

	নাহিত্য-সহালোচনা	
बिरगरिक्नान नक्नमात्र	कवि विवश्रक्षम	*
mentice alla adana	रिक्र-रवर्ष	•
		•
	বস্থিমচন্ত্ৰের উপন্যান (ব্রহ	) P \
	রুবি-প্রকৃষ্ণি	•
	<b>এ</b> কাভের শরৎস্ <del>ল</del>	*
	দাহিত্য-বিভাষ (২র সং)	1
	ৰাংলা কৰিতার ছব্দ (২র সং)	•
_	कांबा _	-
শ্রীবোহিতলাল বলুবদার	च्यभग-भेजाबी (२३ मः)	
	শ্বর-পর্জ (২র সং)	
	414	•
বিবোহিতলাল মনুস্থার	ভাবন-জিজ্ঞানা	<b>110</b>
		<b>W</b> 11-
<b>এএ</b> নখনাথ বিশি	विधित-छेशन	8.
	ৰ্থনীতি ও রাই-বিজ্ঞান	
শ্ভষ্টৰ বটকুক বোৰ	माञ्च वाण	•
विविद्यालम् (पाव	পশ্চিমবজ্যে অৰ্থকৰা	8.
नैक्टनवाकिएनात तात	ভারতের মব রাইল্লপ	8.
	<b>बी</b> वनी	•
S		<b>-</b>
विधायमाथ विभि	ভিত্ৰ-ভব্নিত্ৰ	•110
এবিল লাভ্উইগ	डेगनिय	81
Salaria material	98	
শীরাবপদ মুখোপাখ্যার	चारमध्	•
विषयमा (सरी	সমাঝি	8,
	ারতী প্রস্তালর	
77	গরতী প্রস্থালয়	

वाय-कुमनादियाः (भाः-वदिवद्यवाः (क्रमा-दावकाः।

MRS, P. DEVEE'S (F.D.S.)

### –কুমারী–

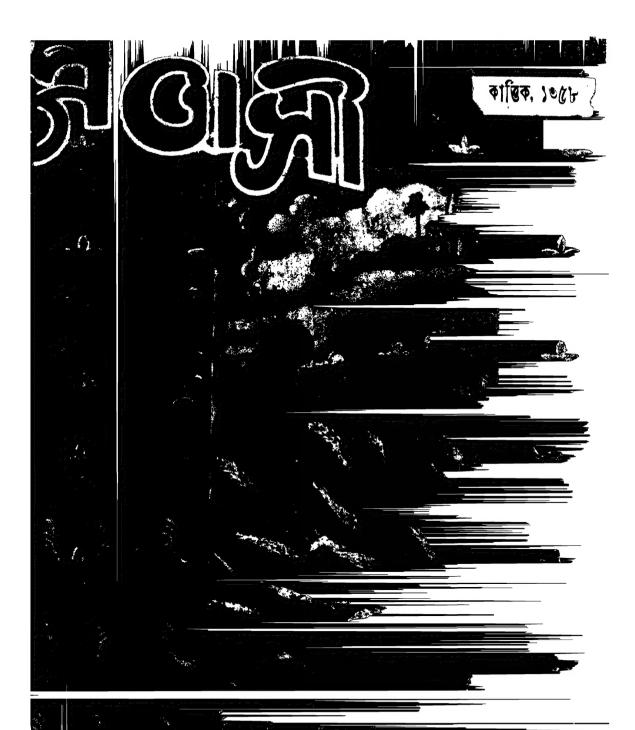
(Tablets.)

হুললন্দ্রীগণ সাধারণতঃ বাসের পর বাস বে সব উপাসসাধির কভ নামাধিধ কইভোগ করে থাকেন প্রায় সকল অবস্থাতেই প্রয়োজন বোধে ব্যবহার্থ্য। হাজার হাজার রোগীতে পরীক্ষিত এবং ভাভারণণ কর্তৃক প্রশাসিং সম্পূর্ণ নির্দ্ধোর উরধ। সর্ব্ব্যাল ৩১ শেভাল ৩১ ও একটা শেভাল ৮১

(ভি: পি: বডর )। বছ বছ ভাজারধানার প্রাথব্য।

একমাত্র পরিবেশক—পি, ডেডী এও কোং, কলিকাতা—০০ হানীর টকিট—এল, এন, মুখার্জী এও সল দিনিটেড, ১৬৭, ধর্মডলা ট্রট, কলিকাতা—১৩

প্রথিতবলা লেখিকা শ্রীলাভা দেবীর
নৃতন গলের বই পতেথার দেখা—মূল্য ১০০
দেরাদেশার আড়াল ২০০
শ্রেষ্ঠ উপভাগ অলখ জোরা—মূল্য ৩১
সিঁ খির সিঁ ছার—মূল্য ২১
শ্রীলাভা দেবী ও শ্রীলীভা দেবীর হুবিখ্যাত গলের বই
হিন্দুস্থানী উপক্ষধা (সচিত্র) মূল্য ৩১
শিশুপাঠ্য সচিত্র সাভারাভার শ্বন—মূল্য ২১
প্রাপ্তিমান—লি ২৬, রাজা বসভ রায় রোড, কলিকাভা।
মভার্থ মূক একেলী—১০বাং কলের ভোরার এবং
ক্ষণা মূক ভিগো—১০ বাইন চাইাজা ইট, কলিকাভা।



was evaluated and the contraction of the contractio

# ্প্রবাসীর পুস্তকাবলী

রামায়ণ ( সচিত্র ) ৺বামানন্দ চট্টোপাধায়ে	2010
সচিত্র বর্ণপরিচয় ১ম ভাগ—	
বামানক চটোপাধায়	10
সচিত্র বর্ণপবিচয় ২য় ভাগ—ঐ	jo
চাটাজিব পিক্চার এল্বাম ১১৭	
(১—১ নাই, :•—১৭ আছে) প্রডোক	<b>नः</b> चा ८८
উষদী (মনোজ্ঞ গল্পদম্ভি)— ঐ	٤,
দোনার খাঁচা—	5110
আন্ধব দেশ (ছেলেমেয়েদের সচিত্র) ঐ	>~
বক্তমণি (শ্ৰেষ্ঠ গ্ৰহসমষ্টি)	٤,
উন্থাননতা ( উপন্থাস )—	
শ্ৰীশাস্থা ও সীতা দেবী	2110
কালিদাসের গল্প ( সচিত্র )— শ্রীরঘুনাথ মলিক	8
গীত উপক্রমণিকা—(১ম ও ২য় ভাগ) প্রত্যেক	210
জ্ঞাতিগঠনে ববীশ্রনাথ—ভারতচক্ত মজ্মদার	>10
কিশোরদের মন—শ্রীদক্ষিণারঞ্চন মিত্র মন্ত্র্মদার	
চপ্তীদাস চহিত্ত—( ৮৫ফপ্রসাদ সেন)	
শ্রীবোগেশচন্দ্র রায় বিষ্যানিধি সংস্কৃত	510
মেঘদৃত ( সচিত্র )—	
শ্ৰীৰামিনীভূষণ সাহিত্যাচাগ্য	810
জন্ম- শ্রীহেমলতা দেবী	214
খেলাধূলা ( সচিত্র )—গ্রীবিজয়চক্র মজুমদার	71.
বিলাপিকা-শ্রীযামিনীভূষণ দাহিত্যাচার্য্য	٠٠٠
ন্যাপন্যাপ্ত ( সচিত্র )—গুনন্দীশ্ব সিংহ	21-
ডাকমা <b>ণ্ডল স্বভন্ত</b> ।	
अवस्त्री क्रास्त्रामञ	

১২ ০৷ , আপার সাকুলার রোড, কলিকাতা

# =প্রবাসী=

১২০াহ, আপার দারু দার রোভ, কলিকাভা।

#### গ্রাহক-প্রাহিকাদের জন্য :-

ভারত পাকিস্তানী সভাক বাধিক মূল্য ১২, ঐ বাশ্বাসিক ৬, ঐ প্রাক্ত সংখ্যা ১, টাকা। বিদ্বেশী সভাক বাধিক মূল্য ১৮, টাকা, ঐ প্রতি সংখ্যা ১০ টাকা অপ্রিম দের। বংসর বৈশাল চইতে আরম্ভ চর। টাকা মনিঅর্ডারে অপ্রিম পাঠাবোই ভাল, বাহিরের বাারের চেকের সঙ্গে অভিরিক্ত ১৮ বাাক্ত কমিলনও দের। ব্যাসি বাংলা মাসের ১লা ভারিবে প্রকাশিত চর। ব্যাসময়ে প্রবাসী বাংলা মাসের ১লা ভারিবে প্রকাশিত চর। ব্যাসময়ে প্রবাসী বাংলা মাসের ১লা ভারিবে প্রকাশিত চর। ব্যাসময়ে প্রবাসী বাংলাভিলে ১০ হারিবের ভিতর ছানীর ভাক্তবের রিপোটিও নির্দিষ্ট প্রাহক নথর সহ পত্র লিখিতে চইবে। পুরাতন প্রাহক-প্রাহিকালন, ভাঁহাদের টালা যে সংখ্যার সহিত নিম্নের হবৈর, সেই সংখ্যা পাইবার পর ২০ নিনের ভিতর পুনর্বার চালা বা প্রবাসী নইতে অনিজ্ঞালাপক পত্র বা পাঠাইতে, ভাঁহারা পরবন্ধী সংখ্যা ভি: পিত্রতে লইবা চালা দিতে ইক্তুক এই বিশ্বাসে ভি: পি: প্রেরণ করা হর। চিট্টপত্র বা টাকা পাঠাইবার সময় প্রাহক-নথর উত্তেখ না করিকে কার্যাসাধনে রোলসমাল অবস্তভানী।

#### বিজ্ঞাপনদাভাদের জন্ম ঃ-

বালিক মূল্য--- নাধারণ পূর্ণ একপৃষ্ঠা (৮ই: x ৬ই:) ৬٠-

- " वर्ष शृष्टी ( ४३:× ५३: )
  - বা এক কলম (৮ই: 🗙 ৩ই: ) 👓 ২১
- "সিকি পৃঠা (২ই:×৬ই:)
  - ता व्यक्त कन्नम ( हहे: × ७हे: ) ১৮८
- " षडेमारम शृष्टी ( ऽहे: x ७हे: )
  - वा निकि कनम (२३:×७३:) ১٠,

#### বিলেব বিলেব পৃষ্ঠার বিজ্ঞাপনের বৃল্য পত্তে জাছব্য

প্রবাস প্রকাশিত হইবার অভতঃ এক সপ্তাহ পূকে 'বিজ্ঞাপন' অতিম গুলাসহ কার্যালয়ে পৌভান চাহ। বুলাসহ বিজ্ঞাপন প্রবাসী প্রকাশিত হইবার অভতঃ ১০।১৫ দিন পূকে কার্যালয়ে পৌভিলে প্রক দেবাইবার ব্যবস্থা করা হয়। প্রক দেবার দোবে বাদ কোন ভূল থাকে ভক্তভ ভামরা নারী নহি। বাহারা বিজ্ঞাপনের প্রক দেবার ভার আমাদের উপর দিবেন, তাঁহারা সামাভ ভূল-ক্রতির লভ অভিবাদ করিলে প্রাহ্ হইবে না। এক বংসারের লভ কটাাই করিলে এবং বংসারের সম্পূর্ণ বলা অপ্রিম জনা দিলে টাকার ৮০ হিসাবে বাদ দেওবা হয়।

কশাধ্যক-প্রবাসী কার্যালয়

# প্রবাসী, ৫১শ ভাগ, বিতীয় খণ্ড, ১৩৫৮

### সূচীপত্ৰ •

### কাৰ্ত্তিক—হৈচত্ৰ

# मन्नापक--- श्री क्लाइनाथ ठट्ढोशाधाः इ

#### লেখকগণ ও তাঁহাদের রচনা

শীৰ্ণিতপুৰার ভটাচাৰ্য্য			শ্ৰকাভাৱনীদান ভট্টাচাৰ্য্য		
—টবাস্ত-সমস্তা	•••	-	পাশ্চান্তা দৰ্শনে ঈখনের অন্তিম্ব-বিচার	•	120
बैज्जूनस्य स्मर्शे			শ্বকালিকারপ্লন কান্ত্রগো		
—ছরাশা (গর)	•••	474	—"বাহানারার আত্মকাহিনী" (সমালোচনা)	***	40
শীপনভতুষার চটোপাথ্যায়			बैक्नोनियान दोव		
—ना <b>ओ ( श</b> ज )	•••	206	—ইতিহাসে নাম ( কবিতা )	•••	100
শীপন্তলাল ঠাকুর			– বারের কোল ( ঐ )	***	***
— অধিল ভারত প্রাচাবিভা মহাসংখ্যান	•••	282	—बारकेत भरत ( व )	***	-
শ্বিৰ্দ্যায় গাণ্ডৱ			—সাহিত্যের সুগ (ঐ),	***	36
—ক্ষমোনা	•••	41)	—त्न पिन          ( 🖣 )	***	220
मैज्रुकंड्र च्डेक्वि			<b>এ</b> কুমারলাল দাশ <b>ও</b> ও		
— ৰভিসাৰিকা ( ক্ৰিডা )	•••	44.	— গোণালের ব <b>্যক্তির ( গল</b> )	•••	. 44
मैजनवर्गात रख			निकृत्रप्रश्चन मनिक		
—পরশীর ( কবিতা )	***	>63	—কবিভার ছু:খ ( কবিন্তা )	***	43
শীশ্বিভাতুষারী বহু		•	—क्वित्र <del>वर्ष</del> ( 🖣 )	***	
বর্মণা অঞ্চলে শারনীয় উৎসব	•••	>00	(年) 紀一	***	43
—নৰ্মদাভীৱের ওকার যাকাভা ( সচিত্ৰ )	940	128	— <b>च</b> त्र। (ঐ)	***	***
🖣 শবিভাভ বন্দোপাধ্যায়			ভার <del>ভ</del> -নহিনা (ঐ)	***	38>
—बूदक्। निरं ( अब )	•••	892	—রপের কথা (ঐ)	***	43.
ৰ বৰুনাচজ্ৰ খোৰ			कृत्र शंज		
—অস্থ্যোগ ( কবিতা)	•••	984	—चून (श्रव)	•••	454
वैषक्षपंत्रम् हक्रवर्धी			<b>बै</b> टकशंबनाथ हटडेाशाशांत्र		
—डेव्होरन ( क्रिडा)	•••	151	—ৰাংলার ক্ষরিকৃত্য জেলার ইয়য়ন ( সচিত্র )	45,	. 280
শীলগোক চটোপাথায়			ইপিরীক্রশেধর বহু	•	
—সমুস্তত সম্পদ্ধ মৃত্যু কথা	***	141	—কি নাম রাখা বার ?	***	290
শীৰাণিদাৰ সেৰ			—পৌরাণিক গাধা	100	**>
—লিভিটোৰ ( সচিত্ৰ )	•••	133	—প্রাচীন ভারতে সভাভার উত্তৰ	***	061
শীপার্থ্য চক্রবর্ত্তী			बैलानामध्य पान		
—পাশা ( কবিডা )	***	983	—क्सपोबो (१०)	***	*>>
—নৰ আবাস ( কৰিতা )	•••	*10	<b>ब</b> लागानगान ए		
শীৰ্ণাকভোৰ সাজান			—মহন্না (কৰিডা)	100	**
वीनवांनी ( कविका )	•••		ইলোপিকামোহন ভটাগের		
শিন্ধীৰ বাধা ( কৰিছা )	•••	w	"বাষণাবারণ তর্বপদানন" (আংগেচনা)	***	***
व्यक्तिया विशे को प्राप्त			बैलाकि संस		100
·वानावक्ति ( नाहका )	\$60, 600	. 166	—কোনারক (সচিত্র)	•••	4
बैंडिया विचान		,	শীলোবিশ্পথ মুখোপাথায়		-
व्रामानम्-प्रवरन	***	34	—क्वांबाबी (कविका)	***	
श्रीकारवीयम रह		_	बैहिसारसन हजनको		
क्रीव ( कविका ) -	•••	450	—"পুৰি পৰিচয়" (সমালোচনা)	•••	4+4
क्षित कामच ( कविया )	***	431	—"বালো বলকাংখ্য ইভিহান" (ঐ)	•••	>>1
211	***		Well iditions diadi. Ad.		A

1 10	ALC: PLAN	Single.	A 20.	F. 15
4.46.24	سفسناها كالمناقط	21424	4.8	<b>**C</b>
		100	e .	****

Sauves preivitalis		: '	विमीमत्रस्य शाम		· ·
—একভারা (গঞ্চ)	***		—शंबन्त (कविज्ञा)	•••	118
শীভপনভূমান কলোপানাম	,		— जनका बहेना बाली (वे)	***	-
—'क्विंगे' ७ 'विक्रियों'	***	•••	—बाब महामा (बरक्कामक (ब)		438
ৰভাগদ বাহা			— শৰ্ম চাহি না আমি (ঐ)	200	200
— निनी (त्रव)	***	>40	बैश्कांवव ब्राप्त, कांवाछीर्व		
बीका वर्ष विकासी			—ক্সিকাতার যদির ও সঙ্গ (সচিত্র)	400	-
—লোকারাধনা না লোক <del>বকনা</del> ?		14.	—"निव्यवस्था क् <b>र्वेट जा</b> षिय स्वरुष्ट" (जास्ताव्या)		
विशासनिष त्रात			— वारकारक म्हरू जारान स्वरूप — बारकारक्रक मन्त्रि ७ मंक्किण (महिन्न)		100
—নেপালের বৌদ্ধর্শ্ব (সচিত্র)		••>	— पालादारात्र पालक ७ पर्यामा १ (गाठक) विश्वतिक (शांचांत्री	•••	• 14
निविशिक्षात त्रात			— कात्रात होन जन्म (महित्र)	***	-
—কাছের মানুৰ <b>শীলরবিন্দ</b>	•••	>>0	— नागा गान वन (नाग्य) वैश्वकृत्रमात्र गानश्च		, ,
विशेषणव्य क्षेत्रांवा			—ৰ্ভিষ্টক্ৰের উপভাবে তাঁহার ভাষণারাও ক্রমবিকাশ		120
—পূৰ্বপুৰবের নামকীৰ্ত্তন	•••	69	बैद्धशहुत चार्जी		,,,,
—- শ্রীধর স্থামীর কুল-পরিচর ও কালবিশ্র		822	—41 <b>4 (44)</b>	•••	212
विशेरमण्ड्य अवकात्र			वैश्वराहत्व ७४		
—ভুঠীর বিগ্রহণালের মূত্র ভারণান্স	•••	(1)	আমার দেশ	100	613
बिहर्नाणाम मनकात			—বুক্তি ও জিগির		39.
—পদ্ধা (কৰিডা)	•••	322	- विचानम्। टनन		,
बैरएरवस्त्रनाथ निज			— চারি বেদের পৌর্ব্যাপর	***	421
—शंक উरभारत नुष्ठन पृष्ठिको ै	***	490	वैश्वित्रलांन हटोशिशास		•
—গোল মালু-সংহক্ষণ (স্চিত্র)	•••	222	—নৰ ৰসতে (কৰিতা)	000	946
—প্রী-অঞ্চলের যেরেদের উপার্ব্ধনের পধ	•••	929	—किंद्र गांध (वे)	•••	
— गृह्णा-चनराम् एपरमस्य उत्तर्भम् । — जृह्मि-स्मनो (महित्र)		42.	—স্বীক্র-সাহিত্যে বৈরাগ্যের বাদী	***	205
— वामानक <b>ठढीशांशांव</b>	•••	848	विविध्कृत्र काना		
विश्वराय मात्री	•••	049	— রাজা রহুনাখনারারণ সম উপালবভাবের বারাছর (সচি	a)	1.
_	<b>&gt;&gt;8</b> .		विविधानवा क्षेत्राहोत्।		
विशेष्टकार्य मृत्याभागात	,,	•••	—একটা হড়া		101
व्ययात्रकाच मृत्याचावाव —हरम्य मानव, हावववाचीव (कविका)		•••	—ক্লিকাতা বিশ্ববিভালয়ের সংস্কৃত বিভাগ	***	450
ক্রেন সালন, স্থানন্দ্রের (কার্ডা) ক্রিগেলকুরার ভ্রার	•••	ics	— व श्वरणव	•••	100
— कुक्रुबात शिज			—য়ৰীল্ৰ-সংলাপ কণিকা	***	89.
	•••	8 78	ব্ৰীৰিভূতিভূষণ মুৰোপাধ্যায়		
—(मवानम (উপ <b>ड</b> ान)			—नातावनी (नव)	•••	•4
1	•••	189	वैदियन त्रांत्र		
—রাজনগর (উপস্থাস) ৭০, ২০০, ৩০০, বীন্দরন্তবাধ রায়	***,	440	—সরকারী কলা-মহাবিভালরের প্রবর্ণনী (সচিত্র)	•••	**>
—ভিকতের টাকাকড়ি			वैविमनव्य च्छावां।		
	•••	•>	— निकात विवर्जन	•••	243
—দিনালপুর জেলার পরীর আর্থিক জীবনের রূপান্তর —বেপালে ভাইপুলা	•••	412	<b>এ</b> বিষ্ণাংকপ্রকাশ রার	•	
— দেশালে ভাইপুলা <b>অন</b> দিনীকুমার ভত্ত	•••	547	—"কে দিল আবার আবাত·••" (প্র	•••	350
			विवीना बाब कोधुबी		-,-
জন্ম দেশে (সচিত্র) টমাস জান্তা এডিগৰ ও চলচ্চিত্র শিল্প (সচিত্র)	•••	110	—সম্ভা—পৰ্ব কোধার ?	***	286
	•••	10.			٠.
—ভীল কাতির মৃক্তিসাধ <b>ক যোগীলাল ভেজাবং (সঞ্জি)</b> —হুদান (সচিত্র)		228	वैशेरतळक्मात्र ७४	•	
——यगान (नाठका) विनाबावर्गव्या वन्त	•••	806	—बडेनोड़ (क्विडा)	904	Bec
			विरोतिकक्षात पात		
—পিতৃলেহ ও তার বরণ শীনির্বাক্ষার চটোপাধ্যায়	·***	>6+	— <del>ডুল</del> (গ <b>র</b> )	9 <b>09</b> )	440
			ম্ভার অভ্যক্ষা (গল)	944	MEL
— করাসী-কবি লেকৎ বে কীল্ ক্রিকিন্দ্রক্ষর বাস	••• .	647	विरीतस्य गंभ ७६	^	** N
্ৰীবিৰ্যালমুমার রায় সম্পূৰিত্ব ক্ষাৰ ক্ষাৰ			fact. (pri	), <b>356</b>	***
— जननी क्षण्ड्रिक (१६)	***	<b>41%</b>			
विनीवरक्षन वाप			विद्यम् अस्मानांशाम	Jan de	ما
— रमनीयाध्येत पूच	900	>>6	—শাৰভ (কৰিডা)		16.

#### - Survey & States and

किया मार्थ करणा वागान		***	बिल्यमंत्री स्वी	3 .		
- क्या-माविरकात्र अनेन पूर्व	8	• • •	—পশ্চিৰ সৰ্জ-ৰক্ষে (সচিজ)	6	•	438
त्वारबद्धवाच हट्डीभीवारेब	2	*	—প্যারিস (ঐ)			-
—স্বাহাৰ প্ৰশে কেউছৰ	1	>	নীলৈবেজ্ফ লাহা			
विक्रीलगांव क्रांगांचांक	_		— বৰনীজনাৰ (কৰিডা)			-
< —वन्त्रद <b>् अ</b> क्नांत्रत्र शंन	\$	• 6	—কান্তৰ (এ)	•	••	•••
এখতিদাল রার			—বুগদৰি (ঐ)		•••	88
— চল্পরগরে 🏖 অর্থিশ	•••	<b>~</b> >	— बाक्युर (अ)		••	500
- পশ্চিচারীতে <b>এজ</b> রবিশ ২১৪, ৬২৩, ৪৬৭	. evs. 1	85	बैर्लिल्खिक मंत्रक्ष			
अवयुक्तन करहानायात	, ,		—শহর কাতি (সচিত্র)		••	303
—কেন ছেড়ে পেলে (কৰিডা)	2	>4	बैलोबीळनाथ च्हार्गार्थः			
—विश्व <b>रत</b> (अ)	*** 5	24	—ক্ৰির স্থা (ক্ৰিডা)		• •	***
विजयरनाथ बृत्यांनायांत्र	-		শীকাৰহুদ্দৰ মাইভি			
	3		বৃদ্ধিচল্ল : ক্ৰিয়ানস ও স্ট্ৰলোক			sve
विद्यादिगीरमास्य विशेष		••	विकारांगर हटोगांगांत			
- जारनीय विकास क्रांडिय-विकास विदियम		21	— <b>4181 (</b> 98)		•••	833
विद्यारमञ्जल भाग	••••	•	—হ্বৰা (ঐ)		•••	1.0
	•		শ্রীসভীশচক চটোপাধারি			•
— गानक ध्यम <b>के</b> ट्यांध्यम्बद्धस्य बांबस	0	••	जात्र के क्या निर्माण क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या		•••	346
			— जात्रवात गान-नराजवा—पूना जानस्यान विज्ञास्त्रवात जिल्लाहो	Ţ	•••	
— খাৰ জুজনখন নামচোধুনা (নাচনা) — ভারতের নিকট বুভিন্কানী টিউনিসিয়ার আবেদন (সা		**				
		२¢ 89	—হু:বৰাদী (কৰিতা)	•	•••	<b>U</b> : <b>U</b>
—বশেষকে নীল-আন্দোলন ও শিদিরকুষার যোব		97 92	শীসবাসাচী রাম			
— বণোহরের নীল-আন্দোলন সন্পর্কে আয়ও তথ্য		19	—নিকৃতি ( <b>অন্দিত গর</b> )	•		SP.
—"বাবেজ-মচনাৰলী" (গৰালোচনা)			শ্ৰীসাধনা চটোপাখ্যার		•	
—শিশিরকুষার বোব ও জাতীর রক্ষক		84	—কন্তাকুবারিকার করেক দিব (সচিত্র)		904	500
– সে বুগের শিক্ষা-সংস্কৃতির কথা	••• 5	29	🖣 मारिको ध्यमन हर्देशभाषाच			
শীলালিংকুয়ায় সেন			—জাগে চল (কৰিতা)		•••	*
—উভাগ (কৰিভা)	••• 9	*	—এভটুকু (ঐ)	•	•••	673
नित्रवीत्यनाथ त्याव			—ছোট বর (ঐ)	•	•••	446
—শ্ৰ বৰাৰ পাট	••• 9	••	শীসার্গাচরণ চক্রবর্তী			
ৰীন্নশা চৌধুৰী			ৰাংলায় কাপীস-চাব (সচিত্ৰ)	•	•••	465
— সাহিত্য ও স <del>ৰাজ</del>	(	<b>v</b> •	<b>बै</b> ञ्चारश्ववित्रम मृत्योगायात्र			
(बन्नामंत्री) त्ररम्			प्रक्ति-शूर्व अभिन्नात नवकाश्रवन		•••	229
—ব্ৰিভারতে ভারতীয় সংস্কৃতির প্রচার (সচিত্র)	***, *	*				16
শীরবেশচন্ত্র বন্ধ্যোপাধ্যার			শ্বীস্থপান্ডবোহন বন্দ্যোপাধ্যার			
कुमजी अरह हिन्द्-वृत्रमधान	•	25	—প্ৰাচীন কামতা ৱাল্য সম্বন্ধে বংকিকিং	•	-	175
बिज्ञतमण्डळ बरकारियाच			वैद्योत ७७ 🗸			
শ্বশিশি	1	<b>3</b>	<b>—শুভা</b> ত (কৰিডা)	•	•••	100
শীরাবশন মুখোপাধ্যার			—সন্ধাৰ (ঐ)		•	
ृ — ननी नाज (छेपछार्ग) ७३, ১৭২, ७००, ८३			শ্রীক্ষীরকুমার দেন			
	-,, -		वर्षात्र हो (नव)		•••	446
विगानिक न्यांनावाक			•			
—তপৌগিরি বা রাষটেক (সচিত্র) শ্বীশাক্ষীল লাশ	***	re	बैद्धीत्रव्य कत			
			— ধর্মাধনার রবীজনাধের দৃত্র ইজিড	•	POS .	40
—এণাৰ (কৰিডা)	··· )	43	निस्वीत्रक्त वांत			
কীপিবলাস চক্রবর্ত্তী	,		—পূৰ্ব বাংলার বভৰণা	•	•••	38.
—সোপনচারি <b>নী (কবিভা)</b>	1	١٠	<b>এ</b> গুনীৰ্ভুষাৰ লাহিডী			
ইশিৰ্জত ঘোৰ			—ৰ্থন রবো না আমি (ক্ৰিডা)			
—প্ৰতিষ্বজের পান্তস্কট	••• >	11	—শেবের মধ্যে অংশৰ আছে (ঐ)			4
विभिनित्रकृतीत कर			विश्वीनहरू बांब			4.443
	••• >	•>	— বুৱা (কবিতা)	٠.	-	355
			Zui ( 1 1 2 A	,		~~~

· Migration ore		4	वैद्यास्य त्यां		
शांवांतव प्रक्रींगांगांव	•••	**	समनिष्	***	£76
बीस्पीयग्रेज (पांच			—ভারতে বৈদেশিক সাহাব্যের এতিবন্দিতা	•••	
—वात्ना ७ वाषांनी 💮 ७२, ३१०, ७२४, ६१८	440	143	—শিক্ষা ও বসুয়ন্ত্	900	50
बैहडिइस सम्मानायात			ক্রিহেক্সেনাথ পালিত		
—পূৰ্যৰ ও পূৰ্বসংজ্ঞা 'সন্তসন্তি'	***	512	– সুলে ছেলেন্থের পাস্থা	140	984
	-		•		
	বি	ষয়-	সূচী		
অধিস ভারত প্রাচারিভা মহাসক্ষেত্রন-জীবনভলাল ঠাকুর	•••	482	কোশী-বাধশীলিশিরকুমার কর	•••	>->
অভুৱোৰ (কৰিতা এঅনুল্যচন্ত্ৰ যৌৰ	•••	916	খাছ উৎপাদনে নৃতন দৃষ্টিভনী—শ্ৰীদেনেজনাথ বিজ		490
অন্ধ বেলে (সচিত্র) – শ্রীনলিনী কুষার ভত্র	•••	660	थून (१४) - इवन नाम	•••	165
অৰ-ীত্ৰৰাথ (কৰিতা)—গ্ৰীলৈনেত্ৰকৃষ্ণ লাহা	•••	480	बीडे (कविटा)——वैकूम्स्त्रक्षमः अज्ञिक	•••	648
<b>ष</b> ष्टिमात्रिका (के —वैष्यपूर्वकृक क्ठांगर्वा	•••	***	গোপনচারিশী (কবিডা)—শীনিবদাস চক্রবন্তী	•••	83.
অন্তর জাতি (সচিত্র)—শ্রীশৈনেক্সবিধয় দাসপথ	•••	747	গোপ'নের ব্যক্তিক (গর)—জিকুরায়লাল গালভপ্ত	***	46
খালে চল (কবিতা)—শ্ৰীসাৰিতীপ্ৰসন্ন চটোপাখ্যায়	•••	4>	গোল-আলু সংৰক্ষণ (সচিত্ৰ) – জ্ৰীদেৰেজনাথ মিত্ৰ	•••	4>4
	e 34,	***	প্ৰামবাসী (কবিতা)— <b>নী</b> ৰাণ্ডভোব সা <b>ন্তান</b>	•••	84.
আসার চীনজ্বণ (সচিত্র)—শীপরিষল গোলামী	•••	2	চন্দন-পৰে শ্ৰীশ্ৰমবিদ্—শ্ৰীশতিলাল হায়	***	*>
আমার দেশ—শ্রীবরদাচরণ ভগু	•••	442	চারি বেদের পৌর্ব্বাপর্ব্য — শ্রীবাসনা সেব	•••	441
चारनाव्या	280	13.	চোৰ (কৰিতা)—জীকলণাময় বল্ল	•••	***
<b>খাশা (কবিতা)—শ্ৰীশাৰ্ব্য চক্ৰবৰ্ত্তী</b>	•••	12>	<b>্ৰাট বৰ (এ)—শ্ৰিসাবিত্ৰীপ্ৰসৰ চটোপাধ্যাৰ</b>	***	***
ইভিহাসে নাম (ঐ)—একালিবাস রার	•••	804	জনৰী কমত্যিক••• (গ্ৰঃ)জীনিৰ্মণত্মাৰ বাৰ	904	210
केक्शेन्न (वे)—वे बङ्गनंदर्श ठळवर्षी	•••	131	কনশিক্ষা—শ্রীহরিহর শেঠ	***	226
উথাত্ত-সমস্তা	***	918	জয়া । কবিতা)———— কুম্দরপ্রব মন্ত্রিক	•••	***
উভাস (কৰিতা)—শীনগৰিংকুমার সেন	***	<b>24</b> 5	"কাহানারার <del>আত্মকাহিনী"</del> (সরালোচন <sup>1</sup> )—		
'ট্ৰ্ব্নী' ও 'বিজয়িনী'—শ্ৰীতপ্ৰকুষায় বন্যোপাধ্যায়	•••	4.8	শ্ৰীকালিকারপ্লৰ কামুনগো	***	459
a करे। इक्। चित्र्रमध्य च्हाराया	***	909	কুরা (কৰিডা)—জীকুনীলচক্র রার	***	795
একতারা (পল)—ইজনধর চটোপাধার	•••	27	টমান আল্ভা এডিদৰ ও চলচ্চিত্ৰ শিল্প (সচিত্ৰ)—		
এট্টুকু (কৰিতা)—এসাৰিত্ৰীখনন চটোপাৰাান	•••	412	<b>বিবলিন</b> কুমার ভার	•••	10.
ক্ৰা-সাহিত্যের প্ৰবন্ধ বৃধ	***	8.>	ভণোগিরি বা হাষটেক (সচিত্র)—শ্রীশচীক্রনাথ মুখোপাখার	•••	• •
ক্লাকুমারিকার করেক দিন (সচিত্র)—			ভালমহল (কবিভা)—জীনীলয়তন দাশ	***	138
শ্ৰীনাথনা ভটাপাথায়	***	549	তিকতের টাকাকড়ি—ঞীনরেজনাথ রার	***	*>
কবিতার ছংগ (কবিতা)—ইকুমুন্তপ্রন মরিক	***	62	তৃতীয় বিএহপালের নুতন তারশান্ন—বীনীবেশচক্র সরকায়		645
ক্ষির যাধা (ঐ)—ইলোরীক্রনাথ ভট্টাচার্ব্য		<b>99</b> 5	দক্ষিণ-পূৰ্ব্ব এশিলার নৰজাগরণ শ্বিখণাংশুবিষল মুৰোপাণাংগ	***	227
ক্ৰির কুথ (উ) — বীকুমুদরপ্রন মরিক	•••	8•8	দিনালপুর জেলার পলীর আর্থিক জীবনের রূপান্তর—		•
ক্লিকাতা বিশ্ববিভালরের সংস্কৃত বিভাগ শ্বীবিশ্বনেশ্য ভটাচ	वि	653	শীনরেক্রনাথ পার	***	489
ক্লিকাভার মন্দির ও সঙ্গ (সচিত্র)—			इश्रांगा (अस)—वि बजूनध्य ध्यारेखी	100	-32
শ্ৰীপঞ্চানৰ রায় কাবাভীর্থ	•••	***	হুংববাদী (কবিতা)—গ্রীনভোবকুবার অধিকারী	400	030
কাছের সামূব শ্রীমরবিদ্দ-শ্রীবিলীপকুষার রার	***	>>0	নেৰতা হইৱা জাগো (কবিতা)—বীনীলয়তন দাশ	•••	V8
কাটা (গ্ৰহ)—ইক্সামাপদ চট্টোপাথ গ্ৰ	•••	813	विवासक (उपकार) विननीमर्थिय क्रीयुत्री	100	185
কি নাম রাধা বার ?—এগিরীজ্ঞলেখর বহু	***	290	(तम-विम्मलात क्या (त्रविद्य)	, •••	, 106
रिवार (पण   निव्य)—			विश्वहत्र (कविका)वैत्रभूत्रवन हरहे।शाशांत	***	740
	, >>=	610	ধর্মসাধনায় রবীজনাধের নৃতন ইলিভ - শীর্ধারচজ্ঞ কয়	•••	40
सूरको अप दिन्तु-पुरानमान	100	425	বাৰ বনাৰ পাট বীৰবীক্ৰমাণ খোৰ	***	4+4
ভূকত্যার বিজ-জীনলেজত্যার গুহরার	•1	*17	নৰ আখান (ক্ৰিডা)—শ্ৰীকাৰ্ব্য চক্ৰবৰ্ত্ত্ৰী	***	410
"কে দিল আবার আহাত-••" (প্রয়)—জীবিমলাংগুগুকাশ রা		349	নৰ বসতে (এ) — বীৰিজয়লাল চটোপাধায়	400	***
কেন চেড়ে পেলে (কৰিডা)—শ্ৰীমধুস্থন চটোপাধ বি	***	8>4	नर्ज्य क्रम्पल भाउनीय छैरमय	944	***
কোলাগনী (ঐ) – বীমোবিন্দুগল মুখোণাখায়ে	***	"	নৰ্ম্বৰাতীয়েৰ ওচাৰ নামাতা (সচিত্ৰ)—ই	800	440
কোনারক (সভিত্র)—জীগোপী রায়	•••		नानक (वरी—विरवात्त्रमध्यः भान	*9*	4.4

शिकाली जान (तक) - विविधृतिकृतन स्थानियांत :	400	100	ক্ষুত্ৰ ভাৰত (কবিভা)—একক্ষুথিৰ বস্তু	P00.	•
विकृषिः (लगुनिक पक्ष)—शिमपानांकी काव		-	कातक-वरिया ( वे ) बिक्युररश्चन वृत्तिक		383
विनाटन कार्युवा—श्रिमदास्थान साम	***	649	जावरोद वर्णन महाम्जा-पूर्ण व्यविद्यमन-		
বেণালের বৌতধর্ম (সচিত্র)বিদাশতবি দার	••• ,	403	্ৰ ইসভীশচন্ত্ৰ চটোপাথাৰ		110
প্ৰিচারীতে শ্ৰীকাৰিশ—			ভারতীর বিজ্ঞান কংগ্রেদ—কলিকাতা অধিবেশন—		
, জীয়তিলাল রাজ- ২১৪, ৩২০, ৪৬০	473	183	<b>ब</b> रनाहिनीरनाहन विचान	•••	929
খ্যা (ক্ৰিডা)—শীহুৰ্গাদাস সরকার	•••	200	ভারতে বৈদেশিক সাহাব্যের প্রতিঘশ্বিতা—বীহরিহর শেঠ		•>•
नही-जकरनद स्वरद्यक छेशार्करवद शय-जिल्लास्याप विज	•••	471	धांत्रदेश निकृष्ठे पुक्तिकांत्री हैहिनिनिन्नांत्र चार्यस्य (महिन्न)-		
পশ্চির সমুত্র-বংক্ষ (সচিত্র)ব্রিশেকালী নদী	•••	*>*	बैदर्गात्मकल नामम 🐞	•••	624
পশ্চিমবলের বাভসকট—জীশিবত্রত বোব	•••	>11	ভীল ৰাভিন বৃক্তিসাধক মোতীলাল তেলাবং (সচিত্ৰ)—		
গালাভা বৰ্ণৰে ইখনের অভিয-বিচার—			ঞীনলিনীকুৰার ভজ	•••	448
<b>শ্ৰ</b> কাভাগ্ৰনীৰাস ভটাচাৰ্য্য	***	846	ভূজকণর রায়চৌধুরী (সচিত্র) – জ্বীবোগেশচন্ত্র বাগল	904	
পিতৃয়েহ ও ভার বরণ—শ্বীনারারণক্র চন্দ	***	>4.	कृत (अब)—विगेदत्रककृतांत त्रांत	•••	108
"পুৰ্মি পরিচর" (সমালোচনা)—জীচিন্তাহরণ চক্রবর্তী	•••	***	ভূমি-দেনা (সচিত্ৰ)—শ্ৰীদেবেজনাথ মিত্ৰ		<b>२</b> २•
भूषक-भृतिष्ठत्र ३२५, २६४, ७१४, १० <b>१</b>		, 900	অষ্ট্ৰীড় (কৰিতা)—জীৰীনেন্দ্ৰকুষাৰ খণ্ড	•••	846
পূর্ব বাংগার ব্রতক্থা শীহুণীরচন্দ্র রায়	•••	>>-	बनचर्च अछनारतत्र गांन -श्रीवनीसानाच मृर्याशांशांत	•••	
পূर्वभूक्तवत नामकीर्डन-विशेषनगढ्य च्छोठार्वा	•••	41	মহিলা-সংবাদ (সচিত্ৰ)—	•••	-10
পৌরাবিক গাখা—জীগিরীক্তশেখর বস্থ	100	8.>	ৰছয়া (কৰিডা)—শ্ৰীগোপাললাল দে	•••	
পাারিস (সচিত্র)—জীপেকাসী নন্দী	•••	902	ৰারের কোল (ঐ)—-ঞ্জীকালিদাস রার		***
শ্ৰণায় (কবিডা)—শ্ৰীশান্তশীল দাশ	***	395	মৃক্তার জন্মকথা (গর) — জীবীরেজকু মার রার	•••	•
এভাত (ঐ)—ইহুণীয় ভগু	•••	166	বধন রবো না আমি (কবিডা)—অফনীনকুমার নাহিড়ী	•••	**
এর (গন) – এত্রেদাত্র ভাতর্থী	•••	213	বশোহরে নীল-আন্দোলন ও শিশিরকুষার বোব—		
প্ৰাচীৰ স্বামতা বাজা সম্বন্ধে বংকিঞ্চিৎ—			ञ्चेरवारभनव्य वाभग	•••	***
क्षेत्रशास्य वटकाशिशांत्र	•••	443	বলোহরের নীল-আন্দোলৰ সম্পর্কে আরও তথা —		
প্রাচীৰ ভারতে সভাভার উত্তৰ—জীপিরীস্ত্রশেপর বস্থ	***	441	श्चीरवारमन्द्रस्य वांगन		497
করবোসা শ্রীক্ষবিলকুমার দাশগুপ্ত	•••	093	বাত্রী (গল)শ্রীলনতকুমার চটোপাথার	•••	206
করাসী-কবি লেকং দে লীল্—ইবিশ্বলকুমার চটোপাধার	•••	<b>2.6</b> 2	ৰুক্তি ও জিগির—জীবরদাচরণ শুপ্ত	100	24
क्डपांश (त्रक) — श्रेटलांगांगव्य मान	•••	*>1	যুগস্থি (কবিভা)—ই শৈলেন্ত্ৰকৃক লাছা	904	8.2
কান্ত্ৰৰ (কবিডা)—ইলৈলেন্ত্ৰকৃষ্ণ লাহা	•••		वारमञ्जनाच हाह्यानामात्र-श्रीतरसञ्जनाच रत्यानामात्र	•••	230
क्टि गंड (वे) — वैविवनगान हट्डोगांगान	•••	1>4	রঘুনাথ দন্ত (সচিত্র)—	•••	44>
ৰকিংচল্ল: কৰিমানস ও স্টলোক – এভাবস্থার মাইতি	***	86 6	রম্ভিদেৰ —শ্রীবিধুশেধর ভটাচার্ব্য	•••	10
ৰভিৰচজের উপভালে ভাষার ভাষধারার ক্রমবিকাশ			রবীক্র-সংগাপ-কণিকা—শ্রীবিধুশেশর ভট্টাচার্ব্য		84.
<b>এএকুনকুমার দাশভথ</b>	•••	130	রবীন্দ্র-সাহিত্যে বৈরাগ্যের বাণী—শ্রীবিজয়লাল চট্টে:পাধ্যার	***	598
ৰন্দী ৰাৱা ( উপভাস )—			রাজগৃহ (কৰিতা)—শ্রীলৈলেজকুক লাহা	•••	>+4
শীলানপদ মুখোপাধান / ৩৪, ১৭২, ৩০০, ৪১৫	**>	, **>	রাজনগর (উপভাগ)—		4.7
ৰহিৰ্ভাগতে ভাৰতীয় সংস্কৃতিৰ প্ৰচাৰ (সচিত্ৰ) —			<b>बीननोगांधर होयूरी</b> १०, २०७, ७७९,	852,	463
বক্ষচারী রবেশ	***	425	রাজা রযুনাখনারীরণ মল উপালবঙ্গেব বাহাছর (সচিত্র)-		
বানী (গ্ৰন)—ইভারাপদ সাহা	***	360	<b>अ</b> विशृह्द <b>न जान।</b>	•••	9.0
নালো ও নাডানী			নামানল চটোপাধ্যার-জীবেক্সনাথ নিত্র		1.00
वैश्वीनव्यः पांच ७२, ३१८, ७२४, ३१८	cre,	103	ঐ — শ্রীপ্রেশচন্ত্র দেব	•••	
যাংলা বেশের মন্দির ও মঞ্চলিপি (সচিত্র)			রামানক-প্ররণে – শ্রীউবা বিধাস	•••	**
্ৰীপন্দানৰ বাহ, কাৰ্যভীৰ্	•••	398	"त्रारबख-त्रवनांवनी" (मयारलांवना) बैरवारनंगवळ वांत्रन	***	444
বিলো মললকাব্যের ইভিহাস" (স্বালোচনা)—			ন্নপের কথা (কবিডা)—শ্রীকুষ্বরপ্পন মনিক	100	45+
ৰীচিত্তাহৰণ চক্ৰবৰ্তী	•••	>>4	নিভিটোৰ (সচিত্ৰ) — ই কাদিনাথ সেন	•••	430
রালোর কার্পাস-চাব (সচিত্র)—অসারদাচরণ চক্রবর্তী	•••	445	लाकात्रायमा मा लाक्यकमा !नामा धर्माधिकात्री	***	444
বাংলার ক্রিকুত্ব জেলার উন্নয় (সচিত্র)			শাৰত (কবিতা)—শ্ৰীৰেণু গলোগাব্যায়	•••	>10
बारक्शत्रमाथ हटहाशायाच	45,	₹8•	শিক্ষা ও সমুখ্যৰ – শীহরিহর শেঠ	***	- 80
विविध वागम ३, ३७३, २८१, ४৮८	430	483	শিক্ষার বিবর্জন—শ্রীবিমলচন্দ্র ভট্টাচার্যা	100	847
हित महानि विदयकांत्रक (कविका)	•••	418	শিল্লাচার্য্য অবনীজনাথ ঠাকুর	•••	190
্রজ্য শিব (গ্রা)—জীজমিডাভ বজ্যোগালার	•••	4>>	শিক্ষীর বাধা (কবিভা)—শ্রীশাশুডোব সাঞ্চাল	•••	**
निवादी लिका ७ वनकच किनवर्गाच बुट्यांगांशांत	***		শিশিরকুষার যোব ও জাতীর রক্তরক—জ্রীবোরেশচন্দ্র বারল	***	484

रनेत्रव मध्या चरनंत्र चांदव (कविका)			न्यूनमा (नक)विकासमार क्रिक्सिक्स	***	**
শীহুণীগদুখার গাহিড়ী	500	-	प्रवेतन क प्रवेतरका 'मधनकि' - मिराक्रियन परमानियान	***	Ž#
विषय पांचीय कुल-পतिष्ठम ७ कालविर्वत			নে দিন (কবিভা)—শ্ৰীকানিয়ান রায়	•••	100
विशेष्यमञ्च च्हारांश	***	8.0	নে বুনের শিকা-সংস্কৃতির কবা		-
ষাটের গরে (কবিভা)—শ্রীকালিকাস স্বাস	•••	415	কুলে ছেলেনের বাস্থা ইছেনেজনাথ পালিত	900	189
मंबाताम भरनन रवडेकत्रविज्ञत्वकाचनाच बरनानिवाति	000	432	चत्रंगती (श्रव)—विश्वीतरूगांत त्यन	000	696
ল্কান (কবিডা)	***		পর্নিপি—মীওঁকারনাথ চটোপাধ্যার	•••	469
সমভা—পথ কোধান ?—বীৰীণা নালচৌধুনী	•••	280	ঐ — শীরবেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধায়	***	140
পদ্মেশ্ব সহমে নৃত্য কথা—শীলংশাক চটোপাধার	***	969	বৰ্গ চাহি না আনি (কবিতা)—নীনীলয়তন দাল		4.8
अत्रकात्री कमा-वश्विकामस्त्रत अवर्गनी (महिन्न)—	***	803	শ্বরণীর (কবিতা)—শ্রীক্ষরমূমার বস্তু	•••	>61
নাহিত্য ও স্যাৰ—জীৱনা চৌধুরী	•••	ev.	रमशेषांटित गुच-विनीतपकृषण तांत्र	***	)As
নাহিত্যের মুল (কবিভা)—- 🕮 কালিবাস বার	•••	38	হনেন সাগন, হামহরাবাদ ( কবিডা )		
হুপান (সচিত্র)—ইনিনিনিকুষার ভত্ত		840	वैशेदत्रव्यमां मृत्यांनायाम	•••	564

# বিবিধ প্রসঙ্গ

व्यवनीरनाहन द्वांत्र	***	***	কাতিসংক্ কৃষিপ্রসঙ্গ	v •i•	074
অমিরকুষার গালুশী	•••	***	কামসেংপুর সক্ষয় আন্দোলনের নৃতন স্থাণ	900	212
আগাৰী নিৰ্মাচনে বিভিন্ন খনের প্রতীক	•••	>	ডাকাত সৰ্দাৰ ভূপং	***	943
আচাৰ্য্য অবনীপ্ৰনাথ	•••	269	<b>ভেলের প্রতি</b> বোগিতা	•••	240
আন্তর্কাতিক প্রেস ইন্ <b>টিটি</b> ট	***	495	ত্ৰিপুরা ছাজ্যে গ্রনাগ্রনের হুবিধা	***	424
শান্তর্কাতিক প্রয়স্থ	•••	285	ত্তিপুরা রাজ্যের সঙ্গে বোগাবোগ	•••	>>
আমানের দেশে খাভ ঘাটতি কি প্রকৃত ?	•••	.22	দাৰ্শনিক সম্মেলন		
हैरातुओं निकांत कम	•••	•	ছুনিরার বাণিজাপোডের হিসাব	•••	>=
ইয়াণ ও বিশন্ত	***	388	হুৰীতি খ্যান	***	130
ইট ইভিয়ান নেলগুয়ের কণ্মীসংখ্যা	•••	240	নিধিল-ভারত বন্ধভাবা-সাহিত্য সম্মেলন	•	-
वंतरनाथ উপनटक वत्रक्याकवि	•••	388	নিৰ্কাচন ও পশ্চিমৰজের ভবিভডের স্থপ	•••	483
একই ভালে পেচক ও দাঁড়কাক	***	>•	নেভাৰীর মৃত্যু-সংবাদ	***	433
बक्रि महर थरान्ड्री	***		নেপালে আৰায় বিজ্ঞান	***	_434
क्रदर्जनी (नकूनांत्रक् (क्षत्र नित्रत्यक्रका)	•••	243	নেপালের মন্ত্রিসভা	***	348
ৰস্থিকতের প্রতিরোধ—কল্পিকবের প্রসার	***	62.	শুট হাৰ্থৰ	•••	
ৰস্মিষ্ট ও বিভূগা শ্ৰেণী	•••	200	পতোদীর নবাব	***	
क्यानिहे मरनद क्य	_ "	625	পদাৰিত বাংলা	940	388
ৰয়েকটি প্ৰকাণ্ড ভূলের পরিপাষ	•••	>-	পশ্চিমবল কি বাট্ভি অকল ?	•••	>00
কাপড় দইবার ক্রেডা নাই	***	201	পশ্চিম্বল বহিলা জল্মী সেবা-সমিতি	900	30
কালীকান্ত লিরোমণি	•••	-	পশ্চিম্বল রাজ্যের রাজ্যপাল	•••	>46
কাৰী-নক্ষো-কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়	•••	413	शन्धिवरंज निकार <b>न</b>	***	34.
কালীর সম্ভা ও ডেভার পরিকরনা	•••	419	পশ্চিমবন্দে বৃদ্ধি বিভাগ	000	
কেম্পানী আইন কৰিটি	•••	454	পশ্চিম্বল্পে মথক্তের চায	100	188
ৰাভ	.000	**	পশ্চিমবলে পাছা ও চিকিৎসা ব্যবস্থা	100	*
<b>ৰাভ</b> স্মতা	***	•	পুল্চিমবজের আরশ্য সম্পন্ধ		. >4>
ধৌন বাৰ্ক	***	•	পশ্চিত্রকার বন্ধ পরিক্রমা		24>
शंक्रव गर्ड	800	427		***	7.
চীন ও ভারতবর্ষের পার্বক্য		701	পশ্চিম্বলের নির্মাচন	901	470
চীন ও ভারতের স্বস্থ	•••	340	পশ্চিম বাংলার রেশনের লোকান.	iles.	
সীমের বর্ত্তমান উন্নতি	***	443	পাকিয়াৰে বৌধ নিৰ্মাচন রাখী	440	444
समिका	•••	388	শাকিছানে হিন্দু 🌋 🖫	•	15.0
क्षवित्र मात्र छेरशांक्व	***	108	পাশ্চাক্ত কথতের আইনেম্বক	***	380

		***	ভারতীয় ভাষা-বীতি		2.03	
चूना जून शांकिशांत वारनांचांचां चांत्वांनन	444	-	বাহতের বাইণতি	900	4	
नूस्तरम वाशाजाम्म र विश्व निका			ভূষিদাৰ বজেৰ স্ত্ৰপাত	***	965	
जूनिक्ष वीर्विश्वर कर्न । विश्व	100	423	"ভোট বাও নাই চিনি ও কাপড় পাইবে না"	•••	459	
পূৰ্মবন্ধের হিন্দুরা কোন্ নেশন ? বারীয় জাতীয় নিক্লা-গরিবহে ডঃ নর্মপঞ্জী হাবাকুৰ	cas winder	ote	बयुवाकी नहीं ७ थांन	***		
	1110011- 1110	383	ৰাধ্যবিক শিক্ষা ৰোৰ্ড	***	•	
वयानी थान		249	मानकृत्मन चरश	•••	250	
ব্যক্তির ভারত ও জাপান		33	বাৰ্কিন বুক্তবাষ্ট্ৰের অৰ্থসাহাত্য	944	34	
শ্ৰী আয়াকাৰে পাকিছাৰ প্ৰতিঠা	***	ezv	মাধিক জাতির পরিচয়	***	445	
रत्रकर्माती दर्गम	***	247	মিশর-হুত্বাল-চিউনিসিয়া	960	150	
चारनात्र निर्याष्ट्र	,	OVE	"নৃক্তি" পত্রিকার বাবপ বর্ব পূর্ত্তি সংখ্যা	900	200	
নালোর নির্বাচনী অভিযান		***	मुनाइांग	900 °	484	
নাংলার থাদি ভঙ্গকুল	***	621	रण्डात कुछ्न जनवारी		434	
বাংলার পুড়ক-প্রকাশক সক্ষ		243	বুংজন প্রায়াণ বুৰজনের নেবামঞ্জ		-44	
বাংলার স্থাবিত স্থানের স্বত্য		426	पुरवारण प्रतिशासकण "बरहर विशोजिक"		<b>60</b> a	
नंडांनी	504		রন্ধেন (রশারেক রাজনীতি ও নিষ্ঠ রতা			
विश्वनिष्ट ब्रासिक माना भारती	•••	345			627	
বিধানচন্দ্র রামের পরিকলনা	•••	628	ताका पर्व कर्या	-		
ীৰণ-ভাগৰতী ও <b>ভজি</b> -নিকেতন <sup>®</sup>	* ***	3.	রামকুক নগর	100	245	
বিশ্বভারতী বিশ্ববিভাগর	•••	•	রামদোহন রায়	•••	208	
विषमान्ति ७ देवजीत "बारनीवात"	•••		রিজার্ত ব্যায় ও ভারতীয় কুবি বুণবান প্রতিষ্ঠান	000	400	
বিশ্বত বিশ্বৰী	•••	24	রেলওয়ে উপার্ক্তর ও ভারতরাই	•••	503	
বিহার প্রমে ন্টের অমুবারতা	600	652	मर्त्नाथन	100	esm	
বুৰিবাদি শিক্ষার সংগঠন	***	48>	সংস্কৃত পু'বিদ্ন তালিকা	000	215	
उत्तृत कृत ७ क्टनटकड नक्टनर्विकी अन्	` •••	~	সাৰা চাষড়ার দাপট	000	450	
াপীৰ্থীৰ ছৰ্দ্দশা	***	200	সাধারণ নাগরী লিপি	e è	•	
ারত ও বাকিব বৃদ্ধ্যাট্রের সবস্থ	***	544	দাধায়ণ মির্কাচনের প্রার্থী	•••	140	
जीवरु-ब्रिटिय-वृक्तवाद्वे	***		সিরিয়ার ও পাই রাট্টে রাট্টবিগ্লব		212	
ांबर-वार्किन हुन्दि		483	বুজার্বন অঞ্চলের সমস্তাবলী	* ***	•	
चात्रख-मञ्ज्ञास्त्र वार्टि	***	488	"সোবিয়েতে"র নদী: আৰু ও কাল	•••	540	
जनकर्ताः चार्याः विकास	•••	38	শাস্থাহীনভার কারণ ও চিকিৎগা	***	-	
जंतरवादो "बाहाकी" क्यों	•••	200	হাবড়া উৰাত্ত-কলোনী	900	<b>480</b> .	
जंबलबाद्धे भारतेव हांच वृषि		240	হিন্দী সাত্ৰালাবাদের নৃতন অভিযান	004	483	
जनकराद्ध पारका वाच प्राच जनकराद्धेन स्वीपहन		• • •	হে অনাদি অতীত, কথা কও		-	
JINONICEN CHITCH	-					

# চিত্ৰ-সূচী

রঙীন চিত্র		দ্ভাত্তির মন্দির, কির্রুদেশ	*** <b>*</b> \$*
श्रदंग-कममी	>	বিরীতে সম্বতী পুরাস্থান-কৃষ্ণের অনুকৃতি	
चढ्-मिनीशंतरक्षन रमक्छ	483	manufacture	··· 92 <b>6</b> -
বাৰপ্ৰস্থ— ঐ	976	নাইবোৰিতে (পূৰ্ব্ব-আফ্ৰিক্) ভারতীয় ক্ৰিপ্নার	
কুছের বৈরাগ্য—এসভোব সেনগুপ্ত	674	শস্ত্ৰিত শ্ৰীতি-সন্মিদৰ	969
শিকারী-এদেবীপ্রসাদ রারচৌধুরী	*** 388	নিউ লাগীপ্ৰথম চলচ্চিত্ৰ ইডিও	••• •••
হালকা হাওৱা— - ঐ	269	ৰেপাল—	
একবর্ণ চিত্র	1	<b>⊸ নাৰ্</b> রা চৈত্য	
चनुन निःह, छन्नेत	42	and and an Com-	*** ***
जब सर्वत विजानमी	144-42	—ব্যক্তনাথ সন্দির	
অংশীজনাথ ঠাকুর	241, 836	প্ৰীয় লগনাধ यमित श्रीतांगठल नाम	803
অবনীজনাথ ঠাকুরের শোক্ষাঞা	***	প্যারিস চিত্রাখনী	90-509 300
শহর কাতির চিত্রাবলী	343-48	প্ৰতিকৃতি—শ্ৰীশচীৰ বাব	500
শাৰেরিকা—		প্ৰভাকৰ চটোপাধ্যাৰ]	*** ***
—ইৰ্টাটিউট অৰ টেক্ৰোল্জি, যাাগাচুগেট স	>>e	थानांधन मेचिय महाचि	476
क्यारनंत्र पुष्ठिक	4 348	ৰহিৰ্ভাৰতে ভাৰতীয় শ্ৰনিক	*** ****
—-ট্যাস জেকারসন স্বতি-সৌধ	*** 378	ৰাংলার সেচনালী	62-6
এডিসন, ট্যাস আন্ভা	*** 140	ৰাঙলার মন্দিরের চিত্রাবলী	>14-18
4004	*** *>*	ৰাজাৰ—শ্ৰীৰসিত সেৰ	
ওকারেশর মন্দির, নর্মদাতীরে	*** 126	বি. কে. বেছ ক্ল, গুৱাশিংটনে	42
শভাকুৰায়িকার চিত্রাবলী	649-95	বেক্সিলিডে ছর্সোৎসৰ	200
कर्वडरा-जिम्हीन तात	*** 842	(वार्बिन), अन् इपिय	676
क्ना-बराविशानाम अवनित विजाननी	845-68	ভারত সেণাশ্রম সন্দের প্রচারক্ষণ	
শ্লিকাতা চীনা অঞ্জের চিত্রাবলী	··· Y3-38	ञ्चनभव बाबराग्यी	85, 600
কার্পাদ-চাবের চিত্রাবলী	-48	ভূমি-সেনার চিত্রাবলী	42 22
কালিকারপ্রন কাত্রবগো	609	मन्दितम विकाशनी	415, 400-4
কিমন্ত্র-বেশ-চিত্রাবলী	84-9	नुक-रशिव	168
সুটার-শিল	\$02	যোতীলাল তেজাৰং, ভীলনেতা	438
কোনারক চিত্রাবলী	200-208	ৰাৰপ্তানী – শ্ৰীহেমন্ত্ৰী সেন	
কোরিয়াছ ৩০তৰ ভারতীয় এখুলেল ইউনিটের মেডিক্যাল	অফিসার ৫৪৪	त्रांना त्रप्नाथनातात्रन नह উशानवश्रदणन नाहाजूत	••• 98
দিরিশচন্দ্র দাস	*** 907	त्रांदक्वाधनाम	842
মেজিয়ার প্রধান খাল	see 8:00	त्रारबद्ध बनांव, बांड्रेगिङत्रांत्रानम-कीवनी छनहांत्र	*** 49)
লেবেল আউনিয়া বাঁধ	800	রাণী বিতীয় এলিজাবেধ	230
খোল-আলু রাধিবার চালাঘর, পুণা	*** \$30	রাষটেক যদির	*** 3
इमिक्रव है किए	*** ***	লনিত্যোহ্ম ঋপ্ত	900
ৰ্মীৰা সংস্কৃতি বিশ্বন, ৰিউ দিলীতে	>20	नि <b>चिराडे</b>  न	*** ENG-E
চীশা সাংস্কৃতিক মিশন	*** ***	শরশবা — শ্রীশাভিরপ্রশ মুখোপাধ্যার	***
ৰাণানের শাভি চুক্তি বাক্তর	*** 343	निवमकत कों इति ও निवधकर्नमोत्र উरवायन-छेरनव	*** 946
পাড়পাৰ বাজপরিবারের ব্যায়াখাপার	*** 9 ** **	নান্ ক্রান্সিক্রো	100 '00
ৰ্টীকশালে ভারতীয় মূলা নিৰ্দাণ	*** 484	निष्डनभाग रिवर्ड चवन	346
ট্রেবের কাষরা — এশচীন রায়	800	সিঙ্গাণের সন্দির, সর্ম্মণাডারে	980
बिनियांग		নিব্ৰি কাৰ্টনাইকার কাউরি	
जार्गममाब-मनिव	*** 4.8	স্থানের চিত্রাবলী	840-85
—পান্ধী শ্বতিসন্দিৰ ও শিবালয় <sup>প</sup>		স্থান্ত পাৰ্বের স্বাস্থা	*** *>8
विष्-्-यित्र	*** 963-2	इरहिं। वस्त्र	see\$38-6



প্ৰবাসী প্ৰেস, কলিকাতা

গণেশ-জননী শ্রীবীরেশচন্দ্র গঙ্গোপাধায়



রামটেক মন্দির



রামটেক মন্দির হুইতে অসা হুদের দৃগু



#### "গভ্যৰ্ শিবৰ্ স্করৰ্

नावमाचा रलक्तन नकाः

্র সাক্তার হয় খণ্ড

# কাত্তিক, ১৩৫৮

ভম সংখ্যা

### বিবিধ প্রসঙ্গ

পূজ

পূজা আগতপ্রায়। বাঙালীর ঘরে আগমনীর হ্বের সঞ্চেনিরানন্দ দূর হয়, নগরে পল্লীতে—গ্রামে গ্রামে উৎসবের আনন্দ-স্রোত বহিয়া বায়। আজ সে উৎসবের মধ্যে দেবি বেন বিধাদের ছায়া, সে আনন্দ যেন মনে হয় কটসাধ্য। দেশে বহিয়াছে অভাবের ক্ষত, লোকের মুখে মসন্ভোষের অভিশাপ। শান্তি নাই কোধায়ও, সম্ভাষ্টি রাই কাহারও ঘরে।

ঘোর দাসত্বের দিনেও বাঙালীর ঘরে "বারো মাসে তেরো পার্বংগ ছিল, এবং সে সকল পূজাও তো উৎসবের পূলকে পূর্ণ হইত। আব্দ খাধীনতার দিন, চার বংসর নতিবাহিত হইয়া গিয়াছে আমাদের খাতজ্ঞালাভের পর। তবে জনগণের কেন এ অবস্থা, কারণ কি এই নিদাকণ দৈহিক ও মানসিক অবসাদের পূ আব্দ কেন মনে হয় বুধাই এই শক্তির আবাহন, নির্থক এই দেবতার বোধন পূ

ছিল এক দিন স্থদ্র অতীতে, ষধন বাঙালীর শক্তির
নারাধনা ছিল সার্বক। তথনও বাংলামায়ের সন্থানের
নকপ্রত্যক লাসত্বের শৃথলে আবদ্ধ ও জর্জারিত হয় নাই,
চাহার শিরায় শিরায় উত্তপ্ত শোণিতের প্রবাহ ছিল।
নিজের জন্মগত ও ব্যক্তিগত অধিকার ও সন্তান-সন্ততি,
নাজীয়-কুটুম্বের মানমর্যালা, সম্পত্তি রক্ষার্থে জীবনমরণ
ল করিয়া সে শোণিততর্পণে কুঠিত বা বিচলিত তথন
ইত না। দুর্জ্জয় শক্তিতে সে অভিক্রেম করিত লাকণ
ংধকই, বিষম বিপদ, অর্থ বৃথিত সে দেবীর ঐ আবাহনের:

"बरः बनाय नमनः कृत्वामि"

দেবতা তথন ছিলেন জাগ্ৰত, তাঁহার প্ৰারী ছিল জাগ সভেল, ৰছসম কঠোর নিৰ্মম। মান্তের সন্তান তথন তিপুলা করিত সমরাদনে, শত্রুর রক্তে অসিফলক রঞ্জিত করিয়া, আত্মবালদান দিয়া। শৌর্য ছিল তাহার, বীর্য ছিল তাহার, তিতিক্ষা ছিল তাহার অক্লের ভূষণ। উদান্ত স্থর ছিল দেই পৌরুষদৃপ্ত শক্তির পূজারীর। তথনই ছিলেন দেবতা জাগ্রত।

দেদিনের জ্বাজন্যমান সাক্ষ্য রহিয়াছে পঞ্চজুমের ইতিহাসে, দে পূজারীর পরিচয় আছে বারোভ্রার ইতিরুত্তে। ভাহারও পূর্ব্বে ভাহার বিবরণ আছে ''হুট্ট শণাক্ষের'' অভিযানে, শত বিজোহ-বিপ্লবের ক্ষিদন্তীতে।

ভাহার পর বাঙালী গা ঢালিয়া দিল বিলাস-বাসনের স্রোতে। পূজারী ভূলিল পূজার অর্থ, দেবতার নির্দেশ অগ্রাহ্ম করিয়া উন্মার্গগামী ও লালসাগ্রন্ত ইইয়া চলিল সে ধ্বাসের পথে। দেশ হইল শত্রুকবলিত।

তার পর গিয়াছে যুগ্যুগব্যাপী দাসত্ত্বে বন্ধন, ক্রীবন্ত্রের অভিশাপ। অযোগ্য অধম সন্ত'নের অশোগগু শিশুবৎ ক্রন্সন, আবেদন-নিব্দেন, অভিমান-আবদার তত দিন বুথাই গিয়াছে। দেবতার নিমাভদ হইক কথন ?

আবার আদিল একে একে দেই প্রাচীন ঐতিহের উত্তরাধিকারী পূজারী, সংখ্যায় মৃষ্টিমেন, সহায়সম্বাহীন। কিছু তাহাদের চিত্ত ছিল সবল, দিছান্ত ছিল অটল। বিল্ল-বিপদ তুঃগ দহন তুল্ক করিয়া তাহারা লোণিততর্পণে সম্ভূই করিল দেবতাকে; দেশের লোক ব্রিয়াও ব্রিল না, ভাবিল বুধাই এ আত্মবলিদান, অনর্থক এই নিদাকণ কুল্ক-সাধন। সাধারণ লোক পূজার সেই প্রাচীন স্নাতন অর্থ তথন ভূলিয়াই গিয়াছে। তাহ দাশ ভিল্ল আধীনতা অর্জন অসম্ভব, এ কথা কেইই জানে না।

আজ দেশের ভাগাচক্র ফিরিতেছে, ঐ চক্রের পেষ্ণ সভ্ত করিবার ধৈর্ঘ ও পৌরুষ কি আমাদের আছে ? যদি থাকে, তবে কিসের এই বিদাপ-প্রলাপ, কেন এত ক্রোধ-ইবা ও বেষ দ স্বাধীনতার মৃদ্যাদানে ধদি আমরা অসমর্থ, তবে অনর্থক সকল পূজার আয়োজন, বুগাই এই শক্তির আবাহন।

স্বাতস্ত্রের মূল্য নিরবচ্ছির সজাগ সতর্কতা এবং শক্তি পূজার অর্থ শক্ষাহীন, নির্মান কঠোর হালয়ে বীরগতি কামনা, এ কথা যেদিন দেশ বুঝিবে দেদিনই ছইবে পূজা সম্পূর্ণ সার্থক।

পশ্চিমবন্ধ বাঙালীর শেষ তুর্গ একথা বছ বাব আমরা বলিয়াছি। এই তুর্গ জীণ ও ভর এবং ইহার জ্ববিবাসিগণ পঞ্চাশ বৎসরব্যাপী বিদেশীর উৎপীড়নে ক্লিয় । ইতিহাস-বিখ্যাত পঞ্চভ্যের মধ্যে দিংহভূম, মানভূম ও শিপরভূম আরু বিদেশীর চক্রান্তে ও ভিন্ন প্রদেশীয়ের অতি হীন মনোবৃত্তির ফলে পশ্চিমবন্ধ হইতে বিচ্ছিন্ন এবং উহার জ্বিধাসিগন অবাঙালীর অভ্যাতাবে তৃদ্ধণাগ্রন্ত। পশ্চিমবন্ধের সন্থানগণের আশাভ্যমা বাহা বিছু ছিল— ষাধীনতা-প্রাপ্তির সন্ধে বাহা ব্রেইই বর্দ্ধিত হয়—দে সক্লপ্ত ক্রমেলপ্ত ইইতেছে। এই ভয়াবহ অবস্থার মধ্যেও কি আমাদের প্রেক্রিগর মনোভাবই থাকিয়া বাইবে ?

দাসত্ত্বে যুগে, ক্লীব্তপ্রাপ্তির ফলে "পাঁঠাবলি দলাদলি"
দিয়া তুর্গাপুজা, কালীপূজা চলিত। আজ স্বাধীনতার
আলোয় আমাদের সে দকল কলককালিয়া আরও ফুটিয়া
উঠিতেছে, কিন্তু তাহার অবসানের কোনও চিহ্ন তো দেখা
যাইতেছে না।

দেশ ত বিভক্ত। শুধু পূর্ববৃদ্ধই বিচ্ছির হয় নাই—যদিও
এক দল লোক চীৎকাব করিয়া তাহাই জানাইতেছেন।
পশ্চিমবদের সমৃদ্ধিশালী অঞ্চল, বেধানে অমূল্য ধনিজ
সম্পদ বহিয়াছে, তাহা গিয়াছে। পূর্ণিয়া, করিমগগ্র
ত্যাদি উত্তর ও উত্তর-পূর্ব অঞ্চলের বাঙালীও এখন
বিহারী ও অসমীযার অধীন। স্কুডরাং বাংলার
আছে কি ?

শ্বত এই কুল অঞ্লের অধিকার ও সম্পত্তি নইয়া কাড়াকড়ি ও টানাহেঁচড়া চলিতেছে। দেশের বাহা কিছু ভবিশ্বং আশা ছিল ভাহাও দেই সঙ্গে রুদাতলে বাইতেছে। বদি বুঝিভাম বে দেশের লুপ্ত সমৃদ্ধি উদ্ধার করিবার জন্ত চেটা চলিতেছে, বদি বুঝিভাম ভাহার শ্রী ফিরাইবার পথ লইয়া মতবৈধ হইয়াছে, ভবে ঐ দলাদলির একটা অর্থ পাইভাম।

বাঙালীর অন্তিত্ব লইয়াই প্রশ্ন। ভিন্ন প্রদেশে আমাদের স্থান সন্ত্রিত হইয়া ক্রমে শৃক্তে মিলাইতে চলিয়াছে। এই দরিত্র প্রদেশে যাহা আছে ভাহাতে দেশেরই সম্ভান যাহার। তাহাদেরই সন্থান হওয়া অগন্তব। অথচ এদেশের পরিধি বিভার বা ভারতের অন্য ক্ষেত্রে বাঙালীর অধিকার বৃদ্ধির কোনও সমিলিত প্রচেষ্টা নাই। আছে তুধু "উহাকে বঞ্চিত্র করিয়া আমাকে দাও" অথবা "উহার সন্তানের মুখের গ্রাস আমার সন্তানকে দাও।" চাকুরীর ক্ষেত্রে তাই, জমিজমার ক্ষেত্রে তাই, এখন পার্লমেন্টে এবং ব্যবস্থা-পরিষদের নির্ব্রাচনেও তাই। যদি বৃদ্ধিতাম ভুধু বোগ্যভার মাপকাঠিতে ব্যবস্থার, বা বদি বৃদ্ধিতাম ভুধু স্টিক অধিকার নির্দ্রে বিচাবের প্রশ্ন. তবে বলিতাম ভুধুন্তা

পথে ঘাটে ফাকা কথার ছড়াছড়ি চলিভেছে। "বিপ্লব বিশ্রেছ", "গণতন্ত্র প্রজ্ঞান্তন্ত্র", "গণমত গণবিপ্লব" ইত্যাদি গালভর। শব্দ ও শ্লোগানে আকাশ মুখবিত। কাগজে সত্য-মিথ্যার বালাই নাই, কিসে উপকার-অপকার হয় তাহার বিচার নাই, এক দল বাহা করে অন্য দলে বলে বা লেখে যে দে সবই মিখ্যা, কণট ও আনাচারপূর্ণ এবং তাহার পান্টা জবাবও সলে সঙ্গে আদে।

দেশের অবস্থা ত অবনতির দিকেই যাইতেছে ? ইহার প্রতিকারই ত প্রার্থনীয় ? তবে পরম্থাপেকী হইয়া বা পরকে দোষ দিয়া কি লাভ হইবে ? বিদেশী সরকার যত দিন ছিল তত দিন তাহাকে দোষ দেওয়া ছাড়া অক্স উপায় ছিল না। এখন ত স্বাভন্তঃ আসিয়াছে, যদি বর্ত্তমান সরকার না পছল হয়, নৃতন সরকার গঠনে অবহিত হউন। খাহাকে চিনেন, যাহার ইতিবৃত্ত জানেন, তাহাকেই বলুন অগ্রসর ইইতে এবং তাহাকে সাহায় কক্ষন দেশের নৃতন সরকার গঠন করিতে।

দেশের লোক বদি উৎসাহ উন্নম দেখার, বদি বেখানে তাহার অধিকারচাতি হইতেছে সেগানে দৃচ্চিত্তে বাধা দিতে অগ্রসর হয় তবে এই জীর্ণ তুর্গ ই বিজয়ের আকর হইবে। দেশের প্রাচীন গৌরব ও পুরাতন শ্রী ফিরিয়া আদিবে। হতোভ্যম হইয়া নিবিষ সর্পের মত গর্জ্জাইলে শক্র হাসিবে, কার্যোদ্ধার ত হইবেই না। শ্রমকাতর বা উন্নমহীন লোকের স্থান আজিকার জগতে অতি অল্প, এবং যে দেশে প্রতি বর্গমাইলে ৯৫০ জন লোক সেখানে বিন্দুমাঞ্জত্ত্বানের অভাব। এই সকল কথা অরণ বাধিয়া, সভ্যবদ্ধ হইবা অভিবান করিতে হইবে। বদি তাহা হয় বাঙালী গৌরবের সহিত বাঁচিয়া থাকিবে, অশ্বথায় তাহার দাসত্ব ও অভিত্ত লোপ স্থনিশ্যিত।

বদি শক্তির বোধন কাম্য হয়, যদি সার্থক করার ইচ্ছা থাকে এ পূজা, তবে প্রথমে দূব কর মনের দৌর্বল্য, ক্ষম্ভবের কল্য-কালিমা, শরীবের আলস্তা। দেবতার আশীর্বাদ তাহারই প্রাণ্য যাহার আত্মনিবেদন ঐকান্তিক।

#### খাদাসমস্থা

अक्तियबाज्य बाह्यमञ्जा क्रमणः अक्रवद बाकाद बादन कविटकरकः। अ वरनद अध्यक्ते चनाद्रहेत का कारमद ভবিষাং খুব খারাপ বলিগ মনে হইবাছিল। চাউলের দরও অনেক চভিন্ন গিনাছিল। পরে র্টি হওরার শেষ রক্ষা তইবে বলিবা মনে হইভেছে, কিন্তু চাউলের ধর কমিতে চাহিভেছে ता। शत big वरमदा biक्रिका का कामन: वास्त्रिका हिलाहा अवसारी (में करें बेठांत व मार्थाठिक विवरण প্রভাশিত ভাইরা থাকে ভাঙা একত করিয়া ছেখিলে আপর। क्रम (स वांश्वारक्राम बारकात चवमा अचारे अजीन वर्षेश টিসিভাতে। এবার আর এক বিপদ চইয়াতে--বচ বান-ক্ষিতে পাট চাঘ তইয়াছে। পশ্চিমবঙ্গে পাট চাবে ধুব লাভ তইবার मधावमा क्या कादन शाहे भागवाद ७ ब्हेवाद करनद अवारम একার অভাব। প্রোভের কর হাতা বহু পটা করে ভার পাট থঠে না। কলিকাতার নিকটবর্তী বে সকল ছামে भार्त व्हेशारक (जनारम अञ्चनदाम कवित्न (मना याहेरन रव शाह शाह जातर हरेबाट किस जातत सजाद जात शाह বাতির ভটতেতে না। এবার বানের ভ্ষতিত পাট চাষ করায় খাভসমতা বাভিয়াছে, ডলার সমভার সমাধান কভটা হইবে বলা যার নাঃ পাট বা তলায় নিজে খরংসম্পর্ণ না ভইরাও বে বৃহত্তৰ বস্ত্ৰশিল্প এবং ধুব উল্লেখবোগ্য ভাবে চটকল চালামো याव खिर्केटमब मुद्रीन्त किवा चामारमब बार्क्स केंगरब के रवि (बैंकि (४६३) महकात ।

খাভের স্ল্যবৃদ্ধির হিসাব পেজেট হইতে সঙ্কন করিছা নীচে দেওছা হইল। ইহাতেও ফসল বৃদ্ধি আন্দোলনের বার্থভাই ভুচিভ চইভেচে:

কেলা জুলাই '৪৮ জুলাই '৪১ জুলাই '৫০ আগই '৫১ বৰ্জমান

বন্ধৰাৰ			•	
(কালণা	) २०,	20'/0	224/6	23/4
বীরভূষ	34	394¢	22/0	26100
বাক্ড়া	36	36	>>/	26140
মেদিশীপুর	3910	394¢	23/	224/0
হৰলী	24100	26	28	७३
হাওছা	33./8	20/4	25/6	80
২৪ পরগণা	२७१०	७२	७२	884/o
ममीबा	281/0	224/2	<b>७</b> ०। 🗸 १	<b>6</b> 8,
ৰু <b>শিদা</b> বাদ	231/0	224/6	80	2 2 h/o
<b>শিক্তম</b>			`	
দিনা <b>ৰ</b> পূৱ	1 28	20,	<b>૨૭</b> ,	941/0
য়ালদহ	ONO	₹8,	28	୭୭୩ / ୦
		,	,	

্লপাইগুড়ি ৩০॥০ ২২৸/৮ ৩২ ৪২॥/৮ এই সমস্ত দর ঐ সব জেলার সর্বোচ্চ সুল্য। কল্ডকগুলি ৰাছতি কৰ্ডন এলাকা ছাড়া অধিকাংশ ছলেই উহাই চাউলের বৃল্য। এই ভাবে উভ্তভোত্তর প্রতি বংগর দাম বাড়িতেছে ইহা ব্যা আশ্বার কথা।

বাভের অপচন্ত বছ বেশী হইভেছে। গত বংসর এরক্ষী প্রামাণিকের সভাপভিছে অপচন্ত ভদ্ধ করিবার জন্য একটি কমিটি গটিত হইহাছিল। উহার সদত প্রীমানাভক হালদার মক্রলের প্রোকিউরমেণ্ট গুদাম দেখিতে চাহিলে জাহার সহিত কমিটির চেরারম্যান ও সেক্রেটারীর মতভেদ হর। প্রীমুক্ত হালদার অপচন্ত বুব বেশী হইভেছে বলিয়া সন্দেহ করেন। তিনি অপচন্ত ববিবার জ্বত পাড়াপীতি করিতে থাকিলে কমিটির কাজ বন্ধ হইলা বার্য প্রিদেবেন দেম বাভসচিবকে প্রশ্ন করিবা বে সমন্ত তথ্য উদ্বাহিত করিবাছেম ভাহাতে অপচন্ন অভি সাংঘাতিক হক্ষের হইভেছে বলিয়া বন্ধা পঢ়িবাছে। বাভমন্ত্রী চাউলের নিয়লিবিত হিসাব দিয়াছেন:

	€8-48€€	3385-¢0
	ম্ৰ	<b>ৰ</b> ণ
বৰ্ষাৱন্তে মনুভ বান	22,22,900	<b>১</b> ٩,२ <b>১,</b> २ <b>১</b> २
ঐ চা <b>উল</b>	30,39,000	৩১,৭৩,৫৬৭
বংসর মধ্যে ক্রীভ ধান	93,80,006	≥¥,90,0¢8
वे हाडेन :	,40,74,340	5,09,28,006
वरमदाद माना विकीण ह	<b>উল</b>	

ধা থেড ২,১২,৭১০ ১,২৩,৭৮৭
বি , ১,৩২,৮৫,৪২০ ১,৩৪,৪৬,৯৯৬
বংসরাভে মজ্ভ বান ১৭,২১,২৯২ ৩৩,০৩,০৪২
চাউল ৩১,৭৩,৫৬৭ ৩০,৪২,৮৩৫

বংসরাতে মতুত ও বংসর মব্যে ক্রীত বাম চাউলের স্থাম বংসর মব্যে বিক্রীত ও বংসরাতে মতুত বান চাউলের স্থাম হইত। সামাম্য অপচর হইতে পারে। কিন্তু হিসাব করিছা দেবা যাইতেছে যে ১৯৪৮-৪৯ সালে ৫০,৫১,৬৭৪ মণ চাউল যাট তি হইতেছে এবং ১৯৪৯-৫০ সালের ঘাট তির নারা আরও বাছিরা গাঁছাইতেছে ৫৮,০৯,৮৭৫ মণ। গ্রীদেবেন সেন থাভ্যমীকে এই বৈষ্য্যের কারণ জ্ঞাসা করিলে তিনি পাঁচ মিনিট সমর চাছেম। কিন্তু মিলাইতে পারেম না, কোন কৈনিরও দিতে পারেম না, অগত্যা তথ্য-কার মত দার এভাইবার জন্য তিনি নোটশ চাহেম এবং সে নোটশ তাহাকে দেওরা হইবাছে। আমাদের মনে হয় বাভ সম্বন্ধ আলোচনা এভাইবার চেষ্টা মা করিয়া ব্যহ্যাপরিষ্যে ঐ আলোচনা হইতে দিলেই ভাল হইত। থাভ্যমী তহুপদক্ষে হিসাবের এই মারাজক গল্প বুবাইয়া দিবার অবকাশ পাইতেন।

ৰাভসমভা লইয়া বিয়োৰী পক্ষ আলোচনা ক্রিভে

চাহিতেছেৰ আৱ সৱকাব পক্ষ কেবলই উহা এড়াইবা বাইতে-ছেন ইহা উচিত নহে। বাংলার খাজসম্ভা এমন অবহার আদিয়া পৌছিরাছে বে সকল দলের সমিলিত চেটা ছাড়া উহার সমাধান সুদ্রপরাধত। খাজসম্ভাকে রাজনীতির বাহিরে রাখিয়া উহার সমাধানের জভ সকলের সমান্ডাবে চেটা ও বড় করা এড়াড় আবিশ্রক।

#### একটি মহৎ প্রচেষ্টা

"ৰাভ উৎপাদন" (পাক্ষিক) পঞ্জিকার ১লা আদিন সংখ্যার নিয়নিবিভ বিবরণটি প্রকাশিত হইরাছে। ভার লেখক শ্রীরামণুর মহকুমার এপ্রিক্যালচারাল অকিসার:

"কিছুদিন পূৰ্বে মাননীয় কৃষিদন্তী এীপ্ৰকুলচন্ত্ৰ সেন মহাশ্ৰ বক্তভা প্ৰসঙ্গে বলিয়াছিলেন যে, অধিক খাভ উৎপাদনে যিনি न्छम शर्वत श्वाम विष्ठ शांतिर्वम, विनिरे आमार्वत अवांत পাত্র। এরপ একজন লোকের কথাই এখানে বলিভেছি। ভিনি হইভেছেন ভারকেখবের অন্তর্গত বৈভপুরের বস্থ-এ সরকারী কৃষি প্রদর্শনী-কেন্দ্রের অভত্য মালিক শ্রীগোলোক ৰন্দোপাব্যার। চীন ও জাপানে মাতুষের মল ব্যবহার করিবা সেধানকার চাষীরা যে আমাদের দেশের অপেকা ছই-ভিন গুণ অবিক কলন পান, কৃষি কৰ্মচাত্ৰীদের নিকট একণা শুনিয়া তিনি বিশেষ প্রেরণ। লাভ করেন এবং মলের প্রতি স্থানীয় কুসংখ্যার, ও চাষীদের রক্ষণশীলতা ও বিক্লম মনোভাবের ক্রা ভানিয়াও ভিনি তাঁর ভ্ষিতে মল সার ব্যবহারে কুত্রসঙল হন। ভারকেশ্বর শহর হইতে তাঁহার বাছী এক মাইল ৷ ধেপরদের সহিত বন্দোবন্ত করিয়া উক্ত শহরের মল তিনি তার ক্ষিতে এক-দেড় হাত অশ্বর ছোট ছোট গর্তে পত মাথ মাদ হইতে क्ला चांत्र करदम। देवभाष मात्र भर्वाष्ट मन क्ला हत। **व्यवद्वित्रहरू कि**नि श्रीष्ठ काला यम वहत्त्वत कम हादि कामा ক্রিয়া দিভেন। জৈতেইর শেষে তিনি উক্ত ক্রি চায করিতে ममञ् किताल, मञ्दादा देख किया किया वा वावकाक हरेशाइ ৰলিয়া চাষ করিতে অন্ত্রীকৃত হর। স্থানীর লোকের ও কৃষি-ক্ৰীদেৱ চেষ্টাৰ অভংপৱ ভাতাৱা চাষ কৰিছে ৱাতী তৰ এবং আষাচ মালে অমিট ভালভাবে চাষ করা হয়। প্রাবণ মালে 'পাট্যাই ২৩' নামক কৃষিবিভাগের নির্বাচিভ বাম হোপণ করা হয়। ইতিমধ্যেই উক্ত ক্ষিত্র ধান অভাভ বানকে शांभारेश छेडिशार अवर शांस शांस अक अकड वार् १०डे পৰ্যত গাছ হইয়াছে।"

বন্দ্যোপাব্যায় মহাশ্র বে উংসাহ প্রদর্শন করিয়াছেন, ভাহা দিকে দিকে বিকীণ হউক।

#### मशुताको नमी ७ थ!ल

<sup>প্</sup>আগে জন ছিল, এখন নাই। কিছ আগের লোক-

সংব্যার চাইতে এবন যে কারণেই হোক, লোক অনেক বাড়িঃ। বিরাছে। আগে যে হারে উৎপাদম হইত, এবন ভাহা শতাংশের এক ভাগে ইংড়াইরাছে। নদী-মাতৃক দেশ, ভাই বাংলা ছিল শভভাষলা। আৰু নদী-খাল-বিল সব মজিয়া বিঃছে—আৰু উৎপাদম বাড়াইতে হইলে সর্বপ্রথম প্ররোজন দেই নদী-প্রবাহ অব্যাহত রাধা। আজ্কের প্রত্মেণ্ট ভাই সকল কাজ কেলিয়া সেই দামোদর-মযুৱাকীয় বাঁধ নির্দ্মাণে ব্যন্ত।

এই বাঁৰ সম্পূৰ্ণ হইলে, বীরভূষে মুড়াই নলহাট, রাষপুরহাট, মর্বেখর, মোলারপুর মহম্মদবাজার, সিউড়ি, সাঁইবিহা,
নারুর, লাবপুর, ইলমবাজার ও বোলপুর বানার অঞ্চল—
মুশিলাবাদে সাগরদীঘি, মবপ্রাম, বরপ্রাম, ভরভপুর, বরওরাম
ও মির্জাপুর বানার অঞ্চল এবং বর্জমানে কেতৃপ্রাম বামার
অঞ্চল সেচের জল পাইবে। এই সমন্ত এলাকা ১০৪০ বর্গমাইল বিছত এবং প্র'র ১৮ লক্ষ্ বিহার বানক্ষেত জল পাইবে।
ভালা হাড়া রবিশভের জালে প্রার ভিন লক্ষ্ বিহার সেচের
কল বাইবে। পভিত জমি উদ্ধার হুইবে ৭৫০০০ বিহা।
সেচের জলের মূল বাল ১৪০ মাইল ও শাবা-প্রশাবা প্রার ৭০০
মাইল কাটা হুইভেছে এবং অনেকদ্র অগ্রসর হুইরাছে। এই
কাল্ধ শেষ হুইলে, বাংলার বাভ্লান্তের পরিনাণ অভ্যঃপক্ষে
১০ লক্ষ মণ বেলী জ্যাইবে। আর দানোদ্র ভ্যালির কাল্ধ

"দৈনিক" (সাপ্তাহিক) প্রিকার ১০ই আবিন সংখ্যার সম্পাদকীর মন্তব্য প্রশিবানধোগ্য। স্বয়ুরাকী প্রিকল্পার উপর বেদৰ আশা গড়িরা উঠিরাছে, ভাচা সাধক হটক।

#### ন্তন্দর্বন অঞ্লের সমস্থাবলা

গভ প্রাকশ মালে ভারমণ হারবারে পশ্চিমবঙ্গের অভত্ ক স্থাববন অঞ্চলর নানা সমস্তাবলী আলোচনা করিবার ভগ একটি সম্মেলন অস্টিত হয়। ভক্তর প্রামাপ্রদাদ মুবোপাধ্যার সেই সম্মেলনের স্থাপতি ছিলেন। তথার যে সব প্রভাব গৃহীত হয়, তাহার চুম্বক উদ্ধৃত হইল:

হাসমাবাদ, সন্দেশবালি ও হাড়োরা পুলিশ থামার অন্তর্গত লক্ষ লক বিঘা বান-ক্ষির সর্ব্বাপেকা বেশী কৃতি হইরাছে।
গত লেপ্টেম্বর মালে করেক ছামে বাব ভাঙিরা বাওয়ার
উক্ত ক্ষিওলিতে লোমা কল চুকিয়া পতে। সাগর, কাক্ষীপ,
মধুরাপুর, ক্ষমগর ও ক্যামিং বামার অন্তর্গত করেকটি
ইউমিয়মও অভ্যন্ত কৃতিগ্রন্ত হইরাছে। ঐ অঞ্লের অবিবাসিগণ অবর্ণনীয় হংবকটের সম্বীম হইরাছে এবং অবিলপ্তে
সাহায্য চাওয়া হইরাছে। সহল্র সহল্র কৃতীর বিধ্বত ছইরাছে
ও বহু গবাদি পশু বিমার হইরাছে। পানীয় ক্লের অভাব
দেখা দিয়াছে এবং বচা-বিধ্বত ক্ষেক্ট এলাকার ক্লেরা

बहाबाबीबट्रां (एवा पित्रांदा । **উक्त प्रकं**टन वश्च नवनवाद वस् करेशाता

- (১) প্রধ্যেই প্রকৃত অবস্থা কামিবার কর্ত অমতিবিলক্ষে পর্য্যাপ্ত সংখ্যক বেসরকারী প্রতিমিধি লইরা একট তদত ক্মিট গঠম এবং উক্ত ভদত ক্মিটির প্রদন্ত রিপোর্টের ভিতিতে বধোপযুক্ত ব্যবস্থা অবলক্ষম।
- (২) "বাঁৰ" রক্ষার সম্ভাই হইল সুক্ষরবনের সম্ভা।
  বাঁবের কৃতি হইলে যে কেবল বংগরের শস্তই মই হয় ভাহা
  নহে, পর্য হই ভিম বংগরের ক্ষ্য ক্ষির উৎপাদনী শক্তিও
  চলিরা বার। এই কারণে দেশে লক্ষ্য লক্ষ্য বাবাদী
  ক্ষরবার পড়িয়া বাকে। সুক্ষরাং বাঁবগুলি যথোগযুক্তভাবে নির্দ্যাণ করিয়া রক্ষা করিছে হইবে এবং বে সব
  বাঁবের ক্ষরত্ব বারাণ সেইগুলি যথাযথভাবে মেরামভের ব্যবস্থা
  করিতে হইবে। উপত্যাক্ত ব্যবস্থা ক্ষরভাম করিলে কেবল
  বাদ্যসমন্তারই সমাধান হইবে না, পরস্ক ক্ষমশনক্রিই কৃষিকীবিগণ উপকৃত হইবে কারণ ভাহারাই এই বাঁবগুলিতে কাক্ষ
  করিবে এবং কীবিকানির্ব্যাহের পথ বঁকিয়া পাইবে।
- (০) প্রভাক ইটনিরনে ভাষা মুলোন্তবা বিক্ররের কণ্ঠ দোকান থুলিতে হইবে, অসহার ও করাগ্রন্ত লোকেদের ব্যরাতি সাহাষ্য দিভে হইবে। প্রভাক ইউনিরনে সাহায্যকে মার্কভ চিকিৎসার ব্যবস্থা করিতে হইবে।
- (৪) স্থানীর একেনী মারফত জনগণতে কাপড় সরবরাতের ব্যবস্থা করিতে ভইবে।
- (৫) পানীর জলের জন্ম পর্যাপ্ত সংখ্যক নলকুপ খনমের ব্যবস্থা কবিজে হটবে।
- (৬) চাষ-আবাদের জন্য বীজ ও বলদ ক্ষরের নিমিত কৃষি-বণ দিতে হইবে। ইহাতে অধিক খাদ্য উৎপাদন অভিযান সহায়তা লাভ করিবে।
- (৭) স্থানবন এলাকার মধ্যে অবাবে বান চলাচলের অন্তর্মতি দেওরা উচিত।
- (৮) সম্দেশগালি থানার অন্তর্গত গোলাবা ইউনিয়নের সাত্রেলিয়া গ্রামে এবং হাজোরা ও ক্যানিং পুলিস থানার মব্যবর্জী দেওলী নামক ছানে পুলিসী জুলুমের বে অভিবোগ আনহন করা হইরাছে, সে সম্পর্কে ভদভের ব্যবস্থা করা উচিত।
- (১) সম্পর্বন অঞ্চল বছসংখ্যক উদান্ত কৃষিণীবীর পুনর্বা-সভির উপযুক্ত স্থান। কারণ উক্ত অঞ্চলে প্রমণ্ডির ববেপ্ট অভাব বহিবাছে।
- (১০) অনুরপ্রসারী ব্যবস্থা হিসাবে কুদারবনের সম্বভ এলাকা সরাসরি সরকারী কর্ত্বাধীনে আনা উচিত এবং ক্ষিণারী প্রথা বিলোপের পরীকা এবানেই হইতে পারে। কুদারবন

व्यक्तिनीटम्ब इ:वहर्षमा जायत्वत सन्। त्योथ कात्रवाद्यत वावत्रा करा केठिल।"

এই প্রভাবগুলির মধ্যে সরকারের কর্ত্তব্য সহছে নামা
নির্দ্ধেশ বা দাবি আছে। কিছু ঐ অঞ্চলের লোকসমন্তি কি
করিরাছেন বা করিতে প্রস্তুত আছেন, তাহা জানাও প্ররোজন
বলে করি। কোন কোন সমস্তা রাষ্ট্রের সাহায্য ছাড়া
মিটিতে পারে মা, করা সভ্য। ভতোবিক সভ্য নাসরিকের দারিত্বোর। এই সকল প্রভাবের মধ্যে স্থলরবন
অঞ্চলের লোকদের কর্ত্ব্য সহছে বিশ্বন নির্দ্ধেশ থাকা উচিভ
ছিল। ঐ অঞ্চল হইতে বান চাল ও বস্তু চোরা পরে পাকিছানে
ব্যাপক ভাবে চালান হয় এ কথা সর্ব্যজনবিদিত। ৭মং
প্রভাব অভ্যামী ভ্যাব বান চলাচল হইলে ভাহা বাছিবে না
কমিবে ভাহা বলা বাহল্য। বঁবে রক্ষার ব্যাপারে স্থানীর
লোকের উদাম কভটা প্রযুক্ত হুইরাছিল ভাহারও আলোচনা
হওরা প্রয়েজন।

#### পশ্চিমবঙ্গে বৃত্তি বিভাগ

পশ্চিমবাসর প্রায়াঞ্জে অবস্থিত ৩৫ লক্ষ্ পরিবারের বৃদ্ধি-ব্যবসাহপত সংখ্যা হোট কত, পশ্চিমবঙ্গ সরকারের পরিসংখ্যান বিভাগ ভিন বংসর অন্ধনভানে ভাতা দ্বির করিয়াছেন। এই ভিসাবাভ্যাহী ২ লকাৰিক পরিবার কৃষি-কার্য করে ৮৬ ভাজার মাছ ববে ৬০ ভাজার তাঁত বোমে, ১৭ ভাজার ছভাৱের ও ২২ ভাৰার কৃষ্ণকারের কাৰ করে, ১৬ হাৰার বাঁপ ও বেভের কাৰু করে, ১১ হাৰার স্থাকারের ও ৩৪ ছালার মুচির কাল করে। কাল্-বিভলের কাল, সোলা ও मां (कर काक ताक मिश्रीय काक, (दमय की है भागन, मिरहर কান্ধ ইজ্যাদির ছারা জীবিকা নির্বাচ করে এমন পরিবাবের সংখ্যাও মির্দ্ধাহিত ভাইছাছে। ইভার সংখ্যা ছই চটতে দল ভাজারের মধো। পরিবার পিছ পাঁচ ক্ষম ভিলাবে लाक मरना बदा कहेल अकियरकद शामाक्त त्याहै चरि-वाभीत मरबा शाब (भोरन इहे कांक्र कांक्रांब हेटांब मरबा भून-বয়ুগ পুরুষ কড় নাহী ও শিশু কড় কভ লোক এই সকল বৃত্তি ব্যবদার অভুসরণ করে এবং পরিবার পিছু মাসিক বা বার্ষিক আয়ের পরিমাণ কভ, এগুলি নির্দ্ধারিত ভালৈ ভবে পরী-वारमात मामाक्षिक चवत्रात शतिहत्र शाख्या वाहेटवः।

এতংসম্পর্কে এক 'দৈনিক' সহবোধী বলিতে-বেন বে শেষোক্ত তথ্য সংগৃহীত হবলৈ বুঝা ঘাইবে কেন আমাদের দেশের লোক শহরের দিকে বাওয়া করিতেতে, প্র্যোপর বা ভাবিয়া সহর ও নগরের বহু হাওয়ার মর্যে আর্থিক যাক্ষ্যের পথ বুলিতেতে। এই সম্ভা সহতে একটা ক্বা কিছ ভুলিলে চলিবে না যে, এই সম্ভা উত্তব হইয়াহিল প্রায় ২৫০ বংসর পূর্বে; এবং ভারত্তবর্ষে আর্ভ ছইয়াছে ১০০ বংসর পূর্বো। এই ছুইটি ভব্য সম্বন্ধে কোম বিভর্ক নাই।
আনেকেই সীকার করিয়া লইয়াছেন যে পদ্ধী অঞ্চলের অবমতি
প্রাকৃতিক বিবর্জনের অস। এই ভাবে ব্যাপারট বৃবিতে চেঙা
করিলে কোন বাজি বা শ্রেণকৈ দোষী করা যাইবে না।

#### ইংরেজী শিক্ষার ফল

"শিক্ষারতী" পঞ্জিকার বিভীর বর্ণের প্রথম সংখ্যার জীপ্রস্কানজ্ঞ চক্রবর্তী "বর্ণ্ড শিক্ষা সহকে ছু'চার কণা" প্রসঙ্গে বে ঐতিহাসিক ভণ্ড ভনাইরাছেন, ভংসহকে আরও অ'লো-চনার প্রকোলন আছে। ইংরেছী শিক্ষার অলেণ দোষ। কিছু সর্বাদোষ হরণ করিবা ইহা এমন একট অঘটন ঘটাইরাছে বে, তাহা উল্লেখ না করিলে ইভিহাসের সভাকে লজন কর। হইবে। প্রস্কুরাবুর বক্রবা উদ্ধৃত করিবা ভাহা আনোচনা করিব। কারণ জাহার ভাব বা মৃত্ত পরাধীন দেশের সাধারণ ভনমতের প্রভিগ্ণনি মাত্র।

"ইংহেছী শিক্ষা ইংরেজ শাসম এ দেশে মুদ্দ করিবার উদ্বেশ্তই প্রবৃত্তিত চুইরাছিল এবং সে কাহণে ভাহা কথনও জাতীর উরতির সহাহক হর মাই। এ শিক্ষা কথনও জাতীর প্রতিত্ত করাহক হর মাই। এ শিক্ষা কথনও জাতির প্রাণশক্তিকে জাগার মাই, বরং এই মিপ্সেষিত দেশকে জারও মিপ্সেষিত করিরাছে। জাতীর শিক্ষা পরিকল্পনার শাসম ও শোষণের বাহক উক্ত বিদেশী শিক্ষা-পদ্ধতিকে সর্ব্বাত্তি পরিবর্তন করা দবকার। ইহা জাতীর শিক্ষা পরিকল্পনার সর্ব্বপ্রধিষক প্রয়োজম। যদিও শিক্ষা-ব্যবহার কিছু কিছু পরিবর্তন চইভেছে, তথাপি উক্ত প্রাথমিক কার্যের জসম্পূর্ণ-ভার জন্ম শিক্ষা-ক্ষেত্রে এদেশে গত ভিন বংসরে ভেষম কোম উল্লেখ্যাণ উন্নতি পরিফাকিত হর মাই।"

ইংবেশ্ব শাসন সুদৃঢ় করিবার জনা ব্রিট্রণ-রাজ নিকেদের পরীক্ষিত নিকা এদেশে আনহন করিলেন। তাঁহাদের যাহা শ্রেষ্ঠ শিকা ছিল তাহাই এদেশে প্রবর্তিত হয়। তাহার কলে ব্রিট্রল-রাজের অবসান হয়। এদেশে এমন একটি শ্রেণীর স্কটি হয় যাহারা তাবে তাবনার, আচার আচরণে পাশ্চাত্য দেশীর। কিন্ত ইহারাই স্বরাক আন্দোলনের স্রষ্ট্র: এবং জাতীয় সংস্কৃতির রক্ষক। এই সংস্কৃতির উপর তাঁহাদের কোন প্রভাব বা বিশাস ছিল না। কিন্ত মনতা ছিল এবং এই ননতার প্রেরণারই নিজেদের বিশাসের বিক্রছে তাঁহারা সংগ্রাম্ব করিয়াছিলেন। "ইরং বেহুলে"র আদি ও অন্তের ইহাই হুইল সভ্য ইতিহাস।

#### বিশ্বভারতী বিশ্ববিদ্যালয়

গভ ৫ই আহিন আছুঠানিকভাবে বিশ্বভাৱতী বিশ্ব-বিভালম্বের প্রতিঠা ঘোষিত হইরাছে। ভারভরাষ্ট্রের শিক্ষামন্ত্রী মৌলানা আব্ল কালাম আকাল এই উৎসবে নেড্ছ ক্রিছা-ছিলেন। রবীক্ষমাধের "বিশ্বভাৱতী"—ভাঁহার সাব্যার ব্য মৰ-কলেবর বারণ করিল। এই উপলক্ষে "বিশ্বভারতী"র হিতৈথীরা আমন্দিভ হউবেদ। সঙ্গে সংক্র মানা প্রশ্ন তাঁহাখের মনে আগিরা উঠিবে। ভাহার মানা ভারণ আছে। "বিশ-ভারতী"র বীক্ষত্র ছিল — "সভাষ্ শিব্য আমন্দ্য"। ভারভ-রাঞ্জের বিধান পরিষদ, অজ্ঞাভ কারণে, বামবেরালি বশে— বিশ্বভারতী বিশ্ববিভালর আইন পাস করিবার ভালে "সভাষ্কে" দিরাছেন বিসর্জন। এই বেরাল কাহার ভাহা আনি না।

সেইবছই নামা প্রশ্ন উঠিয়াছে এবং এই বিষয়ে "পশ্চিমবঙ্গ পাঞ্জি।" ৮ই আবিন সংখ্যার যে সম্পাদকীয়
মন্তব্য প্রকাশিত করিয়াছেন, ভাহা বাঙালী বনের ক্ষোভের
পরিচায়ক: "…রবীক্রমাথ একক প্রচেষ্টায় বাহা করিতে
চাহিয়াছিলেন, সহত্র শক্তি প্রভাক্তাবে অথবা পরোক্তাবে
তাহার বিরোধিতা করিয়াছে, প্রতিক্রিয়াশীল শক্তি সেই
প্রচেষ্টাকে বিক্রত করিয়াছে, চতুর্দিক হইভে পিই করিয়া মাস
ক্রন্দ করিবার চেষ্টা করিয়াছে। সমগ্র পৃথিবী যে পথে
চলিয়াছে, রবীক্রমাথ তাহার বিরোধিতা করিয়াছেন, তাহার
উপলক সভাকে প্রকাশ করিয়াছেন, কিন্ত ধ্বংসের গভিকে
ভিনি রোধ করিতে পারেন নাই।

"বর্তমানে বিশ্বভারতীর যে পরিবর্তন ঘটন, আমাদের আদকা, সেই পরিবর্তন কি রবীক্রমাথের আদর্শকে সকল করিবার সহায়তা করিবে? আরু বাহাদের কর্তৃত্বে, বাহাদের নির্দ্ধেশ বিশ্বভারতী পরিচালিত হইবে, ইংহারা কি রবীক্রমাথের আদর্শে বিশ্বাস করেন? যে সভা, স্কল্পর ও মললের বাণী রবীক্রমাথের সমগ্র জীরন-আদর্শের মূল ভিভি, ভাহা কি উহাদেরই কর্তৃত্বাধীনে চূড়ান্ত আপমান, লাঞ্না ও ধ্বংলের সম্মূর্ণীন হইতেছে না? যে বান্তিকভার বিরুদ্ধে রবীক্রমাথের বিশ্বভারতীর পঞ্চী, সেই যান্তিকভাই কি বর্তমান কর্ণবারদের অন্তর্ভাত, চেভনাকে প্রভাগীত্বত করে নাই ?"

#### মাধ্যমিক শিক্ষা বোর্ড

প্রায় ছই যাস পূর্বে মাধ্যমিক শিক্ষা বার্ড গঠিত হইরাছে। একজন পেজনপ্রাপ্ত শিক্ষাবিদ, প্রীক্ষপুর্বকুষার চন্দ্র, পশ্চিমবদের সরকার কর্তৃক তাহার সভাপতি নির্বাচিত হইরাছেন আর আর সভ্যগণও 'মনোনীভ' বলিলে সভ্য কথা বলা হইবে। কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয় কর্তৃক অন্থ্রোদিভ ; বিশ্ব-ভারতী কর্তৃক অন্থ্রাদিভ, সরকারের পেরালমাকিক ননোনীভ ; উচ্চ ইংরেশী বিদ্যালয়ের প্রভিমিবি সভা কর্তৃক মনোনীভ ; কলেজসমূহের অধ্যক্ষপুল বা তাঁদের প্রভিমিবিদ্যানীয় শিক্ষাবিদ্যণ, অভিন্ত ও অবসরপ্রাপ্ত রাজকর্ম্বচারী, এই লোকসমন্ত মাধ্যমিক শিক্ষা বোর্ডের কর্ববার, পশ্চিমবদের শিক্ষার নিয়ামক, যে শিক্ষা এভিয়ন কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয় কর্তৃক পরিচালিভ হইত।

প্রারম্ভিক সংগঠন হিসাবে ইহার বেশী গণতরবুলক কোন প্রতিঠান গঠন করা হংজ বর্তমানে সম্ভব হর নাই। কারণ ১৯৫২ সাল হইজে আমাদের পরিচিভ ম্যাট্রকুলেশন পরীকার বেলা শেষ হইল। আরম্ভ হইল নুখন নামের 'কুল কাইনাল' পরীকা। 'কুল ফাইনাল' নামের অর্থ হইল কুলের শিকার অন্তে বে পরীকা। ইহা পরিচালনা ক্রিবেন এই মান্যমিক শিকা বোর্ড। কোন্ শিকার অন্ত, ভাহা এই নুখন নামে বুবা মার না।

এই সব শান্তিক চুলচেরা প্রশ্ন ছাড়িয়া দিয়া, এবন এই
শিকা বোডের কার্যাগছিত ও আদর্শ সংকে একটু আলোচনা
করিতে চাই। সন্পাদকীর মন্তব্যের ক্ষে পরিবির মব্যে তাহা
হয়ত সন্তব নয়, এবং এই বোডের দৈনন্দিন কার্যা ও নানা
আবিবেশনের নানা আলোচনার গতি সহকে আনাদের কোন
ব্যক্তিগত জান নাই। সেইকড শোনা কবার উপর নির্ভর
করিতে হর; বোডের সভাগবের কবারার্যা হইতে অনেক
তব্যের কাঁচ করিয়া লইতে হয়। সেইরপ জানই আনাদের
বর্তবান মন্তব্যের উপক্রেণ।

এই সব কৰাব। গু। হইতে বুকিতে পারিতেছি যে বোর্ডের
মব্যে দলাদলি আরম্ভ হইরাছে। এক দলের দলপতি নাকি
ডক্টর ভামাপ্রদাদ মুখোপাব্যার, অভ দলের দলপতির নাম
এখনও তানি নাই। সভাগণ কে কোন্ দলের তাহা ভানি না।
কারণ দলাদলির ও ভোটাভুটর সংবাদ এখন পর্যন্ত অতি যত্তে
গোপন রাখা হইরাছে।

কিত্ত এই দলাগলি বা ভোটাত্টির সংবাদে আমরা বিচলিত হই নাই। আক্কাল পদ্মীপ্রামে যত্তত উচ্চ ইংরেকী বিদ্যালয় প্রতিষ্টিত হইয়াছে। ১২৫ বংসর পূর্বে কলিকাতা নগরী ও তার পার্যবর্তী অঞ্চলে যেমন লোকে ইংরেকী শিকার মোহে দিগ্বিদিক্ জান হারাইয়াছিলেন সেইক্রপ এখন পদ্দীবাসীরা করিতেছেন। ইংরেকী আমলের পেতানপ্রাপ্ত শিকাবিদ্গণ একদিক হইতে চাহেন শিকার প্রসার, অন্ত দিকে দাবি করিতেছেন স্ক্র-মরের এমন কতকগুলি লোঠব যাহাতে এই শিকার নিশ্চিত গভিয়োব হইবে।

ষ্ঠাভবরণ এগুলির উরেধ করিতেছি। আমরা দেখিতেছি
শিক্ষকের গুণাবলী সহদে এখন অনেক কিছু সর্প্ত আরোপিত
ছইতেছে বে পলীবাসীর শক্তি নাই জাহা গ্রহণ করিতে
পারেন। বি-টি শিক্ষক চাই, বিলাত কেরত হইলে আরও
ভাল। ব্যায়ামের কচ্চ চাই প্রাক্তরেট শিক্ষক। ব্যায়ামের
শিক্ষক মহাশর প্রাপ্তরেট হইবার প্ররোজন কি? আমাদের
জিজান্ত, স্বাধীন রাষ্ট্রের উপযোগি শিক্ষা কি হওরা
উচিত, মাব্যমিক শিক্ষার মাম কি হইবে; কোন প্রভে
অবলম্বন করিলে আমাদের আর্থিক সক্তির উপযোগি হইবে;
বিদ্যালয়ের বাছী-বর, বেলার মাঠ, কিম্নাসিরান, টউব ওরেল

কভবানি আবশ্রক ? বোর্ডের সম্পাদকের নিকট হইডে এই প্রারে সহস্তর পাওরা,ঘাইবে কি ?

#### গ্ৰেদ মাৰ্ক

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাইস-চ্যান্সেলার ঞ্রীপড়্নার্থ বন্দ্যোপাব্যার 'রূপান্তর' আদিলে এক বক্তথার বলিরাছেন যে এক নম্বরের কল্প কেল করা লইরা যে আন্দোলন হইভেছে ভাহা ঠিক নহে। বগুভ: দশ নম্বর থেস দিবার পর ইহারা এক নম্বরের বল কেল করিরাছে, অর্থাৎ পাস মার্ক অপেশ আসলে ইহারা ১১ মার্ক কম পাইরাছে। ইহাদিগকে পাস করাইলে আবার এক দল এক নম্বরের বল কেল করিবে, স্পত্রাং ইহার শেষ কোধার? তিনি পরে একটি কথা এই বলিরাছেন যে ১৪ ক্লম হেড এগকামিনার তাঁহাকে লিবিভ ভাবে জানাইরাছেন যে বাভা উদারভাবে দেখা হইরাছে।

ভাইস্-চ্যাজেলারের উক্তি আমরা মানিতে পারিলার
না। তিনি ইংরেজীর কবা বলিয়াছেন, ইংরেজী ভিন্ন আর
কোন বিষরে প্রেস দেওচা হর নাই, সুতরাং সাবারণ ভাবে
প্রেস মার্কের প্রশ্ন উঠে না। ইংরেজীতে একটি পেপারের
প্রশ্ন অভ্যবিক কঠিন হইরাছিল এবং ইহা হেড এগজামিনারেরা
শীকার করিয়াছিলেন বলিয়াই প্রেস নম্বর দেওয়া হইরাছিল।
বাহারা ঐ পেপারে ১০ পাইরাছে, প্রশ্ন সাবারণতঃ মাহা
হইয়া থাকে সেরুপ হইলে ইহারাই হয়ত ৩০ পাইত। সুভরাং
১০ নথর প্রেস দিয়া এই কতি পূরণ করা যায় না। এক
প্রশ্ন কঠিন, ভাহার উপর বাভা দেবার নির্দেশ্য বুঁব কঠেরে
রক্ষের দেওয়া হইয়াছিল। প্রশ্নে এবং বাভা দেবার অভিরক্ত
কভাক্তি করিয়া ১০ নথর প্রেস দিয়া কণ্ডব্য শেষ হইল ইহা
মনে করা অবিচার।

বাংলার প্রশ্ন অত্যবিক কঠিন হইরাছে। অবাভাবিক বেক্ষের দীর্ঘ হইরাছে। মাট্রুক, ইণ্টারনিডিয়েট, বি-এ ভিন পরীক্ষান্ডেই বাংলার প্রশ্ন সব রক্ষে বারাণ হইরাছে। বি-এতে বে রচনা লিবিতে দেওরা হইরাছে ভাহা প্রশ্নকণ্ডা মহাশরেরা হই ঘণ্টারও লিবিতে পারেন বলিরা বিশাস হর না। ইহার করু বহু পরীক্ষার্থী কেল করিরাছে। বে ছাত্র সব বিষরে ৬০০-র বেশী পাইরাছে ভাহাকে বাংলার ১ নহুরের কর্ম কেল করিরা দেওরা হইরাছে। বে ছেলে রোট ৬০০-র বেশী পাইরাছে, পদার্থবিদ্যার শতকরা ১০ পাইরাছে, ভাহাকে বাংলার ২৷১ নহুরের কর্ম কেল করাইবার কি সার্থকতা বাক্ষিতে পারে আমরা ভাহা বৃবিতে ক্ষম। আগে নিয়ম ছিল যে কোন ছাত্র সব বিষয়ে ভাল নহুর পাইরা এক বিষয়ে অল করেক মার্কের কর্ম কেল করিলে ঐ বিষয়ট উদার ভাবে ক্ষেরা ভাহাকে পাস করাইরা দেওরা হইত, যে মহুর ক্ষ পঞ্চিত ভাহা বোট নহুর হইতে কাটিরা লওৱা হইত। এই

নিবম পালনে বাধা কিলেৱ? কেনিট্রির প্রশ্নে যে সব তুল ছিল তাহা কলবল্নক। এর খন যে সমত ছাত্র কেল করিবাছে ভাহারা খন বিষয়ে পাল করিবা থাকিলে উদার ভাবে থাতা পূনঃ পরীকা করিবা পাল করাইবা দেওরা যাইত। ভাহা না করিবা এরপ কেন্ত্রে পূনঃ পরীকার নার্ক আরও ক্যাইবা দেওরা হইবাছে বলিবা শুনিবাছি। হেড এগকামি-নারবা বলিবাছেন বে, ওঁহোরা উদারভাবে থাতা দেখিবাছেন। ইথার কোন প্রীক্ষের দেওরা ৮ ক্যাইবা ১ করিবাছেন। ইথার কোন প্রীক্ষের দেওরা ৮ ক্যাইবা ১ করিবাছেন ভিনিও ভ উদারভাবে থাতা দেখিবাছেন বলিবা লহি করিবা-ছেন ও পরীকা-ব্যবহা ও শিকা-ব্যবহার একসকে আর্ল পরিবর্তন না হইলে বর্তমান শুনিক্ষণ্ডা আরও বাছিবে। ইহাতে ছাত্রছারী, শুভিভাবক ও দেশবালী ভিন পক্ষ ক্তিপ্রত হইতে থাকিবে।

ভাইস-চ্যাভেলার মহাশরের এ বিষয়েও জান থাকা প্রান্তের প্রক্রিকার বান ও পরীক্ষার বান অসম হইলে ছাত্রের প্রতি অবিচার করা হয়। সে জাম ওাঁহার আছে বলিয়া মনে হয় না। এবারে পরীক্ষার অভার ও অবিচার অভি সুস্পাই, সুভরাং ভাইস-চ্যাভেলার মহাশরের "চুব প্রলেপ" চেঙা অসমীচীন হইরাছে বলিয়াই আমাদের বিখাস।

#### বেথুন স্কুল ও কলেজের শতবাষিকা গ্রন্থ

গত ১৯৪৯ ইটান্দের যে বাদে বেপুন স্কুল প্রতিষ্ঠার শতবাবিকী উৎগবের স্কুলা হইরাছিল। তত্পলক্ষে বে পরিচালনসমিতি গঠিত হর তাহার কর্তৃপক্ষ হির করেন বে, বাংলাবেশে
ত্রীশিক্ষার ইতিহাল রচনা এই উৎগবের অবক্ত কর্তৃব্য বলিরা
বীকৃত হউক। উপর্ক্ত গবেষক ও ঐতিহালিকের হাতে
তাহার ভারার্পন করা হর। তাহাবের পরিপ্রমের কল আমরা
প্রকাকারে প্রাপ্ত হইরাছি। তক্ষ্য পরিচালন-সমিতিকে
বছরাদ জাশন করিতেছি।

যে সব বাঙালী ঐতিহাসিক এই আড়াই শত পৃঠার পুতকে বণিত বিষয়ের সংকলন করিবাছেন, তাঁহারা বাঙালী শিক্তি সবাকে সগ্রানিত। এই পৃঠা-সংখ্যার মধ্যে প্রার ছই শত পৃঠা ইংরেলী ভাষার লিবিত। বক্তায়ার সংকলিত অংশে প্রারক্ষেনার বন্ধ্যাপার্যাহের "নাছিতো বক্তনারী" ১৯৫-২১১ পৃঠা তথ্যে পূর্ব। প্রীয়োগেশচক্ষ বাগলের "বেপুন ছ্ল ও কলেক্ষের কর্বা" প্রবছে ঐ শিকা-প্রতিঠানের কর্মকর্যা ও কলেক্ষের কর্মকর্যা প্রারহে (২১২-২২৪ পৃঠা)। বেপুন কলেক্ষের অনৈকা হার্যা প্রারহিতী ভারতী রার শতবার্যিকী উৎসবের একট বন্ধান্ত বিবরণ দিরাছেন। "রাষ্ট্রীর আন্দোলনে বক্ষহিলা"—রাক্ষনীতিক্ষেরে বাঙালী নারীর হোগলানের বিবরণ; লেবক প্রীযোগেশচক্ষ বাগল। বাক্ষনীভিত্র

ক্ষেত্ৰে নারীর অবদানের সভ্যকার প্রমাণ শাওরা বাইবে কাভির সংগঠনকার্ব্য। সেই পরীকার সমর উপস্থিত।

এই প্ৰকের প্রধান অংশ ইংরেণী প্রবাহিতে পূর্ব।
১-১২৫ পৃঠার শ্রীযোগেশচন্দ্র বাগল সমসামরিক সরকারী
দলিল-পত্র, এবং অন্যান্য পুতক-পুতিকাও সামরিকপত্রাদির
উপর নির্ভৱ করিরা বের্ন ফুল ও কলেকের প্রামাণিক
ইতিহাস লিশিবদ্ধ করিয়াছেন। এই প্রবদ্ধ বর্তনান মুগে বাংলাদেশের স্ত্রীশিকার ইতিহাস বলিলে ভাহার প্রকৃত বর্ণনা করা
হইবে। আচার্ব্য বহুনার সরকারের নিয়-প্রনিয়বর্গের মধ্যে
যোগেশবাব্র একটা ছান আছে। শতাবিক বর্গব্যাপী নারীকল্যাপর্লক প্রচেটাসবৃহের একট ভব্যপূর্ণ বিবরণ দিয়াছেন
শ্রীযুক্তা লভিকা বোষ (পু. ১২১-৬১)।

বাঙালী সমাজ এক শত পঞ্চাশ বংসৱের মধ্যে বিদেশী শাসনের ও প্রদেশী সংস্কৃতির সন্মুখীন হইবা কি করিবা বাঁচিবা উটিবালে, আগ্রন্থ হইবা এই ছইট বস্তকে রূপাছরিত করিবালে, তংসদতে অনেক পুতক লিখিত হইবাছে। এখনও প্রায় প্রতি স্থাহে সংবাদপত্রের ভতে তার পরিচর পাওরা বার। বেপুন মূল ও কলেকের শতবার্ষিকী উৎসব উপলক্ষে যে ইতিহাস রচিত হইবাছে তার মধ্যে বাঙালী সনাক্ষের অনেক লেয় গুণের প্রমাণ পাওবা বাইবে। সেই লেয়-তুণ সর্ক্-ভারতীর।

আমর। পুণী হইতার যদি সর্বভারতীর শ্রীশিকার ইতিহাস এই উপলক্ষে নৃতন করিয়া সংগৃহীত হইত। ১৯৪৯ সালে বধন এই উৎসবের পরিক্রমণ প্রকালন পরিচালন-সমিতির নিক্ট তধন আমরা এইরপ অলুরোধ করিয়াহিলাম। তনিতে পাইলার যে, পরিচালন-সমিতি সে চেটা করিয়াহিলেম। কিন্তু মাজাক, বোখাই প্রভৃতি প্রদেশের শিক্ষিত সমাক তংগকতে কোন আগ্রহ কেবান নাই। প্রতিলিয়া উত্তর পাওয়া বার নাই। শ্রীশিকার সেবার আল্থনিবিশ্বত শিক্ষিত মন এরপভাবে কৃর্যুত্তি অবলক্ষম করিতে পারেম, ইহা বর্তমান মুগের অনুপ্যোগী এবং ভারভরাষ্ট্রের কল্যাণের পরিশ্বী।

#### সাধারণ নাগরী লিপি

ভারভরাইে লিগি-সমতা—নামা অঞ্চল ও সামা সমাধে বিভিন্ন অঞ্চল থাকার অভ যে সমতার উত্তৰ হইরাতে, তংগক্তে আচার্য্য বিধোবা ভাবে বাহা বলিয়াছেন, তলপেকা সমল উপারের কথা আমরা ক্রমা ক্রিভে পারি না। গত ১ই আরিনের বাংলা "হরিক্ন" পত্রিকার ভাহার অভ্লিখন প্রকাশিত হইরাহে। ভাহা আমাদের পাঠকবর্গের অবগতির কর্ত ভূলিয়া দিনার:

"বৃঠাভবন্ধণ বিৰোধ। ভারতবর্ধের ভাষাসন্তার উল্লেখ করিয়া বলেন, হারাধ্বাবাধ রাক্ষে নারাট, কানার, তেম্ক, উহ্ ও হিন্দী প্রভৃতি বে পাঁচটি ভাষা বলা হব ভার সবস্থলির ভৃত্তই নাগরী লিশি অবলবদ করিলে ভাহারা ভারতের ভাষা-সম্ভার সমাধামের দিকে সাহার্য করিছে পারে। ভারতের বিভিন্ন ভাষাগুলি পরস্বার হইতে বেশী পৃষক মর; কিছ ভাহাদের লিশিগুলি পৃষক এবং এক হইতে অংক আরুত রাখিবার পক্ষে সেগুলি দেগুরালের মত কাল্ক করে। সকল-গুলির পক্ষে এক সাধারণ লিশি থাকিলে ভাহাদের লেখাপভার স্বিবা হইবে এবং ভাহাদের পরস্বারকে পরস্বারের নিকটে আনিরা দিবে। এই সম্পর্কে তিনি তাঁহার নিকের অভিজ্ঞতার বিষর উল্লেখ করিয়া বলেন, লিশির বিভিন্নভার তাঁহাকে আশেষ হর্ত্তোপ ভূপিতে হইরাছিল। এই রাজ্য অথবা কোন পৃত্তকপ্রকাশক যদি প্রত্যেক ভাষার সংসাহিত্য নাগরী লিশিতে প্রকাশ করার ভার নেন, ভবে ভারতের মহা উপকার করা হটবে।

"উচ্ যদি মাগরী লিপি গ্রহণ করে ভবে ভারার ছারাই हैं हा हिन्दीय छेपद श्रष्ठांव विखाद कतित्व अवर छाता हिन्दीरक **সংস্কৃতের কৃত্রিম প্রভাব চইতে রক্ষা করিবে।** বিৰোৱা একথা विमाण हाम मा (व. छेइ ता कामाच मिशिएक अरकतारह वर्ष्यम ক্রিতে হটবে। কিন্তু যদি এগুলির সঙ্গে তাঁহারা নাগরী লিপিও গ্রহণ করেন এবং ভাহা ব্যবহার করেন, ভবে তাঁহারা कानकाम अपन अक जानमें हिन्दुशामीत मुक्के कतिएक भारित्वन. **चड नकरन धूनी ट्रेश यादात चन्नभत्न कतिरत। वर्छमारन** ৰদিও তাঁহাৱা ভাতীর ভাষার আবক্তভা সগ্ধে এক্ষত, তব্ও সে ভাষা দেৰিতে যে কেম্ম চইবে ভাহা কেহই ভাষেম না এবং সেক্ষট ভীত্র অবচ নিফল আলোচনার স্তী হয়। ভাহা-लब चापर्न विस्त्रशानी अहे तकम छीउछाद चवतान प्रकाहित । উছবি সেধানে ব্যবহার চলে এবং ভাহার বেশ উন্নভিত श्रदेशारह । डाँशारमञ्ज (क्यम देशारक अकृते प्रवस कृतिर्छ হইবে এবং ইহাকে নাগরী লিপিতে লিবিতে চইবে। ভাচা হইলেই তাঁহারা ভাতীয়-ভাষা-সম্ভার সমাধানে উল্লেখযোগ্য দাৰ কবিতে পারিবেন। ভারতের সমস্তা সমাধানে কেমন ক্রিয়া তাঁহারা সাহাষ্য ক্রিভে পারেন, ইহা ভাহার একট পৃষ্ঠাত মাত্র।"

আচার্ব্য ভাবের প্রভাব কোন রাজ্যের সরকার পরীকা করিবা দেখিলে লোকের মিব্যা ভীতি ভালিবে। ভীতি অপেকা পরের লিপির প্রতি সহজাত সংকারই বর্তমান সমতা উৎপাদন করিবাছে। এক আদর্শ, এক ভাষা, এক লিপি এই জরীর সংযোগ না হইলে মহাভারত স্টে হইতে পারে না। তবুও আমাদের মন এই আদর্শের আশা ছাড়িতে পারে না।

পূৰ্ববিঙ্গে বাধ্যতামূলক উদ্দু শিক্ষা পূৰ্ববদ সমসায়ের শিক্ষা বিভাগ সম্প্রতি এক নির্দেশ কারী করিবাছেন যে পূর্কবিলের কুলসমূতে মুসলমান ছাত্রজের বর্ণ পরিচয় উর্জু ভাষার স্কুক করিতে হুইবে। প্রথম, বিভীয় ও ভূতীর প্রেণী পর্যন্ত ভাহারা কেবল উর্জু ভাষাই শিবিষে এবং চতুর্ব শ্রেণী হুইতে ইচ্ছাবীম বিষয়রূপে বাললা লগুরা চলিবে। উর্জু বরাবরই অবস্থান্তি ভাষা রূপে পরি-গণিত বাকিবে। পূর্কবিল সরকায়ের এই আদেশে সেবানকার শিক্ষা ব্যবস্থার আমূল পরিবর্জন দেবা দিবে। এই আছেশ যদিও মুসলমান ছাত্রদের প্রতি প্রবালা, ভ্রবাশি বাত্তবক্ষেত্রে হিন্দু ছাত্রেরাও এই আদেশের আগতার পভিষে। কারণ পূর্ক-বলের হিন্দু ছাত্র ও মুসলমান ছাত্রদের উর্জু লিকার সক্ষে হিন্দু ছাত্রদের বাংলা শিবিষার ব্যবহা বাকিবে এরূপ কোন কর্মা ঐ আদেশে নাই, স্কুরাং হিন্দু ছেলেদেরও ঐ সক্ষে উর্জু তে বর্ণ পরিচর হুইবে ইহা নিঃদক্ষেত্র। কলে হর ভাহা-দিগকে স্কুল ছাড়িতে হুইবে নত্বা উর্জু পঞ্জিতে হুইবে।

রাজনীতি ও নিষ্ঠুরতা

গভ ১লা আবিনের "ৰক্ষ" প্ৰিকায় ( ক্লিকাভা হইতে প্ৰকাশিত পদ্ধীসমান্তের সাধাহিক মুখপত্ৰ") "অপপ্ৰয়াস" শিরোনামায় যে সম্পাদকীয় মন্তব্য প্ৰকাশিত হইয়াছে ভাছা সভ্য হইলে পুথিবীর ধ্বংসের দিন ঘ্যাইয়া আসিভেছে:

"সহবোদী সংগঠন পঞ্জিকা একটি গুৱুতর বিষয়ের অবভারণা করিরাছেন। আগানী নির্বাচনে কংগ্রেসের ইগুলার সম্পর্কে আলোচনা প্রসঙ্গে সহবোদী বলিভেছেন, 'আনরা জানি দেশে ছর্তিক হইতেছে না দেখিছা কোন কোন মেতা ও শিক্তি ব্যক্তি নিভাছ বিমর্ব হইরাছেন। ছর্তিক না হইলে লোকে যে নির্বাচনে কংগ্রেসকেই আবার ভোট দিবে, এই আক্ষেপ কাহারও কাহারও মুখে শুনা বাইভেছে, আর্থাং কংগ্রেসের পরাক্তর দেখিবার স্থোগ লাভের লোভে নিজেকে একেবারে আনাম্ব্য করিয়া ফেলিভেও ইহাদের আগভি নাই।"

পাশ্চান্তা বৈজ্ঞানিক নির্বিকার চিত্তে আমাদের শুনাইন্ডে-ছেন যে তাঁহাদের গবেষণাগারে এবন সব বিষ আবিদ্ধৃত হইরা গুলামলাত হইরা আছে যে তাহা বাতালে ছুড়াইরা দিলে ২।১ ঘটার মধ্যে এক একটা জনপদ—পশ্চিম ইউরোপ বা সোভিরেট ইউনিরনের জনপদ—প্রাণীপৃত হইরা ঘাইবে; গুলার গাছপালা পুভিরা ঘাইবে। আমাদের পুরাণ প্রভৃতি পুথকে যে ঘাদশ স্থানির আবির্ভাবে স্টি পুভিরা বাইবে এরপ তবিষাৎ বাদী পাঠ করিরাছি, ভাহা নিজেদের শীবনে দেখিবার স্থোগ হইবে না কি ?

আগামী নির্বাচনে বিভিন্ন দলের প্রতীক আগামী গৌধ-মাম মাসে ভারতরাক্তে নুভ্য নির্বাচন হইবে। প্রায় ১৭ কোট নরনারী এক কি ছ'দনের জয় দেশের নিরামক হইবেম। কারণ তাঁহাদের পছন্দ বা ধেরাল মত বেসব সদস্য নির্বাচিত হইবেম, তাঁহাদের মধ্য হইজে মন্ত্রিমঙলী মনোনীত হইবেম এবং এই ভাবে তাঁহারাই আগামী গাঁচ বংসর ব্যাপিয়া দেশের লাসনকার্য্য চালাইবেম। এই ভোটাভূটিতে মানা দল প্রতিযোগিতা করিবেম, এবং অশিক্ষিত, আর্ক্-শিক্ষিত নর-নারীর স্থবিধার জন্ম নামা চিহ্ন মানা দল পছন্দ করিগাছেম। এ সম্বন্ধে নির্বাচন পরিচালক শ্রীস্কুলার সেন সকল দলের সঙ্গে পরামর্শ করিয়া তাহা হির করিয়াছেম। নিয়ে ভার ভালিক। দিলাম:

দাভাৰ সিংহ करश्रार्थ उक---ঐ ( কুইকার পদ্বী )---মামুষের হাত অধিল ভারত হিন্দুমহাসভা---খোড়া ও খোডসওয়ার कियान-मक्छत-अकामन-कॅटल चढ केलीवसाम अर्था অবিল ভারত রামরাকা পরিষদ---ভারতীয় তপদীলী ফেডারেশন---हाडी ভারতীয় ভাতীয় কংগ্রেস- ভোরালে বংবা এক ভোড়া বলদ चादचीर नमाक्टभी मन ( मामानिहे भार्षि )-ভারতীর সাম্যবাদী দল (ক্যুমিষ্ট পার্ট)--বানের শীষ ও কান্তে ক্ষেক্টি প্রকাণ্ড ভূলের পরিণাম

গভ ১৫ই আগই ভারিখের "আমন্দ বাকার পত্রিকা"র যে "ৰাধীনভা" সংখ্যা প্ৰকাশিত হয় তার মধ্যে এঅমলেশু সেনগুও একট মন্তব্য করিভাছেন যার ফলে কোন ভুল কমিথা যায় মাই বা কোন সমস্ভাৱ সমাধান হইতে পাৱে না। বর্তমানের সমট অবহা ৪ বংগর পূর্বের করেকটি প্রকাও ভূলেরট পরিণাম, ইহাই এই প্রবদ্ধের বক্তব্য। এই প্রকাণ্ড খুল ক্ষটির মধ্যে ভারভ-বিভাগে সীকৃতি সর্ব্ব প্রধান। এই মন্তব্যের মধ্যে ৰে হজি আছে ভাতা মাকিনী সাংবাদিক ভানসন বল্ডট্টনের थ हाकिल केशकात एव अञ्चलक्षात्वत । क बर ब के প্রকাও ভুল করিয়াছিলেন তার কলে আৰু পাক্ষাতা সভাতা নাকি বিগল্প হট্যাছে। সেইল্লপ নেহকু ও প্যাটেল ভারত-বিভাগ খীকার করিয়া ৩৫ কোট বা ৪০ কোট নরনারীর জীবন, সম্মান ও বিভ বিপন্ন করিয়াছেন। এইরূপ বস্তুব্যাদির মুক্তি খীকার করিয়া লইভাম যদি ইয়াণ্টার ক্রবভেণ্ট-চার্চিল আর কি করিতে পারিতেন ভালা বল্ডট্টন প্রভৃতি ব্যাখ্যাকার-পৰের প্রবন্ধে দেখিতে পাইভাম। সেইরূপ দিল্লীভে নেচকু-প্যাটেলের গভান্তর কি ছিল, ভাহা দেবাইভে পারিলে অমলেন্দু বাবুর বক্তব্যের মৃল্য ছিল। নেহকু ও প্যাটেলের মীভির সমৰ্ক না হইয়াও তালের হইয়া এই ক্ৰা বলা যায় যে পাকি-शाम' शिक्तिश्व नगाजि भी मिल चामारमद काहि काहि मद-নামীর অবস্থা বর্তমানের অপেকা উর্ভতর হইত তাহা প্রমাণা-ভাবাং অগ্রাহ্ন।

একই ডালে পেচক ও দাঁডকাক

করিষগঞ্জ হইতে প্রকাশিত 'পূর্বাচল' (সাথাহিক)
পত্রিকার গত ২০শে তাল সংখ্যার আসাম রাজ্যে
কংগ্রেস ও মুগলিম লীগের যিতালী সম্বন্ধ নিমলিখিত
সম্পাদকীর মন্তব্য প্রকাশিত হইবাছে। থারা আসামের রাজশৈতিক হালচালের সন্ধান রাখেন তারা এই 'নিজাহ' বিবাহের
সংবাদে আশ্চর্বাহিত হইবেন না। পূর্ববঙ্গের মুসলমান সমাজে
বাম তুলিবার সময়, পাই তুলিবার সময় এরুপ, অন্তন্তি বিবাহ
হয়। প্রায়ই ২০ মাস পরে 'তালাকে'র বুম পড়িয়া যায়।
আমাদের কেবল জানিতে কৌতুহল হয় যে এই ব্যাপারে কেবল ও কে কনে—বৃদ্ধ ও র্লা।

"...ভারভংগকে 'পেকুলোর' রাথ্রে পরিণত করার প্রচেষ্টার জওহরলালকীকে সাহায্য করাই হইল ভাহাদের কংগ্রেসে যোগদানের অন্তত্তম উদ্ভেশ। ভাহাতে লীগ-নেভা জনাব সৈমদ সাদউলা ইহাই বুলাইতে চাহিতেছেন, যেন ভারতব্য বাত্তব ক্ষেত্রে আচার-আচরণে কার্য্যতঃ 'পেকুলোর' বা বর্মানরপেক রাথ্র নহে বা অন্তর্ম রাথ্রের রূপ পরিগ্রহ করিতে সমর্থ হর নাই। এরূপ হীন ইন্নিভ একমাত্র লীগ-নেভা ও তাহার সাম্লাতদের পক্ষেই সভ্তব। ইহা 'সেকুলোর' বা বর্মানরপেক রাথ্র না হইরা যদি পাকিছানের ভার সাল্যপাধিকভানেরপেক রাথ্র না হইরা যদি পাকিছানের ভার সাল্যভাবর্ষে চারি কোটি মুসলমান কার্যানে ভারতবর্ষে চারি কোটি মুসলমান সম্প্রানেও শান্তিতে এই রাথ্রে বাস করিতে পারিভেছেন, ভাহাই ভারতবর্ষের সেকুলোরিকম এর ছলছ নিদ্যান।

"প্রকৃতিগত সম্পূর্ণ বিশ্বজ্ঞাবাপন্ন ছুইটি প্রতিষ্ঠান—কংক্রুস ও লীগের মিলন কিলপে সপ্তব হইল ? যুগলীম লীগ উৎকট সাম্প্রদায়িক ও প্রতিক্রিয়ালীল প্রতিষ্ঠান এবং কংগ্রেস সাম্প্রদায়িক প্রতিষ্ঠান না হইলেও ইহা বর্তমানে খোর প্রতিক্রিয়ালীল। সমস্বার্থের ভিত্তিতেই এই উভন্ন প্রতিষ্ঠানের সন্মিলন সম্ভব হইছাছে। প্রকৃতিগত কারণেও এই ছুইটি ছুই গ্রহের মিলন ঘটনাছে। একটি ছলে ছুইটি প্রতিষ্ঠানের যে অপুন্য চারিত্রিক সাদৃষ্ঠ আছে তাহা হইতেছে উভ্যেই প্রতিক্রিয়া-শীল।"

"প্রতিক্রিয়াশীল" শক্ষ্ট হাদে অহানে এত অধিক ব্যবহার করা হইতেছে বে তার কোন আলা নাই। ক্রিয়ার বিরুদ্ধে হয় প্রতিক্রিয়া। তারতরাষ্ট্রে কিলের বিরুদ্ধে কংগ্রেগ প্রতিক্রিয়া আরম্ভ করিয়াছে? প্রতিক্রিয়ার প্রশ্ন আর্ক্ত করিয়াছে? প্রতিক্রিয়ার প্রশ্ন আর্ক্ত করিয়াছে, কেবল কংগ্রেগই তংকর্ত্তক অভিতৃত্ত হয় নাই। কিছু আগাম রাজ্যে যাহা ঘটতেছে তাহার গতারে বাইতে হইবে এবং তাহা আবিকার করিতে হইলে তামা-বিদের আপ্রশ্ন করিতে হয়। এরপ এক্ক্স ভাষাবিধ ভট্টর

বুনীতিকুমার চটোপাব্যার। তিনি বহদিন পূর্বে আসামের ন্যাধা-সঙ্কট সন্থকে যাহা বলিয়ছিলেন আৰও তাহা সত্য; নাজও ভাষার হন্দ রাজনীতিকে নিয়ন্ত্রিত করিতেছে। ভারত-নাপ্তের চিরশক্র মুসলিম লীগের সলে যিতালী রাইলোহের স্মান।

সুখীভিবাৰর বক্তব্য এইরূপ ছিল:

"... টপত্নিভকালে আসামের মাত্র এক-তভীরাংশ অবি-নাদীর ভাষা অসমীয়া , ইহা কেবল একাপুত্র উপভাকার, এবং ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকার পশ্চিম অংশে গোৱালপাড়া জেলার াংলাও প্রচলিত। ত্রহাপত্র নদের দক্ষিণে পার্মতা অঞ্চল বৈভিন্ন পাতাভী ভাষা প্রচলিভ— যথা গারো বাসিয়া মিকির क्षेत्राजा दा काणां की साथा अदर समिलदी ककी स लगाहै। টোলের মধ্যে সাভিতাও সংস্কৃতিতে ধাসিয়া ও মণিপুরীরা বিশেষ উন্নত এবং আমি নিজে মণিপুরে ও শিলাও যাতা দ্বিধাছি ও ভ্ৰমিখাছি ভাচাতে আমার মনে কোন সন্দেহ রাই যে আসায়ের এই সকল পার্কেডাভাডি নিবিল-আসায়ের ব্যক্তাভাষা ভিসাবে বরং ভিন্দীকে চার—মণিপুরীদের অনেকের বাংলাতেও আপত্তি নাই--কৈন্ত অস্মিধা কেন্ট্ৰ চাতে না। নাসামের পার্বত্য জাতিসমূহ এখনকার জাসামের জনসংখ্যার এক-তভীয়াংল। অবলিষ্ঠ তভীয়াংশ আসামের বাংলাভাষী। কোন হাবে এক-ততীয়াংশের ভাষা (এবং সেই ভাষার সাহিত্যিক, সাংস্কৃতিক, ব্যাপারিক ও বাজনীতিক প্রাধান অভ আর একটি ততীয়াংশের ভাষা অপেকা ওকতর ইহা কেহ বলিবে না ) অন্ত ছই-ডভীয়াংশের উপরে জোর করিয়া লাপানো ঘাইতে পারে, ইহা আমার বুদ্ধির অপমা। ভারতীয় ব্যষ্টের অবিবাসীর অঞ্জম মেলিক অবিকার চইতেতে যে সে ভারতের যে অংশেই বাস করুক না কেনু ভাচার ভাষা এবং ভাষাগভ সংস্কৃতি সে অকুন রাবিতে পারিবে ৷…

আসাম প্রবেশের মৃত্তিসঙ্গত নাম হওৱা উচিত "পূর্বা সীমান্ত প্রদেশ এবং এই পূর্বা সীমান্ত প্রদেশের চারিটি বিশিষ্ট নও, ইহার প্রভ্যেকটির অবিবাসী পরস্পর হইতে বিচ্ছিল্ল ও বিভয়—(১) হিমালবের সাস্থ্যেশের পার্বাভ্যমাতি আবর, মিরি, মিশমি ও ডফলা প্রভৃতি হারা অধ্যুষ্থিত, বালিপারা ও দিরা সীমান্ত অঞ্চল, (২) অসমিরা ভাষীদের হারা অধ্যুষ্থিত পূত্র উপভা্যা, এই অঞ্চলের পশ্চিমে বাঙালীদেরও বাস:

o) পার্বাভ্য অঞ্চল—গারো, গাসিরা জয়ভিয়া, নওগাঁ জেলার 
কর পাহাত এবং নাগা পর্বাভ অঞ্চল, মণিপুর ও লুপাই 
বিহাত ; (৪) সূর্বা উপভ্যকার কাছাত ও শ্রীহটের অংশ—
।গামে বাংলাভাষা প্রচলিত।"

শতকরা ৩৩ জন লোক যদি নিজেদের স্বার্থ বাকী ৬৭ নর উপরে স্থাপিত করিতে চার তবে এরপ অস্থারী নিকাহ" হাড়া জন্ত গতি কি আহে গ্ ত্রিপুরা রাজ্যের সঙ্গে যোগাযোগ

গত ১৮ই তাজের "ক্ষমতি" ( সাপ্তাহিক ) পত্রিকার "শ্রীবাত্তব" এই ছল্লামে এক ক্ষম লেখক যে অভিজ্ঞতার কথা বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা পাঠ করিলে বুবা যার কেন ত্রিপুরার প্রকাবর্গ পাকিস্থানীর আশহার দিন কাটাইতেছে। পুরাত্ম কথার, আসাম সরকার ও কেন্দ্রীয় ইঞ্জিনিয়ারগণের অক্রপ্যভার কথা উল্লেখ করিতে চাই মা। এখন "যাত্রা" শেষ হুইলে রাঠের মঞ্জা।

"ত্রিপুরা রাজ্যের সঙ্গে আলাম-কাছাড়ের সংযোগ নিরে বে অন্তত কাও ঘটে গেছে, ভা সর্বজনবিদিত।

সংযোগের পরিকল্পা প্রস্তুত হ'ল, নতুন নতুন ইঞ্জিনীয়ার এলে আন্তানা গাছলেন ত্রিপুরায় । কত কন্টাক্টার এলেন, ভাদের দিয়ে কাজও আরে ও ত'ল, লক্ষ্ণক টাকা ব্যয় হভেলগল। কিন্তু ভার পর ? যংন কন্টাক্টাররা বিলের টাকা নিয়ে ঘরে উঠেছেন, ভখন দেখা গেল, পথের মাত্রা হছেছে ভুল পথে আরু টাকাগুলো গেছে মাঠে মারা । ইঞ্জিনীয়াররা খান ভাগে করলেন অথবা করতে বাব্য হলেন, এলেন নতুনের দল, আবার আরম্ভ হ'ল নতুন রাভা, এলেন নতুন কন্টাক্টার। এবার নতুন পরিকল্লনা নিয়ে যাত্রা স্ক্রু হ'ল। শে

ব্দ্মী আরাকানে পাকিস্থান প্রতিষ্ঠা

পত প্রাথণ-ভাষে মাসের শেষে একটি সংবাদ ভারতীর সংবাদপত্ত্ব প্রকাশিত হয়। ভার মর্মার্থ এই : পাকিছামের সাহায়ে এবং সমর্থনে একদল মুসলিম 'মুজাহিদ' বা বর্ত্মযুদ্ধের গৈনিক প্রকাদেশের আরাকান জঞ্চলে 'জেহাদ' চালাইতেছে এবং বৃধিতং এ ভাহারা সম্প্রভি একটি 'শরিমতী সাধারণভন্ধ'ও প্রতিষ্ঠা করিয়াছে।

উক্ত 'সংধারণতন্তের' প্রধান হইতেছেন আবুল কাশিম নামে ঢাকা বিশ্ববিভালয়ের জনৈক 'ল' গ্রাজুরেট। আরাক্ষানের ভিনি একজন বনী জমিদার। তার দলে করেক শত সশস্ত্র 'মুলাহিদ' আছে। বে 'সাবারণতন্ত্র' ভাহারা প্রভিষ্ঠা করিয়াছে সেট অবক্ত একট 'ল্রামাণ সাবারণতন্ত্র'। ত্রক্ষদেশীর সৈত্ত-দলের দৃষ্টিগোচর হওয়ার উপরই ইহা নির্ভরশীল। নাক নাবে যে নদীট ত্রক্ষাদেশের আরাকান অকল এবং পূর্ব্ব-পাকিছামের অন্তর্গত চট্টগ্রামের পার্বত্য অকলের মব্য দিয়া প্রবাহিত, সেই নদীর ক্লে কাশিম দৈর্ঘ্যে ৩০ মাইল এবং প্রস্থে ১০ মাইল শক্ত গাঁটি ভৈয়ারী করিয়াছে। কাশিম-বাহিনীর কার্য্য-কলাপ এবন মউডভেই জোর চলিতেছে।

কাশীবের কারদা এবানেও চলিতেছে, আরাকানের এই সমত 'মুজাহিদ'কে গোলাবারুদ কে জোগাইয়াছে—অব্দ্র প্রকাশ্তে ও সরকারীভাবে মহে—তংসহতে জন্ননা-জন্মার অবকাশ নাই। সম্প্রতি পাকিস্থান হইতে মুজাহিদ্গণ চার ইঞি ষ্টার এবং অটোষেটক অৱশত্র পাইরাছে। জানা গিরাছে যে, গত বুদ্ধের সময় আরাকামের জনলে প্রাম বিটপের কিছু অভ্যমন্ত মুসলিম মুজাহিদের হাতে পভিয়াছে।

একট 'বাহিনী'ও তাহাদের আছে। এই বিতীয় বাহিনীর অধিনায়ক হইতেছে অন্ধদেশীর পুলিসের কনৈক প্রাক্তন সাব-ইজপেন্টর, নাম কাকর। বিধানবাগে কাকর করেকবার করাটী যাতায়াত করিবাছে। কিছু কাশীরী মোলা সে আরাকানে আমদানী করিবাছে।

কিছুদিন হইল কাশিম ও কাকর মিলিত অভিযাম চালাইতেছে।

আরাকানের এই মুজাহিদ্দের ছানীর মুসলমান বা বাজের বিজোহীদের সহিত কোন আত্মীরভার সম্পর্ক নাই; সংবাগও কিছু নাই। এই 'কেহাদের' উদ্বেশ্ব সম্ভবতঃ আকিরাব পর্যান্ত চাউল-উংপাদনকারী সম্বন্ধ অঞ্চলটি পাকি-ছানের আওতার আনা। আকিরাব বন্দরের সাম্বিক শুরুত্ও রহিরাহে।

ব্ৰহ্ম সৱকার এই 'কেহাদকে' তাঁহাদের 'বরোরা' ব্যাণার ও শান্তি-শৃথলা ব্ৰহ্মার প্রশ্ন বলিরা বলে করেন, তাই পাকি-স্থানের বিরুদ্ধে তাঁহারা নিশিষ্ট কোন অভিবোগ উপাপন করে নাই।

'মুকাহিদ্দের' লড়াইরের কারদা এই: ব্রহ্মদেশীর সৈত্তদল দেখা সেলেই তাহারা পার্থবর্তী পূর্বা-পাকিছানে চুকিরা পড়ে এবং নিকেবের পরিচর দের আরাকান হইতে আগত মুগলিম উর্বান্ত বলিরা। তাহারা বলে, আরাকানীদের অত্যাচারে তাহারা পলাইরা আসিরাছে। পূর্বা-পাকিছানে সম্প্রতি আরাকানীদের বিক্লবে প্রচার চলিতেছে। ব্রহ্মদেশ হইতে পূর্বাবদে চাউল চোরাই-কারবার প্রসিত্ত।

এই সংবাদ পাঠ করিয়া আমাদের মনে যে বারণা ক্ষিয়াছে তাহা—এই কর্ম্বের কলে পাকিছানী মনোভাব ছনিয়ার চোখে আরও স্পষ্ট হইয়া ফুটিয়া উঠিবে। ক্ষুম্মিট "পঞ্চবাহিনী"র মত পাকিছানীদের নিকেদের রাষ্ট্রের অনিট সাবনে তংপর দেখা বাইবে।

ভারতরাষ্ট্রে অভের খনি ও ব্যবসায়

"যুগাছর" প্রকার অত্তবনি ও ব্যবদার সম্পর্কে অনেক তথ্য প্রকাশিত হইরাছিল। এই প্রবদ্ধ পাঠ করিলে ব্রিতে পারা যার যে এবন পর্যান্ত এই বনিজ ক্রব্যের বাজার বিদেশে, বিশেষতঃ মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রে ও বিলাতে। রুছের সমর অত্ত অনেক সামরিক প্রয়োজনে লাগিরাছে। স্করাং ভাহার বুল্য বাড়িরাছে।

"ভারতীর অত্তের বেশীর ভাগই পাওরা বার বিহারের অত্ত-বনি অঞ্চন বেকে। হাজারীবাস জেলার কোভারনা, সাঁওরা, সাভবাওরা, জারুরা প্রভৃতি থানা, গরা জেলার রকৌনি থানা ও ব্ৰের জেলার বাঁকা টেশনের নিক্টবর্তী কভকাংশ নিবে
গঠিত ষাট মাইল লখা ও বার মাইল চওড়া বিহারের এই
অত্রধনি অঞ্চল। ছোট বড় অসংব্য অত্রধনি আছে এই
অঞ্চল। বিহার তথা ভারতবর্ষের অত্র-ব্যবসারের প্রধান
ক্রের হাজারীবাগ জেলার কোভারমা ও তার পরেই গিরিভি।
ছোটনাগপুরের তরলারিত ভূমিতে অবস্থিত এই ছুট জারগা
পুষিবীর সমন্ত অত্র-ব্যবসায়ীর কাছে পুপরিচিভ। মারাজ্প প্রদেশের নেরোর জেলা ও রাজপুতানার কিষ্ণগড় প্রভৃতি
টেটেও অত্র পাওরা যার। গুড়ুর ও ভিলওয়ারা ব্যাক্রমে
মারাজ্ব ও রাজপুতানার অত্র-ব্যবসারের কেন্ত্র।"

ধনি বিজ্ঞানে বলে বালুসার কোনাটক ধনিকের গলিভ শ্রোভ বাহাকে "পেগমেটাইট" বলে, যবন অন্তবারক "মাইকা সিট" ভরকে ভেদ করে, ভধনই অন্তের কর হয়। কোট কোট বংসর পূর্ব্বে ঐরণ ক্রবমন আরের প্রোভ বহিনাছিল। আক মানা প্রাকৃতিক পরিবর্তনের পরে ঐরপ ঘটনাছলগুলি অন্ত-ধনিতে পরিণভ হটনাছে। অন্তধনিতে দেখা বার পেগ-মেটাইটের মধ্যে পাধ্রের ভিভরে চাপ চাপ অন্তের "পক্টে" বহিনাছে।

"অবক্ত সব পেগমেটাইটেই সমান অত পাওৱা যাব না। কোনও জাহগার বুবট সামাল পাওয়া বার-জাবার কোনও জারগার বেৰী পাওয়া যার। অভ্রবনি অঞ্লে অনেক জারগারই অত্ৰৰত-মিশ্ৰিত এই 'পেগমেটাইট' ভূপুঠে দেৰতে পাওৱা যাব। বিক্ষোরক ব্যবহার ও হাভুভি, শাবলের সাহায্যে এই পেগ-सिंहों कि कि मान्य नीटि निय वाब, चात चांड! भाषरतत ভিতর বক্বকে অত্রবওগুলি বেলিয়ে পড়ে। এমনিভাবে সোভা পঁচিশ ভিত্তিশ কৃট কেটে আবার পেগ্যেটাইটের ভিভর দিরে লখা পুড়ৰ কাটা হয়, আর পাধর কাটারে অভ্রবওগুলি উপরে भिरम जात्रा हर । अवनि करत अक अक्षे जल्दीन शाहन ছ'ল কৃষ্ট নীচে পৰ্বাস্থ যায় এবং ভাতে পঁচিল জিল কৃট चक्रत चरमक्छनि एक्य काठी हरह यात. (रूप नचा नचा। चल्रचनिधनि (वनी क्षण क्य मा। कावन (नन्द्रकाहरकेंव इने शास्त्रे मानावनण: बाल्क बानेका मिरहेव स्वताम । अने 'निहे'. बर यादा चल भारता वात मा राम बस्तिएक चार कार्रा त्र मा।

মাটর মীচে অমনি সুভদ কেটে বাওরা বুব বিপক্ষনক।
মাটর মীচে বভ যাওরা বার, ভভই গরম—আর ওবানে ভ
উপরের মত এমনি মুক্ত হাওরা পাওয়া বার না। কাক্টে
বায়ু চলাচলের অভ প্রভ্যেক খনিতে ছই বা ভভোবিক মুধ
করতে হয়—মাটর মীচে অভকারে কিছুই দেখা বার না, ভাই
সক্ষে মিরে বেতে হর মোমবাভি বা লঠম—ভাতে খনির মীচে
পরম ভবোট ভারগা ভারও গরম হবে ওঠে। ভার পর উপর
বেকে মাট-পাবর চাপাও পড়তে পাবে, ভারও ববোচিত
ব্যবস্থা করতে হর। পাবরগুলোকে ফাটাবার ক্ষয় ব্যবস্থা

হয় ভিনামাইট। বিক্ষোরণে পাধরগুলো ফেটে চৌচির হয়ে বার আর পাধরের বও হিটকে আসে বুলেটের চেয়েও জোরে। প্রমিকেরা কিছ প্রাণের মারা ভূচ্ছ করে পালাক্সমে দিমরাজ এই সব পাভালপুরীতে কাল করে যাচ্ছে, আর ভূগর্ভ বেকে উটিরে আগহে অভি প্ররোজনীয় এই সম্পান। অনেক বন্ধপাতি দরকার হয় বছ বছ বছ বাফি কাল করার জন্যে—বেমন ধনির শীচে জল হয়—সে সব জল উপরে ভূলে কেলবার জন্য চাই বছ বছ পাম্প। অল ও পাধর উপরে ভোলবার জন্য চাই বছ বছ 'হয়েই'—ভা ছালা এইগর পাম্প ও হয়েই চালাবার জন্যে থাকে বছ বছ এঞ্জিন ও বরলার। 'এরার কম্প্রেসার' চাই এই সব শক্ত পাথরে গর্ভ করবার জন্য ব্যবহৃত হয় যে মেসিন ভিল ভার জল।

আত বছ্ছ ও মহণ—কিছ তুগতে অভাভ জিনিষের সংস্পর্ণে এবে এর বছতোর কিছু ব্যতিক্রম ঘটে ও অনেক সমর নানা দাগ পছে এবং তুগতে পাধরের চাপে থাকে বলে কিছু কিছু অত্র অমহণও হয়। যত বেদী দাগযুক্ত বা অমহণ হবে, ততই তার দাম যাবে কমে—কারণ এওলির বৈহাতিক তরল রোধ করার শক্তি কমে যার। তাই এরপ শ্রেণীবিভাগ দরকার হয়ে পছে। প্রবানত: নিমলিবিভ করেকটি শ্রেণীতে অপ্রথলকে ভাগ করা হয়:—সম্পূর্ণ বছে, দাগমুক্ত মহণ যে অপ্রথওওলি সেওলিই হছে সবচেরে দামী ও প্রয়োজনীয়—এওলিকে বলা হয় ইংরেজীতে 'ক্লিরার এল এল'। তারণরে পর্যায়ক্কমে 'ওড় টেনড', 'কেরার টেনড', 'হেভিলি টেনড', 'ব্যাতলি টেনড',' ইত্যাদি। এমনই শ্রেণীবিভাগ করে অপ্রথলকে ওদামলাত করে রাথা হয়। তারণর বিদেশ থেকে যেমন যেনন চাহিদা আসতে থাকে, বাল্ল ভর্তি করে এওলিকে চালান দেওবা হয়। ক্রিন্তিন উপায়ে প্রেটল প্রস্তিবের পরিকল্পনা

প্রতি বুগে এক একটা শব্দের ব্যবহার মান্থের বুরিকে বিজ্ঞান্ত করে, ভাহাদের কর্মান্তি হরণ করে। প্রথম বিসমুদ্ধের পরের মুগে, যেদিন হইতে মার্কিণের বম ও বৈতব ছনিয়ার উপরে ববরদারি করিতে আরম্ভ করিল, সেই দিন হইতে "প্রামিং পরিকল্পনা" শস্কটি বর্তমান অগংকে পাইরা বসিয়াছে। যেন একটা অভ্যুত আবিদ্ধার এই শব্দের মধ্যে নিহিত আছে।

অধ্য সাধারণ লোকে ভাবিরা পার না যে শস্ট্র ব্যবহার কেন এত জনপ্রির হইরাছে। ভাহার। ত ভাহাদের "অশিকিত" বৃত্তি বিরাও ব্বে যে কীট-পভদ পর্বান্ত "পরিকল্পনা" ছাড়া কোন কাজ করে না। বর্ষার জন্ত খাত সক্ষর ও আবাসম্থানের ব্যবহা একরুপ, শীত ও গ্রীজের ব্যবহা অভরুপ। ধার্দি-প্রতিষ্ঠানের মধুমকিকা সম্বন্ধে বিশেষজ্ঞ শ্রীকিতীশচল দাশগুণ্ড এই সম্বন্ধে আমাদের অনেক তথ্য তুমাইরাছেন; তাঁহার আপ্রিত মক্ষিকার নামাবিধ কৌশলের গল বলিরাছেন। এই ক্রেশিকিতপট্ট লাভ করিবার জন্ত বিরাট কলকারশানার বা গবেষণাগারের প্রয়োজন হর না। সেইজভ অনেক সময় ভাবি "পরিকল্পনা" শস্ট ক্রিভে ক্রিভে আমরা এরণভাবে আত্ম-চারা তইলাম কেন।

ভৰ্ও অধীকার করি না বে গবেষণাগার ও কলকারধানার প্রয়োজন আছে; অভীভেও ছিল। সেইজভ
ভারভরাষ্ট্রের পরিচালক গ্রীজবাহরলাল নেহকু বর্থন অনবভ
ভাষার "পরিক্লনার" ওপকীর্ত্তন করেন, ভবন মন দিরা
ভানিতার। আজ ভাহাও নৃত্তনত্ব হারাইরাছে। একটা নৃত্তন
শব্দ আবিভারে না করিলে ব্যবসায় অচল হইরা বাইবে বে!

গত কান্তন-চৈত্ৰ মানে দিলী হইতে একট সংবাদ প্ৰচারিত হুইৱাছিল। ভাতার মুর্গ নিমে উদ্ধুত ক্রিলাম :

ভারতীয় কয়লা হইতে কৃত্রিম উপায়ে পেট্রল প্রস্তাভার পরিকল্পমাকে অগ্রাধিকার প্রদানের ছঙ বৈজ্ঞানিক ও শিল্প-বিষয়ক গবেষণা পরিষদের গবর্ণিং বভি ভারভ-সরকারকে অপ্রয়োধ করিয়াছেন।

কাউ সিলের তিন দিনব্যাণী অবিবেশনের পর পুর্ব্বোক্ত পুণারিশ করা হইরাছে। প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত ক্বাহরলাল নেহক্র এই অবিবেশনে সভাপতিছ করেন; তিনি বৈজ্ঞানিক গবেষণার উন্নতি সাধনের করু পরিষদকে বছবাদ জ্ঞাপন করেন।

প্রধানমন্ত্রী বলেন, বৈজ্ঞানিক গবেষণাক্ষমে ভারত সরকারের বিভিন্ন কার্য্যকলাপ সম্পর্কে সমালোচনা হিসাবে আমেক কিছু বলা বাইতে পারে সভ্য; কিন্তু আমাদের আমু-প্রশংসারও আমেক কারণ আছে। বৈজ্ঞানিক গবেষণার উন্নতির সহিত সংগ্লিপ্ত পরিষদের কার্য্যকলাপ প্রশংসার। ইতিমব্যেই ছুইট বীক্ষণাগার খোলা হুইয়াছে এবং সেখামে কাক চলিতেছে। বেভাবেই হুউক, আমরা ভাল কাক্ষের ভিত্তি স্থাপন করিয়াছি। অর্থিক অন্টন হেতু গবরেণ্টি গবেষণা এমন কি অবিকতর ওক্তুপূর্ণ পরিক্রমা সংক্রান্ত ব্যর হ্রান্য করিতে বাধা হুইয়াছেন, ভবে তিনি পরিষদক্ষে উক্তল ভবিষ্যতের আলেখ্য প্রদর্শন করেন এবং বলেন যে, বৈজ্ঞানিক গবেষণার প্রসার রৃত্তির কল উৎসাহ দানের ব্যবস্থা অব্যাহত থাকিবে।

ভারতে কৃত্রিম উপারে পেট্রল প্রস্তুতের কারণামা ছাপনের উদ্দেশে বিদেশী বিশেষজ্ঞগণের সহিত পরামর্শক্তরে একটি পরি-ক্রমা রচমার ক্বলু পরিষদ একট ক্ষিটি গঠন ক্রেম।

বিদেশী বিশেষজ্ঞগণের সাহাখো ইহার পর এই পরিক্লমা সংক্রান্ত একট নক্সা প্রস্তুত করা হয়।

পরিষদ এই দৃচ অভিনত ব্যক্ত করেন বে, বত সত্ত্র সম্ভব এই পরিকল্পনা অন্থারে কার্যারন্ত হওরা আবস্তক। অর্থ-নৈতিক কারণে অভ্যার ঘটান আলে উচিত নত্তে। কপার্স ইল ইউ এস এ বে পরিকল্পনা প্রযুক্ত করিবাহিলেন, পরিষদ ভারত-সরকারকে উহা এহণ করিতে অফ্রোব করেন। উক্ত পরিকল্পনার ২২ কোটি টাকা মূলবন বিনিরোগ করিতে হটবে। এই পরিকল্পনাস্থ্যারে ভারত ৭০ হাজার টন বিষাম চালনার পেট্রল, ১৫ লক্ষ্টন পারিবারিক ব্যবহার্য্য করলা, কিছু পরিমাণ পেট্রিরামকাত দ্রব্য লাভ করিবে।

পরিকল্পনা সহকে কর্পাস ইন্সের বিপোর্ট পরীক্ষার অভ পরিষদ নিমলিখিত বিশেষজ্ঞদিগকে লইয়া একটি ক্ষিট গঠন করেন; বধা—— এ কে আর ভি টাটা, এ কি ভি বিভলা, শেঠ কন্তব্রভাই লালভাই, লালা এরাম, ডাঃ এস এস ভাটনগর, ডাঃ কে সি ঘোষ এবং ডাঃ ডি এন ওবাদিয়া। তিন মাসের মধ্যে বিপোর্ট দাধিল করার কর ক্মিটিকে নির্দেশ দেওয়া হয়।

ভারতের কোন কোন অঞ্লে স্বভাবিক পেটোলিংম পাওয়া ঘাইতে পারে, ভাতার ক্রুস্থানের ক্রু পরিষদের উভোগে ভারত-সরকার ভূতাত্ত্বিক ও ভূপদার্থতাত্ত্বিক তথ্যাত্র-সভাষের ভীরভা বৃদ্ধি করেন। তরুপরি খনিক পেটোলিংম খরিদ করিয়া ভারতীয় বন্দরসমূতে ভুইটি বা ভিনট শোধনাগারে উহা শোধন করা সম্ভবপর কিনা, তাহাও তাঁহারা পরীক্ষা করেন। ভূচাত্তিক ও ভূপদার্থতাত্তিক ভ্রণাভূসগ্ধানের ফলে এ পর্যান্ত দেশের কোৰাও ভৈলবাহী এলাকার সভান মিলে মাই : ভরণরি ভারতীয় বৈজ্ঞানিকগণের স্কৃতিভিত ভভিমত এই বে. দেখের কোণাও তৈলবাহী এলাকা হয়ভো থাকিভে शादा: किंद कांडा शरिष्ठांत कतिएक श कारक मांगाहरूक বল বংগর অভীত লটবে। সুতরাং এটরাণ কোমও সম চটতে পেটन সংগ্রহ করিয়া দেশের প্রয়েজন মিটাইবার আল সম্ভাবনা নাই। প্রভারং পরিষদ এই সুপারিশ করিয়াছের যে, ক্তমি উপারে পেট্ল প্রস্তুতের পরিকল্পনা অবিলয়ে कार्याकरी कटा अध्यासमा

বিজ্ঞান ও শিশ্প গবেষণ,-পরিষদের পরিচালক সমিতি গবেষণা সম্বাদ্ধ কতকণ্ডলি নৃতন পরিকল্পনা মঞ্র করিয়াছেন। ইহাতে আহ্মানিক ছুই লক্ষ টাকা হিসাবে ব্যয় হুইবে।

ভারণর ৫।৬ যাস অঠীত হইবাজে, কেন্দ্রীর বিধান পরিষদে প্রশ্নোভর উপলক্ষে কৃত্রিম পেটুল উৎপাদন সহত্তে কিছু কিছু সংবাদ পাওয়া যার। কিত্ত ভরসার কথা এবমও শুনি নাই।

তুনিয়ার বাণিজ্য পোতের হিদাব

সম্প্রতি আমেরিকা ম্যারিটাইন কমিশন (U.S. Maritime Commission) বিভিন্ন দেশের সম্প্রপোতের 'টনেক' বা নালবহন ক্ষভার এক হিসাব প্রকাশ করিবাছেন। রুদ্ধের অব্যবহিত পূর্বেক কি অব্যা ছিল এবং বর্তনানে ভাষা কি অব্যার পৌহিরাছে, ভাষার একট তুলনামূলক হিসাব হইতে বুবিতে পারা বার রুদ্ধের বিষয় ক্ষর-ক্ষতি কাটাইরা জাহাজী ইনেক অভি ক্ষে ১৯০৯ সালের পরিমাণ সানাভ্যান্তার অভি-ক্ষর করিতে সমর্থ হইরাছে। আবার ভবিহাৎ রুদ্ধের বাক্ষরে

গৰ দূব হইতে ভাগিয়া আগিতেছে। যদি বিশ্বাণী তৃতীয় মহাযুদ্দ দনাইয়া উঠে, তবে সনুজপোভের অবহা যে আরও সনীন হইয়া উঠিবে, ভাহা সহজেই অসুমান করা বায়।

क्रहे किमारव (प्रथा बाद :

			7505	>>40
যোট বাণিজাপোভের সংবাা			25,646	30,902
ৰাহাৰী টনেৰ		হাৰায়	9,22,02	৮,১৮,১२
<b>इंश्ल</b> ७	•••		2,50,14	2,20,32
আমেরিকা#	• • •	•	7,03,75	2,02,23
নৱপ্তৱে	•••		69,07	90,69
পাৰামা	•••			82,58
(नमादमा। ७	• • •	•	<b>₹8,</b> ₹ <b>€</b>	৩৬,৭২
ফ্রাপ	• • • •		₹6,65	00,20
স্টডেন	• • •		20,00	२१,०¢
এীস	• • •		د ه <sub>ر</sub> و ۶	25,00
গোভিয়েট ক্লশ	• • • •		and the same	72,58
অপরাপর সন্মিলিভ				7,67,87
<b>জাপা</b> ম	• • •		13,84	_
<b>ভাৰ্মা</b> গী	• • •		<b>¢3</b> ,99	
<b>इं</b> डामी	• • • •		٥٥,٥٥	७७,४२

সম্প্রতি ভারভরাট্রের কাভীর কাহাক মালিক সমিতির সভাপতি ঐ কি. টি, কামদার ইহার বাধিক অবিবেশনে উল্লেখ করিয়াছেন যে ভারভরাট্রের টনেক মাত্র ৪ লক্ষ্য টন। ভারভের ক'হাকী-বালিকা স্থচারু ভাবে চালাইতে হইলে উপ-কুলের কর আরও ১,৭০,০০০ টন এবং বৈদেশিক বাণিকোর কর ১,৫০,০০০ টনের কাহাক প্রয়োকন। ইহার মবো অবভঃ ৩০,০০০ টনের কাহাক মাত্রী বা যাত্রী ও মাল ভারভ সমুদ্রে সমনাগমনের কর প্রয়োকন। এই কাহাক কর করিতে ৭ হইতে ৮ কোটি টাকা প্রয়োকন। সমন্ত উপকূল বাণিক্য ভারভীয় কাহাক কর্ত্তক সম্পন্ন করিতে হইলে আরও ১৪ কোটি হুইতে ১৬ কোটি টাকা এবং আমেরিকা, ইংলক, আর্থ্রেলিরা এবং ল্যপ্রাচ্যে গমনাগমন ও বাণিকাপোতের কর আরও কর-বেশী ১,২০,০০০ টনের কাহাক কিনিতে ১২ হইতে ১৩ কোটি টাকা প্রয়োকন।

এই অভাব বিটাইবার ব্যক্ত ভারত গবছে তি এককালে বিদেশী বাহাৰী কোম্পানীকে ভারতে আনিয়া কাৰ্কার-বার আরম্ভে সহায়তা কবিতে ইচ্চুক হিলেন। কিছ প্রয়োজনীয় ৩৫ কোটি টাকার ৭৫ ভাগ শতকরা ২ টাকা স্থদে

ইহা ছাড়া আমেরিকা ব্ঞরাপ্তের সামুদ্রিক ক্ষিশনের উাবে যে ১৯,৯৫,০০০ টনেছ আছে বা সেনাবিভাগের অন্তর্গত বত টনেছ আছে, তাহা এই সংখ্যার অন্তর্গুক্ত বতে।

অপ্রিম দিলে বাকী টাকা শেষার বিক্রম করিয়া দেশের মব্যে সংগ্রহ করা বিশেষ কটকর হটবে মা। এই প্রসদে আয়বশের তথের ও পরবশের হুংখের কথা আয়াদের হুদয়দম করিছে চটবে। ভবেই দেশের মদল।

#### মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের অর্থ-দাহায্য

নিম্নলিখিত বিবরণটি "আমেরিকান রিপোটার" ( বাংলা সংস্করণ ) পঞ্জিকায় প্রকাশিত হইরাছে। এই সাহায্যের পরি-মাণ প্রায় ২ হাজার কোট টাকা। মার্কিন যুক্তরাই ক্বেরের দেশ বলিয়া পরিচিত কেন ভাহা এই সাহাধ্যের পরিমাণ লক্ষ্য করিলে বর্গা যায়।

এতংগশ্পকে ছুই-তিনটি কথা আমাদের মার্কিনী বন্ধুবর্গের জানিয়া রাখা ভাল। প্রথম—থাহারা উপকৃত হইতেছেন, তাঁহারা এই দানে প্রথম ভাতি ভাহাদের মনকে নাড়া দের যে দাতা এই দানের প্রতিধানে কিছু উত্তল করিয়া লইবেম। বিতীয়—এরপভাবে দান করিয়া মাধুঘের মন জয় করা যায় না। চীনদেশ ভাহার বিশিপ্ত প্রমাণ। বক্লার বিজ্ঞাতের ক্তিপ্রশব্দশ বহু কোটি টাকা মার্কিন মুক্তরাষ্ট্রের ভাগে পড়িয়াছিল। আছুজাতিক সন্ত্রীতির নিদর্শনস্বরূপ এই টাকার স্থল লওয়া হইল না। ভাহা ব্যর করা হইল প্রায় পঞ্চাব বংসর ধরিয়া চীনদেশীর যুবকর্ত্বের বিক্ষার উন্নতিক্রে।

ভার ফলে তাঁহারা মার্কিনের কলেন্ধ ও বিশ্ববিভালরের শিক্ষা শেষ করিলেন, ভাব ও চিন্তার হইলেন মার্কিনী, বেমন ইংরেন্ধের আমলে আমরা হইরাছিলাম। চিধাং-কাই-শেক, মাও-সে-ভূং ছাড়া চীনের নেত্বর্গ প্রায় সকলেই ছিলেন এইরূপ ভাবে মার্কিনের নিকট ধনী।

আৰু দেখিতেছি কি ? এই নি:খাৰ্থ দানের কথা চীম-দেশের কেহ কি মনে-প্রাণে খীকার করেন ? সেইক্ছই বলিতে চাই—মার্কিন মুক্তরাষ্ট্র যদি এশিরা ও আঞ্চিকাকে কম অবিসাহাযা করিতেন তবে তাহা কল্যাণপ্রস্থ হইত বেশী এবং দাতা ও প্রতীতা উত্তেই শান্তিতে থাকিতে পারিতেন।

"আন্তর্জাতিক মুলা ও আবিক সমস্যা সংক্রান্ত জাতীর পরামর্শ-দাতা পরিষদ আমিষেছেন বে, ১৯৪৫ সালের ১লা জুলাই থেকে মধ্যপ্রাচ্য ও দ্রপ্রাচ্যের দেশগুলি মোট ৫০০ কোট জলার সাহাব্য পাইয়াছে যুক্তরাষ্ট্রের কাছ থেকে।

কোন্দেশ কভ ডলার সাহাযা পেরেছে ভার হিসেব এইরপ:—

ভারত ৪ কোট ৬০ লক তলার, ত্রহ্মণেশ ৫০ লক ভলার, চীম ১৭৯ কোট ৬০ লক তলার, ইলোনেশিয়া ১৫ কোট ১০ লক ভলার, ইরাণ ৩ কোট ভলার, ইস্রাইল ৪ কোট ৮০ লক ভলার, জাণাম ২ শত কোট ৭০ লক ভলার, বিপাবলিক অব কোৱিয়া (পকিণ কোৱিয়া) ৩৫ কোট ১০ লক ভলার, কিলিশাইন ৭৬ কোট ১০ লক ভলার, বিভিন্ন বিশেষ্ট ১০ লক ভলার, বিভিন্ন বিভিন্ন বিভাগ ১০ লক ভলার, বিভিন্ন বিভিন্ন বিভাগ ১০ লক ভলার, বিভিন্ন বিভাগ ১০ লক ভলার, বিভিন্ন বিভাগ বিভাগ কালার বিভাগ বি

ভলার, সৌদি-খারব ১ কোট ৭০ লক ভলার, থাইল্যাও ৬০ লক ভলার এবং ভরস্ক ২৬ কোট ৮০ লক ভলার।

আফ্রিকার দেশসমূহ: মিশর ১ কোট ৮০ লক ভলার, লাইবেরিছা ১ কোট ২০ লক ভলার এবং দকিণ আফ্রিকা ইউনিয়ন ১০ লক ভলার।

ওশেনিয়া: অট্রেলিয়া২ কোট ডলার, নিউজীল্যাও ৭০ লক্ষ ডলার এবং ওশেনিয়ার অঞ্চান্ধ অঞ্ল ৪০ লক্ষ ডলার।

প্রায়র্বদান্তা পরিষদ মিয়লিবিত সপারিশও করেছেন :

- (১) ইউরোপ পুনর্গ ঠন পরিকপ্পমার যদি কোনও দেশ যোগ দেয় তা হলে সে দেশকে "পরিবর্ত আমানত" অমা রাখতে হবে, কেননা এ ক্ষেত্রে আর্থিক সাহায্য দেওরা হয় সম্পদ হস্তান্তরের ভিত্তিতে। তবে কোনও কোনও বিশেষ ক্ষেত্রে অবক্য এরপ ভিত্তিতে হয় না।
- (২) প্রভিক্ষা ব্যবস্থার সৌক্ষার্থে ধ্বনই প্রবাজন হবে ভ্রমই যাভাতে সাম্বিক ব্যব্ত নির্কাহের নিমিত এই "পরিবর্ত আমানভে"র অর্থ পাওরা যায়, ভার জন্ত যবোগযুক্ত ব্যবস্থা অবল্পন করতে হবে।
- (৩) অংগামী ২০শে জুন পথান্ত আৰ্থিক বছরে তে সব বিশেষ বরণের বৈষয়িক সাহায্য দেওগা হবে, ভাও হবে ঐ সম্পদ হন্তান্তরের ভিন্তিতে, সাম্বিক সাহায্যও ঐ একই ভিত্তিভে দিভে হবে। ক্বমই বুণ দামের ভিত্তিভে ঐ সাহায্য দেওরা চলবে না।
- (৪) বৈষ্ঠিক উন্থন পরিক্লনাগুলির জন্ত বে অর্থ দেওরা হবে, তা হবে ঋণের ভিভিতে। তবে এরণ সাহাষ্য দেওনা হবে তবু সেই সব ক্ষেত্রেট, যেখানে দেখা বাবে যে, ঋণ গ্রহণ করে ঐ পরিক্লনা সকল হতে পাবে এবং সেই পরি-ক্লনার উদ্ভেত্ত যথোপযুক্ত বরণের।
- (৫) সম্পদ হতাভবের (দাম) তিওতে যে বৈষ্থিক সাহাযা দেওৱা হবে, সেই সাহাযাকে "কোনও মতেই বর্ণ ও ডলাবের মন্ত্র তহবিল বৃদ্ধির উদ্দেশ্যে বাবহার করা চলবে না এবং বিপরীত পক্ষে যে সব দেশ দেশরক। বাবহার যোগ দেবে, তাদের বর্তমান মন্ত্র তহবিল হ্রাস করা মুক্তরাষ্ট্রের সাহাযালাতের প্রাথমিক সর্ত বলে ধরা হবে না।

উক্ত পরামর্শদাতা পরিষদ আরও দেখিরেছেম বে, গত মার্চ মাস পর্যান্ত মুক্তরাষ্ট্রের আমদানি রপ্তানি ব্যাক্ত ৩০০ কোটি ৪০ লক্ষ ডলার গণ মঞ্ব করেছেন। আন্তর্জাতিক আর্থ শুহ-বিলের কাগক বিক্রয়ের পরিমাণ দাভিরেছে ৮১ কোটি ১০ লক্ষ ডলার। আন্তর্জাতিক পুনর্গঠন ও উন্নয়ন ব্যাক্ত ১০৭ কোটি ২০ লক্ষ ডলার গণ দেবার প্রতিশ্রুতি দিয়েছেম।

#### বিষ্মৃত বিপ্লবী

ৰহাৱাই দেশে ৰহুদেব বলবন্ধ কাড়কের (Phadke) ৰাষ্ট্ৰপুৰ্বাৰ্থ বিশ্বী স্থিতী শিক্তিৰ Libbargue বা ভারত ইবর্তী কালে বহারা ট্র দেশে বহারের গোবিন্দ রাণাভে প্রভৃতি নিভিত নেতার প্রাবাভ প্রতিষ্ঠিত ছিল এবং দেই সমরেই এই প্রার জনিভিত বুবক সম্প্র বিক্রোহের ধ্বজা উভোলন করেন। বিষ্টিশ শাসকবর্গ এই চেট্রাকে ক্রমক প্রেণীর অসভোবের (agrarian discontent) কল বলিছা মত প্রকাশ করেন। কিন্তু ভংকালীন বোলাই সরকারের সেক্টোরী বলিয়াছিলেন তাঁহার নিকট প্রমাণ আছে বে, ভারতে সম্প্র বিক্রোহের আরোজন চলিভেছে। কাভকের বিল্রোহ ভার প্রথম প্রকাশ। আজ নহারা ট্র বলবভের বোগ্য সম্প্রান দিভেছে।

ভারভবর্বে পূর্বাঞ্চলে অক্সরপ চেপ্তা হইরাছিল প্রায় ১৮৬০ সালে, 'সিপাহী বিদ্রোহে'র ২।৩ বংসর পরে। সেই বিস্লোহের নেভা ছিলেন 'মব্বন'— সোনারাম আওসেন। ভিনি কাছাটী ছিলেন। গঞ্র ছিল ভবন মহকুষার সদর শহর। স্তরাং 'বব্বন' ধ্বনি তুলিলেন—'চল গঞ্র'। পাশাপাশি একটি সর্কার ছাপিত করিলেন। প্রায় ১২ বংসর এই অসম বৃহ চলিল। শেষে 'মব্বন' বিখাসঘাতকের কৌশলে বহা পভিলেন। ভবন ভিনি কোম গ্রামে কবিরাজী ব্যবসার করিভেছিলেন। ভার জীবন-কথা অবলম্বন করিরা অনেক পন্ধীগাধা রচিত হইরাছিল। ভাহা সংগৃহীত হওরা উচিত।

#### "বিশ্ব-ভাগবতী ও ভক্তি-নিকেতন"

শ্রীসভীশচন্ত রার আসামের ভিরেটর অব পারিক ইন্ইাকশন ছিলেন। সরকারী লারিছ হইতে অবসর এহণ
করিরা তিনি বৃন্ধাবন বৈশ্বব বিশ্ববিভালরের ভাইস্-চ্যান্ডেলার
পদে অবিটিত ছিলেন। সম্রুভি তিনি বে বিরাট কর্মভার
মাধার তুলিরা সইভেছেন, তাহা যৌবন-ত্রুভ কর্ম্মভির
উপযোগী। দেই সঙ্গে থাকা চাই ভক্তিও পাতিত্য। একটি
বিবরণে দেখিতেছি বে উপরোক্ত প্রভিঠান অবলম্বন করিরা
তিনি ভক্তিশারে, বর্ম ও আচার সম্বন্ধ প্রার ১৯০ থানি
বাহ প্রকাশের পরিক্রমা করিভেছেন।

এই বিরাট কার্যা একার দারিছে সম্পন্ন হর না। সভীশবাব্ নব্দীপ্রাম, কলিকাতা, শিলং প্রভৃতি ছানের ভক্ত, পভিত ও লোক্ষাহকদের আশীর্কাদ ও অগুযোদন লাভ করিয়াছেন। আমরা তাঁহার প্রচেটার সক্লভা কামনা করি।

পশ্চিমবঙ্গ মহিলা জকুরী সেবা-সমিতি
এই সমিতির সভাষেত্রী গ্রীহভুৱা হাক্সার ও ব্যা-সম্পাদিকা
শীক্ষীণ এইচ সিং ও গ্রীশশোকা গুণার বিবৃতি হইছে নিয়লিখিত তথ্যবদী সংকলন করা হইবাতে:

"পঞ্জাব হইতে আগত লক লক গৃহহারা উরাত্ত বর্ণন উত্তর তারতের নিদারুণ শীতে কঠ পাইতেছিল তথ্য তাহাদের কঠ লাববের উদ্ধেত তাহাদিগকে তৈয়ী জায়া পোশাক

**व्यव**ाह कर 3589 जारबाह करके।वह बारज शन्तिहरूह ভদাধীত্ব হাজাপালের পরিচালনা ও পঠপোরভভার পঞ্জির-বল বচিলা ভক্তবী সেবা-সমিভি সমিভ চম ৷ এই প্ৰতিঠান বিভিন্ন নাত্ৰীসন্দের আছবিক সভাকততি এবং আয়াদের বর্তমান রাজ্যপাল ডা: কাইজর সভাদর প্রপোষকভার ইতার कार्वावकी विकित्त किरक विकास कविरक अक्रम क्रोडारम । वर्षवारम करे श्रीकृष्ठीम करूक मित्र कार्वाश्वीस जन्माहिक क्रेंट्ड्इ (১) अधिकि ১৮ট हत्वराकास्त्रत शतिहासमा कतिराजाक अवर अहे १४कि त्काम वर्षधारम १६० सम प्रतिकारक বোনা ও প্রচী শিক্ষা দেওৱা চইভেছে। এভছাতীত এই সব हर्तवारकम हरेल रेकिशवारे २००६ क्य विकासियीक विका ৰেওৱা চইৱাৰে। (২) ভিষ্ট কেলের স্থচী শাৰাৰ বাৰ ১৩० कम महिलाकि कृती निका (मध्या हरेलाह : बरे लिन्हें কেন্দ্ৰ চইডেছে বেচালা, কাল ৰোধ লেম ও সরকারী ভবন। (७) यहन मानाव ১৫ कम वाशिकाटक मिटबान करा करेंबाटा। এই শাৰাৰ বাদি, ধৃতি, শাড়ী, চাদৰ প্ৰভৃতি ভৈৰাৰী কৰা হয়। (৪) বহনে শিক্ষরিত্রীগণকেও শিক্ষা দেওছা তম্ব এবং এ পর্যাত্ত তিন দকার ৪১ কন শিক্ষরিত্রী শিক্ষালাভ করিয়াছেন, ভরব্যে ২৩ কনতে সৱতারী বিভিন্ন শিবির ও অভাত সমিভিতে নিয়োগ করা ভইমাছে। (a) হিন্দী শিকা ক্লাশে চতুৰ ঘকার শিকাবিনীগৰ্ণকৈ শিকালান করা হইতেছে। (৬) সমিভির সাধারণ সেবাকার্বোর মধ্যে উদ্বাল্ডদের ভিভরে বিভর্পের অভ জামা-পোশাক সংগ্ৰহ, উদ্বাস্ত বোগদিগকে চিকিংসা সাহাব্য-দান, উহাত বালিকাদের বিবাহের বভ আবিক সাহাব্য, উহাত विक व प्रक्रिमामिनाक कैरभव कैनमाक निवास मारव मारव चाहार्था साम हेलासि दहिशास । असार्था (चळारत्रविकारसद সাচাষা সাদরে গভীত চইবে।"

কলিকাতা নগরীর নব্যে এইরপ সেবা-স্নিতির সংখ্যা অগণিত। সামরিক প্ররোজনে বাহা গভিরা উটিরাছিল ভাহা আরু পৃত্য সমাজ-গঠনের প্ররোজন অকুতব করিভেছে। সেই জল "করুবী" শক্ট অবাত্তর হুইরা পঢ়িরাছে। আমানের প্রভাবিত পরিবর্জন সাবিত হুইলে স্নিভিত্র পরিচালকবর্গ ও ক্যাইন্স গঠনবৃদ্ধক কর্ম-পদ্ধতি অনুসরবে উৎসাহিত হুইবেন।

#### পূজার ছুটি

শারদীরা পূলা উপলক্ষে প্রবাসী কার্যালর ২১শে আবিদ (৮ই অক্টোবর) হইছে ২রা কার্ত্তিক (২০শে অক্টোবর) পর্যন্ত বন্ধ থাকিবে। এই সমরে প্রাপ্ত চিট্টপর, টাকাক্ষি প্রভৃতি সম্বন্ধে ব্যবহা কার্যালয় বুলিবার পর করা হইবে।

**पर्वावाफ---"धवानी"** 

## যুক্তি ও জিগির

#### ঐবরদাচরণ গুল

মানুষের ভাল-মন্দ, ন্যায়-অন্যায় বিচারবোধের মৃলে রয়েছে 
যুক্তি। যুগে যুগে যাবা মানুষের মনকে নৃতন নৃতন আলোর
সন্ধান দিয়েছেন, ধর্ম অর্থ কাম মোক্ষ সর্বক্ষেত্রে অগ্রগতিতে
তার পথ নির্দেশ করেছেন, তাঁদের স্বারই প্রেরণা ছিল
যুক্তি, আর আবেদনও ছিল একাস্কভাবে সাধারণ মানবমনের ঐ সহজ যুক্তি-প্রবণ্ডার প্রতি।

যুক্তির প্রতিধানি হচ্ছে জিগির। এতে খুক্তির আলো নাই, আছে শুধু হুকার। জনগণের মন এতে শুধু মোহাক্তরই হয়, বিন্মাত্রও সমুদ্ধ হয় না। জিগিরের বহুল প্রচলনে উন্নতির প্রবাহ বরং ব্যাহতই হয়ে থাকে। এর প্রমাণ ইভিহাসের পাতায় পাতায় পাওয়া বাবে।

প্রাচীন যুগের বেদ-উপনিষদের বাণী বাগযক্তের জিগিরে পর্যবৃদিত হয়েছিল। প্রতিবাদ এনেছিলেন বুদ্ধদেব। পরবন্তী যুগে:জিগিরের প্রতিধ্বনিতে তার বাণীও বিকৃত হতে বেশী দিন লাগে নি। শহরাচার্য্য, শ্রীচৈতন্য স্বার স্বদ্ধেই অল্প-বিশুর একণা থাটে। তবু জিগিরের জয়বাত্রার বিরাম নাই।

কলিকালে নাকি নামেই মুক্তি। নাম ছাড়া অন্য গতি নাই—ত্রিকালদলী শান্ত্রকারের। তিন সত্যি করে বেশ জোরের সঙ্গে একথা বছপুর্বেই বলে গিয়েছেন। শুধু অধ্যাত্মক্ষেই নয়, সম্প্রতি জীবনের সর্বত্র আমরা আবালর্ক্রনিতা অক্ষরে অক্ষরে এই আপ্র বাক্যের সভ্যতা প্রতিপাদনে উঠে-পড়ে লেগে গিয়েছি। কর্মের প্রেরণার হান অধিকার করেছে এখন এদেশে নামের জিগির। সংযম এবং নিষ্ঠা, পরিপ্রশ্ন এবং সেবা ছারা যা অধিগত হবার কথা, আমরা তাকে কেবলমাত্র আবৃত্তি ছারাই আয়ন্ত করবার চেইটার আছি।

শুধু মাত্র আবৃত্তি দার। শান্তবোধ হয় কি না সে বিষয়ে মতভেদের বিশুর অবকাশ রয়েছে। কিন্তু শুধু কথায় বে চিঁড়ে ভেল্পে না এটা সর্ব্ববাদিসমত সত্য। শান্তবোধ স্ক্র ব্যাপার; ভার অভাবের অভ্কার আবৃত্তির ধোঁয়ায় আলোকিত না হলেও হয়ত দরকার মত চাপা দেওয়া বেতেও পারে। চিঁড়ে কিন্তু অতি স্থূল পদার্থ। ওর বেলায় শিশুকেও ফাঁকি দেওয়া সম্ভবণর হয় না।

বর্ত্তমানে আমরা সেই অসাধ্যসাধনেই ব্যাপৃত আছি। নবাৰ্ক্তিত আধীনতার দীপ্তি, তার সহজ প্রেরণা, তার একাশ্র আহ্বান ও উদ্দীপনাকে অনায়াসে ধুমুলোকে নির্বাসিত করে স্বাই আমরা আগে ও পাছে, দক্ষিণে ও বামে দল বেঁধে দলে দলে কেবলমাত্র কথার জােরেই আমাদের অর, বস্তু, বাস্তু, শিক্ষা-আদি করে সমৃদ্য সমস্তারই সমাধানে প্রবৃত্ত হয়েছি। এতে করে কর্মপ্রচেটা থেকে অবচ্ছির হয়ে বৃদ্ধি আমাদের শুধু একাগ্রতাকেই হারায় নি, বেশ খানিকটা তমসাচ্ছয়ও হয়ে পড়েছে। এ অবস্থায় আমাদের কাছে অধর্মই ধর্ম বলে মনে হবে, এতে আশ্রুয় হবার কিছুই নাই।

মাত্র ক্ষেক বছর আগে এই দেশেই ভ জনগণের একাস্ত সাধনায় ও সমবেত শক্তিতে বৈদেশিক সাম্রাজ্ঞাবাদ विश्वष रुष्यित । अग-चात्सानत्त्व चर्चेत-चर्चेत-भिष्ठमी **मिट उक्ति भाषा महमा कान मक्ना होतिए त्रना** পরাজলাভের সঙ্গে সঙ্গে যথনই আমরা রাষ্ট্রের হাতে দেশের গঠনমূলক সমন্ত কর্মের দায়িত্ব নিংশেবে সমর্পণ করে নৈক্র্যা সিধির সাধনায় লেগে গেলাম, সেই দিন থেকেই এই অচল অবস্থার উদ্ভব হয়েছে, একথা নি:সংহাচেই বলা থেতে পারে। বৈদেশিক শাসনের অঞ্জ প্রতিকৃষতা, সহত্র বাধা-বিশত্তি সত্ত্বেও, ভধু জনগণের আগ্রহে, ত্যাগ আর সেবার পাদপীঠের উপর বে সমন্ত জাতীয় প্রতিষ্ঠান গড়ে উঠেছিল, স্বরাজ প্রাপ্তির সলে সঙ্গেই তারা বেন व्यथाक्रमीयात भर्गाय भए जन। हतका-मञ्ज, श्राम-উদ্বোগ-সঙ্গ, তালিমি-সঙ্গ প্রভৃতি অধিল ভারতীয় অমুষ্ঠানগুলি কর্মিগণের ওদাসীন্যে অসংকৃত, অবক্রাড হয়ে কোনমতে বেঁচে মরে রইল।

ধাদের নেতৃত্বের দিকে সমন্ত দেশের দৃষ্টি নিবছ ছিল, তাঁদের অধিকাংশেরই মনের হ্বার খুলে গেল মন্ত্রিসভা, আইনসভার সোনার মন্দিরে। থাদি, কুটীর-শিক্কা, বনিয়াদিশিকা, হরিজন-উন্নয়ন, জনসাধারণের অক্ষরক্রান—এ সব তাদের সহজ এবং স্বাভাবিক পরিবেশ থেকে অপস্ত হয়ে প্রবেশ করল সরকারী দপ্তরে। ভাড়াটে ঘোড়া দিয়ে শ্রীশীজগন্নাথদেবের রথ টানাবার ব্যবস্থাও বোধ করি এর চেয়ে খুব বেনী বিশায়কর ব্যাপার হ'ত না!

ভারতের বিপুল গণ-আন্দোলনের বিনি ছিলেন ভঙ্গীরণ ভার প্রতিটি পদক্ষেপ যুক্তি ছারা নিয়ন্তিত হ'ত। অহেতুকী ভাবপ্রবণতা কখনও তাঁর মনকে আবিট, দৃষ্টিকে আচ্ছন্ন করতে পারে নি। ভক্তপণের জিপির তাঁর যুক্তিকে ছাড়িরে যাবার উপক্রম করবার সম্ভাবনা মাত্রেই ভিনি উম্বভ আন্দোলনের গতিবেগ পুন:পুন: প্রশমিত করতে বিন্দুমাত্রও ইতন্তত: করেননি। ভাবোরাত্ত জনতাকে তিনি বারদার কর্মের পথে মৃক্তির সন্ধান দিয়েছেন। অবসাদগ্রত কর্মদলিগণকে তিনি নিজ আচরণ দারা কর্মের পথে অবিচলিত রেখেছেন। স্বাধীনতার অর্থ ছিল তাঁর কাছে দেবার পূর্ণ অধিকার। জীবন পণ করে তিনি সারা ভারতের জন্য দে অধিকার অর্জ্জন করে গেছেন। কি সন্থাবহার করেছে ভারত তার ?

বছ শতানীর পরাধীনতার ফলে বহু আবর্জনা এদেশের ঘরে বাইরে জমেছে। এক দিকে বর্ণজ্ঞানহীন পলীবাসী জনসাধারণের বিরাট অঞ্চতা, আর এক দিকে বৈদেশিক শिकाय अভिমানী मुद्देश्य भहतवानीत वृद्धित विकृष्ठि, দেশাঅবোধের অভাব। এ ছইটি পরিস্থিতিই অভাস্ত অবাঞ্নীয় সন্দেহ নাই। কিন্ধ উভয়ের সমন্তরে এ দেশে रा ममला । महारनात स्रष्टि श्वाह. जामात्मत नाधीनजा লাভের পরমূহুর্ত্ত থেকে এ পর্যান্ত, ভার তুলনা বোধ করি পৃথিবীর ইতিহাদে তুর্বভ। শোনা যায়, চীনদেশে নাকি অল্প কিছু দিন আপেও বণ-তর্মদ নেতারা অল্পজে স্থ্যক্ষিত, প্রায় অন্নবস্ত্র বিবর্জিত, বিপুল বাহিনী নিয়ে সমন্ত দেশটা তোলপাড করে বেডাতেন, নিজ নিজ প্রাধান্য স্থাপন করবার জনো। ব্যাপার্টা নিতান্ত অশান্তিকর हरम् भारि के किन हिन ना। आत. अ त्यार्गत अपूर्ध ওর ভেতবেই হয়ত ছিল। আমাদের সমস্যা কিন্তু ওর চেয়ে লক অণে ভটিল।

দলাদলির জিগিরে স্বাধীন ভারত আত্র প্রপীড়িত। কয়েকটা বছর আগেই কিন্তু পরাধীন ভারতের আপামর সাধারণ সমবেত হয়েছিল একচ্চত্র জাতীয় মহাসভার পতাকাতলে—স্বাধীনতার সংগ্রামে। ভাতীয় মহাসভা ছিল জাতির স্বাধীনতা-স্পৃহার মুঠ্ন প্রতীক। সেই স্পৃহা প্রয়াসশুন্য মিথাচারের জিগিরে পরিণত হতে পারে নি. তার কারণ জাতীয় আন্দোলনের উত্তেজনার সঙ্গে ওত:-প্রোভভাবে গাঁথা ছিল ভাগে, সেবা ও গঠনমূলক কর্মের তপস্তা। জাতীয় মহাসভার শক্তির উৎস ছিল সমস্ত জাতির সমবেত সমর্থন। ঐ সমর্থন জিপিবের হাওয়ায় **চড়ে** जारम नि. এरमिंहन कर्म्यत वाहरन। याधीनछा অর্কিত হয়েছে; কিছ দেই আরক কর্মের রথচক্র যেন কুরুক্তেরে বণফ্লান্ড কর্ণের র্থচক্রের মত্ট নিশ্চল হয়ে পড়েছে। আর এতে ববেই নানারকম সমস্তার স্থা इटबट्ट ।

স্বাজ-প্রাপ্তির পরে নবলন্ধ বাষ্ট্রবন্ধের বাহিবে, ভারভের

বিবাট কর্মকেত্রে ভারতীয় জাতীয় মহাসভার নেতমগুলীর যে কর্মনৈথিন্য তার প্রতিক্রিয়া এক দিকে বেমন সমগ্র জাতির মনোজগতে বিভ্রাম্ভি এনেচে, অপর দিকে তেমনি মহাসভারও প্রচর স্বাস্থাহানি ঘটিয়েছে। যে মহাপুরুষের অতক্রিত নেততে জাতীয় মহাসভার কর্ণধারণণ লোকসেবা কর্ম্মে উৎসর্গীকৃত-প্রাণ হয়েছিলেন, তাঁর তিরোভাবের সঙ্গে সক্ষে দেখতে দেখতে তাঁদের অনেকেবট কর্মোৎসাচ এ मिक यम मनोक्छ हत्य या**राक मानम । ता**ं हयू, कांत्मव অফাতসারেই অবস্থাটা দাঁড়াল 'বামুন গেল ঘর, লাকল তুলে धव' कळकी। मार्डे धवरनव । औरमव मर्था याचा वाहेरासव নানা বিভাগের নিয়ামক চলেন তাঁদের সমগ্র কর্মণক্তি এবং মনোযোগ সম্ভবত: প্রধাবিত হ'ল আমলাতন্ত্রের বশীকরণে আর প্রজাতন্ত্রের সম্প্রতিষ্ঠায়। আর সরকারী দপ্তরের বাইবে যারা রইলেন তাঁলের হাতে স্থপবিক্লিত গঠন-কর্মসূচী এবং সম্মথে সন্থ বাজনৈতিক পরাধীনতা-পাশমক ভারতের স্থবিশাল কর্মজ্মি থাকা সত্তেও তাঁরা ন যথৌ ন তন্ত্রে অবস্থায় হয় সতফনয়নে, নয় সমালোচকের দ্বষ্টি নিয়ে তাকিয়ে রুইলেন —মিরিসভা, আইনসভা প্রভতি প্রতিষ্ঠানের দিকে, মিশ্র মনোভাব নিয়ে।

সাতচল্লিশ সালের মার্চ্চ মাসে এলাহাবাদ নগরে ভারতের বিভিন্ন কংগ্রেস-কমিটির সভাপতি এবং সম্পাদক-গণের সম্মেলনে বে গঠনকর্মস্টী গৃহীত হয়ে ওয়ার্কিং কমিটির অছমোদন পেয়েছিল তাকে কার্য্যে পরিণত করবার যদি আন্তরিক চেষ্টা দেশে হ'ত, তা হলে স্বল্প সময়ের মধ্যেই দেশের হাওয়া বদলে বেত, এবং অনেক তুর্গতির হাত থেকে দেশ রেহাই পেত। কিন্তু তা হয় নি। যার স্থান হওয়া উচিত ছিল সবার আগে তাই রইল নিতান্ত কোণঠাসা হয়ে সবার দৃষ্টির অগোচরে। স্থানীনতা আর সাম্প্রদায়িকতার জিসিরে দেশের আকাশ বাতাস আন্তর্ম হয়ে গেল, আর নেত্বর্গের দৃষ্টি গ্রামে জনসাধারণের দিকে প্রসাবিত না হয়ে নিবন্ধ রইল নগরীর বিধান সভায়, আইনসভায়, মন্ত্রণাসভায়। সেবা ও কর্ম্যজ্ঞের স্থান নিঃশেবে-অধিকার করল জিসির ও জটলা।

এমন ধারা ব্যাপক নৈছম্মের ফল বে কি হতে পারে তাত গীতাকার বহুপুর্কেই শীভগবানের ক্রবানিতে বলে গিয়েছেন:

> উৎদীবেগুরিমে লোকা ন কুর্ব্যাং কর্ম্ম চেদ্রন্থ। সক্ষয়ত কর্জা ভাদ্পক্তামিশাঃ প্রকাং।

প্রজাব তৃঃথ বে আন্ধ চরমে উঠেছে সে বিষয়ে আশা করি তৃই মত হবার কোনোই আশহা নাই। সহরের শোভাষাত্রাও বেমন সাড়ম্ম চলেছে তাতে তাও ফে

কারও দৃষ্টি এড়িয়ে বাবে, এমন সম্ভাবনা খুবই কম। मवात जारा हालाह नामिताही निया बाडीय त्नवकमञ्च সলে সলে বোমা বালব নিয়ে ক্য়ানিষ্ট পার্টি, আরু স্বার পিচনে রয়েছে সর্বোদয়ের শিঙা হাতে ক্রব-মজর-প্রকা পার্টি। এই সব সভ্য-সভা, ব্রক-পার্টির যারা অগ্রনী তাদের অনেকেট কোনো-না-কোনো সময়ে জাতীয় মহাসভায় বিশিষ্ট স্থান অধিকার করেই ভিলেন। বর্ষমানে এঁদের জিগির আলাদা আলাদা, রীতিনীতি বথেষ্ট স্থিতিত্ব পক কিন্তু লক্ষা এক। সেটা হ'ল জাতীয় মহাসভার মোহ থেকে দেশকে মক্ত করা, জাতীয় মহাসভার হাত থেকে রাসীয় শাসন্মন্ত নিজেদের হাতে নেওয়া। এ কাজে শোনা যায় তাঁরো নাকি পরস্পারের সঙ্গে হাত মেলাডেও প্রস্তুত হয়েছেন। দেশের রাজনৈতিক অভিব্যক্তিতে এ এক নতন অধ্যায়, দলেহ নাই। সিন্ধিয়া-ভেঁপেলা:-গায়কোয়ার-হোলকার মহারাজদের যদি অষ্টাদশ শতাকীতে এমনধারা মুবৃদ্ধি হ'ত তা হলে আৰু বিংশ শতাদীতে আমাদের যে এ দশা হ'ত না এ কথা নি:সংখ্যেচেই বলা চলে।

ব্ধন বহি:শক্তব গ্রাস থেকে দেশকে বক্ষা করবার জনো দংহতির একান্ত প্রয়োজন ভিল তথন আমাদের সেই সব নেতারা পরস্পর হানাহানিতে শক্তিক্ষয় করে বিদেশী শাসনকে এদেশে কায়েম করেছিলেন। তারও আগে বিদেশী ৰখন স্বপ্নেও এ দেশে সামাজ্য স্থাপনের কথা ভাবে নি. তথন এই বাংলা দেশেরই ধনিক আর দৈনিকে মিলে তলে দিয়েছিল দেশটাকে বিদেশী বলিকের হাতে। রাষ্ট্রনৈতিক ব্যাপারে অকাজে একতা আর কাজের বেলায় षरिनत्कात मुहोस युर्ग युर्ग षामात्मत हे जिहारमत : शृक्षीरक क्लक्कि करवरह। जाव जाव स्मर्ट मक्के मगरव जरेनरकाव মাঝে ঐক্য স্বত:ই আত্মপ্রকাশ করে। জাতির বিপদে দলাদলি ভূলে তারা স্বাই কাঁধে কাঁধ মিলিয়ে দাঁড়ায়। षांभारमञ्ज रमरण अभनेषि कमाहि हरग्रह ; षात्र अत শরীত দৃষ্টাস্ক রয়েছে আমাদের ইতিহাসে প্রচর। স্বাধীন বভের বর্ত্তমান রাজনৈতিক পরিস্থিতি দেখে মনে হয় ভহাস ভার পুরাতন অভিশাপের পুনরাবৃত্তি করভেই আবার চলেছে।

দেশের বৃহত্তর স্বার্থের পরিপ্রেক্ষিতে গণদেবতার
াখন এ দেশে স্বেমাত্র স্কু হয়েছে। এ পথে এখনও
াদের বহুদ্র অগ্রসর হতে হবে। পথের সন্ধান যিনি
য়েছেন তিনি পুন: পুন: দেখিয়েছেন ও পথ পল্লী অভিন, দিলী অভিমুখীন আদে নয়। ঐ পথেই আসবে
তির প্রকৃত কল্যাণ। বতদিন না জনমত জাগ্রত হবে
দিন পুরাতন অভিশাপের ভূত, যা কি না এদেশে

পাঠান, মোগল, ইংরেজ একে একে স্বাইকে হাডছানি
দিয়ে ডেকে এনেছিল, সে আমাদের স্কল্প থেকে এক পাও
নড়বে না—এ স্থনিশ্চিত। এ ভূত জিগিরে বাবে না।
ফাকা আওয়াকে পাখী ত দ্রস্থান, গাছের পাডাও পড়ে
না—নড়েও না। আওয়াক হাওয়ায় মিলিয়ে যায়, বেথে
যায় খানিকটা ধোঁষা; বোঁষায় ধোঁষায় ভারতের রাজনৈতিক গগন আজ সমাজ্জা।

O

কথা উঠেতে ভাবতের পার্লামেন্ট এবং রাষ্ট্রীয় ব্যবস্থাপক সভাগুলিতে গণতন্ত্র সার্থক হয়ে উঠতে পারছে না এবং তার কারণ হচ্ছে সর্বত্র কংগ্রেণী সদক্ষপণের আত্যন্তিক সংখ্যাধিক্য। সংখ্যাধিক্যের কথাটা হয়ত ঠিক। কিন্তু তা না হলেও গণতন্ত্র সাথক হবার সম্ভাবনা ছিল না। তন্ত্র আচে, তন্ত্রধারীও আচে এদেশে বহু, কিন্তু গণকোধায় গ্রাধানা থাকলে মাথাধ্বার প্রশ্নই ওঠে না।

দেশে সভিক্লাবের পণভন্তের প্রতিষ্ঠা বারা চান, প্রাথমিক কাজ তাঁদের পালামেন্টেও নয়, ব্যবস্থাপক সভাতেও নয়। দেশের লক্ষ লক্ষ গ্রাম হ'ল তাঁদের কর্মানক্ষে । কুমোর বথন প্রতিমা গড়ে, তথন প্রথমে গড়ে ধড়, ভারণর করে একমেটে, পরে দোমেটে, সর্বাশেষে মৃত্ত বসায়। পালামেন্ট, আইনসভা এ সব হ'ল গণভন্তের মৃত্ত। ধড়ের উপরেই মৃত্তের প্রতিষ্ঠা। মৃত্ত থেকে ধীরেহুন্থে ধড় বেকলে, সে ইরাণা রূপকথা বতই বিশ্বয়কর হোক না, নিভান্ত অচল হবে ভাতে সন্দেহমাত্র নাই। অপরপক্ষে, গণদেবভা যদি উদ্ব হন, তবে তাঁর মৃত্ত বেষনই হোক, জাতির সিদ্ধির পথ থাকবে অবারিত। কাজেই স্বাধীন ভারতের জাতীয় জীবনের বর্ত্তমান অবস্থায় দেশ-সেবকের প্রধান কাজই হবে জনমতের উদ্বোধন।

এ কাজে উত্তেজনার অবকাশ নাই। দলাদলির আশকা নাই। জাতীয় মহাসভা যথন জাতির মৃক্তির লক্ষ্য সামনে রেখে, শত বাধা বিপত্তি অতিক্রম করে, শত নির্বাতন সন্থ করে জাতির মনকে স্বাধীনতা সমরে একাগ্র করে তুলছিল, তথন কংগ্রেস একটা দল ছিল না। কংগ্রেসের যারা প্রতিষ্ঠা করেছিলেন, জীবনপাত করে যারা এতে শক্তি সঞ্চার করেছেন, তারা কোনো দলেরইছিলেন না। কংগ্রেসের মূলমন্ত্র, আদর্শ, কর্মপদ্ধতি, এক কথায় এর উদ্দেশ্র এবং বিধেয় ভারতের সার্ব্বজনীন। বিদেশী শাসনের ভেদনীতির অক্তম্ম কৃটকৌশলও সে সার্বজনীনতা খুব বেশীক্ষা করতে পারে নাই। আর, আক্র বথন স্বাধীন ভারতের অগণিত নরনারী মৃক্তির আলোকের অংশ পারার জন্ম অপেক্সমান, বধন যুগ যুগ আলোকের অংশ পারার জন্ম অপেক্সমান, বধন যুগ যুগ

ব্যাপী দারিস্ত্রা.ও অশিকা, অস্বাস্থ্য ও কুসংস্কারের বিরুদ্ধে জাতির সমবেত শক্তির বিজয় অভিবানের মাহেক্রকণ সমাগত, তথন কংগ্রেসের সেই সার্ব্যজনীনতা বিধবন্ত হতে চলেছে তারই বহু বিশিষ্ট কন্মীর কথায় ও কাজে।

সম্প্রতি কংগ্রেদের দলে সম্বন্ধ বিচ্ছিন্ন করে, কায়মনো-বাক্যে এঁর। কংগ্রেদের অহিত্যাধনে তৎপর হয়েছেন। স্থানিকাল স্থানেশ দেবায় থারা ছিলেন সতীর্থ, থারা ছিলেন গুরু ভাই, স্থানেশপ্রেমের অমৃত ধারায় পুত হয়ে থারা বৈদেশিক রাজবোষ অগ্রাহ্ম করে এক দলে কারাবরণ, স্থান্থ নির্বাতন সহ্য করেছেন, আল জারাই অবস্থার পরিবর্ত্তনে নিজ রোষ সম্বরণ করতে পারছেন না। তাঁদের সাম্প্রতিক ভাষণে ও আচরণে সর্বাত্র তাঁরা তাঁদের এই নবজাত জ্যোধের নগ্র পরিচয় দিচ্ছেন। ও-সবে যুক্তি এত কম আর জিগির এত বেশী বে স্থভাবতই মনে হয় যুক্তির অভাবকে জিগিরের ছকার দিয়েই তাঁরা পূরণ করছেন।

কিছ কেন এই কোধ! শাস্ত্রে বলে কামনা থেকেই কোধের উৎপত্তি। কিসের কামনা প্রতিহত হয়ে, কোন বিষয়ে নিরাশ হয়ে তাঁলের এই ক্রোধ? দেশমাতৃকার সেবাই বলি তাঁলের কাম্য, তার ত সহস্র পথ খোলা ছিল। আজ চার বছর হতে চলেছে, বিদেশী শাসক আমালের পথের দাবী মেনে নিয়ে সরে দাঁড়িয়েছে, আমরা সে পথে কত্টুকু অগ্রসর হয়েছি ?

কামনা থেকে কোধ, কোধ থেকে সম্মোহ আর সম্মোহ থেকে জন্ম স্বভিবিভ্রম। মোহের বশেই আমর। মনে করি শাসনব্যের স্বষ্ঠু পরিচালনা আর ব্যবস্থাপক সভার কৃষ্ণ ভর্কবিভর্ক দিয়ে দেশের ক্রভ উন্নতি অভি সহজেই সম্ভব হবে। অর্থাৎ কিনা, ওদের বদলে আমরা বদি ওখানে বাই ভবে রাভারাভি দেশের হালচাল, রীভিনীভি দরকার মত রদবদল করে সব সমস্তারই স্মাধান অচিরে করে ক্ষেলতে পারি!

বহুকালের পরাধীনতার ফলে রাজ্ঞশক্তির সার্বভৌমিক প্রভাব-প্রতিপত্তি সম্বন্ধে আমাদের মনে একটা অন্ধ বিশাস স্বতঃই জন্মে গেছে। আমরা মনে করি, রাজ। বখন দণ্ড-মুণ্ডের কর্ত্তা তখন দেশের ভাল-মন্দ, উন্নতি-অবনতি তাঁরই ইচ্ছার, ইলিতে বা আদেশে সম্ভব। এমনতর ধারণার কোনোই ভিত্তি নাই। ওরকমটা বদি সভ্যিই হ'ত তা হলে স্কনীর্ঘ মুগলমান রাজস্বের পরে এ দেশে একজনও হিন্দু থাকত কি না সম্পেহ। প্রভাব উন্নতি-অবনতি বভটা না রাজার উপরে নির্ভর করে, রাজার উন্নতি অবনতি ভার চেয়ে চের বেশী স্থনিশ্চিত ভাবে প্রজার উপরে নির্ভর করে। গণতান্ত্রিক রাষ্ট্রশক্তির সম্বন্ধেও এ কথা আরো বেশী প্রবোজ্য। কাজেই থারা মনে করেন রাষ্ট্রশক্তি অধিগত হলেই দেশের সর্বাদীন উন্নতির রথ 'তৃই দণ্ডে চলে বাবে ছ'মাসের পথ' তাঁরা নিতান্তই ভল ধারণা পোবণ করেন।

গণতত্ত্বে বাষ্ট্রশক্তি প্রজাশক্তিরই প্রতীক। পার্লামেন্ট বা ব্যবস্থাপক সভার সদক্ষপ্রজার প্রতিনিধি; জনসাধারণের সমবেত ইচ্ছাকে ব্যবস্থাপক সভার ব্যক্ত করাই তাঁর কাজ। জনসাধারণের নিয়ন্তা, প্রভু বা গুরু হিসাবে সেধানে তিনি প্রেরিত হন না। জনসাধারণ তাঁর ইচ্ছাতে পরিচালিত হবে না, তিনিই জনসাধারণের ইচ্ছা যাতে কার্য্যে পরিণত হয় ব্যবস্থাপক সভায় তার ব্যবস্থা করবেন। সেই উদ্দেশ্যেই জনসাধারণ তাঁকে সেথানে পাঠায়। এর ব্যতিক্রম হলে নির্ব্বাচকমগুলীর কাছে তাঁকে জ্বাবদিহি করতে হয়।

কাজেই দেশের শাসন যন্ত্রই হোক, অথবা পার্লামেন্ট বা ব্যবস্থাপক সভাই হোক, সব প্রতিষ্ঠানেরই কার্যকারিতা এবং সম্ভাবনা স্থনিদ্ধিষ্ট ও সীমাবদ্ধ। যে-কোনো গণ-তাত্ত্বিক দেশের ইতিহাস পর্যালোচনা করলেই এ কথা স্থাপ্ট হবে যে প্রজার শক্তিতেই দেশ বড় হয়েছে, আর তার পার্লামেন্ট শক্তিমান হয়েছে।

মন্ত্রিসভা, পার্লামেন্ট, ব্যবস্থাপক সভার মহিমায় মোহাচ্ছর হয়ে বাঁদের স্থৃতিবিভ্রম ঘটেছে, ২৮শে এপ্রিল ১৯৪৬-এর "হরিজন পত্রিকায়" প্রকাশিত মহাত্মান্তীর স্থাক্ষরিত বাণী থেকে নীচের ক'টি পংক্তি তাদের উপহার দিচ্ছি:

"নগতে বাহা ঘটতেছে তাহা বদি আমরা ভাল করিয়া দেখি, তবে বুঝিতে পারিব বে আইনসভার বাহিরে বাহার। থাকে তাহারাই দেশকে সত্য সভাই চালার। বদি তাহা না হইত, তবে প্রতি দেশের শাসনবত্র আগু অচল হইরা বাইত; কারণ দেশের জীবনকে পরিচালিত করার কাল হবিশাল এবং তাহার তুলনার আইনসভার শক্তি নিভান্ত নগণ্য। টিক কথা হইল এই বে, সমুদ্রের সহিত জলবিন্দুর বে সম্পর্ক, আভীয় জীবনের সহিত পালামেণ্টের সম্পর্ক তাহার চেরে বেশী নর।" (ইরেজীর অমুবাদ। নিউদিলা, ২০-৪০৩)

9

ঐ বে কথা উঠেছে, পার্লামেণ্টে বলিষ্ঠ একটি বিরুদ্ধ দল
না থাকলে গণতত্ব ঠিকমত কাল করবে না ওর মধ্যে যুক্তির
চাইতে জিগির আছে ঢের বেলী। আমরা জানি, গিরিজায়ার ঝাটা পিঠে না পড়লে দিয়িজয়ের মনে ভালবাশার
আমেল কমত না,—ভাই বলে সর্ব্বভ্রই প্রশক্ষের পক্ষে
সম্মার্ক্তনী অপরিহার্যা মনে করা যুক্তিসক্ষত হবে না
নিশ্চয়ই।

দেশপ্রেমের একটা লঘিষ্ট সাধারণ চেতনা, দেশের ঐডিজ্, বৈশিষ্ট্য, লক্ষ্য সম্বন্ধে একটা স্বাভাবিক সম্লমবোধ, এক কণায় জাতীয় বিবেকবৃদ্ধির উদ্বেষ না হলে তথাকণিত গণতান্ধিক দলাদনিতে লাভের চাইতে আমাদের লোকসানই
হবে বেশী। উন্নত গণতান্ত্রিক দেশে শত অনৈক্যের মধ্যেও
বে জাতীয় স্বার্থগত একটা সহজ ঐক্যবোধ আছে,
আমাদের দেশে এখন সেটা সবেমাত্র গড়ে উঠছে। সেই
ঐক্যবোধই হবে জাতির স্বাধীনতার ভিত্তিভূমি। তার
উপরেই হবে জাতির সর্বাদীণ উন্নতির প্রতিষ্ঠা। দেশের
যারা নেতা, দেশসেবাকে জীবনের ব্রত হিসাবে নেবার
অধিকার এবং অবসর যাদের আছে, তাঁদের কাজ হবে
স্বাধীনতার সেই পাদপীঠকে স্বদ্ধ করা, সম্মত করা। আর
তাঁদের পক্ষে অকাজ হবে এমন কিছু করা বাতে করে
জাতির বিবেক বিভ্রাম্ভ হয়ে সেই ভিত্তিমূল শিধিল হয়ে
আসে।

যুগব্যাপী পরাণীনভায় বে স্কীর্ণ রাজনৈতিক মনোভাবে আমর। অভ্যন্ত হয়েছি, স্বাধীনতা প্রাপ্তির সঙ্গে সঙ্গে তা নিভাস্কই বাতিল হয়ে গেছে। তবু অভ্যাদের বলে তাই আকড়ে ধরে আমরা আছি। লোকায়ন্ত শাসনের আহগত্য কায়মনোবাক্যে মেনে নিয়ে, স্বাধীনভার দায়িত্ব এবং শৃদ্ধলাবোধকে আমরা সহজভাবে অস্পাকৃত করতে যেন পারছিনে। ফলে, একদিকে বেমন নিরঙ্গুল সমালোচনার প্রোত দেশের সর্বাত্ত বয়ে চলেছে, অন্যদিকে গঠনাত্মক সহবোগিতারন্ত তেমনি অভাব হয়েছে। পরাধীন ভারতের অসহবোগের জের বেন স্বাধীন ভারতে এসে আজন্ত শেষ হয়নি। আর এতে করে প্রভিপদে আমাদের অগ্রগতি ব্যাহত হচ্ছে।

স্বাধীন ভারতের অগ্নগতির মন্বতার বারা অসহিষ্ণ্ হয়ে, আগামী নির্বাচনে ব্যবস্থাপক সভায় বা পার্লামেন্টে তাঁদের মত উষ্ণ মনোভাবাপন লোক বাতে সমধিক সংখ্যার প্রবেশনাভ করতে পারে তারই সাধনায় তৎপর হয়েছেন, তাঁরা খুব সম্ভব মনে করেছেন সোয়ার বদ্লালেই আজকার বেতে। ঘোড়া কাল পক্ষীরাজ ঘোড়ায় রূপাস্তরিত হবে। কিন্তু তা হয় না. হবেও না।

আর, উগ্র সাম্যবাদীর দল বাঁরা বোমা-বাল্ব দিয়ে কেলাফতে করবার চেষ্টার আছেন, তাঁদের উদ্দেশ্য মহৎ সন্দেহ নাই; তবে উপায়টা বে তাঁদের সত্পায় নয় তা ত তাঁরা নিজেরাই বলেন। আমরা তর্বলি অমন সরাসরি উপায়ে স্থায়ী উন্নতি অসন্তব। ও উপায় বাইবেলের আদিকাণ্ডে পৃথীব্যাপী প্লাবনের অমুপান দিয়ে ভগবান নিজেই একবার পরধ করেছিলেন; কুফকেত্রের যুদ্ধেও ধর্মরাজ্য স্থাপনের চেষ্টায় কতকটা ঐ রকমই তিনি করেছিলেন যুগোপবোগী উপকরণ দিয়ে। অমুষ্ঠানের ক্রটি উভয়জ্ব কোথাওই হয়নি। কিছু ফল বা হয়েছে, তা ত দেখতেই পাওয়া বাচ্ছে।

অসহিষ্ঠা ও অন্ধারতার বশে দেশের যত সমস্তা, যত 
হর্ভোগ সবকিছুর দায়িত্ব অপরের ঘাড়ে চাপিয়ে দিলে 
ধানিকটা মিথা আত্মপ্রসাদ পাওয়া গেলেও যেতে পারে, 
কিন্তু তাতে করে হুর্ভোগের বোঝা আমাদের এতটুকুও 
হালকা হবে না, সমস্তাও সমাধানের পথে এক পদও অগ্রসর 
হবে না। বরং বোঝা আমাদের আরও ভারী বোধ হবে, 
সমস্তাও আরও নৃতন নৃতন আকারে দেখা দেবে।

যেখানে রোগ, চিকিৎসাও সেইখানেই প্রয়োজন।
সত্যিই দেশের ক্রত অগ্রগতি বাঁদের লক্ষ্য হবে, তাঁরা
ব্যবস্থাপক সভায় বা পার্লামেণ্টে 'বলিষ্ঠ বিরুদ্ধ দল' গঠনের
নিফল চেটায় মন না দিয়ে, ও সব প্রতিষ্ঠানের ক্ষ্ম গণ্ডীর
বাইবে, গঠন কর্ম্মের ভিত্তির উপরে, বিশাল ভারতের বুকে
কোটি কোটি নর-নারী নিয়ে বিশাল ভারতীয় সেবাদল
গঠনকার্য্যে মনোনিবেশ করলে জনেক সমস্তার উপরেই
সমাধানের আলোক পড়বে—এ অতি স্থানিচিত। আর,
স্করমপ্যস্ত ধর্মস্য ভায়তে মহতো ভয়াৎ!

### কবিতার **চুঃখ** ঞ্জীকুমুদরঞ্জন মল্লিক

বটি মাস্কবের স্থপ ত্প ভাগী,
বাস করি এক ঘরে,
কিন্তু আমি তো ভূগিতে পারিনে
প্লীহা কি কম্পদ্ধরে।
দেখি ভাহাদের অন্তক্তর,
নানা দিকে কভি-ক্ষয়,
কিন্তু ভাদের দৈনন্দিন
দিই না কো পরিচয়।

তাতে কি দাৰ্থকতা,
হাণাইয়া আমি বদি তাহাদের
কহি হাণানীর কথা 

২

দাবানলে মৃগ-মবকের কথা
বলে না'ক মৃগনাভি,
মৃক্তা করে না লবণ-জনের
প্রতিনিধিত্ব দাবি.

রৌত্রও আছে, জনকণা আছে, मत्मर नारे ष्यू, তবু মেঘ নয়, রৌদ্রও নয়, রামধন্ত, রামধন্ত। পক্ষেতে বয় বোঁটা, कि लाय. यनि ना द्राट भक्रा क পঙ্কের ছিটা-ফোঁটা গ

হীরক বাবে না আবেইনীর কয়লা কালিমা লেশ, অক্থিত থাকে খনির আধার. খনি-শ্রমিকের ক্রেশ. সাপের মাথার মাণিক—ভাচারো আনন্দ দিতে সাধ, দেও দেয় নাকো বিষদং টার গরলের সংবাদ। 명을 비행 캠프-শমকদের 'ভঙের' কাহিনী করে না তো নিবেদন গ

'চোক গেল' বলে পাপিয়া ফুকারে, দেটি হয় স্থীত. কৃষিত ব্যাত্র গর্জন করে সেটা ভার বিপরীত। অতিক্রম যে করে স্কীত সব বাতনার সীমা, ছলে ও হুরে রাজে ভার চির বাস্থী পূৰ্ণিমা। ভিক্তা বহে দুর গীত যে সাগর-উন্থিত স্থা সব ভার স্মধুর।

এসেছে দাকণ মন্তর. মান্থৰ করিবে কি ? লাভ ভো কিছুই হবে না, করিয়া • মনকে হতপ্ৰী ? কথাকর নাম না দিয়া টাদকে विन वना दश '(बाहि', পড়িবে কি একমুঠা বেশী ভাত তাতে স্থাতের পেটে গ

কে হবে ভাহাতে ধনী ? थाल मध यमि धवागात्वव স্তম্মার আবরণী।

অধিকারী ভেদ সবেতেই আছে. কি বলিবে মহাজনে ? কাশ্মীরী শাল, না বুনে, শিল্পী 'গামছা'ই যদি বোনে ? যারা অভ্নন্তা 'মাচরা' গডেছে. খাতে যারা চরাচরে. কলালন্দ্রীই কাঁদিবে-তাহারা यि अध '(ए कि' शए । বাডিবে বিডম্বন, मकन मिथनी माउन स्ट्रेल উপবাসী রবে মন।

ভেব না নেহাৎ উদাসীন আমি. নাহিক সহাত্মভৃতি, यमि ना कनन कनाईटल भावि. স্থোগাতে না পারি ধতি। আমি ভোমাদেরি আশা-আকাজ্ঞ। বেদনার কথা কই. স্তরপুরে তাহ। পাঠাবার ভধ যোগ্য করিয়া লই। বুঝিতে করো না ভুল, वानी-अर्फना इव नाटका निया भावद्वत वर्ख्न ।

ь

যুগ-উপযোগী হতে কহ মোরে ভাতে যোর কচি নাই. সব দেশ, কাল, জাতির আমি বে মধ্যাদা পেতে চাই। ধনিক, বণিক, শ্ৰমিক ক্ষণিক, কারো প্রীতিকামী নহি, আমি জগতের যজের চক দেবভার তরে বহি। আর কিছু নাহি পারি, আমি তোমাদিকে করি আনন্দ অমৃতের অধিকারী।

# শিক্ষা ও মনুষ্যত্ব

## শ্রীহরিহর শেঠ

মানবদেহ ধারণ করিয়া সর্বাপেকা যাহ। আবশুক ভাহা শিক্ষাও মন্ত্ৰাত মঞ্জিত জীবনলাভ করা। মধ্যে যে গুৰুত্ব নিহিত এবং তাহা কাহার কতট। আয়ত্তের মধ্যে আছে তাহার পরিমাপক কোন আখ্যা নাই, মাপিয়া দেখিবার কোন ষদ্ধ বা পদা নাই। যেমন বিভার মাপ-কাঠি এখন মুখাত: বিশ্ববিদ্যালয়ের ডিগ্রী, মহুধাত্বের মাপকাঠি তেমন কিছু নাই। তবে এখন মামুষের পরিচয় অনেকটা ভাহার ধনসম্পদের বহি:প্রকাশে। আর ভাহার मत्क यमि मः रागा बारक विश्वविद्यानस्य कि धी. जाहा इहेरन সোনায় সোহাগা। অতি অলকেত্র ভিন্ন সাধারণত: দেখা যায়, ধনশালী বাজিগণই বাই ও সমাজের প্রায় সকল বিভাগেই প্রাধান্ত পাইয়া থাকেন, আর তাঁহারাই প্রধানত: মানব-শিকিত ও মহুয়াত্মপার বাকি যে সমাজে প্রথাত। कांशाम्ब माथा नारे वा थाकिए भारतन ना अक्षा क्रिस বলিবেন না। তঃখের বিষয়, সে জ্ঞান ও মহয়ত্ব বা মানবভার মর্বাদা আৰু কোথায়। মহয়ত্বসপার বিভাগীন মানুষ সাধারণের ভাষা আকর্ষণ করিতে পারিয়াছেন এমন দৌ ভাগ্যবান অধুনা কয়জনকে দেখিতে পাওয়া বার ?

মহয়ত্বা মানবতাবিহীন 'মহুষ্য' নামধারা জীবের সজে বনচারী পশুর খব বেশী পার্থকা নাই। মাজুবই একমাত্র জীব বাহারা সমাজবন্ধ হইয়া একত্র বসবাস করিয়া থাকে। দেখানে মানবোচিত ধর্ম লইয়া জীবনবাপন কবিতেই হয়। অন্তানহিত স্থপ্ত প্রতিভাকে বিকশিত ক্রিয়া জগতের কলাণে বত হওয়াও মাহুবের ধর্ম। সেই पश्च আমার। নানাবিষয়ক বিদারে সাধনা করিয়া থাকি। বিষ্ণাব প্ৰভাবে জগতের বহু উপকাৰ সাধিত হইয়া থাকে সতা। আৰু বিজ্ঞানবলেই জগতের এই রূপ-অসম্ভব বলিয়া এতাবং যাতা কল্লনার অভীত চিল তাহা এখন প্রতাক সভো পরিণত হুইয়াছে। এসব যে বিভাৱ প্রভাবেই, একথা কে অস্বীকার করিতে পারেন ? কিন্তু यानवजीवत्न এই मव ऋन-करनजी विला है य अधू याञ्चरक পূর্ণাত্ব করিতে পারে ভাহা নহে। বিহান ব্যক্তিমাত্রকেই আমবা সাধারণত: শিক্ষিত বলিয়া থাকি। বিহান ব্যক্তি. यिनि य दा विषय विषा अर्थ्यन कविशाहिन मिटे मिटे বিষয়ে তিনি সমাক্ জ্ঞানসম্পন্ন হইতে পাবেন, কিছ শাধারণভাবে শিক্ষিত বলিতে বাহা বুঝায় তিনি বে তাহা हरेदनरे अपन क्वान कथा नारे। वर्खमातन विद्यार्कतनद कना বিশ্ববিদ্যালয়ের আশ্রয় গ্রহণই একমাত্র পথ। তথা হইতে জ্ঞান, বিজ্ঞান, ইতিহাস, ভূগোল, দর্শন প্রভৃতিতে জ্ঞানক কিছু লাভ হয় সত্য। বিদ্যালোচনা জ্ঞানলাভের সহায়ক। কিছু সমাজে থাকিয়া স্বভূতাবে জীবন্যাপনের জম্ম তাহাই বথেষ্ট নহে। সেজন্য যাহা কিছু জ্ঞানা প্রয়োজন ভাহা তথায় পাওয়া বাইবেই এখন কথাও বলা যায় না। সেই জ্ঞানার নামই শিক্ষা। সেই জ্ঞানা এবং জ্ঞানিয়া সেই মত চলাবা প্রয়োগ করাতেই মহুষাভের প্রিচয়।

বিশ্ববিদ্যালয়ের উচ্চলিক্ষিত, মানবভার প্রতীক এমন শ্রেষ্ঠ মান্তবের উদ্ধব যে অসম্ভব বা তথাকার শিক্ষাপ্রাপ্ত হইলেই যে তিনি মুমুখাত বিবৰ্জ্জিত হইবেন একখা কেচ**ই** বলিবেন না। এরপ শিক্ষিত লোক বেমন অনেক পাওয়া ষায়, আবার বিশ্ববিদ্যালয়ের সংস্পর্শহীন এমন কি নিরক্ষর-দিগের মধ্যেও জ্ঞান ও মানবতার উচ্চ সীমায় আক্র লোকের দৃষ্টাম্ভও জগতে বছ আছে। মাসুষের ইঞ্জিন-গোচর বান্তব অভিক্রতা ও বাহ্ম শক্তির সহিত অন্তরেক্সিয় স্থূল, সৃত্ম ও অধ্যাত্ম বিষয়ের জ্ঞান এবং সৃত্ম অনুভৃতিসম্পন্ন হইয়া তাহার অন্তনিহিত মানবোচিত প্রচল্প গুণাবলীর বিকাশ ব্যতিবেকে শিক্ষার পূর্ণত্ব প্রাপ্তি হয় না ৷ মামুধের যাহা কর্ত্তরা তাহা পালনই তাহার ধর্ম। মাঞুষের মকুষ্যোচিত কর্ত্তব্য পালন করিতে হইলে হিংসা বেষ. লোভাদি বিপুর ভাড়না হইতে প্রথম মুক্ত হইতে হইবে। ভাগের অফুশীলন, আত্মগংবম অভ্যাস, দেশের কল্যাণ-চিম্বা ও তাহাতে বত হওয়া দ্বকাব, ইহাই মহুষ্যত্ব। দেশের স্বাধীনভাকে রকা করিতে হইলে সর্বাগ্রে মহুষ্যন্ত্রের উল্লেখন আবশ্ৰক। বৃদ্ধিচন্দ্ৰ এই মুমুমুম্বকেই মাফুষের ধর্ম বলিয়াছেন। তিনি তাঁহার ধর্মতত্ত্বে লিখিয়াছেন.—

"চৌথকের বর্দ্ধ কি ? – লোহাকর্বণ। অগ্নির বর্দ্ধ কি ?—দাহকতা। জলের ধর্ম্ম কি ?—দ্রাবকতা। বুক্কের ধর্ম কি ?—কলপুলোর উৎপাদকতা। মন্দ্রবার ধর্ম কি ?—মন্দ্রবাস্থা।"

এই মছ্যাছেই বধন মানবজীবনের সার্থকতা, স্তরাং উহাই চরম সম্পদ, তথন মানবতার সাধনার জন্য বাহা কিছু আবশুক সে দিকে যে লক্ষা রাধা উচিত, মনে হয় এ বিষয়ে নেতৃবর্গের উদাসীনতা আছে। আধুনিক ব্যবস্থায় শিক্ষাপ্রাপ্ত হইয়া বে হারে মাছ্য জ্ঞানসম্পন্ন হইতেছে, পূর্বেষ বধন এ শিক্ষার প্রচলন হয় নাই, আক্ষরিক শিক্ষা স্বল্পনাকের মধ্যেই নিবছ,ছিল বা বধন গুক্মহাশরের পাঠশালা টোল অথবা গুরুগৃহই বিদ্যাশিক্ষার ক্ষেত্র ছিল, তথন অনেক মান্নথই এথনকার মত বিবিধ বিদ্যায় ভূষিত না হইলেও শিক্ষিত জ্ঞানীর সংখ্যা বে কম ছিল তাহা নহে। পূর্কের সহিত তুলনা করিতে হইলে একথা অবস্থ শীকার্য্য, এখনকার মত তখন জীবনবাপন এত জটিল হইয়া উঠে নাই। তখন বে-সব শিক্ষার তত প্রয়োজন ছিল না এখন তাহা আছে। বাহার প্রয়োজন আছে তাহার অন্থ্নীলন চাই-ই, কিছু তাহা মন্থ্যুত্বের বিস্ক্ষন দিয়া নহে।

त्वम. উপনিষদ, পুরাণ, উপপুরাণাদিতে আমার কোন আন নাই : কিছ গলে কথায়, যাত্রা কথকভায়, থিয়েচারের भोवानिक काहिबी इडेटा अवर विद्यास माहेटकन, ववीस-नात्थव यूत्र पर्वाच डांशात्मव धाशांनि हहेट व धावना মনে বন্ধুন হইয়া আছে তাহাতে এখনকার মহুস্তাত্তের এমন লাঞ্চনা, এমন অবমাননা আর কখন হইয়াছে কি না সন্দেহ। আমরা ছেলেমেয়েদের বিদ্যাদান কবিতে, বিদ্যার নানা দিকে শিক্ষা দিতে চেষ্টা কবিতেছি। বৰভাষার অবাধ প্রচলন, উন্নতি এবং উহার শ্রেষ্ঠত श्वित्रक्ष कविवाद क्य आभारमद मनौयीदा नर्वमा नरहहे : এমন কি আমাদের এই বক্তায়া বাহাতে ভারতের সর্ব্যত্র প্রদাবলাভ করিতে পারে দেজক আমরা উলোগী তইয়াছি। ইতা অবশ্র ভালই। ইহার দারা জাতীয় গৌরব বুদ্ধি পায়, কিন্তু বে মহুষ্যত্তই মাহুষের সর্বভাষ্ঠ সম্পদ, বাচার অভাবে আজ আমাদের পারিবারিক জীবন বিশ্বান্ত, সমাজ ব্যাধিগ্ৰন্ত, নতন ব্যক্তিক জীবন কলছিত তাহা লাভের জন্ম কোন বিশেষ প্রচেষ্টা ত দেখি না। বিদ্যা ও শিকা, মালুষ ও মলুষাতের স্বাতন্ত্রা বিবেচনা করিয়া সে বিষয়ে কর্ত্তব্য নির্দ্ধারণ ও পালন করিবার জন্য তাঁহাদের প্রদাসীনা পরিহারের বিশেষ চেষ্টা কি আমাদের শিক্ষাকেন্দ্র-সমূহে পরিদৃষ্ট হয় ? এই অপূর্ণতা তুর্বলতার আমাদের কত সম্পদ দ্বত হইয়া সর্বানাশের পথ স্থাম হইতেছে কে তাহা নির্ণয় কথিবে।

আমার এই সব মন্তব্য হইতে হয়ত বিশ্ববিদ্যালয়সংশিষ্ট এক সংখ্যালঘু বিদান সম্প্রদায় হইতে হয়ত কথা উঠিবে, সে শিক্ষা এবং তাহার পরীক্ষা কি করিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ের মাধ্যমে সম্ভব হইতে পারে। বদি একথা উঠে, ইহার ঠিক মত উত্তর দেওয়া বা পথ নির্দেশ করার মত ক্ষমতা আমার পক্ষে সম্ভবপর নহে। তত্ত্ত্তরে এই কথাই শুধু বলিতে চাই, বক্ষচর্ব্য, গুরুগৃহে বাস ও শিক্ষা এসব বাহা এখন কল্পনার বিষয় হইয়াছে, লোক শিক্ষার পুরাতন ব্যবস্থাদি বধন আল লুপ্তপ্রায়, বধন সরকারনির্দিষ্ট ব্যবস্থা ভিত্র আমাদের জ্ঞানার্জনের এখন অন্য পথ নাই, তখন তাহার
মধ্য হইতেই আমাদের মাসুষ হইবার মত শিক্ষা কি উপায়ে
দেওয়া বাইতে পারে, কি উপায়ে তাহার পরীক্ষা লওয়া
সম্ভব এসব কথা ওধু শিক্ষাক্ষেত্রের নয় রাষ্ট্রের শ্রেষ্ঠ
মনীধীদের চিন্ধা করিতে হইবে। বিশেষভাবে লিখিত
পুত্তক পঠনব্যবস্থা, কি পোট গ্রাজুয়েটের অপর কোন
নূতন বিভাগ খোলার ঘারা এ কার্য স্থাম হইবে বা বিখবিদ্যালয় নিষ্টির স্থল কলেজের শ্রেণী ছাড়াও তৎসহিত
কথকতা যাত্রাদি অথবা এ সকলের স্থলাভিবিক্ত সরকারের
কিন্ম ভিভিশনের সহায়তা ঘারা লোকশিক্ষার অন্য পথ
গ্রহণ আবশ্রক সে সকল বিষয়েও চিন্ধা করিতে হইবে।

আমার এই বে আলোচনা ইহা হয়ত 'ছোট মুখে বড় কথা'র মতই প্রতীয়মান হইতে পারে। আমাদের চরম পরীক্ষার দিন সম্মুখে। আমি দীর্ঘদিন হইতে বাহা উপলব্ধি করিয়া আসিতেছি, শিক্ষা প্রসঙ্গে বজ্তা অথবা প্রবন্ধাদিতে বা সভাসমিতিতে বলিয়া আসিতেছি তাহাই একটু বিশদ ও স্পষ্ট করিয়া এখানে বলিলাম মাত্র। আমার কথা, বদি আমার এই চিস্তাধারা বাহা আমার বিশাস বহু চিস্তাশীল ব্যক্তিই ভাবিয়া থাকেন—ভাহার কোন সার্থকতা থাকে তবে জাতিকে ধ্বংসের মুখ হইতে বাঁচাইবার জন্য এ বিষয় অবহিত হইতে হইবে। ইহার সারবত্তা অমুভূত হইলে সরকার সে শিক্ষার পথ নিশ্চয়ই আবিছার করিতে পারিবেন।

একণে স্বাধীনতা আমাদের করতনগত হইয়াছে। আমাদের অন্নবন্ত্রের অভাবজনিত এই অবর্ণনীয় চুদ্দিনে রাষ্ট্রনায়কগণ বহু চিম্বা-প্রস্থত পরিকল্পনা রূপায়িত করিতে অক্তম অর্থবায় ও পরিশ্রম করিতেছেন। আশা कवा यात्र, हेराव अधन अक मिन शाहेवरे : कि छा रुव স্বাধীনতা পাইবার মাত্র এক যুগ পূর্ব্বেও মহুষাত্বের মাপ-কাঠিতে আমরা বাহা ছিলাম একণে ভাহা হইতে কভ नामिश्वा शिश्वाहि, এই निश्वशामीत शिल्दांश कविश्वा व्यामारम्ब মধ্যে নৃতন করিয়া মহুধ্যত্বের উদ্বোধন করিতে না পারিলে সমাকভাবে ভাহার ফলভোগ করিতে সমর্থ চটব ना। भागामय এই वर्खमान इक्ष्माय अक्टा वर्ड कावन त আমাদের মধ্যে মহুষ্যত্বের বিলোপ-প্রাপ্তি ভাহাতে কোন সন্দেহ নাই। স্বাধীনতা স্বাধিকার লাভ ত সকলেরই কাম্যু, কিছ সে স্বাধীনতা মাহবের হইলেও মহুবাছ-বিবর্জিত माञ्चा विक एवं छार। जनिरहेत्रे मूनीकृठ कावन इहेट्य। বহ কাম্য বিপুল ভাগেণৰ খাধীনভা হয়ত খালিত হইয়া বাইবে। অমাপ্রবের হত্তে অধিকার পাওয়ায় কথনও কল্যাণ হইতে পারে না।



ब्रेक्सारमान मामक्छ

সকালবেলা গোণাল মুখুজ্জে ভাহার ছোট মনিহারী লোকংনের সামনে একখানা ভিনপায়: টুলের উপর বিদিলা বিভি টানিভে-ছিল। মাঠের উপর অক্স সোনালী রোদ ছড়াইয়া পড়িয়াছে, বাভাসে একটা নাম-না-জানা ফুলের গন্ধ ভাগিয়া আসিভেছে অবচ গোপাল মুখুজ্জের মন যবেন্ত প্রকুল নয়। গ্রামের বাজারে একাবিক মনিহারী লোকান, বেচাকেনা খুবই কম, একটা লোকের মোটা ভাজকপিড কোটানও মুশকিল, এ অবস্থায় গোপালের মন প্রভুল্প থাকিভে পারে না।

সংগাৰে গোপাল একা, ভাহার পিতৃত্বে ও মাতৃ-কুলে কাছাকাছি কেচ নাই। অবিবাহিত গোপালের ব্যস জিলোর কাছাকাছি, শৈশবে কিছুদিন স্কুলে গভায়াত করিয়া-ছিল বটে, কিঙ বিভালাত বিশেষ ঘটে নাই।

স্টিকণ্ডা এক একটি মানুধের স্টির ভিতর দিয়া এক একট রসস্টি করিয়াছেন। কোন মানুষটি আদিরসপ্রবান, দেবিতে কলপের মত সুন্দর, কোন মানুষটি বীররসপ্রবান, সর্বানাই মুদ্ধ দেহি ভাব, কোন মানুষটি কক্ষণরসপ্রবান, চোধ ছটি ছল ছল মুবে হাসি মাই, একটা অদৃপ্ত ছংবের বোঝার বিমত, আবার কোনটি হাত্যরসপ্রবান—বেমন এই গোপাল মুবুজে। তামবর্ণ গোপাল বেটে মানুষ, হাত-পা শীর্ণ অবচ পেটটি খোটা, উপরের দীতগুলি উচু বাকার মুববানি সব সমরই হাসি হাসি।

ভিনপারা টুলের উপর বসিরা গোণাল আনমনে বিভি টানিভেছিল—আজ সকালে বরিদার যেন অঞ্চিনের চেরেও ক্ষ। পথ দিরা বে হুই-চার জন চলিভেছে ভাহারা দোকানের বিকে কিরিয়াও ভাকাইভেছে না। বিভিট পুড়িরা গেলে সেট কেলিয়া বিয়া গোণাল অভ্যন্ত দক্ষতার সদে ভিনপারা টুলটির ভারেম্মভারকা করিয়া পা'ছট ভুলিয়া টুলের উপর আসন-পিছি চট্যা বলে এবং মনে মনে দেনা-পাওনার হিসাব বভায়।

হঠাৎ একখানা মন্ত বছ নকৰকে মোটৰ পথ ছাছিবা ভাহার অলান্ত নিকটে আসিরা ধামে এবং ভিতর হইতে ছুট স্ট্পরা ভদলোক মামিরা আসেন। গোপালের মানসাহ গোলমাল হইরা যায়, সে অভান্ত দক্ষতার সদে তিনপারা টুলটি হইতে উটিয়া গাছার। প্রথম ভদ্রলোক আগাইয়া আসিরা প্রশ্ন করেন, "দেখুন, আপনি জ্রীগোপালচক্ষ মুখার্ক্সকৈ চেনেন ?" গোপাল মাধা নাছে, কেননা নামটা ভাহার হইলেও পে বুলিভে পারে মোটর গাড়ীর বাবু ছুটি ভাহার মন্ত মগন্য লোককে বুলিভেছে না। পিছন কইতে দিলীর ভদ্রলোকটি প্রশ্ন করেন, "হা মলায়, বলুন ভ এ প্রামের নামটা কি ?" এই বার গোপাল কভকটা নিউর হয়, সমন্ত্রম ক্ষাব দেয়, "আজে এ প্রামের নাম বেলগাছি।"

ভনিয়া ভদ্রলোক বলেন, "গ্রামের মামও মিলে বাজে, মনিহারী দোকানও মিলে বাজে, অবচ দোকামের মালিক প্রীণোপালচক্র মুবার্জীকে আপনি চিনেম মা—আক্র্যা!" প্রথম ভদ্রলোক হাসিয়া বলেন, "মাও চিমতে পারেম, সবচী পরিচর ত দেওরা হরমি, সবচী দিলে হরভো চিমতে পারবেম, আমরা বুঁজহি ক্রজনাস মুবার্জীর প্র প্রীণোপালচক্র মুবার্জীকে।" ভনিয়া গোপালের মুবার্জীর পুর প্রীণোপালচক্র মুবার্জীকে।" ভনিয়া গোপালের মুবার্জীর প্র প্রীণোপালচক্র মুবার্জীকে।" ভনিয়া গোপালের মুবার্জী প্রথমে লাল হইয়া ওঠে, তারপরে লেই পরিয়াণে কালো হইয়া বার। বিতীয় ভদ্রলোক এইবার হতাশ হইয়া বলেম, ভা হলে আপনি গোপাল মুব্রেক্তে চিনেন না দেবছি।"

থতমত ধাইরা ভীত গোণাল এইবার বলিরা ফেলে, "আজে আমিই গোণাল মুধুছে।"

মাট পৃছিতে খুঁছিতে হঠাং এক কলসী টাকা পাইলে মাহ্যের অবস্থা বেষদ হয় গোপালের উত্তর শুনিরা তল্পলোক ছুইটার সেই অবস্থা হইল, তাঁহারা সম্বরে টেচাইয়া উঠিলেম, "পেরেছি—পেরেছি।" তারপরে প্রথম তল্পলোকটি ছুই হাত জ্যেত করিয়া অভ্যন্ত বিনীতভাবে নম্বার করেম, আর ছিতীর তল্পলোক বাঁ হাতে নেক্টাই সামলাইয়া একেবারে ঝুঁকিয়া পছিয়া গোপালের পদ্ধুলি লন।

ইভিৰব্যে চুই-চারি কন করিয়া গ্রামের অনেকেই আসিয়া शास्त्र । श्रेषेत्र क्रमामांक (जड़े प्रशासक क्रमांक प्राचीवन कतिश कित्सम, "चाक चामारमत अक महा चामरमत मिन. এক মাস ববে আমরা যে রতের স্বান করছিলাম আৰু তা बहेबारन बहे युट्टाई (शरत वश दमाय। जाशनाता निक्तते শক্তিপুরের ভ্রিদারদের নাম **ওনেছেন, আমি হচ্ছি দেই** ভবিদারীর উকিল, ভার ইনি চচ্ছেম ম্যানেভার। ভাপনারা তম্ব তো জানেম মা যে, শক্তিপরের জমিদার ত্রীরণেক্রমারারণ बाब विकास (बंदक सामवाद भाष बाद्याद्रीम (स्टंड मादा (मेर्डिय---(म चार्ड क'शारमद कथा। दर्शस्त्रमादायन किर्मिय অবিবাহিত এবং তার নিকট-আত্মীরও কেউ নেই—এ অবস্থার আৰৱা তাঁৱ দূৱ সম্পূৰ্কীৰ উত্তৱাধিকাৱীর স্থান সুকু করি এবং ववानमस्य औरभागामध्य प्रवासीत नाम विकास भारे। भागानवाद्य माभीत प्रश्रादय मामा ठएकम मेखिलादद क्षिनावरम्ब मोहिक। अक बारमद व्याकावृक्दि शद काक আমরা শক্তিপুর ক্ষিদারীর শুল সিংহাগনের মালিককে পেরেছি।" ভূনিয়া সমবেত জনতা হর্বধ্বনি করিয়া উঠে-গোপালের মাধা ঘরিয়া যায় এবং পা কাঁপিতে ধাকে।

ইহার পরে কি অবস্থার এবং কেমন করিয়া গোপালকে থোটারে ভোলা হয় ভাহা ভাহার ধেরাল নাই।

ন্তন অমিদারের আগমন উপলক্ষে ক্ষেত্দিন বরিরা শক্তিপুরে মহোৎসব চলে। গোণালের দিনগুলি একটা বপ্পাত্র অবস্থার ভিতর দিয়া কাটতে বাকে; প্রকাণ রাজনাতী, সাজান বড় বড় বর, আসবাবপত্র, বাড়, গালিচা, আমলা গোমতা, পাইক, পেরালা, দাসদাসী ইত্যাদির মালিক সে, এবং ক্তেম্বল। অবস্থ বেলগাছির হেঁড়া হাকণাট-পরা গোণাল আর সে নাই, পোশাকে-আয়াকে ভাহারও ভোল একেবারে বদলাইরা গিরাছে।

সেদিন সকালবেলা গোপাল সপরিষদ রাজবাড়ীর বাগানে বেড়াইডেছে এমন সময় কে একজন ভল্লোক গুভি-চাদর বেসামাল অবস্থায় ভ্রুড় করিয়া ভাহার পাষের কাছে দওবং হইবা পছেন। বেশ কিছুক্দণ বাদে বৃত্তিটি উঠিবা মাকেন্ট উপরকার হভা-বাঁৰা চলমাজ্যেলা সংযত করিবা জোডহানে কহিতে থাকেন, "আহা কি সৌম্য স্বাহিত ভাব, বদন মণ্ডকে কি দিব্যজ্যোতি, দর্শনে মহাপুণ্যলাত হয়। মহারাক্ষ আপনি মহাপুক্ষর, মহাপুক্ষ।" পোপাল পরিচয় পাইল ভক্ষটি ছানীন পভিত এবং মহা ধর্মপ্রাণ। পভিতবর উপস্থিত অভ সকলকে লক্ষ্য করিবা বলেন, "এই যে এত লোক ভোষরা এখানে উপস্থিত আহ, কৈ, কাউকে দেখে ত মন আহুও হচ্ছে না; অথচ বেই মহারাক্ষকে দেবলাম অমনি ভক্তিতে মাথা ওঁর পাছে আগনিই হুরে পড়ল।" পভিত মণার অনেকক্ষণ বরিবা বেদবেদাভ হইতে কভার বিবাহস্কটিও পুত্রের শিক্ষাসম্প্রাণ পর্যন্তি অনেক কথা বলেন। বিদার লইবার সমন্ত্র আথ্যি এই প্রথম দেখলাম।"

ক্ষিণার বাজীর প্রকাণ বৈঠকখানার সন্থাবেলা আগর ক্ষিয়াছে, মারখানে ভাকিয়া ঠেস দিয়া গোপাল সমাসীন, চারিদিকে বিরিয়া বিগরাছে সভাসদ্বল, পুগদ্ধি ভাষাকের খোঁয়ায় বর ভরপুর। সাহিত্যিক আনন্ধবাব্ কথা কহিভেছেন, বলিভেছেন, "বারিপাভ না হলে বেমন কগল কলে না ভেমনি রাজার কুপানৃষ্টিপাভ না হলে সাহিভাস্প্রী হয় না, রাজা বিক্রমাদিভ্য অসুগ্রহ করেছিলেন বলেই কালিদাস কাব্য লিখতে পেরেছিলেন।" শ্রোভারা বিজ্ঞভাবে ঘাড় নাড়ে, আনন্দবাব্ উৎসাহিত হইয়া বলেন, "ঝারও দেবুন মহারাজ কুঞ্চন্দ্রের সভাকবি রায়গুণাকর ভারভচন্দ্রের ইভিহাস, কুঞ্চন্দ্রের কুপাতেই তিনি বলবী হরেছিলেন। মহারাজ, আপনিই বল্ম একথা যথাব কি না ?" মহারাজ কি জ্বাব দিবেন ভাবিয়া পাম না, অথচ একটা কিছু বলিভেই হয়—অবশেষে মুছ্হান্ত করিয়া বলেন, "হাা, কথা ঠিক, কুঞ্চন্দ্রের কুপায় কালিদাস যলখী হতে পেরেছিলেন।"

ত্ৰিয়া সভাছ সকলে চমংকৃত হয়, কেহ বলে, "কি আগাৰ পাণ্ডিত্য," কেহ বলে, "কি হল বসবোৰ"। আনন্দবাৰু গদগদ কঠে বলেন, কি গভীৱ গ্ৰেম্বা, কালিদাস যে বাঙালী ছিলেন এক ক্ৰায় মহাৱাল তা প্ৰমাণ ক্ষে দিলেন—মহা-ৱাজের চরণত্লে বগে কৃত যে শিবলাম, কৃত যে শিবন।"

দেউলে ব্যবসারী সভাপদবার একটু দেরিভে আসিরা
পিছনে বসিতে বাব্য হইরাছিলেন, এভক্ষণে ঘবিতে ব্যবডে
সামনে আসিরা পভিরাছেন, আনক্ষবাবুকে এক রক্ষ ধামাইরা
বিরাই বলিয়া উঠিলেন, "সাহিত্য ভো সামাভ বিষয়, আমাদের
মহারাজের ব্যবসার বুদ্ধি এত প্রথর বে টাটা বিরলা ওঁর
চরণভলে বসে শিক্ষালাভ ক্রভে পারে।" মহারাজ বে
ইতিপুর্ব্যে একটা ব্যবসারের সঙ্গে ক্ষিত ছিলেন এ খবর
উপস্থিত সক্লেরই জানা ছিল, সভাবাবুর ক্থার সকলেই

ভাই একবাকো সার দিরা উঠে। সভ্যবাবু সোংসাহে বলেন, "মহারান্দের মত প্রতিভাবান মাত্র বদি আবু ব্যবসায়ক্তের নামেন ভা হলে একটা বিপ্লব ঘটে বার।" আনন্দবারু হটবার পাত্র মহেন, কবার ভাঁহার উপর। তিনি বলেন, "প্রতিভার ক্তের বাবসায় নর, প্রতিভার ক্তের সাহিত্য, বিরলা টাটা ফু'দিনের কিন্তু কালিদাস রবীক্তমার চিরকালের।" ইহার পরে আনন্দবারু ও সভ্যবারুতে হাভাহাতি হইবার আর্সেই সভা ভক্তর।

নিভন বাত্রি, আলবোলায় শেষ কলিকা চড়াইয়া দিয়া থাস চাকর বিদায় লইয়াছে, পালকে শ্যা প্রভন্ত, ভইলেই হয়, অবচ গোপাল জানালার বাবে ইড়াইয়া জ্যোৎসামাবিত বরণার দিকে তাকাইয়া আছে। বরণার দিকে তাকাইয়া আছে বলার তুল বলা হইল, কেননা গোপাল জাসলে তাকাইয়া আছে তাহার বাক্তিত্বে দিকে। কি আর্হ্যা, এভদিন সে নিজেই জামিত না কি জ্যাবারণ বাক্তিত্ব তাহার। সে মহাপুরুষ, রাজ্মি, সে একটা বিরাট প্রতিজা! বেলগাছির বাজারে কেহু ভাহাকে চিনিতে পারে নাই, পারিবেই বা কেন গু গুলীকনের আদের গুণীসমাজেই হইয়া বাকে। ভগবানকে সংখাবন করিয়া সে মনে মনে কহিল, "হে প্রত্, আমাকে লইয়া কি মহান্ বেলা তুমি বেলিবে তা তুমিই কেবল জাম।"

আপিস দ্বে ম্যানেকারবাবু সোপালকে ক্ষিদারী সংক্রান্ত হ'একটা কবা কিজাসা করিতে ও গোটা করেক সই লইতে আসিহ'ছেন। মহারাকের এত প্রবর বৃদ্ধি যে ম্যানেকার বাহা বৃশ্ধাইতেছেন তিনি ভাহাই বৃশ্ধিতেছেন, আইনের বড় বড় ব'বাগুলিতে পর্যান্ত আটকাইতেছে না। আক্ষর্য হইরা ম্যানেকারবাবু বলিতেছেন, "মহারাক আইন পড়েন নি কানি, কিন্তু না কামলে কিছুতেই বলতে পারভাম না আইম পড়েন নি!" মহারাক একটু একটু হাসিতেছেন এবং কাগকে সই করিতেছেন এবন সমর বেরারা আসিরা ববর আনাইল আনক্ষাব্ দরকার উপন্থিত—মহারাক্ষের সঙ্গে দেবা করিতে চাম। ম্যানেকার কাগকপত্র গুছাইরা বিদার লইলে আনক্ষাব্যুত্র চুকিরা পদধূলি লইলেন এবং হাতকোড় করিরা কহিলেন, "আক একটা মহাকাব্যের প্রচনা করব ভাই মহারাকের পারের বুলো নিতে এলাম।"

মহারাক্ষ বসিতে অক্রোধ করিলে আমন্সবাৰু চেরার টানিয়া বসিলেন এবং একটা গভীর ভাবষর অবস্থার তাঁহার মতাকাবোর মোটা কথাগুলি বলিতে লাগিলেন—মহারাক্ষকে ক্ষেক্ষ করিয়া ইহা লেখা হইবে, মহারাক্ষের কীর্ত্তি, খ্যাভি ও প্রতিভার কথার প্রত্যেক্ট অধ্যার ঠানা থাকিবে। অবশেষে উপসংহারে বলিলেন, "অতীভকালে রাকামহারাকাকে কেন্দ্র করে বদি মহাকাব্য দেখা সম্বব হরে থাকে ভা হলে একালে কেন হবে না—মিক্তর হবে, আমি দেখিরে দেব হবে।"

ইতার পরে সাধারণ কথা পুরু হয়। আনক্ষবাবু বলেন, "একথানা উপভাস ছাপতে প্রেসে দিয়েছি, কিছু টাকার যোগাড় হচ্ছে না, মহারাজের কাছে ভাই সামাড হাজারখানেক টাকা প্রাথনা করছি।" পেদিন টাকা না পাইলেও আনক্ষবাবু আলা পাইয়া উটিলেন।

বিকালের দিকে পদধ্লি ও সেই সঙ্গে ব্যবসায় সম্বন্ধ ক্ষেত্রট অমূল্য উপদেশ লইতে সভ্যপদবাবু একটা বত বছ কাইল বগলে করিয়া উপস্থিত হন। এদিকে কোন কাপছের মিল নাই, একটা মিল বুলিবার সব ব্যবস্থাই হইরা সিয়াছে, কেবল টাকার ব্যবস্থা হর নাই, এই বিষয়ে মহারাজের উপদেশ চাই। টাকা খরে রাখার চেয়ে কারবংরে খাটামো যে লাভক্ষক একখা মহারাজের মত ব্যবসায়বৃদ্ধিসম্পন্ন লোককে বলিরা দিতে হইবে না, তিনি অগ্রনী হইরা মিলের অর্কেক শেরার কিনিয়া লইবেন ভাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। এখন বাকি রহিল মহারাজের আম্বর্কাদ, ভাহা পাইলেই মিলের প্রতিটা ও আর্বিজ অনিবার্থ। ব্যবসায়বৃদ্ধিসম্পন্ন মহারাজ বিষয়টা ভাবিরা দেখিতে রাজী হইলেম।

ইহার পরে রাজবাড়ীতে সভ্যপদবাবুর আনাগোনা ক্রমেই বাজিয়া যায়, লোকে গোপনে বলাবলি করে ব্যবসায়-সংক্রাভ কথাবার্ড। ছাড়া আরও একটা কথা চলিভেছে। শেষে যেদিন সভ্যপদবাবুর প্রশিক্ষিতা ও প্রকরী ভগ্নী মালিকা দাদার কাইল হাতে করিয়া রাজবাড়ীতে উপস্থিত হন সেদিন কথাটা আর গোপন থাকে না। অবস্থ ইহাতে আপত্তি করিবার মত কিছু নাই, কেননা মহারাজের বরস হইয়াছে এবং পাত্রীইও ভাল।

মালিকাকে গোপালের সভাই ভাল লাগে। সেদিন সন্ধার দিকে মালিকার শাভীর রং, চুলের গন্ধ এবং হাসির স্থর এবদ একটা আশ্রুষ্য পরিবেশের স্থট্ট করে বে, গোপাল ভাহার মদের কথাটা বলিরা কেলে। মালিকা ইহার জভ প্রস্তুত ছিল কি না বলা বার না, ভবে মভ দিভেও সমর মই করে না। অভঃশর ছই জনে প্রেমের সমুদ্রে হাবুড়ুবু খার। গোপাল রহন্ত করিরা বলে, "আমার মভ বুড়ো বরকে ভোষার পছক্ষ হবে মালিকা ?" মালিকা জ্বাব দেয়, "পৃথিবীভে আপ্নার মভ সুক্লর কে ?"

আকাশে অগণ্য ভারা, পৃথিবী নিদ্রিভ, রাজবাড়ীর ভেতলার ছালে একাকী পদচারণ করিতেছে গোপাল। ভিন মাস অভীভের ইভিহাস, অখ্যাত দরিক্রজীবন, বেলগাছির বাজার, মনিহারী দোকান, এ সব ভাহার ভাছে আজ বরের মত অলাঠ। এমন একটা কুংসিত অভীত ভাহার জীবনে আদপেই ছিল কি মা সে বিষয়ে ভাহার সম্পেহ হয়। সাধারণ সে নহে, হইভেই পারে না। পারের নীচে ঐ যে ধূলিমর বরণী, উহা যেন দ্রে আরও দ্রে সরিবা বাইভেছে, মাধার উপর ঐ যে ভারকার্থটিভ বিরাট আকাশ উহা যেন কাছে, আরও কাছে নামিয়া আসিভেছে। গোপাল ভর হইবা দাঁভার, আপনার বিরাটভুকে আপনি অহুভব করে। জ্ঞানে সে বড়, জাপনার বিরাটভুকে আপনি অহুভব করে। জ্ঞানে সে বড়, জাপে সে বড়, দেখা গেল রূপেও সে বড়। পূথিণী বুদি ভাহার কাছে জ্যোভাভ করিয়া না দাঁভায় ভবে দাঁভাইবে কাহার কাছে গুলহাভ করিয়া না দাঁভায় ভবে দাঁভাইবে কাহার কাছে গুলবে একটা কাঁটো ভাহার মনের মধ্যে মাথে মাথে বচৰচ করিয়া বিবে, দেটাকে সে আর দেবি না করিয়া ভূলিয়া কেলিবে, গোপাল নামটাকে বদলাই আহু মহীপাল না হয় ভূপাল করিবে।

অনেক বাত্রে শোওয়ার ভোবের দিকে গুম ভালিতে পোপ'লের দেদিন বেশ বেলা হয়। উঠিয়া দেখে চাকর নিভাকার মত আলবোলার নল লইয়া মাধার কাছে টাড়াইয়া নাই ডাকিয়াও সাড়া পায় না। গোপাল রাবিয়া অভিন হইয়া উঠে, ধির করে জুভা মারিয়া ভাচাকে অ'কই ভাড়াইয়া मिट्र । किंद्र अञ्चल अकरी ठाकर कि चानिए पादि मा ? না-ইহারা অভ্যন্ত আশ কার। পাইরা গিরাছে, একটাকে ভাঞাইলে হইবে না. সেট কে সেট ভাঞাইতে হইবে। গোপাল ক্ষেপিয়া বাহিরে আদে, মনে মনে ভাবে হাতের কাছে याजारक भारेरव जाजारकरे बादिश एक निर्देश किय जाएउड কাছে কাছাকেও পাৰ না। পোপাল ভারখরে টেচাইতে पाटकः बहेवात माछ। (तम मधर मार्गिकातवायः मार्गिकात বাবু সায়নে আসিম্ন ইছোন এবং মূহ হাসিম্ন পোলের সমস্ত वान क्ल कविदा निवाद ८०४: कट्टन । किन्द त्रशः माहनकाटवर হাসিট্রু জ্লের কাজ মা করিয়া বরং ভেলের কাজই করে--ম্যানেকারের বেরাদগীটাও ভোক্ষ নর, পারের ধূলা লইভে ভূলিয়া বাৰ ৷

গোপাল একটা কঠিন কথা বলিতে যার, কিন্ত রাগে গলা দিরা কোন আওরাক বাতির হর না। ম্যানেকার-বার্র মুহহান্ত বিকৃততর আকার বারণ করে, তিনি বলেন, "এই বে, উঠে পড়েছেন গোপালবার্।" গোপালবার্। একি মহা অপনামকানক সহোধন। ম্যানেকারটা নেশা করিরাছে নিশ্চর—গোপাল ছ'পা পিছাইরা যার। ম্যানেকারবার্ সেইছ'পা আগাইরা আসিরা বলেন, "পালাবেন না, ভহুন, একটা ব্যুব করের কথা বলবার আছে—ব্যাপারটা হচ্ছে এই যে, আমাদের ক্ষমিদার ত্রীরণেজনারারণ রার মারা যাম নি, কাল তিনি কাররো বেকে হেঁটে ক্লকাতা পৌছেছেন, এক্ছেজ্ল আপনার কর্তবা হচ্ছে আর কালবিলহু না করে এখান বেকে সরে পড়া।" সব ক্ষিনিধেরই একটা সীমা আছে, মাতলামিরও একটা সীমা আছে, গোপাল আর সহু ক্রিতে পারে না, ব্যুক্

দিখা উঠে — বলে, "পায়্ম, থায়্ম, চের বেরাদণি সহ আর সহু করব মা, বেরিখে যাম আমার সামতে বেরিছে যাম।"

ম্যানেশারবাবুর মুব হইতে হাতিটুকু এবার যায়—নরম হইথা বলেন, "বেরিরে যাওয়াটা সংগ্রতি ছ দরকার হরে পড়েছে গোপালবার, জানেন না তো জিনিগরটিকে, চকিংশ ঘণ্টা মদ খান, হাতের কাছে ছ পেলে ধরে চাবুক মারবেন। ভাল কথা, যাবা পোশাকটা বদলে কেলুন ভো, ভারতঃ রাজবাড়ী জিনিষই আপনি নিয়ে যেতে পারেন না, পরনের ঐ খানাও না, অতএব ওখানা রেগে জাপনার ধেই ত হাফলাট আর ধৃতি পরে নিন্, অনেক কণ্টে এ হুটে করে এনেছি, হুংখের বিষয় হেঁড়া চটি জোড়ার কোই পোলাম না। নিন্, একটু ভাড়াত ভি করেন।"

ম্যানেকারের পুঁটলিট হউতে হাফশাট অংর ধৃথি হউল—গোপাল দেখিয়াই তাহাদের চিনিল।

পুরোমো হাকশার্ট জার যুক্তি পরিষ্ণ থালি পারে
পথে বাহির হটয়া পড়ে। রাগে, তৃঃখে ও লক্ষার ম।
করিয়া সে পথের একটি বার দিয়া চলিতে থাকে
অবস্থার কেহট ভাহাকে চিনিতে পারে মা, মাত্র
লোক চিনিতে পারে ভাহারা হটতেছে ভাল পণিত
এবং সাহিত্যিক জানন্দবারু। জাক গোপালের
জালাভিরিক্ত ধূলি থাকা সত্তেও পভিত মহাল্যর পদ
লইয়া হাসিয়া পাশ কাটান, জানন্দবার মহাকাবে
চরিত্রকে হাতের কাছে পাইয়াও উপেকা করিয়া চলিকা

পৰ চলিতে চলিতে গোপাল ভাবে সে কোৰায় কি করিবে। ভাবিতে ভাবিতে সভাপদবাপুকে মে গোপালের একটা সমস্তার সমাবান হয়, সে সভাবাবুর যাইবে এবং নিজের অষ্ল্য বাবসাধ-বৃদ্ধিটা ওঁাহার বরিয়া দিবে। সভাবাবু ভখন চা খাইভেছিলেন, পো প্রভাবটা ভনিয়া হাসিয়া বলেন, "ওটা নিজের কাছেই মনিহারী দোকানটা আবার চালাভে হবে ভো।"

গোপালের চোবে ছমিয়া অঙ্কার চইয়া আদে, পা চার না, ধ্লিমর ব্যানিক বছ কাছে, বছ আপেনার বলিহ হয়—সে বসিয়া পছে। মনের মবো চিন্তা ভালগোল পা যার, কত মুব ভাসিয়া আদে, ভাসিয়া চলিয়া যার। হঠা হাসি হাসি মুব ফুটয়া ওঠে, ভাইডো, গোপাল এতং র্বটকে কেমন করিয়া ভূলিয়া ছিল ? সর্বাথে মালিকার কাছেই ছুটয়া আসা উচিত ছিল, মালিং ভাহাকে ভালবাসে। এ ছুছিনে সে ভাহাকে হি পরিভাগে করিবে মা, দারিস্তকে বরণ করিয়া মালিকা হা ভাহার হাত বরিয়া এক অনিষ্ঠি পরে যালা তুক করিছে বাসানের ভিভর দিয়া আবছায়া অনকারে গোপাল আমালার কাছে আসিয়া দাঁছায়। হাঁ, সে ঠিকট আসিয়াছে, এই তাহার প্রিরতমার মন্দির। গোপাল চাপা গলার ভাকে, "মালিকা, মালিকা।" হাদরের আহ্বান কথনও বার্থ হর না, মালিকা জানালা দিয়া উঁকি মারে। গোপাল অংকুল কঠেবলে, "আমি এপেছি মালিকা।" মালিকা জ্বাব দের, "আমিও আসিতেছি প্রিন্ত," ভারপরে চুটিয়া চলিয়া যায়-গোপাল উল্লে হাদর লইয়া অপেকা করে। হঠাৎ জানালার ভিভর দিয়া যাতা বেগে আসিয়া পড়ে তাহা মালিকা না, এক বান ইট। বিহাৎ-বেগে মাথা সরাইয়া লইলেও গোণালের নাকটা কিঞিৎ ভব্য হয় এবং বান ইটবানা পায়ের বড়া

আজুদের উপর আলিয়া পড়ে—গোণাল আর্থনাদ করিয়া কর্মে:

বেলগাছির বাজারে সাধ্ময়রার দোকানের সামনেই
গোণাল মুখুজের মনিচারী দোকান। তিন মাসকাল বাবং
সে দোকান বন্ধ, তালার মরিচা বরিলাছে, সংইনবোর্ডধানা
কাত হইরা পড়িরছে। সেদিন সকালবেলা সাধু দোকানের
ঝাপ তুলিতে গিলা দেখে পথের ওপালের দোকানিটর দরকা
খোলা, সংইন্বে তথানা সোজা হইরা কুলিভেছে এবং চির্পরিচিত গোপালের বৃত্তি তিনপায়া টুলটির উপর বসিয়া বিভি
টানিতেছে।

# ধর্মসাধনায় রবীন্দ্রনাথের নূতন ইঙ্গিত

শ্রীস্থারচন্দ্র কর

ভি করে মাহুষের সংক্ষ মাহুষকে মেলাবার সমাতম অন্তর্ট পাওরা যার, রবীক্ষমাথের সমত মনমে, বাংবানে ও আচরণে চলেছিল তারি সন্ধান। সে সন্ধান তিনি পেটেছিলেন বর্ত্তের ভান্ধিক কিথা বাবহারিক দিকে মন্ত, পেরেছিলেন অভিনব একটি দৃষ্টির সাহাযো। "কালাগুর" হছের ছোট ও বন্ধ প্রবন্ধে তিনি সেই দৃষ্টির প্রসংক্ষ বলেছেন: "বিখ্যানবের ইতিহাসকে অপও করিছা দেবিবার অব্যায় দৃষ্টি যাহাতে শান্তি নিক্তেন আপ্রয়ের বালকদের পক্ষে মার্লিছা করিছা না হান, আমি এই লক্ষা দৃচ করিছা রাগিয়াছি। তাই এই আপ্রয়ের গুভকার্যা ইংরেজ স্বেক্তেরও জীব্য উপহার দাবি কারতে আমি কৃষ্টিত হই মাই।"

কীবনের অপবাক্তে এসে "মামুখের বর্ণা গ্রন্থের দিতীয় অবাবেও আর একবার রবীক্রনাথ সে কব ই বলেছেন—"বৃহৎ কালে মেলে দিয়ে মামুখের ইতিহাসকে যথন দেবি ভবন দেবতে পাই শিল্প সৌন্দর্যের তেওঁতা সম্বন্ধে সকল কালের সকল সাবকদের মন মেলবার দিকেই যায়।"—ইহাও সেই "ইভিহাসকে অথও করিয়া দেবিবার অব্যায় দৃষ্টি"র কবা। এর মধ্যেই বিশ্বমানবের মিলন-সাবন-শ্রুটীর ইপিত মেলে। সেটি পরিভার করে বুবে নেওয়া দরকার।

পোট। মানব-সমাকের পথের বিবিধ পরীক্ষার কথা বছেছে ভার ইভিহাসে। এই ইভিহাসই ভার সভ্যভার বাহন। মহাকালের বুকে সভ্যভারই ক্রমান্তা চলেছে। কালে কালে ,
ভার সম্ভটী বভ বভ, যত সাংঘাতিক, যত দীর্ঘায়ীই হোক,
ভবু ইভিহাসের শিক্ষা এই বে, সেটা সামন্ত্রি। সেটা খ্রাগ্রহণ মান্ত্র, খ্রাপুঞ্ভা নর।

সংখির বাধার বর্জনানের ক্ষুদ্র দেশকালে লোকে মিলতে পারে না। কি ৪ ইভিচাগের বিবাট পটভূমির দিকে তাকালে দেশতে পাই যে মাধ্য মাধ্যের চিতে আর্থ্যিভারে আবেদন আনে দেশকাল অতিক্রম করে। এমন কি, মহা অভ্যাচারীও সেবানে ক্ষাই হতে উঠে।

ম'স্থের মিলনবর্মী মহানু আত্মার দেখা পাই সকল বর্শেই, উল্লেব ট্রার ফ্রিল্য-ব্রেট্রের অভাব নটে। কিন্ত কার্যভঃ বংগীর প্রভাব সফল করা নিষ্টেই যত সহস্যা। আচার বা নীতির চেয়েশ মল সভাটকে এলণ করাই আবেলক। কিন্ত (मर्थ) याष्ट्र अ (१९) अ पर्याच श्रीष्ठ भक्त वर्षराद्वा एवर अस् দাঁভিয়েছে বত ছককাটা নীতির নানা ক্রিয়া-প্রক্রিয়ার অভ্যানে: ত্রবীজনাথের প্রক্রিয়া কিন্তু নীভিগত নতু বলা যায় তা দ্বীত ক্লিপত। তা চচ্চে অধ্ধ ইতিহাসকে বা চির্মন ৰান্তৰকে দেখা। কালোজীৰ্ণ হানবকীনির নিদর্শন— জান-বিজ্ঞান ও শিল্প-সম্পদগুলি দেশকাল নিবিবশেষে মানুষের বি আকুল অমুভৃতির বিষয় মচেপ্রোদারোর আবিষারে ভা বিলক্ষ (भवा (शरकः। श्राकृष परवाश निष्ण-वावश्वा प्रकृ परिवाहित পারে করেছে চিত্রালম্বন। মাসুষের ভিতরকার ঐশ্বর্যা ঐ সব শিল্পে প্রকাশ পেয়েছে ৷ মাত্র্য ভাতে দেখেছে একালের সক্ষেত্রণাভীত হুদুর সেকালের যোগ। ভার মনের মধ্যে পেরেছে কোন গেট অচেনা মাত্ষের অন্তর্বেদনার মিল, সুকুমার সমব্যাতা: রাজা-সাঞাজা তলিরে বার, কালের কপোলতলে শুল সমুজ্বল' হরে থাকে এই বেদনাই। বেদনাভেই মাতৃষ अक. এই हिंदे जाद हिदछन आकृष्ठि। य जब कार्क अद প্রকাশ হয়ে চিরকাল মাত্রকে আনন্দ দান করতে

পারে, সেই সকল কাজের সাধনাই যাহুষের বধার্থ ধর্মসাধনা।

রবীজ্ঞনাথ কথাগুলি বলেছিলেন তাঁর মৃত্যুর কিছুদিন আগে। রোগশবাা থেকে উঠেছেন। উত্তরারণে পুত্রবধ্
প্রতিযাদেবীর শিল্পত্য "চিত্রভাত্ম"তে তথন তিনি বাস
করছিলেন। সেই সময় তাঁর "বিশ্ব-পরিচয়" প্রস্থের ছিতীয়
সংকরণ ছাপা হচ্ছিল। প্রেস কপিতে তথ্য সংশোধনের সলে
কোনও কোনও কর্মার প্রকৃত দেখে দিছিলেন তিনি নিজেই।

वरेक्टें "लोडकन्" बनाएश्व अक प्रत्न अरेक्स निविज আছে যে, সৌরমাওলিক গবেষণার একটি সংবাদের অপেকার किएक शिरविक्रम विकासी छा: एशमारशत अक है शिकास । "এীনিচ মান্যল বিভাগ খেতে সংবাদ নিখে" সেই ভগাট ভানা ৰার। এই গবেষণার ভগাট সেবারে বইয়ে নভন যোগ করা হয়। প্রাফের এই ছলে এসে কবির সঙ্গে বর্তমান লেখকের একট আলোচনা চলল। ডা: ডগলাসের সেই হারানো ভবোর चाविक्की काबाद तरह छनित्त किक ठाँद नावनाद कन **किरकारमर करण शामय-अशास्त्र फेक्टाविकारर अन्त्रम हार** রইল। আৰু হিনি পরিচিত, সেই ছা: ডগলাসও চয় ত একদিন बादिय छलिए काल काल और छाट माम-जाहारमा कछ ব্যক্তির সাধনা বিজ্ঞানকে সমূহ করে রেখে পেছে নব-নব আবিষ্ণারে, এপিয়ে নিমে চলেছে ভাকে পূর্ণভার পরে বিভূতভর करतः। याष्ट्रस्यत् भारमा विख्यातम् यक्त देवर्वात्किक करत्र शास्त्र । এমন যেন আর কিছতে নয়।--- এমনি ধরণের কথাই বলে-किसाब।

**एटम कवि वलालन, जानमा माट्यबरे विश्वत्र बाट्ड**: माश्रायद विश्वत्रभेष जाद मत्वा मिरबरे श्रेकामका । स्मर्भ. জাভিতে, বৰ্ণে, ৰৰ্ণ্যে, জামরা আৰু যে পণিবীবাাপী সার্থ-সংঘর্ষের মধ্যে লোকের ক্ষুদ্র রূপ দেবছি এ ভার ব্যক্তিগত সামরিক রুপ। ভার যা চিরম্বন রুপ, ভার মহৎ প্রকাশ এরুপ रेमर्वाक्किक विकारमहे हरबाह । विकारमद मण भव कारकदहे সেইত্রপ বিজ্ঞাল দেখা হার ইভিচাসের পটে। বিজ্ঞানালবা সাতেবটির নিকটে তার ভারানো স্তাট প্রকাশ পেৰে অকলে তাঁকে সাহায্য দিৱে আনন্দিত করেছিল। বিশ্বত অভীত বেকে মহেঞানারোর অব্যাত লোকেনের বে শিল্পনিদৰ্শনগুলি মিলল, দেগুলো মানুষকে ভার মানব-বারার উৰ্ত্ন-ইভিহাসের ভৰ্যের সন্ধান দিরে ভাকে করছে ভেমনি অভিভূত। দান আছে, দাতা নেই, বুৱা যায়, সমন্ত দেশ-কাল-भाव (भविदय अक विवाहे चम्च चर्क बानव-नावमा **काला**छ। এই ইতিহাসই ভ মাফুষের আসল প্রূপ, যধার সভার আবার, --ভার সভা পরিচয় এখানেই নিভিত।

কবি উজ্ল মুবে বলে চলেছিলেন; হঠাং তাঁর কঠে বেলনার সুর বাজন, তিনি বললেন, "কোণার মালুয় তাকে দেখবার দৃষ্টি নিরে বড় হবে, তা নর, কুল দলাদলি চুলোচুহি
নিরেই সকলে বাতা। সব জাতির দান, সব দেশের দাহ
সব ব্যক্তির দানই একটি সংহত সমগ্ররণে দেখা দিরেছে এ
মানব-সভ্যতার অভিযানের মধ্যে। নৃতন নৃতম কীর্তির বোগাহ
বারা এই সভ্যতার সেবার লেগে থাকা, এবং এক পুরুষ থেছে
আর এক পুরুষের হাতে সেই সভ্যতাকে পৌছে দেওরাই
ব্রভই হচ্ছে মানুষের আসল কর্তব্য। স্বার্থের কুল্লতা থেছে
মুক্তি পেতে হলে এই অবত অপৌকুষের মানব-সভ্যতারই ব্যাহ
করতে হবে, সেই বানই নিয়ে বাবে তাকে পরার্থতার।

আমরা দেহরক্তধারা-যোগে বরবাকী সম্পত্তিতে বা চিডা-বারার নিজের হাপ এঁটে দিরে সব কিছুকে অক্ষয় করে রাণতে চাই। বেঁচে থেকে জীবিভকালে এখনও বেমন তোগ করব, আমি বেঁচে মা থাকলেও আমার হাপমারা কীর্তির মধ্যে আমি চিরকাল সেই গৌরবাধিকার নিরে মরণীর হরে থাকব, এইট দেখে বাবার, বুবে নিরে যাবার জন্মই বার্থের ব্যাকুলভা। কিন্ত মহাকালের বর্মে কি দেখছি? সে লোককে কেবলই সকল কিছু থেকে ছাড়িয়েই নেয়—কেড়ে নের ভার কীর্তিকেও। মামুষের কাজগুলি যদি বা এই দেখা পৃথিবীতে তু'দিন স্থানও পার, মহাকালের থেলার প্রোতের মুধে এই পৃথিবী, এই ভার ইভিতাস—সব বার ভেলে।"

আপে বেকেই কবির ভাবনার ও লেখার এই চিন্তারই প্রবাহ চলেছিল। "মাফুষের বর্ষ" গ্রন্থের বিভীয় অব্যাবে তিনি বলেছেন, "পুরোনো সভ্যতার মাট-চাপা ভাঙাচোরা চিহ্নার উদ্ধার করলে ভার মধ্যে দেখা যায় আপন শ্রেষ্ঠভাকে প্রকাশ করবার জন্ম মানুষের প্রভান প্রয়াস। निष्यु ग्राह्म (व क्यमार्क अक्न काल्य अक्न बाक्रुश्य বলে সে অভুতৰ করেছে ভারই হারা সর্বাকালের কাছে নিজের পরিচয় দিতে ভার কভ বল কভ কৌশল। ছবিভে, মৃত্তিভে, ঘরে ব্যবহারের সামগ্রীভে সে ব্যক্তিগভ মান্থবের বেয়ালকে প্রচার করভে চার নি, বিশ্বপত মান্থবের আনন্দকে স্বাধী রূপ দেবার ক্ষণ্ডে ভার ছ:লাব্য সাধ্যা। মালুষ ভাকেই আনে শ্ৰেষ্ঠতা যাকে সকল কাল ও সকল মানুষ ৰীকার করতে পারে। সেই শ্রেঠতার ছারা মানুষ আছ-পরিচয় দিরে থাকে। অর্থাং, আপন আত্মায় সকল মাসুষের আত্মার পরিচর দের। এই পরিচরের সম্পর্ণতাতেই মাছুষের অভ্যাদর, ভার বিকৃতিভেই মানুষের পত্ন।"

চিত্রবহুল মহেক্সোদারোর বইগুলি কবির দপ্তরে আসার পর বেকে সেগুলির প্রভাব তাঁর অনেক রচনার উৎস হরেছে। প্রায় একটা গোটা কাব্য—"শেষ-সপ্তক" স্ট হ'ল মহেক্সোদারোর প্রেরণা থেকে। তার পর থেকে অনেক কবিতার এবং তাষণেই এসে গেছে মহেক্সোদারোর সেই প্রভাবই। এ বিষয়ে বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য হচ্ছে, মৃত্যুর

ারাগ আপেকার ১৩৪৭ সলে প্রদত্ত ৭ই পৌষের সর্বাশেষ লমণ--- "আবোগা"। ভাতে না-ৰণ্মী মানব-সাধনার পাশে লভর বলিভ ঠা-বর্মী সাধমার আমর্শক্রণে কবি ধরে ্ৰবিষ্কেৰ চীনকে, আৱ প্ৰাগৈতিহাসিক আদৰ্শক্ৰণে । ছতেঞাদাৱো-শ্ৰেণীৰ নাৰহীন অচেনা মানব-সাৰ্নাকে। हरिएक कीवन-नाबादक हैजिहान । विकान-नाखर विचाद as कड माथाडे--- कथाांच-क्रिकीभनांच वित्मध जलांचला करवांक। क्षित्रारमत (श्रेतनात कथा अधारम यहा है क-अमिन थाँके रेखारबद (श्रदेश बिरश्च रहाद कथा कविद कीरान चारह । ছবি বলেন, "যে সাৰনাৱ লোভকে ভিভৱের দিক থেকে দৰন হারে সে সাধনা ধর্ম্মের, কিন্তু যে সাধনায় লোভের কারণকে वाहेरवर पिक (बरक पद करत रश शायमा विकारनद । प्रहेरहर স্মাল্যে সাধ্যা সিদ্ধ হয়, বিজ্ঞান-বৃদ্ধির সঙ্গে বর্গার্থির আছ মিলনের অপেক। আছে।" 'বিখ-পরিচয়' গ্রন্থের ভূষিকায় ভিনি বলেছেন, "আৰু বছসের শেষ পর্বে মন অভিভূত নব্য প্ৰাকৃতভব্বে--বৈজ্ঞানিক মামাবাদে।"

বিশ্বভারতী পরিধনের ভাষণেও পূর্ব্বে কবি বলেছেন: "রহৎ কালের মধ্যে ইতিহাসের উদার রূপ যদি আমরা দেখতে পাই তা হলে দেখব, আগ্রন্থরী পলিটিন্সের দিকে মুরোপের আগ্রাব-মাননা, সেখানে ভার অধকার; বিজ্ঞানের দিকেই ভার আলোক অলেছে, সেখানেই ভার যথাব আগ্রপ্রকাশ—কেননা বিজ্ঞান সভ্যা, আর সভ্যাই অমরতা দান করে। বর্ত্তমান মুগে বিজ্ঞানেই মুরোপকে সার্থকভা দিয়েছে, কেননা বিজ্ঞান বিশ্বকে প্রকাশ করে।" (১৩০২)।

ইতিহাসও আৰু বিজ্ঞানের পর্য্যারে উত্তীপ হতে চলেছে।
বিশেষত: মাট বুঁড়ে বাতু, জাতিতত্ব বা তাষার প্র ধরে
পুরাতত্ত্ব সাহাযো ইতিহাসের যে অংশ সক্রিয়, তাকে
বিজ্ঞানের অদ বলেই ধরা ষেতে পারে। মহেক্সোদারোর
পুরাবিদ্যা ও শিল্পকার ভিতর দিরে তাবের ও তাষার বিনিময়
হচ্ছে একালে-সেকালে। ছুই কালের আচার-বিচার ছাপিয়ে
উঠেছে এই তাষা। বিশ্বভারতীতে রবীজ্ঞনাথ 'বিদ্যাতবনে'
ও 'কলাতবনে' এই চিরকালের তারাকেই করেছেন তার
সাংস্কৃতিক বর্ণ্যের সাধ্যমন্ত্র। বিশ্বভারতীর প্রধান বৈশিপ্তাই
কৃটেছে এই ছুটী বিভাগে। রবীজ্ঞনাথ বিভিন্ন সমরে নিজেই
একথা বলেছেন।

হিন্দু মুসলমান ছুই বর্ণের থেকেই শীংস্থানীর রক্ষণশীল আচারনিঠ ব্যক্তিরা শান্তিনিকেতন আশ্রমে এসেছেন কম। কিন্তু তারই মধ্যে কবির সমকালে 'বিদ্যাতবনে'র পণ্ডিত বিবৃ-শেবর শান্ত্রী মহাশর এবং মৌলানা জিলাউদিনের মধ্যে যে প্রীতিভাব ও জন্য আচরণ লক্ষ্য করা বেভ, তা ছিল আদর্শ-হানীর। ছুই বর্ণের ছু'কনের মধ্যে ছিল মানবিক প্রীতি। কবির আশ্রমের পরিবেশে তা বৃদ্ধি পেরেছিল। ভাতি- বর্দ্ধের হাজার নীভি-বৈচিত্রের উপরেও ভারি প্রভাব ছটি মাহ্মকে মিলিছেছিল আপন ক'রে। বপাক ছাজা যিনি আহার করেন নি, এমন মহাপণ্ডিভ নিঠাবান আন্ধ্র, ইটাম পাত্রী দীমবন্ধ এওকজের পদধূলি নিভেম। মেবরের মাল্য-জনও সেই প্রাক্ষণের কাছে সমান প্রীভিভেই গ্রহণীর হরেছিল। এ ঘটনা লাভিনিক্তেনে সহক্রেই ঘটেছে। এবানে বর্দ্ধের বাহ্ম পূলা-অর্চনা নয়—মানবিক ব্যবহার। মভ ছেড়ে ব্যক্তিপ্ত ভীবনেও যে বাভবভা কিরপ কার্যক্র হভে পারে, বিদ্যাভ্রনের কর্মক্রেড ভার প্রমাণ এঁলের মধ্যে দিয়ে আমরা প্রভাক করেছি।

বিশ্বভারভীর বার্ষিক-পরিষং-সভার ১০০২ সনের অধিবেশনে "আচাৰ্ব্যের অভিভাষণে" বিশ্বভারতীর সাধনা প্রসঙ্গে ববীলনার अक्षरल रामाहन--- "महाकाणिक केवा अक्षरक *(प्रा*म राकाशक সম্ভৱ প্ৰকাশ করা হয় কিন্ত ওদিকে ভাতি-সভ্যান্ত লেগেই আছে।" আকালী শিব আন্দোলন ও মালাবারের মুনলমান स्थानमा (मोदारशाद कथा छैदार क'रद छिनि वरमन--"बारमद আমরা নিবিভভাবে কানি ভারাই আমাদের জাতি। ভারত-বাৰ্ষৰ জোক প্ৰম্পাৱের সমূহে ধৰ্ম মহাজ্ঞাতি হাবে ভৰ্মি ভারা মহাকাতি হতে পারবে। সেই কানবার সোপান তৈতি কৰাৰ ছাতা মেলবাৰ শিখতে পৌছবাৰ সাধনা আম্বা গ্ৰহণ করেছি।" এ সাবদার শাস্তীয়তাশর কবির আদি जिल्लाहरू किरमन । कवि के क्षेत्रक वर्षाहरू : "किया एव-দিন স্বত্ত্বর বিধুশেধর শাস্ত্রী ভারতের সর্ব্বসম্প্রদায়ের বিদ্যা-श्वातिक काराकर विमादिकात अकत करवार कर केलाने চয়েছিলেন তখন আমি অতান্ত আনন্দ ও **উং**সাহ বোধ **ভৱে-**ছিলেম। ভার কারণ শাগ্রীনশার প্রাচীন গ্রাহ্মণ পরিভাষের निकाशदाद शर्थहे विल्यालाक करदहिराम । विश्वरतद समाजन শাগ্রীয় বিদ্যার বাচিত্রে যে সকল বিদ্যা আছে তাকেও শ্রদ্ধার अल्क श्रीकात कत्राज शादाम जात्र व चामारमत निका फैमात ভাবে সাৰ্থক হতে পাৱে, তাঁর ষ্বৰে এ ক্ৰার সভা বিশেষ कारत वन (शरश चांबाब कारह क्षेकांच (शरबहिन। चांबि जमुख्य करदिहालम अहे छेनाया, विमाद क्या जनम जालित প্ৰতি এই সসন্মান আতিখা এইটাই চচ্ছে যথাৰ্থ ভাৱতীয়—সেই কারণেই ভারভবর্য পুরাকালে বর্ণন এীক রোমকদের কাছে বেকে জ্যোতিবিদ্যার বিশেষ পছা গ্রহণ করেছিলেন ভবন মেছ গুৰুদের ঋষিকল ব'লে খীকার করতে কৃঠিত হন নাই। जाक विश् अ अवस्य जामारमद किल्लमाळ क्रुपनका चर्ट बारक ভবে জানতে হবে আমাদের মধ্যে সেই বিশুদ্ধ ভারতীয় ভাবের বিকৃতি ঘটেছে।"

জিরাউদিন সাহেবের মধ্যেও ধর্ম্মের কোনো আছম্মর ছিল না। তিনি ছিলেন সহজ সাদাসিবে ভাবের, অবচ স্থাকু-বৃদ্ধি, নিরহমার লোক। তাঁর কাছে গেলে ধর্মের কোনো অন্তানের কথা ৰমে হ'ত না, কিন্তু বর্দ্ধের সার-রস বে প্রীতি ও আনন্দ--তার সারিব্যে তা পাওয়া যেত, অমৃতব করা যেত সংস্কৃতির উদ্দেলতা। কবি যাদের সম্পর্কে বলেছেন, "বর্দ্ধতির বহিবঁছাঁ পরকে সে বুব তীত্র ভাবেই পর ব'লে জানে কিন্তু সেই পরকে সেই কাকেরকে বরাবরকার মত খরে টেমে আটক করতে পারলেই সে বুদী।" সেই সম্প্রদারের লোকেদের মব্যে রবীক্রনাবের সংস্কৃতিমূলক প্রাণবান বর্দ্ধান্তার লোকেদের মব্যে রবীক্রনাবের মত মাহুষ সংগ্রহ করতে সক্ষম হয়েছিল। আপন স্বভাবের মৃত্ব ম্পূর্ণ বিলিয়ে মৌলানা নিজ বর্দ্ধের প্রতি সকলের শ্রহা আকর্ষণ করেছিলেন।

এই খৌলবীর সক্ষে রবীজনাবের যে বস্তুত্বে 'সল্বন্ধ' এ সল্পন্ধই মানব-সপদ। এই সল্পন্ধের প্রেরণাই— মানবন্ধ। এই বর্ল্পেরই বাণী "যিনি বেদনীর সে পূর্ণ মাতৃষ্কে জানো; — অন্তরে আপনার বেদনার বাকে জানা বার তাকে সেই বেদনার জানো, জানে নত্ব, বাইরে নর।"

ক্ৰির শীবন সহতে আলোচনা ক্রলে দেখি জানের সাধনার সঙ্গে সঙ্গে সারা শীবন বরে চলছে তাঁর বিচিত্র ক্রান্তান - কিন্তু আনুষ্ঠানিক ক্রিয়াকাণ্ডের চেয়ে জানকেই ক্ৰিপ্রাধান দিয়েছেন; এখানে দেখা যাচ্ছে সব আভিয়ে উঠেছে বেদনার কথা। বলা বাহল্য, শান্তেও কন্ম হচ্ছে জান-অফুশীলনের কর মাঞ্জা।

কৰির আহ্বানে আগ্রমে আরও থারা এগে নিলেছিলেন, ইংরেজ শিরাসনি এবং এওজ ছিলেন তাঁদের অগ্রতম। কিন্ত এঁরা সকলেই নিজ নিজ বর্গে নিঠাবাম থেকেও প্রতিচিত ছিলেন মানুষের এক বেদনবোরহক অগ্র মানবর্গে।

চীনাত্বন হিন্দীভ্যন প্রভৃতি গড়ে উঠছে রবীক্রসাধনার বিভারের সঙ্গে। নানা সাধক ও শিল্পী বিশ্বভারতীর বিভিন্ন বিভাগে আসা-যাওয়া করেছেন; রবীক্রনাথের সাধনার মন্ত ও ভার আয়োকন দেশ-দেশান্তর থেকে এঁদের যেমন আকর্ষণ করেছে, ভেমনি এঁরাও আগ্রমের আন্তর্গকে নানাভাবে ক্রণায়িত করেছেন।

অবশেষে একটি অভিনব ব্যাপার দেব। গেল। প্রবন্ধর অভন্ন ধর্মপাননার উপাহসরপ কবির যে ঐভিহাসিক যোগদৃষ্টির ইলিভের উল্লেখ করা হ'ল শান্তিনিকেতনে আরু ঠিক সেরপ সাধনারই ধারা বাস্তবে রূপারিত হরে উঠেছে। রামকুফ বেদন্তে-মঠের সাধক সামী শক্ষরামন্দ শান্তিনিকেতনে চীমান্তবনে সম্প্রতি গবেষক হরে এসে একটি কঠোর সাধনার রভ হরেছেন। তার সাধনার বিধন্ন হচ্ছে—মহেপ্রোদাকোর লিশি ও শিল্পকলার কাঠামোর বিভিন্ন মানব-সভাতার মূলক্ষেত্র আবিষ্ণার।

আরও একজন সংস্কৃতি সাধকের কথা এ প্রসঙ্গে মধ্যে প্রে । তিনি নহাপতিত রাহল সাংস্কৃত্যারন—তিনি হিন্দী-

ভবনে মালেকভাল মাত্র যাপন করেন। চীনাভবনেরট কল্পে এক সভাবে ভিনি একটি মনোত্ত ভাষণ দিলেছিলেন। দেশে प्राप्त श्राकृष्टिक विभिन्ना, काण्डि-वर्ग-वर्षा, नवाक, बांड्रे, नाहिन्छा, শিল্প, ভাষা, পোশাক-পথিছেদ, আঞ্জি-প্রকৃতি স্বকিছর মধ্য দিৰে শাখত এক মানব-বৰ্মা পৰা কৰে চলেতে , ভাৱ সকপ উপল্ডির সাধনাতে ইনিও নির্ভা বলেছিলেন-- বালিয়াভে ভিনি ভ্রমণ করছেন। টেনের কামরার ছাপত শীভের এক রাক্রি। ওদেশের এক যাত্রীর সভে আলাপ ত'ল। তাঁরা প্রস্পর কুলগভ যোগের সন্ধান পেলেন। স্থান ছট দেশের কভক ওলি বিচ্ছিত্ৰ শক্ষেত্ৰ মূল ৰাভ সম্বৰে বিচাৱের ছারা টোনে অবস্থিতির শলকালটুকুর মধ্যেই সে খনিষ্ঠতা আরও দানা বাবে। রাশিধার একটি মন্দির এবং সৃতির কথাও রাহল সাংকৃত্যাহন বলেছিলেন। বিশ্বভাৱতী বিভাতবনের আধুনিক গবেষণা-গ্রন্থ 'গোর্থাবন্ধরে' 🚓 মধোও সেই মন্দিরের উল্লেখ সম্প্রতি চোখে পড়ল। এডের ভূষিক:তে লিখিত আছে: "অমুমান হয়, মহজোন সাধক-গণের ভপঃপ্রভাব - - তিমালয়কেও অভিক্রম করিয়াছিল। প্রভি-বেশী ভাতিদেরও পরস্পরের হার। প্রভাবিত হওয়াই স্বাভাবিত। ...कारकवर्ष बाकावेश नाय-(यांग काट्य शादक ध्रम कि রাশিয়া পর্যান্ত এককালে বিস্তুত চুইয়াছিল কিনা অনুসদ্ধানের বিষয়।" পাদটাকার আছে: "ৱাশিয়ার বাকুতে আলাম্থী দেবার মন্দির শৈব নাথযোগীর প্রতিষ্ঠিত বলিয়া মন্দিরগাতে খোগিত লিপি আছে।" নানা ক্ষেত্রে ঐক্যের এরণ অনুসধান ষেমন বিদ্যাভ্যন চীনাভ্যন প্রভৃতির মধ্য দিয়ে চলছে, কলা-ভবনেও শিল্পের বেদীতে মানবধর্মের গেট সধান ও স্ক্রীর একট অৰ্থা নিবেদিত হচে। আশ্রমের অভান্ত বিভাগে পুরা-কলৌন সন্ধানের চেমে বর্তমান কালোপখোগী শিক্ষা ও সৃষ্টির ভাগিদই বছ।

কবি তাঁর "মান্থের ধর্ম" গ্রন্থের শেষ অধ্যায়টিতে একটি বৌদ বানী উদ্ধুত করেছেন, তার তাংপর্যা হচ্ছে সংসাধের সর্বা-জীব-কল্যাণ। সেই সলেই রবীক্ষনাথ নিজের বিশেষ কামনাট মুক্ত করে বলেছেন, "গুঃখ আগে ত আমুক, মৃত্যু হয়তো হউক, ক্ষতি ঘটে ত বচুক, মানুষ আপন মহিমা থেকে বঞ্চিত না হউক, সমুদ্র দেশকালকে ধ্বনিত করে বলতে পাক্লক—"সোহহ্য।"

বৃদ্ধদেব যে সর্বাদীব-কল্যাণ চেরেছিলেন, কিভাবে ভা সাধ্য করতে কবে, ভার দৃষ্টান্ত দিতে গিরে এই মর্ম্মে বলে-ছিলেন—'একপুত্রবভা মাভা ধ্যমন করে নিজের পুত্রটকে বন্দা করে, সেই মনভা ও প্রয়ম্ভে সকল জীবকে সেবা করতে হবে।' রবীজনাথের অন্তরের নিভ্ত প্রদেশ হতে সমগ্র জগতের প্রতি জামরা সেই বেদনাটিরই প্রবাহ উৎসারিভ দেশতে পাই।

<sup>•</sup> श्रीभक्षामम मधन कृषा



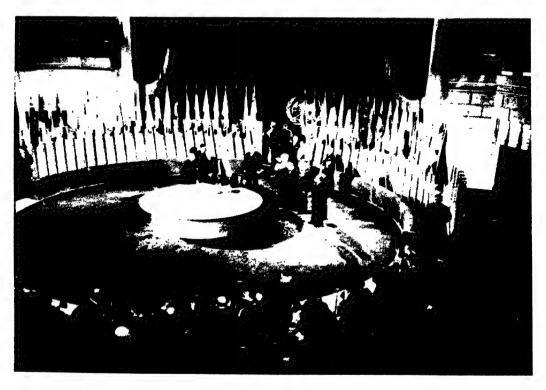
্ক, নেহ্র কাহক মেদেয়া ওইবকে ভারেটায় পার্জ্যুদের একটি মড়েল প্রদান



কোরিয়ায় সাম্মালত রাষ্ট্রপঞ্জ কামশনের ভারতীয় সভা ডক্টর অনূপ সিংহকে কোরিয়ান বালিকার কলের ভোড়া উপহার



বান ফ্রান্সিয়ে।, ক্যালিকোণিয়া— এখানে জাপ শান্তি চুক্তি স্বাক্ষরিত হুইবে



১৯৪৫ সালে সান ফ্রান্সিয়োতে সন্মিলিত রাষ্ট্রপুঞ্চ পরিষ্দের স্ষষ্টি

বেরেদের কাছে লেখা ভ'একখানি চিঠিতে রবীজনাখের त्रम्या-जन्नक्रिक-क्षर्यन सम्बद्धि शतिहास स्थला । एक स्थला देवर्था जित्य (बादका बित्कत बाम विशेषमत्त्व अविकास कराव वकटक अक क'रत वेश्वरंत अवर वकत बहुबा अक विक्रक करह कर्षा कर विभिन्ने रमितक सामा कारत काशास करात-----ভাবটিই তার সেই পত্রথলোতে বাক্ত ভারতে সেটিই নামাভারে তার পরিণত শীবনের উপলব্ধ 'লোহহম' ছাড়া আর কিছু মর। किस श्रीष प्रदा भीरामत श्रीतस (दाकर किम अक-अक्टामि পত্তে এ সৰ অভডতিৰ কথা লিখেছেন তাঁৱ পৰিক্ৰমণ্ডলীকে। के छित्र में वा मिर्ट्स (यम विक् निक करत केंद्रेस उनिक व मकी-ক্রারে প্রাণ্ডর। মুল্রোকা প্রাক্তির মান্ত-সমূত অবলিপ্র চয়ে তাত্তিকভার শুগ্রভা ঘটিয়ে দিয়েছে। কবি ভবন বিলাভে। ধ্ব সন্তব ১০১৮ সন্ট তবে। শালিনিকেতন আগ্রেয়ের শিক্ত অভিত চক্তবভাঁর প্রথমা কভার সুমধর দীলাময় শৈশত-বিষয়ে কবি পত্ৰ পেছেছেন এবং অভিভবাৰুর স্বী শ্রীয়ক্তা मार्था (भरीटक जिलि जाद । य केंद्र भित्यक्त जारज कवि মাড়বের শিবাটকে কোবায় ডলে বরুতে বলেছেন ভা আছে প্রের কংট পঙ জিতে।

Ġ

#### কলাংগ্রহান্ত

লাবণা, এবার আশ্রম থেকে কেবল ভোষাদের ছ'কনের চিঠি পেরেছি। ভোষার চিঠিভে অমিভার জীবনরভাতের ক্তক্টা সাভাগ পেরে ব্ব বৃদি হল্য। ভাকে দেধবার জ্ঞানার মনের মধ্যে বৃদ ঔৎস্ক্য আছে। ভার সলে পূর্বাবারে বিশেষ পালা আমি পূর্বেই শেষ করে এগেছি— এবার কিরে বিশেষ রাগবৈচিত্রা তাক করতে হবে।

তোমার হুদর প্রদীপে যে মাতৃত্বের শিখাটি অলে উঠেছে
সেট কেবল ভোমার কঞার মুখের উপর পঞ্চলে চল্বে না—
ভাতে বিগ্রুননীর আরতি করতে হবে—যবন সকল ছেলের
উপর এই আলো বিকীর্ণ করতে থাকবে ভখনি সেই জননীর
নারতি হবে। আমরা মরনাবী বে কেই আশ্রমে এসে ফুটেছি
প্রত্যেকেই পূদার অর্থা নিজের জীবন দিয়ে পূব করব এই
সেবার ভারই আমাদের উপর আছে—কারো বা শতদল প্রদারা বা পাঁচটি পাভার করবী। সেই অর্থার বালা ভোমাদের বাবের কাছে অপেকা করছে—বেলা ব্রে যেন না যার।

### আশীৰ্কাদক ত্ৰীৱবীজনাৰ ঠাকুৱ

আর একধানি পত্র লিখেছিলেন এই লাবণা দেবীকেই।

ইবন কবি শিলাইদহে। পৃত্র রবীজনাবের পরিণর সম্পন্ন

ইবেছে। পুত্রবধু প্রভিনা দেবীকে সংসারে কি ভাবে প্রভিত্তিভা

দেবতে চান, সেই প্রম আকাজনাট জানিবে কবি পত্র

নিবেছেন। কবির চিত্ত সকল স্ববেই সকল বিষ্তে অসীবের

দিকে অগ্রসর করে আছে; এই করেকটি ছত্তে আমরা পাই তাঁর সংসারের কল্যাণ্যর এই অস্থানটিকে কোন্ অয়ভলোকে উত্তীর্ণ করে দেবার আকাজন ছিল তাঁর মনে। কি পুরুষ কি ত্রী সকলের অভেই তাঁর মঙ্গল-কামনা চিরদিন এমনি হরে প্রকাশ পেরেছে:

Ž,

শিলাইলা নদীয়া

#### কল্যাণীয়া প্ৰ

মা, ভোষার চিটি পেরে খুদি, চলুম। আমার সংসাবের মধ্যে ঈশ্বরের প্রতিষ্ঠা করে, আমি অমুভব করব তিনিই একে চালনা করছেন, তারি প্রস্নুভার ভামার গ্রু আন্লাকিড ভাষে **টঠা**ৰে বিষয় সেবাপ**হভা**র কাছে ভোগস্থাৰে ঔষভা নত ক্ৰেৱইবে এই আমি অংশা ধরে অংছি ৷ উংকে মনে क्षारण अलाख निकार के जेनन कि मा कराल किला बारक मा. टेमिना द्धार भरक, कदाह कवाह खाइदियांच परहे-সংগ্রের প্রিত্রতা এবং শান্তি নতু তথ্য এই জন্ম প্রতিদিন্দ জাঁকে পাবার দাধনা এবং তাঁর কাছে আআনিবেদন করা চাই। যেহেদের মনে ঈশ্বর যংল ভাজিরসংক উৎসাবিত করে দেন তথ্য হয় ধুখা, যে এ যে সংধ্যীতার বিকাশ হয় প্রতিমার মৰো অংশি দেইটি দেবৰ এই আমাৰ মনের আক্তম্। জন্তব্য মধ্যে বে কলাপ্ৰয় মাতৃভাব অংকে, ধা সংসংবের भग्न का लिया पुरुष (परु. भग्न छेपासर भन्न करहे, भग्न क्या (स्ट्रीय, लाक ख्र्णाय, श्रष्ठांत सूद करत, यात क्रांचि (स्ट्रे, विवक्षि নেই যা সকলের উপরে থেকেও সকলের ক'ছে নত যা সকলের শ্রেষ্ঠ করেও সকলের শ্রেষ ক্রাপেনাকে স্থান দেয়, যার অভিযান নেই ওঁগুড়া নেই নিজের অধিকার নিয়ে অন্যোর छैभरत मार्चि कदा काग्न मा भिर्द्धत अविकात क चर्च करत छ অনোর দাবি যে প্রসর মবে মিটারে দের—বিশ্বযাভার সেই কুৰামন্ত মাড়ত্বকে আমি বোমার মধ্যে আমার ঘরে আবিভূতি (मन्दा अहे आधि क्षेत्रदेव कार्ष श्रारंग कर्वति। क्षेत्रव যদি দলা করেন ভবে ধনে রঙ্গে নয় এই অনুতেই আনার খর পুণ হবে। ... বৌষাকে ও মীরাকে আমার আশীবাদ দিয়ো।

> শুভাহ্যাদী শ্ৰিববিশ্ৰনাথ ঠাকুর

এই অম্বতত্বের সাধনা চলেখিল রবীক্রন-বের সমগ্র জীবন বোপে। কোনো বিষয়ই তা থেকে বাদ পঞ্জেনি। তাই না তিনি আমাধের জনো বেবে গেছেন এমন একটি তত্ত্বা ভঙ্কতা ত্যাগ করে এক পরম অধ্যাত্মলোকের সিংহুদার আমাদের সমক্ষে উদ্যাহিত করেছে।

# বন্দী যারা

## ঞ্জীরামপদ মুখোপাধ্যায়

14

अक वक छेरनदात बाकाटल वक वाकीका नदा तम मा। ওবান বেকে চলে আসার পরও প্রভাতের চিত্তারাকো মাধা ভলে দাভিয়ে বাইল বাভীটা। ওই বাভীতে লক্ষীর সিংহাসন প্রভিষ্টিত হরেছিল একদা—আত্তও ভক্তিভরে ওঁরা প্রণাম করেন লক্ষীরণিণ সেই শক্তির উদ্দেশ্ত। কিন্ত লক্ষী কি সভাই ওবানে অবিষ্ঠিভ হয়ে ওঁদের প্রাণে প্রেরণা দেন ? লল্পীকে হারিরে কিংবা দা পেরে-লল্পীপুর্বার ঘটা বেমন প্রভাতদের মত মধ্যবিত সংসারে—তেমনি আচার-উপকরণের বোৰাৰ ভাষী হয়ে ভক্তিটা প্ৰকট হয়ে উঠেছে কি ওবানে ? এই ভক্তির বর্ধ আৰও প্রভাতের কারে স্পষ্ট হয়নি। ভার ৰৰে প্ৰশ্ন ব্ৰয়েছে সভাই কি ভগবানকে ভালবাসি আমৱা ? এই যে সংসারে এত আচরণ নিঠা পবিত্রভার অসুঠান---ৰ্যান বারণা পুৰা পাঠের আড়খর—ব্রিভ ভক্তির চাণে कार किर्म ह-इ करन कम शका-कर्श कारतरम क्रम इ खा-ৰায়ুভাঞ্চিত বেভসপত্ৰের মৃত সারা দেহ কেঁপে কেঁপে ওঠা---এ সবই কি ভিতরের কিনিস? হরতো ভাই--হয়তো ভা নয়। হয়তো মনের মধ্যে ভাবলোকের ভূমিতে এই গাছ-ভলি সহলা সভেত্ব হয়-শাৰাপ্ৰশাৰা ছড়িয়ে সংসাহকে কিছুক্পের ক্ষম আড়াল করে রাখে। তবু এই ভক্তিকে প্রভাভ ভাবে-- শীভকালের বোঁরার মভ। সে বোঁরা ধন এবং দৰ্বান্ত হারেও উর্দ্ধের বায়ুত্তর ভেদ করতে পারে मा। छैभरतत दिमक्नात हार्य माहित मात्रिया (परक मुख्य পাওরা ভার পক্ষেত্তর। সংসারী মাজুষের বারতত পুৰা-পাৰ্বাণ নিভ্য পৃহস্থ দরে যা অস্টিত হয়, নিত্যনৈমিছিক কর্ম ভোত্রপাঠ পুষ্প চয়ন ব্যান মল্লের ক্প প্রণামের मिडी जल्म व नवनव बाबा (यनकन्न धरे नव वृति উর্বতর ভর ভেদ করে অনত শুনোর সহবাদী হতে পারে না: এই সংসারের শভ পাকে কভিরে ভক্তির মুহুর্তগুলি হর অত্যন্ত কণড়ারী এবং ভাবের আয়ু বাল্পের চেরেও লয়ু সংক্ষিপ্ত। বাই হোক বাড়ীটা স্পষ্ট হয়ে বুইল মনে। ভৈলচিত্ৰের ৰাছ্য এবনও কারা বারণ করে ভৈলচিত্ৰের শীচের এলে দাভার। তার মুবে প্রসর দীপ্তি-কঠে অপুর্বা সাত্যা। ওই ব্যারসী যেন প্রভাতের অপতে চেনা মাত্য-শ্বলির পেকে শালালা। ও বাজীর পিলপ্রকের ওপর বে ভেলের প্রদীপট অলছিল ভারই মত স্থিত্ত-আপন ব্রভের बर्या युनर्भ् अक्षे निया। श्रवादात चाविनया मारे-च्यः নাশের শক্তিও রাবে।

বাছীতে বা তো এবন করে কথাগুলি বলতে পারেব না। সেকালের বে গল মা করেন—ভার মধ্যে একালের বঞ্চার ক্ষোভটাই বেশী কোটে।

একালে ভোদের না আছে বাওরার ভোগ—না আছে পরবার সুব। মনের আনন্দ বাক্বে কি করে! ভবন টাকার পনেরো পের আবমণ চাল, ছব দশ পের আর আল মাছের পের বুব মাগ্রি হ'লো ভো আট আনা। লোকের পাণে পাণে সব নই হরে গেল।

—পাপ করছে কারা—এর সঠিক উত্তর পাওয়া মুশকিল।
অভিযোগকারী ছাড়া পাপ হরতো সবাই করে। কিছ উনি
সল্ল বললেন কি সুন্দর করে। একালের শিক্ষা বাদের
সেকালকে ঘুণা করতে শেখায়, ঘুণা না হোক থানিকটা
তাহ্নিল্যের তাব ফোটে—ভাদের স্বাইকে ডেকে ওই গল্প
শোষাবার ইছা হছে প্রভাতের। ওর ইছা হছে বলে—
সাহস ও প্রত্যুংশন্নমভিত্ব সেকালেও চুর্ল্স ছিল না—
শক্তির অর্থ তারা ভূল বুবতেন না—সর্ব্বোপরি রাখতেন দুচ্
বিশ্বাস আপ্রার উপর। কিছ আয়প্রচারে অহন্তার আসে
বলে—সেই বিখাস নাও করতেন ইখরের উপর। এই
ইখরকে পিছনে রেখে মাহুয় এগিয়ে চলেছে আছ। কিছ
শ্বাং, শ্বাং,—অমিভাতের বাণীর মত একটা কিছু আক্রছে
বরে একটা কিছুতে স্থির হবে বাক্তে চার—চারনিক বেকে
স্রোভ উত্তাল হরে ঠেলে দের ভাকে সামনে। শ্বাং, শ্বাং,
সেই পর্ব নিয়ে ভার নিফ্রডেশ যালার হক।

পর পর করেকদিন প্রভাত পেল ওখানে। ওভদর প্রভাক বারেই ওকে ভাকতে আসে। বলে, চলুন মেজ জোঠাইযার হতুম।

প্রভাত সে ছকুম মানে। সেই খরটিতে সিরে বসে।
মেল জ্যের্টাইমা আসেন মিষ্টির রেকাবি নিরে। সবদিন সন্দেশ
মর—খরে তৈরি নারকেল নাড়ু—সরের নাড়ু—কোন দিন
বা চিঁছের পারস। বলেন—মিষ্টি মূব কর তবে গল বলব।
অকুরক্ত তার গলের ভাঙার। সেকালের ঐবর্হ্য যেন সন্দিভ
রবেছে গরগুলিতে। এই বাছীর গৌরবগাণা মর—অপকীর্তিও
"—লদের অভিবি সংকারের পাশে প্রজা নির্বাভনের কথা
—দানের সলে শাসনের নির্বাভা—ভক্তির সলে ভোগপরিলভার আবর্ত্ত নম্মুত্ত চরিত্রের ছজের দিক্টির প্রভি
ইলিভ করে। কালের পৃত্তে গ্রন্থির পর গ্রন্থি পড়ে—কালের
স্রোভ বিবিল করে গ্রন্থির বরুন—ভেসে যার নাছ্য—ভার
বর্ত্ত—ভার অবর্ত্ত—হিংগা ব্যাভি হস্ত ভালবালা প্রভা প্রভি-

হিংসা—ভক্তি ও ভেদবৃদ্ধি কুল পাতা বছক্টা সব নিৰে স্ত্রোভের গভিতে ভেসে চলে সংসার। ভবু মাহুষ চার ধামতে—একবার পিছন কিরে দেবতে—বা ছিল অবচ পার দি ভাই নিরে করনার কুল কোটাতে—কি প্রন্ধর সে করনা—ভেমনি রামরাজ্য প্রতি মাহুষের মনকেই বৃধি প্রশ্বর করে। কোম একটি বিশেষ কালে নর—সর্বাকালে।

এক্ষিম প্রভাত শুভররকে বললে, আছো ভোষাদের বাড়ীতে তো প্রদা-প্রধা এখনও ? কেম রয়েছে ?

७ इक्द चांद्रक ग्रंट वर्टन, चाथि गानि ना ।

কি মানিস না বে শুভ ? বেকাবি-হাতে মেৰু জ্যেঠাইমা ব্যাহাকে বিজ্ঞাসা কয়লেন।

শুভত্তর সলক্ষে উত্তর দিলে—এই পরদা-প্রধা—যা ভাষরা আকও যান।

মেক কোঠাটমা হাদলেন, আমরা যে বছ ছর্মল আর নামাধের কালটাও ছিল রাকা-বাদশার, তাঁরা ইচ্ছে করলেই প্রকার সম্পত্তি কেডে নিভে পারতেম।

এখন তো আর সে কাল নেই।

অভ্যাস আর সাহসের অভাব। কিন্ত হঠাৎ বাইবে গরে ঘোষটা বুচিয়ে দাভালেই কি আমাদের সব দোষ খণ্ডন হয়ে যাবে রে! আগুন অবৈজনা পৃভিয়ে দের—সে ভার যে বাহাছরি নেবার চেঙা ভার মধ্যে নেই।

তা যাই বল—ভোষাদের কালের পোশাকগুলোও কি । বিশ্বী। যেমন ষোটা—ভেমমি কবরকক।

— গতের ওগুলো তৈরি হ'ত আমাদের ক্লচিতে—তোদের ।—তোদের পরেও ক্লচি বদলাবে—নতুন লোকেরা । লাকের ভানের পোশাক দেবে। এমনি হয়—না হলে মাসুষ য পুরোনো হয়—পুলিবী যে একবেয়ে হয়।

একথা খীকার করে প্রভাত। পৃথিবী ভাই আন্ধও পুরাতম 
। লাল আন্ধ আকাশের নীল, গান্তের সর্ক, পাথীর 
চাকলি—অত্দের আগা-যাওয়ার তিসাব হ'ল না পুরাতন। 
কন্ত পর্যুহুর্তে ভাবে এই বে বছ মুগের পৃথিবী পুরাতন হয় মা 
।াছ্যের কাছে—একি শুবু ভার বাহ্ন বৈচিত্রোর প্রভাবে—না 
।াছ্যের মনে নিভ্যকালে খণ্ট হচ্ছে বে পৃথিবী ভারই রঙে 
চারই বর্ণে গন্ধে ধ্যমিতে অপরূপ হরে উঠছে চির পুরাতন 
।ত্ত্বে ধ্যাত্বি অপরাধ ক্রিয়ার বুলে রয়েছে গুলন খন্টির 
প্রবাণ। ক্র লিশু মাটির চেলা গড়ে আমন্দ পায়—বড়দের 
।াজামো জিনিস ভেলে-চুরে বিশ্বল করেও ভার আমন্দ। 
ভর খেই অপতে বাস করতে সে পীকা অমুক্তর করে—সে 
। নিজের হাতে কিছু গড়তে—নিজের খণ্ট আমন্দ-লোকে 
লক্ষেকে প্রভিত্তিত করাই ভার সর্ব্যোত্বম উপভোগ। এই 
নিজের হাতের ক্ষেত্র ক্ষেত্র হয়—জানের সঙ্গে হয়

আছুবিত: পৃথিবী ও জীবন নৃতন বৈচিত্রো ও লীলার সমূদ হয়।

আশ্চর্যা, এই একটি কালের মধ্যে বাস করে আর একট কালকে প্রত্যক্ষ করতে পারে ধূব কম লোকেই। বর্তমানের শব্দ ও আলো অভীত বা ভবিয়তের মৌন ভাষাকে বাঙ্মর হতে দের না—ওই শব্দ-আলোর সমারোহ নিরে মাহ্য মত হরে ওঠে—গে শিহনে চার না, সামনেও অল দূর পর্যন্ত ভার দৃষ্টির প্রসার। যেন চোধে ঠুলি পরানো বোড়া চাবুকের স্পর্ভয়ে চালকের ইপিতে উর্থাসে হুটে চলেছে—দিগবিধিক ভারা হয়ে।

ওঁর মুবে দেকালের গল তনে কোল সহছে নতুন করে কানবার প্রাণ্ধা কেপেছে প্রভাতের মনে। পেকাল সভ্যতার অনেক পিছনে পড়ে নাই। এই কালের মতই মাহুর প্রভূষে মহতে বৈরাচারে বাসনে ও জনস্বান্ধ সক্ষেত হরে উঠেছে। পেকালের অত্যাচার ছিল ছুল—তার প্রতিরোধ-চেপ্তাও তেমবি ছুল। একাল রাজনীতিতে ছুল কলা-কৌশল বিভার করে মাহুমকে হাসি ও ক্রকুটির মধ্য দিয়ে কবন কাছে টানছে, কবন দ্রে সরিছে দিছে। একালের কর্মা মাহুষের ছট রূপ। কবনও বর্গর, কবনও বা বরাজর তার প্রহরণ। রাজনীতির ধেলার দক্ষ মাহুষের এ ছাড়া গতি নাই।

ডান হাতে ভোৱ ৰড়া কলে বাঁহাত করে শহা হরণ।

বৈত-জীবনের সাধনার সিধি লাভ করতে চার মাতৃষ !
আক্ষা, এই হৈত-জীবনের রহন্ত সেকালের বন্ধ বাজীতেও
প্রকাশ পেল একদিন। প্রভাতের খণ্ণ ডেকে গেল—চলতে
চলতে ওর সামনে পড়ল প্রকাও এক গহরে—অভলক্ষা
ফুড়াপুরী।

মাত্র ছ'দিন আগের কথা। প্রভাত আর ওভরর মেছ ভোঠাইমার আগর থেকে গল্প ওনে কিরছিল সেই গলিপথ দিরে। গলিপথ শেষ হলে বৈঠকথানা খরে ওরা পৌছল। হঠাৎ ওভন্তর চঞ্চল হয়ে উঠল। বললে, একটু গাড়াবেম ভার—আমার একটা জিনিস ভূলে কেলে এল্য ওথানে।

কি ৰিনিস-কবিভাৱ ৰাভা নৱ ভো ?

হাঁ—লক্ষার ৰাপা নামিরে ওভঙ্কর উত্তর দিলে। **পাভাটা** কাল নিপ্রা নিষেছিল —ফিরিয়ে দের মি।

चात अक्टी पिम (वनै बहेमरे वा छात कार्ट्स-

মা—সেক্ত নয়। কাল কলেজ ম্যাপাজিনে একটা কৰিছা দেব, আপনি সিলেই কয়ে দেবেন। একটু দাঁড়াম আস্তি।

ও চলে পেল। প্ৰভাত একলা দীভিৱে দ্বের আসবাৰ সজা দেখতে লাগল। বেশী কিছু নাই দ্বে তবু যা আছে তা সাৰাৱণতঃ আৰকালকাৱ দ্বে গাকে না। এর ছাদ এত উঁচু, মেবে এত চওকা আৱ দৈখা এর এমন অমৃত বে হৃতঃই প্রৱ জাপে মাত্মকে তুচ্ছ করে দেওয়ার এই আয়োজন কেন? প্রথম দিন এই ধরে বলে প্রতাতেরও মনে হরেছিল এত ক্ষ আমি। আর কি নগণা। ওঁরা ঘর তৈরি করে মাত্মকে করেছেন অসহায় অর্থাৎ ধরের মহত্বে মাত্ম অভিত্ত হরে কোবায় মিশিয়ে যায়।

কোৰায় ছিলেন ত্ৰিলোচন গেন—সামনে আৰিভূতি হয়ে বললেন, প্ৰভাত এই অপরাক্তে ত্মি কি মনে কর হে ?

আত্তে মেৰু কোঠাইমার কাছে এপেছিলাম।

গুড—গুড। ত্রিলোচন সেন হর্ষধন্দি করলেন। প্রভাতের মনে হ'ল ওঁর স্বর ঈংং জ্ঞানো—উচ্ছুদিত আবেগ-প্রথর। মনে হ'ল অস্বাভাবিক।

জিলোচন সেন বললেন, নিজে দেখে-শুনে কান্ধ করা ভাল। আমাদের কাল ছিল আলাদা। গুরুজনেরা বললেন, অমুক দিন ভোমার বিয়ে—ভথাপ্ত। কোথার বিয়ে—পাত্রী কেমন—কভ বয়স এসব জানবার অধিকার আমাদের ছিল লা, এসব জানানও ওঁরা কর্ত্তবাবোধ করভেন না। এক কথার বিয়ে হয়ে যেত—ভার জামরা যে ঠক্ভাম ভাও নয়। কর্তাদের দূরদৃষ্টি ছিল আশ্র্যা রক্ষের। ঠিক্কী কোন্ঠী—রাশি গণ যোটক এসব বিচারের উপরেও নিজেদের চোধে দেখভেন লক্ষণ, পায়ের গড়ন, চলন, মাধার চুল কপাল চোধ আর জা ঠোট চিবুক গলার স্বর হাসির আওয়াক গায়ের লোম ভন্ন করে মিলিয়ে ঘরে আনভেন স্থলক্ষণা কঞা। বোধ করি আমরা ঠকিনি ভাভে। ভূমি ভো দেখেছ কয়েকখানা অয়েল—পেন্টং ছবি। ভাল লাগে নি ভোমার গ

প্রভাত অংতি বোর করছিল। এ প্রসঙ্গ কেন তুললেন উনি ? ওঁর অংখাতাবিক বরের প্রভাব কি ?

কি হে—চুপ করে রইলে যে—ভাল লাগে নি ? কঠে ভোর দিরে প্রশ্ন করলেন। আদেশের সূর সেই প্রশ্নে।

প্রতিকৃত্য মন্তব্য অসমতার নামান্তর। তা ছাড়া অভ্যভার কারণও ষধন নাই। ওঁদের ছবি কতথানি প্রদা আদার
করতে পারত সে প্রভাত জানে না কিন্তু গল্প ছবিওলির প্রাণ
প্রতিষ্ঠা করেছে। শতিশ্বী, সৌন্ধ্যামন্ত্রী নারী।

প্রভাত প্রদাধিত ধরে বললেন, চমংকার। ওঁদের যে শক্তি—

एकद किदा जम ।

মিলোচন সেন বললেন, ভাল স্ত্রী শুবু সংসারের সম্পদ নর, আভিরও সম্পদ। মুসোলেনীর আজ্জীবনী পড়েছ ভো? ভাল গৃহিনী গড়তে চেংছেলেন ভাল মা যিনি প্রস্ব করবেন বাছাবান ছেলে—জাভির সম্পদ।

ভত্তর প্রভাতের হাত ধরে বললে, আসুন। মানে ? –িত্রলোচন সেন উফস্বরে বললেন, স্বটা না ভনেই? ভাল লাগছে না বুবি? প্রভাতের পানে কিরে বললেন, আমি চাই—ভোমাদের নিজের পছল মভ…মানে আমাদের কাল ভো আর নাই বে, পিভার আদেশে…ভবে ভোমাদের চোধ—অর্থাৎ দৃষ্টিও ভো পরিভার নয়—একটু খোলাটে। ভা হয়ই—কালে স্বাইয়ের দৃষ্টি অমন হয়ই। ভাই ভাল-মন্দ বিচারের একটা ধেই ধরিয়ে দেওয়া কর্ডব্য আমাদের। নয় কি?

প্রভাত হতভাষের মত বললে, আছে ই।।

গুড়। ঝিলোচন সেন ছয়ার চাপড়ে টেচিয়ে উঠলেন। আমি অত্যন্ত আনন্দিত ভোমার কথা গুনে। ভেরি গ্লাড টু হিরার—

ভঙ্কর ভংন প্রভাতকে টেনে নিচে নিরে চলেছে। ইতিমধ্যে মেজ জোঠাইমার গলার স্বর প্রভাত ভনলে। ছি. জান হারিছে ? যারা ভোমার ছেলের মত—

ছেলের মত ? হোয়াট ডুইট মীন বাই ছেলের মত ? আৰু বাদে কাল বে জামাই হবে—জামাই আর ছেলেতে তকাং আছে কিছু ? তোমার জ্ঞান ধুব টনটনে, নয় ? অলোচন সেনের উচ্চকণ্ঠ একডলা থেকে শুনলে প্রভাত।

আকটা রুচ আখাতে ওর ধপ্প ভেঙে গেল। এই জন্মই কি
সাহিত্য-সভালেষে শুভকর ওকে অন্ত:পুরে নিয়ে গিয়েছিল ?
মহিম্মরী নারীর ভূমিভার—সামনে এলেন মেল জাঠাইমা—
হাতে তাঁর মিষ্টির থালা। তাঁর আক্ষ্যা কঠথরে বললেন
সেকালের গল। কেন বললেন ? এই বাজীর ঐথর্যা মহত্ব
বীরত্ব মহাত্তবতা সবকিছু দিয়ে প্রভাতকে অভিভূত করে
দেবেন বলে ?

প্রভাভ হন্ হন্ করে এগিবে চলল। ভভহর পিছন বেকে ভাকলে, প্রভাভ-দা ? প্রভাত মুধ কিরিয়ে চাইলে না।

শুভদর পিছনে চলতে চলতে বললে, রাগ করলেন ? প্রভাত ফিরে চাইলে। অকালবর্ধার মত প্রথমে ওর আফুতি—গলার স্বটাত বেশ ভারি। বললে, রাগ করবার কারণ কি নেই ?

ভভষর আশ্হর্যা হয়ে বললে, কি কারণ ?

এই মাত্র ওপরে খে-কথা হ'ল তা বোৰ করি শোন নি ? বল, এ ব্যাপারের কিছু জান না ?

প্রভাতের শ্লেষোক্তিতে শুভদর প্রভন্ত পেরে বললে, আমি—আমি কি করে শানব।

ওর বিত্রত ভাবে প্রভাতের মারা হ'ল। সভ্য এ অবোধকে ভং সমা করে লাভ নাই। কবিষশঃপ্রাধী ভরুণ—মনের উদ্ধাস কবিভার পত্রপুটে সক্ষর করেই ওর আনন্দ—সংগারের কুটল প্রবেখার সঙ্গে পর সরিচর থাকা সম্ভব মর।

সম্মেহে ওভত্ৰভের কাঁৰে হাভ দিয়ে বললে, বেয়ো এক

দিন আমাদের বাছীতে ভোমার বাতা নিয়ে—যাবে ভো ?

যাব। আপৰি আমার ভূল শুৰুৱে দেবেন ভো ? দেব।

গুভৱত অকুমাৎ আনন্দে **অধীর হয়ে** প্রভাতের পাছের কাছে অধনত হ'ল।

19

ধানিকটা দেরিতেই ঘুম ভাঙল। দিনের আলো প্রথর হয়ে চোবে লাগছে। কানে আসছে তরকারি রানার শস্, একটা অস্তিকর গন্ধে ঘুমের আলস্ত ভেঙে গেল। প্রভাত উঠে বসল।

ভাহ্নিকসভিতে পৃথিবী পুরাতন দাগেই পৌছেছে—চারিদিকের ঘটনাপুঞ্জ সময়ের প্রোতে একই জায়গায় জমবে, ক্ল'জ
নম্বন যা থেকে সংগ্রহ করবে অবসাদ। ছে'ট উঠানের মাধায়
এক কালি বাহীন আকাল—চারিদিকের ক্লন্ত প্রচীরে প্রভিত্ত
কীণ বাভাস—মাছ ভরকারি বাসি ডালের কট্ট ক্লন্ত গ্লন্ত প্রালন্ত আর্থনা গৃতিনার একটানা অভিযোগ-অভিভাপের কেল-কীবনকে বিধাদ করে দেবার প্রপ্রচ্ব উপকরণ
বংগই জানে প্রভাত। জীবনের প্রোত্থারা এর মবোই বিল্প্ত
ইবে না। ওই কালি আকালে উদ্ধাচনের লোভা না কুটনেও
ভার বাদী বহন করে আনে কোমল রঙ; বাভাস সাগরপারের উদার স্পর্শে গুভন উভ্যে সঞ্জীবিত করে আলাকে;
সৌন্ধর্যিও আনন্দে পূর্ণ হয়ে প্রঠে পুরার পাত্র। জীবনরসায়নে জীবনয়াত্রা ছল্লোব্র হয়।

মুখহাত ধুরে পলিটার দিকে চাইলে—উৎসব-ক্লাভ আসরের মতই সেটা ব্রিয়াণ। পত কালের অপরিমিত বাগ্বাহল্যে ওর পুঁজি ফুরিরেছে। নিশানগুলি এখনও গৃহ-অলিজে জামালার বারান্দার নামা ভঙ্গীতে টাঙ'নো রয়েছে—ফুলের মালা ভকিরে গেছে, দীপের শোভাও নাই। করেক দিম আগে সরবে যে বার্ডা দিকে দিকে ছড়িয়ে পছেছিল—আজ তা অন্তর আশ্রম করেছে। খানীনতার মধ্যাদাকে অংশের আসন দিতে হবে অন্তঃপ্র।

একটা রেশন-ব্যাপ নিয়ে মা খরে চুকলেন। একবার বান্ধারে যেন্ডে হবে বাবা —ওঁর পেটে বাধা উঠেছে।

নিরাপন্তিতে ব্যাগট হাতে নিলে প্রভাত।

মা একটি টাকা ওর হাতে দিয়ে বললেন, এইতেই বা হয় আনিস।

প্রভাত বললে, মাছ, আলু সব ভো এতে হবে মা।

চুনোমাছ আমৰি—আর আগুনা এনে বরং কচু আর পৌণ আমৰি। গলার হর নামিরে বললেন, ক'দিনই এটা ওটার বরচ হবে গেল বেশ—আজ ভো মাসের শেষ।

প্ৰভাত বললে, তবে বাক না বাকার।

পাগল । খবে এক ছিলকে তরকারি নেই—খাবি কি দিয়ে ভাত।

প্রভাত বললে, সেদিন বল নি কেন আমার যে সংগার-বরচ বেকে বাধীনত:-দিবস পালন করা যাবে না।

এমন কিনিস বা কমিন্কালে কেউ দেবে নি—ভাবারণ করভে পারি। দিন যে ভাবে চোক চলে যাবে।

ভাই হয়ত যাবে। এই আথাসে মা চল্লিশ বংসর সংসারের 
চাল ধরে আছেন—বাবা দশটা পাঁচটার জীবন বাঁধা 
রেখেছেন। অন্যেরা যেখানে উৎসবে বেপরোরা আনজ্ঞে 
মাতল—এ সংসার সেই পরম ক্ষণেও চিনাবের অকপাত করল 
মনে মনে। চারিদিকের বভ্নথা বাঁচিয়ে অতি কঙে কোধা 
থেকে ছিনিয়ে আনা হ'ল আনক্ষকে—ক্ষীণ আয়্—উপরে 
বিতানো অল জল নীচেয় তার জ্বাম আছে পাঁক।

পলি হাতে সে বাজারে বেরিয়ে গেল। বাজাবের রাপ্তার বহু রক্ষের পণা নিয়ে বসেছে কত লোক—বহু কঠের বিভিন্ন খোনগার ক্রেডাকে করছে বিভাল। আরু ক্রেডাকে করছে বিভাল। আরু কি উপভোগ করেছে খাবীনভার আনন্দ? যে পরম বার্ডা রেডিও যোগে বিঘোষিত হয়েছে ভারভবর্ষের প্রাসাদে কুটারে—শহরে পদ্দীতে—এরা কি ভাবে নিয়েছে সে ধাংগা গ

না—উৎসব অন্তে এরা ভিছমাণ নয়—নীচের কমা পাঁক
উপরে বিভানো ক্ষাের বর্গকে মিল্লম করে নি। এরা চিরকাল
বৈহিলানী বলেই—পরিণাম নিয়ে মাথাবাথা করে না। এই যে
একটি পরিবার পথের কুটপাতে বেচছে লেবু, আম্ছা, কচি
ক্ষাা আর চালভা। বর্মীয়গী গৃহিণী মুভি থেকে কিনিসগুলি
দিছে ছেলেমেয়েদের হাভে—ছেলেমেয়েরা কেউ বা ন্যাকভার
কেউ বা কুটের রকে কেউ বা হাভে করে টেচাচ্ছে—আনামে
ভিন—বাবু আনামে ভিন। মাথন লে যাও বাবু—আমার
রাকাবাবু লে যাও। বিচিত্র ক্র—হাভভার ভগিতে কিরে
চাইছে ক্রেভা—ক্রিনিস হাভ থেকে গিয়ে উঠছে ধলিয়ায়।
এ পরিবারটিকে কানে প্রভাত। পেল ভালে ভাইরেই
আ্যাকশনে প্রাণ দিয়েছে বৈজু।

তার জন্ম করেকদিন মাত্র হা-ছতাশ করেছে মনিয়া।
দিনের পর দিন শোককে টেনে জীবনযাত্রাকে পঞ্ করে
ভোলে নি। বৈজু থাকভেই ওরা বিক্রের নিয়ে পথের ধারে
এমনি করে চেঁচাভ—সংপার-চালনার কৌশল ছিল আরভে।
ওদের সংগারে একটি লোক কমলে—মনে ধানিকটা আঘাভ
লাগে—কিন্ত সংগারের গারে ভার আঁচ পৌছার না। একট
মান্ন্র্যের উপার্জনে বছপোযাভারগ্রন্ত সংগার নির্ভর করে না।

সমাক্ষের গর্কানির তারে দারিত্তা আছে—কিন্ত দীবন-যাপনের সমস্যা তেমন দটল নর। সর্কারিক্ত দারিক্তার দটবোলা প্রণালীতে সামাজিক মানদতের গঠনট ভিন্নতর।

अरमद वाकीद कुमवरदा शाद (केंट्री अक वाकी (बरक अब ৰাষ্ট্ৰীতে কিংবা প্ৰাম থেকে গ্ৰামান্তৱে গেলে পথ ভালের মৰ্ব্যাদা চত্ৰণ করে না-নতন অভিধিত্র আগমনে-বিভেডে বা শ্রাদ্বাসরে লৌকিকভার দণ্ড দেওয়া না-দেওয়ার উপর মান-প্রতিপত্তি নির্ভৱ করে মা--কিংবা সংসাবের কলছ নিয়ে जमारक काम हवाद वावचाल माहे। चर्याद चारमा कक्ष्म ভাবে বেষন প্রভাবেদীতে আর নর্দায়ার প্রভ-ছান বিচার করে না-এদের বেঁচে থাকবার চেপ্তাও সেই ছাতীয়। আক্মিক দৈবছবিবিপাকে এবা ভভিত্ৰত্ব লগ্ধ বাট-ছভিত্ৰ - कनक्षावत्म- कृषिकत्म्य- शत्क किश्वा वाश्वित काकारत হাজারে এরা নিশ্চিক হয়—তবু সেই মৃত্যুর অসৌরব ক্ষ। बबाविएक मश्मादा मुजा-मित्मत भत्र मिन त्य कार्त केंकि মারে যে ভাবে আবিপভা বিভার করে -- ক্ষ করে জীবনী चेक्टिक...अङाङ भीर्षभि:भाज क्वाला। , ভাবলে এরা মধ্য-विष्ठ मन वर्षाहे अर्पन मन्ना। इन्न बुन्न लाइहि मा-अर्पन মৃত্যুকে ভাবছি ভেমন ভয়াবহ নয়-ভবু আকাশ আছোদনে ध मर्ज्यवत- ७१ अन वा छाछ-चाहात नश्रात-अत्मत জীবন্যাপন-প্রণালী যে গ্রন্থিতীন একথা অধীকার করি কেমন করে। শুধু প্রাণধারণের মীভিতে এরা রাম্মালতা নয়---भर्षद मूर्कामन भम्राज्य भिष्टे श्राम्थ अश्रुक विभट्टे श्रुव ना। ছট যুৰের অভিশাপ পুৰিবীতে ছায়া বিভার করেছে, আগামী মুদ্ধেও ছায়া পাচতর হবে। সর্বহারা আর সর্বযয়দের ঘণে बार्ड क्रथ পরিবর্তন করছে—যারা খরের নর—খাটেরও নর— चर्वा९ मदाविख-जात्मत कथांका जावत्व कि क्के ? ना. ভাৱা থাকবে মা—। ভাদের চিন্তা, বৃদ্ধি, প্রভিভা, আকাশ আর পাতালকে বেঁবে রেখে মাধ্যাকর্ষণে নির্ব্ধিত করছে। **जारमंद्र मिरबरे श्रियो, जयम श्रीयो (श्राक जादा बारक)** 

সন্ধ্যাবেলার অনম্ভ আপিস থেকে ফিরে এসে ভাকলেন, প্রভাভ।

প্রভাত এলে বললেন, ভূমি উপরুক্ত ছেলে—ভোষার কাছে আমি এমন ব্যবহার প্রভ্যাশা করি মি। বুবতে পারছ মা? কাল ত্রিলোচন সেনকে অপ্যাম করেছ ভূমি।

আমি ? বিশ্বিত প্রভাত পিতার পামে চাইলে।

নৰ ভ কি। উনি আদর করে ভোষার ডেকেছিলেন, ভূমি ভদ্রভার মধ্যালা রাখনি। ওঁর বাড়ীতে গিরে ওঁকে অপষান করার সাহস হ'ল ভোষার !—আভর্ষা!

পিতার ভর্মনার প্রভাত আলো দেখতে পেলে। কথনও সে পিতার কথার প্রভাতর করে নি—আদ্ধ সে পারলে না নৌন থাকতে। বললে, উনি ত যাত্রা রেখে কথা বলেন নি।

থাম। অনন্ত গৰ্জন করে উঠলেন। জান উনি কত বড় মানী লোক ? নিজে এসেছিলেন—আত্মীয় হবার দাবী নিরে —তনেছেন লেখাপভার ভোনার কেরিয়ার ভাল—ভাই— প্রভাত বললে, বেশ ভ—সে কথা আপনার সলে কইলেই যথেট হ'ত—আমাকে টানবার কারণ ববলাম না।

ওঁর বিষয়-সম্পত্তি ভাবছ সব শেষ হরেছে ? এখনও যা,
আছে সেই সব একজন বুদ্ধিমান বিশ্বাম ছেলের ভত্তাবধানে
দিয়ে উনি নিশ্চিত হতে চাইছেন। ছেলে নাই—ছট মাত্র মেয়ে। একট মারা গেছে, আর একটকে ভাছে রেবেই—
অর্থাং যত দিন উনি বেঁচে পাত্তব—

প্রভাত বললে, স্পষ্ট করে যদি বলতেন এ কথা তা হলে অসমানের কারণ ঘটত মা।

আনত্ত নরম হরে বললেন, অভ বছ মানী লোক—সরাসরি কথাটা পাছতে কভবানি লজা ভাব দেখি। আমি অবঙ বুবেছিলাম—ভেবেছিলাম ভূমি বুদ্ধিনান—ভূমিও বুকবে।

প্রভাত নএকঠে বললে, হাঁ বাবা—আমিও বুকতে পেরে-ছিলাম। তাই কিছু অভন্রভা করে কেলেছি। কিন্ত উনি একথা কেন বুকলেন না যে ওঁর মানসন্ত্রম বেমন উঁচু, অভের মানসন্ত্রম ভেমন উঁচু না হলেও থানিকটা আছে। কোন আত্তমর্যাদাশীল ছেলে ওঁর প্রভাবে রাজী হভে পারে না। কথা শেষে প্রভাত আর সেধানে অপেক! করলেনা।

ভণ্ডিত অনভের বাঙ্নিল্পভির অবকাশ রইল মা। চিরদিনের মন নিরীহ প্রভাত বলে কি। তার বতর একটি মর্যাদা
আছে একথা কোম দিন তো অনভের বাবণাতে ছিল মা।
বতর মত, এও বিচিত্র বটে ! তাঁদের কালে—কিন্তু সে কালের
দৃষ্টান্তে এ কালের তরুণরা অন্তপ্রাণিত হয় মা, কভকটা উপহাসের ভলিতে ভারা সে কালের কাহিমী শোনে। তাঁর নিজের
সংসারে আঞা—অবহেলার মনভাপ এ বাবং ভোগ করতে হয়
মি—আপিসের সহক্র্মীদের কাছে শোনা বহু কাহিমী মনে
গাঁথা আছে। সে সব কাহিমী ভনেছেন মাত্র—মনকে বিশেষ
ভাবে মাছা দেয় নি। পৃথিবীটা বেয়াছা রক্ষে বদলে বাছে
এই বরণের ক্ষোভ কিছু প্রকাশ করেছেন, কভকটা ভাচ্ছিল্য
কতকটা মজা-দেখার মত বার্তাগুলি মনের উপভোগ-রঙ্গে
পরিপাক হয়ে গেছে, নিজ কালের গৌরব প্রচারে সভ্য বলভে
কি আনন্দ লাভই করেছেন এভদিম—আজ ছেলেবেলায় পড়া
প্রপ্রাক্তি সেই কবিভাটা মনে পড়ছে:

কি যাভনা বিষে বুবিবে সে কিসে, কভু আশীবিষে দংশেনি যাৱে!

্ত্ৰহণী বাৰ চুকে দেখলেন, ছ'হাতে বুক চেপে বাৰ অনম বালিশে উপুচ হাৰ ভাৰেছেন। বললেন, বুকের ব্যথাটা কি বাচল ?

₹ ।

গরম কল এনে দেব ?

मा। (भाग, अमिक्क अम।

পুনরনী কাছে এসে বসভেই বললেন, আর কোন আশা নেই, বুবলে ?

কিসের আশা ?

প্রভাভের বিবে দিরে বউ আসবে—বুজো বরসে পারের 

রপর পা দিরে বঙ্গে বউরের সেবা খাবে—

श्रमश्रमी रजाजम, (त्र जाना कदि (न ।

নিশ্চর কর—মিধ্যা বলো না। প্রায় ব্যক্ত দিয়ে উঠলেন নমন্ত্র। আলা কর না ভো সংসার কিসের জঙ্গ কার জঞ্জ চভের ব্যাগার খেটে মরছ।

্দীর্ঘ নিখাস কেলে অনহনী বললেন, যা দেখি চারদিকে। লাতে ভরসা হয় না যে বউষের সেবা পাব।

कि (पर ?

কেন—মিভিরদের বাজী—মূব্জেদের বাজী—দভদের বাজী

—শীলেদের বাজী—যে দিকে ভাকাবে সব শেয়ালের এক
।। কেউ বলে নাযে ভেলের বিশ্বে দিয়ে স্থী হরেছি।

ভোষাদের কালেও এ ব্যাপার ছিল ভো। মূব নামিও ।—আমি আনি—মার কাছে অনেক কথা ভনেছ ভূমি—
নেক সংগ্রহ—

সে হয়ত অভাবের জন্য---

ঠিক তা নয়। তবুমা ভোমাকে ভালও বাসভেন মথেই। কের গায়ের গহনা ভোমার পরিরেছেন—নিজের মুবের বার ভোমার ভূলে দিয়েছেন।

ত্'ৰুনেই থানিকৰুণ মৌন হয়ে রইলেন। অভীত যত ফ্রুণই হোক—স্মৃতির কিনারে কোমল রঙ একটু লেপেই কে। হয়ত সে বর্ণ বিলাসের—ভবু তা আনন্দদারক।

অনম্ভ বললেন, এতটুকু বেলার এ সংসারে এসেছিলে। বলভেন—একটা বিভাল ছানাকে নাভলে চাড়লে যারা ার, আর ষামুষের ওপর মারা পড়বে না ? কিছ আজ বা আসে—ভারা আলাদা সংসারের রীভি নীভি নিরে—লাদা সংসার গড়বে এই সকল নিরেই আসে। ভাদের এক র বাঁবভে পারা কি ভেষমি সহজ্ঞ ভাব ?

याक--- अत्रव कथा (कर्त्व बन बांडाश कर्द्धा मा--।

মা—বুড়ো বরসে নিজের পারে বল বাকে না বলেই বন। আমাদের কালে কওবাটা ছিল বছ—এরা মাত্র্যকে বি ভার ওপরে। ভারা—ভারা—। দীর্ঘ নিবাসের সঙ্গের ছাছলেন অন্তঃ।

ভূমি প্রভাভকে পড়া ছেড়ে কাজে চুকতে বলেছিলে ?

ইা—কিছ ভেবে দেখলাম ভূল করেছিলাম। ওকে ভ

ব রাঙাভে পারি মা যে পড়াবার ক্ষতা আমার নাই।
ছলে পড়িয়ে টাকা রোজগার করছে—ও বাবীন।

না—না—প্ৰভাত ভেষন নয়। স্বাই ওর সুধ্যাত করে। গ্লিক ক্ষিয়নী। অমত প্রত্যুত্তর মা করে ললাটে তর্জনী স্পর্ণ করে হাসলেন:

32

अत नत न्या भाषा अन ।

খাৰীন ভারতের প্রথম শারদীয়া। কার্গকে কার্গকে এর বার্ডা বিখোষিত হচ্ছে। কিন্তু সন্দেহ জারে, পঞ্চাবে আর বাংলার বাস্তত্যাগীর বিপুল সংখ্যার শহতের আমন্দকে ফুটতে দেবে না এবার। বিভক্ত পঞ্চাব আর বাংলাতে সংখ্যালঘু হিসাবে যারা পঞ্চে রইল—ভাদের আস দূর করতে পারে এমন অভ্যাপানির স্কান কে দেবে ? বরাভ্যদায়িনীর মহিমা কেউ উপলব্ধি করতে পারবে কি ?

সাহিত্যের বান্ধারে নৃত্তন শারদীয়া সংখ্যার আবির্ভাব—
আর সব অভাব মোচন করবে এ আখাস পাওরা যাছে।
প্রাতন লেখকদের যে ঘেমন পেরেছেন নৃতন নৌকার টেনে
তুলেছেন উত্তাক্তার। --- যেমন বেল্ড মঠের পারাপারের
নৌকার হাঁকডাক করে যাত্রী বোকাই করা হয়। আর প্রতিযোগিতা পুরু হয়েছে ক্ষারটুলির ক্যারিগর দবলের। কে
কভ ভাল প্রতিমা আনতে পারেন ভারই উভোগ আয়োলন
চলছে। ভারতবর্ষ যথন প্রাধীন হয়েছে উৎসবটাও সেই
গৌরব অধ্যায়ী হওয়া চাই—টাকার হিসাব রাধার প্রয়োজনই
বা কি। পাভায় পাভায় চাধা সংগ্রহের ধ্য লেগে গেছে।

প্রভাতদের বান্ধিতে চাঁদা আদায়করৌরা এল। এক দল মর, ড্'দল।

অনস্ত বদলেন, গেল বার ভো এক কারগার চালা দিয়েছি, এবার ছ'কারগায় কেন ?

এবার একটা নতুন পূজো হচ্ছে ভার।

ভা হলে টাদাটা ভাগ করে নিও।

ভা কি করে হয় স্যার। আর পেল বারে যা দিরেছেম এবারে ভার চেয়ে বেশী না দিলে—বুঝভেই ভো পারছেম খাধীন ভারতের প্রথম প্রো—

অনন্ত বিরক্ত হয়ে বললেন, ভারত স্বাধীন হয়েছে, আমাদের আর ভো বাড়ে নি বাপু।

স্থাধীনতার জন্ত কলে দেশের লোক কল্ত কট সহ্ত করেছে ভার---সামান্ত হ'টাকা টাদা---

অমন্ত চটে উঠলেন, যথন উপাৰ্ক্ষন করবে তথম এসব লখা লখা কথা বল, আছ তো বাপের হোটেলে—

ছেলেরা চটে উঠল, আযাদের ইন্সণ্ট করছেন। আছে। দেখ্লেদে।

সবাই একযোগে চীংকার করে **উঠল, জ**র হিন্দ**্**।

প্রভাভ বেরিয়ে এসে বললে, তবু তবু টেচাচছ কেন ?

দেবুন প্রকাত-দা---আপনার বাবা আমাদের অপনান করেছেন--উনি যতকণ না মাণ চাইছেন ততকণ আনরা

প্লোগান আওড়াব। বলে ছেলেট দলের দিকে কিরে চীংকার করে উঠন।

দেশের শত্রু---

সমবরে সকলে প্রতিধ্বনি তুলল, মুর্দাবাদ।

প্রভাত হাত কোড় করে বললে, আমি ক্যা চাইছি।

ছেলেদের দলপতি সামনে এসে বললে, আছো—সে বা হয় হোক—টাদাটা এখন পাব কি গ

পরভ এসো।

भवारे क्या दिन्स् श्रमि मिएछ मिएछ हाम (अम ।

অনত ততক্প ক্রোবে কোতে তাঁপছিলেন। বললেন, তুই ওদের টাকা দিবি বললি কেন? যত সব গুঙার সর্দার—
পুকোর নামে গুঙামি।

প্রভাত বললে, আপনি নেয়ে নিন গে—আপিসের বেলা হ'ল।

অনম্ভ বললেন, কিন্ত বলে রাখছি প্রভাত—ওদের নিরে যদি আমরা খাৰীনভার বড়াই করি সে বড়াই বেনী দিন শাকবে না।

প্রভাত বললে, বাবা, ডাইবেই একশনে এরা পাড়া বাঁচিয়েছে।

হঁ—তাই গুণানিতে হাতটি হরেছে পাকা। এসিড বাল্ব, বোমা তৈবী, ষ্টেনগান চালানো, ছোৱা মারার কাষদা আর সেই সঙ্গেদের মত সুসু উচ্চারণ—।

প্রভাত তক তুললে না। শান্তকণ্ঠে বললে, আপনি নেয়ে মিন গে।

অনন্ত গৰু গৰু করতে লাগলেন।

বাজীর মধ্যে আসতেই সুময়নী বললেন, ওরা টেচাচ্ছিল কেন গো?

প্ৰোৱ টাদা চায—যত সৰ মা-মহা বাপে-খেদান ছেলের মাতৃত্ততি দেখলে পিতি শুদ্ধ হি বি করে জলে।

সুময়নী বললেন, ভা থাদের যেন বিদেয় করলে—যেরে জামাইকে ভো—

ভদ্ম করতে হবে—ময় ? ভিন বছর হ'ল বিয়ে হয়েছে ---এবনও ভদ্ম পাৰ-আহলাদ যে বই বই করে উবলে উঠছে !

অনম্বর তিক্ত হাসি দেখে সুনরনী আপনাকে সামলে নিলেন। নরম গলার বললেন, লোকত: বর্মত: না হোক — আপন স্থান—

পরগোরের মেরে আবার আপেন হয় কর্বনও ! ওদেরও ছেচি দেহি রব। আমাদের মত বারা—তাদের বর্দ্ধ নেই— সমাজও নেই—আমরা সব স্প্রী ছাড়া—কালাপাহাড়। বলে উচ্চকঠে হেসে উঠলেন অনস্ক।

স্থনমনী চূপ করে রইলেন। স্বামীর মনের বেদনা তাঁর মনেও যে স্কারিত হয় নি ভা নয়—কিন্তু শারদীয়ার দিনে মেৰের মান ব্ৰবানি—ভার কলনাকে পীড়িভ করে তুলছে। বংসরাভে একবানি কাপড় দিবে স্বেহ প্রকাশেরও স্বোগ বুঝি তার ঘটবে না।

আনত বললেন, সন্তার দিনেও খণ্ডর নশার ভিন বছরের বেশী কাপভ দিতে পারেন নি—আমাদের গায়ে নিশ্চর সে হংব লেগে নেই! স্নয়নীর মনে কাঁটার মন্ত বিবৈ আছে সে বাবা। অদৃষ্ঠ কাঁটা—চোরা বেদনা। সে গভীর হংব আছেও অস্তব করেন তিনি তাই নিজের মন দিরে মেরের মমকে আর্শ করেন বার বার। হংব গায়ে লেগে থাকে না সভ্য কবা—কিও বাইরেটা থদি মাস্থযের সব হ'ত।

মেরেকে আমবে না এবার ? অনেক দিন দেখিনি ভাকে।
—অভ্যন্ত কোমল কঠে প্রদয়নী বললেন।

সের অনন্তর মনকে পর্শ করঞ্জ একটি নি:খাস বুকের মাঝে টেনে নিরে ভিনি বললেন, মেরেকে কে আর না দেশতে চার বল ৷ কিন্তু রেশনের বাজার—চাল জোগাব না কচিছেলের হৃহ জোগাব! মা আসেন বটে বছর বছর—কিন্তু কি দেশতে যে আসেন!

দীর্ঘনি:খাসটা আর চাপতে পারলেন না।

মা এলে যারা বুসী হয়—তেমন তেমন লোকের সংখ্যাও বাংলার কম নর। সেটা মাকে দেখবার আগ্রহ নর—বৈচিত্র্য-সন্ধানী মনেরই খেলা হয় ত !

এর মধ্যে অনিমেষ দিন ভিনেক প্রভাতদের বাছিতে একে কিরে গেছে—প্রভাতের সক্ষে দেখা হয় নি। এক দিন একটা চিট্টি দিয়ে বলে এসেছিল—বিশেষ দরকার, ভাকে এক বার অবশ্য করে পাঠিয়ে দেবেন। বলেছিল নেপব্যচারিশী ক্রমনীকে উদ্দেশ করে'।

সহক যেলামেশার মধ্যেও রহং একটি ব্যবধান ছিল ছু'
বাছীর। প্রভাতের সঙ্গে দীপা বা অনিমেধের অন্তর্মকতা
বাকলেও ওরা কোন দিন প্রভাতদের অন্তঃপ্রে আসে নি।
এ বিধরে ওদের সঙ্গোচ কভটা ছিল বলা কঠিন, কিছ প্রভাত
সম্রত হয়ে উঠত ওদের ভাক জনলে। ভাভাভাভি বাইরে
এসে ওদের টেনে নিরে যেত অন্তদিকে। এ বাভিতে ওদের
অন্তর্গনা করবার সাহস কোন দিনই প্রভাতের হয় নি।
বাভীর স্প্রকটিত দৈন অববা অভাবগ্রত মানুষের মাজাজানহীন
আলাপের অসৌকন্ধ—কোন্টাকে ভর করত প্রভাত, কে
ভানে। ওদের বা কিছু আলাপ পর্বের দিকের একমাজ
ভানালার মাব্যমে স্প্রশার হ'ত।

ইদানীং প্রভাতের সকোচটা বেভেছে। বিশেষ করে
টিউশানি না নেওয়ার পর। ওরাও এই প্রসঙ্গটিকে সবতে
এভিয়ে গেছেন—ভবুমনে হয়েছে ওদের আলাপের সফ্রফ স্বটি ঠিক মত আর বাজ্ছেনা। অনিমেষের কাছে ও বেশ বামিকটা অপরাধী হছে আছে। প্রভাত বাড়ী কিবলে সুনমনী বললেন, বড় বাড়ির ছেলে নেছিল—এই বে চিটি। বলেছে বিশেষ সম্বভাষ, বেধা নিছে। একটু থেনে বললেন, তুই বুকি আর ওনের ওধানে। নিস্কাল প্

श्रकांच रमाम, बाबाद जबद द्व मि।

সে কি বে—ভোৱ কি এড কাজ যে বছুৱ সলে দেবা বিতে সময় পাস মা ৷ ওৱা ভোকে ভালবাসে বলেই মা বিজে! বছলোকের সলে অসম্ভাব করলে নিজেরাই কট াবি—

প্রভাত আহত হরে নিজের দরে এনে বসলে। ছুলের লাপের এমন অর্থ কোন দিন ওর কাছে স্পষ্ট হর নি। দের আলোর প্রানার প্রকারে কান্তর কালের প্রকারে প্রকার কালের কাল

লাভির চেছারা এমন কুংসিত নর—চিভাসক্ত সত কমত না গ্লানি। টিউশানি পাবার প্রত্যাশার একবার ব তার খুলবৃত্তিটা প্রতাতকে রচ আবাত করেছিল। সেই বাতিক মুহুর্ত্তও নিঃশনে সরে গেছে—কিছ অভাবপ্রত নাবের ক্লেকরাশির কিছু অংশ প্রতাতের মনে সঞ্চিত হরে ছে। ও তেমন সহক ভাবে অনিমেষদের সকে বিশভে বছে না।

পরের দিনও ও অনিষেষদের বাকীতে পেল না । অনিষেষ বিশেষ করে । বিশেষ করে । বিশেষ করে । বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ ।

ভবে ? ওবেলার বছকণ অববি অপেকা করলাম—এলে
—তদলাৰ কি একটা সমিতি নিবে উঠে-পড়ে লেগের।
একটা কিছু চাই তো। প্রভাত হাসলে।
এবার বোব করি প্রোতে কোবাও বেরুবে না ?
প্রোতে বেরুবার সাহস আমাদের—
এ বেন সেকালের দেশত্রমণ। পারে হাঁটা পব—পর্বে
ভাকাত। অনিষেব শব্দ করে হাসলে।
ভা ছাডাও সাহসের দরকার হর না ?

ই—টেম কলিশন ? আছো প্রভাত—প্রাবের নারা ভোর

বেশ কৰে প্ৰাক্তি প্ৰভাৱ — প্ৰাক্তি প্ৰভাৱ কৰি হ'ল কৰে প্ৰেক্ত ?
প্ৰাণ বাৰিতে প্ৰাণাভ বলেই তো—

ভ গোৰি বাৰ : অনিবেষ ভাছা বিলে : ভোৱ ভাছে

একটা পরামর্শের কচ ছ'বেলা ইাটছি—ভোর কিছ গ্রাছই বেই।

कि अवन नवावर्ष ?

এবার পূজোটা কি কলকাভার কাটাতে হবে ? না কিছুতে নর। আমি বলহিলাম দিলীতে বেড়িবে আসা বাক—

मन कि--वाक्वामी-वर्गन।

मीभा वनाय मार्किनिर ।

चाद७ जान । अटकवाद्य मामाद वाकी।

ৰামার বাভী ?

নৰ ? মা তো কি বছর ওখানেই আসেন এই সমলে।

— ওই হিমালরে।

— ওই হিমালরে।

জনিমেষ হো হো করে হেলে উঠল—তাই ভাল—কি বলিন গ

मन कि । প্रভাত निक्रश्नाद ननाव क्रांव पिरन ।

ৰানে ? সবিদ্যৰে প্ৰভাভের পাৰে চেরে হেসে উঠন অনিষেয়। বেন ভোৱ পক্ষে ক্লকাভাভে থাকাও ব্য— পাহাডে যাওয়াও ভাই।

উদাস দৃষ্টিতে অনিষেধের পানে চেরে প্রভাত বসলে, ভা ছাভা কি ।

ण इस्म पूरे यावि मि ?

প্রভাভ আই না বলভে পারলে না। বছর চুই আংগ ওরা শিলং গিরেছিল-- পুরস্থতির মত ভার রেখা এবমও সমস্ত বৃত্তিতে লেগে ব্রেছে। পাণ্ডবাটে প্রমার বেকে মোটরে ওঠা — নাংপোর ক্রসিং-এ আপ্-ডাউন ছ'বারের মোটরগুলির नाकारकात--भाराकी (सामध्यापात कार्य कमनातन् कमा আর স্পিল পাহাড়ের পথে বাঁকের পর বাঁক ছুরে মুফুণ প্রভি बाहिदार एक अधियाम आध प्रत्य त्यंता एक वरन मान हवा। দেদিৰও তা ৰপ্লের মত মনে হয়েছিল। পর্বাতসাক্ত ভরলারিভ যোজন-বিভূত ক্লাম-সমারোহ-নীলের চক্রাভপের সদে ভার ষিভালী—দে বেদ পুৰিবী ছাড়িয়ে আরও কোন প্ৰিবীর বার্ডা। প্রভাহের বৃদ-বৃলিম্লিম প্রিবী নর-কলছ-কোলাহল মাধা গৃহাক্ষও মহ, শাণিতমুধ তীরের আবাভে विष भीवम बाह्य विविध नम्या मन-- नम्म-- धरादिष উৎসের মত সুরের বঙ্কার ভূলে দৃষ্টি থেকে নেপথ্যে অন্তৰিভ हरबाह अवर स्मर्भा (बरक चक्रत चालब मिरबाह रम चनर। লে জগৎ স্বপ্নে পাওয়া জবচ চিরজীবী।

কিবে—বাৰি তো ? অনিষেষ ওর বাড় ধরে নাড়া দিল। প্রভাত বাড় নাডলে।

দীণা বললে, ৰমে আছে সেবার বিশণস কলস থেকে কিরতে পাহাড়ের বাধার এক বাঁক রভোভেন্ডুন বেথে ভোরার আর্ডি, 'উত্তত বত শাধার শিধরে রভোভেন্ডুন শুছা।' দীপা ভেকে নিবে গেল চাবের টেবিলে—নিপুণ হাডে বাবার-ভরা প্লেট রাবলে নারনে—পেরালার পেরালার ঢাললে চা—পিরানোর ভূললে পুর। হাসিতে গরে ক্রনার মশগুল ভবে কেটে গেল দীর্ঘ সমর।

বাজীতে ফিরে এসেও স্থের বোর আর স্বের মোহ কাটল না প্রভাতের। মনে হ'ল পৃথিবীর ভপস্থাই হ'ল এই ভগংকে আরম্ভ করা। স্থের মাধ্র্য স্থারী হর বাভ্বের উপক্রণ নিরেই। বস্তকে বাঁববার কৌশল যার আরম্ভ নর ভার শক্ষে শুরু বিলাস নয়—পীড়নও বটে। বহ্নি-সম্পিত প্রক্রে আলা…

কানালাট বুলে দিলেই গলির ওপ্রান্তে তেতলা ঘরণানি দৃষ্টিতে পক্তে। সন্থার মুবে ও ধরে নীলবাভির আলো জলে—

লে আলো বাজির মধ্যবাবেও অলে— বাজিশেষে প্রভাত-ভারার সক্ষেও পালা কের। কাচে-বেরা কাছদের আলোর চারধারে পতকেরা ভাষা বাপ্টাতে পাল্টাতে প্রায় বৃদ্ধিত হরে পড়ে, তবু আলোর বোহ ভাগের বোচে দা।

কভ বিনিত্র নিশীবে তেতলা বরের ওই আলো বেবে প্রতাতের মনে হরেছে—৩ই আলো আলার তপভাই পৃথিবীতে সার্থক হওরার মানদও। যশ—সৌভাগ্য—স্থ—কগ্পরুক্তের ফলের মতই অনারাসে চয়ন করে নেওয়া যার—সম্পদের দক্ষিণা বদি করতলগত হয়। সে সম্পদ বিবাতা দেন না— তাগ্যও দের না—বৃদ্ধি আর উভ্যের আঁকনী দিয়ে পেড়ে নিতে হয়।

76E 2 W

## যুগদন্ধি

### ঐশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

ৰক্ষা ভেমনি বিচিত্ৰ আৱ আকাশ ভেমনি মীল, ছারিবেছে শুধু প্রকৃতির সাথে মাত্ম মনের মিল। জ্যোৎসা ভ আর হনর স্লিম করিভে পারে মা ভার, অক্লণ পারে মা পুঞ্জীভূত সে দূরিভে অরকার।

সৌন্দর্ব্যের সন্ধানে কেহ যাত্র। করে না ত্রক, ত্রেহ-করুণার অন্তর কারো কাঁপে নাকো হরু হরু।
প্রতিহিংসার মন্ত মানব, অন্তরে পৃথি' তর
ভাগংখিচারগভার করে সে বিচারের অভিনয়।

মাহ্ব ভাবে না—কি তার ইছা, ভাবে না কি-বা সে চার, পৃথিবী এ কোন্ অনিন্চিতের রবেছে প্রতীকার ? কোবা আমন্দ ? হন্দবিহীন জীবনে বাজিছে ব্যথা। কোবা প্রশান্তি ? অন্থতব করে দারুণ অহিরতা।

কুল্ কুল্ কল-ধ্বনিত এ নহে শান্ত নদী, আপনার মনে একটামা স্রোত বহে নাকো নিরবৰি। এ বে সীমাহীন কুন সাগর, থামে না আন্দোলন, বাহুর আঘাতে বার বার বারি ক'বে ওঠে গর্জন। দেখিলা শেখেনি, ঠেকিলা শেখেনি; কে ভাৱে সভ্য কহে, আধি-মানবের আধিমভা আন্দো রক্তে বাহার বহে! বিচুৰ্গ হ'ল—ধিল বাহা-কিছু সুক্মার স্থলর। শোনা বাৰ তথু বুছের রখ-চক্তের বর্ণর।

প্রসর-সাধনা-ময় মাছ্য প্রীভির প্রার্থী মন্ত্র, চাতে ছর্ম্মার বিপূল শক্তি, চাতে নির্মান কর, চাতে প্রস্তুত্ব, একাবিপত্যা, ক্ষাহীন সংগ্রাম, ক্ষীবনচিহ্ন-বিলুপ্তি—বুকি শান্তি ভাহার নাম।

প্রকৃতির স্নেহ, শোভা ও স্থানা বৃদ্ধ হাদরে ভবি' জীবন-সাবনা করিতে হবে বে আবার মৃতন করি। কেন বিক্ষোত ? কেন এ বিরোব ? কেন এত সংবাত ? বহু, নিক্ষের অস্তর-পানে কর গো দৃষ্টিপাত।

আকাশে আকাশে স্থ্য-ভাৱার যে স্থ প্রকাশ, সেই স্থার আৰু বাজিরা উঠুক জীবনের যত গান। রূপের সন্ধ্যা এসেছে—জান না ? এল সন্ধিল্প, আর দেরী নর মনোমন্দিরে কর পূকা-আবোজন।

## কিন্নর-দেশ

## ঞ্জীধর্মদেব শান্ত্রী

## অমুবাদক শ্ৰীবীরেন্দ্রনাথ গুহ

িকরর বা কিররভূমি সাহিত্যিকদের ক্ষনার সৃষ্টি নহে। কিরর-দেশ। কিরার বা কিররভূমি সাহিত্যিকদের ক্ষানের। কিরার ও তিব্বতের রাগাযোগ অতি প্রাচীন ও অতি ঘনিষ্ঠ। আকৃতিগত বৈষমা সংস্থেও। বিরোগত সাদৃশ্য এতছুভরে আনেকটা। কিরর-পরীতেও লামা আছে। সারেরা অত্যন্ত গরীব ছরিজনশ্রেণীর লোক—নিপীড়িত। তিব্বতে মানিষ্ট প্রভাব প্রভিতিত হওয়ার ফলে এতাবং অজ্ঞাতপ্রার কিররভূমির কথা থে-কোন দিন গুরুত্বপূর্ণ সংবাদ হইয়া উঠিতে পারে। লেখক কিররদের অর্দ্ধদের বলিয়াছেন। এমন্ট অভিনব তারাদের হিক সৌন্দর্য, আর অপূর্ব্ব তারাদের মিহি ক্রপর । পাঠক অজ্ঞাতনার এই হিমাচলবাসী আদিবাসীদের শিকা দীকার, জীবিকার, মাজিক রীতি-নীতি ও আর্থিক অবস্থার চিত্র এই লেখার পাইবেন।

লেখক এগার মাস আবে লিখিয়াছিলেন—"হিমাচকপ্রদেশের রাজনী শিমলার সহিত এই সীমান্তপ্রদেশের মোটর ও টেলিফোন বারা
বোগবিধান রাষ্ট্রক্ষার দিক হইতেও প্রচোজন।" আজ এই প্রচোজন
বিশেষ উপলক্ষ কটাতেছে।

প্রাগ্জ্যোতিবপুরের কামরূপের সহিত হাজার মাইল পশ্চিমে (অবস্থিত লবের প্রাচীন রাজধানী কামরূর কোন সম্বন্ধ ছিল কি ? স্বাবার থিতে পাই চীনীতে বাণাস্থরের স্থূৰ্গ ছিল—স্কুবাদক।

এক সময়ে লোকে মনে করিত হিমালর অলজ্য। কিছ জানের উন্নতির এই যুগে উত্কু শৃক্ত আর অলজ্য নহে। ফানের প্রসাদে স্থান-কালের ব্যবধান আৰু প্রায় মাল্ম হয় । কিছ কিন্তর-দেশ-বাত্রীর কাছে বিজ্ঞানের সব চমৎকারিতা ক্বারে যুটা মনে হয়। এ কথা যে বলিতেছি তাহার কারণ নলা হইতে ১৪০ মাইলের স্বন্ধ, মকল গ্রহের দ্বন্ধ অপেশা ক্ম মনে হয় মাই। কিন্তর প্রদেশের প্রধান স্থান চীমী নলা হইতে ১৪০ মাইল স্বন্ধ অবস্থিত।

১৯৪৮ সালে শিষলা ও পূর্ব-পঞ্চাবের রাজ্যগুলি লইবা 
াচলপ্রদেশ সঞ্জিত হয়। অন্তর্ভুক্ত রাজ্যের মধ্যে প্রধান 
স রাষপুর, বৃশহর, সিরমোর, মঁডী ইত্যাদি। ভারতভার হইতে ইহাদের ভাতা দেওরা হয়। মঁডীর রাজা 
ার সকলের অপেকা বেশী পান। এই প্রদেশের ক্ষেত্রকল 
৬০০ বর্গমাইল এবং লোকসংখ্যা ১৩৫০০০। হিষাচলদশে বিলীন বৃশহর রাজ্যের ক্ষেত্রকল ৩৮০০ বর্গমাইল, 
কিসংখ্যা ১১২০০০। বৃশহরের কিয়র-অধ্যাবিত ভু-ভাগের 
ফকল ২০৬০ বর্গমাইল ভার লোকসংখ্যা ৩৫০০০। কিয়রদশকে কুনোর' এবং কিয়রদের 'কুনোরা' বলা হয়। 
নরা কিয়র শক্ষি ব্যবহার করিব। কিয়রের পূর্ব-পশ্চিমে 
নত, পশ্চিমে কুর্ (পঞ্চাব), উভরে—লাহোল, দক্ষিণে 
রাবপুর রাজ্য। ক্ষির-দেশ ভারতের সীমান্তপ্রদেশ।

ইবার সীমা তিকাতের মগম্যা গ্রামে মিলিয়াছে। সংলগ্ন গ্রাম শিবকী তিকাতের সীমার অবস্থিত। এই স্থানে চুই দেশের সীমানা মিলিয়াছে। এই পথেই প্রাচীমকাল হইতে চুই দেশের আদান প্রদাম চলিয়া আসিতেছে। ভাষা ও সংস্কৃতির দিক হইতে তিকাত ও কিয়রের মধ্যে প্রব সাদ্যা বর্তমান। কিছ



কিন্তর প্রদেশের অশোক আশ্রমের কর্মীরন্দসহ জীবর্দ্যদেব লাগ্রী ও শ্রী আর. এস. বিশ্র

ভিক্ষতী মগণের অপেকা কিম্মরবাসীদের উন্নততর মনে হয়।
এই সীমাজপ্রদেশে বৌধনশ্রের প্রতাব বেশ বুরা যায়। পামআহারে, নীতিনীভিতে ও বেশকুধার তিকাতবাসীদের সহিত
এদের অনেকটা মিল; সব চাইতে বড় বাববান, ভিক্ষতে বর্ণভেল নাই, কিছ কিম্নরদের মধ্যে তাহা পূর্ণমান্তার বিভ্নান।
ভেমনি তিকাতীরদের অপেকা কিম্নরদের সংস্কৃতি ও বুর্দি
সম্বিক বিক্লিত। তাহা প্রাচীন আর্থ্যবর্শ্বের দান। বৌধবর্দ্ম উহারই এক শার্ধা। আর উত্তর বর্শ্বের সম্সিদ্ধান্ত
অহিংসার ও তপভার বিভার ক্লম্যাবারণ্যে বৌধনর্শ্বের
প্রসাদেই হইয়াছে।

## দেব-জাভি কিন্তব

সাংস্কৃতিক সাদৃষ্ঠ বাদ দিলে, কিন্নর ও ভিন্নতীয়দের
আকার-প্রকারের ভেদ সুস্পষ্ট। কিন্নরেরা দীর্ঘাকৃতি,
তিন্নতীরেরা অপেকাকৃত ধর্মকার। আকৃতিতে কিন্নরেরা
প্রাচীন আর্বাদের মত। কালিদাস কিন্নরেদের অধ্যুধ বলিরাভ্রেম। তাহা ঠিকই মনে হর ? যে অর্থে বামর অর্থ-মর,
কিন্নর সে অর্থে অর্থনের। ইহারা মাসুষ ও দেবভার মধ্যবর্তী।
এত প্রাচীনত্ব, এরপ অতিমানর দেহ-সৌঠব, এবন অপূর্ব্

কঠবর আর কোবাও শুনি নাই। কিন্তু দারিত্রা আপরিসীম। অবচ চুরি এবানে নাই-ই। রাভার বান গম কেন্তু কেলিয়া গেলে, অপর কেন্তু তান্তা হোঁরও না। ব্যক্তিচার নাই বলিলেই হব। বহু-পতি-প্রবা বাক্তিলেও কোন জ্রীলোক মঞ্জপান বা অভ নেশা করে না। এবানকার লোক কোন কোন বিষয়ে আমাদের অপেকা প্রেঠ। প্রাচীনকাল হইতে এই লাভি উৎকৃত্র বলিরা গণ্য হইরা আসিরাছে। পুরাবে, মন্তাভারতে, এমন কি উপনিষ্যে পর্যন্ত কিন্তুর্যের বহুর্যে, বহু প্রাচীন সাহিত্যকারের কিন্তুর্যের বহুর্যে, বহু প্রাচীন সাহিত্যকারের কিন্তুর্যের বহুর্যে, বহু প্রাচীন সাহিত্যকারের কিন্তুর্যের বহুর্যে, বহু প্রাচীন সাহিত্যকারের। কিন্তুর্যের বহুর্যে, বহু প্রাচিন



ক্ষিত্র সেবাসক্ষেত্র ছুই ক্ষম সভ্যসত্ প্রবর্গনের শাস্ত্রী

দেবৰাভিতে তুক্ত কৰিয়াহেন , নৃত্য, স্বভি ও সঙ্গীতকলার সহিত ভাহাদের নাম কৃতিয়া দিয়াহেন । চিয়দিন ইহারা শান্তিপ্রির ও কলা-প্রেমিক । ভাহাদের প্রাচীন রীতি-মীতি আৰও স্ববিভ কিন্ত হুর্তাগ্যবশতঃ তাহাদের মধ্যে আবিক ও নামসিক দৈত পরিব্যাপ্ত । জীবনধারণোপ্যাের আহারও তাহাদের মিলে না । অনেককে আমরা ক্ললে ঘাস-পাতা ঘাইরা থাকিতে দেবিয়াতি ।

কালসীতে বাভাৱাত করে এমন বহু কিন্তর বন্ধু গত তিব বংসর আবাকে চীনীতে বাইতে অহুরোধ করিতেছিলেন। নিচাম কর্মচারী ঠকর বাপার পরামর্শে হুগনলাভাই পরীধের সলে এবার কিন্তর-দেশে বালা করি। শীতকালে কিন্তরেরা তেড়া-হাগল লইরা শীচে চলিরা আলে। বে সব হামে ভালারা আসে ভ্রমব্যে কালসী প্রধাম। কিন্তর-কালসীর এই সমন্ত পুরাকাল হইতে চলিরা আসিয়াছে। কালসী এক সমরে প্রধাম বাগিল্যকেল হিল। আর সংস্কৃতির দিক হইতে, ইহারই মদীর বারে বহারাক অপোকের চৌক শিলা-লেখ বিভ্রমান। ভালা ভারভীর সংস্কৃতির নিদর্শন।

গত হই বংসর এক আদিবাসী হরিজন কিন্ন-দাণতি বিভাগনে আপ্রবে আসিরা বাকিতেতে। তাহারের নিকট হুইতে আপ্রবেশাসীরা নির্দাস কর্ম্মের মৃত প্রেরণা পাইরাতে।
কিন্নবেশা নির্দাপ এবাবে বাভাগাত করে। ভাষারের দেবিলা

পৰ্যভবাসী সামাসিধা দেখ-মাগ পালক কিন্নবাদের স্থতি সদা মনে স্থাগরিভ হয়। অমণকালে তাহাদের সম্বন্ধ বাহা স্থানিবাহি এখানে দিভেছি।

এই হতভাগ্য প্রদেশের দিকে বদি লোকের দৃষ্টি আছুই হয় ভ আমার শ্রম সার্থক মনে করিব। এক সমরে বে আভি উন্নত ছিল আৰু ভাহারা অহ্নত—অবহা ভাহাদের শোচনীর। অভ সব আদিবাসীর মত আদিবাসী বলিয়া গণ্য হওয়ার ও আদিবাসীদের বিকাশের নিমিত যে সব প্রবাগের ব্যবহা রহিয়াছে ভাহা পাওয়ার পূর্ণ দাবি ভাহাদেরও আছে। যাবীন ভারতের সরকার ও অমসাধারণের নিকট হইতে এ দিকে অনেকটা আশা করা বাইতে পারে।

#### বেশভূষা

भाम छेरभाषम देशाला कीविका । भारतिबहु देशाला भनाम देखती। (काहे वस जकरतात हाएको कार्यात सकता. অবসর পাইলেই ভারাতে ভারারা প্রথমের মুভা কার্টে, পারে জোশের পর ক্রোশ চলিভেছে, আর চাভে ভক্লি বুরাইভেছে। মেষ-পালন প্রধান বাবসার। মরনারী উভরেই क्लि कार्शित या अक क्षकांत हेनि भरत । हेनिए अक्षे भक्ते नश्मध--- चैक्काल काहा विश्वा काम छाएक। किश्वतीया त्वेष वादा। त्वेष हेलिब मीह हरेटच वृत्रिवा बाटक। भर्वा ৰে কি ভাতা ভাতারা ভাষে না। স্ত্রীলোকেরা কমলের মভ ৰোটা পদমী দাভী পরে। অভাবে পভিলে ভাতা ধইয়া কবল क्रांश विकार कविश (नय। याश्रामय शविदार विनास वृत्रोत्र. লোড় (ৰা**ড়ী), টেপা (টুপি) ও চোলী (হাভাবিহী**ন ব্লাউক বিশেষ )। এীমকালে অবিকাংশ ছলে শাড়ী দিৱাই চোলীর কাল সারিয়া লয়। পুরুষেরা পশমী পারভাষা ও चाठकान शविधान करब-नीर्ट कान कार्डा बार्क मा। ভাহারা পদতে ভৈরি ভূভা ব্যবহার করে-নাম ভাল। আচকান ( হওরা ) এবানকার প্রাচীন বেশ। বরকের উপর দিরা চলার জন্য বে জুভা ভাহারা ব্যবহার করে ভাহা ছাগলের লোবে তৈরি হর। জীলোকেরা কানে রৌপাভ্যব ৰাৱণ করে—দেখিতে কাঁচার মত। वमीरकत चलकात সোদার ভৈরী, গরীবদের নিকৃষ্ট বাডুভে।

#### ভাষা ও সাহিত্য

কিয়বদের ভাষা বতম—নাম হমস্বত। নিশি ভিন্ন নহে। সাহিত্য বনিভে কিছু নাই। নোক্ষীতি ধুবই সুক্র। নাগরী নিশির প্রচন্দ হইভেছে। ক্ষেকট খবা:

क्रियव	<b>हिम्मी</b>	क्रियव	হিন্দী
ভী	পাৰী	मर्ग	বাল
किय्	<b>য</b> ড়াব্র	<b>দাউ</b> চ	বহুৰ
<u>ৰোলংখ</u>	CTW	(ata	कांका
महंची	<b>दलाई।</b>	जवा, पृष्	ৰাভা

কিন্নবাদের বব্যে ত্রান্থণ নাই। সংকারাদি নিজেরাই মিলার করিরা থাকে। সংকার অফুঠানে অরির স্থান নাই। ধূপ-ধুমা আলাইরা থাকে। বৌদ্ধবর্শ্বর শুব্দ লামারাও সংকার মিলার করাইরা থাকে। কিন্নব-প্রামেও লামা আছে।

#### ইভিচাসের পঠভয়ি

কিয়বদের প্রাভম রাজ্বামী কামক। বখন বুশ্চরের
রাজার রাজ্য প্রভিত্ত হর নাই, ভখন ভখার ঠাকুর রাজ্য
করিভেন। এখানে একটি প্রাচীম ঐতিহাসিক কেলা আছে।
আজীবন করেদীদের সেখামে রাখা হইত। চারিদিকে বদ্দ্রপ্রাচীর; দরজা একটিও নাই। দভি দিরা ক্ষেদীদের ভিতরে
মামাইরা দেওরা হইত। খাভও ঐ ভাবেই দেওরা হইত।
ভিতরে যে ঘাইত, জীবনের করু যাইত। 'চীনী' কিয়বপ্রদেশের মাহাজাপুর্ণ হাম ও কেলা। এখানে বাণাস্থরের চুর্গ
বর্জ্যান। চীমী হইভে আঠার মাইল দূরে শতক্র-ভীরে মোরংগ
মামক স্থানে পাওবদের একটি চুর্গ আছে: লোকে বলে
আজাতবাসকালে ভাহারা এক রাত্রে উহা নির্দাণ করিয়াছিলেন। ভ্রিলাম ৩২ মাইল দূরে লামবংগে এইরপ আর
একটি চুর্গ আছে।

পাওবদের বাসর-গীত বিবাহ-রাত্রে কিন্নরের। গাহির। থ'কে। লোকে বলে এবামকার বহুপতি-প্রবা পাওব-সংখতিরই ফল।

#### 'দেবভার' গোলামি

উত্তরাৰওকে লোকে দেবভূমি বলে। 'কিন্নৱে'ও এই কথার ইদিভ মেলে—অসংব্য দেবদেবীর পূর্বা ভার সাক্ষ্য। প্রত্যেক প্রাধের দেবভা ভিন্ন। স্বার তাদের নামে সম্পত্তি ও জাৱদীর রচিয়ালে। পাজে দেবতা বিরূপ চন এই আশ্লার লোকে সদা ভটম। দেবভার আবিপভা সর্বাক্তে। **विकार का अर्थ कि मुद्रका चार है शर्फ चारक। कामध** ছলের কথাপ্রদক্তে ভবৈক শিক্ষক আমাকে কোনও দেবতাদের नथरक श्रेत्र करवन। छष्ट्रस्य चामि विन-"श्रेमाचार अक মাজ দেবতা, ভার সবই ভরোপার্জনের বাহামা।" এ কথার लाक्षे विनश विजन-'(सवलाद विकट्ड अवादन वना कन्दर মা। সে অধিকার কারও নেই। "এক গ্রামে দেবিলাম, দেবতা भानाद छेभविडे व्हेडा अमिक-अमिक व्हनिए इनिएण्डम। পার দেবভার এদিক-ওদিক তেলা দোলাকে ভজেরা নিক নিৰ প্ৰশ্নের উত্তর বলিয়া গ্রহণ করিভেছে। কোঠার দেবী হইতেছেন মুখ্য দেবভা। বদরীমাধ, মহেখর, মাগল আদিকেও প্ৰবাদ স্থান দেওৱা হয়। জনশ্ৰুতি, সৱহান বাণাসুৱের बाक्यामी किल।

শিভার হৃত্য হইলে কোন পরিবারের ভাই-বোনদের <sup>ন্ব্যে</sup> সম্পত্তি লইরা কগড়া বাবে। কোঠার দেবী নাকি ক্রা-ক্রমি ভাগ-বাটোরারা ভ্রিয়া বিবারের রজা-মিশাভি করিরা দেন। এবানকার দেব-দেবী বীরের রূপে পরিক্ষিত। সব দেবতার কাছেই মংজ জার মাংস নিবেদন করা হয়। বৌধনদিরের দেবতারাও বাদ মান না; তাঁহাদের কাছে পর্যন্ত মাংস ভোগ চড়ান হয়। ছই দেবতার মধ্যে এইটুকুই



একট আশ্রম বিভালয়ের কিরম বালক-বালিকারুক

মাত্ৰ পাৰ্থকা যে বৌদ্ধ-দেবতা মেলা ইত্যাদি উপলক্ষ্যে মন্দিৱের বালিবে হান মা। এই দেবভার মাম ভোতী-ই-বোল---বক্ষর দেব। চীমীর বৌদ্ধ মন্দিরে মাটর ভৈরি কুন্দর কুন্দর বিশাল वृद्धि चारह । ७१वान वृद्धद द्रशीम ठिळ पिता श्रमद--- निवकनाव উত্তৰ নিদৰ্শন। ভূত-প্ৰেভের হাত হইতে বন্ধার ব্যাপ্ত অনেক সৃত্তি তৈরার হইরাছে। অনাবৃষ্টি হইলে দেবভালের সভোষ বিধানের কর লোকে উষ্ত কর ( ধান বা গন ) পর্যন্ত পুজারীদের দিয়া দের। সরহানের ভগবভী-মন্দিরে প্রভাত দ্ৰ-বাৱটা ভাগ ও ভাগ-শিশু বলি দেওৱা হয়। ঐ মন্দির তুইতে প্ৰায় হুই মণ ক্লণা ও পঞ্চাশ ভোলা সোমায় তিমট ছাতা চবি বিবাহে বলিয়া শুনিয়াহিলাম। ইহা হইভে মন্দিরের সম্পত্তির পরিচর মেলে। মন্দিরের খান্দানা নাই। মন্দিরের সম্পত্তি তইতে অনারাসে বছ ফুল চলিতে পারে। এবামে ত্রিক্রদের ছারা পর্যন্ত পঢ়িতে পার না। দত্রপর গ্রাবের মন্দিরের কার্বাকরী সমিতিতে ছই ক্ম সংস্বারপদ্ধী মুবক আছে। जारे ज्यात अकृष्टे कुम श्रीतामिज हरे (ज्या । छेशरतरे विन-হাছি, মন্দির মাত্রেই প্রভূত সম্পতি। এখানকার সার্বজনীন क्षणितक्षमि अध्य विभावन-श्रापन-जतकारतत निरुत्तनाथीरम । সরকার ইচ্ছা করিলে এদিকে অবস্থই কাছ করিছে পারেন। সর্ব্যসাধারণের সহযোগিতা নিঃসন্দেহ পাওয়া যাইছে। পঞ্চ বলি বন্ধ হওয়া ও হরিজনদের মন্দিরে প্রবেশাবিকার স্বীকার করা আন্ত কর্তব্য। দেব-দেবতা স্বাৰ্থনর লোকের উদরপরিত্র উপাত্তে পৰ্যাবসিভ ভইরাছে। ইতার সংস্কার ছওরা দর্ভার। भाबाबद्यं मामद श्रीवर्श्वम-नाथम क्ष्मिम काक अत्मह माहे. किय जाना हाना किततरमत देवनि हरेगांव महन । मर्व्वामीन नश्कारबंद देवा गांभक रक्षा। नश्कारबंद क्रक किंद्ररबंदा

উদ্ধীৰ হইবা বহিবাহে বলিলেই ঠিক বলা হইবে। ইহারা দেবতা ও গোনভাদের মাকড়সা-ছালে আটক পড়িয়া গিবাহে। এই প্রাচীন জাতির বিকাশ-কল্লে আব্যাদ্বিক দিক হইতে সবিশেষ চেষ্টা আবঙ্গক।

#### বচপতি-প্ৰৰা

পরিবার-প্রধার বিকাশক্রমে এক সমরে জী পরিবারত্ত সব ভাইদের পত্মীরূপে আদিতে আরম্ভ করে। ইহা হইতেই বছপতি-প্রধার ক্ষমণাত হয়। পাওবদের সমরে হয় তো ভাহা সাধারণ প্রধা ছিল। আকও যেখানে এই প্রধা প্রচলিত সেধানে লোকে লোকগাধায় আদরপ্রক পাওবদের কথা করণ করিয়া থাকে।

শিমলা চইতে রঙনা হইরা আমরা কুমারদেনে পৌছ। ভার পরে কোঠগড় রামপুরে ঘাট। এই প্রবা তথার মাই। কিছ দেবাৰ চইতে নয় মাইল দুৱে গোৱা নামক ভানে রাজ-প্ৰদেৱ মধ্যে বছপতি-প্ৰথা বৰ্ত্তমান , ভৱিত্তমদেৱ মধ্যে নাই। আক্রের ব্যাপার। কৌনসারবাওর ও রওয়াই-এ অফুসভান ক্রিয়া ভানিতে পারি যে, তথায় এই প্রধা সকল ভাতির মধ্যেই বর্তমান। এ ছানের (পোরার) আশপাশে চাথ-আবাদের क्षि नारे, वार्षिक शांष्ठ्राय माएक नारे कारे कानी वानि ছবিছমেরা স্থিলিভ বিবাচের প্রয়োজনীয়তা বোধ করে মা। बाहारण्य बरवा बहुन्छि-स्ववा स्राह्मक काहारण्य किसावाता धरेक्षण: कारेरका श्वक श्वक विवाह कतिरम श्वक कार्य পাকিতে আরম্ভ করিবে, কমি-কমা ভাগ-বাটোয়ারা চইয়া ৰাইবে, আৰু ক্ষিবে। কঠোৱ ছন্নছাভা পাঠাডী জীবন সুপ্ৰ कतात कर वरुपणि-श्रवा श्राह्म अवया जाराता माम করে। শিকার পূর্ণ বিভার হওয়ার পূর্ব্বে এই প্রধার অবসাম विशेष्टिल किसदानद चार्विक चवका विश्वां छ हरेत. चार्वादश्व ইছাই বিখাস ৷ শিকা পাইলে ভাতারা ববিবে, এক পরিবারে এক অলে বাকিতে চইলে স্মিলিড বিবাচ বে করিছেই हरेत अमन क्या कथा मारे। अधारम अरे क्षांत अर्थ रेटा मध থে. কোন প্ৰীৱ সৰ পতি সকল সমৰেই ৰাভীতে থাকে। ভেড়া-ছাগল চরাইবার জল ভাহাদের আলাদা আলাদা বাকিতে इव। जकता रवंग अकव हव छवन शोदा नामक शास्त्र প্রথা অত্যামী প্রভাক ভাই ক্রম-অতুসারে ছই দিন করিয়া পার। চুই ভাইরের এক পত্নীও থাকে। চুইরের অধিক ভাইদের পুৰক পত্নীদের সহিত ভাইদের সহবাস ভেমন নিন্দার মতে।

কিন্নর-দেশে এই প্রধা রীভিন্তীকৃত ও পূর্ণনাত্রার বিদ্যানাম। সব ভাইরের একই পত্নী—ছাট মর ভাই হইলেও।
পত্নীর উপরে সকলের সনাম অধিকার। বিবাহও এক সম্বেই
হয়। ছৌনসারবাওর ও রওরাই-এ পত্নীর উপর ভারের এইরুপ
অধিকার বেশী। ফল ভার ভাল নতে। কিন্নরে এইরুপ

নতে; এথানে জীৱ বর পৃথক এবং বর্থন কোন পতি ভিতরে বার তথন বরজার টুলি রাধিরা বার। ঐ নিদর্শন বেধিলে অপর কোন ভাই-জীর বরে প্রবেশ করে না। ইহাই এথানকার ব্যবস্থা। অভত্র এই ব্যবস্থা নাই। কৌনসারবাওর ইত্যাদি স্থানে বে ভর্মর রোগ দেখা বার তার কারণ এই ব্যবস্থার অভাব। কিন্তরে এই ব্যবি নাই।

#### বিবাহ-পদ্ধভি

বিবাহ বেশী ব্রসে হইরা থাকে। তুরক্ষিত হইলে করা
আঠার বংসর পর্যান্ত কুমারী থাকিতে পারে। ব্যতিচার
নগণ্য। বিবাহ মাতাপিতার সম্ভিক্তরে হয়। পরস্পারের
সম্ভিক্তমেও ক্থমও ক্থমও হয়। পিতামাতার অফ্লোদিত
বিবাহে অধিক ব্যায় হয়। তাই যে ব্রক্তের অধিক ব্যায় করিবার সামর্থা নাই সে সোজা র্যতীর সহিত কথা বলিয়া বিবাহ
করিয়া থাকে। মাতাপিতা স্ব হেলের একটই মাত্র বিবাহ
দেয়। এই নিয়ম এখন কতকটা শিধিল হইরাছে।

## 'বধু'-যাতার রীভি

छैद्रशेद ( नियमा हरेए अरे शाम ১२४ मारेम एरव ) ठीकृद দিং নামক রাজপুত জমিদারের বিবাহা দশ নাইল দূরবর্তী এক প্রায়ে হয়। কনে ও বরের বহুদ ঘণাক্রমে কৃষ্টি ও একুশ ছিল। পিতা সহধ্য দ্বির করে। বরপক্ষ যাবন কভার বাতীতে উপস্থিত হটল, ক্লাপক টকা (ভিলক) বাবদ এক টাকা आमात्र कृतिम । कृत्नक् महेशां माका ( रत ) यथम निक বাড়ী রওমা ভইবে ভখন কলে মাকে জভাইরা বরিয়া কাঁদিতে मानिन। भासकीरक कृष्टि है। का प्रक्रिशा पिएक व्हेन, चांब निकाद काह हरेए करमरक हाजारेए बादश कृति। भागी अवर जानक भणीरकक प्रम प्रम है।का जनक्ष प्रक्रिमा प्रिटक हरेता। जाहालार काह हरेए हैं।का जाहारार और अब दीचि । चर्चा, मश्रमणी रेखाकि मश्कात-चन्नुहोम विवाद मारे। वत्रभाक ছিল চার আর ক্নেকে লইবা কেরার সমর সলে আসিল আশী। চার বেলা তাহাদের আদর-সমাদর করিতে হইল। কিছু আরোজন ত পুর্বেই ছিল। তার উপর আরও আটটা (चए। ও चिम्हे। चार्य काहे। हरेल। व्यूषाका अमनर वास-गार्थकः।

ববে আসিরা বধু অভ পভিদের ভিলক পরার। ভার মানে সে এখন ভাহাদেরও পভিছে বরণ করিল। বিবাহের অভ কেবল বড় ভাই-ই কনের বাড়ী বার। বিবাহ বড়ভঃ কনের বাড়ীভে হর না, হর বরের বাড়ীভে। এইরপ বিবাহে বড়ারাংদের বণেছে ব্যবহার হর। ধুপ আলান আর ভিলক হাড়া
বিবাহের অভ কোন সংকার পালন করা হর না।

#### পিঠের বোঝা

ট্ৰংডার নিকটে বরাট (কল মোত চালিত কাঁতা) আছে।
আমানের আগে আগে এক ব্ৰক-ম্বতী চলিরাছে। ব্ৰতীর
পিঠে গমের বোঝা, ম্বক বালি হাতে। বরাটে পৌহিরা
ম্বতী ভিতরে গেল; ম্বক ছঁকা টানিতে লাগিল। কিলাসা
করিলাম:

'4 (平 ?'

সে কহিল—'গ্ৰী'

—ভোষার ব্যুস ১

-- वनाज भाति मा, कृषि द्राव ।

--ভোমরা ক' ভাই ?

---915 I

-- পাঁচ ভাইৰের ক' খ্রী ?

--- अक चनरे।

--ভাতে ভোষরা গ

—লোহার।

—ভোমার খ্রী খরাট চালাছে। পিঠে যে গম বরে এনেছে সে ভ নিজ চক্ষেই দেখেছি। সাহাব্য বুঝি তুমি একটুও কর না ? ভাষাক টান্ভে বসে গেছ।

—আমাদের পাহাড় অঞ্চল মেরেরাই সব কাক করে। আমি বোকা বইতে যাব কেম ?

দেবিলাম মুবভীট শীলবভী ও পরিশ্রমী। মুক ভাষার পে যেন বলিভেছিল—'পিঠের বোঝা যত দিন না আাষাদের হাল্কা হবে তত দিন খাবীনভার বাদ আমাদের নাই।'

#### जीत्मात्कत त्रश्याविका ७ 'स्नारमा'

এখানে বছপত্নী-প্ৰধা নাই। কচিং কোৰাও কোন পুরুষ ৰে একাৰিক বিবাহ কোনক্ৰমেই করে না ভাহা নহে। কিন্ত তাহা একাছই বিব্ৰল। ফলে শত শত মেয়ে অবিবাহিত পাকিরা বার-ভাতীবন ক্যাতীও থাকে। এইরপ অবিবাহিত यादवा चिकारम एक मामारमय कारक मीका श्रवन कविश 'জোমো' হয়। বাংগভুর পরের চড়াইরে ছইট 'জোমো' গ্রী-লোকের সহিত সাক্ষাং হর। ভাহাদের একক্ষ ভালা ভালা হিন্দী বলিতে পারিত। মতক হুই ক্ষেত্রই মুভিত। এক करमद পরিধানে লাল বস্ত্র। উভয়ের গলাভেই মালা। টপির পরিবর্ডে বাধার ক্লমাল জড়ানো। বাভাবিক বহুপতি-र्थात एकम वांग हरेशां अर्एत '(कांदा' हरेल हत ; कांत इर्जन बदः क्य प्रमती हरेला। छाहारमत कठक छ বভাৰভঃই ৰশ্বভিমুৰী হইৱা বাকে —ভাহাৱা বেচ্ছাৱ 'লোমো' হয়। 'ভোষো' হওয়ার পরে পিতৃগৃহেই ভাহারা থাকে। লাৰাদের কাছে ভিকাতী ভাষা শিবিরা, ঐ ভাষার একবানি वह बार्व ७ छात्र भूका करत ।

#### বিদা প্রসার মুখ্র

'কোমো' হইরা দীকা গ্রহণের পরেও কুষারীরা মাতা-পিভার কাছেই থাকে—বাভীর কাক করে। মাভাপিভা ইছাতে ধুবই ধুশি, কারণ 'কোমো' জীবনের শেষ দিন পর্যন্ত বিমা প্রসার থাটবে।

#### বহুপত্নী-প্ৰধা

ভাই যথন পূথক হয়, গৃহে 'কোষো' না থাকিলে, চাং--বাসের কল গে আর একটি বিবাহ করে। কিছ ইচা নির্মের 🛭



একট ভোষে: স্ত্ৰীলোক

ব্যভিক্রমের মতই। বছপত্নী-প্রধা সাধারণভঃ প্রচলিভ মহে। চীনী যাওয়ার পথে সভ্কের উপরে মেন্ত্রক্র তারু সারি সারি। তার্র এক রুবতীকে কিজাসা করিলাম—'তোমার বিবে সংযাদে ?'

'না, এখনও হয় নি।' ভাহার কঠবরে ও চেহারার বেদনা ফুটরা উঠিল। পালে ভার ভাই দাঁছাইরা ছিল। সে বলিল—'আমাদের পাহাড়ী মেয়েদের বিয়ে চব্বিশের আর্গে হয় না।' ভরণীর বয়স কুড়ির কাহাকাছি।

#### বিবাহ-বিচ্ছেদ

বছপতি-প্রথা যেমন কিন্নর-দেশে প্রচলিত, তেমনি বিবাহবিছেপত। বিবাহ-বিছেপের অবিকার পতি-পত্নী উভরেবই
আছে। বিজেপের পূর্বে তাহারা নিজ নিজ ব্যবহা করিবা
লয়। বিছেপের অসুমতি লইতে হর খ্রীর পিতার কাছ
হইতে। অভএব যেরে যথন বাপের বাড়ী যার তথন ভালাক
হয়। কেহ বদি পতিগৃহ হইতে কোন খ্রীলোককে মুস্লাইরা
লইয়া যার ত তাহাকে পূর্বপতির প্রাধিত টাকা দিতে হয়—
হুই শতও হইতে পারে। তালাক মাতাপিতার অসুমতিতে
হুইলে লাগে গাঁচ হুইতে কুড়ি টাকা মান্ত।

#### धी विकासन वश्व

ভারতীর সংবিধানের ২৩: ১ অস্ক্রেন্ড ভাছে: 'রামব-পণ্য (ত্রী ও বালকের ক্রের-বিক্রর), বেগার বাটান, অধবা ভাষিব জোল-ক্ষরকাতি প্রম আদার মিষিক করা বাইতেহে। এই বিধিন উল্লেখ অপরাধ বলিয়া পরিগণিত ত আইনতঃ ক্ষমীয় চইবে।

বনে হর সংবিধানের এই অস্ক্রেরের প্রতি হিবাচল প্রবেশসরকারের দৃষ্টি আজও আফুঠ হর নাই। আজও সেধানে
ল্লী-বিক্রর এবং বেগার খাটানো ইন্ড্যাদি সবই চলিতেছে।
বিবাহ-বিক্রেরের জভ টাকা আদার ল্লী-বিক্ররেরই সামিল।
এ কথা বধন লিখিতেছি ভার মাত্র হুই দিন আগে আপ্রধ্যের
সন্মুখ দিরা রোক্রভনানা একট বেরেকে পুলিস বরিয়া লইয়া
পেল। তাহার বিক্রনের ওরারেন্ট ছিল এই: তার একাবিক্র
পতি ধানার অভিযোগ করিয়াছে,—সে না বলিয়া পিতৃগৃহে
চলিয়া সিয়াছে। ভক্লবির পতিকে জিল্লাসা করিলাম—'ব্যাপার
কি গ' উদ্ভৱ পাইলার:

'লী অপর কাউকে বিষে করতে চার, তাই বাপের বাড়ী চলে গেলে।'

'ভোষরা ভাকে রাবভে চাও, এই না ?'

'mi '

'ভবে কি চাও ?'

'বার কাছে এ বেভে চার ভার কাছ থেকে আমাদের টাকা নিরে দিক: বাস, এই আমাদের কথা।

'কত টাকা গ'

'শাত্ৰীকী, আপৰি ভ কানেনই বে আক্কাল সব কিনিষ্ট নাগ্লি; ছোট একটা হানী তা-ও এক শ' টাকার কন নেলে না। বিয়েতেও খরচ হয়েছে। টাকার অকের কথা বরতে যান ত এই ত্রীর কল আনাদের দাবি কন পক্ষেত্র হালার।

'লী ভ প্রস্থাব নর বে এরণ দাম তৃষি করছ? বিরেতে বরচ হরেছে ত তার করে লী দারী কেন হবে? ভাল, সে ত ভোষাদের বরে অনেক দিন ছিল। সে ভোষাদের ভাল করেছে। ভোষাদের ইচ্ছা পূর্ণ করেছে। মূল্যই বদি বার্ষ করবে ত এ সবের মূল্যও ভোষার বরতে হবে।'

'পাত্ৰী মহাশব, আগনি নৃত্য আইনের কথা বলছেন। আমাদের পাহাড়ে চিরকাল বে আইন চলে এসেছে ভাই চলবে। ত্ৰীদের কাছ থেকে বদি এরপ আদার না করা হয় ভ ভারা বাধীন হয়ে যাবে। একের অধিক পতির কাছে বেকেও স্ত্ৰী আৰু ভালাক চাছে। আপনি ভ সৰই ভাষেত্ৰ। বুলাবৃত্তির ক্ষত এবল নেৰে ও বোষের দাম বচ্চ আকা।'

এ কৰা বলিয়া সে চলিয়া গেল। আৰাম কাৰে ধ্বনিভ হইতেহে 'ৰেৱেও ৰোহের দাৰ বড্চ আক্রা।" ইহা মী-বিক্রম নয় ভ কি ? শ্রীদের এই শোচনীয় অবস্থা দূর করিতেই হইবে; সাধীনতা ও সমানাবিকারের ভিন্তিতে রচিত মৃত্য সংবিধানোক্ত প্রবিধাও এদের দিতে হইবে।

হিষাচল প্রদেশ প্রভাকভাবে কেন্দ্রণাসিত ছাম। অভএব এই দিকে কেন্দ্রীয় সরকারেরই দৃষ্টি দিতে হইবে। নৃতন বিধানে দেশের পুরানো আইন-কান্থনের রদবদল করা হইরাছে। তদ্রণ পুরাতন দেশীর রীতি-প্রধারও আবস্তিক পরিবর্তন করা কর্তব্য। এই সব প্রধা আদালতে আইনের মর্যাদা পাইরা আসিরাছে। যে সব ছানীর প্রধা নৃতন সংবিধানের বিরোধী যাহাতে সেগুলি আদালতে গ্রাহ্থ না হর, অভতঃশক্ষে এ নির্দেশত আদালতগুলিকে দেওরা চাই-ই।

#### অভিশন্ত নাতী

অৰ্থোপাৰ্কনের উপায় হিসাবে কিয়ন্ত-দেশে নারীর ছান বুবই গুরুত্পূর্ণ। কিছ অবনৈতিক ব্যবছার ভার নিক্ষে স্থাৰ নেহাভই হীন। পুরুষ লাকল বরে ও कुछान हानाइ। वान्, देशांद्र चिक् कि इ त करव मा। সব কাল শ্লীলোকদেৱই করিতে চর। ৰৱার পালা যদি রাজিতেও পড়ে ত সারা রাভ ভাগিয়া গ্রীদেরই দে কাব্র করিতে হয়। এ কাব্দীও মেরেদেরই। ভূঁকা টানিভেই পুরুষেরা সম্বিক ওন্তাদ। বে পুরুষ নিজে ক্ষেত্ৰ কাৰ কৰে. লোকে ভাকে কুপাৱ চল্ফে *দেবে*—ভাৰটা এই: আহা ৷ গরীৰ বেচারা কি করে ৷ বরে ভ ভার মেৰেমামুষ নাই, ভাই । নিজ হাতেই করতে হর।' স্কাল পাঁচটা হইতে বাভ দৰ্শটা পৰ্যাত্ত কাজ কৰিবাও শ্ৰীৰ নিভাৱ নাই। বাত্তে নিভ খবে একাৰিক পভিত্ৰ সভোষবিবাদ ভাতাকে করিতে হয়।—রে নারী এত কাম করে, যাহার আর্থিক গুরুত্ব এত বেৰী, সে খহং নিঃখ। ভাল-ৰন্দ কোন রক্ষের বানী अवास नाहे (व क्षत्रव-कारम जहारका भाहेरव। क्षक्रार श्रीत-कारम वह खीरमारकद चकाममूछा पर्छ।



# কবি ভুজঙ্গধর রায়চৌধুরী

### ব্রিযোগেশচন্দ্র বাগল

আমরা সভাই আত্মবিশ্বত। শুধু ভাই নয়, ভূলে যাওরা আমা-দের থেন বভাব। নইলে মাত্র বারো বছর পূর্বেক কবি ভূজদবর রাষচৌধুরী মারা গেছেন, এর মধ্যেই আমরা ওঁাকে ভূলতে বসেছি। অথচ ভিনি ছিলেন বাংলার একজম গাঁট কবি।

কবি ভ্ৰদ্ধরের পিতৃনিবাস চকিক্শ-পরগণা ক্রেলার বসির-হাট মহতুমার অন্তর্গত শিবহাটি গ্রামে। ১৮৭২ সনের আগষ্ট মাসে পিতার কর্ম্মান মেদিনীপুরে তাঁর জন্ম হয়। তাঁর শৈশব ও কৈশোর কাটে পুরীতে। পুরীর সমুক্র-সৈক্তেই ভ্রদ্ধবরের ক্ষিত্ব উল্লেম্ব কয়। এগার-বারো বংসর বয়সে তিনি ক্ষিতা রচনা ভারম্ভ ক্রেন।

প্রী থেকে ভিনি এন্ট্রান্স পরীক্ষা পাস করেন। ভারপর কল্কাভার আদেন কলেকে পছতে। প্রেসিডেন্সী কলেকে অব্যরমকালে ইংরেক কবিদের কাব্যের প্রভি তার মন বিশেষ ভাবে আকুঠ হয়। শেলী, বাররণ, কীট্স হিলেন তার নিভ্য-সদী। তার বছ কবিভার রচনাকাল ১৮৯৩ সন। এই সমেই ভ্রুবর প্রেসিডেন্সী কলেক থেকে বি-এ পরীক্ষার উত্তীপ হম। এর পর বছর ইংরেকী সাহিত্যে এম-এ পাস করেন।

ভূকদথর আইন পরীকার সাফলালাত করে ওকালতী করবার কর ১৮১৭ সনে কলপাইগুড়িতে যান। সেবানে ছিলেন
১৯০০ সন পর্যান্ত। ভূকদখরের কবি-মানস কিন্ত সর্বাক্রই
সক্রির হিল। এই কলপাইগুড়িতে বসেই শশীভূষণ
নিবােগীর সহায়তার "ত্রিপ্রোভা" নামক একবানা মাসিক
পত্রিকা তিনি কৃতিথের সহিত সম্পাদমা করেছিলেন। এর
পর তিন মাস মাত্র হালারিবারে ছিলেন, ওকালতীতে সেবানে
প্রবিধা হয় কিমা পরধ করবার ক্ষেত্র। এর পরেই তিনি নিক্ষ
মহকুমা বসিরহাটে চলে আলেন।

বসিরহাটে ভূকদবর ওকালতী আরম্ভ করলেন। তিনি বিল তবু ওকালতীই করতেন, বনৈবর্থ্য আন দশ ক্ষের মত তথাকথিত বছলোক হতে সামতেন। কিন্তু এতে তাঁর মন উঠল না। কাব্যলজীর সেবাতেই তিনি সম্পূর্ণরূপে নিজেকে নিরোজিত করলেন। পল্লী-জননী তাঁর সমগ্র মন-প্রাণ কুড়ে ছিলেন। মৃত্যুকাল পর্যান্ত তিনি বসিরহাটেরই স্থামী বাসিলা রইলেন। হ্রারোগ্য অপ্লেখন তিকিৎসার জন্ত শেষ সমরে মাস হ্রেক তাঁকে কল্কাভার থাকতে হয়। ব্যাধির কিনিং উপশ্য হলেই তিনি স্থানে কিবে বাবেন এই ছিল তাঁর ক্ষামন। কিন্তু বিধি বাম। তাঁর অপ্লেখন আন্রোগ্য হ'ল না। ১৯৪০ স্থের ১৫ই সেপ্টেম্বর তিনি ইত্রাম ভ্যাগ করেন।

প্ৰাৰ অৰ্থভাকীকাল ভূৰদণৰ বসিন্নহাটে বাস করে-

ছিলেন। তিনি এথানে থেকেই বরাবর সার্থকভাবে কার্যলক্ষীর আরাধনা করতে পেরেছিলেন। তাঁর বছ কবিতা
দেশবন্ধু চিগুরঞ্জন দাশ-সম্পাদিত নারারণে, এবং মানসী ও
মর্শ্ববাণী, ভারতী, হিন্দু পত্রিকা ও অভাভ বহু ব্যাভনানা
মাসিক পত্রিকার প্রকাশিত হয়। ১৮৯২ সন থেকে মৃত্যুর
কিছু পূর্বে পর্যায়ও ভিনি অবিরভ কবিতা রচনা করে
সিধেছেন। এই দীর্থকালের মধ্যে রচিত কবিতা ও কার্যসমূত্রের কিষদংশ মাত্র পুত্তক এবিত হত্তেছে।



कवि कुक्तनवत तास्टार्भवी

বসিরহাট ক্রমে বানী-চর্চার কেন্দ্র হরে উঠল। ভ্রুক্তবর 'বানী-স্মিলনী' নাবে একট সাহিত্য-সভার প্রতিষ্ঠা করলেন। এই স্মিলনীর সভাগতিরপে জলবর সেন, মিবিলনাথ রার, লরং চক্র চটোপাব্যার প্রমুখ বহু মনীয়ী ও ঔপভাসিক বসির-হাটে সিরেছেন। ভ্রুক্তবরই ছিলেন তাঁদের প্রধান আকর্ষণ। তিমি 'পল্লীবানী' নামে একখানা নাসিক পত্রও অভি বোগ্যভার সহিত বছ বংগর বরে সম্পাদনা করেন। পল্লীবানীর আবি-ব্যাবি, আলা-আলক্ষা, সুধ-ছংবের কথা "পল্লীবানী" দিকে দিকে প্রচার করত।

ভূদক্ষর পণ্ডিত-প্রবর হীরেক্রমার্থ দন্ধ এবং দেশবন্ধু চিন্তরঞ্জনের প্রীতিলাভ করেন বিশেষভাবে। তাঁর আধুনিক বৈক্ষব কবিতাবলী দেশবন্ধুর বড়ই প্রির ছিল। সংস্কৃত শাত্রপ্রহে ভূদক্ষরের পাণ্ডিত্য দার্শনিক হীরেক্রমার্থের বিশেষ আদরের বন্ধ ছিল। হীরেক্রমার্থ তাঁর "ঈভা"র (পভান্থবাদ, প্রকাশকাল ১৩৪৩) ভূমিকাই তারু লেবেন নি, এর পূর্বে

১৩২০ সালে প্ৰকাশিত কবিতা-পৃত্তক 'হারাণবে'র ভ্ৰিকার ভিন্দি ভূত্তক্ষর কবি-প্রভিতারও প্রশতি গেরেছিলেন।

এবার আমরা তাঁর ক্বিভাবলীর আলোচনার আলি। ভুজদ্বরের ক্বিভাকে আমরা প্রবাদতঃ হু' ভারে ভাগ করতে পারি—মৌলিক ক্বিভা এবং অফ্বাদ ক্বিভা। আগেই বলা হয়েছে, যেমন ইংরেজী ভেমনি সংস্কৃত সাহিত্য তিমি গভীর ভাবে অফ্লীলন ক্রেছিলেম। বাংলা ভাষার মাধ্যমে, অফ্বাদের ভিভর দিরে এর সারবন্ধ সরস করে পরি-বেশন করতে তিনি সমর্থ হন।

ভূদকৰর কবিভারচমা করতে সিরে শিশু ও কিশোরদের ভোলেন নি। আমরা ছূলে পাঠকালে একবার এবং কলেকে ছিতীয়বার এে'র 'এলিকি' পছেছি। ভূককৰর এর যে রসসিক্ত অন্থবাদ "পদ্ধীসমাধি-পাথা"র (১৩২৫) বিরেছেন ভা সভ্যই অন্থম। এর ইট শুবক মাত্র আপনাদের শোনাব। বূলের সদ্ধে মিলিরে নেবেন।—

"কত নিরমল রতম উক্ল অগাধ খতল আধারমর রহে খলবির গোপম গরতে লোক-লোচনের দূরে, নমন আভালে ফুটরা বিরলে মধুতরা কত কুমুমচর, বিলাম সুরভি উলাল প্রনে বিক্ল মরুর পুরে।

হেণা চিরতরে হরত বা কোন ব্যাল প্রায়্য লিবাজীবীর জনম বাহার দমিতে ক্ষেত্র-বামীর অত্যাচার,
হেণার মৌনী জন্যাত-নামা কবি কালিদাস রাবিল শির,
বক্ষন-শোণিত-ক্ষরণ-মুক্ত প্রতাণাদিত্য জার। (পৃ. ৪)
এই জন্থাদে 'ক্রমওরেলে'র বদলে 'শিবাজী,' 'মিণ্টমে'র
পরিবর্ত্তে 'কালিদাস' ও হাম্পডেনের ছলে প্রতাপাদিত্যের
উল্লেখ লক্ষীর। সংগ্রুত প্রস্থাদি থেকেও তিনি বিভর পদ্যাহ্যবাদ ক্রেছিলেন, এর ভিতরে মাত্র 'সভী' (১৩০৪), 'গীভা'
(১৩৪০) ও চণ্ডী (১৩৪১) পৃত্তকাকারে প্রকাশিত হয়।
হীরেজনাধ 'গীভা'র ভ্রিকার বলেছেন, ভূক্ষরর আক্ষরিক
অন্থাদের পরিবর্তে ভাবাহ্বাদের পক্ষপাতী হিলেন। এর
ভাল-মক্ষ হ'দিকই আছে। কিন্ত ভূক্ষররের অন্থবাদ, নিজ্কে
কবি বলে, বিশেষভাবে রসোজীর্ণ হয়েছে। শারদীরা সমাগতা।
ভূক্ষর-কৃত্ত চণ্ডীর অন্থবাদ থেকে একটি ভবক মাত্র
আপনাদের শোনাচ্ছি:

মদল বাহা ভারি মদল-কৃণ কল্যাণি ! ভব কল্যাণভ্য রূপ পরে শান্তি অহর তুমি শিবা নিশান্ত রূপা তুমি আমন্দ দিবা। অর্ধ-সাবিকা অযুভের তুমি দান্তী। তুমি যা গৌহী জ্যোতির তুমি যা জ্যোতি ত্রিলোক ত্রিণ্ডণ ত্রিদেবের তুমি গভি। কর কর ত্রিমরশী ঃ

নমি ভোষা নারারণি ! (পু. ১৫৯)

ভূজদৰরের মৌলিক কবিভার নব্যে 'শিশির' (১৩১৮) কিশোরদের অভ রচিভ। 'ন্ধনীর' (?), 'গোধ্লি' (১৩১৮) 'হারাপব' (১৩২০), 'রাকা' (১৩২৩) তাঁর ক্ষেক্থানি প্রসিদ্ধ কবিভা পুন্তক। শেষ পুন্তকের নামান্থসারে ভিনি 'রাকার কবি' নামেও পরিচিভ হরেছিলেন। 'ন্ধনীর'-এর কবিভানিচর অবিকাংশই ১৮৯২ বেকে ১৮৯৯ সনের ভেতরে রচিভ। বাঁকুভার অবস্থানকালে ৯:৩।৯৩ তারিবে রচিভ 'নাববীলভা' শীর্ষক কবিভার প্রথম ক'পংক্তি এই:

"কোষল ও তছ দিবে জ্ছা'বে
সমন্ত শরীরধানি নিছ-বিটপীর
তিক্ত প্রাণ সিক্ত কর প্রেমরস ঢালি'
কে ভূমি পো প্রেমমরি ?" (পু. ১৬৬)
আবার 'গোধূলি' কাব্যে 'শরং' শীর্ষক কবিভার পাই:
আকুল করিছে মহী প্রন্ধর প্রবান বহি'
পূজভার-মত শাবে মধূপ-বস্থার,
মধ্র পিরাসে জলি কুটাইছে কুল-কলি,
প্রিয়া-বিরহিত চিতে জন্মে বিকার।

মেদ-গুঠ মুক্ত করি' চস্ত্রমূবী বিভাবরী ছোছনা-ছকুল পরি' করে কলমল, কঠেতে ভারার নালা মরি কি রূপনী বালা বিকচ বৌবন-রলে করে টল টল। (পূ. ৭৮)

'রাকা'ৰ কবি-চিন্ত যেন সকল দিকেই পরিণতি লাভ করেছে। অধ্যাস্থ-চিন্তা তাঁর মনকে সাবারণের অনধিগম্য ভরে নিবে বার। আবার বৈঞ্ব সাহিত্যও তাঁকে দীন হভে দীনভর করে ভোলে। তাঁর আস্থ-জিঞাসা বেভে চলে। এখানে এসব কথা বিশদ ভাবে আলোচ্য নয়—মাঞ্জ 'রাকা'র প্রথম কবিভাট (পৃ. ৬) আপনাদের ভনিরে হভাব-ক্বি ভুজদবরের ম্বৃতি-ভর্পন সাদ করি:

"না কুরাতে সঙ্গীতের বিতীয় চরণ
কেন পেল খানি ?
না আসিতে অপরাত্র, মব্যাহ্-তপন
কোখা সেল নামি ?
কোন কুল পড়ে খসি না হইতে বাসি,
কার অভিশাপে ?
বসভের মারখানে কেন ব্যা আসি
সহসা বিলাপে ?"

# বাংলার ক্ষয়িফুত্ম জেলার উন্নয়ন

## জ্রীকেদারনাথ চট্টোপাধ্যায়

পশ্চিমবঙ্গের পশ্চিম সীমান্তে বাঁকুড়া জেলার স্থান। এই জেলা এক দিকে প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্যে অন্তপম, অন্ত দিকে ইহার অধিবাসিগণ যুগব্যাপী অনাবৃষ্টি, প্লাবন ইত্যাদি প্রাকৃতিক বিপর্যয়ের ফলে তুর্তিক ও নিদারকণ দারিন্দ্রক্ষিত্ত। জেলার আদি অধিবাসীদিগের এক অংশ দীর্ঘকালব্যাপী তুর্তিক্ষের ফলে প্রায় চল্লিশ বংসর পূর্বের মানভূম ও রাণীগঞ্জ অঞ্চলের কয়লার খাদে কাজের চেষ্টায় চলিয়া যায়, অন্য দিকে দাম্দেরের বন্যায় বিধ্বন্ত হওয়ায় আরও বছলোক সর্বন্ধ বেচিয়া চলিয়া যাইতে বাধা হয়।



ভভবর দাভার সেচনালীর মুধ

এইভাবে লোকক্ষয় হওয়ার ফলে ঐ জেলার অনেক জমি পতিত হয় এবং দেশের সাধারণ শ্রম-সম্পদ ক্রমেই কমিতে থাকে। বর্ত্তমানে জ্ঞেলার আয়তন অমুপাতে কৃষিক্ষেত্র শতক্রা ৪০ ভাগ মাত্র এবং উহার ক্ষল ও রেশমী কাপড়, তাম:-লোহা-পিতলের বাসন ও ষম্বপাতি ইত্যাদি স্থাসিদ্ধ কুটীরশিল্প ধ্বংসের পথে চলিয়াছে।

বিষ্ণুব-রাজের অধীনে এই অঞ্চল শৌগ্যবীর্ঘ্যে ছর্দ্ধর্ম বলিয়া ইতিহাস-প্রখ্যাত ছিল। মোগল-পাঠান, বর্গী-মরাঠা, কেংই ইহাকে বশে আনিতে পারে নাই, এবং সেই গৌরব- ময় অতীতের স্মারক গাখা-কাহিনী ও স্মৃতিচিহ্ন আজও ঐ দেশের রাজ্বনানীর আশেপাশে রহিয়াছে। কিন্তু ১৯০৫



গ্রীভূপতি মঙুষদার কর্তৃক শুভকর দীভার জলমুখ উদ্ঘাটন

সালে বি. এন. বেলওয়ের লোহবর্ত্ম দেশের জলনিকাশের পথ নষ্ট করে এবং সেই সঙ্গে ম্যালেরিয়া মহামারীর ন্যায় দেশে ছড়াইয়া পড়ে। যে বাঁকুড়া মাত্র পঞ্চাশ বংসর পূর্ব্বেও হাজারিবাগ ছোটনাগপুরের ন্যায় স্থাস্থ্যের জন্য বিখ্যাত ছিল, যাহার অধিবাসীদিগের মধ্যে বাগদি, রজপুত, মাল, লোহার ইত্যাদি জাতি অতি স্বল ও শক্তিশালী ছিল, আজু সেখানকার লোক রোগক্লিষ্ট, উস্থমবিহীন, জীবনীৰ্থকায় হইয়া গিয়াছে।

এইরপ অবস্থার প্রতিকার করিতে হইলে সর্বাব্রে দেখিতে হয় বাঁকুড়াবাসীর এই নিদাকণ ভাগ্যবিপর্য্যের কারণ কি ?

বাকুড়ার জ্ঞীসম্পদ ছিল কৃষি, কুটীরাশিল্প, অরণ্য ও পশুচারণ ভূমিতে। বাকুড়ার ভূপৃষ্ঠ বাংলার অন্যান্য জেলার মত সমতল নহে, রাঢ়ের অন্য অঞ্চল অপেকাও ইহা অধিক গিরি-উপত্যকা ও পার্ববত্য নদ-নদীপূর্ণ। জ্ঞামি সমতল না হওয়ায় বর্ধাকালের জল কৃষিক্ষেত্রে অল্পই দাঁড়ায়,



ওভকর দাভার বাধ

ভাকা বা ঢালু জমিতে একেবারেই থাকে না। সেইজন্য এই অঞ্চলের চাধী জল ধবিয়া রাখিবার জন্য উচ্নীচু জমি ধাপে ধাপে বাঁধিয়া রাখে (terrace cultivation) এবং বিষম কায়িক পত্রিশ্রমে জলের আগম-নির্গমের পথ স্থাংবদ্ধ করে। এ অঞ্চলের নদ-নদী স্রোভস্থতীতেও জল বেশী দাঁড়ায় না, কখনও বা নদীতে প্রচণ্ড বন্যা, কখনও বা ভাহার জলবেখা শীর্ণ ও ক্ষীণ।

পুর্বেকার দিনে বাকুড়ার গিরিমালা ও অধিত্যকা বনরাজিপুর্ণ ছিল। বধার জল বনের রুক্ষগুলার পাতায় ডালে ও শিকড়ে বন্ধ হওয়ায় ধীরে ধীরে মুক্ত হইত, ফলে

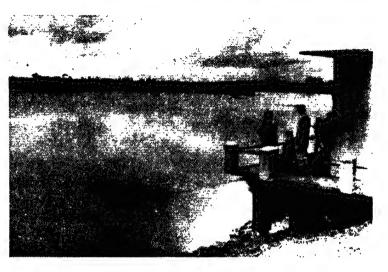
নীচের জ্বমি ঐ জ্বল অনেক দিন পাইত ও সরদ থাকিত। দে সকল বন মালুষের অদুরদশিতার ফলে আজ নিমান इहेबाएइ, भारत्य वन द्वालव जिलाने. क्यमात्र थारम्य थुं हि । जानानि कार्र পরিণত হইয়াছে। যে কাটিয়াছে সে ভবিষ্যতের দিকে তাকায় নাই, স্বতরাং চাৰা ৰাখিয়া বন বাচাইবার চেষ্টা হয় নাই। এখন বর্ধার প্রবল বারিপাতের জল ক্রত গড়াইয়া নদী-নালায় জোরে পড়ে এবং দেখানে প্রচণ্ড গতিতে বান ডাকাইয়া সমুংজ্ব দিকে ধাইয়া বায়—চাষার প্রয়োজনের সময় নদীতে থাকে বিশাল বালুতটের মধ্যে অতি ক্ষীণ জন-রেখা। শুধু তাই নয়, এরপ व्येष्ठ (वर्ष क्रम नाभिवाद करम छ ह

জমির বৃক চিরিয়া ফাটল দেখা দেয়,
প্রশন্ত ভূপৃষ্ঠ ক্ষয়ের চিহ্নে — "খোয়াইয়ে"
ভরিয়া যায়, পথ-ঘাট লোপ পায়— এর দ ভাঙন ফাটলের ফলে ক্রমে শস্তের ক্ষেত্রও যায় খোয়াইয়ের কুক্ষিডে।
এই ভূনিক্ষয় (erosion) ও জলাভাব
বাঁকভার চাধীর মারণাস্ত্র।

অতীতেও ছিল এই জলসমস্থা, কেননা বন-জলল জলধারার গভিবেগ হাস করে, জল ধরিয়া রাধিতে পারে না। অথচ জল পাইলে চাষী একই জমিতে ছুই ফসল, এমন কি তিন ফদল ফলাইতে পারে। সেই কারণে আগে-কার দিনের রাজা ও বিভ্তালী লোকেরা দরিত্র প্রজার সহায়তার জন্ম ঐ জলের পথে বিরাট জালাল বাঁধিয়া বিস্তৃত জলাধার "বাঁধ" রচনা করিয়াছিলেন।

উপরস্ক ঐ সকল জলাধার এবং বর্ধার জলে স্ফীত নদনদীবক্ষ হইতে কৃষিকেত্রে জল-সেচনের জন্য স্থন্দর ও
স্পরিকল্পিত সেচখাল—যাহা এ অঞ্চলে "দাড়া" নামে
পরিচিত—কাটা হইয়াছিল। তন্মধ্যে বিকুপুররাজের
দেওয়ান গণিতশাস্থবিশারদ, কায়স্বকুলতিলক শুভঙ্কর
রায়ের "শুভঙ্কর দাড়া" বিখ্যাত।

এইরপ ব্যবস্থার ফলে চাধী সম্বংসর জাল পাইত এবং পরিশ্রমের পরিবর্ত্তে তাথার গোলা ধান, সরিষা, গম, কলাইমটরে পরিপূর্ণ থাকিত। চাধীর অর্থের অন্টন ছিলনা, স্থতরাং কামার, কুমার, কাঁদারী, ছুতারের ক্রেতার জ্ঞভাব



শুভবর দাড়া--জলাবার

ঘটিত না; বনে প্রাক্তরে পশুচারণের বিন্তীর্ণ ক্ষেত্র ছিল, স্তরাং ছুধ ঘি ছাড়াও ভেড়ার পশম প্রচুর পাওয়া যাইত; বনে তদরেঃ গুটি ছিল অপ্যাপ্ত, উপঃস্ক নিপুণ কুটারশিল্পী ঘরে তুঁত পাতায় গরদ-বেশমের গুটি-পোকা প লন কবিত। কার্পাদ ভারত বড় নদ-নদীর পাড়ের জমিতে। স্তরাং দেশে আর বস্তু এমন কি শীতবস্তু ও উৎসবের বস্তুও ছিল প্রচুর। মাত্র বিশ্বপর পোকামুগীর গরদ-তদর ছিল প্রস্কুর দোনামুগীর গরদ-তদর ছিল

পঞ্চাশ বংসর পুর্বের, বথন ভাবী চ্দিনের ছায়ামাত্র দেখা দিয়াছে, আমরা দেখিয়াছি বাঁকুড়ার চাণীকে উল্লভদেহ, স্বল স্থপুষ্ঠ ও প্রমণ্ট.

গৃহস্বকে দেখিয়াছি অভাবমুক্ত ও প্রসন্ধ, যদিও তথনই অতীতের উত্তরাধিকার আমরা হেলায় ও নিশ্চিত্ব ভাবে জভ ধোয়াইতে চলিয়াতি।

এই সেদিন এক বিদেশী-শিক্ষার ছাপযুক্ত, বিচার-বৃদ্ধিইন বাচাল উচ্চকণ্ডে বলিতেছিলেন, "চতুদ্দিকে, বাজাবে বার-লাইব্রেরীতে, লোকে বলিতেছে, ইহা অপেক্ষা বিদেশী সরকার ছিল শতগুণে ভাল।" যদি তাঁহার ক্ষীণ মন্তিক্ষের ক্ষমতা থাকিত বিগত দেড় শতান্ধীর স্মৃতি ধারণ করার, যদি তাঁহার চপল বৃদ্ধির শক্তি থাকিত বিদেশীর শেখানো বৃদ্ধি উচ্চারণ করার বাহিরে, ভবে তিনি বৃদ্ধিতেন ও কথা বলা কত বড় মুর্থতার পরিচায়ক।



বিভাইৰের জলাবারের এক অংশ



বিভাই খালের সেচনালীর মুখ

কৃষ্ট ইণ্ডিয়ান বেলপথ ইংবেদ্ধ কোম্পানীর সহদ্ধ অর্থাসম ও ইংবেদ্ধ বিণকের ধনলুঠনের পথ স্থাম করিবার জন্য নিমিত্ত হয়, ঐ বেলের স্বার্থে পশ্চিমবঙ্গের পথ্যাট অবহেলায় নাই করা হয়, কেননা যদি পথ-ঘাট ঠিক থাকে তবে দরিজ্ঞ দেশের শ্রমপট্ লোক পয়সা থরচ করিয়া বেলে চড়িবেই বা কেন, মালই বা বেলপথে পাঠাইবে কেন ? খাহারা প্রামিদ্ধ "অহল্যাবাই রের সড়ক" ও বীরভূমের শিউড়ি-হেতমপুরইলমবাজারের পথ অল্পদিন পুর্বেধ্ন দেখিয়াছেন তাহারা একথার মর্ম্ম বৃঝিবেন। তারপর ই. আই. বেলপথ বাঁচাইবার জন্য দামোদ্বের বর্দ্ধমানের পাড়ে উঁচু বাঁধ দেওয়া

उडेम । डेटाएक कम हमाहरमय পথ নটু হওয়ায় বৰ্দ্ধমান মাালেবিয়ায় বিধ্বস্থ হইল। সেই সঙ্গে লক লক বিঘাজনি জলবন্ধ হট্যা বোগের আকর হইল, শস্তের ফলনও গেল রদাতলে। অন্য পক্ষে বাঁকড়ার দিকে বাঁধ দেওয়া হইল না, কেননা मितिक द्वलभाष वा खना विरम्भी স্থার্থের নিদর্শন ছিল না। দামোদর এক পারে বাধা পাইয়া অন্য দিকে রুদ্রশীলা আরম্ভ করিল। বারুড়ার বিস্তত অঞ্চ বংসরের পর বংসর বন্যায় ভাগিল। 📆 ডাই নহে, বাঁকুড়ার ইতিহাসপ্রসিদ্ধ সেচ্থাল বন্যার বালি ও পলিমাটিতে মঞ্চিতে मातिम ।

एएटमं विमान मीघि-वारधद সংস্থার পর্বেকার দিনে রাজ-কোষ হইতে চলিত। বিদেশী-বাল্ডের বাক্স আলায়ের বাবস্থা আরও কঠোর হইল, কিছু রাজ্ম-বায়ের খাতে চাষী বা গুলম্ব-সাধারণের প্রয়োজনের কথা দৈপক্ষিত ই চিল। সূত্ৰেয়াং সংস্থার অভাবে সেঞ্জিও মজিল। দীর্ঘকাল দাসতের ফলে আমা-দেৱও উভ্তম ও বিচাইবৃদ্ধি লোপ পায়, স্বভরাং আমরাও স্বত:-প্রবৃত্ত হইয়া নিজেদের বাঁচাইবার চেষ্টা করিলাম না. কেবলমাত্র বিদেশীকে এবং নিজেদের অদৃষ্টকে দোষ দিয়া কাস্ত হইলাম। আক্তও সেই দাসতের বীজাণ

আমাদের শিরায় শিরায় রহিয়াছে, তাই গালি ও নিন্দায় আমরা পঞ্মধ।

সমগ্র রাচের মধ্যে বাঁকুড়ার এই জলদেচ ও পথ ঘাটের সমস্যা অতি জালৈ, কেননা এই অঞ্চলে সমতল ভূমি অল্প, দিরি-অধিত্যকা উপভ্যকাই চতুদ্দিকে বিস্তৃত। স্ত্তরাং ঐ সমস্যার সমাধানে কেন্দ্রীয় সরকারের সহায়তা বিশেষ প্রয়ো-জন, সেই সঙ্গে চাই প্রাণেশিক সরকারের সজাগ ও ক্ষিপ্র কার্য্যকারিতা এবং দেশের লোকের সর্বাক্ষেত্রে ব্যাপক সহযোগিতা। কোন একটি বিরাট সেচ-পরিকল্পনায় সমস্ত জলসেচ-সমস্যার সমাধান সম্ভব নহে, কেননা জল নীচের



ভালুকা-ভোভের বাঁৰ



ভালুকা-ভোড়ের কলাধার

দিকে যায়, উপরের জমিতে জলপ্রবাহ সাধারণভাবে লওয়া সম্ভব নয়। স্কৃতবাং সমস্ত জেলা অনেকগুলি ছোট বড় অংশে ভাগ করিয়া প্রত্যেকটির জন্য পৃথক জলাধার গঠন ও ছোট-বড় জলনালী কর্ত্তন ভিন্ন উপায় নাই। পথ-ঘাটের ব্যাপারে প্রাচীন, সহজে নিম্মিত গ্রাম্য পথগুলির কিছু অংশ সংস্কার এবং সম্পূর্ণ নৃতন স্ক্গঠিত রাজপথ (Arterial Roads) গঠন নিতাস্কই প্রয়োজন।

বছদিন হইতে জেলার চিন্তাশীল ব্যক্তিগণ এ বিষয়ে আন্দোলন করিয়াছেন। "প্রবাদী" সেই আন্দোলনের মুখ-পত্র ছিল ও আছে। ক্ষিত্র ইতিপুর্বের বিদেশীর ও বিদেশীর

অন্ত গ্রহ প্রাপ্ত লীগ স্বকারের অবহেলায় এবং আমাদের নিজেদের ক্ষুদ্র স্থার্থের ভাড়নায় কিছুই হয় নাই। পশ্চিমবন্ধের প্রাদেশিক সরকার কিছুকাল যাবৎ এ বিষয়ে অবহিত হইয়াছেন এবং প্রায় তুই বংসর যাবং ইহার ভার সেচমন্ত্রীযুক্ত ভূপতি মন্ত্র্মদারের হাতে ন্যন্ত করিয়াছেন। তাঁহারই নির্দ্দেশে সেচ ও পথ-ঘাটের কার্য্য ক্রত

সম্প্রতি এই ছুই বৎসরের কাজের ফলাফল দেখিবার স্থযোগ
আমার হইয়াছিল। প্রায় আড়াই
শত মাইল ঘুরিয়া বাহা দেখিলাম
ভাহার:সংক্ষিপ্ত:বিবরণ দিভেছি।

প্রথমেই বলি সেচের কথা। পৰ্কে বলিয়াছি বাঁকডায় ভপষ্ঠ যেত্রপ অসমতল ভাহাতে এই পবিকল্পনা-কেলায় ময়বাকী জাতীয় একটি বিরাট সেচ-পরি-ক্রনায় কৃষিসমস্তা পুরণ হওয়া সম্ভবপর নহে। সেইজনা অসংখ্য চোট-বড বাঁধ ও সেচ-খালের প্রয়েজন। বর্ত্তমানে ছইটি মাঝারি ও কথেকটি ছোট পবিকল্পনা শেষ হইয়াছে বা শেষ হইয়া আসিতেছে। ইহাদের মধো প্রধান ছইটি. "ভভত্তর দাঁডা"র দশ-আনি চয়-আনি অংশ ও বিডাই-থালের এক অংশ।

শুভরর দাঁড়ার দামোদরমুখী অংশ "দামোদর উপত্যকা" পরি-

কল্পনার অংশ, স্ত্তরাং ভাষা কেন্দ্রীয় স্বকাবের অফ্ গ্রহের উপর নির্ভর করিতেছে। যে অংশের নাম "দশ আনা ছয় আনা" তাহারই উদ্ধার, তাহার জন্য বিশাল জলাধার গঠন ও নালী-প্রণালী সংযোগের কার্যাই এ বংসর শেষ হইয়াছে। বলা বাছল্য, তুই বংসর পূর্ব্বে এই প্রাচীন কীর্ত্তির নির্থক ধ্বংসাবশেষ মাত্র ছিল। এখন চতুদ্ধিকের জলপথের মুখ বাঁধিয়া ও ফিরাইয়া, একটি বড় বাঁধ দিয়া, জলাধার গঠিত হইয়াছে এবং সেই জলের প্রবাহ নিয়ন্তিত হরিয়া সেচ-থালের পথে চালাইয়া দেওয়া ইইভেছে। এ



ভালুকা-ভোড সেচপথ

বংসরই প্রায় ১৮০০ বিঘা ক্ষমিতে উহার সাহা**ষ্যে চাষ** হইয়াছে।

আমবা যথন ঐ অঞ্চল দেখি তথনও বৃষ্টির আভাবে চতুদ্দিকের ক্ষেত থা থা কবিতেচে, মাত্র চার-ছয় আনা জমিতে চারা বোপণ ইইয়াছে বা ইইতেছে। ভতরবের দাঁড়ার হই পাশের জমিতে কিন্তু পূর্ণ আবাদ ইইয়া বছদ্ব-ব্যাপী হরিং ক্ষেতের শোভা দেখা যায়। আমরা উহার যেখানেই গোলাম চাষী হই হাত তুলিয়া আশীর্কাদ করিল। বিডাইয়ের জলাধার আরও বিস্তৃত ও গভীর ইইবে।

এ বংসরই ১৫০০ বিঘায় জল
পাইয়াছে ও আবাদ হইয়াছে।
বিড়াইয়ের পথে ওন্দা থানার
নিকট দিগন্ধপ্রসারিত মাঠে
জলাভাবে আবাদ হয় নাই দেখিলাম। বিড়াইয়ের জলাধারের
নীচে আবার দেখিলাম ধানক্ষেতের
স্থামল শোভা। বিড়াইয়ের বিত্তাবের ব্যবহাও ক্রভ চলিভেছে
নক্সরে পড়িল।

ঐ তুইটি ছাড়াও দেখিলাম ছোট বড় অনেকগুলি বাঁধ, বাহা ছোট ছোট জোড় বা নালায় বাঁধ দিয়া জলাধার প্রস্তুত করিয়া জল-নিচামক বন্ধ বসাইয়া সেচকার্ব্যে লাগানো হইয়াছে। ঐক্সপে ভালুকা ভোড়ের মুবে বাঁধ গঠন করা হই-



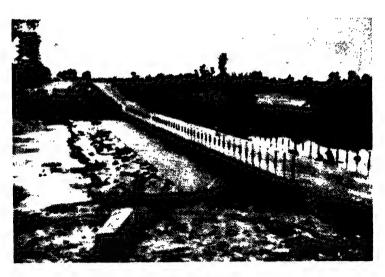
चानचान्या-रामना राक्शन

মাছে বাহাতে এ বংসরই প্রায় ৩০০ বিষায় পূর্ণ জলদান সম্ভব হটয়াছে।

ইহা ভিন্নও বহু হোট বাঁধ ও নালা দেখিলাম, ডাহার কিছু ফুবি-বিভাগ হইডে নির্মিত বা পুর-গঠিত হইনাছে। এগুলিতেও বহু গ্রামের ক্ষেত জল পাইয়াছে ও পাইডেচে।

এই সকল অঞ্চল পরিদর্শন করিতে কয়েক ক্ষেত্রে পথের অভাব বুঝিলাম। সেখানে জিপগাড়ীকে নদী-নালার পাড় বাহিয়া ডাঙ্গা ময়নানের উঁচু নীচু জমির উপর দিয়া চলিতে হইল। কিন্তু বড় বড় রাজপথগুলির সংস্কার করা

হইতেছে দেখিলাম এবং কয়েক স্থলে, যেখানে কখনও পথ
ছিল না সেখানে দেখিলাম দেতু ও কজওয়ে যুক্ত প্রশস্ত
রাজপথ তৈয়ারী হইয়াছে। ভালভালরা-বানদা রাজপথ
উহার মধ্যে দ্র্বাপেকা স্কৃতা। ভাহার এক অংশে ১৪
মাইল পথ দরলা বৈধার মত পাহাড়-উপত্যকার উপর চলিয়া



গিয়াছে। উহা বেধানে জয়পাণ্ডা জোড়ের উপর গিয়াছে সে স্থানটি বড়ই স্কলর।

দেখিলাম অনেকৰিছু, তথার বুঝিলামও অনেকৰিছু।
দেসকল কথা বাহাস্তরে বলিবার ইচ্ছা বহিল।

ক্ৰ মূশ:

### কোজাগরী

#### विरागितन्त्रभम मूर्याभाषाग्र

সক্ত সুদ্ধ স্থান্ নভে পূর্ণ চাঁদিনী লেখা, মৌন প্রকৃতি নীরতে দাঁড়ারে কা'র আগমন লাগি'; জ্যোৎসা-গ্লাবিত বসুধার বৃক্তে কা'র পূত পদ-রেখা, পুল্পিতা ধরা বরিতে তাহারে তাই কি র'রেছে জাগি'।

খনীয় উছলি' বহিছে টাদিনী ভাষল বনানী-শিরে, ভরল খর্ণ-বারার খাকুল বরণী যে অবগাহি'। শারদ-রাণীর গুভাশিস্ বরে দ্বিশ্ব শিবি-নীরে, খলখ-খনিরা নানিছে বরার দীপ্ত কোছনা বাহি'।

বনপৰে কোটে শুল্ল শেকালি বপ্লিল বাসে ভরা, মনে পড়ে বার দূর অভীতের বিস্মৃত বত স্মৃতি, মালভী রজনীগড়া-স্বাসে স্মৃতিত আজি বরা, সারাট পৃথিবী ছাসিয়া উটিছে শাভ প্রাণের ক্ষিতি। ভোছনা-উহল আৰি এ নিশার শারদ-লক্ষী নাকি, নামিবে মরতে মানবের লাগি' দীপ্ত-কনক-রবে; কল্যাণ-দানে ভরিবে ভূবন কিছুই রবে না বাকি, কভ না শান্তি, সুষমা ভাগিবে বরণীর ধূলিপবে।

কোন্ সে অতীতে কোন্ সে ললমা এমনি জাগিলা নিশি, পেরেছিল তাঁর বহু-বাঞ্চিত ছর্লত দরশন; কে আছ জাগিলা এমনি সাবিলা কত শত দিশি দিশি, শারদ-লন্দ্রী ফিরেছিল যবে গৃহত গৃহে অগণন।

আবার এসেছে আজি সেই নিশা, ওগো বধু ভূমি আজ, নিজাবিতীন নয়নে ভোষার জেগে থাক সারা রাভি; মন্দির তব মুক্ত থাকুক রেখে বিও শত কাজ, বরুক শেকালি, কুটুক দোপাটি, অলুক ক্মক-বাভি।

# পূৰ্বপুরুষের নামকীর্ত্তন

#### बीमौत्नमध्य ভট्টाहार्या

পিতপকে পর্ব্বপুরুষের নামে জলাঞ্জলিদান আফুর্চানিকভাবে এখনও অনেকে করিয়া থাকেন। ঐতিহাসিক দষ্টিতে এই অমুষ্ঠানের একটা मुना আছে বাহা উপেক্ষণীয় নহে। সম্বংসবের মধ্যে এক পক্ষকাল কিন্তা অন্ততঃপক্ষে মহালয়ার একদিন প্রবিপ্রক্ষের নামমালা যথায়থ স্মরণ করিয়া পারি-বারিক ইতিহাসের মূল উপাদান অংশতঃ পরিরক্ষিত হয়। সারা বৎসরটা বিষয়কর্মে মগ্ন থাকিয়া, ক্ষণকালের জন্ত এই পৰিত্ৰ কাৰ্য্যে সকলেবই কচি হওয়াৰ কথা, কিন্তু হঠাৎ বৃদ্ধপ্রপিতামহ অথবা বৃদ্ধপ্রমাতামহের নাম ঠিকমত খুঁজিয়া বাহির করা এখন ধরে ঘরেই প্রায় অসম্ভব হইয়া পডিয়াছে। অথচ সেকালে প্রায় প্রত্যেক ব্রাহ্মণপ্রধান গ্রামে এক পুৰক ঘটকসম্প্ৰদায় এই সকল নামমালা বীতিমত লিপিবদ্ধ ক্রিয়া রাখিতেন। এই সম্প্রদায় এবং তাঁহাদের নিখিত গ্রন্থ অধুনা বিলুপ্ত ও অনাদৃত হওয়ায় পারিবারিক ইতিহাসের প্রামাণিক ও মল্যবান উপকরণরাজি বিনষ্ট হইয়াছে এবং তাহার খান অপ্রামাণিক ও কৃতিম বচনা-দারা পুরণ হইতেছে। রাজা রামমোঃন রায়ের পূর্বা-পুরুষের বিশুদ্ধ নামমালা কুলপঞ্জী হইতে উদ্ধার করিয়া আমরা প্রকাশ করিয়াছি ( প্রবাসী, ভাদ্র ১৩৫৮ )। তদ্তে যাঁহাদের কৌতুহল উদ্রিক্ত হইঘাছে তাঁহাদের গোচরার্থ ভূদেব মুখোপাধ্যায় প্রমুখ চারিজন বাঙালী মহামনীধীর পূর্বপুরুষের নামমালায় যে অমুপেক্ষণীয় ভ্রম চলিয়া আদি-তেছে তাহা সংশোধন করিয়া লিখিত হইল। লক্ষা করা আবশ্রক, তাঁহাদের বর্তমান বংশধরগণ কেচ এ বিষয়ে দৃষ্টিনিক্ষেপ করিয়াছেন বলিগা আমরা অবগত নহি। वाःगाद त्नज्ञानीय वाक्तिपद कीवनीव वःगविरमयन অমপ্রমাদশৃত হওয়া বাঞ্চনীয়, এই উদ্দেশ্যে প্রবন্ধটি লিখিত হইল- ও তত্ত্ব পরিবার মাত্রের মনস্কৃষ্টির জক্ত নহে।

#### >। भृतादित शृक्षशूक्ष

সনামধন্য ভূদেব মুখোপাধ্যায় (১২৩৩-১৩০১ বঙ্গাৰু)
মহাশয়ের কুলপিচিয় ছিল "কামদেব পণ্ডিতের সস্তান"।
মুখবংশের এই দারার দাঙ্গেতিক সংজ্ঞা "বিং মুং" সমস্ত কুলপঞ্জীতে পরিগৃহীত হইয়াছে—বিশেশর (সংক্ষেপে বিশো) নাম হইতে ভাহার উৎপত্তি। আমরা পূর্ববং রাচীয় সামাজিক ইতিহাসের যুগুজয় ধবিয়া নামমালা বিশুদ্ধভাবে লিপিবদ্ধ করিতেছি। সর্বারস্তে একটি মারাত্মক লমের কথা বলা আবশ্রক। ভর্মাজ্যগাত্র রাচীয় বান্ধণ মাত্রেই আদিপুরুষ "শ্রীহর্ষে"র নাম উচ্চারণ করিয়। থাকেন এবং এক সময়ে এই শ্রীহর্ষ নৈষ্ধকার কিনা ভদ্বিয়ে বছ বাদামবাদ চলিয়াছিল। ইতা অতীব বিশায়কর বাাপার যে আজ শতাধিক বংসর মধ্যে একজন ব্যক্তিও লক্ষ্য করেন নাই, প্রামাণিক লেখামুদারে এই শ্রীহর্ষ মোটেই গৌডদেশে আসেন নাই। সর্ব্বপ্রথম আসিয়াছিলেন শ্রীহর্ষের প্রপৌত্র "মেধাডিধি" এবং এই মেধাডিধির শ্রীহর্ষ নামে কোন পুত্র ছিল না। স্বতরাং অংদিশ্রের সভাগত মেধাতিপি হইতে নামমালা কীৰ্ত্তিত হইলে শ্রীহর্ষের নাম তরাধাে পড়ে না। নবদীপে আমরা প্রবানন্দ-রচিত অতি-ডল্ল'ভ "মহাবংশাবলী" নামক গ্রন্থের কতিপয় পত্র **আ**বিদ্ধার কবিয়াছিলাম। তন্মধ্যে সৌভাগ্যবশতঃ "মুখয়চীকুল" প্রায় সম্পূর্ণ আছে। এড়মিশ্রের কারিকান্সুদারে (১৫ শ্লোক) মেধাতিথি আদিশুরের সভায় আসিয়াছিলেন। গ্রুবানন্দের উক্ত গ্রন্থামুদারে বল্লালী আদিকুলীন উৎদাহ মেধাতিথির অধন্তন একাদশ পুরুষ। যথা, মেধাভিথি-ত্রিবিক্রম—কাক—ধাধু ("মুখে গ্যাত:")— জলাশ্য – বাণেশ্বর – প্রাণেশ্বর – গুণ্ডি – আচাষ্য মাধ্ব-উৎসাহ; লক্ষা করা আবশুক, মেধাতি থির পঞ্চম পুরুষে প্রথম 'গাঞি' সৃষ্টি হইয়াছিল। আধুনিক কুলপঞ্চীতে ধাহা পাওয়া যায়, এডুমিখ্র-জ্বানন্দের নবাবিস্কৃত লেগানারা তাহা অপ্রামাণিক প্রতিপন্ন হয়। নগেজনাথ বছর গ্রন্থে ( ২য় সা, প. ১৪১ ) জুই জন "মেধা িখি" কল্লিত ইইয়াছে, কিন্তু প্রথম মেধাতিথির নাম বলপূর্বক ছন্দোভঙ্গ করিয়া পাদটীকায় উদ্ধৃত লোকে ঢুকাইয়া দেওয়া হইয়াছে। প্রকৃতপঞ্চে প্রামাণিক হরিমিশ্রও মেধাতিথির পুত্র শ্রীহর্ষের নাম লিখিয়া যান নাই। এই ১১ পুরুষের মধ্যে কাহারও সম্বন্ধে কোন কথা জানা যায় না। কেবল উৎসাহের সম্বন্ধে লিখিত আছে, "উৎসাহস্ত সমঃ পৃত্তি কৎসাহো ভূবি विश्व दः ।

লক্ষ্মণ সেনের অভিষেককালে উৎসাহ জীবিত ছিলেন না। তরিমিত্ত প্রথম সমীকরণে তাঁহার জোন্ত পুত্র আহিতের নাম শীর্ষস্থানে স্থাপিত হইয়াছিল। উৎসাহের ১৬ পুত্র ছিল—তন্মধ্যে ধিতীয় বা তৃতীয় ছিলেন "মহাদেব"। তিনি পঞ্চম সমীকরণে ভ্রাতৃপুত্র লৌলিকের সহিত একসলে পুজিত হইয়াছিলেন। মহাদেবের কূল-কারিকায় জ্বানন্দ (মহাবংশ, পৃঃ ৫) স্পটাক্ষবে লিবিয়া- ছেন—"দহক্ষমাধবেনাসে বাজ্ঞা পূর্বং পুরস্কৃতঃ।" এড়মিশ্র প্রভৃতি সামাজিক-প্রধান ব্যক্তির সহিত লক্ষ্ণসেনের
পূত্র কেশবসেন "তুক্লছের" ভয়ে দেশত্যাগ করিয়া "বক্লে"
দহক্ষমাধবের আশ্রয় লাভ করিয়াছিলেন—এই অতিমূল্যবান্ ঐতিহাসিক তথ্য স্বয়ং এড়মিশ্র লিখিয়া গিয়াছেন
(৩২-৩০ প্লোক)। সম্প্রতি (দামোদরদেবের পূত্র)
"অরিরাজদহক্ষ-মাধব শ্রীদশরথদেবে"র একাধিক তাম্রশাসন
আবিষ্কৃত হও্যায় কেশবসেনের সমকালীন ঐ রাজার সত্তা
প্রমাণিত হইয়াছে এবং এড়মিশ্র ও প্রবানন্দ প্রভৃতি
কুলাচার্বাদের প্রস্কের প্রামাণ্য সম্যক্ প্রতিপালিত হইয়াছে।
অথচা অন্যাপি শিক্ষিত ব্যক্তিমাত্রই কুলপঞ্জীর প্রামাণ্যে
সন্দেহ পোষণ করিয়া থাকেন।

महारित्वत व्यथक्षन ५म शूक्ष कामरित्व। वर्षा, महारित्व —विरम्बद ( महावः म, भू. १ )—डव ( भू. ১२ )—भरमा (পু. ১৮)—ক্বঞ্চ (পু. ৩৩)—মহেশ্বর (পু. ৫৮)—হরি (পু. ৮৪)—কামদেব (পু. ১০৭)। অর্থাৎ প্রভ্যেকেই সমীকরণভুক্ত প্রধান কুলীন ছিলেন। কামদেবের ১১ পুত্র, তন্মধ্যে মধুস্থদনের কারিকা ধ্রুবানন্দ লিখিয়া গিয়াছিলেন (পু. ১২৮)। লক্ষ্য করা আবক্তক, গ্রুবানন্দ মধুস্দনের পুত্রব্যের নামও লিপিবদ্ধ করিয়াছেন এবং ইহা নিঃদন্দেহ বে, এ পুত্রহয় (অনস্ত ও সম্ভোষ) ১৫০০ খ্রাষ্টাব্দের কিঞ্ছিৎ অগ্রপশ্চাৎ জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। পরবর্তী কুলপঞ্চী-সমূহে কামদেবের অধন্তন বংশধারার অতি বিস্তৃত পারি-ৰাবিক বিবৰণ পাভয়া যায়। তাহা সম্যক পৰীকা না করিয়া "ভূদেবচরিতে" যে নামমালাও কাহিনী লিপিবন্ধ হইয়াছে ভাহাতে বিশায়জনক ভ্রম পরিদৃষ্ট হয়। বিশায়ের হেতৃ হইল এই যে, ভূদেৰের পিতা বিশ্বনাথ তর্কভৃষণ কুলগ্রন্থের সহিত পরিচিত ছিলেন (ভূদেবচরিত, ১ম ভাগ, পু. ১৬) এবং স্বয়ং ভূদেবও বহু ঘটকের সংস্পর্শে আদিয়াছিলেন। আমরা সংশোধনপূর্বক একটি বিশুদ্ধ নামমালা সকলন করিতেছি। কামদেবের উপাধি ছিল "পণ্ডিত" এবং তাঁহার একমাত্র উপাধিধারী পুত্র ছিলেন "মধুসদনাচার্যা"। মধুস্দনের ছুই পুত্তের মধ্যে কনিষ্ঠ সম্ভোষের উপাধি ছিল সমন্ত কুলগ্রন্থামুসারে "মুকুট রায়"— তৎকালে এই উপাধি বাজকার্য্যে মন্ত্রিত্বাদি প্রধান পদাধি-কারীর জন্ম প্রচলিত ছিল। তিনি আলিবদ্দী থার বিরুদ্ধে "ভাস্কর পণ্ডিতের সহিত মিলিত হন" (ভূদেবচরিত, ১ম ভাগ, পৃ. ৩)—ইহা সম্পূর্ণ প্রমাদকল্পিত একটি আকাশ-কুন্তম। সম্ভোষ আলিবদীর আয় ২০০ বৎসর পূর্ববন্তী ছিলেন। এবং ভবিষয়ে বহু প্রমাণ বিভ্রমান আছে। শ্রুবানম্বর্ভুক তাঁহার নামোল্লেখ ব্যতীত অপর একটি মৃল্যবান্ প্রমাণ কৃলপঞ্জী হইতে উদ্ধার করিয়া লিখিতেছি।
সন্ধোষের তৃতীয় বা কনিষ্ঠ পুত্র অপুত্রক "চণ্ডীদাসে"র নাম
কৃলপঞ্জীতে প্রায়ণ: লিখিত পাওয়া বায় না। বর্জমান
অঞ্চলের একটি পুথিতে (১২২।১ পত্রে) তাঁহার নাম ও
বিবরণ আছে—"হড়সার্বভৌমস্ত কন্তাবিবাহ:।" এই হড়সার্বভৌম ছিলেন ইছাপুরের চৌধুরীবংশীয় স্থপ্রসিদ্ধ রাঘব
সিদ্ধান্তবাগীশের পুত্র রামভন্ত সার্বভৌম এবং রামভন্তের
পৌত্র প্রতাপশালী "রাজা বঘুনাথ চক্রবর্তী চৌধুরী"র প্রদন্ত
১০৭০ সনের (১৬৬৪ খ্রী:) দানপত্র আমরা দেখিয়াছি
(নদীয়ার ৪৩২৮৩নং তায়দাদ)। চৌধুরীদের পরমাত্মীয়
সন্ভোষ মুকুট রায় চৌধুরীদের সন্ধে মোগল-পাঠান সংঘর্বভালে
কোনপ্রকারে বিপদ্ধ হইয়া থাকিতে পারেন, যদি বস্ততঃ
থ্রজণ কোন কিম্বদন্তী সন্তোষের সমৃদ্ধে প্রচারিত থাকে।

সম্ভোষের দিতীয় পুত্র রমাকাস্ত ( রামকাস্ত নহে ) এবং তাঁহার দশ পুত্রের মধ্যে দ্বিতীয় পুত্র গোপীবল্লভ (অথবা গোপীজনবল্লভ) প্রথম কুলভঙ্গ কবিয়াছিলেন। যথা, "পশ্চাৎ চং কামদেব রায়স্থ কলাগ্রহণাত্তক: তত: কন্যা অপাতে গতা" ( অস্মন্নিকটে রক্ষিত পুথির ১৫নাং পত্র )। "বিভো-চট্ৰ বংশীয় এই কামদেব বায় নদীয়ার চৌধুবী ছিলেন, তথনও নদীয়ায় বর্তমান রাজবংশের প্রতিষ্ঠা হয় নাই। গোপীবল্লভের পুত্র রামকানাই কুলভঙ্গ করেন (ভূদেব-চবিত, পু. ৩)—এই উক্তি সম্পূর্ণ ভ্রমাত্মক। বল্লভের রামকানাই নামে কোন পুত্রই ছিল না এবং গোপী-বল্লভ স্বয়ংই কুলভঙ্গ করিয়াছিলেন। এই ভূলের জন্য সম্ভবত: দায়ী "সমন্ধনির্ণয়" (৩য় সং, পু. ৬৪১)। গোপী-বল্লভের সাত পুৰের মধ্যে সর্বাকনিষ্ঠ ছিলেন "নকড়ি" (নামাস্তর কামু)। একটি গ্রন্থে তাঁহার বাসস্থান লিখিত আছে "সাং চানক"। বোধ হয় গোপীবলভই কুলভক ক্রিয়া সমাজস্থান "পড়দহ" প্রিত্যাগ ক্রেন এবং ভাঁহার পুত্রগণ নানাস্থানে বসতি স্থাপন করেন। নকড়িরও সাত পুত্র, তন্মধ্যে দিতীয় পুত্র "রামনাথে"র দশ পুত্রের অন্যতম "वामकानाइ न्यायवाशीन"हे ज्लादवत्र शूर्वाभूकव। वामकानाई-वाटमचव विमावातीन-इविनावायन मार्क-ভৌম—বিশ্বনাথ ভৰ্কভূষণ (১১৯৯-১২৭৩ বন্ধাৰ)—ভূদেব। গণনাম্পারে আদিশ্র আনীত মেধাতিথি হইতে ভূদেব হইলেন ঠিক ৩০ পুরুষ। হরিনারায়ণ পাঁচ ভাইয়ের মধ্যে সর্বাক্ষরিষ্ঠ ছিলেন (ভূদেবচ্ব্রিড, পু. ৫)। ভূদেবের ১২ বংসর বয়:ক্রমকালে ১৩ বংসর বয়সে তিনি স্বর্গত হন ( ঐ, পু.৬-१)। কিন্তু ইহা ঠিক কিনা সন্দেহ। হরিনারায়ণের ৮ পুত্রের মধ্যে সর্বজ্যেষ্ঠ বিখনাথের জন্মকালে ভাঁছার বয়স হইয়া পড়ে ৪৬—ইহা একাস্বভাবে অসম্ভব না হইলেও

ষ্মত্যস্ত 'হল্ল'ভ ঘটনা এবং বিশ্বাস করা কঠিন। ভূদেবের উৰ্ধতন চারি পুরুষ শান্তব্যবসায়ী পণ্ডিত ছিলেন।

#### বৃদ্ধিমচন্ত্রের পূর্ব্বপুরুষ

বহিমচন্দ্র স্বয়ং 'সঞ্জীবনী-স্থা'য় লিপিয়াচেন: "অবস্থী গঙ্গানন্দ চটোপাধ্যায় এক শ্রেণীর ফুলিয়া কুলীন-দিগের পর্বপ্রথম। তাঁহার বাস চিল হুগলী জেলার অন্ত:পাতী দেশমুখো। তাহার বংশীয় রামজীবন চটো-পাধ্যায় গলাব প্রবিতীবস্থ কাটালপাড়া গ্রামনিবাদী বঘুদেব ঘোষালের কন্যা বিবাহ করিয়াছিলেন।" এই ক্ষুদ্র পরিচয় জিনি নি:সন্দেহ লালমোহন বিদ্যানিধির নিকট সংগ্রহ कविशाहित्वत । मश्चक्रिनिर्देश भविभित्रे (वश्मावनी, भू ২৪০-৪৪) এই পরিচয়ই বিবৃত হইয়াছে, কেবল বিদ্যানিধির মতে "ইহারা হরিপালের অধিবাসী ছিলেন।" বিদ্যানিধি প্রকাশিত নামমালা স্বভাবত: প্রামাণিক বলিয়া পরিগহীত হটয়াছে এবং নগেল্ডনাথ বস্তব গ্রন্থেও (২য় সং, পু. ২৬৩) তাহাই লতাকারে মদ্রিত হইয়াছে। ঐতেমেক্সনাথ দাশ-গুপ্তের গ্রন্থে (বহিমচন্দ্র, ১ম খণ্ড, পৃ. ৩০) একটি অভিরিক্ত পুরুষের নাম ( "পীতাম্ব") দষ্ট হইতেছে। ব কলার যে কোন সমাজের যে কোন কুলগ্রন্থ একবার দেখিলে এই বছকাল প্রচারিত ২ংশলতার বিশ্বয়গনক ভ্রমী সংশোধন করা যায়। গলানন অতি প্রসিদ্ধ কুলীন ছিলেন এবং তাঁহার অধন্তন বংশধরের বহু বিবরণ কুলপঞ্জীতে স্থপ্রাপ্য।

আদিশ্ব আনীত কাশ্রপগোত্র বীতরাগের বংশে প্রথম বল্লানী কুলীনের নাম "বছরপ" (মহাবংশ, পৃ. ১)। তাঁহার ৮ পুত্রের অগ্রতম ছিলেন "গাহী" (পৃ. ৫)। তৎপুত্র সর্বেশ্বর "অবস্থা" সংক্ষা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন:

নারা সর্বেশ্বর: শ্যাতো দানে: করমহীরহ:। অবস্থীতি বিশ্যাতো বজাবস্থপালনাং । (পু. >)

ঘটনাটি এই—বোষালবংশীয় "আডোক" নামক সামা-জিকের বজ্ঞশালায় সর্ব্বেখন ও তাঁহার সমকক কুলীন ঘোষালবংশীয় "পণ্ডিভে"র শান্তীয় বিবাদ হইয়াছিল এবং ভদবধি উভয়েরই "অবস্থী" খ্যাভি হয়। কিন্তু পণ্ডিভ শিপুত্রক ছিলেন বলিয়া একা সর্ব্বেখনই ঐ মধ্যাদাভাজন হিইয়াছিলেন।

গৰিতন্ত সমানোহনো চট্টসর্বেশবঃ কৃতী। আভোক-বক্তপাদারাং বিবাদেন ঘরোরপি। অবস্থীতি বিথাতিস্তন্ত পুত্রো ন চাভবং। (পু. ৮)

ইহা প্রীষ্টার ১৩শ শতাকীর মধ্যভাগের ঘটনা এবং তথনও শমর বাগবজ্ঞাদির অন্তুষ্ঠান এবং বজ্ঞবিদ্যার অন্তুশীলন চলিত ছিল। কুলএন্থের এই সকল প্রামাণিক কথা স্থত হইয়া বর্ত্তমানে অবস্থী শব্দের নানার্ক্প কল্লিত থ্যা অনেকে করিতেছেন। প্রকানন্দ ছিলেন সর্কেশবের অধন্তন নবম (অন্তম নহে) পুরুষ। বথা, সর্কেশর—তেকড়ি (পৃ. ১৫)—সিধো (পৃ. ২৫)—সধো বা লন্দ্রীধর (পৃ. ৪৫)—দিগম্বর (পৃ. ৭২)—জগরাথ (পৃ. ১৬-৯৭)—শ্রীগর্ভ (পৃ. ১১৮)—ভগবান্ (পৃ. ১৪২)—পদানন্দ। ভগবানের কারিকায় গলানন্দের নাম প্রবানন্দ উল্লেখ করিয়াছেন, ভগবান সর্কাশের সমীকরণের কুলীন ছিলেন।

গঙ্গানন্দের অধন্তন নবম পুরুষ বহিমচন্দ্র। বথা, গঙ্গানন্দ কৃষ্ণবল্লভ-নন্দ্রাম (ভঙ্গ)-রামজীবন-রামকান্ড-রাম-हित-- निवनावायन-- यानवहन्त (১२०२-৮१ वक्रास)-- विक्रम (১২৪৫-১৩ • )। বামজীবন পর্যান্ত নাম বছ কুলপঞ্চীতে লিপিবদ্ধ আছে। ক্লফবলভের পাঁচ পুত্রের মধ্যে নন্দরাম ( নন্দগোপাল নহে ) ছিলেন দ্বিতীয়। তিনি কুলভন্দ করিয়া নানাস্থানে বহু বিবাহ করিয়াছিলেন। বিস্তৃত বিবরণ কুলগ্রন্থে পাওয়া যায় এবং তন্মধ্যে এমন গ্লানিকর কথা আছে যাহা লিপিয়া প্রকাশ করা যায় না। তাঁহার পত্রসংখ্যা বারোর কম নতে—তন্মধ্য ক্রাপি রামকান্তের নাম নাই, আছে রামজীবনের। সাহিত্য-পরিষদের ৭৮৭ সংখ্যক পুথিতে রামজীবনের সাত পুত্রের মধ্যে বাষকান্ত এবং তাঁহারও চারি পুত্রের নাম আছে—"রামহবিশীহবিগশানাবায়ণজগলাপাঃ" (২৭০-৭১ পত্র)। স্বতরাং বিনি রয়দেব ঘোষালের কন্সা বিবাহ কবিয়া কাঁটালপাড়া আদিয়াছিলেন তিনি বামজীবনের পুত্র রামকান্ত, নিশ্চিতই রামকান্তের পুত্র রামজীবন নহেন। ঘটকের প্রামাণিক লেখা অগ্রাহ্য করিয়া, কি করিয়া এই অন্তত নাম-বিপৰ্যায় সাধিত হইয়াছিল, জানিবার উপায় নাই। যাদবচন্দ্রের বৃদ্ধপ্রপিতামহ রামজীবন নিশ্চিতই द्रचुराव श्वाकारमञ्ज वरशास्त्रक्षे अवः शृक्ववर्त्ती हिरमन। कान গ্রন্থেই পীভাম্বরের নাম নাই।

গলানন্দের বাসগ্রাম ঠিক কোথার ছিল এখন নির্ণয় করা অসাধ্য। তাঁহার এক পুত্র "বিখেশর" ফুলিয়ার রামেশর ঠাকুরের কন্তা "গলা"কে বলপূর্বক স্থগৃহে আনিয়াছিলেন। এ সম্বন্ধে একটি গ্রন্থে কৌতুকজনক কথা আছে—"ভত্যাং মৃভায়াং বিশেশরপুত্রেণ রামনাথেন বিমাত্মভত্তাং 'দীর্ঘগলে' আদ্ধং কৃতং" (কামালের পুথি, ফুল্যাপ্রকরণ, ১৬৷২ পত্র)। এভদ্যারা অন্থমিত হয়, গলানন্দ ও তাঁহার পুত্রগণ অধুনাতন বৈদ্যবাটীর সংলগ্ন প্রাচীন দীর্ঘগক অথবা দিগকের অধিবাসী ছিলেন।

#### আশুতোষের পূর্বাপুরুষ

কুলশান্তে লকপ্রবেশ স্থসাহিত্যিক স্থর্গত মহেজ্ঞনাথ বিদ্যানিধি মহাশয় সর্বপ্রথম আভতোষ মুখোপাধ্যায়ের পূর্বপুরুবের নামমালা বহু পরিশ্রমে সংগ্রহ করিয়া প্রকাশ

করিয়াছিলেন ( সন্দর্ভদংগ্রহ, ১৩০৫, ৫ম প্রস্তাব)। তাহাই সম্বন্ধনিৰ্বয়ের ৩য় পরিশিষ্টে (১৩২), পু. ২৬০) সংক্ষিপ্তা-কারে পূর্ব্বতন বংশলডার সহিত সংযুক্ত করিয়া প্রকাশিত হইয়াছে। আমরা সংশোধনপূর্বাক সম্পূর্ণ নামমালা লিখি-তেছি। আদিশুর কণ্ডক আনীত ভরধান্দগেত্র মেধাতিথির অধন্তন দাদশ পুরুষ আহিতের পুত্র "উধো" (মহাবংশ, পৃ. ৪ ), তৎপুত্র শিয়ো "ধঞ্জ" ( পৃ. ৮ ), শিয়োর তিন পুত্র হইতে মুখবংশের তিনটি প্রদিদ্ধ সমাজস্থানের উৎপত্তি— নৃসিংহের ফুলিয়া সমাজ, রামের 'স্বর্জুলিয়া' ও দ্যাকরের কাঁচনা। রামের অধ্তন পঞ্চম পুরুষ "গোপাল ঘটক" স্থামে মেল করিয়াছিলেন। হথা, রাম (পু. ১৪)—হ্রে )পু. ২২ )— জয়পতি ( পু. ৪০ ) – গদাধর ঘটকাচার্যা ( পু. ৬৬ १ )—বোপাল (পু. ১১)। তৎপুত্র মাধব ''লক্ষর'' (পু. ১১৪) এই বংশেরই ধনপতির পুত্র মাধ্ব হইতে পুণক বাক্তি। কেই কেই ভ্রান্তিবশতঃ ধনপতির পুত্র হইতেই বংশ বর্ণনা করিয়াছেন (লালমোহন মুখোপাধ্যায়-রচিত মুধবংশ, পু. ৮২)। ঘটকের পুত্রের 'লক্ষর' উণাধি বিশেষভাবে লক্ষ্য করা আবশ্রক, ধ্রুবানন্দও তাহা লিপিবদ্ধ ক্রিয়াছেন। ওন্ধারা পাঠান আমলে রাজ্যতন্ত্রের সেনা-বিভাগে মাধবের উচ্চপদাধিকার স্টিত হইতেছে। ধ্রুবা-নন্দের কারিকায় (পু. ১১৪) মাধ্বের ছয় পুত্রের নাম আছে। বিদ্যানিধির মতে ( সম্বন্ধনির্ণয়ের পরিশিষ্ট, বংশা-বলী, পু. ১০১ ) জে। ষ্ঠ পুত্র স্থরানন্দের ধারায় আওভোষের क्या। हेहा कान পूषिएडहे भाष्या यात्र ना, ख्डदाः ভ্রমাত্মক। পরবন্তী ঘটক গ্রন্থানুসারে মাধবের পুত্র "রঘু লম্বর ভিন্ন অপর পাচ পুত্রের "কুলাভাব" ছিল। বঘু मशक कविशा मानाध्वथानौ म्यान व्यविष्ठे दहेशाहितन। তাঁহার পুত্র 'কুমুদে" ব সম্বন্ধে লিখিত আছে, "কুমুদস্য বিবাহদোষ: কক্সা অপাত্রস্থা" ( অস্থনীয় পুথির ৮০)১ পত্র ), অর্থাৎ, তিনিই প্রথম কুলভঙ্গ করেন।

কুম্দের অধন্তন পঞ্চম পুরুষ "পুরুষোত্তম তর্কবাগীশ"
দিগ্স্ট নিবাদী ছিলেন! নামমালা যথা, কুম্দ— হরিদেব
—ধামনারায়ণ—কুষ্ণবল্পভ—পুরোষোত্তম। কোন কোন
গ্রন্থাকুসারে হরিদেব ছিলেন কুম্দের লাতা দেবীদাদের পুত্র
(কুলকল্পজ্ঞম, মুথবংশ, পৃ. ২১৫)। ছগলী কালেকুরীর
৪৫২৯৭নং তার্দাদে পাওয়া যায়, (সাবর্ণ-চৌধুরবংশীয়)
বিদ্যাধর রায় মুখবংশীয় পুরুষোত্তম তর্কবাগীশকে দীর্ঘস্ট
গ্রামে ভূমি দান করিয়াছিলেন—১২০৯ সনে তাহার
অন্যত্তম দ্বলকার ছিলেন "হ্রেক্ট্ড বিদ্যাদাগর"।
পুরুষোত্তমের এক পুত্রের নাম রাজারাম—রাজারামের
জ্যেষ্ঠপুত্র বলরামণ্ড শাস্তব্যবদায়ী পণ্ডিত ছিলেন। মহেন্ত্র—

নাথ বিদ্যানিধির মতে তাঁহার উপাধি ছিল "ন্যায়ালছার", কিছ বঙ্গায়-সাহিত্য-পরিষদের ১৮১৫ সংখ্যক পুথিতে (৬৫৬।১ পত্রে) আছে "বলরাম ন্যায়বাগীল"। এই পর্যান্তই কুলপক্ষীতে পাওয়া যায়। অতঃপর মহেন্দ্রনাথের পরিশ্রমসাধ্য লেখাই আমাদের উপজীব্য, বলরামের তিনপুত্র—হরেক্ষণ্ণ (বিভাসাগর), রামজয় ও কলিকাতা সংস্কৃত কলেজের প্রথম স্মৃতির পণ্ডিত রামচন্দ্র বিদ্যালছার। রামজয়ের ১১৯৬ সনে অল্প বয়সে মৃত্যু ইয়—তৎপুত্র বিশ্বনাথ (জন্ম ৪ কার্ত্তিক ১১৯৪, মৃত্যুও ১ কার্ত্তিক ১২৫৬) গলাপ্রসাদের পিতা এবং আন্ততোষের পিতামহ। মেধাতিথি হইতে আন্ততোষ ঠিক ৩২ পুরুষ।

#### রামানন্দের পূর্ব্বপুরুষ

খনামধনা রামানন্দ চট্টোপাধ্যায়ের জীবনীতে বে বিস্তৃত বংশাবলী লভাকাবে মুদ্রিত হইয়াছে ভাহার প্রথমাংশ ভ্রমপ্রমাদপূর্ণ। এই বংশের প্রকৃত পরিচয় হইল "নানোর চট্র" সংক্ষেপে ('নাং চং'), কিছ ঐ চট্টবংশ ঠিক কোন ধারার অস্তর্গত ভাহা অল্লায়াদে নির্ণয় করা সম্ভব হইলেও আমরা তাহাতে অসমর্থ। যে ধার। মুদ্রিত ইইয়াছে ভাহা ঠিক নহে। নাং চং মহাকালের পুত্র পদাগভির নাম ধ্রুবানন্দ লিখিয়াছেন (মহাবংশ, পু. :২৫)। পদাপর্ভের পুত্র হরিরাম। হরিরামের ছয় পুত্র— রামশহন রামনারায়ণ (ভঙ্গ), সীতারাম (ভঙ্গ), যাত্ ( নি:সন্তান ), মাধব ও সন্তোষ। এই সন্তোষ রামানন্দের পুর্বপুরুষ হইতে পারেন না। ভাঁহার বংশ অদ্যাণি "নিক্ষ" কুণীন এবং নামমালা কুলপঞ্চীতে স্বপ্রাপ্য। বুখা, সম্ভোষ-বামচক্র-বিশ্বনাথ-ধনশ্বয় প্রভৃতি ছয় (বিক্রমপুর অঞ্লে ছিল)। সকল গ্রন্থায়সারেই রাম-চল্লের একটি মাত্র পুত্র ছিল বিখনাথ। যদি সজ্ভোষের পুত্র রামচন্দ্র এই বংশের পূর্ব্বপুরুষ ছিলেন বলিয়া চির-প্রচলিত প্রবাদ বা প্রমাণ থাকিয়া থাকে, ভাহা হইলে আমাদের অনুমান এই সস্তোষ পুর্ব্বোক্ত পদাগর্ভের এক বৃদ্ধ প্রপৌত্র হইতে পারেন। যথা, পদাগর্ভ—অভিবাম ( ভন্ন )---লোক রাম---সাতু বা কৃষ্ণজীবন--সস্ভোষ। কিছ এই সস্তোষের পুতাদির নাম আমাদের পরীক্ষিত কোন গ্রন্থে নাই। পদ্মগর্ভের উদ্ধতন পুরুষের নাম ও বিস্তৃত বিবরণ কুলগ্রন্থে স্থপাপ্য-ভিনি আদিকুলীন বছরপের অধন্তন একাদশ পুরুষ। যথা, বছরপ—গোবিন্দ—চক্রপাণি ( চাকু )-পুরুষোত্তম ( পুরো )- নন্দন-জগরাণ-विद्याहन ( जिनाभी )—हस ( हाम )—मधू—महाकान পদাগর্ভ। কুলগ্রন্থামুদারে পুরো নলীকুলবাদী ছি<sup>লেন</sup> विषय्ना 'नारका' मः 🗪 প্राश्च इन ।

## তিৰতের টাকাকড়ি

#### গ্রীনরেন্দ্রনাথ রায়

ভারতের টাকাকড়ি তিব্বতে চলে; কিন্তু তিব্বতের নিজম্ব মুদাও আছে। তিব্বতের বাজারে আমাদের টাকার কদর আছে। ঈষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর টাকা বা ভিক্টোরিয়া মার্কা টাকার আদর সবচেয়ে বেশী। আমাদের আধুলি সিকি বড় দেখিতে পাই নাই। শুনিয়াছি পূর্ব-তিব্বতের কোষাও কোথাও নাকি একমাত্র ভারতীয় টাকার সাহাব্যেই কেনাবেচা হয়। উহাকেও নাকি তিব্বতীয় প্রথায় কাটিয়া অল্পমূল্যের মুদ্রার কাজ চালানো হয়।

তিক্তের মুদ্রা আগে নেপাল হইতে তৈয়ারী হইয়া আদিত। খাদের মাজা ক্রমশং বাড়িয়া বাওয়াতে এখন লাদাতেই টাকশাল প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। কলিকাতার টাকশাল বাহারা দেখিয়াছেন তাঁহারা যদি মনে করেন বে, তিক্তেরে টাকশালও ইহার অন্তর্গ তাহা হইলে ভূল করিবন। উহা বাংলা দেশের কামারশালার বড সংস্করণ।

তিকতে প্রচলিত মুদ্রার নাম "ত্রক্কা"। উহা পাতলা ও গোলাকার—ক্রপা ও তামা মিশাইয়া তৈয়ারি হয়। এক ত্রক্কার ক্রয়মূল্য আমাদের ছয় আনার সমান। তিকতের অবস্থানকালে কিন্তু আমি হাটেবাজারে ভারতীয় এক টাকায় তিন ত্রক্কা পাইতাম। তিকতে ক্ষেকপ্রকার ত্রক্কার প্রচলন আছে, যথা (১) গ্যন্ডেন্ পোডল ত্রক্কা, (২) কোল ক্যর ত্রক্কা, (৩) টুল্ট্যল, ত্রক্কা (৪) চোডল, ত্রক্কা, (৫) পা-নিয়ল, ত্রক্কা। এগুলির মধ্যে প্রথম প্রকারের ত্রক্কারই প্রচলন বেশী। উহার এক পিঠে লেখা আছে "গ্যন্ডেন্ পোড্যল, চোলে ন্যন্ গ্যল্"। ইহার অর্থ বাংলায় করা যাইতে পারে— "সকল দিক হইতে বিজয়ী পবিত্র প্রানাদ"। অপর পিঠে লেখা থাকে "ট-পি টগ্যা" অর্থাৎ সৌভাগ্যের অন্ত লক্ষণ।

একবার লাসা গবর্ণমেন্টের সহিত রেটিং গোদ্দার বিবাদ বাধে। তাহা মিটাইতে আসেন চীন হইতে একজন উচ্চ রাজকর্মচারী। টুল্-ট্যুল অঙ্গকা তাঁহারই নাম অফুসারে হয় বলিয়া প্রবাদ আছে। পূর্ব্বোক্ত অঙ্গকার মত ইহারাও এক পিঠে সৌভাগ্যের অষ্টলক্ষণ আছে, কিন্তু অপর পিঠে কিছু লেখা নাই। আছে কেবল শোভাবর্দ্ধক কাক্ষকার্যা।

কোলপার অভকাতেও কোন লেখা নাই। কেবল এক পিঠের মধ্যস্থলে চতুকোণ আঁকিয়া উহার মধ্যে একটি ডিব্ৰতী সংখ্যা লেখা আছে।

চো-টাৰ্ অৰকা আসলে নেপালী মুদ্রা। ইহা নেপাল

হইতে তৈয়ারী হইয়া আসে। উহাতে নেপালের রাজার নাম, সন, তারিথ ইত্যাদি লেখা আছে। ইহার নেপালী নাম 'মোহর'।

তিকাতে এককা কাটিয়া অল মূল্যের মূলার কাফ চালানো হয়। গান্ডোন্পোডক এককা সাধারণতঃ কাটা হয় না। চোডক এককাকেই বেশী কাটা হয়।

এক অঞ্চলার মূল্য আমাদের ছয় আনার সমান।
কাজেই উহাকে ঠিক অর্দ্ধেক করিয়া কাটিয়া তিন আনার
মূলা করা হয়। তথন উহার নাম হয় "চি-কো"। তিন
ভাগ রাখিয়া কাটিলে উহা চারি আনার কাজ চালায়,
এবং তথন 'সো-কল' নামে পরিচিত হয়। এক-তৃতীয়াংশ
মাপে কাটিলে উহার নাম হয় "কর্মা"।
উহার মূল্য তুই আনা।

অঙ্গকাকে কাটিয়া অল্প মূল্যের মূল্যা তৈয়ারি করিবার সময় কর্মকার যে লোভে পড়িয়া কিছু ধাতৃ না রাথে তাঁহা নহে। উহাতে বান্তবিকই অন্তবিধা আছে। এই অন্তবিধা দূর করিবার জন্য তিব্বত গবর্ণমেন্ট তুই পয়সা (ধক্-চে) ও এক আনা মূল্যের (খ কাঞ্চ) তাম্মূলার প্রচলন করিয়াছেন। ইহা ছাড়া এক টাকা তুই আনা মূল্যের "অঙ্গ-চেড্" এবং তুই টাকা চারি অনো মূল্যের "সাজ-কাক" এই তুই খোনীর রৌপামূলারও চলন হইয়াছে।

চীন হইতে আমদানি করা রৌপ্য-পিগুও তিকাতে মুদ্রার কান্ধ চালায়। ধাতুর ওজন হিসাবে উহার মূল্যের তারতমা হয়।

ভিকাতে পণাবিনিময়েও কেনাবেচার কাজ চলিতেছে। মুগনাভি, গমচ্র্ল, যব, চা প্রভৃতি মূল্যের মাপকাঠি হিসাবে চলে। বেমন, প্রায় নয় পোয়া যব এক টাকার প্রভীক। পণাবিনিময়ে কেনাবেচা করা বিষম ঝকমারি ব্যাপার। প্রথমতঃ কাহার কি প্রয়োজন ভাহা বাহির করিয়া যোগস্থাপন করিতে হইবে। ভাহার পর দরক্যাক্ষি। ইহাতে অযথা অনেক সময় নই হয়। কেতাও বিক্রেতা হই ই স্ব স্ব পণাের গুণকীর্ত্তন ও অপরের দ্রব্যের গুণহীনতা প্রমাণ করিতে যথাসাধ্য বক্তৃতা করে।

জনৈক তিব্বতী বন্ধুকে জিজ্ঞাসা করিলাম,"মুদ্রাসংস্কাবের প্রয়োজনীয়তা কি আপনারা এখনও অফুভব করেন না ?"

তিনি বলিলেন, "অমুভূতি জাগিয়াছে—সংস্থারের বেশী দেরী আছে বলিয়া মনে হয় না।"

বর্ত্তমানে তিব্বত চীনের তাঁবে আসিবার পর নৃতন চীনের মূলাও তিব্বতে চলিতেছে।

### বাংলা ও বাঙালী

#### শ্রীস্থশীলচন্দ্র ঘোষ

বন্দেমাতরম্ মহামন্ত্রের ঋষি বৃদ্ধিমচন্দ্রের কল্পনালোকের বাংলা ও বাঙালী আজ ধ্বংসের পথে। আনন্দমঠের ব্রহ্মচারীকে বখন মহেন্দ্র জিজ্ঞাস। করিয়াছিলেন "মা কে", তখন ব্রহ্মচারী উত্তর দিয়াছিলেন "আমহা তাঁহার সন্তান।" মহেন্দ্র আবার যখন জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন "কে তিনি"? ব্রহ্মচারী উত্তর দিয়াছিলেন "সময়ে চিনিবে।" পরে মহেন্দ্র এক "অপরুশ সর্বাক্ষ্মপালা সর্বাভ্রণাভূষিতা অগজাত্রীমৃত্তি" দেখিয়া ব্রহ্মচারীকৈ জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন "ইনি কে ?" তখন ব্রহ্মচারী উত্তর দিয়াছিলেন "মা বা ছিলেন।"

বন্ধিমচন্দ্রের ব্রহ্মচারী ধথন বলিতেছিলেন "আজি দেশের সর্ব্বব্রই শ্মশান—তাই ম। কথালমালিনী" তথন উাহার চোথে দর দর ধারা পড়িয়াছিল। আজ বাংলা দেশে সেই ব্রহ্মচারীর ভায় সর্ব্বত্যাগী নেতা কোথায় গুআর মহেল্রের ন্যায় সেই দেশপ্রেমিকই বা কোথায় থাহারা আবার বাংলার রূপ বদলাইতে পারেন ?

ভারতবর্ষের মধ্যে বাংলা প্রদেশই প্রকৃতিদন্ত সম্পদে
অধিক সমৃদ্ধশালী ইইলেও ভারতের অন্ত সমন্ত প্রদেশের
তুলনায় বাঙালী জাতি আজ দরিদ্র। বাংলার সহস্র
সহস্র কাধ্যক্ষর উচ্চলিক্ষিত যুবক আজ উপযুক্ত কর্মক্ষেত্র
শাইতেছে না। বে জাতি এতদিন সাহিত্য, রাজনীতি
প্রভৃতি সকল ক্ষেত্রেই সমগ্র ভারতের চিস্তার থোরাক
জোগাইয়াছিল সে আজ অন্ত প্রদেশবাদীর নিক্ট সকল
বিষয়ে অবহেলিত। রাজনীতিবিদ্ স্থরেজ্বনাথ, সাহিত্যসম্রাট বিদ্মিচন্ত্র, বিশ্বকবি রবীক্রনাথ, বৈজ্ঞানিক প্রফ্রাচন্ত্র
ও জগনীশচন্ত্র এক সময় সারা ভারতবর্ষে অগ্রণী ছিলেন।
তাঁহাদের পদাহাত্মসর্গ করিবার মত নবীন বাংলায়
কাহাকেও আজ দেখা যাইতেছে না কেন তাহা ভাবিবার
কথা।

একথা অস্বীকার করিলে চলিবে না বে, এই যুগে সারা বিস্বে রাজনৈতিক ও অর্থ নৈতিক সমস্থা একই স্ত্রে গাঁথা। পূর্ব্বে পরাধীন ভারতের কথনও পুরাপুরি ভাবে এই সমস্থার সম্মুখীন হইবার অবকাশ ছিল না। কিছ এ যুগে বে জাভির অর্থনৈতিক শক্তি নাই রাজনীভিক্ষেত্রে সে জাভি কথনও মাথা তুলিতে পারে না। এই কারণেই আজ বাংলা ও বাঙালী অন্থান্য প্রদেশ ও প্রদেশবাসীর অনেকট্টপিছনে পড়িয়া আছে এবং দিনের পর দিন নিশ্চিত ধ্বংসের মুখে আগাইয়া বাইতেছে।

ভারতের সকল প্রাদেশের অধিবাসী ও নেতারা অর্থ-নৈতিক এবং বাজনৈতিক ক্ষেত্রে নিজ নিজ প্রদেশের আর্থ অগ্রে বজায় বাধিবার পর তবে সমগ্র ভারতের আর্থের দিকে লক্ষ্য করেন। তাঁহারা এ মনোবৃত্তিকে "প্রাদেশিকতা" বলিয়া মোটেই মনে করেন না। কিন্তু অধুনা বাংলার প্রায় সকল নেতাই বজমাতাকে ভূলিয়া একমাত্র ভারতমাতার বন্দনায় ব্যন্ত। তাঁহাদের মতে বাংলার আর্থ অগ্রে রক্ষা করিলে উহা নিচক "প্রাদেশিকতা" হয়।

বাঙালী জাতিকে যদি আবার মাথা তুলিয়া বিশের দাড়াইতে হয় তাহা হইলে অগ্ৰে কাল্লনিক "প্রাদেশিকতার" কলরবকে উপেকা করিয়া তাহাকে বাবদা ও বাণিজ্যে মনোনিবেশ করিতে হইবে। তাহাকে বাংলার বাহির হইতে ও ভারতের বাহির হইতে অর্থোপার্জ্জন করিতে হইবে এবং সর্ব্বার্গে বাংলাদেশের অৰ্থ বাহাতে বাহিৰে চলিয়া না বায় ভাহাৰ জন্ম বথাসাধা চেষ্টা করিতে হইবে। যথন আমরা ব্রিটিশ সামাজ্যের অম্বৰ্ভ ছিলাম তখনও বাংলাদেশ হইতে যত টাকা বিদেশীরা লইয়া যাইত তাহা অপেক্ষা অনেক বেশী পরিমাণ টাকা ভারতের অপরাপর প্রদেশে চলিয়া যাইত। ইহার মোটামৃটি হিসাব আচাব্য প্রফল্লচক্র তাঁহার আত্মনীবনীতে লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন। স্বাধীনতা লাভের পর ইহা शाम भारता पृत्वत कथा वदः এই টাকার পরিমাণ বছলাংশে বন্ধি পাইয়াছে। এই অবস্থার জন্য কিছ ভারতের অনাানা প্রদেশের অধিবাসীদের দোর দেওয়া কোনমতেই উচিত হইবে না। यमि शुक्रदांहे, शक्षाव, वाचाई, माखांक, फेबर शाम । विहादक अधिवामीका वांशामित आनिका काछि काछि है। का छेशार्कन कविशा निस्मानव साम লইয়া ঘাইতে পারে তবে বাংলার অধিবাসীরা কেন সমূলত করিয়া তোলা অল্পসংখ্যক ব্যক্তির পক্ষে সম্ভব নহে। দেশের সমগ্র অধিবাসীর প্রাণের সঙ্গে এই আকাজ্ঞা ভড়িত থাকা একান্ত আবশ্যক। এজন্য বাংলার প্রত্যেক সম্ভানকে মানসপটে হুজুলা হুফুলা শস্ত্রজামলা বন্ধমাভার আরাধনা করিতে হইবে । ভবেই ঋষি বঙ্কিমচন্দ্রের স্বপ্ন বাস্তবে পরিণভ ছইতে পারে। রবীশ্রনাথ গভীর তঃখে লিখিয়াছিলেন-

> সাতকোটি সস্তানেরে হে ম্ঝা জননী; রেখেছ বাঙালী করে মান্তব করোনি।

বাংলার টুনবীনেরা কি এখনও কবির এই মর্মব্যর্থ অনুভব করিতে পারিতেছে না ?

## নারায়ণী সেনা

#### এ বিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

সমস্ত দিন সমস্ত বাত গাছের উপর কেটে গেল।

সমস্ত দিন বলাটা একটু ভূল, কেননা ছপুর পর্যান্ত আমরা ছিলাম হাতীর হাওদার উপর। আমি আর নলিনীবাব্। পূজার ছুটিতে আমরা ছ'লনে ছ'দিক থেকে এসেছিলাম আমাদের উভয়ের বন্ধু আনন্দের বাড়ী, নলিনী-বার কলকাতা থেকে আর আমি এদিক থেকে।

আনন্দের পুরো নামটা হচ্ছে আনন্দকিশোর থাপা। खता जुताहरमञ्ज त्मलामी क्यमिनात । अत लाठा कीवरमव ক্তকটা কাটে পাটনায়, এবং বত্তকটা কলকাভায়। বরাবরই বাঙালী-ঘেঁষা, তাইতে আমার সঙ্গে পরিচয় হয় পাটনায়, আমরা উভয়েই তথন বি-এ ক্লাসের ছাত্র। বি-এ পাদ করে আর আমার কাছে বিছাদাগরের দিতীয় ভাগ শেষ করে আনন্দ কলকাতায় চলে গেল। সেধানে এম-এ পড়ে চার বছর, ঘরে লক্ষ্মী বাঁধা, তাই বােধ হয় সরস্বতীর উপর ভক্তিটা মরে এসেছিল। কিন্তু এম-এ না পাদ করে ও বাড়ী ফিরে গিয়ে আমায় যে চিঠিটা লিখেছিল সেটি একেবারে ঘরোয়া বাংলায়। তাইতেই প্রথম কাঁত্নী গাইলে—একলা পড়ে গেছি. বনবাস, নিশ্চয় আসবি একবার, যত শীগগির পারিস—শিকারের লোভ দেখান ছিল, আবার ঐ একই চিঠিতে প্রাকৃতিক সৌন্দর্যোর দকে 'বনবাদে'র শাস্ত নিরুদ্বেগ জীবনের উচ্ছুদিত গুণ-গানও ছিল। ... বি-এ ক্লাদেই আমি লুকিয়ে লুকিয়ে লেখক হবার পায়তারা ভাঁজছি, আনন্দকিশোর সেটা জানত।

ভারপর এক বছর ধরে এই রকম চিঠি মাঝে মাঝে বরাবর এগেছে; কিন্তু চারদিক দিয়ে প্রলুক হলেও এভদিন গিয়ে উঠতে পারি নি।

আর কথনও বাভয়ার তুর্মতিও না হয় যেন। প্রথমতঃ
দূরত্ব এবং পথের তুর্গমতা। রূপনগর নিকটতম বেলষ্টেশন থেকে আঠার মাইল। রাস্তা নেই বললেই চলে।
ভারতের দীমানার মধ্যে মাইল তিনেক একটা কাঁচা
সড়ক, তারণর দীমানার একটা খাল পেরিয়ে তার আদলটা
কিছুল্র পর্যন্ত গেছে বটে, কিছু দেই কোন্ য়ুগে প্রথম
তোয়ের হবার পর তাতে আর কথনও মাটি পড়েছে বলে
মনে হয় না। মাঝে খাঝে পাহাড়ী নদী, অল্পরিসর,
কিছু অভ্যন্ত গভীর আর থবস্রোতা। জ্বল পড়ে গোটাপাঁচেক, তার মধ্যে তুটো জনেক দূর পর্যন্ত বিস্তীর্ণ। রাস্তা
ঠিক মাঝখান দিয়ে যায় নি বটে, তবুও খানিকটা ভেতরে
থাবার পরই গভীর অল্কণার; কতকটা এই থমথমে
স্ক্রকারে, কতকটা একটা অক্টানা আশ্রায়. বেরিয়ে

আসবার পর মনে হয় ধেন পুনর্জন্ম হ'ল। প্রাম খুব দ্বে
দ্বে, পাহাড়ের দিকে বতই এগুনো বায় আরও এসেছে
কমে, আর এই বে নিজের-মনে-গড়ে-ওঠা রান্তা এটা হয়ে
উঠেছে উঁচুনীচু, জায়গায় জায়গায় পাপ্রে, আর সেটাকে
খণ্ডিত করে যে সব নদী বয়ে গেছে তাদের সংখ্যা গেছে
বেডে।

যানবাহন হাতী, ভারতসীমানা পেরিয়ে থানিকটা পর্যস্ত একটা গরুর গাড়ির ব্যবস্থা ছিল, বৈচিত্র্য হিদাবে।
-হাতীই চরম বৈচিত্র্য মনে করে আমরা যাবার সময়ে ষ্টেশন থেকে নেমে তাইতেই সওয়ারী হই। ভুলটা যথন বোঝা গেল তথন আর গরুর গাড়ির পথ নেই।

কতকটা স্থবিধা আছে শেষের দিকে। গ্রাম থেকে বোরয়ে প্রায় মাইল চার পর্যান্ত খাপা-পরিবারের জমিদারির তরফ থেকে একটা আবার রাস্তা করে দেওয়া হয়েছে, বিজুরিয়া বলে একটা নদীর ধার পর্যান্ত; বাড়ীর দিকে রাস্তাটা মাইলধানেক পাকাও। এইটুকুতে আনন্দ-কিশোরদের মোটরটা যাতায়াত করে। মোটরটা আদে এধানে পৌছেছিল কি করে সে একটা আলাদা কাহিনী।

এই হাডভাঙা অভিযানের পর কিছু আমরা বে मुन्दी मिन द्यारन हिमाम, वड़ जानत्मई हिमाम। क्रभ-নগর জায়গাটা খুব মনোরম। গ্রামের শেষ প্রাস্ক থেকেই পাহাড় আরম্ভ হয়ে গেছে, তারপর স্তরে স্তরে উঠে একেবাবে শেষ দিকে তৃষারমুকুট। সকালে, আর বিকেলে একটু নরম হয়ে আসার সঙ্গে সঙ্গে তার উপর যে রক্তাভা পড়ে তার উপমা হিমালয়ের এদিকে কোথাও আছে বলে মনে হয় না। আনন্দকিশোবের পিতা কুগং-কিশোর সৌধীন লোক, নিজের গ্রামট্কুও বেশ সাজিয়ে-গুচিয়ে পরিষ্কার-পরিচ্ছন্ন করে রেখেছেন। শরতের স্বচ্চ আকাশের নীচে রূপনগরকে একটু দূর থেকে দেখলে মনে হয় নীলাম্বীপরা কোনু মায়ের কোলে সাক্রোজ করা একটি শিশু বেন শুয়ে রয়েছে। এখানে থাকাই আনন্দ তার উপর নিত্য হজুগ। আৰু শিকার, কাল বিজ্বী-অভিযান, পরশু পাহাড়ের উপর গিয়ে পিক্নিক: চোট ছোট শিকার ছাড়া একদিন হাতী নিয়ে, লোকলম্বর সজে করে একটা বড় শিকারও হয়ে গেল—ছটো চিতাবাম্ব গোটা পাঁচ হবিণ, ছটো বুনো শুকর। এর উল্লাদ দামলাভেই তু'দিন গেল কেটে। আহার তো শেষ পর্বাস্ত একটা তুশ্চিস্তাই হয়ে দাঁড়িয়েছিল-জল অত ভাল হওয়া मर्च छ ।

তবুও যে কেন বলছি আরে বাবার ফুর্মতিটা যেন না হয় তার দিতীয় কারণটা এবার বলি।

সাতটা দিনের প্রোগ্রাম ছিল আমাদের। ওঁদের অহ্বরোধ-উপরোধে সেটাকে আর একটু বাড়িয়ে আমরা দশম দিন সকালে বাজা করলাম। বিজুবী নদী পর্যন্ত পরিবারের এক রকম সকলেই মিলে আমাদের মোটরের পৌছে দিলেন—পর্দ্ধা নেই, আনন্দকিশোরের স্থী, ভগ্নী প্রভৃতি কয়েকজন মেয়েছেলে পর্যন্ত। নদীর মাঝথানটুকু নৌকায় পেরিয়ে আমরা এপারে এসে হাতীর ওপর চড়লাম।
শেব দৃষ্টটুকু বেমন অপূর্ব তেমনি বিষাদময়। হিমালয়ের ভ্যারমুক্ট, তার নীচেই ঘনারলাের নীল রেখা, তার পর খানিকটা সমতলভূমি, বিজুরীর উত্তরতটে আনন্দকিশোরেরা দাঁড়িয়ে রয়েছে, গোরকান্তি মেয়েদের রংচঙে পোশাক, আনন্দকিশোর আর কয়েকজন কমাল নেড়ে বিলায় জানাচ্ছে, নীচেই বিজুরীর উপলাহত উচ্ছল জলস্রোত আর সমন্তটকুর উপর শরংপ্রভাতের ঝলমলে রোদ।

হাতীটা থানিকটা এগিয়ে এলে নলিনীবারু বললেন, "এবার ঘুরে বন্ধন শৈলেনবার্, যা ছেড়েই আসতে হবে তার দিকে এরকম করুণ দুষ্টতে চেয়ে থাকা বীর ধর্ম নয়।"

নলিনীবাবুর কথা বলা হয় নি। একটি জটিল চরিত্র, কিন্তু সদী হিসাবে চমংকার; আমুদে, গল্পপ্রবণ, যে অবস্থাতেই পড়ুন তার মধ্যে থেকে রস বের করে সেটাকে উপভোগ্য করে নেবার ক্ষমতা আছে; মোটের উপর নামে-ধামে-স্বভাবে এক জন আদর্শ কলিকাতার মামুব, আসবার সময় উনি না থাকলে যে কি অবস্থা হ'ল, আর বাবার সময়ও যদি উনি না থাকতেন তো…

কিছ সেকথা পরে হচ্ছে; এখানে মাত্র এইটুকু বলে রাখি যে ওঁর থেকে থেকে ঐ 'বীর-ধন্ম' কথাটা ব্যবহার করবার বাতিক আছে। একবার রহস্তচ্চলে প্রশ্ন করতে বললেন, "শৈলেনবার, ভেতো বাঙালী, এসেছি এমন দেশে যেখানে স্বার কোমরেই একটা খুরকি বুলছে, এখানে জিভের ডগায় অন্তভ: একটা ধারালো কথাও না নিয়ে থাকলে মানাবে কেন গ্"

বললাম, "কিন্তু আনন্দ তো আমাদের শ্বরূপ চেনে।" উত্তর করলেন, "জিগোগও করেছিল এ নতুন মুদ্রা-দোষের কথা, বললাম, থেটে অভ্যেস করেছি, নইলে তোর মান পাকবে কেন ?"

আরও কীর্ত্তি আছে নলিনীবাব্র, কিন্তু সে কথাও বথাস্থানে। সকালের দিকটা আমাদের বেশ কাটল। স্নানাদি সেরে বেশ ভালভাবে জলযোগ করে বেঞ্নো গিয়েছিল, হাওদার উপর তুলতে তুলতে, গল্প করতে করতে, নিগবেট পোড়াতে পোড়াতে আর নক্তি নিতে নিতে আমরা তুপুর পর্যান্ত গ্রাম থেকে প্রায় মাইল বারো দ্রে রামফেরী জন্মলের ধারে এসে পড়লাম।

খিদে পেয়েছে, খাবার সময়ও হয়েছে, তা ভিন্ন জান্নগাটা এমন অপরপ বে এইখানে বদে হিমালয় ভরাইয়ের শেষ নিদর্শন হিসাবে এটাকে মনে গেঁপে নেবার ইচ্ছাটাও প্রবল হয়ে উঠল। আমাদের ডান দিকে উচ্-নীচু জমির উপর নিবিড় শালবন, দেটা যেখানে পাতলা আর সক্ষ হয়ে এসেছে দেইখান भिश्व **আমাদের রাস্তাটা। আমাদের বা দিকে** একটা ছোট পাহাড়, সমস্ত জায়গাটা ঢেউয়ে ঢেউয়ে ছলে এদে যেন এই পেষ ঢেউয়ে খেমে গেছে, এর পরেই তরাইয়ের সমতল, উঁচু জমিতে রয়েছি বলে কতদূর পর্যান্ত ষে দেখা যায় তার হিসাব নেই। সমস্ত জায়গাটিকে প্রাণবস্ত করে রেখেছে একটি ছোট নদী। জায়গাটা উচ্-নীচুবলে মাঝে মাঝে তার স্রোত গেছে আটকে, জল হয়েছে জ্বমা, তার পর সেই সঞ্চিত জ্বলের চাপেই সেটা তোড়ে বেরিয়ে এসেছে; চার দিকে ঝরঝর, ঝরঝর শব্দ: একটি নদীই ঝরণার মালা গেঁথে চলেছে, একটি নৃত্যচপল মেয়েরই পায়ে নূপুর, হাতে তালি, কঠে দকীত।

মাছত করন্ বাহাত্রকে বললাম, "হাতীটাকে পাহাড়ের গোড়ায় নিয়ে চল, ঐ গাছতলাটায় নেমে আমরা আহারটা দেরে নেব।"

ठिक त्य तननाम छ। नम्न, थानिक्छ। देविछ, थानिक्छ। हिन्नी आत এইशान मन मित्नत क्रिक्षेत्र अमत जारात গোটাকতক শব্দ যে আগত্ত করেছিলাম তার মধ্যে থেকে কিছু কিছু দিয়ে উদ্দেশ্তটা বুঝিয়ে দিলাম। বেশ বুঝাল, কিছ না এগিয়ে খানিকটা ভাষায় আর খানিকটা ইন্ধিতে कानिएम मिल एर ममक्टल न्याम थानिक है। अनिएम अन একটা ভাল জায়গা জানা আছে, দেইখানেই বাচ্ছে। সাধারণত: নেপালীদের মুখটাই হয় অত্যস্ত গন্তীর আর ভাবলেশহীন; দেইজন্তেই, আর তার বক্তব্যটা পুরোপুরি ৰুঝতে না পারার জন্যেও নিশ্চয়, আমাদের মনে र'न लाकडी व्यवधारे विक कदाइ। তাই আমরাও গম্ভীর হয়ে গিয়ে ওকে আমাদের নির্দেশ পালন করতেই हरूम निनाम। এদের आत এकটা দোষ চটু করে চটে যায়। আর কিছু বললে না, হাতীর মুখ ঘুরিয়ে গাছটার मित्क ठानिए मितन, जांत शत त्वम वसन काहाकाहि এসেছি, এই হাত পঞ্চাশেকের মধ্যে, হঠাৎ দাঁড় করিয়ে জানাৰে বে জায়গাটায় বাঘের ভয় আছে, বনের শেষে এই ঝরণা, প্রায়ই ওরা জল খেতে আসে এখানে।

व्यामारमत मूथ एकिस्य भाग। ठिक এইভাবে म इटित

সামনে এনে ফেলে কণাটা প্রকাশ করার জন্য লোকটার উপর একটু বিরক্ত হলাম, কিছ ঠিক এই ধরণের লোককে আর চটানো বিবেচনার কাজ হবে না বুঝে আমরা প্রস্পাবের মুখ চাওয়াচাওয়ি করতে লাগলাম।

নলিনীবাব্ বললেন, "শাত্ত্বে এর ভাল ব্যবস্থা আছে শৈলেনবাব্—যং পলায়তি স জীবতি। কিন্তু এ হতভাগা আমাদের পরীক্ষা করছে, তায় সেদিন একটা বাঘ মারবার যশটা আমিই নিয়েছিলাম, মারি আর নাই মারি—ভাই ভাবছি কি করে অভারলি রিট্টি করা যায় যাতে বীর-ধশ্ম রক্ষা হয়।"

সাহসী বলে আমারই যে খুব নাম আছে এমন নয়, তবে ভরা মধ্যাহ্ন, জঙ্গল প্রায় নেই বললেই চলে, এমনই কেমন ভয় আসে না, তার উপর একটা ভাল বন্দুক রয়েছে শৈলেনবাবুর হাতে। আমি একটু ভেবে নিয়ে উত্তর করলাম, "এক কান্ধ করা যাক না মাঝামাঝি, গাছ-তলাটাতেই যাই, তার পর হাতীর পিঠ থেকে না নেমে খাওয়া-দাওয়া সেরে নিলেই হবে।"

মনের কথাটাও বললাম, "শেষে জ্বলথাওয়াটা শুধু ঐ ঝণার জলে সারবার ইচ্ছে আছে নলিনীবাবু, নইলে আপশোষ থেকে যাবে।"

নলিনীবাবু আমার মুখের পানে চোগ বড় বড় করে চেয়ে রইলেন, বললেন, "বিদ্যাদাগর মহাশয়ের প্রথম ভাগ থেকে আরম্ভ করে ক্যাণ্টের ক্রিটিক্ অব পিওর রিজন্— এতগুলি বইয়ের মধ্যে আদল বই কথামালাটাই আপনার বাদ পড়ে গেছে শৈলেনবাবু? আমরা নীচে জল খাছি, আর উপর থেকে বাঘ যদি বলে— ওরে অর্বাচীন, তুই আমার পান করিবার জল ঘোলা করিতেছিদ কোন্দাহসে?—তথন ?"

হো হো করে হেসে উঠলাম। হ'লও ভাল, বিপদের মুখেই হাসি, বীর-ধর্ম ভাল করেই বজায় রইল, সলে সঙ্গেই করণ বাহাত্রকে ইসারা করলাম হাতীটাকে এসিয়ে দিতে।

করণ বাহাত্র হাতীর কানের গোড়ার হাঁটু ত্টো চেপে অঘ:' না ঐরকম কি একট। শব্দ করলে — সামনে যাবার। হাতী কিন্তু এগল না। তিন-চার বার ঐরকম করবার গরও ঘথন অগ্রনর হ'ল না তথন কান থেকে অঙ্কুশটা খুলে নিষে মারলে উল্টো দিক দিয়ে একটা বাড়ি, তার পর গাতেও নড়ে চড়ে না দেখে দিলে থোঁচার দিকটা খানিকটা সিয়ে। হাতীটা আর্ত্তনাদ করে উঠল, কিন্তু নড়ল না। গার পরই তার ভলি গেল বদলে, ওঁড়টা চালাতে লাগল, বীরটাতে আন্তে আন্তে দোল দিতে লাগল, একটা যেন ই বক্ম নৃতন ধবণের ভাব। ক্ষণবাহাত্র সামনে গলাটা

বাড়িয়ে কি যেন পরীকা করছিল, হঠাৎ হাতীটা সামনে হন্ হন্করে এগুতে আরম্ভ করলে।

করণ বাহাত্র মাথাটা একবার ঘুরিয়ে বললে—"হুজুর, ক্ষে হাওনা ধরে থাকুন…"

"কেন বে ?"

"হাতী পাগল হবে ... হয়েছে ... "

বলতে বলতেই হাতীটা গাছের নীচে এসে পড়েছে, ধারেই একটা নীচু ভাল ছিল, হাওদায় লেগে মটাস্ ক'রে গেল ভেঙে, আমরা হাওদার পাদানের কাছে সুক্রেপড়েছিলাম বলে বেঁচে গেলাম, সরু ভাল বলে হাওদাটাও নই হ'ল না, কিছু বেণ থানিকটা একপেশে হয়ে গেল। করণ বাহাছর মার ছেড়ে আদর থোসাংমাদ ধরেছে, অমরা গাছের মাঝধানে একটা বেশ মোটা ভালের নীচে এসে পড়ভেই বললে—"এই ভালটা ধরে উঠে পড়ুন হজুব, আর কোন উপায় নেই, ক্ষেপেই উঠেছে."

আমরা ইতন্তক্তঃ করছি দেখে বা হাতটা পেছনে করে ক্রমাগতই তাগাদা করতে লাগল—উঠে পড়ুন, উঠে পড়ুন, সঙ্গে সঙ্গে ঐ ডাল ধরে উপরের মোটা ডালটায় চলে বান —নইলে ••"

আমরা আর বিশ্ব না করে ডালটা জড়িয়ে উঠে পড়লাম। সেই ডালটা থেকে একটা ফাাকড়া বেরিয়ে উপরে একটা বেশ মোটা ডাল ঘেঁষে উঠে গেছে, সেইটে বেয়ে আমরা তার উপর গিয়ে বসলাম। হাভীটা ভখন একেবারে কেপে গেছে, প্রথমে শরীরটাতে ঝাঁকানি দিয়ে হাওদা আর মাহত ত্টোকেই ঝেড়ে ফেলবার চেষ্টা করলে, হাওদাটা একেবারে পেটের কাছাকাছি নেমে এল, করণ বাহাত্ব কিন্তু সুঁকে পড়ে ওব কানেব গোড়া তুটোধরে চেপে পড়ে ইল। হাতীটা ভূঁটো আছড়াচ্ছে ওকে ধরবার জন্তে, কিন্তু অল্ল জায়গার মধ্যে এমন ভালগোল পাকিয়ে পড়ে আছে যে ওকে স্পর্শই করতে পারছে না ভাল করে।

আমরা প্রায় উঠে পড়বার সঙ্গে সংক হাতীটা এ ডালটার তলা থেকে সরে গিয়েছিল, ঝেড়ে ফেলবার চেষ্টায় বিফল হয়ে আবার ফিবে এল, তারপর আমরাও টেচিয়ে উঠেছি 'তুমিও উঠে এসো করণ বাহাছর' বলে, সেও ঘাড়টা কি ভেবে একটু তুলেচে, এমন সময় হাতী ডালটা। ত ড় দিয়ে জড়িয়ে গরলে, বার তিন চার ছলিয়ে ছলিয়ে বেন দেখে নিলে কতটা শক্ত, তারপর একটা প্রচণ্ড নিনাদের সঙ্গে মড় মড় করে ডালটা ভেঙে ফেললে। নলিনীবারু আমার মুখের পানে চেয়ে বললেন—"শাস্ত্রবাক্যের মূল্য আছে লৈলেনবারু।" বললাম—"ভাবছি, করণ বাহাত্রও উঠে এল না কেন—"

"বোধ হয় শাস্ত্র-অনভিজ্ঞ বলে · আমাদেরই প্রথম চান্স নিতে দিলে, মূর্যের নানা দোষ তো ···"

ভালের গোড়াটা তথ্নও গুঁড়ির দক্ষে লেগে রয়েছে, হাতীটা দেইটে চেপে চেপে ধরতে লাগল নিজের গায়ে, অর্থাৎ করণ বাহাত্রকে পিষে মারতে চায়, হাওদাটা দিতে লাগল বাধা, পেট থেকে ঝুলে পড়ে থানিকটা বেরিয়ে এদেছে আর দেইজন্যই শরীরের দক্ষে ভালটার একটা ব্যবধান থেকে যাছেই। শেষ পর্যন্ত কি হ'ত বলা যায় না, কিন্তু কতকটা এই রকম টানাটানিতে এবং কতকটা নিজের ভাবে ভালটা এক সময় আলাদা হয়ে গিয়ে মাটিতে নেমে পড়ল। হাতীটা আবার ত্লিয়ে ত্লিয়ে ত্লে নিয়ে দেখলে সন্থাবহার করা যায় কি না, ভারণের আবার একটা চীৎকার করে হন্ হন্ করে গাছের তলা ছেড়ে বেরিয়ে পড়ল। করণ বাহাত্র একবার ঘাড়টা একট্ বেকিয়ে কি বললে—'আঞ্ছ-ইঞ্ব' দিয়ে হলেও বেশ বুঝলাম, বলছে—ভয় ক'রো না আচি।

নিদীবাবুরও পরিহাস-প্রিয়তা বন্ধ হয়ে গেছে, বললেন
—এত ভয়ের মধ্যে লোকটা এখনও গুধু আমাদের ভয়ের
কথাই ভাবছে মণাই! কি কাগু! কি ধাতু দিয়ে এরা
তৈরি!"

হাতিটা বাড়ীর দিকেও না, টেশনের দিকেও নয়, রাস্তা
একেবারেই ছেড়ে পাহাড়ের গা বেয়ে নীচের সমতলের দিকে
এগিয়ে চলল। শেষ যা দেখলাম—একখানি প্রায় মণখানেকের
পাথরের চাঁই তুলে নিয়ে পেছন ঘেঁঘে ছুঁড়ে মারলে।
পাথরটা করণ বাহাছরের হাভকয়ের দ্ব দিয়ে বেবিয়ে গিয়ে
হাওদাখানিকে চুরমার করে দিলে। এর পর গোটা ছই
আওয়াজ ছাড়া হাতীর খবর আর কিছু পাওয়া গেল না,
শেষটা মনে হ'ল, মাইল ছয়েক দ্বে কোনগান থেকে
এল বেন।

এবার চিন্তা হ'ল কি করা বায়। হাতীর আওয়াজ অবশ্য পাওয়া বাছে না, কিন্তু যা দেখা গেল তার পর নামতে আর কারুর সাহস হচ্ছে না। করণ বাহাত্তর ভরসা দিয়ে গেল, কিন্তু সেও নিতাস্ত অনিশ্চিত একটা ব্যাপার, হাতী বদি ঠাণ্ডা হয়ে যায়, তাকে শেষ করে না কেলে, তবু ও-হাতীতে চড়ার আর কথাই উঠতে পারে না। এক, বদি ওটাকে কোনরকমে রূপনগরে চালিয়ে নিয়ে বেতে পারে, সেখান থেকে তাঁরা ভাড়াতাড়ি একটা ব্যবস্থা কর্বেনই।

গাছেই বলে আছি, শরতের ছোট বেলা, দুপুর গড়িরে

বিকেল এসে পড়ল, বোদ হয়ে উঠল হলদে। প্রচণ্ড কিংধ পেয়েছে, কিন্ধ উপায় কিছু নেই। যতই সময় বেডে লাগল, আলোর সকে আশাও হয়ে আসতে লাগল ডিমিড; এই ভয়টাই মনে অধিকার বিন্তার করতে লাগল—নিবন্ধ উপবাস দিয়ে সমস্ত রাজিট। গাভের উপর কাটাতে হবে নাকি! একটা কোন ব্যবস্থা করে নিতেই হবে যে।

গাছটা চেনা গাছ নয়, কোনও ফলও নেই যে চেনা না হলেও পরীকা করে দেখা যেত। গাছের নীচেও মাত্র লখা লখা ঘাস, মত্ত হাতীর দাপটে বিমন্দিত হয়ে রয়েছে। সফলের মধ্যে দিগারেটের টিন, আর আমার নিস্তির ডিবে। এক সময় একটা দিগারেট টানতে টানতে নিলনীবার্ বললেন—"এ অবস্থায় নিশ্চিন্দি হয়ে দিগরেট টানার মধ্যে একটা বীরভাব আছে বটে, কিন্তু তাতে চলবে না। সন্ধ্যে প্রায় হয়ে এল, একবার নেমে একটু সন্ধান নিতেই হবে। পাহাড়ে আতা থাকা খুব সন্থব, তার কয়েকটা গাছও আমি দেখেছি আসতে আসতে—দাড়ান হয়েছে, একটা জায়গাও আমার মনে পড়ছে, পথের ধারেই, বেশী দ্রও নয়—"

এ ভালটা বেশ মোটা, মাঝখান থেকে অনেক ছোট বড় ভাল বেরিয়ে যাওয়ায় পড়বারও ভয় নেই। নলিনীবার্ একটা ভাল ধরে উঠে পড়তে যাচ্ছিলেন, হঠাৎ নীচের দিকে দৃষ্টি পড়তে এক রকম চেঁচিয়ে উঠলেন—"শৈলেনবার্ জোর বরাত—উভোগিনপুরুষ সিংহম্—কি যে বলে এ দেখন!"

ওঁব তৰ্জ্জনী অন্তুসরণ করে দেখি অন্তপ্রায় ক্র্যোর রাঙা আলো পড়ে ঘাদের ভেতর কি একটা চিকচিক্ করছে। একট্ট লক্ষ্য করতেই বুঝতে পারলাম—আমাদের টিফিন কেরিয়ারটা। তার একট্ দ্রেই আর একটা কি চিকচিক করে উঠল, ঠাহর করতেই বোঝা গেল আমাদের বন্দুকটা —হাওদা কাং হতেই তুটো নিশ্চয় নীচে পড়ে গিয়েছিল।

আমি নলিনীবাবুকে ধরে ফেললাম, বললাম, "আপনি কলকাতার মান্ত্র্য, মন্ত্র্মেট হলে আপত্তি করতাম না, কিন্তু গাছে উঠা-নামা করাট। আমারই এলাকার মধ্যে পড়ে, বস্থন আপনি।"

একটু অহুবোণের দৃষ্টিতে চাইলেন নলিনীবার, বললেন, "আমি দেখলাম, আর আপনি আত্মদাৎ করবেন, তার পর 'আমার কলকাতা আর আপনার বেহারের পেট' এই ছুতোয় বড় ভাগটা দখল করবেন—এ বীর-ধর্ম হয় না শৈলেনবারু…"

ভালপালার মধ্যে দিয়ে গুড়ি পর্যন্ত বেশ গেলেন নলিনীবাৰু, ভার পরে নামতে বাবেন, কি বেন একটা দেখে থমকে গেলেন, তার পর বেভাবে অতি সন্তর্পণে পা কেলে ফেলে ফিরে এসে আবার বসলেন আমি বিমৃচ্ হয়েই জিজ্ঞেস করলাম, "ব্যাপারখানা কি নলিনীবার, ফিরে এলেন বে।"

বেশ বোঝা গেল গলা ভবিয়ে গেছে. টিন্টা আমার কাছে ছিল, বললেন, "দিগারেট একটা।"

ত্ব-একটা টান দিয়ে বললেন, "সর্ব্যনাশ হয়েছে শৈলেন-বাবু, আর ফিরে যেতে হবে না—"

"দে কি।"

একটা চরম ভয় আর নিরাশার জন্মেই বোধ হয় নলিনী-বাবুর স্বভাবসিদ্ধ কৌতুকপ্রিয়তা আবার ফিবে এন্দেছে, সিগাবেটেও বোধ হয় একটু কাণ্ড হয়েছে, বললেন, "পুরুষ-সিংহ চিতার পাল্লায় পড়েছেন, স্থন্দবী আবার সদ্য-প্রস্থৃতি…"

"কোপায় ?"

নলিনীবাবু নীচু হয়ে এক দিকে চাইলেন। ওঁর দৃষ্টি অন্থসরণ করে দেখি প্রায় শ'থানেক হাত দৃরে একটা ছোট, হাততিনেক উচু টিলার উপর হামাগুড়ি দিয়ে একটা চিতাবদে মাঝে মাঝে লেজ আছড়াচ্ছে আর তৃটি বাচ্চা সেই লেজ নিয়ে নিজেদের মধ্যে কাডাকাডি করছে।

অন্তমিত সুর্য্যের আভায় একটা তুর্লভ-দৃশ্ন, কিন্তু সে দেখবার আর সময় নেই। আমরা যে ডালটা ধরে উঠেছিলাম এই বড় ডালে, তাড়াতাড়ি সেটি ধরে নীচের ডালে নেমেই কোমরের র্যাপাবটা খুলে ডালে বাঁধতে আরম্ভ করলাম। শৈলেনবারু প্রশ্ন করলেন—"ব্যাপাবখানা কি? অভ্যর্থনায় বাচ্ছেন ? আরে, সেই রাজা কি, তাঁর মন্তন অভিথি-সংকারটাই ভো ভালভাবে করা বাবে—"

বললাম, "আপনিও নেমে আস্থন তাড়াতাড়ি এই ভালে, গেরোটা চেপে ধকুন, বন্দুকটা নিয়ে আসি, অত ঘুরে যাবার সময় নেই।" উনি আসতে আসতেই আমি ব্যাপার ধরে পা-টা নামিয়ে দিয়েছি, কিন্তু আর এগুনো গেল না।

এখান থেকে দৃষ্টির আর কোন প্রতিবন্ধক নেই; মনে হয় হাতীর ব্যাপার থেকেই চিতাটার বোধ হয় এই জায়গাটির উপর লক্ষ্য ছিল, ব্যাপারটা ঝুলে পড়ভেই বোধ হয় একটু সভর্ক হয়ে পড়েছিল, আমার পা নামতে আত্তে আত্তে উঠে পড়ল। তার পরেই হফ্নমানের মত আগে পিছে তলে তলে অগ্রসর হ'ল। আমি যে উপরের ডালটা পর্যন্ত পৌছুতে পাবলাম, তার কারণ নিশ্চয় বাচ্চারা পিছু ডেকে দিয়ে থাকবে। একটু পরেই শাবক ছটিকে সল্কে করে আধ-ছোটা হয়েই এসে ঘাড় তুলে একটা আওয়াজ করলে।

নলিনীবাবুর চরিত্র দেখে বিশ্বিভই হয়ে গেলাম, সন্মুধ বিপদের মধ্যে ওঁর কৌতুকপ্রিয়তাটুকু যেন আরও ফুটে বেরিয়েছে। বোধ হয় এইটে বজায় রেখে উনি চিম্ভার পথটা বাধছেন পরিষ্ণার। বললেন, ''শৈলেনবাবু, মশাই, সামান্য একটা চিতা-বাধিনীর ভয়ে হাত-পা আলগা হয়ে পড়ে বাওয়া বীর-ধর্ম হবে না, তার চেয়ে এক একটা ভালের সঙ্গে নিজেদের বেঁধে রাধি আহ্বন রাাপার দিয়ে।"

বললাম, "চিতা তো কিন্তু গাছে ওঠে।"

"জানি, বাঁধা পাকলে আমাদের লড়বারও স্থবিধে হবে, 'উই সাল ফাইট উইথ আওয়ার ব্যাক টু দি' ডাল।… নিন্ এইবার এই ক'টা হাত দিয়ে বেশ ভাল করে শুঁড়ো করুন দিকি। আপনার তো বেহাবের থৈনি দলা হাত।"

টিনে গোটা চল্লিশ সিগরেট ছিল, অর্দ্ধেকগুলো আমার দিলেন, প্রশ্ন করলাম, "একি হবে ?"

"বারুদ, আপনার নিশ্মির ডিবেটাও উজোড় করতে হবে। কিছু নাও হতে পাবে, তবু কোন জিনিসই অবহেলার নর, একেবারে সামনাসামনি এলে, ছ'মুঠো ঝেড়ে দেব, চোখে নাকে যদি যায় তো দিতেও পাবে কাজ। বেটি তোপ্তিতবংশের মেয়ে নয়—নক্ষি নাও ব্রদান্ত হতে পাবে।"

নীচে থেকে একটা আপ্যাক্ত হ'ল, "হৃম্!" একটু গাঢাকা হলে বোধ হয় বেশী খোলে।

নলিনীবাৰু চাপা পলায়ই উত্তৱ করলেন, "বেশ তো, বসে বসে শাল আলোচনা করা যাবে।"

আমবা বেরিয়েছিলাম ত্রয়োদশীর দিন। দিনটাও শুভ, আর অস্তত পূর্ণিমাট। বাড়ীতে কাটাব এই রকম ইচ্ছা ছিল। সুর্যা অস্ত বাবার সঙ্গে সঙ্গে চাদ হয়ে উঠল স্পষ্ট।

সৌন্দর্য্যে ভীষণভায় অত অপরূপ পৃথিবীকে আব কথনও দেখি নি। আমার মনে হয় সৌন্দর্য্যকে পূর্ণতর করে বিকশিত করবার অন্যে তার পেছনে চাই একটা টাজেডি। তাই হয়েছিল সে বাতে, আর তো ভোমায় ছেড়েই ষাচ্ছি হে মুশ্মে ধরণী—হে চির-নবীনা পুরাতনী…

না, এ কথাটা বোধ হয় একটু বেশী বকম ভাবালু হয়ে পড়ল। আমরা যে এত নিবিড়ভাবে সেদিন সৌন্দর্য্য উপভোগ করতে পেরেছিলাম তার আরও একটা কারণ ছিল—বডই রাত এগুতে লাগল ততই বুরতে লাগলাম বাঘিনীর গাছে উঠবার কোন অভিসন্ধি নেই। আশ্রুণ্ডই বোধ হতে লাগল—প্যান্থারই হোক, লেপার্ডই হোক, পাছে উঠা চিতাবাঘের রেগু, কিছ সেদিকে আমাদের নৈশ অভিথির কোন বকম তাগিদ নেই। একবার স্থ্ গোড়ার দিকে গুড়ির কাছে এসে ঘাড় উচুনীচু করে বেন তদারক করে গেল, তারপর আর কিছু নয়। ঠিক বুরতে পারা

যাচ্ছে না; হতে পারে, উপরে বধন শক্রই ময়েছে, বাচাগুলোকে একা ফেলে রেখে যেতে চায়ন¹, এও হতে পারে যে মাহ্য-শক্ররই অভিজ্ঞতা আছে। কিংবা এও হতে পারে ভেবেছে—শিকার ত মুঠোর মধ্যে কিসের ভাড়া এত, অবরোধের দারা শক্রকে কর্তলগত করা বাক না।

জ্যোৎসায় ফিনিক ফুটছে, আমাদের দামনে গভীর অ-ণ্য, ওদিকে বিস্তীপ সমতদ, মাঝখানে আমাদের এই কডকট। পাতলা পাহাড়-বন। আমাদের গাছট। থুব পুরনো, কিন্তু খুব ঘন ডালপালার নয়, দিকচক্রবাল পর্যান্ত সমস্টটুকুই আমাদের দৃষ্টির দামনে ঝলমদ করছে। রাত্রির প্রথম অংশটা ছিল শুরু, তারপর যতই গভীর হতে লাগল ডতই এদিকে ওদিকে এক একটা যে আওয়ান্ত উঠতে লাগল তা ধেমন অন্তত ডেমনি ভয়ক্য।

আমাদের পায়ের নীচে আমাদের মৃত্যু। স্থনিশ্চিত, বেশ জানি, একটু যে অনিশ্চয়ভার কথা ভাবছি দেটা একটা সাম্বনা মাত্র, যতকণ খাদ ডভক্ষণ আশও তো।

নিনীবাবু বললেন, "শৈলেনবাবু, বাঘিনীই তে', নোলা আছে, আমাদের জ্যোৎসায় জাবিয়ে নিয়ে তারপর খাবে।"
এক সময় ডি. এল. রায়ের সেই গানটাও ধরলেন—
আজি এমন চাঁদের আলো, মরি বদি সেও ভালো…বেশ
উন্মুক্ত গলাতেই।

নীচে থেকে মাঝে মাঝে বাঘিনী— হম্ হম্ করে সায় দিয়ে যাছে। অভত সঞ্ত।

এক সময় ভাবের ঘোবে বলে উঠলেন—"লৈলেনবাবৃ,
মরবার আগে তগবানের কাছে শেষ প্রার্থনা জানিয়ে বাই
আর বেন মাহ্য হয়ে জন্মাতে না হয়। বড় কুৎসিত
আমরা! চেয়ে দেখুন নীচে, কি অভূত স্থলর! ভাবছি,
মাহ্য আমরা কাণড়-জামার ফাঁকিবাজির সৌল্র্যানিয়ে
লোপটিই হয়ে গিয়ে ওদের জায়গা ছেড়ে দিই না কেন
এবার, বৃদ্ধির মুগের বোকামিটা দেখাও ভো হ'ল আনেক,
এবার একটা সৌল্র্যাের মুগই আস্ক্ না।"

ভোর হ'ল। আমরা মাছবের জগতে ফিরে এলাম।
আবার একটা অভুত ধরণের আশা বাঁচতে হবে, উপায় বের
কর। শালাদি যুগ থেকে বে বিবস্মান্ মাছ্যকে এসেছেন
বাঁচিয়ে, বেদ-সঞ্চীতে নিয়ে এসেছেন পূজা, তাঁকে যুক্তকরে
অভিনন্দন করলাম শাহে দেব, বাচ্চি, তবু মাছবের হয়ে
ভোমায় বে শেষ কৃতজ্ঞতা জানিয়ে বাবার অবসর পেলাম,
এও ভো পরম সান্তনা।

আছও বাঁচালেন, দিবালোকে রহস্টা প্রকাশ পেল।

সকাল হতে বাঘিনীর চেহারা গেল বদলে। । এ কি বকম কথা ।—সমন্ত রাত ছাঁ-পো নিয়ে উপোসী বসে আছি, কিনা স্থেফ গান গেয়ে রাত কাটিয়ে দিলে।

দেশ আছড়াতে লাগল আর উপরে চেয়ে চেয়ে হকার, তার পরেই ছুটে গিয়ে তর তর করে গুঁড়ি বেয়ে খানিকটা উঠে গেল। তার পর কিন্তু দেখান থেকে এক লাফে নেমে পড়ে মাটিতে মুখ রগড়ে থাবা দিয়ে মুখ আঁচড়ে আবার বাচ্চাদের মধ্যে এদে বদে ইাকাতে লাগল। আমাদের অবস্থা সহজেই অস্থমেয়, তু'জনেই কাঠ হয়ে বদে আছি।

বারচারেক এ রকম হয়ে গেলে, নলিনীবাবু উঠলেন, আমি বাধা দেবার চেষ্টা করলাম কিন্তু ভনলেন ন', বললেন, "এ বার-ধর্ম নয় শৈলেনবাবু, স্বন্ধরী আসতে পারছেন না, দেখতে হয় তো সিংহ্রাবে কি বাধা পাচ্ছেন।"

পরে টের পেলাম আন্দাজটা করে নিয়েছিলেন বলেই এত সাহস। নিজন্প পদে প্রায় ডালের গোড়ার কাছাকাছি পর্যন্ত এগিয়ে গেলেন, তার পর খানিকক্ষণ ধরে দেখে দেখে চীংকার করেই উঠলেন একরকম—''শৈলেনবার, নারায়ণী দেনা! শীগ্গির দেখে বান—ভয় নেই…'' বাঘিনীও খানিকটা এগিয়ে এল, কিছু ভারপর আর কেন এল না বলতে পারি না, সেইখান থেকেই একটা ছহার ছাড়লে। নলিনীবারু তাচ্ছিল্যভরে বললেন—"খামু মাগী, বোঝা গেছে মুরোদ!"

এমন কিছুই নয়, কাঠপিঁপড়ে, কিন্তু এত যে সমস্ত গুঁড়িটি যেন হলদে করে রেখেছে। একটা চাপ, আন্তে আন্তে উপরেও বাভ্ছে নীচেও আসছে, কিন্তু প্রয়োজন হলে বে কত ক্পিপ্র—ভাও দেখে নিলেন নলিনীবার, পকেট থেকে ক্মালটা দিলেন সেই চাপের গায়েছুঁড়ে। কে যেন লুফে নিলে ক্মালটা, মিনিটখানেকের মধ্যে সেটা একটা হলুদের স্তুপ হয়ে গেল।

নলিনীবাৰু বললেন আমি ভয় নেই। এইবার ভধু যুক্টা আমেভ করে দেওয়া।

বিস্মিতই হয়ে গেছি, প্রাণ্ণ করলাম, "দেনারা তো আমাদের দিকেও আসতে পারে, আসেই নি বা কেন ?"

নলিনীবাবু বললেন, "ঠিক বলতে পারছি না মনে হয় মাঝের গুড়িটার উপরই কোন বড়লোছের ভোজ পেয়েছে—আমাদের সন্ধান পায় নি এখনও এটাও ঠিক। বাক, তাড়াতাড়ি লড়াইটা আরম্ভ করে দেওয়া বাক।•••
পুর কিন্তু তরস্ত হতে হবে আর থুব সাবধান—"

একটা লম্বা ভাল ভেঙে নিয়ে ভার মাথাটা শিঁপড়ের চাপের উপর ধরলেন। মিনিট হুয়েকের মধ্যেই সামনের পাভার অংশটা হলদে হয়ে গেল; নলিনীবারু গোড়াটা আমায় ধরিয়ে দিয়ে বললেন—"আলগোছে ধরে নিয়ে গিয়ে শীগ্রির বেটির সামনে ফেলে চলে আফুন।"

সক্ষে সক্ষেই আর একটা তাল ভেঙে নিলেন। বাধিনী ঝাঁপিয়ে পড়ল ডালটার উপর, কে জানে, বোধ হয় আমাদেরই একজন পড়ল ভাবলে।

অবস্থাটা ব্যুতে না ব্যুতে একেবারে গোটা চার ডাল তার ঘাড়ে পিঠে গিয়ে পড়ল ঝপ ঝপ করে।

ভার পরই দে কি আছড়ানি আর চীংকার! গাছের গোড়াটা যেন চযে ফেললে, ভার পর উঠে আর বাচ্চাদের দিকে নজর না দিয়ে গোক্লা দৌড়, ঝণা ডিডিয়ে, পাহাড় ভিঙিয়ে সমতলের দিকে, তার পর ভ্লটা ব্ঝতে পেরে ঘুরেই সোজা শালবন।

আর দেবি করা নয়, বন্দুকটি আগে হাত করা দরকার। ডালে আলোয়ান বেঁধে আমরা নেমে এলাম, খুলে আনবার উপায় পরে ভাবা যাবে।

বাচ্চা ছটে। কিরকম হকচকিয়ে গেছে, মায়ের অবস্থা দেখে ওদিকে এগোয়ও নি, একটাকে তুলে নিয়ে নলিনীবাবু বললেন, "গেরো দেখুন না, এখন ওঁর ছেলেমেয়ে মান্ত্য কর তোমরা ব'দে ব'দে !···"

#### আগে চল

#### শ্রীসাবিত্রীপ্রসন্ন চট্টোপাধ্যায়

হে বিশ্বজন, শোম শোম আৰু নিয়ত চলার গান,
গেরে চলে কবি, কঠে কঠে হউক সে চলমান।
বিহাংগতি সপ্ত অহা হুর্বের রব টামে
চলে অবিরাম দিগ দিগন্তে জাঁবারের সন্ধানে।
রবচন্দ্রের ঘর্তরে প্রতি গভিবেগ চঞ্চল
আলোকের ধূলি ঐকরিরা পড়ে আলোকিরা নভোতল।
দিনের হুর্বা নিশীবে দীপ্ত উদর-অন্ত নাই,
আকাশ হইতে প্রিবীতে পড়ে আলোক সর্বাদাই।
অবিরাম গতি অক্সর জ্যোতি পৃর্বিবীর সহল
চলমান বরা, মর্আখাদী চলার অমুত ফল।
হুর্বের পানে চেরে দেবি ভার অরন অব্যাহত
অচলারত্বে জাগে সন্ধান, তমিত্র পরাহত।
হুষ্টির আদি হু'তে চলা ভার দিনেক্ও বিরাম নাই,
অতএব চল আগে চল সবে, আরো আগে চলে বাই।

বে নদী বহিলা চলে অবিরাম নির্মাণ তার বারি বে বীণার ভারে অনাহত সুর মহাকাশে ঠাই ভারি; य क्रानद ब्रांड मान बर्द नारका, त्म क्रान स्वरं पृष्टि অভর মাবে আমার আমিরে ত্রুর হরে বুঁজি। খষিতে খষিতে চন্দন দের স্থগন মনোলোভা। প্রবল প্রবাহ কীণ তরকে বাড়ার মদীর শোভা। नवारन बाकारत विम कमिकाम, वाभत कात्रिका छै। উঠিৱা দাভাই সেই ত্ৰেভাৱপ, সভাযুগই ভ কোটা। দেত-আতার চরম বিকাশ নিরভ চলার মাবে সব পাপ সব হীনভা নাশিয়া আপনি মুক্তি রাজে। বসিয়া বসিয়া দিন গণে যারা হারায় শ্রেষ্ঠ বন পাপ ঢোকে তার ভীবন-রয়ে. এইীন আছ জন : অগ্ৰসামীৰ সৰা সহচর দেবতা দাভান পাশে যে বদিয়া থাকে তাহার ভাগ্য বদিয়া বদিয়া হাসে: ৰে উঠে ইাড়াৰ তার সাৰে তার ভাগ্য ইাড়াৰ উঠে हाबारमा पिरमदा किवारब चामिरछ नूर्व रव दवा हुटि। चल्रव हम, चारत हम छारे, ह्या ना निष्म किरव (एव जन्माद छेएस चर्वा, भीवम-जानत-जीदा।





রাশা রখুনাথ মল্লের বয়স ও শক্তি অসুযায়ী ক্রমাধর বিভিন্ন ওজনের ব্যায়াম সরঞ্জাম, যে লৌছদণ্ডে গাঁট লাগাইয়া আবার খুলিয়াছিলেন ভাহা এবং হাভের চাপে যে লৌহদওড়ে বক্ত করিয়াছিলেন ভাহার আলোকচিত্র [কটেন—লেখক

# রাজা রঘুনাথনারায়ণ মল উগালযগুদেব বাহাতুর

#### শ্ৰীবিধৃভূষণ জানা

বাছপ্রাম মেদিনীপুর জেলার একটি মহকুমা শহর। জভীত কালে ইহা উড়িয়াবিণভির শাসনাবীনে ছিল। প্রায় চারি শভ বংসর পূর্বের রাজা রত্ত্বমারের পূর্বেপুরুষ রাজা সর্বেশ্বরমারারণ মল্লবেব সিক্ষী কভেপুর জকল হউতে পুরীর শ্রীক্ষেত্র পর্বাচন করিতে আসিরা এই মহকুমার বসতি স্থাপন করেন। কালক্রমে তিনি বাজ্প্রামে একটি স্থাবীন রাজ্য স্থাপন করিয়া রাজা উপালমভদেব বাহাছ্র উপাবিতে ভূমিত হন। ইহার বংশবরেরা দীর্ঘকাল পর্যান্ত নিজেদের বাহবলে রাজ্যের স্থাবীনভা জক্ষ্ম রাগিরাছিলেন। পরবর্ত্তিকালে নাম নাত্র রাজ্যের ইহারা ইংরেজের আবিপ্রভা স্বীকার করেন।

এই বংশের রাজা সর্ব্বেশ্বর একজন বিখ্যাত পালোরান ছিলেন। তিনি বিভিন্ন হুদ্ধে ও শক্তি-পরীক্ষার শ্রেষ্ঠত লাভ করিয়া রাজন্যবর্গের ধারা 'মর' উপাবিতে ভূষিত হইরাছিলেন। ইঁহার অবভন প্রায় অপ্টাদশ পুরুষের রাজা রন্থনাধনারারণ মল্ল উপালয়ভদেব জন্মগ্রহণ করেন। ইঁহারা ভাতিতে ক্ষিত্র। রাজা রলুনাথ একজন অমিত শক্তিশালী পুরুষ ছিলেন।
তাঁহার শক্তি-ক্রীভার বে পরিচর পাওরা বার, তাহা এদেশের
শরীরচর্চার ইতিহাসের একটি গৌরবয়য় অব্যার। বর্তমান
কালের ক্রীণজীবী ও চ্র্কলদেহীদের নিকট তাহা বিশ্বরকর
মনে হইবে। কারণ আজকাল সাধারণ তাবে বলিঠ ও দীর্ঘারত
বাহ্য বাংলাদেশে অতি বিরল। রামারণ ও বহাভারতোক্ত
বীর-শ্রেঠদের কাহিনী আমাদের নিকট এবন নিছক গলে
পর্যাবসিত হইরাছে। অনেকে পাশ্চাত্যের ভাতো ও রাশিরার
ক্রোমারের শক্তির পরিচর বিশ্বত হইরাছেন। এবং আমাদের
দেশের ভামাকাত, তীম তবানী ও রামর্ত্রির কাহিনীগুলিও
গল্পের ভার বোধ হইতেছে। এবন কি শ্রুতের শীর্ক গোবর
বাব্র কর্ণাও যেন লোকে ভূলিতে বসিয়াছে।

আমি রাজা রখুনাথের সম্পর্কে পুথাত্বপুথরণে অভ্সভান করিয়া বহু তথ্য সংগ্রহ করিয়াহি। রাজপরিবার ও প্রতিবেশী প্রাচীন মাতকারদের হারা ভাতা হাচাই করিয়া লইবাহি। আমি আরও হুই ক্ষম অন্তসাধারণ শক্তিশালী



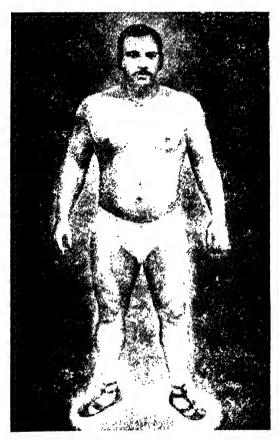
ৰাভ্ঞাম রাজপরিবারের প্রাচীম ব্যায়ামাগার। উচ্চ-উগাল পরিবেটিত রাজপ্রাসাদের বহির্ভাগে অবস্থিত । ফটো—লেবক



ব্যায়াম-সরঞ্জাম। প্রভার নির্দ্ধিত একটি রহুং নাল। ইচা ভার-উভোলনের ব্যায়ামে ব্যবহৃত হইত।
১ম দিকের এক কোলা মুখ্যরের ওজন একমণ গঢ়িশ সের, ২য় জোলার ওজন একমণ বৃদ্ধিশ সের।

রাজা বৃদ্ধাধ এই সরঞ্জামখনি লইয়া ব্যায়াম করিতেন। [কটো—লেধক

পুরুষের বিষয় জানিতে পারিরাছি। এ সমত আবার সংগৃহীত তথ্যের পরিপোষ্ট। অহুস্থান করিলে ভারতবর্ধে এরপ আরও শক্তিমান্ পুরুষের পরিচয় পাওয়া যাইবে।



वाका वर्गावमावाश्य यह छेत्रालय अट्टार वाटाइव

রাজা রদ্মাণ ১২৭২ সালে জাষাচ মাসে রবেণংসবের পূর্বদিম ঝাড়প্রায়ে জন্মগ্রহণ করেন। বাল্যকালে তিনি মেদিনীপুর
কলেজিরেট কুলে জন্মরম করিতেন। পাঠ্যাবছার এক দিম
তিনি কোম কারণে ঝাড়প্রায়ে কিরিবার গাড়ী বরিতে পারেন
নাই। মেদিনীপুরে রাত্রি-যাপনের জন্মবিধা ব্বিরা পদত্রকে
ঝাড়প্রারে রওনা হইলেন। মেদিনীপুর হইতে ঝাড়প্রায়ের
পথ জললাকীর্ণ ও ব্যাত্র তর্তের জাবাসহল, স্তরাং সন্মার
প্রেই এই দীর্ঘণথ অভিক্রের করিবার জল তিনি দেট্টাইতে
জারস্ত করিলেন। দেট্ট বন্ধ করিলেই এই দীর্ঘণথ অভিক্রম
করিতে রাত্রি হইরা বাইবে এই আশ্বার তাঁলাকে অবিরাম
দেট্টাইতে হইরাছিল। তিনি নিজ গড়ে উপস্থিত হইরা এই
ব্রভান্ত প্রকাশ করিলে সকলে বিন্তরাভিত্ত হইরা বার। ইহা
সহপাঠী ও প্রতিবেশীগণের নিজ্ট বিশাসবোগ্য লা হওরার,

তিনি একাৰিক বার অবিরাম দৌকে এই স্থীর্থ ২৬ মাইল পথ অভিজ্ঞেন করিরাছিলেন। ইহা তাঁহার বাল্যজীবনের একটি উল্লেখবোগ্য কাহিনী।

ব্ৰুনাৰ আঠার বংসর ব্যুস চুইতে বাড্গ্রাম গড় পরিবেটিড लिक र क-देक देशास्त्रत विक्शांत 'देकरवर्शनात लाकान' তাঁচাদের প্রাচীম আবভার নিয়মিত শক্তিচ্চার মনোযোগ হন. ভিনি প্ৰথম মধুৱার অধিবাসী ছয়াত্ৰী চোবে নামক একজন প্রসিদ্ধ মল্লকে নিয়ক্ত রাখিয়া মল-ক্রীভার সদী করেন এবং क्टाब काय अकि-हर्कात अकुकन श्रीतिया ग्रीत क्या श्रीतिया शामान का ७ जाकामामी का अकटाटिय वक्ति मिळा. এটোয়ার ক্ষমর সিং এবং কাশীর শালগ্রাম ব্রন্ধচারী প্রভৃতিকে প্ৰায় প্ৰয়-ক্তি বংগর নিয়ক্ত রাবিয়াছিলেন। সভিত প্রায়ই জাঁচার শক্তিপরীকা চইত। রাজ্যাড়ীতে হে-তোম টেংলবের সময় মল্লয়র ও নানাবির শক্তি-ক্রীভার প্রদর্শনী একটি বিশেষ অফুঠান বলিহা পরিগণিত হইত। রাজা ব্ৰদাৰ প্ৰায় এক মণ কৰিয়া চুইট মুগুৱ চুই হাতে ভাঁজিভেন। আভাই মণ ওজনের পাধরের 'পাল' এক হাতে মন্তকের উপর উছোলন করিতেন। কাঠনিশ্মিত বহং 'কালাল' (প্রায় ভিন মণ) ছই হাভের সাহাযো মাধার উপর তুলিভে পারিতেন।

বাজা ব্রথমাথ এক মণ ওজনের মুগুরকে একটি হস্তাপুলির केशत वाचित्रा (चला (मचाकेटलम । (चार्ड (चल्द ७ लाम गाइक কট ধরিষা অনায়াগে উৎপাটন ক্রিভেন। রহং ভাল ও শাল পাছের উপরের কিছু শিক্ত ও মাটি উঠাইরা মুলবেশে অবনত দেহে তাহা নিক **अक्टलट**र्म শিক্ষল বাঁৰিয়া জ্ঞাইতেন এবং সোজা ভাবে দাঁভাইরা ব্লক্টকেও উৎপাটভ क्तिएक। ठातिक अञ्चल खंक्किर्ठित चंक्रित छैनत करेंकि বৃহৎ কাঠের বীম সমান্তরালভাবে রাধা হইভ। ভাহার উপর काकी देशहेबा, वीत्मत नीति नामिता-वीम कृष्टिक शृक्षेत्वम লাগাইতেন। অতঃপর বীম সহ হাভীটকে পুঠের উপর ভূলিরা জাৱসালা বজায় ব্ৰাধিজেন। ভুই হস্ত পরিষিত দৈখ্য ও 🤰 ব্যাসের কৌতদতে দভির ভার গাঁট দিতেম। এক সময় (यक्तिनीश्राव अनिक व्याविक्षाव की त्वाक विद्यांती प्रस्त महास्व के अकात अक्षे लोडक्छ चानिया ताका तक्नावटक नांहे पिट्छ विश्वाहित्नन-- बच्नाथ अमाबादन छाटाए मांहे विश्वा कीरवाय বাবকে হতবাক করিয়াছিলেন। শীরোদবাব এই গাঁট দেওৱা লোহটকে পাশ্চান্তোর কোন এক প্রদর্শনীতে প্রেরণ कतिबाहित्सम । छाहात (मरहत मिर्चा वस्त्रेक समार्थका अकृते चनिक वावनात्न करशिक इरेकि पारम, इरेकि इत्य অধবা ছুইট বৃহৎ খুঁটির মধ্যে উপুত্ত ভাবে শয়ৰ করিয়া नमबब बाबा ও क्खबरब बाब इरेक्टिक र्कनिया मांच ক্রিয়া দেওয়ার চেঙার সদে সদে ভূষির সহিত স্বাভরাত

ভাবে শরীরকে থাম ছুইটর শীর্ষদেশে উভোলন করিভেন ও ছুতলে নামাইভে পারিভেন। একবার একট বিশাল নিম্বর্কের ছুইট বিপরীভ দিকে প্রসারিভ শাখার ব্যবহানে এই প্রকার প্রচাপন দেওয়ার রক্ষের মূল কাওট ছুই শাখার সহিভ হিয়াবিভক্ত হুইয়া গিয়াহিল। ভিমি বুকের উপর পমর-যোল মণ ওক্ষম প্রহণ করিয়া নামাবিধ ক্রীছা দেখাইভেন। ভিমি চাগ্—ক্ষক ওয়ারে একক একদিকে থাকিয়া প্রার একশভ সাধারণ ব্যক্তির গভিরোধ করিভেন।

তিনি কেবলমাত্র শক্তি-সাধনায় কৃতিত্ব আর্ক্তন করিয়া -ছিলেন ভাহা মহে, বস্ততঃ তিনি বিভিন্ন বিদ্যায়ত সফলতা- লাভ করিয়াছিলেন—ক্যোভিষ বিভার, সলীতে ও বাভষ্ত্রেও ভাঁহার বিশেষ অধিকার ভিল।

রখুনাথের দৈহিক ওজন ৩ মণ, উচ্চতার ৫ - ১১ ইঞ্, বাহ ২০ ইঞ্চি ছাভি ৫২ ইঞ্চি ছিল। ভিনি বাং ১৩১৭ সালে ৪৫ বংসর বরুসে ইহুলোক ভাগে করেন।

রাজা বর্ণাথের পৌত্র রাজা মরসিংদেব নিজ বদাভতা গুণে বাঙালী মাত্রেরই প্রধা ও প্রশংসা অর্জন করিয়াছেন। তিনিও একজন কৃতী ব্যায়ামবীর এবং শিকারী, তিনি প্রগতিষ্কৃত ও জাতীয় কল্যাণকর বহু প্রতিঠানের স্থাপরিতা এবং একজন বিভোগোহী বাজিন। বর্তমান সময়ে তাঁহার তুল্য দাতা ও দেশহিতেখী বাজিন অতি বিরল।

#### রাজনগর

#### এননীমাধব চৌধুরী

খদেশী ও বয়কট আন্দোলন, সভা-সমিতি, আবেদন-নিবেদন, অসহযোগের ভীতি, বাংলার হিন্দু-সমাজের মধ্যে প্রবল উত্তেজনা, ভারতবর্ধের অভাভ করেকট প্রদেশে বাঙালীর আন্দোলনের প্রভি সহাস্তৃতি, কিছুই সরকারী মীতির পরি-বর্তম করিতে পারিল মা। ১৬ই অক্টোবর হইতে আ্যুঠানিক ভাবে বাংলা বিভক্ত হইবে দ্বির হইল।

বাঙালী ভাতির একতা ও অবিভাজাতা প্রমাণ ও শারণ করিবার জন্ধ ০০শে আছিন (১৬ই অক্টোবর) বাঙালীকে রাখীবদ্দ উৎসব ও প্রতিগৃতে অরহন ত্রত পালন করিবার উপদেশ দিরা রবীজ্ঞমাধ, সুরেক্রমাথ বন্দ্যোপাধ্যান, বিপিনচজ্র পাল, রাম্বেক্রম্মর ক্রিবেদী, ভূপেক্রমাথ বন্দ্র প্রভৃতির স্বাহ্মরে সংবাদপত্রে এক আবেদন প্রচারিত হইল। রবীজ্ঞনাথ ব্যস্থা দিলেন, উভর বচ্ছের মিলন-চিক্তর্মপ পরস্পরের হাতে রাখী বাধিরা মন্ত্র বলিতে হইবে—

ভাই ভাই এক ঠাই, ভেদ নাই ভেদ নাই— আমরা এক, আমরা অণ্ড।

বাংলার সর্বাত প্রিম্বাত তথে আধিন শোক-দিবস পালম 
করিলেম। কোন গৃহে উত্তন থলিল মা।

কলিকাভার কি ভাবে ৩০শে আবিনের রাণীবন্ধ-উংগব শালন করা হইল জানিবার জভ দেবানন্দ ও ভাহার বন্ধুরা ব্যঞ্জাবে সংবাদপত্তের অপেকা করিভেছিল। কলিকাভার সংবাদপত্ত আসিলে দেবানন্দ আগে একথানি কাগজ সংগ্রহ করিরা এই বিবরণ পড়িতে বসিল। সে পড়িল রাজবানীতে দোকানপাট, বাজার, বানবাছন চলাচল সব বন্ধ ছিল। সকালের দিকে দেখা গেল এক অভ্তপূর্ব্ব দৃষ্ঠ। বাসক, বৃদ্ধ, বৃক্ত, শিল্ড, ছাত্র, মাঠার, ব্যারিপ্রার, উকিল, ডাক্তার, তল ও সাবাবেণ উত্তর শ্রেণীর অসংখ্য লোক খালি পারে গান করিছে করিতে গলার খাটের দিকে অগ্রসর হইল। গোটা কলিকাডা শহর বেন রাভার বাহির হইলা আসিরাছে। মোডে বোডে সওয়ার পুলিস, সার্জ্জেন্ট, কনেপ্রবল দাঁড়াইয়া, ভাহাদের ভাব দেখিয়া মনে হয় যেন শহরে একটা বিপ্লবের আশহা করিভেছে ভাহারা।

কেডারেশন দ্বীটের মাঠে বিরাট সভার অথও বলতবনের তিন্তি ছাপন করা হইল। সভার পৌরোহিত্য করিবার ছল ক্লয়, মৃত্যুপথযাত্রী আনন্দমোহন বহুকে আরাম কেলারায় শরান অবস্থার সভাত্তল আনা হইল। সভাশেষে ঘোষণাপত্র পাঠ করিলেন, রবীজনাধ ও আভতোষ চৌধুরী। ছাত্র ও ছাত্রীরা সমবেত কঠে গান করিল—

> वारनाव माहि, वारनाव कन, वारनाव वायू, वारनाव कन,

পুণ্য হউক, পুণ্য হউক, পুণ্য হউক হে তগবান। বাঙালীর পণ বাঙালীর আশা, বাঙালীর কাক বাঙালীর তাযা.

সভ্য হউক, সভ্য হউক, সভ্য হউক হে ভগবাদ। বাঙালীর প্রাণ, বাঙালীর মন, বাঙালীর বরে বভ ভাই-বোন,

এক হউক, এক হউক, এক হউক হে ভগবাম। বাংলার শহরে শহরে, প্রামে গ্রামে বালক ও মুব্দুগণ প্রভাতী সদীত গাহিয়া মগর ও গ্রাম প্রাদ্ধিণ করিল; বালক, বৃদ্ধ, বৃদ্ধক পরস্পারের হাতে রাধী বাঁধিয়া দিল। সকলে
মিলিয়া খদেশী-গ্রহণ ও বিদেশী-বর্জনের প্রভিজ্ঞা গ্রহণ করিল।
বাংলার আকাশ-বাভাস সেদিন বন্দেরাভরত্ব ধ্রনিতে প্রকশিত
হুইতে লাগিল। বন্দতন্ত্র বেদনার গোন্ধীগত ভাবে সেই
প্রথম অভিভূত উত্তর বন্দের বাঙালী দেশের হাটে, নাঠে, বাটে

ভাই ভাই এক ঠাই, ভেদ নাই ভেদ নাই।

প্রাদেশিক ও অর্থনৈতিক রূপ অভিক্রম করিয়া বঙ্গতল-বিরোধী আন্দোলন সর্বাত্তক কাতীয় আন্দোলনে পরিণত কইল লেই মরণীয় ১৯০৫ সালের ৩০শে আধিন কইতে।

বাংলার প্রবল উত্তেজনার ভরক উৎকল, মান্তাজ, বোখাই, পঞ্চাবে শিক্ষিত-সমাজ ও ছাত্র-সপ্রভাবের মব্যে উত্তেজনা আনিল। দূর নৌশেরা, রাওরালপিতি, ফিরোজপুর হইতে হলেনী সভার সংবাদ আসিতে লাগিল। একখানি কাগজ লিখিল—স্বদেশী আন্দোলন ভারভবর্ষের অবিবাসী বিভিন্ন ভাতিকে এক মচাজাভিতে পরিশক্ত করিবে মনে চইতেছে।

ৰালাকে ছব হাজার ছাত্র সভা করিবা বদেশী আন্দোলনের প্রতি সহাস্থৃতি জানাইবা টেলিগ্রাম পাঠাইল। মব্যপ্রদেশ হুইতে ব্যৱ আসিল অন্যাবতী সরকারী সুলের ক্ষেকজন ছাত্র ঘদেশী-সভার বোগ দিরাছিল বলিবা শিক্ষকণ ভাহা-দিগকে বেত্রপ্রহার করিবাছেন ও কুল হুইতে বহিদ্ধত করিবা দিরাছেন। বালি পারে সুলে বাইবার অপরাবে ঢাকা কলেজ ও সুলের ২৭৫ জন ছাত্রকে শিকা-প্রতিষ্ঠান হুইতে বাহির করিবা দিবার ও বাকী ছাত্রদের নিকট কৈষিয়ত চাহিবার ব্যর পৌছিল। বাংলার ছাত্রমহলে বিক্ষোত দেবা দিল।

দেবামন্দ বিশাল কলেকে তর্ত্তি হইরাছিল। কলেকের ছইট ছেলের সলে তাহার বিশেষ বনিঠতা ক্ষারাছিল। ইহাদের নাম মহেক্ত ও অভূল। অভূল ছিল শক্তিমান, স্পষ্ট-বাদী ও সাহসী, ইংরেকের উপর হাড়ে হাড়ে চটা। মহেক্ত ছিল নিঠাবান, বর্দ্মপ্রবণ ছেলে। সে তাল সান ক্রিতে পারিত। রাজনীতি চর্চাতেও তাহার বিশেষ উৎসাহ ছিল। তাহার প্রির কাপক ব্রহ্মবাধ্য উপাব্যারের সভ্যা। তাহা ছাড়া হিত্তবাদীতে কাব্যবিশারদ কি স্বদেশী কবিতা লিখিলেন, রবীক্রমাধ্য কোন্ নুত্তন কাতীয় সদীত রচনা ক্রিলেন—এ সকল সে সাঞ্জাহে সংগ্রহ করে ও বছুদের পভিয়া শোনার।

কলিকাতা ও মকবলের অনেক ছানে বদেশী প্রচারের জন্ধ ছাত্রকমিট গঠিত হইরাছিল। কলিকাতার কমিট ছাত্র-সনালের কর্ত্তব্য নির্ভাৱন করিবা বিবৃতি প্রচার করিব। এই বিবৃতি প্রকাশের কলে কর্ত্তপক্ষের দৃষ্টি বিশেষতাবে ছাত্র-সনালের উপর পঢ়িল এবং কুব্যাত লারম ও কারলাইল সারকুলার বাহির করিবার প্রভাব উঠিল।

নতম বংগরের প্রথম দিকের কথা।

কলেখের হোঙেলে অতুল ও মহেজের খবে অথবা হোঙেলের পিছনের দিকে বকুলতলায় মাঝে নাঝে ছানীর ছাত্র কমিটির বৈঠক বলিত। সেদিন সভ্যাবেলা হোঙেলের খরে বৈঠক বলিলে অতুল পক্টে হইতে করেকধানা হাওবিল বাহির করিল। বলিল, দেবানন্দ, তুমি কেবল খুঁতখুঁত কর কোম কাজ হচ্ছে মা, এই দেব।

সে টেচাইরা একধামি হাওবিল পড়িতে লাগিল—
"বাংলার ঘরে ঘরে ঘদেশীনন্তের প্রচার।
বদেশীরত পালনের উদাত আহ্বামে দেশবাসীর অপুর্ব সাড়া।
বলতদে মর্শ্বাহত বাঙালীর বক্তকঠোর পণ।

মিশনরী সুলের এটান শিক্ষিত্রীগণ ছুতা ও মোকা ত্যাগ করিবা থালি পারে সুলে যাওরাতে পাদ্রীপুলবের কোন। মৈরমনসিংহের মুটাগণ বিলাভী ছুতা মেরামত করিতে অধীকার করিল। বোপাদের নূতন বিলাভী কাপড় কাচিতে অধীকার। কালীখাটের বোপারা আর বিলাভী কাপড় কাচিতে মা। বাধরগঞ্জের উভিনা পাচক ও ভ্তোরা সভা করিবা আনাইয়াছে বে সকল বাড়ীতে বিলাভী ক্রিনিস বাবহার হব ভাহারা সেধানে কাভ করিবে না।

আরও শুহ্ন—বিলাভী সিগারেটের বৃষ্ণাহী বাব্-ভারাকে খোড়ার গাড়ীর গাড়োরান গাড়ী হইতে নামাইরা দিল। বিলাভী কাপড় বেচিতে না পারিরা মাড়োরারীদের মাধার হাত। বহু-কুললনাগণ কাঁচের চুড়ি ও চীনা মাটির খেলনা ভাজিলেন। নেটভ ঞ্জীন সমাজ বিরাট সভা করিয়া খোষণা করিলেন—বিলাভী জিনিস বর্জন ও খদেশী গ্রহণ। ভাটপাড়ার পতিভক্ল-চুড়ামণির বিহারের জেলার জেলার বদেশী প্রচার।"

অভূলের পছা শেষ হইলে সকলে হাতভালি দিয়া উৎসাহ প্রকাশ করিল। দেবামন্দ বিজ্ঞাসা করিল, এ হাওবিল কোথার পেলে?

শতুল—নদীর বাবে ছোট ছোট ছেলেরা বিলোজিল।
নির্দান নামে একট ছেলে বলিল, শতুলদা, খাদকের
'প্রভিজা' কাগছে একটা গ্র্যাও কবিতা বেরিয়েছে,
ভনবেন ?

बङ्ग-कि रामाह कविकाद बार्ग रम छनि।

নির্ম্মল—বলেছে বিলাতী মার্চেণ্টদের মালভর্তি জাহাজ-গুলো বলোপসাগরের জলে ভূবিরে দাও।

অতৃল হাসিল। বলিল, গ্রাও আইভিয়া বটে । কবি হাড়া আর কার মাধা থেকে বেরুত বল । ইভিয়ান নিরর এই কবিদের সমতে কি বলেতে শুনবে । বলেতে, বাবা-সকল, বলেনীর কর, বাবীনভার কর আন্দোলন কর, ভালই কিছ বভা বভা হাড় ঢেলে সংরক্ষ ক্যানেল বছ করবার, পটকা নেরে কোট উইলিয়ন দখল করবার প্রভাবগুলো আর করো মা, বভূড'-ৰংক উঠে পাগলা দরবেশের মাচ দেখিও না আর। সবাই হাসে এতে।

নির্দ্ধন অত্নের হাসিতে ও কথার ক্রুর হইন। অত্ন বলিন, তুমি চটো না নির্দ্ধন, ভোমার এই "নাচ নাচ চাযুগু" আর "হে মাতঃ হুগা অসুরদলনী" এই জাতীর আফালন আমি সহু ক্রতে পারি নে। মা মা করে চীংকার করলে নিভার-গুলের লবণ আর ম্যানচেষ্টারের কাপড় বোঝাই জাহাজগুলো ভুসু করে তলিরে যাবে বলোপসাগরে ?

নির্মান চটিরা গেল। বলিল, আপনার কানে এ হাড়া আর
কিছু পৌহার না দেখছি। ভাল কান হটো তৈরি করেছেন
অত্লান। রাজপুত বীরছের দৃষ্টান্ত অহসরণ করবার জভ
আবেদন, বাংলা নারের হুঃখনোচন করবার জভ চীন ও
ভাপানের পথে চলবার আবেদন—এ সব কানে পৌহর না।
শিবাকী মহারাজের পৌরবগাণা আপনি শুনতে পান না।

নির্মানকে শাস্ত করিবার অভিপ্রায়ে মহেন্দ্র বলিল, অভুল বোর মান্তিক, ওর কথা ছেড়ে দাও। বদেশীত্রত সকল করবার জন্ত কালীঘাটে পূজা এবং হোমের কথা ভনে ও হাসে। মা কালীর সামনে বদেশী ত্রত পালম করবার প্রতিজ্ঞা করা হচ্ছে ভনে ওর হাভের উদ্রেক হয়। কিন্ত ইংলিশম্যাম কাগজ রাগে কাঁপছে, বলছে—বাঙালী বাবুর দল বদেশী ভাওতা দিয়ে নিরক্ষর জনসাধারণকে বিপথে চালাচ্ছে, গবর্ণ-মেন্টের উচিত এর প্রতিবিধায় করা।

দেবানন্দদের ছাত্র কমিটির কান্ধ তেখন ভাল চলিভেছিল
না। ফুলারী-শাসনে দমননীভির চাকা জােরে ব্রিভে লাগিল।
শীঘট খুলারের বন্দেষাতরম্-বিরোধী সারকুলার জারি হইল।
ভারপর শিক্ষা বিভাগের ভিরেক্টরের লরালটি সারকুলার,
কারলাইল ও লারনের সারকুলার। অনেক অভিভাবক ভর
পাইলেন, অনেক ছাত্রের উৎসাহে ভাটা পঞ্চিল। ইভিমধ্যে
কলিকভাের কৃষ্ণকুমার যিত্র মহাশরের সভাপতিত্বে এটিসারকুলার লােসাইটি ছাপিত হইরাছিল। কলিকাভার বিভিন্ন
অঞ্চলে ও মক্ষলের অনেক শহরে এই সমিভির শাধা
হাপিত হইল। দেবানন্দ, অতুল ও মহেল পুরাভন ছাত্র-কমিটির
করেক্সনকে লইরা একটি শাধা ছাপিত করিল।

ইহার করেকদিন পরে লালনোহন খোষ দিনাজপুরে তাঁহার বিখ্যাত অসহযোগের বক্তৃতা দিলেন। তিনি বলিলেন, আইন-সভার দেশী সভ্যরা, অবৈতনিক ন্যাজিট্রেট্রনণ, ম্যানিসিপালিট ও জেলাবোর্ডের সভ্যগণ এবং ইউনিয়ন পঞ্চারেংগণ পদত্যাগ করুন, দেশের সকল লোক এক বংসরের ক্ত শোক-চিফ্ বারণ করুন, সকল রক্ম আনন্দ-উৎসব বন্ধ রাধুন।—এই বক্তৃতা করেকদিন ধুব উভেক্ষার সঞ্চার করিল দেশের মধ্যে। কিছ উভেক্ষা কোন ছারী কল প্রসব করিল না।

দ্ৰশ্নীতির চাকা আবভিত হইতে লাগিল। বংশুরের

কীছিমান ম্যাজিট্রেট মি: এমার্স ন বদলী হইরা আসিবার পর হইতে শহরের হাওয়া গরম হইতে আরম্ভ হইরাছিল। সে-দিন সমন্ত শহরমর উত্তেজনার বারু বহিতে লাগিল। বি: এমার্স নের আদেশে বন্দেমাতরম্ কানি দিবার অপরাধে ক্রেক্ট অলবরক ছেলেকে বেজ-প্রহারে কর্জরিত করা হইরাছে, ধবর রটল।

সন্ধার দিকে হোষ্টেলে অত্লদের থরে করেকজনের যব্যে অত্যন্ত উত্তেজনাপুর্ব আলোচনা চলিতেছিল। দেবানন্দকে সকলের অপেকা বেশী উত্তেজিত দেখাইতেছিল। অত্ল শুম হইরা ভাহার ভক্তপোষের উপর বসিরা ছিল।

মহেন্দ্র বলিল—ফুলার, এমার্স ন ও কেম্প মিলে বরিশালকে শেষ করবে টিক করেছে। শুনলাম সেদিন করেকটি ছোট ছোট ছেলে সেটলমেন্ট অফিসার মি: জ্যাকের বোট লক্ষ্য করে নদীতে নাকি মাটর ঢেলা ছুঁছেছিল। এই অপরাধে বামরীপাভার পিটুনি পুলিস বসাবার আদেশ দিয়েছে স্লার সাহেব। বরিশালে বন্দেমাতরম্ ধ্বনি দেওরা বছ করবার জন্ত শুর্থা সৈত্ত আমদানী হচ্ছে। ভাও শুনেছি।

দেবাদন্দ বলিল—ছেলেরাও চূপ করে বসে নেই। বন্দেমান্তরম্ বলার বদকে দিলে ওরিরেন্টাল সেমিনারীর ছেলেরা ক্ল ছেছে বেরিরে এসেছে। ঢাকার চার হালার ছেলে সরকারী ক্ল কলেল ছেছে চলে এসেছে। আসান-সোল ক্লের ষাট কন ছেলেকে এই অপরাবে বের করে দেওরা হরেছে। প্রেসিডেন্সী কলেকের বহু ছেলে কলেল ছেডে বেরিরে এসেছে।

কিছুকণ চূপ করিব। থাকিব। দেবানক আবার বলিল—ভোষরা এমার্স নের আদেশে বন্দেমাতরম্বলবার করু ছেলে-দের বেত মারার বাগণার তনে উত্তেজিত হরেছ, কিন্তু ভোমরা জাম না সেদিনকার স্থানশীসভার যোগ দিরেছিল বলে কেলা কুল ও টেকনিকালে স্থানর প্রত্যেক ছেলেকে গাঁচ টাকা করে জরিমানা করবার আদেশ দিরেছে এমার্স ন। এদিকে মালারিপুরে কি হরেছে জাম ? এক সরকারী চাণরাশির সঙ্গে বন্দেন মাতরম্বলা নিরে ছেলেদের কথা কাটাকাটি ছয়েছিল। চাণরাশির ব্যক্ষানিতে উত্তেজিত হরে ছেলেরা তাকে বাজা দিরে সরিবেছ দিরেছিল। কলে স্লারের আদেশে ছাজ্রদের প্রকাশে বেত্যারা হ'ল আর জরিমানা হ'ল দেক্তশা টাকা।

ধানিকটা রাভ করিষা দেবানন্দ সে দিন বাছীতে ক্ষিত্রক।
কীবানন্দ আশিসবরে ভখনও কান্ধ করিছেহিলেন। পুত্রকে
পাল কাটাইরা ভিভরে চলিরা বাইতে দেখিরা ভিনি ভাহার
মুখের দিকে একবার চাহিরা দেখিলেন। বীর স্বরে বলিলেন
—কাল থেকে সকাল সকাল বান্ধী ক্ষেরবার চেষ্টা করো।
সময় ভাল নর।

দেবানন্দ দাভাইয়া পিভার কথা শুমিল, ভার পর ভিভরে

প্रविषय कीवायम ठाक्तिकल ठलिया (श्राम्य ।

মাজ্প্রার শেষ করিয়া জীবানক রাজনগর হইতে চাকুরি-ছলে কিরিয়া বাইবার ক্ষেক্দিন পরে জগনাঞ্জীর জন্মধ্যর জাবার বাড়াবাড়ি হইল। ইহাতে হরিমারারণ বিশেষ চিড়িত হুইলেন।

বছ ছেলে প্রসরের অন্ধর্গানের পর হইতে অগন্ধানীর শরীর ভালিতে আরম্ভ করিনাছিল, পূর্বের বাস্থা আরু কিরিয়া পান নাই। কিছু দিন হইতে হরিনারারণের বাস্থাও একটু একটু করিয়া ভালিতে আরম্ভ করিয়াছিল। ইন্দ্র প্রবেশিকা পরীকা দিরা কল বাহির হইবার জন্ত অপেকা করিতেছিল। বৈষত্তিক ভাজে মাবে মাবে ভাহার ডাক পড়িত। ক্যন্ধানী প্রভাব করিয়াছিলেন ইন্দ্রকে লেখাপড়া ছাড়াইয়া এবার বিষয়-সম্পত্তি দেখিবার কাজে বসাইয়া দাও। হরিনারায়ণ বলিয়াছিলেন ভঙ্ তব্ব ক্র ভার লেখাপড়া বন্ধ করব ? আমি ষ্রভাদিন আছি সেনিভিত্তে লেখাপড়া করুক।

যামীর শরীর থারাপ হইতে দেখিরা জগড়াত্রী তর পাইরা
সিরাছিলেন। স্বামীর আগে থেন তিনি বাইতে পারেন
জগবানের কাছে মনে মনে নিয়ত এই প্রার্থনা করিতেন।
মাবে মাবে ভাবিতেন ইল্লের বে আনিয়া ভাহাকে সংসার
ব্রাইয়া দিয়া নিশ্চিত হইয়া মরিবেন। বছ ছেলের কথা
তাঁহার মনে পভিত। বিবাঈ হইয়া সে না চলিয়া গেলে এত
দিনে ভাহার বে আসিয়া সংসারের হাল বরিত। তাঁহার
গত জ্পের পাণের শান্তি পাইয়াছেম! এ জ্বেত কোন
পাণ করেন নাই—আগের জ্বের পাণ না থাকিলে ক্পালে
এত শান্তি লেখা ছিল কেন ?

ইন্দের সহকে স্বামীর ক্ৰার উপর তিমি আর কিছু বলিলেন মা। স্থির হইল, পাস ক্রিলে সে সদরে পঢ়িতে ফাটবে।

ইন্দ্ৰ এখন উন্নতদেহ, বলিঠ গুরুণবুবক। আগেকার উদ্ধাস-প্রবণতা থানিকটা চলিয়া গিয়াহে, তাহার জারগার আসিরাহে চিন্তালীলতা ও গভীরতা। অন্তরদ কনের সদে কথা বলিতে বলিতে নাবে মাবে দৃষ্টি উচ্ছল হইরা উঠে, চাপা হাসিতে বলকাইরা উঠে, চিবুকের তীকুতা কোমল হইরা আসে। বাহিরের কেহ সেখানে উপস্থিত থাকিলে তাহার মনে হর ইহার কৈশোর এখনও অভিক্রোপ্ত হর নাই।

অগছানী অস্ত হইরা পঞ্চিবার দিন তুই আগে নিজের যরে বসিরা দেবানন্দের সদে চিট্টি-পত্তে যে সব আলোচনা চলিতে-ছিল ইক্স ভাহাই ভাবিতেছিল। পুলিসের অভ্যাচারের কলে যদেশী আন্দোলনে যেন ভাষী পঞ্চিরাছে, এখন কি করা কর্ত্তব্য দেবানন্দ সেই কথা লিখিরাছিল। দেবানন্দের কথাগুলি নিজের মনে আলোচনা করিতে করিতে হঠাৎ ভাহার বনে পঞ্চিল সর্মানক্লার মৃত্যুর দিনক্ষেক আগেকার কথা।

তাঁহার অন্ধর্মের সময় ইক্স প্রতিদিন খবর লইবার জ্ঞ টোলপাড়ার যাইত। প্রথম দিন গিরা লক্ষীকে দেখিরা সে একটু অবাক হইল চিনির বিরের পরে লক্ষী আর ভাহাদের বাড়ীতে বিশেষ যার না। করেক মাস পরে ইক্স ভাহাকে দেখিল।

লন্মী এখন আর অনর্গল কথা বলে না। ভাহাকে দেখিলে

—এই বে ইন্দির দাদা বলিরা সন্তাধণ করা অনেক দিন হইল

সে হাছিরাছে। আঞ্চলাল দেখা হইলে চকিতে একবার

চাহিরা সে বাছ হেঁট করিরা থাকে। কিছু জিজাসা করিলে

ইই-একটি কথার জ্বাব দের। ভাহার এই নৃতন সাভীব্য

দেখিরা সে হরত কখন-সখন একটু ঠাটা করিবার চেটা ভনিরা

সে মৃছ হাসে, আসের মত পাণ্টা ঠাটা করিবার চেটা করে না।

প্রে-বাটে হঠাৎ দেখা হইলে সে যেন একটু জ্ভসভ ভাব

দেখার। পাশ কাটাইরা বাইবার চেটা করে। ভাকিলে

দাভার, কিছু মাধা নীচু করিরা এমন অবভির ভাব দেখার যে,

ইল্ল আন্দর্যা বোধ করে।

প্ৰথম যেদিন সে সৰ্ব্যৱন্তলাকে দেখিবার জন্ত টোলপাভার গেল সেমিম ভাতাকে দেবিয়া কোন সভাষণ না করিয়া লক্ষী এয়ন ক্রমডাবে সবিহা গেল যে ইল বিশিত চইল। পরের দিন লক্ষীদের বাড়ীতে চুকিতে পিয়া লে দেখিল লক্ষী বাহিরে কোবাৰ বাইতেছে। সে পাল কাটাইয়া চলিয়া বাইভেছে। रेख जाराक पाकिन। नची गंपारेन। रेख विकाम करिन. লক্ষী, ভোষার কি হরেছে ? আষার সাম্মে তুমি অম্ম কর কেন ? - বিশ্বিভ হইরাসে দেখিল লক্ষীর মুখ সিঁছরের মভ नाम व्हेश फेंडिशांक। अचि शीदा (म विनन, किए च व्ह नि। ভারপর বাইবার ভর পা বাভাইল। ভি ভাবিরা ফিরিয়া দাঁড়াইল। ইলের কাছে একট সরিয়া আসিয়া মুখ ভলিয়া ব্যাক্ল দষ্টতে ভাতার মধের দিকে চাতিয়া বলিল, আপনি কি तान करतासम आमात छेनद ? हेस अश्वक्रकारन विनन, मा না রাগ করব কেন? লক্ষী কিরিবা চলিল। করেক পা পিয়া একবার কিরিয়া চাহিল। ইজ দেখিল ভাতার চোধ-মুধ ধনীতে বলমল করিভেছে। বভন্দণ ভাতাকে দেখা পেল ইম্র সেখানে দাভাইয়া বুচিল। ভারপর বীরে বীরে বাভীর মবো श्रायम कविम ।

এই সামাত ঘটনাটা প্রায়ই ইজের মনে পড়ে। ভাহার মনে হইত একাত সহক ব্যাপারটার আভালে কি বেন একটা ঘটরা গেল। লত্মীর এত খুদী হইবার কি ছিল, সে রাগ করে নাই এই কথা করট শুনিছা? আর সেই-বা এই ভূচ্ছ ব্যাপার লইরা এত বাধা ঘানাইতেছে কেন? কিন্ত ভূচ্ছ বলিরা উভাইরা দিলেও কথাটা প্রায়ই ভাহার মনে পড়ে।

ৰগভাত্ৰীয় অসুৰেয় বাভাবাভিতে এ সৰ চিন্তা কোণায় চাপা পঢ়িয়া গেল। সদয় হইতে সাহেব ভাক্তায় আসিল, চিন্দ্রীর খণ্ডর বাড়ীতে লোক পাঠাইরা তাহাকে আদা হইল।

চিন্দ্রীর বছ বোদ মুগ্রীর প্রামেই বিবাহ হইরাছিল। নিজের

সংসার কেলিরা সে মাতার রোগশয্যার পাশে দিন-রাত

বলিরা রহিল। দিদি তুর্ বলিরা বলিরা কাঁলে, চিনি ছেলেমাহুম, ইন্দ্র নিজে টোলপাড়ার সিরা জিনয়নীকে ডাকিরা
আনিল। হরিমারায়ণ শ্রীর অন্তর্থে কেমন অন্থির হইরা
পঢ়িলেন, তাঁহার নিজের শরীরও তাল নর। সমত দারিছ
ইল্রের কাঁবে আসিমা পড়িল। মাধা ঠাতা রাবিরা জিনয়নীর
সল্পেরামর্শ করিরা সে সম্ভ ব্যবস্থা করিতে লাগিল।

করেক দিন যমে মান্থ্যে টানাটানি করিয়া জগদাত্রী এই বাজা একটু যেন সামলাইয়া লইলেন। হরিনারায়ণ জীকে বলিলেন, বা জয় পাইয়ে দিয়েছিলে ভূমি। ভোষার শরীর আর একটু ভাল হলে বাইরে গিরে মান করেক থাকব। চুনার কিংবা বিদ্যাচলে বাজী নেব ঠিক করেছি।

কগৰাত্ৰী হাসিলা বলিলেন, তুমি যত ওয়ুৰ খাওৱাও, ডাজনার দেখাও—আমার শরীর আর তাল হবে না। তা ছাড়া রাজনগর ছেড়ে আমি কোথাও যাব না। কাল রাত্রে আমি একটা স্বপ্ন দেখেছি।

হরিনারারণ--কি স্বপ্ন ?

কপঙানী একটু ইভভভ: করিলেন। তারপর বলিলেন, বথে দেবলান আমি যুত্যুখবার। কিসের আশার বেন প্রাণ বেরুছে না, অসহ কট পাছি। হঠাৎ চোধ মেলে দেবলাম ছারার মত কে একজন এসে আমার শিররে ইাড়াল। ভোমাবের কারো নজর পড়ল না তার উপর, আমি দেবেই চিনলাম তাকে। আমার বড় বোকা। বল্লাম, বোকা কিরে এলি বাবা? আমি যে তোর হাতের আগুনের পিত্যেশে মরতে পারছি নে। আমি উঠে বসে তাকে আদর করতে বাব এমন সমর ঘুম ডেলে গেল। বোকা নিশ্চম কিরে আগবে। রাজনগর ছেভে আমি কোবাও বাব না।

হরিমারারণ একটা দীর্ঘনিখাস কেলিলেন। আৰু কর বংসর হটল প্রসন্ন চলিরা গিরাছে, ব্লগডাত্তী এখনও দিন-রাভ কেবল ভাতার চিক্লা করেন।

জিনয়নী প্রভিদিন আসিরা ভবির করিভেন। ভিনি ভার লওবাভে ইজ নিশ্চিত্র বোধ করিয়াছিল। এখন মাভা একটু মুখ হইরা উঠার সে কিছু অবসর পাইল। সে সকালের দিকে কিছুসময় বিষয়-সম্পত্তির কাজ দেখিত, ভারপর সারা-দিনের অবদরে রাজ্যের চিত্তা ভাহাকে পাইরা বসিত।

ইজ নিজের মনে ছংগ করিত দেবুদার মত তাহার মনের জোর নাই। সে বড় ছুর্বল প্রফুতির মাহুষ। বাণের কথা ভাবে, যারের কথা ভাবে, সংসারের কথা লইরা মাথা বামার। সংসারের ভাবনা এত বেশী ভাবিলে কি ভার দেশের কাজ করা বাব ? ভাহার মধ্যে এই চিভার উত্তেক হইড। ভাবিত— হয়ত ভাহার আর পড়ান্ডনা করা হইবে না। সকালে বিকালে কাছারিতে বসিরা নারেবের সঙ্গে বকাবকি, মামলা-যোকদমার পরামর্শ, মোড়লদের দরবার শোনা এই করিরা ভাহাকে নারাজীবন কাটাইতে হইবে। ভাহার পিভা অবসর সমরে পড়ান্ডনা, সদীতচর্চা, শিকারচর্চা করিরাছেন। আপান-বিপদে গরীব লোকেদের সাহায্য করিরাছেন। আপ্রীর-বজনের মব্যে বিবাদ-বিস্বাদে সালিশা করিয়াছেন। সমাজ, সংসার সকলের দাবি ভিনি সাব্যয়ত মিটাইরা দিরাছেন বরাবর। ভারপর স্বদেশী আন্দোলনের মধ্য দিরা দেশের দাবি উপস্থিত হইলে ভাহাও পূর্ব করিবার জ্ঞ যবাসাধ্য চেঙা করিয়া-ছেন। কর্ত্তব্য পালনে ভাহার কোবাও কোন ক্রটি নাই। সে ভাবিত, ভাহা হইলে গে কেন পিভার পদান্ধ জ্মুসর্ব করিয়া আত্মপ্রাদ লাভ করিছে পারিবে না গ

जानक हिला कविद्या (म अहे शास्त्र अकहे। महाशासद मह भाडेल (प्रवासामन काशकप्रिस चार्यन अक भक हड़ेरक। দেবাদন নিকের মনের ছব্তের কথা ভূলিয়া লিখিয়াছে, ভাতার পিভার মভ বয়নের দেশপ্রেমিক বাজিদের কাছে দেশের দাবি যে ভাবে আসিয়াছে ভাহার কাছে ভ সেভাবে আসে নাই। ভব ভাহার কাছে কেন, ভাহার রূপের, নৃতন শভানীর কোন বাঙালীর ছেলের কাছে সেভাবে উপদ্বিত হয় নাই। ভাগার পিভা যে যগের মাল্য লে বলের মাল্যদের কাছে সদেশী আন্দোলন আসিয়াছে মৱা গাঙে হঠাৎ আসা জোয়াৱের মত। আর দেশ ধবন এই কোয়ারের জলে প্লাবিত তবন **काठारम्ब क्या (काबारबद क्न मदिवा याहेरकरक, कहे** প্লাবনের মধ্যে যাহাদের ঋগ হইয়াছে, বাঁচিবার ঋভ ভাই আঞ্ ভাচাদের প্রাণপণ চেষ্টা করিতে হইবে। ইন্দ্র ভাবিল- क्रैक कथा किन बाक्सनट्य विनश्ता जरमाद्यत काव कांद्र महेशा तम কি চেঙা করিতে পারে ? দেবদা কি চেঙা করিতেছে ভাতাও (म किছ बंगियां (मर्थ गारे।

ইন্দ্র সংসারের কাক্কর্ম করে, পিভার কাছে, যাভার কাছে ছই বেলা নির্মিত বসে, ত্রিনয়নী রোসীর সম্পর্কে বাহা করিতে বলেন তাহা করে, কিছ সর্বাদা তাহার যাধার এক চিন্তা থাকে—সে কি করিবে ? ত্রিনয়নীর সঙ্গে লক্ষ্মী ভাহাদের বাভীতে আসে, হরিনারায়পের সঙ্গে আলাপ করে, অগভাত্তীর আরামের অভ নানা রক্ষমের ব্যবস্থা করে। নিজের চিন্তার ইন্দ্র এত অভ্যমনত্র থাকে আক্কাল বে, কোনদিন ভাহার সঙ্গে একটা কথা বলে, ছই-চারি দিন আবার ভাহাকে লক্ষ্যই করে না। মার্যথানে কিছুদিন লক্ষ্মীর কথা বর্ধন ভবন ভাহার মনে পভিত, যাভার অপ্রথে, নিজের মনের অপান্তিতে সে সব করে চাপা পভিয়াছে। ইল্লের সম্বন্ধে লক্ষ্মীর মনোভাব অপ্রথমান করা কঠিন, সে নিজে বে সে সম্বন্ধে সাচেতন ছিল ভাহা ভাহার ব্যবহারে কিছু বুবা খাইত না। কিছু ইল্লের প্রতি

সে বে দৃষ্টি রাখিত ভাহার পরিচর পাওয়া গেল শীত্রই। সে লক্ষ্য করিত বে ইস্ত সর্বাদা অভ্যনত, কি একটা ভাবনা বহিরাহে ভাহার যনে। একদিন সে চিম্মরীকে বলিল,

—চিমু, ইজদাদা সারা দিন কি ভাবেন এত ? ভাঠাইনা ভ অনেকটা ভাল হয়েছেন ভবু কি ভাবেন এত ?

চিন্নরী হাসিরা বলিল—ভূই ছিজেস করলেই পারিস। দাদা কি ভাবে ভা নিরে ভোর এত ভাবনা কিসের ୨

লন্ধী একটু বিৱতভাবে বলিল, ভাষমা আবার কিলের ? কথাটা মনে হ'ল ভাই বলছি। তুই ছোট বোন, তুই ছিজেন করতে পারিস নে ?

চিনি—ছোট বোন গিরে জিজেন করবে, হাঁ দাদা, তুষি দিবানিশি কার ব্যান কর বল না গুনি ? তাই না ? দাদা বদি বলে, বা বা কাজিল মেরে, তোর অভ খবরে কাজ কি, ভখন ?

নন্দ্ৰী—তা কেন বলবেন ? তুই তাল করে জিঞেল করবি।
চিনি—তাল করে জিঞেল করব নানে ? গলার আঁচল
দিরে হাত জোড় করে বলব ? না পা জড়িরে বরে বলব ?
বরং তুই গিরে একটু নিষ্টি করে হেলে বললে কাজ হবে।
দেশবি হরত বলে কেলবেন, লন্দ্ৰী গো, আমি দিবানিশি
তোমারই—

লন্মী চিনির মূৰ্বে হাত চাপিয়া বরিল, বলিল, ভূই বছ বাতাবলিস চিহ্ন। মূৰ্বে কিছু বাবে না।

চিনি ললীর হাত সরাইরা দিরা ছই হাতে তাহার গলা ত্তাইরা বরিরা কামের কাছে মুখ লইরা বলিল, একটা কথা বলবি তাই ? দাদা—

লন্ধী বলিল, দাঁছা ভাই, যহ জ্যোঠামশাইকে ভাষাক দিয়েছে না পড়ে পড়ে সুৰুছে দেখে আসি। চিনির হাভ ছাড়াইরা সে চলিরা পেল।

চিন্ননীর খন্তরবাদী হইতে হঠাং লোক আসিরা উপছিত হইল ভাহাকে লইবা বাইবার কর। তাহার শান্তদী বত করা লোক। অত্য পিতামাভাকে দেবিবার কর তিনি পুত্র-বধুকে পদর দিনের ছুট দিরাছিলেন। তাঁহার হক্ষ হিল পদর দিনের দিন বাপের বাদীর লোক বেন তাহাকে পৌহাইরা দিরা বার। চিন্মনী একথা বাদীর কাহাকেও বলে নাই। সভের দিনের দিন করা পত্র লইবা লোক আসিতে তাহার বেরাল হইল। যাতা এখনও শ্যাশানী, পিতার শ্রীর তাল মর, তাহার এখন যাইবার একটুও ইচ্ছা ছিল না, কিন্তু পত্রে শান্তদীর নেজাকের আভাস পাইরা লে আগতি করিবার সাহস পাইল না। ইক্র চটরা লোক কিরাইরা দিতেছিল, সে নিধেব ক্রিল। বলিল, ছোড্গা, যাদের বরে আমাকে দিরেছেন তাকের চটরে কি হবে ? তবু আরার লাহ্না সঞ্লা বাছবে বই ত নম্ব ?

রওদা হইবার আগে চিমরী মাজার কাছে গিরা বসিদ কিছুক্দণ একথা ওকথা বলিয়া শেষে বলিল, মা, আমার এক কথা শোম। সংসারের এই অবস্থা। ভোমাকে, বাবাত দেখবার লোক নেই। দিদির নিজের সংসার আছে, সে আ ক'দিন করবে? আমার অবস্থা ভ জানই, ছোড়দার বিং দাও।

অগবানী বলিলেন, আমি সে কথা ভেবেছি চিছ। ওঁটে দেখবার এক জন লোক না হলে চলছে না। আমি বিছানা পড়ে আছি, বনক-বানকে বি চাকর দিরে কাজ করাতে হয় নিজে হাতে কিছু করতে পারি নে। ওঁর কি হবে ভেন্মেরতে ভরনা পাছিলে। ভাল নেরে পেলে ছোট খোকার্টিবিরে দিতে পারি। কিছু বেল্ডিখবর করে কে?

চিন্নরী—এত বৌশ্ববরের দরকার কি বা, ভাল মেচে ভোষার হাভের কাছেই রয়েছে। রূপেগুণে ওরকম মেচে কোণার পাবে ?

অপথাত্তী অসুমান করিলেন মেরে কাহার কথা বলিভেছে তবু তিনি বলিলেন, কার কথা বলছিল তুই ?

চিমি—ভোষার কি চোধ দেই ? লক্ষীর কথা বলছি।

জগৰাজীর মুধ বিরস হইল। কিছুক্দণ তিনি কোন কথা বলিলেন না, শেষে বলিলেন, ছেলের বৌ করব সমান খরেছ মেরে এনে। টুলো পভিতের খরের মেরেকে আমি খরে আনতে পারব না, তা মেরে যত তালই হোক। বংশের গৌরব নই করব ?

চিম্মী রাগ করিল। বলিল, এ ভোমার অভায় কথা মা। ভা হাড়া কাকাবাবু ত টুলো পণ্ডিভ নন্, তিনি বড় চাকুরে।

শপথানী— চাকুরের আবার ছোট বড় কি ? যে চাকুরে সে-ই চাকর। ও-শরের মেরে আমি আমব মা।

চিম্মী হাগ করিয়া বলিল, ক্ষেম তুমি তেনুমি দিদি।
ভাকে বলভে দেও ভোষার মত নাক সিটকালো। কি থে
বংশের বড়াই ভোষাদের। অমন সোমার প্রতিমার মত
মেরে—। আমি চললাম, কিছু এই বলহি ভোষাকে, দেখো
গরীবের কথা বাসি হলে মিটি লাগবে। এক দিন হর ত ঐ
মেরেকেই বেচে—

জগৰাত্ৰী বিষক্ত হইৱা বাধা দিয়া বলিলেন, ৰাবার সময় কি ৰে জলকুণে কথা বলিস চিনি!

চিম্মনী উটিরা শিভার ব্যের দিকে বাইতে দেখিল লক্ষী আসিতেছে। কাছে আসিয়া লক্ষী বলিল, আমার দেরী হয়ে গেল ভাই আসতে। তর হয়েছিল তুই বুঝি চলে গেছিস।

চিনি ভাহাকে স্বভাইরা বরিরা বলিল, ভূই বে আবার আসবি আবি ভাবি নি। সকালে কাজীমাকে প্রণাম সেরে ভোর সকে দেখা করে এলান, কি আনি সময় বলি না পাই, বা ভাভাছভো। লন্ধীর হাত বরিয়া সে নিন্দের বরে আমিল। বলিল, যাবার আগে ভোকে একটা কথা বলব বলে এ বরে আমলাম। শোন, মুখ তুলে ভাকা দেবি আমার দিকে।

লন্মী ৰূব তুলিরা চাহিল। চিম্মী বলিল, তুই ছেলেবেলা বেকে শিবপুলো, এত, নিম্ম কভ কি করছিল। ঠাকুরের কাছে বর চাইবি—ঠাকুর, এতদিন বরে ভোমাকে কত ফুল ছক্ষো দিলাম, চিম্মর ছোড়দার সদে আমার বিষে ঘটরে দাও। পারবি বর চাইতে ?

লন্ধীর মুখ হইতে ধেন সবচুকু রক্ত সরিবা গেল, সে কোন জৈলত দিল না। চিম্মরী ভাহার গালে ঠোনা মারিয়া বলিল, জ্বাব দে। বর চাইতে পার্বি না ?

দেখিতে দেখিতে ললীর চোধ হইতে এক কোঁচা কল গড়াইরা পঢ়িল। চিন্মরী তাহার গলা কড়াইরা বরিয়া চোধের কল মুহাইরা দিল। বলিল, তোর মনের কথা আমি কামি। মনে মনে ঠাকুরের কাছে এই বর্টা চাগ ভাই। আমি যাবার সময় তোকে মাধার দিবিং দিকি।

একটু পরে তাহারা ছই জনে খর হইতে বাহির হইরা হরিমারারপের খরে চুকিল।

-

### চন্দননগরে শ্রীঅরবিন্দ

#### এমতিলাল রায়

১৯٠২ बीहारमत विशेष कुनारे विरवकानत्मत त्मरायमान হয়। ইহার ৰৎসবেক কাল পরে শ্রীঅববিন্দ যতীক্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের সহিত বারীক্রকমারের বিপ্লব-প্রচেষ্টা नार्थक हरेट्ट ना त्मिशा, এकवाद वाःनाय প্রত্যাবর্ত্তন করেন। এই প্রত্যাবর্তনের মূল স্তরের অন্বেষণ, দুর্ভাগ্য-বশত: বাঙালী জাতির পক্ষে ক্রমেই অসম্ভব হইয়া উঠিতেছে। দক্ষিণেশবের সহিত প্রীমরবিন্দের জীবন বে সমস্ত্রে গ্রন্থিত, ইহা তলাইয়া না বুঝিলে শ্রীমর্বিন্দের জীবন-সাধনার এই যুগ-পর্বেটা চির অক্তাতই থাকিয়া वांटेरव । रवनारखद रकनदीशब्बन छनिया यांभी विरवकानन মহাপ্রস্থান করিলেন, অল্পকাল পরে প্রীমরবিন্দ স্বাসাচীর श्राय वांश्नाव कर्पाकाल जानिया मांडाडेलन। विदिकानम धर्मा क्षेत्र कविशाहित्सन. ভারতেরই ধর্ম। সে ধর্ম ভারতের স্নাতন যোগতত্ব। শ্রীষ্মরবিন্দ একাধারে ধর্ম ও রাষ্ট্র হুইকেই আশ্রয় দিলেন; কেননা বাষ্ট্রও ভারতের রাজধর্ম। ভারতের স্বাধীনতা **শভিনৰ উপায়ে আ**সিবে—মহাত্মা বিষ্ণু ভাস্কর লেলে णहारक अहे कथा विनिधाहित्तन। श्रीव्यवित्तत्र व्यस्तर-সাধনা ধীবে ধীবে অধ্যাত্ম-যোগপথে সেই সময় হইতেই মোড ফিরিভে আরম্ভ করে।

১৯১০ এবিজের ২৪শে জান্ত্রারী সামস্থল আলমের
ইত্যাকারী বীরেক্সনাথ বৃত হন। ২০শে ফেব্রুয়ারী বীরেক্সের
ওক্ষ বতীক্সনাথ মুখোণাধ্যায় বন্দী হইয়া ইংরেজের
আদালতে অভিযুক্ত হন। বীরেক্সনাথের ফাঁদী হয়
১৯১০ এবিজের ২২শে ফেব্রুয়ারী। এক্সেরবিন্দ ২১শে

ফেব্ৰুয়ারী চন্দ্ৰনগরে আসিয়া উপস্থিত হন। যতীক্সনাথ প্রমাণাভাবে মক্তিলাভ করেন। শ্রীমরবিন্দকেও এই হত্যাকাত্তে অভিত করার প্রয়াস হইয়াছিল, কিছ ভাষা বার্থ হয় ৷ অত:পর "কর্মযোগিনে"র প্রবন্ধের জন্ম রাজ-দ্রোহের মামলায় তিনি অভিযুক্ত হন। সেই প্রসিদ্ধ প্রবন্ধের কথা অনেকেই অবগত আছেন। ইহা "An open letter to my countrymen" শিবোনামার প্রকাশিত হয় এবং তাহা শ্রীমরবিন্দের !"Last political will and testament বলিয়া জাতীয়তাবাদিগণ গ্ৰহণ ক্রিয়াছিলেন। এই প্রবৃদ্ধটি লইয়া তুমুল আন্দোলন চলিতে থাকে। ভদানীম্বন ব্রিটিশরাক ইহা রাজস্তোহ-मनक द्यार्थ श्रीव्यवित्म ७ श्रीकानक मत्नारमाहन व्यावत्क অভিযুক্ত ক্রিয়াছিলেন। শ্রীঅর্থিক এই সময় চন্দ্রনগরে বাদ করিতেছিলেন। নিম আদালতের বিচারে মুদ্রাকর মনোমোহন ঘোষের দও হয়। कि उक्क आमामा छ व বিচারে ভিনি বেকস্থর মুক্তিলাভ করেন। শ্ৰীষরবিন্দের প্রবন্ধটি রাজজোহমূলক নহে বলিয়া উচ্চ আদালতের বিচারপতি রায় প্রদান করেন। প্রীম্বরবিন্দের সহিত প্রতিদিন অপরায়ে ভগিনী নিবেদিতার সাক্ষাৎকার হইত। আচাধ্য জগদীশচন্দ্র বহু অনেক সময়ে তথায় উপস্থিত থাকিতেন। শ্রীমরবিন্দ ভগিনী নিবেদিতার মথে তাঁহাকে পুনবায় ধরিবার আয়োজনের ভগিনী নিবেদিতা তাঁহাকে কোনও বিদেশী বাজ্যে গিয়া আখ্রয় গ্রহণ করার পরামর্শ দেন। পরে নিজ অস্তর-বাণী পাইয়া উক্ত প্রস্তাব ভিনি সিদ্ধান্তরূপে বরণ করিয়া লন। রামচক্র মজুমদার ধর্ম ও কর্মবোগিন্ আপিসে প্রীমরবিন্দের সহকারীরপে কাজ করিতেন। তিনি প্রীমরবিন্দকে সজে লইয়া আহিরীটোলার ঘাটে এক পালী ভাড়া করিয়া তাঁহার চির প্রস্থানের প্রাথমিক ব্যবস্থা করিয়া দেন। সলী হন প্রীনলিনীকান্ত গুপ্ত ও ক্রমেশচক্র চক্রবন্তী।

বাজি প্রভাতের পূর্বেই চন্দননগরের রাণীর ঘাটে তাঁহার নৌকা আসিয়া পৌছিয়াছিল। চারুচক্র রায়ের নিকটে স্বরেশচক্র চক্রবর্ত্তী মারফত তাঁহার আগমন-সংবাদ প্রেরিত হয়। চারুচন্দ্র আমাদের লইয়া সম্প্রতি সারস্বত উৎসব সমাপনাত্তে বিশ্রাম করিতেছিলেন। সামকল খালমের মৃত্যুর পর চন্দননগরে এই প্রসিদ্ধ সারস্বত উৎসব সম্পন্ন হওয়ায়, বিপ্লবিগণ এই কাষ্য চাক্ষবাবুর অতীত বিপ্লবকর্ষের উপর চণকাম করার নীতি বলিয়া রহস্ত ক্রিয়াভিলেন। মনে হয়, চাক্রচন্দ্র জেল হইতে ফিরিয়া वराम-माध्याब माःश्विक পথেই চলিতে চাহিয়াছিলেন। ভাঁহার সারম্বত উৎসব তাহারই দুটাম্ব স্বরূপ মনে করা ষাইতে পারে। যাহা হউক, শ্রীঅরবিন্দের আত্মগোপন ব্যাপারে চাক্রবাব আর কোনও দায়িত্ব গ্রহণ করিতে ইচ্ছা করেন নাই। তিনি চন্দননগরে গ্রীঅরবিন্দের থাকা मध्यत्रत इडेट्य मा विनियांडे छट्यमहस्त्रटक कियांडेया एमन ।

শ্রীশচন্দ্র ঘোষ কানাইলাল দত্তের অতি-নিকট বন্ধ।
এই হই জনেই চাকচন্দ্র রায়ের ছাত্র ছিলেন। শ্রীশচন্দ্র
ঘোষ এই কথা চাকচন্দ্র রায়ের মুখে শুনিয়া অতি ক্রন্ত
আমার নিকট আসিয়া উপস্থিত হন। আমি তাঁহার কাছে
সকল কথা শুনিয়া, শ্রীঅরবিন্দকে আমার বাড়ীতেই আশ্রম
দিই। এই কথা অনেক ক্রেন্তে উক্ত হওয়ায়, তাহা আর
এখানে বিস্তৃত করিয়া বলার প্রয়োজন খোধ করি না।
আমার ক্রায় একজন অপরিচিত মাসুষের হাজে শ্রীঅরবিন্দকে রাখিয়া স্বরেশচন্দ্র ও শ্রীনলিনীকান্তও যে নিশ্চিত্ত
চিত্তে বিদায় লইরাছিলেন, ইহা হইতেই বুঝা বায়
শ্রীঅরবিন্দের প্রতায় আমার উপর কতথানি হইয়াছিল।

শ্রীষরবিন্দ আত্মগোপন করিবার জন্মই এখানে আদিয়াছিলেন এবং কোথায় ভবিষ্যতে বাইবেন, তাহা নির্দ্ধারিত না হওয়া পর্যান্ত এইখানেই বাস করিতে চাহেন। ইহাই আমার রাজনৈতিক বিপ্লবীদের চলননগরে আশ্রয়নানের প্রথম দীক্ষাম্বরূপ হয়। শ্রীমর্বন্দি আমার বাড়ীতে বে কয়দিন ছিলেন, তাঁহার অম্বরাগের স্পর্শ আমি পাইয়াছিলাম। লোক-জানাজানির ভয়ে তাঁহাকে স্থান হইতে য়ানান্তরে রাখিতে হইয়াছে। তিনি এক রাজি আমার এক বয়্ধর পীড়াপীড়িতে ভাঁহারই বাড়ীতে বাস করেন।

কিছ একরাত্রি বাসের পরই বিরক্ত হইয়া পরদিনই আমার ভবনে চলিয়া আসেন। তারপর গোন্দলপাড়ার নরেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের নিকটে তাঁহাকে রাখিয়া আসি; সে বিবরণ অভিশয় বিচিত্র।

কেমন করিয়া নিজের আন্তাবল হইতে গাড়ী-ঘোড়া বাহির করিয়া, নিজেই চালক হইয়া গাড়ী ছুটাই, তাহার বৃত্তান্ত আমার "জীবন-সলিনী" গ্রন্থে বিস্তৃত্তাবে লিখিয়াছি। গোন্দলপাড়া হইতে কটকগোড়ায় করের বাগানেও তাঁহাকে কিছুদিন রাখা হয়। সেখানে বসিয়া তাঁহার সহিত ধর্মসমঙ্কে অনেক কথাই হইয়াছিল। তিনি আমায় অধ্যাত্ম-সাধনার কথাই তথু বলিতেন, কিছু প্রান্তন্ত্র ঘোষের সহিত রাষ্ট্রবিপ্লব সম্বন্ধেই আলোচনা করিতেন। আমার অন্তরের প্রবণ্তা কোন দিকে, প্রাত্তবিদ্ধু করিতেন।

গোপনে বাধার দায়িত্বোধে স্থান হইতে স্থানাম্বরে তাঁহাকে লইয়া আদা হইত। করের বাগানের পর আমারই বাড়ীর নিকট শ্রীঞ্জিগরাথদেবের মন্দিরপার্ষে বে ক্ষত্ৰ একতলা বাডীখানি ছিল তাহা ভাডা করিয়া তাঁহাকে সর্বশেষে সেধানে গোপনে বাধা হয়। তাঁহাকে এই সময় বিপ্লবী স্থদর্শন চক্রবড়ী নামে এক ভরুণ যুবককে লইয়া আসা হয়। স্থদর্শন কলে চাকুরী করে বলিয়া এই বাড়ী ভাষা লয়। প্রভাহ প্রাত: ১টা বাজিলে সে সদর দরকায় তালা দিয়া বাহির ২ইয়া যাইত ও সন্ধার পর বাড়ী ফিরিত। এঅরবিন্দ সারাদিন এইখানে বন্দী পাকিতেন। এই সময়ে তিনি আহার করিতেন কিসমিস. বাদাম আর পেন্তা। সারাদিন বন্দীজীবনের পর রাত্তে চলননগরের বিপ্লবী বন্ধ শ্রীশচন্দ্রের সহিত তাঁহার কথোপ-কথন হইত। এইরপে শ্রীমরবিন্দ চন্দননগরে ৩০শে মার্চ্চ পর্যাম্ভ বাস করিয়াছিলেন। শ্রীমরবিনের এই আক্রাছ-বাসকালের তিনটি ঘটনা আমার মনে বিশেষ ভাবে আঁকা আছে।

আমার বাড়ী হইতে তিনি ফেক্রগারী মাসের শেষে গোন্দলপাড়ায় প্রস্থান করেন। এই কয়দিন আমি তাঁহাকে লুকাইয়া রাখার প্রাণপণ প্রয়াস করি। কিন্তু এক জনের নিকট তাহা প্রকাশ হইয়া পড়ে। সেই কথাই এখানে ব্যক্ত করিতেছি।

দেদিন আমার বাড়ীর কয়েকটি অব্যবহার্য গৃহ বে-মেরামতে চেয়াবের গুলামে পরিণত হইয়াছিল। গৃহ হইতে গৃহাস্তবে তাঁহাকে লুকাইয়া রাধিতাম। এক দিন ইহা ফাঁদ হইয়া গিয়াছিল। আমি ঞ্রীঅরবিন্দকে একটি

ক্ষাল ক্রকে বাধিয়া আমাদের চেয়াবের কারধানায় যথারীতি कर्च कविटक निश्नि । उँ९क्श्रीय नौमा हिन ना । यथा-সময়ে জাঁচাকে বাহির করিয়া বৈঠকধানায় আনিলাম। তাঁচাকে দেয়গে দেখিয়াছি আত্মভোলা শিবের ক্রায়: চলিতেকেন যেন মাটিতে পা পড়িতেছে না। যথন খাইতেন ভাষাও শক্ষ্যীন। হাত-পা নডিতেছে: কিছুকে যেন তাঁহার নিয়ন্তা। শ্রীঅরবিন্দকে আনিয়া অবধি এইরুপ আবাচারার ন্যায় দেখিয়াছি। তিনি এই স্ময়ে আবা-সমর্পন-যোগের কথাই বলিতেন। নিজের হাতথানি উপরের দিকে উঠাইয়া বলিতেন, তুনি মনে কঙিও না আমি হাতধানি উঠাইতেছি, আমার মধ্যে কোন এক ততীয় শক্তি কাজ করিতেচে—আমি বিস্মিত হইয়া ঠাঁচার দিকে চাহিয়া থাকিতাম। তাঁহার অপুর্বর আচরণ লক্ষ্য করিয়া ব্রিভাম—তিনি আর ইহজগতের মান্ত্র নহেন: **७**४ (महंहे। এই বিশে বিচরণ করে ভগবানেরই উদ্দেশ্য সাধনে। সেদিন তাঁর চোখের দৃষ্টি আরও অপলক। আমি তাঁহার অপরূপ ভাবান্তর লক্ষ্য করিয়া নত শিবে তাঁহার নিকট বসিল্লা রহিলাম। ভুলিলা গোলাম তাঁহার লানের সময় হইয়াছে। এই ঘরেই তাহাকে স্থান করাইতে হইবে। নতুবা কাহারও দৃষ্টিপথে পড়িলে ভাহাকে ल्काहेशा दाशाद এত প্রয়াস সব বার্থ इहेशा याहेद्य या: শ্রীঅরবিন্দের মুখে বাণী দ্রিল,—তিনি আমায় লক্ষ্য করিয়া বলিলেন "মতি। আমার কালী-দর্শন হইয়াছে। আজ মাত্ৰ্মতি সন্দৰ্শন করিয়াছি।"

এই দিন হইতে 🗃 অর্বিন্দ আমার নিকট "কালী" রূপে পরিচিত। তাঁহার অসংখ্য পত্তের শিরোদেশে ''ডীয়ার এম্'' ( Dear M ) ; তাহার পর পত্র শেষ করিয়া "Kali" এই मञ्जूषि मिथिएन। তথনও বুঝি নাই শ্রীষ্মরবিন্দ এই "কালী"-সাধনায় সিদ্ধিলাভের পথে ১৯১॰ बोहोस्मय २०८म क्लब्यांदी इटेल्टे हमिल दक ক্রিয়াছেন। এদিকে আমি বাড়ীর মধ্যে প্রবেশ করা-মাত্র আমার পত্নীর মুখে ভনিলাম—তিনি ঘুরিতে ঘুরিতে C शांत (वाकारे घरत्व मर्पा श्राटम क्रिशाहिस्सन! চতুর্দ্ধিকে চেয়ার সাজানো, তাহার মধ্যে অরবিন্দের আসন পাতা ছিল। ঐত্বরবিন্দ ধ্যান-নিমীলিত নেত্রে সেইখানে উপবিষ্ট ছিলেন। চেয়ার সরানোর শব্দে চাহিয়া শেখিলেন। আমার স্ত্রী তথন অসমূতা। তাঁহার হাতে সম্মাৰ্কনী ছিল। তিনি অৰুশাৎ এই গৃহমধ্যে এক পুৰুষমূৰ্ত্তিকে দেখিয়া সলব্দ বিশ্বয়ে জিহুৱা কর্ত্তন করিয়া কিছুক্ষণ শুস্থিত হইয়া দাঁড়াইয়াছিলেন। প্রীঅরবিন্দ নির্নিমেষ নয়নে তাঁহার দিকে চাহিয়া থাকেন। আমার ত্রী এইভাবে কিছুক্দণ স্তব্ধ মৃর্বিতে দাঁড়াইয়া পরক্ষণেই সদক্ষোচে গৃহ হইতে নিজ্ঞাস্তা হন। এই গোপনতার ব্যবস্থা বে আমারই কীর্ত্তি, ইহা বৃঝিতে তাঁহার বিদম্ব হয় নাই। সব কথা ভনিয়া তিনি অভঃপর শ্রীঅরবিন্দের সেবায় অকুণ্ঠ হইয়া-ছিলেন। ১৯২১ খ্রীষ্টাব্দে আমি শ্রীঅরবিন্দেরই অমুরোধে দুলীক পণ্ডিচেরী যাই। সে কথা পরে বলিব।

ছিতীয় ঘটনার কথা উল্লেখ কবিতেছি। বালাকাল হটুটেই কিছ-না-কিছ লেখার অভ্যাস আমার ছিল। তথন সবে "উদ্বোধন" নাটকখানি লিখিয়া এক বাতে বাডীতেই আমরা কতিপয় বন্ধ মিলিয়া অভিনয় করিয়াতিলাম। ঠাকুর दांभक्रक ও বিবেকানন্দের सिवा मद्यस्त्र ज्यानर्न मन्मर्थ রাধিরা, আত্মসমর্পণ ধোগের কথাই এই নাটকে লিখিয়া-শ্রী মরবিন্দ আগাগোড়া ভাষা শুনিলেন। কিছক্ষণ স্থির থাকিয়া বলিলেন, "তোমার লেখার অভ্যাস আছে: আমার ইচ্ছা 'ধর্ম' প্রিকায় তুমি নিয়মিতভাবে লিখিবে।" বামচন্দ্র মজুমদার তথন সাপ্তাহিক "ধর্মে"র পরিচালক ছিলেন। এ অরবিনের নির্দেশে আমি 'ধর্মে' লিখিতে আরম্ভ করি। রামচক্র হয়তো মনে করিতেন লেখাগুলি শ্রীমরবিন্দের। বস্তত: লেখার দীকা শ্রীমরবিন্দই আমায় প্রদান করেন। এইবার সর্ব্যশেষ ঘটনার কথাই বলি। আমার বাড়ীর অভি নিকটেই তিনি বাস করিতেন। কিন্ত তাঁচার সহিত আমি বেশী দেখা সাক্ষাৎ করিতাম না' নিজের সাধন-ভজন লইয়াই বাস্ত থাকিতাম। সকল প্রয়োজন মিটাইবার দায়িত্তকুই আমার ছিল। স্তদর্শনের মধ্য দিয়া ভাচা যথাবীতি সম্পন্ন করিভাম। একদিন শ্রীঅরবিন্দ আমায় ডাকিয়া পাঠাইলেন। বাতে তাঁহার নিকট উপনীত হইলাম। তিনি আমার আপাদ-মন্তক নিরীকণ করিয়া বলিলেন, "তুমি কেমন আছ " জামি বিশ্বয়ে তাঁহার দিকে চাহিলাম। তথন ব্রন্ধচর্যা বক্ষার দিকেই অধিক ঝোঁক দিয়াছি। সংযমের মাতা यम जाद बका हम ना। जल्द-मनी बीबद्रिक यम है। প্রতাক্ষ করিয়াছেন। আমি আমার অবস্থার কথা তাঁহার নিকট বিবৃত কবিলাম। তিনিও অনেক উপদেশ দিলেন। তার পর ধীরে ধীরে বলিলেন, "আমি কালই চলিয়া - প্রীশচন্দ্র কিছু দাখিত গ্রহণ করিয়াছে। তোমাকেও কিছু কিছু ব্যবস্থা করিয়া দিতে হইবে।"

আমি শুনিলাম—তিনি পণ্ডিচারী বাইবেন। পণ্ডিচারী ফরাসী রাজ্যের রাজধানী। দেখানে তিনি নিরাপদে থাকিতে পারিবেন। শুনিয়া বুকটা বেন ভালিয়া পেল; ছই মাদ তিনি ছিলেন, হৃদয় বেন পূর্ণ থাকিত। অকস্মাৎ

ভাঁহার মুখে প্রস্থানের কথা শুনিয়া অমি সবিশেষ বিচলিত চইলাম।

ভার পর দিন তাঁহার বিদায়ের সমন্ত ব্যবস্থা কবিয়া; সহজভাবেই রাজিযাপনের জন্য যথাসময়ে শয়ন-গৃহে প্রবেশ করিলাম। শয়াও গ্রহণ করিলাম। নিজা হইল না। নয়নে অবিরল অশ্রুধারা বহিল। অভকার-গৃহ, নতুবা পত্নীর নিকট ধরা পড়িভাম। মধ্যরাত্তে শ্রীশচন্ত্রের গলা ভানিলাম। পত্নী জিল্লাসা করিলেন, ''রাজিকালেও কি তোমার অবসর নাই ?'' আমি তাঁহাকে শ্রীঅরবিন্দের বিদায়-বার্তা জ্ঞাপন করিলাম। তিনি আশ্রুধার ইয়া বলিলেন, ''মায়্র্যটির শেষ বিদায়ের দিনে ভোমার এইরপ নিশ্বিস্তা—সকল কাজেই শেষ রক্ষা করতে পার না।''

আমি বরের বাহির হইলাম। জ্যোৎসায় সর্বনিক্
উদ্ভাসিত। শ্রীশচন্তের সহিত গলাতীরে আসিয়া উপস্থিত
হইলাম। শ্রীশ্রবন্দি আমারই প্রতীক্ষায় দাঁড়াইয়া
আছেন। আমি প্রণাম করিলাম। তিনি হই বাছ দিয়া
আমায় ব্কে ধরিলেন। সেই স্পর্শ চিরম্মরণীয় হইয়া
থাকিবে। তার পর বাঁধন খুলিয়া মাথায় হাত দিয়া
বলিলেন, "তোমার হবে। যোগ তুমি পাবে। আমার
কথা মনে রাধিও।"

মৰ্শ্ব বিদীৰ্ণ হইয়া ভাষ। বাহির হই**ল,** "আপনার সহিত আবার কি দেখা হবে ?"

তিনি সম্মেহে উত্তর দিলেন, ''হবে হবে। অনেক কাজ ভোমার সজে আমার করার আছে।''

ভার পর ভিনি নৌকায় গিয়া উঠিলেন। জ্যোৎমা রাত্রি,

যভদ্র দৃষ্টি চলে—নৌকাধানির দিকে চাহিয়া রহিলাম। ভার পর ঘরে ফিরিলাম ভগ্ন হৃদরে। কি হইল, ভাহা অবর্ণনীয়।

অনেক দিন কাটিয়া গিয়াছে। এপ্রিল মাস পেব হয়। সংবাদ না পাইয়া শ্রীশচন্দ্র আসিয়া জানাইল. "ব্যাপার কিছ বঝা বাইতেছে না, স্কর্ণনকে পণ্ডিচারী পাঠাইয়া দিব মনে করিতেছি।" স্থদর্শন পণ্ডিচারী গেল। ৰথাসময়ে ফিবিয়া আসিল। সভে তাতার একথানি আঁটা-খাম। খামের উপরে আমার নাম লেখা। খামখানা খলিলাম, সবিস্থয়ে দেখিলাম, তিন্টি মন্ত্ৰ তাঁহারই হাতে লেখা—জ্ঞান, শক্তি ও প্রেমের। মনে পড়িল তাঁহার অজ্ঞাতবাসকালে পার্ষের কক্ষে পল্লী-বালকদের লইয়া হাজার বার চীৎকার করিতাম—'জান, শক্তি, প্রেম দে।' এ সেই জ্ঞানের মন্ত্র, শক্তির মন্ত্র ও প্রেমের মন্ত্র। তিনি নির্দেশে দিয়াচেন—"প্রত্যেক মন্তটি ১০০৮ বার জপ করিতে হইবে।" শ্রীঅরবিন্দ নিজেও এই সময়ে ধ্যান করিতেন, মন্ত্র জপ করিতেন স্বচক্ষে দেখিয়াছি। স্থামারও গুরুমন্ত্র ছিল, সাধনাও ছিল। শ্রীঅরবিন্দের এই মন্ত্রদানে আমার অন্তরে হল্ বাধিল। কিন্তু তাঁহার মন্ত্রই সাধিলাম। সেই পত্তের পাশে একটি ঠিকানা লেখা চিল, ইহা পণ্ডিচারীর কোন ভদ্রলোকের ঠিকানা। স্তদর্শন বলিয়াছিল, "অভ:পর এই ঠিকানায় তিনি পত্ত দিতে বলিয়াছেন। রাষ্ট এবং ধর্ম সকল বিষয়ক নির্দেশই আপনার নিকট আসিবে, আপনি শ্রীশবাবুর সঙ্গে পরামর্শ করিয়া কর্ম কবিবেন।" দে ১৯১০ প্রীষ্টাব্দের অক্ষয় ততীয়ার দিন-আমি পূর্ব-দীকিত হইলেও, এঅরবিনের দীকা সর্বাস্ত:-করণে গ্রহণ করিলাম।

### দেৰতা হইয়া জাগো

#### এনীলরতন দাশ

শরং প্রভাতে শেকালিকা বরে শিশিরসিক্ত বাসে,
সর্ক বানের নবীন স্থীবেঁ বর্ণ-কিরণ হাসে।
চারপের বল চক্ষনা-ভাষা বক্ষনা গার বনে,—
অন্তরে কভ কাষনা বে কাগে, কভ ভাব আসে মনে!
কভ না হক্ষে সে ভাব প্রকাশ করি আগমনী গামে,—
তবু কি ক্ষমী সাভা দাও ভা'ভে? জাগো কি মোবের প্রাণে?
ভোষার প্রভিষা গভিষা বোবন করি মাগো দশভুজা,—
বোভশোগচারে বহাসবারোহে করি বোরা ভব পূজা।
বুবেঁ ভভিত্র বভা বে বহে, অন্তরে বরুভ্বি;
সক্লি হলনা, সক্লি বিধ্যা, সব কাঁকা,—জানো ভূবি।

লালগা-কাৰ্যা-কৃত্যকালিয়া-হিংসার কর্মন ক্রমন কর্মন ক্রমন কর্মন ক্রমন ক

### তপোগিরি বা রামটেক

#### बीमहोस्यनाथ मृत्याभाशांश

মনে হয়, দ্বাছ ও প্রচাবের অভাবেই মধ্যভারতের বিধ্যাত ভীধরান রামণিরি বা বামটেক সারা ভারতের ভীধরাতীর কাছে বিশেষ পরিচিত হয় নি। পুরাতন বিবরণীর মন্ধিরে এই রামটেক বে-কোন বড় ভীধহানের সমপ্র্যায়ভূক্ত হতে পারে।

মধ্যভারতের প্রধান শহর নাগপুরে পৌছেই মনে হ'ল রামচন্দ্রের রামটেক বেভে হবে। ক'দিন ভাগে কার্তিক মাসে উৎসব হরে গেল, কিছ উৎসবের ভিড়ে সব কিনিষ ভাল-ভাবে দেখা সম্ভব নর, ভাই সে সময়ে বাওয়া হর নি। ব্যান করভে হলে নির্জ্ঞনভার প্রয়োজন। যেখানে বহুলোকের হৈ চৈ সেধানে দেবভা অপেকা ভার পাওা ও ভাদের আভ্যরই মনকে দেবভার কাচ থেকে দরে চেনে নিরে বার।

রামটেকের দূরত্ব নাগপুর থেকে উত্তরপূর্বে ২৮ মাইল।
এই ক্লে শহরট জনলাকীর্ণ আলাগত পর্বতশ্রেণীর ত্বারা প্রার
অর্চরভাকারে পরিবেটিভ। রামটেক পর্বান্ত বেদল নাগপুর
রেলওরের একটি শাখা লাইনের যোগ আছে। রেলপর্ব
ত্বান্ত ভাল রাভা দিরেও বোগাবোগ আছে—নির্দারিভ সমরে
বাদ চলাচল করে। শহরটি রামটেক পাহাভের পাদদেশে
বেশ স্করভাবে গভে উঠেছে—দেখে মনে হ'ল ক্রমবর্জমান।
শহরের ভিতর সরকারী তহলিল আপিস আছে। রেল টেশম
বেকে শহরের দূরত্ব প্রার হ' মাইল।

বছদূর থেকে রাষটেক পাহাড়ের উপরে সাধা সাধা বিদারগুলি দেবতে পাগুরা বায়—রামটেক টেশনে দেবেই এই বনোরৰ আবেট্টনীর মধ্যে কিছুক্ষণগু অতিবাহিত করা বাবে এই জেবে মুমটা বুলি হরে উঠল। সলী কৈনবর্দ্ধাবলয়ী বছ্ট বললেন, শান্তিনাথের বিখ্যাত মন্দির, বিগ্রহ, গুরুক্ল ইত্যাদি দেবে পোজা পরে পাহাতে উঠা যাবে। শান্তিনাথ-দেবের বিগ্রাচি দেবে রাগুরাই টিক হ'ল।

শাভিনাবদেবের মন্দির ও অক্রক্ রামটেক পাহাডের পারেই একটি ছোট পাহাডের পাদদেশে অবস্থিত। তগবাম বুদ্ধের বৌরবর্গ প্রচারের পূর্বের বর্জনাম মহাবীর আর্থাবর্গের শাধা বিশেষরূপে কৈন-মতাবলম্বী এক সম্প্রদার গঠন করেন—অহিংলাই তাদের ব্লম্জ। কবিত আছে, ব্যতদেব এই সম্প্রদারের প্রতিঠাতা। আদিনাব, অক্তিনাব, সন্তবনাব, অভিনন্ধনাব, শাভিনাব প্রতৃতি চবিবশ কম তীর্বন্ধর হিলেন। মহাবীরই শেষ তীর্বন্ধর।

ভিন শ' বছর আগেও শাভিনাধদেবের মন্দিরের অভিত ছিল না। ভংকালে লেখানে ছানীর ক্ষেক্ বর আদিবাগী

ছাভা বিশেষ লোকজনের বসভিও ছিল মা। প্রার সম্ভ স্থাম জন্মাতীৰ্ণ ছিল। ভাৰম ঐ সভাল স্থাম নাগপাৰের (फॅं।अरक बाताप्रीवश्रमञ्जू काक्षा जारहरवत कशीम किया। काश्री जारहर अक्षिम मनी रहिमाम भारतीय प्रतिक जीतामणीय पर्नाम বামটেক আসেন। ভৌগলে বামগীতার প্রা শেষ করার পর প্রসাদ গ্রহণ করেন, কিন্তু মন্ত্রী শাহজী বলেন বে, কোনও कीनवर्छि पर्मन ना इटन छिनि कन्धक् कदाल शादन ना। শাহতীর দচ বিখাস যে নিকটেন কোথাও ভগবান ভীর্বছরের वर्षि चार्षः कादन किनमार्ध्य (मर्श चार्षः औदावहस अक्कन खरू भीम हिल्लन । आओ माट्टर माठकीटक ठांत हाकी निरव क्यांग्रेत देवनयन्तिद्व द्याच वनतान, किन्त भावजी मानव বিখাসবশে আদিবাসীদের কিঞাসা করার ভানতে পারলেন (य. (कांके भागास्त्र भागास्य मधीत कमलात मार्था अक . ম্প্রমুখ্য আছে। শাহকী ক্ষম পরিধার করার ভঙ্গে লোক নিয়ক্ত করেন এবং ভক্তের বিশ্বাস সভ্যে পরিণত চয়। পর দিন প্রায় ২০ ফুট উচ্চ শান্তিনাবদেবের মৃতি আবিদ্ধত হয়। যোড়শ তীৰ্ণছত্ৰ শান্তিনাৰদেব-ৰৃত্তি আবিদ্ধাৰ করার পর শাহনী ক্লঞহণ করেন ৷ এই পুকায়িত তীর্থকরের মৃত্তি আবিভার ক্ষার শাহজীর নাম চির্মারণার হরে থাকবে। আগা সাহেব **এই मिनद-मश्काद अवर दक्षनाट्यक्रावद क्रम श्राहद कर्य ଓ मण्यक्रि** काम करवन । वर्ख्यारम अरे यिक्तव माननुरवत विनवत दिक्य-সমাজের কর্ত্তভাষীনে আছে।

পাৰ্যনাপ, শাভিনাপ, আদিনাপ—এই সকল ভীপ্সরের মৃতিগমেত আটট মন্দির আছে। প্রধান মৃতি শাভিনাপ-দেবের। মন্দির ভালর বছরের কিছু বেট হবে, কিছু পাভিনাপদেবের মৃতিট আহুমানিক হ' হাজার বছরের পুরাতন। কাতিক মাসের মাবামাবি বধন রামটেকে মেলা চর তথন এবানেও মেলা বলে এবং বছ বাজীর সমাগম হয়।

দিগথর কৈনসমাজ শিকা-বিভারের ক্ষত মন্দির-সংলগ্ন একটি শিকাকেন্দ্র ছাপন করেছেন। সুন্দর পরিবেশের মধ্যে প্রীশান্তিনাথদেব গুরুকুল (বিদ্যালয়) ও ছাত্রাবাস অবস্থিত। এই গুরুকুল ১৯৪৩ সালের ১৪ই জুলাই প্রতিষ্ঠিত হয়। এখামে পাশ্চান্ত্য শিকাবিভারই প্রবান লক্ষ্য নম্ব-প্রাচ্য সংস্কৃতি, বিশের করে কৈনশান্ত শিকাদানই প্রবান উদ্দেশ্ত। ছাত্র-সংব্যা ক্ষম, বর্তমানে ত্রিশুটির বেনী নয়। ছাত্রদের থাকা থাওরা ইত্যাদির ক্ষত কিছু বরচ দিতে হয়। অবশ্র গরীব ছাত্ররা এই বরচা দেওরা থেকে রেহাই পার। আমাদের নিক্ষ আফর্শে শিকিত করে ভোলার বে বছতী প্রচেষ্টা এখানে চলান্য কর দেশে খুব আনন্দ হ'ল। ছাত্ররা ইংবেকী অষ্টম শ্রেণী পর্যন্ত পড়ে আর সঙ্গে সলে কলকাতা বা কাশীর 'বিশারদ' পরীকার ক্ষম্য প্রত হয়, নংগপুরের বিখ্যাত সমাক্ষ্যণ শেঠ কিশোরী-লাল বারে,কীর অর্থে এই আদর্শ প্রতিষ্ঠান গড়ে উঠেছে।

সংরা সকাল শান্তিনাথদেবের আশ্রান্তে কাটল। মন্দিরের দেবক ও বিভালভার ছাত্রগণের মধ্র ব্যবহারে বেশ আনন্দ পাওয়া গেল। প্রধান দ্রষ্টব্য রামগিরি, ভার সৌন্দর্যা আমাদের মনকে গভীর ভাবে আকর্ষণ করতে লাগল।

ভাষরা রাম'গরি অভিমুখে রওমা হলাম। ছোট
পাহাছটির পরেই বছ রামটেক পাহাছ। শহরের বতীসীমানা এখান পর্যন্ত প্রসারিত হরেছে। পাহাছের গা
দিরে একটা সক্র রাভা উপরে উঠেছে। এটা ঠিক ভীর্থাঞীদের রাভা নর, ছানীর লোকেরা এই রাভার পাহাছে উঠানামা
করে, গোচারণ করে নজরে পছল। পাহাছের গা বেঁসে
ছেলেরা থেলা করছে, বিদেশী ন্তন লোক দেবে কোন
কৌত্হল নেই। এ রক্ম যাঞ্জী দেখতে তাঁরা অভ্যন্ত হরে
গেছে। সাধারণতঃ ভীর্জানে অভ্যন্তভাবে হাত পাভার
নম্মা দেখে বিরক্তি জাগে। কিন্তু এরান্ত দরিক্র তবু আত্মমর্থাাদাবোৰ আছে, মা-বাপের কাছে হাত পেতে ইছানার
শিক্ষা পার্যনি।

পাহাছের গা বেঁদে রামনীর দর্শনে এগুনো গেল। রামটেক পাহাছ বিভিন্ন নামে পরিচিত—রামগিরি, সিপ্রা-গিরি, তণোগিরি ও শৈবালগিরি। উইলসম সাহেব প্রভৃতির মতে রামটেকই মেবদুভের রামগিরি। গেবানে:

> ৰক্ষতক্তে জনকভনয়াস্থানপুণ্যোদকেযু স্লিক্ষ্যায়া ভক্ষয় বসভিং ৱামপিৰ্য্যাশ্ৰমেয় ।"

কেহ কেহ অবশ্ব বলেন, রামগড় বা অমরকণ্টক পাহাড়েই কালিলাবের রামগিরি আশ্রম। যা হোক, ভৃশ্ব দেবে মনে হয় সভাই কালিলাবের মত কবির কাব্যপ্রেরণা জাগাবার উপযুক্ত হাম। 'কাজা বিরহ্ওক্রণা' যক 'শাপেনাভংগমিত-মহিমা' বর্বকাল এই পাহাড়ে অবস্থান করেম। সেই 'কণ্ঠা-শ্লেমপ্রণিয়িশী' বিরহী যক তার প্রণরিমীর কাছে 'প্রিরারাঃ সক্ষেশং মে হর' এই বলে অলকাপুরীতে প্রিরার মিকট মনের তাব প্রেরণের বাসনা জানাম। অনবত্ব মলাকাজা ছল্মে এরগ কাব্যরস-পরিবেশন খান-মাহাজ্যেই সম্ভব মনে হয়। রাম-টেকের নিকটেই নন্মর্জম বা নগর্জন নামে একটি প্রায় আছে, এই গ্রামটি চতুর্ব শভাকীতে বিশেষ প্রসিদ্ধিলাত করে। মনে হয়, এটি সেই সমরে কিছুকাল বিদর্ভদেশের রাজ্বামী ছিল। বিদর্ভদেশের এই রাজ্বামীতে অবস্থানকালেই কবি কালিলাস রামটেক পরিদর্শন করেম ও সেধানকার প্রাকৃতিক দৃত্তে মুগ্ধ হরে বেবসূতে রচনা করেম।

পাহাড়টর অপর এক নাম সিকুরাগিরি। পাহাড়ের

পাণর ভাঙলে পাণরগুলি লাল রঙের মনে হয়—প্রবাদ হিরণ্যকশিপুর রক্তে এখলি লাল হরে গেছে। হিরণ্যকশিপু ও তার পুত্র ভক্ত প্রহলাদের পৌরাণিক কাহিনী স্পরিচিত।

রামটেক পাতাভের প্রধান স্তর্বা—'ভপোগিরি' এই নাষের সলৈ যুক্ত। কথিত আছে, গ্রীরামচজের রাজত্বালে পত্ক নামে এক ভক্ত শুদ্র এই পাহাছের উপর কঠোর ভগভা আরম্ভ করেন। শুদ্রের পক্ষে এরপ কঠোর ভপভা করা তখন ছিল অশাগ্রীয়, এবং এই অশাস্ত্রীয় কাজের জড়ে এক ব্রাকাণ-পুত্রের অকালয়ত্য হয়। রামরাক্ত্রের সময়ে রাকার নিকট যে-কোন বিষয়ে অভিযোগ ভানাবার অধিকার প্রভার ছিল। বছ অফুসভানের পর শহকের সেই অশাস্ত্রীয় ভপভার কথা বামচন্দ্ৰ ভাষতে পাৱেন ও বাজা বামচন্দ্ৰ তাঁৰ চন্দ্ৰহাস ভরবারির সাহাব্যে শুখুকের মুওছেদ করেন। ছিল্ল মন্তক উর্দ্ধে উঠে রাম নাম কপতে থাকে। তক্ত পথুককে রামচন্দ্র বর প্রদান করতে চাইলে শমুক প্রার্থনা করেন তার ভপঞ্চার ৰাৱা উন্নত এই পাতাভ—যা তপোগিরি নামে প্রসিদ্ধি লাভ कट्टट्स (अन्बाटन जामकी दयन ठावि यूत्र वनवान कटवन। अना বরে শতুক নিঞ্চ দেহের শিবলিকত্বপ্রাপ্তি কামনা করলেন। वायम्ब ७ एक व वाक्षा पूर्व कवलन । त्रहे निविधक बे बेबन শুয়েশ্বরশিব নামে প্রসিদ্ধ। রামন্দীর অবস্থিতির নিদর্শন হিসাবে क्षेत्र प्रमित्वर प्रेश्रत प्रांत्व प्रात्व प्रकारमव सक्काराव साव এক ভ্যোতি দেখতে পাওয়া যায়। ভক্ত ভিন্দ এই ভ্যোতি-দৰ্শনের সঙ্গে সঞ্চে আকুলভাবে শ্রীরামচন্ত্র ও ভক্ত শবুকের কথা শ্বরণ করেন।

अहे भागांकिएक देनविनिति वा देनवानिनितिक बना दव. কারণ শহর মহাদেব এই পাহাতে অবস্থানের হত আশন তত वह निवदक जारमन। भूक भवदकत भाष्टिविवास्मत शत গ্ৰীৱাৰচল অগভায়নির আশ্রমে আসেন, কিছ তার জ্যোতি:-वृष्टि ও পদচिक निप्तर्गन विजादि (जवादन दिएक वाब । वाब-গিরি পাহাড়ের উপরে বে এরামচজের পদচিক্ত হিল ভা कालिमार्जित (स्वपृष्ठ शार्टि काना बात । यक छात जनका-পুরীতে অবন্থিতা প্রিয়ার নিকট সন্দেশবাহী মেঘকে বলছে --- वटेम पुरमार त्रष्ट्रपण्डिशटेमत्रक्रिकर (बवनान्छ । अ**हे** शम्बिक कानियान कर्डक श्रीकृष्ठ द्राविन जन्नाम द्रव । अहे श्रमित्स्व কথা আরও স্পষ্টরূপে ভানতে পারা যার প্রভাবতী গুপ্তার ভাত্ৰকলক থেকে। বিভীৱ চক্ৰথণ্ডের (অৰ্থাৎ বিজ্ঞানিভ্যের) কন্যা প্রভাবতীর বিবাহ হয় বিদর্ভের ভেক্টরাক্ষবংশের বিভীয় ক্রদ্রভার সহিত। বিবাহের করেক বংসর পরই ক্রদ্রভার ৰুত্যু হৰ এবং প্ৰভাবতী শুপ্তা শিশু পুৰের নামে রাজত্ব চালাতে ৰাকেন। বেরারের বাৰমপুরের এক ভাত্রকলকে আছে বে. ১২ই कार्श्विक एक णांदिर्य दांबिशविद जनवारमद शमितिस्व পুজার উদ্দেশ্রে প্রভাবতী দেবী কবি দান করছেন। বছা- ভবি কালিদাসের রচনা ও প্রভাবতী গুপ্তার বিবরণ থেকে মনে হর, প্রীপ্রর পঞ্চর শতাবীতেও এই পাহাছের উপরে ভগবান ব্রীরারচন্দ্রের পদচিক্ষ বিদ্যান ছিল, কিন্তু কালক্রমে তা লোগ পেরেছে, অথবা প্রত্যক্ষ চিক্ষ বিল্প্ত করে ভারই উপর মন্দির ভোলা হয়েছে। এরপ প্রত্যক্ষ চিক্ষের বিল্প্তির কথা বহু প্রাচীন তীর্ণের পূর্ব্ধ-ইভিহাসে পাওরা যায়। রামগীভার মন্দিরের পরে অভাভ বিগ্রহ ও মন্দির প্রতিন্তিত হয় এটাই সাধারণের অভ্যাভ বিগ্রহ ও মন্দির প্রতিন্তিত হয় এটাই সাধারণের অভ্যাভ বিগ্রহ ও কল্মিত হলে দেবভার বর্ধা-দেশের কলে এই মৃত্তি ছটি পাওয়া যায় ছবওয়ালা পুডরিনী থেকে। ভাত্রকলকের ভারিধ অভ্যারে ভক্লা কার্তিকের শেষে এখনও উৎসব অভ্যতিত হয়।

উৎসবের সমরে রাষ্টেকে প্রায় এক সপ্তাহকাল মেলা হয়। মধ্যপ্রদেশ হাড়া ভারতের অভাত অঞ্চল থেকেও কিছু কিছু তীর্থান্তীর সমাবেশ হয়। প্রধান উৎসব দিনে মধ্যরান্তে হল্দে রঙের (পীভাগর) বল্প রামচন্তের মন্দিরের উপরে পোড়ান হয়। পুরাণে আছে, পৃথিবীর শান্তিরকার জভ দেবাদিদেব মহাদেব ত্রিপুরাহ্মর দৈত্যকে হত্যা করেন, সেই পীভাগর দাহ ব্যাপার্টি সন্তবত: মহাদেবের ত্রিপুরাহ্মর-হত্যার খারক হিসাবেই অভ্তিত হয়। প্রামচন্তের জন্দিবস রামনবর্মীতেও এখানে বহু ষাত্রীর সমাবেশ হয়।

শান্তিনাপদেবের মন্দিরে আগে না গিছে টেশন ভেডেট সাধারণ ভীর্বঘাতীরা যে পথ ধরেম সেই পথে শতর পার ভয়েই পড়ে चायामा बादा कमानश । अहे कमानश्र विवासीत्नांकिल পাহাত-পরিবেটত ও জলাশখটির চত্রদিকে সাদা সাদা অনেক-धनि मन्दिदा भवार्यभः अधारमद मुख्य अणि मर्गादमः প্ৰবাদ আছে ৰে. একদা ভূষ্যবংশীয় বাজা জন এই পাৰ্বতা-নকলে শিকারে আসেন। রাজা অহু ছিলেন কুঠরোগগ্রন্থ, विकरियादा जाँदक विदायह कराक शास्त्रम विवा भारत वर्षाटम कलामञ्ज किल मा, किल माळ अक्छि वंदर्श। ঞার্ছ অম্ব বর্ণার জলপানে পরিতৃপ্ত হয়ে হাত পা ধৃতে ादकन, किन्न काक्टर्यात विश्वत कांत (मटकत स्थ (य शारन (भ) পার কল লাগে সেই পেই স্থানে কুঠরোগের চিক্ত লোপ পেথে ার। এতে মুগণং বিশ্বিত ও আনন্দে উংক্ল হয়ে রাজা <sup>বই</sup> ৰল ৰাৱা সৰ্বান্ধ ৰৌভ করলেন। বিশ্বরের উপর বিশ্বর -ভারপর রাজার দেহে কুঠরোগের আর লেশমাত্র চিহ্নও ेन मा। बाका कह कुई दानि एव छै भका दाब कह रमहे कम विष करत क्लानंत रुष्टि करतन। अहे कल बर्लंड मनाकिनी छ বাণদীর গদার ভার পবিত্র। এবানে পূর্ব্ব-পুরুষের অধি বৰ্জন বিশেষ পুণ্যকৃত্য বলে গণ্য হয়। রাজার নামাত্রগারে विश्वत मात्र स्टब्स्ट कहाना द्रम ।

অবালা হ্রদে সাম-পূজা সেরে রাষটেক পাহাড়ের উপরে

উঠতে হয় অনেকগুলি সিঁ জি তেলে। পাধরের সিঁ জিগুলো কোণাও উঁচু, আবার কোণাও শীচু, রাভাটি বেশ মনোরম। পাহাজের উপর বিরাট ছর্গপ্রাকার বেটিত স্থান, তারই ভিতর মন্দির। শিবাকীর মারাঠাশক্তি পাঁচভাগে বিভক্ত হয়ে গেলে, রামটেক প্রভৃতি স্থান মাগপুরের ভোঁগলের অধীনে আগে। সেই সময়ে মুসলমানদের প্রভাপ মন্দীভূত হয়ে এলেও একেবারে বিল্পু হয় নি। ভাই ভোঁগলেরাজকে সর্বাদা সজাগ পাকতে হ'ত। এই পাহাজের উপর এরপ সুদৃচ ভূর্গ নির্দ্ধাণ করার ছই উদ্বেশ্ব-প্রথমতঃ স্থানটিকে অভতম প্রভিরোধ-গাঁটিতে পরিণত করা, আর বিভীয়তঃ রামজীর পদাছিত ও মন্দিরাদি-শোভিত হিন্দু-ভীর্ণকে মুসলমান আক্রমণের হাভ থেকে রক্ষা করা;

বেষ্টনীর প্রবেশ-পথের আগে একটু বাঁ দিকে গেলেই
শব্দের লিক্ষ্ প্রিথ্রেখন মহাদেব। মন্দিরের কাছেই একট
ক্ষে বভীও দোকান—খাবার জিনিম বেশ পাওয়া যায়। এর
কাছেই প্রায় সম্পূর্ণ একটি ছোট মসজিদ নিজনভার মাঝবানে
দাঁড়িরে আছে মুসলমান-অভিযানের সাক্ষারূপে। এই
মসজিদটি নাকি স্থাট আওরলজেবের এক সেনাপভির
মৃতিচিহ্ন হিসাবে প্রভিত্তিত করা হয়েছিল, ভারণর দীর্ঘকাল
অভিবাহিত হয়েছে, দেশের বুকের উপর কতই না পরিবর্জন
হয়েছে, কিছু পরধর্মসহিষ্ণ হিন্দু এই মৃতিচিহ্নকে যথেই
ক্রযোগ থাকা সরেও ধ্বংস করেনি। ভক্ত শধ্কের
ধ্রেখন মন্দিরট জনাদ্ত অবস্থার আছে, লোকসমাগমও কম
হয়।

তুর্গপ্রাচীরের নিকটেই ভর্গানের নরসিংহমুর্তি। হিরণ্য-কশিপুকে হভাৱে পর নৃসিংহাবভার তাঁর বৃহৎ পদা যেখানে मिक्कि करतम (जनारन अवही कम नक्षतिवीत स्क्रि श्राह्म अपरमङ अधिकम कराज रह दहार-महका, अधारन अकि दूहर वबारुम्धि चार्छ। छनदात्मत्र अहे यदारुम्धिव छेनदाव मि..-जात्म जामाश्रीच मिट्स भाव द्यार मान्छ पाटक **चान्छत. कि ब** পার হতে গিয়ে কুডকার্যা না হলে ভাকে পাপী বলে ৰুৱে নেওয়া হয়। বরাহ-দর্কার পর সিংহপুর দরকা এবং ভারণর মারাঠা-কামানশোভিভ ভৈরব দরজা। সেদিনের বৃক্তিগণ সম্ভবত: মতাদেবের আখিস লাভ করে অমিত বিক্রমে এই प्रवक्ता त्रका करालम । देखरा-परकार भारते लेबाम प्रवका-পোকুল দৰজা, অভান্তরভাবে গোকুলের অংশ্বর ভগবান আগ্রাম-চলের বিষ্ঠা এই দরকা পার হয়ে হিন্দু ছাড়া আছ वर्षावलक्षीत अत्वर्भ निरंधन । क्यारमता निरंध मावाक्ष निरंध নেই—এই সীমার ওপারে। ভাই ভপোগিরির রামসীভার ছবি পাওয়া যায় ন।।

উচ্চ পাহাছের উপর স্থার শুত্র রামসীভার মন্দি টি— শান্তিনাথলেবের মন্দির বা দূরবর্তী স্থান থেকে তাকা স্থান

ৰেভ কুণোভের মৃত মনে কয়। বিপ্রতের সামনে নাট্মলিরে ভজেরা সমবেত হন, মন্দিরে পূজা হছে, কেউ কেউ তজন পান করছেন মনের আনন্দে। নাট্যন্দিরটতে ভেঁাসলে রাজাদের ছবি আছে আর আছে দোহলামান করেকট ভরবারি, মনে হয় একদা সম্চকালের জ্ঞ এ দের কিছু श्रदाक्य दिन किन अवन क्वन माजावर्कन कदाद । कहै-পাধরের তৈত্রী এই বিগ্রন্তহর ভক্তের প্রাণে ভাষক ভাগিছে ভুলতে কভ বুগমুগান্তর বরে।

ساسة

রামসীভার মন্দির ছাড়া লক্ষণ, কৌশল্যা, হত্ত্যাম প্রভৃতির ছোট ছোট যদির আছে, সেগুলি বেশী পুরদো মনে হয় मा। वावमामरदा बन्धिकी वदार चार्यकाक्क शूदाना माम हव। अरे मन्त्रिके कम्मः स्वर्त्तत मूद्ध क्षण अनिद्य याधवाव উপস্থিত পুরাতত্ব বিভাগের ভত্তাববানে আছে। তৈরব-দরজার উপরে ভোট বর ও ফাকা জারগা আছে। সেবানে বগে শহরের एके. विराय करत जवामां द्वारत एक जिल्हा वर्गात्व वरण शिक्षः ভাভ হয়। মনে হয় যেন এক অপরূপ রাজ্যে এলে পড়েছি।

রামজী ও অভাভ মন্দির দেখা শেষ হ'ল, ইভিমধ্যে প্রবাদেবত অনেকটা পশ্চিম দিকে বেমে এসেছেন। তাই ধ্যেখর মচাদেবের মন্দিরের পথ ধরে অবভরণ করতে ত'ল बाबटिक भटबड़े (बार्ड, किन्द्र लाकनश्या यम हानादाह বেৰী। পোষ্ট-আপিস ইত্যাদি স্বকিছুই আছে, ভাকে ছ'বান **कि कि क्लाब। बाबर्टक हिम्माब कि इस्त बालिक्ट** विम चार्य-दिन्तित श्रीताचन अरे कातर्व चात्र विमी **টেশন-মাটার একজন বাঙালী ভদ্রলোক দেশ ছেভে স**হে প্রবাসী হয়েছেন চাক্রিছতে। তার বৈচিত্র্যবন্ধ জীবনেং কাহিনী ভনতে ভনতে গাড়ী প্লাচকরনে হাজির হ'ল। ভারপং রাভ দশটার নাগপুরের পাছনিবালে পৌছে, সে রাজির মং कार्यक मध्या (नेम ।

## শিশ্পীর ব্যথা

🗃 আঞ্জোষ সাঞাল

चाबाद्य हिटना ना जुबि,— लाबाद्यक्ष नाहि चाबि हिनि ;— পুছতর পারাবার আমাদের মাঝে কলোলিছে রাত্রি-দিন। ভোষার হুদ্ধমন মোর কাছে চির অধকার ! ভবু আৰি আপনার আনন্দবেদনা, জীবনের অভ্ভৃতি,

আবেগ-উচ্ছাস

হলারিভ ক'রে তুলি স্বত্যে বসি' ভোমারি লাগিরা ভবু হে আত্মার আত্মীর আমার ! (स-पून्क केव्हिना केर्ड ब क्षम,— ভৰ ৰশ্বভটৰূলে সে কি কভু ভোলে কলভান ? সকোপৰে ৰে ছ:ৰ মীৱবে সহি আপনার মদে.---ভোৰায় অন্তৱে কিগো লাগে ভার তীত্র বহিভাপ ? चवरां कि नव जून ? ৰাৱ হুৰ্ব, ৰাৱ ব্যথা ভাৱ ভাহা একান্ত আপন ? বিশ্বক্ষ নাহি পাৰ কড়ু ভাৱ নিগুঢ় আৰান। এ অক্য সীমাবৰ ভাষা কড়ুকু পারে ভোষা দিতে পরিচয় ৰোর স্বপ্ন আর আকাজার ?

কি আকৃতি ভাগে প্রাণে প্রকাশের লাগি'-কেরণে বুৰিবে তুমি বলিবারে চাই বাহা, কভটুকু অভিব্যক্তি ভার-এ সুত্র কবিভাৰানি মোহ वानविष भन्ने यवा बदा द्ववा भन्न वाभविदा-छर्द छेविवादः ঐ মতো উঠে হিন্না আকুলি' ব্যাকুলি' অভ্ৰভেদী ভাবলোকে করিভে বিহার,— উড়ে যেতে সুতুৰ্গম মনোলোকে তব ब इर्कन क्यमांच शक्काद (बांद । কোৰা ভূমি-কোৰা আমি ! আমার এ ব্যাকুলভা, অপ্রান্ত প্রয়াস তাহার করুণ ইভিহাস—কেমনে কানিবে ভূমি ! ক্ষেনে বুবিবে তৃষি ওগো বন্ধু মোর,---এ ৩ধু কবিভা নয়--- মর্পের মুকুর,---শীবনের অবিকল প্রভিবিদ্ব নোর,---ब (करम एक नव-- छएव प्लेक्न । ধুপের নীর্ব দাত দেখ নাই চোখে; তথু তার মাণ মাভাবে ভূলেছে ভব প্রাণ। षावि निधी--षावात पीवन তিলে ভিলে পুড়ে-মরা আরভির ধূপের বছন ;---বাহটুকু যোর ভবু—সৌরভ ভোষার।

## আমার চীনভ্রমণ

#### ত্রীপরিমল গোসামী

আমার চীনভ্রমণের কিছু জুমিকা আছে। এই ভ্রমণব্যাপারটি আসলেঁ রফার ব্যাপার। ইতরাং বিশ্বয়ের কিছু
নেই। বফা করে চলায় আমরা অনেক দিন ধরে অভ্যন্ত।
বা চাই তা পাই না, শ্বলি থাকতে হয় তার পরের



₩-5**१-**ਐ

জিনিগটিতে। ইংরেজীতেই কথাটি শোনায় ভাল—next best। অর্থাৎ বেটি পাওয়া গেল না, তার বদলে তার অহুকর আর একটি জিনিদ। চালের অভাবে বেমন গম, ধৃতির অভাবে হাফ-প্যান্ট। কিছুক্দণ ঘাঁৎ ঘাঁৎ করি, ভার পর নিশ্চিস্তমনে দব মেনে নিই।

আমার চীনভ্রমণও এই অগত্যা মেনে নেওয়। বাংলাদেশ থেকে সম্প্রতি (সেপ্টেম্বর ১৯৫১) বে সব সৌভাগ্যবান
চীনদেশে রওনা হচ্চেন, বলা বাহল্য আমি তাঁদের দলভুক্ত
নই, অথচ আমারও চীনদর্শন-বাসনা প্রায় চীনের মতই
প্রাচীন। হয় তো এই বাসনা হাজার ছই বছর আগেকার
চীন-ভারত মৈত্রীর প্রভাব। যারা সে যুগে চীন থেকে
ভারতে এসেছিলেন এবং ভারত থেকে চীনে গিয়েছিলেন
ভীদের অদুশ্র হাত আকও চীন-ভারত মৈত্রীগঠনে সাহায্য

করছে। তাই শুধু আমার নয়, সম্ভবত ভারতবাসীমাত্তেরই
মনে চীনত্রমণের একটি চেতন বা অবচেতন বাসনা আছে
অবচ বর্তমান সময়ে এ বাসনা পূরণ করায় অস্থবিধা আছে
খুবই। বর্তমান চীন তপ্ত তৈলকটাহ, ভবিশুং চীনসঠনেই
মশলা ভালা হচ্ছে সেধানে। এ চীন নিশ্চিম্ব মনে দেখ
চলে না। নিশ্চিম্ব মনে দেখতে হলে দেখতে হয় কনফিউশিয়াস বৃদ্ধ লাওং-সের চীন, ফা-হিয়েন হিউয়ান-সাঙেই
চীন। অর্থাৎ প্রাচীন চীন।

দৌভাগ্যবশত একটা স্থবোগ জুটে গেল বাংলাদেশের



बाभाव क्या चक्रम हीनाएव हामचाव काक

নিমন্ত্রিতদের চীন রওনঃ হবার পূর্বমূহুর্তে – ল-চং-গী নামক এক চীনা যুবকের সঙ্গে পরিচিত হয়ে। তাকে দেখেই মনে এল সেই ইংরেজী কথাটি— next best।

অবিলয়ে চীনভ্ৰমণ আয়োজন শেষ করে ফেললাম।
এক দিন সকালে পলায় লাইকা ঝুলিয়ে ত্'জন রওনা হলাম।
ধাপা অভিমুখে। আমার এ চীন ধাপার জলাভূমির চীন,
কলুটোলা, ছাডাওয়ালা গলি, টেরিটিবাজার, ফিয়ার
লেনের চীন। ল-চং-গী বলল ধাপা থেকেই শুক্ক করা
যাক আমাদের প্রথম পর্ব। ঐধানে এক চীনা শহর
গড়ে উঠেছে চামডার কাজ উপলক্ষে। রওনা হতে বেলা
প্রায় ন'ট। হ'ল। বেলেঘাটার পথে বাস্-এ গিয়ে হাটতে
হবে মাইলথানেক। পথ অভ্যন্ত খারাপ। হিল্পা চলা
প্রায় অসম্ভব। ভাঙা উঁচুনীচু পথ মেরামত হচ্ছিল,

দর্বজ্ঞই পাহাড়সমান উঁচু পোয়ার গাদা। তত্বপরি মাঝে মাঝে বৃষ্টি হচ্ছিল। চলতে পা ক্ষতবিক্ষত হ'ল, তত্বপরি কালা এবং জল। বৃষ্টির ফাঁকে ফাঁকে বেটুকু রোদ তা প্রায় আঞ্চনের মতো গ্রম।



ज-**:**थ-इर

ক্রমে এগিয়ে চলেছি আর বড় বড় কারথানা সব চোথে পড়ছে। সবই চামড়ার কারথানা। সমুদ্রের মতো কলাছুমি। জলের মধ্যে বাঁশ পুঁতে পুঁতে কাঠের তক্তা বিছিয়ে
প্রকাণ্ড এক একটা মাচা করা হয়েছে। মাচায় একের পর
এক চামড়া বিছিয়ে মজুরেরা তাতে বং মাথাছে। পাশে
কতক চামড়া ঝুলিয়ে দেওয়া হয়েছে রোদে ভকানোর
করে। কিন্তু ঘন বর্ষণে কোন কাজই ঠিকমত হছে না।

ছু:খের পথ অতিক্রম করে ল-চং-গী ও আমি গিয়ে উঠলান ল-চং-গীর এক পরিচিত বাড়িতে। সেধানকার সব বাড়িই ট্যানারির সলে যুক্ত। আশা ছিল কতকগুলো কারথানা ঘূরে দেখব। কিন্তু ভাগ্য নিতাস্কই অপ্রসর, বাবার প্রায় সলে সলে ঘন কালোমেঘে আকাশ ছেয়ে এল এবং একটু পরেই প্রবল রৃষ্টি। আমরা বেখানে আশ্রয় নিরেছিলাম সেধানে পৌছেই বাঁশের মাচার এক অংশের মাত্র একথানি ছবি নিয়েছিলাম, দেরি করলে তাও হ'ত না। চলার পথে কারখানাগুলো বাইবে থেকে দেখেছিলাম, তার বেশি আর দেখা সম্ভব হ'ল না। কল চলেছে সব

কারধানায়। কোথাও চামড়া পালিশ হচ্ছে, কোথাও ঘবা হচ্ছে শাদা সোয়েড তৈরির জন্তে। ত্'এক জন ( জহুস্থ সম্ভবত ) লেপের মত চামড়া গায়ে দিয়ে তমে যুমোছে। চামড়ার গদ্ধ সমস্ত বাতাসে, তবে জায়গাটা একাস্কই থোলা বলে গদ্ধ উগ্র নয়। বৃষ্টির মধ্যে ঘরের আশ্রেমে বসে বসে বেটুকু সংবাদ গুনলাম তা হচ্ছে এই যে, চামড়ার কাজে অথবা জুতো তৈরিতে যারা নিযুক্ত তাদের সম্প্রদায় পৃথক, ভাদের নাম হচ্ছে "ধে"। এই ধে-সম্প্রদায় বহু প্রাচীন



চান-চুই-ভীর কাঠির সাহায্যে খাওরা

কাল থেকে চামড়ার কাজে হাত পাকিয়েছে। ক্যান্টনের ধে নামক জায়গা থেকেই এই নামের উৎপত্তি।

চীনদেশের এক একটা এলাকার লোকেরা এক একটি বিশেষ শিল্পকান্ধে বিশেষত্ব অর্জন করেছে। বেমন ক্যাণ্টনের আর এক সম্প্রদায় দারু-শিল্পে ওন্তাদ। ড্রাই ক্লীনিং এবং ডায়িং-এব কাজে ওন্তাদ সাংহাইবাসীরা। এমন কি দাঁত তোলা এবং দাঁত বাঁধাইয়ের কাজেও একটি বিশেষ জায়গার লোকেরা বিশেষজ্ঞ। এবা ক্যাণ্টনের ওপাম নামক জায়গার অধিবাদী। এই বে প্রেদেশ বা সম্প্রদায় ভেদে কর্মভেদ এটা এমনই এদের মজ্জাগত হয়ে পড়েছে বে, এক সম্প্রদায়ের লোক অপর সম্প্রদায়ের কাজ করতে গেলে অন্থবিধার স্বান্ধি হয়। যারা পথে পথে কাপড় ফেরি করে বেড়ায় তারাও একটা বিশেষ এলাকার লোক। এরা নাকি শানটুংবাসী এবং অধিকাংশই মুসলমান।

আমার সদী ল-চং-গীর পরিচয় কৌতৃহলোদীপক। এর পৈতৃক বাড়ি চীনদেশের আমর প্রদেশে, কিছ চীন দে দেখে নি, বাংলাদেশেই তার জন্ম, বরিশালে। এর পিতার নাম ল-ধে-হং। ল-ধে-হং-এর বর্ত্তমান বয়স প্রায় সম্ভর বছর। তাঁর বয়স যথন বারো বছর তথন তিনি তাঁর পিতা ল-চিন-ধি-র সংক আময় থেকে কলকাতা আসেন এবং



কলেকের হান্ত্রী হার-হ

ছ'বছর কলকাতা বাদের পর বরিশাল যান তাঁরই সলে।
ল-চিন-বি বরিশালে স্থপারি, তামাক ও লহা চালানের
ব্যবসা আরম্ভ করেন। ল-খে-হংও সেই ব্যবসায়ে নিযুক্ত
হন। বাংলাদেশের এই তিনটি জিনিস দিঙাপুর, পেনাং
প্রভৃতি জায়গায় চালান হয়। দীর্ঘকাল বরিশালে কাটাবার
শর, দেশ বিভাগ হলে তিনি গত ১৯৪৮ সনে কলকাতা
চলে এসেছেন। স্ক্তরাং ল-চং-গীও এসেছে পিতার সলে।
ল-চং-গী বহিশ বছরের মুবক, আজন্ম বাংলাদেশে থেকে
বাঙালী হয়ে গেছে, বাংলা লেখে, বাংলায় কথা বলে। গত
আই-এস্সি পরীক্ষায় পাস কয়ে এখন 'স্পেশাল বেললী'
নিয়ে বি-এ পড়ছে। ম্যাটি কুলেশনে সংস্কৃত পড়েছিল।
এদের বিত্র পড়হে। ম্যাটি কুলেশনে সংস্কৃত পড়েছিল।
এদের বিত্র ব্যবসা এখনও চলছে, সলে আছেন আর এক
আভি ভাই—নাম চান-চুই-ভী। ল-খে হং বৃদ্ধ কিন্তু
এখনও অসাধারেণ পরিশ্রমী এবং আটুট স্বান্থার অধিকারী।

আমার চীনভ্রমণের বিতীয় পর্ব ওক্ল হ'ল এঁদের তিন জনের সঙ্গে। ক্লুটোলা থেকে বেরিয়ে গিয়ে পৌছলাম চিত্তরঞ্জন এভিনিউয়ের এক আধুনিক চীনা বাড়িতে। ল-খে-হং এবং চান-চুই-তী এঁবা ত্'জনেই বাংলা বলতে পারেন, ল-চং-গীর বাংলা অবশ্য আরও মাজিত। স্কতরাং এঁদের সলে আলাপে আমার কোনই অস্থবিধা হ'ল না। যে পরিবারটির কাছে গেলাম তাঁরাও বখাসাধ্য আমাকে তাঁদের ঘরের থবর জানায় সাহায় করলেন। এঁবা প্রায়



আধুনিক চীনা হাত্র আং-ল-বা

চার পুরুষ যাবং বাংলাদেশে আছেন। গৃহক্তা বুন-চং বৈচে নেই। তাঁর স্থী এখন বৃদ্ধা, বয়দ তিরালী বছর। পরিচ্ছন্ন পরিবেশ এবং পোশাক-পরিচ্ছন্ন। বুন-চংও স্থপারি তামাকের ব্যবসা দিয়ে জীবন শুরু করেন। তাঁর ছ'টি পুত্র এবং ছ'টি কন্তা। ছ'টি পুত্র লিণ্ডু ব্যবসায়ে নিষ্ক্ত এবং অন্তবা বিদেশে চাকরি করে। একটি কন্যার তিন কন্যাও এক পুত্র। এই তিন কন্যার এক জন বি-এ পাস, এক জন ইন্টারমিভিয়েটের ছাত্রী। ছেলেটিও ইন্টার্মিভিয়েট পড়ে। কলেজের মেয়েটির নাম ছায়-ছ এবং ছেলেটির নাম আং-ম-বা। বুন-চং-এর ছয় পুত্রের ভিন জন ক্রিশ্চান। দৌহিত্র এবং দৌহিত্রীরা স্বাই ক্রিশ্চান। দেখলাম একটি টেবিলে মাভা মেরি, ছটি বুদ্মুর্ভি ও একটি হাস্তবত বৃদ্মুর্ভি (Laughing Buddha) সাজানো ব্য়েছে, একই সত্রে বার বেমন ইক্সা পুজা বা উপাসনা চলে। ছটি

ধর্ম পালাপালি, কারও সঙ্গে কারও বিরোধ নেই এবং উপাসকেরাও একই পরিবারভুক্ত। এই ঘটনাটি আমার বড়ই ভাল লাগল।



'পা' ঢাক্ৰাৰ চিত্ৰ

ঘরে নানারকম চীনা-শিল্প আছে, ভার মধ্যে একটি পাত্র দেখতে বড়ই হৃদর। চীনাভাষায় এর নাম পা। টিফিন-কেরিয়ারের মতে। চাংটি গোল কাঠের পাত্র পর পর সাজানো—এবং সেই রকমই হাতে ধরে ভোলা বায়। পাত্রগুলি দেড় ফুট ব্যাসবিশিষ্ট। উপরের ঢাকনায় হৃদর ছবি। ঢাকনাটা খুলে দাড় করিয়ে রেখে একটি ছবি তুলে নিলাম।

ছেলেমেয়েদের সঙ্গে ইংরেজীতে কথা বলতে হ'ল।

আমার চীনভ্রমণ পরিকল্পনার আর একটি অক এখান-কার চীনা মন্দির দেখার। এইখানে আবার আমার সহার হলেন চান-চুই-ভী। ল-চং-গী ভো সর্বদাই সঙ্গে আছে।

আমরা তিন জন নানা গলিঘুঁজি পার হয়ে পৌছলাম গিয়ে ডেমজেন লেনের প্রাচীনতম চীনা বৌদ্ধনিরে। মন্দিরটির নাম থান-ও-বিও। প্রকাণ্ড বাড়ি। মন্দিরটি দোভলায় অবস্থিত। একটা অভ্ত শাস্ত আবহাওয়া। দোভলায় থোলা প্রশন্ত ছাদ। তার পর মন্দিরের দালান, ভার পর মন্দির। তিনটি স্থসজ্জিত দরজা। প্রভারকটি দরজায় স্থকচিস্কভভাবে সিকের চিত্রিভ পদা ঝোলানো। একটি দরজার সজে বড় বড় অক্ষরে লেখা আছে "হাক্-কি-ই-পাব।" ভনলাম এর অর্থ "প্রবাসীদের কল্যাণার্থে"।

মন্দিবের ভিতরটা চীনা কাগজের ফুল ও নানারকম চীন-মাটি ও ধাতৃনিনিত মৃতিতে সাজানো। এক দিকে উঁচুতে ঝোলানো ডাম, অনাদিকে ঘণ্টা। বিশেষ উপলক্ষে এ ছটি বাজানো হয়। মন্দির কেজে ছু'ধারের ফুলের সজ্জার পিছনে একটু উঁচুতে বুদ্ধমৃতি। মন্দিরে কিছুক্রণ কাটাবার পরেই নিঃশব্দ পদক্ষেপে এক শীর্ণ বৃদ্ধ চীনা উঠে এল সিঁড়ি বেয়ে। তার বয়স ১০ বছর। এমন



ধান-খ-বিশ্ব মন্দিরের বুরুর্তি

শাস্ত এবং করুণ তার চাহনি যে দেখলেই মনে হয় এই থান-ও-বিওর প্রশাস্ত তথাগত মৃতির আবহাওয়ায় আশৈশব বাস করার ফলে দে নিছেই শাস্ত এবং আত্মগত হয়ে উঠেছে। বিংবা সেই করুণ চাহনি সম্পূর্ণ আফিং-এর কুণায় কি না কে জানে। এই বৃদ্ধ বিশেষ উপদক্ষে মন্দিরের ড্রাম ও ঘণ্টা বাজায়।

ইতিমধ্যে চান-চুই-তী করেকটি মোমবাতি নিরে মূর্তির সমূধে জালিরে দিলেন। এই বাতিগুলি মন্দিরেই খাকে, চীনে হৈ হিন, গায়ে ছবি আঁকা। মন্দিরের ভিতরের বাঁ পালের 'দেয়ালে কতবগুলো তাক আছে। গেখানে চীনাভাষার লেখা কাঠের অনেকগুলো শ্বভিফলক খাড়া কিবে রাখা হয়েছে। বিশেষ ব্যক্তির মৃত্যুর পর মন্দিরে যদি কোন অফুষ্ঠান হয় তবে তাঁর নাম-সম্বলিত এই স্মৃতি-ফলক এধানে রাধার নিয়ম আছে। একে বলে "চিন চাঃ।"

আতংপর আমবা টেবিটি বান্ধার খ্রীটের আর একটি
ন্যন্দিরে গেলাম। এটির নাম "কোরান-ইম-কো-বি-ড"।
১৮০৫ খ্রীষ্টাব্দে স্থাপিত—প্রবেশহারে লেগা আছে। এই
শান্দিরটি আকারে ছোট এবং অপেকাছত প্রবর্তী হলেও



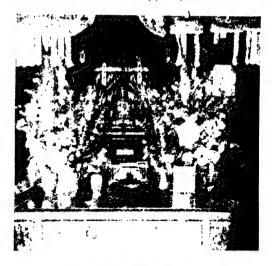
শান-ও-বিও মন্দিরের ১৩ বংসর বম্বন্ধ ঘণ্টাবাদক

এর মধ্যেও চীনা শিল্পের বিচিত্র সংগ্রহ আছে। সজ্জা সবই প্রায় ধাতুনিমিত। মন্দিরে বাইরের লোকের প্রবেশ রা ফোটো নেওয়ার সম্পর্কে কোথায়ও কোন বাধা-নিষেধ নেই বলেই মনে হ'ল, অবশ্য উভয় ক্ষেত্রেই বিশেষভাবে দক্ষিণা দিতে হয়েছিল।

এইখান থেকে বেরিয়ে থাটি চীনা পল্লীতে এসে
দীড়ালাম। চীনা দাতের ডাক্ডার, ওর্ধের দোকান, চীনামাটির জিনিসের দোকান। চীনা কাঠের মিন্দ্রী কাঠের
কাজে নিযুক্ত আছে কোনো কোনো ঘরে। চীনা ওর্ধের
দোকানে গিলে উঠলাম। দোকানে মেয়ে পুরুষ স্বাই
কাজ করে। সিভির উপর বোদে মাছ গুকানো হচ্ছিল।

েত্রজালারে ত্রকনো মাছও বিক্রি হয়। ছবি নেওয়ার

প্রময় মাছগুলো তাকের সজে নুলিয়ে দেওয়া হ'ল। কভক-গুলো দোকানে চীনামাটির পুতুল বছমূতি চায়ের পাত্র



ৰান-ও-বিধন্ন ভিতৰে দৃষ্ঠ পেয়ালা ইত্যাদি আ'ছে। কিন্তু দাম যা ওনলাম তাজে চমকে উঠতে হয়। এই চীনা পলীতে কোনো কোনো চীনা



মন্দিরমধ্যস্থ বাতৃনিমিত নিংহমৃতি

স্থপারি হলুদ চীনাবাদাম প্রভৃতি ব্লীচ করার কাজ করে। গুদামের মধ্যে এক শ দেড় শ হ'শো বস্তা স্থপারি বা বাদাম বেখে সেথানে গছক আলানো হয়। গছকের খোঁয়ায় (সালফায় ডাইঅক্সাইড) ঐ সব জিনিসের বং পথিছার করে দেয়, তাতে বেশি দামে বিক্রী করার স্ববিধা হয়, কারণ দেখতে ভাল হয়। এক শ বন্ধা স্থারি ব্লীচ করতে সের দশেক গছক লাগে।



वूब-४९ शदिवाद्यत कर्जी

চীনারা কলকাতা শহরের অস্তত তু'শো বছরের বাসিন্দা। ইংরেজদের প্রভুত্ব বিস্তাবের সময় মুগীহ¦টা এগাকা ইংরেজ, ক্রাসী, প্রাক, সারমেনিয়ান, পোর্টুণীক প্রভৃতির প্রধান
ঘাটি ছিল। ক্লাইভ খ্রীট, এজরা খ্রীট, ক্যানিং খ্রীট প্রভৃতির
মাঝধানে ৬ন্ড চীনাবাজার খ্রীটটি শ্বন করলেই বোঝা
ঘাবে শুর্গু চীনাবাজার' নয়, সেটি 'ওল্ড চীনাবাজার'। সে
যুগের ব্যবসায়ী চীনাদের মধ্যে চীনজবনের ধারাপ
দিকটাও জাহাজ বোঝাই হয়ে অবশ্য এদেশে এসেছিল,
এবং হয় ভো এপনও একটা শুরে তার অন্তিত্ব আছে।
জুয়াথেলা, নেশা করা, দালা করা ইত্যাদি। অনেক গর
শোনা বায় এ বিষয়ে। বিশিষ্ট ব্যক্তির মুখে শুনেছি কোন
কোন বাঙালীও নাকি চীনাভাষা আয়ত্ত করে নিয়ন্তবের
চীনা জীবনের অসীভৃত হয়ে অনেক কলক্ষের ইভিহাস
রচনা করেছে।

কিন্তু আমি সামার এই চীনভ্রমণ শেষ করেছি মাজ তিন দিনে। এই তিন দিনে এদের ভাল দিকটাই দেখার চেষ্টা করেছি একান্তভাবে। চিত্রশিলে, দাকশিলে, চামড়ার কাছে, ভায়িং-এর কাছে এবং ব্যবসা-বাণিছে। চীনাদের স্বভাবগত বে নৈপুণা আছে এদেশে ভার পরিচয় বথেষ্ট মিলবে। এরা আমাদেরই মতো প্রাচীন জাতি এবং বছকাল আমাদের মধ্যে বাস করা সত্ত্বেও আমারা ওদের চিনি না, সহজে চেনবার উপায়ও হয় তো কিছু নেই। কিছু তেরু আকস্মিকভাবে ল-চং-গীদের সক্তে আলাপ হওয়াতে ওদের সম্বন্ধ কৌতুহল জাগল এবং পরিচয়ও কিছু পেলাম। ল-খে-হং, চান-চ্ই-ভী এবং ল-চং-গীর অক্লান্ত সাহায্য এবং সবিনয় ব্যবহার আমার চিরদিন মনে থাকবে। আমি এদের ভিতর দিয়ে চীনা জীবনের মধ্র দিকটির বে একটুখানি স্বাদ পেয়েছি ভা আমার কাছে অবশ্রই অম্লা।

# সাহিত্যের ফুল

**अ**कामिनाम त्रांग

লাহিভ্যবাদারে নাই ক্লের আগর একথা বে বলে সে ভ আসল বাদর। লাহিভ্য রসের বন্ধ রসনার বন্দ, নালা ভবু গন্ধ বুবে বুবেনাক রস। ক্লক্দি, দেব গিরে বিক্রী হন্ধ টের, বিকার সন্ধিনা কুল আট আলা সের। কুমভার রাঙা কুল গোছাবাঁথা হয়ে
আনা-ভোভা বিজ্ঞী হয়, যায় সবে লয়ে।
বক্তুলও বিজ্ঞী হয় সেথা বুঠোযুঠো।
বিকায় কণলীকুল ছ'আনায় হুটো।
বাকি যত কুল ছিল সবি বিলকুল,
অভিযানে হয়ে গেল ভুষুয়েয় কুল।

### রামানন্দ-সারণে

### 🗃 উষা বিশ্বাস

তেশে সেপ্টেম্বর তক্তিতাজন রামানক চটোপাব্যাবের মহাপ্ররাণের দিন। আগানী ত০শে সেপ্টেম্বর তারিবে তার
ক্রেরাসানের পর অইব বর্ব পূর্ব হবে। তার মৃত্যু-বার্ষিকীর
পূর্ব্যতিবিতে তার বরনীর স্বৃতির উদ্দেশে প্রবাঞ্জনি অর্পন করি।
ক্রেরামুত জনরে স্বরন করি সেই অক্লাছকর্মী সাবকের কাছে
দেশের ও জাতির অশেষ বন। তারতের পরাবীনতার নাগপাশ আক উল্লোচিত হ্রেছে। বে সকল মহাপুক্রম আকীবন
ভারতের মৃত্যুক্তরে কটিন সংগ্রাম করে সিম্ভেন প্রশ্বের
রামানক চটোপাব্যার তালেরই অভতর। তার মহাপ্রয়াণের
পূর্ব্য বিন্নট কাতির জীবনে একটি স্বরীর দিন।

আৰু আমাদের "সোমার বাংলা"র বোর ছদিন। ৰখি विवयत्त्वा वार्म वारमा-मारबद (व प्रवमा, प्रवमा, मध-**ভ্ৰমলা বৃষ্টিট প্ৰতিভাত হৱেছিল ভাৱ সলে বৰ্তমান বাংলার** বাতৰ ব্ৰপের কোন সাদৃষ্ঠ বুঁছে পাওয়া বার না। সারা দেশ মুছে আৰু নিদাৰুণ অয়াভাব, বস্তাভাব। অন্নবস্তের ছভিক্রের नरम चाक चाद अकृष्ठे प्रक्रिक्छ श्रकृष्ठे द्वा प्रेटिंग्स । (मिष्टे হছে দেশে প্রকৃত মালুষের ছডিক। আক্ষের দিমে সেই অভেই আনাদের ভবিয়ভের আশা-ভরসা ভরুণদের চোবের সাম্মে বিশেষ করে ভূলে বরভে হবে বাঁটি মাহ্যদের শীবনা-वर्गक। दायामम हर्द्वाशायात वित्तम अववन वाँके মাহখ-বার মধ্যে মুর্ত হরে উঠেছিল "আন্ধণের মনীযা" ও ক্ষান্ত্রের বীর্য। তার বলিষ্ঠ ব্যক্তিছের সুল্পই ছাপ তার জীবনের ছোট বড় অনেক কাজে ও ঘটনার পরিক্ষৃট। তাঁর চরিত্রে দুচভাও কোমলভার অপূর্বে সময়র হরেছিল। বে কেউ তার খনিষ্ঠ সংস্পর্ণে এসেছেন ভিনিই জানেন তার অভরট কৰ কোষল-কৰু স্নেহ্মমভার পূর্ণ হিল। তার মৃত্যুতে ভাই তার পরিচিত অনেকেই আত্মীরবিরোগব্যধা অভুতব করেছিলেন। আজও বেন চোবের সামনে দেবতে পাই সেই সৌহা, শাভ, আত্মসমাহিত ৰবি-প্ৰভিন নাত্ৰটকে ৷ তার **স্থেহ্যাথা কঠমর আজও বেন কানে বাজে!** ব্যক্তিগত খীবৰে ভিন্নি হিলেন একান্ত স্নেহৰীল—মাতৃভক্ত, পত্নীপ্ৰেমিক, महामयरमा ७ वच्चयरमा । व्यवह मारवाषिक ও সংস্থারক রাষামশ ছিলেন অভারের বিক্লবে কুলীশ-কঠোর-ব্রের **क्टिंग क्रिय अपर जनम्बीय। बामायक हत्वाभागाव कि अक** चय चापर्न जारवाषिक बाब, स्ट्रांच अक्चम (अर्ड विचानाइकरे हिल्लम ? जिनि कि छप्रे अक्चम अक्निर्छ (मन्दारक हिल्लम ? चा बनात कांट्य (बाहे करव स्वयं हरत । नाश्वापिक हिनारव তার শ্রেষ্ঠত্ব অবিসংবাদিত হলেও সেটই তার একমাত্র পরিচয় नश्च। किनि विस्तान अक्षम जावर्ग बाक्ष । बाक्ष बाबानन

সাংবাদিক রামানদের চেরে চের বছ ছিলেন। আছ সেই আদর্শ রাহ্যের চরণোছেশে সম্রদ্ধ প্রণতি জানাই। জ্বির ভাষার বলি—

"ভোষার কীর্তির চেরে ভূমি বে মহং, ভাই ভব জীবনের রব পশ্চাভে ফেলিয়া বার কীর্তিরে ভোমার

বারস্বার ৷"

चरम्पाद्धवरे विन अरे कर्षावात्रे जावरकत कीवरवत पून-ষ্ট্র। খদেশপ্রেম তার কাছে ভরু ভাববিলাস মাত্র ছিল মা। নি:বার্থ জনসেবাই ছিল তার কর্ম্মর জনলস জীবনের এত। अरे वार्यामधीय समक्ताान-कामगारे छात सीराम जक्त কাবে প্রেরণা জুগিয়েছিল। তার খদেশপ্রেমে উন্নাদনার আভিশয় বা ভাবোচ্ছাস ছিল না। তার প্রান্তাহক জীবন-ৰাত্ৰা বেষন সৱল, অনাভ্যৱ ও বাহল্যবঞ্চিত ছিল, তাঁৱ কৰ্ম জীবনেও ভেষনি এই সকল বৈশিষ্ট্য বিশেষ ভাবে পরিলক্ষিত হয়। তাঁর রচনায় ও বক্তভায়--কোণাও বাহন্য বা আভছরের স্থান ছিল না। কেউ তাঁকে কোনও দিন আবেগমধী ভাষার वक्रका पिरा प्रका बाकारक परवन मि। चरम्बरनवार जापर्य উৰ্ছ হয়েই রাষামন্দ চটোপাব্যায় হয়েছিলেন সাংবাদিক। परमाधायत भविक बाज भीकिल हरबरे लिन हरबहिरमम সমাজ-সংস্থারক---দেশমাড়কার একজন একনিঠ জক্লাভ কর্মী। আৰু তাঁৱ ভিৱোৰানের পর বিচার করবার সময় এসেছে দেশের শিল, শিক্ষা, সাহিত্য ও সংস্কৃতির ইতিহাসে তিনি কি অৰুল্য দান রেখে গিরেছেন।

প্রথম জীবনে শিকাত্রতী রাষানন্দের কাষ্য হিল অব্যাণনার 
মাব্যমে দেশে প্রকৃত মাত্রম গড়ে তুলে দেশসেবা করা। তিনি
ছিলেন আদর্শবাদী। কোনও অবছাতে পড়েই তিনি তার
জীবনের বুল আদর্শ থেকে বিচ্যুত হন নি, লক্ষ্যভাই হন নি।
ভাই রক্ষণশীল কর্তুপক্ষের সলে তার বভানৈক্য ঘটল। অব্যাণনা
ছেছে তিনি হলেন সাংবাদিক। সাংবাদিক রাষানন্দ ক্ষশিকার
ভিতর দিয়েই প্রহণ করলেন স্থেশসেবার স্মহান্ প্রত।
লাংবাদিকের প্রত প্রহণ করেই তিনি বুঁকে পেলেন তার
জীবনের ব্রহতর ও মহতর কর্মকের, মাত্রমের সেবা ও স্বদেশ
সেবার প্রশত্তর পর।

ত্রীর্ক্তা শাভাবেবী 'রাষানন্দ ও অর্থাভাবীর বাংলা' নামক পুডকে নিথেছেন—"ভধু মুষ্টামের ছাত্রের সেবার তাঁহার ভৃত্তি ছিল না। তিনি বে গতীর জানভাতার সক্ষর করিরাছিলেন, বে নানা বিভার সম্মোহিনী বংশীক্ষমি তাঁহাকে ভাক হিলাছিল, কেশব্যাণী বে মুর্গতি, হারিত্র্য ও শিকাহীনতা তাঁহাকে মর্শ্বে

মাৰ্থ প্ৰতিভ করিভেছিল, ভাচাতে তথ কলেতের কলে চারিট मध्यात्मत्र मत्या वित्रा शकास्त्र क्वम देशतकी कावा छ লাভিত্য পভাইরা পূর্ব তথ্যি পাওরা যার না। করভ্যির প্রতি ভাগমার কর্মবা করিয়ালি এ সার্মা ভিমি নিজেকে দিতে नाविरक्रकारम्य वा । (व (जवादाक्रव क्रम (बोवम सीवास জিমি লেখনী গ্ৰহণ কৰিবাছিলেম সেই সেবার ভাষাই ভিনি পরেও বার বার লেবনী এহণ করিলেন—দেবার ক্ষেত্র ভাৰার বৃহত্তর হইবা শব্দিল।" "The pen is mightier than the sword."—a Bos south with south শীকার করবেম। সেখের সোকের চিত্তাশক্তি ভাগাতে ও क्षत्रक श्रीय कराज भारतावित्वत सावित (व कक (वने का আক্তের দিনে সকলেরই জানা আছে। দেশের পরাধীনভার ছংসত প্রামি স্বাধীনচেভা রামানন্দের সাহনিষ্ঠ অন্তরে অতরত বেচনা ভাগাত। সেইভন তিনি শক্তিশালী বিদেশী শাসক-अक्षार अवाद आहरतां विकास आक्रीयम त्वयंनी हानमा करत গিবেছেন। ভারতের বাজনৈভিক দাবীনভাই তাঁর একমাত্র ভামনা ছিল না। তিনি তাঁর সুগভীর অভ্ন ষ্টি দিয়ে ব্ৰেছিলেন দেশের রাক্ট্রেভিক স্বাধীনভার সঙ্গে ভার সামাজিক ও অর্থ-মৈতিক স্বাধীনতা অভাজী ভাবে ভড়ত। ভাই স্বাধের नर्वालीन वैविक्ति किल जांव लका क कावा। (मानव की नर्वाकीन देविक नार्यन्त आवर्ग बाय क्य किन (भाराक्रितन তার আব্যান্তিক জীবনের প্রপ্রদর্শক রাজা রাম্যোচন রাবের ভার থেকে। সংস্থারক ও সাংবাহিক রামানদ সামাভিক চুৰ্নীতি, অসামা ও অঞ্জতার বিক্রমেও চির্নিন **लावनी** जानित्व तिराह्म । जांद्र मरख-- "नर्वाविध नश्काद পরস্পর-সাপেক" ও "ভাজীয় উন্নতি সর্ববিধ সংস্কার-সাপেক"। णाक्षांत कारत महात मिटकरे जांत (वन मुक्के विका । स्मर्थात প্রাচীন শিল্প, সংস্কৃতি ও ঐতিহের প্রতি তাঁর ছিল প্রগাচ প্রছা ও ঐকাভিক অমুবার। কিছ তা সভেও তিনি ভিলেন অসা-ৰাৱণ হুক্তিবাদী। পুৱাভদকে ও অভীতকে আঁকড়ে ৰৱে বেকে নৃতনের বিপুল সম্ভাবনাকে তিনি কোন দিনই অধীকার করেন নি। প্রকৃত প্রপতিবৃত্তক আন্দোলনে ছিল তার অগাব বিখাস, তথু ভার "বিকৃতিভেই আপছি"। তাঁর চির তরুণ মন নৃতনকে অকুঠ ভাবে বরণ করে নিতে কিছুমাত্র ছিবা করে मि। अवारमध छात्र विनर्क वास्त्रियात् मृहस्त्रात क क्षेत्रात मरमत পরিচয় পাওয়া যায়। এইক্ষেই ভিনি ছেলের যাবভীয় গঠন-बुनक ७ नरकातबुनक काव बारर वात्मानत्मत नतन वित्यय ভাবে সংশ্লিষ্ট হয়ে ছিলেন। কিন্তু ভিনি ছিলেন নীয়ৰ কৰ্মী - जान्यकारत अकास विवर् ।

নাংবাদিক রামানন ছিলেন অভারের কঠোর সমালোচক এবং ভার ও সভ্যের পূজারী। স্পষ্টবাদিভা, নিরপেকভা,

নিভাঁকতা ও সমুক্তিই ছিল তার সমালোচনার বিশেষত্ব। जगवादन मनीया भाषिका मनमनेमका मिद्रायका छ वाक्षिका क्षीक विज्ञादयदि अवर प्रश्न विद्वारमे मेकि एएट বিজেপত ভাষীবাৰ্গত প্ৰছা আন্তৰ্যণ কৰেছিল। ভিনি নিজীক সমালোচমা ও সাধীর মন্তামতের সাচাবো দি रमनवाजीत किलामस्किटक देश व करत विटमंत मतवारत काराकर साथ रहम कार (प्राचन वासीमकार अवाक করতে অভ্যান্ত ভাবে চেই। করেছিলেন। সাংবাদিক ্ ভिমি युगाचर এমেছিলেন—এক সম্পূর্ণ মুভম আদর্শের € করেছিলেন। তার ভেক্ষিতা, বিভাকতা, ভার ও স প্ৰভি অবিচল নিষ্ঠা ভাৰতের বৰ্তমান ও ভবিয়ং সাংবাদি সাংবাদিক বায়ামন চেয়েছিলেন তাঁর প্রি সাচাযো দেশসেরা ভরতে—বিদেশী শাসকরর্গের চাভ यामीश्वास्त वार्थ दक्षा कदाल-यामान निम्न, माहिका, ও সংস্কৃতিকে নৃতন করে গড়ে ভুলতে—খদেশবাসীদের विश्वता क्षेत्रण कृत्राण । इंजिटांश, निश्च, विकास, निका, সৰাজনীতি, অৰ্ণীতি, সাহিত্য-স্থাতে রাইনীতি, নারীপ্রগতি প্রভতি বিবিধবিষয়ক বচনা-সম্ভাবে সম্বদ পত্ৰিকা ছট ভৰনভাৱ দিমের মাসিকপত্ৰের ধারাই पिरविक्त ।

আৰু আমৱা একটা বুৰস্থিকৰে এলে উপস্থিত হ প্ৰাৰ ড'ল বছৰের প্রাধীনভার পরে ভারত আৰু রাজ वाशीयका चर्काय अक्षत्र कावादिक ६ বৈভিক সাধীনভা ভাতত সে পায় নি। ভাত সময় দেশকে নভন করে, সুন্দর করে গড়ে ভলবার। আ**ভ** एक (मर्च ताबायम हरहाशाबारक बक जामर्न जारना বিশেষ প্রবোজন। জেশের অগণিত বৃক্ত জনগণের ভ ভার জীবনের লক্ষ্য ছিল। তার মধর দেহের মৃত্যু কিছ তার জবিনখর আদর্শের মৃদ্ধা নেই। তার সেই चिम्द्रीन मौननिनात वक चाक्क एकवि देव्यन करा ভিনি আছও বেঁচে আছেন তাঁর আছর্শের মধ্যে-লেই क्यों जावक चवल कांद्र कीविक कारन बीव जावनात ह जाकमा (पर्व (शत्क शास्त्र मि। किन्न जांत (जहें जावर्ने. त्नरे इच्छत जगना ७ कर्कात जरवाम क्यमरे व शादि मा। नर्स विषय धैवल आत्म, निकास ७ नः গরীয়ান বে গৌরবময় স্বাধীম ভারভের স্বপ্ন ভিনি ছেল --জার সেই বিরাট কর বেভিন জার করেশবাসী ল্পান্তি করে তুলভে পারবেদ লেইদিনই তার স্ব করা সার্থক হবে। আছ সম্প্র দেশ আদর্শে মহীরান, नक्ष्मन (नरे चनांशक **चविष्ठाच्य शा**त्वरे न्याकृत € COLE MICE I

### একভারা

#### ঞ্জিলধর চট্টোপাধ্যায়

.

ৰাছয়ের অভরে বে এত মধু আছে রাজক্ষারী শোভা তা ভাষত মা। অমরের মত নিভ্য সে চুটে আসে ভাবন-ক্বির পালে।

অভিবৃদ্ধ জীবন-কবি একভাৱা বাজিরে গান গার। বৌবনের গান। উলাদনা ও উদীপনার গান। শোভা শোনে। ভার রক্ত-প্রবাহে অগুভব করে প্রাধের স্পাদন ও বৌবনের চাফল্য। আনন্দের আভিদব্যে খুঁকে পার বেঁচে-বাকার সার্বকভা।

ৰশীর ছলালী শোভা—প্রচুর ভ্সম্পত্তির একমাত্র উত্তরাধিকারিণী। শোভার মা রাণী বস্ত্রবা চান শোভা ভার ধনসম্পদের মাদকভা অভ্তব করুক। দারিদ্রাকে ঘুণা করতে
শির্ক। কিছ শোভা চায়—অভি দীন জীবন-কবির ভাঙা
ক্টরে দিরে বদে থাকভে। প্রকৃতির প্রারিণী হতে ও কাব্যরদে প্রাণমন অভিষিক্ত করতে। মা ও মেরের এ মতবিরোবের
নীমাংসা হয় মা।

শোভা বলে—ক্বিকে আমি ভালবাসি। তার সদ আমার ভাল লাগে…

অভিব্যবের প্রতি মেরের এই অস্থ্যাগকে অস্ত কোন উপারে বিশ্বিত করতে না পেরে যা বলেন—তা হলে কবিকে ডেকে আন্ এবানে। তুই কেন যাবি সেই নোংরা গরীবের আভানার ?

এ প্রভাবের বিরুদ্ধে শোভা কিছু বলতে পারে না বটে, কিছু মনে মনে ভাবে—কবি কি এখানে ভাগবে ?

বিরাট সৌৰ। পুল্পোভানে বেরা। ক্সমির কোরারার উচ্চ্ বিভ জনবারার গারে রামবহুর সাতরতা বেলা। মারী ও পুরুবের প্রভরর্তি দিকে দিকে সাজামো। মারে নাবে নাবে লভাকুঞ্ক ও পুল্পবীবি অগতি অ্যমার স্থিম। বস্ত্রার ইচ্ছা
—শোভা এই প্রাচুর্যাের লোলার লোলে। কিন্তু শোভার মম
কেম বাহু পুবৈর্যাের ভোলে মা ?

নিঃসদ অঠাদশী শোভা চারদিকে ঘুরে বেডার যেন এক চঞ্চলা হরিণী। বস্থরা ভাকে সাজান—নামাবিধ বেশভুবা ও অলকার দিরে। কিন্ত ভার মন চার দেহের বিলাস নর, মনের খোরাক। সেকথা বস্থরা বোবেন না। রাজপ্রাসাদে শোভার মন-প্রাণ অভিঠ হবে ওঠে। বস্থরার প্রভিবাদ অগ্রাহ্ন করে হুটে বার কবির কুটরে।

জীবন-ক্ৰির হাভ ছ্থানা চেপে ববে শোভা বলে—ক্ৰি! টলো আয়াদের বাড়ীভে। সেধানেই ছুবি থাকবে… কৰি হেলে জিজালা করে-কেন বল ভো 🛉

- ---আৰি আর হুটোছট করভে পারি না...
- —ভাই মাকি ? কবি হো হো করে হেসে ওঠে। হাসভে হাসভে বলে—মা, তা হর না। এই কুটারের দীমতাই ভাল লাগে আমার। প্রাসাদের অহসার সইভে পারি না।

শোভা হ: বিভ হয়। ভত্তৰিজ্ঞাত্ম হয়ে ওঠে। বিমৰ্বভাবে বিজ্ঞানা করে—আক্র' কবি! রাজপ্রানাদের ত্রবৈশ্বাকে ছবি এভ বৃদ্যহীন মনে কর কেন ? শীবনবারণের ত্র্ব-ত্রবিবা কি বির্থক ?

ভাত্র কেশে অঙ্গলি-সঞ্চালন করে জীবন-কবি বলে—আর্থ বলি ভার কিছু থাকে, সে ভাগু জনর্থ বটাবার জন্তেই···

- -ভার মানে ?
- —বলতে পার জীবন-বারণের উদ্দেশ্ত কি ? বাসুষ কি চার ?

শোভা ট্রক বলভে পারে না। কিছ অসুভব করে।
এই লভাপাতা-বেরা দারিদ্রা-লাছিত জীর্ণ কুটারে এলে
কবির পাশে বসলেই তার প্রাণে জারে আনন্দ। এই আনন্দই
ত মাসুযের কায়। প্রাসাদে কেম আনন্দ নেই ?

একটা দীৰ্ঘাস ভ্যাগ করে শোভা বলে—ব্বভে পেরেছি কবি ৷ ভূমি কি বলভে চাও।

- —কি বল ভো **?**
- —ভোমার মনে আছে দৈখের অহমার, তাই তুরি প্রাসাদের প্রাচ্গাকে দ্বা কর।
- ঠিক বলেছ। দৈছের অহনারট আমার মনটাকে বাঁচিয়ে রেখেছে। ভাই ভ এভ পাকা চূলেও বেঁচে আছি আমি। কাঁচা চূল নিয়ে তুমিও এখানে ছুটে আস—সেই বাঁচার ভাগিদে।
  - -ভাই নাকি ?
- —হাঁা, ঐবর্থার প্রাচুর্ব্যে মরে যাহ্ছ ভূমি। আমাজেও সেবামে নিমে মারভে চাও কেম? বাঁচভে যাও—আমার বাঁচভে যাও…
- কি সর্ব্যাশ । এতদিন সেকণা বল নি কেন ? কাল বেকে আনি এবানে আসব একেবারে নিভাতরণা। সেই পাধরের বৃত্তিগুলির নতই নির্তুত অল-সোঠন নিরে। কি বল ? তা হলে তৃনি আনাকে ধুব সুন্দর দেখবে তো?—বলেই শোভা হাসতে হাসতে গভিবে পড়ে। এলিবে পড়ে কবির গারের উপর।

জীবন-ক্ৰিয় একভাৱার ভার ছিঁকে বার। এভ ও বিপর্বাভ কৰি বিরভি প্রকাশ করে। একাতে সরে সিরে, ভার-ছেঁড়া একভারাটা ভূলে নের। গভীরভাবে কাশ র্চতে আবার সূর বাবে।

আকুল আগ্ৰহে জীবন-কবির হাতবানা বরে শোভা বলে
—বোহাই কবি। অভত একবার চল আনার দলে। প্রাদাদে
নর।

- -- তবে কোৰাৰ ?
- वारेटबब कुनवानाटन ।
- **一(甲甲?**
- —ভূৰি বা চাও, সেধানে ভা আছে ?
- -कि हारे ? कि चाटर ?
- আটুট বৌৰন বৃষ্ঠ হয়ে আছে—নিৰুত ভান্ধৰ্বো । প্ৰাণ-বন্ধ অপূৰ্ব্ব সৌন্দৰ্বা ৷ পোশাক নেই, পরিছেদ নেই, একেবারেই নিরাজ্যা পিল-চাত্র্ব্য ৷ বলেই হাসতে হাসতে স্চৌপুট বায় শোভা ৷ ক্ষিকে ক্ছিয়ে ব্য়ে ৷

বিপরভাবে জীবন-কবি বলে—ছি: । সেধানে প্রাণ বেই, আছে শুরু চোববলসানো রূপের ঠাই···আমি বাব না।

জীবন-কবি একদিন ভিজ্ঞানা করে—আছা শোভা ! ভোষার নাকি বিয়ে ?

- --- वैग ।
- --विरवद शत छूनि अवाम (वर्ष्क हरन वारव १
- -কেন বাব ?
- --- वत वृति अवात्महे वाक्रतः ?
- -- चारे वा (कन बाक्रव ?
- -- 5(4 ?
- —ভবে আবার কি ? সেও থাকবে না—আবিও বাব মা।
  - -- चर्व च विरवद कान बार्य हरव ना।
- —মানে না হলেও বজা ত হবে গুব ? বিবের পর ছ'জনেই ছ'জনকে ননকার জানাব প্রভিপদের চাঁদের বড, ভিনি হবেন উলর, আমিও বাব অতে।

জীবন কৰি হেলে বলে—আহ, আমার এই চোধ বুৰি সন্ধাভারার মত চেরে বাক্ষ্যে—ভোষাদের সেই উল্লাভের সাকী হয়ে ?

একটু অভয়নত ভাবে শোভা বিজ্ঞাসা করে—আছা ভবি ৷ বলতে পার —টাবে কি আছে ?

- —(काविमा चार्टि...
- —**ভার কি** ?

- **一(甲甲?**
- —সেধানে নাগ আছে, কি বাব আছে, তা কেৰে আবার কি লাভ গ
  - —ভূমি ভো বেজার ব্যবসাধার ?
  - **一(甲甲?**
  - ---এত লাভ-লোভগানের হিসেব কর কেব গ
  - —ভোষার ভিভরে কি আছে—ভাষ শোভা ?
  - -- TT ?
  - —অভি বিত্ৰী কছাল ৷
- —ভাই ৰদি সভ্যি হয়, ভূমি তা দেশতে চাও মা কেন ? ভয় পাও বুলি ?
- —হাঁ তর পাই। গুৰুত্ব পাই না—ক্যালকে অভ্যন্ত ব্ৰণাও করি। ভোৰার চেরে, ভোৰার ক্যালটা সভিতে নর, ফুলরও নর। ভোৰার ওই ক্যানীর চোধ চুট উপতে কেলে, সেবানে একট কুংলিত গহার ভৈরি ক্যার কি কোন বানে হর। ভোষার ওই রাঙা ঠোট হুবানি বাদ দিলে, হু'পাট মুজ্যের বভ দাভ বে কভ বীভংগ দেখাবে—ভা আমি কানভে বাব কেন ?
  - -- ভূৰি আমতে মা চাইলেই কি সে মিৰ্যে হলে বাবে ?
- —সভিত্যও হবে না। বা অসুন্দর ভাই ভো বিধ্যে ।
  ক্ষাল বৰন মাত্রবের ভিতর বেকে বাইরে এনে সভিত্য হতে
  চেঙ্রা করে কথনি আসে ভার বার্দ্ধক্য। করা বা বার্দ্ধক্য
  বিধ্যে বলেই প্রাণ ভাকে ভাগে করে। প্রাণের প্রাচূর্ব্য নিরে
  সর্ব্যানের বৌবন যথন বেভে উঠে ভবন ক্ষাল থাকে চোরের
  মন্ত কুকিরে !
  - —তুমি অছতৰ কর বৃৰি ?
- —নিক্তরই। তাই ভো আনার নাচের হক আর গানের হর আহও বেঁচে আহে…
- —ভা হলে আমাকে নাচ শেখাও, গান শেখাও—আমিও বেঁচে থাকতে চাই···

জীবন-কবি গায়---

ভেল স্বামো প্রদীপ আমার
ক'দিন বলো অলবে আর ?
ভোমার আলো করবে না দ্র—
আমার বুকের অহকার।

শোভা ব্ৰল—বৌৰনই সভা, আর বার্কট রিধা। প্রাণ চার—কল, বাভাস, আর আলোর পরবার। বার্কটকে অঞাছ করে বৌৰনকে আঁকড়ে বাভাই প্রাণের বর্ষ। আনকই বৌৰনের উপজীবা। নিরানক্ষ বার্কটা কেল আগবে কবিকে প্রাণহীন করতে ? বৌৰন কেল কণহারী ?

শোভা বিজ্ঞানা করে—আছা কবি! বলতে পার—

- —কি করে বলব ? ভাকে ভো বেবি নি এবলো ? সে বন্ধি এনে ভিভাগা করে—আমার বধুট কেমন হবে ? ভা হয়ত বলতে পারি···
  - —বলো ভো ?
  - --- ভাছে বলৰ ?
  - -- चाबादकरे चटना...
  - -- এশতি ভনতে চাও গ
  - —ভাতে কি ভোষার আগতি আছে গ
- আগত্তি নেই। ভবে, ভোষার কভি করে ভোষার ব্যের লাভ আছে। আমার কি ?
- আমার ক্তি করে আমার বরের লাভ আছে? বলোকি?
- —বিরে মানেই ভো ভাই। বিরের পর দেববে—হর সে কিভেছে, ভূমি হেরেছ—জার না হয়, ভূমি কিভেছ, সে হেরেছে···

इ'क्नारे किल्दा मा ?

- —দৌকের বোড়া আঞ্চ-পিছু হবেই। তবে বধুরা অনেক সময় হেরেও কেতে। বরেরা কিতেও হারে। বিরের হারকিত বুরা বাইরে থেকে ধুব সোজা নয়। তার হিসেব নিকেশ অভরের অভুত্তি দিয়ে—বানে ও অভিযানে, হাসি ও কারার…
  - -- जा करण चामि निरम कराना मा ...

ভা কি হয় ? বিবে ভোষাকে করতেই হবে। বৌৰদ কণছালী হলেও—বিবেছ কামনা বিধ্যে ময়। কুলের পরিণতি মে কল, ভা কলবেই···

- —का इतन बतना, जाबाद वद त्कवन इतन १
- -- আমি তো গৰংকার মই ?
- -ভবু বলো…
- —একই মাটতে তেতো নিম, আর মিঠে আঙ্র ফলে। বেঁটুও কোটে, গোলাপও কোটে। ভোষার বর নিম হবে কি আঙ্র হবে—বেঁটু হবে কি গোলাপ হৈবে—বিষের আগে ভূমিও ভা বুকবে না…
  - -- यणि निम रुष ?
- —হতে পারে, আঙ্রের বাদ যে ভাষে না, বৌবন-রাগে
  নিমকেই সে মনে করবে আঙ্র ! বিরে নিফল হবে না---
  - --কি ভয়ানক কৰা !
- —কৰাটা বোটেই ভৱানক নৱ। ভব মৃত্যু বিবে—
  আহকাবের আনৃষ্ঠলিশি। ভবের আগে কেউ যদি সে নেখা
  পড়তে পারতো, তা হলে দ্বিক্ত না–বাণ সন্তানের স্থ দেশত না। সর্প-দংশনে ভারও মৃত্যু হ'ত না। বর-বর্ষ হথ-বরও তেওে বেড না…

শোভার বিবের বাজনা বেজে উঠে। ত্রীবন-কবি কান

পেতে শোৰে। চ্বাগত শানাইতের হবে হবে বিলিবে লেও গাঁব গাঁন। একভারাও বাজে। কিছ তার বজার উঠে না। তবু চলে আঙুলের কসরং। আনন্দে চোবের কল বেরিবৈ আলে।

প্র্যা অভ পেছে। রক্ত ঢেলে রাভিবে রেখে পেছে পশ্চিম
আকাশ। এই তো গোধ্লি ? বোৰ হব বরের হাতে শোভার
হাত বাঁৰা পড়েছে। সে বাঁৰম কত নিবিভ্— কত মধ্র ! সে
ত ভবু হাতের সলে হাতের বাঁৰম নয়— প্রাধের সলে থাবের।

জীবন-কবি ভাবছে—মিশ্চঃই শোভা এবন বসেছে বরের পাশে। পাতলা ওড়নার ভিতর দিরে চুরি করে দেবছে বরের মুব। কি স্থলর বর। কি স্থলনী বধু। সার্বক এই বৌবন-বভের আবোজন। কত পবিত্র এই ওড় মিলন-মন্ত্র। বর-বধু স্বী হোক।

একভারা হাতে নিবে কীবন-কবি একলাই নাচে আর গাব—

জাগো, বর-বধু বৌবন-কুঞ্জে—
জন্তর-মধু-সভানী !
সার্থক এ বৌবন-বজ্ঞের আবোজন
সার্থক এ মিলনের বাবী।

পরের দিন অতি প্রত্যুবেই শোভা হুটে আসে জীবন-ভবিকে প্রধান করতে। চিশ্ করে পাবের উপর বাবাটা রাধতেই—রাঙা বং লাগে কবির পাবের পাভার। জপালের লিঁহর লাগে ভার পার।

কৰি আৰীৰ্মাণ কৰে—এ সিঁহুৱ অক্ষ হোক…

শোভা বলে—বামী বে এত স্থার, এত মধ্র, তা ছো ভাষভাষ না কবি !

—ভাই নাকি ? ত্ৰীৱ সৌদৰ্ব্য ও ৰাধ্ব্য ৰে কভ, ভাও কি ভাষী কেনেছেন ?

আনলে উংকুল কবির মূবে হাসি ধরে না। শোভা লকার নাধা হেঁট করে বাকে।

কিছুক্ণ কৰিব মুখের দিকে চেবে শোভা বলে—ভা হলে এখন আমি জানি ?

- —কোৰায়, কভদূৱে ৰাজ্—তা ভো বললে মা ? ছ:বিভ ভাবে কবি দ্বিজ্ঞাসা করে।
- —আমি তা কি করে জামব ? এখন বদি তিনি যনের বাড়ী নিরে বাম—তাও বেতে বাব্য হব—এইটুকু জানি… বলেই সে চূপ করে বাব। আবার হঠাং বিজ্ঞাসা করে— আছো কবি ! বামী কি নেশার মত ?

জীবন-কবি হো হো করে হেলে ওঠে। হাস্তে হাস্তে বলে —ভার চেরেও বেদী, ভোমার মত বেরের কাছে···

- --- ভাষার মত বেরে, কেন বলছ ?
- —বোৰটা ভোৰায় নয় আৰায় এই একভায়ায়। এই

ছবেই বে ভোমার হুর বেঁৰেছি আমি। বেশ বুকতে পারছি— ভোমার খামী নিষ্ হলেও, ভোমার মূবে হবে আহুর।

একভারা বাজিয়ে জীবন-কবি মেচে বেচে গায়—

্ৰৌবন-ৰোহাৱে ভাবে ভৱী ! জিজালা করে—বল ত কৰি ৷ আমার সামী

শোভা বিজ্ঞাসা করে—বদ ত কৰি ৷ আমার বামীও ভোষার মত নাচতে-গাইতে ভানে কি না ?

- মাচ-গাম স্বার ভিত্রেই আছে। তৃমি যদি মাচাতে পার, তাহলেই মাচ্বে। গাওয়াতে পারলেই, গাইবে। আছহারা হংগ মা—তৃমি যে প্রকৃতি। পুরুষকে মাচামো আর গাওয়ামো বে তোমারি কাক…
  - —ভোষাকে নাচার-গাওয়ার কে **?**
  - —ভূমি…
  - শাষি ?…

একটা দীর্ঘাস কেলে শোভা চলে যায়। শীবন-কবি উদাসভাবে চেয়ে থাকে। ভার চোধ ছটো শলে ভরে ওঠে।

শীবম-কবির মনে অনুশোচনা ভাগে—এই ত সে চলে সেল। কোন্দেশের সূপুক্ষ রাজকুমার এসে ভাকে নিরে সেল। বৌবনের গাম গেরে গেরে কেন সে শোভার ঘুমছ মনটাকে ভাগিরেছিল। শোভাও ভাকে ব্যিরে পড়তে দের নি। কিছু আছু ?

ছুমিরে পছলেই ভ করালটা জেপে উঠবে ? কি সর্ক্ষালা । জীবন-কবি তরে শিউরে ওঠে । না, না, না, তা হতে পারে না। এবনও তাকে কেবে বাকতে হবে, তাবীকালের আগবনী গাইবার জঙে। মুতন আগভক ববন আগবে তাকে কোলে ছুলে নাচতে হবে—গাইতে হবে। একভারাটা হাতে ভুলে নিরে জীবন-কবি নাচে আর গার—

ওরে আস্বে কে তা ভানি—

কুলের বুকে কচি হাতে কলের ও হাতহানি,
ভারে মানি রে ভাই, মানি।

আৰার হাতের একভারা নে—হাত বাছিরে বরভে আলে, ভান্তি আমি হারবো—ভবু করবো টানাটানি।

কিছু দিন পরে। ছীবন-কবি ভার একভারাটা দূরে ঠেলে কেলে দের। মাঃ, ভার পারি না···

ক্টীরের বারান্দার একটা হেঁড়া মাছ্র বিছিতে, চোধ বুঁজে পড়ে আছে কবি। ভার ভিতর থেকে কথালটা যেন মাঝে বাবে চীংকার করে উঠছে—বার ভূগা হ<sup>®</sup>়া

জীবন-কবি বলে—ওরে অকুলর । ওরে নিখ্যে । বৌৰম ভোর আবেদন এছে করবে না। প্রাণ ভোর কুংসিত আচন্দ্রণ সন্থ করতে পারবে না। ভোকে দেখলেই সে পালিতে বাবে। তবু ভোর বাইতে আলার এ কুরাশা কেন । পোভার কোলে বে মৰীমের গুডাগমন হবে, জীবন ছাড়া ভাকে অভিন নন্দিত করবে কে? সে যে হবে এই জীবন-কবির অভর-মধু ! ওরে বীভংগ কছাল! আমাকে বাঁচতে দে—বাঁচতে দে—

ছটো বছর চলে যার, ছীবন-ক্বি চালার ক্লালের সলে বুবাপভা।

হঠাং শোভা আৰু কিবে এনেছে —ক্লিয় বেশ, কল কেশ, ডক বৃধ ! এ কি ! কেম সে এমন নিরাভরণা ? কোণার গেল ভার ঐশব্যের অহসার ? সর্ব্বাফে অলসাবের ঔজ্লা ? রাজ-ক্ষারীকে এমন দীম-ছঃখিনী ভিধাবিদী সাজিবে দিয়েছে কে ?

কৰির কফালসার দেহটাকে বুকে অভিনে বরে টেনে ভোলে শোভা। কেঁদে কেঁদে বলে—কবি ওঠ। ওঠ ভোমাকে বাঁচভে হবে। নাচভে হবে, গাইভে হবে। আমাকেও বাঁচিয়ে রাবতে হবে। আমি যে কিরে এসেছি।

—কিরে এগেছ ? কেন—কেন শোভা ? ছীবন-কবি বিশ্বিভভাবে চেরে থাকে শোভার মুখের দিকে।

শোভা কেঁদে কেঁদে বলে—সে পালিছে গেছে চিহদিনের মন্ত আমার নাগালের বাইরে। ভাকে ভো আর কিরে পাব মা কবি !

শোভা বলে কি ? জীবন-কৰি বেন কিছুই বুবতে পাৱে না। অবাক হবে চেৱে বাকে শোভাৱ নিভাত বলিন বুৰেৱ দিকে।

শোভা কাঁদে। भীবন-কবি সাস্থা দের।

হঠাৎ শোভার চোধ-মূব উজ্জ্ন হয়ে ওঠে। এইমাণ ও অবসম কবির কাঁবটা বরে থাঁকি দিবে বলে—আমাকে সে ভালবাসে নি সভিয়া কিন্তু আমার ভালবাসার প্রভিদামে আমাকে সে কি দিয়ে গেছে ভাষো ?

- **一**句?
- —ভার স্বভি! সে কড সুন্দর দেশবে ?
- —বেধৰ ৷ বেধৰ ৷ ভাকে বেধৰার জভেই ভো বেঁচে আহি ৷

ভীবন-কৰি লাকিৰে ওঠে। তাৰ বুকটা ছলে ওঠে। গুৰু বমনীতেও স্পান্ধৰ অন্তব কৰে চোৰ মুছে তাঙা একভাৱাটী আবাৰ মেৱামত কৰতে ৰসে। কঠে জাগে স্বৰ। পাৰেৰ বল কিৰে পাৰ। গানেৰ ভালে নাচতে চাৰ। মা, মা, কৰি এবন বৰবে না। মৱতে সে পাৰবে মা। ক্ষালকে বলে— সাববাম। আৰু চীংকাৰ কৰিল নে।

ছ: বিভ ভাবে শোভা বলে—কবি। বোকা ভো ভোষার কাছে আসবে মা। ভোষাকেই বেভে হবে ভার কাছে · · বাবে ?

- -- जाबादकरे (बटक क्रव ?
- —তা হাড়া আর উপার কি ?
- अक्षू विका करव कीवन-कवि पहल-दिया, का बदल कार्र

হোক। আমাকেই মিরে চল ভোষাধের প্রালাদে—আবি যাব।

- —ভূৰি যাবে ? শোভা উংক্ল হতে ওঠে। শীৰন-কৰির ছাত ছ্ৰামা চেণে ৰৱে সাত্ৰতে দ্বিজ্ঞাসা করে—সভাই কি ভূষি যাবে আয়াদের প্রাসাদে ?
- —ভোষার খণ্ডে যাইনি, কিন্তু ভার খন্যে যাব। ভোষার মনের মন্ত করে ভাকে গড়ে তুলব আমি। গে বে হবে আমারই অন্তর-মধু—আমার এই একভারার মালিক—আমার স্বর, আমার গান, আমার বহার—এ সবই ভো হবে ভার…
  - -প্রাসাদের অহমার সইতে পারবে ?

জীবন-কবি হো হো করে ছেসে ওঠে। হাসতে হাসভে বলে—ভোমাদের সেই অহুজার চূর্ণ করভেই যাব। ঐ হবে আমার হাভের হাভিয়ার! বহু গরীব-ছ:বীকে বঞ্চনা করে, ভোমার বাপ-ঠাকুরদা যে সব ভোগ-বিলাসের উপকরণ আহরণ করেছিলেন, সে সবই সে বিলিয়ে দেবে। নিজের বলে কিছুই রাধ্বে না।

- —তা কি করে কামলে ?
- সেই কথাই তো বলছি—সে হবে ভোমার নর, আনারও নর, সকলের। আমি ভাকে বাঁট-মাত্র তৈরি করব। এই হাভে তারও হুর বাঁবব আমি। ভা বদি না পারি মিধ্যে আমার এই একভারার কান-মোচ্ডামো।

বৈধব্যের আলা সইতে মা পেরে—শোভা বিষ খেরে 
নরভে গিরেছিল। ছেলের মুখের দিকে চেরে কেলে দিরেছিল 
ছাতের বিষ। কিন্তু মন বে এখনো বিধিরে আছে। বুকের 
ন্তুস শুকিরে যাছে। চোখের দৃষ্টি উদাস হবে উঠছে।

কৰির কথা শুনতে শুনতে—হঠাং তার চোৰের দীপ্তি কিরে আসে। দেখে বেন কোন্ এক মুখন আলো আর ন্তন ক্পং! যে ক্পতের বাঁট বাহ্য হবে তার সন্থান। শোভা কি আর বরতে পারে ?

শোভা বিজ্ঞানা করে—আহ্না কবি ৷ বলভে পার—মৃত্যুর পর সে এখন আছে কোথার ?

—কোণার আবার থাকবে ? তোষার কাছেই আছে…

শোভা চম্কে উঠে। বিশিতভাবে বিজ্ঞালা করে—স্থামার কাছেই স্থাছে, মানে ?

শীবন-কবি হেলে বলে—হাতের চুকি ভেঙে গলার হার তৈরি করলে সোনা তো সোনাই থাকে। তোনার তালবাসার শাভিশব্য সইতে না পেরে, লে সরে গেছে। পলার হার হরে শাল সে তোনার বুকে ফুলবে। দেশবে—কত তালবাসতে শার তুরি ? আন্ধ তার লাবি—তোনার স্নেহ। তালবাসার চেবে স্নেহের গভীরভাও বেলী, মধ্বভাও বেলী। সানীকে বা দিবেছিলে, তার প্রতিদানে পাওয়ার আকাজ্যত ছিল তোনার বলে। আন্ধ কৃষি কেইলে ব্যুব তুর্ব ক্ষেব। পারে না ভিছুই।

- —কেম পাৰ মা ? খোকাকে বুকে জড়িয়ে বন্ধে আমি খে আমন্দ পাই—ভা কি মিধো ?
- —কেম তা মিখ্যে হবে ? সেই তো সভ্যি আমক। সে
  আমক পাওৱার করে মর—দেওৱার করে তোগের কম্যে
  নয় ভ্যাপের করে। সে আমক মর্ভের নয়, বর্গের। হেলে ববম ভোষাকে মা বলে ডাকে—ভোষার বুক উপ্লে উঠে। ভূমি কি পার ভাকে বাধা দিভে ?

শীবন-কবি একভাৱা বাদিবে নেচে নেচে গায়— এই কুটারে, কাণ্ডন দিনের প্রান্তে— বাদ্ধবে আমার 'একভারা' ভার ভাভে।

¢

রাজকুমারী শোভার মা রাণী-বস্তরা পুত্রহীনা বিধবা। শোভা বিধবা হলেও, পুত্রবভী। শোভার পুত্র মরেশ এই ছই বিধবার একমাত্র সাভ্যা ও শান্তি।

নরেশকে খাঁট মাহুষ তৈরি করবার তার নিরেছেম জীবন-কবি। বস্তুত্তরার আপত্তি ছিল। শোভা ছাড়ে নি। জীবন-কবিকে টেনে নিরে গেছে রাজপ্রাসাদে। কবির অভিনত— শিশু-নরেশ শুধু নেচে গেরেই মাহুষ হবে।

নবেশ দাভাতে শিবলেই—কবি ভাকে নাচতে শেবালেন।
মুবে কথা ফুটলেই, ক্ষরে ক্ষর মিলিছে গাইতে শেবালেন।
অক্রর হাতের একভারার দিকে শিশু বুব মজর রাবে। কবনও
বেশ্বরা গাম না, বা ভালও কাটে না।

ক্রমে নরেশ বড় হরে উঠল। তার কৌমারকে ছাপিরে যৌবন জাগল। এতদিন গুরুও নেচেছেন শিয়ের সলে। এবদ জার গুরুর পারে বল নেই। শিয় একাই মাচে। গুরুর দম কুরিরে জাসে—শিষ্য প্রব টেনে রাধে।

চলদে ও রূপগঞ্জার বীরে বীরে দরেশ বেদ হবে উঠে জীবদ-কবির একট প্রভিচ্ছবি। কবির পাকা চুলের চূড়ার মত-সেও বাবে একটা কাঁচা চুলের চূড়া।

রাণ-বহুদ্রার চোৰ ছলে। শোভার চোৰ ছুড়ার। বিরক্ত বহুদ্রা শোভাকে বিজ্ঞাসা করেন—বলি, ভোর উদ্দেশ্ত কি ? নরেশ কি রাজকুমার সাদ্ধেন না ? পোশাক-পরিছ্ণের পারিপাট্য নেই। বিলাসিভার দিকে দৃষ্টি নাই। ওই নোংবা জীবন-ক্বির হত নরেশও কি শুধু গাম গাইবে, আর নাচবে ?

শোভা হাসে। বস্থননা রেপে যান। শীবন-কবির শিক্ষতার নরেশের এই ক্লচি-বিকার বস্থনা আর সইছে পারহেন না। প্রচুর ঐবর্থের উত্তরাবিকারী মরেশ। বন-সম্পাদের প্রতি ভার এই অহাভাবিক বিভ্না ও আলুসুবে অব্যোরোগিতা, বস্থনা গুবই অসমত হনে ক্রেন।

উভেজিকভাবে বস্তুৰহা একবিদ বলেদ-না, দা, শোভা ! এ চলবে দা•••

- -- कि इन्दर मा मा १
- —সংবাদক জান-বিজ্ঞান শেবাতে হবে···সে শুধু নাচগান শিববে—এ ব্যবহা নামৰ না আমি।
- —বেশ ভো জান-বিজ্ঞান শেণাও। মাচ-গানের সকে ভো ভার কোন বিহোব মেই। বন্দোবত কর—একজন বিজ্ঞানী এসে বোজ হ'বন্টা ওকে বিজ্ঞান শেণাবে----
  - -- कविटक काकिटक काख---

শোভা চমকে উঠে। দৃচভার সকে বলে—ভা হতে পারে মা মা! কবি আছে—ভাই মরেশ আছে, কবি মা থাকলে, মরেশও থাকবে মা…

বিশ্বিভ ভাবে বহুৰৱা বলেন---কবি না থাকলে নৱেশও থাকবে না ? বলিস কি ? ওকে আমি বেঁধে রাধব, উচ্চৃথল হতে দেব না---

কোটপ্যাণ্ট-পরা একজন বিজ্ঞানী আসে। হাতে তার বেজ্ঞাত।

পভার বরে বদে মরেশ কিজ্ঞাসা করে আপনার হাতে ওট কি সার গ

- -(40 )
- (वक विस्त कि क्रव ?

গন্তীরভাবে বিজ্ঞানী বলে—খাষার নির্দেশযন্ত না চললে, বা লেখা-পভার অধনোযোগী হলে—ভোষাকে আমি বেড যারব।

- -----
- --ইাা, ভোষার দিবিবার আবেশ...
- —বিষয় বলেহে, আবাকে বেড বারতে ? মরেশ বিষয়ভাবে চেরে বাকে।
- —হাা বলেছি—আভাল থেকে সামনে এসে, দৃচকঠে বললেম বসহরা।
  - -किम निवित्र ? चाराव चनवार कि ?
- —ভূমি উচ্ছুখল হরে উঠেছ ! বহু বার বারণ করেছি— ছোটলোকের ছেলেদের সলে মেলামেশা করো না। গাছে উঠো না। মদীভে গাঁভার কেটো না। ববন ভবন, বেবামে সেবামে নাচগান করে বেছিরো না। আমার এ আদেশ কেন ভবছ না ?
  - -- খানাকে রাজপুত্তর সাজতে হবে ?

হাঁা, ছ্মি একজন কোটপতির বংশবর। এই রাজ্যৈবর্ধ্যের একমাত্র উত্তরাবিকারী। ভোষার বংশমর্ব্যালা আর আভিজাত্যবোধ বাড়িয়ে ভোলবার জঙ্গে ও মাষ্ট্রার ভোষাকে বেক মারতেও ছিলা করবে না।

সংবশের মন বিরক্তিতে তরে ওঠে। মুখে কিছু বলে লা। বিজ্ঞানী নাটার একটা চেরার পেতে বলে। নরেশকে ইনিত করে: নামধের টুলটার উপর বলতে। বারধানে একট বোট টেবিলের উপর বাতা, কলর আর বই। বইবানি হাতে নিয়ে বিজ্ঞানী-বাঠার বলে, শোনো-হর্ব্য প্রিবীর চেয়ে অনেক বভ…

মরেশ বলে—সেক্থা আমি বীকার করি না। বাং করবেম…

—ভার নামে ? বিজ্ঞানী বিশ্বিত ভাবে চেবে পাতে নরেশের বুধের বিজে।

নৱেশ বলে—আয়ন্তনে বড় হলেই লে বড় হয় না । প্র্ব: ড একটা আগুনের পিতি। দূরে আছেন তাই রক্ষে। তবুছ নাবে নাবে কাছে এসে প্রিবীকে আলিয়ে পুড়িয়ে ছাই করে দিছেন…

- अक्ट्रे ट्रांट विकासी वरन—कार माकि ?
- আতে হাঁ। কৰিব কাছে গুনেছি—প্ৰতিপদ বেছে
  টাদকে তিনি ঢাকতে সুকু কৰেন। আনাবভাৱ বাত্ৰে সম্পূৰ্ণ
  ঢেকে কেলেন। এ নীচভাৱ কাৰণ কি ? বাবো বাদ
  পূৰ্ণিনা বাকলে আনাদেৱ কি কভিটা হ'ত গুনি ? টাদ
  আছে, তাই আনৱা বেঁচে আছি।
- ভূল বুবেছ। কৰি ভোষাকে অবৈজ্ঞানিক ভূল কৰা বুবিবেছেন। ভ্ৰাৱখি আছে বলেই আমাদের জীবনবারণ সম্ভব হচ্ছে।
- কি কৰে জানলেন ? বক্তম স্থা নেই। দিনটা হ'ল বাজিব। ভাতিৰে পেলাম আৰবা অকুবত জ্যোহনা। তথু টাদ বাকলে, এই পৃথিবী কি সুন্দর হ'ত ? কত ঠাতা বাকত পৃথিবীর আবহাওৱা। কবি বলেহেন—বাহুষের বনে দব ক্যাকাকা আর হুতারতি জানিবে ভোলার কাষণ হক্তে— ঐ স্থাতেক। টাদ আহে— তাই পৃথিবীতে এবনও আহে মাসুষের প্রতি মাসুষের সহাস্কৃতি। স্বেহ, দবা ও বালা।
  - -अद्यवादारे चरेनळामिक ।
  - -- विकास कि अक्या चौकार करत मा १
- কৰ্বনো না। চাঁদের বে আলো জ্যোছনা, তাও হর্মের কাছ থেকে বার করা। হুর্মা বাকলে চাঁদও বাকে না।
  - —्यूवनाव...
  - -कि वूबंदन ?

একটু হেলে নৱেশ বলে—কবির কাছে গুনেছি—আমার দালামশাই নাকি টাকা বার দিবে, স্থের স্থ আদার করে বছলোক হরেছিলেন, স্থা তা হলে আমার সেই দালামশারের মজ? আলো বার দিবে, অমাবভার অবকারে স্থদ আদার করেন? ভার চেবে টালকে ভিনি মুক্তি দিন না? কিছু আলো টালের নিজৰ হবে বাক। আমরাও টালের আলোর নেচে গেবে স্থেব বাকি। স্থ্য-ভেজের এ দাভিক্তা সন্থ করি কেন ব্যুদ্ধ জ?

विकामी केरविक कारन केर्ड रेशकांत । जीवकांत करत.

বলে—গুৰু টামের আলোম বাঁচতে হলে পৃথিবীর লোকগুলো লব 'বাইসিলে' ময়ে বাবে !

বস্থবলা মুটে এসে বিজ্ঞানা করেন—কি হরেছে, কি হরেছে ?

বিজ্ঞানী বলে—আপনার নাভিকে বিজ্ঞান শেখাৰো আনার পক্ষে সম্ভব নয়…

- **一(季平?**
- —কবি ওর মাবাট বেরে বলে আছে···

কৰি হিল আভালে গাঁভিৱে। বৰসের ভারে মেরদও ভেঙে হাজ হরে পভেছে। সাধনের দিকে বুঁকে-পভা দেহটাকে বাভা রাধবার ভঙ্গে দরকার হরেছে তৃতীয় পা— একটা মোটা লাটি।

আটাৰক্ষের মত ভলিতে এগিরে এলে, কবি বলে—মা। তা হলে এবন আনি আসি। বিদায়…

শোভা ছটে এলে বাধা দিৱে বলে-কেন কবি ?

- —আর ভ দরকার নেই শোভা! নরেশকে আমার চেয়েও ঢের বেশী পণ্ডিত করে দিরেছি। আমার বিভেও কুরিরে গেছে, আমিও কুরিরে গেছি···
  - —না না, তৃষি বেরো না···শোভা অন্থিরতা প্রকাশ করে।
    বস্থবরা গঞ্জীর ভাবে ভাকেন—শোভা !
  - —কি **ৰা** ?
  - —কবিকে বেভে দাও…
  - **—(**( 本 ?
- —ক্ৰির কুশিকা নরেশকে চরম উচ্ছৃথল করে গড়ে ভূলেছে। আর নর। ক্ৰিকে আর সহ করব না আমি···
  - —লোহাই ভোষার, কবিকে ভাছিরে দিও না…
  - ---সেদিন নৱেশ কি করেছে **ভান** ?
  - F ?
- —একজন প্রজা এলেছিল—বাজনার টাকা পরিশোধ করতে। তনলার—মরেশ নাকি ম্যানেকারের হাত থেকে কার্বিলাবামা কেন্দে নিরে—তাকে দিরে দিরেছে। আর বলে দিরেছে—টাকা দিতে হবে মা তাকে…

উৎকুর ভাবে নরেশ বলে---ভার একটা কার কি করেছি ভান বা ?

শোভা বিজ্ঞাসা করে--কি গু

- সেই বুজো প্রজাচী, এই পৌষের শীভে ঠক্ ঠক্ করে কাঁপছিল। দিনিয়া আমাকে বে শালের জোড়া দিরেছিল— ভাই দিয়ে তাকে জড়িয়ে ঐ গেটের বাইরে পৌছে দিয়ে-ছিলাল।
- —ভাই নাকি ? আনদের আভিশব্যে জীবন-কবি নিজের বুক্তের ভিতর চেপে বর্ত্তে নরেশকে। আত্মহারা হত্তে বলে— খাঃ, বাঃ ! ভার পর, একভারার করার বিত্তে প্রেট—

কে ভাবে ৰোৱ চাৱা-গাছে.

नदर्य अ कन चकारन १

ভোদের রবি উঠবে না; মোর—
চাদ উঠেছে সকালে !

बच्चका बक्क विद्य बालन-कवि । बाक---

- —কেন বাৰ্বে ? নরেশ প্রতিবাদ জানিরে বঁলে—গাও কবি ! আমি নাচব···
- —না । এ প্রাসাদে খার নাচ-গান চলবে না···বস্থয়। উত্তেখিত হরে ওঠেন।

একটু হেনে নরেশ বলে—আছা দিদিবা ! আরভনে বছ হওয়াই কি সভিয় বছ ইওয়া ?

- -ভার বাবে ?
- —না সেদিন বলছিল—ভোষাও ওজন নাজি ছ'বণ ছঞিশ সের। কবি আর বৈজ্ঞানিক ছ'কনকেই বদি দাঁভিপালার এক দিকে ভোলা বার—তবু ওঁবা ভোষার সমান হতে পারেদ না। তবে আর বরকার কি? তাভিরে বাও—ছ'কনকেই। ভূমিই পারবে আনাকে শিবিরে বিতে—ভি তাবে গরীবের টাকা কেভে নিরে, হব-বি থেতে হর, আর মূটরে বেতে হর...

নৱেশের সেই মারাস্থক রক্তব্য তানে জীবন-কবি চন্ত্রে তাঠে। বন-সর্কিণী বস্ত্ররাকে জাবাত করবার কতে নরেশের তুণে জার কত বাণ জাহে তাই বা কে জানে ? বা না, এখানে জার বর। জীবন-কবি বাধা নীচু করে চলে বার নিজের কুটারে। বনে বনে জার একবার বলে বার—বাং বাং!

.

বাগে বহুদ্বার চোপ মুধ রাভা হরে ওঠে। ঐ একরছি হেলে তাঁকে দি-মুধ পাওরার পরিবাস করে ? শোভা পর্যন্ত তাঁর সামনে মাধা ভূলে কথা বলভে সাহস করে মা। সেই শোভার হেলে মরেশ। সে করে রাধী বহুদ্বাকে অসমান ?

ৰাষ্ট্ৰায়ের হাভ থেকে বেতথানা টেনে নিবে বহুৰৱা বলেন —বাষ্টার। এই বেত নিবে গাঁভিবে থাক্ব আৰি। ভূষি ওকে পঢ়াও…

— পছ নরেশ ! বিজ্ঞানী আবার চেরার পেভে বলে। নরেশও ভবে ভবে সিবে বসে টুলের উপর।

বিজ্ঞানী বলে—পঞ্চলরেশ ৷ উভর মেকুতে ছ'লাল দিব আর ছ'লাল বাজি···

মরেশ বলে---সেধামে বোৰ হয় ছ'মাস বাইসিস্ আর ছ'
নাস কলেরা!

- —খাঃ ৷ বাবে ব'কো না---
- —বা: রে ! কিছু আগে, আগনিই ভ বললেন, পূর্ব্য-রাশ্নি না বাকলে বাইসিস্ হর···
  - —আজা, এ বই এগন গাড়। গাড়া ফলম নাড, আঁত্ চহ...

বহুৰৱা বলেন, হাা টিকু । আৰু ক্যাও। টাকা-আনা-পাইবের হিসাব শেবাও···আরি একটু বুরে আস্তি···

বস্থবা চলে গেলে নরেশ বেন হাঁপ হেড়ে বাচে। হু'বণ ছব্লিশ সের বিদিনার হাডে বেড বেগলে, কোন্ নাভির গিলে না চব্লার ?

নরেশ বলে, ভছন সার । আঁক্গুলো যেন পচা নর্থার পোকার মভ, আমার মাধার ভিতর গিরে কিনবিল করে। ভার চেরে খন খন করে একটা গান গাই ভছন…

—রাধী বন্ধবরা আমাকে নাইনে দিছেম, ভোমাকে লেখা-পভা শেখাবার ছতে। ভোমার গামের ভারিক করবার ছতে ময়···বলেই বিজ্ঞামী ভার পকেট খেকে সিগারেট-কেস্টা বের করে। একটা সিগারেট ধরার।

হাত পেতে নরেশ বলে, আমাকেও একটা দিন না সার !

- --ভূমি সিগারেট থাবে ?
- --দোৰ কি ?
- সিগারেট বেলে লাঙ্স বারাপ হয়…
- -- जानमाद नाइ न (महे ?
- —বভ্ড অগভ্য হেলে তৃষি…
- —বা: রে ! নিগারেট বাচ্ছেন আপনি, আর অসভ্য হচ্ছি আমি ?

জানালা-পথে দূর থেকে বস্থরাকে আগতে থেখে বিজ্ঞানী ভার সভ-বরানো গোটা সিগারেটটা জুভোর ভলার মাডিরে দের।

নরেশ একটু হেলে বলে, আমার পারেও বড়ম আছে সারু! আমিও ও তাবে ল্কোতে পারতাম···

वञ्चता अरम विकामा करतम, कि ट्राव्ह ?

विद्यामी वर्ल, मरतम यांक कश्रास्त ताकी मन---

চোৰ বাভিয়ে বস্তৰতা কৈফিলং ভলব করেন, কেন মরেল ? বস্ত্রণার অভিনয় দেবিয়ে নরেল বজে, বড্ড পেটব্যবা করতে দিবিবা!

- —পেটব্যৰা করছে? থাক, থাক, ভা হলে আৰু আর পড়ান্ডমোর দরকার মেই। ওর্থ থাবে এস---বলেই বস্থর। বর থেকে বেরিরে যান্।
- নৱেশ ভাবে, ভাই ভ । এখন কি করা বার ? শিঠি বাঁচিবেছি শেটের দোহাট দিরে। এখন পেট বাঁচাবার উপার কি ?

শোভার কাছে চুটে সিরে, নরেশ ভাকে কভিবে বরে কেঁদে কেঁদে বলে, বা । আমি মিছে কথা বলেছি। সভ্যি পেট-ব্যথা করছে মা আমার । ভবু দিনিমা আমাকে ভেভো গুরুব পেলাবে···

- --- (क्य विद्य क्यं वनता ?
- —সভ্যি কৰা বললে দিবিবা বেভ বারভ।

- -ভাই দাভি গ
- —হাঁ। শোৰ বা । আৰুই আৰি কবির কাছে চচেবাৰ। বেগাৰে সভিয় কবার শাভি বেভ আর বিধ্যে কবাই শাভি ভেভো ওর্ব, সেবাৰে আর একট দিনও বাকৰ ন আৰি।

শোভার চোৰ জলে ভরে ওঠে। চোৰ মুছে নরেশের মাৰার হাভ রেবে নে বলে—আঞ্চা এলো।

- <u>—वाव १</u>
- —হাঁা, এবানে পাকলে ভূমি নিগাাবাদী হবে, চোর হবে, ভাকাভ হবে।
  - —ভূমি যে আমার কভে কাঁদবে !
- ৰা বাবা ! একটুও কাঁদৰ না। তৃমি কৰিব কাছেই বাও। আমি মাৰে মাৰে গিছে দেখে আসৰ। এগানে যদি বাক ভা হলে আমাকে দিনৱাত কাঁদতে হবে।

নরেশ শোভার পাছের বুলো মাধার নিবে উঠে দাঁড়াভেই সে তার মুধবানা বুকের ভিতর টেনে নিবে কপালে চুফন করে। নরেশ চলে বার।

এক হাভে ওমূৰ আর এক হাভে বেভ নিরে বস্করা একে জিজাসা করেম—মরেশ কই ?

- -- हरन (शरह।
- --কোপাৰ ?
- --ক্ৰির কাছে।
- ভোষাকে বলে গেছে ?
- 一章川 1
- --वाबा पाछ नि ?
- ---वा ।
- **一( 年** ?
- —ক্ৰিই ভাৱ ৰা-বাণ। আৰি কেট নই। এবানে লে ৰাজ্বে না।
  - —एन क्वांत वाटन ?
- নামে ভোষাকে বোঝাভে পারব না না। নরেশের আশা ভূমি হেছে বাও।
  - —আশা **হেছে দেব** ?
  - **一**刺(
- —ভা হলে শোন শোভা । ভোনাকে ভাবার বিবে দেব ভাবি।

শোভা চমকে ওঠে। কি ভরানক কথা। চোধ ছটো বড় করে দারুণ বিশ্বরে শোভা কিজাস। করে—ভূমি কি বলহ মাণ্

—ভোষার এ বৈধব্যের কোন মানে হর মা। পুরো হটো বছরও ভূমি খানী নিরে পুণী হও নি। আবার ভোষাকে আনি বিয়ে দেব এ সভল আবার ছিল। বিভালী। এ ছিকে এলো··· দরকার দিকে মুখ কিরিরে সক্তরা বিজ্ঞানীকে ভাকেন।

বিজ্ঞানী এনে বৰে চোকে। বহুৰহা ভাকে বলেন— শোভাকে বুকিরে লাও ভার মত বাল-বিধবার বিরে হওয়া উচিত কি মা হ

সসক্ষোচে ও সবিষয়ে বিজ্ঞানী নিবেদন করে—সে বিষয়ে আলোচনা করতে উনি বদি রাজী না হন ?

শোভা বলে--ই্যা রাজী আছি। বসুন আপনি।

একটা চেয়ার টেলে নিয়ে উৎসাহিত ভাবে বিজ্ঞানী বসে। বস্তুত্বরা বেরিয়ে যান যর থেকে।

শোভা বেশ বুবতে পেরেছে—প্রভাবটা বুব হঠাৎ আসে
নি ভার কাছে। এ বিষরে বিজ্ঞানীর সঙ্গে বস্ত্ররে আলোচনা হরেছে পূর্বেই। বিজ্ঞানীর প্রভাক উদ্ভেজ নরেশের
শিক্ষভা হলেও, পরোক্ষে ভার দূর দৃষ্টি পজেছে শোভার
প্রভি! শোভাকে পেনেই ভ রালৈম্বর্য পাওরা হবে ? শোভার
নবে কেগেছে বিজ্ঞানীকে একটু যাচাই করবার কৌভূহল!
ভাই কিল্পানা করে—আপনি কি ্বিববা-বিবাহ সর্বন্দ
করেন ?

- —মিশ্চরই। বিশেষতঃ আপনার মত বাল-বিববার বিবাহ না হওরা অভার অভত ও অসলত ?
  - —আপৰি কি বিবাহিত ?
  - --- TICE 41···
  - --- अकृष्ठे वाल-विश्ववात इ:च पूर करत्व ?
- নিশ্চরই করব। আমার জীবনের একটা পবিত্র সম্বর্গই । বছ কুমারীকে প্রত্যাব্যান করেছি। আজও অবিবাহিত আছি···
- —-ৰভবাৰ। আৰু, আত্ম তা হলে। কাস আবার আসবেষ। আমার পরিচিত একটি বাল-বিৰবা আহে। মা-বাপহারা অন্তঃবিমী। তাকে উদার করবেষ গ
  - —দেবুন, আমি···আপন'কেই···
- বেরিয়ে যান এ খর থেকে···শোভার চোবে-মুবে খেন আশুন খলে ওঠে। এদিক-ওদিক চাইভে চাইভে বিজ্ঞানী বেরিরে যার।

কৰির ক্টারে গিৰে শোভা দেখে—কৰি মৃত্যু-পৰ্যার। ব্য়েশ ভার সেবাৰত্ব করছে। গান গেরে শোনাছে। কৰির একভারা আৰু নরেশের হাভে। চোধ বুলে বভার ভন্তে উন্তে কৰি বল্লে—বাঃ বাঃ।

চাৰী-পদ্ধী থেকে নৱেশের সমবন্ধনী বন্ধা সবাই এসে ইটেছে সেধানে। কবির কৃটিরে আৰু কোনও কিছুর অভাব নেই। কড কুল, কড কল। বৃদ্ধা বেন বছোংসব। জীবন-কবি ভার অভ্যানীদের নিকট থেকে চিন্ধ-বিদার নিজে। সকলের চোৰ সকল। কিন্তু কৰিৱ বিশীৰ্ণ মূৰ্বে হাসি বেৰ বয়ছে না। এ কি বজাৰ আনক।

শোভা কেঁলে বুক ভালাছে। কবি ভাকে সান্ধা নিরে বলে—কেঁল না শোভা । আমার কডাল আৰু পুতবে—আমার হবে মুক্তি । ছংগ করো না । মুড়া কিছুই নর । আমি ভ বেঁচে বাকব ভোষার নরেশের মনের মধ্যে ।

চোৰ মূহে শোভা কিরে আসে। বহু স্ন্যবাস আসবাৰ-পত্তে সাকালো একট কক্ষের এক কোণে বসেছে সে। বোলা-কামালা দিয়ে বাইরের দিকে চেয়ে আছে। চলেছে থীবস-কবির শববাহী শোভাষাত্র।

হঠাং পিছন বেকে বস্তুরা ভাকলেন-শোভা।

শোভা যাত কিরিয়ে দেবে—বহুৎরার সলে একটি অপরিচিত লোক।

বস্থৱা লোকটাকে দেখিরে বলেম—ইনি এসেছেন ভোষার সঙ্গে আলাপ-পরিচয় করতে।

- ( BA ?
- --- अक्षम विशास पार्विक ..

দার্শনিক প্রতিবাদ জানিরে বলে—না না, কথাটা আপনার টিক বলা হ'ল না, বহুররা দেবী।

- **一(事年?**
- —বলুন আপনি আমাকে ভেকে এনেছেন, আলাপ-পরিচয়
  করাতে আপনার বেবের সকে···
  - --- 44 £ @ 441 ···
- —আজে না—কৰাটা এক নহ ···ভবে, বিজ্ঞানী আমাই বন্ধু। ভাষ সংস্কৃত্তির বিষেটা ঘৰন ঠিক হলে গেছে···ভবন··· আমি নিজে এলেও···

উত্তেজিত তাবে বাধা দিবে শোতা বলে—ৰা! এ সৰ কি? তুৰি আমাকে কি তেবেছ বল ত?

- -- কি ভেবেছি ?
- —না। ভোষৱা আমার সামীকে দেবতে পাছে না।
  আমি দেবছি—আমার এই বুকের ভিতর বেঁচে আছেন ভিনি
  ...ভার অর্থ আমি অভ্যুত্ব করি...
- —কি সৰ্বাদা । এই মেরেকে বিরে দিতে চান আপনি ? দার্শনিক বিশ্বর প্রকাশ করেন।

বস্থার দৃঢ়ভার সঙ্গে বলেম—বিরে ওর দিভেই হবে— সে সম্বাহ কোনও প্রভিবাদ শুনভে চাই না।

দাৰ্শনিক শোভাৱ বিধাসকে সমৰ্থন করে বলেন—বীর মন বিধবা হয় নি—ভিনি কৰমই বিধবা দল···একবা আমি বলবই···

विकामी वारेटर शेक्टिश दिन । वज्रदर्श चाटक विकास

ভাকেন। ভংগনার প্রে বলেন—কেন ভোষার এই দার্শনিক বছকে নিয়ে এসেছ ?

দাৰ্শনিক বলে—বিজ্ঞানী মুৰ্থ বলেই রাজকুমারী শোভাকে চিনতে পারে নি। কিজাগা করি—কেন ওঁকে আপনি বিবে দিতে চান বলুন ত ?

- আমার এই অন্তল ঐর্ব্য ভোগ করবে কে ?
- —ৰাৱা ভোগ করবে—ভারা আগছে।
- --কারা জাসতে ?
- ৰাৱা এই শোভা দেবীকে বা বলে ভাকবে। তাৱা একজন নত্ত, ই'লন নত্ত হালাৱ হালার ক্ৰিতের দল···
  - -কোপাৰ ভাৱা ?
- —দেশে কি দেবছেন না ছজিকের পূর্ব্বাভাস ? অনার্ক্ট ও অঞ্জা আরম্ভ হয়েছে । শীগুগিরই শুনতে পাবেন অরহীন প্রকা-সাবারণের হাহাকার। বাদের কায়িক প্রনের মূল্য আহরণ করে গড়ে উঠেছে আপনার এই রাজপ্রাসাদ।

উত্তেজিতভাবে বহুদ্ধরা বিজ্ঞানা করেন—বিজ্ঞানী ৷ কেন এই দার্শনিককে নিয়ে এগেছ এবানে ?

विज्ञान विकाभी वान-कृत करवहि...

— ভূল কর মি বরু । এই শোভা দেবীকে তুমি চিনতে পার মি। আমার দৃষ্টি নিবে ওঁকে চিনতে ও ব্কতে চেটা কর বাব-চিভা মাহ্যকে অবুব ও অগলত করে · · ক্রতাবে দার্শিক বলে।

বস্থান ব্ৰেছেন—এই দাৰ্পনিক একটা বিশিষ্ট মতবাদের সমৰ্থক, বালা বলে—বনীর সম্পদে নিধ্নের দাবি আছে। কাৰও বলগু—দাৰ্শনিকও বলগু—ধনীরা প্রস্থাপ্তালী দ্যা। দেশে ছডিক বা আলভাব ঘটলে ধনীর ভাতার্বার বুল্ভেছবে। নিবল্লকে আল দিতে হবে। কিন্তু কেন ? এই সব মভবাদী যে অভাভ শল্পীকাতর সে বিষয়ে বস্থানা মনে কোনও সম্ভেচ নেই। উভেজিতভাবে বস্থানা কিন্তোল করেন—দার্শনক। ভোনার উদ্ভেজিতভাবে বস্থানা কিন্তোল

- —কোমৰ উদ্বেশ্ত নিয়ে ভ এবানে আসি নি··· ?
- —শে:ভার দিকে ওভাবে চেরে আছ কেন ?
- --- (Wafe ···
- -fo (H4E ?
- অপুঠা মাতৃষ্ঠি ৷ ক্ৰিতের দল বখন মা, মা, বলে আপমার হারে এসে কাদ্বে, তথম এই শোভা দেবীর মাতৃহুদর মিচ্ছেই কেঁদে উঠবে ৷ ভাতার-হার বুলে দিতে বাব্য
  হুবেম আপনি…
  - --वाबा छव १
- —'ন-ভরই। শোভার ছেলেবেরো অনাহারে শুকিরে ময়বে, ভা কি হভে পারে ?
- —বাদের অন্ন ক্টবে না, ভারা মরবে। লে মৃত্যু ভালের বিবি-মিদিট শাভি ৷ আমার কি ?

- —বিধি-নির্দেশের কথা ভুলবেন না। সে নির্দেশ চিরছা নর, পরিবর্তনশীল। আজু বারা মরবে, মরার আগে ভারা আন্তে চাইবে—কেন মরছে? কে ভাগের বাঁচার অধিকার হরণ করেছে? এ প্রশ্নের সমানান বদি ভারা করভে চার, ভা চলে আগনারাও বাঁচবেন না…
  - -- আমরাও বাঁচব না ?
- —- নিশ্চনই নৱ ৷ মা মা, বলে কেঁলেও যদি মাকে ভাগাতে না পাৰে ভা হলে সে ডাইনী-মাকেও ভাৱা মাৱবে…
  - —ভূমি বেরিয়ে যাও এবান বেকে !
- —যে আভে, যাচ্ছি ∙ কিছ তুমি কি করবে বছু? বিজ্ঞানীকে কিজাসা করে দার্শনিক।
- বস্তম্ভৱা দেবী যদি শোভাকে আমার সলে বিয়ে দেন, ভা হলে এই রাবৈশ্বয় রক্ষার দায়িত আমিই গ্রহণ করব…
  - --পারবে গ
- —কেম পারব মা ? এমন সব মারণাপ্র ব্যবহার করব, বাকে অগ্রাহ্ করা কোন আক্রমণকারীর পক্ষেই সম্ভব হবে মা…
- ৰাহ্য-মারা বুব লোজ। কিন্তু তার মনকে বশীভূত করা অভ্যন্ত ¢টিন। উপস্থিত ভূমি যে আক্রমণ চালাচ্ছ, তার কলাবে কি হবে, ভাও ভাব একবার।
  - --- খামি খাক্রমণ চালাছি ?
- মিশ্চরই। রাণী বহুদ্ধরার সাহাব্যে বস্কু দিয়ে থিরে, শোভাকে চয়ত বিয়ে করতে পারবে, কিন্তু ভার স্থকে তৃষি পাবে না বছু! সে থাকবে ভোমার মাগালের বাইরে… মুমুজার বহুদ্ধরা দেবী! আসি ভা চলে।

দার্শনিক চলে যায়। শোভার কাছে গিয়ে বস্থারা দেখেন, শোভা বৃহ্ছিভা।

বন্দিনী-শোভার বিষেত্র বাজনা বেজে ওঠে। কবি বেঁচে দেই। কবির সেই নিরামক কুটারে বলে মরেশ শোলে সে বাজনা।

অদৃরে চাষীপদ্ধী। সেবামেও আমক মেই। আমার্ট্রর কলে মাঠের মাট ওকিরে পাবরের মত শক্ত হরে গেছে। চাষীরা লাঙল চালাবার ব্যর্গ চেট্রা করে প্রাক্ত হরে পড়েছে। কছালগার গরুগুলি কাঁবের লাঙল কাঁবে নিরেই শুক্ষাে মাটতে তবে পড়ে। টামতে পারে না। গরুর অপরাব কি ? ভারা মাট গুলুক ভুলে ত্বে বেভার। কোবারও এক গাহি সবুক ত্পের সভান পার মা। পুকুর-ভোবার ক্লেও শুক্রি আনত । পলীমেরেরা উল্লিবে আর শাব বাজিরে পর্জনা-বেরের পুলা করছে। হে ঠাকুর, কল দাও—ক্লেল দাও !

কৰিয় যুত্যর পর হ' বাদ কেটে গেছে। শোভাত আর একট বারও আলে বি কৰিয় হুটীরে। যা ভায় সভানকে ভূলে গেছে ? অনাবৃষ্টি ভ হবেই। শোভা বে ৰদ্মিনী ভা ভ মরেশ জানে না। সেই স্নেচমনীর এই আচরবের কথা ভেবে ভেবে মরেশের মনে বিশ্নরের অভ নেই। আজ শোভার বিষের বাজনা শুনতে শুনতে নরেশের মন বিশ্নরে ভরে বার। না না, পর্জ্জদেব। ভূমি এক ফোঁটা জলও দিয়োনা। এ দেশ অলে পুড়ে ছাই হয়ে যাক। ভোমার ভ বক্র আছে ? ভার একটা কেলে দাও ঐ রাজপ্রাসাদের চুড়ার।

নৱেশ শুনল চাষীপদ্ধীতে বিৱাট ক্ষমতার স্বাবেশ হরেছে। ভারাক্রান্ত মন নিম্নে মরেশও যার সেবানে। চুপ করে ইাড়িয়ে বাকে এক পাশে।

সমবেত চাধীদের সামনে দাঁড়িয়ে বক্তৃতা করছেন দার্শনিক।
— ওরে জন্ত্রীন বন্ধত্রীন, মৃক ও বধিরের দল। ভোরা
কি তনতে পাস্ না—রাজ্ঞাসাদের নহবতে আৰু কিসের
বাজনা বাজে ? কান পেতে শোন্—বন্দিনী বিধবা রাজকলার
বিবাহোৎসব।

নরেশ চিৎকার করে বলে ওঠে--রাজকভা বন্দিনী ?

—ই।, ইা।, বন্দিনী । দার্শনিক উত্তেজিত তাবে বলেম—
রাজপুনী আজ সঙ্গীনবারী সৈনিক দিয়ে বেরা। আমি জানি
শোভা দেবীর ইছেরে বিরুদ্ধে এই বিবাহের আয়োজন। ভূরিভোজনের বিরাট ব্যবস্থা। দেশ-দেশান্তরের বনী-মহাজনরা
এসে বিবাহপভার শোভাবর্জন করবেন। ভোমরা অরহীন ।
কিছ রাজপুরীতে মঙা-মিঠাই পড়াপড়ি যাছে। এক ফোটা
ভূজার জল পাও না ভোমরা, রাজপুরীতে বয়ে যাছে অভি
উত্ত ও তীর পানীরের টেউ। ভোমাদের আমের মূল্যাদেরই
ঐ রাজপ্রাসাদটা পড়ে উঠেছে। কিছ কই । কোনো
উৎসবেই ত ভোমরা নিমন্তিত হও না সেখানে ।

একজন বৃধ চাধী কপালে করাখাত করে বলে—আমা-দের অদৃষ্ঠ ঃ

দার্শনিক বলেন—অদৃষ্ঠকে দেখতে চেষ্টা কর, বুখতে চেষ্টা কর। ঐ রাক্প্রাপাদের প্রভ্যেকটি ইটের সলে ভোষাদের সম্বন্ধ আছে। রাটা বস্থবা কে? তাঁর নিমন্ত্রণের অপেকাকেন করবে? হাজারে হাজারে গিয়ে হাজির হও ঐ রাজ্যারে। অর দাও, বল্প দাও বলে চীংকার কর। এই ছজিকের দিনে বিলাগী-ধনীদের আনন্দোংসব কি ভোষাদের অদৃষ্ঠকে পরিহাস করছে মা? সে পরিহাস ভোমরা কেন সন্থ করবে? অনার্টির প্রভিকারের অভে যদি প্রভাষেত্র কাছে অল চাইতে পার, ধনী-মহাজনদের কাছে বেঁচে ধাকার দাবি আনাতে পারবে না কেন? ভাদের স্থেধর্যে কাছের

নরেশ বীরে বীরে এগিরে বার দার্শনিকের দিকে। বৃব ভাছে গিরে করভোভে বিজ্ঞানা করে—আগনি কে?

-- प्रवि (क--- चारश चारे वन…

—বিৰবা ভাত্তভা আনাত্ৰ না। আমি তাত্ৰ একনাত্ৰ সভান।

দার্শনিক চমকে উঠেন। বিশ্বিভভাবে চেম্বে থাকেন নরেশের মুখের দিকে। অক্ট খরে বলেন—ভূমি ভার ছেলে? ভিনি ছেলের মা ?

- —বিধবা যে পুত্ৰবভী, তা কি আপৰি ভানভেন না ?
- শা। আমার বিজ্ঞানী বছুর কাছে ওনেছি—ভিনি নি:সভান | কি আশুর্য । তুমি এ বিবাহে প্রভিবাদ করছ নাকেন ?

নরেশ একটু লব্ধিত ভাবে বলে—কেন করব ? আমার মায়ের মনের অবস্থা যে কি তা ত আমি জানি না ? বিবাহে যদি তার আঞ্চলাকে আমি কেন বিলুখটাব ?

- -- पृथि तृषि बाष्धानास थाक मा ?
- না। রাণী বহন্ধরার অভ্যাচার সইতে না পেরে এই কৃষক-পদ্মীতে বাস করছি। এই চাধীরাই আমার অভ্যক বছু। এদের আমি ভালবাসি · · ·
- —ভাই নাকি ? দাপনিক উৎকুল জাবে বলেন—ভা হলে চল—ঐ হাজার হাজার ক্বিত জনহীনের দল ভোষার নেতৃত্বেই প্রবেশ করবে রাজ্পাপাদে। তোষার দাবি যাথের সলে দেখা করা।

জনসমূল উৰ্জেলত হয়ে ৩ঠে। বছ কঠের কোলাহলে প্ৰভাবট সম্বিত হয়। সাজ, সাজ রব পড়ে যায়।

কেউ কেউ সন্দিম ভাবে প্রতিবাদ জানায়—আমরা নিরন্ত। সক্ষীনধারী সৈনিকেরা বদি আক্রমণ করে—তথম আমাদের কি অবস্থা হবে? সেকবাটা ভাব। বেতেই বলি হর—চল, তৈরি হয়ে যাই। খোডা কোদাল, দা-কুড়ুল, বার বা আহে নিয়ে এস…

দৃগু কঠে প্রতিবাদ জানিয়ে মরেশ বলে—মা, কেট কোম
অন্ত নিতে পারবে মা। শুরু আমার হাতে থাকবে—এই
একতারা । তোমাদের সবার আদে থাকবে আমার এই বুক।
বুক দিয়ে সদীন ঠেলে এসিয়ে যাব আমি। আমার মৃত্যু
না দেবে, ভোষরা কেট পিছু হটতে পারবে মা।

মরেশের সে বোষণার সমর্থন জানিরে জহিংস জভিয়ামের মাহাত্ম প্রচার করে দার্শনিক। চারধিকে উংসাহ ও উদীপনার বভা বরে বার। জনস্রোভ বাত্রা করে রাজ-প্রাসাদের দিকে।

বছৰ্লা অলম্বারে আর বেশভ্যার শোভা আৰু রূপসজা করেছে—বেন রাজরাজেখরী। কি অনিদ্যস্থর তার মূবত্রী। নে বেন বৃত্তিমতী সৌন্ধ্য। মুখ দৃষ্টিতে বিজ্ঞানী চেরে থাকে। শোভার মুধের দিকে। া শোভা বিজ্ঞাসা করে—আছে। বিজ্ঞানী। কি বনে কর এই দেহটাই আনি ?

- -- PT 1
- --
- —ভোষার বনও আবি চাই…
- চাও ? ভাই নাজি ? কি করে পাবে ?

বিজ্ঞান্ত বিজ্ঞানী বলে—দেহকে পেলেই ভ মনকে পাওৱা বাবে···

শোভা হাসতে হাসতেই বিজ্ঞাসা করে— ভোষার বিজ্ঞান ভাই বলে বৃবি ?

- —হাঁ, শুৰু বিজ্ঞান কেন ইভিহানও ভাই বলে। বাজি বা ভাতির উবান-পভনের ইভিহানে শুৰু দৈহিক নামৰ্ব্যের ভ্র-বোষণা ছাড়া আর কি আছে ? কভ বিজ্ঞাহী মন শজিফানের ভাছে নভ হবে অধীনতা বীকার করেছে।
- —সে বৰ্জন ব্ৰেন ইতিহাসের পুননার্ডি আর হবে না।
  এ বুগে নৈহিক প্রাণাভ কেউ মানবে না। এখনও সাবধান হও
  বিজ্ঞানী । মনকে উপেকা করো না। মা-বস্থনার রক্ত চক্
  আন ভোনার কোনবের ঐ পিতলকে তর করব না আনি !
  —শোভা গভীর হবে ওঠে।
- —সভ্যিই কি ভূবি আমার হবে না শোভা ? কাভরভাবে বিজ্ঞাসা করে বিজ্ঞামী।
- —আমি বলি এক টুকুরো মাংস হভার—ভা হলে ভোষার বভ হাংলাকে বিলিয়ে বিভে পারভার। আমি বে কি ভা ভূষি ট্রক বুকুতে পারহ বা···
- কি ভূমি ? কেন এবন ভ্ৰনবোহিনী বাক্তাকেবরী নেকেছ ?

ৰহ্মত্বা হাঁপাতে হাঁপাতে এসে বলেন—বিজ্ঞানী ! সৰ্বাশ হয়েত্তে···

- -- কি হরেছে মা ?
- —হাজার হাজার ভিবিরি আসহে রাজপুরী আক্রমণ করভে···
- —বেশ ভ, আত্মক না। তর কি ? রাজপ্রাসাদ ব্ব প্রকিভ আহে। কেউ চুক্তে পারবে না। আমিও বাছি ভালের অভ্যর্থনা করতে—বলেই কোমরের পিভলটা হাভে বাসিবে নিরে, বিজ্ঞানী বেবিরে বার বর বেকে।

বস্থৱা চিত্তিভভাবে একটা আগনে বলে পঞ্চেন। বাধাটা চেশে ধরেন।

শোভা কাতরভাবে বলে—হা ! তিবিরিদের রক্তে সাম করে ধুব পুৰাসকর করবে, মা ?

—উপায় কি ? বোৰ হয় নৱেশও আছে ওলের সকে ! ভাই ভ ভাৰত্বি—কি হবে ?

या या, महत्रम निकार बाह्य-वाक हुटी नाव

জানালার বাবে। বাইরে উঁকি বিবে জানজে জান্ধহারা হরে ওঠে। চীংকার করে বলে—মা ! দেবে বাও—বেবে বাও—জানার নরেশ কি স্থানর সাজে সেকে এলেছে…

চাষী বালকেরা কুল-সাব্দে গাজিবেছে মবেশকে। গলার ভার বিচিত্র কুলের বালা। চুড়াবাঁবা কেপথছে কুল বিবে জ্ঞানো। ভানে কুলের কুওল। হাতে কুলের করণ। তওঁ-ভাগনের মত উজ্ল ভার সুকুমার দেহের দীগ্রি। পর-পাণ ভির মত জলভরা ভারত চোব হুটি টলমল করছে। মুবঞ্জীতে অপূর্কা সহল্পের দুচ্ছা। ছেলে ভার যাকে দেবতে এসেছে।

শোভা ভার অদের অসমায় বুলে বরময় ছড়িরে কেলে। বোঁপা বুলে চুল এলিয়ে দেয়। মূল্যবাম বেশভ্যা ছেড়ে পটবয় পরে। বহুদ্ধরা চুপ করে বসে দেখেন। কোমও প্রভিবাদ করেন না।

মরেশের পাশে ইাছিরে, হাররফীদের সংযাধন করে
দার্শনিক বলে, এই তরুণ-কিলোর কে ? তোহরা কি চিন্তে
পারহ একে ?

নরেশকে দেবেই ভারা চিনেছে। ভার মুববানি বে শোভার মুবের প্রতিহ্নবিঃ বাররকীরা অভিবাদন কানিরে পর্ব হেড়ে সরে ইড়ার।

শিক্ষল-হাতে বিজ্ঞানী এলে ছতুম দের, সদরের পেট বছ কর···

ৰাৱৰভীৱা বিজ্ঞাহী হয়ে ৩ঠে। সে অভাৰ ছত্ৰ ভাৱা ৰান্বে কেন ? ভালের ভাৰীয়নিৰ রাজস্বার নরেশকে ভাৱা বাবা দেবে কার ছত্বে ? বিজ্ঞানী কিরে বাম বস্থৱায় কাছে। বাহরভীদের সদে ভার কথা-কাটাকাটীর ধবর ভাবে, বস্থৱা যাানেকারকে পাঠান, একা নরেশকে সাদরে অভ্যব্দা করে ভেতরে আন্বার কলে।

নৱেশ সে প্রভাবে রাজী হয় না। যারা ভার সদে এসেছে, ভাদের স্বাইকে দিভে হবে প্রবেশাবিকার। রাজকভা শোভা ভ আজ একা নরেশের যা নন্? হাজার হাজার সভান তার। স্বাই এসেছে ভাদের বাকে দেবভে। কোন বাবা কি ভারা বাদবে? বস্থুরার ভুকুম অবাভ করে স্বাইকে নিবে নরেশ চুকে পড়ে, সদরের গেট পার হরে, প্রাসাদের স্মুবে, বিভীর্ণ পুলোভাবে।

প্রাসাদের দরজায় গুলিভরা পিগুল হাতে ইাভিয়ে আছে বিজ্ঞানী। দূর থেকে ভাকে দেখে নরেশ একটা নর্মায় জানায়। ভার পর করেক জন সাহসী বন্ধুকে সকে নিয়ে বীরে বীরে ওঠে সোপান বেয়ে।

বিজ্ঞানী বলে, যদি প্রাণের মনতা বাকে, আর অঞ্জনর হয়োনা···

উপেক্ষার হাসি হেসে মরেশ বলে, প্রাবের চেরেও, বা বে সভাষের কাহে কত বেশী প্রির—তা কি আপনি ভাবেন বা ? আপনায় বোধ হয় বা বেই গ অভি ব্যালয় আলাপ্রেয়া গ শশুৰৱা এসে বলেন, নৱেশ। ভূষি একলা ভিভৱে এস। ওলের কিরে যেতে বল···

—ভা কি হয় ? ভ; হলে আমহা কেট ভেডৱে বেতে চাই মা। আমাদের মাকে একবার বাইরে আসতে বল। ভার পারের ধুলো নিয়ে আমহা সবাই কিরে যাব…

ৰস্থৰা উভেজিত ভাবে বলেম, সে এবামে আসৰে মা, আসতে পান্তৰ মা…

- —কে তাঁকে বাধা দেবে ? আমি যাব তাঁকে আৰ্ভে, এই চাৰীদের ভিনি আশীর্বাদ করবেন…
  - --- जावबान मदबन । (ज जामात (मदब...
- —কিছ আমার মা। আমি তোমার স্থৈবর্ত্তার প্রভ্যানী
  মই। আমার মা যদি আমার কুটারে গিরে ভিবারিনী সাজতে
  চার, ভোমার কোম অধিকার মেই ভাকে বাধা দেবার…

বিভলে শোভার কঞ্চীকে বাইরের দিক থেকে ক্লছ করে এসেছেন বস্থভর। গ্রাফ পরে একটি পরিচারিকা এসে উঁকি বিবে দেখে। পলার বছৰূল্য হারহছা পরিচারিকার গাবে ছুঁছে যেরে শোভা যিনতি জানার— দরজাটা থুলে বে— বুলে বে—তোর পার পড়ি খুলে…

পরিচারিকাও প্রবর্তী। মরেশের মুখের বিক্তে চেরে ভারও বনে পড়ে নিজের ছেলের মুখ। কিন্তু কি করবে? বহুররার ভরে সে কাঁপে। ভবু হঠাং বর্ধন কেখে, বিজ্ঞানীর পিডলটা মরেশের বুকের উপর—ভবন আর ছির বাক্তেপারে বা। জান্লা দিরে হারহজা কিরিবে দিরে, দরজাটা বুলে দের। ভার পর পালিরে বার সেবান বেকে।

উরাদিনী শোভা ছুঠে বার। শাবকহারা সিংহিনীর বভ আক্রমণ করে বিজ্ঞানীকে।

বস্থবা নির্মাক ভাবে চেয়ে বাকেন শোভার সেই তেকোদৃও মুখের দিকে। কোন কথার বা কাজের প্রভিবাদ করবার সাহস নেই ভার···

মরেশ এনে শোভাকে কভিরে ধরে বলে—মা 1

## কোশী-বাঁধ

### গ্রীশিশিরকুমার কর

গত ১৫ই গুলাই হুইতে কোনী মদীতে খল বাছতে থাকে এবং বিহারের খে-সব অঞ্চল দারুণ অরাভাব তারই কভকটা অংশ কোনীর বচার সম্প্রতি জল-প্রাবিত হবে ভাগের হুর্ভাগ্যের উপত্রে আরও হুর্ভাগ্যের বোঝা চালিরে দের। এইভাবে সাহার্গা এবং পূর্ব্য-হারভালার এক শভের উপর প্রায় জলপ্লাবিত এবং লক্ষাবিক লোক বিপর হর, সমত জারগার বুকসমাম খল ইাভিবে যার। প্রায়ম শভক্তেরের উপর বিবে ববে পিরে আগামী বংসরেও হুর্ভিকের আগমমবার্ভা ঘোষণা করে চলেছিল। একমান্ত্র মৌকা ভিন্ন অভ সমত যামবাহ্য চলাচলের রাভা বছ হরে যার। বছার কলে মৃত্যু হাভা, বছ লোকের সর্গাঘাতে মৃত্যুরও সংবাদ পাওরা সিরেছিল। মাবেপ্র থানার ভিনট গ্রাম—বা কোন বিদ্যাবিধ্য হ্যুমি, কোনী এবার ভাদেরও আক্রমণ করেছিল।

এবারকার বঙার অপ্রথীর কভি এই হরেছে যে, বাবেপুর নারাধ ভিংতগবানপুর প্রামের প্রসিদ্ধ নৈধিলী পণ্ডিত রাধবাচারী শালীর বাড়ীটা সম্পূর্ণ বুরে-মুহে গেছে। সেই সলে তালপাতার উপর হাতে লেখা বহু হুপ্রাপ্য প্রাচীন পুৰি নাই হর। তার মধ্যে একখানা পুৰি ছিল বা সাত শত বংগর আগে প্রসিদ্ধ পণ্ডিত বামদেব উপাধ্যার কাশ্মীর থেকে বিশিলার এমেছিলেন।

#### क्षयम भर्वताय

কোশীর এই মুর্থনদীর বভাকে প্রভিরোধ করবার কচই কোশী-বাবের পরিকল্পনা করা হরেছে। সম্রতি ভারত-সরকার এই কোলী পরিকল্পনার প্রথম পর্ব্যার শেষ করবার জভ সাজে দশ কোট টাকা ব্যর বরাদ করেছেন। এটা বিভারবাসীর পক্ষে সভাই অসংবাদ। বিভারের অর্থসচিব ভা: অভ্যন্ত-নারারণ সিংছ কিছু দিম পূর্ব্যে বলেছেন বে, অটোবর বালে এই ভাজ হাডে মেগুরা হবে। প্রথম পর্ব্যারে বোগবাদী থেকে দেশালের বরাহক্ষেপ্র পর্বান্ত ৪০ মাইল রেল-রাভা, কোনীর উপরে একটা ব্যারাজ, করেজ নাইল দীর্ঘ সেচের থাল, প্রভাকটি দশ হাজার কিলোগরাট শক্তিসম্পন্ন হুইট বিহাৎ-উৎপাদক বন্ধ সমেভ একট বিহাৎ-উৎপাদক-কেন্দ্র এবং বিহারেও দেশালে বিহাৎ-পরিবাহক ভার লাগানো হবে। এই কাজ-শুলি শেষ করতে চার বছর সমন্ধ নির্দারিত হ্রেছে।

#### কোৰী ও ভার বছা

হুৰ্দাত কোৰী তার ধ্বংসদীলার কত বিহারের আতত হবে বাতিবছে। কোৰীর প্লাবন এমনই চুর্দাত বে, ২৪ বন্টার ৩০ কূট কল বেকে উঠতে দেবা গেছে। এই প্লাবনে বছরের পর বছর কত নাম্ব, কত গৃহপালিত পশু, কত গরীবের কুঁতে বর, কত বনীর প্রাসাদ, কত গোলাভরা শভ, কত শভক্ষে তেসে বার তার পরিমাপ করা হুংসাব্য। সমর সময় এই প্লাবন প্রার কুটি মাইল চওড়া একটা চলমান সমুল্লের আক্ষার বারণ করে। তথন প্রতি সেকেওে ১,৪০,০০০ বন কুট কল সবেপে বরে বার। এই প্লাবনের কলে বিহার ও নেপালের এক বিতীর্ণ কুবও করেক নাস বাবং কলমগ্র অবহার চাব-আবাকের অভ্পন্ত হবে পতে বাকে। চলাচলের আর্থা বর্ষা ব্যা

হবে যার। বহু জারগা বহু জ্ঞাশরে পরিণ্ড হবে মণক ও
ন্যালেরিয়ার আকর হবে দাঁড়ার। সবচেরে বড় জ্ঞতি এই হর
বে, হ'হাজার থেকে তিন হাজার বর্গরাইল উর্বার শতক্ষেত্রের
উপর বালি জ্বে' তাতে বহু বংসর পর্যান্ত কৃষির সম্পূর্ণ জ্ঞ্প-বোগী করে রাথে। এইজ্ঞট জোলীকে "বিহারের হুংবের
নদী" এবং "বিহারের আত্ত্ব" ইত্যাদি নাম দেওরা হয়েছে।

वैष्ठ ১৯৩१ जारम को शावस बिरवारयत खेलाव निर्फावरयत चन मनकाती अवश त्वमतकाती मनखानत थिए अक कथि बरम । ভাতে ডাঃ রাজেলপ্রদাদ ভিজাসা করেছিলেন—"(स्टापेत धवन मर्वामा ना करत धरे चित्रक कत्रतामित्व त्रत করে দেওয়ার কি কোন উপায় নেই ? একটা কুল্লিম কুলাবার रहे करत अरे विवाहे क्लवानिक प्रवकारवत मध्य (मरहत কাৰে লাগানো কি সম্বৰ হতে পাৱে না ?" তার উন্তৱে এইছ (क. वि. (प्रम वर्तम—"कानीत अ माक्रम वका श्रावितात्वत अक्रमाञ छैनाब दृष्ट्य. (बनाटम लाहाट्यत बना किट्य अहे मधी वानित्क अक्षे 'छेरेवाद्व'त बना शिर्व ठानित्व त्वश्वा । किन्द শন্তবিধা হচ্ছে এই যে, ভেষন ভারগা শুধু নেপালের মধ্যেই भाउदा (बल्ड भारत बारर बाहा वह वाद जाना।" (एम बानीम হওবার পর থেকেই ভারত-সরকার এদিকে সমাক অবহিত হয়েত্বে, সেক্ত তারা ৩৫ বিহারবাসীর নর সমগ্র (क्यवाजीव वस्रवामाई।

#### কোশীর ধ্বংসদীলা

কোশীৰ ধ্বংসলীলা সহছে প্ৰথমে যে আভাস দেওৱা হৰেছে সেটা সামৰিক এবং অভি ক্ষেত্ম অংশমান। এই ধ্বংসলীলা অভ্যন্ত ব্যাপক, দীৰ্ষ্যায়ী এবং এর বৃল গভীৱে। ভাই এটা সমাক্ বাৰণা করতে হলে একটু বিশদ আলোচনা প্ৰয়োজন।

কোশীর ভিমন্ট উপন্দী আছে। (১) সান কোশী পশ্চিমদিক বেকে ৭,৪২৪ বর্গনাইল জারগার, (২) জরুণ উত্তরনিক
বেকে ১৪,১০৬ বর্গনাইল জারগার ও (৩) ভিমূর প্রাকি
বেকে ১৪,১০৬ বর্গনাইল জারগার বৃষ্টির এবং বরক্সলা জল বরে
এনে মেপালের পবিত্র ভীর্ব বরাহক্ষেত্রের প্রার দেড় নাইল
উত্তরে একই জারগার এগে বিশেছে। এই ২৩,৮০৮ বর্গনাইল
জারগার মধ্যে ২,২২৪ বর্গনাইল জারগা চিরভ্যারার্ড জকলের
অংশ। নেপালের পার্মত্য জকল পার হরে কোলা বেধানে
ভারভের সমভল ক্ষেত্রে এসে নেরেছে সেবানে এভ বিভ্ত
হবে পভেছে বে, হিমালের বেকে উত্তুত বড় বড় নদ-মদীগুলির
মধ্যে সিন্ধু এবং বজ্বপুত্রের পরই ভার ছান। ভারপর বেল
এবং দো-আঁশলা নাটির প্রার সমভল ক্ষমির ভিতর দিয়ে ক্ষকভাল চওড়া নদীগর্ভের (channels) স্টে করে ভার ভিতর
বিরে প্রবাহিত হবে গলার সলে নিশেছে। জলের সদে কোলী

বে বালি এবং পলিষাট বছে নিছে আনে ভা কৰে কৰে শীনই এই নদীগৰ্ভগুলি করে ওঠে। করেক বছর পরে আবার বৰ্ষ দিনকরেক ক্রমাগভ অভিবৃষ্টি হতে থাকে ভবন কোশী ভার পুরাজন পথ ছেভে মৃতন কমি কেটে মৃতন পথ ভৈরি করে নের। এয়নই করে কোশী পূর্বাদিকে পূর্ণিরা থেকে পিল্টম দিকে বারভালা পর্বান্ত বিহারের ২০০০ থেকে ৩০০০ বর্গমাইল উর্বার শসাক্ষেত্রের ধ্বংস সাবন করেছে। এ ছাড়া নেপালের নষ্ট করেছে ৩০০ থেকে ৫০০ বর্গমাইল উর্বার শসাক্ষেত্র। এই ভারগার জন-বসভির পরিমাণ হচ্ছে প্রভি বর্গমাইলে ১০০ জন। ভাই কোশী বছরের পর বছর ১৮ লক্ষ্য থেকে ২৭ লক্ষ্য লোকের সমৃত্য কভি করছে। এর পরও কি বিহারের ছাত্তকের কারণ বুজতে অলক্ষ যাওয়ার করকার হন্ত গ

#### ব্যুখী পরিক্রমা

এটা একটা বহুমুখী পরিকলনা। এতে নেপালের বরাহ-ক্ষেত্রের প্রার দেও মাইল উভরে, বেবানে কোশী ছাত্রা মামক পাচাড়ের বলের মধ্য দিয়ে সরুপথ করে নেমে এসেছে, সেবানে ৭৮৩ ফুট উচু একটা বাঁধ বেঁধে দেওরা হবে। এতে লক্ষ একর ফুট+ বছার জল ধরে রাধবার বলোবত থাকবে।

स्मिशास अवर विदाद इक्टी द्यादाक, चात त्रके भटक (कार्ट भावा थान वारत ३.७३७ मारेन भीव वक्र बान काहे। हरत। এই সবগুলি থিলে বলার উদ্ধায় প্রবাচকে আরছে আমতে পারবে। ৩০ লক একর ক্ষিতে সেচের ব্যবস্থা হবে-ভার बर्सा चर्मक कविए वहरद कृष्ठी करन कनारमा मस्त्र करन । সৰ সময়ের অভ নকাই হাজার কিলোওরাট এবং খত অসুবারী আরও প্রভারিশ হাভার কিলোওয়াট বিহাৎ উৎপন্ন হবে। ক্ষিত্ৰ কৰু বন্ধ চবে। বছাছ বালি এগে ক্ষি নই চওছা বন্ধ হবে। যে-দৰ ভাষণা বন্ধ ভলাম পরিণত হয়ে রয়েছে দে-দৰ कांबनाद मध्याद शर्य हाराय छे भव्य शर्य। या लिविया प्रव হবে। বিরাট আকারে মাছের চাষ সম্ভব হবে। উপরে খীচে बनयान हमाहरमद प्रवासाय हत्य। छ। हाम अर्थ कर्द প্রভূত বাজ্ঞসম্ভ উৎপন্ন হওয়ার কলে বিহারের লোকে পেট ভৱে বেভে পাবে। সন্তার বিহাৎ-শক্তি পাওরার বহু শিল-প্রতিষ্ঠান সভে ইঠবে। এই সব শিল্প-প্রতিষ্ঠানে এবং ক্রমিক্ষেত্র ৰচ লোক কাৰু পাবে। ভাদের খীবনবাজার মান উন্নভ হবে।

শ্রীদীপনারারণ সিংহের মতে উত্তর-বিহারের এই জন-সংখ্যার মব্যে শভকরা ৮৫ জন একমাত্র ফ্রায়র উপরই নির্ভর-শ্রীল এবং গড়ে মাত্র ফ্রাই বিশা জমির উপরে ভালের জীবিকা নির্ভর করে।

<sup>†</sup> এক একর ক্ষির উপত্রে এক কুট পরিবাণ উঁচু হলে। ভবে 'এক একর কুট' বলা হয়।

এ সমন্ত বাদ দিয়েও শুধু বভা নিরোধের কর এই পরিকল্পনার পেছনে যত টাকা ধরচ হবে তা সার্ধক হয়ে উঠবে।

#### ক্ষেক্ট আপত্তি এবং সেই সহত্তে আলোচনা

বর্তমানে এই পরিকল্পনার বিক্লছে কভকগুলি গুকুতর আগতি ভোলা হচ্ছে। অনেকে হয়ত এটা করেছেন এই বিরাট পরিকল্পনার সমত বুঁটনাট ভব্য না জানার জন্ত । আবার কেউ কেউ এটা বিশেষ উদ্দেশ-প্রণোদিত হবে করেছেন বলে মনে হয়। প্রথম আগতি হচ্ছে—বাঁব ধ্বসে পড়ে কয়েক হাজার বর্গমাইল জায়গা ধ্বংস হবে এবং হাজার কয়েক লোক মরবে।

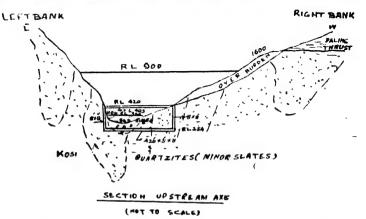
কেউ কেউ আমেরিকার সাণী ক্লব্দ নদীর
উপরের বাঁব ভেলে পভার কথাও এই
প্রসঙ্গে উল্লেখ করেছেন। স্টেট্সম্যাম
পত্রিকাও দেখছি অনেকটা সেই বরপের
মত প্রকাশ করেছেন এবং তাঁরা বিহারের
প্রবানমন্ত্রীর বঞ্তার উল্লেখ করে বলেক্রেন—"অভ্যন্ত সভর্কভার সঙ্গে এই
পরিকল্পনার কাব্দে অগ্রসর হওরা উচিত।
এ বাঁব যদি ভেলে বার ভা হলে ভাগলপুর
মিশ্চিক্ত হরে যাবে। কলিকাভারও ক্রতি
হত্তে পারে।" সভর্কভার সঙ্গে অগ্রসর
ইওরার সংপ্রামর্শ অব্লা করা সমীচীন
নর। আমার মনে হর, এই সব অহেতু ক্

আশকা ভারতীয় ইঞ্লীনিয়ারদের জ্ঞান, বুদ্ধি, অভিজ্ঞভা এবং কর্মান্তার প্রতি জনা ছাপ্রাম্বত। বর্তমানে ইঞ্লীনিয়ারীং বিভা এত দ্ব উন্নতিলাভ করেছে যাতে এরপ ধারণার কোন সক্ষত কারণ আছে বলে মনে হয় না।

এমনি বরপের বাগণার ঘটে ভবনই যথন বাঁবের ওজন ভার ভারবহন ক্ষরভার চেরে বেনী হয়; অববা বাঁবের নাঁচে কিখা ছ'পাশে এমন পাধর বাকে যার ভিতর দিয়ে জল চুইরে বেতে পারে এবং চোরাবার সময় ঐ পাধরেরও কিছু অংশ ধুরে নিরে যেতে পারে। অবচ ঐ সব ক্ষেত্রে জলনিবোর করবার এবং পাধরের শক্তি বুদ্ধি করবার মত বিজ্ঞানসম্মত কোন আবৃনিক ব্যবছা অবলম্বন করা হয় নি। আক্লালকার দিনেকোন বাঁব তৈরি করার আগে এই সমন্ত বিষয় বিশেষজ্ঞ ইঞ্জীনিয়ার ও অভিজ্ঞ ভূতভূবিদ্গণ সমবেত ভাবে সম্পূর্ণ অমুস্থান করে এবং মডেল তৈরি করে ভার উপরে পরীকা চালিরে সমন্ত বিষয়ে নিঃসংক্ষেত্র হয়ে নত্না তৈরি এবং বাঁবের ছান নির্পত্ন করেন।

কোশী বঁৰ লখার হবে ১,১৮৫ কুট, ভিতের সবচেরে মীচু ভারণা থেকে উচু হবে ৭৮০ কুট। চওজা হবে তলাতে ৮৪৮ কুট, উণরে ৩৫ কুট। বাঁৰের ভিৎ এতবানি কংক্রিটের তার লইতে পারবে জিলা সেটা পরীক্ষা করেছেল শ্রীষ্ত কে, কে, কি, এন-এস্লি সহজায়ী ভূতত্বিদ্, বি: জে, বি, অডন্ ভল্লা-

বৰাৰক ভ্ৰন্থবিদ্ এবং প্ৰীৰ্ক্ত পি. সি. দে হাজৱা বি-এস্সি, (লভম), এ-আর-সি-এস বর্ডমান ভল্পবৰারক ভ্ৰন্থবিদ্। আমেরিকার বহু বড় বঁটা নির্মাণ সহছে হাজরা মহাশর্মের প্রভাক অভিজ্ঞভা আছে। বাঁধের ভিভিন্ন নীচে থেকে জিলিং করে পাধরের নম্না ভূলে এনে এবং বাঁধের ছু'পাশের হিন্দে বহু ছোট ছোট স্থান বুলে, সেধানকার পাধর পরীকা করে ভারা বা বলেছেন ভা সংক্ষেপে এই:—"বাঁধের ভিভিন্ন নীচে ৫০ কুট পুরু কোষাট্লাইট্ পাধরের শুর আছে। ভার ভিভরে ভিভরে সামার প্রেটের পর্যাণ এবং কন্যোমারেট চৰ্ব-



भावत चारक। अत कांत-रठम-मक्ति घरवरे।» अहे भावरतत অৱঞ্জির অবস্থান এমনি বে তাদের ধ্বসে পভার বা তাদের ভিতর দিয়ে কল চটরে যাওয়ার সপ্তাবনা নাই। এটা সত্য ষে কোৰী অত্যন্ত চুৰ্দান্ত নদী এবং যে জাৱগাৱ বাঁধের স্থান बिक्तां हिल श्रदाह (मही कृक व्यानद के श्रीक्षिशासद महिकार । ভাই ভভত্ববিদরণ কোলীপর্ভের নিয়তম স্থান খেকে ৩০ কৃট } मीटि मिर्द अभाव (बंदक अभाव भर्तास ४२० कृष्टे मधा द कृष्टे চওড়া এবং ৮ ফুট উচ্ একটা মুড়ক খোঁড়ার প্রভাব উপস্থাপিত करतरहम। अ काकी किष्टुमृत अध्यमत् छ स्राह्म (हिन स्वृत्र) এটা হরে গেলে ভূতভূবিদ এবং ইঞ্জিনীয়ারগণ, বাঁৰের সম্পূর্ণ ভিংটা পরীকা করে নিরুত ভাবে পরিকলনা ভৈত্তি করভে পারবেম। পাধরের ভিতর তথ্য সামারমাত্র তুর্বলভার বিদর্শন পেলে মাহুষের শরীরে ইন্জেক্শনের ভার পাধরের ভিভর ভৱল সিমেউ চালিয়ে ( Grouting ) ভালের একীছভ করে ভিতের শক্তি বছগুণ বাভিত্তে দেওৱা চলবে। তা ছাড়া এই जित्यके ठालात्माव किला किलाव अवर इ'लात्मव ठाविक कन-मिरवायक जिरमर्केव अक्षेत्र भाजना भवना भरक छैर्दर । कार्क के बह बहरबह जामकाक्रमक ब्रामाह य बहेर्द मा छा बि:मत्मद्र यमा (यट्ड शादा।

পরীকার কলে দেবা গেছে, এই পাবর প্রতি বন ইকিছে
 ১৪'৪৪ টন ভার সহ করতে পারে।

একথা এথানে বলা উচিত বে, বাঁবের ভিত্তির সামর্থ্য পরীক্ষার বন্ধ সদীর নীচে বিরে প্রকল বুঁতে বেখার মত নিবুঁত অস্থ্যভাগ অভ কোল বাঁথ তৈরির আগে করা হরেছে বলে আলার কালা নাই। এ সভ্তেও এমন অক্তপূর্ণ পরিক্রনার বিক্লারে এরণ ভীতি-উংপাদক প্রচারকার্য্য সভাই পরিভাগের বিষয়।

বিভীর আপন্তি—ধেবানে বাঁব তৈরি হবে তা ত্কপ্রের উংপতি-হলের সহিক্টে অবহিত। তাই এক দিন হয়ত ত্ক্পনের কলে বাঁব তেঙে অনর্থ বটাবে। বড় বড় ইঞ্জিনীয়ারগণ—বাঁরা এরুপ রহং পরিকল্পনা প্রণরনের গুরুলাহিত্ব নিয়ে
থাকেন, তাঁরা এত বড় একটা বিষয় তুলে বাবেন এমন বারণা
লোকের মনে আসা সমীচীন নয়। যা হোক, প্রত্যেক বাবের
পরিকল্পনা করার সময় এর ছত অভিরক্তি সামর্ব্যের ব্যবহা
করা হরে থাকে। তার্থচা বাবের জভ ভূমিকপা নিরোবের
নিবিভ অভিবিক্ত সামর্ব্যের ব্যবহা রাধা হয়েছে। ২০ বছর
আর্পে বাবি টেটে বে জলবিছাং-উংপাদন-কেন্ত ভৈরি হয়েছে
ভাতেও এ ব্যবহা করা হয়েছে।

এই পরিক্রমা বাঁরা তৈরি করেছেন তাঁরা বে এ বিষ্ণটা তুলে বান নি ভা এই থেকে বুবা বাবে বে, ভূভবুবিভাগ এবং আবহাওরা বিভাগ (Meteorological Department) সমবেত ভাবে এই ভারগার ভূকশন বিব্রুক অন্সনান (Seismological Survey) করেছেন। বর্তনানে ঐ ভারগা থেকে অনভিদ্রে একটা ভূকশন রেকর্ত করার কেন্দ্র হাপনের ব্যবহা চলতে।

ভূতীর আপছি—বাঁবের কার্যকরী কীবনকাল নিরে। কাই কলের সলে ববেই বালি এবং পলি নিরে আসে। তাই এই কলকে বলা চলে বে, "পান করার পক্ষে বচ্চ গাঢ় কিন্তু চাব করার পক্ষে অভ্যন্ত পাতলা।" লেইকচ কেট কেট বলে-ছেন বে, নার ক্রিশ বছরের মধ্যে এই বাঁব বালি ও পলিতে তরে বাবে। তার মধ্যে দশ বছর ত বাঁব তৈরি করতেই লেগে বাবে। তাই ভারা বলেন বে, এ বাঁবের কার্যকরী কীবন-কাল হবে নাম ২০ বছর। কানি না এটা ভারা কোন্তব্যের উপর নির্ভর করে বলছেন।

উদ্দেশ্য
কতটা কারগার খোরানী আসে
বকার কত জল আসে
কলাশরের পরিমাণ
বাঁথে জলের পরিমাণ
বাঁথের উচ্চতা
সেচবাবছা
ধান খাল
বিহ্যাৎ-উৎপাদন

ভাগড়া বাঁধ
জলবিদ্বাং-উৎপাদন, সেচ বভা নিরোধ
২২ ০০ বর্গমাইল
সেকেন্তে ১৩,২,০০ বনকুট
৫২ বর্গমাইল
৭৩,৮০,০০০ একর কুট
৬৮০ কুট
৬০ লক্ষ একর
২০০ মাইল
৪ লক্ষ কিলোধনাট

ভারত-সরকারের প্রবাদ ইঞ্জিনীয়ার রায় বাছাত্তর আবোব্যানাথ বোসলা ভারতের এবং ভারতের বাইতে বিশব, আবেরিকা এবং ইউরোপের বছ দেশের নদসদীর পলিবছন বিষয়ে অকুসভাল এবং গ্রেমণা করে এই লিভাতে উপনীত হরেছেন বে, প্রতি ১০০ বর্গনাইল ভারগা থেকে প্রতি বংসর বে বোরানী নেনে আলে ভা থেকে ৭৫ একর ক্ষির উপরে এক কৃষ্ট শলি ভারতে পারে। কোনীতে এই বোরানী আলে ২০,৮০৮ বর্গনাইল ভারগা থেকে। কাজেই ভোনী প্রতি বংসর পলি বরে আনে — ২০,৮৫৬ একর কৃষ্ট।

কোৰী বাঁৰের ছারা যে জলাপর তৈরি ভবে ভার পরিমাণ হবে ৭৩'৭৬ বৰ্গমাইল। এতে জল বয়বে ১ কোট ৯ লক अकद कृष्ठे। ভाद भर्ता मीत्रद २८ नक अकद कृष्ठे द्रश्य वद कन (dead storage)। अहे २८ नक अकत कुछै बातना পলিতে ভৱে গেলেও বাঁৰের কার্যাকরী ক্ষমতার কোন ইতর-वित्मय हरव मा। अचि वरमत ३१,४४७ अम्ब मूठे करत शिक्तिक कदान बहे वैद्या काकाला २८ नक बकर कृते कश्म ভরতে লেগে বাবে ১৩৪ বংগর। তা ছাড়া যে-সব ভারগা বেকে বোরামী আনে ভার মব্যে চির-ভূষারাচ্ছর অঞ্ল বাদ प्रिटर बांकि कार्यभार भाव जानित प्रिटन क्या कर वह हत. करन बाहामीत जरक शनि, वानि, बाहि देखानि कम चाजरव। ভা ছাড়া বাঁৰের জলের উচ্চতৰ সীৰার (highest pond level ) छेशदा कानैत थे जिनही छेशमही ए करवक्ष द्वांहे त्यांके नेव ( Check Dams ) त्नेत्व किरण और ध्ववाम नीरवन्न कार्यक्रती कीवम वक्षमिम (बाक्ष बाद्य: कात्रन के बाबक्षमि পলিতে না ভৱে ৰাওৱা পৰ্বান্ত প্ৰবান বাঁৰে পলি আসভে भावत्व मा।

এবাদে বলা অপ্রাসনিক হবে না বে, দীর্ব পঞাশ বংসর পরীকার কলে নির্দারিত হরেছে বে, ৬৮০ কুট উঁচু ভাবভা বাবের কার্যাকরী কীবনকাল হছে ৩০০ বছর। ভবন লোকে কি করে নেনে নিতে পারে বে, ৭৮৩ কুট উঁচু (পুৰিবীর রব্যে সর্কোচ্চ) কোশী বাবের কার্যাকরী কীবনকাল হবে নাত্র ২০ বছর ?

কোশী বাধ
কলবিদ্যাং-উংপাদন, সেচ, বকা নিরোধ
২৩,৮০০ বর্গনাইল।
সেকেন্ডে ৯,০০,০০০ খন কুট।
৭০০ বর্গনাইল।
১,০৯,০০,০০০ একর কুট।
৭৮০ কুট।
৩০ লক একর।
১,০৯০ মাইল।
৯০ হাজার কিলোওয়াট (সর্ব্বা)
৪০ হাজার কিলোওয়াট (কোন কোন বস্তুতে)

# কাছের মানুষ শ্রীঅরবিন্দ

জীদিলীপকুমার রায়

আৰু ঠিক বাইশ বছর হতে চলল তাঁত চত্ৰভাষায় আশ্ৰয मिश्रात । २२८म मरवयत ১৯२৮ (यटक को फिरमयत ১৯৫०। এতদিন ছিলাম তাঁর আলোক-পরিধির মধ্যে তব ভোন पाक छैएव भारे नि अरे श्रास्त्र (य कि कार्यन अपन अमस्त्र সম্ভব হ'ল-কেমন করে আমার মতন চাভিভরা অপূর্ণ সম্ভার ৰ্ম টানল তাঁৱ মত্ৰ অচাত সভা গ খাৰ টেনে আনা নৱ, ৰৱে রাখা। তাঁর প্রভিভার দর্শন ? তাঁর চাভে ছিল "स्वर्णात मीभ", यूर्व छेभनवित क्यांचि-छाई कि १ मा वर्ष्टिम बार (अञ्चादक विकाशास्त्र क्रोक वर्षास्त्र (च अक অনামী মতিয়া-মঙল গড়ে থঠে ভার তাভচানি গুনা তাঁৱ **धार्वितक एवं जानका देव: जारकार एकारहान अरब कैर्फिक्क** ভার অভিভৃতি—মা, তাঁর শব্দিগানিখা, দষ্টর আলো অলোক-লোকের বাণী যে আনত বহুন করে ? মা. সেই শান্তিসমূলের ৰৌনকলোল ৰা তাঁকে খিৱে থাকত বেমৰ প্ৰলৱপ্ৰোৰি माबाबन्दक ? जरनाद्य माखिय कांडाल नव (क ? खन्ड--'লীলা বটে লীলামহের—শান্তি কাছে আসতে না আসতে केंग्रे चामका चनाच करत :

বভাববিমুখ বরা ভাবরূপান্তর-সাবনার;
চিরন্তনের স্পর্শ স্থঃসহ মরতার কাছে:
ব্যোষ ও বহ্নির সাথে চিরবিস্থাদ ভার—হেম
বিমুখতা সহে না দেবতা—ভাই তার দেবতর;
শুমরে সে অমরার ছঃখহীন স্থে—আলোকের
বর ভার খেন প্রার দেবতরে করে প্রভাবান…
আপনার পঙ্কে করে ছালোকের দেবদৌভো নান:
ভারিণী শুভদা ক্রেপার কর সাথে সাথে বাদ,
অম্বভর পুরুগনে সম্বিরা হুভাার, লাছনে।

কিংবা শীবন ও নিয়তি সম্বন্ধে যে গভীর পাঠ তিনি দিয়ে-হিলেন এসেছিলান ভারই টানে—এই বিখাসে যে, ব্যাধির এমন নিদান দিতে পারে যে মহামানব তারি তো নাম ধ্যন্তরি :

> নিগুচ বৈৱিতা এক বিৰপ্ৰগতিরে নিরন্তর করে আঞ্চনণ : চিন্তা ভাষা কর্মে যার চিহ্ন রেখে :

\* Hard it is to persuade earth-nature's change;
Mortality bears ill the Eternal's touch:
It fears the pure divine intolerance
Of that assault of ether and of fire;
It murmurs at its sorrowless happiness.
Almost with hate repels the light it brings . . .
It sullies with its mire Heaven's messengers:
Its thorns of fallen nature are the defence
It turns against the saviour hands of Grace;
It meets the sons of God with death and pain.
—Savitri, Book I, Canto I—Sei Aurobindo

প্ৰভি সাধনাৰ চ্যুভি কলকের ছাপ চিরাছিত;
ভাচার অভান্ত বিনা ববে শান্তি নিষিদ্ধ ধরার ।

ষনে এ বরণের প্রশ্ন আৰও ওঠে বৈ কি—যদিও জালি
না এ-সবের কবাব কি। এক সমরে ভাবতাম বুরির আলোর
চরম মুশকিল আসানের হদিস পাওরা যাবেই যাবে। কিন্তু
তবন আমার মন ছিল বতিরে বুরিরই পুলারী বলব। কিন্তু
আল নেই আর বুদিতে সে অটল আছা। বাকবে কেমন করে
—এই বাইশ বংসর বরে এমন একটি মাছ্মের সলে লড়াই
করার পরে (বুদির) কাঁটা দিরে কাঁটা তুলতে বার জুড়ি
ছিল না। আমি ত আমি, বুদির তক্তিরণে তার সঙ্গে এটি
উঠতে পারতেন কোন্ মহারধী ? কার ত্নীরে ছিল অমন
যক্তিকভা উপলবির, দ্বির মারায়ণার ?

ষ্তির কবা বলতে গিয়ে মনে পড়ে আশ্রমবাসের সেই প্রথম দিককার কবা— যবন ভগবানে সবে একটু ভক্তিবিশাস এসেছে— অবচ মন তবু কেন জানি না বুলি হয়ে ওঠে ভগবানকে কেউ যুক্তিবাণ দিয়ে বিবছে দেবলে। শ্রীজরবিক বছ পত্রে আমাকে লিবেছেন ভাগবতী চেতনাকে মানবিক চেতনা বুবভে পারে না বদি সে তার মানবিক চেতনাকে আঁকড়ে বাকভে চার। তাই ভ আমরা পদে পদে ভগবানকে ভূল বুঝি। মনে পড়ে শ্রীমার কবা। বুছের দর্শন তিনি প্রায়ই পেভেন— বলেছিলেন আমাকে। একবার বুছ তাঁকে বলেছিলেন :

"esta

ওঠো কলকিয়া আপনার কিরপের গরিমার। ক্ষিকার কেন ভর ? সমীরণ আমাদের ভট হতে দুরে ল'য়ে যার

24

এনে দিতে আরো ব্যাপ্ত বিশ্বপরিচয়।

ঈশবী করুণা তব উলাভিয়া দিবে না হ'হাতে ?

—প্রেমের ঐশ্বা-উৎস পারে কি ফ্রাতে ?

কেন কুঠা তবে ?

পাছে ভূল বোঝে সবে ? কৰে হায়

দেখেছ—মানবমন ব্ৰিয়াছে ভবে দেবভার ?"‡
সাবিত্রীতে গুরুদেবও একথা বারবারই লিখেছেম—বে

- † A secret enmity ambushes the world's march;
  It leaves a mark on thought and speech and act:
  It stamps stain and defect on all things done;
  Till it is slain peace is forbidden on earth.
  - -- Savitri: The Book of Fate--SRI AUROBINDO
- ‡ আমির করাদী অপুলেধন থেকে অনুদিত। সমত প্রার্থনাট "অর্থ" নামক কাব্যত্তে ছাপা হ্যেছে আপ্রম্থেক।

বাহ্ব বাহ্ব বলেই তপৰানকে চার না বুবতে। বুবে বলে পারি না বুবতে। কিছ জন্মদেব বলতেন (বে কথা বারবার ঠেকে শিবেছি) বে, আনাদের 'পারি-না'-র মব্যে প্রারই 'চাই-না' থাকে স্কিরে। তাই ত তপবামের ভাগবতী শক্তিকে ব্যাদ করে মাহুবের এত তৃত্তি, তার লক্ষ্য সৌরহণং-চালিনী প্রতিভার ক্রিরাকলাপকে আমাদের বেচপোরা বুরির বাটধারা দিরে নাগবার এত স্পর্ভা, অহন্যর গুতার উপরে আমি বিজ্ঞান একটু-আনটু পড়েছিলান, কাছেই ঈপর অসিছ—"প্রধাণাভাবাং" এ আতীর বৈজ্ঞানিক আহিমরে সাচা একট্ দিরেছিলার বৈ কি? ভাবটা—বিশ্বাস করি বটে, কিছ বিশ্বাস না করতে পাহলেই বেশি খুশি হই। ত্রমতে হয়ত একট অন্তত্ত, কিছ আকরে অকরে সভ্য।

এত্ন ছ'নৌকার পা দিরে যখন পার হতে চেটা করছি দেই সময়ে আনাতোল ফ্রানের Dieux Out Soif (দেবভারা ভ্যার্ড) উপলাসট হাতে পড়ে। তাতে ব্রভো বলে একজন রসিক ভাগবত-ফ্রিটক বলে:

"Ou Dieu veut empecher le mal et ne le peut, ou il le peut et ne le veut, ou il le veut et le peut. S'il le veut et ne le peut, il est impuissant; s'il le peut et ne le veut, il est pervers; s'il ne le peut ni ne le veut, il est impuissant et pervers; s'il le veut et le peut, que ne le fait-il, mon pere?"

#### Wite-

"হর জ্বর করতে পারেম রু:খ নিরারণ, গুৰু শক্তি নেই—তা হলে অক্সর সেকন। পারেন ভিনি বুবই, গুরু চান মা—বিদ হর, বলতে হবে এমন হরি হিংকুক নিকর। চান মা এবং পারেন মা এই ক্বাই বলি ঠিক, বলব ভিনি অক্সর এবং হিংকুক—বিক, বিক। পারেন ভিনি করতে, গুবা চানও—বলি হর, করতেন মা কেন—পারেন বলকে মহাশর ?"

গুলুদেবকে ক্রাসী প্রশ্নট উদ্ধৃত করে লিখি: "গুলু । কি বলেন ? একটু হাসলেমই বা। আর যদি সম্ভব হয়— একটা ক্রাব দিন না এ বোক্ষর প্ররোৱ।"

भविषये अन क्वाय-साक्त्यव केवत साक्य क्षेत्रताः

"আনাভোল কাঁনের কথা সর্কান বলার বৈকি—ভা তিনি ভগবাদের সক্ষেই লিবুন, বা শীকানিটির সক্ষেই লিবুন বা ব্ছিরালী পাশবিক বানবভার বুছির ভথ। আচরবের বোকানির সক্ষেই লিবুন। কিছু আনাভোল কাঁ।সের সক্ষেধন ভগবাদের কেথা হর (কোন এক বিজ্ঞানের ক্ষেই হবে, কাল নার্কসের মর্গে হ্বার কথা দর—বভার পূর্বে তার মার্কসবাদে দীক্ষিত হওয়া সক্ষেও) তথ্য ভগবাদ তার নিজ্ঞিতার যে ব্যাখ্যা বিরেছিলেন ভা ভূমি শোনো নি বুবি ?

कर्तवाम काँव कारक मदामद मिरव बनरमम : 'अ बामारकाम ! ভোষার নাভিক ঠাটাট যোক্ষম হয়েছে, মানভেই হবে : কিছ হয়েছে কি. আমার নিজিত্ব থাকার পুর সকত কারণ ছিল। अकृषिम बुक्किरमयी अरम जामारक विश्वम सम्कारनम : 'रमने रह. ভূমি আছ এ ভাষ কর কেম ? ভূমি বেশ কাম ভূমি মেই बन्ध कामिनिक विकास मा । जात यहि छवि मिछाई बाक चा वरमध क्रमि कामार एहे मिरद त चमारहे काथ करवह victe (visite wist wie alsie atere ale (a) বেই ভূমি সরে যাবে সেই জগং হরে দাভাবে চমংকার---সাবাস খাকে বলে। আমার মেরে বৈজ্ঞানিকা কেবীও আমি সব ভোড়ভোড় টিক করে রেবেছি। ভূমি বেতে মা বেতে बाल्य कार बीश नित के करत क्रमरन—'नवात केशरत बाक्य ज्ञा' अहे जनमा शद्र महिमादिज ७ वाबीन करत : সামাভাৰাপন্ন ভাড়তাবাপন্ন, প্ৰভাৱিক হলে, নিক্ষের বাইরে चाव काक्रव यूर्व मा (हरह, विश्वतकार्क नित्कव (हरह चाव काष्ट्रेटक वक वरण मा स्थरम । छथम मा शाकरवम धर्मबाम ना (परापरी, मा भाषाशुक्रण, मा बर्चाहदन। छवन मुख हरत সৰ অভ্যাচার, দারিত্রা, বুছবিগ্রহ। বস্তভাত্তিকভার বরে कार आहर्या केंद्रेट हेर्डेच्य हृद्य, वानिकाय हा खान मनीत সোমার পাবা হবে সর্ব্রদামী। বিশ্বব্যাপী বিকার গুণে অঞান হবে নিশ্চিক, মাপুষের মন্তিকে বৃচ্চার বা অবেটিঞ্কভার भवार्ण करत चवाचन। बाक्य करने विवस, श्रास्त्र, बृद्धिनाथी, रेक्कामिक, श्राक-अविकृत अवके। त्करम श्राम श्र विठात करत (शेहरव करन करम बवाबब निवास । देवळानिक छवा বিশেষজ্ঞানের ভারত্বর সর্বাত্ত পভাবে ছভিত্তে—ছাভবে না माञ्चरक भावित वर्श नवानव श्लीत्य मा नित्त । अटकवारव নিবুৎ স্থাৰ ৷ অনে অনে হবে স্বাস্থ্যনান অভিবিক্ষিত : **ठिकिरमा ७ पाद्यविशासित छा। अविक हार वृद्धि-**निविधिक, विकास केर्रेटर ह बाटम, कटर चळाच, मर्काक्य क े न्यादिनिकाद कार बाद मनावान । विश्वनावकात আষদরবার, নিবিল ভাতিসব্দের প্রতিষ্ঠা; বিবর্তনের কলে মাছ্য, মহভো মহীয়ান্ মাছ্য, চলবে প্রকৃতির প্রে যার চর্ম পরিণতি হবে মহানু বেভজাতিকের মধ্যে, মানবিক করাবশে शांक बदद बीदद बीदद केंद्रीद जांबद कांद्रा कारण करने कांद्र राचि:, माचि:, माचि:। मुक्ति, ও পীতাত আতুগণতে : বাৰছা, ঐকা হৰে বিশ্বতোষ্ধ।' আমাজোল। এইভাবে আরও কত কি বে ভিনি করলেন বোষণা। ভনে আমার बाब हम, 'वा, वा । कि हबरकात ।'-- चात जूवित्वरें कि कब १ **(ज्रांत (वर्व, जावारक मा इरव किंद्र कदार्ज, मा इरव किंद्र** र्वरंक क्षमाक। कार्कर वानि नव काक रवरक निनाम निरक्ष थेहैरर-कादन इवि काम, वावि नवायवरे प्रकार अक्ट्रे श्रदाय-श्रव, प्रतिस्य रू(१७ मिस्टर्क अक्ट्रे भर्पायतीय

करत वा निष्ठम किएक जावरक कालवाजि । किस्त अ कि अबि আছ ? যে-সৰ খবর কানে আসতে ভাতে ভ যাবে ভাতে বা (व. अवन कि विकासित मार्काचा (शरबक विकास की कांत्र श्रीष्ठिक्षणि नंदन करदाहब ? वहि वा करत बारकम करत ताम করেন নি বলবে আমাকে ? কারণ কি এই বে ভিনি করতে काम मि. मा भारतम मि ? मा. चिमि कामक मि. भारतमक मि ? मा. जिमि कारबिशमक वर्ते. भारत्वक वर्ते. क्वम य-ভাৰেই বটক বাৰে ওঠে বি। ভা ৰাভা দেব আমাভোল, विकास ७ ब्रक्टित्रवीत धरे महानश्रीत-नाडे. व्यक्षिक्का, ৰনভান্তিকভা--এদের রকমদক্ম বেন কেম্বন ক্রেম লাগে: বেৰ এক অভিকার রাক্স, ভার উপর হাভে পেরেছে বৃদ্ধির पंक्रिनावर्ग ७व। विकारभद्र नदक्षाव, नाक्त्रका । चर्क चार्क्सा, करे बाम छ इत मा (व. ताका ७ वर्षात ब्राप्त बाक्य यक्ती বাৰীৰ ছিল ভাৱ থেকে দে আৰু বেশী বাৰীৰ হভে পেৱেৰে। ব্যাপার কি ? কিংবা এও কি সম্ভব বে যক্তিদেবী না সর্ব্বেসর্ব্বা, না অভাছ-এমন কি আমার চেমেও বেৰী অনাসন্তী ভাও করে ৰলেছেন ভিনি নৰস্ক্লী করতে গিয়ে ? তাঁদের কথালাপের विर्णार्वे और भरीकर भारति जाति , कानि मा अब कक्वी স্ত্যি-কারণ বে ভগবানের ছবি আমাতোল ফ্রাঁজ এ কেছেন তাঁকে আমি নিজে চিমি না।"#

क्छि और त मीश मनीश। मह'न राक्तिक्ष चाद विना त्वर क्यम करद लाएगरक बादा कारम वि a चनवन बाक्स्केटक क्षांम विमंध ? मा कामरन जारवर कामारना वाटन कि करत কেম তার পাশে ৰভ সব দীপ্তভম ভুক্তম প্রতিভাকেও মনে হ'ত বামন ? তা হাড়া ভাষাতে চাই এ স্পৰ্কাই বা কেন-वर्ग निर्दे जान करत जानि ना किर्न कि हर-अवन कि কোন টানে এলেছিলাম তাঁর কাছে তারও প্রো খবর পাই नि बनाक श्रेष्ठ करत ? स्वीवादि कृत्वत कार्य चारत बर्द টানে, কিন্তু ভার পিছনে থাকে ভার প্রাকৃতিক সহকাভ সংভার। কিছ আমি ? আমি কেম্ম করে টের পেলাম তাঁর ভাঙাৱে আছে অক্ষর অয়ত ? কোন সংস্কার এ ? অস্তত বৃদ্ধির मत ब निकद-क्ममा वृद्धि छ हिन जामात ब विश्वारमत शतम थ চরম বৈরী যে একলা যে-মাতুষ রয়েছে বছরের বছর, না करत राया. मा कत कथा. मा मार्ट किम-बार्य मान्य কোনও কাভে আসতে পারে বিশ্বহানবের। রাসেনের ভক্ত আৰি চিরদিন। তার কথা চিরদিনই বনে হরেছে অকাট্য বে, "এফুডি ৰাজ্যকে গড়ে ভোলেন নি একলা ৰাভাবাত্ৰ পতে।"। অৰচ কি বলা বাবে এতেন অভত মাতৃষেত্ৰ

-BERTRAND RUSSELL

जारमारक त्र क्षांत्र चर्क चंकाकी कांद्रेरर क्रिय अवदेशक चरत-कालत गरह रहवांक्षमा मा करत बहारहरे हवा। सर्गरक क्क कि कांच बाड़े (तक चंदर कियि कांगतिय मा कि हरें। करन-ছিলাৰ তিনি ৰাভি কোৰও দিব সিবেষা পৰ্যায় বেৰেন নি। ভলহয়ী ভেনিস নগরীতে এয়ন মাছম নাকি আছও নেলে বে हर्द्रहरू कामक किन बाला लाव मि। क्रेसदेविएम्ड क्र्यंमक जित्ममा मा त्वथा जामात काटक जात काटक जाकमीत मत्म হ'ত। মনে হ'ত বাভবপরাহাধ। এতেন ম্পাল মুনির মৌন बार्गित विद्वत्रभव करन क'कम स्वनायी १० अजारन अक्ना ধেকে ভগতের উপর কি প্রভাবই বা ভিনি বিভার ভরতে भारत्य ? व्यविश्व कथम् । कथम् । क्रिय कार्यामस-माम ह'छ : शाद्रदिम मा विन किम ? क्रांचित क्रियोक छ विकास विश्राम करत या । कात्कर मस्य चमस्यवित व्याभादि रेक्टिन्थं विषय बाबरक श्रामाना मत्न कवरण श्रिमाम कि छ:रप ? कि हैह: वावहादिक वृद्धिक अन्त महत्क माक्त क्या हरन मा। ভাই ভক্তি-বিশ্বাসের রঙীন প্রহর কেটে বেতে না বেতে আসত বেশাভাঙার পরের অবহা—the morning after—ভবৰ ছেৰে আসভ মনে বৰ্ণাচা আবেশের প্ৰভিঞ্জিয়া--কিনা বুসৰ जरमह। बाम क'ल लबन मंदर हत हारोगानात्वत कवा : "विश्वारमत कि अक्षे मिश्विष्ठ बाकरव मा बिमीन " बरम छ'छ त्रवीलमार्थत कथा : "कृतित ग्रुमिक्न और त्य प्रशीलप्रकारकत গুৰুবের আত্তম না পারে দে বিখাস করতে, না অবিখাস ভৱতে।"

এই নিরেই বা ভূগেছি কি কম ? এক দিকে অবিখানীর জেরা ভানে পার হানি, মনে পড়ে এজরবিজের আমাকে লেখা এডটি চিটি:

"But if the intellectual mind is inferior (to spiritual experience), how can it challenge, judge, make the Divine stand as an accused or a witness before its tribunal, summon Him to appear as a candidate for admission before a Board of Examiners or pin Him like an insect under its examining microscope?"

("বৃদ্ধি ৰদি অব্যান্ত্ৰের চেবে ছোট হয় ভবে কোন্
ভাষার সে ভগৰামকে আসামী করে কাঠগড়ার ইাড় করাভে

 চিত্ৰং বটভবোৰ্লৈ হ্বদাঃ শিষ্যা শুকুৰ্বা।
 গুৱোন্ধ নৌমব্যাখ্যামং শিষ্যান্ধ হিন্নপ্ৰাঃ। (শঙ্কাচাৰ্ব্যের দক্ষিণবৃত্তি ভোত্ৰ)

বছই আশুৰ্যা বে বটয়ক্ষের বুলে শিষোরা কেবি যুদ্ধ, আর শুকু হলেন বুবা !

গক্তর দৌদ বেই হ'ল কিনা ব্যাগ্যা—অথচ ভাতেই কিনা শিহাদের সংশব হ'ল হিয় !

† বৃদ প্ৰাচ আচৰ আমেরিকান এডিশন Among the Great-এ বাপা হয়েছে: ২৪৫-৫০ পূঠা।

<sup>† &</sup>quot;Nature did not construct human beings to stand alone."—Marriage and Morals, Chap. 9.

চার—বেদ ভগবান উবেদার, তাঁকে ববাবিবি কেরা করে তবে বাহাল করা বেভে পারে, অববা পিন দিরে বিবে বৈজ্ঞানিক রাইজোজোপের সামনে বরে তবে পরীকা করতে হবে।") অন্ত বিকে অভিবিধাসীরা দেবি তাবে ঐঅরবিক বা ইছে তাই করতে পারেন ( বিষিও ঐঅরবিক লিবেছিলেন একটি চিটিভে, "I do not deal in miracles." "আমি তোকবাকি নিরে কারবার করি না।") বরে বের—তিনি সর্ব্বজ্ঞান । এক মাকোরারির কবা মনে পকে। মহাপ্রত্ এনেই আশ্রানের এক সাবককে কিন্তানা করলেন: "কৌন্ কারবা?"

- —"এ দোভলাম। জাননা গোলা ?"
- -- "বিস বরস ?"
- -- "चव का। ?"

চোৰ বড় বড় করে মহাবিখাসী বললেন চুপি চুপি: "ক্যা ? উড় ভাভা ?"

अ बराबर विश्रात की बरुविया ठाइँएकन मां अ कवा चात्रि स्थ (कांत करत वना महे- श्रमां कत्र भाव-कि चत् বহু বৃদ্ধিবানের বধ্যেও দেখেছি বা ভা বিখাস করাত ছর্কন্দীর लक्ष- छा चाराव रह रह (झारकव बाहा के हित्र- नारवान. महाल--! अँदा कार्यम अदह मात्र वर्षात करूककि, चामूनका -- লয়ালট : তুনতে তুনতে প্ৰায়ই আমাত্ৰ মনে ত'ত---আমাত্ৰ মতন ভিস্লয়াল শিয় বুবি ভূভারতে ছট নেই। বহু ভূপে ও (भाक (बंदर क्रमण: ब्राविमाम- शक्रामरवर जारांत्र (भाव कारत- (व देसहेरशीशनिक श क्षताक्राणी जमार्क यह। কিছ ভবু বৃদ্ধির অহমারে আঘাত লাগতে না লাগতে মন क्रमक निद्रभा--- जवाकविक मामवश्रक्रकित बत्रवादन (व वृद चदमाश्रम यह (कामल ब श्रकृतिह चमनवमन कहाल हारेल मा किष्ट्रा अपेठ मका अहे त्व. खेलद्रविकारक मिनवामाळ বা তাঁত চিট্টপত্ৰ পেতে না পেতে মনে কেগে উঠত এমন এক ভাবের ভোরার যে তথ্যকার মত সব সংশ্রের ব্যক্তী। शनिवाहि (काषात स्व त्य त्य त्य । केळ्नात्मत त्म-क्या व मध्य সাৰাত্ৰৰ মানবপ্ৰকৃতি বা লৌকিক বুৰিতে আছা হাত্ৰামোত্ৰ क्ष निर्देश बक्रि वर्ष क्ष मा निवालक । वारदिक चनरा विश्नात कुकान हरनाह क हरनाहरू-नार्व बार्व वांव ভাঙে, ভার পর সুরু হয় কের মারণ-স্রোভের বিরুদ্ধে কি ৰৱণের অভিকাম বাঁৰ দেওৱা যায় ভার অৱনা-ভ্রনা।

শ্ৰীখনবিদের বৃষ্টিভলি বানিকটা খারত হতে না হতে সভিতিই বেন বেণতে পেভান নে বৃদ্ধির নেরামতে কোনো ছারী শোধনের বা অধনের কাজ হবে না হতে পারে না। অম্নি ননে হ'ত—ভা হলে বৃনি বৃদ্ধি ছাড়া অভ কোনো বলরে এনে-হেন ভিনি অধাতে আমার নাজেহাল থেরাকে টেনে! একথা বার ননে হর সে বা ভানে বলে মনে করে ভার চেরে বেশি আনে না ভ কি? অভ ভাষার, আমি নিজেকে বা ভেবে এসেছি বদি সভিত আমি ভাই হভাম ভা হলে আমার ননোবাসী বৃদ্ধিন আমি আশিওকে নিরভ করে আমারই নব্যেকার কোন্ শভিত ? কেন আমি এমন অভিত্ত হই এঅরবিজের সাধনলভ বাবীতে:

ৰানব । বহুম কৰো এ বিবের বেদ্যাবিধান, ছঃৰাৰ্ডা বহার অভি-ছুৰ্গম এ বাজাপৰে ভৰ অবনার নহাপতি হোক ভব আলার নির্ভন, হও উর্থ সভামুখী, প্রেমের শাভির সুদ্রাধী। অলারু আনন্দ ভূষি লভিয়াহ নভোলোক হতে, ভণিকের দিব্যস্পর্ণ—বৈনন্দিন বান্ধ-জীবনে, প্রভিদিন হোক ভব ভীব্রত-উদ্যাপন সম।

বৃদ্ধির অভিযানে বা লাগলে ঘৰনই বাজত ভবনই নমে
হ'ত ভিনি বে বৃদ্ধিলাকের মন্ত্রীকে চহম দিশারি মনে করেন
না একথা জেনেও তাঁর শরণাপর হতে পেলাম কি ছঃবে ?
বৃদ্ধি ঘতই কেম 'না না' করুক এতে ওতে ভাতে—ঘতই কেম
না মনে করি এ নিষেবের রাশ বরে আছে নাববানী মন—
তবু সেই উপ্টো পথেই উবাও হতে চাই কেম জেনেন্ডমে বে
এ পথের দিশারি বৃদ্ধি মর—এ ভাক বৃদ্ধির বোৰগন্য মর ? ভাই
না এ ভাকে আমি সাভা দিরেছিলাম সাভা দিতে না চেরেও।
কেমন ক'রে দিলাম ভার কিছু হদিস দেবার চেঙা করব, কিছ
ভার আলে এই বিচিত্র উপলব্ধির উপর একটু জোর না দিহেই
পারছি না যে আমার সভার বে অংশ তাঁর এ ভাকে সাভা দিরেছিল—আমার অনিজুক পারবৃদ্ধি সেই পারসারবিক্তে মানতে না
চেরেও মানতে বাবা সম্বাহ্রিক না বেনে উপার ছিল না বলেই।

O mortal, bear this great world's law of pain,
In thy hard passage through a suffering world
Lean for thy soul's support on Heaven's strength,
Turn towards high Truth, aspire to love and peace.
A little bliss is lent thee from above,
A touch divine upon thy human days:
Make of thy daily way a pilgrimage.

—Savitri: Book of Fate—Sri Aurobindo



## "বাংলা মঙ্গলকাব্যের ইতিহাস"

অধ্যাপক শ্রীচিন্তাহরণ চক্রবর্তী

পুৱাৰৰ বাংলা সাহিত্যের ইভিহাসে মুক্তকাব্য ও পাঁচালি अफ विभिन्ने प्राम व्यविकात कतिया चाट्य । शरिवात्नत प्रिक प्रिया বেৰিতে গেলে সমগ্ৰ সাহিত্যের অবে কের উপর ইহার আমলে भए । कि **७५** भविवार्शन विक विना नरह मुस्लान विठारक ইছার গৌরব কম মতে। সাহিত্যিক গুণাগুণের কথা বাদ ब्रिक्ट बाजाकी समाधारायंत्र कीवान बेजात असारवत सम ৰাই। বৰ্মেকৰ্মে আনন্দে উৎসবে কিছদিন পূৰ্ব পৰ্বছও ইচা ছিল অপরিতার্থ। নানা উপলক্ষ্যে অগণিত লৌকিক দেবভার পুৰা-প্ৰসঙ্গে দেবভাদের অলৌকিক কাহিনীপূৰ্ণ কৰা বা नांगानि भार्व वा नाम भूकाद विभिष्ठे चक वनिया भवित्रनिक হইত। মনলচতী প্রভতি বেবভার মাহাত্ম বা মনলভাবোর श्रीम क प्रक रक काक्यर १६ केश्मरवर यक किए। वर्क्यारम वैज्ञास्त्र क्षात्म्य किछ कशिरमध केंद्रक्षाद्य (मान नार नार-প্রায়াকলে ও প্রাচীনপত্নী সমাজে ইতারা এবনও অন্নবিশুর পরিচিত। শহরের আধুনিক বরবের লোকের নিকট ইহারা ও ইহাদের সমগ্র পরিবেশ অপরিচিভ হইরা পড়িলেও ইহাদের নাহিভ্যিক ও ঐভিহানিক বৃদ্য শিক্ষিত-সমাক্ষের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে-নালা মকলকাবা প্রকাশিত ও আলোচিত হইতেছে—বিশ্ববিভালর ইতাদের কোন কোনটাকে সাহিত্যের बाबापत शार्शकार विद्राष्ट्रिक करिएक्त। अवश्र अवदा चश्रीकात करा हरन मा (य. मुक्रेश्यर करतकम्म लारकत मर्यारे हेडारुव वर्ष्किकर चारलाहना श्रीबायक—मिक्कि स्थारक ইহাদের পুঝামুপুঝ বিশ্লেষণের ভেমন কোনও উৎসাহ, আগ্রহ বা ক্রয়োর মাই। স্বলকাবো বিভিত আচারাসুঠান যে স্কল अस्त्रभारबर बरवा अवस्थ अन्यात्रक बादाब निजासमान काहारमञ সলে ঘনিষ্ঠ পরিচয়ের জভাবে—কোন কোন ছলে সম্প্রদার-विट्राक्ट प्रमुख वह किमिट्यद क्षेत्रच वर्ष अवव वः गांवा। क्रम बहै विभाग जाहिएछात चरमक चरम बनम भर्ग चामारमद बिक्र जन्महे-हेठाव (व जाबाब चर्म श्रकानिक वहेबाद ভাষার বেশীর ভাগ ক্ষেত্রে প্রাচীন প্রস্থ প্রকাশের বৈজ্ঞানিক হীতি ধৰাৰৰ ভাবে অভুক্ত না হওৱার আলোচনার পৰঙ चन्य क्य मारे।

এই সব অসুবিধার ক্রব্যেও বাহারা অসারাভ বৈর্ব ও
নিঠ্:-সহকারে এই সাহিত্যের বারাবাহিক পরিচর এবং
বিধরণ সংকলন ও প্রচার করিতেহেন তাঁহারা নিকিত
সাবারণের বভবাদের পাস্ত। নীর্ঘ বিন বাবং বাংলা
সাহিত্যের ইতিহাসের সকে প্রাস্তিক ভাবেই এই সাহিত্যের
আলোচনা হইরা আসিতেহে। বতন্তভাবে ইছার ব্যাপকতর্ম আলোচনার প্রয়োজন কেই উপলব্ধি ক্রিরাহেন বসিরা
ববে হর না। চাকা বিশ্ববিভালরের বাংলা সাহিত্যের ভূত-

পূর্ব অব্যাপক শ্রীষ্ঠ আন্ততোৰ ভটাচার্ব মহাপর বাঙালীর জীবন ও সাহিত্যে মকলকাব্য বে বিশিষ্ট ছান অবিকার করিবা আছে ভাহার কথা বিবেচনা করিবা এই বিবরে অএপী হইবা-ছেন—'বাংলা বদলকাব্যের ইভিহাস' নাম বিবা ভিনি বদলকাব্য সাহিত্যের বিভূত বিবরণ উপস্থাপিত করিবাছেন—প্রসক্ষমে তিনি মদলকাব্যে বর্ণিত কেবভাবের মরণ নির্বা-রণেরও চেষ্টা করিবাছেন। প্রথের কথা এই বে, বাঙালী ভাহার দীর্ব সাবন'র এই কল সাদ্বে বরণ করিবা লইবাছে—ক্তরের বংগরের মধ্যেই ভাহার প্রহের প্রথম সংকরণ নিঃশেষিত ভ্রতাছে এবং পরিবর্ণিত ও পরিবাজিত আকাবে প্রকাশিত বিভীয় সংকরণের কর কলিকাতা বিশ্ববিভালর প্রভূতারকে স্বান্ধিত করিবাছেন। আন্ধরাও ভাহাকে অভ্যান্ধক করিবাছেন। আন্ধরাও ভাহাকে অভ্যান্ধক আন্ধানতিতি।

चित अमना हुनी, बर्म, कालका, मिल्ला, वर्त, नाइका, দক্ষিণরার, হুই প্রভৃতি দেবভার মাহাত্মা বর্ণমপ্রসঙ্গে যে সকল কাৰ্য বিভিন্ন কবি কভ'ক বিভিন্ন সমূৱে বাংলা ভাষাৰ ৰচিত व्हेशकिम कावारम्य हेलियक करे अरब चारमाहिक व्हेडारह । (सरासरी एक चरतका करिया रहिए एवं जब प्रका १६ का किसी প্রচলিত আছে, গ্রন্থকারের মতে 'প্রকৃত মনলকাব্যের মর্ব্যালার रेटारबर बाद अक्बाबिक हैहील ट्रेंटल भारत नारे'--कारे তিনি তাহাদের গহছে কোন আলোচনা বর্তমান প্রছে করেন পঞ্চাত্তর পদারামের মহারাষ্ট্রপুরাণ, ভারতচজ্ঞের बामिनिश्व कारा ७ विकरबाद्यत जीवनका बहे जिनसामि खेलि-হাসিক কাৰ্য সহতে বছন্ত একট অব্যাৱে বিশ্বত আলোচমা कदिशासन । अथा बन्नकारराद अञ्चल है जारबद रव अवस ক্ষিত হুইবাছে ভাহা অপেকা পরিচিত-অপরিচিত বিভিন্ন দেবদেবী-বিষয়ক কাৰা হভা কাতিনীয় সভিত ইতার সম্পর্ক चक्रक: विश्ववच्या मिक् मिना चनिर्वच्या जरमह माहे। अहे সাহিত্যের মধ্যে ক্রফ্রিময়ক ক্রফ্রমকল এবং ছেবসমুখ বোগী-দের বাহাত্মবর্ণদাত্মক পোরক্ষবিকর, গোপীটালের পাঁচালি প্রভৃতি গ্রন্থের আলোচনা বিভিন্ন পুত্তকের মধ্য বিশ্বা বিভাল क्य हा मारे। किन्त निमान गाँठानि, मणानावाद (नव गाँठानि, चन्नकार के. द्वियमका की श्राप्त विकित श्राप्त व मका की. (क्याना, एकामी, अनगतमातात्री, मिताकून बाबावय, देव প্রভৃতি বিভিন্ন লৌকিক দেবভার বে সমস্ত কাহিনী এখনও ৰহিলাদের মধ্যে অলবিভর প্রচলিভ সেওলির লালাভ ভিছ কিছু বিবরণ বিভিন্ন অনভিত্তলভ পত্র-প্রিকার হড়ান রহিয়াছে —এসম্বৰে পুথলাবৰ বিশেষ কোৰ আলোচনা এখন পৰ্বৰ হর নাই। খবচ কোন কোন পাঁচালির রচনার মধ্যে ভবিদ-

শক্তির পরিচর পাওরা বার বা এবদ নতে—ইহাবের হলের চাত্র্ব ও শক্তমিরেশের দৈপ্রা পাঠকের চিত আরু ইকরে। দুইাত হিসাবে পূর্বকে প্রচলিত কালিদাসের সভ্যনারারপের পাঁচালির উল্লেখ করা বাইতে পারে। কাহিনীগুলির বর্যেও অনেক হলে প্রাচীনকালের বাঙালী-সমাক্ষের প্রথ-হংবের অপরূপ চিত্র কুটরা উট্টরাতে দেখিতে পাওরা বার। বাঙালীর লৌকিক বর্ষাস্থঠানের ইভিহাসের বিক্ দিরা ইহাদের ব্ল্যাসর্বোপরি। এইরপে নানা দিক বিরা ব্লাবান এই বিষয়গুল সহতে একটি অব্যার আলোচ্য প্রত্যে সংযোজিত হইলে ইহা পূর্ণাল হইত বলিছা মনে হর। বিভিন্ন প্রেণীর মলনকাব্যের আলোচনার উপক্রমে প্রহ্লার লৌকিক দেবতার উৎপত্তি ও ক্ষরিকাশ সম্বাহন বে পাণ্ডিত্যপূর্ণ আলোচনাও করিরাত্বেন, লৌকিক বর্ষা সম্বাহন বে আগ্রহ প্রহ্লার ব্যক্ত করিরা-তেন তাহাতে ওাহার নিক্ট হইতে এ বিষরে আরও অনেক তথা ভানিবার আশা ছিল।

প্রাচীন বাংলা গ্রন্থভাল যে অবস্থার, বে আকারে আমাদের নিকট পৌহিয়াহে ভাহাভে ভাহাবের আসল রপ্তর্চনাকাল ও রচমিভাদের পরিচর নিব্রিণ করা অভি ছরত্ব্যাপার। বাঁহারা এই বিষয় লটয়া আলোচনা করেন ভাঁহাদের পর-ম্পারের মধ্যে এ সম্পর্কে প্রচর মন্তর্ভেদ বর্তমান। আলোচনা-কারীদের অশোভন পক্ষপাতিত্বের বন্ধ এনকল আলোচনার কল কোন কোন কেন্দ্ৰে বিসদুশ হইয়া উঠিয়াছে। বেষন, একজনের वहबूल बाद्रका-- 'नःक छिविदी म' পूर्ववत्क कथम ७ काम छैरकृष्टे এছ বচিত হৰ নাই বা হইতে পাৱে না-প্ৰাচীন সাহিত্যের মৰ্যে ৰাহা কিছু ভাল ভালা পশ্চিমবদের অধবা বাহা কিছু পশ্চিমবলের ভাতাই উংকৃষ্টভর। এই অভুত বারণা ভাঁহার শ্ৰমবছল পাণ্ডিভ্যপূৰ্ণ আলোচনাকে অনেক ছলে বিহৃত ও ক্লুষিত করিয়া কেলিয়াছে-পরম্ভ সম্বন্ধ তাঁহাকে অসহিফু ও উপ্ৰ ক্রিয়া ভূলিয়াছে। পুৰের বিষয়, বর্তমান এছকারের लियांत बर्या अरेक्षण क्रिकेत नदान भाश्वता यांत मा-विद्यांशी মত বঙ্গের সময়েও তিনি অসংহত ও অসকত ভাষার আশ্রহ প্ৰহণ করেন নাই। ভবে অনেক ছলেই ভিনি অব্যাপক সুকু-মার সেন মহাশরের মত বঙ্ম ও সম্পূর্ণ বিরোধী মত প্রতিষ্ঠা ক্রিলেও বাত্র বার ছই পাষ্টীকার (পু. ৫১৫,৬৭১) অভ প্ৰদক্ষে তাঁহার নাম উল্লেখ ক্রিয়াছেন। ইহাতে বৈজ্ঞানিক আলোচনার উচ্চ আদর্শ রক্ষিত হইরাছে বলিতে পারা বার মা। অবর সেন মহাশয়ও তাহার প্রছে একবারও ভটাচার্ব ৰহাশৰের নাম বা প্রস্তের উল্লেখ করিবাছেন বলিবা মনে পড়ি-(चर्च मा। (न चच्छ क्या।

' হিন্দুর বর্ম ও আচার সহতে আলোচনা ভরিতে গিঃ। जामा के भाव थे बाहित शिक्षित होने किया विका बारकम ৰেবিছে পাওৱা বার। ভাই আচারনির শাল্ল পভিভের जहारवाजिका और जब कार्र चनवित्रार्थ। क्रीहार्थ ब्रह्मान्टर व প্ৰছেও এ ভাতীৰ ক্ৰট কিছ কিছ বৃতিয়া গিয়াছে। ব্যাস খব-क्रां देविषिक दहेबाद ( पू. ১७৫, ১৪१ ), काळाबनीएक যোভদ-মাতকার অভতৰ বলিয়া নির্দেশ করা চইয়াছে (প্ ७१२ )। प्रें हैमाई हरेतार अधनि छैट्नकी मह। जाहा हाजा. 'ক্ৰম্মী' নামটি কোন কোন অঞ্লে প্ৰচলিত থাকিলেও ইচা সাধারণত: স্বতিকাষ্ঠ্র নামে অবিকভর পরিচিত। পশ্চিমবলে প্রচলিভ অরণাষ্ঠীর ব্রভক্ষা বলিরা প্রত্কার কোন বছর ইদিত করিরাছেন বুবিভে পারিলার বা। রবুনন্দরে পুঞ্জিভ অষ্টাবিংশতি ভড়ের অন্তর্গত ভিবিভত্তকে 'রবুনন্দের রচিত विनवा श्रीतिष्ठि अहेकर्थ छैडार क्यांच ( शृ. ८७) (इकु श्रमर्भ कतिल काम इरेक। जाककामकात बारमा अध्नमृत् श्राप्तक: देव्र अरङ्ख बर्दम वर्गाचिव्र वाह्ना (वम अक्टी নিষ্মের মত হইরা গাড়াইরাছে : ছ:বের বিষয়, বভূমান এছেও ইহার ব্যভিক্রম দেখা যায় না।

এই সব সামাভ আটবিচ্যুতি সত্ত্বেও প্রছ্থানি সুলিবিদ্ এবং সুপাঠ্য। ইহার পত্তে পত্তে প্রছ্কারের পরিশ্রম ও পাঙিভার পরিচর পাওয়া যার। পুরাভভাষোদীর ভ ক্থাই মাই, সাহিত্য-রসিক বাঙালী পাঠক্যাত্রই ইহা পড়িয়া আমন্দিত ও উপক্রত চইবেন।

বাংলা মদল কাব্যের ইতিহাল। ঢাকা বিশবিভালনের বদভাষা ও লাহিত্যের ভূতপূর্ব অব্যাপক প্রীআভভোষ ভটাচার্য এম-এ প্রবিভাল। পরিবর্তিভ ও পরিবর্থিভ বিভীয় সংস্করণ। ১০৫৭। কলিকাভা বুক হাউল, ১০১, কলেক কোৱার, কলিকাভা। বুলা দশ টাকা।

## সভভা, কৰ্ণ্ডব্যনিষ্ঠা ও কাৰ্য্য কুশলভার নিদৰ্শন ব্যাক্ত্য অফ্ বাঁক্ত্যা লিমিটেড

বাংলার ব্যাদিং জগতে বিরাট বিপর্বার সন্থেও ভারত সরকার হইতে পাঁচ লক্ষ বাট হাজার টাকার শেরার বিজ্ঞানের অভ্নতি পাইরাছে। শেরার বিজ্ঞান সংজ্ঞান্ত ঘোষণা শীল্লই বথারীতি প্রকাশিত হইবে।

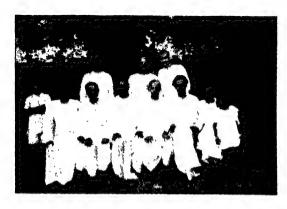
চেয়াবম্যান—**শ্রিজগন্তাথ কোলে**ম্যানেজিং ভিরে**টা**র—**শ্রিহরিকাস ব্যালার্জি** 

১। অবঙ এই আলোচনার সকল অংশের বৃক্তি, প্রবাণ ও সিহাত শাঠ ও তর্কাতীত বসিরা বনে হর না।

### দেশ-বিদেশের কথা

# কৃষ্ণনগর সাহিত্য-সঙ্গীতি

গত এই আধিন সন্ধার ক্ষমণর কলেক হলে ক্ষনগরের বিশিষ্ট সাহিত্যিক প্রতিষ্ঠান সাহিত্য-সনীতির একাদশ বার্ষিক অবিবেশন স্থাপর হয়। অব্যক্ষ শ্রীস্থাংশুক্ষার শুরুঠাকুরতা মহাশরের প্রভাবে এবং শ্রীবীরেল্লোহন আচার্য্যের সমর্থনে শ্রীবোগেশচন্ত্র বাগল মহাশর সভাপতির আগন গ্রহণ করেন। প্রবেশ পরিচালক শ্রীকৃষ্ণক্র চক্ষবর্তী সনীতির একাদশ বর্ষের ভার্যবিবরণ পাঠ করেন। সনীতি কর্ত্বক অনুষ্ঠিত কবি ভারত-



- সভাপতিগহ সাহিত্য-সঙ্গীতির করেক্ষন সদস্ত

চল্ল শারণোৎসব বিশেষ উল্লেখনোগ্য। বিদেশ শুভিরকা বিষয়ে সদীভির প্রচেটা সাফল্যের পরে অগ্রসর হইভেছে। কার্য্য-বিবরণ পাঠের পর অব্যাপক ঐচিভাহরণ চক্রবর্তী সদীভির আবর্ণ বর্ণন-প্রসঙ্গে আধুনিককালে সাহিত্যের ক্ষেত্রে সাবনা ও আবর্ণনিঠার অভাবের কথা উল্লেখ করেন। এই হ্রবছার প্রভিকারের ক্ষ্য ভিনি লেখক, পাঠক, গ্রন্থপ্রকাশক এবং সভা সমিভির উভোক্তর্গকে সমবেভভাবে ঐকাভিক চেটা করিভে অন্থরোর করেন। সভাপভি মহালর তাহার ভাষণে বর্তথাম বাংলা সাহিত্যের সম্বট ও ভাহা দুরীকরণের উপার নির্দেশ করেন। এই বিষয়ে সাধারণের কর্তব্যের কথা ভিনি সক্ষাকে শ্রমণ করাইয়া দেন।

কৰি জীবিজনলাল চটোপান্যার সভাপতি মহাশনকে বৰনাদ প্রদান করিলে সভা ভঙ্গ হর। জীনতী বৈদঃত্বী সাভাল, জীনতী বেণু ভটাচার্যা, জীনতী মাধুনী আচার্যা ও জীনতী মীনা চক্ষনত্তী ক্ষেত্ৰট সন্মোপবােগ সদীত গাহিনা সভাত সভলের আমন্দ্রিনাক ক্রেন।

৭ই আখিন স্থানি এই অবিবেশন উপলক্ষ্যে অব্যাপক জীনিৰ্বান্ত্ৰান বহু 'হিন্দু স্নাৰ' বিষয়ে একট পাণ্ডিচ্যপূৰ্ণ বহুতা প্ৰচাৰ করেন।

### ধার্য়াতে আদিবাসী ও অসুষ্ঠ সম্প্রদায়ের শিক্ষাকেন্দের উদ্বোধন

বাংলাদেশের আদিবাসী ও অসহত ভাতিসহতের উরহ্ম-করে গভ কন মাসে কলিকাভার ভারত মহাভাতি মঙলী নামক সংঘাট প্ৰতিষ্ঠিত হয়। পত ১৬ সেপ্টেশ্বর ৰামুবার সাৰ্নাশ্রবে महाकारि बचनीर जवक के जानियांनी ७ जन्मक जलागारा निकारकत्वत हेरबायम हहेबारक। अहे छैनमारक रमवारम अक्षे সভা হয়। মন্ত্ৰী এীশীহারেন্দু গত মন্ত্ৰমনার সভাপতির আসম গ্ৰহণ কৰে। তিনি মহাকাতি মঙলীর উদ্বেশ্ব ও কর্মপরা বিব্ৰুত কৰিয়া এক চিতাকৰ্ষক ৰক্ষাপ্ৰভাষ কৰেন। সভাপজিত অভবোৰে জীনলিনীক্ষার ভল্ত আদিবাসীদের সহতে ভাঁচার ব্যক্তিগত প্ৰভাক অভিজ্ঞভাৱ কৰা বৰ্ণনা কৱিয়া বলেন, "মহাছা গাঙী তার গঠনত্বলক কর্মবিধির যোল নহর ধারার আদিবাসী-त्मव (भवाकार्यात केनर वित्नव शक्य चारतान करवम । किन्द এট ক্ষেত্ৰে কথাৰৈ অভাৰ দেৰে ভিনি "The harvest is rich but the labourers are few"-- wis. 'Friend attoff चारत. किन्न क्योंत मरना नक्षरे क्य', वरत चारक्ष करत-बिरमम । जांद धरे चारकन स्वीरनाद करण मरम परम কৰ্মীদের আৰু এই সেবার কেন্দ্রে এগিয়ে আগতে চবে।"

সভার সর্বাসমভিক্রমে থির হর, অবিলবে এই শিক্ষাক্তের আদিবাসী এবং অনুয়ত সম্প্রদারের ছাত্রদের শিক্ষালার, কৃষ্টির-শিল্পের প্রবর্তম, আশ্রমের পৃত্তরিগতে মংস্কের চাম, বিজ্ঞানসম্বভ উপারে কৃষিকার্য্য, লোকসঙ্গীত প্রচার ইত্যাদির ব্যবস্থা ক্তিতে কইবে।

এই শিক্ষাকৈক্ষে ক্ষাঁ তৈরার ক্রিরা বাংলাদেশের বিভিন্ন হানে, আদিবাসী ও অন্তরভাতি অধ্যুবিভ অঞ্লে প্রেরণ করা হইবে। এই আশ্রুবে একটি নারীশিক্ষাক্ষেও প্রতিষ্ঠিত হইবে। তাহাতে নারীদের, বিশেষভাবে আদিবাসী প্রীলোক্দিগের লেখাপড়া ও বিভিন্ন বৃত্তিব্লক শিক্ষার ব্যবহা করা হইবে। রামকৃষ্ণ বেদাভ সোসাইটির স্বামী তবেশামন্দের উপর বাযুবার শিক্ষাক্ষেপরিচালনার সর্ক্ষ্মর কর্তৃত্তার অর্পন করা হইবাছে।

### দ্বিজেন্দ্রনাথ ভাত্নড়ী

কৰি বিৰেজনাৰ ভাৰ্ছী গত ১০ই আগষ্ঠ প্রলোকগন্ধৰ কৰিবাছেন। তিনি ১৩০২ সালে নদীয়া শান্তিপুৰের স্থভবাগন্ধ আমে ক্ষপ্রহণ কৰেন। বাল্যকালে বিভাশিকার জন্ত ভিনি কলিকাভার আলেন। প্রথম কীবনে ভিনি রাজনৈভিক্ নেতাদের সহিত কিছু দিন কাক করিবাছিলেন। অসহবাগ আন্দোলনের সময় তিনি সরকারী কার্য্যে ইন্ডকা বিরা সমাজ-সেবার আন্দানিয়োগ করেন এবং শিক্তভাকার্য্যে ব্রতী হন। পাইকপান্ডা রাজা নবীক্র স্থভি বিদ্যালয়ের প্রধান শিক্তক্স

পদে তিনি অনিষ্ঠিত ছিলেন। অবসর সময়ে তিনি সাহিত্যসাধনা করিতেন। তাঁহার নধুর ব্যবহারে সকলেই মুর্ছ হইত।
বিজেলনাথ তবু হক শিকারতীই হিলেন না, তিনি হিলেন
একাবারে কবি, ত্বতা ও বৈক্ষণাত্রে ত্পতিত। বাংলার বহ
বিব্যাত সামরিক পত্রিকার তাঁহার রচনা প্রকাশিত হইবাহে
এবং "বিশ্ব বৈতালিক" ও "পাছপাষণ" নামক কবিভার বই
হুইবানি বাংলা সাহিত্যে সমান্ত হুইবাহে। সিঁবি বৈক্ষ
সন্মিন্দীর তিনি ছিলেন প্রাণ্যরূপ। তাঁহার সভাপতিতে
তুলীর্বকাল বরিরা সিঁবিতে বহু বৈক্ষ্য মহাজনের অভিস্কা
অনুষ্ঠিত হুইবাহে।

### কবিরাজ ব্রজবল্লভ রায়

গত ২বা ভাজ বৰিবার চু চুড়ার লবপ্রভিষ্ঠ কবিরাক ত্রৰ-बद्धण बाब वर्गण इरेबार्ट्य। ১২৮२ जारनद कांक्स मार्ट्स कांड्यानाचार महाप देवरावश्य कांडाव क्या हर। कांडाव भिका रेकनामठळ बाब हाँ हज़ाब कविबाक विस्तान। **बक्**रब्रक সহজাত কৰিত্ব-শক্তির অধিকারী ছিলেন। করেক বংসর চু हुए व की ठार्क कुरत ७ शहर बुना खाए नाक करनाक পভিয়া ভিনি ভাষাত্র উপাধি অর্জন করেন। তলিকাভার বিখ্যাত কৰিয়াক লোকনাথ মন্তিকের নিকট ভিনি চহকালি আর্কেছ-শাল্ল অধ্যয়ন করিরাছিলেন এবং শেষ জীবনে ৰাংলাৰ একৰণ শীৰ্ষানীয় ক্ৰিয়াক্ত্ৰণে প্ৰভূত প্ৰতিঠা লাভ করেন। আচার্ব্য অকরচন্দ্র সরকারের আতুকুল্যে ভিনি সাহিত্যচর্চার বিশেষ প্রবোগ লাভ করিবাছিলেন। ১২৯৭ লালের বৈশাধ বালে লাপ্তাছিক "মুবোৰিনী" পত্রিকা তাঁহার সম্পাদৰাৰ বাহিত্ৰ হুইৱাছিল, ভখন তাহাত্ৰ বন্ধস কিঞ্চিদ্ধিক ১৪ বংসর বাজ। পরে ভিনি "বছর্ণী" নাবে পঞ্জিতাও जन्नापन कविदाविद्यानः

ভিনি শিভ্ভৰ্ণৰ, স্থাংগু সন্মিলন, সভাও সহোদর, শারক-শারন প্রভৃতি নাটক, উধানদল, চুরা ও চলন প্রভৃতি বঙ্কাব্য

### এনিদিনীকুমার ভজের নৃতন বই আদিবাসীদের বিচিত্র কথা

( সচিত্র ) মূল্য—২১

লেখকের প্রত্যক্ অভিজ্ঞতাবৃথক বুলাবান্ গ্রন্থ। ইহাতে আছে
ভারতের বিভিন্ন প্রদেশের, বিশেবতঃ বাংলা ও আসাবের আদিবাসীবের
রীভিনীভির বর্ণনা আর থাসিরা, কাছাত্বী প্রভৃতির সোরবোজ্ঞল অভীত
ইভিহাসের বিবরণ। আদিবাসীবের মৃক্তি-সংগ্রামের কাহিনী এই
পৃত্যকের সর্বপ্রধান আকর্ষণ। আজুর 'কেডা ডোরা'বের এবং থাসিরা
সামস্ত-মাজা ভীরত সিং-এর সদার বিজ্ঞোহ, ভীল-নেতা বোতীলাল
ভেলাবং পরিচালিত মৃক্তি-অন্সোলনের কথা বাংলা ভারার প্রথম
এই পৃত্যকে প্রকাশিত হইল। নাগা-রাশী গাইভিলিট, মৃভানেতা বীরসা
ভারান সক্ষেত্ত বহু অজ্ঞাত তথা ইহাতে সম্লিবিট হইরাছে।

**दिनवक्ष वृक् जिल्ला**—৮৪এ, विरवकातम त्रांज, क्लिः ७



तक्रमण वाद

এবং স্বাস্থ্যেরে ইভিহাস ইভ্যাদি গবেষণাবৃদক এছ লিখিয়া সিয়াছেন। সাম্যিক পঞ্জিসাস্ত্রে তাঁহার বছ রচনা প্রকাশিত হইয়াছিল।

### জ্যোৎস্নাময়ী বস্থ

গভ ২১শে আবণ সিট কলেক স্থানর প্রধান শিক্ষ আকেশবেশ্বর বছর সহধ্মিদী জ্যোৎসামরী বস্থ মাঞ্চ ৪৭ বংসর বরসে পরিবারের এক ভূভ্যের হন্তে নিহন্ত হন। তথন তাঁহার বামী নিজের কাজে বাহিরে চলিঙা গিরাছিলেন। তিনি নিজেও আহার করিবা তাঁহার কর্ম্মণ হাওকার একট বালিকা বিদ্যালরে বাঞা করিতেছিলেন। এবন সমর এই শোচনীর ব্যাপার সংঘটিত হর। শোক্তও কেশবেশ্বরকে আবাদের সম্বেদ্যা কামাইতেছি।

### बोदब्सनाथ मान

গত ২৪শে তাত্ৰ বীরেজনাথ দাস তাঁহার হাইলাকাদিছিত বাসতবনে বাত্র ৪৫ বংসর বরসে পরলোক্সন্ত করিয়াছেন। বীরেজনাথের বাড়ী শ্রীহট শহরের নিক্টবর্তী আধালিচা এাবেছিল। তিনি বহু বংসর শ্রীহট জেলা কংগ্রেস ক্ষিটির সম্পাদক হিলেন। অসহবোগ আন্দোলনে বোগদান ক্ষিয়া শ্রীহটের বে সব দেশসেবক ছংগ ও নির্বাত্তন তোগ ক্ষিয়া-ছিলেন, বীরেনবাবু তাঁহাদেরই অভতম। ত্যাগ, নিঠা ও নিংহার্থ দেশসেবা হারা তিনি সক্লের শ্রহা ও স্থেছ অর্জন ক্ষিয়াছিলেন।



পদার্থবিভার নবযুগ---- জীচারচক্র ভটাচার্য। বিবভারতী লোকশিকা প্রহুমালা। মূল্য তিন টাকা।

বাংলা ভাষার বৈজ্ঞানিক বিষয় সাধারণের উপযুক্ত করে লেখা কঠিন কাজ। একটি কারণ—পারিভাষিক শক্ষ বথেষ্ট নেই, যা সম্প্রতি সংকলিত হয়েছে তাও সাধারণের পরিচিত নর, এবং বাংলা ভাষার বৈজ্ঞানিক বিষয় প্রকাশের রীতিও ভাল করে গড়ে উঠে নি। আর একটি কারণ—বিজ্ঞান (বিশেষত পদার্থবিজ্ঞান) চর্চার ক্ষম্ব যে ভিত্তি অর্থাৎ প্রাথমিক শিক্ষা আবশ্রক তাও অনেকের নেই। বারা ইংরেজীতে বিজ্ঞান শিবেছেন উদ্দেরও অনেকে বাংলা বৈজ্ঞানিক সক্ষর্ত প্রবাধ মনে করেন। বাংলা ভাষার ইউরোপীয় দর্শনশান্তের ব্যাধান অপেকাকৃত স্থ্যাধ্য, কারণ দর্শনচর্চার উপযুক্ত ভাষা এবং বহু পারিভাষিক শক্ষ আ্যাধ্যের আছে।

বাঁরা আমানের মাতৃভাবার বিজ্ঞান লিখে থাকেন তাঁলের অনেকে রচনার প্রকৃষ্ট পছতি আগন্ত করতে পারেন নি। এঁরা ইংরেজীতে বিজ্ঞান দিখেছেন, ইংরেজীতেই ভাবেন, এবং ইংরেজী বাকারীতির বর্ধাবথ অমুকরণ করেন। এক ভাবা থেকে অন্ত ভাবার আক্রিক অমুবাল অসভব, অধিকাংশ ক্ষেত্রে বাকারীতির পরিবর্তন করতে হর, অনেক শব্দের প্রতিশব্দ না দিরে অন্ত ভাবে বক্তব্য প্রকাশ করতে হর, এইসব বিবরে অবহিত না হলে রচনা উৎকট হরে পড়ে। Sensitized paper ছানে 'ল্যার্কডার বাগল্ক', low protein diet ছানে 'নীচু প্রোটন ধোরাক' ইত্যাদি অন্তত অনুবাদ অনেক দেখা বার। সহত্তে বোঝা বাবে মনে

করে অনেকে অভিনিক্ত রূপক বা কাব্যিক ভাবা প্ররোগ করেন, বেমন 'কোটকাটিনা জীবাগুর পক্ষে বজুর কাল করে'। 'বে অগুর মধ্যে বভ প্রকারের বাভাবিক কাপন, তত রক্ষ ভাবে এক একটা আলোকশার থেকে কাপন চরি বেতে পারে'।

বে অন্ন করেকজন বাংলা ভাষার সার্থক বৈজ্ঞানিক প্রসঙ্গ লিবে বশৰী হরেছেন, উাদের শীর্বে জাছেন প্রীবৃক্ত চাঙ্গচক্র ভটাচার্য। বহু লোকের মূথে এর জ্ঞাগনার উচ্চু সিত প্রশংসা ওনেছি। এর ছাত্র হবার সৌভাগ্য আমার হর নি। সাজ্জনার বিষয় এই যে, ইনি কলেজের গান্তির বাইরে এসে চুপ করে বসে নেই, ধর্মেকর্মেন্ড ভূব দেন নি; নানা ব্যাপারে বাল্ড থেকেন্ড মনোহর মাতৃভাবার আবালবৃদ্ধবনিতাকে বিজ্ঞান বিভরণ করছেন।

চারবাব্র নরতম প্রশ্ন পার্থবিভার নববুগ। স্কুলপার্থের অন্তর্নিহিত বেসব তথা আজকাল অসংখা লোকের অত্যন্ত কৌতুহলের বিষয়, বেমন ইলেন্ট্রন, বেডার, রেডিরম, আটম ভারা-সড়া, আটম-বোমা, আপেক্ষিকতা-বাদ প্রভূতি, তারই বুভান্ত এই প্রছে আছে। পদার্থবিভা অব অর্থাৎ মাপজোথের উপর প্রতিন্তিত, কিন্তু অনেকে লেশমান্ত অব সইতে পারেন না। তারাও নির্ভরে এই বইটি পড়তে পারেন। প্রস্থার অব পরিহার করে অতি সরল ও সরস ভাষার বিজ্ঞানের নিগ্ছ রহজের ব্যাখ্যা করেছেন। এই প্রস্থাপ্ত পাঠক বিশ্বরাবিষ্ট হবেন এবং সঙ্গে জ্ঞান ও আনললাভ করবেন।

গ্রীরাজ্ঞশেধর বস্থ



ক তিপায়—জ্বাননান গাণভব। ভারতী গ্রন্থ-ভবন। «, ভানাচনৰ দে ট্রাট, কলিকাডা-১২। বুলা ছই টাকা।

বে প্রক্ষা চিন্তাবারার পরিশতিতে মান্তবের বছবিচিত্র রীতিনীতির উত্তব, কার্যভারণ সম্পর্কের বিচারে সব সমরে সেঞ্জনি ইরতো স্পষ্টতর হয় না, কিছু অসম্পূর্বতা, কিছু বা রহস্ত কোথার বেন লাগিরাই থাকে। এই সব কট-পাকানো আচার-আচরণ বিহার এবং কৌতৃহতের বন্ধ। মনগুবের এই প্রের মধ্যেই কথা-সাহিত্যের পরিপৃষ্টি। বিষয়বন্ধ নির্বাচনে বাহিরের ঘটনা ও অন্তর্জের সংঘাত গুরের প্রভাবই অত্যন্ত বেশী। অবশ্র লেথকের দর্শন ও অনুভৃতির রসে সিক্ত হইরা বিষয়বন্ধ কুঠু প্রকাশভলীকে আশ্রর না করিলে—গঞ্জ উত্তরাইরাছে বলিরা রসিক্জন থীকার করেন না।

আলোচা প্র-সংগ্রহণানি পড়িরা এই কথাটিই মনে হর-লেথকের দ্বী ও অমুভতির সঙ্গে শিশীমনও বধের সচেতন। অভি সুন্ম ভচ্ছ ঘটনা বা বৃদ্ধিসমূহের বরূপ তিনি জানেন এবং সেগুলি ফুলর করিয়া, পুষ্ট ভবিষা প্ৰকাশ ভবিষাৰ ক্ষয়তাও বাবেন !...এছলিতে গৱের বস আছে-কিছ বাঁধনিটা নাটকীয়-বলিও নাটকীয় বাত-প্ৰতিষাত বা চরিত্র-विकारमंत्र व्यवकान देशांत्र मार्थ। नार्हे। कार्कात्र वाद्यव अवः व्यवाध कहना ছটিকেই লেখক চরম পর্যায়ে লইরা পিরাছেন। ইহাতে কোন কোন বচনা হঠাৎ শেব হইয়াছে বলিয়া মনে হয়। কিন্তু নাটকীয় ভঞ্জীর যাহা এখান উপদীবা অৰ্থাৎ সংলাপ ভাছার গতি একটও ব্যাহত হয় নাই. ভাৰকে অনায়াদে বছৰ কৰিয়া দে রসলোকে পৌছিয়াছে। চিত্ৰগুলির বেছনা, আনৰ বা কেতিক সমজাতীয় নহে। দুটাভবরণ 'বাসৰ' ও 'ৰনাম্ভরালে' ছুইটি চিত্ৰের বেদনার তুলনা দেওয়া বায়। একটিতে অভি-বান্তৰ ঘটনার ক্লচ্ আঘাতে মন ভারাত্র হইরা উঠে, সমাজ-ব্যবস্থার ক্রটিতে মন বিষাইয়া উঠে, অঞ্চী বগ্নসগতের মধুর একটি আবাদে মনকে মেছর করিয়া তলে। 'রাজপুত্তর' গঙ্গে উত্তির-বৌৰনা অভিসাধারণ একটি মেরের মনের কামনা নিবিলের নারী-চিত্তেরই প্রতিবিদ্ধ। 'কৃতের দেশে পাই বুৰোন্তর বুগের বিকলাক ভগ্ননোর্থ বাসনাদিগ্ধ কতকঞ্জি মানুৰকে। 'ভিনটি বেজে সাত মিনিট'-এ আছে আসন্ধি-কড়ানো ভীবনের একটি দিকের সতাকার পরিচয়। জাসলে এগুলি রেখাচিত্র। সমগ্র জীবনের না হোক—জীবনের কোন অংশের সামান্ততম বুজির অধবা বিচিত্র আশা-আকাৰণাৰ ভাঙা-চোগা টকরা--বেওলিকে একত করিয়া লেখক চিস্তা করিবার ও রদ উপভোগের বধেষ্ট অবকাশ পাঠককে দিয়াছেন। সমস্ত ছৰির রং ৰা রেখা সমান নছে—রদও চরতো সর্বত্র গাঢ় ছইতে পারে নাই, তথাপি এইওলিতে লেখকের স্তলনী-প্রতিভার পাকর আছে-ভবিন্ততে পূর্ণতর জীবন-চিত্র অন্তনের প্রতিশ্রুতিও বিভয়ান।

### ছোট ক্ৰিমিদ্যোদগৰ অব্যৰ্থ উৰ্থ "ভেৰোনা হেলমিন্থিয়া"

লৈশবে আমাদের দেশে শতকরা ৩০ জন শিশু নানা জাতীর ক্রিমি রোগে, বিশেষতঃ ক্রু ক্রিমিডে আক্রান্ত হয়ে ভার-যান্ত প্রাপ্ত হয় "ভেরোকা" জনসাধারণের এই বছদিনের অন্ত্রিধা বৃর করিয়াছে।

ৰ্ন্য—৪ আঃ শিশি জাঃ মাঃ সহ—২।• আনা। **ওরিভেক্তাল কেমিক্যাল ওরার্কস লিঃ**১৷১ বি, গোবিন্দ আডটা রোড, কলিকাড;—২৭

কোৰ-সাইৰ ৮৮১

ইঙ্গিড--- শ্ৰন্থবোধ বহু। এছাগার, পি-০৮, ল্যালভাউন রোভ, কলিকাডা। রাহ ২০-টাকা।

এই উপস্থাসধানিতে বর্তমানকালের রাজনীতির ও রাইনারকারের প্রতি ও চরিত্রের বহু অংশ প্রতিকলিত চইবাছে।

প্রভার ভারতী অর্থবান বাছি—সমাজে তাঁচার প্রতিষ্ঠা ও প্রতিপত্তি বৰেই। বাজনীতি-কেত্ৰে এই প্ৰতিষ্ঠাকে প্ৰসায়িত করিবার আয়োজনে বে বৃদ্ধি-কাশলের আবস্তুক ভাষা ভাষ্টী মহাশবের প্রচর পরিমার্শেই আছে। প্ৰভৱাং প্ৰিকা-সম্পানকেরা ভাঁহার কার্য্যকলাপ সমর্থন করেন, লেখকেরা ভাঁহার নামে বক্ততা ও প্রবন্ধ লিখিয়া দেন। কলিকাতা বিখ-বিভালরের প্রতিভাবাৰ ছাত্র শ্রীমন্তব্দে লেকেটারীরণে কিনিয়া লীওয়াও তাঁহার পক্ষে সহক্ষাধা। রাজনীতিতে সক্রির আল এছণ না করিলাও শ্ৰীমন্ত বৰিতে পারে, সমাজ বা অর্থনীতির মল পুঞ্জী কোধায় বিশ্বত ৰচিবাছে। এই বোধের সঙ্গে জীমস্তের অন্তরের হল ভাচার ভাগাকে কোন পথে লইরা গিরাছে—'ইন্সিতে'র প্রতিপাম ভাষা নহে। নেভার নেতার আত্মঘাতী কলহ, বৈতনীতির প্রয়েগ, লোভ ও ক্ষমতালাভের মন্ততা লাতীয় লীবনকে কি ভাবে কলুবিত ও পদ্ধিল করিয়া তলিতেছে, ইলিতের মূল উপনীবা সেইগুলি। বলা বাহলা, লেখক জাহার বস্তবা ভালভাবেই গুছাইয়া বলিয়াছেন ৷ উপস্থাসথানি পড়িতে পড়িতে মনে হয় না যে, নিছক কল্পনার জগতে বিচরণ করিতেছি। আজিকার দিনে বে তিক্ত সভা যাত্ৰকে প্ৰায় নিৱাশাৰাদী করিৱা তলিৱাছে, ইন্সিড ভাছারই মৰ্ম্মৰণার উদ্যাটক এবং এই কারণে ইছার চরিত্রগুলিও বালবাম্বন। শ্ৰীমন্ত, প্ৰচায় ভাচ্চী, কালীকিকা, সুভদ্ৰা দেবী প্ৰভতিকে আময়া जकलाई कमतानी कानि।

**এ**রামপদ মুখোপাধ্যায়



# = পূজার উ

অধ্যাপক শ্রীসমর গুচ প্রণীত

শ্ৰীননীগোপাল চক্ৰবৰ্ত্তী প্ৰণীড

# তাজার মত ও পথ

फिल्लपंत्र शांज्य काष

নেতাজীর মত ও পথ নিয়ে কংগ্রেসের দক্ষিণপদ্মীদের সাথে মত-বিভেদ ও তার কারণ নিয়ে নিথু ত বিশ্লেষণ। সংবাদ্রপত্রসমূহে ও পাঠকমহলে উচ্চপ্রশংসিত। সুল্য ৩।•

বিনা ধরচে বা নামমাত্র ধরচে যে সর জিনিস তৈরী করা বেতে পারে ভাদের কথা গল্পের মত সরস ও সাবলীল ভাষায় লেখা : वह हित्व स्विक्ते। भूना ३ होका। ষভীন্তমোহন বাগচি প্রণীভ

প্রীভীমাপদ ঘোষ প্রণীত

রবীন্দ্রনাথ ও যুগ-সাহিত্য

শ্ৰীউপেক্সনাথ ভট্টাচাৰ্য্য প্ৰণীত

যাঁরা ছিলেন মহীয়সী

51

ত্যার অন্তিতোষ মধোপাব্যায় গ্রীদেবপ্রসাদ সেনগুর প্রণীত

নীল আকাশের অভিযাত্রী Sho

পূজার পড়া ১। ০ প্রথপেজনাথ মিত্র প্রণীত সীমান্ত-পারে

পি. সি. সরকার প্রণীত

রমেশচন্দ্র দাশ প্রণীত সাগরিকা (১ম) ১৫০

সাগরিকা (২য়) ১৫০

স্বৰ্গীয় ব্ৰমেশচন্দ্ৰ দত্ত প্ৰণীত

110

স্থাসিদ্ধ ঐতিহাসিক উপতাস। বছদিন পরে এর পুনমু ত্রণ হয়েছে। বৃদ্ধিন প্ৰছেদ পোভিত। মূল্য ১১০

গ্রীকরেন্দ্রমোহন চৌধরী সম্পাদিত

সংক্ষিপ্ত রুমেশ-গ্রন্থমালা

বঞ্চ-বিজেতা

মহারাষ্ট্র জীবনপ্রভাত

निनी मानस्थ स्वीफ হাসির দেশ ১।০

শ্রীভারাপদ রাহা প্রাণীত

রবিনহুড ঐসভাচরণ চক্রবর্ত্তী প্রণীত

তুঃসাহসী Sho

শ্ৰীনীহাররখন ওপ্ত প্রণীত

(১ম)

শস্তব (২য়)

বাংলা ভাষায় সর্বপ্রথম স্থবিষ্ণত পদার্থ-বিজ্ঞান

প্রতপেন্দ্রকিশোর রক্ষিত-রায় ও শ্রীজ্যোতিশচন্দ্র জোয়ারদার প্রণীত

# — विखात्नत **हि** हि

আচার্য শ্রীসভ্যেক্রনাথ বস্তুর ভূমিকা সম্বলিত

কভক্ভলি পত্ৰের মাধ্যমে এতে আলোচিত হয়েছে—আলোকের বিকিরণ-লীলা, বিত্যচেটীয়ক মতবাদ, আলোকজ্ঞ বৈদ্যুতিক ক্রিয়া, পরমাণবিক তত্ত্ব, মহাজাগতিক বশ্মিতত্ত্ব, প্ল্যান্থ পরিমাণবাদ ও বিজ্ঞানের আরো অনেক তত্ত্ব। **আঁচার্য বস্তু** বলেন—"সহত্রসাধ্য ক'রে লেখা জটিলতম নানা পদার্থ-বিজ্ঞান-তত্ত্ব পরিবেশিত এ গ্রহণানা বাঙ্কাভাষী প্রভােককেই ভাল ক'রে পড়বার জন্ত অমুরোধ করছি।"

১৫৭ খানা বৰ্ণ ও রেখাচিত্রে ভূষিত

মূল্য ৮১ টাকা

অভিতোষ লাইৱের

৫, ৰভিৰ চ্যাটাৰ্কী ক্ষ্মীট, কলিকাজা 🔘 ৯০, বিউয়েট রোড, এলাহাবাদ 🔘 ৭৮/৬, লায়েল ক্ষ্মীট, চাকা

মারকে লেকে—এপরিমল গোবামী। রীভাব কর্মার, এ শহর ঘোর নেন, কলিকাডা-৬। ভাষ চারি টাকা।

ধিতীয় বিশ্বন্ধ আহন্ত হয় ১৯৩৯ সালে, আৰু আৰু 'e১ সালের শেব ভাগ। বুদ্ধের পরোক প্রভাবে বা সালেশের সমান্ত-নীবনে বে বিপর্যার ঘটিয়াছিল নাম্বন্ত ভাহার ক্ষেত্র চলিতেছে। এই এক যুগ ধরিয়াবে নীবন আধরা বাপন ক্ষিতেছি ভাহা স্কন্ত ক্ষেত্র বাভাবিক্ত নহে।

আমাদের এই বিপর্যন্ত এ ং বিকৃত সহাজ-জীবনেরই ছারা প্রতিক্ষিত হইরাছে 'মারকে বেজে'র গলগুলিতে। ১৯৪২ হইতে ১৯৪০ এই ছর বৎসর গরগুলির রচনাকাল। যুক্কালীন রাকে আউট, চোরাকারবার, পঞ্চালের মুদলির লীগ ঘোষিত প্রভাক সংহাম, ও 'এক হো ভিনীর তুলির। উত্তর স্ত্রাধ্যের জাপটালাপিট, কাপড় ও ছাতার কন্ট্রোল ইত্যাদি বিচিত্র বিবর লইরা লেখক এই পুস্তকেকতকগুলি রেখাচিত্র আঁকিয়াছেন। ভূমিকার লেখক বলিয়াছেন—"লাজের চেছার। খাকলেও সংগুলি ঠিক গল নর, ক্যারিকেচার বা কার্চুনি চিত্র।"

্ ১৯১০-এর মাঝামাঝি গ্রাক্সভিটের সমন্ত হইতে আরম্ভ করিবা আন্ধ্র পর্যন্ত একই নীতি অনুস্ত হইরা চলিরাছে। তাহা বহু লোককে সর্ববাপ্ত করিরা মৃষ্টিনের কতকঞ্জলি লোকের স্বার্থনিদ্ধির নীতি। ইহাই "মারকে লেকে" নীতি এবং আল এই অপধর্মই হইবা দড়াইরাছে বুগবর্ম্ম। চোরাকারবারের প্রদার, পঞ্চালের মধন্তর প্রভৃতি এই অপধর্মের অপত্য কল। যহারা এই অপধর্মের আচরণ ছারা মানুবের ছুর্গতির বোঝাকে ছান্ত করিয়া তুলিয়াছে ভাহারা "স্বাই এক একটা মুখোল পরে বড়াভে, বে বা নয় ভাই দে দেখাবার জভ্তে বাস্ত।" (মারকে সেকে—'অভিনেতা গাখা')।

প্রিমলবাবু তাঁর গলগুলিতে এই সমস্ত বার্থাঘেনীর মুধোশ খুলিয়া দিয়াছেন, মামুবের অত্যাপ্র বার্থবৃত্তি, ভাকামি এবং তথামিকে তিনি ভীবভাবে কশাঘাত করিয়াছেন। 'গুহ এও পাল' পালের গোবর্জন গুছ এবং প্রজ্ঞাত পাল 'প্রাধীনতার ফলে'র মহাদেববাবু প্রভৃতির লোক-দেখানো দেশহিত্ববার সুলে কোন্ প্রবৃত্তি, লেখক তাহা আমাদের চোখে আসুল দিয়া দেখাইয়া দিয়াছেন।

পরিংলবার বাল-রচনার নিছহন্ত এবং তাঁর রসিকতাও বতংক্তা। মারকে কেলের 'হাডা' প্রভৃতি কোন কোন গল রস্যুচনার পরাকাঠা বলিয়া পণঃ হইতে পারে। গলগুলির এই বাফ সুপুই হয়তো সাধারণ পাঠকের

আনজ্বিধান করিবার পক্ষে ঘ্রেই, কিন্ত এই বহিরাবরণ ভেদ করিবা विमि शहकानित वर्षपुरम खारवन कतिए भाविरयम छिमिरे छेनाहि स्वि-दिन (व. शंकीय दिएमादिशंध बडेरफ डेडाएस क्या !- लिथक कीवरनेत फिक-ত্য অভিজ্ঞতাস্থ্যকে ব্যিক্তার প্রলেপে মিট্ডাদ্ব্র করিরা পাঠবদের निकृष्टे शहिर्यमम अविद्याद्यम । अत्य व्य द्यन प्रदेशन प्रेशन प्रयानव অভাচার, ধনিকের লোবণ, চোরাকারবারীর মুনীতি এই সময়ের কলে অগণিত সাধারণ মানুবের পোচনীর ভরবতা তাঁহার মর্মত্বলে বে গভীর ক্ষতের শৃষ্ট করিরাছে, হাক। হাসির পরিবেশ শৃষ্ট করিয়া তিনি সেই ক্ষতের ফালাকে ভলিয়া থাকিবার প্রয়াস পাইলাছেন। কিছ 'নববোৰণা'. 'নতন পাইচর' প্রভৃতি গলে মর্শ্ববেদনাকে তিনি লুকাইতে পারেন নাই। ভাছার বেদনাবিদীর্ণ ক্রমন্তের ক্ষত-স্থানটি আমানের নিকট উদ্যাটিত হটরা পভিন্নাছে। এই বইরের 'কবি-পিঞ্জী-কবা' শীর্বক গলটির চেহারা আলাদা -- हेरा व अ-बहना नहर । किस हेराब मध्य (यमन क्षयत्मन कवि-मानसम्ब তেমনি তার আদর্শবাদী মনেরও পরিচর পাওরা বার। আজিকার ভর্বোগই বে ভবিছতে নব্যুগের ফুচনা করিছেছে—গল্পটিতে এই আখাস আছে ৷ লেখক বলিভেছেন—"রত্বেরও কবি সেও শ্রষ্টা, কিছ ভার বিবরবস্ত্র মানুষ-তে মানুষ মাটির কাছাকাচি বাস করে। বাদের সে দেশে পারে চলার পথে, বাদের সে দেশে নীচের বাপে। মানবভার হুঃখে মানবতার অপমানে দে কুর হয়। সে দাঁডার হীবনের কারখানার খরে। ৰিক হাতে সে ন্তৰ প্ৰিবী গড়ার কালে লাগে।"

পরিমলবাবু জাত-লেখক। জাঁর রচনা মিতবাক্। তিনি বেমন চমংকার লিখিতে পারেন, তেমনি কোথার থামিতে হয় সে কৌশলাটও তাঁর আরও। তাঁর রচনা মেদবর্জিত, নিরলত্বত, অখচ স্কুল সাহিত্যিক কারুকার্যাম খিত —তাহাতে বটচুকু প্রকাশিত হয় তাহার চেয়ে বাঞ্জনা থাকে আনে কংগী রচনার এই সমস্ত গুল 'মারকে লেকে'তে স্পরিকৃট। পুত্তকথানি বাংলা-সাহিত্যের একটি জুলাবান সম্পদ বলিচা রনিকজনের খীকুতিলাভ করিবে। বিশেব একটা কাল-সীবার মধ্যে সংঘটিত ঘটনাসমূহ লইরা গ্রন্থলি রচিত বটে, কিন্তু কত্বগুলি গাল এমনি প্রাণমন্নতার পরিপূর্ণ বে, সেগুলি কালোগ্রীণ হইবার লাবি বাংলা।

বইরে সংবোজিত জীলৈল চক্রবজীর জাঁকা কার্চুন চিত্রগুলি বেমন ব্যস্ত্রনামর, তেমনি সেগুলিতে জাছে বাধীন করুনার বেলা। লেখার বে ছবিটি মানস-নেত্রে ফুইরা উঠে, বেখার তা হুট ভাবে রূপারিত দেখিরা মনে পুলক-স্থার হয়।

শ্রীনলিশীকুমার ভদ্র



विश्मणि महामानव-श्रेकनक बरलाणामाम । अ. म्थाँक এও কোং निः, कनिकाका। पृ. २११, ब्ला पीठ ठीका।

**এ**বোপেণচন্দ্ৰ ব্ৰোপাধান "প্ৰকাশকেৰ কথা'ন বলিনাছেন:— পুরুষ্মিত রাজা সামমোহন রার হইতে আরম্ভ করিবা কুভার্চতা পর্ব।ভ ৰে বিংশতি সহামানৰ জনাগত বাংলাৰ বস্তু নুতৰ ঐতিহ গড়িয়া ভুলিয়াছেন জীহানের জীহন-কাহিনী বাংলার নিশু এবং কিলোরনের হাতে क्रिशंत सक 'विश्वित महोगानत्व'त्र श्रीवकत्वना।" वामत्माहन, त्यत्वत्वनाच, विकामानन, मधुरुवन, शश्मक्रम, वृक्तिम, खन्नवाम, स्ट्राह्मनाच, स्थानीनाहज्ञ भगेताच्या ( महाताच ), मरीवानाच, धारूतव्या, विरवणानच, खालरावा बामानन, विख्यक्षम, व्यवनीता, व्यवस्थित, भद्रश् वता, मुखायवता करे कृष्टि লনের সাক্ষিত জীবনী ইছাতে সামিষিট হইলাছে। কেশ্বচল্লকে বাদ দেওবা ঘোর ক্রাট হইবাছে বলিরা মনে করি। ত্রিবর্ণ চিত্র সন্মিবেশ,

मुखन ७ वीथाहेरतम किक किना बहेबोनि यह हमश्कांत वृहेनारक, छरबान विक দ্ধা ততথাৰি নিৰ্ভ হইলে আমনা আমত ধুনী হইতাম। তথাপি মুহতের বিষয় আলোচনা এবং সেশের কিশোরদের কল্যাণের প্রতি লক্ষ্য রাধিরা সেই আলোচনা সর্বদাই প্রশংসনীর।

व्यर्ग - अनुबनारामा नवस्ति। व्यानम-रिन्हान असामनी,

ঞ্জিনরলাবালা সরকার স্থলীর্ঘকাল সাহিতা-দেবা করিতেছেন। প্রনর ৰুণিকাতা। বুলা তিন টাকা। বংসৰ বয়সে ভাগাৰ কৰিতা "ভাৰতী ও বালকে" এখন প্ৰকাশিত হয় I अथन कीशी वहन हिडालव । अमन शीर्ष अदा जङ्गांच कावानायनात मुडेाच বিশ্বল। আনুষ্ঠা এই, বন্ধনের সঙ্গে তাঁহার কবিতা সন্ধীবতা ছারাল্ল নাই। উদ্বিংশ শতাকীর শেষভাগে এবং বিংশ শতাকীর প্রথমভাগে বহ ব্যাতনারী

ভারতীয় জীবন বীমার অগ্রগতির পরে "হিন্দুস্থান" সর্ব্রদাই পরোভাপে विश्वादह। य चार्षिक मात्रवला, मःहिं ও मन्निल-मिक्क हिम्मुन्नात्मत्र देविनिहा. ১৯৫০ সালের বার্ষিক বিবরণীতেও তাহাই পুনবায় প্রকাশ পাইয়াছে।

যোট চলতি বীমা মোট সংস্থান বীমা তহবিল প্রিমিরামের আয় मानी (भाष (>>٤०) 40,35,60,639 6141 39,90,90,628

>4,29,89,486 0,80,89,006 1034,56,58

দূতন বীমা

294,60,99,002

কিন্ত হিন্দুস্থানের উপর জনসাধারণের যে অকুঠ আন্থা পূর্ব্বাপর ভাছার क्राजावित भरा भारत्य करण महावेषा क्रिजार्ह, मक्न मेन्स्राप्त (सह সম্পদ তাহারই অন্ত হিমুকানের প্রকৃত গৌরব। হিমুদ্ধানও ভাহার ঐকাত্তিক সেবা দারা সেই গৌরব অকুর রাধিবে, নৃতন বংসরে ইহাই ভাহার প্রতিশ্রতি।

HHHHK কো-অপারেটিভ ইন্মিওরেম সোদাইটি, লি:
হিন্দুস্থান বিল্ডিংস্, কলিকাতা-১৬ নারী-ক্ষির আবির্ভাব ঘটরাছিল। লেখিকা আধুনিককাল পর্যন্ত সেই পৌরব্যর ঐতিহ্ন বহন করিরা আনিরাছেন। সরলাবালা গুধু কবি নন্, বহু পরা এবং এবছও রচনা করিরাছেন। সারাজীবনের কাব্যসক্ষর "অর্থে" নিবছ হইরাছে। মীরার প্রার্থনা, নিবেলিতা, বাল্মাকি, অহল্যা, রক্তর্মার, রমনীর প্রত, গভীর নিশীবে প্রভৃতি কবিতাগুলি বড় ভাল লাগিল। বিবেকানন্দের উপর লিখিত 'পৌব-কুকা-সগুনী' প্রবং রবীক্রনাব্যের তিরোধানে লিখিত 'তুমি আমান্তেরি লোক'—ছুইটি বিশিষ্ট কবিতা। বছ কবিতাই ক্রেশপ্রেমের উদ্ধুল।

"ভালবাসা বিনা নাছি পারে কেছ মরতে দেবতা হ'তে।" অথবা—

> 'তপস্তা মুরতি ধরে এনেছিলে ধরা 'পরে তপখিনি অন্তি' !'

অধবা-

'আকাশে যে তারে তারে গাঁখা তারা-হার অপূর্ব্ব নে বীণায়ত্ত্ব, শুনেছ কি কোন দিন অপূর্ব্ব বজার ৫'

শ্ৰন্থতি বহু পংক্ষিই মনের উপর একটি প্রতীর ছাপ রাধিরা যায়। "জাগরণী" থণ্ডের অন্তর্গত সমস্ত কবিতাই একটি অপূর্ব্ব জাগরণের হুরে চিন্তকে উদ্বুদ্ধ করে। "অর্থো" পাঠক প্রকৃত কবিছের সন্ধান পাইবেন।

অন্গিত-এফুনকুমার সরকার। আনক-হিনুছান প্রকাশনী, কলিকাতা। বুলা ছুই টাকা।

প্রকৃষ্ণার সরকার শুধু প্রসিদ্ধ সাংবাদিক ছিলেন না, ভিনি খাত-নামা উপ্রাসিক এবং প্রাবন্ধিকও। "অনাগত" উপ্রাস। ১৩০৪ সালে ইহা অথম প্রকাশিত হয়। প্রথম সংখ্যাপ বছ পূর্বেই বিঃশেষিত হইরা
যায়। 'প্রকাশকের বিবেশনে' প্রীক্তরেশচন্দ্র মন্ত্রুমণার বলিতেছেন,
"পরাধীনতার ছঃসহ বজননোচনের জন্ধ একদা বাংলার বে সব তর্লশতরূপী
কর্মণ পণ করিয়া কুরধার পথে বাঝা করিয়াছিল, তাহাদের কীবন-কথা
এই উপভাদের বিবরধন্ত। পরাধীনতার পটভূমিতে এই উপভাদের
ঘটনাসংখাল হইলেও বাধীন-ভারত-সঠনের ইন্ধিত ও নির্দেশ ইহাতে
আছে।" উপভাস হিসাবে বাঁহারা "জনাগত" পাঠ করিবেন তাঁহারাও
কাহিনীর বৈচিত্রো এবং ঘটনার সাবলীলভার আনক্ষলাভ করিবেন, প্রতিমা
এবং অনিন্দিতার চরিত্রে মুগ্ধ হইবেন। কিন্তু "জনাগত" ওধু উপভাস
নর, ইহাতে ভবিভতের ইন্ধিত আছে, ভাবী রাজনৈতিক মতবাদের সঙ্গেত
আছে। প্রায় পতিল বংসর পূর্বের রচিত এই উপভাসখানির রাজনৈতিক
পটভূমিকা এখনও উজ্পা হইরা রহিরাছে। রসামুভূতির সহিত মননশীলতার সংমিশ্রণ প্রকথানিকে উপাদের করিয়া তুলিরাছে। কারাকক্ষে
মোহিতের সহিত প্রতিমার শেষ সাক্ষণ বন্ধ কর্মণ এবং মর্শ্বশর্মী।
"অনাগত" আজিকার দিনের তর্মণ পাঠককেও প্রেরণা দিতে পারিবে।

जीवालसक्य नारा

কবির স্বপ্তা---- জীরাধাচরণ দাস সাহিত্যরত। সাহিত্য-মন্দির, পাবনা, মল্য দশ জানা।

'কবির বর্গা রবীক্রনাথের 'থের।' কাবোর সমালোচনা-প্রস্থ। রবীক্র-নাথের কবিত্ব-প্রতিভা বিল্লেখন করিরা আজকাল বাজারে বহু সমালোচনা-প্রস্থ প্রকাশিত ক্টরাছে। ছুই-একথানির কথা বাদ দিলে ঐ ধরণের সমালোচনা প্রস্থানের অধিকাংগাই সরল কথার জটিল বাাধা।য় পরিপূর্ণ।



ইহাতে সমালোচকের পাঞ্জিভাতিমান তৃত্য হয় বটে, কিন্তু পাঠক ও লেখকের মধ্যে ব্যবধান মুন্তর হইরা উঠে। অখচ সমালোচনার প্রধান উদ্দেশ্য রচনার মুর্বার্থকে পাঠকের নিকট সহজ্ঞ ও পাই করিরা তুলিরা ব্যৱ—লেখক ও পাঠকের মধ্যে রসোপালির সংবোগসেতু রচনা করা। আধুনিক অনেক সমালোচনার বার আছে, পাঞ্জিভা আছে, বৃদ্ধির শাণিত উজ্জ্যা আছে, কবার তীক্ষ চাবুক আছে, তলীর চটক আছে—নাই গুধু আছিমিকতা। প্রায় আটাশ বংসর পূর্বের রিচত 'বেরা' কাব্যের এই বর্মী সমালোচনা পাঞ্জা তাই চমক লাগিল। কি অনাড্রার বলিবার জলী, কি সহজ্ঞ, প্রাপ্তল ভাষা—রসাবাদনের রক্ত কি অকুত্রিম এবং আত্তরিক আলোচনার বারা। পড়িতে পড়িতে কাব্যরসের মন্দাকিনীপ্রবাহে পাঠকের চিন্ত পাইপূর্ণ হইয়া উঠে। ব্যাখ্যা-বিরেরপের এইবানেই চরম সার্থকতা। দীর্ঘকাল পূর্বের লিখিত হইলেও এই নিবল্লপুত্রকথানি আলও সম্ভাবে মুতুহনী পাঠকের চিন্তকে রসামুভূতির সহপ্রধারার অভিসিঞ্জিত করিরা দিবার ক্ষতা রাধে।

শ্রীমশ্বথকুমার চৌধুরী

পশ্চিমবঙ্গের অর্থ নৈতিক ভূগোল—পৃষ্ঠা ১৪০। বুলা ছই টাকা।

ভারতবর্ষের পরিবহন ব্যবস্থা— জ্ঞানবপ্রদাদ খুখো-পাধ্যাদ্র। পূচা ৬৪। এইচ. চ্যাটার্জি এও কোং দিঃ, কদিকাতা। খুলা দেও টাকা।

দেশ-বিভাগের পরে ভারতের, বিশেষতঃ বাংলার বে অবস্থা দাঁড়াইরাছে

ভারতে অনেক জিনিবই নতন করিয়া গড়া প্রয়োজন হইয়া পড়িয়াছে। এই কাৰ্মে স্থান্ত, পৰিকল্পনাৰ বিশেষ প্ৰয়োজন। কিন্তু ভাষাৰও পূৰ্বে ৰভিত বাংলা ও ভারতবর্ষের আর্থিক অবস্থার একটি সম্পূর্ণ বারণা ন। লইরা কার্যা আরম্ভ করিলে সকলতালাভ সম্ভব নহে। অর্থনৈতিক ভগোলসৰতে আৰ্থিক দ্বষ্টিকলীৰ সাহাব্যে প্ৰাকৃতিক পরিবেশ, কৃবি, वानिकामन्त्रमा अनिक ७ कावनामन्त्रमा निक्र, नविवहन-वान्ह्रा, नवव ७ ৰন্দর প্রস্তৃতি বিষয় আলোচিত হইরা থাকে। স্বতরাং ইহা ঘারা শিকার্থী, बावमांडी क्षवः मांधावन भाक्रेक (च क्कानमांछ करवन वावगाविक कीवान ভালা ধ্বই আবন্ধক। বাংলাভাষার এ ধ্রণের পুতকের প্রকাশ সভ আরম্ভ হইরাছে। ইহা ধুবই সময়োচিত ও ফুলকণ। লেখকের রচিত ইংৰেজী বইবের আলোচনাকালে আমরা তাঁহাকে এই বিবরে বক্তাবার এছ নিখিতে অনুৰোধ জানাইরাছিলাম। গ্রন্থকার বাংলাভাষায় অর্থ-বৈতিক ভূগোলবিছার প্রচারে এতী হইরা বেশবাসীর একটা অভাব দুর क्रिलन এवर निकार्षित्रागंत कृष्ठक्रष्ठाक्राक्षम हरेलन। शुक्रक्थानि क्रमिष्ठ वदः खांडवा नाना उत्था पर्व । हेरात वर्ष्ण सहात रहेरव जाना कवि ।

লেখকের দিতীর পুত্তকখানি পরিবহন সম্বন্ধে। এই বইখানি লিখির।
লেখক বাংলাভাবার একটা অভাব দূর করিলেন। ইহাতে রাজপথ, রেলপথ, বিমানপথ ও জলপথের বিবয়ঞ্জি আলোচিত হইরাছে এবং ছর্মটি
মানচিত্র দারা বিবর্বন্ধ বুঝাইবার চেটা করা হইরাছে। অবস্থ একথা সত্য বে, এদেশের পরিবহন-ব্যবস্থা পুবই অসম্পূর্ণ। লেখক সর্কানী পরিকলনার
পরিচর দিরাছেন, ভাহাতে কিছু কিছু আশার কথা আছে।

শ্ৰীঅনাথবন্ধু দত্ত



অন্তরীপ — এনদন ৰন্দোগাবার। প্রকাশনী, ১৫,৭, স্থানাচরণ দে ক্লীট, কলিকাতা। যুদ্ধা আডাই টাকা।

যুখোন্তর অতি সাক্ষতিক সমাজ-জীবনের পটকুমিতে উপজাসধানির চরিত্রকাল স্ট হইরাছে। প্রাতন সমাজ ব্যবহার গণ্ডি ছাড়াইরা রাতারাতি 'আলটু 1 মতার্ণ' হইতে বাওরার রাসবিহারীর সংসারে বে বিপর্বার দেখা দিল তাহা এই পুতকের বিবরবন্ধ।

লোড়াসাকো অঞ্চলর পুরাতন বনেদী পরিবারের রাসবিহারী হঠাং একদিন তার পূর্বপুরুবের ভিটা বিক্রর করিয়া দিরা বালিগঞ্জে আসিরা বাসা বাধিলেন। সা বাধা দিরাছিলেন ক্রিক কল হর নাই। বৌবনের আশা আর বর্গ্গে তার সন ছিল আছের, ক্রি এই আছের তাব কাটিয়া বাইতেই এক দিন তিনি আবিছার করিলেন বে কালের গতির সহিত সমানতালে পা কেলিয়া চলিতে তিনি সক্ষম হন নাই—এমন কি ভার ত্রী, ভার মেরেরাও নিয়ন্ত্রবের বাহিরে চলিয়া গিয়াছে। রাসবিহারী আক্রেশ করিলেন না, কিন্তু নিজেকে এই আধুনিক আবেট্রনী হইতে দুরে সরাইয়া লইয়া গেলেন।

এই অতি-আধুনিক কতকণ্ডলি মেরে এবং পুরুবের চরিত্র আঁকিতে বসিরা শ্রীবৃক্ধ বন্দ্যোপাধ্যায় বে ধরণের পরিবেশ সৃষ্টি করিরাছেন ভাষা কোন মতেই সমর্থনবোদা নয়। মাতৃত্বের পরিজ মহিনাকে পর্বান্ত এই উপস্থাতে কলুবিত করা হইরাছে। কালিখাটের বজেখরতলার গলির একটি বাড়ীতে বে গুরুবিক্রনক দৃষ্টের অবভারণা করা হইরাছে ভাষাতে মাত্রাজানহীনভার পরিচরই পাওয়া বার। অবচ এই আল্টিকে অনারাসে বাদ দেওয়া চলিত। লেবকের লিবিবার ক্রমতা আছে। কিন্তু সার্থক রচনার অক্তর্জম শ্রেষ্ঠিও। সংব্য ৪;ভাষার অভাব এই লেবকের রচনার দেবিরা আম্বরা ফুরিত।

শীতীয় স্বরাজ ( বিহার সংকরণ )—মীনেলোকানাথ চক্রবর্ত্তী। শীগোরাজ প্রেস, ৫, চিন্তামণি বাস লেন, বলিকাডা-> । পুঠা

२१३। बुना छिन है।का।

গ্রন্থকার থাবেশের খাবানতা-সংগ্রামে বোগদান করার ত্রিশ বংসর বিদিশের কারাগারে আবদ্ধ ছিলেন। দশ বংসর বীপান্ধর বাসের পর তিনি কলিকাতার আলিপুর জেলে প্রেরিত হন। আলিপুর জেলে থাকা-কালে তিনি সমালোচ্য পুরুক্থানি রচনা করেন। জ্রীসভীশচন্ত্র পাকড়ান্দী 'পরিচিভি'তে এই গ্রন্থকে 'নীতার টাকা' বলিরাছেন। ইংগাডে সমগ্র নীতার সংস্কৃত গ্লোকগুলির সরল অমুবাদ ও বাখ্যা দেওরা হইগাড়ে। বৈলোক্য মহারাজের নীতাব্যাখ্যা কোন প্রচলিত ভার বা টাকা অবলখনে লিখিত না হইলেও ইহা সভাই অভিনব এবং যুগোপবোদী। ব্যাখ্যাভা উপক্রমণিকার নীতান্ধ নুলভবের ইন্ধিত দিয়াছেন।

সংক্ষিপ্ত ভূমিকার বাধাতা বাহা বলিয়াছেন তাহা প্রণিধানবোরা। তিনি গভীরভাবে বিখাস করেন বে, বাবীন ভারতকে দীতার আগপেনি না গড়িতে পারিলে দেড় শত বংসরের পরাধীনতার বে কুফল আমাদের মজাগত হইরাছে তাহা দুরীভূত হইবে না। দীতোক্ত আদর্শ সভ-বাবীন ভারতের রাষ্ট্রিক, সামাদিক, পারিবারিক ও ব,ক্তিগত জীবনে রূপারিত বা হওরা পর্যন্ত দেশবাধী কাপুক্রবতা, উদ্ভূখনতা ও ফুনীতি অপক্ত হইবে না এবং আমাদের বসুভবের বিকাশও বহুবে না।

লেবকের ভাব প্রাণশ্পর্নী এবং ভাষাও সাবলীল।

यांभी खगमीयद्रानम

১। সাধন বাণী ২। জীবন সাধনার পথে— বানী আছানব। ভারতদেশ্যম সভ্য, ২১১, রাস্বিহারী এভিনিউ, ক্লিকাডা-১৯। বুলা ব্যাক্তমে আট জানা এবং এক টাকা।

অপনোক এইটতে এইকার যানবের বিশেষ কল্যাণ এর এক গডটি প্রচেতিত বাদী পরিবেশন করিয়াছেন। বিভীয় এছে 'বীবন লক্যা, 'প্রার্থনা-নম্ম ও প্রার্থনার নির্ধর' দীর্থক বিয়ালিশটি অধ্যান্ত-আলোচনা হান পাইরাছে। আবর্ণ জীবনগঠনের পক্ষে একান্ত প্রয়োজনীয় বিষয়ওনি অতীব সরল ও চিন্তাকর্ষক ভাষায় নিশিবন্ধ হুইরাছে।

ঐউমেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

বৌদ্ধগান ও দোহা—মহামহোপাথার হরপ্রনাদ শালী। বিতীয় সংকরণ। মুদ্য পাঁচ টাকা।

সে কাল আর এ কাল—রাজনারায়ণ বহু। বুলা ১,।
পদ্মিনী উপাধ্যান—রঙ্গাল বন্দোপাধার। বুলা ১,।
বজীঃ-সাহিত্য-পরিষদ ২৪৬), আপার সারকলার রোড, কলিকাতা-৬।

আলোচ্য তিনখানি পৃত্তকই শ্রীবৃত ত্রজেক্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যার ও শ্রীবৃত্ত
সন্ধনীকান্ত দান কর্ত্তক সম্পাদিত। 'বৌদ্ধগান ও দোহা'র প্রথম সংকরণ
( ১৩২০ ) বাহির ক্ইবার পর দীর্ঘকাল অভীত ক্ইরাছে। এই সমরের
মধ্যে ত. প্রবোধক্রে বাগচী, ত. শহীর্রাক, ত. স্থনীতিকুমার চট্টোপাধার
প্রস্থ ভাবাভত্তবিদ্যান পৃত্তকের চর্চ্যাপদগুলি সম্পর্কে বহু পবেবণা ও
আলোচনা করিয়াছেন। কলে এ সমুদ্রের কিছু কিছু পাঠ-সংবারও
সাথিত ক্ইরাছে। পূর্ব্ধ সংভরণে বালোভাবার চর্ছাপদগুলির কোন
বাথা ছিল মা। পরিবদের পৃথিদালার পত্তিত শ্রীবৃত্ত হোগ্রমার
ভট্টাচার্য্য বহু আরাসে উক্ত ভাবাভাত্তিকগণের গবেবণার নিরিধে এং নিজ
বিচার-বৃত্তিমত এ সকলের বাথা করিয়া দিয়াছেন। এই বাথাার পদগুলির
অন্তনিহিত রস ও ভাবগান্তার্থ্য রক্ষিত ক্ইবাছে বলিরা মামানের বিবাস।
একারণ ইহা পাঠে বাংলাভাবা লিক্ষাবার, বিশেবতঃ বিব্রিভাগেরের বাংলাবিভাগের উচ্চতন ছাত্র-ছা

রাজনারারণ বরুর "সে কাল আর এ কাল" সম্বন্ধে নুতন কিছুই বলি-বার নাই। এবানিও দীর্ঘকাল বাবৎ অপ্রাপ্য ছিল। ১৮৭৩ গ্রীষ্টাম্বের ২৩শে মার্চ্চ 'ৰাতীর সভা'র বাজনারায়ণ উক্ত শীর্ষক একটি সারগর্ভ বক্ততা এদান করেন। ইতাই পরিবর্ত্মিত ও সংশোধিত হইয়া বক্তা কর্ত্তক পরে পুরুকা-কারে প্রবিত হয়। তাঁহার জীবদ্ধশার বতম প্রক্রমণে এখানির ছইটি সংকরণ মাত্র বাহির হর। উনবিংশ শতাব্দীর এখন পঁচাত্তর বৎসরের ৰাঙালীর হালচাল, শিকাদীকা ও সামাজিক দ্বীতি-নীতির গতি-প্রকৃতির তুলনাৰ্লক আলোচনা ইহাতে আছে। রাজনারারণ বস্তুর মনবিভার পরিচর ভাঁচার বিভিন্ন বক্তার ও রচনার ক্রুকট। বাংলাদেশের নব-কাতীরতার উরোধকপণের মধ্যে তিনি ছিলেন শীর্ষরানে। বে কাতীয় সভা'র তিনি এই বক্তা দেন ভাগা হিন্দু মেলাইই অন্তৰ্গত, আৰু ইহার ভাব-প্রেরণা রাজনারারণ বোপাইরাছিলেন। বর্ত্তমান সমালোচকের 'রাজ-নারায়ণ বন্ধ' এবং 'জাতীরভার নবমন্ত্র বা হিন্দুমেলার ইতিবৃদ্ধ' পুত্তক ছইখানিতে রাজনারায়ণের মনখিতা এবং খাধীন চিন্ধাধারার পরিচর দেওরা হইরাছে। আলোচা প্রক্থানি প্রকাশে বাংলা সাহিত্যের একটি অংলা বন্ধ সাধারণের নিকট প্রলভ হইল।

কৰি বল্লাল ৰন্যোপাখার রাজস্থানের ঐতিহাদিক কাহিনীঞ্জি বাংলা কাব্যে পরিবেশন করিয়া দেবুলে মব্যশিক্ষিত বাঙালীর প্রাণে কাতীরতাবোবের উল্পেব বিশেব সহায়তা করিয়াছিলেন। 'পত্নিনী উপাখান এইরূপ একথানি কাব্য। "বাধীনতা হীনতার কে বাঁচিতে চায় হে কাঁচিতে চায় হে কাঁচিতে চায়" শীর্ষক পাক্তিগুলি এই উপাখানের 'ক্ষারাছিলের প্রতি রাজার উৎসাহ বাকো'র অঞ্জু ক্র । ইহার একটি অংশ এই:

ें अछ अब बर्ग्यूय हम बन्ना बारे रह,

हम क्या बारे।

तमहित्क मत्त्र (यहे, जूना कांत्र नांहे रह,

তুল্য ভার নাই।"

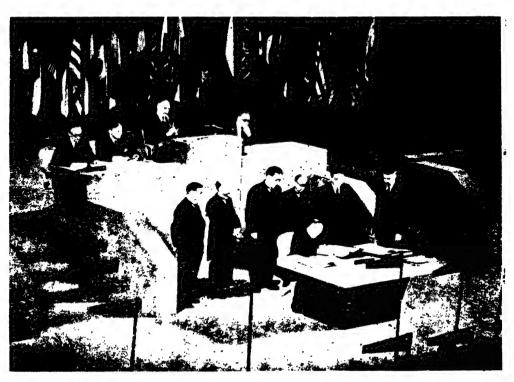
ব্যসূল্যে এনকল পুতক সাধারণের নিকট সহক্ষপাশ্য হওয়ার বাংলা-ভারী ও বাংলা-সাহিত্যসেধী বিশেষ উপকৃত হইবেন নিঃসলেছ।

विर्याराभवतः बाभन

শিকারী ভাদেনাপ্রসাদ রাহচে,ধুরী



নিউ বিলীতে চীমা সংস্কৃতি-বিশ্ব, মধ্যহলে ৱাইণ্ডি বাবু রাজেলপ্রসায় ও তাঁহার পার্যে ঞ্জিকবাহরলাল মেহ্ত



শাভি-চ্ক্তি বাকর-রভ কাণানের প্রধান মন্ত্রী। একচলিনট রাই এই চ্ক্তি বাকর করিয়াহেন



"সভ্যৰ শিবৰ স্থলন্তৰ নামাখা বলৱীনেৰ সভাং"

# 

# অপ্রহারণ, ১০০৮



## বিবিধ প্রসঙ্গ

সাধারণ নির্বাচনের প্রার্থী

আগানী নাৰাৱণ নিৰ্মাচনে সকল বলের প্রার্থী-মনোনরন ভালিকা প্রকাশিত হইরাছে। ইহার বব্যে কংপ্রেস-ভালিকা সর্মপ্রথমে উরেখনোগ্য। এই ভালিকা দেখিরা আমরা হত্তাশ হইরাছি। প্রার্থী বাছাই করিবার বভ গাঁচটি 'চাসুনী কমিট' (Screening Committee) গঠিত হইরাছিল। ইহারা দিখারার পরিপ্রেম করিবা প্রার্থীদের বোগ্যভা বাচাই করিরাছেন বলিরা প্রকাশিত হইরাছে। কিছু বাচাইরের কল দেখিরা লোকে সভাই হর নাই বলিলে কম বলা হইবে, সকলেই অভ্যন্ত অসভাই হইরাছে এবং কংপ্রেসের উপর আনাহা ইহার পর আমন্ত অনেক রাভিরা গিরাছে। অবিকাশে এলাকাতেই লোকে দেখিতেছে বে, ভারাদের অঞ্চলের সুপরিচিত, হুর্নীতিশ্রারণ এবং রাজনৈত্তিক অপাংক্রেম বাজি ভালিকার হান্দাভ করিরাছেন। সেধানকার কোন বোগ্য লোক মনোনরম ভো পানই নাই, প্রার্থী-নির্মাচনের আবে কাহাকেও কিছু জিলাসাও করা হর নাই।

প্রার্থী-নির্মাচন প্রথমেই করিবাছে কোন-কংগ্রেস কমিটিভালি। গত পঞ্চারেং নির্মাচনে অবিকাংশ করিট হুনীতিপরারণ লোক কর্তুক অবিকৃত হুইরাছিল একবা পতিত নেহর
নিক্রেই বলিয়াছেন এবং বাবু পুরুষোভবদাস উত্তরের সহিত্ত ভারার বিরোবেরও ইহাই ছিল সুল ভারণ। নানিক্
কংপ্রেসের প্রতিমিধি নির্মাচন লইরাই নেহর-উত্তর
বিরোবের হুরুপাত। জেলা কমিটিগুলি হুনীতির প্রবাম বাঁট,
চোরাভার্যার এবং জালজুরাচুরির কেন্দ্র বলিলেই হর—ইহা
আজ বেশহুর লোক জানে। প্রাথমিক প্রার্থী বাহাইয়ের ভার
ইহাদের উপর পড়িরাছিল। প্রথমেই ইহারা সেই সেই অকলের
ভাল লোক্ষের বাদ বিরা বিজ্ঞারে লোক লইরা প্রার্থীভালিকা রচনা করিয়াহে। কংগ্রেসের কোন্ উপরল কর্মটা
আনন পাইবে ইহাই লইরা বা কিছু বগলা হুইরাহে। পণ্ডিভ
নেহরু বাহিষের ভাল লোক আনিবার কর্ম প্রার্থী হিয়াছিলেন। ইহারা ভালা বধারণভাবে ভবে বাই। তে ভর্মের

বাহিষের লোক আসিয়াহে ভাছায়া হয় একই শ্রেণীর মহিলে थांत पक्षत्व । (काम अक्षे क्यांत बावता विवि माहे व **ৰেলা কংগ্ৰেস মনোনহনে ভাল লোক ও চুৰ্নীভিপৱাহৰ লোক** नरेश मण्डल हरेशारह । नर्राव अकरे कथा-शार्थी कराअत्मव कान छेनवरमद लाक. बहुक बाकी खबरा खहुक बाकी। এই হাঁকাই শেষ হওৱার পর ভালিকা গেল প্রাছেশিক करदारम । रमर्गात्मक और अकरे किक्टिक कामिकारक श्रादिनक स्थ (पश्या वरेन । यक नामास्य विकास्य करावन মনোনমৰ দেওমার সমর যোগ্যভার মাপকাটি ছিল জেলবাটা। अवावकाव मानकार्वि वरेबाट्य ध्यामणः है।काव प्रक्रि । काठाव পর স্থান পাইরাতে, স্মীতিপরায়ণতা ও কুটল রাইনীভিয় ক্রণোষ্ট। বেশের গবরে উ পরিচালনের ক্ষতা ইতাদের আছে किया (निविष्क क्वांस द्वांस विष्कृत क्वांस क्वांस विष्कृत व्यास शासिक नवर्ष के निर्म बाहाबिन क कर्तारवन्त्र वा रकता-वार्छ পরিচালবের অবোগ্য বলিরা ববে করিয়াছেন এবং ভার ৰত কৰ্পোৱেশন অধিকার করিয়াছেন বা কেলা-বোর্ডের কর্ম-क्डांदिव विकृत्व चारेमनंग्रह वांदश चवनवामंत्र क्या चारिया-**(इम डाहादां कराजन्यार्थे डानिकाद द्यानांड कृदिदादः ।** 

এই মনোনয়ন-ভালিকা ভৈত্তি করিবার পর চাল্নির ব্যবস্থা করা হইরাছে । চাল্নির কাক ভালোর মন্দে বিশানো বন্ধ ইণিকরা নদকে বাহির করিবা বেওরা। আমরা সমস্থ প্রকেশের বেলাতেই দেবিতেছি ঠিক ভার উণ্টা হইরাছে । চাল্নি করিট সব করিট ভেলাককে সমত্বে প্রহণ করিবাছেন । পশ্চিমবলের বেলার অভতঃ বেবিলার যে প্রাথমিক ভালিকা প্রবং চূড়াছ ভালিকার অভ সামার রদ-বন্ধল হইরাছে । চাল্নি করিট বনাইরা ভেজাল বাহির করিবা বেওরার প্রকৃত ইছ্রা থাকিলে উহা বলানো উচিত ছিল কেলা কংগ্রেলে । ভারা না করিবা শেরপ্রান্ত বলাইরা চাল্নির সার্টিকিকেট ছিল্লা ভেলাল ভারইবার চেঙার ইহাই সন্দেহ হয় বে প্রক্রেছে বাছাই করা আসল উদ্বেভ বন্ধ, ব্ল অঞ্চিপ্রান্ত নাকাই বছা ক্ষমত বিজ্ঞান করা । বির্মানিকী চালাক্ষির ইহা প্রকৃত্তি বিজ্ঞান করা ।

কংৰেস-কালিকাৰ কংৰেসের বিজের বলনীতিও বিক্ত তঃ নাই। বেহক চুৰ্নীভিপরারণভা হুর ক্রিয়ার ক্থা বলিবা-त्वम विश्व कामिकार कामार्थे मान विश्व किलीर मिस्ताहम त्वार्छत अमुरवाननकाय, अधिनत मुगतिहिक वृशीचिनतातन, हाराकारवारी अल्डि भार वरेशास्त्र । वर्षभारी कर्धारात कार्शकरी जका करेंग्स भारत या। और त्सेनेत चामाक काशिकाव वासमाक करिवारकम । कश्रतिमाक काम मिर्वाहरम ৰেত প্ৰাভিত কৰিব। ৰাজিলে তাঁচাকে কৰ্মত কংগ্ৰেস बरमामसम (एश्रमा स्त्र मा। और त्यनित अकारिक राक्ति शामास्त्रम मांच कविशास्त्रम । यक यक विनय (अधि, यक यक ভাষিদার বাচাদের কোমরণ ব্যাভি কোন কালেও নাই कांशाबा नित्यबा कांशाबाद कर्याबी, धेकीन, अनिर्माब, शास्त्रकात अक्षित कश्यन-मरमागरम माक कविशासम। কোমৰূপ নীতি, ভার বা হক্তির উপর দাভাইরা কংগ্রেস-ভালিকা রচিত হর নাই। অসাধু লোকদের লইরা উহা প্রভঙ हरेबारक, बाहादा वर ७ मेकिमानी केमबरनद महिक मानिहे ভাতাতাই অধিকভাত পৰিতাৰে ভাৰ লাভ ভবিতাতে।

পণ্ডিত ৰেচক সেমিৰ বলিবাছেল যে, ভালিকাৰ বহ খবাঞ্চিত লোক চুকিয়া বিয়াতে। তিনি এখন তাতা বুবিয়াতেন ভবে আর করার কিছ নাই, কারণ বছই দেরি হইয়া গিরাছে। ভাষরা এট কথাও যানিতে পারিলার না। ভালিকা বচনার যে অভায় করা চইয়াতে ভালা ভানিয়া ভনিয়া সভানে চইয়াতে বলিয়া আহাতের সংক্ষা ভিল। আতেই এইত্রণ সাচাই আসিবে ইতা আহরা আসেই ভাবিয়াতি এবং প্রিত নেতকর के वक्कणात चार्य मरवयत बारमत 'बणार्म तिकिष्ठे' क निर्मिताणि । चलाव बुक्ता त्माल काकाव मर्दमायमरे निद्रम । चलाव बुक्तिवा क कानियां जरत्नीयम् या कहां व्यनदायः। वकाद जरत्नीयत्यद জোন সময় নিৰ্বিষ্ট নাই। বে কোন অবস্থার বে কোন সময়ে খভার ব্রিবামাল বে লোক ভাতা সংশোবন করিছে পারে সেই ব্যক্তিই প্ৰকৃত মুকুলুছের অধিকারী। আৰু বাহাদিগকে মনোম্মন দেওয়া হইয়াছে ভাহারা পাঁচ বংগর গবলে উ हालाहेरत हेहा **काविबाहे काला क**र्या हहेबारह। चरवात्रा. দ্ৰমীভিগৱাৰণ ও স্বাৰ্ণৰ লোকের হাতে গবছেণ্ট পঢ়িলে দেশের কি অবস্থা হয় বর্তমান কংগ্রেস প্রদেশি ভাতার প্রমাণ। গভ সাৰায়ণ নিৰ্মাচনের সময় প্ৰাৰ্থীয় বোগ্যভা বেখা হয় নাই দেবা হইরাছিল কেবল কংগ্রেসের ছাপ। স্বাধীনভার পর এই শ্রেণীর লোকের মূল্য লোকে হাতে হাতে বুবিরাছে। कारबरे बाब बरे जब मश्रमान्यम श्रीवाक्य विज । क्रिक-বাল বোগাভাসভার প্রার্থী কংগ্রেস চইছে দেওবা উচিত ভিল। भिष्यको त्व बहुर्स द्विलाम त्व और मीकि करत्वन-कालिकाव ব্ৰক্তিত হয় নাই ভংকণাং ৰদি তিনি উহা ৰাতিল কৱিয়া দিভেন এবং নৃত্য ভালিকা বচনার সময় দেওয়ার কর হই বা ভিন সপ্তাহ

विकारित विद्यारेश किएक करन और कल व्यावशाहेगात नावन हरेंच । शीष्ठ वरत्रद अक प्रम सामाशा (मारसद हारस श्रवास<sup>्</sup> সমূৰ্ণৰ কৰা অংশকা জিম সপ্তান্ত মিৰ্জ্ঞাচম পিলামো আমে: ভাল দেশগুৰ লোক ইচা ববিভ। ইচাৰে কংগ্ৰেলের মর্ব্যালা অবেক বাভিত। কিছু বেচক ভাচা ভবিজেন না। আ তার এই সীকারোজ্ঞিকে লোকে সম্ভাপর ইজি বলিং মানিবে না, ইহাকে বরং অধিকতর অপরাধের প্রমাণ বলিং এহণ করিবে। ক্রানিই পার্ট নুত্র একটা অভার কা ক্ষিবার আগে পূর্বাকৃত কার্যা ভূল হইয়াছে বলিয়া প্রচা कविया समयक मास कविटल हाब महानव प्रहे-हाविके लाखरः विडाडिक कविशा समझक्त कांचला मिटक हारेल कटत পভিতৰী এই পদাই অৱসরণ করিতেলেন ইচা ববই ছঃবে বিষয়। ভিনি ভারতের প্রধানবলী নির্বাচন সহতে ভাঁতার মতে প্রেসিডেও কাছ করিবেন। বর্তমান ভালিকার না (मर्थ) (मारकता निर्दारिक कहेरम कांत्रोही और तरमत (मर क्नाजन बहेरद बनिश किम निरक दिवारम बिक्टि नाहिए ছেৰ দেখাৰে ভার সংশোধ্যের ভ্রু অমায়াসে ভিনি প্রেরি ভেণ্টকে ছই-ভিদ সপ্তাত নিৰ্ব্বাচন পিছাইবার পরামর্শ ভিতে পারিভেন ৷ ইচা না করাম আছরিকভা প্রমাণিত চর নাট প্ৰমাণিত চইয়াছে এই যে তিনি মনের মধ্যে পাপ সইখা এ कांक कविशास्त्र । प्रांख्यां वांत्र के लाख लाशे ।

### পশ্চিমবঙ্গে নির্ব্বাচন

পশ্চিমবঙ্গে प्रक्रिय ताब केई चर्थ: क्रेमान काय देवसङ क्या रेकापि मर्राधातव भागिक काठाएक मरमामीक लावी ভালিতা প্ৰভাগ ভৱিষাছে। বাচার একটা প্ৰাৰ্থী তরাইবাং भावा माडे (मक अकम'है मात्र कामाडेशास । का: विवासहस्र ताः अक जारवाधिक रेवर्डरक विनदास्त्रम (व. स्ट्रांन करखंत्र हास আর কোন পুর্বান্ত রাজনৈতিক দল নাই, কাজেই আং কাচারও পক্ষে প্রব্যেষ্টি গঠন করা সম্ভব নতে। বাষপর্য দলক্ষ্যি একমত চইতে পারিকেলে মা এ করাও জিমি বলিয়া দেন। আগানী বাৰজা-পরিষদে যে ভিভিতে বাজাই চইন কংগ্ৰেসপ্ৰাৰ্থীয়া আদিভেছেৰ ভাৱাতে কোৰ 'Stable' বা স্বাৰ্থ भवत्व के श्रीम मक्कव करेटन किया (म विश्वत जाबादमत यार्व) সন্দেহ বহিষাছে। বেশসেবা, দেশের উন্নতি ইহাদের লক্ষ হইবে না, হইভে পারে না, ইহারা ভার অভূপর্ভ । কংগ্রে: परमत अपनाक मका कहेरत चार्नमिक। हेकारक विरताः बर का जानाजानि चर्चचारी। क्षांची बत्नामहत्तर विज्ञात्कर त्वर्था बारेट्काल व्य. विजिते मानावस्य जाक करवा मारे किमिरे कराबंग शांकिकाहम बावर मुक्त क्रम कतिरकाहम मिर्काहरमञ्ज भव भविषय-अटकत चिकटत जिवित जाक्षाहरस्य सर् भारेत रेडा चार्च ज्ञास चन वाकित्व। शार्वी बाबाबबाद বাষপত্নী নামে পরিচিত চলগুলি আরও শোচনীর বার্থব

মনোবভির পরিচর বিরাছে। নিজের বলের বার্থ কেন্তট क्रांकिटन मा । अरे ऋरवारन रेक्ट-अम-७ अन्द क्रमामिट नार्के অভ দলপ্রলিকে সলে হাবিহা কলিকাতা ও শিৱাঞ্চল बिरक्टमंड ब्रीबांक अधिकांड चश्च (मविज्ञांट, केटा चार्स) जकर किया, जांधजा करकिय क्रिकिटन, जाता किया कविशा (मार्थ माहे। क्वथबार्ड ब्रक ठाव-शांठ हेक्बा व्हेबारक। वावश्वी अवही वन दर्शास मित्कता अकब शांकिएक भारत मा. जिशास ভাহারা প্রদেশব্যাপী ঐক্য গভিয়া ভূলিবে ইহা আশা করাও वाकृतका। क्यानिहे एन वादिद्ध क्ककी महम काव दाविश ভিতরে রীভিনত দরক্ষাক্ষি ক্রিভে পিরা ভালপোল পাকাট্যা বসিয়ালে। वामभन्नी औरकात मारम असम हैक-अग-अत जावक का त्रीति है छेगमम अवर क्यामिक मालव (कांग्रेटक ठानाहेवांव ट्रिडी व्हेटकहा। यन विजाद व्यविकाश्य नामभडी क्यार देशास्त्र नाशित हिन्दा निवाद । चार-अम-अ शार्षित लाहार रहाता निवाद. किन अरे नलाव কোন অভিত এখন জার নাই। ভোঁসলে অনেক দিন কংগ্রেদের সচিত ভাত মিলাইরাছেন। শাতনওরাক কংগ্রেস मामानवन महेबाएक. महबूद नेदार्श किंद्र हाक्द्रीए निदाएक. नाट्म खत्राक अवर बीलम कलिकाजाय करे छेलस्टला हरेसा मिया निवादम । देवांत निवाद चारे-अम-अ नाहि चारक-বলিতে চটবে ? সবচেয়ে বছ কৰা এই যে, বে কৃষ্যু-মিষ্ট দল মেভাদী পুভাষকে দেশবোহী বলিভে ছাড়ে মাই, তাঁতার সংগ্রামের যাতারা সবচেরে বড় শত্রু ছিল, নেভাজীর क्षेणिट्य मानिमात करवाबार्ड त्रक वा बेक्ट-अम-४ अवर जाहे-এম-এ দলের সভিত সেই কয়ানিই দলের মিল্ম ও একা কি করিয়া চইতে পারে ? কোন আদর্শের ভিছিতে এই রিলন ষ্টাতে পারে না. ব্যক্তিগত বা উপদলগত স্বার্থ এবং লোভের कि खिला है हैता मखन ।

দেশবাসীকে আৰু ভার বাৰ বা দক্ষিণ টকিট দেখিলে চলিবে না। ভোট দেওছার সময় পার্ট টকিট অপ্রাহ্ম করিছা ব্যক্তিগভ ভাবে প্রার্থীর বোগ্যভা বাচাই করিছা দেখিতে হুইবে। ইহা না করিলে আগানী পাঁচ বংসরের ছঃশাসনের বিরুদ্ধে কাঁদিবার অধিকার কাহারও বাকিবে না।

### ডাঃ বিধানচন্দ্র রায়ের নানা ভাবনা

পশ্চিমবদের ব্ধাননী ডাঃ বিবাদচক্র রাবের ভাবনার আন্ত নাই। ডাক্তারী করিবার সমর তিনি বাক্তিবিশেবের রোগের নিদান করিতেন, চিকিংলার ব্যবহা করিরা বিভেন। রোদী ও তাঁছার আত্মীরবর্গ ভারতবর্বের অভতন প্রেঠ ডাক্তারকে দেখাইতে পারিরাহি, এই আনক্ষে নিভিত্ত রমে বাড়ী বাইতে পারিত। কিন্তু আন্ত সমাক্ষদেরের নানা রোগ লইরা তিনি কাহাকেও সভ্ট করিতে পারিতেহেন না,

এবং কাছাকে সন্তুঠ করিলে বে টেচাবেচি কম হইবে আহা বুবিতে পারিতেহেন মা।

গভ ২৪শে কাঠিক নিজের বাসগুছে সাংবাদিক বৈঠকে তিনি বে বিহৃতি লান করেন ভাতার ববো আবরা উপরোক্ত বিবার তাব লক্ষ্য করিতেছি। এই বিহৃতির চুম্বক বৈনিক সংবাদপত্রে প্রকাশিত বুইরাছে এবং আমাদের বছব্য হইবে তাহা অবলম্ম করিয়া। তিনি পশ্চির্বকের স্বাক্তের বব্যে প্রেটীবিভাগ লক্ষ্য করিয়া ভাতাদের স্বভাসমূহ স্থাকে বাহা বলিরাছেন তাহা তর্কের বিষয়। আমরা তাহার বিহৃতির চুম্বক প্রকাশ করিয়া ভাঃ বিবাসচক্র রারের হক্তিগুলি বিচার করিবার করু পাঠকবর্গকে স্বযোগ দিব।

প্রধানমন্ত্রী বলেন—দেশের লোক আছ তুলিতে পারেন না বে, নব্যবিভ সমস্তা এবং পূর্বেনদ হইতে আগভ বিপুল-সংখ্যক মব্যবিভ উষাত্ত সম্ভাই ভারতের এই সম্ভাব্তল রাজ্যের প্রধান সমস্তা। অনেক রাজনৈতিক দল কৃষ্ক-প্রজা-মক্তর, পূঁলিপতি প্রভৃতির কথা বলিতেত্বেন। কিছ কেন্ত্রই মধ্যবিজ্যের কথা বলিতেত্বেন না।

ভা: রার বলেন, কিষাণ ও বজ্চরের জীবিকার ব্যবস্থা আছে; ভাহাদের উপার্জনের পথ আছে। কিছ জীবিকা অর্জনের উপায়হীন মবাবিভের কথা কেই চিভা করেন না। মবাবিভ শ্রেণীসভূত বুছিলীবীরা বলি বাভ ও আশ্রের না পান, বলি ভাহাদের সর্ব্বদাই জীবিকার কভ চিভিত বাভিতে হয়, ভাহা হইলে ভাহারা ক্রমণ: কভবুছিতে পরিণত হইবেদ এবং ভাহার কলে দেশের কভিই হইবে। স্ভরাং এবন হইতেই মবাবিভাদের কভ গভীরভাবে চিভা করা দরকার।

ডাঃ রার বলেন, তিনি এই ম্বাবিভ সমভা সমাবাদের

কল একটি প্রকাষনা পরিকল্পনা প্রভাত করিবাছেন। এই

প্রকাষিকী পরিকল্পনার স্করণা হইল স্বাবিভ শ্রেমীর
লোকদের কল বল্ভি হাপন করা। তিনি আশা করেন বে,
উভর কলিকাভা বিহ্যতীক্রণ পরিকল্পনা বারা বে আকলে
বিহাং সর্বরাহ হইবে সেই এলাকার ম্ব্যে তিনি ক্রেক্ট

ক্রাবিভ বল্ভি হাপন করিতে পারিবেন।

বৃধ্যমন্ত্ৰী বলেদ, পশ্চিমবদের কৃষকদের প্রকৃত সম্বভা হইতেহে জীবিকা নির্মাহোশবোদী অনির সম্বভা। সম্বভার কর্তৃক সংগৃহীত সংখ্যাতত্ব অসুমানী দেখা যার, এই রাজ্যের বছ-সংখ্যক চামীকে বংগরের প্রায় তিম-চারি নাসের খাত্য বাজার হইতে ভিনিতে হর। কাজেই এই সমত চামীকে অভ ভাজে নিমুক্ত করিবার সমতাও আছে। চামীকের অভ স্বরংসম্পূর্ণ ব্যবহারকরে পশ্চিমবদে ভূমি উন্নর্নের হারা চামীকের মধ্যে আমি প্রক্ষিদের প্রয়োজন আছে। পশ্চিমবদে ভূমিবন্টনের প্রায়ট এই রাজ্যে কি পরিয়াণ অনি পাখিলা হাটাকে আন্তালক সদে সংশ্লিষ্ট। পরিসংখ্যান ছইছে বেখা বার বে, এই রাজ্যে অবলিত ভবির পরিষাণ ধুবই বল। জীবিকা-নির্বাহোপবারী ভবিত: ভবিবে বিসাব অস্থারী ভবিত: প্রত্যেক চাষীকে ৫০ বিখা করিরা ভবি দিতে হর এবং ঐ ব্যবহা কার্য্যকরী হইলে বহু চাষীকে ভবি হইতে উংগাভ করিতে হর। কাজেই ইক্ষরিক হোক্তিঙের ভিভিতে ভবি প্রব্যাক্তিমের ব্যবহা ভরিতে ছইলে সরকারকে ভবি হইতে উংগাভ চাষীকের বিকল্প রভিতে নিরোপ করার ব্যবহা ভরিতে চইবে।

ভা: রার বলেন বে, বিহার, উভরপ্রদেশ এবং জন্য বে সকল রাজ্যে জনিদারী প্রধা বিলোপ করা হইরাছে ভিনি ভাহাদের কর্তৃপক্ষের সহিত জালাপ করিয়াছেন এবং চাষীদের জীবিকার উপযুক্ত পরিমাণ কমি জববা বিকর রভির ব্যবস্থা করিবার সমস্যা তাঁহারা কিভাবে সমাবান করিছে পারেন ভাহা বিজ্ঞানা করিয়াছেন।

উপরোক্ত প্রভ্যেকট সরকার এই সমস্থার শুরুত্ব উপস্থিত করিয়াহেন এবং আত্মও পর্যান্ত ভাষার সমাধানের পশ বাহির করিতে পারেন নাই।

"পশ্চিমবদের ক্ষিণারগণ তাঁহাদের ক্ষিণারী বিজ্ঞান করিবা দিতে বিশেষ উৎসাহী—একথা আৰু আমি বলিতে পারি। ক্ষিণারী বিজ্ঞারে তাঁহারা ধূব ধূপী হইবেম।" তিমি বলেম—কিন্তু ক্ষিণারী ক্রম করিবা তাহা বারা চাষীদের উপর্ক্তভাবে সাহাব্য করা বাইবে কিনা ভাহাও সরকারকে এই প্রসক্ষে ভাবিরা দেখিতে হইবে। এই দৃষ্টিতে বিবেচনা করিবা দেখিলে দেখা বাইবে যে, পশ্চিমবদে ক্ষিণারী রাষ্ট্রীয়-করবের প্রস্তা তেমন শুক্তবর্প নয়।

ভ্ৰমিদাতী প্ৰথা উচ্ছেদ সম্পৰ্কে মন্তব্য প্ৰসংক ভিন্নি বলেন—
সামরিভভাবে ভিনি অন্ততঃ ভ্ৰমির কলন বাড়াইবার একটা
উপায় করিবাছেন। অনেকেই ভানে না বে, সর্ফায়
গত ১০৬ বংলরে সেচ ও উন্নত বরণের বীত্ব এবং ভাল সার
বিভরণের ক্ষেত্রে সাত কোট টাকার উপর ব্যর করিবাছেন।
ভ্ৰমির উংপাদন বৃদ্ধি এবং চাষীদের আর্থিক দিক দিরা
বরংসম্পূর্ণ করার পথ পুলিরা ধেওবাই সর্কারের লক্ষ্য ছিল।
ভিনি আরও বলেন বে, তাহার এই নিজম্ব সমাধানের উপার
লইবাই ভিনি নিশ্চিত্ব থাকেন নাই। থালবহলের ভ্রমি সম্পর্কে
একট পরিক্রমা রচনার নির্দ্ধেশ ভিনি দিরাছেন।

এই বিবৃত্তির মধ্যে ডাঃ রার 'মধ্যবিত্ত' সম্ভাকে প্রধান
ছান নিয়াছেন। ছাই লোক বলিবে বে, আগানী ভোট-বুছে
উচাদের ভোট সংগ্রহ করিবার কচ তিনি ভাকা করিবাছেন।
আমরা ননে করি, ন্যাবিভের সম্ভা বক-বিভাগ দারা কটলতর
হুইরাছে নাম। ভাকা গত ৮০।১০ বংসরের নানা ভার্বের
কল। ভংগদ্ধে বাঁচারা গ্রেব্রণা করিবাছেন উচ্চারা ভাবেন

বে, বাঙালী মব্যবিভ শ্লেণ্ট অপর প্রমেশবাসীদের মত প্রাম্ব ছাডিয়াইল অভাবের ভাড়নার বা বাছ্যের অবেষণে। এই ব্যাখ্যা সহজে বুঝা বাইবে বহি আমরা নোগল রাজছের অবসানের কল পর্ব্যবেজণ করি। আমীর-ওবরাহ, লেমানী-সৈত বেকার ক্ইরা পড়িরাহিল। পূর্কে বা পান্টিলে ইংরেছের কল্যাণে বেসব সূভন বৃত্তির প্রষ্ট কইরাহিল ভাতার জত বোখাই, মান্রাজ, কলিকাভা নগরীতে ও জাহাজবাটীর এবং বেলওবের ক্র্যারণে ভাহারা ভিড় করিল। অভ্রমণ অভাবের ভাড়নার লক্ষর, রামাস্থ প্রভৃতি সম্প্রদারের লোক আজ উভর-ভারত ছাইরা কেলিরাহে। ইহার প্রবাণ সরকারী নপ্তরে, সওলাগরী আপিনে জীবত হইগা রতিরাহে।

পশ্চিমবদের মধ্যবিভ শ্রেণী অভত: গত এক শত বংসর হইতে এই ছই অবছার দারে ঠেকিরা গিরাছিল। ক্লিকাভার সংবদাগরী আপিস, লালদীখির উভর দিকে সরকারী দপ্তর, গলাভীরে অবছিত হাইকোটের দৌলতে প্রায় ৫০ বংসর উহারা একপ্রকার সুপে ও যভিতে কাটাইরাছে। আপদ কুটল ম্যালেরিরা রূপ বারণ করিরা; ভারাদের প্রায়ছাল করিল। বাছ্যের অবেবণে তাঁহারা বাহির হইবা পভিলেশ বাংলাদেশের বাহিরে।

একটা হিসাবে দেখিবাহি বে, সাঁওভাল পরগণা হইছে এলাহাবাদ পর্যন্ত বাঙালী বাহ্যাবেষীরা বে সব বাড়ীবর করিরাহিলেন ভার সূল্য অন্তভঃ পক্ষে ৩০।৪০ কোট টাড়া। মনে হর, বি. এন. বেলওরের টেশন ও উড়িভার বাঙালী বসভি এই হিসাবের অন্তর্ভুক্ত। আন্ধ এ সব বাড়ীবর, সম্পতির মূল্য কভ ভাহা সংখ্যাভত্তবিদেরা বলিভে পারেন।

পশ্চিমবদের মুখ্যমন্ত্রীকে সমাজবেহের এই ব্যাপক রোগের চিকিংলা ভরিতে হইবে। কেবল 'বসভি' ছাপম করিলে রোগ দূর হইবে মা এবং সরকারী 'বসভি' ছাপম সহছে বে অভিজ্ঞতা লাভ ভরা সিয়াছে, ভাহা বুব আপাপ্রন ময়। 'বুগাছর' পঞ্জিলার গত ১৩ই কার্ডিকে প্রকাশিত এক পঞ্জে নেই অভিজ্ঞতার বর্ণনা আছে:

"পশ্চিম্বক সরকারের পুনর্জাসন পরিকল্পনা অন্থ্যারী পূর্জ্বক হইতে আগত ধ্যাবিত শ্রেপীর উলাভবের জত ২৪ পরপণা জেলার হাবভার 'আর্জান' কলোনী গভিরা উঠিতেছে এবং ইতিমধ্যেই এখানে বহু পরিবার সরকার কর্ত্তক নির্দিত চুই কামরামুক্ত বাভী পাইবা তথার বসবাসের চেঙা করিভেছেন। অনেক বাভী এখনও থানি পভিয়া রহিলাছে। অনেকে বাভী পাইবার পর সরকারের নিক্ট হইতে বাভীর অবিকার সইবা বাস করিবার পরিবর্গে ভালা লাগাইবা বাভী কেলিবা রাখিবা-ছেন। অনেক বাভী এখনও বিলি-বন্টন করা হয় বাই। বাভীগুলি থানি পভিয়া থাকিবার কলে, পার্থবর্জী অবিবাসীক্ষের লোকাভাবে বিশেষ অন্থ্যিবা হুইতেছে। এই গক্তর গুরুষ

বালিক বে কৰে আসিবেদ অথবা একেবারেই আসিবেদ কিনা আচাবও কোন নিক্ষরতা নাই।

বাহারা এবানে বসবাস সুক্র করিবাহে, ভাহাদিগকে
নামা প্রভার অসুবিধার সন্মুখীন হইতে হইতেছে। আক্র্য্যের
বিষয় কর্তৃপক্ষ দেখিরা ভনিরাও এই সকল অসুবিধা দূর করিবার
দিকে নোটেই নজর দেন না। অনেক বাজীর সন্মুখে পুরাতম
রাভা ভাঙিরা কেলিবার কলে বে গভীর গর্ভের স্ক্রী হইরাহে,
ভাহা আবু পর্যান্ত ভরাটী করিবার কোন ব্যবস্থা হর নাই।
আনেক বাজী এভ নীচু বে, সামান্য বৃদ্ধী হইলেই কল ক্ষিরা
বাকে।

প্ৰাৰ পাঁচ শভ পরিবার বসবাস ক্ষুক্ত করিলেও আৰু পর্যন্ত এবানে গোষ্ট আপিস, স্থামী বাজার, স্থল প্রভৃতি প্রতিষ্ঠার (कान रावका क्य नाहे। (नामा वाड. नेखरे कन. राकाड হইবে, ঠেঙার আহ্বান করা হইরাছে। কিন্তু কবে যে ইহা ৰান্তবে পৱিৰত চইবে, ভাচা কৰ্ম্মণক্ষই বলিভে পাৱেন। ভাচা ছাভা কলিকাভার সচিত সচত যোগাযোগের অভাবই শচর-পরিকল্পনা সাজলাম্বিক ভাইবার প্রধান অকরার। এখানে निय-वानिका श्रीकर्शन मिया जिनवाद काम (हर्ड) व्य गारे. কাভেই এবানকার অধিবাসীদের প্রায় সকলকেই কলিকাতা ৰহানগরীতে চাকুরী বা ব্যবসা-বাণিজ্যের ভব ছটাছট করিতে भिक्षतक जदकाद (हेंहे-वाज जाकिज ठालू कदिशा অমায়ারেট এট সমস্রার সমাধান করিছে পারেম। কলিকাভা बालाबारणत जरू धेशांव वा बालारक वांवा करेंदा सामाचव পরিবারবর্গকে এবানে রাধিয়া কলিকাভার বাকিভে ভর। কলে, ছই জারগার ব্যর নির্বাহ করা এই বাজারে বে ক্তিরণ ক্ট্রনার্য ভাতা সহক্ষেই অলুমের। কলিকাভার সহিত সহজ যোগাযোগ খাণিত চইলে ভালা-দেওয়া বাভীগুলির मबका बुनिया बाहरक्ष रमित्र हहेरन मा अवर शुमर्काजन शर्य-কলনাও ভবন সাক্লামণ্ডিত হইবে। আর একট অপুবিধা भागीय करनत । २०।२४ है वांकीत भत्र माळ अक्षे कतिया हैछैवश्रदान बाखात बादा वन्देश शुक्तानम-कर्ष्ट्रभक करनत সম্ভা মিটাইবার বাবছা করিয়াছেন। ইহাতে কলোমীবাসী-ৰের বে কিরুপ ভাইকর অবস্থা দাঁভাইয়াতে, তাহা ভূক্তভোগ ছাড়া কেন্ত বুৰিবৈদ কিনা সন্দেন। ইনা ব্যতীত আরও অসংখ্য बक्रविका ब्रह्मिता ।

এই 'আৰ্কান' কলোমী ছই বংসৱের অধিককাল পূৰ্ব্বে ইতিষ্ঠিত হইৱাহে···৷"

প্রলেখক নিজের নাম দিলে ভাল করিভেন। তিনি বে লব অভাব-অভিবোগের উল্লেখ করিবাবেন ভাহার মধ্যে নভূচিক আছে। এই কলোমীবালী কি প্রভ্যাশা করিবা-বিলেন জানি না। রাষ্ট্রবিপ্লবের কলেবে পরিবার-পরিজন ইয়ভির ভইকা পালে জাল ইজিকাল আলাক বাদ । প্রাণ- वित्र ना करेरम 'मजीद मर्ख' वृष्टिया यादेख , छाजाबा जवकाती काम विकारनंद निरंक हातियां वाकिएकम मा । जामारनंद क সৰ অক্ষতা সভেও ইতা খীকার করি বে, পুমর্বাসভি বিভাগ बिट्यत वर्षराभावन करवेव नाहे। जनकाती जात क्रिकार মৰো ভাঁচাৱা বেমৰ আইতাইয়া গিথাতেন, ভাঁচাতের বেসর-কারী সাভাষাকারীকেও সেই ভাবে ভভাইরা পভিতে দেখিয়া इ:व हव अवर श्रीहाता अहे (वहाकाल कि किता वाहित करे-ৰাৱ অৰ্ডা কৰেন ডা: ৱাহ ও তাঁচাৰ সালোপাল ভাঁচাদিগকে कौनाल नदाहेदा (क्या छाडाद हैसाहदन-3585 नाल ইউরোপে খাইবার পর্বের খব ঘটা করিয়া ভিনি একট পুনর্ব্বাসন বিভাগ ভাগন করেন। ভাচার পরিণতি ভি ত্রপ বারব ক্রিয়াছিল ভাতা ভিনি কবনই এত শীত্র ভূলিয়া বাইছে शास्त्रम मारे। त्मरेकमा छा: बारबद विवृक्तित मरवा आवता বিশেষ কোন আশার অংলোক কেবি না এবং হলে করি ছে. কেবল মধাবিত শ্ৰেণীর "কলোমী" বসাইয়া পশ্চিমবাচর সম্ভার সমাধান চটবে মা।

ডাঃ বার নিজেই মীকার করিরাছেন ন্তন বৃত্তির স্ট করিতে হইবে। কেবল মধ্যবিত শ্রেণীর জন্য নর, লক লক ক্ষক বে তিন-চারি মাস কর্মহীন বসিরা পাকে ভাহাদের জন্যও; ভবেই বাঙালী সমাজ আছে হুইবার স্বােগ পাইবে। নানা পরিকরনা আছে জানি। ডাঃ রাহেরও একটা থাকিবে না কেন ? কিছু সে সব পরিকরনাকে রূপ দিবে কে বা কাহারা ? একজন ওলজারীলাল নক্ষ বা একজন বিবানচল রাহু কার্ডবীর্যার্জ্নের মন্ত সহস্ত্র-বাছ হুইলেও ভাহা সন্তব হুইবে না বদি মা "ছিসও ক্ষেটি ভূক" এই মহৎ কার্য্যে সাহায্য করে। অনেকেই ভাহা করিতে উৎস্ক। কিছু সরকারী দপ্তরধানার উত্তপ্ত বাভাবে তাঁহারা স্বভাইবা পঞ্চন। ইহা ভ বাভব অভিজ্ঞা।

বাঙালী কৃষকের সমতা সহতে ডা: রার বাহা বলিরাছেন, তাহা মোটার্ট সত্য। তাহাদের অমি ববেই মাই; কিছ তাহাদের প্রত্যেককে "৫০ বিষা করিরা কমি" দিবার পরিকল্পনা অত্যন্থ অবাতব। গাঁচ বিষা করিরা দিলে দেশের লোক তাঁহার স্থতি অবর করিরা রাবিবে এবং সেই পরিমাণ কমিও পশ্চিমবদে আছে কি না তাহা সম্পেছ্লমক। আনাদের বনে হর বে, প্রেণীবিরোবে বিষাস না করিরাও ডা: রার প্রেণীবিতাপ করিরা কেলিরাছেন। সেইকল্য তাঁহার অত্ত পরিকল্পাদির তবিত্যং তাবিরা চিভিড হইভেছি। সম্প্র বাঙালী স্বাক্ষ তথা সম্প্র তারতীর স্বাক্ষ স্তম্ব করিরা প্রতিক করিছে। অবিষাসী শিল্পবর্গের ক্ষম্য গান্ধীনীর সে বর্গ ব্যর্গ হইছে চলিরাছে। সেক্ষ প্রতিক করিনাক: বারী। ডা: রার ক্ষমেও পারীবীভিন্নের ব্যবনাক রাণী গানাকের প্রামান্ত হারী। ডা: রার ক্ষমেও পারীবীভিন্নের ব্যবনার রাণী গানাকের ব্যবনার রাণী বার্লিক ব্যবনার রাণী গানাকের রাণী গানাকের ব্যবনার রাণী বার্লিক ব্যবনার রাণী গানাকের ব্যবনার রাণী বার্লিক ব্যবনার রাণী গানাকের ব্যবনার বার্ণিক ব্যবনার রাণী বার্ণীর ব্যবনার রাণী বার্ণীর বার বার্ণীর বার্ণীর বার্ণীর বার্ণীর বার্ণীর বার্ণীর বার্ণীর বার্ণীর

বর্তবাদ মুগের "রহং বর"—কলকারবাদার বিখাসী। নিজের কীবনে তাহার পরিচর বিবাহেন বিভিন্ন বরণের নির প্রতিঠ। করিরা এবং তাহালের সম্প্রসারণে সাহায্য করির।। সেইকন্য তিনি "বব্যবিভ" শ্রেণীর সভান হইলেও পুঁলিপতি হইর। উটবাহেন এবং তাহাদেরই বার্থ সংযুক্তর করিতে সদা বারা।

ক্ষি দেশের ছ্র্ডান্য বে ভারভরাষ্ট্রের শাসকশ্রেণী—ডা: বিবানচক্র রার তাঁহাদের এক্ষন—নিষ্কেদের কথা অনুসারে কাষ্ক করিতে পারিভেছেন না এবং গানীনীতি কার্য্যকরী করিতে উৎসাহ পাইভেছেন না। ইহাই পবিভ নেহক্ল ও ডা: রারের মভ লোকের ছ্র্ডান্য। বর্ডরান ভারভের, খানীন ভারভের, নানাবিধ ব্যর্ভার অন্যতম কারণ।

### পশ্চিমবঙ্গ রাজ্যের রাজ্যপাল

ভইর বুংগাণাব্যারের শিক্ষক-জীবন আরস্ভ হর বিগভ শভালীর শেষভাগে। কলিকাভা নিট কলেকে দীর্ঘকাল আব্যাণনার পর কলিকাভার বিশ্ববিভালরে ভাতার পূর্ণ গরিপতি ও বিকাশ। তাঁহার প্রভিতা সহতে বভাষত প্রকাশ করিবার চেঠা আমরা করিব না। আমরা মনে করি বে, তাঁহার শিক্ষক-জীবনের গৌরবোজ্ঞল অব্যার তাঁহার বিরাট লামের মধ্যে পাঙরা বার। শিক্ষাক্তের রাসবিহারী বোষ, ভারকমাধ পালিত, বিহারীলাল মিত্র—এই তিন জন বাঙালী দাভার পরেই ডইর হরেক্রক্রার মুবোপাধ্যারের নাম উল্লেখ-বোগা।

ভিনি বিশ্ববিদ্যালয়ের মুখপত্র "ক্যালকাট। বিভিউ" (বাসিক) পত্রিকার সম্পাদক ছিলেন। কংগক বংসর পূর্বেও মনে হর সম্পাদকমওলীর মধ্যে তাঁহার নাম প্রকাশ পাইত। সেই সত্রে সাংবাদিকগণের সঙ্গে তাঁহার পরিচর ও সথদ আরম্ভ হর। ভাহা মব্র ছিল ও আছে। আন্ধৃ ভিনি পশ্চিনবন্দের শাসনকার্থ্যে বিশিষ্ট হান অবিকার করিভেছেন। সাক্ষাংভাবে ভিনি কিছু করিতে না পারিলেও তাঁহার ব্যক্তিদ্বের প্রভাবে মল্লিমভানী ও সরকারী ক্রম্বাচারীবর্গ পরিচালিত হইবেন, এই বিশাস আনাদের আছে।

শিক্ষকের কর্ত্তব্য ও শিক্ষকের হংগ তিনি ব্রেন। আনরা আশা করি বে, তিনি তাঁহার রভির সন্মান বর্ত্তন করিছে নাহার্য করিবেন। শিক্ষপ্রেণীর মধ্যে বে হা-হতাশের বন্যা বহিরাহে তাহা রোধ করিতে তিনি চেঠার ক্রট করিবেন না এ কথা আনরা স্থানি।

নেপালের মন্ত্রিসভা বহারালা **এ**বোহন পারশের ককের নেড্ডে বে বরিসভা গটিত হইরাছিল ভাহা পদভ্যাগ করিরাছে'। ভংপরিবর্জে নেপালের অবীধর ঐতিভ্রনদের পাছ নেপাল কংগ্রেমের নেভা ঐরাভ্কাপ্রসাদ কৈরালাকে নৃত্য মহিসভা গঠনের কচ আহ্বাম করিরাছেন। ভিনি ভাহা এহণ করিরাছেম এবং চুড়ান্ত মহিসভাও গঠিত হইরাছে। মহিন্নভলী মাতৃকাপ্রসাদকে প্রধানমন্ত্রী করিং। শণৰ গ্রহণ করিরাছেম।

কি কারণে এক মন্ত্রিমণ্ডলীর পত্তম হইল এবং আর এক মন্ত্রিমণ্ডলী গঠিত হইল ভাহা আমি না। বোহন-বন্ধি-সভার কংগ্রেস পক্ষীর সচিববৃদ্ধ প্রধাববি—১৯৫০ সালের নার্চ নাস হইতে—প্রকাক্তে অভিবাস করিতেছিলেম যে, রাণাবংশের মন্ত্রিম্প সণভরের বিবালাদি অমান্ত ভাহার কৌশলাদি অব্যাহত রাবিতে (৮৯) করিতেছেম। রাণাপক্ষের বন্ধবা আমরা আমিতে পারি নাই। সেইজন্ত হই দলের অভিবোগ সমত্তে মতান্নত প্রকাশ করিব না। তবে ইহা আমি বে, নেপালের কংগ্রেম ও রাণাবংশের প্রতিমিধিবর্গের মধ্যে মন্ক্রাক্ষি চলিতেছিল।

রাষ্ট্রের ক্ষতা ও সম্পদ লইরা বিরোধ নেপালে মৃত্য নর। প্রায় ২০০ বংসর রাণাবংশ কি করিরা রাজবংশকে কোণঠাসা করিয়া রাণিরাছিল, তাহার ইতিহাস আমরা জামি। গণ-জাগরণের কল্যাণে এবং রাণাবংশের বর্তনাম প্রতিমিধিকের মধ্যে আম্মকলহের কলে আজ মহারাজা ত্রিত্বনদেব হুড় ক্ষতা কিরিরা পাইরাছেন। তার প্রমাণহরণ উল্লেখ করিছে পারা বার করেক্জম রাণাবংশের মন্ত্রীর নাম হাহারা কংগ্রেসী তালিকার হাম পাইরাছেন। মেপালের রাজবামী কাইমাণ্ট্র হুটতে ২৯শে কার্ত্তিক বে বার্তা প্রেরিজ হুর তাহার মধ্যে আছে এই ক্ষতি মাম—স্বর্গ শামশের জ্বল, ক্ষেমারেল ক্ষার সামশের জ্বল, মেজর-জ্বোরেল শর্কা শামশের জ্বল, মেজর-জ্বোরের প্রতিমিধি—শ্রীমহেন্দ্রবিক্ষম শাহ। জ্বোন্যরা মধ্যবিত সম্প্রদারের প্রতিমিধি। প্রজাপুদ্ধের প্রতিমিধি কে বা কাহারা ভাহা বৃবিভেছি না।

রাণাবংশের শাসনের অবসাম হইল। এই বিরার্চ বিপ্লবে ভাহাদের ক্ল্যাণ হউক; নেপালের গৌরব অক্র বার্ক, এই আশা ভারভরাট্রের সকলেই করিবেন। মহামালা জিক্বদদেব শাহ মূভন কর্জব্যের দায়িত্ব নিক্ষের করে ভূলিরা লইলেন। নির্বভাজিক রাজা হইবার শক্তি ও বৃদ্ধি তাঁহার কার্যক্লাপে ক্টরা উঠুক, এই প্রার্থনা করিভেছি। কংগ্রেসীদলের নেতৃত্বে বে মন্তিন্দলী গঠিত হইভেছে, বাভববৃদ্ধির প্রেরণার ভাহা চালিত হউক। ভাহা না হইলে ভারভীয় কংগ্রেলের বন্ধ তাঁহারা বিদ্যাভাজন হইবেন।

রামমোহন রায় "দেশ" প্রিভার ১৯শে আবিদ সংখ্যার চিত্তাশীল বাঙালী লেখক ক্ষাব লৈৱদ মুক্তবা আলী রাকা রাম্যোহন রার সক্ষে যে প্রশংলা করিয়াহেন, ভাতার কিঃলংশ ভূলিরা বিলাম :

"তার পর তারতবর্ষের যে অবিখান্ত অবংপতন আরস্ত হয়, তার ইতিহাস সকলেই জানেন। টোল-চড়ুপাসি, বজুব-বাজাসায় সংস্কৃত এবং আরবী-কারসী কোনগতিকে বেঁচে রইল বাজ---এর বেশি কোর করে কিছু বলা যায় না।

ভার পর এই হতভাগ্য ভারভবর্বেই এবং আমাদের পরম রাঘার সম্পদ এই বাংলাদেশেই জ্বালেন এক বাবা পণ্ডিভ, এক জ্বরদন্ত মৌলবী—বিনি কি আল-বীর্মী, কি দারা-শুকুত যে কারো সদে কাঁব মিলিয়ে টাভাতে পারেম।

ভৃষ্ ভাই মৰ, মানা হন্দ, মানা সংবাভের উর্দ্ধে বে সভ্যালিবক্ষমর আছেম, থার অভিত্ব বীকার করলে পরস্পরবিরোধী
সংবাভ মাত্রই লোপ পার, সেই সভ্যস্থমরশিবকে তিনি হৃদরে
অত্তব করেছিলেম, মনোজগতে স্পষ্টরূপে বারণা করতে
পেরেছিলেন বছবিব ঐতিহ্রের সন্মিনিভ সাধনার ভিতর দিয়ে।
বাল্যকালে তিনি শিবেছিলেন আরবী-কারসী, পরবর্ত্তীকালে
সংস্কৃত এবং সর্বলেষে হিক্রু, গ্রীক, লাভিন। হিন্দু, মুসলমান,
ইছদী, মীই—এই চার বর্মকগতে তিনি জনায়াগে অভি সক্ষ্যে
সাধার্যাস গ্রহণ করে, অন্তরের বাভ অন্তর্থণ করে, বে শক্তি
সক্ষর করতে পেরেছিলেম, সে শক্তি বে ভব্ সে-বুগের বৃঢ়ভা
জ্বভাতে কর করতে পেরেছিল ভাই নয়, সে শক্তির প্রসালাং
পরবর্ত্তী বাংলাদেশে এবং ভারভবর্বে যে মব নব অভিযানের
প্র বেরিয়েছিল, ভার কিঞ্চিৎ ক্রমা আমরা আজ করতে
পারি আমাদের অভ্যার জীব্য ভ অবস্থা থেকে।

রামমোহন বলতে কি বোঝার, তার সর্বাক্তম্পর বারণা রবীক্তমাধের হিল, ত্রক্তেমাধ শীলের হিল, সে বিষয়ে কোন সম্পেহ নেই, কিন্ত আমার ব্যক্তিগত বিখান, তার বহুমুখী পাঙিতা ও প্রতিভার সমাক চর্চা এখনো হর নি।

নিপীছিত হলেই সে ব্যক্তি মহাজন এ কৰা বলা চলে না, কিন্তু মহাজন মান্ত্ৰই নিপীছিত হন, সে বিষয়ে আমার মনে সন্দেহ নেই। রাজার ভাগো সে নিপীছন এসেহিল, চাষীদের ভাছ বেকে নয়—সেটা ব্যক্তে অপ্রবিধা হয় না— ভার বিরুদ্ধে ইাজালেন সর্ববর্ষের প্রিভাগণ।"

ভারত ও মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের সম্বন্ধ

এই ছই দেশের মধ্যে সম্বৰ জ্বেশংই অপ্রীতিকর হইরা
উঠিতেছে কেন তংগলতে আলোচনা নাকিন যুক্তরাষ্ট্রের
সংবাদপত্রাদিতে হইতেছে। আমানের দেশের মনোতার
ননেকটা "পণ্ডিত" ক্যাহরলাল নেহক্রর সমর্বক। পাশ্চাত্য
বিজন্ধ-শাসিত রাইগুলি চার ধে, আমন্ত্রা তাহাদের ক্যুবিটসীতি বানা পরিচালিত হই এবং লোভিরেট রাষ্ট্রের বিরোধী
ইইরা উঠি। সভবাদ সব্বতে ক্থনও ভারতবাসীর কোন

গোঁচাৰি ছিল মা, এখনও নাই। নেইকচই প্ৰধানবদ্ধীর নিৰ্কিলোধী মীভি আহলা সমৰ্থন ছবি।

যুক্তরাই এই মনোভাব বৃত্তিতে পারে না। সেইজ্ভই মনে করে যে, টাকা-পর্যা বার বিরা বর্তনাম বিজ্ঞানের নানা কৌশলাফি শিক্ষা দিরা আনাদিগকে দলভুক্ত করা অধিক্তর লহ্ছ হইবে। এই অন ভাতিবে কিনা বৃত্তিতেহি না। আর্থিক সাহার্য্য দিরা কোন আভির মন বে বেলী দিন বাবিরা রাণা বার না, ভাহার প্রবাণ চীন দেশ। ১৯৪১ সাল হইতে নাজিন রাই প্রায় দল-বারো শ' কোটি টাকার প্রব্যাদি ও অল্লন্ত বিয়া ভাহাকে সাহার্য করিরাছে। ভাহার কলে কি পাইরাছে আজ্ঞাহাকে সাহার্য করিরাছে। ভাহার কলে কি পাইরাছে আজ্ঞাহাকে সাহার্য করিরাছে। ভাহার কলে কি পাইরাছে আজ্ঞাহাকে সাহার্য করিরাছিল; চীনা যুবক-মুবতীকে উচ্চশিক্ষা দিয়াছিল; হাভার্ড, ইরেল, প্রিকটন, কর্পেল প্রভৃতি প্রেঠ মার্কিন বিথবিভালরসমূহে বৃত্তি দিয়া তাহাকের শিক্ষার ব্যবহা করিরা দিয়াছিল। বর্তনান চীনের শাসক্বর্গের মধ্যে এক চিয়াংকাই-শেক ও মাও-সে-ভূত ছাড়া প্রার সকলেই মার্কিন বিথবিভালরের ছাঞ্রছাত্রী।

এত বছ বিরাট সাহাব্যের কথা আৰু চীনদেশ ভূলিয়া গিরাছে। তাঁহাদের সংবাদশত্তে বেসব মন্তব্যাদি প্রকাশিত হর ভাহার ভদী সোভিবেট রাষ্ট্রের সংবাদশত্তের বরণ-বারণ হুইতে কর অসংখত নর।

এই পরিণভিত্র কারণসমূহ বিশ্লেষণ করিয়া দেখিলে মার্কিম চিভানাঃকৃপণ ও শাসক-শ্ৰেণী বুবিভেন কেন চীনকেশবাসীয়া চটবাছেন। মার্কিন জাভি তাঁতাদের বার্ধ-বৃদ্ধিকে নির্ম্লিক হুইতে দিভেছে না। বৰ্ডমান বুগের পাশ্চান্ত্য রাজনীতির ভিক্ত অভিন্ততা আমাদের আছে। ব্রিটার সাসন আমাদের দেশের উন্নতিকলে কিছুই করে নাই, এই কথা আমরা মধ্যে করি না। ভাহাদের জান-বৃদ্ধি, সভাভার অভিযান-এই মনোভাবের প্রেরণার ভাহারা শিক্ষার কেত্রে, আর্থিক ব্যবস্থানির কেত্রে वर्षमाम ब्रामानायात्र जानकिक विश्वादिन द्येबावक: बिरक्टबर वार्ट्द वांकित्तः। त्रहेत्रण बार्किन युक्तवाहेश्व नविश्रीत जन्नल "অনপ্রসর" দেশে অছরপ চেষ্টা করিছেছে এবং বাকিনী সাংবাধিকেরা নানাভাবে বুঝাইতে চেঙা করেন বে. এল্লপ দানে সকলকে ভাঁহাদের অনুগামী করা উচিত। ভালা বে হৰ না, এরণ আলা বে ছৱানা তাহা বদি চীবের অভিজ্ঞা हरेए काहाबा वृक्तिक मा भारतम, करन बाब किसरभ वृतिरक পারিবেন গ

সেইকত নৃত্য বাকিব রাইকৃত বি: চেটার বোলস্থত
১৯শে কার্তিকের একট বিযুতিতে বে-সব কথা বলিবাছেন,
ভাহার ইকিত নৃত্য পহার নির্দেশ করিলে আনরা পুৰী হুইব।
বাহাতে আনাকের "পুরাচীন সংস্কৃতি" নির্বাচি বাকিতে
পারে ভার কর্ম ভারকরাটের সংবাধিক ক্ষালালের প্রাকৃতি

হুৰ্নাৰ বা প্ৰনাৰ আছে—"পাছ হিন্দুখাতি" (mild Hindu)—
এটৰ বোৰার বুগে এই বিশেষণ সন্মানের নৱ। এটৰ বোৰার
তর হুইতে মুক্ত হুইবার কৌপল ভারতীর সংস্কৃতি শিবাইতে
পারে—অনেক পাকাভ্য চিভাশীল লোক কিছ এই বিশ্বাস
বনে বনে পোষণ করেন। তাঁহারা গাড়ীজীর উলাহরণ
ক্ষেণাইরা থাকেন ববন-ভবন। চেটার বোলসের এরপ কোন
বারণা আছে কিনা জানি না। তিনি অভ্যন্ত কাঁকা কাঁকা ভাবে
আনাক্ষের "প্রবাচীন সংস্কৃতির" প্রশংসা করিরাছেন বেনন
করিয়াছেন নিক্ষেবর সনাক ও সভাভার।

আৰৱা এই ছই সংস্কৃতির ভুলনাবুলক স্বালোচনা করিতে हारे। किन्न **जावता वाम कति त्व, जावारात नः**कृष्टित शक्न পরিচয় দিবার চেপ্রা কলাচ আমেরিকায় চইরা বাকে ৷ আহরা আমেক প্রচারপত্রিকা পাই যুক্তরাষ্ট্রের প্রচার বিভাগের चाकुरुता । इरेवानि देवनिक रेश्टरकी ७ वारना शारेश वाकि । কিছ ভাতার মধ্যে পাই কেবল যুক্তরাষ্ট্রের রাজনৈতিক কার্য্য-क्लारमब माना कांबरनब बााना अवर इरेनामि मिक्कावरे ভারতীর লেখক ভাচার প্রশংসা করিয়া বে-সব পত্র লেখেন ভালা পাঠ করিতে হর। মার্কিন সংকৃতির ব্যাখ্যা প্রায়ই দেৰি না। এনারসন (Emerson) প্রভৃতি "বোইন ভাক্ষণগণ" ( Boston Brahmins ) হইতে আরম্ভ করিয়া বে আদান-প্রদান চলিরাছিল রাম্যোত্ন রারের সময় চইতে, ভাতার काम देखन विनि मा। जन्द्रदान कविना ७--- विनी नश्तीत जन्नावरकत निक्रे शक निविद्यांथ, यन वर मारे, इरे-अक सम वाक्षांनी जारवाषिक अञ्चल चिक्कका चर्चन करिशास्त्र । कांडावा वाक्ट्रेमिक चारमाहमा कविटक हाम माडे। किस ছই দেশের সাংখ্যতিক সম্বন্ধের কথা বলিবার কর অভারোধ कतिशांकिरकान अवर क्षेत्रय शांकिम अरक्षांत्रत शतिहत क्रियांत क्या विवाहित्वम । ভाठार क्रा हरू धारुधीर जरप्रधिर ভক্তও নিজের কথা বলিতেন।

পরস্পর ভাসা ভাসা প্রশংসা করিলে কোন ফল হর মা।
এই অবহার পরিবর্ত্তন বাহ্মনীর। চেপ্তার বোলস্ ভাহা
করিতে পারিবেন কি ?

### চীন ও ভারতের সম্বন্ধ

সম্প্রতি চীনদেশের পক হইতে একট লংছতি বিশন ভারতরাষ্ট্রের নানা হান জন্ত করিতেহেন। দিল্লী নগরীতে এক
নভার (গত ১৩ই কার্ডিক) ভারতের পক হইতে ওঁহোবের
অত্যর্থনা করা হয়। সভাপতি হিলেন আলীগড় বিশবিভালরের উপাব্যক ভটর কাকির হলেন। বক্তৃতা উপলক্ষে
ভিনি বলেন: "আনাবের ভারতীরগণ অপেকাও প্রাচীনভর
একট কাতির, অবচ আনাবের নাবারণভন্তী রাষ্ট্র অপেকাও
নবীনভর একট রাষ্ট্রের প্রতিনিধিরণে আপ্রাহা এবানে

অভিনদিত হইতেহেন। তাহা ছাড়া আপনাদের এই তারত পরিবর্ণন উতর রাষ্ট্রের বব্যে বৈত্রী ও সহবাসিতার দূতন রুপের স্চনাদরণ; একড আপনাদিগকে বিশুণ অভিনদ্দর ভাগন করা চইতেহে।"

এই অভিনন্ধনের উভবে বিশ্বনের নেতা ভিং সি লিন্
বলেন, "তারত ও চীনের বব্যে বৈত্রী ও সাংস্কৃতিক সম্পর্ক
দীর্ঘলীবী হউক। আবরা প্রত্যেকেই আবাদের বেশগুলির
প্রতিটি লোকের সম্বৃত্তি এবং দেশের নিরাপতা কামনা করি।
ইহার কত চাই উভর দেশের মধ্যে বৈত্রী-বন্ধন দৃচ্তর করা।
ইতিহাস ইহার ভিত্তি প্রতুত করিয়া রাখিরাছে। বিগত হুই
বংসরে আবাদের উভর দেশের কুটনৈভিক ও অর্থনৈভিক
সম্পর্কে বেরণ উন্নতি হুইরাছে, ভাহাই এই হুই দেশের
পূর্ব্বোলিখিত বৈত্রীর জাজ্জারান প্রবাণ।"

এরণ ওত ইছার বৃল্য আছে । কিন্ত ভাহা রাজনৈতিক নব । আমরা বভাই করিরা থাকি বে, আমাদের দেশে বৌদ্ধ-বর্ণের কর, বৃদ্ধদেবের বর্ণ আমরা চীনকে দিরাছি । চীন-দেশের পক্ষ হুইতে এই ধন অস্বীকার করা হব না । কিন্ত চীনদেশীর নর-মারীর মনে একটা অভিযান আছে বে, ভাহারা কেবলনাত্র পৃথিবীর সর্ব্বাপেকা অবিক লোক-সমষ্ট্রর অবিকারী নর, ভাহাদের দেশ শিল-বানিকা ও সংকৃতির অভাত প্রকাশের কেন্তে আনভ্যাবারণ আনক্ষিত্র লান করিতে পারে । এক কন আর্থান বৈজ্ঞানিক বলিয়াছিলেন, বে আভির্বারারা বি-কোন আবহাওরার মধ্যে বাস করিতে পারে, বাহারা বা-ভা থাইরা জীবনবারণ করিতে পারে, ভাহারা আছের ।— সেই ক্বাই এখন প্রমাণিত হইতেছে । ভারতরাই হইতে সংকৃতি মিশন চীনদেশে নিয়াছিল । ভাহার এক কন সক্ত—প্রহাতী সিং বাহা বলিয়াছেন ভাহা এই মতের সমর্থক :

" .. উচ্চ শ্রেণীর কারিগরী বিদ্যা কানা না বাকা সম্ভেও
চীনারা কাক করিবা বাইকেছে। চীনের বিরাট ক্ষমসম্পদকে
পুনর্গঠনের ক্ষম প্ররোক্ষনীর ক্ষরাদি উৎপাদনের কাকে নিরোধ
করা হইরাছে। বৃঞ্জীক্ষরপ বলা বাইকে পারে যে, ২০ লক্ষ্
লোক কোনালি হাতে লইরা হরাই নদীর বভানিরোব পরিক্ষমা কার্যাক্ষরী করিকেছে। বাঞ্রিয়ার বেকার নাই। ছুল
কলেক্ষে হাত্রেরা ক্ষিত্রেরা উৎপাদনের সহিত্ত অভাভ ক্রব্য
উৎপাদনের ক্ষমতা বজার রাবার চেগ্রা ক্ষিত্রেছ। ত্রিসংকারের পর চীন বাল্যে বাবল্যী হইরাছে। এবানে নিত্যাধ
এক্ষরকা বভারের হান নাই। ক্ষপক্ত আরও ২০ বংসর
ব্যক্তিগত পুঁলির প্ররোজনীয়তা বীকৃত হইরাছে।

চীনা ক্ৰমানাৱৰ বৃতিতে পাৱিষাহে, সন্থ্ৰ চুৰ্ৎসৱ। তবে উাহায়া ইহাও বীকার করে বে, অতীতের ভূসনার বর্তনান উরত। সরকারী অকিসাররা অক্সন্ত নালানিবা জীবনবাপন করেন। তাহারা বেতন পান না, বাব্য ও নাবাত তাতা পাৰ। চেৰাৱৰানে ৰাও-দে-ভূং বাত্ৰ ৮ শত টাকা ভাতা লইৱা বাজেন।"

अरे देखिन देशव बच्चा श्रकान कतियात श्राह्म वारे।

### চীন ও ভারতবর্ষের পার্থক্য

মব-প্রকাশিত "নিশান" পঞ্জিকা এই চুই দেশের মধ্যে বে সাংস্কৃতিক পার্থক্য দেখা দিয়াছে ভার নিদান অনুসন্ধান করিতে সিরা বলিতেকেন :

"আমরা তব ইতাই বলিতে চাই, চীনের বেলার অস্বাভাবিক কোন কিছই এয় নাই। চীন লক লক ভাতি-জোহীকে বলি দিয়াই আঞ্জিকার ক্য়ানিষ্ট গবংগণি প্রভিষ্ঠা ভবিষাতে , বলডভার ও প্রায় রোলাবের সালাযো দেশ পালিখ করিয়া নুভদ রাজ্য প্রতিষ্ঠা করিয়াছে, এখানে ভাহা হয় নাই। পাৰীশীভি অনুসরণ করিলা বনা বন্দপাতে আপোষে সরাজ আসিয়াতে। ভাই মধে বলিলেও কাৰ্যাভ: একজনও জালে-बाबादी वा क्षिकाद्रक महान्त-त्नारहे गंति क्रिक नारव नाहे। প্রভাতর শাসম প্রবর্ত্ম করিয়া প্রভোকের জীবন ধন-সম্পতির প্রকৃত মূল্য-মান দিয়া তবে ধীরে ধীরে অগ্রসর চইতে বাধ্য হইতেছে, ইনকাষ্ট্যাক কাঁকিদাভাকে ভাতারা সময় দিয়া দিলা আপোষে একচলিশ কোট আঠার লক টাকা আদায় कविशास । चलवार विश्वावत भाष हिम्मा हुई बरमात हीन যাহা করিয়াছে, পতামুগতিক নিয়মনিঠার পৰে ভতবানি অঞ্চনত চইতে ভারতের লাগিবে অন্ততঃ ২০ বংগর ৷ প্রভরাং লক্ষৰে ভাৰই অক্ষাৰ ।"

এই "আত্মাধবকারী পরমোৎসাহ" (রবীজনার্থ) সহছে
একটি প্রের করিতে চাই। চীন যে মুল্য দিয়াছে "বরাজ"
পাইবার জন, আমরা ভাহা দিতে প্রস্তুত ছিলাম কি ? এবনও
আছি কি ? গানীজী আমাদের প্রকৃতি বৃধ্বতেন বলিরাই
অহিংসার উপার অবলগন করিরাছিলেন। রাজনীতি সম্বদ্ধে
উৎসাহী বাহারা উহোরা ত নেডাজীকে সাহাযা করেন মাই।
ভবিলে চরত তিনি দেশভাগে করিতেন না।

ভারপর এই চারি বংসর আমরা কি করিভেছি ? সকলেই বে আমরা অহিংসাবাদী, বাক্যে, মনে ও কর্পে অহিংস এমন কথা বলিতে পারি মা। তাঁহাদের মধ্যে কেই কি কোন কালোবাদারীকে নিদ্ধ হতে শাভি ধিয়াছেন ? একটা কথা ভূলিকে চলিবে মা। বেহন প্রস্থা তেমন রালা হয়। দোর করিয়া রাম্বকে সং করিলে হিটলারের দশা ঘটে। সেইধানেই গাড়ীনীভির শ্রেক্য।

### বস্ত্রশিল্পে ভারত ও জাপান

ক্ষেক্ বাত্ৰ পূৰ্বে কাপানী বন্ধলিল পৰিচালক সমিতির কোন পৰিকাল একট সংবাদ প্ৰচাৰিত হইলাছিল—বল লগতে কাপাৰ এই দাবি ক্ষিতে পাৰে বে, লে বল্পবাদী বগতে 'এক নখন' ছান অবিকান কৰে। ইহান প্ৰচাৰী সরকানী বন্ধ নিমন্ত্ৰণকানী বিভাগের কোন দানিছবীল কৰ্মানী বলেন বে, এই কথা সভ্য নম ; ভারভনাঠ্রই এই দাবি করিছে পারে। ভার প্রমাণহরণ ভিনি এই ভব্য উপছিভ ক্ষেন, ১৯৫০ ঐটাব্যে ভারভ হইতে ছল ও ক্লপ্রে প্রায় ১২০০ কোট গক্ষ বন্ধ নথানী হইবাহিল; সেই বংগরে ক্লাপানী হিসাব্যুতে ঐ দেশ ১০৬৪ কোট গক্ষ বন্ধ নথানী করে।

সংবাতিত্বে এই যুদ্ধ আমাদের কোন উপকারে আলে
মা, ভারতের সাবারণ নাগরিক ভারতে কোন আনন্দ পার বা।
সরকারী বন্ধ নিয়ন্ত্রণ বিভাগ বভাই বড়াই করুন, দেশের লোক
ববন দেবে যে একবানি ঘুড়ী বা শাড়ী অববা এক গদ 'বাকিন'
কিনিতে ভারাদের লাইন বাঁধিয়া গাড়াইতে হয়, এবং ২ ৩ বঙী।
আপেনার পর বালি হাড়ে ফিরিডে হয় ভবন জাগান
ও ভারতের এই প্রভিযোগিভার সংবাদে তাঁহারা কেবল গালি
দিতে পারে অদৃষ্টকে এবং ভারাদের অর্থে পুষ্ট সরকারী নিয়ন্ত্রণবিভাগকে।

ইহার মধ্যে আবার সংবাদ আসিরাছে যে, বৃষ্টি কম তওয়ার কারণে বোঘাইরের কাপড়ের কলে বিজ্ঞা-শক্তি করাইরা দেওরা হইরাছে। কলে ব্যাভাব, কালোবাজারীর লাভ ও সরকারী নিমন্ত্রকভারীর উপরিপ্রান্তি কিছু হইবে। এই একটি মাত্র কারণে নেহরু সরকার ভণা কংগ্রেসী সরকার ভোটসুত্রে হারিয়া যাইতে পারিভেন যদি দেশের অবিজ্ঞাংশ লোক নিরক্ষর মা হইত।

## ভারতীয় ভাষা-নীতি

রাষ্ট্রপতি রাজেন্দ্রপ্রসাদ নানা ছানে ভারভরাষ্ট্রের রাষ্ট্রভাষা সহবে বিবৃত্তি দিতেছেন। ইবা উগ্রের কর্ত্বর। এই সম্বন্ধা ক্রমশ:ই যেন কটেল হইরা উঠিতেছে। আদিতে ক্রেনাগরীও উর্ক, লিপি সহতে যে তর্ক ছিল তাহা রহিরা সিরাছে। এখন প্রতি রাজ্যের স্থানীয় তাষাও লিপি নিজেদের স্বকীয়তা রক্ষা করিবার জল বরপরিকর। যতই শিক্ষাক্রের অবঞ্চশিক্ষীর বিষয় বলিরা তিন্দী সীক্রত হইতেছে, ততই বিক্রোভ বাছিতেছে এবং নামাভাবে তাহা রাজনীতির সঙ্গে জভাইরা যাইতেছে। "বিন্দী সাত্রাজ্যবাদ" ইহার কারণ। আনাদের মনে হয় যে, প্রতি রাজ্যে আগামী ভোট-র্ছে এই বিষয়ট কংপ্রেস শাসনের কলম বলিরা প্রচারিত হইবে।

সেশভ বাবু রাজেজপ্রসাদের সাম্প্রতিক বিবৃতি হইছে সম্ভা সমাবাদের একটি উপারের ব্যাব্যা উদ্ধৃত করিভেছি। বাংলা "হরিজন" পত্রিকার তার অক্বান প্রকাশিত হুইয়াছে:

শ্প্রত্যেক অঞ্চলর ভায়ার বিকাশ লাব্য করিবা ভাহাকে প্রাচীব ও অর্থাচীর সকল প্রকার ভাবের ভাতার করিবা তুলিতে হইবে, সকল প্রকার শিকার বাহন করিতে হইবে ধ হানীর গ্ৰণ্বেণ্টের বভ্রুর সাব্য এই কার্বে সাহাব্য করিছে হইবে। বর্ত রানে ভাষার বে রূপ ও শবসন্দর আহে ভাষাই উপর গঠন করিছে হইবে এবং অন্ত সম্ভাতীর ভাষা হইছে সহজ ও বাভাবিকভাবে সন্দর প্রহণ করিরা সামগ্রহ সাবন করিছে হইবে। ভাষার আদি উৎসে পাওরা বার না—অভএব নৃত্য কর্বাভদী বা ব্যাকরণের নৃত্য কোন কিছু প্রহণ করিব না, প্ররূপ ওচিভা-বিলাস ব্যব হইবে। ভাহাতে ভাষা সম্বদ্ধ না হইরা ভাহার বৈতই রৃদ্ধি পাইবে।

ভাষা হাছা, হট নাও বলি হয় ভবাপি এই সকল অনাবর্জক ব্যাপারে কয় করিবার মত শক্তি আমাদের নাই। বেশের বারিত্র্য ও অক্তভা বৃর করিবার কর আমাদের নর্ব-প্রকারে নিক শক্তি রক্ষা করিবা ভাষার পূর্কু প্ররোগ করিভে হইবে। ভাষার ব্যাপারে ভচিতা রক্ষার চেটার কোন অব্নাই, কারব ভাষা ও ভাবের বাহন, আর কোন শব্দ-প্রতীক বলি কোন ভাষকে প্রকুতাবে প্রকাশ করে, তবে সেই শব্দ বৈদেশিক কোন ভাষা হইভে আসিরাহে বলিরা ভাষাকে ভ্যাগ করিবার কোন হেতু পাওরা বার না। ভা হাছা কোন অকলের ভাষার বিকাশ সেই বিকেই হওরা চাই বে-দিকে সেই ভাষা ক্ষমাবারবের নিকট অবিক্তর প্রান্থ ও বোরগম্য হইবে। ভাষার বিষয়বন্ধ, লেবনভঙ্গী ও শব্দসম্পর সাবারবিলের কীবন ও ক্রমের বভ সরিকট হয় ভভই ভাল। আনি ববে করি, অভাভ প্রভিঠানের মত ভাষাও বদি মান্থবের বুক্রের ভাবে পৌত্রে ভবেই সরাক উপকার হয়।

আমাদের দেশ বছ ভাষাভাষী। দেশের বিভিন্ন অঞ্চ বাহাতে পরস্থারের সহিত এবং সমগ্র জাতির সহিত বোগাবোগ রক্ষা করিতে পারে ভাহার জত আমাদের একট সাধারণ ভাষা চাই-ই। সমাক বিবেচনার পর বিবাদ-পরিষদ্ ভারতীর সংবিবাদে দেবনাগরী অকরে লিবিত হিন্দীকে ভারতের এই নাবারণ ভাষা বলিয়া হির করিয়া দিয়াহেন। ভারত ইউ-বির্বের সরকারী ব্যাপারে সংব্যার অভগুলি হইবে বর্জনানে সর্বভারতে চলিত অহ।

এই সিহাতের ফলে কোন অঞ্চল বা সন্তানারের কোন কভি হইবে বলিয়া আনি ননে করি না। প্রভ্যেক ভাষাগত অঞ্চলের শিক্ষাবাত্মার রাইভাষা শিক্ষার বন্দোবন্ত থাকা উচিত—ইহার চেরে বেশি কিছু বলা প্ররোজন আহে বলিয়া আনি ননে করি না। য়াইভাষা শিক্ষার উপর জোর বেওরা প্রয়োজন, কারণ ভাষা হইলে বাহাবের ভাষা হিন্দী নহে ভাষাবের কোগাও কোনও কারণে অপ্রবিধার পভিতে হুইবে না।"

ভারতরাষ্ট্রে "জাহাক্স" কন্মী ভারতরাঠের ভাহাতী ব্যবদার দইরা কেন্দ্রীর দরকার ববেই চিভাবিত হইবাহেন। এতবিদ বে-সব পুলিপতি, শেঠ গুৰালটাদ হীৱাটাদ প্ৰভৃতি ব্যবদাৱী এই ব্যবদাৰ করিছেন তাঁহারা হঠাং "লাভ হব না" বলিরা হাভ গুটাইভেবেন। নিছিল্ল ইন-দেভিগেশন কোন্সানী বটা করিরা লাহান্দ নির্দাণের কারখানা প্রভিন্তিত্ করিলেন বিশাখাশনন পোভাশ্রেরে নিকটে (Vizagapattam Port & Naval Base)। এখন ভাহা সরকারের হাভে ভূলিরা দিবার কল ব্যত্ত। এই বিষয়ে অনেক আলোচনা হইবা গিরাছে, এবং সংবাদাদি পাঠে মনে হব বে, গভাভর নাই বলিরা সরকার ভাচা করিছে বাবা হইবেন।

কিছ এই বার্থের লোভ হাঙা আরও লক লক লোভ এই আহাজী ব্যবসার উপর জীবিকা উপার্জনের জন্ত নির্ভন্ন করে। ভালানের সংখ্যা অভভঃ ১০,০০০ হাজার এবং শব্দরা ৮০ জন পাকিছানী—পূর্বেবদ, সিদ্দেশ ও পশ্চিম পঞ্চাবের মুসলমান। একটা পররাষ্ট্রের নাগরিকের হাতে জাহাজী ব্যবসারের জীবনমরণের কাঠি রাখিরা দিবার বিপদ কাহাকেও বুঝাইতে হইবে না। ভবুও বাধ্য হইরা এই অব্যবহা আমাদিগকে সহু করিতে হইতেছে। কারণ পাকিছানীরা বে অভিক্রতা অর্জন করিরাহে ভাহা করিতে সমর লাগিবে; এই অভিক্রতা ও কৌশ্ল শিখাইতে সারেলগণ বিলম্ব করিবে।

আনরা ভানি বে, বছ হিন্দু ব্রক চেঙা করিবা নিজের
নানা সংকার অগ্রাহ্ করিরা ভাহাজী ( বালাসী ) হইবার চেঙা
করিরাছিলেন। কিছ "সারেদের অবানির" অপকৌশলে
বার্থমনোরণ হইরা ভাহাদের কিরিছে হর। সে আজ্
বছ বংসর পূর্বের ভ্যা—বিপ্লবী রুগের ক্যা। আজ্
ভারভরাট্রের অনেক নাগরিক এই রুভি অবলম্বন করিরা
পরিবার প্রভিপালনের জন্ম ব্যপ্র। কিছ ইহারা নব্যবিদ্ধ
ভক্র সমাজের সভান। জাহাজে প্রম ও ক্ট করিবার
অভি ইহাদের নাই। "সারেদ সুবানির" অভ্যাচার সন্থ
করিবার বৈর্ব্য ও প্রবৃদ্ধি নাই। সেইজন্ম ক্রমেণ প্রেক্তিক
পাকিছানী বালাসীদের সদ্বে প্রভিবোগিতা করিতে পারে না।

ভারতরাষ্ট্রের নাগরিক—পশ্চিমবদের নাগরিক ক্রমক-শ্রেমী এই বৃত্তি অবলয়ন করিছে অনিচ্চুক। ভাহাদের গাওৱা-পরার সংকার আর একটা বাবা। অবচ এই অবছার পরিবর্তন করিছে হইবে। কেবল রাষ্ট্রের রক্ষাক্ষে মর, বিরাট উপার্জনের উপার এই বৃত্তির মব্যে আছে। ভাছার একটা বারণা পাওরা বার গভ ২৩শে কার্তিকের এক নাংবাদিক সম্মেলনের বিবর্তন। ইত্তা হইছে নির্লিখিত ভব্য সংগ্রহ করা হইরাছে:

"বর্তবাদে এক কম নাবিকের মূল বেতন নাত্র ৩৬, টাকা। এই আক্ষার বাকারে এই টাকার পরিবার-পরিক্ষনের তরপপোরণ করা অসতব। কাকেই বেতন স্থয়ি করিয়া অচাচ ভাতানত্ব সর্কানির ১২৫, টাকা বার্য্য করা উচিত। কৰ্মচাৰী নিৰোপের পূৰ্বে ডাজারী পৰীক্ষার কোন বাবাবরা, স্বৰ্চু নীতি এই ব্যাপারে অহুসরণ করা হর না।
প্রত্যেক নাবিক্ষে ছুই বার করিবা বোর্ডের সন্থান হইতে
হয়। একট সরকার কর্তৃক নবনির্জ্ঞ বোর্ড, অপরট কাহাক্ষের কর্তৃপক্ষের তৈরি বোর্ড। আসলে দেখা গিরাহে,
সরকারী বোর্ডের মভারত রালিকের বোর্ড আমল দের না।
প্রথমাক্ষ বোর্ড কাহাকেও কাক্ষের উপর্ক্ত বোষণা করিলে
শেষাক্ষ বোর্ড ভালা বানিবা লয় না।

ৰোট ৯০ হাজার নাবিকের নাম এই পর্যন্ত রেজেট্র করা হইরাছে। তাহার বব্যে শতকরা ৮০ জন পাকিছানী এবং বাদ বাকী ভারতীর। ইহাদের মধ্যে আবার এক-তৃতীরাংশ জাহাজের কাজে নির্ক্ত এবং আরও এক-তৃতীরাংশ কাজের জভ বনিরা বাকে। এই সমরে ভাহাদের কোন ভাভা বেওরা হর না। বাকী ৩০ হাজার ছুটতে বাকে। বর্তমানে নাবিকদের দৈনিক প্রার ১২ বন্ধী কাজ করিতে হর।"

উপরোক্ত বিবরণ পাঠ করিলে দেখা বার যে, প্রতি মাসে ৭০:৭২ হাজার পাকিস্থানী নাগরিক ক্ষপক্তে ৫০ লক্ষ্ণ টাকা উপার্জন করে। সেই অর্থ ভারভরাষ্ট্রের কোন প্ররোজনে লাগে না।

ভারতরাষ্ট্রে পাটের চাষ রন্ধি

ইংরেজী সাংবাদিক বাংলাদেশে উংপাদিত এই দ্রব্যের নাম দিরাছেন "সোমার তত্ত"। স্তরাং ভারত-বিভাগের পর ইহার উংপাদন রৃদ্ধির উপর বিশেষ জোর দেওরা হউতেছে। কারণ পূর্বেবদের উপর একাছভাবে নির্ভর করা উচিত নর। মাছুবের সকল কাজের মত এই প্রচেপ্তার ভাল-মন্দ হই দিক আছে। তাহাই "আমন্দবাজার পত্রিকা"র বাণিজা-সন্পাদক গত ১৩ই কার্ত্তিকের সংখ্যার বলিয়াছেম। শেব মন্থ্যটির প্রতি আমরা পাঠকবর্গের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে চাই। আজু পাটচাবের ও বাছলাত উংপাদনের মধ্যে সম্বন্ধ বাহা কাছাইরাছে ভাহা ছই সতীনের মান।—

"প্ৰথম পূৰ্ব্বাভাস ভ্ৰমিয় পৰিমাণ

चासव गावनाम >>±0-€> ... >२,२१,8७१ अकृत

>>6>-65 ... >٢,50,5٢> \_

বৃদ্ধির হার- ৪৮'৩'/.

শভকরা ৫০ ভাগ পাটচাবের ক্ষি বৃদ্ধি চাষী, পাটকলনালিক ও ব্যবদারীর পক্ষে বিশেষ আনন্দের কথা। পাটের
দার এখন ধ্বই চড়া এবং বানচাবে বেমন সরকারী বাব্যতাব্লক কলবের পরিষাণের সংবাদ দেওরা বা সরকারী দাবি
বিটাইবার হালাবা আছে, পাটচাবে সে সভাবনা নাই, বরং
সরকারী উৎসাহ আছে, স্ভরাং চাষীর পক্ষে পাট চাষ বৃদ্ধিতে
আনক্ষ আছে।

পাইকল-মানিকবের আনক--আর পাটের অভাবে কল বন রাখিতে হইবে না; বভই বাল উংপর হউক এবং বে বরই নির্দ্ধারিত করা হউক, ক্ষেতার অভাব নাই, প্রভরাং লাভের অহ কীত চইবার প্রবাগ উপস্থিত।

গৰৰে উও লাভবান হইবে। পাটজাভ রপ্তানীর উপর ৰে হাবে ভক বসিবাহে, ভালাভে এই থাতে গৰৰে ভেঁৱ প্ৰচুব আৰ হইভেহে, স্ভৱাং পাটচাৰ বৃদ্ধিত গৰ্কে তেঁৱ পঞ্চে আন্দিত চইবাৰ কথা।

পাট ও পাটজাত দ্ৰব্য ব্যবসাধী প্ৰকাপ ও তাহা অপেকা অধিক অপ্ৰকাপ লাভের আপার উংক্র হুইরা উঠিবেল, কার্থ বর্ডনান অবহার পাট সংক্রাভ ব্যবসা একেবারে ভাঁহাদের নিক্ট সাক্ষাং কর্মকের সমস্তল।

ভাবিতেহে ভাহারা বাহারা পেট পুরিষা থাইতে পার মা, পরদার অভাবে সামনে বিজ্ঞার্থ চাউলের ভূপ বেবিরা দীর্থ-নিখাস ফেলিয়া অনাহারী স্ত্রী-পুত্র-কভা প্রভৃতি লইরা কুটীরে দিন বাপন করে। বান কলিলে হরত এক সমর বাজারে চাউলের দর কম হইড, এখন বানের ক্ষরিতে পাট কলিলে বাহারাই লাভবান্ হউক, ভাহার অর্থ-সামর্থ্যের বব্যে চাউল ক্ষর ক্রিবার সন্তাবনা ক্রমেই দুরে সরিষা বাইতেহে।"

ৰাজ্পত এবং অৰ্করী শতের মধ্যে কি অনুপাত রাবিলে একটা সামঞ্জ থাকে সেটা নির্দ্ধারণ করার ক্ষমতা বা চেপ্তা তো বাংলা-সরকারের নাই। কেন্সীর সরকারের তাঁবেবারী করিরা আর কভানিন চলিবে ?

## পশ্চিমবঙ্গ কি ঘাট্তি অঞ্চল ?

এই বিভর্ক বহুদিনের; অভত ১৯৪২-৪৩ সালের ছুডিকের
সময় হুইতে তাহা নানাতাবে আলোচিত হুইতেছে। পশ্চিমবলের বর্তমান গাড়মরী এগ্রুক্লচন্দ্র সেন এই ঘাট্টিত-তছ্ব
প্রচারে বিশেষ উৎসাহী। তার দেখাদেশি তার বিভাগ ভব্যগাস্ত্রে পাতিত্য দেখাইতে চেঙা করেন। অনেক অবসম্বর্থান্ত
সরকারী কর্মচারীও ঐ পথের পথিক হুইলা পঢ়িছাছেন
দেখিতেছি। তাঁহাদের মধ্যে এককন এইক্ত্মণ চটোপাব্যায়।
গাদ্যের ভণাগুণ বিচারে তিনি কেন্দ্রীর স্বত্তে ক্রের রাসাম্বনিক
ছিলেন। উপরোক্ত প্রের্ম করিয়া স্প্রতিত তিনি একবানি পৃতিকা
লিবিয়াছেন।

এই বিভৰ্ক 'প্ৰবাসী'র পৃঠার অনেক হইরাছে। আনরা এই বাট্ভি-ভড় সহতে সন্দিহান। কেন্দ্রীর ব্যবস্থাপক সভার সভ্য ও বর্তবানে বত্রী আন্ত. কে. সিত বহাশরের বভেও ভারত-রাই বাভবিষয়ে বাট্ভি নর। তংসহতে বহু আলোচনা করি-রাছি। 'আনন্দরাভার পত্রিকা'র বাবিজ্য-সন্দায়ক নিবিভ বিশেষ প্রবন্ধ নিত বহাশরের বভের স্বর্ধক। ইন্বাব্র পৃতিকা সহতে এক সংব্যাভত্বিধের বভর্য আনরা নিরে প্রকাশ

করিভেছি। ইন্স্বাব্র সংখ্যার বিশ্লেষণ সহজে ভিনি লিবিভে-জেন:

"১-২৩ পৃঠা পর্যন্ত কোন মন্তব্য নাই, কারণ এই করেকটি
পৃঠাতে লেখক পশ্চিমবলে খাল্যাবছা বুবাইবার করু ভূমিকার
অবভারণা করিরাছেন নাত্র। ২৫ পৃঠার ১৩নং তালিকাতে
লেখক পশ্চিমবলের ১৫ আউল হিসাবে তভুল খাদ্যের
পরিছিতি দেখাইরাছেন। খাল্যপিরিছিতি আলোচনা করিতে
ছইলে মোটার্ট তিনট জিনিখের সঞ্জি হিসাব প্রয়েজন—(১)
লোট কসলের পরিমাণ, (২) লোকসংখ্যা, (৩) খাদ্যের হার।
এই তিভিতে উপরোক্ত তালিকা আলোচনা করা প্রয়োজন।
লেখক প্রথমেই ১৯৪৬ সাল হইতে ১৯৫০ সালের গড়পভভা
উংপালন বরিরাছেন, ইহা সমীচীন হইরাছে বলিরা মনে হয়
না। উক্ত পৃতিকার ১নং তালিকাতে পশ্চিমবলের চাউল
উংপালন দেওবা চইবাছে, তালাতে দেখা যার:

পশ্চিৰ বাংলার চাউল উৎপাদন

(হাজার টন)		
7284	2694	•
>>89	068V	
7981	<b>©86</b> 2	
7989	0080	
3540	9605	

যদি কোন বংসতে অহাভাবিক ভাবে উৎপাদনের পরিষাণ কৰ পাকে ভাতা চইলে গড় ক্ষিবার সম্ভ ভাতা বরা বে'টেই ৰ্ভিযুক্ত নৰ কারণ এক বংস্তের সংখ্যা সম্ভ হিসাব সম্বৰে ভুল ৰাৱণা জনাইবে: বৰ্ডমান ভালিকাভে ১৯৪৬ সালে क्यो बाद (व. छैरभावन अलाल वरनद अर्भका अर्मक कर. रेठांद कबरे ३७ वर जानिकारण (बाहे हाफेरनव फेरनामम পরিষাণ এক কম জাসিষ্যাত। চাইলের বাটকি সম্বাদ चालाहमा कृतिएक हरेल श्रांक वरत्रदात चाममानी-तथानीत হিসাব লইয়াই করা উচিভ, গড় লইয়া তিসাব তরিলে ভাতার সম্বৰে ৰাৱণা পৰিকার ভয় না। ভাভার উপর দেবা যায়, ১৯৪৬-১৯৫০ সাল পৰ্বান্ত মোট চাউল উৎপত্ৰ ভটবাতে ১৬৮৮৩ হাজার টম, অভএব ভাহার গড় ৩০৭৬ ৬ হাজার টম্ কিছ अबर चानिकारच चारा ७००० ठाकात हैन (मधाम ठवेबारक। ১৯৫১ সালের হিসাব অভ্যায়ী লোকসংখ্যা বরা হইরাছে ६,8४,>8,०००। (माकनश्यात बत्या निक्त, वानक, ब्रा, त्व विष्**षि मामा (अने चारह, बा**ञारमंत्र श्रीकारकत बारमात हात বিভিন্ন। লেখক যে এখানে ১৫ আউল গড় হিসাবে ৰৱিছা-(स्य, ७९नश्रक कांम नाडे है(इस मारे। "population studies" হুইভে বিভিন্ন শ্রেণীতে ভাগ করিয়া, প্ৰভাক শ্ৰেণীৰ বৰ কত বাদ্য প্ৰয়োজন ভাতা তিসাৰ কৰিছে क्रेटन, मटार क्षरणाय बारगात बाहे कित शतियान मिन्न कता बार्टिर मचन मन ।"

সংখ্যা বিশ্লেষণের ভূল দেখাইরাও সংখ্যাভত্বিদ্ মহাশব বনে করেন বে, পশ্চিমবদ খাদ্যখন্ত সমতে ঘাট্তি অঞ্চা। বর্তমানে এই ভক্রতে লিও হইতে চাই না। "মুরশিলাবাদ সমাচার" নামক "অ-দলীয়" পত্রিকার পত ১লা আবিষের সম্পাদকীয় মহুব্য আয়াদের যুক্তি বোটায়ট সম্বৰ্ণ করে:

"পশ্চিমবল সরকারের কৃষি, পশুপালন ও বংশ্বচার বিভাগের পক্ষে প্রচার বিভাগ চইতে প্রকাশিত ভিযাসিক शक्तिका 'वलकवा'। डेबाव देवबाव-देवार्व जरबागि अब वंश হাতে আসিয়া পছে। পাতা বুলিতেই ৫ম পুঠার দেবি বছ वक ककरत (मर्था--- शक्तिम वाश्मात चावारम (मर्थात जव লোকের পেট ভবে মা ও ভাচার মীচে বিভিন্ন কগলের আবাদের পরিমাণ একর ভিসাবে দেওরা আছে। আমন बारमद खावारमद शिव्यान ११,३६,३३० अकद : खाउँन बान ১৪.৬৯.৬৩२ अक्द : (वादा बान ४८.१৮৮ अक्द ४ গম ১,০০ ১০৪ একর। প্রভি একরে আমন চাউল ১২ মণ, चाडिन ३० मन छ त्वाद्या १ मन अवर शम अ मन बहिएन स्था है উৎপর চাউল ও গমের পরিষাণ দাভার ১০,৯৫,২৯,২৯২ **ব**ব। বৰ্ডমান দেনসাপ অভ্যায়ী পশ্চিম বাংলার লোকসংখ্যা প্রায় ২ কোট ৪৮ লক। গড়ে লোকের দৈনিক ১৬ আউল ভিনাবে বংগরে প্রভাকন তম প্রত্যেকের সাজে চারমণ श्रीपार्यात क्रम राजात ५ (क:के १७ मक वन माहित क श्रीवत প্রয়োজন। দেশা যাত, এ হিসাবে সমগ্র প্রদেশে উচ্ছ হয় ১ কোট ১১ লক্ষণ। উংপদ্ন চাউল ও গ্ৰের অপচয় শক্তর। ১০ ভাগ বরিলেও ঘাটভি চর না। প্রদন্ত লোক-সংখ্যার হিসাবের মধ্যে ২ বংসর বা অনবিক বয়স্ত শিশু রহিয়াতে, ভাহাদের সংখ্যাও প্রায় ৫০ হাজার হইবে। বোট लाकम्या बहेर् देशांस्त्र याम मिल छैद छव भवित्राव ভারও আড়াই লক্ষ্মণ বেশী হয়। ভুটা, বব ও ছোলার चारारम्ब পরিমাণ ৫,२৫,७৪৪ একর ; মতুর ১৯৮,२৮৫ একর। মুশিদাবাদের পূর্বাঞ্চল নদীয়া প্রভৃতি অঞ্চল ছোলা, বব ও मन्द्रदेव 'मिनना' कृष्टि चाल्यात लाहमा चाटम । अहे १ सम् বিবা অ'ম চইতে অন্ততঃ ২০ লক্ষণ ৰাভ্ৰান্তৱ সরববাত ৰৱা বাইতে পাৱে। ভুভৱাং দেবা ঘাইভেছে পশ্চিম বাংলার चारार प्रत्मेत जर मार्कित (भी मा कतात कामक जमक কারণ থাকিতে পারে না। প্রবেতির অব্যবদা সরকারী क्रविरादीत्वत अरमत्कद अभावूका बदर बहाकम ७ (काक्रवाद প্রভৃতির অভি লোভ ও চোরাকারবারই এই দেশব্যাপী অন্তর্য ও चलादवर चल माशी...।"

বে সংখ্যাভত্বিদ্ ৰহাশবের বছব্য আবরা উদ্ধৃত করিবাহি ভিনিও বলেন, "খাভ ঘাট্ভির সদে পশ্চিমবদ সরকারের অব্যবস্থা সমভাবে দামী। পশ্চিমবদ সরকারের খাভ সংগ্রহ এবং পরিবেশন নীভি, পরিবর্শকের অনিরমান্ত্রভিতা ও অসাধৃতা বাত-পরিছিতির কটনতা বছনাংশে বৃদ্ধি করিরাছে। লেখক বর্তমান পুতিকাতে তাহা সম্পূর্ণ আলোচনার বাহিরে রাবিরাছেন। আমার ধারণা এই সমন্ত বিষয় আলোচনা না করিলে পশ্চিমবলের খাল-পরিছিতি সন্যক্ উপলব্ধি করা সম্মন নয়।"

আমরা খাদ্য-বিভাগের উভরের প্রভ্যাশার আছি। কারণ ইন্দুবারু তাঁহাদের পক্ষ সমর্থন করিভেছেন। এই প্রগকে অম্যত্র প্রকাশিভ "পশ্চিমবলের খাদ্যসফট" প্রবন্ধটির প্রভিও আহ্বা পাঠকবর্গের দৃষ্টি আকর্ষণ করিভেছি।

### পশ্চিমবঙ্গের অরণ্য সম্পদ

'বাঁকুড়া-দৰ্পন' পত্ৰিকাৰ এই সহতে যে একট ভণ্যপূৰ্ণ সম্পাদকীৰ মন্তব্য প্ৰকাশিত হটয়াছিল ভাহা সকলেৱ ভানিহা বাৰা প্ৰয়েভন :

"বিশেষজ্ঞেরা মনে করেম মে, দেশের অন্ততঃ এক-চতুর্বাংশ ছলভাগ অরণ্যায়ত থাকা আবর্জক। কিন্তু ছঃবের বিষত, পশ্চিমবকের ফলভাগের ১৪ শতাংশ মাত্র অরণ্যায়ত এবং এই বনতুমি দাক্ষিলিং, জলপাই ওছি, পশ্চিম দিনাজপুর ও ২৪ পরস্বা ক্লোছ সীমাবছ। পশ্চিমবকের সমগ্র বনভূমিকে প্রধানতঃ ছই ভালে ভাগ করা যাত্র, হথা—(১) সরকার-সংহ'কত বনতুমি এবং (২) ব্যক্তিগত বনতুমি। সমগ্র বনভূমির মোট আরতন ২৪,৬৯,৬৮০ একর (৩.৮৫৯ বর্গমাইল) এবং ইহার মধ্যে সরকার-সংরক্ষিত বনতুমির আরতন ১৬,৯৭,০৬৮ একর (সমগ্র স্থলভাগের ৯'৭ শতাংশ মাত্র) ও ব্যক্তিগত বনতুমির আরতন ৭,৭২,৬১২ একর (স্থলভাগের ৪'০ শতাংশ মাত্র)। নিমে ইতাদের জেলাগত বর্ণন দেওয়া ত্ইল ঃ

শ্ৰেণী বিভাগ (Types of forest)

পশ্চিমবাদের বনভূমিকে প্রধানতঃ তিন শ্রেণীতে ভাগ করা মার মধা—(১) পত্র-পভনশীল রুক্তের অরণ্য (Deciduous forest), (২) পার্বেভা অরণ্য (Hill forest) এবং (৩) উপকূলীর অরণ্য (Tidal or Littoral forest)।

(১) পদ্ধ-পভ্যনীল বা পর্ণমোচী রক্ষের অরণ্য (Deciduous forest)—খাল, সেগুন, লোহাকাঠ প্রভৃতি ব্ল্যবাম রক্ষ এই বনের বৈশিষ্ট্য। ব্ল্যবাম আসবাবপত্র ও বামবাহমাদি প্রস্তুত করিতে এই সকল পর্ণমোচী রক্ষের কাঠ ব্যবহৃত হয় বলিরা দেশের অবনৈতিক ক্ষেত্র এই সকল বুক্ষের প্রত্যেত্র করিছা সর্ব্যাপেকা অবিক। দাক্ষিলিং, কলপাইগুড়ি এবং বেছিনীপুর, বাঁকুড়া ও বীরভ্যের পশ্চিমাংশে পর্ণমোচী বুক্ষের অরণ্য বর্ত্তরাম।

পশ্চিমবদের মানাবিধ শিল—বিশেষতঃ কাগৰ ও দিয়াশলাই শিল্প—বৃক্ষ বা বৃক্ষাত ক্রব্যের উপর নির্ভরশীল বলিয়া এই প্রদেশে ব্যত্মির অক্তম্ব অভ্যাধিক। প্রভরাগ এই ব্যক্ষির সম্প্রারণ ও সংগ্রহণ সরকার এবং ক্ষসাধারণের

কর্তব্য বলিষা গণ্য করা উচিত। স্থেবর বিষণ, সরকারের দৃষ্টি এ দিকে আফুট হইরাছে। বলবিভাগের পর সরকারী বন্ধ-বিভাগে ৫,১২৪ একর ক্ষিতে পরিকরনাত্মারী রুক্ষোপোষন করিয়াছেন এবং বর্তমান সময় পর্যন্ত এই শ্রেণীর বন্ধ্যনির পরক্ষিণ ৮,০০০ একরে পরিণত হইরাছে। এতহাতীত সম্প্রতি সমগ্র ভারতব্যাপী বে রুক্রোপণ স্থাত প্রতিপালিত হইরাছে, পশ্চিমবল সরকারও ভাহাতে উল্লেখযোগ্য অংশ গ্রহণ করিষা-ছেন। অবিক্ত রুক্ষোপোদনে উৎসাহদানের ক্ষত বাঁকুছা ক্ষোয় তিন্ট নার্মারি স্থাপন করা হইরাছে। এই সকল নার্মারি হইতে বিভিন্ন কাজীর রুক্ষের এক লক্ষ্ণ চারা গাছ স্থানীর অবিবাসিগণের মধ্যে বিভরণ করা হইরাছে।"

### বনমালী খাল

আৰু প্ৰায় ২৫ বংসর হই ত হগলী জেলার সিঙ্গুর প্রার জনগান্থা রক্ষার জন্ত সঞ্জির পরীক্ষাগার হইরা আছে। প্রৱেজনাথ মারিক মহাশংরর অর্থ ও চেপ্তা এই প্রসিধির মূলে বর্তমান। সেই স্বান্থা-কেন্দ্রের কর্মিগণও ঐ অঞ্চলের প্রজা অর্জন করিরাছেন বলিয়া মনে হয়। বনমালী খোব ভাহার ভার-প্রাপ্ত ভাল্ডার ছিলেন। তাঁহার স্ভিরক্ষার জন্ত হানীর লোক ন্তন করিয়া একট খালের নামকরণ করিয়াছেন। সেই উৎসবকে উপলক্ষা করিয়া "গ্রামের ডাক" প্রিকা নিয়লিখিক প্রশংসা করিয়াছেন:

"ডা: ৰোষ সিজুর খাত্মকেন্দ্রের কর্মবারাকে সরকারী কাইল দপ্ততে বছৰুলা চইতে উদাৱ করিয়া আমলেবার খাতে প্রবাহিত করার বপ্ল লইয়া শহরের আরামপ্রদ চাতুরী ছাড়িয়া ম্যালেরিয়া প্রশীভিত সিজুর অঞ্লে তাঁহার কর্মকেন বাছিয়া লইয়াছিলেন। তাঁহার সে স্বপ্ন ভিনি বছলাংশে সার্বক ক্রিয়া পিয়াছেন। সিজুর স্বাস্থাকেলের অধীন শভাবিক গ্রামের সাধারণ স্বাস্থ্যের উন্নতির কর পরিকল্পনা রচনা করিয়া ভালুয়ায়ী যে কর্মপ্রবাচের স্ট্র ভিনি করিয়াছিলেন ভালা সাৰাৱৰভাবে যে কোনো সৱকাৱী কৰ্মচাৱীৰ চৰিছে একাছ ছল'ভ। গ্রামকে ভালবাসিরা, গ্রামের মাতৃষকে ভাপন করিয়া এবং গ্রামের মাতুষের আপন হইরা ভিনি কাজ क्तिएम। अवकादी शीर्षश्यका, कर मामाकार ७ मामाकर অভিমান সম্পূৰ্ণভাবে বাছিয়া তিনি গ্ৰাৰের মাটর সভাম হইয়া যাইতে পারিয়াছিলেন। প্রভাক প্রায়ে কর্মী ও ইংলাছী ব্যক্তিদের লইবা, আম্য বাছ্যকমিট গঠন করিবা, নিজে প্রভাক সম্পর্ক ও বোগাবোপ রাখিরা সরকারী পরিকল্পনাগুলিকে বান্তৰ ত্ৰপ দিতে সচেষ্ট ছিলেম।

ভা: বোষের হিল সন্তিজারের গ্রামর্থী বনোভাব।
ক্ষীদের সহিত নিক্তাতে কাক করিবা, বিপ্রামের কাকে
ববরের ভাগক পাভিরা মুড়ি-হোলার ক্লবোগ করিবা আপ্র-ভোলার যত প্রারের ভাক করিবাকেন। প্রারের প্রের ধূলার পরিবাবের পোশাক বারাপ হইবার সংকোচ তাঁহার হিল না, শাসকের নিবাা আভিজাত্য ত্র হইবার তর তাঁহার হিল না, প্রাবের রোগরিষ্ট অবহেলিত রাত্ত্বজন হইতে কুনির পার্বক্য বজার রাবিবার কঠকরিত প্রহাল তাঁহার দেবা বার নাই। নাবারণ প্যাক-কোটের আভালেও যে একজন প্রাবিক রাত্ত্বের নন বাস করিতে পারে, ভাহা ব্রিতে কাহারও প্রত্টুকু কঠ হইত না। তিনি যে একজন প্রাবীন মুগের সরকারী কর্মচারী, ভাহা কেইই বনে করিবার প্রযোগ পাইত না।

'প্রাষের কথা'র নিয়মিত পাঠকপাট্টকারল সিতুর অঞ্চের उँ डीपानी, इनकाभी माद्य श्राव डाकांत्र विश পরিমাণ डाका-बचा-कृत्वा चित्र कथा चत्रव कतित्व शातित्व। अहे कृत्वा ৰাঠের কল নিকাশের ভুৰোগ না পাইরা মাঠের পূর্ব্ব প্রান্ত দিয়া প্ৰবাচিত সৱস্থাী নদীতে না প্ৰিয়া নাঠেই কমা ভইয়া ৰাজ্জি এবং বচ ক্ষকের সোনালী স্বপ্তকে আঘাতের পর আৰাতে চুৱৰার করিয়া দিত। বিশ বংসরাধিক কাল পুর্বেষ अक्वात अरे मार्टित मश्कारतत राही हत : किन काहा चार्ला কলপ্ৰত্ব ভব নাই। ডা: বোষ উক্ত নাঠ চুইটৰ কলনিকাপ করিবা চতুপার্বের প্রামণ্ডলিকে ম্যালেরিয়ার হাভ হইভে উদার করিবার স্বপ্ন দেবিতেন এবং স্থানীর কর্মীদের এই কার্ব্যে উৎসাহিত করিতেন। তিনি পরলোকে; নতুবা দেবিরা ভীত্র আমন্দ বোৰ কৰিভেন ৰে. ছামীয় কংগ্ৰেসকৰ্মীৰের নেততে, ভাতীয় সরভাবের সাচাব্যে ও জনসাবারণের সহবোগিতার মাঠ চুইটার মভা বাল সংস্থার করা হুইয়াছে, ডবো ভবিতে ক্সল ক্লিয়াছে এবং সদে সদে ব্যালেরিয়া রাক্সী দেশ হাছিরা পলাইয়াছে। স্বামীর ক্র্যাবৃন্দ ভাঁচার স্বর্গত মহান আন্তার প্রতি खंबा कामारेवात ७ कांठात कर्यवत भन्नीथान कीवनवादात्क ध्यम कतिया वार्विवाड क्य ठेडीवानी-इनकामी बार्छव मन সংস্থ বালের নামকরণ জাঁচার নামাসসারে করিবার সিহাত্ত প্রচণ করিছা সভ্যিকারের কর্মীরনের পরিচর দিয়াতেন।"

### পরাজিত বাংলা

এই নানের একবানি ৪১ পৃঠার পৃতিকা আমরা পাইরাছি।
লেশক এক জন সামরিক কর্মচারী ছিলেন। তাঁতার নাম
চুনীলাল গলোপাব্যার। সাত বংসর কাজ করিয়া (পেশোরার
চুইতে ইন্কল পর্যায়) তিনি কাজে ইতকা দিরাছেন এবং
পরাজিতের মনোভাব লইরা বইবানি লিবিরাছেন। আমরা
ভাবিরা পাই না ইচা কিয়প শিকা বাহা বোরাকে এমন
ভাবে মানলিক জরাএত করে।

এই পৃতিকা আজকালকার বিধা-বিজ্ঞাল বাঙালী বনের পরিচর বের। সেইজড় লেখজের মনোভাবের সঙ্গে ১৩-১৫ পৃঠার বর্ণিড "হাজকর্মী"র বনোভাবের সাল্ড নাই। এই কুমাঁ "বুব বেশী বাজার আশাবাদী"। ভিনি বলেন—"নৈৱাড হড়াবোর চেবে বৃক্তিহীন আশাবাদকেও আমি ভাল বৰে ভবি...৷"

ভার পর আবরা কেবা পাই—নবঃশুক্ত অভর ব্রহ্মচারীর।
তিনি পুলনার অবিবাসী। 'সাবক'—পরাজিভ বাংলার সাবক।
পিরোজপুরের আল্ভাব বিঞার সদে ভানবাজারে হঠাং
কেবা। ভিনি কোভের সদে বলিলেন—"আবার হদেশ আবার
বিদেশ হবে পেল—ইশা বাম আলিবনির ভাভ আপন ঐভিছ্
বিদ্বভ হবে ভরাচীর লাসভ নেনে নিল।…" এই হইল
চুনীবাব্র "সর্ব্বশ্রেষ্ঠ আবিহার"। সুভরাং তিনি সহিং
কিরিরা পাইবেন, এই ভরসা আবরা ভরিতে পারি। ভবন
"পরাজিভ বাংলা" লেবার জভ লজিভ হইবেন।

#### জনশিক্ষা

সরকারের ক্যশিকা বিভাগ সরকারী চালে এই শিকা বিভার করিতেহেন। ভার কল বাল একট বিভাগ পুরিবার মিরিভ তিন-চার লক টাকা ব্যর হুইতেহে। অবচ বেসরকারী প্রতিষ্ঠানসমূহ—রামকৃষ্ণ বিশন, নারীশিকা সমিতি, সরোক্ষলিনী সমিতি, পশ্চিববদ ব্যরক্ষিণা সমিতি প্রভৃতি প্রতিষ্ঠান—ভাহার দশ অব ভাক করিতেহে। অবচ সরকার-পক্ষ বংসরে হু' হাজার হুইতে বার হাজার টাকা সাহায্যবাবদ দিভেহেন। ভাহার মোট পরিষাণ সরকারী বিভাগ পুরিবার ব্যরের পরিষাণ কুইতে অনেক কর। সকল বেসরকারী প্রতিষ্ঠানের ভার্যবিবরণ না পাইরাও আম্বা এই কর্থা বলিতেহি।

সরকারী চাল বে কি বন্ধ তাহা আবরা জামি। সেইজ্জ ১৯৪৯ সাল হইতে আমরা বলিতেহি বে, একট বেসরকারী প্রতিষ্ঠান গড়িরা ভাহার উপর এই ভার কেওবা হউক। গাঁচ-ছর লক্ষ্ণ টাকা নির্দিষ্ট করিবা দিলে কেবা বাইত বে, তাঁহারা এই শিক্ষার বিভার করিতে পারেম কিনা বেনন করিবাছিলেন কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালর। এই বিষয়ট বন্ধক শিক্ষা করিছিতে আলোচিত হইরাছিল। অধিকাংশ সভ্য ভরে ভাহা এইণ করেন নাই এ সংবাদ পাইরাছিলান। ভরের কারণ এই বে, এই নৃত্য প্রভ প্রহণ করিতে বেসরকারী লোক কেহু আগাইরা আসিবেন না। অব্দ তাঁহারা আমিতেম বে সরকারের বহু পূর্বে অনেক বেসরকারী প্রতিষ্ঠান তাঁহাদের ক্ষ্ণে অব্দক্তি অহুলারে ক্ষণিকা বিভার করিতেহেন। আক ব্যন বীকার করা হইরাছে বে, অনশিকা ছাড়া গণভ্যের বিকাশ হইতে পারে না তথন এই শিক্ষার ভার ক্ষণণ্যের উপর ছাড়িরা দিলে সক্ত হইত।

### আন্তৰ্জাতিক শ্ৰমসজ্য

গত ১৯১৯ সালে 'নীগ অন দেশনগ'-এর সহযোগী সামত-শাসন্দিন প্রতিভাষরণে আত্তাতিক প্রবদন্দের উত্তব। কোনিবাৰ সন্ধি ও অভাভ শাভিচ্ভিৰ সদে সাৰঞ্জ বাধিৱাই ইহাৰ মূল নিবৰ-ভাতুৰগুলি বচিত।

#### **पर्ध**ना

সাবাদিক স্বিচারের ভিডিতে সভ্যিকারের বিরশান্তি প্রতিঠার সহবোগিতা করাই আন্তর্জাতিক প্রবস্তের সক্ষ্য। আর্থিক ও সাবাদিক অবস্থার উন্নতির কর এই প্রতিঠান নির-লিখিত কার্যাধারা প্রস্তাব চেঠা করে :

- কার্য-সমর শির্ধারণ (সারাদিবের ও সপ্তাহের সর্ব্বোচ্চ কার্য-সমর ছির করাও এর অন্তর্গত);
  - ২। শ্ৰমিক বোগাৰ এবং বেকার সম্ভা প্ৰভিৱোধ ।
  - ७। जीवमधाका मिर्द्धारहत ७० श्रासामभीत देशार्कम .
- ৪। অসুহতা, রোগ ও কার্যকালে আবাতপ্রাপ্ত কর্মী-দের রক্ষা করা :
  - e। माती, निक क बूदकरवत क्या कता .
  - ৬। আহত ও বৃহদের বর ব্যবস্থা এহণ :
- নিক কেশের বাহিরে নিরোজিত প্রবিক্ষের খা<
  রকাঃ</li>
- ৮। একই কাজের ভঙ একরণ পারিশ্রমিক দেবার শীভি এডবের ব্যবস্থা
  - अन्यवद्वाद श्रादीमकाद मीकि श्रीकाद कृदिश मध्या .
  - ১০। কারিগরী ও অভাত বৃত্তি শিকার প্রতিষ্ঠান ছাপন;

১৯৪৪ সালে কিলাডেলকিয়ার অন্ত্রিত আন্তর্জাতিক প্রব-সলের এক সন্মেলনে ঘোষণা করা হর, আতি-বর্ম-জী-পুরুষ নির্মিশেরে প্রভ্যেক মানুষের বাবীন ও সম্মানক্ষক তারে ভাহাদের বৈজ্ঞানিক ও আব্যাদ্মিক উন্নতির কান্দে এবং আর্থিক নিরাপতা ও সমান প্রোগ-প্রিবা পাওয়ার অবিকার আছে। এই থোষণা পরে আন্তর্জাতিক প্রবস্তারে সঠনতপ্রে সংযোজিত হর। এই ঘোষণার আরও বলা হর: প্রম কোন পণ্য মর, বাবীন রভারত প্রকাশ ও সভ্যবহতা উন্নতির সহায়ক। কোন হানের দারিত্র্য প্রভ্যেক সমূহ ছানের বিপদ পৃষ্টি করে এবং অভাবের বিরুদ্ধে কেহাদ ঘোষণা করিয়া অমিত বিজ্ঞানের সলে কান্দ্র করা প্রভ্যেক রাষ্ট্রেই নীতি হওয়া উচিত। এই ঘোষণার সভ্যের নিয়ন-কান্স্য মানিয়া লইয়া পৃথিবীব্যাপী এক ব্যাপক কর্ম-ভালিকা প্রহণ ও ভাহা রূপারিভ করার বাত নিয়ন্নপ কান্দ্র করিয়া বাওয়ার করাও বীকার করা হয়:

- >। পूर्व कर्य नरदान ७ कीवनवाळाड बाम छेडीक कडा ;
- <। ক্রী ভার নৈপুণ্য প্রকাশের পূর্ব প্রবোগ পার এবন জীবিকা সংখান;
- । প্রম শিক্ষা ও প্রম বরল করার স্থাবার রাধার
   ব্যবহা করা;
  - श्रम्बीय गीचि, भगव ও সকলের ইয়ভিব সহাবক

णाणणार्वत जात्रमण्ड मर्च अवर जीवनवाका निर्कारकत मर्कनित्र नक्ती:

- ইংপাদন-ক্ষতা, বৃদ্ধির ক্ত কার্ব্য পরিচালব ব্যাপারে স্ক্রেনিভার স্বীকৃতি :
  - ७। সামাজিক मিরাপভা রক্ষা ব্যবস্থার সম্প্রসারণ ,
- প্রত্যেক বৃত্তির শ্রমিকদের জীবন ও সাছ্য রক্ষায়
  বর্ষেই বলোবত করা :
  - ৮। শিশুক্ল্যাণ ও প্রস্থভিবের রকা ব্যবস্থা:
- ) পৃষ্টিকর বাড, খাছাসম্বত আবাসপৃহ এবং সাংভৃতিক
   ভ আমোদ-প্রমোদের স্ক্রিক্ষ স্থাোগ-স্বিধা দান ;
- ১০। পুৰিগত ও কারিগরী শিক্ষা ব্যাপারে সমান ক্রোর ভাষ।

এ সমন্ত উদেশ্ত সাকল্যমণ্ডিত করিবা তুলিবার কর আত্ত-জাতিক প্রমসন্দ প্রমিলক ও সরকারী প্রতিনিবিধের লইবা ইহার অন্তর্ভুক্ত সকল সভ্যের কর সর্কানিয় বাব ছির করিবা থাকে।

### পাশ্চান্ত্য জগতের প্রধান সমস্থা

यार्किन बक्कताडे ७ लाजिएको वेदेनियम धरे करे श्रवन শক্তির মধ্যে পভিয়া ত্রিটেনের কি দুশা ছইবে, ভংসকুছে ব্রিটশ চিত্তানারকের। পর্যাত্ত ভাবিত হইতেত্তেন। অক্টোবর মাসের "এমপারার বিভিট্ট" পঞ্জিকার ইতিয়া এসোসিয়েশনের এক অবিবেশনে চার্শনিক ভটর ভোরাতের একট বভূতার চুত্তক প্রকাশিত হইরাছে। ভিমি আশহা প্রকাশ করেন বে, "পশ্চিমে মার্কিন মুক্তরাষ্ট্রের ও श्राच वानिवाद प्रवर कांचाकरनद (great mill-stones) মধ্যে পভিষা আমৱা চৰ-বিচৰ্গ হইব--বুৰ ক্ষেত্ৰে ৰভটা মত্ত সংস্কৃতির ক্ষেত্রে ভদশেকা অনেক বেশী পরিমাণে। বার্কিন হক্তবাই আনাদের ভাগাইরা দিরাছে ভাহার হারাচিত, ভাহার বেভার বক্তভা, ভাহার খাভদত ও বিলাস করেয়ের বভার ছারা।" ইতার কলে "ব্রিটশ বুবক-যুবতী ভবিত্তং সমূত্রে নিরাশ ক্রা প্রোচ্ছে গৌছিবে , ভাকার উপর আছে ভভীত विश्वयुष्टत ज्या" अरे मामाजाय द्याव कृतिक विशि वा त्य पन शाहित्वम अहे श्राकित्कत बत्याकार खशाब्दिक कतित्क शाबितम, छाङाबारे वरेतम मन-बिटिंग्स खड़ा। १७ वरमब वदान धेरेम्डेन ठाफिन बरे इक्ट क्खरात वाचा चारक क्रनिया नरेबाएन जांव जांबाएक क्टम १०।१४ वरनव वस्त कांबवाब বুছিনাৰ, বিভগালী লোক ভোট-বুছে বাবিভে সাহস পাল লা। এ পাৰ্থক্য কেন কৰিবাহে ? এই নিস্পৃত্তাবের সভে বারা-বাবের কোন সময় আছে কি ? সামী বিবেকানক প্রভাৱিত कीरनक्या क्ष्यारम कृतिया जाहाक नका प्रतिया सरस ET 41 1

### থাণশোধ উপলক্ষে দরক্ষাক্ষি

বুৰের সমরে ধণ ও ইজারা চুক্তি অহুসারে বার্কিন যুক্তরাব্র লোভিষেট ইউনিয়নকে যে সকল সমর-সরঞ্জামারি
বিরাহিল ভাষার মধ্যে ভিনধানি বরকভালা ভাহাজও হিল।
উহার মধ্যে মুইখানি কেরভ দেওরা হইবে বলিরা লোভিষেট
ইউনিয়ন মার্কিন যুক্তরাব্রকৈ জানাইরাছে। জাগামী নাসে
ভার্মানীর অভর্গভ ব্রেরারহ্যাভেন নামক বন্দরে জাহাজ
মুইখানি কেরভ দেওরা হইবে।

ভাহাত ছইবানির নাম 'নৰ্থ উইও' ও 'ওরেই উইও'। নার্কিন রুজনাট্রের অহুনোবের উভরে রাশিলা করেকবার ভানাইরাছিল বে, ভাহাত ছইখানি ল্যাপল্যাও সমুদ্রে বরকে আটক পভিরাছে। ১৯৪৪ সালে উভর মহাসাগরের ভূষারায়ত প্রবেশ-পব পরিকার করিবার ভভ এই ভিনবানি ভাহাত বেওরা হইরাছিল। তৃতীর ভাহাত্বানি ইভিপুর্কেই ক্ষেত্রত দেওরা হইরাছে।

ধণ ও ইছারা চুক্তি অসুসারে আমেরিকা কর্তৃক রাশিরাকে প্রমন্ত বে সকল দ্রব্য বুদ্ধের পরেও অবশিষ্ট ছিল এবং বাহা শান্তিকালীন কার্ব্যে প্ররোগ করা যাইতে পারে, মার্কিন বুক্তরাব্র ভাহা কেরত চাহে এবং ভাহা লইরা গত করেক বংসর বরিরা উত্তর দেশের প্রতিনিবিদের মধ্যে আলোচনা চলে। বরক্তালা ভাহাক করবানি হাড়াও চুক্তি অসুসারে আমেরিকা রাশিরাকে আরও ৬৭২ বানি ভাহাক ও অভাত প্রকারের জলবান প্রদান করিরাহিল। রার্কিন যুক্তরাব্র কেরতি করেত চাহিরাহে।

ধণ ও ইকারা চুক্তি অত্সারে মার্কিন রুজরাই রালিরাকে বে সকল জব্য প্রদান করে ভাহার যোট বৃল্য হইবে ১০৮০ কোট ভলার (প্রার ৫ টাকার এক ভলার)। রুছের পরে শান্তিকালীন কার্য্যে ব্যবস্থাত হইতে পারে এইরূপ বে সকল জব্য রালিরার ছিল ভাহার বৃল্য বাবদ ৮০ কোট ভলার ও ঐ ভাহাজগুলি মার্কিন যুক্তরাই ক্ষেবত চাহে, এ পর্যান্ত বে আলোচনা হইরাছে ভাহাতে জব্যাদির সক্ত বৃল্য বলিরা আরেরিকা বে পরিবাণ অর্থ লাবি ক্রিরাছে ক্লশ প্রভিনিবিপণ ভাচা প্রদান করিতে বীক্তক হন নাই।

### ইরাণ ও মিশর

এই হুইট রাই লইরা পাশ্চান্ত্য শক্তিবর্গ বছই বিপন্ন বোৰ করিতেছেন। ইহা বৃথিবার জন্ত প্রাতন সামাজ্যবাদের কথা ভোলা নিম্মরোজন। বিতীর বিশ্বরুদ্ধের কলে বিটপরাক হর্মান হুইরা পঢ়িরাছে। ভার উভরাবিকারী রূপে ধেবা বিভাছে মার্কিন মুক্তরাই ও লোভিবেট মুক্তরাই। ইংরেজ ভার বর্গোন্ন উভরাবিকারীকে হিংসা ও ভর করে; বার্কিন মুক্তরাই পরবর্মানি লোভিবেটকে ভর করে। কিছ ভার বর্গোন্ধকে ইটিরা কেলিতে পারিভেছে না, কারণ ছ্পাল ব্রিটেনের ব্রিবল ও অভিজ্ঞতা এবনও তার কাজে লাগিবে—এই আশার লে ইরাণ ও মিশরের সদ্যধারত ও উর্জ্ঞ জাতীরতাবাদকে আমল বিভেছে না। সোভিষেট রাষ্ট্র আরব রাষ্ট্রগোষ্ঠীর বিরোবের সুবোগ লইতেছে।

ইহাই হইল বাহ্নিক আন্দোলনের অন্তর্নিহিত কারণ। ইরাণ ইংরেজের হাত হইতে তার তৈল মুক্ত করিতে চার। বর্তমাদ শাহের পিতা রেজা শা পহলবী চাপ দিরা ইংরেজ তৈল কোম্পানীর নিকট হইতে করেক কোট টাকার রাজ্য আদারের ব্যবস্থা করিরাহিলেন। দিতীর বিশবুভের সময় জিশক্তির বলে ও কৌশলে তাঁহাকে রাজ্যচাত করা হয়। নার্কিন মুক্তরান্ত্র, ব্রিটেন ও গোভিয়েট রান্ত্র এই কাজেলিপ্ত হিলেন। এই অপ্যানের শ্বৃতি ইরাই নরনারী ভূলে নাই।

মিশরের বিবাদ ইংরেজের সলে। ১৮৮২ হটভে ১৯৩৬ প্রীপ্তাক পর্যান্ত ব্রিটিশ রাজের লাপট মীল মদের ভটভূষির অধিবাসী সহু করিয়াছে। শেষোক্ত বংসরে বিশর "বাধীন রাষ্ট্র" বলিয়া ঘোষিত হয়। এই অনুগ্রহ-প্রনম্ভ বাবীনতা মিশরের আত্মসন্মানে আঘাত করে। অভাভ কারপের মধ্যে সর্ব্বাশেকা অপমানজনক ছিল মধ্যপ্রাচ্য রক্ষার অভ্রতে ব্রিটিশ সৈচবাহিনীর উপস্থিতি। সেই সৈচবাহিনী আতে আতে সরিয়া যাইতেছে। কিন্তু ভাহারা হুরেজ বালের ভীরবর্তী অঞ্চল হুইতে সরিতে চাহিতেছে মা।

ক্ষে — ভার কোন সহত্তর পাওরা বার না। মার্কিন বুক্তরাই ও ব্রিটেন মব্যপ্রাচ্য রক্ষার করু নৃভন ভাবে কোট
পাকাইভেছে। এই আরোজন-উদ্যোগে বোগদান করিবার
করু তুরক ও আরব রাইগোন্ধী নিমন্ত্রিভ হুইভেছে। বিশ্বর দরক্যাক্ষি করিভেছে নিক্ষের বিশেষ বার্ণের প্রয়োজনে। অরু
আরব রাইগুলি ভাহাকে পূর্ণ সমর্থন করিভেছে না। বাহিরের
দর্শক আমরা বিশ্বের হার্থাগিদ্ধির ব্যাপারে বোগ দিতে পারি
না। বিশেষ করিষা হুলান দেশের উপর ভার আবিপভ্য
প্রতিষ্ঠার হুরাকাক্ষার আমাদের সহামুভ্তি থাকিতে পারে না।
ফুলানের প্রস্থার মধ্যে হার্সীরা সংখ্যাপ্তরু। ভাহারা
বিশ্বের প্রভুত্ব চার না। এই অবস্থার ইংরেজ এক নৃত্তম
হুবোগ পাইরাছে। ভাহারা হার্সী জাভির স্থান্তার রক্ষক
হুইরা দিভাইরাছে।

পুতরাং রাষ্ট্রপৃঞ্ধ-পরিষদের ষঠ অবিবেশন উপলক্ষে
প্যারিস হইতে অনেক বৃধরোচক সংবাদ পাওৱা বাইবে।
ভারতরাষ্ট্রের পক হইতে আপোষের চেটা হইবে নিকর।
ভার কলাকল সম্বন্ধে সন্দিহান হইলেও, ভারভের সমূদ্ধের সম্বন্ধে কোন সম্বন্ধের অবঁকাশ নাই। কারব সাম্বিক্তি শান্ধি হাতা এই অকলে আনাবের কোন বাব নাই।

# বুনিয়াদী শিক্ষা ও মনস্তত্ত্ব

### 🗃 মন্মথনাথ মুখোপাখ্যায়

শিক্ষার ক্ষেত্রে কর্মের প্রাধান্য বিশেষ কিছু নৃতন কথা নছে। বাংলা দেশের বছ শিক্ষকই বেমন্টের Principles of Education নামক পুস্তকে বছকাল পূর্ব হইতেই পাঠ গ্রহণ করিয়া আসিতেছেন:

Incessant activity is a law of the child's being, and the first requisite of a wise system of control is that this activity should be directed into desirable channels.

ডিউই, ব্যালার্ড, এবট, উড প্রভৃতি শিক্ষাতত্ত্বক্ত পণ্ডিতেরা শিক্ষাক্ষেত্রে কর্মনীতির অপরিহার্বতা বারংবার স্বীকার করিয়াছেন। ইউরোপ ও আমেরিকা শিক্ষাক্ষেত্রে শিশুর কর্মপ্রবণতাকে কাজে লাগাইবার বধাসাধ্য চেষ্টা করিতেছে। ভারতবর্বের ইংরেজ শাসকেরাও শিক্ষাবিন্তার ব্যাপারে এই সত্য একেবারে ভূলিয়া যান নাই। ১৯০৫ জ্রীষ্টাব্দে বোঘাই মিউনিসিপ্যালিটি বখন প্রাথমিক শিক্ষার পাঠ্যতালিকা হইতে হাতের কাজ, সেলাই, চিত্রাহন প্রভৃতি বর্জন করিবার প্রস্তাব করিয়াছিল তখন ব্রিটিশ সরকার এই বলিয়া উক্ত প্রস্তাব প্রত্যাধ্যান করিয়াছিলেন:

There are strong objections to the omission of these subjects from the course. The three R's are only a means to an end. To attempt nothing more than Reading, Writing and Reckoning would create a dislike in the mind of the child for other works which would be sufficient to combat in later years.

প্রকৃত পক্ষে শিশুশিক্ষায় কাজের নীতি (activity) বহুকাল হইতেই স্বীকৃত হইয়া আসিতেছে। মহাত্মা গান্ধী এবং তাঁহার সহক্ষিগণ সেই নীতিকেই ভিত্তি করিয়া বুনিয়াদি শিক্ষার প্রবর্তন করিয়াছেন।

কিছ বুনিয়াদি শিক্ষায় পৈশিক কর্মের উপর অর্থাৎ হাতের কান্দের উপর বে পরিমাণ গুরুত্ব আবোপ করা হইরাছে, কর্মপ্রধান অন্যান্য শিক্ষাব্যবস্থায় ঠিক ওডটা হয় নাই। মহাত্মা গান্ধীর গঠনমূলক কার্বধারার বিশিষ্ট ধারক ডাক্ষার কুমারাঞ্লা লিখিয়াছেন:

The whole of basic education was founded on and voven round work for the young, work for the adult and work for the old; work developed human personality and when they neglected it they sank to be level of life that sustained on violence.

ইহার সহজ অর্থ হইল এই বে, শিক্ষাক্ষেত্রে কর্মই হই-তেছে একমাত্র মুখ্য বস্তু এবং এই কর্মের 'by-product' বা অভুসিতাত রূপে বাহা কিছু পাওয়া বাইবে ভাহার

অতিবিক্ত আরু কিছু শিক্ষণীয়ও নয়, গ্রহণীয়ও নয়। আরু সকলই একান্ত গৌণ। শিক্ষণীয় যাতা কিছু আছে তং-मभूमधरे राज्य काटका मधा मिशारे लाख कविटल रहेटा. কিছ শিক্ষা-প্রতিষ্ঠানে কাজকে যথাযোগ্য স্থান দেওয়া আর একমাত্র কাজের মধ্যেই সমগ্র শিক্ষাকে কেন্দ্রীভড করা এক কথা নয়। এবট অথবা উভ, ভিউই অথবা বাালার্ড হাতেকলমের কাজকে শিশু-বিদ্যালয়ের অত্যাবশ্রক অঙ্গ বলিয়া গ্রহণ করিয়াছেন সভা : কিন্তু শুধ হাতেকলমের কান্ধকে কেন্দ্র করিয়াই সমগ্র শিক্ষাব্যবস্থা পরিচালনা করা সম্বন্ধে তাঁহাদের মতামত খুব স্থপষ্ট নহে। শিক্ষা-কেত্রে হাতের কাজের দাবি স্বীকৃত হওয়ার পর ইংলপ্রের সাফোকে, মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রে দক্ষিণ প্রদেশগুলিতে, চিলিতে, গুয়াতিমালায়, অট্টেলিয়ার ট্যাসমানিয়া ও ভিক্টোরিয়ায় 'এবিয়া স্থল' নামে যে সকল আদর্শ গ্রামা বিভালয় স্থাপিত হইয়াছে সেগুলির সকল ক্ষেত্রেই গ্রাম্য শিল্পর পক্ষে প্রয়ো-জনীয় শিল্প ও অন্যান্য হাতের কান্ত সাধারণ শিক্ষার সঙ্গে সমান আসন পাইয়াছে, কিন্তু কোন স্থানেই ভধু শিল্প বা হাতের কাজকে কেন্দ্র করিয়া সমগ্র শিক্ষা পরিকল্পিড হয় নাই। তবে বুনিয়াদি শিক্ষায় অস্ততঃ নীতিগতভাবে ভাহাই क्वा इहेग्राट्ड।

মহাত্মা গান্ধী তাঁহার শিক্ষা-পরিকল্পনার সমর্থনে বিশেষ কোন মনভাত্মিক যুক্তির অবভারণা করেন নাই। তাঁহার প্রধান যুক্তি সমাজনৈতিক এবং অর্থনৈতিক। কিন্তু বাঁহারা এই নৃতন বুনিয়াদি শিক্ষা-পরিকল্পনার প্রচার ও প্রবর্তনের ভার গ্রহণ করিয়াছেন তাঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ এইক্লপ অভিমত প্রকাশ করিয়াছেন বে, বুনিয়াদি শিক্ষা বিজ্ঞানসন্মত মনভাত্মিক ভিত্তির উপর প্রভিত্তিত। ইহাদের অনেকেই অভিজ্ঞ শিক্ষক এবং শিক্ষাভন্ধা। কিন্তু তথাপি মনে হয়, তাঁহারা বুনিয়াদি শিক্ষার সমর্থনে বে সকল মনভাত্মিক যুক্তি প্রয়োগ করিয়াছেন তাহা অধিকাংশ স্থলেই একদেশদশাঁ এবং ফ্রাটপুর্ণ হইয়া পড়িয়াছে।

কাজ করা শিশুলীবনের সহজ ও খতঃফুর্ত বৃদ্ধি,
স্তরাং কাজকে কেন্দ্র করিয়া বে শিক্ষা দেওয়া হয় তাহা
খাভাবিক এবং সহজ হইবে। এই যুক্তি বুবিয়া উঠা ছঃসাধ্য
নয়। কিন্তু কাজ বলিতে বধন শুধু হাতেকলমের কাজকেই
বুঝান হইয়া থাকে তথনই যুক্তিটা অভ্যন্ত ছুর্বোধ্য হইয়া
উঠে। শিশুর কর্মপ্রাচুর্বের পশ্চাতে শৈশব হইভেই বে
মানসিক ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়া, এমন কি শিশের এক প্রকারের

মানসিক শক্তি জনবরত কাজ করিরা থাকে, এই মনগুলটুকুকে ইচ্ছা করিয়াই তাঁহারা উপেক্ষা করিয়াছেন; শারীরিক
ক্রিয়ার মত মানসিক ক্রিয়াও বে শিশুর স্বতঃ ফুর্ত বৃত্তির
একটি জল একথা ভূলিয়া গিয়াছেন।

बनाव मारहव काहात From Birth to Maturity बहेरा निश्नापत कियात रव विक्रिय चरवत वर्गमा कवियाकम ভাহাতে ভিনি লিখিয়াচেন বে. দেভ বংসর বয়স হইতে শিশুর গৈশিক ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়ার একটা বিশেষ পরিবর্তন ঘটে। শিশুর পৈশিক কার্যকলাপের এই পর্যায় চয় বংসর পर्वस हिलाए बादक। এই সময় সে ইটের ঘর, কাঠের পুল, কাগজের নৌকা এবং আরও কত কি বল্প তৈয়ার করে। ইটের ঘর বধন সে তৈয়ার করিতে বসে তথন প্রতিদিনকার দেখা ঘরের একটা অস্পষ্ট ছবি তাহার মনে ভাসিয়া উঠে। সেই অস্পষ্ট ছবি হইতেই সে ঠিক করিয়া লয় কোন ইট-খানার উপর কোখায় কি ভাবে অপর একখানা ই ট রাখিলে ভাচার পৈশিক ক্রিয়ার ফলটি ভাচার মানদভবির অফুরূপ इडेश छेप्रित । এই সময়काর শিশুकोবনের অধিকাংশ পৈশিক কর্মই এইব্রপ কোন-না-কোন মানসিক ছবি ও তং-मः ब्रिहे बन्भहे जवः बनःवक हिन्दा वा कह्मनाव कन। जहे সময় হইতেই শিশুর মানস-ক্ষিয়ার উদ্ভব হয়: লক্ষ্যহীন গৈলিক বিক্ষেপ ক্রমশ: লোপ পায়। অঞ্চাতসারে এবং জম্পষ্ট ভাবে লক্ষ্য তাহার পৈশিক ক্রিয়াকে সচেতন করিয়া ভোলে। পৈশিক চাঞ্চ্যা শিশুর পক্ষে যতথানি স্বতঃকর্ত, এই মানসিক ক্রিয়াও তাহার পক্ষে ততথানি স্বাভাবিক। হাতের কাজ ৰদি শিগুশিকায় মনগুরুসমত উপায়ে হয় ভাচা চইলে এই মনের কাজও ভাচার পক্ষে মনস্তত্ব-विष्ठि परिकानिक विनेश दिश हरेए भारत ना। अ ৰাবৎ শিক্ষাকেত্ৰে হাতের কাজ তথা শারীর-ক্রিয়াকে শ্বপ্রায় করায় এক প্রকার ক্রটিবিচ্যাতির স্টি হইয়াছে। কিছ মনের কাজকে উপেকা করিলে শিক্ষায় অপর এক-প্রকারের দোষ বর্তিবে। এই উভয়বিধ কর্মকে কেন্দ্র কবিয়াই শিশুকে শিক্ষা দিতে হইবে। নচেৎ আপাতত: ৰভই স্বৰ্গ ও স্থমৰ হউক কালক্ৰমে ইহাৰ ভিভবে পুনৰায় পদুত্ব দেখা দিবে। পৈশিক ক্রিয়ার জন্ত বেমন হাতের কাজের প্রয়োজন, মানসিক শিকার জন্মও সেইরূপ বিখের काभी ७ ७ ने लाकामत पूर्वाकिक विकालात वात्रक। এইখানেই শিক্ষাকে পুস্তকের সাহাব্য গ্রহণ করিতে হয়। শিক্ষায় হাতের কাজের মত ইহাও অপরিহার।

মনন্তাছিকগণ বলেন, শিশুর মধ্যে প্রচ্র সহজাত শক্তি (instinctive energy) বহিয়াছে। শিশুর কাজের মধ্য দিয়া তাহাই খাভাবিক ভাবে প্রকাশলাভ করে। এই কাজ বাহাতে সমাজ-পরিপধী বা অসামাজিক না হইয়া সমাজের পক্ষে কল্যাপকর হয় ভাহার ব্যবস্থা করাই শিক্ষার মুখা উদ্বেশ্ন । স্থভরাং শিক্ষা কর্মকেন্দ্রিক হওয়াই মনত্তব্যসমত । কিছ কাজের বে একটা মানসিক দিকও আছে ভাহা পূর্বে উল্লেখ করা হইয়াছে। স্থভরাং গৈশিক কর্ম বা হাতের কাজই শুধু শিক্ষার বাহন হইতে পারে না। জীবনের বৈচিত্র্য ও ব্যাপ্তির তুলনায় মানসিক কর্মও শিশুর কাছে কম প্রয়োজনীয় নহে। ১৯৪৭ সনে ভারতীয় বিজ্ঞান কংগ্রেসে জীবুত জনাখনাখ বস্থ বলিয়াছেন:

Contemplative gratification (of instinct) is relatively passive in as much as it utilises other people's experiences in a second hand manner.

ভিত্ত অপব লোকের অভিক্রতোকে অবলম্বন করিয়া পড়িয়া উঠে বলিয়াই কর্মণক্তির মানসিক তথি বে শিক্ষা-ক্ষেত্রে একটি গৌণ বস্তু মাত্র এবং পৈশিক কর্মের তুলনায় নিভান্ত অকিঞ্চিৎকর ইচা স্বীকার করিতে কর হয়। প্রাক্তন অভিত্রতাকে বর্তমানে কাছে লাগাইবার বোগাডাই সভাতার অগ্রগতির প্রধান নিয়ামক। উৎপাদনমূলক কর্ম-কেন্দ্রিক শিক্ষাও এইবপ অভিজ্ঞতার উপর একাছভাবে এই অভিজ্ঞতাকে কাজে লাগাইতে না পারিলে কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষারও অপমৃত্য অবশ্রমভাবী। তলা কতথানি পি জিয়া লইলে উহার পাঁজ করা বায় ভাচা ঠিক করিয়া লইবার করু অপরের অভিক্রতার প্রয়োক্তন আছে। নচেৎ উপযুক্ত পাঁজ তৈরি হওয়ার পূর্বে প্রচুর পরিমাণ তুলার व्यवशा नहे हहेशा वाहेवाव मञ्चावना वहिशाह्य धवः भूनःभूनः ব্যৰ্বতাৰ দীনতা শিকাৰীৰ মনে গলুৰ বিভ্ঞাও হয়ত সৃষ্টি করিয়া ফেলিতে পারে। তাই হাতের কান্ত করিতেও অপরের অভিজ্ঞতাকে অপরিহার্য বলিয়া মনে হয় এবং অপরের অভিজ্ঞতা সম্বন্ধে সমাক জ্ঞানলাভ করারই নাম পুত্তককৈ কিকা। ইহা "অগ্রাহ্ম" এবং "অপের্ম" কোন অবাস্তর বন্ধ নছে।

শাবার কডকগুলি সহজাত বৃত্তি রহিয়াছে বাহা ওপু
হাতের কাজের মধ্য দিয়া, ওপু অকীয় অভিজ্ঞতাকে অবলঘন
করিয়া আদৌ পরিপুট বা পরিত্যক্ত হইতে পারে কিনা সে
বিষয়ে গভীর সন্দেহ রহিয়াছে। আহুগত্য, বিরক্তি, সদ্দলিলা, আবেদন, সহাহুড্তি, ঘুণা, লক্ষা, ভয়, আনন্দ, গুছা
প্রভূতি বৃত্তিকে সমাজহিতকর করিয়া ভুলিতে হইলে ম্ধ্যতঃ
বে বস্তুটির সহায়তা প্রয়োজন তাহা হইল মন । শিক্ষক
এতৎসম্বভীয় বহলনলম্ব অভিজ্ঞতাকে কড়পানি আবেপময়
করিয়া শিক্ষাধীর নিকট উপদ্যাণিত করিলে শিক্ষাধীর
অস্তুত্বশক্তি প্রতিক্রিয়া-চঞ্চল হইয়া উঠিবে— ভাহারই উপর
এই বৃত্তিগুলির উৎকর্ষ ("sublimation")নির্ভর করিবে।

**শপরের শভিক্র**ভা এবং শিক্ষার্থীর মন এখানে গৌণ ড নহেই বরঞ্চ শভাস্ত প্রধান।

শিশুর অভাব আক্রমণাত্মক। এই আক্রমণাত্মক শিশু-প্রকৃতির সন্দে বহির্জগতের বে বন্দ উপন্থিত হয় তাহার ফলে শিশুমনে একপ্রকার অপরাধ-বোধের সঞ্চার হয়। এই অপরাধবোধ দীর্ঘন্তায়ী হইলে শিশু-মন বৃদ্ধির পথে বাধাপ্রাপ্ত হয়। কাজ শিশুর এই অপরাধ-বোধ বা তৃঃখ-বোধের লাঘ্য করিয়া মনের ক্ষয়ক্ষতি অনেক্থানি পূর্ণ করিয়া দেয়। শিক্ষাভ্যক্ষর্গণ বলেন:

Constructive work gratifies one of the deepest needs of child,—namely the needs of restitution.

কিন্ধ এই ক্ষতিপূরণ একমাত্র হাতের কাঞ্চের মধ্য দিয়াই হয় না। বে শিশু অন্যায় করিয়া তাহার ছোট বোনটিকে বাধা দিয়াছে তাহাকে যদি দশটি অফ করিতে বা ছইটি জ্যামিতিক কুট সমাধান করিতে দেওয়া যায় তাহা হইলেও অন্যায় করিবার ফলঅরপ তাহার মনে বে অপরাধ-বোধের স্পষ্ট হইয়াছে তাহার অনেকথানি লাঘব হয়। অবশ্র হাতের কাজের বা পৈশিক কর্মের ক্রিয়া এই ব্যাপারে গভীরতর এবং অবিৎফলপ্রস্থা।

কিছ অপরাধ-বোধ ও তজ্জনিত অমুশোচনাকে পরি-পূৰ্ণ ভাবে মন হইতে ঝাডিয়া-ম্ছিয়া ফেলিবার নীডিটি সামাজিক মনের স্বস্থ গঠনের পক্ষে সহায়ক কিনা সেকথা ভাবিবার আঞ্চ সময় আসিয়াছে। অভিবিক্ত অপবাধ-বোধ মনের স্বাভাবিক অবস্থা নষ্ট করিয়া মনকে বিকার-গ্রন্থ করে ইহা বেমন সভা, অপরাধ-বোধের ঐকান্তিক অভাব, অপরাধের প্রতি অপরাধীর মুণা হ্রাস করিয়া দিয়া তাহার মনের অপরাধপ্রবণতা বাডাইয়া দেয় ইহাও তেমনই সভা। দেখা গিয়াছে, যাহারা দিনের অধিকাংশ সময় কায়িক পরিশ্রমে নিয়ক্ত থাকে ভাহারা নি:সঙ্কোচে বে পরিমাণ অপরাধ করিতে পারে অপর লোকেরা ততটা নি:সঙ্গোচে তাহা পাবে না। ইহার মনস্তাত্ত্বিক কারণ এই বে. নিরম্ভর পৈশিক কর্ম তাহাদের অপরাধ-বোধ লোপ করিয়া দেয় এবং ভাচাদের কার্যের অবশ্রমারী ফলম্বরণ অপবের বতই ক্ষতি হউক অথবা নীতির মানদণ্ড যতই অবনমিত হউক তংপ্রতি তাহারা সম্পূর্ণ উদাসীন হইয়া উঠে। অপকাধ-বোধ হইতে মাত্ম্যকে সম্পূৰ্ণ বেহাই দেওয়ার ব্যবস্থা निकात माधारम कवा छेठिछ इटेरव किना मिटे विवरव आक সংশন্ন উপস্থিত হইয়াছে। কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষায় পৈশিক কর্মের चािजनयु चार्छ। ইहात करन माञ्च कीवरनत श्रासनीय অর্থোগার্জন করিতে পারে। কিছ ইহার ফলে সজে সজে নিঃসভোচ অপরাধপ্রবণভাও নৃশংস ভাবে বৃদ্ধি পাইডে

পারে। কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষার আভিশব্যে পৃথিবীর মান্ত্র क्र्यंत्रं, नाज्यनक, जेरशामनवहन अथह अम्ब्रहीन अकृषि बृहर ব্যা পরিণত হইয়া যাইতে পারে। আধনিক জগতে বে সকল দেশে শিকাকেতে হাতের কাউকেই প্রাধান্ত দেওয়া হুইয়াছে ভাহার মধ্যে বালিয়া ও আমেবিকা উল্লেখ-বাশিয়া সম্পর্কে নিরপেক তথা সংগ্রহ করা কষ্টকর। কিছু আমেবিকা যে ক্রমশ: একটি নিয়মনির্ম প্রাণহীন বন্ধে পরিণত হইতে চলিয়ার্চে তাহা মনে করিবার কারণ আছে। বছ পর্যবেক্ষণের অভিত্রতা হইতে মিসেস ম্যানিং বলিয়াছেন, আমেরিকা একটি বিরাট দেশ, কিছ ভাহার হ্রনয় নাই। এই পরিণ্ডির জন্য হাতের কাজের প্রাচর্য কতথানি দায়ী তাহা ভাবিবার অবকাশ আমেরিকা-বাসীদের জীবনে আজ দেখা দিয়াছে। তাই জীবনবাপনের नर्वात मात्र (मीहिवाद डिप्हाना मार्वकरीन निव्यन्तिकाद পথে অগ্রদর হইতে হইতে আমেরিকা বেন থমকিয়া দাভাইয়াছে। জীবন্যাপনের সর্বোচ্চ মানদণ্ড ভাহাকে তপ্তি দিতে পারে নাই। আজ সে প্রত্যেক ক্ষেত্রে বোধ করিতেছে মানবভার কুধা।

আধনিককালে ভারতীয় শিক্ষাকেত্রে হাতের কাজের উপর যে জোর দেওয়া হইয়াছে তাহা লক্ষ্য করিয়াই মহীশরে অফুটিত ১৯৪৮ সনের সর্বভারতীয় শিক্ষা-সম্মেলনের সভাপতি রামস্বামী মুদালিয়ার এই সাবধান-বাণী উচ্চারণ কবিয়াছিলেন। বান্তবিক আৰু যদি কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষার প্রতি এই অশোভন পক্ষপাতিত্ব হইতে শিক্ষা-ব্যবস্থাকে মক্ত করিতে না পারা ধায় তাহা হইলে শৈশব হইতে আরম্ভ করিয়া সমগ্র শিক্ষাকাল ব্যাপিয়া কর্মকৈঞ্জিক শিক্ষার স্থদীর্ঘ পদ্ধতির মধ্যে যে দানবীয় মনোভাবের স্থাষ্ট হইবে তাহা আমাদের সমগ্র সভ্যতাকে চুর্ণবিচুর্ণ করিয়া দিবে। একদা পৃথিবীর প্রাচীন সভ্যতাগুলি বিদেশী বর্বরদের অভাচারে বিধ্বন্ত হইয়া গিয়াছিল। কিছ আমাদের বর্তমান সভাতার ধ্বংসের দায়িত্ব আমাদের নিজেদেরই স্কল্কে আসিয়া বর্তিবে। শিকাগো বিশ্ববিদ্যালয়ের সর্বাধাক বুবার্ট হাচিন্দ সভাই বলিয়াছেন:

Other civilisations were destroyed by barbarians from without we creed our own.

বুনিয়াদি শিক্ষায় শিক্ষা এবং বে-জন্ত শিক্ষা, এই তুইটি
বস্ত নাকি অলাদিভাবে সংবদ। ইহার ফলে শিক্ষার লক্ষ্য
শিক্ষার্থীর নিকট অভ্যন্ত সুস্পাই এবং প্রভ্যক্ষ হইয়া উঠে,
শিক্ষা প্রীতিপ্রদ এবং সহজ হয়। বে কর্মকে কেন্দ্র করিয়া শিক্ষা
দেওয়া হইয়া থাকে ভাহাই যদি শিক্ষার উদ্দেশ্ত হয় ভাহা
হইলে হয় শিক্ষার উদ্দেশ্ত সম্বদ্ধে শিক্ষাভয়ক্তারের ধারণা

ষত্যন্ত সংকীর্ণ বলিয়া মনে হইবে, নচেৎ মানব-জীবনের বিস্তৃতি সহদ্ধে তাঁহাদের চিন্তাধারা ষত্যন্ত সীমাবদ্ধ মনে করিতে হইবে। কাপড় বোনা বা অক্সরপ ছই-তিনটি হাতের কাজই বদি শিকার উদ্দেশ্য হয় তাহা হইবে কেনা সন্দেহ। মাধাম রূপে নির্ধারিত কর্মকে শিকার উদ্দেশ্য রূপে ছাত্রদের নিকট উপস্থাপিত করিলে আপাতদৃষ্টিতে আর্থিক সমস্থার কথঞ্জিৎ সমাধান সন্তব হইনেও ব্যাণক অর্থে শিকার উদ্দেশ্য ব্যর্থ হইয়া বাইবে।

কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষায় শিশুর আকর্ষণ বেশী। ভাচার ইচ্চা ও ওংক্ৰকা উভাব প্ৰতি তীব্ৰত্ব হয়। ইভাব একটি কারণ এই বে. কর্ম শিশুর সহজাত শক্তির স্বাভাবিক বিকাশ-মাত্র। পূর্বেই দেখান হইয়াছে বে. কর্ম অর্থ ৬৭ হাতের কাজই নতে: কর্মের একটা মানসিক দিকও বহিয়াছে। ইহার দ্বিতীয় কারণ এই যে, কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষার লক্ষ্য অতাম্ব সম্পট্ট এবং প্রতাক বলিয়া অনুমান করা চইয়াছে। किছ এট नका निकाद ममश्र नत्काद अविधि प्रिक मात : সমগ্র नका নতে। ইহা পূর্বেই বলা হইয়াছে। স্থনির্দিষ্ট ও স্থারিকল্পিত লক্ষ্য চোথের সম্মুখে অহরহ: সুস্পষ্ট পাকিলে দৈনন্দিন একঘেয়ে কর্মতালিকার মধ্যেও উৎসাহ এবং আগ্রহের সৃষ্টি হইতে পারে। কিন্তু লক্ষ্যে পৌচিবার প্ৰাট বদি স্থানীৰ্ঘ হট্যা উঠে তাহা হটলে লকা বড়ট না স্থানির্দিষ্ট হউক, পথ চলাটা শিশুর পক্ষে কৌতহল ও উৎসাহ-জনক না হটবা একাজভাবে যাছিক হটবা বাটবে এবং কৰ্ম-কেন্দ্রিক শিকার মনন্তান্তিক বুনিয়াদ ধ্বসিয়া পড়িবে। স্থস্পষ্ট লক্ষ্যের গেরো বধন চিঁডিয়া বায় তথন কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষার কর্মও একঘেরে হইয়া উঠে। পুস্তককেন্দ্রিক শিকার সঙ্গে ইছার আর তথন বিশেষ কোন পার্থক্য থাকে না। ঠাকুর-পূজা বখন দৈনন্দিন অফুষ্ঠানে পরিণত হয় তখন ঐ পবিত্র কর্মটির প্রতি সাধারণ মান্তবের না থাকে নিষ্ঠা না থাকে অম্ববের গভীরতা। তথন বেতনভূক পুরোহিতের উপর এই ভারটি ক্রন্ত করিয়া দিতে সে উৎস্থক হয়। তদার পাঁজ করা বর্থন বছদিন ধরিয়া দৈনন্দিন কাজে পরিণ্ড হইয়া যায় এবং এ কাজ করার মধ্য দিয়া বধন শিশুকে প্রভাত একই প্রকারের কড়াকিয়া, দেরকিয়া প্রভতি শিবিয়া লইতে হয় তথন তাহাত্র ঔৎস্থক্য ও আকর্ষণ বজায় রাখিতে কোনও প্রকার নতন প্রক্রিয়ার সাহাব্য গ্রহণ করিতে হইবে। কাজ শিশুরা ভালবাসে, ইহা মনস্তাত্তিক সতা।

একই কাজ পুন: পুন: করিতে বা একাদিক্রমে বছদিন ব্যাপিরা করিতে শিশু বিতৃষ্ঠা অন্তত্তব করে। ইহাও মনন্তাছিক সত্য। বিতৃষ্ঠা এবং বিরক্তি শুধু পুত্তককে ক্রিক শিক্ষারই প্রাপ্য নহে। কর্মকে ক্রিক শিক্ষারও ইহা অবশ্রম্ভাবী পরিণতি। প্রকৃতপক্ষে কোনও শিক্ষাপদ্ধতি শিশুদের পক্ষে আনন্দদায়ক ও স্থাকর হইবে কিনা তাহা শিক্ষাপদ্ধতির উপর বত না নির্ভর করে তাহার চেয়ে অনেক বেশী নির্ভর করে শিক্ষকের উপর। শিক্ষাপদ্ধতিটি মাটির ঢেলা মাত্র। কুম্বকারের কৃতিমান্থরায়ী তাহা হইতে ভয়কর দানবও নির্মিত হইতে পারে আবার কোলে-তৃলিয়া-লওয়া কোমল পেলব লন্ধীরও সৃষ্টি হইতে পারে। পদ্ধতিটা করণ কারক। শিক্ষকই প্রকৃত

শিক্ষাকেত্রে হাতের কাজের প্রচলন অপরিহার। শিকাকে সকল দিক দিয়া স্থলর ও মঞ্চলময় করিয়া তুলিতে হইলে শিক্ষাব্যবস্থার মধ্যে পৈশিক কর্মকে একটা বিশেষ স্থান দিতে হইবে। কিছু তাই বলিয়া ৩৪ হাতের কাজ বা পৈলিক কর্মের মধ্যেই সমগ্র লিকাকে কেন্দ্রীভূত করার যে পরিকল্পনা ভাহা ব্যক্তি বা সমাক্তের পক্তে প্রাপ্তি কল্যাণকর হইয়া উঠিবে কিনা সন্দেহ। মনস্থাত্তিক দিক হইতে विरवहना कविरन भरत इय, शुक्षकरकिक निकाद रा मकन দোৰকটি বহিয়াছে কৰ্মকেক্সিক শিক্ষাও তাহা হইতে মুক্ত নহে। ইহার একটি মাতুষকে বন্ত-দান্বে পরিণত করিবে, অপর্টি মামুষকে সমাজ জীবন-বাপনে একান্ত অন্তপযক্ত একটি कीरव क्रभास्त्रिक क्रिया । এই চুইয়ের সংমিল্পণেই মাত্র শিক্ষাব্যবস্থা সার্থক হইয়া উঠিতে পারে। হাভের কাজ ও মনের কাজের মধ্যে এমন সঙ্গতি বাধিতে হইবে যেন একের প্রতি পক্ষপাতিত দেখাইয়া অপরের গুরুতকে হ্রাস করা না হয়। পুত্তককেন্দ্রিক এবং কর্মকেন্দ্রিক এই উভয়বিধ ব্যবস্থার মধ্য দিয়াই শিক্ষাকে সার্থক করিয়া মনস্তব্যের লোহাই দিয়া কর্মকৈ ব্রিক তুলিতে হইবে। বুনিয়াদি শিক্ষাকে মুখ্য এবং অতীতের বৃহজ্জনদত্ত অভিত্রতায় সমুদ্ধ পুত্তককেন্দ্রিক শিক্ষাকে গৌণ বলিয়া चौकां कदिया गरेल आभारतय भिका अम्भुर्व हे धाकिया ৰাইবে এবং ইহার অবশ্রম্ভাবী ফলস্বরূপ আমরা হয়ত আমাদের কুষ্টি ও সভাতার সংস্পর্শ হারাইয়া এমন একটি ন্তবে গিয়া পৌছিব বেধান হইতে ইউবোপ ও আমেরিকা সভয়ে পশ্চাৎপদ হইবার উদ্বোগ করিতেছে।

## ভারত-মহিমা

### গ্রীকুমুদরপ্রন মল্লিক

,

ধন্ত আমি এ পুণ্য-বিশাল
ভারতের দীন্তান,
শত বৈন্যেরও মাবে মানি আমি
পরম ভাগ্যবান।
ব্রহ্মাণ্ডের তৃপ্তির লাগি
আমি করি তর্পণ,
করি বে দর্বকর্মের ফল
শ্রীহরিবে অর্পণ,
মধু রাত্রিন্দিব।
গোটা ভারতের আরতি করিয়া
জলে মোর গৃহদীপ।

3

অপবিত্র তো হবে না এ মাটি
ভদ্ধ ও সিন্ধ,
ভক্তের পদ পরশে নিত্য
সে অপাপবিদ্ধ।
এখানে রুথায় অপ-শক্তির
দন্ধ-সৌধ গাঁথা,
চূর্ণ হইয়া ধূলায় মিশিবে
বাস্থকী নাড়িলে মাথা।
নাহি কোনো ভয় নাহি।
আলামুখী-শিখা সর্বারিষ্ট
সর্বাদর্প দাহী।

9

মন্দির ভাঙি উপলগও
বাহারা সিয়াছে লয়ে,
সে দেশ সে জাতি বহিবে না গর
বাবে আপনার হয়ে।
শুদ্ধা তাদের থাক্ বা না থাক্
না থাকুক নিষ্ঠা,
শুদ্ধাতে তারা করেছে সেধানে
শিবের প্রভিষ্ঠা।
শুশেষ কট্ট সহি'
বিফলে তাহারা পাবাণের ভার
লয়ে বার নাই বহি।

ভারতের ধনবত্ব শইরা
বাহারা করিছে কেরী,
ক্ষতি কিছু নাই বিনিমরে ভারা
হয়ে গেছে আমাদেরি।
সপ্ত নদীর বন্যার জল
প্রবেশ বেখানে শভে,
এই ভারতের ভাগার চির
প্রসারিত সেধা হবে।
ওই বাত্বে জয়ভেরী,
হরণ করেছে, বরণ করিতে
করিবে না বেশী দেথী

.

আনন্দ মোর কতই নিবিড়
কি বিপুল হবঁ,
আমি ও আমার প্রতি অগুটুকু
এ ভারতবর্ষ।
আমি গয়া, কালী, আমি অবোধ্যা
পুরী ও বৃন্দাবন,
আমি কামাধ্যা, আমি কাশ্মীর,
সোমনাথ পন্তন।
আমি তো ক্লুল অভি,
কিছ বিরাট ওই হিমালি
আমার গোত্রপতি।

ভারত-তনয় অমৃতপুত্র
আমি মৃত্যুঞ্জয়,
পুণ্যবাহিনী গদা আমাকে
আদরে অকে লয়।
হোক ইউরোপ, হোক আফ্রিকা
হোক না সে আমেরিকা,
আমার চিভার অগ্নি বেধানে
সেধানেই হোমশিধা।
বেধানে রবে সে ছাই
চিরদিন তরে ভারতবর্ব
হয়ে যাবে সেই ঠাই।

# পিতৃম্বেহ ও তার স্বরূপ

### প্রীনারায়ণচন্ত্র চন্দ

শাস্থবের মন সীমাহীন গহন অরণ্যের মতই রহস্তময়; কোথাৰ এর আরম্ভ আর কোধায়ই-বা এর শেব কিছুই বুঝবার উপায় নাই। এ অরণ্যের ভিতর সূর্বের কিরণ প্রবেশ করে না, কাজেই স্পষ্ট করে কিছু প্রত্যক্ষ করা সম্ভবপর নয়। ভধু অন্তঃসভানী আলো নিকেপ করে ব্যক্তিগভ ভাবে নিজের নিজের মনের বে অংশটুকু দেখা যায় তা ব্দবন্দন করেই মাতুব ব্দপরের মন:প্রকৃতি সম্বন্ধেও ব্যুমান করে নেয়। নিজের মনের উপর আত্মান্তসন্ধানের আলো কেলে চিস্তাশীল ব্যক্তি মানব-মনের কত তুক্তেরি বহুক্তের থৌব্ধবর সংগ্রহ করেন। মাছবের প্রতিটি কথা, প্রতিটি **ভাচরণের উৎস সন্ধান করতে গেলে মনের** নিবিড গহনে প্রবেশ করতে হবে। বে নদী আমাদের ঘরের কাছ দিয়ে কুলুকুলু খবে বয়ে যায়, তার উৎস সন্ধান করতে হলে বেতে হবে বহু দূরের তুষারক্ষেত্রে; বে শতদল জলের উপর পাপড়ি বিকাশ করে সৌরভে বাতাস মহর করে দেয়, তার মূল খুঁজতে হবে জলের তলায়, মাটির নীচে। তেমনি শামাদের শাচরণও অদৃশ্য সংযোগসূত্রে মনের বিভিন্ন ভাব-কামনার সঙ্গে সংযুক্ত। আশা-আকাজ্ঞা, বন্দ্-নৈরাশ্র, ক্রনা-বাসনার বে ভাব-বুৰুদ নিরম্ভর মনের তলায় মালোড়ন তুলছে, ভারই বহি:প্রকাশ মাহুবের আচরণে। ভাব-কামনাগুলির তীব্ৰতা কমবেশী থাকলেও সকল মাহুবের মানদক্ষেত্রেই এগুলি বিরা<del>জ</del> করে। ভাই আমরা নিজের মন দিয়ে অপরের মন বুঝতে পারি, নিজের ভাবাবেগের অহুভৃতি থেকে অহুরূপ অবস্থায় ব্দপরের ভাবাবেগ কিরুপ হতে পারে তা ব্রহ্মান করে নিই। এ অন্থমান প্রায় সকল ক্ষেত্রেই সভ্য হয় এইজন্য त्र, यत्नद्व स्पोणिक উপामानश्विण नकरमदरे जक ; जक्रे রূপ সহজাত প্রবৃদ্ধি (instinct) এবং প্রক্ষোভ বা ভাবাবেগ (emotion) মনের গভীরে থেকে মাহুষকে নানা আচরণে উৰুদ করছে। এদের স্বব্ধতে পারলে জীবের স্বাভাবিক মানসিক প্রবণতা সহত্তে মাহুবের জাননেত্র খুলে ষায়; তথন অন্যের মনের গহনেও দে আলোকপাত করতে পারে।

#### ন্মেহের উৎস কোথায়

সভানের প্রতি প্রবল আকর্ষণ একটি সহজাত প্রবৃত্তি, ভীবের রক্তের সভে এ মিশে আছে। অপত্যন্নেহ জীব-মাজেরই খাডাবিক ধর্ম। প্রকৃতি সকল জীবের মধ্যে এই সন্ধানবাৎসন্য এমন মাজায় দ্বিগেছেন বাতে তারা সন্ধানসন্থতি বাঁচিয়ে রেখে স্পন্তীর ধারা অব্যাহত রাথতে পারে।
আৰু স্লেহের বশবতী হয়ে পশুমাত্রেই সন্ধান পানন করে।
বাদের পাননীশক্তি কম তাদের সন্থতির সংখ্যা দেখা বায়
প্রচুর। মাছ-ব্যাও প্রভৃতি নিম্ন অবের প্রাণীর অসংখ্যা
তিম হয়—এক-একটি মাছ বা ব্যাওের ভিমের পরিমাণ
হবে কয়েক কোটি! এদের বৃদ্ধি ও সামর্থ্য অন্থবামী
সন্ধানদের রক্ষার ব্যবস্থা এরা করে, কিন্ধ এই সংগ্রাম-সন্থন
জীব-জগতে বেঁচে থাকা বা শৈশব পার হয়ে আসা অভি
অল্পনংখ্যকের পক্ষেই সন্ধাব হয়। ইতর প্রাণীদের জগতে
দেখা বায়, সন্ধানের প্রতি স্লেহ পুরুষের চেয়ে স্লীজাতীয়দের
মধ্যেই বেশী প্রবল। জনকের কবল থেকে সন্ধানদের
বাঁচাতে জননী ব্যাকুল হয়ে ওঠে। শিশুসন্থান নিয়ে সে কিছুকাল লুকিয়ে কাটায়—প্রাণিজগতে এ দৃষ্টান্থ বিরল নয়।

সন্তানের প্রতি তীত্র আকর্ষণ জীবের সন্তায় মেশানো রয়েছে; বাইরে থেকে এ প্রবৃত্তিকে জাগিরে দিতে হয় না। সন্তানের জন্ম হলে আভাবিক নিয়মে জনক-জননীর মনে এর ক্রুণ ঘটে। তখন সন্তানকে অবলম্বন করেই এই আদিম প্রবৃত্তি একটি নৃতন রূপে মূর্ত হয়ে ওঠে। সন্তানলাভের পূর্বে অপত্যম্মেহ পূর্কবের মনে বিশেষ প্রভাব বিস্তার করে না; জীলোকের ক্ষেত্রেও একথা খাটে, তবে তাদের মন অভাবতঃই কোমল বলে এদিকে প্রবণতা বেশী এবং সন্তানলাভের সন্তাবনা দেখা দিলে সন্তানকে কোলে পাবার আপে থেকেই বাৎসল্যরসে তাদের মন স্বেহসিক্ত হয়ে ওঠে।

অপত্যক্ষেহ মাতৃহ্বদরে কতকগুলি প্রবল প্রেরণা জাগিরে তোলে; তাদের মধ্যে প্রধান হ'ল সন্তানকে রক্ষা করার তীর বাসনা ও উল্পন। অসহায় কচি শিশুটি বেন তারই দেহমনের একটি অংশ, বেন তারই অভিনব স্কটি। এটিকে ব্রুকে অভিনের গরে, তান্যপান করিয়ে তার পরিতৃপ্তি। তান্যপায়ী শিশুটি একাস্কভাবে বে তার উপরই নির্তরশীল এ ভাব নিজের অভ্যাতসারেই জননীর মনে গর্বমিশ্রিত পূলক্ষিণ্ডবণ সঞ্চার করে। সন্তান ক্রি, কি কুৎসিত, স্কঠাম ক্রিকাণ এ সব বিচার করে মাতৃত্বেহ কম বা বেশী উৎসারিত হয় না। জননীর স্বেহকাজল মাধানো চোধে সন্তানমাত্রেই অপূর্বস্কর দেবদৃত; এদের মল্লকামনাই তার অভ্যের নির্ত্তাকার অপ্যায়। সংস্কৃত সাহিত্যে

সন্তানের প্রতি নির্মল উলার আশীর্বাদ ভমতে পাই কবির ক্থার—পুত্রনামা আত্মা অসি দং জীব শবদাং শতম্। ভূমি আমার আত্মা, পুত্ররূপ ধরে এসেছ; ভূমি শতবর্ষজীবী

#### পিতক্ষেহের বৈশিষ্ট্য

সন্ধান বধন অসহায় অবস্থা কাটিয়ে উঠতে থাকে তথন ক্রমে ক্রমে ভার উপর মাতৃত্বেহ কমে আসে। জীব-লগতের এই নিয়ম। শিশু স্বাবলয়ী হয়, তাকে পালন করার, রক্ষা করার লায়িত্ব আর জননীর উপর থাকে না। ক্স্মু সবল আত্মনির্ভরশীল সন্ধান অপেকা তুর্বল, কয়, আত্মশক্তিহীনের প্রতিই মায়ের স্নেহ স্থভাবতঃ প্রবলভর ভাবে প্রবাহিত হয়।

পিছুল্লেহের স্বরূপ কডকটা ভিন্ন। অসহায় কুন্ত্র শিশুকে দেখে তার প্রতি জনকের মমতার উল্লেক হয় সতা, কিছ ভা জননীর স্বেহের মড এড প্রবল এবং দক্রিয় নয়। পুত্রের বয়োবদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে ধীরে ধীরে পিতার স্নেহ তাকে অব-লম্বন করে দানা বেঁধে উঠতে থাকে: পিতার আশা-আকাক্ষা বেন ডাকে আশ্রয় করেই আত্মপ্রকাশ করতে চায়। এই কামনার মধ্যে ছুইটি ভাবের মিশ্রণ ঘটে-নি:বার্থ ভাবে পুত্রের কল্যাণ কামনা ও আত্ম-অহমিকা পরিত্থির কামনা। পিত্রেছের মধ্যে এই চুইটি কামনা এমন ওতঃপ্রোভ ভাবে মিশে বার বে, পিতা ক্রমে পুত্রকে নিজ থেকে অভিন্ন করে ভাবতে থাকেন। পুরুষ কারও কাছেই পরান্ধিত হতে চায় না; তথাপি পিতা প্রৱেব কাছে পরাত্ত্য কামনা করেন, তার কারণ পুত্র বিজয়ী হলে म विकारगीयव जाय निष्क्रवरे । शुख्य अग्मविमाय कना ভিনি বেমন আত্মতপ্তি অফুডব করেন, তার দোষক্রটি এবং পরাজ্বরে গ্লানিও তাঁর বকে সমান ভাবে বাজে। বিখ্যাত मताविकानी गाक्ष्णान वरनहिन:

... whatever is admitable about it (child) brings satisfaction to his (father's) positive self-feeling; whatever is defective humbles him, excites his negative self-feeling; its shame or disgrace is his shame, its triumphs are his triumphs.—William McDougall: Social Psychology, p. 143.

অর্থাৎ, সন্তানের মধ্যে যা-কিছু প্রশংসনীয় তা পিতার মনে আত্মগোরবের সন্তোব আনে, সন্তানের দোকফটি তার আত্মগাঘাকে হীন করে; সন্তানের কজা ও অপমান তার পক্ষে কজা ও অপমান, সন্তানের সাফল্যে তার সাফ্ল্য ।

পুর্তে অবলম্বন করে শিভূমেহ এবং শিভূম্বদর্যের ধাননা মুর্ভ হডে চায় । প্রয়োজন হলে পুত্রের সঙ্গে একই ছঃখনাগরে ঝাঁপিনে পড়ে পুত্রের সমন্থংখভাগী হতেও পিতা কৃটিত নন। বংসাময় মনোজগতের এই সভাকে রবাজনাথ পুত্রজ্বোত্র গুভরাষ্ট্রের বেদনাক্ষ্ম কঠে জনম্বকর্ণীয় ভাষায় রূপ নিরেছেন। কপটন্তে রাজ্যলাভ করে ছুর্বোধন পিতাকে প্রণাম করতে এসেছে। গুভরাষ্ট্রের মৃত্ ভিরস্কারে ছুর্বোধন ক্ষম হয়ে পাওবদের বাজ্য ফিরিয়ে দিয়ে বনবাসে বাবার ইচ্ছা প্রকাশ করলে গুভবাষ্ট্র বললেন:

হার বংস অভিমানী । পিতৃলেহ মোর
কিছু বদি হাস হ'ত শুনি হুৰুটোর
হুছদের নিশাবাকা,—হুইত কল্যাণ ।
অথমে দিরেছি বোগ, হারারেছি জান,
এত সেহ। করিতেছি সর্বনাশ ডোর
এত সেহ।
মণিলোভে কালসর্প করিলি কামনা
দিমু তোরে নিজ হুতে ধরি তার কণা
অজ আমি। অজ আমি অভ্যের বাহিরে
চিরদিন,—তোরে লরে প্রলর্ডিমিরে
চলিরাছি।…

আসম বিপদে
কণ্টকিত কলেবর, তবু দৃঢ় করে
ভয়বর স্নেহে বক্ষে বাঁথি লয়ে ভোরে
বাযুবেগে অধ্বেশে বিনাশের প্রাসে
ছুটিয়া চলেছি মূঢ় মন্ত অট্টহালে
উকার আলোকে,—গুধু তুমি আর আমি,—

কুরবংশ-রাজলন্মী নাহি রবে আর গুধু রবে আরু পিতা, আরু পুত্র তার আরু কালাঞ্চক বম,—গুধু পিতৃলেহ আরু বিধাতার শাপ আরু নহে কেছ। ( গাঞ্জারীর আবেদন—"রবীক্র-রচনাবলী", ৫ম খণ্ড; পু. ৭১ )

•••

ধৃতরাষ্ট্র ন্যায়তঃ রাজ্যের অধিকারী হয়েও শুধু অক্ষের বিকলতার জন্য সিংহাসন থেকে বঞ্চিত। তাঁর রাজ্য-লোভাত্র অস্তরের চিরবঞ্চিত কামনা পুজের সামল্যের ভিতর দিয়ে আত্মপ্রকাশ করতে চেরেছিল। তুর্বোধন এই অন্ধ পিতার রুদ্ধ কামনারই মৃত বিপ্রহ; পিতা এবং পুজ এদিক দিয়ে অভিন।

গাছারী যথন ন্যাম্বিচার প্রার্থনা করে পাপী তুর্বোধনকে ত্যাগ করতে আবেদন জানালেন, ধৃতরাষ্ট্র তথন বললেন:

পাণী পুত্র ভাষ্টা বিধাতার, ভাই তারে তাজিতে না পারি,—আমি তার একমাত্র। উন্নত্ত তরল-মারখানে বে পুত্র সঁপেছে অল তারে কোন্ প্রাণে হাড়ি বাব। উদ্ধারের আশা ত্যাগ করি, তবু তারে প্রাণপণে বক্ষে চাণি ধরি, ভারি সাধে এক সাবে বাঁপ দিরা পড়ি, এক বিনাপের তলে তলাইরা বরি

অকাতরে, অংশ সই তার হুর্গ তির, অর্থ কল ভোগ করি তার হুর্গ তির; সেই তো সাস্তবা বোর,—

পিতা বধন শিকাদীকা দিয়ে পুত্রকে নিজের মনের মত করে গড়ে তুলতে চেটা করতে থাকেন তথন থেকে পুত্রের প্রতি তাঁর প্রেহ ঘনীভূত হতে থাকে। পুত্রের সার্থক আত্মবিকাশে তাঁর চেটা, উদ্যম, আর্থত্যাগ তাঁকে নিবিড় ভাবে পুত্রম্থী করে ভোলে। তিনি বেন কোন একটি বড় ব্যবসায়ে তিলে তিলে মূল্যন নিয়োজিত করছেন। এর সাফল্য পিতাকে বেমন আনন্দিত করে তেমন আর করবে কাকে? তেমনি এর ব্যর্থতার বেদনা পিতার চেয়ে আর কারো বুকে এত নিদার্কণ হয়ে বাজেন।।

#### শিক্ষক হিসাবে পিতা

আমাদের নিজেদের অভিক্রতা থেকে জানি—কদাচিৎ
এর ব্যতিক্রম দেখা গেলেও—পিতা নিজ সম্ভানের আদর্শ
শিক্ষক হতে পারেন না। এর কারণ এ নয় বে, তিনি
সম্ভানের শিক্ষার উন্নতির জন্য আন্তরিক চেষ্টা ও পরিপ্রম
শীকার করতে নারাজ। আসল কারণ বরং এর বিপরীত।
তিনি কামনা করেন তাঁর সম্ভান ক্রত সকল বিষয়ে পারদর্শী
হয়ে উঠুক—পুত্রের সাফল্যে তাঁর অহং ভাব হয় পরিভৃপ্ত।
সম্ভান তাঁর আশা-আক্রার সঙ্গে তাল রেখে চলতে না

পাবলে পিতার অহংবোধ আহত হয়; তিনি ক্রুছ হয়ে ওঠেন। বে বিষয়টি তাঁর কাছে এত সহজ সেটি সন্থান কেন বোঝে না এবং এটুকু ব্রুতে না পাবলে সে কি করে অন্যের সক্ষে প্রতিবাগিতায় শীর্ষদান অধিকার করবে এ চিন্ধা তাঁর নিজের অক্সাতেই মনের আকাশে ঝিলিক দিয়ে বায়; অধীর হয়ে তিনি ছেলের বই খাতা ছুঁড়ে ফেলে দেন আর না হয় মারমুখো হয়ে ওঠেন। অধিকাংশ পিতার সম্বদ্ধে একথা প্রবোজ্য; সন্তানের মন্দলের জন্য বিনি অতিমান্তায় আগ্রহী তাঁর পক্ষে আরও বেশী প্রযোজ্য।

পক্ষান্তরে সন্থান বদি মোটাষ্টি বৃদ্ধির পরিচয় দেয় তো পিতা মনে করতে পারেন, তাঁর পুত্রের মত বৃদ্ধিমান শিশু ধ্ব কমই আছে। তাঁর নিজের আশা-আকাজ্জা তাকে অবস্থন করে উচ্ছুদিত হয়ে ওঠে। পুত্র বদি পিতার এই মনোভাবের আভাস পায় তবে সেও মনে মনে গবিত হয়ে উঠতে থাকে। এতে ফল ভাল হয় না। স্নেহ ও শাসন এ তুটির মধ্যে মধুর এবং স্থসমঞ্জস মিলন সাধিত না হলে সক্রিয় পিতৃস্নেহ অনেক সময় মন্ত্রের তেয়ে পুত্রের অমন্ত্রাই সাধন করে বেশী। পুত্রের কল্যাণকামী পিতাকে একথাটি সর্বলা শ্বন রাখতে হবে।\*

্ৰাবণ সংখ্যা 'প্ৰবাসী'তে প্ৰকাশিত "আপনায়ও তো ছেলেমেয়ে আছে" শীৰ্ষক প্ৰবজ্ঞের ক্ৰমান্ত্ৰত ন।

## স্মরণীয়

### এঅমরকুমার দম্ভ

সৰিবা আন্দিকে আপনাৰ মনে ভোৰার নামট প্রিব, পেরেছি ভাহার অধির বাণুরী সুন্দর রবণীর; ছুমি কাছে নাই, দূরে চলে গেছ, ভবু ভ ভোষার লাগি, আপনার ননে ভোষারেই ডাকি, ভোষারি বিরহে ভাগি।

আনার কৃশ্ব-কাননে লেদিন বে কুল কৃটিরাছিল, বোকের নিলন-স্বভির রেণু বাহারা ল্টিরা নিল, ভোনার আনার প্রেন-পারিকাত বেসেছিল বারা ভালো; ভারা আজি হার শূর্ব আশার ব্যব্যর বিবেতে কালো। আকাশে বে ভারা জাগিরা সেনিম নেবেছিল অনিমিবে, বোদের নেত্রে ভানার ভানার স্থার পাঞ্চিকে, আজি রজনীতে বুঁজিতেছি রুধা, কোবাও না পাই ভারে, হারাপথ হাছি, অভল সুনীলে, ভুবায়েছে আগুনারে।

আমার বুকের 'পরেতে বধন সেদিন আছিলে ভূমি, অণু পরমাণু হয়েছিল লয় অদে আদে চূমি'; অভসু সে প্রেম উছসি উট্টাছে ভোষার নামেতে প্রিয়, সুকারেছে ভারা, গুকারেছে সূল, তবু ভূমি পরবীয়।



## वांनी

#### শ্রীতারাপদ রাহা

বৃক্টা হঠাং কেঁশে উঠল। কেন্দ্ৰই যেন হবে গেল।
মনের সমন্ত শক্তি কেন্দ্ৰীভূভ করে উংকর্ণ হয়ে উঠলান।
বাসটা আরও বানিকদ্র এগিরে এনে বানল। বৃক্তের
মাবে অনেক দিন আগের ভূলে বাওয়া একটা প্রামো
বেদমা যেন যাবা চাড়া দিরে উঠল: একটা লোক বাঁদী
বাজাছে। এবার স্পষ্ট ভনতে পাছি ভার হুর, স্পষ্ট দেবতে
পাছি ভার বুব আর চেহারা। সাভাশ আটাশ বভলোর
জিশ বংসর বরসের এক বুবক, কণালে ছোট একটা কাটার
লাগ, কাঁবে বুলান একটা বলে ভরতি নানা সাইজের নানা
রক্ষের বাঁদী। বিক্রী করভে এগেছে নিক্তর, কিছ বিক্রীর
কবা ভার মনেও নেই। আলে পালে ভার যেসব লোক
ভিছ করে বাঁভিরেছে—ভাদের মাবে ক্রয়েছু লোক হ'চার
জম নিক্তরই আছে, কিছ ভাদের দিকে সে ক্রিরেও
ভাকাছে মা একবার—চক্ মুক্রিভ করে দেহের উর্জাদে
ভাবের ভর্ল উৎকেণ করে সে বাঁদী বাজিরেই চলেছে।

বাঁশীওৱালারা পরে কতই ত বাঁশী বাজিরে থাকে, কিছ কৈ মনটা ত ঠিক এমনি করে ওঠে না ৷ চেহারা দেবে মনে হচ্ছে বাঙালী, তাই বলে কি ? না, তাও নর : বংশীবদন কত বাঙালীরই ত বাঁশী ভামেদি, মনটাকে এমনি করে আছেয় মৃদ্ধিতপ্রায় করে তুলতে পারে নি ত কেউ, তা হাড়া শিলকে হেছে প্রাদেশিকভাকে বড় করে দেববার মত মন ত আমার মর।

চক্ষু ছট বাপ্পাছের হরে আসহিল—গাবে কাটা পিছিল, বুকের মাথে কেমন বেন একটা বেদনা বোব করহিলাম। এই সব অনুভূতির সঙ্গে সংলই মন বিচার করে চলেহিল কেন এমন হ'ল, এই স্বটা—স্বটারই এই গুণ। ছেলেবেলার একটু-আবটু সদীত-চর্চা করেহিলাম, বুবতে কাই হ'ল না লোকটা আলোরারী বালাছে, হাঁ টিকই, আলোরারী নইলে মনকে এমনি উদাস করে ভাসিরে নিরে বেতে আর কোন সূর পারে? কিন্তু আলোরারীও ত আরও কত ওনেহি—কত বছ বছ ওভাবের মুখে, মনটা এতবানি অভিত্বত হরে পড়ে নি ত কোনছিন।

আরও তাল করে বৃথতে চেটা করলাম। হাঁ, আশোরানীর সলে আরও কি বেন নেপানো ররেছে, টিক বে কি
বরতে পারহিলান না, তবে আছে, আতেই হর বৃত্তি এত মব্র
হরে উঠেছে। হয়ত এ ছাড়া আরও কিছু আছে: শিনীর
হবদ, তার ভ্যবতা অধবা তার নিক্ষে বনের গোগন কোন

ব্যথা, হয়ত এও সব নহ, এ ছাড়া আরও কোন কিছু বার ঠিক সহাম পাজি না আহি—

বাস টার্ট দিলে। চলতে ত্মক্র করলে বাস। নিজের বরসকে শত বিভার দিলান মনে মনে: কিশোর বা বৌবনের প্রথম দিক হলে এই ভবল ভেকারের উপর থেকে বটাবট শক্ষ করে এক দৌভে নীচে নেমে সিরে বাঁশীওরালার পাশে সিরে বীভাভার।

বাঁশীর হার ক্রমে আমার প্রবর্ণের আছন্তের বাইরে হয়ে গেল, কিন্তু মনের মাবে সে তথ্যও তর্গ তুলছে। সেদিম রাত্রে ভারও সাদ একটি ক্যা বলতে পারি নি—অনেক—ক্ষুপ্রিছে ব্যক্ত পারি নি।

এর পর থেকে মহামগরীর পথে ট্রামে-বাসে যেতে বাঁশীর সুর কানে পেলেই লোকটাকে বুলি। সুর শোনার পর অবস্ত আর লোক থোঁকার প্রবোজন থাকে না, কারণ মন कारम ७ प्रत ७६ अकश्मन दीनी (बर्कर दिक्छ शासा। ভাগ্যচক্রে আর একদিনও বাসে আসভেই লোকটার দেবা मिनन। एव (बंदन वीनिव प्रव कारन व्यक्ति वृबंदक (भरब-ছিলাম-এ সেই! বাঁপীতে বাৰছিল সেদিন পুরিয়া, যাত্রি আটটার কাৰাকাছি বেটোপলিট্ন ইনসিওরেকের নুভ্র-কেনা বাজীটার সামনে। ঘাত্রীতে তবল তেকার ঠালা, বেশিকণ গাড়াল মা বাস। ভাছাড়া প্ৰথম দিমের মন্ত चक्री निरुद्धन्छ कार्य मि मत्म। वीनिश्रद्धाना चक्री আছহারা হবে বাঝাছে মা সেদিন, বিজ্ঞীর দিকে বেশ वामिक है। यन बावटक श्रावटक कांब। (तम अक है बाव स्वित्न लाक्षीत छेनत. किन्छ छन्मरे विहाबब्दि अर्म मन्दक नमक बिरम: (थएक करन मा अब---(बाक्नमंत मा करत क्विन ভোষাৰ বাঁদী শোনাবে।

বালে আগতে আগতে আৰি বেশ উপলত্তি করণায— বাঁশী তবে লোকটাকে আৰি ভালবেলে কেলেছি, আরও ব্ৰলাম প্রেমের দিতীর স্পর্শ প্রথম স্পর্শের মৃত অভ বারায়ক নর !

আমার এই নৃতন ব্যাগদেটটকে আরও ছ'দিন পথে দেশলাম বাঁদী বাজাতে নর—বিক্রী করতে। বাজনা হরত একটু আগে শেব হরে গেছে, দেটা সন্তবতঃ ওর পণ্যবহার বিক্রাপন। শিলীকে ব্যবসাধীর স্থিতে করনা করতে স্পর্ক কাতর বন বারাজ হবে ওঠে, তবু লোকটর প্রতি আমার আকর্ষণ একেবারে বার না। একবিদ রাজি হণটার কাহাকাহি—গভিরাহাটার বাড়ে বাস থেকে নামভেই ওর সলে দেবা হরে গেল। তুর থেকেই ওর বাঁশী ভদহিলান—লেদিন বেহাগ বাজাফিল। বাস মোড়ে বামভেই ওর বাজনা থেকে গেল: কে একজন বাঁশীর বর্মভার করহে। শৃতপ্রার বাস থেকে মেনে আমিও যর্মচালিভের বন্ধ এগিরে গেলান কাহে। ক্রেডাকে ব্রহত্তর করতে দেবে ও যুহু হেসে বললে, এক দানে বিক্রী ভাই, এই সমর কি বর-ক্যাক্রি ক্রবার কুরসং পাবেন আপনারা ?

এই কথাঞ্চলির বাবে লোকটার শিকা ও ক্রচির যেন বেশ বানিকটা পরিচর পেলান আবি। হাসিটাও বড় বরুর, ইাডগুলিও স্থিতত বড়বকে। লোকটকে এত কাছে পেরে কথা বলার আগে ভার চোধে রুবে সর্বাদে একবার ক্রত চোধ বুলাবার লোভ কিছুতেই সংবরণ করতে পারহিলাম না। চেহারাটা এমন কিছু কলপের বড় নর—ভবে স্থলর। চোধে বুবে বুহির বীপ্তি, আর শিরপ্রভিতার জোল্ন। গারের রংটা হরত একবিন করনাই হিল, কিছু এবন ভারাটে। নাধার চুল খন এবং অনেক বিন কাঁচি পড়ে নি—ভাই একটু দীর্ব, অবিভত। এসব বিকে ভার ধেরাল আছে বলেই বনে হরু না।

বে বেলেট বাঁদী দর করছিল সে গাঁচ সিক্তে দিরে একটা 'বি-ফ্রুট' কিবে নিরে চলে গেল। এর পরই আনার পালা। একটু লকা করছিল। মনকে করে বমক দিলার, অভাত বরের মত বাঁদীও একট পুর-মর, বেহালা তুমি বাজাও, আর বাঁদীভেই এবন লোব করলে। তাগে অবত আনার বারণা ছিল বরস তুভি পেফ্রলেই আর কারও বাঁদী বাজান উচিত মর। ঐ বরসের পর আনি নিক্তেও বাঁদী হেডেছি ভিনা।

ৰাই হোক শিরের ছোহাই দিয়ে বনে লোর এনে সংকাচ ফাটরে কোন রকবে বলে বসলাব, "G" আছে ?

**डेवाबा मा मुनाबा, वाबु?** 

Getat i

আৰু ও উলাৱা আৱ ৰেই বাৰ্—ছটো ছিল বিকী হয়ে। গেছে, বলেন ত কাল এনে দিতে পারি।

क्छ शाव ?

ভাল বাঁশের ভাল কিনিস করা বোটা 'বি' একটা ছ' টাকা পড়বে, আর অভিনারি সাভ সিকে।

বেশ, ভালচাই আনবেদ---

লোকটা ক্ষেম একটু রাম সকজ হাসি হেসে মলনে, আহাকে আপনি মলছেন ?

বিশিষ্ট হয়ে বললাৰ, কেন, আপনি বলব না কেন, না বলবায় কাষ্যৰ কি ?

লোকটা আৰ একটু বিষয় হালি বেলে বললে, বড় কেউ বলে না কিনা, ভাই বলছি। না বলবার ভ কোন সকভ কারণ নেই—চেহারা দেখে বনে হর আপনি ভত্রলোকের ছেলে।

লোকট কোন উত্তর না বিরে মাটর বিকে ভাকাল।
ভা যাভা মনে হর লেখাপভাও ভিত্র করা হরেছে—

বলেই একটু হকচজিরে পেলার: আমার বাজ্যবিভাসটা আপনি আর ছ্রির নাঝানারি হরে পেল। পরক্ষেই ব্যাপারটা ভবরে নিভে বললার, দেশ কোবার আপনার— পূর্ববলৈ বোব হয় ?

মান হেলে লোকট বললে, আছে ই।।

আশে-পাশে তেমন লোক ছিল না, ক্ষেতাও কেট আসহিল না, স্তরাং আনার এই স্তন ন্যাগনেটের সদে পরিচরের এই স্বোগ। বললান, আপনাকে আনি আগেও লক্ষ্য করেছি, বাজনাও ভনেছি। বৌৰাজারের ওনিকেও আপনি বান।

ৰাজে হাঁ, কলিকাভার সর্বজ্ঞই ৰাষার ৰাভায়াত, পুৰাৰ্বেও ৰাবে যাবে বাই—

ব্ৰলাৰ অহুবাৰ আৰার বিধ্যা নৰ—লোকটা লেখাপছা সভিাই আনে। বললাম, ইা, এক্থিৰ তবল ডেকারে আগতে বৌৰাজারের মোডে আপলাকে বাঁৰী ৰাজাতে ওমেছি, আপোৱারী বাজাচ্ছিলেন। বহু ভাল লেগেছিল আৰার। 'এবন বাঁৰী আনি'—বলভে বাজিলান 'কীবনে আর ওনি নি', কিছু সামলে নিয়ে বললার, 'জীবনে ক্য ওমেছি'—

কৰাটা ভবে কেবলাম গ্যাসের আৰহা আলোভেও বুৰ্টা ভার একটু লাল হয়ে উঠল। বুক্ত করে চক্ত্ কৃটি অর্জনুত্রিক করে সে কাকে প্রধাম কামাল।

ব্ৰলাম না এ আমাজে, না তাঁর ওক্লকে, না কোন দেবতার উচ্চেত্র। বললাম, বেশ নিবেছেম আপনি। এ কোন্ ওক্লর কাছে শেবা—না তবু নিকের চেইাতেই ?

প্ৰথম পরিচয়ের আছাইতা ক্রমে কেটে আসহিল লোকটর।
বললে, এ আনার বাবার কাছে পাওয়া, বার্। শিবেছি
আমি অবন্ধ নিজের চেটাতেই, কিছ প্রেরণা পেরেছি, উভরাধিকারছত্তে পেরেছি আমি এ বাবার কাছ থেকে। তিনি ধ্র
ভবী লোক ছিলেন, প্রায় সব রক্ষর বন্ধ বাকাতে পারতেন,
বাঁদী অবন্ধ তিনি বাজাতেন না, বাজাতেন সব তারের বন্ধ—
রাগ-রাগিদী সবই তাঁর কাছ থেকে পাওয়া। বাঁদী বাজানো
আর বানানো অবন্ধ আমি নিজের চেটাতেই শিবেছি—

এই সময় একজন পরিদার এসে সর্বভ্র করে করেক মিনিট সময় আমাদের নষ্ট করে থিছে গেল,—কারণ বাঁদী লে কিনলে না। বাঁদী না কিনে তথু তথু কথা বললে বলি ব্যাপারীয় সময় নষ্ট করা হয়,—ক্ষমে আমায় বেলারও এ সভ্য।—মনে হভেট একটা ভি-বাঁদী বের ক্ষম্ভে বলনার লোকটকে। বাৰ কভ ? বেভ টাকা।

পকেট থেকে টাকাটা বের করে ভার হাতে দিরে বললার, বাঁশীটার একবার এক কলি বাজিরে দিন আপনি, আওয়াকটা একবার দেখে নি।

ক্ৰাচী বলা হয়ত আবার টিক হয় বি। লোকট যুহ হেলে বাৰীটা একবার যুখে তুলে নিলে। পরক্ষেই মনে হ'ল—আকাশ বেকে আবার কানে বেন এক পশলা সুবার্টি হয়ে গেল।

বেশী শুনতে চাওৱা উচিতও বর, তার সুযোগও নিলন
না। আর একটা ভবলডেকার এসে গেল, তা থেকে বাত্রী
নামল এবং ছট তরুণ এসে বাশীর দরদন্তর সুক্র করলে।
নিক্ষের বাশীট হাতে নিরে, পরের দিন নোটা বি–বাশী
আনবার কথা অরণ করিবে দিবে আনি সেদিনকার মত
লোকটির কাছ থেকে বিদার নিলাম।

পরের দিন সন্থার লোকটির কাছ থেকে নোটা 'ভি' কেনবার সবর ভার নামট জেনে নিরেছিলাম। পুরো নামটা অবস্থ প্রথমে সে আয়ার বলভে চার নি। প্রথমে বললে বি, শুহ।

হেসে বললাম, এ ও ঠিক দেশের দত্তর হ'ল মা—বংশের মামের চেরে বাপমারের দেওরা মামটারই এবামে কদর বেশী—

সামাভ একটু সংখাচ—ভার পরেই সলজ হাসি হেসে বলনে, ভৈরব শুহ।

নামটা একটু গেকেলে ভেবে হয়ত লোকট সকোচ বোৰ করেছিল, কিছ আমার মনে হছিল অভ কৰা। বিজ্ঞাসা করলান, আগমার কর হয়েছিল বুবি প্রভাতে ?

हैं।, कि करत कामरमन ?

আর নাম রেবেছিলেন বুরি আগনার বাবা ?

লোকট আন্তর্য হরে আমার বুবের বিকে ভাকিরে বললে, হাঁ, কিছ সব আগনি টক টক বলহেন কি করে বুবহি মা ত !

সেক্থার জ্বাব না বিষে বল্লার, বড় সুকর নার রাথ। হরেছে আপনার, নার্ঘাতার শিল্পান আর ক্রচির প্রশংসা করতে হব।

ক্ৰাটা ভবে লোকট ভেষম গুলি হবেছে বলে বৰে হ'ল না। জ-হট ভার ইয়ং কুকিভ হবে উঠল, বললে, কেম বলুম ভ ?

বলপাৰ, আপনি এত সহীতচ্চা করেছেন আর এটা বুবলেন না ? তৈরৰ হচ্ছে প্রতাতের একটা রাগের নাম, অন্য কথার বাকে বলে ভাররো, প্রভাতের নদনার সূত্র— বিশ্বদেশতার বদনা, বড় দিব্য গভীর এর রূপ। এক বৃহত্তে লোকটার বুবের বিরক্তি আর অবভির রেখা-ভলি নিঃশেষে বুছে গেল, বললে, ভাই ভ, এভবিৰ ভ কথাটা ভেষে বেধি নি—

ক্ষেকট বৃত্য কেতা এলে ইাড়িছেছিল, আৰ বিশেষ কৰা সেবিৰ হতে পাৱল না; কৰাৰ প্ৰয়োজনত আমান্ত তেমৰ নব, প্ৰয়োজন আমান্ত তত্ত্ব বাণী শোনা, আৰ সে-ও বে সে বাগ-বাগিনী নয়—সেবিনকার মত সেই আশোনারী—কিছ লে ভ করবাল দিয়ে বেধানে সেধানে হতে পারে না, লোকটিয় সলে তাব বেধে একদিন তাই শোনার সভাবনাটুক্ তথ্ বভ করে বাধতে চাই।

আর এই সভাবদাই আর একদিদ আমার জীবনে কেমদ আশ্রুষা রক্তে সকল হুরেছিল সেই কথাই আৰু বলব।

ভৈরবের সদে আরও ছ্-এক বার আমার অবঞ্চ বেধা হয়েছে, তার কাছ থেকে আমি আরও ছটো বাঁদী কিনেছি, আমার পরিচয়ও সে কিছু কিছু পেরেছে, কিছ কোবার বাকে সে, সে ববর আর আমি রাখি মি।

বিজয়য় হ'দিন পর একটা কলোনীতে গিছেছিলার প্রথান করতে আর প্রীতি জানাতে। দেখানে আমাদের করেকজন আত্মীর আতানা গেছে বাস করছেন। আত্মীর-বাড়ীতে বৈকালিক জলবোগ সেরে একিক-ওদিক একটু বুরে দেখছিলার। এসব জারগার ত্বতে আনার বেশ লাগে। বাইরের স্বকিছু থেকে বকিত হরে কেবল আত্মশক্তি মান্ত্র সম্বল নিরে মাহ্ম বিজেকে পুন:প্রতিষ্ঠিত করতে বে আরোজম করছে তা দেখে সভিটই আনন্দ লাগে। অথবা নাগরিক ক্রমেনতার খোলস-খনা বাংলার বিভিন্ন অঞ্চলের বিচিত্র রূপের এক অপুর্ব্ব সমাবেশ এখানে দেখতে পাই।

কিছুক্প এদিক ওবিক ঘোরার পর বাস-ইপের সামনে এক চারের দোকানে চুক্তে পছলার। বাস আসতে একট্ট্র দেরী আছে—তা ছাড়া সন্মার দিকে বাসে ভিডও বাকে ধুব। একট্র দেরী করেই বাব ঠিক করেছিলার। আসল কবা এবাবে এই চারের দোকানে বসে লোকের কবা ভনতেও আনার বেশ ভাল লাগে। প্রভরাং পেরালার পর পেরালা করে অভতঃ ভিন চার কাপ চা আমার এবানে অনারাকে চলতে পারে।

লোকানে বলে সৰে প্ৰথম পেৱালার চুর্ক বিৰেছি এমন সময় 'ও নৱেন্দর'—বলে বরে চুকল কে। কণ্ঠবর বেন পরিচিত। চেবে দেখি তৈরব। মুখ খেকে অমনি বেরিয়ে গেল—আরে আপনি।

ভৈন্নৰ আমান দিকে চাইভেই বুশিতে উভালিত হতে উঠল ভার বুব। সদে সদে ভার মুব বেকেও বেক্লল—বাযু, এবানে।

ভৈয়বের মূবে বাবু কথাটা অবত আনার ভেমৰ ভাল লাগল না। ভার নদে বভ পার্বক্য আহি রাবতে চাই, অধবা আমার বিচারনতে বতটা পার্বচ্য হঁওরা উচিত, বাবু ক্বাটা বেন সে বত ওলটপালট করে দের। তবু তবনকার বত কোন প্রতিবাদ না জানিরে বললান—হাঁ আমার করেকজন আত্মীর বাকেন এবানে, তাঁদের সন্দে দেবা করতে এনে-ছিলান—বিজ্ঞার পর—

ভৈরব মিণভির সুরে বললে—ভা বাব্ আমার ওবানেও একটু পারের গুলো দিভে হচ্ছে বে, আপনি এসে লোকাবে—

বললাম, ভা কি হবেছে—এখানে আমার বড় ভাল লাগে।···আপমার বাড়ীও এখানে বুবি ?

ভৈত্ৰৰ হাসল: ৰাজী আৱ কি করে বলি, বাৰু, একটু মাধা গুঁজবার হাম করে নিহেছি।

লোকানের মাকে আর প্রাণ বুলে কবা বলতে পারহিলাম
না তৈরবের সলে। চারের দাম বিটারে বাইরে আসতেই
তৈরব আবার চেপে বরল, চলুন বাবু—কাছেই আমার বাড়ী
—পেরেছি ববন আপনাকে, কিছুতেই ছাড়ছি না।

ভৈরবের আন্তরিকভার মুখ হজিলার আমি—কিন্ত ভেবে পাছিলার বা —এবন কি পেরেছে লে আয়ার কাছ থেকে বাতে লে আয়ার এবন ভক্ত হরে উঠতে পারে। বাই হোক—ভৈরবের আহ্বানে 'না' করতে পারলাম না, তা ছাভা মনে মনে কৌতুহলও হরত ভিল—বাভীতে কি জীবন লে বাপম করে তা দেখতে।

গতিরাহাটা বেন রোড ছেকে গলিতে চুকে তৈরব আর এক বার বাবু বলভেই আমি বনক দিরে উঠলাম —দেপুন ভৈরববাবু, আপনি ভল্লোকের ছেলে লেগাপড়া জানেন— আমাকে এননি বাবু, বাবু—করা আনি পছল করি না। আমার পরিচরও আপনি পেরেছেন—ভেমন কিছু হোমরা-চোমরা আনি নই। দরকার হলে আনাকে কল্যাপনাবু ডাকভে পারেন—আর বলি বেশী আপনার বলে মনে করভে পারেন—ভা হলে দাদা বলভে বাবা দেশি না।

বেশ, ভা হলে আমাকেও আপনি বলবেন না আপনি, ভগু ভৈরব বলে ডাকবেন—আনি ভ আপনার কভ ছোট।

चाळा, चारे करन ।

মনটা গুলি চহেট উঠল: ভৈরবের সদে এই রক্ষ অভরদভাট চাইছিলাম আমি। কিন্ত একটু পরেই মনটা আমার আবার হঠাং বিচন্তে গেল—বৰন কামে এল ভৈরব ভাকছে—দাহ, ভাইনে—এইবার এইদিকে কিরভে হবে আনাদের।

ষদের উথা আর চেপে রাখতে পারলার বা—বললার, দেব তৈরব, এই লাহ, লাহটা বিঞী লাগে আমার কামে, তুরি আমার কল্যাণ-লা— অববা শুরু লালা বলে ভাকলে বুলি হব।

क्षित्र जातात है भव तार्थ कराल किया कि जाता । क्या

বললে সে একেবারে বাড়ীর সামনে এলে: এলে বেছি, বাবা, আপনি এক সেকেও বাড়ান—বেথে আসি আনি কি অবহার আহে !

বেশীকণ গাঁড়াতে হ'ল না আমার—প্রায় পরকণেই ফিরে এসে কেমন একটু হেসে বললে, আহুন দালা, আহুম—

হাসহ বে !

আর বলবেন মা—কাপভটা পালটাতে বলছিলার—ভা ও কিছুতেই ওমলে না, বলে—বেমন আহি তেমনি বাক্ব—কাপভ পালটানো ত আটিফিসিরালিট—

আৰিও হাসতে হাসতে ওদের বরে চুফলার। চুকেই বাফে দেবলার ভাকে দেবেই কারো বুবতে অসুবিবা হর না— ভৈরব এরই মুবের কবাটা হবহ আর্ডি করে শুনিরেছে আমার অর্থাং ইংরেশী শক্ষটিও এরই উচ্চারিত। দেবেই বনে হ'ল আর মঞ্জা কাপড় পরে দেবী সরস্থী দাঁভিয়েছেন আনার চোবের সাম্মন।

বুৰে মধ্য খিভ হালি। হাত জোড করেই নম্ভার করলে মেরেট। প্রতিনমন্থার করলাম। তৈরবের সলে ছমি বলে কথা বলতে হাফ করেছি, কিন্তু বরলে এত ছোট হলেও রীতিমত ভাবতে হার এর সলে কথা বলতে মধ্যম পুরুষের কোন্ শব্দটি ব্যবহার করা উচিত—শিক্ষা এবং ক্রচির এমন একটা দীপ্তি রবেছে এর মুবে।

ভৈরবের দিকে চেরে যুহু হেসে বললাম, ভৈরব, আমার এ ছোট বোমটির মাম কি ?

ৰেৰেট হাসল। বছ মধুর সে হাসি। সে-ই খবাৰ দিলে, আমার নাম শাভি।

শান্তিই বটে—মনে মনে ভাৰলাম আমি: চারদিকে তবন ক্রম্ভ একবার চোব বুলিরে নিরেছি আমি। রাগিপ্পের চালি হাওরা বাঁশের বেড়া দেওরা হোট বরবানির এক পালে এক তক্তপোষে নাভিতত্র একটা বিহালা পাতা— ভারই নীচে একটা কলচোকীতে সোলার বত করে নাজা বালা বটা বাটি গেলাস, বক্বকে পেরালা ভিশ। বেড়ার গামে ছাল বেকে একটা বুলান বাঁশের আলনার আব্যরলা ও করসা ক্রেড়টা ভাষা কাপড় সাড়ী রাউজ সারা। বেদিকে অভ্যােষ ভার উপেটা দিকে একটা হোট বেকে ঢাক্লা বেওরা একটা হারনামিরামের বাল ও একটা টাইনপিস্; আর ওদিক্কার দেরালে ঢাক্লা দেওরা একটা সেভার বুলানো। ওদিকে নজর পড়তেই বলে বসলাম, বউষা বাজাম বুলি ?

শাভি সদে সদে বলে উঠল, এই যে একটু আগে বললেন, আমার বোন, বলে বছ হাসল।

ৰোদ আর বউবাতে তকাং কি আছে ?

ভা আছে বই কি—বউমা বললে ওঁর সম্পর্কটাই বছ হয়ে ওঠে, আমি হয়ে বাই ছোট।

**w:--**

বলে হো হো করে হেসে উঠলাম—হার মানলাম দিনি।
শাভি বললে, আর একটা ভূল করলেন দালা, আমার
সম্বন্ধে বলভে গিরে 'বাজাম' বলা আপনার উচিত হর নি,
বলা উচিত হিল, বাজার; বোনের সদে আপনি আপনি করে
কেউ কথা বলে না।

ন্তবে মনটা যেমন জ্জিয়ে গেল, বিশহবোৰ করলাম ভভোৰিক। হেলে বললাম হার মানতে হ'ল, বোমটা।

আমার মুখের কথা কেন্ডে নিরে ভৈরব হাসতে হাসতে বললে, হার মানভেই হবে আপনাকে, উনি যে সরবতীর মানসকলা, মুক্তিতে পেরে উঠবেন না ওর সঙ্গে, আমাকে কথার কথার—

আ কুঁচকে অপান্ন দৃষ্টিতে শান্তি শানন করলে তৈরবকে, ভার পর আমার দিকে চেরে বিছানা দেখিরে বললে, বসুন, দাদা আপনি, আমি একটু চারের জল চাপিরে আসি—

ভৈত্তৰ অধনি টিগনি কাটলে, দাদা, দাদা ত করছ, কিছ এদিকে যে হাজ কোড় করে নমস্তার করলে দাদাকে, বিজয়ার পরে একটা—

শাভি অমনি লক্ষা পোৱে ছুটে এসে পাৰের কাছে এক সভক্তি প্রণাম করে গেল।

শান্তি বারান্দার চারের জল গরম করতে গেল, আমি একটা গিগারেট বরিছে বললাম, শান্তি গাম বাজনা ছই-ই জানে বুঝি ?

ভৈরবের চোধ মুখে যেন একটু লাল আভা দেখা দিরে
নিলিরে পেল, বললে, গান বাছনা নোটামুট এক রক্ষ লবই
ছানে, ভবে সবচেরে বড় কথা, স্থরের একেবারে পাগল।
একটা ভাল সুর শুনলে একেবারে কাঁদভে বসে যাবে।

रावामा (गर्क रकाव अन, तन्त्र, कान हरन मा रनहि -

ভৈরব যুদ্ হেনে উতর দিলে, মা না, ও সব আর বলছি
মা আমি। ভার পর আমার দিকে চেরে অহুচ্চ কঠে বললে,
ওর পরিচর ভগু ঐটুকু নর, লেখাপড়া ওর কাছে বলে হল
বংসর আমি শিখতে পারি: ও এাজুরেট আর আমি আই-এ
অবধি পড়েছি—

শান্তি এবার খলত একবানা কাঠ নিবে উঠে এল, দেব্য ভাষা।

আমি হেসে উঠলাম, মা মা, শান্তি ভূমি কিরে বাও, আমি ওকে শাসম করে দিছি: একজন প্রাজুরেট ক্রমও একজন আই-এ পড়া ছেলেকে লশ বংসর পড়াতে পারে, বড সব ইরে—

'আপৰিও ওর পক বিলেন'—বলে অভিযানের কারার প্রর বিরে পাত্তি বারালার কিরে গেল – আৰি হাসতে হাসতে ভাকে নাৰ্যা দিতে বারালার বেরিবে এলাব। দেবি শাভি হেঁট মুবে উছ্লের বারে বলে সভাট কাঁগতে—

বিমৰে আৰি ওকে সান্ত্ৰা দিতে তুলে গেলাৰ, আৰাৰ কেবলই মনে হতে লাগল, আৰি আছ বেন এক স্বপ্ৰলোকে এসে গেছি,অধবা সভাই স্থা দেবছি।

ক্ষেক সেকেও পর আমি আমার পূর্ণস্থিৎ কিয়ে পেলাম, ওকে সাজুনা দিবারও কিছু নেই, ও ত এ হংবের কালা কাঁদছে না। ওর কালার মূল কারণ বন রহুছে আবল্ল।

এই বার ওর উহনের দিকে নজর পড়ল। আল দিছে ও পাহাড়ে ভরল বাঁশের কুচি দিরে, যে বাঁশ দিরে ভৈরব তার বাঁশী তৈরি করে। বারান্দার অপর পাশে পাঁচ-ছর হাড লাঠির হত লখা ঐ বাঁশেরই বোঝা বাঁধা ররেছে।

শান্তির এ কালার আমার কিছু করবার নেই বুবে আহি বেকুবের মত আবার খরে কিরে এসে বসলাম। ভৈছবকে কিজাসা করলাম, আৰু আর বেরোও মি—না ?

না। সন্মীপুজোর আগে আর বেরুব না। এ সময়টা আমাদের দেশে আত্মীয়বজনেরা সব দেখাগুনো করতে আসেন —নিজেনেরও বেতে হয়।

হেসে বল্লাৰ, স্থানি, আমিও ত ভোষাদেৱই মৃত ও অঞ্লেৱই লোক !

কোৰাৰ বাড়ী ছিল আপনার ?

ষ্পোর। --- শান্তির পিড়কুলের বাস ছিল কোবার १

ভৈরব একটু গন্তীর হরে উঠল যেন: ওঁরা এইখানেরই লোক।

শান্তি বারান্দা থেকেই প্রতিবাদ ভানিত্রে বললে, মা, দাদা না, ভামাদেরও ভাদি নিবাস ছিল করিদপুরে।

করিদপুরে, কোঝার ?

মাদারীপুর সাবডিভিশানের রতম্ভাদা।

রতন্তালা । রতন্তালার ত আমার মাতুলালর । রভন-ভালার কারা বল ত ?

শাভি বারাকা থেকেই উভর দিলে, রভনভালার সনাভন বাঁজুজ্যের নাম ভদেহেন ? আবার বাবা তাঁরই বংশবর। সনাভন বাঁজুজে হিলেন আবার প্রশিভাষত—

বিশারের মাত্রা জ্ঞামেই বেড়ে চলেছে: সমাতন বাঁড়ুজে ! বাঁড়ুজে, আর এ দিকে হচ্ছে গুড়—ত্রাকণ আর কারছ!

নিক্ষেকে সামলে নিবে শান্তির কথার কথাবে বললাম—
হাঁ, সনাতন বাঁচুক্ষের নাম ভনেতি বই কি—ভিনি ভ
ওবানকার ভাকসাইটে কনিলার ছিলেন। পরক্ষেই একটু
কৌতুকের লোভ সংবরণ করতে না পেরে ভৈরবকে বললাম,
ভোনাদের ভা হলে বেবছি এ লোভ ন্যারেক্ষ্ণ, সুবই ভাটিটিক্

ভোষাদের —বলেই একটু উচ্চ কঠে ছেলে উঠলাব। ভৈরব ভেৰম গ্রীয় হয়ে হইল, ভোষ ভবাব দিলে না।

আমিও এর পর—কি বলতে কি বলে বসব—তেবে কিছুকণ চূপ করেই রইলাম। শাভি পোরালা নিভে বরে এল। নিজু হাতে তৈরি বাবার বের করলে। একটু পরে একবানা বালার উপর মু' কাপ চা আর এক প্লেট বাবার নিবে বরে এল। এতকণ চূপ করে বাকার পর এবার আবার কবা বলবার হুবোগ পেলাম আমি। বাবারের দিকে গৃট্ট বিরে বাভিকে বললাম, এ সব তৈরি করতে ভাম ভূমি ?

বছ হাসল শাভি: কিছু জানতাম, বাকী শিবে নিবেছি।
প্রথম বিন এসেই একের অনেক কিছু জেনে নিবেছি
বলে বোৰ হয় একটা অপরাবের তাব মনে চেপে বসেছিল।
আলাপ বেশ সহজ হরে উঠছিল না, তরু জোর করে
শাভিকে বললান, আজ রাত হরে বাজে, আর বিরক্ত করতে চাই না, এর পর বেধিন আসব গান বাজনা শোনাতে
চবে কিছু।

শাভির রুধ থেকে ছেলেমাছবির ভাব কেটে গিরে আবার সেই প্রথম দেখা বুদ্ধির দীপ্তি আর গাভীর্ব্য সূটে উঠেছে। কোন রকম ভাকামি না করে শাভ কঠেই সে উভর দিলে, আসবেন, যেটুকু পারি ভনতে চাইলে শোনার বই কি, ভনতে চাইলে বাদের গুমোর বেড়ে বার আমি ভাবের দলে নই।—বলে অর্পূর্ণ দৃষ্টিভে একবার ভৈরবের দিকে চাইলে।

ভৈত্ৰৰ অধনি কৃত্ৰিষ বোষ দেখিতে বললে, বিছে অপৰাৰ, কেন, শোনাই যে আমি ভোষার বাঁদী ?

का बटहे ।

**परिमार्ग (क (यम वहे करत बदका यद करद मिर्ट्स ।** 

সাভে ন'টা বেজে গিরেছিল। আর দেরী করলে বাস পাব না। শেষ বাসধানা ১-৪৫এ আসে। স্করাং উঠতে হ'ল। হারিকেন ধরে শান্তি আমার এগিরে দিতে এসে বেশ আত্তরিকভার সন্দেই বললে, আবার আসবেন দাদা—রবিবার সভাার পর উনি বাভী বাকেন—

গান শোনাভে হবে কিছ।

—ৰলতে বলতে এগিরে বাহ্মিলার। শান্তি ওবান বেকেই বললে, শোমাব—আগমার লেখা বই বিতে হবে কিছ আমার, নইলে আড়ি—

কঠবৰে আবাৰ সেই বালিকার সারল্য কিরে এসেছে। বেভে বেভেই হেলে উঠলান: আহ্বা, আহ্বা নে হবে'বন। মনটা বেশ প্রসন্ন হবে উঠল, আনার সহবেও কিছু কিছু ভবেছে তা হলে ভৈরবের কাছ বেজে। নিজেও বোঁজ-ববর রাবে নিজর, লেবাগড়া ত জানে।

क्तिय जावाद गत्न गत्नदे विज-अभिरत विरच अलिकि ।

বাসে উঠবার আগে তাকে বলে এলান, নাননের রবিবারে মর, এর পরের রবিবারে আবার আসব। ---বড় আনকে ভাটল ভোরাদের এবানে—

ভৈয়ৰ প্ৰচ্যুভৱে বললে, আনাদেৱও বে কভ আনন্দ হ'ল এবন বোৰাভে পায়ৰ মা—পৱে এলে বুৰবেন। আনবেদ চাচা—

আসৰ---

বাস ছেকে দিলে। এদের এবানে বা দেবে গেলাম —সে রাজে তারই স্থৃতি আমার একটা গানের প্রের মত অভিত্ত করে রেবেছিল।

নির্বিষ্ট রবিবারে ওদের আমরণ রক্ষা করতে গিরে নিক্ষে লেখা ছ্থানা বই দিরে এসেছি—শান্তির গান বাক্ষণা ওনে এসেছি। ভৈরবকে বাঁশী বাক্ষাতে বললাম, সে কিছুভেই রাজী হ'ল না, বলে 'রুড' নেই বাদা।—শান্তির গানের সলে অবশু সে বাঁশী বরেছিল, কিন্তু ভাতে ঠিক ভৈরব ভাতের সেই বাঁশীর প্ররু আসে না।

কৰে তার মুভ আগবে গেই আশার প্রার প্রতি রবিবারেই ওদের ওবানে বাওরা পুরু করলাব। তা হাড়া ওদের হ—ক্ষনেকই আমি দত্তরমভ ভালবেসে কেলেছিলাব। তাদের এই অভূত রহস্তমর কীবনও আমার কাছে কম আকর্ষণের ছিল না। যত দিন বাছিল ততই বেন আরও বেশী রহস্তমর হয়ে উঠিছিল।

এদের জীবনের অনেক কথাই আমি বীরে বীরে জেনে
নিরেছি। এদের বিষেটা বে অসবর্গ সেকথা অবস্ত আমি
প্রথম দিনই বুবে গিরেছিলান, কিছু গাছির দিক দিয়ে সে বে
কি ছংসাহসিক সাধনার সিদি ভাবলে অবাক হতে হয়।
আমারই মভ সেও ভৈরবের বাঁদী ভানেই প্রথম আফুট্ট হয়—
আফুট্ট হর বললে হয়ত কিছুই বলা হয় না—সে একেবারে
পাগল হরে বার। প্রথম দিন ভৈরবের বাঁদী ভানে ডাইভারকে
বলে সে বোটর বামিয়ে ভছ হয়ে বসে বাকে। লে রাজে
নাকি মুরুভে পারে নি। পরে সন্থার পরে বেভাবার ছলে
বোটর নিয়ে সে পথে পথে ভৈরবের বাঁদী ভানবার জন্যে মুরে
বিভাত—কোন দিন ভাগ্যে বাঁদী পোনা ভুটভ, ভোন দিন
বাঁদী বিজ্ঞানত ভিরবকে লে দুর বেকে দেখেই কিরে বেভ।

বছ একটা ইন্ডাইরাল কার্বের ব্যানেখিং ভিরেটার, নাভির বাবা প্রাইই বাইরে বাইরে বাক্তেন। নাভি আর ভৈরবের মধ্যে কি করে বে আলাপ পরিচর এবং পর বিনিম্নত ক্ষেত্র হ'ল সে অনেক কথা। যনির্চ্ছা হবার পর প্রার প্রভিদিনই দীর্ব পর লেখার পালা চলে। ভৈরব ভানিরেছিল ভার হৈতের কথা, নাভি ভার উভরে বলেছিল, ওলব কোনো

কিছুর বরকার নেই···শান্তি একদিন তৈরবকে নিভিন ম্যারেজ এই অস্থনারে বিধে করে বসন।

বিবে হবে বাওয়ার পর মি: ব্যানার্ক্সি প্রবাসে শান্তির চিট্ট পেলেন—বাবা, ভালবেসে আনি এক স্থর-সাবককে বিবে করেছি। রাগ করো না—আন্মর্কান করো আমরা বেন স্থবী হই।

মি: ব্যাদান্দি পাকা লোক। অভরে ছলে গেলেও বাইরে বিরপ ভাব কোবান নি ভিনি। জানাইকে নিজের কার্মে চাকরি বিরে প্রশুভিন্তিত করতে চেরেছিলেন, কি কারণে বুরলান না তাঁর সে চেঙা সকল হর নি। ব্যাপারটা থানিকটা রহজের মতই ররে গিরেছিল আনার কাছে। আর আকর্ষ্য হ্বারই বা কি আছে, একের সব কিছুই রহজ্বর।

ওবের দীবনের কোম কথাই কোর করে দামতে চেটা করি নি আমি। এক দিন হঠাং কেন দামি না, সেই হুর্মাভ হরে গেল। সে রবিবারে কলোমীতে আমার সাবেক আমীর-দের সলে থেখা করে একটু সকাল সকাল এলে গিরেছিলার ওবের ওখামে। তৈরব সবে মাজ বাদী কিরল আর শাভি বেরিবেছে বাদার করতে। ওদের হ'লমের কাছেই বরে চুক্রার আলাদা চাবি থাকে।

ভৈত্ৰৰ আমাত্ৰ আতে নিজেই চা তৈত্ৰি কৰে নিজে এল। চৌহলী থেকে কিছু কান্ত্ৰাদাৰ কিলে এনেছিল ভৈত্ৰৰ; শাস্তি বা কি এ থেতে বন্ধু ভালবালে।

বাদান সহবোগে চা খেতে খেতে হঠাং বলে বসলান, শান্তি ভা হলে ভাজু বাদামের কথা ভূলতে পারে নি ?

देक्यन ट्रांग केंग्रेन : ना।

সুবোগ পেরে বলনাম, আজ্বা, ভাই, একটা কথা আরি প্রায়ই ভাবি, কিছ টিক বুবে উটি মা।

তৈরব জিজাপু নেত্রে ভাকাল।

কথাটা হক্তে নানে দেবতে পাজি শাখি ভার পূর্ব-জীবনের পুৰবাছক্ষ্যের আখাব একেবারে ভুলতে পারে নি, অবচ এ সব ভোগ করবার প্রবোগও ভার ছিল। ভোষার বভর না কি ভারই কার্বে ভোষার চাকরি বিভে চেরেছিলেন, লেটা নিলে ভার—

ভৈত্ৰৰ আমার মুখের দিকে চেরে একটা দীর্ঘনিঃখাস হেছে বললে, কি করব, হালা, ও কিছুতেই রাজী হব না, বলে ভা হলে আমি ভোমাকে হারাব, লে আমি কিছুতেই সহ করতে পারব না। আশিসের বাবু বা বভ ব্যবসারীকে বিরে করতে চাইলে ভ আমি অনাবাসেই করতে পারভাব। লে ভ আমার বর্ম নর। বে রূপে ভূমি আমার কেবা দিরেছ— সেই রূপকেই আমি চির্হিন আমার জীবনের প্রবভারা করে রাবতে চাই। ভোমার অভ স্তিতে ক্রমা করতে গেলেই चनाक् हरद मिनाय चानि कित्रस्य क्या स्था । नननाय, कारक ननमा क्या, अ त्य चलात्यत कीनम, अ त्य बाहित्सात कीनम।

মান হেলে ভৈরব বললে, সে সব বলভে কি কিছু ৰাখ বেৰেছি, লালা—

कि बरम ७ ?

ও বলে, ভাতে হংগ কি, এ জীবন ত আনার কেছারত। ওর বারণা আমি অভ কিছু করলেই ওর হর ভেঙে বাবে, আমি আর ওকে তেমনি করে বাঁশী শোনাতে পারব না।

কিছ এ জীবনেও ওকে ট্রক্সত বাঁদী শোনাতে পার কি. বা ক্লাছ হয়ে আস—

আবার নাম হাসি দেখা দিলে ভৈরবের মুখে: পারি কি না ভামি না—ভবে চেটা করি—

কবে, কখন গ

মালে একবার, প্ৰিমার রাজিতে—রবিবার সভ্যার ছাড়া প্ৰিয়ার রাজেও আমি বরের বার হই মা, সেইদিন আদি ওকে বাঁদী শোমাই, ও আমাকে—

वनत्छ निर्व अक्ट्रे त्यस्य त्मन देख्वय ।

ধাষলে কেন, বল, বল---

আগনি দাদা, তবু আপনার কাছে আনাবের গোপন কিছুই নেই, সেইদিন ও আনাকে নিংশেবে নিজেকে উলাভ করে বিরে ভালবাসে, আর উনত্তিশ দিন ও আনার ওব্ অতিপ্রির বন্ধু, সাধী—

কিছুকণ ভব হবে তণু ওর মুখের দিকে চেরে বলে রইনান। তার পর এক সময় নিভমতা তল করে বলনান, তাই তৈরব একদিন আবি ভোনার বাঁদী তদেই ভোনার দিকে আরু ই হরেছিলান—বছদিন আবি ভোনার সে রক্ষ বাঁদী তনি নি—একদিন প্রিনার রাতে শাভির বভ আবাকেও প্রোতা করবে ভোনার বাঁদীর ?

হাসল ভৈরব: আপনার কোন অহুরোবে কি আহি 'না' বলতে পারি—

কি, কি জন্মবোৰ হচ্ছে বাবার ? বলভে বলভে বরে চুকল শাভি। সহসা আনার কৌচুক্বোৰ কেপে উঠল—বললাৰ, বলো না বলো না ওকে ভৈরব, হঠাং আনহা ওকে একেবারে চমক লাগিরে বেব।

এর দিন পাঁচেক পরেই এক পূর্ণিমা পাওরা গেল। নাবের পূর্ণিমা। সন্ধার একটু পরেই আমি ওকের ওবানে সিত্তে হাজির হলাম। রাজির রায়া পাভি আনেই লেরে রেবেছিল। আমি গেলে ভগু আর এক বার চা করলে।

সৰাই বেদ কেন্দ্ৰ গভীৱ। আমি বিজেও ভেন্ন বেছ

কৰা বলতে পাহছিলাৰ যা। বৰ্পত্যাশিত বিষেৱ আকাজনাৰ বেদ যদে যদা বনিষে আসভিল।

বাইরে সেধিন—'চল চল কাঁচা আক্র লাবনি অবনী বহিরা বার।' আবাদের প্লান হিল—এই ববুর, তরা ভোহনার বেল লাইনের পালে উন্ত প্রান্তরে বলে বাঁলী ভ্যন, কিছ বিলার নেবার আগে শীভটা সেধিন আবার একটু ভেঁকে প্রেছিল ভাই প্লানটা আবাদের পালটে দিছে ত'ল।

গৱৰ কাণকের পার্টের উপর একটা কাম্পার এ টে তৈরব বাটের এক পাশে একটা বুঁটতে ঠেন দিবে বনল, আমরা বনলাম ভার অপর পাশে হই কোণে। কবা বলহে না কেট। ভৈরব চক্ হটি মুক্তিভ করে বলেহে···বীরে বীরে এবার সে বাঁশীট ভূলে নিলে মুবে। আমার পুরামো বুকটা শালিভ হভে চার বেন—শাভির দিকে চেরে দেবলাম একবার লে হাভ হটি কোলের উপর ভূলে নিরে ব্যানহ হরে বলেহে—

বরের সেই গভীর শিশুরভা তল করে সহসা বাঁশী বেজে উঠল। প্রথমে অনেক টালা টালা কেমন যেন এক কারার বভা--লা, লা--কারা বললে টিক হবে লা, কেমন বেন মন উদাস করা, ভাও নর--কেমন যেন এক গভীর অস্তাপের হয়। বীরে বীরে হার কলাদে অগ্রসর হতে পাকলে বোঝা সেল প্রবী বাকছে---

সারা দিনটা কেটে গেল—করবার মত কাছ কিছু করা হ'ল না, স্ব্য উদিত হরে দিব্য আলো বিকীরণ করে তাণ দিরে আঁবার-সব্ফে মিলিরে গেল। এমনি করে আমাদের জীবনস্ব্যিও অভ্যতিত হতে চলেহে, কিছুই যে করা হ'ল না জীবন—ক্ষটা যে র্থাই কেটে গেল।

সূত্ৰ উদান্ত হতে হতে এক সমত্ৰ হঠাৎ কোৰাৰ বিলিৱে পেল। বুকে বইল ভগু ভাৱ বহাব।

কিছুক্ৰ ভবু জনতা।

মিনিটবানেক পরে ভৈরব আবার বাঁপী মুবে ভুলল।
এবারের পুরে—আপেকার সেই ভাবটাই যেন গভীর, আরও
গভীর করে ভুললে, ভার সলে আরও কি যেন মেশানো
আহে। পুরলান পুরিরা বাজহে শেষে বাজল বেহাগ।

মিনিট পানের পারে বেছাগের কারাও শেব হবে গেল---। কৈরব বাঁশী থামিরে একবার শান্তির একবার আমারে মুখের দিকে চাইল। শান্তি সুপ্তোখিতের মত ক্ষিত কঠে বললে, লেইটা—

প্রার সলে সলেই আবার মূব বেকে বেরিয়ে গিয়েছিল— বৌবাজারের যোগে বে প্রতী। বাজিয়েছিলে সেই—

কণা বলা আর আবার শেষ হল না,—তৈরব তথ্য চোণ বুকে বাঁদী তুলে নিরেহে মুণে—কম্পিত বক্ষে ভাবতে লাগলাম, আবার নির্দিষ্ট স্থর বাজার বদি শান্তির লাগবে আবাত, আর শান্তির ইনিতমত বাজার ত আমি পাব মনংকই—

বেশীকণ ভাবতে সময় পেলাম মা। পরমূহুর্তে দেখি ভৈরব
আমার সেই অভিপ্রির প্রথম দিনের শোলা আশোরারী
ফুক্ল করেছে। এক মুহুর্তের কন্ত শান্তির মুখের দিকে
ভাকিরে দেখলাম বিরক্তি বা অসভোষের আভাস তাতে
বিলুয়াত্র মেই। পরমূহুর্তে শান্তির মত চক্লু মুক্তিত করে
আমিও এক মহা আবির্ভাবের আশার হার উমুক্ত করে উমুখ
হরে রইলাম। বাঁশী বাক্তে পুক্ল করেছে— মুদুর বেকে যেম
কার আহ্বান আসছে। সংসারের সকল চাওরা পাওরা,
সকল বাঁবন ছাছিরে মেওয়ার আক্ল আহ্বান। উদাস করা
সেই পরম প্রির যেন ক্রমেই কাছে আসছে— বড় কাছে এসে
গেছে সে। ক্রমের সকল বাঁবন বেন আলগা হরে বাছে,
সার্গুলি সব বুলে বুলে বাছে, এ কি হ'ল আমার, আর একট্ল
হলে সকল অনুভূতিও বে হারিরে কেলব আমি। বুক্টা মুই
হাতে চেপে বরুতে ইচ্ছা ক্রহিল, কিছু সে শক্তিও আর মেই
…মিঠুর বাঁশী বেক্লেই চলেছে—

প্রায় আব ঘণ্টা পরে বাঁলী থামল। একটু ছির ছবে চেরে দেখি শান্তি তথমও আবা উপুত হরে ছই হাতে মুখ চেকে কাঁদছে, বাইরে চেপে রাখলেও অন্তর্নী আমারও টিক অমনি কারার ভূলে কুলে উঠছিল—তৈরবের দৃষ্টি তথু বদির, ব্যামভিমিত।

সে রাজে বিদার শেবার আবে ওবের সদে কথা বলা আর সভব হ'ল লা, মুথ ওেকে বেরুল ভবু, 'চলি'---



## অসুর জাতি

### ब्रीटेनरमस्विक्य मामश्रश

বিহার রাজ্যের ছোটনাগপুর অঞ্চল বহু আদিম জাতির বাসজ্মি। ইহাদের মধ্যে সর্বাপেকা কম পরিচিত এবং জনসংখ্যার লঘু অস্থর জাতি। অস্থর নাম ভারতবাসীর নিকট অপরিচিত নয়, কিন্তু ইতিহাস-প্রসিদ্ধ অস্থরদের সঙ্গে এই অরণ্যবাসীদের কোনরূপ যোগস্তু স্থাপন করা সঞ্জব হয় নাই।

वाँ हि अ भागारमी स्वमा এवः ऋवश्वका हिटहेव आखवर्जी অখনাকীর্ণ পর্বতগাত্তে কুদ্র কুদ্র পল্লীতে ইহারা বাস করে। পরী ৰলিলে অবশ্র এগুলির গৌরবই করা হয়, কারণ অধিকাংশ প্রী চার বা পাঁচ ঘর বাদিনা লইয়া গঠিত। এক ঘর লোক বলিতে সাধারণত: স্বামী, স্ত্রী ও অবিবাহিত পুত্রকক্ষা বুঝায়। এক পল্লী হইতে অপর পল্লীর দুঃত ন্যুনাধিক চার-পাঁচ মাইল এবং উচ্চতার ব্যবধানও স্থানে স্থানে এক হাজার হইতে দেড হাজার ফুট। বাসস্থানের এই হুৰ্গমতা অস্থৰ জাতিকে বৰ্ত্তমান জগৎ হইতে এত দুবে বাধিয়াছে যে, উরাও, মুগু প্রভৃতি পার্বত্য ভাতিকে আমরা বে অর্থে অরণাচারী বলিয়া থাকি এই সব জাতি ও अञ्चरक्रव । तहे अर्थ अवनाहां वे वनाहरन । अवस्मव ফলমূল আহরণ, বন্ধ পশুপক্ষী শিকার, জলল কাটিয়া শক্তাৎপাদন, গোচারণ ইড্যাদি জীবনধারণের বাবতীয় कार्र्स रेम्मेन इडेरफ नार्कका अधास सम्मानन मरमडे डेडारमन ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ । বেশভ্যায়, আচার-ব্যবহারে স্থানীয় অন্যান্য चातिम चिवानीरत्व मर्क हेशालत मिन चरनकथानि। ভথাক্থিত সভা মানুষের সমপ্রাায়ে স্থান না দিলেও कर्छात मत्रन कीवन वागरन वर्ष धरे माञ्चवक्रनित क्रवतनव পরিবেশে বেশ মানায। "বনোরা বনে ক্রন্থ" কথাটি মনে ছয় ইহাদের বেলায় খুব ভাল থাটে।

শহরের মোটাম্টি তুই ভাগে বিভক্ত—(১) বীর শহর বা লাত শহর এবং (২) সোইবা শহর অথবা বিরবিয়া শহর। উত্তর দলের জীবনবাত্তা-প্রণালী এক প্রকার হউলেও বীর শহরেরা শনেকেই প্রাচীন পদভিতে গোহ নিদাশন করে এবং বিরবিয়ারা কেচ কেচ লোই নিদাশন করিলেও লাক বাটিয়া পাহাড়ের পারে বেওঁড় চাব করাই ইহাদের শন্তম প্রধান জীবিকা। ভারতের পূর্বানীমান্তে এই প্রকাবের চাবকে জুম চাব বলে। এই ছুই শহরে প্রেণীর

ৰে ভাষায় ইহারা কথা বলে পভিডেরা ভাহার নাম

দিয়াছেন অহবী ভাষা। মুগু ও সাঁওভালী ভাষার সহিত ইহার মিল অনেকটা। ইহা ছাড়া প্রত্যেক অহব আবাল-বুক্তবনিতা ছোটনাগপুরী হিন্দীতে কথা বলিতে পারে।

বীর অত্ব নিজেকে বিরবিং। অপেকা বড় মনে করে। কারণ তাহার পূর্বাপুরু: "বীর অত্বর" বোড়ার লাগাম তৈয়ার করিবার জন্ত ভগবান ছবী কর্জ্ক নিযুক্ত হয় এবং অয়ং ভগবানই বীরকে সেই প্রয়োজনে লোহ নিজাশন-প্রথা



बक्षे बद्ध स्वी वृत कृतिकाद

শিধাইয়া দেন। বীর মুট্যাখাতে বড় বড় শ'লগাছ জুণাভিড করিয়া ভাষা পোড়াইয়া কাঠ কয়লা তৈরার করিত এবং ভাষার সাহাব্যে ছোট চোট চুলীতে লৌহম্ম প্রস্তুর প্রলাইরা লৌহ নিছ শন করিত। সেই গৌহ পিটাইয়া লাগাম ভৈয়ার করিত এবং পলা লোহার পিগুই ভাষার ধাল্য ছিল। সেই আদি পিডা বীর হইডেই ব'শপরস্পার্ক্তমে লৌহ নিছাশন-প্রণালী বর্জমান অন্তবেরা প্রাপ্ত হইয়াছে। ৰধাৰণ ৰূপ বাড়িয়াছে। এই সব মূল সিভ খাইয়াই এক-প্ৰকাৰ চলিয়া যায়।

এ সকল ছাড়া প্রতি অহব-গৃ:ছই পালিত শৃকর, ছাগল, গল্প, গ্রুপী ইত্যাদি দেখা বায়। চরম অভাবের সময় ইহারাও কম সাহাব্যে আসে না। বেঁহু কেহ আবার বালের চুবড়ী, শাল, সেন্ডনপাতার ঝু'ড় ইত্যা'দ তৈয়ার করে। ঘরের কাজেও লাগে, হাটে বিক্রয় করিতে পারিলে মল ক্রয় করিবার প্রসাও যোগাড় হইয়া বায়।



বিবাহৰোগ্য অপুর মুবক (পলার মন্ত্রপুছের হার)

হাটে বাওয়া ব্যাপারটা সংজ্ঞানাথ্য কাজ নয়। কারণ
অক্সবপরী হইতে ইহার দ্বত ছয় মাইল হইতে পঁচিল
মাইল পর্যন্ত। কিন্তু তাহা হইলে কি হয় প্রভি হাটে
অবস্থিত সরকারী ভাটিখানা পরম আকর্ষণের আন। তাই
দেখা বায় কেছ কেছ প্রত্যুবে হাটের উদ্দেশে বাজা করিয়া
সভীর নিশীথে অথবা পরের দিন বাড়ী ফিরিয়াছে। অবশ্র এই সময়ের অধিকাংশই কাটিয়াছে পথ ইটিয়।

মদ চোলাই কথা নিবিদ্ধ কাজ। কিন্তু মন্থা ফুল ফুটিবার সময় বোণঝাড়ে লুকাইটা ছুই-এক বোডল মদ চোলাই করিয়া বাগে না এইরূপ পরিবার কম। সাকা বংদর হাড়ভাকা পবিশ্রার করিয়া ছুই বেলা য'হাকা পেট ভরিয়া ঝাইডে পাতে না মদের নামে ভাহারা সব ভূলিয়া বায়। মদ কেবল ভাগা দব ভীবনের কঠোরভার বিশ্বারক নয়, ইয়া ভাহাদের ধর্মজীবনের অপরিহার্য উপকরণ।

অহুবরা বিখাস করে, মৃত্যুর পরে জীব মৃত্যুপূর্ব্ব আরুডি লইয়াই পৃথিবীতে থাকে। দেহটিই কেবল হাওয়া-বাভাসের यक न्मान कवा बाब ना। यक भूक्तभूक्तववाहे छाहात्मव भवस শাখীৰ এবং ভাচাদের নিমিত্ত প্রতি অপ্রবৃত্ত একটি প্রবোষ্ঠ পথক করা থাকে। তাহাকে "ওরা ভিতত" বা ভিত্ত-ঘর বলে। এই ঘরে প্রয়োভনীয় ভিনিসপতারি वाथा बाब, किन बाल किन लाय ना। भवत-भार्कान গৃহক্রা এই প্রকোঠে মুহগীর বাচ্চা বলি দিয়া মদ পরি-বেশন করিয়া মৃত পৃর্বাপুরুষগণের তৃপ্তিবিধান করে। ভাহাদের বিশাস জীবনের প্রতি মৃহুর্ছে মৃত পূর্বপুরুবেরা খলক্যে থাকিয়া আপন সম্ভতিগণের কল্যাণ্যাধন করে। ইহা ছাড়া অস্তররা বিখাদ করে প্রতি গিরিশুক, গভীর অকল, নদীনালা, বড গাছ, পর্বতগুহা ইত্যাদি বৈশিষ্ট্যসম্পন্ন প্রত্যেক জিনিসেরই একটি করিয়া অধিষ্ঠাত দেবতা আছে। हेशामव (कह (कह माञ्चावत एकामधावी, तकह तकह भक्त-कारायत माराय (कह (कह वा निवालक। तमहें बना अहे সমন্ত দেবতার তথার্থে সারনায় অথবা "ভিজর-ঘরে" প্রতি भवव छेभनरक हारे मुक्तीय बाक्ता वनि स्वथ्वा हम **७ म**र निरंदमन कदा इह। अर्थाएनका खद्यावह अनुदावका कुरे हि-(১) বাঘুত ও (২) চুৱাইল। প্রথমটি ব্যাত্রদারা নিহত বাজির প্রেডাত্মা এবং দিভীষ্টি মৃত গর্ভবতী স্ত্রীলোকের প্রেতাত্ম। ইহাদের পরিতৃষ্টির জন্য বইপা নামধের বৈছ



ভ্তপ্ৰেভের ভূটবিবাদেরত বইগা বা পুরোহিত

বা পুবোহিত আছে—তুক্তাক আছে। বস্ততঃ মদ না হউলে এই সমস্ত কৃত্য হয় না। স্বাং ভগবানই নাকি ভাহাদের আদিপুক্ষাকে মদ ভৈয়াবীর প্রাণালী শিখাইম্-ছিলেন। বেওঁই চাবই ত ছিল তখন প্রথান উপভীবিকা। সেই বেওঁছে বড় বড় শশা উৎপদ্ধ হইত। এই শশার এক মুখ কাটিয়া বাণু ( Ferment ) সাহাব্যে মদ ভৈয়াৰ হইত। চাউল, ভূটা, মহয়া ইত্যাদি হইতে মদ তৈয়াবি করা পরে শিবিয়াতে।

ভভাতত কার্ব্যে উপর পরলোক্ষাসীর কর্তৃত্ব সম্বন্ধে বিশাস ইহালের জীবনে এত প্রগাঢ় যে জন্ম-মৃত্যু-বিবাহালি বাবতীর বিষয় পর্যালোচনা করিলে ভাহার প্রমাণ পাওয়া বায়। ইহা ছাড়া প্রাকৃতিক ঘটনালির সংঘটন সমস্তার সমাধান সহজেই হইয়া বায় মহালেব ও ভলীয় সহধামনী পার্ব্বতীর কাহিনী অবভাবনায়।

এত স্ব সংগ্ৰপ্ত আপাত দৃষ্টিতে ইহাদের স্থাক্ত-ব্যবস্থার ক্রেটি কমই লক্ষিত হয় নাই। পরিবারের কর্তার কথাই সর্ব্বোপরি। তাহার কথাই অন্যদের মানিংগ চলিতে হয়। আবার ক্যেকটি পল্লীর বৃদ্ধ পুরুষদের লইফা পঞ্চায়েৎ আছে। পঞ্চায়েতে ঝগড়া, বিবাদ, অনাায় কার্য্যাদির বিচার হয়, শান্তিবিধান হয়—স্মাজে থাকিতে হইলে এই বিধান শিরোধার্যা করিতে হইবে। আবার সামাজিক বীতি- নীতির বিশেব কোন ব্যত্যর হইলে "কুটুমারেং" ভাকা হয়। অহন জাতির সমৃদর পরিবার হইতে বয়য় প্রক-প্রতিনিধির এই কুটুমারেতে উপদ্বিত থাকা নিরম। এই সমাবেশে বাহা ঠিক হইবে তাহাই সমগ্র ভাতির নির্দেশ বলিয়া গণ্য হইবে। কুটুমারেং আহ্বানকারী "লোটালার" আছে। সে এক লোটা জল লইয়া পল্লীতে পল্লীতে অহ্বর মাতক্ষরদের আহ্বান করিয়া আসিবে। সমাবেশে বয়স, বাক্চাত্রী এবং আথিক অবহা বিশেব প্রশিধানের বিষয়। এই তিন বিষয়ে যে ব্যক্তি উচ্চ সে-ই এই সব সমাবেশে নেতৃত্ব করে। সাঁওভালদের মত স্থাবিচালিত সমাজ্ঞানকগেটী ইহাদের মধ্যে না থাবিলেও শত শত বংসরের সংস্কার ইহাদের মধ্যে জাতির প্রতি অহ্বাগ ও ব্স্তাতালীকাবের মনোর্ভি স্পন্ত করিয়াছে। স্তরাং জাতীর সংহতিরক্ষায় ইহাদিগকে অধিক বেগ পাইতে হয় না।

# রাজগৃহ

### ক্রিশৈলেক্রক্ষ লাহা

ভণাগত, আৰু এসেছি ভোষার স্থৃতি-বিপ্লৃত দেশে, আবার কি তৃষি নৃত্ন করিরা ইড়াবে সমূবে এসে ? সিই শাভ গভীর কঠে ভোষার অমর বাণী মনে হ'ল বেদ ধ্বনিরা উঠিবে, দ্বিবে সকল গ্লানি।

গিরিত্রক্তে গিরেছি আমরা পঞ্চ পাহার্য বেরা,
ত্রুর অতীত নিকটে এবনো যেবা করে বোরাফেরা।
তীরার্জুনের সঙ্গে কৃষ্ণ করাসকের পুরে
আসিল গোপনে কি মলবেশে, কোন্ গিরিপর বুরে।

বিধিনারের রাজধানী হেখা—বগবের অবিপতি,
বুক্রের রাজদিয় প্রধান, পরন বর্ষে মতি,
লভিল ভাঁহার অপার করুণা মুপতি ভাগাবান।
গৃৱক্টের বির্জন গুছা—সে বে পুণা ছান।

এইবানে সেই অন্নিভাভ আসি বিভরিল উপদেশ—
অন্ত-ভারতী—নিয়বর্গে করিবা বে উদেশ।
ভাবেরি কি আনি ? নমে হ'ল বেন হেবা বেণ্বনে এসে
শুনিভেমি বাবী বুরের পাবে চাহিরা নিনিবেবে।

অভাতশক্র রচিল প্রাকার—আছো বেন ছর্জন, কত বে হৈডা, কত ভূপ, বুগ-বুগাছে নাহি কর। বেবা বরে বার ভিমিত তপোদা ছুর্গপ্রাকার-বুলে, আবাস নিরেছি সেই মছর সরস্ভীর কুলে।

ভাষের তীৰ— হোধা মালদা বিশ্ববিভালর সারা পৃথিবীর বিভাগাঁর চিত্ত করিল কর। শ্রেষ্ঠ আসন—শীলভজের কোন্ শিলাসমধানি, প্রাচীরে প্রাচীরে প্রহৃত আকো কি দীপ্সরের বাদী ?

প্রাচীন অভীত আজো জীবত এই রাজগৃহ বাবে, কত সহস্র বর্ব হেবার বৃর্ত হবা আছে। লক্ষ রবের চক্ষচিক্-অভিত রাজগণ, বনের মন্ত্রন গরিষা ভাষার ভাসিতে বর্ধবং।

মহাবীর তাঁর বর্ণ প্রচার করিল হেবার থলে, শশু সাবকের সাবনার স্বৃতি বাতালে বেডার ভেলে। বুড়, ভোষার শরণ কইল কত রাজ-বহারাজ, বুজিতেছি সেই চরণের রেণু এই ধূলিকণা-বার্থ।

## নর্ম্মদা অঞ্চলে শারদীয় উৎসব

## ঐঅমিতাকুমারী বস্থ

শবং এসেতে ভার লোনালী আকাশ আর নিষ্ট বাতাস নিরে।
চার বিক থেকে যেন আগরনী-দীতি তেসে আগরে। বন্টা
হঠাং আনন্দে তরে গেল, কিছ তার পরই এল অবসাদ, সুদূর
বাতোরার বাওববনে আনক্ষরীর আগরন হবে কি? মনে প্রকল
স্কলা স্কলা শতভামলা বাংলামারের কবা। বদিও আক্
রাজনৈতিক ভারবে বাংলা বিবভিত, বাংলার বুকের উপর দিরে
বহু অভ্যাচার, বহু রক্তপাত হবে গেছে, তবু সর্বহারা রিক্ত
বাঙালীর রুবেও কীন হাসি কটে উঠবে।

किस अप्रात्न (म देशमा (महे । चताकत लातास मार्यन-চতৰী এল, মচাবাহীৰ আৰু ভিক্তানীদের ববে ববে প্ৰেশ-ইংলব জাঁকভয়ক করে শেষ হ'ল। ভারপর হুর্গাপুজা। विद्यवे हरन त्रन, नद्यभी हरन त्रन, चर्डभीव क्रिम मर्स इ'न अक वाब ब्रीक रवर्षक करन अकरन भावरवारमस्वद काम আভাস পাওয়া বার কিবা। ভাষলায় এ সমরে শহরের बाहेरव ब्रम्टरव अक्टास्त क्वामीत मन्दित है १ प्रव हरन । একবানা ট্যান্তি ভাভা করে সেদিকে চললার, শহর হাভিত্তে গাড়ী চুটল যুদ্দির অভিযুখে। শহরের দুপ্ত ভেষন উল্লেখ-যোগা নর। অপরিচ্চর অলিগলির রাভাও অনেক আছে। প্ৰথলো অভিক্ৰম কৰে প্ৰায় বান্ধা ধৰে গাড়ী চলল। বান্ধার ছ'লালে বাবে বাবে ছোট ছোট কুঁড়ে ঘর টুকরো টুকরো कारना भावत विज्ञाद देखति, स्वतारमत भारत नितियाम पिरत विविध किस औरक दारवरक चरतत कारन क्र'अकहै। क्यरण नाक. विस्तर्गाष्ट्र मिला केर्डिट, इ'ठावडे निक अनाव अनाव र्यमास. পরনে হয়ত ব্লাউক খাবরা, নয়ত ইকের কুর্ডা। নন্দির-প্রাদৰ্শে গাভী এলে বাষল। আৰ্থ জললাকীৰ্ণ ছামের মধ্যে ছোট-पार्टी बन्दि ।

ৰন্দিরের সামনেই দীপনালা। পাণবের একট অস্ক ভঙ্ক, ভার চারদিকে দীপ রাধবার বাক হকের বাভ ইট গেঁবে রেখেছে। প্রভার ও দেওরালীতে বধন এর ওপর প্রদীপ আলাম হয় ভাগন বড় সুন্দার দেখার—টিক বেন একট আলোক-ভঙ্ক। চারদিকের অসংখ্য নাটর প্রদীপের আলোকশিখা হাওরার হলে অপূর্ব্ব শোভার স্টে করে।

ভৰানী বিদ্যাচ অভি পুৱানো, হোট ও বিশেষস্থীন। বিশ্ববাব্য কালো পাবরের ভবানীবৃত্তি ইাভিরে আছেন। প্রবাদ, কালাপাহাড়ের আমলের এই বৃত্তি—কালাপাহাড় বাকি কেবীর বাক কেটে দের। ভবন থেকে দেবী "মাকট ভবানী" বাবে আব্যাভ হরেছেন। কেবীর এই বাবের কারণ সভ্য কিবা পুজারীকে বিভাগা করার বজনে, ওগুলোবাজে কথা। বছরের পর বছর দর্শকেরা দেবীর কপালে ও নাকে সিদ্র হল্দ ববে আসহে, বয়তে বয়তেই দেবীর নাক কর হরে গেছে ও দেবী 'নাকট তবানী'তে পরিবর্তিত হরেছেন। দেবী নাকি বছ আঞ্জা।

বিজরা দশনী ! বাংলাদেশে আজ বাবের বিলর্জন।
সারা বছরের প্রতীক্ষা, আশা আনন্দের অবসান করে আজ বা
পভিগৃতে বাঞা করবেন। বিকেলের দিকে অবসার নেই,
প্রভ্যেক প্রামন্তপে বাবের আরভি করে পাদবন্দনা হছে।
ভারপর বাভভাতের সদে শোভাবাঞা করে ক্ষক্ষননীকে নিরে
বাওরা হ'ল নদীভীরে। সারি সারি বহু সুন্দর প্রতিমা দাঁড়
করিরে রাধা হরেছে বিগর্জনের কয়। চারদিকে ভিড়, হৈ চৈ—
শিশুরা সুন্দর স্থানর পোশাক পরে এসেছে বিসর্জন দেবতে।
ছেলে বুড়ো বুবক হৈ চৈ-এর বব্যে দেবীকে বিসর্জন দিরে
রাম মুবে বরে কেরে। সমবরসী সন্বর্গীতে হব কোলাকুলি,
বভবের করে প্রণাম। মারেরা স্বাইকে বিষ্ট্রের্থ করিছে
আপ্যারিত করেন। এই দিনে এই ক্ষ্পে স্বাই ভূলে বার
ব্যোলালিত হিংসা-বিহেষ।

কিছ এ অঞ্চল আগমনীইতিও নেই, বিষাহইতিও নেই, তাই মাত্ৰিলাহের বৃহুর্ড মনকে বেলনার করুণ করে ভোলে না, ভাব পরিবর্জে এদেশবাসীরা আনন্দে দশেরা উৎসবের ক্ষত তৈরি হতে থাকে। পুত্র থাতোরার বে ৮।১০ বর প্রবাসী বাঙালী আছেন, তাঁদের মধ্যে তংপরতা দেখা যার। শিশুরা উৎসুর হবে ওঠে নৃতন আযাকাপত পরে। স্বাই বেরিরে পতে বাড়ী বাড়ী গিরে প্রবাসে মিলনকে স্বধ্যর করে ভোলবার কর।

এ অঞ্চলর নিয়প্রেণীর অবিবাসী ট্রম্ন ও বরুরা। এবের প্রবান দশেরার দিনের বিশেষ উৎসব "ভূজরিরা"। এবের প্রবান দেবী হচ্চেম শীতলা দেবী। শহরের বাইরে বটের হারার শীতলা দেবীর মন্দির। বাদের পরিবারে শীতলা হাই-এর আবির্ভাব হরেছে, বাদের মনোরত বিরে হচ্ছে না বা বারা নামাবিব সাংসারিক অসুবিবার ভূপতে, তারা এই দেবীর কাছে বামত করে। "মঙরান্তের" সময় ববহুর্গা ববন বটে অবিষ্ঠিতা হ্ম, তবম এরা নিজেবের গৃহাদনে জনি নিজিবে তাতে একটা স্তম মাটির কলসী রাবে, ভাতে সার্যাট, গোবর ইত্যাদি পূর্ব করে সম ব্রের রাবে। ব্রবার আগে গমতলি করেকদিন কলে ভিজিবে রাবা হর, সার্যাটিতে পতে শীরই সেই তেলা গ্রের অনুরোজন হয় ও সেওলি বর দিনের ভিডর স্কর সমুক্ত হোট কিশালরে পরিবত হয়। এই কৃটি কিশালকে

খলিকে লোকচন্দ্ৰ আভালে ৱাৰবার বত একট কাণড় পৰ্বার क्रक क्रिक्टिक बाटन । नीटन नीटन आधीरकृष्टेन अधिनि अधानक আসতে প্ৰক্ৰ কৰে, উৎসৰ কৰে থঠে। পৰ্বা সৱিবে লোকে-দের এক পাশে বসতে দেওবা হব, তাদের গরের সর্ক চারা-খলো দেখান হয়, এখলোকে "তুদ্বিয়া" বলে। ভোগ দেওয়া, বাধবা-বাধবা হয়, গান বাজনা চলে , বে বে বাডীতে মানত ভৱা চহেছে সেই সেই বাভীর এক এক ভম বহন্ত পুক্রম বা মেছে वह विव छैलाज करत बारक--- ७९ हा, इब, कन बाबबाद बाद। ৰাহ শৱীহে দেবীর আবিষ্ঠাৰ হয়, সে ভবন নানারকর द्याचन केवन किएक बाटक । यह किन शह क्ष्यचात किन वठा वय-बाब करद छात्रा हरन नैकना बाबे-अद शुका पिएछ । बागरनद মভ বাজনা বাজতে থাকে। বেবেপক্তম স্বাই স্থান করে আসে। মেৰেৱা মুভন বঙীন শাড়ী পৰে প্ৰনাগাঁটভে সেকে গুকে বেৱ হয়। চার অন বট বভ কলগীর "ভুপরিয়া" ছোট চারট ৰাটির কলসীতে ভাগ করে যাখার তলে নের। ভাল মেরেদের কারও হাতে বৃত্তি থাকে ভাতে বৃব বৃণ হাততে থাকে। कात्रक हाट्ड अको बानाट्ड बाटक हनूब, तिसूत छ धरीय।

মাদল বাজার সলে সলে জী পুরুষ সবাই শোতাবাঞার বেরিরে পড়ে। বার উপর দেবীর তর হরেছে সে বাজনার তালে ভালে প্রবলবেগে নাচতে থাকে। বউরা "তুজরিরা" যাথার নিরে গান গাইতে গাইতে চলে, জার বারা নানত করেছিল সেই মেরেরা রাজপথের উপর সাঠাল প্রণাম করতে করতে শীতনা দেবীর মন্দিরে পৌছে। সেধানে দেবীর চরণে "তুজরিরা" রেথে পূজো দের। দেবাবিপ্ত লোক্টকে স্থাম করার, তথম ভার শরীর থেকে দেবীর ভিরোধান হরে বার— ভারপর ভারা যরে কিরে আসে।

विक्लाब मिक् बावन चानारमा छैरनव चक्र वस । अही क'न क्यमाबादावद चामन-छेश्मव । चामारमद वाकी (वरक थांत चार मारेन एरव अक्षे र्याना महतान चारह। সামনের রাজপণটা বেঁকে ভারি পানে চলে গেছে, রাভার হ' পালে লারি লারি বছ বটগাছ ভালপালা যেলে রাভাটকে কুলর পুশীতল ভারাকীর্ণ করে বেথেছে, সেই রাভা ধরে চললে र्यामा बद्यमार्ग श्रीकांन यात्र। रम्यारम्हे रबना यगर्य ७ ল্ড্যার 'রাবণ ভালানো' হবে। বিকেলের দিকে টালার বোডার, 🍍 =ইল গাড়ীর বইলের গলার যুঙ্বের টুং টুং আওরাজ রাভা (पविष करत कुनन। नरन नरन (बरन, ब्रह्म), ब्रुवक, मात्री लाट बावन पामारमा छैरमव स्वयंद्य । अर्पारम मव पामम-रिगरवरे शृंक्रवरम्य वच व्यवस्था चवाव शकि । कक स्मर्थात Pe বৰসের বেরে, ভালের পোশাক্ট বা কভ রক্ষের। करे वा वावता अववा गरतरह. क्ये वा काहा विरत्न चार्शाता राज माजी गरबरह, काबक वा शबरव मारमाबाब शाकावी। দৰে অধিকাংশই পরেছে মংবেরঙের পাড়ী ভিত্তানী প্রধার।

নাকে নাকছাৰি বা নৰ, কানে বছ বছ লোনা লগার স্থা, পারে নোটা নোটা পাঁইজোর, নিঁবিতে লখা করে টানা ভগতনে নিদ্ব, চোৰে কাজল, গালতবা পান, বাধার রঙীন ওডনা, বনে করিবে দের এবা অবাঙালী।

বাদবাহনও বিচিত্র রক্ষের। বইল গাড়ীগুলি বড় প্রকৃত। সবদে বন্দিত হাইপ্ই বইলগুলি টালার বোজার অপেলা কোন অংশে নিজ্ঞ নর। হোট একবানা কাঠের ভজা চার চাজার উপর বজবুত করে বসান আছে, হ্'পাশে লখা সক্র সক্র ভাঠের কালি। বংবেরঙের ভোরাকাটা ভাপড়, বা কুলভোলা রকীন কাপড় বিরে হ'ভিনারা ও উপরটা ঢেকে দিরেছে, স্ব বেকে ননে হয় একবানা রঙীন নৌজা। গাড়ীর নব্যে সভরকি বিহিন্তে, নবত বড়ের বিচালী ইভিবে গাঁরের বৌবিরা বসে উংসব দেবতে এসেছে। আর ক্পাল ঢাকা বোমটার নীচে নাবে নাবে এক একবানা কোরল রূপ ক্রমও ক্রমও ভেলে ওঠে। সেই মুব্লী দেবলে আবাক হতে হয়। গরীব চাবীদের ব্রেও ক্রমন প্রকর বেরে।

কোন কোন বইল গাড়ী দেবতে ভাৱী বজা লাগে।

হ' চাকার উপর সুদৃত একখানা রেলিং দেওৱা ভাঠের ভতা
বসানো, ভাতে হুটো বোড়া ভূড়ে আরোহী বরা বরে গাড়ী
চালাচ্ছে, দেবে বনে হর বেন অভীত বুগে কিরে গেছি।

উনুক্ত প্রান্তরে মেলা বলে গেছে। বেলাতে পুলর পুলর কাগছের ফুল পাণী, কাঠের তলোয়ার, বাঁদী ও রক্ষারি ষাটর বেলনা ইত্যাদি শিশুদের আনন্দবর্জন করছিল। মেলাশেযে শিশুরা তাদের কচি কচি হাতে ওওলো আঁকড়ে হালিমুবে বাকী কিরছিল।

मक्षात्मव अक्षात्म अक्षे वंद्रगाद श्रीन सम्माना स्टब বাছে, তার পাশে একটা ছোটু মন্দির, মন্দিরট বসুমানভীর। ভিভরে খেভ পাণরের তৈরি হতুমান। সেই মন্সিরের अकृ पूर्व अक विदाष्ठे वृद्धि शैक्षिय चार्छ । वृद्धिके ७०।८० कृते উঁচু, আর ভার পরিবিও প্রার ১০।১৫ কুট। বৃত্তিটর কাঠাবো वारमंत्र देखित, खात छैनद नान मीन नवुष कानक किर्द्ध प्रमुख कवा करवरक । अरे निवार्त नृश्चित क'न क्वाठाव वानरनव । नत्मतात पिन वामक्कणी वार्य वर करवित्तम, जात्रहे चुकि-ব্ৰভাৰে বছৰের পর বছর এই বিবাট বাবণ ভৈত্তি করে দুশেরায় দিনে আলান হয়। বত দৰ্শক মেলাতে আলে সবাই ভাতে চিল ছুঁড়ে আনন্দ পার। সহ্যার সময় ভুমূল ভাওবের ভিতর दायर्गद वृद्धिष्ठ चाधन राज्या द'न, लाक्या गानिनानाक करत जात किन हैं ए जारबद बरबद तान-विरवय क्षेत्राचे जन-विम । बहरूत (बंदक बांबरनेत जाश्वत्मत बन्नका जात द्वारा द्वारा বেতে লাগল। বুগ বুগ ব্রে রাক্সরাক রাবণের ভাত্তবিক वृद्धित जनवान करत जात बृद्धान्छ निरंद छेड्द-छात्रर्छत जन-সাধারণ দীতাবাদ হয়ণের প্রতিশোধ ভুলতে। এই অভুঠান খেতেই বুবা বার রাষ্চল্লকী আর সীভারাই-এর উপর ক্র-দাবারণের কি প্রগাচ ভক্তি আর বিভাস।

উংসৰ শেষ হলে হলে হলে হেলেরা আর পরিচিতেরা 'চাহিলোনা' (অঞ্চন পাতা) মুট তরে নিবে এল সভলের হাতে হাতে 'চাহিলোনা' হিবে বিজয়ার সাহর সভাষণ ভাষাতে।

বাঙোৱার পূজার আমক তবনও নেবে নি, ভারণারই এল ভোলাগরী পূর্বিবা ভার বক্ষতভাত জ্যোংস্থাবারা হছিবে। এল অবাবভা, গাঁচ আবারে মগরী ভূবে গেল, অবিবাসীরা ববে বরে দীশনালা পরিবে মগরী আলো করে ভূলল। চারহিছে রোশনাই, পটকাবাজী, আভসবাজী, রক্ষারি বাজী বাঙোরার আকাশ-বাভাস বারুদে তরে দিলে। বড় বড় শেঠবের আবাসগৃহ আর লোকানপাট আলোক্ষালা পরে বলমল করতে লাগল। রাভার রাভার ব্যাওপার্টর স্থনিই বাভ শহর সরগরর করে ভূলল, সলে সলে লোকানে লোকানে কাক্ষরক করে পাম স্থপারির উৎসব চলল। কল্যাগনারী বোনবের স্লেহবারার অভিবিক্ত হরে ভাইলোক (আভ্রিভীরা) উৎসবক শেব হ'ল।

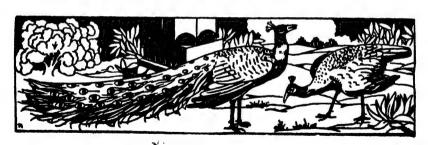
আবার এক বিন বিকেলে বাবানা বেকে উঠল, শিকার আওরাক কানে আসতে লাগল, আক বোবের লড়াই। আলপাশের আন বেকে চাবীরা ও সম্পন্ন গুরুছের। ভাষের বলিঠ বোবওলোকে নিরে এসেছে বোবের টকরের কচ। এবেশে বলে "হেলার টকর", বানে নোবের লড়াই।

এক-একটা বোব দেববার মত, বেরে দেরে সুপুই, মবরকাতি।
ভাবের বালিকেরা বোবের কপাল বাবা হুলুদ আর নিজুর
বিরে রঞ্জি করে রেবেছে, শিংগুলো রং দিরে লাল করেছে,
বোবের কালো কুচকুচে রঙের উপর হুলুদে আর লাল রং
বিরে অভ্ত চিত্র করে রেবেছে, এক-একটাকে দেবলে আতদ
লাগে, বলে হুর ক্সক্রনীর হাতের বর্ণাযুক্ত হুরে মহিষাস্থর
বুবি বাভোৱার বর্ষানে অবতীণ হুরেছে।

নারা হপুর রক্মারি বাজনা বাজতে লাগল। লোকেরা বোষকলোকে বেশ করে দেশী বদ বাইরে টকরের কন্যে তৈরি করতে লাগল। বেলা পাঁচটার মধ্যে ফলে ফলে৯ ত্রী পুরুষ এলে বহুতাৰ তত্ত্বে কেলল। পুলিসের লোকেরা চারনিক বুরে

হুরে ক্ষরতাকে পূরে সরিত্তে বহুতান বালি করে থিলে বাঙে
মোরগুলি বেশ তাল করে লঙ্গতে পারে, আর হুটে গিরে
ক্ষরতাকে আহত করতে না পারে। বেলোরাভরা বোটা
রক্ষের বাজী রেবে থেলে, বার মোর জিতবে, সেই এই
বাজীর টাকা পারে। হু'পকে বিশেষ প্রভিবোসিতা চলে,
নির্ভিট সমরে নিলা ফু'কল, বাজনা তালে তালে বাজতে
লাগল। হুটো তীর্ণাকৃতি "হেলা" নিরে তাকের বালিকরা
র্ণাক্ষর এসে ইভিল। উত্তে উত্তের মোরকে পিঠ চাপকে
নিজ ভাষার উৎসাহিত করে সরে ইভিল। বর্ণকেরা
উত্তরীর করে বেলা দেবতে লাগল।

द्या इती कीकान्त्य हुन करव विविष्ठे करवक काकान. ভীত্ৰ দৃষ্টতে একে অন্যের দিকে ভাকাল, ভারণর নাথা সুইবে भिर (वैक्टिब अटक अभवटक आक्रमन कवटन, भिर्छ भिर्छ ঠোকাঠকি লাগল। একটা হেলা আর একটা হেলাকে শিং দিয়ে ৰাভা দিতে লাগল প্ৰাণপণে। ছটো ছেলাই সমাম ভোচাম क्रम, नाबाद्यवट: भिर्द्धत छैनदरे नवल मक्ति ब्राह्मन क्राह्म। একটা হেলা আর একটা হেলার পিঙের ভিতর নিজের শিং আটকে প্ৰবল বেগে ৰাভা মাৱতে মাৱতে পিছে ফটছে দেবার क्या लानगरन रहेरी कराज मानम । हरहे। रहमाद शास्त्रह দাপটে অনিতে ঠকাঠক আওৱাজ হচ্ছিল, চারবিকে গুলো ছিটকে পড়তে লাগল, দৰ্শকেরা ভয়মিভিত আমন্দে টেচাৰেচি পুরু করে দিলে। যাত্রা বাজী রেবে বেলছিল, ভাষের মুব আশা-নিরাশার উচ্চল ও মান হতে বেতে লাগল। বোষের यानित्कता आया क्याद त्यायक्रामात्क वाद्या शिष्ठ मार्गम. ভোৱে ভোৱে বাজনা ভালে ভালে বাজাছিল। হঠাং अक्टो (क्या अक मिरवरव अयव (क्याडेरक निर्देश करेंचा याद कार् करत निष्ट वहेर किन। (नहें। वानगरन क्रोकरक मानमा चादनद बड़ी दिमा विवदनदर्स वृक्ष चमीट किरव क्षेत्रान-कार इत्हे। जान हेक्डेटक, माभारक कीछ। वर्गस्करा ভোৱে হাভভালি দিভে লাগল, বোষের নালিক হাসিযুৰে मर्गावरन चाव भारमावाम स्वाय चाव वाकीव हाका मिरव बर्ट किर्ट हमम-बार्श्वाचा नावरवारमस्य त्यव नर्व नवास छ'न।



## "কে দিল আবার আঘাত…"

### ঐবিমলাংশুপ্রকাশ রায়

লব্ধতিঠ ক্থানাহিত্যিক বিনান। বৌৰনের প্রার্থতে নিবেহে প্রেনের উলেবের গল, বৌৰনে আলোচনা করেছে গভীর প্রেন্ডক আর আল অপপ্রির্নান বৌৰনে নিবহে বলে উর্বান প্রেনের কাহিনী। এত বে নিবেহে নরমারীর প্রেনকথা, এক দিক দিরে বরতে গেলে বলতে হবে তা সবই প্রার্থক ক্রনাপ্রস্থাত, তবু ঐ প্রবান দিকের প্রেন্ড উলেবের অব্যারটি হাছা। সেটা হিল তার নিকের বাত্তব জীবনের আলেবা।

বিষাদের বুকে দাগা দিরে পালিরেছে দিখা। বেন দে বিহাংলিবাই। দীর্তি ভার কবিকের, কিছ ভা নর্মনুলন্দার্শী। কড ধিনকার কড লুকোচুরি করে পাওরা ভার দেখা। নদীর বাঁক মুরে কড গাছতলার বলে কড সড-রচিভ কবিতা, গর-পাঠ। পাঠক ও শ্রোজীর নন নিবিভ হবে বিশে একাকার হরেছে, সে কি ভাহিনীর অবজ্বাট বিশ্বতি অবলম্বনে, না ভর্মা-ভর্মনীয় সারিবাের ঘাহন্যরে ?

পাহাছের পাদবেশে সেই গুল্ল পাবরবানি শিশিরস্থাত হরে বৃদ্ধ পেতে আকও বে অপেকা করে আছে তা বিনান কেবেছে মাঝে মাঝে গিরে। ঐবানেই তাহের শেব দেবা। ঐ বপরণে সালা পাবরের এক প্রান্তে সেবিন শিবা বলে বিনানকে বলেছিল, আকাশের রং কেবেছ ?

একটু বেৰে একটা দীৰ্ঘাস টেলে আঘার বললে, বসো একটু এইবামটার, কাল ত চলেই বাব।

এই চলে যাওয়া যে চিয়কালের ঘটেই যাওয়া তা সেধিন কে আনত। সেই সভ্যার তারা হ'লনে বলে বলে ব্র্যাভ কেবেছে একসকে। সভ্যি কভ সৌন্ধর্যভরা রাঙা আকাশ-বানি অর্থচ সাঁবের মানিমার অর্ত্তরাল হিল বুবি কভ অব্যক্ত নাই-সহলিভ। সেদিন ভালের মুব দিরে কবা কোটে নি বেশী, অন্তর হিল ভালের বিদাহ-আবেগে ভ্রা। বাভাসও হিল না মুবর লে সভ্যার। বিত্তবিরে বৃহ্ ভাবণের গুরুন হিল গুরু। কি ভার অর্থ কেউ ভ বোবে নি!

ভার পরেই সেই মর্মাভিক রেল-ছ্বটনা। পুলের উপর বেকে ট্রেনের পিছলের করেকবানা ভানরা লাইনচ্যুত হরে এতেবারে নবীর বুকে। কড লোকের অভিন আর্ডনাব, কড বরে হাহাভার। পর পর ভিন বিন বরে যুত ও আহতকের নাম বেক্তে লাগল ভাগকে। হতকের ভালিভার নিবার নাম। সেই হতে বিয়াৰ জীবনের সবল করেছে কলবকে। কিছ সে লেখনীনিঃস্ত রস তথু আর সবুক বহু, বিবিধ রভের। এই দীর্য জীবনভার ভারতীর চল্লণে কভই বা রং-বেরং হোপ লাগিবেছে।

ব্যাতি পৌছেছে দেশ ছাড়িছে সুদ্ধ বিদেশেও। বিদেশেও ৰে এত বাঙালী পাঠকপাটিকা বাকতে পাৰে তা জানা পেল এই বাংলা লেখার বৌলতে। তত সমধ্যারের চিট্ট আলে, কত লোক দেখা করতেও আলে।

নেৰিন অপরায়ে ৰেখা করতে এলেন আবেরিকার একট ভারতীর বিশ্বের ব্রহ্মচারিট ভগিনী ভেলানক বাল। এব সলে অনেক দিন হতে পদ্রালাণ চলেতে। ভিছ চাছৰ পরিচর ভিল মা। বিয়ান প্রবাদকে অভার্থনা ভবে বসাল। নীতিলীৰ কিছ বৰ ভত্ৰ কেপলাৰশোভিত গাডীৰ্বাপুৰ্ব অপুর্ব হুবাবহব। তার সভানী তীক্ষ নৃষ্ট বেন বিভাবের অভ্যুত্ত পৰ্যাত্ত পৰ্যাবেক্ষণে নিবিট। বিমান অবাভ ভৱে তার পাত বৃত্তির দিকে ভাকিবে ঘটন। গৈরিকপদিবিভা আশ্রবাসিনীয় সদে ৩৭ বে গভীর ভত্তই আলোচনা হ'ল का मह। विवासित शब्द क्यांच क्या जक्षक केंद्र शक्त । रक्क: छात्रत भवानाभ छ थे नह बात्रक्ष्ट । महानिधी হলেও সন্নাস-বৰ্ষাবলন্থিনী বেদ দল ভিলি। সংসালেছ महमातीत पूर-इ: (यह शक्ति वदमाक्ष कांच रार्वन वाक्कार्की বলে বনে করেন। ভাই ভিনি ভার চিট্টভে বিনানের অবেক বইছের ক্ষ স্বালোচনা করে পার্টছেব। আকও সেই नव जालाहमा हमए मानम नाकारक। विमान बह्नद्रवेश वर बरे बरीवनी बरिनाव क्या समिति। अस बुँहैरव अवस बम जिर्दे कांद्र मिनी क्लि गर्फ का कांद्र कांना दिल ना। নিজের বা কিছু বলবার হিল তা বেন আছ তর। তাছ ৰনে হজিল কি একটা আকৰ্ষণে বাবা পড়ে বাচ্ছে ভাছ वन और विकास थिकि। अवा ? का करन। और प्रकृष একটা প্রভার শক্তি ভার উপর আরোপিত হরেছিল--লে বছকাল আবে। শিবা ? হাা, শিবায়ও শক্তিপ্ৰভাব ভার বুকে তীরের মত আজও বিধে আছে। বেছিল শিবার প্রতি क्षंत्र कात करात नकातिक विक्रम, विमानित बान श्रात्तिक ভার কৈশোরে হারালে বারের কথা। আর আকও এই কৰে बरम कर्म्स बारबंद कथा, नरक नरक नियाद प्रक्रिक किरक ভাগে। এ কি অপূৰ্ব আলোচন অভৱে। নকন এবার আবার কি একই ছয়ে গাঁথা গ

হঠাং এক সময় একচারিশী বললেন—আৰু উঠি তবে। বিমান চমকে উঠল। তাই ত সে হিল কোনু রাখ্যে ?

এতক্ব ব্ৰহাৰিব গাভীব্য হকা করেই কবা ক্রেছেন ববিও ভাতে বনিঠভার ছিল লার্ন লেগেছে ক্রে ক্রে, কিছ এক্বারটও তার রূবে হাসি কুটে ওঠে নি। প্রথম দর্শনের অভিযাদন চুর হতে কোড় করে বভক হেলনেই সমাবা হরেছে, কিছ এবন বিহারবেলার ভেষানক বাই উঠে এগিছে এনে দক্ষিণ হছ প্রসায়িত করে বিলেম পুরোপুরি পাশ্চাত্য প্রধার এবং সঙ্গে সঙ্গে অভি মধুর আবেগভরা হাসির ছটার সম্প্র আনমনবানি হরে উঠন উক্ষন। বিশিত, অভিত বিমান সেই উক্ল হাসির আলোকে চিনে কেলে চীংকার করে উঠল— "শিবা।"

পরমূহর্তেই শিধার প্রসারিত হাতথানি নিকের হুই হাতের মুঠোর চেপে ধরে বললে, বল বল, ব্যাপার কি বল ত ?

খলছি শোদ, সৰ বলছি। সেই বে ভূমি ছাতব্যাগটা আৰাৰ উপহার দিলে থাবার দিন, সেইটই প্রথম নহরের গোল পাকিরেছে। ব্যাগটার মধ্যে টাকাপথসা নোটবুক সবই পুরে নিবেছিলান। ব্যাগটা এত স্থলর ছিল থে টেমে বলে বেই একবারট স্টকেস হতে বার করেছি, অমনি আনার লামনের বেকির একটি মেরে বলে উঠল "বাঃ। কি স্থল্যি ব্যাগটা আপনার? বেকি মা একবারট।" বিলাম ওর হাতে।

चार नदहे (व कि छाद तन कि चारम । कर्रार तम अक महा शाकारम द्वारान करमात्र । चात्राद वर्ग काम किरत बन चर्न तिर्व चानि बक्ते। जिक्ति त्रीत्कातः। व्यामश পাল তুলে ভর্ ভর্ করে মৌকো চালিরে চলেছে। ছাভের ৰিকে ভাকিৰে দেবি চুড়ি নেই। কানে হাভ দিৱে বুবলাৰ ছলও গেছে। জেলে তো নঃ, এ বে দেবছি ভাড়াত। ওবের রক্ষসক্ষেও বুবলাম দুর্ভিদ্দি। ভরে আবার चामात्र थान छैए तन । हुन कृत्व नरक बरेनाम, हार बावनाव योकाव वारेरवव विरक्। अकृत भरवरे स्वनाव উপ্টো বিক হতে একটা বৌকা আসহে। কাহে আসবার अक्ट्रे चार्त वाकरण्डे हीरकांत करत छेईलांत. "वाहांत, वाहांत, ভাকাত ভাকাত !" বৃহুর্তের বব্যে একটা কেলে এলে আবার মুৰ ও গলা চেপে বরলে। আমি ভবুও অসুষ্ঠ কঠে চীংকার করতে লাগলাব। ওবিকে লেই নৌকাও আবাহের কাছাকাছি এনে প্ৰদ। ভাবের ঠেকাতে এরা কড়াই পুরু করে দিলে। কিন্তু ভাষা হিল সংখ্যার বেনী। জেলেয়া

ৰিক্লপাৰ বুৰে আমাৰ বৰে ছুঁছে কেলে বিলে কলে। আৰি আমাৰ অভান কৰে প্ৰকাৰ।

এবার বধন জান কিরে এল তথন দেবি একটা হালণাতালে

- কিছ আমার কথা বলবার শক্তি নেই। আর আমাকে কথা
বলাতে চেঠাও কেট করছে না। বোধ হর ডাক্তারের বারণ
ভিলা।

প্রদিন ছুপুরে বেধি নার্স একটা ব্যরের কার্যক পক্ছে।
আমি হাত বাভিরে কার্যকটার হিকে ইলিত ক্রলার। নার্স
তা দেখেও বেন ব্রল না। কিছ বুবেছিল টিক, কিছু পরে
ভার নিজের পভা শেষ করে আমার হাতে কার্যকটা হিছে
পেল। সেই কার্যকে পভলাম, "রেল-ছুব্টনার আর একটা
নারীর রভদেহ পাওরা সিরাহে। কিছু দেহটা ঘটনার তিন
দিন পরে, প্রার তিন শত নাইল দূরে এত পলিত অবছার
পাওরা সিরাহে বে ভাহা সনাক্ত করা ক্রিন, ভবু ভাহার
হাতের সুঠোর প্রাপ্ত একটা ব্যার পাওবা সিরাহে ভার মধ্যে
একটা নোটবকে নাম লেবা আছে 'শিবা সোম'।"

বিশ্বিত বিক্ষারিত বেরে বিমান অক্ট কঠে বললে, কি আন্তর্বা । তার পর १

ভারণর বর্থন আবার কথা বলার শক্তি কিরে এল, একজন গৈরিকবসন সৌন্যদর্শন প্রৌচ এসে আবার প্রশ্ন করতে নাগলেন। একে আরও ক্ষেক্তিন দেখেছিলান আগে হাসপাভালে। ব্রলাম হাসপাভালটা কোন আগ্রেছ প্রভিত্তিয়া।

আৰার বনে তথৰ আলোড়ন চলেছে। তাৰছি—লিখা সোম ত মরেছে, আপদ চুকেছে। এখন তবে এই সূত্ৰ জীবনটা নূতন তাবে চালাই। তার প্ররেষ উভৱে বললাম, আমার কোন নাম নেই, বাম নেই, আত্মীরহজন আর কেট নেই প্রত্যু আপনারা বাঁচিয়েছেল আমার, এখন আপনারাই আমার সব। আপনাদের আপ্রেষর কাজে বদি হয় তবে আমার লাগান তবে এ হতভাগিনীর জীবন বত হবে বায়।

তিনি এইভাবে ব্ৰলেন, হিন্দুনারীয় সফটমর অবস্থা। বে বালিকা একবার ছুর্ভদের হাতে সিরে পড়েছে সে বহি ভাদের হাত বেকে উনারও পার তব্ হিন্দু সমাজের নিঠুর সন্দিন্ধ দুটি হতে উনার পাবার বো নেই। সেই তেবেই ছয়ত আবি আর সমাজ বা সংসারে কিরতে চাইছি না। ভার ভোল হহিসও বিজ্ঞিনা।

বিষাৰ অধৈৰ্য্য হয়ে এইবানটায় বলে উঠল—ক্ষিত্ত আৰি
ত হিলাৰ শিবাঃ

रा।, पृति दिल, किच--

এইটুকু বলেই উদান ভাবে স্থাননায় কাঁকে আফাদের বিকে ভাতিরে বাকে শিবা।

'किष' कि ? विवादनव देवर्ग बादन ना--पण वल किष

' कि १ थः। ভূষি বুৰি ভাষলে সেই পুৰাকালে ৱাৰচফ্ৰই ' বদি সীভাকে এছণ করতে পারলেন' না, ভবে আদি কি ' আছ—

কাৰা দিবে শিখা বললে, মা মা, তা মর। আমি বিখাস করি অতীভের রামচল্লের চেরে আব্নিক অনেক রামচল উরভ। কিছ তবু—

এই পৰ্যাত বলে একটু বেখে আবার আভালের দিকে ভাকিরে বেন কোন অগীভের বাবে নিজেকে ভূবিরে বীরে অভি শাতভাবে বলভে লাগল, ভবে আবার জীবনের আর একটা অব্যার ভোষার কাছে আরু বুলে বরি বন্ধ।

আবার চুপ করল। বিষাম রুগ মিখাসে অপেকা করতে লগেল।

শিবা আৰার পুরু করল, আমি ভোমাকে বেমন নিবিভ ভাবে ভালবেদেছিলার ভেষ্ম করে খন্ত মেরেরা ভালবালে কি না কাৰি না। আৰি বেন ভোষার গ্রাস করে কেলতে চেৰেছিলাৰ কিংবা বেদ ভোষার পারের দুখল হয়ে পড়তে বাহ্নিলাম। কভবার নিবেকে সামলাতে সিয়েছি, কিছ পারি নি। কাছে থেকে তা হ্বার যেন ছো ছিল না। কত বিভার দিবে নিৰেকে বলেভি--্যাকে ভালবাস তার উন্নতির পথের कैं है। हरदा मा। किन्न विकास का बसा। उम्मी प्रसंध এতই প্ৰবল ভাবে এই চিতে স্কিত হতে লাগল ভালবাদাৱ সদে সদে যে তুমি আগ্ৰহ করে ভোমার লেখা বংম শোমাতে चावात. चावन द'क बुवरे जल्मक स्वरे, किन्छ त्वरे जल्म अक्टी। মুৰ্জন হিংসা ও অভৃত্তি ভুৰদিনীর মত মাধা ভুলতে ৰাক্ত। মৰে হ'ত ভোষার প্রাণয়ম ও অকুক্ ভোষার লেখাতেই পড়ে बाटक, ভाর मर्या जामात श्राम (काबात ? जात रव रमरी নিবছ বৰে, বৰিও ভা আমাকে একবার শোনাচ্ছ, কিছ ভা ভ चामात चरतरे मह। कात । विरच म्हर का विमित्त । चात

ভোষার খ্যাভির কাছে ভূষি বাবে বিকিছে। আমি থাকৰ কোৰার পঞ্চ পু অভিযামে অভয় অমুরে উঠে বলত, ভাই কোক ভবে। মনে হভে লাগল আমার এ পোড়া মুদ্র বেদ মুকুমি। ভোষার কাষ্যরস এর উঠ নিখালে শুক ক্ষে বাবে।

ভাই এক এক সময় মনে কয়ভাম দূরে সরিলে কেলি এই হভভাগিনীর জীবনকে। সরিরে ভোষায় মুক্তি বিই এই সংকীণ মনের বাঁধন হভে। কিন্তু সেও বড় ফ্টিম। 'হাড়াতে গেলে ব্যধা বাজে।' লে বে বিষম ব্যধা।

এমন সময় হৈব উপাত্র করে দিলে। আমার স্বৃত্যু-সংবাদ প্রচারিত হরে পেল। মনকে মিদারুণ শক্ত করে অজ্ঞাত-বাসের এ প্রবোগ ছাড়লাম না। বিজেবের ভীত্র বেদমা ভেদ করে একটা পরম তৃত্তি—আত্মপ্রসাদের কোরারা এ জীবনকে সিক্ত করতে লাগন আশ্রহের আশ্রহে সিরে।

এ পৰ্যাত বলে শাষল এবং ছই ছাতের বাবে বাগাট। ওঁলে দিল বুবি উল্লেখ্য অঞ্চলংবরণ-চেপ্লার।

বিমান পাগরের বত ছিল এতকণ, এইবার আতে একথানি হাতে শিবার অবমনিত পূর্তদেশ বেইন করে চুপ করে বলে রইল—বাক্যহারা। শিবা একটু পরেই মুব তুলে লোকা হবে বিমানের নিকে তাকিরে সহাত মূবে বললে, আত সভিয় মনে হচ্ছে ভপতার আগুনে প্রেরের সব কর্টকভাল পুতিরে তবু কুমুমটা কুটরে তুলতে পেরেছি। তপঃক্লিষ্ট ভালবাসার এই অবহাট। বুবি ভগতে অতুলমীর।

অঞ্চল্লাত নিভ ও প্ৰদীও মুখবানির দিকে বিনান বিশ্বরে ভাকিরে রইল।

আকাশের আলো বিলিয়ে বেতে লাগল। তথ্য সভ্যা স্বাগতপ্রায়, ভাষের জীবনেরও। স্থিম সমীয়ে তেলে আসহিল দেবলারু শ্রেণীর শাবা হতে বিবিধ বিহলমভাজলি।

## প্রণাম

### এশান্তশীল দাশ

আমার প্রণারধানি রেবে বাই ভাহাবের তরে, বাহাবের নান কেছ কোনদিন করে না পরব ; ইভিছাস বাহাবের নামগুলি রাথেনিকো বরে, নিঃশেষে বুছে গেছে ভাহাবের সব বিবরণ।

অকক্ষণ পৃথিবীর বৃক্তে বারা এলো অসহায়, মানুষের অন্তরে একটুও পেল দা লে ঠাই; পড়েছিল এক পালে অনাদরে আর অবভার, মানুষ্যের তারে বাব কোন্দিন কের মতে বাই। কীবনের সুক্র হ'তে বারা ওবু করেছে সংগ্রার, নিরভিত পরিহালে বার বার হরেছে বিকল ; আলেরার পিছে পিছে বুরে বারা কেরে অবিয়ার, নারাই জীবন ববে বালের করেছে আবিজল।

কভ আশা করেছিল, কিছু বাবা পেল বাকো হাত, বাবের জীবনগুলি বরণীভে হ'ল ব্যবকার; ফ্লাভ জীবন বহি' চলে গেল কোন অভানাত, অভানা ভাবের লাগি রেবে বাই আবার প্রবাম।

## বাংলাদেশের মন্দির ও মঞ্চলিপি

ঞ্জীপঞ্চানন রায়, কাব্যতীর্থ

মন্দির নেশ বা জাতির জীবন্ত ইতিহাস। ইহা বেমন প্রতিষ্ঠাতার ধর্মভাব, স্থক্ষচি, লান্দিণ্য প্রভৃতির পরিচয় দেয় ডেমনই পঠনবৈশিষ্ট্য, অলম্বরণ-পদ্ধতি ও প্রতিকা-বিদ্যাস-কৌশলে সকলপ্রকার সামাজিক বিষয়বন্তকে নিজদেহে ধরিয়া রাখে। আবার মন্দিরলিশিসমূহ সাহিত্য, ইতিহাস ও সেই সেই কালের অক্ষর-লিখনভন্তীকে বক্ষা করে। প্রাচীন পুথিতেও আমরা অভীত মুগের হন্তলিশির নিদর্শন পাই, কিছ পুঁথি অপেকা মন্দির-লিশি দৃচ্ পটভূমিতে গঠিত হইলে দীর্ঘকালস্থায়ী হয় বলিয়া আমরা উহাতে বহু প্রাচীন



হাওছা জেলার বেল্যক আমের রপনারারণ নবতীরত্ব অংশোপালকীর অঞ্চাল বন্দির। রাজা বুকুলপ্রদাদ রারচৌধুরী কর্তৃক ১৫৭৩ শকাকে প্রতিষ্ঠিত

লিখনভন্দীর সহিত প্রবিচিত হই। মন্দির ও মন্দিরলিপি দেশের গৌরব ও প্রামাণ্য দলিল। এখানে বাংলার করেকটি মন্দিরের লিপি ও ভাহা হইতে গুহীত ভব্য সংক্রেপে লিখিতেছি।

হাওড়া জেলার গড়কবানীপুরে মণিনার মহাদেবের বে অট্টশাল মন্দির আছে উহার লিপি সম্ভবতঃ বাংলাদেশে প্রাচীনতম। লিপিটি এই: উভগবডো বাহুদেব নারারণত। উভমত্ত শকাস্কা: ১৩-৬।২১ প্রারণ।

ইহা হইতে আমরা প্রায় ছয় শত বংসর আগেকার অক্ষর ও সংখ্যালিখনপ্রণালীর সামান্ত আভাস পাই। এই লিপি ও নিয়োক্ত সকল লিপিই বলাক্ষরে।

মেদিনীপুর জেলার ঘাঁটালস্থ বাংলার নিজস্ব পছতিতে সিংহ্বাহিনীর চতুঃশাল নির্মিত মন্দিরে লিঃপিযুক্ত ছুইটি ফলক আছে। উহাদের পাঠোছার ক্টকর, কিছ "গুডম্মন্ত শকালা ১৪১২" সহজে পড়া বার। ইহা প্রার পাঁচ শত বংসবের প্রাচীন।

হাওড়া জেলার মেল্যক গ্রামের প্রাচীন গোপালজীর

প্ৰসাদ চৌধুবী কৰ্তৃক স্থাপিত। উচ্চে বভধানি নিম্নেও ভভধানি প্ৰোথিত বলিয়া এখনও স্ফটট আছে। -

মেদিনীপুর জেলার চন্দ্রকোণার নিকটবর্ত্তী লালগড়ে পূর্বেবে নবরত্ব মন্দির ছিল ডাহাডে ক্লকপ্রতারে উৎকীর্ণ স্থার্থ লিশি ছিল। লিশিষ্ক্ত প্রতারকলকটি এখন চন্দ্র-কোণার বর্জমানরাজের ঠাকুরবাড়ীডে আছে। উহার লিশি:

শুভমন্ত পকান্ধা: ১৫৭৭ পাকেছবিশ্বনি বানেক্ষো বৈশাধে শুক্লপঞ্চক।
তৃতীয়ায়াং ভৃগুদিনে শ্রীরভোকভূজাবহ (?)। ছবিলায়ান-নৃপক্ত পদ্মী
শ্রীলক্ষণাবতী। শ্রীরাধাকৃকরো: শ্রীতো নবরভূমিক করে। রাধাকৃক্ষণাবিক্ষাসিকা শ্রীরাজানোর্বধু। খ্যাত-শ্রীরাক্ষণভেক্ত বনিতা
শ্রীরোলায়াল্ললা। মাতা শ্রীবৃত বিজ্ঞানে মূপতের্বিখ্যাত শ্রীর্থে: কিতে।।
শ্রীনারান্ধ বন্ধকৃপ ভঙ্গিনী রুষাং করে। মন্দিরন্। গ্রিরিধারিপল্ডোজে নববভূমিক শুক্রম্ । নির্মান্ধ বহু ক্ষেত্রন স্মর্শিতব্রতী মুদা। পৌরাণিক্
শ্রীনোহন্দক্ষণী রোক্সদাস।

লিপিটি চক্রকোণার লুপ্ত ভান রাজবংশের একটি ক্র ইতিহাস। সভবতঃ মোহন চক্রবর্তী উহার রচয়িতা ও গোকুলদাস মিল্লী। লিপির মর্ম: বীরভাত্মর বধু, হোল-রায়ের কন্তা, রাজা হরিনারায়ণের পদ্ধী, রাজানারারণ মলের ভাগনী ও রাজা মিল্লগেনের মাতা শ্রীলম্বণারতী ১৫৭৭ শকের বৈশাখ মাসের মজর তৃতীয়ায় লিয়িধারীর প্রীতির নিমিত সানন্দে এই রম্য মন্দির দান করিলেন। লিপিজে মাস্ট্রপ ও শার্ক্ লবিক্রীড়িত হন্দ আছে। শান্ত রস ইহাকে কাব্যের রূপ লিয়াছে। স্ত্রীলোকের নামের পূর্কে শ্রীষ্ডী না লিধিরা মাত্র শ্রী বাবস্কুত হুইয়াতে ইহা লক্ষ্ণীর।

**ठळरकाना इरेटक नाठ त्कान मृद्य यांडाल बाहेबाब** 

রান্তার পাশে নবগ্রামে বে নানা শুপ্ত কক্ষবিশিষ্ট প্রাচীন পঞ্চরত্ব আছে, উহার লিপি: "মবেদ্রসসংযুক্তেশাকেচৈব নিশাপতো। গোপীনাথক্ত বেশ্মেদং ভক্তিতো দন্তবানহম্।" মন্দ্র—১৬৪০ শকাকে গোপীনাথের এই মন্দির ভক্তি-পূর্বক দান করিলাম। লিপিটি সরল শান্তরসপূর্ণ ও শিলা-কলকে উৎকীর্ণ।

বাংখার বাহিরে উড়িয়ার ভ্রনেশরের জনস্ক বাস্থদের মন্দিরে রাজা হরিবর্মার মন্ত্রী ভট্টভরদেবের শিলালিপি তুইটি স্প্রপাচীন বাংলা লিপির নিদর্শন।

প্ৰীধামে মার্কণ্ডের সরোবরের ঘাটে বাংলার নিজম বীতির ইটক-নির্মিত চতঃশাল মন্দিরটি বর্তমানরাজ কীর্মিচন্দ্র-নির্শ্বিত। **देश**व वक्राक्टव বুচিত প্রস্তব্যলিপিটি এইরপ: "শ্রীশ্রীহবি। লভমক্তশকাৰা: 2666 ষ্ডসদর্শন মিতেইকে। পহোদ্ধরত (?) সৌধ नुभ को छिष्ठख बननी সোপানং। জনিতং। প্রেষিত হরে কৃষ্ণাত: (१)। লিপির 'ড' 'ড' চইলেই অর্থসক্ষতি হয়। মুর্ম সম্ভবত: এট : বাজা কীবিচন্ত শকাৰে এই সরোবরে পঙ্গেদ্ধার, ও সৌধঘাট নির্মাণ করাইয়া মাত্রণ শোধ করেন। জলাশয় ধনন ও ঘাট নিৰ্মাণে মাত্ৰণ শোধ হয় প্রাচীনগণ এরপ ধারণা কবিতেন।

মেদিনীপুর জেলার চেতৃয়া বাস্থদের-পুরেম্ব (পো: সঙ্করপুর) মুক্তারাম ভটাচার্যের পঞ্চরত মন্দিরের লিপি:

দহনবমনগন্ধাসন্মিতে শাক বর্ষাক্ষতির নিলয়মেতং গ্রীলদামোদরার । কুলকুম্দকলেশ: গ্রীলমুক্তাভবামো। বস্থলপরমভজ্ঞোদভভূর্মেদ মাল । ১৭২৩ শকান্ধাতে কুলরপ
কুম্দেরচন্দ্র ম্কারাম এই মন্দিরটি দামোদরকে দান করেন।
দিশিটি পোড়ামাটির, ছুই পংক্তিতে সমাপ্ত। ইহার ছন্দ
মালিনী, ভাবা স্বল, অলহাবপূর্ণ ও শাভ্রস্যুক্ত।

নদীয়া জেলার গোরাড়ী কৃষ্ণনগরের আনন্দমন্ত্রী মন্দিরের লিপি:—বেলাজেকণ গোত্র কৈরব কুলাধীপে শকে শ্রীযুতে। কৈলালপ্রতিক্রপ কৃষ্ণনগরে শ্রীমদ গিরীশোৎসবে।। নামানন্দ-মরী অভেহ্ছনি মহামায়া (?) মহাকালভূৎ। রাজা শ্রীল গিরীশচন্দ্র ধ্বনীপালেন সংস্থাপিতা।।—বাজা গিরীশচন্দ্র ১৭২৬ শকাকে কৈলানভূল্য কৃষ্ণনগরে শুভ গিরীশোৎসবে আনন্দমন্ত্রী প্রতিষ্ঠা করেন।

মেদিনীপুর জেলার রাধাকাভপুরে (পো: সহরপুর)

দাসবংশের স্থঠাম, পুত্তলিকাবহন ও অলহারম্ভিত আল-গোছ টুলী মন্দিরে পোড়ামাটির আটটি কলকে নয় পংক্তিতে বাংলা প্লালিশি:

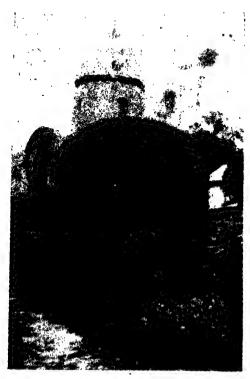
রাধাকান্তপুরে বাস নাম জনানন্দ্রাস বর্গে বাস এট সে কারণে:
মহা মহা পুণাবলে সপ্তপুত্র কিভিডলে কোটপুত্র ভামদাস নামে:
বিনি দাড়া পুণাোদর প্রকালিত সহালর ম্বাম তৃতীর সহাদরে:
বর্জমানে গাঠাইরা গোপীনাথে আনাইরা দ্বাপন করিলা এই বরে:
নবাব পৃথিবীপতি তার ভরে ব্যস্ত অতি সীবানা ঘেরিয়া পুলিলা গড়:
দামানা দ্বলা পরে কর চন্ডীর কুপাবরে পুকরিশী খুলিলা ভার পর:



ৰেছিনীপুর বাঁটাজের সিংহ্বাহিনী ৰ দির চতু:শালরীভি-- প্রতিঠাশক ১৪১২

সন্ধান গাইলা বদি সন্ধাসিং নরপতি সেই হেতু কড়া না আইসে:
কল্পনান ক্রোবছরে আজা দিলা অন্তরে হান লিব প্লাতিক রোবে:
বিপক্ষ হইল কাল কাল দ্বল প্রকাল কিছু না লানিল মহাশর:
ভাহাতে ছেলিল মুক্ত ছুগা ছুগা ডাকে তুও শুনি রালা মানিলা বিশার:
কবিতা করিতে তার এই ছানে আঁটা ভার হ'ল ছুই শক্ষেক বংসর:
রীতি নীতি পিতৃকীর্ত্তি এই বংশে জ্ঞাববি বন্ধনাই হতেহে ফুলর:
আগল হইল ইবে বৃক্ষ হৈল মন্ধিরেতে সাবাইতে সাব্য নাহি কার:
নারাগলাসের বংশে মধামবাড়ীর অংশে বজ্ঞেবর ক্লেছিল সার:
সন ১২৭১ সালে গোজীর সহিত মিলে নানাবৃক্তি করে লবে লবে:
তেহ বলে লরা কর কেহ বলে একেই সার বজ্ঞেবরের কিছুই না লয় মনে:
পিতৃকীর্ত্তি ভূবাইরা কেমনে করিব ইহা সারাইব বা থাকে ভালোতে:
ভ্রমনোকে ভালাইরা হীক মিন্ত্রী আনাইরা উল্লোক করিল সারাইতে:
সন ১২৭১ সালে গোজীর সহিত বিশে বন্ধির করিলা বেরাবতি:
হিসাব কর্ছ সবে ইহাতে নিকাস পাবে কবিতা সনাপ্ত হৈল ইতি:

অর্থ সরল। বাংলার শিবাজী সভাসিংহের আংলেশে জনানন্দাসের মন্তক ছেলন হইলে কাটামুও ছুর্গা ছুর্গা বলিয়াছিল। বে মকুর একটি কড়ি পারিশ্রমিকে কাজ করিত ভাষাকে কড়া বলে। লিপিতে কোলন বিরাম চিক্তরপে বাবস্তুত হইয়াছে। লিপির বর্ণাগুছি শোধন করিয়াছি।



মেদিশীপুর রাধাকাভপুরের বাসেবের গোপীনাথ বনির (এক্ষরত্ব বা আলগোছ টুলী রীভি অনুসারে নির্বিভ অধীর্থ বাংলা পভলিপিছ্ড)

ঐ গ্রামের একটি উৎকলরীভির মন্দিরের লিপি:
৺শ্রীশ্রীকাশীশর মহাদের ছাপন। শকান্ধ: ১৭৬৭ সন ১২৫২
সাল মাহ আবাচ। জেই হেড় মহাদের কাশীশর নাম:

ক্ষললোচন দত্ত গীয়াছিল গ্রাথাম: পিভার কর্মপ্রে কাশী গমন বাসনা: কিন্তু গ্রিছে ভাত্তিগণ করিল মানা: প্রীভ্যাগমনেভে সিব ভাগন করিবে: কাশী গমনের ফল ভাহাভে পাইবে: এই হেডু প্রকাস হইল কাশীখর: মন্দার সমান কাম মোলক কিংকর: (१)

বৰ্ণাশুদ্ধি দক্ষণীয়। শেব পংক্তির অর্থ অস্পষ্ট। কোলন বিরামচিক রূপে বাবজত।



চতুহা ৰাপ্তৰেবপুৱের গুলাৰ দণ্ডের শিবনন্দির। নন্দিরের উর্বভাগ গণুভাঞ্জি বলিয়া ইহা ইসলামীর রীভিজে নিশ্বিভ

মন্দিবের মত অনেক রাসমঞ্চ ও বছডলবিনিট চূড়া ও পুড়লিকাবছল এবং লিনিযুক্ত। মেদিনীপুর-পাশকুড়ার ইটোরা মান্দলোই গ্রামের একটি অটকোণ, জিডল, জমোন্দশ চূড়ার স্কঠাম, সোপানযুক্ত, পুড়লিকাবছল মঞ্চের লিনি— শ্রীশ্রীরাধাদামোদর জীউ। শুভুমন্ত শকান্দা: ১৭৮০ স্ব ১২৬৬ ইন্দরাক্তি সন ১৮৫০ সাল। শ্রীঠাকুরদাস মাইতি 1

মন্দিরলিপিতে শকাক ও বাংলা সনই ব্যবহৃত হয়।
এই লিপিতে খ্রীষ্টাক্ষও ব্যবহৃত হইয়াছে—ইহা অভিনৱ।



## वाःना ७ वाडानी

### এমুশীলচন্দ্ৰ ঘোষ

বাঙালীর আর্থিক ও রাজনৈতিক অবন্তির কারণ অন্ত্যনান করিতে হইলে প্রথমে পশ্চিম বাংলার ভৌগোলিক সংস্কান সমতে কিছু আলোচনা করা দরকার। শিরের প্রসারের অন্ত ও থাল্যে অয়ংসম্পূর্ণতা লাভ করিতে হইলে প্রত্যেক প্রদেশেরই তাহার আয়তন এবং লোকসংখ্যার অন্ত্পাতের মধ্যে বতদ্ব সম্ভব সামক্ষত্ত থাকা দরকার। তাহা না হইলে সেই প্রদেশবাসীর আর্থিক তুর্বলতার প্রতিকার করা কোনমতেই সম্ভব নয়।

কোনত প্রদেশের প্রতি বর্গমাইলে লোকসংখ্যার চাপ
আর্থাৎ বসতির হার বদি আতাধিক হয় তাহা হইলে
প্ররোজনীয় ভূমির আতাবে খাদ্যোৎপাদন ও শিল্পস্থাসারণ
আগন্তব হইয়া পড়ে। এই হেতু সেই প্রদেশকে বিদেশ
হইতে এবং অপর প্রদেশ হইতে খাদ্য ও আনান্য বহ
নিত্যবাবহার্ব্য জামদানী করিতে হয়। ইহার ফলে
সেই প্রদেশবাসীর অর্থ আন্য প্রদেশে ও বিদেশে চলিয়া
বায়। একমাত্র শর্করাশিল্পের দিকে লক্ষ্য কবিলে দেখা
বায় বে, পশ্চিম বাংলার মাটি এই শিল্পের পক্ষে বিশেষ
উপবোসী হইলেও ভূমির অভাবে এই প্রদেশে ইহার
প্রসারণ হইতে পারিভেছে না। ফলে প্রতি বংসর লক্ষ
কক্ষ টাকার চিনি অপর প্রদেশ হইতে আমদানী কবিতে
হয়। আয়ভনের দিক হইতে বর্ত্রমান পশ্চিম বাংলার
অবস্থা কিক্ষণ দাঁভাইয়াছে তাহা নিয়ে দেখান হইল:

धरम्भ	আয়তন বৰ্গমাইল	১৯৪১ সালের আদমস্থমারী অন্থসারে প্রতি বর্গমাইলে			
		লোকসংখ্যার চাপ			
<u> শাজাব্দ</u>	১,২৬,১৬৬	<b>دد</b> ی			
উত্তরপ্রদেশ	>,•७,२८१	6.24			
मधा अदम्	25,494	>1>			
বোখাই	16,800	. २१७			
<b>ৰি</b> হার	42,18¢	. (2)			
<b>শা</b> নাম	60,276	389			
পূৰ্বপঞ্চাব	99,0eb	8 • 4			
উড়িক্সা	466,50	293			
শশ্চিম ৰাংলা	٠٠,٠٠٦	163 ( 288 )			
	•	ror ( 33e3 )			

এই হিসাবে স্পষ্টই দেখিতে পাওয়া বাইতেছে দে,
আয়তনের দিক হইতে পল্টিম বাংলার স্থান কেবলমাত্র
সর্বানিয়েই নহে, অধিকত্ব প্রতি বর্গমাইলে তাহার বসন্তির
সংখ্যাও অত্যধিক। বাস্তহারাদের সংখ্যা দিন দিন বেরপ
বাড়িয়া চলিয়াছে তাহাতে মনে হয়, পল্টিম বাংলার
প্রতি বর্গমাইলে বস্তির হার উত্তরোভ্যর বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইবে।
এই প্রদেশের অন্ধ-বন্ধ সমস্তা অপেক্ষাও আয়ডন-সমস্তাই
ভক্ষতর। ইহাকে জীবনমরণ-সমস্তাও বলা চলে।

ভারত স্বাধীন হটবার পর বেশীর ভাগ প্রাদেশেরই আয়তন, পাৰ্যতী দেশীয় বাজাগুলি সংযুক্ত হওয়ার ফলে वृद्दे वाष्ट्रिया शिवाद्य । किन्द्र छः त्वेद विवय, न्यायमञ्ज দাবি থাকা সত্ত্বেও পশ্চিম বাংলার সঙ্গে কেবলমাত্র ছুইটি কৃত্ত আয়তনের দেশীয় রাজ্য-কুচবিহার, ত্রিপুরা এবং একটি ছোট শহর চন্দননগর এই প্রবেশের সঙ্গে সংযুক্ত হইয়াছে। একেই পশ্চিম বাংলার ভাষার প্রয়োজনাত্তরপ চাউল উৎপন্ন হয় না, ভাহার উপর বন্ধবিভাগের পর পাটের অভাব হেতু ধানের চাব কমাইয়া সেই সব জমিতে কেন্দ্রীয় সরকারের ইচ্ছাতুসারে পার্ট চাবের ব্যবস্থা প্রদেশ-সরকার অধিবাদীদের অরাভাব অপেকা পাট-কলওয়ালাদের পাটের অভাবের জন্য ভাষারা অধিকতর : চিস্তি। বাংলাদেশে "अधिक थाना ्क्लां । अधिकान ও "বৃন্ধবোপণ-উৎসব" একটা প্রহদনে দীড়াইছাছে। ভারত-সরকার পরবাষ্ট্র সমস্তা লইরাই সর্বাদা বাত, প্রদেশ-সরকার নীরব, প্রদেশের রাজনৈতিক নেভারা নির্বাচন-ছদ্দে মাডিয়া আছেন। প্রবীণ বাংলা উদাসীন এবং নবীন वाःमा এ विषय अटकवादव উদामशैन। वक मिन वाद्यांनी তাহার হ্রবস্থার এই মূলগত কারণ অর্থাৎ স্থানাভার ঘুচাইতে না পারিবে তত দিন তাহার অল্লাঞ্চাব, অর্থাভাব, ৰাখ্যাভাব প্ৰভৃতি কোন অভাবই দ্বীভৃত হওয়া দুৱের कथा, ववर मिन मिन वाफियारे बारेटव ।

শ্রমিক সমস্তা বাংলার আর্থিক চুর্বলেতার আর একটি কারণ। অর্থাভাবে ও অল্লাভাবে বাঙালী জাতি আরু ক্রমেই স্বান্থাহীন হইরা পড়িতেছে এবং এ কারণে এই প্রস্থোশ প্রতি বংসর লক্ষ্ণ লোক ম্যালেবিলা ও বস্থা-রোপে প্রাণ হারাইতেছে। বাঙালী ভাতি আরু ক্রিকু। এই কার্থ চাবের কার্য্যে বেশীর ভাগ বাঙালী শ্রমিক

অভ্নৰোপী হইরা পভিয়াছে। বাংলার কলকারধানা ও ক্ষেত্রে কার্ব্যে নানা কার্বে বাঙালী প্রমিকের সংখ্যা দিন দিন কমিয়া বাইতেছে, সাঁওতাল প্রপণা ও বাঁচিব প্রমিকদের ছারাই বেশীর ভাগ কৃষিকার্যা আঞ্চলাল हानांडेटल हर। शाहेकन, कांशरणद कन ७ जनांना निब-কাওধানায় প্রায় শভকরা নকাই জনের অধিক প্রমিক অপর প্রছেশবাসী। কলিকাড়া শহরে নানা কার্যো নিবক্ত প্রায় সমত প্রমিক্ট ভিন্ন প্রানেশ হটতে আগত: खाहादा ना हहेरल हरल ना। ১৯৪৮-৪৯ **मालद मदकादी** বিষয়ণে প্ৰকাশ, বাংলা ও আসাম চইতে প্ৰায় ৩৫ কোটি ৪৪ লক্ষ্ণ টাকা মণি অর্ডারবোর্গে বিভিন্ন প্রদেশে পাঠানো হইয়াছে এবং সেই সময়ের মধ্যে বাংলায় ও আসামে ৩০ কোটি ১৮ লক টাকার মণি অর্ডার আসিয়াছে। অর্থাৎ ৫ काहि २७ नक होका ১৯৪৮-৪৯ माल वारना ও जामाय হইতে বাহিরে বেশী পাঠানো হইয়াছে। বদি মোটামটি ইহার শতকরা ১০ ভাগ টাকা আসাম হইতে পাঠানো হটয়াছে বলিয়া ধরা বায় তাহা হইলে বাংলাদেশ হইতে উক্ত বংসরে এই প্রদেশবাসীর প্রায় ৪ কোটি ৭৪ লক টাকা বাহির হট্যা গিয়াছে। বে সমস্ত টাকা মণি অর্ডার-বোরে পাঠানো হয় ভাহার বেশীর ভাগই ক্রবি ও শিল্পকার্ব্যে নিৰ্ক শ্ৰমিকেরাই গাঠাইরা থাকে। বাংসবিক প্রার পাঁচ কোটি টাকা প্রদেশের বাহিরে চলিয়া বাওয়া কম কথা নহে।

শান্য ও অন্যান্য নিতাব্যবহার্য ক্রব্য ক্রের করিবার জন্যও পশ্চিম বাংলা হইতে বাৎদরিক মোটাম্টি কড কোটি টাকা অন্য প্রদেশে চলিয়া বার, ভাহার বিভারিভ বিবরণ পরে দিব।

খাধীনভালাভের পর আর্থিক ক্ষেত্রে বাংলার আর একটি নৃতন সমস্তা দেখা দিয়াছে। বছ বিদেশী কোম্পানী ও শিল্পপ্রতিষ্ঠান বিদেশবাসীরা ভারভীর্নদেশের নিকট বিক্রয় করিয়া চলিয়া সিয়াছেন। বত দ্র জানা বার, বাংলাদেশেই তাহার সংখ্যা বেশী এবং অপর প্রদেশবাসী ধনীরাই ইহার অধিকাংশ ক্রয় করিয়াছেন। এই সমস্ত প্রতিষ্ঠানে পূর্বের বছ বাঙালী কেরাণী এবং অনেক ছোটবড় বাঙালী ব্যবসায়ী নানারপ মাল সরবরাহ করিভ। বাহারা ঐ স্কল শিল্পপ্রতিষ্ঠানে উৎপন্ন ক্রব্য ক্রয়-বিক্রয় করিভ তাহাদের সংখ্যা নিভাস্ক কম নহে। উপস্থিত এই প্রতিষ্ঠানগুলি অন্য প্রদেশবাসীদের হাতে বাওয়ার ফলে এই সমস্ত কাল এবং ব্যবসা হইতেও বাঙালীদের হটিয়া বাইতে হইতেছে। ইহার পরি গাম কি দাঁভাইবে ভাহা বলাই বাহল্য।

## শাশত

## वित्वृ गत्नां भाषाग्र

ভাবি ভাবি বিলাইবে ভাবজের বৃহুর্ত চকল।

বিভাগের কুলোংসব এক বিষ কুইবে বলিব,
পুলারিভ প্রাণলভা ববুরাভ হরে বাবে ভাবি,
এও ভাবি, ভাবিভার ভূবি ভাবি হব বা ববীব।

বৌৰন-চৈততে তথা উএগৰী প্ৰেন-পৰিমল সুক্ষৰে স্মাৰতি কয়ি হবে বহু আৰু ববুনৰ। প্ৰেৰেয় এ পৰিণতি সত্য বলে কানি আৰু নানি। আফিকায় হাতোজ্ব এ আনন্দ, এও মিধ্যে নৱ।

মিধ্যে নর বুবোদুবি এই বসা, এই কবা কথবা, মিধ্যে নর চোবাচোবি, আলিদন, প্রশাচ চুবন। সভ্য হুট ব্যবহার রলোজ্ল ভাব বিনিবর। অতি সভ্য আজিভার পরিপূর্ণ এ আনক্ষণ।

নত্য ভূমি, নত্য আমি, নত্য এই আৰম্ভ চণল । পুন্দর এ দান্দত্য-প্রথবেছ দীলা-প্রকল ।



## পশ্চিমবঙ্গের খাতাসঙ্গট

### 🗃 শিবত্রত হোষ

পশ্চিমবন্দের থাদ্যসন্ধট ক্রমণ বেরণ প্রকট হইয়া উঠিছেছে তাহাতে শীঘ্রই এ রাজ্যে পঞ্চাণের মন্বস্তবের পুনরাবৃত্তি ঘটিবে বলিয়া আশকা হয়। রাজ্যে আজ অন্ধ নাই, বাহা আছে তাহা জনগণের ক্রয়-শক্তির বাহিরে। জনসাধারণ সরকারের নিকট আন্নের দংবি জানাইয়া ব্যর্ব হইতেছে; ফলে রাজ্যের বিভিন্ন অঞ্চল হইতে ঘ্রিকের এবং অনশনে মৃত্যুর সংবাদ আসিতেছে।

পশ্চিমবন্ধের এই থাদাসন্ধটের হাত হইতে পবিদ্ধাণ দাভ কবিতে হইলে প্রথমে আমাদের থাদা-সমস্থার কারণ দানা প্রয়োজন। কেন্দ্রীয় ও রাজ্য-মন্থিগণের বিবৃতি, হক্তা, বেতার-ভাষণ প্রভৃতি হইতে আমরা জানিভেছি দশ্চিমবন্ধ ঘাটুলি রাজা। অর্থাং এখানকার অধিবাসি-দুণের যে পরিমাণ থাজ্বশুরে প্রয়োজন তাহা অপেক্ষা র বাজ্যের উৎপাদনে গরিমাণ গল্প এবং এজনা পর্বনির্ভব-দীল হইয়া বহিংছে। স্বকার ইহাই পশ্চিমবন্ধের দালাভাবের প্রদান কাবন বিদ্যা প্রচাব করেন। খাদা-মিস্তা সম্বন্ধে সরকারী অভিমত অল্রন্থ বলিয়া প্রকাশ রাইলে ন্নগণে এ বি গে বলিবার ব্রেশ্ব কিছু খাকে না। রাই কাবনে আমাদের অন্ত্রন্ধনে ক্ষিয়া দেবা প্রয়োজন শ্লিমবন্ধ প্রক্তপক্ষে ঘট্টি অঞ্চ কিনা।

কোন্ অঞ্চল ঘট্ত বা উৰ্ত্ম তাহা নিৰ্ণয় করিতে লৈ প্রথমে ঐ অঞ্চলের খাল্যোংশাদনের পরিমান, উহার জনসংখ্যা এবং জনগণের অঞ্পাতে চাহিদা দ্বির করা য়াজন। অতএব পশ্চিমবঙ্গ রাজ্যের বাংস্বিক উৎশন্ধ দ্যার পরিমানের প্রতি সর্বাহ্যে দৃষ্টি দেওয়া কর্ত্তব্য। চমবজ্বে খাদ্যবস্তু বলিতে প্রধানতঃ চাউলকেই বুঝায়। কাজ্যে ভিন শ্রেণীর চাউলই উল্লেখবোগ্য। সরকারী নাবের সাহাব্যে আমরা পশ্চিমবঙ্গে কোন্ শ্রেণীর ফাক পরিমান উৎপন্ন হয় এবং মোট উৎপন্ন চাউলের মান আনিতে পারি। নীচে ঐ হিসাব দেওয়া গেলঃ

১৯৫০-৫১ সালের উৎপাদন হাকার টন হিসাবে

<b>যো</b> ট	<b>*•</b> ¢¢
বোৰো	>6
<b>ভাষ</b> ন	<330
<b>ভাউ</b> শ	400
	<1-11-0-11

Indian Irade Journal, Sep. 8, 1951, page 802.

উপবের হিসাব হইতে দেখা বাইতেছে বে, পশ্চিমবদ্থে ১৯৫০-৫১ দালে মোট চাউল উৎপন্ন হইয়াছে ৩৯ লক ১০ হাজার টন অথবা ১০ কোটি ৭৫ লক ২৫ হাজার মণ। চাউল ব্যতীত পশ্চিমবঙ্গে আরও নানারপ খাজ্যশশু উৎপন্ন হইয়া থাকে। তন্মধ্যে গম, বব ও ভূট্টা বিশেষ উল্লেখবাগ্য। এ বাজ্যে এই তিন প্রকার শশু কি পরিমাণ উৎপন্ন হইনা থাকে তাহা নীচের তালিকা হইতে অনায়াসেই বুঝা বাইবে:

১৯৫০-৫১ সালের উৎপাদন ( হাজার মণ হিসাবে )

গ্ৰ	2259
<b>य</b> व	<b>316</b>
<b>बृहै।</b>	৬৪৮
	2800

দেখা বাইতেছে সকল প্রকার বান্ধরর সংস্থার পশ্চিম-বলের উৎশন্ধ বান্ধ্যকের বাৎসারক পরিমাণ দাঁড়ার ১১ কোটি মণের মত।

ইহার পর অমাদের জনসংখা। ও প্রয়োজন নির্ণয় করিতে হইবে। ১৯৫১ সালের অদমস্থানী অসুসারে পশ্চিমবন্ধের জনসংখা। ২ কোটি ৪৮ লক্ষ হইয়াছে। এই ১৪৮ কোটির মধ্যে শিশু কিশোর, প্রাপ্তবয়স্ক প্রভৃতি বিভিন্ন বয়সের লোক বহিহাছে। উহা চাডাও প্রপ্রবয়স্ক দিপের মধ্যে বিধবা এবং এমন অনেক ব্যক্তি আছেন বংহার। নৈকি একবার অন্নগ্রহণ করেন। এই কারণে মোট জনসংখ্যা হইতে প্রথমে আমাদের প্রাপ্তবয়স্কদের সংখ্যা বাহির করিয়া তাহা হইতে বিধরা এবং অঞান্ধ বহাবা একাহারী তাহাদের সংখ্যা বাদ দেওয়া প্রয়োজন। উহার পর ধ বংসরের শিশু হইতে ১৫ বংসরবয়স্ক কিশোরস্বেণর এবং ধ বংসর পর্যন্ত শিশুদের সংখ্যা বাহির করিতে হইবে। জনসংখ্যা স্থিব করিবার পর উহাদের চাহিদা নির্ণয় করা বাইবে।

মোট জনসংখ্যা ২ কোটি ৪৮ লক্ষ প্রাপ্তবয়ন্ত ব্যক্তির সংখ্যা মোট জনসংখ্যার

শভকরা ১৯২ জন হিসাবে ১,৪৬,৪১,৬০০ প্রাপ্তবয়স্ক বিধবা একাহারীর সংখ্যা

শতকরা ৮'ও জন হিসাবে ২০,৫৮,৪০০ প্রাপ্তবয়ক একাহারীর সংখ্যা

শতকরা 🗢 জন হিসাবে ১৪,৮৮,০০০

ve,84,8..

रित्निक पृष्टे वात अबश्यक्षकाती आश्चवस्यत

त्यां वर्षा ३,३०,३६,२००

e हरेटा ১৫ वरमद वबस्रतात मःथा।

জনসংখ্যার শতকরা ২৫'২ জন হিসাবে ৬২,৪৯,৬০০

• হইতে ৫ বৎসর বয়স্ক শিশুর সংখ্যা

জনসংখ্যার শতকরা ১৫'৫ জন হিসাবে ৩৮,8৪,০০০ বিভিন্ন শ্রেণীর জনসংখ্যার হিসাব উপরের তালিকা হইতে আমরা দেখিতে পাই। এক্ষণে উহাদের খাছের প্রয়োজন কি পরিমাণ তাহা দ্বির করা যাক্। কৃষক, শ্রেমিক, মধ্যবিত্ত ইত্যাদি প্রত্যেক প্রাপ্তবয়স্ক ব্যক্তির জন্ত গড়পড়তা দৈনিক মাখাপিছু৮ ছটাক বা আধ্যের চাউল বংগট। প্রাপ্তবয়ন্তদের ৮ ছটাক হইলে বাহারা এক বেলা আরগ্রহণ করেন তাঁহাদের ৪ ছটাক, ৫ হইতে ১৫ বংসর-বয়ন্তদের ৬ ছটাক এবং শিশুদের জন্য ২ ছটাক বলাজ করিলেই চলিবে। এইরপ বরাজের ফলে প্রাপ্তবয়ন্ত্র, একাহারী, কিশোর এবং শিশুগণের মাধাপিছু বাংসরিক বাজের চাহিলা দাঁড়ায় বথাক্রমে ৪ই, ২ই, ৩ই এবং ১ই মণ। এখন হিসাব করিয়া আমবা দেখিতে পাইব পশ্চিমবঙ্গের বাংসরিক মোট খাল্যশশ্রের প্রয়োজনের পরিমাণ কিরপ। উহার পর বাংসরিক উৎপাদন ও চাহিলার সামগ্রশ্র করিলে দেখা যাইবে এ রাজ্য প্রকৃতপক্ষেত্র রু না ঘাট্তি অঞ্চল:

মাথাপিছু বাৎসরিক ৪ই মণ হিদাবে প্রাপ্তবয়স্কলের মোট প্রয়োজন ৪,৯৯,২৮,৪০০ মণ

	₹	*	একাহারীগণের	20	92,92,800
	٠٠		কিশোরগ <b>ণে</b> র		٠,٥٥,۶٤,٥٠٠,

ू ऽहे सम्बर्गालय स्थापन प्रश्निक स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्

বংসরে পশ্চিমবন্ধের মোট প্রয়োজন ৮,৩৩,২৪,৭ • মণ

পশ্চিমবজ্যে খাল্যশক্ষের উৎপাদনের মোট পরিমাণ

১১ কোটি টনের কিছু অধিক এবং চাহিলা ৮ কোটি ৩৩

লক্ষ ২৪ হাজার টন। স্কুরাং স্পাই দেখা বাইডেছে,
প্রতিবংসর আমাদের রাজ্যে প্রায় ২ই কোটি টন খাল্য
শক্ত উদ্তেখাকে। অবস্থা বীজ প্রভৃতির জন্ত কিছু অংশ
মোট উৎপাদন হইতে বাদ দেওয়া প্রয়েজন। উহার

শরিমাণ শতকরা ৫ ভাগ হিসাবে ধরিয়া ৫০ লক্ষ টন
ধরিলেও পশ্চিমবলের বাৎস্বিক উবস্ত ২ কোটি টন

অবস্থাই থাকে।

উপরের সরকারী পরিসংখ্যানগুলি হইতে ইহাই নিঃসংশার প্রমাণিত হয় বে, এ বাজো খাদ্যশক্ষের কোন খাট্ডি নাই। ঘাট্ডির পরিবর্টে উষ্ত দেখা বাইতেছে খবচ বংসরের পর বংসর সরকারী ভাবে এ বাজাকে ঘাট্তি অঞ্ল বলিয়া প্রচার করিবার কারণ কি ?

ঘাট্তি অঞ্চল না হইলেও পশ্চিমবজের খাদ্যাবস্থা বছ বংসর হইতে শোচনীয় হইয়া উঠিতেছে। ইহাব কাবল কি হইতে পাবে ? এই খাদ্যসম্ভের জন্য মুখ্যতঃ দায়ী সরকারী অর্বস্থা, জোভদার ও ব্যবদাদারগণের অভি-লোভ এবং কালোবাজারীদের প্রতি স্বকারী উদাদীন্য। বে খাদ্যসম্ভ বর্তমানে বা লাকে ধ্বংসের দিকে টানিতেছে ভাহা মহয়। কত সম্ভ বলিয়াই মনে হয়। স্বভরাং সংকার ও জনসাধারণ বদি সমাজন্তোহী কার্যকলাপ দমন এবং সমাজন্তোহী ব্যক্তিবর্গের উপর্ক্ত শান্তির ব্যবস্থানা করেন ভাহা হইলে বর্ত্তমান স্মটের হাত হইকে নিস্তারলাভের আশা স্পূরপরাহত।



# वन्दी यात्रा

### এরামপদ মুখোপাধ্যার

. .

আমলেন্ খবর বিলে—একটা বভ রক্ষের সহাম পাওছা পেছে। পাকিছানে কাপভ আর চিনির অভাব বভ বেই— পশ্চিমবল থেকে ওগুলি মাকি কালোবাভারীরা চালাম দিক্ষে পাকিছানে।

কেন—সীমানার পাহারা নেই—শুক-আপিসের কর্তারা করতেন কি গ

পাহারা আহে—ভত কড়া নর—আর ওক অফিনার সবাই ভো সাধুনর। এ ছাড়া চোরাকারবারীরা বা ড়ৌশন করতে তাতে বরাও নাকি মুশকিল।

একবাৰি কাগত বার করে ভার পাভাগুলি সামনে যেলে वत्राम जमामजू। এই দেব জলের ওপর ভাসতে যাত্রী-(बाबार बोटका-क्राब समाब प्रम कन कार्वकारमा द्वारकब মব্যে হয়েছে মতুন কাপড়, নৌকার নীচে শিক্স দিয়ে বোলামো ট্রান্থ দিব্যি কলের তলা দিরে ভিন্দুখান বেকে भाकिशामं काल बाटकः। **भाव अहे त्वयं स्वि—दिनशक्ति** नारकहेतित यायात करनत है।।इ-अट्ड कन त्मरे, चारक মতুন কাপড় বোঝাই করা। দিব্যি জু বুলে জোড়া জোড়া ৰুতি সাড়ি এর মধ্যে সাজিবে রেখেছে। দেব— গাড়ির ভলার চাকার পাশের লোহার রভে বোলামো--বড় বড় বড়া। এই रमचंद्र (वामकी रमध्या स्वरकी---कारमञ्जू क्षेत्रे रद्दामक निरंब এ সীমানা থেকে ও সীমানাম বাচ্ছে—বাছমন্ত্রে ওর ভাইপুট খোকা কাপড়ের বাভিল হয়ে যাছে-ভেমনি কভ রোগা লোক সহসা মেদবৃদ্ধিতে বেমানাম হয়ে উঠছে। স্লির ভলার-উক্লভে কোমরে বুকে পিঠে জামার নীচের জোবার मा এर मूरकाচृति (बना। ) हार्च अभिरंद अभाव (बरक अभारत গেলেই দশ বিশ টাকা লাভ।

প্রভাভ বললে, এ ভো সবই দেবছি বলা পড়ে ছবিতে উঠেছে—ভবু চলছে ?

হঁ—। কোণা থেকে কোণার বাব ছিনিষ ভার সভাব কিছু আমাদের গলিভেই পাওৱা বাবে।

CF-CF-?

কিছ ভারা চুলোপুঁট নর—ভাবের বরভে গেলে জাল শক্ত হওবা দরকার।

শাৰরা চেঠা করব। যদি কোটপডিও কেউ থাকেন এর মধ্যে—

কোটপভিবের সাহস্ট বেশী। স্থগোর ভীর বেরে জন্মেন্ড সারেল করাই ভাবের রীভি। অবলেন্দ্ হাসল। প্রভাত উত্তেৰিত হয়ে বললে, সরকার বিশ্বর এর টেশ নেবে—ভাগতে রোভ বেকুছে—বেশের শত্রু চোরাভার-বাহীদের বহিষে লাও—

কিন্ত বরবে কে ? আইন কোবার ! আটার তেঁতুল-বীচি আর নরম পাধরের ভ'লো; হাজার হাজার বণ বরা পভেছে—কিন্ত কেট শান্তি পেলে কি না জানতে পারি নি । আইনের কাঁক নাকি ওবের কারদা করতে পারছে না—নভুষ আইন তৈরি হচ্ছে। শোন ভা হলে।

একদিন কাগকে দেখলায়— ওয়ুবের দোকানে ওর্থ কিলে ক্যাশমেরা চেরে নেবেন—মেনো না দের নিকটবর্তী পুলিসকে জানাবেন। জাপনিও চে:রাবাজার দমনে জনারাসে সহারজা করতে পারেন যদি ভাষ্য বৃল্য দিরে কিনিস নেন, আর ক্যাশ-মেনো দিতে বাধ্য করেন দোকানীকে।—ওয়ুব কিনে মেনো চাইলাম, দিলে মা। পুলিসকে জানালাম সে বলুলে, থানার ইন্চার্জের কাছে যান। ইন্চার্জ্য বলুলে, আছা জিনিসচী রেখে যান—এন্কোথারী করব। পিছাপিছিতে একচী ভাষেরিও লিখলে। বলুলে, আমার অফিসারকে জানাব—কি ভাবে কেসচা টেক আপ করা যার ছ'বিন পরে আসবেন। গিরে জনলার, কেসচা দারের করতে হবে আপনাকেই—আমরা সাকী হিলাবে—বল দেবি ভাই চার টাকার ওয়ুব কিনে আদালত করা উকিল নোক্তার এসব পোষাবে কি আমানের মত গরীবের গ

অমলেন্দ্র কৰাগুলি ভাববার মন্ত বটে। বারা শান্তিপ্রির
নিত্রীহ লোক অবাবসা বা চাকরি বা ছোটবাটো কাল করে
দিন গুলুরাণ করে ভারা কেন পোলান্ডে যাবে এই বঞ্চাট ।
এমনিতেই ভো দেবা বার—পকেটবার বরা পজনে কিংবা
কেট ট্রাম বাস বা ঘোটর চাপা পজনে সহমান্ত্রীরা সহজে
আইনের আওভার আসভে চার মা। ভাদের সালীর অভাবে
কত হুছভি বে চাপা পড়ে বার । মা—ক্ষমণের খার্বের ক্ষম্য
ক্ষমণ কোন্দিন সচেভন মর। ভাদের ছুংগপ্রকাশের
ক্ষমভার বভ ভাদের উদ্যুমের এবং নাগ্রিক খদ্রকার বোবঙ
বিদি উপ্র হ'ভ ?

অবলেন্দু বললে, আমি অনেক তেবেছি তাই—এর একট মাত্র উপার আছে, তবে সেটও বুব গ্রীতিকর নর।

এমন উপায় ? প্রভাভ হাসল।

অবলেন্দু বললে, একবিন ফ্লালে লেকচার গুনহিলার, বিবেশ থেকে এনেহিলেন এক বিশ্বক্যাণকারী। ভিবি বলহিলেন, বাহুবের পূর্ণবিকাশ হর রাহুরকে বিরে। এথাবি- কগং বা পশ্চিক্সভেও একটু সক্য করে বেখলে বেখতে পাবে

—পরস্পরের সহবোগিতার জীবনবারণ প্রথের হর, জীবন
পরিপূর্ণ হর। বাহুত কিছু প্রতিযোগিতা চোবে পড়লেও সহবোগিতা না বাড়লে ভৃত্তির কোন অবই বাকে না।

প্ৰভাত বললে, ওকৰা তৰু ৰীষ্টানৱাই বলেন নি, আয়াদের নাৰেও—

বিক্ষর। বারা একটু গভীর ভাবে চিন্তা করেন—ভারাই ভাবেন কাউকে বাল লিবে—

ভোষার কথাওলিও উপদেশায়ুতের যত ঠেকছে অযুলেশু।
আবলেশু ইবং উড়েজিত হবে বললে, ই —কারণ আবরা
কারুর কর ভাবি না—বজ্জ বেদী সেলক-দেন্টার্ড। কোষ
কোম কেশের লোকে শোড়া চুরুটের টুকরো—হেঁড়া কাগক
বা সামার করালও পথের বাবে কেলে না—আবার কোম
কোম কেশে আব বা করা থেরে ভার থোসা পথে কেলে চলে
বার মির্কিকার ভাবে। আমার খণ্ডিরার সকে ভোমার অলছাবির ব্যন সম্পর্কট নেই—

ৰাষ—ৰাষ। বা নেই প্ৰকৃতিতে—তা এক বিনে চোৰ ছাতিৰে বা লাট পিটে—2ক কৰে কেওছা বাবে না। সে চেটা আমানেকই কৰকে চবে।

f# #t4 ##t4 ?

এন মা—সামতি বে গড়লাম—সেকি কতক্ষলো নিষ্ধ-কাছৰ বাতাৰ টু.ক বাববার কতে ? সেকি ব্রিক বেলা—আর সবের সাতিভাচকা কিংবা সৌধন গুংগবোচনের থিটেকেটা বিবে নিজেকে ভূলিরে বার্থবার কতে ?

क्वाडी क्रांच क्रिय नक्षम ।

अक किम चम्राक्तमूर्व। क्ल'रव बात मताधर्म कराव काम् छेगारब अने इमेंकि त्वाय कवा बाव-अयम मयद भने छाक्या এলেন সেবানে। তাঁকে দেৰে প্ৰভাতরা রীভিন্নত বিশ্বিত ष्ट'न। **बहे करबक किन चार्त-छं**बहे अक कर्चठाडीरक... ক্ষেক্ বভা চিনির ক্র ভারা যথেই অপনাম ক্রেছিল—শেষ **पर्वाच (कन्छै। पुनिरमद हारच कुलि किरिश्ट अहा, किन्द** बिन्छि इट गाउ मि। पूनिज-क्रम् बागावते क्षत्र्व অঞ্জন হ'ল--কিছুই জানতে পাৱা যাব নি। আটার পাধর-খঁছো ভেঁচুলবীচি-কচালে কাঁকর ষেশামোর ভদভের মভ व्याभावते त्वभरवारे तमस्य। काभरक बक्षिय द्व विरमार्हे পতে ৰাজ্য উভেজিত হয়—তার ফলাফলের বত আরও কিছুদিন গে হয়ত অপেকা করে-কিছ পুৰিবীতে বটনা তো के अप्रदेश मह। भीरमराहरणंत एक जनका एक विरू টানহে ৰাছবের বুভিজে, কাজেই বেল কিছুবিল পরে সে কৌছুহল কোৰাৰ নিভিন্ন হৰে বাৰ ভাৱ টেকটকানা বাকে मा। यात्रा माष्ट्रपथ इन्सनचात्र प्रत्यान निरंत छैनात छैर्द्रस् তারা ভাষে মনভড়ের এই প্রেট—ভাই কবনও কবনও লভ উভেকনার বৃহুর্ভগোকে বুম পাভাবার ভঙে দীর্থ নীরবভার লাওয়াই প্রথোগ করে থাকে। অমলেন্দ্রা ভাগে ভানত না এসব তথ্য—আভকাল ভাষের পরিধি ভাষের বিভৃত হচ্ছে।

শবী হাজরা লোকট প্রির্গন না হলেও--হাভযুধ। সে হাসি কৰমও ব্যবসায়ীস্থলত গুৰ্ভভাৱ টোটের বাঁকা রেখার वादक कृदहे. थर्ड -- कथमथ निक्र मण (कोजुदक दव छेळू निक। क्याधनि छात विहे-नान वाहा हाना कांग्रेटक नट्यायन करवम मा-नवारे जाद रेक्कववाक्षित विमास मर्वामारे विश्रीमध हर्ति चारहम । चार भाका चार कांठा कम्बहाँ हे हन-मूळ-चकरीम त्रानशान च्वाडे पूर-नश्द काचि-यान यन-বলে নর--প্রোটন ভিটামিনে লাবণাযুক্ত। গারে একট হাতকাটা কড়বা—অধিকাংশ দোকানীর বত আধ্যয়লা নর -- जारन (मही नश्क्रम वा हेन्स्मत विम-अन्य मन्दर शिक्तिहरू -- बाबाब शाबी हेशेल अकड़े ; हेशेएक जिम दक्ष একবানা আনলবাজার আর একবানা বসুষ্ঠীও প্রভাৱ মেম। বলেন, ছ'রকমের ছবানা ভাগত না নিলে नविष्ट्र कामा वात्र मा । पक्रवाकारवत वाकात हरक---अकरा একবানি ছোট বর ভাকা করে বাৎসারের পশুন করেন—আক ভাত লাগাও চাত পাঁচবামি যতে সে ব্যবসা সম্প্ৰসায়িত बरबाब । वादमास ७५ (महेबाटमहे मीमावस मस-- नाकारकथ ছেটে মুদিশনার দোকামট আটা চাল চিনি কেরোলিন क्लाव (बनम निर्व (केंश्न केंद्रिक । अहे (बाकामिय किमिय ক্ষেক্ট বন্ধা নিভতি রাতের নীরবভার স্থানাম্বরিত হবার कारक वर्ष्टिक विश्वित

শব হাৰতা এসেই বললেন, এই যে বাবারা সব এইবামেই এসেহ—আমিও ভাবতে ভাবতে আসহি—স্বাইক্তে এক জারগার পাব ভো ? চল - গ্রীহরির ইজ্যার…

অমলেন্দু অপ্রসর খবে বললে, আমাদের স্বাইকে কি আশমার দরকার ?

'নিশ্ব—না হলে ছুটতে ছুটতে আসহি কেন।' অভ্যাসবশতঃ হাৰবা মণাবেব হাত ছুট কোড় কৰাই বাকে—
অপরিচিত কেট দেবলে ভাববে অকানা ফ্রট্রুমিত অপরাবে
সদাই সম্ভত হবে আহেন। একটু তেবে বললেন কেন আসহি
ভান ? গুনলান—ভোৰৱা একটি স্বিভি গড়েছ—

व्यवतम् वाज्ञस्यमान वदा वनतन, व्यव स्थलम ?

না—আৰু কেন ভানত। আমার দোকান বেকে বেদিন
চিনির বভা পাচার হাজিল—সেই দিনই ভানলান-পুন উভন
কাল করেছ বাবা। ভোনাবের নত ছেলেরা বদি পাড়া রজা
না করবে ভো পাড়ার বাস করব কোন্ হবে ? ছবি জে—
লবই ভোনার ইছা । উদ্দেশে বুভ কর উর্জে ছুললেন। একট
বীৰ্ণিখান কেলে বললেন, এই করেই বোড়ানটির বড়া লেরে

আনহিল—হততাগা। একট মহ বাবাজী—আহও আহে—
হ্ৰ কলা দিয়ে বে কালসাপ পৃষহি—তা কানি, কিছ হাতেনাতে বহুতে পাত্রি না বলে কবাব দিতেও বাবে। তাবি
হুকের জীব—ওকে যদি কবাব দিই—ওর পরিবার হেলেবেরে বাবে কি ? তাবের হংবে কেলে আমি কেন মিমিডের
তাই হই। বাক—হা বলতে এসেছি শোন। তোমাধের
কাল দেবে আমি ব্ৰ ব্লী হুরেছি—গোবিকের ইচ্ছার এই
নতিগতি ভোমাধের বজার বাক—ভোমরা হুর্জনকে সাজা
দেবার ক্ষতা লাভ কর।

প্রভাভ হেসে বললে, কিন্তু হাজরা মণাই—ছ:খ বে এই ছর্জনরা নিজেদের ছর্জন বলে খীকার করে দা। তাঁদের ছুকুভির দারে আমবাই হয় ভো সাজা পেরে যাব।

না—ক্ৰনও না। হাজৱাৰ কণ্ঠবৰ অভৱ বাণীৰ পৰ্বাৰে উন্নীভ হ'ল। অন্ত আমি বেঁচে ৰাজতে নৱ। তোমাদের দ্যিভিকে বভটুকু পারি সাহায্য ক্রব। অবঙ্গ গভৱে পারব না—নে ভ্রমতা নেই, কিন্তু টাকার কলে ভোষৱা ভেবো না— আমার ব্যাসাথা—

किन बटक का जानमाइक विनय कर नह ?

বিপদ! কিছুক্দণ বিশ্বরে চেরে থেকে হেলে উঠলেন ভিনি। ইা—বিপদ অনেক রক:মর আছে। তবে এও জানবেম—সংপথে বাকলে আদেক রাতেও অর হর—এ বিশ্বাস আমি রাবি। বাবসাধীর মূলবন ৬'ল সভতা—গোবিক্ষের ইঞার এই সভতা য'ল বাবার বাবতে পারি কোন বিঞাকে ভরাবার কিছু নেই আমার।

কত্রার কেব বেকে একটা লাল রথের ভাকভার বাগে বার করলেন হাজরা নশার। পাকানো হভার আলগা কাল বুলে তা বেকে বার কবলেন একখানা একশো টাকার নোট। নোটখানি এগিরে দিরে বললেন, নাও বর—আনাকে ভোমাদের সভা করে নিও। বলেই উচ্চকঠে হেসে উঠলেন, বাধি আরি বোরতর অগতা—লেবাপভা ভানি না।

প্ৰভাততা বিশ্বিত হ'ল। এটা পত্ৰীকা মন্ত তো ? হাকতা মশান কোন্ কৌশলের কাল পাতবার ক্ল ব্যাভতার অভিনয় করছেন।

আমনেকু বললে, আমরা ছ:বিভ হাকরা মণার বে আপনাকে সভা করতে পারলার লা।

কেন ? বিশবের বোর কেটে বুবে তাঁর বেদনার হারা পাচতর হ'ল। এক বিনিট চূপ করে বেকে একট নীর্বনিধান কেলে তিনি বললেন, বুবেছি—আমাকে বিধান করতে পারহ না ভোমনা ? তাবহ বার লোভান বেকে র্যাক্নার্কেটে চিনি চলে বার, বার কর্মচারীর নাবে পুলিনে কেল বারের করেহে তাকে কি করে…

अधाय पन्तान, (नहें। नवा नव कि १

ইা—গুবই ভাষ্য কথা। কিছ এইটুকু বিখাস কর বাধা—
সে কর্মচারীর সলে আবার কোন সহত্ব নেই—ভাকে চুর
করে দিরেছি দোকান থেকে। আর ভোনরা বল ভ চুরির
লাবে ভাকে কেন খাটরে সাকা কেওয়াই। বরুক ভার লী
পুত্র বুড়ো বা বাবা—ভাবের ক্রমানের কর্মকন ভোগ করুক
ভারা—অসক্ষের সাকা হোক।

সে বা ইচ্ছা ককুন গে—আৰৱা আপনাকে নিভে পাৰলাৰ না—একত হঃবিভ।

হাজরা মণার সংখদে ললাটে ভর্জনী স্পর্ণ করিবে বললেন, সবই গোবিক্ষের ইচ্ছা—ভার ইচ্ছাই পূর্ণ হোজ। ভবে ভোষাদের এ ভূল একদিন ভালবে বাবা—ভবন বুববে ভবু বাইবেটা দেবে মাল্লের বিচার করা কভ বভ ভূল। আছা আসি।

ভিনি চলে বেভেই শশাস বললে, ভূল করলে প্রভাত— টাকাটা বেওয়া আমাদের উচিত ছিল।

ভূষি ভাষ বা প্ৰাছ —এও এক রক্ষের মূব। অবলেপু প্ৰতিবাদ করলে।

ভূপতি বললে, কেন আৰৱা বলি সম্বন্ধে ঠিক থাকি কিলের ভয় ? টাকাটাও বিশেষ ধরকার।

ই।—টাকাট। সৰ সৰবেই বৰকার—সৰ কাজেও। সেই কচই তো ছ্নিয়ার এক চোরাকারবার চলতে—আর এক রক্ষের আটনকাজুন গভেও ভাষের ঠেকাকে পারা যাছে না । প্রভাত দুচু ধরে বললে।

ভূপতি বললে, তুৰি একটা দিকই দেশৰ প্ৰকাতলা—কিছ দেশ ত দেশি টাকা হাড়া কোন তাল কাজ কি হুৰেছে পুৰিবীতে 1

ওটা এক দিন ভিবেট করবার ছত পাকুক তুপতি—আর একটা সভা আহ্বান করা যাবে।

ভূপতি লক্ষিত মুখে বললে, বাই বল—এ ভথা গৰাই খীকার করে।

আমরাও বীকার করি—তবে এই মুহুর্জে নর। ছাজরা মশারের কেসটা শেষ হোক—টাকা মেওরার বাধ্যবাধকতা কাটলে পর কাউ:কই বিমুখ করব না ভাই।

20

মনটার কি বেন অহতি লেগে রইল—কিছুই ভাল লাগছে
না। সংগ্রামের শেষ অব্যাহে নতুন করে লংগ্রাম স্ট্রী—ভাই
কি করছে নদের প্রশান্তিকে নই। এতে কার কত্টুকু লাভ প্রভাত কামে না—কিন্ত অকারণে শক্রাহৃতি হচ্ছে। অভারের বিক্রমে প্রতিবাদে বা বুলে নদের বাবে বে আনন্দের উত্তর হয় ভাকে অবীকার করা বার না। এ আনন্দে নিক্রেকে বানিকটা উচ্চতে ববে হর। কর্তব্যের কটিন হাছিত্ব বহন করে নাছবের প্রশংসা অনারাদে নকর করা বার প্রম্ন কৃত্তের এই হৰতো চন্তৰ প্ৰভাৱ, ভবু ৰৰ বলে—এও মিথা। ভোৰার কাঁপানো গোনবে পৃথিবী বদি পানের ভলার নামল—ভূবি কি পৃথিবী থেকে বিচ্নুভ হবে গেলে না। নাই থাকল বদি পৃথিবী ভোনার ব্লা বীকার করবে কে? গোনবে উপরে উঠে স্বাইকে কাছে টানবে এ হ্রাশা ক্পংস্টির প্রভাব থেকে নাছ্মের বনে আপ্রান্ত নিরেছে; কিছু শাসন নর—সেবার হারা নাছ্মের বনে আপ্রান্ত পিছানোর সহজ্ উপান্ত বার বার ভূলে বাও কেন? স্টির অহমারে প্রমন্ত নাত্ত ভোনার ক্লাং বরণেই উত্তাসিভ হ'ত। ভূবি ব্রভে কারও উপরে কেউ নর—কারও কৃতিছেও কারও বদল মন্ত —বে সার্থক হ্বার সাধনা নিরে জীবন উংসর্গ করে, পাওনার বর ভাকে থালি রাথভেই হবে। সে বরের আন্ত প্রশ্ করার কৃতিছ ভার নর।

আগতে পারি কি ভার ? বৃছ্ সর্তিত কঠ। প্রভাত বাইরে আগতেই ছেলেট প্রধানের ভঙ্গীতে ইবং বুঁকে পড়ল। প্রভাত ভার হাত ধরে বসলে, বাক বাক, কিছু সরকার আছে ভাই ? ও ভোমার নাম ভভত্ত লা ?

 ই। স্বিন্ধে বললে ছেলেট। আপনি কি গুব ব্যস্ত আছেন ?

না কান্ধ আর কি--বেক্লব ভাবহিলাম।

ভবে থাক—ওবেলাই আগব। ওভত্তত কেরবার উভোগ ভরতেই প্রভাত ভার কাঁথের উপর হাত রাধনে। বললে, চল বসবে।

আপনার কভি হবে না ?

্ ক্তি। প্রভাত হাসন।

এ ছীবনে সমাই বটে কর—কভি ভবু হয় মা কোমনতে। সভিয় বলেছেন।

আমি নর—বলেছেন আবাদের কবি। করের সকে কৃতির কোন সম্পর্ক নেই—এর চেরে বড় আখাস কেট আমাদের দেন নি আই। এস।

হ'বনে ববে এনে বসল। ববের রব্যে দেববার কিছু
বেই তবু শুক্তরভ উংস্ক চৃষ্টিতে চারিদিকে তাকালে। বর্ণহারা
বেওরালের ক'বানি ছবি টাঙালো আছে—স্যাভসেতে
বেওরালের কর্পানি ছবি টাঙালো আছে—স্যাভসেতে
বেওরালের কর্পানি ছবি টাঙালো আছে—স্যাভসেতে
বেওরালের কর্পানি ভালের হ্-একবানির বিষরবন্ত হুর্কোব্য
ছবে উঠেছে এবং বাকিগুলিও অচিরে হুর্কোব্য হবে উঠিছে
ভার স্বচনা কেবা দিবেছে। বিবেকানজের পাগড়ী বেকে
রাধা পর্যান্ত একটি সালা লাগ নীচের দিকে নামছে—রবীলেনাধের রুধবানি বাগনা হবে আগতে তাঁর শুল গালার কর্পা
উপর দিকে প্রসারিত হওরার করে। বইবের সেল্কটার কোন
বিবেহে, আর তারি সামনে বে টপরটা রবেছে ভার উপরের
ভাতিবানটার রুব্যাও কর্মার। সেটা সন্তা ভাগানী টেবিল-

ল্যাম্প-পিতলের ক্লাই উঠে বীচের ইনটা আত্মধাপ করেছে। একবারে পাতা ররেছে হোট একবানি ভক্তাপোর ভারই আব-বহলা চালরের উপর হ'লনে বসল।

প্রভাভ বললে, ক্রিছের ধোরাক এ বরের কোণাও পাবে না---

ভতত্ত বৃহত্তে বললে, বুগে বুগে লবভিছু বহলায়, কবিষের বলগও এক বাভে না।

প্ৰভাভ বিশ্বিভ হয়ে বললে, ভাই নাকি ? এ বুগের রসদ কি ?

বেশী করে লক্ষিত হ'ল ওতরত। বললে, আপনি বেদ কিছু কানেন না! আপনার লেখা আমি পড়েছি।

প্ৰভাভ বললে, হাঁ এক সময়ে অন্ন-বল্লের প্রাচূর্ব্যে ছিল ওয় বসদ, আৰু অনু-বল্লের ফুজুভার জাগছে ওর প্রাণ। অন্নচিতা চৰংকারা এ নিরম আজু বাটে মা।

কিছ একি গুৰু কালা নৱ ? গুৰুত্তত বিজ্ঞাসা করলে। কালা।

ইা—কবিভা লিবে আমরা হাসভেও পারি—আবার কাঁদভেও পারি । মানে আমি হয়ত টিক বুবাতে পারব মা, ভবে আমার মনে হয় কবিভা লেখার উপকরণ বদলে যাওয়াভে উপভোগেও বাবা পভ্তে।

व्वरक भारताम म।।

মানে—স্বাই ছ: ব নিয়ে এত ব্যস্ত বে ছ:বের কবিতা প্রতার স্বাহই বা কই ৷ আব্দকের জীবন নাছ্যকে স্ব স্মূরে ভাজনা করছে—বামলে পরে কোবার কি বেন ক্তি হয়ে বাবে ৷ কিছু না বেনে ছুইতে ছুইতে—

প্রভাত হেসে বললে, তবু আমরা কবিতা লিখি এবং পতি আর ভবিও। ভবতে ভবতে আমালের অনুভূতি চুংখে বা আমন্দে প্রথর হয়। আমরা উপভোগ করি বৈকি ভতরত। ভতরত বললে, এ লেখার কোন সার্বভাত আছে ?

সে উত্তর নিকেই আশা করি পেরেছ। নইলে ভূমিই বা কবিতা লিগবে কেন। স্কটা এবন অভূত বে, বে বা চার না তাকে তাই করতে কর। আনক সব বিনিসের বীকের বত— স্বেও সে আহে, হঃবেও আছে। কৈ বার কর তোমার বাতা।

পৃত্তে পৃত্তে শুকুরভের সংলাচ কেটে গেল। গলার হ্বের কম্পন জাগল—উচ্ছান বা আবেগ ভাকে ঠেলে নিবে চলল মর্ত্তা থেকে কল-চারণার। সে লোকে পৃথিবী রইল পারের ভলার—হংধ রইল থিভিরে—গ্রহণক্ষরে। হ্যাভিন্ত কেচ্ছ নিরে ভার চারিবারে আনল-রশ্বি হ্ছাতে লাগল।

ত্ব হংবের সাগর পারেতে বৃহ্ তর্জ কলে
জীবনের ব্যবা জীবন-পিলী কুটার বে জবহেলে।
ভোষার জাষার জডি সাধারণ জীবনের ব্যবা বর,
নিবিল-বাদদ ব্যাদলোকে বার জর এবং লয়।

ষদ্—ভোষার বেহনা আনার নর্পে বহিল লাগি

উহর অরুণ দেখিব বলিরা স্থাবি নিশি আগি।

শিলিরে গলিরা হংবের মেব নহীতে নাবেও বহি
রূপালী চেউরেতে বলী অরুণ কিরে দিবে হারানিধি;
তৈল টানিরা সলিভার মুবে অরি উজল হর,
ফহনের কালে ভিমিরে লেবে লে আপনার পরিচয়।
বাহের ভাকে বর্গ-জগং থেকে বিচ্যুত হ'ল প্রভাত।
অপ্রতিত শুতরত ভাড়াভাড়ি খাভা বহু করে বললে, বিছিনিছি
আপনার অনেক সময় নই করে দিলায়।

প্রভাভ হেলে বললে, সময় ভো মই হবার করেই।

ছ'ব্দৰে বাইরে এল। ওভত্রত হাত তুলে মনকার করতেই প্রভাত তার হাত চেপে বরলে। কোমল হাত—ওর বুবের মতই সুদ্দর। স্পর্শে আত্মীরভার সুর বেকে উঠল। বেন কর-ক্ষাভবের চেনা নাসুষ—বাকে পর বলে ব্যবধান সৃষ্টি করভেও সঙ্গোচ বোৰ হয়।

ভডৱত আত্মই হ'ল এই স্পর্ণে। বললে, একদিন আসবেন আনাদের বাড়ীতে ?

প্ৰভাতের মূৰে ছারা নামল—বললে, কিছ ওই বাভীটাই ভো ভোমাদের ?

করেকদিন আগেকার ঘটনা ওতরতের স্থৃতিপথে এল।
বুবলে ও-বাড়ীতে পা দেবার সঙ্গোচ কেন প্রভাতের। সে
নাধা নামিরে উত্তর দিলে, ই।—ওই বাড়ীটাই। অবস্ত মেজ-জাঠামশাইর সঙ্গে পার্টিশন হরে গেছে। বলতে বলতে লজার
ওর স্থোবার রথধানি লাল হরে উঠল।

প্রভাত তাড়াভাড়ি তার পিঠ চাপড়ে বললে, আছো বাব। আমি এসে ডেকে নিয়ে বাব আপনাকে। কাল আসব ? এসো।

প্রভাত বাতী চুক্তেই অনম্ভ বললেন, আবার ওর সলে বাধানাধি কেন—ও পাট ভো একলম শেব করেই দিবেছ।

প্ৰভাভ বুৰভে পাৱলে না—পিতা এ ভাবে বক্লোক্তি ভৱছেন কেন।

খনত বললেন, ৰাও তেল বেথে নেৱে নাও, আৰু আবাদের আগিলে একটা ইকারভিট দিয়ে আগবে।

প্রভাত বহু খরে বললে, চাড়রি আমি করব না।
আমত সহসা চটে উঠলেন, ভবে জি লাইসারেবি করবে ?
না---লাই-সারেবয়াও বেশী দিন এবানে বাক্তেন না।

আনত উত্তেজিত কঠে বললেন, ভূই তেবেছিন কি বলত ? তোকে বে এতদিন লেখাণড়া শিবিৰে মাত্ৰ করবার চেঙা করহি সে কি কথার অবাধ্য হবি বলে ? আমাধের অবহা ভূই ব্যবি মা—কি করে সংসার চলে ভা কি কোন ধিন ভাষতে চাইবি না ?

अणा वनात, वावा, नश्नाव त्व करव करन त्न कानि-

কিছ সংসারের মধ্যে আমাকে নট করে কেবার কচই কি সর্বাহাত হরে লেবাপভা শেবাজেন ?

ভোৱ কথা আৰি বুৰতে পাৰি না প্ৰভাত। ছুই বছ হেলে—সংসাৰের অবলখন। ভোকে লেখাপজা শেখাহি বেৰী করে উপাৰ্জন করতে পারবি বলে—আমাকের বড ভাইনে আমতে বাঁরে কুলোর না গোছ সংগার চালানোর ভাতে নর।

কিন্তু চাকরি করে এর চেরে ভাল সংসার চলে দা বাবা। ভার চাকরিতে ধুব বেশী লেখাপড়ার দরকারই বা কি !

সে বুবৰি আশিসে চুকে। সাবেবের সলে হরদম ইংরেজী চালাতে পারি, কিন্ত একটা নোট দিতে গেলে কলম তেলে বার ৷ কভ বড় বড় বিষর মাধাতেই চোকে মা। ওরে আগেকার দিন আর নেই বে ইরেস ভার বলে কাজ চালিরে

একটা বছর আমাকে মাগ করবেন বাবা—আনি চেটা করে দেবৰ—চাকরি ছাভা আমরা ইভাতে পারি কিনা।

চাকরি ছাড়া করবি কি—ব্যবসা ? সে পুঁজি আছে ভোর ?

ব্যবদার কৰা ভ ভাৰছি না আমি—
ভবে কবিভাপাঠ করে সংসার চালাবে বুবি গ

প্রভাত তাড়াতাড়ি সরে এল সেবাম খেকে। বাবা অত্যন্ত উত্তেজিত হয়েছেন। উত্তেজনা বাড়লে ওঁর লগুগুরু জাল বাকে না—বা মুবে আসে বলেন। হ'বা মানের চেরে ভার ব্যধা বড় ভয়াক । এমনই করলোকের পৃথিবী কুংসিত হয়ে উঠবে। অন্নবলের কৃত্তুভার কুংসিত নর—শালীনতা ও সম্লম্বাব-মুক্ত মাহুবের নির্দদ্ধ আচরণে কুংসিত। স্টের আনক্ষ্ মুর্ত্তে বিষিয়ে ওঠে—ববনই বাবের উলল প্রকাশ সৃষ্টকে আবাত করে। মনে হর সংসারে জীবনবারণের মন্ত ক্ষর্ম্ব্য কিনিস আর মেই। এবানে স্লেহ-ভালবাসার বেসাভি মিরে স্বাই চলাকেরা করছে।

চলতে চলতে ক্থন সে এলে পছেছে দীপালের দাড়ীর সামনে। তক্ষন বে বাড়ী থেকে বেরিরে জনিবের ভার ছাভ বরে চানহে, বলহে—এথনও চোবে ভোর ক্ষিভার বোর লেপে ররেছে যে। এত ভাকলার দোভলার জানালা থেকে এক্ষার মুধ তুলে চাইলি না পর্যন্ত !

অনিবেশকে অসুসরণ করে প্রভাত গেল—কিকে নীলরঙা বসবার বরে—একথারে তার বিলাতী ব্রোক্তে বোড়া সুমূত সোড়া—কোচ—অত বারে টাক্মাবোলা সুরহুৎ অর্গান। বার্থবানে পালিশ করা ঠেবিলে বোরাবাবানী সুন্তবানীতে পোলাগ আর গাঁবার ভোড়া—বাধার উপর নারা রেভের পাধা—আর লাল কাছ্বে বিজ্ঞলী বালব বেন লাল পাণ্ডীর সুমূত একট সুল—নারা কোরকটকে লবতে তেকে রেখেরে

ভার বুকের মধ্যে। বেগুরালের ছবিগুলিতে এবনও গুক্রের দ্বালা কভানো—বাবীনভা বিনের ভিনরঙা বিশান—ভাও থুলে বেগুরা হয় নি। কেন বুলে বেবে ? ওবের ঘাবীনভা ভো একট বিনের নর—প্রভিবিনে ভাকে চেবে চেবে উপভোগ করছে ওরা। এই করে বলে প্রভিবিনই ভাবতে পারা বার—আমরা ঘাবীন ধাবীন। রাই কিংবা সমাজ—ভিংবা সংসার—ভোনভিত্রর অভরালে পৃথল-বহার প্রভিবিনর হবে বা এই বরে বসলে। বে ভর বে সম্ভা প্রভাত-বের বুরুনীমানার বর্থম ভব্ম বহু তুলছে—এই বৃহ সেই পরিবিধ বাইরে।

প্রভাতের গাড়ীর্বা দীপাকে আঘাত করল। সে বললে, আফ্লাল বচ্চা বেশী গড়ীর হবে যাচ্ছেন প্রভাত-দা—শেখ-ভালে দা দার্শনিক হবে পড়েন।

প্রভাভ উভর দিলে, বরস বাড়লে ফর্শনের পুঁকিও বাড়ে, দার্শনিক হওয়া আক্ষ্যাকি !

উভিটা বেহুরো লাগন। দীপা ভাড়াভাড়ি সামলে নিরে বলনে, আছা প্রভাত-হা—এবার ছাব্দিশে ভাতুরারি হবে ত ? কেন হবে না ?

আৰৱা তো খাৰীৰতা শেৱে গেলাৰ—ভাই বলছি। দ্যত্যিই কি খাৰীৰতা গেৱেছি আমন্ত্ৰঃ ?

ৰা: রে—পাইনি ভ ত্রিটপ এদেশ ছেড়ে বাছে কেন ? এক বছর পরে বেববেন—ওবের একট সৈতও এবেশে বাক্ষে লা।

ভাই ৰাকি ! প্ৰভাভ হো হো করে হেসে উঠন।

দীপা সুধ কঠে বললে, কাগদে ভা হলে মিথো লিখেছে ?

মা মা, মিথো লিখনে কেম। প্ৰভাভ হাগভে হাগভে
বললে, ভবে রাই চালামোর জন্যে ওবের রীভিনীভি, আইন
ভাছৰ ভাষা—

অনিবেষ বললে, ভূই কি রাভারাতি সব মুহে কেলতে চাল ?

আমরা বা চাই—ভা পাই কি ? আমরা সবক্ষিত্র ক্ষেত্র বুল্য দিয়েছি—ভবু বণ এবনও লোব হ'ল বা !

थणांच केक कर्छ त्वरंग केंग।

হীপা আৰু অবিষেধ হ'কৰেই চয়কে উঠন। এবন ডিক্ত কৰ্মন হাসিও হাসতে পাৱে প্ৰভাত।

্সভাই এর পর আলাগ করল না। বীগার কৌছুহল ভিনিত হরে এল—অনিবের অন্যথনত হবার ভান করলে। প্রভাতের এই বরণের হাসিকে ওরা তর করে।

দীপার বনে পড়ল আর এক দিনের কথা। বেদিন প্রাইভেট ইউশানি নিতে প্রভাতকে ও বারণ করেছিল—ভার পরের চিনের কথা।…

পেলিম সকালে প্রভাত এ বাড়ীতে আসে মি। সন্থার মুবে দীপাই বেন ওকে বরেছিল পথের মাবে। বলেছিল— গেলেন না বে সঞ্চালবেলা। ভাবলেন বুবি স্থালভের ব্যাপারটা নিয়ে মা স্থানি কি কাওটাই বাববে!

ব্ৰলাৰ—মানেক করে নিবেছ ভূমি ? আপনি ভ ভেবেছিলেম পারৰ না।

আকৃশাং হেসে উঠেছিল প্রভাত। এবনি উচ্চ আর কর্কণ হাসি। সে ক্ষমিতে দীশার আত্মতৃতি বাম বাম হরে তেকে গিবেছিল। ক্থাটা কি আত্মগীববের বভ শোদাল। ব্যাপারটা টিক্মত হ্যবহ্দর ক্রতে পারে মি দীশা। তথু ববে হয়েছিল প্রভাতের বিষ্ট বভাবের পরিবর্তন হয়েছে।

এর পর দিমক্ষেক প্রভাত ভাবের বাড়ীতে আসে নি। বেদিন বাড়ীতে এসেছিল সেদিনও কথোপকখনের বাতাই ছিল সংকিপ্ত—বাঁড়া। হঠাং কিছু না বলে ও চারের আসর ভ্যাগ করেছিল।

আত্বও হঠাৎ হাসি থানিত্তে প্রভাভ বললে, আহ্বা আসি। প্রভাতহের অবকাশ মা দিত্তে ও বার হতে গেল।

খীপা বললে, ব্যাপার কি ছোড্লা ?

অনিষেধ বললে, বুবতে পারলাম না। ও নাকি পছতে চাম—কিন্ত প্রবিধা করতে পারছে না। ভার জন্য ওর বেজাক বিটবিটে করেছে।

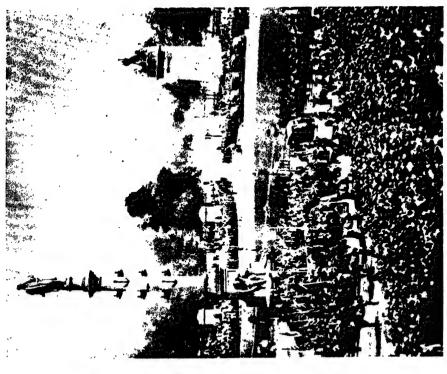
**(**44 ?

(क्न-- कृष्टे काश्वित ना ?

খঃ—দীপা দক্ষিত হয়ে মূৰ্ব কেরালে।

(क्वमः)

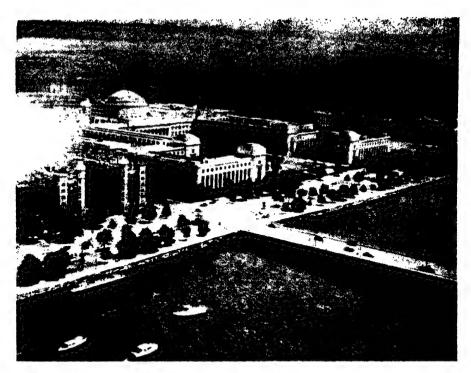




ওহাবিংটকে ট্যাস কেহারসৰ বাতি-সৌধ পরিদৰ্শন-রভ ভারভীর 'কোহার অফিসায়' পাখাম



बारमधिकात निष्टेर कं काबारमत मृष्डिस्ड गांगरमर कनायाम पिरम कैर्याभन



মার্কিন বুজরাষ্ট্রের অভতন শ্রেষ্ঠ শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান—ইনষ্টিটউট অব টেকনোলন্ধি, ব্যাসাচ্সেট্র



সিউলের পার্লাবেণ্ট ভবনের সমূরে নাগরিককের নার্কিন বুক্তরাই হইতে আনীত চাল বিভরণ

# इननीचार्टेत युक

## वशांशक जैनीवम्बूयन वाष

াজহানের বৃক্তিব-পশ্চিম জোণে বেষার বেষা। বোড়র্য । বোড়র্য । বোড়র্য । বাড়র্য । বাড়র্য । বাড়র্য । বিজে লারাই এবং নিরোহী হুইছে বিওরার পর্যন্ত, বৈব্যে । বিজ্ঞানিক ১৫০ নাইল ও প্রছে ১০০ নাইল বিভূত ছিল। । নারারী ও লাতপুরা পর্যন্তনালা এবং ইহানের পাধাপ্রশার্থা হাকে বেষন স্বর্জিত, তেমনি ক্ষরময় ও অনুর্যার কমিরা। বিরাহে। বেষারবাসীদিগকে কঠোর পরিপ্রম হারা শভাংশালম ক্ষরিতে হর। ইহারা বেষন বলিঠ ও বীর্ষামা ভ্রমই স্বাধীনভাগ্রির এবং নির্ভাক। এই নিশোদীর হাজপুত্রদের বীর্ষকাতিনীয় এক অধ্যার বর্ণনা ক্ষিতেতি।

পাণিগবের বিভীর বুবের চারি বংসর পর (১৫৬০) রাক্ষর বহুতে রাজ্যার এহণ করেব। ক্রেবে বালব, বেছভা। গওলোলা (১৫৬২) কর করিবা তিনি চিতোর হুর্গ অবরোধ দরেন (১৫৬২)। এই চিতোর কর (১৫৬৮, ২৩ কেজারাই)। গারতের ইভিহানে একট পরবীর বটনা। আক্ষরর হুর্ভেড। হুজর (মণভভপুর) ও কালিঞ্জর হুর্গ অবিকার করিবা ১৫৬৮) এবং বায়বার-বিকানীর-ক্ষরস্করীর হাজাকে বিজেয় ববীনে আনর্থন করিবা ১৫৭৪ নালে সর্ব্বর হাজানে আর্থন ক্রিভা করেব। এক্ষার বেবারের যাবা প্রভাগনিংহই চালার অধীনভা বীকার করিতে অধীকত হল।

ভিজেক এ, দিব আক্ষম-প্রভাগ সংগ্রেম্ব কামব দিবর দ্বিতে গিবা লিবিয়াবেশ:

"Pratap's patriotism was his offence. Akbar had von over most of the Rajput chiefs by his astute policy and could not endure the independent attitude assumed by the Rana who must be broken if he would not bend like his fellows."

ব্যক্তঃ ব্ৰেশগ্ৰীতিই প্ৰতাপের কাল ঘটবাবিল। নিক্ষে বিচক্তপতা ও বৃত্তিকোশলে আক্ষর যালপুতানার বৃপতিব্যর বের অনেক্কেই বশীকৃত করিবাহিলেন, কিছ প্রতাপ তাঁহাবের তে তাঁহার অধীনতা বীকার না করিবা যাতরা হকা করিবা চিতিতে থাকার আক্ষর তাঁহার শক্তি চূর্ণ করিবার লক্ষর করেব। পতিতপ্রবয় গোঁহীলক্ষর হাঁহাটার ওখা বছবা ক্ষিয়াগ্রেশ, প্রতাপ নামনিংহের সহিত এক্ষর পামাহার বা ক্ষিয়া তাহাকে অপনামিত করার আক্ষর এক ভূম হন বে, রাণাকে শারেতা করিবার কর ক্ষ্মণার লেনাপ্তিকেই তাঁহার বিক্ররে প্রেরণ ক্ষরেব।"২

হুইট বছবোই আক্সংখ্যে ব্যক্তিগত বাৰ্থ বা কোতকেই বুকের কারণ পলিয়া পর্ণনা করা ভ্ইরাছে। রাজ্য কর করা জন্মনুষ্ঠা।

> হকত আদিবলা প্ৰিল্প বাৰপাত্ত হাৰচুমাৰ ব্যৱসাধ আদিৰে বিপল।

वर्षार, जाक्षे बाका कर करिएक शाहिरकक बाक्नोविद्यांच चल प्राक्ता करवद नामना अवल क्या। देशा क मामूनि नर । विज्ञी-त्ववाद बरबद हेडा खड़का कादन वर्ति, किस त्लात्वह विधीह 'किलिन' वा अखितिश्तानदावन क्ष्मिय बाव बारेजारमय जाद আক্তৰ কেবল নিত শক্তি ও মুৰ্ব্যালা বৃদ্ধি কত লালাছিত ferme ut : wierwe fafer wife auf in urfe mit-विशेष केवानाम अविक करिया जकतरक यांकवार्या जनाव অবিকার বিবা ভিনি এককাতীয়ভার দৌৰ পঢ়িয়া ছলিছে हाविदादिक्षा । जाद वरे बढ़ान जादर्गरक नाजरन स्रामिक ভবিতে ভিবি ভড বলা ও লাজনাই বা বাবার পাতিবা अवैशक्तिका । वनश्च भव चाता त्यानात किविशव भर्द जबाई बाक्यर दारिय गैर बाका रहेन्द्रशीय हिन की जारकरस्य क्यमनाम-प्रक अक रम कविष्ठाक विविध्य नाम तारे विविध क्रीय कीवाम वित्यमकारय प्रश्नेत । के परमत्रहे किथि चारस्य-बाक कारबरमध कवाद महिक श्वित्वत्रद्व कारब क्य । अक्य वारेन परमद पद:कम्पाल गढाडे चाक्यक मास्रविक (कर-ব্যৱস্থত ভীৰ-কৰ ও জিলিয়া ক্ষেত্ৰ বিলোপনাৰৰ স্বাস্থা जकत सकारक अकड़े शांककीय विशाम क मानम मामप्राय सरीत्य सामस्य करिया देशायका अपर समास्थापिक मामा-कारका शहित्र क्षेत्राम करतम । क्षेत्रांश ७ वकांक दशिक्तित्व बार्क्स क बाबीनका विकास बार्कीक बाक्यरबस मारक बिरक्स जावर्गाक बाज्यत निविश्व कथा मजब दिल था। देखाँदै विश्वी-व्याप नश्यार्थेय क्षेत्रक या वृत्रा कायन।

আক্ষম বেৰাছাবিশতিকে কৃটনীতিবলৈ বিজেম অধীৰে আনিবাছ ক্ত চেটাছ ক্লট ক্ষেত্ৰ লাই। ১৫৭০ লালেছ এবিজ নানে তিনি বানসিংহকে অক্ষমী হুইতে উম্প্ৰপুষ্থে পথে আঞায় কিবিলা বাইতে আবেশ ক্ষমে । বেৰাছে তব্য ছালনৈতিক পট পৰিবৰ্তিক হুইবাছে। ছালা উম্বেছ ব্যায়োহণের পথ (১৫৭২) প্রতাপ উছোছ ক্ষিত্র আভা অপনানকে বিভান্তিক ক্ষমিলা নিকে সিংহান্ত্রেক আহোহক ক্ষমিলাকে , আন ক্ষমিল লাহী কুপার আনিব পাইলা আহাত্রেক

<sup>\*</sup> V. A. Smith: Akbar, the Great Mogul, p. 151.

२ बायगुरमा-का-देखिहान, क्ष्मीत वर्ष, गू. १००।

ত আক্ষরদায়া, মূলএছ, এনিছাটক দোলাইট কর্তৃক প্রকাশিত, ভূতীয় বত পু. ৪০।

পূরে অভাবনাস করিকেবেন । চ নাম উদরপুরে পৌছিলে প্রভাগ ভাঁছাকে সামরে অভার্থনা করিবা রাজপ্রাসারে কইবা বাম । তথার অবস্থানকালে বাম নেবাররাক্ষের সহিত একর ভোক্ষনময়ে মনের গোগম কথা ভাঁছার নিকট ব্যক্ত করিছে ইচ্চুক হম । উদর সাগরের তীরে সুশোভিত বতপে ভোক্ষমের আরোজন করা হয়, কিছ আহারের সমর উপস্থিত হইলে, প্রভাগ অসুবের ভাম করিবা ভাঁহার পুর অমরকে অভিবিয় সহিত একসকে আহার করিকে প্রেরণ করেম । কর্মসিংহ চরিকে রাম্কবি ভাষা এইরণ বর্ণনা করিবাছেন :

> राना सों मोजन समय गही मान यह बान। हम बयी जैवें झापहू जैवंत हो किन आन॥ कुंबर आप आरोगिये राना माख्यो हेरि। मोहि गरानी सी कल्ल अवे जेंहहूँ फेरि॥

নাৰ প্ৰভাগকে বলিয়া পাঠাইলেন, "আপনি অৱগ্ৰহণ না ক্ষিলে, আনি ক্ষিপ্ৰে আহার করি:" বাণা প্ৰভাতৱে বলিলেন, "আৰি অহম, আপনি ভোতন ক্ষ্ণন, আনি না হয় পৰে ক্ষিব।"

প্রভাগের আচরণে মান ক্ষ ও অণমানিত বোধ করিবা ভোজ্যবন্ত কেলিরা আগ্রা যাত্রা করেন। এই ঘটনার পরও বালপার আহেররাক তগবানলাস এবং রাজা টোডরমলকে মেবারে গৌত্যকার্ব্যে প্রেরণ করেন। তগবানদাস ১৫৭০ সালের অক্টোবর নাগে গুলরাট হইতে আগ্রা কিরিবার পথে রাপার সহিত সাক্ষাং করেন। প্রভাগের রাজ্যচুত ভ্রাভা কপমাল তথন মেবার-সীনাভে সিরোহী রাজ্য করের চেটার রত। নিক রাজ্যপ্রাভে বিলোহী ভ্রাভার প্রভিত্তার সভাবনা কেবিরা প্রভাগ পাহী থেলাত পরিবান করাইরা পুর অবরকে আগ্রা দরগাহে প্রেরণ করেন, কিছ নিকে বর্গবেদমার শীভিত্ত এই অকুহাতে আগ্রা বাইতে অসম্মতি প্রকাশ করেন।ও ১৭ই অক্টোবর, ১৫৭০ সালে কপমাল রুবে নিহত হন এবং প্রভাগের সিংহাসন নিক্টক হর। উাহার মনোভাব সক্ষ্য করিবার কত রাজা টোডরমল উপরপুরে উপহিত হন; প্রভাগ ডাহাকেও ভোক্যাক্য এবং নিইকবা বলিয়া বিলার করেন।ও

হিজরী ১৮৪ সালের পৰিত্র বহরৰ বাস। আজ্মীচে পীরের বরগাত্ এই সবর উৎসব-আনন্দে মুবরিত। এজনা বালপাত্ তথার পৌছিরা তাতার অভরদ বছু বানসিংত্তে সইরা পুসাহ্রতিত পৰিত্র স্বাধিবলিরে প্রবেশ ক্রিলেব

बर 'कारका'> शक्ति वर्गक नैरवन विक्री वरकाच বানিলেন। ১ বাৰণাত তথন প্ৰভাগের বিক্ৰছে অভবায়ৰে ক্তসভল। এত বিৰ লাকতে গোপৰে ভাতিবা ভিৰি জাঁচাৰ অভিপ্ৰাৰ ব্যক্ত ভৱিলেন। ভজ্ঞবাত দেবাপতি বিধানীন किए भारी वृद्ध भविकालना कविएक लग्नक हरेलन अवर के वरनदाव ( रेर ) ১৫१७ नात्नव अधिन वाटन वर्शनंक पण्डि-ৰূবে রঙনা হইলেন। তাহার সলে চলিলেন নামজালা নেনা-নারকগণ-- আসক্ধান, ধাজা বুহুল্ব একি বছৰ সী, শিহাবুছীৰ बुद्धा-शादका क्कांक, जानी बुदान केक्बक ७ वादका देनवप-গণের অধিনারক সৈমদ আহমদ ও হাসিম বামহা, লগমাণ कम्प्रवाह ও बर्जिश्ह। ३० बानाब विक्राप्त बहे अधिवात्तव नरवारत त्रीका यूजनवारमद मत्या अक अवन स्ववादी मरनाइछि ७ वर्रनावायमाव एडि वर्रन । निकीव त्रव नारकरवव वरमबद्दवर्गाव चारमा के 'चारबाद'त कक 'त्वावाव' कामिल कृतिक वार्थ क्षेत्रम । जात (स्वारम्बि मारकत जन्म বাস ইবাৰ 'ভারিব'-প্রবেভা আবছুল ভাষের বদারুনী সাহেব 'বেজার' নৈশার মাভিয়া উট্টলেন। ভিনি সভল কৰা অকণট ভাবে ভাহার 'মুন্ত্ৰাৰ-উভ-ভাওরারিব' বা 'ইভিছাল-চমনিকা' এছে লিশিবদ ক্ষিত্ৰা পিথাছেন। ৰোলা লাভেবের এই জেহাৰ বা বৰ্ণহুত্বে বোগলানের পক্ষে প্রধান অভয়ার हिन और (व. छिनि नरवनाब बान रेवामर्गरन निरुक्त क्रेबारहम, ছুট পাওৱাই তাঁহার পক্ষে দার। প্রথবে ভিনি সেব-উল-रेनमाय त्मव चावक्वित जारकरवद मिक्के बद्दना मिरमा। তাঁছার গভিষ্পি ভাব দেবিয়া প্রসিদ্ধ চিত্রকর মীর সৈহদ আৰহ্ন সভিকের পুত্র নকীব বাঁর শরণাপর হয। গৌড়াবিভে ৰাঁ সাহেব বলারুনীর এক কাটি উপরে ছিলেন। তাঁছার পিভাৰত নীর সিয়াস্থীন উঐ বভবাবের জভ কজবীন শহর হইতে বিভাছিত হটর। ভারতে আশ্রহ এহণ ভরেন। বাঁট श्रवि नविरम्भ नाम क्याब करन और नविनार्वे र्गाकावि चावक डेरक हरेवा छैटि। छारे नवातुमीत 'स्वहाबी' श्रेष्ठान कृषि बरम अहन क्विएंड मा शाविका छिनि बनिरमम, "जारे, হিন্দুৰ সৰ্বামী না বাঞ্চিলে আনিও ত বুৰে বোনদান করিভাব।" বৰাছ্ৰী নিৱন্ত না হইছা প্ৰভানতে বলিলেন, "লেনাপভি यामनिश्र वा अमा (व (कहरे हड़ेय ना (कन, चिनि विक इक्बर्डिं ( वाक्नार्डिं ) 'वाका' ७ बीड्रे 'विश्वर्ड'व लाक इन ভাহা হইলে ভাণভির কি কারুণ থাকিতে পারে। এই वुष्टिक निक्रकत हरेश मकीन नानमारकत निक्र ननात्नीत हुटैंड चांडकी (भन क्विस्त्रन। बाह्मांड देवांव नार्ट्यस्क

<sup>ঃ</sup> বাৰপুভাৰা-কা-ইভিহান, বিতীয় বঙ, পৃ. ৭৩৬।

<sup>₹ , 19</sup>b-80 I

भाक्षतंत्राता, १, ७१ ।

৮ কোর্খাবের প্রথম খব্যায়

মুভবাব-উভ-তওয়ায়িব, ব্লএছ এসিয়াটক লোসাইট
কর্তৃত প্রকাশিত, পৃ. ২২৭।

३० थे, श् २२४

ভাকিয়া বিজ্ঞানা করিলেন, "আহ্মা, নভ্যি কি আপনি বুড়ে থাইতে চান ?" বলাবুনী সবিদৰে নিবেদন করিলেন, "হাঁ হজুর, এই বে আয়ার কালো 'নহাছেন' ( লাভী ), ভাহা আপনায় বেদনতে মহিত করিতে চাই" এবং নিয়োছত ভবিজ্ঞাই আবৃত্তি করিলেন :

ভাবে তু যথাত্যা আহত্ থাত্য ত্রাব্য তাব্য তা হোরণ তুমম্বোবে আজ তুইরা গরন্দ।
অথাং, "আপনার সেবার ভাজটতে বিপদ থাকে থাক্ত,
হয়ত আমার যুখ্যওল রক্তাত, না হর এীবা রক্তাপ্পত হইবে।"
বলার্লীর ভক্তিতে বারণাহ পরন প্রীত হইবা বলিলেন, "ইন্সা
আরাভারাহ আপনি থোল থবর লইবা কিরিরা আসিবেন।"
এই বলিরা 'কাভেহা' পভিতে পভিতে বারণাত অখচালনা
ভরিতে উভত হইলেন। আনন্দের আভিল্যে বলার্নী
ভ্যব্রী করিবার জভ বারণাহের পদক্ষলের বিকে হত্ত
প্রসারিত করিবার জভ বারণাহ রেকাবহিত পা উর্দ্ধে
উভোলন করিবা এক অঞ্চলি আশব্দি ইমান সাহেবের হাতে
চালিরা বিলেন। বলার্নী বিলার পাইরা 'জেহালী' বলের
সহিত নেবার অভিযুবে বালা ভরিলেন। ১১

শাহী কোঁকের বঙলগড় আগরন-সংবাদে বিশ্বাত্ত বিচলিত না হইরা প্রতাপ ক্ষত্নি রকাকরে তংপর হইলেন। পিতৃপুক্ষদিগের পুণ্যপাদম্পর্শে পুত বেবারের প্রতিষ্ট খুলিকণা হিল ভাঁহার নিকট পবিজ। মেবারই হিল তাঁহার সকল বর্ম, কর্ম, চিতা ও ব্যানের মূলে।

অর্থণতাকী পূর্ব্বের বেবার দিল্লীর সমস্ক ছিল। রাণা সদ তারতের রাজমুক্ট মন্তকে বারণ করিবার উদ্দেশ্য স্প্রতান ইরাহিম লোলী ও বাবর বাদশাহের বিরুদ্ধে প্রচণ্ড সংগ্রামে অবতীর্ণ হন। কিন্ত মুদ্ধবিপ্রহ ও নানা বিপর্বারের কলে রাণা উদ্বের আমলে মেবার এক ক্ষুরাজ্যে পরিণত হয়। কি অর্থনার্ব্যে কি লোকবলে শাহী পক্ষের ভূলমার তদামীতন মেবার ছিল মগনা। ভাই প্রবল শত্রুণক্ষের আক্রমণকে কি উপারে স্থানুতাবে প্রতিরোধ করিতে হইবে, তাহা ছির করিবার ক্য প্রতাপ তাহার আল্রিভ রালা ও ভৌনিক্লিগক্ষে এক মন্ত্রণা-সভার আহ্বাম করেন। সর্ব্যাসভিক্রের ইংক ইংবে এবং সেই উদ্বেভ হেবের সিরিক্লারের স্ব্রোগ পরিপূর্ণ ভাবে প্রহণ করিতে হইবে।

ইভিমব্যে নামলিংছ বঙলগড় ছইতে বাজা করিবা মোহী-আন হইরা প্রভাগের শক্তিকেজ গোডঙা ছুগাভিমুবে অঞ্চর ছইতে বাকেন। ভাঁহার লকে ছিল নাজ হর হাজার লৈত। জনলাকীৰ্ণ হৰ্গৰ পাৰ্জভ্য প্ৰবেশ 'ছুদ্বৰা' বা চক্ষব্যুদ্ধে জহুপৰােই বৰে কৰিবা হুকৌশলী নেবাগতি অভি জনসংখ্যুক্ত দৈচসত্ বেবালসিংছের বিবরে প্রবেশ করিলেন। প্রভাশ গোডারা জবহান করিবা কক্ষবাত নেবাণতির গতিবিধি লক্ষ্য করিতে লাসিলেন।

चार्याक्षत वान और बादना वहबून (व. क्षणान अवन विशेष ও বাজাত্যাতিয়ানী ছিলেন বে, ভিনি নানলিংছের সহিত (बरम भागांगारा विवय हम मारे भवत वरामद नाम विनि আজীৰভাততে আৰু ভাৰাৰ কংশৰ বভচি বনে হওৱাতে ভিনি উদয়সাগরের ভীরে বে ছানে নানসিংহকে ভোজাবন্ত পরিবেশন করা হইরাছিল সেই স্থানট খনন করাইরা দেখানে প্ৰাক্ত সিক্ষের ব্যবস্থা করেন এবং "আকবর ভাছার কুকা" এই গালি দিলা তাঁহাকে অপনানিত করেন। "বাজ-প্ৰদান্ত বহাকাৰা" ও "ভৱসিংহ-চরিতে" এই উক্তির উল্লেখ माहे शब्द विवाद दांगायित वाक्ष्यक्रम (व दूननवाम बाबाबा, वाक्वाटाइब, त्राममाक क्षिमादक रेजवारेम ३० अवर .. শুৱরাজবংশীর হেকিলা বাঁ শুর প্রভৃতি রাজাচ্যত মুসলবান ৱাছারা ভাশ্রর গ্রহণ করেন, ভাহা ভবিস্থানিত সভ্য। বনি তাঁহাদের অবস্থিভিতে ও দাশাপাণি এহণে বেৰানের পুত আবহাওয়া কল্যিত মা হইয়া থাকে. ভাষা হইলে কাহৰাহ সেনাপভির অনুপ্রহণে কি করিরা উদর-সাগরের তীর চুষিত হয় ? ব ব চৌকার ব-পাকভোজী রাজপুত চারণগণের মভিডেই যে এই বরণের কল্পনা গভাইরাহিল, ভাতা অসুবাব कदिएक विलय हर मा। इनहीयांहे ब्रेशकरम बाहाबा धावारमब क्र कीवम ११ कदिया मिहिशादिम, छाहारम्ब मर्दा द्विम বাঁ শুর হিলেন অএগণ্য। আর ভিনি রাণার এমন অভ্যক্ত ছিলেন বে, সৈচদলের এক ভাগের কর্তৃত্ব তাঁহারই হতে ভত

তথন জুন মাস।১৪ প্ৰথম বৌত্ৰ-দীও রাজ্যান তও কটাছের ভার উভও। পার্বেভা মদী-নিব রিণ তথনও বিভাস।

আবৃদ কৃষ্ণদের মতে এক প্রহার বেদার বৃদ্ধ আরম্ভ হর।
কিন্তু বেবারহিত কালীশ মন্দিরে উৎকীর্ণ নিশি অভ্নারে
ইয়া প্রাক্তালে সুফু হর।

३३ र्थ १, १९५-९३

১২ ৰাজপুতাৰা-কা ইতিহাল--তৃতীৰ ৰঙ, পৃ. ৭৪২

১৩ আক্ৰৱনামা, বিভীয় ৭৬, পৃ. ৩১৯

১৪ আক্ৰৱনাৰা, ভূতীৰ খত। পু. ১৭৪
ভিন্ন কৰ ঐতিহালিক কৰ্ড্ক বচিত একট কলেজণাঠ্য পৃত্তে
এই বৃত্তের ভারিব এপ্রিল নালে কেওৱা হইবাছে। আর
"Pratap was defeated"—এই এক ক্বান্ত মেবারাবিশভির
সংকার করা হইবাছে। ভিলেউ এ. মিব বলিয়াছেন, "The
imperialists narrowly escaped suffering a total
defeat."—Akbar, the Great Mogul. পু. ১৫০।"

ভূগাভরণপূত পর্কাভগার কৃষ্ণ। এই নিবাক্রণ ব্রীয়কালে ১৫৭৬ সালের কুম বাসের বাঝারাঝি বামসিংহ গোগুতা ছুর্নের আচিচ্বে বমাস নগাঁর তীরে অবছিত বমনোর বাবে পৌছিলেন।১৫ প্রভাগ ফালবিলহু মা করিরা তাঁহার আক্রমণ প্রতিবােশ করিবার ছঙ্গ ফালবাহ নিবিল্ল হুইতে ভিন্ন বাইল চুরে হলগীবাট গিরিসহটে বাত্র তিম হাজার নৈতসহ অপ্রসর হুইলেন। ভিনি এই কুল্ল বলকে হুই ভাগে বিভক্ত ভরিবা এক ভাগ পরিচালনার ভার বাবিলেন নিক্ল হুতে, অভ ভাগ বিলেন হেকিল বাঁহ উপর।

অপরণকে যামসিংহ সৈত-স্বাবেশ করিলেন পদীর আড়ারে। এই পঞ্চীর ভার আকুভিবিশিষ্ট বাহিনীর চঞ্ছত ছিল সৈরত হাসিত্র বারহার অধীবে একবল সৈত, মডকে वन्तान कळ्यां अवर वाजक बांड वनीय वर्णकाकुक विक-লংখ্যক সৈত : পুঠে নামসিংহ খবং, আর দক্ষিণ পক্ষে সৈরদ चाबनार पांत्रहा ७ राज शक्क त्यांजा काकि दे। अरश नुकारमा ( rearguard ) (बहरूच वी : ১৮ই सूम (१) ভারিব উভর পঞ্চ হুলবীবাটের প্রাভবে পরস্বর পরস্বরের লখুণীৰ হইল।১৬ প্ৰথৰে আক্সাম সৈভাব্যক হেকিব ৰা বিহাৰেদে পশ্চিম বিক হুইভে পাহী১৭ কৌজেয় চঞ্ ষা অএগামী বল চুইটর উপর আপতিত ত্ইলেম। ছামট हिन बहुत ७, करीकाकीर्य। चारे विचक्त रन इरेडे अकड দ্বিলিভ তুইভে মা পারিয়া শক্রসেমার আক্ষমণে বিপণ্যত इरेश पहिन। ভাহারের নাহাব্যার্থ শাহী বুলবাহিনীর অব্যক্ষ বামসিংহ বলবলসভ্ অঞ্সর হইলেম, কিছ হেকিয় ৰী অৰ্দ্ধরভাভাৱে ছুৱিয়া প্রচত ভাষাতে এই ভংশের বাম পার্থ হিছতির করিবা কেলিলেন। অনভোগার ভইবা এই পার্থের সৈভাব্যক ছাকা লোকরণ খপকীর অপ্রদামী ফলের ব্যুহতেদ করিয়া আশ্রেহের জত দক্ষিণ পার্বে আহ্মুদ্ বাঁ বার-हांच जरीनच रेनडमरानच निरम बाविक हम। क्रवन बावबान প্রভাগনিংছের পঞ্চীর রাজপুত ও প্রভারন্থর (লোভরবের) অধীনত্ব হাজপুতদের মধ্যে ভারতন্য করা কটিন কইরা উটিল।

এবিকে বুজাহিব যোৱা বৰাত্ৰী আসক্ বাঁর পার্থে ত্থান এত্থ করিবা শাভ ও সংবত চিতে শর নিজেপপূর্থক কাকের-বিগকে "জাহারুহে" ( মরকে ) পাঠাইতেছিলেন, কিছ বৰ্ণন উত্তর প্লীর রাজপুত ওভঃপ্রোভ ভাবে নিশিয়া পেল, ভব্ন আসক বাঁ বহাৰুখীকে বিজ্ঞাসা করিলেন, "বাঁ সাহেব, এই সময় আরা ও বেগানা ( শক্ষ ও মিত্র ) রাজপুত সমাজ করা ত বছ মুখলিন। কি করা বার ?" তিনি উভর করিলেন, "আবে তীর হাছিতে থাকুন ত ; হুশবন কাকের বে পকেই নিপাত হব, হউক, ইসলাবের ত লাভই।"১৮ বলার্বী বোশবেকাকে বদুজাক্রবে অবিরাম তীর নিক্ষেপ করিতে লাগিলেন এবং 'পেকার হোরাব' হাসিল করিলেন।১৯

ৰোৱা সাহেৰ ৰণন বিৰশ্বীকৃলের ধাংস্সাৰ্থে বড়, প্রভাপ তথ্য উদার ভার পাত্রী বাহিনীর বাষ পার্থের উপর পভিত হইলেম, আর হেকিম বাঁ যক্ষিণ পার্থ আক্ষমণ করিলেম। হছ ভবন চরবে পৌছিল। রাজপুত অবারোহিগণের প্রচঙ আক্রমণ সত্ত করিতে দা পারিরা বাম পার্থে অবস্থিত সিক্রীর र्जनन गुर्वधानम् कविया जयवानम हरेएक यह पूरव भनारेवा (नन 120 अरे मानव रेन्डावाक काकी वाम मक्करेनाडव मणि-त्वाव कविरक ववानावा ८०डी कविरमय: किन्न विक् व चत्रवादित जावाच शारेता क्यतच बृहत्रद्वत (शः) अपने के আহুতি করিতে করিতে ভিনিও "বোহাজের" (পলাভক) হইলেন। দক্ষিণ পাৰ্থের অভতৰ সেনানায়ক দৈয়ক হানিব ৰাৱহা হেড়িৰ শুৱেৰ আক্ৰমণ বোৰ ক্রিভে গিয়া অৰু হুইভে পছিবা গেলেন। সৈয়ৰ রাজুর সাহাব্যে ভিনি পুনরার অখা-दाहर कविताम नहीं, किंद करबरे और भार्यक (अमैनवजार) ৱাৰা কটিন হইছা উটিল। এবিকে প্ৰভাপ বাৰ পাৰ্থ ও কেন্দ্ৰছিত বাম খংশ বিধাত কৰিবা শক্ৰানৈত ৰখিত কৰিছে করিভে বানসিংহের সমুখীন হইলেন। মেবাররাভ কচ্ছবার দেনাপভিকে সংখাৰণ করিয়া বলিলেন, "ভূম সে অহা তড় হো সকে বহাদুরী দিবাও, প্রতাপ সিংহ আ পহচা হৈ।"২১ चर्नार, बाकान चानक। चानमात नमतकूनमका अवस बाहर्यम क्क्रम। बचान चाहात बित्र वर्ष देव्हरकानति हैन्दिहै, আর বাদ হতীর উপর আসীন। রাজপুতেরা ভাছোরা দেশাপভিকে বৰ করিরা ভাঁহার ভও শোলিভে বুবের খালা मिकेरिक रक्टी कविरव और काविया, यान बानवरणाकिक হাওদা পরিভ্যাগ করিয়া হস্তীচালকের স্থামে উপবেশন

১৫ বৰনোর গোওপা হইতে তিন কোণ দূরে অবছিত ছিল। রাজপুতানা-কা ইতিহান, পূ. १৪০। বরনোর হইতে হলগীবাট তিন বাইল দূরে, এই ছানের বাট হত্ববর্ণের। ভাই হলগীবাট নার। ঐ পারটকা, পূ. १৪০।

১৬ जाक्यबमाना, छ्जीव ४७, मृ. ১१८

১৭ "আৰু কেবল ফুইৱা"। লো ( Lowe ) গাৰেবেছ অনুবাদ টিক বয়।

১৮ বন ভনককে কাকের তুল্ভা শোনান, খুন-ই-ইল্লাম বাশন।

১> "শিহত বর আন্ আবু চুন্ কৃহ্ আহলান্ বতা নবি শোল্ও হোহাব-ই-পেলা হাহিল শোল্" অবাং, বলায়্নীর অহ-সভান পর্যভোগন বিশাল লৈতসমূহের উপর অবার্থ হইল এবং বর্ত্তরে পুণ্য সকিত হইল। (মুভবাব-উভ-ভাওহারিব, ঐ পু. ২২১)

२० ब्र्डवाय-डेड-डडाडिय, 🗳 वृ, २७२

२> वाक्न्वावा-का देखिवान -- नृ. ७०३

করিলের।২২ তীর ও বর্ণা বারিবারার তার তাঁহার উপর
নিজিও হাঁতে লাগিল, কিছ বান ক্ষমও বতক অবস্ত করিবা,
ক্ষমও চালের লাহায্যে শরবটি হাঁতে আত্মরকা করিলেন।
ক্ষমে তৈতক পৃঠারচ প্রকুর রপোলালনার উত্তেজিত হাঁবা নামনিংহের হতীর সমীপবর্তী হাঁবা অপ্রবর্তী পা হুট ত তের উপর
কুলিরা বরিল, আর প্রতাপ মানকে লক্ষ্য করিবা লক্ষেরে বর্ণা
নিক্ষেপ করিলেন। তাগ্যক্রমে কোঁহরভিত হাওদার প্রতিকৃত্য হাঁবা উরা বাটিতে পভিষা পেল।২৩ আহী সৈভের
অবস্থা তথন বছাই সম্ভাগর। সৈত্যুহের 'চঞ্লু' করিত,
'বাম পক্ষ' তর্গ, 'দকিব পক্ষ' অবসাদপ্রত্ত প্রবং 'পৃঠদেশের'
পক্ষ বিকল্প দীপলিধার ভার উক্ষল। দূর হাঁতে তাঁহার
শোর্ষ্য ও কর্তব্যনিঠা দেখিরা মোলা বদার্থী বিয়োহিত হাঁবা
বলিরা উটলেন, "হমুদ শন্সের-ই-ইমাম জন্দ"—অবাং, হিন্দু
ইসলাবের ভ্রবারি চাৎনা করিতেত্তম।

এই ছব্যাপের সমর দ্রে, বহু দ্রে মেখ-পর্কমের ভাষ কৈরবনাদ উথিত হইল, তথম প্রভাগের সৈতমধ্যে প্রচারিত হইল বাদশাহ সসৈম্যে রণাদ্দে আবিভূতি হইরাহেন, কিছু যিনি এই ছব্যাপে প্রত্যুমপতিতে আসিয়া উপস্থিত হইলেন তিনি প্রভাগের সৈতাব্যক বেহতর বাঁ। তাঁহার আবীন্ছ তেনোল্ড সৈতদলের বে:প্রামের ফলে র্ভের পতিতে সহসা এক আভাবনীর পরিবর্তন ঘটনা।

আবৃল কণলের উক্তি হইতে জানা বাদ, "নেহতার বাঁর আগবনের পূর্বে প্রভাগের সৈহদের দত্ত ও আক্ষালনের সীমা ছিল না; তাহাদের স্কৃতি ক্রবেই রছি পাইতেছিল", কিছ অভকিতে এই পকাৰবর্তী সৈচদলের বোগনানের কলে ব্রের গতি বিগরীজম্বী হইল। এই নৃতন পরিছিতিকে আরতে আনিবার লভ প্রভাগ তাহার রণ-হতীজনিকে শক্রব বিক্রবে পরিচালিত করিলেন। লোনা নানক হতীট অনেক শাহী নাতককে গরাভ্ত ও শক্রবৈত দলিত করিরা দর্মপেষ গতর্তা ছাতীটকে বারেল করিল, কিছ সহসা লোনার নাহত ভলীর আবাতে নিহত হওরার লোনার আক্রবের বেগ বলীভ্ত ছইল।২৪ বৃত্তবিবা প্রভাগের সর্মপ্রেট হতী রামপ্রসাদ লোনার শৃত ছান পূর্ণ করিল। এই বছ বাতক ডও আক্ষালন

ও শক্রানেভাষের যানিভ বাবিভ কারের রাপক্ষের এক প্রান্তন কাতের স্কট করিল। পানী পতের মুইট হাতী 'পজ্যাক ও রাপন্যার' ইতার সহিত আঁটিরা উঠিতে পারিল না। কিছ এবারও শ্রনিভেপপূর্বাক শাহীপক রামপ্রসাবের চালকক্ষে দিহত করিরা কৌশলে হাতীটকে রপক্ষেইে ক্যানিভ করিরা কোলন

शंकाण क्रमान वर्गकान्य प्रमा তাভার প্রকারী সেমাপতিগণের অনেকেই, বধা—গোরালিবরয়াক রাবশাক ও তাঁতার ভিন পত্র শালিবাত্ন, ভবানী সিংহ এবং প্রভাপ जिश्ह २४ क्यारामा श्व वार्कात वामनाम, मजतनाम, बाना-বীলা ও মানসিংহ, ভীমসিংহ সংগ্ৰাবে আত্মাছভি দিয়াছেন। चक्रोजात्वरा क्षेत्राभावत त्रहेव करिया मिलावहैय प्रांत मंद-নিকেপ করিভেছে। তাঁচার সর্বাদ রক্তরভিত। বাহৰ চৈতকও কতবিকত। বেহরকী-পরিবৃত বেবাররাত এই সময় বিপৰ্বাৰে ক্ৰম্পেশাত বা কৰিবা অবিচলিক চিতে হব পৰি-हालका खरिएखरम्म । अध्य अध्य मध्य जिल्लाम वलीवान খাতী বাতিমীৰ ছক্ষিণ পাৰ্য তেতিয় বাঁৰ ঘলতে ভাতাৰ সৈত-শ্ৰেণীর উপর ঠেলিছা কেলিল। সৈত্তবিগতে হণ্ডাত্ত অবসহ ও বিপৰ্বাভ দেখিৱা যেবাৱাৰিণতি আৰু শক্তিকৰ না কৰিবা इस्तक व्हेट चहाँदे व्हेटनमा १५ माम माम दिव कतित्वम बाराद मुख्यकात्व अवच करेवा भारी-वाविमीव जाक जरशास्य पारकीर्ग कहेरत्य । देजवान्य कांकार शम्कारकार्य করিল-এমনিভাবে এই ইভিহাস-প্রসিদ্ধ বুদ্ধের ব্যনিকাশাভ এই হবে প্রভাগণকে নিচত চইল ভিন শত আৰী ক্ষ ও শাহীপকে এক শত বিশ ক্ষ হত ও ভিষ শত ক্ষ ৰাহত।

হলদিবাটের মুদ্ধে বেবাররাজ বে সাহস, বীরত এবং সৈত-পরিচালমার বে নৈপ্ণ্যের সৃষ্টাত অধিবা সিরাছেন ভাহা মুদে মুদে ভারতবাসীকে উচ্ছ করিবে।

২৬ বেবারখিত কগনীশ বলিরে উংকীর্ণ এক প্রোক্তে প্রভাগ বুদ্ধে করলাত করিরাহিলেন এইরূপ উরিবিভ আছে। প্রোক্টি বার্থবোকন। এক অর্থে এইরূপ বুবার বে, প্রভাগ প্রাত্তকালে ভরবা রহন্তে রূপান্দে অবভীর্ণ ক্টরাহিলেন। নামগভীর সৈন্য হিছভিয় ক্টরা পৃঠ্ঞবর্ণন করে।



२२ व्यवाय-डेज-जन्मादिय, गृ. २७२-७७

২৩ স্বাৰপুভানা-কা ইভিচান তৃতীয় ৰও, পৃ. ৭৫১

२८ चाक्यदमामा पू. ১१८-१८।

২৫ আক্ৰৱনামাৰ ভ্ৰামী সিংহকে ভ্ৰ সিং ভ্ৰা হইৱাছে। ওৰাজী এই ভ সংশোধন ক্ৰিৱাহেন। ভ্ৰাজ-পুতামা-কা ইতিহাস, ' ।৪৩।

# পূৰ্ব বাংলার ত্রতকথা

## अञ्बोत्रव्य ताग्र

ঐভিহাসিকেরা অত্থান করেন, পূর্ব্ব-ভারভের অবৈধিক আর্থ্য-ভাষীৰিগকে বৈৰিক আৰ্থাভাষীৱা গুণাত্ৰ চক্তে ৰেৰিভ ও ভাষাদের অভিহিত করিত 'রাভ্য' বলিরা। ভট্টর শীহাররপ্রন बाब और जानारमत किशारम तक वनिरक रेक्का । किनि वरमम "আৰাবের গ্ৰাহ্যসৰাকে বিশেষভাবে দাহীদের ভিভন্ন যেসৰ बच चावध श्रामिक छाहात चित्रकारमहे चरेनिक, चनार्छ, অপৌরাণিক ও অত্তাহ্মণ্য এবং মূলত শুহু মারু ও প্রথমন-শক্তির পূজা, বে পূজা গ্রাহ্য কৃষিসমাজের সলে একাছ সংপ্রত। ৰংগৰ হইতে আৱম্ভ ক্রিয়া আমাদের প্রাচীন ধর্মায়, বৰ্ষছন, কোৰাও কোম প্ৰচলিত ত্ৰতের উল্লেখ পৰ্যত मारे ; चानि तोव ७ बाधनवर्ष त अरे वर्षावर्शनत्म बीकाव পরিত না এ তব্য পরিভার।" তাঁহার এই অসুমান ও ঐতিহাসিক বৃক্তি একেবারে উপেকা করা বার না। ভবে পরবর্তীকালে ত্রভক্ষার মধ্যে যে পুরাণের কথা আসিয়া আশ্ৰয় লইবাছিল, ভাতার প্রবাণ পাওরা বার। মনে হয়, পুৰার দিক হইতে যভ মভবিরোধই পাকুক, ব্ৰভ ও ভাহার ক্ৰার ম্বা বিয়া বে মেরেদের মন প্রভাবিত ও প্রকাশিত হুইভ ইতা প্রিভেরা অভ্যান করিতে পারিরাছিলেন।

ত্রভ উদ্বাশন করিতে ত্রাহ্মণের দরকার হর না। বেবেরাই এবানে প্রধান। কোন মন্দিরে ইরা অনুষ্ঠিত হর না; সেইবার স্থানের স্থিরভাও নাই। সমত্ত ত্রভই যে সমবেত ভাবে করা হয়, ভাহা নহে। সমবেত ভাবে বেগুলি উদ্যাপন করা হয়, ভাহার স্থান—চৌমাবার রাভার কিংবা বটের ভলার। কিছ গৃছের আলিনার মব্যেও ছোট ছোট দলে বিভক্ত হইলা যেরেরা ত্রভ উদ্যাপন করে।

ত্ৰত উদ্বাপন বাঁহারা করেন, তাঁহাদের মধ্যে বিধবা, সৰবা এবং কুমারীরা বিশেষভাবে মোগদান করেন। কভকগুলি ত্ৰত আবার পূথক পূথক ভাবেও আছে।

উপকরণের মধ্যে কোন বৃত্তিপুলার প্রচলন নাই। কিছ ক্ষেক্ট রভে আলিম্পন দিবা পুতৃল-চিত্র আঁকা হয়। কভজ-ভলিভে অম্পট্ট ভাবে পিচুলী বা কীর দিয়া গরুবাছুর নির্মাণ করা হয়। স্থাননী রভে গোবরের উপর শিলনোভার নোভা হাপন করিবার রীভি আছে; পাটাই পুজার দেবি বনের গাছ আনিরা বাঁবিরা সৃত্তির বভ করা হয়। মনে হর, রভ উদ্-বাপন বিস্তুলা হইলেও ইহাতে সৃত্তির ব্যান নাই।

কুল-কল-মূল, ছবিজা, পাল, সুপাবি, কলা, বাল, চুৰ্বা প্ৰায় প্ৰতি ব্ৰভেই প্ৰয়োজন। স্থবচনী ব্ৰভে ভেল সিকুর বিশেষ উপক্ষণ। 'ভাল'-এর প্রচলন সম্ব ব্ৰভে লা বাজিলেও ক্ষেক্ট ব্ৰতে ভালের নৈবেদ্য দিতে বেখা বার। রঙ্গ-ব্রব্যের তেমন হান নাই। হর্ণ রৌণ্য বর দানও বিশেষ দেবি না।

প্রবেশ ছাড়া ত্রভ উদ্বাণিত হইতে বড় একটা বেবা বার না। ত্রভের ক্বাগুলির মধ্যেও প্রারের করিত্র সংসারের ক্বাই বেনী। তবে প্রাম ছাড়িয়া ত্রভ ববন নগরে রাজপুরীতে ছান পার ভবন হইভেই ত্রভের দেবী কাঞ্জা হন।

বর্তমান প্রবছে আমরা এত পালনের ক্রিয়াকর্মের কথা বিশেষ আলোচনা করিব না। আমরা নাবারণভাবে এত-কথাওলিকে সইবাই আলোচনা করিব।

এই ত্ৰতক্ষার মধ্য দিয়াই বল্পানীর মানস-সংস্থতির পরিচর পাওরা বার। কেবল মানস-সংস্থতি কেন, ভলানীরন কালের সামাজিক দিকের উল্লেখ্ড ইলাভে বর্থেই আছে।

কিছ ব্ৰছকথার রূপতেদ আছে। বিভিন্ন অঞ্চল ইহার নানা পরিবর্তন ঘটনাছে। পরিবর্তন ঘটনাছে বলিরাই ব্রত-পূজার মূল অর্থের সহিত কবাগুলির বিরোধ। কিছ কবাগুলির প্রটি বলনারীর মনের ক্লছ আবেগের দর্মন। ১

ত্ৰভপ্ৰায় ছইট প্ৰধান অল—(ক) ত্ৰভপ্ৰা আৱ (ব)
ত্ৰভক্ষা। কিছ প্রবর্জীকালে ত্ৰভক্ষাই প্ৰধান হইবা উঠিল।
এবং সেইজনাই আজও ত্ৰভপ্ৰা অভূচিত হয়। ত্ৰভপ্ৰায় মূল
কারণ হিল বাছশক্তির প্ৰজননশক্তির ও কৃষিকর্পের প্ৰা।
কিছ ত্ৰভক্ষার উংপতির কারণ হইল, বাভার স্নেহের প্রকাশ,
স্বীদের সহিভ ন্যবৰ্ব প্রাণের ক্ষার বিনিম্ন এবং ন্যব্ধুর
প্রতি শান্তীর অভিবোগ।

ত্ৰকৰা অনেকে সকলম করিয়াছেন। কানীনাৰ অৰ্কবাদীন একবানি ত্ৰত্বালা সকলম করিয়াছিলেন (১৮৬৭ এ:),
কিন্তু ইহাতে সংস্কৃত ও পুৱাৰ ইভিছালের গরই প্রাধান্যলাভ করিয়াছে। বাংলার স্বাভ হইতে এই ক্ৰাঙ্লির উংপতি হয়
নাই। ইহার মধ্যে ত্রাত্মণদের বাভির করিবার ক্ৰাঙ প্রচুয়।
ইহা ত্রতপুঞ্জার আসল অর্বের সহিত নোটেই বাণ বার না।

পরবর্তীকালে আরও অনেকে ব্রতক্ষা সকলন করিয়াহেন।
কিন্তু ইহার নথাে কাহিনীটুকুই স্থান পাইবাহে, প্রানের নেবেরা স্থান পার নাই। অর্থাং, এই কাহিনীগুলি সানুভাষার রূপাভরিত হইরা কভক্গলি স্ববিদ্ধান গলের সমষ্টি হইরা প্রভাৱে।

বতদ্ধার আলাদা এক প্রর আহে। ইয়ার যাক্যগুলি হলে হলে এবিত—পুর সহজে হলর ভার্শ করিবার বত। কিছ এই হল আবার আঞ্চিক ভাষার হলকেই বেশী বাত করে। ভাকেই আঞ্চিক ভাষাকে বর্জন করিবা ত্রভকবা সফলন করা বার বার করা উচিত নর।

পূর্ক বাংলার এতক বাঞ্চলিই এবানে বিশেষ ভাবে আলোচা। কিছ পূর্বে বাংলা বলিতেও আমরা একট বিভূত অঞ্চলের এতক বাঞ্চলির রূপ বিভিন্ন প্রকার। সেইকচ এই এতক বাঞ্চলির ক্ষেত্র মূলতঃ পদ্মা-চন্দ্রমান্য ভীরের অঞ্চলগুলির মধ্যে সীমান্ত করা কটল।

চন্দনা নদীর কথা বর্তবানে অঞাত থাকিলেও সপ্তদল ভান্ধীতেও ব্রোকের নদন্দীর নলার এবং রেশেলের মানচিত্রে গাওরা বার। ব্রোক চন্দনাকে বশোরের পশ্চিম দিক দিরা প্রবাহিত নদী বলিরা উল্লেখ করিরাছেন। বর্তমানে ইবার নারা অভ্যন্ত কীব। এখন চন্দনা বশোরের অনেক পূর্ব্ব দিরা সিরাছে। পরার পতিও পূর্ব্বে অনেক উত্তর দিরা প্রবাহিত বিল। কালেই ঢাকা হইতে বশোহর পর্বাহ ভ্রতের লোককেই এই অঞ্চলের মধ্যে বরিতে পারা যার। এখানকার নবিবাসীদের ইতিহাস আলোচনা করাও বড় ক্টিন। বত-চ্বার কোবারও মুসলমান আনলের কথা পাওরা বার না রহং বিকিসভাভার সমরের কথাই বিশেষ উল্লেখ করা-ইরাছে। বনপতি সওলাগর আর টানসওলাগরের আমল বত-চ্বার মধ্যে পরিক্ট। কিন্ত নগর-সভাভার বিশেষ ইলিত নাই, সম্পূর্ণ ব্রামীণ পরিবেশ। ক্ষাক্রের্গের কথা এন্ডলিভে প্রধান :

ব্ৰভক্ষার মূদ-কাহিনীর বর্ণনাও নাই। মনে হর বভপুজার মূলবারা অন্থ্যবন করাই হিল কথার প্রথম প্রবান; কিছ পর-ধর্তীকালে অভঃপুরিকার ব্যক্তিগত মংগকট কথার মধ্যে একটু হাল পাইরা বসিরাহিল। এই জন্ত কাহিনীর সর্ব্বেমীনত্ব আছেই তিবে বিভারিত বর্ণনার মধ্যে অঞ্চলবিশেবের পরিচর পাওরা বার। তথাপি ভ্রণা-মামূলপুর প্রভৃতির ঐতিহাসিক কাহিনী হাম পার নাই।

আঞ্চিক ভাষাও বভক্ষার সদে মিল্লিভ হইবা এক স্ভন

দুশ দইবাছে। গোৱালন্দ বহুক্ষার খণ্ডববাড়ীতে ৰাজ্যা বা

কালা বাণিকগঞ্জের বেবে বিবাহিতা হইবা আলিতেছে। সদে

মাসিভ পেঁটবা, বেভের বাণি আর বভক্ষার বুলি, হরত পাবনা

মাতবাছিয়ার বেবে আসিল ভাল্বালির বাঁশের বাড় আর

মাতের-পোলের দেশে। ইহারা ভাষা হাছিয়া বিবা আসিত

বা

কালেই এই উপারেও বভক্ষার ভ্রমা এবং ভাষার

কিল্লেব ভ্রমা গিরাছে।

এই রভক্ষার নব্যে এবন একটা হার আছে যাহাকে বলা ইতে পারে 'আগননী' গানের পরিপূরক। আগননী গানে বাবের জারা বেরের বত। বাংকার বেরের আট বৃহত্তে বিবাহ হইছা পরের যর ক্রিডে বাইডে হইড। নেগানে ক্ত কঠ। মারের প্রাণ বংগর অভে ভিন বিনের জন্য বেবেকে দেখিতে পাইবে বলিয়া কড ব্যপ্ত। কিছ আগননী গানে নেই বালিছা বগুটর রণরনিনী শান্তভীর উল্লেখ নাই। আগননী গানে কভার জীবনের এই পুঠাট উহ।

কিছ ব্ৰহ্মণার লেই করা ক্ষাল শান্তীর ব্বে, বৌধ-পরিবারে, তার অপারগতা লইরা কি করিয়া বিদ কার্টাইরা থাকে, তাহাই চোথের ফলে, ছোট ছোট ফ্রার, অলভার-বর্জিত ভাষার বলিয়া থাকে। পাটাই পূজার কথার আছে, "শান্তটী উনেদের বিকে গরন হাতা নিরে আলে বউর কিয়— হের ঠা'লে দ্-হোরলেন।" অর্থাৎ, শান্তটী উন্ন হইতে গরন হাতা লইরা আলিয়া বৌরের ফিলার ঠাসিয়া বরিলেন।

जवन वर्षापद मद्दाद बाजान क्यांक व मा जारक काला শান্তভীৱাও সেই সমূহে আমেক গল ভৈয়াত্ত করিয়াছেন। কিছ কোন বধ বদি ভেমন "অলপ্লেমে"র ( অল্লায় ) কাৰু করিয়াই পাকে ভবে ভাচা অনেকটা বেভের भीरवत मछ। जात कांहात मक्ति बुव कम, भविरकत भरवत वित्रक (क्यम प्रतिष्ठ ना. क्षत् चानाताह अक्षे देखाक कृतिया লর মাজ: বলিতে প্রারা বার, ভার অভরের বেদনা পরবের 'পেলব' ভলীতে একট সহাত্ত্তি আকাজা করে মাত্র। बांक्ड बरीत व्यक्ति प्रशास प्रामा बाताक्षेत्र 'वानमी'त प्राम प्रमण-तालव 'तिराख'र रहेरवर काशियी मामावक्य कारक बाबारएक किए बाकर्षन करत। टेक्स बारम वह बार्याच-ষ্ট্ৰ। অশোক্ষ্মীর অশোকার বাঙা এক বিশ্বহকর হেছে। लाक्ष्मेरास्त नवारक रव दर्ग ठहेरा वारवद नवका वक कहेवा উটিল সেই বুগের চেছারা এই। ত্রাক্ষণের কেবল ক্যা-ज्ञानरे वरेण, পुबन्धान चार करेण मा। किक्किन शुद्धांध भाषानीत्व देशात कम कमाध्यक्षित इस्रात्मात जात कम हिल না। ত্ৰতক্ষাৰ আত্মৰ ভাই আত্মৰীকেই দাবী কৰিলেয শাসাইরা গেলেন এবার করা ছইলে ত্রাছণীকে ভাতাইরা पिर्वम ।

—এক্লিন বাউনী পোছাতী। বাউন বলিছে, 'এই বাউনী। ইবার বতি নিরে অর, তর নিরে বিরে আর ভোছ বিরে ভাড়ারে দেব।'—কিন্তু কভাই হুইল। ত্রান্ধণ ভবন পুলা করিতে সিরাহেন।

"উনি কি করেন ?"

—মিরের হ্ব বাওয়ারে, তেল-কামল বি-ই-রে, বিবিচ ক'রে এক বছুন পাতিলির মনি ভয়ারে একবেন চেলির কাপভ বিরে চাক্-এ, নরা র্বির উপের বিরে, নদীর কলে ভাসারে বিলেম।—

কভাটকে বিদৰ্জনের সময়েও বারের ক্রেছ কভার আয়ু-বৃদ্ধি করিয়া বিল। আক্ষাল এইওলিকে আর্লা প্রয়ো বদিরা বর্জরতা বলিব , বলিব বে, বেরেবের উপর ঘারীবের এ কি অত্যাচার ! কিছ তবু বলিতে হইবে—বাংলার সবাকে এই রক্ষর করেকটা মুগ গিরারে । আবিও কত কারবে, এই গুর্লজীবের আবরা কঠ বিরা থাকি, তারা হরত সুহত্তর চিতার পাকে আবরা ভূলিয়া বাই । বাহায়া এডকবার রাজগটন বভ মুল বর্জরতা করেব না, তাঁহায়া হরত বা ইবলেবের 'তলস হাউলে'র অভ্যাণ ক্যা আর সত্য অত্যাচার করিবা বাকেব।

ৰে সৰ ভাহিনী দইবা বদলভাব্য বচিত হইবাহিল, দেই বজুৰ একট ভাহিনীই এই অশোভ্যত্তী, এই ভাহিনীকে দইবা হয়ত 'অশোভা বজুল' লিখিবা কেলা বাইত।

গারণী সংক্রাভিত্র কথার বধুট ত্রভক্থার বর্জিনা বিশেষ।
অসমী বা সভীনকে নানা কলী ঘাঁটিরা ভাডাইল, সভানবের
বঙ্গলসাধন করিল। ইহার পর্যবেক্ষণশক্তি অপূর্ব্ধ। পুকরের
ব্যবহার বেবিরা গারণী ত্রভের বর্ষ বরিতে পারিয়াহিল।

—উনি গ্-হাটে চান করতি গেছেন। বা'বে বেবেন বে,
একটা প্রের বাফা নিরে বেড়ারে বেড়াকে। বেড়াভি
বেড়াভি ল্-হানের ক্যাভে বা-রে ল্-হান বা'লো। ল্-হান
বা'বে আ'নে বাফার হন বিল, আর বাফাগুলে সন ব'বে
পেল।

ভার পর ওবেরটা আবার কিছুক্তণ পরে কচু ব্যাতে পেল। বাবে কচু বাবে আ'লো। কচু বাইরে আইলে বাভাগলো ভাকল, আর বাভাগলো ভালা হ'বে উঠল।

বৌ ইঞাৰে ইঞাৰে ঐ বেপল। সন্দে বনে ভাবল, 'ভালি ভ গালীর বিল ভাভ থালি সভাল বাঁচে লা; ভা আর্ও আর ব্-ছাভ থাব লা।'— আঁকুড় যজীর বব্টির বৃত্তির ভারিক ভরিভেই হর। হালী হরিপের বদলে নালী বাছুরের বাংস ভাটিরা রালা ভরার। ভাহাই রাজ্যপদের বাইভে দেওরা হইবে। বব্ট টের পাইরা এক কলি আঁটিল—লালীকে বলিল,
—ছ্বি এক ভাক ভর। পুঁই নিরে আস। পুঁই হেঁচে গ্রোরের সাথে বর ভলভলে ভরে লেপে বোও।—লালী ভাই ভরল।

ব্যাহ্মণরা আতে গাভি বনল। পাভা করে করে বনে পভিছে। বৌ বাজার কাপত কড়ারে ব্-হাতের থালা হাতে করে বাহ্মেন। বাভি বাভি পিছলেরে ঠান হরে পড়ে পেল। পড়ে বারে হাত লাগে বৌ অজান হরে পেল। কাভ অপর-ভাতিতি গৃহর তবে পেল। ব্যাহাতালিয় নই:হরে পেল।—

ৰোটবাটো বৃদ্ধি এই পরিচন, বনুদের এই ফুডিছ ক্ৰায় নবা বিবা হড়াইনা বিদেবের উপন আহা কিনাইনা আনিত। আছ-সান্বোর (self-assertion) ইহা এক বিচিত্র প্রকাশ। বাহিন হুইতে বাবা পাইনা পাইনা, ক্ৰান্ত বব্য বিনা নিজেবের বিশেষ পরিচয় ভারানা রাখিতে চাহে।

এই দৰ বৰু কোৰ বিদ দাহিত্য স্কচনা ক্ষিতে চাহে

নাই। হংগের সবরটা ভাহারা কি ভাগে, কার কাছে, কেবৰ করিবা আত্মসবর্গণ করিবা সিরাহে এ ভাহারই ইভিহান। ভাহারা বিপ্লব করিকে পারে নাই।

দৰীকে কাছে মনের কথা বলিবার অন্য ভারারা পাভর কর', 'পাচালী পচাল পাড়ে' আর 'গোবর-গোলা বিরে 'বতে বতে বেরভ কথা' বলে। ত্রভ অতে 'সগ্বা' হলে ভেল নিজ্ব 'অব্বা' হলে 'বাব-চ্কো' বিরে বরের ভাজে লাগিরা বার।

এবনি কবিরা ইহালের জীবন কাটে। গাঙে জল পঢ়িলেও ইহারা আলা পার না, নহীতে 'চোড' আনিলেও ইহারা ভাবনা করে না। বানী প্রবাদে বাকিলে গোলালী, বরে কিরিলে ঠাকুল্লণের হেলে। এই 'রাজেখর'লের নিকট হুইতে ভাছারা অবেক ক্ষেত্রেই সংস্থা পার নাই, পাইরাহে সভীন। শলাক্রর বভ গারে কাঁটা বাকিলেও গলা নরর, অভরে অভিবােশ বাকিলেও শলাক্রর কাঁটার রভই সেইওলিকে কুলর করিবা বালাইরা চলিতে হয়। রভক্ষাগুলি ভাহানের সেই শলাক্রর কাঁটা। ইহারই বব্যে ভাহারা সভাবের জন্য জীর-বারা সক্ষর করিবা চলিরাহে। 'চাপভ্যরী'র বধ্টীয় প্রের জন্য ব্যভা সভাই অভি করেন। 'চাপভ্যরী'র বধ্টীয় প্রের জন্য ব্যভা সভাই অভি করেন। 'চাপভ্যরী'র বধ্টীয় প্রের জন্য ব্যভা সভাই অভি করেন। 'চাপভ বার ভাস্যে, বোকা আলে হাতে।' কথাটার ব্যবাহে বে, পারত মাতৃর্তিই ইহাতে লগ পরিপ্রত করিবাহে।

যত মদল, ভাহা সৰ 'ক্ষের ক্ষে' 'গেরভর' কল্যাণ বৃদ্ধি করিয়া তবিভাং বংশকে বাড়াইরা ভূলিয়াছে। 'অশোক্ষরী' 'লম্পং-নারাণির' ত্রত, 'বাট্যন্তী' স্বক্ষিত্র মধ্যে মার্থে ক্ষাণ্ডিংলারিত হইবা উটিয়াছে।

ব্যব্যাকী হইতে বাপের বাকী হয়ত বেছায়ালের এক কাবের ব্যব্যান। কিছ 'আবাসীর বিট'রা সেই কুলি বা সোরারীর স্থান জানে না; জবচ এক মিনিটের নোটপে ভারতের চিরকালের জন্য বাপের বাকীতে বাকিতে হটতে পারে। বাবার উপর এই বাঁড়া বহুন করিরা ভারারা স্থান পালম করিবে, গৃহত্বের কল্যান চিল্লা করিবে, গাড়াগভনীয় 'আহে 'কান' করিবে। 'বভরে'র সমর মুনিবজনের ইাভি হাঁড়ি ভাভ র'নবিতে হেঁলেলে আশুন ঠেলিবে, বর্গায়ারের মলন-মলার পর ভারারা কুলা লইরা বান উড়াইবে, বাম গোলার ভূলিবে, বান সিছ করিবে, ছতুর ভাজিবে, চিঁতে কুটবে। ইহারই মধ্যে সমর করিয়া নীভের স্কালে ভেষাবার বা বঙ্গের আভিনার অববা আগ-মুয়ারে "নীভি টির টির" করিতে করিতে রভের সমন্ধান সইয়া বলে।

অৰচ ইহাৰের আজাজা বেশী নয়, পরস পূব বুৰিতে ইহারা বুৰিত বাবের জোল। বনুনারতের নাগ পণনীর বিনে ব্যুক্তর ইক্ষা হইতেই ভারাকের চরিত্র বোকা বার। লাভট বৰু নিজের নিজের নেরা ইন্দার কথা কানাইকেছে। ভারাবের সকলের কথাই প্রার এক রক্ষের। সপ্তর বষ্টার কথা— 'আক্লের মড নিন হয়, বাপ নার বাড়ী হয়, উপেনে নাহ পুড়া নিয়ে পাড়া ভাত বাএ ওবে বুল বার।'—একটু অনসভাবে ভারার ভার ইচারা এতাত ববে কাল্যা করিত।

ইভূপ্ছার উননী-বৃথনী কথা আলোচনা করিলে বেবিতে পাই, মাত্রীনা তরী হুইটর অভদ্ ছি। শিভার প্রতি তাদের স্থেছ অগান, বিবাহ না হুইবার হুংব শিভাকে পুনরার বিবাহ দেওরাইনা নিটাইতেছে। উননী-বৃথনীর বাবা বদি ননোবিদ্ হুইতেন তাহা হুইলে ব্বিতে পারিতেন, ইহা তাহাদের সভ্যার কথা নহে ইহা ভাহাদের নামসিক অভিকেশ (projection)। এই কথার রাজানহাশরের অবিবাহিতা কভাকে লইনাও এক সমভা। ইভূপ্ছাট অবিবাহিতা কভাদের হুংবক্তে অবলহন করিরাই রচিত। তবু ইহারা বাপমানের বিরুদ্ধে গোম অভিবাপ পোষণ করে না। বরং তাহাদের উপর ইহাদের পভীর ভক্তি। বাপমানের হুংব ব্রবিবার মত বৃদ্ধি ইহারা বিভিন্ন হুড়ার নথ দিয়া প্রকাশ করিরাহে। একট হুড়ার—

আৰ-কাঁঠালের পিছি থানি
থি ন' ন' করে
ভারির উপর বাপ বুড়ো
কভা দান করে।
বাপ বার রে নার নার
পুজো বার রে ভরে (ভীরে)।
শিশু কালে বিরে দিলি
সভার আঞ্চন অনে ।

**ঘটনাও দেবিতে পাই**---

ব্যব্যাব্য বাভ বাজে
সাজিরে ক'নে ষত্ম সাজে
না বাপে দেন বরের করে
কভই বনের সাবে।
মা-বাশ ভাষনা ভরেন—
ভালো বরে ভালো বরে
দিবেন ব'লে বি—
ভূপাল বনি মুল হর

না বাপে ভার করবেন ভি ৫

ইহাবের এই সব মনের কথা বাহির হইতে প্রকাশ পাইত না। সক্তল আবেগ ক্লব্ব করিরা ইহারা পাবাধ-বৃত্তির নত হইরা পড়িত। এইজভই বোব হর আগমনী গানে আহে, 'পিছবোবে বেবে পাবাধী হ'ল।'

এই সৰ বভক্ষার মধ্যে ৰাঙালীছও অভি পরিকার। বাঙালীর ফাভিডছ নদকে নদীবীরা সাবাধণত: বে কর্মী বিবরে একরত তারা হুইতে বলে হয়, বাঙালীর বনিরাধ নিলোবটু, অঞ্জি, ক্রাবিভ ভাষাভাষী, আল্পীয়, আবি মতিভ্বের কইয়া।
এই নিক্রণ যারাই বাংলার সূত্র অভীতে সমাজ-ভিডি সটিভ
হয়। অভএম বর্ডমান ভালের বাঙালীদের নির্ভান মনে
সেই আদিন মনোরভি ছান পাওরা বাভাবিক। ভাতির এই
নিজ্ঞান নন (unconscious mind) উপেক্ষর নহে।
ভাতির রক্তবারার প্রাচীন সংভার বহিলা সিরাছে। ব্যক্তবার
মধ্যে জনের প্রতি মোহ, বনানীর প্রতি আকর্ষণ বেশ
পরিস্কিত হয়।

নিগ্রোবটু আর অট্রকেরা সর্জের বারে বাস করিছে ভালবাসিভ, প্ররোজনও বোব করিছ। ভাহারের প্রধান বাল্য হিল শিকারের বাংস, ববের কলব্ল, বাহু ইত্যাদি। প্রভক্ষার বব্যে বাহের আর কল ব্লের উল্লেখ ভূরি ভূরি দেবা যার। গারনী সংকাভিতে কলব্লের ব্যবহার বিশেষ লক্ষার। প্রায় লাগে, আলা-কাচকলই—ভালের আঁটি—
ভাবের জল আর ভাতের সলে চৌহ শাক।

ঞ্ৰীপক্ষী আর বিজয়া-দশ্মীতে কোভা-ইলিস বাছ কুটীরা বরে লইতে হয়। সেই ইলিসের বাঁইস বাভিচ্চি প্রভৃতি আবার বরের এক কোণে বিশেষ অন্তঠান কবিরা পুঁতিরা রাবিতে হয়।

আদি বাঙালী হরিণ শিকার করিতে ভালবাসিত। আঁকুড় বজীতে পুকরিণ উংসর্গ উপলক্ষে হরিণ-মাংস থাওরাবোর ব্যবহা আহ্মণ করিবাহেন। এই আঁকুড় বজীতে ধেথা বার, নরাক্ষে একন এক শ্রেণীর লোক বান করিত বাহারা গোহত্যা বা গোমাংস ভক্ষণ বিশেষ গহিত মনে করিত না। অধ্য ইহার মধ্যেই দেখা বার, আহ্মণেরা শ্রেণীতেক বিশেষ ভাবে মানিতেন। সমাক্ষেই হা এক বিশ্র-মুগের কথা।

সর্ত্যের প্রতি আকর্ষণ নদসা রতের মধ্যে বিশেষ করিয়া পাওয়া যার।— আভাইরাজ, মণি-রাজ মা-পলার বাহন, ওঁরা এক ডুবি সাত সর্ত্র পার অবে মা-পলার কোলে ব'লে ছব বাবার লাগলেন—'

এই এত ক্থার অতি সরল করিবা নাত্রজাতির চরিত্র বিরেষণ করা হইরাছে। কিছ এই বিরেষণ বে কোল্ যুভি হইতে জাত তাহা তাবিরা দেখিবার মত। না-পরা বলিলেন, "সর্ক্ষালা। ওরা হ'ল মান্বির বাচা; ওরা পেট ড'রে থার, বন ড'রে হার্গে—ওরা নাছ থার, নিছে কর; উরা কি দেবপুরীর নাম বোবে ? উরের আনে' কান নাই।" ইহা বেন নেরেনের আলিম্পন অমন। হাতের এক একট লীলায় টাকার থলি, নিছুক, দেবীর চরণ আর সুটত ক্ষল আহ্মগ্রকাশ করে। বাস্থ্রের ব্যবহারের প্রতি বিরূপতা কত প্রচণ্ড ভাবে থাকিলে বে এত সংক্রিপ্ত বিরূপ বর্ষণ করিতে পারা বার, তাহার গতীরতা কে নাপিবে ? দেবপুরী কোন্ট আনি লা। হয় ত বা নানা পাথাজাতি বা 'কথবে'র পার্ত্তাব আর

ইংগাতে ভাহারা ক্ষমণ: ভাহাদের বে অভীতকে ভূমিরা বাইতে বসিহাতে সেই অভীত লোক সম্বৰ্থেই ভাতাদের এত করবা। অরণাকে ভাচাচা পবিত্র মনে করিত, ভব আহারের ভাই ভীবন নতে, উদান আনন্দৰে বাঁচাইৱা ৱাৰাই ভাতাদের ভাষা। ভল, পাছাভ, ভরণ্য ভাই এভ পবিত্র ভাহাদের विकडे । बाबर प्र: द विक करेल और बातर वाकाली चहाता দিলা কাঁদিতে বদিত, পাধরে দিলা মাধা বঁডিত। অর্প্যের প্রতি বৃষ্ণার্থ বে ভাহাদের পূর্বাপুরুষের আছা। এইবঙ বিদা প্ৰৱোজনে ইহাৱা পদ্ধৰ ভাঙিত না, ভাহাৱা দল भाकारेक मा. जरहाकिमकि काहारमद हिन मा. चार्थमांद रवनमा আপনি উভাভ করিবা ঢালিবা ভিত বনদেবীর পাবে। সেই **চরিত্রই পরবর্তীকালে বাংলার বালিকা বধুদের ত্রতপার্ব্যপের** बवा क्रिया त्वया क्रिया वित्व प्राथी क्रिया वार्थी क्राय वार्थी क्रिया वार्यी क्रिया वार्थी क्रिया वार्थी क्रिया वार्थी क्रिया वार्थी क्रिया व भक्षीरक करन मां, जलारबद विकटेश क्षेत्राम करव मां। ভক্তর পুনীভিভূমার চটোপাব্যার বলেন, "লাবব খীকার করার बरवारे रेटार्कत बहेटे लाग्निक दिन, बरे लाग्निक माना शतिवर्धास्त कावा क्रियां व एक क्रम काहे।" खाक्य (मार्वरम्ब प्रकारक को शक्तिक शासका बाद। मात्रशक्तीत मध्या व्यक्तित চরিত্র বিশ্লেষণ করিলে অবাক হইতে হর। क्षण अवर जाहबार्गव बार्या त्यन अक्षेत्र बहुर यम जाअक हरेवा इंड-श्रकात देवनी-व्यमीत हतित्वत अवम प्रश्म चाकिक बारमात (बारहरूक बारा चलविचत वर्ग गांव।

অফ্রিকদের আর নেপ্রিটোবের এই আরণ্য ভাষট তাহিরা দিল লাবিড় গোনী। লাবিড্বের বহুতবাদ, আব্যাহিক্ বিখাল, শিলবোবের আভাল রুভক্ষার মধ্যে কভক্ পরিনাশে শাওয়া বার। হঠাৎ কুঁড়েখরের বদলে ইয়ারভ নির্দ্তিত হওয়া, রুভ বছুতে প্রাণদ্যার সবই সেই রুহুছের বলে।

একট ব্ৰহুক্পার আছে, "বুনোরা বনে আগুন কেছে। বিটি হবে গেছে, চাক চিকেনি কল আইচে নাঠের নদি। ভার নদি আভাইরাক সনিবাক ভূব পারতেছেন।" ইহাতে এমনি একট প্রাকৃতিক চিত্রের নিযুঁত বর্ণনা পাওয়া বার।

বে যেরেট ত্রভক্ষা বলিভেছে লে ভাহার স্থা দৃষ্ট ভূলিরা বরিষাছে শাওনের স্বষ্টর দিনে পথের দিকে। এক লহমার চারিদিক সে দেবিয়া লইল। মাঠের বংগ্রকার জল বে চিক্চিক করিভেছে ভাহাও ভাহার মুগ্ধ দৃষ্টি এড়াইরা বার মাই।

কিছ এমনি করিয়া বুঁটরা বুঁটরা ভাতির অভীত বৈশিষ্ট্য বাহির করা সহজ্পাধ্য ময়। পালিয়াটির বাল্কণা ভূলিয়া কে প্রবাণ করিবে ইলা অমুক পালাছের অমুক পাণ্ডটার কণা ? ভবু আবহুমান কাল বহিয়া আনালের নদের মধ্যে যে সংকার বাঁচিয়া রহিরাছে ভালাকে বে আমরা অলীকার করিছে পারি নাই—ভালাই প্রমাণ করে এই ব্রভক্ষান্তলি। অভীত আমা-দের মধ্যে এখনও ক্রিয়াশীল, সেই অভীতকে বুকিয়া পাইছে আনালের বিশেষ চেষ্টা ভরিতে কইবে।

## কিন্নর জাতি

### ঞ্জিখৰ্মদেণ শাল্ৰা

षष्ट्रवानक-श्रीवीदवस्त्रनाथ अह

## क--वर्णक्या : वर्णक्या मानव

কেৰিলাৰ কিয়ন কেশেও গাঙীকীয় নাম পৌছিনাছে।
কিছ উচ্চান হনিজন-উন্নয়ন প্ৰচেষ্টান কৰা পৌছান নাই।
নাহৰ সুধান নাহুবেৰ হানা পৰ্যান্ত নাভান না একবা পভিচাই
আনিনাহি এক দিন, স্বচক্ষে দেবি নাই, এবানে ভাকা
কেবিলান। কিয়ন দেশে আজও এই ব্যাপান চলিপ্তেহ।
লবৰ্ণ কাভিন কোন লোক—ত্ৰী বা পুক্তম—কল ভনিনা নাভা
কিনা নাইতেহে এনভাবহান ভাকান ইপন ব'দ হনিজনের হানা
পতে ভজন অননি অপনিত্র হইনা বান, ইহাই সবর্গদের
বিখাস। ভাই কিয়ন দেশেন হনিজনদের নাভানু নাবনাকে
চলিতে হয়। ত্রীপনীধ ও আনি চীনী বাইতেহিলান।
পবে ক্ষেক্ত কন লোক বেশ থানিকটা বুঁকিনা আনাক্ষেন্ত
নাকান ক্ষিত্র, আন নাভা হাছিনা হিলা বীচে গিনা ইভাইল।

থীরণ করার কারণ বিজ্ঞাসা করিলার। ভাহারা বলিল,
"আসরা হরিক্ষন, তাই।" উচ্চবর্ণের বরে আমার কর একপা
মনে হওরার অন্তরালা আমার বিভাবে ভরিরা গেল। আমি
বলি হরিক্ষন হইতার ভাহা হইলে আমাকে পথ ছাড়িয়া
কেওরার ব্লানি ইছালের ভূগিতে হইত না। বে হরিক্ষন দিমরাত্ত
ভারিক প্রান্ধে পেটের অয়সংখান করে, হিংপ্র করতে বে
ভর করে না, বছলে বন-কললে একাকী বিচরণ করে, সেই
হরিক্ষন বে, কোন আদনা স্বর্ণকে দেখিবা কাঁচুমাচু হইবা বার,
ইহা স্বর্ণদের পক্ষে পৌরবের কথা নছে। ইহা বে ভাছাকে
হিংপ্র করের অবর করিবা দের।

#### . প্রভারণ ভরিভান

রাজপুত বা অন্য কোন সবর্গ কল ভরিষা রাজা বিরা চলিয়াছে। পরে পাছল হরিজন। উপার । হরিজনকে বে নোজা তাজিরা বলিবে—'সরে ইাডাও' লে জো-ও নাই।

ভাতের তে ভল অপবিত্র চরবার ভর। ভাই বাজার भारतक लका कतिया जवर्ग विनया पारक, 'com!' समित्र : नरव या. चावार कम महे हर्ष बारव । वेहा हवेरच हरिकस ब्विता नह कन कतिश काम जवन काजिकाद , कारक नव ছাভিয়া সবিহা যাইছে ভাইছে। প্রায়াঞ্চল যে বাগুভি हरेए जन्म का कार हिकामता (जह नावकि हरेए का ভরিতে পার মা ৷ শুমিতে পাইলায়, রাষ্ণ্রে ভাষেত্র जाइजी एक्टि जर्गरहर राश्चि हरेरल कम चामिशकिया अहे क्या जनर्गना बहानाक श्रम्मित्रहरून कारम मानिन करता मक्तिएव विकास बायमा हाम बाद शायत शायत शायत अन है कि कविश्वामा हुन । दांश्वभूत अपन (जहें दांश बाहे, कारन चाका विजीय क्रवहात भरत । तावश्यत क्रतिकासता (प्रवे ताथकि करेंद्र क्रम कविशा नेवांक्रम लेबाव कवनाम व्हेरदेशाना রামপুর ত শতর। দেবামে সব বাবভাই আছে। ভিত অদৰ প্ৰায়ে জন্তা বিবাহাণৰ কৰা কাল কোন বাৰ্ডি চটাত ভল আনিৰে এছম চিশাত ভোষ চতিত্যত নাই। বাওতি विकास अवास क्यां स्टबार । भारतात व प्रत पास क्य क्य बनवाडा क्रि हरेए बेश्नाडिक हर, बन बाईकारे-ৰাৱ জন্ত সেই সৰ ভাৰপত্ব ৰামিকটা গৰ্ড কবিবা চাবিবার একট উঁচ কৰিব। দেওবা হব। কোন কোন ভাৰণা নিৰেণ্ট দিবা বীবাদ চর। ইচাকে পাচাতের লোকেরা বাংভি বলে। ভোদ পাত্র ভ্রাইরা কল তুলিতে হয়। বাওভিতে হরিক্সদের ছায়াও পভিতে নাই।

#### क्रविक्रम १९ मनिय

কিন্তর দেশের প্রায় সব মন্দিরেবই নিত্তর ভূ-সম্পত্তি আছে।
কমবেশী পঁচিশ হাজার টাকা উহারা মকুব পায়। ভাই
মন্দিরগুলিকে জনসংখারপের সম্পত্তি বলা বাইতে পারে।
রাজকোর হইতেও উহালের নির্দাণকার্যো অনেক ভার বার
হইবাছে। প্রভাগে ঐ সব মন্দিরে প্রবেশের দাবি হরিজনদের বোল আনা আছে। হরিজনদের মন্দিরে প্রবেশ
আইনভঃ বীকৃত হওরা চাই এ কথা অনেক হরিজনকৈ ভার
দিরা বলিতে শুনিরাছি। ভারতীর সংবিধান অনুসারে এবিছব
ভোগাতের এবন আর পারিতে পারে মা।

#### হামাহৰ পাঠিও অপতাৰ

হিষাচল প্রবেশ রাজা বিলীন চওবার পূর্বে মহারাজার রাজা হরিজন বালকদের লেবাগড়া নিহিদ্দ বিল। গোরা হউতে রামপুরের পথে চৈত্রাম নামে এক হরিজনের সলে দেখা। চৈত্রাম বলিল, সে গোরার এক ইংরেজের চাপরাগী বিল। কোন যোকতমার সাজা বিতে সে সমরে ভারাকে রামপুরের মহারাজের আগালতে হাজির হউতে হয়। প্রতিপ্রকর লোকেরা মহারাজের কাছে মালিশ করিল, "ব্ৰুর, এই চৈতু বুলী বাধার চতেহে। কাতে কুলী হুইলেও এ পঢ়ান্তবা করে। ইংরেছের নড়বি করতে করতে ভারও কাছে এ রামারণ পঢ়তে পিবেছে। এর রামারণ আছে, আর একে ডা আরি পড়বেও লেবেছি।

এই কথা শুনিভেই বহারাজার যন বোক্ষরার বৃদ বিষর হইতে সরিরা দিরা, জোলী হইবাও হৈছু বাবারণ পতে এই অবাদ্ধর ক্যাক্ডাতে নিবছ হইল। রঞ্চতে ভিনি বলিলেন, "বহুয়ানি স্কু করেছ। রাষ্ট্রেণ পছরে ও জেলে পূর্ব। বাইবে সিহে লেখাপড়া করো এ কথা আবার শুনুতে পাই ভ বাইবে আব যেতে তের মা—জেলে পাঠাব।"

#### श्रतात शारत बाहरकडे छहेटच

পরিভার পরিচ্ছরভার দিকে কির্রুদের দৃষ্টি নাই। এবাবে वाक्रनकावत वाद नकाव व विवाद काम साक्रम मार्ड---प्रज्ञातिक शास त्योह कात या। क्षत्राम मेंक्स विरम् किन हैं जिस रवड करते से । एका है बे क्या विश्व के केट्ट ত্তে তবিভাষেরা আরও অধিক অপরিক্ষর। ভারাজের অপরিক্ষয়-कात बाल क्यांक: कारिका। की वा शुक्रव काम कविकासक পরিবামেই নির্বাত কাপত বেবিতে পাইবেন না। ভাচাবের চোলিতে পৰ্যাত ভালি, পাতীর ভ ভবাই মাই। বিছামা ও शाद्य कामा त्मक्षांच कचन चित्र कड़े कड़ेटकथ कीर्न अवर अवद । कारकर केरिक सबसे करमक नार क्षामें कानक केरिक देखन बाहित्क कालावा विजया याव । अहे कैकम बाहाद बाानाव चलीत भत चली विविध हिमाल चारक । हिन्दिवा वर्ता शंकद মাংস বাহ, চামভা ছাভাছ, ভাই ত ভাচারা ত্রিক্দলের হুণা करत हेडाहे जर्गरवत कथा। यक कदत बारजाहात कवात-क्यक गत्मह माहे। किन्द्र त्काम हतिकम बडा बारन बांडेटव मा क्रिक करितम अवार्तना काजारक काजा बाहरक वाबा करता शास अक काली वरकत अहिक बालाम । कार्रावामानाम সে তামপর সিমাছিল। কংগ্রেসের কোন বক্তার বক্তভার (म (बारम (व प्रता शक्त प्रारम बाहेरल माहे। कवाही प्रयास्त श्राम बतिहा दाव । वाकी कितिहा (म श्रीक्रका करत महा नंदर व बारम चार त बाहेर्य मा। चमरक मता बारम बाहेर्य मा श्रिका कतिवारक अहे कवाहै। नारत बाहे हदेवा त्रेन । जवर्गहा श्रवाप अनिम। यदा मारम चाहेरव मा. छात मारम চামভাও ছাভাইবে মা। মহা গক বলদ ভবে অপসাহণ কৰিবে কে গ ভা বাদে সাক-মুভৱা বাকিছে আৰম্ভ क्तिल (य कादा वाबीम क्रेश वारेत, मिक शादा काकारेत. আমানের দাসভ অধীকার করিবে। গ্রামবাসীরা পঞ্চারেভ पाकितः शकारताच्य जनार्य काली स्वरक्त भेमेंब हरेता। शकारमण ७ क्वांनी स्वरकत बर्ग व्य क्यांगर्छ। इस काहा बरे :

'छमटक शास्त्रि यदा मारन चाद माकि वादि मा ?'

'হা, বেভেবি, বিশুদের নরা বাংল থেতে নাই। গরু বাবের ভূল্য।' 'তৰে কি তোৱ বাণ-ঠাকুৱলা হিন্দু হিল না; চুই সচুন হিন্দু হতে বাহিল ?'

'বাপ-ঠাকুরদার কথা কানি না। এবন বেকে আর ও মাংস বাব না।'

'নৱা বাংল ভোকে বেভেই হবে, নৱত আম ছাত্ত হবে।'

'বৰিব ! গাঁ ছেডে যাওৱার জারগা আমার আছে কি ? আপনাদের জাছে বিন্তি বরা বাংস থেতে আমার জোর জরবেন বা।'

'ভা হবে না! কংগ্রেসওয়ালাদের ক্ৰার চুই বাৰার চড়ভে বনেছিল। ভোর থাকা-খাওয়ার ব্যবহা ভারাই ক্রবে।'

ব্ৰক্কে পৰে একবৰে কৰা হয়। সেলাই কল আনিৱা সে দৰ্জির কাল করিভেছে। এখানেও বাদ সাধার—কলটা ভার হাভছান্স করার চেঠা চলে। কিন্তু ভাহা কলবতী হয় মাই। মাঠার অন্থলালকী পরিকার করিরা ব্রাইখা দেওভার সবর্ণদের উৎসাহে ভাটা পঢ়িয়া বায়। মাঠার অন্থলালকী মধু প্রাবের সম্বানিত সবর্ণ—হরিজন-হিতৈষী বিঠাবান কর্মী।

কোন হরিক্স ভাল কাপড় পরিলে অথবা পরিছার-পরিছের থাকিলে তাকে গালরক্ষ সহিতে, ধনক, এবন কি কান কথনও বারও থাইতে হয়। এরপ আচরণের কারও সুস্পষ্ট। পরিছার-পরিছের থাকার কথা ভাহারা ভুলিরা যাক, চিরদিনের বত বোংবা থাকুক, স্বর্ণেরা ইহাই চাহে।

এক হরিজন বনবিভাগে কাজ করিত। তাহার কার্য্যকাল বর্ধন শেব হইল ভবন বন-বিভাগ হইতে সে কৃতকণ্ডলি বেবহাকুর ততা পার। ততাগুলি সে ভার বরে লাগার। তাহা
গাঁরের লোকের অসহ হইল। বেচারাকে ডাকিরা ভাহারা
বলিরা বিল—'ভতাগুলি বুলে কেল।' 'বুলে কেলতে হবে
কেন ?' এই বেরাদবির জুভ ভার প্রহার বিলিল। সবর্ণেরা প্রকর্যাও বলিল—'ভূই ত কোলী। ভোর বর দেবলাকুর ভতার
তৈরি হর ত ভোর আর আনাদের বব্যে তহাং থাকল
ভোবার ? বাপ-দাদা বেনন চলতো তেমন চলাতেই ভোর
কল্যাণ লাইলাহেন হতে গিরেছ ভ মরেছ।' আপন হাতে
সে ভতা বুলিল না, দেবিরা প্রানের ব্রক্তরা ভার বাড়ীতে
গিরা বরের চাল কাট্রা নীচে লাগান ভতাগুলি বুলিরা হ্রে
কেলিরা বিল।

ৰবিজনেয়া জনসভা করিতে পার না। করিলে পূলিণ ও সবর্গ-অনভার হাতে ভাহাদের নারণিট বাইতে ও লাহনা ভোগ করিতে হর। কিছ নদে হইল সবর্গদের নব্যে এবন অনেক এবন বিবেচক লোক আহেন বাহারা হরিজনবের প্রতি লহাবহার করিতে চাহেন। নিকা-বিভারের সলে সকে এই ভাব পৃথ হুইতেরে। বানপুরের কনসভার ছরিকন্দরে আবি বলি, "কোলী ইত্যাদি বাহাদের বৃদ্ধি চানভা হাভানো, ভাহাদের আবি বলহি, চানভা হাভাইতে আপত্তি করা ভোনাদের উচিত নহে। চানভা দেশের সম্পন। চানভার ব্যবহার দিন দিন বাভহে। অভ্যান রুত পশুর চানভা বিদি নাই হতে বিই ত চানভার কড লাগো গক্ষর প্রাণ বাবে। বে সব কোলী এবানে ক্তা তৈরি কবে ভাদের কডও ত চানভা চাই। যুত গো-মহিবের চানভা বদি ভারা নিকেরা না হাভার তা হলে নিকেদের প্ররোজনেই ত বাইরে বেকে ভাদের চানভা আনাতে হবে। ভবেই দেবতে পাক্ত, হ'বিক দিরেই কতি হবে।"

বেধানেই কোন কোলীর সহিত কথা হইরাহে, বলিরাহি

"চামভার ভাজ হীন নহে। সবর্ণেরাও আজি 'লার্থা বৃষ্ট হাউস', নান দিরে চামভার ব্যাপার করছে। তোমরা বারা চিরকাল চামভার কাল করে এসেহ, চামভা পাকা ও রং করতে শিবে কাঁচা চামভাকে বামী চামভার পরিণত করাতেই ভোমাদের কল্যাণ। ভাতে সমাজে ভোমাদের হাম উ চ হবে।"

কোলীবিগকে চাৰড়া পাকান ও বং কবিতে শিকা দেওৱাৰ ক্ষ আনপুৱে কুল বোলা দৱকার। প্রসক্তঃ বলিব বে সবর্ণ-দের আচরণ অভুত। গরু ও বলদের কল্যাণে আজীবন তাহারা লাভবান হইলেও মৃত গো-বলদকে তাহারা অপবিদ্ধাননে করিবা থাকে, ছোঁবও না। অথচ গরুকে তাহারা আবার বাভাও বলে। মৃত গোনাভার গতি বাহারা করে ভাহা-দের অপ্ট করিবা রাখা এবং ভাহাদের কাককে হীন বনে করা তাহাদের শোভা পার না।

এনন যে আৰ্ডক কাম ভাকেও ছেব চলে বেধার সংকার স্বৰ্গদের মজাগত হইবা গিড়াছে। অভএব বড দিন এই সংকার ছুর খা হইভেছে ভড দিন শিক্তিত হরিজনের। ভাতাদের এই পুরাতন বৃত্তিকে হীন মনে ভরিবেই। হিন্দুবর্দ্দ হাড়া অভ কোন বর্দ্ধে এবনটি দেখা বার না।

ক্ষনতা করার অধিকার আইমতঃ সকলেরই আছে। আমরা চাই বে হিবাচন প্রদেশ-সরকার, বিশেষতঃ পুলিশ বিভাগ এই যৌলিক অধিকার হইতে কাহাকেও বঞ্চিত বা করে। ভক্ত সরুচিত ব্যবস্থা অবলব্য করা দ্রকার।

## অপ্রভার হত অপৃঞ্চেরাও দারী

কোটগড়ের এক সভার রেচ (ভালী) জাতির একট লোকের বিরুদ্ধে খনৈক কোলী অভিবােগ করে বে, লে ভাল হাভের কল খার মা। অভিযােগের উভরে রেচ বলিল, 'কোলীরা আবাুর হাভে কল খার কি বে আমি থাব ?'

কোলীদের বব্যেই, বাহারা চার্যার কান্ধ করে বা ভাহারা চার্যার কান্ধ করে এরণ কোলীবের হুণার চন্দে বেবিভে আরম্ভ করিয়াহে—ই কা, কল বহু করিভেহে। বহু বলিরা গণ্য হইতে হইলে নিজেদের অপেক্ষা বাহারা হোট ভাহাদের
মূণা করিতে হর এ শিক্ষা বস্ততঃ অবর্ণেরা সবর্ণদের কাছ
হইতেই পাইরাহে। তাই পরস্পর সমান হইলেও বড় বনিরা
গণ্য হওরার তাগিদে ইহারা অপর কাহাকেও হোট করিতে
লাগিয়া গিরাছে। বে হরিজন নিজে 'অস্ট্র', বাহার হারার
নাকি কল 'অপবিত্র' হয়, সেও পর্যান্ত সমপ্র্যারের ভাইদের
ম্বণা করিরা নিজকে বড় দেখানোর স্বপ্ন দেখিতেহে।

#### হরিক্ষদের চারি বিভাগ

হরিজন বলিতে সাধারণভাবে কোলীদেরই বুঝার। আর্থিক অবস্থার দিক হইতে হরিজনদের চার ভাগে বিভক্ত করা বার।

১। হালী—ছোভদার কোন কোলীকে প্রেক্ণাচ টাকা
দিবা হালী করিবা লব। ছোভদারের কবিতে লে লাদল
দেব; অভ করনাসও ভাকে বাটতে হব। হালীকে বেদিন
আভদার কাজে লাগার সেদিন ভাহাকে লে প্রতি বেলা ছইবানা করিবা ভিন সভ্যার হরবানা ফুট দেব। একবামি ফুট
ডক্তনে প্রার তিন হটাক। ভা হাড়া ছোভদার শীভের কসল
হুইতে বিশ সের ও প্রীঘের কসল হুইতে বাইশ সের গম দিবা
বাকে।

২। রেগভূ—কোন কোলী বিশ-চলিশ টাফার থবের দারে স্ব-বাবদ বথন জোভদারের কাজ করে তথন ভাহাকে 'রেগভূ' বলে। রেগভূ এক প্রকারের ক্রীভদান। রেগভূকে ভোডদার, সকাল, হপুর ও সন্ধার ছইবানা করিবা রুট বাইভে দের। পুরাভন হেঁড়া কাপছও সে পার। ভোর পাঁচটার ভার কাজ আরম্ভ হর, আর শেষ হর রাজি দশটার। বাড়া সতর ঘন্টা কাজ করিবা জোভদারের কাছে সে মুট পার। বাড়া সে করে বালি হাভে, বলিন মুবে। ললাটের লিবনের দোষ দিভে দিভে সে পর চলে। বিজ্ সামাজিক অবস্থার কর্থা শর্ম করিবা ভার অভ্যরে চাপা ক্রন্দানর রোল উঠে।

রেগছু কোলীর অবছা বন্ধতঃ পশুরও অধন। অন্থব হুইলে বা কান্ধে না আসিলে কোন্ডদার ভাহাকে বাইন্ডে দের না। টাকা দিনা ভোন্ডদার ভাহাকে বরিদ করিবাহে, বন পরিশোন করিন্ডে পারিলেই ভবে গোলানি হুইন্ডে ভার অব্যাহতি। কিছ বন পরিশোন করা ভার পক্তে অসান্য। অভ কোনাও ভ সে কান্ধ করিন্ডে পার না। সে উপারও নাই। অপর কোন ভোন্ডদারের রেগতু হুইলে ভবে ভ সে ভাহাকে টাকা দিবে।

৩। বৈটু—ভোতদার বাহাকে সাবান্য কিছু অন্তর্গর
ক্ষমি দেব—অর্থাং নিক বেতিতে বসার, আপ্রার দেব ও কাক
চলার বত কিছু বণও দেব, ভারাকে কোতদারের বৈটু বলে।
হাল দিতে বা অত কাক করিতে কোতদার ববনই ডাকিবে
তবনই বৈটু আসিতে বাব্য—নিক কাক কেলিয়া বলি আসিতে
হয় তবুও । অতথায় ক্ষমির সাকা কসল কাভিয়া লইয়া

জোতদার তাহাকে তাড়াইরা বের। তাজের কচ জোতদার বে দিন বৈটুকে ডাকে সেদিন সারাদিনের আহার বাবদ সে চার হটাক আটা বা চাল পার।

৪। কার—ছোভদারের বাড়ীতে বে দিনবজুর হিসাবে 
কাজ করে ভাকে কার বলে। বজুরী বাবদ দর্গদ কিছু দে পার 
না। ভিন বেলার ছুইবানা করিরা হরবানা ক্রট নে বাইতে 
পার। ভহতিরিক্ত ছুটর সমরে আরও ছুইবানি ক্রট বেওবা 
চর। ভাচা দে বাড়ী কুইবা বার।

একট থাবের সকল লোকের বৃত্তির অসুস্থান আবরা করি। থাবে চৌদ বর কোলীর বাস। তার বব্যে একট পরিবারের কেবল নিজ জমি আছে। অবশিষ্ট সকলে হালী বা রেগড়। একট পরিবার পাইলাম—তার চারজন লোকের একজন হালী, একজন রেগড়, একজন বৈটু আর চড়ব জন করে।

কোন কোন কোনী সম্প্রতি দক্ষিত্র কাষ্যত বরিয়াছে।
তাঁতি ও কামারের কাষ্যত হরিজনেরা করে। কিছু অবস্থা
তাহাদের সকলেরই সমান শোচনীর। কারিগর হইলেও
কমিলারের কবলমুক্ত ভাহারা নহে। পরিপ্রতিক বাবদ বে
বাম পম তাহারা পার ভাহাতে ভাহাদের সংসার চলে মা।
ব্যঞ্জ হরিজনদের কাছে খাধীমভার ক্থা, সমান সুযোগের
প্রতিশ্রুতি অবহীন।

#### रेवसमा

পাহাড়ো দেশে সবর্ণদের জন-মৃত্যুতে ও ভেহার পর্ফো বাজনা বাজান হয়। হিনালরের ছর্গন ছামেও বর-বাজার ও শব্যাজার বাদ্য বাজিরা থাকে। কিয়র দেশে ছরিজনেরা বাজনা বাজার। কিন্তু নিজেদের স্থাজে জন-মৃত্যুতে বাজনা বাজাইবার অধিকার ভাহাদের নাই। বাদ্যে কেবল স্বর্ণদেরই অধিকার। অথচ বাজ্যন্ত পঞ্চারেতের সম্পত্তি, জারণ স্বর্ণ অবর্ণ সকলেরই একচ চাদা দিতে চর।

কিছু দিন আগের কথা। হরিজনদের একট বরবারা রাজী হইতে লাজনা বাইতেহিল। বরবারার লাজীও লাজা (বর কনে) হই-ই ছিল। লাজনা পৌছিতে, অনিলার শোজান্যারা রাধিল—অপরাধ, বাদ্য বাজিতেহিল। বরবারীদের উপর লাটি চলিল—বরও বাদ পেল না। বর্ষধ্যকীরা ভাছার রাধা ফাটাইতে বাকী রাধে নাই। রামপুর আদালতে ঐ বোক্দমা চলিতেহে।

বভ্ৰমণরে গ্ৰীখাখী বভাজর বহারাক্ষের বন্ধির। বন্ধিরের আদিনার ত্ন বলে। পার্টপালার শিক্ষ সভ্তর লোকঃ হরিক্স-হিতৈখী। উাহার চেঙার এগার ক্স হরিক্স বালছ পভিতে পাইতেহে। পার্টপালার চুকিতে বাইতেহি, বেণি বর্ষার বাহিরে ভিন চারিষ্ট পার্যধানা কুলিতেহে। ভিজান ক্রিলার, 'পার্যধানাত্তি এবানে ক্ষেম চ্ট উত্তর পাইলাঃ

পাৰভাষাগুলি হৰিত্ব হাত্ৰতের। হরিত্ব বালকরের পাৰভাষা পৰিবা বন্দিরের ৮ড়ুঃনীমানার প্রবেশ করার অধিকার মাই। নেংট পরিবা বাইতে চর।

ৰন্দিবের কর্ম্মকর্তাদের অভুরোধ করিলাম, 'বাসক্ষের পারজারা পরিরা পাঠশালার আসিতে দিন।' সাম্দ্রে বলিতেহি তাঁহারা আমার এই অভুরোধ রক্ষা করিবাছেন।

#### व्यक्तिमालक पावि

#### ভাৰারা চাতে :---

- ১। কৰি ভাষাদের হুইক। বে ক্ষি ভাষারা ভোগ করি-ভেছে ভাভে ভাষাদের মালিকাশা কাগৰণত্তে বীকুভ হুটক। হুভচাভ ক্ষি ভাষাদের ক্ষেত্ত দেওবা হুটক। আর বেহেড়ু ভাষারা ভূষিহীন সেইহেড়ু ক্ষির সূত্য বিলি-বন্ধোরভের লম্বরে হরিক্ষদের লাবি স্বাধ্যে বেন বিবেচনা করা চর।
- ২। সর্বাসাধারণের কুবা বা বাগতি চইতে জল ভরার সমান অবিকায় এবং অপন্ন শ্রেণীর লোকের ভার মন্দির-প্রবেশের ও বাল্যভাও সহকারে বরবাঞ্জা ও প্রয়ালার সমান অবিকার।
  - ৩। ধনসভার অবাধ অধিকার ভাতাবের বেন বিলে।
- । বলা বাংস খাইতে তাহাদের জোরজবয়দ্ভি না
   করা হর।
- ৫। এ পৰ্যান্ত হতিক্ষাদেত লেখাপ্ৰায় বাবা ছিল। তাই অধিকসংখ্যক হতিকৰ ছাত্ৰকে ছাত্ৰহৃতি দিলা সত্ৰকাত্ৰ এই দিকে উৎসাত কাৰ ককৰ"।
- । সংব্যাস্থাতে প্রারেতে হরিজনদের ভর আসন সংবক্ষণের ব্যবদা।
- १। হতিক্রনদের ব্যহ্রার নির্ভিশর ক্রীর্ণ। হর বেরাক্রের ক্রম্ব বিশেষ সাহাব্যের ব্যবস্থা।

#### 4-- চাষবাস ও ভীবিকা : ভবি ভচ্চ

বে মানে আমি কিন্তর দেশে গিরাভিলার। সেই সমষ্টার জলের অভাব পাকে না। নারা বছর তথার পর্যাপ্ত জল পাওরা বার এ তথা বেন পাঠক মনে না তরেন। বছতঃশক্ষে কিন্তরলেশ রষ্ট হব না। পীতভালে বরক পড়ে। প্রীত্মতালে বরক গলিরা অলম্রোভ বহিতে পাকে। বুদ্দিনান কৃষক ঐ জল ক্ষেতে বরিহা রাবে। প্রায় সর্বান্ত মানের মাবামাবি বরক গলিরা শেষ ক্ইরা বার। তথন পানীর জলের পর্যান্ত অভাব বটে।

এক বৃদ্ধ চাষীর সক্ষে দেখা। সে বলিল, 'কগবান ত সব আরগার আছেন। তপবান অভ সব আরগার হট্ট দেন। আরাদের এখানে বর্ষ'-বতুই নাই। বাংগড়ু তক হৃটি হয়। ভার পরে এদিকে কেন বে তপবান হৃটি দেন না।' বছতঃ উত্তর-পূর্বা নরহুবের দিক হইতে দেখিলে এই প্রবেশ কোরেটা-ব্যুচিহাবের বত তক দেশ। বুলংকার ভিত্তত দেশত অভ্রূপ ভক্ত অঞ্চন। ভাই ভিক্তভের কৃষির অবস্থা কিয়র কেশেরই বভ। ক্রোশের পর ক্রোশ বরিরা ক্ষন ও অস্থার ভূমি। আবাদী ক্ষি ক্য। বাদা উঁচু পাহাত বেশী। আবার ভূমার-পাতও হর অধিক। প্রভাং বেভির পক্ষে অপুবিবা।

#### কলের চার

ভগবাৰ এ দেশটাকে বেন কলের জন্তই সৃষ্টি ভবিবাছেন।
আমার এভিনার বাকিভ ভ কিরব দেশে আমি শ্রেক কলের
চাষ্ট করাইভান, আর কলের বিনিমরে সরকারকে এবানকার
আরে বাবহা করিছে বলিভান। ভালা হইলে ওছ আবহাওরার যে সব কল কলে দে সব কল কোরেটা-বেল্টিয়ান
হইতে আমদানি করার আর প্ররোজন বাজিবে না। ভার
অর্থ রাইপঠনে কিরব দেশের যাহা বেওরার আছে ভালা
দেওরার স্বোগ সে পাইবে, আর ভার ভিতর দিরা লে নিজে
উল্লভ হটবে। চনন (বেল্টিয়ান) অপেনা পাবা-বাঁটভে
আনেক বেলী কল উৎপত্ত করা বাইতে পারে।

কিন্তর দেশে রষ্টপাত কম। অতএব কিন্তর দেশ প্রকৃত্ব পক্ষে চাব-আবাদের বা বন-স্কীর অভুক্স নতে। ৩ক আব-হাওয়ার কল—আভূর, আপেল, ব্রবানী, বালাব, আবরোট ইত্যাদির চাবের উৎলাক এবানে কেওয়া উচিত।

#### ভিন্ন সীমাত প্ৰদেশ

পুতরাং চীনী পর্বান্ত ত বোটরের রাতা হওরা চাই-ই, আর নচার পর্বান্তও তাহা প্রসারিত করা একান্ত দরকার। কল রঙানির প্রবিধা ভাহাতে ত হইবেই; অভ ভারবেও তাহা আবর্জক। কিয়র বেশ তিকাত সীমার অবহিত। হিমাচল প্রদেশের রাজবানী সিন্নসার সহিত বোটর ও টেলিকোন বারা এই সীমান্ত প্রদেশের সংবোগবিবান রাইরকার দিক হইভেও প্রবোজন।

কিন্নর দেশ পরিভ্রমণ কালে এ সবদে বছ কিন্নরের সহিত্য করা হইরাছে। কিন্নর দেশের ব্যবসার তিকতের সঙ্গে। তিকত হইতে রামপুরে সোহাগা, পশম, লবণ ও কিছু ঔষধ আমদানি হয়। আর ভারত হইতে রগ্রানি হয় চাউল, কাশভ ও গুড়। তেড়া ও ছাগলের শিঠে এই সব পণ্যের আমদানি-রগ্রামি হইরা বাকে। কিন্নর-ব্যবসাধীদের হাজার হাজার টাকা তিকতে খাটভেছে। তিকতী ভাকাতেরা সময় সময় ভারতীর ব্যবসাধীদের উপরে হামলা করিবা বাকে। আমান্দের বিবেচনার চীশীর আরও ওদিকে ভারত-ভিক্তত সভক্রে পর অবছিত ভারতের শেষ সীমাত প্রাম মগম্যার পুলিস-চৌকি সংখ্যান করা আবপ্রক। উহার সহিত্য টেলিকোনের বোগা-রোগ ব্যবহা করাও হুকার।

পশ্য উৎপাদৰের পক্তে অন্তরার কিয়র বেশে কেবলার ও চীত গাবের বন পটি করা হয়।

আলার বিবেচনার ভাল। এক বতে। বে সব গাছের পাড়া (क्या-मानामत बाजा अवन वाक्य वन एक क्यारे अवाद সদত। মনে রাখিতে হইবে বে. ভেড়া-ছাগল এ দেখের প্রধান अभाग । (मानव कारक नेक विवादानद विविध किहाददा খল খল মৰ পশৰ উংপর করিয়া বাকে। ভারতবর্ষের ইয়া माध्यमक बाठीन नित्र। इःस्वत विवत, कित्रवर्गत छैत्रचित পৰে আৰু নাৰা বিশ্ব एक वहें छाइ। বন-বিভাগ বছতৈছে जनकार वर्ष व्यवसार । एका-मानाक वस्तर नेक मान करा नवकारबब बरे मुद्रेक्तीब चावन পविवर्तन दश्वा চাই। ষেষ ও ছাগ-পালন ব্যবসার যাতাতে পুরক্ষিত হর अवर प्रेमारायत प्रेमात प्रेमिक स्व (अरे विश्वास किसीन मतकातरक क्विक वहेरक वहेरक। अहे वावमारक क्षेत्रक-काम विमानन थारम. देखन थारम ७ मनाव मावारक श्रमिष्टि भीष्ठि अनुनारत अक्रांटर काच करत. देशायत मरना वाकिश (कसीय मधकायाक (म नावश कविष्क हरेरन) कियव रम्य चाक्छ अहे बावमाश्रदक वाहाहेश शाविशास । देहा बकाब क्या जबकाब जातह मा हरेल, बरे वायभाव महे हरेश याधवात जामका जाट्य। मडे. श्रदेश जारात मुख्य कृतिश আরম্ভ করা কটিন হইবে। তাই এই দিকে সম্বর সন্মিলিত (छट्टे। छल्डा प्रवकात । श्रीचकारम (बदमान नदेश कित्रद्वता यक्त वाको किविटकिक क्षत्र (शरखद भारत जरकावक ब्रद्ध-वा রোগ বেখা বের আর ভার কলে বছ ভেড়া মরিভেছিল. निक ठटकर चावा चाववा क्विवादि। धरेवन नवद्य अक्ट किमारेन शारेट शादा बाखाद दकाबाब बादिद खदक वरेट त्नरे वावशा नारे। वैककारन किवरववा रक्का नरेवा भीरह নাবে, আর এীয়ারভে ভেড়া নইরা ভাহারা বগৃহে কিরে। और इरे नवरब किंद्र विस्वत क्षेत्र बाखाब विकित्नाव नाबावन

ব্যবস্থা করিলে শত শত তেড়া মুড়ার হাত হইতে রক্ষা পাইতে পারে।

#### किवदाया जन्मम १७

कित्रदिवा १७ जानवारम । १७ जाशासद मन्त्रम । मिरक्दा वत्र जमाहारत वाकिर्त, किन्द अस्तत जाहाता जनमह चमाबादा बादन मा। मिटकरम्ब मिछम्बाम शादा दाँहैवा পথ চলিয়াছে, আৰু কিন্তুৰী ক্ষেত্ৰৰ বাচ্চা পিঠে বছিয়া চলিয়াছে, এ मुक्र চক্ষে পাছয়াছে। পর-বলদ দেবিয়া •মনে হইবাছে, ওগুলি সবড়ে পালিত। কিরবেরা এক সুভ্য कारण्य नमम रहे क्रियाह-जादा दरेखाद जिलाकी देवाक ও ভারতীর গতুর সহযোগ-ছাত সহর। নাম তার 'ছো'। '(का'-এর পিঠের লোম লখা, আর গোটা লেকটা লখা লোবে **ঢाका । जाबावन बमम चर्मिका (का ठावधन दिनी कांक करव ।** কিছ যে বাসের পরে জো রামপুরে ঘাইতে পারে বা--রামপুর भवम कारमा । किरुदारा (बाका अवर भावाछ भारत । किरुत দেশের বোভার প্রসিদ্ধি আছে। বোভাকে দানা দেওৱা হব মা। অকলের বাদ-পাতা বাইরা তার পেট তরে। ভারিক बार्ज बामनूरव अकड़े समा बरम । थे समाब किवन, विकास ও ক্ষীতির লোকেরা বোডা বিক্রম করিতে আলে।

#### কিয়র দেশের অর-সংখ্যম

বৰ্ওৱা কিয়নদেশের প্রধান আয়। বৰ্ওৱার রং কাল—
রাইবের মত ক্ল একরপ শভের হানা। বব, গর পার
কোবাও কোবাও বানেরও চাব হয়। নিকেবের ব্যবহারের
ক্ল কিয়নের। আনুও ক্লায়। কিছ এবানে সর্কার্ল্যে হয়
মালের বোরাক বাল ক্লে। বাকী হয় বানের তিন বান
ভার্বের চলে কলের উপরে, আর ভিন বান ভারারা কাটার
বন্য ক্লব্ল-কল বাইরা। এরপ বারিল্য ক্লয় কোবাও আনি
দেবি নাই।

### बीयूनीनहत्त तांग्र

দৰ স্থলে স্বল, গোলমাল করে বংগৰি,
বিদার গভিতে সমাধি নিক্ষের রচেছি,

চুর বাস্চরে চক্চকে রোল পড়েছিল ভাই বেথেছি ঃ
নরীচিকা ভাকে মলী বলে ভালবেসেছি,

লব গোলমাল বিজিধিকি করে

অকুল লাগরে ভেসেছি।

মাৰায়ণে এক পভেছিত্ব কৰে নাৰা হয়িপের গল, বে হয়িণ বহা-হোঁয়ার বাইরে, বে হয়িণ চূহ কল, সে সোমা-হারিণে লোভ করে আমি মনে মনে তথু পুডেছি, মুগলা-মেশায় বছুর ছিলের অগংগ্য বাণ কুডেছি, ভীরগুলি গেছে এদিকে ওদিকে লক্ষ্য হরনি স্পৃত্ত, পিছনের দিকে কিরে দেবি হার ভূমীর হরেছে নিঃব। একদা বিকর মধ্যে মধ্যে দিন-রাভ হিন্দু মর্য়, অভিযান শেষে সমূবে দেবি বিকর-ভোরণ ভর, কোবার অরাভি ? সধান নেই। এ কি ভূল পবে ছুটেছি, ভবু আভনের কুল্কি হয়েই কুটেছি।

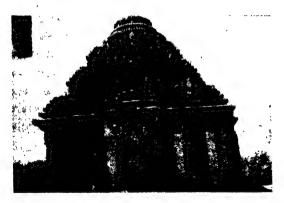
একট কীবৰ পেৰেছিছ ভাকে বাকী কৰে বুৱা বেলেছি, হেৰে গেছি আমি বভ বাহ বাম কেলেছি।

### কোনাবক

#### অগোপী রায়

পুনী থেকে কোনারকৈ ক্লাবার, কুট পথ আছে। একট গো-বাবে—বিশ-বাইশ নাইল, অপর্ট বন্ধ-বাবে—ভাগার নাইল।কোনারকের বাত্রী আমরা মাত্র তিন কন। একটা পথ বিজ্ঞান রাজে গরুর গাড়ীকে পাড়ি বেওরা ব্জিসকত যবে হ'ল না, বাবে বাওয়াই দ্বির হ'ল।

বিকেলে বাস ট্টাওে গিরে কেনে এলার বাস ছাড্বে সকাল ছটার। এবনও হাতে প্রচুর সমর—এই অবসরে কগরাবদেবের যদির আর একবার দেবলে মন্দ হ'ত না। সলীবাও আমার প্রভাব সমর্থন করলেন। যদিরে চুকে মনে হ'ল এই গররে মন্দিরে আগাই সব দিক দিরে প্রশাস। বাজীর ভিচ্ন তা বেই নেই, পাঙার অভ্যাচার নেই, গোল-বালও গা-সহা গোছের, শান্তিতে সব কিছুই বুঁটরে দেবা বার। অবচ গত কার্তিক বাসে সকালের দিকে মন্দিরে এসে পাঙারের অবগৃগ্ধ ভার দক্ষন বারবার আমাদের কি মাক্ষেহালই না তে হরেছিল।



भाषरबन्न मैंथुनि बाजा यह क्षत्रबटमन खेवान कडेक

নভার সময় বন্ধির থেকে বেরিরে হ'চারটে জিনিস জিনে
নিরে ন'টা নাগাদ হোটেলে কিরে এলাম। রাজিটা এক
স্বানই পার করে বিলাম। সুম থেকে উঠে প্রাভঃকৃত্য সেরে
বর্ণন হোটেল ভ্যাগ করলার, তব্ম বভিতে পাঁচটা বাজে।
লার্নে অনভগ্রসারিভ সমুক্র টালের আলোর উদ্ধুসিভ হরে
পভসহল্র চেউরে কূলে আহতে পভতে। ঠাপ্তা কমকনে
বাভাসের অভ্যবনা ভারি চমংকার লাগতে। রোমাঞ্চ
লাগতে ভোরের হাওরার পথ হাঁটভে। জ্যোংলালাভ ক্ষমবিষয়ে উঁচুনীচু পথ বিরে আমরা চলেন্তি ভিন্ত ক্ষম—ক্ষিম্বারু,
আনি আর শৈলেক্ষ ভারা।

বাদে বৰ্ণৰ আসন প্ৰছণ কয়লান, তবন হ'টা বাজে।
শক্ৰে থীৰে থীৰে আলো কুটছে। বিবাট থালাৰ নত
পূৰ্ণিনাৰ টাল চলেছে অভাচলের লিকে। বাভালে এখনও
শীতের আনেক ব্যবহে। বাদের হব বেকে চলেছে। এখার
বাজা হরে। আমরা ভিন কন হাড়া ভাটপাড়ার এক ভবলোক
এবং একট ভকুনী শেষ মৃত্তে বাদে এলে উঠলেন। এঁবাও
বাজেন কোনারক।

টিক সাভচার সমর বাস ছুটে চলল পিচচালা রাভা দিরে। প্রভাভের আবছারা অবলার আতে আতে কেটে বাছে। গাহুপালা স্বকিছু পরিকার ও উত্থল হরে উঠছে। লোকচলাচল হকে হরেছে পথে। দোকানপাট পুলছে একটির পর একটি। পথে বালী ওঠে, থানার থানার বাস থামে এবং আনরাও এই অবসরে এদিক ওলিক ভাকিরে ধেবি, টুকরো টুকরো আলাপ চালাই। পথের হু'বারে বনসরিবছ গাছের শ্রেণী, মাবে মাবে দেখা বার বোরো বামের ক্ষেত্র। পভ কান্তিক মাসে এই ক্ষেত্রভাল ক্ষমরা দেখেছিলান। এবন কি চরংকার সভেন্দ সবুলে গাছঙলি প্রাণবান হবে উঠেছে। পথে আর কোন বৈচিল্লা দেই—ভব্ মাবে বাবে হু-চাহুবামা চালাবর ধেবা বার, কোবাও চোধে পড়ে ছোটুবাট বন্দির—পর্বচারী হু'ভিন ক্ষম পরিক।

পঁচিশ মাইল পথ অভিক্রম করে আমরা পিপলিতে এসে পৌহলাম। এইবাম বেকেই পথ ভাম দিকে বেঁকে গেছে নিমাপাভা হরে কোমারকের দিকে আর সোজা পথ চলে গেছে ভূবনেশ্বরে। কোমারকের যাত্রী এক উভিয়া ভত্রলোক পিপলিতে আমারের সদী হলেম। ভত্রলোক বছরবারী এবং আমারিক প্রকৃতির—বাংলাও বজ বলেম না, বাকেন গঞারে।

শিপলিতে গাভি ইংডাল আববণ্টা। আববা এই অবদরে এক এক গেলাস কল বেবে গলা জিলিবে নিলান। ত্বনেশ্বর বেকে বে বাস কোনারক বার, অলুরে ভার সাকাং পাওরা পেল। তবন আবাদের ব্যবহার হার নারনে এগিরে চলল। এইবার সুকু হ'ল গুলিগুলর কাঁচা রাভা। কিছুক্দণ উঁচুনীচু পর্ব পার হরে বাস হঠাং বাঁকানি বিরে জানিরে বিলে বে, এইবার সাববান হওৱা উচিত—এই ভাবে বেতে হবে বিশ্ব নাইল। সকালের আলোর এই বে দীর্থ বালা এর কোণার বেন এতকোরের নেশা স্কিরে আছে।

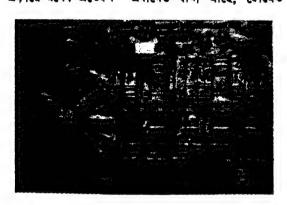
গড়কের হ'বাবে বিজ বানক্ষেত্র। নীল আকাশে ইছততঃ বিজিও পাবাপালা টুড়বো বেব। হ'পাশে বেবা বার বোট বোট বারিকেলমেন্ট—কোবটাতে কলোকান ছাৰেছে, কোনটাতে হয় দি। বাবে বাবে চোৰে পড়ে বেছাতি ছ'চায় কৰ লোক, ছ'একটা চালা। এয় বব্যে হঠাং গাভিয় গতি বছর হয়ে এক। দীচে বেখা গেল দীৰ্থ একটি দলী, নাম ভাগনী। উঁচু থেকে হাভা ক্ষমণঃ নীচু হয়ে গাঁকোয় দিয়ে বিশেছে। নদী থেকে এক কুট উঁচু সেই গাঁকো এবং ভা পায় হতে হবে বাজীপূৰ্ণ বাসে কয়ে। বাই হোক, বীয়ে বীয়ে বাস দদী পায় হয়ে আয়ুও উঁচুতে উঠল।

বাস চলেছে এঁ কেবেঁকে। একটা বোলনকও পার হয়ে পেল। কিছু পরে নিনাপাছার এসে বাস থাবল। এনহা-পাছা একট বড় এবন। থাবা আহে, ছুল আহে, থাবার লোকান আহে আর আহে হোটেল। ভ্রেছিলার,

এবানে বুৰ ভাল ভীৱকণৰ পাওৱা বাব। আলাগের চোবে ভিত্ত ভিত্তই প্ৰভল বা।

শরীর ধ্লিধ্পরিভ, বন প্রান্থ বিপর্যাত। একবেরে বাজিক আওরাক তুলে পুনরার বাস সামনের বিকে ছুটে চলল। এভকণ পর ক্তিরবাব্র অবীর প্রর শোনা গেল—'আর ক্ত দুর গ'

গোণে এসে পৌহান দেল। এটও একট বড় প্রায়। তবে নিরাপাড়ার বড় বর—ভার সকে আড়ারে বা হোক, প্রকারে অমেক প্রভেষ। এবাবেও বানা আছে, ভৌটনত



विचारक वकुमा अवर हक

যালার আহে, একট বাবারের বোকানও আহে। এবান সেকে কোনারক ভের বাইল। ভালগারের কাঁকের ববা নিবে কো বাছে কোনারকের ননিবের আভান—অনেকটা প্যাপোচার নত। অনেক বিনের স্বস্থপোবিত বাননা ভা মনে পূর্ব ববার পরের।



नकीननम् (मध्य ( वाम किएक )

ভাম পাশ দিয়ে একট মনী ববে চলেছে। ভার প্রায় লবটুকুই বালি, একটু খল। বাবে বাবে ভার ললে চকিতে
বেবা হর, আবার কোবার প্রকার বাব। নদীটর বাব
কুশভলা। বানিক পরে আবার একট পুলের উপর এলে
পৌহলাম—ভার্ববীর পুলের বভ। পুল পার হবার পরেই
বেবা গেল পথের হ'পাশে চলেছে বন বাউরের নারি।. এবার
পবে আর গুলো নেই। বে দিকে ভাকাও ভবু বালি আর
বালি। আগে সমুল্ল বে কোনারকের বন্দিরের কাছেই ছিল,
এই প্রস্তুরপ্রনারিভ বালুকারাশি দেবেই ভা আনাক্ষ করা বাব।

রোগ চড়ছে। প্রভাতের সোনালী আবেদ ভেটে
গিবেছে। বাটর বত উপুড় করা আকাশ থেকে স্কুক্ত হরেছে
রোজালোকের অক্স প্রাবন। বেলা এগারোটার আবরা
পৌছলান বলিরের পাণলেশে। থাবারের বোলা, 'ওরাটার
বটলা' নিরে বালি তেওে তেওে এসে ইাড়ালান বলিরের
চড়ঃনীমার ভিডরে। চারবিকে তব্ নিক্বকালো পাণর আর
পাণর—তেভে-পড়া বলিরের এক্ডালের সম্বির নির্দান।
ভালের সাকী হিসাবে আবও কোন রক্তরে ইাড়িরে ররেছে
ভগরন বলির। ভগরন বিবেই স্থাবলিরে চুক্তে হ'ত।

চ্ব থেকে অগমনকে একট অভিভাৱ মধ্যে মত বেবাত্র।
চিন্দেশট চক্র এবং লাভট অব লম্বাত্ত যে মন্দ্রি ছিল বিনাট
আকারের আক ভার লামাভ্যাত্র নিবর্শনই অবশিষ্ট আছে ।
কগমনে বোৰ হয় বারোট চক্র—হ'একট অবিকৃত্ব, বাকিশুলি
ভার। মন্দিরের এক বিকে হট অব বেল গভিত্র প্রভীক, এক
বিকে হট হতী, অভ বিকে হট বাবে।

এবার আমরা গুলর পাবরের সিঁড়ি তেতে অগরৰ বলিছের উপরে উঠতে সাগলায়। থাবিজ্যুর বিত্তে দিছে বিচ্ছে নামতে নাগলায়, প্রবাবেশভার বেলীর উদ্দেশে একেবারে
পাভানপুরীতে। কুলনভাপাভা-লোভিভ হভীর্থ বোলাইভলা চনংভার একট পাণরের বেলী বেণা গেল। গাইড
বললে বে, প্রবান মন্দিরের নির্দানন্তরূপ এই বেলীটাই
ঘর্তনান আছে। এর উপরেই অবিটিভ ছিল হর্ত্যবেশভার
নরনাভিরার র্তি। অভাভ অনেক প্রকর জিনিসের সকে
লে র্তিভ আজ অপন্ত। কেউ বলেন—পুরীর অগরাধ



च्रांबृष्टि ७ कांब नात्नव वृष्टिकनि

বন্ধিৰেৰ একট কক্ষেৰ অভ্যন্তৰে অৰ্কাৰ কোণে বে বৃথিটি বেশা বাৰ, দেইটাই আসল হুৰ্ব্যস্থি। পুৰীৰ মন্দিৰে ঐ বৃথিটি আৰক্ষা কেবেছি। আসল বৃথি বা হুলেও ওট বে কোনালকেৰ মন্দিৰেৰ কোন বৃথি ভাতে সন্দেহ দেই। কেবলা পাণৰেৰ বঙ, বৃথিৱ গঠনবৈপুণ্য কোনাথকেৰ বৃথিভানিৰই অহ্মণ। কোনাৰকেৰ অক্ষণ ভড়টিও ভাৰ অভিটাক্ষেম থেকে অপসায়িত কৰে কগৰাৰ মন্দিৰেৰ প্ৰবেশ-প্ৰেৰ নাৰ্থেৰ বাভাৰ এনে প্ৰভিটিভ কৰা হুৰেছে।

অবকার কক থেকে ব্যক্ত ব্যক্ত পুনরার উপরে উঠতে লাগলাব। অনেক উচ্চত উঠেছি, লামনের বিকে অবারিক প্রতা, নিচে গাহুণালাখলো হোট কেবাকে, রাল্রগাত্তে অবংব্য বৃতি। কোনট বাস্কীর বড, কোনট বোহিনীস্থি, কোনট বা লী-পুরুবের বিশুমর্ভি, যুভিখনি ব্যালাইট পাধরে ধোলাই

দাৰতে লাগলাৰ পূৰ্ব্যবেষভাৱ বেদীয় উদেশে একেবায়ে , করা। অবিকাংশই ভা বা বিগভঞ্জী—কতকণ্ডলি বৃষ্টি অষণ্ড পাভালগুৱীতে। কলভাপাভা-শোভিভ ভভীবধ ধোলাই– অভা অবহার আহে। এই ভা বৃষ্টিগুলির বধ্যে প্রাচীন



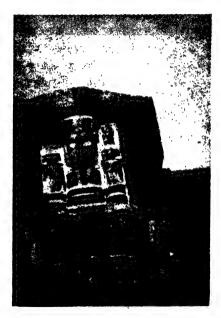
कामायक्त अक्षे ज्यानित प्रशृति

উচিয়ার ভাষর্ব্যাশিরের যে নিদর্শন দেখতে পেলাস, ভাতে বিমরে অভিভূত হরে গেলাম। এই নির্কান প্রান্তরের নব্যে নিম্মরণাত্তে কি অপূর্ব্য শিল্পটিই না করে গেলেন সেকালের শিল্পীরা। বিশের পর বিন, বংসরের পর বংসর লোকচকুর অভরালে যে সব শিল্পী শুটির প্রেরণার ও অক্লান্ত সাধনার শাষাপকে মুখর করে ভূলেছিল, আল কোবার ভারা আর কোবার বা ভারের উত্তর্লাবক বংশবর্গব।

কর্মনের উচ্চতা একল' পঞ্চাল কুট। প্রধান বলির হিল এয়ও চেবে উচ্চ। এক উঁচুতে এই বিরাট বিরাট পাধর তাঁরা কেমন করে বহন করে নিরেছিলেন, তা ভাগতে মন বিসরে আগুত্ত হবে ওঠে। বেকালে কেম হিল না, নেই নমরে এক উঁচুতে এই বিশাল আকারের পাধর কেমন করে উভোলিত হ'ল। তবে কি এমন কোন মন্ত্রিক বা আককের কেনেরই অভ্যান ?

হোটবাটো বৃষ্ঠি ভ হাজারে হাজারে বলিরগালে উৎকীর্ণ রবেবে। তা হাজা বাছবের বভকপ্রবাণ করেকট বৃহ্বাকার বৃষ্ঠি—ভোনট বোহিনী, কোনট ব্রহুখানিনী বারী, কোলট বিলন-রভ রী-পুরুষ—ভোনটই অভর বা অটুট বর। আরও করেকট বিরাট আকারের হুর্বার্ট নকরে প্রকল, বৃত্তিভালির বিলনেপুণ্য এবনি চলংকার বে, চাকুব বা বেবলে বিবাস করা সুক্টীন। বেবন বাজাবার বুরু কলী, তেবনি ভার ব্যক্তমা, কলার উপৰীত, কটতে অপত্ৰণ কটক্ষণ, পাৰে পাছকা। বৃত্তিওলি দেশলে বাধা প্ৰভাৱ ভজিতে অবনত হয়। নেওলি সবৃত্ব পাণৱে ধোলাই করা। ভারও হাত ভাঙা, ভোনট সুওহীন।

অগমনের আকার একট বিরাট রবের মড, বে করট চাক্।
কালের বুল হতাবলেণ এডিরে আজও নিজ নিজ অভিত বজার
রেবেছে, নেগুলি বিশাল আকারের। চাকাগুলিতে অমেড়
রক্ষের সকুলা ররেছে। বন্দিরট সর্ভই কাটা কাটা পাধর
কিরে তৈরি; একট পাধরের উপর আর একট পাধর; অবচ
কি নির্ভ ভাবেই না বৃত্তিগুলি বিল বেরে গেছে—তথু জোড়ের
চিক্ট হালা। 'প্রশন্ত লোপানপ্রেণী অভিক্রম করে বন্দিরে
উঠতে হয়। লোপানগুলির শেষভাগেই প্রধান কটক। এট
এবন পাধরের গাঁগুনি দিরে বন্ধ করে রাবা হরেছে। কটজের



चनत अकृष्ठे च्वांबृष्टि

হ' পাশে এবং বাবার সব্ত পাবরে উংকীর্থ অবেকগুলি ক্র ক্র বৃষ্টি নকরে পড়ল। দ্বীচে বেকে ইাছিরে বন্দিরশীর্বের বিকে ভাকালে আরও কড়কগুলি বৃষ্টি চোরে পড়ে। মনে হর এক্ট গরুড় পজীর, একট ল্লীর। স্পষ্ট ভাবে ভূমি বেকে বেবা বার গুরু বিশাল প্রাযুষ্টিগুলিকে।

একট বৃষ্ঠি ভারি ভাল লাগল। এই হাতভাঙা বিরাট বৃষ্ঠির হই পাশে বৃত্তিভাজত হট বৃষ্ঠি বৃত্তভারে হাঁটু গেছে বলে আছে, ভার হ'পাশে হট লঙারমান বাবনবৃষ্ঠি, ভার হ' পাশে আছও হট বৃষ্ঠি। নাধার বৃষ্ঠি, কর্পে আভরণ, হর্বাবৃষ্ঠির নতই গলার উপবীত, কটতে কটকুবণ। একজনের হাতে উষ্ক্র ভারারি, স্পর্টির হাত ভাঙাঁ। বৃষ্ঠিপানর উপরে

নানা অনভয়ন, অনেক ক্স ক্স বৃতি। প্ৰাবৃতিটয় পাৰের কলার আরও একট ক্স বৃতি। শিলপ্টর দিক থেকে এটর কুলনা নেই। বৃতিথলিয় গঠন-কৌশল ও শিল-প্রনা বেবে বৃত্ত কলার।



बिल्दिव देशकांच अक्षे पृष्टि

জগনন পরিক্রমা শেব করে এবার দীতে দেবে এলার।
আহারাদির পর প্নরার উপরে উঠার পালা। হাকে সমন্ত বুঁর
বেদী দেই। এর বব্য নাটমলির ও ভোগনর কেবে নিজে
হবে। শৈলেক ভারা বিপ্রাবের বাসনা ভানালে আমি আর
ক্তিরবার হ'লনে রওনা হলান ভাকবাংলার নিকে। মলিরের
বেইনী-প্রাচীর হাভার্তেই সামনে চোবে পড়ল অনতবিভ্ত বাস্কারাদি। সমুত্রের আভাস দেবা বাছে চুরে।
সমুত্র এবান বেকে প্রার ভিন্ন নাইল সরে গেছে। মবাহলে
ইতিহাসপ্রসিহ চক্রভাগা নহীভই—সেবারে প্রতি বংলর বাবী
স্থানীতে এক বিরাই বেলার আরোজন হব। বিনক্রেক
আগে সে বেলা হবে গেছে, এবনও এবানে সেবানে ভার চিছ্
দেবা বাছে। এবার নাজি লক্ষাবিক লোকের সমাগন হবেহিল এই বেলার। আর না এগিরে আম্রা ভাকবাংলোর
চুক্লার বাংলোর পশ্চাতে একট মুঙ্গ বসানো হুর্বাব্জি
দেবতে।

ভাকবাংলোট বেশ চমংকার, পরিকার এবং পরিজ্য। এবানে দর্মকণের কতে বালী আছে, বে-কেট এবানে ত্যাক্তে পারেব। কিছ একটা বিশ্বর এবানে এই প্রকৃত্তে বিভূমধ্যান্তে উত্তেপ করা-প্রবোজন। এবানে আলতে হলে বাবার-হাবার ইক্ষের বোজন বা ভ্রাক্ত প্রভিত বিহে আলা অবভাই উচিত।

এইবার নাটবন্দির এবং ভোগবর দেববার পালা। ভোগ-বরের ইবারভের কোনও অংশই আড় আর বাড়া বেই। পাবরের তর ভভঙনি ইভভঙ: বিভিপ্ত ররেছে। ভৃতকগুলি ভভ বাড়া- আহে, কোন কোনট ভাঙা, কোনট বা

ভাক বাংলোর বিক বেকে কগরনের হবি। সমুবের ভর ভয়গুলি অংগঞান্ত ভোগবরের নিজনন

া। নাটবলিবটও তেওে গেছে। তবে এখনও এর চারণাশের বেওরাল এবং বেবে ও নিঁভি অটুট অবহার মরেছে। নাটবলিবের রঙ লাল, বলিব-গাবে বাভবর-বাববরতা নারীবৃতি উৎকীব। এক বিকে আছে অখারচ হ্বাবেবতার বীরহ্বাঞ্জ একট বৃতি। বৃতিটির বাবে একেবারে ছবিব ভারেই আছে একট বিকটাভার ছ্বীরের বৃতি। এর

ভাৰেই বিদ এভভালে স্ব্যবেশ্য স্ব্ৰশ্নিই ছাত্ৰা বা বাত্ৰা বেৰীয় মন্দিয়। প্ৰধান মন্দিয়ের সলে দে মন্দিয়টও ভালের ভ্যান প্ৰাসে ধ্বংস্থাও হয়েছে।

ভগনৰ বলিবের ভিভরে জি ছিল, আদু আর তা ভানার ভোন উপার নেই। পাছে সর্ঞ বলিরট অংসভূপে পরিণত হর সেই ভারণে ভিভরটা বাস্ত্পে পূর্ণ করে বাইরে থেকে

शाबरवन्न नावनि वाता टारमभवक्रि वय करत रक्षत्रों स्टाइट । बाहा वा बाबादवरीत वन्तित प्रदावन्तिद्वत जरकरे विकित्र हरत शिरह । ।विभाग वानुका-छ भाव मर्था विश्वेगी-आही बहे क्र वर्षवान ब्राट्ट । माठवरत्रत्र क्यारण अवर क्य-ৰদের বহিরংশই কাক্রকার্যারচিত। পূর্ব্য-দেবের লগ্ধ-অখচালিভ সুক্ষর রবের তভোৰিক সুন্দর এবং অপূর্ব্য কাল্ল-কাৰ্যাপচিত চক্ষণ্ডলির ক্ষেত্রট লাল विक्रमाम । क्यारा माळ इ-अक्ड चक्ड जरहाद जाट्ट, राक्टिश्रनिय काक्टकार्द्य मक्त्रा अवर जनकत्रत्व किन्न किन्न जिल्लीन হরেছে, কিছু বা ভেঙেছে। ওগু অভা অটুট অবস্থার দেখা বার লবপ্রহের ষষ্মাভিরাম বৃত্তিগুলি। ক্লিক্দেশের প্ৰধাহবামী প্ৰভি মন্দিৱের সন্মুৰেই थिकिक बाक्क मन शहर वृद्धि। वनि. সোৰ, যদল, ব্ৰ, বৃহস্তি, ভঞ্ णनि, तांच ७ (क्कू-बरे मन्तरहत नवडे वृष्टि अकडे सकां नवुकांक नावदव আভাআভি ভাবে উংকীৰ। বৃত্তিগুলির ভৰিবা ভাৱি চৰংকার।

এইবার মলিরের ছাপভ্য-শিল্প সবহে হ'একট কথা বলছি। এথন বক্ত কেউল বা পুরুষ কেউল (গভীরা); বিভীন—অগ্যোহন বা জী-কেউল (কর্ণকের ছাম বা ভক্র কেউল)। এই হয়ের নিলনের মধ্য কিরেই ছাপভ্যের এবর্ধা বিকশিত হরেছে। বড় কেউলের বক্ত গোলাকৃতি, বাধার শির্মাণ; ক্ষান্ত্রের বড়ভার বিভ্লিভ, বেবর চুকা অধিক্তর বিভ্লা।

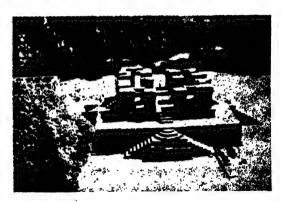
ভিন হক্ষ পাধরে বন্দিরট নিম্নিত। বেলে পাধর, বাক্তা পাধর এবং হুগনি পাধর বধাক্ষমে ভূমনেখন ও আটসড়, তুমনেখন, বুর্গা ও নীলসিরি বেড়ে আমীত।

হ্ব্যাদেশের মধচক্রের আবর্তন করনা করে বনির্ম্ভ পরি-ক্ষিত হ্বেছে। মধ্যের হ'পাশে বার ফোড়া রহং চক্র বার বাংলার প্রতীকু। এক বিকে বার্ট্যান্তন্তন্ত, অপর বিকে বার্ট্য ক্ষণক। সূৰ্বে নাডট বোকা হব টেবে নিবে বাছে—তা লাভ হলিব বা লাভ বাবের প্রতীক। কেট কেট সংগ্রির বেহবর হবকে নাডট বৈহিক হলের—বধা গাহিত্রী, উচ্চিক, অনুষ্ঠণ, হৃহতা, পংতি, এই গ'ও অগতীর সদে কুলবা করেব।

ৰশিৱের বৰ্গার নারিগুলি খভি বনোরম। ভাষের নামও বিভিন্ন। (১) নাজের ভালি বা পাণ্ডি ভালি—ফল-ফুল-শোভিত সভাগাভার বক্সা।

- (২) মাগবভিছল—মান্তবের থেতের মীচে সর্পাঞ্ছি
  মাগ-মাগিনী পরস্বাহক কভিবে আছে।
- (৩) বছৰছন্দ—ছই পাৰ্বে বছকাৰ (গ্ৰী-পুক্ৰবের বিক্ৰ) ভার উপরে বর্জকীদের সূর্তি।
- (৪) গোলবাই ভালি—এতে দেবা বার একট লভা বেঁকে তেউ ভূলে এগিবে গেছে, প্রভি তেউন্নের মধ্যে একট বিভ মৃত্য-ভলিমার হাভিবে। ভার উপরে পূঠে পুরুষকে বহুম ভবে পরীকভারা উত্তে চলেতে।
- (৫) বাক্রছন-জানহারিক নক্সা—উপরে নৃত্য ও বাক্তা নামীসূর্তি।
- (৬) শিবরহল—ত্রী-পুরুষের মিলন—উপরে মৃত্য ও বাচনরভা নারী।
- ্ (1) বরবাঞ্বি—এক প্রকার জনত পূলা—নালার আকারে চিক্রিত।
  - (৮) কাভি পাৰুবা—কুলের পাপভির চি**ন্ন**।
- (৯) গঠিকাজুলা বা কেশর পার্ব—আলজারিক নক্সা।

  মন্দিরের মক্সার মধ্যেও নানা রক্ষের ভাপভ্য হল আছে,



क्षत्रवासत छेशत (बरक माडेब करात कृष्ट

- (क) গৰুগাৰিণী—নামাভাবে বিচরণরভ অনেক বত হতী।
  - (व) हरनलहरी-विचित्र चनियात विकिष हरत्मत वन ।
  - (গ) মহুভলহত্তী--বছ মাহুবের বিবিধ ভূদিবার চিত্র।

এবার প্রভাবর্তনের পালা। বিধারকালে কোনারকের
প্রাকৃষিতে গাঁভিরে মনে হচ্ছে—আবৃনিক সভাভার মোহ
কোবার আমানের ঠেলে নিরে বাচ্ছে। উভিবারে বঙগিরি
কেবলার, উন্বাগিরি বৈবলার। কেবলার কোনারক—বেবারেই
গিছেরি মন প্রভাবিত্মরে আরুত হরে উঠেছে। করেক পভাকী
আনে বারা নীয়ন পাবাবে এই বিভিন্ন রূপত্তী করে বেছেন
আকু কোবার ভাবের উভর সাবকের বল।০

• বালোক্চিত্রখলি লেখক কর্তৃক গৃহীত।

## স্বৰ্গ চাহি না আমি

এনীলরতন দাশ

र्भ र्भ र'ए ब नवाब गार्थ चीनरमत नवम,
माडित भवरम चारे चारम वारम भूमरक भम्मम ।
स्विते भूमिनीत सङ्क्षेरमम चारम स्वाद स्वाद चारम कमतन,
धान मनेरदाह समस्य चानात रहारम नीमा-नवाद—
हवा पूर्वा साम चारम चारमारक भागानात ।

আকাশ কুন্তৰ কৰি না কাৰনা", পুলিত এই বৰা আকাৰি কানিবা লগে বলে গানে গৰে বৰণে তথা। বাজ্যেৰ ধোৰ শ্ৰীতি ভালোবাসা পুৰাবেছে সাৰ, বন্ধ ও আশা, ৰাত্ৰেৰে তুলি' দেবভাবে ভাই কমি নাই সমান— বাট ও বাত্ৰে বন্দৰা কমি' বচিবাছি নোৰ বাদ।

### वाजनभव

## बननीयायव होधूबी

১৯০৬-এর বার্ক বানের বারাবারি জনেক ভরির-ভাগারা ভরিবা জীবানল ছুট পাইলেন। বাননিক উরেগ ও অণাতিতে তাঁহার বাহা বে ভতবানি ভাতিরা পভিয়াহিল ভাহা থানিতে পারিলেন বাজনগরে আসিরা। বিন বর্ণেক বাইতে না বাইছে ভিনি গুরুতর রূপে শীভত হইরা পভিলেন। ভর পাইরা জিনরনী বেবানলকে আসিবার কল টেলিপ্রাম করি-লেন। হরিবারারণ সহরে টেলিপ্রাম ভরিলেন ভাজারের কল। বাভার টেলিপ্রাম পাইরা বেবানক প্রদিন রওনা হইল।

শেষ বানিব বিকে কংশন-ঠেশনে গাড়ী বৰল করিতে হর।
ভাহাবের গাড়ী আলিতে ভবনও কিছু দেরী আছে। বালপর
এক ভারগার বাবিরা বেবানক গ্লাটকরবে পারচারি ক্রিতে
লাগিল।

সে বে ঝাড়ীতে আসিরাহিল ভাহা চলিয়া বাইবার পরে ক্লিরা প্লাটকরবের উপর ভইবা পঢ়িয়াতে। পান, লিগারেট ও বাবারের কিরিওয়ালারাও নিক নিক জিনিবের বাজের পাপে ভইরা পঢ়িয়াত। ভাহার বভ অপেক্ষমান বালীরা ভেঁহ প্লাট-করবের উপর সভরকি পাড়িয়া ভইরাতে, কেন্ত্রেকিতে বা নিক্ষের ট্রাফ, বিহাবার উপর বসিরা চুলিভেতে। অভবড় কংশন-টেশনটা সারা বিনের ফ্লাভি ও হ্টপোলের পর বেন বিহাইভেতে।

গাড়ীতে গরম ও ভিড়ে বড় কঠ ঘইরাছে। বিরবিরে ছাওরা বিভেছিল প্লাটকরমে। কিছুক্দণ পারচারি করিবার পর দেবাদক্ষের শরীর কুড়াইরা গেল। কিছুক্দণের মধ্যেই ইকিট-খরের কাছে আসিরা লে থামিরা গেল।

ইকেই-মরের কাছে একটা বহু কাঠের বাজ বহিবাছে।
তাহার উপরে হুই কন লোক, বোব হর টেশনের কুলি কি
তেতার, পাশাশাশি ব্যাইতেছে। নীচে বাজের গারে ঠেন
বিরা হুই কন বিহারী পুলিন বিরাইতেছে। একজনের বাধার
লাল পার্গতি কপালের উপর নারিরা আনিরাহে। তাহারের
লল্পে একথানা বরলা বিপলের উপর চারিই ছেলে ক্তলী
পাকাইরা নিত্রা বাইতেছে। তত্তলোকের ছেলে। দেখিরা
ববে হুর বার হুইতে চৌহর বব্যে বরন। কোবরে প্রত্যেকের
বৃত্তি বাধা, হাতে হাতকভা। তাহারের বৃথের উপর ইকিট
বরের বাহিরের দেরালের আলো পড়িরাছে বেবানক্দ বেধিল
একট ছেলের বুধবানি নিতাত কৃচি। লেইটকে হলের বব্যে
নতনের হোট বলিরা ববে হুইল। ছেলেনের কোরেরের

ৰভিন্ন অপন্ন প্ৰান্তে ক্ৰেইবল কুইট নিজেবেল পাৰেন নকে বাঁৰিবা ৰাখিবাতে। আনামীনা পালাইবান চেটা ভবিলে পাৰে টান পভিত্ৰে, ভাতানা ভানিবা উঠিবে।

বেৰানন্দ কিছুলৰ হাভাইয়া ছেলেডলিকে বেৰিল। কোৰ कालत मीत्रत क्रांतित होत हरू। अधनकः नाम बाचरानव ৰত বারাত্ত কথা উচ্চারণ করিবার ক্রত অধবা কোন ভোতাৰভাৱতে "বিলাভী লবণ বেচিও বা ভাই" বলিয়া ভোত काटक चक्रदाव कविवाद क्या श्रवनश्रकाशाविक जबकारवद चारम् चाहावा त्यक्षांच हरेबारह। विहास हरेर पहें। করিয়া। শাভি চুইবে বেড, করিয়ানা বা কারারও। ভুল-कर्छभक्र बहाबाबा देनत्मकेरतद चारहरम कविरयम बाहिरकमन। (एवायक जावाद शांद्रादि छतिए जादस छदिन। पर्का বাজিয়া উঠিল। ভূলি, ভেণারহা এবং ছবছ বাজীয়া সকলে ইটিহা বসিল। কিছকৰ কাটহা গেলে গাড়ী আসিহা পড়িল। বিনিগণত লইবা বেবানন্দ গাড়ীতে উঠিতে বাইভেতে পিছৰে क्षतिल "वटल बाकतम्"। "वटल बाकतम्"। द्याबदत पहि-বাঁধা চুইট ছেলে ভাষৱা চুইভে প্ল্যাটকরুৰে নামিরা, "বন্দ্র ৰাভৱন" ক্ষমি দিভে লাগিল, ভাছাদের হাভেও হাভড়া। ব্যস্ত বালীরা এদিকে ওদিকে বাইবার সময় চালিয়া দেবিভেতে। एरव क्रैकिके-बरवद विक क्रेस्ड बावाद अब बाजिन "वस्क ৰাভৱন"। বুৰভ ছেলে চাবটকে ক্ষেইবলরা বাভা দিয়া कांशरिवाद्य । अरे शाकीटक कावाद्यवं बारेबाव कथा । श्रुनिश কোষবের দক্তি বরিষা ভিকের বব্য দিরা ভাহাদের লইয়া চলিল গাড়ীর দিকে।

বেষানদ গাড়ীতে উঠিয়া খিনিনপত্র ছাবিছা প্ল্যাটকরবে বাজীবের ঠেলাঠেলি হড়াছড়ি পেবিতে লাগিল। বাধার বজ্ঞ পাগড়ী বাবা, হাতে ভারী বোট লইডা একজন বাত্রী হল্ হল্ করিছা বাইভেছিল। দেবানদ্দ জামালার, বীড়াইছা ভাহাছ বিতে জনামনত্ব ভাবে ভাকাইছা ভাবিভেছিল লভ বড় পাগড়ী বাহার নাগার, বোব হব লে পঞ্লাবী হইবে। জামালার ভাবে আলিছা লোড়ট এক্যার উপরের বিকে চাহিছা একটু দাড়াইল, ভার পর আবার পা বাড়াইল। দেবানদ্দ ভতকবে লাকাইছা গাড়ী হইতে নাবিছা পড়িছাছে। লে আগাইছা গিলা বাত্রীটকে পিছল হুইতে জড়াইছা বহিল। বলিল—সভীব-হা।

নভীৰ বাভ কিলাইলা দেখিল কেবাৰজ। বোট বালাইলা লাখিলা ভালাকে জভাইলা বলিল, বলিল—আত্তে, ভূই কভটা বভ হতে গেছিল কেবু। জালালাল ভোকে কেবে বলৈ হ'ল বেৰ চেৰা লোক। কৰ আলোভে ভাল বেৰভে পাই বি। ভল হতে পাৰে ভেবে ভাকি বি।

বেশাৰণের নাথার শিঠে হাত বুলাইরা বলিল— তার পর বাহ্নিল কোথার ? তলেজ চলহে না ?

বেৰামন জানাইল ভাহার শিভার অন্নবের ববর পাইরা যাড়ী যাইভেরে। জিজালা করিল—আপনি কোবার বাচ্ছেন ?

সভীৰ—আৰি বাজি রাজসাহা, সেধান থেকে আরও অনেক জারগার বাব। ভোলের বাড়ী এর ক'টা টেশন পরে বল ভ ?

(क्वानक-छिन्दे (हेनन शदा। वकी (क्रक नार्त)

সভীন—বহলি হ্বার পর আর ভোর বাবার সলে বেশা হ্র নি। আমি উাকে বড় প্রহা করি। ভোর সলেও কড বিন পরে বেশা র'ল। ভাবতি—

দেবাৰক সাঞ্জৰে বলিল—কি ভাবতেৰ সভীন-দা ? বাবাকে একবার দেবতে বাবেৰ ?

সভীন একটু চিভিড ভাবে বলিল—ভাই ভাবহি, কিছ হাতে অনেকগুলো কাৰ আহে। ভা বাক্। চল এক বিনের ক্ষয় ভোলের ওবানে বুরে আদি।

দেবানৰ আনক্ষে বেন আছহাৱা হইবা গেল। তাৰ পর তাহার বোটটা তুলিরা লইবা, নিক্ষে বে কানবার উটিবাহিল নেই কানবার সভীনকে উঠাইবা তাহার টকিট কিনিবার ক্ষ্য নানিবা গেল এবং ভাভাভাভি টকিট সইবা কিরিল। ইই ক্ষ্ম গাড়ীর এককোনে পাদাপাশি বসিল। গাড়ী ছাড়িবা দিল।

দেবাসক ও সভীন বৰন রাজনগর বোড টেশনে নামিল ভবন রাভ প্রার শেব হইরা আসিরাহে। টেশনহরের দিক ইইভে লঠন হাভে এক কম লোক আগাইরা আসিল ভাহাদের দিকে। কাছে আসিরা সে লঠন ভূলিরা বরিরা দেবাসককে বেবিরা সেলার করিল। বলিল—বাবু আইছেন ? বাঠান বাড়ী পাঠাইছেন।

বেবাৰক চিনিল ভাহাদের বাভীর বাঁধা গাভোরান ইলনাইল। লে জিজালা ভরিল—বাবা কেবন আছেন ভান ইলমাইল ?

ইগৰাইল বলিল—আন্নান্ন হোৱার কর্তা ভাল আহেন আৰু হই বোজ। কাল বিয়ানের গাড়ীতে সহবের ভাতার সাহেব কিয়া গ্যালেব।

শভীবের প্রতি ইনিও ছবিরা ইসরাইন বলিল—এ বাবুরে ত চেবলাব বা। এবি কি ডাভার ?

বেশানক হাসিতা বলিজ—না, ইনি আমাত নাঠার নগাত। নাবাত অসুবেত ধবর ভলে বেবভে এলেতেন।

ইস্থাইল বলিল—দেলাৰ বাবু। কডার শক্ত ব্যারার হইছে ভবি। আপুনি দেবভি আইছেন ইট বড় সরিক ভার হইছে। এবন চলেন। পাড়ীভে ভরা বুব ভার, প্রভ বানেকের যতি পৌছা। বাবাৰ। বালপত্তর আবার বাতার কুল্যা ব্যাল।

ব্ৰাৰণ ও সভীৰ গাড়ীতে উটিয়া পালাগালি ভইল। বহিবের গাড়ীর বাঁকুনি সভেও হই চারিটা ভবাবার্ডার পরে ভাহারা ব্রাইরা পভিল। এতটা উঁচু ভাঠের পুল হইতে গাড়ী গড়াইরা নামিবার সময়ে হই জনের বেহে বাড়া লাগিতে ভাহারের ব্রু ভাকিরা পেল। ভাহারা উটিয়া বলিয়া হালিতে লাগিল।

চাৰদিক পৰিকাৰ হইবা আসিবাৰে, বিছত চৰা বাঠেৰ ওপাৰে আকাশেৰ এক অংশ উল্ক বেবাইতেৰে। একটু পৰে হৰ্ব্য উকি বিবে। বেবানন্দ বাবিৰেৰ বিকে চাবিৰা বিনিল—সভীন-দা, চলুন এবাৰ বেবে পড়ি। ছ্বিৰে প্ৰায় অৰ্জেক পথ এনে গেছি।

ভাহার। ছই জন নামির। গাড়ীর জাগে জাগে হাঁটরা চলিল। বিরবিরে হাওরা দিভেহিল। হাওরার সদে বুব বোলাবের একট বিঠ গর।

ভাহার। ইটিতে লাগিল। রাভার পাশে চাবীবের বাড়ী, বীশের বাড়, আয়, কাঁঠাল, ফলার বাগাল, ভারাফ, লছা, বেগুনের কেড, বালের ররাই নজরে পড়িল। এই প্রাই হাড়াইরা আবার ছই বারে খোলা নাঠ। কিছু দুর সিরা বেবানন্দ বী দিকে নাঠের ওপারে দুরে বুরলী বিলের বিকে লভীবের দুটি আফর্বণ করিল। বলিল—ঐ বে দুরে হুর্বোর আলোডে চিক চিক করছে দেবছেম ওটা বুরলী বিল। বভ বড় প্রবন্ধ আহে বিলে। বিলে ধুব বাছ। আর শীভের সমর কড় রহুবের পাই বে আলে ভার কেথাজোখা বেই।

গভীন বলিল—কি নাম বললি ? বুবলী বিল ? ভোষের বিলের নাম ত বড় কবিছপূর্ব। ভোরের আলোভে কেম্বন বলমল করছে ওবিকটা কেব।

(स्वामक विक—काञ्च, के वर्षेत्राव्याय मीटा विज ।

সভীন বলিল—আৱে, রাভার বব্যে বিশ্রাব করলে বাড়ী গৌহতে দেরি হরে বাবে।

দেবাদন্দ বলিল—দেৱি হবে কেন ? আননা ভ এলে গেছি প্ৰায়। ঐ ৰে গাৰে গাৰে গাহেৰ নাম দেবছেৰ ঐ গাছ-ভলোৱ ওবাত্তে আক্ৰপত্ত। আৰু পাচ-সাভ বিনিট হাঁটলে কালীবাড়ী দেখা বাবে।

ছুই কৰে বটগাছের নীচে বুবলী বিলেম বিকে মুখ ক্ষিত্র। বসিয়া পানীর পাত্তী উপভোগ ক্ষিতে লাগিল।

এবনি ভাবে কিছুক্ৰ কাটলে পৱ সভীৰ বজিল—ওৱে; এবার ওঠ বেশি।

ছট কৰ আবাৰ হাঁটতে নাসিল। কিছুক্তৰ পৰে কিওনী নবী বেবা নেন। ভাষ পৰ কানীবাড়ী শিহনে ছাবিছা ভাষাছা बाह्यमध्य भौदिन्। न्यीन प्रतिन—ग्रेडीव स्ता, प्राप्ति। स्वति ना १

দ্ৰেণাকৰ হালিয়া বলিল—গাড়ী কৰৰ আলবে ঠিক আছে ? ইনবাইল, ছুব বিজে আয় বোৰ হুটো বেয়ালয়ত টুক্টুক করে আলতে।, চলুব আহবা এখই।

প্রাবের মধ্যে চুকিয়া কিছুদ্ব আগাইতে দেখানক কেবিল ইল আনিকেন্তে।

ইজ আদিরা দেবাদলকে অভাইরা বরিল। বলিল—কেবন আহ দেবুলা ? ভাভাবাবু ভাল আছেন।

বেশাৰৰ ইত্ৰেৱ হাত ধৰিৱা বলিল—ইবি কে ভাৰিন ? ইবি দতীৰ-লা, বাঁৱ কথা ভোকে তভ লিখেছি।

ইল হাত হাতাইরা নইরা নতীনকে প্রণান করিতে পেল, স্বতীন ভাহাতে বাহ্বছনে আবহু করিরা বলিল—থাকু ভাই, প্রণান ভারতে হবে না। ভোষাকে বেশবার আকাজনা বন্দ্রেল অনেক দিন।

ইজ বুৰ বুৰী হইল সভীনকে পাইরা। দেবানককে বলিল
—একৈ কোণার পেলে দেবুলা ?

বেশানৰ-হাসিয়া বলিল— হঠাং আবিছাত্ৰ করলায়—ভাই কা নভীন-লা ৭

. बडीव देवर वानिन।

গর করিতে করিতে তিন কন টোলপাড়ার দেবানকদের বাড়ীতে পৌহিল। দোতলার বারালা হইতে ১ তাহাদের হেবিতে পাইরা লখী কৌড়াইতে কৌড়াইতে নীচে নাবিল। ফিডির নীচে তাহার নাতে দেবিরা বলিল—না, দাবা এলেতে। সচল তে একজন আছেন। বাবাতে বলবঁ ?

ভ্ৰমন্ত্ৰী বলিলেন—আৰি বলছিন। ছুই নীচের বৈঠকবানা ব্যৱে বলতে দেন। হাত্তমূব বোৰার বল দিতে বল্ল। লখ্নী আহিবের বোলা রকে আলিবা দেখিল ভিন বল উঠানে বাভাইরা গল করিতেবে।

্লৰী বাহিৰে আনিতে ধেনানৰ বলিল--সভীন-বা, এই ভৱনহিলাটকে চেনেন কি ?

ু সূত্ৰতে ছানিয়া উঠন। বেবাৰক বলিস—ইবি এবতী দুখী বেবী, এর ক্বা আগনাকে বছবার বলেছি।

সভীৰ স্থাপংস বৃষ্টিভে সন্ধীন দিকে চাহিল। বেৰকভাৱ বভ সাবণান্ত্ৰী স্থাপণা বেকেটকে বেৰিছা সে বৃত্ত হুইল। বলিল—ভোষাকে আৰি চিনি সন্ধী-বিধি। আৰাকে ভ ভূমি চেন না ?

লখী সদম্ভ উঠে বলিল—আমি আপনার কর্মা ওবেছি। আ:আপনাকের এই ববে মসতে সজলেন। আপনি বস্তুম।

ব্যক্তর এক পাশে বক্তিত কলনী বহু বালকি ও ক্রন্তেইক প্রকৃতির বিদ্যান্ত ভূমাপনি ক্রাক বুব ক্রেছেন , এরাছে ১ , আবি প্রামান, সাম্বর্জ সমুদ্যানি ক্রিকে ১৮ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ্ৰ কৰী ভিভৱে চলিয়া গেল।

হাতর্থ গৃইরা কলবোগ সারিরা সতীন ইল্ল ও কেবানক্ষের লক্ষে-উপরে গেল জীবানককে কেবিজে। লভীন প্রধান করিরা বলিল—কেব্র কাছে আপ্নার শক্ত অপুথের, ধবর ভাননার টেশনে। তাই একবার কেবতে এলাব আপ্নাকে।

শীবাৰক শুইৱাহিলেন। একটু হাসিৱা বলিলেন— ভোষাকে কেবে বন্ধ বুলী হলাম বাষ্টার। অনেক বিদ বরে ভূগে ভূগে শবীরে আর কিছু দেই।

সভীন বিজ্ঞানা কবিল, ডাঞার কি অপুর বলে ?

কীবানন্দ বলিলেন, ডাক্ডার তো একটা গালভৱা নাম বলে গেল। আমি বলি শরীরের চাইতে ননের অসুধ বেনী। লে কথা যাক। ভূমি এলেছ, দেবু এলেছে, ভোষাদের কাছে অমেক থবর পাওরা বাবে। ভাল কথা যাটার, ভূমি কি এখনও চাক্ষি করছ, না চাক্ষি হেকে কোন দলে ভিক্তে।

নতীন দেবাৰন্দের দিকে চাহিরা একটু হাসিল। বলিল, চাকরি ছাকব কেন ভর, এবন তাল চাকরি ৷ বরং ছোটলাট সুলার বলেছেন, ছেলেরা ছিল ও ব্যায়ার করক। তার আগতি ওবু বন্দে বাভরবে। আরি ত ছেলেকের বন্দে যাভরব্ বলতে নিবেব করি।

জীবাদন্দ বলিলেন, নিৰেৰ কর ? কেন বল ভ নাঠার ? ভিনি উটিয়া বসিবার চেঠা করিলেন।

সভীৰ হাসিভে লাগিল। বলিল, আগনি উঠবেৰ না, ভৱে ৰাকুল। আৰৱা বসহি।

বেবেকে শীক্তন পাট বিহানো হিল। সকলে ভাষার উপর বসিল। সন্ধী একটা সাধা পাধরের বাটকে বেধানার রস আদিরা পিতার প্রায়র পালে ধাড়াইল। বৃহ বরে বসিল, দাবা বেধানা এনেহে, বা রস করে দিলেন।

चौवामन विल्लान, द्वामां बन ? वाछ।

পিভাকে বন বাওৱাইবা বাট হাভে লখী, বর হুইভে বাহিরে সিরা ভবনই কিরিল। বলিল, বাবা, জ্যেঠাবশাই এনেছেন।

হরিনারারণ বরে প্রবেশ করিলেন। লভীন এই শাল-প্রাংও নহাতৃত্ব বিরাট পুরুষকে দেখিরা বিভিত হইল। ভাবিল, ভারার জিননাটক-করা কেহকে এই নামুস্ট ইকা করিলে এক আহাতে হাতৃ করিলা বিভে পারেন। লভীন ও কেন্দ্রন্থ হরিনারারণকে প্রণাম করিল। হরিনারারণ ভাহাকের নাগার হাত বিরা আম্বর্জাক করিলেন। কেন্দ্রান্তারের পরিচর দিল। জীবাদক বলিলেন, কেন্দ্রান্তারের বে পরিচরটা বিল লেইটেই ভার সবটুতু নর। এর অভ একটা পরিচর আহে। বাটার, রখন এলেহ হ'চার বিল বাড়বে ত ?

न्त्रीन निमन, बर्गार चाना …

ু হৰিনাবাৰণ পলিলেব, বাঙৰালী বুঠাং হবে বা। ভোৰুৱা

লৰ বলো। কি কৰা ছচ্ছিল জানি আসবার লবম ?

জীবাৰন্দ বলিলেন—নাষ্টাৰ বলছিল সে ছেলেবের বন্দে বাভয়ন্ বলভে নিবেৰ করে। আনি কারণ বিজ্ঞানা কর-ছিলান।

হরিনারায়ণ বলিলেন, সভীবের নিবেবের কারণ কি আনি কানি নে, তবে এ সহতে একটা কথা আনার ননে হরেছে। লায়ন সাহেবের এটি বন্দে নাডরম্ সারকুলার অনাভ করাকে র্থ্য ছাম দিলে আমাদের আন্দোলনকে ধ্ব বেশী বিন টিকিরে রাখা বাবে না। প্রহার, কেন, করিনানা, রাটকেশন, অভিভাবক ও শিক্কদের ভাতে নারবার ভর কেবিরে আন্দোলনকে ঠাওা করবার চেঠা হচ্ছে।

জীবানদ বলিলেন, সেধিন ওনলান কোবার এক বরবাত্রী বলের শোভাবাত্রা বহু করে দিরেছে বরবাত্রীরা বন্দে মাতরম বলতে পারে এই ভরে।

হরিমারারণ বলিলেন, বরবান্ত্রী কেন হরিসজীর্ত্তনও কোন কোন ভারপার ঐ আশভার বর করা হরেছে। এবিকে ঢাকার ব্যাব্যক্ত সুলার বে উপার আবিকার করেছেন ভাতে বলেনী আলোলনের অনেক কিন্তু ওলটপালট হতে পারে।

আরও কিছুক্দণ আলোচনা চলিবার পরে হরিমারারণ বলিলেন, রোগীর বরে এত কথাবার্তা তাল নর। 'এল, আবরা উটা দতীন, আবাদের প্রার্টা বোব হর, এ পর্যাত বুরে দেবনি।

শীবাদক বৃহত্তর প্রতিবাদ করিরা বলিলেন, আমি ত এখন ভাল আছি।

হরিমারারণ হাসিরা বলিলেম, বিকেল ভক্ত ভাল পাকলে আবার কথা হবে।

পূৰে বাহির হাইবা সভীন বলিল, আপনি কুলারের নৃত্য উপার আবিফারের কথা বলছিলেন। কি উপার আবিফার করেছে? হিন্দু-বুগলনানের বধ্যে বিবোধস্টির চেঠার কথা বলছেন কি ?

হরিনারারণ বলিজুন, সেই কথা আনার ননে উঠেছে বটে। বলেই আন্দোলন আরভ হ্বার সনরে এ অঞ্চের মুসলবানরা কতকটা বলেইভাষাপর হরেছিল তা আনি লক্ষ্যও করেছিলার। এবন দেবছি ভালের বারণা হরেছে বে, সরকার বাহারর ভালেরই স্থবিবের কতে বাংলাদেবক হই বও করেছেন। কি স্থবিবৈ হরেছে কিজেল করলে বলতে পারে না। এই বারণা থেকে বিলেভী লবণ, চিনি, কাণড কেনবার কতে একের আএছ বেকেছে।

প্রসদাভবে আসিরা হরিনারারণ বলিলেন, ভোনার বেবে কিছু কিছু ববর আমি ইজের কাছে বেবুর চিটিওলোভে নাগে পেভাব। সে এবাবে এক আন্মোহতি সমিতি গভেবিল, ইনিলের উৎসংক্তে সমিতির কাজ বহু হয়েহে, অনেক হেলে পালিবেছে তবে আর অভিভাবকের তাড়বার। সব ভারগাতে বোধ চর এটা অবভা গ

সভীন বলিল, কোন কোন ভাষণার এই অবহা হয়েছে বটে। কাজের প্রভিত্র কিছু পরিবর্তন করা আব্রুক্ত হয়ে প্রেছে। এই উদ্দেশ্রেই আমি কভক্সলো ভারণার বোঁজ নিতে বেরিবেলি।

হরিবারারণ বলিলেন, এবানেও বোঁজ লাও। এবানকার হেড নাঠার উংসাহী লোক। ইল হেড নাঠারের বাড়ীডে ভোনাকে নিরে নাবে। আজ বেলা ইরেছে। ইল, ভূমি বরং রাজেনবাবুকে একটু খবর দিরে এন বিকেলে তিনি বেন জীবাননের বাড়ীতে আসেন।

ইজ বলিল, এখন গেলে তাঁকে বোৰ হয়, বাড়ীতে পাথরা যাবে। বাব গ

হরিমারামণ-পাবে কি ? দেবে এস। চল সভীন, আনাদের বাড়ীতে একট বসবে।

সভীৰ—আমিও ইল্লের সঙ্গে একটু বুরে আসি মা।

হরিমারারণ—আছা যাও। ইলের সদেই কিরে এলো।
দেবানন, ইল ও সভীন গর করিতে করিতে হেড
মাঠারের বাজীর দিকে চলিল। সভীন ক্লের ছেলেলের
ও মাঠারদের কবা বুঁটিরা বুঁটিরা জিজালা করিতে লাগিল।
করণপূক্রের পাশ দিরা বাইবার সময় ইল বলিল, চল্ম
সভীনদা, মনলচভীর বাজীতে একটা প্রধাম করে বাই।

বদলচতীর মন্দিরের কাছে গিরা ভাছারা দেখিল বন্দিরের বাহিরে বাঁবানো চাভালের এক কোণে একজন বৈরাঈ বনিরা একভারা বাজাইরা গুন্ খন্ করিরা গান করিভেছে। ভাছাদের ছই জনকে দেখিরা সে গলা হাছিরা গান বরিল:

বাবু, বুৰবে কি আর বলে ভোষার কাঁবে সাহা ভূভ চেপেছে এক্তম ক্যা সারলে।

ছিল বান গোলাভৱা, বেভ ইন্দুরে ভরলে সারা চোবের ঐ চশবা জোড়া দেব দা বারু বুলে— বান নিয়েছে, বান নিয়েছে, হাত দিয়েছে কুলে বাবু, বুববে ভি ভার বলে।

ইল ও দেবানল এই বৈয়ানীকে আগে রাজনগরে কবনও দেবে নাই, বৈয়ান-বোটনের মূবে এ বরণের গাল কোথাও লোনে নাই। দেবানল সতীনকে বলিল, রাবেক্স ছেড়ে বৈয়ান মূতন রাজনের গান গাইছে শুন্তম সতীন-ছা ?

সভীন শুনিয়াছে। ইতার আগেও প্রামাকলে বেড়াইখার সমরে এই রক্ষ বৈরাদী ছই চার জনকে সে ব্যক্তি গান গাহিকে শুনিয়াছে। বৈন্দনিং ও বরিলাল আকলে ইতালের বেলী বেণা বার। প্রাম হইকে প্রামে চাবী, বজুর, রাণাল, বোড়ালী, বৌড়ার মাধিবের বব্যে, হবিল প্রচ্ছের শুনিরে ইহারা ভাতীর আন্দোলনের মৃতন বার্ডা শৌহাইরা দিভেছে।

গভীন বৈয়াৰীয় কাছে পিয়া বলিল, এ গান কোৰায় শিখলে বাষালী ?

বৈয়াৰ বলিল, লোকের মুখে মুখে ভবে পিখেছি বাবু। সভীন—এ রক্ষ গান আর ক'টা ভাল গ

বৈরাই—বেশী কানি না, হ'চারট বাভর ভবে ভবে শিবেছি। ভনবেন আর একটা ?

সভীৰ ৰাখা ৰাভিয়া সম্ৰভি ভাৰাইল ৷ বৈৱাই আবার গান ৰবিল :

> হেকে লাও কাঁচের চুকি বলনারী কতু হাতে আর পরো না। জাগো গো ও জমনী ও তগিনী বোহের বোরে আর থেকো না।

সতীন ইজের দিকে চাহিয়া হানিয়া বনিল, ওনলে ইজ ? বাবাদী, এ গানও ফি লোকের মুবে ওবে নিবেছ ?

বৈরাদ্ধ--- আছে বাবু। নইলে আর কোণার শিববো ? সভীন পকেট হইতে একট সিকি বাহির করিরা বৈরাদ্ধকে দিল। বলিল, ছুমি কি আজই চলে বাবে এখাম থেকে ?

বৈরাই—ছ'ভিন দিন থাকবো বাবু। সারা গাঁহে গান ভনিত্রে ভিক্তে করব। ভারণর ভিন গাঁহে বাব।

ইস্ত—ভূমি এবানে বলে থাক একটু। আনৱা এবনই কিন্তব। ভোনাকে আনাদের বাজী নিজে বাব। সেবানে গান ভনিত্তে ভিক্তে নেবে। কেন্তন ?

বৈৱাৰ ছাসিৱা বলিল, শ্ব বাবে কৃষ্ণ। তাই হবে বাজাবাবু।

মন্সচণীকে প্রধান করিবা ভাষারা হেড মাইার মহাশরের বাজীর দিকে চলিন। ইক্র বাজীর ভিতরে গিরা ভনিন তিনি ছুলে চলিরা গিরাছেন। তাঁহার ত্রীকে পিভার অভুরোব জানাইরা সে কিরিবা আসিল। মন্সচণ্ডীর বাজী হইছে বৈরামকে সকে সইবা ভাছারা বাজীতে কিরিন। হরিনারারণ ভাছারের বভ অপেকা করিভেছিলেন। বৈরামকে বেবিরা ভিনি জ্জ্ঞাসা করিলেন, এইকে হুপুরবেলা কোবা বেকে আনলে ?

বৈরাদী নিজেই উভর দিল। হরিনারারণকে প্রণাম করিরা সে বলিল, বাবুরা গান ভবে বরে আনলেন। বললেন, কর্তাবাবুকে গান শোনাবে।—বলেই গান বরল:

রাধা বলেদ, ভব সধি আর আবি বাবো না পথে।
বুলা বলেদ, কেব গো রাধারাকী, কেব আর বাবে না পথে?
রাধা বলেদ, সধি পথে বড় ভয়—পথে বড় ভয়
ভাতি, বাব, বাবি বিষে হবে বে সংশ্র।

নালা বাল্ছে ভবি ছেবে গেল বেশ,
নৃটে-পৃটে কেকে ছিঁকে করল সকল শেব।
পবে বাটে হাটে বাঠে করে অভ্যাচার
বেলগাড়ীতে কত বেরেরে বিল ছারধার।
ভবলে সে সব কবা লাগে প্রাণে লাক্রণ ব্যথা,
তরু দেখো দেশের বাছ্ব অবোরে ছ্বার
ভবে অবোরে ছ্বার।

বৈষাধী গান শেষ কৃষিয়া বলিল, ক্ষ বাবে ক্ষক । কণ্ডা বাবু, ছট ভিক্তে বিভে আজা দেন। ক্ষ কাৰগাৰ বুবতে হবে। , হবিনাবাৰণ ভৱ হুইবা গান ভণিতেছিলেন। বৈবাদীর কথা ভনিৱা বলিলেন, ভূমি এই বক্ষ গান কভণ্ডলো শিবেহ, আমি সব ভনব। এখন বেলা হ্রেছে। ভূমি কাহারি-বাজী গিবে বলো। ভাষরারের প্রানাধ পাবে। বিকেলবেলা গাম শোমাবে। কাল সভালে ভিক্তে নিষে বেলো।

তিনি একজন চাকরকে ভাকিরা বংগাচিত ব্যবহা করিবার আবেশ বিলেন। সে বৈরাদীকে সলে লইরা কাছারি-বাড়ীর দিকে চলিয়া গেল।

বৈরাণ চলিয়া গেলে ছরিমারারণ যলিলেন, এই বিশিস্ট নুভম দেখলায়।

সভীৰ বলিল, এ দিক্টাতে বোৰ হন, এই আরম্ভ হরেছে।
কোন কোন আরগার বলেনী আন্দোলনের স্কুল থেকে এর
চল হরেছে। অনেক আরগার তরলোকের ছেলেরা বংশী
গান গেরে বেড়ার। বৈদনসিঙে ভালের নাম হরেছে চারণদল, কোবাও বলে ভাট। আরও হুটো ভিনিস কোন
কোন আরগার আরম্ভ হরেছে—বদেশী বাজা ও ক্রকভা।
পৌরাণিক কাহিনীর মাধ্যমে বদেশী ভাব প্রচার করা হর।
এবনও পুলিসের চোর পড়ে নি এবিকে।

হরিনারায়ণ বলিলেন, কেশের সাবারণ লোকের মধ্যে সূত্র তাব প্রচার করবার এর চেয়ে তাল উপার আর নেই। বক্তা কেশের ক'কন লোক শুনে আর ববরের কার্যক কর ক্ষেইবা পতে ?

কিভাবে রাজনগরে বদেশী বাজা ও কবকভার প্রবর্তন করা বার ভাষা লইরা হরিনারারণ ও লভীনের বব্যে অনেককণ আলোচনা হইল। সভীন বলিল, বদেশী পালার বিভারিত বিষয়ণ সংগ্রহ করিয়া লে পাঠাইবে।

বেলা ছইয়াছে কেবিয়া সভীন ও কেবাৰল উঠিল।

সন্ধান পরে হরিমারারণ ও রাজেমবার আসিরা জীবানজের বরে বনিলেন। বেবানজ ও ইঞ্জতে সইয়া সভীন রাজ্যনর ভূলের এসিটাট হেড মাটার বভীনবাব্র সলে আলাপ ভরিতে গিরাহিল। বভীনবাবু বে এক জম বলের লোক সভীন সে ববর রাজ্যনহে আলিবার আর্গে পাইরাহিল।

क्यात्र क्यात्र बार्क्ययाच् देववननिष्ठ त्यानवारमञ्ज्या

ছুলিলেন। বলিলেন, আমার এক উক্তিল বছুর চিট্ট থেকে জানতে পারলাম বে, লেখানজার রুগলমানদের থারণা হরেছে পর্বন্ধেন্ট ভালের পজে। তিনি এই বর্ণ্ডে: লিখেছেন—রুগলির নেভারা প্রকাজভাবেই বলেছেন বে, সরকার হিন্দুদের বিজ্ঞান্তী বলে মনে করেন, জাজেই রুগলমানরা কোন শান্তির ভর না রেখে ভালের উপর অভ্যাচার চালাভে পারে।—মৌলবীরা প্রচার করে বেড়াছে এদেশে ইংরেজ-রাজত্ব শীর্ম শেষ হবে এবং আবার রুগলমান রাজত্ব জারেন হবে। কি বরণের অভ্যাচার ছছে চিট্টভে ভার একটা কিরিভি দেওরা হরেছে—
যিখ্যা অপবাদ রটনা, রাভাখাটে রাহাজানি, তাজাভি, দোকান সূর্ত্ত, আগুন লাগান, হিন্দুদের খাভ্যন্তব্য অপবিত্র করা, হিন্দু বিব্যাদের জার করে কিনা করবার ভর দেখান ইন্ড্যাহি।

আরও কিছুক্দ আলাপের পরে হরিমারারণ ও রাক্ষেমবাবু নীচে নামিরা আসিলেন।

রাত্রে হরিনারারণের গৃহে সভীন ও দেবানন্দের আহারের নিমন্ত্রণ ছিল।

আচাত্তের পর হবিনারাহণ আসিহা বৈঠকধানার বসিলেন। ज्ञीय, हेल ७ (सरायम ज्याप रजिश जानां करिएहिन ! হরিনারারণ বলিলেন, দেব সভীন, এবানে বালক-স্বিভি নাম দিয়ে একটা স্থিতি চ্ছেছিল ভোষাকে বলেছি বেবি পরে এর মাম হয়েছিল আছোরতি সমিতি। এই স্মিতির ছেলেন্বের বলা চ'ত ভাগনাল ভলানীরার मन। लात्कत चानत-विनाम नावाया कता. इहे लात्कतमत উপর নম্বর রাখা, বৃষ্টিভিক্ষা ও চালা ভূলে ভূলের গরীব ছেলে-ৰের সাহায়া করা, হাদেশী গাম গেছে লোকের মধ্যে হাদেশী किनिन किति करा. टाटिनाकाट विमाकी किनिन मा क्यारात ভভ লোককে অহুৱোৰ করা—এই সৰ ছিল **নে**শভাল चनाविदादत्वद कांच। शूनिरमद चन्नावाद्व ७ पुननवायदा বিগছে গিৰে এবের কারো কারো নামে বোক্তরা ভাষাতে ভলাভিয়ার দল প্রায় ভেঙে গেছে। যে নাষেই হোক একটা चत्रभागारेक्चम मा बाक्टन चट्टमे कार वाहित्य जाना कर्रीय হবে। ভোৰৱা ভ ক্ৰীলোক, এর কোন ব্যবস্থা করহ ?

সভীন—এই পুরোদো বেশতাল তলাটিরার দল নিরে
ঢাকার পুলিবলা অক্সীলন সমিতি গড়ে তুলেছেন। করিবপুরে
বাতী-সমিতি, বরিখালে বনেশবাদ্ধর সমিতি, বৈন্দসিঙে
স্কল ও সাবনা-সমিতি এই ভাবে গড়া হরেছে। কলভাতার
বিঃ বিভিরের অক্সীলন সমিতি গোড়ার এইভাবে আরম্ভ
হরেছিল।

কি ভাবিরা সে থামিরা সেল। ভারণর একটু হাসিরা বলিল, এবানে বেযানক ইজ এবের বত হেলে আছে, ভাবনা কি ? বুজন দিনিস গড়ে উঠাতে বেরী হবে লা।

वाना बक्टबंद जाजांग इजिन । वकावाटमक शरद इदि-

মারারণ বিদার সইয়া শরন করিতে গেলেম। সভীন ও বেবানন্দ ক্রোজপাভা রঙানা ভটনা।

দেবাসন্দের শ্রন্থরে সভীনের বিছালা হইরাছিল।
আনেক রাত্র পর্যান্ত হুই জনের বব্যে কথাবার্তা চলিল। পিভার
আপ্রবের সংবাদ পাইবার আগে বরিশালে আলিবার সমর
নিজের বামলিক অপান্তির কথা দেবামন্দ সবিভারে বর্ণনা
করিল। বলিল, দে সময় আপনার ও দেবেন পভিত মপারের
কথা বার বার মনে পভত। আপনাকে চিট্ট লিখে সম্ব আনাব
তেবেছি কভবার। কিন্তু শেষ পর্যান্ত- লেখা হরে ওঠে নি।
আপনি বানিকটা লিখিরে পভিরে হেছে দিলেন, কোন্ পথে
বাব বলে হিলেন না। পভিত্যশাই দীকা দেবেন বলে আখাস
দিলেন, ভারপার নিজের সাবনার ভূবে গেলেন, আরিও চলে
পেলার অভ আরগার। ভিনি বৈপার্য অপ্রব-রহিনীর
আবির্ভাবের কথা বলেছিলেন। আরি দেখছি বৈপার্য অপ্রবমহিনীর
আবির্ভাবের কোন লক্ষণ নাই।

দেবাদন্দের উত্তেজনা দেখিরা সভীন হালিল। বলিল, কোন লক্ষণ নেই তাই নাকি ভাবছিল ভাই ? ওরে অবিধানী হোস না। অত্যাচারের নাজা পূর্ণ হলে ভবে না কেবীর আবির্ভাবের শুভ মুহুর্জ আসবে। ভোর পথ ভোর সামনে প্রসারিভ রবেছে দেবু, সময় হলে কুয়াশার পর্যা সরে খাবে, সেই পথ দেখতে পাবি।

দেবাদল চুপ করিরা রহিল। সতীম আবার হাসিরা ভাহার নাথার, পিঠে হাত বুলাইডে লাগিল। বলিল, অবৈর্থ্য হলেই কি কান্ধ এগিরে বাবে ভাবহিল ? অবহা অমুক্ল, সময় অমুক্ল হওরা চাই। চল্, এখন ভারে পঢ়া বাক, অনেক রাভ চরেছে।

कृरे करम मना अंदर कविन ।

পরনিম জীবানক ও ছবিমারারণের কাছে বিদার কইরা সভীন টেশনের পথে রঙমা হইল। দেবানক, ইন্দ্র ও বভীন-বাবু প্রামের সীমানা পর্যন্ত আসিলে সভীন ভাছাদিগকে কিরিতে বলিল। বলিল, এবার ভোরা ঘরে যা। ভারপর টেশনের পথে পা বাভাইরা দিল।

কগভানীর পরীর বানিকটা সারিষাহিল নান, ভিনি সম্পূর্ণ পুছ হুইতে পারেন নাই। উাহার নিজের বারণা হুইরাহিল বে শীন্তই ওপার হুইতে উাহার ভাক আনিবে। এইজভ ইন্তকে পভাগুনার নিনিত্ব ভঙ্গন পাঠাইতে উাহার কিছুমান ইন্তা হিল না। কিছ পুত্রকে উচ্চ শিকা বিবার ভঙ্গ খানীর আগ্রহের কথা ভিনি ভানিভেন, ভাই ভাহাকে লভ্তঃ ক্রিবার জন্য ইন্তের বাইবার প্রভাবে রভ দিতে হুইল। ইলের ইক্সা হিল লে কলিকাভার পড়িবে । হরিলারারণ ভালাভে রাজী হইলেন না । কলিকাভার বর্তনান উভেক্ষ পরিষেশে ইলেকে ছোটেলে রাখিরা পড়াইভে ভিনি ভরলা করিলেন না । সদর টাউনে তাঁহার নিজব বাড়ী আছে । হির হইল লেই বাড়ীভে থাকিরা লে কলেকে পড়িবে । নাথে নাথে ভিনি ও অগহান্ত্রী সিরা লেখানে থাকিবেন । ইলেকে আখাস বিরা ভিনি বলিলেন—এক-এ পাস করিলে ভোলাকে কলিভাভার পাঠাইব ।

শিতাবাতার অভ্বতি পাইরা ইক্স কলেক্স তর্তি হইল। হরিদারারণ একটু তুল করিরাহিলেন। উত্তেজক আবহাওরা সে সমরে কলিকাতার হাক্সবলেই তবু সীবাবৰ ছিল না, নারা বাংলার হাক্সবাল তথন উত্তেজনার বব্যে বাল করিত। পভাতনা বত না হউক, ইক্স শীবই সব রক্ষর হাক্সবালেকের একজন পাওা হইরা ইাভাইল। বক্ষল শহরে পুলিসের সৃষ্টি সহক্ষে আকৃষ্ট হয়। ইক্সের সম্বন্ধে কিছু খবর পাইরা পুলিশ তাহার উপর নজর রাবিল। ছই এক বার ভাহাকে হালামার জভাইতে চেঠা করিল, কিছু কলেকের অব্যক্ষের স্কৃতার ক্ষয় সকল হইল না। স্পর্ক ইক্সকে প্রেহ করিভেন। ভাহার বিশ্বালয় করিবা তিনি ছির করিলেন হরিনারারণকে প্রক্র লিবিবেন ইক্সকে অন্য স্বাইরা লইবার কর্য।

শিভাকে সুহ হইবা উঠিতে দেখিবা দেখানক ভাভাভাছি কিবিৰার ক্ষম প্রভত হইবা। কীবানন্দের ইক্ষা হিল বরিশাল কন্তাবেল শেব হইবা গেলে দেবানক কিবিৰে। কিও দেবানক কলেক কাৰাই হইবার অত্যাত তুলিতে তিনি আর কিছু বলিলেন না। দেবানক বেলিন রঙনা হইবে ভাভার আগের দিন বন্ধু অভূলের এক লীর্থ পত্র পাইল। এই পত্র পড়িরা ভাহার কিবিবার আগ্রহু আরও প্রবল হইল। অতুল লিবিরাহে—ভাই দেবু, আবার বোব হর আর পভাভনা করা হবে না। বাবার অপুধ লারহে না, আর সারবেও না বনে হর। সবাই বলহেদ নিক্ষের চাহবাল, কাল কারবার দেব, বোনদের বিরে দাও, হোট ভাইদের বাছ্ব কর। বাপ অক্ষর হবে পড়েকেব লেক্ষেরে বহু ছেলে ভূবি, সব দার ত ভোরারই। ঘোট কবা, আতে আতে সংসারের সব ভার এলে বাভে চাপতে।

পড়ান্ডনা হবে না, সেলন্য হংগ করি না। পড়ান্ডনা করে কি বা করব ? কুলার সাহেবের নুতন নারকুলারের কল্যানে হিন্দুরের চাকুরি জোটা কটিন হবে। আসল কবা বন বেবন অভিন্ন হবে উঠেতে ভাতে প্রবোধ হেলের বভ সংসারের ভার কাবে বরে হিন্দু কাটান পঞ্চ হবে বনে হচ্ছে।

এক এক বিদ এবন সৰ ঘটনা চোৰে পড়ে, এবন সৰ ব্ৰৱ
কাৰে আলে বাতে ছিত্ৰ বাকা বাব বা। পুলিসের অভাবির
কক্ষম হিন্দু গৃহছেরা সর্কাল গরত। কবন কার বাকীর ভিতরে
হক্ষে পড়ে, বেবেবের অসনাধ করে, জিনিসপত্র ছবি করে—

লকলের এই ভয়। এয়াল নৈর শালনে অবস্থা আরও বারাণ হয়েছে। বলে হচ্ছে ট্রন্স বেল বর্গের হুলুক্ষে বাল করছি।

সনিব্যার কাহারি-বাকী বোরাকের আজ্ঞা হরেছে।

ঢাকা, বৈননসিং, বোরাবালি বেকে এলে এবানে আজ্ঞা গেকে
ভারা আশশাশের কারগাঞ্জনিতে আনাগোনা করছে।
পুলিসের কর্মচারীকের দেখানে বাভারাত করতে দেখা বার।
শোদা বাজ্ফে বৈননসিঙে মুসলমানকের নব্যে কোর বিস্থিবিষ
প্রচার করা হজ্ফে, সরকারী কর্মচারীরা র্যেছে এর শেহনে।

ভাই, এবন অবছার মব্যে রাজ্য কি করে প্রস্থ বাভাবিক কীবন বাপন কর্মীব ? আনাদের পাপের শান্তি ভালভাবেই আরম্ভ হবেছে। বনে হন্তে বেশে আশুন শীর্রই মলে উঠবে। নে আশুনে কড জন পুরু রয়বে, কড পরিবারের সর্ক্রাণ হলে বাবে ভাবতে জয় চর রনে।

লেখিন বলেখনামৰ সমিতির একজন ছেলের জাছে এজবানা কাগজ দেবলাম। নাস ছই আগের কাগজ। একটা
ভারগার চোব পড়ল। জ্যাক ( বাকে ঠাঠা করে 'জ্যাক দি
ভারেণ্ট-কিলার' বলা হব ), এমার্স ম, টমসম, কার্লাইল ও
বিজ্ঞলের উল্লেখ করে লিখেছে লোকের মনে গবর্ণমেণ্টের
বিক্রছে বিবেষ ও বৈরিভাব অর্গাহর তোলার জন্য এলের মত
ভারীকেউ লামী নর। গবর্ণনেন্ট বলি বাংলার বলেই আলোলন
ধ্বংল ক্ষরবার জন্য কশিরার গবর্গমেটের মত দমননীতি
চালামোই হির করে বাকে তা হলে ভালের এ সভাবনার
কথাও বনে রাখতে হবে বে, ক্লেশিরার ন্যমনীতির বিক্রছে
ক্রেশিরার প্রথারা বেনন প্রতিয়োধ-নীতি অবলবন ক্রেছিল
এলেশের লোকেরাও ভাই করতে বাব্য হবে।

ভাই দেবু, ভোষার ভ জনেক পড়াগুনা আছে। ক্রণিয়ার প্রজাবের এই প্রতিরোধ-নীভির বিভারিত ভব্য দিতে পার ? ববেশবাবব সমিভির অনেক হেলে আয়ার কাছে কামতে চেরেছে।

বেবু, ভিন বিন আগে চিটিটা এই পর্যন্ত লিবেছিলান, আরও ভিছু লিবৰ বলে তাকে কেলি নি। একটা লেববার বত ববর আছে। পরস্ত ব্লনা বেকে একজন আত্মীর আর্লবেন বলে জীনার-বাটে সিরেছিলান। দেবি বাটে পুলিসের বিশেষ সনারোভ। ভাবলান উচ্চপদ্ধ কোন সরকারী কর্মচারী আসবে বোব হব। তনি, তা নর, কলকাতা বেকে করেকজন বলেরাভরবওরালা আনবে বলে পুলিস ববর পেবেরে, তাই এই অত্যর্বনার আরোজন। বলেরাভরবওরালা কে এলেন আনিমে ভবে আনার আত্মীর আর তার নকে এলেন এক অভি নীর্বকার ব্যক্তি বেন একটি সচল পালভক্ন। বাজীরা বেমে একছে আর পুলিস বিজ্ঞানা করছে—কীত্রা লে আতা ? নেই সাহেব-বেনী পালব্রোংগু লোকটির বিক্তে ভাকিরে পুলিস্ বুলি পার্নেই বলকে—"আগ ?" বাজনাই গলার হঠাং প্রচণ্ড গর্জন শোনা

নেল, "রভী নোরাইন, গেট আউট !" চমড়ে উঠে পুলিস পথ হেডে সরে ইড়াল। আল্পাশের বানীরা পর্যন্ত সে গর্জনে ভতকে গেল।

ভাৰতি এ কাকে গদে নিবে এলেন আনার আলীবট ? একে নিবে আনাবের বাড়ীতে উঠবেন নাকি ?' পেছন বেকে সেই গলা খললে, এগিবে বাঙ না হে বাপু। ভাল বেবে গাড়ী ঠিক করে। আমার কত। বাকে বাঙ ক্লান গাড়ী করে। না।

শুনে আমার পিছ মলে গেল। আছা লোককে সকে এবেছেন কেবছি।

ভিন কন গাড়ী করে বাড়ীর বিকে রওনা হলাম। গাড়ীভে উঠে ভক্রলোক আনার বিকে চেরে হাসভে লাগলেন। বললেন, কি হে রালার, বাডচিং ভনে ভড়কে গেলে? রংটা ভেনন কর্মানর বটে, কিছ আনি এক কন পাড়া সাহেন, কন বুলস খন বালার।

এই খন বুলস ওন বালারট কে খান ? মুর্ভাখার লাগবেদ খিংনারারণ ওরকে ভিতৃদা। এর বিভারিত পরিচর পরে দেব। আপাভত: এইটুকু খানাছি বে এঁর প্রকাত পেলা একটা বিলেভী কোম্পানির ট্রাভেলিং এখেন্টসিরি, খার অপ্রকাত পেলা সিজেট প্রোপাসাভা ও অরস্যানাইছেশন। আনার খানীর এঁর সভ্য পরিচর খানেন।

ভিত্যাকে পেরে আমি অকুলে কুল পেলার। বংশ-বাছর সমিভিত্র ছেলেরা তাঁকে ছেঁকে বংলছে। পর্বের মিশামা পাবার ভঙ্গ তারা ব্যাকুল।"

বেবানন্দ বরিশালে কিরিয়া আসিয়া হোষ্টেলে বৌদ দুইয়া ভাষিল অভূল ভাহায় ঝাষে চলিয়া সিয়াছে, কবে আসিবে ঠিক নাই।

ক্ষকারেশের হত তলানিরার হল গঠন করা হইতেছিল।
পড়াঙলা হাড়িরা দেবানক ও বহেন্দ্র ভারাদের হলবল লইরা
এই কাল লইরা পড়িল। সন্থার দিকে দেবানক হংকেবান্তব সমিভির আজ্ঞার কাটাইড, অভূলের চিট্টিডে উরিবিভ
কিছুদার সম্ভে লে আরও অনেক নৃত্য তথ্য সংগ্রহ ক্রিল।
লে বুবিতে পারিল এই ভ্রালোক স্বেশ্বান্তব সমিভির

সভাবের প্রাণে একটা মৃতন প্রেরণা আনিয়া বিরাহেন।
কলিকাতা, করিদপুর, বহমনলিং, ঢাকা, ক্রিরা প্রভৃতি বিভিন্ন
অঞ্চন হইতে সৃতন সৃতন লোক আলা-বাওরা করিতে লাগিল।
সমিতির সভাবের সকে ভাবের আলাপ-পরিচর হইল। স্পঠ
করিয়া কিছু না মুখা গেলেও চারিদিকে বেন একটা প্রভৃতির
আরোক্য স্কুরু হইরাহে দেবাসন্সের এই রক্ষ বনে হইল।

পরীকা আসিভেছে, পড়ান্ডনা বিশেব হর নাই। বিশিপ্ত মনকে ওছাইরা দেবানক পড়িতে বসিবার চেঠা করে। সেদিনও সন্থার পরে সে বই বুলিরা বসিরাছিল এবন সমর মহেল্র আসিরা ভাহার বরে চুকিল। ভাহাবের বাড়ীভে ভাহার বরুরা বড় একটা আসে না। নহেলেকে এত রাজে হঠাং আসিভে দেবিরা সে বিভিত হইল। নহেলের বুবের দিক্ষে চাহিরা সে চেরার ছাড়িরা উটিরা দাঁড়াইল, ব্যভভাবে ভিতাসা করিস, কি হরেছে মহেল, ভোনার চেহারা এবন দেবাছে কেন ?

ৰতেজ বলিল, এই বাজ চিঠিতে খবর পেলাব দেবেন প্ৰিতম্পাট বাহা গেছেন।

দেবামন্দ শুনিয়া অভ্যন্ত বিমৰ্থ হইয়া পঢ়িল, বলিল, মাস ছই থেকে ভিনি সকলের সদে দেখাসাকাং বন্ধ করে-ছিলেন। অনেকে আশহা করেছিলেন এই রক্তর একটা ব্যাপার শেষ পর্যন্ত হতে পারে।

মহেল বলিল, আমি ওনেছিলাম ভিনি নানা ব্ৰক্ষ বিভীবিকা দেখতে আৱম্ভ ক্ষেছিলেন, তাঁৱ শৱীৰও একেবাৱে ভেলে গিছেছিল। মৃত্যুৱ আগেও নাকি ভিনি এই ব্ৰক্ষ বিভীবিকা দেখে অঞ্চান হয়ে বান।

উভরে অনেককণ চূপ করিষা বসিরা রহিল। অবশেষে দেবাদদ বসিল, দেব ভাই, আমার কেমন মনে হচ্ছে পভিত মুলারের মৃত্যু আসর কভের সংহত। আরও মনে হচ্ছে আমরা সম্পূর্ণ প্রস্তুত হবার আগে কড় উঠে বিপর্বায় বটাবে।

দিন্দ্ৰেক পৰে দেবানল সভীনের একট চিট্ট পাইল। দেবেন পণ্ডিত বণারের আক্ষিক বৃত্যুতে হংবপ্রকাশ করিয়া দেবানল বে আশ্চার কথা জানাইবাহিল নেও সেই আশ্চাই ব্যক্ত করিবাহে চিটিতে।



# পণ্ডিচারীতে শ্রীঅরবিন্দ

### এমতিলাল রায়

শ্রীক্ষরবিন্দের সহিত স্থামার ঘনিষ্ঠ পরিচরের কথা ব্যক্ত করিতে গিয়া প্রত্যক্ষ চাবে স্থামার ব্যক্তিগত স্থনেক কথাই স্থাসিয়া পড়ে। স্থামি এই দিক দিয়া স্পতিশয় সতর্কতার সহিত শ্রীক্ষরবিন্দ-প্রসঙ্গে ১৯২১ প্রীষ্টান্স পর্যন্ত বে কথা বলিতে চাহি, তাহা হয়ত স্থনোর স্থবিদিত। এই বিষয়ের সাক্ষ্য দিবার মান্ত্র এক কন স্থাছেন, তিনি শ্রীক্ষরবিন্দর স্থাশ্রের সম্পাদক শ্রীযুক্ত নলিনীকান্ত গুপু। শ্রীক্ষরবিন্দের স্থাস্থান্দ্র-সংক্ষর ও তাহার বাষ্ট্রীয় মতামত প্রমাণিত হইবে। ইহা স্থান্ধ বাঙালী প্রাতির ক্ষানিবার বিষয় বলিয়া স্থামার এই বিষয়ে লেখনী ধারণের স্থাগ্রহ।

শ্রীজরবিন্দ বিগায় লইলেন। চন্দননগরের সহিত তাঁহার সহদ্ধ অবিচ্ছির রহিল। স্থদানের কথামত তাঁহার নির্দিষ্ট ঠিকানায় পত্র দিলাম। পত্রোজ্বরে তিনি জানাইলেন তাঁর পণ্ডিচারী-জাগমন-সংবাদ তাৎকালীন সরকারের সংশয়-ভান্ধন শ্রীনিবাস আয়েজার, ভি. ভি. এস্ আয়ার ও তামিল কবি ভারতীর উদ্যোগে বিপুল জনতা তাঁহাকে অভ্যর্থনা জ্ঞাপন কহিতে আসায় ঘটনাটি সর্কাজনবিদিত হইয়া পড়ে। এই কারপেই তিনি যে বাসা-বাড়ীতে থাকিতেন সেই বাড়ীর সম্মূপে সর্কাদাই ইংরেজ পুলিদের ঘাঁটি বসান হইয়াছিল। তিনি এই পত্রে আরও জানাইয়াছিলেন শ্রীনিবাসের লাতা পার্থসারিধি শীঘ্রই কলিকাতায় বাইডেছেন। তাঁহার সহিত আমার সাক্ষাৎ করারও নির্দেশ পত্রে ছিল। পার্থসারধির ছন্মনামই তিনি পত্রবোগে জানাইয়াছিলেন। রাইঞ্জকরণে তিনি এই বিষয়ে অভিশয় সভর্ক ছিলেন।

এই সময়ে কলিকাভার বিশিষ্ট পুলিস কর্মচারী মিঃ ডেনকাম অমে মিঃ কাউলির গাড়ীতে একটি বোমা নিক্ষিপ্ত হর। এই সম্পর্কে বে ব্যক্তি ধৃত হন তাঁহার সন্দীরূপে ধৃত অন্ত তুই ব্যক্তি উভরেই চন্দননগরের নিকট প্রতিবেশী। আমার সহিত তাঁহাদের ঘনিষ্ঠ পরিচয় ছেতৃ এই সমর হইতেই পুলিসের অন্তচরকৃত্ম ছারার দ্রায় আমার অন্তসরণ করিত। কালে কাজেই ভাহাদের কাঁকি দিতে অনেক সময়ে আমার কলিকাভার পথে গা ঢাকা দিয়া চলিতে হইত। আমি এই ভাবেই পার্বসার্থির সহিত সাক্ষাৎ করি। ভিনি অনেক কথার পর খামী বিবেকানক্ষের কোন একখানি পুত্তকের নির্দিষ্ট পাভার

আংশবিশেব হইতে একটি কোড অর্থাৎ আক্ষরিক গুপুলিপি বচনা করিয়া আমার পোচর করেন, এবং বলেন এই কোডে শুসাবিদ্দ অতঃপর প্রয়োজনীয় পঞাদি লিখিবেন; আপনিও তাঁহাকে এই কোডেই পত্র দিবেন। বদি পুলিস আমাদের পত্র হপ্তপতও করে, তাহারা কিছুই ব্ঝিবে না। এইরপ নিরাপদ পত্রব্যবহার শুসাবিদের সহিত আমার অনেক দিন চলিয়াছিল।

ৈ চন্দ্ৰনগৰ কৰাসী ৰাজ্য হওয়ায় কৰাসী পোষ্ট আপিসেব ভিতর দিয়াই আমি পতাদি প্রেরণ করিতাম। পত শ্ৰীষরবিন্দের নামে বাইত না। এক মালালী ভল্তলোকের নাম দিয়া পত্ৰঞ্জলি প্ৰেৱিত হইত। তিনি আমায় কোভেই পত্র দিভেন। দেই গুপ্তাক্ষরে লিখিত পত্রাবলী ১৯১৬ প্রীষ্টাব্দে স্থার চার্লদ টেগার্ট আমার বাড়ী ধানাতরাসী করার সময়ে পোড়াইয়া ফেলিতে হয়। নতবা শ্রীষ্মরবিন্দের उनानीसन बाह्रेनिएमिंग किंद्रश हिन, छाहा श्रमांग पर चाक উপস্থিত করিতে পারিতাম। চল্লনগরের বিপ্রবম্পলী শ্রীমরবিন্দের নির্দেশ বাতীত এক পা অগ্রসর হয় নাই। সে যুগে শ্রীম্ববিন্দ পণ্ডিতচেরীতে থাকিয়া চন্দরনগরের यशा विशा व बाहेनिएक मिर्छन, छाहाई वांश्वाद विश्ववी-ল পালন কৰিত। পৰে তিনি ইচা চইতে বিৱত চইয়া-ছিলেন, किन्छ ১৯১৪ औड़ात्यत कून मान भगान छाँहातहे নির্দেশে বাংলার বিপ্লবিগণ পরিচালিত হইত। তাঁর वह देवश्रविक निर्द्भालय मानल हिन बाह्रीय कर्पनाधनाव मरक व्यथावामध्याद व्यष्टरश्चर्या । वी व्यविक हक्त्रमध्य হইতে প্রসানকালে শিরিসচল্ল ঘোষের নিকট এক বাজির নাম দয়ছিলেন। আমি তাঁহার সহিত সংযোগসূত্র স্থাপন করি। তিনি পরলোক্গত স্থবেশচন্দ্র দম্ভ। মাণিকতলা সম্পর্কিত বোমা নির্মাণের গুরুত্রণে হেমচন্দ্র লাসের (काञ्चन(भा) नामहे अमिषिनाङ कविशाह । मानिकजनाव र्वामाद मामनाद भव अक्माब और स्टूर्वनहत्त नस्ट वारनाव বোমা निर्मात्व कर्ष चाचनित्रांश कविशक्तिन। এই সমরে ডিনি এম্-এস্সি ক্লাসের ছাত্র ছিলেন। ভার পর जिनि विभन करणायव अक्षांभक रन । जैशिवरे नाशात्य চন্দ্ৰনগৰে এম-এগদি ক্লাপের ছাত্র শ্রীমণীজনাথ নায়েক वामा श्रष्टित कौमन मिक्ना करत्रन. धवर छाहात्रहे ভভাবধানে চন্দননগরে বোষা প্রস্তুতির শুপ্ত কার্থানা স্থাপিত হয়।

ক্রেশচন্দ্র গভের নাম ঐত্যাবিদ্যের মূথেই আমরা প্রথম শুনিরাছিলাম, পরে বোমা নির্দাণের ব্যাপার লইয়াই উাহার সহিত্ত চন্দ্রনলগরের সংবোগ স্থাপিত হয়। স্থারেশচন্দ্রের শিক্ষাকৌশলে ও মণীন্দ্রনাথের প্রতিভার চন্দ্রনলগরের বোমা শক্তি ও বৈশিষ্ট্যে ভারতের বিপ্লব-কেন্দ্রে ঐতিহাসিক বিশেষত অর্জন কবিয়াছিল।

১৯১১ এটান প্রায় শেষ হট্যা আসিল। এঅরবিন্দ প্ৰিচাৰীতে বসিয়া বাংলার বিপ্ৰবীদের বধারীতি নিৰ্দেশ मिटक मानिस्मन। ১৯১১ औद्दोर्स चरकेविद मारमद स्मर्थ আমি তই জন করাসী রাজপ্রতিনিধির সহিত পণ্ডিচারীতে পিয়া উপস্থিত হইলাম। এই সময়ে শ্রীঅর্বিন্দের আগমনে শ্ৰীনিবাস আমেলার প্রমুখ বিপ্লবী নেতবুলের কর শহরে है : दिक श्रीहरमद वित्यव केंश्यव स्वर्ध विद्यक्ति। वित्यवकः वाडानी तिशिताहे अहे नकन श्रुश्च श्रीनित्र छाहाति हरक চক্ষে রাখিত। আমি ফরাসী রাজপ্রতিনিধিগণের সহিত ক্রদের্থ। বান্ধারের সন্নিকটে রান্ধাপুলের প্রসিদ্ধ ভবনে व्यवचान कविश्राक्रिनाम। এक हिन व्यवदाइ निकर्षेवर्खी পণ্ডিচারীর প্রসিদ্ধ ওদঞ্জল মাঠে বে ফুটবল খেলা হইত. তাহা দেখিতে বাহির হই। এই সময়ে এ। গুক্ত নলিনী, হুৱেশচন্দ্ৰ ওৱফে মণি ফুটবল খেলায় ৰোগ দিতে আসিতেন। শ্রীমরবিন্দের স্থানক সৌরীম্রনাথ বস্থও এই মাঠে পদচারণা করিতেন। এইথানেই স্থকৌশলে তাঁহার সহিত সাক্ষাৎকার হইল। আমার পণ্ডিচারী আগমনের कथा शुर्व्वह अव्यवादा अव्यविमादक जानाहेशाहिनाम। দৌ বীজ আমাকে দেখিয়াই সঙ্গেতে আমার মাঠ হইতে দুৱে যাইতে আহ্বান করিলেন। কোম্পানী বাগানের এক পথে ছই জনে মিলিভ হইলাম। আমরা এক খোলার বাড়ীতে পিয়া উঠিলাম। বোসেফ ডেভিড নামে এক মান্ত্ৰাকী ভাত্তের সহিত আমার এই বাডীতে পরিচর হইল। ইনি পরে পণ্ডিচারীর খাতিনামা ব্যারিষ্টার ও মেয়র হইয়াছিলেন। জাঁহার সহিত আমার পরিচয় করাইয়া সৌধাল প্রস্থান করিলেন।

পরদিন সন্ধার আমি বোসেক ডেভিডের সহিত সাকাৎ করিলাম। তিনি একথানি পূশ্ পূশ্ ভাড়া করিরা আমার শ্রীন্দরবিন্দের নিকট লইরা চলিলেন। তিনি আমাকে এক জন রমণীর মত সর্কাকে মালাজী চাদরে মৃভিয়া পূশ্পুশে চড়াইরাছিলেন। বোসেক ডেভিড এক জন নারীকে লইরা শ্রীন্দরবিন্দের বাড়ীতে প্রবেশ করিভেছেন, এই হেতু পূলিস প্রহ্বীদের এ বিবরে কোনই মনোবোগ আফুই হইল না। আমি দেখিলায—বাড়ীর অপর ধারে এক চল গোলেনা প্রলিস চলা করিভেছেন আমার একপ্রকার নারীবেশ হওয়ার তাহারা কিছুই মনে করিল না। আমরা তুই জনে এই বিশাল ভবনে প্রবেশ করিলাম। নিম্নতলেই নলিনীকাভের সহিত আমার সাক্ষাংকার হইল। ভাঁহার অপার্বিব সোহার্দ্য দেদিনও অসুত্র করিয়াছি। তিনি বলিলেন, মণি অর্বাৎ স্থরেশ-চন্দ্র আজ আমাদের সৈরিক্ষী।

আহার্যের কথা জিজাসা করিলাম, উত্তরে শুনিলাম, থেচরার হইতেছে। অন্ধকারের মধ্যে একটি কেরাসিন তেলের ডিবার মিটি মিটি আলো জলিতেছে। স্থরেশচন্দ্র হাসিয়া বলিলেন, "রন্ধনের বালাই বিশেষ কিছু নাই। আমরা রাজে পেচরারেই উদরপূর্ত্তি করি।" ইহাদের ত্রবন্থার কথা ভাবিতে ভাবিতে আমি দিতলে গিয়া উঠিয়া হলদরের সমুপেই শ্রীমরবিন্দকে দেখিলাম। বহু দিন পরে আবার উহার ক্রন্থার ক্রায়ের স্পর্শ পাইলাম।

সম্মেতে জিজাদা করিদেন, "কেমন আছ ? চলিভেছে ?" ইতিপর্বে তিনি বৌপিক সাধনের কয়েক থণ্ড টাইপ করা বাগঞ্জ চলাননগরে আমায় পাঠাইয়াছিলেন—ভাহার প্রথমেই লেখা ছিল— "you need not make ashan" ৷ কথাগুলি আমার পক্ষে विरमय वाधात रुष्टि करिए । आमात नाधन किन ८० हो-প্রস্ত। তাহা হইতে বিরত থাকার আদেশ তিনি এই কয়েক খণ্ড কাগজে দিয়াছিলেন। আরও ভাঁচার কথা ছিল. "মজিতঃ সর্বাহুর্গানি মংপ্রসাদাৎ তরিয়াস।" এই মন্ত্র আমাকে অনেক কর্মে ভরুগা দিও। ভিনি আরও লিখিয়াছিলেন, "ন মে ভক্তঃ প্রণশ্রতি"। ভাঁহার এই কথায় আমার মৃত্যুভয়ও দূর হইয়াছিল। কোন কর্ম্বই व्यक्तिक माधिक ना हम, जाशाय अन्न निरम्बर मर्खनाहे শ্বির রাখিতাম। সাধনার কথা বলিতে বলিতে তু**ই জ**নে হলঘরের এক পার্শ্বে কয়েকথানি ভাঙা চেয়ার ও একধানি প্রাতন টেবিলের সম্বাধে আসিয়া উপস্থিত হইলাম। তিনি টেবিলের এক পালে উপবেশন করিলেন। **আ**য়াকেও তিনি" বসিতে বলিলেন। দেখিলাম টেবিলের উপর करबक्रों प्रदेव ভाका পড़िया चारक। चनवारक हैकाई চৰ্ব্বণ কৰিয়া তিনি চা পান সমাপ্ত কৰেন। ভাছাৰ দিকে আরও কিছুকণ চাহিয়া মনে হ**ইল--বে**ন ভিনি অনেক শীৰ্ণিয় হইয়া পিয়াছেন। চন্দ্ৰনপ্ৰে ভাছাৱ বে শ্ৰী দেখিয়াছিলাম, এখানে বেন সে কান্তি বহু পরিমানে मान रहेबाट । किन छाराव ठाक्य मीखि मान रहेन আরও বর্দ্ধিত হইরাছে। তিনি আমার অভক্তন ভের কৰিয়া বেন প্ৰসাৰিত দৃষ্টিতে সাধনার অবস্থার কথা জানিয়া লইলেন। তাব পর বাংলার বৈপ্লবিক কর্ম্মের সকল বিষয়ত অবগত হইলেন। বিলারকালে তিনি বলিলেন, "প্রতিধিন এখানে আসা ভোষার পক্ষে সক্ষত নহে। ডোমাকে বাংলার কিরিয়া অনেক কাক্ষ সমাপ্ত করিতে হইবে। সপ্তাহে তুই দিন মাত্র আমার সহিত সাক্ষাৎ করিও। আক্ষ মকলবার, আসামী শুক্রবারে আবার আসিও, অনেক কথা হইবে।"

আমি ভাঁহার তৎকালীন অবস্থার কথা ভাবিতে ভাবিতে নিম্নতলে আদিয়া উপন্থিত চইলাম। আমার সত্তে সভে উপরের সিভির নিকট আসিয়া **षागारक विशाय मिरनन। षायि नौरह नायिवायां बह्नरहत्र** হাক্তরবে সব যেন মুখরিত হইল। স্থারেশের খেচরার রন্ধন শেষ চইয়াছে। সে হাড়ীর কানা ধবিয়া উপরে লইয়া গেল। লৌরী<del>স্ত্র</del> বলিলেন, "নারীর বেশে আপনি যে পরিমাণে निवाशास এই वाफीएक क्षार्यम कविशाहन, এই व्यवकार ভাহা বদি পুলিদের দ্বষ্টিগোচর হয়. ভবে ভাহারা আপনার অমুসরণ করিবে এবং আপনাকে পণ্ডিচারীতে থাকিয়া ৰাইতে হইবে। তিনি আপনাকে গোপন পথেই প্ৰস্থান করিতে বলিয়াছেন " নলিনী ও সৌরীক্ত আমাকে গোপন भथ त्मथाहेबा मिरना । हेहा अकृष्टि शाम भथ । **अहे मिक्**डी খন্য লোকের বাড়ীর প্রাচীরে কন্ধ হইয়াছে। সেই গ্রহের चावकनावानि এইখানেই নিশিগু হয়। সেই পথ प्रिया কিছু দূব অগ্রসর হইলে সোজা পথে উঠা যায়। সৌরীনের কথামত আমি এই গোপন পথ দিয়া বাহির হইলাম এবং নিরাপদে রাজাপুলের বাজীতে আসিরা উপস্থিত হইলাম।

আসিবার সমরে সৌরীক্ত বলিয়া দিয়াছিলেন—মধ্যাহে ওলঞ্চলের নিকট কোম্পানীর বাগানে সাক্ষাৎ করিবার অন্য। আমি বধাসময়ে বাহির হইলাম। কোম্পানীর বাগানে গিয়া সৌরীক্তের মূখে. ভাহাদের হুরবস্থার কথা বিশেষভাবে অবগত হইলাম। সৌরীক্ত বলিলেন, "মাজাজের ধনী, বিশিষ্ট ব্যবসারী কোন এক ভজলোকের সাহাব্য এক বংসরের জন্য এই কয়েকটি প্রাণ রক্ষা পাইয়াছে, ভাহার পর বথেই ভাগিদ দেওয়া সত্ত্বেও ভাহার সাহাব্যে আর তেমন ভাবে মিলে নাই। বংসামান্য বাহা কিছু ভিনি পাঠাইয়া দিয়াছেন, ভাহাতে আমরা একবেলা কোন প্রকারে টিকিরা থাকিছে পারি। এই বিবরে আপনি কিকরিতে পারেন আমাদের জানাইয়া বাইবেন।"

আমি সেই মুহুর্জ হইডেই জীঅরবিন্দ এবং গুঁহার সন্দিগণের জীবনোপার নির্দারণের চিন্ধার প্রবৃত্ত হইলাম। সৌরীক্সকে বলিলাম, "চন্দননগরে গিরাই আমি কিছু ব্যবস্থা করিছে পারিব। এই বিবরে আমগ্র এডিনিন নীরব ছিলাম। ইহাই আমানের লক্ষার বিবয়। বাংলার কর্ণবার

क्षेत्रदिन विकास जातिया क्रियार जात्कत. हेवार थवर चामबा दाथि नाहे। हेहाहे चामारमंद हुई।शा।" अमिरक প্রতি মদলবার ও শুক্রবার সেই গোপন পথেই আমি গ্ৰীৰববিন্দের সহিত সাকাৎ করিতে বাইডায়। বিপ্লবাছক क्यं श्राहरीय कथा करे-ठावि शितारे त्यव रहेन । फाद शब वधायनाधनात कथारे मधादर करे मिन खारात मृद्ध অনুসূত্র বাহির চইল। আমি কান পাতিয়া জাঁহার কথাওলি क्रमस्य ध्रञ्ज कविनाम । क्रीरवात्र, वाकरवात्र, एष, नक्षिया-সকল সাধনার উপরে তাঁছার মধে গীতার "ৰাজসমর্পণ-বোগ" মত্ত্ৰে আমার চিত্ত আলোকিত হইল। "You need not do Asan and Pranayam - 51515 4415 আসন, প্রাণায়াম দুর হইয়াছে। তার দেওয়া ত্রিমন্ত ব্দেপর সহিত "ব্যা ক্রবীকেশ: ক্রদিস্থিতেন বধা নিব্রক্তোহস্মি তথা করোমি"-এই স্নোকটিও আমার অপের বিষয়ীভত हरेशांकित। "कवीरकन" विलाख खर्चन निष्ठा ख्रीसरविना বাডীত আমি আর কাহাকেও মনে করিতে পরিতাম না। ধাইতাম, শুইতাম তাঁচাকেই শাবন কবিয়া। অতি সভটময় কর্মে আগুয়ান হইতাম এই প্রতাক স্বধীকেশেরই আরেশে। রোপ হইলে এই জ্বীকেশকেই অন্তুসরণ করিতাম। বিদার-কালে আমার কথা ডিনি মর্শ্ব দিয়াই অমুভব করিলেন। তার পরে এক তাভা কাগৰ বাহির করিয়া আমার হাতে विशा वनितन, "ভোমার সাধনার নির্দেশ ইহা হইতে আরও বিশদরূপে পাইবে। পূর্বেবে বে সাধনার কথা টাইপ করিয়া ভোমায় পাঠাইয়াছিলাম, ভাচা আমার নিজের नरह। जामि धानिरवात्त्र वाका वामरमाहन वारवव वाने বেমনভাবে পাইয়াছিলাম, তদমুদ্ধপ উহা লিপিব্রু হইয়াছে। ভাহার পর এই লেখাগুলি আমার নিজেরই উপলব্ধির কথা। তুমি ইহার বারা বথেষ্ট উপকৃত হইবে।"

আমি বাসায় আসিয়া দেখিলাম, তাঁহার টাইণ করা কাগজভালির মাথায় "Yoga and its object"—এই দিবোনামা লিখিত। এই গ্রন্থই "লীলা" নামে গ্রন্থানারে আমি বাংলার তাঁহার প্রথম অছবাদ প্রকাশ করিয়াছি। তাঁহার প্রথম পুত্তকথানিও বৌগিক সাধন নামে বাংলার মুক্তিত হইয়াছে।

আমি অনেক রাষ্ট্রনীতিক নিক্ষেপ এবং সাধন-রহজ্যের কথা বুকে লইরা বাড়ী ফিরিলাম। কিছুদিন পরেই ডিনি পত্রবাগে জানাইলেন—"Situation just now is that we have Re. ½ or so in hand." অর্থাৎ, অবস্থা এক্ষণে এমন হইরাছে বে আমালের হাতে মাত্র আটি জানা পর্যা আছে।

আমি আদিবাৰ সময়ে করেকটি টাকা সৌরীজের

হাতে দিয়া আসিয়াছিলাম। সম্ভবতঃ সেই টাকায় কয়েক
দিন চলার পর প্রীঅরবিন্দ এমনই ভাবে অভাব-রাক্ষনীর
তাড়নায় ঘোরতর বিপর হইয়াছেন। তাঁহার পত্র পাইয়া
আমার চক্ষে জল আসিল। এই সময়ে আমার হাতে
কিছু টাকা চেয়াবের কারবার হিসাবে ছিল। তাহা হইতে
পঞ্চাল টাকা লইয়া তাঁহাকে পাঠাইয়া দিলাম।

কিছুদিন পরে তাঁহার আর এক পত্র পাইরা অভিশয় ব্যস্ত হইরা পড়িলাম। তিনি পুনরায় জ্ঞানাইলেন—"I must ask you to procure for me by Will Power or any other power in heaven or in earth"। অর্থাৎ, আমি ভোষার কাছে চাহিভেছি বেমন করিয়া পার আমার জন্ম অর্থ সংগ্রহ কর। তোমার ইচ্ছাশক্তির প্রভাবেই হউক অর্থবা স্বর্গের বা মর্জ্যের যে শক্তির সাহাব্যেই পার, অর্থ আমার জ্ঞান্ত প্রেরণ কর।"

আমি বিহ্বলচিত হইলাম। শ্রীম্ববিন্দের সহিত ুপুন: সাক্ষাৎকার নিফ্ল হয় নাই। আমি বে তাঁহার কড আপনার ইহা জানিয়াছিলেন বলিয়াই এইরূপ দাবি তিনি আমার উপর করিতে পারিয়াছিলেন। সাধনার ইতিহাসে এই তত্বের মূল্য শুধু আমার কাছে অনেকথানি নহে, প্রবর্ত্তক সজ্জের স্টি-প্রেরণার মূলে এই দাবির তাৎপর্য্য কতথানি শক্তি সঞ্চার করিয়াছে, তাহা অন্থ্যাবন করিয়া আমি কৃতজ্ঞতায় ও আনন্দে বিহরল হই।

অত:পর চন্দননগর হইতে বধারীতি তাঁহার জীবনবাপনের স্বাবহা করিতে সমর্থ হইয়ছিলাম, ভজ্জন্য
নিজেকে আমি ধন্য মনে করি। পরবর্তী সংখ্যায়
শ্রীমরবিন্দের পরিচয় তাঁহার প্রাদির মারফতই কিছু কিছু
ভূনাইবার প্রয়াস পাইব। ইহা ভারতাত্মার বাণী। ভারতসংস্কৃতির অসাধারণ ঐতিহের এই অধ্যায়টুকু না জানিলে
বেমন শ্রীমরবিন্দের প্রাময় মহাজীবনের একটি অংশ
অক্সাত রহিয়া বাইবে, তেমনি ভারতের জাতীয় সাধনায়
তাঁর স্বগভীর অবদানেরও অনেকথানি মর্ম-পরিচয়
অপ্রকাশিত পাহিবে।

### খুন

#### কৃষণ দাস

#### অমুবাদক—শ্ৰীঅমলকান্তি ঘোষ

টবের পর্বা আঁটা লোহার পেটটার ওপালে ক্রমণ: ভিচ্চ বাচ্ছে। মাহুষ ক্ষতে কাতারে কাতারে। দূর থেকে দেখা বাচ্ছে ভব এক দদল কালো মাধার অরণ্য।

মাৰথানে গেট, ছ'পাখে লখা উঁচু পাঁচিল। বেম কোম মক্ষলের কেলথানা। উঁকি নিরেও বেথবার জো মেই এবিকে কি আছে না আছে, কিই-বা হচ্ছে না হচ্ছে। মধ্যের উঠানের এক পাশে সথের টবের কুলগাহগুলোর আভালে কি একটা চট-ঢাকা পভে আছে।

ভর-ছপুরে কাল্য ভরদর গর্জনে চার পাল শিউরে উঠে-ছিল। কিছুক্দ বাদে আর কোন আওরাক্ষ না পেরে বেন কিসের বোঁকে কালো নাধার ভিচ্চ ভগন সবে একে একে এগিরে আসহিল। অতুত এক আদিন অতুভূতির আকর্ষণে গেটের সামনে ওরা থমকে ইংচাতে লাগল। চোধ টান করে নাধা ভূলে.এ ওর বাড়ে প্রার লাকিরে পড়ে কি বুঁকহিল নাক টেনে টেনে। ছাভগুলো সব অতুভ লহা—কেমন বাটর দিকে বুলে সচীন হয়েছিল।

তংকণাৎ সারা বাড়ীর সমত দরকা-কানালা বত করে দিতে বললে বীরেশ। নিজে অনেক সামলে আলিগড়ের ভালা হাতে এসিতে পেল গেটের কাতে। ভালার চাবি লাগিরে পেছনের পাঁচিলের চোরা-দরজা দিরে বর্ধন পিঠ কুঁজো করে বলে বেক্লভে গেল—-অমনই সারা শরীর জজানা আপভার ধর ধর করে কেঁপে উঠল।

দীস্থ চাকরট। কালুকে আগেভাগেই পার করে নিধে বাঁজিবেহিল শক্ত শিক্তন হাতে বরে। কালুও বেন কেন্দ্র হরে গিবেহিল, প্রভুকে দেবে ভার আনন্দ প্রকাশের ভাকতলোও আর গলা দিবে বেকুল মা। বিবংগ্রহাণ লক্ত্রকে লোভাভূর বিভটাও বেন পেটের মধ্যে চুকে গেছে; চোকত্রভার আকর্ষ্য মীরবভার হারা।

দীস্বদলে—দাদাবাবু, পাশের গলিতে ট্যান্তি ভেকে রেথেতে ক্যান্ত বি, সরে পত্তেম স্থিপনির।

- पृरं कावाब वनि ।- नना किंत वैदेन वीरतन्त ।
- —দেবে আনি, মেজ বা দরজাগুলো ভাল করে এঁটেছেন কি না।—বিভীর কথার আগেই জ্যানুক্ত ভীরের বন্ধ চুটল দীয়। পেছনের দরজার বাকা দিয়ে অহুবান করলে তেভর বেকে বিল ভাল রক্ষেই জাঁটা আছে। ঐবাদেই ইাড়িরে ডেকে বললে—নেজ মা, বাবুকে কোন করেই আগহি, দরজা বেন ভারত কথার বুলো না।—বলেই বীকু পগারপার।

ভেডর থেকেও তেবনই সাড়া এল বা। তার কথা কারও কানে পেল কিনা তাও বুববার কো বইল বা।

বাবের বরে কণিকা শিউরে শিউরে উঠিছিল। বেরাল ঠেন দিয়ে নিজের কেহের ভারনাম্য বজার রাগতে চাইছিল। উপরে নীচে, চার পাশে নিশ্ছিত্র পাকা ই টের বজ্বমুভ আশ্রর অবলব্যেও বেন ভার বভি ছিল না। তীভিপ্রত ছ্লিডার লে নারা হয়ে বাহিল। একি সর্বানাশ, কার্টা কি করে বসল।

क्षिका कावरक शास्त्र मा-अवमध बहारक शास्त्र कुकरत । হোক বিলেডী কুকুর, ডাক্ৰি ডাক, চোর-ডাকাত ভাঙা কর वस हैत्या। विम-प्रशंद कि जारवासिक कांस्त्र । कृतिकांत ह्यात्वत देशदा वहेमाहै। अवस्थ कामहा -हिरास वरम দে আর বীরেশ বাছিল। বেদি-ঠাকুরপোতে আলোচনা হুছিল কাল রাজের সিনেমার বাওয়া নিরে। অকুমাং সেই বল্ল-পৰ্কন আৰু সদে সদে অহতে দী আৰ্থনাৰ উঠতে না केंद्रे वंशिव-पद्धव किविन-क्षित्रकाल त्यम हत्रक माकित्य फेर्रम । अं हो शास्त्रहे हु एक त्यत्वत त्यहत्य त्यहत्य वाहेरत व्यक्ति व्यवत्म-कांव क्रिकात व्यक्ति चाना अकता विक्र वृत, भीव एएटब नक नना, इ'गाँछ दे। जाना ना ना निव हारण त्मच भर्वाच कारहे वरण श्रंदा। बुर्का स्थाना मिव (रक्टमा हाटचर कांटक माना माना अक मना कांच--वारत्त्रद টকৰোটা পাৰে গঢ়াছে। প্ৰচণ্ড আক্ষিকভার আবাতে কৰিকার বৰ বৰ হবে আস্তিল। প্রার-চেত্রাল্প্ত হততব বীরেশত বেদ পাধর হয়ে গিরেছিল।

সহসা সে বাকা দিলে বীরেশকে, বললে—দেশহ কি ঠাডুরশো, হাড়াও।

ভক্তকণে দীকু চাকরটা এলে পড়েছে চুটতে চুটতে।
আরা হাঁকাছে। ছেলেয়েরেরা ভাগ্যিন কেউ বরে নেই—স্বাই
ছলে গেছে।

এবনও রক্তে বাক্ত বেন বাকা লাগছে। ভাতগুলোর সেই চেছারা। কেবল কোনপ্রকারে ছাত বিরে বরেছিল ভিবারী বুড়ী। ভোগে এল না, সলে লক্টে—।

পাশে কি একটা গা ছুঁৰে বেতেই ক্ৰিকাৰ বেন চকিতে ল্যীবেছ লোলা বেনে গেল। ও বেন গিলেও গেল না। গাৰে গারে লেগে বইল। নিন্দ্রিক ক্পাট-আঁটা অভকারে কিছুই ঠাত্ব হুছিল না, কিংবা হয়ত নানসিক উত্তেশনার চোবের ক্ষেবৰ ক্ষতা এসে পভেছিল; ভার পাশ দুরে বে বেববে সেমনেই হ'ল না। ভাই কিছুক্ব নিশাল অবের মত কাটাতে লাগল। ভারপর ক্বন নে তথু অহ্যান ক্রলে—এ ভোৱা বাছবের। কিছু কি ভীবৰ ঠাতা।

—দিবি নাকি ? বীহেলের বুবা বোল ছাড়া এবন ঠাড়া ছক্ত এ বাড়ীয় আয় ডায় হবে। ডিড কোন উভর এল না। আয়ুঙ্গ বেঁথে এল বেব নেই শীভাডুর পর্যা।

- —আরা বাকি ?—আবার অক্ট কর্চে প্রর করনে কবিকা।
- —আয়া ৰেই।—গলা কাশল বুক্ করে, -বেন আরও কি বলতে চাইছে কিছ গলা হিছে বেক্লছে না।

বাইরের কালো বাধার ঐ অরণ্য এবন চূর থেকে বেবাচ্ছে আরও ভয়কর। একটা অরিকাণ্ডের পরে আব-পোড়া অকারের তুপ বেম কুড়ে পড়ে রয়েছে পথের ঐবানটার।

বিদিক্তে পাশে পেরে সাহস আস হ ক্পিকার বড়ে। আগাগোড়া বটনার হবিটা আবার বনের পর্বার প্রতিবিদিত হছে। কেনে উঠাহে স্বতিতে :

কত করে গেটে রোজ তালা দিতে বলে আসছে: সে কি चांच (परक. काहरक चांना चर्चव वनरच-जांच ठांक्शरणा. ও কুকুইকে বিখাস নেই, ওর বা আওয়াত, ওর হড়ারে ভোষার বাদারই ভর করে। কি ভানি কৰে কাকে কাৰতে বসবে, হালামার পড়তে হবে। ভার চেরে পেটে ভালা লাগাও--অপরিচিত কেট আসতে চায়, অপেভা कद्रार । मीच जाना चूंल मिल जर मा हर जानर । একটবানি অপেকা করলে সে ভোষার कांत्र कांत्रकारन (कन-कांक्कक क कर: शारद। (करन ভোষাকেই ভ নৱ-ভোষার দাদাকেও মিৰে চাল না পড়ে ভ কি বলেছি।—সেই ভালা শেষ পৰ্যাত্ম লাগালেই এক দিন चार्त नागाल कि अवन क्छि छ'ड । दाक्र के दर्बाह ঠাকুরপো, ভিৰিত্ৰী ৰূড়ী গেটটার কাছে অবুৰবু হয়ে বসে থাকে — ওর কি ভেষন নভার সাধ্য আছে। না হর বৃতীকে ভাভা, करव क मिकिस्ति । १६ कथा बनातार क्रीकृतरभात स्थमि मना-वाकि-वाक मा वरत रवेकि. रखामात चक माबावाबा किरनत । रु'न च अपन ।

ঠাকুরপোর কি কিছু কম শরতানি, অভরে অলে উঠল কণিকা। কতকাল লক্ষ্য করেছে—কার্কে বাবার বিলেই বুটী মাটতে ভবে কি করুণ দৃটিতে আকার। তলার ওই কাঁকটুকু দিরেই যা একটু-আবটু দেবা বার কার্ বাচ্ছে! ওকি এমনি আকার, আকার ওর পেটের আলার। পেটের বে কি আলা নে ত দানা-বৌদির বোলতে ঠাকুরপো বুবলে না।

- ७ वर्षे तर्थे नक्ट वन-नीव तन कावाद ?
- —আর আলিও না বিদি, ভূনি বেন কিছু কান না—বীহ গেল কোণায় ?—বিহুত কঠে কণিকা বেন নিজের অভিছ অন্তব্য করতে চাইল।
- —ৰিছে রাগ করিল, আৰি কেবল করে জানব, বিজেল করলেও অলবি—আলাভন।

ৰগড়া কৰতে চাৰ নাকি বীৰেশের বিধৰা হলা বোন। কৰিকা সামলে নের। চার পালে যেন অহুড বিশহ ভার বিরে আসকে। সা হলে আক্রিডাও সামান্য কৰার এবনি ভাকে টে। অন্তরে অন্তরে শুল হরে বার সে—ভার অভগুলো ছেলেবেরে, গুই অবল বানী, গুলের ভবিবাং।

নিজের বনের অছবান বাচাই করে নিজে বুড়া আবার লে ওঠে—কেবন বেন আওয়াজ পান্ত্রিন না···এই ওই বেন ক ঠেলতে।

—বেহাই নাও বিদি, ঠেলে ও গেট ভাঙৰে কে ভান।

চৰিকাৰ চোধের সামনে বাবা ভূলেছে এক প্রচও বাবা—

সোহার গেট, বাবার ওপরে দেড় হাত উঁচু পাঁচিল, ভাঙা কাঁচ

বার হচালো লোহার পেরেক পোঁতা। তা হাড়া ওরা কি

চামতে পেরেছে, বুড়ী ভিগারিণীকে বেরে কেলেছে কারু।

কেবন করে ভানবে। দেখতে পাবে কি করে। এক গাছে

টঠে। কিছ কুলের উবের আভালে বুড়ীকে এবন করে ঢাকা

দরেছে দীছ়। এক কোঁটা রক্তের চিহ্ন পর্যন্ত নেই। বুলে
ভো চামভার তলার ঐ মরা হাড়ে রক্ত আসবেই বা কোখেকে।

যমে মনে অনেক বুক্তির অবভারণা করে ক্রিকা।

গেটের ওপাশে ভবভা কেটে বেভে চাইছে বেন।

থদিকে দীস্ চুটে চলেছে। সে কোন করার কথা ভূলে দিরেই চুটছে। ভার আগে-পাছে কারা বেন আগছে। ভীবণ বড়-বঞ্চার পূর্ব্ব-মৃত্ত্তির মন্ত থলের চেছারার বেন প্রলৱের আজাল বরবার ভারতে।

বীবেশের চেয়ারে গিরে বশাস করে দীছ বেবের ওপরে বলে শহল। গা দিরে ভার কালবান ছুটছে। চুলগুলো বাহা হরে উঠেছে। চোব বেন বেরিরে আসছে, হাড় কাঁপছে ঠড় ঠক করে।

—কি বে, ভোৱ এবন চেহারা কেন ?

উভর দিভে পারে না দীছ। পলা শুক্তির কাঠ হরে বাহে।

বিরক্ত হর বীরেশ। বেরুবার মুখে বেন এক আপদ এসে দুটল। সে চীংকার করে উঠল—কি হরেছে বলতে পারছিল না হততাগা।

ক্ষিত কঠে এবারে বলতে লাগল দীছ—আজে—কেই দ্বিত্বী বৃতী—কেষৰ করে গেট দিয়ে চুকে—

ৰীবেশ হুড়ার দিরে বললে—চরি করেছে छ।

- —আজে না···। আজে, কানুর বাবারে হাত দিবেছিল···। কান্ত কানকে দিবেছে।
  - -- (44 TIELE )
  - —चाट्य--वृष्टी बद्ध (श्रंद्ध--नदम नदम ।

অবৈৰ্ব্য হয়ে ৰীৱেশ চীংকার ছাড়ল—বুড়ী মরেছে—ভা কাছছিল কেন গ

—বাৰু।—কথা বলতে প্ৰাণপণ চেটা করতে লাগল দীছ। কেবন করে বলবে সে—দাদাবার তিবিরিণ বুড়ীকে প্লিনে দিতে চেরেছে—ও ভাকে পারে পড়ে নিরভ করেছে। কেবন করে প্রকাশ করবে—কেন ঐ বুড়ীবা ভার শহরের সকল বাড়ী হেড়ে দীছ চাকরের মনিবের বাড়ীর গেটে পড়ে থাকে। বারু মোটরে হর্ণ দিলেও কেন সরে না। তিথারিণ কেবল ভাকার ক্যাল ক্যাল করে—কেন দাদাবাবুরের কাছে হাড পেতে ও পরসা চার না। কেউ ভাবে না; সেই আকাল থেকে সেকালা, সে বোবা—একমান্ত লীছ ছাড়া। ভার চোথ কেটে চৌচির হতে চাইছে, এখনই বুবি কিন্কি বিবে বক্ত ছুটবে ভীরের মত।

ৰীরেশ উন্নাদের মত কি খেন বলতে বাচ্ছিল—হঠাৎ দীসুর উপর চোধ পড়ভেই থমকে গেল। ওর চোধে খেন তিংপ্রভা ভলতে।

আত্মরকার করে নিকেকে মুমুর্ছে প্রকৃত করে নিকে
বীরেশ। হয়ত এর কোন প্রয়োজনই ছিল না—ছ্তিক্লের বছরে
বুঠো বুঠো তাত বিবে কিনে নেওয়া চাকর বৈ ত নয়।
তবু বিধাস নেই—ছ' বেলা পেট ভোর ধেরে ধেরে সেনিনকার
জীপ বেহু লোকটা জোৱান হবে উঠেছে।

দীস্ব বক্তলোল্প দৃষ্টি আগুল হবে উঠল। প্রাণপণে
চীংকার করে সে কি বলতে চাইছিল। কিগু—'ও বা',
বলতেই বিকট এক আর্ডনাদের সলে সলে তার দেহ গভিৱে
প্রকা

প্রচণ্ড এক ভরের শিহরণ আছের করে কেলল গীরেশকে

—বেষন অপ্রভাগিত ভেমনই ভয়সর।



# ভূমি-দেনা

### ঞ্জিদেবেন্দ্রনাথ মিত্র

কেন্দ্রীয় সরকারের একট পরিক্ষনা অহ্বারী প্রত্যেক রাষ্ট্রে "ক্রি-সেনাদল" গঠিত হইবে। গত ২৪শে জ্লাই হগলী কেলার শ্রীবামপুর মহকুমার অন্তর্গত জালীপাড়া বামার আঁটপুর গ্রাবে পশ্চিমবদের প্রবর্গ ভূমি-সেনাদল" গঠিত হইবাছিল। তংশর এই আগঠ ফুরি ও বাদ্যমন্ত্রী শ্রীপ্রকৃষ্ণতক্ষ সেন



আঁটপুরে মবগঞ্জিত ভূমি-সেনা দলকে এপ্রকুলচন্দ্র লেন পাটগাছের পোকার আক্রমণ নিবারণের বভ ঔষৰ ভিটামো দেবাইতেছেন

মতাশরের কলিকাভার আবাসে ভূমি-সেনার বিভীয় বল গঠিত হয়। এই দলে কলিকাভাবাসী বহু বিশিষ্ট ব্যক্তি (মারী ও পুরুষ) বোগদাম করেন। তৃতীর দল গঠিত হয় ১৫ই আগষ্ট বাবীমতা-উৎসবের দিনে, কলিকাভার দেশবছু পার্কে অবছিত ভামবাজার টেনিস ক্লাবে। প্রধানত: বিদ্যালয়ের হান্ত্রীরা এই দলে বোগদাম করেন। পত ২৫শে আগষ্ট বর্জনাম সরকারী ক্রিক্তের বর্জনাম জেলার প্রথম "ভূমি-সেনাবল" গঠিত হয়। এই উৎসব পুরই আড়ম্বরের সহিত্য সম্পন্ন হইরাছিল। কেন্ত্রীর রুষি ও বাল্য-সচিব নামনীর গ্রীকে, এম. মুলী, পশ্চিমবন্ধের প্রধান মন্ত্রী ডা: বিবামচন্দ্র রার, কৃষি ও বাদ্যসচিব প্রপ্রকৃষ্ণতন্ত্র সেন, সরবরাত্ত-মন্ত্রী শ্রীমিক্স্পবিহারী বাইভি, প্রম-মন্ত্রী শ্রীকালীপদ রুবোপাব্যার, সেচ-মন্ত্রী শ্রীভূপভি মন্ত্র্মদার, বারস্থ-শাসন-মন্ত্রী শ্রীমান্ত্রনাত্রনার বার্ত্তি ইতাতে বোগদাম করেন।

গভ ২৬শে আগঠ হগলী ধেলার রাজ্বলহাট প্রাবেশ্ব এক-দল ভূমি-লেনা গটিত হইরাছে। ইহা ব্যতীত অধ্যাবনি আর কোম হামে ভূমি-লেনাদল গটিত হইরাছে জিনা জানি না। বাত ভ ভূমিন্ত্রী প্রশ্নসক্ষ নেদ এক ভাবনে বলিয়াছিকে

"প্রতি ইউনিয়ন, প্রতি থানা, প্রতি নহতুমা ও প্রতি-জেলার এই 'ত্যি-সেনাদল' কৃষি-অবিকর্তার নির্দেশে একই আদর্শে অত্প্রাণিত হয়ে কাজ করবে। খুবই আশা হয় বে, এইরূপ সর্বাদীণ প্রচেপ্রায় অচিরেই আমরা জরহুক্ত হব; পছা বতই বন্ধুর হোক্ না কেম, লক্ষ্যে গিয়ে আমরা পৌহবই। আজ কৃষির এই ছ্রিনে দেশে চাই ভূমি-সেনা। বিবেকামন্দের দেশে ত্যারী ও ক্ষ্মীর আভাব হয় নি। আজও আশা করি স্বেচ্ছাসেবকের অভাব দেশে হবে না।"

মন্ত্ৰীমহাশ্যের ভাষণ অভ্যায়ী প্রতি ইউনিয়ন, প্রতি বানা, প্রতি মহক্ষা ও প্রতি জেলার ভূমি-সেনাদল গঠিত হইরাছে কিনা, কিংবা গঠনের চেটা হইতেছে কিনা ভাষাও অবগত নহি। আমাদের বিখাল যে কৃষি ও খাদালটিব মহাশ্যের নির্দেশ অভ্যায়ী পল্লী অঞ্চলে বদি "ভূমি-সেনাদল" গঠিত হয় এবং সেই দলে বদি দেশপ্রেষে উর্ভ সক্ল সন্তানায়ের প্রস্তুভ কর্মী বোগদান করেন ভাষা হইলে সর্কায়ী কৃষিবিভাগের পক্ষে কৃষির উর্ভি ও খাদ্য উৎপাদনে বিশেষ



বৰ্জনাৰ কৃষিক্ষেত্ৰৰ ২৫শে আগঠের অষ্ঠানের একট দৃত্ত
সহায়তা সাত করা সভৰ হইবে। তবে তৃষি-সেনাদলকে
সর্বপ্রধানেই ভাহাবের কর্জন্য সহতে উপযুক্ত শিকা ও প্রেরণা
হিতে হইবে এবং ভাহাবিগকে উপযুক্ত ভাবে পরিচালনা
ক্ষরিতে হইবে। কিন্তু সেইরণ শিকা এবং প্রেরণা বিবার ও
পরিচালনা ক্ষরিবার জোন ব্যবহা আত পর্যায় চইলাতে বলিরা

প্ৰৱে লগ । আঁটপুৱে ও কলিকাভার व "चनि-जमामन" मीच हरेबाद ভাচার সচিত আমি কিরংপরিবাণে সংশ্লিষ্ট ভিলাম এবং ভ্যা-সেবাদলের জনীতা হাচাতে অভি সমূহ শিকা পাছ ও ভার্যপ্রধালী সম্বন্ধে অবহিত হয় সেই ইতেকে পশ্চিমবলের ক্রমি-অবিকর্তার निकडे शक्त निविधादिनाम, वौविक আলোচনাও করিয়াছিলান। কিন্তু আৰু श्राक जाहार प्रथर हडेएक (काब बिट्यून चारत माहे. "छुबि-(त्रनामालद" तर्वन, विका ७ कार्वाधनामी जन्द विश्वमानमी আৰু প্ৰায় কোন স্থানে পৌহাৰ নাই। ছঃবের বিষয় করেক মাস তইল আঁটপুরে क्षच्य "कृषि-(जनाएन" शरीक श्रेतारण, ভাহারা 'ব্যাক' ও কোদাল পাইরাছে---কিছ কোদালের 'সহাবচার' চইভেছে किना (कठरे (प्रविवाद नारे। अरे ভারণে অনেকেই বলিভেছেন, ভূমি-লেনা পঠ্য একটা "হতুগ" মাত্র। কিছ



বৰ্জনান কৃষি-ক্ষেত্ৰ নবগটিত ভূমি-সেনার দল



वर्षवाम कृषि-त्काख जांक्कान बमनेश्रांतव कृषि-त्मना वरण व्यानवाम

বাত্তবিক পতে পুগঠিত ও পুপরিচালিত ত্রি-সেনাগলের নাহাব্যে কৃষির উন্নতি ও বাদ্য উৎপাদন বৃদ্ধি ব্যতীত পরী-অঞ্চলের অভবিব উন্নতিও সভবপর। ইহালের নাহাব্যে পরী-অঞ্চল বছলাংশে সমুদ্ধ হইতে পারে।

वैश्वन्त्रका त्राम वहामस्य अक कावन वहेरक कृति-

সেবাদলের উপকারিতা সম্বন্ধে অবেক জাভবা বিষয় জানা বাইবে। वर्जन, "रामारनवाद महान चानर्न छेव द क्षे एमि-रिनिक्तन छात्र छात्र, बानाइ ধানার, প্রতি জেলার নিরে বাবে আশা ও তৰ্শের বাণী---ধ্যতসমন্তার সমাবাৰ করতে করবে সাহায্। ভ্রি-সেমা-বাহিনী ভৰু যে কৃষিকাৰ্য্যে সাহায্য করবে বা কৃষিযোগ্য ক্ষির পুনক্ষার कत्राव जारे मह अता देख्य कत्राव कृषिकार्यात अकृषा जुनिविष्ठ श्वाचि. হার অভাবে দেশে শতকরা ৭০ ভাগ ক্ষভীৰী বাকতেও দেশবাসীর বাছের সকুলান হয় নাই, ভাই ভূমি-সেনার ভাজ হবে কৃষকের কৃতিছ বুদ্ধি করা-ক্ষক-সংখ্যা ৰাভিত্বে ভোলানয়, উৎপাদন বাছিরে দেশকে আত্মপ্রতিষ্ঠিত করা, **७९ श्रीकश्रमा कदा मद्र। अस्मक कुल-**কলেকে বেমন নেপভাল ক্যাভেট কোছ

রবেছে দেই রক্ষ ল্যাও এঞিকালচারিষ্ট কোর-এর প্রবর্তন
করা দরকার। এই দলত্ক ত্নি-সেনারাই ত দেশবাসীকে
সচেতদ করে তুলবে ক্ষিকে উরভত্য ভিভিতে ছাপন করতে,
ভাষের শিক্ষিত ক্রচি নিয়ে করবে দেশের সর্কালীণ নদলের
নাবনা, ভাষা ভাগিরে তুলবে দেশের হাবে কারিক প্রবেষ

মৰ্ব্যালাবোৰ। এরা শিকার আলোক ভূলে বরে দূর করবে লংকারের অভকার, সমবার প্রভিত্তে গঠনবৃদক কাক করে



বৰ্ডৰান ক্ৰয়িকেলে সাইকা আউল বাৰ

দেশকে ভাষাৰে ভার উৎকর্ব, এমনিভাবে একবোগে দেশের কৃষি, পশু-পালন, সেচ-ব্যবস্থা, পতিত ভষির পুনরুষার প্রভৃতি ভাজ ভরে দেশের এক সর্বাদীণ সমৃতি এনে দেবে। দেশের বিভিন্ন গবেষণাগারে কৃষির উৎকর্ষক অনেক ভব্য



বৰ্ষনাৰ কৃষিক্ষে ভূমি-লেনাগৰ কৰ্তৃক কলোও প্ৰস্তুত

আবিষ্ণত চরেছে ও চচ্ছে, কিছ গ্ৰেষণাগারে উচ্চ কর্ম-প্রভিন্ন সদে চাবীর বোগাবোগ সব সময়ে ঘটে ওঠে বা। গ্রেষণালয় কলের ছবিবা ছবিজীবীরা বোল আনা এবং করে

শভোংগাদনে পূর্ণোভনে অঞ্জনন হতে পান্ধছেন না। আনাদের ভূমি-লেনালল এই বোগানোগ রক্ষা করে উন্নতভন্ত বৈজ্ঞানিক ক্ষমি-প্রণালী প্রবর্তনে চাবীদের লাহান্য করবেন। তাঁবের এই কাজের উপর্ক্ত করে ভোলার করু ক্ষমি-বিভাগ বিশেষজ্ঞান করে বারা ববারণ শিকালান করবেন। বে সব বিবরে শিকালাভ করে ভূমি-লেনাবাহিনী কাজে অঞ্জনন হবে সেওলো হছেে (১) রক্ষ রোগণ ও পরিচর্ত্যা, (২) আবর্জনা-লার তৈরারী করা, (৩) শাক-সজীর চাব, (৪) কসলের রোগ ও কীট শক্ষম্বন, (৫) গবাদি গশুর বাহ্য-সংরক্ষণ ও উন্নতি-বিবান, (৬) আগাহা ক্ষম, (৭) সভ্তর্যক্ষ সম্বাহ্য-প্রতিক্তে চার্যবালের সম্প্রসারণ, (৮) হোট হোট সেচ-পরিক্রমার প্রয়োজনীকরণ, (১) নাছের চাব বাভানো, (১০) শভের কলম বৃদ্ধি ও প্রতিবোগিতা সংগঠন, (১১) উন্নতভ্র ক্রমি-প্রতিক্ত উপার প্রভৃতি।

काविवर्वनिर्कात्मारय कृषि ७ श्राव वेशवाम वेष्





বৰ্ণবাৰ কৰিকেতে লাটকা আউপ বাৰ

বে-কোনও লোক এই ভ্ৰিবাহিনীতে বোগৰান করতে পারবেন। বে-কোন বিভারতনের হাল-হালীরাও এর সবত হতে পারবেন। ভ্ল-কলেকের ববেট অবকাশ আছে। নেই অবলবে এক এককন শিককের বেড্ছে হালহালীরা পারাকলে গিয়ে চারবালের অবেক সহায়তা করতে পারেন। বেশের বাট ও বেশের বাছবের লকে বনিঠ বেলাবেশার বিজেবের

ভানবৃদ্ধি বিক হাড়াও আর পাঁচ ক্ষকে এতে সহকেই নৃত্য ভাবে উপীপ্ত করে ভোলা বার। প্রাবে বা শহরভলীতে বেধানে হানাভাব বেই, সেই সব অঞ্চলের হারহানীরা চুটির অবসরে শাকসকী ও কলের চার আরম্ভ করে বাতসমভা সমাবানে উদীপনা স্টি করতে পাগে। ইউরোপ ও আবেরিকার শহর-বাসী ছেলে-বেরেরা এইভাবেই ফল বেঁবে প্রাবে প্রাবে হাড়িরে পড়ে প্রাম্বাসীর সফে নিবিড় আত্মীয়ভার বোগস্ত্র হাপন করে ভালের রাবে শিক্ষা ও সংস্কৃতি বিভারে সহারভা করে বাকে।" কৃষি ও বাড়-সচিবের ভাবণ বুবই হালরপ্রাহী হইরাহিল। আনরা পুর্কেই বলিরাহি স্পন্তীত ও স্থারিচালিত ভূমি-সেনা-ফলের উপর পদ্ধী অঞ্চলের সমৃতি বছলাংশে নির্ভর করে। কিছ

কৃষি ও বাড়-সচিবের আখা ও আজাজ্ঞাতে সার্থক করিছে

হইলে ছুনি-সেবাবলের উপর বে পরিমাণ শুকুত্ব আরোপ কর। উচিত আহা তাঁহার বিভাগীর কর্মচারীগণের উপলব্ধি করা অভ্যাবক্সক।

পরিশেবে পরী-অঞ্চার বেড্ছারীর ব্যক্তিগণকে অন্থরের করিতেছি উচ্চারা বেন ব ব এলাকার "ক্মি-সেনা" গঠনের চেঠা করেন। পরী অঞ্চান বহু বৃক্ত কর্মের অভাবে আলতে বিনাভিপাত করিতেছেন; উচ্চাবিগকে কাজে লাগাইলে অনেক বিকেই বেশের উন্নতি সাবিত হুইবে। নেড্ডের অভাবেই আল পরী অঞ্চানর চরর হুর্মণা বাইরাছে। সকল কাজেই সরকারের মুখাপেন্সী হুইরা বাজিলে বেশ্ক্ষিকালেও উন্নত হুইবে না। অভের উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করা সমীচীন নতে।

## त्म पिन

### बैकां निमान त्राय

সে দিন সিরেছে চলে কিরিবে না আর,
দীনভার আবরণে সে প্রভুনভার।
কন বটে হিল আর ছিল্ হবে ভাতে ভার,
দিন না বাড়ের বার এত করভার।

পদে পদে আইনের ছিল না বাঁৰন,

ভাম দিলে ছিল নাকো সাধ্যসাৰন,

জিনিস কিনিতে বেরে ওজন দেবিনি চেরে,

হ'ত না ভালদা দিরে ছবেলা র'াবন।

ট্ৰেণে ট্ৰামে পৰে বাটে ছিল নাকো ভিছ,
ছিল না বাহার এত রভিন শাভীর।
মেৰেরা হাডেনি লাজ বরেনি বর্বী লাজ,
অভারণে হ'ত নাকো বাভীর বাহির।

ষাহ্য হয়ৰি এত বৰ্ষবিষ্ণ,
কবিভায় য়গণাৰে ছিল উৎস্ক ।
আকাশে আছিল ববি আলোকিত ছিল দবি,
ছিল দেশে বসিকত। হাসি-কৌচুক ।

কাৰ্যে হল ছিল ভক্তি গাৰে,
কৰ্মে শিঠা ছিল ক্ষি প্ৰাণে।
ছিল বা সিনেবা মোহ প্ৰবোদেৱ স্বাহোহ,
কানো বাভাৱের নাম ভ্ৰিমি কানে।

ৰ্বারা পালামা মন, পরিত বৃতি, ছিল মা ভাদের কোন সধী বা দৃতী। পৰে রবে এত ছবি বিত না ঢালিরা ছবি ভাহাদের মোহামলে নিতি আছতি।

সাৰ্ব্বদীন পূজা, লোলের নামে
ছিল না এ নাভানাভি ভাইনে বাবে।
অভিনেতা কীভানীর ছিল না দেবতা পীর।
ভূচ্ছে নিত না কেউ উচ্চদানে।

বাৰেদি লড়াই ছিঁ হু-বুসলমানে, মেঘনা মুখর ছিল ভেটেলী গানে। বিহারী উড়িরা যারা পর ছিল মাজো ভারা, বালাদীই ছিল প্রভু সকলখানে।

ভাড়াটবা হৰনিকো বাড়ীব বালিক,
ভাড়াভ না বাস। হতে ডকেরে সালিক।
বুৰীর হৰনি টেকি, চলিত না এড বেকি।
চোৰ রাডাত না এড থালিক হালিক।

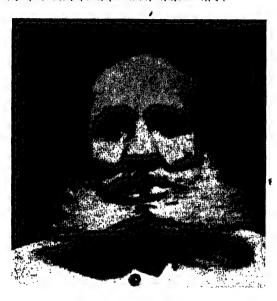
সে বিন গিরেছে চ'লে কিরিবে না আর।
নাই সেই সুধ্বর শুভ সংসার।
বক্ষে পাবাণ দলি'
রেবে গেছে ভার সেই পুরো কাল্চার।

# ভীলজাতির মুক্তিসাধক মোতীলাল তেজাবং

এনিলিনীকুমার ভদ্র

তীলরা ভারতের এক প্রতিষ প্রাচীন ভাতি। রামারণ, বহাভারত এবং প্রাণাদিতে এই আবিন ভাতির কথা পাওরা বার। কবিত আহে, প্রোণাচার্ব্যের প্রতিষ্ঠির সবকে বিনি বহুন্দিতা অভ্যাস করতেন সেই একলব্য ছিলেন ভীলকাভীর। অক্লে দকিশাবরণ একলব্যের অনুষ্ঠদানের কাহিনী সর্বীর হরে আহে।

ভীলদের বীরত্ব সাহস ও কেশপ্রের অভূলনীর। পৌরাধিক বুগ থেকে আরম্ভ করে রাজপুত রাণাদের আমল পর্যন্ত এলের বহু বীরত্ব-কাহিনীর সহিত আমরা পরিচিত আছি।



তীলনেতা মোতীলাল ভেলাবং

বদেশের স্থানীমতা রক্ষাক্রে রাণা প্রতাণ বেদিন মুষ্টবেষ নৈচদল নিবে প্রথম প্রতাণাধিক দিলীখন আক্ররের বিক্রুছে বুছে প্রয়ম্ভ হ্রেছিলেন সেদিন রাজপ্তানার আদিবালী জীলরা এলে তাঁর পাশে দাঁভিবেছিল—রাণার চরন ছুর্কিনেও ভারা তাঁকে পরিভ্যাগ করে নি। সেদিন এই আদিন আভিন লোকেরা বেঁ বীরত্ব, ভ্যাগ, স্থানীমভাপ্রিরভা ও প্রভুক্তির পরিচর দিরেছিল ইতিহাসের পৃঠার ভা স্থাক্রে ছাত্মসাম বাক্রের।

রাণা প্রভাপের সঙ্গে ভীলদের সম্পর্কের কথাই গুণু সাধারণের ভাষা আছে। কিন্ত রাজপুত ভাতির রাজ্য-প্রতিষ্ঠার প্রায়ত্তাল থেকে ভীলরা কড ভাবে বে তাঁকের সহবাসিতা করেছে তার আর অভ দেই। কবিত আছে, বে, রাজপুত-রাজ্যের প্রতিষ্ঠাতা বাপা রাবলকে বাজ তিন বংসর বরসের সময় তীলরা জললে নিরে সিরে প্রতি-পালন করে। পরে ববাসময়ে তারাই তাঁকে সিংহাসনে বসার। হেলেবেলার দেবা আর বালিয়া নামে তু'লম তীল এঁর বঞ্চারেকণ করত।

ভীলকাভির কোনো ধারাবাহিক ইভিহাস পাওরা বার না বটে, কিন্তু ভারতবর্ষের প্রাচীন ইভিহাসে এবের সাধীনভা-প্রীভিন্ন উল্লেখ কিছু কিছু পাওর। বার।

এই বাধীনভাপ্রিরভা ভীলদের মধ্যে বংশপরস্থারার সঞ্চারিভ হরে আগছে। সেইকভেই আধুনিককালে ভারতের বাধীনভা-সংগ্রামের আহ্বামে ভীলভাভির চিত সহক্ষেই সাভা দিরেছে। সৌরবমর ঐভিছের উত্তরাধিকারী ভীলরা ভারতের বাধীনভা-সংগ্রামে ধোগদান করে অবর্ণনীর হুঃধবন্ধণা বরণ করে নিয়েছে, দলে দলে পুলিসের গুলিতে প্রাণভ্যাস করেছে। হুংধের বিষয়, ভারের সেই ভ্যাস, ভিভিন্দা ও বীরত্ব-কাহিনীর সলে আম্রা অনেকেই পরিচিত নই।

ভীলরা ভারতের মামা প্রদেশে ছড়িবে আছে এবং বিভিন্ন
আঞ্চলের ভীলসপ্রদারের মধ্যে বীর দেশপ্রেমিকদের আবির্ভাব
ছরেছে। তাঁদের সকলের কথা এখানে বলা সম্ভব মর।
বর্তমাম প্রবছে আমরা কেবল রাজস্থানের ভীলদের সাধীমভাআন্দোলনের কথা উল্লেখ করব—ভাও অভ্যন্ত সংক্ষেশ।

আধ্নিক কালে ভুকরপুরের ভীলনের মব্যেই সর্বপ্রথম সমাজ-সংকার আন্দোলন স্কুক্র। শ্রীশিবলাললী কোটভিয়া তার ভুকরপুর রাজ্যের ইভিহালে। বলেছেন বে, উনবিংশ শভালীর শেষভাগ আর বিংশ শভালীর প্রায় গোভার দিকে গোবিন্দ শুকু নামক কমৈক লাগ্র মেড্ডে 'ভীল-স্থার' আন্দোলম স্কুক্তর। তিনি মুলাভীরদের বর্মীর এবং সমাজ-সংকারস্কুক কার্যপ্রধালী মির্কেশ করেন। তার প্রচেপ্তার ব্যম ভাতির মধ্যে ভাগরণের স্কুলা দেখা দিলে তথ্য কর্ত্তপক্ষ শহিত হরে উঠলেন। এই আন্দোলনকে দ্যম ক্রবার ক্রেভ তারা হলেন স্বল্পবিক্র।

কিছুকাল পরে একদিন বানগড়ের বহাতী নারক ছাবে প্রায় সমগ্র বাগড় (ভূলরপুর, বাঁদাবাড়া আর দক্ষিণ বেবাড়) অঞ্চলর বছসংখ্যক ভীল কোনো উংসব উপলক্ষে অ্যারেং হলে, উপরোক্ত ভিনট ছানের পণ্টবের সৈড আয়দানী

<sup>+</sup> कुन्दर्व : अक निरदायामन

করে ভাবের উপর নির্কিচারে খলি চালানো হ'ল। এই খলি চালনার কলে প্রার আই শ'লোক বারা গেল, বহু লোক হ'ল আহত। এই প্রকার নুশংস আচরণ বারা শাসক-লক্ষরার সামরিক, ভাবে ভীলদের আন্দোলনের গতিরোব করতে সক্ষর চলেন।

১৮৯৪ সনে ভূকরপুরের শাসনভার বিটপ সরকার কর্তৃক নির্জ এক রিজেনী কাউজিলের উপর অর্পণ করা হর। অভঃপর এই রাজ্যের শাসন-ব্যাপারে এক নব বিধান প্রবর্তিভ হ'ল। এই 'নহা কাছন' অহুসারে ভীলজাতি এক প্রেণীর অপরাবপ্রবণ জাতি (জরারমণেশা কৌব—Criminal tribe) বলে গণা চর।

व्यवस्थानम्द्र सामा चिक्रम कृद्र निविनिक विनेद প্ৰবাহ বেষৰ সময় সময় উচ্চ সিভ তত্তে ওঠে ভেমনি মাৰো बाद्य नवकाती विविभित्यय अधाक करत जीन आत्मानम श्रांक ভাবে আছপ্ৰকাশ করভ, সঙ্গে সঙ্গে সরকার কঠোর ব্যবস্থীতি व्यवान करत रन चार्मानस्यत निरुद्ध शिक्य करवार करन তংশর হারে উঠতেন। ভারতবর্ষের সাধীনভালাভের এক বংগর र्ग्स भर्यास बिक्रम महकात कौमारमत छेनत श्राह्मास प्रम-দীভি চালিবেছিলেন। ভারা বার বার বহু ভালকে গ্রেফভার করেছেন, তীল কন্দেভাবের নির্বাসিত করেছেন, কোনো কোনো ভাৰগাৰ ভ্ৰভাৱ উপত্ৰ বিনা ৰোটলে করা চরেছে माठि ठार्क करम पंच पंच लाक चाठक ठरहरह । चीन ভাষাৰ প্ৰকাশিত প্ৰচাৰণৰ পুত্তিকা ভাষণ এবং रक्षकानित प्रेशन निरम्शका कानी कता व्यवस्थ->88 बाजा প্রবোগ করে প্রভাভকেরী হরেছে নিষিত্ব, কোনো কোনো ঘকলে সাহা আইন ভারী চয়েছে, পলিসের চন্ডে ভীল ষ্ঠিলারা পর্বাস্থ অপ্যামিত চরেছেন। বিশ্ব এক লাজ্যা वनवान बदर निर्वाचन जरहत जीनकांचि निर्वादन चामर्त बरबर चिक्रिकिल, लास्य श्राबीमला-ल्यंदारक स्थम करा विक्रम नवर्गायक्ति गटक जलवनत कर्मा ।

2

এই বাধীনভাপ্তির তীল জাতির হব্যে বর্তমান রুগে এমন একজন শ্রেষ্ঠ পুরুবের আবির্ভাব হরেছে বার আবর্শনিষ্ঠার চূলনা নেই। তিনি ভারতের শ্রেষ্ঠ ব্যৱশপ্তেমিকবের সদে এক পংক্তিতে ছান পাবার বোগ্য—নার তাঁর মোতীলাল ভেলাবং। কিন্ত হৃঃবের বিষর, বাংলা সাহিত্যে ভারতের এই অভতন শ্রেষ্ঠ বৃক্তিসাবক সহতে আল পর্যান্ত কোনো নালোচনা হ্রমি।

১৯৪৬ সমভের জৈঠে বালে বেবারের তংকালীন বগরা স্বলার এক প্রভাব-প্রভিগত্তিশালী তীল-পরিবারে বোতীলালের বস্ত হয়। ইনি বোটাযুট একরকর লেবাপড়া শিক্ষা করেব

এবং হিন্দী ভাষার বায়লি আৰু অর্জন করেব। কিছ বিজের অভব বেতে ইনি যে শিকালাত করেন প্রিগত বিদ্যা ভার कारक कुछ । जब नवन रनरक किमि रक्टनंब बाक्यरक कामनामास विर्यम-त्रमातीय अवर प्रावनकात कामार्य केव জ্বত ভাষাত্ৰ ভাষাত্ৰ পৰিপৰ্ণ ছবে আঠ। ভাতৰীৰভাৱেতা সকলেই থাকেম ব্যক্তিগত বাৰ্থ নিৰে হয়, কিছ ৰোভীলালের त्यमात्र अव वाश्विक्षम (एवं। तमा) क्षणायत वेशव कावनैवयात. ভবা সহকারী কর্মচারীদের কুসুমুক্তরদন্তির খনিষ্ঠ পরিচয়-লাভ করে তাঁর প্রাণ কেঁছে উঠল—ভি ভাবে চর্গত প্রভাবের ছ:ব্ৰোচন করা বার ভাই ভ'ল তাঁর একবার ভাবনা। ১৯২১ जात्म किमि क्षेत्र कील चारमानत्मत् 'बीका केंग्रासम् । किमि विकित्त पारम व्यक्ता क केश्मवादिक আহোত্তৰ কৰে বক্তভানি ছাত্ৰা সমবেভ ভ্ৰমণ্ডলীৰ সমক্ৰ তাদের অপরিসীম অভাব, দৈত এবং ছ:বছর্বশার চিত্র कृष्टिय जुनानम। 'स्यवाद शृकाद' मामक स्थानियाय-ইহীপক পুল্লিকা প্রায়ে প্রায়ে বিভারণ করতে লাগলেন। क्षे जबल क्षाद-कार्याद करन जनविल जीन बदबादी चाबीब-कार व्यक्तिहरू श्रीकात्रहर कराता। "मादर मा हर बहर".--এই আহর্লে ভারা হয়ে উঠল অনুপ্রাণিত। এয়নি ভাবে ভীল-দের ভাষীনভা আন্দোলনতে দানা বাঁৰতে দেখে ভাষীরদার चाव जवकावी कर्यकावीया प्रस्तुवन वायस अंतिक अवर विक्षां शिवद प्रमम करवांद यह फश्यद श्रद केंद्रेशन । সিরোহী, বেবার আর বাঁভা এই ভিনট অঞ্লের কোনও কোমও প্ৰায় আগুন দিৰে আলিবে দেওৱা হ'ল। ১৯২২ जारमात १३ मार्क रेपदा रहजरबाक जीम मंत्रीय ह'न।

এই আন্দোলন যথন পুরোদনে চলতে তথন বহালা গাড়ীর তরক থেকে গ্রীমণিলালতী কোঠারী নিরোহীতে গমন করলেন। বণিলালভীর মধ্যত্তার তীল-নেতা তেজাবং আর বিটিশ অফিসার হালিভের মধ্যে আলাগ-আলোচনা হরে একটা আপোব-রকার ব্যবহা হ'ল। হালিভে তীলরের স্মাত্তম দাবি পূর্ব করবার প্রতিশ্রুতি প্রদান করার ভেজাবং আন্দোলন প্রত্যাহার করতে সম্মত হলেন। কিছু প্রক্রেশু বিষ্ঠিলের চিরাচরিত নীতির ব্যক্তিক্র হ'ল না—'রাজপুতানা প্রক্রেশী বার বার প্রতিশ্রুতি তদ করতে লাগলেন। ফলে তীলরা আবার গবর্গেরের উপর বিরূপ হরে উঠল, আবার তারা বাবা বাচা দিরে উঠবার উপক্রম করলে। প্রবার

चাগেকার বিনে পশ্চিম ভারতের কোন কোন অঞ্জে
ভান হংগাব্য কর্মে প্রয়ন্ত হওরার পূর্ব্দে পানের বিনি ভূলে
নিরে মুখে বেওরার রেওরাক ছিল। একেই বলে বীড়া
উঠানো। এর থেকে বীড়া উঠানা ক্যাই পশ্চিম ভারতের
বহু হাবে প্রবাদ-বাক্যের মত প্রচলিত হবে গেছে।

আন্দোলনকে অনুৱেই বিনষ্ট করবার জন্তে সরকার কুডসঙ্গ ছলেন। ১৯২২ সালের মে মাসে রোহেরা ভহৰীলে এক मित्रम क्ष्मणात छेशत देश्टबक कर्वाठातीता शुमतात समीवर्वन করলে-তুলা আর বলোলিয়া নামে চুট গ্রাম আলিরে দেওয়া-ত'ল। এই ঘটনার অভাত বিচলিত তবে 'রাজ্যান সেবাসক্ষে'র क्षंभक विष्यापत श्रीकिवित श्रीवत करत शानीत लाटकरमव विक्र (बाक क महाद (वांक्ववर मिर्क मार्गामम। প্রাব্য পঞ্চারেতের প্রথবাং এবং অভাত হতে তারা নিরীত প্ৰামৰাসীকের উপৰ সরকারের অধাপৃথিক অভ্যাচারের বে সমন্ত কাহিনী জানতে পারলেন ভার ভুলনা বেলা ভার। তাঁদের রিপোর্টে প্রকাশিত হ'ল বে, উক্ত হটি প্রায়ে ৩২৫ট পরিবার সম্পূর্ণরূপে নিশ্চিক্ হয়েছে আর ১৮০০ লোকের वानहानि हरतह. ७४० है यह यानित्व (ए उद्या वा विमहे कहा ছয়েছে, ৭০৮৫ মণ বাদ্যসামগ্ৰী আৱ ৬০ গাড়ী বাস আলামো वा नुई कहा हरपट, मिरूछ अवर चल्छछ लखद नरवा। ১०৮। ৰে সমত মাল সুঠন করা বা আলিবে দেওৱা হবেছে ভার बुना ३०,०००, होका।

এই অকথা অভ্যাচার করেও ব্রিটিশ গবরে তি ভান্ত হলেন বা, তীলবের থাবীনভা আন্দোলনকে সবলে বিনষ্ট করবার হুছে তাঁরা বোভীলাল ভেলাবংকে সাভ বংসরের হুনো ভারালতে হুজি করলেন। বোভীলাল কিছু ব্রিটিশের চোবে গুলো দিয়ে কেরার হুরে যান এবং পাহাছের এক নিভূত ছানে ভঙ্ত ভাবে অবছান কর্পতে থাকেন। এদিকে ব্রিটিশ সরকারের ভঙ্তচর বিভাগ তাঁকে বরবার হুজে বিশেষ ভংগর হুরে উঠল। তাঁরা আর এক ব্যক্তিকে মোভীলাল ভেলাবং মনে করে বরে দিয়ে এল—ব্রিটশের ভার বিচারে সে বেচারার হুল প্রাণদও। যাতে ভীলবের মধ্যে কৈরাভের সঞ্চার হুর এবং ভারা আনভে পারে যে ভালের মেভা আর ইহলগতে নেই, সেই উদ্বেশ্প গরতে লাগলেন।

এবার আর স্কিরে বাকা তেজাবতের নিকট সমীচীন বলে বলে হ'ল না—কাভিকে আগত করবার জন্যে আত্মপ্রকাশ করা বে একাত প্রয়োজন তা ভিনি মর্শ্বে মর্শ্বে উপলভি কর-লেন। ১৯২৯ সালের তরা জুন তিনি বেজার ইতর রিরাসতের বেভরজ নামক হানে রিটেশ গবর্নে তেঁর নিকট বরা দিলেন। বিচারে তাঁকে লাভ বংলরের জভে কারারতে রভিত করা হ'ল। উপরপুর সেন্ট্রাল জেলে নির্দিষ্টকাল কারানত ভোগ করবার পর ১৯০৬ সালের ১৫ই এপ্রিল বোভীলাল কারাপার বেকে যুক্তিলাভ করেন। বীর্ঘ কারাবাসের কলে তাঁর বাস্থাতক হরেছিল, কিন্তু ভা সঙ্গেও তিনি নিজ্ঞির ভাবে বলে রইলেন না। ভীলভাতির সর্ব্বালীণ কল্যাণনাবনকে ভিনি জীবনের রভ বলে বয়ণ করে নিহেছিলেন। বিন্দুভক বিপ্রান

করে আবার ভিনি শৃতন উভনে কর্মকরে অবতীর্ণ হলেন।
১৯৩৮ সালে মেবার প্রভাষতে ছাপিত হওয়ার পর ভিনি এই
প্রভিন্নার কর্ম-প্রচেটার সলে গভীরভাবে সংগ্লিট হরে
পাড়েন, কলে পুনরার তাঁর কারারও হয়। বধাসমরে কেল
থেকে ভিনি ছাড়া পোলেন বটে, কিছ গৃহের নিক্তিত আরার
বিবাতা এই কমনায়কের অনুষ্টে লেখেন নি। '৪২-এর
আগঠ আন্দোলনের সরব ভীলকাভিও বধন "করেকে ইরে
মরেকে" মরে উচ্ছ হরে উঠল ভবন ভালের পুরোভারে এসে
বাড়ালেন মেভীলাল। ভার কঠে ধ্বনিত হরে উঠল বিপ্লবের
উলাভ আহ্বান। বেগতিক দেখে সরকার ১৯৪০ সালের
২৪শে আহ্বারী পুনরার তাঁকে উদরপুর সেন্ট্রাল কেলে
পুরলেন। এবার তাঁর দেড় বংসরের কারারও হ'ল।

জাতির মুক্তি-সাধনার উৎস্গীকৃত প্রাণ এই ভীল-বেডার भीवन अक्टामा इःववदानत काहिनीएक भतिभून । स्थीर ভীবনের বেশীর ভাগই কেটেছে তাঁর কারা-প্রাচীরের অভরালে আর অঞাতবাসে। বিভ্রশালী আর্দ্রীরহার হওরা সভেও क्षवम (योगामरे जिमि विशश्यक कर्णकाकीन शवाक दाए निरहिद्दानम्, छादशत् (बर्क क्लेक-मुक्ते बाबाव शर्व तारे वक्षत भावने जिम अभिन्त कामाहम। हिन्नवम अवर আত্মত্যাগের বারা বভাতীর নর-মারীর ক্রদরে তিনি নিজের আসন প্রপ্রতিষ্ঠিত করতে সক্ষ হয়েছেন। ভীল নর্মারী তাঁকে কিন্তুপ শ্ৰদাৱ চন্দে দেখে তা বাৰপুতানার বিখ্যাত লেখক অধিল বিনয়ের উক্তিতে সুপরিক্ষা। ভিনি লিখছেন ঃ "हार्य करवरी ১৯৫० (में जाशक प्रतन करान का लोकाश প্ৰাপ্ত হয়। ব। আপ কোটৱা ভোপট ( উদয়পুর ) মে ১২-১৩ क्दवदीक चानिवात्री जत्यनमदक चात्रचायुक्त (व । चात्रकी বিন্মতা ওর দেবা ভাব দেব কর হম মুগ্ধ হো গরে। হমবে रमना कि जीन शुक्रम र्थव जिबाँ पाजानिक क्षेत्राह क्षेत्रा तन जागरक हदन वर्ग धानाम कदानी श्री : श्रेद जागका जानीकांच পানে কী ইচ্ছক বহতী খী। ইসলে বাসুৰ হতা কি ভীস লোগ আপকে দেবতা সমবতে হৈঁ, ওঁর আপকে নাম পর चद्रह-चद्रह की बार्याची हा यद्य बागाच देहें।"

অর্থাৎ, "১৯৫০ সালের কেক্ষারী বাসে এর দর্শনলাভের সৌজাগ্য আনার হয়। উক্ত বংসরের ১২-১০ কেক্ষারী জারিবে ইনি উদরপুরের কোটরা জোপটে অস্প্রটিভ আছিবাসী সম্মেলনের অভ্যর্থনা সমিতির সভাপতির পদে বৃত্ত হয়। এঁর বিষম্মতা আর সেবার ভাব দেবে আমি মুখ হরে ঘাই। আমি দেবলার বে, তীল ল্লী-পুরুবেরা আভরিক প্রগান্ধ প্রভাতরে তার চর্মে প্রণাম নিবেদন ক্রছে—তার আম্মির্কাল লাভের করে ভালের কি প্রথল আকাজা। এসব দেবে ভ্যমে আমার প্রতীতি হ'ল বে, তীলরা তাঁকে দেবতা বলে মনে করে, ভারা লম্মর সময় ভার মাধে বিবিধ প্রভারের মানত পর্যান্ধ করে। বোভীলাল ভেষাবভেষ নেতৃত্বে ভীলদের অত্যাবানের ভাহিনী আব্দিক কালের ভারভবর্বের ইভিহাসের একটি গৌরববর অব্যার, কিন্তু পরিভাপের বিষয়, আমাদের খাবীনভালংগ্রাবের ইভিহাসে সে কাহিনী হান পার মি। ইংরেজ বর্ধন দেশের মালিক ছিল ভবন ভারা আদিবাসীদের সলে আমাদের বিভেদ স্পষ্ট করবার করে প্রাণপণ চেপ্তা করেছে। এই উদ্বেজ সম্পূর্ণ বহিন্তু ভ বা আংশিক বহিন্তু ভ অঞ্চল স্পষ্ট করে ভারা সেওলিতে যভন্ত শাসন-ব্যবহার প্রবর্তন করেছে। আদিবাসীদের মুজ-আন্লোলনের কথা হর ভারা কৌশলে চেপে রেখেছে নভুবা ভার অপব্যাখ্যা করে দেশবাসীকে বিজ্ঞান্ত করবার চেপ্তা করেছে। খাসিরা-বিজ্ঞোহের নারক ভীরভ সিংকে ভারা চিত্রিভ করেছে (রক্তপিপাস্থা, 'বুমো' 'বুমী' রূপে, মাগারাণী গাইভিলিউকে দিরেছে বারুকরী আখ্যা, অজ্ঞের কেণ্ডা ভোরা বিজ্ঞোহের মারক আর্ডি শ্রীরাম রাজাকে (সীভারাম বাঞ্) কারপ্রাণীরের অভ্যাকে নুশংসভাবে ভলি করে হভ্যা করেছে।

বেশ আৰু বাবীন । বাবীনভার বধাৰৰ ইভিহাস রচনার
পথে বে সকল বাবা ছিল সেগুলি এখন বছলাংশে অপলারিত ।
আৰু ভাই নৃতন করে ভারতের বাবীনভা-সংগ্রামের ইভিহাস
রচনার প্রয়োজন ৷ এই নৃতন ইভিহাসে দেশের অভে
আদিবাসীদের হ:খবরণ ও বলিদানকে বোগ্য মর্ব্যাফা দিতে
হবে ৷ এ কথা ভূললে চলবে না ভীরত সিং, গাইভিলিউ,
ভারতে প্রথম করবছ আন্দোলনের প্রবর্তক মুখানেতা বীরদা
ভগবাম, মেভা নির্মল মুখা, আগই-আন্দোলনে প্রাণহতে
দ্বিত আসামের কমলা মিরি, কাছাফী নেতা মধুবন, ভীল
কমনারক ঘোতীলাল ভেজাবং প্রভৃতির সক্ষিত্র দেশপ্রেম এবং
আগ্রভ্যাবের কাহিমী বাদ দিরে ভারতের মুক্তিসংগ্রামের
সর্ক্যাকসম্পূর্ণ ইভিহাস রচিত হতে পারে না ।০

লেখকের প্রকাশিভব্য 'আদিবাসীদের বিচিত্র কথা'
 নামক পৃথকের একট অব্যার।

# চারি বেদের পৌর্বাপর্য্য

শ্রীবাসনা সেন, এম-এ, বেদাস্ত-ভীর্থ

ভারতীয় সভ্যতা ও সংস্কৃতির আকর বেদ। অপৌরুবের বেদের উপর ভারতের প্রায় সমস্ত গৌরব প্রতিষ্ঠিত। বহু দিন হইতে আমাদের দেশে ভারতীয় সভ্যতা ও সংস্কৃতি বিষয়ে বধাবধ আলোচনাদি না হওয়ায় অনেকের মনে এই অবও বেদ সম্বন্ধে নানা ভাস্ত ধারণার উত্তব হইয়াছে। আরুকাল আমরা শিক্ষিতসম্প্রদায়ের মধ্যে এরপ কথা তানিতে পাই বে, ঋক্সংহিতা সকলের পূর্ব্বে রচিত হইয়াছিল এবং তার পর যজুংসংহিতা ও সামসংহিতা রচিত হয়। অবর্ধসংহিতার রচনা বহু পরবর্ত্তীকালে, বেহেতু ইহার ভাষা ঋকসংহিতা অপেকা সরল ও সহজ। তার পর ঋক্সংহিতার প্রথম ও দশম মগুল বহু পরবর্ত্তী, কেননা ইহাদের ভাষা অগ্রাক্ত মণ্ডল অপেকা সরল এবং বৈদিক সংস্কৃতের ন্যায় ত্রহুহ নহে। এই সকল যুক্তি যে সম্পূর্ণ অর্থশুন্য তাহা আমরা এই প্রবন্ধে বিশ্বভাবে আলোচনা কবিব।

পাশ্চান্তা পণ্ডিভগণের সিদ্ধান্ত গ্রহণ করিয়া বদি আমরা বদ সম্বন্ধ মভামত প্রতিষ্ঠা করি তবে বে ভাগা সম্পূর্ণ নবৌক্তিক এবং জ্রান্তিমূলক হইবে ভাগতে কোন সন্দেহ নাই। পাশ্চান্তা পণ্ডিভগণের বেদ সম্বন্ধ নানাপ্রকার মতামত যে বথাবথ অধ্যয়ন প্রস্তুত নহে তাহা বুঝা যার। এ স্থলে বিশেষ লক্ষ্য বাধিতে হইবে বে, অক্মন্ত্র ও সামমত্রে এইমাত্র প্রভেদ বে, অক্মন্ত্রগুলি সীত হইলে তাহাই সামমন্ত্র ইয়া থাকে। সামগানের আধারীভূত মন্ত্র অক্মন্ত্রই বটে। সামের আধারীভূত অক্মন্ত্রকে 'যোনিঅক্' বলা হয়, অক্মন্তই বড়জাদি স্বরুগংযোগে গীত হইলেই তাহাকে সামমন্ত্র বলে। 'তেরামুগ্ ব্রাথবশেনপাদবাবস্থা' (কৈমিনি স্ত্রু ২০০০), 'গীতিবুদমাধ্যা' (কৈমিনি স্ত্রু ২০০০), 'লেবে বজুংশক্যং' (জৈ. স্. ২০০০)—এই তিনটি স্তর্বারা ভগবান জৈমিনি অক্মন্ত, সামমন্ত্র ও বজুম্বিত্রের লক্ষণ প্রতিপাদন করিয়াছেন। এজনা অথবদংহিতার মন্ত্রগালি অক্মন্তই বটে। শান্তি, পোটিকাদি দৃষ্টফল কর্ম্যের অভিধায়ক অক্মন্ত্রই বিত্রি একত্র স্কলিত হইয়া অথবসংহিতা নামে প্রসিদ্ধ হইয়াছে। এজনা আথবনিক মন্ত্র অক্মন্ত্রই বুঝিতে হইবে।

ঋক্সংহিতাতেও যে বে হলে মন্ত্রারা সানের উল্লেখ আছে দেই সমত হলে সামমন্ত্রই প্রযুক্ত হইরাছে ইংাই বুঝিতে হইবে। অপ্রগীত মন্ত্রই ঋক্ এবং প্রগীত ঋক্ষন্তই সাম। এজন্য ছান্দোগ্যোপনিষদে বলা হইরাছে বে 'ভদ্মাছ্ ঋচি অধ্যুদ্ধ সাম গীরতে' (ছা. উ. ১. ৬. ৫)।

শামরা এই প্রবদ্ধে গীতিযুক্ত মন্ত্রের উল্লেখ করিয়া ঋক্-সংহিতাতে সামমন্ত্রের সন্তা দেখাইতেছি।

ঋক্সংহিতা পূর্বের বিচিত ইইরাছিল এবং জন্যান্য বেদ সকল পরবর্তীকালীন রচনা এই বৃক্তি অত্যন্ত প্রান্ত। তাহার প্রথম কারণ 'সামানি' এই শব্দ ঋক্সংহিতার পুনঃ পুনঃ উলিখিত ইইরাছে। যদি সামসংহিতা পরে রচিত ইইরা থাকে তবে ঋক্সংহিতার মধ্যে তাহার উল্লেখ কিরুপে সন্তব ? অথর্বসংহিতা বহু পরবন্তী ইহাই পাশ্চান্ত্য পণ্ডিতপণের অভিমত। অথর্বসংহিতার ঋষিক 'ব্রহ্মা' শব্দ ঋক্সংহিতার উলিখিত আছে। তিন সংহিতার একজ উল্লেখ বছবার অকসংহিতার মধ্যে দেখা যায়।

অথবদংহিতার মন্ত্রদকল ঋকৃদংহিতার আমাত বহিয়াছে বলিয়া অথবদংহিতা জ্বয়ীর অন্তর্গত হইল না। অন্যথা অকৃদংহিতার মধ্যে এই ছুই সংহিতার এবং এই ছুই সংহিতার অভিকলণের উল্লেখ দেখিতে পাওয়া বায়।

ৰচাং বং পোৰমাজে পূপ্যান্ গায়অং বো গায়তি শক্ষীয়ু। একা বো বদতি জাতবিভাং ৰঞ্জসাত্ৰাং বিদিষীত উৰু। (বু, সং ৮. ২. ২৪)

এই ঝক্মত্রে ঝক্, সাম, অথব্য এবং বজু এই চারি
সংহিতার উল্লেখ করা হইয়াছে। ব্রহ্মা অথব্সংহিতার
ঋষিক, তাহার নাম এই মত্রে উল্লিখিত হইয়াছে।
বজুর্বেদের ঋষিক অধ্বর্গুকে বজ্ঞের মাত্রার নির্মাতারূপে
নির্দ্ধারিত করা হইয়াছে। এই মন্ত্রটি উদ্ধৃত করিয়া বাস্ক্
বিলিয়েল—'ঋষিক কর্মনাং বিনিয়োগমাচটে' (নিক্সক্রম্,
উপোদ্যাতপ্রকর্ব ১৮)।

ঋক্সংহিতার পুরুষস্তের মধ্যে 'তত্থাৎ বজ্ঞাৎ সর্বহুতঃ ঋচ: সামানি জজ্ঞিরে। ছান্দাংসি জজ্ঞিরে তত্থাৎ যজুতত্থাদ্ জ্ঞায়ত।' (ঝ. সং. ৮. ৪ ১৮।) এই পুরুষস্তের মধ্যে ঋক, বস্তু এবং সামের কথা একত্র উদ্লিখিত হইয়াছে।

> 'সাম বিবর্ধা মহিতিগ্যভৃতীঃ সহস্ররেত। ব্ৰভন্তবিমান্ । (ব. সং, ৪, ৫, ৩) বজৈরধর্কা প্রথমঃ প্রবৃত্তে ততঃ সূর্ব্যো ব্রভপাবেদ আক্সনি (ব, সং ১,৬,৪)

সামসংহিতার মধ্যে অথর্বসংহিতার উল্লেখ দে'খতে পাওয়া বায়।

> ভাষয়ে পুক্ৰালগ্যধৰ্বা নিরমন্থতঃ মুর্থ্ব বিষক্ত বাষতঃ। ভৰু কা ক্ষাড্ ক্ষি: পুত্র ইবে অবর্ধনঃ বৃত্তকার প্রক্রমন্। ( সাম বেল ১,১,৯)

অধর্বসংহিতা বদি বহু পরবন্তীকালে বচিত হইরা থাকে তবে তাহার উল্লেখ সামসংহিতার মধ্যে পুনঃ পুনঃ কিরুপে স্ভব হইল ? অধর্বসংহিতা অধীর অন্তর্গত না হইলে সামসংহিতার অধ্বশক ব্যবস্তুত হইল কেন ? অকু-

সংহিতায়ও এই মন্ত্র উলিখিত হইরাছে। (খ. সং. ম. ৬, ১৬, ১৩-১৪), (খ. সং. অষ্টক, ৪. ৫. ২৪)।

শক্সংহিতার বহন্থানে সামের উল্লেখ হইয়াছে। 'দ্মর্কেভিন্থং সামভিন্থং গায়ত্রৈশ্চর্পদেয়াং' (ঝ. সং. ৬।১।২২) এই মন্ত্রের অভিপ্রায় এই বে চর্বলিগণ এবং লোকসকল তাঁহাকে অর্চনামন্ত্র দাবা বর্দ্ধিত করে, সামমন্ত্রদারা বৃদ্ধিত করে এবং গায়ত্রীমন্ত্রদারা বৃদ্ধিত করে।

'অৰ্চন্ত একে মহি সাম মহত তেন পূৰ্য্যমৰোচং' ( ব. সং, ৬২।৩৭ )

এই মন্ত্রেব ভাবার্থ এই বে ভোতাগণ মহাসামমত্র উচ্চারণ করেন এবং দেই মন্ত্র্যারা স্বর্গকে দীপ্ত করেন।

'বৃহদিক্রার গারত মরুতো বৃত্তহস্তমম ( ব, সং, ৬١৬١১২ )

বজ্ঞবর্দ্ধক বিখদেবগণ ত্যতিমান ইল্রের উদ্দেশ্তে এই গান ঘারা দীপ্ত সর্বাদা জাগত্রক জ্যোতিঃ উৎপদ্ধ করিয়া-ছিলেন।

> ভিল্যাতেৰ শকুনে সাম পারসি ব্রহ্মপুত ইব সবনেরু শংসসি ( ধ. সং, ২৮৮১২ )

অৰ্থাং হে শকুনি । উদ্যাতা বেরূপ সামগান করে সেইরূপ তুমি গান কর। বজ্ঞে এক্সপুজের ভার শব্দ কর।'

সায়নাচার্য্য লিখিয়াছেন—বোল জন ঋদিকের মধ্যে বিজ্ঞাণ শংসী' নামে যজের একজন ঋদিক ছিলেন।

'প্ৰাৰ ইক্ৰান সাদনং হৰ্যাবান পানত' (বা, সং, এখা) ।

ক্ৰাণ হে স্থাপণ! তোমৰা সোমপানী হৰ্যাৰ ইক্ৰেন্ন উদ্দেশে

মদকৰ তোক পান কৰ।'

'বা বিশাসাং জনিতারা মতীনামিস্তাবিকু কলশাসোমধানা'

প্রবাং নির: শক্তমানা অবস্ক প্রস্তোমানে। দীরমানানো অবৈ:
( ব, সং, ৭)১/১৩ )

অর্থাং 'হে ইন্স ও বিকু! তোমরা সমস্ত অতি উৎপাদন করিয়া থাক, তোমরা সোমের নিধানভূত এবং কলসবরণ। উচ্চাব্যমাণ ডোঅসমূহ তোমাদিগের নিকট সমন করুক এবং ভোভূগণ কর্তৃক সীয়মান ভোত্তসমূহ ভোমাদিগের নিকট সমন করুক এবং ভোভূগণ কর্তৃক সীয়মান ভোত্তসমূহ

'ৰি বৰাচং কীন্তানো ভরছে
শংসন্তি কেচিন্নিবিদো মনানাঃ' ( ব, সং, এ)১১১ )

'বৰ্থৰ মেধাৰিগণ ছতি উচ্চারণ করেন কেই কেই ছতি করতঃ বিবিৎসমূহ পাঠ করেন ৷'

অগ্নিৰ্দাগাৰ তমূচঃ কামৰন্তে

অল্লিজাগার তমু সামানি বভি। (ব, সং, ঃ।২।২৫)

'সভলাত কোষণ প্রকৃতি স্থিকে ভোলের সহিত হব্য প্রদানপূর্বক পোবৰ করিয়াছেন।'

'বেষি দ্বা পূৰ্ম জনে বেষি ভোতৰ আয়ুণে' ( ব, সং, এ।।।৩৩)
'হে পূৰা। তোষাকে প্ৰদাৰিত কয়িতে ইন্দা কয়ি। হে দীতিযুক্ত। তোষায় ন্তুতি কয়িতে ইন্দা কয়ি।'

ৰক্দংহিতার মধ্যে চারি বেদের চারি জন ঋষিকের নাম বছবার উলিখিত হইয়াছে। ঋবেদের ঋষিক হোডা, সামবেদের ঋষিক উদসাতা, বস্তুর্বদের ঋষিক ঋষবুর্য এবং অথববেদের ঋষিক ব্রস্না। এই চাবি কন ঋষিকের নাম ঋষেদে পুন: পুন: উল্লিখিত হইয়াছে। ইহা হইতে বুঝা বায় বে, অন্যান্য সংহিতাসকল ঋকৃসংহিতার পরবর্তী রচনা নহে। বজুর্বেদের ঋষিকের (অধ্বর্ত্ত) নাম ঋষেদে বছবার ব্যবহৃত হইয়াছে। 'অধ্বর্ত্তাভি: পঞ্চভি: সপ্ত বিপ্রা, প্রিয়ং রক্ষতে নিহিতং পদং বৈ'—এই মত্রের অভিপ্রায় এই বে, পাঁচ জন অধ্বর্ত্তার সহিত সাত জন হোতা গমনশীল অগ্নির প্রিয় স্থান বক্ষা করিতেছেন। এস্থলে যে অধ্বর্ত্তা শস্ত্রেশহিতায় উল্লিখিত হওয়া উচিত ছিল। এই অথও বেদের রচনাবিভাগ কেবলমাত্র ভাষার দিক হইতে করিতে গেলে বহু অমপ্রমাদ হইবার সম্ভাবনা আছে।

উভিভিন্তমিৰনো হ্যয়হতোনি মায়াবান ব্ৰহ্মা দহ্যৱত'। ( ঋ. সং, ৩)০)২২ )

অথবদংহিতার ৰাখিক ব্ৰহ্মার নাম ঋক্সংহিতায় উলিখিত হইয়াচে।

'আকুহানা মৃতপৃষ্ঠং পৃষদ-দধ্যবানো হবিবামর্ক্যধ্যন্।
'হে অধ্যযুগণ ৷ মৃতপৃষ্ঠ, ছুলবিনুবুক বহিঃহোমকরতঃ প্রদান কর।'
ঋক্সংহিতার ২, ৬, ১৩।১৪ বর্গে বে বারটি ঋক্মন্ত্র
আহে তন্মধ্যে ১১টি মন্ত্র অধ্বযুগিণকে উদ্দেশ্য করিয়া
আয়াত হইয়ার্চে।

'অধ্বর্গনো ভরতেজার বোদ নামত্রেভি: নিঞ্চা মন্যবন্ধ:'—
এই মন্ত্রের আভিপ্রায় এইরূপ বে, হে অধ্বর্গুগণ । ইজের
জন্য সোম আহ্রণ কর, চমদের হারা মাদক অর অগ্নিডে
প্রক্রেপ কর।

'অধ্বর্গবো বো অপো বব্রিবাংসং বৃত্তং ক্রখানাশক্তেব বৃক্তর ।' 'হে অধ্বর্গুগণ ৷ বে ইক্র ক্লাব্যুপকারী বৃত্তকে অপনি ধারা বৃক্তের ভার বিনাশ করিয়াছিলেন, সেই সোমাভিলাবী ইক্রের ক্লন্ত সোম আহরণ কর ।'

এইরণ ১১টি ঝক্মত্রে অধ্বর্তি শব্দ পুন: পুন: উলিবিত হইয়াচে।

'অধ্বর্গারোহণ ইতা সমুত্রমণানেপাতং হবিবা বলধান্।'
'হে অধ্বর্গারণ । জলের সমুত্রে গমন কর। 'অপানেপাং' নামক দেবতাকে হোমের জ্ব্যাবারা পূলা কর।'

এই দকল বৈদিক মন্ত্ৰ হইতে ইছাই প্ৰমাণিত হয় বে,
বিবাট বজকে দমূপে বাধিয়া এই চাবি সংহিতা বচিত
ইইয়ছিল। বজ ব্যতিবেকে এই চাবি সংহিতাব কল্পনা
কবিতে গেলে ঋত্বিক কর্মবিষয়ে সংশয় উপস্থিত হইবে।
চাবি ঋত্বিকের একত্র উল্লেখ হইতে বুঝা বায় বে, চাবি বেদ
বুগণৎ স্ট হইয়াছিল, নতুবা ঋত্বগণের উল্লেখ বদি ঋক্সংহিতার পাওয়া বায় আর সেই সেই ঋত্বিকগণ বে বে
সংহিতা অন্থ্যায়ী বজাদি দম্পন্ন করিবেন তাহা ঋক্সংহিতার
প্রের বিচিত হইয়াছিল স্বীকার করিতে হয় তবে এই বুজি
সভ্যন্ত প্রাতিম্লক হইবে।

পাশ্চান্ত্য পশুভগণ ধাবেদের ১ম ও ১০ম মণ্ডলকে পরবর্ত্তীকালীন রচনা বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। তাঁহারা এই যুক্তি দেখাইয়াছেন বে, ১ম ও ১০ম মণ্ডলের মন্ত্র সকল সরল ও সহজবোধ্য। এছলে আমরা ১ম ও ১০ম মণ্ডলের করেকটি মন্ত্র উদ্ধৃত করিয়া দেখাইব বে এগুলি সরল ভোনহেই, উপরন্ধ মহাভাষ্যকার পতঞ্জলি এবং নিকক্তকার বাক্ব এগুলিকে গুরুহ বলিয়াছেন।\* ঋক্সংহিতার ১০ম মণ্ডলে 'স্পোর জর্ভনী তুর্ফ'রী তু' (ঋ. সং. ১০. ১০৬, ৬) ইহা বারা আপাতঃকৃষ্টিতে কোন অর্থপ্রতীতি হয় না।

'অমাক্সা ত ইক্স কৰিবনে সনেমাত ং মন্ধতো জুনন্তি'— ( ব, সং, ১, ১৬৯, ৩ )

ইহাও প্রথম মণ্ডলের মন্ত্র। নিকক্তকার বাস্ক এই মন্ত্র উদ্ধৃত করিয়া বলিরাছেন 'অবিস্টোর্থা ভবস্থি'। এইরূপ বহু মন্ত্র ১ম ও ১০ম মণ্ডলে পাওরা বায় বাহার অর্থ সহজ-বোধ্য নহে। অপরপক্তে ২য় হইতে ১ম মণ্ডল পর্যন্ত অক্মন্ত্রের মধ্যে বহু সরল ও সহজ্ববোধ্য মন্ত্র আহেছে। (অ. সং. ৩. ৪২. ৪-৫, ৩. ৪৪. ১, ৪. ৪২০ ৩, ১. ১১, ১,৮৪,

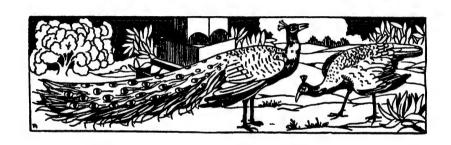
তার পর শতপথ ব্রাহ্মণের অন্তর্গত বৃহদারণ্যকোপ-নিবদে উক্ত হইয়াছে: 'ৰক্ত মহতঃ তৃতক্ত নিঃখসিতমেতদ্ अध्यमग्रक् विमार्थवानियामिकामिश्रामि । 'মহত: ভতন্ত' শব্দের দাবা বেদের অপৌক্ষবেয়ত্ব প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে এবং চারি সংহিতার একত উল্লেখ ছারা বুঝা यात्र (य सार्थम शुर्क्त रुष्टे इय नारे। এই চারি বেদ महान-ছত যে ত্রন্ধ ভাহারই নি:খাস্থর্প। এথানে বুঝিডে इटेरव रव. निर्मिष्ठे क्षणांनी अञ्चलारव विशिष्ठे बहनामण्यव तिम श्रास्त व विश्वभाग है जिन, त्रहे विश्वभाग तिमहे शूक्य-নি:খাসবং ব্রদ্ধ হইতে অভিব্যক্ত হইয়াছে মাত্র; কিছ কোনও ব্যক্তিবিশেষের চিস্তাপুর্বক বিরচিত হয় নাই; এই কারণে বেদ স্বার্থ-প্রতিপাদন বিষয়ে সম্পূর্ণ নিরপেক্ষ-ভাবে প্রমাণ, অর্থাৎ বেদের প্রামাণ্য-নিশ্চয়ের জন্য অপর কোনও প্রমাণের অপেকা করে না; ইহা খড:প্রমাণ। বিশেষতঃ পরমাত্মার উপাধিত্বত নাম ও রূপই ব্যাক্তাবস্থা প্রাপ্ত হয় এবং জল ও ভাহার ফেনার নাায় নাম ও রূপকে ভিন্ন বা অভিন্ন বলিয়া নিরূপণ করা বায় না। যে কোন অবস্থায় থাকুক না কেন, সেই নাম ও রূপ লইয়াই সংসার। এজন্য এখানে কেবল নামকে ( শব্দরাশিকে ) নি:খাসবৎ উৎপন্ন বলা হইল। কাৰণ ভাহাৰ নিৰ্দেশেই অপৱেরও—

করেদের দশন সকলে (১০.১০.১২৭ রাত্রিস্ক উক্ত ক্ইরাছে।
 এই আটটি স্কের অর্থ অতীব হুরহ।

রাত্রী বাধ্যদারতী পুরুত্রা দেব্যক্ষতিঃ বিধা অধি বিবাহিষ্ঠিত। (১) কর্মপা অবর্জ্যা নিবতো দেব্যুবত ল্যোভিডা বাধ্যতে ভবঃ। (২) ইজাদি। রশেরও নি:খাদবং উৎপত্তি প্রতিপত্ত হইরা থাকে। লোকের নি:খাদ বেরপ অযম্প্রস্ত অর্থাৎ খাভাবিক কার্য্যের ফলমাত্র ডক্রপ বেদরাশিও পরমপ্রস্থের নি:খাদবং অনায়াদপ্রস্ত। কিন্তু অপরাপর গ্রন্থ বেরপ লোকের চেষ্টাদাপেক, বেদ দেরপ নহে, এইজন্যই ইহা বত:-প্রমাণ।

বে কোন মন্ত্রগালিতা অধায়ন করিলে ইচা ফুল্পষ্ট প্রতিভাত চটবে যে, কোন যজ্ঞবিশেষ আরম্ভ করিয়াই সেই বল্লে অপেকিত দ্রবা-দেবতার গুণকীর্ত্তন, স্কৃতি প্রভৃতি এবং ৰজে ৰজমানের শুভুজাশংস প্রভৃতি বেদমন্ত্রসমূহের হারা প্রতিপাদিত চইয়াছে। অনা কোন অর্থ বেদমন্তবারা প্রতিপাদন করিতে চটলে নানাবিধ কিটু কল্লনার আপ্রয় লইতে হইবে। বেদের ব্রাহ্মণভাগ ও কর প্রভতি বেদাক আলোচনা করিলে এই কথাই স্বস্পান্ত প্রতীত হইবে যে ঋকমন্ত্র বছবার সোম্বাগের প্রাত: স্বন, মাধ্যন্দিন স্বন ও ভতীয় স্বন এই ভিন্টি স্বনের বিশেষ পরিচয় প্রদর্শন কবিয়াছেন। ঋত্বিকগণের নানাকর্ম্মের উল্লেখ এই ঋক্মন্ত্র-সমতে সম্পষ্ট দেখিতে পাওয়া বায়। শ্রোভতত প্রভঙ্জি গ্ৰন্থ আলোচনা করিলে ইহাই উপলব্ধ হয়। মল্লের দর্বামুক্রমনি প্রভৃতি গ্রন্থের আলোচনা করিলেও কোন ৰজে কোন দেবতার উদ্দেশে কোন সময়ে কোন মন্ত্র বিনিয়ক হইয়াছে ভাহাই স্বাত্তক্ষণিকারও প্রদর্শন কবিয়াছেন। এই यस প্রতিপাদন অভিপ্রায়ে বেদের মন্ত্রভাগ ও ব্রাহ্মণভাগ আলোচিত হইলে বেদের অধিয়ক্ত অর্থ প্রথমতঃ পরিক্ষরিত হইবে। ক্রৈমিনির মীমাংস। দর্শনও এই পক্ষের অন্তুক্ত। অধেষা চরতি সাম্বরৈ বাচং ভশ্রী অফলামপুস্পাম—৮/২/২৪ ঝ. সং. এই ঝকমল্লের ব্যাখ্যাতেও ভগবান যাম উপোদ্যাত প্রকরণে বেদের প্রাথমিক প্রথমাবগত বজ্ঞরণ অর্থকেই বলিয়াছেন। অধিবজ্ঞ ব্যাথ্যা দারা বেদমন্ত্রার্থ গৃহীত হইলে পরে অধিদেবতত্বে
বেদার্থালোচয়িতার পরিচয় জন্মিবে। কারণ দেবতার
উদ্দেশে হবি: ত্যাগই যজ্ঞ। এই দেবতত্বের সহিত পরিচয়
হইলে সমন্ত মন্ত্রভাগ বাহা অধিযক্তরণে প্রতিভাত হইয়াছিল
ভাহা অধিদৈবতরূপে ভাসমান হইবে। অধিদৈবতত্বে
নিল্লাতপুরুষ আধ্যাত্মতের স্থিতিলাভ করিবে। এজন্য
বেদমন্ত্রসমৃহই সাধারণতঃ ত্রিবিধ অর্থে ব্যাথ্যাত হইয়া
পরিসমাধিলাভ করিয়া থাকে।

অধিবজ্ঞ, অধিদৈবত, অধ্যাত্ম-প্রথমটি উপায় বিতীয়টি উপেয়: একনাই উদ্ধৃত মন্ত্রে বজ্ঞ, অধিবজ্ঞ, অধিদৈবত व्यर्थक भूष्म ও व्यक्षांचा व्यर्थक कन वना श्रेशाहा। कृत উপায় ফল উপেয়। ইহাই সাধারণতঃ বেলমন্ত্রসমূহের অর্থ। যজের ঋতিকগণের পথক পথক কর্ম বিভিন্ন সংহিতায় আয়াত হইয়াছে। বেমন ঋকসংহিতায় হৌত্র-কর্ম, সামসংহিতায় ঔদগাত্র কর্ম, যজু:সংহিতায় আধ্বর্যার কর্ম এবং অপর্বদংহিতায় ব্রহ্মকর্ম আয়াত হইয়াছে। প্রত্যেকটি যজ্ঞেই এই ঋত্বিক চতুষ্টয় অপেক্ষিত এবং ইচাদের কর্মান্ত বিভিন্ন রূপ। এজন্ত সোমবাগাদি প্রতিপাদনে প্রবন্ধ হইয়া শ্রুতি চতবিধ ঋত্তিককর্মানুদারে মন্ত্রদম্ভ চতৰ্বিধ ভাগে বিভক্ত হইয়াছে। কোন মন্ত্ৰ বা ঋত্তিক পূৰ্ব্ববন্তী বা প্ৰবন্তী এক্লপ বলাব কোন অবকাশ থাকিতে পারে না। অতএব আমরা ঋকসংহিতার মন্ত্রেও অনা বেদমন্ত্রের ও অনা ঋত্বিকগণের কর্মের উল্লেখ দেখাইয়াছি। মন্ত্রমূহের পৌর্বাপর্য স্বীকার করিলে ঋক-সংহিতাতে পঠিত মন্ত্ৰদমূহের আনর্থক্য হইয়া পড়িবে। ইহাই বিবেচনা কবিয়া ভারতীয় প্রাচীন আচার্যাগণ বেদমন্ত্রের পৌর্ব্বাপর্যা স্থীকার করেন নাই।



# ফরাসী-কবি লেকঁৎ দে नौन

### ঐনির্মলকুমার চট্টোপাধ্যায়

শ্ববিধ্যাত করাসী-কবি লেকং দে লীল্ ( Leconte de lisle) ১৮১৮ এইান্ধে 'বি-ইউনিয়ন' বীপে জন্মগ্রহণ করেন ও ১৮৯৪ এইান্ধে পরলোকগমন করেন। করাসী-পাঠকসমান্ধে তিনি অভ্যন্ত জনপ্রির কবি ছিলেন এবং আজও তার কাব্যাবলী বিশ্বের কাব্যরসিক্মওলীর বিমুগ্ধ দৃষ্টি আকর্ষণ করছে। জীবিভ কালে কবি লেকং দে লীল্ করাসী-কবিসমান্ধে বিশেষ আদর ও মর্ব্যাদা পেরেছিলেন; বড় বড় সমালোচক, সাহিত্যবিদ্ মভিত ও মনীযিরন্ধের নিকট বেকে ভিনি প্রভৃত প্রখ্যাভি অর্জন করেছিলেন।

खेमविश्म महासीत प्रवासात कारण अक विभिन्ने कविपत्नत चाविकाव द्वा . अंदा Les Parnassions मारव चिकिट्ड চরেতেন। এঁরা সদীত, কাব্য প্রভতি পুকুমার কলাবিদ্যার चित्रिको स्वीत छेभाजक दिस्मय अवर चित्रव चानिएक कार्या अक मण्डर्न मुख्य बदानंद सूद कृष्टिय प्रमाख (हरद-हिल्म। चान्केंम् (म नावाद्याचन (১৭১০-১৮৬৯), चान्द्रक ए किकि (১१৯१-১৮৬०), जान दक ए गुरुत (১৮১०-১৮৫१), श्रामि क्षाप्रय (১৮৩৯-১৯০৮), (च.-बम. एम क्राविया (১৮৪২-১৯০৫), ফ্রাসোরা কপ পে (১৮৪২-১৯০৮) প্রভৃতি স্থাসিছ क्रवाजी-कविक्रम बहे भोक्षेत्र चक्क क बिरमम । मिक् प मीम এই পানাসিকা (Parnassian) নামক করাসী-কবিবন্দের মধ্যে चलने हिलन। जिनि क्रिक्टिन स्व. कार्या करन विकास ও क्लाब পরিবিশ্রণ, বৈজ্ঞানিক যুক্তিবাদ ও ভাবাযুভূতির মিলন। যদ্রপ ও ক্রচ বাভবের সন্মুখন ছয়েও ভাই ভিনি কাষনা করেছিলেন ভাবভগভের সঙ্গে, সৌন্দর্যালোকের সঙ্গে পরিপূর্ণ মিলম , তার কাব্যেও সেইজম্য দুর্ভমান কগভের সঙ্গে অনুষ্ঠ ক্ষম ভগতের মহন্তর সংযোগ সাধিত হরেছে। নিজের বুৰিবৃত্তি ও চিভাৰাবার সাহাব্যে ভিনি পুৰিবীর প্রকৃত রূপ नम्पूर्व चादव द्वेशमध्य करवरहम अवर मानदवर चामा-चानत्म प्राय-इ: एवं कहा कर वर्षा-कीवम मिर्दा कहना करवादम छाव चर्क कारा।

লেকং দে লীল্ L'univers Visible অর্থাং দুগুরাম বিখের সৌল্ব্যরাশির সদে মনের ক্রমারাজির সংমিশ্রণে অপরণ কাব্যাবলীর স্টে করেছেন। এই প্রকৃতির মধ্যে বা কিছু সভ্য, বা কিছু রহতমর তা তাঁকে আকর্ষণ করত; তার মনোদর্শণে প্রভিক্লিভ হরে সেগুলি অপূর্বা কাব্যে রগারিভ হ'ভ; হাংয়াবেগের রঙীন আল্ পনার হয়ন্তিভ করে ভিনি সে সকল ভাব প্রকাশ করতেন। বান্ধ-হাংরে চিয়ন্তব প্রক্রমণ তার আহম-বীণার বিচিত্র

সুরে বেকে উঠেছিল; ভাই ক্থনও তাঁর ক্বিভার ভনি
আনন্দমরী আশা-রাগিনী, আবার ক্থনও বা অস্থুভব করি বে,
সেধানে বারুল হুবেছে নৈরাজের সুর। ক্থনও তার ক্বিভা
নিলনের আবেগে আত্মহারা, ক্থনও ভা মর্মজেনী বিজ্ঞেদের
হাহাকারে প্রভিথ্যনিভ। কোধাও তিনি অনুইবাদের ক্ষরগান
ক্রেছেন, কোধাও বা ভিনি হুরে উঠেছেন চুলাভ আশাবাদী,
আবার কোধাও তার চোবে বড় হুরে উঠেছে আদর্শবাদ,
কোধাও বা ভিনি হুরে উঠেছেন হুংখবাদী, কিছু স্বভিত্রক
অভিক্রম করে অবশেষে ভিনি সেই আনন্দমের সুক্রেরই
বন্দনার আগ্রহারা হুরে পড়েছেন।

লেকং দে নীন্-এর কাব্যের অগাৰ অভ্যানশী ভাষরান্ধি,
নতঃপ্রনারী অগীন চিন্তাবারা, স্নির্কাচিন্ত গান্তীর্যপূর্ব শব্দসূত্ব,
পরিমাজিন্ত বছে সতেজ ভাষা, লালিন্ডাপূর্ব বছারবর ক্রান্তিবছর হন্দ-এ সমন্তই তাঁকে মহান্ গৌরবের অধিকারী করেহিল ও প্রের্চ কবির আসনে বলিছেলি। তিনি একই সক্লে
ভাবপ্রবণ কবি, বিচন্দণ দার্শনিক এবং অভিন্ত ঐতিহাসিক
হিলেন। প্রাচীন ক্রের এীক, লাইন ও হেরাথিক্ সংস্কৃতি
সম্পর্কিন্ত পুন্তকাবলী তিনি বিশেষ বত্নের সক্লে পাঠ করেহিলেন। তাঁর কাব্যে এ সকলের প্রভাব হিল স্ক্রান্ত। এই
সকল কারণে করাসী-কবিসমান্তে লেকং দে লীল্-এর ছাম
হিল অনেকটা Maitre বা শুকুর মত।

লেকং দে লীল্ নিজে কিন্তু তার দীত-কবিতার পাঠকযুন্দের মনে কোমরূপ ছারী আবেদন জাগাতে সচেই হন নি।
তার কবিতা বেন জহারী ইত্রবন্থর কণিক বর্ণস্থমা, বাসজী
হাওরার স্পূর হতে হঠাং জেনে জাসা প্রকৃষ্টিত উদ্যান-লভার
স্থাতি, দক্ষিণের সামরিক চঞ্চল-বাতাসের হিলোল, কিবংকণের জন্য পূর্ব-চালের জ্যোংস্থা-কিরণ।—বা পতে বিমুগ্ধ
পাঠকের হৃদর কণিকের জন্য উরাদ হবে উঠবে, কিছুক্পণের
জন্য ভার মনকে লোলা দিয়ে বাবে কবিতার লোহল হন্দ্ আর
অপূর্ব ভাষা। সূল বেষন রূপে-সৌরতে গৌরবে স্টে
উঠে জাবার কিছুক্প গরে ব'রে পড়ে বার—তর্ বরার বৃজ্বে
রেখে বার ভার স্থানিত কীপস্তি—Parnassien কবি
লেকং দে লীল-এর বীতি-কবিতাগুলি হ'ল সেই রক্ষ ; ছবিক্রাভ বা গুল্ল তাব-পূল্যে বিম্নিক্ত এই জাব্য-লভার এইবানেই
হ'ল জাসল গৌরব। অহারী সৌন্দর্যবাদ্ধই হ'ল এই দ্বিভিকবিতা কর্মটর বৃল-কথা।

লেকং দে নীল্-এর এই অভিনৰ কাব্যবারা ভলানীভণ

অনেক করালী-কবির বলে লাকা কুলেছিল; কাব্যে লেকং দে লীল্-এর অন্থণারীর সংখ্যা তাই কর বর। ঐ কবিগোলীর বিখ্যাত কবি প্রালি প্রশাস্ত্র লেকং দে লীল্-এর বত পরিকার-পরিক্ষর বক্ষ-সভেক ভাষার পক্ষণাতী ছিলেন। স্থালি প্রশাস্ত্র ছিলেন নর্শন শারে স্থপতিত; গণিত বিদ্যাভেও তাঁর অগাধ অবিকার ছিল। Les Stances et Poemes (১৮৯০-৬৬) নামক প্রস্থকান করে এই করালী কবি প্রথম বারের নোবেল প্রাইক পেরেছিলেন। পার্নালিকা-কবি কে, এন, বে হেরেদিরা লেকং দে লীল্-এর রচনাভলী বিশেষ বড়ের সক্ষে আরম্ভ করেছিলেন। হেরেদিরা 'কিউবা' দ্বীপে ক্ষপ্রহণ করেন। তিনি ব্ব ভাল সনেট লিবভে পারভেন। Les Trophees (১৮৯০) নামক প্রস্থকান করে তিনি বলবী হ্রেছিলেন।

लाउँ र जीन-अब कविकाद देशव बांद नाबान क्षेत्रां পাৰ্যভিত্ন ভিনি চল্লেন করাসী-সাচিতোর অবর কবি ও গ্র্মণভাসিক ভিক্তর হিউপো। আল ক্স দে লামার্ভিন, चान क्रिक ए चिन ७ चान क्रिक ए बार बरे चिन वन कवि क्रिकाम क्रेश्कर मैकि-कविकाद क्रविका : कार्या मार्केश स मीम ভাষে ভাষে তাঁর পর্কাবর্জী এই কবিজ্ঞারের সাধার অভুসরণ ভৱেছেন ও তাঁৰের দীভি-কবিভার বারা বভার রাগতে সচেই চরেছেন। লেকং দে নীল -এর এই সব কবিতা নিবে ভিটর विकेटना ७ मार राज बुनावान बाटनावना करवादन। থভীকৃত্ৰী (Symbolist) দলের বিব্যাভ কবি পোল क्ष्वार्जन-अब लकें प नीज-अब देशदा निविष्ठ अक्ष ৰৰোক্ত বুচনা আছে। শক্তিশালী কহাসী-সমালোচক ৰাজিৰ করবঁ স্বাভাবিক নৈপুণ্যের সলে লেকং দে শীল-এর ভাষ্য বিচার করেছেন। আমানের দেশের (बीवर-बाडानी बहिना-कवि एक पछ (১৮৫৬-১৮११) ধুৰ আন্ন বন্ধনে লেকং দে লীল-এর কবিভার চমকপ্রদ नवारनाठमा करत अक चनुर्य ध्यय ब्रहमा करतम। ভবে ভা বাংলা ভাষার লেখা নর বলে সাধারণ বাঙালী পাঠকেরা রচমাটর রসাধাদে বঞ্চিত হরেছেন।

১৮৫৩ সালে ৩৫ বংসর বহলে লেকং দে নীল্-এর প্রথম জাব্যপ্রছ 'পোরের্ বাতিক্' (Poemes Antiques) প্রকাশিত হয়। তার মর বংসর পরে ১৮৬২ সালে ৪৪ বংসর বরলে লেকং দে নীল্-এর বিতীর কাব্যপ্রছ 'পোরের্ বার্বার' (Poemes Barbares) বার হয়; স্থলীর্ব বাইশ বংসর পরে ১৮৮৪ সালে ৬৬ বংসর বরলে লেকং দে নীল্-এর তৃতীর জাব্যপ্রছ 'পোরের্ রাজিক্' (Poemes Tragiques) হাণা হয়। কবির শেব কবিতাগুলি 'ভালিন্ডার পোরের্' (Derniers Poemes) বাবক প্রছে সভলিত হয়। 'পোরা দে পোরেল্' (Choix de Poesies) বাবক প্রকে কবির সম্ভ

হয়েছে। বলা বাহন্য, প্রকাশিত হ্বার নলে নলে এই সকল কাষ্যপ্রহ রসবেভা পাঠকনহলে বিপুল স্বাবরলাত ক্রেছিল, এবং এওলির কাষ্যরে অভাশি রয়েছে অব্যাহত।

बाजनावा आठाविज्ञाविभावत बाद्यमुक् विराम कवि रमके (म मीन-अद अस्तर वस । दादमक शाधीम कादमी ७ जावजीद গ্ৰন্থ হ'তে অনুবাদ করে কৃতিত অৰ্জন করেছিলেন। এ ছাড়া ভারতীয় ভাব, সংস্কৃতি, ধর্ম, ঐতিহ্ন প্রভৃতি বিষয়ে তাঁর আৰ হিল অগীম। এই বারনুকের শিকার ও সাহায্যে লেকং দে লীল ভারতীর পুরাণ, দর্শন, বিজ্ঞান, ইতিহাস প্রভৃতি বিষয় चरावम करविष्टालम । (महेक्क (लकेंश (म जील-धव कार्याव উপরে ভারতীর ভাব ও বর্ষের প্রভাব যথেই দেখতে পাওৱা ৰাষ। ভিক্ত বৌৰ প্ৰভতি ভারতীয় ধর্ম ও দর্শন-বিষয়ের वह कारवादा वा कवा लाउँ९ एम मील व्यविश्व करद्रिश्मम । এ সমন্তই ব্যৱস্কের সলে খনিঠভার কল, কেন্দা তাঁর निकृष्ठे व्हाउँ लाकैर ए जीन श्राद्यक्तिन श्राष्ट्रा नश्यक्ति দীকা। ভারভীয় বর্ষ ও দর্শনের উপরে দিবিভ দেকং দে লীল-এর কবিভাগুলি তাঁর প্রাচ্যের সংস্কৃতি ও চিছাবারার লকে গাচতম পরিচয়ের নিদর্শন। হিন্দুবর্শ্ব তার মনে বিশেষ स्थाना पिरविष्त , कांत्र 'कानवर' (Bhagavat), 'प्रवा' (Surva), 'बक्त है' (La vision de Brahma), 'निव' (Civa), 'বিৰ্ণয়' (L'arc de civa), 'ৰাৱা' (Le Maua), প্ৰভৃতি ক্বিভাগুলি পাঠ ক্বলে তা বুবা বার। 'বৰ', 'অগ্নি', 'कान', 'वाचन', 'नमा', 'नाविद्धी', 'देशक्षर', 'मादम', 'चनिता', 'देकलाज,' '(वन', 'छत्रेतव', 'बवि', 'चलत', 'किन्नत', 'हिमानव', 'वायीकि', 'क्ष्मामन', 'लकाद दावन', 'दाक्तन', 'বশরব', 'রাব', 'লক্ষণ', 'নীভা' প্রভৃতি পুরাণে উল্লিখিড, আমাদের একাছ সুপরিচিত নামগুলি যখন লেকং দে লীল্-এর মত একজন করাগী-কবির লেখার দেখতে পাই তথন কোঁতহল-विक्षिण जागरम जागारमञ्जू कुरू जरत करिं। अहे जब कविचार লেকং দে লীল্-এর আগ্রহ ও আছরিকভার বিশিষ্ট পরিচর পাওরা ৰাৰ। প্ৰাচ্য-সম্পৰ্কে তাঁৱ L' Orient ও Bouddha ক্ৰিডা इक्र के स्वाप्ताना । देनलाव नम्मार्कक कवि वार्षक केरलक ছিলেন। এই প্ৰসংক তাৰ Le Suaire 'de Mohammedben-Amer-al-Mancour' & Les roses d'Ispahan কবিতা হটর নাম করা বার। তা ছাড়া 'লরুলা' ও 'মজু ছু'র वंशां काविमी कवि लक्ष त नीन-अब क्षत्रक्षीरक त्य विधित बंदात कुरनदिन कात वह राम कात इ-अवहे क्विकार ज्ञातिकृते।

বিভিন্ন থাতের পশু ও পদী কবি লেকং দে নীল্-এর বিশেব থির হিল। দীবকত্বর উপরে লিবিভ তাঁর কবিভার লংব্যা ভাই কর নর। পশু-পদীর ববজত্ব বিরে কেকং দে নীল্ববন ভবন চিতা করতেন। তিনি বনে করতেন ধ্যু পশুৱা মাছবের অপেকা নির্দোষ ও সরল বনের অবিকারী। 'কাগুরারের বর্ধা' "Le reve du Jaguar", 'হন্দীৰ্ধ' "Les Elephants", 'ক্ষা চিত্রবাগনী' "La Panthere noire" প্রভৃতি উংস্কৃত্ত কবিভাগনী জার শিলনৈপুল্যের পরিচারক।—
একট ব্যক্ত পশুর বর্ধা-বাসমা ভেষম নিপুণ হাতে কবি লেকং দে লীপ্ কৃতিরে তুলেকেন ভার নিদর্শন-বর্ধা এই সম্পর্কে ভার সবচেরে বিধ্যাত কবিভাটর "Le reve du Jaguar" কিরদংশের মর্বাগ্রবাদ দেওবা গেল:

"শেহালা-জীর্ণ গুড়-দীর্ণ রক্ষ-শাবার পাশে— আছ শরীরে ক্র জদরে জাগুরার রোজ জালে; লেচন করিতে নিজ লাজুল রাগে দংশন করে, দীর্ষদণের সুবার আলার স্বৃতিটি গুঠাবরে !—

স্বিপুল যম অরণা; যেবা দিবার বিশ্রতরে
পদ্ধর আর পত্ত-জভিকা রবিরে গোপম করে,
আহাভিরা সেবা পড়ে ভাগুরার মরম মাটর 'পরে,
সমুবের বাবা লেহম করিরা সুপরিস্কৃত করে;
ভঙ্গাতে ক্রমে চুলু চুলু চোবা, লাগুরার বোলে বাঁবি,
বর্ণাত হুই মরমের ভারা কাঁপিছে বপ্ল বাবি' !
ভ্য জরা প্রয়াস সংজ্ঞা হারার, ভুবুই ঘুমের ভরে
লাজুল কভু সরিভেছে ভার, মাবে বাবে বাবা মড়ে।

খণনে খেৰিছে—সুপুঠ গাজী ছরিং-বনেতে চরে ; বেগে জাগুৱার পড়ে লাকাইবা সেই গাজীটির 'পরে ! ভণ্ডিভ সেই শাস্ত গাজীট ফুলারে আর্ছবরে,— মধরের মাবে জাগুরার ভার ধাবাতে শোণিভ ভরে !"

लिए ए मील वस निविष्ठ चाच्च किय वर्त कावाबाद्या প্রবেশ করেছেন , তার অভর্লেকের প্রশাদ সৌন্দর্যা-চেত্রনার ারা ভিনি কাব্যের দের হেছে প্রাণের উপর নির্ভর করেছেন। ভিনি তাই আছুষ্ট অভভাপুৰ্ণ কবিভাকে দিয়েছেন শক্তিপুৰ্ণ उक्त कीवम : सत्मत मार्वाटक . मत्मत वाश्वनाटक मत्कमर्वा ররেছেন ও স্টি করেছেন সুপরিচিত কল্প-বিলাসপদ্বী (romantic) कविका। त्नकं एक नीन-अब कवि-धाव जक्रण्यतः, अनुवारितः । आर्यरितः (कवः तिरे कवि-श्रारितः বাছে এক বৰ্ণাচ্য রশ্বদী বৃতি, অুগভীর রসলিপা-ৰা কাব্য-ব্যক্তে সুষৰভাবে করে রঙীন। মনের উপভোগের বত ভিনি अवन वर्ग-विकिक कावायखर एक करवादम बार बुन-कर्म करक इक-ए इत्क इति-लात्व चनुर्य-चामक नाज-नीनाव ইলোলিভ হছে। লেকং দে দীল্-এর ববু কবিভার ছিল একটা 'নুভীৱ ভাৰোৱান' বা Lyric Enthusiasm ; বা जीव "Les Elfes" वा 'नदीवन' कविचाद वेक्कारनद वक বিশ্বভক্ষভাবে কুঠে উঠেছে ৷ ভাবে ভাষার হবে কবিভাট

বীতিবত ৰোহকর। প্রথবেই অপরণ দৃত ব্রন্গোচর হয়:

"নিবিভ বনেতে অবিছে বেধার ছবিশেরা হলে হলে,
ক্ষু বোটকে একেলা সেবার অবারোহী লৈ চলে।
বর্ণপটিত পাছকা তাহার নিশীবে উজলি' উঠে;
বন অরণ্যে জ্যোংস্থা-ক্ষিণ বেধানে পভিছে লুটে,
প্রভাগিরা সেধা দীরি ভাতিছে নীরব বনের মাব,
ভোগিরা তিনির অবারোহীর বলসে শিরের ভাজ।
বনলপা আর শুন্ত ক্রুর বভবে আবরি জেশে,
বোহিনীর দল নৃত্য-উছল বনেতে বেভার হেসে।

মূহল-আভাসে বাভাসেতে ভাসে পনীলা স্ভারতা
কিনিলা কিনিলা বুলিলা বিনিলা সাগন-উনি বধা !

— 'ওগো বীর ব্বা ! এত পরে ভূমি এ হেম নিশীধকণে
বলো, কোবা বাও ?'— অপানী লাই কছে বিশ্বন-মনে :
'বলে দলে বত অভত-আজা কিনিছে ক্ষিত-মনে ;
এইবানে কেনো, হ'কমে মিলিলা এলো নাচ কনি বমে ।'
তক্ষণ অখালোহী বীন ভাল বাগ্দভা-প্রিগল পুহাভিমুবে
ক্রুত অহা চালিরে বাছে, ভাই স্ভারতা পনী-নাশীল সালল
আমন্ত্রণ উপোধা করে সে বললে :

'মা, না । ৰোৱ প্ৰিয়া ব্যৱহে চাহিয়া আমারি আসার পণ, আগামীকলা চালাব আম্বা মিলমের বনোরণ। সমূৰে বাবার পণ লাও যোৱে, বনচারী পরীলল, পার পণ বার চরণ-চিক্ত কুলজ্বা বন্তল; বোর বিলম্ব করে দিয়ো নাকো, প্রির বোর জেগে রয়, চাহিয়া দেব গো. উবার আভাস জেগেছে রজনীবর।'—

বৌৰনমুখা পৰীৱাৰ তৰু মদিৱ-আহ্বান জানাল:

—'অবাৰোহী গো, দাড়াও কণেক ৷ এনেছি ভোষার ভৱে
পরশ-মানিক সুগৰি-মানা—বাহাতে জালো না বরে ৷
গৌৰব আৰু ভাগা-রঙন দানিব ভোষাৱি করে,
জানার বসন করেছে বরন চল্ল-কিবণ বরে ৷'—

क्षि:

'মা ৷' বলিল বীয় ৷—'বাও ভবে ৷' কোণে ভূষার-আঙ্লে পরী

ब्वात यक शतनिन, शैत व्यक्तिता बात जिं।

এর পরে দৃঙ্গট ফ্রন্ড পরিবর্ত্তনশীল, এবং চরত্ব রত্ত্যর ঘটনার চিক্রট বিম্বতিত ৷ তরণ-বীরের কালো বোড়া সবেপে সন্মুখে অগ্রসর হ'ল, কিছ:

চনকিরা উটি' অখাবোধী সে সহলা সর্বে চার;
পব 'পরে হেছে, আসে সেবা এক ব্রতি ভূষারকার
কিছু নাহি বলি' বীরের পানেতে সে বে বাছ বেলি' বরে
—'বেতিনী, বাদবী, অভত-আছা, আটক কোরো না বোরে ;'

যর্গভেদী দৃষ্ঠট এবার ক্রপ্তর হবে উঠল :

'বোরো না আবারে, দেহতীন হারা—অপরা-অপবেবতা !
আমার প্রিরার আঁথিট জাগে বে, কাল বিলনেরি কথা ।'
'ওগো প্রিরতন, বন্ধু আবার !' লে ক্তে ক্রপ বরে,
'বিলন লোদের হবে অবত স্বাধির অভরে,
আবি আক রত !'—বার্তা ত্রিরা বীর ওঠে চক্লি',
বাত্রায় প্রেমে স্বাধির 'পরে চির্ভরে পড়ে চলি' !"

ৰাৱ উদেশে এই বিপংসমূল গহন-অৱণ্যে ৰাজা সেই প্ৰাৰ্থিতা প্ৰিয়তনা নারী অধারোতীর সন্মুৰে প্ৰত্যাখ্যাতা পরীর প্ৰতিহিংসার কলে যুত অবস্থার শেব দেখা দিল; তথ্যসূত্র অধারোতীর জীবন সাল হবার সলে সলে ক্বিভাটর উপরেও প্রত্যে রহত্যার ব্যবিদ্যা।

লেকং দে লীল্ শেষ পর্যন্ত গভীর আব্যাত্মিক-লোকের উদ্দেশে যাত্রা করেছেন। বহির্কগভের ব্যর্থ অনুসরণ না করে বানস-অনুভূতিকে হিরভাবে রূপ দিরেছেন। অর্থাং, আত্ম-প্রভাবের ভেডর দিরে আব্যাত্মিক-সমূহতি লাভ করেছেন, মানলোভর চৈতভকে কাব্যে রূপদান করেছেন। তাঁর বনের পর্দার রূপলোক আর অরূপলোকের অপূর্ব বিপ্রণ হ্রেছে; সেখানে সুটে উঠেছে 'পুমহান্ স্থরাজি'!

দৃশ্ভমান প্রকৃতির রূপ-বর্ণমার কবি লেকং দে দীল্ বিশেষ সাফল্যলাভ করেছেন; পৃথিবীর বাহুদৃশ্ভ তার যাহ-লেখমীতে মুর্ভ হরে উঠেছে। বর্ণম পভি:

"ছিপ্ৰহয়, অৱিয়াক, স্বিভৃত ব্যিত্তীয় বুকে,
উভ্ ক স্নীলাকাশে বসি' হজাইল বৌদ্ৰুকর,
নীৱৰ পৃথিবী। উজ বায়ু প্ৰজ্ঞালত অৱিমূৰে,
আগুল-বসনাহতা পৃথী সংজ্ঞালার নিরভ্য।
বস্তুবা নীযাতীন, কাভার করে না হারাবান,
উংসতীন নদীবকে গাভীদল ভ্রা-বারিতীন;
অরণ্য সুল্রে, বার ফীণপ্রাভ পরিনৃত্যান,
নিশ্লন-নিভ্য আল, স্পতীরে চিত্র-তলানীন।"
ভিংবা বথব পতি:

"নৃভ্যের রেশ দূর-সমুদ্ধে, সন্থার বারু হেমভের, ক্ষম অবধা সহলা ব্যবিভ বিদারের তার সদীতের কেলিবাহে চাড়ি' বরবীর বুড়; নীরব ব্যথার জালিবা হার রক্ত-রতীন রূপ বরিবাহে অভ-রবির রক্তিবার। বিশাল-নতের বন্দে শিবিল শাবাদল বুহু আন্দোলিহে; লাগবের বুড়ে রক্তিবা হার; সনীরব-হিরা কি ক্রনিহে; অলগ গভিতে স্ব্যা আসিহে, ব্যার স্ব্যা তলা সাবে, বিহল-নীড় রাম-শাবাদলে জড়ারে পড়িছে সুনীল-রাতে।"

ভবন লেকং দে লীল্-এর জনাধারণ বর্ণনাশক্তির পরিচয় পাই। প্রাকৃতিক দৃষ্টের বর্ণনা তাঁর করনার সংমিপ্রণে জপরপ লৌকর্যসম্পন্ন হরে উঠেছে, ভার মধ্যে স্পরিস্ট এক নৃত্তম স্থা, নৃত্তম ছল, নৃত্তম ভাব ও নৃত্তম প্রী। তাঁর চমক্প্রদ বর্ণনার ভবে প্রাকৃতিক দৃষ্ট আমাদের চোধের সাম্মে জীবছ হরে ওঠে। মাবে মাবে ভাই তাঁর কবিভা সম্বন্ধ হয় :

"সে যেন স্থীৰ্ণাস স্চির প্রভণ্ড ছদি হ'ভে, বিভিন্ন শভের শীৰ্ষে দাগিভেছে মর্মরের প্রার, কোন এক কলোচ্ছাস বীর-ছির মহিনার রবে, ধুসর দিগন্তপ্রান্তে অবসম বিমুহিত হার।"

জীবন-মব্যাকে প্রাজ্ঞ-কৃবি লেকং দে দীল্ মর্ত্য-মানবের প্রতি বলেছেন:

"হে মানব, হুদি তব আহলাদে বা কোতে শরিপুর, চলিরাছ বিপ্রহরে প্রতিও কাভারে স্থাকরে, বাও । এ প্রহৃতি শি:ব, পান করে হবি ত্যাত্র : শীবিত যে দেহ হেখা, হুখে-সুধে বাবে তাহা মরে।"

বিশাল-বরিশ্রীর চরম-সভাট মর্ভ্য-মানবের উদ্দেশে শানিবে আমর কবি লেকং দে লীল্ আবার পরমুভুর্তেই সাভ্নার আযাল-বালীতে বলেছেন:

"অঞ্ আর হান্ত কিছ, তুমি বদি পার গো তুলিতে, থাকো বদি তুলে নেতে চপল-পূৰ্ীর এ কামনা, সমতুল্য কান বদি শাণে-বরে, নার্কমা-শ্রীভিতে, বরি' লবে বদি ভূমি বিরাট ও বিষয় বাসনা,—" ভা হলে:

"এসো হেৰা। হৰ্যা ভোষা' কহিবে গো বাৱভা ৰহান্।"



## যাত্ৰী '

### শ্রীঅনস্তকুমার চট্টোপাধ্যায়

अवहा अवहामा कीता वानि वाकित्य माककीतात क्षेत्रात प्रवन ধুলনাখাট ছাতে তথ্যও রাতের অভ্নার আলেপাশের সব-किएटक करतानिकार यत कविरद बीटक । दाट्यर बस्कारर যারা আগে থাজভেট ডেকের উপর বান্ধ ভোরদ সাবিরে নিজেকের গণ্ডি টেনে নিরে শুরে থাকে, ভারা অনেকেই সে শব্দে চোৰ মূহতে মূহতে উঠে বলে। যাৱা অভ্যন্ত ভাৱা পাশ কিরে শোর। কেবিনের সামনে বেভের চেরারচার ইপর পলা পর্যাত্ত একটা পাতলা ব্যাগ ভতিতে ভতিতা मामत्मद किरक (**চ**ट्ट वटन बाटक। क्षेत्रांत बाबात जटक রাত্রির কচতা তেলে সেও একটা ছোট হাই তুলে ঠিক হরে বলে। ভৈত্ৰৰ মনীর জলকলোলের সলে প্রমারের চাকার শক ইঞ্জিনের বসবসানি প্রথমটা ভার ভালই লাগে-ভিড ভারপরই বেলা বাড়ার সঙ্গে সঙ্গে তা এমনি বিত্রী বিরক্তিকর হরে ওঠে--সমগ্র স্বাহমগলীর মাবে এমন একটা অসাভতা এবে দেব বে প্রীয়ারের মত সেও বেন কাঁপতে থাকে। এ প্রমিত্রার বছ বারের অভিজ্ঞতা।

স্বিত্রা সাধনের দিকে চেরে চেরে দেখে—কেমন করে কালো অবকার বীরে বীরে নীল হরে ওঠে—কেমন করে সেই নীলের বাবে আলোর চেউ এসে লাগে—পাছের ঝোপবাছের বব্য থেকে অমাটবাঁথা অবকারও কেমন করে আত্মগোপন করে। কেলেভিনিগুলো সব জনের ওপর ভেসে পছেছে—এক দল হুই ছেলে ভাদের ভিন্নি নিরে প্রমারের সঙ্গে পালা দিরে দাঁছ বাইবার চেইা করে—কিছুক্দণ পরে না পেরে উচ্চ হাসির সঙ্গে বিন্দা জনারের পর্ণ আগলে বরে — প্রমারের বাঁশী বেকে ওঠে—অমুভ কিপ্রভার ভারা পাশ কাটরে সরে সিরে বুভো আত্মল ভূলে ফুভিত্বের নিদর্শন দেখার—সারেকের গালাগাল শোনা বাত্য।

বসে বসে এই বিচিত্র জীবনের ছবি দেখতে ধুবই ভাল লাগে। প্রীয়ার বর্থন বাচের বারে এসে লাগে—সারেদ হাতের দভিতে তান দের তাচ ও করে বন্ধা বাজে তিরি পতিতে কর্থনও আগে কর্থনও পরে বার তাই রনে হর বাতের কিনারে ভিড্রার সময় কার্টের পাঁচাভমগুলি বুনি ভেদে বাবে। ভারপরে জেলো বাছ নিবে আলে, চাবারা ভিদি বোকাই করে নিরে আলে ভাব। বাজীদের নদে দরক্ষাক্ষি শ্রুক্ত হয় তেনে, কেট জেলে বা। প্রীয়ারের বন্ধা আবার বাজে, বানীয় গভীর আভ্রাজ প্রভিত্তবির সদে

মিলে কাঁগতে থাকে ... চাকার শব্দ স্ক্র হয় ... বারা আবে তারা তিনি নিরে সরে বার। প্রীমার চলে, কাবামাণা উলন্দ্রেলের দল কাঁকড়া শিকার কেলে হাততালি বের। প্রতিবারই স্থামিলা হাতের বইবামি পাশে রেবে এই বিচিত্র বিশ্বলীলা দেখে। বিশ্বত্বমের মাবে এই বাজাটুকু ওর কাছে এক বঙকাব্য বলে মনে হয়।

(मिम् अ कन्नाद श्रेमादवार्ष अविव (दनिश वर्द क्रिप-ৰাটে পাকী করে বে এসেছে, শশুরবাভী বাবে বোৰ হয় विराद शत क्षेत्र शामीत यह कहा । ठकठाक केरमह अकी। कार्यनाम भावध कि कि त्यम किनिज को त्वान बहाबति करत क्षेत्रारत कृत्न त्वच-कृतक र्वोक्टित करा कारे। विरक्षत्वत সমর বত নিকটবর্তী হবে আসে সঙ্গের বেরেটর সহিত বেটির কৰা বলা ধেন আৰু শেষ চহ না। সুষিত্ৰা ওলের পরস্পারের मण्यकं चाविकात कतवात (bहा करत। वा क महरे, कात्रव বন্ধসচা মানার না…বছ বোন বোর হর, বোষটা পরা বেরেটর মুৰ ভাল দেখা বাহ না, ক্মিত্রার ভবু মনে হয় ওবের ছ'জনের মুবের আদলে মিল আছে, বড় বোমই বোৰ হয়-বোৰ হয় क्न. निकारे। कार्यंत क्न मूहरू वृहरू *वार्ति* বেটিকে প্রমারের উপর ভূলে দের। ভারপর প্রবার আবার ছাতে—বেটির বাপের বাভীর গাঁ ছবির হত আভাশের পটে আঁকা থাকে। বিচিত্ৰ কিছু নয়, আক্লুই হবার মুখ্য কিছু নেই, यवन्य वामीत वत कदान वातक, जब कम कामि मा कि अकी। क्षेत्रज्ञ वाथाव क्षत्रिकांत कार्य प्रकी बनवन एरव अर्थ । विक्रष মণীর বুকে ছোট ছোট চেউগুলি রোদ লেপে বক্ষক করে बार्ट्ड जार्मित वछ। विकृष्ठकवारम आकारमद नरक बाँड মিশে গেছে—পাকা বাদের ক্ষেত্রে উপর স্থর্ব্যর আলো পড়ে অপূৰ্ব্য কুলৱ দেবার। কোবাও বানভাটা কুরু হয়েছে---কৰ্মব্যন্ত নিৰ্ভ পদ্মীকীবন। প্ৰবাৰের উপর দিয়ে এক বাঁক क्लाइत भावी छेटक बाब, क्षेत्रादात मत्य कारमत कामात मन ভাল শোনা বার না-ভবু লে ভালের পানে চেরে থাকে. कादनव कार्य किविटर मिटर विशेषश्चनाती बार्टिक किटन केलाज एक्रैट (हरद बारक-अक्ट्रे चार्श कि त्वम चाद हाहिरद त्नंदर ।

হঠাং পিছনে চেরার টানার শবে কিরে বাকে কেথে, সারা হনিবার বিষয় এক সদে বিদলেও সে বোব হয় ভার চেয়ে অবিক বিষিত হ'ত না। বাইশ বছর আসেকার দেখা— ভা হোক তবু গুভাংডই ভ—নাক চোথ মুখ সম ঠিক ভেষনি আহে তথু পরিণত বরসের গাড়ীবার্যন নাগুর্ব্যে ভা ব্যথম

করছে। চোবে চশমা, তা বাক সুবিত্র'কেও আক্কান পরতে হয় , অর্কেক চুল পেকে গেছে, ভা বাক ভার নিজেরও ভ ক্ষ পাৰে বি। ইয়া ও ভভাংভ, নিভয়ই ভভাংভ— সম্ভেৰে অবকাশ বাবে না। একটা বিহ্বলভা প্ৰক ভার वर्ग (मरे, जावा (मरे ७एक (वम ज़ाइटा करता अक्जम অপরিচিত পুরুষকে সংখাবনের বিধা ও অভভার তথা ভূলে গিবে ও বলে—"ওভাংড"—কঠে একরাশ বিশ্বর। সে লোকট ওর ডাকে আরও বিশিষ হরে বলে--"হ্যালো, प्रतिका पृथि अवारम ?" अत देखन क्शंवरत मस्य वह अ रवम धन मूचम चाविकात--कमशास्त्रत चार्यविका चाविकारतत **टिटर किंद्र** क्य गर। त्र श्रेमादर केंद्र अक क्यमहिनादक রেলিং বরে গাঁভিয়ে বাকভে দেবেছিল, কিছ সে বে সুবিদ্রা, ৰাইণ বছর আবেকার অমিলা…না না, বাইণ বছর পরের সুবিত্ৰা ভা কি কল্পনা কৰভে পেৰেছিল। এডকণে বোৰ হয় বিশায় আর আনন্দের আভিশংহ্য ভাকে ক্তিরে বরভ। প্রমানা সরে এসে বলে—'আমিও যে সেই ভ্ৰাই আমতে চাই ভভাং**ত** ৷ ভূবি এথানে ?' মুহু তেসে अकडें। क्रियां जामस्य द्वेरम चकारच वर्तन - 'वज ! वलहि।' সুবিদ্রার বুড়ের ভিডর ভোলণাড় করে ওঠে, আবার সেই হীৰাৱের সঙ্গে সঙ্গে হাভ পাঞ্জোর বিঞী কাঁপুনি। ७७:९७ प्रशिवाद मिर्क जान करत रहरत वरन, "कृषि रा একেব'ৰে বুড়ী হৰে গেছ পুৰিজা |" পুৰিজা তেলে বলে---"আর ভূমি ?" ভভাংত বলে—"বান্তবিক, ট: ় ইউনিভার্নিট **ट्रिक्ट (मर्ट ১৯२०-अ, जात जाज ১৯৪२। है: वाहेन**— ব-ছ র ! ই' জি বলছিলুম। আমি একটা সরকারী ফিলারি কীর নিৰে বাংলার নামা ভারগার আপাততঃ সার্ভে তরে বেড়াছি —কিন্ত ভূমি ?" স্বমিত্রা ভেমনি হেসে বলে—"আমি খুলনার ইলপেট্ৰেস অব মূলস—সাভজীৱাৰ টুৱে বাজি।" "৩-ইন-🗱 " व्य कुँठरक खणारक वरना, "त्रकीम अकवाद वरनहिन বটে—ৰে ভূষি এভূকেশৰ ভিপাৰ্টবেণ্টে চাৰুৱী পেৰেছ। ভাল কৰা—সভীশ, সভীশের কৰা ভোষার মনে আছে প্ৰবিশ্ৰা । যে কলেজের সৰ কট বেবেকে সহাৰ ওকনে ভালবাসভ—আন্ন অগীন বৈৰ্য্যসহভাৱে ভোনামের ভাত বেড়ে সমান ওঅনেই ব্যক্তিজ্ঞান সভূ করভ—সভীশ মারা গেছে।" —ব্যবাহ ওভাণ্ডর গলাটা ভারী হরে আলে। সুমিলা ব্যবিভ चरत क्षत्र करत-"मात्रा शिष्ट ? यह कि ?" "है। कारे। **७४ कि कारे, ड्रेनिक विरवध करविक-त्वी, बाव इस्टी** (क्रांवरकरक निर्व वर्णिक क्ष्मांत्राहे। जत्ना ।" बादीयनक সহাত্মভূতিতে অনিলার বন ভবে ওঠে, প্রস্নাভবের चवषां (कथम ?"

ভভাংভ বলে—"ছোপলেন। পভতরা নিরানক্ট কব বাঙালীর বরে বা হর একেরেও ক্রেছে টক ভাই—নাবে বাপের বাড়ী, ভাইদের বিশেষ করে অ'ত্বব্দের গঞ্চা—বোধ হয় আত্মহত্যাই করত যদি-লা হেলেবেরে হুটো বাকত। ভাল কবা"—একটু বেয়ে গুভাংগু বলে—"মেরেট ন্যাট্রক পাল—হাতের কান্ধ লেলাই-টেলাই মন্দ জানে না, ভূমি চেঙা করলে বোব হয় ভাকে এই দীনভা বেকে হকা করতে পারবে।"

"আছা দেধৰ—কিন্ত আপাততঃ ভোষার হাত দিয়ে কিছু সাহায্য পাঠালে দোষের হবে কি ?—আহা সতীশ ; বাতবিক আমরা তার ওপর ভারী অবিচার করেছি।"

"বিলক্ষণ, আগতি তিসেব", এতটু তেলে বলে, "কিছ
'শেষাণিট' নাকি ? কিছ তাতে কি সুবিধে হবে সুবিদ্ধা—লে
ওই ভাই ব্যাচাহাই যেয়ে দেবে। বাক, ওকণা ছেকে লাও,
ভোষাদের সেই কণা মেডেটির খবর বল, মোই ইণ্টাডেটিং, সেই
যে অভ্যুত তাবে মেচে নেচে চলত—আর কলেজের কোম
ছাত্রকে দেবলেই চুভিতে গোঁজা ছোট ক্রমালটা টেমে রুখটা
একবার বেজে নিত।" সুমিন্রা তাবে—টিক সেই আপেকার
ভভাংত—সেই উজ্জা প্রাণশপদ বা লভোচের গতীকে ভেলে
বছুছকে নিবিত্ব করত। তেলে বলে—"ভোষার চুলওলা
পাকলে কি হবে তু'ম আজও টিক ভেমনি 'সিলি' আছ।
কণা এবম আর সেই কলেজের মেরে মহ—বল মেবের
মা। এম-এ কেল করেই ওর বরাত বুলে গেল—এবম
ব্যাতিই'রের বে), ওর ছেলেই ত থার্ড ইরারে পড়ছে—আর
মোটে, বাভবিক ভভাংত, চলবার ভলীটা টিক যারের মন্ড
শেরেছে, ভেমনি মেচে মেচে চলে।"

"আছা প্রক্ষের শুপ্তর কবা ওনেছ ? বুড়ো বহসে আবার বিরে করেছেন—ওঁকে খেলে দেওরা উচিত ছিল। আর আক্ষাল পোষ্ট প্রাজ্যেটের ছেলেগুলো একেবারে সাইক-লেগ, আমহা হলে ওঁর প্রক্ষেমী ছাড়াডুহ—ভবে অভ কবা।"

"ভা পারতে।" স্থান্ত মুখ ইপে হেসে বলে—"সেবারে ভোষাদের সেই লোনেম ছেলেটিকে…উ: ছি ছি…শেষ পর্যন্ত ভাকে কলেজ ছাভিরে তবে ছাভলে—আমি কিছ ভোষার উপর ভারী চটেছিল্ব।" ছুইানির হাসি হাসে ভভাগত। স্থান্তা বলে—"আছা ভোষাদের সানের খবর কি ? রিমলেস চসরা পরে মিই মিই কবিভা লিখত—আর সভীপোর সঙ্গে কবার কবার বালা আমার বিবে বলেছিল, পড়ে অভিমত লিখে দিতে—শেবে সালা পাভা আছে। আমার মনে আছে আমি লিখে-ছিল্ম, ইম্পাত না হলেও রাজনে বরলে বার হতে পারে—উ: বেচারা প্রায় কেঁদে কেলেছিল। ভোষাদের সাল জোবার ?" ভভাগত ছোলে বলে—"সানের খবর রাখ মা ? আরে, সে বে এখন মন্ত বভ বাবসালার—শেষার রাকেটের কত বভ বালাল, লাখ ইছিল বন্দ-ভগন বার করে বিতে পারে। বিবালেল চম্পার

এবদ আর পরে না, নোটা সেলের চপনা পরে—আর শরীংট এবদ আর ভছু নেই, একেবারে বপুতে পরিণত হরেছে। তবে এটা সভ্যি স্থিতা বে ভোনাকে বিরে করবার কর ও বেচারা একেবারে তেপে উঠেছিল—আর করলেও বোর হর ঠক্ত না।"—তেসে ভভাংভ কর্বা শেব করে।

"সিলি"—কণট কোৰের সকে সুমিত্রা বলে—"বিস্ত বেলা ত বেল কচ্ছে—আককে কি আর ধাওরা-চাওরা হবে না ?"

"না হলেও আগতি নেই, কারণ আমি ও কাজটা সেরেই উঠেছি—তবে ভোষার আভিধ্য নেওবার দৌভাগ্যকে"—কথা শেষ না করে স্থিতার পানে চার। স্থিতা কঞ্জিত হবে উঠে বার।

বাওয়া-দাওয়া বংলামাত। প্রেচ বছসের ভীর বেকে থর কলেক ত্রীবনের উচ্চল দিনগুলিতে কিরে এগেছে—কভ श्रेवाद्यां अन् तन-त के केन क मामन चाद विदान (महे : तहे कानि, तहे नहें की की पहें चशामक (वारनह (बाडी हमबाद केंट्कब बना (बटक चहुक्ताद (हरव बाका... প্রোকেসার বামার্কির অন্ত উচ্চারণতদী---বিনয়ের পশুপদীর नेनां बाक चक्रका कहा अरकतारत करक... (क्नारक विश्वत हित्यवासाय कॅटक बाजा···ज्रशीत्यत जत्म बाजाबाति···बीजां•·· (भावमा...रक्षित चाव जादा कीरामद (क (क'न चाद चरितिक, अ जकरमद व्यव वर्गमाव वाहेन वहद आर्थकाद कृष्टे अहदक हात-हाळी चारात त्वम क्षेत्रम कोर्यात चामम-त्वमना-तरम फेक्स मिनक्रिएक किरद अरमरक। कर्डार क्रजारक नरम-"कि পুৰিত্ৰা আৰক্ষাল আৱ কবিতা লেখ না, আছো তোমার সেই क्रिका माम चारब---(वहें। क्रिम चाक्रकांच करन 'विच-गाहित्जात गतिनिष्ठ' नत्म क्षर्य स्वयं केळ्जिल हत्य निर्देशित. কিছ সাহস করে নীচে নাম দাও নি-ভোমার মনে আছে ত্ৰবিষা ?" সামনে বুঁকে ভভাংত প্ৰশ্ন করে। 'বাও ভাষি मा' वरम श्रमिका मिक्क मुनवामि किदिएत स्मत ।

আমার কিছ হবত মনে আছে, এমন কি ছটো বানান ভুল করেছিলে আও—ভুদবে, শোদ—

বৰ্ণাৰ আশীৰ ভৃপ্ত উধে লিভ গিরিগরী ভূমি— প্রাণের বভাষ বেগে বাঁচাইবে এই মর্ডাভূমি বাধা দিবে ভূমিলা বলে—"হবেছে, থাক।"

''ৰাক কি সুনিঞ্জা—কান ? ইতিহাসে বা কথনও ঘটে নি
বা কেউ কথনও কলনা করে নি, তুনি ভাই করেছিলে । বেছে
হবে হেলেকে উদ্দেশ্ত করে কবিভার প্রদা নিবেদন করেছিলে ।
কিছ ননে আছে—সেবার ভোলার কি ভীবন কল করেছিলে ।
নেই কবিভা হাতে কোরিভোরে ভোলার চ্যালেঞ্জ করে বলেহিন্ত, পোঙ-প্রাকুষেটের সেক্টোরির কাছে নালিশ করব ।
সভাই ভোলাকে সেনিম কি নার্ভান হতে বেখেছিলার
স্থনিলা—বাকে আল্বা ভাল বাংলার বলি বেপপুরতী—এতে-

বাবে ট্রক ভাই। ভার পর ভোষার আখাল বিবে আবি বে কবিতা কিরিয়ে দিয়েছিলায—যদে আছে গুল

"আছে—বেৰতে চাও"—পুনিলা গভীর করে বলে।

"কি পাগন—ভূমি কি আৰও তা রেখে দিয়েছ"—বিশিত হয়ে বলে তভাংত।

সুমিনা সে কৰার উত্তর দেব মা। বলে—ভাল কৰা— পাগলামি করতে করতে তোহার আদল কৰা ফিজেস করা হর মি—ভোষার বোঁ, ভোষার ছেলেমেরে—পূর্ণ দৃষ্টিভে সুমিনা ভভাংগুর দিকে চার।

ভ্ৰাংশ হো হো করে ছেসে বলে—"ওবলি ইন ডুিমস্
(কেবল যথে) প্রজ্ঞি— ওমলি ইন ডুিমস্।" ভার পর নিজের
আব পাকা আব কাঁচা চুলগুলোর মধ্যে আকুল চালিরে বলে
—"কিন্তু এবন বে আনক দেরি হরে গেছে।" একটু পরে
ভ্রাংশু কেমন গভীর হরে বার, বলে—"ভোমাকে দেবেও
বনে হচ্ছে বে ভূমিও বোব হর এই ভাজ্ঞা করবার প্রবোগ
করে উঠতে পার নি, কিন্তু ভবু ভোষার ফ্র্যান্সলি বলি এ
হর্ম্যান্ধ না হলেই ভাল হ'ত।"

স্থমিত্রা থর দিকে একবার চেবে চোর্থ কিরিবে বের।
ভঙাংগু নিজের গেরালে বলে চলে—"দের স্থমিত্রা, সত্যি করা
বলতে কি—"আই ভোউ সো মাচ কিল কর এ ওরাইক
বাট, বাট আই লং কর এ চাইজ—এ চার্মিং চাইত্র"—( লীর
অভাব ততটা আমি অস্তব্য করি না, কিছু বেলে—একট
স্কলর হেলে আমি চাই)। একরাবা কোঁকড়ানো চুলওয়ালা
একট স্কলর শিশু আনার 'বাবা' বলে সলা কছিবে বরছে—
গঃ, হাউ ডু আই কিল কর ইট, এও কিল হাউ প্যাশমেটলি
(আঃ, কেমন করে—কি ভীত্র ভাবে আমি এ অভাব বোধ
করছি), ছেট স্কলর শিশুর দিকে চাইলে চোধ কেরাতে পাত্রি
না…'হোরাট এ পিটি' " ( কি শোচনীর অবস্থা ) !

পুনিত্রা শুভাংশুর দিক খেকে বুখবানা একেবারে শিছ্ম করে বাইরে জলের দিকে চেবে বাকে। শুভাংশু কিছুক্তরে কভ আন্দর্মা হবে বার। ভার পরে নিজেকে সাবলে নিয়ে কথার পুর পার্ণেট বলে—"আছা। ভোনার সেই বদক্ষোভী নামাট এখন কোধার, বিনি বে-কোন ভেলে আর বেবেকে কথা কইতে দেখলে পৃথিবী রলাভলে বাচ্ছে বনে করভেব।" পুনিত্রার দিক থেকে কোন সাভা আলে বা—শুভাংশুর রসিক্তাও টিক করে না, ও আতে আতে রেলিং বরে ইংভার।

ভিছুক্দ পরে কথা আরম্ভ করবার চেটা করে বলে—"ইস্
সুবিজা, ভোষার চুলগুলি বাথাবিকই বেশী পেকে গেছে—
আবার চেতেও—আহ্না চলত আরমার সামনে পালাপাশি
ইাভিত্রে বেশি কার বেশী পেকেছে"—কথাটা একটু বুঁকে
অহুসভের সকে বলতে গিরে দেখে, স্থবিজ্ঞার হু' চোথ
হাপিত্রে কোঁটার পর কোঁটা কল করে পড়ছে। যাড

হবে উঠে ওভাংও বলে, "হি হি--আমি কি ভোষার ৰৰে আখাত দিলাৰ প্ৰমিলা-ভাৱি অভাব হবে গেল ত।" अक्रे दार्वाव स्वाब क्र्ल वर्ल. "स्वयं, शांका इक वर्ल निकारे ভোষার বাদ ভরতে চাই বি-বরং এই বহলে চলওলোর কাঁচা থাকাই বে অগোরবের সুমিলা।" ওর ইচ্ছে করে সুমিলার বাৰার উপর হাত বেবে ভাকে শাভ করবার চেঠা করে. ভিছ টক সাচস পার না। এত একবার মনে তর এই পাকা চলের প্রাচীর কি এই সভারতভির অর্পতে তথাকবিত শিপ্তাচারের পত্তীকে অটুট রাধ্যে দা। জোলো বাভাগ লেগে श्रविकात हमश्रतमा--वित्यय करत भाका हमश्रतमारे व्यव উড়তে বলে যনে হয়। সুষিত্রা কারা আর কিছুতেই চাপতে शास्त्र मा, बूटवं खाँठन ठाशा वित्य छैर्द्ध शिस्त्र स्कवित्यव नवका वह करता । अवारक दक्षम इचतुन्ति हरत बात-धत कवान ৰা আচরণে পুৰিত্ৰাকে কোৰায় ব্যবা দিলে বেলিং বত্তে ছাভিত্তে হাতিৰে বিষয় মনে সেই কথাই ভাৰতে থাকে। হঠাং সীনারের वीनित मधीत पत पार्ड (य पहुतवर्धी (जक्या (वायमा करत) चार्नानी अल राज, "चानान्त्रमी अन, मामरक हरन।"

ওভাংও প্ৰিয়ার ক্ষম বাবে আবাত করে বলে, "প্ৰিয়া বোর বোল—এবার আবার নামতে হবে।"

স্থানি বাবে প্ৰে বেরিবে আসে—চোপে স্থাপট কলের নাগ, চাপবার চেটা করে না। ভারী গলার বলে, "ত্মি নাভকীরে বাবে না ?"

"বাৰ, তবে হু' চার কাষণা বুরে বেতে হবে"—অল হেলে ভতাংত উত্তর কেয়।

"(कम ?" जब क्रकश्रत राम प्रविद्या।

অভূত প্রশ্ন। ততাংত উত্তর না দিরে ওর বুবের দিকে তাকিবে বলে, "বাতবিক আত্মকর দিনটি তারি প্রকর কাটল—বেন বর্থের বত। উঃ । বাইশ বছর আর্গেকার দিনগুলোকে কিরে পাওয়া—আক্র্যা ! বাইশ বছর আর্গের প্রবিরা-----আছা প্রবিরা, তুমি বর্ধন ইলপেকপ্রবে বাও বেরেরা তোমার তর করে ?"—ভার কঠে বেকে উঠে আসর বিনারের সুর।

স্বিদ্ধা এসৰ কথাৰ উত্তৰ বেৰ না, বলে, "সতীপের বৌৰের টিকানাটা হাও সে কি বাইবে চাকরি করতে পারবে ?" শুভাংগু বলে, "নিক্ষাই"—ভারপর নোটবৃক্ থেকে একটা কাগল ছি'কে নিরে টিকানাটা টুকে বের। স্থিতা বেথে সেই বাইশ বছর আগেকার লেখা একটুও বললার নি। লেখবার সময় নীচের টোটটাকে টিক ভেষনি করে কানকার।

ষ্টাৰাৰ বাটে ভিড়ল। ভভাংভ টুপিটা নাৰাৰ বিতে থিতে বলে, "আলি ত্বিলা।"

প্রবিজ্ঞা কলভরা প্রাপ্ত চোধ হুট ভূলে ওর পানে ভাকার, ভারণর চোধ নত করে কি বেন বলবার ইচ্ছে করে—ওর ঠোঁট ছটো ভবু কেঁপে ওঠে—কিন্ত কিছুই বলা হয় না। ভভাগত নেমে বার।

সন্ধা হবে আসে। মদীর জলের উপর খেব খ্র্যান্ডের चारना वनवन करत. चात अकड़ी रकान चारड़े राहे वर्षे स्वरव বার। এবারও প্রমিত্রা চেবে চেবে বেবে বর্টে, কিছ লে আর ওর মনকে স্পর্ণ করে না। অবকার হরে আসে, হীমারের সার্চনাইটের আলো হরে হরে ছ'পাছের উপরে পছতে বাকে। यमीत छेनत त्रीकात उटक मीन चल. श्रेबाद्वत छा त्रीवाचात আনে পর্যাত আলোর ভারা তলের তলে অনেক দুর পর্যাত চলে ৰাৰ। ভারপরে চেউ লেগে ভারা ভেলে বার-নৌকাগুলো इन्राट बाक .. बीभिना एव बाकात्म बाबाव वक विष्टे विष्टे করে। তীরের উপর প্রাম থেকে শাঁথের আওয়াক তেনে আনে ···ভাকাশে সন্থাভাৱা দপ্দপ্করে জলতে থাকে···ত্রিভা क्टाइ क्टाइ अवनि आदा अक्षे जरजात तहनात चश्च क्टाई. খামী, পুত্ৰ, কড়া---একমাণা কোঁকড়া চুলওয়ালা সুলৱ শিশু ৬র কোল থেকে দৌছে গিয়ে কার পলা ভড়িয়ে বেন 'বাবা' वलाइ... इक्टिक मान भारक संस्थात क्यां-- 'बार्ड मर सब ब हाइक.... हाजिश्हाइक...!"

প্ৰবিদ্যা চৰকে উঠে সোজা হয়ে বসে। ভারপরে ভাষা-হীন উদান দৃষ্টিতে বোলাটে আকাশের বিকে চেরে বাকে; ভেক চেরারটার হেলান বিরে—চলং-শক্তিহীন রোনীর বভ।



# নেপালে ভাইপুজা

### গ্রীনরেক্সনাথ রায়

নেপাল বাংলাকেশ থেকে বিচ্ছিত্র বহু দূরে হিবালরের নিভ্ত কোন্ডে স্বাক্তি দেশ। কিছ ববন এদেশের আচার-প্রবা, রীডি-নীডি, পূলা-পার্কাণ ইত্যাদি লক্ষ্য করি, তবন বাংলার ললে এর অনেকটা সাদৃত দেখে অবাক হরে বাই। এই ঐক্য আরও সুস্পাই হবে উঠে ববন নেপাল ও বাংলার ভাষা ভূলনা করা বার। ভূলনাসূলক আলোচনার কলে নেপালী ও বাঙালী-দের অভীত বনিঠ সধ্বের সভাবনার কথা মনে কেপে ওঠে।

আৰু 'ভাইপুছার' বিবরণ বলব। বাংলাদেশে বে পার্মণকে 'আড্বিভীরা' বলে দেশালে ভাকেই 'ভাইপুছা' বলে। এই পার্মণের উদ্ভেগ্ন আব্দুর্ব্যর কথা ভাবলে বভই মনে হয় আমাদের এই নবছাগরণ—এই ছাভীর একভা লাবদের দিনে ইছা ভারভের ছাভীর উৎসব বলে গণ্য হওরা উচিছ।

বেণালে সকল জাতই ঠিক একই প্রধান্ত্রসারে 'ভাইপুড়া' করে না। ত্রাহ্মণ ছত্রী প্রভৃতির নিরম এক রকম, আর নেওয়ারদের প্রধা ভিন্ন। আমি আজ নেওয়ারদের ভাইপুড়ার কথাই বলব।

ভাইপুৰা হয় সন্থার পর। ভাইপুৰার প্রথমে ব্যরের বেবেন্ডে প্রভ্যেক ভাইরের ক্ষণ্ড এর একটি মঙল আঁকতে হবে। মঙল আঁকবার মিয়ম হচ্ছে, প্রথমে কলের আলপনা দিরে ভার উপরে ভেলের দার্গ বিভে হবে। এই ভেলের দার্গর উপরে আবার ওক্না চালের ওঁড়া ও হল্দের ওঁড়া বিশিরে রেখা টানভে হবে। মঙলের বাইরে চার কোণে এবং ভিভরে টক নার্বানে কিছু কিছু নান রেখে ভার উপরে আভ চাল রাখতে হবে। এই চাল ভৈরি করতে পুর সাব্ধাম হভে হর বেম একটুও মা ভালে। সেই চালের উপরে ক্লওও ধুনা রাখতে হবে। এই সব রেখে ভারপর সকলের উপরে রাখতে হবে 'বজন্কা'। আঙ্গলে ভৈরি ভ্রেন্ডার ছোট লৈভার নাম ও বেশের ভারার বলে 'বজন্কা'।

এর পরে ভাই রওলের দিকে রুধ করে বসবে। বোদ ভাষদ 'সগুন্' বা 'গগুন্' এনে একে একে ভাইদের হাতে ছলে দিবে।† বদ, বাংস, ভিন, আলা, রত্ত্ম ইভ্যাদি নিশিরে

ভারিক-বর পাঠ করে 'লগুন' ভৈরি করা হর। ভাই ভক্তি-ভৱে ওটা ছাতে নিৱে আপন বাধার স্পর্ন করাবে, এবং সেই नक्टि ( दान वर्ष हरन ) क्षेत्राम क्यार । दान वरि हार्डे হর, ভবে বোদ ভাইকে প্রধান করবে। ভারপর ভাই দেই ज्ञथम बाद्य । बाजहाद मिह्न-अक अक्षे किमिन मिद्र काह जाक मान मिनिया बारव । शतिमान व्यवस ब्रवे क्य । वादा দীক্ষিত তাঁদের প্রভ্যেকট ভিনিস থাবার সদে সদে মন্ত্র উচ্চারণ করতে হবে। কোন্ট আগে কোন্ট পরে থেতে হবে ভারও নিরম আছে-প্রথমে ভিম এবং পেবে আলা बाधबाद निद्य । 'जधन' (मध्या इतनरे ताम चारेक 'मैका' वा 'तिन' ( चर्वार (कांडा ) (नव । (वंडडक्म, 'चक्छा' (डान), पर और किम किमिन पिरत (काँहै। पिरक दव। चारन हक्त वितंत, छात्रभव वरे ७ चक्छ। नित्त क्भान क्लिंक नित्क कृत्व। योदा वस कृत्वम छाता वसक्य विश्व नवरहत्व चारन क्लांडी एम । 'जलम' बाबाद जमन त्याम बरे बवर मामा कलाइ টুকরা ভাইরের মাধার এমনভাবে ঢেলে লেবে যেন সেওলি গভিত্তে মাটতে পভে যায়। এরপর মাটতে বা পভল ভা বাঁট দিবে পরিকার করতে হবে। তারপর একট শালপাতার 'লোমা' বা 'টপরা' বা 'ঠাত্রে'র (ঠোডাক্সভি) মব্যে মামা वक्ष कन ( जाद मत्या जानरता के जजह श्राताज्ञीय अवर 'विभिन्ना' (मन् पाका प्रतकात), अकड़ ज्ञाति, श्वना, 'वक्ष्का' ( अप्रै वावकारवर धेनपूर्क ) अवर कूरनद बाना स्वर्थ (मह ঠোঙাট ভাইকে দিভে হবে। ভাই ভা গ্ৰহণ করে রেখে দেবে।

এর পরে ক্ষেক্ট পলতে একর করে তার হুই বুবে আন্তম বরিরে বোন তা হু'হাতে বরে তাইরের নিক্ট আনবে। তাই সেই আন্তম স্পর্ক আন্তম হাত মাধার হোঁরাবে। বোন তারপর সেই পলতেন্ডলি মতলের উপর আন্তামান্তি করে এমন তাবে রাধ্বে বেন চার আনগার বানের উপর অলতে বাকে। তবন মতলের উপর বুপ আলিরে দিতে হব। এর পরে বাঁট দিরে সব পরিকার করবার মধ্যে বাতি নিততে পারবে না।

সৰ পরিকার হলে ভাই নিমন্ত্রণ থাবে। এই থাওয়াটা দেবে বোন। কিছ এ নিনন্ত্রণে ভাভ থাওয়া চলবে না। বে সৰ জিনিস থাওয়া হয় ভার বব্যে চিঁড়াই প্রধান।

ৰাওয়ার শেষে ভাই বোনকে শাড়ী ও টাড়া ইভ্যাদি উপভার বের।

ভাইপুভার দিন বোন সারাদিন উপবাস করে আচার-পর্কা শেব হলে ভারপর বার।

বে কোন কুল রাবলৈ চলবে না। পাহাকে বাকে
"উপারি" কুল বলে ভাই প্রথমত। ভা না জুইলে "হাইপত্রি"
বা গীবাকুল বরভার।

<sup>†</sup> শেওৱার ভিন্ন অভ আভের ভিভরে 'প্রথম' বাওৱার শিবন নাই।

# বাংলার ক্ষয়িফুতম জেলার উন্নয়ন

### केरकमात्रनाथ हाहोशाशाय

গত সংখ্যার লিবিয়াছিলাম, "দেখিলাম অনেক কিছু আর বুঝিগামও অনেক কিছু। সেকথা বাহাস্তবে বলিবার ইচ্ছা বহিল।" এখন বলা বাক দেই সকল কথা।

দেখিলাম বাহা তাহাতে সন্দেহ বহিল না বে, মাহুবের ইচ্চা বদি সক্ষাক্ত চেষ্টার সহিত যুক্ত হয় তবে এ জেলার উন্নয়ন অসাধ্য নয়। বাহা প্রয়োজন তাহার তুলনায় বাহা হইয়াছে তাহা সামার, শিক্ত তাহা পরীক্ত মুগক দৃষ্টান্তর প অমূলা। সেচ বেখানে হইয়াছে সেখানেই সোনার ফসল ফণিতেছে এ তো অচক্ষেই দেখিলাম, আবও দেখিলাম বে, জলের সমস্তাপ্রণও অসম্ভব নয়। সমস্তা এই মাত্র, কি করিয় বৃষ্টির জল সঞ্চিত রাখা বায়। অবস্তা এ সমস্তা "এইমাত্র" বলার অর্থ এ নয় বে, উহা অতি সহজ্পাধ্য। বরং ইহাই বলা উচিত তে, অজল্প অর্থবায় এবং প্রভৃত পরিশ্রম ভির তাহা সম্ভব নয়। কিন্তু আম্বা দেখিলাম বে, পিড়পিতামহল্য এ বিষয়ে বে পথ নির্দ্দেশ করিয়া গিয়াছেন ভাহা এখনও সঠিক এবং কার্যক্রী।

কিছ তথু অর্থব্যয়ে যদি এ কাজ করিতে হয় তবে কুবেরের ধনও ভাহার জগু পর্যাপ্ত নহে। বিদেশী ঠিকাদার, বিদেশী মজুর ও সরকারী ধনদোলতের সাহায্য ও চেষ্টার অপেকায় যদি দেশের লোক বসিয়া থাকে তবে বাঁকুড়ার এ ক্ষয় কোনদিনই বাইবে না। কেননা উহাতে বে পরিমাণ অর্থের ইপ্রয়োজন ভাহা বাংলা সরকারের তহ্বিলে নাই ও আগমনের সভাবনাও স্থদ্বপরাহত। কেন্দ্রীয় সাহায্য ভিন্ন ভাহার এক-দশমাংশও জ্টিবে না এবং কেন্দ্রের সাহায্য-প্রাপ্তির সভাবনাও কম, কেননা কেন্দ্রীয় লোকপরিবদে বাঁকুড়ার কথা বলিবার লোক কেহ নাই।

পথঘাটের ব্যাপারেও দেখিলাম উপযুক্ত আয়োজন ও পরিকল্পনা বদি থাকে এবং সেই সদে বদি স্বষ্ঠ ভাবে পূর্ত বিভাগের কাজ চালানো হয় তবে রাকুড়ার দ্বর্গমতম অঞ্চলও স্থাম করা সম্ভব হয়। এ জেলার ম টি শক্ত ও বন্ধরবছল স্থাম পথঘাট নির্মাণ—বিশেষ বন্ধ-সাহাব্যে ও বিজ্ঞান-সম্মত উপায়ে—অভি স্থান ভাবে হইতে পারে। বে অঞ্চল নৃতন পথ নির্মিত হইয়াছে দেখানকার কবি ও কুটারশিলের উন্নতি সংকার করা ছরুহ হইবে না।

(बाहारे का क्कूबिटकरे बहिशाटक अवर वृक्ति नारे-

ভেছে। আজিকার শশু-শ্রামল কেত সামান্ত কয় বৎসবেই ধুলায় ধুদর অন্তর্কার প্রাক্তরে পরিণত হইতেছে। চাষীর সাধা নাই একাকী খোঘাই বোধ করে। কিছু সরকারী বাবস্থায় দেখিলাম তুই-এক স্থলে তাহার স্বন্ধৃত প্রতিরোধ-ব্যবস্থা হটয়াছে। ভবে এখানেও সেট এক কথা, বাহা প্রয়োজন ভাহার তুলনায় হই।। তে অব্লই এবং বে ভাবে ও বে উপায়ে ইং। হইতেছে ভাহাতে সমগ্র জেলা: সমস্তা-পুরণে বে সময় বা অর্থ লাগিবে ভাহা কল্পনারও অভীত। चावल करमक चरन मिल्लाम, त्रशास हायी व्यवस्थ অপেকাকৃত হন্থ ও কর্মট মাছে এবং বেধানকার স্থানীর ख्य गृहच्च (खेगी महरवर शाहर भट्डन न:हे, स्थारन स्मृह ও সংবক্ষণের চে া গ্রা.মর লোকেই করিয়া চলিডেছে এবং সেধানে এই তুই বিষধেই স্থানীয় গে:০ের অবস্থা অন্যান্য অঞ্চল অপেকা উন্নত। সেধানে সরকারী সাহাব্য বধার্থ क्रां अन्य दरेल जाहां द देवम नहक ७ व्ह व दरेश य व এবং সরকারী সাহাব্যের প্রয়োগ শুধু বে বথায়ণ হওয়া প্রয়োজন তাহা নহে উহা সময়মতও হওয়া স্বাধ্বক নচেৎ এখানকার চাণীও ক্রমে কীণবল হইহা ধ্বংসের পরে চলিবে ষেভাবে অন্য অঞ্লে ইভিমধ্যেই হইয়াছে।

দেখিলাম স্বাস্থ্য বিষয়ক উন্নয়নও কিছু অসাধ্য ব্যাপার নহে। ম্যালেরিয়া দমনের বিজ্ঞানসম্মত উপায় আহিছু চ হইয়াছে। তৃই-এক অঞ্চ ল ঐতপ কাজ চালানোর ফলে ম্যালেরিয়ার প্রকোপ বিশেষভাবে কমিয়াছে। ম্যাল-রিয়ার আক্রমণ হইতে উদ্ধার পাওয়ায় দেখানকার চাষী পুরাদ্মে ক্ষেতের কাজ চালাইতেছে এবং ভাহাতে ভাহার ছর্দ্ধণাও দূর হইবার আশা বাড়িতেছে। এ ক্ষেত্রেও স্মস্তা একই—সর্থবল, লোকবল ও বধাবধ চেটার।

ম্যালেরিয়ার হাত হইতে পরিজ্ঞাণ পাইতে হইলে এক
দিকে প্রয়োজন মশক-ধ্বংস ও ঔবধপজ্ঞের ব্যবস্থা, জন্য
দিকে চাই পৃষ্টিকর খান্ত। পৃষ্টিকর খাল্যের ব্যাপারে
বঁ কুড়ার সংগ্র সম্পদ ছিল গোধন এবং দো-কসলা জমি,
বেখানে ডাস, সরিষা ও গম জ্লাইত প্রচুর। চাবী ক্ষয় ও
সবল না হইলে বাকু চার জমিকে ক্ষমলা করা জ্মসন্তর।
জাবার সেচ ও সংবক্ষণের ব্যবস্থানা হইলে চুইটি ফল্ল
অপ্রেরও জ্ঞাত। জলল নিম্মল হওয়ায় কাঠের বদলে
ঘুটের প্রচন্তনে ক্ষেতে সাবের জ্ঞান ব্যবস্থা, জাবার
ক্ষমে সার শহর হংতে দুরে লইতে হুইলে প্রভাটের

মভাব খরচ ও পরিপ্রমও আশের এবং ফ্সল ফলিলেও বলি বহুনের খরচেট ভাহার দাম চরমে উঠে ভবে চাবীর আয় হয় কিসে ?

ক্তরাং সমস্তা বছম্থী। কিন্তু সকল দিক দেখিয়া বুঝিলাম বে, সর্বাপেকা গুরুতর সমস্তা রহিয়া গিয়াছে দেশের লোকের মানসিক অবস্থার মধ্যে। চতুদ্দিকের সমস্তা ভাবিয়া চিন্তিয়া ভাহা পূরণ করিবার জনা যে প্রচেটার আবস্তুক ভাহার একান্ত অভাবই দেখিলাম সর্ব্বত।

বদি দেশেব লোককে একথা বুঝান বায় বে, ভাহারা নিজেদের উন্নতি করার চেষ্টা করিলে ভাহাতে আরও দশ জনের এবং সরকারী সাহাব্যও পাইবে, বদি নিজ্জীর লোককে সজীব করার জন্য উপযুক্ত নেতৃভাধীনে কর্মাঠ আছোসেবক দল জোটে ভবে সরকারী হাজার টাকায় এখন মাহা হইতেছে ভাহা ভাহার এক পঞ্চমাংশেই সপ্তব হইবে। বছদিন পূর্বে বাঁকুড়ায় ঐ চেষ্টা গুলসদয় দত্ত মহাশয় করিয়াছিলেন, কিছু সরকারী সাহাব্য একেবারে না আসায় ভাহা কিছুদ্ব অপ্রসর হইয়া বায়্। সেচের- কাজ, পথঘাট নির্মাণ সবকিছুই মাজ্বের কায়িক পরিপ্রমে হয় ভাগ, অল্পই হয় বল্প-সাহাব্য, বাঁকুড়ার মত দেশে বেখানে বেশীর ভূমিপৃষ্ঠ অসমতল।

আজ বাঁকুড়ার লোকের বেরপ মানসিক অবসাদ, বেরপ নিদারণ বর্ষবিম্পতা, তাহাতে দেশের লোকের মনে নৃতন্ বল আনা সহজ নয়। দেশে নেতৃত্ব নাই বলিয়াই এরপ ষ্টিয়াছে একথা আমাদের তুঃধের সহিত বলিতে হইতেতে।

বে নৃতন পথটি বাঁকুড়ার অতি তুর্গম অঞ্লের মধ্য দিয়া চিবিশ মাইল সরল রেথায় চলিয়া গিয়াছে তাহার তুই পাশের গ্রামে অদংখ্য দরিত্র লোকের বসতি। আমরা পথ দেখিতে বখন গিয়াছিলাম তখন এক স্থলে প্রবল বুষ্টি আয়ন্ত হইল। আমরা জীপ থামাইয়া বর্ধাতি পরিতেছি এমন সময় এক দল জীলোক ছুটিয়া আমাদের সামনে পথ পার হইল। তাহাদের সকলেরই বজ্লের অভাব—জীর্ণ শতছিল্ল কাপড় বৃষ্টির জলে ডিজিল্লা বাওয়ায় লক্ষা নিবারণের উপায় নাই। এই ব্লাভাবের প্রধান কারণ অর্থের অভাব ডাহাতে সন্দেহ নাই, কেননা টাকা গুণিলে চোবাক্ষারবারীর কাছে কাপড় পাওয়া বায় এ কথা সকলেই আনে।

বে প্রথি ঐ স্ত্রীলোকের দল ছুটিয়া, মুখ ফিরাইয়া পার হইল ত:হা সবেমাত্র নির্দ্ধিত হইয়াছে এবং নির্দাণে লক্ষ্ লক্ষ্ টাকা ফুলিকামিনকে দিতে হইয়াছে। অথচ শুনিলাম, সে সকল মজুবদের প্রায় সবই ভিন্ন প্রদেশ হইতে আনিতে ব্রয়াছিল। স্থানীয় দ্বিজ্ঞ লোকের ম্বের স্থীলোকের লক্ষা নিবারণের উপযুক্ত ব্যবস্থা না করিছে পারিলেও পঞ্জিমের বিনিময়ে অর্থোপার্কনে প্রস্তুত নয়।

ঐ একই কথা বীরভ্যে ওনিয়াছিলাম ময়্রাকী পরিকরনার কাজে। সেধানে কোটি কোটি টিকা উপার্কন
করিয়াছে গঞ্চাম অঞ্লের উড়িয়া, মজুর ও মজুবনী এবং
বাকুড়ার লক্ষ লক্ষ টাকা লইয়া গিয়াছে মানভূম ও ছোটান
নাগপুরের ওঁরাও, মুগ্রা ও কোল।

দেশের অশিক্ষিত ও দ্বিদ্র লোকের বৃদ্ধি অল্প, তাহারা আবলখনের পথ তথনই দেখিবে বখন :শিক্ষিত গৃহত্ত্বের সন্তান সেকথা তাহাদের বুঝাইবে। সে চেষ্টারও অভাব বেশী স্পষ্ট দেখিলাম, যে কয়জন উৎসাহী লোক এ বিবরে চেষ্টিত ভাহাদের সাহায্য করা দ্বের কথা, সহামুজ্ভিও কলাচিৎ ত-একজন প্রকাশ করেন।

তবে বাকুড়ার উন্নহন কি করিয়া সম্ভবপর ? সম্ভব তথনই হইবে যথন ইহার উন্নয়নে বছপরিকর হইয়া দেশস্থ করেকজন গণসেবক প্রাণপণ চেটা করিবেন। তাঁহাদের প্রয়োজন প্রাদেশিক সরকারের সাহায্য ও কেন্দ্রীয় সর-কারের অর্থবল। তাহার জন্ম উভয় স্থলেই তাঁহাদেরই নির্ব্বাচিত লোক থাকা প্রয়োজন। তাঁহাদের প্রয়োজন জেলা বোর্ডের ও জেলা পরিচালকের ভারপ্রাপ্ত অধিকারী-বর্গের সাহায্য। সেজনাও তাঁহাদের সভ্যবন্ধ ভাবে উপযুক্ত লোকের জন্য দাবি করিতে হইবে। সর্ব্বোপরি তাঁহাদের প্রয়োজন দেশের লোকের কায়িক ও মানসিক উন্নয়। ইহার জন্য তাঁহাদের আবশ্রক ব্যাপক প্রচার ও আন্দোলন।

যদি উপযুক্ত নেতৃত্ব তাঁহাবা লাভ করিতে পারেন তবে সকল সমস্তারই সমাধান হইয়া বাইবে। তবে বছদিন বাবং বাকুড়া ঘুরিয়া দেখিয়া যাহা বুঝিয়াছি তাহাতে নেতৃত্বের একাস্ক অভাবই স্বস্পাই।

বাক্ডায় কংগ্রেসী দল- ছই ভাগে বিভক্ত—নিজীব ও সজীব। নিজীব দলে সং লোক আছেন বাঁহাদের সদিজ্যা ও সঙ্গ্র মনের মধাই থাকে। সজীব দলে আর্থান্ত্রেপ ভিন্ন অন্য বিছু খুবই কম। হতবাং কংগ্রেসের বাবা বাক্ডার সমস্যাপ্রণ তথনই সম্ভব হইবে বধন উহার বর্তমান কাঠামো বিস্কলন দিয়া ন্তনের প্রতিষ্ঠা হইবে।

খন্য দিকে বিভিন্ন দল: পরস্পারের বিরোধ স্বদ্ধে চিস্তা ও কংগ্রেসের ধ্বংস-চেষ্টার বাহিরে কিছু ভাবিবার অবকাশ এত দিন পান নাই। ভবিব্যতে কি হইবে তাহা বিধাভাই জানেন।

বাক্ডা জেলা ক্ষের মূথে চলিয়াছে কেন সে কথা জো বলিনাম। কিছ আশার আলোক বে একেবাবে নাই ভাহাও নয়। ইভিমধোই ছ'চার ছলে ভেচ্চানেৰক্ষল পঠিত হইতেছে শুনিলাম। ভাঁছাবাই দেশের আশা ভর্ম।

# অধিল ভারত প্রাচ্যবিদ্যা মহাসম্মেলন

(वाक्न चविर्यमम, नरक्री

व्यथानक जैवनसमाम ठीकूत

বিগভ ১৬ই আখিন হইতে লক্ষ্ণে শহরে অধিল ভারভ প্রাচ্য-ব্রিভা বহাসপ্রেলনের ভিন বিদ ব্যাণী বোড়শ অবিবেশন হইরা সিয়াছে। ভারভের বিভিন্ন প্রবেশ, সিংহল, ত্রন্থদেশ ইলোনেশিরা, চীন, ভূরড, ইংলও ও আনেরিকা হইভে প্রাচ্যবিদ্যানোদী সহভেরা সন্মেলনে উপস্থিত হইরাছিলেন।

হল সভাপতি অধ্যাপক কে. এ. নীলকাত পালী খীৰ श्रृष्टिक विकास (माम देवलानिक थ साहिक मकाकात-প্রসারের আমুবলিক কুকল, খাবীনতা লাভের পরবর্তী বিভিন্ন সমস্তা ও বৈভিক অবনতি, বেশের ভবিত্রং সম্পর্কে নেড়-বন্দের কুরাসাক্ষর বারণা প্রভৃতির ভীত্র সমালোচনা এবং এই সভাভা সমটে ভারতীয় সংছভিত্র গভীর চর্চার উপবোগিতা বৰ্ণনা করিয়াছেন---পাক্ষাভ্যের অভ অমুকরণ পরিভার করিয়া মত্য, বৰ্ম ও অভিংসা পৃত বীৰ ঐতিহেত উপৰ ভাতিকে মচ-**शिक्षिक करेबाद जास्याम जामारेबाद्यम--मिर्विम जादजीद** भट्यमा बन्धि प्रापन अवर क्षांतीय क्षांतियक श्री मर्थक क লংবক্তবের প্রতি সরকারের সঞ্জির সহাতৃত্তি কাষণা করিবা-ছেম-ৰিচাৰপূৰ্বকৈ বিশীকে বাইভাষা এবং বিশ্ববিভালনসৰতে ইচ বিকার বাহ্মরণে এহণের সপক্ষেও ভাষার ভিত্তিতে श्राप्त गर्रावत विभाक यथक श्राप्त कतिवाद्य-भतित्याय कावटक अवर विरम्दम श्रीकाविका क्रकांत करवकी विभिन्ने क्रेलाकबद्धव केटबर्च ७ क्ष्मारमा कविवादक्य ।

বাগতকারিণী সভার সভাপতি আচার্ব্য গ্রীনরের দেব প্রাচ্যবিভা চর্কার ইতিহাস আলোচনাপূর্ব্বক ভবিবরে পাশ্চাত্য প্রভিত্তের দাস প্রভার সৃহিত উল্লেখ করিরাছেন এবং ভারতীর ক্ষপণের উখান ও প্রভন্ন, শক্তি ও চুর্ব্বসভার প্রকৃত ইতিহাস রচনার প্রভাকন বিবৃত্ত করিরাছেন।

প্রার্থিক বক্তার উত্তর প্রদেশের প্রবাদ নত্রী নাননীর শ্রীগোবিক্ষরত পত্ন বর্তনাদের পঠতুরিকার প্রাঞ্জীন ভারতীর সংস্কৃতি ব্যাব্যার প্ররোজনীয়তা বিশ্বত করিয়া ভবিত্ততে অন্তর্ম সর্বভোর্থী সংস্কৃতিসঠনের আহ্বাদ ভানাইরাছেন।

সংখ্যের শাখা-সভাপতিকের অভিভাষণে সংগ্নিষ্ট বিভাগগর্হ সম্পর্কিত বিভিন্ন সমভা এবং কৃত কর্ম্বের আলোচমা ও
কর্তব্যের বির্দেশ কেওরা হইরাছে। অর সমরের বব্যে
সংক্রেমের বিভিন্ন শাখা-সভাপতির অভিভাষণসমূহ বিভাগ
ক্রিতে সিরা প্রভাবের ক্রত বাজ আব ঘণ্টা সমরের ব্যবস্থা
করা হইরাহিল। অবচ অবিভাগেশ অভিভাষণই উক্ত সমরের
মধ্যে সমার্ক বা ইওরার সক্তেরা সক্র সভাপতির ভাষণ

প্রবৰ্ণের পূর্ণ প্রবোগ পান নাই। ভর্পরি বেশীর ভাগ পাথা-সভাপতির ভাষণ বৃদ্ধিত না হওরার বিশেষতঃ নৌকিত সংস্কৃত শাধার সভাপতি অব্যাপত এ কে, কে, হাভিতী বহাশবের প্রচিত্তিত ভাষণ অভি অর সংব্যার পরিবেশিত হওরার বিশেষ অপ্রবিধা অভ্যতত হইরাহিল।

विकित्र भाषाय नामा विश्वत्य श्रीष (श्रीत्म किम मक श्रीवद পটিত অৰবা পটিত বলিহা গুলীত চইহাতে। অনেক শাৰাহ क्षवदमरका त्वने क्षवाद भाई अवर चारमाठमा विस्मवद्भार ব্যাচত চইহাছিল। প্ৰবহ-সম্পৰ্কে ভবিষ্যাভৱ ভৱ কৰ্মপঞ্চ करवक्री निवय चित्र कविया विवादक्य । अ श्रीम अवस छ ভাচার সারাংশ প্রেরণের সময় মির্ছিট থাতিলেও ভাচা মধামধ **जारत चन्न्छ हरेण मा। अक्र मातारम मूळाल विंट्य** অসুবিধা হইত। নুভ্ন ব্যবস্থার প্রবন্ধ ভাতার লারাংশ चवित्वभागत चक्कं: ठावि बान शृद्ध कर्छशाच्य विकृष्ठे পৌছাইতে হইবে। তাঁহারা অবিবেশনের এক বাস পুর্বে পুত্रकोकारत बुखिल माताश्मश्रीम महत्त्वराहत विकर्त भाकाहरतम। गर्यमान थावक शार्वित क्रम अवर जनवक्री मिसिट बाकिता। बरे निषम चम्रण हरेल जम्मवर्णन वित्नम श्रविन हरेरन আশা করা বার। প্রবদ্ধের সারাংশের সঙ্গে বুল সভাপতি ও শাৰা সভাপতিদিপের অভিভাষণসমূহ মুদ্রিত হইলে আরও णान **ट्रे**टर रनिया मान हव । वर्षमान राज्यात अकरात मुक्तिक ভাষণ সভার বিভৱণ করা হয় এবং পরে কালক্রমে কার্বা-विवदान मुक्तिक दरेबा छेटा विकीववाद जनकावद मिक्टे लीहि । প্রভাবিত ব্যবহার হুই বার হাপাইবার অসুবিবাও বুর হুইতে भारत ।

অধিবেশনে হারদরাবাদের অন্তর্গত পিতসকোর। এবং পাটনার অন্তর্গত ক্ষারহারের আবিকৃত ধ্বংসাবশেষ সম্পর্কে আলোকচিত্র সহকারে হুইট তথ্যপূর্ব বক্তৃতা বিশেষ উপভোগ্য হুইথছিল। জাতীর শিকা ব্যবহার প্রাচীন সাহিত্যের ছান এবং রাইভাষার স্বরূপ নির্ণর ও উর্বেশ সম্পর্কিত হুইট আলোচনা সভারও ব্যবহা হুইয়াছিল।

অভ্যাগত সদভবের আমক্ষবিধানের হুত সক্ষোরের প্রতিষ্ঠ সূত্য ও সঙ্গীতের ব্যবহা করা হইরাহিল। বিহ-বিভালবের হাত্র-হাত্রীরা ভটনারারণের বেইসংহার নামক সংহত সাইক অভিনর করিরাহিলেন। অভিনর উপভোগ্য হইরাহিল। কিন্তু সংহত ভারার বৌলিক উভারণবিধি সর্ক্তর অকুত্ত না হওরা পর্বাত্ত বিভিন্ন প্রাতীর প্রোভার কাহে হাত্রীর প্রভাবর্জ সংক্ত উচ্চারণ ক্রতিকটু বোধ হইবে। ভারতীর বিশ্বিভালরসমূহও প্রাচাবিভাসবেলনের এ বিহরে অবহিত হওরা প্ররোজন। বিশ্ববিভালরের হিন্দী বিভাগের বিভারীরুল বিশী বাটক কলগুও বিজ্ঞাবিত্য অভিনর করিবাহিলেন।

বিধবিভালত্ত্বর ঠাকুর গ্রন্থলার একট চিভাকর্বক প্রবর্ণনীর ব্যবহা করা হইরাছিল। উহাতে সন্মেলনের সদভেরা বহু বৃল্যবান্ সংস্কৃত ও কারলী পুধি হেখার স্থবোগ পাইরা-ছিলেন।

মিয়ভয় শ্রেণীসবৃহ হইতে বাব্যভাবৃদ্ধ সংক্ত শিক্ষালামের ব্যবহা এবং সর্ফভারতীর প্রাচ্যবিভাষন্দির প্রভিত্তী
সম্পর্কে সরকারের দৃষ্টি আকর্ষণ, পুণা ভাভারকর গবেষণাগার
এবং হোসিয়ারপুর বিভ্রামক্ষ বৈদিক গবেষণাগার হইতে
প্রকাজবাম মহাভারত এবং বৈদিক শক্ষানের অবশিষ্ট
অংশ সম্পাদমের কর সাহায্য দান, বৌদ্ধ সংকৃতি ও
সাহিত্য আলোচমার বোগাযোগ ছাপনের উদ্দেশ্তে সিংহলে
বৌদ্ধবিদ্যারন্দির প্রভিত্তার কর সিংহলের ক্ষমসাধারণ এবং
সরকারকে অভ্রেমান, নিবিলা সংক্ত গবেষণামন্দির,
য়াইভাষা পরিষদ, ক্ষমত্তরাল গবেষণা মন্দির এবং মগন
পালি গবেষণা মন্দির ছাপনের কর বিহার সরকারকে
বর্তবাদ জ্ঞাপন, রাজহানের ইতিহাস সম্বানের উদ্দেশ্তে
ব্যক্তিসত প্রহাগার প্রভ্রমণ্ডলীর নিক্ট উন্নুক্ত করিবার

কত দেশীর রাজ্তবর্গকে অন্ধ্রোধ এবং রাজ্যান পুরাজ্য কলির রাপনে সভাব প্রকাশ করিরা সম্মেলনে প্রভাব পৃথীত ক্টরাকে। সম্মেলনের কার্য্য পরিচালন প্রবং এবক প্রভৃতিতে ইংরেজীর সহিত হিন্দী ভাষার ব্যবহারও বিবিশ্ব করা ক্টরাকে।

সংযোগদের পরবর্তী অবিবেশন আগানী ১,৯৫০ নীঠাকের শেষভাগে আচার্যা শ্রীর্জ সুনীভিক্ষার চাটোপাব্যারের সভাগভিত্যে আরু নদাবাদে অস্কৃতি হইবে।

সংযোগন পঞ্চশ শাখার বিজ্ঞ এবং ইহার ক্ষেত্র এত বিভূত বে বাজ তিন দিন সমবের মব্যে প্রকৃতাবে ইহার সভল কার্য্য সম্পাদন সন্তবপর নহে। কলে এবার পূর্ব বিজ্ঞাপিত হারদই জ্রমণ কর্মসূচী হইতে বাদ দিতে হইরাছে। তারতীর দর্শন-কংগ্রেদ এবং ইতিহাস কংগ্রেদের সহিত অধিকার বিভাগ করিবা সইলে সংগ্রেদের ভার লাখন এবং প্রয়োজনীর ক্ষেত্র বিভূতি সন্তবপর। হুভলিখিত পূধি সম্পর্কে সংস্কলনের এক্ষ্ট মৃতন্ত্র বিভাগ থাকা অনেকেই আবস্তুক মনে করেন। অবচ বর্ত্তরান ব্যবহার ভাহার সন্তিবেশ অসম্ভব।

সম্মেলনে বলীর সদভসমূহের সংখ্যারভা ভাষেকেই ছঃবের সহিভ লক্য করিবাছেন। বলের খ্যাতনামা পভিতমভলী এবং স্থাসির প্রভিত্তানসমূহ ইছার সহিভ মুক্ত হইলে সম্মেলনের কার্যাকারিভা বৃদ্ধি পাইবে।

## সমস্থা-পথ কোপায় ?

### बीवीना जाग्र होधुबी

কি কটিন সমভা চারিবিকে। অভাব ও ছুর্নীতি চলছে পাদাপাদি। মাছবের ভার-অভার বোবের চেতনা ক্রমে লোপ পেরে বাছে। ভাবহি অভ্যন্তার কি বিপুল বোঝা আমাদের বইতে হবে, বদি না অগণিত ছেলেনেরের সামনে ভূলে বরি উচ্চ আন্দর্ম, বদি না পরিচালিত করি ভাবের প্রফুত পরে।

নিবাশার অভ্নাবে আদ বন আছের ভাই পথ পুঁথছি
ব্যাকুল উৎকঠার। বিব্যালয়ে, গৃহে বা ন্যাদে যে নব সমভা
করেক বংসর পূর্বে আবাদের বনে আশহার উল্লেক করে নি,
আদ সেই নকল সমভা প্রতিনিরভই আবাদের বিপর্বাভ করে ভূলতে। ভাই চাইতি পথ-নির্কেন, খুঁকতি বেদনার প্রতিকাশ্ব-পছা।

বারা ক্স্বিত বন নিরে ভাবিরে ভূলেতে আবাবের আর স্বাক এবং রাষ্ট্রের চরর স্ক্রাক করতে—ভাবের স্বতে আনাদের সতর্ক হওবা উচিত। তাবের সংস্পর্ক ও কুলিফার
প্রতাব থেকে আমাদের হেলেবেরেরের রক্ষা করতে হবে।
নারা নহান্ আদর্শে উর্ছ, দেশ ও সমাক্ষকে তবিভতে নারা
ন্তম করে গভবে তাদের প্রতি আহে আমাদের পরিপূর্ণ
আহা। তাম ও লিফার, শক্তি ও হুচ্ভার এগিরে চলেহে,
তারা নহান আদর্শের হিকে। তারা সমাক ও রাট্রের সম্পর্ক
তর্ পিতামাভারই নর দেশ ও জাভির আশা-করসা ভারা।
তাবের জন্য ভাবনা নেই, কিছ সম্ভা আমাদের হর্জাকছিদের নিবে বাদের বব্যে হ্রেছে অন্যাবের বীক্ষ উর, বারা
পারহে না সম্ভক্ত ও হুচ্ আম্মাক্তি বারা প্রলোভনকে কর
করতে। শিক্ষাক্ষেরে আহি দীর্থ কাল বাবং, আবার বহু
পরিবারের সক্ষেত্ত হরেছে নিবিক পরিচর। হাজার হাজার
ছেলেবেরের সংস্পর্ণে এলাব এ জীবনে। একের স্থ-ইংখ,
আশা-আফাজ্যা, সবসভা-হুর্জনভা এবং সেই সক্ষেত্ত করে করে

अरबद शादिबादिक शविद्यम, धार्विक चर्चा देखावि नव्यक्त चारक किए कामान प्राथान र'ना क्रक शतिवर्धन पहेरह अरबन क्रियाय, वाट्या ७ चाहत्त्व । शतिकाद-शतिकत्वा, अंथना ७ মিরবাছবর্তিতা—এই সমস্ত সদন্তণ জ্ঞােই যেন এদের মধ্যে কঠোর শান্তির ব্যবস্থা না করে বলেন। অনেকে বলতে পারেন, লোপ পেৰে বাছে। কভ ক্ষ হচ্ছে উৱাৰ্গ্যামী, ভাই আমৱা धैरकक्रिक करन क्षेत्रीच-कि करत तथा करन अरमत । कि करत সভা পৰ দেবাৰ গ্ৰেমের যাত্রা প্রধান আশা-ভরসায়ল সেই क्टानावादा विक प्रश्न विक-वामन व्यवकारी ना कर. बाडे विक বিপয় হবে পতে বিভাত বৃদ্ধি নাগরিকদের অপকর্ণের দক্তম, ভা হলে আমাদের দেশ যে কগতের কাছে কভটুকু তের হয়ে ৰাবে লেকৰা মনে করে আমাদের দাবিদ সহতে সচেওন হতে कट्द ।

বর্তমান প্রবাদ্ধে যে সমস্ত কথা বলব সেগুলি আমার প্রত্যক चिक्कणा-श्रेष्ट । चाना कति, जशक्तिरेश्यी शक्तिशाखरे नमारनाहरकत पृष्ठे किरत विहाद ना करत प्रतक किरत जामारकत (सामाधारकारका कथा कायातम। श्रायका वालिका अवर कित्यादीरमञ्ज्यामन जरम्मार्ग श्रीकिवन्त के बामनि विदेश चारनाठमा करि: मनश्रुविक रामम-- (मरश्रुवि वस्त्र वस्त्र यस्म 11 (बंदक 10 वा 18 क्यम कारमत मन क्यावक:हे अकटे काव-প্রবণ চরে ৬ঠে। এই বছলে ভাবের উপর গৃত্ পিভাষাভার ও বিভালরে শিক্ষিত্রীর বিশেষ দৃষ্টির দরকার। এই সময় ভারা পড়ে ষষ্ঠ, সপ্তৰ, কৰমও বা আইন শ্ৰেণীতে।

বিভালর পরিচালনা করতে গিরে ছাত্রীবের উপর কটিব শাসৰের বিষয়ৰ প্রতিক্রিয়া সহছে বে অভিক্রতা লাভ করেছি ल विश्वाद कि कि कि वमा को दे अर और के दिन कि विश्वाद कि नक्न **शिकाबाकार त्वन देशाव एडिक्टी बिट्स अक्षाबरएव विठाव** করেন। স্তেত ও বছ শাসন ভইরেরই প্রয়োজন, কিছ সর্বা-পেঞা অধিক প্রয়োজন পিভাষাভার বিচারবৃত্তির প্রয়োগ আর ज्ञानरक मनस्य दर्वनात जास्त्रिक (०१)। शकु-निर्वाद नचक्छ जामकडी निर्णामां । अकारमद नचरकदे जमुद्रन । चावदा चावर्ग निकृतिकी द्वा महे, ख्यू अक्वांश विन (व. त्व जब बाळीव जल बाबात्मत वरगदात शत वरगत कारहे. বেসৰ ভক্ৰণ ৰমের আশা-আকাজা আনন্দ-বেলনার সঙ্গে পরি-চিভ হচ্ছি প্ৰতি দিন, ভাদের আমরা যথাবঁই ছেত করি, তাই চাই ভালের সর্বাদীণ কল্যাণ-এই আকাজ্ঞা আহরা পোবণ क्ति (व. ভाष्ट्रिय श्रीकृत्य हाक बाबाल्य श्रीकृत-ভाष्ट्रय ত্ৰাৰে আমাদের বুৰ উত্তল হোক। লেৰাপড়ার স্বাই বে সমান উন্নতি করবে ভা আশা করা বার না, ভবে এটাই अकारकार्य कामा (व चारा हिस्स्वर्म स्थाप प्रमुख केन्द्रम করতে পারে, ভবিত্তৎ কীবৰে ভারা বেন আনর্শ সহবর্ণ্যি এবং ক্ষনী হতে পারে। সময় সময় বেবেবের ব্যক্তিগত ব্যাপার निरंद करेन नम्बाद एहे हर। अथन विकानकरम्ब निकृष्टे चावारका जाक शरक। -चरनक नवबरे चानका वब. शारक कीवारे কট্টম শাসন করে ভারও সর্বানান করে না বলেন। ভাই অভিভাবকদের ভাষে এই অন্থরোধ তারা বেদ বৈর্বাচাত করে "এই উপদেশ দেবার প্রয়োজন কি, আপনারা কি পিভারাভার हिंदा दिने जानवारमम स्मरकारमद १" जो हरू मन, जर्द হাত্রীদের মনভত্ব সভবভ: অনেক পিভাষাভার চেরে বেরী ব্বি আর ধীর্ঘকালের সাহচর্য্যে ভক্তণ মনের অলিগলির লক্ষে পরিচহত আমাদের গভীর। পিভাষাভার সম্পর্ক গুটকরেক ছেলেবেছের সভে আর আমরা চালার চালার বেছের সংপর্বে क्रमाम कीवरम ।

অভিবিক্ত কঠোর শাসদের কলে অনিষ্ঠ বে মেরেছের कित्रण हर त मच्या अकड़ बहेबाद कथा बनाइ-अकड़े ছোট যেৰে পঞ্চৰ শ্ৰেণীতে পছে, সে পৰীকাৰ নকল কৰে। আমরা সাধারণত: এর প্রতিকার করি নিজেরাই নেরেকে বকুনি দিয়ে আর ভালভাবে ববিষে-কিংবা ভার मध्य कार्क निर्देश श्रीकाम त्यां करान क्ष्मक्रमास्त्र ভেতে স্থানিয়ে দিই। এক ক্ষেত্ৰে যেয়ের পিভাকে স্থানাদো হ'ল। অবর্ত ভিনি বে বরণের শান্তিবিধান করকেন ভা विम मन्त्र निवासिक मध्यानिक। (मर्द्धक दोदो क्रालय কি, শাভিবরণ মেরেকে ভুল খেকে ছাভিরে নিরে তাকে বর-সংসারের কাকে লাগিরে দিলেন, আর বাড়ীর বাইত্রে ভার কোথাও বেরুমো বছ করে দিলেন। ফলে চ'ল বি---বাঞ্চীতে বলে থেকে ও বিদরাত শাসনের চাপে থেকেটর মন বিগতে বেভে লাগল, লে তরে উঠল একান্ত অবাধ্য। লেখা-পড়ার সঙ্গে সম্পর্ক ছির হারে গেল ছারের বভ। এক্তেরে निर्ण (व छाव कर्षवा अन्नावत्य क्रिके करवादम (म क्या वना वाष्ट्रणा ।

अब क्रिक कित बबार्यव अक्कि पृष्टीक विक्रिश माद्व क्य বিষয়ে কেল করে প্রোর্থেন রিপোর্টে নব নম্বর পার্ণ্টে বাডীছে বাবার হাতে রিপোর্টট দিলে। পিভা এলেন পর্বিদ ছলে। "দেৰুম এ কেন প্ৰয়োশন পেলে না ? সব বিষয়ে পাস-মাৰ্ক ब्राहरू ७ ?" अवाक द्राह त्रमाम अंध वक् कृम करहादि कि ! মেরিট বুক এমে মিলিরে দেখি কোনটাই মিলছে মা। ভবে কি ভুল হ'ল ভুলভে ? পর পর চেকিং চলভে লাগল---देश्टबची, बारमा, देखिदान, क्रामन-नवदे कि कुन क'न ? **পर्दार्टक्य करत राया राम जब मयरदात छैगत कामि मिरब** লেখা—0 কে 8, 1 কে 4, 2 কে 5 ইত্যাৰি। বেৰের পিভাকে দেখাশো হল। ভিনিও খীকার করলেন overwriting (कान कहा इरवर्ष)। किन्द का मरक्ष श्रादानरमञ् क्ष किमि क्ष्रदान क्षरक नागरनम । नननाम, "कागमि अस वाबायरम्ब करण अ प्रणाव पश्रवाय प्रवास्य कि करव !"

ভিছু ভ্ৰাভাটাভাটন পন্ন সেবিন্দান মত ভিনি বিবার হলেন। পরদিন আপিস ভাষাই ভবে এলেন আবার; অভ্যন্ত ভাজের চাপ, বহু অভিভাবত এসেহেন নেরেনের প্রয়োশনের অভ আবেদন জানাতে। পূর্ব্যোক্ত ভদ্রলোকটি পুমরার এসে নেরেকে প্রয়োশন দেবার অভ প্রভাপীতি করতে লাগলেন। বহু অভ্যরোধ-উপরোধ সম্ভেও ভিনি অকত-ভাব্য হবে শেব পর্বান্ত ভূর মনে বিদার নিরে চলে গেলেন। যে পিভা ভীবনে সব পরীভার প্রথম ছান অধিভার ভবেহেন ভিনিও আসেন চার বিষয়ে কেন করা নেরের অভ অভ্রোধ করতে। এতে যে প্রকারাভারে মেরেরই অমিট্র জ্যা হয় সেক্থা যে এঁবা তলে বান সেইটেই আভর্বা।

আমাদেরই ক্লাছামীয়া ক্তজ্ম ব্রেছে, কেন্ন্ ক্র্ম্নিছলে, ক্ষেন্ন্ পরিবারে বধু বা সহধ্যিপীরণে, সমন্ত সমন্ত্রাদের পরিচন্ধ দিতে লক্ষা বোৰ করি, এ ত গেল এক দিক। কিন্তু আমাদের প্রদন্ত শিক্ষার স্কলের দৃষ্টান্ত বধন দেবি তথম মন আমলে তরে ওঠে। এমন ক্ষত, ছাত্রী র্য়েছে যাদের কথা মনে করে আমরা গর্জ বোৰ করি।

বে সমস্ত কিশোর-কিশোরী আৰু ভাছ পথে চলেছে একাছভাবে ভাষের কল্যাণ কামনা করি বলেই ভাষের সম্বত্ত ছ'একট অপ্রিয় সভা বলতে বঙ্গেছি। যে সকল মারাত্মক (माथक है चाक कारमत बकानक करत (नरह. (नश्रमा नरामायन করতে পিছে বছ কেতেই চার মানতে বাব্য চচ্ছি। বন্ধতঃ त्वांके त्वांके त्वरमायायायय याता वर्षाच चवांच चाठवानंव অভ্যাস যে-বজন বেলে নাজে ভাতে ভাতির ভবিষণ সকলে बरम देवतारक्षत मकात हव। निक्रका-कार्या मर्शाहे (बरक ৰে অভিক্ৰতা অক্তিত চল্লে তা মৰ্বাভিত। ভোট ভেলেমেরেরা माहिमात है।का हृति कराइ, अरकत क्लब, बाला, वह, रमलाहे चार वाकी मिर्द वारक चवलीलाक्टरम । चनदावीद चन्नभदाम ভবতে ও অভিভাবতের অভিযোগ জনতে জনতে আহবা চহ-হাৰ হয়ে যাক্ষি। কিছ এ সকলের প্রভিবিধানের চেঠা বার্ব হয়ে বাছে। কেন হছে এ বছৰ এবং এর প্রতিকার কি-এ সম্ভে শিক্ষক-শিক্ষিত্ৰী, অভিভাবক-অভিভাবিকা প্ৰভোককেই আৰু গঙীৱ ভাবে ভেবে দেংতে হবে—হাত্ৰহাতীৱা বাতে উন্নাৰ্গামী মা হয় সেক্ত সৰ সময় বাৰ্তে হবে স্কাৰ্গ ও नकर्क मृष्टि । कक (कालादार व कुरन वावाद मान करद क्लेड) (बर्क हारही जह जारतार जाया मारत किरवा निरम्भा तर्ब. কৰ্মন শিভাষাতা ভার খোঁত রাখেন। আম্বাও খনেক সময় (वीक नाहे मा। विकामिका अवर अमानत्मत मित्कक चाककान इन-क्रान्टका (ब्राह्मक क्रम्म दक्य (वैक्रि (वर्ग वाटक। व्यानरक (जारक-शारक जाशावित हो। हो। करवर काहिए विराह । वा वावा विक्षित्र विद्धिकात । कक बाद य विद्याद वह विव অজি বিবে এবিক নেবিক বেভিবে বেভাকে, কভ বিভাবিনীই

না নোট বই ছাতে নিৰে ভিটোরিয়া দেখোরিয়েল, চ্যাপেল বোডে পারচারি করছে। এ বরণের বহির্বী বিভিপ্ত বল নিরে ভো বিভাভ্যাস হর না, হর পিভার বা অভিভাবতের কটার্ক্তিত অর্বের প্রাচ। সব রক্ষম ছাত্র আন্দোলনে কিছ এদেরই দেখতে পাবেম অঞ্জী; বিশ্ববিভালরের পাসের হারু ক্ষম বলে 'ছাত্রমেব চলবে না', 'অভিভাবক বলি চলবে না', এই সমন্ত ধ্বনি করে বাঙা উভিরে প্রসেশ্রম বের করছে নিঃ-

केळ ७ मवाविष्य शतिवादित कालामात्रात्मत माना व्य नक्त বিষয়ক্ষের বীক আৰু অভবিক ও প্রবিক লয়ে উঠাতে আহলা চাই তা উংপাটিত হোক, কিছ কিতাবে হবে তা বৰে টাইছে পারছি মা। চাই ছাত্রছাত্রীদের পিভামাভার সহযোগিতা, চাই প্ৰাৰণৰ চেষ্টা। হয়ত সফল হব মা সকল ক্ষেত্ৰে ভব প্ৰতি-कारतत भव बंकरण करत । एकन-एक्नीरम्ब बाक्य क्याना श्वक्रमाविष् चामारमञ छैनत छछ। चामारमञ कर्षका कारमञ् अनात्व केक जाममें जाम बता, जनात्वत लांक जात्मत अवा ক্ষানো, সংকৃতির প্রতি অনুরাগ কাগানো। আয়াদের চাকে छान प्रथम स्मार्थित हिन्द क्षेत्र क्षेत्र कार्या कार्या करें হবে যেন ভারা ভবিয়তে আদর্শ পৃতিণ ও জননী হয়ে পরিবারের মুখ উজ্জল ও জাভিকে গৌরবারিত করতে পারে। चर्च चाक (र चावदा धावारमद चावर्न (शरक चरवक हरत সরে পেছি নেজত অনেকটা ভাষী আধনিক সমাত-ভীবন জ বৰ্ডমান জীবন-সংগ্ৰাম। এ ছাড়া সময় এবং ইচ্ছার অভারত কভকটা দায়ী। এ কণা কানি যে, পিভাষাভার বিশেষ সভৰ্কতা সভেও কভ ছেলেনেয়ে ভূল করে বিপথে বার। এর বুলে বাকে अप्तक कारन कि कर का का एक मिरन हमार मा। अपन्य ষেষ্য স্থেত করতে তবে তেম্ম শাসনের রাশও শিবিল করে मिल हम्बद मा। अस्त जामस्मद (बादाक अ मन मिल्ड हरन काम मनी मूं कि मिएक करन आपन कहा। প্ৰতিবছক বে कक জীবন-সংগ্রাম যে কি প্রচণ্ড সবই জানি, কিছ কুগভানের জমক ७ क्मनी हत्स वाका त्व चावत त्वी वर्षाक्षिक !

অনেক দূব এগিরে চলে এসেছি জীবনপথ বেরে, আমাদের স্লেহের ছেলেমেরেদের অন্যকল আশকার আমরা অবস্থি বোধ করছি, তাই বার বার এই কথাই মনে জাগছে, সম্ভা কট্টম—পর্ব কোথার ? আমাদেরই চোথের সামনে কভ ভরুবের হচ্ছে সর্কাশ, কভ তর বী করছে নহাভূলের প্রারভিত্ত, কভ ট্টি পিডামাভা প্রতিধিন অক্র বিসর্জন করছেন। আমরা কথনও নর্দক, কথনও বা ভূজভোগী—অক্ষনতার বোকা বহন করছি তর্। কথনও বা প্রারভিত্তও করছি আশন নির্ভিতাও সভানের ভূলের অপরাধের। ভাই বলি সম্ম থাকতে প্রভিক্ষারের পহা আবিভাবের অভ মনোবোদী হওৱা একাভ আবিভাব



# আলাচনা



## "রামনারায়ণ তর্কপঞ্চানন" শ্রীগোপিকামোহন ভট্টাচার্য্য

উক্ত শীৰ্ষক প্ৰবাদেৱ (প্ৰবাসী চৈত্ৰ, ১৩৫৭) আলোচনা করিয়া প্ৰবাসী জৈচি, ১৫৫৮) গ্ৰীদীনেশচক ভটাচাৰ্য্য বহাশৰ আমার কৃত্যভাভাষন হইবাহেন। ওাহার করেকট উক্তি সক্তম আমার বক্তবা নিবেদন করিভেচি।

রামনারায়ণের "তর্কপঞ্চামন" উপাধি মোটেই ছিল কিনা
এ বিষয়ে তিনি সন্দেহ প্রকাশ করিয়াছেন। অবক আমাদের
দৃষ্ট রামনারায়ণের প্রছ্জরে "তটাচার্যা-চক্রবর্তী" উপাধিটিই
আছে। প্রবেদ্ধ আলিদাস দভের প্রবিদ্ধ ও "বলে দান্দিণাত্য
বৈদিক" প্রছে তর্কপঞ্চামন উপাধির উল্লেখ বিশ্বকোষ হইতেই
দৃষ্টীত হইয়াছে। রামনারায়ণের বংশবরগণের মধ্যেও, তাঁহার
বে 'তর্কপঞ্চামন' উপাধি ছিল পুরুষাহক্রমে সেই বারণাই
চলিরা আসিতেছে। এত দিমের প্রচলিত সত্যুক্তে পৃথীত
তথ্য বে একেবারে অমৃক্রক তাহা মনে হয় না। রামনারায়ণ
বে নবরীপে ভার অব্যয়ন করিয়া বিশেষ বৃংগের হইয়াছিলেম
ভালা ত সর্ক্রবাদীসমূত এবং উাহার বে 'তর্কপঞ্চামন' উপাধি
একেবারে ছিল না ভালাও স্থানিউট ভাবে বলা বাছ না। এ
বিষয়ে আম্বাধি বিশেষ ভ্রামধ্যেতের চেটা করিছেছি।

বামনাবারণের সমসাব্যক্তি রূপে উরিথিত পাঁচ জন পভিতের মধ্যে রাবেধর ভারবাদীশের অমপ্রিকা আর্বা পাইবাহি। ভারাতে তাঁহার জন ১৬৪২ শকাক্ত্রণে উরিধিত আহে। উহা রামনারাধণের সমকালবর্তী (১৬৩৫ শকাক্ত)। অভাত পভিতেত নার পুরুষাকুক্তম-হিসাবে গৃহীত হইবাছে।

রামনারারণের 'ভূল ভাগবভ' রচনার আখ্যাহিকাট আনাদের নিকট সভারণেই প্রভিভাভ হর, কাবেণ সারা দক্ষিণ অঞ্চল প্রবান রূপে বৃত হওয়ার একাবিপতা তাঁহার বংশবর-গবই ভোগ করিভেছেন। ক্ষিণ অঞ্চল কেশব রাম চৌধুরীরই

क्षिणांदी। विक कुक्रदारबद शर्र्य काजादक केळ वर्ताण शास्त्रि महत्र वह करन कांवाद खाकाद वरमदवन्तनद धार्या वर्षधारम ইচার এচণবোগাভা সভ্তবপর এবং রামনারায়ণের প্র-দের মধ্যে যদি কের পাইয়া থাকেন ভবে অভাত প্রচের বংশ-ৰতগণের মধ্যে তাতা বিদামান থাকা নিশ্চমই সম্বৰ্ণর সম। কিছ উচার কোন পঞ্চ বর্তমানে দ্বই চর না। রামনারায়ণের চারি প্রের মধ্যে উচা সীমাবদ ব্রচিয়াছে। প্রভরাং মিভাল্প मिशियक श्रमानाकाययमण: फैक्स श्रामक बादनात क्रमकाका প্রমাণিত চয় না। ট্রচা সভা চইলে ভ্রিলার ভেশব বার চৌৰবীর সহিত রাম্নারায়ণের পিভার সম্পর্কের কথা একে-বাবে অবুলক নর। পরত উক্ত ভ্রিদার কর্তক নিশ্বিত 'यमित वाकाद' मायक शास अकृष्ट निवयमित्रशास वाकिक किशि ठडेएक काना यात (य. ১৬१० नंदक (১৭৪৮ वी: व:) किमि ভীবিত ভিলেম। জিপিট এইতপ "আকাশভিতে কোনীয়িতে भएक भिवासमार । क्याः औरकमारवा-कार्यीबाल्यापारवस मिलि-প্ৰা" (Vareadra Research Society's Monographs No. 4. "The Antiquities of N. W. Sundarban".-Kalidas Dutt. रा: > )। क्रकारमञ्ज्य वर्णवस्त्रप्रत प्रत इक्कि अक्षे नुर्वि हरेल यावहा यानिएक शांवि रव, ३७४७ শতেও ভিনি ভীবিত ছিলেন। প্ৰভয়াং বৰ্ষ বিলাবেও ভক্ষাৰ ক্ষিদার কেশৰ ভার চৌৰুলীয় সম্পান্তিক। ইক সভাপতিক वाकाकानीय क्रकताम मदाद चात्रक क्राइक्के चावाातिका कांकाच दश्मदवर्गरवंच बरदा संत्रक्तिक स्वारक ।

কৃষ্ণাম বে প্রায় শত বংগর জীবিত ছিলেন এই উজি একেবারে অমূলক নয়। পুত্র রামনারারণ ববন ছাত্রাবছার নবহীপে প্রতাব্যার গ্রন্থ নকল করেন (১৬৩৫ শক্) তবন কৃষ্ণরামের বার্কজ্যাবছা। ১৬৮৬ শক্ষেও তাঁহার জীবিত বাকার কথা আমরা ভানিতে পারিতেছি। স্বত্তাং ক্রিত বার্ক্যাবছার পর অভতঃ ৫১ বংগর জীবিত ছিলেন।



তাঃ বিদ্যাভ্যবের উক্ত রাননারারণ বদি বুলো রনানাথ এবং কৃষ্ণভাতের গুরু হল তবে আনাদের আলোচ্য রাননারারণ বিশ্বই তিনি নন। এই রাননারারণ ক্ষমণ্ড নবরীপে অন্যাপনা করেন নাই, যদিলপুরেই জাঁহার টোল হিল। এ বিষয়ে ভটাচার্য্য নহাশরের আলোচনা বিশেষ গুরুত্বপূর্ণ। তবে মনিলপুরের রামনারারণ বে জাঁহালের সমসাব্যক্তি ভাহা বিংলক্ষেত্র।

কারিকাবলি প্রভৃতি প্রস্কৃত্রর বচরিতা বে প্রস্কৃতই মন্দিলপুরনিবাসী রাম্মারায়ণ (কোলালিয়াবাসী মন) ভাহার স্মুম্পই
প্রমাণ আছে। রাম্মারায়ণের পুত্র রাম্মীপাদ বিদ্যালয়ার
বহু পুনিতে 'মন্দিলপুর' কবাট লিবিয়াছেন এবং পৌত্র
রামগোপাল ভুকালভার বর্ষিত 'ভেদজান ভিনির মিহিরোদ্য'
নামক দার্শনিক প্রস্কের (১৮২৬ প্রীক্তাকে সংকৃত মুক্রাব্য়ে
বৃত্তিত) পুলিকার আপনাকে মন্দিলপুরবাসী রূপে উল্লেখ
ক্তিয়াছেন (সৌর বাব্যু বিংশাংশে মঞ্জপুর দেশভঃ—

পু: ৬০ )। ভাষগোপালেভপুত্ৰ ভাষত্ৰপ ভৰ্কবাৰীৰ বাংলা পৰাৰ হলে এবিভ, খনচিভ "ক্যোতীৰভাষাৰুভাবলী" এছে মজিলপুরবালীরপে BCH4 "बक्षनपुर निवानी खेदायद्वन छर्कवामेन क्यांकार्य ध्यान-হত্ৰ প্ৰবিভাৱাং ক্যোভীযভাষা হক্তাবল্যাং ১০০ প্ৰকৰিংশ-এতি: " টক বাৰুত্ৰণ বিভাগাদীশের কমিঠ লাভা বাৰুদেবক শিবোষণি (১২২৩ সম) কোলালিয়াবাসী বাষ্মাবারণেয ভাষাতা মজিলপুর নিবাসী যাদবামক বিদ্যারপ্রের সমসামরিক এবং বিনি (কোদালিয়াবাসী) রাজা রাধাকার দেব বাহাছত্ত্বের সমসাম্বিক, ভাঁচাকে কারিকাবলি বচ্বিভা (১৭১৩ ইটাস) ত্ৰপে কল্পনা করা কোন প্রকারেই সন্তবপর নয়। রামনারায়্বের इस शुक्रम चर्चा वाक्येत्वर्त्तश्रीत । श्रीमानात्मास वमान-বাদক, 'ভিৰিক্তাম' শীৰ্ষক সংগ্ৰন্ত শুভিত্ৰছের ও নৃপ**ঠক**ৰ প্ৰভৃতি বহু সংস্কৃত কবিভাৱ বচৰিতা বিব্যাভ স্বাৰ্থ বিশ্বৰুক বিদ্যারত করেক বংসর পর্বেও মজিলপুরে জীবিত ছিলেন।





১। বাংলার জনশিক্ষা (১৮০০-১৮৫৬)।

২। বাংগার জ্রীশিক্ষা (১৮০০-১৮৫৬)। জ্রীবোগেশচন্দ্র বাগন। বিশ্বিভাসংগ্রহ। বিশ্বভারতী, কলিকাতা। ১৩০০, ১৩৭৭। পু. ৭৬, ৫০।

জ্ঞান-বিজ্ঞানের বিবিধ ধারার সভিত্রপরিচিত করাইয়া দিবার জন্ম বিশ্বভারতী হইতে বিশ্ববিশ্বাস:গ্রহ শীর্ষক যে সংক্ষিপ্ত পুত্তিকাঞ্চলি व्यक्तिक इहेर्ल्डाइ, लाहा विवासन विकित्सा, त्यक-निर्वाहत छ স্কুচনার মনোপ্রাহিতার অতি অর সমরের মধ্যেই প্রতিষ্ঠালাভ করিয়াছে। बारमारमान निकाविष्यात मन्नार्क कुडेहि উল्लब्स्याना विवय-स्वानिका छ बोमिका-धरे मध्यद्व हरेंहि পुश्चिकात श्रीवक व्यात्मनहत्त्व वानन. খন পরিসরের মধ্যে ও ঐতিহাসিক তথানিষ্ঠার সহিত বিবৃত করিয়াছেন। অধন পুত্তিকার উনবিংশ শতাক্ষীর অধনার্ছে জনশিকার লুপ্তপ্রার ইতিহাস লিপিবন্ধ হইরাছে। 'মিশনরীদের প্রতিষ্ঠিত চ'চ্ডা, বন্ধমান ও এীরাম-পুরের পাঠশালা হইতে কলিকাতা কুল সোসাইটির উদ্যোগে জনশিকার বিষ্ণার, এডাম সাহেবের এডকেশন রিপোর্ট, হাডিপ্র ক্ষলসমূহের স্থাপন, প্ৰবন্ধ বিভাসাপ্তের পরিকল্পনা ও নর্মাল ক্ষুল প্রতিষ্ঠা পথান্ত জনশিক্ষার বিশ্বত ও তথ্যবহল বুড়ান্ত, কোন প্রয়োজনীয় কথা বাদ না দিয়া মাত্র ৭৬ প্রায় যথ্যে, আত সহল ও সংক্ষিত্তভাবে লিখিত হইরা জনসাধারণের প্রদান ও অধারাস জ্ঞানের পথ জগম করিরাছে। বিতীয় পৃত্তিকার बांत्रम प्रहानम (वर्ष ( वोष्टेन ) कुल श्राष्टिका भर्ताख वारमास्मरण खोनिकाम প্ৰবৰ উল্যোপের যে প্রামাণিক বিবরণ দিয়াছেন তাহা সকলেরই চিন্তা-কৰ্ম চইবে ৷ পত বু:পৰ সমাজ ও শিকাৰ ইতিহাস সম্পৰ্কে বোগেল-চন্দ্ৰের মত অভিজ্ঞ ও সাবধানী লেখক বিরল ৷ বোগা ব্যক্তির উপরই এই फुरेडि निविवात **कात (म**न्त्रा स्टेबाएस ।

সাহিত্য-সাধক-চরিতমালা (সপ্তম ৰঙ)— এব্ৰেজকনাৰ ৰজ্যোণাথ্যার। বঙ্গীং-সাহিত্য-পরিবং, কলিকাতা-১।

শ্রীবৃদ্ধ বজেরাশ বজ্যোপাব্যার সন্থাত এই প্রহ্মালার সপ্তম থও, পূর্ব-থপ্তভির মতই, তথ্য-নির্বাচনে ও স্মাহরণ-নৈপূণ্যে কেবল ফ্পাঠ্য নর, সংক্রিপ্ত সংগ্রহ হিসাবে অপরিহার্ব। হইরাছে বলিলেও চলে। বর্তমান বঙে বোল কর প্রহ্মার ও উহাদের রচনার পরিচর লিপিবছ হইরাছে। ভাহার মধ্যে উল্লেখবোগা হইরাছে হরপ্রদান শাল্রী, গোবিল্টক দাস, শিবনাথ শাল্রী, রজনীকান্ত সেন, চক্রশেধর মুবোপাথার, পাঁচকড়ি বজ্যোপাথার। প্রভৃতি বনামধ্যাত লেওকদের বৃত্তান্ত। প্রক্রেশধের অক্সাহিবসা ও তথানিষ্ঠার নৃত্তন করিরা পরিচর দেওরা অনাবক্তক। বর্তমান থঙে ভাহার প্রভিট। কিছুমান কুর হর নাই।

बियुगीनक्मात प

ভারতীয় সঙ্গীতের ইতিহাস ( প্রথম খণ্ড )—সঙ্গীত-নায়ক জ্রীগোণেখর বন্দোণাধার। বহুমতী সাহিত্য বন্দির, ১০৬, বৌবালার ক্লীট, কলিকাতা। মূল্য পাঁচ টাকা।

ভারতীর স্কাতের পশ্চাতে একটি বিরাট ইতিহাস বহিরাহে। ইং।
বহু শতাকী ব্রিরা শত শত ক্রত্রেটা ও স্কাতসাধকের কঠোর সাধনা ও
স্কাতানোনা সৃপতিদিপের উৎসাহ এবং পৃষ্ঠশোবকভার কলে নব নব রূপে
ক্লণান্তিত হইরাহে। স্কাতকলার এই ক্রম্বিবর্তন করিবা

সদীতাচাৰ্ব্যপ্ৰ সমীত-বিজ্ঞান হাই কৰিয়াছেন। সদীতকৈ বিজ্ঞানসম্মত ত্ৰপ দেওৱাই প্ৰকৃত সমীতসাধকের লক্ষ্য থাকা উচিত।

সঙ্গীতের এই ক্রমনিবর্ত্তনকে গ্রন্থাকারে পরিবেশন করা বিপুল প্রমসাপেক, কারণ এই বিষয়ে তথানি সংগ্রন্থ করিবার মত নির্ভরবোগ্য পুদ্ধক বিষয়। সেই হেতু সঙ্গীতনারক গোপেরর বাবুর এই পুরুক্থানি প্রকাশিত হওরার ক্রীলীতকলার সাধকসমাজ বিশেবরূপে উপকৃত ইইরাছেন।

ভারতীয় সঙ্গীতের ইতিহাস-এর মধ্যে ভাদশ হইতে অটাদশ শতাকী পর্বান্ত অর্থাৎ দিলীখন পৃথীরাজের সমন্ত হইতে :আরম্ভ করিরা আহম্মদ শাহের রাজস্বকাল পর্বান্ত যে সম্পন্ন স্বরপ্রটার আবির্ভাব হর তাঁহাদের নাম ও পরিচর এবং তাঁহাদের মধ্যে বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য সজীতকার-গণের রচিত প্রায় একশত গীত ও সেগুলির স্বরালিণি সন্নিবেশিত হইরাছে। ইহাদের মধ্যে শঙ্রানন্দ, নারকগোপাল, বিবেকস্থামী, রামদাস, স্বরদাস, ভানসেন, জানকাদাস, সদারক, অদারল, মির্মাঞ্চলমানবী, শোরী, তুলসীন্দাস, মীরাবান্ধ প্রভৃতির নাম উ:চথ করা বাইতে পারে।

এই প্রছের মধ্যে প্রণদ, টপ্না, ধেরাল, ঠুংরী প্রকৃতি বাবতীর উচ্চাঙ্গসঙ্গীতের সমাবেশ রহিরাছে। তাহা ছাড়া ক্রমবিবর্জনের মধ্য দিরা
কিরপে কাহার গ্রবাপ কাহার রাজ্যকালে একটির পর আর একটির
উৎপত্তি হইল তাহা, এবং একের সহিত অপরের প্রভেদ ও প্রভ্যেকটির
বৈশিষ্ট্য বিশাদভাবে লিশিয়ত হউরাছে।

এই গ্রন্থ বে কেবল সঙ্গাত-শিপাফ্রকেই আনন্দের এসদ বোপাইবে তাহা নহে, ইহার ঐতিহাসিক দিক এবং সঙ্গীতগুলির বধ্য দিরা ভাব ও ভাষার বিবর্ত্তনের দিকটি সর্ক্সাধারণের জ্ঞানবিস্তারের সহায়ক হইবে, ইহাই আমার বিধাস।

<u>জীরাধাগোবিন্দ রায়</u>

কালো আকাশ— গ্রিন্তরপ্লন ঘোষ। প্রপ্রেসিভ পাবলিশার্স ৩৮-এ, তুর্গাচরণ মিত্র ষ্ক্রীট, কলিকাভা-৬। সুলা হুই টাকা।

নগরোপকঠের শিকাঞ্লের আকাশ বন্ত্র-দানবের দীর্ঘনিঃখানে ধৃষ-মলিন। এই আকাশের নীচে বাদ করে বে সব মানুষ ভাছাদের জীবন কার্থানার নালপাশে বাঁথা-ব্রের সেবা করিয়া তাহারাও হইরাছে कुर्वद्वार्थ छेनामीन राज्य छात्र । अमनहे अक अभिक अवश्व- योगानव প্ৰারতে গুরু হইরাছে ভাহার জীবনবুড, পঞ্চাশোর্ডে পৌছিরাও সে বুজের विवास नारे। मानादा क्या जो, विकास ७ छेन्द्र श्रेण एटल ; सप्राणायुरी ছোট একটি মেয়ে: অর্থ নাই, বাহা নাই, শান্তির বাশাও মরীচিকা। क्रहे मःनारत्वहे क्रके हिल्ला बान बानिया शिवियाह वृहस्त स्नारक জালো ও বার্তা। অশিকা ও অধান্তাকে সে অদৃষ্টের প্রাপ্য বলিরা মানিরা नव नाह--धननानानात्त्र अपने जाहात्र मर्ग छोड हहेवाहे नानिवारह । न्छन সংসাম आब दिशवान कीयरमद वर्ध स्विद्याह । स्वां करनी द्भार महात्राचा पारतम महत्र यह दीवान चरा। देणनवकारमञ्जूषा वात्रज्ञ । বেলাঘর ও পুতৃত-প্রীতির মধ্যে পুহিনীপনা ও মাতৃষের বিকাশ। এই ৰপ্ৰের সঙ্গে বান্তবের সংখাত। এই একটি মাত্র পরিবারকে কেন্দ্র করিয়া লেখক প্রতলীয় কালো আকাশের ছবি আঁকিরাছেন। ছবির পরিবেশ বেমন বিবাদয়ান, রেখা ও রঙ ডেমনি ছলছলে—কাহিনীতে त्यकात क्य वांचात्वा। अहे काहिबीहे हेवाहेश विवाहेश करून सत्य

ज्यादेश (स्वता नृत्य (नवाय- नृत्य वाश्वीय । विव शृह्यंत्र काहिनी ज्यारण ज्यूजा क्या कर कर का किना वहें एक तम्ब वाल व प्रावसात नामक काममा करा क कामकी की बहुन का किया थे देखाई है जी हिमाहे हैं। इसी कर्त्रहादिन विश्वासी की बहुन की विश्वास की विश्वास की किया है हैं। प्रभाष्य प्रभाष्य नाज्याच नाज कृतियात (क्षे) कृतिशास्त्र । कृति वृद्धिः मार्थिक वृद्धाः मनस् हिला विक्रमिक व्हेर म मूर्व हरशत नात गाहै । छवानि तथात हान तहे द क्रिकार्ड जाशांक प्रविद्यम्भि मजीव हरेबार्ड । अञ्चलके बन्धननीत ।

গ্রীরামপদ মুখোপাখায়

र्विमिक (मवेक) — क्षेत्रिक्षेत्र क्षेत्रार्थः। विवस्त्रको अस्ति । विवस्ति होहेली हैं। क्लिकांको । ब्ला बाहे

ৰেছ হিন্দুৰ পায়ৰ আছাত্ত বস্তু—ইহা ভাছাত্ত সমস্ত ধৰ্ণকৰ্মেত নিয়ামণ-क्षरण बीकुछ। अवंह देवनिक जाहाई अमुडीतिन महिल वर्षमान हिन्मून जाहान जाना । बार्डीत्वर शास्त्र स्पडे । देवविक त्यारी ७ बाधिवक स्मृत त्यारांत्र शरव ७ और कारणबाद विश्वनीत्मन व्यक्तांत्र नाहे । वर्षमान हिम्मू नवारण আমনা বৈ সহত কেবাৰেনীর সহিত বিভা-পরিচিত তাহাবের অনেতের प्राप्ताच्य न्वाप्त अंद्र जीवडी योह तो। रहिराइड केट्सब दाह गाँह

# 

ভারতীয় জীবন বীমার অগ্রগতির পথে "হিন্দুছান" সর্বাদাই পুরোভাগে विश्वादः। त्य चाषिक मात्रवला, मश्रुणि ও मन्नणि-मक्ति विसूचात्वत्र देविनिहा, ১৯৫০ সালের বার্ষিক বিবরণীডেও ভাত্তাই পুনুরার প্রকাশ পাইরাছে।

মোট চলভি বীমা ষোট সংস্থান বীষা ভহবিল প্রিমিয়ামের আর मानी (नाम (>>eo) 40,30,60,631 6141 39.90.90.6284 >6,39,89,686 0.80,89,000 12.22.660

মৃতন বীমা 294,60,99,00

কিছ হিন্দুখানের উপর অনসাধারণের যে অকুঠ আখা পূর্বাপর ভাছার क्रस्यात्रिक शर्थ शार्थिक करण महावेषा किविशास, मकन मन्यापत (वार्क সম্পদ তাহারই অন্ত হিন্দুখানের প্রকৃত গৌরব। ছিন্দুখানও তাহার ঐকারিক সেবা বারা সেই গৌরৰ অক্স রাবিবে, নৃতন বংসরে ইহাই ভাছার প্রতিফ্রতি।

কো-অপারেটিভ ইন্মিওরের সোমাইটি, লি: হিন্দুস্থান বিল্ডিংস, কলিকাতা ১৩

ভাহাদেরও বর্মণ সক্ষে আমাদের বে ধারণা আছে ভাহার সহিত বৈদিক বর্ণনার থুব বেলি মিল নাই – ভাহাদের সম্পর্কে বে সমস্ত কাহিনী আমাদের মধ্যে প্রচলিত ভাহাদের কোন কোনটর ইলিতমাত্র পাওরা বার, অনেক ক্ষেত্রে ভাহাও বিলে না। পকান্তরে, বেদবর্ণিত বহু দেংতা আজ আমাদের নিকট অপরিচিত বা অর পরিচিত।

এ অৱস্থাৰ বৈদিক দেবতাৰ স্বৰূপ বৰ্ণনা বা বৈদিক ধৰ্মাসভানেৰ বিষয়ণ কেবল কৌতৃক্ষমক্ট নয়, হিন্দুধর্মের বিচিত্র পরিণতির ইতিহাস আলোচনার ইহা এখান অবলম্বন। ইতিপূর্বেরামেলফুলর क्रियमी प्रमानव वारलाकायात क विवाद शथ क्षाप्ति कावदारक्रम-कावाब 'ৰজকৰা'র ৰৈদিক বাগৰজ্ঞের অপুৰ্বে বিবরণ সম্বলিত হইবাছে। আলোচা পুতকে লেখক প্রাচান বেদাচার্ব বাছের শ্রেণীবিভাগ অনুসরণ कविद्या बनारवालांक दावान दावान सम्बद्धात शतिहरू निर्दाटन-नारकार ভাছাদের ইভিহাস আলোচনা করিয়া দেখাইয়াছেন, কোন কোন দেবতা বৈদিৰপূৰ্ব বুগ হইতে বিভিন্ন দেশে পূজা পাইয়া জাসিতেছেন। বিভিন্ন ছিল বেবতা বিভিন্ন নৈসৰ্গিক ব্যাপারের প্রতীক-প্রাচীন এবং আধুনিক অনেক পঞ্জি কৰ্মক বিশ্বতভাবে ব্যাখ্যাত এই মতামুদারে লেখক আৰেক ছলে দেবতাদের সুল एच উদ্বাটিত করিরাছেন। এই বিবরে ইংরেজীতে নামকরা প্রামাণিক এম্ব আছে—বাংলার এযাকং বিশেব কিছুই ছিল না। বৰ্ত্তমান প্ৰক প্ৰকাশিত ছওৱায় ৰাঙালী পাঠক অনাৱাদে देवविक द्विकाद्व मचर्क मात्र क्यांक्षनि क्यांनिर्क भावित्व এवर क्यांनिया উপকত হইবেন।

ঐচিন্তাহরণ চক্রবর্তী



রাষ্ট্রভাষা-প্রবেশ — শ্রীষ্ণুত্বৰ লাসপ্ত। ৩ং, টাংহা রোভ, কলিকাতা—১০ ছইতে শ্রীবিদনাথ নাথ কর্তৃক প্রকাশিত। ১২২ প্রতা । মুলা দেও টাকা।

রাষ্ট্রিক কারণে রাষ্ট্রভাবা হিন্দীর প্রচারকলে বাংলা দেশে বাংলা ভাষার সাহাব্যে প্রাথমিক ও উচ্চতর প্রবেশিকা ও পাঠ্যপুত্তক বহু বাহির হইরাছে ও ইতি:ছ। ইহার অনেকগুলির পিছনে জ্ঞান নিষ্ঠা ও সাধবা নাই, এগুলি ওপু ব্যবসারস্থিপ্রণোদিত প্রকাশ ভাহা বলাই বাহলা। ক্ষের বিষর, 'রাষ্ট্রভাবা-প্রবেশ' এই হলুগ-প্রহ্মালার অন্তর্গুক্ত নহে। প্রহ্মার রাষ্ট্রভাবা প্রচার সমিতি ও পশ্চিমবক্ত রাষ্ট্রভাবা পরিবরের সহিত বৃক্ত থাকিরা হাতে কলমে কাল করিরা বথেই জ্ঞানলাভ করিরাছেন। কলে এই পুতকে পরীক্ষিত বৈজ্ঞানিক পছতি অমুস্ত হইরাছে। আঠারটি পাঠ এবং পরিশিষ্টে প্রহত্ত শক্ষেত্র আরম্ভ করিলে হিন্দী ভাষার মোটাক্রট্ট জ্ঞান হইবে। বাংলা ক্ষেপ্তে হিন্দী প্রচারে বাহারা সর্বহা বাগ্যুত, দেই
জ্ঞানিররঞ্জন দেন, জ্ঞারেবতীরঞ্জন সিংহ প্রভৃতি বইথানিকে স্মানর করিরাছেন। আশা করি, শিকাধীরা এই পুতকের সাহাব্য প্রহণ করিবেন। এই জাতীর ভাষা-প্রবেশিকার মুদ্রাকর-প্রমান থাকা অভার। গরবর্তী সংকরণে প্রস্থকার এই কথাটি মরন রাখিলে আনন্দিত হইব।

রাষ্ট্রভাষা-শিক্ষক—শ্রহণীরচন্দ্র মন্ত্রদার। চক্রবর্তী, চাটাব্দী এও কোং, কলিকাতা। পু. ১৯৮। মূল্য পাঁচ দিকা।

হিন্দী ও হিন্দুভানীর বিজেন ও সামপ্রক্ত সম্পর্কে সাধারণ বাঙালীর কোনও শাই ধারণা নাই। শ্রীযুক্ত মজুরদার উভরবিধ ভাষার অভিজ্ঞ, অধিকত্ত ভাষাভাজের নিটাবান সাধক। এই কুল প্রছে বল পরিসরের মধ্যে হিন্দী-হিন্দুভানীর বিজেন ও সামপ্রক্ত ব্রাইয়া রাইভাষাকে সহজে আরত্তে আনার কৌশল প্রদর্শিত হইরাহে। অনুনীলনগুলি বিশেব কার দিবে। এই পুতকের বহল প্রচার কামনা করি, কিত সেই সঙ্গে ইহাও নিবেদন করি বে, ১১৮ পূঠার বইরে পুরা ভিন পূঠাবালী শুক্তি গল্প কল্লাকর। হথের বিষয়, প্রকাশক আখাস দিরাছেন, বইধানিকে সম্পূর্ণ গুড করিয়া প্রচার করা হইবে, ইহা টো রাল প্রিট্ট মাল।

₹.

সন্ধানী—বুনিরাণী শিক্ত-বিভালর, হস্তান্ত্রীক্টতে প্রকাশিক।

প্রাথমিক বৃনিয়ানী শিক্ষাকেক্সের অধ্যাপক-ছাত্রগণের স্থানিখিত প্রবন্ধন সমষ্টি।

উপজীবিকা হিসাবে বিজ্ঞাপন—এগভোৰকুমার বে। বেষল পাৰ্দিশান, কলিকাভা। পূঠা ১২০। মূল্য ২০০।

মোট পাঁচটি অধ্যানে পৃত্তকুথানি সম্পূর্ব। বথা—'উপজীবিক' হিসাবে বিজ্ঞাপন', 'বিজ্ঞাপনের দান বের কে ?' 'ব্যাপক বিজ্ঞাপন', 'প্র-প্রিকার বিজ্ঞাপন', 'বিজ্ঞাপনের দান বের কে ?' 'ব্যাপক বিজ্ঞাপনের ব্যাবস্থা একটা প্রধান আরের পথ । বহু লোক ইহাতে নিবৃত্ত আহেন এবং বহু প্রতিষ্ঠান এই ব্যাপারে সংগ্নি? । অবস্থ কেবল বিজ্ঞাপনের জোহে অচল প্রবাধ বিদ্যালয় কালে বাং এই একাজ প্রারেশীর বিবন্ধে অপার ছুই একাজ প্রারিশ্ব বাংলা কালিক সংখ্যা পুরুষ্ট কর । লেখক বৈজ্ঞানিক প্রধানীতে আধুনিক ক্যতের বিজ্ঞাপন সম্পর্কে পৃত্তক নিবিয়া বাঙালী পাঠকের বভ্যাবভাজন হইরাছেন ।

জীঅনাথবদ্ধ দত্ত

পরবাসী—এআদিভাশহর। ১৬, মিচি রোড, ক্লিকাভা। মুলা ভিন টাকা।

ক। হিনী স্থাক ইইরাছে সভ্যোবের সংগ্রামমর জীবনকে কেন্দ্র করির। এম-নেস্নি পাস করিরা ভবিছৎ জীবনের উচ্চাপার মন বধন পরিপূর্ণ এমনি সময়ে পিতার আক্ষিক মৃত্যুতে সংসারের সমস্ত ভার আসিরা পঢ়িল বাইশ বছরের বুবক সভ্যোবের ক্ষে । শহর হই দুরে একটা ফাউরিতে সহকারী কেমিটের পলে সে'বাহাল হইল। সংলয় নারক সভ্যোন নয়, বিকাশ—বার পরিচাস-নৈপুণা, অপুন্ধ ব্যক্তিত্ব, আপরিসীয় সহ্মশীলতা, দ্রা দাক্ষিণাপুর্ণ ই রহস্তমর চালচলন, প্রাণ্থালা ব্যবহার ক হিনীকে আগাগোচা প্রাণ্য করিরা রাখিয়াছে।

বিকাশ কাজিরির কোরসান। ফলত:, ফাজিরীর বড় ছোট সকলেই তাহার অপুনত। সচ্চোল এখানে নবাগত হইলেও তাহার উপর বিকাশের কি জালি কেন একটা বিজয়কর আক্থি দেখা ঘাইত বাহার কলে এই হজের চরিজের লোকটার বিনের অনেক তথাই তাহার কাছে বাজ হটবা পড়িল।

বিকাশের ভিতরকার সভিচ্চিরের সামুবটির পরিচর বধন সভ্যেন পাইন তথন সে নিজের কাছেই যেন ছোট হইরা গেল। অথচ বিকাশ সব বুলিরা এবং সব জানিয়াও কত সহজে বনিতে পারিল—'ভূস ত সামুবই করে সভোন।'

বিকাশ ছাড়া 'আরও বে কয়টি চরিজের সাক্ষাৎ পাওরা যার তানের মধ্যে চাফ কেনিষ্ট বোবের আ "বৌদি" মনে ছাপ রাখে। একটি বাঁটি বাঙালী মেরের ছবি নিপুশভাবে ফুটিরা উঠিরাছে তার মাতৃ, ভগ্নী ও গ্রী-প্রভৃতি বিভিন্ন রূপের মধ্যে।

ক্ৰীতির স্থকে সব সময়ই পাঠকের মনে একটা কোতৃহণ জাগিয়। থাকে। পুরকের শেবে তার সাকাং বিলে কাাক্টরির ম্যানেজারের ব্রীক্রপে বখন মানেজার বিকাশকে ভূন বুবিরা আঘাত করিতে উচ্চত আর সেই আঘাত প্রতিহত করিতে বিকাশ বখন রুখিরা উঠিরাছে সেই সমরে। অত্যন্ত সাবধানী এবং ঘার্থপর একটি সেরে। কিন্তু এরই জন্ত বিকাশ সর্ববিত্যারী। ক্রীতিকে না পাইরা সে গোটা ছনিরার মাসুবকে পাইরাছে।

পুত্তকথানি অধপাঠ্য এবং আকৰ্ষীয় চইয়াছে। সংল এবং ৰক্ত্ৰ ভাষা। কিন্তু বইথানিতে শরং চল্লের একথানি উপভানের প্রভাব বেশী করিবাই পভিয়াছে মনে হয়।

🗃 বিভূতিভূষণ শুপ্ত

১। **জ্রীলন্মী পূজা** ও কথা, ২। **জ্রী জ্রীবিশ্বকর্মা** পূর্জা ও কথা—জ্রীউমেশচক্র চক্রবর্তী। প্রাপ্তিহান—১২০.২, দাপার সারকুলার রোড, কলিকাতা-১। মূল্য প্রত্যেকথানি মশ

পুলা-পাৰ্বণ, ব্ৰভউৎসৰ বাঙালী হিন্দুৰ ব্যক্তিগত ও সমাল-লীবনের অপরিহার্যা অল। লেখকের প্রণীত পুলা ও ব্ৰতক্ষা বিষয়ক পুত্তকসমূহবারা সাধারণ বাঙালী পুরস্থের বিশেষ উপকার সাধিত হইতেছে। অলকাল মধ্যে শ্রীশ্রীলন্দ্রী পূলা ও কথার বিতীয় সংক্ষেশ হওয়াতে এই-খানি বে বিশেষ ক্ষনপ্রিয়তা অর্ক্তন করিয়াছে তাহা বুঝিতে পারা বায়। শিলকর্পের দেবতা বিষক্ষা। যত্রশিল্পী ও কার-শিলিগণ কর্তৃক প্রতি বংসর ভাঁহার পূলা অমুষ্টিত হইরা থাকে। ঘিতীর পুত্তকথানিতে লেখক এই পূলার কথা বড়ই চিন্তাকর্ষকভাবে বর্ণনা করিয়াছেন। এই প্রসল্পতিনি ধর্ম সমাল ও রাষ্ট্রে শিল্পীদের স্থান সম্বন্ধে বে আলোচনা করিয়াছেন ভাহা মনোক্ত হইরাছে।

এনিলিনীকুমার ভদ্র

শরৎ চন্দ্রের পুস্তকাকারে অপ্রকাশিত রচনাবলী

-- খ্রীরজেলনাথ বন্দ্যোগাধার কর্তৃক সহলিত। গুলদাস চটোপাধার এও
সল । ২০০১১, ক্পিডালিস খ্রীট, কলিকাতা-৬। দুলা পাঁচ টাকা।

কুডি-একুশ বংসর পূর্বে একটি সাহিত্য-সম্ভান্ন বোগদানের স্থবোগ স্মার হইয়াছিল। দেখানে সাহিতে।র স্মানোচনা প্রসঙ্গে উপস্থিত করেক-জন মনীবী শরং চল্লের ৰচনা সম্পর্কে অনুকৃত্ত ও প্রতিকৃত্ত উত্তর মৃতই প্ৰকাশ করিয়াছিলেন। কিন্তু একটি বিষয়ে সকলেই একষত ছিলেন, ভাচা শরৎ চন্দ্রের জনপ্রিরতা সম্পর্কে। বস্তবান 'রচনাবলীতেও ইছার ছাল ফুপাই। বাংলাদেশে বাংলাভাষার খ্যাত-অথ্যাত, দীর্ঘরায়ী বন্ধায় এমন পত্ৰ-পত্ৰিকা ধুৰ কমই ছিল বাহাতে কোন-না-কোন সময়ে খবং চল্লের হচনা প্ৰকাশিত হয় নাই। বিনিই আলোচা পুত্তকথানির পাতা উণ্টাইবেন জাঁহারই চক্ষে প্রথমেই তাহা ধরা পড়িবে। ইংা হইতে আর এकि विवत्र आयोग्यत व हारे यत्न हिन्छ हत्। धरेक्स विकित्र नमस्य একাৰিত বিচিত্ৰ ধরণের পত্ৰ-পত্ৰিকা হইতে রচনা সম্বলন কিয়াপ আম-সাধ্য ব্যাপার! কিন্তু একেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যার ব্যাপক অফুসভান ভারা এই অম্বাধ্য কার্যা সম্পন্ন করিতে সমর্থ হইরাছেন। এই সকল বচনা--যাহার অধিকাংশই হয়ত বর্তমান পাঠক সমাজের অপোচরে থাকিয়া বাইত , পুত্তকাকারে প্রকাশিত হওরার বোলো-সাহিত্যের বেমন মর্গাদা ৰাডিয়াছে, বাংলা-ভাবীয়াও তভোষিক উপকৃত হইয়াছেন।



**এই बहुनामब्दाहर ध्यांब मध्यबहे ১७১० माल हर्दे ७ ५७८८** मा नव माथा विकित शक्तिकात क्षेकांनिक इत। अक्षांनि मधारा ७ इहेथानि অসমান্ত উপস্থাস ও একটি ব্ৰপক্ষা বাবে অপর সভলই, এক ক্ষার বলিতে বেলে মনন-সাহিত্যস্থাক রচনা ৬ তাবণ। সমাজ, সাহিত্য, রাজনীতি প্ৰভৃতি বিবরের আলোচনাইহাতে নালা রূপে ত ন পাইরাছে। 'ঔপভানিক' শরং চক্র কেন বে 'অপরাতের' ১ইরাছেন ভারাত মুগ কারণ এই সকল बहुबाशीर्क बञ्चक कि । भारत हात्म व किन्नहा कि व वसन विहित्त. তাঁহাৰ আহরণও ছিল তেম্বি প্রচুৱ। নুতত্ত, পুরাতত্ত্ব, ইতিহাস, সমাজ-বিজ্ঞান, বৈদেশিক সাহিত্য ভাহার বিশেণ পড়া ছিল। এই সকল 'আহরণকে অভিজ্ঞতার সংগ মিলাইরা তিনি শীল রচনাকে রসগ্রত করিয়াছেন। তবেই তে। তারা প্রেট সাহিত্য চইয়াছে। 'কানকাটা' প্রবদ্ধে উড়িয়ার কামকটো এবং বাইবেল-ক্তি কানামাণ্ট জাতির সাদ্য [?] একটি চমংকাৰ উপমাধারা ভান বুঝাইরা নিরা ছক। 'দর্শনাভার' এবং 'দশামা ভাৰটির মণে বে মিল 'কানানাইট' ও 'কানকাটার মধোও সেইরূপ মিল! শরৎ চক্র মহায়া পান্ধী-প্রবর্ত্তিত অসহবালের ঐকান্ধিক অমুরান্ট ও সঞ্জির সমর্থক ছিলেন। ভারার কার্যবরণের পর পরৎ চক্র 'মহাস্থাছী' প্ৰবন্ধ বেৰেন ('নাবারণ'—বৈশাধ ১৩২৯)। ভারতবর্বের 'ৰাধীনতা' অপেকাও সভাবিহ তথা 'অহিংসা'কে গাৰীলী কেন উচ্চে ছান

# ছোট ক্ৰিমিনোত্গর অব্যৰ্থ ঔৰণ "ভেরোনা হেলমিন্থিয়া"

পৈশবে আমাদের দেশে শতকরা ৩০ জন শিশু নানা আতীর ক্রিমি রোগে, বিশেষতঃ ক্তা ক্রিমিডে আক্রান্ত হয়ে তার-আছা প্রাপ্ত হয় "ভেরোজা" জনসাধারণের এই বছদিনের অস্ত্রবিধা হয় করিয়াছে।

বৃদ্য—৪ আং শিশি ডাং মাং সহ—২।০ আনা।

ভবিত্তরকীল কেমিক্যাল ভরার্কস লিঃ
১।১ বি, গোবিন্দ আড্ডী বোড, কলিকাডা—২৭
কোন—নাট্য ৮৮১

# নতভা, কৰ্ব্যনিষ্ঠা ও কাৰ্য্য কুশনভার নিষ্ঠান ব্যাক্ত অফ্ বাঁক্তিড়া লিমিটেড

বাংলার ব্যাদিং কগতে বিরাট বিপর্যার সংস্কৃত ভারত সরকার হইতে পাঁচ লব্দ বার্ট হাজার টাকার শেরার বিক্রয়ের অক্সমতি পাইরাছে। শেরার বিক্রয় সংক্রোম্ভ বোবণা শীম্মই বধারীতি প্রকাশিত হইবে।

> চেনাবম্যান— **শ্রিক্সরাথ কোলে** ম্যানেজিং ভিবেক্টাব— **শ্রিক্ররিদাস ব্যালার্জি**

দিলাছিলেন, তালাৰ একটি স্কাৰ বাধা। লেখক টলতে বিলাহেন। 'সভাগ্ৰী' ও 'বৰ্ডমান িশু মুসলমান সমস্তা'ত তিনি ল'ত সহল ভাবার বাঁটি সভা কথা বলিলাহেন। চৰপার গৰা বলালাভ সভৰ এ ধারণার শুভিও তিনি কশাবাত করিতে ফ্রেট করেন নাই। 'মুসলমান সাহিভ্য' সম্বন্ধে ভাঁহার বন্ধৰ প্রশ্বিধানবোগ্য। এই পুত্তক প্রভাক বাংলাভাবীর বার বার পঠ কবা করিব।

রামমোহন-প্রস্থাবলী (১ম বং)—স্পাদক: শ্রীক্রার্ক্তরনাধ বন্দোপাধার ও সক্ষাকাত দাস। ক্রীক্রান্তর-পরিবং,
২০০১, আপা সার্ক্তাব রোড, কলিকাতা ও। মুলা সাড়ে চারি টাকা।
বঙ্গীর-সাহিত্য-পরিবং কর্তৃক প্রকাশিত রামমোহন-প্রছাবলীর তিন
ধণ্ড পূর্বে প্রকাশিত স্ট্রাছে। পানি বরিরা এই চারি ধণ্ড বাহির
হটন। এই ধণ্ডে রামমোহনের বেদান্ত হু বেদান্ত সার এবং পঞ্চোপনিবং (ভলবকার, উপা, কঠা, মাণ্ডুকা ও মুণ্ডক) প্রদন্ত চট্ট্রাছে।
'বেদান্তর্গ্রহণ ও 'বেদান্তসাহে'র প্রতিপাত্ত বিবরের প্রতিবাদে পশ্চিত

বেদান্তর্গন্ধ ও 'বেদান্তস্থাত র্বার্থনার প্রতিবাদে পাঁডিত
মুচাপ্রের বিন্তালভার ইংরেজী অনুবাদ সহ 'বেদান্তচিক্রভা' প্রকাশিত
করেন। তাঁহার উত্তর রামমোহন দেন 'ভটাচার্বাের সহিত বিচারে'।
মুচাপ্ররের উক্ত বাংলা প্রতিবাদ গবং রামমোহনের জবাব হুই ই এই বঙে
হান পাইরাছে। এভদিন রামমোহনের উক্তির সজে মাত্র পাঠক সাধারণ
পরিচিত হিলেন। বর্ত্তনান সংকরণে উত্তর-প্রতুত্তর মুত্রিত হর্তরার এক
দিকে বেমন রক্ষণশীল হিন্দুদের মভামত ও মনোভ'ব জানা ব ইতেছে,
আন্ত দিকে বামমোহনের বক্তবা ও পাইভাবে ব্বিবার স্থাবার য বাছে।
ইহা বর্ত্তমান সংকরণের বৈশিস্তা। সম্পাদকাণ নিশ্লের বতু সহ্তারে
রামমোহনের জীবিতকালে প্রকাশিত বুল প্রক্রের হুলার বান বাের বাাবিদ্রের জীবিতকালে প্রকাশিত হুল প্রক্রের কোন কোন
নবাবিদ্রত প্রক্রের বাহা ইভিপ্রেক্তার ইসংজ্বণগুলিতে হান-পার নাই,
ইহাতে সরিবিষ্ট করা হইরাছে, আবার কোন কোন-রচনা অপরের সম্লেহে
ব্রিতিত হইরাজে। এই শোভন ও পরিশুদ্ধ স্বাহ্বনাই কালে আন্সাইনের

বর্ষপঞ্জী, ১৩৫৮—জীনভোবরপ্লন সেন্তথ্য ও শ্রীদোগাল ভৌমিকের বুগ্ম-সম্পাদমার থাকাশিত। এস্ আত. সেন্তথ্য এও কোং, ৬, চিত্তরপ্লন এভিনিউ, কলিকাতা-১৩। স্বাচারি টাকা।

বাংলা-গলের ক্রমোলভির ধারা নির্বাহক্তে ও এরূপ পুত্তক প্রকাশের বিশেষ

সাৰ্থকতা বাং।

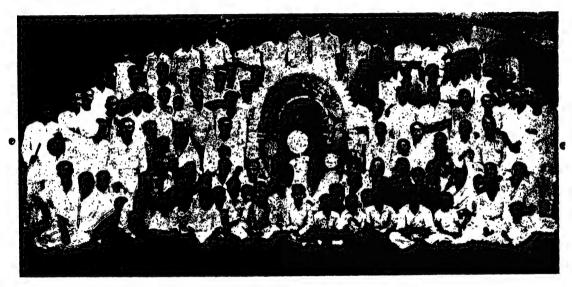
ইলানীং বে বরণের বর্বপঞ্জী বাহির চ্ইতেকে 'প্রকাশক কর্জুক সর্ব্যবন্ধ সংয়ক্ষিত' এই পঞ্জীবালিতে তাহার কিছু বাতিক্রম দেখিলে সুধা হটলাম। কুরি, শিল্প বিজ্ঞান, হাজনীতি, বাছে, জীবন-নীমা, শিক্ষা, বাছা, বর্তমান ভারত, বহিতারত, খেলাধুলা, খাজসমক্রা, চলচ্চিত্র, বাজ্বিপরিনর প্রভৃতি নানা বিবরের অবতারণাই ইহাতে করা হইলাছে। কিন্তু বছেই ছুংধের বিবর, কিছু কিছু ভারতমা হইলেও কোনমিরই বিশ্ল বা বিশেব বিবরণ পাইতেছি না। ভারতের শিক্ষা-ব্যবদ্ধা নাত্র মর পুঠার শেব হইলাছে। শৃথিবীর ইতিহালে সর্বীর তারিব"-এ দেখিতেছি, 'সভীবাহ প্রথা'র উজ্জের হইলাছে '১৮২৮ সনে। ইহা ১৮২৯ স্ট্রীক্ষের হঠা ভিসেন্তর ১০শ বিধিন্নারা ব্রহিত করা হয়। কিন্তু এডগুলি বিবরের পাইবর্তে, ছই চারিট্ট জ্ঞাবন্তর বিবর কাইরা এক একথানি বর্ষপঞ্জী প্রকাশিত হইলে ভাল হয় না কি

ৰীযোগেশচন্দ্ৰ বাগল



### বেরিলিতে ছুংগাংসব

এবার উভয় প্রদেশের বেরিনিংভ বিপুল স্থারেছে ছুর্নোংসব উন্থানিভ ১ইরাছে। ছুংমীর পুলিস স্থারিটেভেন্ট বিঃ এইচ, কে, ভর পূজা-ভ্রিটর সভাণতি নির্বাচিত হন। খলির বব্যে চারট বুনির'লী প্রতিতে চলে। এখলির শিক্ষেরা ওয়ার্ডা অববা বলরারপুরে বুনিয়ালী শিক্ষার শিক্ষা-প্রাপ্ত হইরাহেন। বিদ্যালয়খলিতে বোর্ড বে সাহাব্য বেন ভাহা বংসায়াত। ভাই পূর্ব্য বংসরের বক্ত এবারও শিক্ষের



বেরিলিভে ছর্বোংসব

ছানীর লোক ও প্রবাসী বাঙালীকের পারস্পরিক সহবোগিতার এবারকার পুরাফ্টান সর্কালস্থার হইরাছিল। বেরিলিকে সমাগত পূর্কাবলের উদ্বাহরের কীর্ত্তনও বিশেষ উপভোগ্য হইরাছিল।

### হরিজন সেবক সঙ্ঘ, বঙ্গীয় বোর্ড (১৯৫০-৫১)

৩১-৩-৫১ ভারিখাত এক বংসরের কার্যাবিবরণী
এই বংসর উপলোক্ত প্রতিষ্ঠানকর্তৃক ৪০ট হরিজন
বিহালর পরিচালিত হইরাছে। উহার বব্যে ৩১ট পশ্চিববদে
এবং বাকি ৯ট পূর্বা পাকিছানে। আলোচ্য বর্বে বিহ্যালহভলিতে হালহাত্তীর সংখ্যা বৃদ্ধি পাইরা বোট ১৬৮৪ জন হর।
পূর্বা বংগর ঐ সংখ্যা ছিল ১৪০০। পশ্চিববদের বিহ্যালহ-

বৃত্তির সহিত্য বাসিক ৫ হারে বাগ্রি ভাতা অনেক তেনে দেওবা হয়। আলোচ্য বংসরে বিভিন্ন কারণে আটটি বিদ্যালয় বন হটরাকে, হটট পুতল বিদ্যালয় খোলা হটরাকে। পুতন বিদ্যালয়গুলির একট হাওচা জেলার, অপরট বেদিনী-পুরে। বোর্তের পক্ষ হটতে নববীণে হট বয়ক বহিলা-শিক্ষা কেন্তেও চলিতেছে। পক্ষিরবদের বিদ্যালয়গুলির লাহাব্য বাবদ বোর্ত ৮,২৬৯ টাকা ও বাগ্রি ভাতা বাবদ ১,৩৬৬৪১০ সাতাব্য দিরাকে, পূর্ববদের বিদ্যালয়গুলিতে প্রকল্প সাহাব্যের পরিবাণ ২,৬১৫ টাকা। বিদ্যালয়ে নাহাব্যের পরিবাণ মোট ১০,২৫০৪১০ টাকা। ওট হরিক্ষন হারকে বৃত্তি বাবদ ৩২৫, টাকা দেওবা হটরাকে।

ছুই ক্ষম উংগাতী ক্ষ্মী পাওৱা গিয়াতে। একক্ষম বিদ্যালয়-, ভলি পরিবর্গন করেন। অপর ক্ষম আব্যবাধ চহকা-শিক্ষক। শহরের বেধরদের ক্ল্যাণ-চেটার এই বংগর ৪৭১৪০
টাকা ব্যর করা হইরাছে। হাওভার একট নেধরবভিতে
গেবাকার্য্য চলিতেছে। হরিকদদের গারাজিক মর্ব্যাকালাভ
হবরে এই আশা লইরা এ প্রচেটা হক্ত করা হইরাছে। এই
কেলের উংগাহী কর্মী জীলালবিহারী প্রধান ওয়ার্ভার লিক্ষাপ্রহণের ক্লপ্ত গিরাহেন। পরে এই কেলে শ্রীমধূর্যদম জীবাত্তর
গভ ৯ বাস বাবং অগবতী বভিতে সাকাই ও পরিচ্ছরতার
অভ্যাসস্টের চেটা করিতেহেন। এই কর্মে প্রভিবেশীদের
সহাস্তৃতি পাওরা হইতেছে। সম্রতি ঐ ছানে একট বরস্কশিক্ষাক্রের বোলা চইতেছে।

প্রচারকার্থ্য ৩০১৮/০ টাকা খরচ হইরাছে। গাড়ী কছজী দিবস, গাড়ী প্রধান দিবস, ঠকর বাপার জননিদ ও মৃত্যু দিবসে সন্দের পক হইতে জনসভার আবোজন করা হয়। একটি সভার ভটর কৈলাসনাব ভাটজু এবং আর একটিভে ভূতপূর্ব কংপ্রেস-সভাপতি জীপুরুবোভন্নাস টওন সভাপতিত্ব কংরেম।

পশ্চিমবল সরকারের নিকট বোর্ড ৩,৫০০ টাকা সাহায্য পাইরাহেন। আলোচ্য বর্ষে ঠকর বাপার পরলোকগরনে সন্দের অপূর্ণীর ক্ষতি হইরাহে। ১৯৪৬-৪৭ সালে বলীর হয়িজনদের লাক্রণ মুক্তিগাকের দিনে এই ব্রহ জনসেবক বাংলার মুক্তীরা আসিরাহিলেন। ঠকর বাপার দেহাবসানের পর প্রীর্বেটি হরি হরিজন সেবক সন্দোলক হইহাহেন। তিনি ক্লিকাভার আসিরা সন্দের কলিকাভা ও হাওকার বঙ্গি শিকাক্তের পরিদর্শন করেন। সন্দের সহযোগী হয়িজন উমান বোর্ড এবং হরিজন পূন্বস্বিতি বোর্ডের পরিচালিত মুইটি পাঠশালা পরিদর্শন করেন এবং বলীর বোর্ডের স্বভানের স্বিতিত বিজিয়া চরিজন করেন এবং বলীর বোর্ডের স্বভানের

এই প্ৰভিত্তাদের বদীয় বোভেন্ন সম্পাদক জীপ্ৰিয়ন্ত্ৰণ সেম।

### বাঁকুড়া শ্ৰীরামকৃষ্ণ মঠ ও মিশন

আলোচ্য বর্ষে বঠে ১৫২ট বর্ষপথনীর ক্লাস এবং নিবমিতভাবে জীৱান্দান সংকীর্ডন করা হইরাছে। পুতকাগার এবং
সাধারণ পাঠাগারও স্কুলুভাবে পরিচালিত হইরাছে। প্রহাগারে
রোট পুতকের সংখ্যা ১৭৪২।

নিশ্ন বিভাগ: নিশ্নের ভড়াবথানে বাঁকুড়া শহরে হুইট এবং রামহরিপুর এামে এডট নোট ডট বাভব্য চিকিংসালর আছে। আলোচ্য বর্ধে এই ভিনট চিকিংসালরে বোট ৬৬০৪৫ জন সুভন ও পুরাভন বোনী চিকিংসিভ হুইরাছে এবং নোট ১৫২ জন বোনীয় উপর অলোপচার করা হুইরাছে।

বাঁকুড়া বিশন প্রালণত রোসিগণের অহারী আবালে বোট ৩০৮ কব বোদী অবস্থান করিয়া চিকিৎসিত হুইয়াছে। আলোচ্য বৰ্ষে বিবেকানক হোনিওপ্যাধিক বিভালয়ে নোট সাভ কন ছাত্ৰ শিকালাক করিয়াছে। ইহাদের মধ্যে ২ কন ছাত্ৰ হোনিওপ্যাধিক বিভালয়ের ভিত্তীলাভ করিয়াছে।

সাৱধানক ছাত্ৰাবাসে পাকিয়া ধৰ্ম কৰ ছাত্ৰ অধ্যৱনের হুবোগ লাভ করিবাছে। এই বংলরে রামছবিপুর রামছক মিশন পরিচালিত মধ্য-ইংরেছী বিভালরে বোট ছাত্রসংখ্যা ছিল ১৬০। একট বালিকাও এধানে শিকালাভ করিবাছে।

মিশন বিভাগ আলোচ্য বর্বে ৰোট ৪০ জন হুংছ ব্যক্তিকে ১৬১৮/০ আনা পাছাব্যবান বিশ্বাহে। নিশনের ১৯৫০ সালের বোট আর, ৬৮৮১৮০, তর্ব্যে বিভিন্ন জনহিত্যকর কর্মে ব্যর ভ্টরাছে ৬৭৪০১২৫ প্রসা।

### মুক-বধিরদের সমাবেশ

ক্লিকাভার বৃক্ত-ব্যৱ বিভালয়কে কেন্দ্র করিয়া বাংলা বেশ ভবা ভারভবর্ষে বৃক্ত-ব্যৱ শিকা-প্রচেষ্টা পুরু হয় গভ



क्ष-विवाहत मन्द्रिय

শভালীর শেব দশকে। বৃক্-ব্যির বিভালয়ের অভতর প্রতিঠাতা বানিণীযোহন বঙ্বদার দীর্থকাল ইহাদের দেবার রভ
হিলেন। তাঁহার পুলবের মধ্যে কেই কেই কার্য্যে বিশেষ
ভাবে ব্যাওত আছেন। ত্রীর্ক্ত বলিনীযোহন বজ্বদার বৃক্ব্যির্বের সাধারণ ও শির্দ্যালা শিক্ষাদান বিষয়ে উভোদী।
ভিনি সম্প্রতি বীর তবনে বৃক্-ব্যির্দির্গকে শিক্ষা ও সমাজ্যঠন
বৃক্ক হারাচিত্র প্রদর্শনের ব্যবহা করিবাহিলেন। এইরপ
আবোক্ষের বিশেষ আবর্তকভা আছে।

### ডক্টর শৈলেশচন্দ্র দেন

শ্ৰীলৈলেণ্চল লেন সন্তাতি "Sugarcane Chemistry ( रेफ् বলাবন) সহৰে বিদিন লিবিবা তি-এন্সি তিত্ৰীলাত ভৱিয়াহেন। তইব লেন বাবতালা কেনার পুনা ইচ্ছ গ্রেমণা-কেলে কর্মে নিযুক্ত আহেন। বিহারে 'ইচ্ছ বলাবন' বিষয়ে তইবেই তিত্রীবারী আর কেব নাই। ভার ক্য বালেন, তি-এস্লি

এক, আর, এস্,, ভটর ভবল্য, ভি, ওগ, ডি-এস্সি, এক, আর, এস্, ও অব্যাপক রিচার্ড ড্রেডকিক-এই ভিন কন বনীবী ভটর সেনের বিনিদ পরীকা করেন।

### ডক্টর স্থনীলচন্দ্র রায়

ভারত গবর্ণবেণ্টের প্রস্থাত্তিক স্থীকার কেলো প্রস্থীলচল্ল রার, এব্-এ, প্রাচীন কালীরের ইভিহাস ও সংস্থতি সহত্তে
গবেরণা করিরা কলিকাতা বিশ্ববিভালর হইতে ভক্টর অক
কিলসকি ভিন্তী পাইরাছেন। তাঁহার বিসিস অব্যাপক ভক্টর
নীহাররঞ্জন রার, অব্যাপক আল্টেকার ও অব্যাপক নীলকণ্ঠ
শালী কর্ত্তক প্রীক্ষিত ও উচ্চ প্রশংসিত হর। ভক্টর রার
চুঁচুভার ব্যাতনারা ব্যবহারকারী প্রস্থীরচন্ত রার মহাশ্রের
পুল।

### পরিমল রায়

সঞ্জতি আবেরিকার নিউ ইয়র্কে পরিষদ রার পরনোক-গমন করিফাছেন। দিলী ছিল-তাঁহার কর্ম্মন। অর্থনীভিতে তাঁহার গভীর পাভিত্য ছিল। কর্ম্মব্যন্ত কীবনের কাঁকে কাঁকে ভিনি ঐকাভিক নিঠার সকে সাহিত্যচর্চা করিছেন। বাঁচিয়া বাঁকিনে বাংলা-সাহিত্যে বসরচমার কেছে ভিনি একট বিশিষ্ট আসম লাভ করিছে পারিছেন। তাঁর লেধার বে সংব্যের পরিচয় পাওরা বাইভ ভাহা প্রশংসনীর।

### মণীব্ৰভুষণ সিংহ

গভ ২২শে আবিন বাঁতুভার জনপ্রির কেণ্ডেবক ববীক্রত্বণ সিংহ ৬৪ বংসর বরসে পরলোকগনন জরিরাছেন।
তিনি বাঁতুভার ভাতুল প্রামের রাবিকাপ্রসাদ সিংহের জ্যের্ড পুরা
হিলেন। শৈপবে দেওবরে উচ্চ ইংরেজী তুল হইতে তিনি
প্রদ্রীল পাস করেন এবং বিহার প্রদেশ হইতে হাজদের
ব্যোপ্রধন হান অবিকার করিরা কলিকাভা বিশ্ববিভালয়ের
ব্যভিলাভ করেন। কলিকাভা প্রেসিডেলী কলেক হইতে
বি-এ পাস করিরা ল কলেজে আইন অব্যৱনভালীন ইতিরা
স্বর্ণমেণ্টের 'করেন' আপিলে চাকুরি এহণ করেন। ভংকালে
করেন আপিলে একেন্ট্র কর্ম্মচারীর সংবা্ হিল আর। আত্রস্মানে আবাভ লাগিলে ইংরেজ সহজ্মানের ভিনি হাছিরা
কথা কহিতেন না, সেইজভ উহালের সহিভ প্রারই উার
বচসা হইত। ইউরোপের প্রথম মুরের সমর ভিনি সহসা
চাকুরি ভ্যাগ করিরা কলিকাভার ক্রিরা আলেন। সেই
সমর হইতেই দেশের বাবীনভা আন্যোলনে বোগ্রান ক্রি-



বার একটা প্রবল আকাজা তার হাবর কাসক হয়।
বহালা গানীর আহনাদে তিনি তার বনত্নি বাঁহুভার দেশদেশার আন্দর্যাগ করেন। ঐবিনিল্যরণ রারের সহিত রুগ্ধ
নালাক হিনাবে তিনি কংক্রেনের দেশা করেন। ১৯২৮
নালে তিন বংগরের কর তিনি কারাক্র হন। ১৯৪০ হইতে
১৯৪৩ সাল পর্যন্ত বার বার তাঁহাকে আটক রাবা হয়। তিনি
পদর বংসরকাল বাঁকুরা তিন্ধিট বোর্তের চেরার্য্যাম ও বাঁকুরা
নালানীর কার্যানির্বাহক সমিতির সভ্য হিলেন। বাঁকুরা
ক্লাবোর্ত, বাঁকুরা তিন্ধিট বোর্তের সোর্ভাল ওরেলকেরার
এসোনির্বাহন ক্রিক্রির সার্ভিত এবং আরও
আনেক সারানিক ও ক্রহিতকর প্রতির্ভানের সহিত তাঁহার
বোগ হিল। ১৯৩৭ সাল হইতে ১৯৪৬ সলে পর্যন্ত তিনি
বলীর আইন সভার সভ্য হিলেন এবং ঐ সমর কংপ্রেস
এসেহলি পার্টির সম্পাক্ক ম্বোনীত হন।

### গণেশচন্দ্র তলা

कैंचिव ध्वेरीनंक्य नारशिक मर्तनंत्रक कना भवरनाक প্ৰৰ ক্রিয়াছেন। এার পঞ্চাশ বংগর পূর্বে বেছিনীপুর **ৰেলায় বৰন কোনও সাধাহিক সংবাদণত ছিল না সেই সময়** कैंबिट कानारनाक विचारवद चंधरूक श्वरनाक्ष्मक व्यूचरून জাৰা বহালৰ 'নীহার প্রেন' প্রভিঠা ক্ষেন এবং "নীহার" ('मांबंदिक ) श्रीबका ध्राम करवन । चर्नकाव विस्न केंबिव णांच अक्षे रूबवर्षी, पूर्वन कृत महत्व मश्राम्भक भवि-**ठाणना इ:नाटरमद काक दिल। अथन हरेएडरे मर्रमप्टल बरे** পঞ্জিকার পরিচালন-ভার প্রহণ করেম এবং মুদ্ধার পূর্ব্ব পর্যাত্ত ভাষা ভিনি ৰোগ্যভার সহিত সম্পন্ন করিয়া ভাসিয়াছেন। বৰেৰ আন্দোলনে "নীছাএ" গৰবে টের কোণদৃষ্টতে পড়িরা-दिन, क्षि त कांबर बहुवावू वा शर्यमध्य क्रब्हे स्मालवाब পশ্চাংপদ হল নাই। দীৰ্থকাল বাবং "নীহার" তাঁহার অক্নিষ্ঠ সেবা পাইরাছে। আমরা উাগার আত্মার কল্যাণ প্রার্থনা **ভবিভেহি এরং তাঁহার বী ও সভাব-সভতির** প্রতি সহাস্থৃতি जानम प्रविद्धित ।

### সভ্যকিঙ্কর মিত্র

ক্লিকাতা হোট আলালতের স্থারিটিত ব্যবহারতীবী জীপত্যক্তির বিত্ত ১৫ই কার্চিক উচ্চার ২৯এক, জীক রোহিত বাসতব্যে প্রলোক্ধর্ম ক্রিরাহেন। বৃত্যুকালে ভারার বর্ম ১৯ ২ংগর হুইরাহিস। পাঁচৰহদের স্থানিটিভ নিত্র পরিবারের বারবাহাছ্র বারকানাথ নিত্রের ভার্ড পূর সভাক্তিরবার কলিকাতা হেরার মূল ও পরে প্রেসিডেলী কলেখে শিকালাভ করেন। অবারিক হিসাবে সভাক্তিরের বিশেষ স্থান হিল এবং তিনি ভাল থেলোরাক্তরপেই পরিচিভ হিলেন। হীর্থনিন বাবং তিনি হেরার শোর্টং ক্লাবে কুইবল থেলিরাহেন। গভ ১৯৩৯ সালে সন্ত্যানরোপে আক্লাভ হুইবার পর তিনি আইন ব্যবসার হুইডে বিলার এচন করেন।

### প্রবাদী বঙ্গ-সাহিত্য সম্মেলন

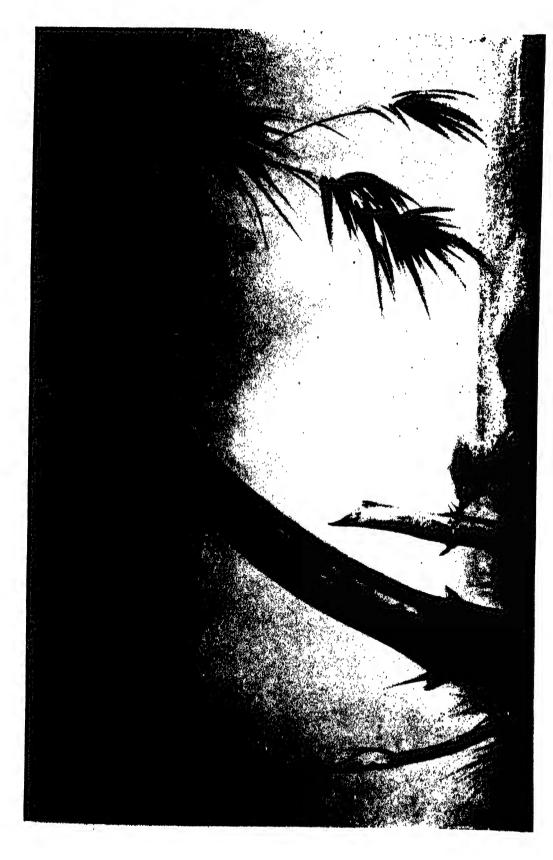
পাটনার ১৯৩৭ সালে প্রবাসী বদ-সাহিত্য সম্মেলনের
অবিবেশন হয়। ইহার চতুর্জন বংসর পরে পাটনাবাসী
বাঙালীরা আবার বদ-সাহিত্য সম্মেলনের ১৯৫১ সালের
অবিবেশন পাটনার অস্কৃতিত ক্রিভে ছির ক্রিয়াহেন।
২৯লে, ৩০লে, ৩১লে ডিলেছর—এই তিম দিম সম্মেলনের
অস্কৃতিন হইবে বলিয়া ছির হইবাহে।

বৃদ্দ সংখ্যক দট আটট শাধার বিভক্ত। ডাঃ প্রীপ্তারাপ্রসাদ বুবোগাধার বংশার সংখ্যকরের উর্বেশন করিবেন। প্রীপজ্য-চক্ত গুরু বহাশর বৃদ্দ সভাপতি নির্মাচিত হইরাহেন। আটট শাবা গু প্রভাক্তির নির্মাচিত সভাপতির বাব নীচে দেওরা হইল:

নাহিত্য পাধা—আচার্ব্য ঐকিতিবোহন সেন (পাছিনিকেতন), ললিভকলা পাধা—ঐদিলীপক্ষার রার
(পতিচেরী), বিজ্ঞান পাধা—অব্যাপক ঐসত্যেক্রনাথ বস্থ
(কলিকাভা বিশ্ববিভালর), বৃচভর-দদ পাধা—ডা: ঐরমেশচক্র মন্ত্রদার (কামী ভিন্দু বিশ্ববিভালর), ইতিহাস পাধা
—অব্যাপক ঐসব্যেক্রক হিংহ (কলিকাভা বিশ্ববিভালর),
নহিলা পাধা—( সভাষেত্রী নির্ব্রাচন এখনও হর নাই), পিতসাহিত্য পাধা—ঐস্থীরচক্র সরকার (কলিকাভা), নিধিল
ভারতীর সাহিত্য পাধা (আলোচনা)—প্রতিভ ঐহাজারীপ্রসাহ হিবেদী (কামী হিন্দু বিশ্ববিভালর)।

সন্মেলনে বাছারা বোগবান করিবেন উচ্চাবের চিড-বিলোদনের ডভ প্রমোলায়ুঠানের ব্যবস্থাও করা হইবে।

ব্যারিটার পি. আর. দাশ এবং পাটনা হাইকোটের কথ এন. কে. দাশ এই অনুষ্ঠানের হুই কম বিশিট উভোজা। শ্রীর্বাপতি শুরু ও অক্লণচন্দ্র হার ইরার মুখ্য সম্পাদক বিশ্বাচিত হুইরাছেন। এই সম্মোলনের ক্যান্তারের টিকানা লালকুটি, এগজিবিশন ব্যেত, পাটনা





অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর

क्या : १हे बानडे, ३४९३

मृञ्राः • हे फिरमच्द्र, ১৯৫>



"সভাৰ শিবৰ স্বৰাৰ বলহীনেৰ সভাং<sup>গ</sup>

্র হাও বিশ্ব হার

# পৌষ, ১৩৫৮

ুক্ত সংখ্যা

# বিবিধ প্রসঙ্গ

### আচাৰ্য্য অবনীন্দ্ৰনাথ

জ্যোসাঁকো ঠাকুর-পরিবারের আর একজন কতী সন্ধান দেহত্যাগ করিলেন, যিনি কেবল রক্তের সম্পর্কে নয়—ভাব-চিন্তা-আদর্শের সম্পর্কে কবিগুরুর সমধর্মী ছিলেন। রবীক্রনাথের সঙ্গে তাঁহার কি সম্বদ্ধ ছিল, তাঁহার নিকট হইতে তিনি কভভাবে প্রেরণা লাভ করিয়াছিলেন তাহা তিনি বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন "জোড়াসাঁকোর ধারে", "ঘরোয়া", "আপন কথা" প্রভৃতি বইয়ে। চিরকালের জন্য দেশের বালকবালিকাদের আনন্দবিধানের আয়োজন করিয়া গিয়াছেন তিনি "রাজকাহিনী", "কীরের পুত্ল" প্রভৃতি পুত্তকে। ভারত-সংস্কৃতির ধারক এবং মরমী ব্যাখ্যাতা অবনীক্রনাথের পরিচয় তামরা পাই কলিকাতা বিশ্ব-বিল্যালয়ের "বাগেখরী" বক্তভামালার মধ্যে।

বাহারা বাংলার তথা ভারতের অন্তরাত্মাকে বিদেশীর দ্বণা ও অবহেলার নাগপাল হইতে মৃক্ত করিয়াছেন, শিল্প- শুক্ত অবনীক্রনাথ তাঁহাদের মধ্যে অন্যতম। ভারতের শিল্প ও ললিভকলাকে ধূলিস্তৃপ হইতে উদ্ধার করিয়া পুনর্কার প্রাচীন গৌরবে অভিবিক্ত করিয়া, বত্বকল্প উচ্ছল করেপ প্রতিষ্ঠা করার কৃতিত্ব বদি কাহারও প্রাণ্য হয় তবে ভাহা আচার্য্য অবনীক্রনাথের।

আচার্য্য শব্দের ব্যবহার আমরা জানি না, তাই বোগ্য অবোগ্য সকলকেই আমরা ঐ আব্যা দান করিয়া থাকি। বিনি কোনও শাস্ত্রে কোনও নৃতন বিধান বা সংজ্ঞা দান করিতে সমর্থ হইয়াছেন, বিনি মনীবিগণের সমূপে নৃতন জানের পথ নির্দেশ করিয়াছেন বা বিনি কোনও বিচার বা নির্ণয়ের ক্ষেত্রে নৃতন আলোকের আধার স্থাপন করিয়াছেন, ডিনিই আচার্য্য।

ভারতের সংস্কৃতির ক্ষেত্রে ললিভকলার স্থান নির্দেশ ও ভালার উদ্ধারের পথ প্রদর্শন বাংলার এই সন্তানেরই পুরুষকারে সন্তব হয়। তিনি বে শুরু পথ নির্দেশ করিয়াই ক্ষান্ত হইয়াছিলেন তাহা নম্ন, তাঁহার উপদেশে ও ব্যাখ্যায় এবং তাঁহার অমৃতময় তৃলিকার সক্ষিয় সঞ্চালনে ভারতের ললিতকলা নৃতন জীবনলাভ করে। দেশে-বিদেশে তাঁহারই চেষ্টায়, তাঁহারই উদ্দীপনায় ভারতের চিত্রকলা খ্যাতি অর্জ্জনে সমর্থ হয়। স্থতরাং আচার্য আখ্যায় ভাঁহার অধিকার স্প্রাভিত্তিত এবং তর্কের অতীত।

ছু:খের বিষয়, বর্ত্তমানে কতিপর বিদেশীর পদলেছী "লফ্লাটপটাবৃত্ত" মুর্থ, বাচালভার দাবা ভাঁহার পৌরবকে মান করার চেষ্টা করার দেশবাসীর দৃষ্টিবিভ্রম ঘটিমাছিল। কিন্তু সে বিভ্রম কণিক। ইতিহাসের পৃষ্ঠার ভাঁহার তৃলিকা ও ভাঁহার লেখনী অ্পাক্তরে বাহা লিখিরাছে এবং আলেবা অভিত করিয়াছে ভাষা আক্রেয় ও অক্ষয়।

বাংলার আকাশ আজ তমদাছের। বে কয়টি তারকার আলোক আমাদের অতীত গৌরব ও ভবিষ্যতের আশাশেথ নির্দেশ করার জন্ত অবশিষ্ট ছিল তাহার মধ্যে অত্যুজ্জন জ্যোতিক আজ অপদারিত হইল। আমাদের নিকট রহিল কেবল স্থতি। বাহা নম্বর তাহা পঞ্চতে বিলীন হইয়া গিয়ছে, কিছ বাহা অক্লয়, অমর, বাহা পুরুষকারে এবং অক্লয় বিশাস ও অদম্য প্রয়াসে অর্জিত, তাহা চিরস্থায়ী হইয়া থাকিবে বাংলা মায়ের মানসপটে। আঅবিশ্বত বাঙালী এখনও ব্বিতেছে না সে কি হারাইল, বেদিন ব্রিবে সেই দিনই দেখিবে বে, সেই অম্বল্যোতি বাহা আচার্য্য অবনীজনাথের বত্নে ও উদীপনার প্রকাশিত হইয়াছিল, তাহা মান হইতে পারে কিছ নির্ব্বাণিত হইডেপারে না।

এই মহামানব গত ১০শে অগ্রহায়ণ বুণবার রাজি প্রায় ১০ ঘটিকার সময় ৮১ বংসর বর্গে উহার প্রার্থিত লোকে চলিয়া গিয়াছেন। আমরা ভাঁছার বিদেহী আস্থার উদ্দেশে প্রভাগনি নিবেশন করিভেছি এবং ভাঁছার পুত্রকনাদের শোকে সমবেশনা জানাইভেছি।

ৰীৰ্ত্তিৰ্বস স জীবতি।

### বাংলায় নিৰ্বাচন

বাংলার এবারকার নির্কাচনে ভোটবার্ভাবের সমুবে এক বিষয় সম্ভা দেখা দিরাছে। প্রার্থিক সকলেই নির্কাচিত ছইলে পরে বাংলাকে ভ্রত্থে পরিপত করিবার প্রতিক্রতি দিতেছেন। নিজের বা নিজ দলের ক্রতিরের পরিচর দানে সকলেই শতমুব। কংগ্রেস ত দলগত ও সমষ্ট্রগত ভাবে নির্কাচনে দাবি করিতেছে বে, দেশকে বাবীন জরা হইতে আরভ করিবা দেশার রাজ্যগুলিকে সমষ্ট্রগত করিবা দেশবানীর দপলে আনা, অনিদারী উচ্ছেদের ব্যবহা করা, ছতিত ঠেকাইরা রাধা, বাভরারা পুনর্কালত করা, সমত পূর্ণব্যকের ভোটাবিক্রারা, বাভরারা পুনর্কালত করা, সমত পূর্ণব্যকের ভোটাবিক্রার দান, দেশে বাব্যভাব্লক প্রাইষারী শিকাদানের ব্যবহা, মন্ত্রপান নিবারণ, প্রচুর থান্য উৎপাদন, সেচ-ব্যবহার প্রতিষ্ঠা, বর্গ্য-নিরণেক রাই হাপন ও অন্ত্র্যং-উহার ইত্যাদি সম্বিক্রই ইহা করিবাছে। এ বিষয়ে স্বিশেষ আলোচনার অবকাশ কর্মন নির্কাচকের হইরাছে আনি না।

খাৰীৰভা বুৰে দেশবাসীর পূর্ব্যকুষণবের খান অভি विवाहे अवर काकित करक बहाबा शाबीत करनाम क्छि बहान अक्षा एक चरीकात करत ? किन्त अ शीवत्वत मानि वाहाता क्तिकार्यम छाटार्यस कृषिक रेटार्थ क्ष्रहेरू? राष्ट्रिय बारकाव प्रवाद भवाब भगारहेरलव जर्म श्रीवरमब किस अहे नर् कर्धात्रव वाहिरवत यह लार्कत कृत-वृहर वास्य কীন্তির ইতিহাস কংগ্রেস প্রচহর রাখিতে চাহিতেছে। ক্ষমিণারী উচ্ছেদের ব্যবস্থা ভ আরম্ভ হর ত্রিটণ আহলে এবং ইহার ব্যবভার বারপদ্মীবের প্ররাস ও নির্দেশ কংগ্রেস অপেকা क्षामक **पराम क्य मह्य । प्रक्रिक मियात्रात कर**्यंत्र नमर्व ছইবাৰে। কিব বেভাবে ভাতা করা ছইবাৰে ভাতাতে সৰভ **रिल अधिरविद्योग अवर इदारदात्रा कन्य ७ जनाहारद** क्कविक हरेबार्ट । वर्षवारम अरेबाब नना वाब रव, प्रक्रिक সাৰ্ষিক ভাবে ঠেকানো হইবাহে কিন্ত রোগ অপেকা ভাহার প্ৰতিকার ভীষণতর ভ্ৰবার নিদর্শন দেবা দিরাছে এবং বেভাবে কংগ্ৰেপের অধিকারীবর্গ ব্যবস্থা করিরা চলিতেত্ত্ব ভাতাতে কংগ্ৰেসেরই বেহ ক্ৰমাভাবে ক্স্বিভ ও অকর্ব্য হইরা পঢ়িভেছে। অভ সকল লাবি ভ ব্যব্দ ও ক্ৰেছিকের ব্যাপার। निका, बाएक निवादन, बाखहाजा नुबर्यानन, खारेबाडी निका, নেচ ও বাভ উংপাদন প্ৰায় প্ৰভ্যেকটই অবোগ্য লোকের হতে माच। वारमञ्जलक मान्य अववारत जानामा कनरे रहना वारे-(कार । अहार-वेदाव ७ वर्ष-निवालक वाहे दागत्वव कीर्क বাহার তাহার অবুল্য জীবন রকার চেঠা বারও বাহারা করে ৰাই ভাহাৱাই সেই গৌৱৰের স্বটাই দাবি ক্রিভেছে, ইহা ভারভের অদৃষ্টের পরিহাস ৷

অন্য সকল দলও নানা কীঠির বাবি-বাওরা করিভেবেন, ভাষাও অনেকের কেন্তে অলীক ও অবৌক্তিক। দাবি আছিরা প্রতিশ্রুতির প্রশ্নে আনিলে বেবা বার অবস্থা আরও অভুত। "আয়ার দলকে রাষ্ট্রের ফওর্তের অবিভার দাও, আনি ভোরাকে রাজা ভবিরা দিব"—এ প্রতিশ্রুতি সকলেই হিতেহেন, শুরু বার সাবারণের রাজ্পদ লাভের পরার নির্দেশ বিভিন্ন। ভারার পর স্বতন্ত প্রার্থীর প্রতিশ্রুতি। ইহাও আশেষ ও বিচিন্ন। বে বাহা বুসী অফীকার করিভেছে, "তংপরে বদ্ভবিয়তি ভদ্ভবিয়তি"। কলে নির্দাচন একেবারে প্রহলনের পর্যায়ে আসিরা ইাভাইরাছে!

নির্মাচকবর্গত, অভতঃ তাঁহাছের অধিকাংশই এই নির্মাচনকে প্রহণন বা সানাজিক নিরস্ত্রণের বভই দেবিতেহেন। করজন ব্বিতেহেন যে, তাঁহারা বলি চকুসজ্জার পাতিরে, বা তাবের বলে, বা হেলাপেলার অবোগ্য প্রাথীকে নির্মাচনে সমর্থন করেন তবে বাংলা ও বাঙালীর চিভার আর একট কাঠবঙ বোগানই হইবে, মুভপ্রার বাঙালীকে প্রাণ্ডান করা হইবে মা।

বাংলাও বাঙালী আৰু হতনৰ্ব্বর, শোষিত, দলিত ও মনপোযুব। আরও পাঁচ বংসর বলি এইতাবে যার তবে বাংলার সভানের বৃতদেহের উপর অঞ্চপাত করা ভিন্ন অভ কিছু করার বাঁকিবে না। এ সকল কবা দেশবালী বৃধিরা দেশুন ইহাই আয়াদের সমির্বির অভুরোব।

বে লোক বাংলার ও বাঙালীর ছু:বক্ট প্রভিনিয়ত অহতব করে, বে লোক বাংলার ছুর্বণার প্রভিকার-চেটার নিজেকে উংসর্গ করিবাহে এবং সর্বোগরি ইরার গ্রীতিকার-করে বাহার বুরি, ক্ষতা ও ব্যুর্বভাগে আহে সেই লোকই নির্মাচনের বোগ্য। অক্ষ বা বার্বণার লোক অবোগ্য ও বিষবং পরিভ্যাক্য।

বে লোক চরিজ্ঞবাদ, বৃচ্চেতা ও সাহসী, সে-ই নির্ব্যাচনের বোগ্য। অপক্ত ও স্বিধাবাদীর অবোগ্যভার সন্দেহের অবকাশ নাই।

ভোটৰাতা বিচার করুন, এবনও সময় আছে বে ভুৱা প্রতিশ্রুতির মূল্য কতটা। বিনি বা বাহারা প্রতিশ্রুতি বিভে-হেন তাহাদের সে প্রতিশ্রুতি রক্ষার কমতাই বা কত্টুকু এবং তাহাদের অতীত ইতিহাসে তাহার নির্দেশই বা কি আহে ?

ভোটৰাভাৱ কানা প্ৰৱোজন বে, উছোৱ ভোটবানের অধিকার কণিকের বাব, কিছ ভাহার কলাকল উহাকেই, লগেনী ও লবাহবে, ভোগ করিতে হইবে বীর্ণ পাঁচ বংগর বিষয়। প্রভাগে প্রার্থীর বোগ্যভা বিচারের অধিকার উাহার আহে ভোটবানের প্র্যুহুর্ত পর্যভ। "কবা বিয়াহি" বা "একটা ভোট অবোগ্য লোক পাইলেই বা কি"—ইহা বহি উাহাবের বিচারবৃত্তি আহ্মর করে, বা অহবিধাস উাহাবের বৃটি সমীর্ণ করে তবে আগানী পাঁচ বংগর কোলও অভিযোগ করার অধিকার ভাহাবের বাকিবে লা।

### : কংপ্রেসী সেকুলারত্ব (ধর্ম্ম-নিরপেক্ষতা)

"(১) আমিন নাবে একট লীগণছী বুনলনান ১৯৪৬ সালে বুনলীন লীগের প্রভাক সংপ্রামের সময় এরপ 'সুখ্যাতি' অর্জন করেছিল যে, সুরাবর্দীর বিশেষ প্রিরণার হবে ইণ্ডার। এবং সেই সময় অন্যথ্য অভ্যাচায় ও অনাচার সে নিজে ও ভার নহকারীরা করিবাছে। ঐ সকল অপরাধ্ অনুষ্ঠান করছে এরপ বছ হবি আছও বুঁকলে পাওরা বাবে। দেশ বিভাগের পার পে পাকিছালে পালিরে বিহেছিল। গভ বছর সে কিরে আসে। আর যার কোবা, Prodigal son কিরে এলো। বরের বোটালোটা বাছুরট কাট এবং কুর্তি ও ভোক্ষের ব্যবহা কর। কংগ্রেসের সেকুলারী মহাপুক্রমণ ভাকে সুকে নিলেন। আমিন হ'ল বড়াগুর কংগ্রেস কমিটর সহকারী নভাগতি। বাস ছরেক হ'ল এহেন রড়টকে ভবাকার অবৈতনিক প্রথম প্রেণীর ম্যাকিট্রেট নির্জ্ঞ করা হরেছে। কারণ প্রথম হালে হ,০০০ মুসলমান ভোট ররেছে।

"(২) পুলাবকৃস্ হচ্ছেম লীগপহী ব্যবহা-পরিষদ-সমস্ত।
প্রভ্যক্ষ সংগ্রামের সময় তিনিও ছিলেন সুরাবর্দীর অভতম
হত। সেক্লারী রাজদের পর লীগপহীদের হাভাবিক নির্মে
তিনি আসেন কংগ্রেসে। কংগ্রেসপহীরাও ভাকে ল্কে
নিলেন। গত বছর পূর্ববিদ মুসলমানদের পুমর্মসতির অভ
এই ভদ্রলোককে পশ্চিমবদ সরকার ৮৫,০০০ টাকা
হিরেছিলেন। এই টাকার হিসাব চাওরা হলে জানা গেল
ভার কোন পাভা নাই। পীভাগীভি করলে উভর হিলেন,
আমি কোন হলি নিই নি। আরও চেপে বরা হলে
হবং ভাক্তার বিবান রার এসিরে এলেন তার পদপুটে
বুলাবক্স্কে বাঁচাবার অভ। বুলাবক্স্ লোকটি ভালই—ভবে
বে লোকগুলিকে তিনি টাকা হিরেছিলেন, ভারা বদি

"ভল্লোক আসন নির্মাচনে কংগ্রেসের টকিট পেরেছেন।" প্রীক্ষবাহরপাল নেত্রে বে "আম-পানী" তার প্রকৃষ্ট প্রমাণ উপরোক্ত বছরের মবের পাওরা বার। আমরা ব্রিতে পারি না বে, কোল রাষ্ট্রের নর-নারী বে বর্ষ-বিশাল বশে চলে এবং ঐ বিভালের নির্মেশে বে লব আচার-অক্টান পালন করে তংলছরে সেই রাষ্ট্র কি করিরা নির্মিকার নীতির অক্সরণ করিতে পারে। কোল বুলে ভাছা লক্ষব হর নাই। নার্কিন মুক্তরাষ্ট্র ও লোভিরেট রাষ্ট্র বর্ষ-নিরপেক রাষ্ট্র বলিয়া বজাই করিয়া বাক্তরা বাক্তর। ভাছা বে বিখ্যা ভার ছইট প্রমাণ পাওরা বাচ, আক্র পর্যান্ত কোল ক্যাথলিক ঐটান নার্কিন মুক্তরাষ্ট্রের রাষ্ট্রপতি বনোনীত ক্টতে পারেন নাই এবং সোভিরেট রাষ্ট্রেকান অক্টানিট কোন উচ্চপতে নিরোজিত হল নাই।

পশ্চিমবঙ্গের জন্ম পরিকল্পনা
ক্ষ বাবের "প্রবাদী" পরিকার সন্দার্কীর বছব্যে সামরা

বলিরাহিলার বে, ভারভরাঠের নর-নারীর জীবনকে সুভদ করিরা গঠন করিবার জন অনেকের অনেক রক্ষর পরিক্রনা আহে, প্রতরাং আমানের সুব্যরত্তী ডাঃ বিবানচক্র রারেরই বাকিবে না কেন। তিনি নব্যবিভ শ্রেমীর সমভা সমাবাবের কন্য এক সাংবাদিক সম্মেলনে ভংগদ্বরে একটু ব্যাব্যা করেন। ভার চার-পাঁচ দিন পরে আর একট সম্মেলনে তিনি নানা সংব্যা-ভব্য-বহুল একট বিয়তি দান করেন, এবং ভার প্রভাবে আগারী নির্বাচনে জরলাতের আগা করেন। বদি পরিক্রনার রূপ প্রব্রু এই হুই অবহার বব্যে কোন চুরুছ না বাকিত, তবে ডাঃ রারের বহুং উক্তেজন সাক্ষয় আন্তরা দেবিতা বাইতে পারিভার।

কিছ বিশ্ববিধানে সাধারণতঃ তাহা হয় মা। ডাঃ ভার তাগ্যবান লোক, তাঁহার বেলার এই বিধান উণ্টাইরা গেলে আমরা সুণী হইব। তবুও সংশরী মন ইভিহাসের শিক্ষা অগ্রাহ্ম করিছে পারে না, এবং সেইকন্যই নিক্ষের সংকার অস্নারে বলিতে বাব্য হয় বে, সংব্যা-তব্যের সংগ্রহ ও সমাবেশে নত, তাবের পবিত্রতা, কর্প্রের সকলতা ও ইছোর একাপ্রতা পরিক্রনাদিকে আশাস্থ্যপ রূপদান করে। এই তিন্টির স্ববাহ বা স্থিলন আন্বরা বেখিরা বাইছে পারিলে ডাঃ বিধান্চক্র রারকে বন বুলিয়া অভিনক্ষর ভানাইব।

### বাংলার মধ্যবিত্ত সমাজের সমস্তা

मुनामती महाभद्र रामम (व. वाश्मारमण भहत्र ७ श्रामधनि নিভাত বাপহাতা ভাবে গভিয়া উঠিয়াছে। ইতালের পল্ডাতে काम **পরিকল্পনা ছিল না**। কলে আম্য ভীবনের স**হিভ** মাগরিক কীবনের কোন সামঞ্জ মাই। চির্ছায়ী বন্দোবভের পর হইতে বাঙালী জ্মির উপর একটু বেশী পক্ষপাতিত দেবাইয়াছে। কলে চাবের উপর অধিকাংশ লোক নির্ভর ক্রিরাছে, কিন্তু পরিণামে কুষিকে উন্নত না ক্রিয়া জ্বাপত অবম্ভির প্রেই লইবা গিরাছে। কারণ শতরের গঠিত অর্থাৎ বাজারের সহিত যোগাবোগ না থাকার দালালের মার্কত কাৰ ক্রিতে হয়, পুতরাং লাভের অংশ হইতে বঞ্চিত হইতে হর। বাহারা অপেকাকুত কৃতী ও উভোগী ভাহারা শহরে নুতন জীবিকার অধেষণে বাহির হইবাছে। বাহারা অক্স ভাছারাই এবন চাবের ভাভে নির্ভ ভাভে। অপর পঞ্ শহরগুলি এমনভাবে পভিয়া উটিয়াছে বেবানে এই সকল প্রায-ভাাৰী মৰাবিভকে বাসভান বেওয়া সভব হুইভেছে না। প্রবের অপ্রভাকর বাসভান ও বঙী ভীবন ভারাবের ক্রমির জীবন্যাপনে বাব্য করিভেছে। টাট্টা বাভত্তব্যের ও মুক্ত আলোবাভাসের অভাবে শহরবাদিশন সাহ্যতীন ও হীনবীর্য্য ভইয়া পড়িতেতে।

প্ৰভাগ বৰ্ডমান পরিছিতিতে প্রয়োজন প্রায় ও শহরওলিয় লবো একট অৰ্থীভিক সম্পৰ্ক ভাগৰ করা। এই ইংক্তে পরিভ্রমা ভরিশম উন্নয়ন-পরিভ্রমা অভ্যায়ী ভ্রপদ গঠনের बाबाव फरिवारक्य । फाँजावा शकाम-वाहेंहे बाब नहेवा अक अक्षे आयममे अर्थरवर चुनादिन करियास्य । निकारत्वर वर्षमान क्षमभरवादि विठाद कदिवा वना वाद (व. क्षेत्रभ अक-अपने क्षायमप्रदेश विष-प्रतिम जालाव लाक पाकित्व अवर छेबाद भविषि बहेटर जाल्यामिक १८ र्गनाहेन। अहे नर-পঞ্চীত শহরগুলির প্রত্যেক্টতে এক হইতে হই হাভার মধ্যবিত পরিবারের পুনর্কাসনের ব্যবহা করার প্রভাব হইরাছে। बरे जकन महत्व चाहारस्य काम-मा-काम क्षवाद चादिनती শিক্ষা দেওয়ার ব্যবস্থা চইবে। সেবামে শিক্ষা পাইরা ভাচারা मामाक्षकाव मिछाक्षरहासमीह क्षताहि क्षत्र कविरत । अहे नकन सवा के शकान-वाहेंके आत्मक लाकरमद मरना चाराव বিলি-বণ্টন করিয়া দিতে হইবে। প্রামাকলের লোকের চাহিদা विधारेश यपि किह छेव छ बादक छाडा छवन करता. কেরোলিন, লোহা, ইম্পাভ ইভ্যাদি ক্রব্যের বিনিমরে রপ্তানী कता हरेरव । अवारम निका, बाह्य, विकिश्ना रेक्यांकि नर्स-क्षकारवज्ञहे नानका नाकिटन अवर क्षमनावादनक नकन विचटकहे প্ৰবোগ কেওৱা হুইবে।

পশ্চিমবদ সরকার আশা করেন বে, আগানী পাঁচ বংসরে রাজ্যের বিভিন্ন ছানে অন্ততঃ বিশটি কুল্ল শহর ছাপনে সক্ষর ছবৈন । প্রভাকটি শহরের উরৱনের ক্ষত নোট চল্লিশ সক্ষ চাঁকা ব্যৱহ হবৈন । প্রায়প্তনির বব্যে যোগাযোগ ব্যবহার উন্নতির ক্ষত ও অভাভ বিবিধ প্রয়োজনে আরও বিশ সক্ষ চাঁকা ব্যর করা প্রয়োজন । আদর্শ নগর নির্দাণের ক্ষত প্রধান প্রায় করা প্রয়োজন । আদর্শ নগর নির্দাণের ক্ষত প্রধান প্রায় করা প্রয়োজন ।

১। ৫ শত একর ক্ষি ধ্বল (একর প্রতি ২ শত টাকা)— ১ লক টাকা।

২। ১ সহম গৃহ নির্দাণ (প্রভ্যেকট ১৪০

दाबाव है।काव)--->४ नक है।का।

। नथ पांठे, कम ७ विद्युर नववबाद

बदर नदः श्रामानी-- व मक है। का

৪। ১ ছাজার লোককে বিভিন্ন ব্যবদারে শিকালান (প্রভ্যেকের শিহনে ৭৫০,ব্যর) ৭ লক ৫০ হাজার টাঃ

e। क्लकात्रवामा विद्याव--- > लक eo हाकात है।:

। ७ वाटनं कनकार्यानां नाकनंशांत्वः ৮ नक है।:

१। विविध याच ... ६ नक् है।:

ৰোট ৪০ লক গাকা

७०) बाद्यत वैश्वद्यव एक बर्द्यण गुप्त व्हेट्य :

- ১। য়াভা ২০ বাইল পাকা, ১২০ বাইল বাঁচা ১২ লক চাঁঃ
- ২। ছুল ও চিকিংলালর ছাপ্দ ২ লক্ষ্ টাঃ
- ৩। গ্ৰামগুলির খড় খাল ধনন ১ লক ৫০ হাজার টাঃ
- । यापानिष्ट १० ठीका छाटा ७ छाकाव

গ্ৰামবানীকে কৃষি নাহাব্য ৪ লক ৫০ হাকার টাঃ

ৰোট ২০ লক চাকা

অভএব প্রভ্যেকট নগর নির্দাণ করিতে ব্যর হইবে ৬০ লক টাকা এবং এইরূপ ২০ট নির্দাণ করিতে ব্যর হইবে অভত: ১২ কোট টাকা। এই টাকার এক অংশ রাজ্য সরকার ধণ বাবদ দিবেন। অবশিশ্রংশ ব্যক্তিবিশেষ বা দলবিশেষের নিকট চটকে ভোলা চটবে।

এই ভাবে মুখ্যমন্ত্ৰী বহাশর বাংলার বধ্যবিভ সমভার সহাবাদ ভিত্ত করিয়াছেন। কিন্তু মধ্যবিভেত্ত সহভা এড विदार ए करवकी 'छार्टनाइके' मनत क करनामी मिनीन कदिश रेठाद जमानाम ठरेट मा। स्मानद विनाम वर्ष মৰাবিভ আছে-লে পূৰ্ববলের উভাত্তই তউক বা পশ্চিমবলের বাসিদাই চটক—ভাচামের সকলতে এক ভারণার ছভ করিবা শহরে পুনর্বাদন করিলে কোন অনুরপ্রদারী কল পাওরা ৰাইবে বলিয়া মনে হয় না। মধ্যবিত্ত সমাজ দেশের সর্ব্বজ্ঞ ছভাইরা আছে। কোনও একট নির্দিষ্ট ভারণার ভাতাদের সকলকে একত্রে পাওরাও যার না এবং সে চে**টাওঁ বাতুলভা**। बराविष, अबिक-ठायी ७ वनी बरे जिन (अनीक नरेशारे क्या । ইচাৰের প্রভোককে পূথক বাসভাষে সীমাবৰ অবস্থায় द्यांबित स्मान नामाजिक मनन हरेरन मा। हैहा नहान्छ মতে। দেহের সহিত দাতীর সংযোগ মা থাকিলে বেহ বেমন मचंद्र, आम हरेल हिद्र मनानिष्डद कीरमध एकमि मिना। শহরের কেরাবীর পক্ষাতে বে বৃহৎ মধ্যবিত সমান্ত আছে ভাতাকে অখীকার করিবার উপার নাই। সুভরাং ভাটেলাইট हादिन गर्रम जबकात जमानाम महा ।

বধ্যবিভের সমভা আৰু অবোণার্জনের সমভা। বধ্যবিভ সমাজে ব্ৰক শ্রেণীর চাক্রী নাই। সরকার ভাহারের চাক্রী বিভে পারিভেরে মা। ভাহারা শিল বা ব্যবসারে বোগ বিভে পারিভেরে মা—কারণ ভাহারা মতলর্কার, ভাহারের পুঁকি নাই। বঁড বড় ব্যাহ হইতে ভাহারা টাকা বার পার মা, বোট ব্যাহ ভাহারের টাকা বার দিতে সাক্র পার মা। ইহাই ভাহারের প্রধান সমভা। ভাহারের শিলা, ভাহারের চিকিংসা-ব্যবহা এত কাল কের ভাহারের করিরা দের নাই। ভাহারা নিজেবের ব্যক্তিখের প্রেরণার নিজেবাই করিরাতে।

ভাতাদের বর্তবাদ সমভার সমাবাদের উপায়—ভাতাদের উপার্কনের পথ বিশ্বত ভবিরা বেওরা। এবাদেই সমভাবের

লিৱৰীতি নাহাৰ্য ভৱিতে পাৰে। ভাষাৰ ভত নৰ্বপ্ৰথৰে शासक विकार जंतवशास्त्रंत वावका करा । विकार परभावत्वत ৰে সকল পৰিকল্পা সৰ্ভাৱ একণ কৰিয়াকেৰ সেওলিকে প্ৰত ভাৰ্বো পৰিণত ভৱা ব্ৰকার। ভাচার ছারা প্রায়ে जलाहरत विकार जहबहाह करा जहक हरेरा। करन माना প্ৰভাৱ কটাবশিল গভিয়া ভোজা ঘাটবে—বেৰামে প্ৰায়ের स्मार्था प्रतिस के प्रवाशिक्त स्मानत अर्थास स्टेंग्स भारत। हैकार महत्र महत्र क्षाराक्ष्म भवता (कार्यर अवके चर्रायक्रिक गाएँ क्वा-काम चार्य कि कि काँठावान जरुवनका अदर कि बदाबद निव्न त्मवास्य मध्या देवीरक भारत वेकावि कवा সংগ্ৰত করা। অবর এই বর্ণের অভসভান একাবিত বার ভবা চইয়াতে এবং ভাচা জিপিবছও আছে। ভাবপর বিভিত্র আঞ্লিক শিরের উপযোগ ঠেকনিক্যাল ভল ভাপন করিয়া দেবাৰে শিভাৰীদের শিভার ব্যৱস্থা ভরা। শিভা আছে ভাচারা নিভ নিভ প্রায়ে গিরা যোগভো অভুসারে ভাভ করিবে। সরকারী সালায়ে বাছে প্রভিন্ন করিয়া ভালার स्त्रप्रदा मादा शास्त्र स्त्रा क्षेत्र ज्ञान मिल वा क्षि ज्ञान-শুলিতে হড়াইরা কেওরা হইবে। ভাতারা বিনাপ্রে বুলবন ৰাহ দিয়া এই সকল শিকাৰীকৈ শিলে বোগদানে সাচাযা कदिर्द । यक क्षिम है।का शतिरभाव का हरेरद कक क्षिम ব্যাহের পঞ্চ চইতে শিল্ল-বিশেষজ্ঞান ইচার উপর ভয়ারত कतिरवम अवः जर ७ चनतामर्न विश्व निश्वक्रिक शिक्षां করিবেন। তত দিন নৃতন শিল্পীও অভিজ্ঞতা অর্জন করিরা ষাৰসাৰে প্ৰপ্ৰভিত্তিত চইতে পাৱিৰে।

প্রাচ্যে জাপান একমাত্র কুটিরশিজের ছারা অভি অন্ন সময়ের মধ্যে মধ্যবিভের অবনৈতিক সমস্তা মিটাইরাছে। জার্নানীতে গোরেরিং-গ্ল্যামণ্ড এ প্রসঙ্গে উল্লেখযোগ্য। ১৯৩০ সনে সুক্র ক্রিয়া মাত্র চার বংসরের মধ্যে গোরেরিং-গ্ল্যামে জার্থানীর মধ্য-বিশ্ব সমাজের আর্থিক চেহারার আবৃদ্ধ পরিবর্তন সাধিত হয়।

একট আঞ্চিক ব্যাহ ইচ্ছা কবিলে জনসাবারণের কভ উপকার সাবন কবিতে পারে অট্রেলিয়ার নিউ সাউব অবেলসের ব্যাহ (Rural Bank of New South Wales) ভাহার শ্রেষ্ঠ প্রবাণ। এই ব্যাকের ছুইট বিভাগ আছে, সাবারণ ব্যাহিং বিভাগ ও সরকারী একেলী বিভাগ, শেবোক্ত বিভাগট সরকারের অর্থে চলে। ইহার কাজ কবি, শিল্ল, গক্র-ভেল পালন প্রভৃতি প্রবোজনে কিংবা গৃহনির্দ্ধাণ, শিলা, চিকিংসা ইত্যাদির কল কেন্ত্ গণ চাহিলে ভাহাকে গণ বেওয়া ইইভে তক্ষ করিয়া বাবভীর কাজের অন্ত জনসাবারণকে নাহার্য করা। ব্যাকের ৫০ জন অভিজ্ঞ ভ্যান্রায় আছেন। কেন্ত্ গণ চাহিলে ই হারা ভাহার সিক্টিরিটির ব্ল্য নির্দারণ করেন। কিন্তু এইবানেই ভারাদের কর্তব্য শেব হয় বী। জোন ক্ষুক্ত ভাল উৎপালন না করিতে পারিলে,

তাঁহারা উরভির উপার বিবরে পারিলে বিজেরা বলের বতবা ৰত বিভাগ চইতে প্ৰাৰ্শ ও সাচাৰা পাওৱাৰ ব্যৱসা কৰেন। बार्टिक अवसे भावतिक विराममा सकितात सार्टिम । वीहार ভাভ উন্নভ কৃষিকার্বো ক্রমকলের শিক্ষাদান এবং কিলে शास्त्रक चार्विक देविक करेरव चाराव मध्यक प श्राह । अहे कारव श्राहाक विश्वत काहारा क्रमाबावनाक সাচাবা ভবিভেবেন। বেশের প্রকৃত বন্ধকামী চইলে এ काक अवन किंद्र इक्रव नटर, काबारमंत्र राटमंश्र देश कराबारम করা বাইতে পারে। অবাভাবের ওকচাত ভোন ভাতের मत्त्र, जबकाव देशाचरम्ब कर मकाव मकाव त्व वर्ष बंदवाकी मिरकरक्य काठारक मा ठकेरकरक जनकारन जाक मा रवन-वाजीत मा देवाचरणत मिरकरणत । अहे वर्षाता अवन अकड़े পরিকল্পনা প্রতণ করিলে ইভিষ্থো অনেক কাল পাওয়া वांदेख विनिश्च चामदा बरम कदि, अपमध जरकाद निरम्न बुन्दन সর্বরাত্রে জঙ মিজে ৩৭ করিয়া, বা শেষার বিজ্ঞা ছায়া অর্থ সংগ্রন্ন করিছা এরপ ব্যাস্থ প্রতিষ্ঠা করিছে পারেন। क्षांक्षणिक जरकार सक्य व्हेल क्लीर जरकारक अलग बन दम्ख्यात कर यांना करारेट भारतम । अवनित्मत बरवारे क्षेत्र अन शिवटमान कवा वाहेटन ।

ডা: বিধান রারের পরিক্রাতে ২০ট ভাটেলাইট শহরের
কর ১২ কোট টাকা ধরত হইবে। কিছ ঐ অর্থ বনি
উপরোক্ত উপারে ধরত করা হয় ভারতে অধিকতর অর
সময়ের মধ্যে মধ্যবিধের আর্থিক সমভার সমাধান হইবে।

ভূমি-সংস্থার ও পশ্চিমবঙ্গ সরকার

शक्तिवरकत वर्गमञ्जी **णाः विश्वम**त्तक ताव अश्वाकशस्त विरक्षि-शाम मण ১৮३ मारबंद दविवाद कविवादी सर्वा विरमाण मक्ट भक्तिवरम महकारहत मौकि श्रकाम करहम। किनि रामन त्व, हाथ अवर हाथीत्वत वर्षमान हर्षमात कावन क्षिभावी वा मवाविष्ठ वक्ष नव। और अवाव प्रेटक्ष हरेलारे ৰে শভোৎপাদনের পরিমাণ বাছিবে ইতাও ভুল বারণা, বহি ভাচা চইত ভবে ৰে গড়ল অঞ্লে বাৰতগুৱাৰী ব্যবস্থা আছে ভবার বা এই রাজ্যের বাসমহলের অভর্গত ভবিতে শভোং-পাহন বৃদ্ধি পাইত। ইহা ব্যতীত বৰ্তমান মালিকানা ও ভূমিছছ উংবাভ করিতে হইলে শাসমভন্ত অভবারী ইতাদের ক্ষিপুর্ব দিতে হইবে। এই কভিপুলপের সম্পূর্ণ ব্যর্ভার অধির উপর পঢ়িবে এবং কৰি হইভেই ভাহা আদার করিভে হইবে। মুভরাং নভন ভ্রিব্যবস্থার চাষীর প্রকৃত উন্নভিত্র বিশেষ সম্ভাবনা নাই। বিভীৰত: বৰ্ডবান ব্যবস্থাতেও ক্লয়ক ৰম্বি ৰেশ্ব উংপাদৰ করে ভবে ভাহা কৃষকেরই প্রাণ্য, বেছেত ক্ষিকারের जार जारेन राजा निर्विते।

কৃষি উৎপাদন বৃদ্ধি অন্যই ভূমি-সংখ্যানের প্রভাজন, ভূমির নালিকামা বছ চামীর হতে অবাং প্রায়েক ও ভাগচারী

क्षे प्रेयर क्षेत्रार हातीरहर हत्य वर्षिक हतेरहरे बंद्वारशास्ह्यर পরিমাণ বৃদ্ধি পাইবে মা, ভারণ প্রভোক চারীকে বিলি ভরার ভৰা পৰিবিভ চাষের ভবি আহাতের বাই। পভিত ভবি বারা चारक कांकार कविकाश्मेंके बसाकासर का कसारमारक चाक्रियां मा बाय जिल्ह्या चर्चना औ-प्रक्रियांक्रिय चीर्क्ट क्या बारमत कवि विमारत एका करं। श्रातक्ष । अविश्वेशभाष हारबंद केशबक कविरक त्व चार्यत क्षांबाक्य खाजाब ব্যবস্থা করা কুল্ল চাষীদের পক্ষে অসম্ভব। ভিনি আরও বলেন त्व. वर्षमात्मरे चामात्मत कवि वह कृत कृत चरत्न विचक अवर यह छैरनाम्याव देशाहे क्षेत्राम कार्ता प्रति-नारपात পরিবর্তন করিয়া চাষীকে করির মালিক করিলে কনসংখ্যা বৃদ্ধির সলে সলে এই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ক্ষুদ্রি আরও বছবা বিভক্ত চইয়া ৰাইবার সভাবনা আছে এবং এই পরিছিভিতে ভোন चारेम दावा रच कडा वारेट रिनश मत्म ठव मा। कुछ कवि छश्चाद चना हैता चादश क्रथ बताचनरपद कद्रवनश्च हरेरा. कादन कीविका निकारित कमा कातारमंद्र महाक्मरमंद्र कारक ৰৰ প্ৰচৰ কৰিছে চইবে।

ইহার প্রভিকারের উপায় স্বরূপে তিনি বলেন বে, জন-वर्षमान क्रमकरनाति हान क्रमित देशत हरेएक क्रमा मिटक हानमा ভবিতে চটবে। এত্যাই পদীবাসীদের কৃত্যি-শিল্পাদি লাভ-ভাৰত ভাৰ্মের কৰিবা কেওবা প্রবোধন এবং চামীদের অপেকা-ক্লভ ব্ৰভন্ত আহতবের ভবি চাষ করার ব্যবস্থা করিতে চইবে। करे विश्वके क्षत्रके करेन ए वानिक दि काठांव चुनावका करिएक बहेरम मध्य विश्वके अवधि जनविक्रकिक वर्षात्रशैव ছারা ভরিতে চইবে। পশ্চিমবঙ্গ সরকার ইচার প্রতি উদাসীন बहा। छाँछाता कार्वाकती देशाव देशावत्मत वावका कतिएक-ছেম। ইভিমধ্যে সেচ-ব্যবদা, উন্নভ বীভ, সার প্রভৃতির সাহায্যে কৃষি-ব্যবস্থার উন্নতি করিতে চেঠা হইতেছে এবং क्रीत-निरम्ब सेविकिविवास्मत कर्षकरी अवन करा व्हेशास । अहे ব্যবস্থার কলও এবনই পাওয়া বাইতেতে। পশ্চিমবল সরকার क्ष-मरकारवर अ मकन मम्बाद कवा मान वाविवार प्रमात-बरबद महकादी कविएक और शतिकहवा श्रवक कार्या शतिकक ভৱার চেঠা ভরিভেছেন।

বুণ্যমন্ত্ৰী ৰহাশৰের বিবৃতি হইতে ইহাই প্রভীবনান হয় যে, ভিনি বর্তবানে জনিদানী প্রধান উদ্ভেদ করিতে অনিজুক। জনিদানী প্রধান হয় কলার কারণ নহে ভাহা নভ্য। জনিদানী ব্যবহার উদ্ভেদ করিতে বে পরিমাণ অর্থ ভিতিপুরণের জন্য প্রয়োজন ভাহা সরকারের নাই ইহাও সভ্য। ভূনিবছের মুখন ব্যবহার কলে মুখন সমভার উত্তব হইবে ইহাও জালা কথা। জনির উপর লোকসংখ্যার চাপ সরাইং। শিরের প্রদান করা প্রয়োজন ভাহাও বহুক্রত বাক্য। কিছ

मारे. मा बदकारबा प्रजित प्रत्याचार ५ क्रकेटीन क्रवेस्टीस অভাবে প্ৰভিভাৱ ব্যাৱত চইতেতে ৭ আহ্বা ভাবি এই স্কর অভিকল অবভার মধ্যেও ব্যবহা ভরা বাইতে পারে বহি সহকাৰের মনোভাব সেরপ হয়। মধ্যমন্ত্রী মহাপর বলিয়াছেব ৰে ভবির বালিভাবতত চাষীর চাতে অণিভ বইলে ভাতা चारक विकास करेरर अवर प्रकासमाय क्यांच करेरर । (WIR WINE) states Land Alienation Act-এর বিধর্ণন কেবাইভেছি। সেবানে ক্ষরি কেবলনাত্র প্ৰকৃত চাৰীই জ্বৰ ভৱিছে পাৱিৰে। চাষেৰ সঙ্গে প্ৰভাক ভাবে ভঙ্গি নতে এখন লোক ভবি কিনিভে পাৰে আমাদের বাংলাদেশেও ক্ষলুল হক মহাপ্রের ব্দ্রিছের আমলে অভুত্রণ ব্যবস্থা অবস্থান করা হয়। ১৯৪৩ जारमत इर्फिक्क शत वर्षम (प्रथा (त्रम (व. चविकाश्म चिव ৰভাজনের কবলে গিরাছে তথ্য ছর্তিকপীতিক চাষীবের মধ্যে ৰাহাৱা কমি বিক্ৰম করিয়াছিল ভাষাদিগকৈ কমি কেরক দেওবার বন্দোৰত হয়। ইতা বারা করি চারীর চাতেই वाकित-इंडाव क्याविकातीत शतिवर्धम हदेता। चाहारक हारश्च काम ककि हरेरा मा। शक्तिमनन-जन्नकान कनिनाती श्रवाद विरमान कतिया और वायबाद बादा महासमरणद हांक हरेल क्षत्र दका करिएक भारतम । चनद भएक लाकनश्वा বৃদ্ধির সলে সলে কৰি বিকক্ষ কথবার যে সভাবনা আছে कातार श्रीक्रकारवर कथा किन्नरे बना तब मारे। रेतार श्रीक-कारत जाबारम्य वैक्रवाधिकारतत जाहेरबद शतिवर्कम करा अमस्य करेला अमा वावचार बारा रेगार शिक्यार करा বার। বর্তমানে রাশিরা প্রভৃতি অভাভ অনেক কেশে বছবা বিভক্ত মালিকানাত্ত সন্মিলিভ চাষের পতে অভবার হয় ৰাই। সমবাৰ সমিভিত মাধ্যমে বিভিন্ন চাষীৰ ভমিকে একলে চাষ করার পক্ষে কোন অন্থবিধা নাই। ইতাতে চাষী ভাতার মিকৰ বছ বকা কৰিয়াই কসলের পরিমাণ বাভাইতে পারে। পঞ্চাব, ৰাজ্ৰান্ধ ও বোধাই প্ৰবেশে আইন বাৱা কৰি একজিত कवाब बाबचा कवा करेबारक (land consolidation acts) । क्षि वहि कविशारी थाना तरिक मा क्ष काका करेलारे अरे ব্যবস্থা এতণ করিছে ত্ইবে। অন্যথার ইতার কোন প্রয়োজন बारे। अरे विश्वत जवकाव के लाजे करेबा कार्यावस कवितारे অভীই কল লাভ করা বাইতে পারে।

পৃতিত কৰি সকৰে প্ৰধান নদ্ৰীয় সহিত আৰৱা একনত হুইতে পাৰি না। পতিত কৰিব পৰিমাণ আবাদের কৰ নতে। সে কৰিব উভাবেৰ দানিত্ব সরকারকেই প্রহণ করিতে হুইবে। ভারত-সরকারের পক্ষাবিকী প্রিক্সনাতেও ভাহার উল্লেখ বেধা বাব। কিছ এক্ষেত্রে দেখা বাইতেহে বে চাষীর উপরই সে অন্ধ্ দানিত নিক্ষেপ করা হুইরাছে। ক্ষমির বালিকানাত্তর ক্ষিণায়ের হাত হুইতে প্রহণ করিবা চাষীর

াভে ছাভিয়া বিলেই সম্কাষের সকল কর্মব্য শেষ হইবে

ভূতীরতঃ, ক্ষির উপর নির্ভরতা ক্লাস করিবার করা বিলাক্ষ ক্ষীরলিরের প্রসার। ইহার ক্ষা প্রবাধন বিকারের বিহাৎ সর্বরাহের পরিক্ষানার ক্রম রূপারণ। সাহার বারা প্রানাকলে লিরের বিভার করা সহক হইবে। বি হুইতে লোক সরাইরা লিরে নিরোগ করিরা আগাভতঃ সাধিক সমভার স্বানান হইবে নিক্ষর। ক্রিছ কৃষি বিদি র্ত্তরান অবহার বাকে ভাহা হইলে ভবিয়তে আরও নাচনীর হুইবে। আনাদের দেশে কৃষি একক ভাবে কোম নেই সম্পূর্ণ ছিল মা। চিরিপনই ক্রীর্নানির চারীর অন্যত্তর বিকা হিল এবং চাবের সমর ব্যতীত ক্ষম সমরে ভাহা বারা পার্ক্তন করিতে পারিবে না। ভাহাকে স্বাবক্ষী করিতে ইলে সক্ষে সক্ষে আনাদের ক্রীর্নানিরে উন্নতি করিতে ইবে এবং এই চুইট ব্যবহা একই সক্ষে করিতে হইবে।

প্ৰবাম মন্ত্ৰীর বিবৃতিতে জানা গেল যে পুন্দরবন অঞ্লে রভারী বাসের ভমিতে নির্দিষ্ট কর্মখনী অমুবামী ভার্ব্য আরম্ভ हेबाट अवर चाठाव काल भाषता वाहेट्ड । अहे करनव ত্ৰণ ক্ষমানাত্ৰ আক্ৰও ক্ৰামিকে পাতিকেন্তে মা। ইতাত াৱা বাংলার ক্লেভ্য কেলারও বাভাভাব হর করা বাইবে লিয়া শুনিলে নিশ্চিত্ত হইভাষ। ভাতা ছাড়া সম্প্রাচী সম্প্র দেব। ভালাতে একট মাত্ৰ সরকারী বাসের মধ্যে সীমা-उ वाबित्स वित्येष माथ हरेत्व कि ? अवन वमा हरेत-রীভাষলত। ভিত্ত স্থাধীনভার চারি বংসর পরেও বলি रीकार्यक कथा क्षतिएक तब कार वक्षरे विभागत कथा। प्राप्तत ব্ৰহাত পৰিভিত্তিত প্ৰধান হয়ীৰ ভাষৰ বভ বৈৱাক্তনক। त्र विकाहत्वत शाकारम करतात्री श्रवाय बडीर करतात्रत গ্ৰন্থচীয় বিপৱীত বৰ্ষী ভাব ও নীতি প্ৰকাশ কংগ্ৰেসের পক্ষে ভিকাৰত চইবে না কি ? কংগ্ৰেস ৰে দিন চইতে নিকেকে অগবের প্রতিষ্ঠান বলিয়া দাবি করিয়াতে সেই দিন চইতে ভাৰৰি জাঁৱাৱা ভবিদাৱী প্ৰবাৱ উচ্চেদকে ভাঁহাৰের কৰ্ম-চীর অন্যতন প্রধান নীতি হিসাবে বন্দা করিয়াছেন। প্রধান बी देशारक केरणका कविशास्त्र। बक्क क्रमग्राशावर्णव কে ইহা ৰাভবিকই হৰ্কোণ্য।

### রি**জার্ড** ব্যাঙ্ক ও ভারতীয় কৃষি ঋণদান প্রতিষ্ঠান

ভারতীর কৃষি ধণদান সমিভিগুলির অবস্থা পর্ব্যালোচনা সিম্বার ক্ষয় রিফার্ড ব্যাহ হইতে আট বাসব্যাপী একট সম্পূর্ণ অক্সভান-কার্য্য পরিচালনা করা হইবে। এই নার্ভের াবা বিকার্ড ব্যাহ, কেন্দ্রীর সমকার ও বারীর সরকার ভাহাৰের স্ব কৃষি ধণদান বিভাগ পুগঞ্জি ভ্রিভে পারিবেম বলিরা আশা করা বার।

ভারভীর ইউনিরনের ২০ট রাষ্ট্রে এই সার্চে অস্ট্রেড হইবে এবং ১৯৫২ সালের ভূম বাস পর্যান্ত ইহা সম্পূর্ণ হইবে বলিরা বনে হর। কিন্তু রিপোর্টের প্রভা সম্পূর্ণ হইন্ডে ভারত কিছু দিয় সম্মন লাগিবে বলা চুইবাছে।

এই কার্ব্যের সুবিধার জন্য সমগ্র দেশকে ফুবির অবস্থা অস্থারে ৩০ট আঞ্চলিক ভাগে বিভক্ত করা হইরাছে। প্রভ্যেক রাষ্ট্রের কতকগুলি জেলাকে এবং প্রভ্যেক জেলা হইতে আবার অস্থান উপারে আটট ক্ষিলা গ্রামকে বাহাই করা হইরাছে। সর্বাসবেক ৬০০ শত গ্রামকে এই সার্ভের করা হইরাছে। সর্বাসবেক ৬০০ শত গ্রামকে এই সার্ভের

প্রধানতঃ প্রভাক কৃষক-পরিবারের চাষ বা ঐ সংক্রান্ত কার্ব্যের ক্ষম কি পরিবাণ অর্থের প্রবাদন ভালা নির্দারণ করাই হইবে সার্ভের প্রথম কাল। বিশেষতঃ বর্ডনান অর্থ-নৈতিক পরিভিত্তিত ভালাদের আর, ব্যর, ঝণ, সঞ্চর ইত্যাদি সম্ব কিছুর পরিপ্রেক্তিটে ইলা করা হইবে। ইলার ক্ষম প্রভাক প্রায়ে ১৫টি করিরা পরিবারকে বালাই করা চইরারে।

কৃষি বণদানের বিভিন্ন প্রতিষ্ঠানগুলির কর্ম্মনী ও নিমনকামন পর্যবেদণ করা হইবে এই লার্ডের বিভীয় কাল ।
ফ্রন্ডের আর্থিক প্রবোদন নিটাইতে প্রচলিত প্রতিষ্ঠানগুলি
কভদুর সক্ষন—কার্যক্ষেরে ভাষাদের কি অম্বিধার সন্ধূরীন
হইতে হয়—কোন্ ব্যবহার হারা এই সকল অম্বিধার প্রভিকার করা বার—ইত্যাদি সকল বিষয়েরই ভণ্য সংগ্রহের চেঙ্ঠা
হইবে।

ইহা ব্যতীত কৃষিৰণ সম্বীয় দেওৱাৰী আইম ও লৱি কাৱবার নিয়ন্ত্ৰণ আইন প্ৰামের বিভিন্ন কৃষি ৰণদান ব্যবস্থান্ত উপর কিরণ প্রতিক্রিয়া ক্রিয়ান্তে ভাহারও অনুস্থান এই সার্তেতে করা হইবে বলিয়া আনা গিয়াছে।

প্রতি চারট প্রাবে একজন করিরা 'ইনভেস্টাগেটর'
নির্ক্ত করা হইবাছে। ইঁহারা সকল ভব্য লংপ্রত্ব
করিবেন। তাঁহাদের প্রতি হই জনের কার্য্য পরিকর্শনের জন্য একজন করিরা পরিবর্শক নির্ক্ত
হইরাছেন। ইঁহারা আবার বিজিওনাল কন্ট্রোলারদের
অবীনে কাল করিবেন। এরপ পাঁচ জন বিজিওনাল কন্ট্রোলার বির্ক্ত
হইরাছেন।

এই তাবে সম্প্র কৃষিধণের একট সম্পূর্ণ সর্ক্রভারতীর পরি-সংব্যান সংগৃহীত হইলে তবিহতে হিজার্ড ব্যাহের, কেন্দ্রীর ও প্রারেশিক সম্ভারের কৃষি বিভাগের কার্ব্যের বিশেষ স্থাবিধা হইবে এবং বেশের বহু বিনের একট জভাব হুর হুইবে বলিরা আশা করা বার। ইহার বারা বিভিন্ন অকলের বিজয় অভাব-অভিবোগ অবগত হইরা ক্রত প্রভিড়ারের ব্যবস্থা অবলয়ৰ করা বাইবে।

১৯৩৫ সালে বিভার্ড ব্যাহ বর্ষন গঠিত হব তর্থনই তারতীর ছবিধণের সুব্যবহা করার গুলু লাখিছ ইহার উপর স্থাত হইবাছিল। কিন্ত হুংখের বিষয় ভাতীয়করণের পূর্বে পর্যান্ত বিভার্ড ব্যাহ্ম এই ব্যাপারে একেবারে নিচ্চেট্ট বসিরা ছিল। বাহা হউক, ১৯৪৯ সালে রিজার্ড ব্যাহ্ম রাষ্ট্রীয়করণ করা হইবাছে। আর ১৯৫১ সালের ভিসেম্বরে ভাহারা এই বিষয়ে সচেত্র হইবা স্বেমার তথ্য সংগ্রহের ব্যাপারে হন্তক্ষেপ করিল। রাষ্ট্রের প্রতি বিভারেই কর্মতংশরভার একান্ত আনা পরিলক্ষিত হয়। জাতির বর্তবান সহটে ইহা বছই ছংগ্রহনত।

### জমির সার উৎপাদন

বাৰবাদ হইতে ১৪ মাইল দুৱে গও গ্ৰাৰ সিন্দ্রী। তাতা আৰু এশিরা মহাদেশের বব্যে সর্বপ্রেট ক্ষির সার উংপাদমের ক্ষেত্রণে রপাভয়িত হইতেছে। গত ১৪ই ফার্ডিক এবোনিয়ার সালকেট সারের উংপাদম আরম্ভ হইরাছে। তহুপলকে বিশেষ অফুটানের আরোক্ষ করা হয়। এই ভারবামার ইতিহত ভাষিবা বাবা ভাল।

"প্রায় দশ নাইল জুড়ে এক শহরের পথন হরেছে; সরকারী পরিচালনার এবং সরকারী বালিকানার এও বড় ভারধানা ভারতবর্ধে আর নেই। একট নাত্র কারধানা থেকে এই পরি-নাণ অর্থাং দৈনিক হাজার টন, এনোনিরাম সালকেট তৈরির কেনে, পৃথিবীর সুহত্তৰ ভারধানাত্তনির মধ্যেই সিন্দ্রির ভান।

"নিক্ বির রাসার্থিক কার্যানা ছাপনের ইতিহাসে ছুইট নার বিশেষতাবে উল্লেখনোগ্য। একট হ'ল, বিগেডিয়ার এব, এইচ, কল। ভিনি এই পরিকল্পনার প্রবাদ উপদেপ্তা রূপে কাক করেছেন। অপর নার বিঃ কে. এইচ, হল। ভিনি কার্যানাট্র পরিকল্পনা করেছেন এবং তা গতে ভূলেছেন। বিঃ হল এখন এই কার্যানার রেনিভেন্ট ইঞ্লিনীয়ার এবং বিগেডিয়ার কল্প এটর ক্লোবেল স্থারিক্টেভেন্ট। কার্যানার ক্লোবেল ব্যানেকার পদে নির্ক্ত হ্রেছেন বিঃ বি, বি, হুরার্জি। ইনি উচিতা সরকারের চীক গেকেটারী হিলেন।

"বিটিশ আবলে ভারত-সরকার ১৯৪৩ সালে বাতপত উৎপাহন বৃত্তির উপার উত্তাবনকরে একট কবিশন নিরোগ করেন। সেই কবিশনের সুপারিশ অক্সারী ভারতে নাইটোকেন-পুঠ কবির মাসার্যনিক সার উৎপাহনের নিয়াত করা হয়। তিন কন বিটেশ বিশেষজ্ঞের উপরে এই সম্পর্কে একট প্রিক্তনা রচনার ভার বেওবা হয়। ভারারা একট রহুৎ ভারবাবা ত্রাপ্রের এবং সেবানে বংগতে লাভে ভিত্ত লক্ষ্ ইন এবানিয়াৰ সালকেই উৎপাৰ্যের ক্ষত স্থাবিশ ক্ষেম। বৰাক্ষ্যে একট বিটিশ ও একট বাক্ষিন প্রতিষ্ঠানের সঙ্গে ভারত-সরকার চুক্তি সম্পাদন ক্ষেম পরিক্ষমান্ত্রারী ভাষবানা প্রতিষ্ঠার ক্ষত। ব্যুগাভি এবং বিশেষক ইঞ্জিনীরার ইত্যাবি আনানো হ'ল বিটেন ও আবেরিকা বেকে। ভারতবর্ষ সরবরাত করল বর-বাড়ী ভৈরির লোভা-সভড়, বাল-মশলা, লোক্ষ্ম এবং প্রবোজনীয় অর্থান ক্যুলের এই ভিন্ট রাই।

"হান নির্কাচন, ভবি গরিদ, বনজদল পরিকার করা, উঁচুনীচু নাট কেটে সনান করা ইত্যাদি পরিক্রনার প্রাথমিক পর্যারের কাজগুলি ভারত হর ১৯৪৫ সালের নারামানি, কারণানার ইনারত গড়া ভারত হর ১৯৪৬ সালের বব্যবর্তী কালে। পাঁচ বংসরেই এই পুরুহং পরিক্রনার কাজ সরাও করা সভব হরেছে। ভারতবর্ষকে গাভ সম্পর্কে বরংসম্পূর্ণ করে ভোলবার উদ্দেশ্রের পক্ষে এই কারণানার ভক্ষ বুব বেশী। সম্প্র পরিক্রনাটর ভর্ণাৎ শহরস্থেত কারণানাট ভৈরি ক্রবার বরচ পড়েছে ২৩ কোট টাকা।

"বিৰেশ থেকে প্ৰতি বংগর ৪ লক্ষ্ণ ট্ৰ করে এবােনিরার সালকেট বর্জনানে ভারতে আমলানি হচ্ছে। বদি বংগরে সাক্ষে তিন লক্ষ্ণ ট্ৰ এবােনিরাম সালকেট উংপন্ন করা বার ভা হলে প্রতি বংগর ১ কোট থেকে ১০ কোট টাকার বভ ভারত-সরকারের আমলানি বরচ বেচে বাবে।

"এবান বেকে ৰে সার তৈরি করা হবে তা বুব সভা দরে চাষীরা বাতে কিনতে পার তার ব্যবহা হরেছে।

"কেবল ক্ষিত্ৰ সাত্ৰ তৈত্ৰি ক্ষাত্ৰ কাক্ষেত্ৰ ব্ৰংবাই কাৰবামাট সীমাবৰ থাকবে না। ব্লক্ত: একট ভাৱি নাসায়নিক
উৎপাদমের কার্যানা হবে ইছিবে। কাঁচা ক্ষলা থেকে
পোছা ক্রলা (কোক্) তৈত্ৰি ক্ষা ধ্বন এই কার্যানার
সভ্তবণর হবে উঠবে তথন ভাগধা, আলকাত্রা, বেনজিন এবং
গ্যাস ইত্যানি অভাভ সহজাভ উৎপর অ্যানিও এবানে প্রচ্ন
তৈত্রি ক্যা বাবে। তা হাছা সিমেন্ট তৈত্রির পক্ষে প্রস্
প্রবাদমীর একট বছ—ক্যালসিয়ান কার্মনেট সাজ (গান)
এবানে তৈত্রি হবে উক্ এনোনিয়ান সালকেটের সহপরিবাবেই, সহজাভ উৎপর্রপ্রেণ, প্রভিন্নি ১০০০ টন।
এলোনিয়ান লালকেট হাছা প্রায় ৩০০ টন এনোনিয়াও
এট ভারধানার প্রভিন্নিত্র তিবি হবে।"

### ক্যুয়নিষ্ট ও বিড়লা শ্ৰেণী

ত্রীহেনভকুষার বসু নেভানীর একজন একনির্চ সহকর্মী; তিনি পশ্চিমবদে "করওরার্ড রক্তে"র অন্যতন নেভা। সংযাব-পত্রে বেখিতে পাই এই বল ত্রি-বারার বিভক্ত। তিনি উত্তর-কলিকাভার কংগ্রেস ক্রিটর পক্তে পশ্চিমবদ পরিবদে নির্মাচিত হল। গত বংসর কংগ্রেসী মু-শাসনের প্রতিমাদে বল ভাগে করেন; পরিবদের সহক্ত পরেও ইভালা বেন।

ভিনি একথানি লাগুছিক পজিকার কর্ণনার; তার নাম "কর্মানল"। সেই পজিকার তরা অঞ্চাহন ভাবিবে নামপ্রী হলের নিলম অসভব হুইল কেন, তংসকরে একট সম্পানকীর প্রবন্ধ প্রকাশিত হুইরাহে। তহুপলক্ষে ক্র্যানিষ্ট ফল ও বিভলা প্রেণীর সকরে বে সব কথা বলা হুইরাহে, তাহা নিয়ে উদ্ধৃত ক্রিলাম। তারভরাষ্ট্রের অগনিত ক্ষমত্তর প্রতিশ্বনি ইহাতে ক্রমা লাম :

''আৰু বাহারা ভুষা বাষপত্নী ঐক্যের নামে নেডাকী व्यास्यत काम बारवाशकाती विस्तृती वालालस्य जरह ্ৰাজ্যান্ত করিতে বাইতেত্বের ভাচাদের উদ্দেশ্যে সাববান त्रांगे फेकादन कृतिया जानदा अक्यारे निनव त्य. क्यानिक्रेटच्य गेर्निटक कांडांटा (सब ना वा (स्थ । এ क्षेत्रक कांबरा अवीरन ্লিয়া রাখিতে চাই যে, সোভিষেট রাশিয়ার প্রতি আমাদের কোন বিষেয় নাই-ৰা আমৱা দেই মহান ৱাষ্ট্ৰের প্ৰতি পঞ্-াবাপরও মই। কিছ ভারভীয় ক্যানিই পার্টর চিত্র প্রাভন होशिया चालता (कामनाकडे जमनेस कतित मा-कतिरक গারি মা। যদি ক্য়ানিষ্ট পার্টর নেতা ও ক্মীরক্ষ ভারতের গজীঃভার প্রভি-ভারতের মহা মনীয়ীদের প্রভি-ভারতের उम्मार्थन श्राष्ट्र जरकी यम जरेश जरशंक्रतात भारत भवितक्रमा দক করিতেন, ভাতা কইলে সারা ভারতের লাহিত াস্থের জেলপ্ট সমর্থন ভাঁতারা অবস্ট পাইতেন—আমরাও शहा हरेल काहारम्य केरकाल लावा कानारकाम । कारकर बार्क (य-भरव कांकावा कांकारसव 'कर्षकक्क' मिक्टि कविशासम. স পৰ অভি কৰ্মাশা-এখেনের প্রতি ভাতা পদে পদে वेकिकन । कारकर कररबनी क्वाबि ও वकन नामानानीस्वर াঠানির বিক্রমে আনাদের লেবনীবারা চুর্বার পভিতে क्रिया हिलाद्य ।

"আমানের সম্পর্কে বাহারা অঞ্চানা আলহার লভিত ইয়াছেন, তাঁহাদের উভেক্তে আনবা একথাই বলিব বে, রামরা কোনরপ অভারের পথ বরিরা চলি নাই। কাজেই সেত্যের প্রতিবাদে আমরা বে কোন বিপদকে বরণ করিচা ইতে প্রক্তর আহি। বে দেশের লোকের হাভ বাংপ ইবাইয়া বিভলা আজও রক্তচন্ত্ করিরা পশ্চিনবন্দের প্রধান জীকে 'Purchasable Commodity' বলিতে সাহস পার, ব দেশের বধাসর্কার শোষণ করিয়া বিভলা উত্বত্য করিয়া লিভে সাহসী হর বে, "আগামী নির্কাচন আমরাই চালাইব, জীবওলও আমরাই সঠন করিব", সেই দেশের প্রধানমন্ত্রী রেভ গোপন কারনে ইহার উপর্ক্ত ক্ষাব বিভে কার্পন্য সিবনের লোভ ভিনিত আকারে প্রবাহিত ছইভেন্তে, ভাহার ক্ষেত্র প্রক্রণ গুইতা—এইরণ অলিই উক্তি কি করিয়া সভ্
লা সভব গ প্রিক্তাকর প্রধানমন্ত্রীকে এই কথাই আক

বেষনার দরে বিজ্ঞানা করিতে ইক্ষা হর বে, বিড়লা বেরিম বাত্তিকভাবলে এই উন্নতাহচক উক্তি করিবাহিলেন, নেই বিন তিনি কি করিবা উরা সূহ্য করিবাহিলেন ? বাঙালীয় বিজ্ঞানী আত্মা—কামবর্ষের তেজঃপ্রভা কি উচ্চার কেহ্মনে— উাহার বন্দীতে, শিরার শিরার সেবিন কম্পন ভাগার নাই ?

"বিচলার ওঁবভার ক্বাব বিতে পশ্চিববলের প্রবাদমন্ত্রী কার্পন্য করিলেও—বাঙালী করিবে না। কারণ, বাঙালী আকও মরে নাই—ভাই আনাধের কৈকিংং হিলাবে সকলের উচ্চেত্রে বলিতে চাই বে.

> রক্ত বরাতে পারিনে ভো একা ভাই লিখে যাই এ রক্ত-লেখা বাহা কেকে বার ভেত্রিশ কোট মুখের এান এ লেখার বেদ লেখা হয় ভালের সর্কানাশ।"

আহলা চেন্তবাবুল সভিত সমবেদনা প্রকাশ কলিতেতি।
কিছ আমানের হংবেল সহিত বলিতে হইতেতে বে, "Purchasable Commodity" কংঝেসের বাহিলেও আছে,
মজিলে বাংলার নির্বাচন চন্ত অভ্যাপ বাল্য করিছ।

### মানভূমের অবস্থা

এই কেলার প্রসিদ্ধ ক্ষমেতা জ্রীক্ষরনাপ্রনাধ চক্ষবর্তী
বিহার ব্যবহাপক সভার আগানী নির্মাচনে প্রাথবিরণে
বীড়াইরাছেন। সপ্রতি তিনি সন্ন্যান গ্রহণ করিরাছেন, এবং
প্রাচীন "সংগঠন" পত্রিকার (সাধাহিক) সম্পানকরণে কেল ও বলের সেবা করিতেছেন। এই পত্রিকা পাঠ করিলে এ অকলের অনেকটা পরিচর পাওরা হার। পুরুলিয়ার "বৃত্তি" বে কার্য্যে আত্মনিরোর করিয়াছে, ভাত্তাই সংগঠন করিয়া বাইতেছে।

এই পঞ্জিকার ১১ই অগ্রহারণ সংখ্যার বিহার প্রবেশ শিকা বিভারের নাবে বে অপচেটা চলিতেতে, অহিন্দী ভাষা-সর্হকে দাবাইরা রাধিবার চেটা চলিতেতে, ভাহার বর্ণনা করিতে গিরা আবাদের সহখোগ বাহা বলিয়াহেব ভাহা বিহার রাজ্যের সীমানার বাহিরেও ভাষাইরা বেওরা উচিত। আবরা ভাহাই করিভেছি:

শবিহার রাজ্যে শিকার কেন্তে আবার একটা বিপর্যার আসিল। সপ্রতি পাটনা বিশ্ববিদ্যালয়ের ন্যান্ট্রকুলেশন পরীকার ভাষার নাব্যন সহতে যে নিয়ন করা হইরাছে, ভাহাতে ওবু ইংরেজী নর, উভিয়া বাংলাকেও সরাইরা একরাজ্ঞ হিন্দীতেই প্রবেশিকা পরীকার্থীবের উভয়-পত্র লিবিজে হাইবে। এই পরিবর্ভনে বিহার রাজ্যে কার্যাভঃ অপুবিবার প্রটিই করা হইল। ইহা বাবীন ভারতের পণ্ডর-বিজ্ঞাবী। পাটনা বিশ্ববিদ্যালয়ের কর্ত্তৃপক কেন্তুন এই বিশ্বব

"বাৰত্ব বেলার নগর বৰ্ত্বা হাজা দৰ্শন হাইভাবাহ

আবালতের তাক চলিবে বলিরা সরকারী ইতাহার কারি হইরাছে। এই সংবাদ দেখিরা বানবাদ বছকুমার বহু বলিল লেখক আবাদের সহিত সাক্ষাং করিরাছিলেন। বানবাদ বহুকুমার বিশী তাবার কর দলিকই লেখা হইরা থাকে। বাহুবের সরল সহক নিক্ষণ তাবাকে বাদ দিরা এই অভ্যাচার সরকারী কুলুর ব্যতীত কিছুই নহে। ইংরেজ আবলে ইংরেজী রাপ্ততাবা হিল, পরত বাংলা তাবাতেই বানকুরের সর্পত্র কোর্টের কার্য্য পরিচালিত হইত। অবধা গণ্বিভোতের পতি কোন্দ বালের ই প্রত্ন বাভিতের লক্ষণ মতে।"

রাষ্ট্রপতি রাজেলপ্রসাবের অমতুমিতে আর ক্তকাল এই অনাচার চলিতে বাজিবে ? এই প্রশ্ন আমরা প্রার প্রতি নালেই ক্রিতেছি। ভাহার সহতর এবমও পাই নাই।

### "মৃক্তি" পত্রিকার দ্বাদশ বর্ষ পর্ত্তিসংখ্যা

গত ১৭ই অগ্রহারণ ভারিবে পুরুলিরার "মুক্তি" ঘাদশ বর্ব অভিক্রম করিল। এই পরিকা রাইপতি রাজেলপ্রসাদ, মৌলানা মক্তর-অল প্রমুখ নেত্বর্গের সহক্ষী নিবারণচল দাশ প্রতিষ্ঠা করেন। সেই পরিচর ভারতবর্গের বাধীনতা— সংগ্রামের ইভিচাসে অকর অকরে লিখিত থাকিবে।

আৰু নিবারণচল কর্তৃক প্রতিষ্টিত "লোকসেবক সংশ"-ও কংগ্রেসের বিপ্লাদ নির্বাচনে নামিরাছেন এবং "মৃক্তি" তাহার সপক্ষে বৃক্তি বোগাইতেছে। কি অবহার পড়িলে সহক্ষীর বিক্লাহে হাভাইতে পারা বার তাহা করনা করা কটিন নর। লোকসন্দের পরিচালক শ্রীঅভূলচল্ল বোষ সন্দের বৃল নির্বাচনী কর্মনীতিগ্রহের বব্যে তাহা বর্ণনা করিরাছেন।

"লোকসেবক সভ্য পঞ্চারেং চেতমার ভিত্তিতে নির্ব্যাচন পরিচালনা ভরিবে।

সত্যের প্রতিনিবিগণ কেলার পঞ্চারেংগুলির কাছে দারী বাজিবে।

কাতীর আর্থিক বানের বৃষ্টিতে সন্দের প্রতিনিধিছের ব্যর ভ্যাপের ভিত্তিত পরিচালিত হইবে।

ভোট আলাবের দীভি পরিহার করিবা ভ্র-চেত্রার ভিছিতে সংস্থার বির্বাচনী প্রচায় চলিবে।

ক্ষপণের ক্ষীবদক্ষের সন্দের সেবা ও সহারভার বোগ বেধানে রহিয়াহে সন্দ সেধানেই প্রার্থী মনোনয়নের মীভি প্রহণ করিয়াহে।

ব্যাপক ক্ষেত্ৰ প্ৰচাৱের সৰ্থ্য অভিযাবে সল অৰ্থ্যে সভাষতা বৰ্জন করিবাছে।

নিৰ্কাচনে কৃষ্ট প্ৰমিক প্ৰকা সাধারণের ক্ষত বোগ্য প্ৰতিনিবিদ্যের উপযুক্ত অংশ প্ৰকাশ করিবাবে।

নিৰ্বাচনী জীবনে ব্যাপক কমপজ্ঞিও বৃদ্ধি-প্ৰধান পজ্জির মধ্যে কল সামঞ্চ বিধানের পথ অনুসরণ ক্রিভেছে। ক্ষেত্ৰার শাসন-ব্যবহার নির্মাচন ও প্রতিনিধিছের তিভিতে গণতাত্রিক ক্ষতার অংশ লাভের লক্ষ্য সম্পের রহিরাতে।

বিকেন্দ্রীকৃত আত্মশাসনের ভিত্তিতে প্রায়সমূহের কত পঞ্চারেতী শাসনক্ষতা অর্জনের লক্ষ্য সম্প হাবিহাতে।

গানীবাবের আন্তর্শ ও কর্মনীভিই সন্সের মূল কর্ম নির্বেশ-রূপে থাকিবে।"

নির্বাচনী নির্বেশ-পত্রে ভাব ও কর্ম পদ্ধভিন্ন বিশ্বদ ব্যাপ্তা ভালে:

"ৰুজির নির্মাচনী বিভীর সংখ্যা প্রকাশিত হইল। প্রভ্যেক কর্মী গভীরভাবে ইছার বিষয়গুলি পাঠ করিবা কন-গবের বব্যে ব্যাপকভাবে প্রচারের কার্য্য করিভে বিপুল উভয়ে অগ্রসর হউন। মুক্তির নির্মাচনী সংখ্যার প্রথম ভাগ ও বিভীয় ভাগের বিষয়বস্ত অবলখন করিবা ক্রিণণ কনচেতনা ভাগৃতির ভঙ্গ বৈর্য্যের সলে কাক করন। লোকের বাহা কিছু প্রশ্ন বুখাইভে চেঙা করন। প্রচাতের সময় এইগুলিও লক্ষ্য রাথিতে হইবে:

(১) भागत्मद समाठाव (विवा नाटक (काटकेद विववक विज्ञा हरेबाएड- हेहा एवं कविएक हरेव । लाटक फैनाजीय তইলে স্বাৰ্থানেষ্টাদের ভোট পাইরা অবোগ্য লোক নির্ব্বাচিত ভইরা কভি করিবে। ভোট রাষ্ট্রীর অধিকার। ইতা প্রয়োগ করিয়া বোগা লোক বাছিয়া দেশের শাসন ভাল করিছে क्टरिय । नर्वका यात्रा लाक वाहार कविवाद क्रडी मा दावितन (करणंद च्यवश्राद **देशकि ठ**केरव कि कविदा १ (२) कि**इ ला**क কংগ্রেসের শাস্ত্রে বিহক্ত চইয়া ব্রিট্টশ সরকারের রাজ্য কিরিতা পাইতে চাতিতেতে। এই মনোভাব কভিকর। খন-প্ৰকে বুৱাইতে হুইবে ভাহা সম্ভবত নৱ এবং বাৰীনভাৱ वर्ताभाव जनवारी अव। कहे हरेल अवीम भीवन टाइ--वाबीय शास्त्रिका मित्राप्य मेकिएक सरकार शतिवर्कम करिएक হইবে। কেহ কেহ বলিভেছে সরকারকে ভোট দিব অর্থাং विक्रियक (कांक्रे क्रिय। वृद्धाहेर् क्रिय जाहा मध्य मन-विकेष बाद बार्क श्रेषां हैं एक शहर मा। तिर्मंद स काम माकरक कांक्रे बिरक हदेरत। कश्रत्वनदे अवन नवकाव हरेबार , जबकारवब शिववर्षन हाहिरल क्राज्य शिववर्षन চাই। ভাহা হইলে দেশে অচ সরকার প্রভিষ্ঠিত হইবে। (০) ভোঠের আইন-কল্প ও অধিকার ভালভাবে বুরাইতে व्हेरव । जवकाती कर्यकातीरकत माजरम वा कारण त्क्व (कार्ड मित्र मा ; अरेकार्य कर्यातीया काक कतित्म एक हरेरव-ক্ষপণের বুবা দরকার। (৪) ভোটের আশার কণরে বিধ্যা প্রচার বাহা করিবে ভাহা বঙলের প্রতি মনোবোদ রাখিতে হইবে। (৫) ভোটের ভারিব, ছাল প্রভৃতি বিষয়ে অভের বিব্যা প্রচারে সাববাদ বাকিতে হইবে। (৬) দভা

আঞার করিবা, সঞ্জি সংবাদসমূহ লইবা কর্মীরা প্রচার করিবেন। (৭) অপরের প্রবল বিবোধিতা ও বাগ্লালে কর্মীরা হির থাকিবা নিজেবের বাহা যুক্তি ভাষা মৃচ্ভাবে ও বিচারপূর্বক আত্মবিখালের সহিত জানাইতে থাকিবেন। (৮) জহলাতের জত কর্মীরা ব্যাক্ল হইবেন না। নিজের কাজ প্রকাত করার মধ্যেই আনাদের জয়। ছিলচিতে বিপুল উভবে প্রচণ্ড কর্মীভাতে কর্মীরা কর্ম করিবা চল্ন—ইতাই আমনা।"

### কাপড লইবার ক্রেতা নাই

গভ ৩১শে ভাজ সংখ্যার নামভূব রাষ্চলপুর হইতে প্রকাশিভ "সংগঠন" (সাপ্তাহিক) একট অবাভাবিক অবছার প্রভি দৃষ্টি আকর্ষণ করিরাছেন। এই অবছা কাহার স্থ ই তাহা অজ্ঞাত নর; ভারতের ভবা অগতের শ্রেজীযুক্ষ নাছ্যের খাওরা-পরার প্রব্যাদি লইবা বে খেলা খেলিভেছেন, তাহা ভাহাদের ধ্বংসের দিকে ঠেলিরা দিভেছে। সামারণের বিবেষের পাজ হইরা কেহু বাঁচিতে পারে মা—এই সামাভ ক্ষাটা তাহারা করে ব্রিবেম গ

সংগঠনের বছব্য উপলক্ষ্ করিয়া এই ক্ষাট সর্থ ক্রাইয়া
বিতে চাই। আমবাসী ও শহরবাসী কেছই ক্ষেত্র হাজ
হতে উদ্ধার পাইতেহে না, ভাহাও বনে রাধা প্রবাদম।
"লোকানে লোকানে কাপড়ের ভূপ—প্রাম্বাসীনের ভাজা
হতৈহে কাপড় লইয়া যাও—ভাহারা আলে না।" বাছবের
কাপড় নাই, ভাজা হইতেহে ভবু ভাহারা কাপড় কিনিতে
আলে না—কারণ কি? মাত্র আট গব্দ কাপড় প্রতি পরিবার
পাইবে ভাহাও লইডে পারে না। কর্তুপক্রে কৈকিয়ং স্ক্রর;
কাপড়ের প্রাচ্ব্য ক্রেডার অপ্রাচ্ব্য—ভবু দেশ "ভাংটা"।

"প্রামের বিপণিতে বে কাপক আসিতেছে ভাহার ব্ল্য ও রক্ষ বাহা, ভাহা প্রামবাসীদের পক্তের করা সাব্যাতীত। প্রামের লোকের প্রয়োজন মোটা কাপক, টেকসই কাপক প্রথম বাহার বৃল্য স্থলত। ভাহার পরিবর্তে আসিতেছে চকা করের মিহি কাপক। তব্ ভাহাই নর ৮ গক কাপকের মধ্যে ও গলের একট বৃতি বা শালীর সকে ৩ গক হিট লইতেই ইইবে। অনেকেরই হিটের প্রয়োজন হর না। বাহাদের হিটের প্রয়োজন হর না ভাহারে হিট কইরা করিবে কি? ভাহার বদলে বৃদ্ধি ভাহাদের ৮ হাভি কাপকও হুইট দেওবা হর ভাহা কাকে লাগে। সরকারী কর্ত্পক্ষের এখনি চিভা করা উচিত।"

### রেলওয়ে উপার্জন ও ভারতরাষ্ট্র

'বোগাবোগ' কলিকাভা রেলওরে-সমষ্টির প্রচার বিভাগ কর্তুক প্রকাশিত। ভার একট সংখ্যার নির্নিধিত বিষরণট প্রকাশিত ক্ষরায়ে। লেখকের হাবি—'বর্তবাবে ভারতীয় বেলগৰে বাৰ্ট্ৰে সৰ্প্ৰপ্ৰেষ্ঠ সম্পদ।' ইছা সভা। কিছ ইছা আৰও সভা বে, দেশের সংঘদীর জনমোভ সংঘভ ও স্পরি-চালিভ হইলে রেলগ্রের উপার্জন অপেকা বহু ওণ অর্থ রাষ্ট্রের ভাগারে আসিভ। জলাভাবে শভহানি ও বছার ধ্বংসলীলার অবসান হইভ। এই ভ্যা নমে রাখিরা নিমে উচ্ছত মন্তব্যর ও হিসাবের বিচার করিছে চইবে :

"বর্তবানে ভারতীর রেলওরে রাষ্ট্রের সর্বন্সেষ্ঠ সম্পন্ধ। ইহার আরব্যর প্রায় ভারত-সরকারের বাজেটের ছই-ড্ডীরাংশ, অববা চারিট প্রধান রাজ্যের বাজেটের, অববা ছোট আইট রাজ্যের আর-বারের সমষ্টির সমাম। এডধ্যতীত জাতীর অবনীতি, আত্যভানী নিরাপতা এবং বহিঃশক্র হইতে আত্মরকা বিবান রেলওয়ের সহিত অলাকী ভাবে ভতিত আছে

এই রেলওবেতে সর্কাংশকা অবিক্সংখ্যক কর্মী কাক করেন এবং নানাভাবে দেশীর শিরকে বাঁচাইরা রাথে আনা-দের ভারতীর বেলওরে। ভারতীর রেলওরে বেন ছোটখাট একট পৃথিবী; এখানে প্রাদেশিক সকীর্ণভা ও ভাতিবৈশ্বরা নাই, এখানে বেন সকলেই পারশ্বিক বন্ধুত্ব হয়ে আবহ।

১৯৪৭ সালের পরে রেলওরেভে ভাড়া বাড়ান হর নাই।
১৯৩৮-৩১ সাল হইতে শতকরা বাজ ৪৬ এবং ৭৩ ভাগ ভাড়া
বাড়ান হইরাছিল, কিছ ভাহার ভূলনার রেল পরিচালনার
বরচ বহু অংশে বাড়িরা সিরাছে। ১৯৩১ সালের সহিভ ভূলনা ভরিলে দেখা বার বে জব্যাদির দাব চারি শভ ভাগ
বাড়িরা সিরাছে। কোরিরার বুছ ভারতের পর হুইভে
জ্বাদির দাব জ্বেই বেদ বাড়িরা চলিয়াছে।

বর্তমানে যে পরিমাণে ভাঙা বাঙান হইরাছে ভাহা দারা প্রাকৃ-রুছ সবরের ভাঙার মাত্র শভকরা ৩২ ভাগ পাওয়া যার।

১৯৪৯-৫০, ১৯৫০-৫১ এবং ১৯৫১-৫২ লালে ভারতীর বেলের ৭২৮৯৫, ৮০৪৯৮ এবং ৮২২৪৫ লক টাকার মূল পুজির বব্যে ই, আই, বেলের অংশে বর্ণাক্তমে ১৯৩৯৪, ১৯,৬৯৯ এবং ১৯.৮৫৪ লক টাকা ব্রাভ কইবারিল।

ভারতীয় রেলের তৃতীয় শ্রেণীর এবং অভাত দেশের রেলের ভতীয় শ্রেণীর ভাতা নিয়ে প্রদত্ত হইল:

Solu Con an alal Lieu ale design	
	ভাড়ার পর্যার
	প্ৰতি ৰাইলে ভাড়া
	( পাই হিসাবে )
<b>ावड</b>	•
₹ <b>8</b> . € <b>7</b> .	<b>ঽ৬</b> °08
क्षेत्र. अम्. अ.	47,90
कानाण	40'08
प्रदेशांत्रणा ७	40,94
<b>ক্লা</b> জ	25.76
ইটালী	20,8

গড়ণড়তা বাত্ৰীয় নিকট হইছে এতি বাইলে কড পাওৱা বায়	ৰাণা পিছ আৰ
8*49	210
24.9	9692
<b>૨૨</b> .৫	18060
<b>₹ ₹ . •</b>	87.
•••	8003
•••	= 222
	•••

### ইফ ইণ্ডিয়ান রেলওয়ের কন্মী বংখা

একটা হিসাবে দেখিলাম বে, ১১ বংসরে এই রেলওরের ক্র্মীলংখ্যা অভি ক্রন্ত বহিত হট্যাছে, পূর্ব পূর্ব বংসরের ক্রুলনার বর্তমানে ই. আই. রেলে ক্যু রেলক্র্মী কাল ক্রেন ভাহা নিয়ে প্রমন্ত হট্য:

১৯৩১ লালের ৩১৫৭	1 116-300636
798=	? 000 P
7980	280≤0€
>>88	369900
>>84	2#8942
298 <i>e</i>	>1288
3569	222720
798F	222301
7989	224640
2>40	830808

### ভাগীরথীর তুর্দশ।

গত এই কাঠিক "রুশিদাবাদ স্বাচার" প্রিকার কলিকাতা নগরীর আগর বিশদ সহছে বাহা বলা হইরাহে ভাহা অভানা নয়। সম্পাদকীর সভব্যের ব্যেই স্বভ অবহাটা বর্ণনা করা হইরাছে। দাবোদর বাব সম্পূর্ণ হইলেও এই বিশদ দূর হইবে না। কোন কোন ইঞ্জিনিবারের বভে কলিকাতার বিশদ হৃদ্ধি পাইতে পারে। এই তর্কে বোগদান করিবা লাভ হইবে না। কিছ তবুও আনাদের সহযোগীর আলোচনা স্বয়োগবোধী হইবাহে, অবৈর্ধা হইলে চলিবে না।

"ক্ষেক্ষিন পূর্বে সেচ-সচিব শ্রীকুণতি বজুবলার বহাণর কলিকাভার এক সাংবাদিক সম্মেলনে ভারীরবী নদীর বর্তনান হ্রবছার কবা উল্লেখ করিয়া বলিয়াহেন:

"ভারবাবী মদীতে বে ভাবে পলি পঢ়িতেতে, ভারাতে অর করেক বছরের মধ্যেই নদী মরিরা বাইবে এবং ক্লিকাভার বক্তর বছ করিরা বিভে হইবে।

"লেচ-দচিৰ বৰাৰ্থই বলিয়াছেন ৰে ভাইয়ৰী নৱীয় বোহনায় নিজঠে এবৰ বিঘাট চয় পভিয়াছে ৰে গলা নৱীয় দহিত বৰ্ষাকালের করেক দ্রপ্তার বাতীত ভাসিরবীর কোম जरद्यान बाट्य वा । वेखर जात कम जरवरावकारी वेशवहीर गरनाथ जब, जाकावध मनना। विकन विटक बहुवाकी, जक्त क्लाकी वा हुनी बकी विद्या ता शतिवान कल कामेहबीएक शरक केस्ट्रांड कार्ड महीश्रमि विशे क्रिक्र सम सारम मा । क्रम जानेवरी क्वारेटलट हु निवा महीव युक् क्वार्ड हरेवा बांडेरकरका अंडे उरमद काम बाब सब माडे। सकावर वरनावत वक कामेवनी अवादि कामाव कामाव गुर्व हक्ता एत পাকুক, আবিদ মাসেই চত্ত পভিত্রা নদীবক ভবিত্রা নিয়াছে। बीचकाल जानेत्रवी-राक कन वाकित्व किना राना करिय। কলে ভাগবণীর উভর পার্যত্ব যে করট শহর বুলিলাবাদ জেলার পড়ে, সেবানে এীমকালে পানীর জল সরবরাতের ব্যবস্থাও বন্ধ না হইয়া বার। পুতীর ব্যেহনা হইতে শক্তিপুর পर्वाच लाव 80 बारेन गांनी चानेवबी-बच्च विचाद वानका विदास, चाठारच मही मदिया बाहेबाद जन्मर्व जसावमा । অবচ গৰাৰ ভীৱে বুলিৱান শহর গলার ভাওনে নিশ্চিক হইরা (SE 1

"পশ্চিম্বদ সরকার কেন্দ্রীয় সম্বাহার সাহায্যে করাভায় বাঁব দিয়া ভারীয়বিকে সর্বস্বাহ্য প্রবহ্মানা য়াবিবার বে প্লান করিয়াছেন, গভ ভিন বংসর হইতে সেই প্লান বত কি ভাবে ভার্যানি চলিভেছে, ভাহা আনাদের জানা নাই। করাজান্যারেজ লইয়া ভিন বংসরে ১৭ লক্ষ চাঁজা বরচ হওয়ার ক্যাও প্রীয়ক্ত মন্ত্র্মার বলিয়াছেন। ভিন বংসর বরিয়া Data সংগ্রহ করা হইভেছে বটে, জ্বচ মনী বে ভকাইভেছে ভাহার কোন বিহিত গ্রমাবং হর নাই। করাজার বাঁব বিয়া ভারীরবীকে স্থানার ও প্রবহ্মাণা করিবার সভ্যকারের চেটা আজ্ব হর নাই। কেন্সীয় সরকার কি বিভঙা ভারীরবীর বিক্ গৃষ্টপাত ভ্রিবেন না প্লানী গ্রহেবারে ভকাইয়া প্রেটাই কি করাজা-ব্যারেজ বাঁবা হইবে প্ল

ৰ্দ কৰা এই বে, কেন্দ্ৰীৰ সৰকাৰেৰ মন্তব বাংলাৰ উপৰ নাই। বে ব্যক্তি সন্ততি কেন্দ্ৰীৰ অৰ্থ-বিভাগের অধিকাৰী ভাহাৰ বাঙালী-শ্ৰীভি ভো সকলেই জাবে। স্ভৱাং এই বিষৰে কেন্দ্ৰীৰ সৰকাৰেৰ "দৃষ্টি আকৰ্ষণ" কৰাৰ চেঠা বৃধা। অভ কোন্ পৰে সে কান্ধ কৰিতে হুইবে ভাহাই বিচাৰ কৰা প্ৰযোজন।

### তেলের প্রতিযোগিতা

রাজনীতি এক অতুত কিনিস। তাহা এক গোজীর লোককে একেবারে ভিন্ন করিতে পারে না, আবার ভাষারের বার্বের বিলও কবনও হব না। ইরাপের তেল লইরা বে বগলা বাবিয়ারে, ভাল বব্যে কেবিতে পাই, বার্কিন মুক্ত-রাই অব ও নার্ব্য বিষা ত্রিটেনকে লাহাব্য করিতেতে; লমিনিত ভাতিনকে ভাষারা একবোনে কাল করিতেতে; ভাহারা নামা প্রভাবের সমর্থক। এবিকে আবার এই ভেলের বাজার সইরা বেশ একটা 'চাপা' বিরোধ চলিভেরে। অভভঃ ইহাই হইল গ্রালিনের বভ।

লোভিয়েট রাষ্ট্রের প্রচার প্রভিষ্ঠানসমূহ এই বিরোধের বার্ভা বানা ভাষার অভি আনন্দের সন্দে আমাদের গুনাইভেছে এবং আমাদের মনে এই বিষয়ে বেন কোন সন্দেহ না পাড়ে ভার কর প্রিসংবাদের সাভাষা সঙ্কা ভইষাতে।

প্ৰথম মহামুছের পরে মারণযন্ত্রপানর টেকনিক্যাল উন্নতি তেলের প্রবোজন ও গুরুত্ব আরও বাড়াইবা দিয়াছে। স্কুতরাং কেবা বার পুঁজিতন্ত্রের সাবারণ সহটের অব্যাহে বনভাত্রিক কেপজনির মোট উৎপাদম ববন বংসামাল বৃদ্ধি পাইবাছিল, তবন ভেলের উৎপাদম বাভিয়াছিল অসহার।

ৰমভাৱিক ছনিয়ার ভৈল উৎপাদন সম্পর্কে নীচের এই সংখ্যান্ডলির (১০ লক্ষ্টন হিসাবে) সবিশেষ প্রবিধান-যোগঃ

797.0	• 2
7956	785
>>40	8 <b>&gt;</b> 0

ভেলের উৎসগুলি লইরা সামাজ্যবাদীদের জ্ঞমবর্ত্তমান সংগ্রামে নার্কিন যুক্তরাই ও ত্রিটেনের লড়াইটাই বিশেষ গুরুত্বপূর্ণ হইরা উটিয়াছে।

এই বিরোবের ভীত্রতা ভালভাবে বুবিতে হইলে ধনভান্ত্রিক দেশগুলির ভৈল ক্ষেত্র ও ভৈল উৎপাদনের একট স্পাঠ বারণা বাকা দরকার।

হুইট প্রধান দৈল অঞ্চ আছে। একট আমেরিকা
মহাদেশ, আর একট নিক্ট-প্রাচ্য। আমেরিকার উৎপাদমের
পরিষাণ ৩৭ কোট ৬০ লক্ষ্য ট্যান্ত। নিক্ট-প্রাচ্যের উৎপাদমের
পরিষাণ ৬ কোট ৭০ লক্ষ্য। নিক্ট-প্রাচ্যের উৎপাদমের
পরিষাণ ৮ কোট ৭০ লক্ষ্য। ১৯৫০ লালে নিক্ট-প্রাচ্য হুইতে
সম্প্র পুঁলিভান্তিক ছনিরার মোট উৎপাদমের পাঁচ আগের এক
ভাগ ভেল উভোলিভ হুইরাছে। অবস্থ এই ভব্য হুইতে নিক্ট
প্রাচ্যের ভৈল সম্পদের শস্ত বারণা করা বাইবে না।
ছুভভুবিদ্দের হিলাব অভুলারে নিক্ট-প্রাচ্যে আছে সম্ভ
পূথিবীর ভৈলসম্পদের শভকরা ৪০ ভাগ। এক্ষাত্র সৌধী
আরবেই ৩০০ কোট ইন ভৈল আক্র আছে।

মার্কিন মুক্তরাষ্ট্রের উৎপন্ন তৈলের পরিমাণ সমন্ত পুঁকিবাদী কেশগুলির মোট উৎপাদনের অর্জেকেরও বেশী। তবু সে নিক্ট-প্রাচ্যের তৈলসম্পদ করারত ক্রিতে চার।

বিভীয় মহাবুদের পূর্বে এবং বুদের গোড়ার বিকে বার্কিন ভৈলপভিয়া কুওয়েট ও ইয়াকে ত্রিটেনকে কোগঠালা করিয়া ক্লোভে লক্ষর হল। ভাঁহারা কুওয়েটের ভৈল উংপালনের পভক্ষা ৫০ ভাগ এবং ইয়াকের ভৈলের পভক্ষা ২৩'৫ ভাগ আদার করিবা সইলেন। ইহা হাড়া এংলো-ইরাবীরান অরেল কোম্পানীর উংপাদনের শতকরা ২০ ভাগ উাহারের ভাছে বিজ্ঞর করিবার ভঙ্গ ত্রিটেনকে তাঁহারা রাজি করাইতে সক্ষম হইলেন। সৌনী আরব ও আবিসিনিরার আমেরিভানরা ভৈল উংপাদনের একচেটিয়া অবিকার আদার করিবা লইলেন। সৌদী আরবে প্রচুর ভৈল আছে। ১৯৪৪ সালের দশ লক্ষ্ণ ইন হইতে এই অঞ্চলের ভৈল উংপাদন বাছিরা সিধা বর্ডনান বংসরে ভাহা ভিন ভোট টন চইবে বলিবা আশা করা বাইতেছে।

এই ভাবে নিকট প্রাচ্যের তৈল উৎপাদমের ক্ষেত্র নার্কিন বুক্তরাট্র কলে-কৌশলে ত্রিটেনের নাগাল বরিয়া কেলিয়াছে। নীচের সংবাশ্যলি কটতে এই কথা পরিভার কটবে:

विकडे-थारहात रेखन-देश्भाषय ( क्ष नक हैव विनाद )

	মার্কিন বৃক্তকাই	(वह बिहिन
1901	•	76.4
3540	80*8	88*4

এই হিসাব হইতে দেখা যায় তেলের প্রতিযোগিতা কিল্লণ প্রথম আকার ধারণ করিবাছে। কিছু সোভিরেট হাট্রে তেলের উৎপাদম সহছে কোন আভাস পাইলাম মা। ই্যালিম ত মিক্টের ইয়া বসিবা থাকেন মাই।

### চীনের বর্ত্তমান উন্নতি

কর্।নিষ্ট হুই জন বাঙালী জব্যাপক ঐনির্দ্ধল ভটাচার্য্য ও ঐতিপুরারি চক্রবর্তী সম্প্রতি চীন দেশ হুইতে কিরিরা আসিহাছেন। বিশ-পঁচিশ দিন প্রমণ করিরা তাঁহারা বে অভিজ্ঞতা আর্জন করিরাছেন, ভাহা সভা-সমিভিতে পরিবেশন করিভেছেন। তাঁহাদের কথার বিচার করিভে চাই লা। আমরা সকলেই নিজের নিজের জান ও বিখাস অন্ধ্রারে ভগ্যাদির ব্যাখ্যা করিরা থাকি। তাঁহারাও ভাহা করিবাছেন।

গাৰীপথী অব্যাপক জোনেক কৰেলিবাস কুৰাবালা "হ্যিজন" পত্ৰিকাৰ তাঁহার অভিজ্ঞতা বৰ্ণনা ক্রিভেছেন। ১৬ই অগ্রহাৰণ তাহিবের বাংলা "হ্যিজন" হইতে ভাহা উচ্চত ক্রিয়া দিলাম:

"থাত সৰ্ব্বাহ্ন বৰেষ্ট্ৰ পাওৱা বার। জন্যান্য অভি প্রশ্নেল্যনি সামগ্রীও বেশ পাওৱা বার। তার বেশ সভা। চীকার কাণতি হইরাহে বটে, কিন্ত উহা অভিক্রম করিবার উপার প্রণ্যেক চাইওছে। শাসন-ব্যবহা বুদ্ধপূর্বাক চালভেছে। লোকের উহার সহিত পূর্ণ সহবোগিতা আছে। সকল কর্মচারীরা লোকের সহিত মিলিরা-মিলিরা এক হইরা চলে। সকলে একই প্রভার কাণত-চোপত পরে, এক ভাবে বাস করে। উর্ভ্রম ও নিয়ভ্রের প্রভেক বুব বেদী নাই। চীন নেশের সভাপতি বাও ২,৮০০ কাটি জোবার (এক কাটি — ১০ পাউও — ৫১ তোলা), গাঁকিবার একট বাতী ও ব্যবহারেছ

ক্ষমা একট ৰোটবকার পান। উহা একুনে বালে **উর্ব**পঞ্ ७००, डीका बडा बाद। प्रदे क्य (कवित्महे बहीत দহিত কৰা বলি। ভাহাৱা মানিক প্ৰায় ৪৫০১ টাকার নমান বেডন পাম। বে বেচ্ছানেককেরা আমামের কেবাভমা ক্ষিতেহিল ভাহার। উহার প্রায় এক ততীরাংশ পার। रेटा ट्रेंट बुवा यात हीन त्या अवन नावकरण्य পাইবাছে বাহারা লোকের ভীবন্যালার মিলিয়া বিশিয়া থাকে। বে মনোভাব এখানে চলিভেছে ভাতা কভক্টা আৰাদের দেশে ১৯৩০ সালে বেষন ছিল সেই বক্ষ। আৰৱা हीत्यत क्षेत्रत कामत **अर्थायतल श्रामा हिल्ला** क्रमा कृतिश वाकि। खेलन श्रेवन कनश्रकाव (मबाद्य माहे। दहर निरम ভুৱি উৎপাদন, আর সকল সম্পতির রাইভুক্তি-ইরাই সোভিষেট ক্য়ানিজ্যের বুল। কিছ চীশ সীমাবছ ব্যক্তিগত সম্পত্তি বক্ষার এবং কুম্রকার শিল-প্রতিঠানসমূহে আছানীল। চীৰের বুলমাল ভইল ভূমি-ব্যবস্থার সংশোধন ও কৃষি উল্লয়ন। মুলগত এইরূপ পার্থক্য থাকার হয়ত চীন রূপের অভ অভুসরণ দা ভৱিতে পারে। সেলদোর প্রদের বভুরী বিবার ভাষি ৰে পৰিকল্পনা ও ভ্ৰম্ভ বরিয়াতি এখানকার প্রতি অনেকটা (नरेंद्रभ (पवित्रा चार्याद चान नामिन) अविकृता वाम्हास, পরিবের ও অর পার এবং হাভবরচ মাসিক প্রার ১০ হইতে ১৫ চাকার সমান পার। সেলদোর সুষ্ধ বাভের উপর জোর দেওৱা হইৱাছে বলিৱা উচা অধিক বিভাদদশত। তবে এবাৰকার ব্যবস্থার সহিত উহার সাদৃত চৰকপ্রদ।

"कृष-रावश সংশোষন विষয়ে जालमादा ववत ठाविताहरू। ইতাহা এই বিষয়ে বাখৰ পৰে অঞ্চলত ভইছাছেল মনে ভয়। প্রপাতা ভ্যাত্তবৃত্তি লোপ করা চইহাতে। কিন্তু সম্পর চাৰী বাভাৱা চায়-আৰাম কৰে ভাভামের উপর কোন ভন্তকেপ করা হয় নাই। এভদিন পর্বান্ধ প্রভারা উৎপর কসলের ৫০ চইতে ১০০ শভাংশ ভ্ৰিভাৱতে ভাগ ভিড। ইচা বভ কটবাতে। চাত্ৰী এখন প্ৰয়েৱ ফল নিছে ভোগ কৰিছে পাৰ। **एविदास्टर्ये निर्दां हैल्लेन क्रालर शार ५० नकारन । क्रि** ৱাজৰ শভেই সংগৃহীত হয়। টাকার কাঁপতি ক্যাইবার रेहारे जमाज्य स्थाम श्रष्टाकरण मृहीण हरेबारह । नवस्त्र छ क्यी वर्षाती ७ निक्विशिक शत्या त्रक्षम विशे बाद्यम । ज्ञाज रुक्रैय वााभाव बाहे। चटव त्व जव कविवाद वन-প্রবোগে বিজ্ঞাত করিতে চাতিরাছিল ভাতাবিগকে কঠোর-ভাবে বৰণ করা হয়। ভাতাবের অবি বাজেরাপ্ত করা ক্ষমতে। যাতারা চাষ করিতে চাতিয়াতে ভাতাদিপকে অপর চাৰীবের মন্তই পুনর্বাসনের প্রবোগ করিবা বেওবা হইরাছে।

"সোবিয়েতে"র নদী: আজ ও কাল "বিশান লোবিবেং ছবি বঙৰিবও করে বরে বার লকাবিক নহবরী। সব কট নবী এক সলে কুন্তে নিলে বৈর্ঘ্য নাভার ২০ সক্ষ কিলোমিটারেরও বেশি, অর্থাং সাকে ১২ সক্ষ নাইল। বাভারাত ব্যবহার নদমনীগুলি বিশিষ্ট ছান অবিকার করেছে। সবর ও দশর শতালীতে বে সরভ নবী কাতীর জীবনে অসামাত প্রভাব বিভার করেছিল সেগুলির মধ্যে সর্কাশেকা উল্লেখনাগ্য হচ্ছে নীপার, ভরা, ওকা ও কারা (ভর্মগার উপনবী), নম, উত্তর বিমা এবং মেভা। বল্টিক সাগর থেকে কুক্যগার হবে কলভান্তিমোপল্ পর্যান্ত বাণির্জ্যান্ত বিল মীপার। পরে ভরা, ওকা ও কারার জলপর্ব হিসাবে ওক্তর বৃদ্ধি পার। নম মনী মিকেকে মিলিরে দিরেছে আক্ষর সাগরে। উত্তর বিনার জলরালি গ্রহণ করছে খেত সাগর। মেভার মোহামা বল্টিক সাগরে। এর সব কটই গোবিরেং ভূমির ইউরোগীর অংশে প্রবাহিত।

উলিখিত নদীগুলির জলবান ব্যবস্থা উন্নত করার কিছু কিছু কাজ জাব-শাসিত ক্রশিষার হরেছিল। তলাকে বৃক্ত করা হরেছিল নেতার সলে এবং উত্তর দ্বিনার শেষ তাগে কতকগুলি খাল কাট। হরেছিল এবং লকগেট নির্দ্ধাণ করা হরেছিল। কিছ দেশের জলসম্পদকে যতদুর সন্তব কাজে লাগাবার উত্তোগ সোবিবেং রাই প্রতিষ্ঠার আগে আর হর নি।

মচাম অক্টোবর সমাজভন্তী বিপ্লবের পর্বের ভলবিতাং (क्षेप्र निर्दार्शन काल ठाक (प्रवदा ठव नि वज्ञान के क्षेत्र ठव यमिश्व (माम कनमंख्यित विक्रमात क्यांव दिन मा । त्यांविद्यर শাসন কাৰেম ভাওয়ার পারেই ছেশে জলবিচাং প্লেশনের জাল विश्वादात काक प्रक क'न : विद्यादान वृक्षम कनविद्यार ট্রেশন মিশ্রিত চ'ল মীণারের উপর। তার পর ভবার উপর ভিমট শক্তিশালী খলভড়িং কেন্দ্ৰ এবং ককেসিৱা, মৰ্য क्षिता क जनान सकतात सामकक्षण महीत देशत साहक কভকণ্ডলি বিহাং-টেশন মাধা ভূলে দাঁড়াল। ভার পরে খনন করা হ'ল কভকগুলি ভলপ্রণালী বেমন বেভ সাগর, বাণ্টিক সাগর বাল (ফিনিশ উপসাগরের সলে খেত সাগরকে যুক্ত कदाइ ) अवर महा- कवा थान । मीभाव, कवा अवर कवामा नव-नवीत छेशत विकित कनविद्यार-देशन निर्वान कतात करन क्रमधाम क्रमाक्टला जातक चूरिया क्ट्रा त्रमा जात्रकाव बिटम द नव मनी वावकात कता क'क मा (नक्षान वावकात যোগ্য হলে উঠল।

নদী, খাল ও কলাবারের কিনারার নরা নরা বলর যাথ।

সূলে বাভাচ্ছে। অনেক নগর বেগুলির নিকটে কলের কোল

অভিনুই নেই ভবিভতে লেগুলি কলনিক হবে উঠবে।
লোবিবেং রাজবানী বকো হ'ট সব্জের বলর হবে উঠবে।

নহা মহা বাজীবাহী ও বালবাহী ভাষাজ্পণ বোলার আরোজন

চলছে। আনানী বংগবের গোভার বিকেই ভলা-দন বাজে
ভাহাক চলাচল পুরু হলে এই গমত ভাহাকপথের

শুলিতে কাজ আছত হবে। এজন্য বছুৰ বহুৰেই আধুৰিক বাজীবাতী ও বাজবাতী জাতাত নিৰ্মিত হজে।

আগামী করেক বংসরের মধ্যে সোবিরেতে দদীসমূহের বাভারাত ব্যক্তা করেকগুণ বৃদ্ধি পাবে। ভার কলে কাতীর অর্থনীতির বিক থেকে অনেকবানি স্থবিবা হবে, কারণ রেলপবে বাভারাতের চেরে জলপবে বাভারাতের বরুচ অনেক কর। কলপব নির্মিত হলে তথা বরে বন্ধ নাল যাভারাত করতে পারবে সমান বৈর্ব্যের রেলপবে ভার ৪০ ভাগের এক ভাগের বেশী-ব'রে নিরে বাওয়া সন্তব্য হবে না।"

গত ৪ঠা অঞ্চাৰণের "গোৰিবেং দেশ" প্ৰিকাৰ উপৰোক্ত বিবরণট প্ৰকাশিক হইরাছে। ভাহার মধ্যে অমেক ভামিবার ও ভাবিবার আছে।

#### রামকৃষ্ণ নগর

"ঠাকুর রাষক্ষ্ণ পর্যকংসদেবের নাৰাছ্লাত্রে পঞ্জি क्षेत्रियाटक काकारकत क्षेत्रक केवाल केशमिट्यम दावक्रक मनत्। ভার আদেশাশে বহু ভ্ৰণদ। স্থায়ী অধিবাসী বারা ভারা कार्तिराज्य भारत माहे अन अहरक चलकारमत मरवा नाहारस्य সাহায় ও সহাত্তভিকে কেন্দ্ৰ করিয়া আগত উহাস্ত ভাই-বোনই চেটা করিবা গভিবা ভলিবে ক্লোকীর্ণ উচ্চভূবিতে अयम अक्र प्रमाद धेनियातम् । शिरमद नद निम शामीद अविवासी क प्रेमामास्य समावस शाहरो क क्रेमामिक माधार এই রামকৃষ্ণ নগরের ভিভি ক্লচ তইরাতে। স্বাই বৃবিতে গারিয়াতে ঠাকরের নামের সার্থকতা আতে আর ব্রিভে भाविशाल-(ह्रेशेय जनाया किहरे गारे। अब भव बीटा बीटा এই উহাত উপনিবেশকে কেন্দ্ৰ করিয়া গভিয়া উটিয়াছে ব্যইছল, পোষ্টাশিস, বাজার প্রভৃতি আরও কভ কিছু। তার গর বিগত কেক্তরারীর ভালাভালায়ায় আগত উহাত্তনের গ্ৰহ্মপতির ক্ষা কেন্দ্রীর সরকারের কাষাত শাখার উরাভ গুৰুৰ্বসভি ও সাহায্য বিভাগ এথাৰে বিপুল সংখ্যায় उपायक चामध्य कविष्ठा चालाव-चिवित शहन करतम अवर সহাবের ক্ষম একট সারী কর্মকেন্দ্র সাণিত হয়। केंच रेगांनीर नवकात बरे कर्चटकल छुनिया नरेगांत बक নাদেশ বেওয়ার এভ বড় একটা পঠনবুলক কার্ব্যে সহসা নাৰাপ্ৰাপ্ত হওছাৰ কৰ্মী, উছাত্ত ও স্থানীয় অধিবাসীদেৱ মনে <del>্ৰুচুহু আৰাভ লাগিৱাহে তাহা প্ৰত্যক্ষণীয়া বুবিতে</del> रेविकारकम ।

"ভার পর রাষকৃষ্ণনার বিভাপীঠ। আল পরন সৌভাগ্য— সৌরবের কবা বে রাষকৃষ্ণনার আর্ল বিভাপীঠ রুগণং আসাম-বিকার ও ভারত-গরভারের নাহাব্য ও সহায়কৃতি লাভ সিবিবারে। এই বিকে হানীর অবিবাসী ও উরাভরুক বিকারের কাতে পরস কৃতিত। কিন্তু এত বে আনক, এত বে উৎসাহ ভবাপি ইছার মধ্যে প্রাণ নাই। ভাছার মর্থ ভাছাবন করিছে সিরা আমরা বুবিরাছি জনসাবারণের আকুল আবেদন, ভাছাদের প্রার্ণনার ঠাকুরের আবির্নাদ লাভের পরও, রামকৃক মিশন উপেকা না করিলেও সবিশেব মনোবোগ বিভেছেন না। জনসাবারণ চার বে রামকৃক বিভাগীঠকে আদর্শ বিভালরে পরিণভ করিবার জন্য সামকৃক মিশন ইছার পরিচালনার ভার নিজে প্রহণ করুন। আর্থিক, পারিপারিক অবছা ও শিকারভনের প্রবাক্ষমীর সব কিছু আদ্ বিভাগীঠের আছে বলা চলে। প্রভাবছার বারা আজ প্রমন্ত করিটিভ প্রভিত্তানকে নিজেদের হাভ থেকে অপরের হাভে তুলিরা দিভে চাহিভেছেন ভাছাদের সবিজ্ঞা ও ভ্যাগকে অভিনন্দিভ ও সাদরে বরণ করা উচিত বলিরা আমরা মনে করি। ইছার পর রামকৃক্ষ মিশনের কর্ত্তাক্ষের এই আদর্শ বিভাগীঠ পরিচালনভার প্রহণের পক্ষে সঙ্কোচ ও বিবার অবকাশ কোবার হা

করিষগঞ্চের "নবারুণ" পঞ্জিকা কংবেসের সমর্থক। ভাভে এই উপনিবেশ ও বিদ্যাপীঠ সম্বন্ধ বাহা প্রকাশিত হয়, ভার চূম্বক আমরা উদ্ধৃত করিলাম। আমরা প্রীরামকৃষ্ণ মিশমের কর্ত্তৃপক্ষের নিকট স্থানীর জনগণের মনোগভ ইচ্ছা প্রকাশের সাক্ষর ভাষনা করি।

কাশী-লক্ষো-কলিকাতা বিশ্ববিচ্যালয়

এই তিমট বিশ্ববিভালর সহতে নানা আলোচনা হইরা থাকে। সপ্রতি উভর-ভারতের নানা পঞ্জিলার একট সংবাদ প্রকাশিত হইরাছে, তারা গুরুত্বপূর্ব। উভর প্রবেশের রাজ্যালাল মি: বোদি ছির করিয়াছেন যে, এই ছই বিশ্ববিভালতে কোন উপাব্যক্ক (Vice-Chancellor) থাকিবেন না। ভিনি নিক্লেই ভাদের অব্যক্ষ। রাজ্যপালের ক্ষমতা ব্যবহার করিবার করিব কানা বার নাই। নানা কর্মা-ভ্রমার বব্যে একট কথা শোনা যার। লক্ষ্ণোরের আচার্য্য মরেল থেবের শ্রীর সূত্র নর। তিনি কিছু আবার কাশী বিভালরের উপাব্যক্ষ নির্ক্ত হইরাছেন। ব্যাপার কি গু আচার্য্যকী একটা বিয়তি দিলে স্থিবা হয়।

এলাহাবাদ বিশ্ববিভালনের অবস্থা পৃথক ভাবে বিবেচনা করা হইতেছে। বর্তনাম উপাব্যক্ষ ভক্তর কে, কে, ভটাচার্ব্য নিক্ষের পদে থাকিবেল। এই বিশ্ববিভালনের আর্থিক প্রভালন কিছুতেই নিউতেছে লা। অপুগদান কমিটর নিশোর্ট বিবে-চমার পর ভার একটা সুব্যবস্থা হইবে। লামবিকভাবে একটা গোলামিল কেওয়া হইবে। টাকা প্রাথির আনার-লয় বিশ্ববিভালয়ই ক্ষেতিছি রাষ্ট্রের হাত-বরা হইরা পভিতেছে। ভার কল কি হইবে ? কলিকাভা বিশ্ববিভালতে উপাব্যক শ্রীপভ্রাব্য বন্দ্যোপাব্যাহ্য বেক্তন প্রকৃত্য করিবেল। অবাং বালিক প্রায় ও হাকার টাকা ব্যর বাজিবে। বে লক্ত আশা-আকাজ্ঞা করা হইতেহে ভাহার পরিণতি সর্বসাপেক।
পুতরাং বৈর্ব্য বহিরা থাকিতে হইবে।

জামসেদপুর মজত্র আন্দোলনের নৃতন রূপ ভাষসেদপুরের "নব-ভাগরণ" প্রিকার ৩০শে ভাজ সংখ্যার মঞ্ছর ইউনিরদের পুরাতন মেতৃবর্গের অপ্যারণ সহছে বে আশা-আশ্চার কথা বলা হুট্যাতে ভাঙা প্রনিবাদবােগ্য।

আমরা আর্থিক শ্রেণ-বিভাগ বা শ্রেণ-সংগ্রাম প্রস্তৃতি সমাজভাৱিক বুলির সত্যতা খীকার করি না। তবুও লক্ষ্ লক্ষ্, কোট কোট মরমারী সক্ষরত হইরা নিক্ষেরে খার্থ রক্ষার ক্ষায় বে চেষ্টা করেন ভংগ্রতি দৃষ্টি রাধা রাষ্ট্রের ক্রত্ব্য বলিরা মনে করি।

"গভ ৮ই সেপ্টেম্ব কেবেল ইউনিয়ন হইছে প্রকলের অপসারণ কামসেলপুর মকছর আন্দোলনের ইভিহাসে এক নৃত্য অব্যার রচনা করিছ'ছে। এবাবং কামসেলপুরের মকছর আন্দোলনের গভি অনেকবার ক্রম হুইরাছে, জাবার পরিবর্তিভও হুইরাছে, কিছ ভাহাদের গভিভলী পৃথক ছিল। বিশরীভ ভাবাপর লোক অব্যা কল হারা ক্রম-পরাক্রের লড়াই হুইরাছে, কিছ একই ক্রভুক্ত হুই উপদলের ক্রম-পরাক্রের পালা ইভিপুর্বে কেবা বাম নাই। কংরেলী প্রকল, গোপাল ও সির্বের চৌবুরীর উপর অনাছা প্রভাব গৃহীত হুইলে ভাহাদের ছলাভিবিক্ত হুইরাছেন কংরেলী প্রীক্রশারীলোহন উপাধ্যার ও প্রীনারারণ রুখোপাধ্যার। উত্তর কলের লোকেরাই নিজেলের সক্রিয় করের করের করের। পাকেন।

কেবেল ইউনিয়নের গদীতে এই আরোহণ ও অবরোহণ আনসেনপুর মঞ্ছর কেত্রে বে আলোডন স্ট করিরাছে তাহার প্রতিজ্ঞিরা সূত্রপ্রদারী হইবে বলিরা মনে হয়। অব্যাপক আবহুল বারীর নেড্ছে কংগ্রেস ও মঞ্চর সংগৃঠনের মনের বে ঐক্য প্রতিষ্ঠিত হইবাছিল ইবা বারা তাহা চিরতরে তাতিরা গেল। আবার প্রতানের মঞ্চর কেত্রে অপ্রতিহত প্রতানের বর্ম হইরা গেল এবং কিছুদিন হইতে তাহার নেড্ছে বে বিরানের অভাব দেবা বাইতেছিল তাহা এইবার প্রকৃত মুল পরিপ্রহ করিল।"

### সিরিয়ায় ও থাই রাষ্ট্রে রাষ্ট্রবিপ্লব

জলপথে ও ছলপথে এই ছই রাষ্ট্রের ব্যবধান ভিদ-চার ছাজার রাইলের কর হইবে না। আকাশবানে এই ব্যবধান ৩০।৩২ ঘটার অভিক্রম করা বার। ছইট বেশের বর্ষ ও সংকৃতি বিভিন্ন।

ক্ষিত্ৰ এই দূরত্ব ও পার্থক্য রাইবিপ্লবের পথে কোন বাবা ক্ষার নাই। ছই রাইেই প্রবান নেনাপতি—আহিব এক শিশাক্তি ও শিন চুব আহ্ওরান—রাইপভিত্কে আইক করিবা প্রভাগ্ণর আহার ক্রিরাজ্যে—গ্রভ্রেছ বাবে। পশ্চিন- এশিরা ও পূর্ক-এশিরার আরও উদাহরণ আছে। ইরাণের প্রধান মরী ও সর্বাধান বিচারপতি বিহত হন নসভিবে। টাজকর্তানের রাজা আফুরাও নেইভাবে বিহত হন। পাকিছানের প্রধানমন্ত্রী বিহত হন এক জন পাকিছানী আক্লানের হাতে।
বেনন গাডীজী একজন হিন্দুর হাতে বিহত হন। বজবেশের প্রধান মন্ত্রী আউল সাম বিহত হইরাছিলেন লবতেও
মন্ত্রিকণীর নরপাপারে—নিজের ললের লোকের হাতে।
ইলোচীনে পৃহর্ছ চার বংসর ব্যাপিরা চলিতেতে। চীম-হাট্রে
সম্রতি একটা ব্যবহা হইরাহে। এই সব অভবির্বের শেষ
কোবার তবিতব্যই ভানেন।

সমন্ত বিশ্ব ভাবের রাজ্যে, বিশাসের রাজ্যে, রাই পরি-চালনার প্রভিত্ত ক্ষেত্রে অভবিরোধে অভিভূত। ইউরোপীর ইভিহাসে দেখিরাছি বে, উহার বিভিন্ন অঞ্চল পশ্ব ও বর্চ শতাস্থীতে এরণ ছর্থপার পড়িয়াছিল। লোকে বলিভ পৃথিবীতে সাবু-সত বুমাইভেছেন। বিংশ-শতাস্থীতে আমাদের সে লাছ্যাও নাই।

### সংস্কৃত পুঁথির তালিকা

ভারত গবর্ষে ক্রের শিকা-বরণালর এবেশের সকল সংস্কত পুথির ভালিকা প্রকাশের জন্য মালাক বিশ্ববিভালরকে অর্থ-সাহাব্য করিতে সম্বত হইয়াছেন।

প্রাচ্য সম্পর্কিক বৃদ্ধি ও গবেষণার জন্য ঐরপ তালিকার আবস্তকতা বহু দিন বাবং অস্কৃত হুইডেছে। টি, এন, আরেট্ন ১৮৯১-১৯০৩ সনের চেষ্টার সর্বাপ্রথম সংস্কৃত পুরির ভালিকা প্রথমন করেন।

গত ১৯৩৫ সদে ক্ষেক্ট ভারতীয় বিশ্ববিভালয়ের অহপ্রেরণায় বাঞ্জ বিশ্ববিভালয় মৃত্যভাবে সংস্কৃত পূর্ণিয় ভালিকা প্রণয়নের সিদ্ধান্ত প্রহণ করেন। উক্ত বিশ্ববিভালয়ে একট পূর্ণাল সংস্কৃত শিক্ষা-ব্যবহা আছে। উত্তার সন্নিকটবর্তী সরকারী প্রাচ্য হন্তলিপি প্রহাগায়ে অসংখ্য সংস্কৃত পূর্ণি আছে। ফলে ঐ কার্য্য বাঞ্জাল বিশ্ববিভালয়ের পক্ষে সহক্ষতর হয়। ১৯৪২ সদে ভালিকা প্রণয়নকার্য্য বন্ধ রাখা হয় প্রবং বিভীয় মহায়ন্তের পত্রে উহা পূমরায় আরম্ভ করা হয়। ভালিকাটীর প্রথম বন্ধ গত ১৯৪১ সদের স্কুম মানে প্রকাশিত হয়।

টী, এস, আত্রেট্সের ১১৯৫ পূঠার তালিকাট প্রথবন করিতে ১২ বংসর সমর লাগে। মূতন তালিকা প্রথবন করিতেও নাজাত বিশ্ববিভালরের সম-পরিবাণ সমর লাগিবে। ইছা ১৬ট বতে প্রকাশিত হইবে এবং ইছার পূঠা-সংব্যাহইবে ৮,০০০। ইছা প্রথম করিতে অভিবিজ্ঞসংব্যক্ত করিছারী, মূত্রণ ও অভাত বহুচ বাব্য আহ্বানিক ৮০,০০০ টাকা ব্যব হুইবে।

## কি নাম রাখা যায় ?

### জীগিরীক্রশেখর বস্থ

ছেলেমেয়ে হইলে ভাহার কি নাম রাখা হইবে ইহা লইয়া কোন কোন বাপ-মায়ের চিস্তার অবধি থাকে না। ভাঁহারা এই প্রশ্ন নিকেরা সমাধান করিতে না পারিলে হয়ত বা কোন সাহিত্যিকের নিকট উপস্থিত হন এবং নামটা পছলমত না হওয়া পর্যন্ত ভাঁহাকে বিব্রত করিয়া ভোলেন। এরপ ক্ষেত্রে যে নামের উপর পিভামাতা বিশেষ শুক্ত আরোপ করিতেছেন ভাহা না বলিলেও চলে। 'নামেতে কি আসে যায়' একথা ইহারা স্বীকার করেন না। সাধারণ লোকে নামকরণে তত মনোযোগী না হইলেও এ বিষয়ে যে কতথানি সাবধানতা দরকার সে সম্বন্ধে আমাদের প্রাচীন শাল্পকারগণ খুবই অবহিত ছিলেন। মহুসংহিতা, বিষ্ণুপুরাণ প্রভৃতি গ্রন্থে নামকরণের বিধিনিয়েধের আলোচনা আছে। বিষ্ণুপুরাণ বলিতেছেন:

ততক নাম ক্বীত পিতৈব দশ্বেহনি।
দেবপূৰ্বং নরাঝা ছি শম বম'াদি সংযুত্য ।
শবে তি ব্রাহ্মণভোজং বমে তি ক্রেসংগ্রহম ।
ভঙাদাাছ কং নাম প্রশন্তং বৈশ্বর্তাং ।
নামকল্যং ক্রেপেং বা নাম ক্র্যাং সমাক্ষম ।
নাজিদীবং ন হুবং বা নাতি ভর্কক্রাবিতম ।
হুবোচার্বভ তরাম কুর্বাদ্ধ বং প্রবশাক্ষম ।

অর্থাৎ, জরের পর দশ দিন অতিবাহিত হইলে পিতা নামকরণ করিবেন। নামের প্রথম পদ কোন দেবতার নামাস্থায়ী হইবে। নামের শেষে শর্মা বর্মা ইত্যাদি যুক্ত থাকিবে। প্রান্ধণের নামে শর্মা, ক্রিরের নামে বর্মা, বৈশ্বের গুপ্ত ও শুল্রের দাস যোগ করিতে হইবে। অর্থহীন, অপ্রশন্ত, অপশন্তমুক্ত, অমকলবাচক এবং বীভংস রূপ নামকরণ করিবে না। নামের অক্ষরগুলি বেন সম অর্থাৎ ব্যা হয়। নাতিদীর্ঘ, নাতিহ্রন্থ, অধিক যুক্তাকরবর্জিত, স্থোজার্য এবং শ্রুতিমধুর নাম রাথা উচিত।

লোকগুলির বিশদ ব্যাখ্যা দরকার। জন্মের পর দশ দিন অতিবাহিত হইলে শিশুর নামকরণের ব্যবস্থা আছে, কারণ প্রাচীনকালে দশ দিন পরে নবজাতকের অশৌচাস্ত হয় বলিয়া ধরা হইত। কেহ কেহ বা বার দিনে অথবা এক মাস পূর্ব হইলে অশৌচাস্ত ধরিয়া নামকরণ করিতেন। এ সম্বদ্ধে প্লোক আছে, বথা:

নামধেনং দশমাঞ্চ কেচিদিছন্তি পাৰ্থিব। যাদভামধনা নাত্ৰাং মানে পূৰ্ণে তথা পৰে। অপৰে পূণ্য তিথি বা মুহুৰ্ত কিংবা নক্ষত্ৰাদি বিচার করিয়া নামকরণ করিতেন। অলপ্রাশনের সময় অধুনানাম রাখা হইয়া থাকে।

নামের আত্তে পুরুষবাচক কোন দেবশব্দ রাধার উপদেশ আছে। অনেকে দেবতা বলিতে কুলদেবতাই বঝিতেন। নামের জাদিতে দেবতাবাচক শব্দ থাকায় তৎপূর্বে 'শ্রী' লেখার প্রথা প্রচলিত হইয়াছিল অতুমান করা याय, यथा, औकानिमान न्या। এशास कानिमान भवाछि পুরুষবাচক এবং কালী কুলদেবতার নাম। বিশিষ্ট ব্যক্তির নামান্ত্রসারেও নামকরণ হইতা থাকে. বেমন, শ্রীনারদমূনি বায়, শ্রীগৌতম দত্ত ইত্যাদি। আক্রকাল যে প্রকার তিন পদের নাম পাওয়া যায় পূর্বে তাহা অধিক প্রচলিত ছিল মনে হয় না। 'শ্ৰীমহেক্সকুমার দাস' এখন এইক্স নামের **ठनन हरेशाहि। श्रेवांकाल हेश व्यालका बद्धा शह युक्** নাম বেশী চলিত ছিল, যথা, এবিফু শর্মা। এ কথাটার আর পূর্বের মর্যাদা নাই। বেডিওতে আক্তকাল 'শ্রীচাচিল' ইত্যাদি নামও শোনা যায়। কেহ কেহ ত 🕮 একেবারেই পরিত্যাগ করিয়াছেন। তিন শব্দের বড নাম হইলে আর এক অস্থবিধা দেখা বায়। লোকে অনেক সময় সমাসবদ্ধ পদ ভাঙিয়া ব্যবহার কবেন। ধেমন, 'স্থমতিকুমার গুপ্ত' এবং 'দেবেজ্রমোহিনী দাসী' সংকেপে জীমান স্থমতি ও बीमजी (मरवस हम। हार्षे नात्मव वथा, वर्गामान अवः বিষ্ণপ্রিয়ার ঐরপ ছুর্গতি হয় না।

অৰ্থহীন নাম বাধা অবিধেয় কিন্তু আঞ্চকাল এমন অনেক নাম দেখা বায় বার অর্থ হয় না. বথা, বিপেঞ্জুমার, विवनारमाहिनी हेजामि। अञ्चलक नाम, वधा, मानिकनान, मिश्रयत, खाररियत, श्वाननाथ हेल्यामि। प्रमुक অথবা লজাবহ নাম এই বর্গের অন্তর্গত। অপশব্দযুক্ত नारम अज्ञोन ভাবের উদয় হয়। বিষ্ণুপুরাণের টীকাকার শ্রীধর স্বামী বলিতেছেন, 'অপশব্দং গুরুকেশানি'। ইহার चाधुनिक नमूना, यथा, मिशचत, विवनना (मवी। चमननवाहक नाम, रक्षा, श्रामानशिक, दाह देखानि। (र मुक्न नास्मद সহিত কোন বিপদ, দুর্ভোগ বা দু:খন্ত্রনক ইতিহাস ভড়িছ আছে তাহা ইহার অন্তর্গত। সীতা নামের বহু প্রচলন দেখা বাইলেও ইহা অমকল্য বলিয়া পরিগণিত হয়। জ্ঞান্সিত নামে স্থার উদয় হয়। মারোঘাড়ীদের মধ্যে বিশেষ সম্মানার্ছ क्তि কেছ যদি বাঙালীর এই নাম বাধেন ভবে ভাহা জুঙাঞ্চিত বলিয়া বিবেচিত হইবে। ভূরিবর্মদেন, জরৎকারু, অসিত ইত্যাদিকে এই পর্বায়ে ফেলা বায়।

তুই অক্ষর বা চারি অক্ষরযুক্ত নাম অসম তিন অক্ষর বা পাঁচ অক্ষরের নাম অপেকা প্রশন্ত। নামে অধিক যুক্ত অক্ষর বা অধিকসংখ্যক অক্ষর না থাকিলে তবেই তাহা স্থোচ্চার্য হয়। বেছটেশ্বর, ঝঞ্জানিল প্রভৃতি নাম মোটেই স্মধ্র নহে। সরোববে-হাত্মম্থী-নলিনীস্ক্রমী নাম প্রবণমধ্র হইলেও অনেক অক্ষরযুক্ত বিদ্যা পরিভ্যাক্তা।

পূর্বে বে স্কল কথা বলিলাম তাহা ডাকনাম সম্ব্রে থাটে না। বাঙালীর প্রায় ইছটা নাম দেখা বায়, একটা পোশাকী ও অপরটি আটপোরে। আটপোরে বা ডাকনাম আত্মীয়স্থলন আদর করিয়া রাখিয়া থাকেন। ঘণ্টু, পচা, গলা, ধসা প্রভৃতি নাম বাপ-মায়ের যতই আদরের হউক তাহা অপ্রশস্ত বা জ্ঞুন্সিত। অনেক সময় ডাকনাম চলিত হইয়া বায়, তখন সাধারণে ঐ নাম ব্যবহার করে। দাড়ি-গোঁফওয়ালা চল্লিশ বংসরের প্রোচ্কে খোকাবারু বলিলে বিসদৃশ শোনায়। কিছুদিন আগে রেডিওতে হোনাবারু এই নাম ভনিয়াছিলাম। বক্তা নামটি উচ্চারণ করিয়া নিজেই বলিলেন 'কি নাম রে বাবা!'

শাল্পে বিপবীত বিধান থাকিলেও প্রাচীনকালেও অনেকেরই এখনকার ডাকনামের মত অর্থহীন অপ্রশস্ত বা জ্ঞাপিত নাম ছিল। বছ উপনিবদোক্ত ব্যক্তির নাম এই প্রকারের। নচিকেতা, বৈক প্রভৃতি নাম অর্থহীন। গর্গ (অর্থাৎ যাঁড় বা কেঁচো), বক, মণ্ডুক, ভিত্তির, শেতাখতর প্রভৃতি নাম অপ্রশন্ত। হছমান, জামুবান্, কুকুর ইত্যাদি নামও এই শ্রেণীর। ঐতবের প্রভৃতি নাম জুগুলিত। প্রাচীন ভারতবর্ষে রাজাদের নাম অনেক সময় খুবই मः किश्र इहेफ, रथा, तकि, मिगीन, तचू, व्यक, नृत्र, भाकु, मक् कूक हेजापि। ज्यान्धर्यत्र कथा वह रा, वह मकन नारमञ्जू शूर्व भी भरक्ष अरहान रहना वाह ना विक् दाम এবং কৃষ্ণের পূর্বে 🕮র উল্লেখ আছে। অদ্ধরাজগণের ও ভাঁহাদের অধীনম্ব সামন্তশাসকগণের শিলালিপিতে দেখা বায় বে. কেবল বাজাবাই ও বাজবংশীয় শাসকেরা শ্রী ব্যবহারে অধিকারী ছিলেন। যতই প্রতিপত্তিশালী হউন না কেন সাধারণ শাসকগণের নামের পূর্বে জী বোগ করা নিবিছ ছিল।

বিষ্ণুবাণে কেবল পুক্ষদেরই নামকরণের বিধিনিধে আছে এবং পিডাকেই পুত্রের নাম রাধিবার অধিকার দেওয়া হইয়াছে। মছুসংহিতার পুক্ষবের নামকরণ বিধি বিষ্ণুবাণের অভ্রন্ত। ত্রীলোকের নামকরণ সম্পর্কে মছু ২০৩০ স্লোকে বলিভেছেন: बीनाः व्याजमक्ताः निल्डोर्वः मय्नाहतः । मकनाः नीर्वर्गाजमानीर्वाणाजिमानवर ।

षर्थाः, त्व नाम स्वर्थाकार्य इष्व, निष्ट्रेयकाराकिक ना इष्व, त्य नात्मय ष्यनायात्म षर्व यूया याय, यादा मत्नाद्य अवः मक्नवाकक, यादाय ष्यत्य भीषं षय थात्क अ यादा फिकायत्म ष्यामीर्वाष यूथाय, खोत्नात्कय अहे श्रवकाय नाम याथा फिकिछ। यत्माषा, स्थवा हेकापि नाम अहे हिमात्य श्रम्थ । मञ्च भूनक २०२.५० श्लात्क वनित्कत्कः:

> নক'বুক্ষনদীনামীং নান্তঃপর্বতনামিকাং। ন পক্ষাহিপ্রেয়ানামীং ন চ ভীষণ নামিকাং। ক্ষাঙ্গাঙ্গীং সৌমানামীং হংসবারণ গামিনীং। তমুলোমকেশ্যানামীং মুধ্যীমুধ্যেং দ্বিরং।

অর্থাৎ, নক্ষত্র, বৃক্ষ, নদী, অন্তঃপর্বত, পক্ষী, দর্প ও দাসন্থবাচক অথবা ভয়াবহ নামধারিণীকে বিবাহ করিবে না। বে স্ত্রী অবিকলালী, মনোহরনায়ী, হংস বা পঞ্চগামিনী, যাহার লোম ও কেশ মুত্ল এবং দন্ত কৃত্র এমন কোমলালী স্ত্রীলোককেই বিবাহ করিবে। এই নিয়ম অকুসারে রোহিণী, রেবতী, বিশাধা, কৃত্তিকা, গলা, বমুনা, স্থপণা ইত্যাদি নাম অবাস্থনীয়। এরপ নিষেধের কারণ বুঝা বায় না। অন্তঃপর্বত অর্থে বে পশ্চিম দেশীয় পাহাড়ের পিছনে সূর্য অন্ত বায়। কুলুকভট্ট স্থীয় টীকায় অন্তঃপর্বত শব্দের অর্থ করিয়াচেন মেচ্ছপর্বত।

ভীষণনামী স্ত্রীলোককে বিবাহ করিবে না বলা হইয়াছে। মনে হইতে পারে পিভামাতা ষধন নামকরপ্রে
জন্য দায়ী তথন নিরপরাধা কন্যার উপন্ন এ অবিচার
কেন ? অন্থাবন করিয়া দেখিলে বুঝা যাইবে যে, এখানে
শাস্ত্রকার বিশেষ ক্ষল্ম দৃষ্টির পরিচ্য দিয়াছেন। যে বাপ-মা
ক্র্যার অবাহ্নীয় নাম রাখেন ভাঁহাদের মানসিক
অস্বাভাবিকতা ফ্র্লান্ট। এরপ ক্ষেত্রে যে কন্তার অথবা সেই
কন্যাজাত সন্থানের বংশজ মানসিক রোগের সন্ভাবনা
আছে তাহা সহজেই অন্থমেয়। অন্তুত নাম রাধাও
মনের বিকারের কক্ষণ। শ্রীমহন্মদ উমাস পূর্ণানন্দ পাল
এই নাম পিতামাতার উৎকট ধর্মসমন্বয় আকাক্রার পরিচারক।

এক এক যুগে এক এক প্রকাবের নামের সমধিক প্রচলন দেখা বায়। বহু প্রাচীনকালে বাঁড় অভিসন্মানিত প্রাণী বলিয়া পরিগণিত হইত। আরং মহাদেব ব্যবাহন নামে খ্যাত ছিলেন। অনেকে র্বলবান ব্বে চড়িয়া যুদ্ধ করিতেন। ব্যাকণি, ঋষভ, ব্যক্তে প্রভৃতি ভবনকার দিনে অতি প্রিয় নাম ছিল। প্রাচীন কাল হইতে আরম্ভ করিয়া অর্বাচীন কাল পর্যন্তে বে সকল রাজা ভারভবর্বে রাজ্য করিয়াছিলেন প্রাণে ভাহাদের নাম গুড় ছই-

য়াছে। এই তালিকা পাঠ করিলে দেখা বাইবে বে. নাম-করণে রাজারাও বগপ্রভাব এডাইতে পারেন নাই। যদ্ধান কাৰ্যে ও বাহন হিসাবে কালক্ৰমে অৰু ব্যেব স্থান অধিকার করে। সেই সময়ে বাজগণের নামে অশ্ব শব্দের চডাচডি रमथा याग्न. यथा, विश्वशंत्र, युवनात्त्र, वृहक्त्र, कृवनग्रात्र, पृष्ठात्र, বার্ষণ, সংহতাখ, কুশাখ, পুষদখ, বোহিতাখ ইত্যাদি। আর শব্দের প্রাধান্ত কমিলে রথ শব্দের প্রচলন হয়। তথনকার রাজাদের নাম. যথা, স্থরথ, দশরথ, মীনরথ, সভারণ, বৃহত্তপ, ভামুরণ, চিত্ররণ, শুচিরণ ইত্যাদি। পরবর্তীকালে বধন পৌরাণিক গৌকিক মানবকল শেষ হইয়া দিতীয় কৃত বা সত্যযুগ আসিয়াছিল তখনকার বাজাদের নামে ক্বত বা সত্যশব্দ যুক্ত দেখা যায়, যথা, কুতঞ্জয়, সত্যঞ্জিত ইত্যাদি। পরে আরও কিছুকাল গত হইলে भित्र मक्युक नात्मद लाहर्ष त्रथा नियाहिन, यथा, श्रुष्णिमित्र, অগ্নিমিত্র, বস্থমিত্র, বজুমিত্র, ভূমিমিত্র ইত্যাদি। শেষ অজ্ঞবাজগণের কালে বৈদিক হিন্দুধর্মের পুনরভ্যুত্থান ঘটিয়া-ছিল। তথনকার নাম, বথা, শিবত্রী, যজ্ঞত্রী, চক্সত্রী, বেদত্রী, শক্তিনী ইত্যাদি। আজকাল রাজা ও জমিদার শ্রেণীর বাজিবর্গের নামের সহিত অনেক কেতেই নারায়ণ শব্দটি যুক্ত দেখা যায়, যথা, নুপেন্দ্রনারায়ণ, জগদিন্দ্রনারায়ণ, वारमञ्जू श्रमामनावायन झेळामि। माधावरन्त्र मर्द्या এधन हैन जवर नाथ अथवा हन किरवा क्यांत्र मरश्रुक नाम लाक-श्रित्र इटेशारक, वर्षा, त्मरवन्त्रमाथ, कार्किकवन, नरवन्त्रकृमाव, हेजानि। चटनमक्रमात, हदशायांनी नाटम चटननीवृटगत প্রভাব লক্ষ্মীয়। অনেক সময় একই বংশের সন্তানদের সমাৰ্থবাচক নাম বাখা হয়, যথা, চাবি ভাতাৰ নাম চন্দ্ৰনাথ, সোমনাথ, শশিনাথ এবং শশাহনাথ।

সংস্কৃত ভাষা ৰাংলা, হিন্দী, মারাঠী প্রভৃতি ভাষার জননী।

এ সমত ভাষার প্রচুর সংস্কৃত শব্দ দেখা বার। আশ্কর্ষের
কথা এই বে, সংস্কৃত শব্দ অক্সান্ত ভাষার বত বিকৃত হইয়াছে
বাংলার তত নহে। ইহার কারণ যাহাই হউক না কেন
ফল দাঁড়াইয়াছে এই বে, বাংলা নামে প্রায়ই তক সংস্কৃত
শব্দ পাওয়া যায়। বাঙালী নাম রাখে দেবেক্র, বিহার বা
উত্তর প্রদেশে ভাহা দেবিন্দর হয়। কোন কোন প্রদেশে
নামের সহিত পিভূপরিচয় ও আদি বাসস্থানের নির্দেশ
থাকে। কুশলটাদ চুণিলাল জয়পুরিয়া—এই নামে বুঝা যায়
বে, কুশলটাদের পিতা চুণিলাল এবং ভাহারা জয়পুরের
অধিবাসী। মোগল আমলেও ইহার দৃষ্টান্ত আছে;
বথা, ভীমসেন বুর্হানপুরী, অর্থাৎ বুর্হানপুরের ভীমসেন।
প্রাচীনকালে অনেকে বংশের বা প্রাদেশের নামে পরিচিত
ইইতেন, বথা, রাঘ্র অর্থাৎ ব্রুবংশক্ষাত, কৌশল্যা অর্থাৎ

কোশলদেশীয়া। মাতার নামাছ্যায়ীও নামকরণ হইড, বথা, কৌন্তের, গৌতমীপুত্র, ঐতবেয়। এখনও এইরপ নাম শুনিতে পাওয়া বায়। কেবল বে অক্সাপ্রেলনের লোকের নামেই আদি বাসভানের ইন্ধিত পাওয়া বায় তাহা নহে। বিশেষজ্ঞদের মতে বাঙালী রাহ্মণদের পদবী, বেমন গলোপাখ্যার, চট্টোপাখ্যায় ইত্যাদি স্থান-নির্দেশক। রত্তি অন্থ্যায়ী পদবীও কোন কোন স্থলে দেখা বায়, বথা, কান্থনগো, মহলানবিশ, আচার্য, চ্ধওয়ালা, ঝুনুঝুনওয়ালা ইত্যাদি।

নাম দেহের প্রতীক। দেহ কণভবুর, নাম তাহা অপেকা অনেক অধিক দিন স্থায়ী। মানুষ গত হইলেও তাহার নাম বহিষা ধাষ। কীডির্যন্ত স জীবতি। কীর্তি-মান পুৰুষ মত হুইলেও নামের মহিমায় বাঁচিয়া থাকেন। নামের স্থায়িত কীর্তির তারতমোর উপর নির্ভর করে। কাহারওনাম তই-এক পুরুষ গত হইলে লোকে ভুলিয়া ষায়, কাহারও বা নাম সহস্র বংসরাধিক কালেও লোপ পায় না। পুরাণে গল আছে মহারাজ ইন্দ্রায় পুণাকাজ করিয়া স্বর্গে গিয়াছিলেন। বছ যুগ পরে তাঁহার স্বর্গভোগ কাল শেষ হইয়া আসিলে দেকভারা উাহাকে বলিলেন, 'মহারাজ, এইবার আপনাকে মর্জো ঘাইয়া পুনরায় ব্রুগ্রহণ করিতে হইবে কিন্তু যদি পথিবীর এক প্রাণীরও আপনার নাম শ্বরণে থাকে তবে আপনাকে শ্বর্গ হইতে চ্যত হইতে হইবে না।' অতঃপর দেবগণ মাত্র্যী তত্র ধারণ করিয়া ইন্সত্যুমের সঙ্গে ধরাধামে আসিয়া উপস্থিত চইলেন। তাঁহারা অনেক লোককে প্রশ্ন করিলেন কিন্ধ কেহই বলিল না যে ইন্দ্রতামের নাম শুনিয়াছে। অবশেষে এক অতি বৃদ্ধ ব্ৰাহ্মণ ভাঁহাদের বলিলেন, 'আপনারা ভবতি কাককে জিঞাসা কলন, ভিনি कानित्व कानित्क शादान हेळकाम तक। जामदा विदकान দেখিতেছি তিনি ঐ বটবুকে বাস করেন, তাঁহার বয়সের ইয়তা নাই।' দেবগণ ও ইশ্রতাম ভূষতি কাকের নিকট গেলেন। ভ্ৰতি বলিলেন, 'আমি ইক্সতামের নাম ভনি নাই। নদীতীরে ডিস্কিড়ী বৃক্ষে এক বক বাস করে। তাঁহার নাম ভালভ্জ্ম। তিনি আমার অপেকাও প্রাচীন। তাঁহাকে একবার জিঞ্জাসা করিয়া দেখুন।' ভূষণ্ডি দেবপণ ও বাজাকে সংশ লইয়া ভালজভ্যার নিকট গেলেন। ভাল-জ্জা বলিলেন, তিনিও ইম্রতান্নের নাম শুনেন নাই। তিনি পরামর্শ দিলেন বে, দূরবর্তী এক জলাশয়ে অকুপার নামক এক কুর্ম বাস করেন, তাঁহার অপেকা অধিকবয়স্ক প্রাণী ইহলগতে আর নাই, তিনি হয়ত ইল্লচায়কে চিনিতে পারেন। ভালজ্ঞা পথ দেখাইয়া ভাঁহাদের স্কল্কে লইয়া অকুপারের নিকট উপস্থিত হইলেন।

অকুপারকে প্রশ্ন করিতে ভিনি আবেগভরে বলিলেন, 'মহারাজ ইন্দ্রভূরের নাম কে না জানে। ভিনি পূর্বে এক যক্ত করিয়াছিলেন এবং দক্ষিণাশ্বরূপ ব্রাহ্মণদের এত গাভী দান করেন বে, ভাহাদের ক্ষ্রাপ্রে মৃত্তিকা উৎক্ষিপ্ত হইয়া এক মহান সরোবরের স্টে করে। আমি সেই সরোবরে

এখন পর্যন্ত ক্ষরে বাস করিতেছি।' সকল কথা শুনিয়া দেবগণ ইক্রতায়কে বলিলেন, 'মহারাক্ত আপনি ধনা; এখন পর্যন্ত ক্ষপতে আপনার নাম কীতিত হইতেছে। আপনার ক্ষরিয়া অক্ষয় হউক।'

# জননী জন্মভূমিশ্চ—

এনির্মলকুমার রায়

দক্ষিণে নাভিউচ্চ রাজমহল শৈলমালা, উত্তরে অতিবিভ্ত বালুচর, ইহারই মধ্য দিয়া প্রবাহিত গলা। বর্ষায় আবর্জ-মধী গলা তুকুলব্যাপী জলোচ্ছাদে দিগন্ত প্লাবিত করিয়া গ্রাম, জনপদ গ্রাস করে আর শীতে ও গ্রীমে ক্ষীণ জলধারা-সমূহ অসংখ্য কৃত্ত-বৃহৎ চর স্পষ্ট করিয়া আপন গতিপথকে সর্ণিল কবিয়া ভোলে। ভাঙা-গড়ার, বিনাশ ও স্পষ্টির এই কাজ যুগ যুগ ধবিয়া চলে।

ওপারে সক্রিগলি ঘাট, এপারে মণিহারি ঘাট। ওপারে বড় লাইনের বড় গাড়ী, এপারে ছোট লাইনের ছোট গাড়ী। নদী পাবাপার ষ্টীমারে করিতে হয়। যাত্রী-সাধাবণ ভারত বিভাগ ভূলিয়া বান, কিছু একা নদী বিশ ক্রেশের ব্যবধান সন্থ করিতে চান না। সক্রিগলি-মণিহারি পারাপারের কষ্টে অতিষ্ঠ হইয়া তাঁহারা রেল-কর্তৃপক্ষকে বে সব স্ক্মধুর সম্ভাষণে আপ্যায়িত করেন তাহা গাছে লিখিবার মত নয়।

রাজিতে দিনে, বর্ধায় শীতে, প্লাবনে শুক্কভায়, ষ্টীমার ঘাটে লাগে। সমুখেই ট্রেন দাঁড়াইয়া থাকে। সেই থড়ের ঘর, ইলেক্ট্রিক লাইট, ছোট ইঞ্জিনের তীত্র চীৎকাব, মজত্বদের হুড়াহুড়ি; মণিহারি ঘাট। কর্মীরা ভানে আব্দু বেখানে মণিহারি ঘাট কাল সেথানে প্রকাণ্ড চব। কাল বেখানে ঘাট আব্দু সে কায়গাটা গলার গভীর ব্লুলজেন। ছয়-সাত মাইল ব্যাপিয়া মণিহারি ঘাটের বিভেন্ন শুতুত্তে এই খান পরিবর্জন।

ফান্তন মাস। পলাশে শিম্লে, কোকিলে মলয়ে বসস্ত আদিয়াছে, কিন্তু সে কোথায় ? ধৃ ধৃ করে বালুচর। দিনেব প্রচণ্ড তাপে ভোরে হইতেই বালি ভাতিয়া উঠে। একটু বেলা হইলেই ধৃলির ঝড় বহিতে থাকে। বৌল্র-ভাপ, ফান্তনের লু উপেকা করিয়া মঞ্চুরের দল মাল

উঠায়, নামায় আর বেল-কর্মচারীরা পাট, চা, চিনি, চাল, আটার হিসাব রাখে। স্বাস্থ্যকর পশ্চিমের অধিবাসীরা এই সময়ে দরজা-জানালা বন্ধ করিয়া নিস্তান্থথ উপভোগ করেন আর কলিকাভার শিক্ষিত ভদ্রসমাজ বৈহাতিক পাথার নীচে ও ধস্ধস্-পর্দার পশ্চাতে আপিসের কাজ করেন। রেলের কিছ দিন-রাত্রি নাই, শীত-গ্রীম্ম নাই, মলম্ব-লুনাই। রেলের চাকা চলিতে থাকে, রেলের মজত্বর কর্মচারী থাটিতে থাকে।

এমন সময় আসিল উবাস্তর বন্যা। ফাস্কনে আলের বন্যানয়, এ মাফুষের বন্যা। দলে দলে, দিনে-বাত্তিতে, উবাস্তর দল মণিহারি ঘাটে নামিতে লাগিল। কোথা হইতে আসিতেহে ইহারা ? চট্টগ্রাম, কুমিলা, ময়মনসিংহ, বরিশাল। তারপরে শিয়ালদহ ষ্টেশন, তারপর এ ক্যাম্পাণে ক্যাম্পা। তার পরে ? কে জানে কোথায় ? জলপাইগুড়ি, আলিপুরত্যার, কুচবিহার, আসাম।

হঠাৎ সন্ধ্যায় খবর স্থাসিল রাত্রি স্থাটটায় উবাস্ত-বোঝাই এক ষ্টীমার স্থাসিবে, সারা রাত্রি মণিহারি থাকিয়া ভোবে বিভিন্ন গস্তব্য স্থানে বাইবে। একে ঘাটষ্টেশন ভাহাতে রাত্রি, ইহারা থাকিবে কোথায়, খাইবে কি ?

সমন্ত দিন বাণিষা ঝড় বহিষাছে, চতুর্দ্ধিক বালিতে বালিময়। কর্মচারী, মজহুর, ঠিকাদার সকলে অবসন্ত । কিছু রেলের কর্মচারীরাও মাছুষ। মাহুষ মাছুষকে না দেখিলে কে দেখিবে ? স্বেচ্ছাসেবকবাহিনী গঠিত হইল; চাল ডাল জোগাড় হইল; বালুচরে অজস্র চুলীতে আগুন জ্লিয়া উঠিল।

বধাসময়ে জাহাজ ঘাটে ভিড়িল। দলে দলে নরনারী শিশু-বৃদ্ধ-যুবা নামিতে লাগিল। জনাহারে জনিস্তার ক্লশ, রৌত্র-জলে কুক্ষ, পরিধানে শতছির বন্ধ; হাতে, মাধার, কাঁধে পোঁটলা-পুঁটলি, হাঁড়ি, বাসন, কাঁধা, পাটি, হ'কা, মুখে অভগান্ত নিরাশা; গায়ে বিষম গন্ধ । অম্পান্ত জ্যোৎস্নালোকে সাদা বালু ঝিক্মিক করিভেছে। তাহার উপরে দলে দলে সারি সারি কাহারা চলিতেছে? মাহুব, না মাহুবের জীবন্ত কন্ধাল? হৈ চৈ ভাকাভাকি, ছুটাছুটি, চট্টগ্রাম হইতে বরিশালের ঐশ্ব্যময়ী বাংলা ভাষার অপূর্ব্ব বৈচিত্রা!

ধাওয়ার পালা আরম্ভ হইল। এমন রুশকায় মাহ্রষ এতগুলি ধায় কি করিয়া! থিচুড়িতে বতটা চাল ডাল ডভটা মণিহারির বালি। কিন্তু কে তাহা গ্রাহ্ম করে? ফান্তনে এদিকে কলেরার প্রাত্তাব স্বাভাবিক। ইন্ডেক্শন, ব্লিচিং পাউভার, ফিনাইল, ডাক্ডান, মেপর ঘাটকে স্বস্থ রাখিতে চেষ্টা করে। কিন্তু এত রাজিতে কে কাহার কথা ভনে, কে স্থান-স্বস্থান বিচার করে?

রাত্রি একটায় হঠাৎ একজন স্বেচ্ছাসেবক আসিয়া বলিল, 'ভাক্তারবাবু, শিগ্দীর আহ্ম। একটি স্থীলোকের অবস্থা ভাল নয়।' ভাক্তার হাতে ব্যাগ লইয়া ঈষৎ বিরক্তিপূর্ণ স্বরে বলিলেন, 'ব্যাটাদের তুই মাসের খাওয়া এক দিনে খাওয়া চাই, চল্।'

চবের উপরে এক অতি ক্লশকায় নারীদেহ পড়িয়া আছে। বয়স ১২ হইতে ৩২ যাহা কিছু হইতে পারে। পরিধেয় কজ্জা নিবারণের পক্ষে যথেষ্ট নয়…।

ভাক্তারবারু কণকাল দেখিয়াই বলিলেন, 'আর দেরী নয়, একে কোথায়ও নিতে হবে; প্রসব-বেদনা উপস্থিত হইয়াছে।'

ষেচ্ছাসেবক ছুইটি শিহ্বিয়া উঠিল। এই বিন্তীর্ণ বালুচর, অসংখ্য লোকের ভিড়। খড়ের তৈরি বিশ্রামাগারে ভিলমাত্র ধারণের জায়গা নাই। একে কোথায় লইয়া বাইবে? কিছ উপায় নাই। অনভিদ্বে ছিল টালি ক্লার্কদের খড়ের ব্যারাক। রোগীর চেয়ারে ভূলিয়া মৃতপ্রায় স্ত্রীলোকটিকে সেধানে লইয়া যাওয়া হইল। আত্মীয়ম্বজন কেহু আছে কিনা জানা গেল না। থাকিলেও তাহারা বৃদ্ধিমানের মত গা-ঢাকা দিলেন। কি বঞ্চাট এই অসময়ে, এই অস্থানে।

ব্যারাকে উপস্থিত হইয়াই ডাজার পরম বত্নে জীলোকটিকে বাঁশের মাচার উপরে শোয়াইয়া দিল এবং দৃচ্ছরে
বিলি, 'গরম জল আর ঘরে মাত্র একজন বেচ্ছাদেবক। না
ছিল বন্ধপাতি, না ছিল জন্য কোন ব্যবস্থা। বাহিরে সকলে
উৎকর্ণ হইয়া রহিল। ঘণ্টা ছই পরে নবজাত শিশু তীত্র
ক্রন্ধন-ধ্বনিতে আপনার আবির্ভাব ঘোষণা করিল।
চত্দিকে দিগস্ভবিস্তারী বালুচর, সমুধে ক্রীণপ্রোতা বছধাবিভক্ত গলা, ওপারে নীলাভ রাজমহল পর্বতমালা, উপরে
অনল্র আকাশে থণ্ড চাদ—নবজাত শিশুর তীত্র চীৎকারক্রনি বালুচর পার হইয়া, গলা উত্তীর্ণ হইয়া, রাজমহল গিরিশ্রেণীতে প্রতিহত হইয়া বুঝিবা সমস্ত আকাশ ছাইয়া
ফেলিল। জগতে জগতে, নক্রে নক্ষত্রে মানবশিশুর অন্ধবার্ত্তা ছড়াইয়া পড়িল।

ডাক্তার বাহিরে আসিয়া বলিল, একটি স্থলর শিশু জনিয়াছে কিন্তু মাকে রক্ষা করিতে পারিলাম না।

বাবি প্রভাত হইল। পুণাসলিলা গলার তীবে মৃতদেহ
সংকার হইল। একটি উবাস্ত-দম্পতি শিশুটিকে গ্রহণ
করিতে রাজী হইল। সকলে মিলিয়া শিশুর নাম রাখিল
মনোহর। ভোরের গাড়ীতে অন্নহীন, বৃদ্ধীন,
উদ্দেশ্রহীন দম্পতি আর একটি বোঝা ঘাড়ে লইয়া চলিয়া
গেল।

মনোহর বাঁচিয়া থাকিবে কিনা জানি না। বদি এক
দিন সে তাহার জন্মভূমি খুঁজিতে আসে, পাইবে না। হয়
তাহা আবর্ত্তময়ী যোজনপ্রসারী রাক্ষ্যী নদীপর্ভে, নয়
তাহা দ্রবিস্তারী, আকারপ্রকারহীন অতিবিরল বনঝাউআক্রাদিত চরের যে কোন জায়গায়। আর তাহার
জননী—?



## 

### শ্রীহরিচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়

"সপ্ত ব্যৱহাতি রথমেকচক্রমেকো আখো বহুতি সপ্তনামা।

4(4) 3.308.2 |

— (ভাষ্যাস্থাদ) একচক্রযুক্ত স্থ্রথ সপ্ত অব বহন করে।

এক অব অর্থাৎ এক বায়ু সপ্ত নাম বা সপ্ত রূপ ধরিয়া স্থের

রথ বহন করে। অথবা একচক্র রথ অর্থাৎ একচারী বা

অসচায্যভাবে সঞ্চারী আদিত্যমপ্তলকে সপ্তসংখ্যক বিশ্বি

বহন করে।

একচক্র রধ—খবের ভৃতীয় চরণে "ত্রিনাভি চক্রম্"—
এই ত্রিনাভির বর্ণনায় সায়ণ ভাষ্যে বলিয়াছেন—"বদ্যপি
ত্রীণি চক্রাণি ভ্রথাপি ভ্রেয়ামেকরপন্থাদেকচক্রমিভ্যুচ্যভে,"
অর্থাৎ বদিও তিন চক্র, ভ্রথাপি ভাষারা একরপ বলিয়াই
একচক্র বলে।

বাজ্ঞবদ্ধ্য শুক্লবজুর্বেদ-লাভার্থ শুবগান করিয়া সুর্বদেবের উপাসনা করিলে, আদিত্যদেব প্রাপন্ন হইয়া বাজিরপ বোগি-বরকে অবাতবাম, অর্থাৎ অন্যের অক্সাত বজুংসমূহ দান করিয়াছিলেন (ভাগবত ১২.৬.৭৯)। নির্বয়ণাগর-বত্তর মুক্রিভ শুক্লবজুর্বেদসংহিভায় এ বিষয়ে বে চিত্র অভিত আছে, তাহাতে সুর্বর্থ একচক্রে ও সপ্তাখবাহন; সায়ণের ভাষ্যা-স্লুসাবে একরপ বিচক্রমুক্ত নহে।

সংস্থৃত কাব্যাদিতে একচক্র স্থ্রথের প্রয়োগ পাই নাই, আছে কিনা জানি না। প্রভাষিত রত্নভাঞাপারে প্রথম বিষয়ক নিয়োজ্য লোকটি আছে:

> ্ৰেকচক্ৰেন কৰে। বছা বিকলো বিবসা হয়া: । আক্ৰানডোৰ তেজৰী ভৰাপাৰ্কো নভজনৰ ।"

অর্থাৎ, স্থাব্র রথ একচক্রবৃক্ত, সারথি অকণ বিকলাক, অর্থাৎ অন্ক-উক্লবিহীন, অখাণ বিষমসংখ্যক, অর্থা সপ্ত-সংখ্যক, তথাপি, অর্থাৎ সেইপ্রকার রথাদি হইলেও ডেজম্বী স্থানভত্তল আক্রমণ অর্থাৎ উদ্গমন করেন। তাৎপর্ব,—ডেজম্বীর ডেক্সই মুধ্য সহায়, অন্য সহায়ক গৌণ।

বাংলায় কাব্যে ইহার অনেকগুলি প্রয়োগ পাওয়া বায়:

- ১। ভারতচল্ডের অয়দামলল কাব্যে স্ব্বন্দনায়,— "একচল্ল রখে, আকাশের পথে, উবয়দিরি ইইতে। বাছ অন্তলিয়ি, একদিলে কিয়ি, কে পারে শক্তি কহিতে।"
- २। माहेरकन मधुरुषराव 'जिलाखमा-मखव' कारवा---
- (ক) "লাগৰ অৱশে ববে টবা সালাইতে একচক রখ।"
- (খ) "একচক রংখ
  উদ্দেশ আদিতা বংব উদয়-অচলে ।—বেগৰাদৰণ

(4)

উদয়-অচলে দিবামুৰে একচক্ৰে দিলা দরশন, অংশুদালা গলে

বিভারি স্বৰ্ণরশ্বি চৌদিকে তপন ।"

—'पूर्व ७ देवनाकशिदि-नार्टेरकन अश्वाननी ।

৩। সত্যেন্দ্ৰনাথ দত্তের "কুছ ও কেকা'য়—

"সংহর ও বৃদ্ধি, ওগো একচন্দ্র রাবের ঠাকুর।

প্রীথের হার।

উদ্ধৃত কবিতাংশে সর্বত্র 'একচক্র' শব্দ 'একসংখ্যক চক্র' অর্থে গৃহীত হইয়াছে, 'একরপ ত্রিচক্র' অর্থাৎ 'একারুডি ভিন চক্র' অর্থে প্রযুক্ত হয় নাই, ইহা একচক্র শব্দের প্রকৃতিগত অর্থ।

সপ্ত অখ—( ভাষ্যাস্থ্যাদ ) (১) অস্কবিক্ষসঞ্চার বায়্ব অধীন বলিয়া সপ্তনামধারী বায়—এক অখ বা সপ্তনামা অখ; অথবা (২) সর্পণঞ্চাক বা সপ্তসংখ্যক বিশিসমূহ— সপ্তপ্রকার কার্যে অসাধারণ বা পরস্পরবিলক্ষণ বড়ঋতুগণ, এক সাধারণ ঋতু—এই সপ্ত ঋতু সপ্ত অখ; অথবা (৩) মাসহয়াত্মক বড়ঋতু, অপব অধিমাসাত্মক এক—এই সপ্ত ঋতু সপ্ত অখ।

সায়ণ-ভাষ্যে "আদিত্যমশুলকে সপ্প্রসংখ্যক বশ্মি বহন করে"—এই অর্থ করিয়াছেন। স্থাকিবণে ভাষলেট প্রভৃতি সপ্ত বর্ণ+ আছে; ত্রিভল কাচফলকের মধ্য দিয়া দৃষ্টিণাড করিলে স্থা-রশ্মি ঐ সপ্ত বর্ণে বিশ্লিষ্ট হইয়া দৃষ্টিগোচর হয়। স্থারশ্মি বৃষ্টিকালে জলবিন্দৃসমূহের মধ্য দিয়া স্থান্তর বিপরীত দিকে অবস্থিত মেষধণ্ডে পতিত হইলে ঐ মেঘে নানা বর্ণে রঞ্জিত বে রামধন্তর উৎপত্তি হয়, ভাই সপ্ত বর্ণে চিত্রিত। ঐ সপ্ত বর্ণ স্থান্তর ব্যান্তর্গে কয়না করিলে, নিভান্ত অসকত হয় না বোধ হয়।

"আ সুর্বো যাতু সপ্তামঃ" (ঋষেদ ৫.৪৫.৯)—এই ঝকের 'সপ্তাম' শব্দ বিশেষণ, বছরীছিসাধিত শব্দ—'সপ্ত অম বাহার'। সুর্বের বিশেষণ এই 'সপ্তাম' শব্দ হইডে সুর্বের সংজ্ঞারণে গৃহীত বিশেষ্য 'সপ্তাম' শব্দ অভিধানে ধৃত ও কাব্যে প্রযুক্ত হইয়াছে। 'অম' ও 'সপ্তি' শব্দ সমার্থক— সুর্বের অন্য সংজ্ঞা 'সপ্তসপ্তি' শব্দ এই 'সপ্তাম' শব্দেরই প্রকৃতিগত রুপান্তর।

<sup>•</sup> সংবৰ্ণ—violet, indigo, blue, green, yellow, orange, red ( সংকেশ—vibgyor )।

### প্রশ

### ঐপ্রেমান্থর আতর্থী

আৰু আবিনের শেষে আগমনীর স্থর স্থক হতে না হতে বর্ষা একে দাঁড়াল আকাশ-প্রাণণে, তার মিশকালো ওড়না উড়িয়ে। বিলায়ের আগে তার ষত কিছু সমারোহ নিয়ে নর্ডন স্থক করে দিলে। সকাল থেকেই অবিশ্রাম বর্ষণ চলেছে ঝম্ ঝম্ ঝম্। শুনতে শুনতে আমার মানস-আকাশেও তার ছায়া এদে পড়ল—কি জানি সেধানেও কি কারণে স্থক হয়ে গেল বর্ষণ। কোথা থেকে প্রঞ্জ প্রথমের একে জমতে লাগল দেখানে, অজানা ব্যথায় অস্তরলোক ককণ হয়ে উঠতে লাগল। হঠাৎ এই অক্কারের মধ্যে বিদ্যুৎকুরণের মত একখানি মুধ একবার চমকে উঠে মিলিয়ে গেল—বিচিত্র এই মাস্থবের মন।

বিশ্বনাথের সঙ্গে আমরা এক ক্লাসে পড়তুম, তথন আমাদের বয়স এগার-বার-তের। সে ছিল স্থূলকায়। তথু স্থূলকায় বললে ভূল বলা হবে, সে ছিল বিপুলকায়। তথু আমাদের ইস্কুল নয়, কাছাকাছি তিন-চারটে ইস্কুলের মধ্যে তার মত দশাসই চেহারার বালক আর একটিও ছিল না। সেইজল্প তাকে সে পট্টির ছেলেরুড়ো স্বাই চিনত। নাম না জানলেও চেহারার বর্ণনা ভানলেই লোকে ব্রুড়ে পারত কার কথা বলা হচ্ছে।

বিশ্বনাথরা ছিল ব্রাহ্মণ। বিশ্বনাথ মুখুচ্ছে তার পুরো
নাম। কিছ ক্লাসের ছেলেরা, গুধু ক্লাসের ছেলেরা কেন—
সারা ইস্কুলের ছেলেরা তাকে মোটা বিশু বলে ডাকত।
বিশ্বনাথের চেহারাটাই গুধু জ্মন ছিল না, সেই শরীরে
ঐ বয়সেই একেবারে হন্তীর মত না হোক, হন্তীশিশুর মত
শক্তি ছিল। আমরা ক্লাসের ছেলেরা তো কেউ তার
সলে পারতুমই না, তিন ক্লাস ওপরের কাই ক্লাসের কেউ
তার সলে পারত না। জ্বত শক্তি থাকা সন্থেও তার
মেজাজটি ছিল শরীক। কথনো তাকে রাগতে কিংবা
মারামারি করতে দেখা বেত না, হাজার কারণ সন্থেও।
ক্লাসের ছেলেরা তো প্রায়ই বলত—ভাগ্যে বিশে শালা
ছিল। কিংবা—বিশে বেটা আজ ছুরি আনে নি, পেন্সিল
কাটি কি করে—ইত্যাদি।

কিন্ত বিশু নির্বিকার! সে ওসব সম্ভাষণকে গ্রাহ্যের মধ্যেই জানত না।

মেলালের মত আহার সম্বন্ধেও তার উদার্য ছিল অপরিমিত। আমরা জিজাদা করতুম—হাারে বিশে, তুই নাকি একটা ছোটখাটো পাঁঠা একাই দাবাড় করতে পারিদ? কিছ হাঁা না কিছু না বলে ভগুঁ হাঁ-হাঁ করে হাসতে থাকত আর বলত—কেন রে এক দিন খাওয়াবি নাকি?

তার ধাওয়ার কথা ভনেই আস্ছিলুম, একবার একটা উপলক্ষ্যে চক্ষকর্ণের বিবাদভঞ্জন হ'ল। মহারাণী ভিক্টোরিয়ার মৃত্যুর পর দপ্তম এডোগার্ডের অভিষেক উপলক্ষ্যে দরকার থেকে এথানকার ইস্কুলের ছাত্রদের এক দিন ভরিভোঞ্চনের আয়োজন হয়েছিল। প্রভ্যেক ইসকুলের ছাত্রের সংখ্যার অমুবায়ী গবর্মেন্ট টাকা দিয়েছিলেন, আর প্রত্যেক স্থলের কর্তৃণক আয়োজন করেছিলেন। বেলা ছটো কি আড়াইটার সময় থাওয়ার ব্যবস্থা হয়েছিল। বিশ্বনাথের ধাবার মাত্রা দেখে আমরা তো অবাক, এমন কি মাষ্টারেরা পর্যন্ত ছুটে এলেন। ইস্কুল স্থদ্ধ ছেলের ধাওয়া হয়ে গেল, তথনও দে মাংস আর লুচি ওড়াচ্ছে। চার পাশে ছেলে ও মাষ্টারের দল দাঁড়িয়ে, তার মধ্যে বিশু একা বদে ভোজন চালিয়েছে—দে এক দুখ। শেবকালে অহুৰ কৰবে বলে মাষ্টাবেৱা ভাকে এক বৰুম জোৱ কৰে তুলে দিলেন।

মনে আছে ঐ ভ্রিভোজনের পর সে চলিশটি পানভ্রা থেয়েছিল। বা হোক সেদিন আহারাদির পর আমরা বাড়ীতে না পিয়ে বিশুর বাড়ীতে পেলুম দাবা খেলতে।

বিকেল নাগাদ খেলা বখন খুব জমে উঠেছে, তকাতকি প্রায় মায়ামারিতে পৌছয় এমন সময় বিশ্বনাথের পাড়ার জনকয়েক ছেলে এসে তাকে ধরল। তাদের সজে বেতে হবে তাদের ইস্কুলে খেতে। বিশ্বনাথের এই বন্ধুরা পড়ত তখনকার কেনারেল এসেম্বলির ইন্স্টিটিউস্তনে। এখন বার নাম হয়েছে য়টিশ চার্চ কলেজ। তারা বিশুর সজে আমাদেরও টানাটানি করতে লাগল। আমরা কিছুতেই বাব না—শেষকালে বিশে বললে—ওরা যদি না বায় ভো আমিও বাব না। ফলে হ'ল কি ভারা এক বকম জোর করে আমাদের টেনে নিয়ে চলল।

সেখানে গিয়ে পৌছনমাত্র ছেলেদের মধ্যে হৈ হৈ
পড়ে গেল মোটা বিশে এসেছে বলে। থাবার জারগা
তৈরিই ছিল, আমাদের ধরে তথুনি বসিয়ে দেওয়া হ'ল
সেখানে। অন্ত ঘর থেকে ছেলেরা লাফিয়ে এসে আমাদের
ঘরের পংক্তিতে ঠেসাঠেসি করে বসে যেতে লাগল।
সকলের আগ্রহ মোটা বিশুর থাওয়া দেখবে। ছ-ভিন
জন মাটারও এসে উপস্থিত হলেন। ছেলেরা বলতে

লাগল—ভার মোটা বিশুকে ধরে এনেছি, ও আসতে চাইছিল না। মাটাররা বললেন—বেশ করেছ।

সকলে মিলে বিশ্বনাথকে উৎসাহ দিতে লাগলেন, স্বার উৎসাহ শুনে সেও উঠল ক্ষেপে। থাওয়ার স্কুক থেকেই সে বেন মরিয়া হয়ে উঠল।

হৈ-হলোড়ের ব্যাপার ! পরিবেশন ইত্যাদি তেমন কাছন মান্দিক হচ্ছিল না, প্রথমে চারখানা করে গরম লুচি পাতে পড়ল—চারখানায় কি হবে, চারখানায় কি হবে করে ছেলেরা আরও চারখানা লুচি তার পাতে গছিয়ে দিলে। তরকারি আগতে মিনিট কয়েক দেরি হয়েছিল—ইতিমধ্যে বিশে ছন দিয়েই আটখানা লুচি আড়ে মেরে দিলে। ছেলেরা বিশুর কাণ্ড দেখে হৈ হৈ করে উঠল। তার পর প্রত্যেকটি পদ বেশ ভাল করে অর্থাৎ আর বারা বসেছিল তাদের স্বায়ের চেয়ে বেশী তো খেলেই, উপরঙ্জ বেশী খাওয়া হয়ে গিয়েছে বলে আধ হাঁড়ি দৈ সাবাড় করে দিলে ভাল হজম হবার করে।

ইস্কুলের কাছেই ছিল বিশুদের বাড়ী। টিফিনের সময় বাজে কচুরি জিলিপি না খেয়ে সে বাড়ীতে গিয়ে ভাত খেয়ে আগত। টিফিনের পরের ঘণ্টায় আমাদের ট্রান্সলেশান হ'ত। বাংলা বইয়ের খানিকটা ওর্জমা করতে দিরে মাষ্টারমশায় অক্ত কাজ করতেন। সেটা ছিল বিশুর ঘুমোবার ঘণ্টা। সে ডবল বেঞ্চির ওপর তু'হাত দিয়ে তাতে মাথা বেখে ঘুমোত—আর আমবা চার-পাঁচ জন পালা করে তার পিঠ চুলকে আরাম করে দিতুম। তা না ছলে বিশুবাবুর ঘুম হ'ত না। তার ঠাকুরমা ছেলেবেলা খেকে এখনো পর্যান্ত ঘুমোবার সময় পায়ে হাত বুলিয়ে দিয়ে এমন অভ্যেস করে দিয়েছেন বে তা না করলে সে ঘুমোতে পায়ত না। দিনের বেলায় এই নিজাটি না হলে ভার বড় কষ্ট হ'ত এবং এ নিয়মের ব্যতিক্রম প্রায় হ'ত না।

উপলক্ষ্য পেয়ে এইখানে খুব ভোড়ে চলল সে সব। এক পক্ষ একটা বলে ভোও পক্ষ বলে চাবটে। যাবা নিরপেক্ষ ছিল তারাও বাহাছ্রি দেখাবার জন্য মুখ ছোটাতে আরম্ভ করে দিলে। প্রতিযোগিতার গালাগালি স্থক হয়ে গেল। ঘণ্টা কাবার হয়ে গেল। মাষ্টারমশাই একরকম ছুটতে ছুটতে ক্লাসে এসে বললেন—কি ব্যাপার কি ?

মিনিটখানেক সব চুপচাপ, কেউ কোন কথা বলে না।
কিন্তু মাষ্টারমশাই নাছোড়বানা, ডিনি টেবিল চাপড়ে
ছকার ছাড়লেন—কি হয়েছে। এত চেঁচামেচি কেন হচ্ছিল ?

উভয় পক্ষ উঠে অন্য পক্ষের নামে দোষ দিতে আরম্ভ করলে। শেষকালে আবার এক হটুগোল হবার উপক্রম দেখে মাষ্টারমশায় চেঁচিয়ে উঠলেন—সায়লেল।

আমাদের বিশ্বনাথ বাবাজী এতক্ষণ তাঁর সেই সনাতন 'পোজে' হাতের মধ্যে মুখ লুকিয়ে নিজ্ঞা দিচ্ছিলেন, মাষ্টার-মশায়ের ছকার ভনে ধড়মড় করে উঠে ঠিক হয়ে বসলেন। মাষ্টারমশায়ের কি তুর্মতি হ'ল, তিনি বিভকে ডাকলেন—বিশ্বনাথ, কাম হিয়ার (এথানে এস)।

বিশ্বনাথ উঠে গুটিগুটি তাঁর কাছে গেল। মাটারমশায় বললেন—আমি জানি এবং আশা করি তুমি মিধ্যে কথা অথবা কাকর পক্ষ টেনে বলবে না। এতক্ষণ কি হচ্ছিল বল ত ?

বিখনাথ কারুর দিকে না চেয়ে বলে বেতে লাগল—
কি করে প্রথমে কথাকাটাকাটি হতে হতে ঝগড়া স্থক
হ'ল। ভার পরে কে কে কার দিকে বোগ দিলে ইত্যাদি
প্রত্যেকটি ঘটনা পুঝায়পুঝারণে বলে বেতে লাগল। অথচ
আমরা সকলেই দেখেছি সে তু'হাতে মুথ লুকিয়ে মাথা
নিচ্ করে ঘুম মারছে। বেশ বুঝাতে পারা গেল
দিবানিদ্রার অস্থবিধা হয়েছে বলে বিশুবারু স্বার ওপরেই
চটে গিয়েছেন।

এতক্ষণ তো বা হোক চলছিল একরকম। কিছু মাষ্টার-মশাই যথন জিজ্ঞাসা করলেন—আছা কে কে গালাগালি করেছে, বিশ্বনাথ তথন সলজ্জ কিশোরীর মত ঘাড় নিচু করে নথ পুঁটতে পুঁটতে উত্তর দিলে—বলব স্থার ? কিছু আমার বড় লজ্জা করছে।

মাষ্টারমশায় বললেন—নির্ভয়ে বলে বা, লক্ষা কিলের ? বিশ্বনাথ বলতে আরম্ভ করল—ভার প্রথমে কালীচরণ নিবারণকে বললে—।

একটা অভ্যন্ত থারাপ কথা।

বিশ্বনাথের মুধ থেকে বাক্যটি বেরোনো মাত্র ক্লাস-স্থক ছেলে হো হো করে হেনে উঠল। মান্তারমণাই—এই চোপ্—চুপ কর—সায়লেশ—বলে চীৎকার পাড়তে আরভ করলেন। পাশের ক্লাদের মাষ্টার কৌতৃহল চাঁপতে না পেরে উঠে এলেন—পেছন পেছন দে ক্লাদের গুটিকয়েক ছাত্রও উঁকি দিতে লাগল।

একটু ঠাণ্ডা হওয়া মাত্র বিশ্বনাথ বললে—তার পর স্থার, কালীচরণের ঐ কথা শুনে (কথাটি বিশ্বনাথ আবার উচ্চারণ করলে) নিবারণ বললে—।

ক্লাসশুদ্ধ ছেলেনের আবার হাসি।

শেষে প্রায় ইস্কুলস্ক মাষ্টার ও ছাত্র আমাদের ক্লাদে এসে হাজির হ'ল আর ভার মাঝে বিশ্বনাথ দাঁড়িয়ে গন্তীর-ভাবে একটার পর একটা খারাপ কথার মালা গেঁথে চলল। শেষকালে অন্য ক্লাদের একজন মাষ্টার বিশুকে থামিয়ে দিয়ে বললেন—শুব হয়েছে, যাও বাবা বিশ্বনাথ এখন নিজের জায়গায় স্থির হয়ে বদ গিয়ে।

বিশ্বনাথ গট গট করে নিজের জায়গায় গিয়ে বদল।
পেটা ছিল ইস্কুলের শেব ঘণ্টা। এই ঘণ্টায় জামাদের
যিনি পড়াডেন তিনি ছিলেন অতি ভালমামুষ। বিশ্বনাথ
গিয়ে নিজের জায়গায় বদতেই জন্য ক্লাসের ছাত্র
ও মাষ্টাররা চলে গেল। ক্লাস একেবারে চুপচাপ—
মাষ্টারমণাই চুপ করে নিজের জায়গায় বদে রইলেন।
তিনি কাক্লকে ভিরস্কার বা একটি কথাও বললেন না।
পাঠ্যপুত্তকে জ্ঞানবুক্লের যে সব শাখাপ্রশাখার বিবরণ দেওয়া
জাছে, ছাত্রদের মধ্যে ভারও অতিরিক্ত জ্ঞানের এই প্রসার
দেখে তিনি মর্মাছত হয়ে গিয়েছিলেন। তিনি বসে
রইলেন নিস্তর্ক হয়ে—বিশ্বিত ও ছঃধিত হয়ে।

मित्रकाद भिष घकी भए भाग।

বিশনাপের সঙ্গে আমরা প্রায় ত্'বছর পড়েছিলুম। সেবার বছর প্রায় শেব হয়ে এসেছে, প্জোর ছুটির কিছুদিন আংগে এক দিন বিশু এসে আমাদের জানালে বে তার এক কাকার সঙ্গে সে পাটনা চলে বাবে। পরের দিনই
বিশু ট্রাস্ফার নিমে চলে গেল। সেবানে পৌছে একখানা পাষ্টকার্ড আমাদের লিখেছিল বটে, কিছু ওপরে ঠিকানা না দেওয়ায় তার আর জবাব দেওয়া হয় নি। অবিশ্রি
ভার বাড়ী থেকে ঠিকানাটা নিয়ে আসতে পারা বেড,
কিছু তা আর হয়ে ওঠে নি।

প্রায় বছরতিনেক বাদে প্রবেশিকা পরীকা দিতে গিয়ে
সিনেট হলে বিশুর সক্ষে দেখা। সেও পরীকা দিতে
এসেছে। বিশে বক্লে সে প্রায় বছরখানেক হ'ল কলকাতার
ক্ষিরেছে। বাপরে বাপ—সে কি মোটাই হয়েছে—।
বেমন মোটা তেমনি লখা। দেখা গেল পাটনার সন্তার
ধাবারের প্রতি সে বিশাসঘাতকতা করে নি। বা হোক,
টিক্ষিনের সময় বিশুর বাড়ী থেকে ধাবার এল, সে প্রার

চার-পাঁচ জনের খাবার। জামরাও চার-পাঁচ জনে মিলে
তার সরই মেরে দিলুম। বিশু দোকান থেকে গোটা
হয়েক ভাব জার ছ-তিন বোতল লেমনেড কিনে থেলে।
চার দিন বেড়ে কাটল। তার পর ছুটির প্রায় তিন ুমাস
বিশুদের বৈঠকখানায় জামাদের হুম জাড্ডা চলল।
পরীক্ষার ফল প্রকাশ হতে দেখা গেল আমরা সদলবলে ফেল
করেছি।

পরীক্ষার থবর বের হবার প্রায় মাস্থানেকের মধ্যে বিশু চাকরিতে ঢুকে গেল। তার এক বড়লোক আত্মীয় কলকাতার কোন বড় ব্যাকে কেশিয়ারের কাজ করতেন। সে তার অধীনে কাজে লেগে গেল। সে সময় বিশুর বয়স সতের, দেখলে মনে হ'ত পঁচিশ বছরের ঘ্বা। মাইনে হ'ল মাসে তিরিশ টাকা। তখনকার বাজারে তিরিশ টাকা মাইনের চাকরি নেহাৎ ফেল্নার ব্যাপার ছিল না। এর পরে বিশ্বনাথের সঙ্গে বছরদশেক আর দেখা হয় নি।

সে সময় কলকাতায় এমেচার থিয়েটার ক্লাবের খুব মরশুম পড়েছিল। আমরা জনকয়েক মিলে একটা ক্লাব করেছিল্ম। আমাদের মধ্যে সেই পুরোনো দিনের ইস্কুলেরও কয়েকটি বন্ধু ছিল। এক দিন রাত্রে আমরা বিজেন্দ্রলালের নাটকের মহলা দিচ্ছি, সপ্তাহখানেক বাদে পারিক ষ্টেন্ধে প্লে হবে। বিহাস্যাল খুবই জমেছে— হুর্গাদাস বক্ছে— ভুগাদাস বক্ষে এপরে—

—কভথানি ওপরে হে—বলেই বিশাল লখাচওড়া একটি লোক ক্লাব-গ্রহে প্রবেশ করলে।

আবে বিশে বিশে বিশে—বিশে আয়, বিশে আয়—
আমরা সকলে হৈ হৈ করে উঠলুম। বিশে বাল—তোরা
বে ক্লাব করেছিস তা অনেক দিন থেকেই শুনছি, আজ
মনে হ'ল দেখে আসি কি রকম রাজা উজির মারছিস!

অনেক দিন থাদে তাকে পেষে স্তিয় বড় ভাল লাগল। বিশ্বনাথ বললে—কিন্তু বাবা! ক্লাব করবার সময় বিশেকে তো একবারও মনে পড়েনি। ভাগ্যে আমি এলুম!

তার পর প্রায় পাঁচ বছর একাধারে বিশের সলে ধুবই
দহরম মহরম চলল। বিশ্বনাথ একাই ক্লাবের সর্বেস্বা হয়ে
উঠল। যত পরিপ্রমের কাজ, আমরা সবই তার ঘাড়ে
চাপাতুম এবং সে জ্লানবদনে করে যেত। তার পর
এক দিন ক্লাবও উঠে গেল, তার সজেও ছাড়াছাড়ি হয়ে
গেল।

প্রায় দশ বছর এমনি চলল—কথনো বা তার সলে ট্রামে দেখা হয়,—বিশে ভাই তুই আরও মোটা হয়েছিল।

— (याषे ) हस्त्रहि विनन नि, वन स्मरह स्मरत्रहि ।

কথনো বা একই ট্রামে চলেছি, মাঝখানে নিশ্ছিত্র ভিড়। তৃ'জনে চোখে চোখে ইসারা হয়েছে। এরই মধ্যে তৃ'চার বছর অস্তর ববিবার বিকেলে সে আমার বাড়ী এসেছে, কথনও বা আমি ভার বাড়ী গিয়েছি। এক দিন বিশুকে জিজ্ঞাসা করলুম—ভোর ছেলে কত বড় হ'ল বে ?

বিভ বললে—এবার এম-এস্সি পাস করেছে।

- —বলিস কি ? কোন ক্লাস পেলে ?
- —ফাষ্ট ক্লাস।
- বা বা বেশ ছেলে।

বিশে বললে—মাইরি তাই ভাবি, আমার ছেলে হয়ে বেটা এম-এসসি পাশ করলে কি করে!

বিশু আরও বললে, কোন একটা কোম্পানী তার ছেলেকে তিন শ' টাকা মাইনে দেবে বলেছে, বছর তুই বালে তারাই বিলেতে পাঠাবে।

ভার পরে আমি চলে গেলুম বিদেশে। পাঁচ-ছয় বছর আর ভার কোন সংবাদই রাখিনি। ফিরে আসবার পর এক দিন ট্রামে দেপা। দেখলুম সে ভয়ানক রোগা হয়ে গিয়েছে—বিখনাথ মুখুজ্জে বলে ভাকে আর চিনতে পারা বায় না।

জিজ্ঞাস। করলুম—কি বে এত বোগা হয়ে গিয়েছিস কেন ?

বিশু হাদতে হাদতে বললে—চিরদিনই কি একরকম থাকা ভাল ? বোগা হয়ে বুঝতে পার্ছি মোটা হওয়ার কত অস্থবিধা ছিল।

বললুম—কিন্তু হঠাৎ এ রকম রোগা হয়ে যাওয়া তো ভাল নয়! ডাক্তার-টাক্তার দেখাচ্ছিদ ?

— ওরাই তোনা খেতে দিয়ে রোগা করে দিলে। বলে ডায়বিটিদ হয়েছে, কিছু খেয়োনা—ধাঁ ধাঁ করে বোগাহয়ে গেলুম। এখন অবিভি সবই খাচিছ, ওদের কথা ভনতে গেলে আর বাঁচা বায়না।

জিজ্ঞাসা করলুম—এখনও ব্যাকে চাকরি করছিদ তো।
বিশু হা হা করে হেসে বললে—ব্যাকে এখনও চাকরি
করছি বটে, তবে সে ব্যাক নয়। সে ব্যাক ফেল মেরেছে,
ভূনিস নি ?

—না তো। তোর কিছু গেল নাকি ?

বিশু বললে হাজার পঞ্চাশেক টাকা ছিল ওধানে।
শুনছি লিকুইভেটররা শতকরা পঞ্চাশ টাকা ফেরত দেবে,
শাপাতত। টাকা আজ না হয় কাল, না হয় পঞ্চাশ বছরে
ফিবে পাওয়া যাবে। কিন্তু হংগ এই যে তিরিশ বছরের
চাকবিটা গেল। সেই মনে আছে বোলো-সতেরো বছর
বয়সে ওধানে চুকেছিলুয—আর ছেচলিশ বছর বয়সে শেষ

হ'ল। বৰ্ষন চুকি তথন নোট গুনতুম, মাইনে হয়েছিল তিরিশ টাকা। ক্রমে এদিষ্ট্যান্ট কেশিয়ার হয়েছিলুম, পাঁচ শ'টাকা মাইনে হয়েছিল।

বিশু একবার হা হা করে হেসে বললে—ধন্মে সইবে কেন, আমাদের মত লোকের অত উন্নতি। কি বলিস ?

বলনুম—বেজে দাও বন্ধু, যা বরাতে ছিল তা হয়ে গেছে, তার জন্য আপশোষ করে কি হবে ?

—কেপেছিল তুই! আমি করব আপশোষ । এক হপ্তার মধ্যে চাকরি ঠিক জুটিয়ে নিয়েছি। তবে মাইনেটা একটক কম হয়েছে।

জিজ্ঞাসা করলুম—কত দিচ্ছে এথানে ?

-এক শ' টাকা।

বলেই আবার সেই হা হা হাদি। তার পর বললে—

চুকতেই তো তারা কিছু পাঁচ শ'টাকা আমায় দেবে না?

কি বলিস প

সেদিন এইখানেই শেষ হ'ল। তিন-চার দিন পরে আবার ট্রামেই দেখা তার সঙ্গে। কথায় বার্তায় ব্রতে পারলুম, ওদের পৈতৃক সম্পত্তিও ভাগাভাগি হয়ে গিয়েছে। কিছুক্ষণ জ্বো করে এও জানা গেল যে সম্পত্তির ন্যায্য পাওনা ও পায় নি। তার কাকা জন্যায়ভাবে তাকে ফাঁকি দিছেছেন।

ব্ৰজ্ম-কাকার নামে নালিশ করলি নি কেন পু

বললে—তুই কি পাগল হয়েছিস ? কাকার নামে নালিশ করব! আমার ছেলেবেলার বা-কিছু আবদার সব চলত কাকার কাছে। আমার খেলবার যা কিছু—গুলি, লাটু, খুড়ি-লাটাই, লজ্ঞুদ, চানাচুর—এ সবেরই পয়সা জুটিয়েছে কাকা অমানবদনে, কধনও না বলে নি। আমাদের সেই সম্বন্ধ কাকা দশজনের প্রবোচনায় পড়ে ভুলে গেলবলে আমিও ভুলব ?

বড় রাগ হ'ল। বললুম—বেণ করেছ, ছ'আনার গুলি ও চানাচুরের বদলে লাখ টাকার সম্পত্তি দিয়ে খুব বাহাত্র করেছ।

আমার কথা শুনে এবার বিশে এমন হা হা করে হেসে উঠল বে ট্রামহ্ব লোগ চমকে উঠে আমাদের দিকে তাকাতে লাগল।

সেদিন সেইখানেই শেষ হ'ল। তার পরেই আমাকে
কিছুদিনের জন্যে আবার বিদেশে থেতে হয়। বছর ত্রেক
পরে নানান তাড়ায় দেশে ফিরে এসেই অক্সন্থ হয়ে পড়েছিলুম, বদ্ধুবাদ্ধর কারুরই থোঁজ নিতে পারি নি।

দে সময় শীতকাল। বিকেলে কবিবাজের বাড়ী থেকে
কিরছি—শরীর এত থারাপ বে একটু চললেই অবসয় বোধ

হয়। একটু ঘুবে বেতে হলেও মনে কবলুম 'বিশেদের বাড়ীতে একটু বসে:সেখান থেকে একখানা বিক্সা ভাড়া করে ফেরা বাবে। বিশুব সকেও দেখা হবে।

দোরগোড়াতেই বিশুর খুড়তুত ভাই লোকনাথের সক্ষেপা। ওদের বাড়ীর স্বাই আমাকে চেনে, আমিও প্রায় স্বাইকে চিনি। লোকনাথ আমাকে দেখে খুশি হয়ে বলে উঠল, আহ্বন দাদা আহ্বন। কেমন আছেন, কবে এলেন—ইত্যাদি সারা হয়ে গেলে আমি জিজ্ঞাসা করলুম—বিশে এখনও কেরে নি বঝি ?

আমার প্রশ্ন শুনে লোকনাথের মুখের ওপরে বিশ্বয়ের একটা চমক থেলে গেল। কিন্তু দেই মুহুর্তেই দেট। সামলে নিয়ে বিষয় মুখে হাসি আনবার চেষ্টা করে দে বললে— বড়দা আর আপিদ থেকে ফিরবে না দাত।

#### —ভার মানে গ

— আপনি জানেন না বুঝি ? বড়দা ত নেই। তার গুটির আর কেউই নেই। এক বছরের মধ্যে সব সাফ হয়ে গেছে—এই বছর ছই আগে।

লোকনাথ বলতে লাগল, ইদানীং বড়দা থেন কেমন হয়ে গিয়েছিল।

জিজ্ঞাদা করলুম—কি রকম ্ তাকে ত দারাজীবন একই রকম দেখেছি।

লোকনাথ বললে—ইাা, বাইবের লোকেবা বুঝতে পারত না, কিছু ইদানীং বড়দা একেবারে বদলে গিয়েছিল। অমন লোক যে কি করে এ রকম হতে পারে আমরা তাই বলাবলি করতুম।

### —কি বকম হয়ে গিয়েছিল ?

লোকনাথ বললে—বড়দা ব্যাহে বড় কান্ত করত জানেন ত—সেই ব্যাহ গেল ফেল হয়ে বড়দার চাকরিটাও গেল। বড়দা অন্য জারগার কম মাইনের একটা চাকরি জুটিয়ে নিলে। অবিশ্রি চাকরি না জুটলেও তার ভাবনা কিছুছিল না, কারণ তার ছেলে সোমনাথ তথন পাঁচল' টাকার ওপর মাইনে পায়। চাকরি বেতেই বড়দা বাড়ীর সব ধরচ কমিয়ে দিলে। জানেন ত সে কি রকম থাইয়ে লোকছিল। নিজে থেয়ে আর লোকজনকে থাইয়ে সে পাঁচল' টাকা মাসে ফুকে দিত। পায়ের জুতো ছিঁড়ে গেছে, কিন্ত ছ'বেলা বাড়ীতে বিরিয়ানি কাবাব উড়ছে—এই ছিল তার ব্যবস্থা। বাপের নৃতন ব্যবস্থা দেখে ছেলে বললে—বাবা এবার থেকে বাড়ীর ধরচ সব আমার। বাপ বললে—থবরদার, ওসব লবাবি করতে চাও ত অন্যত্র বাও। আমি বড়কণ বেঁচে আছি তড়কণ আমার আমদানি মতে বাড়ীর স্বাইকে চলতে হবে।

र्ट्ठा९ वक्षमाद अहे हानहान स्मर्थ वोमिश्व छक्रक গেল-দেও কিছ বললে না। তারপরে একেবারে কালিয়া শোলাও থেকে ত'বেলা ভাত ডাঁটাচচ্চডি। শুধ তাই নয়, বাডীতে কোনও জিনিষ খানবার জো নেই—কে এনেছে ? কেউ কোনও জিনিষ কিনতে পাববে না-কে কিনেছে ? দোমনাথের জতো **চি'ডে গিয়েচে.** জামা নেই—কিছ কারও কেনবার হুকুম নেই। আগের দিনে যেমন বার ষা খুশি করত বড়দা স্বতাতেই খুশি, স্বতাতেই তার হাসি—এ বেন একেবারে তার উল্টো, তার ইচ্ছা ছাড়া আর কারও কোনও ইচ্ছা থাটবে না। বড়দার শরীর ত ভেঙ্কে পড়েইছিল, দেখতে দেখতে বৌদি আর দোমনাথও একেবারে কাঠির মত রোগা হয়ে গেল। ছেলেও বাপের এমন বাধ্য বে. বাডীতে বে শাকচজডি ভাত হয় তা ছাডা वाहेदा चात्र काथा ७ थाव ना. वाश वात्र कदत मिरश्रक। আর বডবৌদি, তিনি বঙদার চেয়েও ভালমামুষ ছিলেন। বড়দা যদি ঠাটা করে বলত-সরকারের তুকুম হয়েছে আৰু থেকে লোকেদের মাথ। দিয়ে হাঁটতে হবে. বড়বৌদি বল ত —এ রকম হুকুম কেন•হ'ল বল দিকিন ?

এই বকম চলতে চলতে এক দিন সোমনাথ আপিস থেকে জব নিয়ে বাড়ী ফি:ল। প্রথম কয়েকদিন তালে-গোলেই কেটে গেল, তারপর জব এক দিন বেশি হতেই বছদা একজন ডাক্তার বন্ধুকে ডেকে আনল। ডাক্তার রোগী দেখে বললেন—জবটা বাঁকা বলে মনে হচ্ছে, কোনও বিশেষজ্ঞকে ডাকা দরকার।

বিশেষজ্ঞকে ভাকতে হলেই টাকার দরকার। বড়দা কিছুতেই ভাকবে না। শেষকালে আমাদের জেদ ও বৌদির কালাকাটিতে ভাজার ভাকতে হ'ল, আর সেই সোমনাথের টাকায় হাত দিতেই হ'ল। ভাজার সব দেখে বললেন—বোগের সকে লড়বার শক্তি বোগীর নিজের নেই। ওবুধে যভদুর হয় আমবা ভা করব।

কিছ কোনও ওষুধেই কিছু হ'ল না। দশ-বার দিন বোগভোগ করে এক দিন শেবরাত্তে সোমা মারা গেল।

ভোব হবার আপেই আমবা সোমার দুশবদেহ নিয়ে বেরিয়ে গেলুম, এদিকে বড়দা করলে কি সেই শব্যায় শুয়ে চোধ বুঁজে পড়ে বইল। এই ক'দিন দিনরাজ সে ঠায় সোমনাথের শিয়রে বসে ছিল, নেহাত দরকারে এক-আধবার ওঠা ছাড়া সে কোথাও বায় নি, কোনও দিন ধেয়েছে, কোনও দিন জল পর্যন্ত ধায় নি। অনেক বলাকওয়ার পর বড়দা তথনকার মত উঠল বটে, কিন্তু ঘর ধোয়া-পোছা হয়ে পেলেই সে আবার গিয়ে ঠিক সেই

জায়গাটিতেই শুরে পড়ল বেখানে সোমার বিছানা ছিল।
বড়দা খায় না-দায় না দিন-বাত চোখ বুঁজে পড়ে বইলু।
ওষ্ধ কিংবা পথ্য দিলে থু করে ফেলে দেয়। একেই রোগে
তার শরীর আগে থেকেই জীর্ণ হয়ে পড়েছিল এখন এই
অত্যাচারে মাদখানেক বেতে না বেতেই সে হয়ে গেল
দারা। বড়দা মারা খাবার পর বৌদি বোধ হয় মাদভিনেক
ছিল, কিছু দেও ঐ রকম অত্যাচার করেই মারা গেল।
একটি বছরের মধ্যে সব ফরসা।—

এই অবধি বলে লোকনাথ চুপ করলে। মুধ তুলে দেশলুম ভার ছু'চোধ দিয়ে জল পড়ছে টপ্টপ্ করে— আলাদা হয়ে গেলেও বড়দাকে তারা স্বাই থুব ভালবাস্ত।

আমি বদে বদে ভাবতে লাগলুম বিশ্বনাথের কথা। তাকে আমি বভটা জানতুম সেই বার-তের বছর বয়দ থেকে আরম্ভ করে আর প্রায় পঞ্চাশ বছর বয়স অবধি-জীবনের কোনও ধানটাই লোকনাথ-বর্ণিত তার শেষ-জীবনের সঙ্গে মেলে না। সে ছিল উদার অপার সাগরের মত। লোকের একট্রপানি হাসিমুধ দেধবার জন্যে সে স্ব ত্যাগ কংতে পারত। মনে প্রতে লাগল, আমাদের ছেলেবেলার দাবাবডে খেলবার কথা—ছামরা তিন বার করে চাল ফেরত নিতুম, কিন্ধ বিখনাথ একবারও চাল ফেরত নিতে গেলে আমরা এমন গোলমাল লাগাতুম বে. সে হেসে বলত—আচ্ছা বাবা, আচ্ছা—আমি চাল ফেরত त्वि ना. এই दिर्श पिकि—। वश्त वाजाव नत्त्र जांव अहे ঔদার্য বাড়তে বাড়তে একেবারে অপরাধের সীমায় গিয়ে পৌচেছিল। এখন্য কডবার তাকে কড তিরস্কার করেছি. কিছ সবট সে হেসে উড়িয়ে দিয়ে বলেছে—আরে যেতে দে, কি বলিস। মনে পড়তে লাগল কি সমারোচের স<del>ক্ষ</del>ে এই সংসারে সে এগিয়ে চলেছিল আর কি বিশ্রী ভাবে সে বিদায় নিলে। সমস্ত জীবন ধরে সে নিজেকে বিলিয়েই দিয়ে এসেছিল। বে যা চায়, তার সাধ্যে বডটুকু কুলোয় সে কখনও কাক্ষকে বঞ্চিত করে নি। এই বিরাট ত্যাগের মধ্যে কোৰায় কেমন কবে এক বিন্দু অভিমান লুকিয়েছিল

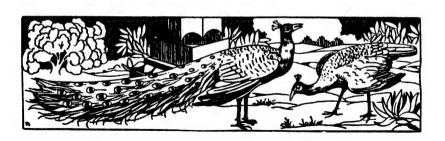
একটি ঘটনার আঘাতে তা এমন ভাবে আত্মপ্রকাশ করে প্রিয়জনদের মৃত্যুর কারণ হ'ল এবং নিজেও এক রকম আত্মহত্যা করলে!

নানা চিস্তা ও প্রিয়-বিয়োগব্যথায় আত্মহারা হয়ে আছি এমন সময় লোকনাথ বললে—দাদা, অনেক দিন বাদে আমাদের বাড়ীতে এসেছেন, বুঝতে পারছি আর বোধ হয়, কথনও আসার স্থবিধাও হবে ন:—বস্থন একটু চা থেয়ে যাবেন।

লোকনাথ বাড়ীর মধ্যে চলে গেল। আমি বলে ভাবতে লাগলুম বিশুর কথা, আমাদের ছেলেবেলার কথা

—মাস্থবের অভ্ত জটিল জীবনের কথা। ভাবছিলুম মাস্থব
কি ঘটনাপ্রবাহকে কথনও নিয়ন্ত্রিত করতে পারবে না ?
তা যদি না পারে তা হলে ঘটনার আঘাত থেকে আত্মরক্ষার উপায় তাকে আবিষ্কার করতেই হবে। একথা
কথনই সভ্য নয় যে, যে মহাশক্তি অভি নগণ্য কীটাস্থকীটকে বিচিত্র বিবর্তনের মধ্য দিয়ে শ্রেষ্ঠ জীব মন্থয়ে
রূপান্তরিত করেছেন তিনিই আবার তাকে এই স্থ-ছংখ
শোক-তাপ লজ্জা-ভয় অভিমান-ইর্ষার পুটপাকের মধ্যে
ভেডে দিয়ে মজা দেখছেন ?

লোকনাথের ওখান থেকে চা খেয়ে যখন বাইবে বেরোলুম তখন সন্ধা। হয়ে গিয়েছে। সন্ধা। ও য়াকে আউটের সঙ্গে শীতের ধোঁয়া মিলে বাইবে যে অন্ধনার জমাট হয়েছিল তারই ভেতর দিয়ে এক রকম হাড়েছে হাডড়ে বাড়ীর দিকে অগ্রসর হতে লাগলুম। একেই কয় শরীর ঠেলে চলতে কট হয়, তার ওপরে অপ্রত্যাশিতভাবে বিশুর মৃত্যুসংবাদ ভনে মনের ওপরেও একটা বিরাট ভার চেপে বসেছিল। কখনও দাঁড়িয়ে হাপাই, কখনও ধীরে ধীরে চলি। এরই মধ্যে একবার যেন মনে হ'ল সেই জমাট অন্ধনার ঠেলে বিশু আমার পাশে দাঁড়াল। আমি অভিভৃতের মত তার দিকে হাত বাড়ালুম কিছ ঘনাছকারে সেই অশরীরী অহুভৃতির কোনও শরীরী ত্পর্শ মিল্ল না।



## জনশিকা

### শ্রীহরিহর শেঠ

আমার এখানে আলোচনার বিষয় জনশিকা। জনশিকা ৰলিতে কি বঝায়, তাহার আবশুকতা, প্রদারের সহজ ও সম্ভবপর উপায় এবং ভাচার কার্যাকরী পদ্ধা নিরূপণ আবশ্যক। বিশ্ববিদ্যালয়ের মাধ্যমে যে শিক্ষা দেওরা হয় সে সম্পর্কে দেশের অসম্ভষ্টি প্রতিরোধের অভিলায়ই হউক আর বৈদেশিক বাজশক্তির স্বার্থ-প্রণোদিত্তই হউক তাহার সংস্থার ও উৎকর্ষসাধনের অন্তঃসারশুক্ত একটা প্রয়াস মধ্যে মধ্যে পরিলক্ষিত হইত। তাহা সরকার-নির্দ্ধারিত এক একটা কমিশনের আকাবেট দেখা যায়। কমিশন স্থাড্লার কমিশন প্রভৃতি তাহারই উদাহরণ। বিশ্ববিদ্যালয়ের সৃষ্টির পর শতাক্ষীর একপাদ না যাইডেই তদানীস্তন শিক্ষিত সমাজের অসন্তঃ ইইতে উদ্বত चात्मानत्त्र हार्ष नर्ड दिश्यत् भामनकाल जाद উইলিয়ম তাণ্টাবের অধিনায়কতে সর্বরপথম একটি শিক্ষা কমিশন নিযুক্ত হয়। তদবধি এতাবৎকাল মধ্যে মধ্যে শিকা-বিষয়ক সংস্কাবের একটা বাহ্যিক চেষ্টা দেখা গেলেও আমানের ঠিক উপযোগী শিক্ষা ও তাহার প্রসার হয় নাই। ইহার কারণ স্থম্পন্ত, কর্ত্তার ইচ্ছায় কর্ম। याँशाबा यथन म्हान्य मानिक भारकन, काँशाम्ब अर्याक्रान, जाँदारमय मुष्टिक्नो नहेबारे वादा किंद्र कविवाद करें। द्या ভাহা ডাঁহাদের কার্যাসিদ্ধির সহায়ক হইলেও, ডাঁহারা যদি বিশাতীয় হন তবে তাঁহাদের প্রবর্ত্তিত শিক্ষায় জাতীয় চরিত্রের উন্নতি, জাতীয়তার বিকাশ বা উদ্বোধন তদ্যুরা হয়ই না বরং অনেক সময় বিপরীতই হয়।

সংসার সমাজ ও রাষ্ট্র মধ্যে বাহা কিছু প্রতিষ্ঠা বা প্রবর্ত্তিকরা বায়, তাহার মৃলে এক বা একাধিক উদ্দেশ্য নিহিত থাকেই। এতাবং আমাদের যে শিক্ষা চলিয়াছিল এবং বাহার ধারা এখনও অব্যাহত রহিয়াছে, তাহা প্রবর্ত্তনের প্রথম কাল হইতে তাহার মৃলে কি উদ্দেশ্য ছিল ? তাহা কি আমাদের জন্য কোন শুভ উদ্দেশ্য লইয়া আরম্ভ বা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল ? না তদ্বারা শিশু-হৃদয়ের বা জনগণের ক্ষপ্ত মানসিক শক্তির অভিব্যক্তিতে সাহায়্ম করিবার কোন প্রয়াস ছিল ? শিক্ষার মৌলিক উদ্দেশ্য—মহ্যয়ত্বের মর্ব্যাদায় সমুন্নত করিয়া মাহুযের কর্ত্তব্য পালন হারা জনগণকে নিজ নিজ সমাজ ও দেশের কল্যাণে উদ্বৃদ্ধ করা। শাসকর্ব্য সে উদ্দেশ্য লইয়া আমাদের স্থার্থের দিকে না চাহিয়া, তাহাদের রাজ্য কি করিয়া ক্ষপ্রতিষ্ঠিত

হয় ও স্থায়িত্বলাভ কবিতে পাবে, নিজেদের পণ্য এদেশে চালাইয়া কি উপায়ে তাঁহাদের দেশ সমৃদ্ধ হইতে পাবে, মাত্র এই সকল উদ্দেশ্যই তাঁহাদের ছিল।

লর্ড কার্জ্জনের সময় বঙ্গভঙ্গকে স্ত্র করিয়া যে বিরাট আন্দোলনের স্পষ্ট হয়, ভাহা হইতে রাজা-প্রকার স্বার্থের পার্থক্য স্পষ্ট ফুটিয়া উঠে। প্রকারাস্তবে যদিও আমাদের মোহ ঘুচিয়া পথের সন্ধান আনিয়া দেয়, ভাহা হইলেও বৈদেশিক স্বার্থমূলক দীর্ঘ শাসনের ফলে আমাদের ষে আনিষ্ট সাধিত হইয়াছে। ভাহা আমাদের অন্থিমজ্জার সহিত যেন মিশ্রিত হইয়া গিয়াছে। আমাদের দেশ জয় করিয়া আমাদের যতটা না পদানত করিতে পারিয়াছিলেন ভাহাদের প্রবৃত্তিত শিক্ষার প্রভাবে আমাদের মনকে জয় করিয়া মানসিক সহজাতবৃত্তিসমূহকে একেবারে পঙ্গু করিয়া ফেলিয়াছিলেন। ভাই আজ্ব দেশ স্বাধীন হওয়া সত্ত্বেও আমরা সে প্রভাব হইতে মুক্ত হইতে পারিভেছি না।

আমাদের স্থশিকা দান করা, স্বাধীন মনোর্ডিড উন্মেরের উদ্দেশ্য ত তাহাদের ছিলই না, শিক্ষার প্রসারও তাঁহাদের উদ্দেশ্য ছিল না বরং যাহা ছিল তাহা শিক্ষার সক্ষোচদাধন করা। ইংরেজদের ভারতে দামাজ্য প্রতিষ্ঠার প্রথম আমলে দরকারেরই প্রচেষ্টায় এডাম সাহেবের বারা দেশীয় শিক্ষার যে বিবরণী প্রস্তুত হইয়াছিল তাহা হইডে জানা যায়, তথন এক বাংলাদেশেই প্রায় এক লক্ষ প্রাথমিক শিক্ষার কেন্দ্র ছিল। দরকারের হন্তক্ষেপের ফলে তাহা হাসপ্রাপ্ত হইয়া ক্রমে প্রায় তাহার শতভাগের এক ভাগে দাড়াইয়াছিল। শিক্ষা-ব্যবস্থায় সেযুগের পাঠ্যপৃত্তকাদিতে জাতীয়তার উদ্বোধক বিশেষ কিছু যাহাতে স্থান না পায় সে বিষয়ে যতটা সম্ভব সাবধানতা অবলহিত হইত।

আজ দেশ স্বাধীন হইয়াছে, দেশের ছেলেমেয়েদের
শিক্ষার আদর্শ ও কর্মপথা আমাদের জাতীয়তার সহিত
ধাপ থাওয়াইয়া নৈতিক বনিয়াদের উপর স্বাধীন দৃষ্টিভঙ্গীতে
বাহা উপযোগী, সংস্কার ধারা তাথাকে সম্ভব করিয়া
তৃলিতে হইবে। রাষ্ট্র-পরিচালকগণ যে সে বিষয়ে অবহিত
আছেন, অধিকার হন্তগত হওয়ার পরই বিশ্ববিদ্যাল্যের
রাধারুষ্ণ কমিশন গঠন তাথার একটি উদাহরণ। সম্প্রতি
বিশ্বিদ্যালয় হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া শিক্ষার উন্নতিকল্পে যে
মাধ্যমিক শিক্ষাবোর্ড স্বষ্টি হইয়াছে, ইহা এই কমিশনের

মতেই হইয়াছে। ইহা হইতে কতটা লাভের সম্ভাবনা বা ইহা কতটা কাজে আসিবে তাহা একণে বলা যায় না, অথবা কোন কতি হইবে কিনা সে আলোচনার এখানে আৰক্তক নাই। তবে যদি এই ব্যয়-বাহল্য করিয়া আশাহ্মরূপ ফললাভ নাও হয়—ইহার মধ্যে উদ্দেশ্ত সম্বন্ধে সন্দেহ করিবার যথন অবকাশ নাই, তথন দোষ-ক্রটি যদিই থাকে পুন:সংস্থারে কাম্যকল পাওয়া সম্ভব ইহা মনে করিয়া নিশ্চিত থাকা যাইতে পারে। কিছু ভাবিবার কথা, এই ব্যবস্থার মধ্যে বা উক্ত কমিশনে ব্যাপক জনশিকার সম্বন্ধে যদি তেমন কিছু স্থাপাই নির্দেশ না থাকে তবে তাহার জন্য কি করা যাইতে পারে?

শুনা বায়, ইউবোপ আমেরিকায় প্রাপ্তবয়স্কদের মধ্যে নিবক্ষর বলিতে প্রায় কেহ নাই, সেম্বলে দশ বৎসর পূর্বেও সমগ্র ভারতে নিরক্ষরের সংখ্যা ছিল শতকরা প্রায় ১০ আর বাংলায় ছিল প্রায় ৭৯। ভারতের প্রাক-ঐতিহাসিক যুগের কথ। বলিতেছি না। ভারতীয় সংস্কৃতির প্রথম বৈদিক যুগের কথাও ছাড়িয়া দিই। বহু পরবন্তী যুগে খ্রাম, কামোক হইতে গান্ধার পধ্যস্ত বিশাল ভারতের বিরাট সংস্কৃতির कथा करम ज़निएक रिमाल बामारिक नामना, अन्छभूबी, ভক্ষীলার বিশ্ববিদ্যালয়ের শ্বতি আজিও প্রত্যক্ষরণে দেখা ষায়। এক নালনা বিশ্ববিদ্যালয়ের সজ্বারামসমূহে কম-বেশী দশ সহস্র ছাত্র ও তাহাদের অধ্যাপকগণ অবস্থান করিয়া বিদ্যাদান ও গ্রহণ করিছেন। তথনকার দিনের এই বিরাটত্বের কল্পনা কি স্বপ্লের মতই নহে ? প্রাচীন ভারতে জ্ঞান আহরণ ও বিভরণের উপর যে গুরুত্ব আরোপিত হইত তাহা এখন আমাদের শুধু কল্পনারই বস্তু। সংস্কৃত একটি প্লোক আছে-

> বো দছাৎ জ্ঞানমজ্ঞানম্ কুৰ্বাাৎ বা ধৰ্মদৰ্শনম্, স কুৎস্নাং পৃথিবীং দছাৎ, তেন তুলাং ন তদ্ভবে।

প্রাকালে আমাদের দেশের এই জ্ঞানাহরণ-প্রবৃত্তি
কতকটা সহজাতই ছিল। আহার নিদ্রার ন্যায় ইহা
মাছ্যের অবশুকরণীয়ের মধ্যেই পরিগণিত হইত।
স্তরাং সেজন্য তথন অন্তরের দরদ ছিল। পাশ্চান্ত্য দেশসমূহ অদম্য চেষ্টায় নিরক্ষরতা দ্র করিয়া এক্ষণে প্রাথমিক
ও মাধ্যমিক শিক্ষার সহিত উচ্চশিক্ষা প্রসার বিষয়েও
যথেষ্ট মনোবোগী হইয়াছে। ব্যক্তিগত জীবনের উৎকর্ষ
সাধনই ছাত্র-ছাত্রীদের ব্যক্তিগত প্রচেটার মূল কার্যইইলেও, বাট্রনায়কগণ বিশাস করেন, উচ্চশিক্ষার প্রভাবে
শক্তি-ক্ষুরিত হইয়া পরিণামে তাহা হইতে দেশের কল্যাণই

সাধিত হয়। সেইজন্যই তাঁহারা শিক্ষার পথ সর্বপ্রকার প্রতিবন্ধকমুক্ত করিবার জন্য এত আগ্রহশীল।

সেধানকার রাষ্ট্রের উন্নতি বিধানের জন্য শিক্ষার উন্নতি ও প্রাসার বিষয়ে যে প্রয়াস তাহা আমাদের এই শিশু গণভান্ত্রিক বাষ্ট্রকে স্থাইত করিয়া তোলার জন্য আবশ্রক। বলিতে গেলে ইহাই এখন এখানকার অন্যতম মৃখ্য উদ্বেশ্ব হওয়া উচিত। রাষ্ট্রকে গড়িবে সরকার, সেই সরকারকে গড়িবার ভার :যখন জনসাধারণের উপর তখন সেই জনসাধারণ যদি নিজেদের সত্যকার শুভাশুভ বোধ-বিবর্জ্জিত থাকিয়া স্থার্থজ্ঞান বিবহিত হন, তাহা হইলে রাষ্ট্র ও সমাজ-জীবনের কাম্য স্থখ-শাস্তি উপভোগ করা সম্ভবপর হইতে পারে না। এজন্ত জনগণকে শিক্ষিত করিয়া তোলাই প্রথম ও প্রধান কার্য্য, কারণ জনশিক্ষাই গণতত্ত্বর প্রাণ। বলা বাহল্য, এ কার্য্য থাত্ত্বর হইলেও এই রাষ্ট্রকে ব্যাহার যেমন শক্তি সে বিষয় সর্ব্বতোভাবে সহযোগিতা করা নাগরিকমাত্তেরই কর্ত্ব্য।

এক্ষণে কথা হইতেছে, এই ব্যাপক শিক্ষার রূপ কি এবং তাহার প্রসার সহজে কি উপায়ে হইতে পাবে ভাহা নির্ণয় করা আবশ্রক। বিশেষজ্ঞগণই সে ভার লইতে পাবেন। অনেকেই মনে করেন, এই উভয় বিষয়েই পাশ্চান্তোর অফুকরণ, আমাদের ঠিক উপযোগী হইবে না। নিরক্ষরতা দূর করিবার জন্ত যথাসন্তব অভিযান আরম্ভ করা আবশ্রক, কিন্তু অধিকাংশ শিক্ষাধীর সক্ষেতাহা বিনা ব্যয়ে বা স্বল্লবায়সাপেক হওয়া একান্ত দরকার। এক্স আড়ম্বনপূর্ণ অট্টালিকা অথবা ট্রেনিং-প্রাপ্ত গ্রাজ্যেট না হইলে বে হইবে না এমন কোন কথা নাই। প্রশন্ত চালাঘ্র, অনেক সময় বৃক্তেল এবং শিক্ষণ-শিক্ষাপ্রাপ্ত অথবা স্থশিক্ষক হইলেই হইতে পারে।

উচ্চ ইংরেজী স্থল বা কলেজে বাহারা শিক্ষালাভ করিতেছে এবং করিতে সক্ষম ভাহাদের শিক্ষা বা শিক্ষাব্যবহার ক্রটি-বিচ্যুতি লইয়া সমালোচনা করা এখানে আমাদের উদ্দেশ্য নহে। জনগণের শিক্ষাই এখানে আমাদের আলোচ্য বিষয়। সমাজবদ্ধ হইয়া স্থাভাবে জীবনধারণ করিবায় জন্য নৈতিক বনিয়াদকে ভিত্তি করিয়া বে সব বিষয়ে জ্ঞানসম্পন্ন হওয়ার দরকার স্থলতঃ তাহা লাভ করার নামই শিক্ষা। আক্ষরিক বিদ্যার ঘারা তাহা লাভ হওয়া অনেকাংশে সহজ্ব হয় সত্য, কিন্তু সম্পূর্ণ নিরক্ষর থাকিয়াও বছপ্রকারে শিক্ষালাভ করা যায়। এদেশে সে উদাহরণের অভাব নাই।

পুর্বেই উক্ত হইয়াছে, ভারতের সংস্কৃতির ইতিহাসে বৈদিক যুগের স্থান ছিল বহু উর্চ্চে, কিছু গুলা বায় ভাহা ছিল শ্রুতি ও শ্বতির যুগ। পুৰিপত্র বা গ্রন্থাদির প্রচলন তথন কমই ছিল। তখনকার লোক বে শিক্ষিত ছিলেন নাএকখা বলাচলেন।।

প্রাচীন যুগের কথা ছাডিয়া দিই, বেশী দিন নয়, অর্জ-শতাৰী পূৰ্বেও আমরাই যৌবনকালে দেখিয়াছি কবির গান, কথকতা, যাত্রা, পাঁচালী প্রভৃতি সচরাচর অমুষ্ঠিত হইত এবং লোকে তাহাতে যথেষ্ট আরুট হইত। তদারা মুমুমুজের চরম ধর্ম যথা ত্যাগ্র সতাপালন, দান, সতীধর্ম-পালন, কর্ত্তব্যপালন প্রভৃতির জলস্ত উদাহরণ রাজা হরিশ-हक्क, वाक्रव्यंवा, कर्व, मधीिह, बायहक्क, भीका, रेमवाा, निवि, নচিকেতা প্রভৃতির মধ্যে ফুটিয়া উঠিয়া আনন্দ উপভোগের সহিত তাহা অতি সহজে অস্তরমধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া যাইত। আবে অনেকেই অশেষ প্রদাব সহিত তোহা আজীবন স্থাবণ রাখিতেন। তাহা হইতে কত সহতে অলক্ষিতে নৈতিক চবিত্তকে সবল কবিয়া মহুধাজলাভ ভাবা সমগ্র আভীয় চবিত্রের মান উন্নত করিত তাহা চিস্তার অবদরও এখনকার নগরসভাতাবিকাসী শিক্ষিতাভিয়ানীদের নাই। বাহিবের সৌন্দর্যা ও আডম্ববের সহিত যদি ভিতরের সঙ্গতি না থাকে তবে তাহার পরিণাম কথনও শুভ হইতে পারে a1 1

যাত্রা, কথকতা প্রভৃতির কথা যাহা উক্ত হইল সে সবের উদ্দেশ্যই ছিল আনন্দদানের সহিত লোকশিক্ষা প্রচার। দাধাবনের নৈতিক জীবনকে গড়িয়া ভোলাই পালা-রচিয়তাদের প্রধান উদ্দেশ্য ছিল। তাহাকেই লোক-দাহিত্য বলিত। স্বশ্ন বায়ে সহজে সে উদ্দেশ্য ষেমন সম্বর্ম ইত, অধুনা শিক্ষাকেন্দ্রে ভদত্তরপ কোন কিছু নাছে কিনা সন্দেহ। আরও এক কথা, এখনকার স্থূল সলেন্দ্রে দীর্ঘমেয়াদী শিক্ষা শিক্ষা-মন্দিরের সংস্রবচ্যুতির ছেল সঙ্গে বিনা চর্চ্চার বেমন লুপ্ত হইয়া যায়, তখন চাহা হইতে পারিত না। তাহা একেবারে হলয়-মনে ক্ষ্র্ল হইয়া উদ্ভর-জীবনে কার্যাকরী হইত। এখন উচ্চার্মাপ্র ব্যক্তিগণ ভাহাদের শিক্ষাপ্রাপ্ত বিষয়গুলিতে মত স্বপ্ত পান্তিত্য লাভ করিয়া থাকেন, কিছু পরবর্ত্তী গলে তাহার চর্চ্চানা য়াধিলে তাহা আর বিশেষ কোন শলে লাগে না।

যাহা জীবনে পূর্ণভাবে কাজে লাগাইতে পারা যায় না,
মন শিক্ষার মোহ সকলের পক্ষে পোডন হইতে পারে
। মহুষ্য-জীবনে জ্ঞানলাডের সহিত বদি বিখভালয়ের উচ্চশিক্ষা অর্জন করিয়া মানব-কল্যাণের
হায়ক হইতে পারা বায়, তদপেক্ষা মাহুবের কাম্য আর

ইইতে পারে ৪ কিছু নানা কারণে কলেকের শিক্ষালাভ

উপস্থিত অবস্থায় কমসংখ্যক যুবক যুবতীর পক্ষেই বৈছব।
আমার বক্তব্য, মানবভার সাধনা ভূলিয়া শুধু বিশ্ববিভালয়ের ডিগ্রীলাভ করিয়া মোহে ভূলিয়া থাকিলে এ
জাতির ভবিশ্বং কখনও সমুজ্জল হইতে পারে না। আমাদের
যুবসম্প্রদায়কে মহুযাজের সহিত জীবন-সংগ্রামের উপবোগী
করিয়া গড়িয়া ভূলিতে হইবে।

জ্ঞাতির কথা ভাবিতে হইলে একথা ভূলিয়া থাকিলে চলিবে নাবে, শুধু শহর লইয়াই জাতি নহে। পদ্ধীসমাজকে অবহেলা বহুপ্রকারে আমাদের জ্ঞাতীয় জীবনের অবনতির মূল। শহরের উচ্চশিক্ষায় শিক্ষিত ব্যক্তিগণ বহুক্ষেত্রেই শিক্ষার অহমিকায় সাধারণ অশিক্ষিত পদ্ধীবাসীদের স্থ-তঃখে উদাসীন।

মহাত্মাজী, ববীক্রনাথ হইতে আরম্ভ করিয়া দেশের मकल ठिकामील मनीवीत कथा-अली-ममारकत ব্যতিবেকে, তথাকার অধিবাদীদের মাখ্যের মত বাঁচিবার জন্ম সামাজিক প্রয়োজন মিটাইবার, স্বয়োগ করিয়া দিতে না পারিলে পাশ্চান্ত্য সভ্য দেশসমূহের স্থায় তথাকথিত গণ-তন্ত্রবাদ শুধু ধনিক ও কতিপয় শিক্ষিতের মধ্যেই নিবন্ধ থাকিবে। প্রাক-ব্রিটিশ যুগে বধন নগরসভাতা এতটা विञ्चि जिना करत नाहे, बथन मित्रम ७ धनिएकत मर्था अर्थ-নৈতিক বৈষম্য এত প্রকট হইয়া উঠে নাই, তথন সাধারণ পল্লীর অবস্থা এখনকার অপেক। অনেক উন্নত চিল। অতি প্রাচীনকাল হইতেই গ্রামকে কেন্দ্র করিয়া আমাদের জাতীয় সংস্কৃতি, সভ্যতা যাহ। কিছু গড়িয়া উঠিয়াছিল। এখনও সেই গ্রামমুখী হওয়া ভিন্ন আমাদের ভোয়: নাই। কিন্তু তাহা যদি কালপ্রভাবে হয় ত আবার কোন দিন হইতে পাবে: নচেৎ নাগরিক স্থপস্থবিধা ছাড়িয়া কয়-জন বাইতে চাহিবেন জানি না। স্বতরাং এখন পল্লীর সমৃদ্ধির জন্ম চেষ্টিত হইতে হইবে। আবশ্রক সরকারী প্রচেষ্টায় জনগণকে শিক্ষিত করিয়া ভোলা।

জনশিকা ব্যাপক করিতে হইলে দেশ কালকে একেবারে উপেকা করিয়া সকল বিষয়ে সেই প্রাচান যুগে ফিরিয়া গিয়া শুধু সেই সেকালের গ্রামীণ শিক্ষার আশ্রম লইলেই চলিবে না। একণে অন্তভঃ একটা নির্দিষ্ট বয়স অবধি কিঞ্চিৎ আক্ষরিক বিদ্যালাভ করা সকল ছেলেন্মেয়ের একান্ত দরকার। সেজনা প্রথমে একটি ব্যাপক পরিকল্পনা আবশ্রক এবং ভাহা অনুসরণ করিয়া আধুনিক প্রণালীতে পাঠ্য পুশুকাদি হইতে শিক্ষার সহিত আধুনিক ক্ষিসমত কথকতা প্রভৃতির ব্যবস্থা থাকিলে অনেক উপকার হয়। এই বৈজ্ঞানিক যুগে বথন রেভিও সাহায়ে রঙ্কন,

সীবন. সঙ্গীত এমন কি ভাষাশিক্ষার ব্যবস্থা পর্যান্ত হইতেছে তথন ম্যান্দিক লঠন, বায়োক্ষোপ বিশেষ করিয়া সিনেমার সহায়তায় যথেই কাজ পাওয়া যাইতে পারে। আবশুক অহরণ ফিল্ম প্রস্তুত করাইয়া, শুধু পুরাণ উপপুরাণাদি ইইতে আদর্শ বিষয়গুলি দেখান বা শুনানই নহে, ভদ্মারা বিদ্যালয় পাঠ্য ইতিহাস, ভূগোল, বিজ্ঞানাদি বিষয়েরও অনেক কিছু শিক্ষা দেওয়া যাইতে পারে। বলা বাছল্য, যথেই ব্যয়সাধ্য হইলেও শিক্ষাখীদের সংখ্যার অহুপাতে গ্রামাঞ্চলে বথাসম্ভব সর্বত্ত অবৈত্তিনক প্রাথমিক শিক্ষাপ্রতিষ্ঠান ও নৈশ বিদ্যালয়সমূহ স্থাপন করিয়া ও তাহাকে চিন্তাকর্ষক করিয়া বাধ্যতামূলক শিক্ষাব্যবস্থা প্রবর্ত্তন করা আবশ্রক করিয়া বাধ্যতামূলক শিক্ষাব্যবস্থা প্রবর্ত্তন করা আবশ্রক। এ সবের জন্য চাই সরকার ও জনসাধারণের শুভ্রেজি-প্রণোদিত আস্থারিক প্রচেষ্টা।

কেন্দ্রীয় সরকারের বছ ব্যয়সাধ্য পঞ্চবার্যিকী পরিকল্পনার কথা সংবাদপত্রে আলোচিত হইলা থাকে, তাহার প্রপ্তক্তরপ কি জানি না। মনে হয়, তাহা কার্য্যে পরিণত হইলে শিক্ষা বিষয়েও বছ গলদ নিরসন হইলা প্রভৃত উল্লভি সাধিত হইবে। বর্ত্তমানে ছাত্র-ছাত্রীদের নৈতিক বিকাশের সহায়তা হওয়া দূরে থাক, শরীর ও মনের উংকর্যসাধনের জন্য যে সব শিক্ষার আবশুক ভাহাও ঠিকমত লাভ করা সম্ভব হয় না, হয়ত সেসব বিষয় সহজ্পাধ্য হইতে পারিবে। উষর জমিকে উর্ব্যর করিবার স্থযোগ দিবার জন্য প্রাথমিক কাক্ষ হিসাবে যেমন হীরাকুগু, দামোদর, ময়রাকী

প্রভৃতি পরিকল্পনা রূপায়ণে কোটি কোটি টাকা ব্যয় করিছে গ্রন্থেট কুতসকল হইয়া কাজে লাগিয়াছেন সেইরুপ দীর্ঘ অবসাদের ফলে যে জনসাধারণের হৃদর আলোকহীঃ হইয়া বহিয়াছে, ভাহাদের শিক্ষাগ্রহণের আয়খকভা উপলিক করাইবার জন্যও প্রথম বিরাট পরিকল্পনার আবশ্রক ভাহার পর শিক্ষারূপ আবাদের জন্য কর্ষণ, বপন, সেচনেং কথা।

সমগ্র ভারতের কথা এখানে না-ই ধরিলাম। বাংলার পল্লীসমূহে, বেগানে শতকরা ৭৮ জন বাস করে—তথাকার অবস্থা লক্ষ্য করিয়াই বলিতেছি।

শিক্ষা বিষয়ে যাঁহাদের চিন্তা ও প্রচেটা উল্লেখবাগ্য তাঁহাদের এদিকে অবহিত হওয়াই এখন আবশ্যক। অল্ল বিশ্বের নিমিত্ত বেমন দেশব্যাপী আন্দোলন স্বতঃই স্বষ্ট হই মাছে এব্দন্য সেইরপ সন্তাবনা আপাততঃ দেখা বাইতেছে না। বাষ্ট্রের সঙ্গে শিক্ষার সংস্ক অবিচ্ছেদ্য। গ্রন্থেনেটের এ বিষয়ে আদর্শ স্থিব করিয়া কর্মপন্থা গ্রহণ করা আছে প্রয়োজন। তবে ইহাও স্বীকার্য্য, তাঁহাদের সদিক্তা প্রস্কলের সহিত বেসরকারী উদ্যম এবং সহবোগিতাঃ প্রয়োজনীয়তা আছে।\*

 হগলী ঘুটিয়াবালার খৃতি-মন্দিরের (দি কুল অব্ ফিলিকাা কালচার) শারদোৎসব ও জনশিকা বিভাগের উল্লেখন সভার সভাপতি অভিভাবণ। ১৩ই আধিন, ১৩৫৮।

### পদ্মা

### 🖻 হুর্গাদাস সরকার

পদার কল ? সাত্ত্যের কাঁবিজল। পদার বুকে করুণ হলাংহল।

এই প্ৰায় ছিল প্ৰের বন,
শথের ক্রে ছিল কি অভ্রণন।
আমরা স্বাই উচ্ছল প্রায়
নারেতে ভেসেছি স্কালে ও স্বায়।
প্রায় বুকে ভাসারেছি বান বই,
সেই প্র'র চিক্ত ভাহার কই ?

হাকা হাওয়ার কাঁপা পরার চেউ
নাখেনি এমন আছে ভো আনি না কেউ।
সেই চেউনে আৰু অভূত অভিনাপ;
পরার চেউ—পরার চেউ সাপ
হাবে জড়ার বুকেতে জড়ার এসে,
আজো কাঁদি তবু পরাকে ভালোবেলে।

পদাৰ কল ? মাছবের আঁথিকল। পদাকে পুর করুণ হলাংহল।

# क्छाक्मात्रिकात्र करत्रकिन

### अभारता हर्ष्ट्राभाराय

টিক সন্থাৰ আমৰা বিবেজৰ পৌহিলাৰ। সকালে ৰাৰাজ-বিবেজৰ এজপ্ৰেলে ৰাহ্না হাড়াহাহি; যাড়াহ গাড়ীতে ল্যান্য আহাৰ হইলেও সান হয় নাই। ভাৱ উপর ভিড়ও হিল ব্ৰেষ্ট্ৰ।

ভিদেশবের শেষ সপ্তাহ; ভবাপি গাড়ীতে গর্ম অসহ বোর হবল। একে সমুদ্রের তীরে শীত অমাট বাঁবিবার সময় পার মা; ভার উপর আমরা ক্রমণ: বিমুবরেধার নিক্টবর্তী হবৈতির। পথের দৃষ্ঠ মনোহর। পাহাডের থাকে থাকে লাজানো শম্ভকের, ভাষল বমানীর গগনচ্থী রুজরাজি, ছামে ছামে আয়, কদলী ও মারিকেলক্ঞ্ম-বীথি—সমন্তই চক্তু ভূটাইরা দের। পথে করেক্ট 'টাবেল' পঢ়িল। ইহার মধ্যে হবৈ-এক্ট বেশ বড়। উজল দিবালোক হবৈতে লহুসানিবিক অভ্যাবের কাল্প্রাস মন্তে আভ্যাতিক করিরা ভোলে।

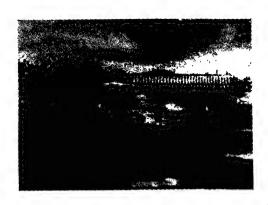


কভাকুষারিকার বিচিত্র অর্থ্যানর

কৃষ্ণৰ হইতে সমূতকে প্ৰায় সদী কৰিবা চলিবাহি।
কৰমও বন বৃক্পাচীৱের আভালে সমূত হারাইবা গিরাছে,
আবার ক্ৰমও নারিকেলকুঞ্জের কাঁকে ভাহার ভটরেবা
স্থানিই হইবা উটিবাছে।

জিবেলৰ টেশনট ছোট। কিছ ইহা জিবাহুর রাজ্যের রাজবানী। তাই রাজবানীর সমানরকার জভ টেশনটকে টানিরা টানিরা বড় করা হইবাছে। রাজিবাসের জভ রেল-কোম্পানীর বাজীনিবাস আছে। আহার তাড়া জনপ্রতি চল্লিপ ঘন্টার চারি টাকা। টেশন হইতে কিছুদ্বে বর্মপালা, ভাড়া কর। বিনাষ্ল্যে থাকিবার ব্যবহাও আছে, তবে 'হংবেষ্ছবিধ্যনাং' না হইরা সেধানে বাস করা ছবহ ব্যাপার।

নারাধিনের ভাশবর শরীর শীখন কলে ত্রির বুইল। কিন্তু নজে নকে অঠয়ারির আনা বাছিতে নাগিল। উচ্চর- ভারতের বাহুব দকিব-ভারতে আসিরা সর্বাণ ক্যাওঁ বইর্লা বাকে। তির প্রদেশের আহার্ব্য ভকবে বাহারা অপারগ, ভারা-দের পক্ষে বেশী বিন দকিব-ভারত ত্রবব করা কটকর। ভারেই কুবাকে আমনা বেশী প্রশ্রম বিই নাই।



"ৰাভভীৰ" স্নানের বাট ও চত্তর

স্কালে বৰৱ লইবা জানা গেল, 'ঠেট এলপ্ৰেন' বাস বেলা পৌনে ভিনটার সময় জিবেজন হাছিবা সভ্যা লাভে পাঁচটার ক্ডাকুমারিকার পৌহিবে। জিবেজন হইভে ক্ডাকুমারিকার দূরত্ব পঞ্চার বাইল; সিনেন্ট কংজিট বাবাল রাভা প্রার গুলিহীন। পরিবেশ্ধ বনোর্য।

শ্লিবেশ্রবের দর্শনীর বিশেষ কিছু নাই। সর্কতীরে স্তমদ্বের অভাষ। সর্বাগেকা ভাল লাসিল 'প্রমাতে'র মন্দির। ককিণ-ভারতীর বাঁচে প্রভরমির্মিত অভি বৃহৎ মন্দির। মন্দিরের কেবতা বিষ্ণু অমত প্রবেশ: সুষ্ঠি অভি বৃহৎ—কিন্ত মন্দিরের অভ্যন্তর ব্যারীতি অভ্যারমর। তেলের বাভি সে অভ্যার ব্য ক্রিতে পারে না। ঠাক্র ক্রিয়া সুষ্ঠির অবহান ব্রিতে হর। তথাপি সুষ্ঠিও পরিবেশ ভাল লাসিল।

ৰশিৱট সৰ্কাগৰাৱণের খত নিৰ্দ্ধিত হইলেও ইহা রাজ্জীয় বিদির। বিশিবে ত্রিবাছ্রের বহারাজা আনিরা পূজা করেন; ইহা বহুদিনের রীতি। হার্লেশে 'বেরনেট' ইভে নিপাহী বাজে। ইহা রাজ্জীয় প্রতাপের নিয়র্শন।

পুরুষবালীকে কটাবেশের উপরিভাগ হইতে বল উর্জ্জ কলিলা বন্ধিরে প্রবেশ কলিতে হব। ইহা বহু প্রচীন বীতি; ইহার কোন ব্যতিক্রম হইতে বেওলা হব না। সভ্যার আন্তির বৃত্ত কুলার। পুরোহিতের বল অপেকারত নির্দোভ; আন দক্ষিণারই সভাই থাকে। এথানে ক্ষিত্র হইবা প্রধান ক্ষিণার বীতি নাই। বুক্তব্যে সর্ভাৱ ক্ষিতে হয়।

সরকারী বাস-এর ব্যবহা তাল। ইহা সময়মত হাতে, অনিহমিত তাবে রাভার দীকার না, আর স্থানিম্নতি গতিতে চলে। ব্যবহার ব্যবহাও উত্তম, 'সিট্র' পূর্বায়ে বিভার্ত করা রার।



খাৰা বেকানকের বাবে উংগ্রাকত মক্ষান বৈলয়গল

জিবেজম রেল-টেশনের প্রাকণ হইতেই কভাকুষারিকার বাল হাকে। আভাই বণ্টার বাজা। ভারভবর্বের ককিণ প্রাভের শেষ সীবা দেখিবার কল প্রাণ চঞ্চ হইরা আছে। মনে মনে জন্মা-কল্পার কল নাই।

পথের চারিবিকৈ সবুজের শোভা-সভার। সভেক সবুজ বাদের কেত বাটর সহিত গলাগলি করিতেছে। পাশে ক্ষলীয়কের সারি আর ভার পাশে নারিকেলকুল্লের বন বিভার। এবিকে ওবিকে পাহাকের চুড়া দেবা বাইতেছে; কোনট শৈবাল ও শশ্ভামল, আবার কোনট ক্লম্ম ও বুলর। পথে করেকট বাজার পঢ়িল; ভাহাকের বব্যে সর্ক্রপ্রবাম 'মাগের করেল'। এবান হইতে মালাকের 'ট্রনেভেলি' জ্লোর সবর টনেভেলি শহরে বাইবার বাড়া আছে।

ক্ষমে বাস ক্ষাক্ষারিকার নিক্টবর্তী হইল। এবিকেওবিকে হই-একট বাজী। ভার পর ছোট ছোট লোকান—
চ্ছাই য়াভা; প্রার পোষ্ট আপিসের কাছাকাছি 'আসিরা
চ্ছাই শেষ হইবাছে। সেই চ্ছাইরের সীনার পৌছিরা বে
বুজ চোবে পড়িল ভাহা সভ্যই অনির্কাচনীর। সন্মুবে ভারতবহাসাগরের উত্তর কলোজ্যান, বাবে বকোপসাগরের আবর্ত।
আর সভ্য করিষা দেবিলে ক্ষিণে আরব সাগরের উভাল
ভয়দ। অবক্ত মহাসাগর, সাগর আর উপসাগরের সীমারেবা
কোবারও নাই—এক দর্শকের ব্বে বাগাইরা পড়িরাছে। পালেই
দেবী ক্লাক্ষারীর মন্দির; ভারপর বিধ্যাভ স্নানের বাট—
নাভতীর্ব।

গরকারী বাদ সরকারী হোটেলের প্রাক্তে আসিরা

বানিল। আনাবের এবানেই বাজিবার কবা। কিছ আদিবার পুরের বর ঞ্চিক করা হয় বাই। হোটেলে সাবায়ণতঃ



কভাতুৰাৱিকাৰ আৱৰ সাগৱে অ্ৰ্যাভ

ভিক্ত বেশী হর না। কিন্ত এবন চুটর সময়। এবান-ওবান হইতে করেকট পরিবার চুট কাটাইবার বাভ কভাকুরারিকার আলিবা কুটরাছে। তবাপি ভাগ্যক্রবে একবানা বর কুটরা গেল। হোটেলের ব্যবস্থা ভাল। বিক্লীবাভি ও পাবা আছে—হোটেলের নিক্ষের ভারনাযোতে চলে। ভবে স্থানের কলের অভাব।

হোটেল হাড়াও এগানে একট সরকারী ভাকবাংলো আহে। আর আহে একট বেসরকারী হোটেল ও বর্গালা। বর্গালার বাত্রীর ভিড় ববেট।

ক্টাক্ষারিকা একট ছোট আমবিশেষ। আবে বাধার নাই—অভি ক্ত করেকট বোকান আছে। হপ বাইল চুরবর্তী 'নাগের করেল'-এ সমত হরকারী বিনিম পাওরা বার। কলের মধ্যে শ্রেট—সুমিষ্ট আনারন। বছপ্রকারের কলা বেবিভে পাওয়া বার, ভাহার মধ্যে সর্কাপেকা সুমৃত ব্যটকে অধান্য বলিয়া মনে হইল।

ক্তাক্ষাবিকার প্রাকৃতিক দুঙ্গৈবিচন্তা নরন বৃদ্ধ করে।
তিন দিক বেরিরা অগাধ অসরাশি। তীরে বাবে বারে
সমূরত নারিকেনক্ষ। তীর হইতে একটু দূরে সমূল্রের মধ্যে
উরতনির উপলবত। সুদূর দিক্চক্রবালে বেবের আভাল
হইতে প্রভাতে দিনবনির আত্মপ্রকাশ আর সভ্যার নিভরদ
সমূল্রকে তাহার আত্মবিলোপ; এই হর্ষ্যোদর ও হর্ষ্যাভ বে একবার দেবিরাহে সে আর তাহা তীবনে তুলিতে পারিবে
না। কিছ প্রকৃতির সদে একাল না হইতে পারিলে এই
সৌন্দর্য সমন্তাবে উপভোগ করা সভব নহে। এই অনির্ক্তচনীর সৌন্দর্যে বৃদ্ধ হইবা প্রীটেচতভবের এবানে তাবে স্বাহিত
হইরাহিলেন। বাত্তীর্বে অবগাহন করিবা হারী বিবেকানক
ভাগরবীরর উচ্চারণ করিবাহিলেন। সমূল্রককে মুইট স্বান
আভাবের উপলব্ধ উর্ভাবির বারীকীর নাম এবনও বৃহ্দ
করিবা রাবিরাহে। কভাক্ষারিকা হিন্দুর শ্রেষ্ঠ তীর্ণের অভজন। গরুরেরতীরে দেবী কভাক্ষারিকার মন্দির। হন্দিণাপথের অভাভ
মন্দিরের কুলনার এই মন্দির অপেকারুক হোট। প্রার
হাজার বংগর পূর্বে প্রভর-নির্দ্ধিত এই মন্দির প্রাবিদ্ধভাকর্বের মিদর্শন বহন করিবা রাধিবাহে। দেবীর মৃত্তি
কালো পাণরে নির্দ্ধিত। অপূর্বে ভাহার গৌন্দর্ব্য, সর্বেহেত
লাবণ্য বেন মৃত্তি ধরিবা রহিরাহে। প্রাবিদ্ধ-সভ্যভার ভার্মব্যশিল্পের হান বে কভ উচ্চে হিল ভাহা এই মৃত্তি বেধিলেই
বুবা বাব। দেবী কভাক্রারীর ক্রমান্টিও চবংকার।

দেবী কভাকুষারী ছিলেন স্বর্গের অপরা। দেবাদিদেব নহাদেবকে পতিত্বে বরণ করিতে তাঁহার বাসনা হর। ভিনি নহাদেবকে তাঁহার আকাজ্ঞা নিবেদন করেন। কিছ নহাদেব তাঁহাকে প্রহণ করিতে অবীকৃত হন। ভিনি বলেন বে, বরা-দেবের পত্নী হইতে হইলে যে শারীরিক ও নাদনিক ঐথব্য বাকা উচিত ভাহা তাঁহার নাই। সেভত তপভার দ্রকার।



পাওরা বার। সহস্র বংসর পূর্বে এই দেবালরে টিক বে

প্রকারে দেবীর পূজা হইড এবনও পূজা সেইরপেই লয়।

প্ৰভাৱ বিৰি বা প্ৰভিত্ন কোনও পরিবর্তন হয় নাই। অবঞ

अवना माक्रिनाटकार श्रेटकाक (प्रवासन प्रचटके नाहि ।

দেবী কভাকুৰাৱা

THE KE

### দেবী কুমারীর বন্দিরে ঘাইবার রাভা

দবী কভাক্ষারী তপতা করিবার আগ্রহ প্রকাশ করেম।
হাদেব তাঁহাকে তাঁহার আবাস কৈলাস হইতে যভদ্র সম্ভব
্রে সিরা তপতা করিতে বলেম। কলে, দেবী ক্যারী
সারতের শেষপ্রান্তে আসিরা তপতার মর হম। আকাজিক
ভ হইতে বছদ্রে থাকিরা তাঁহার প্রতি অন্তরাস বৃদ্ধি করা
ক চ্রহ সাধনা। সেই সাধনা, সেই তপতাই দেবী কুমারীর।
বৃদ্ধীর সে সাধনা এখনও সিহু হর নাই—বহাদেবের আশীর্কাদ
তি এখনও তাঁহার অদৃষ্টে বটবা উঠে নাই।

আরভির সময় দেবী কুমারীকে সুন্দর বেশে সাজান হয়।

ত পরিবেশট অপূর্ক্ষ একট কাহিনীর মত ননে হয়। দর্শকের

ত নন্দির ভবিষা বায়। মনে মনে ভাহারা দেবী কুমারীর

ইক্ষ্ম সাবনার উদ্দেশে প্রভানিবেশন করে। দেবীর নহাদেবী

ইবার সাবনা বাহাতে সৈত হয় ভাই ভাহারা কামনা
হয়।

ৰশিৱেৰ মধ্যে অভীভ ভারতবৰ্ষকে পুৰৱাৰ বেদ কিবিৱা

'ৰাড্ডীৰে' পুণালাৰ হিন্দুৰ বহু আকাজ্ঞিত। প্ৰভৱাৰ ৰাড্হত্যা কৰিলা ৰহাপাভক কৰিলাছিলেন। সেই পাপ হুইভে হুড়া পাইবাৰ দুভ তিনি এই ডীৰ্বে স্থান কৰেন। সেই স্থানপুণো তাঁহাৰ মুক্তি হল। মাড্ডীৰ্বে স্থান ভাই "সৰ্ব্ধ-পালৈ:প্ৰযুচ্চতে"—সকল পাপ হুইভে মুক্ত কৰে।

নাতৃতীর্থে অবপাহনের ছানট বছই মনোরম। উনুক্ত সর্ক্রবক্ত হইলেও বাটের চারিপাশ উপালথতে ভরা। বাটে চেউরের আঘাত লাগে না, আর লাগিলেও ভাহার প্রচওতা বাকে না। বাটের সিঁতি বাঁবানো; মনে হর পুর্রেই মান ভরিতেহি। বাটের উপরে বসিবার কর একট সোলাকৃতি চম্বর আছে—ভাহার হার পাধরের। বহু দূর হইতে চম্বরট বেধা বার।

পূর্বেই বলা হইরাছে, ক্চাত্রারিকা একট ক্র প্রার বার । লোকসংখ্যা অর ; বসভিও বন নহে। অধিবানীরা ববির । ভারাবের উপদীবিকা—ছোটবাটো ব্যবসার ও কৃবি। অর কিছু বংগ্রুবীও আছে। ভাষা ভাষিত।

হিন্দুৰ ৰশিৱেৰ সহিত সাৰঞ্জ ৱাৰিয়াই বেদ এবাৰে একট দীৰ্জা তৈবাহী কয়া হইবাৰে। দীৰ্জাট পুৱাতন।



(है) (शाहित्वत शाम श्रेटक नवृत्वत पृष्ठ

অশিকিত ও তথাক্ষিত নিৰ্মাতিত হিন্দুসন্মানারের বব্যে ক্ত্যবৰ্গপ্রচাহ করাই নাকি ইচার উদ্দেশ।

মাতৃতীর্থে সর্জন্মন, দেবীবর্ণন, প্রভাতে ও সভ্যার
সর্জ্বকে বিন্দর্শনর উদর ও অভ দেখিতে দেবিতে করেকটা
বিন বেন বর্থের নত কাটবা পেন। হোটেলের অধিবানীয়া
প্রায় সকলেই দাকিবাত্যের লোক। একট ইউরোপীর
ফলতিও হিলেন।

দেবী কুষায়ীকে প্ৰণাম করিয়া আবার আম্যমাণ হইলাম। এবার টনেতেলির পৰে মাহুরায়।

## গোলআলু-সংরক্ষণ

এদেবেজনাথ মিত্র

পরিপুরক বাভ হিলাবে গোলআলু অভি উচ্চ ছাল অধিকার करतः वित्मवकः वर्षवाम बाज-भविद्यिक्ति भागवान्ति প্রাৰাভ বেওয়া বরভার। ইতার চাষের বিভৃতির পরে বর্তমান গমৰে বে সকল অভবার আহে তাতা বৰাসভব চুর করাও সহকার ও নেড়ছানীর ব্যক্তিগণের কর্তব্য। আলুর চাষ ও সংরক্ষের কর বুবই সাবধানতা অবস্থন করাও উচিত। আলুর শত্রু অনেক: মামাবিধ পোকা ও হোগ আলুর ধুবই ভতি ভৱে। তেবল যে এই সভল পোড়া ও রোগ ছেতে আলুর অনিষ্ট করে আহা নহে, আলু কেত হইতে উঠাইবার পর বৰম গুলাবে রাবা হর ভবমও ক্তির পরিবাণ বুব বেশী। সময়মত বতু ও সাববাৰত। অবলম্বন করিলে কেতে ও ওলামে আলুর ক্তি অনেক পরিষাণে নিবারণ করা বার। কেতে वर्षम चानू च्याद छ्वम हरेएडर बरे क्टिक विट्यम मुझे दावा क्रिया । कि त्यापेत चान क्रिकारन क्रिया क्रिया क्रिया উহার ক্তির পরিবাণ ক্য হইবে সে বিষয়েও আন বাকা रवकात । अ नवद् शूना (क्लाव क्वटकवा बूबरे शावन्ती।

বে সকল কৃষক আলু সংযক্ষণ করিতে চাল, আলুর কবিতে কলসেচল লগতে উচ্চালের সাববানতা অবলয়ন করা বৃথই দরকার। এই বিষয়ে পূণা কেলার কৃষকদের প্রতি এইরপ: আলু চাবের প্রথম কুই নাসের বব্যে ৮।১০ বিদ অভর একবার আলুর ক্ষেত্রে কলসেচন করা হয়; পরে হয় বিদ অভর একবার লোচ কেওবা হইয়া গাকে। এইরূপ তাবে সময়নত এবং পরিষাণমত অলসেচনের কলে ক্ষিত্রে কাটল' বরে লা। ক্ষিত্রে বাহাতে 'কাটল' না ব্যর সে কিকে বিশেষ বৃষ্টি রাধা প্রয়োক্ষর, কারণ 'কাটল' বরিলে বাটার নিরের মৃত্যুক উৎপর

আসু ৰাহির হইরা পড়ে এবং খুর্যকিরণ ও বার্র সংস্পর্শ উহাদের রং সবুজ হব এই অবহার এক রক্ষ প্রজাপতি (tuber moth) উহাদের চোবের উপর ডিন পাড়িরা বার।

ভবাকার হ্বক্লের বব্যে এই বারণাও প্রচলিত আছে বে,
পরিবাণ্যত ও উপর্ক্ত সমরে সেচের অভাবে নাটর নিয়ের
আলু 'পরব' হুইরা বার; এবং এইরপ 'পরব' আলু বেনী বিন
সংরক্ষণ করা বার না। আলুর গোভার নাট বেওরা ব্যাপারেও
সতর্ক হওরা দরকার। একটও আলু বেন নাটর বাহিরে না
বাকে। সাবারণতঃ আলুর পাভা ববন হল্দে হুইরা বার এবং
ওলাইরা বার ভবনই আলু উঠাইবার সমর হুইরাছে বলিরা
বরা হয়; কিছু আলু গাছের ভাঁটা (haulms) সম্পূর্ণরূপে
'যুত' হুইরা পেলে আলু বিরু উঠানো হর ভারা হুইলে ঐরপ
আলুও বেনী বিন ভলাবে সংরক্ষণ করা বার না; এই বারণাও
ক্রমক্ষের বব্যে প্রচলিত আছে। এইরপ আলুভে নীরই 'পচ'
বরে। বাটভে ববন প্রচুর আর্জতা বাকে ভবনই আলু উঠানো
উচিত।

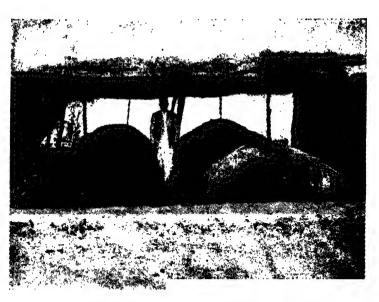
আলু সংৱক্ষণ বুবই কটিন ও সাধবানভাৱ কাছ। আলু উঠাইবার পর কেতে বধন আলু এক এক ছানে কচ করিরা রাধা হর ভবনও ভাহাদের চোবের উপর প্রকাপতি ভিন পাভিয়া বার। স্তরাং এই অবহাতেও আলু আনায়ত রাধা উচিত নর। গুলাবে রাধিবার পূর্বে আলু রোজে রাধিলে উহা 'উত্তও' হইরা বার। ইহাও আলুর পক্ষে কৃতিকর।

পুণা কেলার কুষকের। লাধারণতঃ নিয়লিধিত পছতিতে আলু সংরক্ষণ করেন। কেতের নিকটে ব্যবহন গাছের ছাওয়া-

মুক্ত এক শীখল ভাষই আলু সংবক্তের भटक प्रेमब्क । व्यवह कोत्वह नवद বেন সোভাহতি ভাবে ঐ হানে বেক্স মা আলে। সহতে এইত্রণ ভাষ পাওয়া মা গেলে গাছের মীচে চালাখর বিশ্বিত **क्या व्या अरे परवय ठावि बारवय** तका माछ दरेल बक कुछ वा इरे कुछ টচ্চে থাকে, বাহাতে ব্রের ভিতর অবাবে বার চলাচল হইতে পারে। বুক্ষের বা চালাবরের তলদেশ করেক बार कान करा हह। वाकाक बन्हे 8ie कृष्ठे 'श्रमेख। चानुत शतियाद्यद উপর খণ্ডের দৈর্ঘ্য নির্ভর করে। খণ্ডের প্রশন্তভা পাঁচ কুটের বেশী করা উচিভ নৱ। ইতার বেশী তইলে বঙ্গের মধ্য-ভাগের আলু অভি শীল্প পচিতে আরম্ভ করে। প্রভাক বভের চারি বারে এক हरेट (प्रकृष्टि श्राप्त धार वर वर हरेट चार्ड देकि श्रणीय अक्षेत्र चरलय माला

কাটিয়া দেওয়া হয়। নালা কাটিবার সময় বে নাট পাওয়া ইচার পর বাহ ভাঠা হাতা মালাত পাভ প্ৰভাত হয়। প্রভাক ৰও জলে পূর্ব করিয়া দেওয়া হয়। ছই-এক বিল বঙট बहेन्नन कार्य दावित्न बाहि कन क्षित्रा नहेरत । वक्षे नन्तूर्ग क्षवादेश (मान मक-विविक चान किश्वा भूटर्स विकास चान बंद्रकट केनद नामा कदिया दावा हव। जाबादनक: नामा ठाव সূচের অবিক উচ্চ হর বা। গালাট একট পাতলা নিরণাভার আবরণে আরত করা হয়। ইহার পর গালাট সম্পূর্ণ ভাবে ভিজা বাসের আফারনে আফারিত করা হইরা বাকে. चाकावन्त्रे ७ देकि ठटेरक ৮ देकि नक ठटेरत । चाकावन्त्रे क्लब मानाव भारकत वाहिरत कानिता शक्रिय। शानारक बारमत बाह्यावरम बाह्याविक कता बूबरे कोनरमत काव। ইতা উপযুক্তভাবে করিতে পারিলে গানার মধ্যে প্রভাপতির প্ৰবেশ বছলপত্নিমাণে নিৰাৱণ করা বার এবং সংবৃদ্ধিত আলও 'ঠাঙা' থাকে। এইরণ ভাবে বহু গালা পাশাপাশি করা বাইতে পারে। ক্রমও ক্রমও গাদার উপর অল পরিষাণ চিনি ছড়াইয়া দেওয়া হইয়া বাকে। ইহার ফলে পিথীলিকার আবিভাৰ হয় এবং উহায়া প্রভাপতির ভিন, পুডলি প্রভৃতি ৰাইয়া কেলে।

বাঙ্গের আঞ্চাদন দিবার পর কেবল বারা দেবিতে হইবে বে গাদার ভিতরকার ভাগ বুব নিয়ে বেল বাকে। সাবারণতঃ



পুণার এই বরণের চালাখরে গোলআলু সংরক্ষিত হর

নালার কল ভাই করিয়া এবং ভিম-চার দিন অন্তর বালের আফ্রাদনের উপর কল হিটাইরা দিয়া ভাশ নিরন্তিক করা হর। এই কল বর্ধন বাল্পে পরিপত হয় তর্ধন উত্তাপ নই হইবা বার এবং পালার ভিতরের ভাশ নিয়ে পালে। নালার কল বাটি চোরাইরা নিয়ে চলিয়া বার এবং পালার ভলদেশের নাটকে আর্মি ও বীতল রাবে। পালা বদি ভাল ভাবে প্রস্তুত্ত করা বার এবং উহার ট্রক্সত ভল্লাববান হয় ভাহা হইলে পালার ভিতরের ভাশ ৮৫° ক. ডিপ্রীর উপরে উঠে না। এইরশ অবহার সংরক্ষিত আলু 'বানিয়া' বার না, শুক্ক এবং বীতল পাকে। নালার কল যেন পালার প্রবেশ না করে, ফারণ ভাহা হইলে কলের সংস্পর্ণে আসিয়া আলু অভি বীত্র পচিয়া বাইবে।

বিক্ষরের সময় মা আসা পর্যন্ত পালা এইরূপ ভাবেই রাধা হয়। কিছ কোন কোন কৃষক নাবে নাবে পালা খুলিরা দেখেন এবং গালার মধ্যে বলি কোন আল্ভে পচ বরে ভবে ভাহা বাহিরা কেলিয়া দেন। বেধা গিরাছে, এই ভাবে আলু সংযক্ষণ করিলে ভিন নাস, এবন কি ইহার খেনী সময় পর্যন্ত ইহা ভাল অবহাতেই বাকে।

বিগত বুছের সময় উপরোক্ত প্রণালীতে আসু সংরক্ষ করিরা "ভিকেল ভিশার্টমেন্ট"কে সরবরাহ করা হইত। ক্তির পরিষাণ ধুবই কয় ছিল।

## রবীন্দ্র-সাহিত্যে বৈরাগ্যের বাণী

### **अ**विषयमान हर्द्धाभाषाय

তথন অধ্যাপনা করতাম শান্তিনিকেতনে। ইংরেকী कार्किम कि माफाम माम दृर्व । १०० व्यक्तीरक वावाव वास्त्राव चार्राचा बस्मनान वक्त प्रशानश्चव महन कविव निनारेन्टरव জীবন সম্পর্কে বে কথা হয় ত। শ্বতির ভাগ্যারে আঞ্চও জমা चार्छ। जनमामवात वरमिक्रामज, कवित मरम अकवात जिनि निनारेष्ट किछ्पिन छिएन। त्रहे मगर्य जात्व উঠে এক দিনও তিনি দেখেন নি কবিকে বিচানায় ভয়ে থাকতে। কোন ভোৱে উঠে কবি কাজ স্থক করে দিয়ে-ছেন। বেশ মনে আছে নন্দলালবাবু এই প্রসংক পুল্পিত পাদপের কথা এনেছিলেন। গাছ ফুলে ফুলে কত স্থনার। এই ফুল ফোটানোর পিছনে বয়েছে ভিতরে ভিভরে গাছের স্থকঠিন তপস্তা। এই তপস্তা চলেছে লোকচক্ষর আডালে। কবির তপস্থার দিকটাও খুব অর লোকেই জানত। শিলাইদহের আরু সাহাজাদপুরের কৃঠিবাড়ীর মনোর্ম আবেষ্টনীর মধ্যে সাহিত্যস্তির আনন্দে তিনি ডবে আছেন। কেবল বাইরে থেকে যারা তাঁকে দেখেছে তারা ভারতেও পারত না কি বিরাট তপস্থার আগুন চিল তাঁর সাহিত্য-সাধনার পিচনে।

160

নন্দলাল কবির যে-তপস্থার কথা আমাকে বলে-ছিলেন সেই তপস্থায় কবি বিশ্বাস করতেন। 'বৈবাগা-শাধনে মুক্তি সে আমার নয়'—নৈবেছের এই পংক্রিট আউডে অনেককে বলতে শুনেছি, আত্মপ্রকাশের জন্য কঠিন তপশুৰ্যাৰ প্ৰয়োজন আছে বলে কবি বিশ্বাস কৰতেন না। বে ৩% বৈরাগাচর্চ্চা জীবনকে অস্বীকার করে, উডিয়ে দেয় এই জগৎকে মায়া বলে তাকে ভিনি নিশ্চয়ই সন্দেহের চোখে দেখতেন। 'মরিতে চাহি না আমি স্থলর ভুবনে' —এ তো ছিল কবিবুই কথা। তিনি ছিলেন জীবন-পূषाती-मूक, एक পूर्व कीवरनद शृकाती। এই मूक, एक, পূর্ণ জীবনের গৌরবে পৌছান সম্ভব শুধু ত্যাগের মধ্য দিয়ে — u विषय कवि निःमः मग्न किरमन । याता विदानावादिश्वित ভলায় ডুব মেবেছে ভালের পথকে কবি বেমন স্বীকার করতে পারেন নি, ভেমনই স্বীকার করতে পারেন নি ভাদের পথকে বারা বিষয়কে আঁকড়ে ধরে বয়েছে। সৌন্দর্যোর পঞ্চারী কবি হয়ে অরপের রূপের লীলাকে কেমন করে তিনি অস্বীকার করতে পারতেন ? সৌন্দর্যকে. ভোগকে, আনদ্দকে কথনই তিনি অখীকার করেন নি. কিছ সঙ্গে সঙ্গে স্বীকার করেছেন আনন্দলোকে উপনীত হবার জন্য নিবাসক্ত হওয়ার বিপুল প্রয়োজনকে। নিবাসক্ত হডে পেরেছে বারা, কবির ভাষায়, 'তারা ভোগবতী পার

হয়ে আনন্দলোকের ডাঙা দেখতে পেয়েছে।' আত্মপরিচয়ে কবি অনুহুকুরণীয় ভাষায় লিখেছেন:

"ইশোপনিবদের যে মন্ত্রে পিতৃদেব দীকা পেরেছিলেন সেই মন্ত্রট বার বার নতুন কর্প কর্প নিরে আমার মনে আন্দোলিত হরেছে, বার বার নিজেকে বলেছি—তেন ত্যক্তেন ভূপ্পীবাং, মা গৃষঃ; আনক্ষ করে। তাই নিরে বা তোমার কাছে সহজে এসেছে, বা রবেছে তোমার চারিদিকে তারি মধ্যে চিরছন, লোভ কোরো না! কাব্যসাধনার এই মত্র মহাবুলা। আসন্ধি বাকে মাক্ত্রদার মতো জালে জড়ার তাকে জীর্ণ করে দের, তাতে মানি আসে, ক্লান্তি আনে। কেননা আসন্ধি তাকে সমগ্র থেকে উংপাটন করে নিজের সীমার মধ্যে বাঁথে—তার পরে ভোলা কুলের মডো অরক্পেই সে রান হয়।"

'বৈরাগ্যসাধনে মৃক্তি সে আমার নম'—এই কথা বে কবির কণ্ঠ থেকে উৎসাবিত হয়েছিল তিনি কিছ আসজিকে কোথাও প্রশ্রেষ দেন নি। ভোগকে লোভ থেকে এবং সৌন্দর্যকে আসজি থেকে উদ্ধার করবার কথাই তার সাহিত্য আমাদিগকে বাবংবার ভনিষেছে এবং সেইজন্যই তাঁর সাহিত্য অনায়াসে মহৎ সাহিভ্যের ভবে গিয়ে পৌছেছে।

খ্যাতনামা ঐতিহাসিক আার্নল্ড জে. টয়েনবি তাঁব A Study of History'ব এক ভারগায় লিখেছেন:

We have now, perhaps, established the truth that ease is inimical to civilisation.

মাহ্যের সভ্যতার আর প্রগতির পথে আরাম বে প্রচণ্ডতম বিদ্ন—এই কথাটা টয়েন্বি ধুব জোরের সক্ষেই বলেছেন এবং আপন উক্তিকে ইতিহাসের নানা নজির দিয়ে প্রমাণিতও করেছেন। রবীক্রনাথেরও একই কথা। ১০০০ গ্রীষ্টাব্দে বিবেকানন্দ জনৈকা শিস্তাকে লিখেছিলেন: "কীর ননী থেয়ে, তুলোর উপর ওয়ে, এক ফোটা চোথের জল কথনও না ফেলে কে কবে বড় হয়েছে, কার ব্রহ্ম কবে বিক্লিত হয়েছেন ?" বিবেকানন্দের অভিযান জড়তার এবং আরামপ্রিয়তার বিক্ছে। তার কঠে হুংথের, সংগ্রামের আর মহাবীর্ষ্যের জয়ধনি। রবীক্রনাথও বিবেকানন্দের মতই মর্মে মর্মে বুঝেছিলেন, হুংথবরণের ও মৃত্যুর ভিতর দিয়ে আরে নবজীবনের প্রাবন। তাই জাতিকে অমৃতের ভীরে পৌছে দেবার জম্ব তার কানে ভিনি শোনালেন মরণের জম্বগান।

"কিসেরই বা হুধ, ক'দিনের প্রাণ ? ঐ উঠিয়াছে সংগ্রামগান, অমর মরণ রক্ত চরণ নাচিছে সগৌরবে।" রবীজ্ঞবাধ—বদেশ ও সংকর

কুলর ভুবনকে ভিনি সমস্ত হুদর দিয়ে ভালবেংসভিলেন. कांव कर्छ किन जानत्मय महत्वीयत्नय क्षकि कांच जनवीन हिन धारन धार धाहर। या नीश मुक महाजीवन सिनि कामना करविहरणन निर्वय करा-वाजिय कराउ जाहे কামনা করেছিলেন। প্রথিবীর অন্যান্য আতিগুলি ব্রন कीवानव बाह्यात हिक श्वरक हिनसद हालाक कथन काव चातम कर्वकी विशेष हार भाष्य बाकाव भावत ज्ञान भाषा-এই চিছা কবিকে অন্বির করে তলেছিল। কিছ প্রগতি मखन अनु हमात्र मन्। क्रिया क्रिया मार्थ वीदार प्रमाया **Бनवाद माहम दार्थ काना (४८क क्रकानांव, क्रम ८४८क** অকুলে, বন্দবের নিশ্বরণ জ্বরাশি থেকে মহাসমুদ্রের তর্জ-সম্ভূল বক্ষে ? সমাজের প্রবীণ 'পাকা'দের দ্বারা এ কাজ সম্ভব হবে না-একথা ববীক্রনাথ জানতেন। বিবেকানন্দের মতই তিনি নবীনদের কাছে পাঠালেন ঠার চৰ্জ্বর বাহ্বান। তাদের ভবিষ্যৎ পুর নিরাপদ-এমন মিধ্যা আশার কথা ভালের তিনি পোনালেন না। বাপ-পিতামতের প্রতিধ্বনি ছবে না ৰাৱা, পুৰিৱ কথা না কপচে বাবা বৰবে উল্টো कथा छाटमय निन्ता त्मर्म त्मरम यहैत्वहै. छाटमय विश्वन शरम পদে ঘটবেই। ববীক্রনাথ তাই জাতির বৌবনকেশোনালেন লাবণ-বাত্রির বজ্লনামের কথা। 'ফান্ধনী'তে সর্দার বলেছে 'मक्टे (शदक मक्टि निया हिन-धे आयात महावि'। দেশের আদল 'দর্দ্ধার' তো কবিরাই। কবি ছইটমাানের ভাষায় কবি হজেন "The leader of leaders"। কেৰো লোকেবা ভালের কাজের জোরটা পায় ভাব থেকে আৰ **এই ভাবসম্পদ জাতিকে দান করে কবিদেরই রচনা।** ववीत्मनाथ छात देवधविक छात्वत श्रित्रण मिर्व चरमान्य যুবসমান্তকে পরিচালিত করেছেন সন্ধট থেকে সন্ধটে বেধানে त्नरे घरतत चाताम, त्नरे नातीकरर्शत প्रमुख्यन, त्नरे वहकात्र क्षमःमा. तह मन्त्रीय जानीकाम।

'বৈরাপ্যসাধনে মৃক্তি সে আমার নয'—এই কথা বার লেখনী থেকে বেরিয়ে এসেছিল, তিনি কিন্তু কচকে দেব-বানীর ভূত্বন্ধনের মধ্যে কিছুতেই বাধা পড়তে দিলেন না। পুরুষকে তিনি নারীমায়া থেকে মৃক্ত রাধলেন দেবতাদের সঞ্জীবনী বিভাদান করবার জন্য। কচের ক্থাগুলি কি চমৎকার, কি মর্মশেশী।—

> আমার বা আছে কাঞ্চ সে আমি সাধিব। পর্স আর পর্স ব'লে বিদি মনে নাহি লাগে, দূর বনতলে বৃদি মুরে মরে চিন্ত বিদ্ধ মুগসম, চিন্ন তৃকা লেগে থাকে দক্ষ প্রাণে মন, সুর্কাকার্যা মানে—তবু চলে বেতে হবে

হৰপুত সেই বৰ্গধানে। দেব সৰে এই সঞ্জীবনী বিভা করিরা প্রহান মূত্রন দেবছ দিয়া তবে নোর প্রাণ সার্থক হইবে, তার পূর্বে নাহি মানি আপনার তব।

'চতুবলের' শচীপকেও ভিনি মর বাধতে দেন নি। मामिनीय योवन महीत्मव विवानी मनत्क हानत्छ भारत नि वामवद्यव ठ छः भौषानाव मर्गा। मामिनोरक निरम चव वैषिण श्रीविज्ञान, मठीण नग्न। विद्यकानत्मव बोदवाणीएक चाहिः 'बाख्यान, निकादात्न नान, चटाकन नान, नव কর নারীমায়া।' বিবেকানন্দ অবিবাহিত জীংনের উপরে জোর দিয়েছিলেন। দেশে দেশে সভোর জনা লভাই করবে যারা, স্বদেশকে যার। জ্ঞানের পথে এগিয়ে দেৱে তাবা হবে সর্বত্যাগী তপস্বী। ববীন্দ্রনাথও বিবেকানন্দের भेज जाक निरम्भिन जात्मव बावा चव वांधरव ना. आवाम খুঁজবে না, নাম চাইবেনা, তপ্তাব মধ্যে ধারা ডবে থাকবে, বারা দেশবাসীর সম্মুখে আনবে নিছাম পুরুষের স্থাট শক্তিরণ। ভার 'তিন সঙ্গী' আসল রবীক্রনাথকে চেনবার পক্ষে দীপশিখার কাজ করবে। এই গল্পের নায়ক नवीनवाव नाधिका चित्रवादक किळाता कवला. स्मरश्रकत নিয়ে পুৰুবের কাজ বদি নাচলে তা হলে মেয়েদের সৃষ্টি কেন। উত্তরে অচিরা বলেছে:

"ৰারো আনার চলে, মেরেরা তাদের রুপ্তেই। কিন্তু বাকি মাইনরিটি, বারা সব কিছু পেরিরে নতুন পথের সন্ধানে বেরিরেছে তাদের চলে না। সব-পেরোবার মামুবকে মেরেরা বেন চোধের রুল ফেলে রাভা ছেড়ে দের। •••বে মেরেরা মেরেলি, প্রকৃতির বিধানে তাদের সংখ্যা অনেক বেশী; তারা ছেলে মামুব করে, সেবা করে ঘরের লোকের। বে পুরুষ বধ্ধ প্রুষ, তাদের সংখ্যা খুব কম; তারা অভিব্যক্তির শেব কোঠার। মাধা তুলছে দুট্য-একটা করে।"

মাহ্যবের চরম অভিবাক্তি তপশ্চার মধ্য দিয়ে—এই
কথাই রবীক্সনাথ তানিয়ে গেছেন নৃতন ভারতবর্ধের কর্ণকুহরে। সুদ আবরণ যুগে যুগে ভাগে করতে করতে
বর্ধের মাহ্যব হবে দেবতা—এই বাণীই রবীক্সনাথের বাপী।
রবীক্সনাথ ভারতীয় দংস্কৃতির ধারক এবং বাহক। ভারতের
উপনিষদ জীবনকে অস্থীকার করতে বলে নি, বরং বলেছে
কোরের সপে বাঁচতে। এই বাঁচার আনন্দকে অভ্তর
করবার জন্যই মনকে নিরাসক্ত করবার দরকার আছে
আর ববীক্সনাথের সাহিত্যে নিরাসক্ত বোরনেরই জয়গান।
নিজে বিনি ভপস্বী ছিলেন ভপশ্যার প্রয়োজনকে তিনি
বারংবার স্বীকার করে পেছেন বাস্টির এবং সম্প্রির জীবনকে
গৌরবোক্ষল করবার জন্য।

# व्यारभक्षनाथ हर्षेशभाशात्र

#### 3545-33.2

### **এত্রকেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপা**ধাায়

কালের কি বিচিত্র পতি। উনবিংশ শতাব্দীর শেব পারে এবং বিংশ শ্ভাকীর প্রথম দেশকে বে বোপেজনাথ **क्रिकाशास्त्रक देशमाश्रम्म बादानी** গল-পিপাস্ত পাঠকসমান্তকে মগ্ধ ও আন্দোলিত করিয়াছিল, বাংলার व्यक्षः शृद्धव महस्य शांत्रिकातः व्यवनव-विद्यानद्यव मकी হইয়াছিল, আজ •মাত্র চল্লিশ বৎসবের ব্যবধানে আমরা তাঁহার নামমাত্র আর ওনিতে পাই না। কালের 'নিক্ষে यारशस्त्रनात्वत तहना भवास्त्र श्रीकात कतिशास्त्र मत्सर नारे. ৰি**ছ** একদা সাময়িকভাবে সেগুলি প্ৰভাব বিস্তাব কৰিয়াছিল বলিয়া বাংলার সাহিত্য-সাধক তাঁঃ কৈ সমাজে আৰু আমরা শ্বরণ করিতেছি। সাময়িকপত্র-জগতে वाशिक्षनात्वत 'क्ब्रना' शारी প্रভाব विचाद कविशाहिन, জাহার সহত্তে ইহাও শ্বরণীয়।

#### বংশ-পরিচয়: জন্ম

১২৬৫ সালের বৈশাধ (এপ্রিল ১৮৫৮) মাসে হগলী জেলার অন্তর্গত বাগাণ্ডা প্রামে মাতুলালরে বোগেন্দ্রনাথ ভূমির্চ হন। তাঁহার পিভার নাম—গিরিশচক্র চট্টোপাধ্যায়। বোপেন্দ্রনাথ যথন ছয় মাসের শিশু, সেই সময় তাঁহার পিতৃ-বিরোগ হয়।

### বিভাশিকা

বোগেজনাথ কলিকাতায় পিতৃব্য প্রসরকুমার চট্টো-পাধ্যারের টাপাতলার বাসায় থাকিয়া নয় বংসর ব্যুসে ইংরেজী ছুলে ভর্তি হন। ১৮৭৫ খ্রীষ্টাব্দে তিনি বর্দ্ধমান মহারাজার ছুল হইডে প্রবেশিকা পরীকা দিয়া তৃতীয় বিভাগে উত্তীর্ণ হন। অভঃপর তিনি জেনাবেল এসেমব্লিজ ইনষ্টিটিউশনে প্রবেশ করিয়া এফ. এ. শ্রেণী পর্যন্ত পড়িয়াছিলেন।

### সাহিত্যামুরাগ

পঠদশা হইতেই বোগেন্দ্রনাথের মাতৃভাষার প্রবদ অন্ধরাপের পরিচয় পাওয়া বায়। উনিশ বৎসর বয়সের সময় ভিনি সাময়িকপত্র পরিচালনে ব্রতী হন। তাঁহার পরিচালিভ ভিনধানি সাময়িকপত্রের কথা আমরা জানি; সেগুলি—

'স্থাকর'ঃ ইহা একথানি পাক্ষিক সংবারণত্ত, ১২৮৪ সালের ভাত্র (১৮৭৭, আগষ্ট) মাসে প্রকাশিত হর। 'ক্থাকর' প্রকাশ করেন বোপ্তেকনাথ; সম্পাদক হিসাবে নাম ছিল—ছরিদাস বন্দ্যোপাধ্যায়ের।

'ক্রানা' । মাদিক পত্র; ইহাও বোগেন্দ্রনাথ কর্তৃক প্রকাশিত; সম্পাদন করিতেন হ্রিদাস বন্দ্যোগাধ্যায়। ৬৯ বর্বের (১২৯৬ সাল) পত্রিকায় সম্পাদকরণে বোগেন্দ্র-নাথেবই নাম মুক্তিত হইয়াতে।

'শবকাশ'ঃ ১২৮৮ সালের মাঘ (ইং ১৮৮২) মাদে কল্পনা-কার্যালয় হইতে বোগেজনাথের দম্পাদনায় এই নামের একথানি "নবন্যাদপুর্ণ মাদিকপত্ত" প্রকাশিত হয়।

বোগেজনাথ মুখ্যতঃ কথাশিলী ছিলেন। তাহার বচিত গ্রহগুলির শংখ্যা বড় কম নহে। আমরা কয়েকথানির উল্লেখ করিতেছি:—

>। প্রেম প্রতিমা বা প্রিয়দলা (ইং১৮৮৬), ২। প্রণয় পরিনাম (১৮৮৭), ৩। ডণ্ড দলপতি দণ্ড (প্রহ্নন, ১৮৮৮), ৪। ক'নে বউ (১৮৯৪), ৫। বিমাতা (১৮৯৫), ৬। জীও স্বামী (১৮৯৪), ৭। বড় ভাই (১৮৯৪), ৮। কলন্ধনী (১৮৯৫), ৯। আমাদের ঝি (১৮৯৫), ১০। উর্রাদিনী (১৮৯৬), ১১। প্রসন্ত্র্মারের উইল (১৯০০), ১২। চা-কুলীর আত্মকাহিনী (১৯০১), ১৩। কল্লী মেয়ে (১৯০২), ১৪। প্রতিশোধ (১৯০৪), ১৫। পাহাড়ী বাবা (১৯০৬), ১৬। পুড়ী-মা (১৯০৭), ১৭। শোভাসিংহ (১৯০৮)।

### মৃত্যু

১>•> সনের ২>এ ফেব্রুয়ারি (১৬ মাঘ ১৩১৫) বোপেজ্রনাথ, ৫১ বংসর বয়সে, পরলোক পমন করেন। ভাঁহার মৃত্যুতে 'জন্মভূমি' দীর্ঘ শোক-সংবাদ লিখিয়া-ছিলেন; উহার করেক ছত্ত উদ্ধৃত করিতেছি:—

"ৰদীর সাহিত্য-গগনের আর একটি নক্ষপাত হইরা গেল। স্প্রসিদ্ধ উপভাস-লেখক বাবু বোলেজনাথ চটোপাধ্যার গত ১৬ই সাথ গুজুবার সন্থাকালে অক্যাৎ ইহসংসার পরিত্যাগ করিয়াছেন। তাদুল উদার প্রকৃতি সন্ধার বন্ধুবংসল পরোপকারী নির্দ্ধলকার সজ্জন বন্ধু অধুবা অতি অরুই বেশিতে পাংরা বার। তালাতীর সাহিত্যে প্রগাদ অকুরাগ থাকাতে তিনি ক্ষাব্যরে ২৬ থানি উপভাস পুত্তক রচনা করিয়া গিরাছেন। আমরা আলোচনা করিয়া দেখিয়াছি, সক্লগুলিই স্পাঠ্য, বিশেষতঃ 'ক'বে বউ'ও 'বুড়া-মা' সর্কোংকুই। বলীর সমাক্ষকে তিনি উত্তররূপে চিনিয়াছিলেন, তংগুনীত সামান্তিক উপভাসগুলি প্রকৃত প্রকৃতির মধ্যাদারকা করিতেহে, সম্ভ পুত্তকের ভাষা প্রাপ্তাপ ক্লগিত। তালার বিরোগে সম্ভ বন্ধের সাহিত্য-সংসার বিভান্ত শোকাকুল হইরাছেন, আমরাও অপার শোকসাগ্রের বিষয় হইরাছি।" (পৌর ১৩১৫)

# দক্ষিণ-পূৰ্ব এশিয়ার নবজাগরণ

### অধ্যাপক ব্রীস্থাংশুবিমল মুখোপাধ্যায়, এম-এ

নিংহল, অন্ধদেশ, ভাব, বালর উপন্থীপ, ভিরেংনাম (ইন্সোচীন)
ইন্মোনেশিরা (ওললাজ পূর্বভারতীর বীপপুঞ্জ) এবং কিলিপাইন বীপপুঞ্জ—এই সাভট দেশ লইরা দক্ষিণ-পূর্বে এশিরার
পটিত। কাহারও কাহারও মতে সিংহলকে শক্ষিণ এশিরার
ন্যান্ত মনে করাই অবিক্তর বৃদ্ধিসক্ষত। বিতীর বিশ্বর্থের
পূর্বে পর্যান্ত সামাজ্যাবিকারী বিভিন্ন পাল্যন্ত আতি প্রাকৃতিক
সম্পদে সর্ভ এই বিতীর্ণ ভূতাপের ভাগ্যবিবাভার আসনে
ন্যানিটিত হিল। একবাল ভাবের বাবীনতা অন্ধ হিল।
ব্রোভ্র ব্রেগ দক্ষিণ-পূর্বে এশিরার সিংহল, রন্দ্রদেশ, ইন্সোদেশিরা এবং কিলিপাইন বীপপুঞ্জ বাবীন রাট্রের মর্যান্তাভ কবিবাতে।

विश्म मणासीत बातरखरे तथा बात व, बार्किम, देशतक, করাসী এবং ওলভাক সাত্রাজ্যবাদ সমগ্র দক্ষিণ-পূর্ব্ব এলিয়ার कांकियां वित्राद्य। ১१৯७ जात्वय देव-क्यांजी युद्ध हन्। ७ করাদীপকে খোগদান করে। करन कनार्श्वर चरिक्क निरदम बीम देरमाखंद इसमेस द्वा ১৮२७, ১৮৫२ अदर ১৮৮৫ সালে সংঘটত প্ৰথম, বিভীৰ এবং তভীৰ ব্ৰহ্মবুছের কলে ইঠ ইতিয়া কোন্সানী সমগ্ৰ ব্ৰহ্মদেশ অধিকার করিয়া नव। ১৮৮६ नाम उच्चर्य चारक नामारकार वक्क क **इरेन । ১৮**१८ हरेल्ड ১৯০৯ जात्मच मत्या मानव केनबीन देश्ना का आक्रिक वारका-अवक असारव वेशिवादान शतिबंक रत। ১৯১০ नालंद बर्ला नवत रेल्लास्मीय दीननु ওলন্দান্ত্ৰপূৰ্ণৰ হত্তপত হয়। ১৮৮৪ সালে ক্ৰাসীৱা ইংকিন এবং আনাম অবিকার করে। ১৮১৩ সালে ভাষরাত ভাচা-বের চাতে লাওল অর্পণ করেন। ইচার পর ১৯০৭ লালে ক্ৰাসীয়া কাথোভিয়া এবং কোচিন চীন অধিকায় করিয়া जरेंग । अरे चार्य जयक चिरवरमांव कराजी धैनमिरवरम গরিণত হইল। ১৮৮৮ সালে বোণিও খীপে ইংরেভ আবিণতা ব্রপ্রতিষ্ঠিত হয়। কিলিপাইন দ্বীপপুঞ্জ ১৮১৬ সাল পর্যান্ত ্শানের ওপনিবেশিক সাত্রাজ্যের অদীভুত ছিল। ঐ বংসর শাৰীর সাত্রাজ্যবারের বিক্লছে কিলিপাইনের জাতীর অভ্যাধান ্যৰ হুইয়া বাইবার পর মার্কিন বক্তরাই কিলিপাইন দ্বীপণ্ড বাদ করে। ইংরেছ এবং করাসী সাত্রাজ্যবাহের পারস্পরিক ঐভিবোগিভার কলে প্রায়ের বাধীনভা অনুধ হিল। কিড ইক খাৰীৰতা ভাৱারও ছিল না।

বিখ-অর্থনীতি ক্ষেত্রে যদিগ-পূর্ব্য এশিরা একট বিশেষ ক্ষমপূর্ণ হালের অবিকারী। বিগত বুডের পূর্ব্য পর্যাত সমগ্র বিশেষ যোট উৎপত্ন হবার এবং আয়ত উলের বর্ণাক্রমে বর্ত্ত দশমাংশ এবং সাত-দশমাংশ দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিরা সরবরাহ্
করিত। বাত্তপত্তর দিক হইতে এশিরার বে সমত দেশ
বাটতি অঞ্চল, দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিরা ভাহাদিগকে চাল বোলাইত।
এতহাতীত এই অঞ্চলে প্রচুর চা, চিনি এবং ভাষাক উৎপন্ন
হইত। বিশ্বের কুইমাইন এবং মসলার মোট চাহিদার বুব বড়
একটা অংশও দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিরাই মিটাইত। এই অঞ্চলের
আরবা এবং বনিজ সম্পদ্ধ উপোকা ক্রিবার মৃত্ব নহে।

বিংশ শতানীর প্রথম তাগে দক্ষিণ-পূর্বে এশিয়ার কোণাও লাগরণের সাড়া তেমন তাবে অমৃত্ত হইত না। আপাতদৃষ্টিতে মনে হইত বে, সামান।। বিকারী বেতলাতিপুর বছকাল
নির্বিবাহে এই অঞ্চলে রাজ্যত পরিচালনা করিবে। ক্রিছ লোকচকুর অন্তরালে এই সময় হইতেই দক্ষিণ-পূর্বে এশিয়ার
নবজাগরণের স্থচনা চইয়াছিল।

এক দিন না এক দিন পরাবীন জনগবের অভাখান चरक्कारी। नामकरनाक यनि चरीम चमनगरक विचान मा करवम, यनि ভাতাবিগকে क्रमांगंड উপেका बदर चवका कतिशाहे हरलम, विम कामिनिहे छाडाविश्यक मिरकरवत সমক্ষ মনে না করেন, ভবে শাসিভ ছাভি যভ নিরীত. बिर्किद्धाव अवर नाष्ट्रिय रुपेक वा क्वम, अक विन ना अक विव चाठावा चवजरे वाबीमचानाएं मात्रे वरेता। कृष्टेनीचि अवर वाहबरमञ्ज महाबलाज किहुकाम लाटामिशक मायाहेजा ৱাৰা যায় সভা, কিছ বাহবল এবং কুট্নীভিয়াৱা প্ৰভুদ্ধ कार्यम करा हरण मा । काजक क्रमांगर द्याय-विक नैजरे इकेक, जार विकास है इकेक, विद्यालय जीविनशंत जान्यकान कतिरावे कतिरव । विरामी भागमानीम मिन-शूर्य अभिवाद সরকারী নীভি খেভাল শাসক ভাতিসমূহ কর্ত্তক পরি-ক্তিত তইরা ভাতাদের ইলিভে পরিচালিত হইত। নীতি নিৰ্দাৱণে দেশবাসীয় ৰভাষত গ্ৰহণ করা দূরের ক্ৰা. মভামত প্ৰকাশ কৰিবাৰ সুৰোগ পৰ্যাত ভাতাদিগকে দেওৱা ছইত না। পুতরাং দক্ষিণ পূর্ব্ধ এশিরার ঔপনিবেশিক শাসন-প্ৰভিন্ন মধ্যেই যে ভাছাৰ অংলের বীক নিহিভ ছিল, সে-क्वा वना मिल्लाक्वा ।

নিজেৰে প্ৰবোজনে বিৰেণী শাসকৰৰ্গ যকিব-পূৰ্ব্ব এশিয়ায় পালান্তা শিকা প্ৰবৰ্তনের ব্যবহা করিবাছিলেন। কালজনে পালান্তা শিকা কতকটা বিভারলাকও করিবাছিল। এই শিকাবিভারের পূৰ্ব্বে এশিয়াবালী নলে করিত বে, বে শক্তিবলে বেভলাভি লবপ্র কর্ণতে প্রাবাহলাতে লবর্ণ হইয়াহে, তাহা কোন বিনই এশিয়াবালীর আহতে আনিবে না। কিছ

পাক্ষান্ত্য পিকার শিক্ষিত তক্ত্রণ এশিরাবাসী পাক্ষান্ত্য নাহিত্যের তাব-সর্ব তাওারে বেতজাতির শক্তির উৎসের সভান পাইল। তাহারা ব্বিতে পারিল বে, আব্দিক বিজ্ঞান এবং প্রবল জাতীরতাবোবই পাক্ষান্ত্য আজিসর্ত্তে হর্জর শক্তিতে শক্তিরান করিবাহে। জাতীরতাবোবে উব্দুর এশিরা পাক্ষান্ত্য জান-বিজ্ঞান অবিগত করিতে পারিলে সেও পাক্ষান্ত্য জনতের সরক্ষতা লাতে সমর্থ হুইবে এবং পাক্ষান্ত্য সমাক্ষেত্যাহ্য সমক্ষতার লাবি বীক্ষত হুইবার পথে কোন বাবাই বাজিবে না। ইউরোপ ও আমেরিকার ইতিহাস এবং পাক্ষান্ত্য বিজ্ঞান আলোচনার কলে এশিরাবাসী আবিকার করিল বে, জাতীরভার প্রেরণার অগ্নপ্রাণিত জাতি অসাব্যসাবন করিতে সক্ষব। এই নবলর জান হক্তিণ-পূর্ব্য এশিরার জাগরণে বিশেষ ভার্যজনী চইবাতে।

ভারতবর্বের ভার দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিরাতেও পাচ্চান্ত্য শিকিত-मक्तानारवर मरवारे श्रवम काकीयकार केरनम करेशकित। अरे मक्ताराय (कह (कह विद्यारय प्रश्न (प्रविश्वय । प्रकीरकर পুৰকৃষ্ণীবৰই তাঁহাদের লক্য ছিল। অভেৱা আবার খ-খ ৰাভভূমিকে আধুনিক হাঙে ত্ৰপাভৱিত করিবার সাধনার আত্মনিয়োগ করিলেন। ভাতীরভার নবমত্তে উচ্চ বছ দক্ষিণ-পূৰ্ব্ব এশিয়াবাসী প্ৰথম প্ৰথম শাসকজাভিকে विकाकाकी वस बान करिया कावास्त्र भरावर्ग अवर जवायका এছণ করিতেন। ভারতবর্ষের গোবলে কিলিপাইনের ডাঃ विका धरा रेग्नायमियात अवन बाक्टेनिक मान्ना 'तानि केट्डाट्या'व लेडिकेड्डाडावा करे नर्वाटक नट्डम কেন্ট বিপ্লবের আদর্শে আস্থাবান ভিলেম না এবং মনে প্রাণে বিশ্বাস করিছেন বে. পাশ্চান্ত্যের নিকট হইতে অনেক্ৰিছ শিকা কৰিবাৰ আছে। শাসক ভাতিৰ সহিচ্ছা এবং উদারভা সহত্তে তাঁহারা কোন সন্দেহ পোষণ করিভেন ना बन्द विचान कविष्क्रम (न. नःकाद्वत भरनहे काँकावा बक বিদ স্বাধীনতা লাভ করিবেন। কিছু এই ভল ভাঙিতে বেদী विव जार्य गारे। छाहाबा द्विए शाबिलन य. विस्नै শাসক কোন দিনই খেচ্ছাৰ খীৰ শাসনাৰীৰ দেশকে ভাৰীনতা প্রহান করিবে না। পাক্ষান্তা সভাভার শ্রেইড সহছেও টাতা-ছের আনেকের বিখাস নই চইবা গিবাছিল। এই প্রসঙ্গে কবি-शक वनीसनारवद रवरणांकि विरमयकारव श्रविवानरवाता।

দক্ষিণ-পূর্বা এশিরার মালিক বিভিন্ন খেতাল কাভির বব্যে ট্রার মনোভাবসপার হ'চার কল পরাধীন দেশের বুরিকীবী ব্যক্তি এবং প্রতিষ্ঠানের সামাজিক এবং রাজনৈতিক আশা-আফাজ্ঞার প্রতি সহায়ুজ্ভিশীল হইলেও একথা খুবিজেন বা বে, উপনিবেশসরুছের বাধীনভাই ঔপনিবেশিক শাসনের বাভাবিক এবং অবভাবী পরিণতি। আতীরভাবোবের বিকাশ ব্যক্তি বাধীনভালাত সভব নহে। এই বিকাশের ক্ত গণজাগরণের প্ররোজনীয়তা অনবীকার্য। দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিরার জাতীরভাবাদিগণ কিছু দিনের মধ্যেই উপলব্ধি করিলেন বে, গণ-সমর্থন এবং গণ-সংগঠন ব্যতীত উাহাদের বাবীনভালাভের বর্ব কোন দিনই সকল হইবে না। জন-সমর্থন লাভের প্রচেটা এবং জাতীর সংগঠনের কলে সম্কারের সহিত সংঘর্ষ বে অবক্তভাবী একবা ব্বিভেও ভাহাদের বাকী রহিল না।

দ্দিণ-পূর্ব এশিরাবাসী বাবতীর রাজনৈতিক অবিকার হইতে বঞ্চিত হিল। তহুপরি সমষ্টিগত তাবে তাহাদিগকে খেতজাতির তুলনার নিজ্ঞ মনে করা হইত। এইজত তাহাদের মনে তীর কোতের সকার হইরাহিল। অভাব-অভিবারের প্রতিকারের জন্ত ক্ষমসাবারণকে সর্বাহার উপনিবেশিক সরকারের হারছ হইতে হইত। এই প্রতিকার অবিকাংশ কেরেই বিলম্বিত হইত। বে আমলাভাত্তিক শাসম্ব্যবহার উপর প্রতীকারের ভার তত হিল, ভাহার উপর প্রতীকারের ভার তত হিল লা।

শাগক এবং শাগিত উত্তের বাতববোবের অতাবে ওপনিবেশিক সমভা কটগতর হইরা উটিভেলি। ইঁহারা সকলেই অভতাবে পাশ্চান্তের অভকরণ করিতেন। কলে বহু কেন্তেই সমভার সমাধান হওরা চুরের কথা ভাহার কটগতা বহুতি হইরাছিল। এইজত দক্ষিণ-পূর্ম এশিয়ার জাতীর আলোলন ক্রেই চরমপত্রী হইরা উটিল। দেশান্ত্রেবে উত্তুর এশিরাবাসী বুবিল বে, রাজনৈতিক বাতরা ব্যতীত প্রগতির পথ চিরদিনই বিহুসভূল থাকিরা যাইবে। বছু জাতীরতাবাদী সহিংস আলোলনের প্রতি বুঁকিরা পভিতে লাগিলেন। কেন্তু কেন্তু মনে করিলেন বে, এক্সাত্র সমাজনাদ বা সাম্যবাদই তাহাদের বাবতীর হুর্গতির অবসান ঘটাইবে। অন্যেরা আবার অভ জনসাধারণের ধর্মান্তা এবং বহিরাগতের প্রতি বিহুবের অর্থিতে ইন্থন বোগাইতে লাগিলেন।

বিংশ শতানীর প্রথম দশকে নাগানের নিকট রাশিরার পরান্ধর এশিরার সর্ব্বের নাগরে বেগ ও তীব্রতা বহিত করিবাহিল। বন্দি-পূর্ব্ব এশিরার নিজরল রাজনৈতিক নীবনেও ইহার কলে চাকল্যের শিহরণ নাগিরাহিল। ১৯০৮ সালে ইলোনেশিরার সন্দর্বন নাজনার আলোলনের অ্রপাভ হয়। ঐ বংসর কভিপর হাল্ল এবং বৃহিন্দীবীর মিলিভ প্রচেটার ইলোনেশিরার সর্ব্বের্থন রাজনৈতিক প্রতিটার (বানি উভোরো—মহান প্রচেটা) সংগটিভ হয়। প্রথম বিকে ইহার কোন রাজনৈতিক কর্মণহতি হিল না। বোনি উভোরোকে গণ-প্রতিটান বনে করা ভূল হইবে। বহু বংসর পর্যন্ত প্রধানতঃ শিক্ষিত ব্রহীপ্রাসিগণই এই প্রতিটানে ব্যোগরাক ক্রিভেন। ক্লশ-কাণান বুরের পর হুইভে এবং

প্রধানত: ইহারই ফলে ছক্তিগ-পূর্ব্ব এশিরার সর্বাদ্ধ প্রাণের স্পান অস্কৃত হইতে লাগিল।

প্রথম বিশ্ব-মুভোডর মুগে দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিষার বিভিন্ন দেশে কিছু কিছু রাজনৈতিক সংকার প্রবর্ধিত হইরাছিল। কিছু প্রগতিশীল ক্ষমত এই সংকারে সভঃ না হইরা বরং আরও বিক্ষা হইরা উঠিরাছিল। শাসকগোষী পরাবীনের মৃত্তিন্দানকে উপেন্দা করিরা মুগবর্ষের বিরোবিভা করিলেন। তাঁহারা বনে করিলেন—অভতঃ মুবে বলিলেন এবং এবনও বলেন বে, ক্ষতা হভাভরিত করিলে উপনিবেশগুলির সর্ব্বনাশ হইবে। প্রভ্যেক ব্যক্তি এবং কাতিরই বে ভূলের মধ্য দিরা পথ বুঁজিয়া লইবার অধিকার আছে এই ঐতিহাসিক সভ্য তাঁহারা বিশ্বত হইলেন। কলে স্বাধীনভার আকাক্ষা অতি ক্রত দানা বাঁধিরা উঠিতে লাগিল।

১৯৩৯ সালে যথম বিভীয় বিশ্ব-মুদ্ধ আরম্ভ হব, তথম পর্যান্ত রক্ষিণ-পূর্বে এশিয়ার এই বিক্ষোভের বিশেষ কোম বাহু প্রকাশ মা থাকিলেও জাতীর জীবনের বিভিন্ন ভবে রাজনৈতিক আশা-আকাজনা পরিব্যাপ্ত হুইরা পঢ়িতেছিল। তরুণ সম্প্রদার গতাস্থাতিকভার বোহমুক্ত হুইরা নূভম ব্যবস্থা প্রবর্তমের বপ্রে নশগুল হুইয়া প্রধান ব্যবস্থা প্রবর্তমের বপ্রে নশগুল হুইয়া প্রধানিক।

শাসকগোঞ্জীর ক্ষমভা, কর্ম্মকুশলভা এবং সাম্বরিক শক্তিতে जाका विरक्षण भाजरमत श्रवाम किकि। श्रवम विध-सरकत ৰভিজ্ঞতা এই ভিভিতে কাটল বৱাইয়া দিয়াছিল। বিভীয় বিশ্ব-হত্তের ঘটনাবলী সাম্রাভাবাদের এই ভিভিতে একেবারেই इनिजार कविवा निवादत । ১৯৪১-৪২ जातन विकास स्थाप-राहिमीत शहर चाक्रमानत मूर्व पक्रिय-शूक्त-अभिनाम मार्किम. रेश्यक, क्यांनी अवर अनलाक मक्ति हुई हरेशा शन। य-प शिज्ञाबीय स्थमनंदक मिलाक्ष जडहे अवर इर्जलिव मर्दा ক্লিৱা বিদেশী শাসক 'ব: প্লাৱতে স: জীবতি' মীভি অসু-ারণ করিতে বিন্দুমাত্র বিধা করিলেম না। দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিরা-ানীর বুবিতে বাকী রহিল না বে, ভাহাদের শাসকগোরী াৰাৱণ ৰাছ্য ব্যভীভ আৱ কিছুই নহেন। ভাহাৱা বুবিল, াদেশী শাসনের কলে আত্মরকার ক্ষতা হারাইরা তাহারা ক্ষীৰ্য হইৱা পঢ়িয়াছে। এই প্ৰসঙ্গে উল্লেখবোগ্য বে, মহাদ্মা ांची वह्मिन शृद्धिर चित्रवान कविवाहित्नन-रेश्तक াসক্বৰ্গ ভাৱতীয় জাভিত্ৰ হেকুণও ভালিয়া দিয়া নিবীৰ্ব্য বিবা কেলিবাছে। ১৯৪১-৪২ সালে দক্ষিণ-পূর্বা এশিবার াপানের চনকপ্রদ লাকল্য এবং নাকিন, ইংরেজ, করাসী ও লক্ষাজ লাত্ৰাজ্যবাহের চাঞ্ল্যকর লামরিক বিপর্যার খেত- বাতির শ্রের্ডন্থ সহত্তে ধারণা বে একান্তই ভিন্তিতীন চোৰ্বে আফুল দিয়া ভাষা দেখাইয়া দিল। •

কেবল তাহাই নহে। এশিরার একমান্ত সামাজ্যাবিকারী শক্তি জাপানের আক্রমণ হইতে মার্কিন ও ইউরোপীর সামাজ্যাবাদ নিজেদের আন্তিত জাতিসমূহকে রক্ষা করিতে পারে নাই। তাহাদের এই অসামর্থাকে জনগণ বিশ্বাস্থাভকতা বলিরাই মনে করিল। খেত এবং পীত শাসনের অভিজ্ঞতা হইতে তাহারা এই শিক্ষালাভ করিল বে, ওপনিবেশিক শাসন শোষণ এবং নিপীন্থনেই নামান্তর। সামাজ্যাবিকারী জাতিওলি এত কাল বলিত যে—এবনও সুযোগ পাইলেই বলিতে ছাড়ে মা—তাহারা খ-খ উপনিবেশের অহ্নত, হর্মাল অবিবাসীদিবের ন্যাসরক্ষক মান্ত এবং বিবাড়-নিজিট্ট ওক্তকর্ত্বর পালন করিবার জনাই তাহারা উপনিবেশগুলির শাসনের দায়িত্ব এহণ করিবাহে; ইহার পশ্চাতে কোন খার্থব্রি নাই। কিছ এই বালা আর টিকিল না। জার এই ভূল তালিবার সঙ্গেল ব্রম্বার ক্ষার করার সক্রম ক্ষিণ-পূর্ম এশিরার দাসত্ব-শৃথল খুলিরা পতিতেছে।

হ্রদর্শী চিভানারকগণ আগেই দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিরার বাবীনতার দাবী থীকার করিবা লইবার কথা বলিরাছিলেন।

১৯৪২ লালের ৩০শে নবেশ্বর মি: সামনার ওরেলস একটি ভাষণে বলেন বে, মাল্ডবলাত্রই যে বাবীন এবং সে বে কাহারও ভূলনার হীন নহে এই আখাসবাণী উচ্চারণ করিবার দিন আসিহাছে। বুদ্ধে মিত্রপক্ষের বিজয় মানবজাতির বছন-বোচন করিবে। সাত্রাজ্যবাদের দিন চলিবা গিয়াছে। জন-প্রবির বাবীনতার দাবি খীকার করা ব্যতীত গত্যন্তর নাই।

দক্ষিণ-পূর্বে এশিবার প্রার সমন্ত উপনিবেশই সাধীনতালাভ করিবাছে। ইংরেজ ও করাসী সামাজ্যবাদ কিন্ত এখনও হাল হাছে নাই। ইংরেজ ও করাসী আজও মালর এবং ভিরেৎ-নামে ভিন্ন রূপে এবং ভিন্ন নামে ওপনিবেশিক শাসন-ব্যবহা বজার রাখিতে বছপরিকর। জাএত কনসাবারণ এই শাসনের অবসান বটাইতে দূচসকর। এই হুইট দেশের বর্তনান গোল-বোগকে যে নামই বেওরা হউক না কেন, তাহা যে মুখ্যভঃ মুক্তি-সংগ্রাম তাহা অধীকার করিবার উপার নাই।

<sup>\* &</sup>quot;. . . the nature of defeats suffered by the Western nations in 1942 dealt a final blow to any concept of white superiority that still remained."—Time for Decision by Sumner Wells, p. 238.



## বন্দী যারা

### **এ**রামপদ মুখোপাধ্যায়

,

ৰীপাৰের বাড়ী থেকে বেকুডেই অমলেন্দুর সলে বেখা। ওর হাত বরে অমলেন্দু গলির অভ প্রান্তে টেবে নিরে এল। বললে, সেই থেকে ভোমাকে খুঁকছি। থবর আছে।

ধ্বর গ কিলের গ

কালোবাখানীর। চুলোপুঁট নর—একেবারে রুই-কাতলা।

ব্যৱহী ভ্ৰেও প্ৰভাত বিশেষ উৎসাহিত হ'ল মা। বললে, হিলোট য্ৰাহামে পাঠিয়েছ ?

ভোষাকে না জানিরে--

আৰি পৱে ভামলেও ভঙি হ'ত না।

অমলেশু বললে, ব্যাপারটা হাতে-নাভে বরার মত নর। কাদ পাততে হবে। একটু বেনে বললে, তা হাড়া তোমার মতামত না নিয়ে—

কেন অমল ? ওর ইডডড: ভাব দেবে প্রভাত বিমিত হ'ল।

কারণ আরও যদ হয়ে দাঁভাল অমলেজু। গলা আরও মানিষে বললে, ভূমিও ভ বাতারাভ করছ এভদিন—কোন সংক্ষেত্র নি ?

কোণার যাভারাত করছি ? কিসের সন্দেহ ? বিশ্বরে প্রভাত বেশী কিছু বলভে পারলে মা।

বানে—এই ইবে, একটা ঢোক গিলে অনলেকু এক
নিঃবাসে বললে, এই বে গলির মব্যে উড়ে-বভি উভিবে ভিনভলা প্রাসাদ বাজা হ'ল—এর গোড়াকার কবা আনবার জড় কোন দিন কৌত্তল হয় নি ভোনার ? এই বাজারে বারা
হঠাং লাবপভি ভোটপভি হয়ে ওঠি ভাবের বনিরাদের কোন
কোন আরগার বে অলোকিক কিছু আহে এ সন্দেহ হয় নি
ভোষার ?

প্রভাতের পারের নীচেকার পুৰিবী সহসা হ'লে উঠল।
বন সকরের বৃলে কোন কেতেই কি অব্যবসার আর সভভার
সকর বাকা অবিষাত এই বৃরে ? বিশেব করে বিতীর নহাবৃষ্ণের কলে বাছ্বের নীতি কি আবৃল বদলে গেছে ? নিজের
কেল বলে—আতি বলে—আতিগোর বলেও একটু বনতা বা
সনবেরনা আগতে না মাছ্বের বনে ? কোবার সেল মাছ্বের
ক্রম—বা কালে কালে বেলনার বিগলিত হরে স্টে করেছে
নহন্তক, সুন্দরক, অনির্কাচনীরকে ? ক্রম্বের ওপর চেপে
বলেছে বভিছ—ক্টবৃত্তির পণ্যে তরা বভিছ, বার বিচারে
পৃথিবীর ঐপর্ব্য-সঞ্চর ব্যতীত আর সব সঞ্চর অভিকিৎকর।

ছুল ঐবর্থ্য---জাগতিক স্থপুৰিবাগুলিকে বার বারা কর করা সভব ।

প্রভাত বললে, সন্দেহ হয়—সন্দেহ তথ্ন কর। কিছ আহি ত কানি না—

বাধা বিবে অনলেন্দ্ বললে, আলোর শীচের সবচেরে বেশী অভ্যার, প্রভাত।

ওরা পথ অভিবাহন করতে লাগল। পথের ছু'বারে কভ मृख्य चढ़े। निका वा श्रापात । अहे जव जन्मात्तव चडतात्त অকীন্তির কাহিনী নিশ্চর আছে। বিশেষ করে নরন-লোভন সৌৰগুলির ক্ম-রহত সন্দেহাতীত নর। চলতে চলতে মনে इत्य अत्मत नर्थाां ७ क्य मत। अत्य कि नांदा नद्द इक्टिब भरकट बार्बि ? कान्हेरक बाह हिरब कान्हेब कवा লে ভাববে ? কার হুছুতির নালিশ—কোন্ ভার বিচারকের আদানতে শেশ করবে ৷ চালে কাঁকর, আটার তেঁতুলবীচি, চিনিতে নরম পাবর গুঁড়ো, সরিষার তেলে শিরালকাঁটার वीक-नाविरकन (काल ह्यांशाहे चारान, शांतानात इरव ভঁড়ো ছবের ভেজাল, ভাঁড়ো ছবও অফুত্রিন নর। শিশুর ৰাভ হর্লিকৃন, রোপীর পথ্য বালি সাঞ্চামা, ইন্জেকশনের সিরাম---না---পলিভ ছবিভ পৃথিবীতে নাজুষ নরণোংসবে (बर्काइ-माध्य वम नकरवत (मणाव माखान हरवरह । अक দিকে পরমাণু বোমা, অভ দিকে ভেজাল আর কালোবাজার; পাইকারী ও বুচরা হারে মৃত্যুদেবতা বিতরণ করছেন ব্যাধি। क्नश्रान्तम अक्षा स्वर्त्त इटब्रिंग एडि, अनावध स्वर्रात्रव আৰোজন চলতে সুচাকুভাবে। একে সৰম মভ কুৰভে না পারলে-

অহলেপুর কাঁৰে বাঁকানি দিবে প্রভাত বললে, এর প্রতিকার করতেই হবে।

ন্তন করে ভাবতে বসল প্রভাত। ট্রকই বলেছে অবলেজ্
—জালোর নীচের বেশী অবলার। সে অবলারকে আনরা
চিনি অবচ ঘুণা করি না। সেই অবলার সর্বালে হারাপাত
করলে একটুও বিচলিত হই না; কেননা ভার আসল
চেহারা বাকে আনের অগোচরে। কিছ সারা ছনিয়ার
লোককে সন্দেহ করবে আবার ছনিয়াতে লোককে
বেবাবে নেবার আগ্রহ—এর চেরে পরস্বার-বিরোধী ভার্য
আর কি আছে। কোন্টা ভার, কোন্টা অভার এই ঘোর ত
সকলের স্বান নর। নাছবের বাবারে ভাগ ব্যার বে পত
ভাকে বিবিভিন বা হত্যা করা অবর্দ্ধ নর এক প্রদেশ—অভ
প্রবেশে সেই পঞ্চর বেবাচিত পূকা ব্যাননারোহে সন্দর

হয়। কৰি ছ' আৱগাতেই বটে, কিন্তু পুৱাকালের এক বহতী কীন্তিকলাণের কথা অৱণ করে যাত্ত্বের ফুডজড়া ভাঙে দেবত্ব আরোপ করে ফুডফুড়ার্ব হয়। এমনই বিচিত্র বিবান দেশে-বিদেশে।

আৰু মদের প্ৰসরতা বেদ দাই ক্রেছে। অকারণে বচতা প্রকাশ করে দীপাদের সে আহত করেছে। সভাই কি ভার মনের গভীরে ওদের এখর্ব্যের প্রতি বিভূঞার ভাব সঞ্চিত্ত ब्राह्म १ व्यक्त धरम्ब मन कांब कांम मार्ग । अरमब নৰ্যাভির বার্ডার বন ভার বিষয় হলে উঠল কেন। ... বেন और जनवान अरमत मानाव मा। (व कनक्रांत्र कांक मार्-পতি কোটপভিরা ভাগছেন—দীপারা আছে ভার নাগালের वर्षेट्व । जल्मक जर्कद्र माळ्के ८४ मद्रमाण्डमद इद्रभटमद कानिया-निश्च मद्य-अरे ज्ञा श्राहादाद भिन अर्जास्य। व्यक्टि-विहास्त्रि নিয়ে পরিহাস নর, শাসন নর, উদ্ধত পফুষ বাক্য প্রয়োগও ময়। সহযোগিতা—সেবার আকাক্ষা—প্রীতি এ সব উপচার मा बाकरन भाष्ट्रशत्क शिक्षिण करा वादि मा मध्याए. अरे সাধীনতা অৰ্জনের আগে এক মহামানৰ মহং দৃষ্টাত দিয়ে অৰুপ্ৰাণিত করেন নি কি ? সাম্রাক্যের শক্তিকে প্রভ্যাব্যান করে—একান্ত দীনবেশে ভিনি অপনানিত লাঞ্চি মাসুষের পাপে এসে ইাভিয়েছিলেন। চুড়তকারীকে ভীত্র ভং ননা করেন নি-তার ক্ষা-সুক্ষর বাণী অহমারলেশহীন আচরণের बादा ब्विश्विदिनमः विश्विष्य मानुष्यक छेर्ष कृत्न महिना প্রচার করা বার মা—কাভিত্বের মমত হারা চালিত হরে বে পৌরব রচনা করা যায়, ভানা ভাতির না বা সমাজের নকল সাৰম করে ৷ ভূৱা দেশাত্মবোৰে খবার অত্ত্ক ঘূণা---कावमा। अरे वर्गानाटवाटव द्वाम जाजारकात भक्षम रुखाए --- वनमृत कार्याम कांकि करबाद पश्चिमक। किंद नमका अरे, **मिवाद मिक्कि मक्षत मा करत (भवाद चार्यक्ट एक्वारम वनवय** দাস হাড়া খড় কিছু হওয়া সভব নর।

স্মর্মী বাইবের বরে এসে ভাকলেম, প্রভাত।

**₹ 41 ?** 

থমা—ভূই একা অভকারে ওবে আহিস ? পরীর বারাণ হয় নি তো ?

गा-जानर वाचि।

ভবে চট করে একবার ভাক্তার বাড়ী বুরে আর বাবা। ওঁর কলিকের পেনটা বেড়েছে বেন।

चें।--क्षम ह'न ?

অপিল বেকে এলেই বললেন—আৰু বাতে কিছু বাব না
—পেটের মধ্যে বিন বিনে ব্যথা বোব হচ্ছে। ভার পর
মূলতে বা বলতে—

প্রভাত হুটন পরিচিত ডাজার বাদী। খবর ডাজারকে

লে আসবার অহুবোধ করলে না—কানে অহুবোধ করবার সদতি তার নাই। ডাক্তারও কানেন লে কবা। চাক্রীকীবী—দিন-আনা-দিন-বাওয়ার দল—পারতপকে ডাকে না তাঁকে। আপদে বিপদে ছুটে আসে তার কাছে—পরামর্শ চার, ব্যবহাপত্র লিখিরে নের—একবারে কল না হলে বার আলে। এককন ডাক্তারকে ডাকার অর্থ—কম করে চারট টাকার দও বহন করা। সে অর্থ ঔষধ পধ্যে ব্যবক্রনে—

অনন্তর এ ব্যাধি মৃত্য দর—ব্যবস্থাপঞ্জ মোটাষ্ট কাষা।
তব্ ডাক্তাবের সমতি নিরে প্রত্যেক বারে ঔষৰ আমতে
হর। পরব জলের গেঁক—আর গোটা হই বড়ী—সম্বা একট
ব্যের সঙ্গে বস্ত্রণার অবসাশ হয়।

আৰু কিন্তু জনের সেঁক ও বড়ীতে কোন কল হ'ল না— প্ৰভাগু আবার চুটন ভাক্তার বাড়ী।

ভ্—একটা ভাল ওয়ুৰ আছে—ইনজেকশন। কিছ সাধা বাজাৰে ওয়ুৰটা পাওৱা বাবে কি !

চেঠা করব।

বেশ ভো---। কিছ ওযুৰ জোগাড় করতেই হবে। বেৰী-কণ এ ভাবে বছণা পেলে হাট কেল কঃতে পারে।

কলকাভার এক প্রান্ত বেকে আর এক প্রান্ত ছুটল প্রভাভ। কেট বললে—ও্ঠবৰ নাই, কেট বললে—অভ ভারগা বেকে আনিয়ে দিভে পারি—দান বেশী পছবে। কেট বা বললে, আমার মশাই সোজা কথা—কিপট পারসেণ্ট লাভ দেব—ক্যাশযোষো পাবেন না।

ক্ষেক্ দিন আগেকার একটা বিভাগন সংবাদপত্তে প্রকাশিত হছেছিল। ঔষধের ভাষ্য দামের বেশী দেবেন না —ক্যাশমেয়া দাবি করুন। বেশী দান আদারকারীদের নাম ধান ঠিকানা ভানিরে দিন—

যত সহতে এখনি বিজ্ঞাণিত হবেছে—এক সহতে অস্তা-খনি পালম করা সভব মর। কালোবালারীর হাতে পকব না বলনেই—ভাদের কবল থেকে অব্যাহতি লাভ সহকানায় মর। বছণা আর র্ভাকে সামনে বেখে ভার পথে চলবার হু:সাহস ক'ট লোকের থাকে। কালোবালারে হাত মেলাভেই হবে—মা হলে বছণা ভো কমবে মা, র্ভাঙ আসবে এগিরে।

বেশা দাম দিৰে প্ৰভাভ ঔষণ নিলে—কিছ চুনীতি দমৰে সাহাব্য করবার কোম প্রবাণই সংগ্রহ করতে পারলে মা। প্রবাণ সংগ্রহ করতে পারলে আ। প্রবাণ সংগ্রহ করতে পারলেও—ভা কর্ত্পক্ষের হাতে তুলে কেওয়ার বনোবল ভার পাক্ষেব কি করে। বিপলে সাবাভ বুল্য বেশী নিরে বে পরব উপকার করলে—ভাকে অক্তভ্রের বভ বরিবে দেওরা—কৃতভ্রের বভারে বার্ন ভার পাক্তভ্রের বভ বরিবে বভাকে বার্নিভ করবার সাব্য ভার পাকে না।

বড় কালোবাজারীকে বরবার প্রতিজ্ঞা করেছে প্রভাত, কিছ জীবনের নিভ্য প্রবাজনের জংগে ছোট কালোবাজারীরা বে ভাবে জাকিরে বলে আছে তা থেকে নিছতি পাবার পথ কি ৷ এ মুগের জীবনটাই কি ছুর্নাভির ভাবে পড়ু হুরে বাচ্ছে না ? উবর বক্লভূমিতে করেজ কলসাঁ জন চেলে জমির উর্বাহতা রুবির বভ ছুক্র চেঠা চালাচ্ছে না কি প্রভাতরা—এবং প্রভাতের সমগোজীরেরা ?

.

ভিন দিন ববেও কলিকের ব্যথাটা করছে না অনভর। ব্যথাটা অবভ একটানা থাকছে না—কিন্তু আগছে প্রারু বণ্টার বণ্টার আর প্রভাক বারের ভিতিকালও দীর্থ চচ্চে।

অনত বলছেন, আর পারি না—একটু আহিং বেদী করে 
ভাত-আলা ভূড়োই।

ভাজারের আত্রর মহিরা—ভাই বার ভিনেক কুঁছে বেওরা হরেছে। বরণা উপশন হরেছে সাম্রিক ভাবে। বতক্ষ আছ্র ভাব থাকে বরণাটা অমূভ্ত হর না, কিছ ভার পরেই—

ভাজার বলেছেন—কোন বড় হাসপাতালে ভর্তি হবার বাবহা করতে। কোনী অল্লোপচারের—পিভকোবে পাধর কমেই বল্লধার উংপভি। পাধর অপদারিভ না হলে যন্ত্রপার নির্ভি হবে না।

ভবের কোন ভারণ মেই ভো ?

আছকান আৰ্থার হচ্ছে। বত লোকে ভালও হচ্ছে। স্বাই ভাল হচ্চে কি ?

স্মৰমীর অবোৰ প্রশ্নে ভাক্তার হেসেছেন। ভাল হওৱা লা হওৱা ভগবানের ইছো। ভিনি ইছো করলে—

স্পরনী বনে বনে সভল করেছেন—সবই বধন সেই
নিবভার হাত তথন তাঁরই কাছে প্রার্থনা ভানাতে কি হর !
লৈব বপ্রাণ্য—দেবনির্ভেশ কত পথই ভো থোলা ররেছে।
কাছে-পিঠে ভারকেশ্বর আছেন—হাভার রক্ষরে বার-ত্রভ—
লাধু-সন্ন্যাসী ররেছে—এর কোন একটা ভি—

এক দিন তিনি এহাচার্ব্যের ছয়ারে বরণা দিলেন। বাবা এর প্রতিকার কি ?

পাঁজিপুঁৰি বুলে গ্ৰহাচাৰ্য বললেন, মবগ্ৰহের কৰচ বারণ করাও—শাভি-বভাষন করাও—

ব্যর বা হবে ভা ডাজ্ঞারের সলে পালা দেওরার মৃত। তবু একবারই হবে।

ক্ষেকটা টাফা আঁচল খেকে বার করে বিরে ভিনি কাক্তি ক্যলেন, বেশী কিছু বিভে পায়ব না বাবা—এই নিরে বা হয় করণ।

আহ্বা—আহ্বা—অশক্ত পকে বে বিধান আছে ভাই কৰে বেব। বনে ভক্তি—আনবে—বিধান কল্ববে— প্রভাগ ভবে বললে, চাঁকা ক'চা পাকলে সংগারের কাকে নাগত----

কিছ উৰি ভাল হতে উঠলে--টাভার ভাৰদা কি 9

হাসলে প্রভাত। টাকার ভাবনা নাই সভ্য—কিছ বে
টাকা আসে মাসকাবারে—ভাতে ভাবনা বাচে কড্টুর্
সমরের কড়। নাই নাই রব—বার কর্জ—এ সংসার থেকে
ব্রুহে গেল কি কোমবিন ? উত্তরাবিকারস্থরে এই সম্পত্তি
ভাকেও বর্তাবে। সে উপার্জনের ক্ষেত্রে নামবে—সংসার
পাতবে—সংসারের স্থসকরে মনোমিবেশ করে হুংবের
বোঝা ভারী করবে। থেতের স্বাহ্য ও মনের আমন্দ বিসর্জন
দিরে অসংখ্য দরিক্র রিজের সংখ্যা বাভাবে নার ! আফ
সংসারের বা অবস্থা ভাতে ভার উপার্জন একান্ত প্ররোজনীর।
এ সংসার ভার মর মনে করতে পারে কি সে ? মারের উপর,
হোট ভাই বোমদের উপর, ক্লর্ম বাপের উপর ভার কোন
কর্তব্য নাই কি ? আল বধি খবরের কাগজের হুকারিটও
বাক্তঃ

প্রভাত ব্বতে পারে, অতেত্ক সন্তম-বোবের বাবা মা জ্যালে—কিছ ব্বতে পারদেই কি বিধ্যা আদ্ম-স্মান-বোবকে বিসর্জন দেওবা বার। সমাজের বে ভরে প্রভাতরা আছে—ছেলেবেলা বেকে বে আচার-আচরণে ওরা অভ্যন্ত— ভার মোহ সহজে ভ্যাগ করা কি এভই সহজ ?

ষিতীয় দিন কাগৰ কিবি করার সমন্ত্র সামনে পঞ্চেম বাবার আশিসের এক তন্ত্রলোক। ওঁলের সলে প্রভাতদের বেশ অভরদভা আছে। ওর হাতে কাগছের গোছা দেখে প্রশংসাহচক হাসির সলে বললেন, বাঃ, চমংকার! আলি বখন-তখন ভূতো আর নেকুকে (ওঁর ছেলে) বলি—বেধপে বা প্রভাতকে—হীরের টুকরো ছেলে। ভাগ্য করেছিলেন বটে অনম্বল! খালি লেখাপভাতেই নত্র—লোকের আপবেবিগদে, ভালর-মন্দে কোবার না আছে। ভা কোবাও লাইবেরি করেছ, না গরীবদের বিলোবার কর এত কাগজ ববে নিয়ে বাছে ?

তিনি অবক উত্তরের প্রতীকা করেন নি। আণিলের সমর—মাছ্যকে ভিজানা করা চলে কেনন আছ? কিছ তার কুশন অকুশন ভবে নিশ্চিত বা উরির হওরার অবলর কোবার!

আর এক দিন সাধনে পঞ্জেন এক আরীর। বললেন, কাগদের আণিলে কাল নিয়েছ বুবি ? তা বেশ।

তৃতীর বিদের আরীরট কিছ প্রতাজের কর্ম্বরার বেধে অভিত হরে বললেন, ভোষার এই কাজ ৷ অঞ্চলাকের হেলে, শেহাং র্ব্-সূর্য নও—বি-এ পাল করেহ, ভোষার এবদ মুর্যতি হ'ল কেন ৷ বাপ আশিলের চাকরে, একট কেরাই-বিশ্বিত কি কুটারে বিভে পাছলে না ৷ বি ৷ ভারণর বিৰ বালি হাতে বাড়ী আসতেই লখী' বললে, আৰু সৰ ভাগৰ বুবি বিজি হলে গেল গ

ना-चाक काशक निरे नि ।

**(**44 )

এ কাক আৰার যারা হবে না—আবি সভ্যিই অপলার্ব।
লক্ষী বুসী-উপচানো বরে বললে, ভালই হরেছে—আবি
দুভ দিন ঠাতুরকে বলেছি—দাদার সুখতি দাও।

প্রভাভ অভূত দৃষ্টিভে লখীর পাবে চেরে বললে, ভোর গাহুর ভারি কাপ্রভা

কিছ বলে থাকলে ত চলে মা—এর পর আমক বোঁজ দরে প্রভাত ছটো ইউপনি নিরেছিল। একটা ভাষবাজারে, বার একটা গোষাবাগানে। চ্রছ বেনী নর বলে, সন্থার রে ঘটাতিমেক সমর ব্যর হ'ত। মাইনে এক জারগার ভালই —ি কা টাকা। সপ্তাহে বাল ভিন নিম পড়াতে হয়। আর ।ক জারগার প্রতিনিন হাজিরা নিতে হয়, মাইমেও কম—্ভি। কিছ নিয়শ্রেণীর হাল বলে অভিবাগের অবসর কম। ছিবোগ অবভ প্রভাত করে নি—ক্ষেক্তিম পড়াবোর পর দের বিক বেকেই পুরু হ'ল সেটা।

প্রভাত মরন গলার বললে, সব পড়া ভৈরি হলেই ভ—
না মাঠার, কাল ভূমি চলে গেলে ওকে জিজালা করলান
ভিহালের পড়া, ও বললে, ওটা ক্লানে টিক করে নেবে।
হাজের পানে ভাকালে প্রভাত। হাজ বললে, ইভিহাল ভা
াড়া রুবছ বলতে হব না—

বলি গলটাও ভ জেনে রাণা দরকার। আবি বর্ণন জিলানা রলাম, ভারতে বিদেশীরা আগত কোন্ পব দিরে আর কেন ।গভ—ভূই হাঁ করে রইলি কেন ?

ৰাঃ ৱে--ও ত ক্লাস কাইভের পড়া---

ছঁ—ক্লান নিক্ন'এ বেষাত্ম ভূলে বলে আছ। পভাটা হজে ভৰু পৰীকা পাস করা—বৰে বাধা নৱ—বহ ?

প্রভাত বললে, বোটার্ট পরীকা পাস করতে পারে—
টুকুই ত তৈরি করতে হবে তেলেকের—

ও শিকা আবার শিকা। হঁ। ছেলের বাবা অপ্রসর র হুকার দিয়ে উঠলেন। বললেন, বাই হোক— ঘণ্টা বিনিট র প্রতি বা, একটু কেরার নিরে—বাতে ছেলেটা কিছু বাতে পারে— আৰার মত ভারগার ইউনানি আহে, এর বেদী সময় বেওরা ত সভব মর। প্রতাত গভীর হরে বললে।

হাৰের পিতা অবত মুবে কিছু বললেন না— কিছ ক্কান্তর বেকে ওঁর কটু মন্তব্য শোলা গেল, আক্কাল বেনন হরেছে ইছুল—তেমনি হরেছে মাষ্টার ! তেক্ ব্যবসা—ব্যবসা।

ইচ্ছে হ'ল এই মৃতুর্ছে কাজে ইন্ডকা বিরে চলে আসে। আন্দেক কটে আত্মসম্বরণ করলে প্রভাত। সন্মানবোৰ উপ্ত হলে আর্থিক অন্থবিধা ঘটবেই—এই বান্ডব সভ্যকে মর্গ্রে মর্গ্রে উপলব্ধি করছে ও।

বিভীর বাড়ীর ব্যবহার আরও বিচিত্র। এবাদে হাল্রটি ট চু সাসের—কিড বেবাবী মর। বাপের পরসা আছে—আছে কাজ-কারবার, বিভাশিকা তথু দেশ-বিদেশের বাণিজ্যকে সমূহ করবার জন্ন। একটু শিকা মা বাকলে জগংটাকে ভাল করে চিমে নেওরা ও ভার সলে ভাল বেশে চলা কটিন। কিড এ ক্ষেত্রে বিভার সলে অর্থ উপার্জন জলালীভাবে জন্তিত মর বলেই—বিত্তবান ব্যবসায়ীর ছেলেটি ব্যবহার হিল্পবিমুধ।

প্রথম করেক্ষিন ছেলেট পড়ার মনোবোগ দিলে—অভতঃ
মনোবোগ দেবার ভাম করালে! বক্বকে বাঁবানো বই—
পরিফার-পরিজ্ঞর বাভা— স্বদৃষ্ঠ দামী কাউন্টেন পেন—
চমংকার করে সাজানো বর—বিভা গ্রহণের আবহাওরাটা
ভাল বলেই বোব হ'ল।

এক দিন ছেলেট বললে, মাঠার মণার—আৰু আর পড়তে তাল লাগছে মা—আহুম একটু গর করি।

কিছ ভোষার ক্লাগ---

কাল ক্লাপে না গেলেও চলবে। আচ্ছা নাষ্ট্ৰার মশার, এবার কোন টবের কবিনেশন তাল বল্ন তো ? ইইবেদল না বোহনবাগাণ ?—

-- चावि चावि ना।

—কাষেৰ না ? ছাত্ৰ এ ভাবে বিশ্বর প্রকাশ করলে— বেন বেলার কবাট না কামা একট অমার্কনীয় অপরাব। ছেলেট বত্তব্য করলে—শোটস তথু শরীর গঠন করে না— বনকে তৈরি করে। প্রত্থ দেহেই স্থাবন—

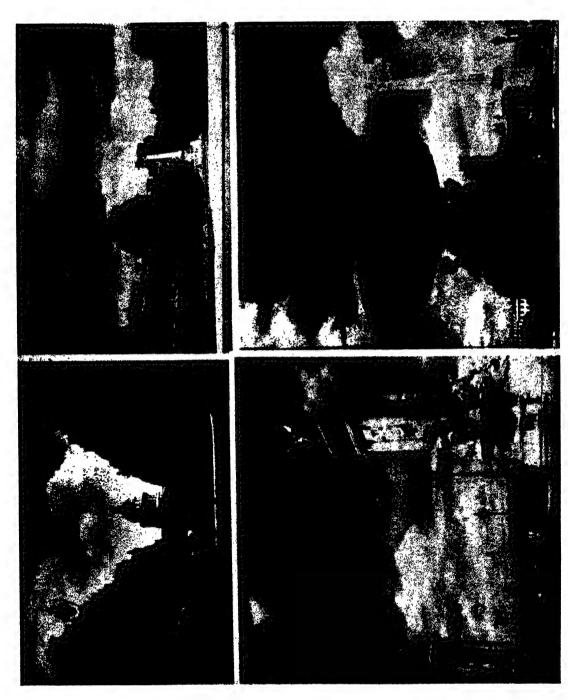
প্ৰভাভ বনলে, আৰু ভা হলে পছবে না ?

বলনাম ভো ভাল নাগছে না। ছেলেট আসারের ভদীতে বললে।

का হলে छेउँमान ।

প্রভাতকে উঠতে দেখে ছেলেট বললে, চল্ন বা কেন-এক ভাষণায় বুবে আলি। একটা বই এসেছে----চমংকার--বাব্দের যত সেরা প্রার--বানে হুগা থোটে---মার্সিন, বিলীপকুষার--অশোককুষার--বলিনী ভয়ত---

थणाण नगरम, चानि गान्छ। ७ माना विविद्ध मन।



দেৰেশ বলে এক বছুৱ কাছে কথা-প্ৰসক্তে এক দিব কথাটা পাতলে।

লেবেশ সাঞ্জতে বললে, আছে এই রক্ষ পার্চ টাইনের ভাজ। করবি ?

কোৰাৰ ?

আৰি বে কাৰ্বে কাৰ করি ভারা একটা বতুন বিশ্বনেস টার্ট করেছে, এক জন করেস্পন্ডেল ক্লার্ক চার। দেশ-বিদেশের সঙ্গে করেস্পন্ডেল—রেনের সঙ্গে ক্লেম সেট্ল আর কর্ম্ প্রণ, বডেরদের কোটেশন দেওরা—এমনি সব কাজ। করবি ?

चामक जबब बादि दि !

আরে—না না, গুনতে বেষন, কাকে তেমন নর। হক-যুক হ'বন্ধী, সংবার পর। পারবি না ?

ৰেখা ৰাক, পাৱি কিংবা হারি। প্রভান্ত হাসলে।

দেবেশ বললে, পারবি না কি রে ? আবাদের বত নন্-ব্যাষ্ট্রকরা বলি হ'লো আভাই লো কাষাই করতে পারে— আক্সা রাজী।

কাকটা হাতে নিরে দেবলৈ বিশেষ কিছু শক্ত নর, বাঁবা-বরা নিরবও তেবন কিছু নাই। বানকরেক চিটির অবাব দিতে হ'বন্টাও লাগে না। মনিব অবত লেবাপড়া কিছুই জাবেন না—কিছু কোবার কি ভাবে অবাব দিতে হবে ভার নির্কেশ দেন অভূত ভাবে। আক্ষর্য দক্ষতা ওঁর। ব্যবসা বেন ওঁলের জ্বর্গত জিনিস। বিভা শিক্ষার এ বেন প্তন একটা কিছ। ভা হাড়া লোকটও ভাল। প্রভাতকে আগান কিছু চাড়া দিলেন।

এত দিলে সে সংসারের প্ররোজনে এলো। নিজেকে
ববে হ'ল—সূত্র দারমুক্ত। কিসের দার তার কাঁবে চেপে
ভিজ—সে জানে না—হয় তো কর্মবাবোর—হয় তো বা

পরাজ্ঞরের রাশির ভার। নিজের উপার্জন সংলারে বিছে নিজেকে বেশ হাল্কা বনে হচ্ছে। সংলারে দেওরা ছিনিসটা সভ্যিই আনন্দ আবে—আত্মবিভাস বাভার—নেওরার হীনভা থেকে বাঁচার।

একটু সামলে উঠে অমন্ত বললেন, এইবার বেবে গুলে একটা ভাল চাকরি যে।…পাকা মত একটা আশুর ভোক।

না—এতেই আগতি প্রতাতের। পাকা মত আপ্রায়ে একে নিজেকে বন্ধী করতে সে রাজী নর। কাজ করার আনক্ষ কাজের বর্নের মবো নর—কোমরূপ বাব্যবাক্তা বেদ তার মব্যে না বাকে। তার মুবের কটিন রেবার পানে তাকিরে অনভ প্রস্ক পরিবর্তন করলেন। কি জানি কেন, কোমল অবচ অনন্ধনীর প্রতাতকে তিনি মনে মনে তর করতে স্কুক করেছেন। প্রতাত প্রতিবাদ করে বিনীত তাবে—কটিন সেবাজির সংক্রিও উভাপতীন উত্তর দের। কিছু বুভি বা জোব কিংবা অভিশাপের তর—কোন কিছুতেই তার সেই সংক্রিও তার্বের ব্যত্যর বটে না। বে ছেলে বেনী বকে—অলতেই উক্ত করে ওঠে—বেলাজে বার ক্রক্তা—তাকে স্বর্ণে আনা সহজ্যাব্য—এটা বছ জারগার তিনি বেবেছেন, কিছু পরিষিত্যাক্—নত্র প্রকৃতির ছেলেরাই সবচেরে বেনী বারাত্রক, তাকের একও রেমির ভূলনাই হর না।

প্রভাত চলে বেতে সুনরনী বললেন, ওকে শক্ত ক্থা না বলে বেশ নরৰ করে বুবিয়ে বল না কেন।

আমত মুখ বিকৃত করে হাসলেন, হাঁ, সেই ছেলেই বটে ভোষার । কথার বলে মা—'ভেল লাও সিঁহুর লাও ভবি ভোষার নহ'—এও হয়েছে ভাই। মরবে, বিকেই মরবে, আমার জি ৭

এমনি করে বাসের পর বাস কেটে গেল—প্রভাত পাকা চাকরীর বত আগ্রহ প্রকাশ করলে না। ক্ষমণঃ

### শেবের মধ্যে অশেষ আছে

### অসুনীলকুমার লাহিড়া

সদীত হতে কোষল বাবীর গলগুলি— ববে যার,—তবু কেলে বাব শিহে স্বৃতির তার; মনের যাঝারে ব্যাকুল ব্যথার কেঁলে কেরে ত্র-কাঁপন তার । রজনীগরা শুকাইরা বার ক্রালে আরু, পরিষল তারি জেগে বর তরি নিশাসবার। গোলাপ সুলের রক্তিব রাঙা বলগুলি,
করে বার ববে চিরগুর নাবে বরনে ভার।
করা পাপ্ডিও রচি' দের পেবে বিরার কোনল পরনাবার।
সুনি বুরে গেলে ভোরারি ভাবনা গোপন ভর,
থেন হবে বোর বনের বাবারে বুরারে রর।

শেলিৰ "Music when soft voices die" কৰিভাৱ ভাৰাছ্ৰাদ

# मानक (मवौ

#### ঐযোগেশচন্দ্র পাল

বঁহালা গাৰীৰ সৰ্বন্ধতী সভ্যাপ্তহ আপ্ৰৰে অবস্থানভালে বাপুৰী এক বিন আনাকে বলিলেন কাৰ্যিওলাকের নানা হাবে বৈ সৰ নানা প্রকার গঠনবুলক কাৰ্য চলিলাছে ভাতা সাকাং ভাবে বেধিবার কচ এবং ভাইার বাত্তর রূপের সহিত পরিচিত ইওরার কচ। আপ্রবের সেকেটারী হপনভাই আনার সকল ব্যবহা করিবা বিলেন, আনাকে সমন্ত ভাল করিবা বুবাইরা বিলেন এবং আনার পরিচর জানাইরা নানা কেল্লের কর্মকর্তাবের নিকট চিটি লিবিরা বিলেন। সমন্ত ব্যবহা হইরা গেল। এক বিন সব্যবহাতী বেল টেশন হইতে গাড়ীতে উটিয়া রওনা হইলার কাৰ্যিওলাকের বিকে।

প্রথমে পেলার কাবিওরাকের অন্তর্গত ওরার্জন রাজ্যের রাজ্যানী ওরার্জন শহরের বাহিরে, কিন্তু অমতিসূরে পরী-অঞ্চলে অবহিত এক হয়িজন আপ্রয়ে। তর্গিতাই এই আপ্রবাহির প্রধান কর্মকর্তা। টেশন হইতে সোজা আপ্রয়ে চলিরা নেলান। তর্গিতাই তথন আপ্রয়ে ছিলেন। বর্গনতাই ত্যিতাইর নাবে আনার বে পরিচর-পর্ক বিবাহিলেন তারা ত্যিতাইর হাতে দিলান। তিনি চিট্টি প্রতিরা আনার পরিচর পাইলেন এবং আনাকে স্বাহর ক্রিরা আপ্রয়ের তিতর সুইরা গেলেন।

এই হরিক্স আশ্রবকে কেন্দ্র করের ক্রমণ করি সঠনব্দক্ষ কাল চলিভেছিল। এই সব কালের বরের প্রধান কালই ছিল হরিক্সকের লর্জালীও উরতি সাবদ করা এবং ভাহারের ভিতরকার ক্রমণা হব করিবা সূত্র প্রেরণার বর দিরা ভাহারিকে আগাইরা ভোলা। আশ্রের পেলার, দেবানে করেক্সন হরিক্স আশ্রবালীকে হেবিলার। আশ্রের ভিতর বিরা ভাহারা বহারা গানীর নিকট হইতে বে অহ্পরেরণা লাভ করিবাহে ভাহাতে ভাহারা আর হরিক্স নাই। বাহ্ব হিলাবে বাহ্বের বাবে ভাহারা ভাহারের হার ব্যাহ্ব হিলাবে। এই ক্লেন্সের নাহার্যে আরও করেকট সঠনব্যক্ষ কাল করা হর; ভাহা হইল—বর্দ্ধ শিক্ষাক্রের বার্মনালা পরিচালনা, হরিক্স বালক বালিকাবের ক্রম রাজির পাঠলালা পরিচালনা, বাভব কর্ম ও ব্যবহারের বর্য বিরা হুংবার্ম পরিহার এবং আন্দোলের আন্তর্জার ভিতরে প্রার-উর্ন্নের প্রচেষ্টা।

নকালবেলা বেলগাড়ী হইতে নানিরাই এই আশ্রের আসিরাহিলান। আশ্রনের হরিজন বন্ধুগণই রারাবারা করিরা থাকে, লেবিবও ভাহারাই করিল। ভাহাবের সহিত বেলা-বেশা আলাপ-আলোচনা করিলার এবং ভাহাবের সহিত

একস্বে ব্লিয়া আহারও করা শেল। সারাখিন আলবেই কাটলা এই আশ্রমটির পুরুচিসন্দার ব্যবস্থা কেবিয়া বড় ভাল मानिन। इन्द दमा श्रेषद दोत्वद जारन वर्ष मक्छियेह মত এই অঞ্স ভাতিরা উটিল। অসহ লে গরব। আশ্রের ৰাধধানের ব্যক্তিভ বিপ্রাৰ করিবার অভিলাবে বিহাদা পাতিছা ভইৱা পছিলাব। একজন হবিজন বালক পাশে বসিহা বাভাস করিভে লাগিল। ভার এই লেবা এইণ করিভে অনিজ্ঞা প্রকাশ করিয়াও কোন ফল পাইলাব না। এভ গরব সহ করিতে আমি অমভ্যত : ভাই ভগিভাই বলিলেন বে. বহি আৰি এই বালকটির সেবা এহণ না করি, ভাহা হইলে আযাত পক্ষে অসুত্ব হইরা পড়াই স্বাভাবিক। ভরিভাইত্রের ক্থার প্ৰভিবাদ করিলার মা। বালকট বাভাল করিতে লাগিল। वामि व्यादेवात (हड़े। कृति क नानिनान । अ नित्क वानकृष्टे বাভাল করিভে করিভে মধুর খরে হছার পালের মভ কি বেন शाहिएक नामिन। वक बबुद नामिन कांद्र स्काद माम। বিজ্ঞাসা ক্ষিলাৰ, সে কি গাহিতেহে ? সে ক্ষাৰ দিল, "मामक (पनी"द नाम।

অজ্বাট ভাষাৰ সে গান গাহিয়া গেল। অজ্বাট বলিভে शांति मा , क्षि किह्न किह्न वृति । वृतिकार कविकार स्थ বোৰা সহজ নয় , ভৰু বভ দুৱ সভব বুবিবার চেটা করিলান। कि चूर्यद र्वारद कामहादा हरेवा शक्तिव। अवक क्ष्मा हरेन मा। विकासरका पूर हरेए छेडेश भार्यवर्धी आदर পেলাৰ। সেবাৰে বিয়াও ৱাবাল বালকদের মুবে ভবিভে भारेनाव मामक (क्योद शाम। अतिकारे जत्म निवादितमः তাহাকে ভিজালা করিলাম। ভিনি বলিলেন বে, কাবি-धवारकत त्ववारमहे वाहे मा रकम, विरमय कतिवा धवार्यम बार्काय गर्कवरे नामक-नामिका, वृद-वृद्धा नकरमय बूर्वरे बरे नामक (परीव नाम स्थितिक भारेत। भारत काविश्ववाद्या वह शाम निवाहि, नर्सबरे व्यविवाहि मानक व्यवीव नाम আঞ্চাপৰাভাগ মুখরিভ ভরিষা ভূলিয়াছে। বেষণ পূর্ব্ব হাতপুতামা ও মধ্যভারতের সর্ব্বে বাঁসির হাবীর বশোগাধা শুনিতে পাওয়া বার ভেষবি কাবিওয়াড়ে শুনা বার নানক ৰেবীয় ৰশোগাৰা। সিপাতী বিজ্ঞোত্তে সময় কাঁসির ছাব বেশকে খাৰীৰ করার জভ বে অংশ এরুণ করিয়াহিলেব अवर (व चारव रक्रावंत वक, क्रावंत वक, चांतरकर খাৰীৰভাৱ বহু আশ্বৰিগৰ্জৰ দিৱাছিলেৰ ভাহাতে ভিনি ৰীয় বৰণ এবং বাৰীৰভাৱ উপাসিকা হিসাবে ইভিহাসের পুঠার অবঃ হইবা আহেন। তাই রাজপুতানার বরুত্ন ও

নব্য ভারতের ব্যক্তন ও প্রান্তর উপশ্বরা হোল উঠে:

"চনক উটি সন সাঁতবন যেঁ বহু তলোৱার প্রার্থ বী;
বুলেনে হয় বোলোঁকে বুহু হনৰে তনি কহানী বী,
ধুব নতী বর্ণানী বহু তো বানিওরানী বাব বী।" ইত্যাধি
টিক এবনি তাবেই নামক দেবীর বীও সতীবের গোঁৱবগাঁবার কাবিওরাকের আকাশ বাতাস কাশিরা উঠে।

কাৰিওরাক্তর এক স্থা বাবীন হিন্দু রাজার রাপী হইলেন নানক বেবী। রাপী নানক বেবী ছিলেন রাপবতী, আর নানারণ লোকের নিকট ভিনি ছিলেন এক রহভারী অপরী। জনের কিক হইভেও ভিনি এক মহান্ চরিজ্ঞবলে বলবতী ছিলেন, আর এই চরিজ্ঞই তাঁহাকে নহীরলী করিরা ভূলিরাছিল। এই চরিজ্ঞবলের কটেই তিনি সকল প্রেণীর লোকের প্রাথ আকর্ষণ করিবাছিলেন। আর রূপ, তাণ ও চরিজ্ঞের নাধুর্ব্যে তিনি নারী ইইরাও সকলের নিকট বেবী হইরা উটিয়াছিলেন। বাববীর স্থবালের মত তাঁর তান-পরিবা ও রূপ-লাবণ্যের কবা লাবা ভ্রুজাটির বরে হরে ছভাইরা পভিরাছিল।

শুক্রাটের রুস্ন্ধান নবাব। সারা শুক্রাটের বালিক ভিনি। শুক্রাটের হোট বড় হিন্দু রাজ্যগুলি তাঁর অবীনতা বীকার করিরা লইবাছে। যে সব রাজ্য এবনও বাবীন রহিরাছে, ভাহারা বাবীন বাজিলেও প্রবল পরাক্রান্ত নবাবের বিরুদ্ধে কোন কিছু বলিবার বা করিবার সাহস পার না। নবাবের প্রভাগ ও পরাক্রম অপরিসীন। শুক্রাটের এই শরাক্রান্ত নবাবের রাজ্যের নিক্টেই নানক বেবীর বামীর রাজ্য । রাজ্য ছোট হইলেও তিনি বাবীনতা রক্ষা করিবাই চলিরাছেন। এই রাজ্যের ক্রির রাজা কোন বিন কোন ব্যামাত বটান নাই বলিরা এই ক্রে রাজ্যটার প্রতি নবাবের বুলিকাতে নাই।

যাজ্যবিভারের ইচ্ছার না হইলেও এক দিন নবাবের নকর
প্তিল এই ক্ল খাবীন হিন্দু রাজ্যকীর উপর। রাজ্যের রাই
নানক দেবীর রূপলাবণ্যের ক্ষম্রুভি নবাবকে প্রকৃত্ব
করিরা ভূনিল। রাইর জনাবারণ চরিত্রবলের করা ওনিরা
নবাব হাসিরা উটলেল। নারীর আবার চরিত্রবল কি 
গ্রাজ্ঞালী প্রেয়ের নিকট লে নিক্তরই মারা নত করিবে,
ইতিহাস ভার বড় সাজী। ভার্ডার নবাবের বুক কুনিরা উটল।
নবাব হির করিলেন, এই রূপবতী নারীকে তিনি তাঁহার বেগন
করিবেন, তাঁহার শভিনভার কাহে চ্যনার হইবা বাইবে রাইর
চরিত্রবল ও পর্বর্গ, আর নারা ওজরাকের নরনারীকে দেবাইরা
নিবেন বে কেন্তর করিরা সবাই শভিন্ন কাহে রাবা নত
করে, কেরন করিরা অপরূপ প্রকৃত্রী নারী বিলাইরা বের ভার
রূপ, বৌবন, রাল, পর্ব্ব এবং গর্কের বন সভীত্ব এক শভিশালী

প্ৰবেষ কাৰে--নাৰক বেৰী ভো নাৰায়ৰ একজন কাকের বাকার বাক বই অভ ভেড বছ।

ন্বাবের বনে কর্বা পূর্ণবাজার আবিল। লারা ভক্ষাট ব্যাপী বে নামীর এক রূপ, এক লাবপ্য, এক তথ এবং এক বহিবা, পে আকে অকণাহিনী ক্ষতে পারে না—লে ক্ষতে জাহারই। ভার পর নামক বেবী আল বেশের রামী ক্ষতা সভেও তাঁর রূপপ্তপের পরিলা তাঁহার রাজ্যের প্রভার মুক্তে বৃবে, ইহা তাঁহার অনক হইবা উঠিল। কেশের প্রেট্ট নামী যদি তাঁর বেপর না ক্ষত ভাহা ক্ষতে তাঁহার ন্বাব্দের স্ল্যা কি ? ন্বাব্দ নামক ক্ষেত্রীকে পাইবার আশার প্রমুক্ত হইবা উঠিলেন। নামক ক্ষেত্রীকে তাঁর ব্যবহারে পাঠাইবার অভ নামক ক্ষেত্রীর কাবিক তাঁর ব্যবহারে পাঠাইবার অভ নামক ক্ষেত্রীর কাবিক ক্ষতে ভূত পাঠাইলেন।

রাজা গরবারে বসিয়াছিলেন ; এবন সময় নবাবের হৃত
আসিয়া তার আগমন বার্তা ও নৌজত আনাইল। হৃতমূবে
বার্তা ওমিয়া সতা নিভর হইয়া উঠিল এবং সলে সলে সভাসমলের চোবে মুখে একটা বিজ্ঞান বসক থেলিয়া পেল।
রাজা কোন প্রকার অসৌজত প্রকাশ না করিয়া বীর ছির ও
প্রতীর তাবে ক্যাব দিলেন বে, নবাব বেন বারন হইয়া টাল
বিয়িবার আশা না করেম। সূত সেলার জানাইয়া সভাকক
চইতে বাহির ছইয়া পেল।

দ্ভ সময়মত রাজার নিকট হইতে জবাব লাইরা মবাবের কাছে আসিল। নবাবকে সেলার জানাইরা দুভ রাজার উত্তর ব্যক্ত করিল। উত্তর শুনিরা নবাব অলিয়া উঠিলেন, বেরন ভরিয়া মুখাছতির আগুন অলিয়া উঠে। সামাত একজন রাজা তিনি জার আগুন করিবেন—ইহা জাহার সভ্তের অভীত। মবাবের হতুরে রাজ্যামীতে সাজ লাজ যব পভিয়া গেল। সহজে বাহা সভব হয় নাই ভাহা তিনি শক্তিরারোগে করিবেন। নবাব নিজে জাহার সৈতসারত লাইয়া নামজ বেবীকে বুছ করিয়া লাইয়া আসিতে চলিলেন। জেবল নামজ দেবীকে বেগন করিয়াই তিনি জাত হইবেন না; ঐ কুরে হিন্দু রাজ্যইও উাহার রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত করিয়া লাইবেন।

নাদক দেবীর বাবী রাজা হিসাবে ক্ল হইলেও, তিনি হিলেদ ক্লির। চুতের নিকট নবাবকে বে ক্লাব তিনি পাঠাইরাহিলেন, তাহার পরিণান তিনি তাল করিরাই কানিতেন। ববনই তিনি এই ক্লা চিন্তা করেন, তবনই উাহার বেহের কাল্লরক টগ্রগ্ করিরা উঠে। সকল প্রকার বিপদের সম্বান হওবার কত তিনি প্রকৃত হইলেন। ববর পাইলেন তার রাজ্য আক্রমণ করিবার কত নবাব সৈত লইরা আসিতেহেন। রাজা নিক্লে তাহার সৈত্য লইরা অর্জগনে নবাবের প্রতিরোধ করিলেন। বুছ আরক হইল। রাজার সৈত্য নবাধ-লৈন্যের কুলনার সংখ্যার অভি অর। তাহাকে করির রাজা তীত হইলেন না। অসির বনাংকারে আভাশ-

বাভাগ কাঁণাইরা ভিমি তার ভ্রির সৈর্যাপ লাইরা ব্যাব-সৈব্যের বব্যে বাঁণাইরা পঢ়িলেন। হত্যাকাও আরভ হইল। বলুভূমির প্রাভ্য রক্তের স্রোভে বহিরা গেল। বুবের শেব পরিপান রাজার জানাই ছিল; কিছ ভারত্তত ভারতে ভীত হর নাই। ভ্রির বীরের ভরবারি সঞ্চালনের কোঁশলে বহু নবাব-সৈন্য হির ভিন্ন হইরা গেল। লে বুবে ভ্রির বীর-গণ রী, পুত্র, পরিবারের কথা ভূলিবা গেল, ভূলিরা গেল নিজের জীবনের নারা। ভারারা বীরবিক্তমে বুহু ভ্রিল, হাজার হাজার নবাব-সৈন্যকে বরাতলে শারিভ ভ্রিল, নিজেরাও শরন ভ্রিল অনস্কর্তালের ভ্রত।

बाका चन्नर कृत कविराम । अ कृत बाका बका क्यांव क्ष मत् व दूष (क्रम शारीमण तका क्रांत क्ष मत् व दूष **भववाका हवन कवाव कहल मब--- व वृद्ध दिन दिन्द्र अक** শাখত ৰচিষ্ণঃ আন্তর্শির সন্থান রকার ভঙ । রাজা তাঁর एक्ट्रकी रेमक्रमान्य महायात्र व्यक्तिकाय इक कविएक कदिएक वह सवाव-देशह क्लाक्क कदिश वास्त्रव करेताना। এই ভাবে মুদ্ধ করিতে করিতে সংখ্যার বহু গুণ নবাখ-সৈভের वाह (चन कविवा वाका वर्ग मवादिव अनुर्द मवादिक शब-নারীহরণের নির্দ্ধ শিকা দেওয়ার কর উপস্থিত হইলেন, ভবন অভক্তিতে এক "নবাব-নৈতের ভালার আবাতে রাজা ভাঁতার খোড়া ভইতে পভিত্রা গেলেন। নবাবের আদেশে রাজা ৰবাৰ-সৈতের হাতে বলী হইলেন। রাজার অবশিষ্ট সৈত আহত রাজাকে উভার করার অন্য শেষ চেঠা করিল, অসীয विकास मनाव-देनमा विश्वचित्र कतिल , किन्द त्यंत पर्वाच नकालहे बाकाव क्या, बाट्याव क्या, वादीमधाव क्या अवर धावाटनव वडीवनी वाने मानक राजीव क्या पुरस्करत थान विमर्कन दिन ।

বৃহত্তে ভাইতে রাজবানী ছিল অনেক দূর। রাজার পরাকর ও বলী হওবার সংবাদ রাজবানীতে পৌহাদোর বছ পূর্কেই নবাবের অবারোহা সৈন্য ক্রডবেপে গিরা পূরী আক্রমণ করিল। পূরী রজার কল বে সারাল করির যোহা ছিল, ভাহারা অবিভবিক্তরে পূরীর প্রবেশবার রকা করিতে লাগিল; কিছ শেবরকা করিতে পারিল না। মূহর্তের মধ্যে পূরীর প্রবেশবার কক করিলা নবাব-সৈন্য পূরীতে প্রবেশ করিল। যাহারা পূরী রকার কন্য ছিল, ভাহারাও মূহ করিল, নবাব-সৈন্যবিগতে বারিল এবং বিজ্ঞো মরিল। রাজার বালক পূর্বের বাকিতে পারিল না, মূক্ত তলোরার হতে পূরীযক্তব্যর সহারভার অগণিত নবাব-সৈন্যের মধ্যে বাপাইছা পঢ়িল। কিছ কক্ষণ। নবাব-সৈন্যের নিকট ভাহারা আহত অবহার বলী হুইল।

রাই নামক দেবীও তাঁহার পুরুষরের সহিত বলী হইলেন। নামক দেবীর বলী হওয়ার কবা ওনিরা ন্যাব পর্যে উষ্ট হুইয়া উট্টানেন এবং হাতিকভার হাসি হাসিলেন। আফ তিনি ছনিয়াকে বেৰাইয়া দিবেন বে, সভীছের তেকে গর্কিভা নারী কেনন করিয়া সবলের কাছে ভার বেহ, নন ও সভীছের অহসার সুটাইয়া দেব।

বেধানে বসিদ্ধা রাজা তাঁর দরবার করিভেন, সেই দরবারকলে নবাবের সমূবে বজী নামক দেবীকে ও তাঁহার আহত
বজী পূঞ্জরকে আনা হইল। নবাব দেবিলেন বে, তাঁহার
সমূবে এক অপরপ নারী দাঁলাইরা আছেন; তিনি ভ রপবতী
নারী নন, নারীরূপে অলভ লোহশলাকা। নবাব সে রূপের
দিকে তাকাইতে পারিলেন না। ছর্ব্যের আলোক দর্পবেপ্রতিবিধিত হইলা চোবে আসিদ্ধা পঢ়িলে চোব বেমন বলসিলা
যার তেমনই সে রূপের তেকে মবাবের চোবও বলসিলা গেল।
আপনা আপনি নবাবের মাধা নত হইলা আসিল। বুছুর্তের
মধ্যে নবাবের দাভিক্তা রানীর রূপের জ্যোভির কাছে
নান হইলা পঢ়িল। নবাব এক স্বর্গীর দীপ্তির কাছে হার
নানিলেন।

কিন্ত কতকৰ। আবার নবাবের হলে ভাগিরা উটিল রপের বোহ ও ভোগের স্পৃহা। নবাব পান্ত ছবে নানক দেবীকে তার বেগন হওরার জন্য অহুরোব জানাইলেন। নবাবের কথা ভনিরা নানক দেবীর আহত ও বলী পুরুষর ভাহাবের বন্ধ ভনিরা নানক দেবীর আহত ও বলী পুরুষর ভাহাবের বন্ধ করিল। পুরুষর সন্মুখে রাভার অপরামে বলী পুরুষরের মনে বিষয় অন্তর্জালা ভাগিরা উটিল। আজ্ব রাজপুত বালক বলী; ভাই রাখা নত ভরিরা সহু ভরিল নিজের বাঙ্গের অপ্রাম। ভিত্ত মুখার, অপ্রামে ও জোবে বলী মানক দেবী সিংহীর হত গজিরা উটিলেন এবং বিজ্লী চমকের বৃত্ত হঠাং অঞ্জনর হইরা নরাব্য ন্বাবকে প্রামাত ভরিলেন।

कारन, जनवारन, नकाव **७ नताजरबब जानाव न**नान छेबछ इरेबा छेडिलम। क्रडे कार्छ मनान मामक स्वनीत्क বলিলেম বে, হয় ভিনি কেছার তার বেগর হইবেন, না হর ভাঁছার সমূৰে ভাঁছার পুত্রহয়কে হভ্যা করা হইবে। হর বেগমছ ৰীকার, না হর টাহার পুরুষরের সভক্ষান ইতার একটা ৱাৰীকে বাছিয়া লইতে হইবে । আছত সিংহীর মত গৰ্জিয়া केंद्रीलय मामक व्यवी अवर चडेटांक हाजिलय। जव जवन নামক বেৰীর পুত্রমণ হাসিয়া উটিল ঋশানের ভূতবেভের चहेवानि अवर नावा पवनाव-मृद्ध (पेनिवा श्रम विकीविकाव अक ७ ७९-थार । अरे मुळ मरारवत चम्ब हरेश छेतेन। बाबैद शृक्षदश्यक रूका। कवाद कर चारम्य कदिराम । चारम्य भारे**वाद जर्ज जरह हुरे क्य भा**र्कात्यद हुरेवायि भाविक क्या কোষমুক্ত হইল; সলে সলে ছুইবালি মুক্ত অসির কলক विक्नी (बनिया बाधधात यक मृत्न देविक दरेश बुद्धार्थं बर्बा मामिश चानिन चाएक, ननी श्राष्ट्रवादव करव , चात इरेडे হিম বন্ধক কুতলে সূচীইবা পড়িল।

বাবি চকু বৃদ্ধিলেন না। চাহিবা বেবিলেন্নু বালকব্যের দেব হুইতে কিন্তি বিরা উঠা রক্তের স্রোভ। কবিকের
ক্তেও রাবী একটু হুংব করিলেন না। নিক্তের সভীত্তের
বিনিন্তর ন্যাবন ন্যাবের কাছে পুত্রব্যের প্রাণ ভিকা করিলেন
না। হুই চোব বিরা ভিনি হুই কোঁটা চোবের ক্তেও কেলিলেন না। অচল অটল অবহার বিক্তারিত ন্যমে
পুত্রব্যের হুড্যা বেবিলেন; চাহিবা বেবিলেন ধূলার পুটানো
পুত্রব্যের হির নভক। ভারপর বীর হির ভাবে স্টাইরা পভিরা
পুত্রব্যের হুপ্ত ক্রবির ভাহার সারা অলে বাবিলেন।

ক্লবিব-বঞ্জি বাণীর বৃত্তি দেখিবা নবাব ভীত হইলেন।
ভবন নবাব দেখিলেন বাণীর নবাে সভীখের ভেজে দীও এক
নহীবসী নামী; আরও দেখিলেন ভিনি নামীখের গর্মে গর্মিত
অলভ লৌহবভের ভার জ্যোভির্ম্মর এক হিন্দু নামী।
অবিকক্ষণ সে জ্যোভির্ম্মর যুঠি নবাব দেখিতে পারিলেন না;
রাণীকে পাকীভে ভূলিয়া রাজনানীভে লইয়া বাইবার জন্য
নক্ষ করিলেন। নবাবের হকুষের সলে সলে পাকীবাহকগণ পাকী লইয়া উপস্থিত হইল।

পাকীবাহকণৰ ৱাইকে পাকীতে তুলিয়া লইয়া নবাবের রাজবানীর দিকে ছটবা চলিল। পাকীবাহকরণ ফ্রভবেরে চলিতে লাগিল : ভিভৱে ৱাৰী বসিয়া আছেন, কোন সাভা-শক নাই। পাকী লইয়া বাহকগণ অনেক দুৱে এক প্রান্তরে চলিয়া সিয়াতে। ভাগৈ বাদী পান্ধীর ভিতর ভাগতে ভাটভাল্ড তাসিলেন-লে বেন হতা প্ৰশানের শিবাকলরে। ৰাচকণৰ সে বৰ ভৰিষা ভীত চইল। মহৰ্ছের মধ্যে পানীর ভিতর একটা ভীষণ পর্কন আরম্ভ চইল : সে বেন পিঞ্চরাবদ আহত সিংহীর গর্জম। পাকী-বাহকগণ পাকী নাবাইয়া পিছনে পঞ্চা নবাৰ-সৈন্যের ও নবাবের প্রতীকা করিতে লাগিল। ভিভৱের গর্জন ভীত্র হুইতে ভীত্রভর হুইল, পদাবাতে বাৰী পান্ধীর মুর্জা ভাঙিয়া কেলিলেন এবং সঙ্গে সঙ্গে লাকাইয়া বাতির তইয়া রাণী উর্দ্ধানে ছটকে লাগিলেন। বাতক্রণ কিং-কর্তবাবিষ্ট ভ্ৰৱা দাভাইরা রাণীর অপরণ মুর্তি দেবিতে नातिन : त्न वृद्धि माजीवृद्धि मत् त्न वृद्धि मामयमनभी वृद्धि। आहाश वाबिक वाबा विज्ञ मां. बिवाब cost कविज्ञ मा-ভাহার। ভাহাদের কর্ডব্যের কবা ভূলিরা পেল। রাণী উর্কু-খালে ছটভে লাগিলেম-কোন দিকে, কোৰায় ভাহা ভিনি कारमय मा । क्षमञीय श्रीकरत छिमि (क्षम क्रेडेक नानित्नम ।

এই ভাবে প্রাভৱের বব্য দিরা, পাহাতের পাপ দিরা, কন্টকিভ বমের ভিডর দিরা চুটতে চুটতে ওঁহোর পরবুগল কররে, পাবরে ও কন্টকে কভবিকভ হবল ; ভবাণি ওঁহোর মুটবার বিরাম মাই। এইভাবে মুটতে চুটতে অবশেষে এক হালে আনিরা ইাড়াইলেম। চারিফিকে ভাল করিবা চাহিরা বেবিলেম। অবলাবে ওাহার পরীর ভাতিরা পভিতেহিল ; কিড

অবসাদ কর্ত্তর ভুলাইতে পারিল না। মার্চ, প্রাছর ও জন্দল হটতে ওক কার্চ সংগ্রন্থ করিলেন এবং চিতা সাজাইলেন।
চিতা সাজাইলেন, কিছ আগুন নাই। কোবার আগুন পাইবেন। এই প্রাছরে কে দিবে আল তাঁহাকে একটু আগুন তাঁহার নারীছ ও সভীছের সন্মান রক্ষার জন্য। কোবাও কোন আলা ববন নিলিল না, ভবন তিনি বুজিরা বাহির করিলেন একটুকরা পাবর। বিভার পাবরের টুকরা তিনি বুজিরা পাইলেন না। নিজের পারের বুছারুঠ সেই পাবরের টুকরার ব্যিরা আগুন আলাইলেন এবং চিতার গুক কার্টে লাগাইলেন। দাউ দাউ করিরা চিতা অলিয়া উঠিল।

এদিকে রামীর পলাধন দেখিরা বাহক্পণ কিছুক্ষণের ক্ষম্য কিংক্রডাবিষ্চ হইরা পড়িয়াছিল। ভারপর বর্ধন ভারাদের চেভনা কিরিয়া আসিল, তর্ধন ভারারা রামীর পলারন-সংবাদ বোষণা করিরা চীংকার করিয়া উঠিল। চীংকার ভনিষা নবাব-সৈনা সেবামে আসিল, এবং নবাব নিক্তে সেবামে আসিলেন। নবাব বাহক্দের ক্যা ভনিয়া সব ব্বিলেন, এক মুহুর্ত সময়ও নই মা করিয়া রামীকে বরিবার ক্ষম্য নবাব ভারার অধারোহী সৈন্য চারিদিকে পাঠাইলেন এবং ভিনি নিক্তেও ক্ষেক্ষন অধারোহী সৈত সলে লইয়া অধারোহানে ছটিয়া গেলেন। বন, ক্ষল, য়াঠ, পাহাত্ব প্রভৃতি সকলে বুলিলা। নবাব নিক্তেও বুলিলেন। কিছু রামীর কোন সন্ধান বিলিল না।

এই ভাবে বুঁজিতে বুঁজিতে সকলে বৰন নিরাশ হইরা পজিল তথম সভাগ অভীত হইরা গিয়াছে। সারা বিধে অভ্যার নামিরা আসিরাছে। মবাব এক কুল্ল পাহাডের উপর বাভাইরা দূরে দেবিলেন এক বিরাট অরিলিখা। মনে করিলেন কোম চিভা অলিভেছে। সেধানে গেলে হয়ভ রাবীর সভান পাওরা বাইতে পারে, ভাই সেই দিকে বোভা চুটাইলেন।

নবাব সেই চিতার মিকটে আসিরা হাড়াইলেন।
দেখিলেন সেই প্রজ্বলিত চিতার এক পালে করজানে
হাড়াইরা আছে করেকজন পাহাড়ী; বেন ভাহারা কোন কেবীর উপাসনা করিতেছে। আর দেখিলেন অলভ চিতার উপার চকু বৃদিরা পরাসনে বসিরা আছেন এক অপরপ নারী। চিতার চারিদিক্লের আঞ্চন লোল কিলা বাহির করিরা সেই রক্তবসনা নারীকে বিরিয়া বরিরাছে। নবাব এই নারীকে চিনিলেন। এই নারীই রাম নানক কেবী। নবাব ভঙ্জিত হইলেন। তাঁহাকে বাঁচাইতে কোন চেঠাই করিলেন না। পরাজর ও অপরাসের আলার তাঁহার অভর রানিতে ভরিরা উঠিল। কিছ বিকু নারীর ভেজ, নারীত্ব বোব, সভীত্বের আনতর্শির বহিষা এবং বৈর্যের পরাকাঠা দেখিরা নবাবের বন প্রাণ প্রছাও ভঞ্জিতে ভরিরা উঠিল। স্বাৰ চিভার উপবিঠ দারীর প্রভি চাহিরা বাধা মত ভবিজেন।

বেছাৰে নামক কেবী চিভাৱোছণ কৰিবাছিলেম সে ছাৰেব উপৰ একট বৃতিমন্ত্ৰিৰ আছে। এই ছান ওবাৰ্ছন শহরেব এক প্রান্তে অবস্থিত। সে এক তীৰ্বক্ষেত্ৰ। প্রবিদ তগি-ভাইকে সলে সইবা এই বৃতিমন্ত্ৰিট বেণিতে গেলাব। বেণিলাব, বহু নামী প্রভাপচার সইবা আনিবাৰে, বামত করিতেরে, স্থিমন্দিরে সিজ্ব মাধাইতেরে, গুণ গুনার আরতি করিতেরে আর তভিতরে প্রধান করিবা প্রারে নিবেদন কানাইতেরে। অনেকৃষ্ণ ইাডাইরা রহিলান। আর্ল্ চরিপ্র নানক বিধা করা তারিরা প্রাণ বান উচ্চার প্রতি তভিপ্রেরার তিরিরা উটিল। তারপর নাধা আপেনি নত হইবা আঙ্গিল। স্থৃতিমন্দিরের দিকে চাহিরা সেই অপরীয়ী নারী রাখীনানক বেনীর প্রতি প্রভা নিবেদনের ফ্ন্য হাতজোষ্ট ভরিলান।

# রূপের কথা

## अक्रूप्तक्षन भन्निक

চেনে না জানে না বে জন তাঁহাকে
পেও জানে নিরাকার।
পরিচয়ে আর আছে কিবা দরকার ?
খ্যানী, অছ্বাঙ্গী, রসিক তাঁহারে জানে,
তাঁরি প্রীডিকামী, ফিবে তাঁর সন্ধানে,
সভাদৃষ্টি ভাহাদেরি বাণী
ভানবার শোনাবার।

£

তশ্বর হয় বে রূপে তাদের

সিদ্ধ শিল্পীমন,
সেই রূপ তাঁতে করে বে নিরীক্ষণ।
ক্ষাদো বা তিনি বরাহ, কমঠ, মীন,
ক্রুপের মাঝে মহারূপ সমাসীন,
ভক্ত মধুপ সব ফুলে করে

মধুবে আকর্ষণ!

কখনো বিজ্ঞ, চ্চুতু অ বা কখনো পঞ্মুখ, পদারবিন্দ পৃজিয়া কাহাবো হুখ। কেহ তাঁরে দেখে কল্ল ভয়ত্ব, কেহ মনোহর চির-ভামস্ক্রন, বহবরুত্ব অন্ত ক্লশ

বাতে বার ভবে বুক।

কোন্টি উচিহার শাঁদ্ধি রূপ বটে কোন্টি ডাঁহার নর গ ডুকুই ডাঁহা করে বের নির্ণর। থখন ধে রূপে দেখেছে স্ত্য ভাই, অসত্যের যে প্রবেশ সেধানে নাই, ধ্যানের সে রূপ-পরিমগুলে সব অমৃতময়।

রণ নাই তার অন্ত বলে,

নেধে সে অন্ধার।

রূপ দেখে সেই বিপুল ভাগ্য বার।
বে রূপের লাগি ভৃষিত নয়ন ঝুরে,
বে রূপ দেখিলে বচন নাহিক ক্ষুরে।
সন্ধ বাহার, সাধনার ধন—

রুক্ত তপঞ্চার।

সেই তাঁরে চেনে, সেই দেয় নাম
ভাকে 'জয় জগদীশ'।
বোগ বার তাঁর সজে অহনিশ।
পটে ও পাবাণে বে বসমূর্তি আঁকে—
সভ্য সে রূপ, ভক্ত দেখেছে তাঁকে।
রূপের পরিধি খুঁজিছে বাহার
নয়ন নিনিষিব।

সে বাগের পথে এক সাথে হয়
ক্লপ ও কথার শেব,
রংশীই তাঁর করে পথ নির্দেশ।
সকল চিন্তা চিন্তামণিরে নাড়ে,
সব দর্শন ফুরায় তাঁহার কাছে,
সুব রস এক ব্রনিকে:বেরিয়া
রচে ক্লপ-পরিবেশ।

# কিন্নর জাতি

## শীধৰ্মদেব শান্তী বছৰাদক—এবীবেজনাৰ ভহ

#### গ-- শিকা, পাৰ্ব্বৰ, অভাব-অভিবোগ

শিক্ষা ও চিকিৎসা। সুখের বিষর, সন্তাতি শিক্ষার াদকে কিরবদের আগ্রহ বাড়িবাছে। বেখানেই গিরাছি, লোকে ভুল পুলিতে আনাদের অন্থরোধ করিবাছে। সারা কিরব-দেশে নরট ভুল—সাভট প্রাইনারী, একট নিডল ও একট লোগার বিডল। ত্রী-শিক্ষার দিকে কিরবদের মন্দর কম। এদিকে বিশেষ চেটা করা দরকার। ত্রী-শিক্ষার বিভার ব্যতীভ কিরব-দেশের উরতি হইবার নহে। চীনীতে একট বেশ সুন্দর হাস-পাতাল দেখিলাম। কিছ ডান্ডার নাই। কেন নাই এ সম্বছে অন্থরান করিবা আনিতে পারিবাছি বে, এত গুরে ভোন ডান্ডার আসিতে চাহে না। চীনীতে জিনিষপত্র বহার্য। সিবলাম লবশের দর চার টাকা, চীনীতে চিলিশ টাকা। পাকাম চাকা বন দরেও চীনীতে গন ছ্প্রাপ্য ছিল। আবার দেশ ভাতার ও রেশনের ব্যবহা করা উচিত। কিরব-দের নিজেদেরই সংবৎসরের খোরাক নাই।

চীনী কিয়র-বেশের রাজবানী। এবানে একট মিডল ছুল বাছে। রামপুর এবান হইতে সভর নাইল। সেবানে হাই হুল আছে। চীনী ও চীনীর আলপাশের লোকেরা ছেলেনের রামপুরে পাঠাইতে চার না। ভা ছাড়া ছাত্রনের ভবার নাবাগিছু চল্লিল চাঁড়া বোরাকী বরচ পড়ে। ভাই চীনীতে অবিলয়ে বাই-ছুল বোলা আবর্ডক। রামপুর ছুলকে ইন্টারমিভিয়েট জলেকে উরীভ করার কবা চলিতেছে। শুনিলার শিকাবিভাবের ভিরেটবঙ এইরূপ সুপারিশ করিবাছেন।

### वामन्दा वादारका एक विकल प्र

রামপুরে বেরেবের প্রাইমারি কুল আছে। উহাকে বিচল ইলে উরীত করা দরকার। প্রবোগ না থাকার, ইছা থাকিলেও রমেক বেরে লেথাপড়া করিতে পারিতেরে না। মনে হর রবিবাসীরা সহশিকার পক্ষণাতী নহে। চীনীর কুলে বেরেবের ইডার ব্যবহা করার চেটা করা বাইতে পারে। চীনীতে কোন বেরেকে আমরা কুলে বাইতে দেখি নাই।

#### দ্রীরোগ চিক্সিংলা

শ্ৰীৰোগ চিকিংলাৰ কোন ব্যবহাই নাই। অভ ছাবে বাই াকে। এবাবে (কিন্ন-দেশে) বাই পৰ্যান্ত নাই। ভাই ইলবকালে অনেক শ্ৰীলোকের অকালবৃত্যু বটে। শ্ৰীৰোগ ইকিংলার অভ এবাবে একট হালপাভাল একার প্রব্যোজন। আৰার বিবেচনার কভারবা ট্রাই হইতে সরহাবে একট হানপাতাল ধোলা উচিত।



চারণ-ভূমির পৰে

হিৰাচল প্ৰবেশের শিকিত মুবক-মুবতীদের চিকিংলা-বিভা শিকার কত বিশেষ হাজয়তি কেওৱা সরকারের কর্তব্য। ভাহা হইলে এবানকার প্রবোজননত ভাক্তার ও জেডি ভাক্তার পাওবা বাইবে।

#### পৰ্ব্য-পাৰ্ব্যথ ও বেলা

কিয়র-বেশে সৌর বর্থ প্রচলিত। প্রায় সব তেছারই সংক্রান্তিতে হয়। প্রধান প্রধান পর্য হইতেছে:

১। বিশু বৈশাধ সংক্রান্তি দিন। ২। কান্তনী হোলী।
৩। বেওরালি—অভন্ত বে সহরে অস্কৃতিত হর ভার এক বাস
পরে। ৪। কু লৈচ—বশহরা। ৫। কার্যা—২০শে ভার ভারিবে। ৬। কব্রেদ—প্রাবধ-সংক্রান্তি।

পৰ্ব্ব উপলক্ষে লোকেরা নাচে, গার ও শক্তি অনুসারে ভাল বারহার। ফাগড়ার দিনে নারারাভ ফাসিরা বাড়ে। ঐ উপলক্ষ্যে বেলা বলে। বেলাতে ক্বেডা আনা হয় এবং তাঁকে নাচান হয়। বীলোকেরা গহলা পরে। বহু-পভি প্রবা প্রচলিভ বলিরা সব বেবের বিবাহ হয় না। এইরূপ অবিবাহিভ বেরেকের কেরু কেরু এই সমর ক্ষেত্রার প্রের-পরিবাহ ভরিরা বাড়ে।

#### য়াৰপুরের প্রধান প্রধান বেলা

বাৰপুত কেবলৰাত্ৰ কিয়ন-কেশেনই বন্ধ বাকার বহে; কুলু, ক্লীভি, ভিকাভ, কৌনলার-বাধর এবং হিবালরের অপর বুল কুল হানেরও ভাষা প্রসিদ্ধ বাকার। এবাবে ভিনট বেলা কর:

- ১। ২৫শে কাৰ্ষিক তথা বোটাবৃটি ১১-১২ই নবেছৰ একটা বক নেলা বলে। এই মেলার ভিক্ত হইভেও পল্ম বিজ্ঞাৰ আলে। লাখ লাখ টাকার জিনিবের আলাম-প্রধান হইরা থাকে। এই মেলাকে লৌক মেলা বলা হয়। বিজ্ঞবের—ক্ষত বহু বোড়াও আলে।
- ২। হোলী—এই মেলার কিয়র, বুশহর ও কুরু হইতে বহু লোক আলিরা বাকে। এটা বরোরা মেলা। বেবভা এই মেলার আলেন।
- । ২৪লে বৈশাধ—উপরি-উক্ত সব রক্ষের জিনিব এই বেলার বিক্ষর হর। ভারত হইতে লোকে জিনিবপর লইবা এবান হইতে ভিকতে বার।

#### গুহ-শিশাণ

ক্ষিত্ৰ-দেশ্য ব্যেষ দেওৱাল পাণ্ডৰ তৈরি, কিছ কাঠের ব্যবহারও ক্ষ নর। এগানে কাঠে উই লাগে না। গম ভগা বানের গোলা পূথক করিরা বানানো হর। গারারণতঃ বাস্থৃত্বে নীচের ভলার পশুদের রাণা হর। গৃহ গোভলা বা ভেডলা। দরকা নেহাত হোট। গৃহ নর ত বেন দরকা-কানালা বর বেলের প্রকোঠ। ব্যের হাদ ভিন প্রকারের। চৌরার আনপাপে সেট-পাণ্ডের হাদ দেখিরাছি। সেগানে পাণ্ডর বার। ইঙা হইতে বাংগতু পর্যন্ত কাঠের হাদ। পরে নাটার হাদ, কারণ সেগানে বর্ণা নাই। এই সব হাদ দেখিরা পাক্ষির কাদ্যের ক্যা ব্যের ক্যা ব্যান বর্ণা নাই।

#### नवकाती वावका

नवकावी कर्यवावश विव श्रकारवव :

প্রভ্যেক থাবে এক কন সর্বার বাকে। নে জাতিতে সবর্ণ। আর বাকে ব্রিক্সপ্রেণী হইতে এক কন ব্রবড়ী। ইহাবের বেডন নাই। সরকারী লোক আসিলে লোকজনকে ববর বেওরা, লোক ভাকা ইত্যাবি ভাহাবের কাক। আন-বাসীবের পীকন করিয়া সরকারী লোকেবের কর ভাহারা বে বার্ড সংগ্রহ করে ভার ভাগ ভাহারা পার। ভাহাই ভাহাবের বেডন।

ক্তক্তলি বাব লইবা একট বোড়ী। প্রত্যেক বোড়ীতে একজন নম্বরণার পাকে। সম্বরণার অভিকাত-বংশের হওরা চাই। রাজ্যের শভকরা পাঁচ চাঁড়া ভাহারের প্রাণ্ড। ক্তি ভাতে কি ভাবের চলে। ক্ষমগণকে, বিশেষ হরিজনবের উদ্যাক্ত ক্ষার ভাবা লাইনেল। লাইনেল বিলে সরকারের লাভ হয়। এ ক্ষেত্রে হয় ক্ষতি—এইটুকু ব্যবধান।

কতব্যুগতি বোচীর স্বাইকে প্রগণা করে। প্রগণার কর্চা হইতেহে কেলগর। কেলগর পরীব লোকের পক্ষে সাকাং ব্যবহাপ। তাহার উংপীক্তনে লোকে শশব্যুগ্ধ। কেলগরও অবিকাংশ হলে অভিজ্ঞাত-বংশের লোক। এই ব্যক্তিও রাজ্যের একটা গোপ পার। প্রার স্বপ্রপাতেই এক ক্ষম পাটোরারী বাকে। পাটোরারীবের এলাকা বভর। ক্ষম্পুত্তি প্রগণা লইরা একট তহুপ্তল। তহুপ্তল তহুপ্তলগরের অধীন। ক্রিয়ন্ত্রেশ স্ক্রির্যায় পাঁচানক্ষটে প্রায়। কুডিট বোডীতে তাহা বিজ্ঞা।

বরাভ বলিতে হইবে, রামপুর ও চীনীর ভর্মীলগারেরা ক্ষান্তির বোগ্য লোক। ভাহারা চুই ক্ষেই বুশহরের লোক— ভাল মাহায়।

নান বৈচিত্রা। সিনলাতে এক কিয়রেয় সহিত বেখা—
শিক্ষা-বিভাগে এসিটেণ্ট ডেপুট ইঅপেটর। ভাছার নাম বাংগ
ডুপ ক্লিংগ। ভললোক বি-এ, বি-ট। চীনীতে একট প্রায়
ছাজের সহিত দেখা, সে নিজ পরিবারের লোকের নাম এইরপ
বলিরাছিল। ছাজের নাম—কঞ্চ ছেরিংগ। পিভার নাম
দেশিন ছেরিংগ। নাভার নাম গবে জামী। বোনের নাম জবল
জামী। কুকবংগ প্রাবের ছাল্ল নিজ পরিবারের নাম বাহা
বলিরাছিল ভালা এই :

ছাত্রের নাম ঠাকুররান। পিতার নাম (১) ইজজিং, (২) ভিলকরান, (৩) রছ্লাল, (৪) পরস লাল। বাভালের নাম (১) গলালানী, (২) বর্জানী।

কিন্নর-দেশের বে সব পরিবারে লামাদের প্রভাব সে সব পরিবারে ভিকাতী ভাষার মান রাধা হর। চীনীর বিভল মূলে বিভীর ভাষারূপে ভিকাতী পভান হর। উহা পঢ়ান রামজীয়ান। ভিনি বৌহবর্ত্বাবলয়ী। ধুব সংলোড।

#### কিয়র প্রদেশের কৈলাস

কিন্তন-দেশে ভ্রানক শীত। আনহা চীনী সিরাহিলার বে বালে। পথে প্রার সর্কার উক্ত শিবরগুলি বরকে ঢাকা বেবিতে পাই। হিলালর বেন চারির গহলা পরিয়াহিল। কিন্তর-দেশের সর্কোচ্চ শিবর কৈলাল। ভালা নারা বছর বরকে ঢাকা থাকে। কৈলালের সর্কোচ্চ ভাগের উচ্চতা সর্কাচল হুইতে ২১২৫০ সুকী। উল্লার নাম বালডংগ। নামল সর্বোব্যের নিক্টছ কৈলাল আর এ কৈলাল এক বহে। ভার উচ্চতা ২২০০০ সুকী। কিন্তর-দেশের কৈলালের শোভার ভূলনা নাই। প্রাতঃকালে স্বর্গার্থরের পরে কৈলাল বেন বর্ব বর্ব লাকে সক্ষিত হয়। থানিক পরে পরে ব্যুক্তন ব্যুক্তন শাড়ী পরিয়া নব বন রূপ বারণ করে।

ক্ষারদেন হইতে একট হিৰাক্ষাধিত উচ্চ শিবর বেবা বার। দেবকীনন্দন ভারবাজ বলিলেন শাহাজীয়া ঐ শিবরকে হংলক্ষেক বলিয়া বাকে। লোকের বিধান জীব বহিরা ওবানে বার। উপনিষদের ধবিরা জীবকে হংস বলিয়াছেন। ভারও আগে বর্থেনে ঐরণ উল্লেখ দেবা বার।

বৃদ্ধ কিমনদের বিজ্ঞাসা করিলে তাহারা বলিবে, পাওবেরা বর্গারোহণের নিমিত ইক্সপ্রস্থ হইতে রওমা হইন হিমালনের বহু স্থান পরিভ্রমণ করেন। অবশেষে তাঁহারা কিমন দেশের কৈলাদে আরোহণ করেন ও তথার দেহত্যাগ সরেন। আর ভাই এই শিবরকে কৈলাদ বলা হর। মৃত্যু শব্দে স্থলে বর্গবাদ বা কৈলাগবাস কথাট ভারভবাসীরা হামেশা ব্যবহার করিরা থাকে।

#### অনপের প্রথমার্ক সমাপ্ত

কিয়বেরা অভি প্রাচীন জাভি। হিনাচলের এই সব অক্সত আদিম অবিবাসীরা সমদের প্রগতির অভি পশ্চাতে পঢ়িবা রহিরাছে। দেশের এক কোণে অবস্থিত কিয়রদের হাদরে হুংগাঞ্চুভি আছে। ভাহাদের মধ্যে জাগরণের লক্ষণ দেখা যাইতেছে। আগ্রবিকাশের জন্ন ভাহারা ব্যাক্ল বলিলেই ঠিক বলা হুইবে। কিন্তু জাগ্রভ সমুস্ত অপর দেশ-বাসীর সহারভা বাভিরেকে ইহাদের বিকাশ হুইবার নহে।

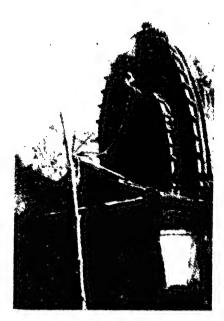
অশিকা কিন্নবদের মুগা সমস্তা। চ্:থের কথা, ক্লের
অভাবে কিন্নব্রেরা ইছে। থাকিলেও ছেলেনেয়েদের শিকা দিভে
পারিভেছে না। ঘরের কোণে হইলেও ইউরোপ-আমেরিকা
অপেকা কিন্নবরেরা ভ্তপ্রেভ ও দেবতার শরণাপন্ন, অম্থবিম্প্রে ভাহারাই ভাহাদের ভরসা। প্রীলোকের অবস্থা
শোচনীর। হরিজনদের অবস্থা পশুর অপেকাও অবর।
হিনাচল প্রদেশের আর কর। অভ্রেব কিন্নবদেশের শিকা,
স্বাস্থ্য ও পথ-ঘাটের ম্ব্যবস্থার ভঙ্গ কেন্দ্রীর সরকারকেই
সবিশেষ ব্যবস্থা করিভে হইবে। বিকাশাহক্ল অবস্থা সন্তেও
কিন্নবদেশ সব দিকে অম্বত। গানী-স্থতি ভাঙার, কত্তরবা
টাই ও ভারতীর আদিবলাভি পেবক-সভ্য ইত্যাদির কর্ত্ব্য—
দেশের এক প্রান্তে অবস্থিত এই সব উপেক্ষিত মূক দেশবাসীর
উন্নয়ন অবচিত হত্বা।

কুমারলেনের দিকে এবার আমাদের যাত্রা কুরু হইল।
কুমারলেন একটি দেবির লাভা দিল। আনা আকু মবর

কুমারসেন একট দেশীর রাজ্য ছিল। ভাহা আৰু নবগঠিত হিমাচল প্রদেশের অভত্তি। আমরা ১০ই মে কুমারসেন পৌহিলাম। নারকুঙা হইতে কুমারসেন হর মাইল। নারকুঙা মহ হাজার কৃষ্টি উচু; কুমারসেন বাঞ্গাঁচ হাজার পাঁচ শত কৃষ্টি উচ্চ।

এবাদে সকলের মুখেই বাভাভাবের অভিবাস গুনিলান।
ব্বিভে পারিলান, সরকারী কর্মচারীদের কাছে প্রান্ধানীরা
বেশদের কভ আবেদন করিলছিল, কিছ তাহাতে কোন
কলোদর হর নাই। পরিবাদে বছর দেখিরা নারভূগার এক
ভাঠুরিরা আনাদের বলে, পঞ্চাবে ত হাজারো বভা গন বাছে,

এদিকে হিমাচসবাসী আমাদের কংগ্রেগ-সরকার আমাহারে নারছে। যে দাম দিতেই আপনি প্রয়ন্ত থাকুম মা কেন,



प्रकारक व मन्त्र

নারত্তাতে গম বা বান আপনি পাবেন না।' নারত্তা হইতে क्याद्राज्य याहेटच याहेटच बार्य अश्यद बाजिन, चत्रवाहि कि अछरे नशीम। किक्रुन चार्यन हरेल नामत्म तिर्माण नम-(क्छ। एउ वरेट याम वरेन क्नम कान वरेशास्त्र। अय-किছ निक हरक रमना जलात । जासात नारवत अवही रक्ष পেলাম। শত পাকিয়াছে বলিয়া মনে হইল। ছট শীয हिँ छिया नरेनाम, ठाट छनिनाम : भँ छ। टरेश (नन ) अक्ष দানাও ভাহাতে ছিল না। এরপ হওয়ার কারণ ভিজাস। कतिनाम । अभिएक शाहेनाम, शब कृतिवाद नमस वृत्ति सम माहे जाहे क्रमल अक्रियांत महे हहेवा निवास । बीक ত্ৰাখাত মত গম পাওৱা বাইবে কিনা সন্দেহ। দেবিলাম প্ত ছৰ্মল, আৱ মানুষ নিৰ্মীব। একট লোকের সহিত বেবা। नतकाती किठित नत्म मारक्षा वहेला (कामा महेशा कितिएक-ছিল, ৰাজ পাঁচ সের। বাইবে সাভ জন। সাভ জনের জভ जारु वित्यत थे नदाय । चात चात कर चाराटक शूता हुई विन राव कविष्ण व्हेबारक। तम जाबारक विनन, "श्वमा विदय्ध श्रम, यव, बाम, त्यांना किह्न में मितन मा। शांह त्मद्व সাভ ভবের সাভ বিষ চলে ? ভত্শিলবার এর বেশী বের বা ।"

কুষাবদেন পৌহিতেই রেশনের অব্যবস্থায় সন্মুখীন হুইভে হুইল। কোন গোড়ানেই খাড়পড় হিল না। জীগেবড়ীনন্দন ভৱৰাক আমাৰের ব্যবস্থা ক্রিলেন, নরভ আমাৰেরও মুশ্কিলে পড়িতে হইত।

শ্বই রাজ্যের রাণা শ্রীলোমেশ্বর সিং উদীরবাম ব্বক।
বহালা গাবীর দৃতি রক্ষকরে ইনি একট বালিকা বিভালরের
বভ তিম হাজার চাঁকা বিরাহেন। হিমাচল প্রবেশর সরকার
এবং জনসাবারণ উভরেই স্ত্রী-শিক্ষা বিষয়ে উদাসীন, তাই
রাণা সাহেবের এই লান ব্বই বাহাল্যপূর্ণ। আমাদের পরাবর্শে
কুমারলেনের অবিবাসীরা ক্তরবা বুনিরালী কভা বিভালর
বুলিবেল ছির করিরাহেন। আশা করি, তাহালের অভিপ্রার
শ্বীর কার্ব্যে পরিণভ হাইবে। নিবলাতে হিমাচল প্রবেশের
চীক ক্ষিপনার কং প্রি, রুলকে এ বিষয়ে বলিরাহি।

#### ৰয়ঞেপ

ক্ষারসেনে পৌৰিলাষ। এবানেও আমাদের দেবিভেই লোকের মুবে সেই 'হা অর' ধ্বনি। হাজাবাসের হাজ, শিক্ক, সরকারী কর্মচারী, কৃষক, বালক, ত্রী-পুরুষ, সকলে বাস ও আল্পীর (ভুমুরজাতীর কল) বাইরা দিন কাটাইভেছে। একাভ বিশ্বর লাগিল। একজন হরিজনকে দেখিলাম। গত পনর দিন সে অনাহারে; নারক্তার জীনুনের সহিত দিন-ক্ষাকে পূর্বে সে বেধা করিবাহিল। সকাল-সন্থ্যা স্থন-চা বাইরা সে দিন ক্ষাইভেছে অধবা বীরে বীরে মরিভেছে।

পরের দিন সভপুর হইবা চাভান প্রায়ে গেলায়। সলে প্রীপরীধনী ছিলেম। চাভান কুরারসেম হইতে বাইল চারেক দূর। প্রায়ের কাছে সরকারী সমিভির ইন্সেউরের ছিত আমাদের সাক্ষাং হইল। প্রীদেবকীনক্ষমনীর অভ্যােরেইং সভিনি প্রার্ট দেবিতে আসিয়াছেম। সেধানে সাক্ষা আকালের পরিচর আমরা পাইলাম। গত তিন দিন সমত প্রাম্বাসীয়া অনাহারে আছে। কিছু খাসের পাভা সিদ্ধ করিবা থাইতেছে। এক হরিজনের দরে গেলাম্। দরে ভাহাদের একট দানা গমও ছিল না। উনান লেগা-গোঁহা, আগুন অলে নাই।

প্রামবাসীরা সকলে আসিরা আমানের খিরিরা কাঁড়াইল।
ভারাদের বারণা আমরা রেশন লইনা সিরাছি। এক বিববা
রাখনী আমাদের তাঁহার বর দেবিতে অন্থরোর করিতে
আসিরাছেন, তাঁহার পশ্চাতে তিনটি হোট ছেলে কাঁদিতে
কাঁদিতে আসিতেছে। স্রীলোকটি ভারাদের আখাস দিরা
বলিতেছিলেন, 'সব্র কর, বাম, সরকার অরের একটা ব্যবহা
করবেট, আমি কি করব ?' একটু বামিরা বেচারী বিববা
আরও বলিলেন, 'বাব কোবা ? পরনা ছিল, ভা ভ বেরে শেষ
করেছি। আছে সবল পরবের কাপড়। ভা বেচেই ভোষের
বাওরাব।' বারুল সাসিল। রাজ্বীর বরে গেলার। উনাদ্র আভব অলে নাই। বরে কিছুই ছিল না, বাসন-কোলন আনেই
বিক্রী হইরা সিরাছে। সকলেই আবাদের বিক্র বিক্র বেবিতে বজিতেছিল। স্বাক্তে চাষী অন্ন বোগার। তার এই হর্জনা। কাজার বন্ধিরা গেলার। ঐত্পন্নাল তাই বোজানে গেলের; কিছু তাজা বোলা আদিরা প্রাম্বালীকের দিলেন। প্রাণে তাহাদের জল আসিল। বুবিতে পারিলান, প্রান্বালীকের সব সমল নিঃশেব হইরা সিরাহে, কেনার শক্তি তাহাদের অত্যন্ত কীণ। চাতানে ইহাও শুনিতে পাইলাম বে, বোহনাসিং নামে এক ব্রহ জ্বার আলা হইতে নিছুতি পাওরার জন্ত পত্রতে বাণ দিতে সিরাহিল। ঠের পাইরা প্রান্বালীরা নদীর কিনারা হইতে বন্ধিরা আমিরাহে। লেই দিন বিপ্রহ্রের আহাবের পূর্বের রাইণতি রাজেকবার, চিক্ক কমিনারা কী. বি. বুন, করবারদান দৌলতরাম, প্রিরাবেশরী নেহুক্ক ও প্রেস ফাউ-এর নামে এক লখা তার প্রেরণ করি। জুপদেব নামে একটু উংলাহী ব্রক্ক তাহা পাঠাইতে কোটগড়ে যার। কোট-গড় ক্যারসেন হইতে চার মাইল।

বাইলাম, আনমনা তাবে। বেবানে লোকে আনাহারে মরে, সেবানে আন ক্রচে কি? সন্তপুর হইতে কুমারসেন কিরিয়া আসিলাম; আবার সেই 'হা অর' রব। ছাত্রাবাসের ছাত্রদের কাছে আমিলাম, ভাহাদের কোম দিন হইবামা, কোমদিন বা সপ্তরা হইবানা প্রট জোটে, কুবা ভাহাদের গাঁচ-বানার। ছাত্রের সংব্যা ৫২।

এক বৃদ্ধী আসিল। হাতে ভার লবণ, ষাট-মিপ্রিত, আৰ त्मद करेरव । माम जिम चामा, वृजी विमन, 'कि ह पाम व्यटि करन शरन नवन पिरद बाव। बाजल अबन क्रवांक।' क्रवांत-भित्यत लाक्तियत चात अक्टी कहे, चादायत हारे चुनाक বিভল ভূলে অবদ্যতি ভ্রা হটবাছে। ভাই ছিবিৰ ভূৰার ভাহাৱা ক্লিষ্ট—ভৌভিক ও বানসিক। হাই ছল বন্ধ হওৱাতে সাভাশ ক্ষ ছাত্রছাত্রী বসিরা আছে। উহাদের ছই ক্ষ বেরে ७ চার ক্ল হরিক্ল। এই ফুলকে প্রাইবারী হইতে হাই ভূলে উন্নীত করিতে শ্রীদেবকীনন্দনতীকে বাধার ধাব পারে কেলিতে ত্ৰীয়াছিল। ভাই ইতার অবমভিতে ভিনি অভিশব বিমৰ্ব। बायवानीत्वत चत्रकर्ट चात हारे कृत्वत कर्ट क्रे-रे नवान छीत । কুমারলেনের শিক্ষার কুবা দুষ্টে হিমাচল প্রদেশের শিক্ষার কুবার আঁচ করা যাইতে পারে। উর্ণীভেও ভার পরিচর পাওয়া পেল। आंत्रद भगवति (कामादार चावारमद चारक चारम । चालावा পভিতে চার, কিন্ত মূল নাই বলিয়া পশু চরার। উপীর দশ ৰাইল দুৱে কিলওয়াতে ভুল আছে। ছোট বালক-বালিকাকের পক্ষে প্রতিদিন তত দুরে বাওরা সভব নতে। ভাওরাতে তুল चार्य, बाबनःशा नैविष्य । यद मारे । नाब्छनाव क्रान रहा। শিষ্ণার সুবার ইহাও পরিচারক। তেবাপড়ার ভাত্রহ বাড়া সভেও দেশের বালক-বালিকারা নিরকর পাকিরা বাইভেবে। विवास निवासि, जाव बाहाब नाइने कवा हरेबारह--- नर्जाबरे अक चक्रदाय—'चावारका कुल किन।'

চীনী হইতে কিরিবার পথে বছনগরে আসিকা (৩০শে বে) ভনিতে পাইলাম, ক্ষারসেন কুনকে ছই বছরের জন্ত পুনরার হাই কুল করা হইবে। পুনী হইলাম। মারকুঙার পৌছিরা বধন ধবর পাইলাম বে, ক্ষারসেনের অরক্ট পুর করার নিবিভ হিমাচল প্রকেশ-সরকার ছরার ব্যবহা বিরোহেন—লোকে রেশন পাইতেহে, ভখন বোকপ্রাপ্তিসম আমনক অহতব করিলাম। চিক কমিশনর ত্রীমুদ ও তাহার বানীনছ রাজকর্মচারীদের বছবাদ ভানাইলাম।

বৰ্ষেলী কুষারলেনের লাগোরা প্রার। তথার একট আশ্রম সংঘাণিত হইরাছে। তথাকার উংলাহী বুবকেরা হিষাচল প্রদেশ সেবা-সত্ম নামে একট সত্ম পঠন করিরাছে। এ সন্পর্কে বৈভ প্রদারষাব সিংখীর মাম উল্লেখবোগ্য। চীণীতেও এইল্লণ একট সেবা-সত্ম গঠিত হইরাছে। ইহা হইতে এই অনপ্রসর প্রদেশের ভাগতির পরিচর যেলে।

নচার হইতে পৌড়া কিরিতেছিলাম। পথে এক বৃদ্ধের সহিত দেখা। দেখিলাম লোকট ক্লান্থ ও উদ্বিধ।

পারীবন্ধী ভগবাদের নাম ভরিতে ভরিতে বানিভদর আগাইরা বিরাহিলেন। অভিবাদন অভে বৃহত্তে ভিজ্ঞাসা **ক্রিলান—'আপনার** নিবাস ?' 'অগ্ল,'। অগ্লু हरेट व वानिक है। इटब---- थ-शाला। यह बाद व विलास---'विवाहन-श्रादम करबाद मां. चामबा किन्नदबदा गरबि । चारन जिन्ना ट्रेंट वर्ड रेप्टा नवन, ७०, ठान, कान्छ रेस्टापि আনা বেছ। কোন প্ৰভিবদ ভিল না। গ্ৰীছে বাড়ী কেৱবার नवय (क्यां-प्रात्रात्मच निर्दे प्रात्म कानिएव जिल्ला के के व হিষাচল-প্রদেশ হওরার পরে আয়াদের পক্ষে সিমলার বাজার वस करत त्मांक , किन्नरवार्त जीव बरहरक।' नरकत माम वर्त-পাল। ধর্মপাল বুশহরের মহারাজাকেও একহাত লইতে হাতিলেন না- "বহারাজা আপন বুর ও বুরেছে; সরকারের সহিত আনার গণা বিলিবে ভাতা প্রক করে নিরেছে। निम निम कुनारह । जानारमत इः (वंत कवा तम कि जारत । यथम दाका दिन छथमध बानाएक किळाना करव दाका दव নি, আর আৰু হিষাচল প্রদেশেও আয়াদের ভিজাগা করে আলে নি। এমন বিপদে আর্বা কবনও পড়ি बि।"

বর্ষপালকে বলিলায—"রাজ্য এবন প্রজার, কোন ব্যক্তি-বিশেষের নহে। ছিষাচল প্রদেশের কেন্দ্র সিন্দার, পূর্ব্ব-শঞ্চাব সম্বজারের অধীন, এ কথা ঠিক। সিন্দার কডকটা তাগ ছিনাচল প্রদেশের হাতে থাকলে আপনালের বুব স্থবিধা হ'ত সন্দেহ নাই। কিন্তু নিরাশ হবেন না। অল বিন হয় ছিনাচল প্রকেশ গঠিত হ্রেছে। বন্ধুন বর, গুহাতেও একটু সমর লাগবেই। আপনালের হেলেরা লেথাপড়া শিবে বর্ণন বেশ-সেবা করবে ভবন আপনাদের অবিক লাভ হবে। হিনাচল প্রবেশ হওরতে কভি চর বি লাভই চরেছে।"

#### উৎকোচের অভিবোগ

इर्डेड (बर-मारक निर्देश क्षेत्रा अक्रम क्रिया जारक বাইতেছিল। সারল চীমীর চৌদ মাইল ছলিকে, তিকাত-সীৰাত্তবৰ্তী প্ৰায়। বেবের পালে ব্রে-ছা রোপের বড়ক দেবা निवाहिन। एक क्यम एक किमित्त। अक अक्षे (क्या বাভী কিরাইয়া লইয়া যাওয়ার জল উমাপুর প্রারণাভ চেপ্রা করিভেছে। কিন্তু বেষগুলি ছই পা বার আর বলিয়া পছে। একবার আদর করে, আবার রাগ করে। मियशिनिक नरेवा अकृते बाब जात बात्म-अरे जात्व উমাত্ৰৰ পৰ চলিতেতে। উমাত্ৰৰের অভবৰতা বেছে, মাৰের शिर्द्ध जात जतलात्वत हजाहे शात लखात कथा। बाजा-পিভার বোবা না হইয়া, ভাহাদের বোবা হালকা করার ৰত এক নবৰাত বেষ-শাবক কোলে করিবা সে পাৰে হাঁটবা চলিয়াছে। উদাস্থধের পদীর কথা ভার কি বলিব। সে বেন তখন মেয়-তাসপাভালের অবাকা: ইতা দেবিয়া আমি বছাই অসোহাত্তি অভতৰ তরিতেছিলাম। আগ্রত তইল ইয়াত্ৰৰ ও তার ছোট যেখেটর সলে কৰা বলি। বলিলাম -- "ভোষাদের এ বিপদে ভোষাদের ছত কিচ করতে পারি कि ? कि काक करत तल ?" अ कथार क्यांटर धैमाञ्च বাচা বলিল ভাহাতে আমার অম্বন্তি আরও বাছিল। দে বলিল -- "বাভবালি কেন্দ্ৰ গ্ৰাস করতে প্ৰক্ত করলে কি আরু বাঁচার चाना बाटक । अवन जबन अवनरे शर्काह रव जनकानी ठाकरना মাত্রই বুষবোর হরে গেছে। প্রসা ছাড়া ভারা গরীব আমা-দের সদে কথা কর না। বে বভ বভ অফিসার ভার হবের বচর ভভ বেদী। কারও কার থেকেই আমাদের আশা নেই। এক ভাষ্ট যাত এখন ভৱনা।"

কহিলাৰ—"বুৰ লাভ বলে না বুৰ নের। নইলে নের কার নাব্য।"

"লোকে কি গাৰে পড়ে দেৱ ? সরকারী কর্মচারীরা আমানের কিছু আমীর নহে।"

এ কথা বলিরা সে শারিত সমূহ হাসের কাছে চলিরা গেল।

বালভূর হর মাইল দূরে শভক্রভীরে রাগরী নামক থান।
তথাকার চটতে পূলিশ ইন্স্পেটরের নহিত দেখা। পাশের
থামে চুরির তলতে লে ঘাইতেহিল। হই দিন আগে এক
করেই-চৌকি হইতে খাট চুরি হইরা গিরাছে। ইন্স্পেটর
বলিল—"এখানে এলে মহা মুশকিলে পড়েছি। সবে এক মাস
এখানে (চীনীতে) এলেছি। ত্রিশ টাকা বিরে সিমলা থেকে
নৃত্য কুতো নিরে এলেহিলার। এক মাসেই তা ছিঁতে শেষ।
খাল্যক্রয়ত কিছুই বেলেনা। সকে কুতি সের গম নিরে এলে-

হিলাম। সুরিবে গেছে। এবার না খেরে থাকার পালা। অধিবাসীদের নিজেদেরই থাবার নেই ভ আনার দেবে কোথা থেকে।"

সরহাম, সৌরা, চৌরা ও চীনীর ভাকবাংলোর ভালীর ব্যবহাও আছে। কিরর দেশে এ কাল করে রেচ লাভির হিছিলের। ঐ সব ভারগার ভালীরা নালিশ করিল বে ভাহারা রেশম পার না। বোভ ইন্শেক্টর শ্রীলঙ্গীটানকে কমাদারদের অপ্নবিধা দূর করিতে বলিলে সেঁ নিজের অপ্নবিধার কবা পাছিল। রামপুরে রেশমের অহারী ব্যবহা আছে। ভারপরে আর ওদিকে দোকামদারের কাছেও বাভশভ মিলে না। সরহাদের ব্যবর আটা টাকা টাকা সের, আর চাউল এক লেরের দাম দেড টাকা। সরহাদের ওপাশে কোন বাত্রী বার ভ তার পক্ষে উপবাসের পুণ্য অনারাস-লভ্য। রোভ ইন্শেক্টরকে বেধানে অনাহারে বাকিতে হয় সেধানে মেধরদের আর কবা কি হ

হিমাচল প্রদেশ-সরকার যদি সিমলা বা নারকুঙার গমবাম ইত্যাদি মজুত করিবা রাবে ত কিল্লরেরা মেয় ও ছাগের
পিঠে তাহা চীমী, আর চীমীর ওদিককার সব ছামে অনারাসে
লইবা বাইতে পারে। কিল্লর দেশে বর্বা হর মা। এ ছাম
কলচাযের উপযুক্ত। গত ছই বংসর হইতে এখামে ভ্রামক
বাল্যাভাব চলিতেছে। বেবামে এক মণ লবণের দাম পঞাশ
চীকা সেবামে আকাল মর ত কি ?

#### 'भागरमद' भावाय

वात्र अक्षे आय। हीमीद निक्रिं। भ्रदीश्य अस् मरेबा चाठावा मर्खायमामधीय वाकी बारे। दमवारम विकार्वी শেরসিং বাকে। ছই বছর আনে অলোক আশ্রমের বিভালরে নে আমার কাছে পভিত। সভোষদাসভী ওবামকার প্রভাব-শালী ব্যক্তি। কিন্তর দেশের উন্নয়ন কি ভাবে তইতে পারে ভংসভতে ভাঁচার সহিত আলোচনার প্রয়ত হইব, এবন সময় দীর্বাকৃতি একট লোক আষার পালে আসিয়া বসিল। পরিচয় मारे, कथा मारे, वार्का मारे त्म विनन-"ठाउ (स्तम छ চার বিখা কৰি আমি সরকারকে দিক্ষি। আপনি নিম। ছেলেদের কৌছে ভর্ত্তি করে দিন। আমার ভ্রমি হচ্ছে চীনীর भारम विमुद्दाय-**ভिका**ण (दाएडा সংमध<sup>ा</sup>" किळाना कविदा चारार्था मत्वायपामकीय कारक चामिनाव लाक्षे अक नामा। मात्र छात्र नमवशाता चन । हिकिश्ना-रावनावश्व (न करव । ছুই বিনিট পরে লাষা সেই কথার পুমরাবৃত্তি করিল। ভূতীর बाद्ध (नांदक का विशा बिना-"बाबाद वक बाका दक ? हाद চার ছেলে আর চার চার বিখা কমি দিবে দিছি। আমার ৰ্ষি প্ৰৱট ছেলে থাকত ভাবের স্কল্টেই আৰি বিৰে विचार।" नावा चावारक क्या क्ट्रेस किन ना। अक्ट्रे

ক্ষা লে । বার বার বলিভেছিল। ভূক ভূক করিরা ভার বুধ হইতে মদের গম আসিতেছিল।

বলিলার—"লামাজী, সহাদ্ধা বুদ ও মহাদ্ধা গাদী বদের আন্দের নিজা করেছেন। সদ আর বাবেন না।"

"ই।, ঠিক কথা। কিছ আমার কথা টুকে নাও—চার হেলে! আর চার-হ বিহা কমি।"

নিটবুকে ভার নাম লিখিয়া লইলাম ভবে না অব্যাহতি।

#### জলও বরাছ

বিষোগ রম্পীর স্থান, শিনলা-নারকুঙা রাভার উপর
অবস্থিত। এবানে হাই স্থল, হাসপাভাল ও আলালত আছে।
বিরোগে টাউন-এরিরা ক্ষিটি আছে। লোকসংখ্যাকে পাহাড়ে
ব্যবশী বলিতে হইবে। জনের এবানে ভরানক অভাব।
শীতকালে বরফ পড়ে। গ্রীমকালে ববন বরফ পলিরা পড়িছে
বাকে ভবন চারিটি চৌবাচার ভাহা বরিষা রাবা হয়।
এপ্রিল, মে, জুন ভিন মাস জলের এবানে নিলাক্ষণ কই।
নির্মিষ্ট সময়ে চৌবাচার ভালা বোলা হয়, ভবন রেশনের
মন্ত বরাহ্যাকিক জল মিলে। মে'র শেষ সপ্তাহে আল্রা
ববন চীনী হউতে কিরিলাম ভবন ভনিলাম বে এক টাকার
এক কলসী বল বিক্রী হইতেছে।

चावारमञ बरम इब. दिवाहन अरम् विरवान क्रिकेटक अक्री (बाहेद किनिया मिल अरे क्लाकार मृद हरेएक शादा। নারকুঙাগামী মোটর-রাভার উপরে আট মাইল দূরে খল আছে মেটিরে ভাতা লইয়া বাওৱা সম্ভব। অভ একট ব্যবস্থাও करेल भारत । विकारनत करे मारेन मीति वीच चारत । মল বসাইয়া ইঞ্জিম সাচায়ো সেখাম চইতে কল ভোলা বাইতে शादा। साहित बावा कन-वहरमत श्रम वावहातिक क অপেকাকত অলবায়-সাপেক। প্রবোজন বোর করিলে এ कन शबना नहेबाल विक्रम करा बाहरण शास्त । अक कनजीर शाम अक है।का शक्ति मा। चामक कम हहेता। अवाम-কার আবহাওয়া শাভ ও বাছাপ্রদ, ক্ষি বুবই উভয়। আর ইছা সিমলারও নিক্টবর্জী। **भवीरको ७ जामि यसम** বিরোগে বাই তব্ন কোন লোককে বলিভে শুনিয়াছিলার -- "अड नर किक इरेट्ड विरक्षांत्र पूर्व, करानद क्या वरानम क नवक "

#### नवस्यत्वत विन इतिक्य

মতাপুরুষ সভাজেরের নাবে শভক্রতীরে সভনগর গানক প্রান। এবানে ২৮ বর লোকের বাস। ভার বব্যে কুছি ৮ ব কোলী (হরিজন) আর চার বর রাজন। ছইট বোড়ান। বোড়ান্দার অনভ্রাম হালবাঁই আবর করিবা আবাবের দভাষের সামীর ও দেবীর মন্দির দেবাইল। ক্রিত আছে, পরভরামলী সভার্বে এই মন্দির মির্দাণ করিরাছিলেন। দত্তনগর হইতে ১৮ মাইল দ্রে শতক্র তীরে নরমতে ( কুর্ব 
হরং পরভরামলীর মন্দির বর্তনান। তমিলাম বার বছর পর
অভর্গত ) পর মন্দেব্যক্ত অস্তুতি হই মানে ।
মন্দিরের ছাদ হইতে একট মোটা দভি থুলিতেছে। লেকে তার
প্রতি আমাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিল। যে লোক দভি চভিবে,
যজের ছর মাস আগে মিক হাতে সে ৫৬০ গক ললা এইট দভি
পাকাইলা বলির জন্ত প্রত্ত হর। বলির দিনে লাখো লাখো
লোক তাহা দেবিতে আসে। দভির এক দিক উচ্চ শিখরের
একটি বুটার বাঁবা হয়, অপর প্রাভ মন্দিরের পালে ময়দানের
অপর একটি বুটার। যে বলি হইতে চার সে ঐ উচ্চ
শিখরে আবোহণ করিয়া দভিতে উপবিষ্ট হয়। মিনিট সম্বের
উপর হইতে ভাহাকে ছাভিয়া দেওবা হয়। মিনিটকরেক

মব্যে ৫৬০ গৰু ব্যবহান হড়ির উপর বিরা লে অভিক্রম করে।
কাৰট নেহাডই ভ্রাবহ। রুত্যুও বটুতে পারে। অনেক সরর
বর্ষদের হরুন হড়িতে আগুনও বরিরা বার। ভাই হড়ি বে চড়ে
ভাহার পিঠে একট জনাধার বাঁধিরা দেওরা হর। ভাহা হইতে
কীণ বারার জল পড়িতে বাকে। বে লোক এডটা চুর
নিরাপদে পৌহরা বার, জনসাধারণ, এমন কি বহারাজ বরং
ভাহাকে আপ্যারিভ ও পুরুত্ত করিরা বাকেম। বারিশ্পাতের জন্তই নাকি এই নরমেব বজের অভ্ঠান। অবিকাশে স্থানে হবিজন শ্রেণীর লোকেরাই নরমেব বজের বাক্তর বলি হর।

আমাদের অমণ-কথা এখানেই শেষ হইতেছে। এই অনগ্রসর সীমান্ত প্রদেশে কভ কাজ যে করার আছে, এই লেখা পড়িয়া, আশা করি, লোকহিভত্রতী সংখ্যসমূহ তংসমতে একটা বারণা করিতে পারিবেন, আর পারস্থানিক সহবোগিতাসত্তে আবন্ধ চইবা সেই কার্যে অগ্রসর চইবেন।

# বৃহত্তর ভারত

#### 🗃 করুণাময় বস্থ

ভাষল বৰ্ম বীপ বেন কাঁচপোকা টপ সমুত্র-বেশলা রূপসীর,— বৌবন হেশার মভশির শভে কলে প্রাচ্ছা সভারে, বসভের পুলা উপহারে।

প্রশান্তির প্রথ বাণী
উৎকীর্ণ ররেছে জানি
পর্কান্তের ধোদাই জকরে,
নন্দিরের কারুলিজে, পরতের হচ্ছে নীলাখরে
হারান্তিত বনের পাতার,
চাঁদ উঠা ক্যোংস্পারাতে কুলের নতার।
বছমিন
এই বীপ ররেছে নবীন
পতীর প্রাণের রনে,
লান্তি স্থানল রঙে, প্রেমের পরশে।

সেই কলোলিত বর.---कोव ज'रक कीरव ধ্বনিত করিবা কিরে भीवत्मद प्रक्रिय बादका : বিলোহের সেই কথা ভালগাং করেছে আবাভ ভারতের মর্শ্ব-উপকৃলে: আখীরতা দভিলাম আঙ্লে আঙ্লে। लान बाबा मिए बारन. প্রাবের নিবিভ যোগ ভাহাদের টানে,... এই गणा कवित्र श्रीकाद। আৰু ভাই করি অলীকার ভোৰাদের কাছাকাছি আৰহাও আহি. कर करेक हैं स्मारमनियात ।

जक्यार देवियाद वर.

# তুরাশা

## बैजज्महम हक्त

এল্ব নবীর বোহনা। বিপুলষক আটলান্টক মহাসাগরে এলে
বিশেহে প্রণত কলবারা। এপারে একটা দোঁ-আভানা,
সিরেন্ট কংক্রিট দিরে প্রবি-ভ ভার পোভাত্ররগুলো।
লমুক্রচারী সাব্যেরিনগুলো দেখানে এলে আত্রর পার। ছচার দিন বিপ্রায় করে, ভেল-রসন গুলি-বারুল বোরাই করে
নের, আবার বেরিয়ে পড়ে শিকারের সহানে বার নরিয়ার।
কলের কলা দিরে পথ কেটে চলে হিংপ্র হু শিরার কলক্ষর
রত। আভানার কাহাকাছি এলে বখন হঠাং কলগর্ভের
ভলকেশ থেকে ভেলে ওঠে উপরে ভখন ভালের কালো
কালো ইম্পাত-কঠোর চেহারা দেখলে বুক কেঁপে ওঠে, মনে
হর অভিকার হিংপ্র সামুক্রক প্রাণী বুবি। বীরে বীরে ইউবোটগুলো এলে আপ্রর নের ভালের নিষ্টিও বোলের মধ্য।

ভালার আছে হাড়া হাড়া ভাবে হোট হোট দালাম-কোঠা ঘরবাড়ী; ভালের হাদের উপরিভাগ নানাবর্ণে বিচিত্রিভ আকাশ থেকে শত্রু-বৈনামিকেরা বাতে সহকে চিনতে না পারে ভারগাটার আসল চেহারা, সেইজভেই ঐ কৌশল। এ আভানাটা আগে হিল না, লড়াইরের প্ররোজনেই গভিরে উঠেছে হালে। শহর এবং লোভালর থেকে বেশ বামিকটা দ্র, ভারি নির্জন ভারগাট। কেবল ভারাই এবানে থাকে বারা সংগ্রিই এই নৌ-আভানার কাজকর্মের সঙ্গে, ভাবেরই জতে ভৈরি হরেছে ঐ সব হোটবাটো ঘরবাড়ী। এই ভ্রে একট ভ্রমণ্ডের ওপাশ থেকে প্রয়ে হ্রেছে বনভূমি।

একটা লাইট রেলগরে এ কেবেঁকে চলে গেছে শহরে প্রার বিশ নাইল দূরে, একবেরে নির্কানবালে বে সব কর্মা লাভ ও অবসর বোব করে, সপ্তাহে ছ'বিন এক বিন চলে বার শহরে, নাচগান, আনোল আক্রাদ করে, প্রচুর বব বার, ভারণর কিরে আলে বে-বার কাজে। এবনই করে চলে এবানকার প্রাণহীন কীবনবারা, কঠোর নির্বের পৃথল বিরে শক্ত করে বাবা। বাত্রহগুলো বেন একটা প্রকাণ ব্যের হোট ছোট চাকা। মনে নেই ক্রমার প্রসার, কর্মে নেই ব্যক্তীরভা, আচরণের মব্যে বেই মুখ্যনত্ব, সকলেই বেন এক ইচিচে ঢালা, একই কারবানার তৈরি।

ওপারে সারাধিন বাঁবা বাকে ছ্বানা ফ্রেলার ( নাটকাটা ভাহাভ ), ভার করেকটা টহলদারী ভাহাভ । টহললারী ভাহাভভলো একটার পর একটা পালা করে ভিউট
দের—উপক্লের বার বেঁহে ভারা চন্দিন বন্টা দের পাহারা।
ভাক্ত ভাবা সন্দেহজনক ভাহাভ বাতে কাহে ভিডতে বা পারে
লিইভতে ভাবের এই সভর্কভা।

উথানের দিকে মধীর ভালন স্থক হরেছে, ভাকে ঠেকাবার কলে বনরাজি বাটছে এক বল প্রানিক আর ভাবের ইন্ধি-মীরার। বেলওরে ট্রাকের উপর এসেছে একটা ভার্টকাল বরলার, ভার সদে বাটছে একবানা স্তীন-হ্যাবার। হ্যন্-হ্যন্ করে পিটে পিটে বভ বভ নরওবেজিয়ান ওক্ কাঠের বুঁটিওলো দেখতে দেখতে বসিরে দিছেে মাটর মব্যে, ভার পেছনে এসে পভ্তে বভ বভ ব্যালাই ট্রেন বোরাই পাধরের বোল্ভার। ঠোকর বেরে জলের প্রোভ মুরে বেঁকে বাছে; দিনের বেলার ভেমন প্রকট হয় না যাজিক হাছুভির শক্ষ, কিছ রাজিবেলার বছ দূর পর্যান্ত ভেসে বার ভার ভীক্ষ কর্কন প্রভিক্ষনি।

আভাষার অধ্যক্ষ ক্যাপ্টেম কোষাকিছ্ শীবার বিপত্নীক বুড়ো মাহুম; নির্ক প্রাট বভাব; নির্ক্তমভার ক্লান্ত অধবা কাবু হবার পাত্র ভিমি নম। মদের অভ্যাস আহে, বরে বসেই পাম করেম; শহরেও বাম মা, অধবা মাভলামিও করেম মা। বৌবমসুলভ মন্ডভার অভীভ ভিমি এখন। গভীর মহুর বভাবের লোক, কঠোর নির্কাবাম কর্মী। ইউ-প্রশিষাম ভ্রামীদের মন্ড আহে একজোনা বিপুল গৌক; বেম দুচ্ভা এবং সহরের প্রভীক।

भाषासंब (बदक बानिकडे। क्लांक क्यांकिन नेवादव<sup>त</sup> वाश्ता। मछाहेरात वामा स्वत्म हता बारक बात कि। चाक्षत्रहीम भागाजित्य श्वत्यत कृष्ठि । ভात्रहे जरमद कांत्र ভার পেছৰে আছে প্রকাণ ছটো বেভার-স্কেতের বার্ডন। আপিসের মধ্যেও আছে নানা বক্ষ কলকভা, হরেকরকৰ লাবুলিক বালচিত্র। দিলের বংশ্য বেশীর ভাগ সময়ই ক্যাপ্টেনের কাঠে আশিল বরের মধ্যে। দৰুৱের উপর বিভিন্ন ভাহাত বেকে বিভিন্ন রকন সাক্ষেতিক ব্যৱ এসে পৌছাচ্ছে সেধানে, সেগুলো চালান বাছে হেড **কোরাটারে, জাবার হেড কোরাটার থেকে বে সব পবর** খাসহে ভা বিলি হচ্ছে সহুৱে। ভ্যাপ্টেন রিনিভার কানে विद्य यम यम मध्याप मध्याद क्यादम चात्र बाारमय छैनव बांक्राकांक क्वरहंग। अरे धव कांक. अरे कांक्वरे धैनि विनवाक वमकन। शास्त्रव जानमाविदकरे बादक वरसव বোষল ভার গেলাস, কলিং-বেল বাজালেই বেয়ারা এলে एटन क्रिक बाब।

ক্যাপ্টেনের করা ম্যারিরা, থাকে তার বাপের গরেই এই পোতাপ্ররের বাংলোতে। বিবিয় কুটকুটে চেহারা, তবী তক্ষী। বছর বাইশেক হবে বোব হর বরগ, বাধার এক ভক্ষ রেখন-চিত্তব সম্প কেশ, তাতে নোবালী আতা, রতিন সৌরবর্ণ, শীলাত হট চকু, বেন আড়াশ আর সরুজের দ্রীলিবার প্রতিবিহ্ন। ম্যারিরার কোন প্ররোজন দেই এই শৌ-আড়াশার নির্জন নির্মাননের মধ্যে পড়ে থাকবার, কোন ডাজ করে না এথানে সে, তরু থাকে বাপের চাছে। নহরে বাড়ী আছে, সেথানে দিরে অনারাসেই থাকডে পারে। ওর বরসে এমন একথেরে নির্জনতা হরত থানার না টক্ষত; হরত আবোদ-আফ্রাদ আর নাচসানের মল্লিশেই ওকে মানার। কিছু ম্যারিরা বেঁলে না সেনিকে, এই জনহীন সমুক্তেট তাকে খেন মারামুর্ব করে বেখেছে। একা একা বুরে বেডার মদীর পাড় দিরে বনের কিনারে কিনারে। চুপচাপ গাঁভিরে থাকে জলের থারে, উদাসীন দৃষ্টতে তাকিরে তাকিরে দেখে কত নৃত্য নৃত্য আহাজ প্রবিশ্ব করছে নদীর মোহ্নার, আবার কত কত বাছে বেরিরে। মনে হয় কোন একটি বিশেষ জাহাজকে সে

नकारे कारे, मधाद्व नत मधाद मातिया और निर्कत मी-बाखामाद श्रेष्ठीका करत वरत बारक विरमय अकवानि रेष-(वार्कित कर. अकड़े फेक्न कारना बर्डव नावस्वतिम. ভার নম্বর U-59, ক্যাভারের নাম মোদলে। বলিঠ ভকুণ, নিভীক, ছঃলাহলী বোদা। ক্যাণার জোল্লে মাবে মাবে কিরে আসে পোভাশ্ররে, বোবাই করে নেয় ভেল-রসদ ওলি-वाक्षम, आवात छात्र देखेरवाई मिरब देवाद द्वाव मृत मीन সমুদ্রে। জলের ভলা বিরে পথ কেটে চলে, শত্রু-জাহাজের ज्ञाम शिल हैर्पिका स्वत्व कृतित्व स्वत । त्रजन कृताल किरत चारन चांचानात। त्यवात नमुख्यत छेशतारे कान দাতাৰ বেকে রসৰ পার সেবার পোডাশ্রমে কিরে আসভে দেরি লাগে ছই-ভিন সপ্তাহ। ভা মইলে পোভাশ্ৰয়ে প্ৰভাবৰ্ত্তৰ করে এক কি দেভ সপ্তাহের মধ্যেই। প্রার পনের দিন আৰ্পে ক্ষাণার জোললে বেরিরে পেছে ভার জাহাত নিরে चाक्थ किरव चार्म मि। मस्मत मरना अक्टी तक छैरवन नित्त मातियां अका अका पूरत त्रकाव जानत-त्मादमात विश्वीर्ग বেলাভূমিতে। মাঝে মাঝে সাগ্রহ উৎক্ষিত দৃষ্ট নিক্ষেপ করে দূর সরুজের সীবাহীন কলরাশির বব্যে। হয়ত কোন কালো বিন্দু কেৰে উঠেছে সেধাৰে, হয়ত বা কোন কাহাক। গাঁ গাঁ করে আলে বাভাগের শক্তার সকে কলোচ্ছাদের नर्कम, दिवरण दिवरण मिरे कुछ कारना विन्यू दावित्व याव কোৰাৰ।

বাণ কানেৰ বেৰের বনের কথা; কিছ কঠোর নিরমনির্চ 'বিলিচীরিব্যান' তিনি। ক্ষেত্-বমভার চেরে 'ভিউট' তার কাছে বড়। তার আচরণের বব্যে আভাস নেই কোন আবেগ অবলা হুর্বলভার। ইউবোট (U-59) সর্জের কোন্ অবলার কোবার ক্ষান থাকে সে ববর তিনি প্রতিনিয়ত গেরে

থাকেন বেভার-সংখাদে। কিছ সচরাচর বেবেকে জানান না কিছু। তবে বাবে বাবে বে ছ'একট থবর না জানান ভেনন নর। থেনন ন্যারিরা ভনেছে ভার বাপের কাছ থেকে পাঁচ দিন আপে U-59 ছিল ছেলিগোল্যাভ্ বাইটের কাছাকাছি; ছই-এক দিনের মধ্যেই বে জাহাজথানা পোভাশ্রেরে চুক্বে এ বারণা খুবই সক্ত। প্রভিদিন প্রভূবে উদ্প্রীব আশা নিমে ম্যারিরার মুম্ন ভালে। সে ভাবে ক্যাভার জোদনের প্রভাবেনর ভভসংবাদ আক্রেক নিক্ষর পাবে।

খবশেষে এক দিন সভ্যিই কিন্তে এল ক্যাণ্ডার খোদুলে। হাসিহাসি বিটি মুখে খভিনন্দন খানার ব্যারিরাকে— ক্রমলন ব্যারিরা স্থেভাত।

—হেইল ৰোদ্লে ! আফ্রানে আবেসে ন্যারির। ৰাজনে বরে ভট-প্রভাগত নৌ-সৈনিককে: এক নিবাসে কিজেস করে—এবার এভ ধেরি হ'ল বে।

ভেমনি হাসিমুখে জবাব দের জোদ্জে—এবারকার চকরটা ছিল পুব লখা। প্রথমে গেলাম অর্কনিজ, সেখাম থেকে সেট্ল্যাওস্, ফাণাফ্লো হছে নরওরের দরিষা ঘুরে ভবে এলাম, পথে একটা জোগানদার জাহাজের সঙ্গে ধেখা হওয়ার রসদ নিয়ে নিরেছিলাম ভাই ভার অস্থবিধের পড়তে হর নি ।

এবার যে প্রশ্ন করতে গেল ম্যারিহা ভাতে ভার নিজেরই
বুক্থানা একটু কেঁপে উঠল। একটু খেন ইভভভ: করছিল,
ভবু শেষ পর্যান্ত ভিজেগ করে কেললে—ক'থানা ভাছাভ
ভোবালে এবার ?

—স্কৃতি হিসেব দেওৱা শক্ত, ভবে সৰস্থ আট-দশৰাৰা হৰে বোৰ হয়। সব সৰৱে ভো নিশ্চিত প্ৰমাণের জভ অপেকা করা বায় না, শক্তর আক্রমণের ভৱে ভংকণাং পালিয়ে আসভে হয় টপেঁডো ছুঁডেই। ছ'-একথানা আহাক সক্ষান্তই হয় বৈ কি !

ব্যারিয়ার মূথের উপর একটা করুণ বেদনার ছায়া নামে,
নম বিনভির প্রে বলে—আফা, সভিাই কি, একটুও অস্কুলণা,
একটুও দয়া হয় না ভোষাদের মনে। নিরীহ নিরপরাধ
বাজীদের অকুল সমুল্লে ভূবিরে দাও।

— नश्च দেখাবার কোন আইন নেই আমাদের ম্যারিয়া, আমরা ওগু জানি হতুম। আমাদের নির্কেশ দেওরা আছে শক্রর মাল অথবা রসদ আছে এনন কোন জাহাজ দেখলেই ভূবিরে দিতে। কে অপরাধী আর কে নিরপরাধ সে বিচারের ভার নেই আমাদের হাতে। আর ভেনন বিচার করতে গেলে লড়াই করা চলে না। পক্রর বিমান এসে বর্ধন আমাদের বড় নগর অথবা ভারধানার উপর বোমা কেলে, ভারা ভো নির্কিচারেই কেলে, রেহাই দের না নারী, শিশু অথবা নিরপরাধকে। গবার উপরে ক্যভূবি, দেশ, দেশের জ্জ হজ্যার পাণ দেই, র্জ্যুও পৌরবজনক।

बाविया वर्ण---(मर्चव छैनद्व व वक्ष्य ।

ৰো: হো: করে অট্টাভ করে থঠে ভোল্লে—ভোষার মুখে যানার না অয়ন কথা, তুরি হচ্ছ সৈন্যাব্যক্ষের বেরে। ভোষার বাপ ক্যাপ্টেন শীরার সেনাবিভাগের এক কন প্রধান বীর। মেরের মুখে অয়ন কথা শুনলে নিক্ষর ভিনি হেসে বুন হবেন। বাক্ ও সব, যাবে ভো আয়ার সলে আক্রেক বিক্লেল শহরে বেড়াভো!

ঠোট উপ্টে ব্যাৱিষা বলে—শহরে সিম্নে সেই মদ থাওৱা আর নাচানাচি করা তো। ভাল লাগে নাও সব আবার, আবি বাব না।

— আহে মা, মা, আজকে মদ খাব মা ভোষায় কথা দিছি। বাব এক বার হাসপাভালে, "পল"কে দেবতে। সেই যে এর আপের চালানে একজন আহত সৈনিককে নামিরে দিবে গিবেছিলান, মনে নেই বুবি ভোষার। ঐ বে ছেলেটা ইপেডো হুঁডভে গিয়ে আগুনের হজার পুড়ে গিরেছিল।

ষাধা নেভে সম্মতি জানার ম্যারিয়া। জোদলের সদে তার ধ্ব তাব। U-59 সামুদ্রিক সকর শেষ করে পোতাপ্ররে কিরে একে হ'কনের দেখাসাকাং হর। অনেক কথা হর হ'কনাতে। আসর বিদারের পটভূমিকায় কণিকের মিলনটুকু তারে উঠে বেদনার ও নিবিভতার। য্যারিয়া বৃঁটরে বৃঁটরে বিজেস করে জোদলেকে তার সমুক্রবাল্লার কাহিনী, বিপদ্যাপদের সবিভার বিষরণ। ওরা একসদে বার শহরে বেছাতে। কিছ জোদলে একবার মদের আভ্তার চুকে শঙ্কাে তালিরে বার সেবানে। কার সাব্য তাকে ফিরিরে নিরে আগে। ব্যারিয়া তবন একা একাই ফিরে আগে নৌ-আভানার। তীরে এসে বে ক'দিন মুট পার জোদলে, সে চার মদ বেরে আর ক্রি করে উভিরে দিতে। ম্যারিয়া চার তাকে শাভ এবং তল্প জীবন্যালার মধ্যে কিরিরে আনতে, ব্রক্ষেচার ও মাতলামির পথ বন্ধ করতে। কিছ সহক মর সে কাজ।

ব্যারিষা কিজেস করে -- কেন মধ গাও খত বল তো ! উচ্ছ্ খলভা এবং ব্যভিচারে নিখেকে যে একেবারে উহাত করে কেললে!

—যদ না বেলে লড়াই করা বার না ম্যারিয়া। কোন একটা নেশা এবং উত্তেজনা সৈনিক-জীবনের পক্ষে একান্ত আবস্তক। প্রতি মুমূর্য্তে বারা মৃত্যু-বিভীষিকার নব্যে বাস করে, জীবনের প্রতি মন্তা এবং আশা ভাদের কয়। ভাদের ক্লচি এবং আকাজনা সহকেই নেমে আসে পাশবিকভার ভরে। সহকেই ভারা হয়ে ওঠে উদাম, মাদকভা এবং উবাদমার বলেই ভারা উপেকা করে মৃত্যুভর। সচেৎ সহকে কি কেট বরতে চার ।

ধানিকটা নিজের মনে কি বেদ তেবে নিবে ব্যারিয়া বলে—হেকে দাও এই লৈনিকর্ভি, কি হবে এমন হয়হাড়া উচ্ছু খলজার ভূবে গিরে, ভার চেরে বরং সংবত শান্ত জীবনের মধ্যে কিরে এসো।

আৰার হেসে কৰাৰ দেৱ কোদ্লে—আমি ছাড়লেও দেশের আইন আমার ছাড়বে কেন ? বত দিন দেহে শক্তি-সামণ্য গাক্ষে তত দিন আমি লড়াই করতে বাব্য। হঠাং বৃত্য গাঁধৰা সাংবাতিক ক্থম না হলে বুছের কবল থেকে আমাদির বুক্তি নেই। আর ছাড়বই বা কি করে এ পথ লোকে বলবে তীক কাপুক্রব, সে অপবাদ সইব কেমন করে ?

ফরলিন ম্যারিরা অভুত চৃষ্টিতে ক্যাত্ ক্যাত্ করে চিরে বাকে জোদ্লের দিকে; কোন জ্বাব দের না। সেদিন বিকেলে ওরা ছ'লনে সিরেছিল শহরে বিলিটারি হাসপাভাল দেবতে। ম্যারিরার মাধা খুরে যাত, অপতি বোর করে। উ:, কি মর্ন্মান্তিক দৃষ্ঠ! সারি সারি বাটিয়ার উপর ভরে আছে শত শত আহত বোরা। কারও মাবার ব্যাওক, কারও পা উড়ে সেছে, কেউ ববির, কেউ পঙ্গু, কারও বা মভিদ্ধ বিকৃত হয়েছে, কেউ লাভরাছে, গোভাছে, ছট্কট্ করছে। কারও জীবমদীপ কীল হরে এসেছে, অচিরেই নির্দ্ধাপিত হবে, তাকে জালাদা করে সরিবে কেলবার জ্বত প্রেচার-বাহকেরা এসে হাজির হয়েছে। ম্যারিরার বুক কাঁপে, অবভি বোর করে, বলে—চল, জার ভাল লাগছে না।

বাইরে এসে মুক্ত হাওরার ও বেদ নিখাস কেলে বাঁচে।
আইডোকরম্ আর ওমুবের পদ্ধে হাসপাতালের আবহাওরাটা
বেদ কেমন ক্ষাট আর ভারী, ভার সঙ্গে বিকলাল আহতদের
আর্ডনাল বিলিত হরে কেমন যেন একটা ছংসহ বীভংস দৃষ্টের
স্কি করেছে।

ভার পর দিন আবার ওরা সিরেছিল শহরে। প্রথমে কথা ছিল, জোদ্লে মদ থাবে না। কিন্তু শেষ পর্যান্ত পারে নি সকল রক্ষা করতে। একটা মাচ-বরের সামনে এসে নিশে গেল মদের আভ্যান্ত। একটা মাচ-বরের সামনে এসে নিশে গেল মদের আভ্যান্ত। তরুণী নর্ত্তকীদের দেহসক্ষা ও অল-ভলিতে বৌবন-মাদকভা কেনিল হরে উঠেছে। ভালের বিরে থিরে ভিন্তু জরেছে বদেশ-প্রভাগত পণ্টমন্তলির, বেন গেঁজে-ওঠা মদের উপর একদল ভ্রান্ত মাছি। জোদ্লের মনের ভলার বে ভ্রিত এবং বৃতুকু লোল্পভা অসাত্ত ও মিজেক হরে পত্তে থাকে দিনের বেলার সভ্যভা ও ভল্রভার চাপে, সে বেন হঠাং রাভাল হরে কেশে ওঠে—ক্রত নারী ও প্রার গর পেরে। সমুল্ত-পর্বাচক বরহাড়া নাবিক, দীর্থ উপবাসলিই জানোয়ারের মত ক্রির ওরে ওঠে ভোজ্যবন্ধর সন্ধান পেরে। জোদ্লে মিশে বার রাভালবের ভিন্তে, মারিরা নিজেকে সরিরে রাবে মধ্দেলিকের এক পাশে।

পোভাশ্ৰৰে কেৱবাৰ শেষ গাড়ী ৰান্তি এগাৰোচীৰ। একবাৰ বৰ্ষনিলে চুকলে চ্মিরাহৰ ভূলে বাৰ জোগুলে। ধেরালই ছিল যা যে কালকে সকালেই আবার বেক্সভে হুকে ভাহাত বিবে সর্ক-বাজার। বে হ'বিলের হুট 'শেরেছিল ভার বেরার আত্তই রাভ ভিনটের পর বেকে সুরিরে বাবে। ভাত্তেই আত্ত রাজেই ভার পোভাশ্রের কিন্তে বাওরা একাত প্ররোজন। কবাটা ন্যারিরা বিজেই আগ্রহ করে ভানার জাল্লেকে। হাজার হলেও সৈনিক নে, ভিউটির সবর আসর হবে আসহে এ বেরাল হভেই হুটাং বেন সন্থিং কিরে পেলে, ভর্গুনি বেরিরে পড়ল নাচনর থেকে, নমের শেষ পেলালটা এক চুর্কে শেষ করে। বে করেই হউক রাফ্রি এগারোটার ট্রেন বরভেই হবে। কাল প্রভাতেই আবার ক্রফ হবে সর্ক্ত-বাজা, আবার সেই সীমাহীন নীল কল আর লক্ষ লক্ষ ভরকের স্ভা। ভারই বব্যে গা-ঢাকা দিরে চোধে গুরবীণ লাগিরে দিবারাল ট্রল দিকে হবে শক্ত-শিকারের

নাচ-ঘর থেকে বেরিরে কমাণার জোলনে সোজা চলে এল টেশমে, সলে ভার ম্যারিরা। গাড়ী হাড়তে ভার বড দেরি নেই। ছুপুর-রাতের গাড়ী, বাত্রীর ভিচ্চ নেই বলনেই চলে। পোভার্স্রের টারমিনাসে ওরা বধন এসে পৌছল, তথন নির্দ্ধন নিগুর অনুকার জ্বাট বেঁবে নেষেছে। ছুরে ডক্ ভার নো-আভানার ঠুলি-লাগান বিজ্ঞলী বাভিগুলো টিমু টিম্ করে ভলছে। রাইকেলবারী প্রল-তেল্মেট-পরা নৈশ প্রহুরী নাবে নাবে দেখা বার ছুপুর জ্ম। বার ছুপুর বাত্রী, জোল্লে ভার ব্যারিষা নাবল টেলনে। বামিক ছুর বেভে হবে ছুপুনকে এফসলে, ভারপর হবে হাড়াছাড়ি।

সভিত কথা বলতে গেলে ম্যারিয়ার মনে মনে বে ভর একট্ মা করছিল এবন ময়। বলিঠ পুরুষ জোদলে, ভার ওপর মদ থেরে চুর হবে রয়েছে। জনহীন রাজির অবকারে হঠাং ওর সংবল্ধ ও শিশ্রাচারের বাঁধ ভেলে গভভে কভজন।

ব্যারিবার তর বিখ্যা নর। মদের মেশার সদে শিংসদ তরুশীর নিভ্ত সারিব্য হঠাং বেন ওর বগকে আন্তন বরিবে বিল। নিকেকে নে কিছুতেই সামলাতে পারল মা। বৃচ্ মুইতে বপ ভরে ব্যারিবার হাত চেপে বরে বলে, ম্যারিবা, চুবি ভরুশী, রূপলী, এই নিবিভ অবভার রাজিতে আনার পাশে একাডিনী, আর আনি হচ্ছি একজন ত্বাভূর ব্বক। ভূমি কিবলে কর আনার পক্ষে সংবত বাকা এতই সহজ !

এই অপ্রভাগিত ব্যাপারে প্রথমটা কেমন বেন বিজ্ঞান্তরে পভেছিল ন্যারিরা। জোগ্লে ওকে ভার্ন করভেই ভার লর্জান্ত বহু করে কেঁণে উঠন, ভিড পরক্ষেণেই লে নিজেকে পামতে নিরে বেশ বৃঢ় এবং কটিন কঠেই করাব বিলে, জোগ্লে ছ্বি ভূলে বাজ্ঞ আবি কে! আবি ভোনার প্রভূ জোরাকিব বীরারের কড়া। আবাকে অপ্রান করবার কত ভোরাকে বর্ধারোগ্য পাতি পেতে হবে। ছুবি ভোনার বিলিটারী ভিনিপ্রিব (নার্রিক বিয়ব-শুখলা) অবাত করহ।

বিকারএড রোপী বেষদ হঠাং চলকে ওঠে, ক্যাপ্টেশ
শীরারের নাম ওনে তেমনি চলকে উঠল জোললে। ভার শিথিল
নৃষ্টি খলিত হরে পড়ল, ম্যারিরার হাতের কলি থেকে। ওরা
নিঃশব্দে চলল, বাকী পণচুত্ কেউ একটা কথা বললে না।
চৌরাভার কাছে এসে জোললে চলে গেল রেই-ক্যান্দের
দিকে ভার ন্যারিরা কিরে এল বাংলোতে।

প্রথম স্কালেই ঘূর ভেলেছে ব্যারিবার। মনের মধ্যে কেম্ম যেন অপাতি করে উঠেছিল। গভ রাজির অপ্রীতিকর ঘটনাগুলো ওর বাধার মধ্যে কেন্স্কই ঘূরণাক বাছিল, এম্ম সম্বরে ভূভ্য এসে ববর দিলে, ক্যাভার জোদলে এসেছে—দেখা করতে চার। ব্যারিবা ভাকে গোলা ভেতরে আসবার লভেই ববর পাঠাল। সামনে এসে দালাল ক্যাভার, বেন বছের শেষে মিন্তরক শাভ সমুন্ত। কোম আলোভম, কোম চক্ষলভার চিক্ত পর্যান্ত মেই। হির মাধুর্যের স্কিন্ধ দৃষ্টি ভার চোবে; মুবের ওপরে মেহেছে সৌর্য স্থাভার আভা। ও বেন সম্পূর্ণ ভিন্ন মান্ত্র্য, গভ রাজির প্রথম মহন্ত্র্য সাম্বিরা, গভ রাজির আচরবের ক্য সভাই আমি অন্তর্ভ্য। আমি ভবন ছিলাম যাভাল এবং অর। চলে বাবার আগে ক্যা চেরে বাই আমার আচরবের ক্য, মনে কোম গ্রামি রেখো যা ভূমি—এই আমার অন্তর্ভাব।

জোদ্দের কবা শুনে চোবে জন জরে উঠন ম্যারিরার। ক্ষাণারের হাত বরে বন্ধ করে সে তাকে নিরে বদান একটা চেয়ারে, বললে, তুমি বলবার জাগেই আমি ক্ষা করেছি জোদ্দেন। বিশাস কর, আমি ভোমার সভিটেই জানবানি।

বাদিককণ বাবা নীচু করে কি বেন ভাবে ম্যারিরা, আবার বলে—অনেকটা বগত উজ্জির মত, তবে কি জান, আরি অভরের সলে কামনা করি, তুরি পাত ও সুলর হবে বাতাবিক জীবনে কিরে এল। তুরি ত্যাগ কর তোলার ঐ প্রমন্ততা, লোল্পভা ও বর্জরভা। আনার জীবনের বর্ধ ; একবানি অনাভবর গৃহ, ভার প্রভু হবে তুরি আর আরি হব গৃহিনী। আসবাব উপকরণ নাই-বা বাকল প্রচুর, লেবানে বাকবে অক্রন্থ ভালবাসা, অপরিসীম ত্যাগ ও বৈর্ঘ। আমরা হব কর্বা বিবের ও প্রতিবোগিতার অতীত ; আনালের জীবনের প্রভ হবে পরসেবা। তেরন একট শাভির নীত আনাকের পদ্দে কি একেবারেই অসভব জোগতে ?

অবিধান আর করণার হালি সুটে ওঠে জোদ্লের রুবে।
নে বলে, ভোষার বথ সুক্ষর ব্যারিরা, সক্ষেহ নেই ভাভে।
কিছ তা লকল হওয়া এ রুগে হরতো একেবারেই অলভয়।
তমতে ভাল লাগে ভোষার কথা, মনে একটা ক্লিকের
আবেশও স্ট করে, কিছ তবু ভা আয়ানের বুগের নাগালের
বাইরে। আবিশতা আর ভাভাভাভিই এ বুগের যুলকর।

পরসেবা বর, আত্মনেবাই আমাদের লক্য।—একটা দীর্ঘ-মিরাস কেলে, যভি দেখে জোদ্লে বলে, বাক ওলৰ ব্যর্থ আলোচনা। এবার ভা হলে উঠি, আটটার সমর আমার জাচাক চাক্ষরে।

জোদলে উঠে চলে পেল। ছ্বারের চৌকাঠ বরে উদাসীন দুষ্টিভে আকাশের পানে চেরে করেক নিনিট নিম্পন্ন হরে বাঁডিবে রইল ন্যারিয়া।

अधिन बाराब (नेवारनिव अक किम विरक्त दनाव, मद-श्वदात क्षेत्रकृत्वत अपूर्व वार्तम वन्तरवत प्रक्रित U-59 वेंदन विरव किविका। नमुख्यव करन क्यम त्यम कारना वस्वत्य हाता, जाकात्मद देश दानार्क, उदमश्रामा क्रांसरे जिनकद ক্ষীভকার ও পর্জনশীল হত্তে উঠছিল। নাবিকেরা বুবল বডের প্ৰাভান, ব্যাহোমিটাৱের চাপ কৰে গেছে। হৰতো সৰ্যার चार्त्रहे जाहेरक्राम फेर्टर, अमन जमरब हाहेर्छारकारम बदा शकन अक्षे काठारकत भवा। अक्षामा विष्टेम रक्षेत्रात हर्रे हरनार ক্ষিপ্ৰ বেপে, হৰতো বড আগবার আগেই কোন বন্দরে আশ্রহ हात । काहारकत मस सरमहे हैंद्रेरवारहेत मानिरकता देशकर्ग হতে ইঠন। বেশীভণ প্রতীকা ভাষের করতে হ'ল না। পেরি-ছোপের দর্গনে প্রভিবিদ্ধ প্রভান প্রভাকার। ভিন-চার ভন अक नदन दिंकिता देवेन. "विधेन क्यान", राज चार किह रन-বার বরকার নেই। गाविकामत कामा जाट वदाकर्षरा। वाष्ट्रारकरे वाच द्राव केंक्र मिरकत मिरकत कारक. चाक्रमानत ব্ৰত সকলেই প্ৰবৃত। টপেডো টউব ভবি হবে পেছে ইভি-बरवारे। जारायविषयांका चरव किरव जवर्गाय शिरव थर लाख वजन (एडेबारवर भरवर छेभर । हैर्ल्स्डार दरकर बरना बरन **१७वाद जाराकामाळ. जादशद मिकिश्व टार तारे जाहद** ब्रावान ।

ঐ বে এলে পাছেছে—বেরি নেই, সলে সলে সুইচ টেপা হ'ল উপেঁতো টউবের, একেবারে অব্যর্থ লক্ষ্য। বিধীপ হরে পেছে ডেইবারশামা। ছুবছে শীরে শীরে, ইউবোটের মাবিকলের বুবে উরাসের হাসি। কিছ সহসা এ কি । সমুরের কলবেশ থেকে বেন বিপুল এক জলভন্তের প্রচণ্ড শক্তি সাবমেরিনটাকে হু হু করে ঠেলে ছুলে বিচ্ছে আকাশের বিকে। সর্থনাশ, শক্ত তেপুশ্ চার্জ (জলবোরা) যেরেছে। সভাই ভাই, ইউবোটবামারও অভিন বশা। বাব পার্থভাগ কেটে গিছে হ হ করে কল চুকছে। বাঁচবার আশা নেই। সর্ব্রের উপর ভবন বছ/বনিরে এসেছে, বাভালের জুহ গর্জন রুহর্ছ হেঁকেচলেরে, পার সলে বাভাল হরে কেপে উঠেছে উছত ভরন্দল। ভূবত ইটুবোটের ভেকের উপর বেকে ওরারলেগ্ অপারেটার ক্রমাগত বেভার-সঙ্গেত পার্ঠাতে লাগল S.O.S.....S.O.S....

সেই মৰ্ম্মন সংবাদ এপ্ৰ নদীর বোছনার নো-আভানার ক্যাপ্টেন শীরারের উঁচু বেভার বাছলেও বরা পছেছিল। ভবন সেবানেও চলছে প্রচও সাইক্লোন। সাগর-সৈক্ত আর অরণ্যমর প্রাছরের উপর দিরে মাভাল হাওরা দাণানাণি করে বেভাছে। ত্যাপ্টেনের আদেশ পেরে ভববুনি হুটল এক ফল রেস্কু শিপ (উরারভারী ভাহাছ) বড় ভূফান অপ্রাছ করে বঞ্জাকুর সমুক্রের মধ্যে।

ব্যারিবা ওনেছিল তার বাপের কাছে, ক্যাতার জোল্লের জাহাল ভূবছে ফাগারর্যাক প্রণালীর কাহাকাছি। ব্যারিবার বুকের মধ্যেও বন্ধ বনিবে এল, আকাশ ও বিগল্পভাগ বন্ধের নলে আল ওর অভর ও বাহির একাকার হরে গেছে। উৎকর্তা ও উর্থেগ তার প্রতিট মুসুর্ভ হরে উঠল হুর্বিষ্ট।

গরদিন বছ থেনে গেছে। আড়াল হরেছে উল্ফল সুনীল-সোনালী রৌক্রে চারদিক বলনল করছে। বিপদের আলড়া আর নেই। সার্ক্রিক পঞ্চী 'নী-গাল' সার বেঁধে আকালের গারে ডানা ছড়িরে অলস নেবের বত বছর গভিতে তেলে চলেছে সূল্র সমুক্রের পারে। হাওরার দাপট সইতে না পেরে করেকটা সূপ আর কিসিংট্রলার আপ্রর নিরেছিল ননীর নোহনার, ভারাও জ্বনে ক্রমে নোলর ভূলে ছেতে বাছে। একে একে কিরে এল রেছ্-শিপের বছর। U-59-এর ক্রেক-ক্রম নাবিক রক্ষা পেরেছে, কিছ ক্রাভার জোল্লের কোন বোঁক পাওয়া দেল না। সে ভলিরে গেছে আট্লান্টিক মহা-সমুক্রের অভল গর্ডে।

লেবিৰ ম্যাৱিষা দায়া সকাল ববে দ্যুক্তট আৰু অৱধ্য-প্ৰান্তবের বব্য দিবে পাগলের যত একা একা ট্রুল দিয়ে বেডাতে লাগল। বারংবার ভার চন্দু মুট অঞা-প্লাবিত হ'ল, আর বারে বারে দে মুদ্ধে কেলল।



# পণ্ডিচা্রীতে শ্রীঅরবিন্দ

🗃 মতিলাল রায

১৯১২ এবং '১০ থ্রীষ্টাব্দে শ্রীষ্মরবিন্দের হালক কিছানোন পরিচালনার বাংলার বিপ্লববাদ প্রাদ্মে চলিয়া-ছিল। তাঁহার অধিকাংশ পত্রই "কোডে" (সাক্তেক অক্ষরে) আসিত। আমরা তদমুবায়ী কার্যা কবিছান। তিনি অর্থ সম্বন্ধে অথবা অন্ত কোন প্রকার রাষ্ট্রীয় ব্যাপারে বিপন্ন মনে করিলেও, আমাকে পত্রবোগে তাহা জানাইতেন।

আমি তাঁহার অর্থাভাবের কথা পণ্ডিচারী হইতেই তানিয়া আসিয়াছিলাম। তথু অর্থাভাব নহে—বন্ধাভাবের অত্যন্ত হংগও অতকে দেখিয়া আসিয়াছি। আমি অতি ফ্রুড তাঁহাকে কিছু টাকা এবং বন্ধাদি পাঠাইয়া দিলাম। তিনি লিখিলেন, "তারবোগে তোমার টাকা এবং পত্র ও বন্ধাদি বাহা পাঠাইয়াছ, তাহা পাইয়াছি।"

"Your money by wire and letter and clothes reached safely."

এই সময়ে ভাহার বে দারুণ অর্থকট, দ্রে থাকিয়া তাহা সম্যক্ বুঝি নাই। তিনি এক প্রকার নিঃম্ব অবস্থায় পশ্তিচারী পৌছিয়াছিলেন; কিন্তু তিনি চিরদিন ঈশবে নির্জর করিয়া চলিতেই অভ্যন্ত ছিলেন। সঞ্চয়-প্রবৃত্তি তাহার কোনদিন ছিল না। সীভার মন্ত্রভাব—ভগবানের উপরেই বোগ-ক্ষেমবহনের ভার দিয়া চলার সাধন-নীতিটা বেন তাঁর তখনকার জীবনে অক্ষরে-অক্ষরে ফুটিয়া উঠিয়াছিল। আমার নিকট তাহার বেটুকু অর্থ চাওয়া, ভাহার মধ্যেও ঈশব-প্রসাদই ছিল—নতুবা তাহার সেই দাবিটুকু-প্রণ করার প্রাণ লইয়াই আমার পক্ষে নৃতন স্প্রী সম্ভবপর হইত না।

পণ্ডিচারী গিয়াই তিনি কোন এক বন্ধুর কিছু সহায়তা
পাইয়াছিলেন—সেকথা প্রেই বলিয়াছি। আমি তাঁহাকে
কতথানি দিছে পারিব, সে বিষয়ে সবিশেষ ধারণা করার
কোন স্থবোগ তাঁর ছিল না। তাঁকে প্রয়োজনীয়
অর্থসংগ্রহের চিন্তা বাধ্য হইয়াই করিতে হইত; কিন্তু
কোথা হইতে অর্থ তাঁহার নিকট আসিবে; তাহা তিনি
অবগড ছিলেন না। তবে তাঁহার কার্যের কন্ত প্রচ্ম অর্থ
এক দিন আসিবেই—এই বিষয়ে কোনরূপ সংশয় তিনি
পোষণ করিতেন না। এক মাল্রাজী বন্ধু ১০০০ টাকা
তাঁহাকে দিছে প্রতিশ্রুতি দিয়াছিলেন এবং বাহাতে
পণ্ডিচারী বাসকালে অর্থাভাবে তাঁহাকে কোনরূপ কট

পাইতে না হয়, তাহারও চেষ্টা করিবেন, আশা করিয়া-ছিলেন; কিন্তু তুর্ভাগ্যক্রমে সেই বন্ধুটির প্রতিশ্রুতি ও আশা কোনটিই সফল হয় নাই। শ্রীঅরবিন্দ এই বিষয়ে পত্র-বোগে আমায় জানাইয়াজিকেন:

"The last time he came, he brought a promise of Rs. 1000 in a month and some permanent provision afterwards, but the promise like certain predecessors may not yet be fulfilled and we sent him for cash. But though he should have been here three days ago, he has not returned and even when he returns, I am not quite sure about the cash and still less sure about the sufficiency of the amount."

শীঅববিন শিশুকাল হইতেই ভগবিদ্যাদী ছিলেন; দেকথা পূর্কা-পূর্কা পবিছেন্দে বলিয়াছি। এই পজেও তিনি আমায় লিখিয়া জানাইলেন সকৌতুকে তাঁহার নিক্ষের মনেরই কথা—"ভগবান বে ব্যবস্থা কবিবেন, এই বিষয়ে সংশয় নাই; কিন্তু তাঁর এই চুট স্বভাবটুকু দাঁড়াইয়া গিয়াছে যে, তিনি শেষ মুহূর্নটি প্যান্ত অপেকা না করিয়া ছাডেন না।"

"No doubt, God will provide, but He has contracted a bad habit of waiting till the last moment."

আমি তাঁহার হংখের বথা শুনিয়া অবধি অতিশন্ন চঞ্চল হইয়া পড়িলাম। কোন প্রকাবে তাঁহাকে কিরপে অধিক অর্থ পাঠাইতে পারা বায়, সে বিষয়ে চিন্তা করিতে লাগিলাম। একবাব বংকিঞ্ছি টাকা ও কিছু বস্ত্রাদি পাঠাইয়া নিশ্চিম্ব থাকা বায় না। শুনিয়া আদিয়াছিলাম—তাঁহাদের পাঁচ হুনের জন্ম প্রতি মাদে অন্তঃ ৭০, টাকা খরচ হয়, আর প্রীঅরবিন্দের নিজের ব্যক্তিগত গরচের অন্ত অন্ততঃ ১০, টাকা হাতে থাকা উচিত। আমি এই ৮০, টাকা প্রতি মাদে পাঠাইবার জন্য অন্তথ্রাণিত হইলাম। আমার আশা পূর্ণ হইল এবং প্রথম দফা টাকা বথারীতি প্রেরিজ হইলে ভিনি লিখিলেন:

"ভূমি এবারকার ৮০ টাকা এবং মার্চ বাসের ক্ষয় ৮৫ পাঠাইরাছ দেবিরা আমরা ধ্বই আখত হইলাম।"

"It is a great relicf to us that you are able to send Rs. 80|- this time and Rs. 85|- for March."

শ্রী অরবিন্দের এই আকৃতি আমার হৃদয় উৎসাহ ও আনন্দে ভরিয়া তুলিয়াছিল। তাঁহার সেবার অবদান বোগাইবার প্রেরণা জাগাইয়াই তিনি ধীরে ধীরে প্রকাশ করিলেন—আমার মধ্য দিয়া কত অর্থনংগ্রহ ও অর্থাগমের উপায় স্ফটির প্রয়াস—তাহা ভাবিয়া শুভিত হই। সে বৃদ্ধে তাঁহার অর্থসংগ্রহের সকল প্রচেষ্টাই আমাকে কেন্দ্র করিয়া সাফলালাভ করিয়াহিল। বাংলায় রাষ্ট্র-সাধনায়ও যেটুকু সাফলালাভ করিয়াছি ভাহাও শ্রীঅরবিন্দের কঞ্লায় সভব-পর হইয়াছিল। আমি তাঁর কত আপনার জন মনে করিয়া তিনি আমার উপর একরূপ ক্ষুদ্র দাবি রাবিতেন, সেকথা ক্রমে বলিতেছি। তিনি চাহিতেন প্রচুর অর্থ। আমি তাঁহার কত্টকু দাবিই-বা প্রণ করিয়াছি—তাঁহার চাওয়ার মূল্য দেদিন ভেমন করিয়া বুঝি নাই। আজ ভাবিয়া সে চাওয়ার কুলকিনারা পাই না। সেদিন কিন্দ্র বুঝি আমায় সান্ধনা দিবার ছলেই তাঁহার দাবি পূর্ণ করার ক্ষুদ্র প্রয়াস্ট্রই তাঁহার নিকট যেন ষণেই বলিয়া বিবেচিত হইত। তিনি আমার নিকট মাদিক ৮৫ টাকা পাইবেন—এই সামর্থাস্ট্রর পর, তিনি আমায় তাঁর এক পত্র লইয়া বন্ধ-বার্বায়ী ম্যাকা খাব্দাবের নিকট উপস্থিত হওয়ার জন্য লিথিলেন:

"'এন' অৰাং নারাঠা বন্ধুকে একথানি পত্ত দিলান— আনার জন্য বদি তিনি কিছু দেন, অবিলয়ে ভাহা আনার বিকট পাঠাটও।"

"I send enclosed a letter to our M. friend. If he can give you anything for me, please send this without the least delay."

শ্রীযুক্ত ম্যাকা ঘাব্দার একজন অবাঙালী ভদ্রলোক। কলিকাতার বডবাজারে তাঁহার কাপডের গুদাম ছিল। তিনি বাস করিতেন বালিগঞে। আমি খঁজিয়া তাঁহার বাডীতে উপন্থিত হইলাম। তিনি প্রথমে আমায় প্রলিদের চর বলিয়া বিদায় দিলেন, এঅর্বিন্দের প্রধানি কিছ সঙ্গে রাখিলেন। তাহার প্রদিন আমি আবার ভাঁহার সহিত সাক্ষাৎ কবিলাম। এবাব ব্ঝিলাম ডিনি সংবাদ লইয়া আমার কথা বিশেষ ভাবেই অবগত ইইয়াছেন। ভার পর শ্রীঅরবিন্দ কলিকাতা ত্যাগ করিয়া কিছুদিন চন্দন-নগরে কি ভাবে ছিলেন এবং কিরুপেই বা পণ্ডিচারী গমন করিলেন, বিশেষ ভাবেই তাহা আমায় জিজাসা করিলেন। কিছ টাকা ডিনি আমার হস্তে দিলেন না, সহাস্তে বলিলেন -- "আপনাকে আমি অবিখাস করিয়া টাকা দিভেছি না. ইহা আপনি মনে করিবেন না। এ অরবিন্দের নামে অনেক টাকাই মধ্যবত্তী লোকের হাতে পড়িয়া শেষ হইয়াছে—ইহা ব্ঝিয়াই আমরা স্থির করিয়াছি, দোভাস্থকি ভাবেই ভাহার হাতে টাকা দিবার ব্যবস্থা করিব, অন্য প্রকারে নহে। আপনি নিশ্চিম্ব হউন। তাঁহাকে লিখিয়া জানাইতে পারেন—জামি ১০০১ টাকা তাঁহাকে 'গ্রীগুলে কোম্পানী'র মাবফতে প্রেরণ করিব।" আমি নিশ্চিম্ব ফিরিলাম। ष्ट्रेश हम्मननगरव **बिषवविमारक** 

কথা জানাইলাম। তিনি বধাসমরে 'গ্রীওলে কোম্পানী'র নিকট হইতে টাকা পাইয়াছেন জানাইলেন। শ্রীযুক্ত ম্যাকা ধাব্দারের টাকা পাইয়া তিনি এইবার পুরাতন বাড়ী পরিভ্যাগ করিয়া ৪১ নং ক্ল ফোমোয়া বাড়ীডে উঠিয়া,আসিলেন। পূর্ববর্তী বাড়ীওয়ালার ১২০ টাকা ভাড়া বাকি ছিল। এই সময়ে বাড়ীওয়ালার বিক্লছে কোন এক পাওনালার নালিশ কল্প করায় এই টাকা শ্রীঅরবিন্দ নিশ্বের হাতেই রাধিয়াছিলেন—এই কথাও ভাহার পত্রেই জানিয়াছিলাম।

১৯১১ খ্রীষ্টাব্দের ডিসেম্বর মাসে আমি চন্দননপর ফিরিয়াই শ্রীঅরবিন্দের প্রেরণায় বিপ্লবের কাজে প্রবল ভাবে লাগিয়া বাই। শ্রীঅরবিন্দকেও এই কাজে কডকটা জড়াইয়া ফেলি। তথন অনস্থোপায় হইয়াই এইরপ করিতে বাধ্য হইয়াছিলাম।

সেই সময়ে পণ্ডিচারী "ক্রী পোর্ট" বলিয়া বিদেশ হুইতে বছ দ্রবা আমদানী হুইত। আমার বিপ্রবী সহবোগি-গণ স্থির করিলেন—পণ্ডিচারী চইতে বিভলভার আনা হইবে। ইহার ব্যবস্থার ভার বন্ধুরা আমার উপর অর্পণ কবিলেন। আমায় বাধা চইয়াই এই বিষয়টি শ্রীঅববিন্দকে জানাইতে হইল। তাঁহাকে ছয়টি বিভলভার ক্রয় কবিবার ক্রপ্ত নিবেদন কবিলাম। শ্রীষরবিন্দ আমার দাবি অপূর্ণ রাখিলেন না। কিন্তু স্বাভাবিক সতর্কতার বশে, রিভলভাব-শ্বলি হন্তগত হইলে তাহা তিনি মাটিতে প'তিয়া বাধিবার বাবস্থা করেন। এইঞ্জি আমাদের নিকট পাঠাইবার স্থবোগ বছদিন মিলিল না। পণ্ডিচারীতে অনেক বন্ধ ডিনি পাইয়াছিলেন, কিন্ধ জাঁহাদের নিকট তিনি যে তথায় যোগ-সাধনের নিমিত্তই আসিয়াছেন, এই কথাই বলিভেন। বাংলার বিপ্লবীদের সহিত তাঁহার বে সংবোগ থাকিতে পাবে. এই কথা তিনি একেবারেই গোপন রাধিয়াছিলেন। প্রায় এক বৎসর পরে শচীক্রনাথ সাল্ল্যালকে দিয়া ঐ বিভলভাবগুলি অতি সমূর্পণে ও স্থকৌশলে লইয়া আসা কিছ মাটিতে এক বংসরকাল প্রোপিত থাকায় বন্ধুপ্রতি একপ্রকার অকেন্দো হইয়াই বায়। শ্রীঅরবিন্দ অতি সতর্কভার সহিত বাংলার বিপ্লব-সংহতির সহিত বোগ রাখিয়া চলিতেন, তাঁহার পত্রই এই কথার সাক্ষ্য দিবে :

"I do not write to you this time about the despatch of the books, because that is a long matter and would delay the proofs, which have already been too long delayed. But I shall write a separate letter on that subject. I have also to write about your Tantric Yoga. But I think I shall have to await what else you have to tell me on that subject before doing so."

ইহার অর্থ অন্ত কেহ বুরিবেন না। আমি বুরিলাম

তিনি 'গ্রহ' অর্বাৎ বিভলভারগুলি পাঠাইতে ইতন্ততঃ করিতেছেন এবং আমাকেও তিনি তান্ত্রিক বোগ অর্থাৎ বৈপ্লবিক কর্ম হইতে নিবৃত্ত করিতে মনস্থ করিয়াছেন। বীক্ষরবিন্দ সেদিন শুধু সাক্ষেত্রিক ভাষার নয় বিপ্লবের রাষ্ট্রসাধনাকে বথার্থই বীবাচারী শক্তিসাধনা বলিয়াই গণ্য করিতেন আর তাহার লক্ষ্য ছিল ব্যক্তির নয়, জাতির সমষ্ট্রগত মৃক্তি ও ভূক্তি। তাহার সমূবে সেদিন কত বৃহৎ কর্ম প্রতীক্ষারত, তাহা বৃঝি নাই এবং সেদিন কত বৃহৎ কর্ম প্রতীক্ষারত, তাহা বৃঝি নাই এবং সেদিন কত বৃহৎ কর্ম প্রতীক্ষারত, তাহা বৃঝি নাই এবং সেদিন কত বৃহৎ কর্ম প্রতীক্ষারত, তাহা বৃঝি নাই এবং সেদিন কত বৃহৎ কর্ম প্রতীক্ষারত, তাহা বৃঝি নাই এবং সেদিকগুই তাহার চিন্তা ও স্তর্কতার অন্ত ছিল না। তিনি বেরূপ আদেশ করিকেন, তদম্বায়ী কর্ম্মে প্রবৃত্ত হওয়াই আমার সভাব ছিল। আমার বিপ্লবী বন্ধুগণ কিন্তু আমায় পণ্ডিচারী হইতে বিভলভারগুলি আনাইবার ক্ষম্ম ঘন ঘন তাগিদ দিতে লাগিলেন। আমি পরিশেষে তাহা কিরূপে আনাইয়াছিলাম, তাহা পুর্ব্বে উরিথিত হইয়াছে।

এই সময়ে খ্রামন্থন্দর চক্রবর্তী মহাশয় আব. এস. শর্মা নামে এক ব্যক্তিকে আমার নিকট পাঠান। আমি সেদিন বুঝি নাই এই শর্মা পুলিস বিভাগেরই একজন গুপুচর। শ্রীঅববিন্দের সহিত সংযোগ স্থাপনের জন্ম এই ব্যক্তিকে তাঁহার নিকট পাঠান হয়। এই শর্মা সম্বন্ধে শ্রীঅববিন্দিপর পত্তে জানাইলেন:

"Your R. S. Sarma I hold to be a police-spy. I have refused to see him, because originally when he tried to force his way into my house and win my confidence by his extravagances, I received a warning against him from within which has always been expected. This was confirmed afterwards by two facts: first, that the Madras police betrayed a very benevolent interest in the success of his mission; secondly that he came to Pondichery afterwards as sub-editor of a new Pondichery paper, "The Independent" subsequently defunct and replaced by another, the "Aryan," belonging to the same proprietor, who has been acting in concern with the British police agents in Pondichery. In the paper he wrote a very enerwing and deprecatory paragraph about me (not by name but by allusion), in which he vented his spite at his failure."

অর্থাৎ,

'ভোষায় প্রেরিভ আর. এস. শর্মাকে আমি একজন পূলিসের গুণ্ডচর বলিরাই মনে করি। আমি ভাহার সহিভ দেবা করি নাই; কারণ প্রথম যথন সে আমার বাজীতে ভোর করিরা চুকিতে চার ও অভিশরোক্তি থারা আমার বিখাস উংগাদমের চেঠা করে ভখন ভাহার বিক্রমে আমি অভর হুইভেই সভর্ক হুইবার সক্ষেত পাই। এই রক্তম সভেত আমি প্রাছই পাইরা থাকি। এই সভেত্রই সর্বন মিলে প্রবর্তী হুইট ঘটনার। প্রথমভঃ, মালাকী পূলিস বে শর্মার উদ্দেশ-লারেই প্রকাশ পার। হিতীরভঃ, ইহার পরে দে বর্ণন আবার

প্ৰিচাৰীতে আলে, তথ্য অধ্যা-বিস্ত "বি ইভিপেণ্ডেক্ট" নাৰে এক প্ৰিকাৰ সহকাৰী সম্পাদক বনিবা আত্মপন্তিত দেৱ। পৰে সে ইহাৰ ত্বলাভিষিক্ত "এৱিবান" পৰিকাৰ সহকাৰী সম্পাদক এইন্নপ বলে। এই শেৰোক্ত পৰিকাণানিও একই ব্যাধিকাৰীৰ কাগজ, বিনি পভিচাৰীৰ বিষ্টিশ পুলিস-প্ৰতিত্ব-গণ্ডেৰ সহিত প্ৰকাণ্ডে সংযুক্ত হইবা ভাজ কৰেন বনিবা জালা পিৱাছে। উক্ত পৰিকাৰ ঐ ব্যক্তি আমাৰ নাম উল্লেখ না কৰিবাও আমাৰ উদ্দেশে একট প্ৰ হীনভাজনক বিজ্ঞোক্তি প্ৰচাৰ কৰে, বাহাতে ভাহাৰ ব্যবভাৱই আলা প্ৰকাশিত হয়।"

শ্রীধ্ববিদ্দ এই সকল কথা জানাইয়া, ভবিষ্যতে এই প্রকার অজ্ঞাতকুগশীল ব্যক্তিকে বিশ্বাস করিতে জামায় নিষেধ করেন। এই সমরে পণ্ডিচারীতে বে সকল রাষ্ট্র-নৈতিক পলাতক বাস করিতেন, তাঁহাদের বিহুদ্ধে ইংরেজ প্রিসের অভ্যবোগে করাসী গ্রবর্ণমেণ্ট হন্তক্ষেপ করিতে উদ্যত হন। শ্রীশ্বরবিদ্দকেও এই শ্রেণীর মধ্যে গণ্য করা হইল। কিন্তু শ্রীশ্বরবিন্দ তদানীস্কন করাসী পণ্ডিত সাহেব ও জ্ঞ্জসাহেবের সহায়তায় এই প্রয়াস ব্যর্থ করেন। এই বিষয়েও শ্রীশ্বরবিন্দ তাঁহার এক পত্তে আমায় লিখেন:

"Other difficulties are disappearing. The case brought against the Swadesies (No one in this household was included in it, altho' we had a very charmingly polite visit from the Parquet and Judge d'Instruction) has collapsed into the nether region and the complainant and his son have fled from P.T. (Pondichery territory) and become like ourselves 'political refugees' in Clore (Cuddalore)"

ভি. ভি. এস আয়েকার নামে একজন ভক্ষণ বিপ্লবী পণ্ডিচারী আসিয়া উপস্থিত হইলে, ইংরেজ পুলিস করাসী গবর্গমেণ্টের নিকট ভাহাকে ধৃত করার জক্ত জক্মরোধ জানায়। এই ঘটনা উপলক্ষ্য করিয়া খদেশী বলিয়া বাঁহারা পণ্ডিচারীতে ছিলেন, ভাহাদের সকলের উপর করাসী গবর্গমেণ্ট ভদস্থ ক্ষ্যুক করেন। শ্রীজরবিন্দের ব্যক্তিদের প্রভাবে ও ভাহার অতুল প্রভিভায় খদেশীরা সে বাজায় রক্ষা পান এবং দীর্ঘ দিনের জক্ত পণ্ডিচারী খদেশীদের নিরাপদ স্থানে পরিণত হয়।

আমি বিপ্লবের কর্ম্মে বিশেষভাবে নিয়োজিত থাকিতাম, কিছু আমার অস্কঃকরণ চাহিত সাধনার নির্দেশ। প্রীব্দরে বিদ্দকে শুধু আত্মসমর্পণ বোগের শুকুত্বানীয় ভাবিরাই পরিতৃষ্ট হই নাই, তাঁহার কার্য্যে আত্মনিবেদন করার জন্য আন্তরিক বত্ব করিতাম। তাঁহার কর্ম্ম শরীর, প্রাণ, মন দিয়া সিছ করিতে পারিলে, আপনাকে তাঁহার চরণে সম্পূর্ণরূপে উৎসর্গ করিয়াছি বলিয়া মনে হইত। আমি প্রেই তাঁহার সাধন-নির্দেশ প্রার্থনা ক্রিডাম। এক

পত্তে তিনি এই সম্বন্ধ বাহা লিখিয়াছিলেন, তাহা আমার অন্ধবে চিন্ন-গ্রাথিত হইয়া আছে। ঈশবের আদেশ ভিন্ন তিনি বে কোন কর্ম সম্পন্ন করেন না, ভগবংপ্রেরণাই তাহার জীবনকে পূর্ণ শৃত্তলিত করিয়া লইডেছে—পত্তের কিয়নংশ উদ্ধৃত করিলে, তাহা পাঠক-পাঠিকারা অন্তত্ত্বকরিতে পারিবেন। তিনি লিখিলেন:

"There is no reason for not writing to you. I never now-a-days act on reasons, but only as an automaton in the hands of another. Sometimes He lets me know the reasons of my actions, sometimes He does not, but I have to act or refrain from action all the same, according as He wills.

I shall write nothing about sadhan, etc., until I am out of my present struggle to make the Spirit prevail

over matter and circumstances."

তাঁহার বাত্তব অভাব কতথানি তাহার ইয়তা করা আমার পক্ষে সম্ভবণর হইত না। তিনি মাণিকতলা বাগান বিক্রমের টাকা চাহিয়া পাঠাইয়াছিলেন। এই সম্বন্ধে পরে কিছু লিখিব। তাঁহার বন্ধাভাবের পরিচয় তাহার প্রাংশ হইতে উদ্ধৃত ক্রিভেচি:

"There is the pressing cry for clothes in this quarter, as these articles seem to be with us to remind us constantly the paucity of matter."

এই বন্ধাভাব দ্ব কবাব জন্ত মাঝে মাঝে আমি কাপড়ও পাঠাইয়া দিতাম। তিনি ম্যাকা ঘাব্দাবের ১০০০ টাকা পাইয়াও আর্থিক ব্যাপারে নি:দংশয় হইতে পাবেন নাই। আমিও যাহা পাঠাইতাম, তাহা তাঁহার নিকট অতি তুচ্ছ। আৰু বিশ্বয় বোধ হয়—জাতির নিকট হইতে কতটুকু দান গ্রহণ করিয়া তিনি ভারত তথা বিশের মানবজাতির অন্য কি অসাধারণ প্রতিভাব অবদানই না রাবিয়া গেলেন।

এই সমরে বিপিনচক্ত পালের Soul of India নামে
পুত্তক প্রকাশিত হয়। শ্রীজরবিন্দ ভাষা হাতে পাইয়াই
আরায় আনাইলেন—ভগিনী নিবেদিভার My Master as
I saw him পুত্তকথানিও ভাষার নিকট যেন প্রেরণ করা
হয়। আরও ভিনি চাহিলেন, রমেশচক্ত দত্তের ঝরেদের
অফ্রাদ। ভিনি ভবিষ্যৎ কর্ম্পের জনা, বিপ্লববাদের
অফ্রাদে নিজেকে কি ভাবে প্রস্তুত করিয়া তুলিভেছিলেন,
ভাষার পত্তের ছত্তে ভাষা প্রকাশ পাইত। আমি
ব্যক্তিগত সাধনার সক্ষেত্তগুলিই বড় করিয়া ধরিভাম—
আর ভার বৈপ্লবিক নির্দ্দেশগুলি বিপ্লবীদের জানাইয়াই
ভাষা থাকিভাম।

এই সময়ে রাসবিহারী বহু আমার নিকট উপস্থিত হন। তিনি শ্রীঅরবিন্দের সহিত আমার নিবিড় সংস্কের কথা বিদিত্ত হইলেন। শ্রীঅরবিন্দের পত্ত হইতেই "automaton" তত্তি আহবণ করিরা তিনি আমার
নিকট বিশেষভাবে তাহার মর্ম বুঝিয়া লন। ইহার পর
এই 'automaton' বা যন্ত্রসাধনা তাঁহার জীবনে কি ভাবে
বৃত্তি পরিগ্রহ করিয়াছিল, তাহা ভারতের রাষ্ট্রসাধনার
ইতিহাদে জলস্ক অকরে চিরদিন অভিত হইয়া থাকিবে।

বাসবিহারী ষন্ত্রীর হাডের যন্ত্রের ন্যায় চলিতে আরম্ভ করিলেন। এই সময়েই ডিনি বসম্ভকুমারকে সঙ্গে লইয়া দিল্লী কৃত্তিমুখে যাত্রা করেন। দিল্লীর দরবার উপলক্ষ্যে নগর-প্রবেশকালে লর্ড হাডিঞ্জের উপর বোমা নিক্ষেপ করা হয়। ডিনি আহত হইলে উৎসব বন্ধ, দিল্লীর দরবার পত্ত হইয়া যায়। আজ বলিতে বাধা নাই বে, এই বোমা নিক্ষেপ করেন নারীবেশে তরুণ বসম্ভকুমার আর বাসবিহারীই ছিলেন পার্থসারখির মত ভাহার পরিচালক ও পৃষ্ঠবক্ষক। এই ঘটনার জন্য আমরা শ্রীজ্যব-বিন্দের প্রত্যক্ষ নির্দ্দেশ গ্রহণ করি নাই; কিছু ঘটনাম্ভে তিনি খুলী হইয়াই বে কথা লেখেন, তাঁর পত্ত হইডে ভাহাউদ্ধৃত করিতেছি:

"I welcome it as a sign of some preliminary effectiveness thro' you. In this direction in which hitherto everything has gone against us, also as we have proof of several, . . . . that the quantity of your power and your work is greatly improving in effectiveness and success."

অর্থাৎ.

তোষার ভিতর দিরা কিছু প্রাথমিক কার্যকারিতার সক্ষরণে ইহাকে আমি অভিমন্তি করিতেহি। এই দিকে যেগানে এতাবং সবই আমানের বিক্লভে সিরাছে, সে কেন্তে ইহা ভোষার শক্তি ও কর্ষের ভণোংকর্ব প্রমাণ করে—ভোষার কর্ম কার্যকারিতার সাকল্যে যথেই উন্নতিলাভ করিয়াছে।"

রাসবিহারী বস্থ ও ঢাকার অফুশীলন সমিভির সাহাবে৷ ধীরপদে আমবা বিপ্লবক্ষেত্রে অগ্রসর চইতে नाशिनाम। असिक ব্যেশবাব্র वारवरमञ শ্রীষরবিন্দকে পাঠানো হইল। তিনি পুনরায় আমায় পত্রবোগে জানাইলেন—দেশবন্ধ চিত্তর্থনের নিকট হইতে তাঁহার জন্য কিছু অর্থ ভিক্ষা করিতে। আমি শ্রীমরবিন্দের পত্র লইয়া তাঁহার নিকট উপস্থিত হইলাম। দেশবন্ধ অনেককণ ভাবিলেন, তাহার পর আর এক দিন আমার তাঁহার সহিত সাক্ষাৎকার করিতে বলিলেন। আমি বথা-কালে. তাহার নিকট উপন্থিত হইলাম। তিনি তাঁচার স্বপ্রসিদ্ধ "দাপর-সদীত" গ্রন্থখনি বাহির করিয়া বলিলেন -- "अवदिक्त वित हेशद हैश्रदकी चक्रवान कविया तन, তবে আমি সহস্ৰ মুক্তা তাঁহাকে এই কৰ্মের জন্য দিব।" শ্ৰীষ্মবিন্দকে এই কথা জানাইলে, তিনি "সাগব-সজীত"

গ্রন্থগানি চাহিন্বা পাঠাইলেন। মিজাক্ষরে ও অমিজাক্ষরে "দাগর দলীতে"র তুই প্রস্থ ইংরেজী অন্থবাদ শ্রীম্বারিনাই করিয়াছিলেন। দেশবদ্ধ এই বাবদ উপরোক্ত অর্থসাহায্যও ব্যাকালে করিয়াছিলেন।

১৯১৩ গ্রীষ্টাব্দের ৫ই জাগষ্ট বাংলার আকাশ মেঘাচ্চর इटेश चानिन। मुयनशाद वृष्टि—वर्षत्व विवास नाहे। कुन ज्ञान शुक्तिनी छाडिन। मार्गामय नाम श्रवन वना (पथा पिन। शूर्वकृत्वव अधिवानिवस गृहहोन हैहेन। বাংলার বিপ্লবী ভক্ষণগুদ সেবাব্রতে তংপর চইলেন। শ্রীষক্ত বি. কে. লাহিডীর উদ্বোগে উত্তরপাড়ার শ্রীম্মবেক্স চটোপাধাায় ও ঢাকার জীমাখনলাল সেন মহাশয় সেবাকর্ম্মে আত্মনিয়োগ করিলেন। আমিও তাঁচালের সচিত যোগ দিলাম। এই সময়েই যতীক্ষনাথ মুখোপাধ্যায়ের ( বাঘা ৰতীন ) সহিত আমার প্রথম পরিচয়। এই বাঘা বতীনের কথা শ্রীঅরবিন্দের মধেই আমি প্রথম শুনিয়াছিলাম। তিনিও চিলেন একজন প্রদিদ্ধ বিপ্রথী বীর। তাঁচার সহিত পরিচয়ের পরবর্জী ঘটনাঞ্জিল সম্বন্ধে এই ক্ষেত্রে উল্লেখ নিপ্রাক্তন। বর্জমানের কাকে আজনিয়োগ করার কালে আমি দারুণ ম্যালেরিয়া রোগাক্রাস্থ হই। বেছ শ জ্বাবস্থায় আমি শ্রীঅমতলাল হাজরা ওরফে শ্রীশশাহের উভোগে বর্দ্ধমান হইতে চন্দ্রনগরে নীত হই। আবোগালাভ করিলে, পঞ্জার পর বিপ্লবিগণের এক সভায় স্থির হয় যে. পণ্ডিচাতী इक्टें बामाय हेत्साठीत याकेट हरेटा। শ্ৰীমববিন্দের প্রেবিড বিভলভাবগুলি নষ্ট চওয়ায় এবং পণ্ডিচারী হইতে অল্ল-সংগ্রহের কাজ বিশেষ অগ্রসর না হওয়ায় ইন্দোচীন হইতে প্রচুর অস্তাদি বাহাতে চন্দননগরে খাসিয়া পৌচায়, ভাগার খায়োক্তন খামাকে করিতেই रहेरव ।

শীষ্মবিদ্যের আত্মসমর্পণ-বোগ সেদিন আমার পাইয়া
বিসিরাছে। তাঁহার আত্মসমর্পণ-বোগে জীবনের মমতা
রাধিতে নাই। আমি ভাবিয়া দ্বির করিলাম—শ্রীষ্মবিদের
অন্থ্যোদন পাইলে, আমি ইন্দোচীনে গমন করিব। বন্ধুদের
এই কথা স্পষ্ট জানাইলাম। ১৯১০ খ্রীষ্টান্মের কোজাগরী
লক্ষীপূর্ণিমা শেব হইলে, আমি কলিকাতা রওনা হইলাম।
আমার পুরা-দন্তর সাহেব সাজান হইল। স্প্রচিকণ গুদ্দরাজি
বিসর্জন দিয়া মুখমগুলের শ্রী পরিবর্তিত করা হইল।
স্বদর্শন চট্টোপাধ্যায় আমার আর্দালী সাজিয়া মান্সাল্প
মেলে আমার তুলিয়া দিল। মান্রাল্গ ষ্টেশনে গাড়ী পৌছিলে
আমার পুর্বাগরিচিত বন্ধু পার্থ-সারধির বাসার গিয়া
উঠিলাম। প্রাটক্রমে আ্রাক্রত অপরাধে বে বিশদ

ঘনাইয়া তুলিয়াছিলাম, ভাহাতে এই ক্ষেত্ৰে নিৱাপদ विश्राम मक्कार को जा। मालाक्का थाकिकाम शाकी পৌছিলে এক বাক্তি আমায় বধন জিক্ষাসা করিয়া জানিল আমার নাম M. Ray ( এম, রে ), কলিকাডার চূণাগলি অথবা চৌবলীতে আমি বাস করি না, চন্দননগর শামার বাসস্থান ও আমি একজন হিন্দু-এই সংবাদ-বিতাৎ-গতিতে প্ৰিসের নিকট পিয়া পৌচায়। অধ্ৰকাল-মধ্যে পার্থদারধির বাডীটি পুলিস কর্ত্তক পরিবেষ্টিত হয়। আমার বিড়কীর দার দিয়া পার্থসার্থি বাহির করিয়া টেশনে এক গাড়ীতে তলিয়া দেন। ভারপর অতি প্রতাষে পরিচারী যথন পৌছাই, তথন প্রবল বৃষ্টিধারা নামিয়াছে। আমি সাহেবী পোশাকে স্বাস্ত্রি প্রীঅব্বিদ্ধের উপস্থিত হওয়া যক্তিযক্ত মনে করিলাম না। পার্থসার্থির टकार्क मरकामत खीनिवाम भारत्रकात उ€ ममरत्र वाकरेनिकक সন্দেহভাজন হিদাবে পণ্ডিচারীতে বাস করিভেছিলেন-তাঁহাবই নিকট গিয়া উপস্থিত হইলাম। তিনিও আমার এक विश्व कानहबन कविटल ना पिछ', औषवविटलव वान-ভবনে পৌছাইয়া দিলেন। গুপ্তচরবুল আমায় দেখিল. কিছ একজন সাহেব আসিয়াছে, এই সংবাদই ব্রিটিশ পুলিস व्याभित्म भागांत्रेश मिन ।

শ্রী মরবিন্দের আবাসন্থলে প্রবেশ করিয়াই আমি
সন্মুখে এক তরুণকে দেখিলাম। তাহার নাম শুনিলাম
অমৃত। সে আমাকে বিজয় নাগের সহিত দেখা করাইয়া
দিল। তারপর আসিল নলিনী, মণি ও সৌরীন—ইহারা
সকলেই আমার পরিচিত বন্ধু। আমার সাহেবী বেশ
দেখিয়া সকলেই সকৌতুকে তারিফ করিল। ভারপর
শ্রী মরবিন্দ ঘর হইতে বাহির হইলেন। আমি নত্তায়
হইরা তাঁহার চরণে প্রণত হইতে পারিলাম না, সাহেবী
পোশাকে তাহা বাধিল। তিনি আমায় ঘুই বাছ দিয়া
জড়াইয়া ধরিলেন, মন্তক আমাণ করিয়া জিল্লাসা করিলেন,
শিনবাপদে আসিয়াছ ত গ্র

আমি তাঁহাকে সকল কথাই বলিগাম। তিনি হাসিরা বলিলেন, "সাহেব সাজিয়া গোপনে আসিতেছ, নামটাও তো ভাঁড়াইতে হয়। আপনাকে হিন্দু বলিয়া পরিচয় দিবার গর্কাটুকু বলি বহিল, তো সাহেব সাজার প্রয়োজন কি ?" আমি অপ্রস্তুত হইলাম। নিজের নির্কৃষিভার জন্য নিজেকে ধিকার দিলাম। তারপর দেড় মাস কাল শীস্ববিন্দের নির্দেশে তাঁহার সারিধ্যে প্রিচারীভেই থাকিতে হইল। ইন্দোচীনে বাওয়ার জন্য তাঁহার আলেশ মিলিল না।

# বাংলা ও বাঙালী

#### শ্ৰীসুৰীলচন্দ্ৰ ছোৰ '

4

পশ্চিমবন্ধে বে সমস্ত কৃটীরশিক্স আছে, নানা কারণে দেশুলির অবন্ধা একরণ মৃতপ্রায় বলা চলে। উপস্থিত বে সৰ স্তব্য উৎপদ্ম চইডেচে ক্রেডার অভাবে এবং অভাধিক দামের অক্ত তাহাও কাটতি হইতেছে না। পর্বেবে সমন্ত কুটারশিল্প ছিল ভাহাদের পুনক্ষার করিতে হইলে এবং এখনও বেগুলি খাছে দেগুলিকে সজীব করিয়া তুলিতে চটলে পল্লী-অঞ্চলে বৈভাতিক শক্তি সরবরাচ করা দরকার. নচেৎ উৎপাদন-বায় কমিবে না। তাহা ছাড়া এই সমস্ত কুটারশিক্ষজাভ দ্রব্যাদি বাহাতে উপযক্ত দামে বিক্রয় হয় ভাহার ব্যবস্থাও প্রদেশ-সরকারের করা আবস্তক। প্রম-भिक्क अ विश्वितिका क्यांक वाडामीत जान काशाय क विश्व পরে আলোচনা করিব। বর্তমানে সাধারণ বাঙালীর অর্থ-নৈতিক তুৰ্গতির প্রধান ও স্থম্পাই কারণ নিমে দিতেছি। আর এই কারণেই এই প্রদেশকে একটি সমস্তা প্রধান প্রাদেশ বলা হইয়া থাকে। পশ্চিমবল পাট ও কয়লা **ভित्र पष्ट विरा**ग किছ भगास्त्र अभव श्रामा वशानि करव না. পাট ও পাটজাত ত্রব্য বাহা অপর প্রদেশে এবং বিদেশে রপ্তানি হয় ভাহার মূল্যের সামান্ত খংশ পশ্চিমবলবাসীরা পার। কয়লা বাহা উৎপর হয় ভাহার বেশীর ভাগ পশ্চিম-বলে ভারতীয় রেলপথে ব্যবহৃত হয়, কতকটা বিদেশে ৰপ্তানি হয় এবং সামান্য পরিমাণ অপর প্রদেশে চালান বায়।

নিয়ে প্রদত্ত হিলাব হইতে মোটাম্টি বুৰিতে পারা বায় বে, প্রতি বৎসরে উপস্থিত বাঞ্চার ও কণ্টোল দর অফুসারে পশ্চিমবঙ্গের অধিবাসীদের প্রায় ৪৫ কোটি টাকা कराकृष्टि शामास्त्रवा ও निजावावकाचा सरवात सनाहे स्था क्षरमध्य हिमा वाष् । উक्त हिमारवद मरशा शाकिश्वान इडेर्स द्वन ६ हीमावरवार्ग अवः विरम्भ इडेर्ड ममूलनर्थ পশ্চিমবলে যে সমস্ত খাছ ও নিতাব্যবহার্যা দ্রব্য আমদানী क्या हम यथा- ठाउँन, श्रम, महता हेल्याति, धवः गहा धहे প্রাদেশে ব্যবহৃত হয় ভাহার মৃল্য ধরা হয় নাই। ভাহা हाडा चनव श्रामन हडेटड रुखीवस, नवन, घड, माधन, মংস্ত, ফল, আলু ও নানারণ তরিতরকারী বাহা वाहा जाममानी कवा इम्र छाहाव मुना ७ थवा इम्र नाहे; কারণ কোনও সরকারী প্রতিকাম উহার সঠিক হিসাব পাওয়া যায় না। এই সকল ত্রবোর মূলাও বহু কোটি টাকা চটবে। এট বাৎসবিক অর্থক্ষ কোন সময়ই বোধ ক্রিতে পারা বাইবে না কি ?

পশ্চিমবন্ধ সরকার প্রচুর তুগ্ধ উৎপাদনের উদ্দেশ্তে গবাদি পশুর উন্নতিকল্পে নানারূপ পরিকল্পনা করিতেছেন। ইহা অর্থের সহায় মোটেই বলা বাইতে পারে না। বেখানে খাছোৎপাদনের আবশ্রকমত জমির অভাব সেধানে গো-চারণ-ভূমি ও গবাদি পশুর খাছা কোথা হইতে আসিবে? "অধিক খাছা ফলাও", "বনমহোৎস্ব" কর এবং প্রধানমন্ত্রীর

১৯৪৮-৪৯ সালে ভারতের বিভিন্ন প্রবেশ হইতে রেল ও নদীপরে পশ্চিমবলে আমলানীকৃত করেকট বাত ও

		<b>ৰিভাব্যবহা</b>	र्ग करनाव वि	<b>हे</b> जा ब	
बर्वाव	আমদানীকৃত ক্রব্যের পরিমাণ		প্ৰকাশিত স্যাভয		<b>ৰো</b> ট
ৰাৰ			ৰাশার গ	<b>७ क</b> च्छे । ज पत	<b>টাকা</b>
<b>হোলা</b>	3,800,404	44	201 \$	কা প্ৰতি ৰণ	24,630,320
बाबा	338,026	**	M	,,	\$30,500
<b>हा छैल</b>	860,412	,,	39	27	1,132,134
नव	33,081	,,	36	**	408,962
<b>ৰাটা</b>	84,561	,,	30		100,812
ৰাদাৰ ভৈল	989,626	"	18	" ( शारेश मत्त्रक )	20,934,000
খন্যান্য ভৈন	843,013	**	10	99	02,166,600
यांगांव	900,931	**	•8	**	1,200,024
<b>দল্লি</b> ৰা	4,008,841	**	40	**	344,389,023
চিৰি	4,668,935	**	100	**	261,284,264
**	3,340,818	,,	28	"	89,340,636
नाविरक्त रेक्न	20,011	20	2081	**	٩,٤٢٢, 8٤٤,

CALD 880' JAN' 077'

ন্তন অভিযান "ধনসম্পদ বাড়াও" পশ্চিমবন্ধবাসীদের निक्रे अक्री निराम्न भविशान गांव । भक्तिम्बर नदकारबर "प्रश्य क्ला ७" चिवात्नत् अक्षे घटेनात् कथा निर्वेटिक । কিছদিন পর্ব্বে একটি ক্রবি-প্রতিষ্ঠান স্থানীয় মংস্কচাবের সরকারী মহকুমা কর্মচারীকে ভাচাদের ক্রিক্তে আসিয়া প্রকরিণীঞ্জলি দেখিয়া ভাষাতে মংস্কর্চাষের বিষয় উপদেশ দিবার জনা আময়ণ কবিয়াচিলেন। काकाळी कावह কর্মচারীটি সেই প্রতিষ্ঠানের লোকদের জাহার আর্থপনে **(मथा कविद्या छेशाम महेटल व्यामिता**) জানিতে পারা বায়, টাকার অভাবে পশ্চিমবঙ্গ সরকার মংস্তাবের কর্মচারীদের বাভাষাভের ভাতা কমাইয়া विद्यारक्त वर दारेक्ताई प्रश्याताहरू वर्षाताहरू के कर्मातीया श्रुक्षिणी ना दिशारे जानित्यत (त्यादि विश्वा डेन्ट्रान रान । এই প্রাদেশে "বাত ফলাও", "মংস্ত ফলাও", "sa ফলাও" এবং "বনমহোৎসব কর" এই সব অভিযান ও পরি-वज्ञनाव बना (वनीव जान वदाक है।का हाहे वड कर्महावी-দের বেভন দিতেই ফুরাইরা বায়।

পূর্বে লিখিয়াছি, এই প্রদেশে ধানের ক্ষমিতে পাটনায় করান হইচ্ছেছে। কারণ পশ্চিমবঙ্গে যতগুলি পাটকল আছে দেই পরিমাণ পাটচাবের ক্ষমি নাই। কিন্তু পাট-করের বেশীর ভাগে টাকা কেন্দ্রীয় সরকার অপর প্রদেশগুলির মধ্যে বন্টন করিয়া দেন। আশা করি, প্রদেশ-সরকার এই বিষয় অর্থাৎ পশ্চিমবঙ্গে প্রতি বর্গমাইলে বস্তির চাপের হার বৃদ্ধির কন্য প্রদেশ ও প্রদেশবাসীর স্থায়ী ক্ষতি এবং অস্থবিধার বিশদ বিবরণ নব-সঠিত কেন্দ্রীয় অর্থনৈতিক ক্ষিশনের কাছে ভাঁহাদের লাবিসহ পেশ করিতে ভূলিবেন না।

প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত নেহক পররাষ্ট্র বিবরে বেরুপ মনো-বোগী, নিজরাষ্ট্রের অন্তর্গত বাংগাদেশে তিনি বে আরের-গিরির স্টে করিতেছেন সেদিকে তাহার সেরুপ লক্ষ্য আছে বিলয়া মনে হয় না। জন্যান্য করেকটি প্রদেশেও নানা জ্যান্তি দেখা দিয়াছে। এইরুপ অবস্থা চলিতে দিলে ভারত-রাষ্ট্রের এশিরার একটি বৃহত্তর "বলকান" হইয়া গাঁড়াইবার সন্তাবনা। ইহার প্রতিকার করিতে হইপে বতদ্র সন্তব্ধত্যেক প্রদেশের আয়তন তাহার প্রতি বর্গমাইলের বসতি চাপের সঙ্গে সমতা রক্ষা করিয়া ঠিক করা দরকার। কেবল বক্তৃতা, নৃতন নৃতন পরিক্রনা, অগণিত "বাণী" ও মৃধরোচক ধানির বারা ইহার কোনক্রণ স্যাধান হওয়া সন্তব নয়।

ভারত বিভক্ত হইবার ফলে পণ্ডিত নেহকর বাসভূমি উত্তর প্রেলেশের আয়তন ১,০৬,২৪৭ বর্গমাইল, বোঘাই প্রেলেশের আয়তন ৭৬,৪৩৩ বর্গমাইল এবং বিহার প্রেদেশের আয়তন ৬০, ৭৪৫ বর্গমাইল দাড়াইয়াছে। আর পশ্চিমবদের আয়তন দাড়াইয়াছে মাত্র ৩০, ৬৮০ বর্গমাইল। কিছ বৃহত্তর বদের কথা পশ্চিমবদ্বাসীরা উথাপন করিলেই কেনবে ইহা প্রাদেশিকভার দোবে দ্বিত হয় ভাহার কারণ বৃষিতে পারা বায় না।

পূর্ব প্রবন্ধে বাংলার প্রতি বর্গমাইলে বস্ভির হারের বিষয় আলোচনা করিবার সময় লিখিয়াছিলাম বে, ভারত বিভক্ত হইবার পর পশ্চিমবন্ধের সলে কুচবিহার ও ত্রিপুরা এই তুইটি কুজ দেশীয় রাজ্য যুক্ত হইমাছে। কিছ উহা ঠিক নহে। ত্রিপুরা রাজ্য এখনও কেন্দ্রীয় সরকারের ঘারা পরিচালিত হইতেছে এবং উহা পশ্চিমবন্ধের সহিত যুক্ত হয় নাই। তবে পশ্চিমবঙ্গের আয়তন মোট বর্গমাইল যাহা লেখা হইয়াতে তাহা ঠিকই আছে।

পূর্বে বাঙালী জাতি সর্বাক্তে ও সর্ববিষয়ে সমগ্র ভারতের অগ্রণী চিল। একথা কেচ অস্বীকার করিতে পারিবে না যে, ভাবত আৰু বে খাধীনতা লাভ কৰিয়াছে ভাহাৰ ভিত্তি প্রধানত: দেশপ্রমিক বাঙালী যুবকদের নি:বার্থ আত্ম-ত্যাপের উপর স্থাপিত। দে সময় বাঙালী ক্রাভিকে অপর প্রদেশবাসীরা বেরুপ শ্রহার চক্ষে দেখিত এখন তাহা প্রায় ইতিহাসের কথা হইয়া দাঁডাইয়াছে। আন্দোলনের সময় বিখ্যাত রাজনীতিবিদ গোপালক্ষ গোধালে ভারতীয় আইন সভায় বক্ততাপ্রসঙ্গে বর্ড কার্জ্জনের প্রতি সভর্কবাণী উচ্চারণ করিয়া বলিয়াছিলেন, "বাংলা আল বারা ভাবি-তেছে—সমগ্ৰ ভাৱত কাল তাহাই ভাবিবে।" আঞ বাহালীর অরবল্প ও অক্সার সমস্তার সমাধান একরপ ভারত-সরকারের উপরই নির্ভর করিতেছে একথা বলিলে অতাক্তি হয় না। এমন কি আমাদের শিকাকেতেও ভারত-সরকারের প্রভাব অভুতুত হয়। ভারত ধর্ম-निवालक वाहे जाव এই कावानरे बविवाका "नासम निवम অবৈত্বম" পৰ্যন্ত ভাঁহাৰ নিজ অধিকাৰ হইতে ৰঞ্চিত इडेशाटि ।

গভ অক্টোবর মাসে Engineering News of India's সম্পাদক ডি. সি. ডুাইভার "A Tiger looks at India" নামক একটি স্থচিস্থিত প্রবন্ধে বাঙালী আভির বর্তমান অবস্থার বিষয় বাহা লিখিয়াছেন ভাহা এখানে উদ্ধৃত করিভেছি:

"In Inda the Symbol of the State should be strength or Shakti. If there is strength, truth will prevail; otherwise it will take refuge in subterfuge. Look at poor Bengal. Once like a tiger it led. What Bengal roared at new moon other Provinces would bleat at full moon. The tiger spirit of Bengal is gone. Now ferocious tigers only appear in West Bengal, painted on its buses."

नित्र हेशांच वकाक्यांस सिमाय :

"ভারতরাষ্ট্রের প্রতীক হওরা উচিত শক্তি। শক্তি
থাকিলে সভ্যের জর অবপ্রভাবী; অন্যথার ইহা চাতৃত্বীর
আত্তর প্রহণ করিবে। ছর্জপাপ্রত বাংলার দিকে তাকাও।
এক সময়ে উহা ব্যাত্রের ক্রার নায়কত্ব করিয়াছিল। অমানিশার অভ্যকারের মধ্যে বাংলা বাহা সদর্পে গর্জন করিয়া
বাহা প্রকাশ করিত, পূণিমার জ্যোৎস্পাস্থাত রাত্রে অন্যান্য
প্রদেশ ভাহা মৃত্রুবরে মাত্র ব্যক্ত করিত। কিছু আত্ত বাংলা
ভাহার ব্যাত্রদর্শ হারাইয়াছে। এখন সেই বীর্যনান ব্যাত্র-

সমূহের মূর্ত্তি পশ্চিমবলে বাষ্ট্র-পরিচালিত মোটর-বাসেই ভধু অভিত বহিরাছে।

জাইভাবের উক্তি বে নিদারণ সভ্য তাহা বলাই বাহলা। ভাবপ্রবণ বাঙালী জাতি তাহার এই জীবনমরণ সমস্তার সমাধান না করিয়া কত দিন বে চুপ করিয়া বসিরা থাকিবে তাহা অন্থমান করা শক্ত। বদি আমাদের দেশের নেতারা বাংলার সমস্তাগুলির ক্রত সমাধান না করেন তাহা হইলে মনে হয়, হয়ত এক দিন সমগ্র বাঙালী জাতি আবার "মান্ত্র আমরা নহি ত মের" বলিয়া গর্জন করিয়া উঠিবে এবং নিজেরাই প্রতিকারের চেষ্টা করিবে।

# রামানন্দ চট্টোপাধ্যায়

बीयदामहस्य (पव

আজ আমরা যে লোক-শিক্ষকের ৮ম বার্ধিক তিরোধান-অন্তর্গান প্রতিপালন করতে সমবেত হয়েছি তাঁর জীবনের সামগ্রিক পরিচয় দেওয়া ছ্ছর। কারণ তিনি নিজেকে নিজের কর্মের পশ্চাতে এমন করে গোপন রাধতে সক্ষম হয়েছিলেন বে, সে গোপনীয়তা ছর্তেন্ত বললে অসক্ত হবে না। অধচ এই লোকটি নিজের বন্ধু-বান্ধবদের নিকট ছিলেন হাসি-খুশীর আধার। গভীর মুখে হাসির উৎস-মুধ খুলে দেবার কৌশল তিনি জানতেন। শান্তিনিকেতনের অনেক বন্ধুর নিকট তা শুনেছি। গান্তীর্য ও পরিহাস-নৈপুণ্যের এই সমবার বিধাত্দত্ত একটি গুণ।

"প্রবাদী" ও "মডার্গ বিভিন্ন" পঞ্জিকা তুথানির প্রতিষ্ঠাতা ও সম্পাদক রামানন্দ—নিকের কাজের মধ্যে নিকের নাম দেশের ইভিহাসের পৃষ্ঠার জাজল্যমান বাথবার ব্যবস্থা করে পেছেন। একজন ভারতীয় সাংবাদিক প্রার ৪০ বংসর পূর্ব্বে বিলাতের "বিভিন্ন অব বিভিন্নজ্ব" পঞ্জিকার রামানন্দের পরিচয় দিতে গিরে বলেছিলেন বে, এই একজন সাংবাদিক বিনি রাজনীতিবিদ্ বলে অভিহিত হতে পারেন, Journalist as a statesman"। সেই সাংবাদিক এখনও বেঁচে আছেন; তাঁর নাম সম্ভ নিহাল সিংহ।

আমার নিকট রামানন্দের প্রধান পরিচর হচ্ছে এই বে, তিনি ছিলেন লোক-শিক্ষক। আজীবন এই কর্ত্তব্য পালন করেছেন—কলেজের অধ্যাপকরণে বা সম্পাদকরণে এবং এই কর্ত্তব্য পালনে এমন একটা নিঠা দেখিরে গেছেন বা বর্ত্তমানরূপে বিরল। পণ্ডিত-বংশে তার জন্ম।

পণ্ডিতের বক্ষণৰীলতা বা গোঁডামি ডিনি পরিডাাপ ক্রেছিলেন: আন্দ্রমাজে যোগদান করে ডিনি কৌলিক স্নাতন আচার-আচরণের নিয়ম লক্ষ্ম করেছিলেন। কিছ আমাদের প্রাচীন সমাজে পণ্ডিতের বে ভান ছিল, লোকের শিক্ষা-দীক্ষার দায়িত্ব তাঁরা বেমন করে ধর্শ্বের অব বলে খীকার করতেন, রামাননের জীবনে সেই নিষ্ঠা ও নির্লোভডার পরিচয় পেয়েছি প্রচর, তাঁর সঞ্চে যাঁরা ঘনিষ্ঠভাবে মিশেচিলেন তাঁরা সাক্ষা দিয়ে সেচেন, এই বরবাক লোকটির মধ্যে জ্ঞানের কি অমূল্য ভাণ্ডার সুকায়িত ছিল। এই ভাগোরের সন্ধান পেয়ে দেশ-বিদেশের গুণী ও পণ্ডিত লোকের। তাঁর চারপাশে সমবেত হতেন এই পাড়ার একটি কুন্ত ককে। তাঁদের মধ্যে একজনের नाम च्युनीय। রামক্ষ-বিবেকানন্দ-গোষ্ঠার নিবেদিত-প্রাণ এই আইবিশ-তন্মা সিষ্টার নিবেদিতা নামে পরিচিতা ছিলেন লোক-সমাজে। "মতার্ণ রিভিয়" পত্রিকার প্রতিষ্ঠালাভের মূলে এই বিদেশী নারীর দান ভলবার নয়। সেইরপ কত খ্যাত খ্থাত লোক ,তাঁকে সাহায্য করছেন।

রামানন্দ বধন "প্রবাসী" ও "মডার্প রিভির্" বের করেন, ডখন ডারডবর্ষের কোন কোন প্রদেশ বিপ্রবী আন্দোলনের বন্যার পরিপ্রাবিত। এর সঙ্গে তাঁর কি সম্পর্ক ছিল তা এখনও জানা বার নি। বভীক্ষনাথ বন্দ্যোপাধ্যার সিটার নিবেদিতা প্রভৃতি বিপ্রবীপ্রধানদের সঙ্গে রামানন্দের ঘনিষ্ঠ সম্ম ছিল। এই কথা তখনও লোকে জানত; ইংরেজের পুলিসেরও জানা ছিল। এই আত্মবিলোপকারী লোকটি কি করে এই আন্দোলনের
মধ্যে নিজেকে চালাভেন, লোকে এই সব বিপজ্জনক
সম্পর্কের কথা জানত না; শাস্ত সমাহিত চিন্তে' তিনি
নিজের দৈনন্দিন কর্ত্তব্যাদি করে বেতেন। তা তাঁর
শক্তির পরিচায়ক ছিল, এবং এ সব সম্ভব হ'ত না বদি
ভার সহধ্যিণী তাঁকে সাহায্য না করতেন। রামানন্দের
জীবনে ও কর্ষে মনোরমা দেবী বিশিষ্ট স্থান অধিকার
করে চিলেন।

আমার বক্তব্য শেষ করবার পূর্ব্বে একটি কথা নিবেদন করতে চাই। আমার পূর্ববর্তী বক্তা (শ্রীবিজয়বিহারী মুখোপাধ্যায়) তার অভিভাষণে বর্ত্তমান ভারতের সাংবাদিক, অধ্যাপক, শিক্তক ও ছাত্ত-ছাত্তীরুক্ষের বিরুদ্ধে যা যা বলেছেন তার প্রতিবাদ হওয়া প্রয়োজন মনেকরি। হতে পারে, বর্ত্তমান যুগের শিক্তি-সমাজ কোন কোন কেত্রে অবোগ্যতার পরিচয় দিচ্ছেন। কিছ তা হলেও যে সর্ব্বক্ষণ তাদের কানে এই কথা শুনানো হবে যে তারা অযোগা, তারা হেয় এটা সমীচীন নয়।

এরপ কথা ভনতে ভনতে তাদের মনে এই ধারণার স্টেই হতে পারে বে, সভাই তারা অবোগ্য, তারা হের। আমী বিবেকানন্দ একটি কথা বলে এরপ উজির নিন্দা করে পেছেন। আয়ার্ল্যাণ্ডের ছেলেদের বিদেশী শাসকবর্গ প্রায়ই নাকি ভনাতেন, "Pab, you are no good" "প্যাট, তোমবা কোন কাজের নও।" ভনে ভনে প্যাটেনের মনে এই ধারণা দৃঢ় হইতে লাগল বে তারা সভ্য সভাই অকেন্তো, অপদার্থ। কিন্তু সেই প্যাটেরাই বধন মার্কিন মূলুকে পদার্পণ করলে, তধন এই ধিকাবের কথা তাদের কানে বাজত না, এবং এই প্যাটেদের মধ্য থেকেই দেখা দিলেন অনেক শিক্ষক-অধ্যাপক, পশুত গবেষক, সাংবাদিক, বৈজ্ঞানিক, শিল্প-বাণিজ্য ক্ষেত্রের নেতা বাদের নাম ইতিহাসে জল্ জল্ করছে। আমাদের দেশের ছেলেরাও সেরপ উৎসাহ পেলে তাদের মত কীর্ত্তি রেখে বাবেন।

গত ২৮শে সেপ্টেম্বর সাধারণ রাজ্মসমান্দ গৃত্তে রামানন্দ
দ্বতি-সভার প্রদন্ত বক্তভার সারাংশ।



বেৰাৰলী হাল চতুৰ্বেৰী কৰ্তৃত্ব ৱাইপতি ৱাজেপ্ৰপ্ৰাহকে ৱাৰাৰত্ব চটোপাধ্যাৰেৰ জীবনী-গ্ৰন্থ "ৱাৰাৰত্ব ও অৰ্থুন্তালীৰ বাংলা" উপতাৰ প্ৰহাৰ । বাইপতিৰ পাৰ্বে হণ্ডাৰনাৰ ভট্টৰ\_উজালিয়াল নাস

# পাারিস

## ঐশেকালী নন্দী, এম-এ

লঙ্গ—ভিটোরিরা টেশন থেকে গাড়ী বরে প্রথম গেলাম ছাবেল পোট-এ। দেখান থেকে ছোট একথানি টারার আনাবের নিরে গেল দিবেপ বলতে, আনরা পৌছলান ফালে। হোট টারার, হল্নি অভ্যন্ত বেলী, ভার উপর ভৃতীর শ্রেণীর বালী বেলী হওরার ভিতের কটটা অভ্যন্তর করলার বেশ ভালই। আবার ভালার নেবে উঠলার গাড়ীতে। বেশ বোরা গেল ফালে এলে পড়েছি, হু'দিকে অপূর্য সর্ব্যের সমারোক—ভারই মাবে নাবে কুলের রাশি। হাভমুখর মরমারীর কোলাহল, সব মিলে মনটা প্রসম্ব করে ভূলল। সভ্যা হরটার পৌছলার প্যারিসে, টেশনটির লাম সেওঁ লগভারা। হোটেলের সহামে বের হলার। ঠাই মাই কোরাও। সর্ব্যের বিদেশী-বিবেশিনীকের ভিড়। বেধানে পাওরা বার, সেথানে প্রবেশ



হই খন বিদেশিনী সহ লেখিকা

করা সাবারণ ভারতীরদের পক্ষে হংসাব্য—বর্ণবিধের নর, অর্থ-লকট। লগদ বহানগরীতে এক রাত্রি বাস করতে হলে সাবারণ হোটেলের বন্দিণা আহ্বানিক এক পাউও, ভারতীর বুলার প্রার ১০৮০। প্রথম বর্ণন এক পাউও ভালিরে করাসী ভাগতে ১৬০ কাঁ পোলার, আমার আমল দেবে কে? বনে হ'ল পুন কর বর্নার প্যারিস দেবা লেরে কিরে আসব। কিছ "বাহিরে বার হাসির হটা ভিভবে ভার চোবের কল।" কে ভানত বে প্যারিস বর্ণানগরীতে এক রাত্রির বিহানা—ভাজা ১০০০ কাঁ। বহু কটে একট সাবারণ হোটেল পাওরা লেল বেবানে বার ক্ষেকটা বর বালি ছিল। প্রতিটি ব্যরের দর্শনী ৪৭০ কাঁ। বাক্ তবু বন্দের ভাল। বাল বলতে ভ হোট ছট ব্যাগ, সেওলো হোটেলগুবালার ক্ষিয়ার বেবে বেরিয়ে পড়লাৰ কিছু থাবাৰের সভাবে, ভার সকে কিছু উপরিলাভ হবে—করেডট রাভার ও ছুই-এডট ত্রাঙ্কা ছালের সকে প্রথম পরিচর।

क्लार्करमद मीरावे अक्षे रदस्ताद । विम । रम्पारम क्षरम् করতে সিরে বিশ্বরে হতবাক হরে রইলার। এত বঢ় এবং अयम बेकबंटक हारबंद हेल क कहे (काब क्रिय क्रिवि वि । हाव विक विराहे लाक श्राटम कराय. जात हात विराहरे बाबारवत माति। व्याणावकी वाशिक शत्वे वाश्यका छ'न वर्षम व्यवनाव আৰিও প্ৰবেশ করছি আমার বিপরীত বিকের রাভা বিষে। लाकामहै निकासरे त्याहे-चात कात लाता नगरक किछरे त्यहें। बाचार विक्री वाव किर्य किय वित्व काव व्यक्त त्याव পৰ্বাছ কেবল ৰক্তবতে আহুনাহ ঢাকা। কলে যেদিকে ভাকাই बाब हव अब जीवा (यह) किये वा संक्रियर करन भागीत्वत স্বাৰহার করতে, কেউ বা বসেতে, কেউ বা প্রতীকা করতে काळ्य कर । चामि अक्टी (हैरिन प्रवेत करव राजाय, अवाय স্তুত হ'ল ভাষা-সমন্তা, ভি করে বোবাই আৰি ভি চাই। একট 'থহেটার' এগিবে এল, ভাকে বোবাতে চাইলাৰ 'চা ও किছ बाबाब', त्म (कवन काकिरद बहेन महाक बुर्द। हर्डाए माबाब युषि अल. केर्ट निरंत চাবের পাঞ্চ दिवर विलाय चात क्रके किन। त्म बूची हरत बानिक शरत अरन हाकित W87W |

ভোত্ৰপৰ্ক কোনৱত্বে সমাপ্ত তথাৰ পৰ ভাম ভেৰাৰ दिनां ति निर्वर चार अपने अस्ति । निर्व अन नर्म করে। সে বুবিরে দিলে কাগদে লিবে বে আরি বেরেছি চা ৪৫ ক্ৰা, ক্লট ৩৫ ক্ৰা, ভিম ৩০ ৰোট ১১০ ক্ৰা। আমাৰ ভ চক্ষহির। ব্যাপার বেবে ওয়েটার ভ হেলেই বাঁচে লা। -লে जावारक जाकून विरव रविरव विरान, खालाक किविरवद बीरक দাৰ লেখা আছে। দেখলাৰ একট লাধারণ কলার লাম ৪০ क्षां चर्नार चानारस्य रशीय बूखाय स्थ चाना । स्थान चिनिय ২০ কাঁৱ নীচে বিকী হয় বা। ভূপাকায় কাগজেয় চাকা বিৰে কোন ভিনিব কিনতে হয়। তবুই কাগভেয় হড়াছড়ি। লোনা বা লগার বাব বাবে না. এর হাত হতে ওর হাতে क्षमा: कार्यक केरक वाटक बात कीवनवातरवत बन्छा क्रमणाहे চতে বাজে, মুলাফীভি অসম্ভব বেছে গেছে। ভার ভর कावध विक्यां वावारायां चारह वरत च बरव व्यव वा অবঙ আমি হিলাম রাজ্যানীতে, তাই হয়ত নিভাভ গড়ীৰ ও নাৰাৱৰ ভীৰনৰাত্ৰা বেৰাৰ দৌভাগ্য হয় দি, কিছ ৱাজৰানীতে কৈ চিভাকুল বুৰ ভ বেৰলাৰ না। নকলেই নছাভ বুৰে ভাগৰ

কাল কৰে বাজে, থাবাৰ গৰৰ ছোটেলে ৰেভান্নীৰ চূকে থেৰে নিজে, বক্তকে ভক্তকে পোলাক-পদ্ম, জীবনটাকে বেল নিভান্ত থেলায় হলে ভোগ কৰে ছনিয়ায় গ্ৰীচুকু সুধ নিংকে নিভে চাইছে। এয়াই সভ্যিকায় সুধী। এ বেল নিগদ বোঁচট খেৰে বৰন ছাভা শেৱিৰে গেলাৰ বিজেৱ চোৰকে বিখান করতে ইছা হ'ল না। খেৰিকে হ' চোৰ বাব নৰ্ফ বাসের যেলা, বহু করে তৈরি করা কুলের রাশি। বাবে নাবে ছোট ছোট চেয়ার প্রাভ্য প্ৰিকের বিপ্রায়ের ভ্রভ



#### ব্বেদাই প্রাদাদ-সংলগ্ন কুন্র প্রোভবিদী

বা পাও, ভোগ করে মাও, বাজীর বাভার শৃত বাক।" এমনি
আর একট ভাভ দেবেছিলার—শেনিশ দেকীর। আফ্রিকার
উত্তর কোনে ক্ল বজর। ওবানকার অবিবাসীরা বেন ওব্
হাসভেই পৃথিবীতে এসেছে। কোন চিভা, হংব, ভাবনা বেন
ওবের স্পর্ণ করেনি। জীবন ওবের হৃচ্ছিভার বোঝা বরে
ভারাফাভ হর নি। স্পেনিশরা সবচেরে প্রাণ-চক্চল ভাভ বলে
বিব্যাভ, ভার পরেই করাসীরা। জীবনকে ওরা নিরেছে
নিভাভ সহজভাবে। ভাই অনর্বক হৃচ্ছিভার বোঝার এরা
ভারাফাভ নর।

क्रिय (क्षेण्टम अटम मनक् करामाम कमकर्ष (प्रवटक वाधवा যাক। দিয়েপ থেকে প্যারিস আলার পথে এক করানী च्छ्यविनाव मान चानाथ हत. चिनि करतको छडेवा द्यात्मव শাম বলেছিলেন, ভার মধ্যে কনকর্ড একটা। ভাষা विलाहे अफिरा प्रथम अवारम अरम श्रीव्याम बाच चर्म मेही। অবাক বিশ্বৰে ভাকিৰে মইলাম প্যায়িসের প্রশন্ত রাজপর্বের क्टिंग अन वर्ष अवर अन क्यांकीर्य वाचा व्य कावाब बाकरक शास्त्र का त्यम कत्रनात बाहेरत दिल। इसके ताका बार्ज वित्नात् द्ववात्व त्ववात्म बक्के चुक्किक-ना क्वक्छ। बवात्व (बडी बिक्टिवर्ड, इपूर्वम मूरे, (बाक्म मूरे बवर चावछ ক্ষেক্তনকে 'গিলোটন' করা হয়। সেই বজাক্ত স্থতি জাপ कुन्राक शास्त्र नि, वा कारक अस्य निरम्भिन वाबीनकात चानिकाम। अधिक दाखाद हरे गार्थ चर्क चालाक्यामाद দাৰি আৰু প্ৰতিষ্ট ৰাভা বিষে দেকেতে অভতঃ কৃষ্টি ৰোটৰ চলেতে গভব্যহল অভিহুৰে। অবেককৰ চেটা ক্রলাব রাভা পার তবার ভত। ভিছ কার নাধ্য এই বিংশ শভাশীর গভির সাবৰে এগিবে বাব। অবেক ইডডড: করে ব্যৱকরেক

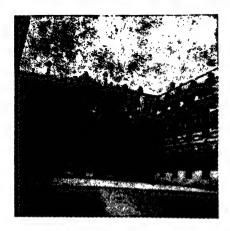


হেবৰ হৈ প্ৰালাহ

সাজান-গোছান পরিকার-পরিক্ষর পার্ক বেবে মনে হ'ল এরা জানে কি করে বাজুবের চোধকে তৃত্তি বিভে হয়। বিধাতার লাম এরা হ'হাত ভরে নিতে পেরেছে, পেরেছে সে আন্মর্কাদের বারাকে নিজেদের তৃত্তির হোঁরার সার্থক করতে।

পর বিম ভোরবেলা— অবঞ্চ আমাদের ভোর মহ, পশ্চিমের সকাল বেলা বশ্টার আবার বের হলাম পূভার বিউক্ষির্থের উদ্দেশ। পথ জানি না, ভাষা জানি না, ভগু জানি গভার হানের নার, ভাও ভাল করে উচ্চারণ করতে পারি না। জারণ আমি বিবেশী, বিবেশীর ভাষা ভগু পড়ভেই জানি, ভার ববেশীর উচ্চারণ লোকের মুখে মুখে কভটা পরিবর্তিত হরেছে ভার ববর রাখি না। ভাই বধন নির্মান্তর প্যারিলের রাজ্পথের পথিককে জিজানা করলাম সূভার কোধার, কেউ বা ভাকিরে হাসল, কেউ বা বললে, ঐ বিকে। বাকে বেখলে মনে হর এ হয়ত ইংরেজী বুখনে ভাকেই জিজানা করি, কেউবা জবাব বের, কেউবা বিবেশী বেথে কুপা ভরে আচ্ল বিরে বেখিরে বের অভকে বিজ্ঞান করতে, ভারণ সে আমাদের ভাষা আন্তর্গার বিভাগা করতে, ভারণ সে আমাদের ভাষা আন্তর্গার প্যারিলের অভীত স্বৃত্তি-ভাঙার— সূভার বিউলিয়র।

পৃথিবীর বংশ্য একট শ্রেষ্ঠ অটালিকা এই নৃভার। করালী বিপ্লবের পূর্ব্ধ পর্যান্ত এটা ছিল ফ্রান্সের বালপুরী। ৪৮ একর করির উপর চতুর্কিকে বিছত এই অটালিকা করালী ছালত্য-শিরের শ্রেষ্ঠ নিম্বর্শন। করালী বিপ্লবের পর এই অটালিকা ব্যবহৃত হর করালী সামাজ্যের শিলাগার ছিলাবে। কালা বিভাগে বিভক্ত করে এক-একট অংশে করা হরেছে এক এক: কাতীর শিরের স্বাবেশ। ভাত্য্য-শিরের অপূর্ব বির্ধন কোল-ভি-বেলো—বীত ভাত্ত্বের পাণর কেটে গড়া বৃত্তি তেলাল ইাভিরে আহে অপরূপ বহিবার, শিরী ররে গেছে অভালার অভ্যারে, কিছ তেলাল লগোরবে বোষণা করছে শিরের অবগান। ভালের ত্রুক্ট উপেন্দা করতে পারে বি, বৃত্তিটির হাত হুট ভেঙে গেছে, শির্টের হালে হানে নাই হরে গেছে ভিছ ভাতে ভার লৌন্দর্য বা অপরূপ লাবণ্যের হানি হয় নি। বিভ হাতে অলেষ লাবণ্যবারী তেলাল অপত্যের সমক্ষে ইাভিরে বলহে, "আবি বাছ্যের সেরা স্ক্ট।" লোক্চকুর



লুভার মিউজিয়ন

অন্তরালে নির্ক্তনে বসে বে শিলী এমন অপরূপ প্রতিষা গড়ে ছুলতে পারে তার শক্তির কথা তাবলে নাহুবের শিল-প্রতিতার প্রতি প্রবাই ভাগে। তিল তিল করে গড়ে ভোলা তিলাভ্যা— ভগতের বত লাবণ্য বত কোমলতা সবই কি একল্লিড হরেছে ঐ তেনালের বুবে, বড়ে, বেহ-স্বমার। বিবাতার স্কট্ট এ মর, এ বাছবের প্রেনে মাছবের শক্তিতে মাছবের আপন মনের নার্বী নিশিবে স্কটি হ্যেছে বে।

স্ভার বিউছিববের আর এক অংশে একি ভারব্যের আরও
হ'একট বৃষ্ঠি পাওরা বার। একট বিধবিব্যাভ এপোলোর
বৃষ্ঠি আর একট দেবী বিদার্ভার। একট পাববের বৃষ্ঠির গারে
আর একট রঙীন পাবর—দেবীর গারে চাবরের বভ ভরে
বলাব হরেছে। অধিকাংশ বর্ষরমূর্তির বিশেষভ এই বে, ভাবের
বেছের প্রভিট রেবা বয় বা বেহাবরবের প্রভিট ভাল স্থানট
হরে সুক্টে উঠেছে শিলীর বিশুব হডে।

বিউলিববের অভ একট অংশে আছে সেরা রঙীন চিত্র।
ভাবের শ্রেণ্ট ভাগ করা হরেছে বিভিন্ন শির-নীতি অনুসারে।
বিভিন্ন বেশের চিত্রাবলী ভাবের নির্দিষ্ট ভারগার রাধা হরেছে।
এবের বব্যে আছে ভা ভিন্নির হবি, রাকারেলের বাভুস্থি
প্রভৃতি কগতের বত সেরা চিত্র। এই রুটো গ্যালারী কেবা ববন

শেব করে বেরিরে এলাব ভবন নত্যা বেবে এনেতে প্যাতিনের বুকে। সূর্ভাবের অভ অংশে কি আছে বেবার আর নবর হ'ল না। 'এই শির-নন্দির কালের হুভাবলেপ উপেকা করে আহ্বান করেছে করতের সকল শিরাহ্বাসীকে ভার অশরপ সংগ্রহ দেববার কর।

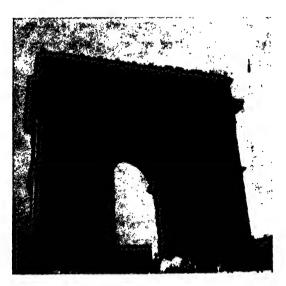
পরবিন অনেক বৌজাবুঁজি করে একট আপিন বার করা পেল বেবান বেকে বিবেশীদের প্যারিসের বিভিন্ন অঞ্চলে নিরে বাবার ব্যবহা করা হয়। ভাবের লকে বাকে ইংরেজী ভাষা জানা গাঁইত। খনের সলে ব্যবহা করলান, একবেলা দেবাবে ঐতিহাসিক প্যারিস, একবেলা আধুনিক প্যারিস আর বেবাবে



নেপোলিছানের সমাৰি

বিষ্যিতিত হোসাঁই নিকেন্তম। সভাল ১১টার রওমা হওরা পেল প্যারিসের ঐতিহাসিক স্থৃতিবিজ্ঞিত অঞ্চলের উদ্দেশে। প্রথমেই পেলার দেওঁ ব্যাগভেলিন নীর্জা—নগুলনা শতালীর এই নীর্জাট বহন করছে এটাক ভাশুর্ব্যের নিদর্শন। নীর্জার মধ্যে করেকট প্রভরন্তি সভিয়ই পুন্দর। এর পর আরবা দেওঁতে পোলার বেশোলিরামের সমাবি-মন্তির। সরাবিহাসট বেবে থেকে প্রার হ' সূট নীচে। ঐত্তের দশ কন শিক্তের প্রভরন্তি সমাবি-ছামটার চার পাশে গাঁভিরে আছে। উপরে বেখানে ঐত্তের প্রভিন্ন ভালি রিজির আছে। উপরে বেখানে ঐত্তের প্রভিন্ন জিল্ল আছে সেই বেলীর উপরিভাগ (অনেকটা আরাকের;বেনভার চভূর্বোলার রভ) হতে আলো উক্রে পভ্যত্ত গোলালী চিজের ভিতর থেকে। কোল রক্তর আলো বা প্র্যালোক ছাভাই বেশ পরিকার বেশা বাজে। শিহন দিকের একট কক্ষে রক্তিক আছে বিভিন্ন জাভির পভাকা বা করালীরা কর করেছিল নেশোলিরনের বেণ্ডার। বিল্যের আর এক ক্ষেণ্ডা-রেশোলিরনের প্রথম্বা বী বোলেকাইনের বর্ণ্ডা-মুর্ন্তি।

এর পর বেশতে গেলার বৃহ-খৃতিখন্ত। এই ভারের চতুর্দিকে গত হুই বভার্তে বিহুত করানী নৈতকের নাম গোলাই করা আছে। এক পালে প্রথম বিশ্বযুদ্ধবিদ্ধতিক ভারিও আছ অপর পার্বে বিভীর বহার্ত্তের। বাকবাবে গ্যার বার্ণারের নাহার্ত্তে অববরত উর্বৃত্তী অরিপিবা দরণ করিবে বিজে সেই শহীরকের কথা—বাবে বাবে কেট এনে স্লের বালা বিরেও] একের প্রতি প্রতা বিবেদন করবে।



আট অভ টাছাক

'প্যাছিনন' করাসী ভাতির ব্যেণ্যকের সমাবিস্থাম।
এবানে আহে ভিটার হিউপো, এবিল ভোলা প্রস্তৃতি বিব্যাত
ব্যক্তির সমাবি। প্রবেশপথের উপরিভাগে লেখা আহে, "ক্রাত্
ভার ভাতির ব্যেণ্যকের প্রতি ক্রম্ভ ।"

বিশ্ববিশ্যাত বোতর্ দার বীর্জা গবিক শিরের নিদর্শন। নোতর্ দার এবং দেউ ব্যাসভোলন উতর বীর্জাতেই করেকট 'গোলাপ-ফানালা' অবাং গোলাপের পাণ্ডির আকারে আঁকা কাঁচের জানালা আছে। বুডের সমর এউলি সরিবে বেওবা হরেছিল।

'একেল টাওৱার' পৃথিবীর সর্ব্বোচ্চ তত। আনাবের লাইড বললে, "Eiffel Tower represents Paris more than anything else"। রাভার এক পার্থে একেল টাওৱার আর এক পার্থে নরবলোভন উভান। প্যারিসের আশেপাশে বেবানে একটু কাঁড়া ভারগা আছে লেবানেই অপূর্ব্ব সব্ব ত লোভনীয় সুলের বেলা। এবন পুলাবির ভাত বোব হব আর বেই।

নিৰ নদীর উপরিছিত নেডু পার হরে রঙনা হলাব কোল হৈরের উভেতে। চডুর্বল নৈই লুভার প্রাসাদে বাকা প্রহুল বা ক্যায় গড়ে উঠেছিল এই কোল ই প্রাসাদ। এবন হববর প্রাসাদ গোটা ইউরোপে বিরল, প্রভিট ককে অপরুপ ক্ষা, কাজের বিধ্যাত শিলীদের অভিত নানা চিত্রে স্থাতিত বাচীরগার, এবন কি ককের প্রশোভন নীলিং পর্যন্ত অপূর্ক চিত্রমভিত—নেপোলিরানের করোনেশন, 'দুই'বের ও তাবের বেহসীবের প্রতিহ্নবি প্রভৃতি নালা চিত্র। একট ককে যক্তিত আহে দেই টেবিলট বাতে ক্রেস্বাই স্থিপর বাক্ষরিত হয়।



रेक्न है। ब्याद

সবচেরে আকর্ব্য ক্ষেস্থি প্রাসাহ-সংগর উভাব। চার
পাশের নাধারকর কুল ও বাদের নিনা-করা গালিচার নীচে
বিরে নেরে গেছে পর—সেই পর বরে এগিরে চললার। রাভার
হুই পাশে নামা ভাতীর রক্ষের সারি—কোনট উঠেছে সরভূবি
বেকে, কোনট-বা নেরে গেছে অনেক নীচে। ভারই নির বিরে
বরে চলেছে হোট একট লোভবিনী, বাপে বাপে নিরাবভরও
করেছে ভার প্রবাহ। পঞ্চল স্ই-এর কীর্ত্তি এট। বাবে
বাবে ভ্যোংসা রাভে গভোলার চঙে রাভা বেক্সভেন অলবিহারে, ভাই প্ররোজন হরেছিল এই সক্ষ্যলিলা প্রবাহের।
উভানের প্রভিট রুক্ত নাকি টবের উপর হাপিত। ভারও
স্ক্রাট বিনের হুই বেলার বাগানের একরকর বং প্রক্ষ ভরতেন
বা—ভাই বাভে ভার ইক্ষান্থবারী বাগানের বং ব্যলানো বার
এই ব্যবহা।

রাজ-প্রানাদের অবভিচ্বে রাজাভঃপুরিকাদের থাকবার কর হোট একট অটালিকা—চার পাশে উভাবের বনোরব পরিবেশে হাবট লোভবীর, ছোট বোভসা বাড়ী, কিছ গৃহ-সজার জের্নাই প্রানাদের নদে ভূলবীর। এই প্রানাদের নর্ম শেব অবিকার হিল বেরী এইওবেটের—ভারই পরিবার ও বন্ধুবর্দের হবি ও নরাট বোড়শ স্ই-এর আবক প্রভিন্তিতে স্পোভিড। বিশেষ করে বেরী এইওবেটের শ্বাা, টেবিল, প্রাব্য-কক কর্মকের বৃষ্টি আকর্ষণ করে।

পেডি-টাছানন বেকে কেরার পরে বেবতে গেলাম 'ক্যাহেল নিউলিয়ন' অবাং স্নাটদের শক্টশালা। স্ইবের ক্ষেত্রট বানের সলে রচিত ক্ষেত্র নেশোলিয়ানের ব্যবহৃত ক্ষেত্রট কাক্ষলার্য বচিত অথবান। একট ব্যবহৃত ক্ষেত্রল নেশোলিয়ানের প্রথম। পত্নী বোলেকাইনের বিবাহে, আর একট বিভীর পত্নীর হত।

জেস হি প্রানাধ থেকে কেরবার পথে বলে হ'ল, করাসী ল্যাটেরা জীবনকে পরিপূর্ণভাবে ভোগ করেছেন । নিজেকের বৃষ্টিকদী প্ৰেক কীবনের বে অৰ্থ টারা করেছিলেন তার বৃদ্যা বিতে ক্রেছিল পেন সনাট ও সনাজীকে। ক্ষরাসী বাব্যের ক্ষরণ বৰ্ণন ক্র্মণার চরন সীবার পৌছেছিল তথনও বেরী এটিওনেট টার প্রাসাদে বিভোর হরে চর্চা ক্রেছেন শিলকলার। প্রকার হিতে বা বাবে টারা কি ক্রেছেন সে বিচার না করে একথা বলা বার—ভালের প্রচেটার বা গড়ে উঠেছে তা আক পৃথিবীর বর্ণনীর হরে আছে।

# কবির ব্যথা

## এশোরীজনাথ ভট্টাচার্য্য

বেৰে প্ৰভ বেলা পেকে আলে সৰ চুল

মূৰে ফুলবৰল হাঁডঙলি নেয় মুট,
ভবু জীবৰ-ভক্লতে গাহে বোর বুলবুল
বোর বনের কুঞ্জে মূল করে স্টোপুট।
বেহ পীডাকজন দানিব্যালাভানা
ভবু ফুলনে বেবে প্রাণ করে আন্চান্,
বভ হুংবেরি বিবে হইলা হুংবহনা
হল বেবে গঠে কেন জানি না ঠুবরি গান।

থারে সক্ষল নরলে বরকীর পানে চাহি
দেবি পুলর এবং পুলরীবের মেলা,
আনি পরি গৌরবে আনার বৈত নাহি
নোর গৌরতে তরে থঠে বিহারের বেলা।
হঠাং বিহার-বেলাতে আগমনীসাম গেরে
বাঁবি গোলাপের সাবে জীবনের হিজ্ঞাল,
লারা প্রতিলীলার জীবনোংসবে চেরে
আনি পুলে বাই স্থা নরবের ক্লরোল।

সাহা। চিড আমার সুকরে মিশে বার
বেধি তগবান বেন নোর পাশে ভারাভাহি,
এই নিধিল ভূড়িয়া সভলেরি চিডায়
আমি স্বারি বনের বোষনে বেঁচে আহি।
এই ভূবনপর সূঠেতে বেলিন থেকে
ভারে আনে বেকে ভার নাকে বিছু আনি,
সেই লীলাশব্যাতে এই মনোকেত হেবে
বৈতিত হিছু এক লাবে আনি ও কাংবানী।

ভবে হঠাং এজদা বেরালী সে ভগবান
ভার দেরালী আলিতে সাব হ'ল ননে ননে,
সারা অগং ভূড়িরা ভরিল দে বীপনান,
আমি কবি হরে নাবে রহিছু সন্দোপনে,
সেই অগংশিলী বেরালে দেরালী আলি
সারা অগং ভূড়িরা রচিল স্ক্রেরেলা,
ভার সেই থেকে চলে সঞ্জন বারবেরালী
আমি কবা সেঁবে ভরি ভালবাসাবাসি বেলা।

সে বে নীলার বর্ধ স্বারি আভালে রহি'
হেবা বরা-হোঁরা সে বে বের না ভাহারে ভভু,
আমি আঁবির সর্বে রাছবের ভ্বা বহি'
লিবি তাবেরি বেবনা—চিনিল না ভারা ভবু !
আমি তাবেরি লাগিরা আলিছ আমার আলো
বভ মরে ভালোবেলে লিবিছ ভাবেরি লেবা,
ভবু ভারা চিনিল না, বালিল না ভালো হোরে
ভাই স্কলের বাবে ববে ববে কিরি একা!

ভাই বাস করি আবি নির্জ্ঞানে এক কোণে
বোর সদী পাইরা দুর্কা তুসনীবন,
বোরে বারা হেলা করে ভাহারেরি বলনে
একা বনে বনে বাই বাজাই অক্সক।
এই সভ্যাকালেভে আলারে রেখেছি দীপ
ভার অক্ষারেভে বদি কেট আনে কারে,
আবি ভারার সনাটে পরাইরা বিব উপ্
বহি ভাবিগো সভ্যি কেট ভালোকানিরাতে ।

## ু রাজনগর

# এননীমাধব চৌধুরী

ইক্সনের কেলার সদৰ টাউনের আলবার্ট পার্কে বজ্তা ছইভেছিল। করেকজন বদেশী প্রচারক আলিবাছেন বাহির ছইভে, তাঁহারা বজ্তা করিভেছিলেন। পার্কের বাহিরে রেজলেশন লাটিবারী করেকজন পুলিস ইাড়াইরাছিল। ইক্স করেকট হেলেকে সদে লইরা বজ্তা ভূমিতেছিল।

বামরীপাছার পিটুমি পুলিসের অভ্যাচারের প্রভিবাদে সভা হুইছেরিল। বক্তার পরে বক্তা ট্রমিরা সে অভ্যাচারের ছাহিনী প্রোভাদের বলিলেন। একজন বলিলেন—বরিপালে বপের আরল কারের হরেছে। ছানীর লোকেরা কুলারের আদেশের বিরুদ্ধে অভিযোগ করে বে সংবাদ বেলনী কাগজে পার্টিরেছিলেন কলকাভা সেন্ট্রাল আপিসে সে টেলিগ্রাম আটক করা হরেছে। কুলারের তাবেদার বরিপালের ব্যাজিট্রেট এবার্স মের আদেশে অধারা এক ভদ্রলোকের বর ভেঙে দিরেছে। তার অপরাধ—সেই বরে বন্দে নাতরর্ কনি দেওরা হরেছিল। রারাব্যের বর্ণ্যে এগার বছরের একটিছেলে বন্দে রাভ্যম্ বলেছিল। সেই অপরাধে কালেটরের আলালভের সাবনে ছইপিং ট্র্যান্সেলে নিরে গিরে হাত-পার্বিধে ভাকে বেন্ত বারা হরেছে।

আর এক বজা বলিলেন—সুলার বোষণা করেছে সে
নাকি পূর্ববদের ছিলুদের দেবে দেবে। ন্যানিট্রেট ডেপ্ট ও
অভাত সরকারী কর্মচারীদের নির্দেশ দিরেছে তাঁদের শরিবার
অভ্যান পাঠাতে। সরকারী কর্মচারীদের ছকুমে ওর্বারা নাকি
রাজে অন্তলাকের বাভীর ভেতরে পর্বান্ত চুকে অভ্যাচার
করে। ওর্বা সৈতদের কার্ফেনির কাছে নালিশ করলে সে
অবাব দেব—ভার কবা ওর্বারা শোনে না, সে কি করবে ?
ভেপুটরা রেঠাইওরালাদের আদেশ বিষেত্বে ওর্বারা বা চাইবে
কেনে, লান চাইতে পারবে না। হই কন বোকানদারের
নোকানবরের বেভার বদেশী বিজ্ঞাপন ছিল। ভারা সেই
বিজ্ঞাপন সরিবে কেলতে অবীকার করার ভাদের বেভ বেরে
অন্তর্কর কর্মন করা হরেছে।

ভূতীর বক্তা উট্টরা বলিলেন—বৈষণসিঙে ছোট ছোট ছেলেরা সূটবল থেলতে থেলতে বাবে বাবে বলে বাতরত্ব বলে চীংকার করছিল। শুনতে পেরে ব্যাকিট্রেট 'ক্লার্ক' ভার চাগ-মালীকে আবেশ করলে কেলেদের বরে আনতে। ছেলেরা চাগরালীকে আসতে দেখে চুটে বাকীর মধ্যে পালিরে গেল। ব্যাকিট্রেট খবল নিজে ভাগের পেছনে পেছনে দেখিতাতে লাগল। ছেলেদের বরবার ক্লানে লোকের বাকীর অক্তর-বর্তনে চুক্তেও ইড্ডড: করলে না। বুলনার পুলিল নাহেব দোকাশদারদের শাসিবেছে, ভারা দোকাশে বিলেভী ভিনিপ না রাখনে বরিশালের যত কঠোর ব্যবস্থা অবলয়ন করা হবে। সিরাজগঞ্জে হাজদের এক সভা ভাঙতে সিরে পুলিস শহরের পথে বেপরোরা লাটি চালিবেছে, খীলোক, শিত পর্যাত্ত বাদ যার নি। বংপুরে বে সকল মিউনিসিপ্যালিটির সভ্য কুলারের অভ্যর্থনার জন্য ভোট দেন নি তাঁদের স্পোল কনেইবল করা হরেছে।

চতুর্ব বক্তা বলিলেম—বর্কবোচিত মনোরভিসম্পর কুলারকে পূর্কবিদ ও আগামের মসমদে বসানো হবেছে। অত্যাচারী কুলার হবেছেম সমাটের প্রতিমিধি। কুলার জল বলেছে, আমি রক্তপাতের জভও প্রস্তত। অতি স্থসংবাদ । দেবা গেছে যে, পৃথিবীর সকল দেশেই রক্তপাতের কলে ভাতীর আন্দোলমের শক্তি রৃদ্ধি পেরেছে। দেশে বে অসভোবের আগুম অলহে কুলাবের কুশাসম তার জন্য দামী। কোম সভ্য দেশে এই কুশাসমের তুলমা নেই।

শ্রোভাদের দিকে চাহিলা বক্তা বলিলেন—আপনাদের
একণানা চিট পড়ে শোনাছি। চিটিগানা লিবেছেন এক
ক্ষম মৌলবী। ভিনি লিবেছেন, কলাই বধন একটা
ভেড়াকে ক্ষমাই ক্ষমার পরে দেই রক্তমাণা হাভ আর একটা
ভেড়ার পারে আদর করে বুলার ভবন বেচারার প্রাণে ভর
হাভা আর কি ভাব হতে পারে ? সরকার ববন আদর করে
বুসলমানদের পিঠে হাভ বুলান সে আদর কি ভালের ভাল
লাগবার কথা ? সরকারী কর্মচারীরা প্রকাভ ভাবে দেশের
লোক্ষের মধ্যে বিভেদস্টির চেটা ক্ষমেছন। ইউরোপের ভোল
ভাভি, এমন কি আমেরিকার লোকেরা পর্যাভ ক্ষমও কি
ইংরেজ ভাতির প্রশংলা ভ্রেছে ভোলির দিয়ে ইংরেজ ভোলালের

সভার এই সমর বিষয় হউগোল আরম্ভ হইল। লাটিবারী
পুলিসের দল ইহার আগেই পার্কের মধ্যে চুকিয়াছিল। বাজাবাজি করিয়া গোলমাল বাবাইয়া বিয়া ভাহারা লাটি চালাইছে
আরম্ভ করিল। বেশরোয়া লাটি চালমার ফলে সভা ভালিয়া
পেল। গোলমাল বাবিল ফুল ও কলেখের হেলেখের লইয়া।
ইলকে কেন্দ্র করিয়া গোলমালের স্তি হইল।

ইজ রাজনগর হইতে সবে বাহিবে আসিবাহে। শাভিপূর্ণ সভার উপর এই বরবের পূলিনী আক্ষমণ ও নির্বিচারে লাষ্টি চালানো এই সে প্রথম দেখিল। হয়ত সমর পাইলে সেও নিজের সদীবের লইরা চলিরা বাইত, কিন্তু সে সমষ্টুকু পূলিস ভাহাকে বিল না। পিত্রন হুইতে লাষ্ট্রর ভাঁতা পিঠে লাসিতে নে কিরিরা গাঁচাইল। ইজ অসীম বলশালী বুবক, রাজমগরের প্রাচীন ঐতিছের উভরাবিকারী, লাটিরাল আজাহার সর্থারের প্রির শাগরের। গুড়া বাইরা নে আহত ব্যানের মন্ড লাকাইরা উট্টল। চোবের মিমিষে প্লিসের হাত হইতে লাটি হিমাইরা লইরা সে এক লাবিতে তাহাকে বরাশারী করিল। সদী-বিগকে পার্কের রেলিং উপকাইরা চলিরা বাইতে বলিরা সে সেবামে গাঁচাইরা রহিল। পার্ক প্রার বালি হইরা আসিরাছিল। অনপাঁচেক হেলে ছাড়া বাকী ছেলেরা ইজের কাত বেবিরা বত শীল্প পারে সরিরা পঢ়িল। আট-দশ কম প্লিস লাটি উঁচাইরা ভাহার বিকে মুটরা আসিল। কাছে আসিরা ইজের চেহারা ও লাটিহাতে ভাহার গাঁড়াইবার তদী দেবিরা ভাহারা সরিরা গাঁড়াইল। ভাহারের ব্রিতে দেরী হইল না, ইহাকে বাঁটানো প্রকৃষ্কির কাল হইবে না।

ইভিন্নরে প্লিন-দলের ভারপ্রাপ্ত দারোগাট দেবামে উপস্থিত তইল। হুডম্টি প্লিগট ভারার অভিযোগ দানাইল। দারোগা আদেশ দিল—উহার লাটি কাছিরা লইরা গ্রেপ্তার কর। ব্যোহ্রত এক ক্ষম ক্ষেত্রকৈ বলিল—তেই বাবুকী, লাটিটো ভাততে কেলিরে দিন।

ইক্স হাসিত্ব। বলিল—লাটিটা কেলে দিই আর ভোমরা লাটির বাবে আযার যাথা ভালো, কেমন ? এস, লাটি কেন্দে মাও।

দারোগা অবস্থাটা বুবিরা লইল। ইলের চেহারা ও হালি ভাহাকে আফুট করিল। সে বলিল—লাটি ছেড়ে দিন মশাই। কেট আগনাকে হোঁবে না। ভবে দরা করে আনার সলে থানার বেভে হবে।

ইলের সদী করেক জনের দিকে চাহিরা সে বলিল— আপনারাও আহুন। এক বাত্রার পূথক কল হওরাটা টিক নয়।

ইল লাটি কেলিয়া দিয়া দলবল সহ থানার চলিল। হারোগা কান্দের বেলার বুব হঁ শিরার। ইল ও বাকী গাঁচ ক্ষম হেলের মধ্যে কেহ থানা হইতে বাড়ী কিরিভে গারিল না।

পরের দিন পুলিসকে কর্ত্তব্য সম্পাদনে বাধা দেওরা ও পুলিসকে প্রহার করিবার অভিযোগে ইল্লের ও সেই ব্যাপারে লাভাষ্য করিবার অভিযোগে বাকী পাঁচ কনের বিচার হইল। সরাসরি বিচার। ইল্লের হর মাস ও আর সকলের হই মাস করিবা সক্রব কারাদতের আদেশ হইল। ইল্লেনে এটেটের উক্লি সংবাদ পাইরা বধন ছুইরা আসিলেন তবন বিচার শেষ হুইরাছে। তিনি আশিলের অনুমতি ও আশিল সাপকে ভানিনের প্রার্থনা করিলেন। ব্যাক্তিটে অনুমতি দিলেন, কিছ প্রার্থনা করিলেন। ইল্ল দলবল সহ ক্লেনে চিকল।

উক্লিবাৰু আপীলের ধরণাত করিলেন। তার পর বিভারিত বটনা আনাইরা হরিবারারণকে টেলিঞার করিলেন। টেলিপ্রাম পাঠাইরা আহালতের কান্ধ নারিরা তিনি কিরিয়া গৈবিলেন ইলের এক কন তৃত্য একবানি বোলা টেলিপ্রাম হাতে তাঁহার অপেকার বলিরা আছে। তাহার হাত হইতে টেলিপ্রামবানি লইরা পড়িরা তিনি মাবার হাত নিরা বলিরা পড়িলেন। হরিনারারণ টেলিপ্রাম করিরাছেন—ইলেকে অবিলয়ে রাজনগরে আলিবার বত, তাহার রাভার অবস্থা হঠাং বুব বারাপ হইরা ইাড়াইরাছে। শহরের বড় ডাভারকে সলে লইরা নে বেন কালবিলয় না করিরা রঙনা হর।

কিছুক্ৰণ চূপ কৰিবা বসিবা বাকিবা আনালভের পোশাকেই ভিনি ডাক্তাবের বাকী ছুটলেন। সম্বন্ধ অবহা জানাইবা তথনই ডাক্তাবের রঙনা হইবার ব্যবহা করিলেন। উাহাকে বলিলেন—ছরিনারারণবাবুকে বলবেন আমি বেষন করে পারি ইক্রকে জামিনে বালাস করে রাজনগরে পাঠাবার চেঙা করেন।

পর দিন ভাজার বর্থন রাজনগরে পৌছিলেন ভবন জগনালীর দীর্থ রোগভোগের শান্তি হইরাছে—বড় ছেলের জড় করেক বংসর ব্যাপী বিলাপ বানিরাছে, বানীকে হাছিরা পাছে এক দিনের জড়ও বাঁচিরা বাকিতে হয় এই উৎকঠা শান্ত হইরাছে। শেব নিংখাস সইবার আগে বানীর পারে বাবা রাবিরা জগনালী বর্থন চোধের ইনিভে বিলার-সভাবণ জানাইলেন, হরিনারারণ ভবন বনে বনে বলিলেন—ভূবি আনার আগে বাবে এ প্রভিচ্চা রাবলে, ভিন্ত ভোনার অভাব কি আনি সহু করতে পারব ? কবে আনার সমর আসবে ?

বভাৱ কৰেক ঘণ্টা আগে কগৰানীয় বাকবোৰ হইৱাছিল। ভাহার হই চোখের ভারা একিক ওদিক বুবিরা নীরবে কাহাকে বেন অবেষণ করিভেছিল। ভাহার হইট ছেলে, কিন্তু এমনি বরাত বে, মৃত্যুপব্যার পার্যে উভবেই অন্থপছিত। এভ ভাভাভাভি সব পেব হইরা গেল বে হোট নেরেটকেও লোক পাঠাইরা আনিবার সমর চইল না।

ভাক্তার আসিরাছিলেন অগবানীর চিকিংসা করিছে, হরিনারারণের অবস্থা দেখিরা তাঁহার চিকিংসার বাবস্থা করিছে হইল। বীরভাবে ডাক্ডারের মূর্ণে ভিনি ইক্রের ববর শুনিলেন। ভার পর স্তীর শেবকুতা সারিরা আসিরা শুরা-গ্রহণ করিলেন। ভাভার পরীকা করিরা দেখিলেন, তাঁহার রক্তের চাপ অভাবিক বৃদ্ধি পাইরাছে। হার্টের অবস্থা ভাল বর।

ভাজায়বাৰু বৰ্ণ ইল্লেয় থেৱার ও বিচার সহতে উদ্দিশ-বাব্য বুবে শোলা ক্থাগুলি হরিলারারণকে বলিভেহিলেন, ক্থন কীবানক সেধানে উপস্থিত হিলেন। তাঁহার পরীর ক্থনও সম্পূর্ণ সূত্র হয় নাই। ক্থরালীর অস্থবের সংবাদ পাইরা লীকে সন্দে সইরা তিনি সেই যে এ বাতীকে আনিরা- ছিলেৰ এ পৰ্যাত আৰু খগুহে কিবিতে পাৱেন নাই।

হরিশারারণের অবছা দেখিবা ভিনি তাঁহার সেবা-ডাজারার ত সত্মীকে আনাইলেন। ছরিশারারণের বড় বেরে মুলরী শোকে এবন অছির হইরা পভিরাহে বে, তাহাকে দেখিবার তেই লোকের দরকার, শিতার সেবা সে আর কি ক্রিবে? চিন্নরীকে বড়রবাড়ী হইতে আনিবার জন্য জীবানন্দ লোক শার্টাইবার ব্যবহা করিলেন।

এই সৰ ব্যবহা কৰিয়া তিনি ভাবিতে বসিলেন ইল্লের
স্বাহ্ব কি করা বার। উজিলবারু আহাস দিরাছিলেন বটে
ইলকে ভানিনে থালাস করিয়া রাজনগরে পাঠাইবেন, কিছ
ভীবানক ভানিতেন এ কাজ তেনন সহক্ষে হইবে না। বদেশীওবালা কুল কলেজের ছাল্লেরে উপর পাসকসন্তাদারের যে
প্রকার বিষেষ ভাব ভাহাতে পুলিস কাহাকেও একবার কোন
উপলক্ষে বরিতে পারিলে ভাহার নিজুতি পাওরা হুর্বট।
হঠাং তাঁহার মনে পভিল বে, ইল্লের আগীলের বিচার বে
কোল ক্ষের কাছে হইবে ভিনি পূর্বে ম্যাজিট্রেট ছিলেন।
বেজার ভিনি পাসনবিভাগ হইতে বিচারবিভাগে বদলি
হইরাছেন। ম্যাজিট্রেট থাকাকালে ইহার অবীনে ভিনি
কাল করিরাছিলেন। কিছু ছন্যভাও হইরাছিল তাঁহার সলে।
ভল্লেকা ভাভিতে আইরিপ, ইংরেক ভাভি সম্বন্ধ তাঁহার
মনে বে একটা বিরূপ ভাব আছে ভাবানক ভাহা সেই সমরে
সভ্য করিরাছিলেন।

জীবামক হির করিলেন, তিনি নিজে সদরে বাইবেন।
ব্যাজিক্লেটি ও জেলাক্ত উভরের সলে দেবা করিলা ইল্লের
ভাষিন সহছে চেষ্টা করিবেন। ত্রীকে ভাকিরা তিনি তাঁহার
সলে পরামর্শ করিলেন। ত্রিমরনী সাঞ্জতে বলিলেন,
ভূমি আকই বাও। দিদি অকালে চলে গেলেন। কর্তার বা
অবহা দেবছি তাঁর ভালমক কিছু হলে এত বড় সংসারটা
ভেসে বাবে। ইল্লকে এবন কাছে পেলে হরভ ওঁর অবহা
ভালোর দিকে বাবে। এমন বিপাকে একটা সংসার পভতে
পারে ভাষাও বার না। একটু বামিরা বলিলেন, চিরকাল
ভাষরা এঁদের কাছ বেকে উপকার নিরেছি, এবন এঁদের এই
বিপাদে বেটুকু সাব্য করভে হবে। জেলের বব্যে ইল্ল ববন
ভাবের মুক্তাসংবাদ পারে—

কৰা শেব না করিবা জিনরনী আঁচন ভূলিবা চোৰ ব্ছিলেন। ইজের অবহা মনে আসিতে তাঁহার চোৰ হাপাইরা কল পড়িতেছিল।

ভিনি কিবিয়া না আসা পর্যন্ত ভাক্তারকে রাজনগরে বাকিবার অন্তরের ভানাইরা জীবানক সেই বিন বিকালে। সকরে রঙালা হইরা পেলেন।

উক্লিবাৰুর সভিত পরাবর্ণ করিরা প্রথমে ভিনি কেলা

আদের সদে দেখা করিলেন। পুৰাতন আলাগ-পরিচর বালাইরা লইরা ও পারিবারিক কুশল-প্রাাদির পর জেলা অভ হাসিরা বলিলেন, আই সি রার বাহাছর, অপুথের নাম করে আগনি বারু অখিনী দতের রাজ্য থেকে পালিরে এসেছেন। ইট ইক বিকমিং র্যাদার ওয়ার্ম দেরার। (সেধানকার হাওরাট কিছ বেশ গরন হরে উঠেছে।)

শীবামন্দ একটু হাসিলেন। বলিলেন, আমি একটা ব্যক্তিগভ কান্দের হল এসেছি। কিছ কান্দটা টিক হবে দিনা বুক্তে না পেরে সংখ্যাচ বোধ করছি।

জেলা কৰা হাসিয়া বলিলেন, আগনি পুলিলের লোক, নিশ্চর কোন বদেশীওরালার জন্য কিছু বলভে আলেন নি। ভবে আর সকোচ কিলের ? নির্ভিয়ে বলুম।

কীবাৰন্দ বলিলেন, ভার, আহি একজন খণেশীওরালার ক্ষ্য আপনাকে ক্ষ্পুরোধ করতে এগেছি।

জেলা জন্ধ—'কি বলগেন ? আপনি না একজন ভি. এল, পি, এবং রায় বাহাছর।'

শীবানক মান হাসিলেন। বলিলেন, আমার কথাটা দলা করে শুসুন ভার।

শীবানন্দ ইক্লের গ্রেপ্তার, ভাহার বিচার ও শান্তি, ভাহার মাভার মৃত্যু ও শিভার শারীরিক অবস্থার কথা বলিলেন।

ৰীর তাবে সব ওনিয়া জেলা জন্ম বলিলেন, বড়ই ছঃবের বিষয়, কিন্তু আমি এ ব্যাপারে কি করতে পারি রার বাহাছর চ

भौवामम--(जर्हे। जाशिम विरवहमा करत वजरवम छात । चामात क्यांका चारत वरम मिहे। क्षत्रक: हेक्टरस्त बाहेरब-করা উকিল আছে এখানে। তবু 'ভিকেলের' ( আত্মপক সমৰ্থের ) কোন প্ৰযোগ না দিনে আৰু ঘণ্টার মৰ্যে সরাসরি ভার বিচার করা হয়েছে। আমরা আগীলের দরবান্ত করেছি। আপীল মঞ্র হলে ভার মাভার আকমিক মৃত্যু ও পিভার শারীরিক অবস্থার কথা তেবে এবং ভার সাধানিক মহ্যালার কবা বিবেচনা করে জামিন দিতে প্রথমেণ্টের আপত্তি হবার ক্ৰা নর। ভবুও পুলিস আপতি ভুলতে পারে। अवात चामात वाकिश्व मिरवनमें। चामाविः। देवरण मुक कवा चामाव कर्षना। चामारक अ नियस वर्गमाना करें। कद्राक हरत । जाक इ'विम ह'न रेखात मारतत बुक्ता हरताह । ভার পিভা গুরুতর অসুস্থ। ইক্র তাঁর এক্ষাত্র পত্র। ইক্রের পিতা আনার বাল্যবদু, আনার একাছ হিতৈষী ভিনি। আমার পিতা দরিক্র ত্রাত্মণপতিত চিলেন, আমাকে ইংরেজী निका क्रियात मामबा कार दिन मा। जानात निकात नवज বায়ভার ইল্লের পিভা বহন করেছেন। বৃদ্যাপন্যার পারিভ আমার পরৰ বছর পক্ষে একমাত্র সাত্রমা তাঁর পুরকে ভাতে পাওরা। এই লাভুনাটুকু যাতে তিনি পান সেই ব্যবস্থা করে। स्वात करगरे जानवात कार्य अरमि।

বেলা কল সহায়ত্তির সলে জীবানলের কথা ভনিলেন।
বলিলেন—আমি আপনার কি সাহাব্য করতে পারি বলুন।

কীবানন্দ—ইলের অপরাধ প্রধাণ করবার মত ববেই
নাক্যপ্রধাণ আছে কি না আপীলের বিচারের সধর বেধা
বাবে। আপীলের গুনানি হতে দেরি হবে। কিছ আপনি
ভানেন প্রভ্যেক হিন্দুর অবশুক্তব্য নাড্প্রাছ সম্পর করা।
ভাত্তেই এই সমর হাড়া পাওরা ইলের পক্ষে একাছ প্রয়োজন।
আমি আপনার কাছে এই অস্থ্রপ্রচুকু চাইছি।

ৰেলা থক বলিলেন, রাষ বাছাছর, কাগকপত্র না বেৰে আমি আপনাকে কিছু বলকে পারছি নে। তবে ভামিনের— আছো আপনারা কি ভামিনের লরবাত করেছেন ?

শীৰানন--- আৰু করা হবে।

বেলা বন্ধ—তাই করুম। কি করা বার দেবব। আই কিল ব্যালার সরি কর ইওর ক্রেও (আমি আপনার বছুর কল রীতিমত হংধবোৰ করছি।)

শীবানন্দ ভাবিভেছিলেন, ম্যাজিট্রেটের সলে দেখা করার প্ররোজন আছে কিনা সেকবা ক্লকে জিজাসা করিবেন। কিছ তার শেষের কবা ভবিরা হির করিলেন উহা অনাবন্তক, বরং কল বারাণ হইতে পারে। ভাহাকে বছবাদ দিরা শীবানন্দ উটিভেছিলেন, জেলা ক্ষ বলিলেন—বস্থন, এ সম্পর্কে আমি আপনাকে একট উপদেশ দিতে চাই।

ক্ষাং হাসিরা ভিনি বলিলেন—কানেন, রার বাহাছর, আষার চৌদ বছরের ছেলে এক কন হবু 'সিন কিনা'র। কে কানে এক দিন আমার অবহা আপনার বছুর মত হবে কি না। ভাল কথা, আপনার বছুর ছেলেটর বয়স কভ হবে ?

শীবানন্দ-বছর সভের-আঠারো হতে পারে।

-- আপনার বছর আর্থিক অবহা কেনন ?

জীবামক —বনেদী জনিবার হয়। অবহা বেশ সজ্জ।

জক— আনি একটা কৰা বলছি। বিজ এবাউট ইট
(এ বিষয়ে তেবে দেবুন)। আপনাদের দেশে বোল বেকে
কৃতি-বাইশ বছর পর্যন্ত হেলেদের পক্ষে সফট-সমর। আপনাদের সমাজে ছেলেদের বিবাহ করানোর পক্ষে আঠারো বছর
উপযুক্ত বহস মনে করা হয়, নর কি ? ছেলেটকে চটপট বিরে
করিরে কেলুম। ইট উইল বি এ গ্যারাটি অব সেক্ট কর
কিউচার (এটা হবে ভবিডভের নিরাপভার একটা অব্যর্গ
উপার)। ওকে ববম আপনার আমার মভ চাকরি করে বেতে
হবে না ভবম ভাবমার কবা কি ? আপনার প্রক্ষ হ'ল
ক্ষাটা ?

জীবানদের ক্বাটা ব্য বনে লাগিল। তিনি ব্বিলেন ক্ষ বিচক্ষণ লোক। হরিদায়ারণের লাংসারিক অবহা বেরপ বাভাইরাহে ইজের বিবাহ করা প্ররোজনও বটে। চট করিরা একটা পুরাজন কবা তাঁহার বনে পঢ়িল। হরিনারারণের বিবাহ দিয়াছিলেন তাঁহার পিতা, হরিমারারণের পুরের বিবাহ দিবার ব্যব্যা কি তাঁহাকেই করিতে হইবে ? তিনি বলিলেন, আপনার ব্ল্যবান উপদেশের জভ বতবাদ। আবার বন্ধুর লকে কথা বলে -আমি এই উপদেশ পালন করবার ব্যাসাধ্য চেঠা তরব।

কোনা কৰ-ইবেন, ইউ স্থত ডুইট (ইা, ভাই আপনার করা উচিত।)

জীবানৰ উটিলেম। সাহেবকে বচবাৰ দিয়া বলিলেন, বেলেটকে সলে করে নিয়ে বাবার ক্ষা আমি আৰু অপেকা করব ভার।

সাহেব একটু তাসিলা জীবানদের জনবর্ষন করিলেন, ভাঁচার কথার স্পষ্ট উভন দিলেন না।

20

চিন্নরী বন্ধরবাদী হইতে আসিরাহে। বাদীতে পা
দিরাই সে মারের বরে সিরা বেবের পঢ়িরা কাঁদিতে লাগিল।
ললী তাহার আসিবার ববর পাইরাছিল। এ-বর ও-বর
বুঁদিরা অবশেবে ভাহাকে জগডাত্রীর বরে পাইল। চিন্নরীর
পালে বসিরা সে ভাহার রাধার, পিঠে হাত বুলাইতে লাগিল।
একটু পরে উঠিরা বসিরা চিন্নরী লল্মীর গলা জভাইরা বরিরা
কাঁদিতে কাঁদিতে বলিল—বাকে শেব দেখা বেবতে পেলার
না ভাই, এ হংব বে আবার মরলেও বাবে না।—লল্মীর চোধ
দিরাও তল পভিত্তিল।

চিনি একটু শাভ হইলে লখী বলিল—চিহু চল্, জাঠা-নশাৰের কাছে গিবে একটু বগৰি। ভোৱা কাঁদছিল, ওঁর চোবে এক কোঁটা কল দেই। কেন্দ্ৰ বেন হবে গেছেন—ওঁর মুখের দিকে আমি চাইভে পারি নে।

চিনিকে লইবা লক্ষী হবিষাবাবণের ঘরে চলিল। লক্ষ্মী এই কর দিন এ বাড়ীতেই আছে। হবিষাবাবণের লেবার ভার ভাহার উপরে। জিমবনী সভালে বিকালে আলেম, ডাভারের মভামত শুমিরা ঔমধ-পথ্যের ব্যবহা করেম, গৃছিনী-পৃত্ত সংসারের ব্যবহার কোন ক্রষ্টী মা হর সেদিকে লক্ষ্য রাবেন। ইজের কথা ভাবিরা তাঁহার মন সর্বহা হার করে। ভাবেম, বড় ভাই নিরুদ্দেশ, অভালে বা চলিহা গেলেম, চোথের বেখাটুকু পর্যান্ত হইল মা, এদিকে বাপের অবহাও এখন ভবন। সংসারের এই হাল আর ছেলেটা নিকে বইল কেলে আটক।

চিনিকে লইবা লখী ছবিশাবারণের কাছে বলিল। বেবেকে বেবিরা ছবিশাবারণ একর্টে ভাছার বিকে চাহিরা রহিলেন। চিনি ভাছার পাবের উপর উপুত হইবা কাঁকিতে লাসিল। একটু পারে লখী চাহিরা বেবিল ছবিশাবারণের চোবের কোণ বিরা খল গড়াইবা পড়িতেছে। ছবিশাবারণের চোবে কল বেবিরা ভাছার বন বেব একটু ছাল্কা ছইল।

লে উঠিব। বাভাইবা ব্যৱহ চাহবিকে চাহিহা বেশিল। ছবি-

নারারণের থির সেভারট একবারে অবত্বে পভিষা আছে, ধূলি কমিরাহে সেভারের গারে। হোট টেবিলের উপরে ক্ললানিভে কুল কবে শুকাইরা গিরাহে। বড় টেবিলের উপরে ক্ললানিভে কুল কবে শুকাইরা গিরাহে। বড় টেবিলের উপরে
আনেকপ্রলি বই হুড়ানো রহিরাহে। রূপার গড়গড়ার গারে
ধূলি সক্তি হুইরাহে। নাবার বালিশের ভোরালেবানা মরলা
হুইরাহে। লগ্নী আঁচল দিরা সাববানে সেভারের ধূলি মুহিরা
ভাহার ঢাকা পরাইরা সেটকে ব্বাহানে রাখিল। ক্লনানি
বারানার লইরা পিরা বালি, শুক্রো ক্লগুলি কেলিরা দিল।
হুরিনারারণের বাল বানসামা বারানার চুলিভেহিল। ভাইাকে
ভাকিরা বাগান হুইতে কুল আনিভে বলিল। গড়গড়ার ধূলি
মুহিরা, নল বুলিরা সেটি গুইরা মুহিরা আবার নল প্রাইরা
রাখিল। গ

কাক শেষ করিরা সে চাহিরা দেখিল চিনি তথমও মাথা ওঁজিরা পাছিরা আছে। তাহার বনে পাছিল, চিনি খণ্ডর-বাছী হুইতে কাল রওনা হুইরাছে, পথে কিছু থাওরা হুইরাছে কিলা সন্দেহ। তাহাকে কিছু থাওরানো দরকার। কে চিনির পিঠে হাত রাখিরা মুহু খবে খনিল—চিহু আর, হাত-রুধ ধুরে এনে বসবি।

ছরিশারারণের খানসামাকে সে বরের মধ্যে বসিতে বলিল। তার পর চিনিকে কড়াইরা বরিবা সে বর হইতে বাহির হইরা পেল। বাইবার আগে হরিশারারণের কাছে গিরা বলিল—ক্যেঠারশাই, চিত্তে কিছু বাইবে আনি, ওর বোব হর সারা-বিন খাওবা হর নি। হরিশারারণ বাড় নাড়িরা সম্মতি জানাইলেন।

পরের দিন সন্থাবেলা হরিমারারণকে পণ্য দিবা, লন্মী কাপড় ছাড়িরা বঙপ দালানে প্রণান করিরা জন্মরের আদিমার চুলসীতলার আসিল। দেখিল বেদীবৃলে প্রদীপ আলিয়া দেখরা হইরাছে। প্রদীশের সলিভাট উস্কাইরা দিবা, গলার আঁচল জভাইরা সে প্রণান করিল। প্রণান সারিরা উঠিতে দেখিল ভাহার পাশ দিরা কে এক জন চলিরা বাইতেছে। লন্মী একটু চন্দিরা বলিল—কে ?

বে বাইভেছিল সে কিরিরা হাঁভাইল। বলিল—কে, লক্ষী ?
লক্ষী দেখিল ইল। অভকারে ইলের মূখের চেহারা ভাল
ক্ষো গেল বা। ভাহার গলার হর লক্ষীর বনের মধ্যে
আবাভ করিল।

ইন্ত আগাইরা আদিরা বলিল, বাবা কেমন আছেন? চিনি এগেছে ?

লক্ষী বলিল, আণমাকে হেকে দিবেছে ? ক্যেঠাৰণাই আৰু একটু ভাল আছেন। চিনি কাল এলেছে। চিনি বছ ভাষাকাট করছে।

একটু থামিরা সে বলিল, আপনি কোঠানপারের কাছে নান। আমি চিনিকে নিবে তার বরে বাহি। ইল চলিয়া গেল। লে চোৰের আড়ালে গেলে লখী গলার আঁচল খড়াইরা আবার ভূলগী-বেদীভে প্রণাম করিল। একবারে ভাতার ভৃত্তি তুইল না, ভিন্ন চার বার লে বেদীভে বাবা ঠেড়াইরা প্রণাম করিল। প্রণাম শেষ করিয়া উটিয়া লে আঁচলে চোৰ মুহিল। ভাতার চোধে জল আসিয়া পড়িয়াহিল।

গাড়ী হইতে নামিলা জীবানন্দুইলকে বলিলেন, ভূবি বাদার বরে বাও, আমি ডাক্তারের সদে কবা বলে আসহি।

ডাক্তার বৈঠকবামার একট বরে ছিলেন। জীবামক বরে চুকিতে তিনি প্রথমেই জিল্লাসা করিলেন, হরিনারারণবাব্র ছেলে এসেছে ?

কীবাদক্ষ বলিলেন, সে কামিনে ছাড়া পেকেছে। আপীলে ভ্ৰমানির সময় উপস্থিত হতে হবে। ডাজ্ঞায় বলিলেন, সে সম্ব পরের কথা। উপস্থিত তাকে বে ছেড়ে দিয়েছে সেইটেই ঢের অসুগ্রহ করেছে বলতে হবে। ছেলেকে কাছে পেলে হরিন্দারাম্ববার্র সায়্যের পক্ষে ভালই হবে। তার ছোট মেরে আসবার পরে থেকে কিছু উন্নতি দেবছি। আসমায় মেরের প্রশংসা কিভাবে করম কামিনে রাম্বাহাছ্র। এটুক্ বর্নে অমন বৃদ্ধিতী, পাভ স্বভাবের কাজের মেরে আমার জার চোবে পতে নি।

জীবানন্দ বহু হাসিলেন মেরের প্রশংসা শুনিরা। বলিলেন, এ বালা দাদা সামলে নিভে পারবেন মনে হচ্ছে কি ?

ভাক্তার—হেলেমেরেরা কাছে থাকলে বীরে বীরে সেরে উঠবেন ভরসা করছি। তবে রীভিন্নভ সুত্ব হরে ওঠা—নাবে আগেকার বাত্য কিরে পাবেন কিনা সন্দেহ। উঠে হেঁটে বেভাভে পারলে উর ভানপরিবর্তম করা প্ররোজন হতে পারে। সে যা হোক, এখনকার চিকিৎসার ব্যবস্থা আনি করে সেলেম । আপনি এসেছেন এইবার আমাকে ছুট দিন।

জীবানন্দ—আৰু রাতটা গাত্ম। কাল ওঁকে ভাল করে দেবে ব্যবহার কথা আমাকে ব্বিরে দিবে থাবেন। আমার লরীরটাও সহ মর। আমার একটা ব্যবহাও করতে হবে আপনাকে।

ভাক্তার হাসিলা,বিলিলেন, আপনার ব্যবহা এবনই করছি। সারা কীবন বেটেছেন, এবন একটু বিশ্রান নিন। আপনার প্রয়োজন পরিপূর্ণ বিশ্রাম।

णाळादात यत शरेटण वाहित शरेता जीवामण श्रीत-मातातरमत यटा रमरामा।

রাত্রে আহারের পর জীবানন্দ স্ত্রীকে বলিলেন, ভূষি ভাজাভাজি বেরে নিরে ওপরে এল। অনেক পরাবর্শ আছে।

নিকে থাইবা ছেলেবেরেরের ওইতে পাঠাইবা ত্রিনরনী বধন বরে আসিলেন কীবানক তথ্য সুবাইতা পভিয়াছেন। ত্রিনরনীয় পারের শক্ষে তাঁহার সুব তাঁহিয়া গেল। তিনি केंग्रेश राजित्वर । राजित्वर अक्ष प्रांत क्य कांच क, (क्क्षे CHESTER!

क्ल बादेश किनि विलालन, क्रैक हार वज विज्ञासाय। चरमक कवा चारह ।

ত্রিমরনী বিছানার বনিরা স্বামীকে বাতাস করিতে ক্রিতে विनित्तम, कि कवा वन ।

শীবানন-ভাতে ভারও ছ'বাস ছট ভাতে। তেবেছিলার একট হাৰ হলে কোন ভাল কাৰণাৰ গিৱে বাসবাৰেক বেকে আসৰ। কিছ সে আলা ভেডে ভিৰেতি। ভবিমাৱারণভার और विशासन मनन डांटक काल वाटक शादि तम । अपन हाटक इति काक रायात । अकते। राख्य नवाय, विक्रीयते।---

क्रियवमी--(बाबत विरव ।

कीवामन-प्रक बरदछ। अ वासीद हिमि बाद नवी अक वस्तान वस १

विमयनी-नची प्र'वारमत रह । जांत जारक ताना वात ना। भीवामम-छाहे वाल मा त्याच छाम विदय त्यव ? छा हर मा। जामात रेट्स कि हिन जारना ? अकनत त्वत् আৰু লন্মীৰ বিৰে দেব। কিন্তু দেবুৰ যা ভাবগভিক, চট কৰে বিৰে দেওৱা টক হবে কিলা বুৰতে পাৱছি লে। ভাই টক करवि स्वारं विरक्षे किर्द क्ला काल । अवार रहेश बारक कत्रर । अपन रेट्यत क्या उनहि-त्याम । एक जात्वरत्त লকে আলাপ করে বা ব্রলাব ভাতে মনে হয় লে ছাড়া শেলেও শেভে পারে, মচেং মামমাত্র শাভি হবে। কিছ ভার পরেও ইল্রের বিপদ কাটবে মা। পুলিসের মছর भिक्ट अब अभव। लाटक वाल वाटव ह कि आंत्रीरवा वा। বাবের চেরে পুলিস সাংঘাতিক জীব। পুলিসে ছালে হয় विक्रम चा। नवारे अक्या कारम। क्कमारवर्ध कारमन चिमि भवामर्न पिरबर्धन. 'ट्यानहीरक यपि मिवाभार वाचरच চাও ভা হলে ওর বিবে দিরে কেল।' এই পরামর্শমত কাজ क्रांच हान व्यवस्य हैत्यव वार्शव स्थ द्वां हाहे. कांव शब रेखा विषय वाकी छउन हारे। अब नागरक हरू वर्षमान चरशा वाकी कवारमा (बर्फ शारत, किन्न देख निरक वित देख नरम ? (बरनारमंद्र कांद्र (शर्द) कि चारक (वांदा इक्द्र ।

बिनवभी-रेक्टक चार्त (बरक बनवाद बदकाद कि १ अ बार्का (शत्म धवाकीत वहेर्डाकृत वनत्वम । छात कथा तम क्लाक नावार मा।

ৰীবানৰ হানিয়া বলিলেন-ভূমি क्रैक বলেছ। আৰু बाष्ट्रेक् काट्टेक, काम द्विमाबादनशास्क नव कवा नमन ।

बिनवनी किष्टकन हुन कविदा कि कावित्क जानिस्त्रन । খীবাৰণ বলিলেন, খার কি ভাবছ ? বেটুকু গোলযালের चानका दिन चार बीबारमा ७ छूबि मिर्क्ट करव किरन ।

খর বাপের প্রক্রমভ বেরে কেবে বিরেটা ভাভাভাতি বিভে भावत्य कि १ वर्षेक्रीकत्वव महीत्वव सवका साम मह ।

এবার জীবাদক ভাবিতে লাগিলেন। কবাটা সভ্য। ইলের শিখা অভয়। বাচা করিবার অর্থাৎ প্রক্রমত বেরে দেখিলা বিবাচ ছিত্ৰ কৃত্তিবার কাল তাঁলাকেই ভবত কৃত্তিতে क्ट्रेंदि ।

बिनवनी-अक्टी क्या वलकि, कृषि कि कावत्य कावि त्व. करन जानि ना. जरमक निरक जानारक कार्न जानरक कर। त्म मंत्र कथा छुवि युवाय मा।

भौरामम अकृष्टे चार्फर्या त्वांव कतित्वव । वनित्वन-कि वनाव वन मा. जाबाद कार्ड वनाड विव जड जावाड हर---

विमहमी-कार्यक अवना त्व क्यांकी कृत्य कार्यात क्यम नांत्रत कामि मा। छमि अवास्म वाक मा, मिस्कत कार्य किष्ट দেৰবার সুযোগ হয় দি। অভ কৰা ভোষাকে বুৰিয়ে বলভে পারব মা। আরি বলি ভি---

भीवामक वृत्रिक्तम बिमन्नमीत वक्तना वाविता वारेट्ड তিনি কি ভাবে কৰাটা লইবেন তাতা ভাবিছা। তিনি ছীর পিঠে হাত বুলাইতে বুলাইতে বলিলেম—ভোষার মনের ক্ৰা रन। (नक्षा बाहे ट्यांक मा दक्ष, चामि किছ मान करव मा ।

ত্ৰিমহনী সামীর কৰা শুনিহা যুৱ ত্ৰাম ভাসি ভাসিলেন। विज्ञान-वज्ञाति । चामि वज्ञि कि चामारमय स्वरवाक कि ইলের তাতে দেওয়া বাহ না ? অনা কোন দিক ভেবে আৰি একৰা বলছি না জেনো, আহি হা বলে অনেক দিকে আহাকে চোৰ ৱাৰতে হয় কিনা ?

जिम्बनीत क्या अमिता कीवामक हुन कृतिका बहिरमा। বোৰ হয়, খ্ৰীয় কৰায় খৰ বুৰিতে চেঙা ক্ষিতে লাগিলেন। क्रिमक्रमी विज्ञालन-इंटिंग्स क्लान करतन हवात जरवान वर्गम क्षमण क्षम श्रासद अमि क्षत्र ह'न व काद दूरवह किल्क আমি ভাকাতে পারি নি, তথু ভগবানকে ডাক্লার মনে মনে। বলনাম, ঠাকুর, মেয়ে আমার বড় হয়েছে, এ কি বেলা বেলছ ত্মি ? ছোটট বেকে ছ'জনে মেলা-মেলা করছে, ছালিবুলী, গল, क्रीक्षे-मक्रवा, नगका-वाक्षे कक्षरे द्रावादा। साथ जाबादनबरे. কেম আরও আগে বেরের বিষের ভতে চেঠা ভরি নি। এভ निय्म नव कूरन वक । वक्का व्यवस्थ बार अपन मार्थ वरनाह. ভাবতে আমার বুক কেঁপে ওঠে। মেরের বুধ বেন আরনা, নিজেও হৰত ভাল করে বোবে না ছেলেবেলার চান ভোগার अरम शिक्टिक्ट ।

कौरानक अक्षा शेर्ष निःशंत क्लिलन । यनिलन-लामात क्या अवाद वृत्रमात । जानात्वत क्रेड स्टब्ट् द्वरत्व. अरु विन निरव ना रमक्षा। अनात चानि छत्र निरवत नान्छ। कदन, वर वैज गाहि। किस कृति वि वाकान कदल का विनवनी--जानवि रेखाव निरंत रानांव जाव ज निम्ह, कियु देखा गारव ना। अन्न क्या रहरू निरंत्रथ अवनी क्या रास्क

বার। সেটা হতে এই বে, ওরা আমাদের উপকারী বছনান বংশ, আমরা ওলের বৃতিভোগ পুরোহিতবংশ। ১ ওলের বেওরা রন্মোতর আমরা এখনও ভোগ করছি। ওরা নিজে থেকে নিজে না চাইলে আমি এ প্রভাব করতে পারি নে।

এবার ভিনরণী বীর্ষনিঃখান কেলিলেন, বলিলেন—ছুরি বাপ, ছুরি বা ভাল মনে কর ভাই হবে।

ভারণর হাদিরা বলিলেন—ভূষি শোও, আমি বাভাগ করি একট।

चौवानक भवन कविटलन ।

পরের দিন জীবানক ছরিনারারণের নিকট ইক্সের বিরের কথা ভূলিলেন। তিনি সহক্ষেই বত বিলেন। বলিলেন, ছেলের বিবে দিতে পারলে আমি শান্তিতে হরতে পারি তাই। তবে পুর ভাঙাভাঙ্কি ভোষাকে ব্যবস্থা করতে হবে। তাল বেরে পুঁলে বের করতে পারবে কি এত শীত্র ? আমি অশত্য হরে প্রেছি, সর ভার ভোষার ওপর।

ভাল বেরের কথা উঠিতে জীবাদক একটু বিষদা হইলেন। ভথনই লে ভাব বাছিলা কেলিয়া বলিলেন, আগে ছেলেটাকে ছাছিরে আনি। বেরের ভাবনা কি ?

ৰণাসৰৱে জগৰানীর প্রাছ মিটবা গেল। হরিনারারণের লানীর জার বারাপের দিকে বার মাই !

জীবানদের সদে পরামর্শ করিরা হরিমারারণ হির করিলেন আপীলের কলাকল দেখিরা ইল্রের বিবাহের কথা পাকাপাকি হির করা হবৈ। বর্জনান অনিশিক্ত অবছার কোন পাত্রীপক্ষের সদে কথা হির করা টিক হববে না। ইল্রের কারামণ হবলে কেহ কেহ হয়ত বেরে দিতে ইডভভঃ করিবেন।

ছ্রিনারারণ পুরকে বিবাহ করাইবেদ একণা প্রচার হওরাতে ছই একট করিবা সহত আসিতে লাগিল। হরিনারারণ বৃদ্ধ নারেবের উপর প্রাথমিক কথাবার্তা চালাইবার ও বেরে দেখিবার ভার দিলেম। তিনি ভাবিলেম, উপর্ক্ত বেরের সভাম পাইলে জীবানককে নেবে দেখিবা সহত ছিব করিতে অস্থ্রোধ করিবেন।

রাজনগরে কিরিমা নাভার আক্ষিক রভার পোকে ও
পিভার পারীরিক অবহা বেবিরা ইক্র করেক বিন র্থনান হইরা
মহিল। গ্রেপ্তার, সরাসরি বিচার ও কারারণ্ডের আবেল
ভাহার বনে গভীর বেবাপাভ করিরাহিল। আক এক
বংগরের উপর ববেলী আন্দোলন বরনের কত পুলিসী কুসুর,
লরকার-ভোষণকারী এক শ্রেণীর লোকের বিরোবিভা, সাবারণ
লোকের প্রামীত—এই সব বীরে বীরে ভাহার বনে নৈরাভের
ভাব প্রে ক্রিভেছিল। ভাহার বনে কেবন একটা বারণা
ক্রেরেই বছরুল হাভেছিল বে, ববেলী আন্দোলনে ভাটা পভিরাহে। প্রব্রের এই আন্দোলন লোকের বনে বেভাবে বোলা

বিবাহিল দেই হুলুনি বানিঃ। গিরাছে। লোকের বন আবার পূর্বেকার ওঁবালীতে আক্তর ত্ইরা পড়িতেছে। পারিবারিক শোকের আবাতে বনের এই ভাবটা আরও বনীডত চইল।

ইল বভাৰত: আবেগপ্ৰবণ, উভবনীল ও বিশেষ বৃত্তিৰাল।
নীমই সে বৃত্তিতে পাত্তিল, পাত্তিবাত্তিক শোকের আবাতে বে
নামসিক হর্মলভা আলিয়াহে সেই হ্মলভা, ও পিভার বাহ্য
একেবাত্তে ভাতিয়া পভার উচ্চার নিজের ভবিত্তৎ জীবন সহছে
বে অনিক্ষরভা দেখা দিরাহে সেই অনিক্ষরভা ভাহার দৃষ্টিকে
ও বোৰশভিকে আজ্য করিয়াহে। সে ভাবিল, হয়ভ
ভাহার কেল হইবে। জেল হইতে বাহ্তির হইরা সে কি
করিবে? কোন্ পথে সে চলিবে? এই অভহ ন্দের কবলে
পভিয়া সে ভাবিল, বলি মন বুলিয়া কথা বলিবাত ও প্রায়র্শ কবিবার যত কাহাকেও পাওরা বাইত। সতীমের কথা
ভাহার মনে পভিল। কিছ ভাহার টিকানা ত সে ভাবে
না। অনেক চিভা করিয়া সে দেবামন্দকে চিটি লিবিভে
বসিল। ভাবিল দেবুলা ভাহার আবাল্য প্রামর্শলাভা ওক্ল,
ভাহার সর্মোভ্য স্থল, দেখা যাক সে কি প্রায়র্শ দেব।

আনেক রাভ কাসিরা সে দেবাননকে চিট্ট লিবিল।
বর্তনান পারিবারিক বে সমভা ভাহাকে ব্যাকুল করিবাছে
ভাহার কথা বিশেষভাবে উল্লেখ করিল। বর্তনান অবছার
বেশসেবার কার্যকরী পছা কি এই প্রান্তী ব্রাইরা ক্রাইরা
ক্রেকবার ক্রিজানা করিল। প্রদিন চিট্টবানি ভাকে দিরা
সে একটু বতি বোব করিল।

বিকালের বিকে পিতাকে ওঁয়ৰ বাওরাইরা সে একটু বেড়াইভে বাহির হইল। চিন্নী ও ইজ উভরে নিলিয়া পিতার ডঞাবার ভার লইরা লন্মীকে বিপ্রামের অবকাশ দিয়াছে। লন্মী এবন বাড়ী হইভে প্রভিদিন বিকালে আসিরা হরিনারারপকে দেবিধা বার।

ইল রারবাগানের পাশ বিরা বনহুর্গাতলা হইরা বুরলী বিলের বারে বার্চে বাইবার পথ বভিল । বনহুর্গাতলার আলিরা কি ভাবিরা দে একটু ইাডাইল, ভারপর বাঁ-বিকে বিলের পথে অঞ্জর হইল। সেই সমরে টোলপাড়া হইছে ইলেরে বাড়ীর বি বুকীর বা ললীকে সকে লইরা আলিছে-ছিল। চিমরী ললীকে আনিবার হুড ভাহাকে পাঠাইরাছিল। বুকীর বা আপে আপে আলিভেছিল। বনহুর্গাতলার ইলকে বেখিরা লে ইাড়াইরা নাথার ভাগড় টানিরা বিল। ইল ভাহাকে বেখিরাছিল, ভারার পিছনে ললীকে বেখিতে পার নাই। করেক পারিরা বুজীর বার গলার পতে কিরিরা চাহিতে ইল বেখিল বনহুর্গাতলার ইভাইরা ললী ভাহার বিকে চাহিরা আছে। চোখাচোধি হুইতে ললী ভাহার বিল, এবং বুড়ীর বার পিছনে অঞ্জনর হুইল।

निरम्ब म्लार्ड अन्त्री रीर्वनिःचान स्मृतिहा देख इतिहरू

লাগিল, ভাবিল, লখী বাবাকে বেবিভে বাইভেছে। এবার এভ বিল বরিরা লখী বাবার বে লেবা করিরাছে ভাহার ছুলনা হর না। লখীর বে এভ ওপ দে কবনও ভাবে নাই। ভাহার বনে হুইল লখী বেন আরও বড় হুইরাছে, আরও ফুলর হুইরাছে। চিনি ওর একবরনী, কিছ ভাকে কভ হেলেনাগ্র্যট্ট বেবার। হুঠাং ভাহার বনে হুইল লখী ওবানে ই।ভাইরাছিল কেন? ভার কি ভাহাকে কিছু বলিবার ছিল? সে বুরিরা ই।ভাইল, হুই এক পা আগাইরা বাবিল। ভাবিল লখী আফ্লাল ভাহার সকে বিশেষ কবা বলে না, সে গিরা কি করিবে? কিছু বলিবার বাকিলে চিহুকে বলিবে। সে আবার বিলের প্রে চলিভে লাগিল।

লখী আৰু সকালে হরিমারারণকে দেখিতে গিয়াছিল। শ্ৰীৰটা একট ধাৰাণ বোৰ হওৱাৰ বিকালে আৱ বাইবে না ছিত্ৰ কৃত্ৰিবাহিল। কিছ মুকীত্ৰ মা আলিতা বলিল, ছোট विविविवि छाडाइक शाकीरेबाइ नाम कविवा नची विविविदिक अवेश शावेतात स्था। नची बाम कविन व्विमावादानंद (नदा-ভঞ্জা সহৰে বোৰ হয় চিনি কোন পরামর্শ করিভে চাহে ভাৱার দলে। সে ভাষিত না চিব্রী ভারাকে ভাকিতে পাঠাইয়া অভ্যন্ত ব্যঞ্জ ভাবে ভাতার অপেকা ক্রিভেছিল ৰটে, কিছ পিতার সহৰে কোন পরামর্শের অভিপ্রারে মহে। সেদিৰ লে ভীৰানন্দ কাকাকে ভাহার বাবার কাছে বলিভে শুনিরাছিল বে, পঞ্জোশীতে একট ভাল ছেলের সহান शांश्वरा जिसारम । শীত্ৰই ভিনি পক্তোশী बत बत शहन हरेल छिनि बाद सिविवाद জ্ঞ পাত্রপক্ষে নিমন্ত্রণ করিবেন ও ছুট লেব হইবার আগে मचीत विवाह मिरवम। हतिमात्रात्र वनिवाहिरनम-स्वरत ৰভ হৰেছে, ৰভ শীত্ৰ সভব দাৱমূক্ত হওৱা ভাল। ভূমি পঞ্জোপী থেকে কিরে এস, ইল্লের খত একট ভাল সম্বন্ধ এলেছে, বেৰেট ভোষাকে এক বাব কঠ কৰে বেৰভে বেভে ছবে। यक वत्र, नाव्यवरक अवास्य शाकीत्व शाहि मा।--धरे কথাৰাৰ্ছা শুনিবার পর চিন্তমী অছিল হইরা উঠিল। সে কিছুতেই বুবিতে পারে না ইহারা এখন অভ কেন, কেন নিকটের বন্ধ চোৰ ভূলিয়া না দেবিরা চুরে হাভড়াইভে

বাইভেছেন। সন্ধীর বনের কথা সে কিছু কিছু কাৰে।

হতরাং ক্লন্য কোণাও বাহাতে সন্ধীর বিরের কথা চলিতে না

পারে যে চেটা ভাহাকে করিতে হইবে। ভাহার বারের
কথা বনে পভিল। কুল-গৌরবে অর হইরা ভিনি ভাহার
প্রভাব কাবে ভোলেন নাই, নিজের সংসারের কিসে হিভ হর
ব্বিতে চাহেন নাই। আন্ধ ভিনি স্বর্গে, উাহার লোব বরিতে
নাই। ভাহার বাবার মনোভাবও কি ঐ রক্ম ? বোব হর
ভাই। নচেং সন্ধীকে এভ দিন বিরো দেখিরা, ভাহার স্বন্ধর
কথা বলেন না কেন ? সব পুরুষ বাহ্য অর। ভাহার দাদাও

কি অর ?

চিখৰী সকল করিল বেষণ করিবা হউক সে জীবানক কাকার পঞ্জোতী বাওরা বন্ধ করিবে, ভাহার বাবার কাছে কৰাটা পাছিবে। সে ৰুবিভে পাৱে জীবানৰ কাকা নিজে হইতে বাবার কাছে প্রভাব করিবেন না। ভাবিতে ভাবিতে এক বার ভাহার মনে হইল, আচ্ছা, দাদার নিজের মনেও विम मारबाब मछ, निनिब मछ कूरलब वकार बारक, विम नचीब উপর সতাই টান না থাকে ভাতা হইলে সে কি করিবে ? ুজাপে দাদার মনের ভাবটা বুবিরা লইরা বাবার ভাছে কবা উখাপন করা উচিত। এখন দাদার বনের ভাব ব্রিবার কি উপাৰ করা বাৰ ? দাদাকে দেখিৱা মনে হয় ভাতার মাধার কি লৰ চিভা ছুৱিভেছে। ইহার আপে মান্তের অসুবের সময় বৰ্ষ সে আলিয়াছিল তথনও দাদাকে এই বকৰ চিন্তাক্ৰিই দেখিৱা-ছিল। সে সৰ সময়ে উল্লা থাকে। সেদিন কাকীয়াও ভাহাকে বলিয়াছিলেন-- চিছু, रेक्ष এত উন্না হ'ল কেন ? ভোষার বড় ভাই সন্নানী হরে বর হেডেছে। ইল্রের এই ভাৰটা আমার ভাল লাগছে না। ভোমরা বভ শীম পার বিবে मिर्द अर्क वैविवाद रहें। कहा। अ यनि भानाद रहाबाद वावा तिहे वर्ष्ण माता चारवम ।—काकीमा ववार्व विरेक्षियेत वक क्या बनिवादम । चाद प्रति क्या जान हरेरव मा।

অনেককণ ভাবনা চিভার পরে ভাহার ববে হইল লগ্ধী আদ বিকালে বোধ হর আসিবে না, ভাহাকে ডাকিরা পাঠাই। ভাহার সলে কথা বলিরা দেখি। ক্রমশঃ



## শিশিরকুমার বেষ ও জাতীয় রঙ্গমঞ্চ

क्षेर्याराभव्य वाश्रम

জাতীয়তার উদ্বোধক প্রত্যেকটি বিষয়ের সক্ষেই "অমুত বাজার পত্তিকা"র প্রতিষ্ঠাতা-সম্পাদক শিশিরকুমার ঘোষ ঘনিষ্ঠ সংযোগ বক্ষা করিয়া চলিতেন। হিন্দুমেলার সহিত্ত ভিনি বিশেষ ভাবে যুক্ত হইয়া পড়িয়াছিলেন। এ বিষয়ে অন্যত্ত ভালোচনা কার্যাছি।

হিন্দুমেলার ন্যায় বক্ষমঞ্চকেও শিশিবকুমার জাতীয়তার উরেষ তথা অদেশ-দেবার অনাতম প্রধান বাহন রূপে গ্রহণ করিষাছিলেন। ইতিপুর্বে জোর্চ বসস্তকুমার এবং না আধুনিক ধরণের বাজার বই নিধিয়াছিলেন এবং নিজ গ্রাম অমৃত বাজারে পরিবারত্ব সকলে মিলিয়া তাহার অভিনয়ের ব্যবস্থা করিয়াছিলেন। নির্দ্ধের আমোদ এবং সভ্যকার শিক্ষা—এই এই উদ্দেশ্য লইয়া তাহারা ইহা আবস্ত করেন।

দুখানাটোর মধ্য দিয়া জাতির মূর্মবেদন। ও মূর্ম-কথা যেরপ প্রচার করা যায় এরপ আর কিছু দারাই সম্ভব নতে। এতদিন কলিকাতা এবং মফল্পলের ধনী ও বিক-শালী লোকেরা সথের থিয়েটার বা নাটাশালা প্রতিষ্ঠা করিয়া সাময়িক ভাবে সে যুগের সামাজিক ও অনাবিধ বছ সমস্তামূলক নাটক-প্রহসন অভিনয়ের ব্যবস্থা করিয়াছিলেন। কিন্তু ভাষাতে উহাদের বন্ধ-বান্ধব এবং নিমন্ত্রিত বিশিষ্ট ব্যক্তিবৰ্গ ছাডা আর কাহারও প্রবেশাধিকার ছিল না। গত শতান্দীর সপ্তম দশকে. প্রথমে ঢাকায় এবং তাহার অব্যবহিত পরে কলিকাতায় এই সাধারণ-অধিগমা রক্ষক প্রতিষ্ঠিত হয়। কলিকাতার বন্ধমঞ্চ ন্যাশন্যাল থিয়েটার বা জাতীয় রক্ষঞ্চ নামে অভিহিত হয়। শিশিরকুমার কলিকাতায় আগমনের পর এইরপ রুদমঞ্চ প্রতিষ্ঠার আয়োজনের বিষয় অবগত হইয়া বিশেষ উৎফল্ল হন এবং र नव युवक देशां अ खिकीय अधनी इदेशाहित्नन छै। हारमव সলে পরিচিত হইবার জন্য আগ্রহ প্রকাশ করেন। বলা ৰাহল্য, 'অমুত বাহ্লার পত্তিকা'য় শিলিরকুমার ইতিপর্কেই অন্তর বে-সব অভিনয় চইতেছিল তাহা প্রকাশ করিতে থাকেন। স্থবিখ্যাত দীনবন্ধ মিত্রের 'নীলদর্পণ' নাটকের व्यक्तिय नहेशाहे साछीय तक्षमाकृत अधिक। हहेन। यथन এই নাটকাভিনয়ের মহলা চলিতেছিল তথনই শিশিবকুমার উজোক্তানের কাহারও কাহারও সঙ্গে পরিচিত হন। নাট্যাচার্য্য অমুভলাল বস্থ উত্যোক্তা ও অভিনেতাদের

অনাতম ছিলেন। তিনি শিশিরকুমারের কথা বলিতে পিরা লিখিয়াছেন,

"ৰুব উৎসাহের সহিত অ'রাদের [ 'নীলদর্গবে'র ] রিছাসাল চলিতে লাগিল ! আনি তবল বিভেটারে গা ঢালিছা
দিবাছি। একদিন রসিক নিয়েনীর ঘাটের বৈঠকখানার
আনি একাকী বসিঙা আছি এমন সময়ে তিনটি ভদ্রলোক
আসিরা উপস্থিত হইলেন। সেদিন আমাদের দলের আর
সকলে সেবানে উপস্থিত ছিল না, কেন আমার ঠিক ননে
নাই। আমা একাকী তারাকু সেবন করিতেছিলান।
আগগুকদিগকে দেবিরা আমি সমন্ত্রের দাঁভাইনা উট্টলান।
একজন আমাকে ভিজ্ঞানা করিলেন—

'ভ্ৰদ নিৰোপীর এই বাড়ীতে বিষেটারের রিছাসলি হয় ?' 'আজে হাঁ।'

'ভূমি কি সেই দলের একজন প্লেরার ?' আমি সম্ভিত্মচক রাধা নাভিনার।

'আৰু তোৰৱা এবনও বিহাস লি আৱস্ত কর নাই কেব ?' 'আৰু আমাদেৱ বিহাসাল বন্ধ, আৰু আমি হাড়া আর কেউ এবানে উপস্থিত নাই।'

'ভাই ভ , আমরা এল্ম তোমাদের রিহাদলি দেখতে'— 'আহন ভিতরে বহুন, ভাষাক খান।'

'ৰাক্, আর ভাষাক খাব না। আমাদের ভূমি চিমতে পার্চ মা। আমার মাম শিশিরকুমার বোষ, ইনি অক্রচজ পরকার, আর ইনি প্যারীমোহম রায়।'

আমি তংকণাৎ শিশিরবাবুর পদধ্লি লটলাম, অক্ষ বাবুকে ও প্যারীযোহম বাবুকে মমভার কবিলাম।

লিশিরবাবু জিল্ঞাসা করিলেন—'তোমার নাম কি ?' 'অয়তলাল বস্তা,'

'তুৰি কি সাধ্যে গু

'আফো, সমত পালাচা মাতর আকু নাই হ'ল, ভূমি নৈতিল্লীর পাঠটা আমাদের একটু শোমাবে ?'

আৰি একটু ইত্তত: করিয়া সম্ভ হইলাম ৷···আমি
শিশিরবাবুকে বলিলাম--- আমি আপনার সেবা পড়েছি, আপনার প্রতি আমার প্রতা ও ভক্তি বুব বেনী, আপনি ববম বল্চেম্
তবম আমি আমার পাঠ একটু আপনাকে শোমাতে পারি ।

আমি নবীনবাৰবের মৃত্যুপব্যার পারে সৈরিজীর অভিনয় করিরা দেবাইলান। তাঁহারা সভাই চুইরা কিরিয়া গেলেন। ত

পুরাতন প্রদদ (বিভীর পর্যার)—বিশিনবিহারী ভর।
 ১৬৩০। পু. ১০০-১

3

শিশিরকুমার জাতীয় রক্ষমঞ্চকে কি ভাবে গ্রহণ করিয়া-ছিলেন সে সম্বদ্ধে অভঃপর অমৃতলাল প্রভাক অভিক্রতা হইতে যাহা লিখিয়াছেন ভাহাও এখানে উল্লেখযোগ্য। ভিনি বলেন,

"সেদিন কিবিয়া বাইবার সময় শিশিরবাব আমাকে विमालम - 'बर्ग चामि वीवाचाद विमानम बामार्कित পলিতে থাকি: ভূমি আমার বাসার আমার সলে দেখা ভোৱো ' ভবন চইভেই ডাঁচার সচিত আমার বনিষ্ঠ সম্বৰ টাভাইষা রেন। আমি তাঁচার বাভীতে হাভাহাত ভরিতে লাগিলার। দেবুন সেদিন যুবিভার্লিট ইন্টিটটট হলে আমি শিশিরবারর সহতে বলিয়াছিলায---'ভিনি একজন আভ বালালী ছিলেন। একবাটা বে কত সভা ভা' আপনাৱা বোৰ হয় च.च्छान देशनिक चित्राच शाहित्यन मा : चिनि (प्रामह সমভ অনুষ্ঠানের ভিতর দিয়া খদেশবাসীকে প্রবৃদ্ধ করিতে প্রবাস পাইরাছিলেন। এই যে সুভন বিরেটার বোলা হইল, খবন জিনি ক্ষিলেন ইতার নাম ভাশনাল বিষেটার দেওৱা তইয়াতে, তথনই ভিনি ভাবিলেন,—ইতার ভিতর দিয়া কি বাঙালীভাতির বিশিপ্ত ভাবগুলিকে কুটাইয়া ভোলা বাইবে মা ? बहे (य democratic (क्षेत्र, देश क चात बनी ग्रहाइत ধেরালের উপর মির্ভর করিবে না : বালালীর সর্বালীণ ভাব-প্ৰতির সাতাষ্য করিবে না কেন ? ইতারা ভ সাত্স করিবা 'নীলম্বৰ্ণ' লইয়া আৰম্ভ করিয়াছে। দেশের বর্ময়ান ভইতে যে বেলনা গুৰবিয়া গুৰবিয়া এতদিনে আগুপ্ৰকাশ করিরাছে, বাতার সহিত সমবেদনার জ্ঞ লং পাতেবের कांबावान ट्रेन. त्नरे (वनमा ७ और (हांकबारित बुर्क वाकिशारम । देहाता विक अब कि अल्लाकिक हरेबा कार्या करत. कारा रहेरल रेटारम्य मिक्ट रहेरक कविशास वस्तम जरमक जाम। कविरक शास्त्र ।...किल्ल क्षिम शस्त्र मिनिवरात् जामास्वत वित्यतेगत्वत अक्कन कांवेरकेत कवेरलम ।"क

প্রারম্ভিক আয়োজনাদির পর ১৮৭২ সনের ৭ই ডিসেম্বর কলিকাতা-চিৎপুরস্থ মধুস্থান সান্যালের বাড়ীতে ন্যাশন্যাল থিয়েটার বা জাতীয় বন্ধমঞ্চে প্রথম অভিনয় হইল 'নীলদর্পন'। লিশিরকুমার অভিনয় দর্শন করিয়া পরবন্তী ১২ই ডিসেম্বর 'অমৃত বাজার পত্রিকা'য় নিজ মন্তব্যসহ দীর্ঘ বিবরণ প্রদান করেন। ইহার মধ্যে জাতীয় রক্ষমঞ্চ প্রতিষ্ঠার প্রয়োজনীয়তাও বিশেষ ভাবে ব্রণিত হইয়াছে। একারণ এখানে এই বিবরণটি হইতে কিয়লংশ উদ্ধৃত করিতেছি.

"শীলদৰ্পণ নাটক দেশপ্ৰসিদ। ইহার গলতাগ অনেকেই ভানেন। কিছ একগাও বলিতে হয় বে গছ শনিবার শীল- ষ্প্ৰিয় 'নৰ্বেবিন' ছইয়াছে। খেডাদগণের পক্ষণাড্য ও অডাচ বৈ অনেকেই নব্যে ন্যা দেখিতেছেন কিছ তথালি সেই সকল কাৰ্য্য বদভূষিতে অভিনীত দেখিলে একরপ অপরূপ ননোভাৰ মনোন্যে প্রকৃতিত ছইতে থাকে। সংসারে নানা প্রকৃতির পঠ ও বিখাসবাভক লোক আছে, কিছ ইয়াগো চরিত্র বদভূমিতে দেখিরা মনোন্যে থোরভর মূণা করে। নৃত্যু কৌষ্টারিধি আইনের কলাকল বিচার অনেকেই করিয়া মনে মনে জন্মন করিতেছেন, কিছ বদস্থলে বর্থন ন্যান্য বলিলেন বে, 'আবার বে নৃত্যু আইন চলিবে ভনিতেছি ভালা ছইলেই সর্ক্ষাশা' বাক্য ক্রেক্ট উল্লাৱিভ হইবানাত্রেই দর্শক্ষণত্যীর মধ্যে বে কোলাহল উপস্থিত হইল, ভালা আন্ত্রা ক্র্যুনই ভূলিতে পারিব না। কিছ আর অরণ্যে রোদ্যে কল কি ?"

শিশিরক্মারের দৃষ্টি শুধু কলিকাতাবাদীদের মধ্যে নিবদ্ধ ছিল না। তিনি মনে করিতেন বাঙালী জাতির হিড করিতে হইলে কলিকাতার ন্যায় মফস্বলের জনসাধারণকেও জাতীয় ভাবে ভাবিত করিতে হইবে। হিন্দুমেলার অছ্টাছ্-বর্গকেও এইজন্য তিনি মফস্বলে কার্য্যক্ষেত্র প্রদারিত করিতে পরামর্শ দিয়াছিলেন। জাতীয় রক্ষমক্ষের বেলাতেও তিনি নীলদর্পনের এই প্রথম অভিনয়ের পরেই মফস্বলে অভিনয়ের ব্যবস্থা করিতে কর্মকর্তাদের উপনেশ দিলেন। তবে এবারে ইহার কারণ কিঞ্চিৎ স্বতন্ত্র ছিল। শিশির-ক্ষমার লিখিলেন.

"আর একট কথা বলিতে হইতেছে। শীলদর্পণ অভিনরের প্রকৃত ছান কলিকাতা নহে। নকবলে বে কাও হইতেছে তাহা কলিকাতার লোকেরা প্রারই আনিতে পারেন না। বর্ধন নীলকর সাহেবের পলাবাতে গরিব রাইরত গুলাবস্টিত হইরা উটেডবরে জন্মন করিতে লাগিল অখন কলিকাতাবাসী দর্শকমওলী বব্যে উটেডবরে হাত্তথানি উটিল। করেকট পরী-প্রাবের ভস্তলোক উপস্থিত হিলেন তথন তাহারা জন্মন সম্বরণ করিতে পারিলেন না। তাহাতেই আমরা বলি বে, এই নীল-বর্পণ একবার ক্ষমগরে, বশোহর বা বহুরমপুরে অভিনীত হইলে ভাল হর। আমরা প্র সকল জ্লোর বনবান জমিলার-গণকে অহ্রোব করি বে, তাহারা এই অভিনেত্গণকে নিমন্ত্রণকে অহ্রোব করি বে, তাহারা এই অভিনেত্গণকে নিমন্ত্রণ করিরা লইরা গিরা একবার অভিনর করাউন। আমরা চরিভার্থ হইব। নীলকর নিজ্ঞীক আর নাই বলিরা উপেকা করিবেন না। বক্ষলে কি হইতেহে তাহা আর কি বলিব গ্ল

জাতীয় বলমকে 'নীলদর্পন' কয়েকবার অভিনয়ের পর অন্যান্য নাটকও অভিনীত হইতে লাগিল। বড় বড় নাটকের সজে প্রহেসনও অভিনীত হইতে থাকে। তথন প্রহেসন-সাহিত্য সবে গড়িয়া উঠিতেছিল। মধুস্দনের করেকথানি প্রহেসনই ছিল তথন এক্ষাত্র স্থল। অভি-

<sup>•</sup> वै। यू. ३०३-२।

নেতাদের মধ্যে কেহ কেহ প্রহসন-রচনার তৎপর ছইলেন।
এই প্রহসন-সাহিত্য রচনায়ও শিশিরকুমার পত্রিক। মারফত
যুবকদিগকে কিরপ প্রেরণা দিতেছিলেন, অমৃতলাল বস্থ্
তাহা লিখিরা গিয়াছেন। তিনি বলেন

.

যুবকদের এই সাধু প্রচেষ্টায় শীঘ্রই বিম্ন উপস্থিত হইল। মভাস্তর ঘটিতে জাতীয় বজমঞ্চের কর্মাকর্তাদের মধ্যে লাগিল। এই সময় শিশিরকুমার পরম্পারের বিবাদ মিটাইবার জন্ত সাক্ষাৎ ভাবে তাঁহাদের দকে আসিয়া যুক্ত হইলেন। ১৮৭৩ সনের ১৯শে জাতুয়ারী তাঁহার সভা-পতিতে বিব্দমান যুবকদের লইয়া এক সভা হইল। সভায় উপস্থিতমত বিবাদ-মীমাংসা অসম্ভব বিধায় তিনি একটি দালিশী কমিটির উপর ইহার ভার অর্পণ করিলেন। এই কমিটিতে চিলেন তাঁহার মধ্যাগ্রহ হেমন্তকুমার ঘোষ, নবগোপাল মিত্র, মনোমোহন বস্থা, মহেন্দ্রলাল বস্থা, মতি-লাল হুর, অমৃতলাল পাল এবং রাজেল্ললাল পাল। ধাহা ভট্তক, কয়েক দিনের মধ্যেই বিবাদ মিটিয়া গেল। ইহাতে শিশিরক্মারের কতথানি হাত ছিল, পরবর্তী ৩১শে ফেব্রু-য়ারি 'ইণ্ডিয়ান মিরবে' প্রকাশিত নিম্লিখিত প্রধানি চইতে ভাগা সমাক জানা বাইভেছে.

Sir,—Now the rupture among the members of the National Theatrical Society has, happily, come to a close. Selfishness, distrust, dictatorial tone and unwillingness to cringe are some of the causes which gave rise to it. This collision would have proved distructive of national entertainments, had not the well-known Editor of the Amrita Bazar Patrika intervened between the contesting parties. His good advices and solicitations gradually conquered the obstinacy and party-feeling of each party and at last brought the matter to a happy end. Such is his desire to give the National Theatre a firm stand that

he, in addition to his hard labor as an Editor, willingly embraced all the privations to write a Natuk for them and at last produced the pleasing Noisho nupcea on the stage the week before last. The three directors of the Theatre now are the Editor of the Amrita Bazar Patrika, Babu G. C. Ghose, and another Native gentleman.

We wish prosperous career to the National Theatre. The members of the N. T. Society must feel grateful; that the Editor of the Amrita Bazar has meddled in its affairs and when he is there we doubt not the matters will be managed smoothly.

Yours etc.,
A friend to the National Theatre.\*

এই পত্রধানি হইতে ন্যাশন্যাল থিয়েটারের কর্মকর্তাদের বিবাদ ভঞ্জনে শিশিরকুমারের কৃতিত্ব ছাড়া আরও কয়েকটি বিষয় পরিকার আনা বাইতেছে। উজ্যোক্তারা যুবক, জাহাদের উপরে চালক থাকা প্রয়োজন। সম্ভবত: উজ্যোক্তাদের আগ্রহাতিশয়ে এবং শিশিরকুমারের পরামর্শে তিন আন ভিবেকুরের উপর সর্ব্ববিষয়ে নেতৃত্ব-ভার অপিত হয়। এই তিন আন ভিবেকুর হইলেন শিশিরকুমার অয়ং, ক্প্রসিদ্ধ নাট্যকার গিরিশচক্র ঘোষ এবং দেবেক্তনাথ বন্দ্যোপাধায়।

উক্ত পত্রে শিশিরকুমারের 'নয়শো রপেয়া' নামক নাটক রচনা ও অভিনয়ের কথাও জানিতে পারিতেছি। এই নাটকখানি জাতীয় রজমঞ্চ ১৮৭৩, ৮ই ফেব্রুয়ারি তারিথে অভিনীত হয়। বলে শ্রোত্রীয় ব্রাহ্মণ-সমাজ কন্যার পণপ্রধা তেতু দিন দিন কিরুপ অধংপাতে হাইতেছিল এই নাটকে ভাহাই বণিত হইয়াছে। শিশিরকুমার কঠিন সমস্তার বিষয়ও হাস্তকোতুকের সমাবেশে সরস করিয়া তুলিতেন। 'নয়শো রপেয়া' শুধু নাটক নহে, একটি সার্থক রস-রচনাও। শিশিরকুমার 'বাজাবের লড়াই' ও 'নিমাই সন্থান' নামে আরও তুইধানি নাটক রচনা করিয়াছিলেন।

থিয়েটারের কর্মকর্ত্তাদের মধ্যে আবার বিবাদ আরম্ভ হইল। ৮ই মার্চ্চ তারিথে শেব বারের মত অভিনয় করিয়া সাধারণের নিকট হইতে ইহা বিদায় লইল। কর্মকর্তারা কিছুকাল পরে ছই দলে বিভক্ত হইলেন। এক দল 'ন্যাশন্যাল থিয়েটার' নাম বঞ্জায় রাখিলেন, অন্য দল 'হিন্দু ন্যাশন্যাল থিয়েটার' নামে পরিচিত হইলেন। শিশিরকুমার অভংপর ইহাদের কাহারও সঙ্গে সাক্ষাৎ ভাবে সংশ্রব রাথেন নাই। তবে উভয় দলেরই অভিনয়-কাহিনী তিনি বধারীতি পরিকায় প্রকাশিত করিতে লাগিলেন।

বলীর নাট্যশালার ইভিহাস—জীরজেলনাথ বন্দ্যো

পাব্যার। তর সং। পৃ. ১১৩-৪। এই পুতকে এবিব্রক
বিভ্ত বিবরণ প্রবন্ধ হইরাছে।

.

निनिवक्याव ज्ञानजान शिखातित 'जीनमर्गन' जारेत्कव लाश्य व्यक्तिरहत भरते प्रक्रमान व्यक्तिसाहित व्यारशक्त कविरक दिएक कारबर भरामने विश्वक्रियान रामिशक । केरारा पड़े के म विक्रक हड़ेश मक्ष्याल-- हाकास 10 अमाक शिश অভিনয়দি করিতে প্রবৃত্ত হুইলেন। হিন্দ ন্যাশকাল थिएवटेव बाह्य जिल्ला भएवडे ८ शहे ज्ञानजारेन थिएवटेवर जारम का किटिक हेटेरक मानिम केटे मगर्य श्वीवरयनीम विरयदाव जवर त्वल चिर्यहोत सारम बावस करें है माधावन वलमध क्रांचित हुई मा कहा कि महत्व विश्वासी हुन के विश्वास करे प्राप्तगरभाष्ठीभक विश्वि नाहें व वश्नीक उडेरकित। 'ভারত্যাতা', 'প্রবেজ বিনোদিনী', 'শরৎ স্বোজিনী', 'বীবনারী', 'হরিক্তর' প্রভতি নাটকের অভিনয়ের সঙ্গে সঙ্গে '(भारतक्षत करे कि काख', 'शेवक हर्ग नाहेक', 'शक्षानम 'अ যুব্বাক্ত প্রভৃতি সম্বোশবোগী বিষয়ান সম্পর্কেও নাটক প্রহ্মন ব্রচিত হট্যা অভিনীত হটতে লাগিল। এ সকল নাটকে উল্লেখত বান্ধনৈতিক ও সামাজিক বিষয়ের উপব শিশিরকুমারও পত্রিকায় লেখনী চালাইভেছিলেন। তিনি প্রকের ন্যায় অভিনয়াদির সমালোচনা করিয়া রচয়িতা ও অভিনেতাদের উৎসাহিত করিতে থাকেন। কিন্তু ইহার পথে শীঘুই বিদ্ব উপস্থিত ইইল। 'গ্ৰুদানন্দ ও ধ্বৱাজে'র (পরে নাম পরিবর্ত্তন করিয়া 'হমুমান-চরিত' ) অভিনয়ে সরকার হইতে ঘোরতর আপতি হইন। ১৮৭৬ দালে যুবরাঞ্চ (পরে, সপ্তম এডোয়ার্ড) কলিকাডায় আদিলে হাইকোর্টের সরকারী উকীল জগদানল মুখোপাধ্যায় ভবানীপুরের ভবনে তাঁহাকে আহ্বান করিয়া পুরনারীদের দ্বারা শব্দ ও উল্পানি সহকারে

ববণ করান। এই ব্যাপারটিকে বাদ করিয়া উক্ত প্রহসন লিখিত। পুলিস ইহার অভিনয় বন্ধ করিয়া দিল। বড়লাট লর্ড নর্থক্রক ভিন মাসের জন্য বাংলা-সরকারকে বাবতীয় অল্পীল, মানহানিকর ও রাজজোহাত্মক অভিনয় বন্ধ করিয়া দিবার ক্ষমতা দিয়া ১৮৭৬ সনের ২২শে ফেব্রুণারী এক অভিনাল জারি করিলেন। পরবর্ত্তী মার্চ্চ মাসেই Dramatic Performances Control Bill নামে একটি আইনের ধসড়া আইন-সভায় পেশ করা হয় এবং বৎসরের শেষের দিকে সাধারণের প্রতিবাদ সন্তেও ইহা আইনে পরিণত হয়। শিশিরকুমার ব্যাবরই এরপ স্বাধীনতা-হন্তারক আইনের বিক্তমে ছিলেন। ভিনি ১৮৭৬ সনে ১৪ই ডিসেম্বর প্রিকায় লেধেন.

শমটিক সহজীর আইম বিধিবদ হটবা সিয়াছে। এ আইম বিধিবদ যা হব এটক অমেকগুলি আবেদন প্রদণ্ড হব, কিছু বাবহাপক সভাতে ভাহা প্রাহ্ন হব মাই। হ্বরাজ বদি এবামে মা আগমন করিভেন ভাহা হইলে হয়ত এ আইমটী বিধিবদ হটত না। এ আইমের উদ্দেশ্ত মহৎ হইতে পারে, কিছু ইহা ঘারা প্রপ্রেণ্ট আমাদের উপর আর একটা শাসম হাপন করিলেম। আমরা শাসনের প্রভাবে নির্দ্ধীব হটমাছি। প্রপ্রেণ্ট বদি আমাদের নিভানেমিছিক সমুদর কার্যোর উপর পর পর এটরেপ শাসন ছাপন করিতে থাকেন, ভাহা হইলে বাব হয় আর দীর্থকাল আমাদের এ আইমের অধীম থাকিয়া ইংরাজ রাজার আজা পালন করিতে হইবে না। ভারতবর্ষবাসীরা এরূপ ছামে গম্ম করিবে বেধানে আর ইংরাজ শাসনের ক্রকৃতিত ভাহাদিগকে ভীত করিতে পারিবে না।"

## অবনীক্রনাথ

### औरभारतसक्ष नारा

সুষ্য গেল স্থাবিধে। স্বস্ত ববি দিয়ে গেল ডাক,
অবনীৰ বাত্ৰা স্থক স্বজাত দে স্বনম্ভৱ পথে।
উদ্ধাসিত মূৰ্জি বাঁৰ মহিমার স্মান স্থালোতে
সম্প্ৰমে স্থানত মৃত্যু দে জ্যোতির সম্মুখে নিৰ্ববাক।
ভিন্ন ক্ল'চ, স্থাতি, স্বন্ধ, শোক, তুঃখ – স্বালি মিলাক।
বচনার মাঝে শুধু নহ ত জীবস্ত কোন মতে,
স্কন্ধ গৌবব তব চিত্রমন্ধ এ মহা-ভাবতে,
স্বাম্ব ত্মি বে, পঠে ক্লম্বনি, বেকে পঠে শাঁধ।

প্লাবন আনিয়া দিলে, হে বিপ্লবী, ভেঙে দিলে বাঁধ, কৰু স্ৰোত মুক্ত হ'ল, মুক্তধারা বহে চারি ভিতে। কলা-সরস্থতী তাঁর দিল ঢেলে সব আশীর্কাদ, দিল প্রোণে বহিংশিধা এ জীবন সফল করিতে। জাপে চিন্ত, জাগে দেশ, নীলাকাশে জাগে পূর্ণ চাঁদ, বসন্থের আবির্ভাব নবঞ্জী-প্রসন্ধ অবনীতে।

# দিনাজপুর জেলায় পল্লীর আর্থিক জীবনের রূপাস্তর

जिनदासनाथ द्राय

পরিগর্জনশীল জগতে বাঙালীর আথিক জীবনও নিয়ত পরিবর্তিত চইতেছে। নদীমাতৃক বাংলার সভাতা নদীকে কেন্দ্র করিয়া গড়িয়া উঠিয়াছিল। বর্ত্তমান সময়ে রেল-পথকে কেন্দ্র করিয়া উঠা নব রূপে প্রকাশ পাইতেছে। এই নৃতন গতির আওতায় আসিয়া বাঙালীর আথিক জীবনেরও বছপ্রকার ভ ঙাগড়া ফ্রু চইয়াছে। নাংলার বে-কেণ্ন জেলায় সমাজগড়নের রূপান্তর লক্ষ্য করিলে এই পরিবর্ত্তন পরিশ্রুট চইয়া দেখা দিবে।

দিনাজপুর বাংলারই একটি জেলা। ধানই দিনাজ-পুরের প্রধান ক্র্যিসম্পদ। বছপ্রকার উৎকৃষ্ট ধান এই জেলায় উৎপন্ন হয়।

এই জেলায় পূর্বেধানভানা হইত টেকিডে। টেকিইটি চিউলই চালান হইত গল্পী হইতে গল্পে এবং গল্প
হইতে নৌকায় দূব দ্বান্তবে। জেলাময় হাজার হাজার
টেকি ছিল। টেকিতে ধানভানা ছিল পল্পীবাসীর অর্থ
উপার্জনের একটি বড় উপায়। একজনের এক মণধান
টেকিতে ভানিতে প্রায় দেড় দিন লাগিত, এবং ধরচ পড়িত
প্রায় দশ হইতে এগার আনা। জেলার দক্ষিণ অঞ্চলে
ধানের আবাদ ও টেকির কাজ বৃহু পূর্বের সাঁওভালদিগকে
আক্রাই করিয়া আনিয়াছিল।

১৮৭২-৭৩ খ্রীষ্টাব্দে প্রায় সাত-আট লক্ষ মণ ধান-চাউল কোচবিহার রাজ্যের মাথাভালা বন্দর দিয়া কলিকাতার দিকে রপ্তানি হইত। তথনকার দিনে পুনর্ভবা, কুলীক, নাগর, আত্রাই, যমুনা ও করতোয়া নদীপথে ধান চাউল বাংলার অন্যান্য জেলায় ও বিহারে চালান হইয়া যাইত। এখনও জেলার দক্ষিণ ও পশ্চিমে রেল-ষ্টেশন ইইতে দূবে ধান-চাউল নৌকায় বগুলি হয়। পুনর্ভবাও আত্রাই নদীর তীরে কাঁটাবাড়ী, নাভিপুর, নীথপুর, গোপালগঞ্জ, আমতলি, শিহোল ও কালিকামোরার ঘাটে ঘাটে নৌকায় ধান বোঝাই হয়। আত্রাই নদী বাহিয়া ধানের নৌকা বাইত প্রায়ই পূর্ববেকে। পুনর্ভবা নদীতে ধানের নৌকা চলিত মুশিলাবাদ, বিহার ও বালিয়ার দিকে। ইটাছার ও বংশীহারি থানা এলাকায় ধান চালান ইইত মালদতের দিকে গকর গাড়ীতে।

ধানের পরই প্রধান কসল পাট, আথ. সরিবা, লকা, ও পেঁচাজ ইত্যাদি। আতাই নদীর ভীরে ভ্রিব বন্দর হুইডে এককালে পাটও বস্তানী হুইত নৌকার। ডালিম-গাঁও ও কালীয়াগঞ্জের সরিবা ও পেঁয়াজ, এবং সেতাবগঞ্জ ও কাহ'ক্লের গুড়ও নৌকায় রপ্তানি হইত। নাজিপুর ছিল গুড়ের বড় বন্দর। বংসরে প্রায় १-।१৫ হাজার মণ গুড় নৌকায় চালান হইত।

নৌকাগুলি নারিকেল, কডাই, এনামেলের বাসন, লবণ, ময়দা, কাপড়, চিনি, কেরোসিন ইত্যাদিলইয়া দিনাজপুরের বন্দরগুলিতে ভিড়িত, এবং যাইবার সময় ধান চাউল, গুড়, পাট, লকা ও অনাানা বেসাতি লইয়া নদী পাড়ি দিত।

সেকালে পুনর্ভবা নদীর ক্লে বড় গঞ্জ ছিল নীধপুর! কুলীকের তীরে রায়গঞ্জ, টালননদীর উপরে কালিকামোরা এবং আত্রাইয়ের তীরে তীরে ছিল মম্বিয়া, চাঁদগঞ্জ, কুমাবগঞ্জ, পতিরাম, বালামাটি; যমুনার ক্লে হিলি, এবং করতোয়ার তীরে ঘোডাঘাট।

এই জেলার নদীগুলি যে কেবলমাত্র কৃষি ও বাণিজ্যের উপরই প্রভাব বিন্তার করিয়াছিল ভাহা নহে, দেশবাসীর ধর্ম, সমাজ জীবন, এমন কি সভ্যতার মূলেও ছিল নদীর গভীর প্রভাব। পূর্বের নদীগুলিও বর্তমানের মত মৃতপ্রায় শীর্ণকায় ছিল না। মোগল-পাঠান যুদ্ধের সমকালেও করভোয়া নদী এরপ বিস্তৃত ছিল বে এক তীর হইতে অপর কল পরিছার দেখা যাইত না।

নদীগুলি ক্রমশ: হাজিয়া মজিয়া যাওয়ায় আগের মড
নৌকায় থান চাউল ইডাদি চালান দেশয়া বাহত হইডেছিল। কাজেই এই শুলায় ব্যবদা-বাণিজ্যের ক্ষেত্রে ভাঙাগড়া ফুরু হইয়াছিল, এবং রেল চলিবার দলে দলে বাণিজ্যকেন্দ্রেওও পরিবর্ত্তন হইডেছিল। হিলি হইডে পার্বভীপুরে
প্রাস্ত ছোট রেলপথ হয় ১৮৭৭ খ্রীষ্টাব্দে। পার্বভীপুরের
প্রবাংশে রেল চলে ১৮৭৮ খ্রীষ্টাব্দে, এবং পশ্চিম দিকে রেল
চলিতে আরম্ভ করে ১৮৮৪ হইডে ১৮৮৮ খ্রীষ্টাক্ষের মধ্যে।
দিনাজ্যপুর-কৃহিয়া বেল লাইন খোলা হয় ১৯২৮ খ্রীষ্টাব্দে।
জেলার ভিতর দিয়া রেল চলিবার পর হইডেই নদীব ভীর
ছাড়িয়া রেলের ধারে ধারে গড়িয়া উঠিয়াছে ব্যাপারীদের
বস্তি।

েল-লাইনকে কেন্দ্র করিয়া দিনাঅপুর, হিলি, চরকাই, ফুলবাড়ী, বিবল, বালালবাড়ী ইড্যাদি বেল টেশনেও কাছে কাছে এবং উত্তবে শিবলাও ও সেভাবলাও প্রায় ৩৮টি চালের বল প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। তন্মধ্যে হিলির নিকটেই ১৪টি কল। এই জেলার প্রথম চা'ল-কল প্রতিষ্ঠিত হয় ১৯১৪ খ্রীষ্টাব্দে। দীঘাপাতিয়ার কুমার শবৎ চক্র বায় মহাশয় উহা প্রতিষ্ঠা করেন। অবপুরহাট, কামালগঞ্জ ও আজ্বেলপুর

রেলটেশনও ধান-চাউল রপ্তানির বড় কেন্দ্র চ্ইয়া উঠিল।

ক্রমে ব্যবসা-বাণিজ্যের ভারকেন্দ্র নদীর তীর হইতে স্বিয়া আসিল রেলের ধারে। সমাজ জীবনেও নদীর প্রভাব ক্রমণ: কমিয়া গিয়া রেলের প্রভাব বাড়িয়া উঠিল। বড় দিন নদীর ধারে কর্মকেন্দ্র ছিল তড় দিন সবই ছিল প্রায় বোল জানা বাঙালীর তাবে, জার রেলের ধারে নৃতন কর্মকেন্দ্র দেখিতেছি অবাঙালীর প্রসার বৃদ্ধি। প্রমিকের ভিতর বিহার ও উত্তর-ভারতের লোকই বেশী। চরকাই, ফুলবাড়ী ও হিলিতে ব্নো, সাঁওতাল ও হোটনাগপুরের অন্যান্য আদিবাসী। কেবল ফহিয়াতে বাঙালী প্রমিক নক্ষরে পড়ে। ধান ভকাইবার ও তুলিবার কাক্স মেয়েরাকরে ।

১৯০৬-৩৭ খ্রীষ্টাব্দেও শুধু রেলের সাহায্যে দিনাজপুর জেলা হইতে ধান বস্তানি হইয়াছে ২৪২,৮০৯ মণ এবং চাউল চালান হইয়াছে ১,৯৬৩,৮৬৯ মণ। শুধু ধান চাউল নহে, পাটও বংসরে প্রায় ১২ লক্ষ মণ রস্তানি হয় রেলে। বেল হইবার পর হইতেই পাটের বন্দরের কাজও চলিতেছে দিনাজপুর, কহিয়া, শিবগঞ্জ, ঠাকুরগাঁও, গড়েয়া, রায়গঞ্জ ও হািল বেল-টেশন হইতে। এই জেলার কিছু ধান-চাউল ও পাট রস্তানি হয় রংপুর জেলার দায়ওয়ানী ও সৈয়দপুর বেল টেশন হইতে। শুড়, সবিষা, লহা প্রস্তৃতি নৌকার পরিবর্ডে বেলে চালান স্কুক্ হইয়াছে।

চা'ল-কলের আবির্ভাবের সঙ্গে সঙ্গে শহরের বাহিরে পদ্ধীতে রেল-টেশনের নিকট কতকগুলি পাটকল (জুট প্রেস্), ইটের ভাঁটা, ভেলকল এবং একটা চিনির কলও সড়িয়া উঠিয়াছে। নদীকেন্দ্রিক বাণিজ্যের আমলে ঢেঁকি, ঘানি, গুড় ও তাঁত ছাড়া অপর শিল্পের বড় একটা স্থান ছিল না। এখনও লাহিড়ীহাটের কাছে ও রাণীবন্দরে কয়েক ঘর তাঁতী ও জোলা অর্থ্যুত অবস্থায় আছে। তাহারা মরিয়াও মরে নাই। সেতাবগঞ্জের চিনির কলের চাপে গুড়ের উৎপাদন কমিয়াছে। তেলের কল পদ্ধীর ঘানির গলা টিপিয়া মারিবার জন্য হাত উচাইয়াছে। চাউলের কল ঢেঁকিকে মুর্গে পাঠাইয়াছে।

পদ্ধীর অভিবৃদ্ধ বলিভেছেন, "বে খলে ১০০ খানা ঢেঁকি সারাদিন চলিভ আজ সেই খলে তৃইখানাও দেখিতে পাইবেন কিনা সন্দেহ। পূর্বে ঢেঁকির শব্দে ছিল প্রতি পদ্ধী মুধরিত। ভজ্জন্য পদ্ধী-গৃহস্থের ট'্যাকেও তৃইটা প্রসা আসিত; কিছু আজ সবই গিয়াছে। বেশী সময় লাগে নাই। এক পুক্ষের মধ্যেই এই পরিবর্জন। এখন কল্টাটা চাউল চালান হয়। কলে টাটবার ধরচও কম,

লোকের কচিও বদলাইয়াছে। নদীর তীবে কত গঞ্জ, কত বন্দর গজাইয়া উঠিয়াছিল; আজ দেখিতে পাইবেন প্রামের নামের শেষেই 'গঞ্জ' ও 'বন্দর' আছে, কাজের বেলা প্রায় সবই নীরব। কারণ নদী যাইতেছে হাজিয়া মজিয়া, আর বেল উঠিয়াছে গজাইয়া।

এক দিকে বৃদ্ধের মূখে ভাঙনের স্থর, অপর দিকে বেললাইনের ধারে ধারে গড়নের নব রূপ। ক্লবিপ্রধান দিনাজপুর কলকারখানাপ্রধান হয় নাই বটে, কিছু বছ্রপদ্ধীর
আওতাঁয় আসিয়া পড়িতেছে বলা চলে। সমাজ-জীবনে
যদ্তের প্রভাব ক্লফ্ল হইয়াছে।

এই জেলায় রেল খুলিবার পর হইতেই ফদলের দাম ক্রমশ: বাড়িয়া চলিয়াছে। মাল চালান দিবার স্থিধার জন্যই গত ৩০।৪০ বংসরের মধ্যে দাম চড়িয়াছে। প্রধান ফদল চাউল। শুধু সাধারণ চাউলের মূল্যবৃদ্ধির গতি দেখিলেই দর কি হারে চড়িতেছে তাহা কতকটা আঁচ ক্রিতে পারা বাইবে:

১৮০৮ খ্রী: এ	।ক টাকায় সা	ধারণ চাউন	পা ওয়া বাই ড	5 8৮ <b>সে</b> র
३५७३ "	*	*		৩২ সের
3645 m	w	20		৩১ সের
১৮৭৪ খ্রী: গি	ইল চ্ভিকের	ৰৎসর। ত	ার পর্ব এব	<b>টাকা</b> য়
		পা ক্যা সা	हरू ८८ कार्ड	। ह्याँग

2662	খ্ৰী:	এক টাকায়	সাধারণ চাউল পা	ওয়া বাইত ৩২ সের
36 <del>68</del>			**	১৫ দের
>>>>				১৩ <del>ই</del> সের
>>० ७	•		n	৮ई সের
7209		,	•	গ্ৰ্ণ্ট সের
4066	n	99	,,	૧ <del>ફ</del> সের
>>> •			99	১৩১ সের
<b>५०२७</b>	,	,,		>• সের
2562	*			२३ भित
			( দিনাব্রণার বে	ৰুলায় ওজন বেশী)

এককালে টাকায় ৭.৮ সের চাউল হইলেই ছুভিক্ষের অবস্থা বলিয়া বিব্রচিত হইত। বর্তমান সময়ে টাকায় আড়াই সের চাউল পাওয়া গেলেও উহা ছুভিক্ষ বলিয়া গণ্য হয় না। ভাহা হইলে লোকের উপার্জন কি এই অন্থপাতে এতটা বাড়িয়া গিয়াছে ?

১৯২৬ খ্রীষ্টাব্দ হইতে ১৯৩০ খ্রীষ্টাব্দ পর্যন্ত দিনাকপুর জেলার সকল থানার এলাকার প্রধান প্রধান গ্রামণ্ডলি ঘুরিয়া নিমলিখিত কয় প্রকার মজুরির হার দেখিতে পাইরা-ছিলাম। এইগুলি জনপ্রতি দৈনিক হার:

- (১) ।/৫ আনা ও ছই বার খোরাক।
- (₹) la/° n n
- (৪) ১০০ , (ত্ত্বীলোকদিগের)
  ১০০ , (পুরুষদিগের)
  (৫) ১০০ , (ত্ত্বীলোকদিগের)
  ১০০ , (পুরুষদিগের)
- (১) (২) (৩) নং মজুরির হারই কডকটা স্থায়ী, এবং জেলার প্রায় ৩ ভাগ স্থানে ইহার চলন আছে। (৪) নং হাবের চলন প্রায় ২০।২৫টি গ্রামে পাইয়াছি। চালের কলেই (৫) নং মজুরির হার চলে। ইহা ছাড়া ধান ও পাট কাটিবার সময় মজুরির হার জেলার সর্ব্বেই বাড়িয়া ১২ হইতে ১০০ পর্বান্ত উঠিত। তখন সাধারণতঃ উহা ৮০ আনার নীচে নামিত না। গরুর গাড়ীর গাড়োয়ান—বাহার নিজের গাড়ী বলদ আছে—সেও দৈনিক প্রায় ১॥০ টাকা উপার্জন করিত।

ধান ও পাট কাটিবার সময় বিহার ও বাংলার অন্যান্য জেলার মন্ত্র আসিত। ফ্রল কাটিবার সময় অঞ্লের রুষক বিদেশী মন্ত্রের সাহায্য লইয়া থাকে। বথন ধান পাকিতে আরম্ভ করে তথন তাড়াতাড়ি অনেক বিঘা অমির ধান কাটিতে হয় বলিয়া বিদেশী মন্ত্রের সাহায্য লইতে হয় : 'গাডা' প্রথা, অর্থাৎ পদ্ধীর সকলে বা বহুলোকে মিলিয়া একজনের শস্ত্র কাটিয়া দিবার রীতিও প্রচলিত আছে। এই জেলার শ্রমিক দেখিতে খুব শক্ত ও জোয়ান হইলেও সাধারণত: শ্রমবিম্ধ। মেয়েরাও বাহিরের কাজে বথেট পরিশ্রম করে। পদ্ধাপ্রধা নাই।

বর্ত্তমান সময়ে পোরাকি ছাড়া মজুরির হার ৮০ আনার নীচে নাই, এবং ১॥০ টাকার উপরে সাধারণতঃ উঠে না। ১৯২৬ খ্রীষ্টাব্দের তুলনায় ১৯৫১ খ্রীষ্টাব্দে সাধারণ চাউলের দাম বাড়িয়াছে প্রায় পাঁচ গুণ। খ্পচ মজুরির হার ১৯২৬-২৭-এর তুলনায় বর্ত্তমান সময়ে বাড়িয়াছে প্রায় ডিন গুণ। মূল্য ও মজুরি বৃদ্ধি সমান তালে হয় নাই। খ্পচ ঠাটও কিছু বাড়িয়াছে। ফলে আধিক কট ঘরে ঘরে।

নদীকেন্দ্রিক সভ্যতার প্রভাবমুক্ত হইয়া বেল-প্রভাবের আবিতায় আসিয়া এবং বন্ধপদায় পা বাড়াইয়া এই জেলার নর-নারী আর্থিক সক্ষরতা প্রায় হারাইতে বসিয়াছে।

পরীশির বাহা ছিল তাহা ধ্বংস হইয়া গিয়াছে। নদীকে কেন্দ্র করিয়া বে সব উপার্জনক্ষেত্র গড়িয়া উঠিয়াছিল তাহাও প্রায় সবই মৃত। অথচ রেলকে কেন্দ্র করিয়া বে সকল কলকার্থানা, ব্যবসা-বাণিজ্য গড়িয়া উঠিয়াছে তাহাতে এই কেলার পরীবাসীগণ নানাকারণে বোগ দিতে পারিতেছে না। ক্রবিক্ষেত্র ও পূর্ব্ব আবাস ছাড়িয়া দূরে গিয়া নৃতন বসতি ছাপন করিবার হুবোগ কয়জনের আছে ? ভিটার মায়ায় ক্ষেতথামার আঁকড়াইয়া ধরিয়া দারিত্র্য বরণ ক্রিয়াই বহিয়াতে বেশীর ভাগ নরনারী।

এই ख्लात-এই ख्लात रुन, वाःनात शात्र नर्सखरे পল্লীবাসীর আর্থিক উন্নতির জন্য প্রয়োজন পল্লীভেই উপাৰ্জন-ক্ষেত্রের সৃষ্টি। উহা সম্ভবপর হয় যদি পদ্মীতেই কবির ভিত্তিতে পরীশিল্প ও কারখানা গড়িয়া উঠে। আমরা এমন একটা যুগে আসিয়া পডিয়াচি বে এখন আবু কল ছাড়িয়া টেকি অন্য কিছু আপ্রায় করা সম্ভবপর নছে। কাজেই বে অঞ্চলে যে কাঁচা মালের যোগান বেশী সেই সব পল্লীর নিকটেই তৎসংলগ্ন কারখানার প্রতিষ্ঠা হওয়া উচিতে। অতীতে এই নীতি অফুসরণ করিয়াই পল্লীশিলের সৃষ্টি ও বিকাশ হইয়াছিল। বে অঞ্চলে পাটের আবাদ ভাল সেই সব পলীতেই দিনাজপুরের বিখ্যাত চটশিলীদের আবাস ছিল। কিন্তু বর্ত্তমানে পল্লী-সমাজের উন্নয়নের প্রতি দৃষ্টি বাধিয়া অর্থকরী প্রতিষ্ঠান স্থাপিত নাই। বর্ত্ত মানে কুটার-শিল্পেরও জন্ম হয় ধনী বা প্রবর্ণমেন্টের ধেয়ালের উপর নির্ভব করিয়া। কাঁচামালের যোগান ও স্থানীয় লোকের প্রতিভা এবং দক্ষতার কথা বিবেচিত হয় না। পল্লী-সমাজের গড়ন ও আদর্শ বজায় রাখিয়া যদি পল্লীর বিভিন্ন স্থানে শিল্পপ্রিছান পড়িয়া উঠে, তাহা হইলেই পলীবাসী কবি ছাড়াও নতন উপাৰ্জনক্ষেত্ৰ পাইতে পারে।

পল্লীকে পুনরায় সঞ্জীবিত করিয়া তুলিতে হইলে সর-কাৰী আপিদ শিল্প-কারখানা প্রভৃতিও কিছু কিছু পল্লীতে नहेवा या ख्या প্রয়োজন। পলীবাসী ক্রয়কের জন্য যে সরকারী কুবিক্ষেত্র তাহাও বহিয়াছে জেলা শহরে, পল্লীতে নহে। এই দ্ব আপিদকে কেন্দ্ৰ কৰিয়াই পল্লীতে উপাৰ্ক্তনের কেত্র প্রদারিত করিতে হইবে। কলিকাতার ছাত্রের ভিড क्याहितांत क्रमा मत्रकांती माहात्या भन्नी-क्षकत्न कत्नक প্রতিষ্ঠা করিয়া সরকার ছাত্রদিগকে আহ্বান করিতেছেন শহর ছাড়িয়া পল্লীতে ঘাইতে, আর সঙ্গে সঙ্গেই কলিকাভার বাবতীয় আশিস ও উপাৰ্জন-প্ৰতিষ্ঠান কেন্দ্ৰীভত করিয়া ঐসব ছাত্রের অভিভাবকদিগকে এবং ছাত্রদিগকেও আক্লষ্ট করিতেছেন শহরের অভিমুখে। এইরূপ অবান্তব নীডি অমুসরণ করিয়া পল্লীর এবং দেশের প্রকৃত কল্যাণ इटेरव ना। छेपार्क्यानव विशिव श्रीकिशन सम्बद्ध पद्धीरक भन्नोत्छ इक्षारेश ना मित्छ भावितन, अवः चाननीत मः इक्षित অফুসরণে সহজ জীবনের আদর্শ প্রাত্যহিক জীবনে প্রতিষ্ঠিত না হইলে, তথু শহরবাসীর মুখনিঃস্ত "পল্লীতে কিরিয়া या ७ देन दिन भन्नीय व्यानश्चिष्ठी इहेरव ना।

## মুক্তার জন্মকণা

### विवीद्यक्रमात्र ताय

অথকার সাঁগেলেও একথানা বর, সব সময় এমন একটা
অপ্টেডা কড়িরে থাকে বে অমতাত লোকের বুবে ওঠা
বুশকিল দিন ও রাভ ট্রক কোন সময় আসে বা বার। বভিতে
সমর প্রায় ন'টা। শেকালী ভাঙাভাছি কোন রকমে জলসিজ্ঞ কেন্দ্রটা কাপতে কড়িরে পাশের হোই বংব-ক্রমটা হতে বেরিরে
এল এবং ওই অভকার ব্রেই একটা বিবর্গ আহনার সামনে
ইাভিয়ে ভার মনে পতে গেল তেলের শিশিটা একেবারেই
কালা। স্নভরাং চিক্রমটা একটু অভিরিক্ত জার বিরেই ক্রম্ম
চুলগুলের মধ্যে চালাভে চালাভে বলল—আহার ভাতটা
ভাভাভাছি দাও যা, আ্লকে আবার দেরি হরে বাবে মনে
হচ্ছে।

মা অপণা কিছুটা সহ্চিত হবে কৰাব দিলেন—ভাই ভো বেৰি, আৰু আনাৱ ৱাৱাৱও এবন দেৱি হ'ল। স্বালে উঠে বেশন আনবার টাকা ভ ভূই দিবে গেলি না, আনার হাতের স্ব কুরিবে গেছে। অনেক বুঁকে পেতে হটো চাল কোগাড় করে আনলাব।

আৰভ্যত লোক অবাক হবে বাবে, অপৰ্ণাৱ কথাৰ নয়, ভাৱ উপছিভিতে। এই খরেই ভিনি এভকণ বলে আছেন এবং দেখানে একটা অলভ উত্নও আছে।

শেকালীর মনটা এ খবরে বড় র্যভে পড়ল এবং ভার চোখ ছটো আবার যড়ির পানে গেল। কিবেও পেরেছে ভার রুব, কিন্তু আর আক্ষেপ বা অপেকা করা চলে না। রেশনে বা চাল পাওরা যার ভাতে সপ্তাহটা পুরো চলে না, আবার কিছু একটা ব্যবহা করতে হর। স্ভরাং অপর্ণা বা খবর দিলেন সেটা নভুন কিছু নর, ভবু আর একটু সমর বভ দিলেই হ'ভ। একেবারে বেরিরে যাবার পোশাকে তৈরি হতে হতে শেকালীর মুখে একটা সাম কৌভুকের ভাব ভাগে —আর বেধিন চাল সুরোর সেই দিনই বুবি রেশনের দিন!

অপণা অৱভাৱের মধ্যেই একটা সঞ্চিক দৃষ্টিপাত করে সব বুবে নিজে ব্যঞ্জ কঠে বজলেন—গাঁড়া, বাসনি বেবি, আর বিনিট পনেরোর ভাত হবে আসছে।

সমরের হিসেব এই সব ঘরেই নিবুঁত। সমর এত ক্ষ বে বান-অভিনানের প্রশ্নও ওঠে না। শেকালী হিসেব করতে লাগে নিনিট পবের হতে, অভত: নিনিট বলেক কুড়োভে ও বেভে—এই নিয়ে প্রায় আব ঘটার ব্যাপার, অভবানি সময় পাওরা অসতব। বুড়ী হেড নিপ্রেসট অরবরনী পিতরিলীবের ওপর ভি রক্ষ বেন সব সবর চটা। প্রথম পিরিয়তে হু-এক নিনিট বেলি হলে এবল ভিন্ন ভঙি হয় না, ভিন্ন বোটা বেওয়ার হ্যোগ ওতেই হয়। শেক'লী এই বোঁটা হক্ষ করার ব্যাপারে এবনও অভ্যন্ত হতে পারে নি, হুওরাং এবেলার বত ভাত বাওয়াটাই ভার মূলভূবী রইল। মূপকিল এই বে, না একবা কোনদিনই বোবেন না, ওঁরে বিখাস হ'ল, বে না বেছে বাহুষ কাছ করতে পারে। আর ভা হলে কাছ করাটাই বা ভিসের ছভ ?

হোট বাগ্যটাৰ দিনিষগুলো শুছিৰে নিতে নিতে শেকালী বলল—ভূবি ভেবো না না, আমি কোথাও কিছু থেৱে নেব, ভাতটা ঢাকা দিয়ে রেব, ওবেলার এলে বাওয়া বাবে।

এক রাস খল পেলে হ'ত। সকালে শুবু সেই এক কাপ চা, ভার পরে টিটানির সেই এক রাশ বকুনি, গলাটা একেবারে শুকিরে উঠেছে। অবচ জলের কুঁলোটা বার বিকের কোবটার এবং জলের সলে বাবার মন্ত কোন কিছুই বরে বে নেই শু শেকালী আমে, কারব শু হলে মা নিজেই এক্সেরে শা আগে ভাগে ভার সূর্বে হাজির করভেম। অবচ সব জেমেশুমেশু বিদি শেকালী এবম এক রাস খল বাবার উভোগ করে ভা হলে ভিনি ইা হাঁ করে উঠে এমন বোঁলা-বুঁজি লানিরে জেবেন বেটা ঐ হেডমিট্রেসের বোঁটার মন্তই শেকালী সইন্তে পারবে না।

অপণা ভবনও ব্যাকৃল দৃষ্টিতে তারই পানে চেবে, আড় চোবে চাইতে গিরেও শেকালীর চোব পড়ে বার। বাবার মুবে এই রক্তম বন্দে দাঁভাবোর কৈকিবত বরপই লে বেন বলে—ইয়া দীলু নীলু সময়মত মূল বার বেন। গলির মোড়ে বেল্ছে দেখে এসেছি, সকালে পড়তে বসেছিল ত ?

चर्तर्ग पूर्वरः चार्थरहत्र जल चात्रस्य करतम-हैं।, किस कृष्टे...चाव्हा चात्र । हत्री हती...

শেকালী ভভক্দ অনেকটা দূর এগিরে গেছে।

প্রথমে আণিলে চুকেই সে গুনতে পেল হেডমিট্রেস তার সহকারিণীর সদে অপুরে ই।ভিরে তরিতরকারীর রহনতত্ব নিরে গল্প করছেন। বুজো বরসে তীবরতি আর কি । কেন, আপিসটা ভোষার রালাঘর না কি । সে নিঃশব্দে বাভার নাম সই ক্রতে করতে একবার আভচোবে দেবে, হেডমিট্রেস ভভোবিক আভচোবে বভি দেবা শেষ করেই ভার পামে ভাকাবার তেইার নির্ভা। ভাবের এই গোপন কটাক্ষেয় বিলম হতেই তিমি বললেন—ভি শেকালী, আভ বভ সভাল সভাল বে, ব্যাপারবানা কি ।

শেকালী বোৰে ভার প্রতি লক্ষ্য হাববার কটাই আশিলের কোৰে এই হায়াহ সললা-ভত্ব বিশ্লেষণ। লে এর উভরে একটা খন্দাই হ'বলে ক্লানের বাভাবানা নিবে চলে এল নিখেনের বরে। তা হাড়া আর বলবারই বা কি আহে? পুক হর ভাকে এই বললার আলোচনার বোগ বিভে হব। তার চেরে শেকালী নিখেদের বরে বলে প্রাণভরে থল বাবে, তার অবেক সময় আছে।

ক্লানেও সেই বক্ষের এক বক্ষারি। একটা ছোট বেছে অনেকটা দেরি করে ক্লানে এল, শেকালী বিরক্ত হরে প্রশ্ন ক্রল—এক বেরি কেন ? উভরে বেরেট একটু ইডডড: করে বেশ সহক্ষাবেই ক্যাব দিল—না রায়ার দেরি করে এলিল, আমি কি ক্রব ?

হততাগা বেবেটা ? কেন সংসারে আর কি কোন কবা হিল মা ? একেবারে সবল পদক্ষেপে ক্লাসে চুকতে চুকতে সে বলি বলত রাভার মারবানে পকে পা ভেঙে গেল ভাই দেরি, ভা হলেও শেকানী বুবি এতবানি বিরক্ত হ'ত মা।

ক্লাসখলো বোকই এই বক্ষ লাগে, আক্ষেক বেন একটু অভিবিক্ত এক্ষেত্রে আব লখা ননে হয়। শেকালী অভ্যাস-যভ ৰক্ষে বাব ঘণ্টার পর ঘণ্টা এবং যভই সমর যাছে শেকালী ভভই সচেভন হয়ে উঠছে, ভার ক্লাভি বেন বাইরে না কুটে বেরোর।

শেষের একটা শিরিরডে এসে সে কিছ একটু বেসাবাল হবে প্রকা। পড়া ছিল উটের কবা, সে নাকি একেবারে বছ দিনের জল সক্ষর করে রাবতে পারে, এবনি আরও কভ কি। শেকালী বরাবরই হালীদের কিজাসাবাদের বাবীনতা দিরে থাকে। একট হালী কিজেন করল—আহ্না দিনিনি, আর কোন প্রাণ্ডী আহে বে এবন না বেরে থাকতে পারে। শেকালী বলে—শোনা বার নাপ নাকি সারা শীতকালটা না থেকে বলে উঠল—আরি বলব দিবিবনি ? সবচেরে বেশী সবর না থেরে থাকতে পারে বাজ্য। আনেকার ব্নি-বরিরা নাকি বছরের পর বছর…

শেকানী বাৰণবেই কেটে গড়ন—কৰা হচ্ছিল সাণ আৰু উট নিৰে, ভূমি কোবেকে নিৰে এলে বাছৰ, মুনি-ক্ষি কড কি···

এবন উপৰাদের ভদীতে নে ক্ৰাণ্ডলো উচ্চারণ করল বে, এর পরেও একটা বেরে সন্বোচে প্রশ্ন বা করে পারল বা— ভা হলে ওওলো কি সব বিহে ক্যা ?

শেকালী বিজ্ঞোহিনীর তলীতে অবাতাবিক কোর দিরে আর চীংকার করে উঠন—সব বিবে কবা, সব···।

আন্ন একট ভিনিন্ন নিম্নেও শেকালীর মনটা টকিনের পর হতেই থারাণ বাজিল। হেডমিট্রেস ভাকে টকিনের সময় ডেকে পাট্টরেছিলেন—টক বে সময়ে শেকালী চারের সম্বাদে স্কিনীদের স্কে প্রাম্ম ক্রছিল। এটা ওটা সেটা গাঁচটা কৰা বিলিৰে তিবি শেকালীকে পহিকাৰ তাৰে জানিবে
দিলেন ক্লানে পাঠোৱ বাইৰে অভ বাকে জিনিব আলোচনার
লাত নাই, কাৰণ পাস করাটাই সবচেয়ে আপের কথা।
এবন তাৰে কথাটা বলা হ'ল বে শেকালী চনকে উঠল,
বেন কাউকে পাস করতে বা দেওবার কতই তার এই ব্যবহান্
বুলক শিকালান বিধি। বেশ তাই হবে। সকে সকে
উনিন-শেষের ঘটা বেকে উঠল এবং শেকালী আক সম্পূর্ণ
বার্থপরের মত অক্তব্য করল—পরের বানসিক উন্নতিবিবাদের
নিক্ষল অক্বিত্রক করে তার নিক্ষের বাল্য সন্থানের সম্বন্ধটাই
নাই চবে প্রেল।

ভার এই বার্থপরভাই বৃকি শেবের পিরিরতে অলহ হরে ব্রহ্মরত্র ভেদ করে একেবারে উচ্চে বৃকি-থবি পর্যান্ত ব্যাপ্ত হরে গেল। কলির আর কোন ভেদ্দ বা বাক্ক স্থার ভেদ্দ বিকালবিক্ত।

ছুট হতেই শেকালী সলিনীদের একটু আড়াল বিরেই বাড়ীর পানে হাঁটল। কিবে ভার এখন তেবল বনে হয় দা কিছু আলো কিছুভেই আর সবঁহে না। কিছুভেই বা। বারপরে একটা হোট বেরে এসে বাবা বিল, বললে—রা আপনাকে আজু আবার ভেকেছে বিবিষ্ধি, সময় হবে, বাবেশ কি? সোজা না বলভে ইচ্ছে হয় শেকালীর কিছু ভয়ও হয়। ইউপনি এবন সভা নয়। শেকালী মেরেটির সলে সলে এসে ভালের বাড়ীতে ঢোকে।

গৃহবাহিনী অভ্যবনা কানিবে ভাকে বরে নিবে বলান এবং সময়ৰত কাকের কথা পাড়েন। মেরেটকে পড়াতে হবে এবং পড়ানোর চাইতে ভার মনটকে সেইভাবে গড়তে হবে, শেকালীর এ বিষয়ে তিনি পুনার ভনেতেন ইভ্যাদি ইভ্যাদি। শেকালী বোকে বনীগৃহের সেই এক অভ্যোগ, সম্ আত্তে ভূম্বনটা টিক করে লাভ এবং সন্মানে একটু হালে, মন্দ্রিক করে দেওবার লোক বরা হ্রেতে বটে।

চা বাওরার এক কাঁকে গৃহসামিনী আবার বলেন—আর বেংট এত কেবী হরেনে, বেবুন না ও বেলার মিছিলিছি একটা হবির বই নিয়ে নেতে রইল, বত বলি ইকুলে বা তত গোবারে হবি বেবা ভার চাই-ই। ওকে নিয়ে আপনাকে একট হুর্জোগ পোরাতে কবে বলে হর।

বেৰেট অচ্চে ব্যৱহ কোণে বলে একটা ছবিত্ব বই ওপটাছিল, এ কথাত্ব হ'বনেত্ৰ চোপাচোধি হ'বে পেল। পেকালী চিন্তে পালল কাঠ পিত্তিবছের সেই বেলেটই বটে এবং বেলেট দেশল লে বলা পড়েবে, ভাজাভাজি বল হেডে উঠে বেছিলে পেল। পেকালীত্ব বনটা এ কথাত্ব আৰু একট বেল চাবুক পেল।

কি মুণকিল! যিখ্যা নাৰাতে বনৰ্জেও ধৰী-গৃছের জাজ-কর্মে পোৰার না, গুরীবের ব্যৱের বিপ্রতিভালোকে ব্যৱ টান बाइएक क्या विवे दिन्दाक दिन क्रिक ने का काल का निवास হৰ ভাত পেতে দেৱি হবে গেল।

इत्वरे मा वा क्या १ अभव यह भवरे क विवा हिल्ल बरन चारक, बिरवा बूरक बाद कहा अवारमहे च नवरहरव সোজা। শেকালী ভাবে মেরেট বোকা, থতে ওর লভার কি আছে ? বহি কারও লক্ষা পেতে হব ত সে শেকালী বিকে।

খাখনে এমন খসময় কয়লি বে। বে ভাড়াভাড়ি হাড শা বুৰে বোস আৰু, ভাভ ভ একেবাৰে জন হৰে পড়ে আছে, (वंदा त्म । जननी मत्रका वंदन विद्यारे वनात्क वादकम ।

শেকালীর বাণাটা এবন বরে আছে বে কিছুক্ত গুরু হরে পতে ৰাকতে ইচ্ছা বাহ। কিছ উপাহ নাই, না ৰাওৱা **পर्वाष्ट्र वा जारक नांकि (करवंव नां। जांब अंगब नीजू मीजू** (बरबंद वरम नक्ष्य, जनबंक कथा कांडीकाहिएक धरस्त ব্যাৰাভ হৰে। দে নিঃশব্দে বেশভুষা বদলে নিয়ে খাবার জামগাটাম গিমে বসল। অপর্ণা কাছে বঙ্গে ভাভ বেড়ে विटक बाटकन ।

क्रिक्रेमित प्रश्रावकी माटक (मामानात रेव्हा क्ता। किन्द चनर्राष्ट्रे बालाका बाक्टिक निर्देश चारतकारत चावक करवन চাপা কিস্কিসানির হবে—আৰু ভ এ বেলার বোটে বারা रु'न मा

শেকালী চমকে উঠল, চোৰ হুটো ভার সোজা পড়ল ঠাতা উত্ৰটার উপর ও ভারপরে পাঠরত ভাই ছটর উপর। দেও ভেৰবি চাপা হুৱে প্ৰশ্ন ক্রল—ভা হলে ভোৰৱা पादय कि ?

এখন হতাশভাবে শেকালী ক্ৰাণ্ডলো উচ্চাৱণ করল বেন ভার নিজের বাওয়াই সংশব্যান্ত। অপর্ণা তাড়াভাড়ি **চिक्**क पर्दा वनामन---(म क्लिक कावरक हरन मा कुरे वा विकि । छात्रभात अकृष्ठे (बाद चावात वनामन-४ विनाबहे विश्व बाबा करबिकाय, धरे वानि विरवरे स्टब तन । योनू बीन् (बंदारक्रावरे शकरक बरमरक, बाव बावि बाद्य बाव मा, बिटम टमरे।

(नकामी नवरे बुजन, प्रकश्चार (बटक बाधक करव किरव बृह्यदा बनन--- बदर बाक्टन ७ द्यांन छेगात त्वरे मा ना १ चा अन ना, इ'करम अकनाम किहुडे। (बरह निरे।

चर्गा यानम-मा ता त्ववि मिछारे विता तरे। ७ त्वनाव ভূই না বেৰে খাৰাৱ পৰ খেকে ব্ৰটা ভাল লাগছিল না ভাই অনেকওলো এবিক ওবিক কাল করার পর বেভে সেই ছুৰুৱ গড়িয়ে গিৰেছিল। আৰু পেটটা সভ্যিই কেবৰবাৰা ভাৱ कता चारह।

- আৰু পাহাবিষেত্ৰ মধ্যে এই একটি কৰাছ শেকালীয় ষাৰার ভাষ অনেকটা কৰে বায়। লে এবায় পরিভৃতির বিলভে বলৈ—ভোষায় লাগল দিনি ?

ছেলেবাছৰি চঙে বাৰাটা একটু বাঁকিৰে বলল--বেশ ভাই হ'ল, স্বিদ্ধ এই বেশী বায়ার কবাটা, সেটাও কি সভ্যি ?

অপুণা এবাহ হয়ত সভাই হাগ করেন—ভোর আক হয়েছে কি বল ভ বেবি, ইছল হভে এলেই এই ভৱ সংখ্যৰ আমার পেছনে লেগেছিল, ভাল করে হুটো বা বিকি আগে।

(नकानी चांच बाधवा कूरन बारवव और जनवन वृष्टि (कर्ष) (नकानी कारम किमि निकार नावापिन किन्दे बान मि चवह चक वक मिया। क्यांहै। यहाथ कांब हार्य बूट्य সৌন্র্যের কি হড়াছড়। ভার বিজের সমস্ত অভিবোপগুলি মিলিবে বাচ্ছে তাঁর ওই ক্লাভ ববুর চাত্রিভে। ঠোটে ভার একটা অন্তত আবিফারের পরিতৃপ্ত তাসি কুটে ওঠে, বেটা পরকরেই প্রচণ উচ্ছাসের বিল বিল শক্ষােছে বর্বর किएक शरक।

অপর্ণা আবার জারুটি করেম, দীলু মীলু কিরে ভাকার কিছ এবারে শেকালী মারের জরুট সম্পূর্ণ উপেকা করে হাঁক পাৱে-দীলু শীলু দৌড়ে আৰু দেখি, এই ভাত ছটো খেৰে আমার উদার করে দিয়ে বা ভাই।

चनना बाच ब्रांच नाइम-त्र कि. कृष्टे त्व अरक्वात्वरे (विन मा, त्व त्व चात्र इत्है। बूदव त्व विकि, चडकरव द्यांहै ভাই নীলু এলে দিনির আসমের এক পাশ অধিকার করে বসেছিল, শেকালী ভার ব্যঞ্জ বাছটা বাঁ হাভে সোজা করে क्रिया बाद बारेटा मिट्ड बाट्य अवर मारबंद क्रम्यारबंद উভৱে এবাৰে সে সম্পূৰ্ণ বিক্ষরভাৱ সঙ্গে বহু হেসে বলে---वननाव च वच्छ माथा शराब, विरम अरकवारत सारे। भीजू ভার বহুলোচিত সংখাচ নিরে অভ পালে বলে পড়ে, অপর্ণা হাঁভির অবশিষ্ট ভাত ছটো ভার সামনে এসিরে দেন। ভিনি পরিক:র ববতে পারলেন শেকালী ভার একট কথাও বিখাদ করে নি। শেকালীর বাইরে দেওয়ার নিবিভ ভলির দিকে ভাকিৰে দেখতে দেখতে তাৰ মনে একটা অপূৰ্ক নিৰ্ভৱভাৱ **८वाबाक् कारत** ।

ওদিকে শেকালী সমত শমীয় দিয়ে অভ্ৰুত্ব করে মীলুর ভাভ ৰাওয়ার প্রচণ আগ্রহ, ও ৰ ভীর ওই হোট হবি-দেবা আঞ্জতবা ভলিট। ভাল হতে এবেরকে আর সংখ্যবেলার পভা বলে দেওয়ার সময় হবে না। এটা কি পুসংবাদ।

ट्टानंद चांत चंत्र जब मां, अक्ट्रे दीका वांनू, बरब नरब वा --- অভ্যবিক আত্ৰহসহকারে সুধ চালমার ফলে এবং শেকালীয় ক্ষিক অভ্যানভাৱ বক্ষা ভার একটা আছুলে নীনুর ভাষত পড়ে বায়, শেকালীর সমত পরীরে একটা মনভার শিহরণ कारन ।

ৰীলু একটু অপ্ৰতিত হবে বাঁ হাতে বাবা চুলকে গিলভে

শেকালী ভার হোট বাধার রুক্ চুলের গোড়ার হাভ বুলোভে থাকে, গলাচী ভার বারের বতই ধরে আর্থে, এক্টু পরে বলে—যা বভি হরেছ। ই্যারে নীল্, আঞ্চ টিক সমরে ক্লানে বেভে পেরেছিলি ভ ? যে, ইা কর।

নীসু এডছৰে বুবি দিদিকে শোলাবার বত একটা কৰা পার। অভ কাহাকাছির বব্যেও বডটুকু অলভদি সভব, সবচী করে নিরে নীসু ভাতচা গিলে নিরেই বেন ইাপাতে ইাপাতে বলে—পারব না তবে? এবন চুট্ বিরেহিলাম, লাগাতে বিজেশ কর না কেন। তবে প্লারব বাতাবানাই নিরে বেতে তুলে গিরেহিলাম —বলতে বলতে তার হঠাং বেন নবে পড়ে বার, বলে—আছো দিদি, তুরি বেরে বাও নি কেন, অপ্লব বুবি? আছো, ভোনাদের ভারি নঞা না বিদি, দেরি কর আর বাই কর কেউ বক্বার নাই, না?

শেকালী বোবে হাভের লেখার ভঙ শীলু বকুনি বা

আরও কিছু খেরেছে। নাঠারেরই বা কি দোষ, তিনি কেমন করে ভানবেন বে, নীলু কভবানি প্রাণপণ করেও কর্তবাচ্যত হরেছে। সে এক হাতে শেষ প্রাণ ক'ট নাবতে মাধতে ও বাঁ হাতটা তেমনি ভার নাধার বুলোভে বুলোভে আখাসদানের ভলিতে বলল—সে হবে, ভোরাও লেখাপড়া নিধে বছ লোস।

কিছ সদে সদে সমন্ত অন্তর দিবে সে ভগবাদের কাছে প্রার্থনা করে—এ মুদ্ধার হাত হতে ওবের রক্ষে ক'রো প্রভু, ভূষি উপার ক'রো।

শীলু শেকালীর হাতের পানে চেরে বিল, ভাত বাধা হতেই সে বেষন মূব বাড়াতে বাবে অথনি ভার গালের উপর এক কোঁটা গরন অলের ভার্ল অহতব করে চরকৈ উঠে উপর পানে চাইবার চেঠা করল, আন্দান্তের ক্রে বলল— বিভি ত্রি…

শেকালী ভার মাধার উপর একটু চাপ দিরে ভাঙাভাঙি বলল—ও কিছু মর ভূই খা দিকি।

## অনুরোধ

### এঅমূলাচন্ত্ৰ বোষ

ষ্পে ষুপে প্রেম্বসি	আ্যার !								
তুৰি আনিয়াছ আজি	বসভ কুত্ৰ রাজি								
শোর করে দিতে	• •								
	কোন দিন ভব সাৰে								
•									
<b>ছিল কিনা</b> মোর <sup>6</sup>									
খাৰি ৰে গিয়াহি ভূলে,	ভূষি তাহা কুতুহলে								
দেৰিভেছ মানিয়া বিশ্বয়।									
ৰঞ্দিতে ভৱা কৃদ,	পল আঁৰি সমভূল,								
ব্যধা কম্প, ছক ছ	কু হিৰা,								
চকল দৰিমা বাবে	অঞ্ল স্টার পারে								
বকুলের তুর্ভি নাথিয়া।									
অাদিকে ব্যাকুল মন	বেকে বেকে অহবন								
ৰুঁছে কারে আকাশে বাভানে,									
কাৰ শাৰি মোৰ ভৱে	চিত্ৰ অভ্যাগ ভৱে								
ৰণলক চাৰ যোৱ আশে !									
শ্ৰীশ কান্তম লোৱে	বিশ্বভিন্ন সুৰ বোনে								
वितन चाक श्रशस्त्र त्यांना,									
ক্ষা কি ক্ষিবে নাকে! ?	यकि कृषि वृत्व बादका								
কেন কেনে ভাহি	বাৰ-ভোলা ?								
<b>७७</b> णा मांग्यी विनि,	डेड्निङ रूप विभि,								
উভবোল হিবা ব্য	পাভূর।								

হে প্ৰিয়া। নঃন মেল---পাপিয়া ডাকিয়া গেল---किम जाजि विवह-विश्व। আজি নব আনন্দের বসভের অভবের, যুকুলের আৰ-জাগা আঁৰি यकि अ वाधिक लारन क्टब' (पत्र शांत्य शांत्य---উচাট্ৰ হিয়া থাকি থাকি---ভূমি কি গো অভিযামে চাহিৰে না ৰোৱ পাৰে---রোবি' বার নাহি দিবে সাভা ? वाविमी विकल याद পিক ৰবে কুহরিবে উচ্ছুসিভ পাগলের পারা ? ওধু নিষেধের তুলে ভোষার চরণ বৃলে विक क'रब बाकि अशवाब, আমার বেদ্যা নিয়া ভোৰাৰ ব্যবিভ ছিৱা খুচাইবে না কি পরবাদ ? উহল বামিনী, হায়, वंदा' भए (बमनाव কার ভরে বিহুলে, ব্যাকুল ; কেটে পড়ে ত্রাঞ্চাসম----ব্যবিভ অন্তর নম विवा नानि कैंक्ति चाक्न। नदीन कासून वात्र ভাকিবা কিবিবা বাৰ---শিয়া | আঁৰি ভোল একবায় ! ৰদি লোহাগের ভাকে ও বুকে সরন জাগে---बूरमा ७५ करतक वात ।

## স্থি মুখ চন্দ্ৰ ছবি

স্বরলিপি—শ্রীওঁকারনাথ চট্টোপাধ্যায়-(রাগ খাছাবতী)

(আহারা) সথি মুখ চক্ত ছবি যব আই বিহারী মান ধরম সবকো গুমাই॥ (অস্তর।) প্যারে প্যারে নৈনা ওটে ওটে ধারলে

প্যারে প্যারে নেনা ওচে ওচে ধারলে চিত্তবন মে বশ গেঁই চিত্তবত্তকি আই॥\*

থাধাবতী থাষাক্ষ অক্সের রাগ, ইহাতে হুই নিধাদ ব্যবদ্ধত হয়, অন্তান্ত স্বর গুদ্ধ। বাদী মা, সংবাদী সা। আরোহণে গান্ধার ধৈবত বজ্জিত। অন্তরা উঠাইবার সময় ধৈবত বজ্জিত রাথিয়া গুদ্ধ নিথাদ ব্যবহার করা হয় যথা:—মা পা না না র্সা। অবরোহণের গতি বক্র ও সাতটি স্থরই ব্যবহৃত হয় বলিয়া থামাবতীকে বক্র সম্পূর্ণ রাগ বলা হয়। থামাবতীর আরোহণে, মাড়, দেশ, সিন্ধুড়া ও অবরোহণে বাগেশ্রীর রূপের আভাস পাওয়া যায়, কিন্তু ধা মা ও মা সা সক্ষতি থামাবতীকে উক্ত রাগসমূহ হুইতে পুণক্ করিয়াছে।

থাখাবতীর মুখ্য অঙ্গ---রা মা পা ধা র্সা---ণা ধা পা ধা, মা গা মা সা

#### খাম্বাবতী—তেতালা

					ना ज					: 1
					<sup>ৰ</sup> গা আ					1
					মা কো					1
					ধা আ					1
		<b>দ</b> া টো		11						

প্রসিদ্ধ সম্পীতাচার্য্য পরলোকগত রামরুঞ্চ বেলবোয়ার গায়কী অবলম্বনে

স্বর্জিপি ( অন্তরা) र्मा । । পা না ৰ না t স রে. প্যা o 7.5 रेन প্যা 0 না O > | ধর্ম র্গো সা ৷ | শ্নস্মির রুমি নিস্ণাা | ওল লল টে ুল পাল লল লল ল **5**3 র গা † i গা t 511 ৱা গরা 511 পা fБ মে ৰ (5) 0 † ৩ | প্রাস্র্বি † 1 | 1 t. মা 541 भा 31 sit সা 5 ক क्रा‡त त त সা ত ১. 1 ত 0. () 0 0 O মা পা ধা স্ব স ধা গি 긔 7 C51 괴 म () 0.0 () স্ব न। সা Ī. 617 í -17 ( উ С. 7 0 () 0 0 > | নসারসা, ণা া | 41 ert 41 411 लभ পমা eii 611 o o , 🖫 o Ť भू ।। 0 **(**1) o যা 511 1 গা যা মা ধা 41 ধা ধা (Ď! (1 ŧ 0 0 0 0 র † ett. म । ধা. ধা পা পা ধা পা বি টো ο, মৃ প O ছ স থি মূ া নসা রসাণা ধণা र्मा ধা 1 1 21 ধা মা

ঠৌ

0

0 0

থি

স

বি

0,

মৃ

খ

मू० ०० थ, की

0 + ৩ স্ণাধা, ধা পা | ধা মা পা ধা | স্ণা া, া | ধণাস্ণাধপামগা | / ভান ১ ०० ८५, इ. वि. म थि मू थे ८ हो ००० चा० ००००० रम्भइ 0 जा0 00 00 00 जा0 00 00 00 जा0 00 00 00 0.0 0 भधार्गा | धामा भा धा | र्गा । । धर्मा र्जा नर्जा স থিম প টো ০ ০ আন ০০ ০০ ০ + ৩ স্ণাধ্সাণধাপমা | স্ণাস্থাধপামগা | রমাপধাপমাগমা | সা, স্মারমাপধা আতি ০০ ০০ ত ত আনি ০০ ০০ আন আন ৩০ ০০ আন, আনি ৩০ ০০ र्थमा शक्षा जी । बिरामा शाक्षा निर्मा । चा<mark>त तत त त प्रभाषि मुभ ८६</mark> ते त त পণাধপা, ধমা গমা | রমা পধা পমা গমা | ধমা পধা সরি রি স্ণা | ধপা মগা মমা সসা আতি এণ্ড এল আহি এন এল এল আহি এন ত । । স্প্রিধা, এণাপপা । ধধা মমা, পপা গগা । ধা মা পা ধা । স্বি । । चात वर, तव वत चाव वर, वव वर म थि मू थ की a a ৩ + ধর্সার্গা, মুমা স্মা | র্রাননা, স্মা ধধা | ণণা পপা, ধধা মুমা | পপা গগা মুমা সুসা আন ০০, ০০ ০০ আত ০০ ০০ আত ০০, ০০ ০০ আত ০০ ০০ नता मेशा धर्मा तर्जा | गथा शमा गमा | धा मा शा धा | र्जा । আবি ০০ ০০ আবি ০০ ০০ ০০ সুখি মুখ



# ৰাংলায় কাপাস-চাষ

### শ্রীসারদাচরণ চক্রবর্ত্তী

बळ-अबका ७ काहार लेकियार

বর্তনাম বস্ত্র-সমস্ভার দিনে বরে বরে সামার পরিমাণ কমিতে কার্পাস করাইলা চরধার প্রচলম হারা সহক্ষে বস্ত্রাভাব চূর হুইতে পারে। বাংলার কার্পাস সহক্ষরতা মর বলিরাই নীর্থ দিনের চেঠারও এবানে ইহার প্রতিঠা হর নাই। বে সক্ষ প্রদেশে কার্পাস উংগন্ধ হর ভবার শিশুরাও ক্রীভান্তলে চরধা কার্টিরা আমল পার। বস্ত্র-শিলে বস্ত্র-মৃল্যের দশ আমা কুলা বরিদ করিতে ব্যবিত হর। নিকে কার্পাস ক্ষাইলে নিধরচার সহক্ষে ইহার সমাধাম হর। প্রভাহ কতক সমর পাভার করেক কনে বিলিয়া চরধার হুভা কার্টিলে এবং এক জনে তথার রামারণ মহাভারভাদি কিংবা কোন পত্রিকা হইতে আক্রবীর অংশ পাঠ করিলে সম্বাহী। বেশ আমন্দে কার্টিরা বার।

বাংলার কার্পাস-চাষ লোপ পাইবার কারণ

ৰে বাংলাৰ পৃথিবীৰ ৰব্যে সৰ্ব্যশ্ৰেষ্ঠ কাৰ্পাস কৰিত সেধানে দীৰ্ঘদিন ইহাৰ চাবেৰ প্ৰচলন না বাকাৰ ক্ৰমণ: ইহা প্ৰায় লুগু হইৱাছে। ১৭৮৮ এইাকে ঢাকাৰ ক্ৰাৰ্শিগ্ৰাল বেসিডেও ফুই ইতিবা কোম্পানীকে বে বিশোচ দিয়াকেন, ভাতাতে আছে:

"The district of Dacca produces the best cotton in the world. The fibres are fine, silky and strong."

দেছ শত বংগর পূর্বে ইংগতে সূতা ও कानरणत कम शक्ति करेरम बनारन সে সকল আৱহানী চইছে থাকে। বিলাভ হইতে আম্বানী হড়া অনেক সভা বলিয়া ক্রমণঃ চরবা প্রভিযোগিতার হটবা বাইভে বাব্য হয়। চরবা কাটা বহ स्रेल कुमान हायक केंद्रेश बाद। बीर्चिय ইহার চাব না থাকার, বাংলা বেন ষ্ণাৰ্থান-চাৰের অন্তপ্ৰোপ্ত ভইরা পতে। পাঠ্য পুডকাৰিভেও এ প্ৰকার অহুণ-ৰোপিতা বিষয়ে উল্লেখ পাওয়া যায়। वारमात्र वस भावेकन चारह। व्यविकारमञ्ज शामिक्ट देश्यक । वारमाव কাৰ্পাস-চাৰ ব্যাপক ভাবে ভইলে পাঠের চাৰ কৰিবা হাইবে এই আলফা হেছ रेरदाक विकाम, जना मनर्गामक ब विवद्ध अवस्थि इव मारे। वारमाद्र अवन চলিপ-প্রকাশট কাপড় ও হভার কল विविधि व्रेवार्थ। कुनाव मान महनः बक रेकित नाच-चडेबारम नवा मा दरेल

কলে ব্যবহার চলে না। বাংলার এ প্রকার ভূলার চাষ
লাই বলিরা এ সকল বিলের আবগুক ভূলা অভাত প্রদেশ—
গাকিহান, আবেরিকা, আজিকা, বিশর প্রভৃতি দেশ হইতে
আবলানী করিতে চর।

#### कार्शन-हाय-श्रदहरे।

ঢাকেবরী কটন নিল্দ নামা দেশ হইতে উৎস্থ ই চুলার
বীক আনবানী করিবা ভারাদের এপ্রিকালচারাল অকিলার
হিলাবে আনাকে দিরা ভারাচ চাষ করাইরা ভাল কল পাম।
সরকারী কৃষিবিভাগত এ বিষরে অক্সন্দ নাকল্য লাভ করেম।
ইহাতে উৎসাহিত হইবা বলীর মিল-মালিক সমিতি ও প্রবর্ণমেণ্টের সমিলিভ চেটার এবং অর্থ নাহাব্যে ১৩০৮-৩৯ লন
হইতে বিভিন্ন পরিক্রমান্থ্যারী সরকারী কৃষিবিভাগের
ভন্নাববানে বাংলার বিভিন্ন কেলার দশ বংসর ইহার চাব
হইবারে। ভারতের কেলীর কটন ক্রিট অর্থনাহা্য ও
উপদেশ দিরা উৎসাহিত করিভেন। বর্ণার কল দাভার না
এপ্রকার বোজাশলা নাট ভাগনি-চাবের বিশেষ উপবোদী
প্রমাণিভ হইরাহে। ইহার চাধে বিবারতি প্রকাশ-নাট
টাজার বভ বরচ করিবা কার্পাসমূল্য বাবদ একা শভ
গচিন হইতে এক শভ গঞান টাকা পর্যাত পাওরা বার।



শিখৰা জীড়াজ্লে চৰণাৰ স্থভা ড়াইডেছে

কলম বিবাপ্রতি তিন বণ হইতে পাঁচ বণ কার্পাস বা এক বণ হইতে হই বণ ভূলা ও হই বণ হইতে হয় বণ বীক পাওরা বার। মিশরীর কার্পাসের মূল্য অভাত কার্পাসের ভূলমার বিভাগেরও অধিক এবং ইহা বাংলার বিশেষ উপবোদী



ক্ষেত উৎপন্ন একট বিশ্বীয় কাৰ্পাস গাছ

ক্লল । উপরোক্ত বিভিন্ন পরিকল্পনাস্থারী উৎপন্ন কার্পালের বীজ বিশার্ল্য ছাজাইনা চুলা ও বীজ বিজ্ঞ করতঃ উৎপাদকদিপকে বুলা দেওৱার ব্যবহা ছিল। এভতির বিশা বুলো সার,
বীজ দেওৱা হইত। পারিভোষিক প্রবাস ও ক্ষতিপূর্ব করিবার ব্যবহাও ছিল। কার্পাল হইতে বীজ ছাজাইবার কল
একট্টবার কল থাজাতে উৎপাদক্ষিপকে বহুছলে বুলা দিতে এক বংগরের উপর সময় লানিত। একত অনেকেরই পর বংগর আর ইহার চাবে উৎলাহ থাজিক না। এ সকল অসুবিধা দূর ক্ষিবান ব্যবহা হইতেছিল এবদ সময় বদ-বিভাগ হইল। ইহার পর কি প্রপ্রেক্ট, কি বিল-বালিক স্বিতি কিংবা ঢাকেখনী কটন বিল্য কেইই বাংলার কার্পাল-চাবের উর্লিভর কর কেনে কেটি করেন নাই। আরি পশ্চিম বাংলার

ইহার চাষের কথা বহুরক্রে, বিশেষ করিয়া বিভিন্ন পরিকাধির নারক্তে প্রচার করিয়া আলিতেহি। এ সহত্রে আনার বহু দিনের প্রভাক অভিজ্ঞভা আহে—নদীরা জেলার সুলিয়াবররা প্রানে নামারক্র কার্পার চাষের কাজে লাগাইরা উংপাদক্ষিপকে আবর্তক্রত বীজ সরবরাহ্ করিতে প্রয়ন্ত হই। মিশরীর কার্পানের চাষে এতদিন কেবল আরিই বিশেষভাবে ননোনিবেশ করিয়াহিলার। ঢাকার করেক রক্র উংস্কৃত্র প্রার বীজের রত, ইহাও বাহাজে বাংলা হইতে বিল্প্ত না হর, তাহাই হিল আমার রুখ্য উদ্দেশ্য। ১৯৪৯ স্বের ১৬ই এপ্রিল বাংলার রাজ্যপাল আমার চাষ দেবিরা বিশেষ প্রশংসা করেন। ব্যক্তিগত চেঙার কোন হারী কলের আশা না বাকার স্বর্গমেন্টের সাহাব্যের জন্ত চেঙা করিতে বাজি।

#### বৰ্ত্তমান বন্ত-সমস্থা ও কাৰ্পাস-চাষ আন্দোলন

(क्म-विकाश क चकाक कांत्राय कांत्रकदर्यतः, विरमधक: वाश्मात विमक्ति चारक्रक्र कार्गात मा शांध्याय वस कडेवार केशका कर। ১৯৪৯-৫० जारमत विकित जनार विश्वी ও বোখাইরে ভারভবর্ষের সর্ব্বত্র কার্পাস-চাষের প্রদারকল্পে ক্রেকট গুরুত্পর্ণ সভা তর। চাষের প্রসার ছারা বারাছে ভারতবর্ষতে ভার্পাস বিষয়ে পরের উপর নির্ভর ভরিতে না হৰ একত কেল্ৰীৰ সৱকার ইতিয়ান সেণ্ট্ৰাল কটন কৰিটকে श्राप्तं हिन सक है।का जाहाबा करत्य। अ जबरव बारमाब शियतीय कार्गात्र-हाथ लहनायत के एक एक विश्व वर्गावत का एक क्ष अक्षे श्रीकृष्णमा अनुसम् कृतिसा अजाद कृति। देश क्रविविचार्त्रत मिक्के श्रम्ण करेला अवर्गावर्क चुनाविच कविका ১৯৫০-এর কেব্রহারী মালে কেন্দ্রীর ভটন ভরিটভে পাঠাইহা रूम अवर ১৯৫०-৫১ जरम चामि बाह्यांच देशांच हाम हामादेश ৰাইভে পারি একচ ১০২০ । টাকা সাহায্য করেন। ইভি-হব্যে ভবিবিভাগ চইতেও বাংলার লখা আঁশের ভার্গাস-চার श्रेत्राद्वर है। इंट किय वरत्रद्वर एक श्रीव हाति क्षण है। का বাৰ বৰিবা আৰু একট পৰিকল্পনা কেন্দ্ৰীৰ কৰিব কমিটৰ বিকট প্ৰেৰিত চৰ । পঞ্জিম বাংলার সরবরাচ-সচিব বাংলার ভার্পাস-हारयाभरवाने करवक्र जान भदिवर्धन करवन । भक्तिम वारलाव বিভিন্ন অঞ্লের বহু পভিভ করি দশ-পদর হাজার চাঁকা বরচ ক্ষিয়া লেচব্যবস্থাত সাহায্যে কিভাবে চাহোপবোৰী কৰা বাৰ ভিনি ভাছার একট বিষয়ণ কেন। বে সকল উচু লোডাঁশলা ৰাষ্ট্ৰতে পাট ও আও বাবের চাব হয় সে সৰ ছলেও ভাপাস क्यांता वारेष्ठ शादा। और वात्मत विकत कवि वीत्रकृत. বাঁকুছা, বেবিনীপুর প্রভৃতি অকলে পতিত আছে। এই প্রকার ৫০০০ একর প্রিভ ভবিভে ভার্পাগ-চাব প্রচলৰ করিবার বাৰতা হয়।

ইভিয়াৰ দেউুয়াল ফটল ক্ৰিট--বোছাই

এই ক্ষিট্ট ভাষতের বিভিন্ন প্রদেশে প্রভিন্নিত বার্যভীর বিল প্রবং সেওলির প্ররোজনীর ভারত-ভাত কার্ণালের উন্নতি ও চাষের প্রদারের অভ চেঙা করিরা থাকেন। বিভিন্ন রাজ্যের ক্ষমিবিভাগ কার্ণাল-চাষ বিষয়ে কোন পরিক্রনা লইরা কার্যো অপ্রসর হইলে ক্ষিট্ট উপদেশ ও অর্থাক্সক্ল্য হারা সর্বতো-

তাবে ভাহাবের কার্ব্যে সহারতা করে।
সেবানে কার্গাস-চাব সম্পর্কে গবেষণা ও
ভালু কার্ব্য পরিচালনার কর বহ
বিশেষক্র নির্ক্ত ভাহেন। বিভিন্ন
প্রদেশের বিল-নালিকদের প্রতিনিধি,
কৃষি-বিভাগের প্রতিনিধি ও ভালর
বিশেষক্র বারা গঠিত এক কমিট ইহার
ভার্য্য পরিচালনা করেন। ভারত হইতে
রপ্তানি তুলা এবং নিলে বরিদ তুলার
উপর বে কর আদার হর ভাহা এই
ক্ষিটির ব্যরনির্কাহার্থ দেওরা হর।
এতত্তির কেন্দ্রীর সরকারও অবসাহাব্য
ক্রিরা বাকেন।

পশ্চিম বাংলার ছুইট জার্ণাস-চার পরিকল্পমা ও ভাহাদের কার্ব্য (১৯৫১-৫২)

পশ্চিৰ বাংলা হুইছে আমার প্রদন্ত বিশ্বীর কার্পাল-বীক্স-মৃতি পরিকল্পনা এবং কৃষি-বিভাগ প্রদন্ত লখা আঁশের কার্পাল-চাব-প্রচলন পরিকল্পনা ভারতের ক্রেমীর কার্পাল ক্রিটির সভ্যবের হারা বিবেচিভ হব। তাঁহারা ক্রিটির স্বেটির ক্রেমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার প্রাক্রিমিনার পরিমেনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ভার্পালার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ভার্পালার ক্রিমিনার প্রক্রিমিনার ভার্পালার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ভার্পালার ক্রিমিনার ক্রেমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ভার্পালার ক্রিমিনার ক্রমিনার ক্রিমিনার ক্রমিনার ক্রিমিনার ক্রেমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার ক্রিমিনার

হানীর অভাভ বিশেষজ্ঞদের সহিত পরার্থ করেন। পরে ভাষাদের ১৯৫०-अत ভिসেম্বরের टावस ভাগে এখানে পাঠাইছা দেন। অযুত্তবাজার পঞ্জিকার বিশেষ সংবাদভাভা 9175160 ভারিবের বিবৰে ভবৰ্কার ভবতা সহতে বিভাৱিত चाटनांडमा **परिवादित्यम्** । के जन्नावक वहानव और वासाम जिन-गांव किन जनशान-कार्लाव मरना अनामकांव करतक्री ভার্ণান-কেন্দ্র পরিবর্ণন করেন। তিনি কুলিবাবররার আমার উংশাহিত বিশৱীয় ভার্ণাসও ক্রবি-বিভাগের ডিয়েক্টর এবং সর-পাৰী অপ-রিদার্ক অভিনারকে নইবা দেবিবা আলেন। ইতার পর প্রাবেশিক ভার্পাস ভবিষ্টর কভিপর সমত ও বভাত সংগ্রিষ্ট ব্যক্তিবের সভিত আলোচনা করিরা ভবিবিভাগ এবত ভার্ণাস-

চাব পৰিক্লনাট প্ৰহণ ক্ৰেন। আমার প্ৰক্ত বিশ্বীর কার্গালবীজ-যুদ্ধি পরিক্লনাট ভাঁহাদের বারা সামরিক ভাবে বাজিত
হয়। আনি প্রাদেশিক কটন সাব-ক্ষিটির প্রকল্পন সভ্য
বাকা সভ্যেও আনার বক্তন্য বিষয় আমাকৈ কোন ক্রোগ বে
আমাকে বেওরা হর নাই—ইহা পরিভাগের বিষয়। সে বাহা
হউক, শেষ পর্ব্যন্ত প্রাদেশিক প্রপ্রেণ্ট আনার পরিক্লনা-



কাৰ্পাসগাছের কাছে দণ্ডাছ্যান লেখক

হ্যারী ভিন বংসরের হলে এক বংসরের ক্বল (১৯৫১-৫২)
ইহার চাষের বরুচ ১৫৮০ বঞ্ব করেন। আনার পারিশ্রিকিক
বাবদ উহারা কেন্দ্রীর সরকারকে নাসিক বৃভিত্র ক্বল স্পারিশ
করিলেও উাহাদের বঞ্রী টাকার বব্যে ইহার কোন ব্যবস্থা
নাই। বাংলার বিশরীর কার্ণাস-চাষের অবহা বিবেচনা
করিলে বলিভে হর, প্রাদেশিক গবর্গনেকের উক্ত সিরাভ মুক্তিসকত হইরাহে। উক্ত সিরাভ অভ্যারী আমি কুলিরাবররার
(নদীরা) প্রার ভিন বিবা ক্রিভে বিশরীর কার্গাসের চার
করিভেহি।

ক্ষমিকিলাগ প্ৰকৃত ভিন বংগরের কার্গাগ-চাব পদ্ধি-ক্ষমাতে প্রার চার লক্ষ্ম টাকা ব্যব হুইবে। এই ব্যৱভার ক্ষেত্রীর ও প্রারেশিক সরকার বহুন ক্ষিত্রের। এই পদ্ধি-

ভলনাছ্যারী এ বংগরের ভার্ব্যে বীরভুর, বাঁকুড়া, বেবিনীপুর, বৰ্ণিদাৰাত, নদীয়া প্ৰভঙ্কি জেলাম ১৯৫১-৫২ লালে প্ৰায় ৩,৫০০ একর ছমিতে পার্কণী নামক লখা আঁশের কার্ণাসের চাৰ চইভেছে। যে সভল ভৱিতে আৰু বান কিংবা পাই চাষের সভাষনা ছিল মা, সভবমত সে সকল ভবিতেই কার্ণাস-अपन यम क्षा क्षितिकार्शन है।केरतन हांच हरें कारण । जाकारबा जाबाबक कांच कविया (प्रदेश कडेंबारक। कांरबर कव ৰে বৰ্চ হইৱাছে উৎপাদক্ৰণ কাৰ্পাদ কৰাইৱা ভাতাৱ বৃদ্য হুইতে ভাহা শোৰ ক্রিবেন। এতত্তির অল মুল্য লইবা সাহ, ৰীক প্ৰভৃতি সৰবৰাত কৰা তইবাছে। এবাৰ কাৰ্পাসের বল্য ৰাতাতে অবিলয়ে পাওয়া বাব দেই উদ্দেক্তে বলীৰ বিল-মালিক সমিতি বিভিন্ন সামে করেকট ভাপাস-বীভ-চাভাম ভল (ginning machine) প্রতিষ্ঠা করিতেছেন। এতছির উংপাদক্ষিপকে যোগ্যতা অস্থ্যারী পুরস্কার দেওরার ব্যবস্থা वरेबारव ।

বাংলাবেশে ইন্স্প্রে ক্থমও এক ব্যাপক ও কার্যকরী পরিকলনা লইবা কার্পান চাষের ব্যবহা হব নাই। কবি-বিভাগের ভিনেটর বহোগরের উভোগে পশ্চিম বাংলার বিভিন্ন অংশে কর্মে নির্ক্ত বিভিন্ন অরের সরকারী কবি-কর্মানীরা প্রার প্রক্যেকেই ইহার লাকল্যের ক্ষত লাব্য-রক্ত চেঠা করিভেছেন। ইন্সিপ্রে এ বিষয়ে বে কাল ক্ইরাছে ভাহাতে পরিকলনাছ্যারী বে হর ক্ষন ভিননপ্রেটর ও ক্টন স্পারভাইকিং অকিসার নির্ক্ত হিলেন, ভন্যভীত ক্ষমি-বিভাগের অভাত কর্মানীবের এই কার্য্যে আশাহ্রণ উংলাহ পরিলক্ষিত হর নাই। আগানী বংগর চাষের ক্ষরির পরিনাধ বর্জনান বংগরের ক্ষরার বিশ্বরেও অবিক বৃদ্ধি পাইবে আশা করা বার।

#### একট বিশরীয় ভার্পাসগাত

এ সকল গাছে গড়ে ১০০ট কৰিয়া গুটা হয়। লাগাইবাম পর পরবর্গী চাবের প্রবিধার হুত চার হাত অভর পংক্তি
করিয়া পংক্তিতে হুই হাত অভর বীত পুতিলে প্রতি গাছে
এক পোরা কার্পান হয়। এই একই ব্যববাবে এক বিঘার ৮০০
গাছ হুইতে ৫ বব কার্পান বা ১৪০ বব তুলা পাওরা বায়।
ব্যব্রতি ৩০০, হর হুইলেও ইতাতে ৪৫০, পাওরা বায়।
চাবের ব্যবহ ১০০, টাকার বেশী হয় বা।

#### ৰাংলাছ বিশহীৰ কাৰ্ণাস-চাৰ

বিশ্ব কেশে কাভ কাৰ্ণাস পৃথিবীর বব্যে শ্রেষ্ঠ কার্ণাস বলিরা পথ্য। ইহার মূল্যও অভাভ কার্ণাসের বিভাগেরও অধিক। বাংলাকেশের আবহাওরার সহিত বিশ্বের আব-হাওরার কোল বিল নাই। পাকিছানের নির্প্রকেশের সহিত বিশ্রের আবহাওরার ক্তকটা বিল বাকার ভবাকার সহজার

रेहा छैरभावत्वत बावश करवन : किन्न जान कन भावता बाद बाहे । जारकरे वाश्लाव रेतात नारवा नारवानारकर পৰে বছ বিশ্ব থাকা স্বাভাবিক। বোল বংসর পর্বে চাকেবরী কট্ৰ যিতেৰ এপ্ৰিকালচাৱাল অফিলার তিলাবে আমি বাংলার বিভিত্ন ভাষে ইচার চাষ আরম্ভ করি। প্রথম চার-পাঁচ বংগর ব্রই তাল ফল পাইরাছিলার। ইতার পুরু শক্ত আঁপ रेगर्डा बहेबाबिन खाब एक हैकि बनर बहे छना ४०-३०० नर ক্তা প্রক্তের উপযোগী ভিল। বভীর ভিল-মালিক সমিভিত্র সম্পাদক "ইহা ভারতবর্বের ইভিহাসে অভূতপূর্বা" বলিরা महत्र कृतिहाहितन । कृत्यक विवाधिक शाह-वृद्ध वन कार्गान वा श्राह प्रहे यन छना भारेशांचि । अ जनन वीक वावहांद कदिशां वकीय क्रविविधान प्रकार नाथ कविदाहन । ১৯৪০ नाम ভারভের কেন্দ্রীর কার্পাস কমিটর সম্পাদক চাকেরতী ভটন ছিল কলাটতে টংগর ভার্পাস পরীকা করিবা ইতার টংকর্ব स्मिश विचित्र करेशकित्म। वाश्मात व अवन वेश्करे কাৰ্ণাদ চইতে পাৱে ভাচা ভিনি ভাবিতে পাৱেন নাই। विषयित और त्यापेत केरकरे कार्गात्मत बीच बावकारवत शर्का বেৰ বৈজ্ঞানিক প্ৰণালীতে বিশোধন কৱিবা লওৱা হয়, সে বিষয়ে ভিনি বিশেষ ভাবে সভৰ্ক ভবিষা দিয়াছিলেন। আৰহা किंद्र क्षत्रज्ञ शिक्ष वरमञ्ज वीक विद्यानम् मा कवित्राहे दशम कविकाय। देशांव शव वरशव ( ১৯৪১ शांल ) देशांक अक बक्ब एक दान (fungus disease) दाना विदा ৰাৰতীয় কলত নই হয়। ইহাতে বলীয় কৃষিবিভাগ বাংলার माडे पर्व, जारन अरे कार्गान छेश्भागत्मव अध्भारनाने मरन ভৱিষা ইচার চার চইতে বিরভ চন।

চাতেখনী ভটন বিলস ও বলীয় মিল-মালিক সমিভি এ প্রকার একট অর্থকরী উৎকৃত্র কার্পাসশিল রক্ষাকরে কলিকাকা विषविकालराव चाकुका धार्यमा करवम । फैक विषविकालय ইতার প্রতিকারের জত বছবান তইবেন এই ভর্না প্রদান करबम बार ১२०००, वाद्य व परमदब क्ष बक्के श्रीक्षाना প্ৰবৰ্ষ কৰেন। বদীৰ মিল-মালিক সমিভিত্ন অৰ্থাসূক্ল্যে কাজ चावस क्व ७ इंदे-सिन वरनदाव बदबारे केलास्त्रावा कार्नादनव এই বোগ দূর করিতে সমর্থ হব। তাঁহাদের গবেষণালক প্রণালীছারা বিশোষিত বীক প্রতি বংসরই মাঠে আমি বপর এবং চাষের ব্যবস্থা করিভাব। তাঁহার। এ কাল পরিভ্যার कविवाद शरद थ शंक शांह बश्जद वावर वदानव्यव कांकारक्य প্ৰবাদীতে বীজ বিশোৰৰ করিয়া উক্ত বীজ বুকাকতে প্ৰতি বংসর ইতার চাষ করিবা বিশেষ প্রকল্যাত করিবা আসিতেছি। বীৰ্থনি আই-হণ বিনিট সালকিউরিক এসিতে ভুৰাইয়া পরিফার কলে বোওৱা হয়। ভার পর দেওলির মধ্যে কলে চুবিয়া থাকে এ প্রকার খীক খণদের কচ যাবা হয়। बरे नीकश्री ३ पर्के। ७०१ (महित्यक केबार्य प्राचित्रा परव

ক্ৰোগৰত পৰিতে চৰ। केवारण वार्षियात कर देवकियरवर्धरवत অভাবে আমি সাবারণতঃ বীক্থলি চার ঘণ্টা হোলে হাখি। ইতার চাব-क्षवाली बहेरान : कवि वास वास हाथ ভবিষা ও ঘট দিয়া বপ্ৰোপ্ৰোদী ভবিষা अधिम ७ व बारमत बर्या उड़ी व्येनात পরে, আর কল না হইলে ক্ষতিত সেচের ব্যবস্থা করিতে হয়। ভার পরে মাটর ছো হইলে বীৰ পুঁতিতে হয়। ছন-ছলাই লাসে বীভিন্নত বৰ্বা আৰম্ভ চইবার পর্বের ভষি কোপাইয়া কার্পাসগাছের গোড়া वांविका किटल दक। कुन, कुनारे मार्ग वृष्टे चावच करेवाव शत वीच वृत्रित ৰে সকল গাভ উৎপদ্ম তম সেগুলি প্ৰায়ই ক্সত্ব পাকে না। উত্তিদভত্তবিদদের ভারা দ্রীভিম্বত অনুসভাষের পর এ বিষয়ে দীতি

মিন্ধারণ করা প্রবোজন। পশ্চিম বাংলার বর্তমান কৃষিবিভাগের ভিরেটর ভটর হীরেজকুমার নদী মহাশরের চেপ্তার টালিগঞ শহাতি ক্র্যিবিষয়ক একট বড় গবেষণাগার প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। क्राइक क्रम कृषी बुवाकत उष्टावशाम अशाम कृषि-जन्नकिछ বিবিৰ কাৰ্ব্য হইভেছে। ইহাদের মধ্যে কলিকাভা বিশ্ববিদ্যা-লরের ছই-এক জন ব্যাত্তনামা অব্যাপক প্রবনে ডক্টর আগার-कारबर सबीरब कार्नाज-विश्वतः शत्वर्गा करतमः। शत्त मध्य ছইতে বিশেষত চইরা ড্রারেট ডিপ্রি লাভ করেন। ইঁহারা সম্রতি এবানে কর্ম্বে নিহক্ত আছেন। কার্পাস-চাষ-প্রসার পরিভৱনাদ্রবারী ইতার কার্বাভার ডক্টর পি. কে. গ্রেপরী পিএইচ, ভি. মহাপ্ৰের উপর হস্ত আছে। উভিচ্বিভার ভাঁহার গভীর ব্যংশতি আছে এবং তিমি দীর্ঘকাল বাংলার কার্ণাস-চাম প্রসারকলে ক্রতিছের সহিত কার্ব্য করিয়াছেন। বিশ্বীর কার্ণালের মত একট অর্থকরী কসলের বীক বিজ্ঞান-সম্বত উপাৰে বিভৰ বাৰিয়া দেশে উক্ত শ্ৰেণীর কার্পাসের প্রসারকলে স্ক্তোভাবে সাহাব্য করা ইহাদের একার कर्सवा ।

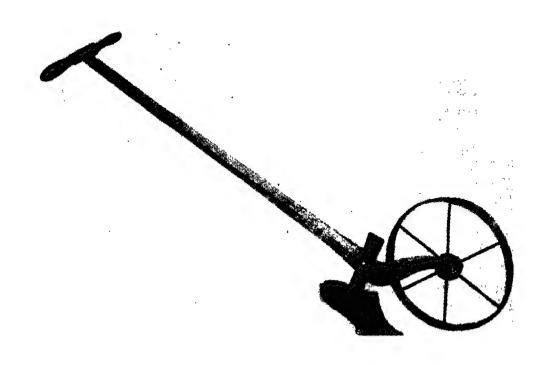
পভ বংসরে নদীয়া জেলার কুলিরাবররাতে (১৯৫০-৫১) বে বিশ্বীর কার্পাদ উংপর হইরাছে তাহার বাঁপের বৈর্য ১৮% ইকি। প্রসিদ্ধ বিলক্ষ্মী প্রমৃ. প্রল. সাহার মতে বোহিনী বিল্স-এ প্র কার্পাদ হইতে ৮০ মং তানার মতে বেছত হুইতে পারে। বর্ডনান বর্বের (১৯৫১-৫২) উংপর কার্পাদ সম্বাহে কেশোরার কটন বিল্স তাহালের ২৪।১১।৫১ তারিবের প্রে ইছার দৈর্ঘ্য ১৮% ইকি এবং কার্পাদ বুবই তাল বলিরা বভব্য করিবাহেন। অভাত কার্পাদের বভই ইছাও উংপাহন করিতে প্রায় স্বাদ্ধ ও চেঠা এবং প্রায়



একই রক্ষের খরচ পড়ে, কিছ কসল হইছে বিশ্বপের স্থিক আরু করা সভব হর।

এখন মিশরীর কার্পাস-চাষের প্রশালী সম্বন্ধ ক্ষক্তলি বিশেষ ভাতব্য কথা বলিভেহি:

- ১। বাংলার সাধারণত: যে সকল কসল করে তাহাবের ত্লনার কার্পাস উংপর করিতে অনেক বেদী পরিপ্রম করিতে হয়। কিন্তু কার্পাস-উংপালন-সম্পর্কিত কভকগুলি অল পরি-প্রমের কান্ধ বেমন নিভান, পোকা বাহা, কার্পাসসংগ্রহ প্রভৃতি পরিবারের হেলেমেরেরাও করিতে পারে। ইহারারা অনিও অনিক্তর সমর আবির বাকে। বাহাবের সব কান্ধ মন্ত্র রাধিরা করিতে হয়, তাহাবের পক্ষে ইহার লাভক্ষক চার হওরা ক্টিন।
- ২। ইহা মিশ্রিত কলক হিলাবে আভ বাদ, চীনাবাদান, কলাই, মুগ প্রভৃতির সহিত একলে ক্যান উচিত। আড-বানের সহিত উংগন্ন করিতে হইলে প্রথমে আড বাদ বুনিবার বিশ-গচিশ দিন মব্যে করিতে করেকবার বই ও বিদে দেওবার পর তিন-চার হাত অভর অভর লারি করিতে ইন। তার পর নেই সকল লাইনে হুই হাত আভাই হাত ব্যববানে বাট কোগাইনা নিভাইনা এবং বালাতে লার নিশাইনা গাঁচ-হুবট করিবা বীক বুনিতে হয়। বাদ, কলাই, মুগ প্রভৃতির সহিত এক্রে কার্গাল ক্যাইনা আমি স্কল পাইতেছি।
- গৃক্ষ হইতে ভৈত্তি কৰিছে বে-কৃন নালে বৃষ্ট হওৱাবাত্ত কাৰ্পাল বৃদিতে হইবে। কাৰ্পাল বীক বৃদিবাত্ত পত্ত প্ৰাত্ত
  ভিন নাল ইতাতে কলের প্রবোজন। কুলকল ব্যিলে পর বাট
  ভঙ্ক বাঙা আবঙক। একচ বাংলার বছু ইতাত্ত চাবের পক্তে



সাৰাৱণ হাভ লালল-ৰূল্য ৩৫১

বিশেষ অন্তৃত্য। বর্ণার কল সহক্ষে সরিয়া যার এই প্রকার লোজাশলা নাটিই কার্পাস-চাষের বিশেষ উপৰোধী।

8। বাংলাদেশে বৰ্বার সময় বাছভি বাস ও আগায়া ह्बीक्तरनंत क्या क्य नंतरह यादारक काक इस कादात नावश ক্ষিতে হইবে। বুনিবার পর দেভ মাস প্রারই হাত-লাকল ও বিদে এবং পরে পক্ষারা চালিত লাকল ও বিদে ব্যবহার করিবা ভবি পরিভার রাধিতে চর। তাতে কোপাইলে ও নিভাইলে ইছার চার-পাঁচ ৩৭ বরচ করিরাও ফ্রত কাজ সমাৰা হয় না বলিয়া কমি আগাহায় পূৰ্ণ বাকে। বৰ্ষাৱ সময় क्षमांचरम दुवनी विम युष्टैशाच यह बाटक मा विनदा, क्षमिय 'লো' অছৰামী নিভান এবং বোঁভার জন্য সময় কৰ পাওৱা বার। এ সমরে আশু বাদ ও পাট নিভাইতে প্রচুর লোক चारकेक रनिया और कारकर क्या लाक भावता कडीन बरर लाक वि वा नश्यक का काका करेरन क कामक नवत की। বৃটি আসিয়া পড়ায় কাজ অসম্পূৰ্ণ অবস্থায়ই বন্ধ কৱিতে হয়। আবেরিকার সাবারণ চাবীরা একট বক্তর-চালিত লাকল ও বিবে সাহাব্যে কৃতি-পঁচিশ বিদা ক্ষরিতে কার্ণান উংপত্র ক্ষিত্রা থাকে। দেখাৰকার আদর্শে আনাবের বেশেও কার্ণাল-চাথে अरेथिकार कृषि-प्रशासित अञ्चल का कवित्व रेखारक अ**वि**रिक्त

বিয়চ হয় বলিয়া ইচ্ছা পাঞ্চিলেও জনেকে ইহাতে ভত উৎ-সাহিত হইবে না।

- ৫। এই প্রদেশে কার্পাস-চাবের ব্যাপক প্রচলম মুক্তমভাবে হইতেহে বলিরা কসল-ব্লোর প্রায় এক-তৃতীরাংশ কার্পাস-সংগ্রহে ব্যরিত হইবে। বে সকল প্রবেশে কার্পাস হর তথার নগদ টাকা না দিরা নণকরা চার-পাঁচ সের কার্পাস মঞ্বীতে বেওরা হয়। এখালে লোকে একাকে অনভাত বলিরা দৈনিক /৫ পাঁচ সের আন্দাক কার্পাস সংগ্রহ করিবে। এ কার্ব্যে ট্রকা মক্রীতে বর্থাসন্তব ন্ত্রীলোক ও অলবরক্ষের নির্ক্ত করিরা বর্ষা করান বার কিনা চেঠা করিতে হইবে।
- ৬। এতে আলাছুরণভাবে ভার্ণাস-চাষের প্রবার এবনও হর নাই। বর্তনানে বিনা বরচার বীজ হাভাইরা তুলা বিক্রী করিরা উৎপাবকগণকে বর্বাস্থল লয়র ব্যবহা পাকা পর্যন্ত বাহাতে বৃত্তি হিসাবে এক শ্রেণীর লোক এই কার্য অবলবন করে তাহার চেই। করিতে হইবে। বর্তনানে পাই-বানের রভ একেশে অর পরিবারে ইতার বিক্রির বভ বাজার নাই। সহজে বিক্রির ব্যবহা না হওরা পর্যন্ত ভার্ণাস-চায় এবানে ছারী হুইবে ভিনা বলা কর্ত্রীন। এবারকার ৬৫০০ একর জ্বিতে উৎপারিত

অভত: ১৪০০০ বৰ কাৰ্ণালে ৪৫ বৰ হিসাবে (ছুলার বৰ প্রায় ১১০ ) ৬,০০,০০০ বুলোর বব্যে বৰ্ণকরা ন্যুবকরে ৫ হিসাবে কার্ণাস সংগ্রহ ও বিজ্ঞির ব্যবহার কল মক্ষী বরিলে এই উদ্দেশ্তে ৭০,০০০ চাকা ব্যয় হইবে। কাকেই প্রথম হইতে নির্মিত প্রচার করিলে এ প্রকার কাকে বহ লোক বে আছাই হইবে ভাহাতে সন্দেহ নাই।

কার্ণাস-চাষের আষব্যর বিষয়ে একটা হিলাব
সংগ্রহ করা আবক্তন। কমি প্রবৃত্ত, বীক বর্ণন ও পরবর্ত্তী
কাক্ত—কসলসংগ্রহ প্রভৃতি বাবদ বিভিন্ন সমরে কক্ত বরচ
হর বিভিন্ন উংপাদকের নিকট হইতে ভাহার একটা
মোটার্ট হিলাব লওবা এবং কার্পাস-চাষের উপরোগিতা
ইত্যাদি বিষয়ে ভাহাদের মন্তব্য সংগ্রহ করা আবক্তন।
কার্পাস-উংপাদমকারীদের প্রতিনিবিহানীর ব্যক্তিদের লইরা
এ বিষয়ে বাবে বাবে আলোচনা ক্রিলে কি ভাবে চাষের
বরচ ক্রাইরা ইহার আর বাকান বার ভাহার পহা হিনীকৃত

হইতে পাৰে। আমেৰিকাৰ কাৰ্ণাস উংপাদৰকাৰী স্বিভিন্ন লোকেদেৰ (Cotton Growers' Assn.) নব্যে একাৰে আলোচনাৰ কলে তথাৰ কাৰ্পাস-চাবেৰ অনেক উন্নতি চইবাৰে।

৮। কৃষিবিভাগের বিশেষজনের ভদ্বাববাবে প্রতি বংগর এই বুল্যবান বিশরীর কার্ণাগ উৎপাদনের ব্যবহা করিবা জনশ: ইহার উৎকৃত্র বীকের পরিবাণ বাভাইরা চারীকের বব্যে বিভরণ করা আবস্তুক। এভাবে কেশে পার্থার প্রভৃত্তি লবা আশের কার্পাগ চাবের পরিবর্তে এই অর্থকরী কসলের প্রবর্তন করিছে লালের কার্পাগ চাবের পরিবর্তে এই অর্থকরী কসলের প্রবর্তন করিছে পারিলে প্রচুষ লাভ কেবিরা সাবারণে হারী ভাবে ইহার চাবে প্রবৃত্ত হুইবে। এবন বিহি কাপক প্রস্তুত্তর উপবোধী কার্পাগ এলেশে করে বা। মিহি কাপকের চাহিরা বেদন বাভিরা চলিরাকে ভারাতে এই কার্পাগ বিকেশ হুইতে আমদানী না করিরা দেশে উৎপন্ন করিতে পারিলে চারীকের ও কেশের প্রভৃত্ত কল্যাণ হুইবে।

## ছোট ঘর

### **জ্বিসাবিত্রীপ্রসন্ন** চট্টোপাধ্যায়

কোণার ভোষারে নিরে হারিবে গেলাম;
আচেনা পর্বের বাবে কুড়ারে পেলাম
হবেও বা আর কারো হারাম মাণিক,
চেনা চেনা বনে হল আচেনা বানিক।

ভবুও হ'বনে ভাই কুড়ারে নিলান, ধুলার হারাই পাছে ভোনারে দিলান। আনাদের হোট বর ; হোট এ উঠান, এক কালি আকাশের হোট ব্যবধান বুচাতে পারি না ভাই সরবে বরি, তুনি বে ররেছ নোর হুদর ভরি। আকাশের এত আলো, এত অবকাশ; ভার বাবে ভবু বেন পড়েনাক' বান।

ছুৰি আহ কাছে কাছে, বাহিৱে অনতা, নেধার কলহ বাকে, ভিতরে বৰতা। একধানি হোট বর, নোরা হুট প্রাণী, বাভাবে ভবিতে পাই চলে কামাকানি।

হারাম বাণিক কা'র পেরে হারালাব, ্ কিবা ভাতে আসে বার ? আবু গাঁচালার বুৰোমূৰি ছুইক্ষমে আঙিনার এসে নাথার উপরে চাঁদ গলে পড়ে ছেলে।

হোট বর ভাই বুবি বাহিরে এলাব, পরিসর হোট ভবু ঠাই ভ পেলাব! সীবানা হারারে বার হাড়ারে দেরাল দেবি দুরে পড়ে আহি, হর নি ধেরাল!

সমূৰে অশেব পৰ, মাধার আঞাল
নীমা নাই, শেষ নাই, আলোর আভান
কোনোবানে কিছু নাই, ধু ধু বনীচিকা
ভু বেন মনে হয় কোনো অনামিকা
আনারে তুলাতে চার, কাঁলাতে ভোষারে;
এ পেলা লাগে না ভাল, আলোকে-আঁবারে।
ভবে চল কিরে নাই লেই লোই বরে
মু'জনে সাভারে ভুলি প্রেম বরে ধরে।

লে থেনে বাসর-শব্যা লে থেনে বৃপতি
স্থপতে ভরিরা দিবে বিলব-আরতি;
হ'কনে কিরিব চল, থেকো না একেলা,
চল বাই কিরে বাই পেব ক'রে ধেলা।

## বহির্ভারতে ভারতীর সংস্কৃতির প্রচার

#### ব্রহ্মচারী রমেশ

'প্রবাদী'র প্রাবণ সংখ্যার "বহির্ভারতে ভারতীর সংকৃতির প্রচার" সহতে আলোচনা করিবাহি। ভারতীর সংকৃতি বিশ্যের চারি ক্ষম সর্যাসী-সমস্ত বহির্ভারতে ভারতের মহান্ বাবী প্রচারের ক্ষম ভারত সেবাপ্রব সক্ষ কর্তৃত্ব প্রেরিভ হুইরাছেম। তাঁহারা হক্ষিণ আমেরিকা ও পক্ষিম ভারতীর বীপপুঞ্জের পথে বরিলাস বীপে অবতরণ করেম। তাঁহাদের প্রেরিভ প্রাদিতে প্রবাসী ভারতীরগঙ্গের ক্ষীবন্ধানার মান, সামাজিক পরিবেশ, রাজ্মীভিক্তেরে তাঁহাদের সাক্ষ্য্য এবং আর্থিক উন্নরনে তাঁহাদের প্রতেষ্টা সম্বতে আনরা যে বিবরণ পাইরাহি ভংগরতে বর্ত্তরাম প্রবত্ত ক্ষিকং আলোচনা ভবিষ।

বিশাস ভারত বহাসাগরের অন্তর্গত একট কুল বীপ। ভালিকাভা হইতে ইহার গুরুছ তেজিশ শত বাইল। এই কুল বীশের আরতন ৭১২ বর্গনাইল লোকসংখ্যা সাঞ্চে চারি লক; ভারবের হিন্দু আভাই সন্দেরও অধিক। বীশটি পার্ববভামর; অধিকাংশ হানই সমূলপৃষ্ঠ হইতে ৮ শত থেকে ও হাছার কুট উঁচু। এই হানের আদিন অধিবাসিগণকে জিবল বলে এবং ভাহানের ভাবা জিবল নামে পরিচিত।

ৰৱিশাসের ঐতিহাসিক পটক্ষিকা বুৰই ভরত্বপূর্ব। ১৫৮१ ब्रेडोट्स गर्स मेक माविकान के बीगई वाविकाद करत । खनम और प्राप्त लाकरमिक दिन मा। क्रेमक मारिएकर बाबाक्जात्व बहे बीशक्रैत बाबकत्व करा वद-बााजकात्वय । ভৌগোলিকগণ ইতাকে কার্মি আখ্যা দিয়াছিলেন। ১৫৯৮ बैद्रीत्व अनमाक्ष्मन हेनात कलकारन व्यक्तित करत बदर देखांत माथ পরিবর্তন করিয়া ভলাতের ব্বরাজের নাবে এই ৰীপের নাম রাধা হয় "বোরিল"। ওলভাত্তৰ এই উপনিবেশ স্থাপন করে। ভাতারা আফ্রিকা ছইতে জীতবাস আনাইয়া বীপট্টকে বসবাস ও কৃষির উপযোগী कविवा मिक्रा छुनियाव कर महाडे दव। व्यवस्थि वरे ছানের কোন প্রকার উরভি হইবে না মনে করিয়া ভাছারা ভাতাবের গভিষা ভোলা গুতাদি ও উপনিবেশের ভালত বাৰতীয় প্ৰব্য তত্মীভূত কৱিয়া চলিয়া বায়। ওলদাৰূপণ এই बीन जान कवितन ১৭১० बैडार हैन क्वाजी व्यक्तित चारन अदर देहाद मूछन नावकृतन करा हद-'(लिक कान'। করাসীগণের অক্লান্ত চেঙার এই কুল্র উপনিবেশ ক্ষমশঃ প্রপতির পরে অগ্রসর হয়। এই সময় ইংরেভগণ বাণিজ্য ৰাপদেশে সৰুত্ৰ পাছি দিছে পুৰু কৰিবাছিল। ভাষাদের সুত্ৰ वृष्टि देशाव देशव शक्ति। ১৮১० बेहारच चावचनावी अक्षे विकेष क्षीपबरवय चिवाबिशन क्षक बरे बीशक्रैय कियबरम অধিকৃত হয়। ১৮১৪ বিটাকের প্যাবিদের চুক্তির কলে যীপটির শাসৰভার সম্পূর্ণ রূপে ত্রিটিশের অধিকারে আসে এবং এবালে করাসী ভাষাই রাষ্ট্রভাষা রূপে পরিগণিত হয়। ত্রিটিশের অধিকারের পর যীপটির নাম দেওবা চর মহিশাস।

১৮০০ মীটাকে আইনের সাহাব্যে এবান্দার জীভ্যাসপ্রধা রহিওঁ হয়। তবন আফ্রিকা হইতে জীভ্যাসপ্রণে প্রমিক্ত আমন্ত্রন বন্ধ হইবা বার। এই সমর ব্রিটাশ সরকার তারত হইতে চুক্তিবভাবে প্রমিক্ত সংগ্রহ করিতে প্রশ্ন করেব। প্রস্কৃতপক্ষে তবন হইতেই মরিশাস, পশ্চিম ভারতীর বীপপুর, কিছি প্রভৃতি হানে ভারতীরগণের আগরম আরম্ভ হয়। ১৮০৪ মীটাকে নরিশাসে সর্বপ্রথম বিহার, রুক্তপ্রকেশ ও মাজাক্ষ হইতে প্রমিক্ত আমন্ত্রম করা হয়। ১৯০৯ মীটাকে ভারতীর প্রমিক্ত আমন্ত্রম করা ৮০ হালার। ১৯১০ মীটাকে ভারতীর প্রমিক্তর সংখ্যা গাঁভার ৮০ হালার। ১৯১০ মীটাকে ভারতীর প্রমিক্তর সংখ্যা গাঁভার ৮০ হালার। ১৯১০ মীটাকে ভারতীর প্রমিক্তর সংখ্যা গাঁভার ৮০ হালার। ১৯১০ মীটাকে ভারতীর প্রমিক্তর সংখ্যা কর্মানি ক্ষমংখ্যার বহুকতা, ক্ষমিক জান্ত্রম প্রমিক্তর সংখ্যাবিক্তর এবং ভাহারের প্রমিক আমন্ত্রম ওক্তরারে প্রশারিক করেন। ইত্যার করে কিছুবিনের কন্য প্রমিক আমন্ত্রম বন্ধ বাকে।

ৰৱিশাসের মোট লোকসংখ্যা ৪ লক্ষ্ণত হাজার; ভয়ব্যে ভারতীর হিন্দু—২ লক্ষ্ণত হাজার, বুসলবাম ৬৭ হাজার, ভারতীর বীঠান ১০ হাজার, চীনা ২৫ হাজার, করাসী ১০ হাজার এবং আফ্রিকান ও বেভাল প্রার কেচ্ছেন।

**এই ছালে অবিবাসিগণের প্রধান উপভীবিকা ইক্চাব।** बरे रेक्कायत क्यारे कातकीत अविकश्नक बरे क्या जानदम करा ठर । अहे बीर्ण श्रीक वरनद 8 नक हैन जर्मका कि त्वि रेक छैरभव हव। रेक् हरेरक भर्ववा छैरभावत्वव कमश्रीन क्यांजीएक अकटाक्रिया अवर रेक्कारवर व्यविस व्यव-কাংলও ভাতাদেরই। ভাতেই ভরাসীগণ এদেশের শ্রেষ্ঠ বনী এবং এবানকার আর্থিক উর্ভি ভাতাদের উপর প্রার বোল व्यामा निर्धदिन । बुननमाम ७ हीमादा अस्तर्भ वावनारमस वर्धने । चमामा चरनक मनीचीनी, चानात चरनक कृतित-भिष्ठित बाता भौतिका निर्काह करता वर्षनारम बन्नमश्यक ভারতীর হিন্দু ব্যবসাক্ষেত্র নামিরাছে। তবে অবিকাংশ ভারতীয় হিন্দু কৃষিক্ষেত্রের অধবা শর্করা উৎপাদনের কলের শ্ৰবিক। ছিম্পাণের যথ্যে বনিক্ষেণী নাই বলিলেও চলে। ভাহারা বেশীর ভাগই দ্বিজ। ভাহাদের কুটার-প্রাদ্ধের চতুদিকে, কিছু কৃষির উপবোধী কৃষি আহে বাজ। বংগৱে আট-নৰ বাস ত্ৰীপুক্তৰ সকলেই কোন-না-কোন কাৰ্ব্যে বিষ্ঠ গাকে। প্রতিবিদ এক একট পরিবারে ত্রী-পুরুবে পাচ-ছর টাকা উপার্কন করে। বংসরে তিন নাস কাল প্রমিকগণের প্রারই কাক থাকে না। বর্তনানে কনসংখ্যা রৃদ্ধি পাইকেছে। ভাছাবের আবিক অবছাও অবনতির বিকে। ভাছাবের ভাগ্যে পৃষ্টিকর খাভ ধুব কনই কোটে।ইছার উপর প্রার অবিকাংশ লোক নভগানাসক্ত। নভ ধুবই উচ্চ বৃল্যে বিক্রের হয়। ওলিকে কিছ উৎপর গরের পরিনাণ উল্লেখবোগ্য নর। ফল ও শাক্সকী প্রচুর করে। গো-ছর্ত্ত এখানে প্রতি সের। ৮০ বৃল্যে বিক্রের হইকে দেখা বার। প্রার সকলেই চা পান করে।

ক্রাসী ভাষা এবাৰকার রাইভাষা ইতা আমরা উরেব করিছাছি। প্রায় সকলেই ফরাসী ভাষায় কথা বলে। সংবাদ-প্ৰথলি ক্লালী ভাষাৰ মুদ্ৰিত হয়। বিভালয়ে কেবলমাত্ৰ কৰালী ও ইংবেজী ভাষা শিকা কেওৱা হয়। হিন্দী ভাষার जक्रवांगीत्मव विकालत्वत देवमन्त्रिय शाद्धेत त्नार्य श्रवक जारव শিকালানের প্রবাগ দেওৱা হয়। আফ্রিকাম প্রভৃতি অভাত অনেক অধিবাসী করাসী ভাষার অপত্রংশকে মাডভাষারণে वारकात करत । वर्षवास किमीद वहन श्रकारबद एक जावजीव প্রচারক্পণ চেটা করিতেছেন। ভাতাদের প্রচেটার তিন্দী অবস্তপাঠ্য ও পরীকার অভতম বিষয়রণে গহীত হইবে বলিয়া মনে হয়। অভ্যন্ত সমরের মধ্যে এবানে হিন্দী-ভাষার ক্ষেত্ৰৰ কৃষি ও লেখক আত্মকাশ করিবাছেন। ছই-একট ভিন্দী সাপ্তাহিক পত্ৰিকাও প্ৰকাশিত হইতে দেখা বার। এবানে কেবলয়াত প্ৰবেশিকা পৰ্যন্ত শিকালাদের ব্যবস্থা আৰে। উচ্চশিক্ষাৰীৰের ভারত অৰবা ইংলও বাইতে হয়। সেইজত উচ্চশিক্ষিত ব্যক্তি এবানে বিরুল।

আমানের দেশে বেষৰ ব্যাহি অমুঠানাতি প্রতিপালিত হয়, এবাৰেও ভেৰ্নি কোন কোন ছানে বৰ্মণাল্ল পাঠ-ব্যাব্যানাদি हरेबा बाटक । अवानकात खंबावान दिन्दूर्गनं रेहाटक नुनाकर्य विभाग बाब कार्यम । वर्षाकरिक-करन आसाम्बर अक्षे नक्षेत्र विषय । यह हिन्द चार्षिक छैत्रचि अवर चीवनवाळात बान छैत्रवन প্রভৃতির বত প্রলোভনে পভিয়া বর্ণাভরিত হয়। ক্ষপণের মধ্যে হিন্দুছের বহান ভাবৰারাসমূহ ব্যাপকভাবে প্রচারিভ इरेल हिम्मन्दक किन्न वर्षायमदायत हो इरेट उका करा बाहरू भारत । ज्ञारम ज्ञारम ननमज्जी विभाग नेकी वहिकारत । धरे शास्त्र व्यविकाश्य बैडीय क्यांनिक मध्यमारवर । बैडीयमन विकास चात्रक वा बाद चात्रक. विक्रिक ब्रुखनात वित्वय संवा-नक्कारत नैकार बार ७ शार्वमानि करत । देश विरम्बकारव উল্লেখবোগ্য বে, ভিন্দুবের সাধারণ উপাসনার কোন নির্বিট স্থান এবানে নাই। অবচ ভারভের বাহিরে সর্বাণেকা অবিক-সংখ্যক হিন্দু এবাৰে বাস করে। গীভাতবদ নামে একট क्ष वृद् चार्टः वादिरत्तत चात्रक्त्रत अवास्त विक्षास्तत ছবোগ লাভ কৰে।

শাসমভাৱে দিকে লক্য করিলে বেখা বাধ, ভারতীর হিন্দুকের অধিকার নগণ্য নত্ত। এখানে প্রকাতর প্রতিষ্ঠিত



ইকুক্ষেত্ৰে প্ৰবাসী ভারতীর প্ৰবিক

হইতেছে। গত ১৯৪৮ সনে এবানকার শাসনভন্তাহ্বারী নুজন নির্মাচন অন্থটিত হইরা গিরাছে এবং প্রভ্যেক নরনারী বাবীন মত প্রকাশের স্থানে সাভ করিরাছে। কলে ১৯ জন নহতের বব্যে ১১ট আসন হিন্দুদের জভ সংর্ভিভ হয়। অবশিষ্ঠ ৭ জন হানীর ক্রীরল এবং ১ জন ইউরোপীর কাউলিলে নির্মাচিভ হইরাছেন। এই হানে ক্রমশঃ রাজনৈভিক চেতনা জাঞাত হইতেছে এবং প্রমিকগণ শক্তিশালী হইরা উঠিতেছে।

বরিশাসের ইভিহাসে ভারতীরগণের দান বিশেষভাবে উল্লেখবোদ্য। প্রবাসী ভারতীরগণের প্রাণপণ চেঠার ও অক্লাভ পরিপ্রয়ে এই কুল্ল দ্বীপটি আছু কুসরুছ। চাবের ভার বাছিরাছে, প্রানের সংখ্যা বাছিরাছে এই ভারতীরগণেরই অধ্যবসারের ফলে। আবার রেলপথ এবং পর্যন্তের ভিতর দিরা রাভাষাট নির্মাণ, কললাকীণ ছানে শহরের পত্তন—সব্ই ভারতীরদের চেঠার কল।

মরিশানের পারিপার্শিক হৃতও বনোরম। ভারত সেবাপ্রম সন্দের সাংস্কৃতিক বিশানের সভাগণকে অভ্যবনা জাপনের কত শহর হইতে ২৫ বাইল চুরে বিউর্জোভ যামক ছামে একট সভার আরোজন হর। এই ২৫ বাইল পর্য অভিজ্ঞানের সন্ধর বিশানের অভতন সদত ব্রহ্মচারী রাজকুক এই স্থানের ভৃতাবলীতে মুগ্র হইরা লিবিয়াছেন—"চিরহরিং পর্যাভ্যম বীপের প্রাকৃতিক ও ক্রমির সৌক্র্যার হর্ণান করিতে করিতে আমরা বিউর্জোভ অভিবৃধে চলিয়াছি; কোবাও রাভার উভর পার্যে সারিবছ আবের ক্রেড, আবার কোবাও সবৃদ্ধ বনরাজির অভ্যন্তর স্থান্য ক্রম্য শহর। প্রভ্যেক শহরের সৌক্র্যার বেন কোন চিত্রক্রের স্থান্য ক্রম্য ক্রম্য বিশ্ব বন্ধানির হুই পার্যে বাধ্যার বন্ধানির হুই পার্যে বাধ্যার বাধ্যার বন্ধানির হুই পার্যে বাধ্যার প্রাক্তানির বিশ্বাহনের প্রাক্তির বাধ্যার হুই পার্যে বাধ্যার প্রাক্তানির ক্রম্যানির বাধ্যার হুই পার্যে বাধ্যার প্রাক্তানির বাধ্যার হুই পার্যে বাধ্যার প্রাক্তানির বাধ্যার হুই পার্যের বাধ্যার বাধ্যার ক্রমের বাধ্যার বাধ্যার হুই পার্যের বাধ্যার বাধ্যার হুই পার্যের বাধ্যার বাধ্যার হুই পার্যের বাধ্যার বাধ্যার হুই পার্যের বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার হুই পার্যের বাধ্যার বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার হুই পার্যার বাধ্যার বাধ্যার হুই পার্যের বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার হুই পার্যের বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার বাধ্যার বিদ্ধান্য বাধ্যার বাধ্যার

ভাই হোই বাড়ী; প্রশত অদনে নানা প্রকার নাম-না-কানা রং-বেরতের মূল ও পাড়াবাহারের গাছ। এক প্রকার ভাই নারিবর বাঁশের বাড় বিরা প্রাক্তণ তথা বাংলোই বেরা। এবানে বর্ণবৈষম্য না খাড়ার বে-কোনও হানে ভারতীরগণ বান করিতে পারে। শহরের বহু হানে বেড়ার ও ভারতীরগণকে পাখাপানি বান করিতে বেনিনার। তবে বেড়ারুবের অহুত্রপ ভারতীরগণকেও বাংলো ভরিতে হয়।"

ভারতীরপণ দীর্থকাল বাবং রাভূত্বি হইতে বহ দূরবর্তী এই কেশে বলবাল ভবিতেতে। ভারাদের আচার-আচরণে পরিবর্তন ঘটরাতে। ভারতের বহান্ ঐতিহের কথা ভারারা ভূলিতে বলিরাতে। কিন্তু এই সূদ্র প্রবালে থাকিরাও ভারা-কের কেশপ্রেবে ভাটা পতে নাই। ভারতীর সন্ত্যালীকের অগপ্রম্ম ভারতের বব্যে অভূতপূর্ব্ব ভাগরণ দেখা গিরাহিল। বাধীন ভারতের বব্যিত্ব ভাবিবার অভ ভারারা উৎস্কৃত্ব, সন্ত্যালী-

প্রচারক্ষের নিকট ভাতারা ভারতীর রাট্রের কর্ণবার পতিত ক্ষাত্রলাল, এবং নর্কার প্যাটেলঞ নক্ষে নানা কথা জানিতে চার; নেভাজীর সংবাদ কানিবার কত ভাতাকের কডই না আগ্রত।

বিশ্যের সদত্যণ বাত্র হুই দিন এই দ্বীপে অবছান করিবাহিলেন। তাঁহারা এবানকার প্রবাদী তারতীরদের অবছা পর্যবেক্ষণ করিবা ভাহাবিগকে তারতের বৃহান্ আদর্শের প্রতি উবুদ্ধ করিবা ভূলিবার প্রবাস পান। স্বাদীন তারতের বর্ষাণী ত্যাস ও দেবা, বৈত্রী ও আভির আদর্শ প্রচাহের উচ্চেটেই তারত সেবাপ্রব সন্দ এই প্রচারক্যাহিনী বহির্ভারতে প্রেরণ করিবাহিলেন।

সাংস্কৃতিক বিশবের সম্প্রপণ গড ১৯৫০ সালের ১২ই
ভিলেশ্বর ব্যবিশাস খীপে অবভারণ করেন। ঐ সবর সর্বার
পাটেল ভারতীর যুক্তরাটের সহকারী প্রধানবরী।

## উন্তাস

### **এ**রণজিংকুমার সেন

অকলাং চেরে দেখি আকাশে উড়েছে চিল বেব কেটে গেছে। অহুকার স'রে গিরে জ্যোৎসা নেমেছে। পূরবো বিষয় দিন : শোণিতসিক্ত দিন অপনত আফ; জ্যোতির আতান জাগে, ক্লান্ত চোঝে কিরে আনে আলোর ঘরাজ। বেব কেটে গেছে আল বেব ন'রে গেছে, ব্যবিদ্ধ নগর ছেডে রজনীগন্ধা-ননে

এবন টাবের দিন বেণিনি কি আর বার
বুক-পুনিরার !
এবন ক্যোৎসা লে কি হালে নি কো গ্রেরনীর
হানির আভার !

হিল ভো ঐতিহ নীল
আলো-হালি অনাবিল
আনাবের অভিছের প্রাণ-পঞ্চরে,
ভারণর কোবা কবে
নবের আঁচকে লে কে
বৃহে বিল সব ভার শোণিভাকরে।
ইতিহাল ভোলে নি ভো, বভ করি কনা,
বহু ব্যধা বহু অঞ্চ
পাডা ভ'রে আকও ভার হ'রে আহে কনা।

এনেছে আলোক,
অকুমাং ইড়ানিরা ওঠে বনোলোক;
অকুমা হর্গন নিলা পেরিছে আবার
অর্ল পাই হিন্দ এক নব পূর্ণিবার।
বেষ কেটে গেছে আকু বেষ স'ছে গেছে,
নমির নগর ছেতে রক্ষনীগরা-বন্ধে
জ্যোৎসা নেবেছে।

## প্রাচীন কামতা রাজ্য সম্বন্ধে যৎকিঞ্চিৎ

#### শ্ৰীস্থাংশুমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়

ভাত্র ও আখিন মাসের 'প্রবাসী'তে প্রীর্ক্ত গলেশচক্র বিখাসের (সাভাল) "বিবর্তনে কামভা রাজ্য" প্রবন্ধীর শিরোমারা দেখিরা মনে হইরাছিল যে, প্রাচীন কামতা রাজ্য সহকেই ভিনি বিশেষ করিয়া লিখিরাছেন। এই স্লিখিভ প্রবন্ধীট শাঠ করিরা জানা গেল—বর্তনান কোচবিহার রাজ্যের ইভিন্নত সকলমই তাঁহার বুল উদ্দেশ্ত। তাঁহার প্রবন্ধের।পরি-প্রক হিসাবে প্রাচীন কামভা রাজ্য সম্বন্ধে এখানে কিছু লিখিভেতি।

कानिका श्वार वर्गिक चारक वर वरकदारका প্রতিপালিত হইয়াছিলেন এবং প্রাগজ্যোভিষপুর জন্ন করিয়া কিরাভরাভ খোটককে নিহত করেন। মঃ মঃ পল্লাথ বিভা-বিৰোদের মতে পঞ্চম ও ষঠ পভাঞ্চীতে ভামত্রপে বচ নোজৰ ও কাৰত্বের বাস ছিল। তিউবেছ সাং এবানে শত শত দেবমন্দির এবং মিৰিলায় কৰিত ভাষার সচিত কামত্রপীয় ভাষার যাবই সাদৃষ্ঠ দেবিয়াছিলেন। নিবানপুর ভাত্রশাসনে ভাত্তর বর্দ্ধাকে "প্রকৃষ্ট আর্য্য বর্দ্ধের রঞ্চক ও পশিশেশর প্রিয় शियाकित्वत कक्ष" विविध वर्षमा करा हरेशाता । वर्षभाव वर्षाप्तरवर क्षेत्रम काममानामक क्षेत्रम क्षेत्रम करा उदेशास छाटक विभि चामित्मव चर्क इवछीयत, यात नमात अक मिटक लाल नीमांभव अन मिटक छैन्डक्मा अर्थ शांद ददरमंद এক দিক ব্ৰভীসুদত ভ্ৰভাৱন্ত, আৱ এক দিক ভ্ৰাছাৰিত — যিনি শুকার ও রৌজরদের প্রতীক। বাব এবং অনিক্রছ-खेबात काविमी, डेन्भी बळवावम विवादनात कवाल चावता পভিষাতি। বর্ত্তণ রাজবংশের পর মেজবংশীর শালভঞ ৱাজারা কামত্রপে রাজত্ব করেন, ভাহার পরে আগেন भारत्या। दक्षर्वाय भारत्यत्व प्रशिष्ठ देशास्त्र काम मन्नर्क ছিল কি না ভানা নাই--ইঁচাদের বলা চইত ভৌষ পাল ७ वादाठीभातः। मानसस् वरत्मद दासादा "कारमध्य बहारशेदी"त देशानक विराम । कामाना ७ टाउँक्यादव बिक्त कांडाताई निर्दाद करवन ।

কাষরণে এই সমরে সুইণা, সরহণা, মীনণা, গোরক্ষণা কানপা, ভিরোগা, ভারিণা, কর্রী, ভুত্বর্ক, ভোষী প্রভৃতি চৌরাশী সিনাচার্ব্যের বিশেষ প্রভিণতি হিল বলিরা মনে হর। বিরাস্থ-সংগৃহীত মাণিকচল্লের গান, মরমায়তীর গান কাষ্-রণেও প্রচলিত হিল। ডাঃ শহীহরাহের মতে হিলী, মরার্ম, উভিরা প্রভৃতি ভাষাভেও নামগীতকা পাওরা বার। তিক্ষতী ভাষার "তেমুরে" ও আহেই। কালিকাপুরাণ ও বোসিনীতল্লে ধেবা বার যে, প্রতীর নশব-একাদশ শভাকীতে বৌজনাব্যে বিহৃত ভ্রবাদ, সহক্ষিয়াবাদ ও নাধবাদ কাষরণে

বিশেষ প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল। পণ্ডিতদের মতে আসারে প্রথম সামাজিক গোর্ড গাঁটুত হর অট্রিকভাষী আভিচের সমরে। মাড্-ভ্রপ্রধান স্থামীণ সভাভাই অট্রিক সংস্কৃতির বাহুক ও-বারক। বহু মূর্ণ পরে এই মাত্তপ্রবাদ সহন্দিরা ও বৌদ্ধ ভাত্রিকভার শক্তিবাদের সহিত বেমাসুম মিশিরা সিয়া কামরূপী সভাভাকে এক নৃতন রূপ দিরাছিল। দেবী কামাখ্যা ভাত্রারই প্রতীক। তাহাকে অট্রক কুমাভাই বলি, (কা-মেই-বা-ই) বলি বা শক্তির বোনি-পার্ত্রহানই বলি মূলে ভিনি এক আর্থ্য-অনার্থ্য অট্রিক বড-সংস্কৃতির মিলিভ প্রকাশ। কোচবিহারের আই প্রভা তংকালীন শক্তিপ্রভারই চিহ্ন।

অহমকোষে আসামকে বলা হইনাছে পভিত কারছের দেশ বা কলিতা কিংবা কুলগুণ্ডের দেশ। এইরপ কিষদতী আছে যে, পরশুরাম বর্ধম তার ক্ষার্থনিবন বল্প আরম্ভ করেন তর্ধম আমনটোর রোধ হইতে পরিমাণ পাইবার ক্ষা আমেক ক্ষান্ত্রির রোধ হইতে পরিমাণ পাইবার ক্ষা আমেক ক্ষান্ত্রির রোধ হইতে পরিমাণ পাইবার ক্ষা আমেক ক্ষান্ত্রির বাব ক্ষান্ত্রির বাবিত। গুণ্ডাত্ত্রিক গণ্ড স্থাট্টের শাসমাধীম একট প্রদেশ ছিল। বর্দ্ধপালের সময়ও কাষ্ত্রপ পালস্মাট্টের প্রভাবাধীম ছিল। ক্ষান্ত্রের ক্ষান্ত্রির ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্রির ক্ষান্ত্রির ক্ষান্ত্রির ক্ষান্ত্রির ক্ষান্ত্রির ক্ষান্ত্রির ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্র ক্

"জক্ষোদ গোড়লত্মীং ক্ষতি কেলিয়াক্তং কলিদান্ বিষয়কে কাষ্ত্ৰপাতিয়ামং।

কালিদাসের রযুর দিখিকরপ্রসঙ্গেও কাষরণের উল্লেখ আছে।
নান্দাসর অনুশাসনে বর্ণিত রাজা বশোবর্গের সাত্রাজ্যওকামরণ পর্যান্ত বিভূত হিল বলিয়া মনে হয়। রাজ্যবতীর
পিতা হর্বদেব তগদন্তবংশ-ছাত বলিয়া খ্যাত এবং উচ্চার
খামী লিছ্বীরাক বিতীয় কয়দেব গৌড, ওড়ু, কলিদ ও
কোপলাবিপতি হিলেন।

পৌভাবিশ রাষণালের সময় কাষরণ বিশিত হয়।
বাঙালী সেনাপতি-প্রতিটিত মহনাগড় আছও কাষরণ
বিকরের সাক্যা বিজেছে। নুশতি তিল্যুদেব সার্বজ্ব মীকার
করিরা বর্তমান তেলপুরে (বাণরাজার শোণিতপুর) রাজধানী
পরিবর্তিত করেন। তিল্যুদেব সৌভসাআজ্যের অধীনভাশাল ছিন্ন করিবার চেঙা করিলে গৌভরাজ্যরী-পুরু বৈভ্রুদেব পুনরার
কামরণ বিকর করেন। বৈদ্যুদেব প্রব্যের রাজ্প্রতিনিধি
ও তাহার পরে বাণীন ভাবে কামরপরাজ্যের পাল্ম্য দিক্ষে
বিজ্ঞান্ত প্রতিটিত করেন। এই রাজ্যই কামভা রাজ্য।
বৈদ্যুদ্ধের পর রাম্বিদেব, ভাতরদেব, বল্লভ্রের, পুরুদ্ধের
প্রভৃতি ক্রেকন্য নর্গতির নাম পাঙ্যা বার। এই সম্বর্গতি ক্রেকন্য নর্গতির নাম পাঙ্যা বার। এই সম্বর্গ বাংলাবেশে সেনবান্ধনের প্রতিপত্তি। প্রান্ত প্রতিহাসিক রাজনোহন নাথের বতে গোরালপাড়া জেলার অভ্যাপ্রীয় সন্নিকটবর্তী লালবাটির ধ্বংলাবশের এই মূপের। হলেখরের দ্ব্যুপরারণ গণেশ ও জন্ম এবং ভেকপুরের প্রান্তি বাংলার ও কানরপের লাংকভিক ঐক্যের পরিচর। তেকবীর ক্ষর বাবে কামভারাজ্যের এককন লাবত নরপতি হিলেন। পূর্দেবের রাজত্ব পৌনঃপুনিক মূললমান অভিযানের কর্চ বিখ্যাত। প্রথমে মূললমানর পরাক্ত হইরা পলাইয়া বার এবং ভাহার আরক-স্বরূপ গৌহাটির নিকটে ব্রহ্মপুরের তীরে কানাই বরশীবোরা ছানে পাহাব-গাত্রে খোদিত একটি শিলালিপি আরে:

"শাকে ভ্রপে মুগেশে মধ্যান এবোদশে কাষরপং সমাগভা ভুরভা: করমারর:।"

পূর্বেবের র্ভার পর কাষতাহাল্য ছই তাগে বিভক্ত হইরা বার। কারছ মন্ত্রীবংশ পশ্চিন দিক অধিকার করেন এবং সভবত: নুসলমানদের আত্মণত্য বীকার করেন। পূর্বে অংশে অর্বাং দরং ও কাররণ জেলার পূর্বভাগে প্রাচীন পালবংশের বারাহীশাধার রাজারা পূনরার রাজ্য প্রভিত্তিক করেন। ত্পপ্রসিদ্ধ রাবার্থক।র মাধ্য কন্দলী এক নহামাণিক্য বারাহী রাজার সভাক্বি ছিলেন। এই বারাহী রাজা ত্রিপুরাবিপতি, কর্মীরাবিপতি বা কামপুররাজ তাহার সঞ্জিক নির্ণর এখনও হর নাই।

কবিরাক কললী বে আনাকে সে বুলি কর
বাবব কললী আরো নাম
সপোনে বাচিতে মঞি জাবে কার বাক্যে মনে
অহাঁশিবি চিতো রাম নাম।

ঞীমহামাণিক্য বারাহী রাজার অস্বোবে ভিনি রামারণ রচনা করিলেন।

লবোদশ শতাকীর কামভাপুরাবিণতি গুর্গতনারারণের নামও সাহিত্যের পৃষ্ঠণোষক্ষরণে অল অল করে। "কামভান্মওল, চুর্গতনারারণ, মৃণবর অহুপম"—তাঁহার রাজসভার হেম্সরম্ভী ও হরিহর বিপ্র নামে চুই অন কবি ছিলেন। হেম্সরম্ভীর প্রস্থাত হিলেব বিধ্যাত :

দুপশিরোননি দেব মহামানী
হুর্গতনারাণ রাজ।
ভাহান্ ভনর ইজনারাহণ দেব
মহাবীর বীর স্বভাব গভীর
নিজে ফুডা হরিদেব।

চুৰ্বতনারারণ ও ইজনারারণ "পাক গৌরেখর" হিলেন। তাঁহাবের রাজস্বকালে হোটদিলা নাবে এক প্রাবে কারস্থারর চক্ষপাণি শিক্ষারের পুত্র কবিরত্ব সরস্থাী নাবে আর এক কবি ছিলেন। তিনি বহাতারতের জোণপর্বা অসুবাদ করেন। লোণপৰ্ক ব্যৱধারণ কৌতৃহলে নিগদভি

এই সমরে রচিত পলপুরাণ নাবে একট আব্যারিকা পাওরা বার বাহাতে হাসেন হসেনের সহিত দেবী পলাবতীর তজদের বোর যুদ্ধ হয়। হাসেন হসেন বাংলার হসেন শাহ।

আই প্ৰার কথা পূর্বেই বলিয়াছি। সমস্থ কালরণ ক্তিয়া, বিশেষ করিয়া ব্ৰহ্মপুত্ৰের উত্তর তীরে (বেনন কুলবাড়ী) আই প্ৰার বহু বিবরণ পাওয়া যায়। কাহাড়ীদের বুঢ়াবুটী (হরথার্বেড়ী) কেচাইঘাড়ীর ভাত্রেখরী, কামাধ্যাপূজার প্রচলন, করেখরের কাহিনী, বারজ্ঞার আইগোলানী পূজা প্রাচীন অন্তিক বাত্বাদের সহিত ভাত্রোক্ত শক্তিপূজা বিশিয়া এক মাতৃভদ্রবাদে পরিণত হইয়াছে। তবন কামরণের সীহানা ছিল:

ত্রিংশদ্ বোজন বিতীপং দীর্বেন শতবোজনং কামরূপং বিজানাতী ত্রিকোপাকারমুখ্যম্ নেপালভকাকনাত্রি ত্রহ্মপুত্রভ সদসম্ করভোরাং সমাপ্রিভা বাবদিকরবাসিনী।

বৌৰভাৱিক বজ্লবোগিনী সাধনার অর্থালানের প্রভিতে লিখিত আছে:

শপকাং পুনরণি ওভিজ্ঞান পুর্ণসিরি কাষাখ্যা সিরিহট ইভানেন পুক্ষেং ওঁ ওঁ ওঁ সর্ব্যক্ত অকিনীরে বজনবর্ণনীরে । বজনবর্ণনীরে । বোচনীরে । হং ছং ছং কট কট কট বাহা। ( সাবনবালা গাইকোরাড সিরিজ বিভীর ভাগ ৪৫৩ পূ, সাবনসংখ্যা ২৩২।)

- ওঁ কাষরপ বন্তপুলে খাহা
- ওঁ ত্ৰীহট বজপুলে বাহা
- ওঁ নম সর্বাগুরু বুছবোধিসত্ব ক্রপুঞ্পে খাহা।

ভর্মারেও মুলাবারে কামরূপের উল্লেখ আছে। লামা ভারামাথের এছ হইতে জামা যার যে, মগব গৌড প্রভৃতি দেশ হইতে বিভাভিত অনেক বৌদসন্ন্যাসী পূর্বাঞ্চল কুলীদের রাজ্যে আশ্রর এহণ করে। কামাখ্যা শক্তিপূজার পাদপীঠ—প্রাচীম অব্লিক মাতৃভরবাদের বোমিপূজার সদে মিলিরা বিক্বভ ভর্মাদ এক বরপের মাতৃপ্রার আহোজম করিয়াছিল। কিছু জনার্যা-প্রভাব, কিছু লিকপূজা এবং শৈববাদও মিলিরা গিয়াছিল। বৈদিক ক্রক্তে অনেকে Syneratic দেবতা বলিরা অভিহিত করেম। ক্রক্তকে বলা হইত বক্তবর্ণ। কীবের মতে, তামিল ভাষার শিব বলিতে বুরাইত রক্তবর্ণ মাহম। ক্রক্তে গভগতি নাম কি ভাবে আসিল ঐতরের আজ্বে গভগতি নাম কি ভাবে আসিল ঐতরের আজ্বে ভারার কাহিনী আছে। ধর্বেকে ক্রক্তে পভগ বলা হইরাছে। গোভিল বৃহত্তরে ক্রক্তের হান পল্টাতে। বন্ধুর্কেরীর প্রভ্রের বাল

হইয়াছে। আবার উপনিব্দে ক্লক্তে পরস ভত্তরপেও

অসৰীয়া সাহিত্যে "আইর নাম" বলিরা ক্ডক্ওলি প্রাচীৰ কবিতা আছে। এই আই "ক্ষরার পুত্লা" তার অণর নাম শীতলা "দি বোরা বুক ক্রাই"—তাকে পেলে বুক ক্তিরে বার। তক্ত গোলানী জিলালা করিতেছে— কি দিরা ভোষার প্রা করিব—কল, হব, বন, কল, অর, বর, বন, চিত—আই উভর দিতেছেন.

ৰেই বন্ধ দিও মাতৃ সেই বন্ধ চুবা আপোনৱ নামে মাতৃ সন্ধঃ হোবা। আইকে বলা চইকেলে:

আই ভগৰতী আই, ভোষার মান সুন্দরী নাই।

অধিকা চণ্ডিকা ভবানী কালিকা এইরপে সুরা বেড়াই।
লক্ষ্য করিবার বিষর যে, "আইদেবী" অধিকা, চণ্ডিকা,
ভবানী কালিকারই অভ রূপ। দিনের শেষে গোধূলিতে
মহারারা রূপে আই আসিতেহেন। সোনার বাঁদী বাজিতেহে,
ভার হাভে ক্মলের কুল "হ্বীরালৈ পেলাই দিহে সুবিল কুলর
মালা"।

এক দিকে মুগ্ৰহামদের আক্রমণ, অভ দিকে তাইশাখার অহমদের আগমন, অভ্যতিবাদ, তুঞাদের গৃহবিবাদ সমন্ত কামতা এবং কামপুররাজ্যকে হিন্নতিন্ন করিবা শক্তিহীন করিবা কেলিবাহিল। এই লমহেই চিক্সা নামক হাবে গোরালপাড়া কেলার বডলাতীর কোচ-দৃপতি বিধসিংহের অস্থানর হর। গীতি-রামারণ ও বেহলা আব্যান রচরিতা কবি হুর্গবের কোচবিহারাবিপতিকে 'ক্মডা-ইখর' বলিভাই অতিহিত করিবাহেন :

ক্মতা ঈশ্বর বলো বিশ্বসিংহ মূপবর আটচ্লিশ মহিনী বলো ওঠর কোওর

নিজের বিবরণ সহছে তিনি বলিতেছেম, "একারছ চন্দ্রবর তানপুত্র হুর্গাবর, বিরচিল দীত বিভোগন"। এই পরিবেশের মধ্যেই মহাপুক্রয শহরদেবের আবির্ডাব। তিনি নব্য আসামের জন্মণাতা বলিলেও অত্যুক্তি হর না। তিনি ওবু তক্ত, সাধক, রূপ-প্রবর্তক বিরাট পুরুষ হিলেন না, কবি, স্বরকার, গারক ও নাট্যকারও হিলেন। তিনি তার শেষ জীবন কোচ-নৃপতিছের আশ্রেরেই কাটান ও সমগ্র কোচবিহারে তাহার প্রভাব সক্রির হিলে। কবিত আহে বে, বীর চিলারার (তরুষকে) তাহার ভার্বা। কমলপ্রিরা দেবীর মুখে শহরদেবের শোমর মন রামচরণে চিত দেছ" এই গানট ওনিরা শহরদেবের শ্রীচরণে আশ্রর লন। কামতা রাজ্যের বিবর্তমের ইতিহাসে শহরদেব ও বাববদেবের নাম বিশেষতাবে উল্লেখযোগ্য।

### ফরমোসা

#### ঐঅনিলকুমার দাশগুপ্ত

সম্প্রতি ভারতবর্ষ জাপ শান্তিচ্জি স্বাক্ষর করিতে ও সাধ-ক্রাজিসকো শান্তি-সম্মেলনে বোগদান করিতে অস্বীকারে করিয়াছে। এই অসম্বতির অভতম কারণ হইতেছে কর-মোসাকে চীনের হাতে প্রত্যর্পন না করা। ভারত-সরকার মনে করেন বে, শান্তি-চ্জিতে কর্মোসাকে চীনের নিক্ট কিরাইরা দেওরার ব্যবহা বাকা মিভান্ত প্রয়েজন। ভারতের বারণা বে, ওপনিবেশিক সাম্রাজ্যবাদ বারা কোম দেশের শান্তি আসিতে পারে না। কর্মোসাকে নিজেকের অবীনে রাখা এই সাম্রাজ্যবাদেরই নামান্তর; স্করাং ইহাতে ভারতের সর্বন্ধ বাকিতে পারে না।

করমোলাকে চীনের হাতে কিরাইরা দিবার র্জির বৃলে বে বারণা রতিরাহে ভাহা হইভেছে—ইহা চীনের অবিচ্ছেত অংশ। বছভ: ইহার ইভিহাল পর্ব্যালোচনা ভরিলে বেধা বাইবে বে, বহু প্রাচীন ভাল হুইভেই করবোলা চীনের অধিভারে ছিল। এই বিষয়ট সক্তে এখানে কিছু বলিব। ইতিহাস: ছানীর ভাষার করমোসার নান "ভাইওরান"। করমোসা নাম ইউরোপীরদের দেওবা, ইহার অর্থ স্থলর। পর্তৃপিক নাবিকেরা এই ছান দিরা বাইবার সময় সমূত্র হইতে এই স্থলর বীপটকে দেবিরা 'করমোসা' অর্থাং 'স্থলর' এই নাম রাবিরাছিল।

এই বীপটি চীন দেশের সরিকটে; স্বভরাং বছ প্রাচীম
কাল হইতে চীনারা ইহার ধবর রাখিত। কিছ ভাহাদের
কোন প্ররোজন না হওরার ভবন ভাহারা এবানে উপনিবেশ
হাপনের চেঠা করে নাই। এটির বোড়শ শভালীতে পর্ভূমিজ
ও স্পেনীররা প্রবম এই বীপে উপনিবেশ হাপনের চেঠা করে।
১৯২৪ সনে ওল্লাজরা ইহার পূর্ব্ব-উপকৃলে জেলাভিরা নাবে
একট হুর্গ নির্দ্বাণ ভরিয়া লেবানে ৩৭ বংসর বরিয়া বসবাস
করিতে বাকে। এই সমর চীন দেশে 'রাঞ্গ'-রা সিংবংশীরকের পরাজিত করে। এই পরাজিত সিং বংশের অভ্নগত
ক্তিপর লোক কোজিবলা নাবে পরিচিত এক ল্লাপ্ডির

পারকত্বে করযোগার ওলকাক্ষিপকে বিভাতিত করে এবং रेहात अक्षे रहस्त स्था स्था क्रिता रहा। শভাকীতে আবার 'হাঞ্রা' করযোগার এই অংশকে আছ-সমর্পণ করিতে বাধ্য করে। সেই চইতে ইচা চীন-সামাজ্যের অভতু ক্ত হয় এবং চীদারা এখানে ক্রম্ভ চলিরা আসিতে কলে ভাহাদের সহিত করমোসার আদিম অবি-वानीएड विवाध चक्र हह।

১৮৫৮ এটাকে টাং নৃদিনের চুক্তির কলে ভাইওয়ান ও ভাষসিদ নামক কর্মোসার ভূইট বন্দর বিদেশীদের বাণিজ্যের জন্য উন্তুক্ত করিয়া দেওয়া হয়। সঙ্গে সদে এট বর্ণবাদকেরা ज्यांच यर्चश्राट्य क्या कानिया कृष्टिन। ১৮१८ और्टेटिन করমোসার উপকূলে একটি ভাপানী ভাতাভ ভূবিরা বার। এই ভাছাভের কোন নাবিককে এবানকার আদির অবিবাসীরা माकि हजा करता है हात क्षिणांव खहनार्व कानामीता अहे দ্বীপটকে আক্রমণ করে। কলে চীমের সলে ভাহাদের বুদের আশহা দেখা দেৱ, কিছ কোনজবে এই যুহ এড়ান হইয়াছিল। ১৮৮৪-৮৫ ब्रेडोट्स क्यांच ७ होत्यत मत्या वर्ग मूक हनिएछिन ভবন করাসীরা করমোসাকে আংশিক ভাবে অবহোধ করিয়া ক্ষেক মালের জন্য কীলাং অধিকার করে। ইহার পর ১৮১৫ এটাকে করমোলা সিমোনোলেকি চুক্তির বলে জাপানের হাতে সম্পিত হয়। কিন্তু সেধানকার চীনা অবি-বাসীরা ইহাতে প্রভিষাদ করিল এবং সেধামে গণভন্ন বোষিত हरेल। ७७: भत काशाभीका रेहा बलक्षरकात्र वांता व्यक करत-वर विखाशी करवात्राक वर्ष चानिए छाहापद ক্ষেক বংসর ধরিয়া বিশেষ আরাস খীকার করিতে হর।

ভৌগোলিক বিবরণ : কর্মোসা পশ্চিম প্রশাস্ত মহাসাপরে हीत्मत निक्**ष्टेष्ट अक्ष्टे दो**ण। हीन ७ देशांत मत्या त्व श्रांकी বিদ্যুৰাৰ ভাতার নাম কর্ষোসা প্রণালী। ইতা ১০ মাইল চওড়া এবং জারগায় জারগায় আরও অধিক বিভুত। কর্মোসার উত্তর ও দক্ষিণে বৰাজ্ঞানে পূৰ্ব্ব ও দক্ষিণ চীম সমূল্য অবস্থিত। কর-ৰোসার আফুডি ডিছের মত। ইহা সহার ২৭৫ মাইল ও **छक्षात ७०-४० बाहेल अवर हेटांब (क्याक्ल ४७,8२৯ वर्ज-**गरिन। रेटात (माक्नरना ७४,००,००० चम ( ১৯৪६ এটাকে ভাপানী কর্তুপক্ষের হিসাব অনুযায়ী)। ইতার রাজবাদী ভাই হোতু ও জন্যান্য শহরের লোকসংখ্যা নিয়-निविच स्र :

> ভাই হোরু ... 0,26,809 PIPIP ভাইনান কীলাং ( কীৱাৰ ) • • • 7,00,477 ভাগি • • • 39,842

করমোসার উভর হুইভে দক্ষিণ বিক পর্ব্যন্ত উচ্চ পর্ব্যক্ত-

মালা মেকুদভাকারে অবস্থিত এবং এই পর্যাতরাজি ইতার মধ্য ও পূৰ্ব্বাংশে বিভ্ৰুত রহিয়াছে। ইহার প্রধান কলবিভাজিকা পূর্ব্ব প্রান্তে। এই দিকে পর্বন্ত খাড়া ভাবে সমূলে মামিয়া গিরাছে। পুতরাং অনেক স্থানে প্রশাস্ত বহাসাগরের সহিত সমাভবালভাবে ১৫০০ হইভে ২৫০০ কুট উচ্চ পাৰ্বভ্য প্ৰাচীৱ প্ঠ হইবাছে। ক্ৰেক্ট সম্ভল ভূমি বিশেষত: গির্ম এই দিকে অবস্থিত এবং ইহার মধ্যভাগে সমুল্রোপকুলের সহিত সমান্তবাল ভাবে একট উপত্যকা আছে। সেই উপভ্যকার মধ্য দিয়া একট বেলপৰ নিশ্বিত হইরাছে। ফরবোসার অভ্যক্ত পর্বভেশ্লের মধ্যেমরিসম (मीहीकाशाम) ১৪,৭২০ (मूहे ও সিলভিয়া (সেটজু জান-১২,৪৮০ ফুট) উল্লেখযোগ্য। করযোসার পশ্চিম দিক সমতল ভূমিতে পরিপূর্ণ এবং ইহা २० मारेन हरू।

কৰ্কট জাছি (Tropic of Cancer) ইহার নাঝধান দিয়া চলিয়া গিয়াছে এবং কিউৱোগিও নামক উফ সমুদ্রত্যোত ইহার পার্য দিয়া প্রবাহিত হইতেছে বলিয়া এবামকার জল-বায়ু উঞ্হতলের অনুক্রণ।

করবোসায় প্রচুর পরিমাণে বৃষ্টিপাত হয় এবং এই দীপট সারা বংসর সমাম বৃষ্টি পার। অবশ্র ইহার দক্ষিণ ভাগ স্বীত-কালে অপেকাকৃত ভঙ্ক থাকে অর্থাৎ কম রষ্টি পার। কলবারুর উঞ্ভাও বৃষ্টিপাভ হেতু আর্মভা এই ছইট কারণে এখানে ষ্ল্যবাম উছিদ উৎপন্ন হয়। ইহার বেশীর ভাগ ভূমি শস্ত ও তৃণ উৎপাদনের জন্য ব্যবস্থাত হয়। পার্বত্য জঞ্চলের বৃহত্তর ভাগ ব্যাপিয়া সভেত্ব বনরাজি প্রসারিত। এই বন ভাল বট কর্ক ( ছিপি ), কর্প র ও ফার্ণ রুচ্ছে পরিপূর্ণ।

ठाउँन, रेक्, ठा, थार्ड, मिक्क चानू, जिस, ठीमावामाय প্রভৃতি ফরযোগার প্রধান কসল। এখানে চাউল বছরে ছুই বার করিয়া কলে। ১৯৪৩ সালের হিসাব অভ্যায়ী এবানকার छेरभन्न-ज्ञादात्र अकृष्टे जानिका (मध्या हरेन :

**ठा छैल** 3,84,80,000 mm ( 8,81,00,000 質 ) মিট খালু \$8,00,000 , **हिमि** 32,90,000 , \$4,800 .

এখানে কলা এবং ক্ষলাও প্রচুৱ উংশন্ন হয়। পশুপালমেও क्त्रवाजायाजीता बुवरे ७९भत ।

कीनार्ड कवनाव विम चार्क अवर जिमस्वाव विकर्त पर्व পাওরা যার। এবাদ হইতে ঘর্ণ রপ্তাদী হয়। রৌপ্য, ভাত্র, গৰক, পেটোলিয়াৰ প্ৰভৃতি খনিত ক্ৰব্য ক্রযোগায় পাওয়া

১৯৪७ नाल क्याबाना ४०,००,००,००० रेखन ब्लाय क्षरा ब्रह्मीन करत अवर ७८,००,००,००० हैरबन बारबन्न बान चावनामी करतः। रेखन कामानी बूळाः। अरे रेखन अवारमध

মুক্তারণে ব্যবহৃত হইত। পরে চীমা জাতীর মুক্তা ব্যবহৃত চইতে থাকে।

১৯৪১ এটাকে কর্মোসার বোগামোগের ব্যবস্থা ছিল নিয়লিবিভ রূপ:

> রেলপথ (সরকারী) ৮৭৯ বাইল ৢ (বেসরকারী) ১,৬২৪ ৢ ট্রাম রাভা ৫০০ ৢ অভাভ রাভা ১০,০০০

করমোসার পূর্ব উপক্লে অবস্থিত লাম বিমান্থাট হইতে আরম্ভ করিরা উত্তর উপক্লে চিলাং ও তাইপী হইরা পশ্চিম উপক্ল ধরিরা ভাওর্যাম সিন্চু, ভাইচুং, চিরাই, ভাইমাম ও জাওসিরাং হইরা পিংটাং পর্যন্ত রেলপ্থ চলিয়া পিরাছে। আর একটি রেলপ্থ পূর্বা উপক্লের ম্ব্যভাগে ছ্রালিন্চিরাং হুইতে ভাইতুং প্র্যন্ত বিভ্ত।

করৰোসার ভাইপী, ভাওরুবান, ভাইচুং, পিংটাং প্রভৃতি ছানে সামরিক বাঁট এবং খংশাং, ভাইপী, ভাইরুবান, সিনচ্, ভাইচুং, কাওসিরাং, পিংটাং, হেংচুন, ভাইতুং, ছরালিনচিরাং ও লান্-এ বিমানবাঁট করা হইরাছে। এবানে চিলাং, কেংগান প্রভৃতি বন্দর আছে।

আদিম অবিবাসী: করমোসার আপানী ও চীনা ব্যক্তীত ছই শ্রেণীর আদিম মাত্ম বাস করে। একটকে বলে হাজা। ইহারা চীনের অভ্যন্তরতাপত্ব কোরাংটাও প্রদেশের উপজাতির সহিত সম্পর্কিত। পেশাহ্রম বা বশীক্ত বুমো এবং চীন হ্রম বা বভ বর্জর এই তুই শ্রেণীর আদিবাসীর মব্যে প্রবিদ্যান্তরা চীনা রীতিনীতি গ্রহণ করিয়াছে, শেষোক্তেরা পূর্কাদিকত্ব পাহাতে বাস করে। ইহাদের সহিত মালর-বাসীদের সম্পর্ক বিভ্যান। এই আদিম অবিবাসীরা কিলিপাইন ও ওললার অবিকৃত ভারতীর বীপপুঞ্জের নেসিরট আবাং হৈশিক শ্রেণীর অভ্যুক্ত। ইহাদের গারের চাম্বভা বাদামী রঙের ও মাধা লখা। ভাহাদের সহিত ইলোমেশীবদের ভাষা ও সংকৃতিপত সাদৃত্য দেখা বার। ইহাদের মধ্যে নরমুওশিকার প্রচলিত আছে এবং ইহা ভাহাদের সামান্তিক মান নির্মান্তর। বিবাহের সময় এই নৃশংস কার্যাকে পারের মান নির্মান্তর। বিবাহের সময় এই নৃশংস কার্যাকে পারের

গুণ হিসাবে বিবেচনা করা হয়। এখানকার লোকেরা উকি
পরে। কণালের বাবধান বিরা একটি নীল রেখা লাজের বক্ত
আহিত করে ও নীচের ঠোটের বাবধান হইতে অন্তরণ একট
রেখা পুতানির মধ্যতাগ পর্যন্ত কাটে। বেবেরা উপর ও নীচ
উত্তর ঠোটে ও গালে নানারকর উকি কাটে এবং তাহাবের
কান পর্যান্ত একটি নীল রেখা ক্রমস্থারমান করিবা আঁকা হয়।
তাহারা বৌবনে পদার্পণ করিলে একটি উংসব অন্ততিত হয়।
এই উংসবে হেলে বেবে উত্তরেরই উপরের হুই ক্ষের হুইটি
ক্রমন দত্ত বা রাজ্যত ভূলিরা কেলা হয়। এখানে অবিবাহিতে
পুক্রমরা আলাদা বাতীতে খাকে। এই বাতী সাবারণতঃ
কাঠের পুঁটির উপর নির্মিত হয় এবং তাহাকে 'অবিবাহিতের
বাতী' বলে। ইহাদের কেহ কেহ লবণকে মুলা হিসাবে
ব্যবহার করে এবং ইলাদের মধ্যে 'পূর্ব্বপুরুষ পূলা'র প্রচলন
আচে।

ইহার। বে ক্রমে শিকিত হইরা উটিভেছে ভাহা ১৯৪১
এটান্সের পরিসংখ্যান হইতে বুবা যার। উক্ত বংসরে এখানে
১,০০০ প্রাথমিক বিভালরে ১২,০৭৬ জন শিক্ক ও ৭,৪০,৬৯৩
জন হ'ল ছিল এবং হরট নর্য্যাল সুলে ২২৫ জন শিক্ক ও
২,৫০৭ জন হাল ছিল। এখানে চারট কলেজে ২৬৬ জন
অব্যাপক ও ১,৩৮৫ জন হাল এবং একট বিশ্ববিভালর ও
ভাহাতে ৩৪৫ জন হাল ছিল।

বর্ডনাম অবছা: ১৮৯৫ ইটান্সে জাপান কর্তৃক অধিকৃত হওয়ার পর হইতে করমোসা জাপানের উপনিবেশ হিসাবে রহিয়াছিল। কিন্তু ১৯৪৫ সালে জাপান মুদ্দে পরাজিত হওয়ার কলে করমোসাকে জাপানের হাত হইতে উদার করিয়া চীনের হতে প্রভাগি করা হয়। ১৯৪৫ সালের আক্রোবর মাসে চীনা জাতীর সরকার কর্তৃক জেনারেল চেন রী এখানকার প্রথর বা শাসনকর্তা নিয়ক্ত হন।

করমোলার কুরোমিনটাং দলই প্রবল। বর্তমানে চিরাং কাইশেক সদল বলে এখানে আগ্রর লইরাছেন। ক্যুনিষ্ট চীমারা এই খীপটকে আঞ্চমণ করিবার আরোজন করিভেছে, অপর পক্ষে ইহাকে বাবা দিবার কভ আবেরিকা চিরাঙের সহিত চুক্তি সম্পাদন করিভেছে।

### মহিলা-সংবাদ

গভ ১৯৫০ নালের কাব্য উপাধি পরীকার এবতী আশানতা হতটোধুরী প্রথম ছাম অধিকার করিবা বলীর সংস্ত শিকা-পরিষদ্ কর্তৃত্ব প্রথম্ভ "গোপীনাধ বাইতি প্রক" লাভ করিয়াহেন। ইনি কলিকাতা বাগৰাজার চতুপারীর পণ্ডিভ কালিপদ শান্তী মহাশবের হানী।

## উদ্বাস্থ-সমস্থা

### 🗸 অজিতকুমার ভট্টাচার্য

সম্প্রতি পশ্চিমবদের উদ্বাধ-সম্ভা আবার মৃত্য করিবা ভ্রাবহ রূপে দেবা বিরাহে। এক দিক দিরা মহে, ইহার বভঙলি দিক ভাবিতে পারা বার, এই সম্ভা ক্রমশং ফট পাকাইরা বাইতেহে। বদবিভাগের পুরাত্য কাম্প্রি না বাঁটরা আমরা ইহাকে পশ্চিমবদের অনিবার্থ সম্ভা রূপে বরিবা লইবা আলোচনা করিব।

शायबिक काटन देवाय-प्रमुख प्रमानाटमत इन्हें अनाम विक जात्त । अक्षे बचारी जाहाया, विजीद शुनर्वाजम । वर्षार প্ৰবাসনের পূর্বে উদান্তদের অভারী সাহাব্যের বাভাবিক ভাবেই এভাভ প্রয়েজন। প্রয়েজনীর শিবির সংখাপন করিরা সামহিক ভাবে সাহাযাদানের পর ভাহাদের পুনর্বাসনের ব্যবস্থা করিয়া পার্হহা শীবনে পুন:প্রতিষ্ঠিত করামোতেই এই বিবাট সমস্কার প্রবালা করা ঘাইতে পারে। পশ্চিমবঙ্গ সরকার উলাপ্তদের সম্পর্কে এই কার্যক্রমই গ্রহণ করিয়া चाजित्वाहम अवर शेरत शेरत छाठारमत विकित पारम वजवाज ভৱাইভোটন। বভ্ৰানে বাভ ও ট্ৰাছ সম্ভাৱ বাৰাহ बरे श्राप्तम बन राम निवास । बरे पूरे पिरकरे जनकात अर्वार्थका कविक मका विश्वा कांक कतिका यारेरकावन । সহস্যাহত মীজি ও ভাইলেম সমুধ ছাতি সামানাই বলিবার আছে। ষেটকু বলিবার ভাতা বিভাগীর কোন-কোন কর্মচারী সম্পর্কে। সরকারী মীতি ও কার্যক্রম ভঞ্চিং-পতিতে সম্পন্ন করিতে না পারিলে সমন্ত পরিকল্পনা ও কার্যবারা বিপর্যন্ত চইতে বাৰা: ভাচার ফলে কোৰাও কোৰাও অশান্তির एक हरेबाएए अवर जबकाशक कार्याय कारी वर्षेट हरेबाएए। এই অবভার পরিবর্ত ন বাঞ্নীর।

উবাত পুনর্বাসনের দিকট সর্বাপেকা প্ররোজনীয়। সূর্চ্ পরিকলনার সহিত এই কার্য সবাবা করিতে না পারিলে সমত প্রচেপ্টাই ব্যব্ হইতে বাব্য। শহরে বে সব পুনর্বসতি হইবে, তাহাদের শহরের উপবোদী জীবিকার সংখ্যম হওরা প্ররোজন। বৃহৎ শিলে, সওদাগরী আপিসে, দোকান প্রভৃতি খানে বাহারা নিযুক্ত হইবার উপযুক্ত, তাহাদের শহর কিংবা শহরের নিকটবর্তী অঞ্চলে বসবাস বাকা দরকার। নতুবা অস্থিবার স্কৃতি বটবে এবং ভাহাতে পুনর্বাসনের উদ্বেভ সার্বক হইবে না। অপর দিকে, বে সকল পরিবারের প্রায়্য পরিব্রোক শীবিকা নির্বাহ করা চলিতে পারে, তাহাদিগকে অনর্বক শহরে ভিক্ না করাইরা প্রাবে বসবাস প্রবং কৃষি বা কৃষ্টির-শিলে নিয়ক্ত করিতে পারিলে সম্ভার প্রাবাদ সহক হইবা

আসিবে। এ বিষয়ে সরকারী ও বেসরকারী প্রচেষ্টা হইরাছে ও হইভেছে। সরকার প্রতি ইউনিয়ন বোর্ড নায়কত বেগানে বেগানে সম্ভব— ক্ষক, মধ্ব, রভিধারী ও ক্টিরলিলীদের বসবাসের প্রচেষ্টা করিবা আসিভেছেন।

ভিত্ৰ পশ্চিমবাদ লোকবদভিত্ৰ ঘনত ও চাপ এত বেৰী বে, তবু এই প্রদেশের মধ্যে সুঠু পুনর্বসভি সম্ভব মছে। ভাই সরকার পার্থবর্তী রাজ্য-সরকারগুলির সচিত যোগাযোগ করিছা विज्ञाद थ छैकिग्राद वक देवांच त्थादन कविद्यारणन। किन्द সেধানেও এক নতম সম্ভাৱ উত্তব চইয়াছে। সরভারী বাবছার क्रिके दश्य चार्य. चादात देशत देशाचरम्ब वाटामी-ध्रवनचा বিভার ও উভিয়ার মাইছে গিয়া বা বাইছেছে। ইভা বাভীভ विकास क्षांत क कारकरें। अरे जब बिलियां क्षम्बेस महाउदारक चर्थार वह देवाल नगराव निकारक किरिया चानिरकाक। বৰ্ত মানে হাওছা ষ্টেলনে খে-দৰ শরণাৰী ভিছ ভৱিয়া আছে, ভাতারা সকলেই বাংলার বাতিরের প্রদেশ-প্রভাারত। ভারত-সরকার ইহাদের সহছে ধুব কঠোর মনোভাব পোষণ করিছে-ছেন , দার পঞ্চিরাছে পশ্চিমবদ সরকারের। তাঁতারা ভাতা-দিপকে শতরের বাতিরে কোন ভানে লইবা ঘাইতে চাতিলেও তাহা কেহ ভনিতেছে না. ফলে কিছু অৰ্থ ধ্যৱাতি বাবদ ধ্রচ চইতেতে। আমহা এই অবসার আল মিরসম ভাষমা ভরি। প্রদেশ-কংগ্রেস-সভাপতি জ্রীঅভন্য ঘোষ মহালয় এই অবস্থার অবসানকলে পশ্চিম বাংলার সহিত সংলগ্ন অন্য রাজ্যের বাঙালী-প্রবাদ স্থানগুলি পশ্চিমবদের অন্তর্ভুক্তির দাবি कामारेबाक्टिनम । मुनामधी णाः विवानम्य बाबन अ वियदा (हर्ष) कविशाहितम । जस्रवन: चानाशी निर्दाहत्वद (चाच-ভোতের জন্য সে সব দাবি আপাতত: চাপা পভিয়া আছে।

জীবনের সব ক্ষেত্রে বেষন ছুনীতি ও অনাচার প্রভাব বিভাব করিব। আছে, উবাস্ত-ব্যাপারেও তেননি। প্রথম ছুনীতি দেখিতে পাওরা বাইবে উবাস্তবের প্রভারতেদে। এনন বছ ব্যক্তি উবাস্ত বলিরা সরকারী থাভার নাম লিবাইবাছে, বাহারা ভাহার সুবোগ-স্থবিধা পাইবার অবিকারী অংশত: বা মোটেই মহে। এক দল পূর্ববিদীর ব্যক্তি পশ্চিম-বদে বছকাল যাবং চাকরি বা ব্যবসারস্থলে বসবাস করিবা আলিভেহিল। বংসরে এক বার বা হুই বার দেশের বাজীতে পিরাই প্রাবের প্রতি নিক্ষেবের কর্তব্য শেষ করিত। ভাহারা প্রার পশ্চিমবদ্বাসী—সরকারী অলিগলির বোঁকব্যর সম্বন্ধে ওরাকিবহাল বাকার সুবোগ লইবা উবাত্যের ক্ষত

নিৰ ছিড যাবভীৰ সরকারী স্থাগ-সবিধা कविशास । খৰ ভাতাই নতে, অপ্ৰয়োজনে সুবিধা লাভ क्तिरम याका कर. काकार करेबारक। व्यर्गर अने स्वर्गर रक वास्त्रि अविश्वासारकत कश्वास्त्रात करिकारकः कारमन (य. वैदाखरमञ পুনর্বসভিত্র कड প্রচর পরিমাণে তেউ-ভোলা টনের প্রয়েজম চটতেতে। ইয়াল চিসাবে পাওয়া हैम अ प्रकास सर्वाधिक (हार्वावाकारत विकास स्टेंटिक (प्रवा পিয়াছে। দিভীর প্রকারট আরও চুর্নীভিপূর্ণ। পুরপাকিস্থান हरेट वह 'कसरताक' बाबी 'श वानकवानिकारमत मेरेडा পশ্চিমবলৈ সরকারী সাচাষ্ট্রে বাস করেন সমস্তপ্রকার স্থােগ-স্থবিধা প্রচণ করেন - অপর দিকে দেখের ক্ষিক্ষা ও বিষয়-সম্পত্তি দেখিবার ভব বাডীতে ভই-এক ভন লোক থাকে। অৰ্থাং বাতাকে বলে 'গাছেৱও বাওয়া, ভলাৱও কুডানো'---चाठाहे चहैत्याय। अहे भर्यात्व भए जतकादी कर्यठाती. চাকরিয়া, ব্যবসাদার, ছোটবাটো ক্ষমিদার প্রভৃতি ম্বাবিত ও শিকিতসম্প্রদারের অনেকে।

অবচ আসলে বাহারা শরণাবী, সভ্যকারের হিন্নুল
নি:সহল উবাত, ভাহারাই আজ সর্বাণেকা বঞ্চিত। অভি
সাবারণ ভরের ও নিম্নন্যবিত পরিবারের ব্যক্তি ইহারা—
সহার নাই, আশ্রর নাই, এক্সাত্র সম্বল সরকারের দ্যা ও
পশ্চিমবকের অসাবারণের সহামুভূতি। কিন্তু ভাহাত বুবি
'শিক্তি' উবাত্তদের কীবনবাত্রার করেকট ভূল নীতি ও কিছু
বভলববাত লোকের ধ্বংসাত্মক অবাক্ষিত রাজনীতির প্রতিক্রিরাত্মক ইহারা হারাইতে বসিয়াহে।

किछ हेता एका कहेवांत्र कथा गत्ता। श्रेषक वयन ১৯৪৬ नारमञ्ज होमाबाद करम अवर शरदा परम परम हिम्दूदा शूर्ववन হইতে পশ্চিমবদে আসিতে থাকে, তথন পশ্চিমবদের সমগ্র হিন্দু-সমাজ ভাতাদের জন্ন অকাতরে জনর ঢালিয়া দান क्रिबार्ट-क्रि पिकार्ट, यह पिकार्ट, त्रवा क्रिबार्ट, নিজেনের ভাগ হইতে বাভ সরবরাত করিয়া বসিয়া বসিয়া बाधवादेवात्य । त्यांतिय कात त्यक्वा कवनदे कृतिवात मह्द । কিছ আছ কেন এভ ভীৱ ভাবে পূৰ্ব্ব-পশ্চিম মনোভাব দানা वैविश छेडिशास ? बुजनिय नीत चायल (य-काम नवकावी চাকুরিতে রুসলমান অকিসারগণ মুসলিম যুবকদের অধিক प्रयोग विवाद करन (बहन निक्छ ७ वराविष्ठ टिक् बरर अून-निम नमारक अकड़े। विकाशीत विरायत रहे दहेशांवन, আৰও ভেমনি বছ অফিলার দেশবিভাগের কলে পূর্ববদীর ছওয়ার তাঁছারা পূর্ববদীর মুবকদের বেশী সুবোগ-সুবিধা किट्टाइन विज्ञां शूर्व-शिक्टम बरमाकार केवन राज्य निकिश-ন্যাকে বানা বাৰিয়া উটয়াছে। ভাহা ছাড়া, অভ কোন ভাজে, সরকারী কর্মচারিগণ কোন কোন পূর্ববদীয় बाक्किक चर्यान-चुनिया विनात कर नाख दम। देशव

ফলে এই মনোভাব দিন দিন হড়াইরা পড়িভেছে। ইহা হাড়া প্রানাঞ্জন সরকারী কার্বে অবস্থানকারী কোন কোন পূর্বকীর কর্মচারীকে বলিতে শোলা যার—'সব হারাইরা আসিরাছি, আমাদের ১৯৮তি কিছু উপার না করিলে চলিবে কেন ?' বলা বাহল্য, অবিকাংশ সরকারী কর্মচারী পূর্ব-বলাগত এবং ক্ষমসাবারণের প্রতি সরকারী কর্মচারীকের অবজ্ঞা ও ওলাসীভের মনোভাব অভীব তঃবজ্মক।

किन जाबादन आध्याभीत्मत जाक हेडात्मत अत्यत अन भार्का बहैल (क्य ) (जवार्य छ चार्यत (काम विरवाद बार्य मारे। वदश्यक शास्य मान्यत यक वैद्याचाक वनवारमत कर আহ্বাৰ কৰিয়া লওয়া চইয়াছে। বোগ অভত, সাৰাৱণড: উচাল্লদের 'কলোমী' করিয়া বিদেশীর মন্ত বসবাসের বারা অনেকাংশে দায়ী। বিস্তীৰ্ণ পভিত ভ্ৰমিতে কলোমী গভিয়া ভোলা ভাভা উপায় নাই। কিন্ত ৰেবানে গ্ৰামের মধ্যে ভানীয় श्रामवाजीतम्ब मक्डे अकडे माण्डि ज्ञान हरेवा वजवार ज्ञान (जवारमध अरे मरमावृद्धि वाकिया त्रिवारक। वाहित्व अवाय श्राप्तचव 'बाक्षाकी-तीला'व बाक्रासाव मक की মিব্যা সাহস্রাও বিভেদ স্ক্রীর সভারক। ভরা সাংভ্রিক বাভয়া, সামাজিক অসামা প্রভৃতির ব্রা তলিয়া এই বে বিভেদের প্রাকার পভিয়া ভোলা হইতেছে, ইহা মুক্তম করিয়া সমস্তাকে মনভাৰের দিক দিরা কটলভর করিবা ভলিভেছে। ইচা বাভীত প্রতিবেশীবের সহিত, বাভীওয়ালার সহিত, ভবি-माद्रात अहिल कृष्ट् कांत्रत्व वा चकांत्रत्व वंत्रका-विवास अक বেৰী বাৰিভেছে যে, ভাহা সভাই শোচনীর। জোধার जबाराय, या नुख्य जक्रे रही।

ইচার উপর ভবাক্ষিত বৈপ্রবিক ও বাষপদী রাজনৈতিক-(एव मान्द्रि देवास-प्रयुक्त चावक द्वावान करेवा मान्यविद्यात । এই সম্বন্ধা এত বেৰী ব্যাপক ও গভীর যে, যে-কোন সরকারকে ইচা লট্ডা চিমসিম খাইছে চইবে। পশ্চিমবলের মন্ত সর্ব জিল দিরা বাটভি প্রদেশে ইহার ভার শুরুতর রূপেই পভিয়াতে। এই সহটের প্রোগ লইবা খার্বসিদি-রভ রাজনৈভিক নেভারা व-कान श्रकाद विमधना गृष्टे कराहेश महकारी वावचारक वानहां कविशा बिटक प्रवेश प्रदेश । वाक्कावाद्यक कलान कविरात फेरन्ड य रेशांत मर्या मिहिक चार्य, रेश अक्रेक्स ज्ञा विनदा बाम हद मा । जानन है एक - जानात्री विद्याहत्व তাতের তাস হিসাবে ইতাবের কাজে লাগাইরা ভয়ভা চরলের श्रवात । वानावाटि देवां वर्गन कर्ज क श्रव श्रव किन किन क्रिय हमाहम वद क्याब मत्या जबकाबी यावशास भूर्यकात्य वामहाम করিয়া দেওয়া ও এই প্রযোগে রেল বন্ধ করিয়া চরম বিশুখলার ৰৰো অৱাক্কতা হট্ট ক্রিয়া ভবাক্ষিত 'বিপ্লব' ঘটানট 🜢 শ্রেণীর নেতাবের উদ্বের ছিল। কিছা পশ্চিমবালের নাগরিকদের অনুচ ও সুসংহত প্রভিরোধের কলে উচাছের এই খণচেঙা ব্যব হইবাছে। কিছ ইহার প্রতিক্রিয়ার কলে বে খছর খের স্ঠি হইতে চলিরাছে, তাহাতে কি বাছহারা-বের কোন কল্যাণ সাবনের আশা করা সভব ? বাহারা নিঃপ হইরা এবানে আলিরা আশ্ররপ্রার্থী, নানবতার নামে তাহাদের সমভ অবিকার খীকার করিরা লইরা ববাবপ ব্যবহা করিবার ভঙ্গ সরকার অপ্রণী, জনসাবারণও সহাত্ত্তিশীল। পশ্চিমবদবাসীর একাভ কারনা—শরণাসভ তাই-বোনেরা ভাহাদের দার ও ভারবর্ষণ না হইরা পশ্চিমবদর সহার ও সম্পদ হইরা উঠক। ভাহা না হইলে,

কাহারও বদল হইতে পারে না। তাই এই হুরহ সম্ভার
সমাবানে উবাভগণকেও আগাইরা আসিতে হইবে তুরা
নেতৃত্বকে অধীকার করিবা। সরকারী ব্যবছার সহিত
সহযোগিতার পথে, পশ্চিমবদ্বাসীর ঘাতাবিক সহাহতুতিকে
কান্দে লাগাইরা এই মাটর সভাম হইরা বাইতে হইবে।
তিটার মারা তোলা বার না সত্য , কিছ বাহা আর পাইবার
নতে, তাহার আশা ত্যাগ করিবা পশ্চিমবদের নাট ও
মাহ্মকে আপন করিবা লইবা বাস করিতে হইবে। এই
পথেই পূর্ব-পশ্চিমের বিভেদ দুরু হইবা ঘাইবে।

## ষাটের পরে

ঐকালিদাস রায়

ষাটের উপরে কবে বরদ বাছিছে মোর বভ নানা ছংব আবি ব্যাবি আর্থি ক্লেশ ক্টাভেছে ভভ। ইহালেরো আছে প্রয়োজন, ইহারাই একে একে ছিডিভেছে মর্ড্যের বাঁবন।

বিধাভার করুণার পাণি
সবের আভালে আছে মানি আর মাই আমি মানি।
বুবিশ্বাছি ইহালের সার্থকভা। বিত্ঞা ভীবনে
ভাগাইতে চলিভেছে ইহালের চক্রান্ত গোণনে।

ইহারা হরিছে বোর অবাহিত আরু, ভূলিছে অসহ করি এই বরণীর অসবারু। মৃত্যু-বিভীয়িত। বোর হরিভেছে এবা মোরে বিরে, করিভেছে বরণেরে বরণীর পাৃহণীর বীরে।

বিশ্বতির অভনে নাবিতে
ইহারা লোপান হ'বে ব্যাপথে দের না গাবিতে।
হিন্ন করে সব শিহুটান,
ব্যাধানার ভাগে পরিফাতা বছর স্বান।

### নব আশ্বাস

শ্রী আর্য চক্র বর্তী
কুহেলীমলিন হলুদ চাঁদের হাসি
ন্তর রাত্রি শীতের মন্ত্র জপে
নির্জন পথে সহলা পদধ্বনি
দ্ব বীথিকায় বায়ু ওঠে নিঃখনি
আবো ভদ্রার নরম আবেশ ভাঙে
জাগ্রত চোথে শত খপ্রের ভিড়
মনের গহনে ব্যর্থ বীণার মীড়।

মনের গহনে ব্যর্থ বীণার মীড়
তবু তারি মাঝে নব আখাস জাগে
গোনার স্ভায় গাঁথ। মূক্তার মালা
কার কথা ভেবে ঘুমে হাসে রাজবালা।



## "ब्राट्मल-ब्रह्मावनी"

#### প্রীযোগেশচন্দ্র বাগল

ভণন কুলের বঠ শ্রেণীতে পড়ি। 'ভারতবর্ধে'র পূঠার রামেক্রফ্লর ঝিবেনী
মহাপরের 'প্রজার জর' পড়িলাম। পড়িয়াছি এই পর্বান্ত মনে ছিল,
ইহার বিবরবন্ত কি পারবর্জীকালে তাহা চেটা করিবাও পারণ করিতে পারি
নাই। এবারে পুনরার পাতা উণ্টাইতে রিরা বুঝিলাম, কেন ইহা সেই
কিশোর মনেও দার কাটিরাছিল। কঠিন বিবর, কিত্ত এমন সরল ভাষা,
বাচনভলী এত চমংকার। কৈশোরের কথক ঠাকুরের কথকতা বেন
ভনিভেছি। এ তো প্রবন্ধ নর, এ বে কথকতা। লেখক পাঠককে বেন
সন্মুধে রাখিরা সকল খুটিনাটি তথা পুঝারুপুঝ্রপে বুঝাইরা বলিরা
বাইতেছেন। রামেক্র-রচনা বত্র পাঠ করিবেন, এইটি ভত্ত উপলব্ধি
কর্তবে।

রামেন্দ্রবার বিভার সাধক ছিলেন। পাঁচকড়ি বন্দ্যোপাধার সভাই বিলয়ছিলেন বে, রামেন্দ্রফলর "একটা মিশন লইরা সারা কীবনটা কাটাইরাছেন। 'নবজীবনে'র প্রথম সন্দর্ভ লেখার সমর হইতে জাহার মৃত্যুকাল পর্যন্ত এই 'মিশন' বা এই সাধনা তাঁহার কীবনের প্রথভারার বরুণ ছিল, কখনই ভাহাকে দৃষ্টির বাহিরে বাইতে দেন নাই। রামেন্দ্রফলর বে অসংখ্য পুত্তক-পুত্তিকা লিখিয়া গিয়াছেন, দে সকলের বিশ্লেশ করিলে এই কীবনবাাপী সাধনার কথা বেশ ফুটিয়া উঠে।" রামেন্দ্রফলর অসন্তব্যক্ষ পরিপ্রম করিতে পারিতেন। পাঁচকড়িবার্ বালিয়াছেন, "রামেন্দ্র বিনিজ রজনী আগাগোড়াই বেদ ও ভয়ের আলোচনার কটাইরা দিতেন। এই উৎকট পরিপ্রমের কলেই তাঁহার বকুৎ রোগ হয় এবং সেই রোগেই ভাহাকে অকালে দেহত্যাগ করিতে হয়।"

ৰন্দ্যোপাধায় মহাশ্রের উচ্চি বে বর্ণে বর্ণে সভা ভাহা পরিবং-প্রকাশিত এই রামেজ্র-রচনাবলী পাঠে সমাক বুঝা বরে। এবাবৎ পাঁচ थल वाहित हरेबाहर मन्नामकष्य विमालहान. अथनल व मव बहना প্রথিত হর নাই ভাষা একত করিয়া ছাপাইলে আরও এক ৭৩ হইবে। এই পাঁচ খতেই ব্যৱস আট পেনী আকারের প্রায় তিন হানার প্রায় রামেন্দ্র-রচনাবলী মাজিত হইরাছে। রামেন্দ্রফলর প্রোটকালে - মাজ পঞ্চার বংসর বয়সে ধরাধাম ভাগে করেন। ইহার মধ্যে তিনি বে কভ ৰিবত্ব চৰ্চ্চা কৰিবা পিথাছেন ভাবিলে বিশ্মিত হইতে হয়। তিনি ছিলেন ৰক্ষভারতীর একনিষ্ঠ সাধক। বিধের জ্ঞান-ভাঞার উল্লাভ করিরা ৰাতৃভাষাৰ মাধামে ভিনি খনেশবাসীকে ভাহা পরিবেশন করিয়াছেন। তিনি বিখাস করিতেন, এবং লিখিয়াও পিরাছেন বে, এমন দিন কলনা করা মোটেই অসাধ্য নর বধন ভারতের বিববিভালরগুলিতে বাংলা ভাবার উচ্চত্তৰ শিক্ষাও প্ৰদৃত হইবে। এই উল্লেখ্য বলভাবাকে নানা বিবার সমূত্র করার অগমা প্রহাস তাহার রচনার ছত্তে প্রকাশ পাইরাছে। বাবেজপুলর ছিলেন বিজ্ঞানী, পদার্থবিভার অধ্যাপক, কিন্ত विकात्नत्र अवन भाषा नाहे त्र प्रवृत्व छिनि शतिशक काननाक करतन नाहे. এবং দেই জ্ঞান মাজভাষায় পরিবেশন করিয়া তাহা গৌড়জনকে উপহায় দেন নাই। আবার সাহিত্য, দর্শনেও তিনি ছিলেন মুণভিত। বাংলা-সাহিত্য এবং ভারতীর দর্শন ভাঁহার লেখনীর অঞ্চে বেন একাছ ৰমৰীয় হইয়া বাইত। ভাষার রূপ সইয়া তাহা বৰৰ আমানের সমূৰে উপস্থিত হইত তথৰ মনে হইত, যে বিষয়টকে এড দিন পুৰই কঠিন বৰে হটছাছে, এখন বে ভাষা একেয়ায়ে জল হইয়া গেল !

রাবেশ্রহণরকে বাঙালী জাতি এত দিন আছার সহিত সমণ করিয়া আসিরাহে সন্দেহ নাই; কিন্তু বাহার কন্ত নাবেশ্রহণর আযাদের কাছে এত 'ছলাঃ', ভাঁহার সেই সাহিত্য ও রচনা র্ত্থাণ্য থাকিয়া সাধারণের নিকট নামেনাত্র পর্যবসিত হইরা পড়িডেছিল। এই সমর বলীরসাহিত্য-পরিবৎ তাহা পৃশুকাকারে এখিত করিতে সকল করিরা 'পিতৃরণ'
পরিলোধে অপ্রসর হন। বল সমরে তাঁহারা পাঁচ খণ্ডে রচনাবলী প্রকাশ
করিতে সমর্থ ইইরাছেন। বাঁহার বাঁহার চেটার ও অর্থে ইহা সভবপর
ইইরাছে তাঁহারা সকলেই বাঙালী মাত্রের ধক্তবাদার্হ। এই বিবরে
সন্সাদকররের উৎসাহ ও পরিপ্রম াবলেবভাবে অ্যবাদির। ছুপ্রাপা পৃশুকসমূহ সংগ্রহ করিরা লেখকের কীবিতকালে প্রকাশিত শেব সংক্রপের
প্রতকের পাঠ তাঁহারা গ্রহণ করিরাছেন। বে সব গ্রন্থ তাঁহার মৃত্যুর
পরে প্রকাশিত, তাহাও বে-বে প্রিকার পূর্বে প্রকাশিত ইইরাছিল
তাহার সঙ্গে পাঠ মিলাইরা সংশোধনান্তং ব্রুতি ইইরাছে। আবার কোন
কোন লেখা বেমন 'গ্রাক্ষণ কি পৃষ্ট ?'—অমুসন্ধানান্তর সন্পাদকর্মর ইহাতে
সমিবেশিত করিরাছেন। প্রথম ও বিতার খতে রামেন্দ্রস্ক্রের ছুইবানি
ব্যক্ত চিত্রও সমিবিষ্ট আছে।

এত কৰা বলিয়াও বচনাবলীর সামাল পরিচর দেওছাই এবানে সম্বর। প্ৰথম খণ্ডে আছে—প্ৰকৃতি কিজাসা ও বলনদ্বীর ব্ৰভক্ষা। পুত্তকাকারে এখিত হইবার পূর্বে কোন কোন পত্রিকার এগুলি বাছির रहेबाहिल, अभिकाव, श्रृहीभाव वा अवकात्माव छात्रांव निर्मान आहि। এইরপ নিদেশ পরবর্তী খণ্ডভারেও দেওরা হইরাছে। কর্ম-কথা চরিত-কথা, বিচিত্ৰ প্ৰসঙ্গ—বিভীয় খণ্ডে ছান পাইয়াছে। তভার খণ্ডে প্রকন্ত इरेब्राइ-- भक्-कथा, विवित्र संग्रद वस्त्र-कथा। (गरवाक गुन्तरक प्रविविद्रे প্ৰবন্ধলি কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাইস-চালেলর সার দেবপ্রসাদ সর্বাধিকারীর অনুরোধে লিখিত ও বিশ্ববিদ্যালয়গতে পঠিত হয়। চতর্ব थए बहिब्राह-माना कथा, क्यार-कथा, পुत्रबीकक्नकोर्ख-नक्षिका। 'ঐভরের ব্রাহ্মণ' নামক সুবৃহৎ গ্রন্থখনি লইরা পঞ্চম খণ্ড। পাঠক পুস্তক-ওলির নাম হইতে রামেশ্রেশ্বনরের জ্ঞানের পরিধি কিরপ প্রসারিত ছিল ভাহার আঁচ করিতে পারিবেন। গত পঞ্চাপ বংসরের মধ্যে বাংলা সাহিত্য नामा विवास ममुख क्वेबाएक वाहे. किन बारमळाळूमात वर मनल मानावाही ভাষার তৎসমূদর লিপিবছা করিয়াছেন ভাষা করজনের রচনার মধ্যে পাই 📍 वर्नन, विकान ६ छारा-माहित्छात्र चार्लाहनात्र मात्रला এवः व्याक्षलका अकास কামা, কেননা লোক-শিক্ষার পক্ষে ইহা অত্যন্ত আবশুক। 'লোক-শিক্ষক' রামেক্রফুল্যের রচনাবলী এত্তে শিক্ষিত-সম্প্রদার ও প্রভ্তক-প্রণেতাদের মধ্যে প্রচারিত হওরা একান্ত দরকার হইরা পঞ্জিরাছে। সভব অবস্থার বে সকল সমস্তার আত্ত সমাধান প্ররোজন, রামেলফুলবের রচনা-वजी, विष्यवत्रः 'नाना कथा'त ध्यवक्षत्रमहित मधा छाहात मकाम मिनिया। রাইপরিচালক ও শিক্ষানায়কদেরও এঞ্জলি পাঠ করা অভাবিক্তক।

রামেল-রচনাবলী বিভিন্ন প্রছাগার, শিক্ষালয় ও সংস্কৃতি-কেল্লে বিশ্চরই ছান পাইবে। ছাত্র, শিক্ষক ও শিক্ষিত সাধারণের মধ্যে বাহাতে এই সকল প্রস্কৃত্যবিধ ভাবে প্রচারিত হর সে বিবরেও উচ্চ প্রতিঞ্জান-সমূত্রে কর্তৃপক্ষের দৃষ্টি বেওরা প্ররোজন। রামেল্র-সাহিত্যের অমুশীলন ভাতির জীবনে নব-বলের স্থার করিবে।

কাবেল্র-রচনাবলী (১ম-৫ম খণ্ড)—শ্বীরজেল্রনাথ বজ্যোপাধার
 শ্বীসলনীকার দাস কর্তৃক সম্পাদিত। বলীর-সাহিত্য-পরিবং।
 বঙ্গাস, আপার সারকুলার রোড, কলিকাতা-ও। মুন্য বধারেরে — ৮১,
 ১১, ১১, ১১, ৩ ১০)।



রাজগৃহ ও নালন্দা—ডট্টর শ্রীজমূল্যচন্দ্র সেন। ভারত বিভাবিহার। ২১, বলরাম ঘোৰ ব্লীট, কলিকাতা। মূল্য এক টাকা বার জানা।

**কৈনধ**ৰ্ম— ভক্তৰ জীজৰুলাচন্দ্ৰ সেন। বিশ্বভাৰতী গ্ৰহানাৰ। ২. ৰহিম চাটজে স্টিট, কলিকাতা। "বুলা জাট জানা।

রাজগৃহ ও নালন্দার নাম গুনিলেই শিক্ষিতগণের চিত্তে কৌতুক জালিরা উঠে। এক দিন এই ছুইটি স্থানের গোরব নানারপে এই প্রকারেই বাড়িয়া উঠিরাছিল। এছকার একজন প্রসিদ্ধ ঐতিহাসিক। ইনি ঐ দৃষ্টিতেই ঐ ছুই স্থান পর্ববেদ্ধণ করিয়া এবং বহ দিন নেখানে বাস করিয়া সেখানকার বিবরণসমূহ লিপিবন্ধ করিয়াছেন। বাঁহারা ঐ ছুই স্থান প্রস্নাক চান তাঁহারাও ইহাতে বিশেব উপকার লাভ করিবেন। আম্বাইহাপাঠ করিয়া অত্যন্ত আনন্দিত হইয়াছি।

ভরদেবের বিষবিভাসংগ্রহ গ্রহাবলী প্রচারের মূল উদ্দেশ্ত ছিল্ বে, ইউরোপের স্থার আমাদের দেশেও সহল ভাষার ও অলের মধ্যে বিবিধ বিভাকে বাঙালী সাঠকদের নিকটে উপস্থিত করা। বর্জনান পুতিকাথানির বারা কৈনধর্ম্ম সম্বন্ধ সেই উদ্দেশ্ত পূর্ব হইরাছে জৈনধর্ম ও সাহিত্য সম্বন্ধ উলেধবোলা সম্বাধ বিষয়েরই সংক্ষিপ্ত বিবরণ ইহাতে দেওলা হইরাছে, কিছুই উপেক্ষিত হয় নাই। লেখক কর্মানির স্থাসিদ্ধ জৈনতত্ত্বিদ্ শুব্রিং সাহেবের ছাত্র। ইনি উহার সর্ব্যাক প্রকাশন গাঁঠ করার হবিধাও এই পৃত্তিকা-রচনার লাভ করিয়াকেন। পাঠকেরা ইহাতে উপক্রত হইবেন।

🕮 বিধুশেখর ভট্টাচার্য

বিশ্ব-ইতিহাস প্রস্ক -- জ্ঞিনাহরলাল নেহর । Glimpses of World History প্রস্থের বলামুবাদ। আনন্দ-হিন্দুহান প্রকাশনী। জে. এক. হোরাবিন অভিত ০০ থানি সানচিত্র সম্বলিত। ১৪৬ পৃঠা, মুখুলা ১২০০।

এই বিশ্বধাত ইতিহাস-পুক্তকথানির বিষয়বন্ধ ও রচনাশির নৃতন করিয়া বিচারের অপেকা রাধে ন। ; ভারতের প্রধান মন্ত্রীর দেখা বলিয়া

নহে, এক জন ভারতীরের লেখা বলিরা ইহা ভারতেরই সোরবের বস্তু।
বুল পুত্তকের চিঠির আকারে লেখা ভলী এবং সাহিত্যগুলুকু ইংরেজী
এই ইতিহাসএইখানিকেও সাহিত্যিক মর্বাাদা দিয়াছে। আনন্দ-হিন্দুছান
অকাশনী এইরূপ একটি বিরাট্ ও বিখ্যাত এছকে বাংলা ভাবার পরিবেশন
করিরা সমগ্র বাঙালী জ:তির কৃতজ্ঞতাভালন হইলেন। বাহার-ভাহার
পকে এই কঠিন কার্যো হত্তক্ষেপ করা সন্তব ছিল না। প্রকাশনী
ইহাতে হত্তক্ষেপ করাতে গুধু অমুবাদের দিক্ দিরা নহে, মুদ্রপ ও গঠনের
দিক দিয়াও ইহা চিন্তাকর্যক হইরাছে।

অক্টোবর ১৯৩০ হইতে আগষ্ট ১৯৩৩-এর মধ্যে কারাপারে বসিরা জবাহরলাল কন্তা ইন্দিরাকে প্রত্তেলি লেখেন। উপকরণের অভাবে বঙঃই তাঁহাকে অফ্বিধার পড়িতে হইরাছিল, ফলে ইতিহাসখানি সর্ব্যর সমান সম্পূর্ণাক হইতে পারে নাই। পারবতীকালে তিনি সংকারের ঘারা অনেক অপূর্ণতা দূর ক্রিরাছিলেন। সোভাগ্যের বিষয়, বর্তমান বাংলা সংকরণে আম্বা লেখকের শেব সংশোধিত পাঠই পাইতেছি।

বইণানি বাঙালীর ছারী উপকারে আসিবে। আনন্দ-হিন্দুছাৰ প্রকাশনী এরপ ছবছ একাধিক কাজে হাত দিয়া আমাদের কৃতজ্ঞতা-ভালন হইরাছেন। গুধু একটি বিবরে তাঁহাদিগকে বিশেব লক্ষ্য রাবিতে বলি। এইরপ বৃহৎ ব্যাপারে বভাবতাই অনেক হাতের সহবোগিতা আছে, কিন্তু সামপ্রক্রবিধারক দৃষ্টির অভাব ঘটরাছে। ফলে "সাথে" ও "সঙ্গে"র ক্রেশদারক সংমিশ্রণ লক্ষিত হইল। ভাল কাজে এরপ হওরা বাঞ্জনীর নর।

ক্রিপ্রক্রেন্দ্রনাথ ব্লেন্ট্যাপাধ্যায়

ম(গের মুলুক—-এ শিচভাকুমার দেনভথা। নিউ এজ পাবলিশাস লিমিটেড, ২২, ক্যানিং ট্রাট, কলিকাতা-১। মূল্য তিন টাকা।

ছোট গলের বই নাকি বাজারে তেমন কাটে না— অর্থচ ছোট গল নহিলেও মাসিক পঞ্জিবার অঙ্গহানি হয়। ক্থাসাহিত্যের আসর জমাইর। রাথে ছোট গল। আতির প্রাণশক্তি সভ্যতা সংস্কৃতি স্বকিছুকেই প্রকাশ করার বুলে ইহার কৃতিত্ব অনেকথানি। বাংলা-সাহিত্যের এই দিকটিই স্বচেরে উজ্জ্ব—অভ্যতঃ বিশ্বসাহিত্যের পাশে অকুঠ সাহসে সে গাঁড়াইতে

# (जिल्ले अड







পারে। এই ক্ষেত্রে অচিন্তাকুমারের দানও উল্লেখবোগ্য। ছোট গরের আসরে তিনি বে সব চরিত্র ও ঘটনার অবভারণা করেন সেগুলির মধ্যে অপরিচরের দূরত্ব নাই, তাহারা অসাধারণও নহে। নিত্য চোধে দেখা মাত্ম্ব, প্রতিমৃত্রর্জে সংঘটিত সব ঘটনা অখচ তাহাদের বিশেব করিরা জানি-বার বা কার্যাকারণের সম্পর্ক লইরা ভাবিবার অবসর অল লোকেরই আছে। শিলীর তুলিকার তাহাদের অকণ্ট অভিবাজ্ঞি বিশাহকেই শুধু বাড়াইরা ভোলে না, অতি আপনার জনকে হাটের ভিড় হইতে তুলিরা ঘরের মারখানে বসাইরা আনন্দ উপভোগ করার।

কিছ শুধু পরিচিত মামুবই নহে, অপরিচিতেরাও মাঝে মাঝে সঙ্গের মাঝে উকি মারে—তাহাদের আচার প্রথা নির্ম নীতি আমাদের বিম্বর্গন্ধন করে। বিশ্বিও ঐ আচাঃ-নির্মণ্ডলিও একান্ত বাহিরের বস্তু। মামুবের সব চেরে বড় সম্পদ বে মন এবং সব চেরে বড় বহুস্ত সেই মনের লীলা-প্রবাহ ভাগা জাতিধর্মের গঞ্জী ছাড়াইরা নিধিলের মানব-সন্তাকে প্রকাশ করে অপরূপ মহিমার। এই মহিমাই 'মগের মূলুক' গলটকে রুগোঞ্ডীর্ব করিরাছে। পঞ্চমার গরিবর্জন, আগুনে পূড়িরা সোনা বাঁটি হওরার উপমাকেই মুরুপ করাইরা দেয়। আর একট অপুর্ব্ব চিত্র পাই 'গলাযাত্রা' গলে। বাংলা-বিভাগের অভিলাপ উম্বান্ত-কাবনে এমন মূর্ত্ত হইরা উঠিয়ছে বাহার তুলনা অক্তর প্রার মেলে না। মাটির সলে মামুবের সম্পর্ক কত নিবিড় এবং বুছোওর জগতে সদ্যুত্তির বিনাশ কি ফ্রুন্ত ও মর্মান্তিক ভাবেই ঘটতেছে 'প্রস্থান্তা' গলে ভাহা স্থাচিত্রত হইরাছে। 'গার্ড সাহেব' গলাটতেও বার্থ-সন্থানি-চিত্ত এক ভর্কর নৈঃশব্দের মাঝে সহসা নিজেকে আবিছার করিয়া—কুম্বনালে নহে অনজ্ঞান্তার

মবনীবনে বেন উত্তাৰ্শ হইরা গিরাছে। গলের পরিবেশটিও চমধকার।
অক্তান্ত গলগুলির মধ্যেও পরীর হার ও ছন্দ ওত্রপ্রোভভাবে অভিতঃ
গরীর আচার রীতি, ক্ষোপক্ষনের ভঙ্গি, প্রবাদবাক্য বা উপদার বটা
মুন্তুক্ত হইরা পরী-পরিবেশ ও মানুষ্ত্লিকে ব্যাব্যভাবে প্রকাশ
ক্রিয়াছে।

ই ক্সিড—জীপুৰোধ কম। এছাগার, পি-০৮, ল্যাপডাউন রোড, ক্লিকাডা। দাম আডাই টকো।

বৰ্তমানকালের রাজনাতির পটভূমিকার রাষ্ট্রনারকলের চিত্র উপজ্ঞাস-ধানিতে পাওচা হার।

প্রছার ভাছড়ী অর্থপালী বাজি—সমাজে ভাঁছার প্রতিষ্ঠা প্রতিপত্তি আছে। রাজনীতির ক্ষেত্রে এই প্রতিষ্ঠাকে প্রসারিত করার কলাকৌশল তিনি ভালরপেই আয়ন্ত করিরাছেন। বৃদ্ধিকৌশলে প্রিকা-সম্পাদকেরা ভাঁছার প্রশাস্তিক করেন, সাংবাদিক ও সাহিতিকেরা ভাঁছার নামে বক্তৃতা ও প্রবন্ধ লিখিয়া দেন, বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রতিভাবান ছাত্র শ্রীমন্তকে সেক্টোরীরপে কিনিরা লওরাত ভাহার পক্ষে শ্রমাণ হয় না।

রাজনীতিতে সক্রি অংশ এংগ না করিরাও শ্রীমন্ত ব্রিতে পারে সমাজ বা অর্থনীতির মূল প্রকটি কোঝার বিধৃত রহিরাছে। এই বোধের সক্ষেতাহার মানসিক বংশুর প্রর এবং সে বংশু শ্রীমন্তের ভাগোর পতি কোন পথ ধরিরাছে তাহা অবশু লেখক বলিরাছেন—কিন্তু 'ইলিভে'র প্রতিপাত তাহা নহে। নেতার নেতার আত্মবাতী কলহ, ক্ষমতালাভের মন্ততা, বৈতনীতির প্ররোগ জীবনকে কি ভাবে কল্বিত ও প্রতিশ করিরা তোলে—ইলিভের মূল উপজীবা এইগুলি। বলা বাহলা, লেখক ভাঁহার



বজৰ্য ভালভাবেই অহাইরা বলিরাছেন। উপভাসবানি পড়িরা বলে হয় না ওপু কলনার কগতেই বিচরণ করিতেছি।

আজিকার দিনে বে ভিজ সভা মাসুবকে প্রার বৈরাজবাদী করিছ। তুলিয়াছে—'ইজিত' ভাহারই মন্থার্থ বহন করিছা পাঠকমনে কৌতুহল স্থার করে। সলের মধ্যে কিছু রোমাটিক উল্লাদান থাকা সংব্রও ইহার স্ব কয়টি চরিত্রই বাজবালুগ।

ব্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

নিশান নাও---জীবীরেক্রনাথ মুখোপাধ্যার। ভবানীপুর বুক বুারো, ১-বি, রুলা রোড, ফলিকাতা। মুল্য এক টাকা বার আনা।

শ্রীবেক্সনাথ মুখোপাধায় "কুটারের গান" লিখিরা খাতিমান হইরাছেন। উহার কবিতার বৈশিষ্ট্য আছে। 'নিশান নাও' তেইশটি কবিতার সমষ্টি। অতিকার না হইলেও এই অবৃহৎ গ্রন্থের অন্তর্গত প্রার্থ সকল কবিতাই কবিছে উচ্ছল এবং দেশপ্রেমে সম্প্রনা। বে বৃগ এক দিন তরুপের মনে উমাদনার সঞ্চার করিরাছিল ইহার অধিকাংশ কবিতা সেই বুগে হচিত। বৃগ করত বিগত, তাহার আবেস কিন্তু এখনও শেব হর নাই। সেই উন্দীপনামর অপূর্ব্ধ দিনের স্থানের রেশ রচনার মধ্যে পাওরা বার:

# পড়ভা, কর্ন্তব্যমিষ্ঠা ও কার্য্য কুশপড়ার নিদর্শন ব্যাক্ত অফ্ বাঁকুড়া লিমিটেড

বাংলার ব্যাদ্বিং কগতে বিরাট বিপর্বার সন্ত্বেও ভারত সরকার হইতে পাঁচ লক্ষ বাট হাজার টাকার শেয়ার বিক্রয়ের অভ্নয়তি পাইয়াছে। শেয়ার বিক্রয় সংক্রাস্ত বোষণা শীব্রই যথারীতি প্রকাশিত হইবে।

চেনারম্যান—**প্রক্রপন্নাথ কোলে** ন্যানেজিং ভিরেক্টার—**প্রিক্রনাস ন্যানার্জি** 

# ছোট ক্ৰিমিনোচগর অব্যৰ্থ ঔবৰ "ভেরোনা হেলমিন্থিয়া"

শৈশবে আমানের নেশে শতকরা ৩০ অন শিশু নানা জাতীর ক্রিমি রোপে, বিশেষতঃ কুল্ত ক্রিমিতে আক্রান্ত হরে ভর-আন্তা প্রাপ্ত হর "ভেরোলা" অনসাধারণের এই বছদিনের অস্থবিধা দূর করিরাছে।

ষ্ণ্য— আ নিলি ভা মা: সহ—২। আনা। **ওরিদ্রেন্ডাল কেমিক্যাল ওরার্কস লিঃ**১৷১ বি, গোবিন্দ আজ্ঞী বোড, কলিকাডা—২৭

কোন—সাইব ৮৮১

"ৰ্ভি চাই! ব্ভি চাই!
বৃত্য পণ ৷ জীবন পণ !
ইয় বিজয় ! নর সরণ !
জয় পাহ আজি দেশবাতার !
জয় পাহ আজি বাধীনতার !"
অত্যাচায়ক্লিট জনগণের বাধিত আহ্বান বাজিয়াছে :
"তাই আজি নিপীড়িত মানবালা ডাকিছে তোমায়,
হে সার্থি, আনো র্থ, আনো শুখু, আনো ফুর্ণন !"
প্রে জাগিয়াছে :

"কে এসেছ তরুণ পৃথিক, হুংখসাগর কুলে ?" উত্তর আসিহাছে :

"প্ৰলৱ ৰাত্ৰি এনেছে আৰু।

মৃত্যু মণানে প্ৰাণসাধনাৰ প্ৰাণের পূজারী এস হে বীর,
লোব্যো-বাংগ্য সৃছে দাও গ্লানি, কালি কলছ শতান্দীর।"
সকলকে ডাক দিয়া ধ্বনি উঠিলাছে:

"ৰাৰি বন্ধায় সৰ ভেসে বান্ন পুঞ্জিত কঞ্চাল, চূৰ্ণিত হ'ল মিখা। শিকল—প্ৰাণহীন ককাল।" ভুৰৰ ভবিন্না সাভা পড়িয়াছে:

"বেলেছে পাঞ্জন্ত !
বুকে হকে জাগে পঞ্জনভাঙা মহা-উন্নাদ লোল,
শুধুই অবি, শুধু কলাল, শুধু পৰ্জন-রোল !"
সেই শৌধ্য কোবায়, সেই হিন্দু কই, কোবা গেল সেই বীর জাতি,
বলিয়া কবি গ্রঃথ কবিয়াছেন :

"বিদেশের বীরনারী চলে একা হিমানীর দেশে। আমাদের পুরুবেরা শাব্র-হাতে অক্কার বেঁসে দাঁড়ারেছে সম্কর্ণণে।"

4041:

"এস ধৃষ্ঠি মেখকটাজ্ট উড়ারে
উনাদ বেলে কুল বিষ গুড়ারে,
বহি-নয়নে এস শহর,
উচ্চ্ খুল কেশকাল মেলি এস প্রলয়ন্তর !"
বহাপুক্ষের "শেব বাঞা"র কথা বলিতে গিরা তিনি বলিতেছেন :
"গুঁহার ললাটে অলে আত্মার অন্নান করটীকা
সংশ্র তিমিরজেগী নিশান্তের বহিনর্গে লিখা
বিষাদের প্রবন্ধাতি শিখা।

'ছের দিগুৱে উবার আভাস, রাত্রি শেব'—এ কথা বলিরাও সংশর কালিরাছে :

"অধীনতা-পাশ ছিল্ল হলেছে, কই বনাৰ ? কই নব্যুগ, নুতৰ প্ৰাণ, কঠে কঠে প্ৰজাতী গান ?"

ৰাজা শেব হয় নাই

"খেনোনা এখন, বর আরবার চলার প্রর।" ছন্মের সাবলীলতার, শন্মের বঙাবে, প্রাণের আবেদে এবং আন্তরিকভার ক্বিতান্তলি কাব্যপ্রির পাঠকের চিন্তকে উন্দীপিত করিবে।

बैरिमलक्षक्क मारा

আফগানিস্থানের শিনওয়ারী বিজ্ঞোহ—এলসিড-নাৰ নারচৌধুনী। রারচৌধুনী 'এও কোম্পানী, ১১৯, আওডোব মুধার্ক্কি রোড, কনিকাডা। পুঠা ১৫১। মুল্য তিব টাকা।

এবের বিবর্জ ( ১৯১৫-১৮ ) শেব হইবার কিছু পরেই, ১৯১৯ সলের

বে যানে আক্যাবিভাবের সহিত বিটাশের বৃদ্ধ হব। এই বৃদ্ধের क्मचन्नभेटे चाक्गानिहान शक्क वांधीनछा नांच करत । देशंत शर्का बहै सम नाम माज वाबीन बदः जिहित्तत व्यर्कानी ब्रोडेमांज हिन । স্কির স্ক্রান্তবারী আমীর 'আক্লানিস্থানের রাজা' আবল পাইলেন, দেশ च्छान बारहेब नाव वांबीन मार्कालीय बारहेब सर्वातः नाम कविन, एवाल রেখা পরিবর্ত্তিত হইরা ভারত ও আক্সানিস্থানের মধ্যে মুতন সীমারেখা নিষ্কারিত হইল। করাচী বন্ধর আফগানিস্থানের শুক্তবিধান বন্ধররূপে ৰীকত হটল, ভৱাও ৱেখাৰ উভৱ পাৰ্যের ভাতিসম্ভত ( টু টেব ) ৰাধীৰ बिनवा बीकात कता रहेन। जासकाछिक बाहेनल निरवान विवस जास-शांनियान निरुद्धन क्रमलार अधिकारी इन्नेत । किंद्र हैश्टरम अहे স্কিস্তে কথা হয় নাই। বাজা আমানুলা খা ডাঁহার দেশে বে নবজাগরণ আনিতে চাহিলেন ভাষাতেও ইংরেজ আনন্দিত হইল ন। এদিকে चांक्त्राविद्यात्मव श्रीला बननवात्मवाल चांबाकृतात विश्ववी मःचात वात्रहे।-সমূহকে প্ৰকলে দেখিল না। প্ৰভাগ ভাগতে কামাল পালা বাহা কৰিতে পারিরাছিলেন আফগানিখানে আমামুলা তাহা করিতে সক্ষম হইলেন না-ভাঁচার প্তন, রাজাতাার অবক্রমারী চটরা প্রিল। প্রত্কার সমসামত্রিক ঘটনা অতি ফুলরভাবে বর্ণনা করিরাছেন। বিশেবত: শিন-ওয়ারী বিলোহের নেতা বাচচা ই সাকোর অভাদরের সকলতার বিবরণকে একেবারে জীবস্ত করিয়া তুলিয়াছেন। লেখকের মতে দক্ষা-সর্ভার বাচ্চা-ই সাকোকে পরাজিত করিবার শক্তি আযামুলার ছিল। কিব দেশবাসীর রক্ষণাত এডাইবার অক্সই তিনি 'ইচা হইতে বিরত হন। নাদির বাঁ (পারে শাহ) দেশকে দ্রা-সন্দারের হাত হইতে মস্ক করিরাছিলেন ও ধীরে ধীরে জাতিকে আমামুলা-প্রবর্ত্তিত সংস্থারের পথে চালিত ক্ৰিয়াছিলেন। বস্তমানে আফগানিস্থান ভারতের বন্ধবাই হিসাবে এলিবার রাজ্যতম পালিবক্ষক। আমানুরা, নাদির পাছ ও জাহির পাই প্রভতির এম্পিত পথে আফগানিয়ান চলিয়াচে বলিয়াই এরপ সম্ভব হই-রাছে। এই কর বইবানি একাধারে তথাপূর্ণ ও সুপাঠা।

# শ্ৰীঅনাথবন্ধ দত্ত

ব্ৰহ্মাসূত্ৰ—প্ৰিবসম্ভক্ষার চটোপাধাার কৃত বাংলা বাাধা। বিতীয় সংস্করণ। সংস্কৃত প্রেস ডিপনিটরি। ৩০, কর্ণওরালিস ক্লীট, কলিকাতা। মূল্য চার টাকা।

শহর ও রামামূল কৃত ব্রহ্মণুত্র ভাতের বিস্তৃত বঙ্গামূবাদ বতজ্ঞাবে পূর্বেও প্রকাশিত হইরাছে। আলোচা আছে ক্রমণঃ মূলপুত্র, তাহার বলামূবাদ এবং শহর ও রামামূলে ভারামূপারী বাংলা বাংলা দেওরা হইরাছে। বেখানে শহর ও রামামূলের মৃত্তেদ আছে তাহা শাই করিরা দেখান হইরাছে। সরল ভাবার সংকিপ্ত আকারে উভর মতের মর্নার্থ বিবৃত্ত হওরার বেলাভাশারে প্রবেলাখাদের পক্ষে প্রহুখানি বিশেষ উপবাদী হইরাছে। প্রহুমধ্যে প্রহুকারের লাজনিন্ধা এবং পাত্তিতা পরিফুট। বাংলা ভাবার প্রিমিত বল্পাখান দার্শনিক প্রহের মধ্যে আলোচ্য পুত্তক-ধানি বিশিষ্ট হান অধিকার করিবে।

# গ্রীঅনন্তলাল ঠাকুর

মন তোর — শ্রীরাধালনান সোম। ডি. এব্. লাইবেরী, ৩২, কবিরালিস ট্রাট, কলিকাডা-১। মূল্য পাঁচ টাকা।

এছফারের 'বৃষ্প' এবং 'বালোস শীট' ইতিপুর্বে অনেকের দৃষ্ট আফর্বণ করিরছে। বর্তনান এছেও উাহার কমনা ও চিত্তাশীলতার পরিচর অস্টে। বইধানি ট্রাইক, কট্টপাথর, বল্ল জীকল, রাবণ ও বর —এই ছয়ট সলের সমষ্টি। গলই বলি, কেননা সাধারণ সলের মত



উপার্জনের ক্ষরতা এবং সক্ষের প্রবোগ আক আছে, কাল নাও থাকিতে পারে। তথন আপনার অন্ততাপ হইবে বে, সময় থাকিতে আপনার নিকের ও প্রিয়ক্তনের ক্ষয় সঞ্চয়ের প্রয়োক্তন ছিল। হিন্দুখানের বীমা-পত্র এই সঞ্চয়ের সহায়ক। আকই ভাবিয়া দেখুন।



কো-অপারেটিত্ই সিওরে স সোসাই টি, লিমিটেড ৪নং, চিত্তরঞ্চন এতিনিউ, ক্লিকাতা মা ইইলেও এওলিতে গলের রস ববেষ্ট পরিমাণে আছে। অথবা, বলিতে পারি, জীবনের করেকটি খণ্ড চিত্র। ঘটনাংশ সামান্ত, কিন্তু কথাবার্ত্তার মধ্য দিরা জীবনের রূপ ও মনের রহন্ত চিন্তাকর্বক হইর। দেখা দিরাছে। 'পরিচরে' লেখক বলিয়াছেন: "তুমি, আমি, রাম, ভাম, শমিচা, শকুন্তলা—এদের স্বাইকে নিরেই আমার মন! সেই মানস্মরোবরে আমারী—তুমি, আমি, স্বাই।" বিভিন্ন লোকের মনের কথাকে লেখক বাহিরে টামিরা আনিতে পারিরাছেন, ইহা ক্য কথা নর। প্রথম গল 'রাইকে' ছাত্রধর্মণট উপালকা করিরা তিনি করেকটি ক্রিমন এবং শিক্ষক্ষণরের বে ছবি জীকিরাছেন তাহা বেমন উপভোগা, তেমনি শিক্ষাপ্রদ। ছানে স্থানে রক্ষরসিকতার মাধ্যমে তিনি ভাবিবার কথা বলিরাছেন। ভাহার রক্ষরসিকতার কাহাকেও আঘাত করিবার জন্ম নহে, জাতিকে সচেতন করিবার নিষিত্ত। প্রসক্ষমে দেশবিদেশের স্বাক্ষ এবং রাজনীতি বিবরে তিনি একটু আথটু তীক্ষ মন্তব্য করিয়াছেন, কিন্তু তাহা অহাক্ষিক নয়।

বিধুর বিভব কাব্য — গ্রাপঞ্চানন কবিরত্ন। শৈলপ্রী—১1>,
বহিম চাট্জো ট্রাট। কলিকাভা-১২। ২র সংকরণ। দাম তিন টাকা।
হরিশ্চল্রের কাহিনী অবলম্বনে লিখিত কাবা! রচনারীতি প্রাচীন।
এ বুগে পৌরাণিক কাবা বিরল। বাঁহারা বাদ বদলাইতে চাহেন, তাঁহারা
পাডিয়া দেখিতে পারেন।

শ্রীধীরেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়

পাঁওপিউ (বাটক)—শ্রীক্ত্রানন্দ রার। এব. নি. সরকার এক সল। ১৭, বহিষ চাটার্জি ট্রীট, কলিকাতা-১২। খুলা তিল টাকা। মহাভারতের একটি ঘটনাকে কেন্দ্র করিয়া 'পাণ্ডপত' নাটকধানি রচিত হইবাছে। নাটক বদি লোক-শিক্ষার অভ্যতম আেই মাধাম বলিয়া বিবেচিত হয়, তবে 'পাণ্ডপত' নাটকধানি নিংসন্দেহে তাহার সার্থকতা প্রমাণিত করিয়াছে। বর্ত্তবানের সজ্বাত-কুল্ল রাহনৈতিক ও অর্থনৈতিক পারিছিতিতে, 'পাণ্ডপত' পোরাণিক নাটকে অনুত্রপ ছায়াপাত লোকমনকে সচেতন করিয়া তুলিবে। খাতনামা নাট্যকার শ্রীকটান সেমকণ্ড লিবিয়াছেন, "নাটকধানিতে নাট্য-মুহুর্জ স্পন্তীর কৃতিছের পরিচর পাই। ভাষা ওধ সহস্ক ও সাধ্যীলই নয়—রভিবেদেরও অধিকারী।"

রিফিউন্সী (নাটক)—গ্রীরবীজ্ঞনাথ ভৌষিক। প্রাণ্ডিছান শ্রীঞ্জুকু লাইবেরী, কলিকাতা। যুলা টুই টাকা।

পূর্ববন্দের ছিন্নমূল নরনারীর ছুংখ-বেদনাকে কেন্দ্র করিয়া এই সামাজিক নাটকথানি রচিত হইরাছে। দেশবিভাগের কলে পূর্ববন্দের উদান্তরা বে অবছার মধ্যে বান্ধত্যাগ করিয়া আসিতে বাধ্য হইরাছিলেন এবং পারবন্তী-কালে বে জীবনাবেগের প্রেরণায় নিজ নিজ আদর্শ অমুবারী নৃতনভাবে বসভিত্মাপন ও আন্ধ-সম্প্রসারবের চেষ্টা করিতেছেন তাহারই একটি খঙ্জ-চিত্র এই নাটকে কুটাইরা তোলা হইরাছে। লেথকের আন্ধনিকতা আছে, কিন্তু নাটক-রচনার পক্ষে ওধু আন্তরিকতাই একমাত্র মুলধন নর।

এমমাথকুমার চৌধুরী





বাংলা-সাহিত্যে গবেষণার জন্ম প্রস্কার

১। পরলোক্সত অব্যাপক অবরচক্র মুবোপাব্যার ঐতি-হাসিক অক্সরান-কার্ব্যে উৎসাহ-বানের করু বলীর-সাহিত্য-পরিষদে একট সন্ধিত তহবিল প্রতিষ্ঠা করিবা সিরাছেন। এই তহবিলের আর হইতে প্রতি বংসর প্রকার প্রবানের ব্যবহা আহে। সম্রতি প্রবৃত্ত রক্তেম্বার্থ বন্দোপাব্যারকে, গত শতাকীর অরবীর সাহিত্য-সাবক্ষের সম্বত্ত বৃত্ততত্ত্ব উরারে উৎসাহ বিবার কর্ম্য পরিষধ এক শত টাকা প্রকার বিরাহেন। বন্দোপাব্যার বহালর প্রতিষ্ঠাকা পরিষদ্কেই কান করিবাহেন।

২। বনোবিভা ও দর্শনের পরিভাষা সঙ্গনের কন্য "ক্সলীশচন্দ্র বন্ধ স্থাভ ভত্তিল" হাইভে বলীর-সাহিত্য-পরিষং, সাইকো-আ্যানালিটকাল সোসাইটির সভাপতি প্রব্যাভ বনোবিং ভট্টর শ্রীসিরীন্দর্শের বন্ধকে হর শভ টাকার একটি বৃত্তি বিবাহেন। পরিভাষাগুলি অচিরে বুলিভ হাইবে।

ত। দিল্লী মূল অব ইক্ষমিক্স-এর প্রীযুক্ত বিবেক্ষরঞ্জন ভটাচার্ব্য "উদবিংশ শভালীতে বাংলা সাহিত্যের বিকাশ" লয়তে রচমা লিবিল্লা দিল্লী বিশ্ববিভালন পরিচালিত 'লীলা বাংলা রচমা পুরস্কার' (১৯৫১) লাভ করিবাছেন।

যামিনীভূষণ অফীঙ্গ আয়ুর্কেদ বিগুলিয় ও যক্ষা হাসপাতাল

বনাৰৰভ কৰিবাজ বাহিনীভূবণ বাব, কৰিবছ, এব-এ, এব-বি বহাপর কর্তুক ১৩২৩ সালে উপরোক্ত আয়ুর্বেল বিভালর ও হাসপাভাল প্রতিষ্ঠিত হব। ১৩৩২ সালে বহালা গানী ইহার নিজব গুহের ভিভি-প্রভর প্রতিষ্ঠা করেন। ১৩৩৪ সালে কলিকাভার ভবানীভন নেরর দেশপ্রির বতীক্রবাহন সেমগুরু কর্তুক হাসপাভালের উরোবন হর। ইহার পর ভাঃ তে. এব, নৈর প্রযুব করেকজনের চেপ্তার এই প্রতিষ্ঠানের অন্তর্গত বলা হাসপাভালের গৃহ-নির্দানের কভ কলিকাভা কর্পে-রেশনের নিজ্ঞ হইতে ২৫,০০০, সাহাব্য পাওয়া বার। ১৯৩২ প্রিটাকে কলিকাভার ভবানীভন নেরর ও বর্ত্তবানে পশ্চিমবন্দের প্রধানবারী ভাঃ বিধানচন্দ্র বার পাতিপুদ্ধে বলা হাসপাভাল ভবনের ভিভি-প্রভর হাপন করেন। ৪৫০০০, টাকা ব্যয়ে ইহার গৃহনির্বাণ সম্পূর্ণ হব। ইহা কলিকাভা কর্পোরেশন হইতে বার্ষিক ২৫০০০, সাহাব্য পার। বলা হাসপাভালে বর্ত্তবাবে

৫০ট 'বেড' বা রোগ-শবা। আছে। আর্কেনীর ও পাশ্চান্তা উত্তর প্রতিতে এবানে রোগদের চিকিংসা করা হব।

কিছ বর্তমানে বন্ধারোপের বেরপ প্রার্ক্তাব হইরাছে ভাহাতে আশাস্ক্রপ রোগী ভর্তি করা সভব হুইতেছে না। প্রীর্ক্ত অনুভলাল রক্ষদারের বহাগভার উক্ত হাসপাভালের সংলগ্ধ একটি প্রিভল গৃহনির্দ্ধাণ সম্প্রতি সম্পূর্ণ হুইরাছে। এবানে প্রিশটী বেড-এর ব্যবস্থা করা হুইরাছে। কিছ এই বাছ ভি রোগীদের রাবিবার ব্যর-সভ্লানের কোমরুশ উপার এবনও হুর নাই। বারিনীভূষণ অটাদ আয়ুর্কেদ বিভালহের কর্তৃপক একত ভাতীর সরকার, রাজ্য-সরকার এবং ক্ষমাধারণের নিকট সাহাব্যের আবেদন ক্ষানাইরাছেন। প্রভিঠানটকে সাহাব্যাদান করিলে ভাহা যে প্রকৃত বদেশলেবা হুইবে ভাহাতে সন্দেহের অব্নালাশ নাই। প্রত্যেকেরই ইহাতে ব্যাসার্য অর্থসাহায় করা



ভৰ্তা। অৰ্ভবাৰ্য পুৰের নামে বিভল গুত্র নাম বেওরা হইবাহে 'বেববাভ হাসপাভাল ভবন'। পশ্চিন্ত্ল-প্রদেশপাল ভটর জীব্যেককুমার বুবোপাব্যার গভ ১৭ই নবেছর ইহার ছার ইকাটন ভরিবাহেন।

### চারুচন্দ্র মুখোপাধ্যায়

গভ ১৮ই অগ্রহারণ বাঁহুভা জেলার সন্ধ্রপ্তির্ক্ত আইন-ব্যব-লারী চাক্ষচক্র বুবোপাব্যার ৭৪ বংসর ব্যবে প্রলোজগনন ভবিরাহেন। আইন ও অভাভ বিবরে প্রগাচ পাণ্ডিত্য ছাড়াও ভিনি বছ সন্তবের অবিভারী ছিলেন। ভিনি স্বপ্রামের বছ বুবক্কে নিজ গৃঁহে ছান বিলা বিভার্জনের প্রবোগ করিরা বিরাহিলেন। ভাঁহার আল্লার প্রতি আমরা প্রহা নিবেদন ভবিতেতি।

#### মন্মথনাথ গঙ্গোপাধাায়

পরবহংগদেবের পুরুষ ৩৩, বার্ণনিক ব্যবদাধ গড়ো-পাব্যার গড় ২০শে অঞ্জারণ ৭১ বংসর ব্যবদে তাঁতার বনোত্র-পুকুর রোভত্থ বাসভবনে পরলোকগরন করিবাছেন। দর্শনপাত্রে তাঁতার অগাধ পাতিত্য ও বর্ত্তপ্রবশতা তাঁতাকে বছকাল পূর্বে শ্রীমরবিন্দের সংস্থানে আনিয়াছিল, এবং তংকালে তিনি "বন্দেরাতর্বে" প্রিক্তার সহিত্ত ব্নিক্তাবে সংগ্রিষ্ট ছিলেন।

### কবি কায়কোবাদ

ত্ৰচন্দ্ৰ, নৰীনচন্দ্ৰ প্ৰভৃতি প্ৰেষ্ঠ কবিদের সমসাময়িক কবি কাৰকোবাৰ। পৰিপত বৰসে প্ৰলোকসমন কৰিবাছেন। বাঙালী মুসলমান কৰি কাৰকোবাৰ হবীল-পূৰ্ব্ব মুসের শেষ প্ৰতিনিধি ছিলেন।

"ৰহাখনান", "ৰঞ্চনানা", "শিবনজিয়" তাঁহার কৰিছ-শক্তির শ্রেষ্ঠ নিদর্শন। এই বইগুলির নানজ্যন হইতে তাঁহার ভাবনানা ও উলার মনের পরিচর পাওরা বার। তাঁহার ক্রিডার একজন বুস্লনান ব্যাখ্যাকার বলেন, "ভিনি বুস্লনান হরেও সঞ্জন শভাকীর শ্রেষ্ঠ জাভীয় ক্রি আলাওলের বভ এলেশের বাটর সহিত নিবিক্ ভাবে সংবাগ ছাপন কৰেছিলেন, একের আন্তর্ণ একন করে একের ভাবে ভবর করে, একেনের উপনা কিন্তে সাহিত্য-কৃষ্টি করেছেন।\*

"নহান্দান" ভাষ্য ভাষৰালায় হালান হোলেনের হভ্যাভাও অবলবন ভাষিনা লিবিভ। একলা "বিষাদ-নিজু" হুংবের
বভা পটি ভবিতে চেঙা ভবিষাহিল; ভাষভোবালের "নহাদ্রশান" ভাব্যে অভ্যানানীর বিফ্রানে গংগ্রানের এই চিত্র বর্তনান
রূপের ভারতীয় ননোভাবের বিশিষ্ট পরিচর প্রদান ভবিয়াতে।

কারকোবাদের অনেকগুলি কবিতা সামরিক প্রেছ পৃঠার হুড়াইরা, আছে। সেগুলি সংগ্রহ করিরা গ্রহাকারে মুক্তিত করিলে তাঁহার স্থৃতির প্রতি বধার্ব সন্মান প্রদর্শন করা হুইবে। আবরা এই কবির স্থৃতির উদ্দেশে প্রহাঞ্জলি অর্পন করিতেছি।



चनमीळनाव डीक्ट्रब (चाक्वाबाद अकारम (विविद क्षेत्रक खडेवा)



# শিল্প-প্রদর্শনী



প্রসাধন

[ শ্রীবিপ্র মহান্তি

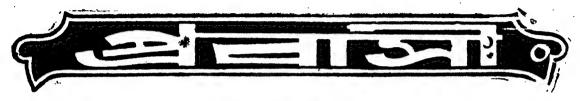


রাজপুতানী

[ শ্রীহৈমস্তী সেন



[ শ্রীশান্তিরঞ্জন মুখোপাধ্যায়



"সভ্যৰ্ শিবৰ্ স্ক্ৰহ নায়নাদ্ধা বলহীলেন সভাঃ"

্রেশ ভাগ ২ম্ব খণ্ড

# মাঘ, ১৩৫৮

8थे मर्था

# বিবিধ প্রসঙ্গ

বাংলায় নিৰ্ব্বাচনী অভিযান

বাংলার এখন নির্মাচনের ধূব পভিরাবে। বিভিন্ন বল দক্ল ক্ষেত্রে ও সকল জেলার ভোট-সনবাদনে নামিয়াছেন। কংগ্রেস-বিবাবী বলগুলি বহু খতে বিভক্ত এবং পরপার বল্ধ-কোলাহলে ব্যন্ত। কংগ্রেসের ভাগাবিশর্বার বাহা হইছে পারিভ ভাহা অনেকটা ঐ কারণে কাটরা গিরাছে। তথাপি লোক্ষত কোন্ বিকে বাইবে ভাহার কোনও পাঠ নির্মেণ পাগুরা বাইতেহে না। গুলব নানাপ্রকার পোনা বার, ভাহার সভ্যাবিশ্যা বিশ্রের উপার নাই, বির্মাচনের কলাকল বাহির হইলে ভাহা বুঝা বাইবে। বোটের উপার বলা বাইভে পারে অভ প্রবেশে ভবাকবিশ্য বারপহী এবং প্রকৃত বারপহী দলের খগুলা-বিবারের কলে কংগ্রেসের আশা বেরণে বাভিরাছে, বাংলারও ভাহার পুনরার্ভির সভাবনা আছে।

ক্লাক্ল ৰাহাই হউক, নিৰ্মাচন ব্যাপাৰে প্ৰভিছনিগৰের বজাৰ প্রচার বেভাবে চলিতেছে এবং বে গৃষ্টকোণ বিষা নির্মাচনের বিষয় ক্লনাবারপের সন্মূবে উপস্থিত করা হুইতেছে ভাছাতে বনে হর এই নির্মাচনে বাংলার ভবিত্যতের অভ্নার কিছুবাল কাটবে না, বর্ষ গাচতর হুইতে পারে। বেখানে প্রায় ক্লেন্সার ক্লপত স্থাবের বা ব্যক্তিগত স্থাবের সেবানে ক্লেবালীর ক্লপের ক্লা স্থান পাইতে পারে না, ইহা বিগত পাঁচ বংগরের ভিক্ত ভভিজ্ঞভাব স্থাপাইরণে প্রবাণিত হুইরা নিরাতে।

বাংলার বর্তনান অবস্থার নির্মাচনের প্রধান লক্য হওর।
উচিত হিল এক বিক্লে বোগ্যতা ও কর্মকতা এবং অত বিকে
নাহল ও সভতার পরিবালে প্রতিনিধি নবোন্ধন করা।
বোগাভার বিচারে অতীতের ত্যাগ ও নির্মাতন তোগ বা
আলোলন-পরিচালন-ক্ষতা একমার নাণকাটি হিলাবে প্রহণ
করা সর্মান্ধেরে ঠিক বর। কেলা এই নির্মাচন পেলন
ভোগের কর বা প্রভার বিতরপের কর নতে, ইয়া বেশের
অবিকং গঠনে নক্ষির অংশ প্রথমের বোগ্যতা ও ক্ষতা নির্মান
রংকাই বাগার। অতীতে বিনি তির ক্ষেত্র কর ও কিবাইল

হিলেম, তিনি বে সকল কেনেই বর্তনানের ভার এরণে সকল একণা কি করিয়া বলা বার গ

কংগ্রেস এ বিষয়ে সর্কাণেকা অপরাধী, সেক্থা আরমা পুর্কেই লিবিরাছি। কেননা দলের আছ্পত্য বা অর্থ-নামর্থ্য তির অন্ত কোমও বোগ্যভার পরিমাণ কংগ্রেসের অবিকামী-বর্গ প্রহণ করেন মাই। বোগ্যভা ও সভভার ক্টি-পাশ্রে কংগ্রেসের মনোমীত প্রাধিগণের অবিকাংশই মেকি বা বিষয় বাদ-মুক্ত বলিয়াই বিবেচিত হুইবেন।

হংবের বিষয়, বিরোধী দলের ক্ষেত্রেও অধিকাংশ ছলে ঐ একই পরিমাপ বীকৃত ক্ষাছে। ক্ষেত্রকম বোগ্য লোক এবং তাঁহাদের দল গঠনে বছসংখ্যক অবোগ্য বা সামাছ বোগ্যভার্ক্ত লোক ক্ষাই বিভিন্ন দল নামিয়াছেন। এইরূপ পছার কলাকল গুরু বে অনিভিত্ত তাহা নতে, ইহা ক্ষ-ক্ল্যাণের পরিপত্নী। বোগ্যভার বিচারেও উক্টের ব্ল্যই জোর ক্রিয়া ভূলিয়া বরা ক্ইতেছে, ব্যক্তিগত ভণাশুণের কোনও প্রাই আনিতেছে মা।

কংগ্রেসের ভাগে বলি ক্ষভাপ্রান্তি বটে ভবে পুর্কৃতাবে রাষ্ট্র-চালনার তাঁহাবের ব্যানীত ধ্রহরবর্গ প্রতি পালে, বার্থের ভাজনার, প্রতিবহকের স্টেই করিবেন। কেননা বেবানে বোগাজার অভাব সেবানে বার্থই প্রবান লক্ষ্য হইরা ইন্ডার—ইহা আনরা কলিকাতা কর্ণোরেশন ও অন্যান্য প্রতিষ্ঠানের দীর্থ পঁচিল বংগরের অভিজ্ঞতার ব্রিরাহি। বাংলার বিগত পাঁচ বংগরের রাষ্ট্র-চালনারও ঐ একই অভিজ্ঞতা আনাদের উপর আনিরা পভিষাহে। অবোগ্য বল অবোগ্য বলী নির্কাচন করিবে এবং অবোগ্য বলী প্রতিদিন দেশের অবলল স্ট্রই করিবেন, ইহাই ভ বাভাবিক।

প্ৰতিশ্বদী বলও ত লেৱণ কোনও ব্যবহা করিতে পারিবেদ ননে হর না বাহাতে কেলের ও ক্ষের বার্থ বজার বাকে। ভাঙন বিরা গঠনের ভাজ হর না ইহা ত বভালির ক্ষা এবং ক্ষো বাইতেক্তেবে, নির্মাচনেই প্রভাক বলনন্টতে গঠন অপেকা ভাঙনের কাজই অধিক চলিতেহে।

# বঙ্গীয় জাতীয় শিক্ষা-পরিষদে ডাঃ সর্ব্বপল্লী রাধাকফাণের অভিভাষণ

বর্তনান কগতে সরাজ তথা জাতির কল্যাণের করু ব্যক্তিন বাবীনতা ও ব্যক্তিবাতরাকে নিশেষিত করিবার বে এক চুর্মার আগ্রহ পরিলক্ষিত হইতেরে, ভারতের লার্শনিক্ষেত্র ও কুলিরাছ ভারতের রাইন্ত ভাঃ সর্মপরী রাবাক্ষণ বাহবপুর ইঞ্জিনিরারিং কলেকে জাতীর নিক্তা-পরিষ্বের সমাবর্তন অসুহানে ভারার স্বালোচনা করেন। জাতির মলনের জন্ত ব্যক্তির উৎকর্থ সাধ্যের উপর জোর দিয়া তিনি বলেন বে, ব্যক্তিই সকল স্কীর মূল উৎস। ব্যক্তির উর্ভিতেই স্বাক্ষের উন্তি।

ডাঃ রাবাভ্যুণ ভাহার ভাষণে বলেন বে, দেশকে উরভ ও नविमानी कविएक करेला. (क्लंब कीवमवाबाद बाम देवीक क्तिए वरेल. देखानिक, चाविकातक, कातिशत ७ श्वंविद्यत প্ৰয়োভৰ ৰে সৰ্জাপেকা অধিক চুইৰে তাচাতে আক্ৰয়েৱ किए मारे। वैज्ञारक्य जलस्वातिका किए काकि बक्षात्र स्वेटक পারে বা। রাজনৈতিক বাধীনভার সঙ্গে সজে জোন জেশেই আৰিক ৰাজকা আসিতে পাৱে মা। কেন্দ্ৰীয় ও প্ৰানেশিক সরকারের সাক্ষ্য ও কর্ম্মুলভার পরীকা তইবে দেশের चर्दमिक ७ निवन् देश्कर्यंत वादा । चन्तर्या विदासिक कृषिक क्रमणांत कथ करमत बात बात व बालारात अरहाम नवकार कविवाद्यम्, ब्रह्मारभाषम्, कर्वाचानः, कमजरनाविका बन्द परिक्रणांत कांजाबा क्लडे। श्रीक्रवात कवितास्वय-डेजाडे चाच विकास । এই পরিবেভিতেই সরকারের সার্বকতা निर्गीच क्रेंदि । देशारे निर्शासन प्रमान । कांत्रन नुकूक्-জনগাৰাৱপকে লইয়া জোন মহান ভাতি গভিয়া উঠিতে शांट्य वा ।

দেশের নানারণ অভাব অন্টনের উল্লেখ করিয়া তিনি বলেন বে, আমরা অবিরাম বাভোগোলন রহির কবা, ভূবি লংকারের কবা শুনিরা আসিতেছি তবাণি প্রতি বংসরই আনাদের সভর লক টন বাভ-শভ বিদেশ হইতে আর্দানী করিতে হইবে। প্রায় এই, ভূমিকন্স, বড়, বড়া-বফ্রণাভের বন্দরী কি কেবলমার সভযুক্ত দেশের আকাশকেই আছ্রে করিয়া রাখিতে পারে ? মুহের দাবানলে বিধ্বত পশ্চিম ইউরোপের দেশশুলি কি ভাবে তাহাবের পূর্বেকার অব-বৈভিক্ত অবহা এবং বাভাবিক পরিছিতি কিরাইতে সক্ষম হইবাছে। একবা বীকার করিতে হইবে বে, অবং এক বিপ্লবের মধ্য বিরা অঞ্জনর হইতেছে। কেবল অসভোষ নতে, সর্বার আলোশ ও বিবোহের ভাব আসিরা উট্টনাছে। বিধের সর্বার ইয়া পরিষ্যার। বেশের বেভূম্বক্তে দেশের ও বিবের এই পরিছিতি উপলবি করিতে হইবে, এবং ইহা সরাবাবের কর্ত উল্লোহ্য সর্বার্থিক বিবোর করিতে হইবে।

ভাঃ রাবাক্ত্রুর বলেন, বছই আনন্দের বিষয় বে, এই কলেক প্রতি বংগর বহু সংব্যার পূর্তবিদ ও কারিগর স্কট করিভেছে। এই সকল কর্মী বারাই বেশের নানাবিধ পরিক্রনা কার্যকরী করিতে হইবে। ইহাকের প্রব ও বুদ্বিভা ব্যতীত বেশের বিভিন্ন পরিক্রনাগুলি সকল হওরা অসক্তব।

किम बरमम औ विकासकायत शिक्षतीय मध्य देशांच প্ৰভিত্নাতগৰ ইচাতে হাছয়ের সৰ্ব্বালীৰ বিভাগের উপযোগী कतिश गृष्टे करार साकाका कतिशक्तिम । बाहरवर सम-विकिन्धवायरणाट्य विक्रमित कराहे मिकार बैटक्स । बायरवर्षी জোৰ বিশেষ বয়ৰের যাল্য নতে, প্রভাক মাল্যই ভাতার त्रीत (काल बामरवर्गी । बाहरतत मिका वा कालात वावलातिक বৃদ্ধি এই মুদ্মানের বিকাশের প্রতিবৃদ্ধ করিছে পারে না। शांकत त्व त्वांम कारक प्रकृषा चर्चम करिया विरम्बळ वहेरक भारत कि चाहारच चाहार बामवदर्य कांव खेवारत कर তইতে পারে না। মাত্রর তইতে, মাত্রবের বৃদ্ধি তইতে মাত্রবের बक्रक (अर्थ । जुक्रकार जर्बर कांचर शक्रक बाक्रय गृष्टि करा. অৰ্থাং লামৰভাৱ সৃষ্টি ভৱাই বৰ্ডনাম ভাৱতের শিকার আবর্ণ। এই বছয়ত্বকে বিকাশ করিছে হইলে বাজবের ব্যক্তিছের देश्यर्व जावम कविएक करेरव । कावन वास्कि-शाबीमका विमार्ट তইলে মুদ্রুভের প্রকাশ সম্ভব মতে। ব্যক্তিকে ধর্ম করিবা সমষ্টির কোন উরতি করনা করা বাছলতা ভির আর কিছুই নতে। বে শিকা, বে পরিকল্পনা বাছবের আত্মাকে বিনট করিলা সমাজের প্রগতি কাষ্যা করে, সেই পরিকল্পাকে जरकारकाक वर्ता हरत मा।

এই প্রসদে তিনি বলেন, হাঞ্চণ বলি মনে করিছা পাকেন বে, প্রগতিশীল দেশগুলিকে অভ্নত্তরণ ও অভ্নত্তরণ করা ব্যতীত ভাতাদের অভ কোন কর্ত্তব্য নাই তবে উাতাদের আছবিখালের অভাব প্রনাণিত হবৈ। অভ দেশ আমাদের অভ্রেরণা বিতে পারে, কিছ সে দেশ ভ এদেশের জাতীর আন্তর্শের পথ নির্কেশ করিতে পারে না। আমাদের কংকার, আমাদের কৃষ্টি হবৈতেই আমাদের লাভীর আন্তর্শনে উদ্ভ করিতে চইবে।

এই আবর্ণ কি তাহা বিশ্লেষণ করিতে গিরা তিনি বলেন বে, তারতীর বাতীর পতাকাই তারতীর বাবনাবর্ণের বৃষ্ঠ প্রতীক। পতাকার মর্যুলে অবহিত চক্ষ বাবনের অঞ্জগতির প্রতীক। বুলং পরিবর্তনালৈ এবং এই পরিবর্তনাই প্রগতির নিমর্শন। নাছ্যকে এই গতিবেগের সহিত সর পরক্ষেশে অঞ্জনর হইতে হইবে। পতাকার চক্ষাই খেত-পটকুনিকার উপর অবহিত। খেত অবত কালের প্রতীক। অবতের পটকুনিকার সংসার চক্ষ আবর্তিত হইতেতে। ইহাকে কুনিলে চলিবে বা —নানে রাখিতে হইবে তীবনের এবানেই সহাতি নহ, বীবন অবত কালের। পতাকার গৈরিক অংশ ত্যাগ ও সংব্যের নিচর্পর। ত্যাগ ও সংবদ ধারা লোভকে কর করিবা জীবনকে পুণুথল করিছে হাইবে। ব্রিরোংশ সর্বির প্রতীক। এই পুথিবীকে সম্বৃতিতে, প্রাচুর্ব্যে আনন্দরর করিবা ভূলিতে হাইবে। জাতীর পভাকার এই আবর্শকে বাত্তবে রপারিত করাই জাতীর শিকার আবর্ণ।

#### খাগ্য

ভা: বাৰাকৃষণ ভাঁহার অভিভাষণে একট প্রপ্রের উথাপন ক্রিরাছেন। ভিনি বলেন, "আনরা বহুবার বহুভাবে ক্সল বৃদ্ধি ও ভূনি-সংকারের কবা ভনিভেছি, ভবাপি প্রভি কংসরই সভব লক টন বাভ-শভ আনাদের বিবেশ হইতে আননামী ক্রিতে হইবে।"

এই প্ৰশ্নত এবন একট ছান হইতে করা হইরাছে বাহা রাজনৈতিক বলাদলির বহু উদ্ধে এবং সেইজ্বতই ইহা আরাদের দৃষ্টি বিশেষ করিয়া আকর্ষণ করিয়াছে।

গত চারি বংগরে বাংলার খাভাবছা এবন এক তরে আসিরা গৌহিরাহে বে, সরত বিষয়টির আহুপ্র্কিক বিচার ও বিশ্লেষণ করিবা সভ্য সিবাতে উপনীত হইতে না পারিলে আর করেক বংসরের মধ্যে বাঙালী জাতিকে এক নহা বিশরের সন্মুখীন হইতে হইবে। কেবলমার বৌধিক আক্ষেপ করিবা বা সরকারের ফ্রাটবছল খাভ-ব্যবহাকে হোষারোপ করিবা কর্তব্য সরাবা করিলে আজু আর চলিবে না। দেশের প্রত্যেক চিভাপিল ব্যক্তিকে আজু দেশের কেন এ অবহা ভাহার কারণ অহুসভান করিবা প্রভিক্তারের উপার হির ক্রিভে হইবে। কারণ এ সরভা কোন প্রেণ্ডাকর। মানা পরিকল্পনা ও ব্যবহার কথা ভনিরাও কেন বে আমানের খাভ আবলানী করিতে হব ভাহার কারণ বিশ্লেষণ করিবা এবং বাহারা ইহার জন্ত দারী ভাহারের কার্যাক করিতে হব ভাহারের কার্যাক করিবে হব ভাহার কারণ বিশ্লেষণ করিবা এবং বাহারা ইহার জন্ত দারী ভাহারের করিতে হব ভাহারের করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রত্যান করিবা প্রতিকারের উপার উল্লেখ্য করিবে হব ভাহারের করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রতিকারের উপার উল্লেখ্য করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রতিকারের উল্লেখ্য করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রতিকারের উল্লেখ্য করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রত্যান করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রতিকারের উল্লেখ্য করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রতিকারের উল্লেখ্য করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রত্যান করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রতিকারের উল্লেখ্য করিবে হব বিশ্লেষণ করিবের করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রতিকারের উল্লেখ্য করিবে হব বিশ্লেষণ করিবা প্রত্যান করিবে হালিক হবরের ইনার ইলার বিশ্লেষণ করিবের বিশ্লেষণ করিবের ইনার ইলার বিশ্লেষণ করিবের হালিক বিশ্লেষণ করিবের ইলার বিশ্লেষণ করিবের ইলার ইলার বিশ্লেষণ করিবের ইলার বিশ্লেষণ করিবের ইলার বিশ্লেষণ করিবের বিশ্লেষণ করিবের ইলার বিশ্লেষণ করিবের বিশ্লেষণা বিশ্লেষণ বিশ্ল

বৃহদ্ধ নথ্য হইতেই আনাদের থাভাভাব দেখা বিরাহে এবং ভারভ বিভাগের পর হইতে আনরা থাভ সহছে সম্পূর্ণ অপরের দরাও দাকিপাের উপর নির্ভর করিবা আনিতেহি। সরকারী বহুলের অভিনত এই বে, আনরা আনাদের প্ররোজনীর থাভ উংপাদম করিতে পারি না এবং বত্টুকুও আনরা উংপর করিতে পারি ভারাও প্রস্তৃতির বির্থভার ব্যাহত হইতেহে, কলে আনাদের থাল্যের এত বিহেশী আননামীর উপর নির্ভর করিতে হয়। আর এই থালা নাইভির কটই আনাদের ভাগতের অভাবও পুচিতেহে না। থাল্য ভলার অকল হইতেই বিশেষ ভাবে পাওরা যার। কিও আনাদের ভলারের সকর কর, স্তরাং ভলার উপার্জন করিতে আনাদের ভাগত হয়।

বেণা বাইভেছে, থান্য সমভা আমানের অক্টোপালের মভ

আঠেপুঠে জড়াইরা বরিবাছে। বছড: বর্তমান ভারতের অর্থ নৈতিক বনিবাছই এই বাদ্য পরিস্থিতির উপর তিতি করিবা আছে। ইহার এক্যাত্র প্রতিকার বাড়োংপাছন রুদ্ধি করা।

আমাদের দেশে চাষের ক্ষরির পরিবাণ বাড়াইবার উপায়
কম আছে। স্তবাং উৎপাদন বাড়াইতে হইলে বে পরিবাণ
ক্ষরি বর্তমানে চাম হুইতেহে ভাহাকেই আরও তাল তারে
চাম করা দরকার। অর্থাং, এই ক্ষরিতে তাল সার, বীক ও
কলনেচের ব্যবহা করিবা বিদি উন্নত ব্যবের মন্ত্রণাতির হারা
চাম করা হর তবে কলল বাড়ানো মাইতে পারে। একড
বে সকল ক্ষরিতে কলাভাব নাই সেধানেই প্রথমে কাল স্ক্রক
করা আবর্তক। কারণ এসব ক্ষরিতে ক্লের ক্ষত বড় বড়
প্রাামের অপেকা ক্রিতে হুইবে না।

এখানে দরকার কিছু হোট হোট খাল, পুকুর অভবার 
করেক শভ টিউবওরেল, আর ভাল আভীর বীজ ও সার।
ইহার ব্যবহা করিবার জল পশ্চিমবল সরকারের সেচ বিভাগ 
রহিরাছে এবং সার ও বীজ বণ্টনের ভার আছে কৃষি বিভাগের 
উপর। কলিকাভার দক্ষিণে সোনারপুর হইতে ক্যানিঙের 
মধ্যে এক লক বিঘা কমি কলে তুবিরা অনাবালী হইরা 
রহিরাছে। চার বংসরের মধ্যে একটা খাল কাটিয়া এই 
কল নিকাশ করা গেল না। এই অনি পরিকার করিবা সার 
বিলা চায় করিলে এখানে ৩০ লক্ষ বব বান পাওয়া বাইত।
বর্জনান শহরের আদালভের সংলগ্ধ খালুইবিলের নাঠে বিখা 
প্রতি ১৮ মণ বান কলিত। কিছ বুরের সমরে বাকারপুর 
ভালার পর এছান হইতে বাট লওয়ার উহা জলাকীর্ণ হয় এবং 
এখানে ৮।৯ বংসর বাবং কলল কলে নাই। ইহার ব্যবহা সেচ 
বিভাগ করিতে পারিত। ইহাতে বিশেষ আর্থ বা বিশেষক্ষের 
প্রারোজন হর না। এইরূপ আরও অনেক ছান আছে।

সার ও বীক্ষের ক্ষেত্রেও একই ইভিহাস। কসল বৃত্তি
আক্ষোলনের নাবে প্রতিষ্ঠি বংসর কোট কোট টাকা
ধরত হইতেহে কিড কল কিছুই পাওৱা বাইতেহে না, ইহাতে কোন প্রকার নিরম বা পরিক্রনা আহে বলিরা সন্দেহ হব।
পর পর হুই ভিস বংসরের হিসাব আলোচনা করিলে দেখা
নার বে, ধরতের বিষরবভাতে কোন প্রকার সায়ন্ত নাই। কথনও
গরের বীক্ষেই বেশী ব্যর হুইল, কথনও ভালের বীক্ষ বেওৱা
হুইল, কথনও বা ট্যাপিওকা চারাই বিলি করা হুইল হাজার
হাজার টাকার। কথনও পারশিরান চাকার ওপগান
আরত হুইল, কথনও আবার পাল্পের প্রেটছই প্রচার স্কুর
হুইল। প্রবোজন অনুযারীই ব্যবস্থা করিতে হুর, বে নাটতে
বে শত ভাল উংপর হুর লেখানে সেই বীক্ষ না বিরা অভ বীক্ষ
বিলে ভাহাতে কমল উংপারন কি ভাবে বৃত্তি পাইবে ? ভার
পর কথনও বা বীক্ষ আহে, সার নাই। সারের পারনিট বিলিল
কিড বাল নাই—বা বাল পাইতে চাবের সময় উতীর্ণ হুইরা নিরাছে, ভাগ্যক্রমে যদি সারও পাওরা যার ও জন নাই— ভবন আবার ক্যানেল কর্তৃপক জন হাতিতে নারাজ। এসব কারণে অর্থ বাদের জনের রভ বরচ হুইভেরে, কিন্তু বাভরূপ প্রসার্থন সঞ্চল চুইভেরে মা ।

চাষের ভবি বাড়ানো বাব জি না সে সমুদ্রেও ভাবিবার কথা আছে। পশ্চিমবাদে আবাদ্যবাগা পতিত ভ্যিত্ৰ পত্নিবাণ ১৪,२५,००० अक्स। देशांत (वनेत जान कवि जमावांत्री ধালার লাবন জলাভার ও ভাগালা ভাতীর ভলন। ভলাভার উপরোক্ত উপাত্তে দ্ব করা বাইতে পারে। নির্দ্ধ করিবার বর টাইর। এ সকল খনি বরের সাহাব্যে অভি অৱ সৰতে চাবের উপৰোগী করা বাছ। রাণাবাট অঞ্জে বছ ভৱি এই ভাবে পভিত আছে। এই সকল ভবিতে कि छेवाचरकत नमर्वाणम करेवारक। काकावा निर्वारम চাষের ব্যবস্থা ভরিতে পারিভেছে না ঐ চই ভারণে। ৰহীয়া হীৱভয় বাঁকভা প্ৰভত্তি অঞ্জে টাক্টৰ ছাৱা চাবেৰ डेनबुक अक हारन ७।८ मक विशे कवि करनक कारह। रे-चारे-चार वि-अग-चार श्रष्टि दिन नारेम्ब इरे पिए नवर्ष्य रिवेड कम कम विवा स्था सक्ताकीन हरेशा मारह। **চাবের ব্যবদা করিলে উচার কগলেই দেশ ব্যংগল্প**র্ব ভইতে পারে। পশ্চিম্বলে প্রকরা ১০ ভাগ হাত খালা ष्ठेश्भावम वाकित्वरे चानात्वच 'कृतारेश वारेख। जानवात्मक একর এখনই ভাজে লাগানো বার এরণ ভবি পশ্চিত্রবাদে আছে কিছ সরকারের হাতে ট্রাক্টর আছে মাত্র ৩১ট। ১৯৫০ नान भर्गाच दिन बाब ३०%, चात्रच ४क्रैंड नामन दिन ना । बहे ক্ষরিকে উন্নত বরপের চাষ করিলে ২০ লক্ষ মণ বাম বাভিত।

ক্সল বৃদ্ধি আন্দোলনের ব্যবের আবেকট বিশেষত্ব এই বে, কর্মচারী, কারোরান, চাপরালি, ভাহাদের ভাভা, বাভারাভ বৃদ্ধ, আপিনের বাজী ইত্যাদিতেই প্রার বেশীর ভাগ বাহির হইবা বার। অবশিষ্ট বাহা বাকে ভাহাতে এটা হরভ ওটা হর না। বাজ বিভাগের এবং কৃষি বিভাগের বাজেটে অভাভ বিভাগের ভার কর্মচারীদের বেভব ও সংব্যা নির্দিষ্ট করা বাজিলে বরচ বৃবিতে স্বিবা হইভ। ভিত্ত ইয়রম পরিক্রমার ব্যহত ঢালা হিলাবে কেবানো হর। ভাহাতে ব্যবহর বিশ্ল হিলাব পাওরা বার না। ফল হইভেছে কি বা ভাহাও বৃত্তা বার না।

বাংলাবেশে প্রতি একরে চাউল সাবারণ ক্ষিতে ১৮ বণ করে। বাজবল্লী প্রসূত্র সেন বলিতেহেন, প্রতি একর ক্ষিতে ১৫ বণ উংশয় হয়।

কাপান বুৰে পৰাক্ষের পরে বানচাব বছ গুণ বাড়াইরা কেলিয়াছে। চীনের উৎপাদন আবাদের আড়াই কি ভিন গুণ। ইকারা এত অন্ন লবত্তে রাজনৈতিক ও প্রাকৃতিক বলার বব্যে বাহা করিতে পারিক্তের আবরা কেল ভালা পারিতেরি লা। লীৰ্ব হেহালী ভটল পত্নিকলবাত্ব পিছনে যে সমূহ ও অৰ্থ অপচয় করিভেত্তি ভাতার গলে কর কর পরিকরণা আভরিকভার जिल्ल चार्च करियां शिल अक शिल चक्क: वांश्लाह चय-সহভা চুত্ৰ ভইত বলিবা আবাদের বিখাস। বৃহৎ কোন প্ল্যান সম্পূৰ্ণ ভাবে করিতে গেলে যথেষ্ট সময় ও অর্থের প্রয়োজন। किस साजारणत वर्षत सार्थका करात वस महत्व थ वाद करात प्रक (क्षे वर्ष माडे जर्मम वार्मकातक वस वंतरहत वावयाहे अंतर करा केरिक किया। अवरच के विव अक्षिय वहार अक्षे কৃত্তিয়া কেলাবাও উপ্তভিতে সর্বাপক্তি নিয়োগ কৃত্তিত্ব ভাষা তইলে পাঁচট ভেলাকে অভাব হক্ত করিতে পারিতেন। আজ নিৰ্ব্বাচনের মহৰ্ছে দেশবাসীর কাছে বলিবার কিছু কৰা ভাঁছা-ছের থাকিত। চার বংগরে সর্ব্বালীণ ইয়তি তরা ছঃসাবা ভবা मामि, किन्द्र श्रीष्ठ वरनत कनन दृष्टित मास्य त्व विश्रम चर्चरात তইবাছে ভাতা ভারা বছরে ছইট জেলার ইরভি করাও ভ क्रजादा किल वा । काला लडेटल क्रडे कार-जाह बरजाद बारमाद চেতারা কিবিয়া বাইভ।

পশ্চিমবঙ্গে স্বাস্থ্য ও চিকিৎসা ব্যবস্থা দল্পতি বিষ্টশ ইন্সরমেশন সার্তিদের বিষ্ট পুডিকা

আৰাদের হতগত হইবাছে। ভাহাতে পৃথিবীর গান্য ব্যবস্থার একট ভগ্যপূর্ণ হিসাব পাওবা সিরাছে। ইহার এক অংশে বিভিন্ন দেশে বাগাপিছু দৈনিক ক্যানোরি ও প্রোটন জাতীর গান্য বরাদের হিসাব দেওবা হইবাছে। আনরা ক্ষেকট বিশেষ দেশের ভিসাব এগানে উচ্চত করিকেভি:

वाषानिक देवनिक क्यारमाति १६ त्याक्रियंत वताक :

	क्रांगिवि			শ্ৰোটন	
		3 8 3-4 0-4T		<b>₽₽-09-48</b>	
		ভূলবাৰ		ভূলনাৰ	
		>>40-45		>>40-4>	
		শতকর		4041	
	3585-60	পরিবর্তন	>>8>-40	পরিবর্তন	
দেশ	देशमिक	বরাদ	टेमिन	<b>ক বরাক</b>	
কাৰাভা	0,300	+ >.4	>0	+ >	
<b>ভাষে</b> বিকা	9,390	+ >,4	>>	+ 2	
ৰাৰৰেকাই	41 4,345	>	305,0	>	
বেলজিয়াব	2,536	+ >	re	-	
ভেদৰাৰ্ক	4,360	+ 8	308	2	
द्रेषात्रमा	. 4,556	+•	32	+ •	
<b>छी</b> न	4,040	+ >0	• 2	+ >0	
रेक्षांत्वनिव	3,000	+•	82	+ •	
জাপাৰ	4,500	+ 6	6.0	+ •	
<b>ब्रह्म</b>	0,080	+ 1	10,4	+*	
-	3,100		\$'0		

(अवस्थात आवरककेषिया वाजीक वेकेरबा-आविकार क्षांच जवन त्यांचर ३५४५-१० जांन सरेएन ३५१०-१३ जारन बारकार केशक बहेशारक। चारककेश्वित चिवन ৰভল চটবা পভিভেতিল বলিবা ভাতাদের ভিত ক্যাযো व्हेबार्ट । अभिवाद समञ्जीत वर्षा कावकदर्य वाका जकन *(करबंदे बारवाद शिक्षांव वांकारवा ठदेवारक। ठीव जवस* প্ৰিৰীকে অভিক্ৰম কৰিয়াহে কিছ সেধানে ৱাছনৈতিক পৰিভিত্তি ভাতাবিক হয় মাই। ইন্ফোনেশিয়া ও ভাপামের আভাছতীৰ অবস্থা ভারতের অপেকা নাম বলিয়া শোষা যাহ যা। সেবামেও ভাচারা ভাভিত্র স্বাস্থ্যতে বিশ্বভ হৰ নাই। পৃষ্টিকর খাছের অভাবের অর্থ যে ভাতির হলা, विशव वरेमा रेम्पारमनिया जावा जान जारवरे जारम। ভারতবর্ষে ক্যালোরি কমিয়াতে শতকরা হয় ভাগ আর প্রোষ্ট্রম नंबकरा शेंड कार्य। कार्यात्वर साकारकर जशाह केंट्र লের খাভ দরকার হয়। রেশ্যের বর্তমান বরাভ সংগ্রাত २'७२ त्रद्ध अवर देशांच्य बांच्यान क्लहेक बांकिएलाइ ভাৰাও উপরোক্ত বিবরণে বুঝা মাইভেছে। ইবাতে ভাতির খান্তা যে দিন দিন শোচনীর ভইরা উট্টবে ভাচাতে আক্রেরির কি আছে। ৱেশন-ব্যবস্থার পর্বেই আনাদের পৃষ্টকর বাচ ও স্থতিকিংগা ব্যবস্থার অভাবে মুড়াহার অন্যান্য দেশ অপেকা অনেক বেনী ছিল। রেশন চালু হওরার পর ভাতার অবভা কি দাভাইরাছে ভাতা সহজেই অক্সমের।

ভোর কমিটর ভদতে আমাদের খাছ্যের বে বিবরণ প্রকাশিত হইরাছে ভাহা জানা দরকার।

41146	MARICA	9161 4	IIII THY H	1
	<b>को</b> वः	H- 1 1 1 1 1 1	ভাষাবার	पश्चित्रास

(वर्ष	মৃত্যুহার	শিশ্বপূচ্য	খীৰদেৱ আশা		
			<b>्रकृष</b>	क्षी	
শি <b>উখীলাও</b>	2,7	.07	be'08	49.44	
অট্রেলিয়া	≥,8	<b>6</b>	60.81	49'58	
দক্ণি-আঞ্জিক	6°06 P	৩৭	41.12	#7.8F	
কাৰাৰা	30'4	96	69.05	£7.69	
<b>আবেরিকা</b>	23.5	48	49,75	७२'७१	
बिर्हेम	35.8	er	<b>e b</b> • 9 e	65,44	
জাপাৰ	39	206	88'₽₹	84.48	
<b><u><b>VIEW44</b></u></b>	228	245	₹6.97	₹6.6₽	

ভারতে রভূহোর ও বিশেষ করিবা লিভ ও বেরেদের রভূচ-হার অন্যান্য দেশ অপেকা অবিক। প্রস্থতিদের অপুষ্টকর বাড প্রহণ ও শিকিত বাইরের অভাব ইকার করা প্রবানতঃ দারী।

শিশু ( কাভির ভবিব্যং ) মৃত্যুর হার

	<b>अफ न</b> श्मरवद	7-6	4-20
	ं क्य पत्रन	ৰংগৰ	वरमञ
ভারতবর্ণ	₹8%	22.4	6.6
बिर्देष	4.1	4.2	7.7

হবের অভাব ও ৰাভার খাহাহীনভাই ইহার অন্য দানী। আমাদের দেশে শিক্তর অন্য হব পাওরা হৃষর, বাহাও পাওরা বাহ ভাহা হপুন্য ও ভেলানবিভিত।

প্রস্থাত-মৃত্যুর সঞ্জিক হিসাব আৰু পর্যন্ত হর নাই। ভোর ক্ষিটার বতে বোট প্রস্থাত-মৃত্যুর সংখ্যা বার্ষিক ছই সক্ষ ও প্রস্থাক্ষিত রোগগ্রন্থা ক্ষমীয় সংখ্যা ক্ষপক্ষে চল্লিশ সক্ষ।

जाबादनकार्य द्वारमंत्र क्षरकारमंत्र बद्दा बहेक्स :

( ১৯৩२-৪১ এই कब वरमदबब महनकृष्ण वार्षिक हिमान )

क्रावा—	3,88,28
বস্থ—	<b>65</b> ,898
<b>(料1)</b>	৩০,১৩২
षद (श्रवामण: बारनदिवा)—	ob, 22, <b>263</b>
আয়াশর ও পেটের অসুধ—	२,७১,३२8
বন্ধ	8,93,402
चन्यां मा	\$4,55,850
ৰোট—	\$2,0 <b>2</b> ,808

অবস্থ এই মৃত্যুহার সংশূর্ণ নহে। আমাদের প্রাম্বাসীরা মরিলে পরে সংবাদ লিবাইবে এতদূর শিক্ষিত এবমও হয় নাই। প্রকৃত মৃত্যুর হার সঞ্চীক সংগ্রহ করা ক্রিন। ভোর ক্ষমিত করিতে পারেন নাই।

(वार्शव मत्या मार्शिवचारे श्रवाम। ৰৈজ্ঞানিক যুগে ব্যালেরিয়ার মৃত্যু লক্ষাঞ্চনক ব্যাপার। ইতার এক্ষাত্র চিকিৎসা কুইনাইন। এক্খন বোগীর খন্য ৭৫ থ্রেণ क्रमारेम श्रासम बतिल मार्ड क्रमारेम प्रवकात वरमत वान नक शांधेक। वर्तवास्य वस्त्रवाद प्रहे नक शांधेक कृषेमाहेब चामदा भारे। ভারতবর্ষে কালিম্পং এবং নীলগিরিভে जामारिक श्राज्मीक नक्छ कृष्मारेन श्रुष्ठ क्षेत्र भारत। क्षि किनावूरवा नामक अक्षे जाह कान्नामीत चार्स देशतक थ कार जाजाकावाकीरमंद रुकारक अरमान करेमारेरमंद भर्दााख চাষ চইতে দেওৱা তথ নাই। বাতা তথ তাতা বংসাবাভ এবং কংগ্রেস-সরকার উত্তার সুল্যও বাড়াইয়াছেন এবং শক্তিও ব্রাস করিয়াছেন। কিনাবুরো কোন্সানী বৰেছ দাবে ভাভার কুইনাইন বিজ্ঞান করিভেছে। খ্রীস কেবলবাল ভি ভি 🕏 হভাইরা ব্যালেরিরা ভাভাইরাছে। আমাদের দেশে সর্ভার त्मणात्य यदि पांचण: यश्मत्व अक्षे त्यमात म्हात्मविवाध हृद করিতেন ভাহা হইলেও এভ দিনে অনেক কাল হইত। ब्यानिविवास चाळाच ३० (कांके लाटकर मत्या ३० मण मदस वर्ते. क्षि के बादि वाकी > रकार्ते >० नक लाकरक कीवब क **क्तिया दार्थ । बन्धा, करमदा, वश्रु, जावायद श्रृष्टि रव रकाय** বোগের সংস্পর্ণে আসিলেই ইহারা আক্রান্ত হর এবং সরিয়া বার। কিছ বেশের লোক ছতিকণীড়িত ও স্বাস্থাহীন হইরা ৰাকিলেই ভাতাৰের শোষণ সহক ও সভৰ হয়।

অভাত রোগের অবহাও কর ভরাবত নতে। ১৯৪১ সালের অক্টোবর নালে ইভিয়ান নেভিকেল গেজেটে বজা-রোগে বভাুর নিয়োক্ত বিসাব বাহিত ত্ইরাছিল:

প্ৰতি এ	<b>Ŧ 7</b> ¥	CHICT	ৰভাহার
---------	--------------	-------	--------

শ্যাৱিদ	399	কাৰপুৰ	8-2
ৰেন্সিকে!	390	नरको	8 >>
নিউইস্বৰ্ক	251	वाळाच	200
বালিন	250	ক্ৰিকাভা	200
797	>6	বোখাই	280

ভাঃ বেঞ্চানিনের মতে বংসরে গড়ে ৫ লক্ষ লোক ভারতবর্বে বজারোগে মারা বার। কিছু ভাহার চিকিংসা ব্যবস্থা এইরূপ:

ব্লা তাসপাতাল ও ভানিটোরিয়ার

	ভাষিটেরিয়াব		ৰমাহানণ	শা <b>ভা</b> ল	ৰত হাসণাভাল	
	সংখ্যা	(40	সংখ্যা	UFS	সংখ্যা	বেড
ভাগাৰ	2	24	-	-	20	32
বাংলা	2	4.2	৩	97F	29	289
বিহার	3	200	a representa		30	29
বোখাই	<b>&gt;</b>	620	¢	६७५	24	२०२
वश्यदान	5	262			٩	27
ৰাজাত	e	670	2	•2	>1	800
<b>উ</b> ক্তিয়া					•	7.0
1214	>	**8	. •	100	38	V81
वेषव टार	74 e	256		-	r	71-8

শাস্থাহীনভার কারণ সহতে ভোর ক্ষিট্ট বলিভেত্ত্ব,
"নেশের অধিকাংশ স্থানেই পরিজ্যনতা ধুব কম, অনসাধারণের
একট বক অংশ পৃষ্টিকর বাজ্যের অভাবে বীর্ষাহীন, চিকিৎসার
ব্যবস্থা প্রবাজনের তুলনার বিভাল কর, শিকার অভাবে
কেশের লোকে অস্বাস্থাকর পারিপার্থিক এবং রোগ সহতে
উদাসীন।" বে সকল প্রামে বীজাগুরুজ্ঞ পানীর অল, মরলা
কল অপসারণের অভ পর:প্রধালী ইত্যাহি ব্যবস্থা আছে
ভাহাকেই আমরা স্বাস্থাকর প্রাম্ব বলিভে পারি। শভকরা
একট প্রামেও এই ব্যবস্থা নাই। ভাঃ বিবান রার পশ্চিমন্
বাংলার ৭০ হাজার প্রামের মধ্যে ৮১টিভে ৮১ সেট ভাজার,
কলাউভার নাস ব্যাইরাহেন। কিছ এবানে অভাব আছে
কেবল উম্ব প্রব্য প্রের।

বক্ৰলের বেভিক্যাল কুলখলি উট্টরা নিরাছে। ওঁবৰ আরও কুপ্রাণ্য ও কুর্লুল ক্টরাছে। টাইকরেডের অব্যর্থ ওঁবৰ ক্লোরোবাইলিল পাকিয়ানে আট টাকার পাওরা বার ( ওক্ পভকরা ৫—৭০ ভাগ ), কলিকাভার উহারই বার ৩২ টাকা ( ওক্ পভকরা ৪০ ভাগ )। গরীবের পক্ষে এই রোগের চিকিংলা অন্তব। বাংলাবেশে বৃহত্বলে বেভিচ্যাল ছুল থাজার প্রাবের লোকের বেটুকু ছবিবা হিল, সেওলি ছুলিরা বেওরার আরও অছবিবা হইরাছে। একটু কটন রোগ হইলেই মক্ষলে চিকিংলার আর কোন উপার আজ্ঞাল না থাজার বাব্য হইরা কলিজাতার আলিতে হয়। এবানে হালপাতালে হানাভাব, বাহিরে আরগা পাওরা কটন, ভাজারের কী, মলমুল্ল পরীজা, এজরে ইত্যাবির কী অবিক। অর্থাভাবের কিংলা করাইতে না পারিরা অবিভাগে চিকিংলা-বোগ্য বোগে লোক মরিতেহে। সরকারী হালপাভালের জিবভের সংখ্যা শতকরা ৬৬ ভাগ করানো হইরাছে। বে বে হালপাভালে 'এভাউবেন্ট' হইছে জি বেভের ব্যবহা—(School of Tropical Medicine, Lake Hospital প্রভৃত্তি) হিল ভাহা অর্থকনী করা হইরাছে।

ডিসপেলারিভে আউট-ভোর রোগীদের কি ভাবে দেখা হয় ভংসদকে ভোর কমিটি বলিভেছেন বে, এক ঘণ্টার গড়ে ৭৫ জনকে দেখা হয়, অর্থাং এক জন রোগী দেখিতে ভাক্তার ৪৮ সেকেও মাত্র সমর দিতে পারেন। এই ভো রোগী দেখার নমুনা। ওঁববের অবস্থাও ভদ্রণ। ছই-ভিনটা ইক নিকল্ডার হাড়া বিশেষ কোন ওঁবৰ ভিসপেভারিতে থাকে না।

মাবে মাবে বেভার বজুভার বা ব্যবহা পরিষদে পুটকর থাদ্যের তালিকা দিয়া উহা খাওরার পরামর্শ অনেকে দিয়া থাকেন। কিছ একথা ব্বেন না যে মুটমের করেক ক্ষম ভাগ্যবান ব্যতীত আর কাহারও পক্ষে এই বাধারে এক সঙ্গে হ্ব, মাত্র, রাংস, ভিন্ন, মাথন সর্কবিধ থাত্য প্রহণ করা ক্ষম অসম্ভব। থাত্যভাব ও পুটিহীন থান্যের বছদিন বাবং ব্যবহারই দেশের বাধ্যতীনভার ভারণ।

দেশের খাছ্যের উন্নভি করিভে সরকারের ধরদ কভ ভাত্। বে-কোন বংসরের "চিকিৎসা ও খাছ্যোন্নভির বরাদ" বিশ্লেষণ করিসেই বরা পড়ে।

নিয়ে ১৯৪৯-৫০ সালের বাজেটে এই বাবৰে কভ টাকা বরাক হইরাতে ভাহার হিলাব বেওবা বেল:

3385-60	3383-40	3383-40			
ৰাজেট	<b>লংশোৰিভ</b>	অভিটক্ষা গ্রহ			
<b>টাকা</b>	টাকা	টাড়া			
		terta			

ঞান্য ডিসপেলারি ও হেলথ ইউনিট ৮০ — ৭১ ৪৫ ২৩,৫২,৮ চালু হাসপাভালের

উন্নতি ১৫ — ৭ ৮২ ৫,৫৮,১৬২ কলিকাভার সংকারক ব্যাবি চিকিংসার হালপাভাল ৩ — ২ ৫০ ১৬,১০০ মুভৰ এবুলেল সার্ভিদ ৬ —১৩ ৬৮ ৪৫,৪৫১

ৰজা হাদণাভাল	3	<b>9</b>	F	>>	21	,43,824
শীলরখন লরকার বেডিবে	क्र					
<b>च्ल</b>	20	_	8	80		२,8२,१२∉
কার্ম্বেনি শিকা	21			<b>¢</b> o		>,১০০
হেল্থ এছুকেশন		3				
जानमान रेमकाबरविव व	<b>च</b> 1-	হোগী	ट्य			
ৰভন্ন সহালো (২০০)	8	ŧ0				
আযুর্কেদিক কলেজ		21			¢ o	¢0,000
থাতের নেভিকেল করেজ		9	2			•
প্রস্থতি ও শিশু কল্যাণ		ર	>			43,203
क्डं विकिश्ना		2	₹8	>	F3	00,000
ৰ্যালেরিয়া শিবারণ		Q				

বাবেটে বে টাকা বরাছ হর কার্যক্ষেত্রে ভাহার অনেক কম বরচা হর। বভটুকু বরচ হয় ভাহারও বেশীর ভাগ 'এটারিশনেন্ট' বাবদই যার, ঔষব ও পধ্যের অবহা ভো দেবাই পেল।

দেশের সর্বাক্তির বাদ এই ভাবে কাল চলিতে থাকে ভাহা হইলে জাতির ধ্বংসের ভার বিশেষ বিলয় আহে বলিয়া বাদে হয় না।

## ভারত-মার্কিন চুক্তি

গত ২১শে গৌষ দিলী হইতে মিন্নলিবিভ বিজ্ঞানি প্ৰকাশিত চইবাৰে:

"ভারত ও মার্কিন বুক্তরাষ্ট্রের বব্যে স্বাক্তিক কারিগরী pक्तिय पूर्व विवयन अवादम श्रम् क्रेम :-- >>०० नारमय २৮८म ডিলেখর নরাধিলীতে ভারত-সরকার ও মার্কিন বুক্তরাই সহতাবের মধ্যে ভাতবিভ ভাবিগরীর ভোম সলাভাগিতা সম্পৰ্কিত সাধারণ চক্তিতে খীকত চইয়াছে বে, ব্যক্তি-খাৰীনতা, चाबीन मक्तारनय अकिंगनन्त्, चाबीनका बकाव कर पूर्व অৰ্থনৈতিক অবস্থা, আন্তৰ্জাতিক কেন্তে সামীভাবে অৰ্থ-নৈতিক সভার্ক বকা একার প্রবোধনীর। ফ্রুড ভারতের পুসংবদ্ধ অৰ্থনৈভিক উন্নতির অভও ঐ চুক্তিতে সহবোগিতা করিবার অভিপ্রার জাপন করা হইবাছে এবং খীকত হইবাছে (व. छेण्ड (स्टाचंड वट्डा चर्चटेनिक्क छेड्डाट्वड चर्च वह्रविका). বন্ধ-বিশেষজ্ঞ ও ভারিগরী প্রধানী সম্পর্কে পারস্পরিক ভাষান-विशासिक करन केवर स्टापंड गांक काला कलानिकत । कारच-সহভার ও বার্কিন হক্তরাই সরকারের আভর্জাতিক কেরে मोहाई। ७ मिम्हा दुविव पण अवर विश्वमाणि ब्रकार चाछ-ৰ্জাভিক কেলে বেষাবেষির ভাব দুর করার বল উভয় পক্ষে সম্বতিক্ৰয়ে ব্যবহা অবলব্যক্ষে একবোগে ভাভ করিছে সমূত बहेबारब--- हेबा विरवहमा कविवा काविनवी अविकत्नाव नव-বোগিতা এবং ইতার অভর্গত বিভিন্ন কর্মপুটী নিয়োক্ত উপারে ভাৰ্ব্যে পরিণত ভরিতে সম্বত চইবাছে :---

১নং অহুছেদ—এতদারা ভাষত-সরকার বে সমস্ত দায়িত্ব গ্রহণ করিলেন ঐওলি বগাবিধি নির্দিষ্ট একজন মন্ত্রীয় সাহাব্যে পালিত হইবে। এতদারা নার্কিন র্ক্তরাষ্ট্র সরকার বাব্য-বাবকভার আবহু হইলেন, অবনৈতিক সহবোগিতা পরি-চালন পরিষ্ণের (মার্কিন র্ক্তরাষ্ট্র সরকারের অভতন প্রতিঠান) মারক্ত ভালা আর্হাক্তর ক্টবে।

- (১) ভারতে কারিগরী সহবোগিতা ব্যবহা পরিচালনের ত্বত উক্ত অবনৈতিক সহবোগিতা পরিষদের ভারতহ প্রতিনিবিই কারিগরী সহবোগিতা বিভাগের তিরেইররণে কাজ করিবেন। তিনি এবং তাঁহার বিভাগের ক্র্রারীয়ক্ত ভারতে মার্কিন ক্রীনৈতিক কর্ম্বারীয়ক্ত বে সমস্ত বিশেষ স্থানা ক্রিবার্ত তারতে ক্রিবার্ত ক্রিবার্ত ক্রিবার্ত ক্রিবার্ত ক্রিবার্ত কর্মবার্তিক কর্মবারীয়ক্ত বে সমস্ত বিশেষ স্বোগ-স্বিধা ভোগ করিবা বাকেন উক্ত অবিভারিক এবং তাঁহার কর্মবারিগণই ভন্তরণ স্বোগ-স্বিধা ভোগ করিবেন।
- (২) কারিগরী কেন্সে সহবোগিভার পরিক্রমণ কার্ব্যে পরিণত করার জন্য অবনৈতিক সহবোগিভা পরিবর-বিশেষজ্ঞ-বিগকে লইরা গঠিত একট প্রভাক সহবোগিভা পরিবর-বিশেষজ্ঞ-বিগকে লইরা গঠিত একট প্রভাক সহবোগি ও সাহাব্যকারী দল উজ (ভিরেউবের) পরিচালনাবীনে কাজ করিবেন। বাজিব সরকারই ভিরেউর এবং বিশেষজ্ঞগণকে নির্ক্ত করিবেন। কিছ ভারজ-সরকারের নিক্ট এই সকল ব্যক্তি প্রহণবোগ্য হওরা চাই। যে সমস্ত পরিক্রমণ সাহাব্য পাইবে সেওলি কার্ব্যে পরিণত করার ব্যাপারে সহবোগিভা এবং ইহা পরিক্রমণ সার্থ্য সম্পর্কিত ভিরেউর এবং সরক্ষেমিন সাহাব্যকারী বিশেষজ্ঞ দলকে যবাবোগ্য সুযোগ-সুবিধা হিবেন।
- (৩) ভারত-সরকার সীকার করিতেহেন বে, বেক্ছে অব নৈতিক সহযোগিতা পরিচালন পরিষদ সম্পূর্ণভাবে বাজিন মুক্তরাষ্ট্র কর্ম্মক পহিচালিত ও নিছন্তিত একটি প্রতিষ্ঠান এবং ভারতের আদালতে অভিযুক্ত না হইবার স্থবিবা প্রভৃতি বে সমত বিশেষ স্থবিবা বাজিন যুক্তরাষ্ট্র সরকারের প্রতিনিবিশ্ন ভোগ করিবা বাকেন এই পরিষদের লোকজনও ভাষা ভোগ করিবান।

ংশং অহুছেন — উভর গবর্গে ত বীকার করিবা লইভেছেন বে, ভারত-মার্কিন অবনৈভিক সহবোদিতা ভর্বিল নামে একট অবভাতার স্টে হইবে। এই ভহ্বিলে মার্কিন রুজরাই সহকার ১৯৫২ সালের ৩০শে জুন পর্বান্ত উভর পক্ষের অহুমোদিত পরিক্রমান্তনির বার নির্কাহার্থ ৫ কোটি ওলার করা দিবেন। ভারত-সরকার কর্তৃক ববাবিধি নির্ক্ত অভিসার এবং (রাজিন) কারিগরী সহবোদিতা পরিচালন সম্পর্কিত ভিরেটর কর্তৃক বৌবভাবে এই ভর্বিলের অর্থ কারিগরী সহবোদিতা সম্পর্কিত অহুবোদিত পরিক্রমাসগৃত্ কার্ব্যে পরিণত করার করা ব্যবহৃত হইবে। উক্ত অস্ক্রেরের বিতীর নিবছে বর্ণিত বিবাধ অস্থানী এই তহবিল হইতে অর্থ বন্ধান হইবে। উক্ত অস্ক্রেরের এই তার্গে বর্ণিত হইবাহে বে, (ফ) অর্থ তাতার হইতে সমিলিত অর্থ তাতার অর্থানান করা চলিবে। উত্তর প্ররেটির সম্মতিক্রের করেকটি পরিকর্মনা করিব লিবে। উত্তর প্ররেটির সম্মতিক্রের করেকটি পরিকর্মনা করিবর অস্ক্রোবিত হাবে বন বাবদ এই অর্থ নাহাব্য দেওরা হইবে। সংগ্রিট পরিকর্মনার কর্মা পঞ্চম অস্ক্রেরের সম্প্রারী অর্থ বরাদ করা হইবে। এই চুক্তি অস্থানী বে অর্থ ব্যাম হইবে তংগালাকৈ রাক্তিম রুক্তরাট্ট সরকার (ফ) অর্থ-তাতারে বে অতিরিক্ত পরিষাণ অর্থ ক্ষা দেওরা হইবে সে সম্পর্কে ভারত-সরকারতে রাবে বাবে আনাইবেম।

ভারত-সরকারের একট বিশেষ উরহন ভ্রবিল রহিরাহে।
ইহার পরিবাণ পঁচিল কোট টাকারও বেনী। ভারত-সরকার
সন্মত হইতেহেন বে, ভারত-সরকার এককভাবে অববা
ভারতের রাজ্য সরকারগুলির সহবোগিভার প্রত্যেকট ববা–
বিবি অহ্যোদিত পরিক্রনার হত হিনীকৃত হারে অভিরিক্ত
অর্থ বরাহের হত 'ব' ত্রবিল চইতে অব্ব্যর অভ্যোদন
ভবিবেন।

বার্কিন বৃক্তরাই এবং ভারত উতর সরকারের অর্থাকুক্ল্যে বিধি উক্ত তহবিল গটিত হইবে, কিছ উর্থন পরিক্লনা নির্দারণ ও ভাহা কার্য্যে পরিণত করার ব্যাপারট ভারতের ক্রেমীর অথবা রাজ্য সরকারের প্রতিনিধি ছানীর সংছার হন্তে তত্ত বাকিবে। চুক্তির সর্থ অস্থারী ব্যবহার বার্কিন পরিচালক বিনি হইবেন, তিনি ভারতত্ত বার্কিন কুটনৈতিক প্রতিনিধি-রঙ্গীভুক্ত হিলাবে বাক্তিবেন এবং পরিক্লমা নির্দারণ ও ভাহা ভার্যে পরিণত করার ব্যাপারে উপনেত্র। হিলাবে ভাক্ত ভরিবেন।

তনং অহুচ্ছেদ—(১) উত্তর গবর্ষে উ সম্মত হইতেহেন বে, তারতের বাহির হইতে উত্তর গবর্ষে উ কর্তৃক বীকৃত বাল, উপকরণ ও উকালার সংগ্রহের অত 'ক' তহবিলে বার্কিন মুক্তরাই গবর্ষে কের অবংশ তারত গবর্ষে কের লম্ভিক্তরে বার্কিন মুক্তরাই রাখিনা কেওলা বাইতে পারে; এইতাবে বে অর্থ রাখিনা দেওলা হইবে তাহা 'ক' তহবিলে করা কেওলা হইবাহে বলিরা গণ্য করা হইবে।

(২) পরিক্রনাথলির কাল চালাইবার কন্য বে অর্থ বিভরিত হুইবে, ভাহা সাহাব্য অথবা ধণ অথবা এজনলে লাহাব্য ও ধণ হিলাবে দেওৱা বাইতে পারে। বদি ধণ হিলাবে বেওৱা হত্ত, ভবে ভাহা চাঁভার ভারত গবর্ষে-উক্তে প্রভাগের সর্ভে বিভে হুইবে; এইভাবে ধণ শোব হুইভে ভারত-সরকার বে অর্থ পাইবেন এবং এই ভারিগরী সহ- বোৰিতা চুক্তি অনুনাৰে আৰম্বাৰীকৃত বিজ্ঞাবোৰ্য বাল বিজ্ঞা কৰিব। বে অৰ্থ পাওৱা বাইবে, তালা 'ব' কহবিলে জ্বা বিভে হইবে। এই চুক্তি বতকাল বলবং বাজিবে, ততকাল একনাল উত্তৰ প্ৰৱেশ্টের মধ্যে শীকৃত অৰ্থনৈতিক উন্নৱন্ত্ৰক পত্নি-কল্পাত্তিৰ জ্যাই এই অৰ্থ ব্যৱ ক্যা বাইবে।

(৩) উত্তর গবর্ষে ও লয়ত হইতেছেন বে, পরিক্লনার করা বার্কিন বুক্তরাই গবর্ষে ও বে লকল অভিজ্ঞ কারিগর নির্ক্ত করিবেম, তাঁহাদের সকলের বেতন ও বার বার্কিন বুক্তরাই গবর্ষে ও ব লকল ভারতীয়কে ভারতের বাহিরে নিকাপ্রহণের মবের্মি বে লকল ভারতীয়কে ভারতের বাহিরে নিকাপ্রহণের মবের্মি বি লকল ভারতীয়কে ভারতের বাহিরে নিকাপ্রহণের মবের্মি বি লক্ষান্ত বিব লাকিন বুক্তরাই গবর্ষে ও বেলরকারী প্রতিষ্ঠান বারকত বে কারিগরী সাহাব্য দিবেন ভাহার বার 'ক' ভহবিলে প্রদের অর্থ হবৈতে না দিরা অন্য ভহবিল হবৈতে বার্কিন বুক্তরাইই বহুন করিবেন। অপরপক্ষে ভারত গবর্ষে ও প্রত্যেক ক্ষেত্রে আবসক মত ও চুক্তি অহুসারে হানীয় মবোগ-মুবিবা দিবেন এবং বেসরকারী প্রতিষ্ঠানগুলির সহিত্ত চুক্তি অহুসারে বে সকল কারিগর ভারতে আসিবেন উাহাদের ব্যক্তিগত অনিবপত্র ও যরপাতিকে কাইন শুক হবৈতে অব্যাহতি দিবেন।

৪নং অক্সজেছ—(১) একট কেন্দ্রীর ক্ষিট গঠন করিতে হইবে। ক্ষিট একট সাধারণ পরিস্থিতি ছির করিবেদ এবং কারিগরী সহবোগিভার চুক্তি অক্সমারী যে সকল পরি-কর্মা কার্যকরী করা হইবে, সেগুলি ভত্বাবধানের ব্যবস্থা করিবেদ।

ভারত গৰবেণ্ট এই কমিটির সম্ভগণকে নিযুক্ত করিবেন এবং তাঁতাদের সংখ্যা সাভ জনের বেশী কইবে না।

১। এই ক্ষিট্ট অর্থ নৈতিক উন্নরনের পরিকল্পনা কার্যাকরী, করিবার ক্ষা দাবী থাকিবেন। তাঁহারা ভারতের বিভিন্ন রাজ্য কর্তৃপক্ষের সহিত পরাবর্শক্ষমে কাল করিবেন।

#### ভৰ্তন্যাৰ পৰিকল্প

উভর সরকারের মধ্যে চৃত্তি অনুবারী সাম্ভিক্তাবে ছির হুইরাছে বে, উক্ত ভহবিলের অর্থ সাহাব্যে বে সকল পরি-ক্রমার কাক হুইবে, ভরবো একট হুইবে ক্ষক্ল্যাণ পরিক্রমা।

ক্ষকল্যাণ পরিকরণা অনুবারী বেশের বিভিন্ন হাবে ৫০টি প্রত্ব-পদ্ধী উন্নয়ন অঞ্চল পঞ্জিত হৃহবে। প্রভ্যেক অঞ্চল ২ লক্ষ্ লোকের বলভিত্যক প্রায় ৬ পাত প্রায় লইবা গঠিত হৃহবে। এইরূপ অনেকগুলি অঞ্চল দ্বাধী উন্নয়ন পরিকরণা এলাকার এবং নলকৃপ ধনন পরিকরণা এলাকার সন্নিকটো গঠিত হৃহবে।

আবাদের বব্যে অনেকে আশকা প্রকাশ করিতেহেব বে, এইরূপ তাবে বাজিব ধব প্রহণ করিলে আবাদের বার্কিবের প্রতাবে পভিষা তারাদের বাবাধিব রাক্ট্রৈভিক কৌশন্তের মব্যে জড়াইরা পড়িব; আবাদের "নিরপেক" নীতি রকা করা সন্তব ত্ইবে না। যদি ইতাই আবাদের বারণা ত্র, তবে আমরা খাবীমতা লাভ করিরা কোন শক্তি অর্জন করি নাই, এবং শীল তাতা র্ভি করিরা নির্তীক ত্ইবার সন্তাবনা ব্যুক্ষ। নিজের জাতি সহছে এইরপ তীন বারণা আমাদের নাই এবং বৃভিত্র অভাবত আমাদের জাতিগত নতে। রাজ-নীতির নানা কৌশন আমরা ববি ও শিবিভেতি।

### যুদ্ধের অপরাধী

কোম ব্যক্তি নরহত্যা করিলে তার কাঁসী হুর্ব বা 
যাবজীবন ভাহাকে কারাগারে কাটাইতে হয়। বিজ্ঞারীর
১৯১৪-১৮ বীপ্রাক্তের বুর হুইতে এক মৃত্য নিষম করিলেন বে,
রাষ্ট্রণতি ও তাঁহার পরামর্শনাতারা বর্ণন বিরাষ্ট্র নরহত্যার
অপরাধে নোষী তর্ণন তাঁহালেরও কাঁসী বিজ্
হুইবে। তর্ণন ব্রিটেনের প্রবানমন্ত্রী ছিলেন লয়েত কর্জ।
ভিনি ধুরা ভূলিলেন—"সম্রাষ্ট্র উইলিয়মকে কাঁসী দিব" এবং
এই প্রভিহিংসা-র্ভি প্রসার করিলা যুরাত্তে একট ভোটযুব্বেও জয়লাত করিলেন।

সেইরপ বিভীয় মহাযুদ্ধের "হিটলারকে কাঁলী দিব"—
"মুগোলিনিকে কাঁলি দিব"—এইরপ বারণা লোকের মনে দৃঢ়
করিরা দেওরা হইল, বিশেষ করিয়া ক্রশিষার। কিছ বিঃ
চার্ফিল এই বর্ষরভার ব্যর্বতা দেবিরাছেন এবং ক্ষতিপুরবের
লাবি করিয়া বে লাভ হর না ভাহা দেবিরাছেন। প্রথম বিশরুদ্ধের পরে ক্ষেতাকে বাঁচাইরা রাখিতে হয় বিশ্বিভকে টাকা
বার দিরা। গ্রালিন কিছ এসব মুক্তি মানিতে চাহিলেন
না। ভিনি ভেছরাণ (ইরাবের রাজ্বামী) নগরীতে কছভেন্ট, চার্ফিল ও গ্রালিনের বা মুক্তি প্রামর্শ হয় ১৯৪৪ বঃ
ভিলেবর মাসে, ভাহাতে প্রভাব করেন বে মাংলি দলের বেভা
ও সামরিক বেড্বর্গকে কাঁলী দিকে হইবে। এই মারাছক
প্রভাবের বিবরণ চার্ফিলের "বিশ্বযুদ্ধের ইভিহাসে" বাহির
ছইভেছে।

"নিউ ইবর্ক টাইমস্" পত্রিকার তার সার বর্দ্ধ অবলঘদ করিবা কোন বার্কিন সাংবাদিক এই বিষয়ের আলোচনা করিবাবেন। চার্চিলের ক্ষরাগুলি গুরুত্বপূর্ণ। নেইক্স্য তার অহ্বাদ করিবা দিলাব। "ক্যার করার গ্রীলিন বলিলেন: 'কার্মানীর সামরিক নেড্বর্গকে থাংস করিতে হইবে; হিট্টলারের সমস্ত শক্তি নির্ভ্র করে এই ২০,০০০ বিশেষজ্ঞর উপর। বদি তাঁহাদের বুঁকিবা পাতিরা বরা বার, তবে বুবের পরে তাঁহাদের গুলি করিবা নারিবা কেলিতে হইবে; এই তাবে কার্মানির নামরিক শক্তি কাংস করিবা বিশ্বশান্তির পর মুক্ত করিতে পারা বাইবে'।"

চাৰ্চিল এই কথাৰ অভ্যন্ত অসম্ভই হইলেন। তথ্য কুমতেন্ট ব্যাপাৰট লয় কৰিবাৰ ক্ষম বলিলেন বে, ৫০,০০০ হাকার নর, ৪৯,০০০ হাকারকে শুলি করিবা নারিলেই চলিবে বিশ্ব এলিরট রুক্তেণ্ট টালিনের প্রভাব সর্বাভঃকরণে সমর্থন করেন। টালিন ও বলোটভ চার্চিলকে শাভ করিবার জন্য বলিতে লাগিলেন—'আবরা ঠাটা করিভে-হিলাম বাল, ইত্যাদি, ইত্যাদি।'

চার্চিল এখন বলিভেছেন : "আমি টেকই ভাবিরাছিলাম ;
ব্যাপার ঠাটা বিজ্ঞপের নর।" এই সম্পর্কে লেখক পোলিশ
সামরিক কর্মচারীদের কথা ভূলিরাছেন। প্রার ১৫।২০ হাজার
লোককে কাট্যন করণে হত্যা করা হর—নাংসি হত্যাকাণ্ডের
পর বাহারা অবলিট ছিলেন। ইতিপূর্ক্ষে বলশেভিক বিপ্পবের
পর ১৯৩০ বিটাকে "কুলাকদের ধ্বংস" করিবার নামেও
প্রায় ৩০ লক্ষ নরমারীকে না খাইতে দিরা মরণের পথে ঠেলিয়া
দেওরা হর। টালিনের রুক্তি ছিল একটা, "কুলাকদের (সম্পর
চাষীদের) প্ররোচনার এই লোকসমন্তি নৃতন রাট্র ব্যবহাকে
অচল করিবার জন্য ভাহাদের গরু বহিষ ভেল ছালল বিদা
প্ররোজনে বারিরা কেলে। কোন রাট্র ভাহা সত্ত করিভে
পারে না। রক্তাক্ত বিপ্লবের পথে চলিবার সাহস থাকিলে
ভাহা হর। ইতিহাসের পূঠা ভাহার সাক্ষ দের। আমাদের
ক্র্মনিটনের সেই সাহস আহে কি ?

### জাতিসজ্যে কৃষিপ্রসঙ্গ

রাষ্ট্রসল্প সম্মিলিত প্রতিনিধিবৃদ্ধ ভূমি-সংখ্যার সংক্রান্ত প্রভাবটি বর্তমান অবিবেশনে সর্বাণেকা গুরুত্বপূর্ণ প্রসদ বলিয়া মনে করেন। বর্তমান সন্তাহে এই প্রভাবটি রাষ্ট্রসল্পের অব-নৈতিক ক্ষিটিভে উবাপিত হইতেছে। প্রতিনিধিবলের এক জন সমস্ত এইরূপ অভিনত প্রকাশ করেন, ভূমি-সংখ্যার সম্বভাৱ আন্ত সমাধান না হইলে ইহা অবনৈতিক নিমন্ত্রণের আহতের বাহিরে চলিয়া বাইবে এবং বিধের নর-মারীর দেশিক জীবন-যালা বাহিত করিবে।

ভূমি-সংস্কারপ্রসদে ত্রাজিল, গাইল্যাঙ, যুক্তরাই ও পাকিছান কর্ভুক উবাপিত যুক্ত প্রভাব রাইসলের অববৈশিতক ভাষটির বর্জনান অবিবেশনে বিবেচিত হইবে। ভূমি-সংস্কার সমভার সমাবানে সরকারের দায়িত সম্বিক। সরকারের নিকট হইতে বাছিক সাহায্য এ বিষয়ে প্রকৃত কার্য্যকরী হইবে। সরকারের সহবোগিতার প্রাবোহনন প্রিক্তর্নার বব্য বিধা ভূমি-সংস্কার সমভার সমাবান করা বাইতে পারে।

গত ২২লে পৌষ ভারিবে;শ্যারিস হইতে যে সংবাদ প্রেরিভ হইরাছে, উপরোক্ত সংবাদটি ভাহার বব্যে আছে। পরিক্রমা বিরাট হউক, সারাভই হউক, ভাহার সাক্ষ্যা মির্ভর করে ব্যক্তির উপর। কোম রাষ্ট্র ক্ষেবল ভার অর্থবলের সাহায্যে ভাহা আনিতে পারে না। ভারভরাষ্ট্রের নাগরিক্বর্গের নিক্ট ইহাই প্রবন সমভা। "রহৎ ব্যরের" সাহায্য না পাইরাও প্রাচীন বিশর, প্রাচীন ভারভবর্গ, প্রাচীন লোলো- পটেনিরা ও প্রাচীন চীনের লোক ভারাবের কেশের চেহার। বংলাইরা দিরাহিল। ভারার ইভিহাস হইতে বর্তনান ব্যবর-বুর্থ নর-মারীর অনেক শিবিবার আছে।

একটা কথা প্রারহ ভানিতে পাই। প্রাচীন ভগতের এই সব নদী-নালা দাস-প্রমিক দারা করাবো হইত। আঞ্চলাল ভালা করাবো হব না। কিছ বাঁহারা এই সব পরিকলনার ববর রাবেন, তাঁহারা ভাবেন বে, ব্যক্তিখানীনভার ছান ইহার নব্যে বেশী নাই; পরিকলনা কার্যাকরী করিতে গেলে ব্যক্তির বাবাঁনভা কর-বেশী সহুচিত হইবে। প্রাচীনকালে দাস-প্রমিক হরত পলাইরা বাইত। আক প্রমিক হর "বর্ষাই" করে, না হর কাকে ইভকা কের। ছবের বব্যে পার্বক্য ব্যবেশী নাই।

## ভারতরাষ্ট্রের নৌবহর

গত ৬ই পৌৰ ভারভব্যাশী "মৌবহর দিবস" প্রতিপালিভ হইরাছে। এই উপলক্ষে ভারভ-সরকার একটি ভব্যপূর্ণ বিবরণ প্রকাশ করিরাহিলেন। ভারভবর্বের অভীভ ও বর্তমান (ইংরেক আনলের) কথা ভাহার বব্যে হিল। আর হিল এই মুহারের সুঠু ব্যবহার করিবার ক্ষ নিক্ষেক প্রভাত করিভে খাবীন ভারভ কি করিবাহে ভাহার কথা। আমরা ভাহার বর্মার্থ নিয়ে ভূলিরা দিলাব:

ভারতীয় দৌবহরের স্থাচীন ইভিহাস ভাষে। কিছ ভাধুনিক কালের যে ইভিহাস ভাষরা ভানি ইট ইভিয়া কোল্যানীর ভাষল হইভেই ভাহার স্থাত হয়।

শ্রীটার শতক আরম্ভ হইবার পূর্ব্য হইডেই বে ভারতীর পোত সমুলে বিচরণ করিক প্রাচীন ধর্মপ্রই, ইভিহাস এবং শিল্পকার নিল্পনগুলিতে ভারার সুস্পাই সাক্ষ্য রহিরাছে। যদিও ইহা-দের অবিকাংশ বাণিক্যণোডই ছিল, ভবু বীণগুলি কর করিবার সমর আহাকের সাহাব্যে সৈভবাহিনী গার করা হইত ইহার প্রধাণেরও অভাব নাই। ভারতে আহাক-নির্দ্ধাণ শিল্পও উরভিলাত করিভেছিল। মদীতে চালাইবার উপর্ক্ত গুর্বোকাই যে তৈরি হইত ভাহা নহে। সমুল্রগানী পোত নির্দ্ধাণ অপ্রচলিত ছিল না।

পরবর্তী শতাকীগুলিতেও এই বোশিরের চর্চা বৃদ্ধি পার।
বোগল আমলে, বিশেষতঃ আকবর নোশিরের উর্বাহির প্রতি
বিশেষ লক্ষ্য রাবেন। বাংলার ঢাকা শহরে উচ্চার লোবিভাগের সদর দওর ছিল। আকবরের উত্তরাবিকারীরাও
নোশিরকে অবহেলা করেন নাই। নালাবার উপক্লের
চেডাগেও (নালরীরা) ভাছাবের নোশক্তির ক্ষর উপক্লের
চিডাগেও (বালরীরা) ভাছাবের নোশক্তির ক্ষর উপক্লে
দীর্বলাল বাবং আবিপত্য রক্ষা করিরাহিল। উৎকল ও
অন্তর রাজ্যে রেলাক ভারতসমূল্তে বে প্রাবাহ স্থাপন করিরাহিল,
ভাহা ইভিহাগে-প্রনিভঃ। বাঙালীর নৌবহর রাজা রব্বকে
পর্বাহ চর্কিত করিবাহিল।

কৃষ্ট ইভিয়া কোম্পামীয় আমল: ১৬১৩ বিটাকে কৃষ্ট ইভিয়া কোম্পামী যথন ভারতীয় মৌবানিজ্যের প্রথপ্তন করিলেন এবং এই নং পোতে কাল করিবার ক্ষত ভারতীয় কর্মচায়ীদের নিরোগ করিলেন তথন হুইভেই ভারতীয় নৌ-বহরের প্রকৃত উংপত্তি হুইল বলা চলে। এই নং পোতে উচ্চ-পদস্থ কর্মচায়ী হিলাবে কোম্পানীয় বানিজ্যপোতের লোক্ষের নিরোগ করা হুইলেও নিয়তন কর্মচায়ী এবং তক প্রহিক্ষের অধিকাংশই ছিল ভারতীয়।

তারভীর দৌবছরের নাম পরিবর্তন করিরা পরে বোঘাই নৌবছর রাবা হইরাছিল এবং বোঘাইভেই ইছার সবর বর্ধর হাপিত হইরাছিল। পর্তুক্তি ও ওললাক্তরে সলে কোম্পানীর বে সব বৃত্ত হর, ভাছাতে এই নৌবছর বিশেষ অংশ প্রত্ত্তবে। কিন্তু শুরু সাররিক ও অসামরিক কাক্তেই কোম্পানী ভাছাবের আছাজভালিকে নিরোগ করেন নাই। বোঘাইভে একট আছাজ নির্দাবের কার্যানাও তাঁহারা গভিরা তুলিতে-ছিলেন। বোঘাইবের বর্ত্ত্রাম তকট ১৭০৫ প্রীপ্রাক্তে অবিকৃত এবং ক্রমে ইছা জাহাল নির্দাবের একট কার্যানা হইছা উঠে। ১৭৭৫ বিটান্সের মধ্যে এই কার্যানাট এত উন্নতিলাভ করে বে, পৃথিবীর অংকালীম বে-কোন শুঠ কার্যানার গলে তুলনা করা চলিত। ওক কাঠনির্দ্ধিত এই আহাজভালি ইউরোপের বে-কোন কার্যানার আহাজের অপেক্ষা উর্ল্

১৮৫৭ বিটাপে ভারতীর নৌবছর দিট ইতিয়া কোম্পানীর নিকট বইতে বিটাশ গবর্গনেটের নিকট হভাতরিত হয়। অবস্থ ভাহার পূর্কে বছবার ইতার নামের পরিবর্তন হইরাতে। ১৮৯২ বিটাপে অবশেষে ইহাকে রাজকীর ভারতীর নৌবছর আব্যা কেওবা হয়।

বিটিশ গৰ্বােণ্ট কৰ্তৃক অবিকৃত হুইবার পর হুইতে ভারতীয় নােবহুর রাজকীর নােবহুরের একট শাবা হিসাবে কাল করিতে বাকে এবং প্রথম নহায়ুছের বহু নােবুছে সহ্বােণিতা করে। ১৯৩৪ মার্টাক হুইতে ভারতীর নােবহুর রাজকীর ভারতীর নােবহুর করে আবাতীর নােবহুরকে বহুলাংশে মুন্তারিত করা হয়। মুছের প্রেই ইহার উচ্চ ও নিয়তন কর্ম্বাচারিত করা হয়। মুছের প্রেই ইহার উচ্চ ও নিয়তন কর্ম্বাচারিতে করা হয়। মুছের নাম্বাহ্বিক। মুছের ক্ষর উহা বৃদ্ধি পাইরা ৩০ হালারে উঠেবছ আধ্যনিক লাহালক ইহার সদ্য যুক্ত হয়।

খানীনভাৰ পরে: ১৯৪৭ সনের ১৫ই আগঠ বাৰীনভা লাভের পর দেশ বিভাগের কলে ভারতীর নৌবহরের আকার অভ্যত কুল হইরা বার। ৪বানি ভারাজ, ২বানি ক্রিকেট, ১বানি ভরতেট, ১বানি সার্ভে-ভেলেল, বানভরেক ট্রলার বাইন সুইপার (বোরা ভূলিবার ভারাজ) এবং ১বানি ক্রাক্টিইং বার অবনিট হিল। ৩ হাজার

মাইল উপকৃত রক্ষার কাকে ইছাকে মোটেই পর্যাপ্ত বলা চলে মা।

স্ভরাং নৌবছর প্রসারের পরিভরনার ভারতকে বর্ণেই কাল করিতে হইরাছে। প্রকৃতপক্ষে প্রার প্রথম হইতে কাল ক্ষে করিতে হইরাছে। ঐ বংসর শেষ হইবার প্রেই ভারত বিষ্টিশের সলে এ সম্পর্কে হৈ চুক্তি সম্পাদম করিরাছিল ভারার কলে সে ৭০৩০ টনের 'একিলিস" নামে একধানি কুলার পার এবং ১৯৪৮ এই কে ইচার 'দিল্লী' নাম দেওবা চর।

এইতাবে ভারতীর ধৌবতর বৃদ্ধির স্থাপাত হয়। বিটেমের
মিকট হইতে ভারত ক্রনে "রাকপুত" "রবনিং" ও "রাঁণা"
নামে ভিনবানি ক্রুলার লাভ করিয়া একটি ফ্রোটলা গঠন
করে। এই সন্দে দেশ বিভাগের কলে যে ফ্রিগেটগুলি
ভারতের অংশে পড়ে সেগুলি লইয়াও ভারত একটি ফ্রিগেট ফ্রোটলা গড়িয়া ভোলে। প্রভাক বহরে ২ শত কর্মচারী
আহে। সম্প্রতি যাইন সুইপার ফ্রোটলাও গঠন করা হইয়াছে।

শিক্ষাকেন্দ্র প্রতিষ্ঠা: ভারতে দৌবহরের প্রসার গরিকল্পনার শিক্ষাকেন্দ্র প্রতিষ্ঠাকেও স্থান দেওরা হইরাছে। এই কেন্দ্রগুলি প্রতিষ্ঠার কলে ভারতীর দৌবহরের বোগ্যতা ও বাবলম্বিভার হিল পাইংছে। দেশ বিভাগের পর ভারত তিন্দ্র উৎকুট্ট শিক্ষাকেন্দ্র এবং বহুসংখ্যক বিশেষজ্ঞকে হারাইরাছিল। অবস্থ এডমিরাল দপ্তরের সাহাব্যে প্রাথমিক অসুবিবাওলি কাটাইরা উটা পিরাছিল। ভারতীর দৌ-কর্ম্মচারিগতে দলে দলে শিক্ষা দেওরার ভার উঁহারা প্রহণ করেন। ইংলওগামী ভারতীর শিক্ষামবীশলের ক্ষত্র একট স্কুল স্থাপন করা হইরাছে। শিক্ষার বান রম্ভি করাই ইরার উদ্ধেত।

বিভিন্নপ্রকার উন্নমন্ত্রক কার্য: ১৯৫০ সনের ২৬শে ভাহারী হইভে কৌবহরের নামের যে পরিবর্তন হইরাছে ভাহা বিশেষ ভাংপর্যপূর্ব। সেই দিন হইতে দীর্বকালের 'রাক্কীর' শক্ট ভ্যাগ ভরিষা ইহাকে ভরু ভারতীর দৌবহুর নামে অভিহিত করা হর।

ভাষনগর ও বোঘাইরের শিষ্প-কেল্ডেল স্থানারিভ করা হুইরাছে এবং কোচিন ও বিশাবাশ্যনমে নৃত্ন শিষ্ণাক্তে বোলা ছুইরাছে।

বোলাইবের নৌবিভারির জোরাড্রন ও জাহাজ ভিচাইবার হান সম্প্রনারণও প্ররোজন হইরা পড়িরাছে। কিছ পর্যাও অর্থের অভাবে ভাহা করা যাইভেছে না। ১৯৪৯ সনে শিক্ষার্থীদের সংখ্যা বৃদ্ধি পাইরা ১৬ হইভে ৪৬-এ উঠে। ১৯৪৮ সালের মাঝারাবি 'বিরী' জাহাজে সর্বাই শিক্ষিত কর্মচারী পাওয়া হার। কিছ শুরু এডনিরালদের সাহায্যে নৌবহুর বিভারের সর্বত প্ররোজন বিচান সভব নছে। ভাই নৌ-শিক্ষাক্রভানি গড়িরা ভূলিভেও ভারত গবর্ষে ও মনো-বোর ইইরাছেন। সম্প্ৰতি ৰৌবিভাগের বিষাধবহুরের অভ সমূত্রের উপকৃলে গাঁচ নির্মাণ করা চইছাতে।

মৌবিভাগ সম্পর্কে প্রবোজনীয় বৈজ্ঞানিক ভগ্যাদি সংগ্রহের জন্ত এক জন বৈজ্ঞানিক উপদেপ্তার জনীমে গ্রেষণাকার্য্য চালান হইভেছে।

নিখিল-ভারত বঙ্গভাষা-সাহিত্য সম্মেলন

গত ১০ই গৌষ পাটনা নগরীতে নিবিল-ভারত বক্তায়া সংগ্রেলনের ২৭ভন অবিবেশন সম্পন্ন হইছাছে। বুল সভাপতি হিলেন শ্রীঅভূলচক্র গুপ্ত। হাইকোর্টের বিশিষ্ট উদ্দিল, সাহিত্যরসিক ও ব্যাব্যাকাররূপে তিনি বর্ত্তনান বল-সাহিত্যের একজন দিক্পাল বলিলেও অভ্যক্তি হইবে না।

তাঁহার বড়ভা ভারতবর্থের শাখত সভ্যের প্রভি নৃত্য করিয়া আমাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে:

শপুর্বের পশ্চিমে খঙাংশ হিল হলেও মহাদেশের মন্ত প্রকাও দেশে আমরা এক মহারাট্র গড়ে ভূলেছি—বাইরের চাপে নর, নিজেকের প্ররোজনে ও ইছোর। এ মহাদেশের ঐক্যা কি কেবল হবে রাষ্ট্রীয় ঐক্যা, শাসন সৌকর্ব্যের ঐক্যা— যা ইংরেকের আমলে ছিল। যদি ভাই বটে ভবে ভারভবর্বের ইতিহাসের এক প্রকাও সন্তাবনাকে আমরা ব্যব্ করব। গে সপ্রাবনা হচ্ছে বছ জাতির মিলনক্ষের এই মহাদেশে জাতিতে জাতিতে যে মিল ভা রাষ্ট্রীয় ও সাংসারিক প্ররোজনের গঙী হালিরে অন্তরের ঐক্যা পরিণত হবে।…

পাতিতা ও সমাজ : চইট চহম মতবাদ

এই প্রস্তে সাহিত্য ও সমাজের প্রকৃত সমুদ্ধের প্রশ্ন সভঃই উদিত হয়। সেদিক বেকে চুট চরমপদী, বিপরীত মতবাদ সম্ভবপত্ন। প্ৰথম মভাকুদাতে সাহিত্য ও সমাভেত মধ্যে ভার্ব্য कावन वा जनाकी नचन (यह । नवात्कव शविति वास्त्र कीवरमब इन পরিবের্ডন। সাধারণ জীবমের ভার্যকলাপ, চিল্লাপ্রবাত, আলা-আকাজা নিৰেই সৰাব্যে কাৰবার। ব্যক্তিয়ঙলী নিৰেই পরিবার, পরিবারগোল নিরেই সমাজ। সেকত ব্যক্তি-গত জীবনের অভি ক্রা ক্রা সমসা, অভি ভুক্তু ভুক্ত সুৰ-ছঃৰ, অভি ভুল ভুল বিষয় নিষেই সমাজকে শেষ পৰ্যাত ব্যাপুত बाकरण हव । किए शतियात वास्त्रियाणका विश्वक्रम मा किरन পরিবারের গঠন সভব ময়। একইভাবে বিভিন্ন পরিবারমঙলী নিৰে বৰন হয় সমাজের ভিভি সংখাপন, তখন পরিবারের चार्यकाकृत महीर् मधीश कर्द बाद मुमदाद विकृष्णद अवर সাৰ্ব্যক্ষীন ওতের নিক্ট ব্যক্তি ও পরিবারের নিক্স সার্ব হয়ে বাহ অপেকাকত অৰ্তীন। তা সভেও বে কোন ভিত্ত-প্ৰতিঠ जवात्करे शतिवादाव चवा वाक्रिय शति छैशिक्ष व्याय मन-कावन পরিবার ও ব্যক্তি নিরেই সমাজ, তাবের বাদ বিরে मत्र। क्रिक धरे ब्याकाहिक कीवामत नाम 🖫 हिरकात-कावा वर्णन वर्ष्यद- नवष बाकरक शादा कि करत ? नवाक कर

পৃথিবীতেই চিরকাল প্রোধিত—প্রাভ্যতিক জীবনের জন্ন-বল্লআল্লার, কন-রজ্য-বিবাহ, বাবি-অবিকার-আইন প্রভৃতির বিচার
ও সিরাভেই সে নিরভন্ন ব্যাপৃত। কিছু সাহিত্যের চিরজন্নান শুভদল প্রকৃষ্টিত হর সেই জুপার্থিব নানসলোকেরই
চির-শোভন নানস-সরোবরে। নিকাবলাহে বেনন শুভদলর
শুভদলই শুকু হরে বারে পজে, বাত্তবভার প্রবর্ধ ভাগে ভেননি
সাহিত্যের প্রাণবন্ধও হরে বার বিনষ্ট। সেক্ত সাহিত্যের
ক্রনাসন থাকবে পাভা সেই জ্বাভব লৌক্র্যলোকেই নাল্ল
বেবানে পৌছাভেই পারে না ক্রেন্ত পার্থিব শোক্তাপের
দীর্থবাস, বেবানে পভ্তেই পারে না বর্ধীর থুলার বলিন ছারা,
যেখানে ভক্ক হরে বার জাগতিক বিবাদ-বিসংবাদের কর্মন
ক্রোলাতন।

#### केवत प्रत्य अक्षांट्यत अववय आवय

क्षि श्रेक्षणाक बान्यार कीवम अक ७ वर्ष । वजरवा वक्कना, भाग, बारमाराणी, रेलियानि मधनिक बसुशानक वक् বিভিন্ন এবৰ কি আপাভদষ্টতে বিক্ৰম অংশের সমাবেশ व्रामक कि अक चनुर्क किविक विद्याप्रमादि अक्षे मध्य चर्छ वसः अवना कीवनशावन करत देवेच अमधनः क्रिक अवने ভাবে, অসংখ্য চিছা, অমুভূতি, প্ৰবৃত্তি প্ৰথণ বিভিন্ন-जानाकाकेट विकद बामनिक जाव-अविज्ञ वामव-मन्द्र कि अक जाफर्रा जावााचिक विश्वाक्राट्ट अक जिल्ह प्रवर्ध प्रकार मछरा अच्छम राक्षित राक्षित हार १५५ एका वर्षा व वर्षा । अवरण ভবু ৰাম্বের কেন্ সম্প্র ভগতেরই ইভিতাস অলমান্ত चालाहमा कराम त्यां वाच त्या वच्च वत्याक अत्कर् विद्यार्थक मार्थाक नामकरणक, विक्रियक मर्थाक नम्बा আবিকার ও প্রকাশই জীবন, ছিতি ও সরুরতির ভারণ। সে क्रम चाम्म के बान्तरवड बारवा विरक्षांव मारक चारवड बारवा अक्षे जरायांत्र जरपानास्य सारुदेश मानुद्रात नाया सारुदेश । বাত্তৰ ভগতেও দুই হয় বে, চত্ৰৰ আদৰ্শবাদী পৰি এবং চত্ৰৰ वस्त्रवामी (कामेद जरवा। वाशका बदानहीरवद जरवाहि व्यक्ति। बच्चाकीवरमञ्ज अहे जबबरबद्ध किस्र बच्चाएडे वर्णम्, जाविका अ শিলকলার পরিস্কৃট হরেছে। ভারই কলে উপরি-উক্ত চুই চরৰ ৰতবাদের মধ্যেও আমতা পেৰেছি একবাত প্রতপ্যোগ্য चार अक्षे छठीर जरवरवार. दर्शास चार्न ७ वाचवचार. जाकाम व शृथिनीत, जांचा ७ दिस्तरात मश्बेष स्टार अक चनुक विम्म । क्षेत्र हत्रम मणासूनारत वर्गम, वर्ग, कावा প্রভৃতি বল্পংখ্যক তীক্ষরী দার্শনিক্ষের এবং উদ্ধ কল্পাবিলাসী ব্ৰতিকল্মের আৰ্বের বন্ধ ক্লেও প্রকৃতপক্ষে সাহিত্য পদবাচ্য মঃ। যে লেখন সম্পূৰ্ণই অবাত্তৰ ও অক্পোলক্ষিত, বার एडि व चिकि मन्पूर्वरे मृष्ट मण्डल, छ। तारे चन्नगरवाक ব্যক্তিকেও কতকাল কত পরিবাবে প্রকৃত ভবিপ্রবাবে স্বর্থ वर, त्नरेडीरे विश्वनीय। जत्त्वव त्नरे त्न, त्क्यल वत्त्वरे जत्त्र

এই একাকী, উদগ্ৰ বেলার মনই বনং অচিত্রে আভ হত্তে পড়ে। সেই অবলাল বেকেই স্কট হত্ত্ব misanthrope বা নানব-বিষেধী লাশনিকপ্রবৃত্তের ও lotus-eater বা দিবাসপ্রবিলালী অলল, অকর্মণ্য অক্তাপের।

সাহিত্য স্তীর মুর্বাদা অভ্যাধনিক কালে ভারতবর্থের ত্ৰমতে পুতৰ ভবিতে তেওৱাত প্ৰবোচন আছে। বেমন প্ৰিবীর অভ সব ছেশে ভেষ্টি ভারতবর্ষে আৰু আমরা কর্ম-ব্যস্ত। অনুবন্ধের কঠেও চিতার ভাতি প্রশীভিত। বেষদ অন্য দেশে তেমনি ভারতবর্ষেও আহরা অনেকে বলছি স্থাবর क्टिन्द (क्ट्र जाबाद्वत हः देव किन अल्लाह । अ इः देव দিনের একটা প্রধান কারণ বাবের মুখে আর কি পরনে কাপক चारक किया (म (बीक (मध्याद प्रवी) (मारकद श्राह्म व व क না, সেই অরবস্ততীনের মল আৰু আর কাকেও নিক্তির বাকতে विष्क्र मा। ভाष्ट्रत पानि (बड़ीनात (ठड़ी मा करत डैनात মেই। এই চেপ্ৰায় পৰ্যাত্ম কৰের পৰিবীর সমান্ধ ও বনভন্ত (कार नकार । कारकारक नका गडिय (वस्मा । किस जा-वरश्चत माविरे कि अरमत हत्य मावि १ (न मावि यथम बिहैरप ভাষের অভবাদ্যা তথম জিলাসা করবে না তভঃ কিমৃ ? বেমন चाक्रक्त ज्ञाजक्रामता ७९ मंत्रीत्वत नावि (महामरक पूर्व সুৰের অবস্থা মনে করেন না, সভ্যভার যে সৰ অপরীরী স্টির चानक ना दल जायद कीरम छेटकहीन ७ चर्न बान हर. ভার দাবিও আভকের অনুবল্লের কালালের। পর্ত করবে। সভ্যভার যে সব স্কট্ট সাংসারিক কান্ধে লাগে না, কিছ ৰাছবের বা অবুলা সম্পদ, ভার দাবি বলি ভারা না করতে म्पारं करन अहे हित्रविकालका जानाव विकेत हार । हैकि-মৰো ভাষেত্ৰ অৱৰম্ভ ভোগাবাৰ বালভাৰ সভাভাৰ অইভভাত-খলি বেৰ আৰৱা না ভাঙি। ৰাছবের নাহিভা সেই অমুখwitten 40\$ 1"

এই ব্যাব্যান রুগোণবাের হইরাহে। অভ্যর্থনা-সমিভির সভাপতি প্রীপ্রবাংভকুমার দাশ এই সভাই অভ ভাষার বলিবা-হেন। ভারতবর্ষের সজ্পতি রুদ্ধির ক্ষম্য বাংলা সাহিত্য বাহা করিবাহে এবং বাহা করিতে পারে সেই আদর্শের ক্ষমাই তিমি বলিরাহেন। শিশু-সাহিত্য শাবার সভাপতি হিলেন প্রস্থার-চক্র সরকার। তিমি এভংসম্পর্কে লোক-সাহিত্য, গাবা, গল, রূপক্ষা ও ক্ষিভার উল্লেখ করেম। শিলাচার্য্য অবনীক্ষমাণের অবদান শর্মীর। বোগেক্ষমাণ সরকার ও প্রকৃষার রাম আধুনিক রুগের শিশু-সাহিত্যের শ্রষ্টা। আক বাহারা প্রোচ্ছে পৌহিরাহেন পৌর-পৌত্রীর সৌভাগ্যে উাছাবের হিংলা হয়।

সুৰীৱবাৰু একট বিষয়ে আমানের সাববাদ করিয়াছেন:
"বিদ বিদ সাহিত্যের পরিধি অনেক বিছত হবে পড়তে।
আঅকের বিদে কেবলমাত বইবের পাভার ববাই শিত-

সাহিত্য সীমাৰত হয়ে মেই। বেভার ও সিমেমার ভিতর দিয়ে নানা দেশে এক অভিনৰ নিত-সাহিত্যের বারা স্ট্র হচ্ছে। এই মন্থুন বরপের সাহিত্য—বিদ্ ভাদের সাহিত্য আব্যা দেওরা চলে—বুবই অভ্তভাবে সরল নিতচিত্তের উপর প্রভাব বিভার করতে চেঙা করছে। এই প্রভাবের ভিতর নিতিদিপের চিতকে বিভান্ত করবার বেষন অনেক পথ আছে—তেরনি ভালো হিকে নিয়ে বাবারও বত উপার আছে।"

সংখ্যলনের এই অবিবেশন সার্থক হইরাছে বধন দেখি বে নিধিল-ভারত সাঠিত্য শাধার সভাপতি বিধ্যাত হিন্দী সাঠিতিকে জীকাভারিপ্রসাদ বিবেদী বলিতেকেন :

"ৰভ দিন আৰকা বিভিন্ন প্ৰাদেশিক ভাষাগুলিক সংল প্ৰিচিভ না হছিহ ভভ দিন প্ৰদেশে প্ৰদেশে সভ্যিকাৰ প্ৰীভি-বন্ধন দৃচ হভে পাৰে না।"

মধ্যমুগে ভাহা সভব হইরাহিল। আজ বাভায়াভের এভ সুবিধা সভেও ভাহা হইভেছে না কেন ভাহাই প্রশ্ন। অভীভের কথা বলিভে গিয়া ভিনি বলিভেছেন:

"ৰাংদা ভাষা, বৈধিলী, অধবুলি সাহিত্যের একসদে আলোচনা করলে বৈক্ষব সাহিত্যের আলোচনা পূর্ণাদ হতে পারে। আসামের অভিয়ানাটের পরস্পরায় এবং মেপালে প্রাপ্ত নাট্যসাহিত্য পরস্পরায় হৈথিলী ভাষার প্রভাব দেখান হংছে। মণিপুর, বাংলা এবং উভিয়াতে গৌভীর বৈক্ষব মভের প্রভাব বিভার হয়েছিল এবং রুমাবন থেকে ভার প্রভাব হিন্দী সাহিত্যে কিছু কিছু এসে পড়েছিল। গৌভীর বৈক্ষব আচার্যাদের নিরাভগ্রহত্তিন পরে অবোধ্যার অনেক রামাওত সম্প্রভাবক প্রভাবিত করেছে। ছন্টিগের বৈক্ষব সাহিত্য বে আমাবের উভাব-ভারতের সাহিত্যগুলিকে মব-প্রেরণা বিবেছিল সে বিষয় সক্ষেত্রই জানা আছে।"

### পশ্চিম বাংলার রেশনের দোকান

এই বিষয়ে, নিছ চাল ও আতপ চাল সরবরাহের ব্যাপারে কচকচির শেষ হইল না। কেন এক কোকানে, বিশেষতঃ, গবর্ষেন্টের কোকানে, আতপ চাল পাওরা বায়, অত কোকানে পাওরা বায় না, ভার রহস্ত বুবা শক্ত। সেই কবাই "আনক বাজার প্রিকা"র ২৬শে পেয়ি সংব্যার আলোচিত হইরাছে। এই বিরক্তিকর ব্যাপারের অবসান কবে হইবে ?

"কলিতাতার বাদ্য রেশন সর্বরাহে কিরণ অব্যবস্থা হর সম্রতি তাহার একট ঘটনা আমাদের পোচরে আসিরাছে। উত্তর কলিতাতার আমহার্ট ব্লীট এলাকার বেশনএহীতাদের অনেককে কেবল আতপ-চাউলই দেওবা হইতেছে; আর বড়তনা এলাকার রেশনএহীতাদের মধ্যে বাহাদের আতপ-চাউল একাত প্রবোধন তাহারা তাহা চাহিরাও পাইতেছে না। পাশাপাশি অবহিত এই হুই এলাকার বে এইরণ সর্বরাহ-

বিজ্ঞান্ত বাইন্ডেলে, ভাহা উপরওয়ালাদিগের অবহেলা ও মনো-বাগের অভাব প্রমাণ করে। উভর এলাভার লোভান্ত এই-রণ ভাবে বিব্রন্ত ও বিরক্ত না করিয়া কর্তৃপক্ষ যদি আমহান্ত বিনি আলার আভণ চাউলের কিছু অংশ বছতলা এলাভার এবং বছতলা এলাভার সিদ্ধ চাউলের কিছু অংশ আমহান্ত বিন্তি এলাভার পাঠাইতেম, ভাহা হইলেই তাঁহাদের কর্ত্তব্য পালন করা হইত। কোন রেশন দোলামে বাসিক কি পরিমাণ আভণ চাউলের প্রয়েজন হয় ভাহার একটা হিলাব আছে। রেশন গোকামের ম্যানেজারেরা যথন প্রয়োজনীয় বছর জন্য কর্ম পাঠাম ভখন ভাহাতে নিক্ষর 'ইহার' উল্লেখ থাকে। উপরওয়ালারা ভলম্বারী কার্য্য করেন না কেন—এই প্রয়েশ্ব অবাবিদ্ধির প্রয়োজন। আভপ চাউলই যাহাদের এক্ষাত্র ব্যবহার্য ভালাদের আভপ চাউল সরবরাহ না করার অর্থ আলার ক্ষাত্র বঞ্জির অবা।"

এই বিষয়ে খাদ্য বস্ত্ৰী প্ৰীপ্ৰকৃষ্ণচক্ৰ সেনের দায়িত্ব স্থাপি । ভোটমুছে ব্যন্ত থাকিলেও তাঁর ত একটা আশিস আছে; তাঁরা কি করিতেছেন ? এতংসম্পর্কে সহবোদী "বুগবাদী" গত ২৭শে পৌষ সংখ্যায় অপব্যয়ের সংবাদের উপর যে মন্তব্য করিয়া-ছেন, তাঁর প্রতি খাত্যমন্ত্রীর দৃষ্টি আকর্ষণ করি:

#### "ৱেশন কাৰ্ড বদলাইবার নিরম

(ইটসম্যান, হিন্দুখান ঠাঙার্ড, অমুভ বাজার প্রিকা প্রভৃতিতে বেশন কার্ডের ল্লিপ আঁটবার বিজ্ঞাপন বুব বছ করিবা দেওবা চইতেছে। ইতাতে বেশ করেক তাভার টাভা वंतरवर कामकश्वमाद गरकाई हाना हरेशाय । रवनम कार्छव व्यक्षां यथानवृद्ध कृतांत्र अवर यथातीक बावनी कावनांत्र रहणेन প্লিপ আঁটবা দেৱ। কৰে কৰন কোৰাৰ কি ভাবে ভাতাৰা श्रिम बाहित काला २८ है।का देकि महत्र देवनिक २०० है।का अब अब्दे जानात बंदर पविद्या विद्यानम (पश्चात काम श्राक्षम करत मा । तानम लाकारम अक्डी त्यांडेन डीकारेवा बिलारे बरबंडे, मा बिलाक कथा मारे। जानन, जान, मकन जब तक्य दिन्म कार्छत बालिकता निर्कटमत श्रेतक श्रिश कांक्रीहेबा नहेत्व। (व क्रीकाक्षी अहे चादव वंददात चानक-धनाटक दमध्या दय (मध्ये काव है।का ? क्य दमध्या दय ? रेलक्यन विकात अवर बाद गाँउहै। नदकादी मुन्गास्त्र পাটোরারী বৃদ্ধির ভাসকর বিবৃতি ভাপিবার অভই কি এই पूर्वश्र कावण ?"

## ত্রিপুরা রাজ্যে গমনাগমনের স্থবিধা

আগরতলা-পাশরকান্দি পথে জিপবোরে (জভ কোন বানে নর) অভতর পথ হিসাবে ডাক চলাচল পুরু ক্ইরাছে ১লা কাছবারী ক্টতে। এক সরকারী বিজ্ঞপ্তিতে ইহা বাহির ক্ই-রাছে। পথট এবসও,তথু Zeepable, পরের ছই বাণা আর্থাং formation cutting ও metalling এবনও দেৱি আছে।
ভাষত ব্যবহেদের পর বিপ্রার সদে ভারতের বোগাবোগ
বিভিন্ন হটবা গিরাছিল। আগরতলা হটতে পাবরকান্দির
দ্বত ১৪৬ বাইল। পাবরকান্দি হটতে ভ্রিবগঞ্জ, ব্যরপ্র
দিরা আগাব লিকের সদে বোগাবোগ অভঃপর সহজ্পাব্য
হটবে।

নাৰকৰ বিপুৰার অভ্যন্ত বিভাগ—প্রবাদ নগর (প্রান্ত ?)
নাৰকৰ হুইভেই বিভাগের নাম। কিছু এইট বেদ পাওববর্জিভ দেশ। চট্টগ্রাম ও নোরাবালী কেলা ইহাকে দক্ষিণপ্রান্তে বেষ্ট্রন করিয়া আছে। আগরতলা হুইভে নাবক্রম
বাইবার হুইট পথ। (১) আগরতলা হুইভে বাসবোগে বিশালগড় (পথ একপ্রকার); ভগা হুইভে বাসবোগে উল্লপুর;
উদরপুর হুইভে নাবক্রম (হুঁটো পথ, অভি ক্টে বিপ চলে)।
(২) ভিতর বিরা পূর্ববেলের ই-বি-বেলওরের আগাট্টরা অংগন
হুইভে চট্টগ্রানের পথে গ্র ট্রেশম; ভগা হুইভে নোকা যোগে
২২ মাইল সাবক্রম।

কলকলিয়াবাট হইতে বর্ত্ত্রনপর পর্যন্ত একট রেলওরে লাইনের পরিক্রমা কেন্দ্রীর সরকারে দাখিল করা হইরাছে। এই সব সুধ্বর। আশা করি, বিপুরা রাজ্যের অকুরম্ভ প্রাকৃতিক ভাঙার এবন মুক্ত হইবে।

বাংলা ভাষা ও পাকিস্থানের শিক্ষানীতি

বাংলা ভাষা সম্বন্ধে পাকিছানের কেন্দ্রীর প্রবৃত্ত বৈ বে একটা মুর্বোধ্য দীভি আছে ভাষা পাকিছানের নাগরিকবর্গের পর্যন্ত বিভঙার বিষর হুইরাছে। এভংলপর্কে ঢাকার "আজাদ" পরিকার প্রভ ২৪শে কার্ত্তিক সংখ্যার মুক্তল আকাছ নামে একজন লেখক বাহা বলিরাছেন ভাষা প্রশিবানবাাগ। প্রবৃত্তের শিরোনানা "শিকা বিভাগের কীর্ত্তি।" আমরা লেখকজে জানি না। কিছ "আজাদ" বখন মু'কলর শিরোনানা দিরা প্রায় ভিন কলবব্যাপী প্রবৃদ্ধ ছাপাইরাছেন, ভখন বনে করি ভার একটা মূল্য আছে।

লেখক পূর্ববদের শিকা বিভাবের অবিকর্তা ভটর কুদরং-ই খোদার প্রতি হুর্ব্যবহার সহতে বেভাবে ক্ষোভ প্রকাশ করিবা-ত্বেল ভাষা নিয়ে উদ্ভভ করিভেছি:

"ওপবের বিকে ভাকালে বেগতে পাই—ভাক্তার (?)
ক্ষরতে ব্লার যত লোক বিনি একাবারে তি-এস্সি, পিভার-এস্, কলকাতা ইউনিভার্নিটর প্রথম বিভাগে প্রথম, বছ
এর-প্রণেতা—ভার যত লোকের হান পূর্ব্ব পাকিছানে হ'ল
না। নানা বিপাকে পড়ে তাঁকে একেবারে হিউকে পড়তে
হ'ল ক্ষাচীতে। বেশে কিরে আসবার চেপ্তাও বে ভিনি ক্রেম
নি ভালর। কিছ তাঁর অপ্যাব অনেক।

গৰ চাইতে বড় অপয়াৰ বুৰি এই বে, শিকা বিভাগের কবৈড় গিলেটবালী ক্ষাচায়ীড়ে ভিনি ভাঁর বিভাগে পূর্ববহের অসংব্য সুৰক্ষ ও বেশীকাল চাক্ত্ৰী ক্রেছেন এখন সৰ কর্ম-চাৰীকে ভিলিয়ে সিমিয়ত্ব সাভিস দিকে ত্রাক্ষী চন নি।"

এবানে সরণ করিতে হইবে বে পূর্ববেদর শিকাষত্রী বোলবী আবহুল হামিদ একক্ষম প্রীরট্ডবাসী। এবং পাতি-হানের প্রতিষ্ঠা হইলে প্রীরট্ডবাসী বহিত্ব প্রতৃতি উচ্চ পদ ও সরকারী চাকুরীতে অনেক সুবিধা পাইবেম এই প্রলোভনেই অনেকে গণভোটের সমর পাকিছানের পক্ষে ভোট বেম। প্রীরটের ব্যলবামসমাজ শিকার বেশ অপ্রসর এবং বংশমর্ব্যাদার তাবের হাম প্রার সুউচ্চে। তাবের অনেকেই ভারতরাট্রে উচ্চপদ অধিকার করে আহেম। এবম ভার ক্ষর তার। অভ ক্যোবাসীর হিংসার পাত্র।

হুক্ল আকাস সাহেব ব্যল-বিজ্ঞণ ও ব্যক্তিগত আলো-চনা করিয়া ব্যাপারট সমুক্রিয়া দিবাছেন। কিন্তু ভাহারও প্রয়োজন আছে; অনেকের গুণাগুণের কথা জানা বার। ব্ল-নীতি সহকে অঞ্চারণ মাসের "ইবরোজ" বাহা ব্রনিয়াছেন ভাহা জানিয়া হাথা ভাল:

"বংসর চারেক আগে পূর্ব্ব বাংলার শিকা সংস্কার ক্রিটি বলে বে ক্রিটি গটিত হব, তারা এতদিনে তাঁলের বিভারিত বিশোট দাবিল করেছেন। কিন্ত শিকাবিদ্দের ক্রিট বে বিষয় ছেলেবের বাড়ে চাপাতে সাহস করেন নি আমাদের শিকানন্ত্রী সেটাকে একেবারে বাব্যভার্তক করে তুলেছেন। প্রাইমারী শিকার মধ্যে আমরা আরবী তথা উর্চ্ হরকের প্রচলনের চেষ্টা ও ভার সাকাই গাওয়ার ক্র্বাই বলছি।

ন্ত্ৰিছের গনী বিজ্ঞানিত্যের সিংহাসনের মন্ত সম্বন্ত জানের আবার কিনা জানি না, তবে বিশেষজ্ঞারের মৃত্যমন্তকে উপেকা করার মন্ত কোন বুজিসদৃত কারণ আমরা বুঁজে পাই নি। শিশুর মন্তিকও শিশুই, তার বাড়ে চাপালেই সে মুনিরার সব জান বহুন করতে পারবে একথা আমরা বিখাস করি না। নত্রী সাহেব বিশেষজ্ঞানের মৃত্যমন্ত উপেকা করে ভানী নাগরিকদের উন্তির পথ উল্কে করেছেন বলে সন্তে পারহি না।

ভৰু পূৰ্ব্ব পাকিছানেই নয় কেন্দ্ৰীয় পাকিছানের নথীয় গৰীতেও বে আলকেনি নেই এতদিনে আনৱা তা একটু একটু বুৰতে পারছি। বাংলার বা পূৰ্ব্ব বাংলার কোন কালে নাকি টাকার আট বন চাউল বিক্রী হয়েছে। অধনকার পাসনকর্তাকে কোন কবাবিহিছি করতে হয়েছিল কিনা আনি না, তবে তিনি ধুনীতে গনগন হয়েছিলেন। এবারকার ব্যাপারে আনাকের কেন্দ্রীয় বাণিত্য নথী বুলী হয়েছেন কিনা আনি না, তবে কবাবিহিছ করেছেন। এ ক্যাবিহিছে কেন্ট্র সভাই হয় নি। পাক ভারতের বাক্-মুভেই বারা আহাক বাটিছর লোহাই বিতে পারেন, নারণ বুলে তাঁলা কি ক্রবেন লে শুনু অনুনানই করা বেতে পারে—লেখা বার না।

পাকিছান ইনলামী রাই হবে এ কথার বহি ইনলাবের অন্থবর্তীরা অতি বিশেষ উংলাহ সহকারে ইনলামী কাছলা কাল্য প্রবর্তন করতে চাম ভাতে তাঁলের কোষ কেয়ে বার না। কিছ কথা হ'ল কোন্টা ইনলামিক আর কোন্টা ইনলামিক আর কোন্টা ইনলামিক বার একটা বিবিশ্বহা হওয়া উচিত। ফটো বছারের অভ বিপ্লিন্ড অভের পক্ষে নর, বোড বৌড করাচীতে বিবিশ্বত ঢাকাতে মর, বলভাল বছদের জন্য ইনলামিক রাজ্যের রাজ্যামী ঢাকা, করাচী, লাহোরে বিবিশ্বত আন্য আন্য হামে নর, এখনি মিয়ম হতে পারে না।

ভবে মধ্যমুখীর প্রভূ-মনভাইকর ধর্মব্যাখ্যাই বারা সভ্যিকার ব্যাখ্যা বলে চালাভে চাম উাদের বিখাসকে এভটুকুও অমর্ব্যাদা না করেও বলা চলে যে সেটা সঞ্চিকও মর সভ্যও মর এবং বিংশ শভাকীভে সে একেবারেই অচল ও মর্ব্যাদাহীন।

সংবাদে প্রকাশ, পূর্ব্ব বাংলার সেক্টোরিরেট ভবনকে সংরক্তিভ দ্বান বলে বোষণা করা হরেছে। এবামকার বত কর্মচারীকে বাক্ষরিভ কটোসহ এবম এতে চুকতে হছে। সেক্টোরিরেট ভবনকে সংরক্তিভ দ্বান বোষণা করার কি বৌজকতা আছে কামি মা। ভবে এতে সবর্বে তেঁর Redtapism-এর ১৮ মালের বংসর বদি বাভাবিক বংসরে অর্বাং ১২ মালের বংসরে পরিণত হর তা হলেই আমরা বুদী হব। সে বাই হোক, এর মধ্যে বে ইসলামিক কারণা কান্থ্যের ক্যা উঠেছি। প্রকাশ, কভিণর কর্মচারী কটো ভোলা অন্ইসলামিক বলে এতে আগতি ভামিরেছেন।

ষধ্যে হুটা নৃত্ৰ ইউনিভাৰ্গিট (রাজসাহীতে ও চইপ্রায়ে) ধোলার কথা শোনা যাচ্ছিল। এবন শোনা বাচ্ছে নানা জারণে সে প্রভাব ধামা চাণা পড়ে সেছে। শিক্ষার এবনি অবস্থাতে আমাদের উচ্চশিক্ষার অপ্রগতি ব্যাহত হবার সভাবনাই স্থাপ্ত।"

## বাংলার থাদি গুরুকুল

নিখিল-ভারত চন্ত্রকা সংলৱ বর্তনান অব্যক্ষ প্রীনীরেন্ত্রনাথ
বক্ষলার এই প্রতিঠান সক্ষে নিয়নিবিক বিরতি দিবাছেন।
বাংলা "হরিক্ষন" পঞ্জিলার ১০ই পৌর সংব্যার ভাহা বাহির
হইরাছে। গাডীকীর গঠনবৃত্তক ভার্যাবলী নানা গরীকার
কল; যুত্য পর্যন্ত তিনি আহা করিরা গিরাছিলেন এবং ভারতবর্ষের অবহা বিবেচনা করিরা তিনি বাহা করিতে চেঙা করিরা
ছিলেন বিকেন ব্যাখ্যাকারপথত ভাহার বুক্তি বীকার করিবাছেন। সক্ষতি বার্ষিন সাংবাদিক ভিটর সিহান ভাহার
"Lead kindly light"—"হিন্য ক্যোভি আনাকের পরিচালনা ক্রক্ত"—এই বাবের পুর্কে ভাহাই করিবাছেন।
রিচার্ড প্রেপ্রের প্রতির বাহিরর বাবের উল্লেখ নাই-বা করিলার।

বীরেমবাবু বলিভেছেন বে, "বর্ডনাম শিকার ব্যর্বভ বাংলার ক্ষসাধারণের অভ্যাত ময়।" আমরা বলিভে চাই দে সারা ভারভবর্ষের, তথা সারা ছ্লিয়ার ক্ষসাধারণ ভার্ ব্রিয়াছে।

"এই বক্ষ স্বাদ সঠনের জন্য বর্ডবান শিকা-প্রভিদ্ধ আমূল পরিবর্ডন আবঞ্চ । কারণ রাই সঠনের বুলই শিকা! বর্ডবানের ইংরেজ-প্রবর্তিত কেতাবী শিকাপ্রভি শিকিছ সম্প্রদারের বৌলিক বৃদ্ধি ও শক্তি বিকাশের প্রধান অভরার : ইংরেজের শাসন চালাইবার পক্ষে এই পছ্তি টক ছিল । তথ্য শিক্ষিত সম্প্রদারের ছারা বৃদ্ধিপূর্বক ইংরেজেদ্ধ শাসন ও শোবণ বল্প চালানই লক্ষ্য ছিল । কিছু যাবীন ভারতের পক্ষে এই শিকার মোটেই আবক্তকতা নাই । আজ্বাই সঠনের জন্য এবন বৃদ্ধিনান ও বৈজ্ঞানিক মন্ত্র দরকার যাহার! শারীরপ্রবের ছারা উৎপাদনের সক্ষে সঙ্গের বাত্রের বৈক্ষর বাত্রাইকে পারিবে।

এই কারণেই গানীজী শিক্ষার সহিত শানীরপ্রবের গুরুত্ব দিতেন বাহাতে প্রত্যেক শিক্ষিত বুবক কর্মাই, সাবলত্বী ও কুশলী নাগরিক হইতে পারে।

এই উদ্দেশ্যে নিধিল-ভারত চরকা সব্দ প্রায় ছুই বংসর হইল নেধিনীপুর জেলার বরিলা গ্রামে খাদি অক্তুক নামে একটি বিদ্যালর ছাপন করিবাছেন। গত ছুই বংসরের কাজ খুবই সজোবজনক ও উৎসাহপ্রদ। দেখা বার ছেলেরা আক্রিক জানে প্রভেক বিষয়ে অব্যহনের সকে সকে শারীরপ্রমের হারা নিজেকের বাবতীর খরচের শতকরা ৪৮ ভাগ খাবলছী হইরাছে।"

বাংলা "হরিজন" পত্রিকার পরিচালকর্মের নিক্ট একটা কথা নিবেদন করিতে চাই। বাংলা কাগতে ইংরেজী ভারিদ কেন থাকিবে তাহা বুবি না। আর যদিই ভাহা রাধিতে হয় তবে বাংলা ভারিধও ভার সলে দিতে পারেন।

### আন্তর্জাতিক প্রেস ইনষ্টিটিউট

২৪ট দেশে নবগঠিত আত্তপাতিক প্রেল ইন্টিটেটের (সাংবাদিক প্রতিষ্ঠানের) কর্মকেন্দ্র বিস্থৃত হইরাছে বলিছা উহার এক্জিকিউটিত বোর্ডের চেরারব্যান লেটার বারকেল বোষণা করিরাছেন। ঐ ২৪ট দেশের প্রতি দেশে একট করিরা আতীর কমিট গঠিত হইরাছে—ঐ কমিটগুলি কেন্দ্রীর ক্রেরের সহিত বোগাবোগ রক্ষা করিরা বাকে। সুইজার-ল্যাতের ভূরিব শহরে এই মগ্রর অবস্থিত।

বিষেয় সর্ব্বাহ্ণ শাস্ত্রের স্থাধীনভাকে প্রসায়িত করিবার কার্য্য এই প্রতিষ্ঠান করিবে। সংবাদের আহান-প্রদান ব্যবহার উন্নতি করিবা বিভিন্ন জাতির মধ্যে সম্প্রীতি স্থাতি করাও ইহার অন্যতম লক্ষ্য। রক্ষেকার ও কোর্ত কাউত্বেশন নামক মার্কিন ক্ষহিতকর প্রতিষ্ঠামন্ত্রের অর্ধ- সাহাব্যে ইহার কার্য্য চলিয়া থাকে। ভিন বংসরের কচ উক্ত অর্থ সাহাব্য দেওয়া হইরাছে।

সংবাদপত্তের হাবীনতা আদ প্রতি দেশে বিপন্ন। কোন দেশের রাষ্ট্র নোভাত্মকি ভাহা নির্বিত করে, কেই করে নানা কৌশলে। বেশীর ভাগ দেশে ব্যক্তিগত অর্থ বা প্রতিষ্ঠানের সম্পিত ভাঙার নানা উপারে ভাহা করিবা বাকে। ভারতবাইও ভাহাই চলিভেকে।

#### দার্শনিক সম্মেলন

দিলী নগরীতে সম্প্রতি এই অমুঠান হইনা সিরাছে।
এক্সপ সন্মেলনের বে ইভিহাস বেবিলান ভাহা পাশ্চান্ত্য
লেশের ইভিহাস। লেবক নৈনিমারপ্যের কবা ভনেন নাই;
বৌদসন্দের কবা ভনেন নাই বা বলেন নাই। ইসলামের
দার্শনিক সন্মেলনও অমুক্ত। চীন দেশ ভ "বহ দুর"।

चबुक धरे रेकिशास्त्रत बृत्रा चारह ।

"দেশ-বিদেশের দার্শনিকদের এইজাবে সমিলিভ হরে আলোচনার প্রথম আরোজন করেছিলেন বিধ্যাভ এীক দার্শনিক প্রেটো। রাইসজের শিক্ষা-বিজ্ঞান-সংকৃতি প্রতিভাগের আহুত এই সম্মেলনে বিভিন্ন রাষ্ট্রের পক্ষ থেকে দার্শনিক প্রভিনিধি প্রেরিভ হয়েছিলেন। এই জাতীর দার্শনিক সম্মেলনের আহোজন প্রেটোর পরবর্তীকালে আর হয় নি। বর্তমানকালে আর্জাভিক ভাববারার আদান-প্রদানের একট বোগস্ক হ'ল রাইসজ্বের এই প্রভিঠানট।"

বিশ্বশান্তি ও মৈত্রীর "অংশীদার"

পুৰিবীতে হুছ নিবারণ এবং শান্তি ও বৈত্ৰী স্থাপনের जावन नहेवा देखेनाहेट्डेफ स्थानन जब्बक्य कविवाद । देखे এন চাৰ্টাৱের মুখবদ্ধে লেখা আছে বে. ভবিষ্যৎ বংশীরগণকে बुद्धत ध्रारमणीला हरेएछ तका कता छेहात खनाम छेएकछ। धरे चामर्न श्वितीत चमनावात्रात्र मर्या वहतून कतिए हरेल क्कन-कक्षेत्रद रेष्डे-अम-श्रद कार्याकमाण সাকল্যের পরিচর জানানো দরকার। বিলিয়া-যিশিরা বাস্থবের প্রাথমিক সমভাসমূহ সমাধানের চেটা যভই সকলের মধ্যে দৃঢ়-बून हरेरन, बूक एकरे जनस्य हरेश छिन्नरः। अरेकन एकन বয়ল হইতে বিখ-আতৃত্বের আবর্ণ অভুসরণ একাভ আবর্ডক। প্রেসিডেণ্ট কুৰ্ভেণ্টের পড়ী এমতী এলিয়ানর ক্রুভেণ্ট এই विवयक्रेट विरम्य मरमार्थानं विवादम अवर द्राम स्विद्यात সহবোগিভার "পার্টবার্স: ইউনাইটেড নেশন্স এও ইউব" नात्व अकृष्ठे हवरकात वरे निविद्यार्थम । बाह्य निका, बाह्य প্রভতি সহতে ইউ-এন-ওর বিভিন্ন বিভাগের কার্যকলাপের পরিচর গরের মত করিবা বইটতে দেওবা হইবাবে। বিধে নুভৰ আহৰ্দ, বিশেষভঃ পাহস্পৱিক বৈত্ৰী ও সহবোগিভাৱ আবর্শ প্রচার করিতে হইলে ভরণ বরস হইতেই ভাতা করিতে इरेटन रेहारण विमण वाकिरण गारत ना। **अरे नरेवानि चळन-**দের উপবোদী হওয়ার দেবিক বিয়া বিশেষ কার্যাকরী হইবে। বুক কোম্পানী বইবানি প্রচারের ভার কইবাছেন। ছই টাকা নাম বুব কম করিয়া বরা হইয়াছে।

## ভারতের রাষ্ট্রপতি

বাৰু রাজেলপ্রসাদ মাজি আগামী হ' ভিম বাসের মধ্যে তাঁর উচ্চণদ হইতে অবসর প্রাপ্ত হইবার ইছো প্রকাশ করিবা-হেম। শরীর তাঁর ভাল বাইতেছে না। চির-রার রাজেল-প্রসাদ বে ভাবে এভদিন লোকদেবা করিবাহেম। ভাহা কেবল বনের জোরে। আজ এই বরনে যদি ভিমি বিপ্রায় করিতে তাম, ভবে আমরা ভাহাতে হংবিত হইব না।

সভাবতই তাঁহার ছলে জাহাকে মনোনীত করা হইবে তংগদৰে জননা-জনা আরত হইবা গিবাছে। দার্শনিক ব্যাখ্যাভা অব্যাপক সর্ব্বপন্ধী রাধাক্ষনের নাম এই প্রসদে উল্লেখ করা হইতেছে। তাঁর আন্তর্জাভিক খ্যাভি আছে। কিছ রাষ্ট্রপরিচাননার কৌশল সম্বদ্ধ আনাদের মন নিঃসন্দেহ ময়। রাজেপ্রপ্রদান বে ভাব ও কর্ম্মবারা অব্যাহত রাধিবার চেষ্ট্রা করিরাছেন তাহার সঙ্গে অব্যাপক রাধাক্ষণের সম্বদ্ধ অত্যন্ত ভাসা ভাসা; ভাহা ভাহার বৃদ্ধিরাহ্য, ভদম্ব্রাহ্ম বনিরা কোন প্রিচম পাই নাই।

অবহা দেখিবা বনে হর বিনি ভারতবাট্রের প্রধান নত্তী হইবেন রাট্রণভির ননোনরনে তাঁহার নত হইবে অপ্রগণ্য। এক জনের নাম বভাবতই মনে হর। তিনি মহারাট্রের ডক্টর মুকুলরাম করাকর। তাঁহার গুণ বর্ণনা করিবার প্রবোজন নমে করি মা। আর এক কথা। "সেকুলারড়"—বর্গনিরণেক্ষয়—প্রমাণ করিতে ছইলে কেবল হিন্দুবংশোদ্রব নর-নারীর মধ্যে এই পদ একচেটীরা করিবার কোন বৌক্তিকভা নাই। বুসলিন, প্রটান, লিখ, বৌদ, কৈম, নিরীখরবাদী বে কেহ এই পদের উপরুক্ত মনে হওরা উচিত। ডক্টর আহেদকরের নাম করা বাইতে পারে। আচার্থা বিনোষা ভাবেকে এই পদে প্রভিতিত দেখিতে পাইলে আমরা সুধী হইব। অবস্থা তাঁর মনোনরমে "পভিত" নেহেকের এই পদের ম্বিনাদা সহত্বে বে বিদ্বুটে ভাব আহে ভাহা প্রবান বাবা ছইবে।

### পতোদীর নবাব

গভ ২০শে পৌৰ ক্ৰিকেট-বীৰ পভৌগীৰ নৰাৰ ইক্তিকাৰ আলি পোলো বেলিবাৰ সমৰ হঠাং অন্বৱেষ ক্ৰিয়া বহু হওৱাৰ প্ৰাৰ্থ্যাপ কৰেন। বিশ্বেষ ক্ৰিকেট-ইভিহানে ভিনি সুপৰিচিত। উইলিংডন হাসপাভালে ভিনি মৃত্যুৰ্বে পভিত হন। ১৯১০ সালের ১৭ই বার্জ ভাহার ক্ষম হয় এবং লাহোর এচিনন কলেকে ভিনি বাল্যকালে অব্যৱন ক্ষেন। ইংলভের প্রক্রেষ্টার ভাতীর ভারতীর ক্রিকেট বেলোরাড হিলাবে বেক্সিয়ার গৌভাগ্য ভিনি লাভ করেন। প্রিল ক্লীপ নিংক্ষীর ল্যায় টেই বেলার বোগদান করিরাই ভিনি পভাবিক হাণ ক্ষিত্রে

# পৌরাণিক গাথা

# ঞীগিরীক্রশেধর বস্থ

পুরাকালে ভারতবর্ষে বে সকল বাজা বাজত করিয়াছিলেন काशामत नाम. की जिंकनाथ अवर वर्भ-व्यास काननिर्दर्भ সহ প্রাণে ধৃত হট্যাছে। পরাণই প্রাচীনকালের 'হিটুরি' বা ইতব্ত। পুৰাণকাৰ তাঁহাৰ ইতবৃতীয় বিবৰণে পুৰিবী करव ७ किक्राल सृष्टि हरेन ववः भागत्वत छे॰लेखि . প্রভৃতি বিষয়েরও আলোচনা করিয়াছেন; এ সকল তিনি জাঁহার জ্ঞান ও বিখাদ অমুধায়ী লিখিয়াছেন। আশ্চমের কথা এই যে, আধুনিক বিজ্ঞানীদের মতের সহিত তাঁহার কথা অনেকাংশে মেলে। পুরাণকার কি করিয়া ভগতের লয় इहेर्द ७ रमहे मरक किङ्गाल मकन हेल्दुरखद व्यवमान হইবে তাহারও বিষয়ণ দিয়াছেন। পুরাণমতে স্ঞা, স্থিতি এবং লয়ের পুন: পুন: আহর্ডন ঘটে। পুরাণে আতর্ঞন থাকিলেও পৌরাণিক কহিনী অবিশাস্ত নহে। পুরাণের প্রামাণ্য অক্তর আলোচনা করিয়াছি। পুরাণে যে সকল বাজার নাম আছে ও বাঁছাদের কীতি বণিত হইয়াছে তাঁহাবা বান্তবিকই এক দিন জীবিত ছিলেন। বিশিষ্ট বাজাণের চবিত্র-কাহিনী কৌতহলোদীপক छ नर्वश श्रावत्यां श्रा

পুরাণ আদিতে পঞ্চ কক্ষণ যুক্ত ছিল। সৃষ্টি, লয়, বংশ व्यर्थाए विनिष्ठे वाश्वित्र: गत वरमविवत्रण, छाहारमत्र क्रिया-कनाभ এবং মম্বন্ধর বা কালনির্দেশ এই পাচটি বিষয় পুরাবের পঞ্চ অঞ্চ বলিয়া পরিগণিত হয়। কালক্রমে পুরাবে অক্সান্ত প্রবন্ধ স্থানলাভ করিয়াছে। পুরাণ একাধিক। পুরাণার্থবিশারদ রুফ্টেপায়ন বেদব্যাস পুরাণগুলির সার-সংকলন করিয়া পুরাণসংছিতা প্রণয়ন করেন এবং নানা আখ্যান, উপাধ্যান, প্রাদ্ধ-কল্লাদির বিবরণ ও গাথা ভাহার সহিত বোগ করিয়া দেন। ইহাতে পুরাণ অধিক লোকপ্রিয় হয় এবং ভাহার ইতবুত্তীর মূল্যও বৃদ্ধি পায়। নিঞ্ मिथिया य मकन विवदन मिथ्या यात्र छाहा आधान, भरवद মুখে শোনা কাহিনী উপাধ্যান। প্রান্ধ প্রভৃতির বিবরণের আর এক নাম কল্পজি। মৃত মহাত্মাগণের রচিত প্লোক বা পীত গাৰা। গাৰাগুলি লোকের মুখে মুখে প্রচলিত ছিল। কতক গাথা উপদেশমূলক; কতক গাথায় বিখ্যাত রাজাদের গুণাবলী এবং কীর্তি বর্ণিত হইয়াছে; কোনও রাজার কোন বিশেষ দোষ থাকিলে ভাহাও কথন কথন পাথায় ঘোষিত হইয়াছে·। ছই-একটি ব্যতীত পাথাঞ্চনির বচরিভার কোন সন্ধান মিলে না। ছড়া ও লোকসভীত

বচকের মত গাণাকার আমাদের অজ্ঞাত রহিয়া গিয়াছেন।

যুধিষ্টিবের পরবর্তী কোন অর্বাচীন পুরাণকারের রচিত এক বিখাতি গাধা আছে। গাধার ভাব ও রচনাভন্নী অভি স্থাৰ। মহায়-জীবন ও বাজা এখৰ্ষাদির নখবতা এট শ্লোকগুলিতে গীত হইয়াছে। পাধাটি উদ্ধত কবিলাম: ज्ञर ज्ञा देव: नुक्रमधनीदेवक्रवाक्षिर्वर्गनामाममान । रेक्षेक रहा विमानाविक्षियीयाः क्रकास कारमन क्यावानयाः । भुष: नम्हान श्राहाद लाकामनग्रह्ला (वाश्विविवादिहक:। ज कानवाचाचिरुटा विमश्रे: किश्वर वया नावानिष्ट्रनवरश्री । খঃ কাভ বীৰ্বো বৃভূত্বে সম্ভান শ্বীপান সমাক্ষয় হভারিচকঃ। क्षाध्यमाम प्रक्रिशियामः म अव मश्क्य विक्याद्यः । দশাননাবিক্তিরাখবানাবৈশ্বহুত্তাসিত দিও মুধানাম। ভন্মাপি যাভং ৰ কৰং কৰেৰ জড়সপাতেৰ বিগল্পন্ত ৷ क्यामदीद्वयवाग यदि मादाज्यामा छुवि ठळ्वक्री। শ্ৰুত্বাপি ভং কোহপি করোভি সাধুর্মমন্ত্রন্ত্রপ মন্দ্রচেভাঃ । क्षत्रवाकाः नन्तः कक्रद्रा प्रमामत्मा बावरमञ्चली ह । বুৰিটিরাভাচ্চ বভুবুরেভে সভাং ন বিখা। ক ছু ভে ন বিখ:। विक् । ह। २ ह। १०-१ ह

লোকগুলির ভাবার্থ, বথা পূর্বে যে সকল মহাপুরুষ উৰ্দ্ধবাহু হইয়া অনেক বৰ্ষ তপস্থা করিয়াছেন এবং যে সকল শক্তিমান ব্যক্তি বিবিধ যক্ত কবিয়াছেন কাল ठौहारात्र कथा भाज व्यवनिष्ठे वाशिया नव स्मय कवियादह । বে পুথু ছবি দলন কবিয়া অব্যাহত পরাক্রমে সমস্ত লোকে বিচরণ করিতেন তিনি কালবায়ুবারা আহত হইয়া অগ্নিডে নিকিপ্ত শিম্ল তুলার মত বিনষ্ট হইছাছেন। কাওবীৰ্য বিপুদল নিহত কবিয়া তুই নদীব মধাবভী সমস্ত প্রদেশ আয়ত্তে আনিয়া রাজত্ব করিয়াছিলেন কিন্তু এখন কথা-প্রদক্ষে তাঁর নাম উঠিলে লোকে দন্দেহ প্রকাশ করে ডিনি वाखिविक हिल्लन किना। म्यानन, व्यविक्षिष्ठ ও दाचवरम्ब ঐশর্বে দিকসকল উদ্তাসিত হইয়া থাকিত কিন্তু ধিক, কালের জ্রকুটিপাতে তাহা ক্রণমাত্রেই ভব্দাৎ হইয়াছে। মাদাতা-নামা পৃথিবীর চক্রবতীরাজ আজ কথাশরীর প্রাপ্ত হইয়াছেন, একথা শুনিয়া কে এমন সাধু ব্যক্তি আছেন বিনি অল বৃদ্ধিবশে নিজের উপর মমত্ত করিবেন। ভঙ্গীরপ প্রভৃতি নৃপতি, সগর, ককুৎস্থ, দশানন, রাম্বর, লক্ষণ, वृधिष्ठैद चानि नक्लारे ছिलान এक्था नजा, मिथा नहर, কিছ এখন ভাঁহারা কোথার আমরা জানি না।'

দেখা বাইভেছে আমরা এখন কেই কেই বেমন পুরাণোক্ত রাজাদের অভিজে বিখাস করি না পুরাকালেও সেরুণ লোকের অভাব ছিল না। মাজাতা প্রভৃতি রাজগণ বছকাল হইভেই কথালরীর প্রাপ্ত হইরাছেন। আধুনিক বুগেও এই প্রকার অবিখাস দেখা যার। অনেকে মনে করেন শেকুসপীরর নামা কোন ব্যক্তি ছিলেন না।

কার্ডিকের বর্ধন তারকান্থর বধের জন্য যুক্ষাত্রা করিয়াছিলেন তথন তাঁহার সৈন্যদিপকে উৎসাহিত করিবার জন্য সিক্ষবিশিকিয়বগণ এক গীত গাহিয়াছিলেন। পুরাণকার ইহাকে গাথা বলিয়াছেন যদিও গাথার বিশিষ্ট রূপ ইহাতে নাই। ইহা পুরাণকার-রচিত। পুরাণ বলিতেছেন, তারকান্থর চিস্তাকুল ও বিশ্বিত চিত্তে অদ্বে দিশুল ক্লমবিদারক, কর্কশাক্ষরময় গীত প্রবণ করিতে লাগিল:

ত্বৰ অভুলশক্তিদীবিভিশিক্তর-ভুক্ততভর্ণরভগ। পুৰৰ ভুত্ৰভাৰৰবিভাসৰেলো क्षात कर विकिक्ननदर्शाविवक्रामन । वक्ष वव्यवय वयुवयम श्वत्रकृष्टे द्या है पि छ छ द व म या हु द यहा जन । चत्र जनिक्रकाकनाशमयवित्रनयन क्रमक्रांच रिकायश्यकः ज्ञानायाम्य । বহু বিশাৰ বিভো বহু সকললোকভাৱক ভক্ত ভব্ন সৌৱীনক্ষম বন্ধান্তির। ব্ৰিন্ন বিশাৰ বিভো গ্ৰভণভাকপ্ৰকীৰ্ণ পঠল ক্ষকভূষণভাষ্ত্রদিশকরকার । শ্ব শ্ৰিভগন্তৰলীলালুবাবিলাৱাভে শ্ব সকললোকভারক দিভিতাপুরবরভারকারক। चन वय वाम जलवाजद वय क्रवावनित्नाक्रियानव । 444 1749180-80 1

এই পাথায় কতকগুলি বিষয় লক্ষ্য করিবার আছে।
আক্ষাল বেমন যুক্-বাজাকালে জাতীয় সংগীত গীত হইয়া
থাকে পূর্বে সেইরূপ হইত না। তথনকার দিনে সেনাপতিরই প্রশন্তি গাওয়া হইত। যুক্তে নানারূপ বাছের
সহিত ঘণ্টাও বাজান হইত। কার্তিকেয়কে ঘণ্টাপ্রিয় বলা
হইয়াছে। ঘণ্টার প্রচলন ক্রেবে উঠিয়া বায়। ভারতযুক্তে শন্তা, তেরী, পণব, আনক, গোমুখ ইত্যাদি নিনাদিত
হইয়াছিল কিন্ত ঘণ্টার কোন উল্লেখ পাওয়া বায় না।
কার্তিকেয় অভি ভরুপবয়ন্ত ছিলেন। তাঁহারে মাজ সাত
বৎসবের যুক্ত-অভিক্রতা ছিল এজনা তাঁহাকে পাথায় 'বাল
সপ্রবাসর' বলা হইয়াছে। তাঁহাকে তারকাক্ষর বলিয়া-

ছিলেন 'তুমি কি বুজ্ করিতে ইচ্ছা করিয়াছ ? তুমি বালক মাজ। তোমার এখনও কন্দুক লইয়া খেলা করিবার বয়স বায় নাই। তুমি সমর-ভীষণ বুজোয়াত অক্সরদিপকে লেখ নাই তাই এ বজিবিশ্রম ঘটিয়াছে।'

ববাতি-পাথা পুরাণে প্রসিদ। এই পাথা রাজা ববাতির নিজের রচিত। বিবয়বস্তভোগ বারা কামনার বিনাশ হয় না ইহাই পাথায় গীত হইয়াছে। গাথাটি খুবই লোকপ্রিয় ছিল মনে হয়। একাধিক পুরাণে ইহা ধুত হইয়াছে। গাথার প্রথম প্লোকটি এখনও অনেক লোকের মূখে শোনা বায়।

ৰ পাতৃ কাৰ: কাৰানাৰুপভোগেন শাম্যতি। হবিষা কৃষ্ণবন্ধে বৃত্তৰ এবাতিবৰ্ধতে । বিষ্ণু ।৪।১০।১॥

গাধার সাতটি শ্লোক আছে। বারু ও বিফুর ববাতিগাধার কিঞ্চিৎ প্রভেদ আছে। বে গ্লোকগুলি উভয় পুরাণে
অফুরুণ তাহার ভাবার্ধ দিলাম। 'বিষরবস্তার ভোগে
কামনার উপশম হয় না, অগ্নিতে স্থত ঢালিলে বেমন তাহা
না কমিয়া অধিকতর প্রজ্ঞালিত হয় সেইরুণ ভোগের ফলে
বিষয়-বাসনা বাড়িতেই থাকে। পৃথিবীতে বত ধান্য, বব,
বর্গ, পশু, এবং স্থীলোক আছে তাহাতে এক ব্যক্তিরপ্র অভিগাব মিটে না, সেজন্য অভিত্ঞা ত্যাগ করিবে।
হুর্মতিগণ বাহা ত্যাগ করিতে পারে না, শরীর জীর্ণ হইলেও
বাহা জীর্ণ হয় না বুদ্ধিমান ব্যক্তি সেই তৃফাকে ত্যাল
করিলে স্থেব দারা পরিপুরিভ হইতে পারেন। অরাপ্রস্থ ব্যক্তির কেশ জীর্ণ হয়, দক্ষ জীর্ণ হয় কিছ তাহার
জীবনের আশা ও ধনের আশা কিছুতেই জীর্ণ হয় না।'

আগুনে বি ঢালার উপমা এই গাধার ববাতি কর্তৃক প্রথম প্রবর্তিত হয়; এখন ফাহা সাধারণ সম্পত্তি হইরা দাড়াইরাছে। কৃষ্ণবর্ত্ত অগ্নির আর এক নাম, কারণ জললে আগুন দিলে আগুন নিজ পথে কৃষ্ণচিছ্ন রাধিয়া বায়। পুরাকালে বন সাফ করিবার জন্য এই উপারের বছল প্রচলন ছিল। গাধার কৃষ্ণবর্ত্ত্ব কথা ইহার প্রাচীনছের নিদর্শন। বেলেও অনেক স্থলে কৃষ্ণবত্ত্ব কথা আছে। এখন একথাটার চলন নাই।

পুরাণে আর এক অতি প্রাচীন গাণার উল্লেখ আছে।
ইহার রচয়িতা ভগবদ্গীতোক উলনা। ইনি আদি কবি
বলিয়া কথিত। এব ও তাহার মাতা স্থনীতির মহিমা
এই গাণায় কীতিত হইয়াছে। গাণার ভাবার্ব বণা, 'অহো,
ইহার তপজার বল, অহো ইহার তপের ফল বাহার প্রভাবে
ইহাকে সম্প্রে রাখিয়া সপ্রবিগণ অবন্ধিত আছেন। আর
এই এদবের স্থনীতি বা স্বভা নায়ী মাতা, ইহার মহিমাই
বা পৃথিবীতে কে বর্ণনা করিতে সক্ষম, বিনি একককে গতে

ধারণ করিরা শ্রেষ্ঠ স্থানে অর্থাৎ ত্রিলোকের পরম স্থানে আশ্রম প্রাপ্ত হট্টমা অচঞ্চলরূপে অবস্থান করিভেছেন।'

মান্ধাতার নামে এক গাথা প্রচলিত আছে। মান্ধাতা চক্রবর্তী রাজা ছিলেন এবং তাঁহার রাজ্য বছবিস্কৃত ছিল। এখন বেমন বলা হয় বে ইংরেজ রাজত্বে স্থর্গ কখনও অস্ত বার না, দেইরূপ মান্ধাতার সম্বান্ধ বলা হইত:

যাবং দুৰ্য উদেভি দ্ব বাবচ্চ প্ৰভিত্তি।

দৰ্বং তদৰোবনাৰত নাৰাত: কেন্ত্ৰন্চ্যতে । বিফু ।৪।২।১৮। অৰ্থাৎ, 'সূৰ্ব বেধান হইতে উঠেন ও বেধানে অক্ত বান তাহার অন্তৰ্গত সমূদ্য প্ৰদেশ ব্বনাশপুত্ৰ মাদ্বাতার ক্ষেত্ৰ বিলয়া কথিত হয়।' এই ল্লোকের রচয়িতা কে তাহা জানা নাই।

ভগীরথ সম্বন্ধে গাথা আছে, 'ভগীরথ কর্মবলে পলাকে चानवन कविवाहित्नन এই बना वः नवित वास्किशन शकारक ভাগীরথী বলিয়া থাকেন।' নাভাগ বংশে মকুত্র নামে এক অতি ধনশালী বাজা ছিলেন। তাঁহার সম্বন্ধে গাথা আছে. 'মকত রাজার বজের ন্যায় বজ পথিবীতে আর কোণায় হইয়াছে ? সেই বজে সর্বপ্রকার বজ্ঞসামগ্রী অর্ণনিমিত ছিল: স্বৰ্ণাতে সোমরস পান কবিয়া ইন্দ্র আনন্দিত হন. ব্ৰাহ্মণগণও দক্ষিণায় সম্বোধনাভ করেন। দেবতারা সদক্ত হইয়া পরিবেশকের কার্য করিয়াছিলেন।' বাম সম্বন্ধে বে গাথা কীতিত হইয়াছে তাহা প্রধানত প্রশন্তি-বাচক। ইহাতে বামকে লোহিতচকু, স্বমুধ, সিংহস্ক এবং মহাভক্ত বলা হইয়াছে। তাঁহার রাজ্যে বেদপাঠের শব্দ এবং ধ্যুকের টংকার অবিচ্ছিত্র শোনা বাইত এবং নিয়ত দীয়তাং ভূজাতাম বব উথিত হইত, ইত্যাদি। কাশিবাজ-গোৱে ধরস্করির বংশে অলর্ক নামে এক রাজা ছিলেন। তাঁহার নামে গাথা আছে, 'অলর্ক ব্যতীত অপর কেহই ধবার স্থায় উৎসাহ সহকারে বাট হাজার বাট শত বৎসর পর্যস্ত প্ৰিবীতে বাজ্যভোগ কৰেন নাই।' বাট হাজাৰ বাট শত বংসর উপলক্ষণ প্রয়োগ, ইহার প্রকৃত অর্থ ছেষটি বংসর। এত দীর্ঘ রাজ্যকাল কলাচিং দেখা বায়। মহা-वांगी सिटक्वाविया कोविष्टे वश्यव वास्ता कवियाहित्यन। ডিক্টোরিয়ার নামে গাখা না থাকিলেও তাঁহার বাজ্য-ভোগের বাট বৎসবে হীরক 'জুবিলি' অমুষ্ঠিত হইয়াছিল। স্মরণীয় কালের মধ্যে স্বপর কোন নুপতির এ সৌজাগ্য দেখা ষায় নাই। ভীমের পিতা শস্তম্ বা শাস্তম্ব স্থাসল নাম জানা নাই। তাঁহার নামের নিক্ষ্তি তাঁহার সম্বন্ধে রচিত গাথায় পাওয়া বায়। 'রাজা সময়পূর্বক বে বে জবাগ্রন্ত शुक्रयरक न्मर्न कविराजन मारे मारे शुक्रवरे शूनवाय वोवन-লাভ করিভ এবং পরম শান্তি পাইত এই জনাই ইহার নাম

শাস্তম।' তিনি মহাতিব অর্থাৎ মহাচিকিৎনক নামে পরিচিত ছিলেন। পাশ্চান্ত্য দেশে লোকে এখনও বিশাস করে বে, king's evil অর্থাৎ গগুমালা রোগ রাজার হত্ত-ম্পর্শে সারিয়া বায়। শাস্তম বেমন 'মহাতিব' উপনাম পাইয়াছিলেন সেইরূপ মূলক নামে রামের এক পূর্ব-পূক্তর 'নারীকবচ' নামে সাধারণে খ্যাত হইয়াছিলেন। পরস্তরামের আক্রমণকালে ইনি নারীবেশ ধারণ করিয়া বিবল্পা নারীগণ ছারা পরিবেষ্টিত হইয়া নিজেকে রক্ষা করেন। তৃণবিন্ধু প্রভৃতি আরও কতিপয় রাজার নামে গাথা প্রচলিত আছে কিছ ভাহাতে কোন বৈশিষ্ট্য নাই। রাজা জ্যাম্য একজন বহুবংশীয় নূপতি। তাঁহার সম্বন্ধে একটি বড়ই মজার গাথা প্রচলিত আছে। জ্যাম্বের কাহিনী এইরূপ:

রাজা জ্ঞামত অল্লবয়স্ক এবং অপুত্রক ছিলেন। তাঁহার পত্নীর নাম শৈবাা: কোন কোন পরাণে তিনি চিত্রা বলিয়াও কথিত হইয়াছেন। শৈব্যা জ্ঞামঘ অপেক। অধিক-বয়স্কা ছিলেন বলিয়া মনে হয়। এখনও বাজপুডানায় বাজনাবর্গের মধ্যে এইরূপ অসম বিবাহ প্রচলিত আছে। এক বংশের পত্র জ্মিলে অপর বংশে বে কন্যা হটবে ভাহার সহিত বিবাহ দিবার কথা পূর্ব হইতেই ঠিক থাকে। হয়ত কন্যার আগে জন্ম হইল এবং তাহার অনেক বংসর পরে অপর বংশে পুত্র জরিল। এরপ ক্ষেত্রে পূর্ব চুক্তি অনুসারে সেই পুত্র ও কন্যার বিবাহ হয়। অনেক সময় কন্যার বয়দ বর অপেকা কুড়ি বংসরেরও বেশী হইতে দেখা যার। জ্যামণের বোধ হয় এই প্রকার বিবাহ হইয়াছিল। তিনি বয়স্থা পত্নীর ধুবই অমুগত ছিলেন। পুত্র না হওয়ার জ্যামঘের মনে খেদ ছিল কিছ ডিনি শৈব্যার ভয়ে অন্য বিবাহ করেন নাই। একবার জামঘকে যুদ্ধে বাইডে হইয়াছিল। তিনি অখ-গজ ইত্যাদির সম্মানজনিত ভীষণ সংগ্রামে निश्व इहेश সমন্ত শত্রু-দৈন্য পরাক্ষিত করিলেন। চতুর্দিকে হাহাকার উঠিল। এমন সময় জ্যামঘ ভনিভে পাইলেন কোন নারী 'আমাকে রক্ষা কর' বলিয়া ক্রন্সন করিতেছেন। জ্যামঘ নিকটে বাইয়া সন্ধান লইয়া জানিলেন বে, ঐ কন্যা রাজকন্যা : তাঁহার পিতা ও ভ্রাতাগণ এবং আত্মীয়প্তন সকলেই যুদ্ধে হত হইয়াছেন। অত্যন্ত ভয় পাওয়ায় কন্যার আয়ত নয়নখয় বিস্ফারিত ও চঞ্চ হওয়ায় তাহার সৌন্দর্য বৃদ্ধি পাইয়াছিল। রাজা ভাবিতে লাগিলেন 'आमाव পুত-मञ्चान नाहे, जामाव छी ७ वद्या. जामि विव **এই क्नाक् विवाह कवि ज्य मञ्जानमाछ कविएंड भावि।** বিধাত। স্বয়ং ৰুঝি আমাকে এই কন্যাবদ্ব দিলেন। ইহাকে এখন নিম্ন বাৰ্ধানীতে লইয়া বাই ও পরে শৈব্যার অ্যুমডি-क्य रेशांक विवाह कवा वाहेरव।' जन्म वाका कन्मांक

রথে তুলিয়া লইয়া নিজ নগবের দিকে বাত্রা কবিলেন।
অনস্তব দেবী শৈব্যা অনেক আত্মীয়স্ত্রন, অমাত্য পরিজন
ও ভূত্যগণসহ বিজয়ী রাজাকে দেখিবার জন্য নগবহারে
উপস্থিত হইলেন। তিনি রাজার বাম পার্যে কন্যাকে
উপবিষ্ট দেখিয়া ক্রোধে অধরপদ্ধর ক্রেরিত করিয়া বলিলেন,
'হে অভিচপলচিন্ত, এই রথে কাহাকে আবোহণ
করাইয়াছ ?' রাজা অভিণয় ভয়ে আমতা আমতা
করিয়া কি উত্তর দিতেছেন তাহা না ব্রিয়াই বলিলেন,
'এই কন্যাটি আমার পুত্রবধু।' শৈব্যা বলিলেন, 'আমার
পুত্রের সংক্ষে ইহাকে পুত্রবধ্ বলিতেছ?' রাজা নিজেকে
সামলাইবার কন্য বলিলেন, 'তোমার যে পুত্র জারিবে
ভবিন্তথ্বালেইনিই তার ভাগা হইবেন।' এই কথা ভনিয়া

শৈব্যা দ্বাৰং হাক্তদহকারে বলিলেন, 'শাক্ষা ভাহাই হইবে।' কথিত আছে, রাজা ও রাণীর মধ্যে পুত্রজন্ম সম্বন্ধে বে আলাপ হইরাছিল ডাহা দৈবক্রমে অতি 'শুভ লগ্ন হোরাংশকাব্যবাদিতে' নিম্পন্ন হয়। ফলে শৈব্যা সম্ভান-প্রসবাচিত বয়স অতিক্রম করিলেও অল্প দিনের মধ্যে গর্ভবতী হইলেন। এই গর্ভে বে পুত্র জন্মিল ভাহার নাম্ম বিদর্ভ। কালে বিদর্ভের সহিত রাজকন্যার বিবাহ হইল। জ্যাম্য সম্বন্ধে গাথা আছে,

ভার্রিকাভ বে কেচিছবিয়ভ্যবনা মৃতা:।
ভেষাভ জ্যান্ত: শ্রেঠ: লৈব্যাপভিয়ত্ত্বপুণ:।
অর্থাৎ, জগতে ষ্ঠ জৈণ পুরুষ জ্যািয়াছিলেন এবং
গত হইয়াছেন অথবা হাঁহারা জ্যািবেন তাঁহাদের মধ্যে
লৈব্যাপতি রাজা জ্যাম্বই শ্রেষ্ঠ।

# কবির সুখ জ্রীকুমুদরঞ্চন মল্লিক

কবিতা লিখিয়া পাই নি আৰ্থ,
পাই নাই কোনো খ্যাতি।
হয়ৈছি অপ্ন-বিলাদী, অল্স,
অন্তযোগ কর সাধী।
হিসাবী বন্ধু, ভূল করিয়াছ,
ভূল বুঝিয়াছ আমাকে,
খন মান লাগি কবিতা লিখি না,
আমি মরি দেই দেমাকে।
ফল পেতে হলে চাব করিতাম,
ব্যবসা— চাহিলে আর্থ,
মংশ্র ধরিতে জাল ফেলা চাই,
আকাশে চাওয়া বে বার্থ।

অন্টন দেয় আঘাত নিত্য

মচ্কাই তবু ভাঙি না,
সাঁজের প্রদীপে তেল নাহি মোর,
ফুলে আলো করে আঙিনা।
আঁধার বধন কাটিতে চায় না,
একা বদে বড় ভাবি বে,
অরুণ আমার এদে উকি মারে,
আকাশ ভরে বে আবীরে।
বিছন পাই, নিন্দাও পাই,
নানা মুখে নানা ভাষাতে,
স্ব ভাষাপোকা প্রজাপতি হবে
আমি থাকি সেই আশাতে।

কি অর্থ খ্যাতি পাইবার লাগি
ব্যন্ধারে পিক পাপিয়া ?

কি পায় সাধুরা গিরি-গহরের
কঠোর জীবন যাপিয়া ?

চিস্তামণির ধনে ধনী বারা
তারা কি মুক্তা মণি চায় ?

বিশ্বয়ে দেখে বিশ্বরূপ বে
নিতি প্রতি অণু-কণিকায়।
আমি সেই স্থপ সেই সে তৃপ্তি—
আমি সেই প্রেম-ভিধারী,
আলোক মাগি বে, আতপ চাহি বে,
সেই হোমানল শিথারই।

ভূবন আমার অমৃত্যম,
ভূধু আনন্দ আলোকের,
ক্ষীর নবনীর অবনী দে মোর
আমার অবনী বালকের।
সোনার নূপুর গুঞ্জরে বেগা,
বাজে রয়ে রয়ে বাঁশরী,
সব তুথ মোর হুব মনে হয়
সব বাধা বাই পাসরি।
লিধি হিজিবিজি কি পাই ভাহাতে ?
বন্ধু কহিব কিবা আর—
সেই হুধ পাই, রামধন্ধ আঁকি
উপজে যে হুধ বিধাভার।

# মনস্তত্তে এডলারের দান

# **এ**মণীজনাথ মুখোপাধ্যায়, এম-এ

মনোবিজ্ঞানের রাজ্যে এডলারের দানের কথা আলোচনা করিতে ছইলে প্রথমেই ফ্রয়েডের কথা কিছু বলা আবশুক; কারণ এডলার প্রথমত: ফ্রয়েডের সংকর্মী ছিলেন এবং ফ্রয়েডির মনোবিজ্ঞানের নির্জ্ঞান মন এবং অবদমন সম্বন্ধে মতবাদগুলি থানিকটা গ্রহণও করিয়াছিলেন। তবে একটি বিষয়ে তাঁহার সঙ্গে ফ্রয়েডের মতানৈক্য আছে। ফ্রয়েডের বিশাস আদিম যৌন কামনাই বিভিন্ন রূপে নির্জ্ঞান মন বা সংজ্ঞান মনের ভিতর দিয়া আমাদের চিন্তাবারা ও ক্রিয়াকলাপকে নিয়ন্ত্রিত করে। এডলার কিছু বৌন কামনাকে অভটা গুরুত্ব দিতে চাহেন না; তাঁহার মতে শক্তির আকাজ্র্মাই (will to power) আমাদের ক্রিয়াকপলাকে নিয়ন্ত্রিত করে।

এডলার বলেন, জাতককে জীবনের পথে চলিতে হইলে তিনটি ব্যাপারে জীবন-পরিবেশের সহিত থাপ থাওয়াইয়া চলিতে হয়। প্রথমটি হইতেছে সমাজের সহিত, দ্বিতীয়টি শেশা ও কর্মজীবনের সহিত এবং তৃতীয়টি প্রেম ও প্রেমাম্পদের সহিত। এই তিনটি ব্যাপারে সে শৈশবে ও বাল্যে যেমনভাবে সাহায্য বা বাধা পায়, সেই অহুসাবে ভাহার ব্যক্তিত্ব গড়িয়া উঠে।

এডলার বলেন, মাছৰ লৈশবে অত্যন্ত অসহায় হইয়া জন্মগ্রহণ করে। এই অসহায় ভাবটি আমাদের নিকট তুই ভাবে পীড়ালায়ক হইয়া উঠে; প্রথমতঃ অন্থপযুক্ত ব্যবহার বা অন্থপযুক্ত পরিবেশের জন্ম এবং বিতীয়তঃ দেহবন্ত্রগত হুর্বকতা, হীনতা বা অসম্পূর্ণতার জন্ম।

মাত্রাভিরিক্ত ভাবে ভিরন্ধার করা, "আতু আতু" করা, "নাই" দেওয়া, একচোপোমি করিয়া প্রশ্রম দেওয়া, অহেতৃক শাসন ভাড়না করা ইত্যাদি অমুপযুক্ত ব্যবহারের পর্যায়ে পড়ে। অমুপযুক্ত পরিবেশ নানা ভাবে হইতে পারে; কেহ হয়ত পরিবারের মধ্যে বংশের প্রদীপ, আহরে হলাল একমাত্র পুত্র রূপে জয়গ্রহণ করিল, কেই হয়ত পিতার বুজ বয়সের শেষ-কুড়ান ছেলে হইল, বাড়ীর আহরে চতুর্ব বা পক্ষম কল্যটি হয়ত হঠাৎ একটি ভাই লাভ করিয়া ভাহার আদর-মর্যাদা হারাইল। কেহ হয়ত পিতার মৃত্যুর পর জয়-গ্রহণ করিল, কেহ বা বিমাতা-প্রতিপালিত বা দ্রসম্পর্কীয় আত্মীয়ের বারা প্রতিপালিত হইয়া 'মাছ্ম' হইল। ইহাদের সকলেরই গৃহ-পরিবেশ হৃদ্ধ সম্পূর্ণ মহ্ময়ত্ব বিকাশের অমুক্র নহে।

ইহা ছাড়া দেহবন্ধগত অসম্পূর্ণতা বা হীনতাবোধও
মান্থবের সামাজিক আচরণের অস্কৃতি ও প্রতিবদ্ধ সৃষ্টি
করিয়া ভাচার মন্থবাড-বিকাশের পথে একটা প্রবল অস্করার
হইয়া দাঁড়ার। দেহগত অসম্পূর্ণতা জাতকের মনে একটা
ভয়, অসহায়তাবোধ এবং লজ্জাতুরতা সৃষ্টি করিয়া ভাহাকে
অনেক সময় অস্বভাবী করিয়া তুলে।

এডলার বলেন, এই সমন্ত প্রাথমিক অন্তর্গায়ের জন্য তিন প্রকার প্রতিক্রিয়া ইইতে পারে ;—প্রথমটি ইইতেছে উপযুক্ত ক্ষতিপূরণ (successful compensation) বিতীয়টি—পরাজয় বা পলায়নের প্রচেষ্টা (defeat or retreat) এবং তৃতীয়টি—ক্ষতিপূরণের আতিশব্য (overcompensation) জনিত অবভাবী আচরণ।

ক্তিপ্রণের উদাহ্বণ—বিধোতেন ডিমন্থেনিস প্রভৃতি। বিধোতেন বধিরতা লইয়া জন্মগ্রহণ করেন। বালোর এই অসম্পূর্ণতার সফল ভাবে ক্ষতিপূরণ করিয়া উত্তর জীবনে তিনি জগতের অন্যতম শ্রেষ্ঠ স্থ্যকার হইয়া উঠিয়াছিলেন। ডিমন্থেনিস্প তাহার বালোর তোত্লামিকে জয় করিয়া সেই যুগের শ্রেষ্ঠ বাগ্যা হইয়াছিলেন।

বিতীয় প্রতিক্রিয়ার উদাহরণ আমরা প্রতিনিয়ন্তই
পথে বাটে দেখিতে পাই। ইহা যাহাদের মধ্যে ক্রিয়াশীল
হয়, তাহারা নিজেদের অক্ষমতা বা অহুপযুক্ততা সম্বদ্ধে
সচেতন হইয়া জীবন-সংগ্রামের বন্ধ ও প্রতিযোগিতা হইতে
দূরে সরিয়া বায় এবং ক্রনার জগতে অথবা গৃহ-পরিবারের
অভিভাবকত্বের ক্রন্থ গণ্ডীর মধ্যে লুকাইয়া থাকিতে চায়।

তৃতীয় প্রকার প্রতিক্রিয়ার উদাহরণও বিরল নহে।
আমরা প্রায়ই দেখিতে পাই "হাবা কালা কালা থোঁড়ার
এক কাঠি বাড়া।" তাই দেখা বায়, হোট্ট হাজা ব্যক্তিষ্থীন
মানুষ্টি প্রায়ই আত্মপ্রচারের জন্য আকুল ভাবে ব্যগ্রতা
প্রকাশ করে। কুৎসিভ মেয়েটি হয়ত সাজশোশাকের চাক্চিক্যে ও রূপের বাহাত্রিতে লোকের চোখ ঝলসাইয়া
দিতে চায়, জীর্ণ হর্মল ছেলেটি পুরুষোচিত বীরষ্কের
অজিনয়ে সকলকে তাক্ লাগাইয়া দিতে চায়।

এই সমস্ত প্রতিক্রিয়ার মধ্যেই দেখিতে পাওয়া হার একটা সামঞ্জুবিধান বা খাপ খাওয়াইয়া লইবার চেষ্টা। এডলারের মতে আমাদের জন্ম ও পরিবেশগত ক্রটের জন্য যথায়থ ক্ষতিপূর্ণ করিয়া সামঞ্জুবিধানের মধ্যেই আছে স্কুমন্ত্রাম্ব। এই সামঞ্জুবিধানে একটু এদিক-

ওদিক হইলেই মাত্রাহীনতা বা মাত্রাভিবিক্ষতা আসিয়া মাতুষকে একটা অস্বাভাবিকত্ব দান করে। স্বভরাং আমা-দের বাহা কিছু অস্বাভাবিক্ত আছে, তাহার মূলে বহি-शांक चामारमय वाना-चीवरम शविरवन वा श्राक्तिभागतमय लार्य निरम्पत मध्य होनमनाका (inferiority complex ) এবং ভাষার প্রভিক্রিয়া হিসাবে সেই হীনমন্যভার অমুভতি হইতে অব্যাহতি পাইবার চেষ্টা। এইথানেই ক্রাডের সঙ্গে এডলারের পার্থকা। আমানের অস্বাভাবিকত্বের মূলে আছে অধিশান্তা (Super ego) মন বা নীভিবোধের সহিত আদিম বৌন কামনার (id) সংঘাতজনিত অবদমন প্রভৃতি, আর এডলার বলেন ইহার মলে আছে হীনমনাতা, সমাজ-পরিবারের সঙ্গে সম্মান-জনক সম্পর্ক ও সহবোগিতার অভাব। সেই ব্যক্তিই হই-তেচে স্বাভাবিক চবিত্রবিশিষ্ট, বাহার ব্যক্তিগত "আমি"টীর (ego) সহিত সমাজগত "আমি"র (community feeling) একটি সামগুল্ঞ হইয়াছে।

এই সামঞ্জের জন্য প্রথম প্রয়োজন হইতেছে জাতকের নিজের গৃহ ও পরিবারের সহিত সামঞ্জবিধান। স্থতরাং বে গ্রহে জাতকের আত্মসমান রক্ষার উপযুক্ত ব্যবস্থা নাই. সেধানে তাহার মছবাত বাহিত হইবে। আবার গ্রের মধ্যে বালকটিকে মহামানী মহাময় তর্বোধন করিয়া মাতুর ক্রিলেও ভাহার মহুধাত্ব ব্যাহত হইবে। কারণ গৃহের ছোট্ট পণ্ডীট ছাড়িয়া যখন সে বাহিবের বুহত্তর সমাব্দে মিশিতে চেষ্টা করিবে, তথন সে দেখিবে বাহিরের জগৎ ভাহাকে তেমন ভাবে মাথায় করিয়া নাচিতেচে না. তাহার অভীষ্ট মুল্য দিতেছে না। তখনই আসিবে তাহার বাৰ্থতা এবং সমাজ হইতে পলায়নস্পৃহা, গৃহ-মুখিতা, ভীকতাও লক্ষাশীলতা। আবার যে ছেলেকে বহু দিন ধবিষা "খোকা" কবিষা বাখিয়া "ছোট ছোট নিষেধের ভোবে" বাধিয়া প্রতিনিয়ত আতু আতু করিয়া মাতাপিতার সভর্ক দৃষ্টির গণ্ডীর মধ্যেই রাখা হয়, সেও জগতের সংক স্থন্থভাবে কারবার করিতে পারে না এবং ভীক স্বাত্ম-কেন্দ্রিক ও পলায়নপর হইয়া উঠে।

পূর্বেই বলা হইয়াছে প্রভাকে ব্যক্তিকেই ভাহার
ভীবনে তিনটি জিনিষের আহ্বানে (challenge) সাড়া
দিতে হয়,—সমাজ, পেশা ও প্রেম। ইহাদের কোনটিকেই জন্য-নিরপেক্ষ একক্ডাবে বিচার করা চলে না।
বস্তুত: মাহ্ব প্রেমের ব্যাপারেও কি ভাবে আচরণ করিবে
ভাহা নির্ভর করে আমাদের সমাজ ও পেশাপত জীবনে
সার্বকতা এবং ব্যর্বভার উপর।

এডলার বলেন, আমাদের অহম্টির (ego) সহিত

বাহিবের জগতের প্রথম সম্পর্ক হয় গৃহহর পরিজনকে
লইয়া। কাজেই এই পরিজনের নিকট আমরা বেরুণ আচরণ
বা অভিজ্ঞতালাভ করিব, তাহারই উপর নির্ভর করে
আমরা বড় হইয়া বাহিবের লোকের সঙ্গে কিরুণ আচরণ
করিব। বে বালক দেখে গৃহে তাহার মাতাণিতার মধ্যে
সম্পর্কের মধ্বতা ঠিক নাই, সে উত্তরকালে দাম্পতাজীবনে
ঠিকমত থাপ থাওয়াইয়া চলিতে পারিবে না। বে বালক
অত্যন্ত শাসন তাড়নের মধ্যে মাহুষ হইয়াছে, সে বড় হইয়া
ছন্দান্ত অথবা জেদী স্বামী হইয়া কিংবা বদ্মেশালী পিতা
বা গৃহ-কর্তা হইয়া তাহার ক্ষমতার অভিলাবকে চরিতার্থ
করিবে। এই ভাবে ক্ষমতার অভিলাবকে পরিতৃপ্ত করিবার
জন্য আমাদের বে প্রতিক্রিয়া আছে, এডলার তাহার
নাম দিয়াছেন "Masculine protest."

এই প্রতিক্রিয়াটির অভিব্যক্তি নানাজাতীয় হইতে পারে। ইহার ফলে হয়ত ক্ষমতালুকা তুর্বলা বালিকাটি নারীস্থলত কর্ত্তব্যকে ঘুণা করিয়া পুরুষোচিত আচরণ করিয়া তাহার দীনতাবোধকে দাবাইয়া রাখে। আবার ইহারই ফলে হয়ত তুর্বল এঁচড়ে পাকা ছেলেটি সারা জীবনই নারীস্বের অভিনয় করিয়া পুরুষত্বের তেজ শক্তি ও ক্ষমতার পূজা করিয়া থাকে।

হীনমন্তার প্রতিকার হিসাবে এই "Masculine protest" হাড়া আর একজাতীয় প্রতিক্রিয়া আছে। ইহার বৃলেও ব্যর্থতার ইতিহাস এবং কমতার জন্য আঁকুপাঁকু আছে। যে কর্তৃত্ব শক্তির হারা অর্জ্জিত হয় না, তাহা হয়ত অনেক সময় চাতৃরী বিশাস্থাতকতা ছলনা কপটতা প্রভৃতি হারা আয়ন্ত করিবার চেষ্টা করা হয়। এই প্রলিকে এডলার স্থীস্থলভ অস্ত্র (feminine weapons) নাম দিয়াছেন। অবশ্র এই জিনিষগুলি স্থীস্থলভ অস্ত্র হইলেও ইহা একাস্কভাবে স্থীলোকেরই সম্পত্তি নহে। বে পুক্ষ প্রতিনিয়ত পরাধীনতা ও বশ্যভার দীনতার ভিতর দিয়া দিন বাসন করিতে বাধ্য হয়, তাহার মধ্যেও এই অস্থভলি ব্যবহারের প্রয়াস দেখা যায়।

এডলাবের বন্ধব্য এই বে, প্রত্যেক পূর্ণবিষয় লোকের ব্যক্তি-বৈশিষ্ট্যগুলি তাহার বাল্য-শৈশবের অভিজ্ঞতার ফল মাত্র। স্তরাং মাত্রবন্ধে বিচার করিতে হইলে তাহার গোল্লীগত বা আতিগত বিশেষস্থল আনিলেই চলিবে না; প্রত্যেক মাত্র্যটিকে এক একটি পৃথক এবং (সমাজ্বতিক্রাজাত) সম্পূর্ণ একক বলিয়া ধরিতে হইবে। প্রত্যেকের স্বতন্ধ সমস্তা, স্বতন্ধ ইতিহাস এবং স্বতন্ধ্র ব্যক্তিক আছে; সমাজের সঙ্গে কারবারের জন্য তাহার বাতপ্রতিঘাত আছে বটে, এবং সেই ঘাত্র-

প্রতিষাত তাহার ব্যক্তিখনে নির্মিত করিতেহে সত্য, কিছ তাহার ব্যক্তিখের ইতিহাস এককভাবে তাহার শনিক্ষেই জিনিব; সেই ব্যক্তিগত মনত্তবটুকু না জানিলে তাহার পরিচয় ঠিকমত জানা হইবে না। এইজন্য এডলারের মনত্তহকে ব্যক্তিগত মনতত্ত্ব (individual psychology) বলা হয়।

এই ব্যক্তিটেকে বুঝিতে হইলে তাহার বাল্য-শৈশবের ইতিহাসকে বুঝিতে হইবে, আর বুঝিতে হইবে তাহার পরিবারগত জীবনধারা (family style) এবং বাক্তিগত জীবনধারা (life style)।

বাল্যের অভিজ্ঞভার প্রভাবের উপর অনেকথানি জোর দিয়াছেন বলিয়াই এডলার আমাদের নীতিগহিত ও পাপের কাজগুলিকে থানিকটা ক্ষমার চক্ষে দেখিতে পারিয়ছেন। তিনি বলেন, বেশ্যার্ত্তি নারীর বৃষষ্যন্তিভা বা উদগ্র কামকুধাজনিত কল ততটা নহে, যতটা বাল্য-জীবনে বঞ্চনা ও ভোগরিক্ততার মধ্যে 'মাহ্র্যুণ হওয়াতে অতৃপ্ত: কামনাকে হুদে আসলে বেশবোয়াভাবে পরিতৃপ্ত করিবার চেটা অথবা প্রক্ষকে প্রতারণা করিয়া নারীর প্রতিহিংসাপ্রবৃত্তি চরিতার্থ করিবার প্রয়াস। প্রায়্ত সমন্ত ব্যভিচাবের ব্লেই আছে শৈশবের বঞ্চনা বা লাহ্মনার ইতিহাস, সমন্ত অহুভাবী মানসভার মূলেই আছে শৈশবের আন্ত লালনপালন, সমন্ত পাপের মধ্যেই আছে শৈশবের অহেতৃক হীনমন্যভাবোধ এবং বিকৃত উপারে তাহার প্রতিকার বা প্রতিক্রিয়ার চেটা।

এইখনা রোগের প্রতিকারের দিক দিয়াও ক্রয়েডীয় मताविकात्व महिल अल्माद्वत मताविकात्वत अक्षा পার্থক্য আছে। মনোবিকলন করিয়া বৌনক্ষধার অবদমন-জনিত জটের (complex) গ্রন্থি খুলিয়া নিজ্ঞান মনের ভর হইতে অসমত এবং অসামাজিক কামনার গোপন ইতিহাস সংগ্রহ না করিয়া এডলার সোজাহ্মজি ভাবে রোগীকে छेरनाह तम अवः छाहाटक वृक्षाहेश मिवाब टाहे। करबम त्व. ভীবন-সংগ্রামে পরাজ্ঞার ভারে সে হীনতর কলাকৌশলের বা কাল্পনিক জগতের আখ্রম লইয়াছে বলিয়াই ভাচার রোগের স্বষ্ট হইয়াছে। স্বতরাং ইহা হইতে প্রতিকারের উপায় হইতেছে কলনার অবান্তব জগৎ হইতে বাহিব হইয়া আসিয়া সাহসের সহিত বাস্তব জগডের সম্মুখীন হওয়া এবং बादी इहेवाद (ठडी कदा। अहे बादी इहेवाद बना एक (मह-ব্যাহ্র প্রয়োজনও কম নহে। चामवा नकरनहे कानि, অজীৰ, কোঠবছতা, হাঁপানি, সায়বিক দৌৰ্মন্য প্ৰভৃতি অনেক সময়ই আমাদের 'মেজাজ' ও আচরণকে প্রভাবারিত করে এবং আমানের অহম ও সমাকের সহিত সামঞ্জের ব্যাঘাত ঘটার। এইজনাই এডলার মানসবোগের প্রতি-কারের জন্য ঔষধপত্তের ব্যবহারকে অপ্রয়োজনীর বলিরা মনে করেন না। ক্রায়েডপছীগণ কিছ এই ব্যাপারে ঔষধপত্তের চেরে মনোবিকলনকে অধিকতর কার্যকরী বলিয়া মনে করেন।

বাচাকে পাপ বলিয়া অভিচিত করা চয় তাচা শৈশবের হীনমনাজা চইতে কি ভাবে মাছবের মধ্যে আত্মকাশ করে ভাষা এডলার নানা ভাবে দেখাইয়াছেন। প্রসক্তে একটি পাঁচ বৎসবের পাপমতি বালিকার উদাহরণ উল্লেখবোগা। সেই বালিকাটি ভাষার চেয়ে ছোট ছোট বালিকাদের খেলায় আহ্বান কবিড এবং স্থবোগ পাইলেই ভাহাদিগকে নদীর কলে ঠেলিয়া ফেলিয়া দিত। এই ভাবে পর পর জিনটি বালিকাকে হত্যা কবিবার পর সেধবা পডে। পরে দেখা বায়, এই বালিকাটি তাহার জীবনের প্রথম চারিটি বংসর মাডাপিতার কনিষ্ঠা কলা হিসাবে আদবের তুলালী হইয়া 'মাসুষ' হইয়াছিল: তাহার পর ভাহার ছদ্দিন আসিল যখন ভাহার আর একটি নবজাভ ভগিনীর আবির্ভাব হইল। সে দেখিল সে ক্রমশ:ই কোণ-ঠাসা হইয়া বাইতেছে, আদর-বতু সমস্তই তাহার নবজাত ভগিনীটিই পাইতেছে। ক্রমে সে তাহার উপর বিরূপ হইয়া উঠিল এবং শেব পর্যান্ত সমস্ত ভোট মেয়েকেই সে নিজের হন্তব্য শক্ত বলিয়া মনে করিতে আরম্ভ করিল। ইচাই চইল বালিকাটির পাপের ইভিহাস।

অধিকাংশ পাপের ব্যাপারেই এই জাতীর একটা-নাএকটা ইতিহাস আছে। উচ্চাকাক্রম ধৃনিধৃস্বিত হওরা,
অভিমান আহত হওয়া, অবস্থার বিড্রুনার নিজেকে ছোট
বলিয়া ভাবিতে বাধ্য হওয়া, আদর-বত্নে বঞ্চিত হওয়া, বাহ্বা
এবং হাতভালি পাওয়ার স্থবাগ হইতে এই হওয়া, এই
সমন্ত জিনিষই জাতককে সমান্ধবিরোধী আচরণে প্ররোচিত
করে। এইজন্তই দেখা যায়, সাধারণতঃ বে ছেলে পড়ান্ডনার
বাহ্বা পায় না, সেই ছেলেটিই স্থলের ধর্মঘটের সময়
ললপতিত করিয়া ছাত্রনেতা হইবার চেটা করে, স্থলের
আইনশৃথলা ভালিয়া, আস্বাবপত্র নই করিয়া শিক্ষকে
অপমান করিয়া বন্ধমহলে প্রতিষ্ঠালাভের চেটা করে।

বাহাকে আত্মাবমাননান্ধনিত কট বা হীনমন্ততা বলে,
তাহা কি ভাবে ছাত্রদের পাপের পথে লইনা বান, তাহা
একটু ভাবিলেই বুঝিতে পারা বান। একজন বালক হন্নত
ক্লানে আন্ধ কবিতে পারে না, সহামুভ্তিহীন শিক্ষক হন্নত
ভাহাকে প্রায়ই ভংগনা করেন, তাহার বন্ধুবাদ্ধবদের সন্থুধে
অপমান করেন। ফলে বালকের আত্মাবমাননা অসভ হইনা
ভিত্তিল এবং বিভালনটিকেই সে হীনমন্যভাব কেন্দ্র বলিনা

मत्न कविश कुन भानाहरू जावज कविन। हेहाव भद्रहे শাবত হইল অভিভাবকের তাকর ভাল করিয়া চিট্রি তাহার পরে ক্রক চইন ছল-পলাতক অবস্থায় সমধর্মী বন্ধদের সঙ্গে গোপনে সিনেমা অভিবান, বিডি ফু কিতে শেখা, অসময়ে যৌনচেতনা লাভ করা এবং গলের বন্ধদের অন্যান্য পাপাচরণগুলি শেখা। স্থলের বাহিরের অগতে সে দেখে অঙ্কের ভূলের জন্য তিরস্কার নাই, वाक्तित्व ज्लाद क्या विक्रम माहे. भार भार वाचाद-মাননা ও লাম্বনার ভয় নাই। এখানে নেতাগিরি করিবার ছবিধা আছে, চাল মারিবার হুযোগ আছে। ছুলের পরিবেশ তাহার আমিতকে ছোট করিয়া দেখায়, আর ম্বলের বাহিরের জ্বগৎ তাহার আমিত্বকে বড় করিয়া দেখিবার স্থবোগ দেয়। ফলে শেষ পর্যন্ত সে কল ভাতিয়া (मध् এवः इष्ठ "वद्यादि" इहेबा शए । এहे वद्यादि इहेवाव পরিণাম বাহাই হউক, ইহার প্রারম্ভ যে ছিল হীনমন্যভার মধ্যেই, ভাহা বুঝিতে বিলম্ব হয় না।

এডলারের এই ভন্তটি শিক্ষার কেত্রে নানাভাবেই বাবচারিক নির্দেশ দিতে পারে। শিক্ষকগণ যদি চাত্রদের অক্তকাৰ্যতা দেখিয়াও অসহিষ্ণু হইয়া তাহাদের আত্ম-দম্মানে আঘাত না করেন, বিস্তার তাক লাগাইয়া ছাত্রদের **অভিত** করিতে চেষ্টানা করেন, "তোর কিছু হবে না" বলিয়া প্রথম হইডেই যদি ভাহাদের অপাংক্রেয় করিয়া না त्मन. जाहा हहेता चातक वानकहे विभाव यात्र ना। বোগ্য শিক্ষক অন্যভাবেও তাহাদের বাঁচাইতে পারেন। ৰে বালক এক বিষয়ে পৰের সম্ভান পাইল না, ভাহাকে অনা বিষয়ে পথ দেখাইয়া দিতে পারেন। ফলে যে বালক আৰু করিতে পারিল না, দে হয়ত ভাল গায়ক হইল; বে ভাহাও হইতে পারিল না, দে হয়ত ভাল চিত্র-শিল্পী হইল। এইভাবে তাহাকে আত্মাবমাননার হাত হইতে, ব্যর্বভাব ৰবল হইতে বকা কৰিয়া ভাহাকে আত্মৰ্য্যাদাকানসম্পন্ন করিয়া তুলিতে পারেন। আত্মাবমাননার অমুভৃতি কিভাবে ছেলেম্বে থারাপ করিয়া দেয়, তাহা এডলার-বণিত আর একটি উদাহরণ হইতে পরিষার ভাবে বুরা বায়। এই উদাহত গল্পতিৰ নায়ক হইতেছে একটি পাঁচ বংসবের বালক। বালকটির মাতাপিতা বাহিরে বাইবার সময় বাক্স সিদ্ধকে ভালাচাবি দিয়া বাইভেন। ইহাতে বালকটি অপমানিত বোধ করিতে লাগিল এবং শেষ পর্যন্ত মাতা-পিভার আচরণের প্রতিবাদ হিসাবে চুরি অভ্যাস আরম্ভ করিল। আঠারো বৎসর বয়স পর্যস্ত ভাহার এই চুরি-বোগ সারিল না; সে ধরাও পড়ে ভবুও চুরি করিয়া

বার। পিতা বলেন, "নেধো এতে লাভ কি ? তুমি বত বার চুরি কর আমি তত বারই ত ধরে ফেলি, এতে আর বাহাছরি কি ?" বালকটি তথন মনে মনে হার্দে আর বলে, "কুড়ি বার চুরির মধ্যে অস্ততঃ এক বারও ত আমি ফাঁকি দিতে পারি,—ঐধানেই আমার বাহাছরি প্রতিপন্ন হ'ল।"

এডলারীয় মনোবিজ্ঞান আমাদের এইটুকুই বুঝাইয়া
দেয় যে, শিক্ষার ব্যাপারে এই বাহাত্রির পথটকে নানা
দিক দিয়াই খুলিয়া দিডে হইবে; ডাহা না হইলে বিশদ
আছে। সোজা পথে বালকবালিকারা যদি এই বাহাত্রির
পথের সন্ধান না পায়, ডাহা হইলে অলিগলির বাঁকা পথে,
পাপের অন্ধলারে এই পথের সন্ধান করিবে। তাহাতে
তাহাদের এবং জাতির কাহারও কল্যাণ হইবে না। এই
অকল্যাণ হইতে জাতিকে বাঁচাইতে হইলে ভাবীকালের
নাগরিক প্রভাক চাত্রটির দিকে লক্ষ্য রাধিতে হইবে,
তাহাদের শিক্ষাকে বছমুখী করিতে হইবে এবং ভাহাদের
যোগ্যতা ও শক্তিকে চিনিয়া লইয়া যথাযোগ্য পথের সন্ধান
দিতে হইবে।

এডলাবীয় মনোবিজ্ঞানকে অনেকে হয়ত অভ্যম্ভ সহক এবং সাধারণ বৃদ্ধির ব্যাপার বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে চাহিবেন। ইহার মধ্যে अधिनতা কিছু নাই, নৃতন কথা কিছু নাই বলিয়া প্রতিবাদ করিতে পারেন। কিন্তু জটিনতা নাই বলিয়া ইহার অন্তনিহিত সভাটি হেলা করিবার জিনিয नहा हेशा मार्था य अवहा वावशाविक मिक चाहि. বে একটা আশার বাণী আছে, তাহা হইতে শিক্ষক, অভি-ভাবক, চিকিৎসক প্রভৃতি অনেকেই উপকৃত হইতে পাবেন। এই মনোবিজ্ঞান আমাদের সামাজিক সম্পর্কগুলিকে মাধুর্ঘমতিত করে, দৃষ্টিকে উদার করে। ইহার ফলে আমরা भागतक घुना कविद्याल भागीतक थानिकी। क्रमात हत्क দেখিতে পারি; আমরা বুরিতে পারি আব্দু আমরা যাহাকে পাপী বলিয়া খুণা করিতেছি, সে নিজের দোষে भाशी छछी। नरह, यछछ। ममास्कद भारम, नामनभागरनद দোবে, তুৰ্বাণ দেহৰল্পের ক্রটিভে। এই মনোবিজ্ঞান আমাদের এই শিক্ষাই শেষ বে, তথ্যপোষ্য শিওটির পৰ্যান্ত আত্মসন্মানের বধায়থ ব্যবস্থা না করিলে দে ভবিষ্যাত 'পাপী' হইয়া উঠিতে পাবে। অভ্যম্ভ অৱবয়ন্ত পুত্র-কন্যাব নিকটও আমাদের আচরণকে ভদ্র ও সংবত রাখিতে হইবে, নতুবা আমাদের আচরণের অভিক্রতা ভাহাদের ক্রিয়াকলাপকেও প্রভাবাধিত করিবে এবং ভবিবাতে অভস্ক বা অ-নীতিপরায়ণ নাগরিক সৃষ্টি করিবে।

# কথা-সাহিত্যের প্রথম যুগ

### প্রত্যেশ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের ইভিহাসে ১২৬৪ সাল বা ১৭৭৯ শকালা নানা কারণে উল্লেখবোগ্য। এই বংসর কথা-সাহিত্যের এমন তিনথানি স্থলিখিত পুন্তক জন্মলাভ করে বাহা বাংলা-সাহিত্যের কেত্রে আজও বিশিষ্ট স্থান অধিকার করিয়া আছে। পুন্তক তিনথানি —প্যারীচাঁদ মিত্র, ওরফে টেকটাদ ঠাকুরের 'আলালের ঘরের ছুলাল', কৃষ্ণকমল ভট্টাচাথ্যের 'কুরাকাজ্কের রুথা ভ্রমণ' ও ভূদের মুখো-পাধ্যারের 'ঐতিহাসিক উপস্থান'। 'আলালের ঘরের ছুলাল' বাংলা-সাহিত্যে প্রথম সামাজিক উপস্থান; বিষয়বজ্ব, ভাষা ও প্রকাশভলী—সকল দিক দিয়াই ইহা তৎকালীন বাংলা-সাহিত্যে আলোড়নের কৃষ্টি করিয়াছিল। বিতীয়ধানি এডভেঞ্চারের কাহিনী, কভকটা আরব্য-উপস্থানের ধরণে লিখিত; ভূতীয়ধানি তেঃ কণ্টার (Caunter)-কৃত Romance of Indian History—India অবলম্বনে লিখিত ঐতিহাসিক উপস্থান।

তিনখানি পুন্তকেরই আখ্যা-পত্তে প্রকাশকাল-হিসাবে কেবল সালেরই উল্লেখ আছে, কিন্তু উহার সহিত মাস-তারিখের উল্লেখ না থাকায় তারিখ-অফুবায়ী কোন্টি কাহার পরে প্রকাশিত হইয়াছে তাহা জানিবার উপায় নাই। বাংলা ১২৬৪ সাল বা ১৭৭৯ শকালা ইংরেজী ১২ এপ্রিল ১৮৫৭ হইতে ১২ এপ্রিল ১৮৫৮ পর্যন্ত। আনেকে এই পুন্তক তিনধানির প্রকাশকাল ইংরেজী হিসাবে "১৮৫৭" ধরিয়াছেন, ১৮৫৮ সনের হিসাবটা ধরেন নাই।

সাল বা শকান্ধার সহিত মাস-তারিথের উল্লেখ না থাকায় ইংরেজী হিসাবে পুত্তকগুলির সঠিক প্রকাশকাল নির্দ্ধারণ করা তুরুহ হইলেও একেবারে অসম্ভব নহে। সমসাময়িক সংবাদপত্র বা মাসিকপত্তে প্রকাশিত সমা-লোচনার ভারিথ দেখিয়াও প্রায় নিঃসন্দেহে ইহা নিরূপণ করা বায়।

প্রথমেই 'আলালের ঘ্রের তুলালে'র কথা ধরা যাক।
ইহার 'আথা-পত্তে মুক্তিত প্রকাশকাল—১২৬৪ সাল।
অধ্যাপক শ্রীকুমার বন্দ্যোপাধ্যার এবং আরও আনেকে
ইহার প্রকাশকাল "১৮৫৭" লিখিয়াছেন। কোথা হইতে
তাঁহারা এই ইংরেজী সাল নংগ্রহ করিলেন জানি না,
অস্ততঃ পুত্তকে ইহা নাই; সম্ভবতঃ পুত্তকে মুক্তিত প্রকাশকাল :"১২৬৪" সাল হইডেই তাঁহারা এই ইংরেজী সাল
অস্থমান করিয়া লইয়াছেন;। যাহাই হউক, উহা বে ঠিক

নহে, ১৮৫৮ সনে বে 'আলাল' প্রথম প্রকাশিত হয় তাহা প্রমাণ করা বায়। ৮ এপ্রিল ১৮৭৮ (২৭ ১৮৫ ১২৬৪) তারিখের  $Hindoo\ Patriot$  পত্তে সম্পাদক হরিশ্বস্তু মুখোপাধায় ইহার সমালোচনা-প্রসাদ লেখেন:—

"Those of our readers who have not blessed themselves with this parting gift of the Bengali Year 1264, may obtain that blessing on an application to Mesers D'Rozario & Co. and the earlier the better, for such blessings are apt to be exhausted."

উদ্ধৃতি হইতে স্পষ্ট জানা বাইতেছে, 'অ'লালের ঘরের তুলাল' ১২৯৪ সালের চৈত্র, অর্থাৎ ১৮৫৮ সনের মর্চ্চ মাসে প্রকাশিত হইয়াছিল।

আমাদের আলোচ্য বিভীয় গ্রন্থ—১৭৭০ শকে প্রকাশিত 'ত্রাকাজ্যের বৃধা ভ্রমণ'। ইহা ঐতিহাসিক উপন্যাস্থ্য নহে. অক্ষাচন্দ্র সরকার-উদ্ধিখিত Romance of Indian History হইতে সম্বলিতও নহে; ইহা প্রকৃত পক্ষেত্রকান বাঙালী সৈনিকের এডভেঞ্চারের কাহিনী। আজকালকার বাঙালী পাঠক যে এই পুত্তকধানির সহিত পরিচিত নহেন, ইহা অত্যন্ত তুংখের বিষয়। কিছু অক্ষয়-চন্দ্র সরকারের মত সাহিত্যরথী পর্যান্ত শতমুখে ইহার প্রশংসা করিয়াছিলেন। তাঁহার প্রশন্তির কিয়দংশ নিয়ে উদ্ধৃত করিতেছি:—

এই কুত্র প্রস্থ মনোঘোগের সহিত পাঠ করিরা আমি বেন ভাষারাজ্যের আর এক দেশে উপস্থিত হইলাম। এ ত কাদবরী মর, বেতাল
গঠিল নর, তারালকরও নর। প্যারীটালও নর,—এ বে এক নৃতন সৃষ্টি।
ইহাতে কাদবরীর আহ্মর নাই, বিভাসাররের সরসতা নাই, অক্সকুমারের প্রসাঢ়তা নাই, প্যারীটালের প্রাম্য সরলতা নাই, অবচ বেন
সকলই আছে। এবং উহাদের ছাড়া, আরও বেন কিছু নৃতন আছে।
আমি বার বার তিন বার পাঠ করিলাম।…

বাঙ্গালা ভাষার ও বাঙ্গালা সাহিত্যের নানারপ আলোচন আলোচন হইতেছে, কিন্ত এই কুত্র পুঁতিকাথানির কথা ভাহাকেও বলিতে শুনি না, বা লিখিতে গেখি না। অথচ আমার বিখাস মুখালাজ্যের ভাষা বহিন্দ চক্রের ভাষার জননী। • • উহার গল্প বড়ই ভাল লাগিরাছিল। (বল-ভাষার লেখক', পু, ৫২৫-২৭)

আশ্চর্যের বিষয়, অধ্যাপক প্রীকুমার বাবু বা ডক্টর কুমার দেন বাংলা-সাহিত্যের ইভিহাসে এমন একখানি গুরুত্বপূর্ণ পুতকের নামোল্লেখ করেন নাই। মনত্বী রাজেক্ত-লাল মিত্র: তাঁহার স্থবিধ্যাত 'বিবিধার্ধ-সংগ্রহ' নামক মাসিকপত্রের আবাঢ় ১৭৮০ (জুন ১৮৫৮) সংখ্যায় ইহার সঞ্জাপন স্মালোচনা করেন। স্মালোচনার কালটি শ্বরণ রাধিলে মনে করা অসক্ত হইবে না বে, 'ছ্রাকাজ্কের বৃধা

ভ্রমণ' মাসিকে সমালোচিত হইবার অস্ততঃ তিন মাস পূর্বে — ১৭৭৯ শকাঝার শেব ভাগে প্রকাশিত হইরাছিল; ইহা ১৭৭৯ শকের চৈত্র মাস (মার্চ ১৮৫৮) হওয়াই সম্ভব, কারণ পরবর্তী ৫ই বৈশাধ হইতে কৃষ্ণক্ষক কিছু কালের জনা নিক্ষকেশ হইরাছিলেন।

আলোচ্য তৃতীয় গ্রন্থ—'ঐতিহাসিক উপন্যাস'। ইহার আব্যা-পত্রে মৃত্রিত প্রকাশকাল—১৭৭৯ শকার্যা। ডঃ স্কুমার দেন ইহার প্রকাশকাল "১৮৫৭" বলিয়াছেন। শ্রীকুমার বাবু 'ঐ.ভিহাসিক উপন্যাদে'র ১ম সংস্করণের সন্ধান না পাইয়া লিখিয়া বসিয়াছেন বে, ইহার "প্রথম আবির্ভাবের ভারিথ অনিশ্চিত।" ভবে ভিনি শ্রীকনক বন্দ্যোপাধ্যায়ের একটি প্রবদ্ধের ('ভারভবর্ব,' বৈশাধ ১৩৪৯) নজীরে উহা বে "১৮৫৭" ভাহা মানিয়া লইয়াছেন। কিন্তু এই ইংরেজী সাল বে ভুল, সম্প্রভি আমার মনে এই ধারণা বন্ধুল হইয়াছে। 'হিন্দু পেট্রিয়টে'র পুরাতন উন্টাইডে গিয়া ১৮৫৮, ১৮ই নবেশ্বরের

সংখ্যার ভূদেবের 'ঐতিহাসিক উপন্যাদে'র এক দীর্ঘ সমালোচনা পাইডেছি। উপন্যাস্থানি ১৮৫৭ সনে প্রকাশিত
হইয়া থাকিলে, একথানি স্থানীয় সাপ্তাহিক সংবাদপত্রে
উহা বে দীর্ঘ এক বংসর পরে সমালোচিত হইয়াছিল, ইহা
বিখাস করিতে মন সায় দেয় না। একে ভ ভখনকার
দিনে মৃষ্টিমেয় বাংলা বই প্রকাশিত হইড, ভাহার উপর
বহঁখানি বন্ধুর লেখা; হরিশুক্র বে বীয় পজিকায় উহার
সমালোচনা প্রকাশ করিতে অম্থা বিলম্ব করিবেন, এইরুপ
চিন্তা করা অসমীচীন। 'ঐতিহাসিক উপন্যাস' ১৭৭৯ শকে
মৃজিত হইলেও কোন কারণে প্রকাশিত হইতে কয়েক মাস
বিলম্ব হইয়াছিল। কিন্তু উহা বে ১৮৫৮ সনে প্রকাশিত,
সে-বিরয়ে সন্দেহ করা চলে না।

এই সকল কাংণে, আলোচ্য পুত্তবস্তুলির প্রকাশের কালক্রম আমার মতে এইরণ:—

- )। जानारमञ्ज चरत्रत्र कुनान: ১२७८ मान (वार्ट, ১৮৫৮)
- २। इत्रोकात्क्वत्र युवा व्यवनः ১११३ मकाका (वार्ठ, ১৮६৮)
- ७। ঐতিহাসিক উপস্থাস: ১৭৭৯ শকালা (ইং ১৮৫৮)

# গোপনচারিণী

# ঞ্জীশিবদাস চক্রবর্ত্তী

প্রলবের বাবে ছিভি হে বৃষ্ঠিবতী, কাক করে চলো গোপনে গোপনে অভি, কে গো নারাবিনী—রূপ নরনাভিরান, গোপনচারিনী, কানি না ভোনার নাম।

বহবের কোবে মবুর জ্যোভির শোভা, অবরের বানী ব্রিজন-মনোলোভা, নিরলভারা, ভোষার অলবাস— সমারোহহীন, নাহি বিলাসোজাস।

অসুক্ষরের সুক্ষর করে। ভূষি, চরণ-পরশে পুলকিভ বনভূষি; ভোষার হাসিতে গাছে গাছে কোটে কুল, বলে বদে পাবী কাক্সি-কুজনাকুল।

ৰহাৰিলবের হাঙা রাধী ল'বে করে, আৰক্ষ-বৰা চোৱা কটাক তবে সূত্ৰে ও বে-সূত্ৰে বেঁৰে দাও সেই ৱাৰী আপনি গোপনে চোৰের আভালে বাকি।

এ বৰ বহুতৈ ভূবি চিৰ অৰ্ডা, বিৰাভা ভোৰাৰ বচিতে পাৰে নি চিতা; পিনাকপাণিৰ প্ৰলৰ-ডবক্তবনি স্টাৰ সূত্ৰে তব বাঁণে অঠে বণি'।

বুগে বুগে ভূমি আছিলে, আছ ও রবে নহীয়নী হ'বে দভোর গৌরবে; মিণ্যারে ভূমি বরণ করো নি, ভাই এ নর বরতে ভোষার বরণ বাই।

কাষনা ভাগারে গোণনে ভাষীর বুকে
ভাব্যের রূপে দেখা লাভ দভুখে,
কে গো নারাখিনী, রূপ-দর্মাভিয়ার
ক্রু পরিচয়—'থেন' কি ভোষার নাম ?

# শ্রীধর স্বামীর কুল-পরিচয় ও কালনির্ণয়

विमौत्नमध्य छ्ट्रोठार्या

স্বনামধনা শ্রীধর স্থামি-বচিত ভাগবডটাকা ও গীডাটাকা বঙ্ক শতাব্দী ধরিয়া ভারতবর্ষের সর্ব্বত্ত স্বপ্রচারিত এবং উड्य श्रम्हे वह श्रात्न वहवाय मुखिल श्रेमा नकलाव निकृष्टे সহজ্ঞপাপ্য হইয়াছে। এই এখর স্থামি-রচিত অপর গ্রন্থ বিষ্ণুবাণের টীকাও বছকাল মুদ্রিত হইয়াছে, কিছ প্রথমোক টাকার্যের স্থার জনপ্রিয় হইতে পারে নাই। তদ্রচিত "বালবোধনী" নামক সনংস্করাতীয় ব্যাখ্যা বোধ হয় অম্বাণি অমন্ত্ৰিত বহিয়াছে। ভারত-বিখ্যাত এই মহা-পণ্ডিত ও ৰতিবরের নাম না ভনিয়াছেন, এরপ লোক শিক্ষিত-সমাজে অতীব বিরল। অথচ এই মহাত্মার কোন প্রামাণিক বিবরণ কেচ্ছ এষাবৎ সংগ্রহ করিতে চেষ্টা করেন সংখ্य গ্রন্থকারদের পরিচয়াদি ব্যাপারে এই পরাত্মধতা ও উপেক্ষাভাব বিশেষ করিয়া বাংলা দেশেই পরিনন্ধিত হয়। বাঙালীর আত্মবিশ্বতির বে সকল উৎক্লষ্ট উদাহরণ আমাদের জ্ঞানগোচর হইয়াছে শ্রীধর স্বামী তন্মধ্যে मर्खाएका कौर्षिमान। जामदा मःक्रिए डाहाद निविद्यानि বর্ত্তমান প্রবন্ধে লিপিবছ করিতেছি।

প্রচলিত প্রবাদ অমুসারে প্রীধর স্বামীর পুত্রই বিখ্যাত ভট্টিকাব্যের রচমিতা ছিলেন। এই প্রবাদ "ভক্তমাল" গ্রন্থে লিপিবদ্ধ আছে। আমরা বাংলা ভক্তমাল গ্রন্থ হইতে কিম্দংশ উদ্বাত করিতেছি:

> শ্ৰীনশ্ৰীৰর বাষী কগতে বিদিত। শ্ৰীমন্তাগৰত-টীকা কৈল বিভাৱিত।

শাক্ষী বিক্লম গৌৰ-সক্ষৰ-ব্যাব্যান। চুবিয়া স্থাপিলা ডম্ম মত বিলক্ষ্য ॥

পুত্ৰ এক স্ত্ৰী নাজ পূৰ্ব গৰ্ভবন্তী।

ভাজিৱা বাইতে বন হইল দুচৰতি ।

হেন কালে নাত্ৰী পূজ প্ৰনৰ হইৱা।
কালপ্ৰাপ্ত হৈল ভাৱ বালক বাবিয়া।
লাধু উৎকঠাতে পূহে যুক্তিতে না পাৱে।
লিভিত বালক এই কে-বা বক্ষা করে।
ভাবিতে ভাবিতে দৈবে এক জ্যেন্ট-ভিষ্য।
লাল হতে পড়ে গেল বিনা অবলম্ব।
ভাজিৱা ভিতর হতে বাজা বিক্লিয়া।
বাইল সন্থে এক বক্ষিকা বহিৱা।

সাধু ভাহা দেবি ৰনে বিচাৰ কৰিল।
সেই পিও বজিবে ৰে ইহাবে বজিল।
এতেক ভাবিবা ভাজি গৰম কবিল।
অনাৰ বালক প্ৰায় লোকেতে পালিল।
সেই পিও ভালে বহাপতিত হইল।
ভটনাৰে বাৰলীলা সাহিত্য বচিল।

ভট্টকাব্য গুজরাটের অন্তর্গত বলভী নামক নগরে ধরসেন রাজার সভার রচিত ইইয়াছিল। চারি জন ধরসেন রাজার অন্তিত্ব শাসনলিপি দারা প্রমাণিত ইইয়াছে—শেষ ধরসেনের রাজত্বলাল প্রায় ৬৫০ খ্রী:। ক্ষতরাং ভট্ট করির শিতা ভাগবতের টাকাকার শ্রীধর স্বামী কিছুতেই ইইতে পারেন না। ভট্টকাব্যের পুশ্লিকায় করির পিতার নাম লিখিত আছে "শ্রীমান"—ভাহার পাঠান্তর "শ্রীধর স্বামী" চুই-এক স্থলে লক্ষ্য করিয়া উভরের পিতাপুত্র সম্বন্ধ করিত ইইয়াছে। এই শ্রমাত্মক কর্মনা নির্কিচারে অনেকেই গ্রহণ করিয়াছেন এবং শ্রীধর স্বামী গুজরাট নিবাসী ছিলেন, ইহাই প্রচলিত মত।

শ্রীধর স্বামী স্বয়ং তাঁহার টীকাত্রেরে বেটুকু আত্ম-পরিচর লিপিবদ্ধ করিয়াছেন তাহা এইরপ। (১) তাঁহার গুরুব নাম ছিল "পরমানন্দ"; গীতাটীকার প্রারম্ভ শ্লোকে তাঁহার ব্যাধ্যা-চাতুর্ব্যের স্পষ্ট উল্লেখ আছে:

শেষাশেষ-মুখব্যাব্যাচাছ্ৰ্যং ছেকবজ্ব ড:।

দ্বান্মভুতং বন্দে "প্রৱান্দ্র"-বাব্যর্ ।

ভাগবভটাকার বহু স্থলে এই শুফনাম কীর্ত্তিত হইয়াছে।

বধা সর্বলেবে

ভাষাৰ্থ-দীপিকাষেভাং ভগৰতভ্ৰতংসলাং।
"পৱষানক"-পাদাৰ-ভূক: ঐঞীব্যোহকৱোং।
ধ্যানক"রপে নামটির পাঠাস্তরও স্থলে স্থলে দট হয়

"পরানন্দ"রূপে নামটির পাঠাস্তরও হলে ছলে দৃষ্ট হয়। যথা বিষ্ণুপুরাণ-টীকায়,

সংশ্রিত শ্রীপরাদন্দ-সূহরি: শ্রীপরো যতি:।
(প্রথমাংশের শেষে ও বিতীরাংশের আরভে)
পরাদন্দপরাভাজ-শ্রীপর: শ্রীপরো যতি:।
( তৃতীরাংশের আরভে )

(২) টাকাত্ত্রয় ৺কাশীধামে রচিত হইয়াছিল এবং তক্ষনাই ভারতবর্ধের সর্বত্ত প্রচার লাভ করিয়াছিল। কাশীতে রচিত হওয়াতেই কুলুকভট্টের মন্ত্রটীকাও তক্রণ সর্বত্ত স্থানিত হইতে পারিয়াছিল। গীতাটীকার আরভে গুরুবন্দনার পরবর্তী মুলুলারোক চইল:

শ্ৰীৰাৰবং প্ৰণৰ্যোষাৰবং বিদেশবাদৰাং। বিষ্ণুপুৰাণ-টীকাও মজলপ্লোক বথা, শ্ৰীবিন্দুৰাৰবং ৰন্দে প্ৰৱাদক্ষবিপ্ৰহং। বাচং বিধেষবং গদাং প্ৰাশবস্থান দুনীদ্য

বৈষ্ণবের পক্ষে বিশেশর ও গলার বন্দন। নি:সন্দেহ কাশীবাস স্থাচিত করে। (৩) প্রীধর স্বামী "নৃসিংহ"-দেবতার উপাদক ছিলেন, ইহাই প্রচলিত প্রবাদ এবং তদম্বামী পৌরাণিক সম্প্রদায়ে শ্লোকার্দ্ধ প্রচারিত স্বাচে:

এ বর: সক্রং বেছি এদুলিংহপ্রদাদত: ।

পূর্ব্বোদ্ধ ত লোকে স্বপ্তক্ষকে 'নৃহ্বি'র সহিত অভিন্ন কল্পনা করিয়া তিনি স্বয়ং তাহার সমর্থন করিয়াছেন। শক্ষাপ্তরে 'বিন্দুমাধ্যে'র বন্দনা করিয়া তিনি স্বকীয় গুরু-পাটেরও উল্লেখ করিয়াছেন। বিষ্ণুপুরাণের পঞ্চমাংশের টীকায় ইহা স্পষ্টতরভাবে নির্দিষ্ট হইয়াছে:

> আৰাতঃ পঞ্চনাংশে একুফলীলামহোলঃ:। বিশুমাৰবভোষায় মধামতি বিভগতে ॥

কাশীর বিখ্যাত 'বিশ্বু-মাধব' তীর্থ ধ্বংস প্রাপ্ত হইয়া শধুনা বেণীমাধবের ধ্বজায় পরিণত হইয়াছে। এই পবিত্র-ক্ষেত্রে অবস্থান করিয়াই শ্রীধর স্বামী গ্রন্থরচনা করিয়া ধন্য ইইয়াছিলেন। বিন্দুমাধব-ক্ষেত্রের দেবতা ছিল বোধ হয় 'নুহরি' অথবা নুসিংহ।

শ্রীধর স্বামীর কালনির্ণয় তাঁহার গ্রন্থোক্ত প্রমাণাবলী ও পারিবারিক ইতিহাস হইতে সহজ্ঞসাধ্য। ভাগবতের টাকায় (৩,২৩)৩২) তিনি "বিশ্বপ্রকালে"র বচন উদ্ধৃত করিয়াছেন ('রুচকং মললজ্বব্যে গ্রীবাভরণদন্তয়োঃ')—বিশ্বপ্রশালের রচনাকাল ১০৩৩ শকান্ধ (১১১১ খ্রীঃ)। বিষ্ণু-পুরাণের টি গাবস্তে তিনি স্পষ্টাক্ষরে লিখিয়াছেন:

> ঞ্জিবংচংক্ষণবোদিষ্ব্যৱচিত-ব্যাব্যাং নিমীক্য স্টং, ভলার্গেণ ইভ্যাদি।

নানা গ্রন্থকার চিৎক্থাচার্ব্যের অভ্যুদরকাল প্রায় ১২৫০ খ্রী: ; তন্ত্রচিত টাকা ও তৎশপ্রদায়ের উল্লেখ করায় শ্রীধন স্থ মীর অভ্যুদয়কালের উর্দ্ধতন সীমা ১৩০০ খ্রী: অব-ধানিত হয়

সন্ন্যাস গ্রহণের পূর্ব্বে তিনি বাংলাদেশের এক বিশিষ্ট ব্রাহ্মণ গান্তী অলক্ষত করিয়াছিলেন এবং তাঁহার অধন্তন বংশধারা নানা হানে অস্থাপি বিষমান আছে। এই 'শ্রীধর স্বামী বংশ' নামে পরিচিত সম্রান্ত পরিবাবের প্রামাণিক বিবরণ কুলপন্তী প্রভৃতি নানা উপকরণ হইতে আমরা সংগ্রহ করিয়াছি—ভাহার সারাংশ লিখিত হইল। (১)

১৮৭৪ এটাকে খড়দহের নিড্যানন্দবংশীর স্থপ্রসিদ্ধ নবছীপ-চক্ৰ বিভাৰত গোৰামী ভট্টাচাৰ্য্য একটি কৃত্ৰ পুত্তিকা মৃত্ৰিত करवन ( ১৮ देखाई ১१२७ मकास )-- बाम्र छुन निरंद्य দিয়া বিষ্ণু পূজা হইতে পারে কিনা ?" তৎকালে ইহা প্রবল चात्मानन एष्टि कविश्वाद्यिन धवः वह विचनत्शां के विवय পুথক পুংক बावञ्चानल সঙ্কলন করিয়াছিল। "विका-देनद्वर्ण-বিচার" নামে 'সভাবাজারীয় রাজসভাসদ-প্রণীভ' একটি পুভিকা প্রত্যান্তর বরণ ঐ সময়ে পুথক মৃদ্রিত হইয়াভিল (প. ৪৪+১)। তাহার শেষে (প. ৪৪) ভরত শিরো-মশিপ্রমুখ ১৪ জন পণ্ডিতের স্বাক্ষর আছে। পঞ্চম স্বাক্ষর-কারীর পরিচয় লিপি অবিকল এই :- "প্রীধরস্বামিরংশাব-তংস অধ্যাপক শ্রীয়ক্ত ঠাকুরদাস চ্ডামণি।" এই ঠাকুর-मान कनिकाचार अक्कन (अर्थ व्यथानक हिल्लन । ১২৯৪ সনের কার্ত্তিক মাদে ভাঁহার ১৩ বংসর বয়সে কাৰ্মপ্রাপ্তি হয় ( নববিভাকর-সাধারণী, ২৯ কার্ডিক ১২৯৪, প. ৬৪৯)। তাঁহার হাতীবাগানের টোলে 'সর্জ-শাস্ত্র' পড়ান হইত এবং ছাত্রসংখ্যা এক সময়ে প্রায় ৫০ হইয়াছিল। তাঁহার মৃত্য-সমাদ ঘোষণা করিয়া "হিন্দুরভিকা"র লিখিত হয়, "ইহার তুল্য পণ্ডিত বাংলায়- আরু নাই" (৮ অগ্রহায়ণ ১২৯৪ সংখ্যা )। কলিকাতা সংস্কৃত কলেক্ষের মহামহোপাধ্যার मर्ट्स नाग्रवेष ( ১২৪২-১৩১২ সন ) ठाक्यमारमञ् कार्ह সহোদর হরিনারায়ণ তর্কসিদ্ধান্তের পুত্র ছিলেন এবং মহেশ-চক্র ঠাকুরদাদের টোলেই প্রথম নাায়শান্ত অধারন করিয়া-ছিলেন।

(২) আমরা বহু কুলপঞ্জীতে এই স্থবিখ্যাত বংশের নাম্মালা লিপিবছ দেখিয়াছি। 'কুলবল্পদ্ৰম' নামক ঘটক-গ্রন্থের তৃতীয় থণ্ডে ( বন্যাবংশ ) কিয়নংশ মুক্তিভও চুইয়াছে ( भ. ७२ १-৮ )। এই वः भाव विक्रिय भावाद विवदन वधावध निभिवक हरेल এकि वृहर श्रंष व्रिक्त हरेल পারে। সাঞ্চাভালার ঘটকবংশীয় বাবহারাজীব জনমেজয় ঘটক দেকালের একজন সাহিত্যিক ছিলেন। ডিনিই সর্বা-প্রথম কুলপঞ্জীতে শ্রীধর সামীর নাম স্বাবিদার করিয়া তদ্রচিত "কুলভত্বদর্শন" গ্রন্থে ( বশোহর হইতে ১২৯৫ সনে প্রকাশিত) লিখিয়াছিলেন:-"স্বরেশ্বর নান্দার বাড়রি नाम् बााज, वहे वर्ष्य छत्नेनावावन इहेर्ड ३२ शुक्रव अखब শ্রীধর স্বামী যিনি ভাগবত ও ভগবদগীতার টীগ্লনিকর্তা তিনি কর্মাছণ করেন। ভাঁছার বংশ নার্যাচিগ্রামে বাস. পুন্তকে লেখা আছে কোন জেলায় জানি না।" (পু. ৪৮, পাদটীকা।) নগেজনাথ বস্তু (ব্ৰাহ্মণকাণ্ড, প্ৰথমাংশ, ২য় সং, পু. ২৫৭) একটি নামমালা মৃত্রিড করিয়াছেন; তু:খের বিষয়, ভিনি শ্ৰীধৰের উপাধি ও গ্ৰন্থকন্ত সম্পূৰ্ণ ৰাষ

দিয়াছেন। আমরা হত্তলিখিত মূল এছ হইতে শ্রীবর স্বামীর উৰ্কতন নামমালা বধাসাধ্য সংশোধন করিয়া লিখিতেছি।

আদিশরানীত শাভিন্যপোত্ত কিতীশের অধ্তন ৭ম পুরুষ "গাউ"। ষথা, কিতীশ—ভটনারায়ণ—বরাহ— বৈনতেয়—স্থবৃদ্ধি—বিবৃধেশ—গাউ প্রভৃতি। তাঁহার ছয় भूख-"दाकृष्ठ निर्धा **क**र्ज्ञ, र्यक्राधव छत्री वर्षे । স্ববেশবশ্চাপি গাউকতা স্থতা ইমে।" এই স্ববেশব 'নান্দা' बाम-निवानी ছिल्मन (शांठास्त्र नासा, नामा, नामा)। কোন কোন কুলগ্রন্থে 'নপাড়ী' বংশীয় অপর এক বছ পরবর্ত্তী স্থরেশ্বর হইতে এই বংশের নামমালা কীর্ভিড হইয়াছে, ভাহা সম্পূৰ্ণ ভ্ৰমাত্মক। স্থৱেশ্বরের ধারায় কৌলীন্য ছিল না- কুলগ্রন্থে ভজ্জন্য এই আদিবংশক গোগীর উপাধি 'বাডবি' নিখিত আছে। কুলপঞ্জীতে আদিবংশক্ষে নাম-মালা লিপিবদ্ধ থাকে না। এন্তলে ভাহার বাতিক্রম ঘটিয়াছে তুই কারণে—ভারত বিখ্যাত মহাপণ্ডিভের প্রতি অসাধারণ মধ্যাদা প্রদর্শন এবং মেলবন্ধনের পূর্বে এই বংশের একটি সর্বজনবিদিত কুলক্রিয়া। স্থারেশবের অধন্তন ৮ম পুরুষ, অর্থাৎ ক্ষিতীশ হইতে ১৫শ পুরুষ, औरद স্বামী। वथा. ऋद्वाय-अजाम-अभाकद-शेजायद-अभार-वानवाहार्या ( 'कश्रीखद्रव' व्यथवा 'कश्रेहाद' উপाधि )--- मक्ना-নন্দ মিল্ল-শ্রীধর স্বামী। সাঞ্চাজার গ্রন্থাসুসারে ( বঙ্গীয়-माहिन्छा-भदिवानय २००२ मः श्रु शिव ১>१ > भक् ) योगत्व পুত্রই শ্রীধর। আমাদের হস্তগত অপর এক পুথিতে বাদব কণ্ঠাভংপের পুত্রের নাম লিখিত আছে "মকরন মিঙ্র"। এং অকুলীন গোষ্ঠীর নামমালা সব কুলপঞ্জীতে নাই। কিন্তু, विश्विक्षाति नका करा व्यावश्वक, य कश्रेष श्राष्ट्र व्याह्य. সর্ব্বত্র স্পষ্টাক্ষরে শ্রীধর স্বামীকে ভাগবতের টীকাকার विशा निर्देश कवा श्रेशारह। अवह विभाग बाहीय कून-গ্রন্থে মুখবংশীয় ক্বন্তিবাদ এবং বন্দাবংশীয় এই শ্রীধর স্বামী वाछी छ कुखानि श्रष्टकनात्र निर्देशन नाहे। दिशीमश्हात-নাটক, নৈষধকাব্য প্রভৃতি বচনার কথা পরে কল্পিড হইয়াছে—মুলগ্রন্থে নাই। কয়েকটি কুলপঞ্জীর বচন অবিকল উদ্ধৃত হইন। অনমজেয় ঘটকের পূর্বোদ্ধৃত উক্তি কুল-পঞ্জী হইতে সংগৃহীত।---

"ত্ৰীৰৱ বামী ভা(গ)ৰভেৱ টকাকার"

( সাবাদের বিভট রক্তি ২ পর )।

"এবর বাধী ভাগবডভ টকাকারক"

( পরিষ্টের পূবি, ১১৭।১ পল )।

"এবর খানী ভাগবভের ইকাকার"

( ঢাকার একট পুথি, ১৬২।২ পর )। উদ্ধৃত নাম্মালা হইতে শ্রীধ্র খাদীর কালনির্ণিয় সহজ- শাধ্য। বন্দ্যবংশে ৬ জন বলালসেনের রাজ্যকালে "কুলীন" হইয়ছিলেন—তন্মধ্যে ঈশান ছিলেন হ্বরেশরের প্রাতা হাকুচের অধন্তন ৫ম প্রকর এবং জাহলন ও মহেশর অপর প্রাতা গলাধরের চতুর্ব প্রকর, অর্থাৎ প্রপৌত্ত। সর্কাকনিষ্ঠ হ্বরেশরের পৌত্রকে প্রথম কুলীনদের সমকালীন ধরা যায়। এক প্রকরে ৪০ বৎসর ধরিলেও প্রীধর স্থামীর জন্ম কোন প্রকারেই ১৩৫০ গ্রীষ্টান্দের পরে বায় না। প্রীধর স্থামীর অভ্যাদরকাল হতরাং নি:সন্দেহে ১৪০০ গ্রীষ্টান্দের কিঞ্চিৎ অগ্রপশ্চাৎ নির্ণয় করা যায়।

শ্রীধর স্থামীর কন্যাকে মুধবংশীয় ফুলিয়ামেলের বিধ্যাত কুলীন মনোহর পণ্ডিতের পুত্র বল্লভ বিবাহ করিয়াছিলেন, পূর্ব্বোক্ত মূল কুলপঞ্জী কয়টিতে ইহা লিখিত আছে। পরস্ক বিভাগাগরের 'বছ-বিবাহ' প্রস্থাস্থপারে (পৃ. ২৬) স্থাং মনোহরই এই হানিকর বিবাহ করিয়াছিলেন এবং তৎসম্বন্ধে একটি কারিকা নানাগ্রন্থে মৃত্রিত হইয়াছে:

ৰলোহর বিৰে করে নাঁধার বাঁচুরী। পরে কুল ভেলে পার শোধার আকুড়ী।

এই বিবাহ হইতে ফুলিয়া মেলোৎপত্তির বীক্ষভূত প্রথম 'নাঁধা' দোষের স্পষ্ট ইইয়াছিল। প্রীধরের অভ্যুদর কাল বিবেচনা করিলে মনোহরের পক্ষেই এই বিবাহ করা সম্ভব হয়, মনোহরের পুত্র বল্লভের পক্ষে নহে। মনোহরের পিতৃবা ছিলেন কৃতিবাস কবি—প্রীধর স্বামী ও কৃতিবাস স্বতরাং প্রায় সমকালীন ছিলেন ধরা বায়: কৃতিবাসের জন্ম আমরা ১৩৫২ খ্রীষ্টান্ধ বিলয়া ধরিয়াছি (প্রবাদী, মাঘ ১৩৫৬, পৃ. ৩০৯) এবং সম্ভবতঃ শ্রীধর স্বামী তাঁহার ব্যোধ্যা ছিলেন।

শীগর স্থামীর অধন্তন বংশধারা অতীব বিভৃত—সেহাথলা, নাবীট, বিকড়া, হরিপাল প্রভৃতি গ্রামের ভটাচার্য্যগণ এই বংশীয় বটেন। ইহারা প্রধানতঃ শাল্প-ব্যবসারী
ছিলেন এবং উক্ত গ্রামসমূহে প্রাচীনকাল হইতে এই বংশে
বে সকল পণ্ডিত জন্মগ্রহণ করিয়াছেন তাঁহাদের সমষ্টিসংখ্যা
প্রায় ৩০০ হইবে। আমরা বাংলাদেশে সংস্কৃত শিক্ষার
প্রধান উদ্ধার কর্ত্তা নারীটের ভট্টাচার্য্য বংশীয় স্থনামধন্য
মহেশ ন্যায়রত্বের ধারাটি মাত্র নিদর্শনস্বরূপ উদ্কৃত
করিতেছি। শীধর স্থামীয় একটি মাত্র পূত্র ছিল শ্রীকর
বিভাবিত্ত —সভবতঃ ইহার শৈশবকালেই শ্রীধর গৃহত্যাগ
করিয়া চলিয়া গিয়াছিলেন। বিভাবিবের পূত্র (হরিহর)
বিভাবিত্ত ও তর্ধপুত্র রমানাথ বিভানিবাস। কোন কোন
পূথিতে বিভাবিত্ব ও বিভানিবাসের নাম বাদ পড়িয়াছে।
বিভানিবাসের পূত্র ক্লফানন্দ ভর্কপঞ্চানন ও ভংপুত্র

জানকীনাথ চূড়ামণি। জানকীনাথের অধন্তন নবম পুরুষ हिल्मन मरहमाठळ । यथा. चानकी नाच-वारकळ मार्करकी म ( ২য় পুত্র )—গোবিন্দ ভর্কালয়ার ( জ্যেষ্ঠ পুত্র )—শ্রীপড়ি ন্যায়বাচস্পতি (জ্যেষ্ঠ পূত্ৰ)—গৌরীকান্ত ন্যায়বাগীশ শিবোমণি—হবিনাবারণ তর্কসিদ্ধান্ত—মহেশচন্দ্র ন্যায়রত। মহেশচন্দ্র শ্রীধর স্বামীর স্বধন্তন ১৪ পুরুষ এবং স্বাদিশুরানীত কিডীশ হইতে অধন্তন ২৮ পুরুষ ছিলেন। তরাধ্যে অস্ততঃ পক্ষে ১৬ পুরুষ ( কণ্ঠাভবণ হইতে ন্যায়বত্ব পর্যায় ) অবি-প্রান্ত গারায় উপাধিধারী শান্ত-ব্যবসায়ী পণ্ডিত ছিলেন। মহেশচক্রের ধারাটি প্রায় জ্যেষ্ঠামুক্রমিক—শ্রীধরের জন্ম ১ ८ ६ - औहोर्स प्रतिम्ब अर्थे क्रिकार्था-लाष्ट्रीय क्यार्थ-भाषाय এক প্রক্ষমের গড়পড়তা হয় "৩৭ বংসর"। ইহা বিশেষ-ভাবে লক্ষ্য করা আবশ্রক বে. চারি পুরুষে এক শতাব্দী বাংলাদেশে কোন পশুত-গোগীতে, কোন কালে লক্ষিত হর না। মহেশচন্ত্রের পর্ব্ব-পরুষদের বছ পারিবারিক তথা কুলগ্ৰন্থাদিতে পাওয়া বায়। আমরা তই-একটি উল্লেখ করিতেছি। হগলীর ১২১-৪ নং তায়দাদে দৃষ্ট হয়, ১২-১ সনে হীরালাল তর্কশিরোমণি এক খণ্ড বৃহৎ নিষ্কর ভূমির দখলকার ছিলেন। ছোটফুলিয়ার মুধবংশে হরি মিশ্র একজন কুলীন ছিলেন (ঞ্বানন্দ, পু. ১১৪)। তাঁহার এক অভিবৃদ্ধপ্ৰণোত্ত পুৰুষোত্তম সম্বদ্ধে নিধিত আছে— "নান্দাবন্দা গোবিন্দ ভর্কালভারতা ক্সাবিবাচাৎ নৈক্তা-ভদ্ব:" (ঘটককেশরীর কুলপঞ্জী, ফুলিছা প্রকরণ, ৩০)১ পত্র)। এতদম্পারে পোবিন্দের অভ্যাদয়কাল হয় প্রায় औ: ১৭។ শতাৰীর প্রথমাংশ। পশপুরনিবাসী বিখ্যাত স্বার্ত্ত পণ্ডিত কুণারাম তর্কবাগীল (১১০০-১২১০ সন) প্রথম বিবাহ करवन "नाविषी"-निवामी शोबीकास नाधवामीत्मव क्षारक —গৌরীকাত্তের দৌহিত্তের নাম ছিল রামস্থলর তর্ক-পঞ্চানন ( হুগলীর ২৯৮৭১ নং ভাষ্ট্রা ।। স্বভরাং भोबीकारस्य समा ১৯०० औहारसद शर्ख रहेशाहिन।

পুণার ভাণারকার প্রতিষ্ঠানে শ্রীধরাচার্য্য রচিত
"গাঁতাসারটাকা"র পুথি রক্ষিত আছে। ইহা শ্রীধর স্বামীর
গীতাটীকা হইতে সম্পূর্ণ পৃথক্ বটে। ভগবদ্গীতার
পরিশিষ্টস্বরূপ 'গীতাসার' নামক এক কৃত্র অতি তুর্লভ
গ্রহে শ্রীকৃষ্ণ-অব্দ্রন সম্বাদে তন্ত্রসম্মত গৃঢ় বোগরহস্তক্রিয়াদি বণিত হইরাছে। টাক্বার পূল্পিকাটি অতীব মূল্যবান্ এবং সম্পূর্ণ উদ্বত হইল:

কৃষ্ণবৈপাৰন-জনমিৰে ভতদৰোপগৃচে কৃষকৃষাহিপভিবিবলংপাৰ্থবছাত্ৰি-মৃষ্টে। শ্ৰীকৃষ্ণোমিৰলবিৰ্ণামভৰ্যভাৰং বিগাচে বছং গীভায়ভমুদভবং সমসাগ্ৰাবিভং বং।

সংসারেখিন্ ভত্তভাংপর্যাড়বৈট্য, চীকাণ্যাভা ব্রহ্মসংকাৰিনীয়ন্।
"আচার্য্যের শ্রীবরেণ ব্রিবেণী-সদ-স্থানকালিভাভর্যনেন।
"রাগাবিষ্টে" বিজ্ঞানিভালাকে, বাবে প্লিটে সোমবারেণ দর্শে।
সিবে বোগে বিজ্ঞাক্তভাই, সিহক্তেরে "বাববাছা"বিলিটে।
(১৮৭৫-৬ সম্বের ৪২৫ সংখ্যক পুরি)

নরসিংহের উপাসক এই শ্রীধরাচার্য ত্রিবেণীসক্ষমে স্নান করিয়া মাধব-মন্দির-সমন্থিত বে সিক্ষক্ষেত্রে বসিয়া গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন তাহা বিন্দু-মাধবতীর্থ-সমন্থিত কাশী-ধামই বটে। সন্থাস গ্রহণের পূর্ব্বে বোগাভ্যাসরত শ্রীধর স্থামীই এই টাকাকার বলিয়া মনে হয়। টাকাটির রচনাকাল হইতেছে 'কটপয়াদি'ক্রমে লিখিত "১৪৩২ বিক্রমান্ধ"—ঐ সনে বস্তুতই মাঘের স্থামবস্তা সোমবারে পড়িয়াছিল ( — ২১ জালুয়ারী ১৭৩৬ খ্রী: )। স্থামাদের নির্ণীত শ্রীধর স্থামীর অভ্যাদয়কাল এম্বলে স্থান্ধরণে সম্পিত হইতেছে। তাহার প্রধান গ্রন্থসমূহ সন্থাস গ্রহণের পর প্রায় ১৪০০ খ্রী: রচিত হইয়াছিল।



# वन्दी यात्रा

### बित्रामनम मूर्यानाधारा

5 4

अवि करवरे कार्डन करवकी बान।

বাণের অসুবে ভাল দিতে দিতে প্রভাতের উপার্ক্তিত
অর্থ নিংশেষ হতে লাগল। বে লাবনার ও সমোনিবেশ
করবে ভেবেছিল ভা রইল বছদুরে। একটা বছর বুধাই
পোল—ক্লাস নেওবার সলভি ওর হ'ল না।

আহ্বাতীর প্রথমে অনিমেবের সদে দেবা। সে উৎকুল কঠে বললে, এতবিনে হবোগ হ'ল ভাই—শীগ্রিরই ইউরোপ বাচ্ছি।

ट्याबादम्बन्ध प्रद्वादिक चर्मको क्रब्राच क्रब ।

কি করব ভাই—বাবা বললেন, বধন পড়তেই বাছ না— ভধন বিজনেসের আদি অভ কিছু কেনে নাও। আজকাল ব্যবসা বলতে বর নিরে থাকলে ভো হবে না—পৃথিবীটা বে এসিরে এসেছে। ভাই ভালির দিছিলান এভিনিন।

কৰ্ব্যাচুলেগৰস্।

কিছ আৰার ইচ্ছা শুধু শির-ভারণানা দেখা বা ইউরোপের মার্কেট টাভি করা নয়—এই সদে ও দেশের সাহিত্য ও মাছবের সদে পরিচর লাভ করা।

প্রভাভ বললে, এ দেশে বসে ওদেশের সাহিভ্যের সংক পরিচর লাভ করা হংসাব্য বুঝি ?

অনিমেষ বিশ্বার অপ্রতিত না হরে বললে, নাস্বের সলে সাহিত্যকে বিলিয়ে দেবলৈ বেষন জানলাত হয়—

ভা ঠিক—বাদের সে প্রোগ ভাবে—ভারা কেনই বা ভা না ভানবে !

অসিবেষ বললে, সিমে চিটি কেব—উভর দিভে ভ্লবি মা ভো ?

প্রভাত বললে হেলে, আকাশের এক কোঁটা তাল পুক্রে পঢ়লে কি হর ভাষ তো ?

অনিবেৰ হেলে উত্তর দিলে, ভাই ভো পুক্র ভরে কোটে পদকুল।…

ভোষার জীববের এই আশা সাধক হোক।

সভাই কি আনল সাভ করতে পারলে প্রভাভ ? ওর ববে কি কোভ বাগতে না বে বৃহৎ পৃথিবী আৰু অনিবেহের বিচরণ-কেন্দ্র হতে চলেতে। করনার আঁকা সর্জ নানা বিচিত্র কোও বিচিত্র বেশবারী নরনারী ভাবের রীভিনীভি শিকা নর্দ্ধি নিয়ে ওর ক্ষপতে এসে ইন্ডাবে। ও সার্থক হবে—বত হবে। আক প্রভাভ বদি অনিবেহ হতো। না—না—ওর দৌভাগ্য প্রভাভের বনে ইন্ডার হারাণাভ করতে—এ

ইব্যাই। এই ইব্যাকে জর জরতে না পাচলে নাবছ হবল — বছ

একলা, জভ্যন্ত নিংল প্রভান্ত। প্রবাদ বলে — সভলভারই
ভীবনে একদিন-না-একদিন সোভাগ্য সিভছাতে ভটাকপাত
করে। কিন্তু বারা বাধার বোকা নিবে জ্যেতে জভাবের
সংসারে, পেটের কুষা ও লেহের লক্ষা বিটলেই ভো ভারা
সোভাগ্যবান ! পুর সুবাছর অবণ, আন-তৃফার লাভি বা বিচিত্র
আনন্দ বালে পরিতৃপ্ত হওয়ার হংবপ্ল ভারা কেন দেবে ! ভারা
ক্যাব কোন্ প্রবাদনে এবং বৃত্যুর পরে রেবে বার কি
সম্পত্তি ? অবচ সাবারণ বরের ছেলেই অব্যবসারে ছ্রেতে
আনভপরী—নহাসাবক — হুর্জব বোদা, প্রবন্ধ রাইনারক—
ভাতির ভাগ্যনিরভা। সে দৃঙাভ মাবে বাবে দেবা বার—
কিন্তু সাবারণ নির্মের ব্যক্তিক্র এরা।

ভাৰতে ভাৰতে ও বছ বাছীটার সামনে এনে পছেছে। বৈঠকবানা বেকে কে বেন ভার নাম ব্যব্র ভাকলে।

बृहुर्छ क्षणाच्य वन विवन करन केर्रण। আগেকার অঞ্জীভিকর বটনার স্বতি ভেলে উঠল মনে। সেই দিব থেকে এ বাছির সলে কোন সম্পর্কই ভো রাথেন নি প্ৰভাত। বাবে মাবে মেছ-ছোঠাইয়ার কৰা মনে হয---অভীত দিনের কাহিনীর পাভার শক্তিবরী এক নারীর ক্বা---কিছ দেই কাহিনীর শিহনে বাহুবের খার্বের কুত্রী প্রকাশে वर्ण्ड विमूप इता कर्छ हिन। बाद कि बाद ना अह रेक्कक:-कार अब समारक ह्यांमा मिएक मानम। व्यवक महत्र मन কিছুৰ ভীৱতা হৰণ কৰে—বহুদুৰেৰ অগ্ৰীতি এই ৰুহুৰ্তে দেদিনকার মত ভীত্র বোধ হচ্ছে না। ওর চিভার রাজ্যে चार अक्षे हवार (मन पूर्ण) अक्कारनर वय-क्य-जब्द অটালিকার গর্কোদ্ধ বৃতি আৰু নাই। ক্ষতার রক্তি সংহরণ করে হর্ব্য বেন অভাচলচ্চাবলমী হরেছেন। ভরু जलाहनशायी पर्राव यक ब्लाटियंकन बहनाव नाया बेरनव নাই---এ দের নামনে রাজির আগর বিভীবিভা। সভত नेनिकांव बानिकांना यह निःत्विक करव और कर्यानीत আশ্ৰৰ নিৰেছে—এই দৌৰও তাকে পৱিপোষণ করতে পারৰে कि ? उँत्तव बत्न विविदे मुद्ध शीवव किविदव जानाव जावना উল হলে ওঠে-লেকত ভবু কি ওঁলাই লালী ? নাছবেল নৰে बानबाब बाना वा (बरक एडे इरबार-वाबी त्नहे बृक्ति। উচ্চাকাকার আঙ্গ এমণি করেই পুড়িরে বারে-সুক্র আবরণে দীবারীত না হলে। আত্ম প্রভাতও কি তুলছে না 🤊 কোৰাৰ গেল ওৰ প্ৰতিজ্ঞা—উচ্চ শিকা লাভ কৰবে—এ र्टिय वर्षाप वर्षेट्र भावत वाद ? अनिराय हरनाए महत-

পারে—ওর বনে ব্যর্কার বেলনা প্রবল হবে উঠছে। ও
হিংসা করছে অনিবেবের। চারিদিকের বটনা ওকে পিছনে
ঠেলছে প্রবল বেগে—প্রভিক্স প্রোভে গাঁভার দিভে দিভে
ক্লাভ হরে পড়েছে প্রভাভ। বছদূরে ওর ভীরভূবি—প্রার
নিচ্ছিত্ হরে গেছে—সেধানে পৌহরার আলা বৃদ্ধি ছরালা
হ'ল। চিভা-রাজ্যের ছরার ধুলে একট রশ্বি ওর আনবর্তিকার সংলগ্ন হ'ল। ইা—অকূল বরিয়ার ভাসছে ও—
বিক্রারা পৃথিবী ওকে ভর দেধাছে—কিভ এই অক্লেও
এক্থও কাঠ বেন ভেসে আসছে। জিলোচন সেনের ভাক
সরাসরি উপেকা করতে পারলেনা ও—ভাবতে লাগল বাবে
ভি বাবে না।

ইভিৰবো ত্ৰিলোচন সেন নেনে এসেছেন। ওর কাছে ইভিনে বলছেন, কি এত আকাশ পাতাল ভাবছ ? আরি ভাতলার—ভনতে পাও নি ? আর আস না কেন ? একট লাহিত্য সভাতে ভোরাদের সাহিত্য শাধার কাজ শেষ হয়ে গেল ?

49 (55(2 49 )

প্রভাতকে নিয়ে উনি সিঁভির পাশের ছোট বরটিতে এসে বসলেন। বললেন, ভর নেই, প্রবন্ধ শোমার না।

প্রভাভ অপ্রভিভ খরে বললে, কিছু মনে করবেন না।

আরে—না—না, ভা হলে ভোনাকে ভাকত্নই না। তুনি
ভ জান না—আমাদের দেহে বে বক্ত বর ভার রঙই
আলালা। এই বরে বসে তুমি ভাবভেও পারবে না—এক্যুগ
আগে আমারই কোন পূর্ব্ব প্রান্ত পানার দাভিস্কল অবাব্য প্রভাকে এই বরের কেওরালেই জীবভ গেঁথে
কেলবার ছক্তম দিরেছেন—আর সে ছক্তম ভামিলও হরেছে।

প্রভাভ ভীৰণ ভাবে চন্তে উঠতেই ত্রিলোচন বেন হেলে উঠলেন উচ্চে:বরে।

হেলেৰাত্ব ভোৰৱা—কাঁকা তেক আহে বনে—কিন্ত বে লক্তির ওপর কাঁক করালে তেককে বনে হবে পৌরুব—ভা নেই ভোরাবের। বাব ভোরার নর—এ কালটাই এই রকম। বাক।—বে কথার কত ডেকেছি—প্রভাতের পানে ভীকু বৃষ্টিতে চেরে বললেন, চাকরি করবে ? বলটা পাঁচটার লাসক নর—টিক গোলারি বাকে বনে কর—ভা নর। কল-ভাভা বেকে দূরে আবার একটা বহাল আহে। হোট বহাল, আর কম—ভবু কমিবারির ভ্যাবশেষ। লেখানকার প্রভাবা মেহাং চাবী বক্র বর—ভাবের সভা আহে—পঞ্জি আহে—কমিবারকে ভাবা প্রভাবন্ধক বা বক্ত শোবক কোনটাই মনে করে না। ভবু ভাবের চালিরে বেওবাটা সহক্ষ নর। আবাবের প্রশো নারের পারের বি—ভাকে বিলার করতে হরেছে।

আন্তৰ্যা, ইবি প্ৰভাতকে নাৰেবি বিজে চান ৷ নাৰেবি ?

প্রভাত সঙ্চিত হবে বললে, মারেবি করবার মত শিকালাত করিবি ত।

ভা ক্ষমি বটে—ভবু সেকালের শিকার এ কালে নারেবি
চলল না—চলবে না। ভয় নেই—বাভার ক্ষা বরচ ভোমার
ক্ষতে হবে না—চেক দাবিলাও লিবতে হবে না—একটা
নই বিও ওবু—নামলা-মোক্ষমা—আরে বাবভো না—এ
কালটাই আলাদা বক্ষের। ও সব বিভীবিকা নোটেই মেই
ও মহলে।

ভবে --

কণা কি ভান—শিকা এ কালের—ভার ষাত্ব সেকালের
বিল হর কণনও! হর ত ভমিদারিও পাক্ষরে না—ভার
নাবেবরা ভার আগেই সরবে—কিছ কণাটা কি সভিয় নর যে
ভমিদারি প্রধার উচ্ছেদ করবার ভভ আইন ভৈরি হবে
সংসদে ?

হর ভ হবে। কিন্তু ভাভেও ক্ষিদাররা নোটা রক্ষের ক্তিপুরণ পাবেন।

পাবেন ? আহা ভাই হোক—হোক এবন আইন। আইন না হ'লে বেচ্ছাৰ ভ কোন ভিনিস ছাভতে চাইব না আমৱা।

কিন্ত কৰিদারি প্রবাচী নট হলে--- আপনার ক্ষতি হবে না ?

হবে। কিন্তু দায়িত্ব থেকে রেহাই পাব। দেকি ? আশ্চর্ব্যে প্রশ্ন করলে প্রভাত।

পাব না ? হো-ছো করে হেসে উঠলেন জিলোচন সেন।
এ কালটাই যে বেয়াড়া—যা আছে ডা নিয়ে বাস্থ্যের তৃতি
নেই। বাস্থ্যের যন চার যুহ করভে—শাভি ভার চক্ষণুল।

কিন্ত এমনও ভ হতে পারে পৃথিবীর চারিদিকে যে আশাভি হড়ান রয়েছে ভা দূর করবার ভত বুছের প্রয়োজন।

বুৰের বারা শান্তি! ভোনাদের গানীলী কি বলেছেন? হিংলার বারা হিংলাকে কর করা বার ?

কিছ ৰুদ্ধ ৰাজকেই হিংসা বলছেন কেন ?

বলছি এইকচ বে হিংলা-অহিংলার প্রভেগচাঁ বচ ছন্ম। ভোমাকে আবাকে আবও অনেককে নিয়ে ত পৃথিবী—কিছ ভোমার লগে আবার—কিংবা আবাকের সলে আব সকলের বতের মিল বাই। তুমি বুছ করছ আবর্ণ স্কট করতে—আবি চাইছি সেই আবর্ণকৈ ভালতে। আব এক জন চাইছে আবর্ণের সংকার করতে। এমনি বিভিন্ন বভবালে আক্ষেত্র পৃথিবী ভারি হতে ওঠে নি কি ?

PE-

ভৰ্ক বন্ধ—ৰে ক'বিৰ ভবিবারি প্ৰথা ট কে থাকে—ছুবি ৱাজী কি ভাজটা বিভে গ

প্রভাতের বন বললে, না। কিছ কালে বেই প্রতিবাদ ধানিত হ'ল না। সংসারে প্রকেবারে কিছু না করা চলে না। চেট বৰৰ এগিৰে আলে চোৰ বুক্তে তাৰ আৰ্ক বাঁচাৰ সভব মৰ। সংসাৰে চলাটা বেমন বৰ্ণ-তেমনি কৰ্ণেৰ আপ্ৰৱে জীবন বন্ধাৰ বৃত্তিও আৱ একট বৰ্ণ। এই সব বৰ্ণ পৰতাৰের সলে সংযুক্ত। কর্ণব্য-বলি বিষে অনেক বন্ধকে বেঁৰে ৱাবা চাছে—যা বেকে পরিজ্ঞান সাত সহক্ষ মৰ।

(न वनात, जाबारक पिन इरे नमन पिन।

বেশ ভ—কাহ্যারির শেষ ভারিবে ভোষার বন্ধ কামিও —অপেকা করব আমি।

ও চলে আগছে—ত্রিলোচন সেন আবার ডাকলেন।
একটা কথা পরিকার হরে থাকা ভাল। ভোমাকে ভৈকে
বে কাকটা দিভে চাইছি—আশা করি এর ভূল অর্থ করবে
না। হর ভ শুনে বাকবে ভোমাকে নিকটে টানবার বুলে
আমার একটু উৎস্থে আছে; সে আর এমন বিচিত্র কি!
ক্যাদারএন্ড বাশেরা স্বভাবভাই সং পাত্রের সন্ধান পেলে
বুলী হন—ভাকে আগন করে নেবার চেঙা করেন—

প্ৰভাভ ৰাথা নীচু করলে।

লক্ষ্য করে জিলোচন সেন বললেন, এটা কোন পক্ষেই লক্ষার কথা নর—সংসারে এ ঘটেই। কিছ একনাত্র সেই উদেও নিয়েই বলি উপকারকের ভূমিকা অভিনর করতে হয় ও তার তেরে লক্ষা কি থাকতে পারে। তোনাকে তাল লাগে—অবীকার করি না—কিছ তোনার বাধীন ইছাকে দভিদভা দিয়ে বেঁৰে আনার বার্থ সিছির অহুকুলে টানব না এটা নিশ্চিত কোন। এ বিষয় ভূমি সম্পূর্ণ বাধীন। আছো—বাও।

পথে এসে প্রভাভ ভাবলে, হর ভ জিলোচন সেন সরল মনে প্রভাবট করেছেন—কিন্তু তাঁর মনে বে বাসনা অনুবিভ হরেছে ভাকে প্রভিত্ন প্রতিবেশে নিবে বাওরা প্রভাতের পক্ষে সন্তব হবে কি । মনের একটা মরম অংশ আছে— সমন-বিশেষে বা কৃতজ্ঞতার পরিপূর্ণ হরে ওঠে। ভার সঙ্গে ছাভ মেলার কর্ভব্যবোধ। তথ্য অভারণে রচ্ হওরা চলে মা। মা—আছ আর এ নিবে ভাববে না সে। হাভে সমর আছে—অনেক ভাববে সে। গভীর ভাবে ভাববে।

9.8

পরের বিদ—দীপার একবাদা ছোট চিট্ট পেলে লে।

দীপা লিখেছে: আৰু ছুপুৱে একৰার আস্থেম এবাড়ীতে। বিশেষ দরকার। বোৰ হয় ভনেছেম—দাদা
ডাটনেন্টে বাছেম—ওঁকে এড়টা অভিনন্দন দেওরা দরকার
ময় কি ? আপনার কি বত ? আসবেন অবিভি—অনেক
—অনেক কথা আছে। দীপা।

সে অনেক কথা প্রভাত ভাষে। অভঃপর এই উপলক্ষ্যে বিরাট ভোকের আলর বলবে—নিব্যন্তিত হবেন এ বুলের ন্যান-শিরোববির।। একবনকে সভাপতি লাভিত্রে—গান-

বক্তা-ক্বিভাপাঠ-হাসি-সন্ধ-বছবাদ—সব কিছু বিশ্ববিদ্
চলবে। বেষ্ম সাধারণ লভার ইয়ে থাকে—প্রচারের
পর্মপ্রতিন বাত্রিক নির্মে অস্প্রতিভ হবে। কিছু সাধারণ
সভাকে—শোক ধা উৎসব যে সভাই হোক, মাস্থ্য বেষ্ম্ম
অভ্যন্ত সহক্ষেও শীত্র তুলে যার—যেম্ম একটা সভার পর
অভ সভাট অমুদ্ধ হয়ে ওঠে মা—বেষ্ম প্রান্ত সদীতে কেই
বনোনিবেশ করে মা—বক্তভাকে ভাল লাগলেও বনে হয়
ওছিরে বলার, ক্রাভিমধুর করে বলার কৌশল মাত্র—কবিভা
পাঠে মিত্রাণ কঠের প্রমি সভাত্রল অর্থহীন হরেই বাক্ষে—
ভেষ্মি বরণের অস্থ্যান হবে এটা। এসব অস্থ্যানের সার্থকভা
কি পু কাকে প্রচারের ক্ষম্ম এর অবভারণা পূ—শোক্ষকে,
আমুদ্ধকে মা আত্রপ্রদাদ লাভের ইচ্ছাকে পু আন্তর্ব্য—স্থেব
বা ছংখে—সম্পাদে বা বিপাদে মাসুষ সর্ম্মদাই চার প্রসারিভ
হতে।

ওকে চিত্তাযুক্ত দেৰে দীপা বদলে, কি ভাবছেন এড ? শনীর কি হুত্ব নেই ?

মা কিছু ময়। ওরা তথম বড় বারালাটা অভিক্রম করছে। হঠাং বারালার এক প্রান্তে প্রভাতের দৃষ্টি বিবছ হ'ল। মনে হ'ল একখন লোক বারালার যেবে ভেদ করে ভূগতে অদৃশ্র হ'ল। ও বিদরে শব্দ করে উঠতেই দীপার দৃষ্টি আফুট হ'ল সেধিকে। বললে, আশনি আনেন না বৃধি ওই বারালার মীচের একট বড় চোরা কুঠুরি আছে।

(甲甲?

ৰানে বিরালিশের জাগানী বোষার কথা বনে জাছে তো ? তাই থেকে গরিত্রাণ পাবার একট জাঞার জার কি ।

क्षि बरम ब चालातत मूना कि !

বীশা বললে, ভবিভাজের বভ—বদি ক্থমণ্ড হ্ছ বাবে— প্রভাজ বললে, আরও একটা উদ্দেশ্ত লিছ হতে পারে। কি উদ্দেশ্ত ?

ৰৱ, কোন ৰাছ্যকে স্কিরে রাণার দরকার—কোন কিনিয়ত হতে পারে—

দীপা বদলে, আপনি আজগুৰি ভিটেক্টভ উপভাস বানাফেন প্ৰভাতদা।

ঠিক নৰ—কেন না—মাছবের বদলে জিনিস রাধকে পারলে আজকালকার দিনে লাভ বেনী। কালো বাজারে বে সব জিনিস পাওরা বার —সালা বাজার ধেকে হঠাৎ উবাও হরে তারা মাটর ভলাকেই অপ্রের করে ভো।

দীপা সন্ধোৱে হেলে বললে, দেববেন—আহাদের বেদ ও বলে টানবেন না।

এই ক্ৰায় প্ৰভাভ চমতে উঠন। এক্ৰা পৱিহান নাও হতে পাৰে। এই প্ৰানাদেৱ ক্ৰৱহত কে বলতে পাৰে ভূৰত-নিৰ্দ্বিত ওই ব্যৱতে নাই। চলতে চলতে ভার বার বার মনে হ'ল—কি আছে পারের নীচের এই গর্ভ-গৃতে? এ কি ভবু অনাগত দিনের বিপন-পাতকে নিবারণ করবার জন্যই ভৈত্তি হরেছে—না চলতি কালের সলে এর সম্পর্ক প্রনিষ্কি।

আহ্না, ভোষাদের একটা প্রেস চলছে না ? হঠাৎ প্রশ্ন করনে প্রভাত।

ছঁ—কেন ? বই ছাগাবেন ? সভ্যি বদি ছাপেন কোন বই—কৰ্মা পিছু কিছু কনসেমন পাবেন।

ভাগৰ ? সে ভো আৰকানকার বাজারে হস্পাণ্য।

না—ভাও বেব। আমানের ইক আছে—নির্ব্তিত মুল্যেই—

ওয়া সিঁ ভির ভাষে এসে পড়ল। সিঁ ভির রুবে অনিবেবের সলে বেবা। বললে হাসিরুবে—এঁরা কিছুতেই হাডবেন না, একটা বিভার-অভিনন্দন জেবেনই। আমার ইচ্ছা হিল কিরে আসি কিছু সকর করে—

প্ৰভাতত হাসলে, সঞ্চ না থাকলে কি কেউ বেশী পাৰার অধিকারী হয়? বাবজো না—বেভে আসভে হ'দিকেই ভোষার লাভ হবে।

হো-হো করে হেলে উঠন খনিবেষ। খাছা—খাছা ওপরে বাও। শীন দিতে দিতে নে বেরিরে গেল।

আরও করেকট ছেলে বেরে উপরের ঘরে বলেছিল।
এরা দীপা আর অনিবেরের বন্ধু। একেরই উৎসাহে অভিনন্ধরের পরিকরনা কারা লাভ করবে। কাগজে কলবে
নভব্য লিপিবছ হ'ল। নাচের ভঙ্গ কাকে বলা হবে—সদীভে
কে কে অংশ প্রহণ করবেন—কার কোন কোন নামী
কবিভার আরভি হবে—আর নভাশভি নির্বাচন—এ নিরে
নানা বভের শুটি হ'ল।

হঠাৎ দীশা বললে, আগনি তো কিছু বলছেন না এভাডদা ?

আৰি ! আৰি এসবের কিছু কানি না তো। ভোষরা প্রায়ই বাও সম্বর্জনা-সভার—কলসার—

ভা হোক—সভাশভিত্র নাম আপনাকে বলভেই হবে। প্রভাত বিত্রত হয়ে বললে, বাকে হোক একফনকে—

লে তো নিক্তর—থালি চেয়ারে স্থলের বালা দিয়ে আবরা অনুষ্ঠান শুক্ত করব বা।

প্রভাভ হঠাং বা বলতে দিরে থেবে গেল—তার ভাবার্থ হ'ল এই বে—তাতেই বা কতি জি ? এক জনকে উপলক্ষ্য করে বিজেবের জাহির করার কাকে বে কেট হলেই ভো বর্বেই।

একট হেলে বললে, সংবাহণত্তের কোন সম্পাহককে বললে ভাল হয়।

একট বেৰে গোংগাহে খললে, টক—টক ভাতে ছিলোটটা পুৰো এক কলমে পৌছৰে। প্রভাত আর একবার হাসলে বলে বলে। আসল উদেওই ত ব্যক্ত হয়েছে। সভাট বিহুক বছু-শ্রীভির বিদর্শন বছু—

এর পর আলোচনা হ'ল—কোন্ কাগকের প্রচার সংব্যা
সর্কাধিক এবং কোন কাগকের সন্পাহক পর-কীর্তন-ত্র্তু—
বা পর-কীর্তন-প্রসলে আত্ম-প্রশংসার শতর্ব। বারা ছরিভোকে পরিত্ত্ত হরে হল লাইনের বিষয় বন্ধকে হ'কলবে
বিভারিত করতে পারেন—এই ভাবের ব্রোরা অভিনক্ষর
ক্ষেত্রে তাঁদের যোগ্যভাই নিঃসংশবে সর্কাধিক। এর পর
তাঁদের নাম এবং তাঁদের সলে কার পরিচয় কভ নিবিক এ
নিবে ভর্কবিত্র্ক ত'ল।

প্রভাতের কানে কোলাহলটা আই হরে উঠল। ও তথ্য
অত রাজ্যে। ও তাৰ্ছে পারের তলার বে গর্তগৃহ তাতেই
কি সঞ্চিত হরে আহে নিরন্তরের কাগন্ধ ? রাতের অবকারে
বা পৃথিবীতে উঠে আসে—নিঃশব্দে চলে বার ছানাছরে—
বিনির্বরে এই প্রাসালের কেহর্ডি ঘটে ! অমলেপুর কথাতে
কি এরই ইনিত ছিল ?

মনে মনে সহল খির করে নিলে সে। বিভার নেবার সমর দীপাকে বললে, তা হলে কথা রইল দীপা—আমার বই হাপানোর কাব্দে সাহায্য করবে ভূমি। নানে হাপার বরচ—কাসক—

বিক্ষা কিছ এক সর্ছে।

সর্গ্র । সে আবার কি ? প্রভাত বিশ্বিত হ'ল। সর্গ্র এই বে বইবানা আবার মারে উৎসর্গ করতে হবে।

দীশার পাদে চাইলে প্রভাত। ওর চোবে অভুত দৃষ্টি।
অভ্যন্ত কোমল—মর্বাশ্রহী দৃষ্টি। এ দৃষ্টির সদে কোম কালে
পরিচিত ছিল না প্রভাত। এ দৃষ্টির আঘাতে ওর মৃতন সন্তা জেগে উঠল বেম। সবল—পুত্ শৌরুষমর সন্তা—বা রুগে রুগে
ছুর্জাককে বল বিরেছে—আশ্রমপ্রার্থীকে বিরেছে আঘান— এবং নারীকে বিরেছে প্রেরের সন্থান। দীপার বব্যে সেই
শাখতী নারী প্রভিতালিত হরেছে—ওর দৃষ্টিতে আত্মসমর্পন্নতা শাখতীর কণদীন্তি দর্ভ আরোপের মৃত্তুর্ভে উল্ভালিত ক'ল। প্রভাতের সারা অভ্যাকেশে উঠল।

भीना ननतन, मत्म बात्क त्वन।

প্রভাতের বৃষ্টতেও কি বীকৃতি কৃষ্টে হিল ? মঙুবা বীণা কি করে অসংশবে যেনে নিলে ভার লাবি প্রাক্ত হরেছে।

.

অভাবনীর সুকুষার বৃহুর্ত্তপ্রিল তণজীবী। পৃথিবীর বার্-তরে তারা কক্চত নকরের বত কণলীউনর—নীচের বিরাই অহতার বৃহুর্ত্তে লে কোভি এল করে বের।

ভূপতি রাণ বুবে এলে ইাড়াল নাননে। প্রভাতধা— একবার আনবে—আনাবের বাড়ীতে ? বাবার বক্ত অসুব ? ভি অসুব ? ভা কাৰি মা---কোন কিছু স্বাষ্ট কৰে বলতে পাৰচেৰ না---অৰচ বভবাৱ ভাভাৱ ভাকবার কথা হয়েছে--হাভ মেতে বারণ ভরেছেন।

রোরির কথা ওমলে—রোগ জারাম করা বাবে না—চল

গিবে বেপলে রোগট শক্ত। বোদী সম্পূর্ণ জানহীন নর
—আফ্রের মত পড়ে আহেন—কিন্ত ডাক্তারের নাম শুনে
ভার আফ্রে ভাবটা কিছুক্তবের করু নাই হচ্ছে—হাত নেড়ে
কি ইন্ডিক করছেন। ইন্ডিট নিবেশেরই নামান্তর।

প্ৰভাভ বললে, ভাজাৱ মা ডাকলে বঙ্কণা কমবে মা। ° বোদী ইলিভে জানালেম—বঙ্কণা মেই। মা হলে জীবদ সংশয় হুছে পাৱে।

ৰাণা নাজনেন ভূপভিত্ৰ বাবা। ওঁত্ৰ ক্যাকানে বৃধে ব্লান হালি কুটে উঠন। জীবনের প্ৰতি উপেক্ষাত্ৰ কিংবা জীবন বাত্ৰণের ব্যক্তে লে হালি বহুভবর।

না হলে আপনার সংসার দেশবে কে? মুরভার শক্ত কৃতি ব্যব মাড়া দিলে প্রভাত।

শীৰ্ণ হাত উপরে তুলে তুপতির বাবা আবার হাসলেন। আবাং দেশবেন ওই ওপরে যিনি আহেন—যিনি ভোষার আমার—এই বিশ্বদনের সকলকারই প্রতু।

প্রভাত আগতি ওনলে না—বাইরে এসে বললে, ভাক্তার ভাকতে চললার।

ভূপতি শুকুনো বুবে ওর সারবে এসে গাঁভাল। বললে, বরে কিন্তু চাকা নেই—আন্ধ বাসের বাইশে।

ভাই ভ—এ ক্ৰাটা ত প্ৰভাতের মনেই হয় মি। ভূপতির বাবা বরণা ভোগ করেও কেন ডাজার ডাজার নাবে বাংকে উঠানে—এডজনে ভাই হ'ল রহজটা। কিছ অর্থাভাবে মাস্থ্য ডাজার ডাকতে পারবে না, রোগবল্লণার ও্যন্ত পাবে না এ কেবন ক্থা ? সাবীন ভারভবর্ণের পক্ষে এটা ক্লকের ক্যা বয় ভি ?

আৰম্ভ ডাক্তার এলেন—প্রভাতই নিজের খরচে আনালে, তার বারোরাড়ী প্রভূর বেওরা ক্ষেক্ট টাকা তথনও পক্টে ছিল। আর টাকা থাকলে মাহ্যের কঠ কেবা বাহ্যের পক্ষে লক্ষর মহ।

ভাক্তার বাইরে এলে প্রভাতকে আখাস দিলেন না। বললেন, ভাইটালিট নেই—চিকিৎসা করব কি ?

তবু একটু চেঠা করুৰ ভার।

চেঠা অবস্তই করব—আনাদের শিকাই হচ্ছে বে কোন অবস্থাতে হাল না হেড়ে বেওরা—কিন্ত বা ক্যাই তা আপনাকে ভানালান, কেনদা আপনি তো ওঁর নিক্ট-

बनकी (कन स्'न ?

ব্যাল-নিউট্নপথ। এ কি আছ নতুন জানলেন ? আবাবের ব্যাবিত ঘরে শতকরা সভর জনের এই দশা। বিশেষ করে বারা চাকরি করে।

ভাজারের কথা সমভ মন বিবে মেনে নিলে প্রভাজ—
কিছ এ হাড়া বরিত্র বরের হেলেদের অবসহনীর সহজ বৃতি
আর কি আহে ৷ বিনা পুঁজিতে আংশিক বিশিন্ত হওরার
আচ কৌশল ভো ভাদের জানা নাই ৷ বেবভার হুরারে এই
পরব পদ লাভের ভঙ্চ কভ বৃত্তরা প্রার্থনা আর সামর্থ্য হাড়া
ভূম বেওয়ার প্রভিক্ষতি জয়ে—সে আর না জানে কে ?

ভূপতির বাবা ছই-এক দিনের মধ্যেই যারা গেলেয—
ভূপতির বাড়ে চাপিরে গেলেয় পোয়ভার। ছট নাবালক
ভাই—ছট অবিবাহিত বোন—বিববা মা। অতঃপর চাকরি
করব মা—এই প্রভিজ্ঞা বজার রাবতে পারবে মা ও।
পারবেও মা। পরের দিনই কাচা গলার দিরে বাপের
আপিসে উবেলারি করতে ছুটন। সলাগরী আপিস—অভ
আইন-কাছনের বঞাট মাই—ইউরোপীর মনিবের মনে
লাগলেই স্বরাহা হরে বার। ভূপতি চাকরি পেলে—বাপের
করম কিছু বোমানও পেলে—আসর পিতৃলার বেকে উবার
পাবার একটা উপার হ'ল।

কিরে এসে প্রভাতকে বললে, ভোষাদের সমিতি থেকে
নামটা কাটরে দিও—আর বরের থেরে বনের নোব ভাড়াবো
চলবে না।

কেন রগদ বোগাড় করে নিলে জি দেশের জাজ জরা বার না ?

না বার না। 'আবি' জিনিসটা সব দিকেই পথ আগলে ইাড়ার প্রভাতদা। নিজে বাঁচার কথাই যদি ভাবৰ দিনরাভ—

কিছ আমাদের কাজ ভো পরকে বাঁচালো মর, নিজেকেই বাঁচালো।

সেঠা একলা একলাই ক্ষমে ভাল। আর কিছুদিন গেলে ভোরাদের সমিতি—কি তোরার নাম পর্যন্ত সহ করতে পারব মা। সভ্যি বলছি—বে চোরাবালিতে ভূবতে লে ক্বমও চেউবের উংপত্তি-তত্ব নিরে বাধা বাবাতে পারে মা।

প্রভাভ অভ্যন্ত বিষয় হল। তুপভির বত উংসাহী কর্মী হৈলে তাকে হেছে গেল—এই কভির কল নয়। এ বেল অভিশাপ—হ'শো বছর বরে বা ভিলে ভিলে আহরিভ হরে এমনি অভ্যাব পেরে আলে। তারতবর্ব অভ্যাবার্থ্য হরেছে—এ কথাটা বরেশী বুল থেকে শোনানো হজে—কিছ সেই অভ্যাবার্থ্যতা কোথার আর কি তাবে আরভ হরে মর্বের কভল্বে গৌছেছে ভা সঞ্জীক বলতে পারে কেউ? ঐবর্যাণালিনী ভারতকে সর্ক্রিক্তা করেছে শোষকগোজী—কিছ লে বন ভার লক্ষিত মনি বুক্তা হীরা বাবিক্য নয়—ভার শিল্পবাবিক্য সামরিক শক্তিও বছু। কেনলা এ সব অপবাত হলে

ভালে পুরণ হবার আশা থাকে। ভূষির শভ কেঠে বিবে সুঠেরা ভো ভূষিকে চিরবঞ্চিতা করে রাখতে পারে না, সে শিংৰভা ভার সামরিক। কিছ চোর সি'বকাটি চালিরেছে গোপন স্কলে-ভারতের প্রাণরত অপত্রণের চেষ্টা চলতে বহুকাল ব্রে। ভার শিক্ষা সংস্কৃতির রূপকে আয়ল বহুলে ৰেবার চে**টা, ভার বণিককে করণিকে রূপাভরিভ করার** नायमा, चात गुरुद छननी ७ मानक्षाम मिना नितर बदल्बि সুলগাহ ও নিত্রীখন বাবের প্রভিঠা--- সুত্বত্ব সবল ও সরল श्रीखिरवर्ष (बर्फ छारक जश्वाख-जडून बावर्खंद घरवा हिरम अत्य भवाक्षरबद्ध कमक्ष्रिक ममारहे औरक भृषिवीरक चक्रक অসহার আর ভীক্ল আর অসহিষ্ণু কাভির পংক্তিতে নামিরে আনা না হলে সর্ব্যন্তিহারা মানুষ সামাত একটা চাকরির ভত এবন আহুলি-বিকুলি করবে কেন ? বনের দূরত আশা আর कबनारक भवाविष्ट करत अहे कार्य काममरक खैरह बाका ও বাঁচিৰে বাধার গভ্জনিকা-প্রবাহে ভেনে বাবে কেন ? অন্ন হরণ করে--অন্ন ভিকার এই নিচুর অভিনরের মধ্যে কে चारवद र्देश्य विराहर १-चनहात-शङ्क-भवनिर्धत**्री**ल--দাসত্-লোল্প ভীৰনমূত্পরাত্ব---

প্রভাতের নাথার আগুন অলে উঠল। ইাতে ইাত চেপে

ও বললে, পৃথিবীতে মুর্বলের হান নাই। শক্তিমান হলেন
ভিনি বার পদমর্ব্যালা আছে—আর সে পনমর্ব্যাদার প্রষ্ট করে বিভ। সুতরাং শক্তির বুলতত্বে বিভ হালা আর কিছুকে

ভরনা করা বার না। এই বিভকে মুর্বে নিজা করেও

নম থেকে সরিরে দেওরা কি শক্তঃ তাই কি সাম্যবাদীরা

এরই বুলে আবাত হানহে নিঠুর তাবে! কিছ লে তো

বাহিরের আবাত। তারা ধনীবের চাইছে গরীববের সলে এক

লাইনে ইাভ করাতে কিছ বনকে পরিহার করার বল্প আবা

ভাবে বা। স্বভাং বন বক্তম করে স্বাই চাছে সুবী হতে

আর এরই মধ্যে ক্ষম্যে অকল্যাপের অগ্নিস্থালিন। বনসাম্যই

বলি এলো তো পাতি আসছে না কেন ? কেন কাদার বদলে

লোহার বেহু গড়ে বাইরের আক্রমণকে প্রতিহত করার

চেটা!

···মনের গভীরে দৃষ্টি কেলে সংশোধনের কাল করবেন—
এই সমাজ-কজকে স্নেহ দিয়ে, সেবা দিয়ে আরোগ্য করে
কুলবেন ভেষম ভিষক কোথার ?

প্রভাতের ব্ধর্থন সহসা আনন্দে উত্তাসিত হরে উঠল।
আহেন—তেমন বাহ্ম তো আমাদের নব্যেই ররেছেন।
ভিনি রাজনানীতে বসে দিনের পর দিন বরে আত্মতভির বস্ত্র
উচ্চারণ করছেন। তার প্রার্থনা–সভা তবু রাম–তল্ম-সামসর্কার—ইহুলোভিক পরিজ্ঞাণ ক্ষেত্র নম। ইহুলোকে বে সব প্রলোভন বাহ্মকে বহুতত্ব থেকে নামিরে দেয়— আত্মপ্রিয় প্রবিশ্ব আলোর নেইঙ্লিকে পুথাহুপুথ নিরীক্ষণ করার বস্ত্র। ক্ষণার অহনার কোন্ হিলাবে প্রবেশ করে অভ্যন্ত সং বাছবের অভরকেও আবিল করে ভোলে—ভারই ইলিভ বেন প্রাথনাত্তিক ভাষণগুলিভে পাওছা বার। সেই মহালা বলহেন, কংগ্রেস ভেডে লাও। ক্ষণার মদে মন্ত হরে ওই পবিত্র প্রতিষ্ঠান, আর পূর্ব্য মর্ব্যদা বহুন করতে পারহে না। ওর সংগ্রামী মনোরভিতে ছিভিনিলভার লক্ষণ প্রকৃষ্ট হরে উঠছে। সাংবাতিক লক্ষণ। ওর্ সংগ্রহ মান্ত্রকে হিভাহিভ আনশৃত করে, মাংজন্যার নীভিতে সে আছাবান হরে ওঠে। আক্লার কাং বন্তভাত্তিকভার মন্ত্র কণ করছে—নীভিজ্ঞান সেকালের কুসংকার বলে সমাক্ষতরে বাসা বাঁবছে। ভাই কি মুক্তবৃষ্টি ভাগি পুরুষ রাজনীভির ঘূর্ণাবর্ত্ত বেকে মুধ কিরিরে দূর দিগভের নিঃশেষিভ মীলিয়ার অভুলি সক্ষেত্র করে বার বার উচ্চারণ করছেন—সাববান বানী। ছাঁসিয়ার পর্য ভুল করো না। আপনাকে জান—আপনাকে জান।

ভাই আৰু বিদ্ধীতে বলে মহামানৰ আৰ্ডখনে বলছেন, কেৱ—কেৱ—অসভ্যের পৰ্বত প্রমাণ বোবা কৰে উঠছে ভোষাদের হ'পাশে। ও বোবার ভলার একদিন সমাধি রচিভ হবে ভোষাদের—সমর বাক্তে যদি সাববান না হও। সং হও—সাহসী হও। অবধা বনসকলে কালোবাঞারকে বলিঠ করো না। এই অভি ফীভি—কেটে যাওয়ার পূর্বত্তকা।

রণু পতি রাধ্ব রাজা রাষ সব কো সমূষতি দে ভগবান।

ভৰু প্ৰাৰ্থনা ক্ষেত্ৰে গলা সাথা নৱ—সাৱা বন প্ৰাণ চেলে বাৰ এই কৰ্মেৰ সাধনাৰ।

করিবে দাও পঞ্চার কোট বুলা—পাজিছানের প্রাণ্য বলে বা দাবি উঠেছে। কিরিবে নিরে এস উৎসাহিত ইসলামী জনকে—ভাগের বর্ম ছানকে সংগত করে—বাসছানকে বাধা বুক্ত করে—ভারা যেখন নিঃবিধে ছিল—ভেষনি নির্ভাবনার নধ্যে পুন: ছাপিত কর ভাগের। সভ্যকে প্রভিঠা করে বাব। চুর্জর প্রভিচা ভার। হর জীবন—নর বরণ।

বৃত্যু পরাকিত হবেছে—সভ্যাশ্রমী শেষ সংগ্রামে চয়েছেন
ভবী। তবু তিনি ভানেন —এ বৃদ্যু তার ভীবনরভার বনতাবশে নিলেছে। এর মধ্যে বভ:কুর্ড প্রাণশক্তির বহিষা নিহিত
ভিনা এ সংশ্ব তার বনে ভেসেছে।

नव्का नन्दकि स क्रांवान।

এই প্রাৰ্থনা প্রতিধিন চলছে—এই প্রার্থনা আজীবন চলবে। এই প্রার্থনার শক্তিতে উজীবিত হবে তারত—বস্থ
—ক্ষ্—ভারত ভার তার পদস্লে প্রহা অর্থ্য বেবে সভ্য-সহানী অর্থবিত সভাব। ..

প্রভাভ বলে বলে সমিভিত্র কার্যস্থতীর একটা খসড়া তৈরি করছিল—শবী হাজরার কঠবর শোনা গেল ঘরের বাইরে, আগতে পারি কি ভারা ?

चमलम् थेणांखर भारम रहरत रहरत रंतल, चात्रम ।

বরে চুক্টে হাজরা বিভ কেটে হ'পা পিছিরে অভ্যন্ত অপরাধীর মত বদলেম, ভোমরা কাকে ব্যন্ত রয়েছ জামলে কি জিলীমানার আলি। ভোমাদের বৃদ্যবাম সময়—

मा-मा-चानि रुप्त । अक विनिष्ठे ।

শৰী বসলে না—খরের চারদিকে কৌছুহলী দৃষ্টিতে চাইতে
লাগন—একটু ইভভভ: করে বললে, একট কথা বলব—রাগ
করবে না ভ ভারা ০

स्रकां कानकी अक भारन र्कटन रवटन ननरन, कि कवा ?

এই—বার ছই চোক গিলে হাজরা বললে, গাঙীর ছবিটা মা রাখলে কি চলে মা ৫ মানে আমাদের বাংলা দেশে—

দবিশ্বরে চাইলে প্রভাত। বললে, গাড়ীখী বাংলাকে বেবতে পারেন না—এখন অভিবোগ অনেক বার শুনেছি বটে —কিছ প্রমাণটা পাই টিক উল্টো।

বোৰ হয় মোৱাধালির কথা বলবে। কিন্ত পেছনে সম্ভ রাজ্যের শাস্ত্রী সেপাই মিরে ও রক্তম থালি হাতে চলার বাহাছরি—

নে কি-শালী নেণাই-

ৰিট ৰিট করে চেৰে মুচকে হাসলে হাৰৱা। বললে, ৩ কথা বিধাস করুক কাগৰগুৱালারা বারা রিণোট বানায়— বিধাস করুক বোকারা—যারা হাপার হরণে বা পঞ্চে ভাই সভ্যি যদে করে—কিন্তু—

হাকরা মণার—আণনার বিখানে বা অবিখানে গামীকীর কভি-বৃত্তি কিছু নেই—হয়ত আনেম তাল করেই। আকাশে পুরু কেললে লে পুরু মিজের গারেই লাগে। বাক—দিল্লীর ব্যাণারটাই ত দেশলেন।

দেবলাৰ—বোহলমানদের সকে চিরকাল উনি আঠাত করে আসহেম। এ ওঁর একচোবোমি। গাঙীকে তালোমাহ্য পেরে ওরা বে আযাদের মাধার কাঁঠাল ভালহে এটা বুবছেন জন্ম

क वृत्रह ?

নবাই—যার সলে বেবা সে-ই বলে—কান্তর্টা কি ভাল হচ্ছে? ভালয়াত্ব্বী করে অভগুলো টাকা কিরিয়ে বেওরা —ওদের বাড়ী বর ধোর সারিয়ে হিছু করা—এর কল কি হবে কান? আর একবার ভাগবাটোরারা। কবার বলে না—

> হিল শাল—হ'ল পুন কাটতে কাটতে নিযুলি।

ৰাকৰ্গে---আপৰার কোন দরকার আছে কি ?

আছে বলেই ভ হুটে এলাম। ভোমরা ভ ভারা দেও বভ দোব নন্দ বোষের। কিছ এ দিকে বে নেপোর দই বারছে সেটা দেবেও দেবছ মা।

भूरम रम्म छ।

বলৰ আৰু কি—সাৰাত মুদিধানাৰ ব্লাক্সাৰ্কেট বেৰ্থ কিছ চুন চুন লোহা—আৰু বিম বিম কাগৰ বে অছকাৰে পাচাৰ হচ্ছে নাকের উপৰ দিৰে সে বোঁজ বাব গ

প্রভাভের মূব গড়ীর হ'ল—বললে, আগনি প্রমাণ বিভে পারবেন ?

বেশ ভ—বুড়োর কৰার বিধাস না তর—এক দিন রাভিরে পাহারা হাও না। বেশি দূর বেভে হবে না—নিজের বাড়ীভে বসেই—

আপনাকে থাকতে চবে। ওর হাত চেপে বরলে প্রভাত।
পরী হাজরা আঁতকে উঠল, আরে—হাড়—হাড়—আনার
কি গারে শক্তি আহে যে লাঠির খা সহু করব। ও স্বাজারাজভার র্ডের বংবা উলু খড়কে টেনো না ভাই। সভাব
স্পুক চাঙ—বাতলে দিতে পারি। কিছ—

মা, থাকৃতে হবে আপনাকে। একটু তেবে বললে, কাকটা আপনাকে দিৰেই হাসিল করব।

পৰী হাজরা সভ্রাসে চীংকার করে উঠল, ওরে বাবা, ওসৰ ক্যালালের বংগ্য আমি মেই। ধাই বাই কাঁসি বাকাই— ও সবের বার বারি না।

না হলে কিছুই হবে না। আপনার নহাজন খ্যাভি আছে

—আপনাকে না হলে হবে না। বেশ ভ—এই ভাজটি করে
আনাদের কর্মী-ভালিকা ভুক্ত হন।

তা কি করতে হবে আমাৰ ?

আমলেপু বললে, আপনি বেন র্যাকে কাগৰ কিনছেন— এমনি ভাব করে ওলের মনে বিখাস ক্যাবেন। ভার পর যা করবার আমরা করব।

হাজরা মুখে ববেষ্ট আগতি জানালে—ননে বনে সভ্ট হ'ল। অর্চেণ্ড্ বাবুর উপর ও মোটেই বুলা ছিল না। লোহা আর কাগজের বিরাট সকর আছে ওদের—অভ কালো-বাজারের চেরে লভার জিনিস ছাভতেও পিছপা নর ওরা। বলতে গেলে ওদের ভেনী কারবারের বা লেগে হাজরার র্য়াকের লাভ প্রার—আসলের কোঠার শেবেছে। হাজরার উপর ভব্ সরকারের কড়া নজর নাই—পাভার বেকার ছেলেরাও বেন উঠে পড়ে লেগেছে। না হলে এ বাজারে রাবব বোরাল হওরা ভার পকে আকর্যের ছিল না। এবন বাজের শক্র বিল বাবে বারে—কভি কি । শলী ভ আর সভ্যের বেসাভ করতে বসে নি—কারও মুবে সভ্যের কবা, শুনলে ওর বনে হর বড়াই করতে লোকটা। শলী ক্ষেত্র হবে বলে,

বেণাৰে পাল পাৰ্কাণ বাব ব্ৰছ কুটুব-মত্যাগত সাৱ-মহাব ঠেকিবে ৰাজ্যকে নাজেহাল হতে বজে প্ৰতিধিন লেণাৰে সভ্য বলে কিছু থাকতে পাৱে? ভেৱশে। পঞ্চাশে বাবা সভ্য-বাদী ছিল—ভাৱা না থেতে পেৱে-ছর্নে গেছে—ভাৱা ভাবের বুবের অন্ন ভালোর বেচে বাবা রইল পৃথিবীতে—ভারাই আক্র্লে কেঁপে হবে উঠেতে রাজা আনীর। ভারাই ভো সভ্যি-ভারের বছ বাছব।

অবস্থ মনের এ উদ্ধা প্রকাশ সে করলে না। ভাকে উল্লেখিত দেবে প্রভাভ বললে, বান, পরে এ বিষয়ে পরাবর্শ ভরব।

ৰাই কর বাবা—এই বুজোকে ভার ক্যাসালের মধ্যে ভঙ্গিও না। গোবিক হে—সবই ভোমার ইছো।

হাজরা চলে গেলে অবলেন্দু বললে, হাজরাকে বিখাস কর প্রভাত ?

मन्पूर्व यह ।

তবে ওঁকে দিৱে এ কাৰ করাবে কেন ?

না হলে আর পথ কি ?

একটু ভেবে বেগলৈ হভো মা। হাজরা বে ব্ল্যাক-বার্কেটের কথা বলছে—ওর খার্থ মা থাকলে—

প্রভাত অধীর হবে বললে, কিন্তু কবে আর কাল করব আনরা ৷ বিনকের দিন কি অবস্থা হচ্ছে দেশের দেশহ ৷ ভালো বাজারী কাঁপছে—নীচু ভরের বারা ভারাও টকে বাজবে—কিন্তু আনরা নবাবিভয়া এ ভাবে কভবিন বাঁচব বলভে পার ? ভারতবর্বের বাবীনভা লাভে বাদের দান হিল সবচেরে দানী ভারাই এ ভাবে বুছে বাবে বাবীন ভারতবর্ব বেকে ৷

অবলেশু বললে, দেশমর হুর্মীতি ভোষার আমার চেঠার কভটুরু হুর হবে। বারা রাজ্যভার নিরেছেন হাভে তারাই পারহেন মা !

প্রভাভ বললে, বড় ছর্তাগ্য আমাদের বে, পৃথিবীতে বে সমরে সবচেরে সম্ভের কাল ভাই বাবীনভা পেরে অভিক্রম করতে হচ্ছে। আফ বদি আমাদের বরে অরচাও বাক্ত গু

অমলেপু বললে, এই অয়বঞ্চনা স্ক্টি করে ভেরশো পঞ্চাশে বেশের ব্রশক্তিকে নিজের প্ররোজনে নিজে পেরেছিল ইংরেজ। কংপ্রেস নিজেশক্তির সলে অসহবােগ বােবণা করলে—ছর্জিকের ভাড়নার ছলে হলে বাহুব এসে চুকল সেনাবাহিনীতে। এবারও বে সেই ব্যাণার আবার বটবে না কে বলকে পারে।

কিছ বুছ আর শীর বাবছে না। প্রভাভ আবাস দিলে।
ক্ বললে—বুছের লাব আমাদের বিটেছে? বারা বুছ
করে ভাবের ইচ্ছা কড়ীবু—বারা বুছ বাবার ভারা ভ কোব
বিদ নামৰে আনে না।

क्षि चारक किमि चावता ।

চিনি কিছ বরতে পারি না—খাভি বিভে পারি না।
আমরা বারা মৃত্যুর হাভ বরে পব চলহি ভারাও নির্বাচনী
পালার বর্ণচোরাবের পক সর্বব করহি।

এবার আর তুল করব মা।

ক্ষে করৰ মা—একর্ঠো চালের বহুলে—কাষানের পালার বহু অসংহাচে আগতে পারি—

কেন আসৰ ?

ভাই ভো ভানি ভাই—অবচ বাবে বাবে এ ভূল আনাকের হবেই। ভূল হয়—কেননা ভূল ঠেকাবার সহজ পর্ব আনরা বেছে নিই না।

क्म मिरे मा ?

কাউকে বে বিশাস করতে পারি না।

কেন পারি না ?

বাঁকে আপন জেনে বাধার ভুললাব—কিছু বিন পরে বিধি বাধার উঠে সেই আমাকে হুর্বপার মধ্যে চাঁমে। বলবে কেন এবনটা হর ? হর এইজত আমারের শিকার গোড়ার পলম ররেছে—গলম ররেছে চারদিকের আবহাওরার। আমানের মনে বনের মোহ বে পরিবাণে ররেছে—জন্দল্যাণের আছা তার শভাংশের এক অংশও নাই। ভূমি আমি আজ বনকে বলছি—পৃথিবীর অকল্যাণ—কিছ ভূমি আমি বিদি বৈবক্তমে লক্ষণতি হই অমনি মনে বনে বীকার করব বনের চেরে কল্যাণকর কিছু জগতে নেই। জীবন বারণের বত কিছু স্থা-বাজ্জ্য সব অবে বেলে—আর তাল তাবে বেঁচে থাক্তে চাওরাটাই তো আমারের সব কাম্যার সেরা কাম্যা। আম্রা বঞ্চিত বলেই হুছে। বনের নিকা করি।

প্ৰভাভ দীৰ্ঘনি:খাস কেলে বললে, জানি না ভোষার বনের এটা সভাস্থি জি না —

অবলেপু হাসলে, ভোষার আবার এবং আবাবের বভ বভ বিভ-বঞ্চিত সাধারণ লোক প্রায় সকলকারই বনের এই বৃষ্ঠি। আমরা বা পাই বা ভারই কোষ কীর্ভন করি—পেলে চুণ করে গাকি। বাইবের হুনীতিটা এভ ব্যাপক এইবভ— বনের হুনীতি আবাবের হুরপদের।

প্ৰভাত বললে, ভোষার কথা ওবে বলে হয়—আযাদের উভারের আশা বুবি বেই !

অবলেপু হেলে বললে, বাতৈঃ একেবারেই অভকারে
নেই আনহা—নাবে বাবে আলো অলহে বৈকি। তাই
তো আমহা বেঁচে হয়েছি এবং তালতাবে বাঁচবার চেঠাও
ভারি। তবে এটটুড় আমার বলে হয়—বে আঘাত আমহা
পাছি তা ববেঁঠ ময়। আহও কটন আমাত না এলে নীতিয়
নানদওট টিক পথে কিরবে না। তিতর থেকে বাতে
বহলাতে পারি—নেই শিকা, নেই পথ নির্বেশ আলু আমারের

অভ্যন্ত প্ৰৱোজন। চল না এক দিন অৰ্থেপ্ৰাৰ্থ কাৰে নিৰে সমিভিত্ৰ উদেশ্য জানাই।

সর্ক্ষাশ—বল কি ? প্রভাত চমকাবার তান করে হেসে
উঠল, অর্থাৎ বাবের সারমে সিরে বলব···বাব মশাই, আগনি
আর নিমীত্র বেষ শাবককে বেরে উদর পূর্তি করবেন না—
তথ তোজনে অত্যন্ত হোন।

অনলেপু ছেলে বললে, উপনা ভোনার ছই হ'ল। বাছব কিছু হিংস্র বাব নর আর ভাকে ড্গ ভোজনে অস্থরোধ জানানোও বিদ্রুণ হাড়া কিছু বর।

তা হলে---

আমরা বলব—মাজুবের ব্যক্তিগত সুধ-মাজুব্যের জত মতটুকু সকর আবর্তক তা আপনার আছে—এইবার আপনি—

কালোবাজারী পরিভাগে করুন। না অমলেন্দ্, এভাবে নাটক করে—নর্গকের হাভভালি বেলে—কিন্ত বে নাস্থ্য দর্শক এবং নায়ক ভাকে ভোলানো বার না। বন তৃঞা আর কলতকা স্থান কিনিল নয়।

ভা হলে হাজরার শরণাপর হবেই ?

এক মুহূর্ড চূপ করে প্রভাত কি ভাবলে। বললে, আছা ভেবে দেবি—কি পথ নিলে হবিবা হয়। ভাল কথা শশাহকে দেবছি না কয়েক দিন বরে ?

আর দেশবেও না! অমলেন্দু হাসল।

#IZ# 9

আহ্বাত্তির প্রথবেই সে বিল্লী পেছে—একটা ইন্টারভিট্ট বিজে।

চাকরির খত ?

ভূমি ভাব কি-ভামরা স্বাই ছেলের দেবা করব---চাক্তি করব না ?

TO 8-

প্ৰভাভ—চাভৱি নিলে বে বেশের সেবা করা চলে দা এ বারণা ভোষার ভূল।

হবে। আনার একটা উপনা বনে পড়ল। আনার চ্ব সম্পর্কের এক পিসিনা নাবে নাবে আনাদের বাড়ীতে আসতেন। কোন সিদ্ধানার কাছে তিনি নাকি বর নিরেছিলেন। দিনে সক নাম কণ ছিল সে বরের বিবি। পিসিনা ভাই করতেন—কিছ সংসারের বাবতীর কাল—রায়া, বাসন নালা, কল ভোলা, গল বগভা, হাসি, ঠাটা সবই তাঁর চলত সেই সকে। তিরিশ বছর বরে শিসিনা বল্প নিরেছিলেন আর তিরিশ বছর একটানা তিনি এই সব করেছেন— চ্বি হিসাব করে বল ভো আনার, সিভিত্ত পর্বে কতথানি এপিরেছিলেন তিনি ?

चनरमञ् रमाम, गरमास त्यरक केवतरक गांधवाय वृक्षेत्र त्य मार्थ--- সে সৰ অসাৰাৱণদের কৰা। আৰৱা কাৰার তৈরি
অভ্যন্ত সাৰাৱণ ৰাজ্য—আবাদের ভ্যাপের সদে ভোগের
বিশেলে ভেলের সদে জলের বভই অবস্থা ইাড়ার। তেল
ভেলে বেড়ার ওপরে—

শ্বলেশু বললে, খনেক সৃষ্টান্ত দিবে তোষার সন্দেহ ভঞ্চৰ করতে পারি।

আৰু থাক। চলতে চলতে ও বুধ কিরিয়ে বললে, কি কানি অনল—আনার কেবলই তর হচ্ছে—শেষ পর্যন্ত এই লব নিয়ে ভোনার সদেও আর তর্ক করতে হবে না। আনাদের প্রভাকেরই পথ আলাদা।

কিন্তু সৰ পৰেই কি দিলী পৌহাৰ বাব না ? উচ্চৈ:খৱে হেলে উঠলে অমলেন্দু।

99

ৰা ভকৰো মূৰ্বে হাঁছিছে ছিলেন দৱজায়। বললেন, কৰন বেকে ভোৱ আশায় হাঁছিছে আছি বাবা—শীগ্ৰিয় ভাঞায়-বাভী বা। ওঁৱ কলিকের বাবাচী আবার বেভেছে।

সারা রাভই ছুটাছুট চলল। ইন্জেক্শন—সেঁক—গরৰ জল। এ সবের সদে অর্থও ব্যব হ'ল যথেওঁ। বা তাঁর হাতের চুড়ী বুলে দিলেন। বললেন, বে বুঁটিতে ভর করে আহি—ভা আগে রকে হোক—স্থানি আসে আবার সব হবে।

ভোর বেলার রোপী একটু সুস্থ হরে চোক বুজলে। প্রভাতও বিহানার ভবে পড়ল। অলীব ক্লাভি দেহে—ভবু বুৰ আগতে না। ক্লান্তির চেবে ভীরভর কভ চিন্তা ওকে আছর করে রেখেছে। বা বা বলেছেন—সেই ভবাকবিভ प्रतिम जाजरव कि ? बनाविछ बरद करन जारज प्रतिम-এলেও ভার আরু কভই বা দীর্ব ৷ একট বাজুষের উপার্জনের बाबाब जरमक्थनि वाचै जाविछ। तम वाचैथनिएक मरनारब আনলে কে ?…সাৱহীন ক্ষমিতে বিক্ত যাত্য গাছও ক্ষীৰ খাৰা-এশাৰা হড়াৰ—ভার ক্লৱ পাৰাহ কোটে বভাব-ভুত্ত কুল--बाद चारक करन बगदिगृहै कन। नवरहरद बाक्कर्रा तह चनूहै करनं वारक चनश्वा शैक चात रन वीरकत नर्स्ड वारक जहूत। जन क'B जात जहूतिक ना करनक शास्त्र सुक्तिका-बर्ग कार्य बनाब कार्या । कार्य श्रेष्ठ कार्यय मर्द्य करना कार्या ও রস আহরণের প্রভিবোগিভা। বা: রে —সংলার। 📆 📥 नीनाव और बाबा मा इनका कि रही लात्यव जायहा (बर्फ ७८५ । वर इ:य-रेमच---(वान-वृक्ता--ववा कीयरवव नार्य পাশে চলে কোন্ ৰহাজীবনের বার্তা বিখোষিত করে। এবের বারা কর করতে পারে না-ভালের কীবনের বহিষাই नां कि । बूरकर महिनां । अनि नक काड़ नश्नात निर्व सम —बाबारकत वाबीव कातकवर्ष । इ:ब-देवक—बकाव—बुक्रा— ৰৰ বতে বৃহ্য পৰ্যাত একটাৰা অবিভিন্ন মেশবহুৰের ইভিহান,

এই বচনা কোন বুগ হতে আরম্ভ করেছি—নের করব কোন কোন বুগে—কেট কানে না। ইং আশাবাদী বলেন এরই নাম বুদ—কীবনবুদ। হুংব-উভবণের চেটা—ও নাকি ক্ষরত রভি। এতেই কীবনের সাদ, শোভা হুদ্রপো বৈচিত্রাও।

বাবার ভালমল কিছু হলে—এত সব চিডাও আর থাকবে
না। ববন বুনি বড় উঠে—কৃটিরে বলে কৃটিরবাসী বলে—
বড় থারাও তগবাস—বাঁচাও। বড় থেমে ববন মুবল বারে
বুটি নামে তবমও তার প্রার্থনা চলে—বৃটি বছ কর প্রভু—
বাঁচাও। বৃটির পর বলি প্রবল শীত আলে তা থেকে পরিপ্রাণ
পাবার প্রার্থনা ঐ একট পুরে চলে—আর প্রবর রোজের তাপে
ভর্জারত হরেও লে পুর থাকে অব্যাহত। একটা-না-একটা
ভভাব আর তা থেকে পরিপ্রাণের হুত পরিপ্রাহি রব—এই
চলহে সংসারে। তরু সংসারের হুত পুলর নাকি কিছু নাই—
সংসার হেড়ে থাবার ক্রমণর হাত্র্য কাঁদে। বাসুষ বলে,
মুরিতে চাহি না আমি পুলর ভুবনে। তুবন পুলুরই বটে!

वाना ।

কি রে ? নদ্মীর ভাকে প্রভাক বাভবে শেষে এন।
সভিয় সদ্মীও কি অভ্ত ভাবে বদলে গেছে ! ওর সদাপ্রকৃত্ব
বুবে ছুল্ডিয়ার মন হারা, বেশবাসও কেবন বলিন। বে
বিশংশাক্তের ভবে বাহুব সর্বাক্তন সচক্তিত হবে বাকে—
ভাই বুবি ওর চিয়ার চেপে বলেছে।

লমী হ'হাতের আজুল বিরে আঁচলের প্রান্তে সিঁট বাঁথতে লাপল। বললে, একটা কথা যদি রাধ—

কি কৰা ৱে—অভ ভরই বা ভোৱ কেন ! প্রভাভ ইবং হেসে ওর ছন্টিভা চুর করতে চাইলে।

ভর ভরি সাবে—ভোষাদের ভেদের ভো অভ নেই।
একটু চুপ ভরে থেকে বললে, নন্দীরা বলছিল—ওদের ছোট
ছোট ছেলেবেরেদের পভাভে পারে এবন এককন অল লেবাপভা ভাষা মেরে বলি সভাবে থাকে—

ওঃ এই কথা। তা বেবের অতাব কি ? বলিদ তো কালই ব্যবহা করে দিই।

মা—ভোষাকে আৰু অভ উপকাৰ কৰতে হবে না। একটা টোক গিলে বললে, আহ্না আমিও ভো ছোটবের পড়াতে পারি—হপুর বেলা বালি ছুমিরে ভো কাটাই।

কথাটা বলে আড়চোৰে সে প্ৰভাতের সুৰ্ভাব বেৰতে লাগল। কিছ ভার সন্দেহ সভ্য হ'ল না। ভার প্ৰভাবে প্ৰভাতের মুৰ্থ গভীর হ'ল না—বানিকটা বিশ্বর আর প্রশংসার আভাসে ভা অভ্যুত দেবাতে লাগল। প্রভাত বললে, ভূইও ভা হলে সংসারের কবা ভাবিস সন্ধী। একট ছোট নিবাল টেনে নিরে বললে, কেবল আমিই ভাবি না।

না বাৰা, ভূমিও ভো বংগঠ ভাব—না হলে পাঁচটাৱ প্ৰ মাহোৱাড়ীয় ভাৰেঁ— তরে, লে হ'ল বাদ-বাঁচামো চাকরি। কিছু ভা করচ চলবে না। পাকা চাকরি আবার নিভেই হবে—

कांच कि-चांच किंह श्रेष्ठ मा।

প্ৰভাভ হাসলে, অৰ্থাং চিত্ৰকাল খোকাই থাক্ব—ছ হৰ মা। বাবার অসুধে যা গহমা খুলে দিলেন—ছঃ আসবাৰণত্ত মাই—পোঠাণিসে একটা সেভিংস ব্যাহের ছ প্ৰান্ত নেই বার অভ অভভঃ পাঁচটা টাকা।

ভূমি চাকরি করলেই—জাবাদের টাকা ক্ষবে। সেই স্বশ্ন দেবিস বুবি সন্ধী ?

কেন দেশৰ মা—সৰাই দেশে আর আমি দেশলেই দোষ

টিক কথা ? বর্গা দেশে না কোন্ নাল্লম ? কলনাই আনে
প্রাণের বসে উচ্ছল করে ভোলে। পৃথিবী পুরাক্তম হয়ে

চির স্কন আর ভিক্ত হয়েও বর্ণমন্ত্রী এ তব্ কলনারই প্রসাদে
আমার কিছু মেই—কটপাকানো বর্তমান আর ধূ ধ্ বাল্রাহি

বিত্তীর্ণ তবিহাৎ—এটা কণ-প্রতীতি না হলে জীবনকে বহু
বেকানো হংসাব্য হতো না কি ? এই কলনার কের—এ
কাং হাক্তিরেও টেনে চলতে হর—এক কন্ম থেকে বহু জন্মে
অনুস্থৃতি একটি সীমাহীন সমুজের মত জীবনের কলনা
কন্ম আর মৃত্যুর মার্বানের অসংব্য বাধা-বিপত্তির সংস্কেরার—এই ভো চলেত্র মুগে মুগে।

প্রভাত বললে, ইচ্ছে হলে কাকটা নিজে পারিস—আবিং বলে থাকব না। একটা কিছু করতেই হবে আবাকে করেক মুহুর্জ চুপ করে সেঁবললে, আচ্ছা লল্পী—বর আ<sup>বি</sup> বলি কোন কাজ নিমে দূরে চলে বাই ভোলের অসুবিং হবে না প

বা: বে, কত লোকই তো চাকরি নিরে কত চুরে যার—

ঠিক বলেছিল। আছো লল্পী, আর একটা কথা
ধর কেন্ট আয়াকে অমেক আনেক টাকা দিবে বললে, ভূচি
আছ থেকে আয়াদের হলে—ভা হলে কেম্ম হয় ?

লে ভো কিলে নেওরা। মাত্রকে অবনি করে কেট কেটে নাকি ? আজও কি পূবিবীতে মাত্রব কেনা-বেচা চলে !

চলে বৈকি। প্রভাভ বৃধ টিগে হাসলে। ভবে কেই
লাসত্ব প্রধার বভ ভত্তত্ব কিছু নর। সে প্রধাট বর্ত্তের
লাবিল—কেষন আনিন ? বেষন বর একটা লোহার গেটের
নাবার বৃট কুলের বাড়। বাইরে থেকে বে কেউ দেববে—
বলবে—চবংকার। লোকে কুল গাহের সবৃত্ব জীবা কুলে
লালারও দেবে—ভার ভলার লোহার কবা ভাবে লা।

লল্পী হেলে বললে, এই নিয়ে একট গল লিখবে বুৰি १ -ভাৰছি লিখব। ভাল চৰে গল্গী, নয় १

প্রভাতের মূবে মূহ হালি দেবে লখীর সন্দেহ হ'ল—এই পরিহাল হাড়া খার কিছু নর। ভার বৃদ্ধি নিরে—হেলে বাছবি নিরে প্রভাত প্রায়ই পদ্মিহাল করে। ৩ই বয়বের হাটি কিছ সন্ধার ভাল লাগে—হবিও হানিব জোবে ও প্রাণপণে প্রতিবাদ করে বার। আৰু কিছ ও বাগলে না—হাসির্বে বললে, গলচা কিছ আমাকে শোনালে হবে না—সাহিত্য-সভার পড়তে হবে।

সাহিত্যরসিকরা কিন্ত মুধ ধোলে না---লন্দী।

ইস— ভাইতে বুবি ভোষার হংব ? ভা ভর দেই, এবার সে হংব যোচন হবে। বলে ও ফ্রন্ড নিজ্ঞান্ত হ'ল বর থেকে। অনভিবিল্য কিরে এল হাতে একটি নীল লেকাণা নিরে। সেটা প্রভাতের কোলের উপর কেলে দিয়ে বল্লে, পড়।

আৰ্ক্যা— সিপ্ৰাই নিৰ্বেছে চিঠি। অপ্ৰভ্যাপিত ব্ৰ । ওই মেৰেটকে না দেখে ওৱ মনে বে ছবিটা উক্ষন হয়ে আছে, সেটা আনচ্চপৱারণা সক্ষাসর্বাধ বনী ছনানীর ছবি। নেই কচ ছবি যে কথা বনতে পারে…

প্রভাত ভাভাভাতি প্রত্য :

ভাই লন্ধী—আমার একট অন্থরোব। ভোমার দাবাকে বলবে—ব্বর্গার বেন বাবার কবা না শোনেন। আজকাল রক্তহীন রোগীকে রক্ত দিরে বাঁচান হচ্ছে—কিন্ত বে রোগী সভ্যিই বাঁচবে না—ভাকে রক্ত দান করাটা নির্ম্বাভিতা মর কি ? এ র্গে জমিলারী রক্ষা করা বাবে না—ভোমার দাবার উৎসাহ বৃদ্ধি পরিপ্রম কোন কিছু দিরেও নর। স্বভরাং এ ছক্তেইা বেন ভিনি না করেন। যদি করেন—নিজেই ভূববেন।

ভোষার সিপ্রাদি

আক্র্যা—সভাসর্থাৰ অভবং বেরেটও কবা কইতে জানে। চিঠির সামাত করট ছত্রের মন্য দিরে সে বেম অসামাত হরে উঠল। স্বিভ সম্পাদকে বারা বনে করে তার্য্য পাওমা—কিংবা পূর্বেজনের স্কৃতির কলে বর্ত্তমাম অব্যের জোগপ্রাপ্তি—এই বেরেট অভতঃ তাদের গোরের মর। এ বেরে পৃথিবীর বুকে কালের পথর্মি তনেছে—আর প্রোতর পভি কোন দিকে তাও ওর অভামা নর। প্রাসাদের ক্রম্ভ বাভায়ন বুলে এ তবু মীল আকালের সৌক্র্যা বেবেই মুখ্র হর নি—ক্রম্থ মাটির অসম্বতন উপত তদিতে বে ইন্নিত নিহিত্ত ভার মর্ম্মার্থ উপলব্ধি করতে পারে। সিপ্রা আর বাই হোক—হলানী নর—প্রাণম্বারী একট বেরে। সাধারণ বেরেরা বে প্রেক্ষা বলে—বে চিভাজাল আপন মনে বোনে—এবং বে সন্ব নম্বতা আপন বুদ্ধি দিরে স্বাধান করবার চেঙা করে—সিপ্রা তেমনই বেরে। ওকে জীবনের পথে সদী পোলে—জীবন হয়ত ভারপ্রত হবে মা।

আপন বনে ছেলে উঠল প্রভাত। বেন এই বৃহুর্তে সিপ্রাকে লাভ করবার সব আরোজনই সম্পূর্ণ হরে গেল। বেন চাকরি নেওয়ার সংক নিপ্রাক্ত নেওয়াও অভ্যন্ত সহক।

राज्या (द ? नची क्रिकाना क्रमण ।

এমনি। আছা লন্ধী, ছুই বিখাস ক্ষিত্ৰ ক্ষমিবায়ী-প্ৰবা বাক্ষমে না গ

বাঃ রে—আমি জামব কি করে ? তবে ভোকেই বা ওকবা জামানে কেন ?

লখী হেলে বললে, খাৰার ধ্বানিভে খানিরেছেন ভোষাকে।

তুই কিছুই কানিদ না তা হলে ? প্রতাত ওর পানে আছ চোবে চেরে হাসলে। আছা—আর একটা কবার উভর দে ত। এই বনভল্ল যানে—পাঁচ কনকে বেরে এককনের বছ হওরার দিন অনেক কারগাবতেই শেব হরে আসছে মাকি !

কেন ? বিশিত কঠে লগ্নী বললে, ভোষার হাডের পাঁচটা আফুল সমান ? না, ভোষার বৃদ্ধির সলে আমার বৃদ্ধির তুলনা চলে ? পৃথিবীতে বার বেমন বৃদ্ধি আন শক্তি লে সেই বড কলই ত পার—গারের ভোরে এক করে বিলেই সব ভিছু এক বহু না।

কিন্ত হচ্ছেও ত। পৃথিবীতে এমন বেশ আছে—

সন্ধী হেনে বললে, না গো মশাই না । ওই গায়ের জোরে
বলছি এক—কিন্ত এক কথনও হতে পারে । একই যদি ছাল
ত আলালা আলালা জিনিল তৈত্বী হওৱার মানেটা কি ।

এর উভরে অনেক কথা বলা বার। বৃক্তি ভর্ক প্রবাধ দিৰে বোৰান বাৰ-প্ৰকৃতিতে বেটুকু প্ৰভেদ ভা ৰাসুৰেছ চেপ্তার অলাবাসে দূর করা সম্ভব। এই প্রভেবে শক্তিকে बाक्य अमन भर्गादा अत्मरह--- बाल्ड कन्यान अर्थ माहे बनलाहे हरल। वृद्धित वरल बाबूय **छे**शार्कम क्रत्राच-वातात ज#स७ করছে—আবার প্রভুত্ব করছে। প্রভুত্বে অভ্যার বাড়ার। পে-ও ভত ৰাৱাত্মক নয়—যত সৰ্কানাৰ মাহুষেৱ প্ৰতি **মাহু**ষেৱ कानवानारक कूरन बांध्या । वर्षार दोरगात करिन वस बरनद कामन वृष्टित पेशत बचरे (BCY वटन मन चचरे (वहतरी हर---मिहंद हर। अर्थमात्मेत वीच बरे जकनत्क त्वरत मित्क अभरत श्कीत तम्मात मर्वारे बारक। त्यावेशीम नमास्कत क्रमा এট সর্বানাতে ঠেকাবার জন্ত কি নর গ কিছ লক্ষ্মী ভর্তের शाबी बद । अर महकाछ बुक्तियथ अक्ही पिक चारह वा विमू-ৰৰ্শ্বের বৃলগত ভত্বের ব্যাপার। এক বিরাট মহান পুরুবের हेक्चार विश्वच दादार अरे चनर--कांद रेक्चारचर जीजात विकान-बाद मौनाद रेबिया मन्नाबरम विकित्र शिद्धारम বিভিন্ন বৃতিনিচয় অসংখ্য কৃষ্টনৰ অসামঞ্জনম আন কৰ্ম প্রভাষর বারা পরিচালিত হছে। এগব না বাকলে কগং ৰাকার নাৰ্বকভাই বা কি ৰাকত। সমূত্রে বদি চেট না ওঠে---কিনের শোভা।

না---কর্ম্মন জীবনের সবই বিশাদ লাগে। বিশাদ শহরের এই একবেরে জীবন। উবর হতে অভ এবং অভের পর বিজ্ঞার পূর্বকেশ পর্যাভ চারিছিকে একই হুভ---সর্বাক্তন একই চিন্তা আমন্ধ বা ছংখ বিষে কালখাপন। একট দিমের পর আর একট দিম আসে সাবাছই প্রভেদ নিয়ে—কিন্ত পর পর করেছট দিমকে পাশাপাশি রাখনেই বৈচিত্রোর বর্ণ বা খাদ কোবার। এ বেকে অভতঃ মুক্তি চাই। এই পলি বেকে, বাভী বেকে, নিত্য প্রভোজনের সলীদের বেকে বিদার নিরে চলে বাবে সে অপরিচিত পরিমতলে—বেখানে নৃত্য বাছ্যের ভিতে নৃত্য জীবন অধিকত হবে—গৃত্য মৃতিতে খন হরে উঠবে

আকাশের নীল—আর সম্পূর্ণ দুঙ্গ পরিবেশ—নুঙ্গ দৃষ্টতদীর দর্গণে প্রভিদ্দিত করাবে—ছব মৃত্যুর স্রোতবাহিত
এক অপুর্ব-দর্শন বস্তকে বা অরিব বন্ধ নিত্যদৃষ্ট হরেও
নিজা ক্রিট্ট নর ।

প্রভান্ত ত্রিলোচন সেনের প্রভাবটা আর একবার ভাল করে ভেবে দেংবে দ্বির করলে :

क्रमणः

# পাশ্চাত্ত্য দর্শনে ঈশ্বরের অন্তিত্ত-বিচার

অধ্যাপক শ্রীকাত্যায়নীদাস ভট্টাচার্য্য

জনভেত্ৰ মল কাৰণ সকৰে চিতা কবিছা সাধাৰণ মাছ্য ইশ্বৰের অভিজে উপনীত হয় নাই, বাভব সম্ভাৱ সন্থান হইয়া মাসুষ ঐপবের অভিথে বিবাস করিতে বাব্য হইবাছে। প্রকৃতি ছর্বোপম্বী। ছর্যোগে বিপন্ন মাত্র্য অপরের সাহায্যপ্রার্থনা করে ৷ কিন্তু এমন অনেক সময় আলে বর্ণন মানুষের সাহাব্য অতি মগণা বলিয়া প্ৰতিভাত হয়। তখন কোন অনত শক্তি-बाजी शक्रायद भागाबाधार्यमा मा कविता मान्य पाकिए भारत ন। প্রকৃতির ভর্কর রূপ-ভূকল্পন, বঞাবাভ্যা, বঙা প্রভৃতি — ৰাত্ৰের বনে ৰাত্ৰের শক্তির ক্ষতা উপলক করাইরা অন্তৰ্শক্তিশালী কোন বিৱাট পুকুষের কল্পনা ভাগাইরা দের। মাজ্যের কল্পনাপ্রবণ মন প্রথমে প্রকৃতির বিভিন্ন প্রকাশের शकारक विकिन्न मित्रमवीत क्यमां करत । क्रम्य विकासतात বিকাশের ফলে মাতুষ বুবিতে পারে প্রকৃতির বিভিন্নভার পচ্চাতে একা, একরপভা বর্তমান। এই উপলব্ধির পর वह श्रेश्ववाम बीद्ध बीद्ध अद्भवववादम निविष्ण हश-अकृष्टिव পরিচালক ও নির্ম্বা রূপে মানুষ একক্ষ সর্বাশক্তিমান পুরুষের কথা ভাবে এবং বিপদে তাঁহার বাান করিয়া मिक्कि श्रावना करता। क्रेश्चरतत श्रीकि विश्राम अहे कारव स्टे हरेला युक्किक वादा बाह्य तरे विवानक नमर्ग कतिएक (क्रेड) करत । अरे विश्वान व वर्षशैन विश्वा विश्वान मट्ट, हेडा (व यथार्व विधान, अञ्चल दिव देवत विश्वमान हेडा প্ৰমাণ-উদ্দেশ্যে ৰে সকল যুক্তি উপস্থাপিত কৰা হয় আমৱা चत्रा श्रवाम श्रवाम प्रक्रिश्राम नवर जात्मावमा कवित ।

ভাৰভাত্বিক মৃক্তি:—এন্দেপ্ৰ নামক কনৈক মধ্যুবীৰ বৰ্মবাজক ঈগরের অভিত্ব প্ৰবাৰ-উদ্দেশ্যে যে মৃক্তি উপস্থিত করেন ভাষা ভাৰভাত্বিক মৃক্তি (Ontological argument) মাৰে পরিচিত। ইনি বলেন, ঈশ্বের অভিত্ব নাই এই কথা একমাত্র মূর্বেরাই বলিতে পারে এবং এই কথা বারা মূর্বেরা ভগু নিজেদের 'মূর্বামিন'ই পরিচর ধের। ইশ্ব বলিতে ভাষরা বৃবি

এমন একট 'মহতৰ সতা' বাহা হইতে আর কিছু মহতর আছে বলিয়া ভাবিতে পারা যার না। এই মহতম সভার অভিত্
যদি বাতব না হইরা তারু কাঞ্চনিক হর তবে সেই সভাকে
মহতম বলা অর্থীন। যে সভা কাঞ্চনিক ও বাতব এই উভয়
কগতে বিভবান সেই সভাই প্রকৃত মহতম। সুভরাং ইপারের
ভাব বা বারবা হইতেই ভাঁহার অভিত্ প্রমাণিত হয়।

এন্সেল্ম-এর এই ভাবতান্ত্রিক যুক্তিটি আধুনিক যুগের করাসী দার্শনিক ডেকাট একটু পরিমার্জিভ রূপে উপস্থিত করেম। আমরা প্রতিমৃত্তর্ভে নিজেদের অপূর্ণ সভারূপে অক্তর করি, কারণ আমাদের শক্তি সীমাবদ, আমরা যাহা ইচ্ছা করি কার্যাভ: ভাহা করিতে পারি মা। আমাদের মনে 'পূর্ণ সভা'র বারণা বিভয়ান না থাকিলে 'অপূর্ণসভা' এই বারণাট ভাগরুক হুইভে পারিভ না। আমরা যে অপূর্ণ ভাহা বুরিতে পারি যে-তেতু আমাদের মনে পূর্ণদ্বের বারণা বিভয়ান। এই পূর্ণ সভার বারণা হুইভেই প্রমাণ হুর পেই সভা অভিত্রান, কারণ অভিত্রান সভা পূর্ণ সভা হুইভে পারে না। বে সক্তর গুণ হারা পূর্ণ সভার পূর্ণদ্ব, অভিত্র ভাহার মধ্যে অভত্য। সুজ্রাং পূর্ণ সভার পূর্ণদ্ব, অভিত্র ভাহার মধ্যে অভত্য। তুজ্রাং পূর্ণ সভাকে অভিত্রীন কল্পনা করা ববিরোধী। ডেকাট-এর মতে এই পূর্ণ সভাই স্বর। সুভরাং স্থার অভিত্রান।

এই যুক্তির বিরুদ্ধে জার্দ্ধান দার্শনিক ইম্যান্থরেল কাউ বে আগতি উথাপন করেন তাহা অতাত অরুত্বপূর্ব। কাউ বলেন, তাবলোকে ইগরের অতিগ্ন হইতে বাতবলোকে তাহার অতিগ্ন অত্যান ভারসন্মত নহে। আমি ইগর নামক একট পূর্ব সভার ভাবনা করিতে পারি বটে এবং খবন সেই পূর্ব সভার ভাবনা করি তবন তাহাকে অভিত্বসম্পন্ন বলিনাই ভাবনা করি, কারণ অভিত্বক পূর্বত্বের আল বলিয়া এবণ করা হইয়া বাকে। কিছু ভাবনার কেন্দ্রে ইগরের অভিত্ব হুইতে বাতবক্ষেত্রে ইবরের অভিত্ব হুইতে বাতবক্ষেত্রে হুই সরক্ষেত্রের সমাম

বলিয়া ভাবিতে বাব্য হই। কিছ এই ভাবমা হইতে ভাবমান বহিছু বাভব জগতে ত্রিভুজ মামক কোম সভার বাভব জভিছ প্রমাণ হয় মা, কারণ জ্যামিতি-পরিকলিত ত্রিভুজের অভিছ গুলু ভাবমার জগতেই, বাভব জগতে মহে। কাণ্ট-এর মতে ভাবভাত্তিক রুক্তি হারা প্রমাণ হয় মা য়ে, ভাবজগতের বহিছু ভাবাভব জগতে ইংরের কোম অভিয় আছে। অবস্তু আমি বথম ইংরেরেক প্র সভারণে ভাবি ভবম ওাহাকে অভিজ্বসম্পাররেপেই ভাবিয়া থাকি; কিন্তু আমি বথম ইংরের কর্যা মা ভাবি ভবম আর ইংরের অভিজ্ব থাকে মা। ভাবজগৎ হইতে বাভবলোকে অল্পমান সভ্য হইলে আন্নার জামার পর্কেটে এক শভ মুলা আছে এই ভাবমা হইতে বাভব এক শভ মুলা প্রকেটে প্রবেশ করিভ। বেহেছু এক শভ মুলার ভাবমা হইতে বাভব এক শভ মুলা উপরিভ হয় মা, সেইজভ ইংরের অভিস্বে ভাবমা হইতে বাভব অভিস্ব মাণ হয় মা।

তাণ্ট-এর প্রবর্তী ভার্মান ভার্মনিক সেপেল জারজাভিক যুক্তিটিকে এত সচতে খণ্ডনীয় বলিয়া হাম কাৰন নাই। হেগেল প্রমাণ করিতে চেষ্ঠা করেন যে, বস্তকগং এবং ভাব-জগভের মধ্যে মূলতঃ কোন অল্পনীয় পাৰ্ক্য নাই, কারণ ष्ठेकस करेर पत्न अकडे विचटहरूमात काकिवास्ति। श्रुकतार যাহা ভাবৰগতে অবগ্ৰহীকাৰ্য্য ভাচা বল্পৰগতেও অবগ্ৰ অভিতৰান বলিয়াধীকার করিছে ভটাবে। বিশেষ প্রশ্নসভা ইয়ার ভাবভাগতে অবভাগীকার্যা ক্রয়ায় ব্রভাগতে ভাঁচার অভিত্রে অভ্যান অসঞ্চ নটে। তেপেলের বৃক্তির বাধাণ্য कारवामी मार्निम्कवा श्रीकात करतम, किन्न वजनामीता ৰীকার করেন মা। বস্তবাদীরা ভাবভগং ও বস্তভগতের বলে কোন বিখচেতনার স্বীকৃতি দারা এই উত্তর লগতের পাৰ্থক্য অভিক্ৰম করিভে রাজী নতেন। ভাৰভাত্তিক যুক্তির যাধার্থ্য সর্ব্ববাদিসমূভ নহে। কিন্ত ব্রক্তিটর শুরুত প্রভাক দার্শনিকট খীকার করেন। পূর্ণতের বে আমুৰ্শকে আমাদের মুদ্দ উপদান্তি করে ভাচা শুৰ আমাদের বাৰসিক কল্পনা নতে, প্ৰকৃতই সেই আদৰ্শানুৱপ পূৰ্ণ সভা ঈখুৱ ৰভিত্বাৰ—আমাদের মনের অভতলের এই দাবিট ভাবতাত্তিক ুক্তিতে প্রকাশিত। পূর্ণছের আদর্শ আমাদের অপূর্ণ কভাব হইতে সঞ্চাত হইতে পারে মা এই আদর্শ একমাত পুর্ণবরণ केषेत्रहे चामारणत मरम जलांच कतिरच शारतन । आमदा चर्ना-ৰভাব হইয়াও পূৰ্ণছের আদৰ্শ বা বারণা স্কট করিতে পারি---এইরণ ৰদি কেতু দাবি করে তবে উভরে বলিতে হয়, ৰপূৰ্ণ ৰভাৰ যদি পূৰ্ণছেৱ আদৰ্শেৱ শ্ৰষ্টা হয় তবে অপূৰ্ণ ভারণকে পূর্ণ কার্ব্যের শুপ্তারূপে এহণ করিতে হব কিছ ইহা जनस्य। प्रस्तार एकार्ड मान कार्यस त्य, शूर्राएव बावनाव বভিত্ব হুইতেই সেই বারবার অগ্রারূপে ইবর বীকার্য। বাহা इडेक, नामहाचील क्षतानवाल विहाद कविएक त्रांत कार-

ভাত্তিক মৃত্যি ভাষা ক্ষিত্ৰ শ্ৰেমাণিত হয় না। কিছ এই মৃত্যিট এই সভাকে সমৰ্থন কয়ে বে, আমাদের মনের অভতলে বিভয়ান ক্ষানের নারণাট ভারতীন নতে, ইতা মধার্থ।

কারণিক যুক্তি:—এই বিখে বাতা কিছু বটে ভাহারই একটি কারণ বর্তমান, এমন কিছু এই বিখে বটিছে পারে মা যাতার কোন কারণ নাই। কগতের প্রভিটি বটনা কার্যাকারণ-ছত্তে আবদ। ইহাই কগতের নিয়ম। এই নিয়ম অস্থারেই আমাদের ভাবিতে হয়, এই কগতেরও একটি কারণ বিভ্যান এবং সেই কারণই ঈশর। ভাহা শীকার না করিলে কগতকে কারণহীন ভাবিতে হয়, কিঙ কারণহীন কিছুই খাকিতে বা বৃষ্টিতে পারে না। কারণিক মুক্তিকে (causal argument) নিয়লিভিজনপে প্রকাশ করা হয়:—

প্রভ্যেকট ঘটনাই কারণ ঘারা স্ট ; এই দগৎ একট ঘটনা ;

সুভরাং এই **ভগং একটি কারণ দারা** সৃষ্ট।

এই হজ্জির প্রধান প্রতিজ্ঞাটি প্রত:সির। প্রত্যেকটি ঘটনাই একট কাৰণ থাৰা সই ইচা সীকাৰ না কৰিলে চিছাৰ ক্লেছে विलाहि गरि हह । किन्न 'बहे करार बक्के पहेंसा' बहे व्यथनीय প্ৰভিক্ষাটির যাধার্থা স্বীকৃতি লইয়া তর্ক উঠে। ঘটনা বলিলে এমন একটি ব্যাপার ব্রায় যাতার আদি ও অস্ত বিভ্নান। किन्न कार्रक कारि-७-कन्नक्षक अकृष्टि वााभाव विमाल किन কেত বাকী মতেন ! এই কগং একটি আদিগ্ৰীন অন্তহীন ব্যাপারও চইতে পারে—কে জামে। জভবাদীরা জভকে নিভঃ বলিয়া গ্রহণ করায় ভভভগৎ তাহাদের নিকট অনাদি ও অনস্ত। কারণিক যুক্তিটির বিক্লম্বে ছিতীয় আপত্তি উঠে কারণ শক্ষের অর্থ লইয়া। বৃঞ্চিটর প্রধান প্রতিজ্ঞা ও সিহাছে কারণ শ্বাদ্ধীকে চুট অর্থে ব্যবহার করা হইশ্বাছে। প্রধান প্রতিজ্ঞাতে थर्बम बला क्रेस्ट्राट्ड शास्त्रकृष्टि परेवाई कांत्र बाता एहे. कांत्र খন্দটিছে ভৰন সাধারণ অধে ব্যবহার করা চইয়াছে---অর্থাৎ কারণ শুন্দট দ্বার। এখন একট ব্যাপার বুবান হইভেছে স্বাহা अभव अक्षे कादन बादा रहे। कि ह निकार कादन मक्के बून কারণ অর্থে বাবক্ত ক্টরাছে—বে কারণ অপর কোন কারণ ছার। স্টু নতে। সভরাং কারণিক বুক্তিটি ব্যর্থকতাদোধে ছই। चावक अकृष्टि चानकि केर्रि । (निष्टे और (य. और चनरच्य अकृष्टि ৰল কারণ আছে খীকার করিলেও ঈখরের অভিত খীকার করিবার প্রয়েজন হয় না। জগতের একট বুল কারণ ভাছে সভা কি ও সেই কারণ কড় ভিন্ন **অভ কিছু ভাহ। অসু**মান করিবার কি হেতু বাকিতে পারে ৷ অভবাদীরা অগভের বুল कारनंदक क्षेत्रदेश्वर श्रीकार वा करिया क्षेत्रदेश किया करिया। স্তরাং কারণিক বৃক্তিবারা কগতের মূল কারণ যে ঈখর ভাহা প্ৰবাণিত হয় না। কিন্তু এই বুক্তিটির কোন অক্সন্থ নাই একথা रका बाद मा । देशदाक प्रामिक क्या करू. कावीम प्रामिक ইব্যাছরেল কাণ্ট প্রমুখ মনীয়ীয়া এই বুক্তিটির প্রশংসা করিছাছেম। কাণ্ট বলেম, এই বুক্তিটি সাধারণ-বৃদ্ধি ও হল্প-বৃদ্ধি এই
উতর ভরের লোকের নিকট সমভাবে শক্তিশালী বলিয়া
প্রতিভাত। কম লক বলেম, কগতের মূল কারণরূপে এমন
একটা কিছুকে বীকার করিতেই হইবে যাহা অনাধিকাল
হইতেই বর্ত্তমাম। কিছু অমাধি কাল হইতে বর্ত্তমাম 'একটা
কিছুকৈ বীকার করিলেও সেই বস্তুই যে ক্ষর ভাহার কি
প্রমাণ আছে? সেই বস্তুকে অভ রূপে মা ভাবিহা ক্ষররূপে
গ্রহণ করা নিছক কল্পনাও ত হুইতে পারে।

সম্প্ৰতি ড: ব্যাশ্ডাল মাৰ্ক কৰৈক ভাৰ্শনিক কাৰ্থিক ৰুক্তিটিকে ভাৰবাৰের সদে সম্বিত করিয়া ইখরাভিত্তর প্রমাণ রূপে উপস্থিত করিয়াছেন। ভিনি বলেন, বেহেত বিজ্ঞান क्षमान कविचारक रव. बारे करेर माकृष्यव चानिकारवव वक गुर्ख इहें एक विकास बन्द (बाह्य कावनाम समान कतिशाद (ब. কোন কিছকে বিভয়াৰ থাকিতে হইলে চেতনার বিষ্করণে বিভয়ান বাকিতে হইবে, সেই হেড় আমাদের সীকার করিতে ब्देर्स (व. बाक्टरवर ८०७मार अधितिक अक्षे विदार ८०७मा विश्वमान बाजात विश्वतार्थ करें कर्ण मान्याय व्यक्तिशायत वर्ष श्रद्ध कहेटकहे काश्विकालमा किया। (जहे विवादे कियाने मेचवा कुछदार मिछा चर्मान (हजमाद्रात केंद्रदक चीकाद मा कदिल ৰাজুষের চেত্ৰার বহিতৃতি অগতের অভিত্ব প্রমাণ করা বাহ या। ७: ब्रामधान-अब वस्तित यावादा चाववाधीता श्रीकाव করেন, কিন্তু বছবাদীরা এই হুক্তিকে মর্ব্যাদা দিতে রাজী নহেন। ভারণ তাঁহারা একবা খীভার ভরেন না বে, কোন ভিছকে বিজয়ান থাকিছে চটলে চেত্ৰার বিষয়রপেট বিজয়ান থাকিতে हरेत । पूछवार बहे बुक्किकेव वाबावाछ नर्सवाविनग्रह महि ।

কাৰণিক ৰ্ভিটির আলোচনা হইছে প্রতিপর হয় বে, ইপারের অভিন্যের নিঃসলিক প্রনাণ রূপে বিচার করিছে পেলে ব্ভিটি ব্যর্থ, কারণ ইছা হারা ভগু একটি অনাদি কারণেরই সহান পাওরা হার। কিন্তু সেই কারণটিই ইপার কিনা এই প্রশ্নের কোন স্বাধান ইছাতে নাই। ভগাপি কারণিক বৃভিটিকে একেয়ারে অর্থহীন বলা চলে মা। উচ্চ মৃভির হারা এই সভ্যের সহান পাওরা হার বে, অর্গভের কার্যকারণ-শৃথলের পশ্চাভে একটি নিভ্য বিরাট সভা বিভ্নান বাহাকে আর্গভিক হটনার বুল কারণ বলিয়া হীকার করিছে হয়। অবন্ধ বুল কারণ আছে কি চৈত্যামর সভা ভাহা কারণিক বুভি হারা নিঃসলিক ভাবে প্রাণিত হয় মা।

উদ্বেভাৰক বৃক্তি:—জাগতিক বস্তুতানির গঠননৈপুণ্য হইতে উদ্বেভানা ক্ষানের অন্থনানট উদ্বেভাৰক বৃক্তি (Telcolegical argument) নাবে পরিচিত:। জাগতিক বস্তুতানির গঠন-কৌল লক্ষা করিলে বনে হয় এইখনি কোন বিশ্বনিরীয় শিল। আক্ষিত ক্ষায়ৰ হুইতে এই বিশ্বতায় প্রকাশ ক্ষমা

कड़ा बाद ना । कि छेडिए, कि कड--शरकारकरे चानन चानन श्राक्षमञ्च स्वर्थकावनमञ्ज्ञ প্রকৃতির বন্ধে বাচাতে बिरागरम कामरकर जाक कीरमधार करिएक गारत तारे किएक দ্বত্ব বাৰিয়া বেন প্ৰভোক্ত প্ৰাণীৰ দেত গঠন কৰা ভইয়াছে। ক্ষররা বাচাতে বারতে দাসপ্রদাস এচণ ও ত্যাগ করিতে পারে (जरे पिटक महै वाविश काठाएस्ट क्जक्ज अंग्रेक करेशारक। कन-DE कीरावर प्राम्थपारमस्य क्रम कालारवर वेशायाने किरकाकीस चक्रश्रेष्ठाक वर्ष्याम । अस्तरकीत्वत वर्ध-विकित्तकात अकारसार केरमं द्विष्टाह । त्व जवन शक्तभनी महत्व हारक विश्व বোৰ করে, শত্রুর কবল হইতে পরিজাণের উপৰোধী করিয়া ভাহাদের বর্ণস্টি ও অনপ্রভাদ গটিত চইয়াছে। পদীর অভি-धनि नवू मकुरा धावाता चाकारम देकिए शांतिक मा : इस्न প্রথলি অভাত সভর্ক ও কিন্তু, ভালা না লইলে ইলারা শত্রুর নিকট চইতে আছৱকা ভবিতে পাবিত মা। এইবপ প্রভাত ক্ষে এককৰ বিখ-শিলী বেদ প্ৰভোকের প্ৰয়োজনাচ্যায়ী चन्याणामावि गर्वेम कृतिया विद्यालय । अहे विद्याने विदय शास्त्र রূপে মহানু শিল্পী বেন তাঁহার অমভ বুদ্ধির সহায়ভার বছৰগং ও প্ৰাণিকগংকে নিপুণভাৱ সহিভ গঠন কৱিভেছেন। प्रख्यार कामिक वस्त्रकात मर्डमरेमनुना हरेएक देवादा শভিত্যে প্ৰমাণ হয়। ইহাই উদ্বেখাৰক যুক্তির মন্থাৰ। এই वृक्तिक याबाबा लाहीम औक मार्निकत्वत चानाकर अधर्म कतिशासम् । এনেকজেগোরাস প্রাণি-জলের গঠনবিভাস দেখিরা ঈশবের অসীম বৃদ্ধির প্রশক্তি গাহিরাছেন। পিখা-গোরাস বস্থনিচত্তের সুসমঞ্জন সুখুখল গঠন-বিভাগ দেখিয়া केवबरक विवाह भविकविक जावा। क्रिकारकम । द्वारका Temæus এছে উদেকাৰক বুক্তির সভ্যতা খীকার করিয়াছেন। এবিঠটন चौरविका ও পहार्वविकाद चारताहमा कडेरल विवशक्तिहालमाव केषरवर केरकाकर भतिहरू भावेशास्त्र ।

আই। দশ শভালীতে উদ্বেভাৰ্ক যুক্তিই ইবাভিছের প্রদানরশে অভ্যন্থ ক্ষমপ্রির হইরা উঠে। ইব্যান্ত্রেল কান্ট এই যুক্তিইকে 'the clearest, the oldest and best suited to human reason' বলিরা প্রশংসা করেম। দার্শ-নিকপ্রবর শেলে (Paley) এই যুক্তিইকে ইপরের অভিছের নিঃসন্দির প্রমাণ বলিরা বোষণা করেম। এই সমর উংসাহী বর্ষবিজ্ঞানীরা বিভিন্ন প্রাণি-অক্ষের বিভিন্ন উপরোগিতা ক্ষমণ করিয়া ইপরের অসীম বৃত্তির প্রশন্তি আরম্ভ করেম। এই সমরে ভারউইদের ক্ষমবিবর্জনবাদ প্রচারিত হইরা বর্ষবিজ্ঞানীব্রের উৎসাহ অনেকাংশে নির্কাণিত করিয়া ক্রেম। ভারউইদ প্রমাণ করেম বে, এক্যাত্র আক্রিক পরিবর্জন (chance variations) হইতেই প্রাণিক্রপতে ক্রের্সইনের বিভিন্নতা স্থাই হইরাছে। প্রাণিক্রের অতাৰ হুইতেই ক্রভক্তিন আক্রিক পরিবর্জন বৃত্তি। এই পরিবর্জনগুলি যদি ক্ষিণ্ড নির্বাহ্র বাণিক্র

पश्चित्र प्रकार पत्रकृत हव छट्टर तरे थाने दांविता पारक। किस वित और शतिवर्धनश्चिन चाचत्रमात श्रीचिक्न वह चाव সেই প্ৰাৰ্থ প্ৰভাৱিত বন্ধ চইতে নিশ্চিক চইবা বাব। পূৰ্ব-পক্ষের পরিবর্ত্তমন্তলি পরবর্তী পুরুষে আসিরা বাকে। পরবর্তী शकास चारात मध्य मध्य चाकत्विक शरिवर्धम त्रश्वीच वस । এট ভাবে বীরে বীরে পরিবর্ত্তন সঞ্চিত হটরা নৃত্য-ভাতীর क्षावित चाविकार पहि। क्षावित्यत्वत भविवर्कमश्वनि अन्भर्गहे আছল্পিক। ইতার পঞ্চাতে ভোষ ইশবের ছডিপ্রার ছত্যান করার হেত নাই। প্রাণিদেহের অবপ্রত্যাদের উপযোগিতা हरेए क्षेत्रदा अखिए अष्टमाम कहा यात मा. कादन शानिरक्ट सर देशानी सम्बन्धात्मत एडी हर ना सामक सम्भावाने অদপ্রভারত স্থ হয়। কিছ একবার উপবোদী অরপ্রভার बाका जबक क्षाविह कोवम-मरक्षात्म करी हत, जनुभरवानि जन-সভাল প্রাণী সংগ্রামে পরাজিত চইয়া প্রকৃতির বন্ধ চইতে বিল্প্ত চটাল লাভ। অবশ্র ভারটেইন ঈশবের অভিতে অবিশাসী ভিলেন ভালা বলা বাব না। বিভ প্রাণিদেলের গঠন-ইপরোগিতা চটতে ইশবের অভিত প্রমাণিত চর না ইচাই তাঁচার মত। क्षत चाकचिक शतिवर्धम बाजा श्रीविषय गर्रेमदेविकारक देशबळ्ळाल वार्ता करा बाद मा छाता पारदेश बीकार ভবিৰেন। কিছ ভৱ কোন কাৰণ নিশ্চিতৰূপে ভাবিছত না ভথৱা পৰ্যাত আক্ৰিকভাকেই আপাতত: স্বীকার করিছা करेल करेत देशरे कांत्रात अध्यक्ष । पात्रप्रेरेम मास्त्रिक बिरनन ना। "I deserve to be called a theist", 'जाबि একজন আভিক বলিয়া গণ্য চইবার বোগ্য'-এক সময় ভিনি वह केकि करवम। किस शानिसारत सम्भागात छैन-बातिका करेटच रेपटाव चक्रांम क्यांमार्थिक मटक विन्हां हैनि केरच्छार्वक विकास वाबार्ट्स चाछाराम मरहम ।

সম্প্রতি নর্ব্যান কেন্দ্র মিক্ বে নামক একলন ইংরেজ নার্দানিক উদ্দোধক যুক্তির বিক্লবে বে সকল আগতি উপছিত করিবাছেন তাহা প্রশিবানবাগ্য। প্রথমতঃ, এই যুক্তিতে প্রাকৃত বন্ধ ও কুল্লিন বন্ধর নব্যে পার্থক্য বীকার করা হর না। কোন একটি কুল্লিন বন্ধর পঠননৈপুণ্য হইতে জানবুদ্বিসম্পর কোন নির্মাতাকে অনুমান করা বার, কিন্ত প্রাকৃত বন্ধর পঠনকোন হইতে এরণ অনুমান রুক্তিসকত কি-না তাহা প্রপ্রের বিষর। বিতীয়তঃ, উদ্দেশ্যকিক যুক্তি বারা ইম্বকে রুচ্ছিতা শিল্পীরণে চিন্তা করা হর, কিন্ত ইম্বক্তি করিবা বিরাট নম্ভ্রমণে করমা করা হর। কিন্ত সর্বাশিক্তিমান সর্ব্বেক পরম পুরুষকে এরণ কর্মা করা হর। কিন্ত সর্বাশিক্তিমান সর্ব্বেক পরম পুরুষকে এরণ কর্মা করা কি ব্যব্রোধী নহে ? উদ্বেশ্যকিক মুক্তির বিক্লবে আরও একট অক্রম্বপূর্ণ আগতি দার্শনিক মহলে আলোচিত হইলা থাকে। প্রকৃতির বাজ্যে তথ্ যে উদ্বেশ্যকান নির্বৃত্তির পাল্যাশিশিক বির্বৃত্তির বি

আনৈপ্ৰাও বৃষ্ট হয়। প্ৰকৃতি এক্দিকে বেরপ স্কার, অপরদিকে সেরপ ক্পেত। প্রাণিজগতের প্রভ্যেকট অকপ্রভাবই বে জীবনরকার উপযোগী করিরা গঠিত হইরাছে ভাহা নছে, অহপযোগী, অপ্রয়েজনীয়, আত্মরকার পরিপত্নী অদ-প্রভাব দারা ভারাক্রান্ত হইরা অনেক প্রাণী প্রকৃতির রাজ্য হইছে
নিশ্চিক্ হইরা সিরাছে। অনেক অভিকার জীবক্ত প্রকৃতির
প্রতিকৃত্য পরিবেশে আত্মরকার অসমর্থ হইরা চির-বিভার প্রহণ করিয়াছে। স্তরাং উদ্বেভার্থক হস্তিট এক্দর্শিভাগোবে হুই।

সম্প্ৰতি বিখ্যাত ইংৱেছ দাৰ্শনিক ও মনীয়ী বাৰ্ট াও ছাসেল উদ্বেশ্যবিক ব্ৰক্তিটকে নতন দৃষ্টভকী হইতে উবাপিত করিয়া-ছেন। বিশ্বপ্রকৃতিকে বদি আমরা ইচ্ছাতীন, উদ্ভেক্তীন অভ বলিয়া প্রচণ করি তাবে প্রকৃতি সমূতে আমাদের ঘণার্থ-জান সভাত চইতে পাতে না এবং ঘণাৰ্থ-জান সভাত না ভইলে প্রকৃতিকে ইফাচীন ইডেখনীন ভত বলাবও কোন जार्थकका सारक मा । अकिक जन्मक चाहारमत वर्षार्थ वा जन्म काम प्रक्रांच हर चौकार करिएन श्रकृति १६ प्रत्यार मर्था क्षेत्र বা সামঞ্জ খীকার করিতে হইবে। অর্থাং, প্রকৃতি সম্বদ্ধে আয়াদের জান ববার্ব ইচা আহরা ভবনই দ্বীকার করিছে পাত্রি বর্ণন আমতা বিখাদ করি প্রকৃতি বেক্ষায় আমাদের জ্ঞানের ভিতর দিয়া বধারণভাবে আত্মপ্রকাশ করিয়াছে। প্রকৃতি বদি আমাদের জানের ভিতর দিয়া ব্যাব্যভাবে আছু-श्रकान मा करत. चर्नार मर्रकात मर्रक विक्रिकत केका वा সাম্ভ্রন্থ না থাকে তবে প্রকৃতিকে উদ্বেশ্রহীন ক্রম্বরণ विनावक काम वर्ष बाक मां, और वर्गमांक मिया। हरेश হাভার। প্রভরাং প্রকৃতিকে উদেশ্রতীন কল্পনা করিবার পর্বের হৰাৰ্জ্ঞান বা সভ্যের ভিতর দিয়া প্রকৃতির উদ্দেশপূর্ণ আছ-প্ৰকাশ স্বীকার করিয়া লইতে চয়, সভা এবং বিশ্বপ্ৰকৃতির মধ্যে ঐভ্য বা সামপ্রস্থপূর্ণতা স্বীকার করিছা লইতে চর। একবে প্রস্থ উঠে, সভার সঙ্গে যদি প্রকৃতির সাম্প্রত বাকে ভবে লিব ও কুলবের সলে প্রকৃতির সামগ্রত বা ঐক্য থাকিবে না কেম গ সভাকে প্ৰকৃতিৰ আৰ্থাকাশ বলিলে শিব-প্ৰদৰ্গকও প্ৰকৃতিৰ ভাতপ্রকাশ বলিতে চটবে। সভাশিবসকরতে বাতবে ক্রপারিভ তবা ৰে প্ৰকৃতি হাবা সম্ভৱ চইতেহে তাতাকে উদ্বেশ্বতীৰ ভত-সভা বৰ্ণনা করা অৰ্থহীন। পুভরাং প্রকৃতিকে উদ্বেপ্তপূর্ণ চেত্রন সভারণে ভাবিতে হয় এবং ভাহার উদ্দেশ সভাশিবপুন্সায়ের বাতৰ রূপারণে পরিকৃষ্ট। বার্টাও রাসেল উদেন্তার্থক বৃক্তির यावावी और जारबरे श्रमान कविवाद श्रदान नारेबाएक। विध-প্রকৃতির উদেপ্তকে ভির নির্দিষ্ট কোন উদেপ্তরূপে ভরুনা ভরা চলে লা। করাসী দার্শনিক বার্গস মনে করেন বে, ছির ও নিৰ্দিষ্ট কোন উদ্বেশ্যর মাপকাটি দিয়া বিশ্বপ্রকৃতির উদ্বেশ্যক क्त्रमा क्तिरम थानेरस्त थलाक बहुक्ल पानीम रेक्साइ খাৰীৰতা খীকার করা বাহ না। বিশ্বপ্রকৃতির ইকেন্ডকে কর- স্কাৰান জৰবিকাশমান উদ্ভেগ্নপে ভাবিতে হইবে। প্ৰকৃতি জনবিকাশের বব্যে বীরে বীরে সেই উদ্ভেগ্ন সম্বন্ধ কাঞ্ৰত হই-ভেছে, ক্রমবিকাশের ভিতর বিদ্যা সেই উদ্ভেগ্ন স্থাই চইতেছে।

নৈতিক মুক্তি :—ভাবভাত্তিক যুক্তি, কারণিক যুক্তি ও উদ্বেভার্থক মুক্তি এই ভিনটি যুক্তিকে খণ্ডন করিবা নৈতিক চেতনার ভিত্তিতে ইন্যান্তরেল কাওঁ বে যুক্তি উপস্থাপিত করেন ভারা নৈতিক যুক্তি নাবে অভিহ্নিত । ভাবভাত্তিক যুক্তিতে ভাবকগৎ হাতে বস্তব্যক্তি অহ্মান, কারণিক যুক্তিতে পরিস্টিমান প্রাকৃত কপতের কার্যা-কারণের শৃথল হাইতে অপ্রাকৃত মুল কারণের অহ্মান এবং উদ্বেভার্থক যুক্তিতে কভকগুলি কৃষির বস্তব্যক্তি উদ্বেভাত্তক লক্ষ্য করিবা সম্বন্ধ বিচারবুদ্ধির সাহাবের অহ্মান ভারসমূত বলিয়া কাওঁ বীকার করেন না। এই যুক্তিভালির ব্যর্থভার কারণ এই যে, ওদ্ধ বিচারবুদ্ধির সাহাব্যে কৃষ্যরের অভিত্ প্রমাণ করা যায় না। কাওঁ মনে করেন, কৃষ্যরের অভিত্ প্রমাণ একমাত্র নৈভিক্ চেতনা ব্যব্য ভিত্তিতেই সম্বন। আমাদের নৈভিক্ চেতনা কৃষ্যের অভিত্ ভাবি করে, কৃষ্যর অভিত্তিত্বীন হাইলে নৈভিক্ চেতনা যথাব হয় মা:

"Admitting that the pure moral law inexorably binds everyman as command, the righteous man may say: "I will that there be a Gog. I firmly abide by this and will not let this faith be taken away from me." (Kant's Metaphysics of Morals.)

আমাদের মৈতিক চেতনা নৈতিক আদর্শের প্রতি অক আফুগভা দাবী করে। নৈভিত আদর্শের প্রভি নির্বিরোধ অকুঠ আপুগভা হইভেই পূৰ্বত্বপা আদৰ্শ বাভবে রূপায়িত হয়। शूर्वछा जानरर्गंत निरम जात्रमण कहेरल भूना अवश्र महे जानर्ग ছইতে অপসরবের কলে পাপ সঞ্জত হয়। পুণাবান যদিও অধের আকাজা লইয়া পুণাকার্যো প্রবৃত্ব হয় না তবু পুণভের चापर्नटक विराधिय कवितन श्रेग ७ यूप बरे इरेटिक खवित्हमा আকরণে পাওয়া যায়। যদিও পূর্ণত্ত্রপ পর্ম আদর্শে পূণ্য ও পুর अफक्छबरे नवविष्ठ चयु रेहक्शर्फ शुन्।वागर्क नर्यामा पूर्वरका न बार भाभागाती क गर्यका इ:बाका व वेरक क्या वास मा। প্রকৃতির রাজ্য যদি শীতির রাজ্যের অভুগ হর ভবেই পুণ্যবাদ पूर्वी बदर शाशाहादी इ:शी हरेए शादा। क्षित्र बरे इरेडे রাজ্য পরস্পরনিরপেক ও খতত্র বলিরা ইত্ত্পতে পরিল্পিড হর। আমাদের দৈভিক চেডনার দাবি অমুসারে প্রকৃতিকে मीचित्र चन्न्र हरेएछ हरेरव, नृगाशा ७ भाभाशा ववाकत्य निक निक कर्षाष्ट्रयाशी यूर्व ७ इ:(बह व्यक्तिही हरेता কিছ পরস্থারনিরপেক প্রকৃতি-রাখ্য ও নীভির রাজ্য একে चनरवंद जब्न वरेट वरेट अव्यक्त व्यक्तिया केन्द्रक অভ্যান করিতে হর বাহার ইছোভুখারী প্রকৃতি নীভির অভূগ हरेबा भूगाचारक भवरमारक ख्बी ७ भाभाचारक इःबी

করিবে। প্রভাগ আমাদের নৈতিক চেডমার দাবি অস্থারে পূণ্যবামকে প্রবী ও পাপাচারীকে ছংবী হইতে হইলে প্রধ্ছংধের বর্ণমন্ধারী ঈশবের অভিছ অস্থাম অপরিহার্য। ঈশব অভিছহীন হইলে নৈতিক চেডমার দাবির সার্থকা থাকে
না, নৈতিক আদর্শ অবহীন হইরা পড়ে। কান্ট রমে করেন, নৈতিক চেডমা প্রাকৃত কগভের চেডমার চারই বর্ধার্থ ও বাভব, নৈতিক চেডমাকে মামামরীচিকা বলিরা উপেকা করা চলে মা। প্রভরাগ নৈতিক আদর্শের সার্থকভার কর ঈশবের অভিত দ্বীকার করিতে হইবে।

ভেষ্স্ মার্টনো নৈতিক বুজিটকে সম্পূর্ণ ভিত্র রূপে প্রকাশ করেন। প্রত্যক্ষ চেতনাতে আমরা থেরপ একটি বছর বাহসভার সম্বান হইরা সেই সভাকে অফ্তব করি, সেইরপ নৈতিক চেতনাতেও আমরা একটি মইন্থম সভার সম্বান হইরা তাঁহার নির্দেশ অফ্তব করি। সেই মহন্তম সভাই স্থার। নৈতিক চেতনাতে আমরা সেই স্থারের সাক্ষাং পাই এবং কর্তব্যাহ্রসর্থের ভিতর দিয়া তাঁহার নির্দেশ পালন করি। কিন্ত প্রচাই উঠি, নৈতিক চেতনাতে আমরা যে মহন্তম সভাকে প্রত্যক্ষ করি সেই সভা স্বাক্ষ কি স্থার ভাইা কে বলিতে পারে? ভাকহিম মনে করেন সমাক্ষ সেই মহন্তম সভা মাহাকে আমরা নৈতিক চেতনাতে প্রত্যক্ষ অহ্তব করি।

সম্প্রতি ড: র্যাশ্ড্যাল নৈভিক যুক্তিটকে নৃত্য রূপ দিয়াছেন। নৈভিক চেত্ৰাভে আমরা যে কর্ত্ব্যনির্দেশের সভাষ পাই সেই নিৰ্দেশগুলি ব্যক্তিসাপেক মানসিক ব্যাপার নতে, নির্দেশগুলি সার্কাজনীন ও বগুনির। আমরা যদি বিখাস করি প্রাণীতভাগ তইতে প্রাণীরকাই শ্রেষ: কডয়ঙা হইতে কৃতজ্ঞতা, স্বাৰ্পরভা হইতে মি:স্বাৰ্তাই শ্রেম: ইদি প্রভাকে मा इडेक, अविकारन लाक विकीय कार्याहिक श्रमही হইতে শ্রেম: মনে করে, ভবেই আমাদের বুবিতে হইবে নৈভিক নির্দেশগুলি ব্যক্তিগাপেক মান্সিক ব্যাপার নতে. নৈভিক নিৰ্দেশ বছনিষ্ঠ, নৈভিক চেডনার বান্তব ভিডি বর্ড-মান। নৈভিক নিৰ্দেশ ছলিকে বছনিষ্ঠ ও ব্যক্তিনির পেক রূপে গ্রহণ করিলে কোন এক বিখচেত্রনার স্বীকৃতি অপরিতার্ব্য হইবা পতে যে চেডনার ভিভিতে নির্দেশগুলি ব্যক্তিনিরপেক ও বস্তুনিষ্ঠ হইতে পারে। অর্থাৎ, নৈতিক আদর্শের সার্বাক্ষমীনভা ও বস্তুনিষ্ঠভা স্বীকার করিলে সেই আদর্শের ভিত্তিরূপে ঈশ্বরের অভিত স্বীকার প্রয়োভন।

অনেক দোষক্রট সভেও নৈতিক মুক্তি আদর্শ করতের গুরুত্বকে বধাবধভাবে বীকার করিলা সইবার দাবি আবাদের সহক্ষে উপস্থিত করে। নিরপেক নির্ক্ষিকার কর্কসংভার বিষয় ও ব্যাপারাধি দারা আদর্শ ক্সংক্রে ব্যাধ্যা করা বার না— আদর্শ ক্সতের প্রতি উপযুক্ত মর্ব্যাদা দিতে, আদর্শ ক্সংক্রে ষ্ণাৰণ ব্যাণ্যা করিতে ঈশ্রের অভিত্ব বীকার করিতে হইবে।
ইহা নৈতিক চেতদার লাবি। কিন্তু নৈতিক দাবিকে বিশ্বপ্রকৃতি বানিয়া লাইবে, এবং নৈতিক দাবির অস্থায়ী ঈশর
প্রকৃতি বানিয়া লাইবে, এবং নৈতিক দাবির অস্থায়ী ঈশর
প্রকৃতই যে অভিত্বাম ভাহার কি প্রমাণ আছে। সভরাং
নৈতিক যুক্তিটকেও ঈশরের অভিত্বের নিংসন্দির্ম প্রমাণরূপে
গ্রহণ করা চলে না। অবশ্র কান্টের ভার আদর্শনিষ্ঠ নীতিসর্বাহ্ব বিজের নিকট নৈতিক যুক্তিটি ঈশরাভিত্বের ব্যাণ্য
প্রমাণরূপে প্রভিত্তাত হইবে সন্দেহ নাই, কিন্তু বাহারা আদর্শকর্ণবে ব্রহণেতের ভার শুরুত্বপূর্ণ মনে করেম না ওঁহারার
নৈতিক যুক্তিকে বিশেষ অর্থপূর্ণ বলিরা গ্রহণ করিবেন না।
নৈতিক আদর্শ ভারসদক্ষ মহে বলিরা কান্ট ভারতাত্ত্বিক যুক্তিকে
পতন করিতে চেষ্টা করেন, কিন্তু নৈতিক যুক্তিতে কান্ট নিক্ষেই ভারক্রগতের দাবি অস্থ্যারে ব্রহ্মগতে ঈশরের
অভিত্রের প্রমাণে ভংপর চইরাছেন।

ক্ষরাভিত্বের উপরি-উজ্ঞ চারিট যুক্তির আলোচনা হইতে আপ্ট প্রতীরনান হর যে, তথাবো কোন একটি যুক্তিও নিঃসন্ধির ভাবে ক্ষরের অভিত্ব প্রমাণ করিতে সমর্থ নহে। বাহারা ক্ষরের অভিত্বে বিখালী ভাহারা উরিবিত যুক্তিওলি হইতে নিজ মিজ বিখানের প্রচুর সমর্থম পাইবেন। কিছু বাহারা নাতিক, ক্ষরাভিত্বে ভাহাদের বিখাস জ্বাইতে যুক্তিওলি বার্থ। চারিট যুক্তিকে বিচ্ছিরভাবে দেখা সম্ভুদ্ধ নহে। ভাবতাজ্বিক যুক্তিতে পূর্ণপ্রের বারণা হইতে পূর্ণরের অভ্যান করা হইরাহে, কার্নিক যুক্তিতে তাহাকেই জনভার ক্ষরের অভ্যান করা হইরাহে, কার্নিক যুক্তিতে তাহাকেই উদ্দেশ্ধর ক্রের সভারণে এবং নৈভিক যুক্তিতে তাহাকেই উদ্দেশ্ধর ক্রের সভারণে এবং নৈভিক যুক্তিতে নৈভিক রাজ্যের বিবাতা পাপপুণ্যের বিচারকরূপে চিঙা করা হইরাহে। ব্যক্তিওলির ব্যাবার্থ প্রমান করে বিষয়, তবু যুক্তিওলি এক সালে ক্ষরির বিষয়, তবু যুক্তিওলি এক সালে ক্ষর্থর অভিত্বের আভাগ দের-ক্ষরিতে প্রান্তির ক্ষরির বিষয় ভারত্বের আভাগ দের-ক্ষরিতার অভিত্বের আভাগ দের-ক্ষরিতার অভিত্বের আভাগ দের-ক্ষরের আত্যার অভিত্বের আভাগ দের-ক্ষরের বিষয়ের বিষয়ের বিষয়ের আভাগে দের-ক্ষরের আত্যার অভিত্বের আভাগে দের-ক্ষরিত স্থিতির আভাগার দের-ক্ষরিত স্থানির স্থানির আত্যার অভিত্বের আভাগে দের-ক্ষরের আত্যার অভিত্বের আভাগের দের-ক্ষরের স্থানির স্থানির

## শিক্ষার বিবর্ত্তন

অধ্যাপক এবিমলচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

হিন্দু সংস্কৃতির গৌরবময় যুগ হইতে আরম্ভ করিয়া আব্দ পর্যান্ত আমাদের জাতীয় শিক্ষার গতি ও প্রকৃতি বিচিত্র-ভাবে পরিবর্ত্তিত হইয়া আসিয়াছে। হয়ত তাহাই অন্ত্যরন করিয়া আমাদের জাতীয় জীবনের উত্থান-পতনের বাত্তব নাট্য অভিনীত হইয়া আসিতেছে। আজিকার যুগস্থিকণেও আমবা শিক্ষাক্ষেত্রে একটা বিগ্রাট পরিবর্তনের মধ্য দিয়া চলিতেছি। রক্ষমঞ্চের অভ্যন্তর হইতে দেখিলে অভিনয়ের জীবন্ত রূপ স্পষ্ট হইয়া উঠে না; ক্ষুদ্র পূ বিক্ষিয় বিষয়গুলি দৃষ্টি আবদ্ধ করিয়া সমগ্রের অন্তৃতি হ্রাস করিয়া দেয়। সেইরূপ আজিকার শিক্ষা-বিপর্যায় আমাদের মনেশ্হয়ত তত স্পষ্ট করিয়া রেগাপাত করে না। কিছ ইতিহাসের পৃষ্ঠায় ইহা একটি প্রভৃত ইন্ধিতপূর্ণ অধ্যায় বলিয়া পরিগণিত হইবে।

পরিবর্ত্তন মাত্রেই দ্বলীয় নহে; বস্তুতঃ পরিবর্ত্তনই উন্নতির দোপান। নব নব পরিস্থিতিতে নৃতন নৃতন প্রয়োজন অফুভূত হইয়া থাকে। তাহা পূর্ণ করিবার উদ্দেশ্যে শিক্ষার প্রকৃতির পরিবর্ত্তন অবস্থাই বাস্থনীয়। কিছ শিক্ষার প্রকৃতি ও প্রেরণা স্থপথে চালিত করিলে বেমন জাতীয় উন্নতির পথ উন্মুক্ত হয়, দেইরূপ বিপথে চালিত হইলে তাহাই জাতির অবন্তির কারণ হইয়া উঠে।

ঘুর্তাপাবশতঃ শিকা-নিয়ন্ত্রণ-কেত্রে, শিকাব্রতিগণকে

অতিক্রম করিয়া রাষ্ট্রশক্তিই অনেক সময় প্রবল হইয়া উঠে;
নির্বিকল্পভাবে শিক্ষার কথা না ভাবিয়া, বাজনৈতিক উদ্দেশ্য ছারা প্রণোদিত হইয়া কথনও কথনও শিক্ষার স্বাধীন ও স্বচ্ছন গতিঃ মোড় ফিরাইয়া দেওয়া হয়। ইতিহাদের সাক্ষ্য ছারা প্রমাণিত হইবে যে, তাহা মক্ষ্য-জনক হয় না। আবার মধ্যে মধ্যে এমন স্থর্ণযুগ আদে যথন রাষ্ট্রশক্তি প্রয়োজনের তাগিদে শিক্ষাদমস্থাও শিক্ষা-ব্রতিগণের নিকট উপস্থিত হয় এবং জাতীয় বুহত্তর স্বার্থের প্রতি মনোযোগী হইয়া থাকে। তথনই জাতির উল্লেডির শীর্ষে আরোহণ করিবার স্থযোগ উপস্থিত হয়।

আমাদের দেশে একবার এইরপ এক স্বর্ণমূপ উপস্থিত হইয়াছিল। হিন্দু বাজত্বে শিক্ষা ও শিক্ষককে যে সমাদবের সহিত পোষণ করা হইত তাহা ইতিহাসের পৃষ্ঠায় নানা ভাবে ব্যক্ত আছে। আভ্যন্তবীণ সাক্ষ্য বারাও তাহা প্রতীয়মান হয়। হিন্দু ক্যোতিব ও আয়ুর্কেদের অনেক তথ্য এরপ যে দীর্ঘকালের—হয়ত বংশপরম্পরার—অস্পন্ধান ও নিরীক্ষা (observation) ব্যতীত তাহা স্থিরীকৃত হওয়া সম্ভব নহে। দীর্ঘকাল নির্বন্দিয়ভাবে রাজশক্তির পোষকতা ভিন্ন এরণ তথ্য উদ্যাটিত হইতে পারিত না। এই যুগে জ্ঞান-বিজ্ঞানের বিকাশ বারা সমগ্র দেশ সমৃদ্ধ হইয়াছিল। কিন্ধ পর্বন্তীকালে শিক্ষার কোন্কটির জ্ঞা হিন্দু-প্রতিভা বহিরাক্রমণের নিকট অবন্ত

হইতে বাধ্য হইল সে ইডিহাস অভিনিবেশের সহিত আলোচনা করা কর্ত্তর। কালক্রমে শিক্ষার ভারকেন্দ্র কি অসমভাপ্রাপ্তি হইয়াছিল ? শিক্ষা কি বাত্তব জীবন হইতে বিচ্যুত হইয়া পড়িয়াছিল ? শিক্ষা কি উপর হইতে নিঃস্ত হইয়া সমাজনেহে প্রাণশক্তি স্কার করিত না ?

মসলমান বাৰুতের প্রবর্তনের সভে সভে রাজণক্তির পোষকতা-বৰ্জিত হটবা সংস্কৃত শিকা ক্ৰমে ক্ৰমে সঙ্কচিত ও চুর্বাল চইয়া পড়িল। আয়র্বোদ ও জ্যোতিবের মত निरोक्तामनक विषयक्षनित व्यक्षणि शृद्धि गाह्य हरेन। প্রাধীন ভাত্তির রাজনীতি, অর্থনীতি প্রভতির চর্চাও অগ্রসর চইতে পারে না। স্বতরাং কেবলমাত্র স্থাতি কারা. ছায় দর্শন ইত্যাদির চর্চ্চা চলিতে লাগিল। वणकः ज्वनकात हिटन भागनवड स्ट्रामंत्र वरक ब्राह्म व्यावन করে নাই। মদলমান রাজপুরুষপণ রাজস্বগ্রহণ ব্যক্তীত দেশের আভাস্তরীণ অবস্থা ও ব্যবস্থা সম্বন্ধে অনেক ক্ষেত্রে উলাসীন ছিলেন। ভাই হিন্দু জনসাধারণের পক্ষে আপন ধৰ্মদন্মত জীৰনযাপন করিবার বিশেব কোন বাধা হইত না। সমাজপতিগণ কঠোর অমুশাসন বাবা সমাজ-বন্ধনকে দৃঢ় ক্রিলেন: হিন্দু-সংস্থারগুলি বাহাতে শিধিল না হয় তৎপ্রতি প্রথব দটি বাধিতে লাগিলেন। সংষ্কৃত শিক্ষাকে क्वमयाक स्मानारमध्य श्रीमामक्रा श्रीमा জীবনত্রতের অভ ও ধর্মের অভ বলিয়া গ্রহণ করার সংস্থার পর্ব্ব হইতেই প্রচলিত ছিল। স্বতরাং সংস্কৃত শিক্ষার व्यथान दश्यत्वा इहेन धर्मनमञ्जूषीयन वानन कृतिया, हिन्तु चामर्न পরিপোষণপুর্বক हिन्दु नमाख्यक ধর্মপথে পরিচালিত করা। এই পরিস্থিতিতে ধ্বংসোনাধ সংস্কৃত শিক্ষা ধর্মপ্রাণ हिन्द्रतिश्व चेदावाविनिकत्न वर्दकीविङ व्यवश्व विक् इहेन। हेश्टबंक चामरनव अध्य मिटक, हिन्द्रमित्त्रव वक्त-किला बता किकि मधारकत विकृति विख्यानत विवह किन। আৰু আমাদের বক্ষণীৰতা প্রায় অন্তর্ভিত চ্ঠায়া আসিতেছে: কিছ বক্ষণশীনতা ব্যতীত হিন্দু সংস্কৃতিব व्यवमान भर्गास कीविष ভরাংশও মুসলমান রাজত্বের থাকিত কি না সন্দেহের বিষয় ।

মুসলমান রাজতের শেষ অবে ও ইংরেজ রাজতের প্রারত্তে এক অকলার বৃগ সমগ্র বাংলাদেশকে আছের করিরা ফেলিরাছিল। সংস্কৃত শিকা ত জীবসূত অবস্থাতেই ছিল; মুসলমান রাজপজি বে আরবী, ফারদীর মাধ্যমে আনবিজ্ঞানের প্রদার ভাষা দেশকে সমুভ করিবার প্রয়াস পাইয়াছিল তাহাও মনে করিবার কারণ নাই। রাজকার্য্য ফারদী ভাষার পরিচালিত হইত এবং এইজ্জ ফারদী ভাষার চর্চ্চা কর্মাণ কিছ বিবিধ জান-বিজ্ঞানের চর্চা—বাহা তৎকালীম ইউবোপকে উদ্ভাদিত করিয়া ভালতেছিল, ভাহা বাংলালেশে একেবাবেই চিল মা।

অতঃপর ইংবেজ-রাজত অঞ্সরণ করিয়া, ইংরেজী শিক্ষার প্রচলন হইল। कारकीशमय निका हैरटरकीर মাধ্যমে হইবে কি সংস্কৃত অথবা আববী, ফাবসীর মাধ্যমে হইবে তাহা লইয়া বে বিভৰ্ক চলিভেছিল, মেকলের স্থপবিচিত সিভাস্ত ভাৱা ভাছার অবসান হইল: মাধ্যমিক ও উচ্চ শিক্ষা ইংরেজীর মারফতে পরিচালনা করা ভির চুট্র। সংস্কৃত ভাষার জ্ঞানসম্পদ মেকলের নিকট অক্সাত ছিল: স্থভবাং তিনি ইগার প্রতি ঘণোচিত স্থবিচার করেন নাই। কিন্তু কয়েক শতান্ধীর নিচ্ছিত্বতার পর সংস্কৃত ভাষার পক্ষে ন্তন জান-বিজ্ঞানের বাহনরপে কার্যকরী হওয়া প্রায় অনন্ধব ছিল। 'প্রাচ্য ভাষায় স্কল এছ অপেকা নিৰ্বাচিত কয়েকধানি ইংবেজী গ্ৰাছে অধিকতব আন সঞ্চিত বৃহিয়াছে'—মেকলের এই উদ্বত উল্লিব মধ্যে আংশিক সত্য নিহিত ছিল। ইতিপুর্বেই খনেকে ব্যক্তি-গতভাবে ইংরেজী ভাষায় ব্যুৎপত্তিলাভ করিয়াছিলেন **এवः এই ভাষার ঐশব্য দারা প্রভাষান্বিত হইয়াভিলেন** ! প্রকৃতপক্ষে এই ইংরেজী-শিক্ষিত-সমাজই মেকলের প্রধান সমর্থক ছিল। অন্যথায় ইংবেজী শিক্ষার প্রবর্ত্তন কখনই সহজ্পাধ্য হইত না। বাজা বামমোহন বায় লও আমহাটে ই নিকট কেবলমাত্র প্রাচ্য শিক্ষার পোষকতা করার বিরুদ্ধে প্রতিবাদ জানাইয়া বলিয়াচিলেন, 'এরপ শিকা দেশত অভকাবে নিম্ভিক্ত বাথিবে'।\*

ইংবেজী শিক্ষা প্রবর্তনের পশ্চাতে মেকলের একটি
আশা ব্যক্ত হইয়াছিল বে, সমত ভারতবর্ব ইহার ফলে
প্রীপ্রধর্মে দীক্ষিত হইয়া বাইবে। সে আশা নিফল হইয়াছে
বাহাই হউক, প্রকৃতপক্ষে মেকলের সিদ্ধান্তের ফলে
আমানের শিক্ষার ইতিহাসে নবর্গ স্চিত হইল। আমহ
ন্তন করিয়া জ্ঞান-বিজ্ঞানের চর্চচায় প্রবৃত্ত হইলাম
ইউবোপীয় জ্ঞান-ভাগ্ডারের দ্বার আমানের নিকট উন্মৃত্ত
হইয়া পেল। শিক্ষিত-সমাজের মধ্যে ইংরেজী সাহিত্য হ
কর্পনের প্রাবন আরম্ভ হইল। বাংলা ভাষাও ইংরেছি
সাহিত্যের অফুকরণে বিবিধ ভার-স্ভারে সমৃত্ত হ
রালিল। একটি প্রতিক্রিয়া হইল এই বে, হিন্দু সংস্কৃতি
প্রতি সমাদর দ্বাস পাইতে লাগিল। নব্য ছাত্রসমাহ
হিন্দু রীতি-নীতির উপর বিজ্ঞাবাল বর্ধণ করিতে লাহি
এবং বিদেশীর আচার-ব্যবহারে অফুবজ্ঞ হইয়া উঠিল। এ

Calculated to keep the country in darkne
 Selections from Educational Records, Part I by H. Sha
 Calcutta, 1920—page 101.



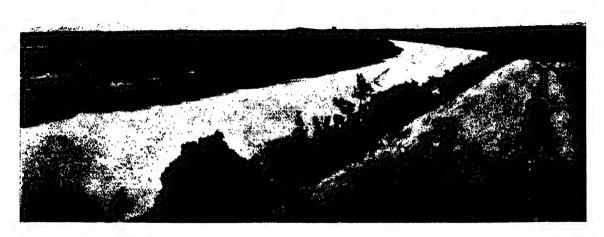
রাষ্ট্রপতি-ভবনে মার্কিন মুক্তরাষ্ট্রের ভারতত্ব রাষ্ট্রদৃতের সহিত করমর্থনরত ডক্টর রাজেশ্রপ্রসাদ



ভারতের প্রথম বাট্রারত ও এশিয়ার বৃহত্য কারবানা 'সিলি কার্টনাইবার ক্যাটরির' একট চুন্য



পেৰিৱাৰ 'হোৱাইট মাইল' নদীর উপর ১৯৩৭ এটাব্দে নিৰ্দ্বিভ গেবেল আউলিৱা বাঁব



সেচ-পরিকল্পনা অহুসারে কাটানো গেজিয়ার প্রধান বাল

উচ্ছ অনতা অবশ্রই নঘটিত্ততা ও অনুবদর্শিতার পরিচায়ক। किन मन्द्रवा है हात माधा क काशास्त्र माधनात नकन বিভালান চিল। তথ্নকার চাত্রগণ আক্ষবিকভাবেই কায়-মনোবাকো ইংবেজী শিক্ষার সাধনায় প্রবৃত্ত হইরাছিল। আজিকার ছাত্রসমাজে শিক্ষার প্রতি বেরুণ নিজিয়তা ও নিক্ল্যমের লক্ষ্ণ দেখিতে পাই, ভাহার তুলনায় তথনকার ছাত্রদিপের এই পরামুকরণমূলক মনোভাব নিন্দনীয় চ্টলেও এক দিক দিয়া প্রশংসারও যোগা। শিক্ষা ও শিক্ষকের প্রতি প্রগাত ভক্তি হিন্দদিগের প্রাচীন সংস্থার। নব্য-ছাত্রদমাজ সাধারণ ভাবে হিন্দুসংস্কারের প্রতি বতই অবজ্ঞাপরায়ণ হউক না কেন. এই সংস্থারটির প্রভাবমুক্ত হইতে পারে নাই। ইংরেজী রাজভাষা: স্বতরাং অবগ্রই অর্থকরী ছিল। কিছু ভার অর্থোপার্জ্জনের উপায় বলিয়াই नहरू. जानर्गवाम बादा अल्लामिक इट्टेग्राच छात्रान है दबकी শিকা গ্রহণ করিত।

আমাদের শিক্ষার ইতিহাসে এই যুগ বতটা অমুকরণের ষুগ, জ্ঞান-সংগ্রহের যুগ, তত্টা জ্ঞান-স্প্রের নহে। এই मगरा हे हे द्वारण नव नव है स्वावतन य किया हिन्द हिन. তাহাব তুলনায় আমরা নিজ্ঞির ছিলাম। নতন ইংবেজা শিক্ষা আমাদিগকৈ সম্মোহিত কবিয়া ফেলিয়াছিল। আমবা মনে করিতাম জ্ঞান-সংগ্রহ করিবার জন্ম ত পাশ্চান্ত্যের জ্ঞান-সমূদ্র সম্মুখেই রহিয়াছে-জ্ঞান সৃষ্টি করিবার কথা তথন একেবারেই মনে উঠে নাই। ইহা मछा दर. हेश्द्रकी निक। श्रीतमात्र व्यक्त ममराव मर्था গবেষণার ক্ষেত্র প্রস্তুত করা সহজ ছিল না। কিন্তু ইংরেজ শাসকর্গণ গবেষণার ক্ষেত্র প্রস্তুত করিবার ও ভারতীয়-দিগকে গবেষণার স্থাগে দিবার ইচ্চা ভতটা পোষণ ক্রিতেন কিনা সন্দেহ। কালের গতির সহিত সকল प्रत्यंत्र नाना প্রকার মঞ্চলজনক অনুষ্ঠানের বাবস্থা করিতে অগ্রসর হইতেছে। তদানীস্তন কালে, দেরপ প্রেরণা ছিল না। বিশেষতঃ ভারতবর্ষের বিদেশীয় বাষ্টের পক্ষে দে প্রেবণা স্বস্তাবত:ই আবও ক্ষীণ ছিল। নব্য শিক্ষিতকে বাজকার্য্যের সহায়করূপে পাইবার উপন্থিত প্রয়োজন ছিল; স্বভবাং শিক্ষা-ব্যবস্থা সেই ভাবেই গঠিত হইল। ইংরেজ শাসকগণ সংশয়হীনরূপে আপন আপন প্রয়োজন বুঝিতে পারিভেন এবং তাহা পূর্ণ কবিবার ব্যবস্থা কার্য্যকরীরূপে প্রবর্ত্তন করিতে জানিতেন। কৰ্ত্তপক্ষ শিক্ষা-ব্যবস্থা हेः(द्रक ভখন শিকা সীমাবদ্ধ হইলেও বাহাতে থাটি হয়, তাহার প্রতি তাহাদের দৃষ্টি ছিল; নিভূলভাবে ইংবেজী ভাষায় লিখিত বিষয় বুঝিতে এবং নিভুলভাবে

এই ভাষায় মনোভাব ব্যক্ত করিতে ছাত্রগণ **অভ্য**ন্ত চইত।

ক্রমে ক্রমে ইংরেক্ট্রী শিক্ষার প্রথম উদ্দীপনা কাটিয়া शिशा है डांद व्यर्थकदी जुल व्लाहे डडेशा छित्रेत : निकाद क्षथान উদ্দেশ্য হইল সরকারী চাকুরী লাভ। লোকে অধিকতর সংখ্যায় ইংরেজী শিক্ষার মিকে ব্রাকিয়া পড়িল। বাংলা-(मण्डे डे: दिक्की भिकास अधनी किन। दाककार्याद कना বাঙালী ভারতবর্ষের বিভিন্ন প্রান্তে আহত হইতে লাগিল। ছাত্রজীবনে পুথির মধ্যে দৃষ্টি সীমাবদ্ধ রাধিয়া এবং কর্ম-জীবনে দুবদুরাস্তবে কেবলমাত্র ইংবেজ প্রভূব মেজাজের উপর पष्टि निवन्न कविशा, नवानिकिछ সম্প্রদায় ক্রমে ক্রমে प्रत्ने क्रमाधादन इटेर्ड मुल्पूर्न विक्रिक इटेग्रा পि**डिन**। এমন কি মুদলমান রাজত্বেও আমরা নিভতে যে গ্রামীণ সভ্যতা পড়িয়া তুলিয়াছিলাম, পল্লীর পরিবেশের মধ্যে निका ७ नमात्कव मः वांश निविष् कविषा छुनियाहिनाम, তাহার তুলনায় এই বহি:কেন্দ্রিক ইংরেজী শিক্ষা কল্যাণকর হইয়াছে কিনা ভাহা বিবেচনার বিষয়। হয়ত ইংরেজী শিক্ষার এই সমাজধ্বংসী রূপের কথা মনে করিয়াই বাধাকজ্ঞনের শিক্ষা কমিশন 'গ্রামীণ বিশ্ববিদ্যালয়' (Rural Universities ) গঠন করিবার প্রস্তাব করিয়াছেন।

অতঃপর স্বদেশীযুগ আরম্ভ হইল। শিক্ষিত-সমাজের
মধ্যেই আন্দোলন প্রথম রূপ পরিগ্রহ করে। এই শুভক্ষণেই
শিক্ষিত-সমাজ প্রথম জনসাধারণের সহিত বোগস্থাপন
করিতে উৎস্ক হয়। অপর পক্ষে ইংরেজ শাসকগণও
ক্রমে ক্রমে উচ্চতর পদগুলি দেশবাসীর নিকট উলুক্ত করিয়া
শিক্ষিত-সমাজের মতি গতি ফিরাইবার চেষ্টা করেন।
বাহারা স্বদেশী আন্দোলন হইতে দ্রে থাকিয়া রাজভক্তির
পরিচয় দিতেন তাঁহাদের প্রতি, এমন কি স্বদেশী
আন্দোলনের কর্মাদের মধ্য হইতেও বাহাদিগকে ফিরাইয়া
আনা সম্ভব তাঁহাদের প্রতিও এই অফ্গ্রহ ব্র্বিত হইতে
লাগিল। শিক্ষাবিভাগেই অধিকতর ভারতীয়করণ নীতি
প্রযুক্ত হইল। প্রকৃতপক্ষে রাজনৈতিক স্বাধীনতা লাভ
করিবার বছ প্রেই আমরা শিক্ষানৈতিক স্বাধীনতা লাভ
করিবাছি। ত্থের সহিত বলিতে হয়, আমরা এই
স্বাধীনতার বধার্যর স্বাবহার করিতে সক্ষম হয় নাই।

দেশবাসীর করামন্ত হইমা কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়
শিকাসংস্থারে প্রবৃত্ত হইমাছিল বটে, কিন্তু সে সংস্থার
শাশাস্ত্রপ কল্যাণপ্রস্থ হয় নাই। প্রকৃতপক্ষে তথনকার
দিনে প্রয়োজন ছিল শিকাকে বান্তব জীবনের সহিত মৃক্ত
করিয়া, নিরীকাম্লক ও বহিম্বী করিয়া, সমাজের কল্যাণে
নিয়োজিত করা—শিকাকে পোশাকী হল চইতে

202

প্রয়োজনীয় শিক্ষার রূপে পরিবর্ত্তিত করা: সরকারী দপ্তরে क्रांगी देखांव कविवाद महीर्ग खेल्हां खेलव निकारक স্থাপিত না করিয়া, সমাঞ্চ কলাাণের প্রশস্ত ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত করা। কিছ কার্যাতঃ সংস্কার হইল এই বে. ইংবেজ আমলে ইংবেজী ভাষা শিক্ষার যে কঠোরতা ছিল তাহা অনেক পরিমাণে শিধিল হইল: অক্তান্ত বিষয় সম্বন্ধেও কঠোরতা হাস করিয়া ছাত্রদিগের প্রতি অফুগ্রহ প্রদর্শক করা হইল। ইপ্সিত ফল অবশাই লাভ হইয়াছিল: পরীক্ষার্থীর সংখ্যা দিন দিন বাডিতে লাগিল এবং বিশ্ব-বিদ্যালয়ের অর্থ-ভাগুবেরও অনুরূপ স্ফীতি হইতে এই সময় শিকাবিভাগের জনৈক উচ্চপদন্ত हैश्ट्रक विश्वविक्षामध्येत मिर्साह श्रद्धांत जानग्रन कविश বিশ্ববিদ্যালয়ের পরীকায় ক্রমবর্দ্ধমান 'পাসের' অভপাতের প্রতি দৃষ্টি আকর্ষণ করিবার চেষ্টা করেন। "The Senate views with alarm"—( দিনেট আশহার দহিত এই মত প্রকাশ করিতেছেন) তাহার প্রস্থাবের এই মুখবন্ধ তথনকার দিনে শিক্ষার্থীদের মুখে মুখে বিজ্ঞাপের সহিত সকলেই ইংরেজকে শিক্ষাবিস্তারের উচ্চাধিত হইত: বিরোধী বলিয়া মনে করিত। শিক্ষার ও শিক্ষালয়ের স্থষ্ঠ তর ব্যবস্থার প্রতি মনোযোগী হইবার প্রস্তাব না আনিয়া, কেবল পরীক্ষায় 'পাদের' সংখ্যা বৃদ্ধি পাইতেছে বলিয়া ভীত হইলে, ইহা অপেক্ষা উদাৱতর সিদ্ধান্ত করা সম্ভব নতে। অদ্তের পরিহাস এই বে. আজ খদেশীবেরাই দেই নিন্দিত নীতি কার্যো পরিণত করিতেছেন। তবে পার্থকা এই যে, তথন সিনেটে প্রস্তাব আনয়ন করিয়া পর্ব্ব চ্ছতেই সংশ্লিষ্ট সকলকে সাবধান ক্রিয়া দিয়া কার্য্যে প্রবৃত্ত হইবার আয়োজন ছিল: এখন ছাত্রদিগের মৃঢ অভিভাবক-গণ অর্থের বিনিময়ে ইহ। অফুভব করিতেছেন। তথন শিক্ষার যে গ্লানির স্থচনামাত্র হইয়াছিল - তৎকালে এই নীতি গুঃত হইলে যে অনিষ্ট কল্প হইত, আজ by the Wardha Conference. Its adoption would go পরিপূর্ণ বিষ্ক্রিয়া করিতে আবম্ভ ভাহা সমাজদেহে ক্রিয়াছে। সাদৃশ্রও আছে; তথন শিকার যে স্কল সংস্কার ক্রণীয় ছিল, আত্মও তাহা ক্রণীয়ই বহিয়াছে।

নতন শিক্ষা সংস্কারের একটি লক্ষণীয় বিষয় এই যে, স্নাতকোত্তর (post-graduate) তারের শিকা স্নাতক-পূৰ্ব (under-graduate) শুৰ হইতে বিভিন্ন কৰিয়া কলিকাতার কেন্দ্রীভূত করা হয়। সংক্ষেপতঃ, ইহার কুফল হইয়াছে এই যে, নিমন্তবের শিকারী ও শিক্ষক উভয়েই चामर्भ इटेट विठ्रा इटेश गोटेटिह बर माधामिक শিক্ষার পর যে ছুইটি বংগর ব্যয়িত হয় তাহা প্রায় বার্ধতায় পরিণত হইডেছে। অপর পক্ষে উচ্চতর স্তরে

कृतक्षित न्लाहे इहेश हैत्रिरकतः একাধিপত্তোর কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের স্ফীতি याका काफाई যাইতেছে: শিক্ষার সৌকর্বোর জনা একাধিক হি বিদ্যালয় স্থাপন করা কর্ত্তব্য ভাহা শিক্ষাবিদ মাত্রেই অফু করিতেতেন: নানা শিকা কমিশন অনেক দিন চ্টাং অকুরপ মন্তব্য করিয়া আসিতেচেন। তথাপি ঠিক। मः खात्रित कथा উक्तातिल इहेरत ना। वत्रक किकः বিশ্ববিদ্যালয়ের আওডার বাহিরে থাকিয়া যে সকল কি বিশেষের শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান নানা স্থানে শিক্ষা-পরিবেশন ক তেছে, সেগুলির কর্ত্তবন্ধ কলিকাতায় কেন্দ্রীভত করিং প্ৰস্থাব উঠিতেছে। কেহ বা এই সৰল প্ৰতিষ্ঠান সম্মিলিত কবিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ের আকার দিতে চাহিতেয়ে কেহ ব। যক্তরাষ্টের অফুকরণে আমাদের শিক্ষাপ্রতিষ্ঠ গুলিকে সম্বন্ধ করিতে চাহিতেচেন। পর পর একার্ শিক্ষা কমিশনের মন্তব্য অগ্রাহ্য করিয়া এরপ প্রস্তাব উত্থা করিবার গাঢ় উদ্দেশ্য কি ৷ ভারতীয়গণ বতই বহৎ প্রতি পরিচালনায় বোগাভার পরিচয় দিতে পারিতেছে না. ত বৃহৎ প্রতিষ্ঠান গড়িয়া তুলিবার আকাজ্ঞ। ব্যক্ত হইছে কেন ? বৃহৎ শিকা-প্রতিষ্ঠান অনেক কেত্রে শিকার ব কর্ষের পরিপন্থী হইয়া দাড়ায়।

শিক্ষার অধনাতন গতিপ্রকৃতি শিক্ষামুধাগীর জ অধিকতর হতাশার সৃষ্টি করিবে। মহাতা গান্ধী 'নাং শিকা (Basic education) সম্বন্ধেই শিকাসংকাম স চিন্তা নি:শেষিত করিয়াছেন: কলাচিৎ তিনি উচ্চ**ি** সম্বন্ধে মন্তব্য প্রকাশ করিতেন। কিন্তু একদা ওয়ার্ছা: ফারেন্সে তিনি কার্যাত: উচ্চশিক্ষার বিরোধিতাই কা ছিলেন। সার ফিলিপ হার্টপ লিখিয়াছেন:

"A suggestion by Mr. Gandhi that no Govern Funds should in future be provided for Universities, es to meet state needs was, I think, fortunately not ende to kill higher education in India." (Some Aspeci Indian Education, Past and Present, by Sir F Hartog. Oxford Univ. Press, 1939. Preface, page X

মহাআ গাড়ী সভাস্ত ছিলেন: নিজ মনে ষ্বিকৃতভাবে প্রকাশ করিতে কৃষ্টিত হইতেন না। তাঁহার অফুগামীদিগের বাক্যেও কার্য্যে মিল স্বতঃ নহে। আজ দেখিতে পাই শিক্ষার বাহ্যিক আড়ং নিমে শিকার প্রতি অনাস্থা ও অবহেলার প্রবল স্রোত বহিতেছে। সমগ্র ভারতবর্ষ ব্যাপিয়া নানাহ জাতীয় গবেষণাগার (National Laboratories) স্থ হইতেছে: বিশ্ববিদ্যালয়গুলিতে এবং সর্বভারতীয় হি বিশেষ প্রতিষ্ঠানগুলিতে অধিকতর অর্থসাহায় ৫

হইতেছে। কিন্তু সাধারণভাবে শিক্ষার আদর্শ অপেকা ক্ষমভালোল্পতার ক্রিয়া প্রবল হইয়া উঠিয়াছে। সমগ্র শিক্ষিত-সমাজের প্রভি স্থায় বিচার করিবার স্পৃহা মন্দীভূত হইয়া, আপন গোটার পোষকভা করিবার আকাজ্ঞা বৃদ্ধি পাইতেছে। সাধারণভাবে শিক্ষা পরিচালন ও শিক্ষিতের জীবনযাপন বিভম্বিত হইতেচে।

শিল্পতিগণ এবং বণিকসম্প্রদায় কারিগরি ও কেরাণীগিরি শিক্ষা ভিন্ন অন্য কোনওপ্রকার শিক্ষার প্রয়োজন
দেখেন না। এ সম্বন্ধে আধুনিক সভ্য জগতের স্পষ্ট দৃষ্টাস্ত
তাঁহাদিগকে বিচলিত করে না। তাঁহারা তুইটি নীতির উপর
তাঁহাদের মুনাফার ভিত্তি স্থাপন করিয়াছেন। প্রথমতঃ,
বিদেশী বিশেষজ্ঞ ও বিদেশী মূলধনের সাহায্যে শিল্প পরিচালিত হইবে; ঘিতীয়তঃ, ভারতের চত্তুদ্দিকে শুল্ক-প্রাচীর
উত্তোলন করিয়া তাঁহারা অন্যান্য দেশের প্রতিযোগিতা
এড়াইয়া চলিবার অভিলাষী। এমন অবস্থায় শিল্পের উন্নতির
জন্য কারধানার অভ্যন্তরে গ্রেষণার ও সাধারণভাবে
উচ্চশিক্ষার প্রয়োজন অন্তন্ত্ত হইবে কিরপে ? যে শিল্প-

প্রতিষ্ঠান স্থানশীয় বৃদ্ধিজীবীদের জীবিকার এবং কর্মশক্তিও প্রতিজ্ঞা বিকাশের ক্ষেত্র নহে তাহা দ্বারা দেশের শ্রীবৃদ্ধি হইবে বলিলে সভ্যের অপলাপ করা হয়। মৃষ্টিমেয় কয়েক জন শিল্পতি এবং বিদেশীয় পুঁজিপতির হাতে বিপুল ঐশব্য তুলিয়া দিয়া এবং দেশীয় শিল্পগুলিকে বিদেশী বিশেষজ্ঞের মৃষ্টিগাত করিয়া দেশের কোন কল্যাণ সাধিত হইবে ?

স্থান শিক্ষার উন্নয়ন ব্যতীত কোন্দেশের উন্নতি সম্ভব ইইয়াছে ? ইয়ত প্রত্যুত্তর মিলিবে, রাষ্ট্র শিক্ষার বিরাট ব্যবস্থায় মনোনিবেশ করিয়াছে। কিন্তু শিক্ষিতের মধ্যাদা রক্ষা, শিক্ষিতের জীবনধারণের ব্যবস্থা এখনও হয় নাই। শিক্ষিতের জীবন বিড়ম্বিত করিয়া বে শিক্ষার ব্যবস্থা হয় তাহা সমর্থনযোগ্য নহে। শিক্ষিতের জীবনের ব্যর্থতা লক্ষ্য করিয়া, কারিগরি ও কেরাণী।গরির দিকে শিক্ষার স্রোত বহিতেছে; শিক্ষার স্ক্রন্দ গতি প্রতিহত ইইয়াছে। ইহার ফলে শিক্ষা ও সমগ্র দেশ কোন্ পরিণামের দিকে চলিতে থাকিবে তাহা স্থদেশের প্রত্যেক কল্যাণকামীকেই চিন্তিত করিয়া তলিবে।

# ভ্রষ্টনীড় শ্রীবীরেক্সকুমার গুল

**८कि छाम्य (वाँ एक** সতভ এ ছব কভ পথ করে পর্বটন। ধু ধু বালুচৱে---বিভীর্ণ প্রান্তরে অবিরাম চরে. হেঁটে খেতে 'ওৰেদিন' অবেষণ করে---अकृष्टि श्रम्स ষে মকুবালুভে ঢাকা বয়। ভৰু কড়ো-হাওয়া শভ হুৰ্বকণা প্ৰদাহের শুধুই লাহনা ভিক্ত বাদ আনে। (बर्ज मां सम्ब (कार्यावारन। ভৰু এক দিন এই বর-আবরণ ছি'ছে अकडे सरस হৰে সোভোষৰ, ধু ধু বালু ভিছে দেবে পৰিচৰ—

রোফে গেলে সে প্রাছর ভেভে' अरे कथा मान ठव (वंटि (याच (याच । মনে হয় একদিন এ বর্গ-প্রাছর ছিল যে সাগর ছিল না ভবুই বাল্ভুপ---शिक्ष थुनद्र। তৰ্ম হাদর ছিল সৌরভে উমিল, পাওৱা ষেত জীবনের অনিবার্য নিল। সে সমুদ্র আৰু নেই---क्ष के क्षा मा কটিন সময় বালুভে-ক্ষরে চড়া পরিণভ হয়। (म जबूख (महे क्यांनि ভবু বে ভাগৰ —'ওয়েসিস' খুঁজে কিরি यु यु यद्भवता।

## স্থদান

## জীনলিনীকুমার ভজ

সুৰেক পাল অঞ্চল ও সুধান লইবা ত্রিটেব এবং মিশরের মব্যে বিরোধ মনক্ষাক্ষি ইত্যাধির কলে বে পরিছিতির উত্তব তইবাছিল সম্প্রতি তাহা এক নৃত্য পরিণতির সমূখীন তইবাছে। মিশরের পরবাষ্ট্র-সচিব সালে-এল দিম পাশা সম্প্রতি কনৈক সাংবাদিকের প্রয়ের উত্তরে বলিরাছেন বে, ব্রিটেম এবং মিশরের মব্যে আপোষ্-রকার প্রথম সর্ভ তইবে মিশর চইতে ব্রিটাশর অপসারণ।



#### च्रमारमञ् बामिक

১৮৯৯ বীঠাকে সুদানীদের প্রপদর্শন নাত্দীর পরাদ্বের পর স্দানের উপর ইল-বিশরীর হৈত প্রত্যুত্ব প্রতিষ্ঠিত
হয়। শীলনদকে বিশরের বরনী বলা চলে। এই শীলনদের
বারি-বিবৌভ অঞ্চলর ঐক্যবিধানের উদ্দেশ্তে বিশর আরু
স্থানকে নিজ-রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত করিতে চার। বিটাশের
ইহাতে আপতি।

प्रवाद 'धवार अन मीन', 'वाचिन ना', 'देखिदारिवाय' अपृष्टि

অনেকঙ্লি বাছনৈতিক দল আছে—তথ্যে কোন কোনটি সুদানের বিশ্রের অর্ভ্জির প্রপাতী, কিছ এক দল ভাতীরভাবাদী সুদানী মিশর এবং সুদানের পরিপূর্ণ ঐক্যের প্রভাব মানিরা লইভে অনিজ্ক। বিভিন্ন দলের এই বভানৈক্যের সুবোপ লইরা বিটেশ সুদানেও নিজের চিরাচরিত ক্ট-মীভির অসুদরণ করিরা চলিরাছে। কিছ বর্জনানে যে পরিছিভি ইন্ডাইরাছে ভাতাতে সুদানে বিটেশ ক্টনীভি বানচাল হইবার সপ্তাবনা দেখা দিবাছে। সম্প্রিত সুদানের সমুদর রাজনৈতিক দল—তথাব্যে সুদানের পূর্ণ স্বাধীনভাকামী আল উন্মা দলও আছে—সুদান হইতে বিটেশ এবং বিশ্বীর সমুদর সৈত্ব বাহিনীর অপসারণের পর প্রভাব আন্তর্ম করা হোক এই বর্ষে মহন্মদ সালে-এল দীন পাশা বে প্রভাব আন্তর্ম করেন ভাতাতে এক্সত ইইরাছে।

মিশরের দক্ষিণ দিকে সুদান আবাছত। সুবিধ্যাত নীল
নদ ইতার তিতর দিবা প্রবাহিত ত্ইরা মিশরের অভিমুখে
চলিরা গিবাছে। 'রু নাইল' এবং 'তোরাইট নাইল' এই চুইট
নদী বারটুমে আগিরা মিলিত ত্ইগছে। এই নদীঘরের মধ্যবর্তী
সম্বতল অঞ্চলকে আরবীরেরা বলে এল গেজিরা—সম্প্র
স্থানের মধ্যে এই অঞ্চটিই সর্বাপেকা সমূদ। মধ্যতাগে
ইতা প্রায় নক্ষই মাইল প্রশন্ত।

মুদানের উত্তর প্রাস্থানীয়াম লিবিয়া এবং সাহারা মরুভূমি হইতে দক্ষিণের সুদ এলাকার জলাতুমি পর্যাত সহস্র মাইল बाानी विधीर्न सकत्न वारमदिक दृष्टिभारचत्र भविमार्गत भावच्या चार्छ अवर अरे कुकारमंत्र क्रम्मरन्। अवर कारमंत्र कीवम-ৰাত্ৰা-প্ৰণালী মুখ্যভ: এই বৃষ্টিপাতের ভারতম্য অসুযায়ীই নিহস্তিত। উত্তর হুইতে বভই দক্ষিণ বিকে অঞ্চর হওয়া যায় **७७३ उद्विभाएक क्रमवर्षमाम भविमानावित्काव भविष्ठ । भाषता** বার। কিছ বক্ত-অঞ্জের সীমারেখা হইতে পাঁচ শভ মাইল हृदवर्षी (शिक्षदार्ष्टरे दृष्टिशाष्ट इद नवरहरद रचने । अरे चकरन প্ৰায় সকল ৰতুতেই প্ৰচুৱ বৃষ্টিপাভের দক্ষণ চারণভূমিতে বিভৱ यात्र अवर मञ्चलकाषित्य विविध मद्रश्रमी कत्रन छैर्शन हरेंद्रा बाटकः। পূর্জদিকে এরিজিরা এবং লোহিত সাগর পর্কভবালা হইতে পশ্চিমে নয় শত মাইল পর্যন্ত প্রসারিত 'ফ্রেঞ্ছ ইকুরে-ট্রিয়াল আফ্রিকা'র মধ্যবর্তী—র্গেবিয়া দখলিত, অঞ্চট প্রায় २०० मण हरेट ४०० मण बारेन धामख-रेहात चिवनारमरे উন্মুক্ত সমভলভূমি এবং গো-মহিষাদি প্রভিণালন করিয়া এই चक्रात चिवाजीया कीविका चर्चन कविया वारक।

সম্ঞ প্ৰদানের বধ্যে গেছিয়ার ভৌগোলিক অবস্থান বিশেষ

শুক্ল পূর্ব। উত্তরে বিশ্ব হুইতে নীল নবের ভীরবর্তী বে রাজা নারা মধ্য-আফ্রিকার সহিত উহার বোগাবোগ ছাপিত হুইরাছে ভাহার মধ্যে ইহার অবস্থিতি, আবার পূর্বাদিকে লোহিত সাগর এবং আরব হুইতে পর্বতপ্রেমী ভেল করিরা একট রাজা ইহার ভিতর দিরা চলিরা গিরাছে। অতীতে এই সমত রাজা দিরাই বিদেশীরা বিজ্ব-অভিযান পরিচালনা করিরা এই দেশ জর করিরাছে, এই পথ দিরাই বহিরাগতেরা আলিরা এখানে উপনিবেশ ছাপন করিরাছে।



মাহ্দীর প্রতনিশ্বিত শেব বোরাশীর স্বাবি

বিটিশ শাসনাৰীনে সুদানের আর্থিক সমুদ্ধি প্রভূত পরিবাধে বৃদ্ধি পাইয়াছে। ইহার আসল হেতু মৃতদ মৃতদ রেলপথ বৃদ্ধিরা বোগাযোগ ব্যবহার প্রসারসাবদ। এই ব্যবহার ম্ফুদ সবচেরে বেশী উপকৃত হইরাছে গেজিরা—রেল-পথের হারা সমুদ্রের সহিত সংবোগ হাপিত না হইলে গেজিরার বর্তমান সেচব্যবহা ভারিকরী হওরার সভাবনা ছিল সুদূরপরাহত। উক্ত রেলপথ লোহিত লাগর পর্যভ্যালার ভিতর দিরা পোর্ট সুদান পর্যাহ আদিরাহে এবং মিশরের সহিত বোগাযোগ হাপন করিরাছে। লর্ড কিচেদার কর্ত্তক সুদান-বিশ্বরের উদ্দেশ্যে এই রেলপথ নিস্মিত হয়। সেরার হুইতে দক্ষিণ-পশ্চিম বিক্তে ইবার একট শাবা গ্রের প্রধান বাজার এল ওবিদ পর্যাহ্য চলিরা গিরাহে

এবং আর একট শাধা পূর্বদিকে সেরার বাঁধ অভিক্রম করিয়া কার্পাদ-উংপাধন-অঞ্চল কাসালার ভিতর দিরা উত্তরাভির্বে অঞ্চর হইরা পোট প্রদানের সহিত সংবোগ স্থাপন করিয়াছে।

এভছাতীত গেৰিবার ভিতরে এবন ক্রেকট বাডা আসিরা মিলিরাছে বেওলি অভিক্রম করিবা নাইছিরিবা এবং পশ্চিম ও মধ্য আফ্রিকার বিভিন্ন অকলের তীর্থবান্ত্রীরা প্রাতম স্থাকিন বন্ধরের ভিতর দিরা মকা অভিমূপে যান্ত্রা করে। আগেকার দিমে বিভিন্ন পরিবারের আবালর্ডবনিতা দলবছ ভাবে পদরকে আফ্রিকার ভিতর দিরা এই তীর্থবান্ত্রার বাহির হইত—মারেরা শিশুকের পিঠে বাঁবিরা লইত। সাপ্রভিক্ কালে গেৰিবার কার্পাদ-ক্রের হইতে এবং তীর্থ-বান্তাপ্রে বিভিন্ন বিরাম-ছলে মানা প্রকার কার্হিক পরিশ্রম বারা বে অর্থ অভিন্ত হয় তীর্থবান্ত্রীরা ভাহার সাহাব্যে সমুলো-প্রক্রম ভাই ভ্রমণের শেষ পর্কাইকু ট্রেনবোগে সম্পন্ন করে।



ক্ষানের ছই কন অভিকাত-ব্যবসারী সহ বাহ্দীর পুত্র পার পৈরদ আবদ এল রহমান ( মধ্যত্তে )

বেলপথের ভার মোটবকারের বহুল প্রচলমেও গেজিরার মাল চালাম ও লোক-চলাচল-ব্যবস্থার বিরাট পরিংগুম লাবিভ হইরাছে। আজকাল গেজিরার সেচ-অঞ্চলের এলাকাভুক্ত প্রামন্ডলির ভিতর দিরা বিতর মাল এবং লোকজমসহ ক্ষমাল যোটর বাস বাভারাভ করে। টেম এবং মোটর বাস কিন্তু মাল বহুনের প্রভিয়োগিতা এই মুক্ত-অঞ্চলের সমাতম বাহুম উটক্তে হটাইরা দিতে পারে মাই। বরং কৃষির প্রসারের দক্ষম বিগভ ক্ষেক বংসরের মধ্যে গেজিরা এবং আছল্ল মালবহুমকারী উট্রের সংখ্যা প্রভুক্ত পরিমাণে বৃদ্ধি পাইরাছে।

### ঐভিহানিক পটভূষিকা

গেৰিয়া লক বৰ্গ যাইল পরিষিত আরতনবিশিও স্থানের অতি ক্ষে অঞ্চল হইলেও এই দেশের ইতিহালে ইহা শুরুত্বপূর্ণ হান অধিকার করিয়া আছে।

ৰীটাৰ এক সহস্ৰাস হইতে গাঁচ 'শভ বংগৰ কাল গেৰিবাতে আলোৱা নামে একট ৰীটান ৱাক্য স্থাতিটিত ছিল। ধারটুমের তের মাইল দক্ষিণে লোবা নামক ছাবে ছিল ইহার রাজবাদী। ১৫০৪ বিষ্ঠাকে মুললমানগণ কর্তৃক লোবা বিধ্বত হয়। ক্ষাইান্টিনোপলের পভষের পর তিন শত বংগর পর্যন্ত পেজিরার উপর কুং রাজ্যের স্বলভাদকের প্রভৃত্ব প্রভিষ্ঠিত



উচ্চপদ্ম সরকারী কর্মচারীদের সহিত শাসন-বিভাগের কর্মে নিযুক্ত উপস্থাতীর নেতাদের সাকাৎ

ছিল—ভাদের রাজ্থানী ছিল সেরার। অভীভে গেৰিরার ইভিহালের রঙ্গদ্ধে বার বার পটপরিবর্ত্তন চুইথাছে। কং

বংশের রাজ্যকালে বহিরাগত আরব এবং বর্করেরা এদেশে অভিবানে আসিরা ছানীর অধিবাসীদিগকে বন্দীকৃত এবং বহু লোককে হত্যা করে। অবশেষে ভাহারা দেশটি দ্বল করিয়া বসে। ক্রমে ক্রমে গেজিরা এই ন্বাগত ভাতিরই বাস্ত্রি হইবা দাভার।

কালক্ষে গেৰিবা বিভাচর্চার কেন্দ্রে পরিণত হয়। সপ্তদশ শতাকীর সুহানের সদে ইসলাম-জগতের সম্পর্ক ছিল ব্যক্তির। ক্রেমে ক্রেমের পরিণত হইল। ইউরোপীরগণ এই শহর পরিদর্শনে সমাগত হুইতে লাগিলেন এবং বীরে বীরে এবানে লাভক্ষক কার্পাস-শিল্প গভিয়া উঠিল। ১৮২১ ইটাকে ভূক্সিণ কর্তৃক সেরার অবিকৃত হুইলে কুং-প্রভূত্ব বিঃশেষে বিশুপ্ত হয়।

মিশবের অধীনে পাকাকালে বিজেতাদের কুশাসন এবং ছুনীতি ভাষী মাহ্দী বিজোহের পথ পরিকার করিল—১৮৮৫ জীঠাকে ধারটুমের পত্যে এই বিজোহের অবসান হইল।

এই সময় গৈদিবার বর্তমান গঞ্জতর মেসিলিবিরা ছিল দক্ষিণ অঞ্চল হইছে বন্দীয়ুভ জাসবিক্ষরের একট প্রধান বাজার: প্রধান হইছে বিপুলসংখ্যক জীভবাস—সময় সময় ভাহাদের সংখ্যা বংসরে ৫০,০০০ হাজারে গাঁড়াইভ-সুদান হুইভে চালান হুইভ।

ষাহ দি বিজ্ঞাহের নারক মাহ দী বহং গেজিয়ার করেক বংসর বাস করিরাছিলেন। তিনি ছিলেন একট বিশিষ্ট বর্ত্তমঙলীর (টারিগা) অবস্তু ক্ত-এবনও গেজিরার উক্ত বর্ত্বরতলীর বিশেষ প্রভাব বিভয়ান। কবিত আছে, তাঁহার খণ্ডর শেব বোরালীর মৃত্যুর পর তিনি নিজের হাতে তাঁর সমাবি নির্দাণ করিরাছিলেন।

#### चुनारमत वर्षमाम व्यविवाशी

বর্ত্তবানকালে হুদানের একই অঞ্চলে এবন অনেক প্রায় আছে বেগুলিতে বিভিন্ন শ্রেণীর উপলাতীর লোকেরা বাল করে। তরবো মাহ্দী লৈচদের বংশবরেরাও আছে। গেলিরার মধ্যবর্তী অঞ্চলে মৃহদের অধ্যুষিত একটি জেলা আছে এবং প্রধানতঃ দক্ষিণ অঞ্চলের বহু প্রায়ে পশ্চিম আফিকার বিভিন্ন জাতির বাস। প্রামাকলের আরবদের মুধাকৃতি এবং গৈহিক গড়ন লক্ষা করিলে একথা স্কুলাই রূপতে পারা বার যে, ভাহাদের দেহে প্রচুর দাস (মিপ্রোয়েড) রক্তের মিপ্রণ হইরাছে।



গেজিরার শীল নদের বুকে ভাসমান বজরা

আগেকার দিনে উপজাতীরদের মধ্যে প্রারই কলহ-বিবাদ থ মারামারি কাটাকাট হইত। ইহাদের সমাজে নামা কুসংখারও ছিল। ইদামীং এ সকল বহুলাংশে করিরাহে বটে, কিছ একেবারে লোপ পার নাই। জাতির অতীত ঐতিহের প্রতি ইহাদের অভ্যাগ অপরিসীয়। ইহারা গোল-ক্বা, পূর্ব্ব-পুরুষদের মুহবিপ্রহ এবং কৃতিসমূহের কাহিনী ভবিতে বড় ভালবাসে। এখান্ডার অধিবাসীরা বছই অতিধিসংকার-পরারণ।
কোনো গ্রামে বেডাইতে পিরা গৃহস্থবাটী হইতে বাড গ্রহণ না করিলে তাহা শিষ্টাচারবিরোধী বলিরা বিবেচিত হয়।

সুদান বছ বিশ্র জাতি বারা অধ্যবিত।
এবানে এক বিকে বেষন অভবৃদ্ধি বাসশ্রেণীর লোকের বাস, অভ দিকে তেমনি
দৈহিক সোঠবসম্পার বিশেষ বৃদ্ধিনান
ব্যক্তিও বিরল নহে। সাধারণতঃ শেব
এবং সন্তান্ত ব্যক্তিদের ঘেষন আভিজাত্যপূর্ণ চেহারা তেমনি মর্ব্যাদাভোতক
উাহাদের আচরণ—ভাহাদের বৃদ্ধি-বৃদ্ধিও
প্রথব।

পেৰিবার আধ্নিক সেচ-ব্যবস্থা

পেজিরার বুগান্তর আমরন করিরাছে
ইতার সেচ-ব্যবস্থা। ইতার দক্ষম এই
দেশের এক অংশের এ ফিরিয়া গিরাছে।
সেচ অঞ্চলের অধিবাসীদের জীবন-বাপনপ্রণালীর আমৃল পরিবর্তন সাধিত
হইরাছে, অব্দ্রু সমগ্র গেজিরার সামান্ত
অংশমান্তই সেচ-ব্যবস্থার অন্তর্ভুক্ত।
নীল নদের পশ্চিম দিকে প্রাচীন

পেজিরা। এই অঞ্লের অধিবাসীরা আকও আপেকার আমলের জীবনবারারই অস্থবর্তন করিতেছে।

উত্তরনিকে বৃষ্টিপাতের পরিষাণ কম বলির। উক্ত অঞ্চলে গাছপালা বিরল। দক্ষিপদিকে—বেধানে পাহাছপ্রেণী সীষা-বেধা রচনা করিরা দাঁভাইরা আছে, গাছপালার প্রাচ্ছা বেধিতে পাওচা যার। সেধানে মাইলের পর মাইল কৃতিয়া একপ্রকার কাঁটা গাছের বোপ ভূপ্ঠকে আর্ভ করিয়া রাধিয়াতে।

পেঁজিরার অনত-প্রসারিত, উনুক্ত প্রভিরে ইাড়াইলে নজরে পড়ে গ্রামগুলি অনুর দিগছে হেলান দিয়া টাড়াইরা আছে। সারিবাঁথা ত্বে ছাওরা অ্লাগ্র চালাবিশিষ্ট কুটারসমূহ বিশেষ ভাবে দৃষ্টি আকর্ষণ করে। উত্তর অঞ্চলে চাল ছাইবার ত্ব জনার না বলিয়া রৌজন্ম মৃতিকা ছারা সম্ভল আকারের চালা নিশ্রিত চইয়া থাকে।

সাৰাৱণতঃ প্ৰত্যেক প্ৰামে এক বা একাৰিক কুৱা আছে— পশ্চিম অঞ্চল ৰাট খুঁজিয়া জল পাওয়া কুইকুর বলিয়া বৃষ্টির জল ৰবিয়া রাখিবার জন বিয়াট আকারের দীবি ( হাফির ) ভাটালো হয়।

নবেঘর নাসে রষ্টপাতের অভাবে ছবি থাকে শুকু এবং অহর্জর। সেচ-অঞ্চল কার্পাসগাহ প্রচুর পরিবাণে ছবে। আহরারী বাসে কার্পাস-শুট বর্ধন কাটিভে থাকে ভবন পাকা তুলার গুল্লা সুদ্রপ্রসারিত কার্পাসক্ষেণ্ডলিকে এক অপূর্ব শোভার বঙিত করিয়া ভোলে। তুলা-সংগ্রহ-কারীরা দলে দলে বাঠে গিয়া কার্যো হত হয়। গৃহস্থদের কুটারে কুটারে রাশি রাশি তুলা বভাবনী করিবার বুল পড়িয়া



সেচ আকলের বাহিবের একটি গ্রামের কুরা হইতে স্থী-পুরুষ চারভার পলিয়ার জল ভূলিভেছে

যার—তারণর উটের পিঠে চাপাইং। দেওলিকে বীক ছাড়াই-বার কেন্দ্রগুলিতে লইয়া যাওয়া হয়।

ষে বংসর সুর্ক্ট হয় সেই বংসরে বর্ষাগমের সলে সলেই সমগ্র ভূ-ভাগ বিবিধ তৃণলতা এবং গুলারুক্ষর প্রাচুর্য্যে সবুক্ত শোভার মণ্ডিত হয়। পদ্ধীপ্রামের মুক্ত প্রান্তরে ইণ্ডাইরা বালগুলির ওপারে তাকাইলে মক্ষরে পড়ে ঘদ সবুক্ত ক্ষনারের ক্ষেত্র মাইলের পর মাইল অবিচ্ছিলভাবে চলিয়া গিয়াছে। স্থানে স্থানে স্ক্রপ্রপাহিত তৃণক্ষেত্রের উপর শাদা রঙের এক প্রকার কুল অবস্তু সুইরা রহিয়াছে—বেদ সবুক্ষর উপর শাদা কুলতোলা বিরাট কার্গেট ভূপুঠে বিছানো।

ক্ষারই এবানে উৎপন্ন প্রবাদ বাঙ্গান্ত। নবেশ্ব নাগে কগল কাটা হইলে পর লোকেদের বাংসরিক বাটুনির অবদান হব। ভাল বৃষ্টি হইলে ভালের বাভাভাব হয় না। ভবন ভাহারা তীববালার বাহির হয়। নাবে নাবে ভোজের আবোক্ষর করে। প্রাচীনকালে এই সময় ভাহারা যুদ্ধালার বহির্গত হইত।

সেচ-ব্যবহার কলে কেবল সেচ-অঞ্চলর মহে তংগরিহিত হানসমূহের অধিবাসীদেরও চুর্গতি এবং চুর্ভিক্রের হাত হুইতে রক্ষা পাইবার উপার হুইরাছে। ইহার ফুল্ল অমার্ট্র হুইলেও ক্ষেত্তলি প্রচুর অল পার বুলিরা ক্লল মিট্ট হর মা, উপয়ন্ত কাৰ্ণাসগাহ হইতে চুলা সংগ্ৰহ করিবাও লোকেরা বেশ হ' প্ৰসা বোজগার করিবা থাকে।

#### প্ৰদামের অৰ্থনৈভিক পরিকল্পনা

ভূলাই স্থলানের প্রধান রপ্তানি ক্রব্য। গভ বংসর তুলা রপ্তানি করিলা এদেশের প্রার ২,২০,০০,০০০ পাউও আর হইলাছিল। একা ত্রিটনই স্থানের নিকট হইতে ১,৮০,০০,০০০ পাউণ্ডের তুলা কিনিলাছিল। আর ভারতবর্ষ



अक्षम चुनामी जिलाशी

ক্ষর করিয়াছিল ২০,০০,০০০ পাউও বৃল্যের। তুলার দর যে ভাবে চড়িভেছে এবং উংপাদমও বেরণ বাড়ভির পথে ভাহাতে আপা করা বার বে, আগামী বরগ্নমে ভূলা হঠানি বারা স্থানের আর অধিকভর বৃদ্ধিগ্রে হইবে।

স্থানের উৎপন্ন প্রব্যাদির মধ্যে তুলার পরেই আরব্য জমারের ছাল—জুমিরার বাজারে ভাহার এই জিনিস্টির এক-চেটিরা ভারবার। এই বাদ্যশভ রপ্তামি হারা গভ বংসর স্থানের লাভ হইরাছিল ২,০০,০০০ পাউও।

এই বেশ প্রকাও প্রকাত মরক্ষি, চারণক্ষি এবং বন-কলনে পরিপূর্ণ-এবামকার উপকাতীর লোকেরাও অভ্যত। নেইক্রত এবানে প্রাকৃতিক সম্পদ এবং পণ্যক্রব্য এতত্ত্তরেই একাত অভাব। কার্শাস-ভূলা এবং ক্লার হাতা সাবাত পরিবাণ চার্যা, বিষেশের চিড়িয়াবানার বত হ্তাপ্য পশুপদী এবানকার রপ্তানিজয়।

মুখ্যতঃ কৃষিপ্ৰধান দেশ বলিবা প্ৰদান জাতীয় শিল্পবিক্লনাসমূহকে কাৰ্য্যক্ষী ক্ষিণ্ডাৰ বহুপাতি, তৈবি বাল এবং অন্যান্য বহু নিভাপ্ৰয়েজনীয় ক্ৰয়াখিব জন্য বিদেশের উপর নির্ভয়নীল। পত বংসর প্রদান বিদেশ হুইতে নোট ২,৫০,০০,০০০ পাউত্তের পণ্যক্রয় আনহানী ক্ষিয়াহিল। ভন্তা বিটেন হুইতে আসে ৮০,০০,০০০ পাউত্তের আর ভারতবর্গ হুইতে ৩০,০০,০০০ পাউত্তের—অধিকাংশই ব্যানসম্পর্কিত ব্যাপতি।

### ভাতিগঠনবুলক সরকারী পরিকলশ

১৯৪৬ বাইাজে জ্লান গ্ৰণ্যেণ্ট একট দশ বংগৱের পরিকল্পনা লইরা ভাতিগঠনসূলক ভার্যো প্রয়ন্ত হম। এই পরিকল্পনার চারিট অল—সামাজিক উল্লয়ন, শিক্ষা, কৃষি এবং ভ্ৰতিক্তর কার্যা।

বর্তনানে ব্রিট্টশ গবর্ণমেন্টের পরিচালমাধীনে খারটুরে সাভট ক্যাকাল্ট সম্বলিত একট উন্নত বরণের বিখবিভালর এবং ১২০০ প্রাথমিক এবং মাব্যমিক বিভালর আছে। এই সম্বত শিক্ষা-প্রতিঠানের ছাত্রছাত্রীর সংখ্যা মোট এক লক। সরকার খার্চুন, ওমভারমান এবং অন্যান্য শহরে ক্তকশুলি শিক্ষবিভালয়ও প্রতিঠা করিয়াছেন।

### চিকিৎসা এবং স্বাস্থাবিষয়ক উন্নয়-প্রচেষ্টা

চিকিৎসা এবং সাহানীতিবিষয়ক উন্নয়-প্রচেপ্তার প্রদারও এই হল-বার্ষিকী পরিক্লনার অন্তর্গত। পরিক্লনার এই অংশট কার্যাকরী করিতে গিরা কর্তৃপক্ষে কুইট প্রবল প্রতিষদকর সমূবীন হইতে হর—প্রথমতঃ, এই কার্যোর ক্ষত্র বার বরাদ করা হর ভাহার অপ্রচ্ছার আর বিভীরতঃ হানীর অবিবাসীদের চিরাচরিত অভ্যাস এবং কুসংস্কার। দীর্ঘকালবাাপী প্রচেপ্তার কলে প্রতিবহুসমূহ বছলাংশে অপসারিত হইরাছে। আক্ষ্যানের প্রভ্যেক নগরী এবং মক্ষল শহরে আধ্নিক ব্যবহা-সম্পাত হাসণাভালসমূহ প্রভিতিত হইরাছে। হাসণাভালের নৌকাগুলি ঔববপ্তা এবং চিকিৎসাবিষয়ক অন্যান্য উপকরণাদি সহ নীল নদ এবং ভাহার উপন্ধীসমূহের বুক্তর উপর দিয়া বিভিন্ন প্রাহে বাভারাত করে।

সেচ-ব্যবস্থার কলে গেৰিরার বে কিরণ উরতি হইরাছে আহরা পূর্বেই তাহার আভাস দিয়ছি।

### গেজিয়া উন্নৰ-পরিকল্পনা

সরকারী কর্তুগক্ষের অক্লান্ত চেটার গেলিরা উর্বধ-পরি-ক্ষমণ সাকল্যের পথে অঞ্জন্ম হুইভেছে। গেলিরা কথাটার বাবে বীপ, কিছ এই সুদান গেলিরা আগলে একট উপবীপ। এবানকার প্রার পাঁচ লক্ষ একর উর্বন্ন ক্ষিত্রে বিধি কৃষির ষ্যবদ্ধ প্রবর্তিত হইবাছে। সরকার এবং ক্ষমাধারণ উভবেই এই বৌধ কৃষির অংশীদার। এই অংশীদারী ব্যবদা অন্থারী কার্পানের মরস্থার ক্ষেত্র করি চারাগাছ রোপণ—কুলা সংগ্রহ, বীক ছাড়ানো পর্যন্ত সবর্পনেণ্টই চাষীকে সর্প্রতোভাবে সাহায্য করেন। সরকার চাষীর ক্ষমা করেন, চাষীকে বীক, বল্পপতি ইত্যাদি দেন এবং বৈজ্ঞানিক প্রণাতী অবলম্বন সম্পত্তি ইত্যাদি দেন এবং বৈজ্ঞানিক প্রণাতী অবলম্বন সম্পত্তি বর্ণোচিত নির্দেশ প্রদান করিরা থাকেন। বাজারে কুলা বিজ্ঞানের ব্যবদাও সরকারী ভত্তাবদানে হইরা থাকে। চাষীকে প্ররোজনবোবে সরকারী বন্ধ দিবার ক্ষরদাও আছে। প্রত্যেক চাষী প্রায় চরিশ একর ক্ষমি পার, তন্মবো অন্তত্ত দল একর ক্ষিত্রে তুলা উৎপাদন করিতে সে বাবা—বাকী ক্ষিত্রে সে নির্দেশ ব্যবহার, তরিত্রকারী এবং ক্ষ্যান্য ক্ষমা ক্ষমা ক্ষমা ক্ষমা ক্ষমা ব্যবহার প্রায়ন্ত্র ক্ষমান্য ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রস্তান ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্য ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রসায়ন্ত্র প্রয়ন্ত্র প্রস্তান বিশ্বর ক্ষমান্ত্র প্রস্তান বিশ্বর ক্ষমান্ত্র প্রস্তান বিশ্বর ক্ষমান্ত্র প্রস্তান বিশ্বর ক্ষমান্ত্র প্রস্তান বিশ্বর ক্ষমান্ত প্রস্তান বিশ্বর ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত্র প্রয়ন্ত্র ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত ক্ষমান্ত ক্ষমান্ত ক্ষমান্ত্র ক্ষমান্ত ক্য

এমনিভাবে সরকারী ব্যবস্থাধীনে ধৌপ কৃষির ধারা ধে আর হয় ভ্রাব্যে সরকার লন শভকরা ঘাই ভাগ—বুলবন বিনিরোগ এবং চাষ্বাসের ব্যাপারে বিজ্ঞানসমূভ পদ্ধতিভে সহায়ভা ইভ্যাদির দক্ষন, আর চাষীকে ভার প্রথমের বিনিময়ে দেওয়া হইরা থাকে শভকরা চল্লিশ ভাগ।

গেৰিয়া উন্নয়-পরিক্লম। এখনো প্রাথমিক অবছারই
আছে বলা চলে। পরিকল্পিত গাঁচ লক্ষ একরের মধ্যে নাত্র
ছই লক্ষ একর ক্ষিতে ক্লনেচ এবং উন্নত বরণের কৃষির
ব্যবস্থা হইয়াছে। ভাহা সন্তেও কিছ সমগ্র স্থানে ইতাই
লক্ষাণেক্ষা গুরুত্বপূর্ণ কৃষি এবং অবনৈতিক পরিক্লমা।
সোভিরেট ইউনিমনের বাহিরে বভগুলি বৌধ কৃষি-বিষয়ক,
পরীক্ষানুলক প্রতেটা হইয়াছে ভন্নব্যে ইহাই সবচেরে বেশী
লাক্ল্যান্তিত বলিয়া প্রবাণিত হইয়াছে।

কিছ ইদানীং ইল-মিশরীর রাজনৈতিক বিরোবের দক্রন পেলিরা-শরিকরনা এবং সুদানের অভ্রুপ অভাভ উর্ন্ন-শরিক্রনা ব্যাহত হইতেছে। কেননা ১৯২৯-এর নীল নদের ক্লরালি সম্পর্কিত চুক্তি (Nile waters agreement) অভ্নারে
স্থান নীলনদের ক্লের কেবলনাত্র শতকরা কিঞ্ছিদ্ধিক হই
ভাগ ব্যবহারের অধিকারী—বাকী সমুদ্ধ অংশ মিশরের
এলাকাভুক্ত। দীর্কলাল বাবং এই চুক্তির অ্লল-ব্লল একাভ
ব্রোক্রনীর হইরা পড়িলেও কার্বো-বার্ট্ন-লওনের রাজনৈতিক বিরোবের সূঠু নীনাংসা না হওরা পর্যন্ত ইহা কার্য্যে
পরিপত হওরা অলভ্রন।

क्षांन अवर विचायक धारांन मक्षां क्रेडिएस भीन नासक

জনের সম্প্রা। জনেকগুলি সেচ-পরিক্রমাই প্রধান-সরকার করিরাহেন, কিছ বে বারিরাশি প্রনানকে বিবৌভ করিরা বহিরা বাইভেছে ভালার শতকরা হুই ভাগের বেশী কালে লাগাইবার অবিকার প্রদানবাসীর মাই। সরকাষী অপ্রবিভাগের হাড়া কোনো প্রধানী চাষী এই মুক্তগভি দলীয় অন্য বারিরাশি হুইভে হুই গ্যালন মাত্র কল পর্যায়ও নিক্ষেয়



ত্ৰদানী সিপাতীৰ স্ত্ৰী

ক্ষেতে পাম্প করিরা লইখা ঘাইবার অবিকার হুইতে বঞ্চি।
'নাইল ওরাটার এপ্রিমেণ্ট' এমনিভাবে ভাহাদিগকে আঠেপুঠে
আবদ্ধ করিয়াছে। কিছু এই চুক্তির কলে মিশরও বে বুব
লাভবান হুইতেছে ভাহা নর। মিশর নীল কলের বাজী
১৮ অংশের অরমাত্রই ব্যবহার করিভে পারে—শভক্ষা
ঘাট ভাগই সরাসরি চলিরা যার ভূমব্যসাগরে। কালেই নীলনদের বারিরাশির অংশীদারিত্ সম্বাভ একটা ব্যাহার ক্ল্যাণ
হুইতে পারে না—এটা উভ্রেরই মরণ-বাঁচমের সম্বভা।

বর্তমানে যে রাজনৈতিক পরিছিতির স্টি হইরাছে ভাহার দক্ষন স্থানের ওবু অবনৈতিক নহে, শিকাবিষ্থক শহিক্ষমান্ত্রত বিশেষ ভাবে ব্যাহত হইতেছে। বাচ্টুর ইউনিভার্সিট কলেক সমগ্র আফ্রিকার মধ্যে অভতম শ্রেষ্ঠ শিকা-প্রতিষ্ঠান। উক্ত বিশ্ববিভালরের ছাত্রদের মধ্যে প্রচণ্ড বিক্ষোতের সকার হইয়াছে, কলে গত হই মান যাবং ইহা বন। ওমভারমান নগরেরও অনেকগুলি বিভালর এবং অভাভ শিকা-প্রতিষ্ঠান বাচ্টুর বিশ্ববিভালরের সৃষ্ঠান্ত অস্পর্য করিয়াছে। স্থানের অবনৈতিক এবং সাংস্থৃতিক জীবনের বারা অব্যাহত বাক্ষিয়া বাহাতে দেশবাসীর প্রফুত কল্যান লাবিভ হইতে পারে লেই ক্র স্থানকে কইয়া স্থ ইল-বিশ্বীর রাজনৈতিক বিয়োবের আভ অব্যান একাছ আব্রুক।

## রাজনগর

## **অ**ননীমাধব চৌধুরী

ইল ব্যলী বিলের বাবে বাঠে বেড়াইডেছিল। হাবার
ভাষার নামা রক্ষের চিড়া। সে এড অঙ্গম্ম বে, ব্রলী
বিলের ওপারে অঙগামী প্রের শোড়া ভাষার দৃষ্টি আকর্ষণ
করিতে পারিল না। প্রিডে প্রিডে ভাহার বনে হইল দ্রে
নেউপীদের ইটের পাঁজার নীচে একজন লোক বলিরা আছে।
দেউপীদের ইটের পাঁজার দিবিরা ভাষার বনে পড়িল করেজ
বংলর আপেকার কথা বধন সেও দেবানন্দ প্রারই ঐ পাঁজার
আভালে ব্রলী বিলের দিকে বুধ করিয়া বলিরা নামা রক্ষ
আলোচনা করিত, কবিতা আর্ভি করিত, প্রাইরা আনন্দমঠ প্রভৃতি বই পড়িত। ভাহাদের সেই প্রির আহ্বাটি কে
অধিকার করিল ভাবিরা ইক্রের কৌত্তল হইল। সে ইটের
পাঁজার বিকে অপ্রসর ভইল।

বানিকটা দূর হইতে সে বিমিত হইরা দেবিল ক্লের
এনিটার্ট হেড মাটার ষতীনবাবু একবানি ইটের উপর বসিরা
এক ননে কি বেন পড়িতেছেন। সে কাছে বাইতে যতীনবাবু ভাহাকে দেবিভে পাইলেন। ভাডাভাড়ি হাতের
কাপকবানা পকেটে রাবিয়া ভিনি বলিলেন—ভূমি একা
একা এত দূর বেডাতে এসেছ? ভোনার বাবা কেমন
ভাছেন ?

ইল্ল বলিল—বাবা একটু ভাল আছেন। আপনি মাঠের মধ্যে বলে কি পছছিলেন মাঠার মণাই ?

ষভীন বাবু তাঁহার ইউকাসন ভ্যাগ করিব। উটিব।
. বাঁভাইলেন। বলিলেন—একবানা ন্তন কাগল বেরিবেছে
ভাই দেবছিলান। ভোনার যোক্ষরার ভারিব কবে ৭

ইলে—তা কানি না। সমঃমত খবর আসবে বাবার কর। কি নুক্তন কাগক নাইয়ের স্বাই।

ৰজীনবাৰু—কাগজধানার নাম বৃগান্তর। কিছুদিন খেকে বেরুছে। কলকাভা থেকে একজন একট নাত্র সংখ্যা গাটিবেছেন।

ইল্ল--কাগৰণানার নাম শুমেছি মনে হচ্ছে। দেখি কি রক্ষ কাগছ।

ৰতীনবাৰ পকেট হইতে কাগৰবানা বাহিত্ৰ কৰিব। ইলেত্ৰ বাতে দিলেন। কাগৰবানা বুলিতেই ইলেত্ৰ চোৰে পড়িল একটা ভাষগায় লাল কালিতে বোটা কৰিবা দাগ দেওবা। ভাষাতে এই মূৰ্বে লেখা হিল:

"যে বেশে ৩০ কোট লোক বিষা আগভিতে দাসছের শৃথল পরে মরেছে সে বেশে বীর ক্যাবে কি করে? যে বেশে মুখের প্রাস ভাত থেকে ছিলিয়ে নিলেও, ক্যার করে

অভ:পুরে চকে বেরেদের বর্বাালাছানি করলেও লোকে अनहांत्र जारन कारक बारक. ब एक कारन कारने श्रीक्रिकांत्र করতে এগোর না সে জেশ বীরের পক্ষে বড়া। হাজার বার भगवारक कर्कविक ठावक त्व काकित जावनमागरवाव कार्य না সে দেশ মুদুলুত্তীন। বিলাভের এক সভার একজন ভারভীর বাগ্মী ভারভবাসীদের অভাব-অভিযোগের কবা বল-ছিলেন। একছন সাধারণ প্রাধিক বক্তভার শেষে ভাঁর কাছে धान कारम कारम किटकन करम- कामारमय (मानद काक সংখ্যা কত ? ভিনি বললেন—ল্রিশ কোট। ভবে প্রয়িক বলল—ভা হলে ভোমরা পচে মর বিমে। একজম সাধারণ শ্ৰহিক পৰ্যায় ভেবে বিশ্বিত হ'ল কি করে এই বিপুলসংখ্যক লোক এক কোটে দাসছের ভার বইতে রাজী হরেছে। আর चावारमञ रमानत कामी वाक्तियां अरक वनादम विकास विज-পেনসেম-বিৰাভাৱ বিবাম। আমাদের উচ্চ শিকা ও সংস্থতির কল হড়েছে এই শ্রেণীর বিধাতার বিধান। ভগবান बरे नरक्षित्र ठाण (बरक क्ष्मांक वाहाम।"

ইল বভীনবাবুকে বাহরম ও শেলীর তক্ত হাজনগর ভূলের
এনিটার্ট হেডমাটার বলিবা জানিত। গোড়ার বংলী
আন্দোলনে যোগদানে তার উৎসাহ পরিলক্ষিত হয় নাই।
সেবার যতীনদা রাজনগরে আদিবার পর হইতে তাঁলার মধ্যে
যেন বানিকটা পরিবর্জন দেখা গেল। তিনি বেজ্ঞানেবক
সংগ্রহ ও ভাহাবের শিক্ষাদান ব্যাপারে উৎসাহী হইবা
উটিলেন। কিছ ইল তাঁহার প্রতি আফুট হয় নাই, উভরের
মধ্যে যনিঠভাও করে নাই। আজ তাঁহার হাতে মুগাভর
বেধিবা হঠাং বেন সে নৃতন করিয়া ভাহার পরিচর লাভ
করিল।

ইল ৰভীনবাবুকে তাঁহার পরিভ্যক্ত আসমে বসাইরা নিজে তাঁহার পাশে বসিল। ভার পর ছই জনের মধ্যে নানা রক্তর আলাপ আরম্ভ হইল। অবশেষে ইল তাঁহাকে নিজের সমভার কথা বলিল। বীর ভাবে ভাহার সকল কথা ভনিরা ভিনি বলিলেন—সভাা হরে এল। চল এবার ওঠা বাক। ভোমার প্রথমের উত্তর আমি পরে দেব। উত্তর কেবার আগে আমি ভোমাকে একটা কিনিস পঙ্গতে বিভে চাই। আনার একথানা সংগ্রহ-খাভা আছে। কেশের মানা সমভা, বিশেষ করে জাতীর আন্দোলনের সমভা সমাবানের উপার সহতে জাতীরভাবাদী কাগজে বে সকল মভ বেরোর আমি সেওলো সংগ্রহ করে রাখি সেই খাভার। ভূমি বেকথা বিজেস ক্রলে ভার উত্তর থানিকটা করেকথানা কাগজের সাজেসলন বেকে

পাৰে। আগে ভূমি লেগলো পড়ে নাও, ভার পর আলোচনা ভরা বাবে।

ইস্ল বলিল—চল্ম আপনার বাড়ী গিরে বাভাবানা নিবে আগি।

ৰভীনবাৰু বলিলেম—আৰু রাভ হয়ে যাবে। ভূমি বাড়ী যাও। ভাল সভালে আমি বাভাবানা ভোমাকে দিয়ে আসব, ভোমার বাবাকেও দেবে আসব।

ইঞ্জনের বাজীর সন্মুধ দিরা বভীমবাবুকে তাঁহার বাজীতে কিরিছে হইবে। বিদার কাইবার সময় ইঞ্জ বলিল—মাঠার মুখাই বাভাবামা আনতে ভলবেন মা।

ইজ কাছারি-বাড়ীর পাশ দিরা বৈঠকধানা দালানের দিকে যাইভেছে এবন সময় বৃদ্ধ নায়েব ভাড়াভাড়ি বাহিরে আসিরা ডাকিল—ছোটবাবু একটা কথা আছে।

ইন্দ্র সেবানে ই। ছাইল। নারের কাছে ছাঁসিরা নিয়কঠে বলিল—ছোটবাবু, ভার এসেছে কাল আপনাকে সদরে বেতে হবে। ও-বাড়ীর রার বাহাছ্র বললেন, ভিনি সদে যাবেন, আর কথাটা বেন কর্ডাবাবুকে না জানানো হর। যা বলতে হব ভিনি নিজে বলবেন।

इस जव क्षतिहा दिनन-चाका।

সে বৈঠকবাদা-দালাদের মধ্য দিয়া পিভার ঘরের কাছে বিয়া চিখারীর পলা শুনিরা বাহিরে ইংছাইল। চিখারী বলিতে-ছিল—আমার কথা রাধুন বাবা। বদি এ ভাঙা সংলারে আবার ঐ ফিরিছে আনতে চান কিতাকে চিনি কি বলিতেছিল ভাহা সে অপ্যান করিবার চেঠা করিল। কিত চিনি আর কিছু না বলাতে ভাহার বক্তব্য ব্বিতে পারিল না।

পাশের ঘরের ভিতর দিয়া সে অন্সরে পেল। উঠানে একটা লঠন হাতে মুকীর না দাভাইরা বলিভেছিল—বাহার বাড়ী থেকে গাঁড়েজি কি একজন সভারকে ভাকি, ভূমি একটু বাড়াও লক্ষী দিদিনণি। একা কিরভি যোর ভর করবি।

ইন্দ্ৰ বুবিল মুকীর মা লগ্ডন লইডা লক্ষীকে বাজী পৌছাইছা দিছে বাইছেছে। সে বলিল—মুকীর মা লগ্ডম আনাকে দাও। বাইরে থেকে কাউকে ডাকভে হবে মা, আনি বাহ্ছি। লক্ষীকে ডেকে লাও।

মুকীর বা বাধার কাপক দিয়া লঠন নাবাইরা রাধিরা সরিবা পেল। লখ্মী অগবানীর বরে বসিবা মুখরীর সলে কথা বলিভেছিল। মুকীর মা তাহাকে ভাকিরা আমিল। বলিল, ভোটবাবু নিজে বেতেহেন দিদিমনি, আমার বাওরার কাম কি?

ইল আগে আগে লঠন হাতে চলিল, পিছনে লখী। ছ' জনে নিৰ্মাক ভাবে পৰ চলিতে লাগিল, অবশেষে শীবানন্দের বাড়ীর কটকের লামনে আলিরা ইল সরিয়া গাড়াইল লখীকে পৰ দিবার ছড়। বলিল—আমি এবার বাই।

কলী এক পা ভিভৱে গিয়াছে, ইজ বলিল-ললী, একটা কথা বলব।

লমী কিরিয়া দাঁভাইল। ইক্স বলিল—কাল আমাকে সদরে বেভে হবে। যদি আমার কেল হর, আমি কিরতে না পারি বাবাকে ভূমি আগের মত দেখো। চিহ্ন ওপর বেশী তরসা করি নে, ভারপর হঠাং হয়ত ভার খন্তরবাতী থেকে লোক এসে পড়বে মিয়ে যাবার জন্ত। ভূমি না দেখলে ফিরে এসে হয়ত বাবাকে আর দেখতে পাব না। দেখবে ভূমি ?

লক্ষী ৰাথা নোৱাইল। ইক্স ফিরিবার মত পা বাড়াইরাছে, লক্ষী আগাইরা আগিরা হেঁট হইল প্রণান করিবার মত। ইক্সের পারের উপর সে মাথা রাবিল, মাথা আর উঠেনা। ইক্স লঠন নামাইরা রাখিয়া লক্ষীর মাথার হাত দিরা আশির্মাদ করিবার মত ভান হাত বাড়াইল। মুছ, কোমল বরে বলিল—লক্ষী ওঠি।

ইলের নিজের চোধ কেমন বেম জালা করিরা উঠিল। সে মুধ কিরাইল। লগ্নী উঠিরা দাড়াইল। ইলের প্রদারিভ হাত তাহার মাধার না লাগিয়া চিবুক স্পর্শ করিল।

ত্রিনংশী দোতলার জানালা দিয়া আলো দেবিতে পাইয়া বলিলেন—কে?

ইন্দ্ৰ বলিল---কাকীমা, লগীকে পৌছে দিৰে গেলাম।
ফ্রিমংনী বাভ হইয়া বলিলেম--ত্তপরে এলো বাবা, একটু
বসে যাত।

ইজ— আৰু বাই ভাকীমা, বাবার ওয়ুৰ দেবার সময় হ'ল, দেৱী হয়ে বাবে।

লক্ষীর দিকে চাহিষা সে বলিল—তৃষি ভেতরে যাও লক্ষী, আমি বাই।

देख हिन्दा शन न

পরের দিন ইন্সকে সদে কইরা জীবানক সদরে রঙনা হইয়া গেলেন। ভার পরের দিন বাংলার ইভিহাসে একটা অর্থীয় দিন।

১৯০৬ ঐতাদের এপ্রিল মাস। বরিশালে বাংলা প্রাদেশিক ক্ষকারেশের অবিবেশন হইবে দ্বির হওরার পরে বরিশালের জেলা-কর্তৃপক্ষ বরিশাল "ইন এ টেট অব বিউটিনি" বলিরা বোষণা করিলেন। এই বিজ্ঞাহ লবন করিবার উপযুক্ত বাবস্থা হইল। নবাব সলিয়ুলাহের কাছারি-বাছী রেখলেশন লাটিবারী রিজার্ভ পুলিস ও বন্দুক্ষারী ক্ষমেইবলে ভরিরা গেল। শহরে বন্দে মাভরম্ বলা আগেই বন্ধ হইবাছিল —সভা, সবিভি, শোভাবালাও নিষ্যিত্ব হটল।

ক্ষকারেশের দিন সকাল আইটার কলিকাভা, বশোহর, বুলনা, বঙ্চা, পাবনা, রাজশাহী প্রভৃতি স্থানের প্রতিনিবিদের লইরা ঠীনার বাটে আসিয়া লাগিল। প্রতিনিবিদ্যা সম্বেভ ভুঠে চিংকার করিলেন—বলে বাতরব্যু বাটে বরিশালের গণ্যমাত ব্যক্তির উপস্থিত, প্রতিনিধিদের অত্যর্থনা করিবার বছ। প্রভাতরে বাট হুইতে বলে বাতরম্ ধ্বনি উট্টল না। কুলারী সামস্কারে বরিশালে বলে বাতরম্ ধ্বনি নিধিছ। এটি- সারস্কার সোলাইটির সভ্যেরা বাটে নানিহা বলে মাতরম্ ধ্বনি দিতে লাগিল, সর্কারী নিধেব অবাত করিবা সম্ভ্রাভা তাহারা ধ্বনি দিতে দিতে চলিল।

चाका बाह्यकरवर हारचली हडेरच श्रीकिशिवरा प्रचामकरण ৰাইবাৰ ভৱ বাতিৰ ভইষা আসিলেম। আগে চলিলেম ক্ৰৱেল-ৰাৰ ও অন্যান্য নেভাৱা, ভাঁহাদের পক্ষাভে এটি-সারকুলার লোলাইটির সভাগণ। সহসা প্রিস-সাতের ক্যাম্প ও লাটবারী ক্ষেইবলরা আসিহা সভাষের বিবিহা কেলিল। ক্যাম্প সভা-বের ছকুৰ করিল-ব্যাক পুলিয়া কেল। ভাচারা অধীকার कतिम । जार जारकरे चाकाम चारक करेम । (दश्रासमय नाविदावा शनिम हाविष्य प्रदेश्य मधारम्य याचार शिर्फ বাছতে আবাভ করিতে লাগিল। প্রতারে ভর্করিত ভইষাৎ ভাহারা ধ্যমি দিতে লাগিল বন্দে যাতর্য বন্দে যাতর্য। কেহ কেহ ৰাটতে পভিয়া গেল ভবু বন্দে মাভৱম ধ্যমির विदाय गारे। वानक विश्ववश्य विश्ववाद कविटक्षित वरम মাভরৰ বলে মাভরম। ভিন ক্ষম ক্ষেইবল ভারাকে মারিতে प्रांकितक अरक (कांबांव प्रारंग (कश्मिवा क्रिया) (कांबांव क्राय ৰাজত বৰৰ বিষক্ষয়ৰ তৰ্মত ভাচাদের লাটি চলিতে লাগিল चविदाव । चवर्णाय अक्षम दिन्द्र करमहेवरावद माहि वाविदा গেল। ছেলেটা ভূবিয়া মরিভেছে বেবিয়া দে ভাহাকে জল करेट केंग्रेन। वानक करन चटेहकना।

ইভিনব্যে পূলিল লাহেৰ ক্যাম্প সুরেজনাথকে গ্রেপ্তার করিল। গ্রেপ্তারের পরেই তাঁহাকে ব্যাক্তিইটের কাছে উপছিত করা হইল। সরাসরি বিচারে তাঁহার অৱিনানা হইল। ক্পেজনাথ বস্থ প্রতিমিধিদের উপর আজ্মণের সংবাদ পাইরা ঘটনাছলে আসিরা অনাস্থবিক অভ্যাচার প্রভাক করিলেন। তিনি পুলিসকে বলিলেন—'ওঁদের মারছ কেন প্রান্ধকে বার'। এককন কনেইবল বলিল—এই ব্যাটাদের নারবার তুকুন নাই।

লাছিত, প্রহারে কর্জরিত প্রতিনিধিয়া অবশেষে সভামঙণে পৌছলেন। তাঁহাবের সকলের মনে এই লাজ্যার
আগুন অলিভেছিল। তাঁহারা ভাবিভেছিলেন পূর্ববদে
বিটিশ রাজ্য শেষ হইরা অরাজ্যভার প্রট হইরাছে। এটিলারকুলার সোলাইট ও ভবানীপুর নেবক্ত সপ্রভাবের সভোরা
সভাপতির মঞ্চের উপর ইংডাইরা সাম ধরিলেন—লাল পাগড়ি
ও ভাল কোর্ডা ভুকুর তর দেখাও ভাবে ? সভার উভেজনা
এয়ন প্রবল হইরা উটিল বে, গান বহু ভবিরা বিভে হুইল।

সভাপতি এ, রসুলের অভিভাষণ শেষ ছইলে করেকজন ভদ্রলোক সর্বাদে ব্যাতেক বাঁৰা একট বালক ও একট ব্ৰক্তে বরাধরি করিলা সভানওণে আমিলেন, ভাহাবের সলে আসিলেন মনোরঞ্জন শুহুঠাকুরভা। বালকট তাঁহার পুরু চিন্তরঞ্জন ও ব্ৰক্ট বৈন্দ্রনিংহ পুন্দ সমিতির ত্রজ্জে গান্তা। মনোরঞ্জন শুহুঠাকুরভা শ্রোভাদের সম্বোধন করিরা বলিলেন, "আপনারা নিজের চোধে দেবুন পুলিস এদের কি রক্ষ নির্দ্ধন ভাবে প্রহার করেছে। যারের চোটে আনার ছেলের প্রবল্প অর এসেছে, অরের ভাক্সে সে কাঁপছে। আনার ছেলের ঘলি নারা বাহু ভা চলে আমি গর্জবোধ করব।"

বিভীর দিমের অবিবেশন আরম্ভ হইলে বারেরহাটের এক উকিলের চিট্ট সভার পড়া হইল। তিনি ও তাঁহার স্ত্রী করেকটি টাড়া ও সোমার বালা পাঠাইর'ছেম পুলিস বে ভারগার হেলেদের রক্তপাত করিবাছে সেবানে একটি স্থতি-চিল্ল ছাপন করিবার জভ। চিট্টবানি পড়া হইলে সভার প্রবল্গ উত্তেজনার সকার হইল। চট্টগ্রামের এক জনিয়ার সভাপতির টেবিলের উপর গাঁচ শত টাড়ার এক বলিরা রাবিলেন জাতীর বিশ্ববিভালর প্রতিঠার জভ। মৈননসিংহের বিপুল ভূসপত্তির অবিকারিণী এক মহিলা এক লক্ষ টাড়া এবং আরও করেকন্দ বিলিত ভাবে পঁচাতর হাজার টাড়া বিবেন জানাইলেন।

এই সময়ে প্রকাণ্ড একট পুলিস বাহিনী লইনা পুলিস সাহেব ক্যাম্প সভামতথের প্রবেশপথে উপস্থিত হইনা জানাইল, সভা ভালিরা দিবার ক্ষণ আন্দেশ হইরাতে, সে আরও জানাইল, সভা ভালিরা দিবার ক্ষণ আন্দেশ হইরাতে, সে আরও জানাইল প্রযোজন হইলে জলি চালাইবে। এই ক্যা ভালিরা সভার উপস্থিত জনেকে অভ্যন্ত উভেন্তিত হইরা উঠিলেন। উল্লেখ্য বলিলেন বে, পুলিস গুলী চালাইনা ভালাদের হত্যা করুক, তাঁহারা নভিবেন না। সভার পাঁচ শভ মহিলা উপস্থিত হিলেন। নেভারা মহিলাদের দেবাইরা বলিলেন পুলিসের সলে সংঘর্ব বাবিলে বহু লোকের প্রাণ নই হইবে, মহিলারাও বাদ বাইবেন না। প্রতিনিধিরা ভবন শাভ ভাবে সভামঙ্গ ভ্যাগ করিলেন। ছই ঘণ্টা পরে একট গুছে বিলিভ হইরা প্রতিনিধিরা ও স্থানীর লোকেরা বিরাট এক সভাকরিলেন।

দেখিতে দেখিতে বরিশাল কন্কারেজের প্রতিমিধিদের উপর পুলিসের বর্করেচিত আক্ষমণের সংবাদ দেশমর সর্কাম ছড়াইরা পঢ়িল। গোলগীবিতে হুইট সভার ভাষত্বজন চক্রঘর্তী, প্রবেশ সমাকপতি, আততোষ চৌধুরী, প্রাণক্ষক আচার্ব্য তীব্র ভাষার পুলিস ও পূর্কবিদ-সরকারের আচরণের বিশা করিলা। "আগুন বলিলা, পূর্কবিদে বিটেশ রাজ্যন্তর অবসান" এই শিরোনানার সংবাদশত্বে পুলিসী আক্রমণের বিভারিত

বিষয়ণ প্রকাশিত হইল। কোন কোন কানত লিখিল—
"বেশের উপর দিরা প্রলয়ন্তর বন্ধ বহিতেতে, লোকের বন্ধে
বেপরোরা ভাষ", "উঠ, ভাগো ভাই সব, শব-সাবনার সিভি
লাভ করিবার স্বোগ আসিরাতে।" কেন্দ্র করিবার স্বোগ আসিরাতে।" কেন্দ্র করিবার স্বোগ আসিরাতে।" কেন্দ্র করিবার হান্ট, কেন্দ্র
লিখিল প্র্বেকের নাম দিল—কুলার লু বা ইপ্তার হান্ট, কেন্দ্র
লিখিল প্র্বেকের নাধির শাহ কুলার, কেন্দ্র লিখিল পূর্বেবলের
রহম্ম ভোগলক কুলার। লাহোর, মালাভ, পুনা প্রভৃতি
ভাম হান্টে সহাল্ভুতিস্কক ভার আসিতে লাগিল। দেশের
বহু ছামে সভা করিবা কুলারী কুশাসমের ভীত্র মিন্দা করা
হইল। বেললী "দি হিলার ইছ অন কারার" ("The heather
is on fire") হেভিং দিয়া লিখিল—বিলোলের ব্যাপারে
সমস্ত ভারভবর্ষে বিক্ষাভ দেখা দিয়াতে। ববেজ্ঞাচারের
প্রতিবাদ করিবার ভঙ্গারভবাসী আন্ধ কাঁবে কাঁব মিলাইরা
ইল্লাইরাতে।

ক্লিকাভার লোকের মুখে মুখে ও সংবাদপত্র মারকভ দেশের সর্বত্র প্রচারিভ চইল কাবাবিশারদের গাম—

আৰু বরিশাল পুণ্যে বিশাল হ'ল লাটির বাবে।

ঐ বে মারের জয় গেবে বার বন্দেমাতরম্ বলে।

রক্ত বইছে শত বার, নাই কো শক্তি চলিবার

এরা মার বেরে কেট বা ভোলে মা, সহে অভ্যাচার।
আছে দিব্য চকু যার, বোল ভবিয়তের বার

সময় হলে পশুবলের দেববে প্রতিকার।

77

আশিলের বিচারে ইল্লের ছুই শত টাকা অর্থণ, অনাদারে ছুই মান কারাদণ্ডের আদেশ হইল। ইল্লেন্ডের উলিল অরিনামার টাকা দাবিল করিবা ইল্লেকে গলে লইবা আদালত ছুইতে বাতীতে কিরিলেন। জীবানক আশিলের কল ভনিরা একটা খতির নিরাস কেলিলেন। আর বিলম্ব না করিবা তিনি ইল্লেকে গলে লইবা রাজ্যগরে কিরিবার ব্যবহা করিলেন। হরিনারারণের কাছে ইল্লেকে কিরাইবা বিভেগারিলে ভাঁহার একটা শুকুতার দারিভের অবসান হর।

পরবিদ রাজ্মগরে পৌছিরা ইক্সকে সজে কইরা জীবানজ্ব হরিনারারণের বরে চুকিরাই দেবিলেন মুখরী, চিন্নরী ও লখ্নী উাহার বিছালার পালে বসিরা আছে, হরিনারারণ কি বলিভেছেন। আগে চিন্নরীর দৃষ্টি পড়িল ইক্সের উপর। সে উল্লালে চীংকার করিরা বলিল, বাবা, ছোড়দা ধালাস পেরেছেন।

ইল শিভাকে প্রধাম করিয়া তাঁহার কাছে বসিল। হরি নারারণ তাঁহার বাধার শিঠে হাত বুলাইতে লাগিলেন। শীবানন্দের দিকে চাহিরা তিনি বলিলেন, ভারা, ভূবি আবাকে বুজন শীবন দিলে। একটু বহুতবর হালি হাসিরা তিনি আবার বলিলেন, কিছ ভোষার ঝণ আমি বাকী রাধব মা, হলে-আসলে শোব দেবার (চঙ্চা করব।

পিতার কথা শুনিরা চিম্মরী লক্ষ্মীর দিকে অপালে চাহিছা একটু মুচ করা হাসিল। বলিল, চল, আমহা কাঞ্চাবাৰু ও লাদার পাওৱা-লাওৱার ব্যবস্থা করি।

শীবানন্দকে লক্ষ্য করিয়া সে বলিল, কাকাবাৰু, আপনি কল বেৰে লক্ষ্যকৈ সলে নিয়ে বাবেন। আমি লোক পাৰ্চীয়ে কাকীমাকে বৰর দিচ্চি যে দাদাকে নিয়ে আপনি ভিয়েছেন।

জীবানন্দ বলিলেন, আমি স্নান না করে কিছু বাব মা মা। আমি এবন বাড়ী বাই, ওবেলা এলে ভোমার হাতের সরভাষা বাব।

नचीएक महेश हिन्नशी बत हहेएछ वाहित हहेशा शंना।

শীবানন্দ সংক্ষেপে হরিণারারণের নিকট ইজের বোক্দনা-সংক্রান্ত সমূদর কথা বিস্তৃত করিয়া শেষে বলিলেন, বাবা, এবার ক্ষসাহেবের উপদেশমন্ত কান্ধ করবার আরোক্ষম করুন, আর দেরি করবেন না।

হরিমারারণ মূহ হাসিরা বলিলেন, আমি সেক্**বা ভেবে** মুম্বির করেছি। ওবেলা ভোমাকে সব বলব। রাভ **ভে**লে এসেছ, এবার বাড়ী সিরে স্নান-আহ্নিক সেরে মাও সে।

লন্দ্ৰীকে সদে লইবা জীবানন্দ ৰাজী কিরিলেন। পথে লন্দ্ৰী বলিল, আপনার নামে একধানা টেলিগ্রাম এসেছে কাল। মার কাছে রয়েছে, এখনও ধোলা হয় বি।

টেলিগ্রামের কথা শুনিরা শীবাদক একটু ব্যন্ত হইলেন। বলিলেন, তুমি ভ ইংরেশী কিছু কিছু বুবভে পার, বুলে কেব নি কেন ?

লন্ধী বলিল, মা বললেন, ছুই কি বুবতে কি বুবৰি, এবন বাছ, ভোৱ বাবা এলে বুলবেম।

বাখীতে কিবিয়া শীবানন্দ জিনহনীর কাছে বোক্ষরার কিবিভি দিলেন। বলিলেন, আনার কাঁব বেকে বছ বছ এক বোঝা নেনে গেল। কভ উপকার ওদের কাছ থেকে নিজেছি, এবার সামাচ কিছু খণ শোধ করবার প্রবোগ পাওরা গেল। সে কথা বাক। লখী বললে, কাল একথানা টেলিআর এসেছে। পুলে কাউকে দিরে পড়িয়ে নিলে পারতে।

বিশরণী বলিলেন, আৰু ভূমি না কিবলে ভাই করভার। টেলিগ্রামধানা হাতে করে কেন জামিনে আমার মনটা একটু ধারাণ হরে গেল। বরিশাল থেকে এসেছে। কভারটা সেজত কাউকে দিয়ে ধোলাই নি।

বিষয়নী দোভলার নিজের বর হুইভে টেলিপ্রার্থানা আনির বানীর হাতে দিলেন। জীবানল বুলিরা পড়িলেন। উচ্চার মুখের চেহারার পরির্ভন দেখিরা বিষয়নী উদ্বিভাবে বলিলেন, কি থবর আহে ওতে ? কে পাটিরেছে ?

कीवानक ज्ञान दानिश विज्ञातन, अवादन वर्ता, वजहि ।

এরক্ষটা বে হবে আমার বুঝা উচিত ছিল। কিছ বুবলেই বা কি করতে পারভার ?

বিশরণী অছির হইরা বলিলেন, কি ববর আছে ওতে আগে বল মা।

শীবানন্দ-খবর ধূবই চমংকার। ভোষার ছেলে এেপ্তার হয়েছে।

জিনরণী ষাটভে বসিরা পঢ়িলেন। বলিলেন, দেবু প্রেপ্তার হরেছে ? কেন ? কি অপরাধ করেছে সে ?

শীবানক হাসিলেন। বলিলেন, ইস্কই বা এমন কি
অপরাধ করেছিল ? ইন্ন্তেইর তার পাঠিরেছে। এেগ্রারের
ববর দিয়ে লিখেছে পজে বিভারিত জানাছে। টেলিগ্রার
বেকে ভর্ এই সংবাদটুকু জানা গেল বে, দেবু বরিশাল
কন্সারেজ সম্পর্কে গেপ্তার হরেছে। ভোষরা বরিশাল
কনকারেজ সম্পর্কে কোন ববর পাও নি ?

বিষয়নী বলিলেন, লোকে বলাবলি করছিল কাগকে নাকি ববর বেরিয়েছে পুলিস জোর করে কন্ধারেজ ভেলে বিষয়ে, লোককে নারবোর করেছে, প্ররেন ব'লুব্যেকে এপ্তার করেছে।

পুলিস যখন মারবোর করছিল হোটলাট কুলাবের স্তীমুল্ফ ব্রহ্মকুও তথন নাকি মাক মদীতে গাছিছেছিল। লোকে কুলাবের মুগুপাত করছে।

কীবামক—মুওপাত হবে এবার আমার চাঞ্রির। সে বা হোক, ব্যন্ত হরে কোন লাত নেই। এমার্স মি ক্যাম্পের হাত বেকে বাঁচবার ক্ষত আমি পালিনেছিলাম। ছেলেকে বাঁচাবার চেঙা করি মি। একবার মনে হরেছিল ওকে কলকাতা পাঠাই। তাও বলি, অবহা এবন সর্বাত্ত সমান। চিট্টি মা পাওয়া পর্বান্ত অপেকা করতে হবে। ক্যাম্প বব্দ একবার ওকে ব্রেছে কিছুদিন কেল না বাঁটরে ছাড়বে সে সভাবনা বেই।

খানীর কথা শুনিরা বিষয় কাবে বিষয় কাবে বিলেন, বেবুকে হাভাবার চেটা করবে না ? তাঁহার চোবে কল আলিয়াছিল।

কীবাৰক বলিলেন, দেবুর বাপ পুলিসের চাকুরে না হলে চেঙা করা চলত। ভূমি কি ভেবেছ দেবুর অপরাধের শান্তি তথু তার ওপর দিরে বাবে ? সে শান্তির তাগ আমাকে নিতে হবে না ? মন বারাপ করো না। ওঠ, আমার স্থানের যোগাড় করে বাও।

নিমন্ত্ৰী ব্যক্ত হইবা উঠিবা ইংড়াইলেন। বলিলেন, আনি নিজী ভিজিতে আনের বোগাড় করে বিভিছ। ভূমি ভতত্তৰ হাত-মুখ বুরে নাও।

বাবের কাছে সন্ধী ভাহার দাদার ববর ভূমিল। ইজ কিরিয়া আসিবার পর হইতে ভাহার মুখে কেমন একটু বিঠ হাসির আমেজ লাসিরাছিল। খবর ভ্রিরা সে হাসি অভ্তিত হবল।

সন্থার আবে জীবামক হরিনারারবের বরে গিরা বসিলেন। বরে তথন আর কেছ ছিল না। হরিনারারণ আমক দিন পরে বেশ তাল বোধ করিতেছিলেন। তাঁহার মুখের দিকে চাহিরা জীবামক বলিলেন, দাদা, আপনাকে আজ আমকটা তাল দেখাছে। আনার আশা হচ্ছে এ বাকাটা সামলে ত্রিবেন।

ধরিনারায়ণ হাসিরা বলিলেন, আব্দ বনটা ভাল আছে ভাই বাইরে থেকে দেখে ভোনার ঐ রক্ষ বনে হচ্ছে। একটু ইটিবার চেটা করলে নিজেই বুবতে পারি কভবানি মুর্বল চরে পভেতি।

একটু থামিয়া বলিলেম, এ সব কথা যাক। একটা কাজের কথা বলছি শোন।

भीवानम-कि कारकत कथा वनुन।

হরিনারারণ—ইজের বিষের কথা দ্বির করেছি একরকর। এখন ভোষার মত পেলে কথাটা পাকা হবে বার।

জীবানন্দ একটু বিশ্বিত ভাবে বলিলেন—ছ'দিনের মধ্যে হির হয়ে পেল ? যেয়ে কোথাকার ?

হরিমারাংণ একটু হাসিলেম। বলিলেম, ছ'দিমের ক্থা কি বলছ ? এক দঙের মধ্যে ছির হংগছে। তবে কামো কি বেরের বাপ এখনও এ বিষয়ে কিছু কামেম মা।

শীবানন্দের বিশ্বয় বাছিল। ভিনি বলিলেন—আপনার কথা আমি কিছু বুবভে পারহি নে, দাদা।

ছরিনারারণ ভিছুক্ষণ চোথ বুজিরা চুপ করিরা রহিলেন। ভারণর জীবানন্দের মুখের পানে ছির দৃষ্টিভে চাহিরা বলিলেন, ভোষার বলি কোন আপত্তি না বাকে সম্মী, নাকে আমি নিজে চাই। বৌষার সলে পরামর্শ করে বছ জানিও।

কীবানক আসম হাতিরা উঠিরা বাভাইলেন। তাহার চোবে মুবে মুগণং বিশ্বর ও আনকা। তিনি বলিলেন—দাদা, লল্পী অনেক তপভা করে এসেছিল, তাই আপনার বরে ভার ভাক পভেছে।

হরিনারারণ মৃত্পরে বলিলেন—ভোষার একথা টিক নর জীব। লগ্নী আমার সংসারের সঙ্গে এমন ভাবে বিশে সিহেছিল যে, ভার কথা আমি ভূলেই ছিলান। নিজের মন হির ক্রবার পরে বুবিতে পারছি সে আমার অভ্যরে কভবানি হান অধিকার করে রেখেছে।

একটু গাৰিষা হাসিয়া বলিলেন—ভোষাকে-কিছু সানাবার আগে আবাদের হ'জনের বব্যে কথা ছিল হবে সিবেছে। অবস্ত চিছু মধ্যছ হিল। ঘটকালির পাওনা ভার প্রাপ্য। বৌষাকে স্থানিয়ে রেখো। ভীবাৰক বলিলেন—আমি মনে একটা ভার দিরে এগে-ছিলাম। এবন লে ভার হাকা হরে গিরেছে।

हिमादाय रनिम्म-क्रिजर **कार रन क**।

জীবামন্দ টেলিপ্রামের কবা জানাইলেন। শুনিরা হরিনারারণ কিছুক্দণ চূপ করিবা রহিলেন। ভারপর বলিলেন—টিক হরেছে। দেবু ও ইক্র ছই বনু। ইক্র প্রেপ্তার হরেছিল দেবু কি করে বাইরে থাকবে? এ নিরে বেশী মন থারাপ করো না। আমার পরামর্ল শোন। বাড়ী যাও। বৌনার সদে পরামর্শ করে বশু শীল্ল সশুব বিরের দিন হির কর। বিরেটা হয়ে যাক। ভারপর ভূমি বরিশাল দিরে দেবুকে হাড়ানো যার কি না চেটা করে দেব। বিরেটা হরে পেলে আমরা হ'জনে একটা বড় লার থেকে মুক্ত হই।

শীবানন্দ একটু চিন্তা করিরা বলিলেন—আপনি ভাল পরাবর্ণ দিয়েছেন। আনি বাঙী ঘাই।

ভিন ধিন পরে হরিমারারণের গৃহে একজন অপ্রভ্যাশিত অভিবি আসিরা উপস্থিত হইল। সে সভীন।

সভীদের বেশভ্ষার পরিবর্তন হইনাছে। সে এবন পেরুরাবারী সন্ত্রাসী। ভাহাকে পাইরা ইক্র অভ্যন্ত আনন্দিত হইল। সভীনকে বলিল—সভীনদা, কিছুদিন আসে সারাক্ষণ কেবল আপনার কথা ভাবহিলাম। প্রকানা আনা হিল না নইলে চিটি লিবভাম।

সভীনের আসিবার খবর পাইরা জীবানন্দ আসিলেন, এসি-টার্ট হেডনাটার বর্তীনবাবৃত হাজির হুইলেন। বরিশালের খবর সে কিছু জানে কি না জীবানন্দ সে বিষয়ে প্রশ্ন করি-লেন।

সভীন বলিল-ক্ৰকাৱেল ভেঙে বাবার প্রদিন আমি विविधाल शिर्विक्रित्म । चवत भर्बक करवार क्या चर्म-वास्त निवाद किया क्रमांग प्रमिन क्रमांदिका अवस् विम त्वत्, जाद वसू मट्टल वरन अक्षे रहरन अवर नाद करहकी **(क्रांक अर्थांत क्रांत्र। श्रीमंत्र क्रांत्रद (क्रांत्रिवरक्रां** न्यांक (कर्ष स्वर ७ जार्यत बरत निरंद बाद, किंदू बातवत करत-ছিল। একটা নতন অভিজ্ঞতা হ'ল বরিশালে থাকতে থাকতে। चामता करा रमहि अमन जनत अक्षे (वर्रम ७ अक्षे स्वतं त्नर्वास्य अन् । अन्नास (क्लिकेंद्र नाम अकृत, तन त्वतूद रेखू । আমার পরিচয় পেরে অতুল বললে, এট আমার নামাভো (बाम, मान प्रतमा । कमकारतरकत हरे पिरमत वाबरवनरमरे ७ (वान निरविका । अरमत वाकी फूर्टकमारमत बाकवाकी त्वरक भारकाम बाबाद दालाद क्ष्मद्य । निरमद कार्य क्रियम क बाज्यक जनवात जारव श्रीमानव मात्र (वरक दरवाद । नमाम बाक्त माथा माछि. मात्रमात्र ममत (म टिक्टिस मान वरण-जाबाद (२७ (बार कि वा कुनारन, जाबि कि बारहद लिरे एटल-किन्नश्चमरक कामांव बर्था रकरन मिरव मांवरह.

মূব পুৰছে সে পছে গেল, কাদার ও রক্তে সারা গা, মূব ভেলে বাচ্ছে অমুও বেকে বেকে সে চিংকার করছে—বলে যাভরস্ । এই দ্রু দেবে হুরুষা সারাদিন না বেরে কেঁলেছে।

একট চুপ করিব। থাকিব। সভীন আবার স্কুকরিল
— স্বনার মুধে শুনলান, সভাব চিত্তরঞ্নের বাবা ঘর্থন সারা
গাধে, মাথার ব্যাভেক বাঁথা ছেলেকে দেখিরে বললেন, ছেলে
মবে গেলেও ভিনি কাঁদবেন না উপস্থিত মেরেরা ভবন মুধ্
নামিষে কাঁদতে লাগলেন। কেউ কেউ দীর্থনিখাল কেলে
বললেন, ভগবান, ভূমি কি নেই ? এভটুকু ছেলের ওপর এই
অভ্যাচার ভূমি কি চোধে দেবছ না ?

অতুলের কথা তাম আমি থেছেটর দিকে ভাকালাম।
তার চোবে মুবে কেমন একটা হতাশার হাগ। অতুল বললে,
আমার বাবা মৃত্যু-শ্যার, ডাক্তার দেখাবার হুল তাকে মিরে
শহরে এগেছি। ডাক্তারেরা বলেন, বে-কোন সমরে শেষ হয়ে
যেতে পারে। তাকে কেলে আমি কন্কারেলে আগতে
পারি নি। স্থানা গিরে বরল, চল ভোমার বলেশ-বাছব
সমিতির সভাদের সলে আলাশ করে আসি। ওর মুব চোবের
ভাব দেখে বাবার কাছে বেকে উঠে আগতে হ'ল।

সুরমার দিকে কিরে অভূল বললে, কি রে, কিছু বলবি ? অুরমা মাধা ঝাঁকিয়ে বললে, হাাঁ, আমার কিছু বলবার আছে।

কিছুক্ত কেটে গেল। বুবলান, সুর্মা কিছু বলতে চাইছে, কিছু বলতে পারছে না: ভারণর হঠাং সে কোরে কোরে বললে, চোধের ওপর এই অভ্যারার দেবেও কি আপনায়া সবই চুণ করে বাক্বেন? এত লোক, এত বছ বছ নেভা, সবাই কি পড়ে পড়ে মার বাবার ক্ত এসেহিলেন? এরই ক্তে কি হাকার হাজার লোক যোগ দিয়েছিল সভার। ক্ত পুলিদ কত ওবা ছিল এমার্গনের ভাবে?

আভটুকু মেয়ের মুখে এই কথা শুনে আমি চমকে উঠিলাম। এমন কথা সে ভাবতে পায়ল কি করে ? ভাবতে শিবল কার কাছে ?

আবার কিছুক্প নীয়ৰ বাকিয়া সভীন বলিল, এই মেরেটির কথা করেজ দিন ববে আমার নাধার ঘুরছিল। ছুলে প্রভাৱ দমর একটা ইংরেজী কবিভা পড়েছিলেন, A stormy petral। ক্ষেক দিন ববে ননে ছজ্জিল আমি যেন ইনি পেটেলের পাবার বাপটানি শুমছি মাধার ওপর।

সকলে চূপ করিরা সভীষের কবা শুনিভেছিল। বভীমবাবু বলিলেন, সুরুষা বা বলেছিল সেই বরণের চিন্তা অভ লোকের মনেও জেগছে। আমি করেকবানা কাগছ দেখেছি।
সন্মা লিখেছে, "আমাণের সামনে এই প্রার উঠেছে আজ গরু
ও ভেড়ার পালের মন্ড চূপ করে মার বাওরা ভাল বা আজবাদার কত লাটির বছলে লাটি চালানো ভাল।" অভ একবানা দেবলার লিখেছে, "মা রক্ত চাম। হক্ত বিমা সা লভোষলাভ করেল মা। যে নির্লজ্ঞের ফল নির্কিবাদে নার থার, প্রহাভ হইবা বাহারা করজোড়ে প্রহারকারীর ভাছে প্রহার ভিন্না করে করে লা।" একথানা কাগক আবার নিথেছে, "বাঙালী হাড়া আর কোন ভাতি হইলে বিঃ এখার্স মের হিরমুভ ধূলার সূচাইভেছে দেখিতে পাইভার। আবাদের আশহা হইতেছে অন্তের বিরুদ্ধে অর বাবহার করা হইবে এবং নিরীহু বালকদের রক্তপাভের প্রারভিত্ত করা হইবে ইংরেজের রক্তপাভ করিরা। এই রক্তপাতের পাশের দায়িত্ব আবাদের আভাচারীদের।"

ভীবানক কি চিন্তা করিতেছিলেন, তাঁহার শুরুগল কুঞ্চিত হুইরাছিল। সন্ধোরে তিনি মন হুইতে ছুল্ডিরা বাছিরা কেলিলেন, বলিলেন, লকণ তাল নর—সতীন, কি বলো? ইতিরান মিররের মত ঠাতা মেলাজের কাগল পর্যন্ত এই মর্ক্রে লিখেছে দেশলান—ক্ষতামদম্ভ সরকারের পক্ষে ক্ষমতার হুমননীতি চালানো ধুবই সহজ, কিছু ভার ফল কি ?- ফল ছুল্লে গুপ্ত সমিতিসনুহের প্রতিঠা।

ছরিমারারণ বলিলেন, বোদাই, যাজ্রাক এবং পঞ্চাবেও নাকি বরিশালের ব্যাপার নিবে উভেক্ষার পটি হবেছে। কালকার হিতবাদীতে বেধলাম বুব গরম গরম কথা লিখেছে, আর ইতিয়ান মিরর বা বলেছে সেই রক্ষ আশহা প্রকাশ করেছে।

হরিনায়ায়পের ব্যের চৌকাঠের বাহিরে একট বালক আনেককণ ইড়াইরাছিল। সকলে আলোচনার ব্যাপৃত থাকার কেহু ভাছাকে দেখিতে পার নাই। হঠাং ভাহার দিকে ইল্লের চোব পড়িল। ইল্লকে চাহিতে দেখিরা বালক হাত নাড়িরা ভাহাকে বাহিরে আসিতে ইলিত করিল। ইল্ল বাহিরে বাইতে সে বলিল, ইল্লেলা, না ভাক্তেন সন্ত্রাসী-বারকে।

সে সভীনের বিকে অসুনিনির্কেশ করিল। ভাহার মুখে "সহ্যাসীবাবু" কথা ভূমিরা ইল্লের মুখে হাসি দেখা বিল। বালকট দেখানন্দের হর বহরের আতা উনানন্দ, সকলে আনন্দ বলিরা ভাকে। ইল্ল খরের মধ্যে ফিরিয়া সভীনকে বলিল, দাদা, ও-বাভীতে আপনার ভাক পড়েছে।

সভীন উঠিল। বাটার বভীনবাবুও উঠিলেম। ইজ আনলকে বলিল, ভূমি বাজী গিরে বল উমি বাজেম। সে চলিয়া গেল।

ভিন কন বাড়ী হইতে বাহির হইরা রাভার আসিরা ইড়াইল। বতীনবাবু পকেট হইতে একবানা বাতা বাহির করিয়া ইক্রকে দিরা বলিলেন, এই বাতার কথা তোবাকে বলেছিলার। করেকরানা কাগক বেকে সফলন আহে এতে। এওলোতে ভাতীর আন্দোলনের এক বিক্কার ফাট নির্দেশ করা হরেতে। পড়ে বেবে আমাকে কেরত বিও। বতীনবাবু তথনকার বত বিদার চাহিলেন। সতীন বলিল, আমি আজ রাজে চলে বাব। একটা কথা আপনাকে বলহি। আপনার ঢাকার বাবার ব্যবহা হরেছে। আপনাকে তৈরি হরে থাকতে হবে। বরিশাল, করিদপুর, নাদারীপুরে দল গতে উঠছে। ভিত্নার সদে দেখা হরেছিল। ভিনি রংপুর, পাবনা, রাজনাহী ও উত্তরক্তর বিভিন্ন ভারগার ঘ্রছেন। এর পর ক্ষিলা, নৈমনসিং প্রভৃতি জারগার বাবেন। সবক্তিয় ভার এখন ভিত্নার হাতে, আমি স্তন্ন পথের সভাদে বেরিবেহি।

ইল ষভীনবাৰুর খাভাখানি খুলিরাছিল দেখিবার জভ কিছ ভাহার ছই কাম একাঞা হইরা ভনিভেছিল সভীনের কথাগুলি। মাভার মৃত্যু ও পিভার জন্মধের জভ ভাহার মনের প্রাভন বে সব চিছা চাপা পড়িরাছিল আবার ভাহারা মাধা বাড়া দিরা উঠিল। নিজের মনকে সে প্রশ্ন ভবিল, আমিও কি সব ছেডে দিরে, দেশসেবার ব্রভ নিরে সভীনদার জন্মবন্ধ করতে পারি নে গ

कीवामान्त्रत वाकी बाहेवात भाव हेळ मिल्कत बामत কথা সভীনকে বলিতে লাগিল। সভীন চপ করিবা ভাহার কথা ভূমিল। ইক্র ভামিত মা বে, ভাহার অনুপদ্বিভিতে হরিনারাহণ সভীনের কাছে তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র নিক্রমেশ হইবার কলে তাঁহার স্ত্রীর স্বাস্থ্যতদ ও মৃত্যু, ইল্লের এবনকার মনোভাব, ভাঁহার নিজের শারীরিক অবস্থা ইভ্যাদির क्या कामारेबा विनवाहित्नम, रेख कि वृदिमाम ७ अन्वरान ছেলে। দেশের বর্ডবান অবস্থার সঞ্জিরভাবে দেশের কর কিছু করতে পারছে না ভেবে ভার মনে একটা অভিরভা এলেছে। আমি যে ধর প্রতি এভবানি লক্ষ্য রেবেছি ভা লে ভানে না। জীবানন্দের মেরের সঙ্গে আমি ওর বিবাতের সম্বদ্ধ দ্বির করেছি। ইল এতে অমত করবে না মনে হয়। ভোষাকে সে খুব ভঞ্চি करत । आयात विरमय अक्टताय, जकन अवश विरवहमा करत এমন কোন পথ ওকে দেবিয়ে দাও বে. ওর মনে কোন কোভ मा बारक, चारा चारात कारब (बरक जरत वारात करा) मा कार्य ।

সভীন হরিনারারণকে বলিরাছিল, সে বধাসাব্য চেটা করিবে।

ইক্রের ক্থা শেষ হইবার আগে ভাহারা দীবানন্দের বাড়ী পৌছিল। আনন্দ বাহিরে আলিরা ভাহানিগতে অভ্যথনা করিল। ইক্র বলিল, সভীনলাকে কাড়ীবার কাছে নিরে বাঙ, আমি বৈঠকধানার অপেনা করছি।

সে পক্টে হইতে যতীমবাৰুর খাভাখাদা বাহির ভরিষা বাহিরের বরে বসিল।

সভীন ভিভৱে গিয়া জিনম্বনীকে প্রণাম করিছা বসিল। বলিল, লজীবিদিকে বেবছি না কাকীয়া, লে কোবায় ? ব্রিমরনী—লে পালের বাড়ীতে গিরেছে একটু কাজে, এবনি আসবে।

श्चिमक्ष्मी क्षवरम् । क्षतामान्यत चनत कामिएक हाकितम । ভিজ্ঞাসা ভরিলেন, ভাতাকে কত দিন জেলে থাকিতে হইবে, ভাৱার ভাত পা বা মাধা ভালিয়াছে কিমা। দেবানন্দের প্রসদ ভলিতে পিয়া ভাতার চোবে কল আসিল, আঁচল দিয়া মুছিয়া কেলিলেন। ভার পর ইলের বিচার ও করিমানার কবা ত্ত্ব। শেষে তরিমারারণ কর্ত্তক ট্রখাপিত লক্ষ্মীর সঙ্গে ইল্লের विवाद-श्रेषाद्यत श्रेमक प्रमिश्च विज्ञान. उपन प्रदेश विवाद তথ্য লক্ষীর বন্ধ করের ভপভার ফল। অনেকে মত ছেলেকে ভাষাই ত্ৰপে পাওয়াও ভাষাত্ৰ কম ভাগোত্ৰ কথা নহ। কিছ अक जानत्मत मरवा अ मरनत जत रक्त रवन वृहर् मा वाना। त्वव चार रेख अकनत्व चरमनैत कारक स्वरंबिन। रेख राजन (परक पूरत क्षत । (प्रवृद्ध (क्षत हर्द कामा क्या । करवद कथा और ता जातक किम बात रेख वक देशमा। त्मचेक---ৰেল থেকে কিরে ওর ঐ ভাব আরও বেভেছে। লক্ষীর थनत (कामराजा (बाक अब होन चारक, नची अस्वत परव ৰাচ্ছে, আমৱা বিয়ের বন্দোবন্ত করছি, কিন্ত ছেলের মূবে হাসি মেই। কণ্ডার কাছে শুমেছি দেশে মানা রক্ষ সমিতি গড়ে উঠছে। এর পর বাভী বর ছেভে কোন দলে পিরে ইন্স বদি ৰাম লেখাৰ বেৰেটা আমাৰ ভেগে বাবে। ভূমি ওকে একট ভাল করে বোঝাও বাবা, যাতে আমরা নিশ্চিত হতে পারি।...

ভবিকে ইক্স বসিরা খাভা খুঁলিরা পঢ়িতেছিল। প্রথবে করেক লাইন বছব্য:—"বদেশী ও বরকট আন্দোলন জাতীর আন্দোলনে রপাভরিত হইরাছে। কিন্ত এই আন্দোলনের মধ্যে প্রথবে বে প্রাণের স্পর্ণ ছিল ভাহা যেন হর্মল হইরা পঢ়িয়াছে। কিন্তের ক্ষণ্ড এমন হইল ভাহা চিন্তা করিতে গিরা করেকথানি ভাতীরতাবাদী কাগকের উক্তি আমার দৃষ্টি আকর্ষণ করিল। এই উক্তিওলি হইতে আন্দোলনের একটা বড় ক্ষষ্টি চোধে পঢ়িল। এই ক্রান্ট কি সংশোধন করা যার না ?"

এই বস্তব্যের পরে বিভিন্ন কাগক হইতে কতকগুলি অংশ উদ্ধুত করা হইরাছে। ইকা পড়িতে লাগিল—

১। "আমাদের সাবদার গভি পরিবর্তন করিবার সময় আসিরাছে এবার। দেশের জনসাবারণের সঙ্গে শিকিত শেষীর বে সংবোগ বিচ্ছিত্র হুইরাছে কি উপারে সেই সংবোগ আবার ছাপন করা বার ভাহা ভাবিরা দেখিতে হুইবে। আবার আনাধিগতে এবের প্রথম পরে বাটে বুরিরা বেভাইতে হুইবে দেশের অভবের সলে পরিচর ছাপন করিবার উদ্দেশ্তে। একদিন আনরা ভ্রমলোকেরা শৈবাল ও বাসে আচ্ছর পুরুরিবীর বারে পর্বকৃতির আঞ্রী দেশের অভরেক মুণাভরে পরিভ্যাগ ভরিবা ইংরেক্তের পন্টাতে ছুইরাছিলার। আন্ধ পিছনে কিরিবার দিব আসিরাছে। আনাদের ভরণের হল প্রাবে প্রাবে

আৰকা প্ৰতিষ্ঠিত কৰিবা শক্তির চৰ্চা কৰিকেছে। প্ৰাৰের ইতর সাধারণের সভে ভাষাকের ব্যক্তিত কৰিছে ভইবে।

এই বনির্বভা ছাপনের কর পর্ণকৃতিরে পিরা ভাহাবিপকে
বক্তভা করিতে ক্টবে না। স্নেহ ও সক্ষরভার বারা এই
বনির্বভা ছাপন করিতে ক্টবে। প্রভি র্বক্তে পাঁচ-ছর্চী
করিবা নিয়শ্রেমীর পরিবারের পেবার ভার লইতে ক্টবে,
ভাহাদের সঙ্গে স্নেহের বছনে আবদ্ধ ক্টতে ক্টবে।
বংসরাবিক কাল এই সাধনার অগ্রসর ক্টতে পারিলে শিক্ষিত
ভল্পেনীর সহিত নিয়শ্রেমীগুলির সংযোগ আবার ছাপিত
ক্টবে।" (নবশক্তি)

২। বাংলার আজ স্বাজ-বিপ্লব আরম্ভ হইরাছে।
স্বাজ্যে পদল্লিত, উপেন্দিত শ্রেণীরা উচ্চশ্রেণীর অত্যাচার
ও নিপীক্ষমের বিরুদ্ধে বাধং ভূলিরাছে। আমরা বছ শতাবী
বরিঙা ইহাদিগকে পদল্লিত করিরাছি। বে বিদেশী শক্তি
অত্যাচারে অত্যাচারে আ্বাদের জীবন অতিঠ করিরাছে,
আন্ধ তাহার বিরুদ্ধে আমরা বুর বোষণা করিরাছি। বুরু
বোষণা করিবার পর পশ্চাতে চাহিরা দেবিতেছি সংখ্যার
আমরা মৃষ্টিমের। আমরা মৃষ্টিমের শিক্ষিত লোক প্রবল শক্তিশালী বিদেশী বণিক-শক্তির বিরুদ্ধে বুরু বোষণা করিরা দেবিতে পাইতেছি আ্বাদের পিছনে জনসাবারণের স্বর্ধন
নাই। আ্বাদের যুরু চালাইবার রসদ নাই, প্ররোজনীর শক্তি
নাই।" (সঞ্জীবনী)

একবার পভা শেষ করিরা ইক্র বিভীরবার উদ্ধুত অংশগুলি
পড়িতে লাগিল। ভাহার মনে হইল এগুলির মধ্যে মৃদ্যবান
ইলিভ আছে। হরত ভাহার ব্যক্তিগত সমস্যা সমাবানে উদ্ধৃতিগুলি হইতে কিছু সাহাব্য পাওবা বাইতে পারে। সে নিবিপ্ত মন্দে পড়িতেছে হঠাং লল্পী ভিতর-বাড়ীতে বাইবার উদ্বৈধ্যে খরের মধ্যে চুকিল এবং ইক্রকে দেবিরা বেম একটু বিত্রতভাবে বমকিরা দাভাইল। ইক্র বে বরে আছে লে ভানিভ না।

ইন্দ্ৰ থাতা হইছে মুখ তুলিয়া লক্ষীকে দেখিল, ভাছার বিত্রত তাব লক্ষ্য করিল। ভাহার মুখে বোৰ হর ভাহার অজ্ঞাতসারে মুছ কৌতুকহাত স্টীরা উটিল। সে বলিল— মতীম দা ভেতরে ফাতীমার সদে কৰা বলছেন, তাঁর সদে দেখা ক'র।

লখী ভিতরে গিরা দেখিল সভীন ভাহার বাবের লক্ষেণা বলিভেছে। সে কাছে গিরা নমকার করিয়া ভাহার সমূবে বলিল। সভীন বলিল, ভূমি এনেছ দিদি, ভোষাদের ক্ষাই এভকণ হছিল। একটা কথা বলি ভোষাকে ভনে রাখ। বেরুর করু নম বারাণ করো না ভোমরা। ভোমরা বে বুলে করেছ লে বুলে বাংলার বরে বরে এ রক্ষ ব্যাণার ঘটবে। মনকে শক্ত করে নিজের কাক করে বেভে হবে। আমি বরু সুধী হয়েছি দিদি বে ইজাদের ভালা সংসার জোভা কেবার

ক্ষ ভোষার ভাক পড়েছে। ইল্লের বত ছেলে হর বা। ওকে আবি বেবুর মতই ভালবালি। ভোষরা হ'ক্ষ হ'ক্ষকে পেরে সুধী হও ভগবামের ফাছে এই প্রার্থনা করি।

विमयनी चाँकरण कार्य वृष्टियां छेडियां गाँकांवरणमः। विज्ञानम्, वार्या, अकट्टे वजः। अकट्टे किन्द्र ग्रूटचे विद्य त्यस्य द्वरण द्वरवः।

কন্মীকে বলিলেম, ছুখামা আসম পেতে জল গড়িবে দে দল্লী। ইস্ত বাইরে বঙ্গে আছে, ওকে ভেকে মিরে আর।

ত্রিময়নী উঠিয়া ছইখানি পাধরের রেকাবীতে নানা রকর মিট্ট সাজাইয়া আনিয়া আসনের সন্মধে রাখিলেন। সন্মী কল গড়াইরা দিরা ইাড়াইরা আছে দেখিরা বলিলেন, বা ইস্তাকে ভেকে আন। ওয় বা নেই, নিজে থেকে বত্ন-আভি করতে কবে, লক্ষা করবার অবসর নেই রে।

লক্ষী বরে চুকিয়া গুনিল, ইল ও আনন্দের মধ্যে দিবির বিবাহের নিবল্প-রক্ষা-সম্পর্কিত আলাপ হইতেছে। তাহার মুখ একটু লাল হইয়া উটিল। নারের উপদেশ সরণ করিয়া লক্ষা ধনন করিয়া লে বলিল, বা ভাক্তেন তেতরে।

ইল উটারা ইাড়াইল। একটু হাসিরা আমদকে বলিল, এন আমদ, এখন থেকে নিবল্প গাওরা পুরু করা বাক। (ক্রমণঃ)

### (लाकात्राधना ना (लाकवक्षना ?

দাদা ধম বিধকারী অম্বাদক-জীবীরেজনার গুরু

বিশ্বিক্ষী আলেকজাণ্ডারের সমরে ভাষোজিনিস নামে এক বিবাসী ছিলেম। এই বিবাসীর মম মহুয়জান্তির উপর কথকিং ভিক্ত হইয়া সিয়াছিল। লোকে তাঁহাকে ভিক্তবিরক্ত বৈরাসী মনে করিত। তাঁহার সহছে এমন ভিন্ট কিংবদভী প্রচলিত আছে, বাহা দেশের বর্তমান অবস্থার আমাদের পক্ষে বিশেষ শিক্ষীর বিষয় হইবে।

একৰা দিন-ছুপুৰে লোকে দেখিল ভাৰোজিনিস লঠন হাভে পৰ চলিভেছেন। লোকে ভ ভাঁহাকে পাগল বলিয়া ধরিয়া লইয়াছিল, কিছ ভাঁহার পাগলামি যে এভদুর গড়াইয়াছে ভাহা কেছ ভাবে নাই। লোকে জিজাগা করিল, "এই দিন-ছুপুরে লঠন মিয়ে কেম ? দিনের বেলা লঠন নিয়ে আলো বুঁজে বেড়াছেন বুবি ?" ভারোজিনিস ধুব শাভ ভাবে কহিলেন, "আমি ইবামদার লোক বুঁজে বেড়াছি।"

ভাষোদ্দিন সহকে ইয়ানদার লোক বুঁ কিয়া পাইতেছিলেন না । দিনের আলো বেণানে পৌছার সেণানে বলি
ইয়ানদার লোকের দেখা বিলিভ তবে তাঁছাকে লঠন হাতে
লইতে হইত না । অপ্রনিদ্ধ ছানে ইয়ানদার লোকের বোঁকে
করিবেন বলিরা নিক্ষ হাতে তিনি লঠন লইরাছিলেন । তাঁছার
মনের কথা ছিল, কে বলিতে পারে বেচারা ইয়ানদার লোক
কোথার স্কাইরা আছে ? কোন্ কোণে ? কোন্ ভহার
অভ্যন্তরে ? কোন্ অব্লার খ্রে ? ভাই ভ লঠন লইরা
ভিনি বাহির হইরাছেন।

#### ইৰানদানীর ইভাতার

আমানের প্রধান বল্লী ক্বাছরলালকীও কংপ্রেলে ইবানবার লোকের বোঁকে ক্লুক করিবাছেন। তিনি বলিবাছেন, "এবার উক্লেট ভাছাকেরই কেওবা ছইবে বাহারা ইবানবার।" কল হইরাছে এই বে, নিজ নিজ ইবানদারী সপ্রবাণ করার পারা
লাগিয়া গিরাছে। প্রভাবের বাধার একটি চিন্তা, নিজেকে
অপর সকলের অপেকা অধিক ইবানদার প্রভিপর করিছে
হইবে। কেবল ইবানদার হওরাই বর্ধেট্ট নর। আরও ছুইটি
জিনিষের আবশুকতা হিল। একটি এই বে, লোকে উথাকে
ইবানদার বলিয়া জানে, অর্থাৎ সে বাভগণ্য ইবানদার লোক।
আর হিতীর কথা এই বে, ইবানদারী সপ্রবাণ করার সময়
আনিলে সে বেন নিজকে অবোগ্য প্রয়াণিত মা করে।

এ ব্যাপারে সকলের চেরে বড় প্রশ্ন হইডেছে এই বে এমন ইবানদার লোক ছবিয়ার কত জন নিলিবে বাহার। একথা বলিরা ও প্রতিপন্ন করিয়া বেড়াইবে বে, আনার চেরে অবিফ ইবানদার লোক আর কেই নাই। বে নিজেকে নিজেই ইবানদার বলে, লোকে ভাহাকে সন্দেহ করিয়া থাকে। বছত: বে ব্যক্তি ইবানদার সে নিজ ইবানদারীর চোল পিটার না। সে ইবানদার হয়, আর লোকেও ভাহাকে ইবানদার বলিয়া নানে। কেই বদি ভাহাকে ইবানদার না-ই বলে ভাহাতে ভাহার জকেপ নাই। মুক্তিভর্ক ও দলিল বভাবেজের সাহাব্যে আপন ইবানদারী প্রবাণ করিতে সে চার না।

ज्यवटक (वर्षेश्राम नावाच कतात रेमामनाती

ভিত্ত এবার ভ ইয়ানগারীকে টকেটের সভ<sup>®</sup> করা হইগাল।
অভএব টকেট বাহাদের চাই নিজ নিজ উর্দ্ধিত ভাহাদের
ইয়ানগারীর নিগ্র্পন লাগাইতে হইরাছে। ইয়ানগারীর স্ল্য ভাহাদের কাছে বভটা বাকুক না বাকুক, টকেটের স্ল্য ছিল ভভোবিক। ভাহারা ছাড়া পৃথিবীতে অপর কোন ইয়ানগার লোক নাই, ইহা ভ গ্রাসরি বলিবার উপার ছিল না। আর ভাহাদেরই স্বান বা ভাহাদের অপেকা অবিক বিশাসভাকন লোক নিক নিক্ষন লাগাইবা লাবনে আলিবা না বাঁড়ার সে
ব্যবহা করাও ভারাবের পক্তে লভব হিল না। ভাই অভ
কলা-কৌশলের আপ্রর ভারাবের লইতে হইল। নিক
নিজ ইবানদারী সপ্রমাণ করা অপেকা অভের বেইবানি প্রমাণ
করার পরোক উপার ভারারা অবলমন করিল। নিজের তিলপরিমাণ ওপকে বাড়াইবা বাড়াইবা পর্যন্তপ্রমাণ ও অপরের
ত্বভবং লারাভ দোষকে বাড়াইবা বাড়াইবা মুখলাকার
করার কলার পারদ্শিতা লাতে ভাহারা লাগিরা পেল।
সক্ষনের লক্ষণ বর্ণনা করিতে গিরা বলা হইরাহে যে, তাঁহারা
নিজেনের তিলপ্রমাণ গুণকে পর্বভারার করিরা দেখেন।
কিত ইবানদারীর বর্তমান প্রভিবোগিতার আত্মানা আর
পরনিক্ষাই শালীনভার ও নৈতিক্তার মুলবন্ধ বলিরা পণ্য
চইরাতে।

#### ষধাৰ শ্ৰেঠছের বীভি

ষামী বিবেকানন্দের একট আখ্যাহিকা প্রসিদ্ধ। শুমা বার বে তিনি এক সমরে কোন স্থান ঘাইরা বঢ়ি দিরা বোর্ডে একট রেখা টানেন ও ছাত্রদের বলেন, দেখ, এই রেখাট না মুছিরা, নিশ্চিক্ত না করিরা, না কাটরা, ছোট করিরা দেখাও। বালক-দের কাছ হইতে উত্তর আসিল—সাব্যানভার সহিত প্রদন্ত উত্তর। বেশ থানিক পরে একট ছেলে নীর্বে আসিরা ঐ রেখার নীচে উহা অপেকা বড় একট রেখা টানিরা দিল। ব্যস্, প্রথম রেখাট ছোট হইরা পেল। উমেদারদের প্রভিযোগিতার যদি এই দৃষ্ঠ দেখা ঘাইত ভবে ক্ষরাহরলালকীর পক্ষে ভারতকে নক্ষমকান্দ্রে পরিশ্ব করা অসন্তব হইত না।

किश्व दरेशार अरकनारवरे छेवात निभवीछ। हैरक्रिक **উ**यमात्रभव मर्थम महेबा हेबाममात्रीत जवारम मरह. दिहेबामित বোঁৰে লাগিবা গেল আৱ দেবিভে পাইল বে, ভাতাৱা ছাড়া দেশের আর সকলেই বেইবাম। বতগুলি রাজনৈতিক দল আছে ভাচারাও সকলে আপন আপন সহানী আলো লইবা অপর সব ছলের বিশ্বাস্থাতকভার উপর রশ্বিণাত করিভে আরম্ভ করিল। ক্ষরপথের কাছে সকলে আৰু একে অভের বেইবানি ও দোবোলাটনে নপগুল। যে দুক্ত ভাতারা আনা-দের দেবাইতে চাতে ভাহা কি নরক হইতে অভিন ? হর্বো-बनक बना हरेन, 'अक्सन नक्सन लाक चेंक्स चाम।' अवादन धवात्म प्रतिका प्रतिका आध हरेका चिमि कितिका चानितम । बिकाना करा हरेन, 'काम नकम बिनला ?' इर्दाश्य रनि-লেম, 'ৰাকলে ভো পাব।' বৰ্মৱাজকে বলিলেম, 'ভবে ভূমিই ৰু জে আৰু ?' বৰ্মৱাজ ছুৰ্বোৰৰ হুইভেই সজন ৰু জিভে আরম্ভ कडिलम। कहिंतम, 'लाक बामका अक इर्दायम वर्त, এ প্ৰোৰন।' ইহাই সজনের দৃষ্টির বুল কথা। কিন্তু ভনভে भारे बाचनी किए हैदा कान । मा, क्रिक । च-बाबरेन किक्छा है चावारम्य चानिर्वाष्ट्रयम् रहेक ।

#### গণভাষেত্র বিপদ

যা এক দিন বলিলেন, বে বোরা চাহিবে না লে বোরা পাইবে। আর কি ? না-চাওবার 'মেনিকেটো' বাহির হইছে লাগিল। প্রত্যেকে চেঁচাইরা বলিতে লাগিল, 'দেশ, আমি কিন্তু যোরা চাছি না।' ইহার অনুক্ত বে অংশ প্রত্যেকেরই মনে হিল ভাহা এই—'এ কারণেই ত মোরা আমার প্রাণা।' কেহ বা অনুক্ত যরে মনের কথাটা ব্যক্তই করিয়া কেলিল। কথা হইভেছে গণভারের ও সক্ষমভার মিলম কি আদে। সক্তব নতে ? ভাচা যদি সক্ষয় না চর ত গণভারের মলন নাই।

#### সর্বোদয়-নিঠার সাধনা

आधारमत (माम क्रक्कश्रम प्रदेशीम क नीर्राहीम क्रिय यमान कानादेश हरता। देश शकाशि नावम नरहा काराश युनि कालाव मा, समाल लहेबा हरता। ভाटाराव किळाला করেন ভ বুব সন্তব ভাচারা বলিবে ছে, এই সব মশাল পূর্বকে चारता (प्रथमात कर । चल्रतिएक कत नहेश चामदा कि সমুদ্রকে স্নান করাই না ? ছোটু একটি বাভি আলাইয়া হর্ষকে मी पर्मन कदारे मा माकि ? कदारेदा शांकि, छाटाए खांब সংশ্ব কোৰাৰ গ কিন্তু পাৰ্ক্য এইবানে যে আৰুভিতে বাকে আত্মমর্পণের আকাল্যা আর ইচাতে বচিয়াছে প্রদর্শনের कारमा । विकिन्न सरमद शाबीता चाशम चाशम मनाम महेशा वाकित क्रेशांक किस नन्द्रिकाटक मीन्नात्मत निश्चि नट्ट. পরত আপন আপন আলোভে চকু বলগাইরা দিয়া ভাতাদের बाबाँ मानाहेवाद नदाक। हेटा (माकादाबमा महरू. (माक-वक्या। (माक्राभवात हेडां श्रमश्र शहा मत्डः। त्रन्त्वात्क यपि লোক-বিপ্লবের বাহুমে পরিণত করিতে চাহি ভ আমাদের অভ नव शिक्किया चूँ किएछ इन्दि । अदिशास विशेशवास्तरमञ्जूष माबमा छ। उम्र हारे।

#### (अंडेएस्ट क्षेचि मिरवएम

রাইদেতা জীকবাহরলালকী ও বিভিন্ন পক্ষের প্রধান প্রধান
নেতাদের পুন: পুন: বলি বে, নির্বাচনের নেশার আনরা বেন
সভ্যতাকে বিদার না দিই! কিন্তু সম্প্রতি কিছু দিন যাবৎ
ক্ষণকৈ তিন কন নেতৃপ্রধান একে অতের উপর বাবা ধারাপ
হওরার অভিযোগ আরোপ করিরাছেন। তাঁহাদের ব্যব্য প্রভাবে অপরের সম্বন্ধে বলিয়াছেন বে তাহার কোন ভাল
মানসিক বাাবির চিকিৎসক্ষের বারা পরীক্ষিত হওরা দরকার।
ইহা বদি পরিহাস নাত্র হব ত আপতির বিশেষ কিছু নাই।
কিন্তু বরোর্ক প্রেক্ট ব্যক্তিদের অহুগানীরাও তাঁহাদের
এরপ বসিক্তার অহুকরণ আরম্ভ করিতে পারে। তাহা
হইলে ভব্যভার লেশবাত্র পাক্ষিবে না। কুদে এক নেভা
অপরক্ষে বলিবে, "ভোষার বৃদ্ধিবক্ষরা ঘটরাছে।" উভরে
অপর ব্যক্তি বলিবে, "ভোষার মগক পচিরা গোবর হইরাছে,
হর্গতে টেকা হার।" এরপ ব্যাপারের পর আবার বে ভাহার। পরস্পরের উপর স্থাতি পুলার্ট্ট করিবে, ইহা অলীক করনা মার।

গানীকী আনাদের সার্বক্ষিক বাদ-বিসংবাদকে এক অভি
উচ্চ ভৱে উঠাইরাহিলেন। ক্ষসভাভেও অসুপাসন ও ভব্যভা
বন্ধপূর্বক বন্ধিত হইত। এবন কোন নেভা বন্ধি অপর কোন
বেভার প্রসদে বলেন যে, তাঁহার নাবা বারাপ হইরা সিরাছে
ভ ক্ষসাধারণের দৃষ্টিতে সক্লেরই প্রভিঠার হানি ব্টবে।
ভাই প্রেঠদের কাছে নিবেদন নির্বাচনের ক্ষও বেন তাঁহারা
নিক্ষ নিক্ষ বানী কস্মিত না ক্রেম।

#### প্রভূত্ব-বাসমা

ভারোজিনিস সহকে বিতীর পর এই বে, নিলাবের জন্ত যথন উচিকে লাসের বাজারে রাখা হর তথন ধরিদারেরা ভাচাকে জিল্লানা করে, "ভূমি কি কাজ জাম ?" তিনি বলেন, "আমি একট নালই কাজ জামি, আর ভাচা হইতেতে নাহ্বের উপর প্রভূত্ব করা। ইহাই আমার পেশা। নাহার নালিকের প্রয়োজন লে আমাকে কিমিতে পারে।" বিভিন্ন দল হইতে বাহারা নির্বাচনপ্রার্থী, ভাহারা সাবারণ লোক একথা বেন কেই মনে না করেন। ভাহারা প্রভ্যেকেই এক একট ভারোজিনিস। প্রভূত্বের বাসনা ভাহাদের মজাগত, অবশ্ব ইহার ব্যক্তিক্রম বে নাই ভাহা নহে।

### (माक्वितिविव केत्यमाद

ভবে ভাষোজিনিস ও উহাদের মব্যে ব্যবধান এইটুক্ যে, ভাষোজিনিস শক্ষপ্তলি প্রয়োগ করিভেন উহাদের রুচ অর্থে, ইহারা করেন অভরণে। দরবারী ভাষার কোন শক্ষ ক্ষমণ্ড উহার ঠিক অর্থে ব্যবহুত হয় না। তদক্সারে কোন সরকারী চাক্র্যেকেই সরকারী চাক্র্যে বলা হয় না—তাহাদের বলা হয় সাধারণের ভ্তা। উহাদের নাম—পাত্রিক্ সার্ভেটস্। বিন্দীতে শৌক্রী, বিদমৎ ও সেবা, এই ভিন শক্ষের প্রয়োগ ভিন অর্থে হইরা থাকে, কিছু এ স্বের ছল ইংরেজীতে একটি শক্ষ ব্যবহুত হয়—সার্ভিস্। সংস্কৃতে সার্ভিস্ পর্যার্হাটী শক্ষ

হইভেছে সেবা। অর্থাং বভ সব সরকারী চাক্রের সভলেই লোক-সেবক। বর্ধম ভাঁহারা সরকারী চাক্রির অভ দর্ধাভ করে ভবম ভাঁহারা সেবার উমেদার হম। আর ভাহাদের মধ্যে কেই সেবার অবিকার পাইলে, সাধারণতঃ বিদা খুবে, বিদা বিদ্যালয় লাভার হম। কিছ নোকর প্রভার পরে অম্বার্থকেই হারা অবিকাংশই মাবালক বা বিব্যা জীলোকের মভ অসহার মনে করেম। ভাই অভি উপ্রভাবে ভাঁহারা প্রভুত্ব করিঙে বাকেম। আছ ভাঁহারা আমাদের সম্মুবে খাছা হইনাছেন। ভাঁহাদের মাবার উপরে লেবেল আঁটা—বাহাদের সেবক দরকার, ভাহারা আমাদের কিমিয়া লউন। কিছ এবানে সেবকের অর্থ মালিক। নিরক্র অভভাবাণর মৃচ্ অম্পণ ভিজ্ঞান করে, "ইহা কিরপ বিপরীত গণভর ?"

### প্রার্থীদের প্রতি

ভারোজিনিস সন্থকে তৃতীর ক্ষনশ্রুতি এই যে, এক দিন তিনি এমনি বসিরা আছেন, এমন সমহ আলেককাণার সেখানে আসিরা উপস্থিত। আলেককাণার ক্রিলেম, "তৃমি কে?" ভারোজিনিস উণ্টা প্রশ্ন করিলেম, "তৃমি কে?" কবাব আসিল, "আমি পৃথিবীক্ষরী আলেককাণার ত আমি ভারোজিনিস কহিলেম, "তৃমি আলেককাণার ত আমি ভারোজিনিস কহিলেম, "তৃমি আলেককাণার ত আমি ভারোজিনিস।" আলেককাণার অভিশন্ন পর্বতরে কহিলেম, "আমি ভোমার কর কি করিতে পারি?" ভারোজিনিস কহিলেম, "ত্র্মি কার্য করিয়া হালা বিভার করিয়া হালাইরাহ, সরিষা পেলে মহা উপকৃত হইব।" "আলেককাণার মা হইলে আমি ভারোজিনিস হইভান"—এই বলিয়া আলেককাণার চলিয়া পেলেম।

ভাল, কোন উনেদারের এ বরণের কবা কবনও কি মনে হইবাছে ? গঠন-কর্মনত সেবকদের নিকট ইহাই মাত্র অসুবোধ বে, ক্ষ্মতাকাজী ও ক্ষ্মতা অধিকামী লোকেরা কুণা ক্রিয়া বেম তাহাদের ও স্থের বব্য হইতে সরিবা দাভান !

### হুদেন সাগর, হায়দরাবাদ

श्रीरवस्ताथ म्र्थाभागाग

কালো খল খার কালো খাকাশ আকাশে টাদ, ভারার দল, চূরে চূরে খলে প্রদীপমালা। সেভুর উপরে খামরা হ'বদ, আমাদের মদে খালোড খালা। ৰোৱ ষম আৱ ভোষার মন, উছলে জল, কে বাঁধে সেতৃ ? হাসিছে হণম টালভারার। শোম আখাছ চুরের বাভাসে গুণারের চেউ ভাতে এপার।

### আনারকলি

### बेहेन्नित्र। (मवी कोधूत्रांगी

### ( त्रणात्मक वार्डका ) नवारम

আনারকলি (পুর্বে আরেবা) নায়ী কাবুলের মুসী মহিউদ্দিনের পরমা ফলরী কলা ব্রাল দেলিমের চিত্রমাত্র দর্শনে মোহিত ইরা, গোপন থেমে আত্মহারা হয়. এবং পিতামাতার বহু অসুনর সত্ত্বেও অপর কাহাকেও বিবাহ করিতে অসুন্ত হয়। তাহার এই ভাবের বৈলক্ষণার কথা ও নিরা কাবুলের হিন্দু শাসনকর্তা দেওরান মাধব রাও তাহাকে অসুন্তুনক করিবার উদ্দেশে দিল্লী পাঠাইবার পাগমর্শ ও সাহাবাদান করেন। সেখানে বাইরা দে ব্বরাজের বাঞ্চিত প্রক্রাভে সক্ষম হয়, কিত্ত দেই কারণেই আক্রম শাহের কোপদৃষ্টতে পড়ে; এবং বীরবলের মন্ত্রণার কলে বিচারাত্তে তাহাকে জীরস্তে কবর দিবার ভীবণ দেওাক্তা বেওরা হয়। লাহোরে এখনও আনারক্লির ফ্লের সমাধি দৃই হয়, ভবে এই নাটকার বাগবাকা ঘটনা অনেকাংশে ক্রমাগ্রস্ত ।

### নাটকীয় পাত্ৰ-পাত্ৰিগণ

### পুরুষ

मिली व वामना আক্বর শাহ---বীরবল--Ø. মন্ত্রী —किंग ঐ বাজকবি দেলিম— ঐ যুবরাজ কাজী সাহেব--ঐ বিচারপতি দেওয়ান মাধব রাও— কাবুলের শাসনকর্তা ইলাহী বস্থা---নগরপাল মৃশী মহিউদ্দিন-ঐ সেবেন্ডাদার. আয়েষার পিতা

ওমরাহগণ, আদালতের কর্মচারীবৃন্দ ও প্রতিহারিগণ।

जो

আমিনা— মহিউদ্দিনের স্ত্রী
আরেহা— ক কণ্ডা
মতিজান দৰ্জ্জিনী— আয়েহার স্থী
রোবেনামা— কাবুলের কাজীর কণ্ডা
মেহের-উল্লিসা— দিল্লীর অন্দর্মহল রক্ষী
সাকিনা— ক বেগমবিশেষ

অস্তঃপুরিকাগণ।

প্রথম অঙ্ক

প্রথম দৃষ্ট

( মাধব রাওয়ের সভাগৃহে মুন্সী, মহিউদ্দিন ও দেওয়ান মাধব রাও আসীন। উভয়পার্থে হুই চোপদার কেরামত ও নেয়ামত দণ্ডায়মান।)

মাধব। মুলীজী, সেই ফাবুদী বয়েতটা আব একবার

বল ত, যাতে আছে যে "বিহাৎ পড়ুক", "বিহাৎ পড়ুক" বলতে বলতে বিহাৎ পড়ল। সেটা মনে আছে ?

মুন্সী। আছে বই কি, ছজুর। সেই অভিলাবে বিহাতের প্রার্থনা ছাড়া আর কোন প্রার্থনা না থাকুক— যদি বিহাৎ পড়ে ধনধান্ত জলে যায়, তবে সে বড় আশ্চর্যা নয়।

মাধব। আমিও তাই বলতে চাই বে, আমরা বেমন বলাবলি করছিলুম সব বড় চুপচাপ হয়ে বাচ্ছে, একটা লড়াই নেই, একটু লুঠভরাজ নেই, আমাদের বীরপুরুষেরা-ভবে বীরত্ব দেখাবে কিনে । তেমনি ভগবান যেন আমাদের মনের আজি শুনেই লাণ্ডিকোটাল থেকে খামকা এক দল ডাকাত পাঠিয়ে দিলেন।

মুন্সী। খোদাবন্দ্। ভাতে ছেলেদের তাকত দেখাবার স্থবিধে হতে পারে বটে, কিন্তু মেয়েদের পক্ষে একটু মুশক্ষিরে কথা হয়ে পড়ে।

মাধব। কেঁউজী, ভোমার ঘরে কিছু মুশকিলের কারণ মটেছে নাকি ।

মৃন্ধী। মৃশ্বিলও হয়েছে, মৃশ্বিল-আসানও হয়েছে। সেই কথাটা বলতেই ত হজুবের দরবারে আত্ম সকালে ছুটে এসেছি, খার আমার মেয়েকেও আনতে পাঠিয়েছি।

মাধব। তোমার মেয়ে ? আয়েষা ? কেন তার আবার কি হয়েছে ? তার মত কুন্দরী কাবুল শহরে আর একটি নেই।

মুন্দী। সেই ত হয়েছে বিপদ, হুকুর। কালো কুৎসিড হলে ত কোন ভাবনাই ছিল না। পাড়ার ছেলেদের জালায় তার একটু জানলার ধারেও দাড়াবার জো নেই। জাবার বদি বোরখা পরে মেয়েদের সলে একটু হাওয়া থেতে বেরল ত পড়ল ডাকাভের স্বন্ধরে।

মূলী। আজে, যদি ধরে নিমে যেত তা হলে কি আর হজুরের কাছে মুধ দেখাতে আসতুম ় এই, কেরামত !

কেরামত। জী হজুব!

মুন্সী। এক বার দেব ত আমেষাবিবি অন্দরমহঙ্গে এসেছেন কিনা ? বল, মুন্সীসাহেব তাঁকে বাইবে ডেকে পাঠিয়েছেন।

কেরামত। যে। হকুম মুন্সীকী। (প্রস্থান)

মূলী। বে বীরপুরুবের কথা এখনি হচ্ছিল, তাদের মধ্যে ছ'ভিন জন যদি দেদিন প্রাণ হাতে করে আরেবাদের উদার না করত, তা হলে এই বুড়ো বরুসে আমার মান-ইজাৎ সমস্তই ধোয়া বেড, আর আমিও দেশভ্যাগী হতুম।

মাধব। (উৎকটিত) বল, বল কি হধেছে মুন্সীকী; আমাকে আৰু সংশ্যেৰ দোলায় ছলিও না।

( প্রথমে কেরামভ, পরে বোরধাপরা আবেষা,

পরে ইলাহী বক্সের প্রবেশ )

মৃন্দী। এই বে **হজু**র, বাদের পর তাদের কাছেই এবার ভাল করে সব <del>তথু</del>ন।

মাধব। আবেবাদিদি, তুমি বোবধা খুলে ফেলে ভাল হয়ে বদো। ভয় নেই, ভোমাকে লুঠ করে নিয়ে বাবার জন্তে এখানে কোন ভাকাত ৩ৎ পেতে বদে নেই!

আমেষা। (বোৰখা খুলিতে খুলিতে) বাবা, তুমি কেন ও-স্ব কথা হজুবকে বলে দিলে! আমার বুঝি লজা করে না?

মুন্সী। ভোমার লজ্জা করবার বয়স হয়েছে, সেৰ্থ।
তুমি নিজেই ভূলিয়ে দাও বে মা! তা ছাড়া আমি এখনও
হজুরকে কিছুই বলি নি, ভোমাদের নিজের মুথেই সব
ভানবেন বলে তিনি বসে আছেন।

আন্মেষা। তুমিই তাঁকে গলটোবল নাবাবা, তুমি ভ সুবই জান।

মূলী। আমি শুধু এইটুকু জানি বে, সাতটা বেজে বেতেই 'তোমার মা মরিয়মকে পাঠালেন মোতীবিবির ওবানে, আর মজিদকে পাঠালেন ইলাহী বক্সকে ডাকতে। আর আমাকে কোথার পাঠাতে চান তা বদিও—পট করে বললেন না, কিছু দিনরাত কেবল লেখাপড়া নিয়ে থাকি আর ছেলেমেয়ের কোন খোঁজখবর রাখি নে বলে বকতে বকতে এমন তুলকেলাম্ বাধিয়ে দিলেন বে, আমি মাথাটা ঠাঙা করবার জক্ত আন্তে আন্তে পাগড়ী আর লাঠি নিয়ে রাজার বেমনি 'বেরিয়ে পড়েছি, অমনি দূর থেকে দেখলুম আমাদের ইলাহী সাহেবের সঙ্গে একটি ছোট্ট মেয়ে হাঁটি হাঁটি পা পা করে আসছেন; দেখে প্রাণটা ক্ষুত্র ঠাঙা হয়ে কোল। বদিও ভার ধীর পত্তীর চাল দেখে কারও হঠাৎ বোঝবার সাধ্য ছিল না বে, সে আমাদের এই নাচুনে আমেরারাণী!

আবেষা। আমি কিন্ত একবারও কাঁদি নি বাবা, তুমি বরং মোডীদিনিক জিঞেন কর।

মাধব। না দিদি, আফগান মেয়েরা বিপদে পড়লে কথনও কাঁদে না, আর আফগান ছেলেরা ত হালে। কি ইপাহী বন্ধ, তুমি চুপ করে দাঁড়িয়ে রইলে বে ? ভোমার বীনৰের কাহিনী শোনবার জম্ভ বে আমরা উৎস্ক হয়ে বলে আছি।

ইলাহী। হজুৰ, বেলি ড কিছু বলবার নেই। আমিনা বিবির অভুবোধে তার মেয়েদের খুঁজতে বেরিয়ে, দেওদার वर्मित वाहरत कावजन जात जाहरभरक स्वर्थ जामि ভেডবে ঢুকলুম। ঘুরতে ঘুরতে ফুলের মালা, ভালা পেয়াৰ। প্ৰভৃতি কতকপ্ৰলি লক্ষণে যথন সন্দেহ হ'ল যে, একটু আগেই সেধানে আয়েষাবিবিরা ও ডাকাভের দলবল এসে চলে গেছে তখন ভাড়াতাড়ি আবহুলদের ডেকে নিয়ে তাদের উদ্দেশ্তে চুটলুম। একটু পরেই দূরে তুটো আলো দেখতে পেয়ে উৰ্দ্ধবাসে দৌড়ে গিয়ে দেখি চুই বেটা ডাকাড আয়েষাবিবিদের সঙ্গে নিয়ে গভীর বনের দিকে চলেছে। বেওকুফরা আমাদের সাড়া পেয়েই ফিরে দাঁড়াল, আর মশাল ফেলে ছোড়া উ'চিয়ে আমাদের মারতে এল। স্মাবদুল আর স্মাহমেদ তথন চট করে তাদের ডান হাতে এমন জোরসে তুই লাঠির ঘা কসিয়ে দিলে বে, ছোরাগুলি দশ হাত দুরে ছিটকে পড়ল। তার পর আমরা তিন জনে তিন জবর লাখি মেরে তাদের মাটিতে পেড়ে ফেললুম, আর তাদেরই ছোরা তাদের বুকে विभिद्य (यायामव निष्य वन (चाक विविद्य भड़नूय। हैं।), বলতে ভূলে গেছি যে, আগে তাদেরই পাগড়ী দিয়ে ভাদের গাছের সঙ্গে ক্সে বেঁধে কেলেছিলুম: বোধ হয় এখনও তারা সেই অবস্থার সেধানেই পড়ে রয়েছে।

মাধব। আর বোধ হয় মামদো ভূতের ভয়ে ও-পথ দিয়ে লোক চলাচল বন্ধ হয়েছে। ভালই হ'ল—আমার দেবদারু পাছগুলো ভা হলে একটু বাঁচবে!

আয়েযা। ( জনান্ধিকে বাপকে কিছু বলিল )

মাধব। কি, আয়েখা-দিদি! বা বলবার আছে খুলে বল না, লজ্জা কিসের ?

মুন্সী। হজুর, ও বলছে, বিনি এতক্ষণ গল্প বললেন, তিনি আর সব কথা ঠিকই বলেছেন, কেবল নিজের বীরত্বের কথাটা চেপে গিয়েছেন। ডাকাতরা মাটিডে পড়ে যাবার পরেও অত চট করে গাছের সক্ষে বাধা পড়েনি; শেব পর্যান্ত লাখি ঘূবি কামড়, কোনটাই বসাতে ছাড়েনি। শেবে একজন কোথা থেকে এক চাকুছুরি বের করে ইলাহীর হাতের কবজার বার বার থোঁচা মারায় ঝরু ঝরু করে রক্ত পড়তে লাগল; তরু ইলাহী সেদিকে জ্রাক্ষেপ না করে, তাকে গাছের সঙ্গে বেধে জ্বেল, ভবে ক্ষমাল দিয়ে নিজের হাত বাধলে। ঐ বে সেই রক্তমাধা ক্ষমাল এখনও হাতে জড়ানো রয়েছে, দেখন না।

মাধব। দেখি ইলাহী ? ডাই ড। আবার কমালের উপর একটা শুকনো ফুলের মালা কেন? এ-কি ব্যথা কমাবার ওয়ধ নাকি ? কোথায় পেলে ? কে দিলে ?

ইঙাহী। আছে, কেউ দেয় নি, আমি আপনিই বন থেকে কুড়িয়ে এনেছি। কিন্তু ব্যথা ত কমেনা।

মাধব। সাবাস ইলাহী, তোমার হিমতের কথা ভনে আমার বড় মেজাজ খোশ হ'ল।

ইলাহী। আমি কেবল নিজের কর্ত্তব্য কাজ করেছি হজুব, তার বেশি কিছু নয়।

মাধব। প্রজার বেমন কর্ত্তব্য আছে, রাজারও তেমনি কর্ত্তব্য আছে। এই, নেয়ামত !

त्याम्छ। की, इक्ता

মাধব। থাজাঞীকে বল কোতোয়াল সাহেবকে এক হাজার আস্বফী এখনি বক্শিশ করতে।

নেয়ামত। যো ছকুম, ছজুর!

ইলাদী। হজুবের অভ্গ্রহ অসীম, কিন্তু (আয়েষার দিকে আড়চোধে চাহিয়া) আমার বক্শিল আগেই মিলে গেছে।

মাধব। নেয়ামতের সঙ্গে বাও, ইলাহী। আর সর্বাদা মনে বেথো বে, দেশ ভোলার মত স্থপুত্রই চায়। কিন্তু তথু ছ জনকে নয়, দলহন্দ্ধ ডাকাতকেই দেশছাড়া করা চাই, বুঝলে ?

ইলাহী। (দেলাম করে)—আলার দোয়ায় ভাই হবে হজুর। (প্রস্থান)

মূলী। এবার তুমি জন্পরে বেতে পারো মা। জামি হজুবের সঙ্গে তুটো কথা বলেই তোমাকে বাড়ী নিয়ে বাবার জন্ম থবর পাঠাব।

মাধব। মুন্সীজী, ভোমার মেরেকে একটা গান ভনিরে বেতে বল না। সকলের মুখেই ত ভনতে পাই ওর বেমন রূপ, তেমনি ভাগ।

মূলী। হন্ধুব, আমাদের দেশে মেয়েদের রপ থাকলেই বা কি, গুণ থাকলেই বা কি ? জ্ঞান হতে না হতে তারা হীরে জহরতের মত লোহার দিরুকে বন্ধ হয়ে বায় ; কৃটতে না কৃটতে তারা পোকা-কাটা কুলের মত মাটতে করে পড়ে। আবেষার গলাটি মিটি, কিন্তু কোনরকম শিক্ষা ত পায় নি। এই আমি নিজে বেই কু জানি তাই শিথিয়েছি, জার আপনার বাড়ীর নাচগানের মজলিস দেখেগুনে এক আধটু বা শিথতে পেরেছে! তবে আপনি যে গুর গান গুনতে ইচ্ছে করেন, সে আপনার মেহেরবানী।

—কেরামত ! হোসেন খার কাছ থেকে এক **ভো**ড়া

বাঁয়া-তবলা আর ঘুঙুর শীষ্ত এনে দাও ত, আর ঐ দিলফবাটা এপিয়ে দাও। (কেরামতের তথাকরণ)

দেই যে কারদী গানটা আমি ভালবাদি, দেটা **ৰজ্**রকে

আহেবা। (দিলক্ষবা বাজিয়ে গান)—
হাল যে রবে রবা।
তু আপনে কজন করি, দমমে রবসাঁই।
ক্প্রদম্ব ভোর, মাহি ধেসরা
ভদানি, হিসাবে কমো বেসরা।

মাধব। বাং বাং, বড় হৃদ্দর। কিন্তু পানটা কিছু পঞ্জীর, হ্বটিও বড় কঙ্গণ। ওর বয়সের উপযুক্ত আর একটু হাল্কাভাবের একটা কিছু গাইতে বল না মূলী।

মুসী। আছে। আছে।, ভোমার ছেলেবেলার আয়ান্ত্রী ধে নাচগান করে ভোমাকে ভোলাভ, সেইটে হন্ত্রকে দেখিয়ে দাও না ?

আথেষা। সে ছেলেমাস্থী কাণ্ড দেখে ছজুব হাসবেন নিশ্চয়। (কেরামডের বাঁয়াতবলা ও ঘুঙুব আনরন। মুন্সীর সঙ্গত করণ ও আথেষার ঘুঙুব পরা)।

মাধব। তাই ত চাই বিবিজী। আমাদের দেখিরে দাও বে ডাকাতরা ডোমার হাসিটি চুরি করে নিমে বার নি। তা ছাড়া আমারও ভিতরের ছেলেমান্থটি ত এখনও একেবারে মরে নি, দাড়িগোঁকে ঢাকা চাপা আছে মাত্র। তাকেও মাঝে মাঝে খোরাক দিয়ে জীইথে রাখা চাই ত?

আবেষা। (নাচ ও গান)
কোন এরসি সবি চতুর না সিলে
নোরে পিকে ইরারমে পৌহা বেতি (আরে ইা ইা)।
মেরে মন্মেত আরা কি বোগন বন্ধ,
আওর মল্কে বতুত মদিনে চর্লু।
সবি হিন্দী কি নগরীমে কাহে রহ,
নেহি প্রীতকি চৈন জরা দেতি (আরে হা হা)।
সবি সাত সমুজ্য পার তরা,
মেরে জনমেত চলনে ন জোর হাওয়া,
কোই আতি মদিনে সে ঐসি হাওয়া,
নব মুলকে আবার কো উড়া দেতি (আরে হা হা ১)।

মাধব। (হাতভালি দিয়া)—সাবাস্ সাবাস্। এই ছেলেমান্ধির ভিতর আস্লী মাল লুকনো রয়েছে, তা কিছ বলে রাথলুম। পার দেখে নিও। আমাদের চোথ এই দেখতে দেখতে বুড়ো হাত পেল, কিসে কি হয় তা আমরা বেশ বুঝতে পারি। নাও, আরেমাবিবি, আমার গলার এই হানটি তোমাকে বক্শিশ করলুম। বার গলায় ভূমি মালা দেবে, সে ভাগাবান পুরুষ না জানি কে।পায় ব'সে দিন ভন্ছে!

মূলী। মা আয়েষা, এবার তুমি বাড়ী বাবাব উড়োগ কর গে; কানই ত দেরি হলে তোমার আমার কণালে কি আছে!

আয়েবা। তুমি বে চুপ করে থাক বাব', কাজেই মা ৰভ খুসি বকে বায়।

মূনী। তাই ত মাঝে মাঝে হজুবের কাছে পালিয়ে আদি, নিজের গলার আওয়াজ শোনবার জন্তে! আর একটুবড়হও মা, তথন বুঝবে দে বাধানা দেওয়াটাই বুদ্ধির কাজ। (হাদিতে হাদিতে আয়েবার প্রস্থান)

মাধব। এমন মেয়েকে তৃমি কার হাতে তৃলে দেবে মনে করছ মূলীকী ?

মূলী। হুজুর, সেই বিষয়েই ত আপনার উপদেশ প্রার্থনা করতে এসেছি। আপনার মন্ত ব্রু এই শৃহরে আমার আর কেউ নেই। আয়েষাকে আমি এত বড় করে ঘরে রেখেছি, পাঁচরকম বই পড়িয়েছি আর গান-বাজনাও কিছু কিছু শিখিয়েছি, এই সব অপরাধে সমাজের মোড়লরা আমার উপর খড়গহন্ত। তবে কি কুকণে যে মেয়েটা রূপ নিয়ে জয়েছিল, তাই বুড়োরা যাই বলুক, ছেলেরা ওর ক্তেল্ড সব খোয়াতে গাজী।

মাধব। তবে ভাল দেখে একটি পাত্তের সঙ্গে এই বেলা ওর সম্ম পাকা করে ফেল না ? বত দেরি করবে, ডভ বেলি মুশকিলে পড়বে। আমি ভুক্তভোগী কিনা, ডাই জানি। আমার ভ মনে হয় ওর উপর ইলাহীর নেক্নজর আছে। ভোমার কি বোধ হয় ?

মূলী। আজে, আমার বোধ করবার কোন আবশুক নেই। বহু দিন বাবৎ প্রমাণ পেয়েছি বে ইলাহী ওর জন্যে প্রাণ দিডে প্রস্তুত।

কিন্তু আমার মেয়েকে বে মোটে বাগ মানাতে পারছি নে হস্তু, কি করি বলুন ? ওর মা আর আমি ওকে বলে বুঝিয়ে, বকে ধম্কে, খোশামোদ করে, হয়বান হয়ে চাল ছেড়ে দিয়েছি। এক বাঁকি আছে জোরজবরদন্তি।

মাধব। না ন', ভাও কি করতে আছে ? হয়ত ওর মনে মনে অন্ত কাউকে পছন্দ হয়েছে, কিছু বলতে লক্ষা করে।

মুনী। আন্দেনা, ভুকুব, সে খোঁজও নেওয়া হয়েছে। সেরকম কেউ নেই। অথচ আজকাল ওর খ্রের কাজ কগতে মনে থাকে না, লেখাপড়ার ভূল হরে বায়। আনমনে জানলার খারে বসে আকাশের দিকে চেরে থাকে, সাভ বার ভাকলে ভবে এক বার সাড়া পাওয়া বায়।

মাধব। এ সব ভ বড় ভাল লক্ষণ নয়! এ বে আমাদের শ্রীরাধিকার বর্ণনার সঙ্গে হবছ মিলে বাচ্ছে। দেশে দেশে মান্থবের মন স্বই এক, কেবল আমধাই ভূল বুঝে "রাম রহিমকে জুলা" করি। বা হোক, চুপ করে বদে থাকলে ত চলবে না, এর একটা কিছু বিহিত করা ত চাই।

মৃশী। আমার বুজিতে ত আর কুলচ্ছে না হস্ত্র।
জানেন ত মেয়েজাতটাকে চিরকালই আমি একটু ভরাই;
ছোটই হোক্ বড়ই হোক্, ওলের বেশি ঘাঁটাতে সাহস
করিনে। আপনি আমাকে যা করতে বলবেন, ভাই
করব। তার উপর আবার এই এক ডাকাতের উপদ্রব
হয়ে দিন রাতে স্বস্থি নেই।

মাধব। (একটু ভাবিয়া) এক কাজ করলে হয় না ? মূজী। আজা কলন হজুব।

মাধব। ওকে দিনকজক অন্য কোথায়ও পাঠিয়ে দিলে হয় না ় হয় ত একটু জায়গা বদলালে মনের এই আচ্চন্ন ভাবটা কেটে বেতে পাবে।

মুন্সা। ছজুব আমরা গরীব মান্থব, তবু ছেলেমেয়ে-দের ভালোবাসি। ওকে ছেড়ে থাকা আমাদের পক্ষে নিভান্ত কট্টকর হলেও, ওর ভালোর অন্যে তাও করতে প্রস্তুত আছি। কিন্তু এই অল্প বহুসে অমন স্থন্দরী মেয়েকে একলা দ্বদেশে পাঠানো কি বৃদ্ধির কান্ত হবে ? কে ওর সঙ্গে বাবে, কে ওর ধবরদারি করবে—শেষে হিত করতে বিপরীত হবে নাত ?

মাধব। আমি কি সব দিক না ভেবে-চিন্তে একটা মোৎফরকা কথা বলে বসবার লোক, মুন্সীজী ? তা হলে আর এত বড় একটা রাজ্যশাসনের ভার আমার হাতে এতদিন থাক্ত না।

মৃশী। আমাকে মাপ করুন, হন্তর। ত্রেহে মাসুবকে
অন্ধ করে ফেলে।

মৃসী। হজুব বা বলছেন সবই ওব ভালোর জন্যে, ভা আমি বৃষ্ণতে পারছি। কিন্তু আমার একলার মডে ভ কাজ হবে না; দেখি ওর মাকি বলেন।

মাধৰ। বদি তোমাদেব ছ'জনের মত হয়, আর অবশ্য আরেবা বেতে চায়, তা হলে থাজনা নিয়ে আমাদের বে ডাক শীক্ষই দিল্লী রওনা হবে, সেই সঙ্গে ওকে পাঠাবার বন্দোৰত করে দিতে পারি। ইলাহীকে বলব ওর রক্ষক হয়ে সংক বেতে ও থাকতে; আর ভোমরাও হয়ত কোন মেরেকে ওর সন্ধিনী করে দিতে পারবে।

মূলী। হুজুবের দয়ার শেষ নেই। কি ঠিক হয় কালই স্থাপনাকে স্থানাব। (সেলাম করিয়া প্রস্থান)

### २व मुख

( মুক্সী মহিউদ্দিনের বাড়ীর অন্দরমহল। আমিনা বিবি দেলাইকার্ব্যে রভ। দূরে আনালার ধারে আয়েষা বই হতে আসীন)।

মূলী। (বাস্ত হইয়া ডাকিতে ডাকিতে প্রবেশ)— আমিনা। আমিনা। কোধায় তুমি ?

আমিনা। এই বে, এইখানেই বসে আছি। সকাল থেকে সন্ধ্যা, আর সন্ধ্যা থেকে সকাল ভ হুদুরেই হাজির থাকি, আর যাব কোনু চুলোয় ?

মুন্সী। (বসিয়া পড়িয়া) তোমাকে ত আমি আর কোথায়ও বেতে বলছি নে। কিন্তু আয়েবার এক জায়গায় বাবার কথা হচ্ছে, তাই তোমাকে বলতে এলুম।

আমিনা। আহেবা ? সে আবার কোণায় বাবে ?
মেরেমামুবে ত এক বাপের বাড়ী ছেড়ে শুন্তরবাড়ী
বায় জানি; তা ও-মেরের ত দেরকম কোন গভিক
দেখছিনে। আর ভার পর ভারা বায় দমের বাড়ী। তা
আমার সেইটেই বাকি রয়েছে; এখন বেতে পারলেই
আমি বাঁচি, তুমিও বাঁচ। (চোধে কাপড় দিয়া ক্রন্দন)।

( आरश्यो निक्य नाम अनिया कान शाफा कविन )

মূলী। (উঠিয়া স্ত্রীর কাছে শ্লাসিয়া)—স্থামিনা, তুমি হাওয়ায় ফাঁদ পেতে ঝগড়া কর কেন ? স্থামি কি কথনও তোমাকে কোন কটু কথা বলেছি বে, তুমি কথায় কথায় মান-স্ভিমান কালাকাটি কর ?

আমিনা। সেইটেই ত আমার এত অসম্ভ বোধ হয়।
তুমি বদি আমার কথার পিঠে কথা বলতে, বদি আমার
রাগের উত্তরে কাগ ককতে, বদি আমার গলার উপরে গলা
চড়াতে, তা হলে ত তবু বুরতুম বে আমার স্বামী একটা
মান্তব, আর আমাকেও সে মান্তব জান করে।

মূন্সী। (হাসিয়া) ভোমার স্বামী মান্থৰ নয় ত কি ? আমিনা। (রাগভঃ) জানি নে। ক্ষেবতা হতে পাবে কিংবা কলের পুতৃল কিংবা বইয়ের পোকা। তথু এইটুকু জানি বে তার বিয়ে করবার কোন দরকার ছিল না।

মৃন্সী। (শাস্তভাবে) এত দিনে দেও বোধ হয় দেকথা বৃষ্ঠতে পেরেছে। কিছু আমিনা, শুধু একদিন আধ ঘণ্টার জন্যে বদি নিজেকে ভূলে পরের কথা,—তাও পর নয়, নিজের মেয়ের কথা শুনতে পার তা হলে—

আমিনা। কথাব্দবার লোক পেলে ভ গুনব ? বাণ

থাকেন বই নিয়ে, আর মেয়ে থাকেন নিজের ভাবে ভার। আমাকে কি কেউ পোঁছে? আমি চুপ করে মৃথ বুজে হয় সেলাই করি, নয় রাধি, নয় ছাতে একলা পড়ে পড়ে তারা গুনি—আর কি করব ? না আছে একটা কাপড়, না আছে একটা গয়না, না আছে পাঁচ জন ভল্লোকের বাড়ীর মেয়েদের সঙ্গে বাওয়া আসা, না আছে—

মূন্সী। বানেই ভার জ্বন্তে মিছে হা-ছভাশ নাকরে বা আছে ভাই রকা করবার চেষ্টা কংলে ভাল হয় না?

আমিনা। আমার আবার কি ছাই আছে ? থাকবার মধ্যে আছে—

মুন্দী। একটা হতভাগা স্বামী, এই ত ?

আমিনা। ছি: ছি:, অমন কথা মুখেও এনো না। আমার স্বামীর মত এমন ভাল লোক এই দারা কাবুলে আর একটিনেই। কেবল বলি—

মৃসী। তা সে বিষয় তোমার সঙ্গে আমি সম্পূর্ণ একমত। কিন্তু আর একটা জরুরী বিষয়ে বে তোমার মৃত জানতে চাই। ভোমার একটি মেয়েও আছে।

আমিনা। সে পোড়ারম্থীর জয়ে ভেবে ভেবে আমার ত রাত্রে ঘুমই হয় না। ওদিকে তুমি ত বেশ নিশ্চিস্থমনে নাক ডাকিয়ে ঘুমোও।

মুন্সী। সে নোব আমার আছে, তা স্বীকার করছি। কিন্তু তোমাব মেয়ে বাপের শান্তশিষ্ট স্বভাবটি পায় নি। বোধ হয় মাতৃকুলের নিকে—

আমিনা। (বাগত:) আর বাই কর, আমার মা-বাপ ভূলোনা, ভাল হবে না বলছি। এখনও আমার বাপের কবরে হিন্দু-মুদলমানে দিলি দেয়, ভা ভান ?

মৃন্দী। জানি। কিন্তু এমন অপদার্থ লোকের সজে ভোমার বিয়ে দিয়ে কি ভিনি স্থবৃদ্ধির পরিচয় দিয়েছেন বলতে চাও ?

আমিনা। ফের আমার স্বামীর নিন্দে করছ? ভবে আমি চললুম (উঠিতে উছত)—

মূলী। (ধবিয়া বসাইয়া) না না, বদো বদো। আব ও লোকটাব নাম করব না, ভয় নেই। তাবে কারণেই হোক, আয়েষার মন যে আজকাল বড় চঞ্চল হয়ে পড়েছে, সেটা লক্ষ্য করেছ নিশ্চয় ?

আমিনা। ভা আর করি নি ? ভোমাদের মৃত্ত কেতাবী বুদ্ধি নাই থাক, আমরা মাহুবের মন বুঝি। ভার উপর আয়েয়া ভ আমার পেটের মেয়ে।

মূলী। তুমি ওকে পেটে ধরেছ বটে, কিছ আমি ওকে হাতে গড়েছি। হুধেদাত পড়বার পর থেকেই ও আমার গড়ার সলী, আমার ধেলার সাথী, আমার পানের সাগরের। কিন্তু এই মাস্থানেক থেকে বে ওর কি হয়েছে, কেন হয়েছে, কিছুই যেন ব্বে উঠতে পার্ছি নে।

আমিনা। এ তো অভি সহজ কথা। মেরে বিরের 
মৃপ্যি হয়েছে, একটা ভাল দেখে বিরে দিয়ে দাও, ল্যাঠ।
চুকে বাক। ভোমাদের পণ্ডিভী মন কি না, ভাই সোজা
কিনিসটাকে প্যাচালো করে ভোল। আমরা মূর্থ মেরেমান্ত্র হতে পারি, কিছ সংসার-জ্ঞানে ভোমাদের চেয়ে
চের পাকা।

মূলী। তাই ত তোমাকে না জিজ্ঞেদ করে আমি সংসারের কোন কাজেই হাত দিই নে। কিছু আহেষা যে বিয়ের কথা মোটে কানেই ভোলে না, তা তৃমি বেশ জান।

### ( আমেষা ক্রমে অগ্রসর হইল )

আমিনা। মেয়ের মত কেউ কখনো নিয়ে থাকে ? আমার বাবা আমার কত মত নিয়েছিলেন ? একটি ভাল পাত্র ঠিক করে মোলা সাহেবকে ডাক, কল্মা পড়ে দিব— ব্যস, চিরজীবনের মত কাজ ফতে। আবার কি ?

মূলী। তাভ টিক। কিন্তু তুমি মেংইটাকে কাঁদিয়ে কোর করে বিদায় দিতে পারবে ?

আমিনা। কেন পারব না ? মেয়েমাছ্য ত সারা জীবন কাঁদতেই আছে। জ্বাবার সময় কাঁদে, বিয়ের সময় কাঁদে, মরবার সময় কাঁদে। উপায় কি বল ?

মুন্সী। ছদ্ধর একটা উপায় করে দিতে চেয়েছেন।

আমিনা। ভোমার রাতদিন কেবল হন্ত্র হন্ত্র। নিজের ঘটে একটা বুদ্ধি যোগায় না, জীর বৃদ্ধিতে চলতেও সাহসে কুলোয় না, শুধু হন্ত্রের কাছে হাভযোড় হয়ে আছ।

মূলী। তুমি ত জান কত সময় কত বিপদ থেকে তিনি আমাদের উদ্ধার করেছেন। সাধে কি তাঁকে মেনে চলি? কিন্তু আগে উপায়টা বলি শোন। হুজুব বলছেন কোন নতুন আয়গায় ঘুরে এলে হয়ত সেয়েটার মনের একটা বদল হতে পারে। ওঁদের লোকলম্বর থাজনা নিয়ে শীঘ্র দিল্লী যাচ্ছে, সেই সজে ওকে উপযুক্ত সদী দিয়ে পাঠাতে পারেন, বললেন— মবশ্র বদি আমাদের মত হয়। কালই তাঁকে এ বিষয় জ্বাব দেব বলেছি। এখন কি বলতে চাও বল। (মাথায় হাত দিয়া) আমার ত মাথার ঠিক নেই।

আমিনা। কি বললে? দিলী? সেই জাহারামে ঐ তথের মেরেকে একলা পাঠাব? তুমি ঠিবই বলেছ মূলীকী, তোমার বৃদ্ধিস্থদ্ধি লোপ পেরেছে। তুমি হজুতকে আমার হাজার হাজার সেলাম দিয়ে ব.লা তাঁর বছৎ মেহেরবানী, কিছ ঐটুকু মেরেকে কাছছাড়া করলে পাছে একেবারে হাডছাড়া হয়ে যায় এই আগার ভয়।

ৰ্জী। তবে কি এমনি দিনের পর দিন দে কাটা ফুলের মত নেতিয়ে পড়বে, আর আমরা বদে বদে তাই দেখব ?

স্থামিনা। বলছি ভ ধরে বেঁধে একটা ভাল দেখে বিয়ে দিয়ে দাও, স্ব সেরে যাবে।

মূলী। ভার আগে একটু ঘুবে ফিরে এলে ক্ষতি কি? জেলখানা ত সামনে খোলাই ব্যেছে, যাবজ্জীবন কারাবাসে ঢোকবার আগে পৃথিবীটা একটু দেখে শুনে নিক, তার রূপরস ভোগ করে নিক। অস্ততঃ ভাকে একবার জিজেন করে দেখা যাক না, সে কি বলে।

আমিনা। (উঠিয়া) আমি বশহি সে যদি আমার মেয়ে হয় ত কখনো দিল্লী যেতে চাইবে না।

মুসী। (উঠিয়া) আর আমি বলছি সে বলি আমার মেয়ে হয় ত—

আহেষা। (বই ফেলিয়া সামনে ছুটিয়া আসিয়া, ছুই জনের ছুই হাত ধরিয়া) আমি বলছি আমি মায়েরও মেয়ে, বাবারও মেয়ে, আর আমি দিলী বাব নিশ্চয়ই।

মূজীও আমিনা। (একসজে ফিরিয়া) ভবে তুমি সব শুনেছ।

আহেবা। ভোমবাবে চেঁচামেচি করছিলে, আর না ভনে করি কি ? এইটুকু ত ঘর।

মুন্সী। (কন্সার মাথায় হাত বুগাইয়া) মা, আমরা তোমার উপযুক্ত বর-বর কিছুই দিতে পারলুম না, এই তঃধ।

আবেষা। (তাঁহাকে আদর করিয়া) না বাবা, থোমরা আমার জন্ম সবই করেছ, আমার কোন অভাব নেই। (থামিচা) কিছু কি জানি আমার আজকাল কি হয়েছে। এই ছোট ঘর, ছোট শহর, ছোট কথার মধ্যে দিনবাত থেকে থেকে প্রাণটা যেন ইংপিয়ে উঠেছে। তোমরা দিনকত হ আমাকে ছেড়ে দিয়ে দেখ, আমি নিশ্চয়ই ঠিক হয়ে ফিরে আসব।

মূলী। পাণীর ভানা গলালে তাকে বাদা ছেড়ে উড়তে দিতেই হবে, তা আমি বেশ আনি। কিছ ভোমার মা বে দেকথা মোটেই বুঝছেন না, কি করি বল।

আবেষা। (বাপকে ছাড়িয়া মাকে জড়াইয়া ধরিয়া) কেন মা, তুমি আমার জন্ত এত উত্তলা হছে ? আমি কি এখনও তোমার সেই কচি খুকিটি, বার বাড়ী কিরতে পাঁচ মিনিট দেরি হলে তুমি দ্বশ বার ঘরবা'র করতে ?

আমিনা। (কঁ বিয়া উঠিয়া) ভূমি আম'লের একলা

ফেলে কোথার যাবে মা ? সে সোনার পিঁজরার যে একবার ঢকেছে, সে কখনও প্রাণ নিয়ে বেরোয় নি।

আর্মিবা। (হাসিয়া) কেন বেরবে না । এই ত কাবুল থেকে নপ্তরোজের জন্তে স্থন্দরী মেয়ে পাঠাতে বলেছিল বলে কাজী সাহেবদের রোশেনারা ক'বছর আগে দিলী বেড়িয়ে এল। শুনেছি উৎসব হয়ে গেলে বেগম সাহিবারা তাকে কভ জমকালো পেশোয়াজ, ওড়না, গয়না, থেলনা সব দিয়ে দেশে ফিরে পাঠালেন। আর আমি গেলেই তারা আমাকে খুন করে মাটিতে পুঁত ফেলবে ।

আমিনা। ছিঃ আয়েষা, তুমি কি কোন কালেই বড় হবে না ?

### (মোডীবিবির প্রবেশ)

মোতী। এ কি কথা ভনছি চাচিন্দী? আয়েষা নাকি কাল দিল্লী বাবে ? আমার ত কথাটা একেবারেই বিখাস হ'ল না, তাই ছুটে ধবর নিতে এলুম।

আমিনা। ওমা, এর মধোই পাড়ার লোকের কানে কথাটা উঠেছে ? ধন্যি বাপু!

মোতী। না, মরিয়ম তার একটা কুর্ত্তা দেলাই করাতে নিয়ে গেল কি না, তাই বললে বে এই সব কথাবার্তা হচ্ছে ভানে এলুম।

আমিনা। তার মত পাড়া-বেড়ানী আর কে আছে বল ? এদিকে তাকে দিয়ে ঘরের একটা কাদ্ধ পাবার দ্বো নেই। তা তোমার কাছে বলতে কি বাছা, তুমি. আয়েষকে মায়ের পেটের বোনের মত ভালোবাস, ওর যাবার কথা হচ্ছে বটে, কিন্তু এখনও কিছু ঠিক হয় নি।

আবেষা। ই্যা ভাই মোতীদিদি, ঠিক হয়েছে। বল মা, সব ঠিক হয়ে পেছে, না ্ব আয় মোতী, আমরা কাপড়চোপড় বন্ধ করে ফেলি গে। (প্রস্থানোছত) (রোশেনারার প্রবেশ)

বোশেনারা। চাচিজী, আয়েষার নাকি দিলী যাওয়া ঠিক হয়েছে ?

আমিনা। ( গালে হাত দিয়া) মাগো, আমি কোথা বাব! আমরা নিজেই বেকথা জানি নে, সেকথা শহরস্থ রাষ্ট্র হয়ে গেল ? কাজীসাহেবের বাড়ী কি এখানে? মরিয়ম কি এর ভেডর সেখানেও ঘুরে এল ?

বোশেনারা। মরিয়ম কেন বাবে ? এই ঘণ্টাথানেক আপে আমাদের ফতেমা আয়া আমার নতুন চোলিটা থলিফা সাহেবের কাছ থেকে আনতে গিয়েছিল, সেধানে বসে থাকতে থাকতে শুনলে বে মরিয়ম এই কথা বলছে। আমি ত শুনে একেবারে আকাশ থেকে পড়লুম। তাই ভাবলুম বাই একবার ছুটে দেখে আসি গে কি ব্যাপার! আমিনা। এ কথা ত চিরদিন লুকানো থাকবে না মা, তবে আমরা নিজেরাই এখনও মন হির করতে পারি নি। হজুর এইমাত্র বলে পাঠিয়েছেন বটে, তাই ভাবছি—

আমেষা। ভাৰতে ভাৰতে বে এদিকে গোছপাছের সময় বহে গোল মা।—আছো বোশেনারা, তুই ত একবার দিলী পিছেছিলি। সেট। কি মগের মৃদ্ধক ? সেধানে বে যায়, সে নাকি ফেবে না ? ভবে কি তুই মরে ভূত হয়ে এসেছিস ?

রোশেনারা। সে দেশে একবার গেলে আর ফিরতে ইচ্ছে হয় নাবটে, সে কথা সতিয়। কি রূপ, কি রং, কি রোশনাই, কি তামাশা! কেবল মা-বাপের জন্য মাঝে মাঝে বা মনটা কেমন করত, না হলে কি আমি আর ফিরতুম? চল, তোর সক্ষে আমিও আবার বাই ভাই, বিদিও তোকে দেখলে আমার দিকে কেউ আর ফিরেও তাকাবে না! কোন্ নবাবজালা হয় ত তাঁর হাজার বেগমের উপর আর একটি বাড়াবার জন্য শাহেন শা'র কাছে দিনবাত আরজি পেশ করতে থাকবেন। আর তুইও দে সব বাদশাহী চেহারা দেখে আমাদের জল্লী দেশের মুর্থ কক্ষ লোকদের ভূলে যাবি।

আমেষা। যা:, তোর অত বাজে বকতে হবে না। এখনও আমার অনেক কাজ বাকি আছে, চল।

বোশেনারা। আচ্ছা, দাঁড়া, আমাকে বেগমরা বেদব কিংখাবের পেশোয়াজ দিয়েছিল, তা ত বাল্পে ভোলা থেকে থেকে পোকায় কাটছে। তারই ত্'একটা ভাল দেখে নিয়ে আসি, তোর সেখানে কাজে লাগবে। আর আমার চেয়ে ভোকে মানাবেও ভাল। প্রস্থান )

মৃন্সী। মা, তুমি ত নতুন দেশ, নতুন লোক দেখতে চললে, কিছ আমাদের সব বে নিয়ে গেলে, আমর কিনিয়ে থাকব?

আবেষা। খ্রশেদ্ রইল বে বাবা। আর আমি ত
চিরদিনের জন্যে ভোমাদের ছেড়ে বাচ্ছি নে—দেপতে
দেখতে দিন কেটে বাবে। বরং ভোমাদের জন্যে কি নিয়ে
আসব, তাই জিজ্ঞেদ কর। মা, আমি এমন সব চমৎকার
মোগ্লাই খানা আর সাঁচচা কলাবতুর কাজ শিখে এসে
ভোমাকে শেখাব বে, ভোমার কাবাবের আর
ফনামের খোশ্বয় পাড়াস্থ্ছ তুর্তুর্ করবে। আর
ভোমার জন্যে কি আনব বাবা? মোগ্লাই ছবি না
ফার্দী পুঁথি?

মূলী। তুমি নিজে ভালোর ভালোর কিরে এস মা, আমি আর কিছু চাই নে। আমিও ত বুড়ো হরেছি, হরত আর দেখা নাও হতে পাবে। (কিছুক্দ স্বাই নিতর)

(পেশোয়ান্ধ হাতে করিয়া রোশেনারার প্রবেশ)
রোশেনারা। (ইাপাতে ইাপাতে) চাচান্দী, আমি
বাবাকে বলেছি, তিনি বললেন তোমার যদি মত হয়, তবে
আমি আয়েবার সন্ধে দিল্লী বেতে পারি। কি বল, তোমার
এতে কোন আপত্তি নেই ত ?

মুনী। দেকি কথা মা, আমরা ত ওর সন্দেকাকে দেব তাই ভাবছিলুম; তুমি বেতে রাজী আছে তনে মন থেকে মন্ত একটা ভার নেমে গেল। আর তুমি আগের সেখানে পেছ, সব জান, এর চেয়ে ভাল সজী আমরা কোধায় পাব ?

আরেষা। তবে আর কি, সব গোল মিটে গেল। এখন আর, আমরা সবাই মিলে আমোদ করে একটা গান করি, তা হলে মনের এই অন্ধকার ভাবটা কেটে বাবে। বাবা, তুমি বাজাও, মা তুমি শোন। ( ভিন সধীর গান )
চলো মুনাকের, বাবো গাঁঠরিরা,
বচ্দুর বানে হোবেগা।
আৰু ভি বানা, কাল ভি বানা,
আবের বানা হোবেগা।
কশিরা লৌলভ বিংনা হার—
সভি গিরে রহেগা।
মেহ্রাক লড়কা বো কোই হার
কোই নেই সাধ্যে বাবেগা।
বিংনা দের ছনিরামে রহেনা
উংনাই মোহকাং হোবেগা
করো মোহকাং উসীকোনে
বো নে সাধ্যে বাবেগা।

FFW!

# গ্রামবাসী

ত্রী আণ্ডতোষ সাকাল

ঋণী ৰামী ওৱা কেউ মৰ ভাই,
আমাদের আম্বামী,
ওৱা বে সরল সহজ মাহুম,
ভাই এড ভালবাসি !
কেশ হারবার—পেল কে কোবার—
কোন্ খাটে মাঠে মোদরবামান,
আজি গরবাসে ভাবি ব'সে ভাই
আর আবিহুলে ভাসি।

ভানি, উহাদের হিল মা বেভাব, হিল নাজো গাড়ী-ভ্ডি, হক্র ভারতে ভানিভ না ওরা হলাবে বিপুল ভ্ডি! হিল নাজো কেট হালিন ভেপুট, বোহিভ ভাভ লা নর—চুনোপুঁট, বয়াবানা ওয়া লয়া ভেবে ভড় হেলার বিভ না ভুডি। আহা, তবু ওৱা আছীৰ মোর

মর মর কতু পর,
প্রির-পরিক্স ওরাই আমার—
ভীবনের সহচর !
আমার হুংবে হিল ওরা হুবী,
মোর উল্লাসে হ'ত কত সুবী,
ওবের লাসিরা চিরদিন বোলা
হিল যে আমার বর !

হয়তো জীবনে উহাবের সমে
হবে নাকো আর দেবা,
হার বাবীনতা, হার রাজনী,
হিল এ তাগ্যে লেবা !
বৃতির পদরা বুলি' বার বার—
করিবে হারর তবু হাহাকার,
এ জীবনে হার, তকাবে না কড়
একট কতের বেবা !



चाश्रदीव अक्षे निवर्भन

ি এবাণ্ডোষ সাম্ভ

# সরকারী কলা মহাবিত্যালয়ের প্রদর্শনী

ক্রীবিমল রায়

গত ডিসেম্বরের তৃতীর সপ্তাহে সরকারী কলা মহাবিভালরের বাংসরিক প্রদর্শনীর অভ্ঠান হবে গেছে। উরোধন ক্রেছেন প্রছের শিল্পী ঞীবামিনীপ্রকাশ গালুলী। বিভিন্ন সংবাদশত্ত্রেও এই প্রদর্শনীর বিবরণ প্রকাশিত হবেছে। ভাতে চিত্র-প্রদর্শনীর উল্লেখই মুখ্য স্থান অধিকার ক্রেছে। প্রদর্শিত চিত্রাদির সমালোচনা সাম্বিক প্রিকাদিতে বড় একটা দেখতে পাওরা গেল না।

কাৰ্য, সাহিত্য, নাটক, গাম ইত্যাদি ভাল বলে পরিচিত হলে বহু বার সমালোচনা করে সেগুলির প্রশন্তি গাওচা চহ। ভাষা অধবা সুৱে ৰভটুকু ব্যক্ত করা সম্ভব, ভার চেৰে চিত্রে चहांदारम चरमक रवने श्रकान कहा वाद। आवादनकः चरमक विकिछ वाक्तिक वनाक स्था 'इति-वैदि विषय द्वि का'। একবা ভবে ৰমে কৌত্তল কেপেছে, সহকেই যা বোৰা যায় (मही कारक कारक इर्ट्याना नाम मान हव तकम ? निही-बाद्यबरे अ श्राप्त अकडी प्रमाशास्त्र भव बूँदक (क्या केतिक। कारण नहक विशवतक (वाया-रे कि वर्गकरवर नरक करनका-कुछ क्रिन ? छ। बल्न धनिश्व मिन मिन ब्रद्यांना बरन छेर्रदन । वर्णक बाका बरिय वर्गामा दश मा । निवास्तात्रेय निवयस्त्रव অৱগাৰী হওৱা বাহ্নীর। ভা না হলে শিল্প ক্রমে ক্রমে मदा वारव । त्नरे कावरन छारवत मनरक छेव् व कश्रक छरन विस-नवारनावमात बरवडे धारायम चारह। विव अववा मण्ड द्व (व, दविव वर्ष (वाव) प्रकृत, छ। इतन छ।व अक्वास कांत्र कराम और त्य. विविध मानात्व निकास श्रीकाम चामात्वत ষেশে নেই। সেই কারণে ভাষার সারাখ্যে বংগচিত नवारमाञ्चा मा हरम हिंद अध्यायम क्या बूबरे अखा। আৰৱা আগে দেবি, পরে ভাষার প্রকাশ করি। এ কেজে चार्त कारन चमर कि रवरंख नामि, चाइनंद रहर वृत्रंख भावय-क्रिक वा अवलाव का त्वर्वा व'न किया।

পুদ্র অভীতে ৰাজ্য বৰণ গিন্তি-গুড়ার বাস করত, কাঁচা নাংস বেড, রানারণ, নহাভারত, বেণ্ডু, উভররানচরিত বচনার কল্লাও বৰণ ভার ননে উলিভ হব নি ভবনও সে গুহার ভিতরে ছবি আঁক্ত। কোমও জাতির সভ্যতার ব্যসনিরপণে সেই জাতির ছবির উৎপতি ও ক্রমবিকাশের বারাটি অফ্সরণ করার প্ররোজনীয়তা অপরিসীয়। এ কথা অন্যীকার্ব্য বে, সভ্যতার শীর্ষভাগে শিলের স্থান।



প্ৰীর ভগরাধ-মন্দিরে [ এরামচন্দ্র ভাস

এখন প্রশ্ন হক্তে—ছবি কাল্ক বলব ? ভাষাত্র সাহায্যে ববন বাংলাদেশের একটা পল্লীর বর্ণনা করি, ভবন গুলেই বর্ণনার ভেতর দিরে নেই পল্লীর ছবিটা ননের বব্যে ভেলে ওঠে। ববন সেই বর্ণিত পল্লীকে দেখতে বাই ভবন করের চোধে দেখা পল্লীর সকে সাহুডের অভাব ঘটে; ববে হর, বা দেখলেই ছিল ভাল। প্রস্থৃতির এক একট দুরুপটে সৌক্র্য্য সূক্যানো

আছে—বেটা ভার বাব্র্য। কাউকে দেখে ভার বেহনাবণ্য, ভদিবা, আঘল, বং ইভ্যাদি টিক টিক বর্ণনা করা হ'ল, কিছ ভ্রমণ থাকী রইল আসল ছিনিয—সে ভার বাভাবিক সভার রূপ বর্ণনা করা। এই সভা ভার বাব্র্য্য--বাকে ভাল লাগা বাহুবের ক্ষপত অবিকার। বাহুব ভাকেই দেখতে ও দেখাতে ভালবালে।



কুটার-শিল ি শ্রীচুণীলাল দতগুপ্ত

মনের উপর বর্ণে বর্ণে বর্ণনার ছবি এঁকে দেওরা—এ হ'ল ক্যালিলীর কাজ। চিত্রলিলীর কাজ রঙে রেখার রুপারিত করে ছবিটাকে একেবারে জীবত করে এঁকে দেখানো। কোনও লেখা ভাষা না জামলেও এ ছবি অভরত্ব হব। ভাষা কঠত্তই করা ব'র—কিছ ভাষার ভিভিতে বে ছবির স্টি, ভার ছান অভরে।

প্রদর্শনীতে অনেক রক্ষের ছবি ছিল, দর্শকও এনেছিলেন অনেক, নভারতও শোনা গেল বিভিত্র রক্ষের। প্রশংসা করে গেছেন প্রার সকলে। কিন্তু তাঁরা ছবি নিবে গেছেন ধুব অরই। শিলীকে সুখ্যাতি করা বাহ্নীর, কিন্তু তার শিলকে সমানরে এইণ করে তৃত্তি পাওরাও শান্তির কথা, গৌরবের কথা।

প্রবর্ণনীর উদেশ্য, বেশের শিল-সম্পরের সলে বেশবাসীর পরিচরসাবন করা, শিল-সম্পরের ভাঙারট ভাবের হাভের কাছে ভূলে বেওরা। প্রবর্ণনী নৃতন দৃতন শিলীর প্রতিভাবিকাশের অন্তত্ত্ব কের তৈরি করার সহারভা করতে পারে। শিল বে শিকার রভ বড় অল, ভাতীর সংস্কৃতির সলে অলাকিভাবে ক্ষিত্ত, ভা বীকার করে নেওরা প্রবোজন। বেশবাসীর সলে শিলীকের ব্যিক্তিভা প্রবং শিল-পরিচর-সাবন এই প্রবর্ণনীর বারকতেই সভব।

প্রবর্ণনী বেবে ধূব আমল লাভ করা গেল। শিলীরা স্বাই আলহালী--আক্ষর নাই, ভাক্তমক নাই, স্ক্রীর প্রেরণার নিক্ষের খেরালমত বা এঁকেছেন, তাই তাঁরা দেখাতে চেরে-হেন। হবিওলি কুলর, কিন্তু লার অর। প্রদর্শনীতে প্রথম



কৰ্মকা ত্ৰিশচীন বাৰ

শ্রেণী থেকে পঞ্চম শ্রেণী এবং শিক্ষণ-শ্রেণীর ছাত্রছাত্রীদের বিভিন্ন বিভাগের কাক ছিল, বেমন ইণ্ডিরান পেন্টিং, কাইম আর্টস, কর্মাশিরাল আর্ট, গ্রাফিক আর্ট, ভাত্মর্থ্য এবং কারুশির এতথ্যলো বিভাগের কাক্ষের প্রকারভেদ পাকার একবেরেমি ছিল না। তবে সংখ্যার কিছু কর হলে ভাল হ'ত।

বর্তনান বাংলার ছাত্র-শিল্পীদের বছবিৰ বাধা-বিয়ের সমূবীন হতে হছে। অভাব-অন্তন্ম, বাসহানের সম্ভা, রং, তুলি, ভাগজ, ক্যানভাস্ ইত্যাদি শিল্পোপকরণের উচ্চ বৃল্যা শিল্পচর্চার পথে প্রবল প্রভিবদ্ধররপ হরে ইাভিরেছে। ভাই বলে শিল্পীরা শিল্পভলার চর্চা ছেডে হিডে পারেন না। শিল্পাহুরানীরা হু'একখানা করে ছবি ক্রম্ন করলেই একের উংলাহ বাভবে। বিলাভের বিধ্যাভ শিল্পী মি: ভশিন একেশ প্রমণে প্রদেশ তিনি প্রক্রমণী দেখে অব্যক্ষ প্রীর্মেক্রমণার চক্রবর্জীকে প্রচুর প্রশংসা করে গেছেন এবং এই আশা প্রকাশ করেছেন যে ভবিষ্যতে এই বরণের একটি প্রদর্শনীর অন্তর্গান বিলাভে সভবশর হতে পারে।

এই প্রবাদ্ধ বেগৰ হবি হাপান হ'ল, তা হাড়া এনন আরও হবি হিল, বেগুলি অনেকের দৃষ্ট আকর্ষণ করেছিল, ভালেরও নাবের উল্লেখ করা পেল। শ্রীপান্তিরঞ্জন মুবোপাব্যার, ইভিয়ান পেলিডের পঞ্চর শ্রেমীর ছাত্র—এর কাত্র— গুলো বুব চবংকার লাগল। 'পরপ্রাা' ছবিট পশ্চিমবদের রাজ্যপাল জীহরেন্ত্র-ক্ষার মুবোপাব্যার কর্তৃক প্রকৃত ছরেছে। ছবিটির রেখাবিভাগ, বর্ণপ্রাাগ, রচনা এবং প্রকাশ অভি স্থলর। ছবিটিভে ভারতীর শিল্পকা-প্রভির অস্পরন করা হবেছে। এতে সংব্য এবং মান্তাবোধের প্রিচর পাঙ্যা বার।

প্রীচিত দাস, শিক্ষণ-শ্রেণীর ছাত্র—
'প্রতিকৃতি' প্যাষ্টেলে আঁকা, ভূলি ব্যবহার করা হর নি। ছবিট কুন্দর হরেছে।
ছবিট অনাভ্যর, কিন্তু এর সৌন্দর্য সম্পূর্ণ
রূপে প্রকাশিত।

প্রশাদীন রার, ফাইন আর্টস্ পঞ্ম শ্রেণীর ছাত্র—'টেনের কামরা' রঙে আঁকা কেচ, ধ্ব ভাল হয়েছে। গাড়ী চলুতে, যাত্রীরা আলাপ-আলোচনা, গল-

গ্রহণ, রাজনীভিচর্চার মণগুল। ছবিতে এই তাবট কুটে উঠেছে। বেল সবটাই চলছে—বেমে নেই। এর আর একখানা ছবি 'কুটার-শিল্প' (কাঠ খোলাই)—কাজে ব্যস্ত ছট ছীলোক, কাজে ভারা ভগর এই ভাবটা রচনার প্রকাশ পেরেছে।

জীৰতী হৈমতী সেন, কাইন আচঁস্ পঞ্চন শ্ৰেণীর ছাত্রী— 'বাজপুতানী' তৈলচিত্র—এর কাজগুলো অবিকাংশই স্থলর হ্রেছে। এর কোন কোন ছবি বিশেষ প্রশংসালাত করে-ছিল। ছবিতে রাজপুতানীকে ঠিকই চেনা বাছে। ডুইং, রং এবং তুলিটানার পঙ্জি প্রশংসনীর। এর ছবিতে নৈপুণ্য, বাধুর্ব্য ক্রুচি এবং সাহসের পরিচয় পাওরা বার।

শ্রীবিপ্রদাস নহান্তী, শিক্ষণ শ্রেণীর ছাত্র—'প্রগাধন' বৃষ্ঠিট ভারতীর ভাক্তর্যের একট শ্রেষ্ঠ নিদর্শন। প্রসাধনবতা ল্রীলোকটর দেহতলিনা অনবত ভাবে পাবরে রূপারিত হ্রেছে। ভাক্তর শ্রীলাণ্ডভোষ সামত বিভীয় শ্রেণীর হাত্র—কারিগরী শিল্প চার ভাগে বিভক্ত করে দেবান হরেছে—কোন প্রাসাদের প্রাচীরগাত্রে ছাপনোপরোনী ভাক্তর্যাশিল। সহজ্ব সরল ভলীতে সাবারণ বাছ্য কে কেবন করে কি তৈরি করছে ভা দেবান হয়েছে। শিল্প-পরিবেশন-নৈপুণ্য চরংকার।

শ্রীক্ষণিত দেন, ক্যাশিয়াল তৃতীর শ্রেণীর হাত্র—'বাকার' রেণার আঁকা একট ক্ষেচ, প্রশংসনীর। জীরাবচল কাস ক্যাশিয়াল বিভাগে তৃতীর শ্রেণীর হাত্র—'ভিজিট্ পুরী' একট মুভ্য বরণের পোঙার (প্রাচীরচিত্র)—পুরীর পট-চিত্র অবলহনে আঁকা, ক্ষরাধ্বেবের মন্দির্দশ্যের ক্ষত



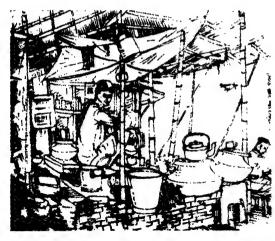
টেনের কামরা

[ अनहीमह्याद

আকর্ষণ স্পষ্ট করবার ক্ষত। ছবিটাতে আছে। শ্রীচুণীলাল দত্তপ্তধ্য-ক্ষাশিরাল তৃতীর শ্রেণীর হাত্ত-পিত্ত' ক্যালেণারের উপর্ক্ত ছবি। ক্যালেণার লাধারণতঃ



প্ৰভিকৃতি এশচীন ভাৰ



বাজার 📗 🗐 দলিভ সেন

বিজ্ঞাপনের খত হাপা হয়। একটা সুখর হবির বব্যে বিজ্ঞাপনের বৃদ্ধ কথা নিহিত আছে। একটু একটু করে একটা বাপ বোনা হচ্ছে। অনেক রকর অর্থেই হবিটাকে ব্যাবা করা বার। এ হাকা আর বে সমত শিলীর হবি উল্লেখবোগ্য তাকের নাম নীচে কেওরা হ'ল—

শ্রীজকণ বহু, যীরা সেন, অবিভ বল্পী, হুভাষ সিংহ রার, কমল চৌধুরী, সলিলক্ষার ভটাচার্থা, ভাষাদাস সেনগুঙ, শিউলি হার, দেবিকা মাগ, পরীক্ষিং বহু, সভোষ কুশারী, হুমনুল সেন, লজীদর দাস, রমল সেন, হণজিং দে, কামাই কর্মনার, গোঠ কুমার, জ্যোভির্মর মঞ্মদার, হুবীক্র দাসবর্থা, অম্ল্য চৌধুরী, হুমির্মল বহু, হবি মুবোপান্যার, মদম হার, মনোরঞ্চ ঠাকুর, রবেন মুবোপান্যার, অভিভ চক্রবর্তী, সমহেশ চৌধুরী, শর্মনী রাম চৌধুরী।

# রামানন্দ চট্টোপাধ্যায়

ত্রীদেবেজনাথ মিত্র

১৩১৯ সালের চৈত্র মাসের 'প্রবাদী'তে আমার কবি-সম্পর্কীর প্রথম প্রবন্ধ প্রকাশিত হয়: তথন আমি नारवाद (विद्याद) कृषि भश्यविद्यानरम् व्यक्षस्य 'প্রবাসী'র কর্ত্রপক্ষদের মধ্যে কাহাকেও তথনও জানিতাম না। বধন প্রবন্ধ পাঠাই তখন আমাদের জানৈক অধ্যা-পক ম্মাধনাধ ঘোষ মহাশয় এবং কয়েক জন সহপাঠী আমাকে বলিয়াছিলেন বে. প্রবাসী অতি উচ্চ স্তরের মাসিক পত্রিকা, ইহাতে নামন্তাদ। ব্যক্তিদের প্রবন্ধ বাতীত খার কাহারও প্রবন্ধ প্রকাশিত হয় না; খামার প্রবন্ধ অমনোনীত হট্টা ফেবত আসিবে। প্ৰতবাং আমিও প্ৰবন্ধ প্ৰকাশ সম্বন্ধ আশা চাডিয়া দিয়াভিলাম। কিছ আশ্চর্যের বিষয়, অতি অক্স দিনের মধ্যেই আমার প্রবন্ধ 'প্রবাসী'তে প্রকাশিত হটন। টহাতে আমার যে কি আনন্দ হইয়াচিল ভাষা আমার এখনও মনে আচে এবং ইহার ফলে বে উৎসাহ ও প্রেরণা পাইয়াছিলাম ভাহার বলেই আৰু পৰ্যান্ত কৃষি-সম্ভীয় প্ৰবন্ধ লিখিয়া বাইভেছি।

১৩১৯ সালের চৈত্র মাস হইতে 'প্রবাসী'র সহিত আমার সংবোগ ছাপিত হইরাছে; কিছ প্রজের রামানন্দ চট্টোপাধ্যায় মহাশরের সহিত আমার সাকাৎ হইরাছিল ইহার বহুকাল পরে। সন ও তারিও মনে নাই; আচার্য্য প্রায়ুক্তক বার মহোলয় আমাকে ভাছার নিক্ট লইরা

গিয়াছিলেন: তথন কর্ণ-ছ্যালিস ষ্ট্রীটে সাধারণ আগ্ন-সমাজ গ্রহের পার্যে প্রবাসী আপিস অবস্থিত ছিল। বামানন চটোপাধাায় মহাশয় সহছে ওনিয়াছিলাম বে. ডিনি অতি গভীর প্রকৃতির লোক, কাহারও সঙ্গে বিনা কারণে দেখা-সাক্ষাৎ করেন না. সকল সময়েই লেখা কিংবা পড়ায় ব্যাপত থাকেন: কিন্তু জাহার সহত্তে আমার এই ধারণা জাঁহার প্রথম কথাতেই পরিবর্ত্তিত হইয়া গেল। আচার্য্য প্রফল্লচন্দ্র আমার পরিচয় করাইয়া দিবার পরেই তিনি আমাকে বলিলেন, "তুমি কবি-বিষয়ে প্রবন্ধ পুর সহজ ভাষায় লিখতে পার: ডোমার প্রবদ্ধে এমন কোন বৈজ্ঞানিক পারিভাষিক শব্দ থাকে না, যা আমার মত লোক বুরতে পারে না।" তাঁহার এই প্রথম কথাতেই আমার আশহা সংখাচ একেবারে দুর হইয়া গেল। আনন্দের আভিলয়ে আমি বিহবদ হইয়া পড়িয়াছিলাম। প্রথম কাৰে আমাকে তাঁৰ "তুমি" সংখাধন, বিভীয় কাৰণ আমার প্রবাছর প্রশংসা। আমার প্রথম প্রবছ প্রকাশ সহছে আমার অধ্যাপক ও সহপাঠিগণ হে मत्यर श्रकाम कविशाहित्यन त्मक्था छै। राक् विमाम जिन जरक्नार वनितन, "कृषिष्टे द आयामत मान्य আসল বস্ত : কৃষি সহতে প্ৰবন্ধ যত বেশী প্ৰকাশিত হয় ভড় দেশের মূলল হবে—আমার কাছে কবি-বিবয়হ

প্রবন্ধ অভি মূল্যবান ; ভূমি লিখে বাও।" তথন বুঝিলাম ভাঁহার নিকট ক্রবির মূল্য ও মর্থাদা কড বেশী।

चार अकते। बहेनार कक्षा दिएक करिएक्कि । देवल करि-अवाजीव अनारवर क्या डेश्रवजी १३३३ मार्स चाचि अवि গরের বই লিখিয়াছিলাম: পুত্তকখানির নাম "ভূলের ফ্সল।" আচাৰ্ব্য প্ৰফুলচন্দ্ৰ ইহাব ভূমিকা লিখিয়া দিয়া-ছিলেন। 'প্ৰবাসী'তে প্তৰধানিব সমালোচনা প্ৰকাশিত হুইয়াছিল। সমালোচনার প্রথমেই ছিল-"লেখক চাষা. লিখিয়াছেন গল।" তথন আমি ফরিদপরে, জেলা-ক্ষি-কর্মচারীরূপে নিযুক্ত ছিলাম: সমালোচনাতে আমাকে 'চাষা' আখ্যা দেওয়াতে আমি খুবই মন:ক্ল হইয়াছিলাম। ইহার পরেই সরকারী কার্য্য উপলক্ষে ধ্রথন চুই-এক দিনের জন্য কলিকাভায় আসি—তখন বামানন্দবাৰৰ সহিত সাকাৎ কবিয়া আমাকে 'চাবা' আখাা দেওয়ার প্রতিবাদ করি। তিনি হাসিতে হাসিতে বলিয়াছিলেন, "তমি যদি প্রকৃতই ক্ষিকাঞ্চকে ভালবাস, তা হলে 'চাষা' উপাধিতে তোমার গৌরব অন্তভব করা উচিত।" এই প্রসঙ্গে তিনি আরও ৰলিয়াছিলেন, 'চাষাই দেশের থাঁটি মাহুষ। তমি সেই রকম থাটি মানুষ হবার চেটা কর।' তাঁহার সেই হাসি আমার এখনও মনে আছে। তখন হইতেই আমি বছ সভাষ নিজেকে 'চাষা' বলিয়া পবিচয় দিয়াছি এবং বামানন্দ চটোপাধ্যার মহাশয়ের কথা সকল সভায় বলিয়াছি।

রামানন্দবাৰু আমাকে কয়েকখানি চিঠিও লিখিয়াছিলেন, বিশেষ বিশেষ শস্তু সম্বন্ধে প্রবন্ধের প্রয়োজনেই চিঠিওলি লিখিত হইয়াছিল। সেই স্কল চিঠিতেও কুবির উন্নতির জনা ভাহার আগ্রহ ও উৎসাহ দেখিয়া আক্র্যা হইডাম।

অতি সামান্য দরকারেও রামানন্দবাব্র নিকটে গিয়াছি —
কিছ তাঁহার নিকট বাইতে কথনও কোন বিধা অছ্ভব করি
নাই। ১৯২৫ সালে 'ওয়েছলী এগজিবিশনে'র পূর্ব্বে কলিকাতার ইডেন গার্ডেনে একটি প্রন্দেনী হইয়াছিল। উক্ত
প্রদর্শনীর কৃষিবিভাগের ভার আমার উপর নাস্ত ছিল। ঐ
সময়ে কতকগুলি ছবি, চার্ট প্রভৃতির জন্য কয়েকটি ইংরেজী
বৈজ্ঞানিক শব্দের বাংলা পারিভাষিক শব্দ স্টে দরকার হয়।
একটি ইংরেজী শব্দ ছিল "pedigree bull", আমি ইহার
বাংলা অছ্বাদ করিয়াছিলাম "বংশ-আনা য়াড়"। রামানন্দবাবু কয়েকটি ইংরেজী শব্দের অছ্বাদ করিয়া দিলেন;
আমার pedigree শব্দের বাংলা অছ্বাদ করিয়া দিলেন,
"খ্ব সহজ হয়েছে, আমি এত সহজ লিখতে পারতাম না।"
যে কয়েক বার তাঁহার নিকট গিয়াছিলাম, এইরপ স্বেচ,
প্রীতি এবং উৎসাহ লাভ করিয়াচি।

১৩১৯ সালের চৈত্র মাদ হইতে অদ্যাবধি 'প্রবাসী'র সহিত আমার সম্পর্ক অবিচ্ছিন্ন আছে। রামানন্দ চট্টোপাধ্যায় মহাশয়ের জ্যেষ্ঠ পুত্র, প্রবাসীর বর্জমান সম্পাদক প্রীকেদারনাথ চট্টোপাধ্যায় মহাশয়ও তাঁহার পিতার ন্যায় উন্নত কৃষির প্রবর্জন সহক্ষে সচেতন এবং কৃষক-সম্প্রদায়ের একজন প্রকৃত দরদী। ইহার প্রমাণ পাওয়া বাইবে 'প্রবাসী'তে প্রকাশিত কৃষিসম্পর্কীয় প্রবন্ধনমূহের সংখ্যাধিক্য হইতে। প্রবাসীর "বিবিধ প্রসক্ষের আলোচনাসমূহ চইতেও ইহার পরিচয় মেলে।

# ইতিহাসে নাম

#### ঞ্জীকালিদাস রায়

वर्षाच्य देखिहारम त्वि बूटन बूटन चाटन ध्यम माक्य (करण (करण. **এই एडि** विवासात করে ভোলে ভোলণাড ভাতে ছাপ বার রেবে শেবে। এ ৰাছৰ ভবু চাৰ विविध्य अ वदाश ইভিহালে থাকে খেন নাৰ আশা দিয়ে জিনে ভার ৰে দেশে সে কৰে হাৰ সে কেশ কভ না কের দাব। প্ৰাণ কেছ ভারি ভরে ्रजफ नफ गांबी-मद नक नक श्रांत नक्त. नक नक प्रद्या হারার অপভ্য দারা সালা দেশ হয় হীলবল।

ভার, ধর্ম, সভ্য নর मिस, मातानका मह নৰ পরাধীমভা ৰোচম, আন্ত-প্ৰথ বৃদ্ধি নয় परमामद विक मध नव विदय क्लान्जायम, गाव वाविवाच जाट्य ७१ विष-रेकिशारम व्याप क्रिक्स वामान व्याप একের ধেরাল বলে সহল অথলে পথে বৰ্গভূমি হয় বসাভল। তৰু লোক বাহি বুৰে কোট কোট ভারে পুৰে बूटन यक करत काकाकात । ভাবেরি কল্যাণ-ভরে ৰোহাবেশে ৰনে করে वृत्रि (न (करवड चवणांड ।

# পণ্ডিচারীতে শ্রীঅরবিন্দ

### এমতিলাল রায়

পথিচারী-বাসকালে আমরা প্রীঅরবিন্দ নাম সংক্ষিপ্ত করিয়া তাঁহাকে "অরো" বলিয়া অভিহিত করিতাম। এই সংখাধন আমরা অভিশয় আদরের সহিত করিতাম। এই "অরো" আমার নিকট কৃত্র ছিলেন না, তাঁহার সমূরত মহিমা আজিও অন্তত্ত্ব করি, বিশ্বিত হই। অরোর সক্তে এই সমরে আমরা দিবারাত্র অভিবাহিত করিয়াছি। মধ্যাহ্নভোলনের পরে তিনি বারান্দায় বসিয়া আলাপ করিতেন। বোগসাধনার মধ্য দিয়া আমালের জীবনকে নৃতন ভন্নীতে ঢালিয়া লইবারই বেন তিনি আলাে ধরিতেন। আলােচনা দীর্বাত্রি ধরিয়া চলিত—সারা রাত কোঝা দিয়া বেন কাটিয়া বাইত, আমালের হঁস থাকিত না। প্রভাতের পাথীর ভাক্টে নিজ ক্রিল শ্রাহার সিয়া আশ্রয় লইতাম। দে কি অসাধারণ প্রীতি ও অন্বরাগ, সে কি গভীর স্নেহ-ভোবে আমাকে বাধিবার অন্তপ্রেরণা।

জ্ঞাম বালকোল চইতে নিবামিধালী। পণ্ডিচারী ভাসিয়া ছেখিলাম-মংস্থাও মাংস ভিন্ন ছাই বেলা আহাবের অন্ত বাৰস্থা নাই। আমি কয়েক দিন অঙ্গের সংক আলুসিদ্ধ বাইয়া উদরপর্ত্তি করিতে লাগিলাম। অরো নিরপেক ভাবেই হাসিতেন। মৃথি, বিভয়, নলিনী প্রভৃতি পরিহাস করিয়া বলিভেন, "এমন করিয়া কভদিন চলিবে? মংস্ত. মাংদ খাইলে আপনি কি জাতিচ্যত হইবেন ?" অবোব মুখে কিন্তু কথা ছিল না-তিনি ভোজনকালে নানা বল-বহুত্তে সময় কাটাইয়া লিডেন; আমি কিছ জাঁহার অভবের বাণী ব্রিয়া লইলাম। অতীতের সর্ক্রিধ সংস্কার চটতে মক্তি দিভেই তার অমুপ্রেরণা অন্তরে অন্তরে অমু-ভব করিলাম ৷ বিজয় প্রভৃতির বাক্য উপলক্ষা বলিয়া মনে চটল। আমি সেই দিনই ভোজনকালে নি:সংখাচে বলিয়া বিদিলাম, "মাজ হইতে নিরামিবাশী আমি আর নহি। অবোৰ বাছাতে ক্লচি, ভাগাই আমার গ্রহণীয় হইবে।" मश्जीर्विदा উन्ननिष्ठ इहेश विनन, "मावाम चाननारक-আপনার সংস্থার, আচার ও নীতি অরোই ভালিয়া দিলেন। সভ্যা হইতেই আপনার পালপাত্রে সমূত্র-মংস্থ (म अबा इटेरव।"

তাহাই হটল। বাজে ভোজন-পাজের সম্থাধ বসিয়া দেখিলাম—ভাতের সলে এক বাটি মাছের ঝোল দেওয়া হইয়াছে। আবাল্যের সংস্থার জ্ঞানতঃ ভঙ্গ করিলাম বটে, কিছু অন্তর ডুকরিয়া কাঁদিয়া উঠিল। অবো এক বার

্ৰক, দিন প্রাতঃকালে ফরাসী পুলিস কমিশনার আসিয়া উপস্থিত হইলেন। মাল্রাজে মোর্ট্যার্ট লহটা অধীক্ত পার্থ-সার্থির স্কাশে গিয়াছিলাম। আমি কিন্তু গোপন পথ দিয়া পলাইয়াছি: তার পর খ্রীনিবাস আয়েকারের সহিত শ্রীঅরবিদ্দের ভবনে প্রবেশ করায় ও ইংরেদ্র পুলিস সম্ভবতঃ क्वामी भवर्गमण्डल उमस कविट वनाव, श्रामिम कमि-শনারের আবির্ভাব। বন্ধরা সকলেই আমায় গোপন ছার निश किह्न मृत्य थाकिए विश्वन-किमनाय गारहव वाफी थानाच्यांनी कविश श्रञ्जान कवित्त. श्रनवात्र वाफ़ीएक প্রবেশ করিলেই চলিবে। এইরপ পরামর্শকালে অবো আসিয়া সম্মধে দাঁডাইলেন। তিনি কটিলেশে বল্পপ্ত ব্দড়াইয়া তাহাবই অর্দ্ধভাগ গায়ে বড়াইতেন। এক ক্লোড়া চটিকুতা থাকিত। দেই সৌমাম্মির মৃত্তি ভূলিবার নয়। তথন তিনি শীর্ণকায় ছিলেন—কিন্তু-তাঁচার চক্ষে ছিল অপর্প দীপ্তি, ভাষর মুখ্মগুল। মৃতু হাসিয়া ভিনি আমায় ভিজ্ঞানা করিলেন. "কি বলিব পুলিন কমি-শনারকে " কিছু আমায় জার কিছু বলিতে হইল না: তিনি আমার মুখের পানে কিছুক্দ চাহিয়া থাকিয়া তার পর অভিশয় গান্ধীর্বে)র সহিত সিঁডি বাহিয়া নীচে নামিয়া গেলেন। পুলিদ ক্ষিশনাথকে তিনি আমার কুথা স্পষ্ট कविदाहे वृक्षाहेश वनिरम्त । त्रव कथा अनिश कमिमनाव সাহেব কেবল किसामा कवित्तन. "हम्मननश्र हहेएछ व ভদ্ৰলোক আপনার নিকট আদিয়াছেন, তাঁহার সৃষ্টিত আপনার সম্পর্ক কি ?" ভিনি ছিরকর্চে উত্তর দিলেন, "He is my disciple" (ভিনি আমার শিবা)। কমিশনার

সাহেব ক্রমন্ধন করিয়া হাজমুধে প্রস্থান করিলেন। অবে। আমাদের নিকট উপস্থিত হইয়া বলিলেন, "সব চুকিয়া গেল, ভূমি এখন আমার নিকট নিরাপদেই বাস করিতে পার।"

এই সময়ে দেড় মাস তাঁহার নিকটে বাস করি। মধ্যে একথানি প্রশন্ত গৃহে নলিনী, মণি ও সৌরীন বাস করিত। প্রীক্ষরবিন্দের সন্মুখন্ত কক্ষে বিজয়ের সহিত বীরেন বলিয়া এক ভদ্রলোক বাস করিতেন। ইংগর সম্বন্ধে পরে কিছু বলিতে হইবে।

অবোর মুখে ভারতের পুরাণেতিহাসের নৃতন ব্যাধ্যা ভানিলাম। বেদের মন্ম তাঁহার কঠে উচ্চারিত হইত। উপনিষং ও গীতার সত্য-মর্ম অন্তর দিয়া বুঝিয়া লইলাম। ভারতের রাষ্ট্রকীবনের বহু পরিচয় মিলিল—নেতৃপুরুষগণের পরিচয় পাইলাম। অবো এই সময়েই নিজের বাল্যজীবনের কথা কিছু বলিয়াছিলেন। আমি তাহা থাতায় টুকিয়া লইয়াছিলাম। সে কাহিনীটুকু আমি ইতিপুর্কের অন্যত্র প্রকাশ করিয়াছি।

আমার ইন্দোচীনে যাওয়া বছ হইল। বিপ্লবী বন্ধুদের আহবোধ অহুষায়ী বিভলভার আনিবার প্রশ্ন উপাপন করামাত্র তিনি বলিলেন, "ভারতবর্ধ রাজসিকতার মধ্য দিয়া জাগিবে না; ভারতের এক দল মাহুঘকে গীতার পার্থ- সার্বির কথা শুনিতে হইবে। ভারতের নেতৃপুরুষ্গণ হইবেন গীতার মাহুষ। তাঁহাদের শুণাতীত হইতে হইবে। তবেই আসিবে ভারতের মুক্তি।" এই সময়ে তিনি স্পষ্ট করিয়াই আমায় জানাইলেন—অভংপর বাজসিক কর্মো আমি বেন প্রবৃদ্ধ না হই। তিনি ভারতকে নৃতন করিয়া গড়িতে চাহেন। আমিও তাঁর নির্দেশ প্রাণপণে পালন করিব বলিলাম। তিনি আমায় বুকে জড়াইয়া ধরিলেন—মন্তক আজাণ করিয়া বলিলেন, "আমার কাজ ভোমার কাজ; ভোমার কাজও আমার বলিয়াই গ্রহণ করিও।"

এই সময়ে তিনি রাজে সম্দ্রতীরে বেড়াইতে যাইছেন।
আমরা সকলেই তাঁর সকী হইতাম। আমরা "পীয়ারে"র
শেষ সীমানায় আসিয়া বসিতাম। জেটিকে পণ্ডিচারীর
লোকে "পীয়ার" বলে। জ্যোৎস্নাবিধোত সম্দ্রতরক নিরীকণ
করিয়া, তিনি অভিশয় পুলকিত হইতেন। আমি গান
গাহিতাম, ক্রেশ ওরফে মণি সেও গাহিত, "অরো" তাল
দিতেন। সে রক্তবহুত্তের কথাগুলি শ্বরণ করিলে আজও
ভৃতি পাই। মনে আছে, এক দিন অলিন্দে বসিয়া তিনি
আকাশের দিকে চাহিয়াছিলেন—আমায় ইচ্ছাশক্তির কথা
বুরাইতে গিয়া বলিলেন, "ইচ্ছা সর্ব্বব্যাপী, এই দেধ—
আমি will করিব, চিলগুলি তৎকণাৎ ভিন্নমুখী হইল।
বাইবে।" সভাই উচ্চাহার ইচ্ছামাত্র চিলগুলি ভিন্নমুখী হইল।

रामिन विमारत्व भागा जानिन, रममिन कि कारव जाति वारनाय किविया वाडेट-এडे श्राप्तत केवा क्रिका क्रिका তিনি কিছকণ চিতা করিলেন, তার পর বলিলেন, "বেডাবে তুমি ইংরেজ পুলিদের চক্ষেধলি দিয়া চলিয়া আদিয়াছ. ভোমায় পাইলে ভাছারা সহজে ভোমায় ছাভিবে না। ভোমাকে গোপনেই 'ফিবিয়া বাইছে চইবে। আমি ठाँशांत जात्मगञ्चाशी कवामी क्लाम्नानीव वाश्नाम व ষ্টীমার আদে. তাহাতে চডিয়া বসিলাম। ভারণর নীলাম্বরাশি বিদীর্ণ করিয়া কলিকাতার বন্দরে বেদিন সীমার ভিডিল. সেই দিনই বাজাবাজার বোমার কারখানা আবিষ্কৃত হয়। অমৃতলাল হাজ্যা ওয়ফে শুলাকমোচন প্রমুখ প্রায় ২০ জন বিপ্লবী ধরা পড়ে। আমি ঐ রাজে বাজাবান্ধার ঘাইতে গিয়া অন্তবের স্তব্বেধণায় সহসা গতিব মোড ফিরাইয়া **ठमानमारवर्डे छेलनील हर्डे।** অবোর আশীর্কাদেই এ যাতা বক্ষা পাইয়াতি বলিয়া মনে কবিলাম।

১৯১৪ প্রীষ্ট!ব্দের ১৫ই আগন্ত প্রীঅরবিন্দের নৃতন বাণী লইয়া "আর্ঘ্য" পত্র প্রকাশিত হইল। "বন্দে মাতরম্"-এর থবি "কর্দ্মহোগিন" ও "ধর্ষে"র পর "আর্ঘ্য" অপূর্ব্ব অধ্যাত্মতত্ত্বসমূহ প্রকাশ করিতে লাগিলেন। "আর্ঘ্য" বাহির করার পূর্ব্বে চন্দননগরে তেপুট নির্বাচনের আন্দোলনে আমাদের যোগদান প্রীঅগবিন্দের নির্দ্ধেশক্রমেই হইয়াছিল। ১৯১৯ প্রীষ্টাব্দের নির্বাচনে আমরা জয়লাভ করি—তাহার মূল এইখানেই নিহিত ছিল। ১৯১৪ প্রীষ্টাব্দের ফরাসী ভারতীয় ডেপুট নির্বাচনে ম: লে-ম্যার, ম: পল ব্লুজে ও ম: পল রিশার, এই তিন জন প্রতিনিধি পদ প্রার্থীরূপে দাঁ টুইয়াছিলেন। আমরা এই সময়ে ব্ধাসাধ্য চেষ্টা করিয়া ম: পল বিশারকে ভোটযুদ্ধে জ্বী করিতে চাহিয়া-ছিলাম; কিছ ম: লে-ম্যারই বিজয়ী হইয়া ডেপুট ক্রপে নির্বাচিত হন। এই সহত্তে প্রীঅরবিন্দ লিথিয়াছিলেন—

"The election is over, or what they call an election with the result that the man who had the fewer real votes, has got the majority."

"নিৰ্ব্বাচন অথবা ইছারা বাহাকে নিৰ্ব্বাচন বলে, ভাছার শেষ হইরাছে। কলে বিনি সবচেত্ত্তে কন ভোট পাইরাছিলেন, ভিনিই সবচেত্ত্তে বেশী ভোটের অধিকারী ইাড়াইরাছিলেন।"

তাঁহাবই পত্ত হইতে আরও জানা পিরাছিল বে, বেধানে ম: লে-ম্যার মাত্র তিন শত ভোট পাইরাছিলেন, সেধানে ৩৩০০ শত নিধিত হইরাছিল। ফরাসী ভারতের নির্মাচন সম্বদ্ধে এই কটু মন্তব্য প্রকাশ করিয়া, তিনি সেই পত্রেই আমাদের চেষ্টাকেও প্রশংসা করিয়াছিলেন। ইচার পর ভিনি অর্থের কথা পুনরায় আনাইণেন। তিনি লিখিলেন—

"My present position is that, I have exhausted all my money along with your Rs. 60|- and I am still in debt for the Rs. 130|- due for the old rent. I do not like to take more money from Mons. Richard. He has sold one-fourth of his wife's fortune (a very small one) in order to be able to come and work for India."

"ভোষার ৬০, চাঁকা সহ আষার সব চাঁকাই আমি বরচ করিবা কেনিরাহি। পুরাজন বাজীভাভার হরুন আমি এবনও ১৩০, চাঁকা ওপএড। বঃ রিশারের নিকট আর টাকা লইভে আমি রাজী নহি। ভিনি তাঁর স্থী-বন হইভে (বাহার পরিমাণ বুবই অল্প) এক-চভূবাংশ বিক্রম করিবা কেলিয়াহেন—ভাহা দিয়া ভারভে আসিরা ভারভের কার্য্য করিবার কর।"

এই সময়ে বাগান বিক্রয়ের জাঁহার অংশস্বরূপ ৫০০ টাকার ডাগিদ দিবার জন্ম তিনি আমায় পত্তে লেখেন। কোন বিশিষ্ট নেতার নিকট হইতে দেশের গচ্ছিত টাকা আদায়ের ছু:সাধ্যতা উল্লেখ করিয়া তিনি এই কথা লিখিলেন—

"This habit of defalcation of money for noble and philanthrophic purposes in which usually the ego is largely the beneficiary, is one of the curses of our movement and so long as it is continued Lukshmi will not return to this country. I have sharply discontinued all looseness of the kind myself and it must be discouraged henceforth wherever we meet it. It is much better and honest to be a thief for our own personal benefit than under these holy marks."

ভিন্ন ও পরহিতের উদ্বেশ্ন প্রবাধ আধানাং করার
এই অভ্যাস —বাহাতে প্রবাধতঃ বাজুবের সার্বসূলক উদ্বেশ্নই
চরিভার্ব ইইবা বংকে—ভাহা আমালের আন্দোলনের অভিনাপবরুণ; আরু ইহা বভিন্ন মা চুর হর, তভিন্ন ভারতে লখীকেনীর পুনরাবির্ভাব ক্রইবে না। আমি নিজে আনার এই
প্রেনীর সকল চিলেরি ভীরভাবে বন্ধ ভরিরাহি এবং বেবানেই
ইরা দেবি না কেন, ভাহার উৎসাহ দেওরা উচিত নহে।
আমালের সোজাত্মকি ব্যক্তিগত সার্ব-সিন্ধির উদ্দেশ্যে চোর
হ্রবাও বহং চের ভাল আর এইরপ পুণাচিক্রের আবরণে ভাহা
হর্তরার চেরে চের সাধ্ আচরণ ক্রবে।

শ্রীকরবিন্দ দীর্ঘদিন অর্থসকটের সমূখীন ছিলেন, কিছ সঙ্কটে কোন দিনই তিনি প্রতিহত হন নাই। ভাগবত কর্ম্মের জন্য অর্থাগমের পথ চিবদিন মুক্ত বলিয়াই তাঁর ধারণা ছিল। এই সময়ে তিনি ভারতের ভবিষ্তৎ সংগঠনের জন্য অর্থসংগ্রহে প্রবৃদ্ধ হইয়াছিলেন। তিনি আমায় স্পাই করিয়াই লিখিলেন—

"What you have to do is to make some real arrangement not a theoretical arrangement by which my burden of my expenses may be shifted off your shoulders, until I am able to make my own provision. Meanwhile get me Rs. 150 and the Rs. 500 due to me (garden money). If afterwards we can make no other arrangements, we shall then have to consider the question again."

"ভোষার বাহা করিতে হইবে, ভারা হইভেরে একট বছতত বাবহা করা—কোন করনাত্রক বাবহা নর—বাহাতে আবার ব্যৱভার ভোষার কর হইতে সরিহা বার—আবার নিত্রের প্রোজন নিজেই পূবণ করিতে না পারা পর্যন্ত। ইতিমধ্যে ১৫০ ও বাগান বিজ্ঞেরের ৫০০ টাকা আবার পাঠাইও। পরে আর কোন ব্যবহা বহি আমরা না করিতে পারি, ভাহা হইলে এই প্রস্কি আবার বিবেচনা করিতে ভাইবে।"

তাঁহার পত্র পড়িয়া আমি নির্ভিশয় চিম্বান্থিত হইলাম। কিন্তু সোভাগ্যবশতঃ তাঁহার দাবি পূরণ করিতে পারিয়াছিলাম। এই জন্য আমার কৃতিত্ব অপেক্ষা তাঁহার প্রেরণার মূল্যই অধিক বলিয়া আমি মনে করি।

আমি যথন ১৯১০ খ্রীষ্টাবে শ্রীমরবিন্দের নিকট ছিলাম, সেই সময়ে বীবেন নামক এক যুবক ৺বিজয় নাগের সম্পে থাকিত—পূর্বেই বলিঘছি। সৌবীক্রনাথ তাহার বিরুদ্ধে অনেক কথাই আমায় বলিয়াছিলেন এবং সে ব্যক্তি যে পুলিসের এক জন গুপ্তার, এইরপ উক্তিও তাহার মুখে শুনিয়াছিলাম। শ্রীমরবিন্দকে এইজন্য আমি সভর্ক থাকিবার অন্থবোধ জানাইয়াছিলাম, তত্ত্বরে তিনি লিখিলেন—

"Then for important subjects. You write about Biren being here. I do not hold the same opinion as Sowrin etc. do, who are inclined towards a very black interpretation of his character and action. . . . I fail to find in him, looking at him spiritually, those inoffable blacknesses, which were supposed to dwell in him, only flightiness, weakness, indiscretion, childishness, swattvic impulsiveness and self-will and certain undesirable possibilities presnet in many young Bengalecs, in a certain type, indeed, which has done much harm in the past. All these have recently much diminished and I hope even to eradicate them by the Yoga. In fact, the view of his presence here forced in me by that which guides us, is that he was sent here as the representative of this type and that I have to change and purify it. If I can do this in the representative, it is possible in the future to do so in the class and unless I can do it, the task I have set for myself for India will remain almost difficult for solution. For as long as that element remains strong, Bengal can never become what it is intended to be."

"ৰীৱেন সহত্তে ভূমি যাহা বলিয়াছ এবং লোগীন প্ৰসূত্

बाहा बिन्नाह, जाहा जवहेक मजा बटह। बीद्यामद के সকল চরিত্রগত দোষ আমার অব্যাহ্মপ্রতি পড়ে নাই। चांडात हानना, इस्तनचा, चविरवहमा, खलबान्धि अन्हे। সাভিক ভাবপ্রবৰ্তা ও বেফাচারিতা এবং এরপ করেক चवाश्नीय महायमा द्वरा यात वर्ते. याहा अक ट्यापेट वाहाली कक्नेरवर मरना विवासाम अन्य चलीरक याता स्वाहे चनिहेने कविद्यात्म--- अहे जवन (माध अथम सामकते। कथिशात अवश আমি আশা করি যোগের দারা ঐশুলি একেবারেই নির্মাল हरेशा यावेटर । ...... विभि जामात्मत निम्नजा, जिमि छाहारेज আৰার কাৰে পাঠাইয়াছেন—সেই শ্রেণীর প্রতিনিধিরূপে। আৱ ভাতাকে আমার পরিবর্তিত ও বিশুদ্ধ করিখা ভলিতে दरेता अक्ट अजीत्कत मत्या विष वेदा चाक निष दश, चाठा ठहेल चिवाएच अम्ब त्यांबेटित महाहे चाठा करा সম্ভবপর হইবে। আর ভাতা যদি আমি মা করিতে পারি, তো বে কাক আৰি ভারভের কন্য গ্রহণ করিয়াছি ভাহা সমাধান করা ছ:সাব্য তইবে। বাংলাও ভাতা তইলে যাতা তইবার জন্য চিহ্নিত, ভাতা চইতে পারিবে না।"

বীবেন সম্বন্ধে ভাঁহার এই আকুলতার মূল্য নিশ্চয়ই
অম্বধাবনীয়। মাম্বকে বড় করিয়া দেখার প্রবৃত্তি যে
ভাঁহার মধ্যে কতথানি ছিল, ইহা হইতেই তাহার পরিচয়
মিলিবে। যদিও বীরেক্সনাথের সংবাদ আর আমরা
রাখিতে পারি নাই তথাপি শ্রীঅরবিন্দের বাঙালীজাতির
তথা ভারতের অভ্যথান ও জাতীয় চরিত্রের আম্ল
পরিবর্ত্তনকল্পে যে আন্তরিক্তা, তাহা চির্দিন আমরা
ক্রত্ত্বতার সহিত শাবন করিব।

শ্রী মরবিন্দ এই সময় হইতেই বাংলার বৈপ্লবিক অফুচান সম্বন্ধে আমার নিকট বে সকল কঠোর মন্তব্য প্রকাশ
করিতোছলেন, তাহাতে বাংলার বিপ্লবিগণ তাঁহাকে রাষ্ট্রনেতার আসন দিতে অতংপর অফীকৃতি জানাইয়ছিল,
কিছু আমি তথন যে অবস্থায় তাহা হইতে মৃক্তি পাওয়া
ছংসাধ্য ছিল। তিনি সর্বাদাই জানাইতেন বৈপ্লবিক
কর্মাফুদান হইতে যেন আমি বিবত থাকি। তিনি এই
সম্বেহ স্পষ্ট ভাষায় জানাইলেন—

"You must realise that my work is a vast one and that I must in doing it come in close contact with all sorts of people, including Europeans, perhaps even spies and officials."

"ভোষার উপলব্ধি করিতে হইবে যে, আবার কার্যা অভি
বৃহৎ। এই কার্ব্যের জন্য বহুবিব লোকের সংস্পর্ণে আবার
আসিতে হইবে—ভব্ববো ইউরোপীয়, এমন কি শুপ্তচর ও
রাজকর্মচারী পর্যন্ত বাজিতে পারে।"

এই প্রসঙ্গে তিনি এক জন ফরাসী কর্মচারীরও নাম ক্রিয়াছিলেন—চন্দ্রনপ্রে তিনি কর্মোণলক্ষে এই সময়ে থাকিতেন। আলাপ করিয়া বুরিয়াছিলাম সে ব্যক্তি একেবাবেই বুদ্ধিহীন। কিন্তু শুদ্ধারবিন্দের প্রতি ভক্তি তাহার অসাধারণ। শুদ্ধারবিন্দেও এক দিন ইহা খীকার করিয়া বলিয়াছিলেন, "He is a queer sort of fool."—
সে এক বিচিত্র ধরণের বোকা লোক।

শ্পষ্টই বুঝিলাম—মঁসিয়ে বিশাবের আগমনের পর হইতেই শ্রীমরবিন্দ নৃতন পরিবেশ স্থাই করিয়া বাংলার বৈপ্লবিক কম হইতে দ্বেই থাকিতে চাহিতেছেন— আমাকেও তাঁহার সধী হওয়ার জন্ত প্রতি পত্তে নির্দেশ দিতেছিলেন। তিনি অতঃপর বেনীতি ধরিয়া চলিতে চাহিতেছিলেন, তাহার আভাস পরবর্তী কয়েক ছত্তে পরিক্ষট হইবেঃ

- (1) It mgih be known among our friends that my whole action is about to be such as I have described, so that they may not again repeat that kind of mistake.
- (2) Those immediately concerned with me must be aloof physically from Tantrlekism; because of the discredit it brings.
- (3) Biren and others of that kind must be made to understand that Tantra for us is discontinued until further notices, which can be only in the future.
- (4) The written basis of Vedantic Yoga has now become impossible and must be entirely changed and as far as possible, withdrawn from circulation."
- "১। আমার বছুদের জানা উচিত বে, অতঃপর আমার সমগ্র কর্ম বেদন বলিবাহি, সেইল্লপ হইবে, বাহাতে যে পুল ভাহারা করিবাহে ভাহা আর পুনরার না বটে।
- ২। যাহারা প্রত্যক্ষতাবে আমার সহিত ক্ষিত, ভাহাদের ভাহ্রিক কর্ম হইতে মূলত: বিরত থাকিতে হইবে—কারণ ভাহাতে অপবাদ ঘটার।
- ত। বীরেশের মত লোকেদের বুবাইরা বিতে হুইবে যে, আমরা ভ্রমাননা পুমরার না নির্দেশ পাওরা পর্যাত বহু করিরাছি; আর দে পুমরারত্ত সূত্র ভবিষাং ছাড়া হুইতে পারে না।
- ৪। বেদাভবোগের সক্ষে লিখিত গ্রহণামি এবন অচল হইরাছে। উহার আবৃল পরিবর্তনের প্রভোজন এবং ব্যাসভব ভাহার প্রচার বহু করিয়া দিভে হইবে।"

তাহার পত্র পড়িয়া বাংলার বিপ্রবীবা কতকটা নিরাশ হইয়া পড়িলেন। তিনি এই সময়ে পণ্ডিচারীতে ধর্মন্দানার ভিত্তির উপর একটা নৃতন সাধকমগুলী গড়িতে উন্নত হইয়াছিলেন। মঁসিয়ে বিশারের ইচ্চান্থ্রায়ী এই সমিতির করালী নামকরণ হইয়াছিল "L'ide Nouvell" (The New Idea)। এই সমিতি কিছু অধিক দিন স্বায়ী হয় নাই।

# রবীন্দ্র-সংলাপ কণিকা

### ঐবিধুশেশর ভট্টাচার্য্য

### **ত্রিপুরবিক্**য

ঠিক মনে নাই, আধামে প্জাবকাশ বা গ্রীমাবকাশ উপস্থিত। ছাত্র আর অধ্যাপকেরা করেক দিনের জন্ত স্থানান্তবে বাইবেন বলিয়া প্রস্তুত হইতেছেন। আমি সন্ধ্যার পূর্বে গুরুদেবের সলে দেখা করিতে গিয়াছি। তিনি বলিলেন—

'আপনি কোথায় বাইতেছেন ১'

'প্রথমে ভো মেদিনীপুর, দেখানে আংমার ছোটভাই ইন্দুশেধর জেলা-ইঞ্জিনিয়ার। দেখানে এক বার বাইতে হইবে।'

'তার পর ?'

'তার পর জামশেদপুর, দেখানে আমার পুত্র ব্রহ্মব্রত থাকে, দেখানে না গিয়া পারি না।'

'ডার পর ?'

'ভার পর হরিশ্চন্দ্রপূর। সেধানে আমাদের বাড়ী, যাইভেই হইবে।'

'তাহা হইলে বলুন আপনি একবাবে ত্রিপুরবিজ্ঞরে বাহিব হইতেছেন।'

### বাইওকেমিক চিকিৎসা

৩১শে আখিন, ১৩৪৪ সাল। গুরুদের বরাহনগর-কামারহাটির পরে বালি রেলপুলের নীচেই গুপ্ত নিবাস নামে এক বাগান বাডীতে আছেন। ভাঁচার শরীর সাক্ষাতিক বিদর্প ব্যাধি হইতে উঠিয়া-ছেন। লখাচুল অনেকটা কাটিয়া ফেলিতে হইয়াছে। দাভিও ছই পাশে উপরের দিকে কতক ছাটিয়া দিতে অনেক কথা চইল। হাসিতে হাসিতে বলিলেন 'শরীর বধন আরু চলে না তথন অন্যের উপর ভব করিয়া থাকা ঠিক নহে।' ভিনি বলিলেন সেই গুরুভর वार्यात्मव मर्था कान कहे चहुक्व करवन नि। वाहेश-কেমিক ঔষধ ভিনি নিজের ইচ্ছায় খাইতে চাহিয়াছিলেন-বদি নীলয়তন বাবু প্রভৃতি ভাক্তারগণের অমত না হয়। ভাঁহাদের অমত হয় নি. কেননা তাঁহাদের মতে ওটা ওষুধই নয়। কিছু ফলটাবে ঐ ওষুধেরই হইয়াছিল ভাহা বলা চলে না। ভাজারেরা বথেষ্ট দেখাওনা করিরা চিকিৎসা করিয়াছিলেন। আনন্দবাকার পত্রিকার প্রতি-বেদক (reporter) বন্ধুছের স্থবিধা লইয়া ভাক্তারদের পৰামর্শের স্থানে গিয়া ভাল করেন নি। ঐ ওবুধের বিবরণ পত্রিকায় বাহির হওয়ায় ডাক্তারদের কেহ কেহ কুর হইয়াছিলেন।

### বাকসিদ্ধি

শুক্রদেব হাসিতে হাসিতে বলিলেন। সকলে তাঁহাকে এখন সংবত হইয়া কথা-বার্ত্তা করিতে বলেন, কেননা তিনি এখন বাঁহা বলেন ভাহাই ফলিয়া বায়। প্রথম প্রমাণ এই বে, তাঁহার উল্লিখিত সাজ্বাভিক বিসর্প। বেদিন রাত্তে এই ব্যারামটা দেখা দিল তাহারই একটু আগে সকলের সক্রে হাসি-ঠাট্টা করিতে করিতে তিনি বলিতেছিলেন বে, তাঁহার তো তেমন কোন ব্যারাম হয়ই না। এমন রোগ হয় বে, চারিদিকে সকলে সেবা-শুশ্রমার জন্য ছুটাছুটি করিতেছে, রাত জাগিতেছে, ডাক্তার-করিরাজ মাথার কাছে বসিয়া আছে, ইভ্যাদি ইভ্যাদি, ভবে তো বুরি হা ব্যারাম, নতুবা কিছুই না! ইহা সক্রে সক্রেই ফলিয়ার বেল।

দিতীয় প্রমাণ। এই কিছু দিন হইল, একটা খুব বড় বক্ষম ঝড় হইয়া গেল। ইহার দিন ছই আগে শুক্ষদেব বলিভেছিলেন 'এখন আর আগের মত ঝড় হয় না। সে-সব ঝড় গেল কোথায়? মনে আছে, কলিকাভায় আছি। এক ভীষণ ঝড় আরম্ভ হইয়াছে। সকলে ছিলাম ভেতালায়। নামিয়া দোভালায় আসিলাম। মাঝের ঘরের একখানা কবাট ভাভিয়া পড়িল। চারিদিকে ভীষণ কাগু। সেই সব ছিল ঝড়। এখন আর ভয়ত্বর ঝড় হইয়াছিল।

তৃতীয় প্রমাণ। শুকদেব সেদিন প্রীযুক্ত প্রশাস্তচক্র মহলানবিশের বরাহনগরের বাগার বাগানবাড়ীতে ছিলেন। তাঁহাদের সঙ্গে গরগুলব হইতেছিল। শুকদেব বলিতে-ছিলেন, 'আক্ষাল ভাকাতি হয় না। বদি হয় তো পুর মন্ধা করিয়া দেখা বায়।' ঠিক ঐ দিনই রাজে ঐ বাগাডেই ভাকাতি হইয়াছিল। শুকদেবের পাশেরই ঘরে প্রশাস্তবারু ছিলেন। তাঁহাকে বেশ বিপন্ন হইতে হইয়াছিল।

নিজের মৃত্যুর পূর্বেই লোকসমূহের ওক্ষনিত শোক জানা গুরুদেবের সহিত কথা চলিতেছে। তাঁহার ঐ অক্থেরেই বিবরে বলিতেছিলাম। ঐ সময়ে তাঁহার ব্যারামে দেশ-বিদেশে এত উদ্বেগ হইয়াছিল বে, ক্ষেক হাজার চিঠিও তার শান্তিনিক্তেন ভাক্ষরে সহসা বাভিয়া উঠে। এলর কর্তৃপক্ষকে জন গৃই অভিবিক্ত কর্মচারী নিযুক্ত করিতে হইয়াছিল। ইহাই অবলখন করিয়া গুরুদেবকে বলিলাম, 'আপনার বস্তুত অভাব হইলে লোকের মনের ভাব কৈমন হইবে তাহা আপনি জানিয়া লইলেন!' গুরুদেব হাসিয়া বলিলেন, 'মরিলে অনেকের ক্স্তু এরূপ হয়, কিন্তু ইহা মনে করিবার স্থোগ অনেকের হয় ন', আমার সে স্থোগালী হইয়াতে।'

### बरमब अंधिश्वा

ঐ গুকুতর ব্যাবামে গুকুদেবকে নিজের লখাচুলকে আনকটা কাটির। কৈলিতে হইমাছিল। এই প্রসক্তে ভিনিবলিতেছিলেন 'বম আসিয়া কুটিটা ধরিমাছিল, অক্তলিকে ডাক্তাররা আসিয়া দেহটা ধরিয়া বিপরীত দিকে টানিতেছিলেন। ফলে বমের হাতে ঝুটিটা থাকিয়া সেল, ডাক্তাররা দেহটা টানিয়া বাধিলেন।'

### কাটা

### श्रेणामाश्रम हर्षेशिशाय

ত্লভার সহিত বিভাগের আলাপের আরব্ডী এইরপ:
বিপ্রহরের অরভোজনের পর বিভাগ রাজির আগরণটা দিবানিজার বারা প্রণ করিরা লইবার সুবোগ বুঁলিতেছিল। কিছ
ন্তম জারাভাকে বহু বিভয়না ভোগ করিতে হয়। যাত্র এই
করেক দিন হইল ভাহার বিবাহ হইরাছে। প্রালক, প্রালিকা
প্রভৃতি মধ্র সম্পর্কীরিপের নিকট এখনও সে প্রাভন হইরা
বার নাই। আহারাভে সে ভাহার ছল নির্ভিট্ট কক্ষে আসিবার
পূর্বেই বালক-বালিকা ও কিলোরীর ফল আসিরা সেবানে
ভাহার ছল অপেকা করিতেছিল। বিভাগ মনের বিরক্তি চাপিরা
রাধিরা ভাহাবিপকে নিঠ কবার সুলাইরা কক্ষ হাছিরা বাইতে
অস্থবোর করিল। কিছ বাঙালীর গৃহে জারাভা নামক জীব্টর
উপর বাহাদের একটা বিশেষ অধিকার বহুকাল বরিরা বীকৃত
হইরা আসিতেছে ভাহারা এক সহজে ভূলিবার পাঞ্রপাত্রী
মর। বিকাশকে ভালরণে আলাভম না করিবা কেই চলিরা
বাইতে সমুত্ত চইল না।

ইছাদের হাভ হইতে বিভার পাইবার আশার বাহিরে ভাসের আভচার দিরা বসিবে কিনা, ইছাই ববন বিভাশ ভাবিতেহে তবন নৌভাগ্যক্তবে শান্তবী ঠাকুরাই আসিরা সকলকে কক ছইতে বিভাছিত করিরা চলিরা গেলেন। বিভাশ খন্তির নিখান কেলিয়া শন্যার দেহ এলাইয়া দিয়া চোব বৃদিল। সুব কিন্তু আসিল না। একটা পরিচিত পদ-কবি ভবিতে পাইবার প্রভাশার কান মুট বাড়া হইবা রহিল।

বহুকণ পরে বৃহ্ প্রথমি কানে আসিতেই বিকাশ চোব হুটকে ভালরণে বৃদ্ধ কবিবা বিঃশব্দে পঢ়িবা বহিল। কিছ প্রভ্যাশিত স্পর্শ না পাইবা বাব্য হুইবাই ববন চোব বুলিল ভবন বেশিল, কে একট বালিকা দীর্ঘ অবভঠনে বৃধ আয়ত করিবা ভাহার শব্যার অভি নিকটে ইাড়াইবা আছে।

विकाम काविन, एक दाव कर काव कानिकारक वर्

নাকাইরা ভাহার নিকট পাঠাইরা বজা বেবিভেছে। বুছু হাসিরা ভাই সে কহিল, ওবানে ইাভিয়ে কেন ? এলো আবায় কাছে বসবে।

বালিকা সে আহ্বানে কর্ণণাভ করিল না। বিকাশ কহিল, না আগবে ত বোষটাটা বোল। দেবি ক্ষেম স্থায় মুখবানি ভোমার।

বালিকা তথাপি কোন কথা বলিল না দেখিৱা বিকাশ উটিবা বলি, শব্যার কিনারে সরিবা আসিরা বালিকার বোষটা ধুলিরা দিল। ধুব সুন্দর একথানি রুখ, সুটকুটে সারের বং, মাধার এক রাশি কুনিভ অবরক্ষ কেশ, সুঞ্জী তার নীচে টানা টানা মুট চোধ। প্রথম দর্শমেই বিকাশ রুখ হইবা গেল। এত দিনের মধ্যে এই সুঞ্জী বালিকাটি কেন বে চোধে পড়েনাই, তাহা তাবিরা সে বিশিত হইল।

বোষটা বুলিয়া বিভেই বালিকার মূবে হালি সুটল। বিকাশ কহিল, এল খুকী, বসবে। কি নাম ভোষার ?

বালিকা কহিল, আমি স্বভা। ভোষার শাওছী।

বিকাশ কৌছুক অহুতব করিরা কহিল, ৩, ছুবি আবার শাশুড়ী ৷ তাই বুবি বোষটা বিষেহিলে ৷ কিন্ত আবাইরের কাছে কি এতটা বোষটা বিতে হব ৷

সুৰভা কহিল, ভূমি ভাল কাৰাই। ভোষার সাম্যে একটু বোষটা দিব।

নেপৰাে থাকিবা বাহাবা আলাপ ভনিভেছিল, ভাছাবা এইবাব বিল বিল কবিবা হানিবা উটল। স্কভা লক্ষিত হইবা বৌভাইবা বব হইতে পলাইবা গেল।

বিকাশের ত্রী প্রদীলা আসিরা বলিল, সুলভা লন্পর্কে আবার শিলী হয়। বাবার স্থলন্পর্কের এক বাবার বেয়ে।

ইহাৰ পৰের বার স্থলতা বধন আলিল তথন ভাহার বোষটার বাজাটা অনেকথানি কবিরাছে। পাতলা ঠোট হুট পান গাইৱা লাল টুক্টুকে করিৱা বিকাশের পাশে বনিরা কহিল, জাবাই, ভূবি-রূপক্ষা জান গ

বিকাশ হাসিহা কহিল, না, আমি আমি না। ভূমি আন ? স্থলতা কহিল, আমি। কিছু দিলে ত বলতে বেই। রাজে বলব। দিনে বললে রাজকাণা হয়।

णारे नाकि ? त्वण बात्करे बरना चा क्रांन---

সুলভা বিভাশকে কি চোৰে দেখিল, লে-ই আৰে। বিভাশ বৰনই একা বাকে ভবনই সে ভাহার নিকট আলিরা হাজির হর। বিভাশের টেবিলে নামা বরবের নাসিক পত্রিকা বাকে। সুলভার প্রভাহ সব পত্রিকার ছবিগুলি বেবা চাই। বিভাশের ক্ষাবলিষ্ট লিগারেটের টুকরা ও নিগারেটের বাজের বব্যে নিগারেটের টুকরাগুলি পুরিরা এক ছাবে বাবিরা বের, বাভী বাইবার সময় সক্ষে করিয়া লইবা বার।

প্ৰবীলা হাসিয়া বলে, কি ভাগ্যি ভূই আলিস্, ভাই আৱ বৰ লোংৱা হভে পাৰ না।

প্ৰকাৰৰক বিয়া বলে, শিগীৰার সাৰলে কাষাইয়ের সংল কথা বলতে বেই। ভূই এখন বা এখান খেকে—

প্ৰমীলা বৃচ্ কি হালিয়া বিকাশের দিকে একটা কটাক বিকেশ করিয়া কৰে শিলীয়ার আবেশ পালন করে।

স্থলতা নিভিত্ত মনে ছবি বেখে, বিকাশকে নানা শিশু-স্থলত প্ৰশ্ন জিজানা কৰে। বিকাশ কোনচীয় উভয় দেৱ, কোনচীয় উভয় উভায় নিকট চইতেই জানিয়া লয়।

পুলভা গভীরভাবে বলে, জানো জানাই, নাজ্য নরবার পর কোণার বার ? ভাহার পর নিজেই ভাহার উত্তর দেব, "জানো না বৃবি ? আকাশে ভারা দেবেছ ভ ? নাজ্য নরনে ভারা হর । আনার বাবা ভারা হবে আহেন ৷ আনি রোজ দেবি ঐ ভারাকে । আনি বর্ণন নরব ভবন আনিও ভারা হব, বাবার ভাছটিতে নিমে উঠ্ন—"

ৰাষ্ট্ৰের প্ৰৱহত স্বৰেও তাহার নিজ্য বড আছে।
ক্ষেত্ৰ দিনের ব্যোই বিকাশ স্থলতার অভ্যক হইরা উঠিল।
ভাহার জানা এবন কোনও বিষয় নাই বাহা সে বিভাশকে
না জানাইরাছে। ভাহার ক্ষে পারিপার্থিকের সম্ভ বুঁটিনাট বিষয়ৰ বিভাগের জানা হইবা নিরাছে।

প্রদীলা বলে, স্লভা ভোষার কাছেই এবন শান্তশিষ্টি বাকে। বাইরে ওর চ্রজ্পনার অভ নাই। ওর আলার পুত্র-বাটে কারও ভেলের বাট রাধবার কো নাই। বেই এডটু অভ্যবক হ্রেছ অবনি নে বাটস্থ ভেল কলের বিক্তে টুভে বেবে। ভোট ছেলেয়েওে বেবলে কোলে নিভে বাবে, আগর করবে, চুবো বাবে; কিছ এডটু পরেই বেবে ছেলের গাল কারতে। ছেলে ববি কেঁকে উঠেছে ভ তব্ধুনি ভাকে বাভা বিরে কেলে ছুটে পালাবে। সুলভার এই লব হুটারির কথা শুনিতে বিভাগের খুবই ভাল লাগে। বলে, "হুটুরি আর চাঞ্চা হেলেবেবেবের অলভার। ভোরার বহি বেরে হয় ভা হলে বেন—" প্রমীলা বিভাশকে কথাটা শেষ করিতে বিল লা, ভারার বুব চাণিয়া বরিল।

সেবার খণ্ডরবাড়ী বাইবার সময় বিকাশ প্রলভার ক্ষ করেকট থেলনা ও করেকবানা হবির বই লইরা গেল। প্রলভা বই ও থেলনা পাইয়া মহা ধ্বী। বলিল, ভালাই, ভূমি রোজ এবানে আস না কেন ?

্ বিকাশ হাসিরা বলিল, রোজ আগতে চাইলে যে এরা বাক্তে বেবে না।

স্থলতা গভীৱতাৰে বলিল, জাৰাই সুমি ব্যাক্ত এলো। এবা পাকতে না দেৱ আনাদেৱ ববে গিৰে থেকো।

यक मिन बाब, कल बबन वाटि । वबन वाकिवाद नटि नटि ৰাছ্যকে সংসাৱত্ৰণ ভালে ভভাইরা পভিতে হয়। বিকাশের करमक-कीरम (भव हरेम, कर्मकीयम बावल हरेम अरर बाहाल बीद्ध बीद्ध मुख्यप्रक भक्तारक क्लिबा चानाहेबा हिन्छ। अमीना अवस सरवर्ष हरेएक क्ममीत महिममत शाम देवीक हरेबार्ट : हरे रहान, अक त्याब अवर नारनाविक माना काक লইয়া এবন লে সৰ সময় বিত্ৰত থাকে। বিভাগের পুৰিবী এখন আপিসের সভীর্ণ সীমার আবদ হুইরা পভিয়াছে। সপটা পাঁচটা আপিদ করিবাও নিভার নাই: গৃতে কিরিবাও আপিলের অসম্পূর্ণ কাজ সাহিয়া রাখিতে হয়। ছেলেমেয়েরা निचाद अक्रे चामरदार श्रेणानाम भारत स्वातामुदि क्विरच পাতে। কিছ ভাচাদের আদর ভবিবার মত অবসর বিভাগের बाटक वा । ट्यालायरवर्ता हीश्काद कविरत, विकार वाना-দাণি করিলে ভাতার কাজের ব্যাবাত হর, সে বিরক্তি বোধ करतः थवीना नरम, व्हरमस्यक्षत्रा नामानामि माणामाणि मा করে কি ভোষার বত বুধ গভীর করে আপিলের হিলেব (वर्गत ? कुलकात वक त्याच क्रावित्व, अवम त्याच इहे,वि क्राल अथ हर्डेटन हम्दर (क्य १

সুলভার কথা কিছ বিকাশ ভোলে নাই। বৰিও এবন বভরবাতী কচিং বাওবা বটনা উঠে, তা সভেও ববনই বার ভবনই স্থানত ভাতার হাত্তবুধ লইনা বিভালের লগুখে উপছিত হয়। এবন নে আন বালিকা নাই, বৌৰনের আভান ভাতার সন্ধানে পরিকৃতি হইনা উঠিভেছে। বিভালের নিকট কিছ ভাতার সন্ধান নাই। নাবার সামাত একটু বোমটা টানিলা নে বিভালের নিকট আসিনা পূর্বের মত নিংসভাচে আলাপ-আলোচনা করিনা বাকে। তবে এবন প্রিভার হবি অপেতা গর-কবিভার প্রতি ভাতার নমোবোন আফুট হবিরাহে, করাবলিট সিগারেটের টুকরার প্রতি ভাতার আর আকর্ষণ নাই।

সেবিৰ আশিন হাঁতে কিবিছা বিকাশ বৈকানিক কন-বোনে বনোনিবেশ কৰিবাহে এবন নমৰ প্ৰশীলা কহিল, বাবা চিট্ট বিবেছেন। বোকাৰ বিৰে। লখা সুচীৰ দ্বৰাভ কৰ।

বিকাশ কৰিল, "একবেরে কাজ করতে করতে আনারও বিরক্তি বরে গেছে। ছুউও অনেক পাওনা আছে। কেবি কি চর।"

ষ্ট নিলিল এবং এক দিন বিকাশ নগরিবারে ব্রুৱালয়ে আসিরা হাজির হইল। বহু দিন আসা-যাওরা না বাকার সবই বেন ক্ষেম একটু অপরিচিত অপরিচিত মনে হইতে লাগিল। বাহারা ছোট ছিল ভাহারা বছ হইরাছে, বাহারা বছ ছিল ভাহারা আরও বছ হইরাছে। অবিবাহিতদের বিবাহ হইরাছে, বেরেদের অনেকেই সন্তানের জননী হইরাছে। স্থলতাকে বিকাশ বে আর আগের নতট দেখিবে না ভাহা বৃথিতে পারিল। হরত তাহার বিবাহ হইরাছে, হরত সে এবন যুগুলাবর চলিরা সিরাছে।

কিছ শীন্ত ভাহার জন্মান বিধা হইল। শুনিতে পাইল, মূলতা বিকাশের শান্তলীকে কহিতেহে, কৈ গো বেছি, জানাই কি এনেতে লাও।

শান্তৰী হাসিরা বলিভেছেন, ভারাই কি এনেছে, বা এনেছে, ভা ভাষাইছের কাছে গিছে ভিজেন কর—

"ভাই ৰাই।" বলিয়া নে বিকাশের নিকটে আনির। উপস্থিত হইল। বলিল, "ভাল আহু ভো ভারাই ?"

বিকাশ চোৰ ভূলিয়া প্ৰভাৱ বিকে ভাকাইবাই চোৰ নানাইবা নইল। এই ব্ৰভীৱ সহিত নি:সংলাচে কৰা বলিতে ভাহার বাব-বাব ঠেকিতে লাগিল।

হুলভা কৰিল, ভোষাকে এবার ধুব রোগা দেবাছে। পরীয়ের বছ নিজ্ বা বুবি ?

বিকাশ চাছিয়া বেবিল প্রলভার সীবন্ধে নিজুর থাই।
বুবিল, এবনও ভাছার বিবাহ হর দাই। কহিল, পরীর
বারাণ করেছে বলেই একেবারে মাসবাদেকের হুট নিবে
এনেছি। ভাল করে শরীর নারাব, তবে যাব।

স্থলতা আৰক্ষেত্ৰীও কঠে কহিল, এক মান বাকৰে। বুৰ আবোৰে বিনশুলো কাটাৰো বাবে তা হলে।

হুলভার বিঃসজ্যের ব্যবহারে বিকাশেরও বনের সভাচ ভাটরা গেল। ইহার পর পূর্বের মতই উভরের বব্যে আলাপ কবিরা উট্টল। হুলভা প্রাবের বব্য-ইংরেজী বিভালরে বিকা নবার্থ করিবাহে। ইহার অভিরিক্ত বিকালরাক্তর হুবোগ ভাহার হুর নাই। কিছু বিভাগ ভাহার সহিত কবা বলিরা বুলিল, পড়াভবার চর্চা প্রবন্ধ সে হাড়ে নাই প্রথং সে চর্চাও ব্যরাভ নির্ভালের ব্য

বিদত্তনি গড়াই আনলে কাইতেহিল। নিত্য কাঠার

সময় আশিস ঘাইবার ভাজা নাই, বৰন ইছা প্রা হাজিরা উঠিতে পারা বার, সান-আহারের সময় কোনও নির্দিষ্ট নিয়ম না মানিলেও চলে। বিশেষ ক্ষিয়া স্থলভার আমম্বোজ্জ সাহচর্ব্য বিকাশের অবসম-ফিনগুলি অবিক্তর মনোরম ক্ষিয়া ভূলিতেছিল।

এক দিন স্থলতা হঠাং বিকাশকে প্রশ্ন করিল, আছা কানাই, বেরেয়াস্থান্ত বিদ্বে না করলে কি চলতেই পারে না ৫

বিকাশ এরপ প্রশ্নের বন্ধ প্রভাভ বিদ্যা। স্বল্পান্থর নাংগারিক অবস্থার কথা তাহার অভানা নাই। গৃছে বিববা না হালা বিভীর কোনও অভিভাবক নাই। আর্থিক অবস্থাও এমন সক্ষল মতে বে, বিবাহবোগ্যা এই তরুদ্ধীকে সংপাজে সমর্পন করা যাইতে পারে। রূপ এবং রূপার পরিপূর্ণ সমন্থর না হইলে আন্তিও আমাদের কেশে কলা সংপাজহ করা সহজ্ব ব্যাপার নর। স্বলভার রূপ আছে, ওপও আছে, কিন্তু গৃহত রূপার অভাব। কালেই আন্তিও ভাহার বিবাহ হব নাই। কিন্তু তাহার সহিত বিভাশের সামান্তিক সম্পর্কটী এমন্দি বরণের বে, এইরূপ বিষয় লইরা ভাহার সহিত আলোচনা করিতেও ভাহার বাব-বাব ঠেকে। তরু সে বলিল, বেরেকের বিবে না করলে বে চলে না, তা নর। তবে আজীবন ক্যারী হয়ে বাকতে গোলেও ভার উপায়ক পারিপার্থিকের, আন্মর্ভিরশীল হবার বত বিশেষ শিকার দরকার।

ত্ৰতা ত্ৰাম বুবে বলিল, কিন্তু লে পাৰিপাৰ্থিক আছি পাই কোবাৰ, আহু লে শিকাই বা আনাৰ দেৱ কে ?

বিকাশ সে কথার কোন খবাব বিভে পারিল না। নীরবে প্রলভার চিভাক্ল রুবের বিজে চাহিরা বহিল। উভরে এভবিন বরিরা যে আনন্দ-লোকের বব্যে বিচরণ কভিভেছিল আদ সর্ব্ধপ্রথম ভাহার বব্যে অনাথাণিভপূর্বে বেলবার আবির্ভাব হইল। প্রলভা অরকণ পরে আবার কছিল, ভারাই, কলকাভার নিবে গিবে আবার কোনও ভাকে চুকিবে ভিতে পারো ? বেশের কাজে বিংবা রোধীর সেবার ?

এরক্ম কোনও কাজের সভানও বিকাশের কালা ছিল লা। ভাই নে এবারও চূপ করিরা রহিল।···

ৱাত্তে প্ৰবীলা কহিল, "দেশ, ভোষাকে বলি বলি করেও বলতে পারি নি। কিও আর না বলেও থাকতে পাছছি না। সুলভা সম্পর্কে আয়াবের শুকুত্বন হলেও সম্পর্কটা পুর নিকট নর। ওর সকে এক বাধাবাধি করলে পাঁচ করে পাঁচ কর্যা বলতে পারে।"

বিকাশ কৰাটা অভ্যন্ত হাল্কাভাবে লইবা বন্ধ হালিব। চুপ কৰিবা বহিল।

ভিত্ত নিভট-নম্পর্কীয়া না হইলেও শেবভালে স্থাভার নমৰ ভার প্রবীনার নিভাকেই প্রহণ করিতে হইল। স্থাভার না নামাত কিন্তু করিকমা মাহা হিল নমত বিশ্বস্থা প্রশ্বিদ্ধা প্রক বিশন্ধীক ব্ৰহের হাতে প্ৰভাকে স্বৰ্গৰ করিবাহিলেন।
কিছ ভাষাত বামীভাগ্য ভাল ছিল না। ভাই বংসবাছেই
বিৰবা ছইবা সে বাহের নিকট কিবিবা আসিল, এবং প্র
বংসমই নাকে হারাইবা প্রমীলার পিতৃ-পরিবাহে আপ্রর প্রথ
করিল।

ত্মতার সমত হুর্তাগ্যের কাহিনী বিকাশ চিটিপত্রের বারকত অবপত হুটভেরিল। তাহার এই পরের বৃত্তে আগ্রের সঙ্গা রূপ হুর্তাগ্যাটার ভাষ্ট বিকাশ সবচেরে বেশী ব্যবিত হুইল।

ইভিবব্যে বিভালের ভ্রুর সংসারে আরও চ্ট সুখন অভ্যাগভের শুভাগরন ছইরাছে এবং সকলের প্রথ-বাজ্ঞলোর প্রতি দৃষ্টি দিতে সিরা প্রবীলা নিজের শরীরের উপর লক্ষ্য রাধিবার বত সময় করিরা উঠিতে পারে নাই। কলে ভাষার শন্তীর ভাতিরা পভিরাছে। কভার অপ্রহৃতার সংবাহে উংক্ঠিত শিতা কভা-কারাভাকে উহোর পূহে বাইরা কিছুকাল কাটাইবার কভ অপ্রেরণ করিরা পাঠাইয়াছেন। পাহাড-বেরা প্রীঞান্তীর স্বাস্থ্যকর স্থান বলিরা ব্যাতি আছে। বিকাশ আর একবার দীর্থদিনের ছুট কইনা সপরিবারে বভরালরে সিরা রাজির ছবল।

এবারের বভ এবন অভরকভাবে বিকাশ আর ক্বন্ড ক্ষভাকে পার নাই। ক্ষভা এবন আর পরের ব্রের বেরে নর, প্রশীলাদের সংসারেরই একজন। ভাতার কর্ম্যকভার, লেবানিপুৰভার বিকাশ হুই হইবা গেল। ক্ষভভার, সেবার স্থাপ অর্থিনের ব্রেই প্রশার পাঙ্র গভে রক্তিব্যাভা বেশা দিল, অহি-চর্ম্যার দেকে পুনরার লাবগ্যের সঞ্চার হুইভে লাগিল।

প্রকাশ থাকিলে হোট খেলে মুটকে সামলানো<sup>4</sup> বার হুইরা উটিভ। ছেলের সদে ছেলেমাছ্য সাজিতে, রোবর সদে রোবী সাজিতে, অপরের জভ সমত প্রথ-বাছজ্যের এবহা ভরিতে সে কোবার শিবিল, ভারা ভাবিরা বিভাশ বিশিত হুইল। বলিল, "এত বাটুনি থেটেও ভোষার মূবে বে জি ভরে হাসি লেগে বাকে ভা ভেবে আমি অবাক হই। ভোষার এত বাটবারই কি ব্যকার? ব্যরেত লোকজ্যের অভাব যেই।"

স্থলতা হালিয়া কহিল, "বেবেছেলে হয়ে বৰ্ণ করেছি তথ্য সুবোধ পেয়েও বেবেছের কর্মীর কাকওলো করতে না পারাটাই হংবের বিষয়। নিজের লোকের জড় বেবেছেলের বেটে বে কড আনন্দ, ডা ভোষরা পুরুষেরা বুর্থে উঠতে পারবে বা।"

বিকাশও হাসিল। কহিল, "ভা না বৃধি। কিন্ত এটুকু বৃধি বে তৃষি ভোনার শরীরের উপর আফো লক্ষ্য রাবছ না। আহদাতে নিজের বৃধবানি একবার কেবো, ভা হলেই আনার কবা বৃষ্ঠতে পায়বে।" অকলাং প্রলভার বুধধানি বিবর্ণ হাইলা উটিল, ভারার বুবের হালি কোণার নিলাইরা পেল। লে বিভাশের টেবিলে ভাগলগন্ধ গুলাইরা রাবিভেছিল। অভবের ভোন এক উভান উদ্ধানকে প্রাণগণে ধ্বন করিতে করিতে লে হাভের ভাজ স্বাধ্য বা করিবাই কক চইতে বাভির ছইরা গেল।

কিছ ভিছুক্তণ পরেই নিজেকে সামলাইবা লইবা কিভিয়া আসিল, কহিল, ছেলেবেরেরের ছেকে আমি থাক্য কি করে ? প্রমীলার শতীরও ভো এথমও সম্পূর্ণ সারে মাই। আমি ভোষাদের সলে পেলে কেমম হয় ?

রিকাশ উংসাহিত হইরা করিল, ব্ব ভাল হয়। বঙ্গ মুলায়ের কাছে কবাটা শেচে দেবি।

বিকাশকে প্রভাব উবাপন করিছে ছইল না। খণ্ডর ন্রভাশরই বলিলেন বে, ক্লভা ভালাদের সদে বাক। আরও কিছুদিন সাববানে না থাকিলে প্রনীলার খাছা পুনরার নই ছইরা বাইতে পারে।

পুলভার হাদর আনন্দ-উৎসাহে নাচিরা উঠিল। বাজার আবোদন করিতে করিতে ভাছার বন হাওবার ভাসিরা বেডাইতে লাগিল। পরীপ্রাবের বর্রশিভিতা বিববা দে। সাংসারিক অভিজ্ঞভাও বে ভাহার বুব বেশী হইরাহে, ভাহা নহে। নিজেকে বিশ্লেখন করিয়া দেখিবার বভ সচেভনভাও ভাহার আদে নাই। ভাহার এই আনন্দ বে কোনও আনামাজিক বৃভিকে অবলবন করিয়া বিভশিত হইরা উঠিতেহে, ভাহা সে কোন দিন কর্মাও করে নাই।…

কিছ যাহার বৈহিক ছুর্মানতা আসিখাতে, বিজের সৌন্দর্য্য সহতে বে সন্দিহান হইবা উটিয়াতে, নিজের উপর আহা হারাইতে ভাহার বেশী দেরি হর না এবং অসংযত মুহুর্ভে যাহা সে বলিয়া কেনে ভাহাই ভাহার অবচেডস বনের মধার্থ পরিচর। একদিন হঠাং প্রামীলার অবচেডস বনের সহতে সমিত অনুসক সন্দেহের পরিচর পাইরা বিকাশের সহত আনক্ষ অবস্থা হইবা বেল।

প্রমীলা বিকাশকে বলিভেছিল, তুমি যে কড চুর অবঃ-পাতে গেল, তা বুঝবার কমতা পর্বান্ত ভোষার লোপ পেরে গেছে। এত দিম চুরে ছিল, এবার কাছে পাবে। আমারও এই শরীর, করে মরি ভার ট্রক বেই। নিজের জভ ভাবছি মা। বত আমার হুজিভা ছেলেবেরেকের কড।

বিদিসপত্ন গুড়ান সহতে কি একটা প্রায়র্শের কচ প্রকাণ প্রথীলার কাছে আসিভেছিল। সানী-ত্রীর আলাপ বৰন ভালার কালে আসিলা প্রবেশ করিল এবং কি সহতে আলাপ চলিভেছে, ভালা বৰন লে উপল'ল ক্ষিতে পাহিল, ভবন ভালাদের অভাভসাতে ভালার আন ক্ষিত্রা বাইবার প্র ছিল না।

এবীলা বছভাছ বিকে পিছৰ কিছিবা বিল। লে ছলভাছ

প্ৰবেশ লক্ষ্য কৰে দাই। বিকাশ লক্ষ্য কৰিলেও প্ৰবীনাকে সভৰ্ক কৰিবা দিবাৰ প্ৰবোগ পাইল না।

খানীর নীরবভার প্রনীলার কেবন বেন সন্দেহ হইল।
সে শিহন কিরিলা স্কভাকে বেধিরা নির্কাক হইলা মূধ নত
ক্রিল। নিজের অসংবত উক্তির অনহাংগে ভোতে, সজার,
অস্থান্টনার তাহার ভাক হাছিরা কাঁনিতে ইছো হইল।
স্কভার হাত হট বরিরা ভাহার নিকট করা চাহিবার ইছো
ভবিল। কিছু কিছুই করিতে পারিল না।

স্থলতা প্ৰভাৱীভূত মৃথিৱ মত একই ছামে একই রক্ষ ভাবে ইংডাইয়া হিল। অসাধারণ বমের কোরে সে নিক্রেক সামলাইয়া রাখিতে হিল।

কিছুকণ কেহ কোম কথা বলিতে পারিল মা। বিকাশ একটা মাণিকের পাতা উণ্টাইতে লাগিল, প্রমীলা মাধা মত করিবা বসিরা বহিল, স্থলতা তেমনি ভাবে ইংড়াইরা বহিল।

অবশেষে তুলভাই প্ৰথম কৰা বলিল ৷ প্ৰাণণৰ শক্তিতে নিজেকে সংৰত করিলা সে ৰীয় কঠে বিকাশকে লক্ষ্য করিলা কহিল— কালাই, এর কড ভূমি হুঃৰ করো না, বা শনীয় উপর রাগ করো না। সে বা বলে কেলেছে হরভো তা বলবার তার
ইক্ষা ছিল না। হয়ত এক বলতে আর বলে কেলেছে।
বিনিসগল্প আনি সব ভাছিরে কেলেছি। পনী, বাকিওলো
ভূই দেবে ওলে নে। আনার পরীরটা বজ্ঞ বারাণ লাগছে…
বলিরা সে বীরপদে কক্ষ হইতে নিজ্ঞান্ত হইরা টলিতে টলিতে
নিজের কক্ষে প্রবেশ করিল এবং পর বৃত্তুর্ভেই ভাহার বৃদ্ধিত
দেহ পথার উপর পুটাইরা পড়িল।

বাজার সময় বর্ণন প্রমীলার মা শুনিলেন বে, সুলভা বাইবে না তর্থন তিনি গর্জাইতে লাগিলেন, কহিলেন, পর কি ক্থনণ আপন হর, না পরের সূর্থ হুবে গু ক'বিন বরে কি লোক বেখানো দর্গটাই মা বেখালে । জামাই বলতে জ্জান, ছেলে-বেরেগুলো কাছে না থাকলে মুবে ভাত রোচে না, পরীর সেবা করতে না পেলে রাভে মুন হর না। জার বেই সভ্যিকারের ব্যক্তার হ'ল জ্মনি বলে বসল, জামি বাব না। জ্মন বেরেকে মুবে বাঁটা মেরে যর বেকে বার ক্রভে হয়—

প্ৰমীলার বাবা বুবে কিছু বলিলেন না বটে; কিছ হলভার এই অবাবাভার ভিনিও যে পুব অসম্ভই হইয়াছেন, ভাহা বেশ বুঝা গেল।

## वाःना ও वाडानी

### প্রীস্থলীলচন্দ্র হোষ

চ্চতি বাহণা করিয়াছেন, বত দিন
পর্যান্ত তাহারা বিভিন্ন প্রদেশসমূহের মধ্যে কেন্দ্রীয়
ভহবিলের টাকা বন্টনের একটা মূলনীতি স্থিব করিয়া না
দেন ততদিন পর্যান্ত দেশমুধ-বন্টননীতি প্রচলিত থাকিবে।
দেশমুধ-বন্টননীতি অক্সান্য মূল ভিত্তির মধ্যে প্রদেশগুলির
জনসংখ্যার অফুপাতের উপর স্থিব করা হইয়াছিল।
আমার মনে হয়, ইহার মূল ভিত্তি প্রত্যেক প্রদেশের প্রতি
বর্গমাইলের বসভিব হাবের অফুপাতের উপর ধার্যা করিলে
অধিকতর ন্যায়সকত হইত। কারণ থাভোৎপাদনের,
শিল্প-প্রসাবণের এবং প্রদেশবাসীর স্বাস্থ্যের পক্ষে ঘনবসভি
ধুবই প্রতিক্ল। এই কারণে ঐ সব প্রদেশ-সরকাবকে
স্বান্থ্য, শিক্ষা, আইন ও শৃদ্যালা রক্ষা এবং অনাান্য জনেক
বিষয়ের জন্য অপর প্রদেশের তুলনায় বাৎস্থিক অনেক
বেশী পবিমাণ অর্থব্যের কবিতে হয়। ইহা ভিন্ন বন্ধবিভাগের
পর পশ্চিমবন্ধের অর্থনৈভিক সম্ব্রা আরও নানাবিধ কারণে

किएन दहेशा देशाहेशाहि : कान आतम-मतकावाक हेशाब জনা বছ অর্থবায়ের দায়িত লইতে হইয়াছে। বছ-বিভাগের পর পশ্চিমবন্ধের ভৌগোলিক আয়তন কিরুপ मक्रिक दृष्टेगाटक लाहा देशाय मानित्य विश्वित महरू के অভুমান করা বাইবে। কংগ্রেস-নেভারা বছকাল পর্কে ভাষার ও অর্থনৈতিক ভিত্তিতে প্রদেশগুলির সীমানা পরি-वर्छन्य नाश्यम् छ मावि यानिश लहेशाहिलन ; हेमानीर পণ্ডিত নেংক ও অপরাপর কংগ্রেস-নেতারা ঐ স্কল প্রতি-अंबि कावाए: एक ना कविराम क्या क्या क्या है हाव मान अमन সব সর্ত্ত আরোপ করিতেছেন বাহার দক্ষন কথনও দে প্রতি-শ্রুতি পালন করা সম্ভবপর হটবে কিনা সন্দেহ। বাঞ্জী লাতি বে কেবল স্বাস্থ্যের দিক হইতে ক্ষিক্ত ভাহা নছে। এই প্রদেশকে সকল দিক দিয়াই ক্ষিক্ত প্রদেশ বলিলে चड़ाक्ति इहेटर ना। हेमानीः श्रधानमञ्जी सर्वाहत्मान বুংত্তর বজের আশা-ভবসা একরপ কল্পনা-লোকে পাঠাইলা-क्रिन विनित्त हरन। ভাঁহার মতে কোন প্রজেশের

সীয়ানা পৰিবৰ্জন কৰিছে চটলে প্ৰতিবেদী धारात्वहे याठावि मचि थाका पदकार। ক্ষেত্র ঐরপ অবদা কথনও সম্ভব হইতে পাবে কি? चरतरक मान करवन रव. अवेद्रश शावना निष्ठक चाषाश्चवकर्ना যাত্র। বলি বেচ প্রভাব করেন, হিন্দু কোড বিলের বিবাহ-বিজেম ধারাতে এমন একটি নতন সংজ্ঞা বোগ করা উচিত বে উভয় পক্ষ মোটামটি সম্বতি না দিলে কোন আলালত বিবাহ-বিক্ষেদের দর্থান্ত মঞ্জর করিতে পারিবে না, ভাষা হইলে এইরপ প্রভাবকে সকলে নিশ্চরই প্রকাপোতি বলিয়া মত প্রকাশ করিবের এবং নেচক্রীও रव प्रावाडे बिलायन फावारफ विकासक मासक नाहे। यक দিন পৰ্যাক্ত ভাবতের সময় প্রয়েশের আহতন ও সীমানা. জৌগোলিক অবস্থা, লোকসংখ্যা, বসতির হার, অর্থ নৈতিক, সাংস্কৃতিক ও জাবা ইড্যাদির ভিত্তিতে বত দর সম্ভব সমতা বুকা করিরা পরিবর্তন না করা হইবে তত দিন পর্যায় তোত্র অর্থ কমিশতর এই উপ-মহামেশকে সায়ী ভাবে অর্থ-নৈতিক ও রাজনৈতিক বিশ্বধানা হইতে বক্ষা করিতে পারিবেন কি না সম্বেচ। কারণ ইচা ব্যভিরেকে প্রভাক প্রাদেশে, বিশেষতঃ পশ্চিমবঙ্গে ক্রমাগত অবস্থার পরিবর্ত্তন অনিবার্থা। কেন্দ্রীয় অর্থ কমিশনের এই সমস্ত বিষয় আলোচনা কবিবার অধিকার-আছে কি না ডাহা আমার সঠিক জানা নাই, তথাপি এ বিষয়ে তাঁহাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতেচি।

ভানরাছি বে, পশ্চিমবঙ্গ সরকার অর্থ কমিশনের
নিকট কেন্দ্রীয় ভহবিল বণ্টনের বিষয় বে সমন্ত স্মারকলিপি
লাখিল করিয়াছেন ভাহাতে একমাত্র ঘনবসভির জন্য
খাত্মবিভাগের খরচ বেলী হয় এই কথাই উল্লেখ করিয়াছেন। কিছ ঘনবসভির জন্য শিল্প-সম্প্রসারণ, থাজোৎপাদন ও নানা বিবেরে অস্থবিধার কারণে প্রদেশবাসীর
এবং প্রাদেশিক ভহবিলের বে ক্ষতি হইভেছে ভাহা সম্পূর্ণভাবে বিবৃত করেন নাই। বলি ইহা সভ্য হয়, ভাহা
হইলে পশ্চিমবজ্ব সরকারের আরও বিশ্বভাবে ভাহাদের
লাবি অর্থ কমিশনের নিকট দাখিল করা কর্মবা।

নিয়ে ১৯৫১-৫২ সালের বাজেট অনুসারে করেকটি প্রদেশের জার ও ব্যায়ের পরিমাণ দিলাম। পশ্চিমবল স্রকারের আর্থিক দ্রবছা ইছা হইতে স্পটই বুঝা বাইবে।
এই প্রেল্ডে-সরকার যদি বথেট পরিমাণ টাকা কেন্দ্রীয়
সরকার হইতে না পার ভাহা হইলে কোন বিভাগেরই
উন্নর-পরিকল্পনা বাভবে রূপারিত হইবে না এবং প্রবেশ
ও প্রেল্ডেশ্যানীরা দিনের পর দিন নিশ্চিত ধ্বংসের মুখে
চলিতে থাকিবে।

### বাজেট ১৯৫১-৫২ ( হাজার অহপাডে )

	-			
প্রদেশের নাম	বাৎসবিক স্থায়	বাৎস্বিক ব্যয়	বাঙ্ ডি	<b>ৰাট্</b> ভি
পশ্চিমবন	<b>08,∙8,</b> €8	eb,b., 98	-	8,96,2.
বোদাই	<b>40,48,26</b> *	60,62,90	8,43	
<b>শা</b> দ্রা <b>জ</b>	42,60	७०,२३,१४	_	69,26
উত্তর প্রদেশ	७১,२७,००	<b>4</b> 2, <b>6</b> 2,••	-	₹€,••
পুৰ্ব-পঞ্চাব	>७,७०,8>	>6,68,46		20,29
বিহার	७६,३७,१८क	93,52,22	8,60,63	
উড়িখ্যা	>0,68,02	>>, ৫ • , ৮>	-	28,82
মধ্যপ্রদেশ	₹•,88,€•\$	२०,७०,७०	۶۵,۵۰	-
আসাম	2,65,90	30,00,28		29,68

সম্প্রতি প্রচেশ-বিধানসভাষ ও কেনীয় লোকসভাষ निर्वाहत-परम वास्ट्रेनिक कात बादानी किंद्रश सम्हार অবস্থায় উপনীত ভাষা থবই পবিক্ষট চইয়াছে। পশ্চিমবক্তে এত অধিকসংখ্যায় অপর প্রদেশবাসী আসিয়া শ্ৰমশিরে ও বাবসায় কেতে জীবিকা অর্জন করিভেচে বে বাংলার রাজ্য-বিধান ও লোকসভার বাঁহারা মনোনীত वहेबाव सम लाली वहेबारकन कांवारबय स्वतंक स्कारक অপর প্রদেশবাসীর ভোটের উপর নির্ভর ভবিতে চইতেছে अ क्रेबाटक । (बढ्न (एक्षा वाहेरलाक जाकारल प्राप्त क्रम क्रे প্রামেশের বাজ্ঞা-বিধানসভায় বাংলা ও বাঙালীর স্বার্থ অপর প্রদেশবাসীর স্বনামী ও বেনামী সভাদের ইচ্চার উপর অনেকটা নির্ভব করিবে। ইহা স্পষ্টই বঝা যায় যে, সমস্ত শহরে ও শিল্লাঞ্চলে অপর প্রদেশবাসীর সংখ্যাধিক্য কেবল-মাত্র সেই সমন্ত অঞ্চলের বাসিন্দা নিজ প্রান্ধের লোকেছের প্রভাবান্বিত করিবার জন্ম প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত নেহকুর, উত্তর প্রদেশের পণ্ডিত পদ্বের, উডিয়ার শ্রীয়ক্ত মহতাবের, বিহাবের জীবৃক্ত জগজীবনবামের পরিভ্রমণ-সূচী দ্বির হইরাছিল। বে সমস্ত জেলায় এবং বে সমস্ত মহকুমায় चित्र श्रामनाजीय मध्या क्य महे मयख चक्रात वहे मकत নেডা কেন ভ্ৰমণ-স্কীভুক্ত করেন নাই ইহা ভাবিবার এই সমন্ত দেশনেতাই আবার প্রাদেশিকভার गर्फ विव्निष्ठ रहेशा छेर्किन । किन्न छः रथेत विव्य श्रहे নিৰ্মাচন-ৰূমে তাঁহাৱা নিজেৱাই কডদুৰ প্ৰাহেশিকভামূলক মনোভাবের পরিচয় দিয়াছেন তালা জালারা একবারও ভাবিয়া দেখিয়াছেন কি ?

<sup>•</sup> বজুত জাবাৰত টাকা হইতে ২,০٠,০০ নইয়াহে।

<sup>†</sup> বলুত আমাৰত টাকা হইতে ১১,০০,০০ লইয়াছে।

<sup>‡</sup> বৰুত আমাৰত টাকা হইতে ১৩,০০ নইয়াছে।

गांधावनकः कान आम्ब ७ आम्बनागीय वर्ष निकिक উন্নতি করিতে হইলে সেই প্রাথেশে নানারণ বহতব শিরের সম্পাসারণ আবস্ত্রক হয় : কিছু পশ্চিমবলে এইরপ শিল্প-সম্প্র-সাৰৰ বৰ্মমান অবস্থাৰ বাঞালীৰ স্বাৰ্থের পকে ক্ষতিকৰ চটাৰে কিনা ভাচা বিশেষ ভাবিবার কথা, কেননা নানা কারণে ইহা বছ প্রতিকৃত্ত অবস্থার সৃষ্টি করিছে পারে। আমার মনে হয় সর্বাত্তে কৃটিরশিরের প্রসার ও বৈজ্ঞানিক উপায়ে কৃষির উন্নতিবিধান করিতে পারিলে বাঙালীকে ভাহার আথিক তুর্গতি হইতে রক্ষা করিতে পারা বাইবে। বতই নতন নতন বহুৎ বুহুৎ শিল্প পশ্চিমবলে প্রতিষ্ঠিত হইবে তভই অধিকতর সংখ্যার অপর প্রদেশ হইতে প্রমিকেরা এই প্রদেশে আসিয়া বসতির চাপ ও সেই পরিমাণে খাছাভাব আরও বাডাইয়া তলিবে। ধখন কেবলমাত্র ক্রষিকার্য্যের জন্তই এই প্রবেশে সাঁওভাল পরগণা, হাজারিবাগ ও রাঁচি ছইতে বছ প্ৰমিক আনিতে হয় তখন উপযুক্ত বাঙালী শ্রমিকের অভাবে নতন শিল্প-প্রতিষ্ঠানগুলি চালাইবার জন্য অপর প্রদেশ হইতে প্রমিক লইয়া আসাভির গতাভার থাকিবে না। পৰ্কে মধ্যবিত্ত বাঙালী যৌথ কোম্পানিতে অংশ ( share ) কিনিয়া বহু কোটি টাকা হারাইয়াছে ইহা খীকার করিতেই হইবে। এই কারণেই নতন শিল্প-প্রতিষ্ঠিত হইলে ভাঁহারা আর অর্থ বিনিয়োগ করিবেন কিনা সম্মেষ্ট। বিজ্ঞানী বাঙালীরা অধিকাংশ ক্ষেত্রে टक्वन छाउँदिकेंद्र इडेवाद यछ चःम किनिया थाटकन। এ সমস্ত নতন শিল্পপ্রতিষ্ঠান হইতে কতিপয় বাঙাশী **क्वानी ७ कराकि फेल्रभाक कर्यानावी खीविकानिर्वाह** কবিলে পাবিবে মাতে। জির প্রায়েশের প্রমিকগণ তাচাদের উপাৰ্কিত টাকা ৰ ৰ প্ৰদেশে পাঠাইয়া দিবে এবং অপর প্রদেশবাসী বাঁচারা ঐ সমস্ত কোম্পানীতে মলধন বিনিয়োগ করিবেন তাঁহার। লভ্যাংশ ভোগ করিবেন। ইহাতে বাংলা ও বাঙালীর লাভ কোথায় ? সরকার-কর্ত্তক প্রকাশিত পুতিকা হইতে দেখা বায় বে. ১৯৫০-৫১ সালে পশ্চিমবক্তে w'so क्लांकि होका चात्रकत चानात्र दहेशाहिन । कि**ड** এहे আয়ের মধ্যে পশ্চিমবঙ্গবাদীদের দেয় অংশ কডটুকু তাহা জানিবার উপায় নাই। তবে মোটামূটি অনুমান করা ৰাইতে পারে যে, ভাহাদের অংশ বেশী নহে। সম্প্রতি পশ্চিমবল সরকার এই প্রাদেশের ব্যবসাবাণিল্যের ক্ষেত্রে ও শিল্প প্রতিষ্ঠানওলিতে কোন কোন প্রান্থের কত প্রথিক কার্বো দিপ্ত আচে ভাহাদের সংখ্যা নির্দারণ করিভেচেন। বখন এই অন্নসভানের ফল প্রকাশিত হইবে তখন সঠিক বুৰা বাইবে ব্যবসা ও শিল্পজে পশ্চিমবঙ্গবাসী প্ৰমিক ও কাৰ্য্যরত ব্যক্তিদের স্থান কডটুকু।

গত ৮ই ডিলেম্ব আমাদের মধ্যমন্ত্রী স্থামনগর টেশনের নিকট উত্তর-কলিকাতা বৈদ্যাতিক শক্তি সম্প্রসারণ পরি-কলনার প্রাথমিক উল্লেখন-প্রসঙ্গে বলিয়াছেন বে, খালোৎ-পান্তন বন্ধি এবং দেশের লোকের আর্থিক উন্নতির কর বৈচাতিক শক্তি একান্ধ প্ৰয়োজনীয়। তিনি আৰুও বলিয়া-ছেন বে. মফৰলবাসীদের স্থা-স্বাক্তন্মোর কল্প এবং বাচাতে শহর ভাতিয়া লোকে মফললে বাস কবিতে আগ্রহান্তিত হয় ভাষার জনা এই পরিকল্পনা করা চইয়াছে। কিছ সম্বর্জন বাস করিয়া লোকে কি ভাবে জীবিকা অৰ্জন করিবে সে বিষয়ে ভিনি বিশেষ কিছুই উল্লেখ করেন নাই। ভাঁছার বক্ততা সংবাদপত্তে বাহা প্রকাশিত চইয়াছে ভাষাতে দেখি. উপস্থিত কয়েকটি ছোট ছোট শহরে বৈদ্যুতিক শক্তি সরবহাতের প্রস্থাব করা হইয়াছে মাত্র। যদি কেবলমাত্র ঐ শহরগুলিভেই বৈতাতিক শক্তি সরবরাহের বাবস্থা করা হয় তাহা হইলে ঐ সমন্ত শহরের আশপাশের কৃষিক্ষেত্র-সমূহ কি করিয়া উহার স্থবিধা পাইবে এবং কুটীরশিল্পই বা কিরুপে গড়িয়া উঠিবে ? বদি ছোট শহরশুলির ভিতরেই কটারশিল গড়িয়া উঠে ভাগ চইলে অধি-वामीरमञ अथ-चाष्ट्रमा वाष्ट्रिया छेठा मरतव कथा वबः কমিতেই থাকিবে। এই পরিক্রমাকে কার্যাকরী করিছে হইলে প্রাদেশিক ও জেলার রাজাগুলিতে বৈচাতিক শক্তি সরবরাহ করা ধরকার বাহাতে শহরের বাহিরে ঐ সমস্ত রাস্তার ধারে কটারশিল্প গড়িয়া উঠিতে পারে এবং কৃষিক্ষেত্র ও কৃষি-প্রতিষ্ঠানগুলি বৈচাতিক শক্তির স্থবিধা ভোগ করিতে সক্ষম হয়। আমি জানি উত্তর-কলিকাতা বৈঢ়াতিক শক্তি পরিকল্পনার অন্ধর্মকী কেন্দ্রীয় ও পশ্চিমবন্ধ ক্রবিবিভাগের উপদেশামুসারে পরিচালিত একটি স্থপরিচিত কবি-প্রতিষ্ঠান বৈচাতিক শক্তির জনা দরখান্ত করিয়া এখনও ভাহা পায় নাই, বদিও সেই কুবি-ক্ষেত্রের পার্শ্বন্থ কোন একটি বাগানবাডীতে বৈচাতিক শক্তি সরবরাহ করিবার ব্যবস্থা হইয়াছে। এমন কি নিকটবর্জী একটি বাস্ত্রহারা কলোনীর অধিবাসীদের দর্থান্ত-বভদর জানা ৰায়, এখনও মঞ্জ হয় নাই।

পশ্চিমবঙ্গে কৃটিরশিল্প—পূর্বের বাহা ছিল এবং এখনও আছে সেওলির পুনক্ষার ও অপরিচালনার ব্যবস্থার কথা পূর্বেই বলিয়াছি। বাঙালী যুবক ও মধ্যবিজ্ঞ ব্যক্তিদের উপবোগী আরও অনেক প্রকার কৃটিরশিল্প এই প্রদেশে গড়িয়া উঠিতে পারে এবং সেগুলির জন্য অপর প্রদেশের শ্রমিকের আমদানী আবশ্রুক হইবে না। তাত-শিল্পের ন্যায় গৃহস্থ্যরের ছেলেমেয়েরাও এই সম্বন্ধ কৃটীর-শিল্প প্রসারের সাহায্য করিতে পারে। ক্ষাইজ্ঞানজালাকে

রেরপ নানা প্রকার ঘড়ি তৈরি করিবার ছোট ছোট কারথানা দেখিয়াছি, মনে হর ডক্মরণ ছোট কারথানা পশ্চিমবঙ্গের ব্যক্ষের বিশেষ উপযোগী হইবে। এই স্বক্টীরশিল্প শিক্ষা কবিবার জন্য বিদেশে শিক্ষার্থী পাঠাইকে বিশেষ কল ইইবে কি না সন্দেহ, কারণ ইহা বহু সময় ও ব্যয়সাধ্য। যদি পশ্চিমবঙ্গ সরকার চীন, জাপান, স্ইজারল্যাও, ইটালি এবং অন্যান্য কুটীরশিল্প প্রধান দেশগুলি হইতে কুটীরশিল্প স্থলক ব্যক্তিদের আনাইয়া একটি স্থিচিন্তিত পরিকল্পনা অফ্লারে কতকগুলি স্থনিন্দিট্ট গ্রামে ও শহরে পাঠাইয়া সেখানকার অধিবাদীদের শিক্ষা দিবার ব্যবস্থা করেন ভালা হইলে এই প্রদেশবাসীর প্রস্কৃত অর্থ-

নৈতিক উন্নতি হইবে আশা করা বার। বাহাতে কুটারশিক্ষণ্ডলি সমবায় প্রভাততে গড়িয়া উঠে এবং সেইগুলি
অর্থাভাবে এবং মহাজনের খণের চাপে ধ্বংস না হইয়া
বায় তাহার জন্য প্রভ্যেক মহকুমায় প্রদেশ-সরকাষের
ভাবা পতিচালিত একটি কবিয়া সমবায় লগ্নী সমিতি
প্রতিষ্ঠা করা দরকার। অনেক ক্ষেত্রে দেখা বার, অর্থাভাবে
ও মহাজনের খণের চাপে বহু কুটারশিল্প হয় একেবারে নই
হইয়া গিয়াছে নতুবা মহাজনের ভাবা পরিচালিত হইতেছে,
ফলে লভাংশ মহাজনেরাই বোল আনা ভোগ কবিভেছে।
বহিবালিজ্যে, বৃহত্তর শিল্পে ও অপরাপর ব্যবসায় ক্ষেত্রে
বাঙালীর স্থান কোষায় তাহা পরে আলোচনা করিব।

# কৃষ্ণকুম†র মিত্র ব্যক্তম†র মিত্র ব্যক্তমার তিনেবর ব্যক্তমার তহরায়

दामाबाकत्वद चारिकारवद क्लानश्रक क्ल काकि श्रेष्ठ ভারতে পারিয়াতিল উন্বিংশভি শতকের শেষ বিক চইতে। क्रकारक बारमारहरणद व ब्रह्म-मरबाक करून रमहे व्याक्तियम অভানমুকে অভিন্মিত করিয়াছিলেন, কুফুকুষার বিত্র তাঁহাবের অভতম। ভারতীর ভাতিগঠনে, বাংলার সামাজিক প্রপতি-বিবামে এবং মিডীকভা ও সভভার সচিত সাংবাদিকের কণ্ডবা সম্পাদনে বিজ মহাশ্যের দান অবিশ্বরণীয়। তাঁহার কর্ম-জীব্ৰের গভি ছিল বৰ্ষুব। দেশ, জাভি ও স্বাজের হিভক্র कार्वा बाक्रहे कांकात क्रमश्रक कांकर्यन कविक। अहे जनमन ভাষ্ঠাতে ভিমি ভগবামের প্রিয় কার্যা বলিয়া বিশ্বাস করিভেম। ভালার কৰ্মনীবন আবাজিক তীবন চাড বিভিন্ন হিল না। ভিনি বলিতেন বে, কাজ না কৰিবা বলিবা বাকা, সে ভ মুলা। অভিন শব্যার শব্দের পূর্বে পর্বান্ত ভিনি লোকহিতকর कार्द्या चार्चामरकात्र कतिवादिस्तम । वनगाणि ७ वाप-श्री के बाद के देख वम्र मार्ग्य कार्य मियू के वार्षिक्ष, विज्ञव-विश्वाचनक किन्नाब जास मा करिया अवर अनवादम অবিচলিত ভাক্ত-বিখাস লইয়া মিত্র মহাশর আবস্থা দেশ, জাতি ও সমাজের সেবা করিরা সিরাছেন।

বৰ্ষদিনংক কোনার চালাইল বক্ত্যার অভর্ক বাধিল থাবে সম্লাভ বলক কাণ্ড পরিবারে কৃষ্ক্রারের কর হয়। উাহার পূর্বপূক্ষ বাধরণয় কোনার চক্রবীপের রাজবংশ ক্টতে উছুত। উাহার পিতা গুরুত্বণ ছিলেন বাধিক, প্রোপকারী, আঞ্জি-বংসল ও সাহলা পুরুষ। এই সর্বর সম্প্রার উাহার পিত্দেবের মিকট হইতে বেম উত্তরাবিকারসকোই পাইবাছিলেন। গুকুচরণ ছিলেন এককম দক অখারোহী। বৈহিক্
বলের সদে তিনি বামসিক বলেরও অবিকারী ছিলেন।
গুলুর সমরে নালকর সাহেবদের অভ্যাচার-উপক্রবে বাংলার
চাষী-মন্ত্র অতিঠ হইবা উঠে। চালাইল অঞ্চলেও মনীর
বারে-বারে অমেক 'মীলকুঠী' ছিল। গুলুরা মিক প্রায়ের
পার্থবন্তী হারদেবপুরে মিঃ বেরি সংমক এককম ইংহেকের
'মীলকুঠী' ছিল। সে বহু অসহার লোকের বানের কেতে
ভারে করিবা মীলের চাই করাইত এবং অমেক ব্রিক্ত রিক্
মুসলমান ক্রয়ক-শ্রেমজীবীকে বলপুর্বাক মীল-চাবের কর
বেগার বাটাইত। বিশ্ব মিনীভিত প্রাম্বাসীরা গুকুচবনের
শ্রণাপর হুইলে তিনি ভাহাদিনকৈ সন্তর্গর করিবা করিবা নালক্র্যান বিন্ধি
সাহেবের কুঠী আক্রমণ করিবার কর্ম প্রস্তুত হুইলেন। মীলকুঠীর স্বোতাক্র-পুন্ন ইতা ভামিতে পারিবা আক্রমণ প্রতিরোবের
বাবতীর সন্থান্য বাবস্থা অবলক্ষম করে।

শুকুচরণ নির্বাভিত চাধী-রজুরনিগকে লাট, বরুর, রাম-দা, কোঁচ, সভকি ইত্যাদি অত্তে স'জত ভবিবা বেরি লাহেবকে দিবালোকেই আজ্ঞরণ করিলেন। তিনি ধরং অধারোহণে ভাষার দলের লোককে পরিচালিভ করেন। বেরী সাহেবও অধপৃঠে আজ্ঞচ হইবা সদল-বলে আজ্ঞরণ প্রতিবাধের জভ অঞ্জর হইল। লাহেব রশুকে লাটিয় আবাতে অজ্ঞান হইবা রক্ত'ক তলেবরে অধপৃঠ হইকে পঢ়িবা পেল। ভাষার দলের লোকের। সলে বলেই উর্ধানে পলাহন

কৰিল। অক্লচন্ত্ৰেৰ আহেশে উড়েজিত জনতা সাহেৰের বরবাড়ী তাতিয়া দিল। সেই দিল সন্থার তাহাকে মৌকার
করিয়া বর্মার অপর পারে পাঠাইবা দেওবা হইল। একজম
আম্য 'মেটিড' তাল্কভারের হতে এই তাবে প্রছত হইছা
নাহেব আলালতে অভিবােগ আনিতে লক্ষা বােধ করিল।
পূর্ব্বোক্ত বটনার পরে সেই অঞ্চল হইতে নীলের চাম উটিয়া
বার। নিপ্রিভিত অসহায় হর্বলে মালুষের জভ বেদনা-বােধ
এবং তাহাদের উর্বার্থ বিপলের সন্মুবিধ হইবার মত মহল্পণ
হিল অক্লচর্বের বংশগত। কৃষ্কুরারের জীবনে ভাহা আরও
উক্লল চইরা প্রকাশ পাইবাভিল।

পাঁচ বংগর বহসে কৃষ্ক্ষারের বিভাগী-জীবন আরম্ভ চর ব্যালনিক শহরের বল বিভালরে। এই শিক্ষাহতনে ভংকালে জোরানের বলাহবাদক, 'ভাগসমালা' ইভাাদি গ্রহ-প্রপেতা গ্রহং নববিবান রাজ্যসমাজের বনামখ্যাত প্রচারক গিরিশচন্ত্র দেন হিলেন অভতম শিক্ক। অপর একজন শিক্কও রাজ্যবর্ত্তিকা ছিলেন। হাত্রমৃত্তি পরীকা পাল করিবা অপর হামীর জেলা ভ্লে ভর্তি হইলেন। সেই ভ্লের শিক্কগণের মধ্যেও ক্রেক্তম হিলেন রাজ্য। এই সকল আদর্শ শিক্ষারতী ভাহার মনের উপর মধ্যেই প্রভাব বিভার ক্রিয়াছিলেন।

কিছুদিন পরে মহন্দ্রনিংহ শহরে একট শাখা ব্রাক্ষ সমাক্ষ্
প্রতিষ্টিত হইল। সমাক্ষের সভাদের সম্বাহ্ নিজন "বাহা সভ্য
বলিরা বিখাস করিব, কাজেও ভাহাই করিব।" এই সম্বরণী
ক্ষকুরারের কিশোর-ভিতকে বিশেষ ভাবে আকর্বন করিল।
ভিনি পরম আগ্রহের সহিত উক্ত সমাক্ষে ধোগদান করিছা
সভাপ্রেণী-ভূক্ত হইলেন। তাহার সমগ্র ক্ষিবনের কর্মবারা
পূর্বোক্ত সম্বর্ধ-বংশীর দারা নিম্মিত ও পরিচালিত হইনাছে।
সেই সম্বর তিনি জীবনে ক্থনও ভল্করেন নাই।

কৃষ্ণার মঙ্মনসিংহ ত্রাক্ষণমাঞ্চ বাইরা নির্মিত তাবে উপালনার বোগলান করিতে লাগিলেন। তংকালে তাঁহার বরল মাত্র চাইছ বংলর। তথন এত অর বরলে হিন্দু-পরিবারে কোন হেলেকে ত্রাক্ষণর্প্ত অইই হইরা ত্রাক্ষণমাঞ্জ হইতে দেখা বার নাই। তাঁহার পিভার বছুবারব ও আছীর-ক্ষমের মধ্যে অমেকেই তাঁহাকে 'ভ্যাক্ষাপুত্র' করিবার জন্য তাঁহার পিভাকে পরামর্শ হিলেন। স্চৃচিত স্বেহনীল পিভা তাঁহাকে পরামর্শবিত কাল করিতে অসম্মতি জানাইলে তাঁহাকে একব্যর করা হইবে বলিয়া তর প্রদর্শন করা হয়। ভ্রুচরণ ইহাকে ক্রিয়ার বিচলিত না হইরা বলিয়া বিলেন বে, ভিনি বরং পুত্রের সঙ্গে একব্যর হইরাই থাকিবেন, এইব্রুচ ভ্রাণি পুত্রকে বর্জন করিবেন না।

ব্যৱহাৰ সিংহ পাছতে বাসকালে কৃষ্ঠুমাত এমৰ অধ্যক সকী পাইতাৰ —বাহাদেত সহিত এক দিকে ব্যৱসাৰালোচনা হুইত, তেৱৰই বেলাবুলা এবং ব্যাহাৰ-চৰ্চাও চলিত। সভ্যৰ,

मोकांगानमा, अवादबाहन, ०० ७० बाहेन मीर्च नव नारब ইটিয়া বাভায়াত করা ইত্যাভিতে ভিবি তক্তা লাভ করিয়া-विरागतः किमि श्रीकिश्व त्यानुस्य मात्र चाम कृतियात नवत मधीरवर महेश माधार काहिएक। धरकारण के बरवर প্রশন্তভা অনেক বেশী ছিল। ক্ষক্ষার ও জাঁছার স্থিপণ मैं। जांद काहिया खश्चनात्वय नवनात्व बाहेरकम अवर नुवदाय u-शाद किरिया चालिएक। केलाव राजाकारल प्रथमन'नश्च नहर हरेए वाचित्र आहा बारेएक हरेला वर्षाकारण विकास मधीनार वाकाशक कांग्रेस करेंच अवर औरच नवजार ৬০ মাইল পৰ অভিক্রম ভরিতে তইভ। ভাতাদের প্রামে ইটিয়া ঘাইতে ভিন দিন সময় লাগিত। বালক কৃষ্ণক্ষার खीचारकारम मधीत महिल शोर्ष भव क्रमानक किम विम में हैंगे. विरय-पानप-महत्र ७ प्रया-देशका वर्ग्रावद व्यवसाद वना विश्वा प्रशास बाहे एक अवर पारकाम-पास महात किरिया আসিতেম। একবার পুরার ছটতে নৌকার গ্রামে বাইবার কালে ভীষণ বছের বুবে পছিয়া নৌকাডুবি হয়। ভাঁছার मनी हिल्म अक कार्रकृत्वा कारे , देवदा अक हता वाहे পাত বহিলা সারারাজি কাটাইলেন। পর দিন প্রভাতে ভরত-বিকৃত্ব ভরা মধী সাভরাইরা পার হইয়া অপর कीरत अक रकामा गृहत्वत वाकी घाटेवा केंद्रितम । मही-नरव হাতাহাতভালে ক্ষত্ৰার মাবিদের সলে নিজে নৌভা চালাইতেন। এমনই ভাবে ভিনি বালাকালেই সাহসী, কঠোর পরিশ্রমী ও কটগতিফু হইরা উটিবাছিলেন।

তাঁহার পিতা গুরুচরণ মিত্র বৌৰমকাল হইতে বোডার চ্ছিয়া বেড়াইতে ভালবাসিভেন। কৃষ্ণকুৰারও বাল্যকালেই উভয় বোভ-সংখ্যার চইয়াছিলেন। বৃদ্ধ ব্যাস পর্বান্ত ভিবি (बाकार मिक्टक कामराजिएकम । विद्यानि वरमत वर्गाम किमि क्षत्रारतात्व के कार्रेस वत्रकात करवक प्राप्त वक्षत्व वाकावाक কবিয়াছেন। বোডা বভই চরত তইত ওঁতোর সালস ও दिश्मात ७७३ वृद्धि भारेक। बालाकात विभि अकवात अवही इक्क (बाधांक प्रकारण दिशे कविता क्षवंत विकार मामावय इन। (व'कांक्र अपन इक्क दिन (व. (कह क्रिक्ट भारत माक देश के देश वाना मिक। जाहाद क्या हरेन, कर वाकाय क्षेत्रित्वमहे अवर केशांक भारतका कवित्रा कर बाकिरवन। किनि तमहे व्याष्ट्राव नामाय अक्री माट्य वीविद्यास अवर माट्य क्षेत्रिवा (य'काव निर्देश नाकारेवा निकासमा आव नव अक्क বেলে উভাকে অনেক দূর অববি মুটাটবা লইবা গেলেল। ইরাতে বোডাট অত্যত্ত ক্লাভ হইবা পড়িল। এবনি ভাবে বে:ভাটকে তিনি নায়েভা করিরা ছাভিলেন।

নংমনসিংক জেলা মূল কটতে ক্ষকুমান ১৮৭০ এই'ছে প্ৰবেশিকা (এন্ট্ৰাল ) পৰীভাৰ উত্তীৰ্গ ক্ষরা ক্ষপ টাকা স্থতি পান। বেভিক্যাল মূলে পড়িবা ভাজান ম্বৰান ইন্ধা উল্লেখ ব্যক হিল; কিন্ত অভিভাষক্ষের ইহা হিল অভরণ।
ভবরুন তাঁহাকে এক-এ পভিষার অভ কলিকাভা বেলিভেলী
কলেকে ভর্তি হইতে হইল। কলিকাভার আনিবা ভিনি
বির্দ্ধাপুর ব্লীটে রাজসনাক হালাবালে হান পাইলেন। বরিবালের বনাবন্য অধিনীকুনার বভঙ তবন এই হালাবালে
বাভিতেন। তথানীতন কলিকাভা হাইকোটের প্রসিদ্ধ ব্যারিহার ভারতবিশ্রুত আনক্ষমোহন বস্ত তথার আনিবা হালেরে
সহিত বেলানেশা করিভেন এবং তাঁহাহিগকে বর্ত্তাবে ও
দেশলেবার আন্তর্প অধ্বাণিত করিবার চেই। করিভেন। এই
সমর অব্যক্ষ হেরস্কল বৈল্লের, কানীশ্রর স্কুল, বারকানাধ
গলোপাব্যার প্রভত্তর সহিত্ত তাঁহার পরিচর ও বছত হয়।

বিভীর বার্ষিক শ্রেণীতে অধ্যয়নকালে শিভার গুরুতর পীড়ার সংবাদ পাইরা কৃষ্ণকুমারকে স্বপ্রামে বাইতে হইল। ইহাতে পাঠে ব্যাঘাত করে, কলে সেইবার ভাহার পরীকাবেওরা হইল না। শিভা স্থছ হইরা উট্টলে তিনি কলিকাভার কিরিয়া আদিরা প্রেসিডেলী কলেজের অভ্যুক্ত তৎকালীন ইঞ্জিনিয়ারীং ক্লাসে ভর্তি হইহেন। ইঞ্জিনীয়ারিং পাঠ স্বাধির পরে নানা কারণে ভাহার এ পরীকা বেওরা হইল না।

ইহার পর ক্রক্ষার ১৮৭৪ বীঠাকে জেনারেল এনেব্রি কলেকে বিভীর বার্ষিক শ্রেণ্ডত তর্তি হন। বার হব মাল অব্য-রনের পর তিনি এক-এ পরীকার উত্তীর্গ হইলেন। চতুর্ব বার্ষিক শ্রেণ্ডত অব্যরমকালে ভিনি প্রেলিভেলী কলেকের আইন রালে তর্তি হইরা 'রীভারলিণ' (ওলালভি) পরীকার কল প্রভত হইতে লাগিলেন। কিন্তু এই পরীকাও লেব পর্যান্ত বেওরা হইল না। ক্রেমানেল এনেব্রি কলেকে হই বংগর বি-এ পড়িরা তিনি পরীকার উত্তীর্গ হইলেন।

बाबजीवरन मदमननिष्ट नद्दा जनवामकारम कृक्तृयाद बाष्ट्रमबाद्य द्वानेबाम क्याब नद्यानकाव, त्रवानवादनका प्रजिट्य केवाब कविवाब बरमावृष्टि विशद्य केवाब, प्रजिट्य क्षण रेकावि विविध मन्छत्य विकासमायम कविवाद प्रवास পাইরাছিলেন। এতাদুদ বহুং খণ্ঞাম উভয়কালে তাঁহাকে বেশ, জাভি ও সহাজের সেবার ত্যাগরীকার ও হংব বরণ করিতে অনুপ্রাণিত করিয়াছিল। কলিকাভার জাঁচার কর্মকের সম্প্ৰসায়িত হইল। বাজসমাজের বিদর্শতলে বাভিয়া ভিলি জীবলাহৰ্ণতে ত্ৰপ দাৰ করিবার প্রবোগ-প্রবিধা পাইলেন। সেই ৰঙলে প্ৰিভ শিৰণাৰ পাত্ৰী, আনন্দ্ৰোহৰ বস্তু প্ৰভৃতিত্ৰ ভাত্ৰ ৰৱেব্য ৰেভা এবং বাৰকানাৰ গান্তনী, কালীপকৰ সুকুল প্রভতির মত প্রবোগ্য সহকর্মীর সভাব বিলিল। বংকীর অবপ্ৰের মধ্যে রাজনীতিক চেত্যাসকার ও পৌর অধিকার-বোৰ জানাইবার জন্ত কুক্তবার এবং ভাতার নতীব-বন্ধ ভাগীণতর পুরুষ উত্তরবদে এচারভার্ব্যে বাহির হইরাছিলেন। উবস পর্বান্ত লে অঞ্চলে ভেলগাতীতে চলাচল-বাবস্থা হয় গাই :

নেই কাষণে ৰাভাৱাতের বুবই অন্তবিধা হিল। ভাছারা হর্ণন পথ অভিক্রম করিয়া নামা ছামে সিরা বক্তৃতা হিতে লাগিলেন।

১৮৭৫ মিটাল হাঁতে ১৮৮৫ মিটাল—এই এগার বংশর ভারতের লাভীর জীবনে একটা নার্বক বুল বলা বাইতে পারে। কলিকাভার ঠুতেউস্ এলোনিরেসন, ইতিরান এলোসিরেসন বা ভারত-সভা, সাধারণ রাজ্যবাদ এবং লিট ভুল ও লিট ভূলেও লিট ভূলের ভূলিন বেশভাল কন্কারেলের জাবিবেশন হয়। ইহার পর ইতিরান ভালনাল কংগ্রেলের (ভারতীর ভাতীর বহাসনিভি) প্রভিঠা হইরাহিল। এই সকল প্রভিঠানের হাপনা অববি ক্লক্স্বার একজন একনিট ক্লামিণে ইহালের সভিত সংগ্রিই চিলেন।

আনক্ষোহন বহু বাংলার হামণ্ড বদেশ-সেবার আদর্শে অন্প্রাণিত করিবার মহান্ উদ্দেশ্ত ই ভেট্স এলো-সিরেশন প্রতিষ্ঠা করিলে ক্ষকুষার ভালাত বোগরাম করেন। এই সমিভির ভিনি হিলেন একজন উৎসাহী কর্মী। আনক্ষোহন বহু ও হরেজনার বন্দ্যোপাব্যারের চেঙার রাজনীভিক প্রণতি লাবমক্সরে ১৮৭৬ মিঙাকে 'ইভিরান এলো-সিরেসন' (ভারজ-সভা) হাশিত হর। ইছার সন্পাদক নির্বাচিত হইলেন আমক্ষমোহন বহু। কৃষকুষার এই গভার বিশিষ্ট কর্মী হিলেদ।

काञक्यार्वस काम विदाहे दिएम-दिवादन नामा काकि छ मक्तवादक वान, नाम। जावाद बाह्मम, विविध वर्षप्रकृत विज-মাৰতা ও পিকা-বীকার অভাবে বেশবাদীর বদ ভূদংকারে আজয় ৬ দেবাদে জাভির চেডনা দকার করা কেবল বে রাজ-নীভিক আন্দোলনের বাবা লক্তব মতে ভাষা বাংলার ভবানীতন व्यवस्था विर्वेशकात्वर विर्वेशक नाविवादिका । त्रवेशक উনবিংশতি শতকের শেষভাবে তাঁহাদের কর্মবারা বিভিন্ন বাতে প্ৰবাহিত হইবাহিল। ভুকতুৰার ১৮৮১ নৰে সিট ভুলে বাসিক मास ४०, राज्यम निकत्कत्र नवस्त्रम् करतमः। साम्राज्यस्य देशनान्त पर विराम और प्रतार द्याम निक्य । काशा वह কালীব্যর পুরুল গণিত পড়াইতেন। হারবের চরিরগর্চন, খাছোলভি, শিকাদান ইভালি কাৰ্ব্যে কৃষ্ণকুমার এলপ বন্ধ লইতেৰ যে, অৱকাল ববোই ভিনি ছাত্ৰসবাৰ ও অভিভাৰত-প্ৰের বিকট অভ্যত প্ৰির হুইরা উট্টলেন। আহর্শ শিকান্তরী বলিলে বাহা বুঝার, ভিবি হিলেব ভাহাই। তত কলুবিত-চরিত্র হাত্রকে উভার কবিভা ভিবি 'বাছব' করিভাত্তের, কত অমবোৰোই বিপৰগাৰী ভাততে বিভাবিকার আতঃ করিবা ৰংপৰে আনিৱাছেৰ ৰেই স্কল বিৰয়ণ তাঁহাছ '<del>আৰুচ্ছিড'</del> এতে এবত ভাষাতে। ভাষা পাঠ ভাষতে এই আবৰ্ণ निकासकीय हैरकरक संसाय बक्क जानका वरेरकरे वक वर्ष ।

প্রতিষ্ঠার ছট বংসর পরে সিট ভুলট কলেকে পরিণত হইল, প্রবর্ত্তীকালে ভিনি সিষ্ট কলেজের অব্যাপক ও ভূপাতিক্টেওেন্ট भरम विश्वक हरेशांबिरसम्। भरमाञ्चि हरेरमध निमि मानिक १०. डीकार व्यक्ति (रक्ति श्रहन करवन गारे। अरे निका-शिक्षिकास चामकाशाहम रह थ काहार सराशा मधीर्वन এলনভাবে গভিষা তলিয়াছিলেন যে, অলকাল মধ্যেই ইহা (सम. काकि थ जवारकत कनार्गनान्याय अक्के जबरवान्यात्रे जरपांच शतिबंध करेता। क्रथकबाद और विकासकरम जामान পারিপ্রায়িকে শিক্ষক। করিয়াই লগু মিকের কর্মবা শেষ চইল विकाश प्राप्त करवन गाउँ। किमि वारकारकर विकास प्राप्त अवर क्रेडियांच चाडेचा श्रामिक्रीयक्रिय व्यवस्थात क्रम स्म हार्कात টাকা সংগ্ৰহ করেন। ভংকালে বেল-প্রথারে যাভায়াভের ব্যাপক ব্যবস্থা না হওয়ার দুরদূরাভারে প্রদ ভাতাত कडेमारा व्याभाद हिम । अक्वाद खिमि चर्द-मश्कारत कर আগরতলার জিপ্রার মহারাভার নিকট পিয়ালিলেন। সিট क्लाबर कर बहारांका किम हाकार है।का बाम करदम। ভবন ত্ৰিপুৱাৰ ৰাভাষাভেৱ ভক্ত বেলপৰ ও প্ৰীয়াৱ ভিল না। नमीशाद चार्यवचना हरेए कनिकालाइ (मोकारवार्त अला-বর্তনকালে প্রচও বড়ের মুবে পভিষা তাঁহার মৌকা ভবিষা ৰার। নৌকাড়বি আসর বুবিতে পারিয়া ভিনি মহারাজার প্রদত किम दाकात है।कात त्रोभा बूखा ७ त्माहे बाक्र दहेरा वादित क्रिया कामरत वांविलम : कोकाछवित जान जान केबान-चत्रमर्ग (मचमा मनी गांचतारेश अक्तरत चनत जीरत देवितम बर तारे चाम करेटच बालि शादा कृद्यक त्कांण वाहिया গোৰালকে বাইবা টেমে কলিকাখাৰ ফিবিলেন।

১৯০৮ মাই ল পর্যান্ত ক্ষক্ষার সিট কলেকের অব্যাপক ও পুণারিটেওেটের পদে নিযুক্ত থাকিব। তাঁহার এই প্রির নিকা-প্রতিউঠানটির সেবা করিবাছেন। তিনি ১৯০৫ মাইলেকর আগই নাস হইতে খদেনীপ্রহণ ও বিলাভী বর্জন আন্দোলনের পুরোভারে থাকিব। কাজ করেন। গবর্গনেন্ট সিট কলেকের কর্তৃণককে জানাইলেন বে, কৃষক্ষার মিল্ল ও ললিতবাহন গাসকে শিক্ষকের পদে নিযুক্ত রাখিলে সিট কলেকের নাম কলিকাতা বিশ্ববিভালরের তালিকা হইতে কাটিরা দেওরা হইবে। তৎকালীন বিদেশী শাসকগণের বারণা হিল বে, চাক্রি হারাইবার ভবে উহোরা বলভলের প্রতিবাদের আন্দোলন হইতে সরিষা পভিবেন। কিছ ইহার কল হইল বিপরীত। কৃষক্ষার এবং উহোর প্রহেশ্যা সহক্ষী ললিতবাহন চাক্রি হাজিলেন, কিছ দেশলেবার এত ভ্যাগ ক্রিলেন না।

শিবনাথ শাল্লী, নগেলনাথ চটোপাণ্যার, ছর্গানোত্য দাস, আনন্দলোত্য বন্ধু প্রমুখ বিশিষ্ট আন্দরণের চেটার ১৮৭৮ বিটালের যে বালে 'সাধারণ আন্দরান্ধ' প্রতিষ্ঠিত হয়। সেই চেঠাকে সকল করিবার খন্ত মূবক কৃষ্ণক্রার একজন উৎসাহী কর্মারণে বিবাহার অক্লান্ত পরিশ্রন করিবাছিলেন।

১৮৮১ বিটালে ভারতের জাতীরভারত্বের আদি উলাভা ধবি রাজ্যারাধন বস্তুর চতুর্ব কভা লীলাবভীর সহিত কৃষ্কুরার পরিণরত্বরে আঘদ হন। বিবাহ উপলক্ষে সামাভ গোল-যোগের ত্বপ্রভাত হব! রাজ্যারাধন আদি রাজ্যমাজের অন্তর্ভুক্ত বলিয়া সেই সমাজের বিধানমতে বিবাহ-অন্তর্ভান সমাজের অন্তর্ভুক্ত বলিয়া ভাহাতে সম্বত হইলেম না। পরে রাজ্যারাধন ক্রক্রমারের প্রভাব মানিয়া লইলেম।

নীলাবতী হিলেদ কৃষ্ণকুমারের বোগ্যা জীবন-সলিনী।
পতিত্রতা সহর্যাধী বলিতে বাহা বুবার, তিনি হিলেদ তাহাই।
সাবারণ প্রাক্ষণভাষ মন্দিরে এই বিবাহের অমুর্ভান হয়। ইহাই
মন্দিরে প্রথম বিবাহ বলিরা বহু নরমারীর সমাগম হইমাছিল।
এই অমুর্ভানে আচার্যা হিলেদ নিবমার নারী। রবীক্রমার্থ
ঠাকুর 'ছইট ভবরের নদী', 'রুগভের পুরোহিত ভূমি',
'ওত দিনে এসেছ হোঁহে' ইত্যাদি সদীত রচনা ভরিরা
দিয়াহিলেন। বিবাহ-সভার গানগুলি গাহিরাহিলেন—ডাঃ
স্ক্রমীরোহন দাস, নগেজনার চটোপাব্যার, কেলারমার্থ
মিন্ত, অহুগারক চুনিলাল, নরেজনার দণ্ড পেরে সামী
বিবেকানক) প্রভৃতি ব্যাহ্মসমান্দের বিশিষ্ট সদস্য ও সুক্রও
গারক্রপণ।

কৃষ্ণকুষারের দাম্পত্য জীবন সুধ-শান্তিতে কাটবাছে। সাক্ষী দীলাবতী যাবতীর সংকার্যো সামীর সহবোগিতা করিয়া-ছিলেন। দেশসেবার স্বামীর লাহ্না নির্যাতন ভোগের অংশ-ভাগিনী হইতে ভিনি কোন দিনই পশ্চাংপদ হন নাই। ভিনি একজন সুলেখিকাও ছিলেন। 'বলনারী'—এই হল্পায়ে বিভিন্ন বাংলা সাপ্তাহিক ও নাগিক পত্রিকার লিখিভেন। ১৯২৩ বীঠাকে কেকলারী মানে তাঁহার মৃত্যু হয়।

বৰৰ্ম, বদেশ ও বজাভিত্ৰ সেবাৰ কৃষ্কুৰাত্তের শ্রেঠভদ কৃতিত্ব 'সঞ্জীবনী' পত্রিকার প্রতিষ্ঠা ও সম্পাদনাঃ উচ্চাত্ত সম্পাদনার বাংলা ভাষার এই সাপ্তাহিক্থানি এক্কালে বিশেষ প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছিল।

১৮৮৩ ইটাকের এপ্রিল নালে (তরা বৈশাখ) কৃষ্ণকুরার বারকানাথ পলোণাব্যার, ত্রেষ্চক্র নৈত্র, পরেশনাথ সেম প্রকৃতির সহিত মিলিভ হইরা 'সঞ্জীবনী' পরিকা প্রকাশ করেন। তথন বছলাই লও বিশবের শাসমকাল—ইলবার্ট বিলের আন্দোলন চলিতেছিল। তারতীয় সংবাদপরের ববো সাহা, মৈত্রী ও বাধীনভার পতাকা লইরা 'সঞ্জীবনী' পরিকাই প্রথম প্রকাশিত হয়। 'সঞ্জীবনী' অর্থোপর্কনের উদ্বেশ্ধ প্রতিষ্ঠিত হয় নাই। সঞ্জীবনী হইতে বে প্রচুয় আর হইত, ভাছা তিনি বর্ম, বেশ ও জাতির সেবারই ব্যয় ক্রিয়া

সিরাছেন। সাংবাহিকভার ক্ষেত্রে সঞ্জীবনীর প্রশংসনীত ভার্যায়নীর বব্যে ভ্রেভেটর উল্লেখ ক্সতিভেটি:

- (১) ভারতত্ব ইংরেজবিগের পরিচালিত ইলবার্ট বিজ-বিরোধী আন্দোলনের প্রতিরোধ, করিতে এবং দেশবালীর বব্যে জাতীর মুর্ব্যাদাবোধ জাগ্রত করিতে সঞ্জীবনী-সম্পাদক মির্ত্তিকভার সহিত লেখনী চালনা করিরাহিলেন। সঞ্জীবনীর কলাধে বহু বাঙালীর হবে ভাতীর মুর্ব্যাদাবোধ ভাগিরাহিল।
- (২) বিদেশী সম্বান্ধ বৰ্ষ বাংলাদেশের প্রামাঞ্চল বোলাভাই ছাপন করিয়া অভ্যত শ্রেণীর লোকেদের বব্যে বছপানের
  অভ্যানের প্রপ্রান্ধ বিক্তেছিলেন, তবন সঞ্জীবনী ইহার বিক্তের
  ভীর প্রতিবাদ করে। প্রয়েজনাথ বন্দ্যোপান্যার এবং আনজনোহ্য বস্তু ভারত-সভার পক হইতে প্রবল আন্দোলন আরম্ভ
  করেন। কলে প্রপ্রেন্ট বোলাভাই প্রধা বন্ধ করিয়া দিতে
  বাব্য হন।
- (৩) কংপ্ৰেলের প্ৰতিষ্ঠা অবৰি সঞ্জীবনী ইহার সমর্থক ছিল। বেশের অনেক সংবাদপত্র নুজন ছকুগ ত্বক হইল বলিরা কংপ্রেসকে উপহাস করিতে থাকে। কোন কোন সংবাদপত্র কংপ্রেসকে 'কলরস' এবং 'X'mas pantomime" বলিরা বিজ্ঞপ করিতে বিবাবোৰ করে নাই। সঞ্জীবনীতে কংপ্রেসের অবিবেশনের বিবরণ চিভাকর্ষক শিরোনামার প্রকাশিত হইভ এবং কংপ্রেসকে 'জাভীর বজ্ঞ'ও কংপ্রেসের নারক্সপত্রক 'হোভা' বলিরা উরেব করা হইত।
- (8) वारमास्याय वह शात, विस्मय कविता कमिकाका মতানগরীতে অসংব্য আফিং ও চভুর আড্ডা বসাবো ত্ৰহাছিল। কলিকাভার সম্ভাভ পরিবারের ছেলেরা পর্যাভ এই সকল আজ্ঞার বাইরা আকিং ও চণ্ডু সেবন করিত। मधीवबीत श्रवण चार्त्मामस्बद करम भवन्यके अहे विश्वत चम्च করার কর এক আফিং করিশন গঠন করেন। সেই করিশনের ভৰতে সাহাৰ্য কৰিবা সঞ্চীৰ্মী দেশ হইতে আকিং ও চণ্ডৱ चाका छनिया निष्क शावियादिन । चानाद्य मधीवमीत यक শক্তিশালী নিৰ্ভীক সংবাদপত্ৰ বা বাকার সেবানকার বহু चिवानी चाकिर-(बाब ('कामिबा') हदेवा निवादिन। चन्छ-কালে পুলিলের সভর্কভার বকুন অনেক সববে ক্রিশনের महश्चनन चाकिश्रवात ७ ह्यूरवारतत चाच्छा थनि वादित हरेए विवाह शाहित्कम मा। जञ्जीवभी-मन्त्राहक चत्रर कमिनात्व সম্ভাগৰকে সইয়া সিৱা পুৰাৱিত আচ্চাগুলি দেবাইয়া দিকে। ভাতার কলে কঠোর আইন পাস হর এবং বেশ হুইতে এই সমুদ্ধ সর্ক্ষালা আড্ডা উটিয়া যায়।
- (e) আসাবে চা-বাগানে কুলীদের উপর বে অবাস্থবিক অভ্যাচার হইড, ভংগবদে বেশবালী কিছুই আমিত বা। সঞ্চীবলী পঞ্জিতাই লক্ষপ্রবন্ধ সেই অভ্যাচারের কাহিনী লগ্রাহের পর সন্ধান্ধ প্রকাশ ক্ষান্তে থাকে। সন্ধানকের

সভীৰ' বছ ধারকানাৰ প্রোপাব্যায় কড বিপরের ব্রা বিভা जानात्वर हा-वानात्व पृष्टिश पृष्टिश के नकन ज्ञाहात्वर विवस्त अरलंह कविरायम अवर अक्रीयमीटक श्रीयां पर शाक्षीरेश शिक्त । क्रक्रकारतत व्यविषयी जनमी चर्त्रमुक्त বেশবাসীর সক্রবে ইনবাইভ করিত। তিনি প্রাণন্দর্শী ভাষার माश्रिक सम्बाद मितीक स्थानामीत केवारतत एक स्थानामीरक जाति करेएक जास्ताम कविरयम। 'का मा क्लीव क्क'. 'আসাৰে জিঞীৰ বংশ' শীৰ্ষ প্ৰবিভাৰতী গঞ্জীবনীতে বাৱা-ৰাভিত ভাবে প্ৰভাষিত হয়। জিঞী "Uncle Tom's Cabin" बायक क्षतिकाल अट्ड वर्तिक लाजरबद अवि অবাস্থবিক অভ্যাচারকারী খেতাল কর্মচারী। আসাবের কৃষী biele (Indentured labour) श्रीव कान-वादनादबढ অভুরণ হিল। সঞ্জীবনীর একার চেঠার ভাতা দুরীভুভ हरेशार विज्ञाल ब्रांकि हरेट मा। म्बीनमी-मन्नामक তাহার সহক্রিগণকে লইয়া আভকাটির কেন্দ্রে ঘাইয়া আসাবে প্ৰদোষত কুলী দ্বনাৱীকে বুৱাইয়া কিবাইয়া আনিতেন अवर मधीवमी शक्तिकात बाहा कर वर्षवाट बटलट शार्टाहेबा क्रिट्डम ।

মিল বহাশবের সাংবাদিক জীবনের স্থান্তেও অবদান হইল লর্ড কার্জনের বলবিভাবের প্রভিবাদে সঞ্জীবনী পঞ্জিলার নারকতে বিলাতী ক্রব্য বর্জন ও বদেশী প্রহণের প্রভাব এবং প্রতিভিত কার্যক্রম দেশবাসীর সন্মূবে উথাপন। এই ঐতিহানিক সত্য বর্জনান বুগের অনেকেই জানেম না বে, বরকট আন্দোলনের উংপত্তি হইরাহিল সঞ্জীবনীতে প্রকাশিত একট লম্পাদকীর প্রবন্ধ হইতে। ১৯০৫ ইটান্তের ১৩ই ভূলাই (১৩১২ বলাক্ষের ২৯শে আবাচ) ভারিবের সঞ্জীবনীতে "কর্ত্তব্য নির্দারণ" শিরোমানার প্রবন্ধট প্রকাশিত হয়। ভারতে প্রভাবিত বল-ব্যবজ্ঞেরে বিক্রবে তীত্র প্রতিবাদ জানাইরা নিয়লিবিত কার্যক্রম প্রকৃত্ত ইরাহিল:

"বলের অলচ্ছেক হইলে বাঙালীর চিরালোঁচ হইবে।…

আতীর অপৌচের সময় সমস্ত বাঙালী বিদেশী দ্রব্য স্পর্শ করা

মহাপাতক বনে করিবে। করকচ বাইবে, তরু বিদেশী লবণ

বাইবে না। ৩৬ বাইবে, তরু বিদেশী চিনি বাইবে না।

আতীর অপৌচের সময় বাঙালী আন বিউনিলিপ্যাল ক্ষিণনার,

ক্লো বোর্ড বা লোভ্যাল বোর্ডের সভ্য, অমারায়ী ব্যাজিট্রেট

বাক্তি পারিবে না।

"কাতীঃ অশোচের সময় বড়লাট, হোটলাট, কমিশনার ও ম্যাকিট্রেটের অন্থরোধে কোন কাজের কচ আর অর্থনান করা চইবে না।

"ৰভ বিন জাতীর শোকের অবদান না হর, ৩৩ বিন রাজ-পুরুষকের আবির্ভাবে ও ভিরোভাবে আনাবের কেই বোগ বিভে পারিবে না। "লও কাৰ্জন বাঙালীর সর্জনাশ করিতে উচ্চ হইয়াহেন। যদি তিনি উচ্চ বজা সক্ষরণ না করেন, বাঙালী আর রাজ-পুরুষধ্যের সংস্রবে বাইতে পারিবেন না।"

সঞ্জীবনীর উপরোক্ত কার্যাঞ্জন দেশের বিভিন্ন স্থান হইতে সমর্থন পার। ইহার কলে প্রার চার সপ্তাহ পরে কলিকাতা টাউন হলে অনুষ্ঠিত এই আগঠের বিরাট প্রতিবাদ-সভার বিলাভী বর্জন বা বরক্ট প্রভাব গৃগীত হয়। ইহার পর হইতে সঞ্জীবনী প্রিকায় বিলাভী পণ্ডোর কোন বিজ্ঞাপন প্রকাশিত হইত না। ইহাতে সঞ্জীবনীর প্রচুর আর্থিক কতি হইমাছিল। অলকাল মধ্যে বলতদের প্রতিবাদে দেশব্যাপী বে আন্দোলনের স্থাই হয়, মিল্ল মহাশার হিলেন উহার পুরোভাগে। তংকালে স্বেক্রমণ বন্দ্যোপায়ারের এক্সপ লোকপ্রিক্রা ছিল বে, ভিনি বাংলার মুকুট্থীন রাজা ('uncrowned king of Bengal') বলিরা অভিহিত হইতেন। মিল্ল মহাশার হিলেন উহার দক্ষিণ হত্তর্ক্তান। বাংলাদেশের বে সমূবর দেশভক্ত নেতার প্রকাভিক নিঠা, অক্লান্ত পরিপ্রায় এবং মিঃসার্থ ও নিউকি কর্মপ্রচার ফলে বদেশী বা বরকট আন্দোলন সকল হইয়া উপ্রিয়াহিল, তিনি তাহাদের অভ্যন।

ধিত্র মহাশার একাদিক্রমে চুরার বংগর কাল নির্দিষ্ট নীতি ও আদর্শের অভ্নগরণ করিবা ফতিছের সহিত সঞ্জীবনীর রভ ত্রাচারিত ও সন্তাভ সংবাদপত্রের সম্পাদনা ও পরিচালনা করিবা সিবাছেন। দেশের ছুর্ভাগ্য যে, তাঁহার মৃত্যুর করেক বংগর পরেই অর্থাভাবে সঞ্জীবনীর প্রকাশ বন্ধ হুইরা যার।

মাতৃতাযার সংবাদপত্তের সম্পাদমা ব্যক্তীত বিজ্ঞ মহাশর 'বছম্মদ চরিত', 'বুছবেব চরিত' এবং 'আম্মচরিত' নামক তিনখানি উংকৃষ্ট এছ রচনা করিবাছে। বানক চরিত' নামে তিনি আর একখানি এছ রচনা করিবাছিলেন। এছখানির রচনা সমাও হইবার প্রেই পুলিস তাঁহার বাড়ী ধানাতলাসী কালে পাতৃলিপি লইবা যার। সে পাতৃলিপি অনেক চেটা করিবাও করত পাওবা বার নাই।

'কৃষ্কুৰার বিজের আত্মচরিত' এতে বাংলার সাবাজিক প্রগতি ও আতীর আন্দোলনের ইতিহালের অনেক তথ্য-পূর্ণ উপাদাম নিহিত রহিবাছে। তাঁহার আব্যাত্মিক জীবনের বিশ্বরকর কাহিনীও ইহাতে লিপিবত হইবাছে। তাহা পাঠে সংশ্ববাদী বা নাভিকের মনেও ভগবামের অভিত্নে বিখাল জনিতে পারে। সদেশী মুগের ভ্যানী কন্মী আদর্শ নিকারতী পরলোকগত অব্যাপক রক্ত্মশ্বর বাব মিল মহাশ্বের এক র্ছ্যা-বার্ষিকী সভার ভাষ্য দামভালে বলিরাহিলেন বে, বিজ্ঞ বহা-শ্বের আত্মচরিত প্রস্থানিকে ভিনি বাইবেল বা নীভার ন্যার প্রিল্ল এর বলিরা মনে ক্রেন। 'প্রবানী'-স্পাদক রামানক

চটোপাণ্যার এছণানির ভ্ষিকা লিখিয়া দিয়াছেন। ভ্ষিকার আরভেই আছে:

"গলের বহি বেরণ আরহের সহিত পঠিত হইরা বাড়ে, আনি সেইরণ আরহের সহিত ইহা আভোগাত পরিবাহি। গ্রহ্কার মহাশরের বাভাবিক সরসভা এবং পুরুক্থানির সহক ভাষা আমাকে ইহা অভি অর সময়ে পড়িয়া শেষ করিছে সমর্থ করিয়াতে।

ভিক্তকুৰাৰ বিজ ৰৌবনে ও পৰিণত বৰসে বেৰন ৰাজ্যট ছিলেন, তাহাৰ পূৰ্বাভাগ তাহাৰ বাল্যজীবনেই পাঙৰা বাৰ।

"এই পুন্তকে ব্ৰিভ অনেক বটনা উপভাগৰণিত অনেক বটনার মত আশ্বর্য।"

চটোপাৰ্যাৰ ৰচাশৰ ভূমিকাৰ আৰও লিবিয়াৰেন :

"সেকালে নিত্র মহাপারের মত শিক্ষেরা ছাত্রদের কল্যাপার বাহা করিছেন, ভাহা সকল শিক্ষেরই আতব্য ও অলুসরবীর।

"ষিত্র মহাশর ও তাঁহার কোন কোন বন্ধু বৌৰন্দালেই ধর্ম্মনাধন। ও ধর্মপ্রচার, সমান্ধ সংস্কার ও সমান্ধ সঠন এবং রাষ্ট্রনীতি ক্ষেত্রে ক্মিউভার দৃষ্টান্ত দেবাইয়াভিলেন। তাঁহারা বাকুসর্বাহ ও আক্ষাল্যনার হিলেন না।

"ৰদেশী ত্ৰব্য প্ৰচলনের কচ তাঁহারা বাহা করিয়াছিলেন, ভাহা অনভিক্রান্থ হইবা আছে।"

বদেশী আন্দোলনের মধ্য পর্কে বধন বিদেশী সরকারের দরমনীতি প্রবল বেগে চলিতেছিল, তথন পূর্কবলে সুলারী লাসনকালে বরিশালে বলীর প্রাদেশিক রাষ্ট্রীর সন্মেলনের (Bengal Provincial Conference) অবিবেশন বল-পূর্কক তাভিয়া দেওরা হব। প্রতিনিধি ও বেচ্ছাসেবকগণের লাভিপূর্ব শোভাষালা ভাভিয়া দিবার কত পূলিস ফলবছ হইরা নিবর শোভাষালীকের উপর লাভির হারা আক্রমণ চালাইরা অনেককে আহত করে। আমারের বাবীনভা-সংগ্রাহের ইতিহাসে ইহা একট প্রসিদ্ধ ঘটনা। ইহা সংঘটত হইরাছিল ১৯০৬ প্রীপ্রাক্তর প্রবিদ্ধ বাক্তি করিব মানে—১০১০ বলাকের বৈশাবে। বিল মহাশর পূলিসের নির্ভুর অভ্যাচার নিযারণার্থ এবং আক্রান্থ প্রতিনিধি ও ক্লোসেবকগণকে রক্ষা করিবার কত বীরের ভার সম্প্র পুলিসের সন্থানীন হইরাছিলেন।

জেলা ম্যাজিট্রেটের আদেশে কন্কারেল বর্থন ভাঙিরা বেওরা হইল, তথন নেত্বর্গের নিভাত অহুগারে সকলেই সভা-হল ত্যাগ করিবা গেলেন। কিছ বিজ বহালর আহাতে সক্ষত হইলেন না। তিনি বিহেমী সরকারের ঐ অন্যার আদেশ অবান্য করিবার কল দুচুসকর লইরা বসিরা রহিলেন। বহুবাছন ও সহক্ষীরা ভাঁহাকে সভারওপ হইতে লইরা বাইবার জ্ঞা বর্ণেট্র চেটা করিলেন। গরিশেবে বিজ বহালর কেন বে সভাত্স ভ্যাগ করিরা গেলেন, ভংসপুর্কে 'আত্মচরিত' হইছে ভাহার উক্তি উদ্ধত করিভেছি:

"সকলেই সভা পরিভ্যাগ করিলেন, এ অপনান সহা অপেকা যুক্তা ভাল ইহা মনে করিয়া আমি বসিরা রহিলান। সুরেজবাব্ আসিরা আমাকে সভা ভ্যাগ করিভে বলিলেন, আমি নীরবে বসিরা রহিলান।

"আমি বলিলাম, 'আৰু এই ছামে প্ৰাণ দিব, কিন্তু এই ছাম পরিভ্যাণ করিব না, আপনারা সকলে প্রস্থাম করুম।' অমাধবাবু আমার হাত বরিরা টামিতে লাগিলেন। তথম আমার মনে হইল আমি বেন একমাত্র সাহসী পুরুষ। এই ভাব মনে উদ্ধ হওৱা মাত্র আপনাকে অবমত করিবা অমাধবারুর সহিত বাহিরে চলিয়া গেলাম।"

মিত্র মহাশরের উরিবিত আচরণ ও উক্তির মধ্য দিকা উচার সন্তপ্তণাশ্রিত খতাবের একটা বিশেষ দিক প্রকাশ পাইরাছে। তিমি ছিলেম একজন সন্তপ্তণধর্মী ক্ষত্রির বীর—বিমি কাত্রবর্দ্ধ পালম করিতে বাইরাও রজোগুণের প্রভাব চইতে মদকে মিশ্র ক্ষি রাবিতে সমর্থ চইরাছেম।

श्रिक ब्रह्मानास्त्र कीतामत जक्षम श्रीम देखनाताना पहेना ১৯০৮ क्रेशेएकर ब्रिजनर बाज ১৮১৮ क्रेशेएकर ज्या বেশ্বলেশন অনুসাত্তে তাঁচাত্র নির্বাসন। এই সময় আলি-शरात चालामा वानिकचना रावात वावना चत्रिम राव. বারীজ বোষ প্রভতির বিচার চলিতেতিল। অরবিশ-বারীজ রাজনারারণ বসুর দৌহিত্র: কৃষ্ণকুষার তাঁহাদের যেগো-মতালয়। অত্তৰিক মির্জোষ বলিয়া তাঁতার বিখাস ছিল। प्रकर्मार कांकार नक्षमध्यान वेनव्य ग्राम्या कतिया कांकारक बक्क कहात रहे। कहा कर्षन्। ध्यानक: विक महानदित চেষ্টাৰ দেশবাসীৰ নিকট চইতে অৱবিন্দের পক্ষে যাবলা পরি চালমার ক্ষম সভেবে। ভাকার টাকা সংগ্রীত তর। ক্ষার-খ্যাত ব্যাসিহার ব্যোহতেশ চক্তবর্তী হামলা চালাইতে স্বীকৃত হইঃাও শেষ পর্যন্ত মামলার শুনানিকালে উপস্থিত তম নাই। তিনি টাকাও কেরত পাইলেন না। তংগর মিঃ সি, আরু লাখ ( পরে দেশবল্প চিত্তরপ্রম ) মামলা চালাইতে রাজী হইলেন : বেলিন সি. আত্ৰ, দাপকে বাৰলা পরিচালনার জন নিযুক্ত করা হইল, ভাতার পরদিশই বিজ বতাশর পুলিস কওঁক গ্রভ करेता मिर्द्धानिक करेताम । तारे मध्य बारमात्मत्व बात्रक আৰ্চ কৰ বেভাকে নিৰ্বাসিত কৰা চইল।

মিত্র মহাশহকে আগ্রা কেলে বন্দী করিয়া রাধা হইল। কারাগারে মির্জন ককে বৃদ্ধ বয়সে বন্দী থাকিয়া ভাঁচাকে নিঃসদ শীৰৰ ৰাপন করিতে হয়। চৌক ৰাসকাল এ তাবে বন্দী থাকার ওাহার স্বাস্থ্য তাঙিলা পড়ে, তাহার দেহের শক্তি নই হইলেও নদের বল অসুধ ছিল। বন্দীজীবনে তিনি ব্রস্থানে নিমর থাকিতেন। এই সমরে তিনি পরবেখবের কক্ষণার বে প্রত্যক্ষ পহিচর পাইরাছিলেন এবং অব্যাস্থ-সাধনার তাহার বে সভ্যোপলকি হইরাছিল, সেই পুণ্য কাহিনী আস্কচরিতে বনিত ভ্রমানে।

ষিত্র বহাশর নির্বাসনে থাজাজালে ১৯০৯ বিটাশের নবেশ্বর মাসে বিলাভের শ্রমিক দলের নেতা মি: ব্যাম্সে ম্যাক্ডোনাল্ড (পরে ইংলভের প্রধানমন্ত্রী) সন্ত্রীক ভারভবর্ষে আলেন। উাহারা উভরে কলিকাভার ৬নং কলেজ কোরারে (বর্তমানে বহিন্ন চাটার্জী ব্লীট) মিল্ল বহাশরের গৃহে আসিরা উাহার পত্নী ও পুত্রকভাগণের সহিত সাক্ষাং করেন। গৃহের দেওবালে বুলানো, ক্লেমে বাঁথানো একট ইংরেছী 'মটো'র (ব্লম্জ্র) প্রতি মি: ম্যাক্ডোনাল্ডের দৃষ্টি পড়ে। মটোভে লেখা ছিল—"I shall go in the strength of Lord God" নির্বাসিত জনমান্তকের গৃহের প্রাচীরসাল্লে ঐ মটো কেখিয়া শ্রমিক-নেভার মনে যে ভাবের উদ্যাহ ইয়াছিল, ভাহা তিনি ভংপ্রেমিত সিল্লাকের কি মিলেনালু of India নামক প্রছে লিশিব্রহ করিছেন। ঐ মটোকে মিল্ল মহাল্যের জীব্ন-বাণী বলা বাইতে পারে।

১৯১० खेडो(यद ১०१ क्वयशदी लिमि बुक्ति भारतमा किन नुर्यवाद्य किमि चात कितिश भारे मिम मा। बमी-জীবন চইতে হক্ত তইয়া ব্ৰবহুলেও ভয় স্বাস্থ্য লইয়া মিল হচাশহ দেশ, ভাতি ও সহাজের সেবাহ পর্কের ন্যায় আত্ম-बिरदान करिएकम । कौराम काम किमरे किमि कर्च हरेएक चरत्रत करें एक हारक्य याते । भरतार्थ चर्चाक्रमेय किया और वर्ष-भवायन कर्पवीरवत लानवर्ष । श्रीवरमय माराम विमायन किमि कालिक्द्रविक्रिएएर विश्वेला बादीत हैवात ७ बालावत क्या "ৰাঠীৱকা স্মিতি" প্ৰতিষ্ঠা কৱিহাছিলেন। ভীবনের শেষ দিন পৰ্যাত্ম ভিনি এই প্ৰতিষ্ঠানের ত্বনা কাত করিয়া পিরাছেন। বাংলার নারীকল্যাণ কশ্বের ইতিহাসে ''নারীরকা সমিভির" कर्पाश्राहित कवा भारतीय हरेश वाकित्व। ৮৪ वरनव বহুদে কলিকাভার বাসভবনে ভদবল্লের জিলা বছ চইয়া क्रक्रक्यारवत कर्मबन्न कीरायत करमाम छन्। कीरमधीन নির্মাণের কিংংকাল পুর্মেও তাহার কঠ হইতে মি:হত हरेशारक-"रह क्षेत्रक, छ जन्म छ जन्म क्ष्माहि स्करणम. একমেবাহিতীয়ম ।"

# বঙ্কিমচন্দ্র : কবিমান্স ও সৃষ্টিলোক

### গ্রীখামস্থলর মাইতি

ल्या खरक: कविशामन

বাংলার তথা ভারতের মৃক্তিৰতে আত্মান্তি দিয়া বেসব মহাপুক্ষ অনরত্ব লাভ করিয়াহেন বনিমচন্দ্র তাঁহাদের অভ-ভন্ন। বেশপ্রেষের অন্প্রেরণার তাঁহার অমন্তলারারণ প্রভিত্তা এবজ্ঞকার বিপুল ও বিচিত্র স্কৃষ্টির কারণ হইতে পারিষাহিল। দেশ ও জাতির কল্যাণ-চিভার এইরপ উৎসর্গীকৃতপ্রাণ মনীয়ী অভিশন্ধ বিরল। তাঁহার বাহা কিছু সাবনা ও কাননার বস্তু হিল তাহা তাঁহার দেশ ও জাতিকে কেন্দ্রক বিরা। তাঁহার এই হুর্গত কেশপ্রেম সম্পর্কে প্রীর্তু বোহিতলাল মক্ষদার যাহা বলিয়াহেম ভাহা এবামে উল্লেখ-বোগ্য, "জাম-বিজ্ঞানের চর্চায়, ধর্মভন্মের বিচারে, সাহিত্যাস্ক্রির অপুক্ষ উন্যাদনার—যৌবনের ব্যপ্ত, প্রৌচ্চর কর্ম্ম-জিল্লার, বার্মক্যের মৃতি-কল্পনার—এই দেশপ্রেম তাঁহাকে অভিতৃত করিয়াহিল; দেশের নামে তিনি আগ্মহারা হইতেম।"

দেশ বলিতে তিনি তোঁগোলিক নীমা দারা বেষ্টত ভ্ৰতটুকুকেই বুবেন নাই। দেশ তাঁহার নিকট ছিল প্রাণৰতী
দেবী। তিনি তাঁহার যে রূপ ব্যান করিরাছিলেন তাহা
এক দিকে বেনন স্থলা স্কলা শস্তভামলা, অভ দিকে তাহাই
আবার তাঁহার নিকট দশ প্রভ্রবণবারিণী চূর্ণা, কমলদলবিহারিণী কমলা ও বিভালারিমী বাণী রূপে প্রতিভাত হইরাছিল। স্বন্ধী অবভ্রি চিন্ধনী রূপে তাঁহার নিকট বরা দিবাছিল। এই যে দেবীস্বর্লিণী দেশমাত্কা ইঁহারই আবাবনার
বহিম তাঁহার নন প্রাণ আল্লা, পাবিব দেহ ত বটেই—স্বকিছু
আছিত দিরাছেম। দেশ যে তাঁহার নিকট কি বন্ধ ছিল
ভাহার এই পংক্তিগুলিই ভাহার চরম নিদর্শন।

"আর বলভূমি। ভূমিই বা কেন মনিমানিক্য হটলে না, ভোষার কেন আমি হার করিয়া কঠে পরিভে পারিলাম না ? ভোষার স্বর্ণের আসনে বসাইরা, ছলরে দোলাইরা নেশে দেশে দেশাইভাম। ইউরোপে, আমেরিকার, মিশরে, চীনে, দেশিভ ভূমি আমার কি উজ্জন মনি।"

বিষয়চন্তের জীবনের যে দিকটি বজীর বৈশিটোর জড সহজেই আরাদের দৃষ্টি আকর্ষণে সমর্থ হয় ভাষা কইছেছে এক এক জভি-চূর্লভ কবি-প্রভিভার সহিত অনভত্মলভ অভিভ ভাষের সমাবেশ—বাহা লাভ করিবার জড ভগভর্মা তরিভে হয়, সেই ভগভর্মাই প্রভিভা; বাহাকে বনীবী কার্লাইল বলিয়াকেন, "Genius is the capacity to take infinite pains"। বাংলা সাহিত্যে সহজাত প্রতিভাৱ অভাব নাই।
কিন্তু সহজাত প্রতিভাৱ সহিত ঐ তপদ্ধর্যার বিলম বরিষসাহিত্যে বেরপ দৃষ্টপোচর হর তাহা বিরল। এ
সম্পর্কে নিয়ে বে উদ্ধৃতিটি দেওবা হইল উহা উাহারই বেন
আন্নকবা: "অতি তরুণ অবছা হইতেই আমার বনে এই
প্রশ্ন উদিত হইত, 'এ জীবন লইরা কি করিব ? লইরা কি
করিতে হয় ?' সম্প্র জীবন ইহারই উতর বুঁজিবাছি। উতর
বুঁজিতে বুঁজিতে জীবন প্রার কাটিরা সিরাহে, অনেক প্রকার
লোক-প্রচলিত উত্তর পাইরাছি। তাহার সভ্যাসভ্য নিরুপণ
কর অনেক ভূসিবাছি, অনেক কাই পাইরাছি। ঘণাসাব্য
পভিয়াছি, অনেক লিবিবাছি, অনেক লোকের সলে কবণোকবন করিরাছি এবং কার্যক্তেরে বিলিত হইবাছি। সাহিত্য,
বিজ্ঞান, ইতিহাস, দর্শন, দেশী বিদেশী শাল্ল ববাসাব্য অব্যৱন
করিবাছি। জীবনের সার্বক্তা সম্পাদন ভর্গ প্রাণশাত পরিপ্রব

বহিদ দেখিয়াছিলেন তাঁহার বদ্ভূমির রূপের অভাব নাই। ভিনি দেখিলেন বলভূমির ভাষল বন্দে গভর পরিবর্ত্তনের সলে সদে আজিও ভল্ল জ্যোৎস্থার অয়ত বারার স্থাভ চইয়া পুলকিভ বাৰিনী নামিয়া আলে। কুলকুসুমিত ফ্রম-দলে শোভিতা হুইয়া আজিও তাঁতার ভাষাকল অপরুপ শোভার বলকিয়া উঠে। কিন্তু মাভার অব্দে অলমার কোণার ? মতৈখব্যবারী চইহাও হাভা ৰে তাঁচার দীমার ভার দিনাভিপাভ করিভেছেৰ উাহার সভানগণ যে আত্মপতিচরহারা, ধুন্যবস্থিত, দীনভার পতে নিষয়। ভাতির এই চরবছা দর্শনে বছিষের ভবর বিগলিত ठरेंग। काकित अरे ठीमावका प्रन्ति किमि काकत कर्त्र र्वालान, "बाबाद बहे रक्षणा" श्रूपंद श्रुष्टि बाह्य, निवर्णन करे १ (परामाद्यार मन्त्रा (मन, स्वाद्यार, जीवर्ष, श्रद्धान भर्वास রাজ্য, ভারভের অধীখর নাম, গৌড়ী রীভি এ সকলের শুভি আছে কিন্তু নিদৰ্শন কই ? পুৰ মনে পড়িল কিন্তু চাছিব কোন দিকে ? দে গৌড কই ? দে বে কেবল ববম-লাঞ্চিত ভরাবশেষ। আর্ব্য রাজবানীর চিক্ত কই ? আর্ব্যের ইভিছাল करें ? भीरन-प्रविष्ठ करें ? की छि करें ? की छिख्छ करें ? সমরকেজ কই ? পুৰ সিরাছে, পুৰ-চিক্ত সিরাছে। বরু निवाद, ब्रमानमध निवाद - চাহিব काम विदक 9"

এই বে দেশপ্ৰেষ ইহাকেই কেন্দ্ৰ কৰিব। বিষয়চন্তের সাহিত্য সাবদা। সাহিত্যের বব্য দিবা তিনি কাতির কাসরবের যন্ত্র উচ্চারণ করিবাহিলেন। নৈবাক্তের ব্যাহারটাল পালে কোলাল আকাজ্যার আলোক-বর্ত্তকা আলিরাহেন। সাহিত্যিক জীবনের লক্ষপ্রের্ড কাল্য বাহা সেই সৌক্র্যা-শিপালা ও আহার নির্ভিত্ত কট শুবু বিজন লেখনী বারণ করেন বাই। আটের গজনত প্রালাদে নিজেকে অবক্রম রাবিলা ভিনি করং ও জীবন হুইতে ল্যে বাজিতে চাহেন নাই। বরং করং ও জীবনের করুই ভিনি নিছক আটের কল্পনাবিলাসকে ল্যে সরাইরা রাবিলাহিলেন। রবীজনাব ববাব ই বলিয়াহেন, "লাহিত্যের নব্যে মুই প্রেণীর বোল কো বার—আন্যোলী ও কর্ম্যালী, বজিব লাহিত্যে কর্মবালী ভিলেন।"

কিছ ভাগলে বহিষ কৰি, দেশপ্ৰেষেত্ৰ ছাত্ৰা একাছভাবে चन्न्यानिक हरेलाक कवि हरेश कारा-एडेड चास्तामरक উপেকা করাও হিল বহিষের পক্ষে অসম্ভব। বহিষের জীবনে প্ৰীয় সম্ভা দেখা দিল। এক দিকে কবি-প্ৰতিভাৱ আছ-श्रकारमंद रच:फुर्स चक्रर्रक्यां, चक्र किरक रहम ७ काचित श्रीक কর্তব্যর আহ্বাম। কবি-প্রতিভা চার মির্ব বিশীর মত নৃত্য করিয়া সদীভের পুরধুনী স্ট করিছে, বেশ ও ভাতি দাবি करत कर्द्धात कृष्ट नावन, चारचारनर्शत कक्रिय नवल। अक बिटक विज्ञानीकार्याव बाका-कामम, चक बिटक दिनार्थास्व क्केकाकीर्न भव । चाटिंद जीनाकृषि कह्नवाद कहालाक, दश्न-প্রেরে ক্ষেত্র ক্ষম বাত্তর ভগং। এই ছই বিপরীভবর্মী বৃত্তির मरवाक विद्यास अस्पादक मधीत कार्य बारमाधिक करिम । जाबादन প্রভিতাশালী ব্যক্তির প্রত এই ছব্তের প্রচণ্ড বাত-প্ৰতিখাত সত কৰা কটিন চইত, ভিত অসাধারণ শক্তিমান ৰভিন্ন আপনার আছের পৌক্রবের ছারা এই ছই বুভির সময়ৰ সাধৰ ভবিতে পারিয়াছিলেন। ভিনি যে সাহিত্য क्षे करिताम काठा अहे इक्टांड काकित शक्क (करमवास वस्त्रजीवमीत साव किवारे कविन या अकरे कारन साता পাৰত সাহিত্যের আসম লাভ কবিল। স্থাম, কাল, পাত্র প্ৰভৃতি সৰ্বিভূৱ গতী অভিজ্ঞা করিয়া মহাকালের বিচারে ভাহা नर्यायम ७ नर्यकाला विवास ध्यापिक हरेल। উাহার রচিত সাহিত্য এক দিকে বেষণ উচ্চাদের শির্কলার त्सर्क निवर्णन, चन्न विरक् छातारे चाराव रख्यार काण्डित नव कार्यद्रवंद क्षांन्य बह्ववंद्रवं ।

উপবের আলোচনা হইতে ইহাই প্রভারনান হর বে, বছিনের স্টে হুইট বিভিন্ন উংগ হইতে উংগারিত হইরা গলা-বর্ষার নত প্রবাহিত হইতেহে। এই হুইট উংগের একট কবি-প্রতিতা অপরট দেশপ্রের। বর্তনান প্রবহে আবি প্রথম উংগতে কবি-নানগ ও স্টলোক আব্যা দিয়া উহারই আলোচনার প্রযুক্ত হইরাহি।

বভিষের কবি-নান্তে এই কণং ও নানৰ অনুষ্ঠের বে প্রতি-নিশি বিভিত হুইয়াহিল ভাহাই উাহার সাহিত্যের মূলতত্ব। তিনি বেল প্রহালয়ে হুতাহ্বাল হুইয়া এই পুৰিবী ও তথার

चक्रकिंच बायर-चारशांत विकित जीजा जन्मर्वय चतिरचरवयः। चिमि (विराम प्रमाणात्मर क्रियोचम चरुपार्थ चरुपा कीयामात्कर शांबन्धकम सद करेश बारेटला । अरे मिर्देश विश्वचित करन हरेए शतिबान शाहेबात कर बाग्रासत कि चाकृत चर्क वार्व क्षेत्रात । क्षित्र ७ प्रमा, विसम ७ विद्यहः স্কলতা ও বিক্লতা, সভ্য ও বিখ্যা, হাসি ও অঞ্চর বাত-প্রতি-বাতে এবং বৰ্গ-বিভালে ৰাজ্যের ভীৰমনাইক বেয়ন বলীন ভেয়নি (वन्नाम । नावात्र वाक्ष वृतिकाह का त्व. काठाव त्वम ७ विनम, वितर ७ विष्टम, मान्ना ७ वयला-लाहात वाहा कि त्यत क त्यत: बहे बहामकित हत्रांगारह ककि छह (बहमात ৰভ। তাই ভাহার পাদক্ষেপে মাসুষের সেই সব সাধনার বছ ৰুছৰু ছ চৰ-বিচৰ হইৱা বাইভেছে। জগং ও জীবনকে শাসন করিছা যে চর্কার শক্তি আপনার কাল আপনার মনেই করিছা वांडेटकट कालांड काट्स मान्यवंत मानमांत (काम चार्यममहे नारे। विश्व नव, चक नव, जन्मर्ग जाठकन किन्न चकि विश्वेत এই মহাশক্তি। এক হাতে লে বেমন সৌন্ধ্য স্ট্র করিতেতে. অপর চাতে সে-ই আবার সেই সৌন্দর্যতে ধ্রংস ভরিভাচে। এই শক্তির হাতে বসম্ব আসিতে না আসিতে "ভ্রমতের" গুঞ্জরণ তত্ত চইহা গেল : ক্টতে না ক্টতে "কুন্দ" কুনুৰ অকালে वरिया त्रल : "त्याविषे" क्रिक्ट क्रम त्रमधाक चालाकिक করিয়া বিশ্বভিত্র ভ্রমগাপাতে অনুক্র হুইল। "হীরা" অলফাত্রের শেভারতি না করিয়া পবের গুলার হারাইরা গেল। "মুর্থা-ब्बी"त श्रेकृत चामम प्रतिहत श्रेष्ठ छाट्य एक क्रेबा ट्रांस रेनेविनी बरिन, क्यानक्षना न्यूखवर्क्ड माखित मीए बुंक्सि भारेन। (भारिक्नान, मानल, श्रेकान, इस्टापंद-एक्ट् बचा भारेन मा। (कह महिन, (कह वीतिशंध महिशा प्रतिन - बरे त्व वार्वणा, बरे त्व ध्वःत्र-नीमा ७ चन्त्व रेटाट्क विवय विवाहरक वर्गन कविदादितान, और त्य कर्श-वर्गन वा कीवन-क्किना रेहारे विद्यव कार्यात मृत्रकः।

ট্রাফেডির এই বে আদর্শ ইহা বহিন দেলপীয়ারের নিকট হটতে লাভ করিয়াইলেন। ইংরেজী সাহিত্যের সহিভ বহিনের পরিচর হিল অভিশ্ব নিবিক। তিনি বেন্দর ইংরেজী সাহিত্যের কাব্যরস্বারা আক্ষ্ঠ পান করিবা বীর কাব্য-ত্যার নিয়তি করিয়াইলেন তেন্দই নবভর কাব্য-ত্তিতে আদর্শ হিসাবে ঐ কাব্যরস্বারণাকেই অবলম্বন করিয়াইলেন। বভিনের ট্রাফেডিতে নামক-নারিকার বে পরিণাব কেলপীয়ারের ট্রাফেডির নামক ও নারিকারও লেই পরিণাব। তেল্ডিয়োনা, অভিলিয়া, নেতি ন্যাক্ষেব্র, ভূলিছেট, ওবেলো, ভারলেট প্রভূতির ভাগ্য লইবা ঐ নিয়তির অবশক্তি বে ক্রীড়া করিয়াহে বভিনের নামক ও নারিকারণের ভাগ্য লইবাত লেই একই বেলা অন্ততি হইবাতে। লেই বৃত্যু, লেই ব্যংগ্য, লেই বিনাপ, লেই অপচয়। লেজপীয়ারের ট্রাফেডির

ভত্তকথা বিশ্লেষৰ ক্ষিত্ৰে পিয়া সমালোচক ব্ৰ্যাভলি বে উচ্চি ক্ষিয়াকেন এখানে ভাৱা স্বৰ্গবোগ্য। ভিনি বলিভেছেন—

"The central feeling is the impression of waste. With Shakespeare at any rate the pity and fear which are stirred by tragic story seem to unite with and even to merge in a profound sense of sadness and mystery which is due to this impression of waste. . . . Everywhere from the crushed rocks beneath our fect to the soul of man we see power, intelligence, life, glory, which astound us and seem to call for our worship. And everywhere we see them perishing, devouring one another often with dreadful pain as though they came into being for no other end. All this makes us feel the blindness and helplessness of man. . . . There is no tragedy in its expulsion of evil. The tragedy is that it involves the waste of good."

বছিবের ট্রাক্তেভিজন সহকে এই উক্তি সম্ভাবে প্রবোজ্য।

শেলপীৱীৰ ট্যাভেডির এই আন্তর্গ বহিম জাতার জাতা-সাৰ্যার পরিণত অবভার রক্ষা করিতে পারেন নাই। ইভাতে তাঁচার ভারতীর সংস্থার বাধা দিয়াছে। ভাঁচার কবি-জীব্দের थ्यंव जात्त्र, प्रकावक:हे वाहा हहेबा बादक, रुद्धि-(श्रवना हिन উদায় ও উচ্ছল: কভকটা আৰু। ভাৰন তিনি সবেয়াত্ৰ শেক্ষণীয়ারের কাবারসে অবগাতন করিবা উটবাভেন। ভাঁচার दर्स (व त्रश्यां विविधा चार्क काठा व्यापका के कावादनावर्ग चर्म चित्रम श्रीतम । कार्यहे के कात्रावर्गरकरे छिनि कांश्व मश्कादवर छेशदर काम क्रिकाटक। किन कवि-कीवटमत भविषक चन्यादि वर्षम स्क्रि-त्थवन। विश्विती मा हरेवा चन्नमू नी ত্ইয়াতে ভবন তাঁতার সেই সুপ্ত সংস্থার সহসা ভাগ্রভ ত্ইয়া क्षेत्र । श्रिम त्येखभीशास्त्र कावामार्त्य मामव-कीवामत त्व बााबा देखिशुर्क्स कविदादित्वम छाहारछ नाहि शादेत्वम मा। ছঃৰ ও মৃত্যুকে—ভাতা বত সভাই তউক, লেষ কৰা বলিয়া মানিতে কিছতেই তাহার প্রাণ চাহিল না। মৃত্যুতেই বলি जब लिय हरेबा बाब छाहा हरेल बरे जीवत्मद जाद कि बारक । अक बहामूं बचारे कि छाहा हरेल कीय-क्या क्य **म्य भविश्व । इ: वह कि छाड़। इहेरन मरमारद अक्याब** मका वक्ष १ . अक इ:व महिवाद 'शरत महक्षद कीवरमद वा পরিণতির কোম আখাদই ভাতা হইলে মাই ? ইউরোপীয় আলপে এই ছঃবই পরৰ সভ্যা ভাতার অভিবিক্ত কিছুই নাই। কিছ ভাৰতীয় সংস্কার তাতা মানে না। সেই সংস্কার আবাদিগকে ছ:ৰ নিশাৰ পাৰে এক বহুতৰ ও উচ্চাতৰ भीवत्यत देविक त्वतः वत्य इःवडी शतिविक मद-श्वा। त्व দিৰ হুইতে বভিষেত্ৰ ভাৰতীৰ সংস্থাৱ প্ৰবলতৰ হুইৰা উঠিল त्नरे विम क्रेट्ड किमि (अञ्जातिक क्रांट्डिक जावर्ग क्रेट्ड विচ্छ इर्रालम । निश्चित मिर्कृत लीलाटक चौकाद कतिरलम বটে, কিছ নেই বিশ্বতিকে বীকার করিবা ভাতাকেই কর করিবার পদার সভাবে প্রবৃত্ত হইলেন। এই সম্পর্কে বোহিত্সালের করেকট পংক্তি উচ্চত ভরিতেতি:

"बीरम ७ करर, जांचा ७ शहकान महत्व जांबात्रह अमन अवकी मरकात चारक रव चामता रकाम कः बरकरे क्लाब बरन कति मां, जब ब्रैक चारक, कामबारम चनिवस वा चनिवास मारे. काम इ:वर चवनक वा चनक्छ मतः अवन कि काम किश्वा किछात महित्क (मवित्न इ:व विनेशा कान वचरे मारे। आवश कांकि वर्ष्ट मिटा कीव-वर्ष किय मिट कमान्य সান্তৰা আছে। এই সাত্তৰার প্রয়োজন আবাবের প্রকৃতিতে नकान ७ चकारम चक्रियत सहबन हरेता चाट्य--- चात्रवर्ष कीवत्मत वाक्यरकरे प्रकास विवार अवन करत गारे। तारे বাভবকে ভেদ করিয়া প্রকৃতি ও নির্ভিত্ন অভবালে একটা रहत्व किहत वर्णमलाक मा कविदा त काक हद माहै... ইউবোপীর সংস্থার ইচার বিশরীত, ভাচাতে ভংবটা অভিশয় সভা। উচার শক্তি অপরিসীয়, অগবামও সেই শহতামের जाल शादिका क्रेडिंग मा ।...विश्वकृत्व क्षे वेक्रेडाशीय कावादजाक অধিগত করিখা তাঁচার উপভাগগুলিতেও সেই বস একরপ মাট্টতীর ভলিতে পরিবেষণ করিবাছিলেন। কিছ ভিনিত্র মৰাপৰে ভারতীয় বা তিন্দুসংখ্যারের বলবর্ত্তী চইয়া ইউবোপীয় चावर्ण बका कविएक शास्त्रम नाहे वा हाट्यम माहे।"

ৰে নিৰভি-লীলার কৰা পূৰ্বে উল্লেখ করিবাছি ভাতা ৰাত্ত্বের তুল-ভ্রান্তিকেই আশ্রম করিয়া আপনার উদ্বেশ্ব চরিতার্থ করে, শেরপীরারের ট্রান্ডেডির উচাও একট উপাদান। माइक-नाहिकांत चक्रककार्दिके छाठारकत अर्व्यमांन अवसा विमक्रित रीक छेछ पाकिरत । मानूब व कृत लाक्रि करत काहा রিপুর ভার্চনাভেই করে। কাব, কোব, লোভ, বোহ, বল, मारमर्ग--- वर वशके विश्व बत्या कायरे मर्वाटकका किकाली। अरेक्ड यक्तिश्व केत्वर कतिएक हरेल नक्तात्व कार्यबरे छेतार करा दव। अरे कांव रुष्टित मुला। देवा व्यवस श्रृष्टित कांत्रण (कमनरे रेहारे कांगात स्तर्रात्र (क्फू-हेहा अकाबाद्य महर ७ जनकत । अहे कामश्रद्धित जाकमात्र माक्रम করে ভাতাই ভাতার জীবদের সর্বাণেকা মৰ্শ্বান্তিক क्रांट्य कि कात्रव दहेश बाटक। महमातीत পরস্পরের প্রতি যে অনুরাগ আকর্ষণ ও প্রণয় ভাতাই বহিৰের ট্রাকেডির উপজীবা, প্রকৃতি ও পুরুষের মধ্যে বে চিরক্তম হন্দ ভাতাই ভাতার স্ট নায়ক-নারিকার कौरम क्रांक्षित क्रक-दर्गिका है। निका विकास । अह बस कि ? श्रेक्कि अकृते। यह नकि । एक्कि काताब अक्षाब काक, काहांत परिक वा व्यपतिक कांन भरकांतर बाहे। সে কৰন ৰে কাহার উপর প্রসর হয় ভাহারও ছিয়ভা ছাই। পুরুষ কৰমও ভাষার কাষে আত্মনবর্ণণ করিছা ভাষাত্র हवा-किका करव-किंद शांव मां, जावांव क्रवंबक वा स्ताकालार

্ৰৰ ভবিতে বিধা বিঠৰ ভাবে বিবাতৰ কৰে, ভাৰাতে নাৰী গুডিয়া হরে সভা, ভিত্ত নেই আঞ্চনের হলকা হইতে পুরুষও ज्ञवाकिक भार मा . काकावक मर्काक कडिएक वर । शक्कि व नक्षय चाराका मक्षिमती देवारे विदय द्ववारेशार्यम । माडीह प्रका किमि बाताबात क्रम्बाकात ट्रांकिकवि PIRTH इतिकारकम । मामय-कलरबत थाठा किछ त्यांत्र तृष्टि—त्त्रहे चर्चा, (श्रष्ट, प्रश्ना, त्याय, जतवहरे चमक चाकर के मारी-समय। प्रविक्रणात कीवल क्षेत्रिक्ष माती, नर्वरमहा बहिबीद वर जनव र: 4-यहना मीतर्य अविदा मातीरे शक्तरस्य चात्रा मिश्रहन उदिकार । अवि-वार्गमिक जालमकावात कार विकासमा The woman pays the debt of life not by what she does but by what she suffers." बाबीब करे वेदां विवाद यस व्हेंदा विवय मादीएक रक्षमा श्राम গীপাৰতি কৰিবাছেন। তিনি বলিৱাছেন, "ৱমনী কৰামনী, वानवी. (श्रव्यती. तमने केनरतत कीखित চরবোংকর্ব, দৰভাৱ হায়। পুৰুষ দেবভাৱ স্ঠি বাত্ৰ। ত্ৰী আলোক, ক্রম ছারা।" নারীরণের বর্ণনা করিবার সময় বভিষেত্র अया विकासीक्ष करेवा हैप्रैवारक क्रमलकात वालावाळ जावारक াই। তিনি বেন নারীর পুরুর বস্তু উচ্চারণ করিতেছেন। ত্ৰি বলিৱাছেন, "পোৰিন্দলাল ৱোহিণীকে ভাবিভেছিল। ীব স্মোতির্দ্ধী, সময় প্রভাগালিনী, প্রভাগ গুক্তভারা-রূপিন কলা বোহিণকৈ ভাবিভেছিল।" এরণ পংক্তি বছ ভাছে।

অগৎ ও জীবন সহতে বহিবচন্দ্রের দৃষ্টিতদীর যে আলোচনা

সিরামি ভাহাই বনি সভ্য হব তাহা হইলে এই ব্যংসোপুর

গতিকে নিশ্চিত বৃভার হাত হইতে রক্ষা করিবার এক প্ররাস

সিনি পাইলেন কেন ? সবই বদি নিশ্যা, বারা, বৃভ্যু বা বিনাশই

খন জীব ও জীবনের অনিবার্থ পরিপান অথবা ইহুলোক

প্রশাস পরলোকই ঘণন বহুতর সভ্যু তথন ঐতিক শুভা
ভাতর উপর কোন শুরুত্ব বেওরা চলে কি ? জগং ও জীবনের

বর্তভাবী পরিপতিই ঘণন এক বিরাট বহাস্তভা তথন

গহালেরই অভত্তি বহুত্তিনির ব্যোজার কি সভ্যু বাকিতে

বিরে আপাতদৃষ্টিতে ইহার সামঞ্চত বুলিরা পাওয়া বার

বিটে, কিন্ত বহিব এক হুর্গত অভ্যুক্তির হারা ইহালের

বিশ্বস্থা আবিকার ও সম্বর্ত্তার আর একট বিশিষ্ট কিন।

ই সম্বর্থ-সাধন বভিত্ত প্রভিতার আর একট বিশিষ্ট কিন।

ব্যবহন কেবিয়াহিলেন জগৎ ও জীবনের পরিধার বিহাই হউক না কেন বাহুখের ঐতিক অভিত্ব করেকট হুর্গলে বিব্যবহ অবীন—বেবন সে ইক্ষা করিলেই আত্মহত্যা করিবা কর আত্মনার অবসান বা গকল সমভার সনাবান করিছে বিব্যবহা । নিজের ইক্ষার বিক্রছে, জাগভিক নির্বের বর্ণেই সাহাকে বাঁচিভে হয়। সলে সলে ভাষাকে এই বাঁচার সহিভ্
রশানিভাবে অভিত সমভাগুলির, বর্ধা—ক্ষ্মা, শিপানা, রোগ

त्थाक श्रक्तित अपनीम बहेरक बहेरत । वीक्रिक बहेरन अपक त्त्रवे वैक्तांच चनिवादी कमस्त्रम त्व प्र:व-फ्टे त्ववा वित्य चात्रांच श्रीक्षकार (म करिएक भारित मा-हेडा अक इ:मड चर्चा। रीकांडे बर्बस सिवक्ति कर्बस कांका वक्त क्रम्मानंद क्रमडे क्रमेंक मा त्क्रम वर्ग प्रक्षाप्य प्रशिकाती हाँदा वै।क्रिक हाँदि "सावशाया रसकीत्मम स्था:"। चचकर केविक ग्रथ-शाक्रतमार क्रम वाटा किछ श्रादाक्य काला करने करनीय। अहे (य प्रतिकती हेलाई विकास की बमवान । विकास की वम-किकाला 'श की वसवान फेजबरे मछा, कामहित बाबा जरमंत्र माहे, विशा माहे, किया-कारमद गर्नाकार हेरादा जह। और प्रहे प्रका भदानद-विरदाबी क्ष मा । जावर्गवाली विज्ञातत ली क्षांत्म शत्म मिक्रांच সহিত বাত্তবতে অভুসরণ করিয়াছে। তিনি জীবনকে বঙরণে (कर्षम मारे। जाहा हरेल काहात कीवम-किकामा ७ कीवम-वारमत बाबा (ब-(काम अकड़िके जला करेल । शकाबात लिमि कीरायद अकड़े अब्दा १६ वर्षक दशहे अकाक करियाहित्सम्। बानवकीयमटक छिनि छैटनका करतम माहे. किन्छ बानव-चपुडे (पविश काँकार प्रकराया प्रतास त्रकार प्रार्थभाव प्रतिश केंद्रिशास अवर काठावर कावनाव व्यक्तिवीय क्रेसिक्टिय जावर्त छि वा भारेबा जिमि हिन्द अश्कादबत वर्त जीवरवत भरभारत प्रतक्त कीतायत प्रकास कविशास्त्र ।

বজিষের উপভাসগুলি, বিশেষ করিয়া ট্রান্তেভিগুলিই তাঁহার ক্বি-প্রভিভার প্রেষ্ঠ নিদর্শন। এখানে ভিনি মুক্ত विकास वक कहनांत जनक मीलाकात्म शक विकास करिया ভালিরা চলিরাছেন। বাছ্রম বে কভ অসহার, নিরভির নিঠর विशासिक मिक्के (म (व क्ल कर्राम विश्वकता अवादि काका (पर्वादेशास्त्र । जबहे क्रिक चार्स, त्यांबार त्यांब क्रिके वा विठाणि बारे क्वार अवन अक्षे पहेंगा पर्डण पाठात पर प्रत्येत जरजात इ: (वंद झावटन काजिका टांन । विकास कामात विन. "বেষৰ বসভের আকাশ--বছ পুলর, বছ মীল, বছ উজ্ল--काबाध किए मारे चक्चार अक्बाना त्यव वेद्रीता ठाविकिक कांबार करिया (काल।" जारुशर वज-वक्षा, ध्वरम-विजादय অবসালে শাভ ভত প্রকৃতির জ্যোভে বসিরা নীক্তারা বরনারী विश्वच्यात्म ठाठिया क्षत्र करतः "कि कतिरम त्यम दिम रचमवरे হয়।" কিছ হার উভর আলে না। তাহাবের এ প্রশ্ন বার-स्तत कीन करायत कन्नमात एडे कतिया विवादेश यात । अक्री कृत्वत कारे और इस्त्रेमा पर्छ । और कुन द्व करत दन ভাতার ত্রাভি ও অবিবার্থ্য পরিণতি সমুদ্ধে সম্পূর্ণ সচেত্রন। जरानावायत ताहे। अ क्विट्या कि नाविट्या वा । अक বিবে বিবেকের অনুশাসন অভ বিকে প্রাণের আকুল আকৃতি এই লোটানার ফ্রোভে পভিয়া বাছৰ তপৰভেয় বভ অকুলে ভানিতা বাব। সহজাত ভাবের সীপলিবার বাহাতে অভার ৰ লিভা বোৰ ভইতেতে ভাভাতই চৰ্ব্বাত আহবাৰে দাভা বিভা

গোবিসলাল, নগেল, রোহিণ, কুল, হুর্যায়ণী, অম্ম, হীরা প্রভৃতি সকলেই একই পরের পরিক। কল্যাণময় অন্তরালোকে তাহারা ভাল করিয়াই উপলব্ধি করিয়াছিল, বে-পথ ভাহারা গ্ৰহণ করিয়াছে সে পৰে কোন দিনই ভাহাদের বাঞ্চিত বস্ত विनिद्द मा , बदर म्लहेरे (पविद्यादिन के शरबंद स्था दिवादि त्मवादम कीर्य-(मवकात (मधेम मारे, चाट्स कित-चक्काताक्रम चलन शब्दा । दनवारम जारना नाहे, ऋष नाहे, नालि नाहे, एछि नारे। चार् चनक चाराव, चनीम इ:४, नीमाबीम অশান্তি আর অপরিগীয় অতপ্তি। সেই চর্ম-পরিপতি मर्नेट्स छाठावा निवृद्धिया प्रेष्ट्रैयाचिन : शानन्द्र (हर्ष्ट्र) वृद्धिया-ছিল ফিরিছে। কিন্তু পারে নাই, কোন এক কুচ্ছিনীর ইল-कारन बाक्टवार यक कारावा तारे विमात्मत प्रिटक श्रद्धारभका ফ্রন্থেই বাবিত হইয়াছিল। আত্মনংৰ্মের বন্ধ রোহিণী কি প্রাণপণ প্রবাস না পাইরাছিল। বিবাভার কাছে ভাহার শক্তি-ভিকার কথা পভিলে পাষাণ-জনম্ব বিগলিভ চুইয়া বার, "হে অপদীখন, হে দীননাৰ, হে ছ:বিজনের একমাত্র সহার। चानि निजास इ:विनी, निजास इ:रवं পड़िवादि-चानाव बका कत-बाबाद सम्दाद अरे अन्य श्विविक मिरारेश माध-আৰু আমাৰ পোভাইও মা। আমি বাচাকে দেবিতে বাইভেডি -ভাহাকে বভবার দেবিব, ভভবার আয়ার অসম বরণা, অমত पूर्व । चाबि विवदा---चाबाद वर्च (नन--पूर्व (नन--क्षान (नन -बिक कि अपू ? वाबिर कि अपू ? (द त्वरणा ! (द पूर्ता —হে ফালি—হে জগরাধ—আবার সুষ্ঠি বাও আবার প্রাণ बित कर--वामि अहे रहना चार प्रतिष्ठ नारि मां।" किन হার, বিধাভার অসীয় কুণা-পারাবার হইতে এক বিন্দু পরিষিত क्रुशावाविश्व दाहिनीव जनुरहे बिटन मारे। दाहिनी जाय-मश्वव রকা ক্রিতে পারিল না। ভাতার "ক্রীভ, ছভ, অপরিবিভ थ्येव **प**र्विपूर्व समय वायिम मा।" शायिममाम क्रिक अकरे चार अकरे धार्यमा विश्वाचात कारक कामारेशावितम. "वा नाय । नाय । छवि जानाव अ विशटर वका कत ।-- छवि वन ना বিলে কাছার বলে আমি এ বিশব হুইতে উভার পাইব ? আবি ৰবিৰ-অবহু বহিবে। ভূবি এই চিডে বিহাপ কবিও-ভাবি ভোষার বলে আছকর করিব।" কিছ গোবিকলাল বার্ব

वरेशांवित्नमः। किमिश्व 'महिमावित्नम', जनवश्व महिमाविताः। নগেলত অবস্থা ভাতাই। কোন অসভৰ্ক মুহুৰ্ছে জানি না, কুল-ৰন্দিৰী ৰগেন্তের ভাৰতে আসৰ প্ৰতিষ্ঠ। করিয়াছিল, কিছ বেই **খণে ভিনি ভাতা ব্বিভে পারিয়াছিলেন ভবন চইভেই উঠোর** হভে কুলকে সেই আসমচাভ করিবার প্ররাস পাইয়াছিলেন। কিছ পাৱেন নাই। আত্তজ্জের চেপ্তা এবামেও বার্ব চইয়াছিল। मर्नस प्रायुक्षिक विनाधिक्त, "प्रायुक्षि । जनशाव नकनरे আমার। ভোষার অপহার কিছই নাই। আমি ববার ভোষার নিকট বিধাসহতা। যথাবই আমি ভোষাকে ভূলিয়া কৃত্ত-विक्रवीएए-कि विवर : जाबि (व बद्रवा शाहेबाहि, जाहा তোমাকে কি বলিব ? ত্যি মনে করিয়াছ আমি চিছ্তমনের (b) कि नारे . अपक कार्तिश्व मा। वार्ति यक बामारक ভিরস্তার করিয়াছি, ভূষি ক্রমণ্ড ভভ ভির্ম্ভার করিবে না। আহি পাপাতা---অমার চিত্তবদ চইল মা।" প্রায়ধীও ক্রল-विश्व निर्विष्ठ भट्ट हेंड। चौकात कतिहास -- "बावि श्रवाह प्रविष्क भारे किम शानभाव प्रशास विषय करिएक-ছেন।····· আর কৃত্ত প্রায়ভারের ভরুই ভ সে নিশীগ্রীর মীরব প্রত্তে মধ্যের মিরাপদ আগ্রহ ভাগে ভরিছা অকামা পথে বাতির চইবাছিল। কিছ তার পারিল মা। আবার ভাচাকে কিরিতে চইনা'ছল। প্রেমের পবিত্র কুরুবে पर्वायुवी, मानात्यव ज्यव त्याविक्रकारमञ्जू वर्कमा कविटक চাহিয়াছিল। অদের বলিয়া ভাহাদের কিছুই ছিল না। কিছ লে আলা কি ভাতাদের পূর্ণ তথ্যছিল ? তীরা चनकार माबी-कोरामद (अर्डनम्बर परवासद हदनला वर्षा দিয়াছিল। কিছ বিনিম্বতে লে কি পাইয়াছিল ? **অপ্**যান चार माश्रमा । क्यामक्तनात्क मरक्मादार चारम किन्ने किन मा । क्यांनि बहे रमवाना नवक्षात्वत श्रेनदक প্রতিদান দিতে পারিল না। সমুদ্রের শীবল ভর্কোচ্ছালে ভাতার সকল সমভার সমাধার্ণ হটরাছিল। মানব-জীবনের क्षेत्र क्षावन शतिनकि करे हरूब अर्थनाम प्रमृत्य कर्मक देशतक মনীয়ী যে সভো উপনীত হইয়াছেন এ প্ৰসলে ভাহার উল্লেখ च्छात्रकिक हरेरव ना। चिमि वनिष्ण्यम.

"The purest reality, the purest beauty, the purest love cannot by its own nature, manifest itself here on earth without disaster but in disaster it can."

সভ্যভার ক্রমবিবর্তনের সংশ সংশ বাজ্য উন্নত ক্রবেই।
কিত এবন দিন হবত কোন কালেই আসিবে না বেদিন সে
বিধিয়ের উপভাসসমূহে বর্ণিত সবভাগনির হাত হইতে মুক্ত
ক্রবৈ। এ সব প্রাপ্ত নামরিকও নর, আর বিশেষ সমাজেরও
নর। সর্বাকালীন ও সর্বনানবীর। ইহাদিগকে উপাধানরপ্রের
এইণ করিরা যে সাহিত্য রচিত ভাহার আবেহন সকল মুর্নের
সকল বাজ্বের কাহে পৌহিতে বাব্য। বহি কোন সামরিক
সবতা বহিষের নাহিত্যের উপভীব্য হইত ভাহা ক্রমের ভারোক্য

আবেষৰ দৰ্মব্যাপী ও দৰ্মজনীন হইত বা—ছাৰ ও ডালের দীনাবেশার আহার পরিবি চিহ্নিত হইবা বাইত।

বৃদ্ধিৰ ভাষাৰ সাহিত্য-সাধনাৰ 'art for art's sake'
দীতিকে এছণ কৰেন নাই, কাৰণ ইহা তাহাৰ কৰিপ্ৰতিভাৱ
দশ্ধ বিৰোধী। বাণাৰ্ড শ জীবন সক্ষে বাহা বলিবাহেন
বৃদ্ধিৰৰ সক্ষেও নেই উচ্চি সমভাবে প্ৰবোজ্য, বৰা:

"I am of opinion that my life belongs to the zhole community and as long as I live, it is my privilege to do for it whatsoever I can. I want to be shoroughly used up when I die for the harder I work the more I live. I rejoice in life for its own sake. Life no brief candle for me. It is a sort of splendid torch zhich I have got hold of for the moment and I want to make it burn as brightly as possible before handing t on to future generations."

বাহার। 'আট'-বিলাগী তাঁহাদের সহিত জীবনের সহত তত্তু বতচুত্ব না হইলে উপায়ানের অতাবে আটের চর্চা সভব হয় না। জীবনটা তাঁহাদের নিকট সম্পূর্ণ গৌণ। পজাভরে বহিষের নিকট জীবনই হিল বুব্য। তিনি জীবনকে তাল- ব্রানিরাহিলেন। শত কব্যতা, ক্রাট ও বিচ্যুতি সভ্তেও জীবন তাঁহার নিকট অবহেলিত হয় নাই, তবু তাই নর আদর্শবাদীর বাহা বর্ণ-জীবনের একটা বহুৎ ও উজ্জা ক্রণ-তিনি ব্যান

ভৱিভেন। বেধাৰে ভিনি ভহুৰ্ব্যভা বা ভালিবা লক্ষ্য ভবিভাছেন, পাপের ভব্যস্পর্ণে বেবানে বিব নঞ্চারিভ হউভে ৰেবিয়াছেৰ লেবাৰে ভিনি অনত বেচনাবোৰ করিয়াছেৰ এবং তাঁচার প্রাণ, সম ও আছা ভাচার বিক্রছে বিল্লোছ বোৰণা ভৱিহাতে। অৰ্থাং, শুৰু বেছদা বোৰ ভৱিহা তিনি নিজিয় ভইবা বলিৱা থাজেন নাই, নীডিজানের বারা নেই ক্ষর্যাতা ও भाभरक रही कब कतिएक महारे हरेशायन । बीचिकामरक विमि विशक्त किएक भारत्व बाहे। काबाद भागांक काबाद काब ইচা ডাঁচার কবিপ্রভিভার নগোত্র চিলাবে ডাঁচার লাহিছো প্ৰবেশ কৰিবাতে। ভাৰণ "ভীৰম বাচাৰ বিষয় দেই সাচিতা चार्टेंड वच नीचिनीय नरेटच शारत या । वनि चाना नरेच ভাতাতে ভীবৰের ত্রপদরপ্রভা প্রভাগ পাইভ না। ওাঁচার হচনাহ ৰে নীভিজানের প্রভাব ভাতে ভাতাতে যদিও আট ক্ষা তইয়াতে কাবোর কিচলাল ক্ষা তর নাই। কারণ নাহিত্যের উংন আর্ট নহে--ব্যক্তির প্রতিতা , এবং কীবনকে ৰে বত বড় করিয়া দেখিয়াছে লে-ই ডড বড় ব্যক্তি, ভাতাৰ त्व वाने जाकारे देशके शेरेल-जाकारे Great Art." ( এবাহিতলাল বছৰদার )।

উপরের কথাখলির বব্যে ব্যিক-প্রতিভার বৃল ছন্ত বিশ্বভ রহিরাতে।

## আলোচনা

"নিম্নবঙ্গের তুইটি আদিম দেবত৷" শ্রীপঞ্চানন রায়, কাবাতীর্থ

প্রবাসী আবাচ ১৩৫৮ সংখ্যার প্রকাশিত বুল প্রবন্ধ ও প্রবাসী তাল সংখ্যার প্রকাশিত আলোচনা প্রভিন্ন বুলিনাম ঐ প্রবন্ধরের প্রতিপাদ্য দেবতাগণ সম্পর্কে বিভূত অভুসদান হয় লাই। নিরবদে বিনি বারা ঠাকুর নাবে তথিত, তিনিই হয়ত বেহিনীপুর প্রভূতি ছাবের বনাকলে বুক্তলে তিংবা শহরের চতুসাবে বকর সংক্রান্তর রালিতে বভাব ঠাকুর রূপে প্রভূত হন। ছানতেরে ইনিই বভাব চতী ও বোড়াই চতী।

হতিশরার পৃথক বেবতা বলিরাই ববে হয়। রাব, হুক, হৈতত প্রত্তির বত তিনিও হয়ত বহুব্যবেহধারী হিলেন। বহাতবি তারতচন্তের পূর্বপূক্ষর রাজা প্রতাশনারারণের রাজা
"রারবাঘিনী" রূপে পূজিতা। বেলিনীপুর কীরপাইরে ঐ নাবের
বেবতা তাহেন। ঐ বংশের প্রথম রাজা হুকরারের রজিণরার নাবে বে পুর হিলেন, হুলপ্রহে তাহার বারা বেবি নাই।
তিনিই তি যজিশরার বাবে পূজিত হুইতেহেন ?

चक्कवाव्य चारमाञ्चाव "स्वितीशूट वाडीम मस्-रामात: पीता स्वापन राजी वाता" पितन नवीतस्ता क्रिक मस्ता চেচুয়া বাস্থাবেণ্র, বৈক্ঠপুর, বিভারপুর, চারপুর প্রভৃতি ঐ বহুকার বহু প্রানের বলিবেই শীতলা ও বনলা বেণীর সহিত নিরোক্ত ব্যানের অভ্যন্ত পঞ্চানন্দ বা পঞ্চাননের মুটি বিভ-বাদ, উহার ছই পালে উপ্রেবতা মুটিবর।

ব্যান :—বিভূজং কটনং শাভং করুণাসাগরং বিভূত্। ব্যানচর্মণরিধানং বজহুত্র সমবিভত্ত। লোচনত্তর সংযুক্তং ভঙ্গাতীই কলপ্রবন্। ব্যাবীদানীধরং দেবং পঞ্চানসম্ভংভক্তে।

ব্ল প্ৰথমে উল্লিখিত লাজিপাত্যের বেৰভাটির সহিত ইঁহার
বিল আছে। বেৰিনীপুরের কেপুত প্রানে ও হাওড়ার আবতা
প্রভৃতি অঞ্চল বটরুক্তলে বটরুপে পঞ্চারক পৃথিত হল।
পরিবারই উঁহার পূজার প্রথম দিন। কোন কোন পণ্ডিতের
বতে ইনি বটুক তৈরব। প্রবাদ বে, শিবই পভ বলি প্রথমের
কত পঞ্চারক বৃত্তি বারণ করিরাহিলেন। কলিজাভার নিবতলা
ও বেদিনীপুরহ বালপুরের নির্ভরপুর প্রভৃতি হানে পঞ্চারক
প্রশানের বেবভা রূপেও পৃথিত। ববীরা প্রভৃতি অঞ্চল ইনি
পাঁচু ঠাকুর। এই লক্তল বেবভা লন্পর্কে লত্য নির্বরের অভ
ব্যাপক প্রের্থা প্রয়োজন।

# বুড়ো শিব

### এঅমিতাভ বন্দ্যোপাধ্যায়

"হে বাবা বুছো শিব, ছুবি কেঞা কর নাথ। ওই বোরেনীর পুতের সক্ষনাশ হোক, সক্ষনাশ হোক। ওকে সঙ্গে বংশাক দেব—ভে-রাভির বেন না কাঠে ভাবভা। ছুবি বেখো, ছুবি বেখো, ছুবি দেখো।" বগলা বুড়ী নাথা ঠোকে আর বিভবিত করে আওভার।

ব্লো নিবের 'বানে' ভবন শেব-চৈত্রের বরা রোল। রোল ভো নর আভন। বেলা গঢ়াইরা আসিরাহে, ভিছ ভারাতেও রোল্লের উভাগ এভ। বুড়ীর জ্রন্দেশ নাই। পাবরের চাভাল রোল্লে ভাভিরা আভন হইরা উট্টরাছে। ভাহারই উপর বর্ণলা বুড়ী বাবা ঠুকিভেছে। রভন রুচী আমগাহটার হাওরার ইটারাইরা চাকে কাটি বারে আর বুড়ীর বিকে চাহিরা দেবে। বুড়ীর নাবা ঠোকা আর শেব হর না। বৈকাল হইরা আসিলেও এ বারটার এবনও প্রচও রোল। সাহপালাও বেনী নাই—চাভালের বাঁ পালে ওবু একটা আমগাহ—কাঁচামিঠে আর। সারনে পালেদের বৈঠকবানার বাঁবান বারালা। ভাহারই উপর বাট হাভে ছোট ছোট ছেলেবেরের ভিছ—অবিকাংশই নিরপ্রের। প্রসাদ্পার্থী। ওবারে একটা ছোট চালাবর। ভাচাভেই একটা উনাবে পূজারী রাজ্বপভোগ চাপাইরাছে। পালে ইভাইরা মুবুক্তে-পিরী।

বৰ্গনা বুড়ীর বাধা ঠোড়া শেষ হইরাছে। সে উঠিয়া আনিরা আব্যাহের ছাওয়ার হাড়াইরাছে।

ৰতন বুচ্ কি হাসিরা বলে, কি শিনী, অত নাথা ঠুকব্যালে ক্যানে গো ?

—বরণ তো হর না, বরণ বাগহিল্ব রে বুর্ণণোভা। বুড়ী কবাব বের।

রভবের হাসি এবার স্পষ্ট হয়—ভা বেশ, ভা বেশ। বুড়ী রাসিরা ওপাশ্চীর সরিরা গাঁড়ার।

বৃধ্দে গিনীর বরস হইরাহে—চোবে ভাল বেবিতে পান
না। প্লানীকে ভাকিরা বলেন—ভাবো ভো ভারক, এই
আনগাহের হাওরার বগল ইাভিরে না। ভারক উনাবে সুঁ
বিভেহিল—বুব ভূলিরা চাহিরা বেবে। ইাা নো বগলই।
বলিরাই আবার ভিজা কাঠে সুঁ বিতে আরত করে। বুড়ী
ঐবিকেই বাইতেহিল। বোব হর পুকুরে বাইবে। ভোগের
চালার ভাহে আনিরা বুড়ী নিজের হারার বিকে ভাজার।
নাববাবে হারা বাঁচাইরা অঞ্জনর হর। বুবুক্তে—গিনী হাঁকেন,
বর্গল—অ বগল। বুড়ীর ভাবে লে বর শৌহার না।—বলি
ত বগল ভাবের রাবা বেহেছিন ? বুবুক্তে—গিনী এবার জোরে

কোরে হাঁকেন। বৃতী হাঁভাইরা পড়ে, বলে, আনি কানের নাথা থেতে বাব কেনে, সে থেকেহ ভোনরা।

ক্থাটা আছ্ব-পূজারী ভারক্কেই উদ্বেশ করিরা বলা হইরাছিল। কারণ আছে। দেখিন বুড়ী হেলেকের লহ্ছিড ভোগের প্রশাদ লইতে আসিলে আছ্ব এক কোঁটা পারেল কেলিরা দিরাছিলেন। সে নাবে নাত্র। আছ্বের কোষ নাই, নইলে কুলার কৈ। ছলেক সাব্যসাবনা করিরাও বুড়ী আর এক কোঁটা পার মাই। রাগটা লেইক্ডই। কিছ চোধ ভূলিভেই নজরে পভিল, প্রশ্নকর্তা পূজারী আছ্ব ভো নরই— আর কেহ হইলেও যোবহর রুলা থাকিত, কিছ সে বরং বুর্জে— গিরী। বুড়ী পূর্ব্ব সব্বের লোহাই পাছিরা চট্ট করিরা ক্যা বোরার। বছ বিন আপে ভাহারা 'সনের ক্যা' পাভাইরাছিল।

— ভবা 'বনের কথা' ভূমি। আবি বলি কে নাকে।
তা ভূমি কিছু বনে কোরো না দিদি—চোবেও পাই বে বেবতে,
কাবেও পাইনে ভনতে। তা—কি বল্ছিলে ?" বুড়ী বিজ্ঞানা
করে। শ্রেক ভূলিয়া বার এই বার নে বলিয়াতে কানের
বাধা ধাইরাতে অপরে—নে নর।

বৃধ্জে-গিরী আর কথা বাড়াইলেন না। গলার ঘর একটু উচ্চে চড়াইরা বলিলেন—না বগল, এনব ভাল নর। এই ভোর বেরের কথাই বদছি। কব্লা রে কব্লা। বৃধ্জে-গিরীর ঘর কমল: উচ্চ হইছে উচ্চতর এাবে উঠে, লে হারার-ছারীর কাওটা আজ শোন্। গলাবেলা লবে চাব লেরে আলোচাল ক'টা নিরে এলেছি—ঘাটে বোব বলে। ভাল থেকেই বনে করে রেখেছি বাবার ভোগটা আজ আরিই বোব। চাল ক'টা গুরে সবে নিঁভিতে জল বরতে হিয়ে হাভটা বৃদ্ধি আর ভোর ঐ আজালী বেরে হলাং করে হিজে গারে কল। ভূই-ই বল্ না হাজে চাল ক'টা থাকলে আজ কি ভোগই হিছুম করে ? ও হারারজারীকে বারণ করে হিল্ আর বলতে, বললে কি ভামিন—ইটা গো ইটা একটু লরে গিরে গুলেই ভো পার। বলে কোমর বেঁকিরে—বৃধ্জে—সিরীর ভোবভানো মুব কিরংকাল বিক্বত হুইরা থাকে।

বৃতী এবার বিজের বাধার একটা চড় বারিরা বলে, 'লবই আবার অবেট গো। কাকে বারণ করব ? আবার বাধানী ভনতে কে ? বে হারাবজারীকে বলতে নেলে আবাকেই উপ্টে বা-কভক বলিরে বেবে। গিবি বীতে কভ লোক বরে, আবার বরণ হর না।' বৃতী পুত্রবাটের পথ বরে। পুত্রপাতে আব-কাঁঠালের গাহের বন লারি। শৈঠার হারা পভিরাতে। বৃতী পেধানে বলিরা অনেককণ কাঁচে। বিজেকে অভিস্থাত দেশ—কভার বৃত্য ভাষদা করে—'বোরেনীর পুভে'র 'ভেরাভিরে'র দব্যে সর্প-দংশন চাছে।' ওবারে ভবন ঢাকের
বাজনা বানিয়াছে—ভোগ-রছন বোব হর শেব হইরাছে।
এবার ভোগ নিবেদনের পালা। ভাহার পরের ভাষটুকু
ভর্বাং প্রসাহবিভর্গের অপেকার বভী বসিরা বাকে।

প্রসাদ গাইরা, পৃক্রে হাত গুইরা, বোরেণীর পুতের আর একবার র্ভা-কামনা করিরা বৃতী বাতীর পণ বরে। এ পণ্টুক্ বৃতী মেরেকে গাল পাভিতে পাভিতে চলে। বেরের উপর বৃতীর অভিযোগের আর অভ নাই। বৃতী তো মিকেই বলে সমরে অসমরে—কি করব বা, মইলে মিকের প্যাটের মেরে। ভিত্ত ব্যাভারটা কেগো—বেদ সভীনের মেরে গো।

2

পণপ্ৰধা লইয়া অনেক হৈ-ছল্লোড়ই হইয়া গিয়াছে। কিছ হৈ-ছল্লোড় যডটা হইয়াছে কল হইয়াছে তার তুলনার খুবই ক্ষ। কিছ এই যে আন্দোলন ইহাতে বাহাদের নাধার আজাল ভাতিরা পাঁড়বার কথা—ভাহারা বরপক। কিছ ক্ডাপকও যে পণ লর এবং পণপ্রধাবিরোধী আন্দোলন যে অতি উৎসাহীরা ভাষাদের বিরুছেও চালাইতে পারে এ ভিক্টা বোৰ হয় তেমন মজড়ে পড়ে নাই। কিছ আন্দোলন বলি বা চালান বার, কল বোৰ হয় কিছুই কলিবে না। কেমনা নিয়শ্রেণীর এই সব হিন্দুর মধ্যে বিবাহবছনটা উচ্চ শ্রেণীর মভ অভ সরত্বে রক্ষিত ভো হয়ই না বরং ঐ প্রকার রক্ষণটাই যেন ব্যতিক্ষম। সেক্ষন্য বিবাহ হয়—পত্নী বর্ডমান থাকিতে অপর বিবাহ হয় ত সন্তব হয় না, কিছ ভাহার রন্ধ্যর পরই আবার নৃত্ন বিবাহের আরোজন চলে। ভাহাকে ইভারা বিবাহ বলে মা—বলে, 'নিকে'।

বগলা-বুজীর বেরের নাম কমলা। এদের সমাজের নিরম্মজ ভারার বিবাহও হুইংছিল নবম বর্বে। কিছু সামীর বরের পাট চিরজালের মজ সারিরা বর্বন সে জাবার শিতৃপুত্ব আসিল তবম ভারার বরস বোল। যোজনী মুবজী—এমন মেরেকে মা লব্বলাই আগলাইরা কেরে। সবছে মুখন আশার সরও দেবে বন্দা-বুজী। বেরে ভারার দেবিতে বারাণ একবা কম লোকই বলিতে পারিবে—ভারার উপর এই বরস। বুজী রঙীন স্থভার জাল বোমে। 'নিকে' হুইবে কমলার বড় এক চামীর হেলে—একট 'বাজর' হেলের সলে। টালা ভ কিছু পাইবেই আর অমন লামাই পাইলে এক হুংব-বাদার আর কোন প্রয়োক্ষই বাজিবে মা। কিছু বুজীর এই বে এত বড়ে বর্ষিত আশা, একেবারে ইহার মূলে বে কুঠারাবাত করিল লে আর ক্ষেত্র নতে, লে ভারার নেরে কমলা নিকেই। বুজী ভাই রোজ সম্বাবেলার আঞ্চাশের ভারাগুলার দিকে চাহিরা অমুঠকে গালি পাতে, সলে সলে বেরেকেও—ঠাকুর কি

'নেকম' নিকেছিলে আমার কপালে গো---আর ঐ হতজাতী নেরেকে বলে এনে ভাও হে ঠাকুর।

এবার আরম্ভ হইল বোরেন্দ্রপর্ক। বগলা-বৃতীর এক বড় আশার বাদ সাবিরাহিল ভাহার বেরেই সন্দেহ নাই, কিছ আহ্বলিক হিসাবে বাহার নাম করিতে হইবে, লে ঐ বোরেন্দ্রিলের নিভাই বৈরান্ধ। শক্ত-সর্ব জোরাম ছেলে। চাববাসে মন নাই। বৃতী ভাহাকে অমেক বিশেববেই আপ্যারিত করে। কবমও বলে 'উড়মচঙী', কবমও 'বাশ-বৃক্লো', কবমও 'ভাকরা'—এবনি আরও কভ কি। ওকে কনি বিভে চাহিরাহিল হরেম পাল। লাফল গরু সবভিমুন্থ ব্যবহা করিয়া দিবার প্রভাবও করিয়াহিল, কিছ নিভাই সম্মত হর মাই। ওর রক্তে কেমম এক বর্রের উপ্র উরাস আহে, ভাই চাববাস করিয়া অমম শাভ জীবন বাপম করিতে সেচাহে না। কাছের শহরে পাটের কলে সে কাল করে— বাকে সেবামেই। মাবে মাবে আসে প্রায়ে। পিছুটাম কিছুই নাই, বেটুকু আছে ভাহাকে এক ক্রার বলা যায়—ভাহা ঐ ক্রলা।

मिमकादरे कथा। जकानदना कमना नक वाहित कविवा बार्ड रांबिया किएक शिवाकित। बार्ट्डेट लर्ड बा किविशे त्म अटकवादा भाषात वया विशे चालिल-केटक्की अस्मिनादा (ठोषुबीएक नामम क्वांत माकिका विका नाकी (करत । বাটে বাগন মাৰিতেছিল-মৰুজে-গিনীর গাবে জল লাগিয়া-হিল ভৰনই। বাসম বাজিয়া সে ভাভাভাভি বাড়ী কিবিতে-विन । १४ मश्किश कविवाद केरकाल श्रीकार विकास বাৰ্ণাৰ ডিকাইয়া আসিতে আসিতে বোৱেইর বডের ঘর্টার विटक नक्द गांकन ।--- शादा अक दान पूना, शादन अक्टाका মৃত্য কুতা—লোকটকে চিনিতে ক্ষলার এক মুহুর্ত্ত দেরি हरेन मा। (अ मिछारे। क्यना अक युष्ट्र छारिन, लाक्ष्री এত সকালে আসিল কোণা হইতে ? থাকে ভ বিশ বাইল দুরে—শহরে, রভনগঞ্জে। হয়ত রাজিশেবে বাহির হইয়া भारत कांक्रिशरे चानिशारक--विश्वाम नारे। अ लाक्क्री भारत मा अवन काकर नारे। छारे क्यलांड चार्च्या टीकिन मा वबर के (व लाक्षे कक्षां हे बूना नरेवा कुर्शाकां हे बुनिवा ৱাৰিয়া বিহানা পাতিয়া ভইয়া পতিয়াতে ভাতার ভত কললার बान कातिन केरकर्श ।

ক্ষলা ইংডাইডা পড়ে। উঠানের একপালে একটা শিউলি সুলের গাছ। এক গাছা বাঁটা গাছটর গারে ঠেন দেওরানো ছিল। ক্ষলা বাঁটাগাছট টানিরা লইল। উঠানে একরান পাভা ক্ষা হইরা আছে— ক্ত দিন বাঁট পড়ে নাই। ক্ষলার বনে পড়ে—সেবার নিভাই আসিরাছিল, ভবন হরত বিভ। সেটা বাব বাস—আভ হু'বালের ক্বা

হইতে চলিল। লীৰ্থ বিৰেৱ অনুপত্নিভিতে বাসগুলি পুনৱাৰ সভেত চইয়া উটিয়াতে, অভাত ভোট চারাগায়ও আহে। ভষলা পাভাগুলি খাঁট দিয়া এক পার্বে কভো করিয়া হাৰিল। দাওয়ার এক পার্যে একটা উনান ভাচাতে কত ভিন বছন চর নাই। উনান পরিভার করিয়া ছাত ধুইয়া আলিয়া দেখিল নিভাই বলিয়া হাই ভূলিতেছে। **चाहारक राविया विचार विजन-रेग. এव मर्या फैर्फाय** वैकि केत्याय-भाषा करश्च अन्त अव । वस्क बिर्म कार्यरक ति—कि चार वन (छा १...ब इर्स द्वारंग क्यमाद गर्दान व्यक्ति। উঠিল। কোৰাৰ সাত-স্কালে সে বাড়ী-খর পরিভার ভবিরা बाबाद উভোগ कविया दिन काटाव कर करते। विक्रै कवा पृदव बाक- छेठिवारे बारे बारे बातक कतिवारक। बार्ल मुब चुवारेका (न विनन-कि बाव ? के दर बाउ मा. छैमारमब नामश्रामा करका करत दारविक् ।--- निणारे श्रदेशा नाक्रा बात अवकी विदाव वार जिल्ला चाकरतार्य ताविया स्विम ক্ষলা ভবনও দাভাইরা আছে। বলিল-ভোকে কে (करकरक (द ? शार शास कांक कदाल (क (कांरक मांचार विविश् निर्दर्श या-वा चावाद बावाद वावचा चावि करव (बर'स्ब।

ইহার পর আর দাঁভাইরা থাকা বার না। অভিনানে ক্ষলার ওঠাবর কাঁপিভেবে। হাভের ঝাটাগাহটা আহভাইরা কেলিরা দিরা সে অদৃষ্ঠ হইরা গেল। নিভাই হাসিরা পকেট ছইভে বিভি বাহির করিরা বরাইল।

বাকী ফিরিতে বাভবিকই দেরি হইরাছে। বগলা-বুড়ী দাওরার বসিরাছিল। মেরেকে দেখিরা আরম্ভ করিল—এই বে গরু বাঁথা হ'ল ? সকালবেলা ত বেরিখেছিলে। কোথার বছরা করা হচ্ছিল শুনি? কমলা কোন কথা বলিল মা। বুড়ী বলিল—হারামকাণী, বিশ দিন বলেছি গরু বেঁথে এসেই আমার ভাত বেড়ে দিবি। বুড়োযাহ্ব সকালে কিন্দে লাগে।

এই এখনি এক ভারগার ক্ষার ভ্যাবধিতি করিয়া আসিরা ক্ষানার নন বেভাজ ভাল ছিল না। আবার ক্ষার ক্ষা ভানিরা ত্র চড়াইরা বলিল—বেগে না বেড়ে। রাজ্যোল — লম্ম রাজ্যোল।

বৃত্তী সনাম চড়া গলার উত্তর দের—কে রাজ্যেস রে হারারভালী? সে তৃই। পিখিবীতে পড়তে তর সইল না অননি
ভাপতে থেলে। বাপ্ৰাপী আবার আমার বলে রাজ্যেল।
বাবই ত—নিজেই বেড়ে বাব।—বৃত্তী উটিবা ঘরে গিরা চুকিল
ভাত্তির হুইতে শিক্ত তুলিরা দিরা কমলা কিরিল। বৃত্তী বহ
ঘরে টেচাইতেত্তে—ওরে সক্ষমানী, ও হারামভাষী—শেক্ত বোল, শেক্তল বোল্। ভিত্ত শিক্তা বে বুলিবে লে তব্ম আরনাগানের পথ বহিরা সোজা রাববাতী চলিবাতে। বৃতী ভাত বাছিরা বাইরা বর ববে বসিরা বনিরা বেরেকে গালি দিতেহিল। হঠাং শিকল বুলিরা গেল—সামনে বাঁডাইরা অত্যার বা। 'শেকল তুলল কে বিভি ?'

আমার প্যাটের মেরে 'বুন্'। বেরেকে ভাত বাছতে বলেছি ত গোসা করে দিল শেকল তুলে। আমার মরণ হয় মা গো—বুড়ী ডুকরাইরা কাঁদিলা উঠে।

কেঁদে কি কর্বি বোন্। আদেই গো। সৰ আদেই। নইলে ভোৰার অধন মেয়ে— অভয়ার যা সাভনা দেয়।

আদেই, আদেই, হা আদেই। বুড়ী কণাল চাণড়ার। আসি, দিদি আর একটা কথা বলছিছ গো। কি কথা লো ?

আমার অভয়ার নিকে এ মাসের মধ্যেই দেব বোন্। হেলের বাপের কৃষ্ণি বিধে জমি চাষ। সব বাদ-জমি। হু'এক বিবে আল্র ক্ষিও আছে। টালির ছাউনি বক্ত বক্ত ছ্বামা বর। একটাতে বাণ্—একটাতে ব্যাটা। মিন্সের পরিবার জনেক দিন হ'ল গ্যাছে। ছেলেটার বিরে দিছেছিল ওই হরগঞ্জে। তা—বৌটা বাঁচল মা। বুজো এসেছিল। দিন ঠিক করে কেলেছি—এবন কেবল ভালর ভালর বিটে

বৃড়ী মি:খাস কেলিয়া বলিল—আর আমার বেৰে। বেৰে ত মহ বাঙায়ী। লইলে আমারই আবার ছ:ব কি গা ?

অভবার মা কোঁস্ করিবা দীর্থনিঃখাল হাড়িবা সহাছ্ছ্ডি দেবাইল। বামিকটা চুপ করিবা বাজিবা কহিল—ভবে, কথা ববন তুল্লে দিনি বলি শোন। গাল-বন্দ ক'ব না, আলব লেগেই বলহি। এই সকালে ওবারে কি জডে গেহি—হেখি মেরে তোমার ঐ বোরেগীর উঠোন বাঁট দিছে। ভাবছ—একটু দেবিই না ব্যাপারটা। ভা দিবি হ'লনে কভ হালি মহরা—আমি ভটি গুটি চলে এছ। এহ্নি বলি বিমহুপুরে যবন-ভবন এমনটি চলে ভবে দশ জনের মুখে হাভই চাপা দেবে কি করে ? এপাছার যা সব মিজেগুলো—ভবনই বেকাঁল করে দেবে। এই বেলা সোলা কর দিদি। পাঁচ জনকে নিরেই ভ সব কাজকম। আর এমন ব্যাপারে গাঁচ জনে ভ পাঁচ কথা বলবেই। আমি সমহ বাকতে ভাই বলহিছু হিছি, আর কেন এবার রাশ টেনে বর। আসি ভা' হলে—বাগ করিসনি দিদি।

बूकी श्वव इरेवा बाटक।

সভালবেলা এই ভাঙের পদ্ধ বুড়ী এবার বোরেনীর পোজে গালি ফিল। তাহাকে থানিকটা গাল পাড়িয়া এবার অভয়ার বাকে লইয়া পড়িল।

ছিত্র বাণাৰ বা বাণীর। বেষৰ বেছে ভেবলি বা। আবাছ আয়াকে ভনিত্রে ভনিত্রে বলভে এলেছে। ভোত্র বেছেছ নিত্রে ভূই বিধি ভ আবাহ কি লা ? বহু, বহু, বাৰী।

এবন ভাতের পরে রাগ সভলেরই হর। ভাই বগলা-বভীর बार्ग क्थवा चान्त्र्या मह । थे त्याद्वमेत क्थवे क कालात और नर्कनान । त्वादान जनकं नीरव-बरव बाटक मा । जरब यर्थकरे चारम छाठारच चालाहेवा राहेरच चारच या । अ भर्ताच বোৰ হুৱ চার-পাঁচ বার বোরেই বুড়ীকে আখান বিরা গিয়াছে --- अवाद्य भव्य वरेटण किविया अटकवाद्य क्रक्र नरेवा चानिया বিষের কাক্ষর্প সব সে বিটাইরা কেলিবে, ভাতার বেবেকে म नहार महेश बाहेरत। जात वजी विष अकाल वा बाह ভবে বাস বাস ভাতার নাবে পোঠাপিলে টাভা পাঠাইবে। ৰুতীর অবত আশা আরও একটু উচ্চরের ছিল। বোরেইর मा चारह हान मा चारह हुरना। छत्य देश मनव शबना काबाब नेहरवत करन केंद्रेक्ट वा। जाहात छैनत व्यवत जाहात अमनि গোঁৰে আৰু কাতাকেও আমলই দিকে চাতে না। বভী ভাই ন্ৰদেক ভাবিৰা চিভিন্ন বাবে ৰভ দিবাছিল। কিছ ৰভ নালাকে বিবাহিল ভালার বোৰ হব, যভ ছবিবা বিবাহিল, কেমনা ইহার পর আসিবা সে আর ওকণা মুধে আমে নাই। जनक (दें।काड़े। त्व बूदरे 'दम' कादा गत्द। कमनारक त्व নাৰশি, চিক্লনি, চুলবাৰা কিছে, কাঁচা সৰই দিয়াছে। কাপড়ঙ नेट गरिवादिन, त्यदा चारा नव मारे--चा मद-मद-बद। ज्ञाबादम् इ-अम् डीमा मधाविशिष् पाधवावेबाद्य, क्रिक াৱের বারে আবার বে-কে সে। ওক্বা আর মনেই নাই। हारे बूकी और कीमा-देशककात बर्बा शक्ति और प्लंडरे विश्वादिन (व. नव चनर्वत्र वृत्र के त्वारतनेत्र त्या। बहे चारव ইর সিয়াতে উপদীত হইরা সে ভাই বুড়ো শিবের 'থামে' ব্ৰাজিল মধ্যে বোৱেমীৰ শোৰ সৰ্পদংশলে মৃত্যু প্ৰাৰ্থনা ্যৱিষা আসিল।

দেশিৰ সন্থ্যাবেলা। বুড়ীৰ বড় ছেলে ডেই ৰাড়া লবে

নাড় লাৱিৰা আলিবা বাইডে বলিবাছে। বুড়ী পূক্ৰবাট
ইতে ছেলেৰ হাড ধূইবাৰ জড় পাড়ুডে- জল আনিডে

বাছিল। আলিবা বেপিল বীডিৰড আলৰ জ্বাইবা নিডাই

নিবা পিবাছে। ডেই ও নিডাই মিলিবা জি এডটা পৰাৰণ

বিভেছিল। বুড়ীডে বেপিবা আবাৰ সৰ চুপ্চাপ। বুড়ী

নিবা বনে গল্ গল্ ভৱিডে ভৱিডে বাওৱাৰ উপৰ গাড়া

বাইবা বাপিবা উঠানে পিবা বলিল। ভ্ৰমণা উঠানে পা

লাইবা বাপিবা উঠানে পিবা বিভালটকে আদৰ ভবিভেছিল।

লী বলিবা পড়িবা অভ বিকে চাহিবা বহিল—নিভাইডে

বিভেই পাব বাই, ভাৰটা এবনি।

কিছুক্তৰ কাটিয়া সিয়াছে। কেই হাত গৃইয়া হাওয়ায় ট ঠেন হিয়া বনিয়া আছে—বৃতী আভাপের ভারা ভনিতেহে, বলা বিভালটকে নইয়া বেন আলাহা ক্ষণভের বাহুষ। কিছ ভাই চুণ করিয়া বনিয়া থাকিতে পারিল না।

---नानी, च-नानी । निकार नावता वरेटक दाँकिन ।

- -CT (T ?
- --- ভাৰি বিভাই গো বাসী।
- —এবার কি ববে করে ভালবাব্রের হেলে—
- আই ভাগ, ৰাসী বেদ জি ? জোগায় এসেই ভোষাবের বৌজগবর করতে এছ—
- ---বাৰ্, বাড় বাবা, বোঁজবণর আনাবের আনবাই করব।
  ভূবি ববের হেলে বরে বাঙ বাড়া।

নিভাই আড়চোধে একবার ক্রনার বিকে চাহিল।
সভাার কিকে ক্যোংলার ক্রনাকে বড় রহুভ্রবী সাগিতেত্ব—
ভাহার পানের রসে রালা ওঠাবরে এক বলক হাসির বিহাৎ
বেলিরা পেল। কে জানিত ইহার বব্যেই হুঞ্জনের সন্ধি
হইরা সিরাহে।—সভাই ভো সকালের পর বীর্ষ হুপুর হিল।
সন্ধিশন বাজরিক হইতে কভ সময়ই বা লাগে।

নিভাই এবার বাওরা হাড়িরা উট্টরা আসিরা বলিল—কি বাসী, অভ চুপচাপ কেনে ? আবার উপুর গোসা করে আর কি করবে বল ? চাড়ার আগাড় করতে হবে ভো । ভোষার কাছে ভো বারো গঙা চাড়ার কর কথাই চলবে বা । এবার কিছু জোগাড়-বাত করেছি—ভা' হলে এই বোলেথেই হরে বাড় কি বল । আমি কলের সাহেবকে বলে কিন হই চুট নিরে আসব । সাহেব ধুব ভাল লোক বাসী—ওই ভো চাড়াওলো বিলে ।

টাকার ক্থার বুড়ীর এবার সন্দেহ গেল।—ভা বাহা, ভোষার ব্যাপার কিছু বুকি না বাপ্। ভোষার ক্থা ভূমিই বিরেছ—ভূমিই ভেলেছ। এবার টাকা হাতে পেরে—ভবে ক্থা।

—ভবে ৰাসী ভাই হোক। টাকা হাতে নিৰেই কথা-বাৰ্ডা হোক। কিছু টাকা আমাৰ কাহে বা আহে এবন বিচ্ছি। পৱে কাজেঃ নমৰ নম বিটিয়ে কোব।

নিভাই অর্থেক টাকা বুড়ীর হাতে বিল। বুড়ী নিভাইরের নাথার হাড দিরা বলিল, থাকু বাবা, ভোষার বাড হিব হোক —এ ভো ভাল কথা। তবে ভাই হবে, আর বেরিই কেন। এবার সাহেবকে বলে করে হুট নিবে এল। আর আমাকে একটা সভাপাড় কাপড় ভিনে বিভে হবে বলে রাথছ বাবা।

পূলা আৰ ৰণ্টা বরিলা ভাৰী জানাইবের সহিত কথাবার্তা চালাইরা বুড়ী উল্লিভ হইরা উটিল। ভাহার পরে বুড়ী বলিল, হাঁা বাবা বলি জি—এ বেলা আনার কাছেই বাঙলালাঙলা সেবে ন্যাও লা কেবে। ওবেলা চালটে ক্ইনাহ ব্যেছিছ—বোল লাবাৰ বাবে

বিভাই আগতি করে নাই—বিশেষ করিয়া ভাহার মাঁথেই বা কে ?

বাওয়াদাওয়া দায়িতে যাত্রি হইল। গুলা জ্যোৎছার ওবারে গছরাজ গাছটার দাধা ভূলগুলা বেদ একর হইয়া নিয়াছে। অবভাটভা ভক্নী নববৰ্ত্ত নতই গাছটকে বেধাইভেছিল। নেত্তিক চাহিলা চাহিলা ভ্ৰনাত্ত ভাল লাসিল। ভাৰী জীবনেত্ত বোলাক্ষর সংগ্র বিভোল হইলা লে উঠান হুইভে উটলা বাটের বেজুলগাছের ভঁজির উপর আসিলা বনিল।

নিভাই বাসীর কাছ হইতে বিধার লইবা নিজের বরে চলিল। ক্ষলাকে পুকুরবাটে বেবিরা নিভাই ক্ষলার হুই চোবে আকুল চাপা দিল। শক্ত কড়া-পড়া হাত, কিছ ক্ষলা বাবা দিল না। বানিক পরে নিভাই নিজেই হাত হাডিরা ধিরা ক্ষলার ভান হাত বরিরা চান বারিল।

- -- छ:, जारन मा वृति ।
- —লাগে ভো লাগে চোধ বোজ। ক্ষলা-চোধ বুজিল।
  বিভাই কাপজের ভাঁক বুলিরা ভাকার হাতে একটা কি
  কেলিরা দিয়া ক্ষণে চাপ দিল। ক্ষলা চোধ পুলিল।
  জ্যোংখার আলো পড়িরাহে—খ্যতি একটা ক্লের নালা।

পথ দিন বৈকাল। তারক বার্ন তোগ রাঁবিতেছে—

যভন র্চী চাক পিটাইতেছে—পালেদের বাঁবান বারালার

আতও এক পাল ছেলেবেরের ভিচ। ব্জী নাণা ঠুকিতেছে—

বাবা কালক্রদুর তুমি তো সবই বোক ভাবতা। বোরেরীর
পোকে শাপ দিছিলাম—লে শাপ ফিরিরে হাও বেব। একশো

বছর পরমার হোক হ্যালেটার।—হে বাবা কালক্রদুর।

—কোৰাও কোন পরিবর্তন নাই। পরিবর্তন কেবল বভীর প্রার্থনার। আনগাহটার একটা ভাল বোব হর ছেলেকের বাপাবাপিতে ভালিরা গিরা থাকিবে। রোক্রোজ্বল আড়াপের এক টুকুরা বাবার বারালার আলিরা পড়িরাছে। চক্চকে গিবেক্টের বেকের উপর রোক্রের লেই প্রভিক্লনটুকু প্রভিবিশ্বিত হইরাছে কালো শিবলিক্টির অনভিচ্রে। শিবলিক ভাই চকু চকু করিভেছে।

বৃতী বাধা ভূলিরা বৃত্তির দিকে চাহিল। ত্নীপৃষ্ট বৃত্তার
নিকট কিছ বৃত্তির এই ওঁজ্লাটুকু এডাইল না। বৃত্তী বিভ বিভ
ভরিরা নিজেই বলিল—বাবা হাসহে।—ভাহার পর বৃত্তী
বাজীর পথ বরিল। অভলিনের বভ আছ ভো ভাহার বনে
নাই বে, ভোগ-নিবেদনের পরেই প্রসাদ বিভরণের পালা।
কেন—কে ভাবে।

বাবার থানের সামনে পাল-বাড়ী। পাশে পালেরের নাটনলির। নাটনলিরের বিভলে একট ক্র ককে বাড়াইরা পাল-বিরী ও ভাহার বড় বেরে হবি।

ক্ৰা হইভেছে পাল-গিন্নী ও প্ৰবিন্ন ৰব্য। পাল-গিন্নী অনুলি নিৰ্দেশ করিবা বেলেকে বলিলেম—হাারে ও ভো কেই বাছার বোন্ ক্ৰ্লি না। ও-বা ও ছুঁছীও আবার পেরাষ্ঠোকে গো।

সভাই বাৰার 'বানে'র এক পার্বে গলবন্ধ হইরা প্রণাম করিভেহে কমলা। আশ্চর্বাই বটে। উহাকে কোন দিন বেবালরে বাধা নোরাইরা প্রধান করিভে কেহ দেখে নাই। আক কেন সে নিবিউচিভে প্রধান করে—কি ভাহার প্রার্থনা ?

# ফিরে দাও

ঞ্জীবিজয়লাল চট্টোপাধ্যায়

কিয়ে যাও আষার সে দবুক আবিরে—
কেলিরা এলেছি যারে কৈলোরের ভীরে
অঞ্চরেভ, অমাবিল, গৌলর্ব্য-পাগল।
দেখিৰ বিষাস হিল অচল-অচল
স্বেরু-পর্কাভসন। বনে হ'ত বোর—
ভোষার অহুত মুট রিক বাছতোর
আমার সভারে বিরে আছে সর্কাভণ।
মনে হ'ত বাহা-কিছু করি নিবেদন
সব সুনি শোনো ভাবে। বিনে দিনে, হার,
সে কৈশোর স্থে হরে গিরেছে ভোষার ;
প্রার্থার দে-বিনের নাই ব্যাকুলভা ;
ভোষা গেল বিষাদের দেই স্বভূচভা ?
ভিরে যাও লে বিষাস, দেই বিঠা যোর,
ভিরে যাও আয়ার লে লোবার কৈশোর।

## কেন ছেড়ে গেলে

শ্রীমধুস্দন চট্টাপাধ্যায়

এক বল নেনা ন্ট-পাট করে তনি বে দেশে,

বজের বভো অবেরা ডাকে—ইট্ভে কেনা:

উবত আর কালো বেশ পরা, নিনিবেবে—

হামিরা চাবুক এলো নির্দর সার্থি-সেনা!

ভারা চীংকারে র্ছের নাম রাজিভাগে,
আনি বুনে কাঁদি ভনিরা ভাদের অইহাসি,
বর্গের নেম ভারা চিত্রে দের—আত্তম ভাগে;
লোহা গেটে বেম বুকের উপর—বিবের কাঁলি !

বিষয়-গর্থে সবুদ্ধ কেশর নাছিরা আলে,
সাগর হইকে ভারা এসে নাকি ভীরেভে কোঁলে !
হে বোর চিড! কভো হভাশাই চিডাকাশে,
থ্রিরা! থিরভয়া! কেশ হেন্ধে গেলে—কি বোর কোঁহে ?

# শিশাচার্য্য অবনীক্রনাথ ঠাকুর

ভারতব্রেণা শিলাচার্যা অবধীক্রমাথ ঠাকুরের রভাতে বিগত ►डे क्रिज़ब्द अवर्गावके करलंक **चव चा**ई 40 क्रांकडे-4व প্রাচাৰে উক্ত শিল্লাহভাষের অব্যাপক এবং চাত্রক কর্ত্তক এক (भाकमण चन्नक्षेष हर । अरे चन्नकारमर यह करनायर पानी मक्षे काल अवर चालभगाव कालांचिक कतिया, देशांत देशां करमायर राष्ट्रिक चरमीतामार्यस अक्री चारक श्रीवर्शि দ্ৰাণিত করা হয়। তলেতের অব্যক্ত গ্রহের নাথ চক্তবর্তী बुभ बुमा जहरवारम और अखिनुविक्रैर्ड मानामान करवम।

कांडांच भेर अशायक डांड अरर क्यांशक-মাজনী এই মার্পত মতাপক্ষেত্র প্রতি ভাঁতা-বের আছরিক প্রহা এবং ভক্তি নিবেদন করেব। তাঁহার বছর্বী প্রভিভার সবিশেষ বৰ্ণমা কৰিয়া এই দিনট তাঁতাৱা (नाकविवन-चळ्न नामन कर्द्रम ।

चरमीसमाय अकरा अहे विकासकारी एक ভাৰতীৰ শিল্পের লুপ্ত গৌরব্যন্ত ইভিচালের মর্ম উদ্ঘাটিত করিয়াভিলেন। সম্প্র ভারতের শিল্পী ও শিল্পরসিভেরা विद्यमीय निद्धात चन्न चन्नतक विज বৰন ভারতীয় শিল্প দেশবাসীর নিকট অপরিণত এবং অসহত বলিয়া প্রভীয়েয়ান हरेड डर्ग जरमीलमान डाहार कारक. লেবার এবং তাঁতার শিক্ষমণলীর ভারা প্রবাণ করিতে সক্ষ হইলেন বে, পিল্লের ক্ষেত্ৰ ভাৰতীয় ঐতিহ আমাদের ৩৭ বছ-बुना नन्निष्टि यह, देश हरेए जिन्नाजह বছমুৰী অসুপ্রেরণার সুবোগও বর্তমান। खबबखांच शिव ভাহার দ্বীতদী चर्या छाष्टात हिलायनी अक स्वत्रश्र প্রবর্তন আনমন করিলেও বহু বিভান, বুদিনান, রাজনীতিজ তাঁহার প্রতিভার ৰোগ্য সন্মান বিভে পাৱেন নাই। কিছ আৰু বৰ্ড শভাৰী কাল পৰে আময়া "বাৰীৰ ভাষতে" বুবিভেছি কি অপৰাদ হুইতে ভিনি আমাদের দেশকে উদার **एविवादिलन । वनीळनार्यव बृह्याना** क्यांक्ष्मि चाराह त्यांनीत्क चहन **परिट विन :** 

ছবে কাকে বিশেষ সন্মান বেওয়া বেতে পারে ভবন সর্জারে

ৰৰে পতে অৰমীক্ৰমাৰের নাম। ভিনি দেশতে উচার করে-ৰেন আম্বনিদা বেকে, আমুৱানি বেকে ভাকে নিছতি হান करत कात जन्मारमद नक्ती केवाद करतरहम, कारक विश्वकरमद আছ-উপন্তিতে সমান অধিকার দিবেকেন। আৰু সমস্ত फाटएक वर्गाक्टटक करकाटना हाराज विकासाद काय-ইপ্লড়িছে। সম্ভ ভারভবর্ব আৰু তাঁর কার খেকে শিকা-शाम अठव करवात । अँटक शक्ति चाक (श्रमताची बदव करव मा (सब, चाक् e वित (न देवांनीम वाटक, वित्वनी वाारियामस्य क्व



निवाहारी जननीत्रमान शहर

बाहबाद जानावधाम चीकात करत त्मन करन और मुरनंत हतन "আবার জীবনের প্রান্তভাবে ববৰ ববে কৃত্রি সমন্ত দেশের। কর্তব্য বেকে বাঙালী এই হবে। ভাই আৰু আমি ভাকে বাংলা-ছেলে সময়ভীয় ব্যপুঞ্জে আগদে সর্বাধ্যে আহ্বান করি।"

# সে যুগের শিক্ষা-সংস্কৃতির কথা

[ বাংলা "অন্বত বাজার পত্রিকা" হইতে উভ্তত ] জ্রীযোগেশচন্দ্র বাগাল

चामदा वर्खमान चारीने नां कदिशकि। हैः दिदस्य কর্মত-প্রভন্ম আর নাই। কিছু আমাদের স্বাধীনতা এক मित्रय वा धक वास्तिय (ठहेर मक हम जाहे। जहस जहस कावलवामीय आकामात्म द्वा मक मक जावलवामीय मीर्घ-कानवाभी विविध श्राप्तहोत करन हैश मध्य हहेशाह । अहे স্বাধীনতা আন্দোলনের প্রাক্তালে বাংলা 'অমত বজাব পত্রিকা'র নিজীক উক্তিসমূহ আজিও আমাদের বিশ্বয়ের উত্তেক করে। তথু বাজনীতি নহে, শিকা-সংস্কৃতি কেত্তেও ষে আমধা তথন প্রাধীন ও প্রম্বাপেকী ইইয়া পড়িতে-किनाम, এ कथां व वाद वाद आमाराद कर्वकृशद श्रिक-ধ্বনিত ক্রান হয়। জাতির সর্বাদীণ উন্নতিকল্লে সভাকার জাতীয় শিক্ষার প্রচেষ্টা ভাতীয় সাহিত্যের প্রচার এবং জ্ঞান-বিজ্ঞানের আলোচনা-গবেষণা একান্ত প্রয়োজন। 'পত্রিকা'-সম্পাদক শিশিরকুমার ঘোষ এ সকল বিষয়েও বিভিন্ন প্রবদ্ধে আমাদের মনোযোগী চইতে বলিয়া-ছেন। এখানে প্রাচীন বাংলা অমুতবাজার পত্রিকা হইতে স্ত্রীশিকা, জনশিকা, গ্রন্থাগার, টোল চতুপাঠী, কাফশিল্প-বিস্থালয়, চিকিৎসাবিধয়ক বাংলা পুস্তক বচনা, বিজ্ঞানসভাদি প্রতিষ্ঠা বিষয়ক কয়েকটি নিবছ প্রদত্ত হইল। ইদানীস্তন कारन अवरद्धांक विवधनम्दद नाववं भागात्तव उपनिक হইবে। এ সকল অফুসরণের প্রয়োজনীভাও ববেষ্ট বুহিয়াছে।

বালিকা-বিভালতে অবগ্ৰ-শিক্ষীত্ৰ কভিপত্ৰ বিষয়

বালিকা বিভালর প্রতিষ্ঠা প্রথা অনেক বিন বাবং প্রবর্ত্তিত হইরাহে, কিছ আছিও সাবারবার ইহা সনান্ত না হইবার কারণ কি? প্রভ্যেক বিষয়েরই একট প্রভ্যক এবং গৌণ কল আছে; প্রথমবিধ কলেই বানব-নন অধিক আরুষ্ঠ হয়। কিছ বর্ত্তনান শ্রী-শিক্ষা-প্রধানীতে প্রভ্যক কল ক্রে থাকুক, পরোক কল লাভ হয় কি না সন্দেহ। বে হুইট কলের কথা উল্লেখ করিলার, ভাষা আই করিরা বলিভেছি, ভবেই পার্ত্তক্ত বর্গ বৃত্তিতে পারিবেন।

বিভার অর্থকরী ও জানকরী হুইট শক্তি আছে। অর্থাং বিভা বারা কর্মন হুইরা লোকে অর্থ উপার্জনে সর্থ হর, এবং বিভাতে জান রার্জিত হুইরা বস্থাপন বিমল নাননিক সূব উপভোগ করেন। ব্যবি প্রীলোক্ষিপকে অর্থে গার্জন ক্রিভে লা হুটক, ভ্রাচ তাহার্দিপের এবন অনেক বিষয় ক্যানা বিভাত প্রয়োজন বাহাতে ক্র্মিং অর্থ বারা স্কাক্রমণে সংসারবাজা নির্কাহ করিতে পারেন। এবছিব নিজালার আভাবে জী-নিজার উন্নতি প্রভ্যানা নিজল। প্রার বালিকা-বিভালর নাজেই দেবা বার, ছই চারিবানি সাহিত্য, গণিতের সাবারণ করেকট নিরম, একবানি ইতিহাস, এবং করেকট ছানের নাম নিজা দেওবা হটরা বাতে। কি প্রণালীতে এ সকল বিষর নিজা দেওবা কর্তবা, ভাহা আগামীতে বলিতে ইছো বহিল, সংপ্রতি জীলোকের অবস্ত ভাতব্য করেকট বিষয়ের উল্লেখ করাই এ প্রভাবের উদ্বেশ্ব। •••

রহম ত্রীলোকদিপের একট প্রধান জাতব্য বিষয়। সংপ্রতি ভিত্রপে ভাচা শিক্ষা দিভে হইবে ভাচার উল্লেখ করিভেছি।

শিক্ষ কিলা শিক্ষিত্ৰীর উচিত যে তাঁচারা প্রতাত সভাত পাঠ্য বিষয়ের সচিত রঙ্গ বিষয়ে একটং উপভেশ প্রভান कारम । भरू कांशार्रामाक खंबार आपने कांनिक সাৰাৱণ আয়ু ব্যঞ্জন, দেশীয় পিইক ও লুচি ইভ্যাদি প্ৰছত করিতে শিকা দেওৱা কর্তব্য। পলার প্রভৃতি প্রস্তৃতি বিষয়ে বিভা না চিলেও কভি নাই। কেন্দা আৰৱা দেসৰ সাৰ্থী সচরাচর ব্যবহার করি না। --- জ্ঞবাপত হয়ট বক্তভা প্রধান नुद्धक नक्षम चर्चार चवकान विवास काहा नदीका कवित्वम । প্ৰৱ হাতা পত্নীকা প্ৰচৰ কৰা আমাৰের বিবেচনাম বভ जालानवायक ठवेरव मां। एक नाइत अकशास, चर्या चमा জোন উপযুক্ত ছানে রহন সামগ্রী লইরা বালিকাদিলের হারা शबक करकक्षिम तक्षम विवास (व करकक्के केशरमण **अवक** इरेबाए, त्नरे जकन राज्यन भाक कदारेत्वन । वानिकावित्रव क्षत्र निष्क हरेल. निषक ७९कनार नरानायम कतिराय । जलात्त मा हव भक्तार चर्डरे बद्धभ निका स्वत्रा कर्तवा । এত্রণ পরীকাতে ভিন্ট উপকার সন্ধিত হয়। প্রথমতঃ বালিকারা শিকিত বিষয় উভয়রণে কার্বো পরিণত করিছে जक्ष हरेता। विकीशकः अकल भागाहात वाता चाहादिशय পরতার বছতা ও আবোদ করিবে। তৃতীরতঃ এরপ উপকারী শিকা সমর্গনে লোকে আঞ্জের সহিত খীর সম্ভিত্তিগকে विकामार श्रीवर कतिरव । अरे श्रीवाणी श्रीवर्षम कतिरम करिए कर्ष व श्राक्त माक माहे। चल्या व श्राम श्रामीय निका-नवाक चार्य, चाहा हरेरड धरे नाव श्रवक करेरन, रव करन काहा नारे वाबीपितंत विकासकता वर्ष ना क्यांकि क्षत्रक कतिर्वत ।

ন্নভাষে পর কলপানি প্রভত করা বীলোকবিধের প্রকৃষ্ট প্রবান কর্ম। -- এই শিকা কি প্রশালীতে বিভে ক্টবে সংগ্রন্থি ভাষাই বিবেচনা করা বাইভেবে। সংক্রম ইভ্যানি প্রভত ভবা হানা অভাবে পদ্ধীপ্রায়ে বটবা উঠে না। অভগ্রব হারা হারা বে সভল সজেশ প্রস্তুত হয় ভাহা প্রবিষ্ঠঃ শিকা না বিয়া, নারিকেল ও কীর হারা বে সভল বিঠার হয়, ভাহাই শিকা বেওরা কর্তব্য। ভংগর বিঠাই এবং পরিশেষে হানার ক্রয় প্রস্তুত করিছে নিথাইবেন। এ সভল বিষয় শিক্ত অপেকা শিক্ষিপ্রীর হারা উত্তম হুইতে পারিবে। অভগ্রব হানীর লোকরা কিঞ্চং বেভন প্রদান পূর্বক, এভবিষরে পটু প্রায় কোন রীলোককে বিযুক্ত করিবেন। তিনি বিনের বব্যে কোন বিক্তি সমরে বালিকাবিলকে এক হানে সইরা শিকা বিবেন। প্রস্তুত সার্গ্রীতে বাহাবিশের অবিক্ ইনপুরা প্রকাশ পাইবে, ভাহাবিশেকে পুরভার দেওবা বিবের।

আহার্য্য বছর ন্যার পরিবের বিষয়েও বালিকাদিগকে
শিক্ষা দেওরা বিভান্ত কর্ত্তর । অবেক সময় কুত্র একটি
পরিছেদ প্রকৃত করিতে, কিংবা জীব বল্ল সংকার করিতে
স্থানিকগবাক অনেক পরসা দিতে হর । পরসা দিরাও অনেক
স্থানে প্রাপ্ত হওরা হুক্র, প্রাপ্ত হুইলেও ননোমত হর না ।
অভএব এইকব মৃত্রুণ বালিকা বিভালেরে কারপেটের কাল্ল শিক্ষা বেওরা হুক্র। থাকে, ভাহার পরিবর্ত্তে পিরিহান,
চাপকান, স্কুলনী ইত্যাদি প্রকৃত করা, এবং হিল্ল বল্ল শিক্ষা ক্রিকা আভ্যাবন্তক । এ সকল শিক্ষা লইলে,
ক্রারপেট শিবাইলে কোন ক্রিকার নাই।

এতহাতীত বালিকাহিগকে 'লিকা', 'ভাগা' ইত্যাদি সর্বাহা প্রয়েছনীর বন্ধ প্রয়ন্ত করার এবং চিত্র-বিভা লিকা বেওরা উচিত। চিত্র বলিতে কের বেন কটপ্রাক, কি লিখোগ্রাক প্রভৃতিত কথা আনরা বলিতেহি এরপ বিবেচনা না করেন। কেননা লেজলি লাধারণের পক্ষে স্কুরণরাহত, ও আকাশ কুরুরবং। বাহারা নগরবাসী ভাহারা বে চিত্রের কথা বলিতেহি, ভাহা ভবিরা হাত করিতে পাারেন, কিছ লেখক বধন একজন পরীবাসী, তখন তিনি পরীপ্রাবের অভাব বিশেবরণে জানেন। পরীপ্রাবহু অনেকগুলি রতে এবং বিবাহে সর্বাহে নামা প্রকার চিত্রের প্রবোধন হয়। হিন্দু বালিকারা তংলহুবর বা জানিলে স্বাক্তে অনেক অপ্রস্থ হন। অভগ্রব এইও বালিকা শিকার একই প্রবান অক সন্দেহ্ নাই। ইহাও ভোষ প্রীলোক হার। অব্যাপনা ভর্মনা।

এ সকল শিক্ষাতে বালিকারা বন্ধণ গৃহকর্ষে বিপুণা ও পরিবারে ব্যবহার্যা হইবে, তন্ধণ তাহাবিগের বৃত্তিরঙঃ প্রাথব্য করিবে। 
ক্টেপসংহারের পূর্বে গৃচ্ছা সহকারে বলিতেহি, প্রবর্শিত প্রণালী প্রবর্তিত হইলে, ত্রী-শিক্ষার সম্পূর্ণ কল লাত হইবেই হইবে। বাহা লিখিত হইল, তাহা আবার বক্ষণাক্ষরত নর, সাধারণের রত। অভ্যার বির্বহাতিকার লক্ষণারে শিক্ষা বিভাগের কর্ত্তারে শিক্ষা বিভাগের প্রক্রিকার বিভাগের বিভাগের প্রক্রিকার বিভাগের বিভা

ভাঁহারা এ বিষয়ে বেদ বিশেষরূপে আন্দোলন করেন। (১৬ কান্তন ১২৭৪। ২৭লো কেকরারী ১৮৬৮)

#### ক্ষক্তিগতে বিভাগান

গৰণৰেও সভাতি এক মহৎ কাৰ্ব্যে প্ৰবৰ্ত হইবাছেন। এবেশহ হীনাবহাণত লোকবিগকে বিভা শিকা বিবাত নিমিত গৰণবৈতি ভাৱি উৎসাহ কেবাইভেছেন। সৰ টিক হইবাছে, কেবল টাকাত অপ্ৰভালতা।

ক্ষকেরা এবেশের হোট লোক। ভাহাবের অবস্থাটি কিরণ, একবার বিবেচনা করিরা বেবা বাউক। আনাবের বাঙী পরী-প্রাবে, আনাবের ভাহাবের প্রকৃত অবস্থা ভানা সভব। ভাহাবের বৈত সকলে ভাবেন কিছু কৃত্যুর বৈত সকলে ভাহান বা ।···

ক্ষকের। ভোর হইতে চুই প্রহর ১টা পর্যন্ত এবং ৩টা হইতে রাজ ১ প্রহর পর্যন্ত পরিপ্রন্ন করে। এ ভারাদের নিভা কর্ম। প্রভার ১২।১৬ ঘটা ঘোরতর পরিপ্রন, এ নারাভ কাও নর। কিছু পাঠক । ক্ষকের সম্পত্তি ক্ষম দেখিলাছ ? আমরা এখানে একট ভালিকা দিতেছি, এ আছ্বানিক নর, আরবা অভস্থান করিবা বাহির ক্ষিবাচি।

चन्न इरेबाना	ৰ্ল্য ৬ টাকা
ৰালা ২	HO
यक्षमा कि पत्रि 3	31
ছোট বটী	10
বেটে হাঁভি, ফলসাঁ প্রভৃতি পৃত্যের	ब्ला /১०
টেকি ১টা	10
<b>विका</b> वि	130
<b>₹</b> IC®	<b>d</b> o
न	40
লাক্স	\$10
वरे	io
पिए	10
<b>इस्</b>	10
शक्त रहे।	401
<b>টো</b> ঙ্গা	40
भाषे की	10
কাৰা হৰাৰা	10
वस व्यामा (सी शूक्तरव )	9
नीवको ३वीना	10
হকা কন্তে	<>4
नीच	4
<b>बह्मा</b> -	Ho
नश्	•

নারাভতঃ একবন ক্রকের ব্যাবর্কবের ভালিকা ইপরে

বেওরা গেল। আরও কিছু জব্যাবি ভাহাবের বাসীতে পাওরা বাইতে পারে, কিছ ভাহার বৃল্য নাই। আর একট কথা বলি। বে বৃল্য বরা গিরাহে সে সর্বার ঐ জব্যাবির প্তম অবস্থার সমরের। অভএব ভালিকার ক্ষকের বে সপ্তি বেধান বাইতেতে, প্রকৃতপক্ষে ভাহাবের ভঙ্গ লপতি বাই।

ইহারে উবরপূর্তি করিবা আহার করিতে পারে বা বলেই ইহারের পরীর জীর্থ-পীর্থ আবোর-আহ্নাল বলে কারে ভাহা জাবে বা, করিবার সরবও লাই। চৈত্র-বৈশাধ বাসে কাঁঠাল দিড, চিনা ভূরা, আর দিড ভক্ষণ করিবা জীবন বারণ করে, আর প্রার জুটে লা। পরিবের একবানি বল্প, আর গারহাগুনি স্বলন। স্থানাতে গারহা পরিবান করিবা বল্প ভ্রমান হর। ভাল মানে একট ভাল আনিরা ভাহাতে পোরাটেক হব ও ওক নিপাইরা উভ্রম আহার করা হর, আর পৌর নাসে, চালির ভঁলা দিছ করিবা উৎসব করা হর। এটা বেন কেই বর্ষেও লা ভাবেন বে আররা বাহিরা বাহিরা ক্রমক্রিগের বর্ষের হিল লোক্সিনের অবহা বর্ণনা করিভেত্রি। ক্রমক্রিগের বর্ষের ইহা অপেন্দা কাহার করার অবহা ভাল, কাহার অবহা মন্দ্র। একপভ কর ক্রমকের বর্ষের প্রকাশত কর ক্রমকের বর্ষের প্রকাশত কর ক্রমকের বর্ষের এক ক্রমের বালি গোলা আহে, আবার ভেরনি একপভ করের বর্ষের গাঁচিশ ক্রমের আর্গে লাক্স নাই ভাভানের চিরকাল বাটিরা বাইতে হর।

ইহা ব্যতীত ভাহাবের অনেক কতি দিতে হর। মহাঅনের টাকার হব শতকরা ৩৮ টাকা। বাত প্রভৃতি শভের
হব শতকরা ৫০ টাকা। ভাহাবের বিবাহ প্রভৃতি কিরা
আহে, কি কোন বৈব-ছর্কিশাকে বিব ভাহাবের বলবের রভ্য
হর, কি ভাহারা হবং প্রভিত হইরা পড়ে, ভবে কাজেই
বহাজনের পরণাগত হইতে হর। আর, একবার বহাজনের
করারত্তে পভিলে ভাহার আর অব্যাহতি পাওরা হকর। বে
ভ্রবকেরা নিজে বহাজনি করে, ভাহারা ব্যতীত প্রার সর্বারই
বহাজনের নিজেই বারী।

উপরে বেরণ বর্ণনা করা গেল, নিয় শ্রেণীয় লোক বারেরই অবহা প্রার নেই রপ। আবরা বুক্তর্তে বলিতেতি বে, আবাবের ক্ষেত্রর ক্ষরকোর উবরপূর্ত্তি করিরা আহার করিছে পারে যা। এরপ লোকদিগতে বিভালান করিবার পূর্ব্বে অরণান করা কর্ত্তর। ভূবেন বাবুন ও তাঁহার নহচরগণের বড়ে একণে অবেক প্রারে পার্ঠশালা বলিরাহে। এই পার্ঠশালাওলি অভিশর বন্ধ-নহকারে ও নাবাবিন উপারে গংহাপিত হইরাহে। ক্ষিত্র এ পার্ঠশালার তরলোকের হেলেরা অবেকে পতে, তব্ এ বন্ধ প্রায় ভূবেন বাবুর পক্ষ হইতে, প্রারহ লোক্ষিপের বন্ধ বার নাই, যবিও প্রবন্ধ প্রথম কিছু বন্ধ বেবার বন্ধে কিছু বে আর হিবের বিভিত। "পেটে বাই ভাত, ভা আবার লেখাগভা

শিবাইব" ভিপুট ইন্লেটরেরা বাবে পার্টপালা বলাইতে গেলেই কবকেরা এই কবা বলিরা বাকে।

গবর্ণমেণ্ট ক্লমক্দিগকে বিভা দাম করিবার মিনিভ ২০ লক্ষ্য করিবারেন। কেন টাকাপ্তলি কলে কেলাইবেন ? এই টাকা দিরা যদি একটা পিশলস্ ব্যাহ্ন করা হর, বিদি তাহাদিগকে মহাক্ষ্যের হাত হইতে মুক্ত করা বার, ভবে তাহাদের বন বৃদ্ধি হইবে, ও বন বৃদ্ধি হইবে। তবন কোল ট্যাহ্র বসাইতে হইবে না, প্রায়ে প্রায়ে কেল্টিদিগকে উপাসমা করিবা বেভাইতে হইবে না, প্রায়ে প্রায়ে ক্রেটিল করিবার করিবার হুইবে না, ক্রমকেরা আশনারাই যদ্ধ্য করিবা ব্যাহরে নিমিত কুঠিত না হইরা বিভা শিক্ষা করিবে। গবনিবেট যদি এইবা একটা কাল করেন তবেই প্রকালোকের স্থা বাশের মত কাল করিবেন। কেন নাম কেনার ক্ষতে গবনিবেট প্রস্থা অন্তর্গত নাই তালাগুলি মাট করিবেন। (৫ ভাল ১৭৭৫। ২০ আগই ১৮০৮)

#### कुरमववायुव भाईभामा धनामी

শক্ষেববাব্র প্রণালীতে পদ্ধীপ্রামহ লোকদিপের সর্বার
লাভ ও প্রথমেন্টের ব্যব কয়। হঠাং দেখিতে পেলে এ
প্রণালীর লোব পাওরা বার না, হঠাং কেন, বিশেষ বিবেচলা
করিরা ফেবিতে পেলে, এ প্রণালীট প্রার সর্বাদ ভব বলিরা
বোব হর। ভ্লেববাব্র অধীম কর্মচারীপরের মব্যে আনেকে
কর্মক, বোর পরিপ্রনী ও প্রভ্ভক্ত। এ সর্বার সন্তেও
পাঠশালার পরিবর্জন কেন নাই, কেন ভেপুটাদিপের বিভালের
হানার ভার, পাঠশালা মুবে করিরা প্রানে প্রানে বেভাইতে
হর ? কেন পাঠশালা সংক্রান্ত সর্বাহই নীরস ও উৎসাহবিহীন হইরাহে ? পাঠশালা পরিদর্শনে আর স্কর্প নাই,
পাঠশালার পড়ান আর স্কর্প নাই, পাঠশালার পড়ান আর স্কর্প নাই।

স্বর্প নাই।

স্বিত্তি কর্মান বিভালের পার্টির আর স্কর্প নাই।

স্বিত্তি বাই
স্কর্প নাই।

স্বিত্তি বাই
স্কর্প নাই।

স্কর্প নাই।

স্কর্প নাই।

স্ক্রিয়ার ক্রিয়ার স্কর্প নাই, পাঠশালার পড়ানে আর
স্ক্র্প নাই।

স্ক্রিয়ার স্ক্রিয়ার স্কর্প নাই, পাঠশালার পড়ানে আর
স্ক্রিয়ার স্ক

গৰণনেটের ইক্ষা এই পাঠশালা ভব্ দরিত্র লোকের বিবিভ বাক্ত, কিও তেপুট, ওক্ত ও হাত্রবিপের ইক্ষা সাহাব্যক্ত বিভালরের সহিত টকর দেওবা। --- এরপ উচ্চাতিলায় প্রশংসনীর সন্দেহ নাই, বড় হইবার ইক্ষা বাজিলেই কিছু বা কিছু বড় হওরা বার, কিও তা বলিলা হাড কি । টাকা বিবার কর্তা গবর্ণনেট, তাহার ইক্ষা ইহার টক বিপরীত। বলি তেপুটিদিসের পদোর্ঘতির প্রভ্যাশা বাক্তিত, বলি পাঠ-শালার নিবিভ পূর্বক হাত্রবৃত্তি বাক্তিত, তবে এরপ বড় হইবার চেঠার কাল বিত, কিও তাহা না হওরাতে পূর্কো আমলা বাহা বলিরাহি পাঠশালা সংক্রান্ত সর্বারই বৃত্ত্যবং হইরা উট্টবালে। ---

পাঠশালার পড়িরা কি কল হইবে, পল্লীঞানহ লোকে ইহাই ভাবে, ও এ প্রশ্নের ক্ষাব বেওরা বার না। বাহারা কর্তনাক ভাহাবিদের পাঠশালার পড়িরা কিছুবাল ভূতি হয় ষা। --- বিভাছ দরিল লোকও পার্টশালার যাইরা কি করিবে ?
ত্বোল পঢ়িলে, ভারতবর্বে করেকট নদী আছে আনিতে
পারিলে, কি সেরাজোদৌলা কোন্ নালে কলিকাভা আক্রমণ
করেম জানিলে, পেটের ভাতও হর মা, এক বিখা জনিতে
ব মধের অবিক বাতও জরাম বার মা। দরিল্রলোকের
নভানেরা পাঁচ বংসর হইতে উপার্জন করিতে আরম্ভ করে,
পার্টশালার পঢ়িলে এ উপার্জনের কভি, ইহা ব্যতীত শুরুর
বেভন, পুতকের ব্ল্যা, এবত হলে দরিল্রলোকের সভানগণকে
পার্টশালার মা পার্টামই লাভ, আর দরিল্র লোকে বমীর ভার
ভাহাদের নিজের লাভ বুবে! তবে পার্টশালার মধ্যবিত
লোকের ছেলেরা পঢ়িতে পারে, ও এইরপ লোকেই একবে
পার্টশালা রাবিতেতে ।

পাঠশালা সাহায্যকৃত বিভালত্তের অনিইকারী নর, বরং हेहेकाडी। এই পাर्रगामा प्राणस्यत मिनिए परमक हात्वत बाब विकासारमत हैका शायन कविवास क जानाना नदिनास লাহায্যকৃত বিভালরে প্রবেশ করিয়াছে, এবত ছলে গবর্ণবেতের এই ছই প্রণালীতে সব্যভাব করিয়া দেওয়া উচিত। আন একট পুথল দিয়া গাঁবিয়া দিলে এই ছুই প্রণালী উভৱে উভয়কে পরি-वर्षम क्रिट्य। जात मह्या जमर्क वरमत वरमत अन्ति টাকা কেন কলে কেলিয়া দেওয়া হয় ? ভূদেববাৰ এই পাঠশালার নিষ্তি গভ বংসর ১ লখ, ৩১ হাজার টাকা ব্যর **ক্ৰিৱাহেন, কাৰ্কান্ত বাবু ৫১ হাজাৱ টাকা ব্যৱ ক্ৰিৱা-**ছেন, ও বার ক্রবে বৃদ্ধি চইভেছে। হর প্রথ্যেণ্ট আরও कि होका यात कक्षम, मज्या भार्रभाका त्व भविवादन ৰাভাইভেছেন, ভাচা না করিবা নেই অবের বারা ভছ পাঠপালার নিমিত কবেকট ভাত্ত্বতি করুম। প্রণ্ডেটের ভয়, এরণ করিলে পাঠশালা বাহাদের নিষিত ভাপিত, चाहाबा देहात कनाचान हदेतक मा. अहा नवर्गायक्तित বিষম ভুল হয়। যদি দ্বিজ্ঞ লোকদিগকে গ্ৰণ্মেণ্ট বলপূৰ্ব্যক বিভা অবঃকরণ করাইতে চাহেন, সে বভন্ন কৰা ৰছবা যথন ব্যৱস্ত্ৰ লোকে বিভাভ্যানের প্ররোজন বোৰ ক্ষািৰে ( যথম ভাছাদের প্রকৃত অভাব বোৰ ছইবে, ভথমি প্ৰয়োজন বোৰ ক্রিবে) ভবন ভেগুটন্বিগকে আর প্রায়ে बाद्य छेपात्रमा कविदा दक्षांहेटल हहेटर मा। बक्टप चानाटम्ब বারো আনা লোকে উপবাস করে, পর্ববেণ্ট ভাহারই ঞ্লিকানা করুন, তথ্য কুষ্কেরা আপনারা আপনারা পাঠনালা वनारेरव । (२१८म टेव्स ১२१८ । ৮ अक्षिन ১৮৬৯)

### মুল ও পাঠশালার ভেপুট ইনস্পেটর

পাঠকগণ অবগত আছেন, ভ্দেৰবাবু, উড়ো, ৰাৰ্টন, ফ্লাৰ্ক নাহেবদিশের ভার ভিতিনবাল ইনস্পেটর হইবাছেন। উহার উভর-মধ্য বিভাগ তাঁহার ভত্বাববাবে ছাপিভ হইবাছে। পুৰ্বে নিয়ন হিল পাঠশালার ভেপুট ইনস্পেটরেরা ভ্ৰেৰবাবুর चबीन वाकित्वन, ७ देश्त्वची ७ वार्निकृताव कृत्वत एउन्हेनन ভিবিস্থাল ইমসপেইরছের অধীন থাজিবেন। নুভন বলোবতে अहे विश्व केंद्रेश निशाद । अक्ष करवि अहे विश्व वहेशाद. व क्ला व देवनाशक्रेयत चनीन वाक्रिय, तारे क्लाव केक्शविव (धनुष्ठे देवजरशक्टराजा अक देवजरशक्टराज व्यवीव वाकित्वम । चात अक्षे शतिवर्धम करेवारक । रवनक्रिक्तित হাৰা বেখন ও প্ৰেছের ভারতহা বাতীত অভ কোনপ্ৰভাৱ श्रांकर बाकिन मा। यांनावा भार्रमानाव रवन्त्रे रेमन्राभकेव হিলেন, তাঁহারা ইংরেজী কল ও পাঠশালা উভৰ পরিধর্ণন করিতে পারিবেদ, আবার বাহারা ভিতিস্দাল ভেপুট ইনস্-**পেষ্টর ছিলেন, ভাছাদিগড়েও পার্টশালা ও ছল নির্কিশেবে** পাঠশালার ভেপুটরা চতুর্ব শ্রেণীভুক্ত দেৰিতে হইবে। इरेलम। बदर जाभाष्ठ भुद्ध (द्या १८ होका भारेतम। ক্ষৰে ইতাৰের তৃতীয়, দিতীয় ও প্ৰথম শ্ৰেণী পৰ্যায় উন্নীত इरेवाद जामा शाकिन। अरे क्षेतानी बादा शरिवर्गन कार्या ও ছুলসমূহের উন্নভিসাধন বে অপেকাকুত উভ্যারণে হইবে ভাৱাতে আর হুই মত হুইবার সন্তাবমা মাই ৷...

डेशनश्हातकारम जाबारम्य रेम्नरशङ्केत जूरमयमानू नमस्य क्षक्रेक्टबक् क्या मा विनदा कांच बाक्टिक भाविनाव मा। ভূদেৰ বাবু ৰেক্লপ তীক্ষ বৃদ্ধি ও কাৰ্য্যক্ষ ভাতা আৰু নৃতৰ कविदा विनवाद श्राटाक्य मारे। कांद्राव वृद्धिम्बाद शतिहत्त रेहा बाजारे यत्यंहे भाषवा बारेट्ट (व. मन्भून विमा महाद्व किय এত वह डेक भवशांश हरेबाहिन। चांत अक्के विश्वतंत्र चण ভূদেববাবু আমাদের বিশেষ ভক্তির পাত্র। অভিনিক্ত ইনুসপেট্র হিলেন, তবন পার্ট্রশালাগুলি অভি বড়ের দাৰ্থী স্বরূপ পণ্য করিভেন। জন্যান্য ইন্সপেইরেরাও ষেত্রপ ছুলের উন্নতির নিমিত উদাসীন, ভুদেৰবাৰু সম্পূৰ্ণ ভাতার বিপ-হীত। তুল কোন কারণ বদত: এইীন চইহা পভিলে অন্যান্য रेन्मर्गञ्जालक मर्या थावर त्या वाव छेटा छेडीरेवा विरक् পারিলে আর হাড়েম না, ভূষেববাবু এরপ অবস্থার বাহাডে পাঠশালাট পুন্থীবিত হয়, ভাহাই করিভেন। ভূষেববারুর चरीत्म हाकाद दूरकी विकासक करम छैड़ेश बाहेक मा. শালিবার মূলের গ্রণ্মেণ্ট চালাও ক্রমণ্ড বন্ধ হইত লা। कृष्यवरात् अव्यक्ति मन्मूर्ग देन्मरभक्तेव हरेबार्थम । अकायनि পরিদর্শন কার্য্যে বহির্গত হল নাই। আনাদের এব বিখাস, अबर श्रावरणत देश्यको कृतकति कावात क्वाववारम जीनलह इंदेर्स । जानाच्यरे अफ्री विश्वत्य क्या नावायाक्य कृत्वय निक्रका कांदार वरीत कूल बारह। शूर्व्स अक बाज हरे बारमब क्य रेमनर्गकेरवव चार्गिम वरेरच नावारवाव विन কেরভ আসিভ না। , একণ নাত বিষেত্র বব্যে পাওয়া বার। শিক্ষবের এই নিষিত ক্ত পুৰিবা হইরাহে ভাতা বলা বাহল্য। পূৰ্বে একবানি পত্ৰ লিবিলে ভাতার উত্তর পাওয়া

হুত্রহ ব্যাপার হিল, ভ্রেববাব্র নিকট পঞ্জ লিবিবারার উত্তর পাওরা বার। ভ্রেববাবু সহর বে সাবারণের প্রের হইরা উঠিবেন ভাহাতে সন্দেহ নাই। (২৫ আঘাচ ১২৭৬। ৮ ভূলাই ১৮৬৯) প্রকালর

ভোষ ভোষ বহোষৰ সাহেবের কুণার একণে ভোষা কেলার এক একট কুল পৃত্যকালর ছাণিত হইরাছে। বেকুস্ লাহেব, বিনি প্রথবে এই সমুদার পৃত্যকালর করিবার বন্ধ করেব, ভাঁহাকে শভ শভ বন্যবাদ। গবর্ণমেন্টের একনে এ সমুদার কুল লাইলারিতে বিশেষ দৃষ্টি আছে। গবর্ণমেন্টের কাগকণল, বুলুব্ক, সাক্ষণেরিক রিপোর্ট প্রভৃতি সমুদারই এই,সমুদার লাইলারিতে পাঠান হইরা বাকে। কিন্তু তবু ইহাকের প্রার্থ ভাবতেরই তর দশা। বশোহরের পৃত্যকালর বর বর অবছা হইরা একণে হেত-মাঠার উনাচরণ বাবুর হতে নিরাছে। ইনি বিভার মর্যাদা ব্বেন, দেবি ইহা ছারা কি হর। কুক্ষণের লাইলারির বৃত্যু হইরাছে। বরিশালের প্রার প্রকাণ। ক্বেল চুচ্চার লাইলারির কুলু হইরাছে। বরিশালের প্রার প্রকাণ লাছে।…

আনাদের বাদলাদেশে সংস্কৃত কলেজের লাইব্রারি, আদি ব্রাহ্মসমাজের লাইব্রারি, অবকুফ্বাব্র উত্তরপাদার লাইব্রারি, এসিরাটিক লোসাইটির লাইব্রারি ও প্রবিদ্দ লাইব্রারি এই ক্ষেক্টি প্রবান পৃত্তালর আছে। ভাহার বব্যে প্রথম সুইটি নিভান্ত কুরা, সকলের শেষ্টি সর্ব্বাপেকা হৃহং। আমরা নিয়ে অনেক অনুসদান করিবা ভূমওলে যত হৃহং হৃহং পৃত্তালয় আছে, ভাহার একটি দীর্ঘ ভালিকা বিজেনি, পাঠক দেবিবেন বে পৃত্তালয় সহত্যে আমরা কৃত্ত পাছে পত্তিয়াহি।

चारमद मान	পুতৰে	म नरपंत्र
बिरोग:	गण	হাৰার
विक्रेम विकेषित्राय, मध्य	- 1	
বলভিয়ান লাইবারি, (সলকো	<b>6</b> ) •	*2
चाड ्रवाटकडेन् के, (बडियवडा)	) >	ro
है निष्ठे कलक, के, (ध्वनिम)	>	<b>4</b> 0
<b>छे</b> निवानि <b>डे</b> , (अधिनवदा)	>	
<b>এ</b> (গ্লালগো)	******	10
এ (দেক আঙুস)		ve
ঐ (আবারভিন)	_	82
निवय करनक (मध्य)	-	¢0
क्रेण रेम (ज्यानिम)		**
बिर्टियंत चन्त्राना शाय	>	9.9
FT :		
ইন্দিৰিয়াল লাইআৰি (পেৰিণ)	>>	ro
चावरमवाम के (के)		•

(a)

বেশিবেশৰ

ব্যাক্ষারিল ঐ (ঐ)	>	43
नवत्रम के (के)	3	2
(टार्डिमविमि थे (थे)	>	**
काटनत चनामा श्रांत	8.	99
रेहानी:		
<b>ভাগান্ট লাই</b> বারি (রোষ)	•	
আখুসিয়াৰ ঐ (বিলাৰ)	>	-
বিষা ঐ (ঐ)	3-	•0
ষারিষিবেটী ঐ (ক্লোবেস)	>	•0
বোহাল ঐ (শেপল্স)	•	-
সেউহাৰ্ক ঐ (বেদিস)	>	•0
रेडानीव चमामा शास	•	ŧ0
(च्चन :		
ৰাশ্বিদ লাইবারি	•	
कांबरवि :		
ৰোয়াল লাইব্ৰায়ি (বিউনিক)	•	
क्षे के (क्ष्मरण्य)	•	9.6
উনিবার্লিট (পটনজেন)	•	40
के (अनरकम न्रहिम)	•	_
थानिया:		
ৰোম্বাল লাইত্ৰাৱি (বাম্বলিম)	•	60
चनामा इति	24	-
<b>बहिश</b> :		
ইন্পিরিয়াল লাইআরি (বিয়ালা)	8	-
चमामा शास	43	
এভড়িয়: কুশিয়ার	٢	46
বেলজিয়াখে	¢	46
ৰোৱাল লাইত্ৰাৱি (হেগ)	3	******
ঐ ঐ (ক্পেন্ছেগেন)		•0
উনিবারসিট আপলাল (সুইডেন)	) >	9.6
के किक्रीमिश	>>	*0
হাৰ্কাৰ্ড কলেক, ৰাচাচুসেট্স্	>	
কলিকাভা	>	
এই সমুখাৰ পুডকের সমষ্টি প্রায় হুই কো	के ज्	-

এই সমুদাৰ পুতকের সমষ্টি প্রায় হুই কোটি কৃতি লক এবং ইহার প্রভ্যেকবানা আতপাত পভিতে বলি গতে হুই ঘঠা করিবা লাগে, তবে এই সমুদার পুতক্তলি পভিতে গুঠানছিলের মত বতবিদ পৃথিবী পৃটি হুইয়াহে ততবিদ ও আবো হাজার বংসর বেশী লাগিবে। (৮ কান্তন ১২৭৫। ১৮ কেকারারি ১৮৬৯)

#### [रेकादिवान चून]

সচরাচর প্রভাব করা বত কটিন, উহা কার্ব্যে পরিবত করা তাহা অপেদা সহদ, কিছ আমানের নেশে তাহার বিপরীত। বত সহস্র প্রভাব হুইতেহে কিছ তাহা জীবিত বাকে কটি। আমাৰের বেশে একট ইঙাট্টিরাস কুল হর, ইহা অনেক কাল হইতে প্রভাবিত হইতেহে কিন্ত এত দিন পরে তগবামবাবুর+ বড়ে উহা কার্য্যে পরিণত হইল।

আনাদের পাঠকগণের বব্যে বোৰ হয় অবেকে অবগত আহেন, বে বর্জনানের ক্লয় দরিল ব্যক্তিগণের সাহায্যাবে ভগবানবাব্ বিভর বন্ধ করিয়াছেন, এবন কি ভগবানবাব্ বন্ধ না করিলে বর্জনানের বে সর্ক্ষনাশ হইভেছিল, ইহা বোৰ হয় প্রবিবেক্টের ও সাবারণের কর্পগোচর হইভ না। ভগবানবাব্ বর্জনানে বে বিভালর করিয়াছেন, ভালা ঐ ক্লয় দরিল্লফের নাহায্যাবে। ভগবানবাব্র প্রভাবের উদ্দেশ্ত একেবারে বিভা ও অল্ল লান।

তাঁহার বিদ্যালয়ে সদীত হইতে চুতারের ব্যবসার পর্যন্ত শিক্ষা দেওরা হইতেহে। আমরা তদিলাম বে এই শিষিত একট হারবোশিষৰ ক্রম করা হইরাহে, গোরা মিন্নী এবামে শিষ্ক্ত করা হইরাহে।

ভগৰানবাৰু বে ভাৰ্ব্যে প্ৰয়ন্ত হুইবাছেন, ভাহাতে ছুভভাৰ্ব্য হুওৱা না হুওৱা অৰ্কাণেক। আপাভভঃ এই ভুলের
ব্যৱের ভার আর ভাহারও লইতে হুইবে না, হার ও শিক্কবিপের প্রছত সাম্প্রী বিজ্ঞান করিলেই হুইবে। আমরা ভরসা
ভারি বে সহাশার ব্যক্তিগণ ও প্রথমেন্ট ভগৰানবাবুকে সাহাব্য
ভারিবেন। (২৮ কান্ত্রন ১২৭৬। ১০ বার্চ্চ ১৮৭০)

### [ मयबीरगत कील ]

নবৰীপে এবন ৩১ট টোল আছে এবং ১০ জন ছাত্ৰ বাত্ৰ অধ্যয়ন করে। টোলের অনেকগুলি নাননাত্র। ভাহাতে নোটে ছাত্ৰ নাই, অব্যাপকেরা নিবন্ধণ পত্র প্রাপ্তি আশার একট টোল পুলিরা রাখিরাছেন। অব্যাপকগণের নধ্যে রক্তনাথ বিদ্যারত্ব, হরবোহন ভক্চভামণি, রামনাথ ভর্কসিহাত্ত, প্রস্তুহন্ত্র ভর্কত্বপ্রধান। (১০ আয়াচ ১২৭৭। ১৩ জুন ১৮৭০)

### [ ৰেটৰ ডাকার ]

এ বংসর বেডিকেল ভালেজ বুলিবার উপলক্ষে ডাজার
চক্রবর্তী। একটি বক্তভা দেন। ডাজার চক্রবর্তী অভিশর পণ্ডিত
এবং তিনি যথন যে বিষরে হতকেপ করেন ভাহাতে লোকের
অনেক উপলার হওয়ার সভাবনা। উাহার বিবেচনার উপর্ক্ত
পাঠ্য পুতকের অভাব নিবছন নেটিত ডাজারেরা চিকিৎসা
লারে বংগাচিত জান পার না। এ পর্যাত করেকজন ডাজার
বানকরেক পুতক বালনার অভ্বাদ করিরাজেন মার, এ বিষরে
আরো মনোবোগ কেওয়া কর্তব্য। বস্তত একেশীর নেটিত
ডাজারগণের হাতে গ্রপ্রেট বেরপ শুকুতর ভার অর্পন করেন,
ভাহার যত ভাহারা কিছুই শিকা পান না। কালেজে ভাহারা

বে ভিন্ন বংগর বাকেন, ভাহাতে ছবিবা পাইলে ভাহার।
বিভর অভ্যান ভবিতে পারেন। বেটবিবা বেভিড়া, প্রাকটন
অব বেভিনিন প্রভৃতি ইংরেজী গ্রন্থ হইতে লন্প্রিপ্রণ অছবাদনা ভরিবা বলি প্রকেশের বিজ্ঞ চিভিৎসক্রেরা বিজ্প পরীকার
কলসহ রচনা করেন, ভবে বিশেষ উপকার হইতে পারে।
ভাজার চক্রবর্তী হরত এত বিদ বাক্লা ভূলে বান নাই, ভত্তির
ভাজার চক্রবর্তী ব্যাত্ত বিভিৎসক্রপ প্রবিশ্বর ইভজ্পে
করিলে বেশের বিশেষ মদল ভবিতে পারেন। (৩১ ভাক্র
১২৭৭। ১৫ লেপ্টেবর ১৮৭০)

#### বিজ্ঞাৰ সভা

ভান্তার বহেত্রলাল সর্কার কলিকাভার একট বিজ্ঞান। উৎক্ষিণ সভা সংস্থাপনের উভোগ ক্রিভেছেন। ভিনি বেরূপ বিশ্বান বৃদ্ধিনান ও উভোগী পুরুষ ভাষ্ডাতে উভা্ কর্তৃক ইতাতে ক্রভকার্যা রুওরা সম্ভব। আয়াদের মুচ বিশ্বান বৃদ্ধিনার উচিত বে তাঁহার এরপ সহলোপকারী সংক্রের সহবোগী হন। (১ যাব ১২৭৬। ১০ আছ্বারি ১৮৭০)

ইংরেজী সাহিত্য ও অঙ্গান্তে একেন্ট্রপণ বেরণ বৃংগতি কোইতেহেন, ভাছাতে আনাদের বনেং অনেক সময় গৌরব উদর হয়। বিজ্ঞানশাত্রে ভারতবর্ষীররা অভাগি ভারুশ পারদর্শিতা দেখান নাই। বিজ্ঞান শাস্ত্রোগরেরা বুরিরভির অভাব কি বর্ধানার একেশে বিজ্ঞান চর্চ্চা হয় না বক্রিয়া বালালির বব্যে অদ্যাণি আমরা বিজ্ঞানবিং কোন ব্যক্তিকে দেখিতেই পাই নাই ভাছা নিক্ষরত্রণে নির্দেশ করা বার না। বালালার কলিকাতা বেভিকেল কলেকে কিরংপরিয়াণ বিজ্ঞান চর্চা হয় এবং পরীক্ষাতে এঁরা বেরণ পারগতা প্রদর্শন করেব, ভাছাতে বালালি ব্রক্গণকে এবিষয়ে নির্দেশ্য বজা বার না, দোষ হয় বে কলেক ছাভিলে আর বিজ্ঞান চর্চ্চা হয় মা, ভাহাদের এবিষয়ের প্রোগও বাক্ষে না, শ্রেরও অভাব হয়।

ইউরোপীর ভাতি অপেকা আশীর কাতির বব্যে বিজ্ঞান
চর্চা অপেকাকৃত কর। তারতবর্ষীরপণ আব্যাদ্ধ বিদ্যার কিছু
অধিক তংগর। তারতবর্ষের জনবার্ প্রভৃতি প্রকৃতিতে বেশীর-গণের বন বিজ্ঞান অপেকা বনতত্ত্বে অধিক বিবেশিত করে, কল বাদলা ব্যক্পণের এ বৃতিটি নিহিত বই ইহার অভাব নাই।

ভাষ্যাত্রাধে যথন বিদি বিজ্ঞান চর্চার বাব্য হইরাহেন ভবনই তাহাতে ভিছু না ভিছু প্রধাতি লইরাহেন। ভানাই বাবু বিদেশীরগণের বব্যে এবিষয়ে বিশেষ বর্ণদী। আজ্ঞান রাজক্রক বাবুও বিজ্ঞান চর্চার আন্দোলন আরম্ভ ভরিরাহেন। রাজক্রক বাবু ভালেজের গাঠ লয়াও ভরিবার প্রধান পান না, প্রভয়াং এদেশে বভদুর সভব ভাঁহার ভত্তুর এবিষয়ে শিকা হর নাই এবং ভানাই বাবু ভালেজের তত্ত বিব্যাভ নন প্রভাগ

ভগবানচক্র বহু, আচার্য লগদীশচক্র বহুর পিতা। এই সমরে
 ভিনি বর্ত্তনালে ভেপুট স্যালিট্রেট ও ভেপুট কলেউর ছিলেন।

<sup>া</sup> ভাই পুৰ্যসূৰীয় ভড়িত চক্ৰয়ী, বেডিকাল কলেজের অধ্যাপক।

এ হা উভর বধন এবিবরে ব্যেপীর বব্যে হউক আর বিবেশীর-গণের বব্যে হউক ভিছু ভিছু প্রতিষ্ঠার আক্ষন হইবাহেন তথন বিয়ালয়ের অনেক ব্যক্তেরই এই প্রতিষ্ঠার ভাকন হওরা

বহেজবাবুর উল্যোগে বলি এবানে সারেজ এসোসিছেসমষ্টির সংখাপন ও উরতি হব, তাহা হইলে দেখির ব্রকগণের
আশা তৃত্তির আর একটি বৃতন উপার হইবে। পুর আশা
ভৃত্তির নর, অনেক ব্রক্তের ইচ্ছা কোন উপারে দেশের কিছু
বদল সম্পাদন করেন, কিন্ত প্রোগ পান না। এ সভাটতে
ভাহাদের বনোরও পূর্ণ হওয়ার প্রবিশ হইবে।

বহেলবাবুর প্রভিন্তিত সভার আকৃতি একণ তিনি সম্পূর্ণরপে
অভিত করেন নাই, প্রভরাং ইরা কর্তৃক আর আনাবের কোন্
কোন্ আলা পূর্ণ হওয়ার সভব ভারা আনরা নিক্তররপে
বলিতে পারি না। ভবে বিজ্ঞানশাল্পট এবেশের সম্পূর্ণ পভিত্ত ভূমি। ইহার উৎকর্ষ নিবছন আনরা অনেক লাভের প্রভ্যাশা করি। বদি অগদীখনের কুপার মহেলে বাবু ইহাতে কৃতকার্য্য হন, ভবে অগতে জানিবে ভারতবর্ষে বিধাতা কত রম্ন নিহিত্ত রাধিরাছেন। এবেশে কৃতবিদ্যের সংখ্যা চাতৃরি অপেকা অনেক বাভিয়া পভিয়াহে, এবং বংসর বংসর বাভিতেছে। ইহার কল হইতেছে লোকের বিদ্যা চর্চার উপর ভাচিত্রা ও হতালা। একণ বাহারা দেশের নদলাকাক্রী, ভাহাদের ইহার প্রভিবিধান করা কর্তব্য। সাএল এনোসিরেশন কর্তৃক এটি ভতক পরিমানে নিরাকরণের সভব।

এদেশীর ব্যা প্রবেগণকে অনেকে অর্থ গৃগ্ন বলিরা কলফ করেন। ইহাদের বর্তনান জীবনবারা প্রণালী দেখিলে এট বলিলে নিভান্ত অভার হর না। উহিলারা প্রহুত কালেজ হাছিলে পুতকের সলে সকল সম্পর্ক লোপ করেন এবং কোবার হট পরসা পাইবেন ভারাই লইরা বিরুত বাকেন। কিছ ভাহাদের অপরাব কি ? ভাহারা কি করে ? সাএজ এসোসিরেশন কি অভ কোন বিজ্ঞান চর্চার স্থাবিধা হুইলে ব্যক্ষণ বোব হর—বোব হর কি—বিশ্বর এরণ অর্থনালসার काममूंग वरेबा दकारेदवन ना । (२৮ कास्त्रम ১२१७। ५० बार्क ১৮१०)

#### काका देवक्रकेंद्रे

···ग्राकार मुख्य अक्षेत्र गण हरेशारह। ग्राका खकाम शार्फ আমাদের বেরণ বোৰ হইল উহাতে রাখনৈভিত ভকবিভক ठरें व मा। विकास १६ जाठिका हकी है (यस जकार श्रास উদেশ্ৰ। কেচ কেচ একণ ভাবিতে পাৰেন ৰে বাচালা প্ৰাৰীৰ, বাতাৰের বাজনৈ ভক কোন ভ্ৰমতা নাই ভাতাৰেছ विकास ठळीड प्रवह ना कि, कनहे ना कि ? किंच जायबा एक हुद बारे मा। एटन छैटा यान कुनवाहद छिटनहैर क्रावह হৰ চৰ ভবে সংবাদপতে উচার বিষয় আলোচনা ভবা না সভার কর্ত্রপকীরগণকে সজা দেওরা। কিছ ঢাকা অভি क्षराम प्राम, अवन कि कमिकाकात मिटाई हाका। अश्रीमकात প্ৰবাদ প্ৰবাদ লোকে যদি সভা করিতে প্ৰবৰ্ত হটৱা থাকেন, खर जानरे वा रूम मा इरेरव ? खर वाना नित नजात मान क्षमित्वरे जामारमद फिरवहैर क्रावत कथा माम शास । जिक्दाद कीवन हिंदक, चाकित्रस्य दहना स्रवाली स्रवृत्ति श्रकारवर मान क्षमितन अपन कानारकर वनन कर । यहि हाकार ত্ৰণিভিত ব্ৰক্ষো প্ৰকৃত বেশের মধন ও আপনার উন্নতি করিতে ইচ্ছা করেন, ভবে সভার চুত্রহ পণিত, প্রাকৃতিক শাছের চর্চা ভারত করুন। এক খেলের কৃষি ভঙ খেলে প্ৰযোগ করা যাব না। কলিকাভাৱ ক্ষিণ্ডা কেবল বিভেশীৰ ব্ৰহ্ম এতাদেশে প্ৰস্তুত করিবার বৃদ্ধ করিতেছেন। কিছু কি উপাৰে এদেশের ভবি আরও ফলবভী চর ভাতার বছ জাতারা ७७ क्रिया देवेट शास्त्रम मा। कुल्क्ष्रिया बामानिया हर्का করেন না। বালালায় ভূতত্ব অন্যাপি কেহ ভাল করিবা অসুসভাষও করেম নাই। ভাতার কিছু কারণ আছে বালালার ৰে চৰ পতিয়াতে উচাৰ মজিকা সংগ্ৰচ কৰিছে অধেক ব্যৱ कविष्क वर्ष किक हाकाब अहे भाव हकीव नकीरमका प्रविधा। নেবানে নিয়ত্বিও আছে পর্যাতও আছে।...( > বৈশাব ३२११ । २३ अधिन ३৮१० )





১৯৫০এর ভ্যালুরেশন

গত ৪ বছরের বিসাব নিকাশে 'হিন্দুছান'-এর উদ্পুত্তের পরিমাণ দাঁড়াইয়াছে ১ কোটি ২৫ সমুক্ত টাকার উপর।সেই টাকা হইডে লাভ সহিত সকল বীমাপত্রে বছর প্রতি হাজার করা কোন্যান্স ঘোষণা করা হইরাছে:

(ময়াদী বীমায়—)
৮১টাক
আজীবন বীমায়—

ভবিবাতে মূল্য ব্লাস এবং অস্থান্ত অনিশ্চিত ব্যয় সাপক্ষে সংরক্ষিত ভহবিলের যথেন্ট ব্যবহা রাখিয়া এবং স্থানের হার অভিন্ধত হার অপেকা % % কম ধরিয়া কঠোরতর পদ্ধতিতে হিসাব নিকাশের এইরূপ ফল দাঁড়াইয়াছে। দায়ীতে কমহারে স্থান অর্জন, চুমূল্যের বাজারে অধিকতর ব্যয় প্রভৃতি নানা প্রভিক্ষ অবহা সন্ত্রেও এই হিসাব-নিকাশে হিন্দুছানের অবিসন্থাদী নিরাপত্তা, স্পৃতৃ আর্থিক সঙ্গতি এবং পরিচালন-বায়ে মিতবাহিতার প্রমাণ পাওয়া বাহা।



•	চলতি	বীমা	•••••	900	神:	かと	गक	টাকাৰ	উপর
---	------	------	-------	-----	----	----	----	-------	-----

- বীমা ভহবিল .... ১৫ 🔑 ৯৭ " "
- প্রিমিরামের আয়. ৩ » ৪০ » "
- দাবী শোষ ...... ৭ ፡› ২০ ৽

292% त का नभाषीर वेलिशतक जाता होते जिल



(का अगापाठड राज्यसंवज्ञ (आजाराठ, लि

# "পুথি পরিচয়"

#### অধ্যাপক ী চিন্তাহরণ চক্রবর্ত্তী

প্ৰায় লোৱা দ' বংসৱ পূৰ্ব্ব হুইছে আমাহের মেশে প্ৰাচীন পুৰি गरबंह ७ चारनाहमात कहवा हव। मरक्क अरबंद नथि नरेहा প্ৰথমে কাম মাত্ৰন্ত হয়। মনেক পরে প্রাচেশিক সাহিত্যের थाठीय मिनर्ममध्निय निर्क পश्चिममध्यमात्वय मुद्रे बाक्टरे वय --- লংকত পুৰিৱ সলে সলে প্ৰাদেশিক ভাষার পুৰিও সংগৃতীত हरेट बाटक। श्राप्त यांके वरमद शृद्ध वनीव-माहिका श्रीदेवर প্ৰতিষ্ঠিত হওৱার পর হইতে ৰভন্নভাবে বাংলা পুৰির সংগ্রহ ও चालाहमात एक्षणां हव । श्रीकिंग्र मनत हरेएकर श्रीम वारका পुषित भरअङ ७ भरवक्ष विषय भतिष्य महारामा चाकडे दश बन्द शक्षिय शक्षिकाय मरना मरना निक्रित्र चारम गश्बिक शृविद विवदन क्षकानिक हहेरक बादक। शदिवर প্ৰকাৰ দুৱাত অভুসৰণ কৰিবা অভাত কোন কোন প্ৰিকাণ্ড বিভিন্ন সময়ে নানা পুৰির বিবরণ প্রকাশ করিয়াছে। পরিষদ ७ वणां करतक विकितास्त कि कि विवर्ग वण्ड পুতকাকারেও প্রকাশিত হইরাছে। তবে বিভিন্ন ছামে विकिश और नवल विवद्यानंद बना हरेए पदकादवल काम পুৰির বৃতাত বুঁজিয়া বাহির করা ছঃলাব্য। এই অপুবিধা দুৱ ক্রিবার শ্রু ক্যাটালোগার ক্যাটালোগোরার নামক সংস্কৃত পুডককোষের অভুকরণে একধানি প্রাচীন বঙ্গাহিতাকোষ व्यवदानक कलमा श्रीवरायक चारक । अहे अह मरक्लिल हहेरल मरनक पुरित जालाहमात भर अच्छ द्वेद-- आह पुरित बुना मिर्वादन चुकद इटेरव ।

পুৰির প্রকাশিত বিবরণ পূর্ণাল বা প্ররোজনাক্ষণ হওয়ার উপরই এই কোরপ্রছের উপবোদিতা বিশেষ তাবে নির্ভৱ করিবে। কিছ ছংবের বিষয়, এ বাবং প্রকাশিত বিবরণগুলি অনেক ক্ষেত্রেই তাসা তাসা, অপ্তই। এ বিবরে কিছু কিছু দৃষ্টাছ আমি ইভঃপূর্ব্বে উপরাশিত করিরাছি (প্রবাসী, প্রাবণ ১০৪৬, পৃঃ ৫০৯)। অতি তলুর এই প্রাচীন পুবি ইতিহাসের অব্লা উপকরণ। তাই এবিকে ইতিহাসরসিক ব্যক্তিরাজের অব্লিত হওয়া উচিত।

বিশ্বভারতী বিভাতবনের উপাব্যার গ্রীপঞ্চানন বঙল 'পূথি-পরিচয়' নামকএছে+ নৃতন ভাবে পূথি আলোচনা আরভ করিবাছেন দেখিরা আনন্দিত হইলান। বিশ্বভারতীর পূথি-শালার সংগৃহীত সাজে পাঁচ হাজার বাংলা পূথির প্রথম পাঁচ খত পূথির বব্য হইতে বাহিছা ১৮১ বানির বিশেষ

विवद्य और अर्थ (एक्षा क्रेबार्ट । चर्च कि प्रक चर्मापन कृतिया वाहारे करा करेबाट काला क्रेबिविक सर माहे। অভাতনামা এছকারের লেখা বোগাভার বন্দনার পুৰির বর্ণনা (क्छन क्रेबारक ( २२.8¢ मरबा), किन्क वाशाबारबन्न निविच अरहत পরিচর দেওরা হর माই। अरहत একট পরিশিতে গ্ৰিভণনৰোহন চটোপাৰ্যাৰ কৰ্ড ক উপজ্ঞ ২১৮ বাৰি পুৰিৱ মব্যে ২১ৰামি পুৰির বিৰৱণ সন্নিবেশিত ভইয়াছে। যে সম্ভ পুৰিত্ৰ কোন বিবৰণ প্ৰস্থমণ্যে প্ৰদত্ত হয় নাই ভাতাছেত্ৰ উল্লেখযোগ্য বৈশিষ্ট্য আৰু একট পরিশিষ্টে কিছ কিছ উল্লিখিড क्रहेशास । त्य लीह नंख श्री अहे आस्त्र क्षीया चयमपत ভাতাদের বর্ণাপ্রক্রমিক মামস্থচী ও এছকার-স্থচী চুইট নির্বটে দেওৱা হইবাছে। এই সঙ্গে লিপিকর, লিপিছান, এছের মালিক প্রভৃতির ভালিকা সংবোধিত হইলে আরও ভাল हरेंछ। अप्तर बाबचहीर बाबा পुबिर शबनरवा। ७ निनिकान উল্লিখিত চত্ত্ৰায় ইচা সংক্রিপ্ত বিবরণের কার্ব সম্পন্ন অৱিশ্বাছে। ইভ:পূর্বে প্রকাশিত পুৰির বিবরণগুলির একট कानाप्रक्रमिक जानिका अक्षे पविनित्धे श्रकामिक दरेबार । এই ভালিকাট অব্যাপক ত্রীয়ক্ত বতীক্রমোত্র ভটাচার্থ সংক্ষিত প্ৰহট সাহিত্য পরিষ্টের এছাগারে রক্ষিত বাংলা পুৰিত্ৰ ভালিকাৰ প্ৰদত্ত পুৰিবিবরণ-পঞ্জীর সংক্ষিপ্তসার। উলিবিত খুচী ছুইটও তাহার পুতকে প্রদত্ত খুচীর আদর্শে इंडिए विश्वा मृद्य हव ।

প্ৰছেৱ ভূমিকায় পুৰিসংগ্ৰহের ইভিহাস বৰ্ণিত হইয়াহে এবং वारमा পুৰির--বিশেষ করিয়া বর্তমান গ্রন্থে উল্লিখিত পুৰিস্কলির दिनिहा जात्नािक इरेशाय। यह श्रेमान व ममल क्या वला हरेबाट छाहारमब मरना कठकश्रीन কোতৃহলোদীপৰ। এছকারের মডে--পুৰি মকল করা हिन चर्मकांत किर्मद अक क्षेत्राम (भना । इन्हांकत कुकत इहेटल जावालयुद्धविजा जकरलहे बहे (भर्मा जवलयम ক্রিভেন। ভেরেটপাভা, ভোজপাভা, গাছের বাকল এবং চাৰ্ডার লেবা বাংলা পুৰির ক্ৰাও ভিনি বলিরাছেন। ছঃবের বিষয়, এই সকল উক্তির সমর্থক প্রমাণ বা দুটাত উদ্ধত না হওৱার অনুস্থিৎস্থ পাঠকের কৌতুহল অতৃও বাকিরা বার---केकित वांशांना नवरक नश्मव क्या। भूषित स्मारव विरक বালিক, লিশিকর, লিশিকাল, লিশিহান, পুৰির বুল্য প্রভৃতি विवाद नामाक्षिक रेकिशात्मव किक विवा विरम्प मूनामान् অনেক তথ্য পাওৱা বার। ইবার কিছু কিছু নিবর্ণন আবর।

পৃথিপরিচর। এখন থঙা বিবভারতী বিব্যাভবনের উপাধার শ্রীপঞ্চানন মঙল, এম-এ সভলিত। বিবভারতি প্রস্থানর, ২ বছিন চাটুলো ক্লিট কলিকাডা---। বুলাবল টাকা।

অন্তম উপন্থাপিত করিবানি। বিশেষ আৰক্ষের কথা, বর্তবান প্রন্থকার এ সম্পর্কে ব্যাপক আলোচনার প্রবাদনীরভা বিষয়ে ঐতিহালিক সমাজের দুটি আকর্ষণ করিবান্তম।

পুৰির বিবরণ সম্প্রদানে সম্পরিতা নার্লি বরণে পুৰির প্রারম্ভ ও শেব হুইতে বদুজ্যুক্তবে করেক পঙ্জি উন্নত করিবাই কাল শেষ করেন নাই—এব্রের ও পুৰির বৈশিষ্ট্যও কিছু কিছু উল্লেখ করিবাছেন। আলোচিত এব্রের অভ পুরি অভন্ত বর্ণিত হুইরা থাকিলে নাবে নাবে আহার উল্লেখ করা হুইরাছে। সর্বান্ত এইরূপ না করার কারণ ব্বান্ত না না বিবরণের নব্যে এহের বিবর-পরিচর স্পোইভাবে উলিবিক হওয়া বিশেষ বাহ্ণার। আলোচ্য এহে সেরপ পরিচরের অভাব অনেক ক্ষেত্র অস্থবিবার স্কট করে। ২৮,৩৫,ও ৬১ সংখ্যক বিবরণ ক্ষইব্য। ১০ সংখ্যক বিবরণ প্রস্কার লিখিরাছেন—"বিক্ আলারাম সন্তব্তঃ লিশিকর, লেখক স্ক্রকা নিবাসী বিক্ মহানক।" এই অস্থবানের হেতু নির্দেশ করিলে ভাল চইত।

আলোচ্য পুৰিগুলির বেশীর ভাগই অপেক্ষাক্কভ আধুনিক।
বাঁহাবের লিপিকাল পুৰির মব্যে উদ্লিখিত হইবাছে তাঁহাবের
ভিতর সবচেত্রে পুরাতন বেখানি সেথানি ১০১৩ সালে মকল
করা। বলীর একাদশ শতানীতে নকল করা আর একথানি
পুৰি আছে। আধুনিক পুৰির মব্যে বৃত্যুপ্তর বিদ্যালয়ারের
রাজাবলি ও প্রীষ্ক্ত হরিচরণ বন্দ্যোপাব্যারের লেখা সভ্যনারায়ণের গাঁচালি উল্লেখযোগ্য। ছাপা প্রচলনের পরেও
কেহু কেহু ছাপা বই নকল করিরা সবত্বে রক্ষা করিতেন।
উদ্লিখিত পুৰি কুইখানির মধ্যে প্রথমধানি বদিবা সেইবরণের
ছয়, বিতীরধানি কথনই সেইরপ নয়। এ ভাতীর পুৰিকে

পুৰিশালার অভত্তি করা কভটা বুক্তির্ক বিচার করিতে হইবে।

বে সকল পুৰিৱ নকলের ভারিব দেওৱা নাই ভাছাদের লিপিকাল গ্রন্থকার নোটাযুটভাবে নির্দেশ করিবাছেন। ভাহার বতে কোন পুৰি আছ্মানিক ২২৫ বংসরের পুরাজন। কোনবানি ২০০ বংসরের, কোনবানি ১৭৫ বংসরের, কোন-বানি বা ১৫০ বংসরের। কিছু লেবা বেবিরা পঁচিশ বংসরের কর বেশী পুরাজন বা বুজন বরা বার কি ?

পৃথিগুলির অধিকাংশই অতি কুলাকৃতি—অনেক্গুলির কেবল একট করিবা পাতা। এগুলি সাধারণতঃ 'পাত্ত।' নাবে পরিচিত। কতকগুলি পর, দরখাত, হাতপত্র প্রত্তিকেও পৃথির মধ্যে স্থান দেওরা ক্ইরাছে। পৃথির নাম অনেক্ হলেই গ্রহুলারের নিজের দেওরা মনে কর। একই বিষরের গ্রহুর হই রক্ষম নামও দেখা বার (২২,৪৫)। পদাবলীর পাতাগুলি বতর পৃথিরণে (১৪ প্রতৃতি) প্রদর্শিত ক্ইলেও কিছু কিছু পাতা একই পৃথির বিভিন্ন অংশ কিনা বিশেষতাবে পরীকা করিবা দেখা দরকার্ন। পাতার মালের ঐক্য আক্ষিক বলিবা মনে কর মা। বত্তঃ একই পৃথির বিভিন্ন অংশ বিদ্যান্তাবে স্বভ্র পৃথিরণে রক্ষিত ক্রেরার ব্যাপার কোন কোন ক্ষেত্র বরা পভিয়াতে।

শতাৰিক বংগৱ ৰাবং সংস্কৃত পূথি কইরা আলোচনার পরেও সংস্কৃত পূথির বিবরণ এখন পর্যন্ত সর্বালহুলর হয় নাই। বাংলা পূথির অপেকাফুড বলকালব্যাণী আলোচনার ক্রেটবিচ্যুতি আশ্চর্যাকর মহে। এ বিষয়ে ক্র্মীর অভ্যন্ত অভাব—কাক করিবার আগ্রহ ও উংগাহ বৃবই ক্ম। ভাই এই নবীন উদ্যুম বিশেষ অভিযুক্তমের বোগ্য।

# সন্ধান

গ্রীসুধীর গুপ্ত

বার্-পারাবার পাভি দিতে চার পাবী,
পাবা-বীপ ভার বাঁবিতে লাগার বার;
চলার—বারার পব প'তে বাতে বাজী;
ভেটেও ভাটে না ভারলের বারা-ভোর;—
অভ্যু ক্রেরে অনীয়ে উভারে ভাই,
অবরায়ে বেন পাবী বলে—'বাই বাই'।
ভোরল কুক্র-পদ্ধর পাবা বেলি'
নাটর পাবীট রবিরে বরিতে চার;
নাট ব্যুত ভবু বেলে ওঠে বাট ঠেলি'.

শাধার শিধরে বাঁবা শেষে গড়ে বার;
গরু ভাহার ভাই বুঝি বারে বারে
পৌরাতে চার চিরছনের পারে।
ধূলার ধূসর উবর বরার বাবে
বাটর বাছ্যও অরুভ লভিতে চার;
বাঁবন এড়াতে ভিত্রভেই পারে বা বে,
ভছ্য জগতে কিরে কিরে আনে বার।
হল্মে-গরে ভবু ভত্হারা প্রাণ,
লীবার ভরিত্রে অলীবেরই সভাব।



ভারত রাষ্ট্রতন্ত্র—গ্রীচান্নচক্র চৌধুরী। এবা পাবলিনিং কোম্পানী, ১৯০ দি, বাসবিহারী এভিনিউ, কলিকাতা—২০। প্রাপ্তিয়ান—এস্. সি. সরকার এও সন্দা লিঃ। ১দি, কলেজ ক্ষোরার, কলিকাতা—১২। দাম আডাই টাকা।

ভারত রাইশাসনভন্তের বরূপ কি তাহা জানা প্রত্যেক নাগরিকের কর্তব্য। অখন কনষ্টিটাশন অফ ইঞ্জিরা অধিগত করা ব্যবস্থাবিশারদের পকেই সম্ভব, আড়াই শত পঠাব্যাপী রাইস্তরসম্বিত ইংরেকা প্রক্রথানির কটিলতা উদ্ধাৰ করা সাধারণমনের সাধা নতে। "ভারত রাইতত্ত্র"র সাৰ্মৰ্ম সংল ভাষায় পাঠককে বুৰাইতে চেষ্টা কৰিয়া প্ৰশ্নকাৰ একটি গুরুতর অভাব যোচন করিরাছেন। কেবল রাইতন্ত্রের জমুবাদে সে অভাব দর করা বার না। বে বিশেব জ্ঞান থাকিলে রাইডয়ের প্রকৃত তাংপৰ্যা প্ৰকাশ করিতে পারা যায় খ্রীচারচক্র চৌধরীর সে জ্ঞান আছে। তিনি থাতনামা বাবহারজীবী এবং বিলাভ আমেরিকা ফ্রাল ও অক্সান্ত দেশের রাইডম্র সম্বন্ধে অভিজ্ঞ। তাই তিনি সহজ ভাষার ভারত রাইডমের প্ৰিচৰ দিতে সমৰ্থ চইবাছেন ৷ প্ৰিচৰপ্ৰদানেৰ ব্ৰক্ত ভাঁচাকে প্ৰিভাষা প্রট করিতে হইরাছে। ইংরেজী পরিভাষার হিন্দী ও বাংলা প্রতিশব্দের বে সরকারী তালিকা পাওয়া বার তাহা সম্পর্ণরূপে গ্রহণীয় নয়, কেমনা অনেকঞ্জল প্রতিশনই সাধারণের পক্ষে বোঝা কঠিন। প্রস্থানি ভিন ৰতে বিভক্ত। প্ৰথম ভাগে রাষ্ট্রসংহতি ও আজিক রাষ্ট্র বিভীর ভাগে শাননতন্ত্ৰ এবং ততীয় ভাগে বিবিধ বিধান আলোচিত হইয়াছে। ভারত-वर्ष ब्राहेम्खन्छ नहरू युक्कबाहेल नहरू देश हैछेनियन वा ब्राहेमःइछि। প্রথম থতে রাষ্ট্রের বরূপ, সংহতি ও আজিক রাষ্ট্রের পরস্পর সম্বন্ধ, বাষ্টিকতা, মৌলিক অধিকার প্রভৃতির, বিতীয় খণ্ডে কেন্দ্রায় এবং আদ্রিক শাসনতন্ত্র, লোকসভা, রাষ্ট্রপরিবং, আইন প্রণয়ন, রাষ্ট্রপতি, মন্ত্রীপরিবং এড়ডির, তৃতীয় থতে আপদর্শ্ব, সরকারী চাকুরি, সমস্ত নির্বাচন, রাষ্ট্র-ভয়ের পরিবর্তন প্রভৃতির পরিচর প্রদত্ত এবং সমস্ত বর্তেই স্বস্থান্ত বহুবিধ জ্ঞাত্রা তথ্য সন্নিবেশিত ইইরাছে। এই তিন খণ্ড ছাড়াও পরিশিষ্টে বাংলা-हेराइकी ७ हेराबकी-वारणा मकार्बशक्की এवर क्यूक्कमणी (मध्या इहेबाइहा এই মুখপাঠা এবং জ্ঞানগর্ভ পুত্তকখানি পাঠ করিয়া কৌতহলী পাঠক ভারত রাইতম সম্বন্ধে একটি সামগ্রিক ধারণা ও জ্ঞান লাভ করিতে शांत्रियम ।

গ্রীশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহ।

দেশের কথা—এবিষণচন্দ্র সিংহ। ৫৯, বারাকপুর ট্রাছ-ভোড কলিকাতা-২ হইতে এবপুর্বাকুক চটোপাগার কর্তৃক প্রকাশিত। প্রচা ১৭৪। মলা তিন টাকা।

দোসরা অক্টোবঃ, ছা কিলে জাত্রহারী, কংগ্রেস, বাংলা ও বার্চালী, আমাৰের কর্মপুটার খস্ডা এবং গানীবাদ ও ৷হলুমুসলমান সমস্তা মোট এই इन्ने अवादि शुक्रकथानि विष्क । वास्त्र कथा कात्रकत नाव्यक्तिक সমস্তাঙলি এতই কটিল বে, সমাধান খুঁ জিয়া পাওয়া খবই লক্ষ। চভালীল গ্ৰন্থকাৰ বৰ্তমান প্ৰকে সাধীন চিতা ও নিৰপেক সমালোচনা-দক্তির পরিচয় দিয়াছেন। কংগ্রেসপথী হইলেও তিনি কংগ্রেসের দোবক্রেট সম্বন্ধে অনবহিত নহেন। বান্তব দৃষ্টিভন্নী দিয়াই তিনি আজিকার সামাজিক ও বাত্ৰীর প্রগতির ধারাকে বাচাই করিরাছেন। কি সামাজিক কি ৰাষ্ট্রীর वांशात जातक कि इरे कि जामर्ग जायाती रह मा. कारकरे ब जब কেত্ৰে নিভ'লতা আশা করা বুখা। কিন্তু ভাই বলিয়া ক্ৰটি-বিচাতির প্ৰশংসা করিতে হইবে এমন কোন কথা নাই। অৱকাল হইল আমরা বাৰীনতা পাইরাছি। এক দিকে ভল ভ্রান্তি অন্ত দিকে অসাধতা ও অবোগতা আমাদের অগ্রগতি ব্যাহত করিতেছে। স্বভরাং পদে পদে এই বাধা ঠেলিরা আমাদিপকে অপ্রসর হইতে হইবে। একেত্রে অবৈর্থা হইলে বা কেবলমাত্র সমালোচকের ভূমিকা প্রচণ করিলে চলে না-লেখক এই সভাটি পাঠক ও দেশবাসীর সন্মধে উপস্থাপিত করিতে চাহিয়াছের ৷ ভিনি বছ দিন ৰোগশবাার কাটাইরা দেশের কলাপ সম্বন্ধে যে সব চিত্তা করিরাছিলেন, অভারের দরণ দিরা মর্কুম্পানীভাবে মেগুলি প্রভাগ করিরাছেন। এইরূপ গ্রন্থ দেশের চিন্তালীল ব্যক্তিয়াতেরুই চিন্তার খোরাক যোগাইবে।

## শ্রীঅনাথবন্ধ দত্ত

কাজল রেথা—এমণি বাগচি। কমলা বুক ভিপো, ১৫, বিষম চাটার্জি ট্রীট, কলিকাতা। দাম হুই টাকা।

গন্ধ জিনিসটি সর্কাশণে সকল বন্ধসের মাসুবের অতান্ত প্রির—বিশেষতঃ
শিশুচিন্তে ইহার প্রভাব অপরিসীয়। জ্ঞানবৃদ্ধির সঙ্গে এক দিকে
বান্ধবের সঙ্গে পরিচর—অন্ত দিকে কল্পনার রাজ্যে তাহার অপ্রতিহত
অভিবান এই ছুই বিপরীত ধারার তাহার চরিত্রের বনিরাধ স্পৃচ্ হুইতে
থাকে। আমাণের শিশুরা আল রুড় বান্ধবের সন্মুখান এবং আমরাও



বাত্তৰকে অভান্ত কঠোরভাবে উপদ্ধি করিভেন্তি, এবং সেই কারণেই रश्राण क्रमात अमील रेजन-निरमक कतियात है एमात बारावणारे আমাদের হাস পাইরাছে। সেকালের মা, ঠাকুরমা, ছিলিমা বাঁছারা শিশুচিতে কর্মার ইম্রুলাল বনিতে অভাত ছিলেন ভাঁচারাও আৰু কঠোর বাস্তবের বুখোরুখি দাঁড়াইয়া সরসবৃদ্ধির চর্চ্চা করিবার অবসর বড় এकটা भाग ना, किश्वा बुरशत भतिवर्खरम काहारमञ्जू क्रिक बमलाहेबारक। কিছ একালের ছেলেরা কি সভাই প্রৱ ক্ষরিতে ভালবাদে না ? কটিব ৰাজ্যবের তিক্ষবাদমাধা প্রহর্তনি চইতে অরত: কিছকণের করও নিছতিলাভের আকাজন কি ভাহাদের নাই ? পল গুনিবার আগ্রহ শিশুদের নিশ্চর আছে, কিন্তু সেই আগ্রহকে করনার উচ্ছল করিয়া তলিবার আরোজনটকট বে আল নাই। লেখক ছেলেম্বের কল এই चार्याक्य कविश प्रकराशार्थ हरेवारक्य। (मकारमय जनकाव कार्याव হুইতে বাছিয়া চমৎকার চারিটি পল ভিনি এই সম্বানে নিবন্ধ করিরাছেন। গরগুলির নাম-কাজল রেখা, কাঞ্চন্যালা, সাণিকভারা, সোনামভি। এওলি অধও বঙ্গের এক প্রান্ত হইতে অক্ত প্রান্ত পর্যান্ত বহুকাল ধরিরা কত লক্ষ মাঠাকুল্মার মুধনিংস্ত হুইরা কত কোটি শিশুর মুবোরুরণ করিরাছে তারার ইবজা নাই। আজিকার মারেদের ভারারও ভারারও বা শ্বতিপটে এই সব গলের ভাঙা ভাঙা টকরা এখনও হরতো চর্ণ হীরকের मठ ऐक्त बहेगा कारह। शबका एथ शनिकाहिएहे नहा अकारक গুছাইয়া বলিবার প্রশংসাও লেখকের প্রাপ:। তা ছাড়া সুমুছণ ও সুন্দর প্রাক্তনপটে বইখানি লোভনীর। পডিরা ছেলেরা ভো আনন্দ পাইবেই-মারেরাও হারানো গলের পুত্র ধরিরা কলনালুক শিশুদের লইরা বিপ্রাহরিক বা সাক্ষ্য আসর জমাইয়া তুলিতে পারিবেন।

এরামপদ মুখোপাধ্যায়

PEPSIN PERSIN PRINTED TO THE PERSIN PRINTED

মাটির কারা— লগিনট্বান। প্রেসিভেলী লাইবেণী। ১৫, কলেল ছোৱার, কলিকাতা: বাংলাবালার, টাকা। বলাছই টাকা।

ক্ষেত্ৰামারের কথা, বলপারীর বুকের কথা অসিমউদ্বীনের কাথ্যে মধুর করণ হুবে বাজিয়াছে। তাঁহার কাথ-সন্মীর সরল লাবণ, সাংলীল গতি এবং প্রাণের দীতি সহজেই পাঠকের মন কাডিয়া লয়।

"রাডের বেলার আঁথারের কোলে ঘুষার নদীর চর, জোনাকী মেরের। অপনের দীপ দে'লার বুকের 'পর। শেব রাজের কোছনার রূপে পরীর। নামিরা আসি । শুঝা শাসুক কুডারে কুডারে থেলার হেধার হাসি'।"

প্রকৃতির এই সব লীলারহন্তে কবি মুগ্ধ। সংসারের ছঃখনৈত্ত অবিচারে তাঁহার হৃদরের কোণ্ড প্রকাশ পাইরাছে কোন কোন কবিভার। শেশুলিতে তিনি অনেক ক্ষেত্রে কথার মাত্রার স্থরের সলতি রক্ষা করিতে গারেন নাই। বেমন, 'নোনার মেরে'-তে—

> "কতটুকু আমি পারিব করিতে, সাধ্য কতবা আছে, মিধ্যানীতি কুসংখার তোর চলিতেছে পাছে পাছে।"

#### 'নিৰ্কাসিতা'ৰ—

"সোনার থাটেতে শরন করির। পান সে করিত রূপোর পেলাসে জল, সেই জলে আজি নানান রোগের বীজাণু আফির। করিতেছে কলবল।" সাম্প্রদারিক দারার নিহত নাজীরের জক্ত তাঁহার .মর্প্রবেদনা পাঠকের রুবরে সাড়া লাগাইবে, কিন্তু তাঁহার 'পাকিছান'-প্রশন্তি অনেকেই হরতো বিধারত চিত্তে গ্রহণ করিবেন। দেশবিভাগে লখও বাংলার ও বাঙালীর কবি উল্লেস্ড হইবেন, ইহা অপ্রত্যাশিত ছিল।

মহাকবি—গ্রহ্মার চক্রবরী বি-এ, সাহিত।বিশারদ, তত্ত্বপু। ডি. এম্ লাইবেরী, ৪২, কবিরালিস ট্রীট, কলিকাতা।

মহাকৰি মধুসুৰনের জীবনকথা লইরা বাংলাভাষার ইতিপূর্ব্বে একাধিক নাটক রচিত হইরাছে। তথাপি এ গ্রন্থ পাঠককে আনকা দিতে পারিবে বিলিয়া আমাদের বিযান। নাট্যবচনার লেখকের খাভাবিক নৈপুণ্য আছে।

নক্সী কাঁথার মাঠ—জনিষ্টদ্দীন। গ্রেনিডেলী লাইব্রেয়ী, ১৫, কলেল কোরার, কলিকাতা, বাংলাবালার, ঢাকা। শুম সংকরণ। মুল্য ১৮০।

ক্ৰিতার প্ৰতি বাঙালী পাঠকসাধারণের বিরাগসত্ত্বে বে ক্ৰিডার বইরের সপ্তম সংবরণ ক্ইরাছে, তাহার নৃতন পরিচর আনাবশুক। অসিম-উদ্দীন বলসাহিত্যে স্প্রতিষ্ঠিত ক্ষি। তাঁহার 'নক্সী কাঁথার মাঠ' ইংরেজীতেও অনুধিত ক্ইরা বিদেশে সমাদরলাত ক্রিরাছে। বাংলার

### জেলে বাখো-

যে কোন ১৭ বংসবের কম ছাত্রছাত্রীকে বিনা টাদায় মাজ ভাক খরচ দিলেই গ্রাহক করা হয় । প্রতিমাসে নিষ্টি সংখ্যক লওয়া হবে। স্থতরাং সন্থর যোগাযোগ কর, কারণ আবেগ এলে আবেগ পাবে।



ছোটদের সাপ্তাহিক ] [ বার্ষিক সভাক ৬৬০ পরিচালক—পোষ্ট বন্ধ নং ২৫৫২ জি, পি, ও, কলিকাডা।

পালীলাবনের, বিশেষতঃ কৃষকজীবনের চিত্র আধুনিক সাহিত্যে আর কেছ এমন করিয়া আঁকেন নাই। এ কবিতা কেবল কথার কৌলল নর, আছারিকতা ও সহম্বতিয়ে সমৃত, তাই ইহা সহজেই ক্ষরকে পার্শ করে।

উত্স নিৰ্জ্জন— এখালোক সরকার। ১০-এ, রাস্বিহারী এছিনিউ, ক্লিকাভা ২০। বলা এক টাকা।

কাৰিকে রচনা আর কৰিতা—সভবতঃ ছুইরের মধ্যে কিছু পার্থক্য আছে। আজকাল কাৰিকে রচনা আনেক দেখি, কিছু কবিতা একাছ বিরল। কুত্রিম কলাকোলল এই সব রচনার প্রাণকে আড়াল করে ইন্দানর। চল্ল নিপুঁত, শন্ধবিভাসে চাতুর্য আছে, কিছু নেই সেই জিনিব বা সোলাক্ষি মনকে গিরে নাড়া দের। এ বইখানি পড়েও সেই কথাই মনে হ'ল। "নিনিমের অবেবণ", আলক্ষ্য হাওরার হাত", "ওরজিত হেসে ওঠা", "এক সুঠি বসন্তের পান —কিছুরই অভাব নেই, কিছু সব মিলিরে কি হ'ল, সহজে বোঝা বার না। তরণ কবিদল নুত্ন পথ-স্কানে উৎস্তুক, বাঁকা পথ ছেডে কি জারা সোলা পথ ধ্ববেন না ?

আবাহন — প্রবীরেম্রকুমার রার। প্রভারতী পাবলিশান', ২০৯, বণ্ডরালিস ট্রাট, কলিকাতা। এক টাকা।
শব্দ ও চলের,উপর কবির অধিকার আছে।

রহিতে নারিমু ঘরে—একালীপদ ঘটক। মিত্রালয় :-, ভানাচরণ দে স্ত্রীট, কলিকাভা। মূল্য আড়াই টাকা।

় কীর্ত্তনের শ্বর শ্রীবিলালের মর্গ্বে প্রবেশ করে, তাকে করেছিল প্রেমন্বয়ে বিভে:র। কুটবুদ্ধি রাজু চক্রবন্তার দল হ'ল ভার শক্রণ। তাকের শন্নতানী চক্ৰান্তে বিপন্ন হলেও জ্বীবিলাস অভানের কাছে যাথা বোরাল না; অন্তনে বাকে সতা বলে জেনেছিল, তারই অসুসরণে চলে গেল প্রায ছেড়ে। শক্রদের চৈতভ উদ্ধ হ'ল ঘটনাবিপর্বারে। কবিশ্বপত্তি উপভাস, কিন্তু প্রথপাঠা।

अधौदासनाथ मुर्थाशाधारा

অগ্নিসম্ভব — এগৌরীশহর ভটাচার্য। মিন্সালয়, ১০, ভাষাচরণ দে ট্রাট, কলিকাডা-২২। মল্য ৪০ আনা।

লেথক অমুবাদ-সাহিতো ফুনাম অর্জন করিরাছেন। আলোচ্য পুত্তকথানি তাঁহার মৌলিক উপস্থাস। উপস্থাসের গোড়ারই আমাদের পরিচর হর খনামধস্তা চিত্রাভিনেত্রী রমিতা মন্ত্রমানরের সঙ্গে। ক্রমে এই চিত্রাভিনেত্রীর বিগত জীবনের একটি অতি করণ অথার পাঠকের চোধের সামনে উল্লাইত হয়। আজিকার রমিতা তথন ছিল সাজ্নানামে পরিচিতা। বৈজের মেরে ব্রাক্ষণের ছেলে মিহিরকে বিবাহ করিল বাপের অমতে এবং ঘটনাচক্রে এমন একটা সমর আসিল বথন এই মিহিরই নিজের স্ত্রীকে বিপলগামিনী হইতে বাধ্য করিল। এখানে সাজনার অতীত জীবনের উপর ধ্বনিকাপাত হইল। লোকে জানিল সে মরিরাছে, কিন্তু সে নমিতা মন্ত্রমানির নামে নুহনরূপে আত্মশাক করিল। পৃথিবীর সমর্য পুরুবজাতির উপর প্রতিশোধ গ্রহণ করিতে দেব অপরিকর ইইল—ফুরু হইল তার নুতন জীবন। কিন্তু বাঙালীর মেরে রমিতা—শিক্ষিতা রমিতা উচ্চুখ্যল জীবনকে বাছিরা লইলেও অল্বরের সহিত ইহাকে গ্রহণ করিতে পারে নাই, তাহার দেহে মনে দেখা দিল



বিপৰ্বার । এই সময় ডাং প্রভাৱন সম্ভাবের সজে ডাহার বনিষ্ঠ পরিচর ঘটন। প্রভাৱনকে আন্তার করিয়া সে নৃতনতাবে বাঁচিরা উঠিতে চাহিল। কর প্রভাৱনকে আন্তার করিয়া করেনে পাড়ি অমাইল। সমিতা বিভিন্ত হইল, কুর হইল, কিন্তু আনা ছাড়িল না। বির করিল, প্রভাৱনের কর্মের মধ্যেই ডাহাকে বাঁচিরা থাকিতে হইবে। উাহার আনা-করিয়া আসিরা একটি বিরাট হাসপাতাল পুলিতে সে কৃতসম্ভব্ধ। রমিতা পর পর পাঁচথানা ছবি তুলিবার কন্টু।াই করিয়া বসিল। প্রভাৱনের পরিক্রনার বাত্তর রূপ দেখিতে হইলেবে প্রচ্ন আর্থের প্রয়োজন। রমিতার সভ্যা এই টাকাটা সে তারই হাতে তুলিরা দিবে, আর নিজে সেবাধর্ম প্রহণ করিয়া আস্তা ডাহার পাশে থাকিয়া করিবে।

কাহিনীট মোটাষ্ট এই। সমিতার চলার পথে আরও বর্ত নর ও নামী ভিড় করিরাছে। তাহারা সকলেই নিজ নিজ বৈশিষ্ট্যে কুটরা উঠিলছে। লেখকের লিপি-সংব্য সহজ সাবলীল ভাষা এবং শাণিত সংলাপ পুত্তকথানিকে ডিডাকর্ষক করিরা তুলিরাছে।

ঐবিভৃতিভূষণ গুপ্ত

স্তৃতিমালিকা— একেলাসচল্ল স্থৃতিতাৰ ও এশিৰ্কিছর কাৰ্তীৰ্থ স্থলিত এবং মুশিনাৰাদ, পোঃ থাগড়া, 'বহুরমপুর জুবিলী' টোল হইতে প্রকাশিত। ১২ + ৬ পুঠা। মুল্য এক টাকা।

এই প্ৰছে প্ৰাত্যকালে সংগীয় ক্তাদি হইতে আৰম্ভ কৰিছা তেইশটি বিভিন্ন দেবীয় ক্তৰ, ছুইটি কাতীয় সজীত, বহু দেবদেবীয় ধানি-প্ৰণাম এবং মৃত্তিকানির্মিত শিবপুলাবিবি ছান পাইরাছে। অবিকাংশই প্রসিদ্ধ প্রাচীন গুবের সংগ্রহ, নাজ করেকটি প্রথম সন্থলকের এবং একট বিভীর সকলকের বিরচিত। লাভীর সলীতের প্রথমটি থবি বহিনের 'বজ্বোভারন'ও বিভীরট রবীক্রনাথের 'জনগণ মন অবিনারক'। প্রাচীন গুব-ভনি স্থনির্বাচিত এবং সন্থলিতিলের রচিত গুবগুলিও ছুন্দের মাধুর্ব্যে, শক্ষের বন্ধারে এবং ভাবের সরসভার সমুজ্বল। এই স্থপ্রবিত মানিকা বর্ণপ্রধান ব্যক্তিমাজেরই কঠে পরিশোভিত হইবার বোলা।

শ্রীউমেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী

স্ত্ৰেরত্বসূম্—এচপলাকার ভটাচার্ব্য-সন্দানিত। প্রবর্ত্তক পাবলিদার্স, ৬১, বহুবাজার ট্রাট, কলিকাডা। বুলা বার জালা।

শ্রীব্দ্নাচার্য্য বিরচিত 'ভোত্রেরছ' প্রবিটিটি লোকে সম্পূর্ণ। সম্পাদক চপানাবার লিখিরাছেন—"১৯২১ সালে অসহবার আন্দোলনের কর্মারপে 'আল্লম' আব্যান্তক একটি ক্লিনিবাসের সহিত সংলিট হইলাছিলাম। তথাকার উবাকালীন প্রার্থনার ব্যুনাচার্য্যের 'ভোত্রংছম্' হইতে করেকটি লোক পঠিত হইত। --- লোক কর্মাইর ভাবমহিমা ও অসাভ্যান্তিক দৃষ্টিভঙ্গী মনকে বিশেবভাবে মুক্ত করিমাছিল। শ্রীশ্রীচৈতক্ষচরিভামৃতের মধ্যে ব্যুনাচার্য্যের স্থোত্র হইতে বে কর্মটি লোক উদ্ধৃত হইরাছে ভাহা পাঠকরিরা মনে অপুর্ব্ধ ভাবাবেশ অমুভব করি এবং সম্পূর্ণ ভোত্তান্তির স্কালকরিতে থাকি।" এই অমুসন্ধানের কল আলোচ্য পুত্রকথানি। প্রতিটি রোকের সঙ্গে সরল বাংলা ব্যাখ্যা থাকার স্থাবণ পাঠকের ব্রিবার পক্ষে



বিশেব ক্ৰিথা হইরাছে। ভূমিকার বহুনাচার্ব্যের সংক্রিপ্ত পরিচরও সম্পাদক মহাশর বিরাহেন। চৈতজ্ঞচরিভার্ডের কোন্ কোন্ হলে ইহা হইতে লোক উক্ত হইরাহে, ভূমিকার পালীকার তাহারও উরেধ আহে। পুতক্ষানি ক্সম্পাদিত। সম্পাদক মহাশরের মঙ্গে কণ্ঠ মিলাইরা বলিঃ "বাক্য ও মনের অভীত অখচ বাক্য ও মনের আঞ্জর বে মহৎ সন্তার অপূর্ক্ষ উপলব্ধি এই ভোত্রের মধ্য দিরা প্রত্যক্ষ তাহারই উল্লেক্স আমার শেব প্রণ্ডি।"

গোকুলচন্দ্র মিত্র ও সেকালের কলিকাতা ( প্রথম ভাগ ) – জীরাজেন্দ্রমার মিত্র। ভার, কে, গাবলিশিং কোং। ১১-এ, গোকুল মিত্র লেন, কলিকাতা-৫। মুল্য ভাডাই টাকা। সচিত্র।

# গভভা, কৰ্ত্ত্যদিষ্ঠা ও কাৰ্য্য কুণপভার নিদৰ্শন ব্যাক্ত অফ্ বাঁকুড়া লিমিটেড

বাংলার ব্যাদ্বিং জগতে বিরাট বিপর্যার সন্থেও ভারত সরকার হইতে পাঁচ লক্ষ বাট হাজার টাকার শেরার বিজ্ঞারের অন্তমতি পাইয়াছে। শেরার বিজ্ঞার সংক্রাম্ভ ঘোষণা শীম্বই ম্থারীডি প্রকাশিত হইবে।

চেয়ারম্যান—**শ্রীজপদ্ধাথ কোলে**ম্যানেজিং ভিরেক্টার—**শ্রীক্রিজাল ব্যানার্জি** 

# ছোট ক্ৰিমিনোনের জন্যৰ উষধ "ভেরোনা হেলমিন্থিয়া"

শৈশবে আমাদের দেশে শতকরা ৩০ জন শিশু নানা জাতীর ক্রিমি রোপে, বিশেষতঃ কৃত্ত ক্রিমিতে আক্রান্ত হয়ে ভার-আন্তা প্রাপ্ত হয় "ভেরোকা" জনসাধারণের এই বছদিনের অক্সবিধা দূর করিয়াছে।

ৰ্ণ্য—৪ আঃ শিশি ডাঃ মাঃ সহ—২॥ আনা।

ভবিত্ৰেণ্টাল কেমিক্যাল ভবাৰ্কস লিঃ
১৷১ বি, গোবিন্দ আড্ডী বোড, কলিকাডা—২৭
কোন—সাউষ ৮৮১

অধাণক বীবৃক্ত সমধ্যোহন বহু পুত্তকের ভূমিকার লিখিরাছেন বে, লেখক গোকুল বিজের বংশধর, স্ত্তরাং এই বংশের অনেক পুরাতন দলিলপত্রের উপর নির্ভিন করিয়া লিখিত, এরপত ভূমিকার বলা হইরাছে। পুত্তক্থানি পাঠে গোকুলচক্র মিত্র-প্রসাদে কলিকাতার বহু পুরাতন থবর আমরা বানিতে পারি। কিন্তু বিদ্যানিক বৈজ্ঞানিক প্রভিত্তান হইলে ইহা অধিকতর স্থাপাঠ্য হইত। কলিকাতার পূর্ণাক ইভিত্তান রচনাকালে এ বইথানির প্রবোলন হইবে নিক্র।

যে গল্পের শেষ নাই (এখন খণ্ড)- এদেবীপ্রনাদ চটোপাধার। দি কালকাটা বুক ক্লাব লিঃ। ৮৯, হারিদন রোভ, কলিকাতা-৭। বুলা এক টাকা চার আবা।

পৃথিবীর ক্ষমান্ত কানিবার কোতৃত্ব মান্ত্রের ঘবে চিরজাগরক রহিয়াছে। হিন্দু, ইবলী প্রমুধ প্রাচীন কাতিসমূলের নিজ নিজ পালপ্রছে এ বিবরে নানা আলোচনা আছে। বিজ্ঞানও বসিরা নাই। আধুনিক বৈজ্ঞানিক গবেবশার কলে পৃথিবীর উৎপত্তি, প্রাণের জন্ম, মান্ত্রের পূর্ব-পূর্ব-ইত্যাদি সক্ষে জনেক বিবর জানা গিরাছে। আবার 'পাহাড়ের বই' হইতে কীবজনতের ক্রমান্তি সক্ষেত্র আমরা নানা ন্তন তথা জানিতে পারিয়াছি। মানুষ তথা মেরলগুবিশিষ্ট কীবের পূর্বপূর্বন 'মাছ'— তনিতে কেমন লাগে। অবচ এই সকল কাটল বিবর গ্রুছলে অতি সহল ভাবার লেখক বলিয়াছেন। প্রতিটি বিবরের সজে চিত্রাদি সন্নিবেশিত হওরার ইহা চোধের সন্মুবে ভাসিরা উঠে। পুত্তকথানি অলবরক্ষদের জন্ত লিখিত। এইলেশ সহল ভাবার বিজ্ঞান-পুত্তক রচনার বিশেষ আবস্থকতা আছে।

"শ্রীমতী অনিলা দেবী"—এই ছল্মামে ১৩২০ সালের 'বল্না' বাসিকপাত্রে লেখকের 'নারীর বৃলা' শীর্থক প্রবজাবলী বাছির হয়। পাতে ইছা
পুক্তকাকারে প্রকাশিত হইরাছে। আলোচা পুক্তকানি প্রকৃতপক্ষে
ইহার তৃতীয় মূল্রণ। শরংচক্র নারী-জাতির প্রতি কিরুপ দরলী ছিলেন
তাহা তাঁহার উপজাসরাজি পাঠে আমরা বৃজিতে পারি। কিন্তু ইহা
তাহার পক্রে মোটেই আক্সিক নহে। তিনি নারী-জাতির ছংখ-মুর্কণা
প্রভাক করিয়াছিলেন, আবার ইতিহাস, প্রমণবৃত্তান্ত ও সমাজভত্ত্রক
প্রভানি পাঠে বিভিন্ন বুসের ও বিভিন্ন দেশের সমাজে নারী-জাতির ছান
সক্ষেত্রে বিশেষ জান আহরণ করেন। নারীর ছংখ সম্পর্কে প্রজাক ও
আন্তর্ক জান তাঁহার মনকে একেবারে দরদে ভরপুর করিয়া তোলে।
বিভিন্ন উপন্যাসে তাহা বেন উপচাইয়া পড়িলাছে। শরংচক্রের জানের
পারিধি বে কত বিচিত্র ও গভীর, বল পরিসরের এই প্রক্রধানি পাঠ
করিলে তাহাও পাঠকের সমাক উপলব্ধি হয়।

बैरगार्गमध्य वागन

# দেশ-বিদেশের কথা

ব্যাত্ত্রাম সেবায়তন আশ্রেমের বার্ষিক উৎসব গত ১৪শে ও ২৫শে ভিসেবর বাছনার সেবারতন আশ্রেমর বার্ষিক উৎসব স্বালোহের সহিত উদ্বাণিত হইরাছে। প্রথম বিন রাক্ষরুর্তে, আশ্রনবৈভালিকগণের প্রভাতী কীর্ত্তনের পর আশ্রনাচার্য্য প্রবংশারী সভ্যানক নিরি আশ্রন-গভাকা উভোলন করেন। অপরাছে সেবারতন-বিদ্যালরের ছাত্রগণ কুচকাওরাক্ষ সহকারে কাতীর পভাকা অভিবাদন করেন। তৎপরে প্রবংশারী সর্বানক নহারাকের পৌরোহিত্যে যোগনন্দির-প্রালণে এক সভার অন্তর্ভান হর। উভর অন্তর্ভানেই আশ্রনের ভজ্জ-নতনী ও বিভিত্ন ছানের বহু মরনারীর স্বাবেশ হর। বিভীর বিন বালকগণের জীড়া-প্রভিরোগিতা হর। সন্ধার প্রার ছুই শত বোগপন্থাবলনী সাধকের স্বাবেশে জিয়াবোগ সাধন ও বার্শনিক ভল্পন্তের আলোচনা হর। কেলা প্রচার বিভাগের চলচ্চিত্র প্রধর্শন সকলের আনক্ষ বর্জন করে।

### অনিলচন্দ্র রায়

ভারতের খাবীনভা-সংগ্রাদের অঞ্চর সৈনিক, বাংলা বেশের অগ্নির্গর কর্মী, এবং পরবর্জী জীবনে সুভাষবাদী করোরার্ড রকের নেতা অনিল রার গত ২১শে পৌর কলিকাতা বেভিক্যাল কলেক হালপাতালের অন্তর্গত প্রিল অব ওরেলল হালপাতালে পরলোকগরন করিবারেন। চ্রভ আরিক ক্যাভার রোগে আক্রাভ হইরা তিনি অরোপচারের অভ বিশিষ্ট সার্জেন ডাঃ পঞ্চানন চ্যাটার্জির চিকিৎসাবীনে হালপাতালে ছানাভরিভ হন। কিন্তু অরোপচারে আরোগ্যের সভাবনা নাই ব্রিভে পারিরা ডাঃ চ্যাটার্জি অরোপচারে বিরভ হন। সহবর্ষির প্রীর্জ্ঞা লীলা রার, ছোট ভাই প্রীক্ষমন রার এবং হই কন করোরার্ড রক্ কর্মীর উপস্থিতিতে অনিলবার্ ভোর ৪টা ৪৫ নিনিটে শেষনিঃখাস ভ্যাস করেন।

অনিলচক ১৯০২ সনে ঢাকা জেলার মাণিকগঞ্জের বিরারা থানে ক্ষর্যাহণ করেন। তাঁহার পিতা অক্ষণ রার হিলেন একক্ষণ বিশিষ্ট শিকাবিদ্। অনিল রার ১৯২২ সালে ঢাকা হুইতে ইংরেকী সাহিত্যে এব-এ, ডিগ্রী লাভ করেন। ছুলে হারকীবন হুইভেই তিনি বিপ্রবালক রাক্নীভিতে অংশ গ্রহণ করিতে থাকেন। ১৯২১ সালে 'শ্রীসভং' নামে ভিনি এক সমাজ-সেবা প্রভিত্তান গঠন করেন। ১৯২৮ সালে ভিনি রাক্ষীভিতে বোগদান করেন নেভাজীর নেভুত্বে ভিনি কংগ্রেলে বোগ দেন। ১৯৩০ সালে রাক্ট্রভিক্ কারণে প্রেপ্তার হুইরা ১৯৩৮ সাল পর্বান্ত আইক থাকেন। ১৯৪০ সালে নেভাজীর সহিত করোহার্ত রুক্ত গঠনে ভিনি বিশ্লেক কর্মপ্রথন-

প্ৰতাৱ পৰিচৰ প্ৰাৰ ক্ষেৰ। ১৯৪১ সালে পুৰৱাৰ প্ৰেণ্ডাৰ হইবা ১৯৪৬ সাল পৰ্যান্ত ভাৰাকে ভাষাবাসে ভাটাইতে হয়। ১৯৪৭ সালে 'ক্ষোৱাৰ্ড ক্লকে'ৱ সঙ্গে সঙ্গে ভিনি কংপ্ৰেস ভ্যাপ ক্ষোৱা এবং পৰে ক্ষোৱাৰ্ড ক্লক হুইট ভাগে বিভক্ত হুইলে স্থাববাহী ক্ষোৱাৰ্ড ক্লেৱ নেভয়ভাৱ প্ৰহণ ক্ষেম।

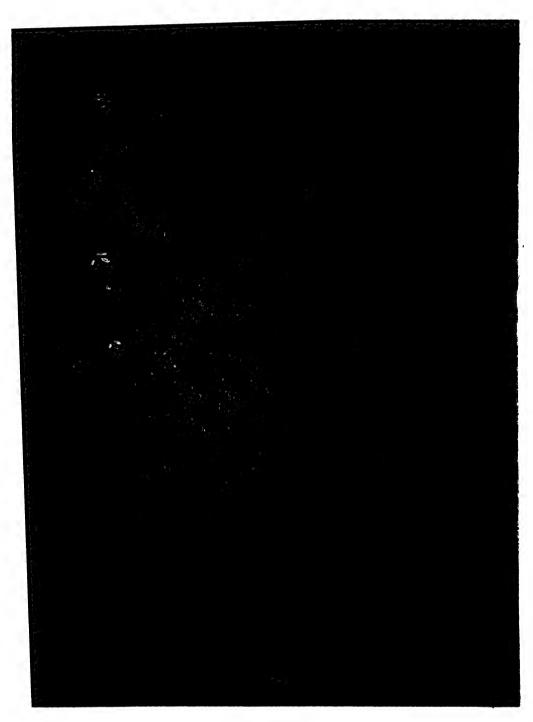
রাজনৈতিক জীবন হাড়া অনিলচক্রের সাহিত্যিক জীবনের কথাও বিশেষতাবে উল্লেখনোগ্য। উচ্চার পাঙিত্য এবং মৌলিক রচনার খ্যাতিও হিল। সদীতত ও কলা-রিকি সমাজে তাঁহার বিশেষ সমাজর হিল। তিনি অপ্রগানী সক্ষ নামে একট সাংকৃতিক প্রতিষ্ঠান গঠন করেন এবং "নেতাজীর ডাক" নামে মৃত্য-নাট্য রচনা ও পরিচালনা করেন। "পার্টি এও লীডারশিণ", "সমাজভন্তীর দৃষ্টিতে রার্জবান্ন", "নেতাজীর অীবন-বাদ" প্রভৃতি তাঁহার রচিত পুতক। তিনি ইংরেজী, বাংলা, হিলী ও উচ্চ ভাষার স্থকটা ভিলেন।

বদবিভাগের পর ভিনি উবাভাগের সাহায্য ও পুনর্বাসনকার্ব্যে অফ্লান্ত পরিপ্রব করেন। তাঁহার সংগঠনী প্রভিভা,
অব্যবসার, একনির্ভা এবং অমাত্রিক ব্যবহারের জন্ত ভিনি
সকলেরই ভালবাসা ও প্রভা আকর্ষণ করিরাহিলেন।
আনরা তাঁহার ক্রোগ্যা সহর্থিনী শ্রীমভী লীলা রার এবং
তাঁহার অভান্ত আত্মীরস্কনদের শোক্তে সহবেদ্যা প্রভাশ
করিভেন্নি।

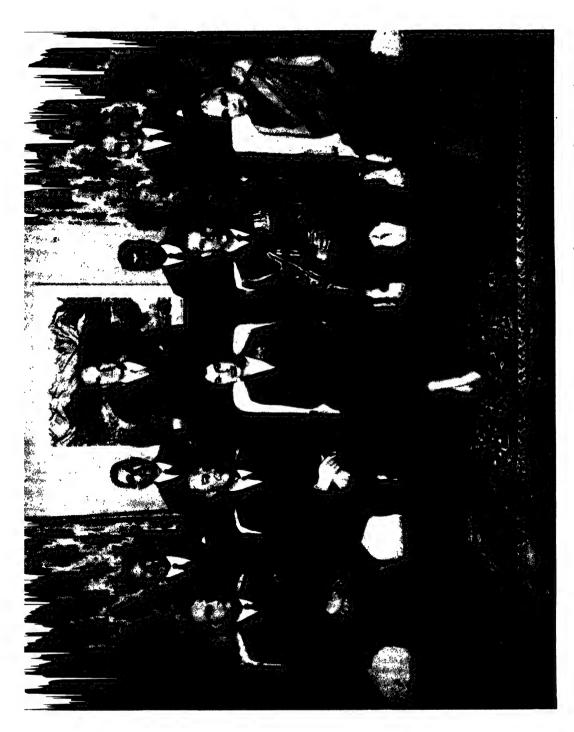
## প্রমথেশ বড়ুয়া

চিত্র-নাট্যকার, চিত্র-পরিচালক ও অভিনেতা প্রমধেশ বজুরা অকালে মর্ত্যলোক ত্যাগ করিরা গেলেন। তাঁহার স্বভির উদ্দেক্ত সমান প্রদর্শন ও তাঁহার স্বভি-রন্ধার ব্যবহার কচ গত ২রা পৌর নক ও চলচ্চিত্র নিরিপণ কলিকাতা ইউনিভার্গিট হলে এক স্বভি-সভার আরোজন করেন। প্রভারাশন্তর বন্দ্যোপাধ্যার উক্ত সভার সভাপতির আসন প্রহণ করেন।

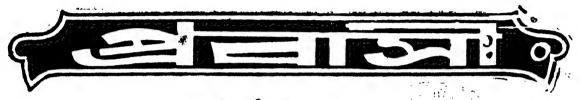
প্রবংশন আসাবের গুবড়ীর অভর্গত গৌরীপুরের রাজা প্রভাতচল বভুরার ভাঠে পুর। প্রভাতচল ছিলেন বাংলা সাহিত্য ও সংছতির একজন পরিপোষক। রলপুর সাহিত্য পরিবদের সক্ষে তাঁহার বনিঠ সংবোগ ছিল। ছারাচিত্রের ক্ষের প্রবংশের বভ অভিজাতপরিবারের ব্যক্তির আবির্ভাব অনেককে বিচলিত করিবাহিল। কিছ তিনি এই ক্ষেরে প্রচুর সুনার এবং সর্ব্বভারতীর প্রতিঠা অর্জন করিরা বাংলা-বেশের গৌরব বৃদ্ধি ভরিষা গিরাহেন। আমরা প্রবংশেবার্র পরিবার-পরিজ্বনের উদ্বেক্ত সহাত্ত্তি প্রকাশ ক্রিভেছি।



বুদ্ধের বৈরাগ্য শ্রীসম্ভোষ সেনগুপ্ত



नद्रमाक्त्रम (ट्यू किम देशा ७३ वाम विकोष अमिकारवर वनिष्ठा विष्याधिक हत्र्यारस्य । किस्सम मार्थन भार्ष केपविहे शिष्ठका विकासम्पी भिक्त ওভাশিংটনছ কানাভার দুভাবাসে বিটিশ কমনওখেলবের অভুসূত্ত দেশসমূহের দৃভগণ সহ রাজ্তুনামী এসিজাবেশ। সম্রাতি রাজা যঠ অপের



"গভাৰ শিবৰ পুলৱৰ শাৰনাকা বলচীনেৰ সভাং"

১৯ খণ্ড ১ম খণ্ড

# कांखन, ५००५

ट्रिंग मध्या

# বিবিধ প্রসঙ্গ

## পশ্চিমবঙ্গের নির্ববাচন

বাংলার ভেটিযুক ত শেব হইল, এখন ভবিষ্যতে কি লেখা আহে ? অবস্ত এ কথা বলা চলে বে, "নীচের ভলার" ব্যাপার শেব হইবাহে বটে, কিন্ত "উপরের ভলা" এখনও খালি এবং লেখানকার নির্মাচন শেব না হওৱা পর্যন্ত শেব কথা বলা বা লেখা বৃত্তিযুক্ত হইবে না। উপরের ভলার কথা ননে রাখিরাও আমরা বলিতে পারি বে, বাংলার ভবিষ্যতে ভোনও বিশেষ আলোর বেখা আমরা এখনও দেখিতে পাই নাই।

নিৰ্মাচন বে ভাবে ভ্ৰৱাছে ভাতাতে একণা সুলাই বে. বেশের শিক্ষিত সাধারণের অবিকাংশ হর অবসাদএত হইরা এ বিষয়ে উলাসীন ছিলেন নয় সাময়িক উভেক্ষার বৰ্ণে লাহিত্তীয় ভাইভেলাপ ভহিচাতের। विचारव विकास इतिशादिक क्षांतारक श्राम कर कामक प्राम विकिश लाटकर ৰবো শতকরা হল অবও ভোট বিহাতের কিনা সন্দের। দেলের ভবিষাং সহতে এইৱণ ওঁদাসীত পিক্তি বাঙালীর একটা প্রকৃতিগত নিরবে ইভাইরাতে। ইতার ভারণ কি ভাতা নিরূপণ করা প্রবোজন। কেননা উহার প্রতিকার বা হইলে ভাতির क्रफ चनकि द्वार कहा मचन हरेटर मा । अनादार निर्द्धाहरम बारमात कामब्रा श्रेकांक केमजब वह गारे नहा, किन कावा व्यवानीय निवयमुधनाय ७किय পविচायक मत्त्, वयक निवादक चननार ७ चनटबलाइरे পরিচারক। বাংলার निक्कि नवाक ववाविक (अवेटकरे शरक। अरे विक्तांत्राय रेडा अवाविक वरे-বাহে বে, ভাতার জীবনীপক্তি অভি জীব এবং চিভাপক্তি বারুব THINE!

এ বিষয়ের বিশেষ পরিচারক বাংলার লেই সকল সংবাধ-শন বাহা এবনও শিক্তি বাঙালীর রূপণন লগে পরিচিত। এই শির্কাচনে বিভিন্ন বলের রূপণন হুই একট হাড়া আর সকলেই অতি সভর্পনে বৌনন্ত অবলবন করিবা "কুল বাঁচাইবার" চেঠা করিবাহেন। বাভবিক আবরা বিগত বিশ-চরিল বংগবের বিভিন্ন নির্মাচনের অভিজ্ঞভার বাংলার সংবাদপরের এইরপ নির্মাণ কড়ভাব কথনও ধেবি বাই। ইহাও বাঙালীর জীবনী-শক্তির হাসেরই পরিচারক। সংবাদপরের কথা আরলা ব্রিভে পারি, কেনলা হরত দেখলির পরিচালকবর্গ নিজেকের ভবিত্রভের চিন্তা আগে করিরা কাহাকেও চটাইতে চাহেন নাই, এই তর ছিল বে, বহি-বা বাহাকের সর্বন করি ভারারা হারিরা বিপক্ষ কল ক্ষরভারাও হর, ভবে ভারারা নিক্তরই প্রভিহিংসার চেঠা করিবে। কিছু পাঠকবর্গ কি ভভোবিক জ্যাপ্রভ ছিলেন, না হইলে জ্যাপ্রশ বাবহীন, সারহীন বঙ্গ ভারারা দিনের পর বিন ক্যিরপে সলাবংকরণ করিলেন স্বভ্রতারা দিনের পর বিন ক্যিরপে সলাবংকরণ করিলেন স্বভ্রতারা ক্রিনের ভারোর আন্তর্মন এই সভিক্ষণে বাংলার সাংবাহিক গোরীর প্ররণ করিবে। ফ্রান্ট অভিশ্ব হুংবক্ষক।

এবারের নির্মাচনে প্রধান স্কর্টব্য বিষয় এই বে, অর্মাচীরের হল প্রায় সকল নগর কেলে এবং অনেক প্রায় অকলেও হইরাছে। তবে প্রবের বিষয়, প্রাবের লোক বর্রুক অনেক কেলে হল অপেকা ব্যক্তিছের উপর অবিক ভক্তম্ব আবোপ করিবাছে। তাহারা উকিট না কেবিয়া লোক চিনিবার চেটা করিবাছে এবং নির্মাচনের বিষয়ে পরামর্শ প্রহুবে কিছু বৃত্তি-বিবেচনা প্রয়োগের চেটা করিবাছে। তুল-আছি ভাহাদের যে হর নাই ভাহা নহে, কিছু নগরের লোকের রভ বিশরীত বৃত্তির ব্যবহারে নিজেবের ননের আলা বিটাইবার চেটা ভাহারা এভটা করে নাই। বোধ হর শহরে লোকের ভার জান-বৃত্তি সেরপ না বাকার ভাহাদের বৃত্তিজ্ঞর এভটা হর নাই।

বাংলার নির্মাচনে কোন বলই কয়নুক্ত হর নাই, কেন্দা নির্মাচনের কলে বলি বাংলার ভবিত্তবের অবলার ভিছু লাবদ না হর ভবে লে অব-পরাজবের বৃল্য কি ? কেন্দ্র কিনিভে পারেন বে, এই নির্মাচনের কলে পশ্চিম-বাংলায় বিবাবনতা অবিক্তর কার্যাকর বা সবল হইল বা এই নির্মাচনের কলে বাংলার সরভাপুর্ব ভাগ্যপর্ব ভিছুবাল পুর্গর হুইল ? আমরা বেবিভেছি সকল বলেবই বব্যে বে কর্মন্দ চিছালীল বা বোগ্যভালন্দর ব্যক্তি ছিলেন ডাঁহাদের ব্যক্তিগত ওপের কথা বলিভেছি, দলগত রভারভের লহে—ডাঁহারা প্রার লকলেই পরান্দিত হুইরাছেন। ইহার ভারণ প্রভ্যেত বলেবই প্রবান চেঠা ছিল বিপক্ষের প্রেঠ লোক্রিগকে পরান্দিত করা। এইরূপ হওরার কলে সংখ্যাগরিঠ বলের বব্যে বোগ্য লোকের নিবারুণ অভাব ভো হুইরাছেই, বিরোধীবলের বব্যেও হারিছ্যামসম্পর লোকও অভি অর। স্তরাং রাই চালনার ব্যাপারে অবিকারীবর্গের ফ্রাই-বিচ্যুতি ও অক্ষরভার কারণে বেশের প্রগতি বেরূপে ব্যাহত হুইবার আলহা হহিল, অভ বিকে বিপক্ষের বিচারশ্ব্য বাবাধানেও দলের বার্থও সেইরূপে ক্রার হবার সভাবনা রহিল। কাওজানপ্র্য বলাবলির কল বাহা হব ভারাই কেশবালীকে ভঙ্গিন ভোগ করিছে হুইবে বভ্রিন উল্লেখ্য এ বিষ্যের হৈত্যনার উল্লেখ্য ব্যাহার এ বিষ্যার প্রত্যার উল্লেখ্য ব্যাহার ।

নিৰ্মাচন পরিচালনা সহতে এখন লিখিবার সনর আসে
নাই, কেননা কভকতলৈ "অলৌকিক" ব্যাপারের কোনও
ন্যারসকত কারণ আনরা এখনও বুঁজিরা পাই নাই, বলিও সে
বিষয়ে অক্সভান আনরা করিছেছি। বধাসময়ে সে সকলের
এবং এবারের নির্মাচনের প্রকৃত রূপ সহতে বিচার করা
নাইবে। আপাততঃ এইনার বলা চলে বে, দেশের লোক
এখনও নির্মাচনরপ বত্তর ব্যবহারে অভিজ্ঞতার অভাব সর্মান
ক্রেই দেখাইরাছে।

কলাকৰ ৰাহাই হউক, এখন কিছুকালের বত বেশের লোক নিজেবের ভাগ্য নিরম্ভণ করিল। বাহারা নির্কাচিত হুইরাছের তাঁহালের লকলেই—বিনি বে কোনও ফলের হউন না কেন----বি বিধান সভার ও লোকসভার পূর্ণ বারিত্জান লইরা প্রবেশ করিছে পারেন ভবে বাংলার ভবিষ্যৎ এখনও প্রসর হুইতে পারে।

### ডাঃ বিধানচন্দ্র রায়ের পরিকল্পনা

কি পরিবেশের বব্যে বাংলার তাগ্যনিররণ আগানী কর বংসর চলিবে তাহার সামান্য আতাস আমরা দিবাছি। এবন সে বিবরে বাংলার রুব্যমনীর বারণা কিরপ তাহাও জানা রারোজন। বলা বাহল্য, সেই ভাতব্য তব্যের পূর্ণ পরিচর পাইবার সময় এবনও হর নাই। তবে রুব্যমনীর নিকট আমরা তাহার আগানী চার বংসরের কার্য্যক্রের একট নত্না পাইরাছি তাহাতে তাঁহার বারণা সভার্কে ইলিভও পাওরা বার।

পশ্চিমবদের মুখ্যবন্ধী ডাঃ বিধানচক্র রাম রাজ্যের করেকটি প্রবান সমভা সমাধানে পরবর্তী চার বংসর সমভার কি পরি-কলনা অনুসরণ করিবেন, ভাষার এক চিত্র সাংবাদিকগণের সন্তুবে উপস্থিত করেন। মুখ্যমন্ত্রীর বাসতবনে রবিবার ২৪শে রাখ অপরাছে অন্তর্গত এই সাংবাহিক সন্মেলনে প্রথমতঃ উবাত সমভা ও তংসপর্কে সমকামী পরিকল্পনার কথা অবভারণা ক্ষিণা মুখ্যমন্ত্রী বলেন, হিসাব ক্ষিয়া বেখা সিয়াহে, পূর্ববন্ধ হইতে আগত অন্তর্গান সাভে একুশ সক্ষ উবাতর বব্যে দেক সন্দের মত উবাতর জীবিকা সংখ্যম ক্ষিয়া দিকে হইবে এবং গড়ে সক্ষলের বর্তনান আবের পরিমান বৃদ্ধি ক্ষিতে হইবে।

উহাত সম্পর্কে ড': রাহের বির্ভিতে সম্ভাপরণ বিষয়ে व्यविदा मुख्य किन्नहे शाहे गाहे। बाबदा बिट्याद वाकिन्छ অভিজ্ঞভাৰ বলিভে পারি বে. ঐ সম্ভাপুরণ ভবনই সম্ভব ভইবে বৰ্ণ ভারত-সরকার পাকিছানের হিন্দু সম্পর্কে সক্ষিরভাবে किया कविदयम. अवर तारे जान देवां व या श्रीवासम (व धेवाचित्रत निर्द्धात्रक अ विश्वत्व श्रामाणात्वत शतिवर्धम व्याबाबन, क्वनवाल भारत जालात्वात क्रेमत विक्त क्रिक ভাঁহাদের অধােগভি ফ্রন্ত হুইভে ফ্রন্ডভাই হুইবে, এবং বৰ্তমানে যে বিষাক্ত ভাওৱা অৱস্তৱ বভিত্ততে ভাভারও বৃদ্ধি चित्रिक केरत । प्रेक्षच ममलाव ममाबादम विकास करें। চলিভেছে ভাহাভে আমরা বলিভে বাধা বে, উচা পশ্চিমবদ नवकार्यत, जना जावात केळजम जनिकाबीनर्रात, जावरणत छ क्षमणात नाहित्व हिन्ता निवाद्य। जाः बात्वय अ नियद बर्बर्ड कुल बातना चार्ट, अवर अ विवयत जूरवाना मन्नी ७ कर्षाती निवासिक निविता रेकिन्दर्स दक्षात नामात क्टबरे विभवीक विटक मेकारेबाटकः। ज्ञूकतार जरानायमञ् तिहै। कविएक करेतन संबद्ध सार्वाकन का: वाद्यव क्षेट्रकारनंद शिवर्षम ।

প্রসকত: তিনি ছোট ছোট শহর নির্দাণের পরিক্রনার উদ্ভেত বর্ণনা করিয়া বলেন, প্রধানত: পশ্চিমবলের নথাবিছ সম্প্রদায়ের বাসহানের সলে সজে কর্মপ্রান করিয়া কেথবা এবং প্রানের সহিত শহরের বনিঠ সংবোগ রক্ষা করাই ইহার মূল কক্য।

এই ছোট ছোট শহর বিশ্বাণের ব্যাপারে বতটা কাল
হইরাছে ভাহাতে দেবিয়াছি স্বচ্ছর রাজকর্মচারী ও উল্লাদের
আত্মীর-বত্ন গোজীরই উপকার অবিক হইতেছে। বাহাদের
কল্য করিবা এই কলক পরিক্রনা রচিত ভালাদের অবস্থা "বে
তিনিরে সেই ভিনিরে।" বত্তঃপক্ষে বাত্তবৃত্ন উৎপাতে
বেনন প্রক্ষত উবাভর বৈরাভ গাচ্তর হইতেছে, সরকারী পরিক্রনার অবাব্ রাজকর্মচারী ও মহিনত্নীর চৌর ন্নার্তিকল্যার অবাব্ রাজকর্মচারী ও মহিনত্নীর চৌর ন্নার্তিকল্যার অবার্তি ও চাট্ট্লারের গৌরাজ্যে কেন্দের নব্যবিত
লোকের ব্যর্থতা ও বনের আলা নেইরপই বৃত্তি পাইতেছে।
স্ক্তরাং বৃচ্চিত মন্ত্রীর পূর্ব সহারতা এবং বিবাদ সভার
পূর্ব সহবোগিতা বা পাইকে র্ব্যবন্ধীর উক্তেও এবানে ব্যাহত
ক্রতে বাব্য।

পরিক্রমার পরিগর ও সমর নিরপণ ভ এইরপে বব্যবস্ত্রী जकारक के किएलमा किया विकास विवास अरेहेक (प. ঐ ভার্যাবারা ভাতার হতে সম্রশিত প্রইবে। বিভেট টাকা क्रिक शास्त्र, वेशरूम क्रिक शास्त्र, विकासमान वेशास शाक्षिक के क्षेत्रिकारिक प्रदेशीय प्रदेशीय ने के क्षेत्रीय व्याप्तिक के क्षेत्रीय व्याप्तिक व्यापतिक व्य भारतः जिल्ला जातक-जतकारतत केळ व्यवकातीवर्गत प्रसा-বৃত্তির পরিবর্তম ভাতারা ভরিতে, পারে মা এবং পশ্চিমবঙ্গ সরকারের কর্মচারী ও অধিকারীবর্গের বধ্যে সাধু-অসাধু বা (बामा-काशारमात वाषाकेश कतिएक भारत वा । अवतार वक বিন ভাঠার বাবভার আভাস আহরা না পাই ভত দিন এই नकन পরিকর্মাই অরবিভর আকাশ কুসুমের পর্ব্যাথেই वाकित्व। याः वाव चात्रं त्ववाम वात्रा त्वाक कावाव ৰাহারা এইরূপ পরিক্রনা স্থঠ ভাবে বাছবে পরিণভ করিতে পারে এবং ইতাও বেবান যে কাতার উপর ভিনি এই পরি-क्षमात शक्य देश्यम जिल्लि विहास श्र बादबार कार क्य ভবিষাদেন। ভাতার পর ভারতা বাচবা দিব।

ৰুখ্যমন্ত্ৰী লবণশিল ও গভীর সমুজে নংজশিকার সম্বন্ধেও সরকারের পরিকল্পনা বর্ণনা করেন। পরিশেষে তিনি বলেন, তাঁহাদের প্রত্যেকটি পরিকল্পনার শিক্তির মধ্যমিত প্রেণীর কল ভালারা যে কর্মের অবকাশ করিরা দিতেহেন, তাঁহার আশা আহে বিশ্ববিভালরের পরীক্ষোভীর্ণ অবচ কর্মাভাবে হভাশ মুক্তপণ ভালার পূর্ণ সুহোগ প্রহণ করিবে।

মুখ্যমন্ত্ৰী ভারভ-সরকারের পরিকরনার বে সমাক উন্নয়নের স্থারিশ আছে, ভাহার উল্লেখ করিরা বলেন, সম্প্রতি ভারজ-মার্কিন চুক্তি সম্পালিভ হইরাছে। পশ্চিম্বক সরকার ইভিন্নধাই বে পরিকরনার হাত নিরাহেন, ভাহার সহিত ভারজ-সরকারের পরিকরনার সকতি আছে। কথা হইরাছে বে, ভিন্নচার শত বর্গরাইল অথবা গড়ে ভিন্নচার শত প্রার কৃত্যি এই পরিকরনা কার্য্যকরী করা হইবে। এরপ পরিকরনাভূক্ত প্রভাকি এলাকাকে আইট বিভাগে ভাগ করা হইবে। প্রভেক ৫০ বর্গ রাইল ব্যাপ্তি এক একট বিভাগে ৫০ হইছে ৭০ট প্রায় থাকিবে, ২০,০০০ একর আবাদী করি ও ৩৫,০০০ অবিবাসী থাকিবে। পরিকরনার মূখন প্রায় প্রতিষ্ঠার কথা নাই, কথা আছে প্রারীণ-শহর প্রতিষ্ঠার কথা।

মুখ্যমন্ত্ৰী বলেন, সরকারের ইক্ষা এইসব শহর বস্থ্যাকী ও লাবোৰর উপভাকার সন্নিকটে হাপন করেন। বস্থাকী ওকলে ভিনট এবং লাবোৰর উপভাকার হুইট শহর প্রভিত্তার কাল অবিলয়ে প্রহণ করা হুইবে। বিভীরভঃ বে সব জলাভূমিতে আবাদ সভব মহে পেই সব হাবে নালার ব্যবহা হুইরাছে এবং জল নিজালন হুইরা পেলেই লেখানে বাসহানের ব্যবহা হুইবে। বেলিনীপুর অঞ্চলে কোন নলী-উপভাকা পত্তি-জলা নাই, এখানে জনি বস্তুত্ব, এই সব জারণার বাঁব বাঁবিলা

অসনেচের ব্যবহা করা বার। তৃতীরতঃ বলতুণ বসাইরা সেচের ব্যবহা করিতে হইবে। অর্থাং বোট আটট পরিকর্মনার আটট করিরা বিভাগ বরিলে ৬৪ট বিভাগের কাজ চার বংগরে শেব করিবার ইচ্ছা সরকারের আছে। শেব হইলে হই সক্ষ প্রারবাসী এবং ১৬ হাজার ব্যবহিত পরিবার এই পরিক্রমার আওভার আসিবে। অনেকে গৃহ নির্দ্ধাণের কাজ পাইবে। সরকারের তত্বাববানে এক হাজার এবং বে-সরকারী ভত্তাববানে এক হাজার গৃহ নির্দ্ধিত হইবে। সংযোগ-রকার অভ্যবহাকে বাহাতে চিকিংসা, শিক্ষা প্রভৃতি সরাজ-সেবার কার্য্য-বারা সহক্ষেই প্রায়াঞ্চল প্রবাহিত হইতে পারে তক্ষর এই সভক-সংযোগ অপরিচার্য।

পরিক্রনা সববে তা: রার আরও বলেন বে, সন্ত্র পরি-ক্রনা ১৯৫৬ সালে শেষ হইবে। ১৯৫২-৫৩ সালে আটট পরিক্রনার এক একট বিভাগের কাল স্কুক হবৈ। ১৯৫৬-৫৪ সালে ঐ আটটির কাল সমাপ্ত হবলে ২৯ট নুভন বিভাগের কাল এহণ করা হবৈ। ভূতীর বংসর ১৯৫৪-৫৫ সালে ঐ ২৯ট শেষ হবলে আরও ২৭ট বিভাগের কাল লওরা হবৈ। এই ভাবে ১৯৫৫-৫৬ সালের শেষাশেষি ৮ট পরিক্রনাই শেষ ক্রইবা বাইবে।

বুণ্যবল্পী বোষণা করেন, সমাজ উন্নয়ন ব্যাণারে সংশিষ্ট কোন কোন বিভাগ এই সব শহরে ছানাছর করা হইছে। পরিকল্পনার বিশ্বর ব্যহার জ্ঞ সরকার একট বিশেষ সংস্থা প্রতিষ্ঠা করিবছেন; কেননা সরকার ববাশীর এই পরিকল্পনা কার্যাকরী করিতে উংক্ঠিত। এই বিবরে কেন্দ্রীর সরকারের সহিত আলোচনা হইরাছে। বাহাতে আগানী করেক সপ্তাহের মধ্যেই কালে হাত নেওবা বার, ভহুতেওে পশ্চিমবদ সরকারের কর্মচারিগণ প্রভাবিত এলাকার ছুরিরা বেকাইতেছেন।

বৃধ্যমন্ত্ৰী বলেন, 'কোড-কাউডেপান' কৰ্ম্মনী অনুসাৰে প্ৰয় এলাকার ব্ৰক্পণকে কৃষি শিক্ষালয়ৰ ব্যৱহা করা হইবাছে। বৰ্জনানের সরকারী কৃষিক্ষেত্রে ব্ৰক্ষিপকে শিক্ষা দেওরা হইবে; এই ব্ৰক্ষণ ছানীর এলাকার প্রান্ত্রালীকে সেই শিক্ষা দিবে। শহর এলাকার কারিগরি শিক্ষাক্তে পরিচলনার লোক পাওরা বাইবে; কেননা গভ ভিন বংসর হাবং আসানসোল, শিবপুর, বাষবপুর ও অভাভ হানে বছ উন্নত্ত ভেনন শিক্ষা লাভ করিবাছে এবং ব্রব্যক্তির সন্ত্রাহের মুবক্ষণকে বিভিন্ন শিলে শিক্ষালানের বোগ্যভা ইহালের আছে।

ইতার ব্যর সম্পর্কে ডাঃ রার বলেন, ইতার থানিকটা ব্যর রাজ্য সরকার বহন করিবেন এবং অবলিটটুকু কেন্দ্রীর সরকার বহন করিবেন। ডাঃ রার বলেন, সরকার অনসাবারপক্তে প্রবোগ বিবেন, সেই প্রবোগ এহপের কাজ অনসাবারপের। মুখ্যন্ত্রী বলেন, এতি বংগর বহু স্বক্ষ-মুখ্যী বিশ্ববিভাগন বইতে বাহির হইরা আলে ও কর্মাতাবে হতাপ হইরা পচে। সরকারের কর্তব্য এই সব ব্রক-ব্রতীর কর্মগ্রাম করিবা কেওয়া। তাঁহায়া ভাহাই ক্রিভেছেন এবং ভিনি আশা করেন, ব্রক-ব্রতীগণ ইহার পূর্ণ প্রবোধ এহণ করিবে।

ভাঃ বাব ট্রকাই বলিবাছেন দে, প্রতি বংগর বিশ্ববিভালর হইতে যে সকল মুবক-মুবতী বাহির হাইবা আলে ভাহারের কর্মগংখান করা সরকারের কর্মগ্র । অভবার ভাহারা ব্যবভার আক্রোল ব্যক্ত করিবার কর্ম্য ভাহারের অপরিপক মুভি ও শক্তি কি ভাবে অভাকে ও কুকাকে লাগার ভাহার পরিচর শক্তিনবক সরকার ইভিপুর্কেই ব্যেষ্ট পাইরাছেন এবং ভবিয়তে—মুক্তন নির্কাচনের বিষয়র কলরণে—আরও অবিক্তরভাবে পাইবার আল্যাও আরে।

তা: রাবের এই উক্তির পরের অংশের সহিত আমরা এক-মত হইতে পারি না। তিনি বলিয়াহেন, "উাহারা ভাহাই করিতেহেন", এবং নেই সদে ইরাও বলিয়াহেন, "তিনি আশা করেন মুবক-মুবতীগণ ইহার পূর্ব প্রবাধ এইণ করিবে।"

আনহা বলিতে বাব্য বে, বিগত করেক বংসরের বে চিত্র
আনাবের সমূবে প্রকাশিত রহিরাহে তাহাতে বোগ্যভার বিচারে
সকল কর্মনার্থীর সরাল প্রবোগের কবা ভাবিতেই পারি না।
অসংখ্য চাক্ত্রী, অসংখ্য প্রবোগ অতি অবোগ্য, অতি অকর্মণ্য
লোকে পাইরাহে। পার্যচর-চাটুকারের গোজবর্গ, অবিকারীবর্গের অকেলো বেকার আত্মীর এবং উপরত্ব ত্যারী নহাপুরুষগণের উন্নেচার্থ—ইহারাই তো অবিকাংশ কাল পাইরাহে।
ভাহার পর পশ্চিমবন্দের সভানবিশের পথে চভূষিকে কাঁটা
বিরাহেন ক্তিপর পূর্কবন্দলাত উচ্চ অবিকারী। প্রভরাং
পশ্চিমবন্দের ম্বক-ম্বতীবিশের নিকট তাঃ রাবের বিরভি
আরব্য উপভালের অংশবিশের বলিরাই রিবেচিত হুইবে।

দৰ্কশেৰে বলিব বে, ডা: বাবের দৃষ্টকোণের বিশেষ পরিবর্তন না ক্টলে তাঁহার বিবৃত্তিতে আগত হওরার কোনও ভারণ আগবা বুঁজিয়া পাইব বা।

## ছনীতি দমন

ভারতীর পার্লাবেকে আইনসচিব ভা: কাইলু ১৯৪৭
সালের হুনীভি বনন আইনের একট বারার বেরার আরও
বাভাইবার কভ আইন পাস করাইরা সইরাহেন। এই আইন
পাঁচ বংসর বলবং আহে, উহার সাহার্যে কভকভিন বতও
হইরাহে, ভিত্ত হুনীভির উল্লেখ ভ বহু বুরের কবা, হুনীভি
বননের উপর্ক আবহাওরা স্টেও হুর নাই। বরী এবং
উচ্চপদহ কর্বচারীরা এক প্রেটর অসাবু বনী ব্যবসারীর হার্শে
হুনীভির প্রপ্রের বিভেহেন এইরশ একট বারণা ক্রসাবারণের
ননে বছর্ল হুইরাহে। স্প্রতি উর্ক্ত গোভওরালা ভারার
রিপােটে গবর্গে উক্তে সরকারী কর্বচারীবের সহত্তে কভকভিনি
বিবরে স্কর্কতা অবল্যন করিতে ব্যিরাভিন্নের। ভারার

क्या बरेटकार वा । चयर बरेबन बक्के बादना कविटकार एर. ब्रांचनाती बहीरम् चन्नुबीच वक वावनावीरम्ब पार्व बार्च क्रिक शास वर वर्षात्रीत्वर विशय शक्ति वर्षात्र । अभिवासराम्य (अम-द्वेरारास्य बहेमाहे व विवास वक्के विरमेश দুঠাত হুইবা মহিলাছে। বদীর ব্যবস্থা পরিবলে দাবি করা ত্ৰল বে, বাতাৰা ট্যাল কাঁকি বিজে সাতাৰ্য কৰিবাতে ভাতা-(वत कार्दात चन्छ अक्षे है विधेनान बनावेश कता वधेक। প্রথবে একক্স স্পোদাল কর্ম দিয়ক্ত করিয়া বে এলিটাণ্ট कविषयात है।का चामिटक विश्वादित्वय काँठावर विकृत्य चर्चा কাঁলের অভিযোগ আমা চইল। স্পেশাল ভক রাহে বলিলেন ৰে, আইনাছদাৰে অভিবোগ বেল্প নিঃসংশবে প্ৰমাণ কবিবাৰ क्या जाना कहा नह बाहै। ज्यानि गादिगायिक पर्नेमात छैनद নির্ভৱ করিব। ভিনি রার বিলেশ বে, উক্ত অকিলারকে ভিস্বিস कश क्रेडिक मह । जिन्निम मा कदिवाद कादव प्रतम किमि बरम्य (व. अक्ट है।। स सिनाहरू सिक्टाका अवर विहास ভবিবার কলে কিছু আভিশ্যা বটবেই, ইছা প্রভিত্ন লোব। ভাৱা হাড়া এই অধিসার ট্যাত্ম আগারের বভ বেটক কোর करिवाक्तिम कांका बाटडेव चार्यव कर. कांम क्यांव वक्तरव এলপ করেন নাই। পুভরাং তাঁতাকে পদচাত করিলে সর্ঞ अवकारी विकारभव बरमावन महे हरेशा बारेटन । देशा मरखब ভাটনাজ নেজেটাতী এনিপ্রাণ্ট ভ্রিশবারতে বোট্টা বেন বে. জাতাকে কেন পদচাত করা হইবে না ভিনি বেন ভার ভারণ क्षर्वन करवन । 🕏 विद्यमान रन नकन हैग्रास्त्रत पतिनान आक् करवन नारे।

ইহার পর ট্রুবিউবাল বনে এবং ট্রুবিউবাল উক্ত কোম্পাননীর উপর প্রায় সাকে চার লক্ষ টাকা ট্যাল বলাব। এলিটাক ক্রিম্মার ঐ ব্যানেকিং একেন্টের অবীনহ পেপার নিলকে ২৬ লক্ষ টাকা ট্যাল বলাইরাহিলেন, ক্টন নিলকে ৪০ লক্ষ এবং বোটর কোম্পানীকে ২৫ লক্ষ টাকা ট্যাল বলাইকে চাহিরাহিলেন। কেম্পোরানের উপর তাঁহারা ৪,৩৬,০০০ টাকা ট্যাল বলাইরা বিরাহেন। ব্যানেকিং একেন্টরা ট্যাল কাক্ষি বেওরার চেটা ক্রিরাহিল ট্রুবিউবালেও ইহা প্রবাধিক প্রকাশের ট্রুবিটাই ক্ষেত্র বীরাংলা হইল লা। প্রভরাং ব্লভঃ এলিটাক ক্রিশালার উক্ট বরিরাহিলেন, ইহা নিঃসংশ্রে প্রবাধিক হইরাহে।

ইছার পর পদচ্যতির ভাষণ বর্ণাইবার বোটশ আলে
কিরপে? এসিটান্ট কবিশ্বার হাইকোটে বাবলা করেন।
হাইকোট রাবে কাইবাল লেকেটারী এবং সেল-ট্যাল কবিব্যারকে কটোর ভাষার স্বালোচনা করেন। হাইকোট
বলিরাহেন বে, কাইবাল লেকেটারী কবিশ্বারকে চিট লিবিরা
এলিটান্ট কবিশ্বারের বিক্লাবে হর্লানির ও বিলবের
অভিবার আবেন এবং অলাবুভার অভিবার্গত করেন। ইহার

উপর হাইকোর্ট মন্তব্য করিভেবেন, "এই নারাশ্বক অভি-থোপের মূলে কোন ভিন্তি নাই। বরণাভকারী সেল-ট্যান্ত বিভাগের অভি বারিশ্বপূর্ণ পরে অধিটিভ হিলেন। তাঁহার বিক্লানে কোমরূপ তথ্য না থাকা সম্ভেত্ত এরণ শুকুভর অভি-যোগ আনা অভার হইরাছে।"

এই বাবের পর কাইবাজ সেকেটারী এবং সেল-ট্যার কবিশনার বলি বপদে বহাল থাকিতে পাবেন তবে এনিপ্রাণ্ট কবিশনার প্রীর্ক্ত রাম কি কবিরা পদচ্যত হন আবরা তাহা বৃথিতে অকন। এ বিষয়ে অন্তবাজার পরিকা, বৈনিক বহুনতী এবং লোকসেবক কঠোর নতব্য কবিরাহেন। দেশের বর্তনাম রূপতির প্রবাম কারণ চুর্নীতি। এইতাবে সং কর্মন্তারীয়া অসাধুদের হাতে বদি লাখিত হন এবং গবর্দ্ধে কারা আরত-সরকারের ইহা বিশেষতাবে চিভা কবিরা দেশা উচিত। প্রীর্ক্ত রাম অত্যত বৈরাপ্রকাক অবহার পদিরা বদি কিছু কুলও কবিরা থাকেন তবে ভারার কর উাহাকে এরপে লাখিত করা বাংলা-সরকারের পক্ষে অত্যত নির্মাণ্ড করা বাংলা-সরকারের পক্ষে অত্যত নির্মাণ্ড বিরাহে, ইহা আবরা বলিতে বাব্য।

## কাশ্মীর সমস্থা ও ডেভার্স পরিকল্পনা

গভ তরা বাব প্যারিস হইতে সংবাদ পাঠান হয় বে,
মিরাপভা পরিবলে ভট্টর কাড প্রাহার ভাত্মীর সরভাসমাবানের উচ্চন্তে তাঁহার বিভীর কলা বিবরণ পেশ করিবেন।
ভংসম্পর্কে ভিনি বলেন, কাত্মীর রাজ্য লইরা এবং
বিশেষতঃ কাত্মীরকে অসামরিকীকরণের প্রশ্ন লইরা ভারত ও
পাকিছানের মধ্যে বে বিরোধ বট্টরাছে, ভালা একাবারে
ব্যাপক ও রৌলিক। ভিনি সমভার সমাবানকলে নিয়লিবিভ
নীতির উল্লেখ করেন:—(১) অসামরিকীকরণের সমর
আতে উভ্যন পক্ষের স্পার্ম সৈতের সংখ্যা বভ্যুর সভব কর
ভরিতে হইবে; (২) ১৯৪৯ সনের ১লা ভাত্মানী বৃদ্দ্রভিত রেধার উভ্যর পার্মে অবহিত সৈতসংখ্যার অভ্পাতে
উপরি-উক্ত সৈত স্কাল করিতে হইবে।

গত ১ই মাৰ মূখৰ দিলী হইতে সৱকারী ভাবে নিয়লিখিত বিহতি প্রভাশ করা হয় :

"এবাৰে অভ সরকারী ভাবে বােবিত ছইবাহে বে, গভকল্য প্যাহিদে অনু ও কাঙ্গীর রাজ্যের অসামহিকীকরপের বভ বে ভেভার পিরক্রনা প্রকাশিত হইবাহে, ভাতা ভারতসম্ভলার ভিংবা ভারতের প্রভিনিধি শ্রীদি, এন, রাও ও ওাঁহার লাম্বিক উপলেটাহিদকে প্যাহিদে আলোচনাকালে একেবারেই জানান হর নাই। গভ ১৬ই অঞ্চাহণ ভাঃ কাভ বে পরিকল্পনাট ইহাবের হতে বিরাহিদেশ ভাতার সহিত ইহার কোনও যুক্তর নার্ভান্ত লাই। বৃৎবিহতি রেণার উতর পার্থে তর্ সৈত অবস্থাবের বিষয়
নহে, অতাত বিষয়েও 'তেতাস' পরিভরনা'র ওক্তর পরিবর্তন
লক্ষিত হইতেছে। সিলসিট ভাউট সংজ্ঞান্ত বিবাস প্রভৃতি
ক্ষেক্ট নৃত্য বিষয়েও এই পরিজ্ঞানার সংযোজিত হইরাছে।"

বোটার্টভাবে বলা বাইডে পারে, পূর্ব্ধ পরিকল্পনার পাক্অবিকৃত এলাভার 1,৬০০ লৈড (এই সংব্যার বব্যে বিরবিত
পাক্-লৈড ও অনামরিক কার্বো ব্যবস্থত সমস্ত নৈডকেও বরা
হইবাছে) এবং ভারতীর এলাভার ২৮ হাজার নৈড অবস্থানের
প্রভাব ছিল। পূত্র পরিকল্পনার পাকিস্থান-অবিকৃত এলাভার
প্রার দশ হাজার নৈড ও ভারতীর এলাভার ১৪ হাজার নৈড
বাবার প্রভাব করা চট্যানে।

#### चाराच्य भरवाहे प्रसादव त्यानावाहे

ভারত-সরকারের পররাই দ্বরের প্রেন্সনোটে বলা হইরাছে বে, 'ভেভার্স' পরিকল্পনা' প্রকাশের পূর্ব্ধে ভারত-সরকারকে কোন কথা জানানো হর নাই। এরপভাবে পরি-জলনা প্রকাশে ভারত-সরকার বিম্মিত হইরাছেন। প্রাহারের ছিতীর ত্রিপোটের বর্ত্ত পরিশিষ্ট হিসাবে 'ভেভার্স' পরিকল্পনা' প্রকাশিত হইরাছে। নিরে পরিকল্পনাটর অংশবিশেবের বিবরণ প্রথম্ভ হইল:

- "(১) ভারত ও পাকিছানের প্রভিনিবিকের বব্যে প্রবাদ প্রবাদ বিব্যে চূক্তির পর জিপ দিন চরন সীমা বলিয়া পরিগণিত তইবে।
- (২ক) বুছবিরভি চুক্তির সর্ভ বাহাতে সলিভ বা হয় ভাহা বেবিবার কল পাছি-পৃথনা রক্ষাকর হানীর সরকার-স্কৃতকে সাহাব্যের ক্ষম এবং সৈত-বাহিনী সমাবেশের ক্ষম রাষ্ট্রপুঞ্জের পর্ব্যবেক্ষকবাহিনীর সৈতসংখ্যা বৃদ্ধি করিতে হুইবে এবং কীপ, হেলিকোপটার ও বোগাবোপ ব্যবস্থার ক্ষান্ত প্রব্যোক্ষীর সরঞ্জার বিভে হুইবে।
- (খ) পশ্চিম দিক হইতে বিনা অক্সভিতে বাহাতে কেই প্রবেশ না করিতে পারে, তক্ষত পাকিছানকে আজাদ কান্দীর এলাকার পশ্চিম লীমাভ দিয়া প্রবেশ বন্ধ রাখিতে হইবে। বাহাই-করা নিয়নিক বাহিনীর বারা এই কাজ করিকে হইবে।
- (গ) ভিদ ব্যাটেলিয়ান হাড়া সম্ভ নিয়মিভ পাড়ি-ছানী নৈত অপসামণ কমিতে হইবে।
- (ব) আবাৰ কাৰীর দশত্র বাহিনীকে ক্রাইরা চাত্র ব্যাটেলিয়ান করিতে হইবে এবং ভারতের নিচ্ছিত নৈওবলের সংব্যা ত্রাস করিয়া এক ভিভিনন করিতে হইবে।
- (৬) নিয়লিবিভভাবে আজাদ এলাকার চার হাজার অসাবহিত ব্যক্তিকে লইবা একট পুলিনবাহিনী গঠন করিছে হইবে:
  - (১) ভাঙিয়া বেওয়া আভাদ বাহিবীয়া পূৰ্বভ্ৰম

লোকজনের মধ্য হইতে ১,২০০ জনকে সমস্ত সৈত হিসাবে বিশেষভাবে বাছাই করিছে ছইবে।

- (২) ক্ৰমণ আছাৰ বাহিনীতে কাল কৰে নাই, এমন ১,২০০ ব্যক্তিকে দশস্ত্ৰ সৈত হিসাবে বিশেষভাবে বাহাই ক্ষিতে হইবে। কোনও পাকিছানী বা পাক্-দশস্ত্ৰ বাহিনীয় কুমপূৰ্ব্ব সৈতকে ইহাতে এছণ কয়। হইবে না।
- (৩) ভালিয়া বেওয়া আজাৰ বাহিনীয় ভূডপূৰ্ব্ধ লোক-ক্ষমের বব্য হাজে ৮০০ নিয়ন্ত অসাবহিক ব্যক্তিকে বিশেষ-ভাবে বাছাই ক্ষমিত হাইবে।
- (৪) ক্ৰমই আজাৰ বাহিনীতে বোগৰান কৰে নাই, এৱণ ৮ণত নিবল্প অনাবহিক বাজিকে বিশেষতাৰে বাহাই ক্রিতে হইবে। কোনও পাকিছানীকে অথবা পাক্-সলগ্র বাহিনীর তভপুর্ক নৈচকে উচাতে এচণ করা হইবে না।"

এই "পরিক্লন।" নইরা নাকি বিশ্বর প্রকাশ করা হইরাহিল। রাইনীতির মধ্যে বিশ্বরের কি থাকিতে পারে ? অসত্যভাষণ, সভ্যের বিলোপ ভ রাইনীতির অল। চাপক্য পণ্ডিভ
হইতে আরভ করিরা টুর্যান, চার্চিল, ই্যালিন, নেহরু,
রাও-লে ভূঙের বুগ পর্যাভ এই নীতি অটুট আহে। ভিক্সন
বেষন ভারত-হাট্রের প্রতিমিধির নিক্ট এক কথা আর
পাকিস্থানকে আর এক রক্ষ কথা বলিয়াহিলেন, সেইরুপ
এাহার-ভেতার্গও চুই পক্তকে হু'কথা বলিয়া একটু থেলিয়া
লইভেছেন নাত্র।

কাশ্বীর সৰস্যার আলোচনার বব্যে নৃতন বটনা হইল সোভিত্রেট রাষ্ট্রের প্রতিনিধি বঃ জ্যাক্তব নালিকের বক্তৃতা। ভালার মধ্যে নৃত্যন কিছু নাই। নার্কিন ও ব্রিটেনের নপ্রামির বিক্রমে অসংলগ্ন বাক্য বর্ষণ এই বক্তৃতাকে বৈশিপ্ত্য দান করিয়াছে। অপ্রেলিয়াবাসী ভিক্সন ও বার্কিনী প্রাক্তার এই চুই অনেই কাশ্মীর সরস্যার সরাবান করিতে পারেন নাই। সোভিত্রেট রাষ্ট্রের কেছ বে ভালা পারিবেন সে বিশাস আনাক্রের নাই। কি ভালে ও কোন্ সর্বরে ভালা ক্টব্রে, ভালা কেছই বলিতে পারেন না। ব্যক্ত ভালা কাশ্মীরের ভাগ্যবিবাভা অনিক্রমভার মধ্যে রাধিরা এই রাজ্যের নরনারীয় প্রতি ও বৈর্দ্যের পরীভা করিতেক্ত্রন এবং আনাক্রের ভর্মা এই বে, কাশ্মীরবাসী এই পরীভার উন্তার্গ হুইতে পারিবেন।

## নেপালে আবার বিদ্রোহ

প্রতি ভারতীর বাসের বিভীর সপ্তাহে আঞ্চ কের বংসর হুইতে নেপালে একটা না একটা স্থানাল লাগিরা আছে।
১৩৫৭ বলাকের বসস্থভালে প্রার কের প্রভাবিক বংগরের বিরাশ বাধাতরে'র অন্বিকার অসম্ বোধ করিবা বহারাভাবিরাশ বিশ্বন বর্মবন ভারতীয় চুভাবালে আঞ্চর প্রত্ন করেব।

বছারাজা চন্দ্র গবলেরজন প্রধান বল্লীরূপে বছারাজাবিরাজের সপক্ষে জনবতের সক্ষির সবর্থন লক্ষ্য করিবা একটা আপোষ করিবা লটকেব। তার পর এক বংসর বাইতে না বাইতে তিনি রাষ্ট্রের কর্ত্ত্বভার সপরতের প্রতিনিধি নেপাল কংগ্রেসের সভাপতি প্রীবাত্ত্বাপ্রনাম কৈরালার হতে সবর্পণ করিতে বাধ্য হইলেন। বিধান পরিষদ স্টিত হইল, হু'তিনটি ফলের সমবারে বল্লিষ্ঠনী শাসনভার প্রহণ করিকেন; রাজবংশ, রাণাবংশ, উলার্টনতিক লল ও বারপহীরা একত্র হুইরা শাসনকার্ট্যের ভারিত প্রহণ করিকেন।

ক্তি আরও উএপছী বল গওগোল করিতে বিরত হইলেন না। তাঁহাদের বব্যে একজনের নার প্রসিতি লাভ করিবাছে। ডাঃ কে, আই. সিংহের পরিচর আনরা পাই নাই। সংবারপত্রে বাহা দেবিতে পাই, নেপালী সর-কারের নানা বোরণার বাহা পাঠ করি ভাছাতে বনে হর এই ভক্রলোক বিপ্লবের নেতৃত্ব প্রহণ করিবার উপর্ক্ত। বার বার কেল হইতে পলারন করার কৌশল আরভ করিবার শক্তি তাহার আছে। পূলিস বিভাগের ও কারাবিভাগের কর্ম্বচারী-বর্গের সর্ব্ধন না বাজিলে ভিনি কর্মণ্ড এরপ ভেল্কিবাজী বেলিতে পারিভেন না। শত শত লোক তাঁহার নলভূক্ত। নেপালী সমাজের একাংশের হৃদ্ধর কর করিতে না পারিলে ইতা সর্ব্যর চইত মা।

গত ১০ই ৰাধ কাটমূত নগৰীতে "কক্ষৰী অবছা" বোৰণা কৰা হয়। ১৯৪২ সাল হইতে এই অবছায় সলে বাঙালীৰ বিশেষ পৰিচয় হইয়াছে। স্তৱাং ইহার স্বিধা-অস্বিধার বৰ্ণনা অনাবস্তক। স্থানজীয় হতে "স্ক্ৰিয়" ক্ষতা অৰ্থন করা হইয়াছে। ২৩শে নাথের বিষয়ীতে বলা চইয়াছে:

"বিজোহী বেতা তাঃ কে, আই, সিং পলাহনের চেঠা করিতে পারের পূর্ব্ধ হইতেই এই সংবাদ আনিতে পারিরা বেশাল-সরকার তাঁহার ঐ প্রচেঠা ব্যর্থ করার অন্য আবেশ আরী করেন, কিছ রকী বলের, উচ্চপ্রস্থ কর্মচারীরা লেই আবেশ পালন করেন নাই।"

ইভাছারে বলা হইরাহে বে, ডা: কে. আই নিং বর্তমানে এবান হইতে প্রার ৫০ নাইল উভরে রপুরা সিরিবর্দ্ধ বিয়া ভিজতে প্রবেশর চেঠা করিতেহেন। কিন্ত রপুরা হইতে কুজি নাইল কুরে ভিজতের বব্যে অবস্থিত কারেরংছ ভিজতী কর্ত্বপত বেশাল-সম্ভারতে জানাইরাহেন বে, ডা: কে. আই. নিং বলি ভিজতে প্রবেশ করেন, ভবে ভাছাকে বেশাল-সম্ভারের হতে থেওরা হইবে।

ভার পর হইতে দব দীয়ব। আবরা এই বিজ্ঞাহের কলাকলের ক্ষা অপেকা করিছেছি। এই দীয়ব বরিষ্ণনীর বধ্যে বত্তেক্সবিত—একথা অধিধাত। "ভোট দাও নাই চিনি ও কাপড পাইবে না"

"ব্ৰহ্মাণপুর বামার বে সমস্ত প্রাম্বাসী কংগ্রেসকে অবাং करत्वन-वार्षिमी खेबका विक्रमीवका स्कृत्क रकाई रहत मारे. তাঁছার স্বামী-বেব্ডা উচ্চত্তে উক্ত প্রাম্বাসীবিগকে চিনি ও काशक शाहरत या विज्ञा है।काहेश किरकरक्य। हिनि ध कांगक क्षमानावायंत श्राह्माकाम का-क्षमात्वकेक होत्व বহিবাহে ভাচা ভ্ৰসাধারণের প্রাপা। ভাচা চইতে ভ্ৰ-गार्वादम्य विकेष्ठ कविवाद स्विकात काठावर गाउँ। स्वाप्ता शामीब जबकादाब मुक्के अविषय वित्यवाद चाकर्य कतिरक्षि क समामात्व यात्रारक सात्रारक माथा शाना मनस किनिय निविध्य मुला विमा चानाव भाव, काहात वावदात क्या चन्द्रताय कामार्टे एक । त्रवसायन्त बामार मीर्वकाम बतिहा त्यात मात्य क्रमणाबातरणत **छ**णत क्रवत्रक्ति, क्रमुववाकी अवर **रक्षा**ठाविका ठलिबाटक । क्यांबादनटक मन्द्रवह उडेवा हैठाव विक्रीकात कतिएक ठहेरत । आधना हैनाहे हाहे, मासिश्र्न ও ন্যাৰসকভাবে প্ৰভাক প্ৰাৰ্থাসী ভাচাদের প্ৰাণ্য व्यक्षांक्रमीय व्यवाणि न्यायनक मृत्या वाद्यांक भाव काद्यांव वावचा रुकेक ।"

ৰাশভূষ নাৰচলপুর প্রীপ্রীবিজয়ক আশ্রম হইতে প্রকাশিত "সংগঠন" পঞ্জিকা উপরোক্ত অভিবাস করিয়াছেন। ইহা ছানীর একট কর্ম্বচারীর বামবেরালি বলিরা মনে করিতে পারিলে আনরা স্বাী হইব। ২৪ পরগণার আলীপুর নহক্রার পোলিং কর্ম্বচারী আয়ালের বলিয়াছেন বে, উাহার অবীনস্থ সকল লোকে অভি সভর্কতা ও সভতার সহিত নিজ নিজ কর্মবা পালন করিয়াছেন। তিনি বলেন বে, ইহা একটা ভরসার কর্মা। সরকারের একট বিশিপ্ত অস্ব বিশিপ্ত বাব অব্যাশ অর্টবোর অট্ট থাকিতে পারে ভবে দেশে নিরাশার বন্যা আটকানো সভ্তব। তাহার ক্যা সভ্য হউক।

### নেতাজার মৃত্যু-সংবাদ

সম্প্রতি বেভাকীর করতী উংসব ভারত ও বহির্ভারতের নানা হামে সম্পন্ন কইবাবে। এই উপলক্তে কলপাইগুড়িতে ভারতীয় চা-বাগাম সমিতি ভবনে বক্তৃতা প্রসকে ভট্টর বাবা-বিমান পাল অভ্যন্ত বৃচ্ভার সহিত বোষণা করেব বে, বেভাকী জীবিত আহেল এবং প্রক্ সমরেই ভারার আবির্ভাব ব্লীবে। তিনি আরও বলেন বে, বেভাকীর বৃত্যুসংবাদ কেবলনাত্র হার্বাবেষী দলের অপঞ্চার বাল।

নিবিল ভারত করোরার্ড রকের তেপুট চেরারবান প্রতিত্ত শীলতর বাজী নেভাজীর অবধিবদ পালন উপলকে বজিয়ার-পুরে এক বিরাট কনসভার বোবণা করেন বে, নেভাজী জীবিত আছেল। কিছুকাল পূর্বে ভারতের কোব বিশিষ্ট ব্যক্তি এশিরার কোন হাবে নেভাজীর দহিত গালাং করেন। তিনি আরও বলেন, নেভাষী ভারতে কিরিবার বত সুবোদের অপেকার রচিরাচেন।

এই হুইট বভ্তা সহতে আৰৱা এই কথা বলিতে চাই বে,
এক দিকে হুই কন হাৰিছ্জানসম্পন্ন ব্যক্তি ঘুচ্ডার লকে
নেতাকীর বৃত্য-সংবাদ অধীকার করিতেকেন অন্ত দিকে
আলাদ হিন্দ সরকারের প্রচার-সচিব আরার বহাশর অতাবিক
যুচ্ডার সহিত কেন বলিতেকেন বে ১৯৪৪ লনে আগঠ রাকে
বিষান-চুবটনার উলার বৃত্যু হুইরাছে। প্রার ভিন শত পৃঠার
একবানি বই লিবিরা তিনি ভাহা প্রমান করিতে চেঠা
করিতেকেন। আরার বহাশর বর্তবানে বোখাই-সরকারের
প্রচার-বিভাগের কর্তা; তিনি জাপানে গিরাহিলেন এবং স্তম
প্রমান সংগ্রহ করিরা তাঁহার সিদ্ধান্ত সপ্রমান করিতেকেন।
এইরূপ হুইট পরস্বারবিরোধী বোষণা হারা কার কি হার্বোভার
হুইতেকে, ভাহা আনরা বৃত্তি না। বদি নেভানী ক্রীবিভ
বাকেন তবে ভিনি কেন এই বিজ্ঞান্তিক্রন লব্যু হুইতে
ভারার ক্রেবালীকে উরার করিতেকেন না, ভার্যুও
বৃত্তিতেকি না।

## क्युरिक्छ म्ला क्य

বাঁকুভার "হিন্দু-বাই" ( সাঞ্চাহিক ) ২২শে সাম সংখ্যাছ ঐ কেলাৰ নানা ৱাক্ষীতিক খলের শক্তিগাবর্গের আলোচনা করার পর যলিয়াকে:

"नर्वराय चारन क्यामिक परनव क्या। बहे क्लक काशास्त्र अक्षे भरको नश्तर्यन देवति करविक नश्यक क्षेत्रिक एक मात्र विदय क्ष्क्रकाल (नमात्री क्यानिरक्षेत्र जहारचार । अरे प्रानद अवहे शार्थीक चरनाच चराच भारतम जनकार यका नात्र वह बला बाहाव-कोमाल। পরাজর অবর্জনাবী কেনেও নিজেদের কর্মী ও বরনংবাক क्षित्रिक वर्गावन वकार दावार क्या क्या क्या क्या ten einig wie achten : tial fere ab en mereinrwa তার বাদার। এবের গড আট-দশ বংস্তের কার্যক্রাণ लारक फूल मि। '85-'8२ नारन और वन नाजाकावाडी बुक्तक "कमबुक" (वायन) करत देशतक-कारविकाय जाक छाछ विनिद्धिक ( बढारे चारांत चाक्कान चम् इनदक चारविकार मानान वरन गानि भारकम ! ), देव-चारविकार 'হিছ ৰাঠাৰ্স ভবেন'ৰূপে নেবিৰ এই ঘল বেভাকী প্ৰভাৱত ও আআদ হিন্দ কৌজকে আপানের দালাল বলে চীংকার करवित अवर बाकान दिन कोरक विकास महाद कहा है শপৰ নিৰ্দেশ্য । সুসলীৰ জীগের সাক্ষয়ারিক দাবী পাক্ষিত্রার थावरक नगरहार चारन जननेन करविक और कहाविदेश---णांथ थांनात त्मस्यागरणत 'साजीत नावि' वरण । ताला-श्रीभाज-कत्रकृतात जनराहरत यक नवर्षक विज क्यानिकेता। বিৰেয় পৰ বিশ ভাষা গাখীলীকে বিশ্বাহ সমুখ্য বহুণা দেবার ভাষা চীংভার ভাষেত্রতা ।

কর্যনিঠ পার্টর পরবর্তী ইভিয়াস আরও কলছবর। বেছিল পাকিছাল-হাবিতে বৃদ্ধীন লীগ হিন্দুকের বিরুদ্ধে বিরুদ্ধে পর্যক্ষ সংগ্রার বাবেশ বাবেশ করে কলিকাভার রাজপথে রক্তপলা বইরে বিরেছিল, সেই ১৬ই আগঠে বৃদ্ধীন লীলের শোভানারার কাবে কাব বিলিবে লীগ ও কর্যনিঠ পভাকার গাঁট-ছভা বেঁবে অংশ এবণ করেছিল এই কর্যনিঠ পার্ট। ভার পর নরহভা ও সূঠবে কলভিত প্রাবর্তীর বলীসভার বিরুদ্ধে বলীর আইনসভার আনাছা প্রভাব আনীভ হলে ক্যুনিঠ সক্তেরা নিরপেক থেকে পরোক্তে লীগ-মহিসভা ভবা হত্যা-ছাওকে সর্থাব করেছিলেন।"

ক্যুানিজমের প্রতিরোধ—ক্যুানিজমের প্রসার

গত ২১শে পৌৰ ভারতের সংবাদগন্তে ছুইট সংবাদ প্রকাশিত হুইরাহিল। ভাষা পাশাপাশি রাধিরা পাঠ করিলে বিতীর বিশ্বহুরের পরের ক্যব্যাশী অশাভির একটা পরিচর পাওরা বার। কোন বছব্য করিরা আবরা এই সংবাদের উপর বং ক্লাইতে চাই না:

निष्टेरेवर्क, ১৪ই जानुबाबी-जावजन्ति बार्किन बार्डेहरू वि: क्रिकेट बानन मक्नान विवादात्म नक्ष्म हरेट निष्ठेरेवर्क শৌছান এবং প্রেনিভেণ্ট ট্রাান ও রাজ্বপ্তরের সহিত चारजाहमात कर चर्चमहे श्रवामिश्हेरमत हैरकरक बाह्य करवम । ৰিঃ হোলুলু বলেৰ বে, ভিনি আগাৰী সপ্তাহে প্ৰেলিভেণ্ট ই ব্যাবের পৃত্তিত লাখাং করিবের। ভারতে ক্যাবিজয় श्रीचिरवारबंद क्या कि कि बावजा अठव कहा है कि अहे श्रीवंद উভৱে বি: বোলন ভিন্ট ব্যবহার প্রভাব করেন :--(১) বুজ-হাই এবং ভাচার আহর্ণ সভার্কে ভারতকে আরও ভালভাবে ওয়াকিবছাল করিতে হইবে। বুজরাটের ইভিহান ঐতিহ ভাছার অবুল্য সম্পদ। (২) ভারতকে কিছু পরিবাণ অর্থনৈতিক লাভাষা ভাৰ এভাছ প্ৰয়োজন। চীমে আবেরিকা বে পরিমাণ সাভাষ্য দিয়াতে ভারতকে সেই পরিবাণ সাহাষ্য দিলে দাৰ্থকতা লাভের বুৰ সভাবদা আছে। (৩) ভারতবাসীর সম্বাধে যে সকল সম্ভা বহিষাতে বচতার সহিত ভারার भक्तवीय क्षत्रा अवर कीवमशावायक बाम क्षेत्रशामक शाविक वित्यव ভাবে ভারভবাসীরই। বি: বোলুল্ বলেন বে, ভারভবাসীর व्यवश्व देविक हरेरकार कार महत्वभिक्त अवर बुक्रवाई ভাতার বত অপেকা করিতে পারে বা।

বোৰাই, ১৪ই খাছৰাৱী—ভাৱতত্ব কুপৰাইছত বি: এব, ভি. ৰোভিকত আৰু এবাৰে বলেব বে, উচ্চাৱ বেপ ভাৱতকে বে-কোনও পিল-সর্ব্বান সমব্যাহ ক্ষিতে এবং ঠাজার অবনা আয় অব্য বে-কোনও স্থাত বুলার ভাতার মূল্য এহণ ক্ষিতে রাজী আহে। ভিনি বলেন, "ভারত ও রাশিরার বব্যে অববৈভিক সম্পর্ক গভিরা ভোলার প্রথম কের রহিরাছে। আপনারা বাহা ভিছুই ভিনিতে চারিবেন, ভারাই আরাদের নিকট পাইবেন, আর আনরাও আরাদের বরকারী ভিনিসপর আপনাদের নিকট হইতে ভিনিতে রাজী আহি।"

তাঁহার বেশ শিলোরবনে বীর্ণদক্ষেণে অঞ্জর হইতেহে এবং এই সম্পর্কে অন্য বে-কোনও বেশকে অন্যেক শিহনে কেলিয়া আলিয়াহে। পাঁচ বংসরের বব্যে আর কোন বেশই কারিগরী বিভার তাঁহাদের সলে প্রতিবাগিতা করিতে পারিবে না। তিনি বলেন, বুছবিধ্বত অর্থনীতিকে আমরা পুনরার পঁড়িরা চুলিতেহি, অভএব ইহা সুম্পষ্ট বে, আমরা বুছ চাহি না। আছ-জাতিক শান্তি ও নিরাপতা ক্ষমা করা আনাদের ব্যবহার। আনাদের সাবাজিক ব্যবহাতেও অর্থনৈতিক বিপর্যার বচার আশ্রমা নাই।

নোভিষেট সর্বায় জাতীয় উন্নদের জন্য বে ভবিছৎ কর্মন্থা প্রথমন করিবাছেন, ক্ল'-রাইছ্ভ ভাহা বর্ণনা করিবা বলেন, "রাশিরার সম্পূর্বে জনশক্তি হ্রাসের যে আশকা বেবা বিরাহে, ভাহা চ্রীকরবের জন্য বে লয়জ শক্তি নিরোগ করিভেছে। রাশিরা উৎপাদন র্ডির জন্য বছবিব ব্রপাতির উভাবন করিভেছে এবং শীরাই বে শভ শভ "এজড়্যাভেটির" এবং ভবত্মরণ ব্রগাতি নির্দাণ করা হইবে বাহার হারা কঞ্চল প্রামিতের কাজ নিশার হইবে। গভ ২৪ বংসর হাবং রাশিরাভে কোনও বেকার-সম্ভাব স্বানান ১৯২৭ নালেই হইবা সিরাছে, ভবন প্রথম প্রকারিকী পরিকল্পনা এছণ করা হইবাছিল।

একট প্ৰশ্নের উভরে ক্লণ-হাইচ্ছ বলেন, রাণিহাতে ব্যক্তিবাৰীনতা নাই, একবা বলা ছল। প্ৰথমে একজন প্রমিষ্ঠ ক্লেণ্ড একজন ইঞ্নীহার এবং এবন একজন ক্টনীতিবিদ লগে তাহার স্থাপি চাকুরী কালে তাহার ব্যক্তিবাৰীনতা অনুপ্রই আছে। এইরপ বারণা বে কেন পোষণ করা হয়, তাহা তিনি বৃথিতে পারেন না।

বি: নোভিকত বলেন, ভারত ও রাশিবার নব্যে গোঁচার্বের সম্পর্ক রহিচাতে বলিবা ভিনি আনন্দিত এবং ভিনি আশা করেন বে, এই সম্পর্ক আরও আন্তরিক হুইবে।

## "রয়েল রিপাব্লিক"

এই শিরোনামার "বুগাডর" (২০শে বাব) বেড় কলব ব্যাপী একট প্রবন্ধ লিখিরা প্রবাণ করিতেবেদ বে, আরাবের "আজাদী বুঁটা হার"। চুই একজন ইংরেজ রাইবিজ্ঞানবিবের বভব্য উদ্ধুত করিরা করেছ বিদ বরিরা উল্লেখ লভপ্রাপ্ত আবিকারকে নাভাচাড়া করিতেবেদ। অবচ আজ প্রার পাঁচ বংগর হইতে আরাবের গহুবোদী ১০ই আগঠের উংল্য উপলক্ষে বিপুল্জার "বিশেব সংব্যা" প্রভাশিত করিতেবেদ। এর মধ্যে কোন্টা সভ্য দেশবাসী ভাহা বিজ্ঞাসা করিছে। পারে।

"ৰূপান্ধৱে"র এই প্রবছের ভাষা ইংরেকী ভাষার অনুষাদ। নিয়ে ভার একটু নমুনা দিলার। ভিনি পণ্ডিভ ক্ষাহরলাল নেহকুকেই বিশেষ ভাবে আফুনণ করিয়া– ক্ষো।

"···জাতীর কংগ্রেসের সেই পবিত্র ও মহান প্রতিশ্রুতিকে समादारम सामान अवस् भागमान करिया वर्धमास कराजामत कर्गबावनन बाधिकेगारहेम-प्रकाशिक कालाब के नंत्राशिककाव বিটিশ কমনওবেলবের রাজকীয় বস্ততা ও আতগভা স্বীকার कविष्ठा महेबाट्यम । अकृता कालित आजुबर्द्यापाट्याय क्लबामि चरः भारक बाबिश (अरम श्रकाकाविक सारहेर बारब साक्कीर বন্দনার এই কংসিত দক্ষের অবভারণা সম্ভব চইতে পারে चाठा चाविवात बच्छ। এই तरबल तिशातिरकत श्रवासमञ्जी ল্পে আনতা যাভাকে পাইডাছি, ভিনি মাবে মাবে ৰচান গণ-ভৱের আহর্ণ, এমন কি সমাজ্তন্ত ও সাম্যবাদের বুলি পর্বাস্থ चाक्षादेश बारक्य। चात्रक हैताता शताबीय चात्रकरर्शत प्रमाशाय किरकेरियात भीम तरकत देशामक अवर कारक-বৰ্ষের ভাতীয়তাবাদী অভিভাত শ্রেণী ব্রিট্রণরাক ও রাক্ষ্মের श्रांक काम ब्राट्सकाटवर वाक्य । अवदा कीम आख अवसाममाद बरे ग्रांबिकत मुख्र विविधात चार्य कर्रधारमत कर्न्यात बरर कांबाद चारकदान्यत है कि किन चादर नमुख्य करन चाच-विश्वक्रम करा !..."

"ৰুগান্তর" ও "অয়ত বাজার প্রিকা" একই সংবাদ-প্রতি-ঠানের অল। কিন্ত চ্ইটর প্রিচালনার এরপ পার্বক্য দেখা দের কেন ?

হিন্দী সাম্রাজ্যবাদের নৃতন অভিযান

"বিহার সরকার সম্রান্ত বোষণা করিবারেন—বিহার সরকারী আবা আইন (১৯৫০ সাল) বিহারে অবিলব্দে চাল্লুইবে'। অর্থাৎ, দেবনাগরী অকরে হিল্লী আবা বিহারে সর্ব্বজ্ঞ কর্মকেন্দ্রে এবন হইভেই ব্যবহৃত হইবে। ভদসুসারে সাব-রেছিরী অকিসে বেলিরী করাইবার দলিলপত্র দেবনাগরী অকরে হিল্লীতে লেবাইতে হইবে। বানার বানার অভিযোগের প্রবন্ধ এছালা (ডাইরী) হিল্লী ভাষার লেবা হইবে। ইন্স্পেটার, সাব-ইন্স্পেটররা প্রাথমিক ও বাব্যবিক তুল পরীকা করিবা ভাহারের পরীকার রহব্য, তাহারের ও এই সকল তুলের ছেডমাটারেরের বব্যে পরের আলান-প্রদান, এসেররী ও কাউলিলে প্রয়োভর সম্পর্কীর প্রালাণ ও বিহার গেকেটের ১ন, ৪র্থ ও ব্য ভাগ এবন হইতে বেবনাগরী অকরে হিল্লী ভাষার হইবে। বিহারের আলালভসবৃহ্ছ হিল্লী ভাষার ভাবের আলাকভ্রম্বাভ ইন্ডানি হিল্লী ভাষার লিবিতে হুইবে। সরল, বোটাল প্রভৃতি হিল্লী ভাষার

मिया हरेत ७ काबी हरेता। वाली विवाली कानाबीच अवादात ७ नाकीरात नाका दिली कावात त्वा हहेरत . अवर दश्क विको काशास्त्र बिटक हरेटा । क्रेकीन ब्याकार्शवनक्रक হয়ত হিন্দী ভাষাতেই সঙ্খাল-ক্ৰাৰ ক্ৰিতে হইবে। এই नगर चानम निर्माहरमय शाकारन बहेबन बक्डी खर्फ বিপৰ্বাৰের ব্যবস্থা কেন করা হুইল, ভাতা হয়ভ অনেভেই ব্বিতে পারিভেছেন না। কিছ গভীরভাবে একট অমুধাবন कवित्म देव। बाहरत त्व. अहे निर्द्धात्मत काक छहेरक कम-श्रवं पृष्ठि अरे पिटक चाकरे कदिवाद चिकशास रेका करा হইরাছে। যে সকল হিন্দীভাষী ক্ষপণ এই বিকাচনে কংগ্ৰেসের বিবোধিতা করিভেছেন তাঁলারা সমস্বাচনত ভৌলাক তাঁহাদের হিন্দা গোড়ামির অন্তক্ত আবহাওয়া পাইয়াছেন ভাবিরা কংগ্রেসের বিরোধিতা করিতে ভাল ভইতে পারেন बादर (व जकन वक्षायाकारी बारे निकाहास कराजाता বিরোবিভা করিভেছেন, তাঁহাদের ভাষার উপর এই বুভন चाळवरनंद पिटक छाडारमंद्र मरनारवान ७ चक्कि-नावना चाळडे हरेल नियाहत्वत काटक काहारवत देनविका चिटक भारत-এই অভিপ্ৰায় ইতার পকাতে থাকা বুবই সম্ভব। ভাতা ছাভা ইহাতে বাংলাভাষীকে বিহার হইতে সবুলে উংপাটত ভব্লি-বার চেঠাও রহিয়াছে। কিন্তু আমাদের মনে হয়, ইছাতে विभावी कन दहरत । अहे नमाम अहेबान अकहे। सन्दर्श कृष्टि করার শত্র-মিত্র সকলেই সরকারের ও কংগ্রেসের প্রতি আরও विक्रम हहेरव ।"

উপবোক্ত সম্পাদকীর বছবা পুরুলিয়ার 'রুক্তি' পঞ্জিয়ার প্রকাশিত হইবাছে। ভাষার এই বিতীবিকা গানীলী, বাবু রাজ্ঞেপ্রপাদ দূর করিতে পারেন নাই। ফলে বহাভারতের স্ক্রী সুধুরপরাহত হইবা উটিতেছে। পাকিয়ান স্ক্রী এই পাপের এক বৃত্তি; বিন্দী ভাষা বা অভ কোন ভাষার অহ্যবিকা ভার অভ রূপ। বুলতঃ হইবের ব্বো কোন প্রক্রেদ নাই।

বিহার গবন্মে ণ্টের অনুদারতা

টাটা কোম্পানী উদার শিলপভিগণের অভতর, ক্তি বিহার প্ৰথে টেইন চাপে পঢ়িয়া তাঁহাদেরও ক্তদ্র অভ্যার হইতে হর, তংগদতে 'র্গাভর' (দৈনিক) পরিকার ২য়া পৌষ সংখ্যার বাহা প্রকাশিত হইয়াহে, তাহা অজানিত মা হইলেও, মৃতন করিয়া বিহারী অ-বিহারী স্বভাটার অক্ত আয়াদের স্পৃত্তি ভূলিয়া ব্রিয়াছে। সম্পার্কীর বভব্যে বলা হইয়াছে:

শগত কৰেক বংগৱে টাটা কোন্দামীর গৌলতে ভাষলেলপুর নহরের অভি ক্রুত বিভূতি ও উরতি বটরাছে। বিভীয় বছা-বুছের বাভায় নহরের জনসংখ্যা বেনন ভারতবর্ধের সর্ব্বত্ব বুছি পাইচাছে, ভাষলেলপুরেও ভাহাই বটরাছে। কিছু এই আধুনিক নহরের ক্রুত বিভূতি সভ্যেও শহরবানীক্ষের ব্যবহানের

भवना बिट्डे बारे। करन कवित मवका वित्येत करूप वर्कम ভবিষাতে। প্ৰভাগ যে এই অবসাহ টাটা কোন্সানী ভাঁচাকের অবিভারতভ করির বিলি-বাবস্থা সম্পর্কে স্থির করিয়াছেন যে, अक्षाम विकाशीत्वत मरवारे कांकाश क्षा वर्केन कशिरवन। **এই निवास्त्र कल कामलिक्त्रवानी च-विवासी मानदिकत्वस** बाबा बाबडे हाक्ना ७ श्रीकिकांड ग्रंडे हरेबार । कावरनव-পুরের অন্ত-সমিভি, উংকল-সমিভি এবং পঞারী ও বাঙালী সম্ভাষ সম্ভত্তি কভকজনি সভা-সহিত্তি করিবা টাটা কর্ত্ত-शक्त वह निवास्त्रत विकृत्य कीव अधिवार कांगादेशास्त्र. कातन अरे नारकात काता निकाती थ च-निकातीत्मत नरना रन भार्यका गरी कहा हहेशाया. चाहा वाहा तकतम देश श्रीए-निक्कार दक्षि शारेत ना. व्यक्कि रेवा कामरमनुदराजी च-विद्याबीएक व्यक्तिक चित्रकावाक वृद्ध कवित्य । चावरा ভাষদেহপরবাসীদের এই প্রতিবাদকে নিভাত বজিলা হবে ভরি। ভারণ ভারসেল্র ভোন "প্রাদেশিক" শতর মতে, ইতা সৰ্ব্য-ভারভীর জনগণের শতর। টাটা কোম্পানীর हैविक । नव्यवित पूर्ण नव्यकावकीय अधिक, कर्षकादी, कार्तिनव ও ইত্রিনীয়ারকের দান রতিয়াতে, এই অবস্থার চাঁচা কোম্পানী ভাঁচাৰের ভবিশুলি কেবলমাত্র বিভারীকের ভঙ সংবক্ষিত विजया त्यायना कविएक भारतम मा। अरे पृक्षेष क्रेटक क्रिकाका, वाचार किश्वा कर य-काम नहरवव क्रुंभक वि जिन्न टारमपानीत निकृष्ठे कवि विकृत वक कृतिया रहम, काहा ছইলে অবছা কিব্ৰপ হাভাইবে ? ইতা কি হকিব আফ্ৰিকার ভারতীর বাসিকা ও ইউরোপীর বাসিকাদের মধ্যে বৈষম্যবলক मीचित्रहे खिच्छिम महा अवर ता भीचित्र विकृद्ध चाक मीर्यकान বাৰং আন্তৰ্জাতক আন্দোলৰ চলিতেতে ? টাটা কোম্পানীর এই নিহাত ভারতীয় শাসনভয়ের বৌলিক অধিকার সংক্রাত बीचित अकास विद्यार्थी। काबरमध्नद्व है।है। कान्नाभी अहे পৰ্যাত্ত বল্ল ভ্ৰমতি কৰা এবং সালাভিত কলাপকর কার্যা ভবিষাহেন। আলা ভবি তাঁচাৱা ভবি সংক্ৰাছ এই অভাব निषाय क्षणाजात चतित्वम ।"

এই বছবোর উপর আমরা আর কোম বছব্য করিতে চাই

লা। একট কথা বরণ করাইরা বিতে চাই। বিহার রাজ্যের

অবিবালী প্রবাণ করা একপ্রকার অসভব। পাঁচ-হর শভ

বংগরের বৌলিক বাঙালীকে ভারা প্রবাণ করিতে ১৯১২

বীঠাক হইতে "ভোষিগাইল্ড" সার্টাক্তেট-রপী বেড়া ভিলাইবার বেণ পাইতে হইতেহে। গাখীলী পর্যন্ত ব্যর্থনবোরণ

হইরাহিলেন।

আমাদের দেশে খাগ্য ঘাঁট্তি কি প্রকৃত ?

ভারত-সরকারের "ভূতপূর্ক এসিটান্ট এরিকালচারাল ক্ষানার" এইকুত্বৰ চটোপাব্যার উপযোক্ত বিষয়ের আলো- চনা করিয়া সময়োগযোগী কর্ত্তন্য পালন করিয়াছেন। আদ নাত-আট বংসর হইতে—১৯৪২-৪৩ লালের ছতিক হইতে— বেশের চিন্তাপীল মর-নায়ী এই সমতা নহছে রাখা খানাইতে-হেন; নিক্ষেরে জান-বৃদ্ধি মতে উপরোক্ত প্রপ্রের উত্তর্জ বিতেহেন। ভারতীয় কেল্লীয় ব্যবহাপক সভার সভ্য ঐ তে. সিংবা ১৯৪৭ সাল হইতে বলিতেহেন বে, ভারভয়াই বাতে ঘাট্তি ময়। "আমক্ষ্যাভার প্রিকা"র বাণিজ্য-সম্পাদক সংখ্যাতব্যের মানা অভ ক্ষিয়া এই ক্ষার সম্বর্গন ক্ষিয়া-ছিলেন ১৯৪৯ সালের যে মাসে। আম্বা সেই সময় ভাষা সম্বর্গন ক্ষিয়াহিলার। ইন্দ্রায়ুর ৩৫ পৃঠার পুভিকা সেই রভ পরিবর্ত্তিরের বৃক্তি ক্ষাইতেহে।

ভবুও বলিভেছি বে, ১ কোট টন (২৭ কোট নণ) বাড-লভের বাট্ভি দেশবানীর বুকের উপর বে অটল হইয়া বসিরা আছে ভাহার কারণ কি ? সংব্যাভব্যের বেলা ভাহা প্রমাণ বা অ-প্রমাণ করিভে পারিভেছে না এবং প্রমাণ বা অ-প্রমাণ করিলেও দেশের নর-নারীর সান্ত্রনা ভোবার !

সিধনা মহাপর গত হই সপ্তাহের সব্যে কেন্দ্রীর সরকারের মন্ত্রিপদে নির্ক্ত হইরাছেন। তিনি এই স্থবোগে তাঁহার বৃত্তির সপক্ষে মন্ত্রিক ক্রিকে ক্রেম্বর মহৎ উপকার-সাধন করিবেন।

ইন্থাবু পশ্চিমবদের বাভবিভাগীর মতের সমর্থন করিছেছেন। উভত্তে সাহেবের ছুভিন্দ ক্ষিণনের মন্তব্য উদ্ভূত
করিরা নিজের মত দুচ করিছেনে, এবং বাভ-বিভাগীর
নামা তথ্যের উপর নির্ভর করিয়া চলিয়াছেন। কিন্ত ছুভিন্দ
ক্ষিণনের মন্তব্যাদি শ্রীকালীচয়ণ বােষ কৃত 'বলবেন্দে ছুভিন্দ'
পুতকে সংখ্যাতখ্যের সাহাব্যে আলোচিত হইয়ছিল।
তথ্যকার মন্ত্রিমভাগী তাঁহার মুক্তি অ-প্রমাণ করিতে পারেন
নাই। আলও এই ভর্ক-মুদ্ধে কােম পন্দ দাবি করিতে
পারিতেছেন না বে, তাঁহাবের মুক্তি এহণ ক্ষিয়া তর্কের
অবলান হউক।

ইন্বাৰু উচ্চার পৃত্তিকার শেষ পৃঠার "সমভাপুৰ্ণ প্রবাসী" (integrated plan) ক্ৰাটির ব্যবহার ক্রিয়াছেন। কিছ ক্ৰা ও কাজের মধ্যে চূরত্ব বিভার। ভাহা কে ক্রাইবেন ইছাই গোভার ক্ৰা।

## পশ্চিমবঙ্গে মৎস্থের চাষ

নবৰীণ হইতে পশ্চিমবদ মংজ্ঞীবী সমিভিত্ন প্ৰচাৱ-লন্দাৰক পশ্চিমবদে মংজ চাবের মানা অপ্নবিধা সক্ষয়ে বে-লথ কাৰণ নিৰ্দেশ করিবাছেল কংপ্ৰতি বংজ-বিভাগের মন্ত্রী মহাশ্যের সৃষ্টি আকর্ষণ করিতে চাই। পশ্চিত নীলক্ষ্ঠ ভক্তি-কুষণ বাহা বলিবাছেশ ভাছা অভিজ্ঞান বাজেই সম্বৰ্ষণ করিবেদ। ভিদি সন্থ্যে মংজ-শিকার সক্ষয়ে বলেব ঃ

বাংলার নদদগীতে বে জেলে ব্যবলার চালার, তাঁহাছের অভিজ্ঞতার কথাই বলিরাছের। "প্রক্রত সমুভার সন্থান হটতে व्हेंदन चावावित्रक विचाद थ कि शतिबाद शब्द हडेरक हरेर बाहारे वृत्र कथा। यश्यकार्य व यश्यकायी जाववाम क्रेंदिम अवर क्रिलंडक बाह्यजन्मक दृष्टि भारेटर अ विश्वत আৰৱা সিঃসন্দেছ, কিন্দ্ৰ ৰংস্কচাৰের অসুবিধা বলি থাকিৱাই वाब, चांव चांबदा बरकांच कर विलालके बावि-बाबारक क्षि वह वृद्धि त्यार्टिहे हहेरन मां, क्षांह्या नाक क प्रवृद्ध कथा। चावारक चणावरे जनवता जारे अविश्वतत वन अवणा-শুলির উপর কিছু আলোকপাত করিভেছি বার। সহস্রাগুলি এই—(ক) পশ্চিমবদের অধিকাংশ পুতুর, বাঁৰ, জরুলীতে ও विटन बरुएक कीवमबात्रांभारवात्र कन बादक मा। (४) বে সম্ভ দীবিপুকুর পূর্বাপুকুষের খনিত, ভাছার ভলদেশে বছ काक जनामि कविदादक-वैठाटक बश्च हार कास्तर। (त) रव-जब विरम श्रीवर कम वारक, अवस कि कि देवनार बारजर इरे बाज कन पादक, जाबादक कहतीशाना करत ७ के शामात গাৰ পাভা শিক্ত জলের তলে পচিয়া ( ভ্যামত ) মংস্ক চাষের অপুৰিবা কৰায়। (খ) প্ৰচর গভীর কলবিশিষ্ট কলাতে বহ মংভাৰ মংভও বৰ্ডমান আছে। (৩) বে কভিপন কলা (সংখ্যার মগণা) সর্ব্ব পরিবেশে বংশ্রচাষের বোগ্য ভালাদের জ্ঞ বৰাসময়ে উপযক্ত মংস্ত-ভিত্ত বা পোমা সংগ্ৰন্তের বাবভার क्षांठर्श माहे। (b) बरखदिव ( बरख-(शायन ) बिटक (वैक দিলেই দিছ ও পোনা সংগ্রহতে প্রাথমিক অধিকার দিকে हरेरर । प्रश्च विकारनेत क विषय अध्यक्षि अपने कार्या है আছও বর। (ছ) বহু পুকুর, দীবি প্রভৃতি বংস্টাবোপবোরী क्लात केनत वह बालिकामा वह बल्फ्रांस्तत विद्यक्षीन वर्ता অভভন। (জ) বে জলার বে প্রকারের মংস্কের বৃদ্ধির ও পুরীর ज्ञावमा चविक (ज चनाइ (जरे श्रकाद वर्ष्णात चन्ना। (ব) জনার বংশুবাদ্য পরিষাপের জন্সভিংদার জনাব ও ষংসাজীবিগণতে অনেত কেত্রে পরিতীর করার উদ্যাধ। छैब्रिविक कादनश्रमित बाल नवानाने वा दहेता वरनाहारव **१**न्दिवर्गाक करलाक्य जनस्य ।"

## পাকিস্থানে হিন্দু

শ্রীশচন্ত চটোপাব্যার পাকিছান পার্লাবেন্টে কংগ্রেনী দলের বেভা। সন্ততি ভিনি ক্ষনওবেলপ পার্লাবেন্টারী সন্তের ভাউজিল অধিবেশনে বোগহানের উদ্দেশ্ত ক্সবো বাজার প্রাকালে বোহাই শহরে এক বিবৃতি প্রসদে বলিবাবেন বে, পাকিছান সরকারের ছইট কার্বোর উপর সেবানকার হিন্দ্রের নিরাপন্তা নির্ভ্র করিভেছে। প্রথমভঃ, 'টু-নেশন বিভরী' বা ছই-জাভি নীভি পরিভ্যাপ, বিভীরভঃ, বৌধ নির্কাচন প্রবর্জন। ভিনি বলেন, পাকিছানে বর্জনানে বে সকল হিন্দু প্রথমভ বাস ভ্রিভেছে, ভাহারা ছাবী ভাবেই সেবাবে

বলবালের ইচ্ছা রাবে। পুতরাং এই চুইট ব্যবহা অবজ্ঞতিত হটলেই দেবালে ভাহারা পাভিতে বাভিতে পারে, এই অবিকার অর্জনের ভঙ্গই হিন্দু জনসাবারণের সংগ্রাম করিতে চটবে।

'আছান' এই সন্দৰ্কেৰে সন্দান্তীয় নিৰিয়াহেন বিশেষ অফুডুপূৰ্ণ বিবেচনাৰ ভাৱা এধানে সন্দৰ্গ প্ৰবন্ধ হটল :

"পাতিছান পার্গারেণ্টের কংরেলী দলের নেভা নিঃ ঞীপ চটোপারার ক্ষমগুরেলর পার্গারেণ্টারী সন্দের কাউলিল অবিবেশনে বোগদানের ভত কলছো বাজার পরে বোরাই শহরে এক বিবৃভিতে বলিরাছেন বে, উাহার দল পাতিছানে হুক্ত নির্মাচনপ্রধা প্রবর্তন এবং টু-নেশন বিরোরি বা ছিলাতি-তত্ত্বের প্রভ্যাহার চার; তবেই পাতিছানের সংখ্যালভূপন নিজেলের অপেকাক্তক নিরাপদ মনে করিবে বলিয়া ভিনি উল্লেখ করেম। তিনি আরও বলিরাছেন বে, পাকিছানের অবিকাংশ হিন্দু এবনও লেখানে আছে এবং বেহেছু ভাহানের মধ্যে প্রার সকলেই সেখানে ছারী বসবাসের ব্যবহা করিবে, সেই কারণে নিজেলের অবিকার অর্জনের হুক্ত ভাহানের সংগ্রাহ করা উচিত।

"মি: চটোপাৰ্যানের বোখাই-বিবৃতি তাঁছার দলের মূল केरकंड जन्मार्क जकताकडे जरहक्षम कविरत। जरवानिक वा अरबारिक व काम प्राप्त सक्क बाहेरका मानविक्त विक व्यविकात वर्कामत कर मरकात करियान व्यविकात एकहे क्किकार करिएरम मा-क्किक: अध्याद्यात क्किमारीश অভীকার করে মা। বলি পাকিছামী সংব্যালয়দের কোৰ ভাষসকত অধিকার ভূপ করা চইবা বাকে, ভাতা তইলে উতা चर्कावर कर कांठारा मध्याय करूम, कांठारक भाकिशासक সংব্যাপ্তক্ৰের কোৰ আপতি নাই , বরঞ্ বলি সভাই কোৰ चविकात जरबााधकता कृत कतिया बाटक, चावा व्हेटन बुक्तबारमदा हैटा प्रयक्षक कितादेश मिएक नर्वमा श्राप्तक । किंद्र वहि (काम विशय भाकिवारमद कोनिक मीकि-विद्वादी অবিকারের দাবী ভরা হর বা পাকিস্থানের ভিভিন্নংসরলক কোম কর্মণা পরিচালিত হয়, ভাহা হইলে উহার আপোর-তীৰ বিবোৰিতা করাই পাকিছানের প্রতিট রাষ্ট্রাতুরত মাগরিকের একমাত্র কর্মবা ভইবে।

শ্পাকিছানে বুক্ত নির্মাচনপ্রথা কিংবা বডর নির্মাচনপ্রথা প্রবৃত্তিত হইবে, এ সম্পর্কে বিতর্কের অবকাশ আছে, বীজার করিতে আপত্তি বাই। কিছু বে বিজাভিতত্ত্বের ভিত্তিতে পাকিছানের স্কৃত্তি ও প্রতিষ্ঠা উতার প্রভাগের কামনা বা বাবী করা বা ভজত কোম ব্যক্তি বা বল পাকিছানে সংগ্রাম পরিচালমা করিতে চাহিলে কোম পাকিছামী নাগতিক উলা সমর্থম করিবে না, করিতে পারে না। লোকা ক্থার, এই নীভিন্ন ভিত্তিতেই পাকিছাম অর্জিত হইবাছে। বাবে প্রভিন্ন বা চাপে প্রিল্ল

খা যে ভারণেই হউক, বিটিশ সরভার ও ভারতীর কংরেসকে
উক্ত নীভির ভিভিতে উপরহাদেশ বিভাগ ও পাকিছান প্রতিষ্ঠা
বীকার করিতে হইরাহে। পাকিছানে বিকাতিভদ্-বিরোধী
প্রচানপাকে রাষ্ট্রের বৃলে কুঠালাখাত করার সাবিল বলিরা
প্রপা করা বাইতে পারে। পাকিছান পার্লাহেন্টে গঠনতর
সম্পর্কিত আন্নর্গ প্রভাব আলোচনার বা অত কোন সমর
বি: চটোপাব্যার টু-নেশন বিরোধির বিরুত্বে কোন উক্তি
করেন নাই। আক বোহাইতে হঠাৎ এরপ বছব্য করিবার
ভারণ পরিহার বৃরা বাইতেছে না।

"বিজ্ঞাতিভাষের অবসাধ চইলেই ভাবে পাকিভাষের সংখ্যা-जवने बिटकरके बटनकांक विदानक बटन कविटन रेजिया ভিনি উ'ক্ত করিবাছেন। আবরা তাঁহাকে কেবল এইটুকু স্বরণ করাইরা দিতে চাই বে, জাগিরা গুরাইলে কেন্ট কান্তারও বুৰ ভাঙাইতে পারিবে না, ইচ্ছাকুত ভাতত ও ভালতা কোন कारक एक एक कविएक भारत या। अहे श्रेत्राक कांडाव अ কৰাও শ্বৰ বাৰা উচিত বে, ১৯৪৭ সালের ১৪ই আগই চটতে আৰু পৰ্যান্ত ৰাজ একবার পূৰ্ব্ব পাকিস্থানে সাপ্তাদারিক গোলবোগ চইবাছে—ভাও আবার দীর্ঘকালবাাণী বত कारबीर प्राप्तातः शिविकिशायसभा । कार भरूप प्रव अव वर-जातर प्राचा ज्ञार बारतर देशर काराक जालाशायिक जालाश ছটবাতে। পাতিভাষে পঞাল গালের সাম্বিক উত্তেজনা ও हाजाबाद कर शिक्षि भाविषानी नका बन्नव करान . ভাঁছারা নিজেদের ইভিহাস অধনিন রাবিবার জভ সর্বাদা महारे। जारजीय मरबाामधानय जनका मन्मार्क जविक जाहमा-চমা নিপ্ৰবোজন। এটটকু ববেষ্ট বে, বিজ্ঞাতিতত্ববাদী भाकिशामी **मरबा। महिर्देशन माध्यमादिक मध्यी** क्रिकाद (व स्ट्रीस বেবাইরা আসিভেছেন, ভারভের ভবাক্বিভ সেকুলারী সংব্যা-श्कृता जाहाट ज्ञा हरेतात्व ।

শপাকিছানের অবিকাংশ কিন্দু এবনও এবানে বাস করিতেছেন। আমরা জানি, বাঁচারা আছেন উচ্চানের অবিকাংশ ছারীভাবেই আছেন; দেশভাগের কলনা উচ্চারা করেন নাই। আবার এ কথাও জানি বে, বছ সংখ্যালরু পরিবার-পরিজন ভারতে রাখিলা এখানে জীবিকা অর্জনের ভঙ্ক রভিরাছেন। এঁরা পাকিছানী নত্নে, বলিও স্থাবান্তির উদ্দেশ্তে নিজেলের পাকিছানী বলিরা চালাইরা বিবার চেঠাও এঁরা কন করেন না। এ কথা চটোপাধ্যার মহাশ্রের জানা নাই বলিরা আমরা বনে করি না। ভবুর পাকিছানীরা ইলাতে আপত্তি করে না বা উত্তালের কোন প্রকৃতি আপ্রিবা ঘটাইবার মত ভারত করে না; বরক উত্তালের অভিবি বলিরাই স্বা করে।

"পুনকুজি সংয়ও আবার আবরা বলিতেতি বে, বিভাতিতত্ব অধীকার করার অর্থ ই পাকিছানের মূলে কুঠারাবাত করা। পাকিছান প্রতিষ্ঠার পর এ সম্পর্কে আর কোন বিভর্ক উপছাপিত হুইতে পারে না। বুক্ত নির্বাচনের প্রশ্নের সহিত্ত ইহাকে কভিত করিব। বি: চটোপাব্যার অহেতৃক আত্মকদক সমস্ভার অবতারণা কারবার চেষ্টা করিতেছেন। পাকিছানে বুক্ত নির্বাচনপ্রব। প্রবর্তিত হুইবে কিনা, ভাহা কেবল বি: চটোপাব্যাহের কংগ্রেসী বর্ণ হিম্মুদলের মতের বা দাবির উপর নির্তর করে না—কেশের অভাত প্রেমীর, এনন কি সংখ্যা-ওক্লদেরও এ বিষয়ে বক্তব্য আছে। অবিকাংশের মতের অবীকৃতির অর্থ গণতন্ত্র নহে—ক্যানিজ্য; মি: চটোপাব্যায়ের ইহা বীকার করিতে বোব হয় আপতি হুইবে না।

"বিজ্ঞাতিতত্বের প্রশ্নতী না ভূলিলেই নি: চটোপাধ্যাবের বভ প্রবীণ ব্যক্তির পক্ষে বুরিবানের কাজ হইত। মোছলের লীগ বিজ্ঞাতিতত্বক বাতব সভ্য বলিরা গণ্য করে। আজ বাহারা বোছলের লীগের বাহিরে গিরাছেন, উাহারাও এ পর্যান্ত ইহা অবীকার করেন নাই। বিজ্ঞাতিতত্ব পাকিছানের বনিরাদ—এ সম্পর্কে বিভর্ক অভতঃ পাকিছানে নিপ্রয়োজন, অকারণ, অহেত্ক, উপরন্ধ রাষ্ট্রাক্ত্রল নহে। বিজ্ঞাতিতত্ব বীকৃতির ভিত্তিতে সকলের পক্ষে ব ব বাভরা বজার রাখিরাও পালাগালি বাস করা ও বাঁচিরা থাকা সন্তব, ইহাই পাকিছানের নীতি এবং লাভি সংবক্ষণের একরার উপার। প্রতিষ্ঠি পাকিছানীকে বে-কোম জাভি, বর্ণ, বর্ণাবলমী হউক মা, তাকে ইহা অকুঠিতিত্ব বীকার করিরা লইতে হইবে। এই চ্টেক্টা অজনের উপরই পাকিছানের রাষ্ট্রাক্ট্পত্যের প্রশ্ন নির্ভর করিতেতে। "

## পূর্ববঙ্গের হিন্দুরা কোন্ নেশন ?

পাকিছান বলিভেছে ভাহারা ছই-জাভি—'টু-নেশন বিগুরী'র উপর গভিষা উঠিবাছে, উঠাতে মুসলনামেরা নেশন বা জাতি বা নাগ্রিক, কিলুবা নহে। আইন-পরিষধে ও লাসন-ব্যবহার পাকিছান হিলুবিগকে মুসলনামদের সমান নাগরিক অবিকার কের নাই। 'টু-নেশন বিগুরী' অসুসারে হিলুবা সেবানে নেশন নহে বলিরা ভাহা দিভেও পারে না। ভবে হিলুবা কোন নেশন, ভাহালের রাই ভোন্ট ?

কলিকাভার ক্বাহ্রলাল নেত্ক বলিরাছেন পূর্ববেদর এক কোট হিন্দুর সহতে ভারত-সরকারের কবা বলিবার অধিকার নাই, ভারাদের অবস্থা দক্ষিণ-আফ্রিকার ভারতীরদের লহিত চুলনীর। পাকিস্থানের হিন্দুদের উপর উৎপীক্ষ হইলে ভিনি হতক্ষেপ করিতে পারেন না, ইউ, এন. ৩. ভারা ক্রিবে। কিও ইউ, এন. ৩.-তে পবর্ষেটের প্রতিনিধি হাড়া কেত ক্থা বলিতে পারে না এবং লে পবর্ষেট সকলের বীকৃত পবর্ষেট হওয়া চাই। পাকিস্থান বলি ভারাদের নাগরিক বলিরা বীকার না করে, ভারতবর্ধি বলি ভারাদের ভাষানাল বা নাগরিক বলিয়া বীকার লাকরে ভবে ইউ, এন, ৩-তে ভাহাদের করা ভূলিবে কে ?

শুভরাং পাকিছানের হিন্দুদের সহতে বুল প্রশ্নই অনীবাংসিভ থাকিরা বাইভেছে এবং এইজভই পাকিছানের হিন্দু সমভার লমাধান কিছুভেই হুইভে পারিভেছে না। পাকিছানের হিন্দুরা কোন্ রাষ্ট্রের ন্যাশনাল—ভাহাদের দেশ কোবার, ভাহাদের নাগরিক অবিভার কোন্ রাষ্ট্রের উপর রহিছাছে—ইহাট বৌলিভ প্রশ্ন এবং ইহার নীমাংসা সর্বাপ্রে প্রয়োজন। অভি বিপদাপর লোকও সামরিকভাবে অন্যের আপ্রর গ্রহণ ভরিভে পারে, কিছ আপ্রিভ থাকাকালেও ভার একটা দেশ থাকে, কোন-না-কোন দেশে ভার নাগরিক অবিভারে বাকে। পাকিছানের হিন্দুরা পাকিছানের আপ্রিভ একথা নানিরা লইলে ভবন প্রশ্ন উঠে ভাহারা ভবে কোন্ দেশন, ভাহাদের রাষ্ট্র কোন্ট গ

বিদ্-ৰুসলমান ছই জাতি, এই 'ট্-নেশন বিওৱী' নতে পাকিছান বলি হিল্লের তার ন্যাশনাল বলিবা না নানে, তবে তারা
ভারতবর্ধির নাগরিক বলিবা গণা হটবে কিনা ? পাকিছান
বলিতেছে বে, তাহারা বুসলমানের জন্য "হোমল্যাও" চাহিরাহিল । তিল্লের তাহারা চার নাই । নেহক বলিতেছেন,
ভারতবর্ধ আঞ্চাক ভিত্তিতে ভাগ হটবাছে, ট্-নেশন বিওৱী
ভিন্ন নামেন না । কিয়ার ট্-নেশন বিওৱী অভুসারে ইংরেজ
ভারতবর্ধ ভাগ করিবাছে । ইহার মধ্যে তবে কোন্ট সভা ?
বাহারা ভারত বিভাগ লাবি করিবাছেন এবং বাহারা বাওবার
আগে লেই লাবি প্রণ করিবা সিবাছেন তাহারা বে ভিত্তিতে
উহা করিবাছেন ভাহা নানিতে হটবে, অববা নসনদের লোভে
বিনি বভিত্ত ভারত নানিয়া লইবাছেন ভাহার ক্যা সভ্য বলিরা
বুলি তইবে ? ট্-মেশন বিওৱী কার্যাভঃ খীকার করিবা
হবে অবীকার করিলেই কি উহা বৃদ্ধের মৃত্তিবা
বাইবে ?

দিল্লী-চ্ক্তির সময় কৰাই উঠিয়াছিল। পাকিছান তার রাষ্ট্রবিধি প্রণয়ন করে নাই, কেবলনাত্র উহা ইসলামিক রাষ্ট্র হইবে—এই সুব্যবহী পাস করাইয়াছে। দিল্লী চুক্তির সময় নিরাক্ত আলি উহা একাইয়া যান। সেকুলার ও বিবক্ষেটিক রাষ্ট্রে কিরপে চুক্তি হইকে পারে এই মূলগত প্রশ্নই অনীমাং-সিত বাক্রিয়া বার। বামেলা একাইবার করু নেহক্র সমস্যাটকে বামাচাপা দিয়াছিলেন, কিছ বামেলা তাঁহাকে আরও বাক্রাইয়া ব্যিয়াছে। সেকুলার ও বিওক্ষেত্রক রাষ্ট্রে, অসাপ্রবাহিকতাও সাজ্ঞলাভিকতার বে কিরপ মিলন ও চুক্তি হয় নেহকু ভাহার পরীক্ষা বভই ক্রিয়া চলিয়াহেন ভঙই বাব হুইকেছেন।

পাকিস্থানে যৌথ নিৰ্ব্বাচন দাবী বৌধ নিৰ্বাচন নহৰে পাকিষানী মুৰ্গত্ত বলিভেছে, কেবল বৰ্ণহিন্দুদের ছারা ইছার মীরাংসা ছইবে লা। আন্যান্য শ্রেণী অর্থাং অবর্ণ হিন্দুদের এবং সংব্যাগরিষ্ঠ মুসলমান ক্ষসাধারণেরও এ বিষয়ে আপন আপন অভিনত ব্যক্ত ক্রিবার অধিকার আছে এবং ভাছাদের স্মিলিত নতাবভের ছারা বিষয়টির মীয়াংসা ছইবে।

श्रीवारमञ्ज्ञाच वक्षाकत श्रवकारम्य भव शाक्रियाय वही-সভায় একৰ্ম চিকু মন্ত্ৰী প্ৰচণ করার প্রযোজ্য চটলে ভারিভ वाक्रवीरक देक शास वकान करा करा। जानाशी नगरणार्केट পুৰ্ব্বাভাবেই বৰ্ণহিন্দুগৰ পাকিছাৰে পূৰ্ব গৰভল্ল প্ৰভিত্তার केटकटक दशेव निर्वताहम मार्चि कविशास । शाकिमाम अवकास মুখত: এই দাবির বৌক্তিকতা অধীকার করেন নাই। কিছ বলিরাছেন বে, বাদ সকল শ্রেণীঃ হিন্দু ও মুসলমানেরা ইহা श्वक्रित्रमण वीमक्षा मावि करत चरव कुर्कानवीकम श्रवा প্ৰবৰ্তম ভবিতে ভাৱাদের কোন আপতি নাই। ভিত হাবিত वाळवीर शारताहमात अच (अवेर जनका) प्रजा विकाहत्वर দাৰি ভূলিয়াছে। ভাহায়া সংখ্যায় যভ সামাতই হউক না কেন, ভাচাদের যুক্তি বছই অসার হউক না কেন. ভাচাৰের মন্তব্ পাকিছান সরকার প্রাবার দিবে নিকেনের সাৰ্বসিধিত ভয়া। ইংবেজের ভেচনীভিত্তে পাভিতার অসাৰাত্ৰণ দক্ষভাৱ সভিত ক্ৰণবাদ্য কবিয়াছে এবং স্বাৰ্থসন্ধিত্ৰ ক্ষা এ ক্ষেত্ৰে ভাষা ব্যবহার করিভেছে। স্থারিক বারুরীকে মুখপাত্র করিরা হিন্দুদের মধ্যে বিভেদ স্ট্র করার চেঠা চলিতেছে, विक्रिन नराव के व्यवस किहारक गृष्ठि कविशासिन, পূৰ্ণ স্বাধীনভাকামী ভারতকে ভিত্তভিত্ত করিয়া শক্তিতীন করিবার উদ্বেক্ত, পাকিছান সরকারও বিপর নিরাশ্রিত সভার-সমলতীন হিন্দু জাতির মধ্যে বিভেদ স্ক্রীর হিন্তু অধ্যেষ क्तिकार बन्द रामिन व्यम क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया সে শ্রেণীর লোকের অভাব চইবে মা। ভাচারা পাভি-शास्य रिम्पू-मश्र्वाचरक विमहे कविवाद रहहे। कवाद गुर्वावरक्व হিন্দুর সমূৰে এক ভীষণ পরীকা উপায়ত করিয়াছে-ইচার छैनद चाहारबद चरियार कोरम यम माम नन्याम नमच मिर्छद wferwen

## বাঙালী

প্রার ছই বংসর পূর্বে—মুশিদাবাদ, বছরমপুরের "গণরাজ" প্রিকার উদ্ধুত কবিতাট প্রকাশিত হইবাছিল। অভও ভাছা সববোশবাদী। ছরমাবে লেবক লিবিয়াছিলেন। কিন্তু বাঙালী এতটা কুপার পাত্র নম ; তাঁহারা কেবল "ঠ্যাঙানি" বার না ; গঠন করে নুতন ভীবন এবং পারিপাধিক অবহার উন্নতির ক্ষত চেটাও করে।

ভাগাল বাগালী। ভবিও বা গোল, মুখট মুকিখা থাড়, থাজিত তব হোবেছে অদ, ভাহাতে ভি আনে বার ? হিবার ভোবার বে বাধা করেছে ছিরার বাধাতে যাধু,

ब्राट्सिककार वर्की द्वय या जारने काजारता नार्व । বিভাৱে আনামে সাঙাদী বেখেও কোনো না অঞ্চপাত, উংকল বলি করে উংপাত, মনে করিও না কিছু। ৰেডা সেকে কর বিজেকের বাবে বিষয় নিকারাত. निष्मरमञ्जा कार्य कार्य वादा करेंद्र वाक मीह। बाराय बाराय बारेट विभिन्न क्षित नामा रक रवाना जबन बनिय पतिया कथा क केर्ड या करा। লিপুরা ভিতা কচবিভারের বেলার প্রশ্ন শভ প্ৰবিষ্যা প্ৰতিষ্ঠা কৰিল। আক্ৰম বৰ্ড বৰ্ড প্ৰতি । ভোষাৰের লাগি ভাবিছেন তাঁরা, ভোষরা কোরো না কবা। বাভ ককুক ভোষাদের বিত্তি বাবভারার দল, चानात्व चनुष वा विश्व मा वाना, विश्व मा चात्रत वाना : বাঙালী বেধানে বাঞ্চিত নর, বেডে বাক জ্বল। काल काल क'रब एवं बरे नव, माताबादि कब परव. क्रमनम मिट्स बाध बाटर बाटर क्रिकीर करकार. সাহাৰাষীয় পাশৰ-ৰঞ্জ বুলুক বাৰাত্ৰ 'পতে ভূলিরাও তবু হাভিও না কতু উপদল মহিমার। --- এবিফু সরবতী।

### সাদা চামড়ার দাপট

ড: তেনিয়েল যালাৰ যকিব আফ্রিকার খেডাল প্রভন্ন श्रीकर्वात किम भक्ताविकी हैश्मन चन्न्वीत्मत चारबाकरन ব্যত। সেই সময়েই আর একক্ষম খেতাক রাইপ্রের সভাষ হাভাইরা দক্তিণ আফ্রিকার আতাত্তরীণ অবস্থা সহতে নিজের অভিজ্ঞভাৱ কৰা বৰ্ণা-প্ৰসদে বলিভেছেৰ যে, ইউনিয়ন প্ৰ-(व के कांकारका वर्श-विरविष्यक्रक मीकित करन अक अक्रकत সম্ভাৱ সন্থান হইতে চলিয়াছেন। অধেতভার অধিবাসী-গৰ বনে করেন বে, দক্ষিণ আফ্রিকার বাসুবের আইন ভাগবং বিধানকে সভাৰ করিতে চাহিতেতে এবং অবেভকার ভাতি-मबूद और प्पर्का क्षत्रकृतिए बानिया महेरव मा, मध्यवद मिक्किय श्रीकितान चारणामात्मत वाता चाठाव निरवानिका कविनान कर चक्षत्र हरेत । वर त्रकान्त्रे हरेलम मानाम नदकार कर्यक হকিব আফ্রিকা হুইছে নির্বাসিত ইংরেক বর্ণবাকক বেভারেক बाहेरकन पर्छ । देनि देखिशुर्व्स चात्रच हरे नात बाहेशुरुत সন্থাৰ উপস্থিত হুইয়া প্ৰত্যক্ষণী ৰূপে বালান সৰ্কাৰ কৰ্ত্তক অনুস্ত নীতি সহতে সাক্ষ্য দিৱাছেন। কিছ বৰ্ষ বাহা বলে বল্ক, সভাভা ও বস্তুত্ব বে বছব্য করিতে হয় করুক—ভাত্যর প্রতি কর্ণণাত করিবার অবকাশ ড: বালানের বাই : বেভাল-क्षांबाच चाजाव चाजाव ७ त्यांवर्गाद कामार्थ अच्छी विदार्ध ভ্ৰমন্ত্ৰে নিঃৰ ও সৰ্বাহাত করিয়াতে, আইন প্ৰণাৰ হাত্ৰা ৰাষ্ট্ৰের প্রাণ্য অধিকার কট্ডে বঞ্চিত করিবা ভারালিগড়ে प्रशामिक मध्यारम मित्रक क्षित्क क्षेत्रक हरेबार्ट । विध-বিধান মলিয়া অজ্ঞাত একট বস্ত বানন ইতিহানে কিয়া করিতে

বেধা বার। বেই বিবাদ বে কজন করে, সেই বিবাদের বোব ভাহাতে ভূণ সম বহন করে। কিন্ত মালাম-লাভীর দীব ভাহা লানিরাও লানিভে চার না, বুবিরাও বুবিতে পারে না। কলে নিজেকে ও কোট কোট নরমারীকে হংবের সাগরে ঠেলিয়া বের।

## মিশর-স্থদান-টিউনিসিয়া

আৰু প্ৰায় আইবট বংসর বিশরদেশ ব্রিটেশের অবীবে আহে; সেই সলে সুদানের উপরও কর্তুদ বজার রাখিরা চলিরাছে। বাহদির পরাজর ঘটে ১৮৯৮ ব্রীটান্তে; তবল বিশরকে বাব্য করা হয় "সব-অধিকার" (condominion) খীকার করিবা লইবার জন্য, বহিও বিশরই এই অভিযানের বাব বহুন করিবাহিল। প্রায় সেই সন্মানী সেনাপতি বার্তেন্ট ইংরেজ সেনাপতি কিচেনারের দাপটে কেলভা (Fashoda) হইতে হাত গুটাইতে বাব্য হয়। কিছ ইংরেজ সোলকেও চটাইতে চাহিল না। উভয় আফিকার করানীর অধিকার বিভাবে প্রশ্রম হিল।

এই ভাবে একট কটলভার স্ঠি হইল। ইহার কল আৰু আনরা সকলে ভোগ করিভেছি। ১৯৩৬ এটাকে বিটেন বিশ্বকে খানীনভা দিল। কিছ "সন-অধিকারট' (condominion) বজার রাখিল। আবার থলিকে করাসী সাম্রাজ্যবাদ বিভীয় বিশ্বক্তর কল্যাণে নিজেকে কর্মল ও অসহার বনে করিভে আরম্ভ করিবাছে। এখন বাক্তিন ও বিটেনের সাহাব্য হাড়া ভাহার চলে না।

স্তরাং বিশ্ব-প্রধান-ইউনিসিরা স্থিতিত রাষ্ট্রস্থ্রের বিবেচনার বিষয় হইবা পঢ়িবাছে। ইউনিসিরার রাজনীতিকেরা আরব-রাষ্ট্রপোজীর বাহিরে নিজেবের লাবিন্যাওবার সমর্থনলাত করিবার চেষ্ট্রা করিতেছে। তাঁহারার বিষয় সমর্থনলাত করিবার চেষ্ট্রা করিতেছে। তাঁহারের পক্ষে আছেই, ভারতরাষ্ট্রের সাহাব্যপ্ত প্ররোজন। সেই ক্ষ্য ইউনিসিরার অবিস্থানিত নেতা এল হবিব বোর্জিবা এই বিষয়ে চেষ্ট্রা করিতেছেন। তাঁহার একবানি পত্র "লাই-লাইউস্" (Spet-Lights) পত্রিকার সম্পাদকের হাতে পৌহিরাছে। তিনি এবন ক্ষাসী কারাগারে বন্দী। তাঁহার পত্রে ভারতরাষ্ট্রের বৈনিক, সাপ্তাহিক ও নাসিক পত্রের সম্পাদক্ষরতারীর নিক্ট অন্থবোর করা হইরাছে যেন তাঁহারা ভারতের ক্ষরতকে তাঁহারের সপক্ষে আনরম করেন। পত্রিত ক্ষরতকে বিষয়ের বলা হইবাছে।

আনৱা এল হবিবের এই অভ্রোব সমর্থ দ করি। বিলেপী
শাসনের আলা বে হাতে হাতে বুবিরাহে, ভাহার পক্তে
পরাধীনভার বিস্থি একাভভাবে কার্য। ভাহার উপর
ভারতের রাইনীভি আক এক শভ বংসর হইতে এই অভ্রেরণার
চলিরা বিটিশ শাসনের অবসাম বটাইরাহে। ভারত সকল
বেশের সর্বাদীন বুজির অভূঠ সমর্থ ক।

### বাংলার পুস্তক প্রকাশক সজ্ম

এই সজের কার্ব্যক্তরে বাংলার পুন্তক ব্যবসারে একটা বিপদ বনাইরা আগিরাছে। কলিকাতা বিশ্ববিভালনের হাত হুইতে এখন বাব্যমিক শিক্ষাবোর্তের হাতে ব্যাট্ট কুলেশন পরীকার সকল লারিত্ব আসিরাছে। বাধ্যমিক শিক্ষাকে নৃতন করিরা গভিষা ভূলিতে হুইবে; তার পূর্ব্যে প্রাথমিক শিক্ষারও পুনর্গঠন প্রবাহ্মন। এই হুই কাক একসলে না করিলে, প্রাথমিক শিক্ষার উন্নতি সাবন করিরা বালক-বালিকার শিক্ষার গোড়া হুচ না করিতে পারিলে পুতকের বোঝা ভাহাদের বাভ হুইতে অলবিত্তর না ক্যাইলে বাব্যমিক শিক্ষার উন্নতি অসত্তব এবং বাব্যমিক শিক্ষার গোড়া চুচ না করিলে দেশের উচ্চশিক্ষার তবিত্তং অন্ধকার হুইবে; পুরাতন ব্যব্তার অন্থস্যর করিরা চলিতে হুইবে। এই তাবে বান্যমণ্ডীবন এক প্রম্নে প্রবিত্ত।

এই সৰ কথার বব্যে নৃত্যত্ব বিছু বাই, কিছ বানব-জীবনের জটলতা স্থাৰ পাইবাছে। টোল-বক্তব ইভ্যানির শিকা বর্তমান জগতের নানা সমভার সমাবান করিতে পারিবে বলিরা বনে হয় না। বাজিক সভ্যভার আমলে বাজ্য অনেকটা ব্য-চালিভ হইয়া বাইভেছে এবং অবছা দেখিয়া বনে হয় বে, ব্যক্তির আছ্ল-কর্তৃত্ব আরও সম্কৃতিভ হইবে.।

এই অবছার সমুখীন হইরা মানবজীবনের সর্বাচ্চের রাজের প্রতিষ্ঠার বার্তির আবিপত্য প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। ইংরেজ রাজত প্রতিষ্ঠার সলে সলে শিক্ষাকেরেও সেই অবছার আবির্ভাব হইরাছিল। শিক্ষার লাহিত্ব বিশ্ববিভালরের হাতে বিরা, এই প্রতিষ্ঠানকে অব সাহাব্য করিরা উচ্চশিকা ও বাব্যবিক শিক্ষার লাহিত্ব হুটেতে রাষ্ট্র বিবেকে বুক্ত করেন।

ছাপাণামার আমদামীর সদে সদে পৃত্ক-প্রকাশ এক বিরাট ব্যবসারে দাভাইরাছে। বাংলাদেশে এই ব্যবসারে কত কোট টাকা মূলবন রূপে গাটতেছে তাহার হিসাব দেখিবাছি বলিয়া রূমে হয় না; তার বাংসরিক আর কত ও কত লক্ষ পরিবার এই ব্যবসারের কল্যাণে ক্রীবন্দরালার উপ-ক্ষরণ সংগ্রহ ক্রিকে পারিকেছে, ভাহার একটু বিশ্ব বিবরণ লংগৃহীত হওয়ার প্রয়োজন আছে।

এই অবছার কলে "বিবভারতী" প্রকাশক গল, এম. সি.
সরকার প্রভৃতি প্রভিটানকে বলীর পূভক প্রকাশক গল একবরে ক্রিভেরেন। আচার্য বহুনাব, রবীক্রমাব প্রভৃতি সাহিত্যের বিকপালবের পূভক বিক্রের বাবা বিভে বাহারা চেটা ক্রিবেন, বনে হর ভাহারাই "একবরে" ছইবেন।

এই সম্ভাৱ সমাধান কটিন নয়। কোন সহকারী প্রভিঠান কর্তৃক প্রকাশিত পূত্রকাবলী বে সর্বাদস্পর হয় ভাষা প্রমাণ-লাপেক। নেইরূপ কোন ব্যবসায়ী সন্দেহ হাতে এরূপ বাহিছ-পূর্ব কার্ব্যের সম্পূর্ব কর্তৃত্ব বেওরা অবাহ্ননীয়। এই মুই পক্ষেয় ৰব্যে একটা আপোষ কৰিতে কে অএসর হটবেন, ভাছাই বিবেচ্য। কল বৰেই বোলা করা হইয়াহে, এবন ছিন্ত-বৃদ্ধিতে সমস্তাপুরৰ করা কর্তব্য।

### রাজা ষষ্ঠ জর্মজ

গত ২৩শে বাঘ ত্রিটেনের রাজা, "ক্ষমগুরেলবে"র প্রধান, রাজা যঠ কর্জ ৫৭ বংগর বরনে বরজগতে শেষ নিয়াল ত্যাগ করিরাছেন। এই রভ্য আক্ষিক মর। গত ভার বানে বর্থন উচ্চার জন্বরের উপর অলোপচার করা হর, তবনই বুঝা বিহাছিল বে. যঠ কর্জের দিন বনাইরা আনিবাছে।

ইভিবব্যে ব্রিসভার পরিবর্তন হইল; প্রবিক্ত ব্রিবঙ্গী সিরা রক্ষণশীল দলের ব্রিবঙ্গী বিঃ চার্কিলের নেতৃত্বে
গঠিত হইল। রাষ্ট্রের পরিচালনে কোন কক্ষমী পরিবর্তন কো বাইতেছে না। বিলাভের লোকের বাংসের অভাব বিটিল না। অভানা বাভন্রব্য প্রচুর, এবং বিলাভের নর-নারী বাংসের ব্যবহার ক্ষাইভে বাব্য হওরার ভাহাকের বাংখ্যের কোন অবন্তি হর নাই; বরং উর্লিড হইরাছে।

অপূলক রাজার প্রথম কলা রাজকুবারী নির্কিলে ব্রিটেনের রাণী হইরাছেন; ক্ষমওয়েলথের প্রধানা হইলেন। জাঁহার পিভার সবরে সর্বাণেকা বিপ্রথকারী ঘটনা হইল বিভীন মহারুছ (১৯৩৯-৪৪), বেমন জাঁহার পিভারহের সবরে ঘটনাছিল প্রথম নহারুছ (১৯১৪-১৮)। এই হুই ঘটনার প্রান্ধ নারা ইউরোপ বঙ হুইভে রাজভন্ত (monarchy) সূপ্ত হুইল। রালিবার জার, জার্থানী ও অট্রিরার কাইজার, ভূরত্বের প্রভান বরাপৃত্ত হুইভে বুছিরা পেলেন। ক্ষেত্রল রহিলেন বিটেনের রাজবংশ বাভি বিবার জল। এই বিষয়ট একটা আলোচনার বিষয় হুইরাছে রাট্র-বিভানে, রাট্রবিদ্দের বব্য। ভাহার রহুভ ভেদ করিবার নানা বুজির অবভারণা করা হয়। ভার বব্যে প্রধান হুইল ইংরেজের রক্ষণশীলভা। ইংরেজী ভাষাভাষী মার্কিনীরা পর্যান্ত লঙ্গলে আলিলে রাজা বা রাণীর সলে ধেণা করিবার জল ঠেলাঠেলি করে।

এই সন্তৰ খার কডবিদ টাকিবে ভাহা ইভিহাস বলিভে পারে। ইংরেজের নথ্যে একটা সংকার খাছে বে, উাহাছের বেশে বৰন রামীর খাবিভাব হয় ভবন বেশের সহবি কাপিরা উঠে বেসন উটিরাহিল রামী এলিজাবেবের সময়, রামী ভিটো-রিরার সময়। রাজা বঠ কর্জের কড়া বিভীয় এলিজাবেশ নামে পরিচিতা হইরাছেন।

তাঁহার পিতৃবিরোগে আবরা সববেহনা প্রকাশ করিছেছি, এবং গণতর বিধানের নাগরিক হইরাও ভাষা করিছে সফোচ বোধ করি না। আনাধের পক হইতে আছুঠানিকভাবে বাহা করা হইতেহে ভার বব্যে একটু আভিশব্য বাজিতে পারে, অব্যার কিছু নাই।

#### সংশোধন

পুলনা দৌলংপুর ফলেজের এরবেশচন্দ্র লাস, এব-এ নিয়লিখিত সংশোধন প্রাট পাঠাইয়াছেন। আমরা তাঁহাকে বছবাদ আমাইভেছি:

"আগমি লিবিরাছেন বে "বহাখানান ভাষ্য ভারবালার হালাব হোলেনের হত্যাভাও অবলহন করিয়া লিবিত। একদা 'বিষাদলিছু' হুংবের বভা প্রী করিছে চেঠা করিয়াছিল; ভারকোরাছের 'বহাখানান' ভাব্যে অত্যাচায়ীর বিরুদ্ধে সংক্রাবের এই চিত্র বর্ডরান বুলের ভারতীর বনোভাবের বিশিপ্ত পরিচর প্রদান করিয়াছে। কিছ প্রকৃতপক্ষে ভাষ্যা নহে। হালান-হোলেনের বিষাদমর কাহিনী বাবাতে বিবৃত্ত হইয়াছে, ভাহার নাম 'বহুরম শরিক' বা 'আত্মবিসর্জন' কাব্য; 'মহা-খানান' নহে। বহাজাব্য 'বহাখানান' পাণিপথের তৃতীর বুছ অবলয়নে লিবিত। এক দিকে আহ্রেদ না-আবদানী ও অভ দিকে বিপুল মহারাই শক্তি; এই বুছকে অবলয়ন করিয়াই কবি বহাখানান রচনা করিয়াছেন। ইহা ভারতীর বুসলমান বীরপুরুষধের শৌর্বীর্ব্যের শেষ অরিক্ষ্পিক বলিয়া ইহার নাম মহাখানান।"

বাঁকিপুরের সদ্য অস্থান্ত প্রবাসী বদসাহিত্য সম্মেদমের সভাপতি মহাশরের বক্তৃতার উপর মন্তব্য করিতে সিরা আবরা বাংলাদেশে শিশু সাহিত্যের প্রবর্তক করের নাম উল্লেখ করি নাই। তাঁহাদের নার প্রবদাহরণ সেন, রানানন্দ চটোপাব্যার ও উপেক্রকিশোর রায়চৌধুরী।

## বদস্তকুমারী হোম

ৰে প্ৰাণৰৰ্থী সংস্কৃতি ভাৰতবৰ্ধে এখনও চলিতেছে, ভাৰ প্ৰতি বিৱল হইবা কেন আনাদের নথ্যে সন্ন্যানীর প্রবৃত্তি আনিরা উটল ভাকা ভারত-ইভিকালের অভতন রহত। বনত-কুমারী কোন এই প্রাণবর্ধের সাধনে নিরভ থাকিতে পারিবা-ছিলেন বলিবা জীবনে এখন করিবা প্রক্তে আপন করিবা-ছিলেন, স্বক্তে নিকটে আনিতে পারিবাছিলেন। ইহা ক্বাৰ ক্যান্য। ইহা ভার প্রভাগত ত্বন্ত্রপ্রত ক্তিত্য।

এই তবের প্রকাশ পাইরাহিল বসভুবারীর পিতা কালীনাথ বছ বহাশরের ববে। এই লোকট হিলেন রাধনারারণ বসুর শিবা; হারকানাথ বিভাতুবণ, শিবনাথ শারা,
হুগাঁগোহন দাশ, আনন্দলোহন বসু, হারকানাথ গাছুলী প্রভৃতি
নাবারণ রাজসনান্দের প্রতিঠাত্গণের অভত্তর। বোড়াল-বজিলপূর, করনগর, চিংডিপোডা, হরিনাতি ললাক একস্কে প্রথিত
হিল। এই অঞ্চাকে নব্যবদের পীঠনান বলিলেও অন্তাক্তি হইবে
না। কেইকত বলভুবারী হোবের বিকট বলিলে ক্থাছলে
ভাঁহার বিকট অবেক তথ্য পাওরা বাইত হারা শিক্তা-প্রতিঠাবেও

পাথবা কটিন। অনেক গবেষক তার নিকট ধনী। লেই বৰ প্রকাকে বাজার করা উচিত।

উাহার বানী গগনচন্দ্র হোন হিলেন পুন্দরীবোহন দাশ, বিশিনচন্দ্র পাল, ভারাকিশোর চৌধুরী (সভ্যাস বাবানী) প্রভৃতির সহক্ষী। শান্ত্রী মতাশন ইহাদের শিষ্যত্বে বরণ করিবার ভার কভ বে প্রতিভা করাইরাছিলেন অধিসাদী করিবা ভাহা দীবনের নানা ক্ষেত্রে তাঁহারা পালন করিবাছিলেন। অভিধিবংসল বলিবা তাঁহার ব্যাভি হিল। ভিনি "সঞ্জীবনী" প্রিভার সলে সংযুক্ত ছিলেন।

বসভকুষারী ৭৭ বংসর বছসে তাঁহার প্রাবিভ লোকে চলিরা-গিরাহেন। তাঁহার কল আমরা শোক করিব না। তাঁহার পুরক্ষার উদ্ধেক আমরা সমবেদনা প্রকাশ করিবেছি।

#### ठोक उत्प पछ

গত ৮ই বাৰ ঞীলৱবিন্দ আশ্ৰবের কেন্দ্র পণ্ডিচারী নগরীতে হুদ্বল্লের ক্লিরা বন্ধ হুইবা চাকুচন্দ্র হন্ত পরলোকে চাল্রা গিয়াছেন। বিপ্লবী বুগে অর্থিন্দের সহক্ষী, সাধনবার্গে শ্রীলরবিন্দের শিয় এই চুই ভাব ও কর্মের সময়র বৃত্তি দেখি-রাছি আম্বরা চাকুচন্দ্রের কীবনে।

তাহার আর একটা পরিচর ছিল। তিনি সাহিত্যরসিক, বাংলা তাহার তাহার আত্মচরিত "পুরামোক্থা"র সেই পরিচর পাওরা হার। তিনি ছিলেন বছলিশী লোক, রবীজনাথের নিকট হুইতে তিনি বে প্রশংসা লাভ করেন তাহা অনেকের স্পৃত্নীর।

তাঁহার শিভা কালিকাদাস দত কৃচবিহার রাজ্যের দেওৱান ছিলেন। চারুচজের জীবন-স্থতিতে দেবিতে পাওরা বার তিনি কেন গিবিল সার্বিস পরীকা দিতে সম্মত হুইরাছিলেন। অর্থোপার্জনের কত নর বা রাজসম্মানের কত নর, কিছ এই উচ্চপদের দৌলতে নামা গোশম সহান লাভ করিরা বিদেশী শাসনবছকে বিকল করিতে পারিবেন এই তরসার চারুচজ্র এই পদ্ এহণ করেন। এই কৃষ্টল পবে চলিবার সাহস বা শভিস্কলের বাকে না। বাক্লিও বেশী দিন উচ্চপদ, প্রচুর অর্থ উপার্জন করিলে, কালে মাহ্র প্রভাই হর। চারুচজ্র সেই ভাগ্য-বানদের একজন বিনি হুর্গর পবে চলিরাও ক্রমণ্ড প্রভিনিযুক্ত হন মাই। চারুচজ্ল এই সবই হাসিয়ুবে সক্ত করিয়াছিলেন।

ভীবৰের লারাকে ভিনি এই পথ অভিক্রম করিয়া বিপ্লবী বুলের সহক্ষীর হাত বহিরা, তাঁহার শিক্তম এহণ করিবা আব্যাদ্ধিক ভীবনের বিভূততর লোকে বিচয়ণ করিতে আরম্ভ করেব। তাঁহার মত অব্যাদ্ধ-ব্যাখ্যাতা পুর করই দেবিবাহি। 'বিব্য ভীবন' (Life Divine) নামক পৃতকের অভ্নাদ তাহার নিয়পন।

এই বাঙালী প্রধানের ভিবোবাদে আনাদের স্বাক বে ক্তিপ্রভ হইল ভাকা অপুংবির। আনরা ভাতার পুর ও পত্নীর উদ্দেশে সরবেহনা ভাগন করিভেছি।

# কলিকাতা বিশ্ববিত্যালয়ের সংস্কৃত বিভাগ

## এবিধুশেশর ভট্টাচার্য

#### উপক্রমণিকা

শোনা বাইতেছে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে কডক পরিবর্তন আসন্ধ, এবং সংস্কৃত বিভাগেও ইহার প্রতিক্রিয়া দেখা বাইতে পারে। আমি এক জন সংস্কৃতাহুরাগী ও আজীবন সংস্কৃতবিভাগের অধিনেতা বলিয়া তাহার সহিত আমার একটা ঘনিষ্ঠ পরিচন্ত্রও আছে। তাই এই সময়ে ইহার সম্বন্ধ জনগণের কল্যাণের উদ্দেশ্যে আমি কিছু আলোচনা করিতে ইচ্ছা করিয়াছি। অহুরক্ত ব্যক্তিবর্গ ও কর্তৃপক্ষ ইহা এক বার চিস্তা করিয়া দেখিতে পারেন।

সংস্কৃত বৃদত বদিও এই ভাবতের ভাষা, তথাপি আর ইহা নিজের চত্ঃসীমার মধ্যে আবদ্ধ নহে। পৃথিবীতে অগ্রদামী দেশসমূহের অনেকের মধ্যে ইহা বর্তমানে সাদরে অধীত হইয়া থাকে, এবং ইহার বিবিধ বিবরে যে বিপুল আলোচনা ও অভ্যাদর হইয়াছে ভাহা কোন অভিজ্ঞ সংস্কৃত-বিদই অবজ্ঞা করিতে পারেন না।

#### শিক্ষাপছতি

বংসর পাঁরত্রিশ হইবে স্বর্গীয় মহাশর আ শু তো য বথন এই বিভাগকে প্রতিষ্ঠিত করেন, তথন, স্পষ্টতই মনে হয়, তিনি চিস্তা করিয়াছিলেন বে. এক্মাত্র প্রাচীন বা নবীন পছতিতে কাজ করিলে চলিবে না। বিশ্ববিভালয়ে উভয়ই প্ৰতিকে বৰ্ণাৰৰ ভাবে স্থান দিতে হইবে। এইজন্ম সংস্কৃত শিক্ষার উদ্ধেশ্যে সংস্কৃত কলেঞ্চের ক্রায় স্থপ্রসিদ্ধ প্রতিষ্ঠান থাকিলেও তিনি বিশ্ববিদ্যালয়ে এই বিভাগটি বোগ করেন. এবং ছই বিভিন্ন শ্ৰেণীৰ অধ্যাপককে নিযুক্ত কৰেন; প্ৰথম, প্রাচীন প্রতিতে শিক্তিত, ইহাদের মধ্যে কেহ-কেহ সংস্থত কলেকের প্রসিদ্ধ অধ্যাপক চিলেন: (ध्वीरिक हिरमन ककक हेश्द्रकोळ वर्षाय मश्कृष्ठ अम. अ. भवीकात छन्नीर्य निक्रकश्य। देशास्त्र देशद्यको जानात्र মনে করা হইয়াছিল বে. ইহারা বর্তমান বা নবীন পদ্ধতিব সহিত পরিচিত আছেন, অথবা ক্রমে ক্রমে শীন্তই পরিচিত হইয়া উঠিবেন, অথবা এই পদ্ধতিতে উপদন্ধ তত্ত্বসমূহকে ছাত্রগণের সম্মুখে উপস্থিত করিতে সমর্থ হইবেন। মনে हम कहे जबहे श्रथम-श्रथम कहे त्वंनीय निकरणानय कांक পুৰাই লখু ছিল। ওনিয়াছি সপ্তাহে এক বা হুই ঘণ্টা কৰিয়া জাহাদিপকে পড়াইডে হইড। মহাশয় আ ও তোবে ব অভিগাৰ ছিল বে. প্ৰথমে শিক্ষেবা নিজেব প্ৰগায় অধ্যয়নের বারা নিজেকেই প্রস্তুত করিরা, বিশেষত বর্তমান পদ্ধতিতে ও গবেষণায় সংস্কৃত ও সংস্কৃত-সম্বদ্ধ অক্সান্ত বিষয় অধিগত তম্বসম্মৃত্ব পরিচিত হইরা ছাত্রগণকে যথোচিতভাবে শিকা দিতে পারিবেন।

মহাশর আ ও তো ব এই ব্যবস্থা করিয়া মনে-মনে আশা করিয়াছিলেন বে, অক্সফোর্ড হইতেও ছাত্তেরা সংস্কৃত পঞ্চিবার জন্য কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ে আসিবে। কিন্তু তাঁহার সেই আশা পূর্ণ তো হয়ই নি, হইবারও কোন লক্ষণ দেখা বাইতেছে না।

#### শিকার অবৈজ্ঞানিক পছতি

আমাদের ছাত্রগণকে সাধারণত বর্তমান গবেষণা ও বৈজ্ঞানিক পদ্ধতির সহিত পরিচিত করা হয় না। ইহার প্রধান কারণ, যে সকল শিক্ষক প্রধানভাবে এই বিভাগের জন্য নিযুক্ত হইয়াছিলেন, এবং মনে করা হইয়াছিল বে, ভাঁহারা বর্ত্তমান পদ্ধতির সহিত হুপরিচিত হইয়া উঠিবেন, ভাঁহাদের অধিকাংশই সেক্ষপ হইলেন না, বা সে বিষয়ে চেষ্টাও করিলেন না। ফলে দেখা গেল বে, প্রাচীন ও নবীন শিক্ষকগণের মধ্যে বস্তুত তেমন কোন ভেদ থাকিল না। আমার মনে হয়, ইহাদের অনেকেই এ প্রশ্নে এক-বারে উদাসীন। সভ্য কথা বলিতে হইলে, বর্ত্তমান পদ্ধতি থাকুক প্রাচীন পদ্ধতিও বিশ্ববিদ্যালয়ে ঠিক অন্তুসরণ করা হয় না।

সংস্কৃতে অভিক্ষতার অন্ধ প্রাকৃত অপরিহার্ষ। প্রথম আরম্ভ হইতেই মহাশম আ ও তো ব সংস্কৃত বিভাগে প্রাকৃতের অধ্যয়ন প্রবৃতিত করেন। ঐ সময়েও ভাষা সমস্কে তাঁহার গভার অন্ধৃতির পরিচয় ইহাতে পাওয়া বায়। প্রাকৃতের কাব্যগত ও সাহিত্যিক উচ্চ উৎকর্ষের কথা ছাড়িয়া দিয়া এখানে তাহার আবশ্রকতা বা প্রয়োকনীয়তা সম্বন্ধে কয়েকটি কথা আমরা আলোচনা করিব। সম্প্রতি বহু স্থলেই, বহু টোলেই বিশেষত বিশ্বিভালয়ে তথাক্থিত সংস্কৃতবিদ্পণের নিকটে প্রাকৃত অন্তাভ হয়, কিছু প্রাচীন অধ্যাপকসপের নিকট এয়প হইত না। মহাক্রি প্রার ব সে নে ব সে তৃত্র স্কৃ, এবং সাত বা হ নে র পা থা স গু শ তী র প্রশংসা না করিয়া বা ণ ভ ট্র নিজের হ র্ব চ রি ত আরম্ভ করিতে পারেন নি । এ তুইখানই প্রাকৃতে রচিত। স্প্রসিদ্ধ স্থবদ্ধ বা দ বের্দ্ধ স্থান্ত হর্ম বি তে, দঙ্গী কা ব্যা দ র্থে, ও ব্যক্ষের

দ্শ্রূপ কে গুণাঢ্যের বৃহৎ কথা র অতি উচ্চ প্রশংসা ক্রিয়া গিয়াছেন। ইহা গৈশাচী-নামক একরণ প্রাক্ততে विकि इहेशाहिन। कुर्जाभावनक हेशाय मून चाक नुश्र, কিছ ইহার ভিনধানি প্রাচীন সংস্কৃত অমুবাদ আছে। वदा लाम ए व करित कथान विश्नान व. ए स्म खा वृहर कथा मझ वी, ७ वृष चामी व वृहरकथा প্লোক সং গ্ৰহ। প্ৰাকৃতের জ্ঞান না থাকিলে পূর্বে কেহ সংস্কৃতবিদ বলিয়া গণ্য হইতেন না। অতি স্পষ্টতই দেখা যায় পূর্বে সংস্কৃতের সহিত প্রাকৃতও অবশ্রপাঠ্য ছিল। সকলেই बात्नन, मःष्ठ्रच नार्वक वा प्रश्न कावाश्वनि क्विन मःष्ठ्रक्ट নহে, কিছু অংশত প্রাক্ততে অথবা স্থানে স্থানে বিবিধ প্রাক্তেও বচিত হইয়া থাকে। সাহিতাদর্প পের বচন্নিতা বি খ না থ ক বি বা জ "সাহিত্যাৰ্ণৰ কৰ্ণধাৰ" বলিয়া প্রসিদ্ধ াচলেন। ইনি আঠাবটি ভাষা জানিতেন. এই ভাষা ভলির মধ্যে একটি সংস্কৃত এবং অবশিষ্ট সতেরটি হইতেছে বিভিন্ন প্ৰাকৃত। বিশ্ব না ও ইহাকে কবি জনো-চিত্তৰূপে বৰ্ণনা কংয়া নিজেকে বলিয়াচেন "অষ্টাদৰ্শ ভাষা বারবিলাসিনী ভূত্রত।" ভাছার পিত। ভাষার্পবের রচয়িত। নানাবিধ প্রাক্ততে অভিক্র ছিলেন (''সক্ষভাস। চউর"— সর্বভাষা চতুর )। প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধ সংস্কৃত বৈয়াকরণ-গণ প্রাকৃত ব্যাকরণও রচনা করিতেন। বেমন হে ম চ জ্র ত্রুমদীশার,ও পুরুষোত ম। ইহাদের প্রাকৃত ব্যাক্রণ এখনো প্রচলিত আছে, ছাপাও হইয়াছে।

আমাদের অলহার গ্রহগুলি দেখিলে জানা বাইবে বে, প্রাকৃত না জানিলে অলহারও ভাল করিবা জানা হয় না। জোজে র স র স্ব তী ক গ্রান্ড র ণ খানি দেখিলে ইহা স্পাইট বুঝা বাইবে। কিছুদিন পূর্বেও এই বইখানি বিশ্ববিভালয়ে পাঠ্য ছিল।

প্রাক্তর প্রয়োজনীয়তা কিছুতেই অবজ্ঞা করিতে পারা বার না। প্রাকৃত কিঞ্চিন্মাত্রও না জানিলে কেছ অতি বড় বৈদান্তিক বা মীমাংসক হইতে পারেন, কিছ হয় তো এ কথা শুনিয়া কেছ-কেছ বিশ্বিত হইতে পারেন বে, প্রাকৃত না জানিলে কোন সংস্কৃতবিদ্ সংস্কৃতবিদ্ সংস্কৃতবিদ্ সংস্কৃতবিদ্ সংস্কৃতবিদ্ সংস্কৃতবিদ্ বংশুতবিদ্ বংশুতবিদ্ধ বিশ্ব বংশুতবিদ্ধ বং

অভিভাগণ জানেন যে, এমন কি ধাবেদেরও ভাষার বছ প্রাকৃত প্রভাব আছে, মহাভারত, পুরাণ, তর প্রভৃতির ভাষার ডো কথাই নাই। মহাকাব্যগুলিরও মধ্যে ইহা প্রচুষ। অৰুক্তিযুক্ত প্ৰতিতে সংস্কৃত মুক্তৰাব্যসমূহের পাঠ

এই প্রসঙ্গে, এমন কি বিশ্ববিদ্যালয়েরও অনেক শ্রেণীতে আমাদের মুক্তনাব্যগুলিকে বে প্রণালীতে পড়ান হইরা থাকে সে সম্বন্ধ কিছু বলা আবক্তক মন্দে করি। দেখিতে পাওয়া বাইবে, শিক্ষকেরা নাটকের মূল প্রাকৃত অংশ পাঠ করিয়া শিক্ষা দেন না, তাঁহারা ছাত্রগণকে সংস্কৃতের ছায়া শোনাইয়া থাকেন। ইহা স্পষ্টতই বছক্তল শিক্ষকের প্রাকৃতের প্রতি অবক্তা স্চনা করে। ফলে এই দাড়ায় যে, বদিও ছাত্রগণ খুব ভালভাবে পরীক্ষায় উর্ত্তীর্ণ হইতে পাবে, বধন ভাহারা ভবিদ্যতে শিক্ষকরপে নিযুক্ত হয় তথন ঐ বিষয়টিকে ভাল করিয়া পড়াইতে পাবে না। এইরূপে এমন একটি ছাত্র-শিক্ষক সম্প্রদায়ের স্থাই হয় বাহাতে মোটের উপর সংস্কৃত শিক্ষার ক্ষতি হইয়া থাকে।

ইহা ছাড়া, যাহা যা তাহা যদি তা না থাকে, তবে তাহার নিচ্ছের গুণও থাকে না। ত্থ যদি ত্থ না থাকিয়া দই হয়, তবে উভয়েরই খাদ প্রভৃতি ভিন্ন হয়, তথের খাদ দইএ থাকে না। এইরূপ প্রাকৃতকে যদি সংস্কৃতে পরিবর্তনকরা হয় তবে প্রাকৃতের যাহা কিছু রমণীয়তা ও মাধুর্ব স্বই নই হইয়া যায়। এই গুণ কথায় বর্ণনা করা যায় না, অভিন্ত ও মর্ক ব্যক্তিই ইহা অমুভব করিতে পাবেন; যেমন ত্থ, চিনি ও মধুর মাধুর্ব কেমন ইহা কেহ কথায় প্রকাশ করিতে পাবে না, আখাদন করিয়াই ব্রিতে হয়। বাছল্য ভয়ে আমি একটিমাত্র ক্ষুত্ত দুটাভ দিতেছি। পাঠকগণের অধিকাংশ প্রাকৃতের সহিত পরিচিত বহেন এই আশহায় আমি এখানে বি ছা ণ তি র একটি পদ উদ্ধত করিতেছি—

"আজু রজনী হাম ভাগে পোহারতু পেথকু পিরমুখ চনা, জীবন বৌবন সকল মানতু দশ দিশ ভেল নিরদলা। আজু মরু গেহ গেহ করি মানতু আজু মরু দেহ ভেল দেহ। আজু বিহি মোরে অকুকুল হোরল টুটল সব সন্দেহা।

ইহার সংস্কৃত ছারা এই—
আন রজনী মহং ভাগেন প্রভাতমকারয়ং প্রৈক্ষে প্রিয়মূখ চপ্রস্থ।
জীবনং বৌধনং সকল মমালয়ং দশ বিশো তৃতা নি বিলাঃ।
আনা মম গেহং গেহমমানয়ম্ আনা মম বেহো ভূতো দেহঃ।
আনা বিবিমে হমুকুলো ভূতজ্ঞানতঃ স্বান্সক্ষেত্র।

পাঠকগণ বি ভা প তি ব মূল ও সংস্কৃত ছায়ার ভেদ নিক্ষেই অফ্ডব করিয়া দেখুন। দী ন ব দু মি ত্রে ব নী ল দ প শে সাধারণ চাবী স্ত্রী-পুরুষদের কথার বে অভিগ্রাম্য ভাষা প্রযুক্ত হইয়াছে ভাহার হানে বি দ্যা সা প ব মহাশরের নী ভা ব ব ন বা সে ব অভি উচ্চ ভাষা বসাইলে বে দুর্দশা হয়, সংস্কৃত নাটকে প্রাকৃতের স্থানে সংস্কৃত বদাইয়া পাঠ করিলে ভাহাই হয়। পাঠকগণ এখন মূল ও ছায়ার ভেদ নিজেই বুঝিভে পারিবেন।

বিশ্বিভালয়ে প্রাকৃতের এই অবস্থার মধ্যে বধন দেখিতে পাই বে, সকলিত নৃতন পাঠ্যসংক্ষেপে (Syllabus) প্রাকৃতকে সংস্কৃতের সমস্ত ছাত্রের জন্য অবশ্রপাঠ্য না করিলা ঐ স্থানে ভারতীয় অর্থনীতিকে (general principles of Indian politics) বসান হইয়াছে, তখন নিভাস্ত বিশ্বিভ না হইয়া থাকিতে পারি নাই। ইহা উল্লেখ করিতে পারা বায় বে, বিভিন্ন বিশ্ববিভালয়ে ও বিদেশেও এই জাতীয় বিভালয়ে প্রাকৃত অবশ্রপাঠ্য।

প্রাক্বতকে অবশ্রপাঠ্য না করায় আমাদের অধিকাংশ ছাত্রের নিকট ম হা ব স্ত, ল লি ত বি স্ত র, ইত্যাদি বছবছ বৌদ্ধ সংস্কৃত গ্রন্থ ও অমুশাদন প্রভৃতি একবারে অবোধ্য থাকিয়া বায়। কৈনগণের আগমগুলিরও দখন্ধে এই কথা, কেননা এগুলিও প্রাকৃতে রচিত। অতএব এ ব্যবস্থা আমাদের নিতান্ত ক্ষতির জন্য, লাভ ইহাতে কিছুই নাই। তাই ইহা কিছুতেই গ্রহণ করা বায় না। সকলে ইহা শাস্ত ও প্রভীব ভাবে চিন্তা কবিয়া দেখিবেন।

#### বৈদিক সাহিত্য

ইহা অতি উত্তম ব্যবস্থা বে, আমাদের বিশ্ববিভালয়ে বৈদিক সাহিত্য শিথাইবার বিধান করা হইয়াছে। প্রথম হইতেই ইহা আছে। কিছু ইহা অত্যস্ত তু:বের বিষয় বে, এ পর্যস্ত বন্ধদেশে এখান হইতে এমন একজনকেও পাওয়া গেল না বাহাকে বৈদিক পণ্ডিত বলিয়া বিশেষভাবে উল্লেখ করিতে পারা বায়। শ্রাকাম্পদ স্বনীয় স ত্য ব ত সা ম শ্র মী মহাশয়ের পর বন্ধদেশে আর কাহাকেও তাঁহার স্থানে দেখা গেল না।

আমাদের বিশ্বজ্ঞালয়ের তেমন ছাত্র নিভান্ত তুর্গভ, বে সংহিতা পাঠ হইতে পদপাঠ, বা পদপাঠ হইতে সংহিতাপাঠ করিতে পারে। অথবাবে ঋথেদের এক পঙ্ক্তিও বথোচিত স্বরসংবোগে উচ্চারণ করিতে পারে। অথচ এই বিশ্ববিভালয় ভারতের, অধ্যাপক ও ছাত্র উভয়ই ভারতের, বিষয়ও ভারতের নিজের, আর ব্যয়ও কিছু কম হয় না।

#### নবীন ব্যাখ্যা

আমরা ভারতীয়েবা নিজে বেদের কীরুপ ব্যাখ্যা করি
ভাচা প্রথমে আমাদিগকে অবস্থই জানিতে হইবে।
আমাদের ছাত্রেরা নিঠার সহিত ইহা করুক। কিছ
ভাচাদিগকে আরও কিছু করিতে হইবে, অক্তথা চলিবে
না। দেশ-বিদেশের অভিজ্ঞ পণ্ডিভেরা কোন কথা সম্বছে

ন্তন কি বলিভেছেন সেই সম্বন্ধে একবারে আজ হইরা থাকিলে চলিবে না, চলিতে পারিবে না। কোন ব্যাখ্যাকে কেহ সভ্য বলিয়া সব সময়ে গ্রহণ করিতে বা না করিছে পারেন, ইহা অভ্য কথা। কিছু কে কি বলেন ভাহা প্রথমত জানিতে হইবে, ভাহার পর ভাহা গ্রহণ করিবেন, অথবা উপযুক্ত যুক্তির উপস্থানে ধণ্ডন করিবেন।

#### বৈদিক যজের ভাব

সংস্কৃত বিভাগের সমস্ত ছাত্রেরই, বিশেষত বৈদিক বর্গের ছাত্রদের জন্য ঋথেদের বহু অংশ অবশ্রপাঠ্য বিদ্যানিধারিত হইয়াছে। ইহার সহিত সায় না চার্ধের ভায়াও পাঠ্য। ইহাতে নানা বাগযক্তের কথা আছে। এই বাগবক্তের সম্বন্ধ ছাত্রেরা বাহাতে একটা সাধারণ ভাব পাইতে পারে, এই উদ্দেশ্যে এই বিভাগে কতকগুলি বক্তিয়-পাত্র সংস্কৃতীত করা হইয়াছে, বাহাতে অধ্যাপক উহাদের সাহাব্যে ছাত্রগণকে বতটা সম্ভব কতকগুলি ব্যাধ্যান দিতে পারেন। এই বিভাগে এইরূপ উপযুক্ত অধ্যাপকেরও অভাব নাই। কিছ হুংখের বিষয়, ব্যাধ্যান দেওয়া আর হয় না। বে অবস্থা দেখা বাইতেছে, তাহাতে মনে হয়, অবিলম্বে এই বিভাগে লইয়া গিয়া রক্ষা করা হইবে।

#### অবেন্তা

সংস্কৃত বিশেষত বৈদিক সংস্কৃত ও অবেন্ডার পরস্পার সম্বন্ধ এত ঘনিষ্ঠ বে. আমাদের শংস্কৃতের ছাত্রগণ স্ববেস্তার ভাষার দিকে চোথ বন্ধ কবিয়া থাকিতে পারে না। এই ক্ষ্যা কয়েক বংসর পূর্বে অবেস্তার একখানি ক্ষুদ্র পুস্তক বৈদিক (অর্থাৎ বি ) বর্গে পাঠ্য করা হইয়াচিল, কিছ ছডাগাবশতঃ দেখা গেল বে. পরিবতিত পাঠাসংক্ষেপে তাহা উঠাইয়া দেওয়া হইয়াছে। ইহাতে কেবল ছাত্রগণের প্রভত কৃতি করা হইল। অন্যান্য ঘটনার সৃহিত ইহা বিচার করিয়া দেখিলে বলিতে হইবে বে, সংস্কৃত বিভাগ বিপরীত গতিতে চলিতে আরম্ভ করিয়াছে। কর্তপক এ বিষয়ে সভর্ক দৃষ্টি রাখিবেন। জ্ঞানের ক্ষেত্রে ইছা ভাৰতীয় বা অভাৰতীয়, আৰ্থ বা মেচ্ছ, এইরূপ চিন্তা বা তদমুদারে কার্য কথনো শ্রেম্বর নহে, ইহা আছাঘাতী। অন্তত আমি ইহা বুঝিতে পারি না ভাষা হিসাবে অবেন্তা পড়িলে কিব্নপে তাহা সংস্কৃতের বা সংস্কৃত-ছাত্তের ক্ষতি কবিতে পারে।

পাঠ্যসংক্ষেপ (Syllabus)

व नषर वर वक्त पाक्रिक व, वह भविवर्कन चावश्रक

হইলেও সংক্ষেপের উদ্দেশ্তে সামান্য কিছু উল্লেখ করা হইতেছে।

- (क) বেলাভ। ইহা বিশেষ লক্ষ্য করিবার বিষয় বে, বেলাভের বলিও বিবিধ সম্প্রদায় আছে, এবং তাহাদের সমস্তই অন্থপেক্ষণীয়, তথালি কেবল শ হ র ও বা মা-ছু জে র ই মত আলোচ্য বলিয়া নির্দেশ করা হইয়াছে। অন্যান্য সম্প্রদায়ের উল্লেখ মাত্র নাই। ইহার ফলে এই হয় বে, ছাত্রেরা বিভিন্ন সম্প্রদায়ের মতের উৎপত্তি, বৃদ্ধি ও পরস্পার সম্বন্ধ বিষয়ের আলোচনা হইতে বঞ্চিত হয়।
- (খ) বৌদ্ধ ও জৈন ন্যায়। বর্তমান ন্যায় বৈশেষিক-বর্ণে শতি স্থুম্পাই ক্রটি এই বে, বৌদ্ধ ও জৈন ন্যায়কে একবারেই শবক্ষা করা হইয়াছে, ইহাদের নামও করা হয় নি শথচ ভারতের ন্যায়শাল্পে বৌদ্ধ ও জৈনদের দান সামান্য নহে। ইহা শত্যন্ত হৃঃথ ও লক্ষার বিষয় বে, কোন ভারতীয় ছাত্র ভারতীয় বিশ্ববিদ্যালয়ে ভারতীয় তর্ক-শাস্ত্র পড়িয়া ঐ সম্বন্ধ কিছুই জানিবে না।
- (গ) সংস্থত ব্যাকরণ। সংস্থত ব্যাকরণ সম্বন্ধে পাঠ্য-সংক্ষেপে বলিও বড বড কথা বলা হইয়াছে, তথাপি ছাত্ৰ, निक्क ७ विश्वविद्यानस्य मः महे बात्रक कार्त्रत द. ব্যাকরণের পড়ান মোটেই সম্বোবাবহ নহে। যে প্রণালীতে ইহা পড়ান হয় ভাষাতে ইহা সম্বন্ধ নতে। ইহাতে বহ বজ্ববা আছে। অভি সংক্ষেপে ছুই একটি মাত্র কথা अवादन वना बाहेटक शादा। व्यायांत मदन हत, व्यादनाहा আইটি ততটা আৰু কিছতে নহে বতটা নিৰ্দিষ্ট পাঠাপুতকে। অতএৰ কৰ্তপক ইছা ধীৱভাবে চিম্বা কবিয়া দেখিতে পাবেন বে, বর্তমান পাঠা ভলে কা শি কা কে দিলে চলে কিনা। কালি কার সাহাব্যে পা পি নির করে পড়িলে ছাত্রেরা ভাষার প্রক্রিয়ার সহিত পরিচিত হইতে পারিবে এবং ইহাতেই দঢ় ভূমিতে প্রতিষ্ঠিত হইয়া সহজে পা নি নি ব্যা ক ব ণ কে ভাহার। আয়ন্ত করিতে পারিবে। ইহাকে তাহারা কিছতেই ত্যাপ করিতে পারে না। কেননা ইচা क्वन गाक्य नहि, हैहा औं उहानिक, छो शानिक ইত্যাদি বিবিধ তুর্গ ভাতব্য বিষয়সমূহের আকর।

পাঠ্যসংক্ষেপ সহকে এখানে একটি কথা বলা বাইতে পাবে। ইহা বচনা করিবাব সময়ে পাঠ্য পুত্তকসমূহের ভালিকা সঙ্কন অপেক্ষা পাঠ্য বিষয়গুলিই বিভৃতভাবে বর্ণনা করিবার দিকে অধিকতর মনোবোগ দেওয়া কর্তব্য মনে হয়। ইহাতে ছাত্র ও শিক্ষক উভরেবই বেশী উপকার হইবে। বর্তমানে ইহা হয় না। ইহা বল্য বাহল্য বে, পাঠ্যসংক্ষেপ করিতে, বিশেষত দার্শনিক বিবয়সমূহের সক্ষে বহি অপীর মহাশয় ত্র জে জানা ধানী লে য় পুতিকা- ধানিকে Syllabus of Indian Philosophy in the University) আদর্শব্ধপে অন্তুসরণ করা হয়, ভবে প্রভৃত উপকার হইবে।

সংস্কৃত সম্পর্কে তিব্বতী ও চীনা

মহাশয় আৰু তোষ এই বিশ্ববিদ্যালয়ে ভিবৰতী ও চীনা শিকার প্রবর্তন করেন। এক জন সংস্কৃতক্ষ তিসাবে আমি এখানে পুনর্বার তাঁচাকে স্মরণ করিতেটি। আমাদের সংস্থাতের বে ধনকোশ নট্ট হইয়া সৌভাপবশত আজ প্রধানত তিব্বতী ও চীনা ভাষাতে আছে, তাহার পুনক্ষারের বীজ তিনি ইহার ছারা এখানে বপন করিয়া পিলাছেন। সংস্কৃত শাল্পনহের এই কথা সাধারণত অনেকেট জানেন না। কিন্তু যদি কেচ বৌদ্ধ ত্তিপিটকের চীনা অমুবাদে গ্ৰহসূচী (Bunio Nanjio's Catalogue of the Chinese Translation of the Buddhist Tripitaka, Oxford, 1883) e পি. কর্মের রচিড তিবতী ভাষায় প্ৰধানত সংস্কৃত হুইতে অনদিত ব্ৰুবচন ও বৌদশাস্ত্ৰদাহের স্চী (P. Cordier's Catalogue of the Tibetan Kanjur and Tanjur - Catalogue du fonds tebitan du la Bibliotheque Nationale, Paris 1909, 1915) এই ছুইখানি পুস্তকের দিকে একটু দষ্টিপাত করেন তবে অতি সহজেই এই বিষয়ট জানিতে পারিবেন। তিব্বতীতে বে কেবল বৌদ্ধ বা ধর্মশংক্রাম্ব श्राद्वरे अष्ट्रवान दृहेशाह जाहा नहर, वह-वह अन्याना श्रद्धक अञ्चान करा हरेशाहि। त्यमन, कारा, अनदात. वाकतन, नाम हेजानि। यथा त्य च मू छ, का वा न मू, পা পি নি ইত্যাদি, ইত্যাদি।

বত দিন স্থানাদের দুপ্ত গ্রন্থসমূহ, বাংগ ডিব্বতী ও চীনায় এখনো পাওয়া বায়, পুনক্ষত নাহয়, বা স্থান্ত প্রভৃতির ঘারা ইহার স্থালোচ্য বিষয়কে প্রকাশ করা না হয় কোন ভারতীয় তত দিন নিশ্চিম্ব হইয়া থাকিতে পারেন না। এ কাল খুব শক্ত, সন্দেহ নাই, কিছু স্থাপায় নহে। বর্তমান পণ্ডিতগণের পরিপ্রম দেখাইতে পারিয়াছে বে, ইহা কতদ্ব সিদ্ধিলাভ করিতে পারে। এখানে ব স্থাব দুক্ত স্থাভিষ মি কো ল'কে পুদে সাহেব (Lois de la Vallee Poussin) প্রধানত তিব্বতী ও চানা হইতে উপকরণ সংগ্রহ করিয়া বেভাবে ক্রাসী ভাষায় ব্যাখ্যা ও স্মুহ্বাদ করিয়াছেন ভাহা উল্লেখ করিতে পারা বায়।

শতএব ইহা শামাদের শণরিহার্ব. ফর্তব্য বে, শামাদের লুপ্ত সংস্কৃত গ্রন্থভাবর পুনক্ষভাবের জন্য বিশ্ববিদ্যালয় ও সংস্কৃত পাঠশালা বা টোলের ছাত্রপথকে এরপভাবে স্থবোপ স্থবিধা বিরা উৎসাহিত করা বাহাতে ভাহারা ঐ কার্বে প্রবৃত্ত হয়, শার ডব্জন্য সংস্কৃতের বোগে চীনা ও তিব্বতী শধ্যয়ন করিতে উৎসাহের দহিত লাগিয়া বায়।

পুনবার আমি এখানে মহাশয় আ ও তো ব কে স্বরণ করিতেচি. কেন না তিনিই নিজে এই জাতীয় কার্য প্রথমে এই বিশ্ববিদ্যালয়ে আরম্ভ করেন। গত ১৯২১ সালের জিসেম্বর মাসে ক্রপ্রনিদ্ধ অধ্যাপক লে ভি সাহেব ( (Prof-Sylvain Levi ) শান্ধিনিকেতনে অভ্যাগত (visiting) অধ্যাপকরপে আগমন করেন। সেই সময়ে সেখানে বিশ্ব-ভারতী যথাবিধি স্থাপিত হয়। মহাশয় আ ও তো য তখন শ্রীয়ক্ত প্রবোধচক্র বাগচি মহাশয়কে তাঁহার কাছে প্রেরণ করেন। ইনি ঐ সময়ে বিশ্ববিদ্যালয়ে ভারতীয় ইতিবৃত্ত ও সংস্কৃতি বিভাগে অধ্যাপনা করিতেন, অধ্যাপক লে ভি তাঁচাকে নিজের সজে স্বদেশে লইয়া বান এবং বিশেষ ভাবে চীন ভারতীয় বিদ্যায় শিকা প্রদান করেন। মহাশ্র আ ভ তোষ বিশ্ববিদ্যালয় চইতে তাঁচার অধ্যয়ন সংক্রান্ত সমস্ত ব্যয় নিৰ্বাহ করেন। শ্রীযুক্ত প্রবোধবার দেখানে হই-খানি চীন-ভারতীয় অভিধানের সংস্করণ করেন। এই इहेशानिहे श्रधानक मरक्रक भागायी हीना भाग्रकत्तव क्या। ইহাতে সংস্কৃত শব্দের চীনা অর্থ সঙ্কলিত হইয়াছে। ভারতীয় পাঠকেরও ইহাতে অনেক জ্ঞাতব্য আছে। এই পুত্তক গুইখানি কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রকাশন বলিয়া প্যারিদ হহতেই মুদ্রিত হইয়া প্রকাশিত হয়। ইহাদের একথানির নাম ফান-যু-ৎ্স-মিঙ, ইহার বচয়িত। নি-য়েন। অপরথানির নাম ফান্-যু-ৎ সিল্-ৎ সেউ-বে্ন। ইহার व्यापणा मि-९ मिः।

ইহা ছাড়া শ্রীমৃক্ত প্রবোধ বাবু ছই থণ্ডে সম্পূর্ণ জারও একখানি পুন্তক ফরাসী ভাষায় প্রণয়ন করেন। Le Canon Buddhique en (hine)। ইহাতে চীনের বৌদ্ধ সাধকগণের বিশ্বরণ জাছে। ইহাত প্যারিস হইতে জামাদের বিশ্ববিদ্যাসয় প্রকাশ করিয়াতে।

আমরা এখানে ভিন্নতী ও চীনা ভাষায় সংস্কৃত গ্রন্থসমূহের প্রাচীন অফুবাদ ও শত শত বংসর ধরিয়া ঐ কার্বে
নিযুক্ত ব্যক্তিবর্গের কথা মনে করিতে পারি। ইহাতে
বিশ্বিত হইতে হয়, কিছ তথাপি ইহা সম্পন্ন হইয়াছিল।
বদি ইহা সেই সময়ে সম্ভব হইয়াছিল, আজকাল কেন তাহা
না হইবে। চীন, ভিন্নত ও মলোলিয়ার অধিবাসীয়া বদি
সংস্কৃত শিখিয়া নিজ নিজ ভাষায় অভ সংস্কৃত গ্রন্থ অফুবাদ
করিতে পারেন, ভবে বর্তমানে ভারতীয়েরা কেন দেইরপই
কাল করিতে পারেন না।

ইহা বলাই বাহল্য, এই কার্যে সরকারের মুক্ত হল্ডে দান ও লাহায় নিভান্ত আবশ্রক। অঞ্জন কোন বিলেয চেষ্ট করা অসম্ভব । তুর্ভাগ্যবশত আমাদের সরকারের ও বিশ্ববিদ্যালয়ের এ দিকে কোন অস্থ্রাগ দেখা যায় না। কিছু দেশ বধন বাধীন তথন এ অবস্থাকে আর দীর্ঘদিন থাকিতে দেওয়া বায় না।

তিব্বতী ও চীনা ভাষা শিক্ষার ব্যবস্থা

আমরা জানি, কিছু দিন হইল বিশ্বিদ্যালয়ে পুনর্বার তিবেতী ও চীনা ভাষা শিখাইবার ব্যবস্থা করা হইয়ছে। সন্দেহ নাই, ইহা ভাল। আমার মনে হয় প্রধানত ইহা রাজনীতি, অর্থনীতি, বাণিজ্য অথবা এইরপ অস্ত কোন উদ্বেশ্ব সিদ্ধির প্রয়োজনে। কিছু বিশ্বিদ্যালয়ের বর্তমান কর্তৃশক ও সংস্কৃতার্বাগী বাক্তিবর্গ বক্তকণ চীনা ও ভিবেতী হইতে সংস্কৃত গ্রন্থসমূহকে পুনক্ত্মত ক্রিতে না পারিভেছেন তত দিন আঅপ্রসাদ লাভ ক্রিতে পারেন না। সংস্কৃত্ত বিভাগের ইহা একটা বিশেষ কার্য হওয়া উচিত।

#### সতকী করণ

এই প্রসঙ্গে বিশ্ববিদ্যালয়ের চীনা ও ভিব্বভী গ্রন্থসমূহের সহদ্ধে কর্তৃপক্ষকে একটু সাবধান করিয়া দেওয়া আবস্তক মনে করি। একবার বিশ্ববিদ্যালয়ে রক্ষিত সাংখাই সংস্করণের চীনা ত্রিপিটিকের অন্তর্গত সমস্ত গ্রন্থকে পোকা ও উই কাটিয়া একেবারে নই করিয়া ফেলে। পরে আবার যবন বাবভাগা ভবনের এক অল্লালোক ঘরের মধ্যে বক্ষিত কাঠফলকে মৃক্রিত (Xylographs) ও বহু হন্তালিখিত ভিব্বভী গ্রন্থগলিকে স্থবিন্যস্ত করিয়া রাখিবার ব্যবস্থার জন্তু আমাকে ভার দেওয়া ইইয়াছিল, তখন সেগুলিকে ভাল অবস্থায় দেখা যার নি।

এখানে ইহা বিশেষ ভাবে বলা আবশুক বে, বিশ্বিদ্যালয়ের ভিবতো গ্রন্থসংগ্রহটি আভি ছুর্মূল্য ও অভি ছুর্মূঙ্গ,
বিশেষত প্র আ পা র মি তা কয়েকখানি পুন্তক। এগুলি
সোনালা ও রপালা কালিতে তহুচিত কাগজে লিখিত।
এগুলি প্রদর্শনের বস্তা দেখিলে চোখ সার্থক হয়। এগুলি
একবার কোনরূপে নষ্ট ইইলে পুন্র্বার পাওয়া সম্ভব হুইবে
না।

স্থানির স্থানির শার চচ ক্র দা স মহাশরের সংগৃহীত তিবাতী গ্রন্থানিও স্থামাদের বিশ্ববিদ্যালয়ের সংগ্রহে রহিয়াছে। মহাশয় স্থা ও তো ব ই এসব সংগ্রহ করাইয়া-ছিলেন।

#### বিদ্যার রকা

প্রসক্তমে এখানে একটা কথা বলিতে পারা বার। ইহা এই বে, যদি কোম নিডাভ আবতাক হইলেও আভি-অবজ্ঞাত বিদ্যাকে কেহ বিদেশ হইতে উপার্কন করিয়া খদেশে খানয়ন করে তবে ষ্ডদুর সম্ভব সর্ববিধ উপায়ে তাহাকে রক্ষা করা উচিত, বাহাতে পুনর্বার কাহাকেও তাহার উপার্জনের জক্ত দেশাশুরে গমন ও তাহাতে নানাবিধ ক্লেশ ও অর্থব্যয় বা কালক্ষম না করিতে হয়, দেশের বে কেই চাহে খানায়াসেই তাহা পাইতে পারে। বিদ্যার রক্ষা বলিতে, বে ব্যক্তি বিদ্যা উপার্জন করিয়া খানিয়াছেন তাঁহাকে এমন স্ববাগ-স্ববিধা দেওয়া বাহাতে তিনি নিজের ছাত্রকে উপার্জিত বিদ্যা দান করিতে পারেন, এবং এই ছাত্রও নিজের ছাত্রকে ইহা খাধ্যয়নকরাইতে পারেন, বাহাতে এইরপে একটা সম্প্রদায়ের স্পষ্টি হয়।

বিশ্ববিদ্যালয়ের অম্বক্ত প্রত্যেক ব্যক্তিই ইহা জানিয়া আনন্দিত হইবেন বে, এই সংস্কৃত বিভাগেরই একটি ভূতপূর্ব ছাত্র এইরূপ আছেন। ইনি সংস্কৃতে এম-এ, এবং
সরকারী বৃদ্ধি লইয়া চীনে বান। দশ বংসর চীনা শিকা
করার অভিজ্ঞতা ইহার আছে। চীনা সংস্কৃতে ইনি কিছু
কাজও করিয়াছেন। বিশ্ববিদ্যালয় ইহাকে কাজে লাগাইলে
লাভবান হইবেন।

#### চীনা-সংস্কৃত-চর্চা

চীনা-শংশ্বত-চর্চা সম্পর্কেও মহাশয় আ ও তো বে র চিন্তা ও কার্ব উল্লেখ করা বাইতে পারে। জাপানের অধ্যাপক ব ম ক মি দো গে ন কে তিনি এই বিশ্ববিদ্যালয়ে চীনা ও আপানী মূল অবলম্বনে কভকগুলি ব্যাখ্যান করিবার জন্ম নিযুক্ত করিয়াছিলেন। তাঁহার ব্যাখ্যানগুলি "Systems of Buddhist Thoughts" এই নামে বিশ্ববিদ্যালয় হইতেই প্রকাশিত হইয়াছে (১৯১২)।

## তিব্বতী-সংস্কৃত-চর্চ।।

করেক বংসর পূর্বে বিশ্ববিদ্যালয়ে তিব্বতী-সংস্কৃত-চর্চা বিশেষ উৎসাহের সহিত আরম্ভ করা হইয়াছিল, এবং অর সময়ের মধ্যে করেকথানি তিব্বতী-সংস্কৃত গ্রন্থ প্রকাশিত হয়, বেমন ভক্টর শ্রী অ মু কুল চ দ্রা ব ল্যো পা ধ্যা রে র সম্পাদনায় দণ্ডীর কাব্যাদর্শ ( মূল সংস্কৃত ও তাহার তিব্বতী অম্বাদ ); শ্রী ত্ র্গা চ র ণ চ ট্রো পা ধ্যা রে র সম্পাদনার জি তা বি র হে তু ত জো প দে শ ( পুনক্ষুত সংস্কৃত ও তিব্বতী অম্বাদ ); ইত্যাদি।

প্রসম্ভ এথানে উল্লেখ করিতে পারা বায় বে, ইহার অনেক পূর্বে মহাশয় আ ও তো বে র চেষ্টায় বিশ্ববিদ্যালয় হইতে আবো তুইথানি ভিন্ততী পূস্তক প্রকাশিত হয়। এক-থানি ব্যাকরণ, A Grammar of the Tibetan Language by H. B. Hanna, 1912), আর অপর্থানি অভি-

ধান, ( An English-Tibetan Dictionary by Lama Dawasamdap Kazi, 1919).

#### कवानी अवार्यान

ইহা অনেকেরই জানা বে, অন্যান্য বছ বিষয়ের ন্যায় সংস্কৃতেও ফরাসী ও জার্মান পণ্ডিতগণের দান সাধারণ নহে। এইজন্য ঐ তৃই ভাষা না জানিলে সংস্কৃতের অভিজ্ঞতা সম্পূর্ণ লাভ করা যায় না এবং তাহা না হইলে বৈদেশিক পণ্ডিতগণের আজ পর্যন্ত গবেষণার সংবাদ রাখিতে পারা যায় না, এবং তাহার অভাবে ঠিক কাজ চলে না। অতএব বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্রের পক্ষে ঐ তৃইটি ভাষার, অন্তত তাহার অন্যতর্গটির অধ্যয়ন অবশ্যন্তর্গা। ইহাতে একট্র বিশম্ব করা উচিত নহে।

#### সংস্কৃত বিভাগের উল্লেখযোগ্য কার্য

এখানে একটি প্ৰাসন্ধিক প্ৰশ্ন স্বভাৰতই উঠে এবং বিশ্ববিখালয়ের অনুগ্রক প্রত্যেক ৰাক্তিই ইছার উত্তর পাইতে ইচ্ছা করিবেন। সংস্কৃত বিভাগের প্রথম প্রতিষ্ঠা इटें एडे टेहात बना वार्षिक श्रेष्ठा वर्ष वार करा हर। সম্প্রতি তো কিঞ্চিং ন্যনাধিক বার্ষিক পঞ্চাশ হাজার টাকা খরচ হয়। কিছ কয়েক জন ছাত্রের এম-এ পরীক্ষায় উত्তीर्व इल्डा जिब्र এই विज्ञात चाव की काल इहेड्:(इ १ শিক্ষকগণ প্রত্যেকে স্বতম্ভ বা সম্মিলিত ভাবে বিশ্ব-विकामप्रतक थे व्यर्थिय विनियस की मान कविषाद्वन. বাহাতে ভাঁহাদের দেখানে নিয়োগকে সমর্থন করিতে পারা যায় ? সংস্কৃত বিভাগ এ পর্যস্ত এমন কি এক পঠাও দিতে পারিয়াছেন বাহা সাধারণ সংস্কৃত শিক্ষার জন্য অপরিহার্য मत्न रहेर्ड भारत, रबमन एक क व मार्टिवत श्रेषान के भ नि-य म अ अ न व नजी जा द भ व का भ ( Concordance to the Pricipal Upanishads and Bhagavad Gita) বাহা কেবল বাদ্রিক কাজ ? ম নি আ র সাহেবের হুপ্রসিদ্ধ ও সংস্কৃতবিদগণের অপরিবর্জনীয় সংস্কৃত-ইংরেজী অভিধান (Sanskrit English Dictionary by Monier Williams) প্রস্থৃতির ন্যায় পুস্তকের কথা ছাড়িয়াই দেওয়া পেল। সাধারণে এই প্রশ্নের উত্তর দাবি করিতে পারে।

## প্ৰস্তাবিত ও সাবৰ পৃত্তক

কাহাবো কাহাবো ইহাও জানিবার ইচ্ছা হইতে পাবে বে, দুর্প ন কো শুবা ভা ব তী য় দুর্প ন ম হা কো শে ব কী হইল ? ইহার পরিকল্পনা অধ্যাপক প্রী বা ধা কু কু ন্ আতকোত্তর সাহিত্য শিক্ষণ সমিতির (Council of the Post Graduate Teaching in Arts) ভদানীভন অধিনেতা প্রিকুক ভামাপ্রসাদ সুখোপাধ্যার মহাশরকে অর্পণ করিয়াছিলেন, এবং ইহা গৃহীতও হইয়াছিল। ঐ সমরে অধ্যাপক রাধা রু ফ ন্ মন্তব্য করিয়াছিলেন—"বদি সম্পূর্ণ হয়, ইহা বিশ্ববিদ্যালয়কে অমর করিয়া রাধিবে।" তুর্তাগ্যবশত আবস্ত করিয়াও কিছু দিন পরে ইহা ত্যাগ করা হইয়াছে। কেন ?

আবে। কয়ণানি এইরপ আবর উপবোগী গ্রন্থের পরিণাম এই প্রকার হইয়াছে, য়ণা সা আ বো গ কো শ ও কা লি দা স কো শ অর্থাৎ কালিদাসের শনকোশ ও কালিদাস-মভিধান। এই সমন্ত কাজ চলিতেছিল এই বিশ্ববিদ্যালয়ের ও অন্যান্য শিক্ষাপ্রতিষ্ঠানের পূর্ব ও বর্তমান শিক্ষক ও ছাত্রগণের একটি সমিতির পরিচালনায়। ইহার জন্য কোন পারশ্রমিকের ব্যবস্থা ছিল না, কিন্ত তথাপি ইহাদের কৃত কার্বের পরিমাণ ছিল প্রচুব। বিশেষরূপে ছাত্রেরাই ইহাতে উৎসাহ দেখাইয়াছিল। কিন্তু বিধাতার ইছার এ কার্যন্ত বেশী দুর অগ্রস্ব হইল না। কেন ?

বে কয়টি কাজের উল্লেখ করা হইল যদি দেগুলি বস্তত করার অহুপযুক্ত বলিয়াই কর্তৃপক্ষের মনে হইয়া থাকে তবে অন্য কোন উপযুক্ত কাজের পরিকল্পনা অনায়াসেই করিতে পারা বাইত, কিন্ধু এ পর্যন্ত তো করা হইল না।

আরক্ত আ ও তোষ গ্রন্থ মালার সম্পদ্ধ আনেক দিন হইতে কিছু শোনা যাইতেছে না। সংস্কৃত-পূর্ণি সংগ্রহ সম্বন্ধেও ঐ কথা। আশাকরি এই উভয়ই ঠিক চলিতেছে।

আমরা সংস্কৃত বিভাগের উল্লেখযোগ্য কার্ষের কথা আলোচনা করিতেছিলাম, বাহাতে এই বিভাগের শিক্ষক-গণের নিয়োগকে ন্যায্য বলিয়া প্রতিপাদন করিতে পারা বাইত। কিন্তু কোন শিক্ষক কোন উপবোগী ও তেমন উপাদের গ্রন্থ কচনা না করিলেও বদি তাঁহার অধ্যাপনা অসাধারণ হয় তবে তাঁহার নিয়োগ নিশ্চয়ই ন্যায়সকত বলা বাইতে পারে। এতাদৃশ শিক্ষকের লাভে বিশ্ববিদ্যালয় নিজেকে গর্বিত ও গৌরবান্থিত মনে করিবেন। বা স্কের ভাষায় তাঁহাকে আমরা নি ধি গো প বলিয়া মনে করি। কিন্তু এক্রপ অধ্যাপক সংস্কৃত বিভাগে কয় জন ?\*

#### অত্যধিক শিক্ষক

ষদিও সংস্কৃত বিভাগের পাঠ্যসংক্ষেপে কয়েক বংসরের মধ্যে কোন নৃতন বিষয় বোগ করা হয় নি, তথাপি কিছু দিন হইল, সবেতনে বা বিনা বেতনে কতকগুলি শিক্ষককে আংশিক সময়ের জন্য নিযুক্ত করা হইয়াছে। কিন্ধ কি উদ্দেশ্যে । এই সমস্ক নবনিযুক্ত ও পূর্বনিযুক্ত শিক্ষকগণের এক গলে পড়াইবার ব্যবস্থার জন্য আরো কতকগুলি নৃতন

 ইংরেজীতে সেক্সপিররের সক্ষে এ বিবরে কীরণ কাল ইইরাছে পাঠকেরা বলে করিতে পারেন। শ্রেণী খুলিবার প্রয়োজন স্বভাবতই তীব্রভাবে স্বস্থৃত হয়, এবং এই জন্য এই বিভাগের চিরাচরিত প্রথাকে হঠাৎ উল্লেখ্যন করিয়া প্রতি শনিবাবেও পূর্ণ ছয় ঘণ্টা করিয়া পড়াইবার ব্যবস্থা করা হয়।প

এক সময়ে বথন স্নাতকোত্তর সাহিত্যশিক্ষণ সমিতির অধিনেতা শ্রীযুক্ত শ্রা যা প্র সা দ মু বো পা ধ্যা র মহাশর জানিতে পারিলেন যে, এই বিভাগে সপ্তাহে ( অর্থাৎ পাঁচ দিনে ) স্নাঠার ঘটা করিয়া পড়ান হইতেছে, তথন তিনি তীর ভাষায় নিজের অসমতি প্রকাশ করিয়াছিলেন—"আপনারা কি ছাত্রগুলিকে বধ করিতে চাহেন ? স্মাপনারা কি ভ্লিয়া গিয়াছেন যে, ইহারা স্নাতকোত্তর ছাত্র ? ইহারা কেবল শিক্ষকেরই নিকটে কোন শ্রেণীতে স্বধ্যয়ন করিবে না। ইহাদিগকে পুত্তকালয়ে নিজে-নিজেও স্বধ্যয়ন করিতে হইবে। কথন ইহারা ইহা করিবে ?" মন্তব্য স্থনাবশ্রক।

#### পরিবর্ডমান প্রয়োজন

এই বিভাগের বস্তত প্রয়োজন বে কি তাহা নির্ণয় করা হয় শক্ত, কেননা ইহা সর্বদা পরিবর্জন প্রাপ্ত হয়। কোন পদে নিয়োগের জন্য এক বিশেষভাবে নির্দিষ্ট বিষয় উল্লেখ করিয়া প্রাণিগণকে আবেদন করিবার জন্য আহ্বান করা হয়, কিন্তু নিয়োগ করা হয় সম্পূর্ণ বিভিন্ন বিষয়ের জন্য। কয়েক বংসর হইতে ইহাই এই বিভারেণর ধর্ম হইয়া পড়িয়াছে। বিশ্ববিদ্যালয় মহলে ইহা সকলেরই জানা। কিন্তু কেন এমন হয় ?

### কয়েকটি সম্পাদনীয় প্রস্তাব

পূর্বে বে সমন্ত সংস্কারের উল্লেখ করা হইয়াছে, সেগুলিকে গ্রহণ করা সম্ভব হউক বা নাই হউক, কর্তৃপক্ষ সভীরভাবে চিম্বা করিয়া দেখিবেন বে, বর্তমান অবস্থায়, যথন সংস্কৃত কলেজ ও বিশ্ববিদ্যালয়ের সংস্কৃত বিভাগের মধ্যে কৃতৃক্ষ-গুলি বিষয়ের অধ্যাপনার কোন ভেদ নাই তথন নিম্নলিখিত ক্ষেকটি বিষয়ের অধ্যাপনার জন্য কেবল সংস্কৃত কলেজেই ব্যবস্থা করিতে পারা বায় কিনা। যথা: বেদ-বেদাস্ত, ন্যায়-বৈশেষিক, সাম্বা-বোগ ও শ্বতি-মীমাংসা।

এখন কর্তৃপক্ষ ও বিশ্ববিদ্যালয়ের পূর্ব ও বর্ত্তমান বন্ধুপণ ধীর ও গভীরভাবে ভাবিয়া দেখুন কিনে ইহার বন্ধত কল্যাণ হয়, এবং তাহাই কল্পন যাহাতে হয় "বিদ্যার অগ্রপতি" ("Advancement of Learning")। কেননা ইহাই হইতেছে এই বিশ্ববিদ্যালয়ের লক্ষ্য।

† পরে ছাত্রগণের ওক্তর আপভিতে শনিবারে পঢ়ান ভ্যাপ করিতে হইরাছে।

## আনারকলি

## बिहेन्पित्रा (पवी कोधूतानी

#### বিভীয় অঙ

#### ७म प्रज

(দেওয়ান-ই-খাস, আকবর শাহের খাস দরবার।
ভান দিকে শৃপ্ত সিংহাসন। আন্দেশাদে সভাসদগণ। বাঁদিকে অপেকাকত সামনে মুবরাজ সেলিম ও রাজকবি
কৈনী আসীন।)

কৈন্দী। বাই বল, কাল কিন্তু জান্কী বাঈ আসর
মাত করে দিয়েছিল। একেই বলি নাচ গান। নইলে
টেচাতে আর হাত পাছুড়তে কচি ছেলেও পাতে—কি
বল হে শাহজালা ? কিন্তু এত রাত হয়েছিল বে (গা মোড়ামুড়ি দিয়া) এখনো বেন আমার আলিন্তি ভাকতে না।

সেলিম। বা' বললে ভাই। দিনকে রাত আর রাতকে
দিন করা অভ্যাস থাকা সত্ত্বেও আমার বেন আরু চোখ
টেনে ধরছে। কিন্তু শাহেন-শার কড়া হকুম, রোজ এই
ইন্থুলে হাজুরে-সই দিতেই হবে; ভাই ভাড়াভাড়ি চোধে
সুধে জল দিয়ে চলে এলুম।

কৈনী। ( ঘড়ি দেখিয়া ) খুব বে তাড়াতাড়ি করেছ
—তা বল্তে পারি নে। জাইাপনার আসবার সময় প্রায়
হয়ে এল—বারটা বাজে। একে ত কাল শুতে দেরী হ'ল,
ভার উপর বাকি রাডটুকু কেবলি মাধায় খুরতে লাগল:

( अन अन कतिया )

পরক্ত বরষত ভিগঁত আইনি,

তুহাঁরে মিলন কো ভাপনে প্রেম পিয়রওয়া। (আরে হাঁ) কি কুন্দর পান, ভার কি মিটি পলা। কেবল বলি তার সভে চেহারাটির মিল থাকত। ভামালের জান্কী বাঈ একটু পশ্চিমে চলেছে—একটু মোটা হয়ে পড়েছে—না সেলিম?

সেলিম। তবুমবা হাতী লাখ টাকা! (হাসিয়া) ভালই হয়েছে, নইলে ডেমন ডেমন একজন তাজা স্ক্রী বিদি সভ্যি সভিয় বর্বাবাত্তে আমার ছ্রোরপোড়ায় এসে ঐ পানটি পাইত, তা হলে তুমি কি করতে বলতে পারি নে—আমি ত সব ছেড়ে ছুঁড়ে বিবাগী হয়ে তার সকে বেরিয়ে পড়তুম।

কৈন্দী। ভা হলে সে বেচারা বে আগ্রারের আশার এসেছিল ভাও পেত না। লাভের মধ্যে ত্ব'জনকেই ভিজতে হ'ত, আর আমাকে করুণবারে গাইতে হ'ত:

व केंहा शास्त्र हा-किरकारन ।

অংশর বিষয়, গানের নায়িকা আজকালকার দিনে সশরীরে এসে হাজির হয় না। আর এলে তাকে দিয়ে ফেলবার মতও আমার কিছুই নেই—এক আমি নিজে ছাড়া। কিছু মেয়েরা উপরি পাওনাটাই কিছু বেশী পছন্দ করে – কি বল ছে ? এখানেই ত তোমাদের জিড—দেবারও বথেষ্ট আছে, নেবারও লোক অনেক। কাজেই আমরা গরীব বেচারারা মনের তুঃথে একলা দ্বে বঙ্গে বঙ্গে কবিতা লিখি।

দেলিম। অনেক আছে বটে, কিছ-লাবে ন মিল্ল এক।

> (বাছোভ্যম সহকারে আকবর বাদশাহ ও মন্ত্রী বীরবলের প্রবেশ এবং সভাস্থ সকলকে যথাযোগ্য প্রভাভিবাদনান্তর স্থাব্য স্থানে উপবেশন।)

আক্বর। বীরবলজী, আজ কি জরবী আরজি বেশী কিছু আছে ? কাল সারাদিন শিকারের পর প্রায় সারাবাত নাচগান চলেছে—তার উপর আজ আর স্নানাহারের বেশী বেলা না করাই ভাল। বাদ্শাদেরও মাঝে মাঝে বিশ্বাম দরকার।

বীরবল। জাহাঁপনা, অর্থী প্রার্থীর অভাব কোনদিনই হয় না; তবে বেশীর ভাগ আরজি কাল ভনলেও চলতে পারে। কেবল দেওয়ান মাধব রাও কাবুল থেকে বে জররী চিঠি আর থাজনা পাঠিয়েছেন, সেগুলির ব্যবস্থা আজই করা বিশেষ আবস্তক।

আকবর। দে চিঠি পড়ে দেখেছ কি ? কাল পর্যন্ত ভার জ্বাব অপেকা করতে পারে না ?

বীরবল। আজে না, খোদাবন্দ্; চিঠির সঙ্গে কিছু জীবন্ত মালও পাঠিরেছেন, বাকে ঠিক থাজনার সঙ্গে ভোশা-খানার চালান দেওয়া বায় না।

আকবর। কিরকম মাল? মাছ্য না ব্বস্থা পাবা না বুনো?

বীরবল। হজুর, মাছবও বটে, জন্তও বটে—অর্থাৎ নারী। তবে একে ব্বতী, তার হন্দরী—হভরাং পোব মানবে কি না, ভা শেষ পর্যান্ত ঠিক বলতে পারি নে।

বীরবল। ভাষাপনা, ভাপনার কাছে বে বা পাঠার, সুবই ও ভাগে ভাষার কাছে পেশ হরে ভবে ভাপনার দরবারে পৌছোর। এ মেরেটকেও আমি দেখেছি। আর
আমার এই বুড়ো চোবের সাক্ষা বদি বিশাস করতে হয় ত
সে অপূর্বা স্করী—তেমন স্করী ইতিপূর্বে কখনও দিল্লী
সহরে এসেছে কিনা সন্দেহ। আপনার হকুমের অপেকায়
তাদের অক্ষর মহলের সন্দার সাহেবের জিম্মেয় রেখে
এসেছি। এখন হজুবের কি আজা হয় ?

( সভাস্থলে চাঞ্ল্যের লক্ষণ প্রকাশ )

আকবর। তার সঙ্গে আর কে কে আছে ? পাঠাবার উদ্দেশ্ত মাধব রাও কিছু লিখেছেন ?

বীরবল। লিখেছেন কাবুলের সহর-কোডোয়াল, আর এক জন স্থীসহ মুস্সী মৃহিউদ্দিনের কন্যাকে তিনি দিল্লী দেখতে পাঠাছেন; তাকে আপনার অন্দরমহলে বেগম-সাহিবারা কুপাদৃষ্টিতে রাখলে তাঁরা স্থী হবেন, আর আপনিও তাকে দেখে ধুশি হবেন।

আকবর। তাদের তিন জনকেই তবে দরবারে ডেকে পাঠাও। দেখছ না তোমার কথা তনে সবাই অধীর হয়ে পড়েছে—মেয়েরা হিংসায়, আর পুরুষরা আননেন।

( বীরবলের প্রস্থান )

সেলিম। জাইাপনা, চান উঠলে যে সমৃদ্রের ঢেউ চঞ্চল হয়ে উঠবে, এটাও ত স্বাভাবিক।

আকবর। আর চাঁদ উঠলে যে তারার দল সান হয়ে পড়বে, এটাও ত খাভাবিক।

কৈন্দী। শাহেন-শা স্থাের মত টাদ তারা সকলকেই আপনার জ্যােতির অংশ বিতরণ করে তাদের স্বস্থ কক্ষে চালিয়ে ও আলিয়ে রেখেচেন।

আকবর। সাবাস দৈজী, কথাটা বেশ ঘ্রিয়ে নিয়েছ, নইলে আর কিসের সভাকবি ? কথার জাল ফেলে মান্ত্র ধরাই ত ভোমাদের পেশা। দেখ আবার নতুন আলোর ঝিলিক্লেগে ভোমার মনের মধ্যে নতুন কোন্ ভাবের ফোয়ারা খ্লে বায়। কল্পনাকেও ফাঝে মাঝে ঝালিয়ে নেওয়া চাই ভ ? নইলে রোজ বে ফ্লের মুধ দেখা বায়, নিভা কি ভাতে নেশা ধরে ?

কৈন্দ্রী। হজুর ঠিক কথাই বলেছেন। আপনার মহযু-চরিত্রের জ্ঞান বেমন স্থন্ন, তেমনি গভীর।

আপে বীরবল, পরে লাল পেশোয়াজ-ওড়না পরিচিতা আয়েবা, পরে সবৃদ্ধ পেশোয়াজ-ওড়না পরিচিতা রোশেনারা, পেবে ইলাহী বস্ত্রের প্রবেশ। বধাবোল্য অভিবাদনাতে আকবরের সামনে পেবোক্ত তিন জনে জোড়হতে দগুরমান হইলেন। সেলিমের সামনে দিয়া বাইবার সময় আয়েবা মৃহুর্জকাল ধ্যকিষা দাজাইল, কিছু তুই জনে প্রক্ষারের প্রতি त विद्यारकोशक हामिन, छाहा चात क्ह व्यक्षिक भारेन मा।)

(সভাস্থানের আলোড়ন বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইল)।
আকবর। আমার প্রির স্কর্ড মাধব রাওরের পত্নের
মর্ম অবগত হলুম। তোমাদের সকলকে দেখেও অভ্যন্ত সম্ভোব লাভ করলুম। পথে নির্কিন্দে এসেছ ভ । কাবুল-রাজ্যের সব কুশল ভ ।

ইলাহী। (সেলামপূর্বাক) হজুবের রাজ্য সর্ববাই নিরাপদ। দিনকতক হ'ল লাগুিকোটাল থেকে একদল দস্থ্য কার্ল আক্রমণ করেছিল বটে, কিন্তু বেটাদের আমরা এমনি শিক্ষা দিয়ে দিয়েছি যে, সারা পথ আর কোন উপজ্ঞব করতে সাচস করে নি।

আকবর। সাবাদ এই ও চাই। মাধব বাওয়ের যোগ্য হস্তে শাসন ভাব দেওয়া অবধি তুর্দান্ত সীমান্তপ্রদেশ সম্বন্ধ আমি নিশ্চিন্ত আছি। কেবল নিয়মিত সময়ে নিয়মিত ধাজনাটি আসে, আর কধনও কধনও সেই সঙ্গে ভিছু উপরিলাভও হয়—বেমন আজ। বিবিজী, ভোমরা বসো, কোন ভয় নেই। (উহারা বসিলে বোশেনারাকে নিরীক্ষণপূর্ব্ধক)—ভোমাকে বেন ইভিপূর্ব্ধে দেখেছি মনে হচ্ছে?

রোশেনারা। (করজোড়ে) জাইাপনা, তিন বৎসর
আগে নওবোজের কয় দিন আমি দিলীতে এসে বেপম
বোধবাঈ সাহিবার মহলে ছিলুম। তাঁদের আদের বত্ত্ব
আর সে সময়ের উৎসব-আনন্দ আমি জীবনে কখনও
ভূলব না।

আকবর। তোমার স্থীও সে আনন্দে বঞ্চিত হবেন না। আর তিনিও আশা করি, মাঝে মাঝে আমাদের দেখা দেবেন। তাঁকে দেখাই বে নয়নের এক উৎসব। বোধ হয় মনোরঞ্জনের বিভাও তাঁর কিছু কিছু আনা আছে?

রোশেনারা। হজুর, আমাদের পরীব কারুল সহরে আপনাদের বাজধানীর বিলাসকলার ক্ষীণ প্রতিধ্বনি মাত্র কলাচ পৌছোর। তবু আয়েবার পলা শ্বভাবতঃ মিটি বলে মূলীলী সাধ্যমত তাকে নিজে পান শিধিয়েছন; আর লেওয়ানজীর বাড়ীর নাচের মঞ্জিশে সঙ্গে করে নিয়ে পেছেন, তাই দেখে সে একটু আধটু বা শিধেছে।

আকবর। বিবিজীর নাম ভবে আবেবা? ভোমার নাম ত মনে হচ্ছে রোশেনারা।

কৈলী। (জোড্হন্ডে)—গোন্ডাকি মাফ করেন ভ বলি খোলাবন্দ বে, এর নাম হওয়া উচিভ ছিল আনারকলি। কেননা আনাবের মডই এর গালেদ। ঠোটের, কাপড়ের বং ও রূপ, আনার কলির মন্তই ইনি লাকুক, নরম ও নবীন।

আকবর। (সহাজ্ঞ)—তা বেশ ত, নতুন জায়গায়
এসে ওঁর নতুন নামকবণ হোক, অবস্তা বদি ওঁর তাতে
কোন আপত্তি না থাকে। কি বল বিবিজী ? আনারকলি
নামটিও বড় মিটি, আর সভিটেই টিক ভোমার সক্ষেধাপ
থায়। দেখ, ভোমাকে দেখে আমাদের সভাকবির ভাবের
উচ্ছাস এরই মধ্যে উথলে উঠেছে।

কৈন্দী। শুধু আমার একলার কেন হজুর, ওঁর শুভাগমনে ফুললানির ফুলস্থদ্ধ ডাজা হয়ে উঠেছে, ঘরের আলোর রোশনাই বেড়ে গেছে, আর বাতাসে স্থাস ভেসে আসছে। মান্তবের মনের কথা আর কি বলব ?

আকবর। ধীরে বন্ধু ধীরে, একেবারে অমন করে সব কবিতার মধু উজাড় করে ঢেলে দিও না। রোস, আগে চক্কর্ণের বিবাদভঞ্জন হোক। আনারকলি, তোমার নৃত্যগীছের একটু নম্না পাব, এমন সৌভাগ্য কি আমাদের আজ হবে ? না পথপ্রমে এখনও ক্লান্ত হয়ে রয়েছ ?

আনারকলি। (উঠিয়া অভিবাদনপূর্বক)— হজুরের ছুর্লভ দর্শনেই আমাদের ক্লান্তি দুর হয়েছে, আর আপনার ইচ্ছামাত্রই আমাদের পক্ষে মহা মান্ত আদেশ। কিন্তু আপনাদের এই বিখ্যাত শহরের আমীর ওমরাহের চিত্ত-বিনোদন করতে পারি, এমন কোন শিকাই আমি পাই নি। পাছে হাস্তাম্পদ হতে হয়, সেই আমার ভয়।

আকবর। কোন ভয় নেই, আনারকলি, সুন্দতের সর্ব্বান্ত জয়। রোশেনারা, ডোমার স্থীকে অভয় দান কর। আর দেখ সেলিম, থাঁ সাহেবের কাছ থেকে বাঁয়া তবলা ও ঘুঙুর আনতে পাঠাও।

> (সৈলিম চোপদারকে হকুম দিতে উঠিয়া গেল, পরে এমন স্থানে আসিয়া বসিল, বেধান হইতে আনারকলিকে ভাল করিয়া দেখা বায়।)

রোশেনারা। ( জনান্তিকে )— স্বারেষা, মনের জোর কর, দেধ বেন দিল্লীর কাছে কার্লের মাধা নীচু না হয়। বাড়ীতে বাপমায়ের কাছে বেমন নিঃসংহাচে নাচগান করতে, সেই ভাব মনে স্থানবার চেষ্টা কর।

আনারকলি। ( খুঙুর পরিতে পরিতে ) সেই চেটাই ত করছি, কিছ এরা বাপ মারের দেওরা নামটা পর্যন্ত বধন তুর্লিরে দিলে, তথন মাধার ঠিক রাধা মুশকিল। বাক, বা আনি তাই ত করি, ভারণর কণালে বা আছে ভাই হবে। (ফুললানি হইডে একটি লাল গোলাপ তুলিরা লইয়া নাচ ও গান )

সাকি লিরে সাগরে হুবকো বু হৈ, কিসি মুক্তকী আনে কি আয়স্কু হৈ। গুলেন্ড া সে বাকে হর্ ওল কো দেখাওরে, ন তেরে এারসে রঙ, ন তেরে এারসে বু হৈ।

( নৃত্য অস্তে আনাবকলি বাদশাহকে অভিবাদন-পূর্বাক তাঁহার সামনে জোড়হতে দাঁড়াইলে পর কিছুক্ষণ সভাগৃহ নিজন্ধ রহিল, পরে বাহ্বা ধ্বনির চোটে ভাঙিয়া পড়িল)

আকবর। আনারকলি, তুমি শুধু ওস্তাদী ঢঙ্ই শেখ নি, তাদের ছলাকলাও কিছু কিছু শিখেছ, নইলে এই স্থান নাচের নাচ দেখাতে এত বিনয় করছিলে ? তোমার নাচের ভলীতে এখনও ছেলেমাছবি ভাব আছে, দেটা ভালই লাগে। কিছু জান্কী বাঈয়ের কাছে আর বছরখানেক তালিম দিলে পর তুমি ভাকেও হারিয়ে দেবে, তা এখন খেকেই ব্যতে পারছি। আজ তুমি আমাদের বে আনন্দ দিলে, তার বক্শিশ স্বরূপ এই চুনীর কণ্ঠি মার এই পান নাও, লালে লাল মিলবে ভাল।

ইন্ লবে নাজুক পে স্ব্ধি পানকি আনে ত.দেও। কৌড়ি কৌড়ি বিকে বাবে বুদল্মীকে চুণি॥

এখন যাও বিশ্রাম করগে। নইলে বাদশাস্থ কবি বনে গেলে রাজকার্য্য চলা দায় হবে। মেহেব উদ্লিসা, বোধবাঈ সাহিবার কাছে মেয়েদের পৌছে দিয়ে তাঁকে বলো বে আমি পরে সিয়ে তাঁকে সব কথা বুঝিয়ে বলব। কোতোয়াল সাহেবেরও অভিথিশালায় থাকবার ব্যবস্থ। করে দিও।

> (একজন ব্যীয়সী রমণীর কিঞ্চিৎ অপ্রসন্ধভাবে আয়েবাদের লইয়া প্রস্থান।)

এবার তবে আমরা সভাভদ করি। বেগা বথেষ্ট হয়েছে, কিছু বে কারণে পীছ ছুটি পেলুম না, ভাতে বোধ হয় কারোই আপত্তি হয় নি।

( मनवनगर श्रेष्टान । क्राय क्राय महाहक । )

ফৈলী। কি শাহাজাদা, এত গোলমাল গোর সরাবতের মধ্যে তুমি চুপ করে রইলে বে? কেমন দেখলে বল; মনে ধরে?

গেলিম। (আবিউভাবে)—আমার পানের নারিকা স্পরীরে দেখা দিয়েছেন, আজ আমি ধন্য। (আনারকলির হস্কচ্যুক্ত পোলাপ কুড়াইয়া লইলেন।)

কৈন্ত্ৰী। আমাকে বা বলেছ বলেছ, অপবের কাছে কিছু এ বৰুষ মনের কথা বেশী বলো না! জান ও দিল্লী শহরে "প্রেম কি করানা সহেল বড়ান।" নয়। বাড়াবাঞ্জিকরলে সশরীরে অনাত্ত হাবার সম্ভাবনাই বেশী।

( হাসিতে হাসিতে উভয়ের প্রস্থান।)

#### ২য় দুখ্য

(জ্যাৎসালোকিত অভ:পুর—উষ্ঠানের নিরালা স্থানে খেত পাধরের ফোয়ারা। দুরে দানাইয়ে মৃত্ত্বরে বেহাপ রাগিণী বাজিতেছে। এক দিক খেকে দেলিম, অপর দিক খেকে মেহের উন্নিদার প্রবেশ, এবং মৃকাভিনয়ে প্রকাশ বেন সেলিম তাহাকে বলিতেছে প্রাদাদ হইতে কাহাকে সেধানে ডাকিয়। আনিতে; সে বেন প্রথমে নারাঞ্চ ভাব দেখাইল, পরে সেলিমের গলার অর্থমের প্রলাভন দেখাইবার পর নিমরাজীভাবে চলিয়া গেল। সেলিম প্রঠা বসা, ধমকিয়া দাঁড়ানো, পায়চারি করা প্রভৃত্তি নানারণে উৎকণ্ঠা প্রকাশ করিল, পরে—)

সেলিম। (বিদিয়া পড়িয়া)—দে কি মনে করবে ? সে কি আসবে ? সে কি ভালবাসবে ? ( গুন গুন করিয়া গান)

বেহাগথায়াজ

আওরে বলমরাজ বিন দেখে নহি পড়ত চৈন সাগরি ররন মোহে তড়গত ওঁজরি, পলক ন লাগি সারি রাত। চাঁদ পিরা বিন নিঁদ ন আওরে.

চুক পড়ি জনি তরসাঁউ।

( আবার উঠিয়া বেড়াইতে বেড়াইতে )—এমন অধীর আমি ত আর কথনো হই নি। এ কি নৃতনের মোহ, না রূপের নেশা, না প্রথম প্রেমের কুহক-মায়া ? বে শাহাজাদার একটি কুপাকটাক্ষলাভের জক্ত শত শত রমণী ভিধারিণী; সে কি না একজন সামান্য প্রজার মত একটি অপরিচিতা বালিকার প্রতীক্ষায় দীনভাবে দণ্ডায়মান। যার দর্শনমাত্রেই আমি এমন আত্রহারা হয়েছি, সে কি আমার এপ্রেমের প্রতিদান না দিয়ে থাকতে পারবে ?

( দ্বে মেহের উরিসার সজে আনারকলিকে প্রবেশ করিতে দেখিয়া সেলিম এক পার্শে সরিয়া দাঁড়াইল। মেহের উরিসা চুপি চুপি কি বলিয়া মাঝপথ হইতে ফিরিয়া পেল। আনারকলি একলা একটু অগ্রসর হইভেই সেলিমকে দেখিয়া সলক্ষভাবে গমনোছত হইল।)

সেলিম। ( অগ্রসর হইয়া গান)

ঠাড়ি রহে মেরে জাঁথৰ জাগে

( খানারকলি ফিরিয়া গাড়াইয়া খভিবাদন করিল ) নেলিম। খানারকলি, জান খামি কে ? আনার। (কম্পিড কঠে) জানি। শাহাজালা। দেলিম। এদ, আমরা ত্'জনে এধানে বদি। (তথা-করণ)। ভোমাকে ডেকে এনেছি বলে ডয় করছে?

খানার। (অপেকাক্তত ভরসাগহ) আফগান-রমণী ভয় কাকে বলে জানে না।

त्निम। काम नाटिय चार्थ छत्र करत्र नि ?

খানার। |কাল ছিলুম বালিকা। খাজ খামি বমণী।

দেলিম। এ পরিবর্ত্তন হঠাৎ কিলে হ'ল ? কি করে বুঝলে ?

আনার। কিসে হ'ল জানি নে; কিন্তু মনে বুঝছি, প্রাণে বুঝছি; সারা দেহে, সারা ত্নিয়ায় বুঝছি।

সেলিম। ডোমার কথাবেন আমার কানে গানের মত লাগছে। ঐ কথাই গান গেরে বলতে পার ?

আনার। পারি, কিছু লচ্ছা করে।

সেলিম। কিসের লক্ষা পু এখানে আমি আব এই ক্যোৎস্থাময়ী রজনী ছাড়া কেউ তোমার মনের কথা ভনতে পাবে না। তুমি নিউন্নে গাও, আমিও নিঃশব্দে ভনি।

আনার। (গান)

আজি হরব সরসে কি জোরারা প্রাণমে না মিলত কুল কিনারা। গাও পাও সথি গৌরবনীত, লীলাচপল রাগ ললিত ললিত। কোকিল পঞ্চম করণ কানাড়া, গাও পাও মৃত্ব মধুর মনারা। সরম কি বন্ধন খোলহ খোল, মরম কি পাল তোলহ তোল, প্রেমপাবনমে ছোড়হ তরনী, ভাসি চলি আও প্রাণমে হ্যারা।

সেলিম। (কিয়ৎকণ পরে) আনারকলি। আনার। ভজুব!

দেলিম। তোমার কাছে আমি ছজুব নই, ওধু দেলিম। তোমার বাড়ীতে কে কে আছেন ?

व्यानाव। या वान जाहे वह्न-मकरनहे व्याह्न।

সেলিম। বন্ধু ছাড়া, বন্ধুব বাড়া কেউ নেই ?

আনার। আজেনা, হজুর !

সেলিম। আবার হজুর ? বল সেলিম!

चानाव। चाव क्छ ताहे, त्रानिम नात्हव।

সেলিম। তুমি বলতে চাও ভোমাদের দেশে এঘন কোন ভাগ্যবান বীরপুক্ষ নেই বাব জিমার ভোমার কুদর্থানি বেশে এসেছ ? আনার। আমার হার পিছিরে পড়ে নেই, ভাকে আমার দুভবরণ আগেই পাঠিরে দিয়েছি হকুর—সেলিম।

দেশিম। (হাসিয়া) ভবে ভূমি হাদয়হীন ?

আনার। (হাসিয়া) আমার এক স্থী বলতেন, ফুলয়ের বললে আমার বুকে একটা পাধর বসানো আছে।

मिन्। भाषत्व ७ मामी हम।

শানার। শামরা গরীব মাসুব, দামী পাধরের কি বুঝি ?

দেলিম। বলি আমি বুঝিয়ে দিই ? দেখি ভোষার হাত (হাত বাড়াইরা)।

আনার। হাতের সঙ্গে হাদয়ের কি সম্বর্

সেলিম। হাতের সক্ষে হাদরের সম্বন্ধ অতি ঘনিষ্ঠ। দেখাই না পরীক্ষা করে।

( আনার তাহার হাতে হাত রাখিলে সেলিম নিজের আঞ্ল হইতে খুলিয়া চুণীর আংটি পরাইয়া ) এই আংটি বখনি দেখবে, তখনি আমাকে মনে পড়বে। এখন সম্মুটা বুঝলে ত ?

শানার। বুঝলুম। কিন্ত শামার কোন শ্বণচিয়ের দরকার নেই।

সেলিম। আনার, একটা কথা জিজ্ঞাসা করতে পারি ?
আনার। আদেশ করুন।

গেলিম। ভোমার হান্ত কি নিজকেশ-বাজার বেরিয়েছিল, না এই আংটির মালিকের কাছে পাঠিয়েছিলে? আনার। (নিজন্তর)

সেলিম। ভূমি ভ ভাকে কখনো দেখ নি; চিনলে কি করে?

चानाव। हविष्ठ (मर्स्सह, चरश्र (मर्स्सह।

সেলিম। স্বপ্ন ভাল, না সত্য ভাল ?

শানার। এক এক সময় মনে হয় শামার স্বপ্নই ভাল ছিল; কেননা তার সন্ধে ছিল শাশা।

সেলিম। আর সভ্যের সঙ্গে কি আছে ?

স্থানার। হয় ছ্রাশা, কিংবা নিরাশা, কে স্থানে !

সেলিম। তুমি কি আমাকে বিশাস কর না, আনার আমার ?

আনার। তোমাকে বিশাদ করেই ত বাপ মা, বাড়ী-ঘর, দেশ দব এক মুহুর্ত্তে ফেলে চলে এসেছি।

সেলিম। ভবে কাকে সম্ভেছ কর ?

স্থানার। এই প্রকাপ্ত প্রাসাদ্ভরা লোক, এই প্রচণ্ড রাজ্যপুত, এই পোণন মন্ত্রণা, স্ববিভূকেই।

নেলিম। তুমি এবই মধ্যে বাজপ্রানাদের কি কুটিলতা কটিলতা দেখলে বল ড ় ভোমাকে কি কেউ অনাদর করেছে ? ভোমাকে কি কেউ ভাল না বেলে থাকতে পারে ?

আনার। না, আমাকে কেউ কিছু বলে নি। আর বেগম সাহিবাও আমাকে যথেষ্ট বদ্ধ করেন। আমি পুর হথেই আছি। কিছু এখানকার দেওয়ালগুলোহুছ বেন ফিস্ ফিস্ করে কথা কর, এখানকার মাছ্যের মূখের হাসি-কথা আমাদের দেশের সরল হাসিক্থা নয়, সেটুকু এক-দিনেই ব্রতে পেরেছি।

সেলিম। তবে ভূমি সভাই বালিকা নও। কিছ আনাব, আমিও বালক নই। এই আংটি পরিয়ে ভোমার হার্ডে হাভ বেবে শপথ করে বলছি—

আনার। দেশিম, শপথে কাজ কি ? আজ থাক্, আর একদিন হবে। আজ আমার জীবনের দর্কপ্রথম পর্কাদিন, আজ কেবল আশা, কেবল আনন্দ, কেবল প্রেমের কথাই হোক্। হয়ত বেশী কথা বলবার দমর পাওয়া বাবে না। আজ আমার মনে হচ্ছে; অগর্ বেহন্ত অন্দর ক্ষীনন্ত হমিনন্ত ও হমিনন্ত ও হমিনন্ত।

সেলিম। ভবে বৃথা বাক্যব্যয়ে সময় নট না করে আর একটা গান গাও, আমার বেহুন্তের ছরী।

আনার। কি পাইব ? ভোমাদের সর্কাল মজ্লিনী পান শোনা অভ্যাস; আমাদের পাহাড়ী পান কি ভার মত হবে ?

নেলিম। তার মত নয় বলেই ত শুনতে এত ভাল-বানি। তোমাদের দেশের গজল গাও। কিছুক্ষণের জন্ত ভূলিয়ে দাও বে আমি দিলীর শাহাজাদা, বে আমার সময়ের প্রত্যেক মৃহুর্ভ, লীবনের প্রত্যেক কাজের উপর সহস্র ভীক্ষ দৃষ্টি নেবছ—বে আমার ভবিত্তৎ গ্রাস করবার জন্ত শৃত্ত সিংহাসহ হাঁ করে রয়েছে!

শানার। গান

কোৰ্শীৰে দিল হাৰে, সনৰ জাৰে কি হাৰ জাৰে।
বিছি হায় ইশ্ককি চৌসার, লগি হায় জানকি বাজি,
পড়া হায় চণৰ্কা পাণা, সনৰ জানে কি হাৰ জাৰে।
লগি হায় ইশ্ককি বৈড়হি, দিলুঁ দৈ ইয়াৰে কেঁটকর্।
কলিজা হায় জল্তা হায়, সনৰ জানে কি হাৰ জানে।
ইবর পানি ধরণতা হায়, উধর্ বিজলী চৰক্তি হায়,
এ কেলি দৰ্ উলজুড়া হায়, সনৰ জানে কি হাৰ জানে।

( দূর হইতে মেহের-উদ্নিগা একটু গলার ইণিত করিল ) সেলিম। ( হাসিয়া) এরই মধ্যে অন্দরের দৃতী এনে হাজির ? বাও ভবে। কিছ বাবার আগে আমার আংটির বললে ভোমার মাধার ঐ গোলাপ ফুলটি আমার দিরে বাও আনার ( আনারের ভথাকরণ )—বার শণথ করে বলে ষাও বে তৃষি রোজ ঠিক এই স্ময়ে এই কোয়ারার কাছে এসে আমার জন্তে বসে থাকবে। আসবে ত নিশ্চয় আনার—আমার।

খানার। হাঁ, খাদৰ নিশ্চন্ন সেলিম—সনম্! (ফিৰিয়া চাহিডে চাহিডে ধীরে ধীরে প্রস্থান)।

#### ०व मुज

(বেগম বোধবালয়ের মহল। উপযুক্ত গৃহসজ্জা, মহামূল্য আন্তরণাদি। আনারকলি তাঁহার পদসেবা করিছেছে। সামনের দিকে রোশেনারা একদল মেয়ের সহিত ফুলের মালা গাঁথিতেছে। অন্য একদল জরির কাক করিছেছে।)

যোধবাল। থাক আনারকলি, হয়েছে। সেই কথন থেকে পায়ে হাত বুলোচ্ছ, হাত ব্যথা হয়ে বাবে বে! ভোষার হাতটি কিছু বেশ নরম, গায়ে দিলে আরাম হয়। বাও ওদের সঙ্গে না হয় ফুলের মালা গাঁথ গে।

খানার। (উঠিয়া বোশেনারার কাছে গিয়া)— ভোরা কি করছিল ভাই ?

বোশেনারা। এই এরা বলছে, আমাদের দেশের মত করে মালা গাঁথতে, কিন্তু আমার ঠিক হচ্ছে না। ভোর মনে আছে ভাই ?

আনার। আছে বই কি। আমাদের নানা রকম বিনি হুতোর হার করে। দেখি ?

প্রথমা। ভোদের দেশে কি হুতো পাওয়া যায় না ? তবে সেলাই কিসে হয় ?

স্থানার। হাঁা, এক রক্ষ মোটা বঙীন স্থতো তৈরি হয়, তাই দিয়েই সব কাজ চলে।

ৰিভীয়া। শুনলি ভাই, ওরা নাকি শুধু হুডো দিয়েই সেলাই করে। (হাসিয়া) কেন, সেধানে বুঝি জরি টরি তৈরি হয় না ?

আনার। আমাদের গরীব দেশে জরি করেই বা কে, পরেই বা কে ? ভাই ড ভোমাদের কাছে জনির কাজ শিখতে এসেছি।

বিতীয়া। সেদিন বেরকম সেজেগুলে খাদ দরবারে নাচলে গাইলে, ভাতে শিক্ষার কিছু বাকি আছে বলে ভ বোধ হয় না, কি বল জয়নাব ?

প্রথম। ই্যা, আমাদের সজ্জাশিকা পাঁচ বছর বরসে আরম্ভ হর, কাজেই চিরজীবন সেটা মনে থাকে। ভবে ভিন্ন দেশে ভিন্ন প্রথা।

कृष्टीया। क्षि वारे वन छारे, स्यायस्य अक्ट्रे

লজ্জাসরম থাকা ভাগ। পুরুষ মান্তবের সামনে ঐ বেহারা-পনাঞ্জো আমি তু' চক্ষে দেখতে পারি নে।

বোশেনারা। কেন, কিসে তোমরা আমাদের এড নির্লব্দ ঠাওবালে বল ত ?

তৃতীয়া। ভোমাকে ত কিছু বলছি নে বোন। তুমি গায়ে পড়ে ঝগড়া কয়তে এলে কেন ?

আনার। ( ক্রভাবে )—কি করব, শাহেন্শা আদেশ করলেন, কাজেই যা জানি তাই করতে হ'ল।

ষিতীয়া। আহাহা ধেন কচি খুকীটি ! তবে মারের কোল ছেড়ে এত দ্বে এলে কেন ? আমরা কিছ ভাই অমন কলের পুতৃল নই, যে দফ দিলেই ঘুবব। তার চেয়ে আসল কথাটা বলেই ফেল না কেন, একঘর পুরুষ মাহুষের সামনে রূপের ঠমক দেখাবার লোভ সামলাতে পারে নি ?

প্রথমা। আ:, কেন ভাই ছেলেমান্থকে আলাভন করিস? এখনি গিয়ে বেগমসাহিবার কানে কথাটা তুলে দিয়ে সকলকে বকুনি খাওয়াবে 'খন।

আনার। (উঠিয়া -দেলায়ের দলের কাছে পিয়া)— আমাকে অরির কাজ শেখাবে ভাই ?

এক জন। আব শিথে কাজ নেই, বা বিছে আছে তাই যথেই! এম্নিডেই বলে রূপের দেমাকে মাটিডে পা পড়েনা, তার উপর—

আনার। (হাসিয়া)—আমার আবার দেশাৰ দেখলে কিসে?

অপ্রবা। কেন, সারাদিনই ত আয়নার মূধ দেখছ, দেখতে পাই। আমরা ত আর চোধ বুজে থাকি নে, কানও খোলা বাধি। তবে মুখটা বন্ধ রাধাই ভাল।— বড়লোকের কথায় গরীবের কাজ কি?

আনার। তোমাদের বে ভাই চারিদিকেই আয়না,
মুধ না দেখে উপায় কি বুল ? ক্রমাগত নিজের ছারা
দেখতে দেখতে এক এক বার বেন আমার বিরক্ত ধরে
বায় সত্যি!

প্রথম জন। দেখ আনারকলি, ভোমার ভালর জন্মই বলছি ভুত্মি নতুন এসেছ, কিছু জান না, ভাই মান না। আমাদের দেখতে ত কিছু বাকি নেই; অমন কড এসেছে, কত গেছে, কিছু আমরা রয়েই গেছি। সাবধান হয়ে চলো, নইলে মহা বিপদে পড়বে।

( খানারকলি খন্থিরভাবে এক কোণে একলা গিয়া বদিল। দাকিনা বেগমের প্রবেশ )

বোধবাল। এই বে সাকিনা, এস আমার কাছে এইখানে বস। (তথাকরণ) তোমাকের সেই বাঁলীটার অবশেষে কি হ'ল বল দেখি ? এই গোলকধাঁধার মধ্যে কেন বে ঐ কচি কচি স্থন্দর মেয়েগুলোকে পাঠার, ভাই ভাবি। আমুুুুাই বা কভদিকে নজুর বাধি বল ?

( আনারকলির উৎকর্ণ হটয়া প্রবণ )

সাকিনা। স্বার হবে কি দিদি,—যা হয়ে থাকে, তাই। আক্সকালে স্থারনী তাকে ডাকতে গিয়ে দেখে, সে কাঠ হয়ে মাটিতে পড়ে য়য়েছে। মেয়েটা মরে বাঁচল; নইলে তার কপালে স্বারও কত লাঞ্চনাভোগ ছিল, তাকে বলভে পারে? তার বুড়ো বাপ মা ভোরবেলা থেকে স্বারমহলের থিড়কি-ছয়োরে এসে এমন কালা কুড়ে দিয়েছিল বে, সারাদিন মনটা খারাপ হয়ে য়য়েছে ভাই ভোমার কাছে একটু বেড়াতে এলুম। (আনারকলিকে দেখিয়া) এটি বে নতুন মুখ দেখছি?

বোধবাঈ। ই্যা, কাবুল থেকে দেওঁয়ান মাধব রাও ওকে দিল্লী দেখতে পাঠিয়েছেন। মেয়েটি ফ্লীলা বলেই ত বোধ হয়। ওব উপর আমাদের কুপাদৃষ্টি রাখতে তিনি বিশেষ করে অফুরোধ করেছেন।

সাকিনা। তা ত রাথব দিদি, কিন্তু দৃষ্টি বে অনেক রক্ষের আছে। ও দিল্লী দেখবে, না দিল্লী ওকে দেখবে, ডাই ভাবছি। (হাসিয়া)বে দেখবে সেও পন্তাবে, বে না দেখবে সেও পন্তাবে।

যোধবাঈ। (হাদিয়া) ঠিক বলেছ ভাই। রূপ বড় জালা। বেমন জলে, তেমনি জালায়। আমার এ আবার এক কাঁটা হয়েছে। এখন মা-বাপের পচ্ছিত ধন মা-বাপের হাতে ভালোয় ভালোয় ফিরিয়ে দিতে পারলে বাচি। আনারকলি!

আনারকলি। (কাছে আদিয়া) জী হস্কুর। বোধবাঈ। ইনি আমার বোন সাকিনা বেগম, আদাব কর। (তথাকরণ)

সাকিনা। বেমন মিটি নাম, ভেমনি মিটি মুধ। বোধবাঈ। নামটি আমাদের দেওয়া, কিন্তু মুখটি ওর শৈতৃক সম্পত্তি।

সাকিনা। স্বার কিছু সম্পত্তি স্বাছে ?
বোধবাঈ। বোধ হয় না। সে থোঁক নেবার দরকারও
নেই। ডবে অনেক গুণ স্বাছে; বেশ নাচতে গাইতে
পারে।

সাকিনা। সভ্যি নাকি ? কৈ, আমাকে একটি গান পেয়ে শোনাও দেখি ?

স্থানার। হস্কাণীর মেহেরবাণী।

গান

ললা ওলানল্ পর্ হো ইদারা তোনারা, অভি কলন্লা নামলা হযারা তোনারা। তানি হৈ আওর কিসীকে চাতে হ' ও কুশ্রন হ্যারা পেলারা তোনারা।

সাকিনা। আহা, গলাটিও বেন মধুঢালা। এরকম গান সারারাত বসে শোনা বায়। আশীর্কাদ করি বেন এমন বরের হাতে পড়, বে আমারই মত গান শুনতে ভালবাসে। কিন্তু এখানে কাউকে বেন ইসারা টিশারা করো,না, বুঝলে? তা হলে তুমিও বিপদে পড়বে, আর আমরাও লক্ষায় মুধ দেখাতে পারবে না, কি বল দিদি?

বোধবাঈ। বয়সটা বে বড় ধারাপ সাকিনা, হাজার বোঝালেও বোঝে কৈ? ও জয়নাব, আজ সন্ধাটা কি এই বকম চুপচাপ ভাবেই কাটিয়ে দিবি? নাচগান কিছু হবে না? কাবুলের কাছে দিল্লীকে হার মানতে হবে নাকি?

জঃনাব। আমরা ত হেরেই আছি; দেকথা পাঁচ-জনের কাছে জাহির করে, লাভ কি ?

বোধবাঈ। অমনি তোদের অভিমান হ'ল বৃঝি?
ছি:; ওরা ছ'দিনের অন্তে বেড়াতে এসেছে, ওদের সলে
কোধায় তোরা খুশিমনে মিলে মিশে আমোদ আহলাদ
করবি, না রেষারেষি রাগারাগি করছিন? নে, ভোদের
মালাগাঁথা ফুলভোলা রেখে, সেদিন মীরাবাঈয়ের যে নতুন
গানটা শিখলি, স্বাই মিলে একবার ভাও বাংলে গা'
দেখি? যতই দ্রবারী ওন্তাদী গান হোক না কেন, আমার
কানে ভঅনের মত অমন মিষ্টি আর কিছুই লাগে না, তা
বলছি বাপু। গা' ভোরা।

মেষ্ঠো সমস্বরে।

পান

ণ্ডনি মর হরি আওন কি আওরাক। মহল চড়ি চড়ি বাঁউ মোরে সজনী, কর্ আওরে মহারাজ। বাছর মোর পশিহা বোলৈ,

কোরেলা মধুরে সাজ।
বরবে নেহরওরা, মেহা বোলৈ,
দামিন্ ছোড়ি লাজ।
বরতি রূপা নওবা নওরা বরিরা,
পিরা মিলনকি কাজ।
মীরা কি চিত বীরা ন বাবে.

বেলি ভালো নহারাজ।

**७वं मृ**ष्ठ

(দেওয়ান-ই-আম, আক্বর শাহের আম দরবার। আক্বর ও বীরবল আসীন। দরবারগৃহ বিশেষ উৎসব- সজ্জার সজ্জিত। কিংখাব ও মধমলের আন্তরণ এবং পর্দ্ধ। পারক্ত দেশের পালিচা, বোখারার পট্টবন্ধ, স্বর্ণ রৌণ্য জহবৎ থচিত পাত্র, ফুল এবং আতর পোলাপজ্লের ছড়াছড়ি, ছয়লাগ।)

আক্ষর। কি বীর্ষক্তী, এমন আনন্দ-সন্ধ্যায় ভোমাকে এত বিমর্থ দেখছি কেন ? ঘরে কিছু তক্রার হয়েছেনা কি ? বল ত আমি মিটিরে ফেলি।

বীরবল। জাহাঁপনা, ঘরে কিছু গোলবোগ উপস্থিত হয়েছে বটে, কিন্তু দে আমার ঘরে নয়, আপনার ঘরে। কাজেই ভাবনাটা আমার কিছু বেশী।

আকবর। আমারই ঘরে গোলবোগ, অথচ আমি সে বিষয় কিছু জানবার আগেই তুমি জেনেছ—এ কি কখনও হতে পারে মন্ত্রীজী । আমি কি এডই অন্ধ, এডই অলস, এমনই বিলাসী ।

বীরবল। শাহেনশার কর্মকুশলতা ও তীক্ষ দৃষ্টি হিন্দুস্থানের সর্বাত্ত বিধ্যাত। কিন্তু অনেক সময় বাইরের বড়
বড় জিনিব দেখতে দেখতে ঘরের ছোটখাটো জিনিব চোখে
সড়েনা। সেই জন্মই ঘরের ভার পুরুষরা মেয়েদের হাতে
ভেডে দিয়ে নিশ্চিত্ত থাকে।

আক্বর। (ব্যন্তভাবে) কৈ, বোধবাঈ আমাকে সম্প্রতি কোন হৃঃসংবাদ দিয়েছেন বলে ড মনে করতে সার্হি নে ?

বীরবল। ধোদাবন্দ্ মেয়েরা মেয়েদের উপর দৃষ্টি ব্রাধবার যত স্থবিধে পান, বড় বড় ছেলেদের উপর—

আকবর। বড় ছেলে । তবে কি সেলিম কোন গোলমাল করেছে বলতে চাও । হতেই পাবে না । সেলিম নামার সেরকম ছেলেই নয়; তার উপর আমিও তাকে ইড়া রাশে মাছ্য করেছি।

বীরবল। হছুব, রাশ হাজার কড়া হলেও তেমন তেমন তেজী ঘোড়াকে সব সময়ে বাগ মানাতে পারে না। যনে রাথবেন, শাহাজালা আর এখন বালক নয়।

আকবর। বালক ভিন্ন আর তাকে কি বলব বল ?
ারাদিন ত বাইরে বাইরে সমবয়নী সলীদের সলে থেলাগুলো
নামাদ-প্রমোদ নিয়ে মেতে থাকে, বিবয়কর্মে মোটে মন
দওয়াতে পারি নে। বেন ইস্কুল পালাতে পারলে বাঁচে।
চার পর সেদিন পারশু-রাজের একমাত্র কন্তার সলে তার
ন্ববাহের সম্বন্ধ এসেছিল, সে একবার মেয়েটিকে দেখতে
নতে প্রান্ধ রাজী হ'ল না; বদিচ লোকে বলে তার
্ল্য রুপনী হিন্দুস্থানে নেই। এতে কি পাকা বৃদ্ধির
নুমাণ হয় ?

বীরবল। হয়ত শাহাজালা হাতের কাছে মনোমড

রুপদী পেরে থাকবেন হজুর। এব ছেড়ে অঞ্চবে না বাওয়াই। ত বৃদ্ধিমানের কাজ।

আক্ষর। হাতের কাছে ত চিরদিনই রূপের রোশ-নাই বাঁধা রয়েছে, কিছু ক্ধনও ত তাকে ত্'দণ্ডের বেশী সেদিকে ফিরে তাকাতে দেখি নি। আৰু হঠাৎ কি হ'ল ?

বীববল। এসব জিনিষ হঠাৎই হয় জাইপেন:—স্কণে বা কুক্ষণে। এখন বুঝতে পাবছি, আমবা এডদিন তুখ দিয়ে সাপ পুষেছি।

আকবর। বিষদাত তুলে ফেলতে কতক্ষণ? কিছ এ সাপিনীট কে ?

বীরবল। হত সহজ মনে করছেন, ভত নয়। সেটি আমাদের নবীনা অভিথি।

আকবর। কে, আনারকলি ? (উত্তেজিত)— গ্রা ? অসম্ভব ! সে যে নিভাস্ত বালিকা! সে ত সারাদিনই অন্যমহলে বোধবাঈয়ের কাচে থাকে গুনি।

বীরবল। সারাদিন সেখানে খাকে বটে, কিন্তু সন্ত্যা-বেলা ঘণ্টাখানেক অন্তঃপুর-উদ্যানের ফোল্লারার কাছে বসে থাকে এবং একলা থাকে না—একথা আমি বিশ্বস্ত-ক্ত্যে অবগত হয়েছি।

আকবর। দেখ বীরবলন্ধী, আমরা আজীবন রাজ-প্রানাদের দ্বিত হাওয়ায় বাদ করে মান্থকে কেবল সন্দেহ করতেই শিখেছি, বিশাস করতে শিখি নি। আনারকলি একে সরলা বালিকা, ভার উপর বন্ধপ্রেরিত শরণাগত অতিধি—ভার নামে হঠাৎ একটা কুৎসিত অপবাদ দেবার আগে ভাল করে অন্ত্রসন্ধান করা কর্ত্তব্য কথাটা সভ্য কি মিখ্যা।

বীববল। হুজুব, মন্ত্রণা দেওয়াই আমার ব্যবসা; এই করতে করতে বুড়ে। হয়ে গেলুম। আমি কি আমার কর্ত্তব্য জানি নে, না হুজুবকে ছেলেমান্থয় পেয়েছি, যে জুজুব ভয় দেখাব ? স্বয়ং জন্দরমহলের সদ্দারই আমার সংবাদদাতা। বলেন ত আমার সাকীসাবুদ তলব করি—

আকবর। (অন্থির ভাবে)—না, না, না, আজ থাক্, আর এক দিন হবে। এখনি সব লোকজন এসে পড়বে। আজকের দিনের আনন্দটাই মাটি হয়ে পেল।

বীববল। হজুব, রাজ্যের মদল-অমদল আমার সকলের আগে দেখতে হবে, তাই এই অসময়েও অপ্রিয় কথাটা তুলতে হ'ল, কমা করবেন। আজ আর কিছু বলব না, কেবল এই বিনীত নিবেদনটুকু করছি বে, নাচগানের সময় আনারকলির উপর আপনি একটু বিশেষ নদ্ধর রাখবেন।

( একে একে শতিধি-শভাগতদের প্রবেশ ও ব্ধে চিক্ত শতিবাদনাকে পালিচার উপবেশন। ব্যাসমূহে নছ্বং বাজিয়া উঠিলে গারিকার দল সহ আনারকলি ও রোশেনারার প্রবেশ এবং সিংহাসনের বামপার্যে উপবেশন। সেলিম, কৈজী প্রভৃতি রাজপরিবদবর্গ সমাটের দক্ষিণপার্যে আসিয়া বসিল। রাজকর্মচারিগণ আতর গোলাব তাছুলাদি বিভরণ করিতে লাগিল। নহবৎ থামিলে পর গারিকার দল উঠিয়া বাদশার সিংহাসনের সামনে আসিয়া সঙ্গতসহ সভজী মোবারকবাদী গান ধরিল)।

সমন্বরে গায়িকাগণ। গান

স্থপ্ৰই কানাড়া—বাঁপতাল
তত বড়ি তত দিন সূত্ৰত
বৈঠে তথত আৰু নিলীগতি নৰ বে।
অচল কুৰুগী ধনি, চহ চক হব হাড়ো,
নগ নোতি নগ হীবা হবে কড়ে হ'।
হবাহুঁকি নজন, চর বুগ জীবে,
পাহানকে বালপাহে আকবন বে।

(সভাস্থ লোকের বাহবা ধ্বনি করণান্তর কথার শুঞ্জন আরম্ভ। পরে বাদশা কথা কহিবামাত্র সকলে নিশুক হইল।)

আকবর। বাহবা! বেশ, স্কর গান করেছ। মিঞা ভানসেনের শিকা দেখছি বুধায় যায় নি। আনারকলি, এবার ভোমার পালা। আন্কী বাঈরের কাছে মাসধানেক ভামিল দেবার পর কি রকম উরতি ভোমার হয়েছে, আজ উৎসব-রজনীতে এই সমবেত সমঝদারদের সামনে ভার পরিচয় দাও। দেখি শাসবেদ কেমন ওতাদের মান রাখে।

> ( আনারকলি খীরে খীরে উঠিয়া সলক্ষ ভাবে বাদশাহের সামনে আসিয়া কোড়হন্তে দাঁড়াইল, পরে একটু ভাবিয়া নিম্নলিখিত গানসহ স্থার নৃত্য স্থাক করিল।)

আনারকলি। নৃত্যসহ গীত

শুক্রেকা ওল—ন্ত্রাণ ডাল
শগুদে বিলব দা, চাগুরে নি সাইরো বছনো,
ডেরে বিলব দা চাগুরে নি সাইরো ( হাঁ )।
সোনি সোনি হ্রত. মন পরবদার ইরো।
বছনো কি তপ্ত বুঝাগুরে উনিদ। (হাঁ )।
বো লিখ্যা সোই পারা নি সাইরো।
কহে রলীরাম, রলী লাবে বনেরা।
বছনো কি তপ্ত বুঝাগুরে উনিদা (হাঁ )।

্নাচিতে নাচিতে বখন সেণিমের সামনে আসিরা পড়িল, তখন আনারকণি মুহুর্ত্তের জন্ত ভার দিকে চোখ ভূলিরা দীবং হাসিল; সেলিমও তথৈবচ। তু'জনের এই পোপন দৃষ্টি ও হাত্তবিনিমর পার্থান্থ দর্পণে প্রভিবিশ্বিত হটরা বারশাকের নজরে পড়িল। ভিনি মহাক্রেশ্ব হটরা ক্রকৃটি- হত্তের ইন্দিতে বাজনদারনিগকে নিবৃত্ত করিল। হঠাৎ বাজনা থামিরা বাওরার আনারকলি অপ্রস্তুতভাবে নাচ থামাইরা 'ন ববৌ ন ডছো' রূপে একণার্থে দৃড়াইরা বহিল। শাহাজাদাও পিতা এবং বীরবলের মুখের দিকে চাহিরা প্রমান গণিলেন। সভাস্থলে চাঞ্চল্য।)

বীরবল। অমাতাগণ ও বন্ধুবর্গ, শাহেন শা কর্মনি অনবরত রাজকার্ব্যে ব্যাপৃত থেকে বিশ্রামের অভাবে আল হঠাৎ কিছু অক্সন্থ বোধ করছেন। তাই তিনি আমাকে আপনাদের জানাতে বললেন বে, আজকের উৎসব এখন স্থগিত রইল। তিনি আশা করেন বে, শীঅই এই আনন্দরজনীর অসম্পূর্ণ অস্থঠান সম্পূর্ণ করা হবে, এবং সেদিন তিনি নিক্টকক্সপে আপনাদের সক্ষ্প উপভোগ করতে পারবেন। এই আপাত-অশিষ্টতা এবং আশাভক্সপাপনারা নিজ্পণে মার্জ্জনা করবেন, এই তাঁর বিশেষ অন্থবোধ।

(বিশ্বিত ও বিক্লিপ্তভাবে সভাভদ। সেলিমকেও পমনোছত দেখিয়া আকবর তাহাকে বসিতে ইন্দিত করিলেন। বীরবল ভিন্ন আর সকলের ক্রমে ক্রমে প্রস্থান।)

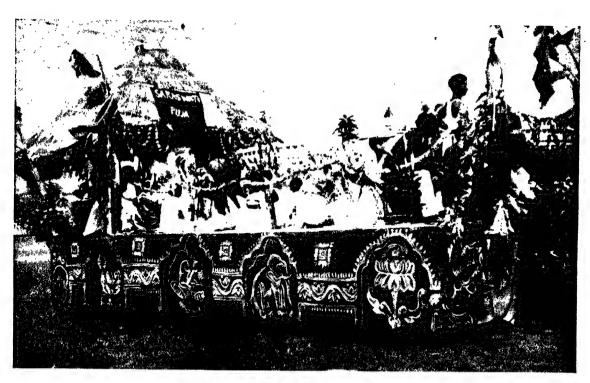
আকবর। (উত্তেজিত) সেলিম, এর মানে কি ? সেলিম। কিসের মানে হড়ুর ?

আকবর। (রাপত:) তুমি বেশ জান কি বদছি। আর আমার চোধে ধুলো দেবার বুধা চেষ্টা না করে সভ্য কথা বদ, বদি ভাগ চাও। এই অঞ্চাতকুদশীল নির্লক্ষ বালিকার সঙ্গে ভোমার কি সময় ?

সেলিম। হজুব, আমাকে যত খুলি গালমন্দ দিন, কিন্তু ভত্তমবের নিরপবাধ মেয়েকে অবধা কুকথা বলবার অধিকার আপনার নেই।

আকবর। আমার অধিকার-অনধিকার আমি বুঝব, তোমার কাছে তা শিথতে চাই নে। আমি ওধু এইটুকু জানতে চাই বে, এই অজানা বিদেশী মেরেটা নিজের স্বার্থসিছির জন্ম তোমাকে ফাঁদে ফেলবার চেটা করছে; না তুমি তার রূপে মোহিত হরে তার জাহারামে বাবার পথ পরিকার করছ। এ রোগ ত তোমার চিল না।

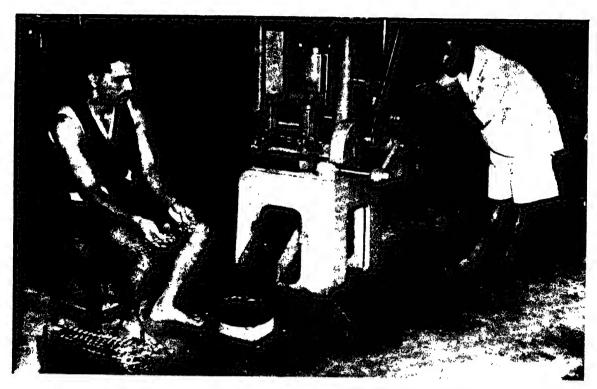
সেলিম। (উত্তেজিভভাবে পায়চারি করভ:) এ রোপ নবনারীর সেই চিরকেলে ভালোবাসা রোপ, কথন কাকে আচ্ছিতে আক্রমণ করবে, তা কেউ আপে থাকতে বলতে পাবে না। বদি ভালবাসা দোব : হর, তবে আমি দোবী; বদি কুলবকে পাবার ইচ্ছে দোব হয়, তবে আমি



দিলাতে প্রজাতন্ত দিবসে বাংলার সরস্বতী প্রজান্তটান দুশোর একটি অনুক্রতি



কোরিয়াও ৬০তম ভারতীয় এঘুলেন্স ইউনিটের মেডিকাাল অনিসার সার্জ্ঞেট মুধু রুঞ্চন ও কুশ্র কুলকনী প্যারিসের এক অজ্ঞাত দৈনিকের সমাধির প্রতি সন্মান প্রদর্শন করিভেছেন



টাকশালে একটি আধুনিক যথ়্ের সাহায়ে কাটিয়া ভারতীয় মূদ্রা নিশ্বাণ



এশিয়ার বৃহত্তম কারখানা—সিক্রি 'ফারটিলাইজার ফ্যাক্টরি'র 'বয়লার হাউদের' অভ্যন্তরস্থ চুল্লীসমূহ

中国司

শাক্ষর। তুমি বেশ জান বে, এক জন ইতরপ্রেণীর ব্যথী ক্রমেট শাহাজালার পাটরাণী হতে পারে না।

तिन्य। ना, चामि ति कथा कानि ति , कानति अ मानि ति । এको निमान्यिकियां कविकशेवश्याण चित्रां भूष्म वाक्रकार्य वर्थहे भविमान चर्षमण मिलारे चामाव निचानिक वर्ष हर्ष्क भावत्य; चाव चामि वारक छानवानि, वारक ठारे, वाव च्छ वाक्रिश्हामन वाक्रमशाना मय छाएं छ ख्रक चाहि, य चामाव च्छ छाव वाभ मा छारे वक् मय हिएए अत्मर्क छारक विवाह कववाव ख्रण्डांव कवतारे चामात्मव कृष्कनरिके चभमानिक नाक्षित्र हर्ष्क हर्ष्व, अ चार्षाक महीन ममास्क्रव निर्मेष वर्षमाने नम्न ।

আকবর। (অপেকাকত নরমভাবে) দেলিম। রাজা-वाम्भारमत्र कीवरनतः रकान निषयि। हे वा चाजाविक १ এहे स्व আমরা দিনকে রাভ. রাভকে দিন করতে বাধা হট: এই বে বাজকার্ব্যের ভাডনায় নিজের পরিবারের সাহচর্ব্য ত'লঙ্কো বেশী উপভোগ করতে পারি নে: এই বে প্রজাদের অভিযোগ শোনা, তাদের স্থপাচ্চন্য বিধান করবার জন্ম সদাস্কাদা প্রস্তুত থাকতে হয়, নিজের আরাম, নিজের অবসর কাকে বলে তা জানতেও পাই নে: একি পুৰ স্বান্তাৰিক জীবনযাত্ৰা ? তবু ড আমাদের পিতৃপিতামহ धारे महर कीवनवायन करव श्राह्म. जाव जामवान षाना कति त षामारमय श्रव-श्रीवन् निरक्तमय बाक्नमा ভলে দেই গুৰুতার বহন করবে:। (কিয়ৎকণী থামিয়া) আমিও এককালে যুবক ছিলুম, আমি ভোমার মনোভাব ৰুৱতে পারি দেলিম; কিছ তুমি কি আমার কথা বোকবার এডটুকুও চেষ্টা করবে না ? ভোমার পিতৃপুক্ষের প্রতি ভক্তি, ভোমার দেশের প্রতি কর্ত্তব্য, ভোমার বাপমা'র প্রতি ভালবাসা, বন্ধুবান্ধবের প্রতি মমতা, সবই কি এই নতুন বৈমের জোয়ারে জোতের মূপে তুপের মত ভেলে ८शंटि ?

সেলিম। (পিতার পারে পড়িয়া কাতরখরে) জাহাঁপনা, পিতা। আমাকে কমা করুন। আমি আপনাদের
স্বেহমমতা কথনো তুলব না, কিছু আরু আমি নিজেকেই
ভূলেছি। আমি আপনাদের বংশের কুলালার, আমি
আপনাদের অবাপ্য কুপুর। আপনারা আমাকে ভ্যাগ
করুন, কিছু সে নিরপরাধ বালিকাকে ভ্যাগ করতে আমার
আক্রেশ করবেন না। আপনাদের অন্যান্য পুরু আছে,
ভারা আপনাদের মান রক্ষা করবে, বংশের মর্ব্যালা রক্ষা
করবে। এই প্রকাপ্ত প্রাসাদে, এই ইল্পুরীভূল্য দিল্লী
শহরে সেই অসহায় বালিকার সর্বনাশ করবার লোক ভের

আছে, কিন্তু তাকে বকা করবার আমি ছাড়া আর কেট নেই। সেবে সরল বিখাসে আমার কাছে আত্মসমর্পণ করেছে, সে বিখাস বদি আজু আমি ভালি, তবে নিলীর তক্তে কেন, নরকেও আমার স্থান হবে না। আপনি ড পিতা, গুরু,—বলুন, এ কার্য্য কি ধর্মসম্পত হবে —ন্যায়সম্ভ হবে ?

আকবর। (বিচলিতভাবে) সেলিম ! ধর্মাধর্ম, পাণপুণ্যের বিচার করতে কথনো শিধি নি; আমরা শিধেছি
ভগু বাজকার্য, বাজকার্যা, বাজকীয়মর্যাদা, বাজদণ্ড, রাজকর্ত্তব্য। (ভাবিয়া) তুমি এখন বাও, একটু বিশ্রাম
করগে। আমিও প্রবাণ মন্ত্রীদের সঙ্গে পরামর্শ করে দেখি
এ বিবরে কি কর্ত্তব্য। বা স্থির হয় ভোমাকে কাল
আনাব। কিন্তু তুমি আমাকে কথা দিয়ে বাও বে, ভার
আগে তুমি ছলেবলেকৌশলে, কোন রক্ষেই আনারক্লির
সঙ্গে দেখা করবার চেটামাত্র করবে না।

দেশিম। (কিয়ৎক্ষণ ন্তক থাকিয়া) তাই হবে।
কুক্ষণে আমাদের দেখা হয়েছিল, আর দেখা করে পাশের
বোঝা বাড়াতে চাই নে। কিন্তু পরামর্শের সময় মনে
রাখবেন বে, তৃটি ভক্ষণ প্রাণের ক্থ তৃঃধ আশা ভয় সবই
আপনাদের বিচাবের উপর চিরদিনের মন্ত নির্ভর করছে।
মনে রাখবেন আপনি আমার ক্ষেহময় পিতা, কেবল রাজনীতির কঠোর প্রতিমূর্তি নয়। কুমন্ত্রণায় মাহুবকে আমাহুব
করে ফেলে। (বীরবলের প্রতি বিছেষকটাক্ষ হানিয়া
প্রস্থান। আক্রবরের মাধায় হাত দিয়া নীরবে অবস্থান।)

বীববল। (হাসিয়া) শুনলেন ত খোদাবন্দ, আমার প্রতি নিন্দিপ্ত বাকাবাণ! প্রবীণ শিক্ষকের প্রতি অর্পাচীন ছাত্রের সম্মানের বহরটাও ত দেখলেন! যাকে জয়াতে দেখলুম, মাছ্র করলুম, সেও ছটো কড়া কথা না শুনিয়ে ছাড়েনা। আজীবন রাজদেবার এই ত যোগা পুরস্কার। নাবালক অবস্থাতেই বধন এই মতিগতি, তখন সিংহাসনে উঠলে না জানি কি মূর্জি ধরবেন! প্রথের বিষয়, তখন আমি আর বাজতবণীর কর্ণধার থাকব না।

আকবর। তৃষি হাল না ধরলে এ নৌকো বানচাল হয়ে পড়বে বীরবল। এধনই তার লক্ষণ দেখা যাছে।

বীরবল। হজুর, আমি বডদিন আছি সাধ্যমত আমার কর্ত্তব্যপালনে জটি করব না। কিন্তু আমালের কাজ ভ শুর্হিডোপদেশ দেওয়া, সে কথা শোনা-না-শোনা সম্পূর্ণ আপনালের ইচ্ছাধীন।

আকবর। তোমার মন্ত্রণা কি আমি কথনো অগ্রাফ্ করেছি বীরবলজী ? আমি এডদিন বে-ভাবে চলেছি, সেই ভাবেই চিন্নদিন চলব। আমার প্রাণ থাক্তে পিছ্ল- পিডামছের শুল্র বশে কথনো কলক ম্পর্ল করতে দেব না।
সেলিমের এই প্রথম প্রণয়, তাই সে এত অধীর হয়ে
পড়েছে। দিনকতক দেখাশুনা বন্ধ থাকলেই এ মন্গুল
ভাৰটা কেটে পিয়ে তার স্বাভাবিক বাধ্যতা ও প্রফুল্লভা
কিরে আসবে। ইতিমধ্যে আনারকলিকে ফেরত ডাকে
কারুল পাঠিয়ে দেওয়া বাক, কি বল বীরবল গ

বীরবদ। আপনি ষতটা হালকাভাবে নিচ্ছেন হজুর, আমি কিছ টিক তা পারছিনে। মিলনে বাধা পড়লে প্রেমিকরা খাইবর অপেকা হুর্গম ব্যবধানও অনায়াদে লজ্মন করে থাকে, ইতিহাদে তার বহু নজীর আছে। ও বিষবৃক্ষ নির্মাণ করাই ভাল। যেরকম বেগতিক দেখছি, প্রাণ থাকতে এ প্রেম বাবে না।

আক্বর! (অবসরভাবে) তবে উপায়? বীরবল। জাইশেনা, আপনি বে এমন জ্ঞানী হয়েও আজ শিশুর মত অগহায় হয়ে পড়েছেন, সে কেবল সঞ্জান-স্লেহের অন্ধ মারায়। আপনি যান, একট নির্জনে গিয়ে ক্ষণবে চিত্ত সমর্পণ করুন, তা হলে আপনার মনের দৃচ্তা ও বৃদ্ধিব দ্বিরতা ফিরে আসবে। আপনার শুধু এক সন্তান নয়, সহল সন্তানের শুভাশুভ আপনার উপর নির্ভর করছে মনে রাধবেন। আমার উপর ভার দিয়ে আপনি নিশ্চিম্ব থাকুন; এ বিশ্রী ব্যাপারের যথাযোগ্য ভদম্ব ও বিচার করে তার ফলাফল আপনাকে অবিলয়ে জানাব। কেবল আপনি কোভোয়ালকে হকুম পাঠিয়ে দিন বেন ৰিচার হওয়া পর্যাম্ব আনারকলিকে কারাগারে বন্ধ রাখা হয়।

আকেবর। বীরবল, তুমি শুধু আমার স্থােগ্য মন্ত্রী
নও, আমার পরম স্থাহ্য ও যথার্থ হিতৈষী। তুমি ঠিকই
বলেছ, সেলিমের অভ্তপূর্ব ব্যবহারে আমি কিঞ্ছিৎ
বিচলিত হয়ে পড়েছি। তুমি শীঘ্র এই সলক্ষণা কন্যার
বিচারের ব্যবস্থা করে আমার মনে শাস্থি দাও, ও বংশের
মান রক্ষা কর।

( व्यागामी वाद्य ममाना )

## চোখ

## ঐকরুণাময় বস্থ

মনে মেই কৰে বেন কেবেছিছ কালো ছট চোব,
লৈ কোন লাগৱ বীপে বছৰিন আগে, আহা আই হোক।
যেবানে উঠেছে বড়, বেবানে বেজেছে বাঁপি,
বেবানে লভাৱ কুল কাৱে চেৱে ওঠে বিখালি,—
লেবানে কি দেশ আছে, দেবানে কি আছে কোন বীণ;
পব চেৱে কাৱো চোবে জন আলে, বাঁচলে কি ঢেকেছে এইীণ?
কভো না গোবুলিকাল মেৰে বেৰে গোনালি ৱেবার
ললিভ ছুলির চাঁনে বিচিত্রিভা বে ছবি আঁকার;
দেই সব মবে রাবা, চির্দিন ভালো লাগা রঙ
ভীবনে বাজার হুর গৌড-সারঙ্।
হঠাং বনার বেব : গাই গাই ওছে বালিইান,
বে নীড় ভেঙেছে বড়ে ওরে পাই বিছে ছই বুজিয়া বেড়াল।
চিক্তৰ স্থুকর বিচে বেবেছিছ কালো ছট চোব,
লে কোন লাগর বীণে বছবিন আলে আহা ভাই ছোক।

ভারপর পেছে কভো কাল,
ভোষার আবার বাবে ইভিহাল স্বাশায় করেছে আড়াল;
ভীরে বলে দেখেছিল সাগরের চেট উভাল,
ভারপর গেছে কভো কাল।
পৃথিবীতে এলো পেল কভো অব, কভো পরাত্মর,
হাওবার উভারে দের ইভিহাল কালের বলর।
বনে হর ভূমি আমি কেট নই, মোরা ভগু খেলার পুভূল,
লভারে কে চেনে বলো, বাস্থেরা চেনে ভগু কুল;
ভূমি আমি খেলার পুভূল।
সেমিম র'বো না বোরা, ভগু এই চিরজীবী প্রেম
বাস্থ্যের জীবনে জীবনে চিরদিন রাখিরা গেলেম।
বলত আলে চিরদিন, ভোখার লে হরেছে বিলীন
লেকালের বলতসেবা,

শ্বরণের বণিকারে প্রের শুর্ গাঁপা র'বে, জুরি রহিবে লা।
ননে দেই কবে বেল কেবেছিছ কালো ছট চোধ,
বেথানে উবার আলো কয়ে বলরল,
পাহাছিরা বুনো পথে নেবে আলে গোধুলি-আলোক।

# যশোহরে নীল-আন্দোলন ও শিশিরকুমার ঘোষ

শ্রীযোগেশচন্দ্র বাগল

গত শতাৰীর মধ্যভাগে বাংলার বিভিন্ন অঞ্চলে, বিশেষ ক্রিয়া যশোহর ও নদীয়ায় নীলক্রদের অত্যাচার-উৎপীডন ভীব্র ও ব্যাপক আকার ধারণ করে। রায়তদের নামে মিথ্যা মামলা ক্লব্জ করা, ধানজ্ঞমি নষ্ট করা, ঘটবাড়ী পোড়ান, গ্রামকে গ্রাম লুঠতরাজ, জ্মিদারির কাছারি चाक्रमण, नीमहाशीरमय नीरमय खनारम चार्क याथा, নারীগণের উপর অক্থা অত্যাচার-একরপ দৈনন্দিন ব্যাপারে পরিণত হয়। জেলার শাস্ন-কতপক তথা माक्तिष्टित्रेश हेश्टब क्रीशनस्त्र नानाकर्भ भाराया क्रिएक। ১৮७० भरत्य ১১म आहेन विधिवक स्ट्रेगाव পর শাসকবর্গ চক্তিভকের অভিলায় চাষীদের উপর জ্লুম-জবরদন্তি চালাইতে থাকেন। শিশিরকুমার ঘোষ তথন মাত্র বিংশতিব্যীয় যুবক। তিনি এই সময় যশোলবে শিক্ষকতা-कार्या निश्व किलान । जिनि भक्त्रन ३३ एउ नौनकदानद অভ্যাচার-অনাচারের বিহুর তথ্য সংগ্রহ করিতেন এবং "M.L.L."-স্বাক্ষরে কলিকাতার 'হিন্দু পেট্ হট' পত্রিকায় প্রকাশার্থ পত্রাকারে লিখিয়া পাঠাইয়া দিতেন। 'পেটি য়ট'-সম্পাদক হবিশ্চক মুখোপাধ্যায় সাদরে এ সমুদয় পত্রস্থ কবিতেন। তিনি নীৰ সম্পৰ্কিত বিভিন্ন অঞ্চল হইতে প্ৰেবিত পতাদি প্রকাশের জন্য ১৮৬০. ২৮শে এপ্রিল সংখ্যা হইতে "The Indigo Districts" নামে স্বতম্ভ একটি বিভাগ প্রজিয়াভিজেন। 'M.L.L.'-স্বাক্ষরে শিশিবকুমাবের প্রথম পত্র বাহির হয় ১৮৬০, ৩১শে মার্চ্চ তারিখে। পরবন্তী मक्न भवारे छेक विভाগে श्वानमां करव । এই 'M,LL' ষে শিশিরকুমার ঘোষ স্বয়ং সে সম্বন্ধে পূর্বে তিনটি প্রবন্ধে বিশদ আলোচনা করি। ততীয় প্রবন্ধে আমি 'M.L.L.'-স্বাক্ষরযুক্ত পত্ত মূল ইংরেজীতে ত্বত উদ্ধত করিয়াছি।\* শিশিরকুমার এই সকল পত্র লিখিয়া কিরুপ বিপদ্গ্রন্ত হইয়াছিলেন ভাষাও আমরা জানিতে পারিব।

শিশিরকুমারের উক্ত প্রথম পত্রে ৪৯ জন মোড়ল বা

কৃষক-নেতার গ্রেপ্তারের সংবাদ আছে। জয়েন্ট ম্যাকিট্রেট সীনাবের নির্দেশক্রমে সরকারী ঘোষণা প্রবণের জন্য कारमारभारत वार्छ-प्रम टाकार जीतानारी समस्यक हम। **এই ম্যাজিটেট-পুল্ব নীলকর-বন্ধ: উপশ্বিত লোকজনকে** নীলচায়ে প্ররোচিত করিতেই প্রয়াসী ছিলেন। বিভ তাহারা ইহাতে অসমত হইলে ভাহাদের মধা হইতে ৪৯ অন নেতাকে থানায় ভাকিয়া লইয়া যাওয়া হয়। সেখানে স্বীনার তাহাদিগকে গ্রেপ্তার করিয়া হান্সতে রাধেন এবং পরে যশোহর সদরে চালান দেন। সেধানেও নীল বুনিতে রাজী कदाहेवाद कना जाहारमद शांत्रारमा हय. जाहारमद जैनद কিছু কিছু অত্যাচারও যে না হইয়াছিল এমন নয়। অব-শেষে প্রতাল্লিশ জন মোড়ল নীল বুনিবে বলিয়া একরার-নামা লিখিয়া দিলে তবে হাজত হইতে মুক্তি পায়। অন্য চারি জনকে জেলা ম্যাজিট্রেট মোলোনী সরাসরি বিচারে চয় মাদের কারাদণ্ডে দণ্ডিত করেন। ইহার জের যে আরও কিছদিন চলিয়াছিল প্রবন্ত্রী পত্তাবলী হইতে তাহা জানা ग्राष्ट्रेरत । स्त्रीमाद मीन्डाशीरमद क्रम कविवाद समा मदकारव विर्लाह निशाहित्मन दश. कात्नारभात्म छाहावा छाहारक স্বাদ্ধি আক্রমণও করিয়াছিল।

যশোহর হইতে ১৮৬০, ৪ঠা এপ্রিল তারিখ সম্বলিত এবং "A Native" স্বাক্ষরযুক্ত একথানি পত্র ১৪ই এপ্রিল ১৮৬০ সংখ্যা 'হিন্দু পেট্রিয়টে' প্রকাশিত হয়। এখানিও বে শিশিরকুমারেরই লিখিত এরপ মনে করিবার সম্বত্ত কারণ আছে। এই পত্রে কালোপোলের ঘটনার উল্লেখ আছে এবং বলা হইয়াছে যে, সেখান হইতে নয় শত জন রায়ত প্রতীকার-মানসে কলিকাভার গিয়াছে। এই সময় যশোহরের উত্তর-পশ্চিম অঞ্চলে অষ্টাশীটি গ্রাম নীলকরদের বিরুদ্ধে সন্তাবদ্ধ হইয়াছিল। গ্রামসমূহের অধিবাদীরা প্রতিজ্ঞাকরে যে, তাহারা আর নীল বুনিবে না। পত্রখানির নিয়-লিখিত অংশ প্রশিধানবোগ্যঃ

Is it that we are weak, wretched and poor—that we are their subjects—that we have no other resource than to suffer patiently whatever punishment our masters will please to inflict upon us, that they thus trample upon us, disregarding justice and the tenets of the Bible. How are we to impress upon the minds of the Government that the ryots have neither taken advances, for drawn contracts? They will never believe it, for the Planters have convinced them otherwise. Woe to the Bengalee that they are sleeping in indoleace. When their wretched countrymen are thus

১৯৪৫ সনের ২৬শে আগন্ত 'রবিবারের ব্লান্তরে' "পল্লা-মাগুরার বোব আতৃগণ : শিশিরকুষার বোব", কার্ত্তিক ১৩৫৬ সংখ্যা 'প্রবর্তকে' "শিশিরকুষার বোব" (পৃ. ২৮৭) এবং ১৯৫২, ২০শে জামুয়ারী তারিখের আবন্ধ বাজার পত্রিকার 'রবিবাসরীর আলোচনী'তে "বংশাহরে নীল-আন্দোলনের কথা" শীর্বক, বর্ত্তমান লেগকের প্রবন্ধনার প্রত্তমান লেগকের প্রবন্ধনার প্রত্তমান প্রথম পত্রখানি প্রবন্ধ প্রত্তমানি প্রত্তম প্রক্রানিক প্রত্তমানিক প্রত্যানিক প্রত্তমানিক প্রত্যানিক প্রত্যান

sacrificing their lives for their emancipation from Indigo-elavery; they are passing away their time in idle luxury. Rise, Rise, Ye countrymen—with supplicating hands, fall prostrate before the Governor, catch his feet, and do not let him go, unless he has granted your requests. Should the Governor or any other nobleman ever visit the moffusil—the uncontrolled authority of the Planter will make them compare the Sahebs of the moffusil to the Spaniards who once depopulated America.

२

শিশিরকুমারের 'M.L.L.'-খাক্ষরে বিভীয় প্রধানি 'বশোহর, ১৮ই জুন' তারিধ স্থলিত। ২০শে জুন ১৮৬০ সংখ্যার 'হিন্দু পেট্রিরটে' ইহা প্রকাশিত হয়। এখানি দৃঢ়-সকল নীলচামীদের শায়েতা করিবার উদ্দেশ্রে নীলকর ও ম্যাজিট্রেটের বড়বজের একটি প্রকৃষ্ট উদাহরণ। প্রধানির মর্ম্ম এট:

"५৯८म कालब नानबावर मारव भागवादि कृष्टेव करेनक ভারিভার বোলোমীর মিকট পাঁচল্যার ভতিপর অবিবাসীর विक्रांद अरु बाबना क्रम् करता। '(म नरन रव, रवक वंक वंक দিরা যাড়াইরা বহু বিখা ক্ষিত্র দীল ভাতারা নই ক্রিরা কেলিভেছিল, দেখিতে পার। সে ইতার প্রভিবাদ করিতে গেলে মতেশ চাইজ্যের নাবেব রভি বুরুজ্যের অধীন প্রার যাই খন লোক জৰ চইরা ভাতাকে আক্রমণ করে। ভাতাকে ধরিরা খাচারা মারবরও করে, কিছ শেষে কে কোমবডে পলাইডে ममर्थ हव । त्यारमामी ७९७वार काहाविरशत विकृत्य क्यारतके कार्ति क्रिंग्सन । वर क्रम्प ब्रिंश क्रामिश हाक्ट (मीन-ক্ষার ভয়াৰে ) পুরা হইল। সেধানে ভাহারা বাসবাবেক বাতে। ভারণর ভারাদিগতে কারাদ্রতে দক্তিত ভরিবা সরকারী কেলে পাঠান হয়। এ কুঠার ভিন কর ভাগিতার ঐ कार्तिकारबन्ध मन्यक्ष माका स्वतः। स्वारमानी केवारबन्ध मास्का সম্ভষ্ট হাইরা বিবাধীপক্ষের অপরাধ সম্পর্কে ছির্নিক্ষর তন बर इरे पित्मत त्यमार कावारमत कृषि है।का कदियामा, जमा-লাহে ভিদ বাদের দশ্রৰ কারালতের আবেশ কেন। ব্যাভিটেই খবৰ বিচারাস্থ্যে, ভবৰ পোৱামারি কুঠার প্রপারিক্টেণ্ডেট শ্বিব সাতেৰ জাভাৱ পাৰ্ছে একবাৰা চেয়াছে উপবিষ্ট ছিলেব। ভিনি ब्राक्टिकेटक क्रवंबक क्रेग्टब्स अवर वक्रवार विटक्टिलन, क्षमक वा कांकात क्षेत्रक वामरमा-वाने वर्षन कविरक्रकिरमा। বিবাদী হয় কৰই অভিবোগ অধীকার করে ও সাজীসাবুদ আনিরা প্রবাণ করিতে চেঠা করে বে. ভাতারা অকুছলে তিলই না। কিছ বোলানী এই বলিয়া ভাছাদের কথা অঞাত ভরি-লেন বে, ভাতারা সভলেই শীলভববের বিক্লমে জোট পাভাই-गोहा । किमि जानियांबहस्य एवा वियोग पविदारस्य, विके

कांडाका बीजकरायक कर्यकांडी अवर करीब क्षेत्रा ...। कियि विकास করিয়াত্তেদ বে, যাই জন লাটিয়াল বিলিয়া এক জন লোককে আত্তৰণ ভবিষা ভাষপিট ভবিজেও লে প্ৰাণ্ডৱে পলাইডে লহৰ চইহাছিল, আৰু বৈবাং ভিদ ভদ ভাগিবার আসিবা ইণ্ডিত চইল স্থন্ন আক্রমণকারীবের বিক্রবে সাক্য বিবার নিবিল। এ বোভদ্যার আর একট কৌত্তক্তর বট্টনা चित्रात्म । अहे चाळवनकारी प्रत्यत त्यका अवर वावसात स्वान विवाही रुक्ति वर्षाक्षारक हार कम काशिकावर नमाक कविन। ভিছ এক কম লেখাপতা ভাষা লোককে অমৰ্থক সাভা বেওৱা ৰাভিটেট ৰজিখন বৰে না কবিয়া যক্তি বেন। সাকীয়া একবাকো বলে যে, ভাতারা পর্বে বভি ববজাকে চিনিত ও माद्रिशमास्य मधादि कवित्य कांकारक के विव त्याप । किय चरित्रशाविकतान श्रवानिक व्हेशास, इकि बुनुका कि ने দিৰ লাভলীন সাতেবের ভাছে ছিলেন। লোলোনী ইচা বিশাস मा कविश शारवम माहे। (य-जव जाकी विशा जाका विरक निश्च बहैक्टल बढ़ा शक्ति छाड़ारणब छैशस किक्टल छिवि ৰিৰ্ভৱ করিছে পাৱেন ? বিবাদীপক প্ৰাৰ্থনা কামান বেন ন্যাজিটেট ঘটনামলে গিয়া ব্যাপার্টর সম্বন্ধে ভব্স করেন এবং अवन जमानाव जारमी जरबहैक हरेशारक किया रहरबंग । चयर चक्रमहाम कतिरम और वार्गितित मछा-विद्या किमि नक्राकर कामिएक शाहित्वम । जकत्महे-काँकारम्य मत्वा बाक्तिहेडे बदर मीलकड (कहरे ताव वाम मा--- मिक्टरे कारमम (व. चकि-হোগ ভিভিতীন। এ জেলার নব-নিয়ক্ত জব্দ বেলী গাতেব এই বোক্ষয়াটির কিল্লপ কর্মলা করেন ভানিবার কল আনতা অভ্যন্ত ব্যঞ্জ হইরা আছি। বলি এভগুলি লোকের উপরে क्षेत्रण चनाव चित्रांत करा वह चावा वहेला हेश्टब्स्ट केइच बर थ्यांविक वित्रां काठित कतात (कामक व्यविकात मारे। উপরের বর্ণিক বিষয়ক্ষলি সভ্য এবং মবি চুইকে প্রায় অভ্যাদ कविश विनाव : जानिव देवाव क्षेत्रद विश्व कविटक नारवव ।

"ভাৰচাৰে"র+ অবাৰ প্রবোগের অন্য লারবুর সাহেব দর্ম্ম হ্বাত। প্রভাবের সাক্ষতিক ভোট পাকানোর বল্পন তিনি পাগলের বত হুইরাহেন। বুলালী বিহালের বাতী পোভাইরা কেলা হুইরাহে। বিবহরি প্রান্ধ পোভানো হর নাই, পূর্ম্মে ভাভাহভার বব্যে ভূল সংবাদ বিরাহিলার। লারবুর সাহেব বভবাতী প্রান্ধ প্রকারে ভলগাং করিরা কেলিরাহেন। বিবহরি, কাক্তিরা, রানক্ষপ্রের বভ বহু প্রান্ধে বানভেভ মন্ত করিরা বিরা লেই লেই ভবিতে নীল বোলা হুইরাহে। হার্নেল বহোরর উভর অঞ্চের প্রভাবের লইরা ভি প্রভই বিরাভ হুইরা পভিরাহেন বে, প্রবিক্তে বজর বিবার সময় পাল না ?

চর্মনিশ্বিত চাবুক

পুনক্ত-উক্ত চার ক্ষ ভাগিতার কি বিব্যা সাক্য বাষের অপরাধে অপরাধী বর ৫\*

৩

শিশিরকুমারের 'M. L. L.'-খাক্ষরিত তৃতীয় পত্তের তারিধ 'বশোহর, ২৮শে জুন ১৮৬০'। পরবর্তী ৪ঠা জুলাইরের 'হিন্দু পেট্রিরটে' এই পত্রধানি প্রকাশিত হয়। নীলকরদের অত্যাচার-হেতু নীলচাবীরা কিরপ সংঘবদ্ধ হয় এই পত্তে তাহার উল্লেখ আছে। আবার কুঠীয়াল-ঘারা জমিদারের কাছারি আক্রমণ ও উভয় দলে এক ভীবণ সংঘর্ষের বিষয়ও ইহার মধ্যে দেওয়া হইয়াছে। পত্রধানি হইতে মূল বিষয়গুলির তাৎপর্য্য এখানে দেওয়া হইল ঃ

"...बीनक्दरण्य अथम कांच दरेन मृद मृद क्षांम दरेए चानक इकीना बाबकननक मूक्त मीन-इक्तिक चानक दरेरक বাধ্য করালো। কেনি সাহেবের লোকেরা ওরভাবশে এই ত্ৰণ কৰিবা কেলে। ইচার কলে সাভাপট প্রায়ের চাষীরা करक्यार क्रीत महा जन्मक वित्र कृतिया मिल। किमि त्यस পर्वाच ভाठारकत मील दुनिएड और विनद्या दांकी कतान (व. এবাৰে নীল বুনিলে পৰে ভিনি এইরপ দাসত চইতে ভাহাদিগকে ৰক্তি দিবেন। চাষীরা ভাহাদের কণা বকা ক্রিরাছিল: ক্রিড কেনির বাধার ছবু ডি চাপিরা বলে, তিনি তাঁচার কৰা রাধিলেন না। এক নাস পর্যে হুসাপুরের करबक कम लाक बाबमन्त्र कृतित ब्राटिमकाद्वत विकृत्त बालिन कविटक बर्वाटन कानिवादिन। নুতন করিয়া চুক্তিবৰ হইতে ভাহাদিগকে পীড়াণীতি করে अवर चाजारम्य करमकम्बद्ध श्रमास्य चार्केक दार्थ। अरे रक्तांत क्रवाठीन बाक्तिहेटहेत निकड़े श्रेकीकांत श्रीवनां ना फरिबा, जदाजदि मशीबाद जाजिएहैंन जाट्टरवर निक्डे পিরা আবেদন ভরিতে ভাতাদিগকে পরামর্শ দেওরা হয়। সম্ভান্তি ( প্ৰাৰ নৰ দিন পৰ্যে ) বিজ্ঞাী কুঠার ( বাহার বালিক बिवान) श्रवाम नाट्य धैरवयनुत, क्रमनत, भावादा, विदेति, লক্ষণদি, আরোকানদি প্রভৃতি প্রাবের ক্ষকরেক বোকলকে ভাকিবা আনিবা ভব দেবার বে, বদি ভাহারা নুভন চ্জিতে আৰম্ভ না চৰ ভাচা চইলে ভাচাদিগতে ভগাৰে আইক কৰিবা ৱাৰা ছইবে। ভাহাৱা বেদ চক্তি করিতে অসমত দা হয়। দীল-हाबीता वाजी कितियां देशांव क्षणीकात अतिहरू क्षणप्रद हर । ভাহারা বলবৰ হুইয়া আমীন ও ভাগিভারতের প্রায় হুইতে ৰহিছত কৰিবা দেব। নীলচাৰীকের ঐতিক বকাতভাৱা অভ্যাচারীদের দ্বার উপর ভাতাবিগতে তাভিরা ধিরাতেন। নিজেবের অধিকার রকার কর তারারা সর্বাদেরে এই অবোধ ष्टेशांव जरमध्य कविवादस ।

গভ ২০শে ভূম বল্লিভপুর গ্রামের ভবিবার গ্রবং নীরগঞ্জের স্যাভূজার্থানের মধ্যে ভীষণ সংঘর্ণ হুইরা সিরাছে। স্বল্লিভপুর আনের একটি সামাত অংশনাত্র সে ইজারা সইরাহিল। সে ভাবিরাহিল, এই হত্তে সন্ত্র আনের উপরই আবিশত্য করিছে পারিবে। কিন্তু প্রান্ধর অধিদার ভালার এই ইজার বাদ সানিলেন। ব্যাকুআর্থার এই বির দূর করিবার সহজ্ঞ উপার্থর হুই শত সমার লাটিরালস্থ নিরা ভারলোকটির কাছারিবাড়ী আক্রমণ করিল। এ প্রকার অভর্কিত আক্রমণের জভ রারভেরা প্রস্তুত হিল না। ভাহাদের মধ্যে চার জন ভীষণভাবে আহত হইল; ইহাদের হুই জনকে প্রথানে (বশোহরে) পার্ঠাইরা দেওবা হুইরাছে। এখানে পৌহিবার অব্যবহিত পরেই এক জন নারা বার। ইহার পরেও নীলকরেরা আমারিগকে জসং, এবং নিশারীদের অপেকা নিজেমের উৎস্কৃত্র প্রীয়ান বলিভেও লক্ষাভুত্ব করিভেছে না।

মলিকপর ভয়ানকভাবে স্তিভও চইয়াতে। স্তীনার এই ব্যাপারের অনুসভাম করিতে গিরাছেম। অভত: ভর্তপভের निकृष्ठे लिमि अहेक गृहे विमादम, यमिश मिराय बाहेबात बाह कार्यन्दे राजवण्य । त्याबाशाचार मि: हे.बाट्टेंस जरून मीतन्रशास माक्षाबात-कणात भीषरे विवाह हरेत, अवर माणित्धेकेता নিশ্চঃই দেবানে নিম্মিত কুইয়াছেন। আমার শ্বন কুইভেছে, অমভিকালপূৰ্ব্বে স্তীনাৱের বিক্রছে যশোহরের করেকজন রায়ত এक्ष बारवस्य वह बिक्तांत्र बायहम करिशादिक त्य. चिमि भीतकारमा जाक भागाणांकम अदर चवषाम कराव । किन ভিনি তথন ইতা অধীকার করিয়াছিলেন, ছোটলাটও তাঁতার किक्श्ल मुख्ये हरेबाबितम्। १७ मामवात २०११ सम अहे विवाठ ठहेवात कथा किल। दविवाद बारलाभी अवश সিবিল সার্জন এই কৃতিতে বোগদানের নিমিত হত্তত হইয়া म्बारम इक्केबाबिरम् । किछ विवाद-अवकान प्रतिक दश्रवाद्य ভালারা বছই বিমর্থ তইয়া পভেষ। অভাত ক্লিই চিত্তে যোলোমী সাহেব ফিরিয়া আসিয়াছেন। স্তীনার সাহেবের अकरे मधात 'तथ (पथा 'छ कमा (वहा' करेंके फेलक किम-काकामा अवाद कवक करां क तित्त, जानांत निवादकत कर्ता-চোষ্যের আত্মানও লওয়া ঘাইবে। বিবাদীপক্ষের অভিবিত্ত হতে এ ব্যাপারের কিরুপ নিপত্তি হইবে ভাহা বুবা বুবই লোজা। जलवन: कतिशामी भक्त बादर जाकारकत जाकी नंदक विद्या जाका ও বিব্যা বোক্তবা সাজাইবার অভিবোগে অভিযুক্ত করা करेता किस मासिट्डेडे वाटाइटवर नाववाम दश्वा देविक. टिनिए गार्टिय किस साह बारमाह 'शवर्व' मन।

আপনাকে একট পুসংবাদও বিভেছি। কালোপোলের সেই কুব্যাভ 'হাব্লা', অবাং অরেণ্ট ন্যাভিট্রেট কীনারের হেপাভং হইতে হাজার হাজার রায়ভ কর্তৃত্ব করেক অন করেণীকে হিলাইরা লওয়ার ব্যাপারটা জেলা অফ বিঃ বেলীর বিচারে সম্পূর্ণ বিব্যা প্রবাধিত হইয়াছে। বেলী সাহেব সম্পূর্ণ

बाब २১८म एन बंबादन चानिवादन । वर्डवान मीन-हानावाद উক্ল বিখ্যা হামলা লইবা নীলকর ও ভাহাবের বছরা বেশ अको (जारतील क्रतिशक्ति । अ वार्शिको देशलका करियारे चीमार जात्वर को जवन आयवाजी 'वित्सांती' क्रोशांक वनिया नवकारत विर्शार्धे कविशाशिक्षम अवर अहे अविनाय अवारम रिम्ह्यायस पार्किनात साकृत सार्वित्रम्थ सामारेशस्तिम । शांबलांव लिक्ष मान्यात लाएकरणव नका कविवा कांगांव अवर रमनारम्ब वर्षास्य (मर्गास्य क्षत्रि क्षाका अवर मर्काम स्वत्रवाद অভ্যাচার তইতে বেতাই পাইবার বিভিত্ত বশোচরের অবি-वानीया नीनकवास्य जान चार्शाय कवनः बालिट्डेडेटक चाक्रवर्गत चित्रांश हवेटल निर्द्धानत वृक्त कृतिर्द्ध वांश दरेशारह । अरे दावनात 'चिन्दर' मीनकत्राकत रहते प्रविश द्य. कार्य माक्टिके क्षेत्राच्य (मक्क कार्य माक्रिया प्रियाद अक्षेत्र মন্ত বভ চতা পাম। অৱপক্ষে ভাতারা মিরপরাধ রারত-প্ৰতে ভোমজেৰেই বাপ মামাইতে পাতিতেৰ না। আহি বাবের मक्न भार्राहेत्छहि। हेठा हीर्व ठहेरामध नाबाद्रस्य निकृष्टे শেশ কৰিবাৰ লোক সম্বৰ কৰিছে পাৰিলাম মা। মিং বেলী সহৰে কিছু নাবলিয়া বাকা বাৰ না। সমগ্ৰ কেলা তাঁতার क्षणश्लाक मुच्य क्षेत्रा फेक्रिकाट । अरे चन्न नमस्त्र मरना चिनि বাহতদের যে কতথানি প্রিয় চইয়াছেন ভাতা বলিয়া শেষ করা বাছ না। তাঁতাকে এবং বিনি এমন এক কন সুবিচারক পাঠাইহাছেন, উভহুকেই অলেষ বছবাদ।"

কালোপোলের হাম্লা যে যশোহরের জেলা জজ বেলীর বিচারে মিখ্যা প্রমাণিত হইয়ছিল, শিশিবকুমার উপরোজ্ঞ পত্রেই ভাহা ব্যক্ত করিয়াছেন। এই পত্রের সংযোজনীস্বরূপ তিনি রায়ের নকল প্রেরণ করেন। ইহা পাঠে জানা যাইতেছে, ম্যাজিট্রেট যে চারি জনকে ছয় মাদের সপ্রমান কারাদত্তে দণ্ডিত করিয়াছিলেন ভাহাদের এক জনের শান্তি তিনি বহাল রাথেন, জনা তিন জন বেকস্থর খালাস পায়। বেলীর রায় ম্যাজিট্রেটদের অবিমুখ্যকারিতা ও নীলকরদের প্রতি ভাঁহাদের পক্ষপাতিত্বের একটি প্রকৃষ্ট নিদর্শনিস্কর্প হইয়া আছে।

8

'M.I.L.'- সাক্ষরিত শিশিরকুমারের চতুর্থ পত্রধানি নানা দিক হইতেই গুরুত্বপূর্ণ। তাঁহার বিভিন্ন পত্রে বথাবধ বিবরণ প্রকাশিত হওয়য় উচ্চ কর্ত্পক্ষ মহলে বেশ একটা চাঞ্চল্য উপস্থিত হয়। গোপনে গোপনে সরকার জেলা-শাসকলের নিকট কৈফিয়ৎ তলব করিতে লাগিলেন। এদিকে ম্যাজিট্রেট বাহাত্বেরা কে বা কাহারা তাঁহাদের এবত্যকার 'কীউ'-কথা 'পেট্রেট'-মারক্ত সাধারণ্যে প্রকাশ

করিয়া দিতেছে ভাহারও থৌক করিতে আরম্ভ করেন।
পত্রধানি যশোহর হইতে ২৫শে জুলাই প্রেরিভ; পরবর্তী
১লা আগটের (১৮৬০) 'হিন্দু পেট্রিয়টে' ইহা প্রকাশিত
হয়। পত্রের মন্ম এই:

"এখাৰ হুইভে লিখিভ আৰার প্রস্বৃত্ত ব্যাজি**টে**টবের त्याहेंगी कार्याकनात्मद कवा श्रकामिक क्षतात. (क ভাঁচাদের এটকণ বেগ দিভেছে ভাচার অভসভাবে ভাঁচারা প্ৰবৃত্ত ভইনাছেন। কিছ কিল্লপে ভাঁচাকে বুঁজিয়া বাহির क्वा बारेट्व ? कीमादाब जीक बृद्धि बरे ब्यानादा मिलाविक হইবাছে। কে কে ভিন্দু পেট বটে'র প্রাহক ভাহার অহ-সভাবে তিনি বাহির হইবাছিলেন। কিছ বছই আক্ষেণের বিষয়, পাৰ লিক লাইৱেৱী বাজীত আৰু কেন্ট্ এগানে 'পেট খটে'র গ্রাহক নতেন। এখন কি করা বাইবে ? বাহা তত্ত ইতার পরেই থিকরগাছার ষ্যাক্তে সাহেবের প্র পাইরা তাঁতারা কভক্টা লোরাভি পাইরাছেম। শীলকরদেরই वक वहमाकाच द्राप्त श्रद्धवार छनिया नीमकत-विद्यावीत्मत অভত: ভিন ডভন নাম ভিনি পাঠাইয়াছেন। নামগুলি পাইয়া ছেল। কত্ৰপিক বেন গিলিয়া কেলিয়াছেন। ইহার বব্যে করেক জন তাহাদের পরিচিত, করেকজন অপরিচিত। কিছ কে বে কাগভে লিখিভেছে ভালা কেমন করিয়া বাহির করিবেন গ কিছ ইহাদের মধ্য হইতে আসলবাবু মাজির, বিফুবাবু পোট माडीत, निनिद्याद निक्क, कुक्वाद, शिबीनवाद अदर चात একভ্ৰতে তাঁচাৱা ঐ প্ৰথমির লেখক বলিয়া সম্ভেচ कडिएकाम मि: (मार्कामी जरकावरण आमनवावरक ভীষণ ভাবে ভিরম্ভার ভরিষাছেন। স্বীনারের নিশ্ভিভ बाबना, निनित्रवाद्वारे धारे काक। आबाब क्रकवातू व मा करें एक भारतम अध्य मह। कांकात देशतकी काम अवर मील-विद्वारी मामाचार अर्थक विश्वित । शक्रामणक विभिन्ने क्षेत्र গিনীপবাৰুও বে ইতার মধ্যে আছেম, এরপ সন্দেহও তাঁছারা क्तिकार्यम । धरेत्रभ अक्ष्य, जामन्यायूक यत्रपाच अवर শিশিরবাবু ও বিফুবাবুকে বেলাবাত করা চইবে; আর কৃষ-বাবু ও গিরীশবাবুকে কারাখও দেওবা হইবে। কিছ আমি বৰ্ডবানে নিৱাপদে আছি আৱ হব হুইতে ভাষাগা দেবিভেছি। माना तक्य कत्रमा-कत्रमा कता वरेत्वत्व. अवन्थ वहेत्वत्व । আনার সহতে বধন এই সৰ ভনি ভবন আরও কৌচুক অমুভব করি। মোলোমী অপেকা অবিকতর অবিবেচক হজভগ্ৰির ( rash ) ফীনার সাহেব আর্নেকার বারণা এবনও পোষণ করিভেছেন। ভিনি শিশিরবার সম্পর্কে প্রভ্যেকট च्या, त्यवन यानदान अञ्चि हेकिया नरेबार्टन। आवि आध-প্ৰকাশ করিব না বভক্ষ না দেখি বে, ভাছারা উপরোক্ত সন্মানিত ব্যক্তিবের কৃতি কৃত্তিতে উত্তত ভ্রত্তাত্তেন। সভ্য কৰা বলিতে কি. প্ৰতিনিয়ত আমায় বহা পঢ়িবায় আপড়া

হইতেহে, ভাহা হইলে ব্যাভিট্টেটবেষ প্রতিহিংগার্ভি চরিভার্থ হৈবে। ভারণ তাঁহারা একাবিক বার হোটলাটের অগভোরভাকন হইরাহেন, এবং করলং কর্তৃক বিবেচিত ভারতবর্ধের একজন অভ্যুংকট ব্যাভিট্টেট গত ১লা আগঠ একেবারে বিলাভ পর্যুভ চুটিরাহেন। তথাপি আমার আশা আহে, কল বেলী—বশোহরে এমন উংক্টে কল ব্য কমই আনিরাহেন—সর্ক্রণজিলাম ব্যাভিট্টেটদের কোণ হইতে আমাকে রকা করিবেন। এই সকল ম্যাভিট্টেটকে প্রায় প্রভাই উচ্চতন কর্তৃপক্ষের নিকট কৈকিয়ং বিভে হইতেহে। এইরূপ একট কৈকিয়ভে কীনার সাহেব বীকার করেন বে, হেলিভের পরামর্শ অভ্যারে ভিনি কিছু করিয়াছিলেন—ভিনি তাঁকে পাট করিয়াই এরূপ করিভে বলেন। এই কৈকিয়তের একটা খনডা আরি দেখিরাছি। ম্যাভিট্টেট বোলোনী ইহা উর্থ্যুলন কর্তৃপক্ষের নিকট প্রেরণের অভ্যুভি বোলোনী ইহা উর্থ্যুলন কর্তৃপক্ষের নিকট প্রেরণের অভ্যুভি ক্যেনাই।

ৰাশ্বার ন্যাজিট্রেট নিঃ টেলর নীলকরদের বন্ধুরণে আব্যাভ হইলেও এখন আর ওরণ নহেন। গুলব এই বে, তিনি একেবারে বদলাইরা গিরাছেন। এডিনি জারপ্র্বক লাবাইরা রাখিলেও, রারতেরা বর্তনানে পুনরার শক্তিমান হইরা উটিরাছে। নীল কাটিবার সমর উপস্থিত। বিভিন্ন লানের রারতগণ এক আবেদনে তাঁহাকে জানাইরাছেন বে, প্রামে বসিরা নীল-গাঁটগুলির ওজন করিছে হইবে এবং ক্ঠিতে লইরা বাইবার পুর্বেই দান নিটাইরা দিতে হইবে এবং ক্ঠিতে লইরা বাইবার পুর্বেই দান নিটাইরা দিতে হইবে এবং ক্ঠিতে লইরা বাইবার প্রেই দান নিটাইরা দিতে হইবে। নচেং তাহাদের বারণা, তাহারা ব্ল্যবাবদ এক কপর্তক পাইবেনা। টেলর আবেদনে বর্ণিত বিষয়গুলির যুক্তিযুক্ততা বীকার করিরা 'নালাদ' ('Madads') দিতেছেন বাহাতে রারতেরা ক্রীরালের স্বেজাচারবুলক কার্যকলাপ হইতে আল্বরণা করিতে পারে।

বীরগঞ্জ কুঠাতে বছই গোলমাল চলিতেছে। রারতেরা বুবই উত্তেজিত। বল্লিকপুরের সংবর্ধের কলে এইরপ হইরাছে। আমি পুর্বে লিবিরাছিলাম এই ব্যাপার গত বালের ২০শে ঘটরাছে, প্রকৃতপক্ষে এটি ঘটরাছে ১৮ই জুলাই। ফীনার বহুং ইছার তহুত করিয়া এইরপ বলিরাছেন, 'য়তদেহ এবং কভঙাল বছ সাজীর বিবৃতির সদে মিলিরা বাওরার অকট্যরূপে প্রবাণিত হইরাছে যে, একটি সংঘর্ব মিচ্ছরই বাবিরা বার, আর রোজিরাছের বাছব্রের কভঙাল হইতে প্রবাণিত হর কুঠার লোকজনও সপত্র ছিল।' লোক গাপ্ করার অভিবাপে সম্পর্কে বিবৃত্তিগুলি এতই পরম্পর্বেরাণী বে, এগুলি বিঘাত নহে।' অকট্য প্রবাণ বাকার জীনার মেরে এই কথাগুলি লিবিতে বাব্য হইরাছেল, প্রবাণিত হইল বে, বীরগঞ্জ কুঠা এবং নভালবাবুলের মধ্যে পাঁচর বাজীতে

বিনা, ভাহাকে ভারপুর্বক কুন্নীতে বরিয়া লইয়া বাইবার চেটা করার একটা বারপিট হইরাছে; এক পঞ্চে পাঁচু শেব, উকীর মহন্দ্রক ও বসীক্ষরীন আক্ষর এবং অন্য পক্তে সক্ষী আহত হইরাছে; পাঁচু শুকুতর আঘাত পাইবার কলে অব্যবহিত পরেই বারা বার। প্রভ্যেক পক্ষ নিজেনের আহত ব্যক্তিদের নিজ নিজ হেপাকতে রাবে। প্রতি বলে কুড়ি-পঁচিশ কম লোক হিল। মর্ভাল-পক্ষীর লোকেদের বিক্রছে সাক্ষ্য-প্রমাণ পুবই সামান্য, আর পাঁচু শেবকে বলপুর্বক বরিয়া লইয়া ঘাইবার প্রবাদে প্রাম্বাসীরা বে বাবা দিরাছে ভাহাতে ভাহাদের দোখ বেওয়া চলে না। জম ডাইভার এই সময় মীরপঞ্জে ছিলেন।

কীমারের রিপোর্ট আদে নিৰুত মর, তথাপি ইহাকে সভ্য বলিরা বরিয়া লইলেও এই কথাই প্রবাণিত হয় বে, রায়তেরা ভঙ্মাত্র আত্মরক্ষার ব্যাপৃত ছিল। ঐ সমর কম ডাইভার ক্সিতে থাকার এ বিষরে তাঁহারে হাত না থাকিরাই যার মা। তথাপি কীমার তাঁহাকে ইংরেজ বলিরাই হয়ত রেহাই দিয়াছেম। মীলকরেরা হয়ত লপথ করিয়া বলিবেন, তাঁহারা বাংলাদেশের হিতৈষী বন্ধু, তাঁহাদের তরকে অভ্যাচার বুব করই হইতেছে, ইভ্যাদি, ইভ্যাদি। আমরা কিছ ভূক্তভারী এবং কথমও বলিতে ছাভিব মা বে, কোন কেশেই নিছক স্বার্থসিধির ক্ষম ম্যায় বিচার এরূপ ভাবে সেই সব লোকেদের হারা পদ-দলিত হয় মাই, যাহারা নিজেদের সভ্যতা ও উন্নত্তর চারিত্রিক উৎকর্ষের ক্ষম খ্যাত। ইংরেজ প্রবর্ণমেন্ট এই নিরীহ জাভির নিকট কথমও অভ্যাচারী বলিয়া মনে হইতেন মা, বদি মা নীলকর্মণ বিভ্যাম থাকিত এবং যদি সিবিলিয়ামণণ বর্থানিছিট কার্য্য করিতে সক্ষর হইতেম।"

0

শিশিরকুমার 'হিন্দু পেট্রিয়টে' 'M.L.L.'- স্বাক্ষরিত পঞ্চম পত্র লেখন যশোহর জেলার অন্তর্গত তারাগন্ধ হইতে ২রা আগই তারিখে। 'পেট্রিয়টে' ৮ই আগই এখানি প্রকাশিত হয়। তারাগন্ধ হইতে কেন পত্র লিখিতেছিলেন, তাঁহার উক্তি হইতেই সেকথা জানা যাইবে। এই পত্র পাঠে আরও জানা বায়, শোলকোপা, বিজলী, রামনগর প্রভৃতি অঞ্চলের হাজার হাজার নীলচামী রায়ত কুঠীয়ালন্দের আক্রমণ হইতে আত্মবন্ধার জন্য প্রস্তুত হুতৈছিল। কুঠীয়ালগণ জোরজবন্ধতি করিয়া নীল তুলিয়া আনিবার জন্য বিভলতার, অস্থান্ত প্র লাঠিবাল সংগ্রহ করিতেছিল; গ্রামবানীরাও বিদয়া নাই, তাহারাও বর্শা, লাঠি, গলা জোগাড় করিতেছে—প্রতিজ্ঞা, মূল্য না পাইয়া নীল ছাড়িয়া দিবে না। শত্রখানেক পুলিসও মোভারেন হুইয়াছিল।

इराज नवकावी कर्चांगी स्व आंठवंश किव्रंश क्यांग इराज शाद जाहांव अकि मृंडारखंद जेंद्रबंध अरे शब्द थानिए आहि। वालाहरदंद निर्देश नार्धन अनिवंदे नार्ह्य कावांगार आहें गाह्य कावांगार आहें वालांगा वालांगा वर्जन नी वृनित्व, ना आवांव खाल आनित्व।' नी नांगार वालांगा अविवाद कावंद कावंद कावांगार कावंद कावंद

"ভিনি [কীনার] আনাদের বংশাহর সংবাদলভাকে
বুঁলিরা বাহির করিবার কন্য কভ চেঠাই না করিভেছেন।
শিক্ষ শিশিরবাবুকে সন্দেহবংশ কল্প করিছে নানা হল
বুঁলিভেছেন। তাহার বিক্রমে বারলাও ক্লুক্ করিরাছেন।
কীনার পার্থবর্তী একট প্রানে চাপরাসী পাঠাইরা চার কন
চাবীকে বরিরা আনিয়াহেন, তাহাদের মুব বিরা ভিনি এই
ক্যা বলাইরাছেন বে, শিশিরবাবুর পিভা ভাহাদিগকে নীল
বুনিভে বাবা বিরাহেন। বুবা বাইভেছে, কীনার উক্ত চাষীস্বক্তে কিছু বিভে অলীকার করিরাছেন। নারেব-লারোগাকে
ব্যাপারট ভবভের কন্য পাঠানো হইরাছে। ভাহাকে নির্দেশ
বেওরা হইরাছে বে, সভ্য হউক বিশ্যা হউক, সে বেন ইহার
বার্থাব্যিই প্রবাণ করিভে প্রবান পার। ইহাই সন বর, কীনার

প্রকাতে বহু বার বোষণা করিয়াছেন বে, তিনি উ হাকে বেধিছা লইবেব ('উস্কো বেধেগা')। বেধা বাক্, তিনি কিল্লগে পাতি প্রধান করেব। যত অবদ্য লোকই হউক, শিনিরভূষারের বিক্লছে কোন সংবাদ দিতে পারিলেই সে জীনারের নিক্ট পুনই সন্মানের পাল্ল বিবেচিত হর। হংবের সহিত বলিতেছি, আমার এবন নৈতিক সাহস নাই বে, এইলে 'কেপা' ব্যাজি-ট্রেটের সমূবে উপস্থিত হই। ইনি ববনই আমার বোঁজ পাইবেন ভবনই আমাকে নিক্তিত ধ্বংস করিয়া কেলিবেন। ("who is sure to ruin me as soon as he has found his man")। সভবতঃ বিঃ জীনারের তর হইরাছে পাছে ক্র্যাত হান্লার ওকুহাতে কলিকাতা হইতে বে সকল সৈন্য আনাইরাছিলেন তাহার ব্রচ উাহাকে বহুন ক্রিতে হ্ব—কারব জেলা কল বেনীর বিচারে ইহা তো বিব্যাই প্রতিপর হুইরাছে।"

পরবর্তী ২২শে আগষ্ট ( ১৮৬০ ) সংখ্যা 'হিন্দু পেট্রিয়টে'
'M. L. L'.-স্বাক্ষর্ক্ত শিশিবকুমারের আর একখানি
পত্র পাইয়াছি। ইহার পূর্ব্বেও পরে "from our Jessore
Correspondent" রূপে আরও কয়েকখানি পত্র বাহির
হইয়াছে। এসব পত্রপাঠে ল্পাইই ব্রা বায়, এগুলিও শিশিবকুমারের লিখিত। তিনি মফল্বলে বিভিন্ন স্থলে ভ্রমণ করিয়া
'পেটিয়টে' সংবাদ পরিবেশন করিতেছিলেন। তিনি ম্যাজিট্রেটনের চোধ এড়াইবার জন্য বশোহর ত্যাপ করিয়া জন্যত্র
বাইতে বাধ্যও হইয়াছিলেন। ম্যাজিট্রেটরা নীলকর-সমাজের
সক্রে বোগসাজ্পে প্রজাকুলের উপর কির্মণ উৎপীড়ননিপীড়নে লিগু হইয়া পড়েন এই সকল পত্রে তাহার বিস্তৃত
বিবরণও পাওয়া বাইতেছে। আগামী সংখ্যায় এই পত্রগুলি হইতে কিছু কিছু তথ্য লিশিবত্র করার বাদনা বহিল।



### वर्ड (गर्व

### এনলিনীকুমার ভর

গোলাবরী বলীর উপরকার পুরুত্ৎ সাঁকো অভিক্রম করে নারাক বেল এলে বামল হোট একট টেশনে—নাম কল্মুর।

নোটবাটসহ টোৰ বেকে নামভেই একজন প্রিরণনি মুবক ছবিভপবে কাছে এগিরে এলে ইংরেজী ভাষার জিজেন করলেন—"আপনি কি এভিন্ত, কলকাভা বেকে আসহেন ?" ভার কবার জবাব দিবে প্রভিপ্রর করলান—"পর্বাজী পাটিবেহেন আপনাকে ?"

্" हैं।, আৰি গাড়ী নিষে এসেছি, চলুৰ আৰায় সদে।"

ছ'লবে এক 'বটকার' গিবে উঠলাব।
বটকা হচ্ছে একট বাত্র গত্রহাত্রা চালিত
এক প্রকার বানবিশেব। কল্পুরের
রাজপথের উপর বিবে আনাবের পোবান
বীরবছর গতিতে চলতে লাগল। এবনি
ভাবে প্রার আব বাইলটাক চলবার পর
বাজারে পৌছে ভান বিকে বোড় কিবল
এবং ছই তিন বিনিটের বব্যেই একট
নাভিরুহং প্রবর্য অটালিকার সামনে
এবে পারল।

আনহা গাড়ী থেকে অবভরণ করতেই
উদ্দল গৌরবর্ণ, ফীণকার প্রেচ্ছ এক
ভব্রলোক বিভহাতে আনাকে বাগত
করলেন। পরনে তাঁর ভত্র বছরের
বৃতি, আর একবানি চাগরে দেহের
উভরার্ড আর্ড। ইনিই হচ্ছেন 'লক্র
শ্রমিক বর্ত্তরাজ্ঞান সভা'র কর্মসচিব,
অক্রবেশের বিব্যাত বিহান শ্রীরতেশর

শৰ্বা—এ বই অভিবি হবে আনি কক্ষুৱে এলেছি।

শর্মানী আবাকে দলে করে তার বহির্বাচীর একট ককে
বিরে দেঁলেব। থানিক বাবে একজন বেজানেবক আবার
কতে কবি ও 'ইতনি' নিরে এল। ইতনি হচ্ছে চালের ওঁছো
আর কলাই তাল বিরে তৈরি একপ্রকার শিঠে।

ঘণ্টাথাৰেক বিজ্ঞানের পর শরীরটা একটু চালা হলে পর
শর্মানীর পুল চল্ডবৃত্তির ললে গোলাবরী নদীর তীরে এলে
উপস্থিত হলাব। গোলাবরী কল্পুরের পূর্বপ্রাত বিরে
প্রহ্মাণ—শর্মানীর বাজী থেকে নদীতীর বাজ করেক
বিবিটের হাতা।

নহীতটে প্ৰকাপ এক নহীক্ৰছের বৰ পৰাচ্ছাক্ষের নীতে প্রাচীন আনলের এক বেবনন্দির। নন্দিরট বেন নহাকালের মুক্ত নাকী—মুগর্গায়র বত্তে হিন্ত বিক্তনভাবে হাড়িতে ৰবীগৰণাৰে আকাশ-দ্বাদীৰ বিলয়-লীলা প্ৰভাৰ্ক কৰ্মে।

বেশ কিছুক্প নহীৰ বাটে কাটৰে আভানাৰ কিছে একে
পৰ আনাকে গণৈ বেওৱা হ'ল লখীপতি বাও নাবে এক্জন
ক্ষমীৰ জিলাৰ। তাঁৱই উপৱ আনাৰ আহাবানিৰ ব্যবস্থা ক্ষমান্ত
ভাৰ। লখীপতি বাও আনাকে নিবে গেলেন থবৈক নাতালী বাহ্ম-পৰিচালিত, অনতিস্বৰ্জী এক প্ৰকাত হোটেলে—
হোটেলটৰ অভিনাত আছে, হুমিশ লাভের প্ৰক্ষেত্ৰৰ



কাৰিবাপেটা সম্মেলনে আহিবাসীবের হভাকাটা একর্বন

খেত পাৰ্যন্তৰ টেবিলের উপর প্রকাণ এক বালার আহার্য্য পরিবেশন করা হ'ল। সম্বীপতি রাখ্যের নিকট ভ্রমান বিনি ভোজার্ত্রর পরিবেশন করছেন তিনিই হোটেলের বালিক, পাচক, পরিবেশক স্বকিছু—স্পরিবারে হোটেলেই বাল করেন। তিনি চহংকার ইংরেলী বলতে পারেন।

প্ৰচুৰ চাটনি এবং লভার ও ভো নংবোলে "বলব" "নবৰৰ্" প্ৰভৃতি বহুবেশীৰ বাচৰত বা'হোত এক ব্ৰক্তৰ ক্ষেত্ৰ বৰ্বাহাৰে চালিৰে বিলান। প্ৰচুহ দৰি, আৰ এবং বিও পাতে পতেছিল। কিন্ত বুশকিলে পতলাৰ 'বাৰবাই' কিন্তে তৈন্তি তেলাৰ বত এক প্ৰভাৱ বাচৰত বিৰে। তেন্ত ভাৰাৰ বিভেকে বলে বাহবাই। পৰিবেশক বলবেৰ বে, ভাৰ নী কিছুকাল ভাৰ ভাইৰেছ নলে বাংলা বুলুকে হিন্তেন, ক্ষম্ম তিনি বাহবাই হিছে এই বাঙালী বহুণের হাহা নির্বেছৰ এবং বিশিষ্ট বাঙালী অতিবিহু কতে বহুতে সবছে এই আহার্য্য প্রস্তুত ক্ষেত্রে। কোন বহুললনা এই বাজালী বহিলাটির বহুতেশীর প্রভাৱ হুবুনবিভার নিকাবারী তা ভানি বা।



#### अपने प्रजानीय वार्टिय हुना

क्षित्र और बळवर ता अक विशेष वजीय कत-महारमद छैनव क्ष्वनिरम्ब बाताच्य 'अभनैतिरमके' ठामारवन का त्वाव वन बाबबारे बटब बिटबरे बबरें। चिवि चार्यक्ष भारतम् मि । आक्रमारव विश्वान करव श्रम-महाम क'न व कांचमके है नाहे —এই অপুর্বা বছট আসলে প্রচুত্ত তেঁতুল আর লভার সংস্থ সিছ कर वाहै। विरक्ष वक । कारना कारना वीहि बाद बाँव व्याप व्याप भावनाम, व विका त्याप कृतन आक्नारह শিঙাৰ আভাৱ বাবৰ কৰেছে ভাই দিৱে এ অভিনৰ বন্ধ তৈৱি. अविष्क कत्रामा अकारहे चात्रात पूर्वत भारत कांक्रत আত্ৰেৰ শ্ৰীৰ প্ৰশাল ক্ষমৰাৰ ক্ষতে-তেভাৱে পৰ্যায় আভালে इक्ति हेर-हेार त्यांना बाट्य। यननाव, "कि जनून हीयरे ना बरबरक, मरन कराक क्रिक रकरनंत्र बाबा वाक्रि।" नरक महारे प्रतित्वमक चल्चः गृत्व भवन क्षत्रत्वन चाव ववनिकाव पक्षात इक्किला पांचक अक्ट्रे क्रक्काल (नाम वैदेन। क्रा वा विनवादी कारे बडेन, वक्ष:पुर (बादक क्षा-कार वातवार जाबार शास्त्र ववाया शिवावित्व वक त्याचा त्याच नामन अपर विश्वाद का चावादक चपनीमा-क्राय क्रेप्टक क्यांक रू'न । अवनिकार्य त्रिविकार यक ভোজন-পর্বোর উপসংহার হ'ল বটে, কিছ বলে আপকা কেরে ৱইল বে ছোজই দা ভোজদ-পাত্ৰে বারবাইরের আবির্চাব व्यक्तिका विश्वांत कीय ।

৮ই কুন নকালে ৮টার নমর নোরামরী নরীজীরত্ব বীত্ত-বলিত্বে নাংকৃতিক নবেলনের আবোকন হ'ল। এই সম্মেলনে বোনহার ক্রয়ের ক্রেই প্রবিক্ত রস্ত্রাক্ত্য নতা কর্তৃক আত্রক নিয়া নিয়ানের সোমনি । বীরবন্ধির অন্ধ প্রমিক বর্ষরাক্তা সভার প্রধান কর্মকেন্দ্র।
আনাবের বাতৃত্বিকে পরাবীনভার পৃথাসমুক্ত করবার উত্তেও
অন্ধ্রেশের বে সকল বীরসভান কীবন উংসর্গ করে পেরেন
উাবের স্থাভিত্রভার উব্যেক্ত এট প্রাভিত্রভ হয়। ১৯৪২
বীরাক্তর এপ্রিল বাসে 'বেশভক্ত' ভেড়ালারা এর উরোধন
করেন এবং উক্ত বিবসেই এই বন্দিরে প্রমিক বর্ষরাক্তা সভার
কার্য্যালয় বোলা হয়। প্রমিক বর্ষরাক্তা সভার আবর্শ হল্পে
সেবার ভেডর বিরে বেশের অর্গণিত বুচ বুক্ অন্পর্গরের সলেন
বোগরাপন। এই উদ্বেজনিভিত্র করে 'সভা'র কর্মানের উভোগে
আন্ধ্র-প্রবিশ্বর ভাইকাগ, ক্লকা, ত্রহুল প্রভৃতি বিভিত্র ক্রেলার
অনেক্ত্রলি 'প্রমিক কল্যাণ কেন্দ্র' প্রভিত্রিভ হ্রেছে। কিন্তু



**परका**शबी

बँ रवड कर्षाक्य ७९ मन्द्रन क्रम्रावर मीनावद वड । शीर्यकान वावर जाक्रव अवको अनाकाव जाविवानीस्वव वर्गा विकास এঁছা কল্যাণকর্মের অভুঠান করে আসহেন ভা ভরু প্রদংস্থীরই মর, অভুক্রণবোগ্যও বটে। বিশাবাপ্তব জ্যোর বছগোলা এবং অবছগিরি এজেলীর সম্ম পার্মভা অঞ্ল कुर्फ अंत्रिक कर्नुरक्त अमानिक। अमिक वर्नुहाका नकान क्वींश वर्ग ध्रव और नक्त चारिनात्रीत प्रदा निकारिकात. বভপাৰ বিবাহণ আন্দোলৰ চহভাৰ প্ৰভাষী, বিভালয় প্রতিষ্ঠা প্রভৃতি বিবিধ কল্যাণ-কর্ম্বের প্রচনা করেন ভবন ভাষা মলাৰা গাৰীৰ অধিবিচৰ লাভ ভয়তে সভয় চৰ। नाबीकी ১৯৪०-वर २०१म जानरहेर 'वरिकम' পश्चिकार चाविनानीत्वत बाता बाँतव बरे नकन कर्वधानक्षेत्र करा केरबर करवन । अरे वहर चन्न्डीरनव अधि उंचव नामावक एक्र चाक्र वर । विशव क्यारी वार्त वहरनाना, चावियानी क्लान नाम'र है।जारन स्मूबरमही अवर काविवारमहीय वि সম্বেলৰ অভুষ্ঠিত হয় দেট বিশেষ সাক্ষ্যাৰভিত হাৰেছিল।

CHARLE OF CHARLE WORKS AND CHESTO HAT! MINERS MISSING STATE

এনে পড়েছি—এবন শীংখনিতে অস্কৃতি সম্মেলনের কথা স্থান্ত করি।



श्ववामद्वीयात्वय अक्षेत्री वाका

শাভ গভীর পরিবেশে বফিষচজের 'বংশবাভরহ' সদীতের হারা সংযাদমের উহোধন হ'ল। গানট গাইলে একট আবিবাসী বৃষক। সদূর কারিরাণেটার পার্মতা অঞ্চল থেকে সে এসেতে এই সংযাদনে বোগদান করতে। উরোধন-সদীতের পর বীরমন্দিরের সমূর্যক প্রাচীরবেটিত প্রাচনে পাশাপাশি হট পভাকা উভোলিভ হ'ল—ভারতের ভাতীর পভাকা এবং প্রবিক্ত গতাকা এই বিবর্গরিভিত। পভাকা উভোলেরের পর সেই আদিবাসী ব্যক্তী কর্তুকই বিত হ'ল ভেস্ত ভাবার হচিত প্রবিক্ত সদীত'। ভার শেবাংশট এইরূপ:

'ভানিকি টোড়গা, বাট অনিক্লা হুটে ভিপেন্চেন'

খৰাং — 'প্ৰবিকের যাত্ৰা কোন্ পৰে ?

বিশ্বসাভ্ত্তৰ পৰে, এক্যের আর বিশ্ববৈদ্ধীর পরে।

সদীত সমাণনাতে স্ফ হ'ল মনিবাত্যভৱে স্থাবজ্ঞের অনুঠান। শুল্ল বছর পরিবিত ক্যাঁরা নার বেঁবে বলে নিবিঠ চিত্তে চরকার স্থা কাইতে লাগলেন—ভাবের নিঠার ভাবট বনকে মুখ করল।

সংখ্যানৰ আহুঠানিক বিকের আরও ক্তক্তবি ব্যাপার সরাবা হলে পর শ্রীবতেরর পর্বা 'আইনঠাইবের আপেক্কিকাবাদ ও প্রবিক্ত বর্ষারের আবর্ণা সংঘ্য তারণ বোরা বোরিক তারণ বিলেন। এবন চমংকার তারণ পোনা দৌতাপ্যের কথা। প্রোভাবের মনকে তিনি এবন এক ভরে নিয়ে গেলেন বেবানে দর্শন ও বিকান পরপারের সকে এনে হাত বিলিয়ে ইাড়িরেছে। বছবিন আর্গে বহারতি বিজ্ঞেলার ঠানুত্ব আবাবের বেশের অনৈক বহারহোপাব্যার পভিত্তক শ্রীবিক্ত পাল্লাগ্রের অগত্য বুলি আব্যা বিবেছিলেন।

শৰ্মাণীর বৈজ্ঞানিক বৃক্তিসর্যাধিত শারব্যাধ্যান ভবে র্যে হ'ল এই অভিনা এই জ্ঞান-ভাগনের প্রভিত্ত প্রবেজ্য।

প্রবিদ ( ৯ই জুন ) অপরাত্ক চার ঘটকার সরব বীররন্দিরে এক বিরাট সাংকৃতিক সন্মেলনের অবিবেশন পুরু
হ'ল। হানীর বহু বিশিষ্ট ব্যক্তি, রহিলারুক, রুবক ও হারুবের
সরাবেশে বীরবন্দিরে আর তিলবায়বের ভারগাটুকু পর্যান্ত রুবল
না। ফুকা জেলা প্রকৃতির ভার সুরবর্তী ছাল বেকেও
প্রবিক বর্ণরাজ্য সভার শাবা-কেন্তসমূকের বহু কর্মী
সন্মেলনে বোগদান করবার হুতে সর্বেক হুগেছিলেন।
সভার বিজ্ঞিশন্ধ ভো প্রচারিক হরেই ছিল, ভার উপর
টোল-শহরুতেও সভার ক্যা প্রচার করবার ব্যবহা করা
হুরেহিল। সভাছলে বলে চোলের আওহাল আর
বোরকের কর্ষবর কাবে আসতে লাগল। পর্যান্তী



বিশাবাপভ্য--- ভেলেপত্নীর একাংশ

বললেন—"ভৱাতী, বহু বংগর আনেকার একট দিবের কথা বনে পভছে। তথন আমানের বৌবনকাল। আলিয়ান-ওয়ালাথাগের হভ্যাকাণ্ডের প্রতিবাদ উপলক্ষে আমরা ধে সভার আবোদন করি ভার কথা এই লোকটই টোল বাজিরে শহরবর বোবণা করেছিল।"

বংগাঠিত গাড়ীব্যপূর্ণ পরিবেশের বব্যে সভা আরম্ভ হ'ল।
পর্বাজী সববেত শ্রোড্রওলীর সহিত আরার পরিচয়সাবদ
ভরিবে বিবে আবাতে ভাবণ বিতে অনুবোৰ ভয়সেন।
ইংরেজী ভাবার নিবিত আরার ভাবণট হিল হুই অংশে
বিভক্ত। প্রথম অংশে হিল প্রবিভ বর্ষরাজ্য সভার আবর্শ সম্বাহে আবার বারণা প্রবং আসাবের আবিবাসীকের সম্বাহে
আবার ব্যক্তিগত অভিক্রভার ব্ণনা, আর বিভীর অংশে
হিল পূর্ববিদের বাতহারাকের কবা। সম্বোলনের ভর্তৃপক্ত
আবাকে পূর্ববিদের উংবাত্তকের সম্বাহে বংকিকিং ব্যক্তিক
আহারে ভ্রার আবার ভাবণের বিভীর অংশট পরে
সংবোধিত ভবেহিলার। বভার প্রভিক্তি বের্কিক আহিন
লোকের, অভবিক্তে ভেববি বর্গাকিত প্রবং অবেক্ক আহিন বাদীয়ও সনাগৰ হবেছিল সকলেও বোৰসৌক্ষ্যাৰ্থে বীন্নবিদ্নের ক্ষ্মান্তি, হানীর সংস্কৃত বিভাগীঠের অবাদ কে, তি. এন, আগ্লান্তাও এন-এ আনার ভাবণ বুবে বুবে তেন্ত ভাবার ভর্জনা করেন। আনার ভাবণের পর সভার ক্তক্তাল বক্তভা হয়। হানীর হিন্দী বিভালরের প্রতিষ্ঠানী কে, এন, রক্ষার বক্তভা বছই বর্জনার্শী হবেছিল। হানি প্রায় আট বটকার সময় সম্মেলনের অবিবেশন শেষ হয়।

. 464



বিভিন্ন সকার সক্রিভ একট গর সত কৰেজ ভিকাবী

পদ্ৰবিদ বুৰ ভোৱে হব ভাওতেই বনে পড়ল বে, আছ আৰ দভা-দৰিভিৰ হাদাৰা দেই, আৰু আৰি অনেকটা चारीन । अरे विचार जर्म जर्मरे त्यम क्यकी वृक्तित चामक অভুতৰ ক্ৰলাৰ, গোলাবৱীৰ ভটভূবি বেদ আহাতে গভীৰ ভাবে আকৰ্ষৰ ক্ৰছে লাগল-ছবিবার লে আকৰ্ষৰ। ভাতা-ভাতি শ্ব্যাত্যাৰ কৰে উঠে শ্ব্যাকীয় বাতীয় পুৰুৰের স্বাভা বিবে গোবাৰত্বী ৰবীর ভটাভিয়বে চলতে লাগলায়। অভকার चर्चक जाम करत कारहे मि-जालात इ'वारतत वेरहेत नीहिम-বেরা বাড়ীওলি বেন বপ্রপুরীর বভ রহতবর- রাজিশেবে বব-পৰিচিত বেশের অনপুত অজানা বাভার চলতে ববে বেশ একটা বোৰাক্তর অভূত্তি ভাগতিল ৷ কবে একটু একটু কবে ভোৱেৰ আলো হুটে উঠতে লাগল—ৰাভাৱ পাৰ্থভী ভোৰ কোন বাজীয় নেরেয়া কেনে উঠে বরেয় বারাকা এবং প্রায়ণ আল্পৰা ( মৃত্য ) বাজা বিচিত্রিত করতে লাগলেব। কক্ষ্ণের व्यक्तरम् को स्टब्स् निकाक्य । कावरनमा श्रवरम् करे कावते নেৰে ভাষ পথ জাৱা প্ৰকৰ্মে বভ চৰ।

বীৰবনিৰ বাভিৰে আলাভ কৃতি কৃতি উচ্ এক বাজপথের উপরে এলে উঠলান—এই এপত বন্ধতি গোলা-বন্ধী নদীর গতিপথের গহিত প্রাভরাল ভাবে উভয়-স্ভিপে বিমানিকি ষাক্ষণৰ বেকে নিয়াব্যোহণ করে গোলাব্যীয় ভটনংলই সুত্তপ্রসায়িত মুক্ত প্রান্তরে এসে গালালায়। সুবুবে পূর্ণ্য-প্রবাহিনী গোলাব্যীয় কটক্ষক বাছিয়ালির অবাব বিভার। ক্ষমে ও-পারের বনপ্রেণীয় উপরক্ষার বেবভূপ বিদীর্থ করে ক্ষাকুত্রসভাপ বালাক্ষণ আকাশে উঠল, বেবজায়ার প্রতিকলনে নদীর বাছিয়ালি হয়ে উঠল বর্ণবর্ণে অনুযায়িত। আলোর উত্তেবের ললে ললে উত্তরপূর্ণা বিকে বীল আকাশের পটকুরিকায় কুটে উঠতে লাগল সুনীল পাহাকের ভরলায়িত রেখাসবৃহ্যের আব্যা। কোন্ বহান্ পিলী বেন বহু প্রবন্ধে এক-বানি স্বিভীণ নীল ক্যানভালের উপর বিচিত্র বর্ণবিভাল ও নিপুণ রেখার প্রযোগে অপরপ্র করে হলেছেন। প্রকৃতির উলার উন্তুক্ত ক্ষেত্রে, গোলাব্যীর আলোক্ষোক্ষল বক্ষে একট নুক্তর হিনের ক্ষরণীলা প্রভাক ক্ষরণায়— নদীর পূর্ণ্য-সলিলে অবগাহন করে আব্যাহও বেন হ'ল ন্যক্ষরণাত।

ञ्चामारक जन्दत महीकोड करूवृत्न निरंत वननाव । अभारतत ৰালুচর বেকে রক্তের মত রাঙা লাল বালুকারাশি বোৰাই করে প্রকাত প্রকাত পালভোলা বৌকার্ডলি গোলাবহীর বৃদ্ধে नाडि कविरदार : (नावावतीय वदीन महीत वाहे (करक कमकि-हदवर्शी—महीद धवाह अवास्य वह भाषा-धभाषाद विकास जानाक जान बारेनहीक रहा '(नामानही'त गर्स क गन्धित তীবের বব্যে বোপদ্ম ভাগন তবে ইাভিতে ববেছে-ভারতেত ভিতীৰ বৃহত্তৰ সাঁকো 'গোড়াবৱী বিজ'। ক্ৰাৰে মহীৰ খাষ্টে স্নানাৰ্থী মী-পুৰুষের ভিত হতে থাকে। বেবেদের পারে বোটা রণার বাড়, হাভে বাভাববা চকচড়ে বড়বড়ে জলের কলসী। একই বাটে খ্ৰী-পুকুষ পাশাপাশি অবগাহৰ ভাৰ করেন-অবধা সভোচ দেই। সৌরকাভি আত্মধেরা একপুক কলে দাঁভিৰে মৰোভিত সূৰ্ব্যের পাৰে ভাভিত্তে পিতপ্ৰক্ষেত্ৰ केरकाक वर्षनानि करवन , कारबन कर्त्वाकाविक वसकानि त्वन महीयक व्यक्त व्यवहारियान देशिक व्यक्त बात्क। अवामकात अरे भूगामतिरमान मानावतीत कनकातात्व দলে দলে আৰি বেদ ভারতের ভণভাপুত ভাতীর জীবদের सर्च्यमस्त्रिक सम्बद्ध भाषे ।

যাটের অনভিদ্বে একইাটু কলে ইাড়িরে হোট কাল বিরে
কভকগুলি ল্লী-পুরুষ বাহ বরছে। পুরুষদের পরনে বেংট,
বেবেবের বেতে বে অপরিলর বরবেও অভাবো লক্ষা নিবারবের
পক্ষে তা লক্ষ্প উপবোধী নয়। ভাবের গারের রং নিপভালো
—নাধার বীকভা বাকভা চুল। এরা বে এবেনের পার্কভ্যে
অকলের আহিবালী ভা বুবতে বেগ পেতে হ'ল না। আর্হ্যি
ভারতের অব্যাল্য-বহিষা এবং অনার্হ্য ভারতের অপরিলীয়
বীবভাকে এবন ভাবে প্রভাক ক্ষরার এরপ সুযোগ ইভিপূর্কে
আর কীবনে হয় নি। অভতঃ হুইছাক্ষার বংলর পাশাপানি
নামান বিল্যা বিল্যান ব্যালি বালাক্ষা বালাক্ষ্যান

ৰব্যে বে কি ছভর ব্যবধান রূমে গেছে তা নৰ্ব্যে নৰ্ব্যে উপলব্ধি জনসাম।

এখান খেকে কৰেক বলি যাত্ৰ ব্যবহানে গাছিবে আছে প্ৰাচীন আমলের আর একট মন্তির। এই মন্তিরটির নাম গৌতন মন্তির। কবিত আছে বে, এই ক্ল্যুরই ছিল থবি গৌতনের তপভাভূমি। এখানেই গোলাবরী নদীর তীরে ছিল



'বাৰ্চ হিলে'র পাদদেশে বিশাধাপত্তৰ পোভাগ্রায়ের দুশ্য

এই বহাতণা খৰির আশ্রব। তারতের এই বরণীর বহির স্থিতকার উদেপ্তেই সূত্র অতীতে এই বন্দিরট বিশ্বিত হয়।
গৌতবের দহিত কভিত বহু ডাহিনী এখনও ক্ষমূরে প্রচলিত
আহে।

নদীতটে এক নিভূত বনোরৰ ছানে বলিরট অবছিত—
ছ'বারে ছ'বারি ভালগাহ আরগাটর লোভা রবি করে
বাঁজিরে আহে। তপভার উপর্ক্ত ছান বটে। এবানে
ছ'বও বসভেই বেন বনের সকল চাকল্য ব্র হরে গেল—বন
তরে উঠল একটা গতীর প্রশান্তিত। বলিরের সন্বভাগছ
আলিনার শীর্ষদেশে গরালনে উপবিঠ, বীর্ষ গ্রন্ডবিষ্ঠিত ওবি
গৌতনের গ্যানগভীর প্রতিবৃত্তি হুদরকে প্রভার অভিভূত করে
বিলে। প্রভাত-ছর্ব্যের প্রথম রাগ্রিরালা বৃত্তিটির বভকে বেন
বর্গের আলিস্বায়ার বত অক্নপর হাজিব্যে বরে পড়ছে।

ৰন্দিৰাভ্যমনে আহে পৰি গৌভবের খেডবৰ্ণাসুৰঞ্জিত একট প্ৰতিষ্ঠি, আহ ভাব পাশেই একট ফেবব্ৰিন বডকোপরি একট প্ৰত্যবিশ্বিত সৰ্পৰ্থী কণা বিভাহ করে বিহাক্ষান। বন্দির-প্রাদর্শের বডিগথীতের প্রভাবেদিকার উপরে কণাবর একট নাগর্থী প্রভিটিত। এই সক্ষা বৃত্তি বৃত্তিশ-ভারতে নাগপুকার বহুল প্রচলবের পরিচাহক।

ৰন্দির পর্যাবেকণ করে আভানার কিবে এনে বিপ্রাবের আহোকন করনার।

বিকেলে লখীপতি ছাওৱের সদে শহর বেবতে বের হওৱা

कांत्रहे हैरहें व वाहिल विरद (बडा शाकावाकी। श्रवहरू चावडा वाकारक अरम देशकिक बमाव । वाकारक क्रिक बाव-बाद्य अबडे हालाबरहर मीरह वर्गकाचि भाका चार्यक च म । এবেশের আর কেবতে বেচন নরনলোকন কেচনি ভাতেও শ্বপ্ৰৰ আৰাম বাবেও চের সভা। चारबंद बाबडे का क्ष्मन कविक्रुर्न-(यमन क्षुप्रन्दिन। जान अवर क्रान्धक হতাহতি বেৰলাৰ। ভাৰতলি বেশ পরিপুঠ ভার বিটোল-কাষকে এহা বলে কয়। ককা বের পাদও অভ্যন্ত রবজাচক, পানকে এরা বলে ভাতুল, চুবকৈ চুবৰ। এবানভার ছামের नाव करनव नाव देखावि नवकिहरक नरकृष्ठ भरवद वका-ছতি বেৰে মন চলে বাৰ প্ৰাচীন ভাৰতে। প্ৰৱেদ্ধ উপকঠে 'ভত্'-বৰ কেৰে বেবচুতে বৰ্ণিত, বিদ্যাপানে বিশীৰ্ণা, উপলবিষয় ৰবুৰুৱে প্ৰতিৰত প্ৰবাহ ৱেবানদীয় কৰা স্বতিতে আৰ্থে---ৰৰে পতে বেৰের প্ৰতি ৰক্ষের উক্তি---

> ভভাতিভৈৰ্বনগভ্ৰহৈৰ্বাসিতং বাত্তবৃষ্ট-ৰ্জনভঞ্জ প্ৰ'ভত্তৱং ভোহৰালায় গল্ভে:···ইভ্যাদি।

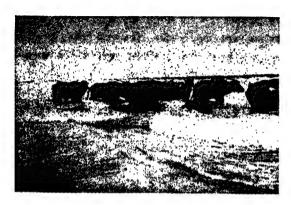


বিশাৰাপ্তন পোভাশ্ৰয়ের অভ্যন্তরভাগ

বাদারে আর একটা দিনিব বেবে বনটা বুলি হবে উঠল।
প্রত্যেক বোডানেই—ভা লে বভ হোটই হোড় বা কেব,
বেভালী হভাবচল্লের একবানা বা একাবিক হবি আহেই।
বেভালীকে অক্রনেশবাসীরা বেবভার বভ ভক্তি করে। ভার
বাব ভারা উচ্চারণ করে অপরিসীর প্রভার সলে। অক্রবেশে
বেভালীর অক্সারীর সংব্যা কর ছিল না।

এ হাতা তত বক্ষের যাহ্য বে বাজারে বজরে পতে তার আর অভ বেই। প্রারা নী-প্রথের পোণাড-পরিছেদ প্রবের নরনারীর চাইতে আলাদা বরপের। বাজারে স্বাসত অনেক প্রারহ্মের রাগার পাগতি, কানে পিতলের আঙ্টি, নাক্ষে বিং। প্রারের নীলোক্ষের বব্যে অনেকের পাতী-নাক্ষ্যিতা দিরে পরা। প্রচী সভবতঃ বরাঠা-প্রভাবের করা। ভক্ষবিদের সর্বাদে গ্রনাগাঁটর প্রাচ্ব্য বেবতে পাওরা বার।
ভাবের নাকে নাক্তাবি (নিরাটা পুনিরা) এবং একপ্রকার বিং
(রুরু পৃত্তুকা), গলার নিনিলোনার তৈরি কঠ্ছার (নায়), আর প্রবালের নালা। বাজারে অনেক পাহাকী ব্রী-পুরুষও সঙলা করতে এলেতে। কইবা নামক পাহাকী বেরেরা বেপ বাস্তাবকী, হৈছিক লোটবলস্বার এবং পরিকার-পরিক্তর—ভাবের কর্ম-করবে পুলার্জক বৌলা।

ক্ষানুহৰ একজনও বাঙালী নেই। শ্বৰের উভ্তর-পূর্ত্তন প্রাতে একট গৌডীর বৈক্য বঠ আছে। ত্রিশ বংগর পূর্ত্তে হুর্ব্যনিভাত সময়তী বাবে স্বাধীণের ক্ষান্ত বৈক্য এই বঠ



একপাল বহিবের গরুল-সাব

প্রতিষ্ঠা করেন—বর্তনানে এই বঠাবীল হচ্ছেন করেক উড়িব্যা-বেশীর বৈক্ষ । গভ ত্রিশ বংগরের বব্যে লাকি বর্তনান লেবক ছাড়া কোন বাঙালী এবানে আসেন নি । ভেলুভ আর ইংরেছী ভাষা ব্যতীভ এবানে আর কোন ভাষা প্রচলিভ নেই । এবানে নকল প্রেশীর লোকই ইংরেছীতে ক্বাবার্ডা বলতে পারে । লাবাভ বোকামদারও কাকচালানো গোছের ইংরেছী ভানে । কল্লাভি এবানে হিন্দী ভাষা প্রচারের চেঙা চলছে ।

প্রবিদ বেলা ব'টার সমর সমীপতি রাজকে সলে নিরে রাজমহেন্দ্রীগামী টেন বরবার কত কব্দুর টেপনে এলে পৌরলাম। রাজমহেন্দ্রী গোলামরী নদীর পূর্বাভীরে অবস্থিত অনুবেশের একটি প্রসিদ্ধ ছান। টেন যথাসময়ে এলে টেপনে পৌরল এবং গোলামরী নদীর পূলের উপর দিরে হ'তিন বিনিটের মধ্যে আনাক্ষে ওপারের টেপনে নিরে গেল। টেপনের নাম গোলামরী।

টেশনে বেনেই দেবি করেক্ত্রন রপলাবগ্যবতী আর বহিলা সভবতঃ পরবর্তী টোনের কতে বিঞাভি-কবনে অপেকা করবেন। কাঁদের লাব গ্যন্তটা এবং শোণাক-পরিজ্ঞানের ব্যবিভিন্তা চোৰ কলালে বিলে। পরবে কাঁদের বিভিন্ন বর্ণের শান্তী, অবৰপ্ৰক্ৰীত ব্যক্ত বিবিধ বৰ্ণালভাৱে ক্ৰিত—ভাবের কেশবিভানের কলী নরবাতিরাম, পূঠবেশে বোলাহবান স্থলীর্থ স্কুক্ত বিস্থলিতে চম্পুক এবং অভাত স্থানি পূস্পমাল্য অভাবো, ললাটে ক্ছ্ব-ভিলক, চোবে কামল, কটতে কামবিভিত বর্ণ-নিস্মিত নীবিষম। হঠাং বেন চমক লেগে বাত, মনে হয় অভভা অহাচিত্রের ক্তক্তলৈ নাবী-বৃত্তি কি ভাষা পরিপ্রহ করে চোবের নামনে এলে কাভিয়েছে।

ভেশন থেকে আমনা সনাসনি চলে গেলাম নামমনেজীর একট প্রাচীন মন্দির বেবকে। মন্দিরের প্রবিদ্ধান তব্তু, ভৈনন, নামদ, ব্যাস, ভূদীখন এবং যতেখন এই হব কম প্রিন্ন ব্যানাগনে উপনিষ্ঠ প্রভানমূর্তি বিশেষভাবে বৃষ্টি আকর্ষণ করল। ভবুক্তর মুখ হবত মাঁকের মুখের মত।

আৰও ভড়ভালি প্ৰাচীৰ বনিবাৰি বেৰে শহৰের बाकारबर रक्करब अक इक्ट बर्स चाना रनेन। रहेमरम क्यबाब भर्द श्रीवाददी मधीब श्रीद अक नावक्राव প্ৰকাণ ভিড় বেৰে এগিয়ে গিয়ে বে বুট সম্বয়ে পড়ল ভাতে ছাসৰ বা কাৰৰ এক করতে পারলাব বা। পাছতলার বুনি খালানো, ভার এক পাশে ভিনহাত লখা খার হাততিবেক চওড়া, বহুসংব্যক লোহায় পেয়েক লাগানো একটা ভঞায় ইপর আসম্পিতি ভবে নির্কিতার ভাবে বলে আছে অছি-চৰ্মার ভটাবারী এক পশ্চিমা লাবু। বুনির অপর পার্বে গৌৱৰৰ বিশালকাৰ সাজোৱাৰ আৰু এক সাধু গঞ্জিকাৰ ব্ৰে বশ্বিক আছেয় কৰে সম্ভৰত: বশ্বহাৰিতাৰ ত্ৰপদৰ্শনের প্রবাদ পাছে। আবি পেরেডখনির বিকে দলিই নুষ্টতে ভাক্তিৰ আহি, হঠাং গাঁভার সন্কেতে ব্ৰহ্ম-তেবী একটা টাৰ বেৱে জোৱাৰ লাব্ট আনাকে চৰকিত करव विरव चनुक्त वांश्लाव वलाल, "७ वांनारे, ७ वश्लाली বাৰু, এ বোড়োল বহু, আদোল শহপ্ৰা, ও তীৰ মুকী আছে ; বিলোৱাল বা হোৱ ভো পেরেক্ষে হাবু লাগাইরে কেবুল।" তৰে কৌতুহল হ'ল-হাতের তেলো বিবে পেরেকভলির উপৰে নাৰাত চাপ দিলাৰ। তাত ইন্টন্ কৰে উঠন। নাৰ্থী তৰৰ আহার হবের পাৰে ভাজিরে ইবং অবভার হালি হেলে বা বললেৰ ভাৱ নাৱৰৰ্ম্ম হচ্ছে এই বে, ভিনি বছৰাৰ ভলি-**ডাভার গেছেব এবং নেই স্থাবেই বহুভাষার এভারুপ যাড়-पहेला जर्जन कराल नवर्ष स्टारहन । এर जीव मनीव्रस पश्चमा** কাৰে কৰে তিনি দায়া ভাষত ছবে বেডান। সম্ভতি কডা-क्वाहिका त्राक् बालाह्य । बनात्म कि बक्की यक हात । कार यह बाद्यय केवर-कार्टक। त्यद्यक-मंत्राप केयविक्षे नार्ट विकाना करनार, "बांक्श श्रृषी, बागनि कि इसिम ৰকা এই প্ৰশ্বয়াতেই প্ৰানীৰ বাজেৰ 🥍 ভীৰ্মদী দ্বাৰ বিলেব বা, বছবিভাগ ভয়নেব বাত্র। আক্ষর্য বোধ হ'ল, এর বব্যে আবার হালিও আলে ৷ কোরান নাযুলীর বুবে

चाराव वर मुठेन, वनान, "जीव बची र्वानी चारवन-कारा বোলেৰ বা। ইা বোপাই, তীৰ ৰজীকে ইনৰে বোনতে ভতে नव कुछ क्वांबर्क छछ।" बात बात बात बानाव, "बाह कवि ব্যাচী বন্ধ হৰ্ব্যোধন। এই খেল কেবিৰে পদলা ৰোজগাৰ কৰে इय-पडे जांव 'वाजि वाजि वाजि' व्यव जांत जांत जांत 'तृक्डे,' वक-नाव जीव वजी (व प्रवाकात जाव प्रवचनात के त्वाव कार्ड विन विन विवास त्यात बाल्क त्म त्वा त्यातात्र চেহারাভেই পুপরিক্ষা। অভিবশব্যা লাভ বা করা পর্যাত বে শরশব্যার হাত বেকে তীয় মতীর বিছতি বেই তা বুরতে পারলাব। লোকটার উপর বারা হ'ল। তার হাতে একটা चार्नि चंद्र विद्र नात्वादान नार्कीत्क नननाव, "नार्वादा, ভীৰ মধীকে একট ভাল কৰে বসৰ বুগিও, নইলে বেশীটন এ ৰেল কেবাতে পায়ৰে বা।" লাবজী জবাৰে জি বললেৰ ভা क्षमचात्र चांबक दरेन मा । मनका चांदाण करह त्रन । बचारमध र्य अकरे मीकि--(नरे इस्तिन्य क्षेत्रत क्षेत्रतक क्षेत्रवर्षि । अरे বৰ্ষক্ষে বেকে সরাসরি টেশনে এসে কক্ষুরগানী ট্রেন বরলান।

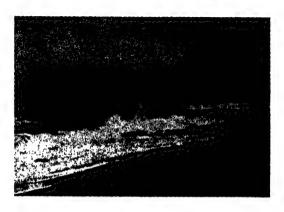
ক্ষা,ৰ খেকে ক্ষেৰণার বিদ প্রবিক্ত বর্ণরাজ্য সভার ক্ষাীয়া আমাকে ষ্টেশন পর্যন্ত এগিরে দিলেন। বিশাবাশভদ বর্ণনের আকাজ্যা বহু বিদা ব্যেই ছিল, ভাই ওয়ালটেয়ায়ের ইকিট কাটলান।

টেৰ বৰ্ণৰ গোৱাৰত্বী নদীৰ উপৰকাৰ পুলেৱ উপৰ বিবে চলতে লাগল ভবন কল্ বুকে শেৰ্বাবেৰ বভ এক্সকৰ বেৰে বৈবাৰ কতে পেছন কিবে ভাকালান। বোক্ষাৰ বভ নদীৰ বাটে পুণ্যকানীবেৰ ভিচ্চ ক্ষেত্ৰে, নদীতীয়ে ঐ ভো ইাভিবে সেই বিবাটকাৰ নহীক্ষহ বাব বিবক্ষাবাভলে বলে প্ৰভাক ক্ষেত্ৰি প্ৰাচীন ভাৰতেৰ বিবাট অধ্যাদ্ধ-বহিষাকে। বনে প্ৰথমি একটা অনিৰ্বেষ্ঠ বেদনাপূৰ্ণ অহুভূতি কাগল বেন কি এক অমৃল্য সম্পদ গোহাৰত্বী দহীৰ ঐ নিৰ্কাশ ভটভূনিতে কেলে বেৰে বাজি।

টেল ছুটেছে প্রবল বেলে—গোলাবরী চোবের নামনে বেকে অনুন্ত ব্যৱ গেল। ছ'বারে নৃতন মুন্তপটি। কোবাও নাল বাটর প্রাত্তর, বাবে হরিং শভক্তের, কোবাও নাইলের নার বাইল ক্তে নারিবাবা নরল নত্ত্বত ভালীবন, কোবাও বা ত্রুপ্রধানী ভালীবনের শেষপ্রাত্তে আভাশহোরা বুনর পাহাড়, নাবে বাবে পাহাড়ের পারবেশে ভালগাভার হাওরা চূড়াড়ার নাবে পাহাড়ীবের ইতেবর, বৃহের অনভিচ্রবর্তী শভক্তের বালকোচাযারা, রঙীন শাভীপরা পাহাড়ী বেরেরা ক্ষেক্তরে রভ। প্রথমি বহিন বিভিন্ন মুন্ত আর অনেক্ষতাা টেশন নাবেশে কেলে আয়াবের টেন বেলা বারোটার প্রসে পৌহল আলটেরার টেনবে।

বৈদলী হোটেলে'র কথা কালা ছিল। একটা বোভার গাড়ী ভাঙা করে গাড়োরালকে দেই হোটেলেই নিরে বেডে বললাব। বিশাবাশভবের রাজ্পবের উপর বিরে অর্থান হুটে চলল। সূত্রে পেরনে—ভাইনে বাঁরে বেনিকে ভাড়াই বজরে পড়ে আড়াশহোঁরা পারাড্রেই—চুরে বার্ড হির্লের পারস্থনে বিশাবাশভন পোডাগ্রের চক্তিতে ধেবা বিরেই আবার অরুঞ্চ হরে বার।

হোটেলে পৌহে গানিক বিপ্রায় করেই রওনা হলার সর্ক্তীবের উদ্দেশ— বাল্বেলার উপর পা হছিরে বসলার। সূর্বে নীলকাভববিনীল সমুক্রের অবভ ভরদ্যালা প্রচণ্ড সর্ক্ষের বুটে এলে ভটভূবির সরিকটে শভবা কেটে পড়ছে—ভাব



বিশাৰাণভবের সর্কভীয়-- দূরে 'ভলকিলস বোল পাহাড়'

বিকে ক্ষ একট লৈগ একেবাৰে সন্তগতে বেবে এসেতে।
সন্ত গৰ্কসন্থৰ, পাহাড চিববৌৰ। সন্তগতোধিত এই
পাহাড কড ব্ৰ-ব্ৰাভ ববে প্ৰচত ভৱণাতিবাত বুক পেতে
সহ কৰতে—কে ভাবে।

ক্ষমে নৈশ-অভকাষের কৃষ্ণ ববনিকাষ চরাচর আক্ষর হয়ে বার—নাক্ষরিয়ার কাহান্তের বুক্তে বৈত্যতিক আলো বেদ সর্বত্যবাসী কোন অভিকার বৈভ্যের রক্ত-চক্ত্র বভ অনভে বাকে। বীরে বীরে লোকের ভিক্ত ক্ষমে আলে। বির্ক্তন নর্বতীরে বাস্কা-শব্যার সচান গুরে পড়ি—সর্বের বহা-ললীভের প্রচার্থ এবার বেদ সম্বর্গ গণ্ডা বির্বে উপলব্ধি ক্ষমেভ পারি।

ক্ষে যাত বাড়তে বাজে। সমূহবেলা সম্প্রতা ক্ষম্ভ ক্ষে বার। বাসুস্ব্যা বেজে উঠে লোভালয়ের বিজে পা চালিরে বিই।

# অভিসারিকা

### अविश्रव्यक्त चर्रागर्वा

আৰু এবৰ বিবে গো কাছে এনে বাবে হ্ন্ন হ্ন বুকে বেকো বা, বাবে বাবে হ্ন্ন হ্ন বুকে বেকো বা,। ওই অঠন তব লাভ আবরণে অভিসারকণে রেবো বা, ওবো, অভিসারকণে রেবো বা।

অন্তবাৰ্গে বৰ্ধি ভৱে গুঠে মন বিছে কেন ভব বেৰণা,
নীৱৰতা বিছে আপনাৱে চেকে খুনে অভাবো না চেডনা।
গুই অবৱের তাবা চেপে রেখে আর
ব্যবা বহিও না প্রাণে অনিবার :
স্কালো সমর বিন গুনিবার
বিকা ! গুণো বপন-প্রের ব্যবিদা !
ভালে করন করে ও চোবে চোব গুলে সর্যে আনন চেকো না।
গুণো, সর্যে আনন চেকো না।

ছরিণ-বরবা । আবাবো সরবে
পড়ে ভব বন-ছারা বে,
ভূবি ভাবো বৃধি ভূবি ছাড়া ভেব ভাবে বা ।
আশাবন ছবি নিরববি
রচে বরবের নগুবারা বে ।
ববোহরণের বংনিড়া ভূলে নোর পানে মন টানে না ।
নীল ভাজনের রেগা বিরে ভেন প্রবরের লেগা লেগো না ।
ভূব প্রবরের লেগা লেগো না ।

বৰে বৰির বাভাগ, রাভের অঞ্চ করে পড়ে ওগো ললমা,
ভূবি ফুলভোৱে বাঁথো পুলকের রাবী কেন লাল এভ বল না ?
ভূবে আনন বানের বিহারের গালে
বেহনার হুবে বলি বন টানে,
ভূব -খলি ভগু গেঁথে রেখো ভব প্রাণে
ববিকা ৷ ওগো অচপল অভিনারিকা ৷
ভূবি অবন করে গো বনের রাহার ব্যবার প্রাণ বেখো না,
বোর বরে অলে বাঁপ ভূকে বরো ভারে চুরের লোহাগ বেখো না ।

### ম্ভুর

#### **अ**र्गागाननान त

আবার এলো কি লব বনত কানলের কোনে কোনে,
বছরার সুলে বোলা বিরে বুলে ববুকর গুঞ্বে ?
ওপো স্চরিতা, আফ একবার কৃতির হুরার বোলো,
ভোষার আবার সেই পরিচর ! বুকি বা পুরাবো হোলো ?
বেবিন ভোষারে প্রথম হেরিছ ভাষা স্করী ভত্ন,
নব বনতে সুল-নির্ম বরার পুশ্বছ;
চূর বন হ'তে সুবাসিভ বারু এবর-বিরুভ সনে,
ভোষারে আবারে বিরি ব্রহিল বরবীর এক কোনে;
লারারাভ ভবু অব্যার জোহনা ভাষা-নীবে উঠে বাভি,
নারিকেল-শাবে বহু ইদিভ ; জেগে কেটে' বার রাভি।
ভবু রন আবান,

মনে তেৰেছিত্ব এমনি কাটবে, বিবি বিবে পরসাব।

তুল তেলে গেল রঙ বা বেভেই, হেরিছ চকিতহত, জীবনকুঞ্জে নথা-সবী কোথা ? বিষয় বিশিধাহত হাল হেলে দিই বারে বারে বত, তুনি ভারে বরো নিতি, প্লথ বহন, কুঠিত হয় শ্রীতি।

ন্নৰ বৰ্ণ, কুচত হয় আত।

এমনি সে ৰণা ; নৰ বসত হত আসে কিয়ে বাং,
বধা-শীভত লাভ কণোত দিশা বুঁলে নাহি পায়।

দিন বাহ তীৰ আশা,

विजारेबा दावि व्यवक्रवानि (व दाबादबट्ट व्यववाना ।

আদিকে আৰার বৰেৰণাতে চলিরাতে কানাকানি, পুশলাবীরা আদিতেতে বুবি ? ভারই চলে হাতহানি।

ভগো, ভেবে বেৰ, কভ বৰ কান্তনে, অনত কালে অনাধি জীবনে বিলনের জাল বুনে । বিত্তি বিত্তি করে রুসনির্কারে 'ভূজন-ভোনি' কারী, জোড়া জোড়া বুড়ু ভাষা বঞ্জনা অবাত্তিত বাঠে ছার, শিরুলে পলাশে ভাকনাশোকে বনাভ রঙে হাসে, বছরা বনের বিষয়বের বাদী বিগতে ভাসে।

লাৰা ৰাভ কুলবোল, বাৰলেৰ ভালে ব্যবালাগনে সুভোৱ কলবোল। হাৰাবায় বহু আফিকায় বিদ, ভৱোনিকুঞ্বন, অহুহু বে শ্ৰেন বাবে বাবে ভায় হুউক উলীবন।

## বন্দী যারা

#### विज्ञामलम मूर्यालाधाव

21

বেৰিৰ কৰা দেওৱাৰ কৰা ছিল—ভাৱ আগেই দেবা করতে বিলোচন নেনের নদে। বললে, আগনার কৰার আনি বাজী। কোবার বেভে হবে—আর কবে বেভে হবে বলুব।

জিলোচন সেন বিশিত মুবে প্রতাতের পানে বানিক চেরে রইলেন। এ বেন তিনি বিখানই ক্রতে পারছেন না। এই প্রতাতই না কিছুদিন আগে কটিন বন নিয়ে এই বাড়ী ত্যাগ করে গিরেছিল। এর মনে নেদিন বে তাপ সঞ্চিত ছিল বারিজ্যের পেবনে তা কি বালা হরে পেল আবা ? ও কি বেকার-জীবনের আলা সর্ব্ব সন্তা বিষে অপুত্র করছে ? হরত বনে বনে বুবছে বাংলাহেশের গৃহত্বরের ছেলের এ ছাড়া আর গতিই বা কি ? কোনমতে একটা আশ্রম—উদরপৃত্তির অভ কিছু ততুলকণা—সারা জীবন অনারাসে বিকিরে বেওরা বার…কেই নিফুদ্বির ছজ্জারার। বাই হোক, তিনি জ্লিলাগা করলেন, বেল করে তেবে বেবছ ? হ' নাল, হ' নাসের ভঙ্গ বার ছেতে অজ পাড়াগারে বাক্তে তোরার অপুবিবা ছবে না ?

শা—এবদ আর অপুবিধা কি ?—একটু হেলে বললে প্রভান্ত, অপুবিধা বা মনে করি তা একান্ত তাবে মনেরই ব্যাণার বই তো নর।

বাদে ? জিলোচন সেন প্রতিপ্র ক্রলেন। একটু বেনে উতরের প্রতীকা না করেই বললেন, মনটাই কি আসল নর ? আনরা হিন্দুরা অবস্ত মনের ওপরেও একটা কিনিদ বেনে বাকি।

লে জিনিস ৰাই হোক—দেহকে চালার বে সকল ইবির ভার বব্যে ন্দটাই হ'ল প্রধান। বনের ক্রিরাডেই হুব হু:ব— লাভ লোকসাম—ভাল মুক্ত বা বলেম ভাই।

বাং বে হাৰ্শনিক—এবন নিস্পৃহ ভাবে বহি জিনিসচাকে বেশতে শেব—ভোষাত্ৰ হংগড় চিলের ? ভূমি ভো—

কিছ আনি মনের ভত্তকা শোনাতে আনি নি। এ বিবরে আনার জানও কম।

বাই হোক—কথাটা বলেছ ঠিক। আনের রাজত্ব বনকে এক পাশে সরিবে রাথা কঠিন। বনের বে থারা আছে—
চিভার স্থাকা বরে সে থারার সর্কাকন চলছে দে। চলছেই
চলছেই—টিকানার পৌছল কিনা—আর টিকানাতেই বিং
পৌছে গেল ভো চলাটাই ভার পেন হবে গেল বে। ভা
হর বা।

क्षणां हुन करव वरेत । वर्त्वव क्ष व्यववान करव वैनि

বে অব্যান্ধ গোলকৰ বান কৃষ্টি কৰছেৰ—ভা ওয় ভাল লাগছে না। সালা চোৰে পৃথিবীকে বেটুকু কেবা বায় ভারই বব্যে সৌন্দর্য্য আবিকার করেন কবি—অবিভাভা আবিকার করেন বারাবালী—সম্পদ আবিকার করেন ভোন। এক একট বিকের দৃষ্টি বিরে—এক একজন বাছৰ বিচার করেন পৃথিবীকে—আসলে পৃথিবী বা ভাই। নে বললে, করে পচর ছাভতে তবে—

আছো সে ব্যৱ এক সপ্তাহের মধ্যে পাবে। বাস্তব কর্গতে কিরে এলেন জিলোচন সেন। কিন্তু একট জিনিস সভ্যিই অবাক লাগতে আমার। ভূমি সভ্যিই কি মনে প্রাণে—

না হলে আগনার কাছে এবনি এসেছি ? আমি শহর থেকে বাইরে বেভে চাই—মুক্ত আলো হাওয়া—আর—

কৰাটা সম্পূৰ্ণ করলে না প্রভাত। শহরের দূৰিত বার্তে বন বিবিত্তে উঠছে—সুস্থ জীবনে শহর বারীতর হড়াচ্ছে—বছ দূরে নিরাপদ ব্যবধান সৃষ্টি না করলে—

জিলোচন দেন বললেন, বেশ, চাকরি নেবার মুখে ভোনার এ সন্দেহ ভ হভে পারভ বে—নিজের কোন খাব-সিভিত্র ভড়—

প্ৰভাত হাসল, হতে পাৱে—কিন্ত তা ভাৰৰ কেন— বাৰ্টা আনায়ও বৰন কম নয়।

ভোষার স্থার ?

ক্ষে চাকরি ৷ আত্তকালকার বিবে একটা চাকরি পাওয়া—

খতির নিখাস কেলে জিলোচন বললেন, তাই বল। কিছ ছ'লিনে পাড়ার্গা বলি একবেৰে হরে ওঠে---

সে:ভ জনেক দূরের কবা। তা হলে এক স্থাত্তের ববাই কি—

है।—रिक्ति करत (बर्का।

প্রভাত চলে বাবার উপজ্জন করতেই তিনি বললেন, আজ বাতীর বধ্যে একবার আসবে কি ?

वित्नव ववकाव जात्व कि ?

বরকার, না---ইা---সিঞার বা বেদ কি বলবে বলছিল। বেল চলুব।

বিবিত হলেও বনে বনে পুলকিত হলেন জিলোচন। প্রভাত সম্পূর্ব বহলে গেল কি করে ? সভিটে কি শহর ওয় ভাল লাগছে না ?

ৰে বাৰে প্ৰথম বিদ বেংগছিল মেল জ্যেতিবিটাকে লেই বাৰেই একে বাৰালা পোলাকা। সামান্তলা ক্ৰিনেটাল সম্প্ৰাম নেই প্ৰবেই আপাতত বৰ হৰে গেল প্ৰতাত। নেই সুৱের তীর থেরে গতীয় হাজি বুবি বি:শেষিত হ'ল।

চোৰ চাইলে প্ৰভাত। কোৰাৰ সেই প্ৰানাৰ—কোৰাৰ গেই কৰা ? ভবে ছানিৱ প্ৰানিট প্ৰতিভে লেগে বৰেছে। লখ্যী শিবৰে ইণ্ডিৰে অপনিবিভ হানছে। বলছে, বহাকালের বন্দিরের নীচের বইভ বে দলী ভারই দাব ভ্ৰনাম ভোষার রবে। ভারতবর্বের নদীগুলির নাব কি ক্ষম্ব হালা।

পরিহালে ভরল বর সন্ধীর খর— অথচ ধার্থবারক এই উজির ভাংপর্ব্য প্রভাভ ব্রুভে পারলে। কেরাল থেকে শেরে এগেরিল ছবি— সাহিত্য নিরে করেছিল সওরাল-জ্বার । আত্মগচেতদ প্রগল্ভা কিশোরীর অর্কু সমালোচনা এতক্ষণ কোন করতে নিরে নিরেছিল প্রভাতকে ? আক্ষর্য— বর্থ-জ্গতের সেই বেরেটি একই জারগার ইাভিরে আছে— মা ভার হু'পাশের ঘটনার স্রোভও গতিষর হরে বরে চলেছে ? ওকি কৌতুহলী বৃট্টি মেলে ভার প্রাণরস্বারা পান করছে না ? ওর চেতদ-লোকে পলাতক ঘটনা রেখা টেনে টেনে গড়ে ভূলছে মা কি স্কৃতির দেউল ? সেই দেউলে বৃদ্ধির দীপ আলিরে ও আরতি করছে জীবনের । অচল-প্রভিঠ হরে সেও অর্কু অর্জন করে নি— ধ্বংসভূপে একট ভারল অত্মর প্রাণরদে সঞ্জীবিত—আলোক-পিণাস্থ অন্তর্ব, সরত ঐর্থব্যকে হু'পাশে অবহেলার ছড়িরে নিরেও প্রেঠ ঐর্থব্য রয়েছে প্রতিষ্ঠিত। মেরেটি সভাই অনতা।

লন্দ্ৰীয় ঠেলা থেৱে চমকে উঠল প্ৰভাত। সুবের বোর ভার সর্বালে—বিহালা হাড়তে চাইছে মা দেহ।

লন্ধীর হয় ভবনও জানে ভাগছে, সারায়াত বুবি ছুমোও নি ? কি যে এত ভাবনা ভোষার।

সভ্য-এ ভাবনায় সলে প্রভাতের পরিচয়ও স্থন। এ ভাবনা জীবনের অর্থ সম্প্রণে বছলে দিতে চার-স্বত স্বভার পাবে উত্তীর্ণ করে দিতে চার বাছ্যকে।

লোহার গরীবের বাইরে আকাশের টুকরোর তথ্য বর্ণাভাগ কেপেছে—একটু পরেই চড়া রোকে নীল আকাশ ধুসর হরে উঠবে। জীবন তথ্য বাতবের কটিন স্পর্শে ভিন্ন অর্থ নিয়ে প্রকাশিত হবে।

অনেক বেলা ক্রে গেছে—নর ? প্রভাত আলভ ভেলে উঠে বনল।

লখী বললে, খাইরে একজন কে ভোষার ভাকছে ৷ কি অনুভ চেন্নারা ভার ৷

শশী হাজহা হাত ভূলে বললে, আবদটা ববে ঠার হুত্যে বিন্ধি। আৰু পিতিতে ভবে বেরিবেছি বাড়ী থেকে—হর এস্পার বর ওস্পার !

কিছু বয়কার আহে ?

थवा रमस्य चायरे अफ्डी (एकरम्थ स्टब नाफ। प्राट

পারলে দা বাবা—৩ই বে স্ন্যাক্ষার্কেটের। কিন্তু আনাকে কি ভোষরা হেছাই দিভে পার দা १

बाबरे-क वनान १

কেন প্ৰাথবাৰ অনুন্ত্ৰ ব্যৱহাৰ নহাই। স্বাই নাকি টকঠাক করেছে—ওবের বাড়ীতে কি গানবাজনা আছে—

শা শা, প্রভাত নিজের যার নিজে চয়কে উঠল। এবন উচ্চ রচ যর তার কঠ থেকে বার হতে পারে।

ভূমি কাঁপছ ৰাবা—একটু ছিব হও।

ৰা হাৰৱা মণাৰ—আৰু কিছুভেই ও কাৰু হতে পাৱে না। আগনি বলুন গে ওলেৱ—

আবার কথার ওরা বিখাদ করবে কি--ভূবি এলে বরং বলে যাও।

আছে। চিটি লিখে দিছি আমি। আর ওবেলা দেব। করব ওদের সলে। একটু অপেকা করুন আপনি।

চিটি লিখে শৰীর হাভে দিরে বললে, নিবে বান। অবলেশুকে বলবেন, ওবেলা বেন এফটা বিটং ভাছে— বুকলেন ?

चाक्श रावा !

শী চলে গেলে প্রভাভ আশন বনে বললে, এ আবার হর্মলভা নয় কি ? আশন বনেই আবাস দিলে, হোক হর্মলভা---এভেও বাহুব সমরে সময়ে আনন্দ শার। একট উৎসবের দিনে বিজ্ঞান্ত বাবানো ভক্ত ক্রচিভে বাবেই।

45

অনিমেহের বিভার-অভিমন্দন সভার সে বোগ থেবে বা ছির করলে। শেষ পর্বাস্ত ওর সভয় বজার বইল দা। দীপা আর অনিবেদ ছ'কনেই টেনে নিবে গেল। সভাটর উভোগ-चारबाक्य बाक्तिक अवर कृतिनव्यक । विक्रवामरबद नवारेरक थान बाद्य मा-बीमारवत वाकीरक ७ व्हरवरह-- व महि-বারের হোট বড় সকলেরই ক্রচিজান অভুড। মার্কিড चाहदन-दृष्टि ও जानाक्षिण चालाहमा-- नवहारण्डे पृणीव সুর্ঠা বভার রাধা এ বেদ থবের বভারণত। অভাবের অমাৰভাৱ অভভাৱ যে পৃথিবী—ওয়া ভাৱ বিপৱীভ মঙলে বাস করে—চিন্ন পূর্ণিয়ালোকের অধিবাসী থরা। ওবের গোৱে প্ৰভাতের গোৱ যেলে যা তবু কোবার বেদ কোন चारत अकड़े प्ररव्य महन्ति चान्हर्या तकरवय प्ररद्ध । देशनियम আচার-বিহারের মুলক্ষের উর্বলোকে আলোধরী বে ৰামসমভা অবসরক্ষণে মাথে বাবে আত্মকাশ করে ভারই সমভূমিতে ওলের মিভালি। এর জড বছুরের পরিহাস সহ করতে হব। আর বলে হব সে পরিহাদ কড বুল--বিবেদ আলাৰঃ ৷ বাইরেম্ব এতেবটা বাস্থ্যেম্ব করেক মক্ষের বাঞ্জ — একটির পর একট অবর্ত্তান প্রবোধ-স্থানিক অনম্বত্ত করছে—স্বর হল দলীত আর্থ্যি কথা দব নিলে—অবঙ আনন্দলোক ঘণীত্ত হচ্ছে। এই মৃত্তুর্ভে রমে হচ্ছে না— প্রচার-বাসনার ফীত হত্তে উঠল কে—কোন বালাটকে স্পোতন করবার বত নানা ভাতীর কুল প্রস্থিত হ'ল একট হল্ম স্থার।

প্রমোদ-ছতী ও আহার হুই-ই স্থান তালে চলছে—এম্বন সমর বেরারা এসে কানালে অর্কেন্দু রার্ভে—কে একক্ষ বাইরে অপেকা করছে তার কর। প্রমোদ-ছতীর মধ্যে তাঁকে আনা সমত হবে কিনা বুবতে না পেরে অর্কেন্দু রার ব্যাক্তন, বাইরের বৈঠকবানা বুলে বাবুকে বসাও গে—আমি বাজিঃ

সভিটে তিনি উঠে বাইরে গেলেন। একে চ্ইরে অমেকশুলি মিনিট বন্টার অভিমুখে আবর্তিত হ'ল—ভিনি কিরলেন
না। উৎসব-মৃত্ত কারও চোবে প্রভল না তার অভুপছিতি।
মুটি প্রাণী শুরু এ সম্বন্ধে সজাগ রইল। দীপা বার চুই বাইরে
উক্তি মেরে বেবে এল বাবা আসছেন কিনা—আর প্রভাত
লক্ষ্য করলে প্রার ঘন্টাবানেক হ'ল গৃহক্তা অভুপছিত।
কেনন অবাদ্ধ্রন্দ্য বোধ করলে সে। কি জানি কি ঘটল—বেক্বা হথেছিল কাল সভ্যাবেলার তারই স্বন্ধ পৌষল কি
প্রবাদ-বাসরে ? উৎসবের দীপাবলী মান হবে এল—হাসি
আনক্ষের কলবর কোন্ গৌরমণ্ডলে নিক্রম্বেশ বান্ধা করলে
বেন।—ও চেয়ার বেকে উঠে দীপার কাছে এসে বললে,
আসছি আনি।

কিছ সেই মুহুর্ছে অর্জেলু বারকে হারণথে দেবা সেল।
এক বটার বাহুবের এবন অভ্নত পরিবর্জনও হর। গৌরবর্ণের
বাকারি গোছের নাহুবটি সহক হাতভার সকলেরই অভরদ বলে
বনে হ'ত। তাঁর পাতলা ঠোটের অবিচ্ছেত হাসিটি বাল
বিবে তাঁর বৃধকে করনা করাই বার না অবচ সেই বুব নিকরুল
গাতীর্ব্যে ধর বন করছে। প্রবোদ-আসরের বাইরে বঞ্চাবীক্তিত পৃথিবীতে এই বার বল-পতনের বিতীমিকা দেবে তিনি
বেন কিরে এসেছেন। তাঁর সৌরা বুবে হরতো বেলনার
করন আতাস লেগে ররেছে—তবু কৃটল সৃষ্টিতে কুটে উঠেছে
অর্জ্যানিত আবাতজনিত হুগা ও ক্লোব—আর নেই কালিবার স্কের বা করন কোন কিছুর চিত্রবারও সৃষ্টিগোচর হচ্ছে
না। প্রতাতকে হাত ভূলে ইসারা করে পিছন কিরলের
তিনি। বল-বন্ধীত্তের বত প্রতাত তাঁকে অনুসর্ধ করতো।

বাইরের ঘরের টেবিল বিরে হ'জনে বুবোর্বি বসলে।
টেবিলের উপর একবাদা বোলা চিট্ট। একটা শিতলের ছোট
ব্র-বৃত্তি বিরে কাগজবাদা চাপা ররেরে—বাতালে উতে বা
বার। বরের জিনিয়পঞ্জলি আশ্বর্ণ্য রক্ষে তর। বালি ক্লক্ষ্
বিভিন্ন টিক লব্দে সেই নিতরতার বুকে আঘাত কররে।
সে আঘাত সময়ের বুকে বাজ্যে—বাজ্যে নাল্যের বুকে।

প্রভাতের কংশিতে দেই আঘাত এলে পড়ল—গলা ভড়িয়ে গেল—অভাত তথা অভতৰ করলে সে।

ভার মুবের পানে চেরে অর্ডেন্ট্ রাম বললেম, টেবিলেম্ব ওপর যা ররেছে ভার অর্থ সভবভঃ ভোমার জন্মানা দর। কিছ আমার সবচেরে আশ্রুর্যা লাগছে—পূথিবীতে আশ্রুর্যা বলে ভোম বছই কি কল্পনা করতে পারা যায় মা। মানুষের এক দত্তের বিশ্বাস পর-মতেই কেন্ডে বার।

প্রভাভ কি বলভে গেল—ভিনি বাবা দিবে গভীর কঠে বললেন, বা বলবে জানি। কিছ একনিন নর, ছ'নিন নর— নালের পর নাল নাল্যের ললে নিশেও কি নাছ্যকে চিমভে পারা বার না—না তাকে বিশ্বাস করাও বুর্গতা। জানি কারও সংক্ কারও নীতি বেলে না—কিছ নীভিতে না নিলনেই জাবে চুর্মীতি ভবে এ বারণা কেমন করে জ্বার—বলতে পার ?

প্রভাভ আর একবার চেষ্টা করলে কথা কইভে—আর্ডেন্
রার উষ্ণ হরে উঠলেন। চাপা ভংগনার কঠে বললেন,
বিশাস্থাভক—প্রকল্পের দল। পেছন থেকে ছুরি চালার
যারা ভারা সং নর—কাপুরুষ।

প্রভাত সরিবা হরে বললে, আমার কথা যদি শোনেন—
কি ভনব ? আমি রাাক-নার্কেট করি—ভোমরা সাধু,
ভাই বরিবে দিতে চাও ? তোমরা সভার গাডীবাদের জিগীর
ভূলে দেশের বুকে মার কিনতে চাও ?

আপনি উভেজিত হরেছেন।

আক্র্যা কি । টেবিলের উপর পড়ে বংবছে ভোরার বছবত্তের রসদ। অবচ ভোরাকে অবাব অবিকার আরি বিবেছিলার অভঃপুরে চুক্বার—আনার বেবেকে বিশভে বিবেছি সরল বিবাসে—

আমার বিশাস করুন। প্রভাত নিমতি করলে। অসম্ভব। আমার সর্বাশাশের জন্য কাঁদ গেভে রেখে— বিশাস করুম—

না—না। কিন্তের মত চীংকার করে উঠনেন আর্জপুরার। ভূমি চলে যাও আমার সামনে থেকে। আমি নিজেকে কিছুতেই সামলাতে পারহি না। হাতের কাহেই রয়েছে বন্দুক—ভূমি চলে যাও—চলে যাও—

প্রভাভ আতে আতে বেরিরে এল বর থেকে। মনে হ'ল

গেছে দর্মাদ। ও কেন প্রতিষাদ করতে পারলে না? অভারের বিরুদ্ধে, অসভ্যের বিরুদ্ধে—কেন ও প্রতিষাদ করতে পারলে না? কোন্ধানে ওর হর্মালভা ওকে ভীরু করে চুললে! সেকি গোপনভা? বে রুহুর্ছে ও অসভ্যকে আবিন্দার করেছিল সেই রুহুর্ছে কেন সভ্য আচরণের বারা নিজেকে নির্ভাক করতে পারে নি? কিনের সৌক্ত—কেন হর্মালভা? অধ্যের গোপন কোনে সম্মান, অর্ব, সাহিত্যা, রুচি কিংবা নারী—কোন্ আগজ্ঞি ওকে কর্ম্বারিষ্থ ভীরু করে ভূলেছিল? আর এই মুহুর্জেও নেই ভীরু নরম্বারের সে সভ্য ভাষণ উচ্চারণ করতে পারলে না। বেজাহত কুরুরের মত বেরিরে এল বর বেকে।

উপবের খর থেকে নৃপ্র-বিভাগের ভালে উদ্ধৃতিত হাসির ধর্মি—ভাকে পথের প্রান্ত ঠেলে নিরে গেল।

90

না—শহরে আর থাকা চলবে না। বে-কোন উপারে হোক দূরে পালাভে হবে। বছ দূরে—বাংলা থেকে বছ দূরে হর—ভাও ভাল। আছই পালা কথা দিরে আগবে বিলোচম নেনক। উনি কালই যেন ব্যবস্থা করে দেব—কলকাভার বাইরে ওঁর সেই বহালে থাকবার। সম্পূর্ণ অপরিচিত প্রতিবেশে নিজেকে আভোপাত পরীকা করে দেববার সুবোগ পাবে। কিসের ভরে সে সভাকে অকপটে প্রকাশ করতে পারে না। সভ্য-প্রকাশের বাবা কি জন্ম-থারিল্রো—কোমনতে উদর-পৃত্তির উপাবচুত্ত হওরার আশবার, না আলমসন্দিত মেহমমভার বহন কাটিরে আনাজীর ত্বতে অভ্যন্ত একাকী হওরার মুংসহ কল্পনার? এভাবে ভরে সর দিক বাঁচিরে সভ্যসাবক হওরার বঢ়াই ভার সাজে না। কোম বাসুমই ভরের সঙ্গে সভ্যকে জড়িবে জীবনের সাবনার জন্মভাত করতে পারের নি।

প্ৰভাত ৷

কে ? চনকে উঠে ও চাইলে---সাৰ্নে ইাছিরে জনলেজু। ওয় সুব্ধ ভক্ষা।

ব্যাপার কি ? ভোর কি অত্থ করেছে ৷

শ্বীরহী ভাল নেই। একটু থেকে বললে, ভা ছাড়া আৰি ট্রন্ড ক্রেছি কালই কলকাভা ছেড়ে বাইরে বাব।

(क्य-काम 'क्याव' (शरबहित्र १

না—হাঁ—এক রক্ষ ভাই বটে । বোট কথা শহরের বাভাগ আষার গহু হছে না—আমি বাইরে বেকে চাই। প্রভাতের কঠবরে কাকুভির রেশ।

শ্বলেপু বললে, বলি কেউ আবালের বাত্তব-ভীপ্র বলে ভাকে বোর বেব না।

প্ৰভাত প্ৰতিবাদ করলে না—কেবন বিজ্ঞানের সভ চেয়ে বইল অবলেশুর পাবে। আন্দেশু রাব ছেলে বললে, বে কথাটা আবি বলতে এলেহিলার ভা আবেই ভূই বলে নিলি। বাবে—সামিও বাইরে বাজি।

Ag-R 3-

উণার কি—কাকা চিট্ট লিখেছেন মীরাট থেকে—ওবান-কার মিলিটারী আ্যাকাউ-চন্-এ করেকটা পোঠ থালি হংবছে নাকি।

हाकवि---

আৰাদের মত মধ্যবিভেরা আর কি করবে। সহার মেই অত পথ বরব---সম্পত্তি মেই ব্যবসাতে মানব।

ইংরেজ সরকার বা শিবিংছেন দেছণ' বছর ববে ভারই জাবর কেটে চলভে হবে আরও বেশ কিছুবিন।

প্ৰভাত ৰীৱে বীৱে বললে, ভাতীয় সৱকার হয়েছে, এবার শিক্ষার বারা শিক্ষার বদলাবে।

বদলাকৃ—আনৱাও ততদিনে জীপ হবে যাব যে শিক্ষা পেরেছি ভারই ভারে।

আৰাদের বংশবর বারা আসবে----

উদ্দল ভবিত্ৰভের স্থা আমি কেবি মা প্রভাভ—পূৰিবী আৰু ভারি গোলমালের মধ্যে চলছে। এ বেন চলেছে পরীভার বুণ—কবে কললাভ হবে সে আলা অবভ পোষণ করা অভার নম্ব, কিছ দেই আলার বর্তমান স্থাপ কটকে কিছু না বলাও ভার চেরে কটিন।

কিন্ত এই অছিরতা—বিখাসহীনতা—আনাদের বেশ হর্মাল করে দিছে, আর রাষ্ট্রও হ্র্মাল হরে পড়ছে। প্রভাত নত্তব্য করলে।

তবু বৈর্ব্য আমরা সকর করতে পারছি না। এত বছ
টাছেতি হরত কোন জাতির ভাগ্যে ঘটে নি ! একটু থেবে
বললে, বিশাস ভালে কেন জানিস ? যাকে অবলয়ন করে
উঠে ইাভাতে বাই—বেধি সেও পাঁক নাথা আশ্রয়—
ভ্যানী যলে বার নহছের পারে সর্ব্বর বিভিন্নে বিভে বাই,
বেধি ভার ভ্যান ভোগের স্বভ্রপথে গোপন সকরে নত।
অন্য নৃষ্টান্ত বে নেই ভা নর, কিন্তু ভার আলো এত চুরে আছে
বে, আনাবের বৈদানিব ভীবনের স্থ-ছংথ আলা—আভাক্রাকে
ভারতে পারতে না।

অবলেশ্ব আক্ষেপ প্রভাতের অন্তর পার্শ করলে। চঞ্চল ছনিবার আন্ধ আবর্ণের সংবাত অত্যন্ত পাঠ—ভাবই বাবে ভূতীর বিধর্তের প্রথমনি শোনা বাজে। বভি-পরিবলে আলোচনা প্রভাব বৃক্তি ভর্কে খোরালো করে ওঠে—ভোটের অক্সমে আর ভেটোর পর্যার ভা প্রকৃত কল্যানে প্রতিষ্ঠিত হতে পারে না। উপ্র আভীরভাবাদের ধ্বংস চাই—ধ্বংস চাই বভবাবের। বড় ছনিবা আরভন-বর্মভার হুর প্রভিবেশীকে ভ্রেছে নিক্ট—নৈক্ট্যের কন্য সংক্ত অবিধান প্রবন্ধ হয়ে

উঠাছে। শ্ৰোভে ভাগতে ভাগতে ব্ৰৱ কলস বতই বিক্টবৰ্ডী হচ্ছে বাভূ-কলসের বিক্—েভডই ভাগ তর বাভছে—ভডই সে চাইছে বিক্টেবৰ্ডা পরিহার করে কোন শভ্ত আবরণে অভেচ হতে। তার প্রভতিতে বাভূ-কলসও হর্তেভ হবার সাধনার লন বিবেছে। বে হর্তেভ হতে পারবে এই প্রভিবোসিভার কর ভাগ জনিবার্থ্য। তাই বরণ ঠেকাভে সাংঘাতিক নারবাজের আবিভাবে বন-কন-বিভা-বৃত্তির প্রভোগ চলহে পূর্ণবাজার। এর শেব কল—মাটর কলসী ভালবে কি পিভলের কলসী কবম হবে ভা নির্ণর করা নর—পূর্ণবীর হুর্জিপাক বে বাভবে—এ ত স্থাবিশিত।

णाबाळाच माम प्र'कान विश्वीच शव बदाल। प्र'क्रामरे ৰুবলৈ স্বিভিত্ত কথা ভোলা নিত্তপ্ত। স্বিভি স্ট হয়েছিল বাদের অবসর কণে-ভারা সময়ের স্রোভে তেসে বাচ্ছে--আবার সময়ের স্রোভেই হরতো নুতন তৃণঞ্চ ভেলে এলে मरमध करव मिकिस शास्त्र । श्रीकरमद विवास ७ मकरमद প্রকাশ ছইবের ভারসাধ্য রক্ষা করে পৃথিবীর বন্তপুঞ্জের অভিছ। বারা আনে প্ররোজনের ভাগিবে ভারা প্র নির্বাণ করে সন্দক্তে রূপ কের---সমাজ-সমিভিতে করে প্রাণ-প্রভিত্তা। कारपरहे देखि विदय-काशत कीवनवाबाद गर्व वक्तांनि श्रूनव क्ष भारत (म. तिहात क्षेत्र क्षेत्र का मा । किस मनरवत त्यास বাবে না এক দতের ভঙে, ভাতকের নৃত্য কাল হর পুরাত্য---त्नरे कान-चालिक विवि-विवय चाहाव-चप्रकाम नवरे वाचिन क्र वात मुख्य कीवरमत बाम मित्रवर्त-मर शरकालात दक-चक (बंदक बंदन शंक द्यवम शृंबांचम शंब । शांचा बंदन (शंकि ভার ভিভি-চিন্ডের একটা নিদর্শন রবে বাব কিছুভালের ভনা---ক্ৰমে ভাও বাহ বিলিছে। ভারণর ভারা আত্রহ পার ইভি-ভাষের পাভার। এক দিন কলকাভার বাত্তর দেশতে দেশতে চার হাজার বছরের মিশরের মমি-ভারও আর্গের মহেলো-चारबा ब्यामाय प्र-नित्र, र्योष प्राप्त निनारनन, चानचा, चन-नित्र बनर चात्रक शरदत चार्ना नरक्षित हिस्त्रवृष्ट् छ छाटेन-ভিছালিক বুগের অধুমালুপ্ত অভিকাম প্রাণীসবৃত্তর নিদর্শন-बरे महत्त्व बह्या कामहत्त्वात्वव चत्राविक बाबाई कांव ह्यादिव সাধনে সহসা উত্তাসিত হবে উঠেছিল। মাত্র চার-পাঁচ হাকার बहरदार देखिहारन बकुछ ७ शामैनबारका विवर्धम-बारा-ভাবের জীবনবাপন রীভির একটা অক্ট আভান ভাবের वाममा-काममात चकि कीन अक्षे क्यक-टिक्कमादादा अनिम चक्रकिंक विन्न कार्या वाबागरवत देविक वरत कारन। विश्वा श्विरीए विश्ववि कालत जीना अवि चनावक ভাৰেই চলতে। তবু ৰাজ্ব নিজেৱ কালটকেই ভাৰতে সৰ্কো-चय-वादा नक क्राइट कार्यद क्राइट न नर्सारत्न त्वाना-'বিদ্যার প্রতিভার না হোড় নিজ নিজ বৃদ্ধিতে ভ বটেই। আর चारके क्या ज्ञानक बाकित्व मित्क यक बवाद वानमा---चिक-

সকরের বেশা— ঐথব্যতোগের লালসা, প্রকৃত্ব পরিচালনার গৌরব—এইওলি ব্যক্তির জীবনে একমান্ত্র সাবদার বস্তু হয়ে ওঠে। এরই মধ্যে ছু'একজন একলা প্রিক্ত—মহামানব এই সভ্যকে জীবনে এবং রাষ্ট্রে প্রভিঠার জন্য প্রাণপথ আবোক্তব কর্মেন।

এঁবা চবৰ সকট বৃত্তে বৃগসভিক্ষণে আবিভূতি কৰে বিধেৰ কাৰে ভূলে বাওৱা বছট উচ্চাৱণ ক্ষেদ্ৰ, বৰে হয় নাছবেৰ হংগনিশার অবসান হ'ল, বিগছের পারে নব ভাছ্য কিবণ-লেখার সবকিছু কোৰল ও ননোৱন হয়ে উঠল···কিছ হার সে ভূবু বর্ধা বাজেই পর্বসিত হয়।

চৰকে উঠন প্ৰভাত। বাড়ীর ছ্রারে পা দিভেই কোলাহলটা প্রবল আকার বারণ ক্রল। বেন নারের আর্ডনাদ—ভাইবোনেদের চাপা কারা—প্রতিবেশীতে পরিপূর্ণ চরে প্রক্রে ভারের ভোট উঠান।

ভাকে বেংগ একজন সংগ্ৰে বলে উঠল, আহা—আছ একটু আগে বলি আসভে ? পাঁচ বিনিটও হয় নি হঠাং হাট কেল কৰে—

ছবিবার কালপ্রোতে অমতও আক তেনে চলেছেন।

60

कानत्यांच हरनरह। यत यत बारकन चरल हरन না, ভাবনার সলে সলে লোকিক কর্ডবাগুলিও আগন আগন দাবি নিবে সান্ত্ৰে এসে হাজির হয়। চোবের জল বুছে---कावनारक निकास र्डंडन-मात्रमुक्तित (ठडे) चारम अभिरत। বাহকাৰ্য্য শেষ করে সে কিরে এল বাড়ীভে। শোকে ভদ্ধ वाकी , या कृतिनयात शरू कांग्रह्म--- चरवाय कांहे-स्वायक्षत কাল কাল করে চেরে আছে। এক দিন পিডছের বলে কোন विनित्र चष्ट्रच करव नि श्रकाल, यदा अब विनदीलहाई अरक गरनाव **मक्टब व्यवसा क**टब कुल्लाह । विवेश मरनाटब विव ওৱা নাই আগত কি কতি হ'ত কগতের ? পিতার আকাজন एटाल वक करव-विद्यास करव-वस चाकवन चताव--बर्माबाना भनाव भवरव-नावारक स्मार विश्वका । कर्वरवाव नक कि विदय वैविदय (बारमाक विवाद राजा विकाद करण भा बादक---(वम त्म अक्रक्मरावद शादन करत---विद्याद ইফার অসংখ্য প্রত্ন দিবে ছেলের ইফার প্রতিবিভয়ণ চলে। এই বার্থবভাকেও সে বছ বার প্রভাক করেছে। প্রত্যক্ষ করে শিউরে উঠেছে—ভাই সংগার সম্বর্ভে ওর বোছ (चयन थानाइक मद। जात (नरे जातानरे नात्मत थाकि ভীতি পোৰণও করত বা। বা হোক-এই হতে বৰে হছে একটা সহার ভার পাশ থেকে সরে গেল। পৃথিবীর সক্ষে बूर्यावृषि शविष्य कविरक हरन अनाव।

কি কৰে চলবে সংগায়--বাবের এই প্রান্তের কোন সহত্তর

হিতে পারে বি—কি করে হারমুক্ত হবে সে সম্বভারত সমাধান করতে পারবে বা ও। সামাজিক প্রবা ওকৈ নিছতি বেবে না অসমর্থ বলে বেকার বলে। তথাক্ষিত বর্মীর অস্ক্রাম-ক্ষান অসম্পন্ন করতেই হবে।

এতদিনের আশা ও ক্রমাকে এক পাশে সরিবে বেথে প্রতাভ সামৰে ভাকালে। সংসাবের কটিনত্ব ওকে আবাভ করছে—বটনা-প্রবাহে ওকে ভির পথে নিরে বাবে এট নিশ্চিত। বছুর পৃথিবীতে বারা বছুত্ব বা আত্মীরভার বাবি নিরে প্রভাল পাশে পাশে চলবিল—ভাকের রূপের পরিবর্তন স্কল চরেছে। ওকে প্রকাল উভীব রুকে হবে চকর পারাবার।

বাণের আপিলে গেল—ছিনপনেরর নাইনে বাবন কিছু পাওনা ছিল সেটার ভাষর করতে।

পিভার সহক্ষীরা সহায়ত্তি কেবিরে উপবেশ দিলেন এক্ষার কর্মকর্তার কাহে গিরে হংখের কাহিনী কানাতে। বাপের পদে না হোক বে-কোন একট পদে হরতো সে বহাল হরে বেতে পারবে। চাকরি ভিরু বধন অভ পদা নেই।

হেড্জাৰ্ক বললেন, আগছে গগুছে একবাৰা বহৰাত বিহে এগ—বেধি সাংবেশক বলে বলি কিছু ক্ষতে পাত্তি।

ভাষে ওর বাবে আবন্দ হ'ল না । চাকরি না পেলেই বা কি কভি !

আপন বৰে গিডি দিৰে নানছে—একটা বিশ্ববস্থতক ধ্বনিতে লে নাৰা ভূলে চাইলে।

ও নিচ্ছর কবিতা লিবে আশিসের কর্ম্ম-সভার আসে নি। বললে, ভূমি বে ?

আহ্ব এবিক। ওত্তর ওকে বারালার একবারে টেবে নিরে পেল। বললে চূলি চূলি, গুনলার জনবলেক লোক বেবে—ভাই একটা ব্যবাত্ত—

ভূমি চাকরি করবে গ

ৰাণা নীচু করে ওভয়র বললে, কিছু উপাৰ্জন ভো বরকার। কাগতে কবিতা বার হলে কেউ পারিশ্রবিক কেন না।

্ৰিছ আৰি তেবেছিলাৰ—প্ৰভাত নাৰলে নিলে। প্ৰভাত বৰেদি বাভিন্ন কেউচি পেরিবে—কেউ কোনবিন তা তাবতে পাৱে না। সহিন্ন কোচন্যান হাহোৱান—আনলা বুছরি ও হছুৰ বরহারে ঠালা বে বাভী—নেই প্রানাবের একট উভরাবিকারী বশবদ ভ্তোর ভূমিকার নামবে বলে উভোগ-আরোজন করছে। কবিতা নিবে ঠালা রোজগার করবে—এই চিভাই বা আলে কেন তত্ত্বার গ্

কিছ চাকরি করবে কেন ? ব্চের বড প্রর করলে লে।
এইটই নোকা বলে বনে হচ্ছে—আর ভো কিছু কানি
লা। লাভুক গলার ডভয়র উভর বিলে।

তৰু মৃচ্যে মত প্ৰশ্ন কৰলে প্ৰভাত, ভোষাদেৱ তো ক্ষিত্ৰাৰ আৰু আহে— কৰিক্ষা । একালে থাকৰে কি কাষও ? পুরোবো বংশ—সবই প্রায় শেষ হরে বাছে । আপনি হরতো কানেব না—এককালে এই গলিচার সবই হিল আনাবের—আক বাজীথানা পর্যন্ত আনাবের সর । একট দীর্থনিধান কেলে ও বললে, বংগর দার বে কি ভয়াকক ববি কানভেন !

প্রভান্ত দ্রাম ছেলে বললে, ভামি।

না—ভেষনবারা ভাষেন না। বাইবের ঠাট বজার রেখে আত্মীরবজন নিরে চলা—এইভেই কতুর হবে গেলেন ভ্যোঠান মনাই। বে জমি আহে ভাও গেল চলে। বহাজন ভার টাকা হাজবেদ কেন।

भवन चत्र वहांकन (कडे चारहन--

বে চাঁকা বার দের সে চাঁকা আলার করবার কৌণলও কানে—সাবারণ নাছবের চেরে বরং বেশীই কানে। আপনি হর তো দেখেছেন গলিচা করে করে হাত বদল করছে। একদিন…

প্রভাতের দৃষ্টি বৃলে গেল। চকলা লখী খন্ডান্থ সন্তর্গবে গৌব; বেকে সৌবান্ধরে চলেছেন তাঁর সোনার বাঁলি নিরে। বহালের সম্পর্কে ভারবানার সম্পন্ধ প্রাস্থ্য করছে—কিছ ভার গতি ভেনন ক্রছ নর। আরু পণ্যনিবন্ধণের ক্ষবিধা নিরে ঘাট্তি জিনিসকে ভালোবান্ধারে চালান বিবে আর এক প্রেণী অভ্যন্থ ক্রছত গতিতে এগিরে আসছে। সম্প্রীর রূপাকটাক্ষ এবেরই উপরে। পূরাভনকে নিভিন্ত ভ্রবার ক্রছ ভারা অভ্যন্থ উৎসাহী—বংশ-কোলীভ রৌণ্য-কোলীভে কিনতে চার এরা। কিনছেও। ক্ষথাশালী দেবভাকে ভূঠ ভ্রবার বন্ধ এরা ভাবে—আইনকে কাঁকি দেবার কৌশলও একের আরতে। এরাই আরু প্রভূবের জাল বিভার ভ্রের এই গলির সম্বন্ধ সম্পারকে আছলাৎ ভ্রেরে ভাল বিভার ভ্রের এই গলির সম্বন্ধ সম্পারকে আছলাৎ ভ্রেরে ।

চলতে চলতে ও প্রস্ন করলে, আর কবিভা লেব না ? লিবি।

আন্তৰ্ব্য তো ! কি ভাৱ বিষয়বন্ত ? ওয় কঠে কৌছুয়ল। নানা বিষয়—বা আজ্ঞাল স্বাইকে নাড়া বেয়— স্বাই অনুভব কয়ে।

इ:4 ? जजार ?

লে তে চিম্নকালের—ভার একটা বাসহও নেই যে বাপতে পারা বার—কি চিমতে ভূল হর ৷ আর আনায় বা হংব আপমার ভা বর—

ঞ্জি বলেছ ভাই। ভোষাবের বড় বরের বর্ব্যাধা বেদ দাধারণ বরের বড় বর—

কিছ বড় বছের বর্যালা আর পাক্তে কৈ—পূপিবীতে স্বাই স্বাৰ এই সভাই তো স্পঠ হলে উঠছে।

কি কানি—নাত্ৰ বদি কাৰাৰ ভাল হ'ত তো একট ইাচে কেলে এ লভ্যের পদ্মীকা লভ্য হ'ত। নাত্ৰে নাত্ৰে ভান বৃদ্ধি ও নানানু বিষয়ের এত ভলাৎ যে লব নিলিয়ে একট দাৰ্কজনীৰ স্থপ বেওৱা চলবে লা। তকাং বাকবেই, লা হলে জীবন-ব্ৰৱের অৰ্থ জি।

খীৰনে ৰে যুদ্ধ করভেই হবে ভারই বা বাবে কি ?

কিছ বৃদ্ধ বা করলে জীবনের বিকাশ কোবার ভাই। আলোর উভাগ নিরে কুঁভির বব্যে কুল করে লভাই কুল হবার জন, ভাই কুল এভ পুলর।

আপনি কবিতা নিৰ্ন প্ৰভাতলা—চনংকার উপনা দিয়েছেন।

এ মূপে উপৰাৱ ওপর প্রছা নেই কারও—কেট পছৰে না সে কবিতা।

(**क**न ?

সুলকে বুটারে দেখার অবসর কোথার নাছবের । উব্ভ সমর না পেলে রসবোৰ জাগে কি মনে ? এই শহরে প্রকৃতির স্থান কোথার—সবই ভো ইট কাঠ লোহা সিমেন্টের জারবার। সে আর্ভি করলে:

'रेटडेव शदव रेडे—दिशा बाक्य कीहे।'

সভ্যি প্রভাতনা—এ কথা ভাবলে ভারি কট হর মধে। আমরা কোথার চলেছি। রূপের ক্পং ছেভে কোম অসুস্তর ক্পতে !

ওভয়রের বর অশ্রু-আতাসে বম বম করছে। সে বেদমা প্রতাতের মনেও সঞ্চারিত হ'ল। বর্গ্গনানর অঞ্চলভাকি চ্ট তাব-সমূদ্র প্রাণ অতীতের স্থৃতি-সমূদ্রে তুবে গেল।

গোলদীবির বেকে এসে বসলে হ'লনে। এডকবে
আকাশে অনেক নক্ষ উঠেছে—গোলদীবির বাঁথানো ক্লেরে
ভাগছে ভার উদ্ধল প্রভিবিদ্ধ। প্রকৃতির সাধাত অংশ নীল
সবুদ্ধ আর কালোর পরদার ছড়িবে আছে। দীবির চার
পাশের সৌব বেকে আলোর তীর প্রকৃতিকে কভবিকত
করছে—কিরিওরালার চীংকার দীবনবাগনের কর্কণ রীভিকেই
প্রকৃতী করছে। সর্ব্যর চলছে শাসন। সভাই দুগং অসুন্দর।

প্রভাত বললে, চল উটি।

ভভর ওর অহুসরণ করলে। বাভীর কাছে এসে কোন কথা না বলে পরন্দর ভির পথ বরলে। ওলের বনের হুংথের আলোর ওরা বেন গভব্য পথ বুঁলে পেরেছে। করনার চভা রঙে লে পথের ধুনি নর অগরণ—আলার বন নীলে সে পথের আছোদনী নর উত্থাপত্র, আনন্দের লবু বারুভে সে পথ পুরে ছলে নীলাপ্রমন্ডও নর। বর্ণহীন খান্চীন শোভাহীন পথ—চলার অহুরাণে ভা অভিক্রমের উৎসাহ জাগে না—নিভাভ না চললে নর—ভাই ক্লাভিভরা কেহকে টেনে টেনে এগিরে নিরে বেভেছর।

দেই পৰে অনত কালের যাত্রা হরেছে স্ক্রন।

65

প্রভাভ বলে বলে ভাবছিল—গলার সাড়া বিবে বরে

চুকলেন অৰ্থেকু হায়। ওয় পাশে চৌকিতে এনে বনে বনলেন, আমাহ নাপ করে। বাবা—কাল ভোষাকে আবাত করেছি।

কি আনি কেন-এই কৰাৰ-প্ৰভাতের স্বভ শক্তি নিঃলেবে কোৰাৰ চলে গেল। ছ'হাতে বুব চেকে অবোধ নিডৰ ৰভ ও কুলে কুলে কালতে লাগল। ভৱ কালা বেবে আর্কেপুও সান্থনার কথা উচ্চারণ করতে পারলেন না। আর কি সান্থনার কথাই বা বলবেন ভিনি! জীবন জপত্ত্ব—আলা যুত্যহীন—পরলোকে নাভিতে বাস করার স্বৰ-করনা এ সব তন্ধ বিবে শোককে নিবারণ করার মৃচতা ভার নাই। ভিনি ভর হবে বলে বইলেন—প্রভাতের শোকের আলা ভার মনকেও ভারাক্রাভ করে ভূলন। একটি দীর্থনিখাস কেলে অনেককণ পরে বললেন, কাল সভ্যিই আনার অভার হত্তেছিল, সভ্য বিধ্যা বিচারবোৰ হারিছেছিলান।

প্রভাত মাথা চুলে বললে, আপনি অভার করেব নি—
নিক্তর অভার করেছি। তিনি বরে কোর বিলেন। এক
জনের কথার সাক্ষ্যপ্রমাণ মেনে নিলার বলি—কিন্তু বাবা,
বোক ত বার ছিল্ল বুঁকে হাজারটা লোক পুরছে—ভার
সক্ষেত্র সব সময় বুক্তির পথ বরে চলে না।

প্রভাত বললে, কিন্তু আপনি বলি অভার ত্র্নাকা না করে থাকেন ভ—সন্দেহ আসবে কেন ?

এ বুগের এমন একটা বারা—বুনাকার ভাষ্য অভাষ্য বলে কোন ইয়াওার্ড মেই। সরকার বাজারদর বেঁবে দিতে পারেন নি—বেঁবে দিলেও আজকের দরের সলে কালকের দরের সাবঞ্চত নেই। বাজারে জিনিসের সরবরাহ নেই—অবচ এমন কতকণ্ডলি নিভ্যপ্ররোজনীর জিনিস বা না হলে জীবন-বারণ করা চলে না লাভটা বেশী বলে ভূমি না নাও—আমি মেব—আমি না নিই আর একজন নেবে। যত বেশী পারে নেবে। আমার সভভাষ্য বাজারদর একটুও নাববে বা—অবচ আমার সভভার স্বোগ নিরে আর একজন হবে বন্ধ-লোক। নিজেকে এ ভাবে নির্বোধ বানাতে পারে কি কেউ।

প্রভাত কথা কইলে না। এই মুহুর্ত্তে এসব নিম্নে তর্ক করতে ওর ভাল লাগতে না। কে ভার পথে চলতে—কে করতে অভার—ভা নির্ণর করবার ভার ও নর।

অর্থেশ্ আর একটু এগিরে এসে ওর কাঁবে ভাব হাভ রেবে বললেন, সে বাই হোক—শোকে এবন র্বতে পকলে ভ চলবে না। আনহা ববন ররেছি—গকেটে হাভ দিরে কি বেন অহতব করে বললেন, ইংরেজীতে একটা কবা আছে— প্রতিবেশীকে ভালবাসবে। সভ্যি—বারা ভোষার হ'পালে বিদ্-রাজির কভ ররেছেন—ভাঁবের উপেকা করা বাহুবের বর্ষ নর।

তৰ্থতাত চুণ করে রইল। এবন সহাত্ত্তিশীল প্রতি-বেশী পেরে কার না চোগর্থ কৃতজ্ঞতার উদ্দল করে ওঠে। কে না বলে, আপনি বা করলেন, লে বব-না এই বাব- বীকারের বব্যেই সভি্যকারের বহুষ্যন্থ নিহিত নর কি ? কিছ ভাবলেলহীন প্রভাতের পানে চেরে ভিনি বিভিত হলেন। হকোরল বৃত্তিতি কি ওর অন্তরে হু:ধ-নিবাব-ভাগে ওকিরে পেরে—না বারিপ্রা নই করে বিরেরে সেওলিকে ? বাই বোক, থানিক ইভডভ: করে ভারী বনিবাগেট পড়েট থেকে বার করনেন—সেটা প্রভাতের সাবনে নাভাচাভা করতে করতে বললেন, টাকাটা বাহুবের লব না হলেও—টাকার অনেক জিনিল পাওরা বার। লোকিকভা বুবের আনীর্কারের চেরে এই ভাবের নিরেট কিছু হলে—ব্যবহারিক কগভে…, বলে হো করে হাসলেন। হাসি বারলে বললেন, আহরা টাকা-আনা-পাইরের হিনাব রাবি বলেই—টাকা-আনা-পাইরের পিরার রাবি বলেই—টাকা-আনা-পাইরের পারার সবভিত্রকেই বেপে থাকি ? অবর্ত এটা ঠিক রাভা নর। বলভে বলভে হ্বানা দল টাকার নোট ভূলে নিরে প্রভাতের সাবনে বাবলেন। বললেন, এটা রেবে হাও—হরভার হলে আরও—

এক নিমিষে প্রভাতের উদাসীন অভরে আবার ভাবের জোরার এল। রুখের পেনী শব্দ হরে উঠল—সেই সলে কণ্ঠবরে কুটল হচতা। এ আগনি করছেন কি ? উঠিরে নিন—

না—না—আৰি ভোষার শিত্তুল্য—আমাকে পর ভাব বহি—

ৰাণ করবেন। আগন হলে এ ভাবে অগনান করভে পারভেন বা।

প্রভাভের বৃচু দর অর্থেন্দুকে রচ আবাত করলে। নিদেকে সামলে নেবার কোন উপায় বুঁজে পেলেন না তিনি। তাঁর মনে হ'ল সুবিধা পেরে প্রভাত কালকের অপমানের প্রতিশোধ নিলে। প্রভাত সতিটে প্রতিশোধ নিলে।

নোট ছবালা ভাডাভাড় ভূলে নিরে ভিনি বর ছেড়ে চলে গেলেন। অভরাল বেড়ে লখা সব দেবছিল—উনি চলে বেডেই লে বরে চূকে বললে, আজা দাদা—মাহ্বগুলো জি । টাড়া বাজনেই কি ভারা ভাবে ছনিবাটা ভাই দিয়ে কিনে নেরা বার ।

প্রভাভ রান হেলে বললে, বার লখী। চার বিকে বে লব ঘটছে—বা ববরের কাগজে ওঠে—আর বা লোকের মুখে মুখে রটে লবই হঠাং বটছে না বা লেইটাই একনাত্র জিনিয় লয়। ওলব এক একটা কোঁভার নত—দূবিভ রক্তের নধ্যে জ্বার বিলটা—প্রকাশ পার একটা।

উনি বুৰি ৩ই বাজীচার নালিক ? আঙুল বিরে লক্ষী দীশাবের ভিনতনা বাজীচা কেবালে।

হাঁ, অনিষেধ বলে বে হেলেট প্ৰায়ই আহাদের বাড়ীভে আনে ভারই বাবা।

ভা ভোষাকে উদি টাকা বিভে আনেৰ কেব ?

আমাৰের বাভিটার বিকে কথনও ভাল করে ভাকিরেছিল ? ভাল করে এ বাড়িকে বহি কানতে চাল তো এক বিদ ওবের বে লব প্রতিবেশীর মনে হয়া আছে তাঁয়া এ হাড়া আর কি করতে পারেম।

লখী নাগ কৰে বললে, ভাবি ভো প্ৰভিবেটি । চাঁকা বাকলেই বাহাছনি নেবান লোভ হন। আনান কি বলে হন আন নাবা—ওই বে নেৰেট যান সংল ভোনান আলাপ আছে ও নিক্তৰ ওব বাবাকে বলেতে—

७ रमण्ड याद दक्य-प्रेमि नित्क कि-

না-না-ওই বেরেট নিশ্চর বলেছে আমাদের অবস্থা থারাণ, টাকা দিলে আমাদের উপকার হবে---

ৰাক এগৰ অহ্বান ভৰ্ক । এ নিয়ে আলোচনা ভাল লাগছে না। আছো, লখা ভূই বেবতো কাল গাওৱা বি আনতে হতে কি না। মটবের ভাল, সৈহব হুন, নালগা এগৰ আছে তো ?

বৈকালে মিলোচম সেম এলেম। বললেম, সবই কর্মকর, কণালের লেখা। মা হলে হঠাং এমম হবে কেম।

ওঁর বেদ প্রকাশকে বাধার্জ্ঞ করবার ছভ প্রভাত নীরব লবে বইল।

ব্ৰিলোচন সেন বললেন, এই বিপদ না হলে কালই রঙনা হলে বেতে পারতে। এখন নাস্চয়েক হয়তো—

প্রভাত বললে, মাসহবেক নয়—হয়ভো কোন দিনই আপনার দরা এহণ করভে পারব না।

লে কি । কাজ্চী নেবে না ? প্রচণ্ড বিশ্বরে ভিনি ভব লবে বটলেন।

मा। अकां युद् यदा रमाम।

কিছ সংসার---

चामारकरे रहेश कराज हरत बार्ड रकाम मर्च हरन।

কিছ চাকরির সাবাভ আবে—পোষাও তো অনেকণ্ডলি— সব কবা ভাল করে শুহিবে বলতে পারলেন না ভিনি।

সামাত ভাবেই চলবে সংসার, এমন চলছেও ভো অনেক।
মা—মা—, প্রবল প্রতিবাদ করলেন বিলোচন সেন।
আমরা বাকতে ভোমাকে এমন কট করতে দেব মা।
মা, ভিছুতে ময়।

খব বহু হাসিব অভবালে কটিন একট প্রতিজ্ঞা বেন আত্ম-গোপন করে ব্যবহে। বনে হর সামাত প্রতিবাদে তা উড়িয়ে বেওরা বাবে, কিছ বুজির রাশি বিরেও তা চুর করা সভব নয়—এটি অভ্তব করলেন প্রিলোচন সেন। ওঁর বুধ পাংভ হরে গেল। একট দীর্ঘনিখাস বুক ঠেলে বেরিরে এল। হুংবিভ খরে বললেন, বা ভাল বোক কর। ভূমি বুরিবান ছেলে, ভোষার আমি কি বোকাবো বল।

তাঁর রথ গতি বেবে মনে হ'ল—আপাহত হরেছেন। বোরগোড়ার গিয়ে তিনি আবার কিরে এলেন প্রতাতের ভাছে। গলার হয় নাবিরে বললেন, সময় করে বলি পায় তো একবার আমারের বাড়ী বেও। সিপ্রায় মার বুবি কি

# তৃতীয় বিপ্রহপালের নৃতন তাম্রশাসন

ডক্টর শ্রীদীনেশচন্দ্র সরকার

বংগরাধিক কাল পূর্ব্বে ভাগলপুর জেলার উন্তরাঞ্চলিছিত বনপ্রার জলাবতী বিভালরের শিক্ষক শ্রীর্ক্ত বৃহর বা বহাশর রভিকার দিয় হইতে একথানি ভাত্রশাসম্ আবিকার করেন। পাঁচনা বিশ্ববিভালরের শ্রীর্ক্ত বিফুলাল শান্ত্রী বহাশরের নিক্ট হইতে এই আবিকারের সংবাদ ভানিরা আমি ভাত্রলিপিথানি পরীক্ষা করিতে ব্যপ্ত হই। কিছুকাল হইল বনপ্রামবালী শ্রীর্ক্ত ছেদী বা মহাশরের অন্তর্প্রহে আমি ঐ ভাত্রশাসম পরীক্ষা করিতে সমর্থ হইরাছি। মবাবিক্বত ভাত্রলিপিথানি বাংলা ও বিহারের প্রাচীন ইভিহাসের উপর অনেকথানি মুক্তন আলোকপাত করিরাছে। এই লিপি সম্বন্ধে আনার একটি প্রবন্ধ সরকারী এপিঞাকিরা ইভিকা পত্রে প্রকাশিত হইতেছে। এখানে আমি সংক্ষেপে লিপিথানির ঐভিহাসিক বৃল্য বিচার করিতেছি।

ভাত্রশাসমধানি স্প্রসিদ্ধ পালবংশীর নরপতি তৃতীর বিপ্রহপাল কর্তৃক কাঞ্চনপুরে অবস্থিত ভরক্ষাবার হইতে প্রস্থে
ছইয়াছিল এবং শাসনোদ্ধিতে ভূমি তীরভূক্তি অবাং বর্ডমান
ভীরছতে অবস্থিত ছিল। পালরাজগণের ভরক্ষাবারগুলিকে
ভারাদের সাম্বিক রাজ্যানী বলিরা গণ্য করা নাইতে পারে।
এ পর্যন্ত ভাত্রশাসমাধি হইতে নির্নিধিত পাল ভরক্ষাবারের
অভিত্ব অবগত হওয়া গিয়াছিল—পাটলিপুর, র্লাগিরি,
ঘটপর্মান, লাহসগণ, বিলালপুর এবং রামাবতীনগর। কেহ
কেহ হর্বামা নামক অপর একট পালভরক্ষাবারের উল্লেখ
ভারিবিরে ; কিছ উল্লালপুর আহু পাঠনাত্র।
ভূতীর বিপ্রহণালের বর্ডমান বন্ধামলিপি হইতে আমরা
ভাঞ্মণপুর্মামক নৃত্ম পালভরক্ষাবারের বিষর অবগত হইলাম। কাঞ্মপুর বিহারের গলাভীরবর্তা অঞ্চলে অবস্থিত ছিল
বলিরা মনে তর।

বনপ্রায়লিপি হইতে তৃতীর বিপ্রহ্ণালের ঘনৈক অঞাতপূর্বা পুরের নাম আনা বার। বলা হইরাছে বে, উক্ত তাত্রআনবের গৃতক হিলেন রাজার পুর প্রহ্নিভরাজ। এই
প্রহ্নিভরাজকে ভদীর পিভার মন্ত্রীরপেও উল্লেখ করা
হইরাছে। পালবংশীর রাজগণের নামাজে পাল শব্দ বেখিতে
পাওরা বার। কিছ প্রহ্নিভরাজকে কেন প্রহ্নিভ পাল বলা
হর নাই, তাহা নির্ণর করা কঠিন। পালরাজগণের অবিবাহিতা
প্রের্নীরিপের গর্ভজাত পূর্বপ্রের এইরপ নামকরণ হইত কিনা,
ভাহা বিবেচ্য।

বর্ত্তবাদ ভাত্রশাসন তৃতীর বিএহপালের নপ্তরণ রাজ্যবর্ত্তে প্রবন্ত হইরাহিল। এই ভারিবটির অনেকবাদি ঐতিহাসিক অক্লছ ভাত্রে। বাংলার ইভিহাসবিষয়ক অভতন প্রামাণিক প্রস্তু ভাতৃ। বিশ্ববিভালর-প্রকাশিত ইভিহাসে ঐতিহাসিক <u>जैवृक्त बर्द्यमञ्ज मक्ष्यमात महाभव भाष्यामिक ১०८६ विदेशि</u> হইতে ১০৭০ ইটাক পর্যন্ত পদর বংসর ভূতীর বিগ্রহণালের রাজ্যকাল প্রশা করিরাছেন। ইতার কারণ এই বে. ততীর বিএহণালের বাদশ রাভাবর্থে আমগাতী ভাত্রশাসন প্রচত চটবাভিল এবং উচার পরে তিনি কত বংসর রাজত করিবা-ছিলেন, এওটিন ভাচা নিশ্চিত ভানিবার কোন উপার ছিল না। পালবংশীর ভিন তন বিগ্রহণাল নামক নরপভির বব্যে অভতঃ अक क्य क्याम हास्तिन वश्त्रदकान दाक्क क्रियाहित्सम । कादन दाका विश्वन्त्रात्मद यक विश्व दाकावर्द शक्यकामायक (बोइअइइइ अक्नांमि शृधि मक्न क्रां व्हेशाहिन वनिश सामा वाद। अरे विश्वद्यान भानवः वैद श्रवद विश्वद्यान हरेए পাতের হা । ভাতৰ ভিনি মত্য পভাকীর মধাভাবে রাত আর ক্ষেক বংসর রাজত করিয়াছিলেন। কিন্ত ইনি বিভীয় विज्ञवनान कि एछीत विज्ञवनान चित्रपद निक्चनत्व मत्ता बक्रक्ष चार्छ। यदिश विकीय विश्वविभागत काम निर्दिश्वे बाकावार्यत केटबन कवानि भाषका यात मारे. चन मानाक ষ্ক বিংশ বৰ্ষাৰিক দীৰ্ঘ বাজত তাঁহাতেই আবোপ করিরাছেন। গ্রীরুক্ত মুক্তমনারের মতে বিভীয় বিগ্রহণাল আত্রমানিক ৯৬০ बेट्रीय हरेटच ১৮৮ बेट्रीय गर्राच चांडीम बरमहकाल डांचच कदिशाहित्सम्। वर्षमाम वमक्रामनिनि हरेए कामा त्रन त्य. তভীর বিএহপাল অভত: সভর বংগরকাল রাজত করিছা-ছিলেন। প্ৰভাগ বছ বিংশ বৰ্ণাবিক দীৰ্থ ডাকাত উচ্চাতেই আলোপ ভবিতে ভটবে। ছিতীয় বিএচপাল আর করেক বংসর রাজ রাজত করিবাছিলেন।

वम्बामनिशि हरेए कामा बाद (य. छीवकुकि चर्नार देखद বিহার তৃতীয় বিএহপালের সাত্রাব্যের অন্তর্গত হিল। কিছ তাঁহার ও তাঁহার অব্যবহিত পূর্ববর্তী পালরাক্রণবের সহিত विद्यादात अविकास महेका बिशूबीस कम्मुसियर मेह साअवादात ষীৰ্থকাল বিবাদ চলিয়াছিল। একবানি রামায়ণের পুৰিতে (मना बाब (ब. ১०१७ विक्रमार्क चर्वार ১०১৯ ब्रिडीटक তীরভুক্তি কলচুরি গালেরদেবের সামাক্যভুক্ত ছিল। বুসলবান लिक देवहकीत विवतन अञ्चलादा ১००৪ बेडाटक वाताननीटक शास्त्रद्वत व्यक्तिव প্রতিষ্ঠিত दिल। वानाव देखिमरना ১०२७ क्रेडोट्स वादानमी चक्रल शानवरनीय वहीशालत त्ववं शावता বার। উত্তর ও দক্ষিণ বিহারেও মহীপালের ক্তক্তলি লেব चाविष्ठक हरेबारक। शारकरवत शूब कर्ग ( ১०৪১-१১ वैडीक ) ১০৪२ बेडोट्स कानीत निकटी कृतिकान कतिवासित्नम । डाहात ১०१> बेहारचत अक्वामि निभिष्ठ थे चक्रन भाषता গিরাছে। কলচুরিবংশের লেখমালার রাজা কর্ণকে গৌছ-ব্যক্তর বিকেতারূপে উল্লিখিত বেখা যার। বিবিজয়ী কর্ম বে পালনৈত পরাত্ত ভ্রিষা বীরত্ব জেলা পর্যন্ত অঞ্চয় হইবাহিলেন, পাইড়োড লিপিডে ভারার প্রবাণ আহে। এবিডে
ভিন্নভীর প্রন্থ হইডে জানা বার বে, নহীপালের পুত্র নরপাল
ভর্পের আক্রমণ প্রভিরোধ করিতে সর্থ হইরাহিলেন। দক্ষিণ
বিহারে নরপালের একথানি লিপিও পাওরা গিরাছে। স্থাভর নজীর রামচরিও অভ্নারে নরপালের পুত্র তৃতীর বিপ্রহপাল
ভলচ্রিরাজ ভর্পকে পরাজিত ভ্রিষা ভলীর কতা বৌবন-শ্রীর
পানিপ্রহণ ভরিরাহিলেন। ভীরভুক্তিতে তৃতীর বিপ্রহণালের
অবিভার এই উক্তির সর্থক বলিরা বোধ হর। কিছ এই
সমরেও পাল-ভলচ্রি হল্পের অবসান হর মাই। ভারণ কর্পের
পুত্র বলংকর্পকে চন্পারণ্য (উত্তর-বিহারন্থিত চন্পারণ)
বিচারবের হাবি ভ্রিডে দেখা বার।

ভূতীর বিপ্রহণালের বনপ্রাস ভাত্রশাসনের একট উরেধ-বোগ্য বৈশিষ্ট্য ভূষট প্লোকে রচিত একট পরিশিষ্ট। পরিশিষ্টট এইন্সণ:

বোড়াঞ্চারিবিচার কাক্ছ ইতির: সন্ত্রান্ধণানাং হিতি
ডক্ষাত্ গোহণকো বিজোজন গৃহং বিপ্রানপ্র্যানার ।
আন্মানিজহনেতি বত্র বিবনো বোপেবর: বংক্তঃ
ব্যাতজ্ঞল ইতোপি নির্মানবাশ বন্ধীশনাবাজ্ঞঃ ।
বো গোড়াবিপডেরসীযঞ্জ রাজ্যো বিবেরো দিশাং
ভূপানের্ বিধার নৈত্রাস্থলক কর্মটিভাবিতঃ ।
কৃষা শাসনবেতদান্ধহনতঃ কামপাব্যাহিতিং
বিপ্রান্ম চ দীসহাবিতজ্ঞনতাভূদিকৈবাশ্রনর ।

শাসদের মৃলাংশে দেবা বার, রাজা ভূতীর বিঞ্ছপাল **কোলা**ক বা কোভাক দেশ বিনিৰ্গত ইটাহাক বা ইট্ৰোড় গ্ৰাম ৰাভব্য বন্ধ কৰ্মৰা নামক বান্ধৰকে তীৱভজ্জিভিভ ভোৱেছ-विषयाधर्मक वक्षकांवर्ष आयात्र किरम्श्य मान कतिरक्रका। কিছ উনিবিভ পরিশিষ্ট হইতে জানা বার বে, ঐ ভূবি প্রকৃত-পদে বাজাৰ ঘটীৰ নাৰা জনৈত আছৰ তৰ্তাৱী তৰ্তত जरीय कानेत वरेट अपन वरेतादिन । नानमळवीचा जाकन কোলাঞ্চ বেশ হইতে আহিবা তীব্তজ্ঞিতে বাস কৰিতে-ছিলেন। শাননদাতা ত্রার্থ বঠীখেরও একজন পূর্বাপুকুর এরণ কোলাক হইতে আসিরা ভীরভুক্তিবাসী হইরাহিলেন। কোলাকবিনিৰ্গত কাজ: তংগুৰ গোহণক: ভাতার কভা रेडका : जर्मूब निवद : जर्मूब (बार्मधर : जर्मूब कुछ : উছার পুর ছিলেন শাসনদাভা ঘটীশ। এই পরিশিষ্ট হুইছে আই বুবা বার বে, ছানীর ভীরভুজিবাসী আন্দরের কোলাঞ বেশীৰ আত্মণের সহিত ভাঁছাবের চুর-সম্পর্কও সংগারবে প্রচার পরিতেদ এবং ভূবিদানাদি বারা কোলাক ব্রাহ্মণকে আণ্যারিভ कविष्क गुक्ष विरागम। ভীৰভূজিভে কোলাঞ্চ ভান্ধৰের দামাজিক মৰ্যাদার এই আভিশব্যের সভিত বিধিলাদেশে কৌলীত এবং কুলপঞ্জিকা হাবিবাছ প্ৰবাহ উৎপত্তিত বৰিষ্ঠ পৰৰ বহিবাহে, ভাষা স্পষ্টই বুৰা বাব।

ক্ষেত্ৰ বলিবাছেন বে, কৌনীতপ্ৰাৰ কত বাংলা-বেশ বিশিলাৰ নিকট কৰি। বিকলি কত People of India, 1915, p. 215; কৰকাত বিশ্ৰ প্ৰশ্ৰীক History of Maithili Literature, vol. I, pp. 26ff. প্ৰভৃতি কটবা। কিছুকাল পূৰ্কে বিশিলাৰ গলোলী বুল্ঞাৰীৰ আক্ষণেৰ সহিত বাঙালী আক্ষণ-স্বাক্ষেৰ গালুলীৰ অভিন্নতা বিচাৰ প্ৰসদে আবাৰও ইয়া সন্তব বলিবা বনে হইবা-ছিল। এই বণেৰ পৰিবাণ নিৰ্ণৱ কৰা কটিন; কিছ উভৱ বেশে কৌলীতেৰ উংশভি বে একই প্ৰকাৰে বটবাছিল, ভাহাতে সন্দেহ আছে বলিবা বোৰ হৰ না। বাংলাদেশেৰ ক্ষণাঞ্জিকা অভ্যাৱে বাটীৰ ও বাবেক্স আক্ষণণৰে পূৰ্ক-পূক্ষয়ের কোলাকদেশ হইতে আসিবাছিলেন। বন্ঞাৰ লিপিব লাক্য এবং উল্লিখিত কিংবদন্তী মিধিলা ও বাংলাৰ কৌনীতেৰ ব্যৱ একট বোগহজেৰ স্কট কৰে, সন্দেহ নাই। ঠিক এইব্ৰণ অপৰ একট বোগহজেৰ সহান দেব আদিশ্বেৰ কাহিনা।

বাংলাদেশের কুলপঞ্জিকা অনুসারে রাজা আদিশরের আমন্ত্ৰেই কোলাঞ্চ ভ্ৰাক্ষণেতা বাংলাত উপস্থিত ভইতাছিলেন। ছঃবের বিষয়, বিভিন্ন কুলপঞ্জিকার আদিপুরের বে বিবরণ त्वथा बाब, छेवा नर्वाश्य शब्लाव-विद्वायी। ग्राका विध-विकासर-क्षेत्रानिक बारमात हैकिहान, क्षेत्र ४७, गुर्हा, ७६८-६७ सहेवा। अवन कि ता वरमा कामा सामार्थना वारमाव क्षेत्रिक वन, केवाद केटबर क्षेत्रक विकित क्षेत्र ७०३, ७१०, 208, 248, 248, 338, 348, 338 444 333 MICHA WI वना क्रेबारक। अरे किश्वमधीनवृक्ष त्व चाविभूरवय वक्षान পরে লিপিবর হুইরাছিল, ভাহার অপর প্রমাণ এই বে, এটার अकावन-बावन मकासीत शृद्ध वांश्मा ७ विद्याद मकास्यव वावकात क्षक्रिक हिल मा। बाका क्षेत्र, क्षांकीम वाश्लाब পুরবংশের রাজত্বের প্রবাণ পাওরা বার , কিন্তু আদিপুর নারক কোন নৱপতির অভিত বাংলার কোন ঐতিহাসিক উপাদান বারা এ পর্যাত প্রমাণিত হর মাই। আক্ষর্ব্যের বিষয়, পূর্ব্ব-ভারতের এক্ষাত্র ঐভিহাসিক আদিপুরের অভিছ-বিষয়ক প্ৰবাণ বিশিলা হুইছে আবিছত হুইৱাছে।

বৈধিল পণ্ডিত বাচস্পতি বিজ্ঞান ভাষত্তী নামক এছ ৮৯৮ সংবংগৱে হচিত হইৱাছিল। ইহা বিজ্ঞানংবং, পাকাৰ নহে। কাৰণ প্ৰাচীন বিধিলাৰ পাকাৰেৰ ব্যবহাৰ অপ্ৰচলিত ছিল। কাই বাচস্পতি বিশ্লেৰ ভাষকণিকা সংজ্ঞক অপৰ একথানি প্ৰছে আহিপুৰ নামক, প্ৰছকাৰেৰ অনৈক সমসামহিক নৱপতিৰ উল্লেখ বোৰা। বলীয়-সাহিত্য-পৰিষৎ পৰিকা, ৫৭শ ভাগ, পুঠা ৬৮ কাইব্য। এই আহিপুৰ নমন পাতাখীৰ মন্যভাগে পাল-বংশীয় স্ব্ৰাচীগণের সামন্ত্ৰনে বিধিলা ও ভাষিক্টবর্তী বাংলায় কিয়বংশ পালন কৰিতেন বলিয়া প্ৰতীয়বাদ হয়।

# খান্ত উৎপাদনে নৃতন দৃষ্টিভঙ্গী

#### ঞ্জিদেবেন্দ্রনাথ মিত্র

প্ৰত ১৩ই ভিসেত্ত পশ্চিমবন পদীয়লন সমিভিত এক বিশেষ অবিবেশ্যৰ পশ্চিমবল সমজাতের ভংজানীন কৃষি ও বাৰুসচিব ৰাননীৰ এপ্ৰকৃষ্ণতল্প লেন বলেন বে, বলিও কৃষিবিভাগ উন্নভ त्सवित वीक मतवताह, तामाविक मात विख्यन, **धेतक व**त्रत्व কৃষি-বল্লের সরবরাত, বিভিন্ন ছানে মুভন মুভন শভের চাষের প্রবর্তম, পোকামাকড়, রোগের আক্রমণ হইতে প্রবর্ত্তা প্ৰভৃতি কাৰে বতী আছে, তথাপি এই সকল কাৰের বন কৃষি-বিভাগ কোনত্ৰপ কৃতিত দাবি ভৱে না। ভাৱৰ জাঁচাৰ ব্যক্তি-গত অভিয়ত এই বে. এই সকল ব্যবস্থার হারা কেনের ক্রমি-প্রশালীসমূহের স্থায়ী ও ব্যাপক উন্নতিসাধন হইতে পারে না। তিনি ভারও বলেন, দেখের প্রয়োজন জমুবারী কৃষি-বিভাগ কোমকালেই উপযুক্ত পরিষাণ উন্নত শ্রেণীর বীক্ बामाविक नांत श्रष्ट्रिक नत्त्वतां कृतिक भातित्व मा। धैराहत्व-चत्रण किमि धैत्रथं कृत्यम (व. शिक्ष्य वाश्माय वाही-ষ্ট ভিদ কোট বিবাৰ বানের চাব হয়। এই ভিদ কোট বিবা ক্ষিত্ৰ কল ৰোটাবুট ৫০ লক মৰ বীকের সরকার। কিছ কৃষি-विकार्त्य शर्क और शिवान बीक जरबराज करा बार्टिर जनव মহ। সিভিতিতে ভালাহনিত লাভ প্ৰভতিত ভাতৰানাত তে পরিবাণ দার প্রথভ হইবে ভাহাও দেশের প্রবোদনের তুলদার পুৰই কম। এইরপ আরও বহু দুঠাত ভিনি দেন।

किंध नम्जात नमानाम कि-कृषि ७ वाज महिन बहे धन करतम। अरे श्राप्तत केसरत किमि मिरकरे बरमम त्य. अरे नमजात नमानाम कतिएल धरेला क्रयक-मल्लामाराज अवर जन-সাধারণের কৃষির প্রতি অতীতের দৃষ্টভদীর পরিবর্তমসাধ্য অভ্যাবতক এবং সরকারী কৃষিবিভাগ এই দৃষ্টভদীর পরি-वर्षममावानत किर्क् विक्रिक्त बानावान क्रिताह . बह বিষয়ে কৃষিবিভাগের সক্ষতা ক্রমণ: বহিত হইতেছে। তিনি তাঁহার এই উভিন্ন সমর্থনে বলেন বে, কৃষি বিভাগের উৎসাহে ও প্ৰেৰণাৰ কৰেক ছানে সম্বান্ন প্ৰণালীতে কৃষিকাৰ্য্যের धावर्षम ब्रेशार्थ , भन्नी जक्रा पान, क्वन, चावर्षमा, कृति-পানা প্রভৃতির হারা 'ক্যপোষ্ঠ' সার প্রস্তুতের প্রতি কৃষ্ক সম্প্রদারের মনোযোগ বিশেষ ভাবে আরু ই হাছে। কেন্দ্রা ভাছারা প্রভাক ভাবে দেখিরাছেন বে. এইরূপ ক্রপোঠ সার প্ৰয়োগের ফলে বাম এবং অভাত শভের ফলম আশাভীত ভাবে বৃদিপ্ৰাপ্ত হয়। পূৰ্বে শভে ওৰৰ হিটাৰোর প্ৰভি কৃষক সম্প্ৰ-शास्त्र त्य स्वरकात विम काश वहम शतिवाल हुतीकुछ हरे-রাছে। তিনি আরও বলেন বে, বিভিন্ন অঞ্চল স্থানীর জনসাবা-बर्पव चाबाद ७ क्ट्रीव बाब ३००हे (बाई (बाई एक-शवि-

করনা কার্যাকরী হইরাছে। কৃষিবিভাগ কর্তৃক প্রবর্তিত অবিজ-ভর বাছণ্ড উৎপাদন প্রতিযোগিতার প্রতি কৃষক-সন্মানারের উৎসাহ বৃবই বর্তিত হইরাছে। দৃষ্টিভলী পরিবর্তনের এইরূপ আরও অনেক উলাকরণ কৃষি ও বাছ সচিব প্রদান করেন।

সকলেই বীকার করিবেন বে, কৃষির উন্নতিলাধনের এবং অধিকতর পরিমাণে বাভ উৎপাদনের জন্য কেবল কৃষক সম্প্রান্তের নত, অন্যান্য সম্প্রান্তেরও নূভন দৃষ্টিভলীর প্রয়োজন। কৃষিকাজ বে হের মহে, প্রের:—এই ক্বাট এবন সকল সম্প্রান্তেই মর্শ্বে উপলন্ধি করিতে হইবে এবং কৃষি ও খাল্য সচিব বে এই নূভন দৃষ্টিভলী-সাবনকে কৃষিবিভাগের প্রধান কাজ বলিবা গণ্য করিবাছিলেন ইতা ব্বই আখানের ক্বা।

কিছ ন্তন দৃষ্টিভদীর শৃষ্ট করিতে হইলে বে সকল আবোলন ও ব্যবস্থা অবলয়ন করা দরকার তাহার বিশেষ কোন ইদিত এবনও সুলাই ভাবে দেবা বাইতেহে না। এই উদেন্তে বে হুই-একট ব্যবস্থা অবলয়ন করা হইরাহে (বেলব 'কুমি দেনা' গঠন), ভাহা বেশীর ভাগ কাগলে-কলমেই নীমা-বহ হইরা হহিরাহে। ফুমির প্রাবায় ও অক্লম্ব বুবাইবার অব্যাআবারের বেশে প্রাচীন কালে বহু রক্ষরে পূজা-পার্কার অস্কৃতি হইত; অনেক গান, হভা প্রভৃতি প্রচলিত হিল, বাবা উৎসবেরও ব্যবস্থা হিল, এবন সেই সকল পূজা-পার্কার-উৎসব প্রভৃতি প্রায় অন্তহিত হইরাহে; প্রবাদবাক্য, গান, হজা প্রভৃতি প্রস্থৃতির গ্রহরে চলিরা গিরাহে।

ন্তৰ দৃষ্টিভদী আনৱন কবিতে হইলে প্ৰবাৰ কবিসম্পৰ্ণীর নানা উৎসবের আরোজন কবিতে হইবে; গান, ছভা
প্রভৃতির প্রবর্গ কবিতে হইবে; আর একট বিশেষ কবা এই
বে, বিদ্যালয়ের হাজদের নদকে ক্ষিমুখী করিতে পারিলেই
ক্ষির ভবিত্তং উজ্লে হইবে। কাগজে-কল্যের বিভালরের
হাজদিগকে কৃষিমুখী করিবার অনেক ব্যবস্থার কবা শুনি;
কিছ কার্যাজেলে ভাহার বিশেষ কোন পরিচর দেখিতে পাই
না। নৃত্য নাব্যমিক শিকা-পরিষদ উচ্চ ইংরেজী বিভালরশুনির উপর অনেক সর্ভই আরোপ কবিতেহেল বেনন পাকা
পারবানা, পাকা ক্রা, বেলার নাঠ ইত্যাদির ব্যবস্থা, কিছ এই
সক্ল নর্ভের মধ্যে উভানরচনার উল্লেখ নাই। পদ্মী অঞ্চলর
বিভালরসমূহে বেলার নাঠের ভেষন প্রবাহ্ম আহে ব্লিয়া
ননে হর না। বেলার নাঠের পরিবর্গে 'উভান'কে প্রারাভ বেওবাই উচ্চ বলিয়া ননে হর।

পাশ্চান্ত্য দেশসমূহে বিভালরের ছাত্রনের বদকে কৃষিত্রী ক্রিয়ার অনেক ব্যবহাই আহে। অবক্ত দে লব দেশেক

খনেক প্রাচীন উংসব সূপ্ত হুইরা সিরাছে। ক্রিছ ইংলভের বালক-বালিকারা এবনও শন্তকর্ত্তনে ভাচাতের অভিভাবক-বের প্রচর সাহাব্য করে। বড় বড় ছেলেরা ট্রাক্টর চালার এবং বালিকারা নাঠের ক্সীদের বত বাল্য ও ঠাওা চা লইয়া बाद। जाबारम्ड रात्पक बहेद्दश क्षवा क्षत्रिक जारह। देश्नात अहे कार्या वामक-वामिकारम्य प्रेश्नात मिवात कर विषेत्व हा शांत्वत जारबाक्य हर बन्द जरक जरक वक उक्तवत খাৰোৰ-প্ৰযোগ, ভাষাৰা প্ৰভৃতি অনুষ্ঠিত হয়। ক্ষকেরা একজিত চইরা বৃচং ভোক্তেরও ব্যবসা করে। बाद्यत बार्ड श्वाय किएकडे विनाद चारबाक्य हव । वार्ड ছোট বালকদের ৰভ বেভি ও ৰভাত বেলাগুলার ব্যবস্থা বাকে, এবং প্রচর পরিমাণে আইসজীয় ও লেমোমেড সরবরাত कवा क्या। भरत विकासरक हारबत बावका बारक अवर अरे नमस्य बादबाबीया विशामक्षेत्र क्रमदस्य मुन्दिक क्रिया তোলে। এই রক্ষ হালি, কৌভুক, আবোদ, চীংকার বিদ্যা-नर्द चांद क्षेत्र (एवं। यांद्र मा । विकानर्द्ध प्रदेशांद्र है पर्द শভের মালা বোলামো থাকে, শভের বীষ, লভা পাভা, কুল প্ৰভৃতি বারা সম্পূর্ণ বিদ্যালমপুত্ট সুশোভিত করা হয়। विशानत्वत्र ज्ञाक तार्ष, एक श्रेष्ठीव श्राम हिवित्वत

উপৰ নানাবিধ থাভত্ৰত্য প্ৰচুৱ পৰিবাৰে বাথা হয়। চারি-হিকেই আপেল, পিৰাৰ, প্লাৰ প্ৰভৃতিৱ বৃতি হেবিতে পাওৱা বাৰ। ক্ষমকৰেৰ পত্নীও কভাগণ ছেলেবের বে বাহা চাহে থাইতে দেন। ইছার পরেও আবার থেলাবুলা, গানের আবো-ক্ষমও থাকে; বাহুকর নানাবিধ থেলা বেথাত, এই সমন্তই "Harvest Home" (বাছীতে শভ আমন্তম উৎসবের) সর্বা-পেকা অধিক ইয়াননা। শভক্তনের গান (Harvest hymn) গাওৱা হয়; এই গান্টির প্রথম চার গংক্তি ছইতেছে—

We have ploughed, we have sowed,
We have reaped, we have mowed,
We have brought home every load,
Hip, hip, hip, Harvest Home!

আমাদের দেশের প্রধান বাজপান্ত কর্তনের সময় পানী
অঞ্চল এইরপ অসুঠানের ব্যবস্থা করা বুবই বাজনীর এবং
এই উপলক্ষে বিভালরের দুরজা জানালা বন্ধ বাজিবে
না, শিক্ষপণত অসুপছিত বাজিবেন না; হার্লেরে সহিত
মিলিভ হইরা 'হার্ভেট হোম'-এর অসুঠান করিতে হইবে।
এই উপলক্ষে বিভালরগৃত্তে কৃষ্ণিসপ্রকীর লিনেনা, নাটকা
প্রভৃতির অভিমন্ত হুইতে পারে।

# वौत्र मन्त्रामौ विदवकानम्

#### জীনীলরতন দাশ

ভারভগগনে বুগগঞ্চিত নিবিভ ভিনির নানি?
ভাতরগন ভোনার উদর, হে ভক্নণ সন্নানী !
পূর্ব্ধ-ভোরণে শহাহরণ ভলা বাজালে ববৈ—
ভন্তা-জলন মেত্র বেলিরা চম্কি? চাহিল সবে।
কল্প আবাতে সুপ্ত জাতিকে জাগানে দৃপ্ত ভেজে,
দব চেতবার স্পল্পক্ষনি বক্ষে উটল বেজে।

লখুবে ছেরি' কোট কোট দীন দরিক নারারণ পতিতপাবন বচ্ছের ভূষি করেছিলে আরোজন। ছূর্বভাবের রুক্তির ভারে খেলে দিলে হোরানল, দীক্তি ছলো লেবার মন্ত্রে নুভন ক্ষিন্তন। 'ঝীবে থেন করে' বে জন জগতে লেই ভাজে ক্ষর— এ বাদী আত্মভালা এ জাতির প্রশিক অভব। বেদ বেদাছ উপনিষদের গড়ীর বর্দ্মবানী
তব সাবনার প্রাচ্য-প্রতীচে হ'বে পেল জানাজানি।
বর্দ্মের সাথে কর্দ্মবোগের সাবিরা সমবর
ভারতাদ্মার শাখত খানী খোবিলে জগংনর।
ভিগারীর বেশে বিশ্ববিজয় করিয়া প্রতিভাবলে
কিরিলে বংদশে ভূমি রাজবেশে বিজয়বাল্য গলে।

তৰোত্তৰ তথা যুত্ৰে মুদ্ধে অয়ত স্ট লাগি'
শক্তিনাৰদা শিবালে স্বাবে, হে নবীন বৈয়াই !
নব্য বুৰ্নের মহাভারতের ভূমি যে স্বানাচী,
তব আন্ধানে দ্বৈন্য ভাজিয়া নাতিয়া উঠিল প্রাচী।
তগবানু রামস্ক্রের কৃতী শিক্ত বোগ্যতম——
ভাব-লগতের বিপ্রবী বীর সন্থানী নবোন্য !

#### অসুধীরকুমার সেন

ক্ষেক্ষিন বাবে মন্তা মন্দ হচ্ছে মা। অবিনাশ পৰ চলভে চলভে হঠাং প্ৰকে দাঁড়ায়, ভাল করে হ'হাত বিয়ে চোধ রগভায়, ভার পর চৃষ্টিকে ব্যাসভব বিভ্ত করে ব্যাস্থ্য মন্দ্র আরু ভাকিয়ে দেখে। পথের অপর পারে দেখাল-সংলগ্ন প্র্যাসার্ভের ছোট ছোট লেখাগুলো কঠ করে পড়ে। কথ্যও বা নিজের গলার কাছে, গালের উপরে চিষ্টি কাটে, যুল্লপায় দেহ আকৃষ্ণিত হতে পাকে ভবু ছাভে না, ভার পর আবার পথ চলে।

করেক দিন বরে অবিনাশের মধের মাবে একটা অরুত সন্দেহ থেকে থেকে জেগে উঠছে। নাবে মাবে ভার মনে হচ্ছে বেন লে জেগে নেই—বেন এক ভর অরুকার রাজে ঘূমিরে সে স্থা দেখছে, ভার চোথের সামনে দিনের পর রাভ, রাভের পর দিন এসে এসে সরে যাছে, আর ভারি সলে কভকওলো আশাভীত অসভাবিত আক্সিক্তা। বোব হর এ তথু একটা রাভেরই স্থা।

পথের ওপর গাঁছিরে অবিনাশ চোব বিক্ষারিত করে এদিক ওদিক তাকার। চেনা বাছ্রবগুলোর মুবের দিকে বারবার তাকিরে বেবে, চেনা ভারগার সামনে এসে অভ্যন্ত মনোবোগের সদে বিশেষগুওলোকে লক্ষ্য করবার চেঠা করে—বেওলো অনেকবার দেবে থেবে তার প্রার মুবহু হরে গেছে। করেকবার নে বালতীকে বলেছে, 'দেব, মাবে-মাবে আমার মনে একটা অভ্যুত্ত সন্দেহ ভাগছে। কর্ণমণ্ড কর্ণমণ্ড মনে হর কি জানো? বনে হর বে, আমি বেন গুমিরে গুমিরে এই সব স্থপ্ন দেবি—বেন সবই বিবের।'

প্রত্যেক বারই মালতীর ঠোটের কোণে দীণ হালির রেখা দুটে উঠে জাবার মিলিরে গেছে। হাাঁ, অবিনাশ স্থাই লক্ষ্য করেছে সেই হালি। শাঃ, মালতীর কাছে এই কথা বলতে গিরে লে মেহাত বোকাই বমেছে !

ব্যাপারটা কিছ সভ্যিই অভুভ ! বিনের পর বিন কেটে বাছে, রাভের পর রাভ, ভবু অবিনাপের বন থেকে সংলংহের খোর কাটল না, অবচ ভারই খাল ভার কভ না অক্লান্ত চেটা! পাকেট থেকে বুঠো বুঠো টাকা ভূলে নিরে বিহানার উপর রেখেরে, একটা একটা করে অনুনরে, আবার সাক্রিরেরে, আবার অনেহে। নিস্কুকের একপাপে ভুনীকৃত নোট—বরে বরে লাকান। নোটগুলো গোনা ভার রোজকার কাছ। ভার গোনা শেব হলে বালভীকে বিরে গোনার হিলাবে কোন গরনিল বরা পকে কিনা ভাই পরব করতে। নাঃ, বর কথনই বয়। ভাহতে হুবহু এবন ভাবে কথনই বিলে বেভ না.

বাভী থেকে বেরিরেই রাজেন করালের সঞ্চে দেখা। হেলেবেলার বন্ধু—একসনে কম পক্ষে সাত-আট বছর স্থূনে পভেছে, থেলেছে, বেভিরেছে। রাজেন বললে, 'প্রার হ'বুর্গ পরে দেখা, চিমতে পারিস ?'

চেনবার বত রাজেনের শরীরে কিছু নেই, তার বর্ত্তরান বেন
নিঠ্র তাবে অতীতকে নির্বাগন দিবেছে। সেই কাঁচা সোমার
বত রং, নবর দেহ, হাঁটলে বনে হ'ত বেন নেচে নেচে চলছে—
আজকের এই রাজেনকে দেখলে কার মনে পড়বে ছেলেবেলার
সেই রাজেন করালের করা! মরলা কাণড়, জারাটা ছিঁডে
নীচের দিকে নেমেছে, দাভি বোব হর সাত-আট দিন
কামানো হরনি, বগলে এক ভাড়া নবিপত্র—হরম্য অটালিকা
হত্তরী হলে বে রকন হর ঠিক তারই মত তার অবহা!
তবু চিমল তাকে অবিনাশ, বললে, প্রায় কুভি বছর পরে, ইস,
কি হরে পেছিস তুই, কোণার আছিল ভাই ?'

'এই বে, এই বাড়ীটার। শীচের ভলার ছ্ণানা বর, ভাই ভাড়া নিবে আছি।'

অবিনাশ বিমিত ভাবে বললে, 'কবে এলি, কৈ জানি না ত। এই গলিয়ই ও-নাৰায় আৰি বাকি, ওই বে লাল বাজীবানা—'

রাজেনের চক্ বেন কেটে বেরিরে আসতে সাগল, 'ভা হলে তুই-ই সেই অবিনাশ চক্রবর্তী ৷ ওই বাড়ীভে থাকিস তুই ৷ লটারিভে শকাশ হাজার টাকা ভা হলে তুই-ই—'

অবিনাশ সন্ধিই লৃষ্টিতে একবার চাব দিক দেখে নিয়ে বলে, 'হাঁ৷ ভাই, আহিই সেই অবিনাশ চক্রবর্তী—'

ভার পর ভাকে বেদ অভয়নত করবার জভ বলে, 'সেই ছেলেবেলার বদে আছে ভ, এক দিন কি বলেছিলুন—'

রাজেন খরণ করবার চেঠা করতে করতে বললে, 'ইয়া ইয়া, পড়তে বটে রনে, বল্ ভ—কি বল্ ভ—'

অবিনাশ তেনে বলতে লাগল, 'নেই বে বলত্ব, বড় হয়ে বহি বুব বছৰাত্ব হতে পাৱতাৰ, বু-উ-ব----'

রাজেন উরালে বললে, 'হাঁ। ই্যা, পড়ছে বটে যমে, বলভিদ সভ্যি ছুই। কিন্ত হাঁা, মিলে গেছে ঠিক অক্ষরে অক্ষরে— পঞ্চাশ হাজার। আছো এখন যাই ভাই, বেলা হয়ে গেল, আবার খেরেই কোট্যুখো—'

বারিক্রোর এক বীভংগ বৃষ্টি চোপের সারনে থেকে গরে পেল। বৰে চলেছে। নাৰবান দিৰে ছুটেছে টান, বাস, নোট্র। অবিনাপ একটা একটা করে নাত্র গোনে, ভার পর হঠাৎ বেই হারিবে বার। তথন গাড়ীর নহর বুবছ করতে আরম্ভ করে। প্র্যাকার্ডখনোও পদতে ভোলে না।

পরসূত্রেই হঠাং সে অভ্যনত হরে বার। কি বেব ভাববিল, কি বেন নদের বব্য থেকে হারিরে গেল, কিছুভেই আর ভার উদ্দেশ পার না।

খগ্ন ও সভ্যেয় নাবে এই বে অসংলগ্ন মৃত্তিগুলো—এরা বেন বেডালে পা কেলে চলছে। চেডনা বুবি দিগ্লাই হয়ে গেছে।

चबु व्यविवान हरन आहि त्वरे, क्रांड त्वरे।

লালবান্ধারের পথে মিশাপভির সকে দেখা। লোকটা কুটপাথের এক পাশে সবত্বে সন্ধিত ক্তকগুলো লটারির টকিটের বাবে কি বেন হাতভাছে। মিশাপতি তা হলে আকও হাতে নি। এখনও আশা আছে।

অবিনাশকে দেখে নিশাপতি চট করে উঠে ইাড়াল।
বললে, 'কেমন, বলিনি অবিনাশবারু, লাগবে, একদিন না এক
দিন লাগবেই—বাবে কোণা গ'

আপিস বেকে হেঁটে বাড়ী কেরে নিশাপতি, ট্রানের ভাড়া আর কলথাবারের পরসা বাঁচার। সেই টাকা দিরে ক্ষমাগত নালের পর বাস, বহরের পর বছর লটারির টকিট কিনে চলেছে—আশা এক দিন না এক দিন বরাত বুলবেই। মার্বে নাবে পথের পালে গণকের ভাছে হাত বেধার—সাধু-সন্ন্যাসী পোলে ভাবের পেছনে লেগে থাকে। কে ভানে, কবে কোন্ ভত বৃহুর্তে অন্তই কিরবে।

নিশাপতি উঠে বাঁড়াল। হাতে বানকতক সন্থ কেনা ইকিট।
বুক্-পকেটের হেঁড়া ভারগা দিরে কডকগুলো ইকিটের
কোব বেবা বাছে। লোকটাকে সভাই নেশার
পেরেছে।

নিশাপতি অবিদাশকে হাত বরে টেনে নিবে চলল, 'আহুব অবিদাশবাৰু, এক কাপ চা বেরে বান, অনেক বিন পরে বেবা—'

চারের বোড়াবের ছোকরাকে হু° ডাপ চা দিতে বলে অবিনাশের ড়াবের ডাহে রুব এনে নিশাশ্ভি কিন কিন ডরে বললে, 'এবার বোব হুর টেলিএার আসবে।'

অবিবাশ চোৰ কপালে ছলে বলল, 'কিলের ?' বিশাপতি বৃচকি কেলে বলল, 'শেবেছি।'

অবিনাশের বিক্ষায়িত চোর্থ নামল মা। নিশাপতি কি পাগল হবে গেল। 'কি বলহেন আগনি গ'

চাৰের কাশে আর একটা চ্যুক দিরে নিশাপতি ব্যাপারটা পুলে মললৈ। কাল রাজে লে মধা দেখেছে, লেক জেফার্লে ভার বছর উঠেছে। একটা-দা-একটা এবার সাগবেই---ছর এবর, বর বিভীর, বিবেদশকে ভতীর।

ও বেদ এক বর্গচারী, অবাতবের পথে চলতে চলতে এবদই হরেছে বে বর্গ থেকে আফ আর সে সভ্যকে পূর্বক ভচ্ছে চিনতে পারে লা।

चिमान है। १७० ।...

কিছ কোৰাছই বা বাবে ? এই ছনিরা ভরাই ভ স্বগ্নচারীর হল ! এই ভ লে নিজেই করেজ দিন ধরে বেন এক স্বপ্ন রাজ্যে স্থারে বেডাছে ! ভারপর বেচিন ছিঁডবে এই স্বধের জাল---

ক্রতগতে বাড়ীর দিকে কিরল অবিনাশ। ট্রাম একটা বাচ্ছিল, লাকিরে উঠল।-

ট্রাম ছুটেছে। বাজীর পর বাজী, গাভির পর গাভি, ক্ষতা আলো—

কামালা দিয়ে বাইরের পালে চেরে বাকে অবিমাশ, এই বস্তর অরণ্যে কোবার মধ্যের অবকাশ ?

क्षेत्र प्रतिष्क, (क्षेत्र नारव, (क्षेत्र क्षेत्र)।

बरे—बरे च जिरे नित, बदरे त्यर मानाव चाद नाजी।

লাক দিবে নামল অবিনাশ। আর, ভারপর এমন ভাবে ইটিতে লাগল বেন একটা মুহুর্ত্তের এদিক ও্লিক হওয়ার উপরে ভার জীবন-মরণ নির্ভর করছে। বাজীর নামনে পৌতেই দরকার বাকার সলে ভুমুল চিংকার—'বালভী বালভী—'

पदका बूटन बाद ।

ৰালভীৱ চোধে মুখে বিশ্বৰ—কিন্ত ভাৱ দিকে লক্ষ্য করবার অবকাশ অবিমাশের মেই। লাকাভে লাকাভে হ'ভিন সি চি পার হরে লে উঠল দোভলার। চাবি, চাবি কোধার পেল ? বালভী বালভী—

নাঃ বাদ, বরকার নেই, চাবি লে পেরেছে। মুমুর্ছে অবিনাশ বরের কোবে গিয়ে গিলুক্টা বুলে কেলল।

টাকা—টাকা—টাকা ! ভাড়ার ভাড়ার নোট বাঁধা। এক হুই ভিদ—

नाः प्रेक्र चाट्य। विशा नत्कर।

নিদাকুৰ অবসাৰে ৰাট্য উপত্ন বলে পড়ে অবিদাৰ্শ ইাপাতে লাগল।

বিকেল থেকে করবার রাজেন এসে অবিনাশের বাড়ীকে ' কড়া নেড়ে কিরে গেছে। রাজে গথে বেখা।

হাজেন টাকা চায়। একটা নয় হটো নয়, এক হাজায়।
আদিনের বাইনে থেকে নালে নালে শোধ করবে। টাকাভলো বেরে কোর কলি বন্দ করে নি । ঐ ভ চেহারা, কোর
না হয় বহরধানেক, কি মু'বহর, ভার পর ভ চন্দু উন্টাবে,

হাঁকা শোৰ কৰবে কে ? ছেলেবেলার বন্ধুছের বাবিতে অবিনাশকে কছর করতে চার।

হাা, ৰাজ্য ৰটে নিৰাণভিঃ বলে, 'আগনার জাহে আসি, ছ'বও বসি, ভা বলে বৰে জয়বেন না ৰে কোন্ দিন বুবি ঘণটা টাকা বায় চেয়ে বসব। কব্ধনও নয়—হামঃ! আয় আয়ায়ও ভ এল বলে। কে জাবে আৰু হাছে টেলিএান হতে শিহন-মহাপ্ৰভূ উৰ্য হব নাকি। এই বেশ্ন বা—

বিশ্বা লটাবির টিকিট ।—শৃত বনিব্যাগটার বব্যে
বিশাপতি নেটাকে লক্ষ টাকার সরকারী কাগজের বত সবছে
বেবে বিরেছে। কে ভাবে, কোন্ মুন্তর্ভ টেলিগ্রার এনে
উপস্থিত হয়।

হাা, এমন বন্ধ পাওরাই ভ সুধ, এভটুকু নীচভা নেই ! লেও ভ অবিনাশের সলে এক জলেকে পড়েছে, বছ হয়ে একসলে লটারির টকিট কিমেতে, হেঁডা কাপতে হির জানা গায়ে রাভার রাভার মুরেছে, ভাঙা কাপে চা বেরেছে। স্বহুংবের বন্ধ নিশাপভি ! কিছ কি উদার ! বুধ ক্টে কবনও মুংবের কবা বলে নি, কবনও অবিনাশের কাছে একটা টাকা বার চার নি ৷ অচল, অটল ভাবে বালি টেলিঞাবের প্রতীকা করছে—ভারও একদিন আসবে ।

অপেকা করার সময় হিল না নিশাপভিত্য—কোণাকার এক লটারিত্র কল নাকি বেরিরেছে, যাট হাজার টাকা কাঠ প্রাইজ, কে জানে, দেরি হলে হয়ত আর টকিট পাওরা বাবে না। ছুটল নিশাপভি। সময় পেলে যাত্রে দেখা করবে।

বাবে নিশাপতি আসে নি, এসেহে আবার রাজেন করান।
ত্রীর অপুণ, বরবর—ডাক্টার আনে এবন প্রসাপরে নেই।
হেলেবেলার বন্ধু রাজেন করাল, আজ অবিনাপ না বেশলে
ক্যে তাকে বেশবে ? বলি লে বেঁচে পাকে, আর কোন
রক্ষে বলি, চাকরিটা বকার পাকে, তা হলে বে-ক্রেই
হোক নে তার কেনা পোন করবে। বন্ধুত্বের অপনান নে জীবন
বাক্তে করতে পারবে না।

হঠাৎ অবিনালের নাবার বৃদ্ধি বেলে যার। দিব কেটে বলে, সব টাকা ভ ভাই ব্যাহে কিল্প ভিপোজিটে রেবে বিভেছি, কি করব বল, পাঁচ বছর না হলে ভ—

'কিলড় ডিপোকিট।' বাজেনের কঠবর যেন আর্ড চীংকারের যক লোনাল, বুবি ভার চোবের সামনে সম্ভ ছবিরা অবকার হবে পেল।

হুনিবা অবভাবই বটে । বিহানার ভবে ভবে অবিবাশ এই জ্বাই ভাবে। বাছবের জীবন । বুলি এ অবভাৱ বাত্তির অবই ভব্ । ভোবাও নিল নেই, হল নেই, সামঞ্চ নেই । ভব্ জভকতলো প্রশার-বিভিন্ন বইনার আবর্তন বাত্ত। ব্যৱহ সধ্যে বুটবুট শক্ত হচ্ছে। ইছিছ হচ্চেও হচ্ছে পাছত—ভিত্ত ইছিছ সহ, অধিনাশ দিখিয় ক্ষেত্ৰ বন্ধত পাছে।

নিঃশব্দে বালিশের জলা বেকে ইউটা বের করে অবিদাশ আলার, বরের বেষের, কোণে, হয়লা ও লিক্কটার উপরে ব্রিরে ব্রিরে আলো কেলে। একটা বেকাল কানালার বিকে সুটে পেল।

ভোর থেকেই গরকার ভাকাভাকি—চারের কাপটাও শেষ করতে পারে নি।

'আগনি ভ এখন অভ্যন্ত ব্যন্ত বাহুৰ, পাছে বেরিছে বান ভাই ভোর হতে না হতেই এনে পছেছি। এই দেবুন আনাদের প্রশোক্তান, নতুন হলে কি হন, পুরোনোয় বাবা। ভবু হভুমিনল বাবামিরারই রয়েছে হ' লাব টাকা কিল্লন্ত ভিপোকিট। ভনেছেন ভ এন, কি. ভোনের নান ? রভ বভালাক—লাব লাব টাকার নালিক—মুদ্রের বাভারেছ টাকা ভ। ব্যাহ বোলার দিন হরণা বোলার ভর সর না, বাবারিয়ার রোলদ, আর ভোল সাহেবের ক্যাভিলাক এনে হাজির, কার টাকা আগে কার হবে। বন্দ ভ মণাই, শবি আর ললী কাকে রেবে কাকে চটাই, নতুন ব্যাহ আনাদেছ।

अविनाम नाथा इनकाट्ड इनकाटड यनता, 'छारे छ !

লোকটার উৎসাহ আরও বেকে গেল, বললে, 'কিছ ভা বললে ভ হবে না, ভটল সমভা নলার, কিছ হরে পেল এক নিনিটে মীনাংলা! একেই বলে ব্যাক-ম্যানেভায়ের নাবা। টিক হ'ল বাবারিয়া আর ভোলসাহেব, হ'জনেরই নাব প্রথম ভিগোজিটর হিসেবে রাজেটে বাক্যে—-হ'লাব হ'লাব চার লাব।'

অবিনাশ অসহিফু হয়ে বললে, 'কিছ আবার চাঁড়া—'

মুখের কথা সুকে নিরে লোকটা বললে, 'আর কোথার রাধ্যেম বসুন ৮ পুস্কি নেশভাল ব্যাকের রভ এভ 'নেক' অবচ 'এবম হাই ইণ্টারেট' আর কোথার পাওরা বাবে ৮'

লোকটাকে বিষায় বা করলেই বয়। অবিধাশ ক্ষেত্রয় থেকে উঠে ইাছিয়ে বললে, আছে। 'আগনাবের প্রশোষ্ঠালধারা য়েথে বান, সময়মত পতে দেখব।'

'নিশ্চ হই,' বলে লোকটা প্রস্পেটান সবেত বিভাগানেক কানকণত অবিনাশের বিকে এনিরে বিলে। 'বেগবেদ পক্তে সময়হত। পক্তনেই বুখবেন বে, গভরেজের নিজ্ত, আর ব্যবনারে নরী—ছুটো কল এক সলে পেতে হলে ছুখ্ডি দেশভাল ব্যাক এক এবং অবিভীয়। আহ্বা, বনে যাগবেদ।'

नवकाव करब लाक्ष्री विशव निरम ।

তৰু সন্দেহ বার বা। সবে হব, এক বিব সচীরির টকিট কেবার পর বে রাজি এসেছিল, তা আর প্রভাত হুর বি। ছঃৰব্যের শেষ আছে, স্থবপ্তের শেষ নেই। কড বিচিত্র অভুভূতির বধ্য দিয়ে এই মহারাজিয় বগ্নতক কবে হবে কে কালে?

নিশাপতি আপিনে বাবার পথে বরজার তাক বিরে জানিরে বার বে, টেলিঞার এবনও আনে নি। বলে, 'কালরাজে বপ্প বেবলান, টাকাটা পেরে পেরি, সাডে বিরায়িশ হাজার। হার, হার, স্থাবের বর্গ কি চট করেই না তেলে বার।'

অবিবাৰ্ণের বেলারই কি ৩বু ব্যতিক্ষর।

ভবু, এ কি এক অবভিকর অবহা। বর্গ বেবানে বাভবের
নকে একাজার হারে বিশেহে, অববা বাভবকে যবন বর্গ
বেকে পূবক করে চেনবার উপার নেই, সেই অবভিকর
অবহার বব্যে মাহুষ কত বিন বাঁচতে পারে ? লারিজ্যের মধ্যে
আলৈশব লালিত অবিনাশ জীবনের কেলে আনা বিনগুলো
হিল বর্গুরীন, চলার পব হিল রুক্, অবহুব, বাভবের ধূলিধূরতি। আল লটারির টকিটে টাকা পাওরার সলে সলে
এ কোন্ ছেবহুনি বর্গ এলে ভার চোবে আর বনে বাগা
বীবল। না, বর্গ সভ্য, গৌভাগ্য বিধ্যা; বর্গতকে আবার বে
অবিনাশ, সেই অবিনাশ।

বাজেন করালের সকে ভোরবেলার চারের ঘোকানে বেবা হভেই রাজেন গোড়ারই বললে, 'কিছু মনে করিল নি ভাই অবিনাল, লেখিন ননের ছর্মাল বৃহুর্ছে টাড়া চেরে কেলে-ছিলান। ভার পর ভেবে দেবলান, ভূই-ই বা খিবি ভোবেন্দে, বিবিই বা কেন ? ভূইও ত আজীবন হংবের সকে লড়াই করে ভারবানের ইচ্ছের লভ সুবের বুব দেবেছিল। না, টাড়া ভোর ভাবে সভাই বার চাই না।

অবিবাশ ৰাক্শজিতীন বিষ্চের বভ চাথের কাণট। রাকেবের দিকে এবিধে দিরে আর এক কাণ চা চেরে নিলে।

রাজেন চারে চুর্ক বিরে বললে, 'সেবিন ভোর কারে
টাকা চাওয়ার পর নিজের বনেই অভ্যন্ত লক্ষা হতে লাগল।
কিছ যে অবস্থার নব্যে চেয়েছি ভা না দেখলে ভোরও বিশ্বান
হবে না।' ভার পর অবিনালের কালের কাছে মুখ এগিরে
গলা নামিরে বলে, 'বউরের ট-নি। পাঁচটি ছেলেবেরে ভাই,
সরক্ষলোই বলভে গেলে হবের নিভ। বেশভানো করার
এক্ষাত্র লোক হচ্ছে আবার বিববা বোন্—কিছ ভার বা
ভেলারা, বেশলে বাস্থ্য বলে কিছুভেই মনে হবে না। কি
বলব ভাই ভোকে, সমভ নিমটা বেন স্থের মন্য দিরে কেটে
বাচ্ছে,—বোর হুংবর।' ভার পর চারের ফাপটা টেবিলের
উপরে সশব্দে নামিরে রেশে বলে, 'ওঃ। ভগবান বদি ভাই

।' বাবেদ বিবার দের। 'অবিনাশ আবার পথ চলে। ভঞাত্ প্রভাত। আকাশ হেরে কি কুমানা বেবেছে।···

শহরের পুন তবনও তাল করে তালে নি। হাতীবাগানের বাজারের পাশ দিবে বাবার সময় নজরে পড়ে সারি সারি মুন্ত বাত্রের হল, কঠোর প্রমের পর উালের মুবে কি গতীর প্রশাতি। কাতেই টাবের মজুর, সমত রাত জেগে সাইন বেরামত করেছে।

অবিনাশ হঠাং ধনকে ইাভাল। এক জন মুনের বব্যে ভান হাভবানা নাড্ছে, মুবের উপর একটা স্থিত হালি সুটে উঠেছে। বোৰ হয় সে ভোন ববুর মগ্প দেবছে, বাজবের সলে বার সম্পর্ক দেই। অবিনাশও হয়ত ওয়ই নত মুনিয়ে মুনিয়া মুনিয়া

রাভে বুব নেই, অবিনাশ অভকারে বারান্ধার বুরে বেডার। কবনও হাবে, আবার কিরে আনে বারান্ধার, বরে। বাবে মাবে এনে বিছানার শোর, সিগারেট বরাবার অছিলার দেশলাই আলিরে রালভীকে দেখে নের। আঃ কি অনারাল নিরা! মনে পড়ে বার, অবিনাশও এক বিন এবনি ভাবে বুরাতে পারত—পভীর শাভিদারিনী নিরা। সমন্ত দিন দারি-ব্রোর সকে লড়াই, টাকার চিন্তা, আলিলের হাড়ভাঙা বাটুনি, সন্থার বাড়ী কিরে ভাত থেলেই চোব তেওে বুর আগত। চুলে চুলে অভি কঠে বেরের পড়া বলে দিত, বুনের বোঁকে অনেক বিন ভুনও বলে দিরেছে। ভার পর কোন রক্ষেবিছানার গা ঢালতে পারনেই সকে সকে বুনে বেছঁশ হরে পড়ত।

बरम शरफ, अक पिम क्षांत्र किरब कांत्र अरमहिल, बालकी দেদিৰ অনেক ঠেলাঠেলি করেও অবিনাশের হুব ভাঙাভে পারে নি। সুর বর্থন ভাঙল ভর্থন চোর নিচের কর্মা বুলে পালিয়ে গেছে। গেদিন নিজায় ছেম ছিল না, স্বপ্ন ছিল না, জীবনের ক্রন্স পৰে সন্দেহের কোনও অবকাশ ছিল না। মনে পড়ে, এক্ষিম সে এক্ধানা লটাহিব ট্টক্টিও কিনেছিল। ৰদে আছে, দেই টকিট নিৰে বালভীৱ সলে সেবিন বাজে ভার বে ভুমুল বগড়া হয়েছিল, ভার পরিণভিতে যালভী রাছে ভাত বার নি। সে কাহিনী বেলনার সিক্ত বাতব। কিছ चात्र नहरे अन अवन अक दिन, वारक रन प्रदिन ना इकिन वनत्व (करव क्रिक क्रवास्त्र भारत मा। इन्द्रत, 'व्यविमानकत्व ठक्कवर्षी' बरे गाव अक्यामा (हेनिआव अन । वानकी (हेनि-গ্ৰাষ খোলে নি, সমুখ দিন এক অনিৰ্বিষ্ট আনহায় কেঁপেছিল ७१। बाद्य विवास वाजी किर्त किन्यान बुनन। जान টিকিটের নখর উঠেছে। সভিা, না খপ্প। কে ভাবে সেধিন বেকেই বর্ণের প্রদা হয়েছিল নাজি! ভার পর আর এক বিদ বৰৰ এল ভাৱ বোড়া কাই' হবেছে। চেক এল প্ৰাণ্ बाबाव केम्पा। ७६ चावबा अक्का पुष्टित वक वरन गर्छ।

হেলেবেলার রিপ্ত্যান উচলের পর পড়েছিল অবিনাশ— লোকটা এক হুরে নাকি কুভি বছর কাটরেছিল। কে ভানে, লে নিজেও লেই রক্তর হুরেই কাটাকের নাকি।

বিহানা থেকে উঠল অবিনাপ, বারাকার এলে ইংছাল।
আকাপে কালো বেব এলে সরস্ক তারা হৈবে কেলেছে।
বাডীটার অভকার প্রথম করছে। এই অভকারে ইংভিবে
অবিনাপের একটা ক্থা মনে এল। আফ সকালেই রাজ্যে
ভাকে বলহিল, সমস্ত দিনটা বেন একটা হংবরের মধ্য দিরে
কেটে বার। কে কানে, বে টাকা আরু ভাকে বর্গচারী
ক্রেছে, সেই টাকা হয়ত রাজেনের হংবরের বোর কাটরে
দিতে পারে।

ৰীবে বীবে ঘবের মধ্যে এল অবিমাপ, পা টপে টপে এলে সিলুকের সামদে ইছোল। ভার পর কোমর বেকে চাবিটা বের করে সিলুক বুলে কেলল। চাবি ঘোরাঘোর শব্দে মালতীর বুবি একবার ঘুম ভেঙে সিরেছিল, 'বাঃ বাঃ' শব্দ করে কল্লিভ ইছুর ভাছিবে লে আবার পাশ ফিরে ভল।

নোটগুলো ভেষনি সাঞ্চানো আছে, গৱে গৱে। অবিনাশ সেগুলো হ'হাভে তুলে নিবে পকেটে পুরতে লাগল। তার পর সে ঘর গেকে বারাক্ষার এল, বারাক্ষা গেকে সিঁভি বিরে নীচে নামল, দরকা বুলে রাভার বেরিছে পড়ল। গলির অভ প্রান্তে রাজ্য করাজ্য বাভি।

ৰাণাৰ ৰাভাগ দিৰে মীকে একটু খুৰ পাড়িৰে রাজ্যে রাভ আন্দান্ত একটার সময়ে ডামেছিল, জোর বোৰ হয় এক বন্টা বুমিয়েছে। এভ রাজে কে ডাকে ? মন্ত পদে এসে দরজা বুলে বললে, 'কে অধিনাশ, এড রাজে ভাই ৷ কোন বিশব-টপন হর নি ভো ?'

অবিনাশের কণ্ঠবর শাস্ত। বললে, 'বিশন কাটাতেই এসেছি আমি। এই টাকাগুলো চুই-ই নে রাজেন, বাকে আমি বপ্ল বনে করেছি, ভোর কাছেই ভার সভ্যের বাচাই হোক।'

'চাকা।' রাজেন করাল ভড়িত হরে বললে, 'চাকা কিলের।' গরীব বছুর ললে অবিদাশ ছুপুররাত্তে ভাষাশা করতে এলেতে নাকি।

কিছ তাৰাশা নৰ, অবিনাশের গলার বরে ভাষাশার বালাও নেই। ছির কঠে দে বললে, 'আনার লটারির টাঙা। নে ভাই, তাভাভাভি বর," বলে দে ভভিত রাজেনের হু'হাভের মধ্যে নোটের ভাভাগলো গুঁজে দিভে লাগল।

অবিনাপের মুধ দিবে অনেক কটে কথা বেকুল। অস্ট বরে সে বলল, 'এর নামে কি অবিনাশ গ'

অবিদাশ অবিচলিত যরে বলল, 'বলস্ব যে, এর নামে বাচাই করার তার এখন তোর উপর দিরে আমি এই অমর্থের বোবা থেকে বালাস হলাম। এত দিন এই চার পাশের ছমিরার সঙ্গে আমার কোন সম্পর্ক হিল না ভাই, বেন গুমের মধ্যে হাততে বেভাছিলার। কাল থেকে আমি আবার নাল্যের বত চলে কিরে বেভাতে পারব। এই আমার পরম লাত। আছো ভাই, আর রাত ভাসিস মি, ভাভাভাভি ভরে পভ সিরে, আমিও বাভী সিরে একটু বভিতে বিহানার গা এলিরে দিই।'

বলে অবিনাশ আবার নিজের মনেই বাড়ীর বিজে কিয়ল।

# এতটুকু

#### **এ**সাবিত্তী প্রসন্ন চট্টোপাধ্যায়

আৰি চেৰেছিছ এডটুকু ঠাই ভোমার নিরালা বরে, কেহু থাকিবে না, কেহু শুনিবে না আবাদের আলাপন, বিনিটে বিনিটে চলে যে নময় হেলার আলল ত'রে ভাই থেকে কিছু লাও লাও ব'লে ক্রিয়াহি আলাভম।

বেশী কিছু নর এক বৃহুর্ত ; অবও অবসর ভোষার জীবনে হেনে বিজেনে আমিত কি ধরণা ? এতটুকু বিলে ভাঙারে তব হ'ত কি আভাতর কয় ও কভিয় অহ কবিয়া কেবা বিত গঞ্জা ? আৰি দেখেছিত্ব তোৰার নহনে আমার প্রবীপ অলে, আমার নহনে বিশ্বভূবন আলো করা ওই রপ, দেখি একাকিনী বৈরা।গৰীরে আমার ক্ষর-তলে, আমার পঞ্চ ইন্সিরে দহে ক্ষিনা-গর ধূপ।

ভাৱি বাবে আমি চেরেছি ভোষারে কণ অবসর বাবে সংসার হ'তে নিজেরে সরারে নির্জবে নিরালার, নেই বৃহুর্ত জীবনে আমার কোট বুগ হবে রাজে এডচুকু পাওরা ভারই হোঁরা লাগি' আহি বে প্রতীকার।

আমার জীবনে দেই মুদুর্ভ লাও লাও প্রিরভবে নবী-ভয়ক বারেক আত্মক সমূত্র-সক্ষয়ে।

## সাহিত্য ও সমাজ

### ভক্টর 👼 রমা চৌধুরী

সাহিত্য ও সমাজের প্রকৃত সহছের প্রশ্ন খতঃই উনিত হয়।
সেনিক থেকে ছটি চরমণছী, বিপরীত মতবাদ সভবপর।
প্রথম মতান্থসারে, সাহিত্য ও সমাজের মধ্যে কার্য-কারণ
বা অলালী সহছ নেই। সমাজের পরিধি বাস্তব জীবনের
ছুল পরিবেটন। সাধারণ জীবনের কার্যকলাপ, চিন্থাপ্রবাচ,
আশা-আকাজ্ঞা নিয়েই সমাজের কার্যবাম। ব্যক্তিমগুলী
নিয়েই পরিবার, পরিবার-গোন্তী নিয়েই সমাজ। সেজ্ঞ ব্যক্তিগত জীবনের অতি কৃত্র কৃত্র সম্ভা, অতি তৃচ্ছ তৃহ্ছ
ছুখ-ছুংখ, অতি কুল লুল বিষয় নিয়েই সমাজেকে শেষ পর্যন্ত ব্যাপৃত থাকতে হয়। এ অবশ্র সভ্য বে, খতত্র ব্যক্তিকুলকে নিয়ে ব্যন এক একটি পরিবার পড়ে উঠে, তথন
খতত্র খতত্ব এক একটি ব্যক্তিছের অতি সহীর্ণ গণ্ডি বহুল পরিমাণে বিভ্তত্তর, ব্যাপকতর হয়ে যেতে বাধ্য হয়।
কারণ কিছু পরিমাণে ব্যক্তি-খাত্ম্য বিগর্জন না দিলে

একটি পরিবাবে সর্ব-সাধারণ-শুভের জন্ম অনেক ক্ষেত্রেই এবং অনেক পরিমাণেই কেবলমাত্র ব্যক্তিগত স্বাভন্ন বিদর্জন দিতে হয়, পরস্পারের মধ্যে স্বার্থভ্যাগ ও আদান-প্রদানের সম্পর্ক সংস্থাপিত করতে হয়। এই ভাবে পরিবারে কেবলমাত্র শুদ্ধ ব্যক্তিস্বার্থের স্থানে বৌধ-স্বার্থই ছবে গাঁডার প্রধানভর। একই ভাবে বিভিন্ন পরিবার-মঞ্জী নিয়ে বখন হয় সমাজের ভিত্তি সংস্থাপন তখন পরিবারের অপেকারত সমীর্ণ গণ্ডিও হয়ে বায় পুনরায় বিশ্বতত্ব এবং দর্বজনীন-শুভের নিকট ব্যক্তি ও পরি-বাবের নিজৰ স্বার্থ হয়ে ধায় অপেকাকত অর্থহীন। এরপে সমাজে বাজির অপেকা জাতি, খাতপ্রোর অপেকা সমবায়, একের অপেকা বছর দাবিই হয়ত মুধ্যতর। তা সম্বেও বে কোন স্থিবপ্রতিষ্ঠ সমাজেই পরিবারের, তথা ব্যক্তির দাবি উপেক্ষিত হবার নয়—কারণ পরিবার ও ব্যক্তি নিয়েই সমাজ, ভালের বাল লিয়ে নয়। সেজকু পরিশেষে সামাজিক সমস্তা পাহিবাবিক সমস্তা, পারিবাবিক সমস্তা ব্যক্তিগত সমস্তা। সমাজের বিধিনিষেধ এরণ হওয়া প্রয়োজন বাতে তা পরিবারের হুধ-সমূত্রতির সাক্ষাৎ কারণ হতে পাবে, এবং পরিবারের অলিখিত আইন-কাছুনগুলিও সর্বদাই এরপ হওয়া আবশুক, বাতে পরিবারত্ব প্রত্যেক वाकिवरे वाकिश्र नमजाव चर्तु नमाधान जेवः वाकिएवर পরিপূর্ণ বিকাশ সভবপর হয়। এরপে বৃহত্তর পরিবারের

এবং বৃহত্তম সমাজের বাজিই মৃলবেজ্ঞ—ব্যক্তিগত তথা-কথিত কৃত্র কিছু অত্যাবশুক সমস্যাপ্তলিই সমাজের নিজ্প সমসাা, ব্যক্তিগত কথ-হংগই সমাজের কথ-হংগ, ব্যক্তিগত সমৃদ্ধি ও সমূলতিই সমাজের সমৃদ্ধি ও সমূলতি। সেজ্প পূর্বেই বা বলা হয়েছে, ব্যক্তিগত দৈনন্দিন আচার-বাবহার, ভাব-ভাবনা, আলান-প্রদানই সমাজেব উপজীব্য বিষয়।

ফিছ এই প্রাতাহিক জীবনের সঙ্গে সাহিত্যের-কাবা, দর্শন, ধর্মের – সমন্ত্র থাকতে পারে কি করে ? সমান্ত্র জড় পৃথিবীতেই চিরকাল প্রোথিত – প্রাত্যহিক জীবনের অন্ধ-বন্ধ-আপ্রয়, জন্ম মৃত্যা-বিবাহ, দাবি অধিকার-আইন প্রভতির বিচার ও সিদ্ধান্তেই সে নিবস্কর ব্যাপুত। এই জগতের উধ্ব লোকে, অপাধিব মানসলোকে, আনন্দমন্ন অমুভলোকে দৃষ্টিপাত করবার তার অবদর বা দামর্থ্য কোথায় ? বিছ সাহিত্যের চিব-অমান শতদল প্রকৃটিত হয় দেই অপাথিব মানসলোকেরই চিবলোভন মানসসরোবরে। নিলাঘলাতে বেমন শতদলের শত দলই ওক হয়ে ঝারে পড়ে, বান্তবভার প্রথব ভাপে ভেমনি সাহিভার প্রাণবম্বও হয়ে বায় বিনষ্ট। দে<del>ক্তর</del> সাহিত্যের কমলাসন থাকবে পাতা সেই অবান্তব সৌন্দর্যলোকেই মাত্র বেখানে পৌচাডেই পারে না কোন পাৰিব শোকভাপের দীর্ঘবাদ, বেখানে পড়ভেই পারে না ধ্বণীর ধুলার মলিন ছায়া, বেখানে শুদ্ধ হয়ে বায় জাগতিক বিবাদ-বিস্থাদের কর্কশ কোলাচল। সেই দিক খেকে সাহিত্য এক অপার্থিব, অমুপম দৌন্দর্য, মাধুর্য ও আনন্দের পূৰ্ণ ভোতৰ বাব ৰণামাত্ৰ এই অপূৰ্ণ জগতে প্ৰতিফলিত হওয়া সম্ভবপর নয়। সেজক স্বভাবত:ই সাহিত্য ইহ-জগতের, এই মর পাধিব জগতের প্রতিচ্চবি নয়, প্রতিচ্চবি সে এক অপাধিব মানসভগতের, এক অবান্তব কল্লনা-রাজ্যেরই মাত্র।

বাত্তবভগতের অনিবার্ধ কঠোর খাত-প্রতিখাতে উদ্যুদ্ধ মানব সাময়িক শান্ধি সন্ধান করে মনঃকল্লিত এক স্ব-উচ্চ জগতে—এর থেকেই হয়েছে সাহিত্য-স্কৃষ্টি। রক্তমাংস-গঠিত, অভ্নেহেক্সিরবান্, এবং সেদিক থেকে পশুভূল্য, মানবের জীবনের অপর একটি দিকও আছে—আলার দিক, বিচার-বৃদ্ধির দিক, নীতি-বিবেকের দিক—এর থেকেই হয়েছে সাহিত্য-স্কৃষ্টি। বাত্তব অগতের সলে নাড়ীর টানে আবন্ধ থাকলেও মানব আদর্শবাদী, সত্য-সন্ধানী, পূর্ণভালিরানী—এর থেকেই হরেছে সাহিত্য-স্কৃষ্টি। একপে

আনর্শ ও আনন্দ — বে আনর্শ বান্তব জগতে চির-অপূর্ণ এবং বে আনন্দ "সর্বং ছুংখং ছুংখন্" সংসারে চির অপ্রাণ্য— সাহিত্য-সৌধের যুগল অভ্যন্ধণ। কিন্তু সমাজের অভ্যন্ধণ। কিন্তু সমাজের অভ্যন্ধণ। কিন্তু সমাজের সভাই বিবরাধ। সেজন্য সমাজের সভাজে জানতে হলে পাঠ কবতে হবে আইন-কান্তনের পুত্তক, বিধি-বিধানের ধারা; জাতি সভাজে জানতে হলে পাঠ করতে হবে ইতিহাস, নৃতত্ত্ব; দেশ সভাজে জানতে হলে পাঠ করতে হবে ভূগোল, শুমণ-ব্যব্দের।

বিশ্ব এই সব হচ্ছে "বিবরণী" বা "কাহিনী"ই মাত্র,
"সাহিত্য" নয়। সাহিত্য হচ্ছে লঘু দিক থেকে কাব্য প্রভৃতি,
শুক দিক থেকে দর্শন, ধর্ম আলোচনা প্রভৃতি। কাব্যের
মাধ্যমে আমরা আত্মাদ পাই এক অনস্ত সৌন্দর্যনাকের এক
অনাবিল আনন্দের পীযুবধারার; দর্শনের মাধ্যমে আমরা
লাভ করি এক পহিপূর্ণ আদর্শলোকের শাখত শান্তির অম্ল্য কৌন্তভমণি। এরূপে আনন্দ ও শান্তিপ্রদায়ক সাহিত্য
নিরানন্দ, অশান্তিসকুল জীবন, সমাজ ও জগৎ থেকে সম্পূর্ণ
ভিন্ন ও বিচ্ছিন। এই হ'ল সাহিত্যের সংজ্ঞা এবং সাহিত্য
ও সমাজের সম্বন্ধ সম্পাকে এক চহম মতবাদ।

বিভীয় চরম মতবাদ হ'ল এই বে. সাহিত্য ও সমাজ কাৰ-কারণক্রপে অভাজী ভাবে ঘনিষ্ঠ আবন্ধ। সমাজের প্রকৃতি, রীতি-নীতি, আচার-বাবহার, স্থণ-ছ:খ স্বই বান্তব, নগ্ন ও সাক্ষাৎ ভাবে আছিত হয় সাহিত্যেরই ছব্রে ছব্রে। সাহিত্য মাছুষেরই 'অষ্টি, বক্ত মাংদে গঠিত মাছবেরই স্বষ্টি, দেবভার নয়। याञ्चरधत कीवान व्यवश्र छि मिक ब्याह्म जात्मह नाहे-দৈহিক দিক, পাথিব দিক, এবং আত্মিক দিক ও অপাথিব দিক। বিশ্ব একথা অত্বীকার করবার উপায় নেই বে. মান্তবের দৈহিক, পাথিব দিকটাই প্রধানতর ও ব্যাপকতর —ভাকে পরিবর্জন বা অস্বীকার করে মান্তবের মন্তব্যন্ত হয়ে পড়ে অর্থহীন। দেজনা বে সাহিত্য মাহুবের প্রাণের ৰুপার বাহ্নিক অভিব্যক্তিই মাত্র, বে সাহিত্য মামুবের জীবনের মূলমান্ত্র লিখনাজ্মক রূপই মাত্র, সে সাহিত্য বে ভার নিডানৈমিভিক ভাব-ভাবনা, আশা-আকাক্রা, পরি-त्यम-चारवहेन मध्य मण्यूर्ग नीवव हरवहे बाकरव, छाहे वा কি করে সম্ভবপর হয় ? যে কল্পলোকের নিরম্ভর আনন্দ-নিক্র-ধারায় মাছবের বল্পনাবিলাসী, আকাশবিহারী মন বিলাস ও বিহার করতে উদগ্রীব, তা বডই সাময়িকভাবে ত্মধুর হউক না কেন, পরিশেষে কেবলমাত্র "ৰপ্নো হু, मात्रा क, मिखदमा कू।" त्रकता चराचर, चर्चरनात्री, আকাশবিহারী সাহিত্যও হরে ওঠে সম্পূর্ণ অবান্তব - শুন্য-

গর্ভ বৃদ্ধেরই মত তার কণস্থায়ী অবান্তব জীবন, মূলাহীন অবস্থিতি। অভএব সাহিত্য আমাদের প্রাত্যহিক জীবনের কুধা-তৃঞা প্রভৃতিকে উপেকা করতে পারে না, বরং এই সবের জন্ত, বান্তব চিত্রাছনই সাহিত্যের ধর্ম।

এরপে তুটি চবম মতবাদ একেজে পাওরা বায়—আদর্শ-বাদ ও বাত্তববাদ, কল্পনাবাদ ও কঠোর সভ্যবাদ। প্রথমটিকে বলা চলে Idealism, দিভীয়টিকে বলা চলে Realism। দর্শনে বেমন সাহিত্যেও ঠিক তেমনি এই ছুটি বিপরীতধর্মী প্রোত নিরন্তর প্রবাহিত দেখা বায়। মাহুষের স্বীয় প্রকৃতিতেই বে আদর্শবাদ ও বন্ধবাদ এই ছুটি পরস্পর্ববিক্ত প্রবৃত্তি নিহিত আছে, তারই বহিঃপ্রকাশ হয়েছে যুগে যুগে মাহুষেরই হৃদয়োথ স্প্রটি—দর্শন, সাহিত্য, শিল্পকলায়।

কিছ প্রকৃতপক্ষে মাছবের জীবন এক ও অথও।
অসংখ্য ইন্দ্রিয়, মাংসপেনী, অংযু, বক্তকণা সম্বলিত মন্ত্রাদেহ বহু বিভিন্ন, এমন কি আপাতদৃষ্টিতে বিক্রম অংশের
সমাবেশ হলেও, কি এক অপূর্ব কৈবিক নিয়মান্থসারে এক
অভিন্ন, সমগ্র বস্তু। অন্তথা, জীবনধারণই হয়ে ওঠে
অসম্বা। ঠিক একই ভাবে, অসংখ্য চিন্তা, অনুভৃতি, প্রবৃত্তি
প্রভৃতি বহু বিভিন্ন, এমন কি আপাতদৃষ্টিতে বিক্রম, মানসিক
ভাব সম্বাণিত মানব্যমনও কি এক আধ্যান্ত্রিক নিয়মান্থসারে
এক অভিন্ন, সমগ্র বস্তু। নতুবা, ব্যক্তিবিশেষের পূর্ণ, সমগ্র
ব্যক্তিত্ব হয়ে পড়ে কথার কথা।

এরপে তথু মানবের কেন, সমগ্র জগতের ইতিহাস কিঞ্চিয়াত্র জালোচনা করলে দেখা যায় যে, বছর মধ্যেও একের, বিরোধের মধ্যেও সামগ্রস্তের, বিচ্ছিল্লের মধ্যেও সমগ্রের জাবিদার ও প্রকাশই জীবন, স্থিতি ও সমুন্নতির কারণ। এই সর্বজনীন, মললজনক নিয়মের বশবর্তী মানব-মনও বিপরীতধর্মী ভাব-ভাবনার বিপরীভমুখী জাকর্বণে বিপরীত দিকে চালিত হয়ে উল্লন্ড হয়ে উঠলেও, পুনরায় ভালের মধ্যেই এক জপুর্ব সমতা, স্থিবতা ও স্থিতি লাভ করে। সেজস্থ সকল বিরোধ ও বৈপরীভারে মধ্যেও একটি মিলনগ্রহি জন্মদান ও জাবিদার করা মান্থ্যের প্রকৃতি-গত, স্থভাবজ্ব। এরপে সকল বিরোধ ও বৈপরীভারের মধ্যেও একটি মিলনের মতের জন্মদান করাও মান্থ্যের প্রকৃতিগত ধর্ম।

বান্তব জগতেও দৃষ্ট হয় যে, চরম আদর্শবাদী শ্ববি এবং চরম বন্ধবাদী ভোগীর সংখ্যা অপেকা মধ্যপদ্বিগণের সংখ্যা অধিক। মহুবাজীবনের এই সমন্বরের চিত্র মহুবাস্ট্ট সাংস্কৃতিক বিবরেও সমভাবে প্রিকৃট হয়েছে।

তাবই करन, छेनवि-উक छुटे চরম মতবাদের মধ্যেও

আমবা পেয়েছি একমাত্র প্রহণবোগ্য আর একটি তৃতীয় সমন্বরবাদ— বেধানে আদর্শ ও বাতবভা, আকাশ ও পৃথিবী, আজা ও দেহমনের ঘটেছে এক অমুপম সংবোগ। এই এক্য মতামুসারে, পৃথিবীর মামুষ আমরা, দেহমনোবান্ জীব আমরা—এই মাটির পৃথিবীর বুকেই, এই ধরণীর ধূলিতলেই আমাদের সৃষ্টি ও ছিতি। সেজস্তু এই মর জগৎকে, এই জড়দেহমনকে আমরা বে শুধু নি:শব্দ অবকাই করতে পারি না, ভা নর; উপরন্ধ, এদের আমরা ভালও বাসি, এদের সঙ্গে আমাদের সন্তার বোগ শাখত ও আছেলা। সেজস্তু আমাদের সন্তার বোগ শাখত ও আছেলা। সেজস্তু আমাদেরই প্রাণের জিনিব সাহিত্যে আমরা প্রকাশ করি, আমরা প্রতীক্ষা করি, এই জড়লগভেরই সভ্যা, বাত্তব, জীবন্ধ, জাগ্রত রুপটিব, এই মর দেহমনেরই স্থধত্থ, আশা-আশ্বা, আলোড়ন-বিলোড়নের মৃত, পূর্ব, বথার্থ, অফ্রিম অভিবাজির।

প্রথম চরম মতামুসারে দর্শন, ধর্ম, কাব্য প্রভৃতি শ্বর-मःशक छोक्क्यो मार्ननिरकत धवः छम्ध कन्ननाविनामी বসিকজনের আদরের বস্তু হলেও প্রকৃতপক্ষে "সাহিত্য"-भवताहा नम्। त लायन मन्त्रार्थे व्यवाचित यात रुष्टि छ দ্বিভি সম্পূর্ণ ই শুরু নভন্তলে, তা সেই স্বরসংখ্যক ব্যক্তি-কেও কত কাল, কত পরিমাণে প্রকৃত তৃপ্তিপ্রদানে সমর্থ হয়, সেইটাই চিন্তনীয়। সন্দেহ নেই বে, কেবল মনেবই मर्प वहे वकाकी, छेम्छ श्रमात्र चत्रः मनहे चित्र खास হয়ে পড়ে। সেই অবশাদ থেকেই স্বাষ্ট হয় misanthrope বা মানববিৰেষী দাৰ্শনিকপ্ৰব্ৰের, ও lotus-eater বা मिवाचश्रविनानी जनम. जदर्भना क्राज्यावार मन्द्राव বড় কথা এই বে, এক্লপ অবান্তব সাহিত্য "সাহিত্য" নাম-ধারী হলেও সাহিত্য নম। এক্সপে একটি পণিতের জটিল ভথ্যপূর্ণ পাঠাপুত্তক অথবা একটি স্থায়দর্শনের পূর্ব্বপক্ষ-উত্তরপক্ষবহুল প্রামাণ্য গ্রন্থ অন্যান্য দিক থেকে বিশেষ মৃল্যবান হলেও "সাহিত্য" সংজ্ঞালাভের উপযুক্ত নয় निक्षश्रहे।

অপরপক্ষে সেই ভাবেই কেবলমাত্র অতি-বান্তব রচনাও
"সাহিত্য"-পদবাচ্য হতে পারে না। কেবল পার্বিবন্ধের,
কেবল বন্ধন্ধের, কেবল জৈবভাবের অপরিসর পণ্ডিতেই
কেবল বে মন বিচরণ করে ও আবন্ধ হরে থাকে, সে মন
ত অভেবই তুলা, ক্ষনী শক্তি তার কই ? সে মন কেবল
লেখক, লিশিকর বা গ্রন্থকারই মাত্র—রচয়িতা, প্রটা বা
প্রষ্টা নর। কেবলই বান্তব জিনিবের বখাবথ বিবরণ,
কেবলই ভূড-বর্তমান-ভবিষাৎ ঘটনার ধাবাবাহিক বর্ণনা,
কেবলই সংসাবের ক্লেশ-ক্লেম-মলিনতার বীভংস, নগ্ন চিত্রণ,
কেবলই মান্থবের জৈবিক বাসনা-কামনার নগ্ন প্রকটন—

আৰু বাই হোক, "দাহিত্য" নয়। দেজত দাধাৰণ পাঠ্য পুত্তক, ভূগোল, ইভিহাস, বোগমৃত্যু বিবরণী স্থলিত চিকিৎসালয়, অনাথাপ্রম প্রভৃতির বাৎসবিক অধিবেশন গ্রন্থ, কামবিজ্ঞান বা 'বট্ডলাব' উপন্যাসালি কথনই "সাহিত্য" মৰ্বাদাসম্পন্ন হতে পাবে না। তথাকবিত "প্ৰপতি**শীন**". অভ্যাধনিক, "বাশ্ববাদী" কবিদের বচনাও সাহিত্যের ভয়াবহ প্রেভাত্মাই মাত্র, "সাহিত্য" নয়। বথা, "ভাই-বিনেশ্ব উদগ্ৰ গছে আকৃষ্ট, গলিত ফোটকাকীৰ্ণ, শীৰ্ণ পৰেৱ কুকুবের তুর্গভ্যন্ত মুখিক ভক্ষণ বা প্রায়নগ্ন, কুঠুরোগাক্রান্তা ভিথারিণীছয়ের উৎকুন ধ্বংসের বা গাত্রকওয়নের বীভৎস চিত্র: আজ সাহিত্যের নামে সরস্বতীর প্রত মন্দির-অনিন্দে প্রবেশের অমুমতিলাভ করেছে—সেটাই বিস্ময় ও চু:খের কাংগ। সাহিতো 'বীভৎস' ও 'ভয়ানক' বসের স্থান আছে, নিশ্চয়ই। কিছ তা "ৱসে" উন্নীত হয় তথনই বধন কেবল অবিমিল্ল, অত্যুগ্র বান্তবভার ৩৯, কঠিন ক্ষরময় ধূলিকণায় লাগে ক্রিচিত্তের শীতল সঞ্জীবক বারি-ধারার অমৃতময় প্রদেপ। ধর্মীর ধুলিপুঞ্জ আকাশের আশী-ধারার আত হয়ে সরস হলে তবেই হতে পারে কঠিন ভ্রমগুলের বৃক্ চিরে নবাঙ্গরের শুভ বিকাশ। একই ভাবে এই মাটির পথিবীর ক্লেদ-কাঠিন্যের উপর কবি-মানসের দেই অলৌকিক নিব্বেধারা-সম্পাতেই জাগ্রত হয়ে খঠে সাহিত্য-কিশলয়ের প্রথম প্রাণের স্পন্দন।

নাহিত্য-স্কটির একমাত্র প্রক্রিয়া হ'ল এই—বাস্তব ও বল্লনার, বর্তমান ও আদর্শের, ভীবত্ব ও মহাক্রতের এক অপূর্ব সংযোগ, সমন্বয় ও সম্পৃতি। পদ্ধ থেকে পদকের, ধলিকণা থেকে ইন্তাধনুর উৎপত্তির মন্ডই বিষয়কর এই পাধিব বন্ধ ও ভাব থেকে অপাধিব আনন্দ-রুসময় সাহিত্য স্ষ্ট। পঙ্কের শত গ্লানি ধন্য করে কোন মান্নাবীর মাগ্র-স্পর্শে প্রক্ষটিত হয়ে উঠে সহস্র-দল-বিস্তারী সহস্রদল ভার অপরপ সৌন্দর্বে, সৌরভে, শুভ্রতায়। ধূলির শভ মলিনতা সাৰ্থক কৰে, কোন্ চিত্ৰকৰেৰ নিপুণ তুলিতে উদভাসিত हरत्र एठ हेक्सप्तर विविध कनकात्रमान क्रण-मधुतिमा । धकहे ভাবে সাধারণ জগতের পারিপার্খিক ঘটনার প্রাভ্যহিক জীবনের নিভানৈমিত্তিক হাসি-কালার, মানব-মনের দৈনন্দিন বিধা-বন্ধ, আশা-নিরাশা, বাত-প্রতিঘাতের অতি ভুচ্ছ, অবজেয় চিত্রটিও বখন কবির প্রাণের রুসে সিঞ্চিত रति महस्वमानत मछहे विक्रिज रात छैठि; ब्रहीत मन्त्री দৃষ্টির অরুণালোকসম্পাতে ইত্রধমূর মতই ভাষর হরে ওঠে, তথনই হয় সাহিত্যের প্রথম ও প্রকৃত স্টে। "সকল কাঁট। ধন্য কৰে" ফুল কোটবার,—সৰুল বাধা বঙীন হয়ে" গোলাপ হবে উঠবাব, সকল কুলীভা, মলিনভা, প্রাভ্যতি-

কভা ও সাধারণভার সাহিত্য-গৌরবে গরীয়ান্ হয়ে উঠবার এই ভ অপূর্ব ইভিহাস।

अक्रा चनाधादावद चनाधादनाच नव. नाधादावदके শ্দাধারণতে সাহিতা চিব-গরীয়ান। এই অসাধারণত সম্পাদনের মন্ত্র-শক্তিতেই সাহিত্যিকের লেখন উরীত হয়. "রচনা" বা "সাহিত্যে" আমাদের দেখন পর্বসিত হয় "বিবরণী" ব। "কাছিনী"তেই মাত্র। বৃদ্ধি-সর্বস্থ পঞ্জির निक्षे वश्व-निवर्णक, मुनागर्ड मरनव चार्लाक है वशान्देव : नाशायन माञ्चरवर निक्षे मन-निवर्णक, जाशाय-विशेष वज्र-লাতের কঠোর উপস্থিতিই বধাসর্বস্থ। প্রথমটি 'Form without matter': বিভাষটি 'Matter without form' ৷ কিছ नाहि डिएक्ट मर्निट्र्या ट्राइड 'Form' & "Matter"-এद পরিপূর্ণ সন্ধৃতি। বাহিরের বস্তুকে তিনি অন্তরের, অপূর্ব রুণাস্বরীকরণ শক্তিতে নিজম্ব করে নিতে পারেন। এরপে সমগ্র বিশ্বন্ধপংই সাহিত্যিকের মনোক্তগতে নবরূপে বিশ্বিত হয়ে পুনরায় নবরূপে প্রতিবিধিত হয় সাহিত্যের স্বর্থ-মুকুরে। সেজনা প্রকৃত শ্রষ্ট্রপে সাহিত্যিক সভাই বিখ-প্রকৃতিকে বলজে পারেন:

"আমি আমার মনের মাধুরী মিশারে ভোমারে করেছি রচনা, তুমি আমারি, মম অসীম গগনবিচারী।"

বস্তুত: সাহিত্যিকই সর্বপ্রেষ্ঠ প্রষ্টা, সর্বাপেকা ধনী— সমগ্র বিশ-প্রকৃতিই তার একাস্থই নিজ্প ধন, মনের আঞ্চনে বাডা।

এরপে নিপুণ শিলীর সামান্য করেকটি রেখার বেমন সাধারণ বন্ধও হয়ে ওঠে এক অপূর্ব চিত্র, তেমনি প্রকৃত সাহিত্যিকের হাতে সাধারণ গল, উপন্যাস, ইতিহাস, ছুগোল, বিজ্ঞান, ভ্রমণ-বৃত্তান্ত, চিঠি-পত্র প্রভৃতি সবই হয়ে ওঠে এক অপরণ ক্ষর "গাহিত্য"। দৃষ্টাম্বন্ধর্প, ববীক্ষনাথের উল্লেখ করা বেতে পারে।

শতএব সাহিত্য ও জীবন বা সাহিত্য ও সমাৰ— শ্ৰাদী ভাবে বিজড়িত হয়েও অভিন্ন নয়।\*

প্রবাসী বল-সাহিত্য-সন্মেলনের ( পাটনা ) সহিলা-শাখার সভানেত্রীয় অভিভাবনের একাংশ।

## বাংলা ও বাঙালী

শ্ৰীসুশীলচন্দ্ৰ ঘোষ

আমার একজন পাঠক-বন্ধু জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন বে, "বাঙালী" বলিতে তিনি কি ব্ঝিবেন ? উত্তর দিয়াছিলাম বে, জাতিধশনির্কিলেবে বাহারা এই প্রদেশের ছায়ী অধিবাসী আমি তাহাদেরই "বাঙালী" বলিয়া মনে করি। আর একজন পাঠক-বন্ধুর কেন্দ্রীয় সরকারের টাকা বউনের বিষয়ে প্রদেশের প্রতিবর্গ মাইলের বসতির হার ও মোট জনসংখ্যা লইয়া একটা ভান্ত ধারণা হইয়াছিল। আমি প্রতি বর্গমাইলে বসতি-হারের উপর (মোট জনসংখ্যার উপর নহে) ভিত্তি করিয়া কেন্দ্রীয় তহবিলের অর্থবন্টনের প্রতাব করিয়াছি। অক্তান্ত পাঠকবর্গের মধ্যে কাহারও করিয়াছি। অক্তান্ত পাঠকবর্গের মধ্যে কাহারও কাহারও এইরেপ ধারণা ও সম্পেহ হইতে পারে বলিয়া এই ছইটি বিবরে আমার বক্তব্য পরিকার করিয়া প্রথমেই লিখিলাম।

বিদেশী ও অপর প্রদেশবাসী ব্যবসায়ীদের সমকক্ষ হইতে হইলে পশ্চিমবখবাসীদের নিজেদের বে সমত দোব ও ক্ষাটি আছে ভাষা সর্কাশ্যে সংশোধন ক্ষাডে হইবে। অপর প্রদেশবাসীরা এখান হইতে কোটি কোটি টাকা উপার্জন করিয়া লইয়া যাইতেছেন এজন্য তাঁহাদের দোষ দেওয়া অন্যায়। ইহা উটপাথীর মনোবৃত্তি ছাড়া আর কিছুই নয়। কেবলমাত্র মূলধন ও উচ্চলিক্ষা থাকিলেই বে শিল্পে ও ব্যবসায়ে উন্নতি করা সম্ভব ইহা একটি আম্ভ ধারণা। ইহার জন্য চাই কঠিন পরিপ্রাম, চরিত্র ও সভতা। ব্যবসায়-ক্ষেত্রে বাঙালীর এই বিষয়ে তুর্বল্ডা কডটুকু ও কোথায় তাহা পরে আলোচনা করিব।

পূর্ব প্রবন্ধে পশ্চিমবদের মধ্যবিত্ত গৃহস্থদের সমস্তা
সমাধানের জন্য কৃটার-শিল্প প্রদারণের বিশেষ প্রয়োজনীয়ভার বিষয় লিখিয়াছিলাম। সংবাদপত্তে দেখিলাম বে,
কেন্দ্রীয় সরকার সম্প্রতি ভারতের বিভিন্ন প্রদেশে কৃটারশিল্প প্রসারের ব্যবস্থার জন্য একটি নৃতন সংসদ পঠন
করিয়াছেন। পশ্চিমবদ সরকারও কিছুদিন পূর্বে ঐত্বপ
একটি সংসদ পঠন করিয়াছেন; কিছু জাজ পর্যন্ত কার্য্তঃ
এই সংসদ কতদ্ব কি করিয়াছেন ভাহার কোন বিশদ্ধ
বিবরণ জানা নাই। দেশের বেকার-সম্বন্ধা সামাধানা

করিবার পক্ষে কূটার-শিল্প প্রসারণই অন্যতম উপার।
পৃথিবীর মধ্যে শ্রেষ্ঠ শিল্পপ্রধান যুক্তরাজ্য যুদ্ধের পর
বধন বেকার-সমস্তা লইয়া বিশেবভাবে বিত্রত হইয়া পড়িয়াছিল তখন ইংলতে শ্রমিক গ্রন্থেমেন্টের অর্থসচিব স্তার
ট্যাফোর্ড ক্রিণস্ এই পদ্মা অবলম্বন করিয়া সেধানে
বেকারের সংখ্যা অনেকটা ক্যাইতে পারিয়াছিলেন।

শ্রমিক সরকার কর্তৃক ১৯৪৯ সনে প্রকাশিত Labour Gazette হইতে জানা বায় বে, তিনি বৃহত্তর শিল্পগুলির উৎপাদন নানা প্রকাবে নিয়ন্ত্রিত করিয়া বতটা সন্তব নিত্যব্যবহার্য প্রবা উৎপাদনের ব্যবস্থা প্রামে প্রামে ও ভোট ছোট শহরে কুটারশিল্পের ছারা করিয়াছিলেন। প্রস্বক্টারশিল্পের ছারা বৃহত্তর কলকারধানার আবশুক বৃহবক্ষের ছোট ছোট খংশ (Parts) ও সরক্ষাম (Accessories), এমন কি অপ্রশন্ত পর্যন্তব প্রতিব্যাদন করা হইয়াছিল এবং এখনও ইংতেছে।

কৃটীঃশিল্পের করেকটি বিশেষ স্থবিধা আছে। ইহার জন্য একসকে বেশী মূলধন লাগে না এবং বৃংস্তর শিল্পের ন্যায় শ্রমিকলের সকে সংঘর্ষের সম্ভাবনাপ্ত কম। তাহা ছাড়া এই শিল্প পরিচালনার জন্য উর্দ্ধতন কর্মচারীর বিশেষ আবশ্রক হয় না। আর একটা স্থবিধা এই বে, উৎপন্ন প্রবেয়র চাহিদা অনেক পরিমাণে স্থানীয় ও নিকটবর্ত্তী বাজারে থাকে।

এট শিল্পের উল্লভিদাধন করিতে হইলে করেকটি বিষয়ে বিশেষ ব্যবস্থা কবিতে হইবে:--(১) শিল্পপ প্রদেশবাসীর মানদিক ও দৈহিক অবস্থার অভুকুল হওয়া শ্বকাব। (২) শিল্পাত দ্রব্যগুলি বতদ্ব সম্ভব নিত্য-बावदावी व्यवः ठाक्कना मन्नव स्वा द्वा व्यव (७) बाहाएक महास्मनत्त्व निकृष्ट (वनी हादव है।का शांव क्विएक ना इव रमकना मूनधन मः शह छ नवरबाह कवियाव একটি হুচিপ্তিত সরকারী পরিকল্পনার প্র:যাজন। নিউ-বিল্যাতের 'Poor Bank'-এর অমুকরণে প্রত্যেক মহকুমার প্রদেশ-সর্কারের ভন্ধাবধানে লগ্নি প্রতিষ্ঠান (Credit Bank ) স্থাপন করিতে হইবে। উপস্থিত সমবায় ব্যাঙ্কেব ছারা চলিবে না। (৪) শিল্পাত জব্যগুলি সম্ভবপর সম্মানের (standardised goods) হওয়া একাস্ক আবন্তক। (e) গ্রামে ও পরীতে বৈদ্যাতিক শক্তি श्रावालय वावचा श्राम-मयकावाक कविरा हरेरव । (७) বিভিন্ন কুটারশিলের উপবোপী আধুনিক ছোট ছোট বৈদ্যাতিক ও হন্ত-পরিগালিত বরপাতি প্রদেশ-সরকারকে विश्न इहेरफ जाममानी कविशा निज्ञक्र निव मर्था वर्षेत्व चरम्यावत कवि.च १हे:व। (१) मधाध्यम विमीव जान

বাহাতে উৎপাদনকারীরা পায় ডক্কন্য প্রদেশ অথবা কেন্দ্রীয় সরকারের বারা ঐ সমন্ত শিল্পোৎপদ্র ক্রব্যাদির বিদেশে রপ্তানী করিয়া সরকার কর্তৃক উচিত মূল্যে বিক্রমের ব্যবস্থা।
(৮) আবশুক কাঁচামাল বাহাতে নিয়মিত ভাবে ও উচিত-মূল্যে শিল্পগুলি পায় এবং উহা কালোবাজারে কিনিতে নাহ্ম ভাহার ব্যবস্থা; (৯) বিদেশ হইতে প্রদেশের উপবোগী নানা প্রকার কৃত্যিরশিল্পে স্থক্ক শিল্পীদের আনাইয়া একটা স্থচিন্তিত পরিকল্পনা অস্থলারে প্রতি মহকুমায় শিক্ষাক্রের স্থানন করিয়া স্থানীয় অধিবাসীদের নানা রকমে কৃত্যীর-শিল্পের শিক্ষা দিতে হইবে। স্থানীয় ভৌগোলিক অবস্থা, জলবায় ও কাঁচামাল সরবরাহের স্থবিবা এবং উৎপদ্ধ ক্রব্যের চাহিদার স্থানের দিকে গক্ষ্য রাধিয়া কোন্ মহাকুমায় কোন্ কৃত্যিবশিল্প গড়িয়া উঠিতে পারে ভাহা পূর্ব্বেই স্থির করা আবশুক।

সংবাদপত্তে দেখিলাম বে, আমাদের মুখ্যমন্ত্রী ডাঃ রাম্ব প্রদেশের মধ্যবিস্ত গৃহস্থাদের ঘারা ছোট ছোট শিক্ষ পরিচালনার জন্য একটি সরকারী শিক্ষসাহাব্য তহবিল ছাপন করিবেন বলিয়া ঘোষণা করিয়াছেন। ইহা বে একান্ত আবক্ষক ও খ্বই সমীচীন ভাহা লেখাই বাছল্য; কিন্তু ঐ তহবিলের টাকা কাহারা বন্টন করিবেন ও কাহাদের মধ্যে বন্টিত হইবে ভাহার উপরই ইহার উপ-কারিভা সম্পূর্ণ নির্ভর করিবে। আশা করি, "ভ্"-মার্কা সন্ভ্যাদের ঘারা ঐ টাকা বন্টনের ব্যবস্থা না হর এবং আত্মীয় ও বন্ধু বান্ধবদের মধ্যে উহা বন্টিত না হর সেদিকে ডাঃ রায় নিশ্চমই বিশেব লক্ষ্য রাখিবেন। নচেৎ উপকারের অপেকা অপকারই বেশী হইতে পারে।

পশ্চিমবশে ঘড়ি তৈরি শিল্পটি মধ্যবিত্ত গৃহস্থানর পক্ষে বিশেষ উপবোপী হউতে পারে বলিরা পূর্বে লিথিরাছি। ইটালিতে আমি দেখিরাছি বে, নানা প্রকার লেল্ (Lace) তৈরি দেখানকার একটি প্রধান কুটাবশিল্প। আমার মনে হয়, পশ্চিমবলে প্রভাব গ্রামে এই শিল্পটি অনায়াসে গড়িয়া উঠিলে বহু গৃহস্থের আয় যথেই বাড়িতে পারে। অবসর সমরে বাড়ীর ছেলেমেরেরাও অনায়াসে ঐক্রপ লেল তৈরি করিতে পারে। তবে ইচ্ছামত নম্না অহ্নপারে উহা তৈরি করিলে চলিবে না। হলি সমবার পছতিতে প্রতা সরবরাহ করিয়া নির্দিষ্ট মজ্বীর হারে, বিলেশে ও প্রদেশে চাহিলা আছে এইক্রপ নম্নামত লেল্ তৈরি করিবার ব্যবস্থা করা বায় ভাহা হইলে বহু লক্ষ্ণ টাকার লেল্, কিতা ও ঐক্রপ সাম্মী বিলেশে রপ্তানী করিয়া প্রবেশবাসীরা লাভবান হইতে পারেন। ইহা ছাড়া চুক্ট ও নালা প্রকাষ বোডাম তৈরারী, চীন ও ভাপানের মঙ্ক

চিত্রিত চীনামাটির বাসন ও চাক্রকলা, চীনামাটির পুতল, কমাল, নানারপ দিকের বস্তু, মোলা, গেলি, ভাতার ফিডা, निध्वात निव. इति. दाँ हि हेलानि वहशकात्वत क्रीविनव वांका साम्ब अधिवामीसाव भाक विश्व छेन्द्रशानी वनिश মনে হয়। একথা লেখাই বার্ল্য বে. এই প্রাদেশের মধ্যবিত্ত গ্রহম্বদের বেকার-মুম্পার সমাধান না করিতে পারিলে, প্রদেশ-সরকার আইন ও শৃত্যুগা হক্ষা করিবার জনা খড়ই চেষ্টা কক্ষন না কেন প্রদেশকে বিশ্বধাগ চইতে মক্ত রাখিতে পারিবেন কি না সন্দেহ। অর্থ ক্ষিশনের নিকট বাংলার বেকার-সমস্থা সমাধানের জন্য কটারশিল্প প্রসারণের বিশেষ দায়িত্বে বিষয় প্রদেশ-সরকারের জানান উচিত।

পাটকল, সুতাকল, কয়লার ধনি ও চা-বাগান পশ্চিম-বলের চারিটি বছত্তর উৎপাদন-শিল। এই প্রতিষ্ঠান-গুলিতে বাঙালীর স্থান কোথায় ও উচালের সরকারী প্রকাশিত সংখ্যা কত তাহা নিমে দিতেচি:

শিল্পের নাম যোট সংখ্যা পশ্চিমবলবাদীলের ছারা পরিচালিত প্রতিষ্ঠানের সংখ্যা

পাট কল -**সুভা**কল 88 কয়লার খনি 246 চা-ধাগান ৩৭৯ (অবিভক্ত বাংলা) ৩-৪

চা-বাগানের সংখ্যাগুলি অবিভক্ত বাংলার। উপরিত পশ্চিমবলে চা-বাগানের সংখ্যা কত ভাষা জানা নাই। যদিও উল্লিখিত ৩৭৯টি চা-বাগানের মধ্যে ৩০৪টি চা-বাগান বাঙ্গালী কর্ম্বক পরিচালিত তথাপি এই ৩০৪টি বাঙালী প্রিচান্ডি চা-বাগানের জ্মির প্রিমাণ মোট চা-বাগানের ক্ষমির প্রিমাণের শতকরা ১৫ ভাগ মাত্র। অর্থাৎ বেশীর জাগ বাগানই ছোট ছোট। বাঙালীর পরিচালিত কয়লার খনি ও পাটকলের বাংসরিক উৎপাদন বদি ধরা বায় ভাচা হইলে ইহাদের সংখ্যার অনুপাতের হার বেশী হইলেও উৎপাদনের ভার ঐ প্রকারই কম হয়। আর একটি বিষয় উল্লেখ করা দরকার বে, বাঙালী-পরিচালিত প্রতিষ্ঠানগুলির মধ্যে বেগুলি বৌধ কোম্পানী হিদাবে গঠিভ (Public & Private Ltd. Co.s) ভাষার आशीशांद्राम्य माधा কভগুলি বিদেশী ও কড়গুলি অপর প্রদেশবাসী আছেন ভাহার সংখ্যা ও ভাহাদের দেয় শেয়ারের টাকার পরিমাণ জানা নাই। তবে অফুমান হয় ইহাও পুৰ কম হইৰে मा। এ कथा जायन वना जावन व, कश्नाद बनि-श्वनिष्ठित वाडानी समित्वव मःशा श्वरे कम ।

वहिर्वानित्यात छेनत त्रात्यत वर्षटेनिक व्यवहा

वहनाः ए निर्छत करत । किह्नमिन शृद्ध यथानी-वानित्का বাঙালীর খংশ কভটকু ভাহার মোটামটি অমুসভান করা হইয়াছিল। ভাহাতে জানা বায় বে, বপ্তানী-বাণিজো গভ ১৯৪৯ मृत्य (प्रांहे २६५'३७ (काहि है।कार प्रांश साक्षाओं व অংশ ২'৮৭ কোটি টাকা অর্থাৎ শতকর। ১'১৪ মাত্র। ইলানীং ইহার পরিমাণ সামান্য কিছু বাড়িতে পারে। কলিকাতা বন্দর হইতে বিলেশে ইলানীং কয়েকটি বিশেষ खवा बाहा वशानी हहेबाइक जाहात श्रीवमां ७ मना नित्र ments :

4

১৯৪৮-৪৯ সনে बाःला इडेट्ड विट्राट्स भावे 'e भावे-चाउ खरा ১৬৫ কোটি ১৬ नक होका, ১৯৪৯-৫० महन अर दाहि १७ वक है।का ४ saro-es मान sen Carif ৩৫ লক টাকা বপানী কৰা হয়।

১৯৪৮-৪৯ मन वाला इटेल ८० काछि ১६ नक **ोका, ১৯৪० €० मत्न ७२ कां**छ २**६ नक** छाका ख >>e--e> जात ७e कांकि ৮० लक वेकांत हा विरम्हण दशांनी कदा हम । किन को है। काव मध्या लाहे छैर लामन-कावीत्वव अपन त्व चुवहे कम छाहा महरकहे अक्रमान कवा ৰার। কারণ ইহার বেশীর ভাগ অংশ রপ্তানীকারী, পাট-करनव अध्मिमांत ७ अभव श्रामनामी भारते प्रशासन ७ শ্রমিকদের হাতে চলিয়া বায়। চা নিত্রক্ষেত্রের বেলায় পার্ট-কলের স্থায় না হইলেও এবুণ কডকটা বলা বাইতে পাবে।

উপদ্বিত ভারত-সরকার ভিন্ন অপর কেই বিদেশে কোনত্রপ করলা ব্রানী করিতে পারেন না। কলিকাডা वस्तव हहेर्ड १७ ১२१) मान काल्यावी हहेर्ड क्रव यान পर्वास इव मार्ग १,১७,৮২১ টন कवना विस्तर्भ ( भाकिसान ছাডা) বপ্তানী করা হয়। সরকার কর্ত্ত প্রকাশিত পৃত্তিকা अक्रमादि हेहाव मना २.५०.२8,६२२ होका हत। अ कर मार्त २, ३१, ११०, हाका मुरनाव २, ८७१ हैन हार्ड काक्स विकास विश्वानी इहेग्राहिन। इंटा जिल्ल नम्हणाय. दान ७ নদীপথে পাৰিস্থানে মোটামুট প্ৰতি মাদে এক লক কৃতি হাজার টন নানা রকমের কয়লা ভারত-সরকার চালান त्वन । अहे ठानानी क्यनाय छेनय छायछ-नयकाय कर्न्होन দ্ব অপেকা ১৯ টাকা টন প্রতি বেশী পাকিস্থান সরকারের निकृष्ट हरेल जानाव करवन। अहे नमख बद्धानी कवनाव মধ্যে কভ টন পশ্চিমবঙ্গের কয়লার খনি হইভে উৎপন্ন হইয়াছিল ভাগার হিনাব সঠিক জানিতে পারি নাই। ভবে উচা মোট বপ্তানীৰ এক-ততীয়াংশ অফুমান করা বাইতে भारव ।

উপস্থিত ভারত-সরকার পাট-শুকের স্তায় <u>রপ্রানী করলার উপর প্রতি টনে নিয়লিখিও হাবে</u> 'সারচার্ক্ক' আলায় করিডেছেন। ইহার পরিমাণ বাংসরিক ক্ষেত্র কোটি টাকা চটবে।

বপ্তানী কয়লার উপর 'দারচাক্ষ'-এর হার প্রতি টনে:

ACOUNT AND IN COLD	Allania ana	राम ज्याच ग्रंच
च(डे निश		. >
বৰদেশ		4
সিংহল	•	•••
নিউবিশ্যাও		210
कार्गान		21
মালয়, সিলাপুর, হ	१कः, इकिन-श	ৰ্ব্ব বন্দৱসমূহ

মালয়, দিলাপুর, হংকং, দক্ষিণ-পূর্ব্ব বন্দরসমূহ (ব্যাহক, সাইপণ প্রভৃতি), এডেন, পোর্ট স্থদান, পূর্ব্ব-আফ্রিকার বন্দরসমূহ, ভূমধ্যসাপ্রের বন্দর- সমূহ, গ্রেট ব্রিটেন এবং আয়ার্লপ্ত--- ৩. উত্তর-ইউবোপীয় ও ভ্যাপ্তিনেভিয়ান বন্দর-সমূহ

একথা সকলেই ভানেন বে, কয়লা প্রদেশের ক্ষর্ম্থ সম্পাদ, কারণ কয়লা কাটিয়া লইলে আর প্রণ করা বায় না। এরপ ক্ষেত্রে পশ্চিমবন্ধ সংকার বনি রপ্তানী কয়লার আদায়ী 'সারচার্জ্ঞ' এবং পাকিস্থানে চালানী কয়লার উপর লভ্যের অংশ কেন্দ্রীয় সরকারের নিকট দাবি কানে তাহা হইলে উহা খুবই ফায়সন্ধত ১ইবে। আমি বতদ্ব জানি পশ্চিম-বন্ধ সরকার অর্থ কমিশনের নিকট এরপ কোন দাবি আজ পর্যন্ত পেশ করেন নাই।

# নিষ্কৃতি

সমারসেট্মম্ অহবাৰক—এববাসাচী বাব

আবার অনেক বিষকার বিখাস বে, কোল ভত্তরহিলা বধন কোন পুরুষকে বিবাহ করতে হয়ত করেব, তথ্য তিলার্ছ লম্ম নই না করে পলায়ন করা হাড়া পুরুষের রকা भावात छेभात त्वरे। किन्छ मा, और भन्नाछ जब जबरत कन राय मा। जामात अक रहरक थानि यात वर्ग खेंन हरहिक व विवासक्षण व्यवस्थावी नर्कनाम नद्रपश्चित् स्वय स्व একট টবরাশ বার সলে নিবে সেই বছর্ছে সে বিভট্টর বলর व्याप पावारपत अपने केपिके क्या निवास निवास पाव नंत वरमवनारम् माना (कान बूदा दिकानात नंत मि বিজেকে বিরাপন বোধ করল : কারণ লে তেবেছিল স্বীভাতির मर्था अक्षित्रेषात प्रधान पार्ट अवर अक नहरत्तत मर्था पत-ৰহিলাট নিশ্চৰই ভাকে একেবারে ভলে বাবেন। কিছ ভাতাভ বেকে সেই পুৱাতন বন্ধৱে নামতেই বিনি সর্কাশ্রবন সোংসাহে क्रमान (मर्क चारक चडारमा क्रमानम, चिनि तमेर क्रमारका ৰহিলাট হাড়া আৰু কেউ ননু, বাৰ ডাছ বেডেই আবাৰ पक्ष गानित शिखिल।

আৰি তৰু এক জনের কথাই কালি বে এরক্র অবছার প্রতেও পের পর্যান্ত নিক্ষেকে উদ্ধার করতে পেরেছিল। তার নার রক্ষার চেরারিং। ক্রথ বারলোর সক্রে বর্ধন লে প্রেরে প্রতেহিল, তথন তার বৌবন অনেক দিন হ'ল অভিজ্ঞান্ত ম্বেছে; তা হাজা তার আলে লে তথেই অভিজ্ঞান্ত সকর ক্রেছিল, বাতে তার নাববান হওৱা উচিত ছিল। কিন্তু কর বাহলোর এবন একট অর ছিল ( অবনা এটকে অর আব্যা লা বিরে ক্ষরতা বলব কি ? ) বার ক্ষর বাবতীর পুরুব বাসুবাই আন্তর্কার অসমর্থ হারে প্রতেশ। এইক্রেই রভারও ভার বিচারবৃতি, সাবধানতা এবং জাগতিক অভিজ্ঞতা সব বিশ্বত করেছিল।

क्रव बाहरनाव अरे चक्र किन चनरतत बरन कक्रवा **উত্তেক্তর ক্ষরতা। এবিতী বারলো ছ'বার বিবাহ করেছিলেন** बादर इ'वाबरे विवया श्राहास्त्रम । कांत्र (ठाव इके सिम मणीत, ভাসাভাসা এবং ভক্তৰ—বেম এই মহাৰ্ছেই ভাৱ বেকে এল केशरह शकरन । कांब रहान रहरने बरन ह'ल राम मरनाव कांब शक्त बकाब इस्तिवह । छात हार्यत शारम काक्रिक बागमात बाम एक:रे बरे जात्वत केवत क'च-जादा. (वठावीत इ:वकडे ওর সম্ভের সীবা অভিজ্ঞর করে গেছে। আপনি বরি রভার क्रिवादिर-अब यक मक्रमनर्, यनिके व्यव्ह व्यवकाती क তার যত প্রচুর বিভবাব হতেন, ভা হলে এটা বুবই বাভাবিক व जानवार बान और देखा र'च-- वर्गाच्य नवस विनय-আপর বেকে ঐ অসহায়াকে আপনি আভাল করে রাবেন। के यक यक करून ट्रांच इक्रे ब्लंड इश्वंब नवल कानिया बूद्ध (क्लांक शांदान, चाः, कि वहर काक्ष्रे मा करा हता। রভারের ক্ৰাৰাণ্ডা বেকে বা বুবভাব, ভাভে মনে হ'ড এবিতী বারলোর সদে পুৰিবীর কেউই তাল ব্যবহার করে নি। ভিনি নাকি সেই রক্ত হততাগিনীদের অভতবা बाबा बबमरे (बबिटक छात्र, नानव फकारव बाव। विवादहव नव कांव चांबी कांट्य बावरवाव कवक : त्यंबाव-वाकारव त्य বালালকে বিবে ভিনি ভাজভারনার করতেন, সে নির্বাভ कृदिक द्वेकाल । केंक्ब ठाक्ब बारवबरे किनि बाबरक्य. টের পাওয়া বেড বে, ভারা পাঁড বাভাল। বে মূলুরছানাড়েই चिनि भूराचन रमके इ'विम नारवरे बाबा रवछ।

রভার বেলিৰ আবাকে ভাষাল খে, অবশেষে লে এবিতী বারলোকে বিবাহপ্রভাবে রাজী করাতে পেরেছে সেধিন আবি ভাকে অভিমন্ত্রন ভাষালাব—"আশা করি ভোষাবের ব্রেড্ড বেশ ভাষাব হবে।"

সে বললে,"বান ভো ও ভোষাকে বানিকটা ভর করে, ও মনে করে ভোষার মধ্যে দুখামারা বিশেষ মেই।"

"আমার সম্পর্কে তার এরক্ষ বারণা হবার হেতু ?"

"চুৰি ৩কে পছল কর ভো ?"

"बिक्टडे, पूर शक्य कृति।"

"আহা, বেচারীর শীবন বছই হৃংবে কেটেছে। আনার এক বারা হর, ৬ব শ্রু।"

"তা ত বটেই।" আমি বসসাম।—এ ছাড়া আর কি বসব ? আমি জামডাম বে গ্রীষড়ী বারসো একট বুছিলীমা অবচ কলীবাজ গ্রীলোক। আমার আরও বারণা হ্রেছিল বে, মিজের স্বার্থ সিভির জড় ডিমি সর্ব্বান্য চুচসছল।

তার সলে আমার প্রথম আলাপের কথা মনে আছে।

আমরা সবাই ত্রিক বেলহিলার। তিমি আমার 'পার্টমার' হংবিলেন। আমার সমত তাল তাল হাতগুলি তিমি আকর্য তংপরভার সলে বার বার মাট করেছিলেন। আমি অবস্থ সাক্ষাং দেবহুতের মত ব্যবহার করেছিলান, কিছ কাক্রর চোবে বদি অল তরে উঠবার কারণ হরে পাকে তো বে আমারই, রূপ বারলোর ময়। ভারপর সদ্যা পর্বান্ধ আমার কাছে অনেকগুলি টাকা হেরে পরে একট চেক পাটিরে লেবেন এই প্রতিক্রতি দিয়ে তিমি বিবার নিলেন বটে, কিছ পের পর্বান্থ কোমদিনই আর তা পাঠালেন না। অবচ পরে ববনই তার সক্ষে ক্রেমিন তার তারে ওরক্ম আহত অভিনানের ভাব উপলে উঠেছে—বেন আমিই তার প্রতি নিদারন ম্বান্থ আমারী মাধার কোমদিনই ঢোকে নি।

ব্ৰদাৱ শ্ৰীৰতীর সলে নিজের বন্ধুবাধ্বের পরিচর করিবে বিলে। তাঁকে অলহারাদি উপহার দিতে লাগল। তাঁকে নিবে এবামে ওবামে বেছিরে বেছামোও সুরু করে। অনুর ভবিষাতেই ভাবের বিবাহ হবে একবা বিজ্ঞাণিতও হবে গেল। রভার নিজেকে ব্র সুবী বোর করছিল। ভার বিধাস হবেছল বে, সে একটা বুব ভাল কাজই করতে বাজে এবং দেটা সম্পূর্ণ নিজের ভাসিদেই। এ ব্লক্ষ অবস্থার সে বে বুলির আবিক্যে বাবে বাবে একট্-আংট্ বাভাবাভি করে কেলবে ভাতে আর আকর্ষ্য কি ?

ভার পর হঠাৎ এক দিন ভার টনক বছন। আনি না কি
করে এবং কেন। এবতী ক্রবের প্রেব-কুকন বে ভার কাছে
পুরোনো হরে গিছেছিল ভা ননে হব না। কারণ এবিভী
কর্ণ কোন দিনই বিশেষ ক্থাবার্ছা ক্রভেন না। হর ভ ভার

চোবের করণ চাউবি আর রজারের অবরে তেবন নোচক বিতেপারিক না। হজারের চোব বুললো এবং ভার বাভাবিক বিচক্ষণতা ও সাংসারিক বৃত্তি আবার কিরে এল। সে স্পর্কই বৃত্তি পারল বে, এমতী ক্রবই ভাকে বেঁবে ভোলবার মতলব করেছেন। বৃত্তি পারার সলে সলেই লেও প্রতিজ্ঞা করল বেবন করেই হোক সে কিছুতেই এটা বটতে বেবে না।

কিছ কি করা বার ? ব্যাপারটা গঢ়িবে গেছে অনেক ছুর। এবন সে সালা চোবে ভাল ডরেই বুবতে পারল কোন বাকুতে গড়া প্রীলোকের সলে ভাকে বোঝাপড়া করতে হবে। বলি সে সোজাত্মকি হাড়ান পারার প্রভাব করে ভা হলে কব নিঃসন্দেহে, তাঁর হুদুরুল্পী করুণ চাছনির হারা বেশ বোটা টাকা তাঁর ননোবেদনার সান্ধুনা হিসাবে আলার কঃবেন। ভা হাড়া কোন ভ্যাবহিলাকে এভাবে পরিভ্যাগ করা বড়ই অপোভন। সরাজে বদনার হর।

वकात निरक्त बरमद कवा बरमहे काल वावन । जारन কিংবা ভাষার কোম রক্ষেই সে গুণাক্ষরেও প্রকাশ হতে দিল মা বে, কৰ বাঞ্চলার প্রতি ভার খনোভাবের পরিবর্তন হরেছে। क्रायत मानातक्षामत विरक् त्म नमान मानारवाने करत वरेन। তাকে নিরে লে আপের মতই খেলাগুলা, সিমেনার বাওরা, ভিনার বাওয়া ইত্যাদি করতে বাকল। নির্বিভ সে তাকে সুলের ভোড়া উপহার দিবে বার এবং দর্মানাই সহাতুত্তিপূৰ্ণ মধুর ব্যবহার করে। কৰা হিল বে, श्रविवायण अकडी वाफी (शामरे जावा विरक्षेत्र) (जाव क्लाव । এখন ভারা হ'লনে যিলে বাড়ী র'জতে লেগে গেল। বাড়ীর এলেণ্টরা অনেক বাতীরই খবর দিলে এবং রভার কর্ণকে নিবে সেপ্তলি যেখে বেভাভে লাগল। মনের মত একটা বাড়ী পাওয়া अधिके २७ वनकिल । तकांत चातक अधिकेश्व कार्य नियम । ৰাভীর পর বাভী ভারা দেখে বেভে লাগল। বেশ ভাল क्रांदरे कादा (प्रथम-क्यमा दावाद क्रंदि (बरक च्यूक क्रांद চিলেকোঠার বর পর্বান্ত ভারা বুঁটারে বুঁটারে প্রভাকট বাজী (पर्य । वाकीश्वनि द्व तम वक, मन दूवरे (वार्ट मान द्व-প্ৰক প্ৰক্ষত আৱ পাওৱাই বাব না। কৰ্মও বা বাজাৱ-হাট অভ্যন্ত প্ৰে পড়ে, ক্ৰমণ্ড বা একেবাৰে বাজাৱের প্ৰায় बर्याहे बाफी भाषवा बाब। इरहात कामहाहे युवियत र्राट्स मा। क्रवंग्र दिया बाद काका यक द्वी नक्ष्य, क्रवंग्र वा जाजा नचा दलक रावा वाद वाकोडे त्वाद जाका-कादा। क्मिय वाणीकोटक वर्ष (वर्ष कामा बाय दव, क्मिकोटक वा बाय হয় বেদ তেশাভৱের বাঠে গাড়িবে আছে। কোনটার বড় বেৰী অৱকায়, কোনটা বঢ় বেৰী ঠাও। প্ৰভ্যেক বাকী (बर्फरे बचाव रकाम मा रकाम वृष्ण नाव कवरवरे। बचावरक বুৰী কৰা হিল শব্দ , অবত ভার কারণত হিল। ভার প্রাণের

মান্ত ত লে একটা বা-তা বাড়ীতে হাবতে পারে লা। বনের

নত ও সর্কোত্তর বাড়ীট ভার চাই-ই। অবচ লে হকর বাড়ী

বুঁলে পাওরা সরব ও পরিপ্রব সাপেত। বাড়ী বোঁজা একট

লান-হরহানকারী কাজ এবং শেষ পর্বান্ত রূপ বিটবিটে হয়ে
পত্তের। হলার তাকে আর একটু বৈর্বা বরে থাকতে অহুরোর
করল। প্রক্র তাকের বনের বত, প্রবোজনরত বাড়ীট নিজ্বই
ভোগাও আপোণাপেই স্কিরে আছে; আর একটু অব্যবসার,
আর একটু অপোন্তা, তা হলেই নিজ্ব ভারা কেট বুঁলে পাবে।
লত লত বাড়ী এই ভাবে ভারা বেবে বেড়াল, হাজার হাজার
লিছি ভারা ভালল, অসংখ্য রাহাবর, ভাড়ারবর ভারা পর্বাবেজন করল। ক্লাভ ও ক্লুব হবে রূপ পোবলালে এক বিন
হজারকে বললেন, প্রেব, ভূবি বিদিপনীর একটা বাড়ী না প্রক্র
কর, আনাকে সরত অবহাটা ভা হলে আর একবার তেবে
বেগতে চবে। এ কি, এ রক্ষ ভাবে চললে ভ আরাকের
কোন বিন বিরেই চবে না।"

"আহা, ও কৰা বলো না," বজাৰ উত্তর বিলে, "আর একটু বৈৰ্ব্য বর, শ্লীক। দেব না, এইবাস্ত একেউবের কাছ বেকে আর একটা কিরিভি গেবেছি—অভতঃ গোটাবাটেক বাজীর ববর আছে এতে। এর সধ্যে একটা নিভাই—"

আৰার হর হ'ল বোঁলাবুঁলি। বাভীর পর বাভী, আৰার বাভী। হ'বছর এইভাবে ভাটল। রূব নির্মাণ ও বীভপ্রছ হতে পড়লেন। তাঁর চোবের সেই ভরুণ চাউনি পেল বহলে, রেবাবে নিরুদ্ধ আক্রোশের ভাব প্রকাশ পেতে লাগল। বাছবের সম্বের নীরা আছে। প্রবিভী বারলো অনীর বৈর্বোর আবিভাবির হিলেন বটে, ভিড শেব পর্বায় তাঁরও বৈর্বোর বাব ভালন।

"রখার, ম্পষ্ট করে বল ভ আবাকে বিবে করবার ভোষার সভি্য কোন নভলব আবে কিনা ?"—এরক্স পাণিভ কণ্ঠবর বারলোর গলা দিরে এর আগে কথনও বেরোর নি। রভারের ববুর, শাভ, উভাপহীন বরের কিন্তু লেশবার ব্যভিক্ষর কেঞ্চ বেল মা, মললে—"নিভাই আছে, কি মলছ ছবি ৷ বে মুছুর্ডে একটা বনের মত বাড়ী পাব সেই মুছুর্ডেই আমরা বিলে করব ৷ ভাল কবা, এইবাল আর একটা বাড়ীর সভাল পেরেছি, মনে হচ্ছে এটা বোব হন্ন বেননট চাই ভেন্নট হবে ৷"

"আবাৰ শৰীৰ ভাল নেই। এইয়াত্ৰ আবার একটা বাড়ী বেৰতে হোটবাৰ আবাৰ আৱ ক্ষতা নেই।"

"আহা, দভা ভোষাকে বড় ভ্লান্ত বেবাছে। ভোষার উপর দিবে কি কম গেছে।"

ক্লণ বাবলো শ্বা এছণ করলেন। রজারের সলে দেখা-সাকাং বছ করে দিলেন। রজারকে প্রত্যন্থ বাইরে থেকেই ভয়াববান করে ও কুল পার্টীরে সভাই থাকভে হ'ল। অবস্থ ভাতে সে বিন্দুবার গাকিলভি করল না। রোজ কুবকে চিট্টী লিবে জানাভে লাগল কবন, কোবার, কি রক্ষ বাছীর সভান পাওরা বাছে। সপ্রাহ্বানেক পরে সে এই চিট্টিট পেল: রজার.

আৰাৰ বিখান চুমি আৰাকে সভিচ সভিচ ৰোটেই ভাল-বান বা। আৰি একজমকে পেৰেছি বিনি আৰার সমস্ত ভার বেবাৰ জন্য বিশেষ উদ্ঞীব। তাঁকেই আজ আৰি বিৱে কছৰি।

क्ष

বিশেষ লোক ৰাৱকত হজার অবিলৱে জবাৰ পাঠাল : কব.

ভোষাৰ চিট্ট আমাকে চুবনাৰ কৰে দিবেছে। এ আবাভ আমি কোম বিনই কাইৰে উঠতে পাৱৰ না, কিছ ভোষাৱ সূপই আমার প্ৰথম ও প্ৰবাম চিন্তা। এই সকে সাভগানি বাড়ীর টিকামা পাঠাছি। আমুক্তের সকালের ভাকেই এগুলি এসেছে। আমার মনে হয় এর মধ্যে একটকে অন্তভঃ ভোষার প্ৰস্কু হবেই। ইভি

> হডভাগ্য বজার



# পণ্ডিচারীতে শ্রীঅরবিন্দ

### এমতিলাল রায়

১৯১৩ খ্রীষ্টাব্দে পশ্চিচারী বাসকালে শ্রীমববিন্দের সহিত মাতা মণালিনী সম্বন্ধ আমার বে সকল কথা হইয়াছিল. ভাহা এই কেত্রে উল্লেখ করিব। মাতা মুণালিনী সম্বন্ধ আমি দকল তথ্য অবগত হই বৰ্দ্ধমানের দেবাকর্মে নিযুক্ত থাকার সময়ে। বাঘা ষ্টানের মথেই গুনি মাতা মণালিনীর কথা। ভূপানবার তখন তাঁহাকে স্বীয় গুরু মক্তানন স্বামীর আশ্রমে পাঠাইয়া দিয়াছেন। মক্তানন স্বামীর নিকট স্বাতা মুণালিনী এই সময় যোগশিকা কবিতেভিলেন। স্বামীকী ডিক্রগড়ে থাকিতেন। ১৯০৭ সনে শ্রেম্বরিন ধে তিনটি "পাগলামি"র কথা মাতা মণালিনীকে জানাইয়াছিলেন, খামী নিক্দিষ্ট হওয়ায় সেই উদ্বেশ্সসিদ্ধির ক্ষয়ই 'ভিনি ডিক্রগড়ে বোগশিকায় নিরতা হইয়াছিলেন। পরে তিনি বেলড মঠে স্বামী সার্মানন্দের আতায় গ্রহণ শ্ৰীঅৱবিন্দ মাতা মুগালিনীকে ঠাহার পাণ লামির কথা গুনাইয়াছিলেন বটে, কিন্তু অক্সাৎ काशास्त्र निकासन उडेरक इस बनिया भनेरक एमक्सभी প্রস্তুত করিয়ালওয়াল্ভর হয় নাই। আমিই সর্বপ্রথমে শ্রীঅরবিন্দকে তাঁহার উদ্দেশসিদ্ধির জন্ম মাতা মুণালিনীকে প্ৰস্তুত কবিয়া লইতে বলি। শ্ৰীমহবিনা তথুত্বৰে বলেন, যদি তাঁহার পতা ভাঁহার লিখিত তিনটি প্রসিদ্ধ পাললায়িত্র লক্ষ্য সিদ্ধ করিতে পারেন, তবে পণ্ডিচারীতে আসিয়া मुगानिनी (मवीद शक्क वान कवा कु:नाशु इडेटव ना। आमि শ্রীমার্বিন্দের প্রমুখাৎ এই কথা পণ্ডিচারী চইতে ভ্রমিয়া আদিয়া মাতা মুণালিনীর ভ্রাতা শ্রীশিশিরকুমার বস্থর সহিত সাক্ষাৎ করি। শিশিরবারুর মুখে মাতা মুণালিনী সকল বৃদ্ধান্ত অবণ করিয়া পণ্ডিচারী ঘাইতে সম্মত হন। কিছ ভবিতব্য তাঁহার প্রতি বিরূপ হইলেন। তাঁহাকে পঞ্চিরী প্রেরণ করার সকল আছোজন বধন শেষ হইয়াছে. সেই नमम चक्यार छांशांद शान-विशातित कथा खेरन कति। **এই সংবাদ** श्री मदवित्मद निक्षे পोहित्म. जिनि भार्छनाम कविशा छिठिन । छारात कामग्ररकती तीर्चानः मारत कलावित विष्ना में निः नाविष्ठ हम । श्री सविष्य विष् ধর্ম-সন্ধিনীরূপে পাইবার প্রভ্যাশা করিয়াছিলেন, কিন্তু দে ष्यामा भून हरेन ना । यांचा मुनानिनीय ७ मुना क्रम छित्रा দিবার অপেকা সহিল না, অকালেই ডিনি চির-প্রসান ₹शिलन ।

জীঅহবিক তাহার বৃণাধিব - বোগদভিবলে সাহা

বিখের মানব-চরিত্রের পরিবর্ত্তন আনিতে চাহিয়াছিলেন। বাঙালী জাতি এবং ভারতবর্গ ছিল তাঁহার অপ্রকৃমির ক্রের। তিনি যোগশক্তির সাহাব্যে বিখবাসীকে অসাধারণ চরিত্রে উন্নীত করিলা জগতে এক দিবাজাতি-গঠনের ইক্সা
(Will) করিয়াছিলেন। এই উদ্দেশ্রেই তিনি আমার দিবিলেন—

"The attempt to apply knowledge and power to the events and happenings of the world without the necessary instrumentality of physical action. What I am attempting is to establish the normal working of the shiddhis in life."

অর্থাৎ, জ্ঞান এবং শক্তি জগতের সর্ববিধ ঘটনার প্রয়োগ করিয়া, প্রয়োজনীয় দৈহিক সাহাব্য ব্যতীত পৃথিবীতে কার্য্য করিবার প্রয়াসই আমি করিতেছি। যৌগিক সিদ্ধিতীনকে জীবনে সংজ্ঞাবে কার্য্যে নিয়োগ করিতেই আমি উন্নত।

#### বিষয়টি স্পষ্ট কবিবার জনা আরও লিখিলেন—

". . . that is, the perception of thoughts, feelings and happenings of other beings and in other places throughout the world without any use of information by speech or any other data."

অথাৎ, বাক্যে অথবা বাছিরের অন্য কোন প্রকার তথ্যের উপর ভিত্তি ন। করিয়া সারা বিশের অপর সকল মান্থ্যের এবং স্থানের চিন্তা, সংবেগ ও ঘটনার অনুভূতি লাভ।

### দিতীয়ত:-

"The communication of the ideas and feelings
. . . To others (individuals, groups, nations) by mere
Transmission of will power."

অর্থাৎ, কেবলমাত্র ইচ্ছাশক্তি প্রয়োগ করিয়াই অপরের নিকট (ব্যষ্টি, সমষ্টি, অথবা জাতির) ভাব ও অহুভূতি জ্ঞাপন।

### ত্তীয়ত:-

"The silent compulsion on them to act according to these communicated ideas and feelings."

অর্থাৎ, অভ:পর এই সমন্ত সঞ্চারিত ভাব ও অহুভূতি অহুবায়ী কর্ম করিবার জন্য নীংবতার মধ্য দিয়াই ভাহা-দিগকে প্রভাবাধিত করা।

### চতুৰ্ত:—

". . . the determination of events, actions and

results of actions throughout the world by pure silent will power."

অর্থাৎ, এমন কি ভিনি চাহেন অগতের সকল ঘটনা, সকল কর্ম এবং সকল কর্মফলও নিছক নীরব ইচ্ছা বা বোগশক্তির প্রভাবেই নিঃমিত করিতে ছইবে।

ভিনি এই সকল কথা ধারাবাহিকভাবে আমায় নিধিতেন। ১ম, ২য় এবং ৩য় পর্য্যায়ের কর্মগুলি ভিনি সম্পূর্ণরূপে গুড়াইয়া লইতে না পারিলেও অনেক পরিমাণে কৃতকার্য্য হইয়াছিলেন। কিন্তু বেংলমাত্র চতুর্থ পর্য্যায়ের বিষয়টি সংসিদ্ধ করিতে ভিনি অত্যন্ত বাধাপ্রাপ্ত হইতেছেন, ইহা ভানাইয়া নিধিলেন, যথন পূর্ণ সাফল্য আসিবে, আমি মনে করিব—

"I have got rid of the past karman in myself and others."

— সামি নিজেও ধেমন প্রাক্তন কর্মবন্ধন হইতে মুক্ত হইয়াছি, তেমনি অপবকেও মক্তি দিতে সক্ষম হইয়াছি।

তিনি কোন দিকে বাজা স্ক করিয়াছেন, তাঁহার পত্র হইতে অস্কত্তব করিলাম। তিনি অভংপর বোগশন্তি প্রয়োগেই বিশ্বের যাহা সৎ, যাহা হিত, তাহাই সিদ্ধ করিবেন, বুঝিলাম। যৌগিক ক্রিয়াকর্মের উপরও তাঁহার আহা কভবানি ছিল তাহাও তাঁহার পত্র হইতে স্পষ্ট ব্রিতে পারা যায়। তিনি লিখিলেন—

"তৃষি বে ভাষিক সাৰমা করিভেছ, ভাছা ছংসাহসিক কর্ম, সন্দেহ নাই। বদিও ইহা অভিশব বোগ্যভার সহিত সম্পর হাইতেছে এবং জ্রমশং ভোষার কর্মে উরভি দেবিভেছি, তব্ধ সর্পপ্রথমে মনে রাখিও প্রভ্যেক কর্মের সাবারণ সভ্যু হাইতেছে মুক্তি এবং ভূজি "which Tantrics in all ages have pursued" অবাং—ইহাই হাইভেছে সাবক্ষের চিম্নের নীতি। কিছ বিশেষ অবহা এবং ক্ষের ভূজ আবাদের কর্ম করিছে হাইবে। বে কর্মের ভূজ চিম্নের তা numerous Kriyas are not always necessary—সর্প্রা হৃহং অববা বহু কিরা এইজ্ প্রয়েশ হ্র না। অতীতে বেরুশ বিশ্ব ভাবে কর্ম্মিনিকে ভার্যকরী করিবাহ সেইরুণ কর্ম সর্প্রা বাহ্নীর।

ভোষার কর্মাকন্য নির্ভন্ন করে ছুইট বিনিষের উপর:
Mantra & Tantra. Mantra the mental part, and
Tantra the practical part. এই কর্মের যে রাজনিক
উত্তেশনা ভালা হুইতে মুক্ত হুইরা কর্ম করিতে হুইবে, ভালা
বলাই বাহল্য। বলে রাখিও, সর্ম্বা Angarakshan is as
important as Siddhis. ছু:বের বিষয় কলিছুলের ভারিকেরা
নিষিয় বোহে অক্রমণ বিষয়ে অভিশন্ন উলানীন। ভালারা
নিষিয় বিশেষ অবিক বৌক্ত বিশ্বা Davils & Rhutes অবাধ

— তুত ও প্রেতেরই পিছারে আদে। অসহকর্পে প্রবেষণ, প্রথমতঃ, বর্থোপর্ক্ত নিছ মন্ত্র এবং নিছ ক্রিয়ার সংবোধ। বিভীনতঃ, সর্বাদা রাকসবের কবলে না পাছিতে হন, এইক্ত সতর্কতা অবলঘন করা। আমি এই সকল কথা তোমাকে বলিতেহি এইক্ত বে, বাহাতে শক্রক্তিক আক্রাহ্ম না হও। মন্ত্র মতক্ষণ অভ্যান্তর মন্ত্র মা হন্ত ভতকণ কর্পে বিরত হইরা বৌন পাছাই ভাল। বেদ এবং তন্ত্র মুই মতন্ত্র বন্তু। বেদায়ের প্রচার এবং প্রসায়তা ভূমি নির্ক্ষিবারেই করিতে পার; কিছ তন্ত্র সবহে সাধকের গোপনীরতা প্রবোধনীর।"

তাঁহার পত্র পাঠ করিয়া উছিগ্ন হইলাম। তিনি বে তাত্রিক ক্রিয়ার কথা বলিতেছেন, তাহা বৈপ্লবিক কর্ম। বেদান্তের সাধনায় তিনি স্বয়ং বে স্থানে উঠিয়াছেন, আমাকেও দেই স্থানে উরীক করিতে চাহিতেছেন। তাঁহার পত্রের মর্ম আমার বিপ্লবী বন্ধু:দর নিকট গোপন বাধিয়া আমি তল্পোক কর্মেই সহ্বাত্রীদের সহিত আগাইয়া চলিলাম। প্রীমরবিন্দ কিছু বিপ্লব-কর্ম হইতে আমি বাহাতে নিরস্ক হই, সেই দিকেই আমায় পুন: পুন: আকর্ষণ করিতে লাগিলেন।

এই সময় মঁসিয়ে পদ বিশার মাদাম রিশারের সহিত জাপান যাত্রা করেন। তাঁহারা ফিরিলে "আর্ধা" পত্রিকা প্রকাশিত হইবে। শ্রীষরবিন্দ আর্থা পত্রিকার মধ্য দিয়াই বেদ উপনিবদের মৃদত্ত্ব ও ভারতের সাধন বিজ্ঞান প্রাচ্য ও পাশ্চান্ত্যে প্রচার করিতে মনস্থ করেন। এই উদ্দেশ্ত-সাধন কি ভাবে করিবেন, তাহার উল্লেখ করিয়া লিখিলেন:

"In this review, my new theory of the Veda will appear, as also translation and explanation of the Upanisadas, a series of essays giving my system of Yoga, and a book of Vedantic philosophy (not Shankara's but Vedic Vedanta) giving the Upanisadic foundations of my theory of the ideal life towards which humanity must move."

অর্থাৎ, এই পত্তিকার বেদ সম্বন্ধে আমার নৃতন মড, উপনিষদের অন্থাদ ও ব্যাখ্যা, আমার পদ্ধতি অন্থাদী বোগের ধারাবাহিক প্রবন্ধ ও বৈদান্তিক দার্শনিকতা প্রকাশ করিব। (শহুগাচার্ব্যের মতবাদ নহে), বৈদিক বেদান্তই এই কাপজে প্রচারিত হইবে। উপনিষদের ভিত্তিতে আমার এই আদর্শের পথেই মানবন্ধাতি অবধারিত চলিবে। তিনি আরও বলিলেন—

"It will be the intellectual sides of my work for the world."

ইহাই অগতের অস্ত আমার আনমূলর কর্মের দিক। আর্থ্য পত্রিকা প্রকাশের জন্য কিছু অর্থ সংগ্রহ করিজে আমার লিখিলেন। আরি সাধ্যমত কিছু অর্থ উাহাকে প্রেরণ করিতে পারিয়াছিলাম। ঐপরবিন্দ চির্নিনই
অর্থেও দিক দেখিয়া চলিতেন। তাই আবার লিখিলেন—

"We shall have a sound financial foundation to start with."

পত্রিকাথানি তিনি ইংরেজী ভাষার ১০০০ হাজার কণি এবং ফ্রাসী ভাষার ৫০০ কণি প্রকাশ করিতে মনস্থ করেন। তাঁহার হিসাব মত বাবিক ৬ টাকা হারে ফ্রাসী ও ইংরেজী সংস্করণ মিলিয়া অন্ততঃ ৪০০ কণি সংগ্রাহক বলি স্বির হয় তাহা হইলে ২৪০০, শত টাকায় কাগজ বাহির করিবার উপযুক্ত ব্যবস্থা হইতে পারে। এই অবস্থায় আমি কত গ্রাহক কবিতে পারি, তাহা তিনি জানিতে চাহিলেন। উত্তরে আমি তুই শত কণি আর্য্য বাংলাদেশে বাহাতে প্রচারিত হয়, ভাহার ব্যবস্থা করিব, জানাইলাম। ভত্তরে তিনি প্রবায় লিখিলেন—

"As to the review, I do not think we can dispense with the 200 subscribers whom you promise. The difficulty only is that, if there are political suspects amongst them, it will give the pilice a handle for connecting politics and the review and theirs frightening the public."

অর্থাৎ, তুমি পত্রিকার জন্য বে ২০০ জন গ্রাহক করিতে চাহিছে, ভাহা আমি নাকচ করিতে চাহি না। মুশকিল এই বে, ভাহাদের মধ্যে বদি সন্দেহভাজন রাজ- নৈতিক থাকে, ভাহা হইলে পুলিদ এই পত্রিকার সহিত রাজনীতিকে জড়াইয়া দর্বসাধারণের মধ্যে পত্রিকা সহছে ভীতি-সঞ্চার করিবে।

"There should be no entanglement of this review in Indian politics or a false association created by the police, finding it in the house of some political suspects they search."

শ্বাৎ, ভারতবর্ষীয় বাজনীতির সহিত এই পত্রিকার কোন সংস্রব না থাকে, শ্ববা পুলিদ এক্লপ মিথ্যা সংস্রব স্পষ্ট না করে, ইহা বাজনীয়। সম্পেহতাজন রাজনৈতিক-দের গৃহে খানাতলাস করিয়া এই পত্রিকা পাওয়া সেলে এইক্লপ সংস্রব স্কৃষ্টি করা সম্ভব।

'আর্যা' সহত্তে আমার এত সতর্ক করিতেন এইজন্য বে, আমি বিপ্লবীদের সঙ্গে বধন মিশিতাম, তথন তাহার কথাই প্রচাব করিতাম। তৎকালে তাহার লিখিত, "Yoga and its objects" এবং 'বৌলিক সাধন' আদালতে বিপ্লবীদের বিচারকালে বহু সমর উপস্থিত করা হইত। শ্রী বর্যবিন্দের আজ্মসমর্পণের মন্ত্র বুলে আমি বিপ্লবীদের মধ্যেই প্রচার করিতাম। আমি বে ২০০ কপি আর্যা প্রচারের ভার লইব বলিরাছিলাম, তাহাদের মধ্যে কেহ কেছু যে রাজনৈতিক সংস্কৃতাজন হুইবে, ইহা যুবিহাই ভিনি আরও লিখিলেন, "রাজনীতি এবং প্রিকা একসংক্ষণিকলে জনসাধারণ ভব পাইবে।" তিনি এই কথা বলিরাই নিশ্চিত্ত হইতে পারিলেন না, আরও লিখিলেন, "তুমি বে গ্রাহক সংগ্রহ করিবে, ভাহারা বেন mainly interested in Yoga—ভাহারা বেন কেবলমাত্র বোগেরই অহ্বাসী হয়। রাষ্ট্রতিস্তা ভাহারা বেন প্রিভ্যাগ করে। ভাহারা বেন প্রিভ্যাগ করে। ভাহারা বেন প্রিভ্যাগ করে।

God save us from all mysteries except those of Tantric Yoga,

পর্কেই বলিয়াছি, মঁসিয়ে পল বিশাবের সহিত সম্মিলিত হওয়ার পর হইতেই প্রীমর্বন্দে বাংলার বিপ্লব-বাদীদের সভে একপ্রকার সবল সম্বন্ধ চিত্র করিতেই মনস্থ কবিয়াছিলেন। আমাকেও ভিনি বিপ্রবর্ণা চইতে অপস্ত করিতে চাহিলেন। আমার প্রতি তাঁর এই অসুরাপের কারণ সেই যে ১৯১০ খ্রীষ্টাব্দে তাঁচাকে লটয়া সাধনার নির্দেশ প্রার্থনা করিয়াছি দেই শ্বতি মছিতে পারেন নাই বলিয়া। তিনি ইচ্ছা কবিলে আমার অপেকা শত সংস্র ঞ্লের মানুষ বাছিয়া লইতে পারিতেন। কিন্তু সীমাহীন অহুবাগের বশেষ ডিনি আমাকে টানিয়া রাখিলেন। বিপ্লববাদ ছইতে কেন ডিনি আমায় সবিয়া আসিতে দাবি করেন, তাহা যুক্তি হারাই তিনি প্রদর্শন করিলেন। এদিকে কিছ-বাদবিহারী বস্তুর নেততে দিল্লী হইতে ব্রহ্মদেশ পর্যন্ত বৈপ্লবিক সভ্য গড়িয়া উঠিয়াছে। সমগ্ৰ বাংলাদেশ ভলে ভলে সেদিন বৈপ্লবিক আহোওয়ায় মুধবিত। এই অবস্থায় ইহা চইতে প্রতিনিব্র চইতে চইলে খাচাছের প্রীমরবিনের নামে এই কর্মে উচ্ছ করিয়াছি, জাঁচালের কেমন করিয়া নিশ্চেষ্ট থাকিতে বলিব, এইরূপ অভ্যান্ত দেদিন কি ভীষণ ভাবেই আমি বিচলিত চইষা পডিঃ1-চিলাম। বিশ্ব প্রীঅববিদ্ধ জাহার সহতে অবিচলিত। তিনি তাঁহার কম্পন্থাকে ছই ভাগে ছবিয়া লইয়াছেন। একটি আহা পত্রিকার মধ্য দিয়া তাঁহার মিশন প্রচার: আর একটি তার ভাষায়-

"The second part of my work is the practical, consisting in the practice of yoga, by an ever increasing number of young men all over County."

এইজন্ম তিনি পুরাতন হয়ের প্রবাহ হইতে সম্পূর্ণরূপে মুক্ত হইয়া ম্পট ভাষায় জানাইলেন—

"Do not let any add to it by associating Vedanta and Tantra together in an inexpressible fashion."

অর্থাৎ, বেদাস্ত ও ভরকে বেন কুর্ব্বোধ্য ভাবে একত্র অভাইয়া ফেলা নাহয়। তিনি আগও বলিলেন, ভাত্তিক কর্মের ক্ষেত্র অভি অর্থাশন্ত, কিন্তু বেদাস্ত এমন

এক বস্তু, বাহার ক্ষেত্র অভি বিস্তৃত এবং সকল প্রকার মালবই বছ ধারায় ইহা প্রকাশ করিতে পারিবে। স্থরণ বাখিও ভদ্ল বেদান্তের মত নতে। তালের দাবা বক্ততালিক জয়লাভ হয়। বদিও বর্ত্তমানে ইহা ব্যক্তিগত সিভিত্ত জভ ব্যবহৃত না হইয়া বাহাতে মানবজাতিই বোগলাভের ম্ববোগ পায়, তদম্বায়ী পরিচালিত হইতেছে, তবও আমার প্রাং-এই অসম্পূর্ণ ভিত্তির উপর নির্ভর করিয়া কর্ম করিলে তমি কি মনে কর আমাদের মূল উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইবে ? আমার মনে হয়, ইহা সম্ভব নহে। কারণ প্রথমত:. পুরাতন ভ্রুবাদ বিকিপ্তভাবে ক্রিয়াশীল হওয়ায় মহুযা-আভির উদ্বেশ্বসাধনে আর সহায় হইতেছে না। বিভীয়ত:, আমাৰের নুভন ভ্ৰৱাদ গোড়ায় বিশুদ্ধ ভাবে আরম্ভ इहेश कछकी कुछकार्श हहेताल. श्रवास्त व्हडायिव स्वव ইহার প্রতিকে ক্ষর করিতেছে। ইহার ফলে একদিকে বেমন অবাঞ্চিত মানুবের সংস্পর্শে আসিয়া ইহার বিক্রতি ঘটিয়াছে, অন্যানিকে তেমনই অসম্পূর্ণ ভিত্তির উপর রুহৎ কর্মদিভির আশা একেবারেই ব্যাহত হইতেছে। অতএব আমাদের কার্য্য এখন এক নৃতন পর্যায়ে আসিয়া উপস্থিত ছইয়াছে। এই ততীয় পৰ্যায়ে আমাদের প্রয়োজন-ছত:পর পরিপূর্ব জানের সহিত এমন ভাবে প্রস্তুত হওয়া ৰাহাতে কৰ্ম ভাগৰত শক্তির উপর অভ নিৰ্ভৰভায় ছাতভাইলা না চলিয়া পূৰ্ব চেতনাৰ সহিত অগ্ৰসৰ হয়। অত:পর কর্ম হটবে ব্যর্থতা অথবা তুলনাত্তিমৃক্ত হট্যা নিছক ভাগবত প্রেরণারই প্রকাশ।

". . . with the full divine power working out its will conserved in its instrument."

কিছ কেমন করিয়া ইহা সিদ্ধ হইবে ? ইহার জন্য
চাই ভারভবর্ধে অন্তভঃ এমন একজন মানুব, বাঁহার ভিতর
দিয়া ভাগবত জ্ঞান ও শক্তি পূর্বভাবে প্রকাশিত হইবে।
আমি দেখিতেছি আমার মধ্যেই এই শক্তি পূর্ব সংবেগ
কৃটিয়া উঠিতেছে; অবপ্র এই গতির সংবেগ নির্ভব করিভেছে কভকটা আমার শরীর-মনের অভহতা দূরীকরণের
উপর এবং কভকটা আমার বন্ধুবর্গ ও উত্তর-সাধকদের দোবক্রেটিওলির বিশুছতা সম্পাদনের উপর। আমাকে অধ্যাত্মভাবে এই স্কলই বহন করিতে হইতেছে। ফলে আমার
ফত উন্ধতিও ব্যাহত হইতেছে। ক্রেরাং বর্ত্তমান পর্ব্যাহে
সিদ্ধ হইবার জন্য অভতঃ কিছু সমন্ন আমার প্রয়োজন।
ইহা সিদ্ধ হইলে বাকীওলি অবপ্রই সিদ্ধ হইবে। অন্যথার
বে বীজ লইয়া আমরা বোগপথে অগ্রস্ব হইতেছি ভাহা
একেবারেই ব্যর্থ হইবে, অথবা প্র সামান্যই ফলপ্রস্ব
ছইবে। এইজন্যই আমি বে ভোষাকে বিপ্রবের কর্ষ্ম

হইতে বিরত থাকিতে বলিতেছি, ভাহার প্রথম কাংণ ইহা ব্যতীত অন্য কিছু নহে—

That is the first reason why I call you a Halt! ইহা ব্যতীত আবও একটি কারণবশতঃ আমি বিপ্লবের কর্ম থামাইতে চাহিডেছি। তাহা হইতেচে—

"Others should receive the same power and light. In the measure that mine grows, theirs also will increase in power provided always they do not separate thmeselves from me by the ahankar."

আর্থাৎ, আমি চাহি আমার মতই শক্তি এবং আলো সকলে লাভ করুক। আমার মধ্যে শক্তি যে পরিমাণে বৃত্তি পাইবে, বদি তাহারা অহঙ্কারেশতঃ আমা হইতে বিচ্ছিল্লভাবে না থাকে, তাহা হইলে ভাহাদের মধ্যেও ভদ্মরূপ শক্তি সঞ্চাবিভ হইবে।

ইহা হইতেই বুঝা যায়, তিনি তাঁহাকে ঘিরিয়া এমন
শক্তিশালী শংহতি গড়িতে চাহিয়াছিলেন বে, সংহতি ভুধু
ভারতের নহে, সমগ্র বিশ্বের মৃক্তি আনম্বন করিতে সক্ষম
হইবে। এই প্রদক্ষে তিনি জানাইলেন

"The power that is developing, if it reaches consummation, will be able to accomplish its effects automatically by any method chosen."

অর্থাৎ, বে শক্তি আমি অর্জন করিতেন্তি, যদি পূর্ণতা লাভ করে, তবে তাহা বে-কোন নিদিষ্ট পথেই স্বতঃসিদ্ধ ভাবে কার্যক্ষম হটবে।

পূর্ব্বে বে বৈপ্লবিক কর্ম গৃহীত হইয়াছিল, ভাহা ভিনি শেষ হইছাছে ধরিয়া লইয়াছিলেন। অভঃপর তিনি নৃতন করিয়া কর্ম আরম্ভ করিবার জন্য নিজেকে প্রস্তুত করিতে লাগিলেন। ভিনি বে শক্তি সঞ্চয় করিভেছিলেন, সেই শক্তি সঞ্চার করিবার জন্য যন্ত্রের অন্বেরণে এই সময়ে অভিশয় বাস্ত ছিলেন। প্রাক্তত শক্তির প্রবল বিবোধিভায় ভিনি বে এই পরমাশক্তিকে আয়স্ত করিবার পথে সর্ব্বতোভাবে অগ্রদর হইতে পারিভেছিলেন না, ভাহা অভিশয় চিস্তার সহিত অম্ভত্ব করিভেছিলেন। বিশেষভাবে আমাদের কর্মকে লক্ষ্য রাধিয়া লিখিলেন—

"It is specially in the field to which your kriyas have belonged and kindred fields that they are still too strong for me."

আমাদের কর্ম তাঁহার নিকট অভিশর বেদনাদারক বোধ হইল। তিনি চাহিয়াছিলেন সর্বপ্রকার সংশয়মূক্ত হইয়া বাহাতে আমি দাঁড়াইতে পারি। তিনি মনে করিতেন, বে শক্তি তাঁহার মধ্যে অব্দিত হইতেছে, তাহা সমগ্র বিশ্বকে প্রযুদ্ধ করিবে। এই শক্তি তিনি আমার মধ্যে ও আরও করেক জনের মধ্যে সঞ্চার করিয়া একটি শক্তিশালী অধ্যাত্ম-বেল্প গড়িয়া তুলিবেন এবং এই কেল্পের মধ্য দিয়া কাব্য করিবেন—ডখনই কার্ব্য ক্রন্ত ও সার্থক ভাবে সম্পর্ হটবে.

"Then a rapid and successful kriya can be attempted."

কত ব্যথা ও দবদের সহিত তিনি বাঙালীকে বন্ধ কবিষা তাঁহার অঞ্চিত বোগশক্তির সাহাব্যে কর্ম কবিতে চাহিয়াছিলেন, তাহা সেদিন স্কল মৃত্তি পরিগ্রহ কবিতে না পারিলেও ভবিষ্যতে তাঁহার প্রেরণায় জাতি উচ্ছ হইবে, এই বিবরে আমার মনে বিশ্বমান্ত সংশ্ব নাই।

# লিভিংপ্টোন

### এআদিনাথ সেন

প্রতি বংগর পঞ্চাপ হাজারেরও অবিকাগংখ্যক লোক ফটলণ্ডের বাণিভাকেল প্রাগগো শহর হইতে লাভ বাইল দূরবর্তী রান্টাবার পরীতে ভেভিড লিভিংটোনের জন্মহান হেবিতে গিরা জালার প্রতি প্রভাল অর্পণ করেন। লিভিংটোন হিলেন এক জন বার্বভাগি, জনকল্যাপভানী কর্ম্মই আদর্শ পুরুষ। উল্লেখ কেই ব্যক্তি শুরু ফটলণ্ড কেন বে-কোন দেশেই বিরল। উল্লেখ কর্মির জীবনের ফুভিগর্হ শরেণ করিরা ফটলণ্ডের- অবিবাসীরা আজও অন্থপ্রেরণা অন্থ্যক করিরা বাভে। বাহারা অন্থলানী পর্যাইক বা অপ্রগামী হিসাবে বিটিশ সাম্মান্টের সমূদ্ধি প্রসারের সহারভা করিবাছেন, ইনি জীলান্তের অন্থলন।

ত্রিটেনে বসবাদ করা বহু আরাসসাব্য। জীবনযাপদ সর্জ্বপায় তইলে সাবারণতঃ জীবনযাত্রার বাদ উর্ব্রন্থে চেটার প্রেরণার জ্ঞাব হর, বেবন আনাদের গ্রীমপ্রধান বেশে আবহাওবা; লোকেদের অভিবি-সংকারপরাবণতা, সহজ্ব সরল জীবনযাপনের আবর্শ ইত্যাদি আযাদের বাঁচিরা বাঁকাকে সহজ্ব করিলা বিরাছে। কিন্তু বিলাতের অবহা অভরূপ হওরার সেবানকার লোকদের কর্মাঠ ও শক্তিশালী হুইতে হুইরাছে। ত্রিটেনের প্রতিকৃল অবহার নিবিত, অববা বৈব বা অবৈবভাবে নির্বাভিত দেশত্যাদী অনেককে অট্রেলার অপরাবীনিবাস বা আবেরিকার 'পিউরিটান' উপনিবেশ প্রভৃতি বিভিন্ন ছানে লইলা পিরা ভালাদের বসবাদের ব্যবহা ভ্রিয়া বেবরার বিক্টেনের অনেক সম্বাভার স্বাধান হুইরাছে।

আৰক্ত আনেকে বৰ্ণপ্ৰচায় ও সভ্যতা বিভাবের অভ্ছাতে বিভিন্ন কেশে আবিপত্য-ছাপন, বাণিকাবিভার ও
গ্রেক্তাবে পোষ্ণের ব্যবহা করিবা ত্রিটেনের বার্থনিছির
লহারতা করিবাহেন। এইরূপ বার্থপ্রিবশতঃ বলাভির উন্নতিকরে আন্তর্গানিক অরপতিকে ব্যাহত করা বা অভ জাতির
অনিইসাবন বর্ণবানে বিশেষ অপের অপাতির কারণ হইবা
ইাভাইরাহে। বিশেষ ভাতির উন্নতির চেঠা অতীব প্রশংসনীত,

সন্দেহ মাই। কিন্তু ইহাতে যদি অভের অপ্রাক্ত হাইছা উপ্রকার হয় অবেই ভাষা প্লাৰ্মীর। এই মীভির অভসরণ



निष्श्रहोत

কৰিবাহিলেন বলিবাই লিভিংটোন সমগ্ৰ পৃথিবীর প্রমায় পাল। অনবরত বোর বারিজ্যের সহিত্য সংগ্রামে উল্লেখ্য আবন কাইবাছে। কিন্তু তগবামের উপত্র আগার বিবাস রাধিবা এই বেশপ্রেমিক অভ্যাচারের প্রভিবোধে এবং নিরীছ নিশেষিত নানবের কল্যাগচেটার, হুঃব, কট, আগল, বিপল, ব্যাধি, এবন কি বছু পর্যান্ত বরণ করিবা কর্তব্য পালনের অভ্যান্তন লুটাত রাধিবা গিরাছেন।

ডা: নিভিংটোনের পৃর্বাপুক্রবেরা দেশের খাবীবভা-সংগ্রাহে ক্ষতি ছিলেন। কালফারে ইলাগে ফাটাফালেল দিয়েত- পশ্চিষের উচ্চভূবি হইতে সম্ভলে নামিরা আসেন এবং ১৭৯১ সনে রাণ্টারারে পৌছেন। লিভিংটোনের বাড্কুল



রাণীয়াবে এই রাজীতে লিভিংটোন জন্মগ্রহণ করেম বিশিষ্ট বর্ষসপ্রদায়সূক্ত ছিলেম। ১৮১৩ সনে লিভিংটোনের জন্ম হয়। তাঁহার চরিত্রে মাতৃকূল ও পিতৃকূল উভর দিক হইতে দৃচ্ডা, তেজবিতা বর্ষভাব ইত্যাদির স্বাবেশ হইথা-ছিল। জন্মবাসে দ্বিত্রতা নিবন্ধ ভাঁহাকে কার্যাদার কাজে চুকিতে হয়। সেধানে কঠোর প্রিশ্রন ক্রিয়াও গতীর রাজি

नर्वाच लिमि नार्ट्य मिद्रक वाकिरकम ।

বৰ কটে কিছ অৰ্থ সঞ্চয় করিছা मिथिराक्षेत्र खरमाठारचा शामानारख **किकिश्मा विका भिका करतम अवर** (अर्डे अर्क वर्षार्थातात्व कारकत क्रम প্রের চন। কিছ কাৰ্যাভঃ কোন চেষ্টাই সাফ্ল্যম্ভিড হইল না। অবশেষে দ্বিণ আফ্রিকাম প্রচার-कार्या बाहेबाड कम छाडाड कमरह প্ৰবল বাগমা কৰে। সৌভাগাক্তৰে ख्याकाव अभिरिव्यक्ति छा: (याकारहेब সহিত দেবা হওৱাৰ তাহাৱই আফুক্ল্যে লিভিংটোন আফ্রিকার धेक्य किक्छ छैन निर्यम करुमारम निशा পৌছেন (১৮৪১ সন)। আঞ্জিকার पक्षिनशास्त्रत देशमित्रपश्चि चार्यका केवन किएक कार्वान कार्यान करनाक्रम चविक बान क्षतात, काम काम

উত্তৰাভিমুখে অঞ্জনন হইবা ভিনি চান বংসর উক্ত অঞ্জে বসবাস করেন। ভৌগোলিক আবিকান উল্লেখ বুধ্য উদ্বেশ অইলেও ভিনি বর্ষপ্রচারেন প্রবোগ অবছেলা করিভেন না। ১৮৪৪ সন্দে ভিনি ভাঃ যোকাটের কলাকে বিবাহ করেন। উল্লেখ ভার্বাক্তের ভব্য কালাছানী নক্ষক্রির উত্তর প্রকেশে বিশ্বত হব। উল্লেখ্য লীও সমর সমর খানীর সন্দিনী ক্রতেন।

चक्रांत्र किथि शिवशंत्रवर्शं का कार्य ভোগ করেন। भागिरेश मिया जिलिशा मिया कारम शिया (भीटमम । अहे जबरव किमि बारिकविश करत कांत्काक हम। ১৮৫৪ जरम विश्राह्म भव अधिक्रम कृतिका आदिजी महीत छेशकाका हरेबा আজিকার পশ্চিৰ উপকৃলে পর্তুপীক উপনিবেশ লোৱালোতে গিয়া পৌছেম। এবানে শরীর সারিয়া উট্টলে প্ররায় নুভ্য एम चाविकारत विश्वित जन्मवरण श्रांकिशाचे तथा ठडेलमा मामा विश्व-चाश्रक्त चिच्चत क्रिका चारस्त्री जरेश जिमि मिनिय किछ किरिया चानिएसम । देवार चमिन काम भारत कारधमी देशकाका विश्वत अध्यक्त करेवा देखात অব্যাতিত একট বিভাট কলপ্রণতে আবিষ্ঠার করেন। ইতাই **चिरकेशियां** कलम नार्य श्रीमिष्टमांक करत । 8000 माहेस পৰের মধ্যে বেশীর ভাগই পদত্তকে অভিক্রম কবিয়া লিভিংটোম আজিকার পশ্চিম উপকৃল হইতে পূর্বা উপকৃলে আসিয়া भीरकमः किकिराहीम ১৮৫७ जरम देशकाल श्राचार्यस WENT !

এই অভিযানে ভিমি দাসপ্রধা বিলোপ করিবার কর প্রাধ-পণ চেষ্টা করেম। ভবনকার দিবে আরব ও পর্তৃত্বীক ব্যবসায়ি-গণ হানীর আদিম অবিবাসীদের গ্রুও পুর্বলাবক করিবা



লিভিংটোনের সাহসের পরিচরের মডেল—লিগ নিগর বন্ধ হাতে লিভিংটোন শক্তদলের সমূবীন

নিচুর ভাবে বাহকের কাক করাইত। স্থানীর লোকেরা সন্দেহ করিতা প্রথমে লিভিংটে নের প্রতি প্রভিক্ল আচন্ত্রণ করিত, কিড তাঁহার প্রকৃত উদ্ভেত্তর সহিত সহাক্তাবে পরিচিত হইবার পর কোন কোন বলস্থি ও ভাহাকের অস্চরবর্গ আভিত্তাবে তাঁহাকে সাহায্য ক্রিতে থাকে এবং তাঁহার কর্মনেটেই।ও সংক্রানাতের প্রে অঞ্চর হয়।

त्यात्व किविका कि-िश्रहेश्य केव्याव अरे शरमब-त्यात

বংগরব্যাপী অরপর্ভাভ প্রকাশিত করেন। ইহা সকলের
দৃষ্টি আকর্ষণ করে এবং তিনি বিপুল ব্যাতিলাভ করেন।
আল্লিন পরিবারবর্গের সহিত আনকে কাইলে পর লিভিংটোন
গবর্গরেকের ভরক হইতে কলাল নিযুক্ত হইরা ভাবেনী নদী ও
ভাত্তার শাবাপ্রশাবা আবিভারের ভত প্রেরিভ হন। লিভিংটোনেরই আবেলনের কলে অম্ভিকাল পরেই বিলাভ চইতে

বিশপ ন্যাকেঞ্জির অবীনে আর একটি
অভিযাত্তী দল প্রেরিভ হয়। ইহাদের
অবস্থানের স্থবাবস্থা করিরা দিরা
লিভিংটোন ভাষাসা হুদের দিকে
পর্যাটনে যান। ফিরিরা আসিয়া
দেবিভে পাইলেন বে, বিশপ ও
উভার অভ্চরেরা সকলেই অরে নারা
সিয়াছে। এই সময়ে অসুথে ভূসিরা
উভার ত্রী সভাস্মু হন। লিভিংটোন
নিজেও অরে ভূসিয়া ভূসিয়া ভূগেল
হয়া পড়েন। এইবার ভিনি কাজের
নেশার একেবারে নাভিরা উটলেন।
এই সমরেই ভাষসা হদ আবিভ্রভ তর

এবং ঐ অঞ্চাই দাসপ্রধার কেন্তহল বলিরা সাব্যন্ত হয়।
ভারসা প্রদে একটি ভাতাক রাখিতে পারিলে দাসপ্রধার
বিলোপে সহায়তা হইবে, এই বিখাসে সম্পূর্ণ নিজের বরতে
প্রায় সর্ব্রেছ হইরা লিভিংগ্রেম সমুদ্রের উপকৃলে একটি
ভারতে সংগ্রহ করেম, কিছু সেটকে হুছর কলপথে ভোমপ্রক্রিকলের হাছ পঞ্চে, এই আশ্বায় লিভিংগ্রেম উক্ত ভাহাক
বিজেই চালাইরা ২৫০০ বাইল সমুদ্রেশ পার হইরা বোঘাইরে
উপস্থিত হম। এখানে ব্যাস্থানা ভাহাকটি বিজের করেম এবং
এখান হইতেই বিলাতে প্রত্যাগ্রম করেম।

এই দ্বিতীর ভ্রমণরভাস্থ প্রকাশিত করিবার অরকাল পরেই
নীল নদীর উংপত্তিহল আবিফারের ক্ষত রর্যাল ব্যিওপ্রাকিক্যাল
সোগাইটির আন্তক্তরে লিভিংটোন পুনরার আক্রিকার বান।
ববেই সরকারী সাহায্য না পাওয়ার তাঁহার বাল্যবন্ধ বিঃ
কেলী ও বোখাইরের বন্ধুবর্গ তাঁহাকে অর্থসাহায্য করেন।
সাভ বংসরব্যাপী অভিযানের অবসান হর তাঁহার বৃত্যতে।
প্রধ্যে করেক বংসর তাঁহার কোন ব্রর না পাইরা লোকের

বারণা হইরাছিল বে, তিনি নিক্রটি হইরা নিরাছেন।
অবশেবে আবেরিকা হইতে প্রেরিক প্রান্তি তাঁহাকে বুঁজিরা
বাহির করেন। কিন্তু লিভিংগ্রোমক কিরাইরা আনিতে তিনি
সক্ষ হন নাই। লিভিংগ্রোম বলেন বে, তাঁহার কার্য্য
তথমও শেষ হর নাই। তিনি কিন্দিংকাল পরে বাতসভাল,
ওঁয়বপত্র, ৫৭ জন বাহক পাঠাইরা কেন। দক্ষিণ আফিকাতে



मत्त्रात पृष्टोरखत मर्छन—जातर-रायभातीत दाछ दहेरछ निविश्रहाम कर्छ्क এक्षम क्षीणमारमत छेदातमायम

টালানাইকা ও ভাষাসা হ্রদের পার্যবর্তী অঞ্জে বছ ছ:খ-ছুগতির মধ্যে লিভিংটোনের দিন কাটিতে থাকে। অবশেষে ১৮৭০ সন্দে ভিনি মারা যান। মর মাস ঔষধ বারা রিভিড ভাহার মুভদেহ সমুজোপকলে আনা চর এবং ভধা হইতে বিলাভে ওবেইনিমটার এবেভে সমাহিত হয়।

রান্টায়ারে লিভিংগ্রেনের জনগৃহে উহার সমস্থ জীবনের সহিত জড়িত বহ ক্রব্য আছত হইরা সমস্থে রক্তিত হইরাছে। ইহা বহু কল্পে বিভক্ত। একটি কামরার আছে তাঁহার পূর্ব-পুরুষদের ব্যবহৃত ক্রব্যাদি। আর একটি ক্লে আছে লিভিং-প্রেনের লাইত্রেরী, হত্তলিপি, চিটিপ্রাদি।

সর্বাণেকা চিন্তাকর্থক লিভিংগ্রেম গ্যালারি, বাহাতে ছবি ও মডেলের (টারো) সাহাব্যে তাঁহার জীবনের বিশেষ বিশেষ বটনাসমূহ প্রদর্শিত হটরাছে। প্রেরণা, সভ্য, ভক্তি, সাহস, বরা, ভ্যাগ, সহিষ্কৃতা এবং উৎসর্গ এই সব নারাভিত রডেলসমূহ আলুম্লিক পটক্ষিকার উপর্ক্ত আলোকসন্পাতে সুপরিক্ষ্ট হটরা সকলের বিশ্বর ও প্রভাৱ উত্তেক করে।



### রাজনগর

### এননীমাধব চৌধুরী

20

সেই দিন বিভালের বিক্তে সভীন হরিনারারণের ভাছে বিলার চাহিল। জীবানজ সেবানে উপস্থিত হিলেন। হরিনারারণ ও জীবানজ উভতেই আপতি ভরিবা বলিলেন—বিবের 
দিন ছির হয়েছে। আর চার দিন পরে বিবে। বিবেটা হয়ে গেলে বেও।

সভীন বলিল—আনার জকরী কাছ আছে, নইলে থেকে বেভান। আপনাদের কাছে একটু বুলেই বলছি। আনার জকরেবের আন্তর নহাত্তে। আল ছব-সাভ বছর পরে সেবানে আনার ডাক পড়েছে। আনার এবানকার কাছ এক-রকর পের হরেছে। শীরই বাংলার আন্তোলন নৃতন পর্য ধরেব। আনি নৃতন কার্যাক্তরের সভান করছিলান এবন সময় ডাক এল। আর কেরি করতে পারছি না। ছুট নিরেছি বটে, কিছ চাকরি-ছলে কিরে আসতে পারব কিনা জানিনে। নাবার আগে একবার আপনাদের সলে সাকাং করে পেলান। দেবর সলে কেবা হ'ল না, ইলাকে বেবে পেলান।

হরিমারাধণ বাসলেন—ভবিস্ততে কি কাবে থির করেছ ?
সভীন বাসল—কিছু দিন আগে থির করেছিলান, কোন
ভাগনার একটা আশ্রম গড়ে দেশের অনিভিত জনসারারণের
মধ্যে শুরুদেশের আদর্শ অবাং বাধীন ভারতের আদর্শ প্রচার
ভয়ব। কিছু অবসংগ্রহণ্ড করেছিলান। এই কাল আগাভতঃ
বন্ধ বেবে বহারাট্রে বাজি।

হরিমারাংগ বলিলেম—ভোষার লোকশিকার আশ্রম প্রতিষ্ঠা করা ছির হলে অর্থের প্রয়োগদ হবে। আমাকে একটু কামিও তথম, অ্যামি বর্গাসাব্য সাহাব্য করব।

সভীৰ বলিল-প্ৰবোজন হলে জানাব। আগনাৱা ইল্লেছ জ্ঞ উথিছ হবেন না। আনি ভাকে এবন কাল বিজে বাৰ বাতে ভার ননের চাকল্য দূর হর।

কিছুক্ব পরে বাইরে যতীন বাবু সভীনের সঙ্গে বেবা করিবার কড আদিলেন। ইক্সকে ও তাঁহাকে সঙ্গে লইরা সভীন পথে বাহির হুইল। ইটিতে ইটিতে তাহারা বুবলী বিলের বাবে নাঠের দিকে চলিল। নাঠে পৌহিরা এক কারগার বালের উপর সকলে বলিল। ইক্স বভীনবাবুর বাতা-বামি বাহির করিবা উদ্ধভ অংশগুলি পঢ়িরা গুলাইল। পড়া শেব হুইলে সে সভীনকে বলিল—বলে হুছে একটা পথের ইলিত আহে, কিছু হাতে-কল্যের কি তাবে কাল ক্যুক্তে হুবে বুরুতে পারহি নে। ব্যটাও সার বিজ্ঞান।

উদ্বতিগুলি গুলিয়া সভীৰ বেবিল বে, এগুলিভে ভারার

লোক্দিকা-আশ্রবের জান্তর্শির সর্বদ রহিরাছে। আশ্রবের জান্ত্র্প কার্বাবেরী ব্যাব্যা করিবা দে একবাদি পুভিকা রচনা করিবাহিল, উহা ছাপাইবার সময় হর মাই। সে মনে মনে ছির করিবাহিল এই পৃতিকাবাদি ইল্লকে দিরা বাইবে। মন-পজি, হিতবাদী প্রভৃতি পঞ্জিবার মন্তব্য ভদিরা তাহার সময় জারও মৃদ্ধ হলৈ। সে নিজের মনে বলিল, এই প্রাই ইল্লের উপর্ক্ত পর। ইল্লের হাতেই ভাহার জান্তর্শের কার্যক্রবিভার পরীকা লোক।

নিজের চিভার অভ্সরণ করিরা কতকটা বেন বগতোজির মত ইল বলিল, মভবাওলিতে লোকলেবার আদর্শ প্রচার করা হরেছে মনে হছে। লোকলেবা এর অংগ কিছু কিছু করেছি। বদেশী আন্দোলনের মাবামাবি সমরে দেবেছি, যাদের কল্যাণ করতে গিছেছি ভারাই পুলিসের কাছে গোপমে ববর দিয়ে বদেশীওলালাদের বরিরে দিহেছে। লাট-সভল্পেলা, ভিম্নাটকের বরাবর রেওরাজ ছিল রাজমগরে। আজ্পরম অবস্থা হয়েছে যে গাঁচটা ছেলেকে একল লাটি খেলতে বেখলে গাঁহের কভকভলো কিচেল লোক শিট শিট করে চেরে বেখে, ভার পর পারে পারে বানার ববর দিতে রওমা হয়। এবের জন্য কিছু করতে ইচ্ছে হর মা, করেও কোম লাভ নেই।

बीद जारब ज्ञीन हैत्यद कथा समिन। साद गद हैतास প্ৰকৃত অবস্থা ব্ৰাইতে পিয়া বলিল, অত হতাশ হলে চলৰে মা (त । यानी चार्त्मानम (नर्म अक्डी श्रेरन नमा अस्मित्न । ৰাৱা বেশের হক্তির ক্ষম আগে থেকে কাক কর্মিল ভারা এই कारवर बनाएक कारक नामाबार करना (मरनेर कननानारनेरक वृष्णि चार्मानरमय नवर्षक्यर्भ भावाय (हडे। करन । (न (हडे) जकन ह'न मा। यूजनमामदा छकाएछ नदा (नन। चांतचनर्दत बाब करवकडे टाराप नाका कार्यन, क्रांक टारापंव लाटकर्व परिने चार्मानम ७ छात्र रानेरक हेर्मका क्वन, स्मार्थिय ७ কাতির বৃক্তির আকাক্ষা ভাষের কাছে মুখন ও অংগাধ্য কিনিস বলে মনে হ'ল। ভারা ভাবল সমন্ত জিনিসটা বাঙালীয় নিজের প্ৰভা মাত্ৰ। সরকার বাহাহর বোশবেরালে বাংলা ভেঙে ছুই वंश्व करतासम : का त्याम मा मिरव बाधामीता समा धारम-श्रामात्क करन है। या हो हो हो । या अपन अप वक चार्त्मानरमञ्ज बांद चामां वार्व इरद शन । এই स्टर्स चार्या-(वर वर्षा अक वम सम्दर्भ कर बक्र अक्र किन्न किन्न विशवक्षवक गर्व मा वाकारक अनिरहत्त् । कारवद शक्क केरवक বুক্তপাত বৰ, ভাৱা চাৰ আতাৰ্তি বিবে ধৰেশবাসীৰ উলা-

নীৰভা চুৱ করতে। ভারা কেশপ্রেবের আগতে পুড়ে বরছে বেশে বোহনভ কেশের লোক এগিরে আসবে এই ভাবের আশা।

লভীন একটু থানিয়া ইলের বুবের বিক্তে চারিয়া একটু ছালিল। ইল নাথা নীচু করিয়া ভাহার কথা বুবিবার চেটা করিছেছিল। সভীন বলিল, আনায় কথা বুবঁতে পারছিল ভাই ? না হেঁয়ালি বলে মনে হছে ? আসল কথা কি ভানিস, যথেশী আন্দোলনের কলে আনরা থানিকটা এগিরেছি, মুভন বে 'এলপেরিবেউ' (পরীকা) হতে চলছে লেটা জাভিকে আরও থানিকটা এগিরে বেবে আলা করছি আমরা। আমাধ্যের স্বকার বেশের লোকের সহাস্তৃতি ও সমর্থন পাওয়া। একমা ভাবের মন্যোধানিকটা রাজনৈতিক চেতনা ভাগাতে ছবে। কি উপারে সেটা করা বেতে পারে ভার নানা রক্ষ এলপেরিবেউ ভবতে চবে।

रेख यूर्व कृतियां वितान, कि तक्य अन्नाशित्रक ?

সভীম সম্প্রহে ভাহার পিঠে হাত বুলাইতে বুলাইতে বলিল, আমি ভাতে যে মোট বইবানা দিছি ভাতে সে কথা ব্যাখ্যা করা হয়েছে। খনেনী আন্দোলমের সময়ও করেছি। ভার পর, মৃত্যু উপায় সম্বদ্ধ আমাদের হেলেরা বে পরীক্ষা করতে চলেছে ভার সম্পর্কে আমার খেটুকু সাধ্যু ভা করতে কপুর করি মি। এখন আমি অন্যু পরে পা বাভিডেছি। অনা পথ নামে মৃত্যু কার্যুড়েছের অনুসভান। ভূই ভোর অথহা ও সাধ্যুবত কাক কর।

সভীন বাব্র বাভা বেকে ঐ অংশগুলো কণি করে রাব্।
আনি ভোকে বে নোট বই দিনান ভাতে লোকশিকার আবর্শ
হাতেকলনে কি ভাবে কাজে পরিণত করতে হবে সে সথজে
বিভাবিত নির্দেশ পাবি। কিছু বিন কাজ করে বেব। বিদ্
আভবিক ভাবে টীক্ষত কাজ করতে পারিস মনে কোম
কোত বাকবে না। এত বহু কর্তব্য আনাদের সামনে রয়েছে
বে বার বহুটুলু সাব্য ভাই করে বাওরা হাড়া আর উপার কি ?

আৰও ভিছুকৰ আলোচনা চলিল। অবংশবৈ হুৰ্ব্য অভ বাইভেছে দেবিবা সভীন বলিল, চল, এবার ওঠা বাক। আমাকে বেরিরে পড়ভে হবে।

ইলের একাভ অভ্রোব সভেও সভীন বাকিতে রাঝী হইল না। ছবিনারারণ ও জীবানন্দের কাহে সভীন বভবানি বলিরাহিল ভাহা অপেকা আরও একটু বিভারিভভাবে নিকের উদ্দেশ্যর করা ইলের নিকট বলিতে হইল। সব কবা ভনিরাইল আর বাবা বিভে পারিল না। ভবু বলিল, বেবুবা নেই, আপনিও চলে পেলেন, প্রবোজন হলে কার কাহে পরাবর্শ চাইব প

শভীৰ নৱেছে ভাছার পিঠে হাভ বুলাইরা হাসিরা বলিল,

পরাবর্ণের বন্ধ পুর ভাল লোক পাছে ভাই, ভাষণা কি ই ছুনি আমার সমীবিধির পুরো পরিচয় এবনও পাও নি।

একটু গভীর হইরা বলিল, কোম বিদ ওকে অনাধর করো না, ওর মনে হংগ বিও না ভাই।

সকলের কাষে বিভার সইরা সভীন চলিরা গেল। বাইবার সরহ বভীনবাবুকে বলিল, আগনি তৈরি বাক্রেন বভীনবাবু, শীনই আগনার ভাক আগতে পারে।

वधीमरायु वितासम, जामि अवच जादि।

ত্রিমারারণ ও জীবানক উত্তরের গৃত্তে বিবাদের ছারা।
ছরিমারারণের গৃত্ত জনভাত্রীপূত। তিনি নিক্তে অনুত্ত, লাষ্ট্র
ধরিরা কোনমতে একটু-আবটু চলাফেরা করেম। জীবানজের
ছেলে বিচারের প্রতীকার কেল-হাজতে। লজীর বিবাদ উপলক্ষে জীবানক উকিলের হারা কেবানককে জাবিনে বালাস ক্রিবার চেঙা ক্রিরাহিলেন, কিন্ত কেলা ব্যাজিট্রেট জাবিনের
আবেলন অগ্রাহ্ম ক্রিরাহেন।

ছুই পরিবারে পরিব্যাপ্ত বিষাদের ছারার মধ্যে বছধানি সম্ভব ছাঁকলমক বর্জন করিবাইল ও সন্মীর বিবাহ হুইরা পেল। এই বিবাহে সকলের অপেকা বেদী উৎসাহ ও আমক্ষ চিম্বরীর। সন্মীকে সে বাভবিক নিজের ভরীর চেরেও বেদী ভালবাসিত। টুলো পভিতের বরের মেরে পিতৃপৃছে আসার মুম্বরী সম্পূর্ণ সম্বন্ধ হুইতে পারে নাই। সে আমিত ভালার হোট বোন চিম্বরীর পীভাগীভিতে অসম্ব পিতা বাধ্য হুইরা সম্মতি নিরাছেন। পিতৃবংশের গৌরব এই ভাবে কুর করার সে চিম্বরীর উপর একটু রুপ্ত হুইরাছিল বটে, কিছ সন্মীর প্রতি ভালার মনে বিরূপ ভাব ছিল না। বংপগৌরবের স্মান্তার ক্রাটটুকু ছাভিয়া নিলে রূপে ভবে বে ইংলের বাঁ হুইবার উপর্ক্ত হেরে একবা বলিতেই হুইবে।

বিবাহের পর দিন সভ্যাবেলা সন্ধী বৰ্ণ বধুবেশে পাকী হইতে ভাহাদের বাড়ীতে নামিল চিম্বরী ভবন ভাড়াভাড়ি বিরা ভাহার বলা ভড়াইবা বরিল। ভারার কানে কানে বলিল, ভোর শিবপুড়ো নার্বক হ'ল ভাই ?

বধ্বরণ শেষ হইলে সুভন বৌকে লইণা সে শিভার বরে পেল। বভরকে প্রণাম করিবা উটিলে চিম্মী ভাচার নাধার কাপক সরাইবা দিল, শিভার পাবের কাছে হ'লমে পাশাপাশি বসিল। হরিমারাংশ হুই হাত উভবের নাধার রাধিয়া চোধ বুলিরা আইব্যান করিলেন। ভার পর বলিলেন, ইক্র কোধার বা ?

ইন্দ্ৰ সেই সৰহ যতে প্ৰবেশ কৰিল। ভাহাকে দেখিবা লখী নাথাৰ কাণ্ড দিতে বাইভেছিল, ছবিমারারণ বলিলেন, থাক না, আনার কাছে ভোমাকে নাথাৰ কাণ্ড দিতে হথে লা। ইজ পিতাকে প্ৰণাম কৰিব। বিহানাৰ এক পালে বসিল। হৰিমাবাৰৰ ভাষাকে বাধাৰ হাত দিবা শীৰৰে আশীৰ্জাদ কৰিলেন। চিন্তৰী দেখিল এক কোঁটা কল পিভাৱ চোধ বইতে গড়াইৱা পভিল।

পর দিন মুপুরের বিকে জীবামল বরিশাল হইতে উক্লিরের টেলিরার পাইরা জানিলেম বে, বেবামলের ছর বাসের জারাযভের আদেশ হইরাছে। উক্লিলিবিরাহেন, আপিল জরা
হইলে তাহাজে বেন টেলিরাহে জানানো হর।

জীবানল ভারাকে টেলিপ্রায় করিলেন, আণিলের প্রয়োজন নাই।

টেলিপ্রামের কবা ছীকে জানাইরা জীবানক বলিলেন, ব্যর্টা বাইছে বেন প্রচার না হয়। মেহের আজ স্কল্যা। পরে স্বাই জানতে পারবে।

কিছ খবর গোপন রহিল না। বাছীতে পিরনকে আসিতে দেখিবা ও কিছুক্দ পরে নাকে কাঁদিতে দেখিবা আনন্দ ইজ-দেৱ বাছীতে সিরাইজ ও ভাতার দিছিকে সে সংবাদ দিখা আসিল। ভাতারা অসুনান করিল দেবানন্দের কোন সংবাদ আসিরাছে। ইজ ভাড়াভাড়ি জীবানন্দের কাছে আসিরা ব্যাপারটা কি জানিতে চাহিল। জীবানন্দকে বাধ্য হইবা টেলি-আবের খবর বলিতে হইল। নিজে বে টেলিগ্রাম করিয়াছিলেন সেক্ষা আর ইজকে জানাইলেন না। ভিনি ভাতাকে বলিলেন, লক্ষীকে আজ আর খবরটা জানিও না, সে বন ধারাণ করবে।

ইল বলিল, সৈ খবরের কচ ব্যস্ত হরে আছে; কি করে ভার কাছে গোপন রাধব গ

জীবামক আর কিছু বলিলেম না। ত্রিমরনী জামাইকে ভিতরে লইরা সিরা কাছে বসাইরা সাগুনা দিতে লাগিলেম। ইজ একটু মান হাসিরা বলিল, আনাকে কি আর বোঝাবেম ? বিজেলের দিকে সিয়ে ওকে একট ব্রিয়ে আস্বেম।

(न इनिया (नन ।

ইল ও লখা ছাড়া বেৰামন্দের কেলের খবর ও-বাড়ীর আর কেহ জামিতে পারিল না।

লক্ষীকে সংবাদ দিয়া ইন্ধ বাছিয়ে চলিয়া গেল। দেবু-বার হয় নাল কারাদতের সংবাদে ভাতার নিজের নন এনন অহির হইনা উঠিনাহিল বে, লক্ষীকে সাল্লা দেওয়ার কবা ভাতার মনে বলিল না।

বাড়ীর বাহির হইবা ইটিতে ইটিতে দে বভীনবার্র বাগার উপস্থিত হইল। ভাবিল বলি বভীনবার্র সদে কথা-বার্ডা বলিলা বনের ভার ভিত্র কলাইতে পারে।

ৰভীনবাবুর বাসার সিরা শুনিল, আপের দিন রাজে তিনি হুঠাং বাছিরে কোণার সিরাছেন। কবে কিরিবেন কেছ বলিতে পারিল না; ভাহার বনে পড়িল সভীনদা বভীন-বারুকে প্রভত বাকিবার নির্কেশ দিরাছিলেন, বলিয়াছিলেন, শীম উাহার ভাক আসিতে পারে—ভাক ভাহা হইলে আসি-বাবে গ

আনক বিলাধে বাজী কিরিয়া সে নায়েবের লকে কডকওলি করুরী বৈষ্থিক ব্যাপারের প্রাথপে ব্যাপ্ত হইল। শিতার আদেশে নায়েবের লকে প্রাথপ করিয়া বৈষ্থিক ব্যবস্থাবি সমস্কট এবন ভালাকে করিতে হয়।

এদিকে চিনি হুপুর হইতে দাদার কুল-শ্ব্যার আরোজনে ব্যক্ত। দাদার বিবাহের সকল জিনিস বরে ভালাবছ হইরা পঢ়িরা হিল। বর বুলিরা পুত্র বিছানাব হুড়াইল। বারের ভালবারী বুলিরা রূপার কুলদানি, চন্দ্রনের বাটি, পোলাপাশা, আত্রদান, রেকাব, পোলাস বাহির করিল। পোলাপ ব্যক্ত, গুর্গুগুলের গছে বর সুবাসিত; টাপা, গ্রহাক, বেল-সুলের গছে আনোদিত হইল। রূপার পিলস্কুক্তে ভেলের প্রদীপ আলাইরা খাটের পাশে রাধিল। পাশ্বরে টেবিলের উপর রূপার বালার বিশ্বি সাজাইল, নাবের বাপের বাড়ীর গোনার পানের ভিবা ভবিষা পান রাধিল।

নাৰের শাড়ী ও গহনা দিয়া চিম্মনী লক্ষীকে সাজাইতেছে এবন সবহ ছোট নেবেকে সদে লইবা জিনবনী আসিলেন।
চিম্মনীর ব্যবস্থা দেখিবা তাহার আনন্দ হইল। মুখে কিছু
প্রভাগ করিলেন না। ভাহাতে ও বেবেকে আশীর্কার করিবা
তিমি চলিয়া গেলেন। বেবে-জানাইবের জন্ধ বে মুখন শাড়ী
ও কাপত আনিবাছিলেন ভাষা চিম্মনীর হাতে বিবা গেলেন।

কলীকে সাকাইবা চিন্নৱী ভাতার চিবুক ধরিরা মুধ্ধামি উঠাইল কেনন মানাইবাছে দেখিবার জন্য। বলিল, আজকার মুক্ত দিন আরু পাবি না জীবনে। কথাটা মনে রাধিস।

সাঞ্চামো শেষ হইলে চিমনী সন্মীর হাত বহিরা ভারাকে সুসন্ধিত শর্মককে আমিল। ঘরের এক পাশে গদী-আঁটা চেরারে ভাহাকে বসাইরা বলিল—এখামে বোল। হালা এলে হাত বরে খাটে বসাবে। তুই বোস, আমি দাদাকে ভাকতে পাঠাছি। কি মন্ধা হবে বল বেশি সন্মী, দাদা এর কিছু ভাষে না।

লে সন্মীর মাধার কাপড় একটু সরাইরা বিল। বলিল—
অভ ললা বোনটা নিস্না। চুণ করে এবানে বলে থাক।
লালাকে কেবেই গলে বাস্নি। অনেক বোলালোক করলে,
আহর করলে তবে উঠনি। বুবেছিস ?

বর হইতে বাহির হইরা চিম্মী দরজা ভেজাইরা বিল। ভারণর বিকে দিরা ইলকে ভাকিরা পাঠাইল। ইল উপরে আসিলে চিম্নী বলিল, আপনি আনার সলে আছুন। একটু কাজ আছে।

ইল্ল বলিল—কি কাম রে চিস্কু বে এনন কড়া কলব ক্ষেত্রিক। ইজের ক্ত যে নৃত্ন কাপ্ত কাবা বিষয়নী বিয়ার্থিনন তাহা দেবাইয়া চিত্রী বলিল, এইগুলো পরে কেল্ম দেবি।

रेख-क्म (त् इंडी९ अश्रामा शत्र क्म ?

চিন্তৰী—আপনার শান্তকী দিবেছেন আপনাকে পরতে। আৰু পরতে চয়।

চিম্বৰীর পীড়াপীড়িতে ইক্সকে নেগুলি পরিতে হইল। চিম্বৰী বলিল, আম্মন এদিকে।

ইন্দ্র চিম্বরীর সলে স্থলজিত কক্ষে প্রবেশ করিয়া একেবারে অবাক হইন। সন্মী বসিরাহিন। ইন্দ্র ও চিম্বরীকে আসিতে দেখিরা মাধার কাপভ একট টানিয়া দিয়া সে উটিয়া ইডিটিন।

চিন্নহী বলিল, আৰু আপনাৱ কুলখবা। মনে ছিল না বুৰি ? আৰু আৱ বৱ বেকে বেকুতে পাবেন না। আহি শেকল তুলে দিচ্ছি, কাল সকালে বুলে দেব।

খর হইছে সে বাহির হইরা পেল।

केंद्र विनन, विन्न, अकृष्टे (भाग अमिरक, ও विन्न...।

চিছ ভতকণ বাহিরে আসিরা দরকার শিক্তা তুলিয়া দিভে দিতে বলিল, কাল ভনৰ ভোক্ষা।

ইক্ল চারণিকে চাহিরা বরের সাজসকা দেবিল। ভাবিল চিনি যে এমন চরংকার সাজাইতে পারে ভাহা ভ সে জানিত লা। ভাবিল চিনির অন্দর ক্লচি, অন্দর সাজাইবার হাত। ভাচার দৃষ্টি পড়িল সন্দীর উপর। লন্মী মাণা হেঁট করিরা চেরারের পাশে দাভাইরাহিল। ইক্ল দেবিল শাভীতে, অলফারে চন্দশে, প্রদীপ্ত রূপে রাবেজানীর হত দেবাইতেহে ভাচাকে।

ইন্দ্ৰ মুগ্ধ দৃষ্টিতে ভাহার দিকে চাহিনা রহিল।

অবণত মৃতকে গাঁড়াইবা থাকিলেও লল্পী লে দৃষ্টির বাব্র্ব্য অক্তব কবিল। বীরে থীরে আগাইবা আলিবা গলার শাদীর আঁচল অভাইবা ইটে গাঁড়িবা ইক্তের পারের উপর সে মাথা রাধিল। লল্পী কতবার ভালাকে প্রধান করিবাহে, কিছ ভালার আঞ্চিকার প্রধৃতিটি ইক্তের কাছে অভিনব বলিবা মনে হইল, বড় ভাল লাগিল। ছই হাত বাড়াইবা তাহাকে বরিবা উঠাইতেই ইক্ত দেখিল ন্ববধুর চোধে অপ্রব আভাগ।

লখ্মীর চোবে বল দেখিরা খুসজিত কক, পুস্পাকীর্ণ শ্ব্যা, আতর ও গোলাপকলের নিম্ন পুষার অভিক্রম ক্রিয়া ইক্রের বল উত্তলা হইরা বাছিরের নক্ষর্বচিত আকাশের নীচে, বল অবকারের মধ্যে কোবার বেল হুটবা চলিল। তাহার চোবের লখুবে তালিরা উটল কারাপ্রাচীরের অভ্যালে, অবকারকক্ষের অপরিসর গ্রাক্ষণবে চুর আকাশে দীরিয়ান প্রবতারার বিক্রে নিজহ চুটি ক্লিই, বির্গ, কিছ চুচপ্রতিক্ষ আশৈশন্ পরিচিত এক বালি মুব।

কঠোর প্রয়ানে সমের ব্যাকুলভা করণ করিবা ইক্স লখীকে বাটে বলাংবা বিত্তে ভারার পালে বলিল। চিযুক্ত বহিরা তাহার ষৃষ্টি নিজের বিকে কিরাইরা পরম সাভ্যা ও ছেত্রের বারে সে বলিল—

—ভোষার চোবে কল কেম আমি কামি। কেবুলা বেবামে থাকুন, বে অবহার থাকুন তাঁর আম্বর্কাদ থেকে আমরা বকিত হব মা। আমি যে তাঁর চাতে গড়া রাজ্য সঞ্জী।

লন্দ্ৰীর চোৰের কল উপচাইরা পঢ়িতে স্বানীর বুকে লে বুধ লুকাইল।

মাস ত্ই কাটবা পিৰাছে। জীবামক দৱপাত কৰিব।
ছুটিব মেৰাৰ বাজাইয়া কইয়াছিলেন, সে মেরালও শেষ হুইয়া
আসিল। নূভ্য জাৱগার তাঁহার বদলির আদেশ হুইয়াছে।
দিন চার-পাঁচ আগে হুইতে তিনি রওমা হুইবার ব্যব্ছা
করিতে লাগিলেন।

হরিনারারণের শরীর অনেকটা সারিবা উটিবাছিল। ভিনি
বাহিরে চলাকেরা করিভে পারেন, বৈষরিক কাজকর্মণ্ড কিছু
কিছু দেশেন। অগনাঞ্জীর মৃত্যুর পরে সর্বালা উচ্চার যে বিষর্ম
ভাব দেশা ঘাইত ভাহা দূর হইরাছে। মূথে একটা ভৃত্তি ও
শাভির ভাব আসিরাছে। জীবানজকে ভিনি বলেন, জীব,
বৌনা আমার সংসারে শ্রী ও শান্তি ফিরিবে এনেছে। জীবনে
যত হংগ পেরেছি ভার দাপ বৃক্ থেকে বীরে ধীরে মূছে বাজে।
মাবে মাবে ইছো হর আর কিছু দিন যেন বেঁচে থাকি, মাভি
মাভনীর বৃণ দেশে, ভাদের নিরে সুথে আহলাদে করেকটা দিন
কাটিবে যেন মরি।

জীবানন্দের মুবে সভোষের হাসি ফুটরা উঠে। আধাস বিয়া ভিনি বলেন, আপনি ভ ভাল হবে উঠেছেন দাদা।

হরিনারারণ বলেন, জীব, আনার নমে একটা জোভ রয়েছে দেবুব কচ। এই রাজনগরের মাটতে ওর মত একটা ছেলে কথেছে বলে আমার মনে গর্জ ছিল কভ। জানি মে কেল থেকে বেরিরে ওর মনের গতি কোন্ দিকে থাবে। ও বেরুলে ওকে কলকাভা পাটও পঢ়াশোনা করবার জভ। একটা উপর্ক্ত মেরের থোঁক করে।; কলকাভা পাঠাবার আগে বিয়ে দিয়ে দিও। এ বরন যে কভ শক্ত বরন ভা আনার ছেলেকে বিয়ে করিছে বুবতে পারছি।

একটা দীৰ্থনিবাস কেলিয়া হরিনারারণ আবার বলিলেন, প্রসাম বেরাড়া হয়ে উঠলে আনার স্ত্রী ভার বিয়ে বিভে বলে-ছিলেন। ছেলের উচ্চ্ খল বভাবে ক্রাই হয়ে আনি লেডবা ভাবে ভূলি নি। হয়ত তার কবা ভনলে ছেলেটা এভাবে বর্হাড়া হ'ত না। ছেলেও চলে পেল, নমের ক্রাই স্ত্রীও গত হলেন।

একটু পরে হাসিরা বলিলেন, তাল কবা, ইল্লের নেবর্জা-প্রবের কবা ভবেছ? অনেকগুলো টাকা আবার করেছে আবার কাহ বেকে—উভিশালা, তাভারবালা, লাইট ভূল, হেলেবের আধার, আহও কি সম কছবে বলে। শীবানশ স্থন কর্মপ্রতার রখনা ক্টরা গেলেন। বিনঃমী বর্ণন বলিলেন, "ভোষার শহীর ভাল নর, আমিও চলি," শীবানশ থকা ধবাবে বলিহাছিলেন, আমার পুরোলো ঠাকুর চাকর নিত্রে বাব, অসুবিবে হবে না। তুনি আগাওত এবাবে বাক ও-বাড়ীতে সম্মী একা পড়েছে ছোট ননদ চলে বাবার পর বেকে। অত লোক্জন, ক্রিয়াক্স সব ভাল নামলাতে ক্র বেটোকে। সূটো ক্বা বলবার লোক নেই, ইক্স ছাড্বার অবসর নেই। বাস্বানেক পরে ভবি বেও।

ব্ৰিমন্ত্ৰী ভাবিত্ৰা দেখিলেন কথাটা ট্ৰক। বিজে হইডাই অভ বড় সংসাৰেন ভাৱ পড়িয়াছে মেন্ত্ৰে থাড়ে, ভাৱ উপর অহত ২৬র। ভিনি বাস্থানেক থাকিয়া বাঙ্যাই হিন্ন ক্ষানেন।

ভীবানক চলিয়া বাইবার কিন সাতেক পরের কথা।

লগী থালার ছবের বাট, কল, বিট আনিরা খডরকে থাওয়াইভে বলিল। তাঁহার সকালবেলার আহার। থাওয়া শেষ হইলে সে থালা, বাট ও রেকাবি ভূলিয়া লইভে-বিল, হরিনারারণ একটু জুভবনকভাবে ভাহার কাল দেবিতে-হিলেন। লগী বাসনগত্র ভূলিয়া লইয়া ঘর হইভে চলিয়া ঘাইভেহিল, ভিনি ভাহাকে ভাকিলেন। বলিলেন, বৌরা, ওওলো নানিবে বেথে একটু বলো। একটা কথা হঠাং বলে এল ভোষাকে বলি।

লখা বাসমন্তল বাবিরা বভরের পারের কাছে বসিল। ছরিনারারণ বলিলেন, বৌনা, ছুরি ছেলেনাছর এত বড় লংসারের তার পড়েছে ভোনার ওপর। ইন্তও এখন ছেলেনাছ্মই হরে পেছে। ঐ ব্রবদে আমাকেও সংসারের তার কাঁবে নিতে হরেছিল। আনাকে সাহাব্য করেছিলেন তোনার লাভকী। তিনি সাহাব্য না করলে কি হ'ত এই বিবর-লভাত্তর, এই সংসারেরই-বা কি গতি হ'ত তাবতে পারি না। তোনাকে সেই কাল করতে হবে বৌনা। এই পুরনো বনেদি পরিবারের সব বিধি-ব্যবদ্ধা বাতে বজার বাকে, বারা ভোনার রুবাপেনী ভারা বাতে পুর-খাছ্লের বাকে সেইটে ভোনাকে সেবতে হবে।

হঠাং খণ্ডবের মূপে এই বরণের কথা গুনিরা একটু বিভিত্ত ছুইলেও লখী অবনত বতকে ওঁছোর উপবেশ গুনিল, বলিল, আরাকে আইবলৈ কঞ্চন বাবা।

হরিনারারণ ভালার বাধার হাত রাধিরা বলিলেন, আশিবাদ তরহি না, আশিবাদ দিনরাতই তরহি। আনার বড় আনন্দ ভূবি আনার গরের লগী ব্রেছ। ঁলকী ভাষাকে ধাণাৰ কৰিছা বাসমগুলি লইছা চলিছা পেল।

বিনয়নী পূকা-আফিক সারিয়া উটালেন, এইবার রারাখরে বাইবেন। ইলাকের বাতীর বি মুকীর বা হত-দত হইবা বাতীর মধ্যে চুকিয়া উঠান হইতে চীংকার ক্রিয়া ভাকিল, আ বা-ঠাক্রাণ, শিশুরি আনেন।

ভাষার চীংকার গুনিরা বিবহনীর বুকটা বড়াস করিরা উঠিল। ভাডাভাডি বাহিরে আসিরা বলিলেন, কি হরেছে বে বুকীর বা, অবন করে ভাতহিস কেন ?

ৰুকীর বা বলিল, কর্ডাবার পইড্যা সিহ্যা ওজান হয়েচেন। আপনি শিগ্ৰীর আসেন।

ত্রিনহনী চন্দিরা উটলেন। গারে একবান চায়র জড়াইরা
তিনি বুকীর নার সলে চলিলেন। বুকীর নার বুবে বটনা
তনিরা বুকিতে পারিলেন, হরিনারারণ জলবোগ লেন করিরা
কাহারীবাড়ীর উঠানে পারচারি করিতেছিলেন। ভারণর
একটু ক্লাভিবান করিরা তাঁহার বরে কিরিভেছিলেন, হঠাৎ
বৈঠকবানা হালানের সিঁভিতে উটনার সমর কিভাবে পা
হড়ভাইরা সিঁভির উপর পভিয়া বান। পভ্যের শব্দ পাইরা
কাহারিবর ব্ইতে ইক্ল, নারেন, গোমভা চুটনা আসিরা বরাবরি করিরা উলোকে বরে সইরা আসে। ভবন ব্ইতে উলোর
ভাল নাই। ভাকার ভাকিতে লোক পিরারে।

বিষয়নী হবিনারারণের বারে চুকিতে বিরা ছেবিলেন বছ লোক কমা হইবাছে সেবানে। ডাজার হাত বরিবা নাড়ী পত্রীকা করিতেছে, ইজা পিভার পারের উপর রুব ভাজিরা আকুল ভাবে কাঁবিতেছে। লক্ষী নাবার কাপক দিরা খণ্ডবক্তে বাভাস করিতেছে। রুবরী পিভার বুকে প্রাভন বি নালিশ করিতেছে। ভিনি বুবিলেন, পড়িবা বিরা বুকে ও নাবার প্রচণ্ড আবাত লাগিরাছে। বেলা বাভিবার সকে সকে খাস উটিতে লাগিল।

ৰীৰে বীৰে হৰিদানাৰণের জীবদ-প্রদীপ নিবিয়া আদিতে লাগিল। স্ব্যাতের সমর তাহার আলা দেহত্যাগ ভবিষা লোকাতবিতা নীর সংগ্রিসিত হুইল।

ছবিনারারণ উলোর জীবনে প্রাচীন ঐতিহে সর্থ রাজনগর ও স্থীন রাজনগরের বব্যে সেতৃ রচনা করিবাহিলেন। ভাল-প্রভাবে সেই সেতৃ জীব হইবা করপ্রাপ্ত হইবার উপক্রম হইল। প্রাচীন রাজনগরের ইতিহালের শেব পাভার উপর বিরাম-চিম্ম অভিত হইল।

**844**:

# নেপালের বৌদ্ধর্ম

### জ্ঞীদাশরথি রায়

প্ৰভ বৃদ্ধ যে খানে ক্ষুত্ৰত্ব ক্ষুত্ৰে নেই সৃষ্টিনী উভান ভৱাই অঞ্লে অবস্থিত। এই অঞ্চল আভিকার নেপাল রাজ্যের चक्क स्थान छडारे मात्र चाचाछ । वर्षमात्मद स्थान चन्नारे चक्रांकर श्रक वृद्ध कीव्याद चिवकाश्म काम चिववादिक करतम अवर अहे शारमहे छिनि शतिमिर्वान मांच कतिवादित्मन । बैरहेत करवत नीह मंख वरनत नर्स्य करवाम वृत्वत स्मान উপভাকার আগরনে, ভাঁহার পুণাপদশর্লে নেপাল হে কেবল वहरे क्राविक काकारे मात और अम्ब करेएकरे मिनारनव প্রকৃত ঐতিহাসিক বুগের আরম্ভ হর। অবর্ড বৌদ্ধায় ৰতে শাক্যনুনি বুছের পূর্ববর্তী হব কম বুছ নেপাল পরিদর্শন ক্রিতে আসিরাছিলেন, কিন্তু ভাষা নেপালের প্রাগৈতিহাসিক ৰপের পৌরাণিক কাতিনী বাত । শাকারনি বহু যথন বেপাল উপভাকার আগমন করেন ভখন ভখার কিরাভবংশীর রাজগণ বাজত ভৱিভেডিলেন। কিৱাভবংশীয় রাজগণ যদিও হিন্দ ছিলেন ত্ৰাপি ভংকালীৰ কিয়াত-য়াক কিতেদভি বোগ্য আভি-থেছতা সহকারে প্রতক্ষে স্থাপত করেন। নেপাল উপত্যকার नाइवां मायक दा शांत शकु वृत्र वााधी भाषक श्रवात कविश-ছিলেন ভবার আজিও একট চৈত্য বিভয়ান। প্রভু বুর নেপাল ত্ৰপভাৰাত অভি অৱকাল অবভাৰ করিয়াছিলেন, কিছ এই जब अधारत बारवारे कांतात शंकातिक बक्षवारम चार्क्ट वरेंदा ভবাকার আছব ও ক্ষির প্রকৃতি উচ্চবর্ণের হিন্দুগণ প্রভুর विकडे क्षेत्रा अठन करवम । अवेदरण स्मार्ग त्योदनर्श्वव ৰে বীক ভিনি নিক্ততে বপন ভৱিছাছিলেন, ভাতা কালে বিৱাট ষ্টীকৃত্তে পরিব্রু চইয়া তথাকার সহস্র সহস্র লোক্তে নৈতিক্ষাৰাভনে আশ্ৰৰ দান কৰিবাছে। ত্ৰিপিটক চইতে প্ৰয়াণ नाथवा वाब (व, जबूबब माकारे बूदबब कीवक्मार्टिं (वोब-্ৰৰ্ব এতণ করিবাভিলেন। কুণ্যাত রাজা বিছদাঙের অভ্যাচারে देशीकि कोवा को जवल (बोदवर्षावलको मानाह विभारतद विकित प्रश्न प्राप्त भनावम कृतिया च्यांच चालव अवन कृतिया-हैलम। वोदर्श्य अनुबक्त और जनन नाकारे श्रेष्ट्र शर्ब-विकारका नवल विभावत क्षेत्र विकर्त कार्य विकार 3 ককুণার বাবী প্রচার করিতেন।

ব্যদেশের পরিনির্জাণলাভের পরবর্তী কালে নেপালে বৌহবর্শের প্রচার ও তথার ইহার অভ্যুখান ও পতনের বারা-রাহিক ইভিহাস হ্স্পাণ্য এবং পণ্ডিতগণের গবেষণার বিষয়। তবে এইপূর্ব্ধ ২৪৯ অব্দে বে বটনার নেপালে বৌহবর্শ দৃদ্ ভিতির উপর প্রভিত্তিত হইরাহিল ভাহার বিষয় ইভিহাসে ঘর্ণা-করে লিখিত আহে। এই সালে বহান স্বাট অশোক নেপাল পরিজরণে আসিরাছিলেন। বুছদেবের অবস্থান পরিদর্শনের উদ্দেশ্ত সমাট প্রথমেই কুন্থিনী তীর্ণে গ্রম করেন। পূণ্যতীর্ণ পৃথিনীতে তাঁহার উদ্দেশ্ত অর্থা নিবেদ্যের জন্ম কুল চল্ম ধূপ ধুনা গ্রহুল ও অভাভ পূজার সান্ত্রী বহুদ করিবা চারি কল নৈভ সমাটের সহিত আগমন করিবাছিল। সমাটের সহিত তাঁহার দীক্ষাপ্রক ভিক্ উপশুপ্ত ও সমাট-কুলা চারুন্নতীও নেপালে আগমন করেন।



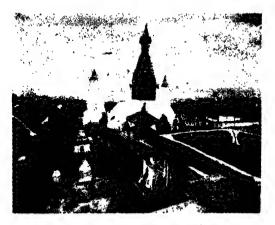
নেপালের নাত্রা চৈত্য।
এইছামে প্রভুব্দ সর্বপ্রথম ব্যাত্রীকাতক প্রচার করিয়াছিলেন।

বয়ভূপ্রাণ-বৰ্ণিত, সত্রাটের ল্খিনীতীর্ধ পরিদর্শন-কাহিনী বছই অবরম্পর্না। বাহার করণাকণা লাভ করিয়া চঙা-শোক বর্গাশোকে রূপাভরিত হন সেই প্রভু বুছ বেধানে প্রধন্ন পদক্ষেণ্ঠ করিয়া বরনী পৰিত্র করিয়াহিলেন সেই পুণাভীর্ধ প্রদান করিয়া বরনী পৰিত্র করিয়াহিলেন সেই পুণাভীর্ধ প্রদান করিয়াই উপাধ্যর সমস্ত্রমে দক্ষিণ বাহ প্রসারগর্পক কহিলেন, "নহাসত্রাটা। এই সেই পুণাভূমি বেধানে আয়ার প্রভু অব্যক্তন করিয়াহিলেন। আয়ার ইছা এই পুণাভীর্বে প্রভুর অভ্যর কীন্তি বোষণা করিয়া ভূমি এক ভঙ্গ নির্মাণ করা।" ভক্তিরসায় ভ অশোক গুরুর আবেশে ভত্তর অবিবাসীকের বব্যে এক লক স্বর্ণমুলা বিভয়ণ-প্রকৃত্ব ভাষার এক ভঙ্গ নির্মাণ করাইয়া ভঙ্গাতে নির্মাণিক নির্মাণ করাইয়া ভঙ্গাতে নির্মাণিক নির্মাণ করিয়াভিত্নন :

"দেবাৰ পিৰেৰ পিৰদসিৰ লাভিৰ বিস্তি বসাভিলিভেখ "অভৰ আগাচ ৰহীয়িতে হিদ বুবে জাতে সাক্যমূৰীভি

 বৌদলালে নিখিত আছে বে, বুডবেব বারাবেবীর গর্ভ হইতে অবলাত করিবার ললে ললেই করেক পদ পাদ-বিক্লেপ করেম। শ্লিকা বিগভাতি চা কালাশিত নিলাগতে চ উন্পাশিতে শ্ৰিক তৰ্মৰ কাতেতি সূত্ৰিন গাবে উবলিকে কটে শ্ৰুট তানিৰে চ

উংকীৰ্ণ লিপিয় অৰ্থ: দেবভাবের প্রিয়দর্শী অশোক বিশ বংসর অভিবিক্ত হুইবার পর এই ছাবে আসিরা পূকা



मिशाला वश्यमात्वत वोदवन्तित

করিষাছিলেন, কারণ শাক্যমূনি বুছ এই ছানে কর্মপ্রকণ করেন। তিনি এই ছানে একটি অধ্যুষ্ঠিখোদিত প্রভাৱ ছাপন করেন এবং একটি ভন্ত নির্মিত করান, কারণ কগবান এই ছানে কর্মগ্রহণ করিষাছিলেন। তিনি লৃথিনী প্রাথকে কর্ম রচিত করেন এবং (উৎপন্ন ক্রব্যের) এক-ক্রমণেশ দিভে আন্দেশ কেন।

मढाई जामाक त्य तकरक तम्मातक कीर्यभर्ताहरम जानिया-ছিলেন ভাষা নতে, নেণালের বছ অঞ্চ ডাঁচার বিশাল সামাৰোর অভ ভূক্ত ভইরাছিল বলিরা অনেক ঐভিহাসিক মৰে করেন। অভএৰ প্ৰিবীর শ্ৰেষ্ঠ বৰ্পপ্ৰচারক সন্তাট অলোকের অধীনে নেপালে বৌদধর্শের প্রভাব কিরুপ বিভ্রন हरेबाहिन छाठा नहत्वरे खन्नद्वत्व । (मनात्वत्व वर्धवान वाक-बाबी कार्डवाश्वर विकय-मूर्व्य श्रीय अक त्काम वृदय "माहेन" ৰা "অশোক পাটৰ" দামক ছানে অশোক এক ৱাছবাৰী अविशे करवम। मजाहे भाहित्वर क्यारण अब चन विश्वान करवन अपर अरे क्लाइ च भाव गुर्का, गण्डिय, देखरा ७ विच्टा अपने पवित्रा चावक ठाविने छ न निर्दान प्रवादेश-हिल्म। अरे च न नाइडे चाय व विकास विकास । वोक बार्चव क्रफ श्रादिव केर्पा बहानवाई काहाव क्रम हाक-ৰভীকে পাটনের দেবপাল নামক এক সন্তান্তবংশীর ব্যক্তির নহিত বিবাহ বিয়াহিলেন। চাকুৰতী প্রবর্তীকালে ভিত্ন-ত্রত অবলবন করিয়াছিলেন। ভিনি বর্ণপ্রচারের উদ্বেক্ত একট বৌৰ বঠ নিৰ্মাণ ক্ষান। চাক্ষনতী প্ৰভিত্তিক বৌৰ বিহারট টা বাহিল"। নামে খ্যাত। এইরপে অলোকের বহুতী প্রচেষ্টার কলে নেশালে বৌহবর্দ্ধ দুচ্ ভিডিতে প্রতিষ্ঠিত হুইল এবং নেশালের তংকালীম অধিবাসী নেওয়াররা সকলেই বৌহবর্দ্ধ প্রহণ করিল।

र्वोदयर्केत रव श्रीत्यवद द्रम चामारकत मनत चात्रक হইবাছিল ভাতা এটার প্রথম শতকে উছভিত্র চরম শিবরে चारवाकन करवा अक्षेत्र चहेत्र मकरक वक्रप्राम (बीच-बार्यत (यह क्रमायाम हर । जनम क्रांतिक वोदवार्यत नीर्र-দ্বান প্রতিবেশী বদকেশ হইতে নেপাল ভ্রারন বা তারিক (बोहबर्ट्यत (खंडबानाच करता मानचा विक्रमणिना প্ৰভতি বৌৰ বিশ্ববিভালৰ চুইতে বছ বৌৰ পণ্ডিত ও বহা-क्षतित त्मशाम श्रम कविवाकित्म । त्योव मकताहादी मात्म ব্যাত মহাপতিত শাস্তব্দিত, অতীশ গ্রীজ্ঞান দীপ্তর প্রভৃতি विन्।ाण (शेवन्य क्षातकनन वन्यान हरेल क्षित्र न्यान कविया जवाब द्योपनर्स स्राधा कवियानिश्मम । अश्कारम कावक वहेटक किसाक बाहेरात शब बिन (मशाहनत महा दिना। শান্তরক্ষিত, ক্ষলইল, অভীশ খ্রীজান দীপদর মেপালের পরে তিক্ষত গ্ৰম কৱিবার কালে ক্ষেক বংগর নেপালে অবস্থাম করেন। এই সকল ভালিত পণ্ডিত নেপালে অলাহন প্রচার कविवाणिकाम । वैवालय श्रेष्ठां थ श्रेष्ठां करण (मश्रास्त्र সেই গৌৱবময় হল ভন্নাম্মের হল বলিয়া প্রসিদ্ধি লাভ করে।

নেপালের বর্মসম্পর্কিত ইতিহাস ভারভীর ইভিচাসের क्रमा। कादाक क्षरम विम विम्परार्श्वद क्षकार अवर विम्प-ৰশ্বের পরবর্তী হুগ কইভেছে বৌদ্বুগ। বৌদ্ধপ্রের গৌরব্যার बून कारक नीर्यकान दाशी हत। कानकार व्योदयर्श्वत অবমতি হইরা ভারতে পুমরার ভিত্রপ্রের উথান হইরাছিল। स्मारमध (महेक्म क्षेत्र इत्न क्षिप्रक्ति ७ भत् दोहबार्यक অভাবান হইরাছিল। কিন্ত চিত্রপ্রের পুনহভাবানের পর कारक विक्रम (बोदवर्णित (मह दश्रि मर्दाक कहिल हहेशास **मिशाल (जममी) इस नारे। अक्या मठा (व. मिशालद वर्छमाम** শাসকগণ হিন্দু এবং নেপাল পুথিবীর একমাত্র হিন্দুরাই। কিছ ত্ৰান্ধৰাৰৰ্শ্বের বিবাদে শাসিভ দেশালয়ালা চইতে বৌহৰৰ্শ্ব বিভাছিত হয় নাই ৷ আৰু তথাত্ব হিন্দুৰ্ব্য ও বৌৰ্ধৰ্য পাশা-भामि जातीवार विवाधमाम ! अधिव ১११६ माल (शावबा-वाषा পুৰীমারায়ণ সমগ্র মেপাল জয় করিয়া ভবাড়ার খাসমভার এহণ করিবার পর দেশালে আর একজনও বৌদ রাভার অভিত্যের কথা জামা বার না , তথাপি আজও বৌহবর্তাবলখীরা मिर्गामिक मर्गामिक वर्षमध्यमातः विभारमक प्रकित कारम হিন্দুদের সংখ্যা অধিক, ৰাকী অভাভ ছানে ( পূৰ্ব্ব, পশ্চিম ও উছয় লেপালে ) খোৰবৰ্ত্মীয়া সংখ্যাগরিষ্ঠ।

<sup>†</sup> চা-বাহিল খক 'চাকু বিভার'-এর অপত্রংখ

किन जाम्हर्दात विश्वत त्मभागी त्रोदनन जान त् वर्ष चाहरू करत छाडा प्रविद्याम वा महाबाम (काम भर्गारा প্ৰে মা: মেপালের আজিভার বৌধবর্ত্ম হিন্দু-বৌদ এই চুই ৰৰ্শের অপুর্ব্ব সময়। মেপালে বৌষধর্ম যে হিন্দুবর্শ্বের বিভিন্ন चाहात-चक्रकारमय प्रतिक प्रश्वितिक वृदेशास कावात कावन হর্নাইছা ঐতিভাসিক্তরণ বলেন যে, নেপালের আদিন অধিবাসী (बीच (बश्वदादम्य (बीचवर्षद जदल बमाइवद श्रवागार्ट जदहे বাকিতে না পারিখা হিন্দুদের প্রধার সাভ্যর আচার-অমুঠানের প্ৰতি আকুই চয় এবং ভাচাৱা একে একে হিন্দু-পূজাণছভিত্ৰ जग्रम्य चाहात-चन्ने। अत्य करता स्थ कातार महत् चाकि-ভেদ প্রভৃতি বিভিন্ন হিন্দু সংস্কার মেওয়াত বৌধদের মধ্যে প্রতিষ্ঠিত চইয়া গেল ৷ বৃদ্ধকে ভাহায়া ভাগে করিল মা. কিছ बहारमय मेखना, शर्मण ७ जनान रमयरमयीरक शुका मा कतिया তাঁচাদের বিরাপভাত্ম তইবার সাহসও ভাহাদের হৃতিল মা। গাৰিব কল্যাৰের লোভে নেপালী বৌহনণ ভাহাদের তিল-লাতগণ পৃত্তিত প্ৰায় সৰ কঃট দেবদেবীকে বুদ্ধের সমসোহৰ अबाम कतिका छाञारमञ्जूषा कतिराख मात्रिम । चन मिरक वाबाद (बनारमद विम्त्रन बुद्दक्ष कावारमद बहरूद सिर्का বলিয়া প্ৰহণ করিয়াছে। আৰু ভজ্জাই দেপালের বৌষমঠে প্ৰকৃতি তিল দেবদেবীর বৃত্তিগরত বৌধন্দাদের পূজা এত্ৰ রিতেছেন। আবার হিন্দু-মন্দিরে বুরবৃত্তি অভাত দেবদেবীর ালে পুৰিত হইতেছেন। হিন্দু পুরাণ 'দেপাল মাহাজো' जेविक चारब--"ब्रह्म शृक्षा कदा निवश्रकात कुना।" चाराव बोबमास वश्स्त्रवान त्मानी (बोदिनश्य विमूप्तवण गल-वियान निरंदेत गुका कतात विनाम विदार ।

অভানৰ নেপালের আজিকার বৌহনর্স হিন্দুনর্স বারা ভানিত হইবা এরপ আকার বারণ করিবারে যে, ভবাকার ছ বৌহকে আপাতস্টতে বৌহনর্সাবললী বলিরা চিনিতে ারা বার না। নেপালে হিন্দু ও বৌহকে সহজে পুরক ারিরা চেনা বার "পিবরাসী" ও বুদ্দার্সী" এই হুইট বাজ্যের ারা। নেপালী বৌহনপ নিজেদের "বুদ্দার্সী" বলিরা পরিচয় যে এবং হিন্দুদিগকে ভাহারা "পিবনার্সী" বলিরা উল্লেখ রে। অর্থাং, নেপালে বেন একট বর্ষই বিভ্নান যাহার ইট পাধা—এক "পিবনার্সী", অভ "বুদ্নার্সী"।

শেণালে হিন্দু ও বৌদবর্শের কিরণ সমস্বর হুইবাছে ভাহার

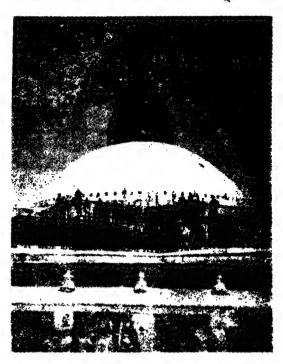
চাত দৃষ্টাত নিয়ে বেওরা বাইতেছে। অনেক সমস্ব বেধা বার

া, একই বেবস্তিকে নেপালের হিন্দু ও বৌহরা বিভিন্ন নামে

া করিতেছে। নেপালী বৌহরা বাহাকে অবলোকিতেশর

বালারা পূলা করে—হিন্দুরা নেই মৃতিকেই মহাবেন বলিয়া
হোল চরণে বিহালল বিয়া পূলা করিতেছে। মড্জেলব বা বংজেলার নেপালের ভাগ্রত বেবভা। বংজেলব ভাবার বুল পল্লাণির অবভার বলিয়া প্রবাত হুইলেও

হিন্দু ও বৌৰ উভয় সন্তাদায় ইঁহায় পূৰা করিয়া থাকেন। মংজ্ঞেমাথের রববামা নেপালে বৌৰ এবং হিন্দু উভয় সন্তা-



নেপালের বৌৰমন্দির বোৰনাথ

লারেরই একটি বিশেষ উৎসব। দেশালের প্রবানমন্ত্রীও এই রখবাল্লা উৎসবে বোগদান করেন। বহানকাল নলিবে কিছু ও
বৌহ উভর সম্প্রদারই পূকা দিরা থাকেন। নলিবছিত বৃতিটি
নিঃসলেহ অবিভাত বৃহ্বৃতি হইলেও হিন্দুরা বঁহাকে শিবরুতি
বলিরা পূকা করে। নেশালের স্থাসিদ বহুলাথের বলিরে
বৌহসপ্রদারের একটি অভি প্রাচীন কীর্তি। কিছ এই বলিরে
বৌহসপ্রদারের একটি অভি প্রতিতা করিবাছে। বরজুনাথের
বলির ও বোবনলির বৃত্তিও প্রতিতা করিবাছে। বরজুনাথের
বলির ও করিবার করিবা বাকেন। নেশালী বৌহসপ বৌহ
বিশ্বনিরে প্রতিতিত দেবদেবীর সমূবে পশুবলি দেব না বটে, কিছ
হিন্দুবলিরে সিরা ভাহারা ভবাকার দেবদেবীর উৎসঙ্গে
হিন্দুবের বভই পশুবলি প্রকাশ করে।

মেপালের বৌহবর্শের এইরপ সংনিপ্রিভ ও বিক্বত রপ বেবিরা কের বেন না সন্দে করেন বে, নেপালের বৌহবর্শ্য কালজ্বে লোপ পাইরা বাইবার সভাবনা আছে। হিন্দুবর্শের আচার-অস্কান র্জ হইরা মেপালের বৌহবর্শ্য এক বৈশিষ্ট্য লাভ করিরাছে। বৌহবর্শের এই নিপ্রিভ রূপ দর্শন ভরিরা অনেকে অবস্ত মেপালে বৌহবর্শের বিস্তির আশক্ষ ভরিৱা- ছেন কিছ ভাহাদের এই আশকা অবৃদ্ধ । বত বিন ব্যক্তাণ, বোৰনাথ প্ৰভৃতি নলিৱের চূড়ার চূড়ার প্রত্ত্ত্বের করুণাপুণ আধি অভিত থাকিবে, বত দিন তারা বাবে নাবে সংকৃত হইয়া মবন্ধণ বাৰণ কৰিবে, বত বিদ পৃথিবীৰ চল্লিপ কোট বৌচ নহনামী সুবিদী, সাধুৱা প্ৰভৃতিৰ নাম স্বৰণ বাধিবে, তত বিদ দেপালে বৌচবৰ্শ্বেৰ বিস্থি হুইবে না।

## 'উৰ্বশী' ও 'বিজয়িনী'

### ঐতপনকুমার বন্দ্যোপাধ্যায়

উর্মণী ও বিজ্ঞিনী কবিতা চুইটতে রবীক্রমাধ অপূর্কা শিল্প-নৈপূপ্যে সৌল্লহাবোৰের ভত্তীকে প্রকাশ করিবাছেন। ভর্ট কবি কোন অভিন্যকে আনাদের আনগন্য করেন নাই, পরত্ত বে সভ্য আনাদের নমোবর্দ্ধে অভর্তীন হইবা রহিবাতে, কবি তাহার রসচেতনার ভাহা গভীরভাবে উপলব্ধি করিবা আনাদের কাছে নিবেছন করিবাছেন। জীবন-বর্দ্ধের সহিত বোগ থাকার অভ বিষ্ণান্ত বেষন এক দিকে বিশ্বব্যাপী সভ্যের মর্ব্যাদ। পাইরাছে, অপর দিকে ইহা খভংই কবিভার মধ্য দিলা সহক ও সর্বাদক্ষর কৃষ্টি লাভ করিবাছে।

छैसी कि, छाड़ा बनिए निशा कवि श्रवस्थ विकाहक শক্ষরত প্রতণ করিয়াছেন। পুৰিবীতে যে পরিচয়খনির মধ্যে चावरा श्रीवरण लोक्षराच नगरात विविध के अधीर जार লাভ ক্ষিতে পাত্তি, লে সকলের উল্লেখ ক্ষিয়া কৰি বলিলেন (व, धैर्किवैदण अ जणन श्विष्ठद्वत मत्वा वावा वावा मा. धैर्किवै এই নিবিড় আত্মীৰভাৱ পরিচঃকে ছাড়াইয়া বার। বাতা, কড়া, বৰু প্ৰস্তৃতি ৰাহাদেৱ আমনা প্রিচনভোৱে বাঁৰি, তাঁহাদের चायदा अकड़े निर्देश जीवात बारवा चायद चति । कांडाता अकड़े বিশিষ্ট পরিবেশের মধ্যে প্রেম ও সৌলার্থার আকর চটনা পাকে। কিছ উৰ্কাশী বেদ আপদাৱ একট ব্ৰচন্ত সভা সইবা খননীর জেহ, জভার লেবা, বধুর প্রেম এ সকলকে ছাড়াইরা একট বহাব্যাপ্তি লাভ ভবিষা আছে। ভাতাতে ভোম বিশেষ পরিচরে বরিতে গেলে ভাতাকে বেদ বরুপে বরা বাব না। "ইহা নতে" বলিয়া ভাভ হইয়াহেন। বভত: 'উৰ্ফাৰী' ভবিভাৱ মধ্যে উৰ্বাদী কি কৰি ভাহা আভালে ইল্লিভে সুটাইয়া তুলিবায় প্রবাস পাইরাছেন। কবি ভবু উর্কশীর প্রকৃতি, উর্কশীর আবেদন ও ভাহার ক্রিয়া বর্ণনা করিয়া উর্কেশী সম্বন্ধে একট বারণা বিভে চাহিয়াছেন বাম। ক্ৰিডাট আলোচনা ক্রিলে আমরা দেবিব (व. वाछविकश्यक माना चाणात, देनिया अक्षे वादवामाळ দেওৱা চলিতে পাৱে, উৰ্জ্বী কি ভাহা নিৰ্বিষ্ট কৰিবা বলা प्रकृष्टिम । देश कीयम-वाश्यक विषय, लोणाना पाकित्न रेटाएक छेनलिक करा यात्र। रेटाएक अकाम करा इत्रह व्याश्रवेद ।

এই উৰ্জনীয় প্ৰতিঠা কোণায় ?—কবি বলিলেন,

- গোঠে ববে সভ্যা নাবে প্ৰাভদেহে বৰ্ণাঞ্চল টামি
ভূমি কোন গৃহপ্ৰাভে নাহি ভাল সভ্যা-দীপৰামি
বিধার ভড়িভ পদে কপ্ৰবক্ষে মত্ৰ নেত্ৰপাতে
মিভছাভে নাহি চল সলচ্ছিত বাসর-সক্ষাতে
ভক্ত অৰ্চৱাতে।

কবি আনাদের জীবনের একাভ আকাজ্যিত বধ্রতম ছুইটি
পরিবেশের কবা উল্লেখ করিয়াছেন। সভ্যাদীপ-আলা কূটীরবামিতে আমাদের দৈমজিন জীবনের আনন্দ, সৌন্দর্য্য ও শাভি
সরিবেশিত রহিয়াছে, আর প্রিরমিলনাখাসে প্রতিশ্রুত বাসরসজাট ভাহার বিশেষ বোহ্যদিরতা লইয়া আমাদিশকে আবিট
করিয়া রাবিয়াছে। কিছু আমাদের সবচেরে প্রির এবং
আকাজ্যিত এই পরিবেশের মধ্যে উর্কেশী বরা বের মা। জীবনে
ইর্কেশীর বর্ধন আবির্ভাব হয় তবন সহলা আমাদের জীবনের
সহিত তাহার নিগৃচ সংবোগট বুঁজিয়া পাই মা, জীবনের মধ্যে
ভাহাকে সহল্ব পরিচারে বিলাইরা লইতে পারি মা। একটা
অভাবনীরতা লইয়া অপরিচিতার পরিচারে আমাদের চেড্নাকে
সেপর্ণ করিয়া বায়, তবন দেখি—

### উষার উদরসর অনবওঠিতা— ভূমি অকুঠিতা।

ভীবনের সদে ভাহার বোগ বুঁজিরা পাই লা। অবচ "উবার উদরসন" এনলি সহজে এনলি বহিনাত, কোল আবরণ কোন কুঠা লা রাবিরা লে আরপ্রকাল করে বে, ভাহাকে ভূল বুবিরার সভাবনা নাত, অবীকার করিবার উপার নাই। আনাদের চেভনাকে এই উর্ক্তি ববনই আর্ল করিবা বার তবনই ভাহাকে নির্ক্তিচারে নানিরা লইতে হব। এ আন্ধ্র-প্রকালের ইভিহাস নাই, কোন ক্ষমবিকালের বারা নাই, "ব্রহুটীন পূলসন" এ আগনাভে আণনি বিক্লিভ হবা উঠে।

অধ্য কৰি জীবনের মধ্যে ইহার খীকুভিক্তে স্পষ্ট করিরা বরিতে পারিলেন না। ভাহার অভ একট লোকাভীত পট-ভূমিকা স্পষ্ট করিরা উর্জনীর আবির্ভাষ্ট বুঝাইতে চাহি-লেন। আমাদের পুরাধে বে উর্জনীর আবির্ভাবের কথা বলা হুইয়াহে, কবি ভাহার সহিত এই উর্ক্ণীর উপনা দিলেন।
এবানে সর্বাঞ্জে এই কথাট কানিরা রাবা প্ররোজন যে, পুরাবের
উর্ক্ণী আর কবির উর্ক্ণী এক নর। পুরাবের উর্ক্ণী একট
আলৌকিক কাহিনীর নারিকানাত্র এবং কবির উর্ক্ণী সৌন্দর্যাভত্ত-করণা, ভাব-করপা। পুরাবের উর্ক্ণীর নব্যে বলি এই
সৌন্দর্যাভত্তের ইলিভ পাওয়া যার, ভবে ভাহা আমাদের হারাই
আরোপিভ, পুরাবকার সে অর্থে উর্ক্ণীর পরিকলনা করেন
নাই। করেকট কারবে পুরাবের উর্ক্ণীর পরিকলনা করেন
নাই। করেকট কারবে পুরাবের উর্ক্ণীর সহিভ কবি এই
উর্ক্ণীর উপনা দিরাছেন। পুরাবের উর্ক্ণীর নহিভ কবি এই
সম্পর্কিভ নর, ভাহার ব্যয়ে সকল সৌন্দর্যের সনাবেশ, ভাহার
বৃত্তাসীতে বিচিত্র সৌন্দর্যের প্রকাশ এবং ভাহার এক, হাতে
ব্রাপাত্র আভ হাতে বিয়-ভাও। কিন্তু এই কারপন্তলিও বাহু,
বুল কারণট হইল রুস্টের প্রয়োজনীরভা। ইহার কবা পরে
নালোচনা করা বাইবে।

कृषि दनिष्ठाहम, छैर्सनी यथम चारिकृ छ। इत, छथम (म ব্ৰাপমার মধ্যেই আপমার সম্পূর্ণ পরিচয় সইয়া আসে। এক क्षेत्र अक अक्रकत प्रकार आधारम् कीरम-जानर प्रक्रिक करिया ল আত্মকাশ করে। সেদিন আমাদের চেতনার একট নতন वाब कात्रिका केर्ड, काहा केर्दान-त्वाब वा भोनार्वा-त्वाव। अरे नीक्षरीटक चामदा देखनिकाल वर्ष स्वर्थ, त्रवेक्षण चामारवर ্ৰো প্ৰথম যে সৌন্দৰ্যা-বৃদ্ধি জাগাইয়া দিয়া যায়, ভাতাভেই রামানের চেত্তনা উচ্চাসিত ভইনা উঠে। এই উর্কৃশীর এক াতে ব্ৰতিয়াহে প্ৰাণাত-লে আমাদিগকে আমল দেৱ. ামানের প্রেমকে প্রবৃদ্ধ করে। ইহাই ভাতার সুধা। ভাতার ার এত চাতে ব্রিরাহে বিষ্ণাও—ভাচাকে লাভ করিতে ্যানতা বাসনা-ব্যাকুল হইৱা উঠি, বিকুত্ত হই, বেগনা পাই। ভাই ভাছার বিষ। এই হাসি-জঞ্জ, পাওয়া-না-পাওয়া, व-प्र: प्रशा क विरवत किया अकडे जरक हमिएक बारक अवर तकात बना विवार जाबादवत जीवन क्रीक्वादवादन जीनाविक हैश क्रिक्र । श्वाभारत्य (हक्षभारक अहे केर्यन विविध व्यक्ति विश्वा यात्र, (जरे क्षिमरे चाटाटक क्षयन क्षयि अवर भविश्वं ৱিতে দেবি। ভাতার মধ্যে অসম্পূর্ণতা নাই, ভাতা আমাদের াছে অভিজ্ঞতার মৰা বিশ্বা বীরে বীরে পরিচিত হয় মা---

"বৰণি জানিলে বিখে বৌৰনগটভা পূৰ্ণ প্ৰস্কৃটভা," ই সৌন্দৰ্যবোৰ বিখের সকলেরই একাছ আকাজ্ঞিভ। ঃইছভ—

> ৰ্গৰ্গাভৰ হ'তে ভূমি ৩গু বিখেব প্ৰেৰণী। তে অপূৰ্ক শোভদা উক্ষী।

এই সৌন্ধ্য-সভাকে ব্নিগণ নিরঞ্ধ বৃতিতে ব্যাদ করেন, বি বর্থনই ভাহাকে রূপের মধ্যে প্রকাশিত দেখেন, তথনই হাবের ব্যাদভক হয়, তথন রূপের মধ্যে তাঁহাকের বিবিক্তে দেখিরা তাঁহারা পূর্বের তপভাকে ভুক্ত করেন। লৌশর্য-সভার নিরঞ্জন বৃষ্টি কবিদের ব্যানের বিষয়, আর ভার রঞ্জনমূর্তি বাদব-সাবারবের আঞ্চালার বিষয়। সৌশর্য-সভার এই রঞ্জনমূর্তিকেই কবি উর্কাণী বিষয়। সৌশর্য-সভার এই রঞ্জনমূর্তিকেই কবি উর্কাণী বিষয়াও সইরা একলা আবাবের জীবন-সাগর নবিভ ক্রেরা আবিভূ ভা হয়। ভাহার স্পর্লে ত্রিত্বন বৌবনচকল ক্ইরা উঠে, রসিক্তিভকে ভাহা সূত্র করে, সদীভর্বর করে। বিহাতের চাক্ল্য সইরা সেই আক্লাক্লা ববন বারা বিভার করিবা বার, ভবন নিবিল বিধ ভাহাকে অভ্সরণ করে।

এই বঞ্চনমূঠিতে উক্সী বৰণ ভাগনাকে নামাভাবে প্রকাশ করে তথন ভাহাতে বিচিত্র সৌন্ধ্য-ভূরণ দেবিভে পাওয়া যায়:

> পুরসভাভলে যবে নৃত্য কর পুনকে উন্নসি,
> হে বিলোলহিলোল উর্থানী,
> হলে হলে নাচি উঠে সিছুমারে তরকের ফল—
> শভাইর্যে শিহুরিয়া কাঁণি উঠে ব্যার অঞ্ল তব ভ্রমহার হ'তে সভ্ভলে খলি গড়ে ভারা অক্সাং পুরুষের বন্দোমারে চিভ আন্সহারা নাচে বক্তবাহা

দিগতে দেবলা তব টুটে আচ্ছিতে অন্তি অসমূতে।

এই সৌন্দর্য-ক্রবে পুরুষের চিন্ত, অর্থাৎ রসিকের চিন্ত ভরলারিত হইখা উঠে, সৌন্দর্য উপলবি করিবা সে আগ্রহারা হইরা বার। এই বে বিশ্বন্ধতে বিভিন্ন রপের মধ্যে কাভির ভোতনা, ইহা উর্মানীর বিভিন্ন প্রকাশলীলা নাত্র। এই বছর মধ্যে কবি যে একক ভাব-সৃতি দেবিতে চাহিরাহেন, ইহাই কবির উর্মানী।

এইবানে বিষয়ট একটু কটল হইবা পছে। কৰি যদি
বিষয়াপী সৌন্দৰ্য্য-সভাকে অৱপ বলিয়া ব্যাব্যা কৰিছেন,
ভাছা হইলে ইহা কাব্যের বিষর না হইবা দার্শনিক
আলোচনায় পর্যাবদিত হইত এবং মুক্তিভর্কের মধ্য বিষয়
বিষয়ট প্রতিষ্ঠিত হইতে পারিত। কিছ যাহা আকেইী, বাহা
বিশ্ব ব্যাপিরা রহিয়াছে ভাহাকেই রঞ্মম্র্ভিতে পরিচিত করিতে
চাহিয়া কবি এক দিকে বেরম বিষয়টকে বোবের বিষয়, তথা
কাব্যের বিষয় করিবা ভূলিয়াছেন, অপর দিকে তেমনই ইহাকে
আভাসে ইদিতে রাধিরা দিয়াছেন। বলা বাহল্য, ইহাতে
কাব্যের মধ্যাদা করি হয় নাই।

বঞ্চনমূর্তিতে প্রকাশিত এই উর্জনী কিরণ ? সিছুমাবে তরকের বে আন্দোলন, দক্ষিণ বাজানে শভ্ননীর্বের বে শিত্রণ, নভজনে ভারকার বে শালন, অভরবির বর্ণফ্টার বিগতে সহসা বে নৌকর্ব্যোভাসন,—ইহালের মধ্যে উর্জনীর রূপ-স্যোভিট বিক্টাণ হুইতেছে। এভলির মধ্য বিরা আমরা কণে কণে উৰ্মণীয় আভাল পাই, এডলি উৰ্মণীয় সভাকে প্ৰয়ণিত কয়ে, পৰিচিত কয়ে। কিন্তু উৰ্মণীয় স্বৰুপ কি ? এই বঙ বিদিপ্ত গৌন্দৰ্য্য-উৎসপ্তলি হইতে যে লাখণ্য বিদীণ্ হইতেছে ভাহায় সভ্য কোৰায় প্ৰভিন্তিত, ভাহা কোন্ পৰিপূৰ্ণ মুৰ্ভিতে বিক্লিভ, কোন লাখদায় ভাহা লভা ?

কৰি একট অস্কেদে প্ৰশ্নতালির উত্তর দিয়াছেন।
ইহাতেই বিষয়বজনী ব্যক্ত হটয়াছে। কৰিব উত্তরট জীবন-বোৰ হইতে সঞ্জাত বলিয়া টহা বুৰিবার জন্যও গতীর বোৰের প্রয়োজন। এই অস্ক্রেন্ট গতীর অর্পূর্ণ ও ব্যঞ্জনা-বয়। যদি আহলা বোৰ দিয়া এই উত্তরট বরিতে না পারি তবে বিচার-তর্কের হারা ক্ষমণ ইহা ব্বিতে সক্ষম হইব না। কৰিপ্তরু এখানে উত্তরট আহাজের বোবের উপর হাভিয়া দিয়া প্রবাদ কবি-কৃতি দেখাইয়াছেন। বিষয়ট ব্রিবার পূর্কে, প্রশ্নতালিকে আর একট স্পষ্ট করিয়া ব্রিবা লগুৱা বাক।

আৰৱা বিশ্বকাতে ল্লেগের মধ্যে কাছিল যে প্রকাশ ছেবি ভাহা আৰাদের সৌন্দর্য-বৃদ্ধির উপর নির্ভন্ন করে। আরাদের **टिक्नांव विकारण आबारमंव (श्रीमधी-यूदि शक्ति। हैर्दि।** ৰাচার চেত্ৰার বিকাশ হয় মাই ভারার সৌন্ধাবোধ নাই। নে বিশ্বস্থাত ত্ৰপতে অভিনয় চলভাবে দেখে ত্ৰপের অভঃবিত कांक्रिक म विवेद भार मा। उन व्हेंस कांच्य व्यक्त काचि वरेन मानत त्मर्था . और मानिकान बावात वस मारे. পুৰিবী ভাতার কাছে ব্ৰপের ৰভপিও বাত। এক উচ্চভর ৰামসিকভাৰ আমানের মধ্যে এই সৌন্দর্যা-বোষ্ট ভাসিহা উঠে। তৰ্ম আহ্বা বিভিন্ন ত্ৰণের মধ্যে কাছির ভোকনা विविष्ठ शाहे। वैसंभीत वाविकार वाबाद्यत कीराय बहे त्रीवर्षा-त्वादवर चाविकाव । चावादवर वत्या त्रीवर्षा-वृद्धित विकाभ वर्ति, किन्त नौमर्वारवाव जाबारवत राजवारक अक विव সহসা ভার্ম বার, আমরা রুপ্তরতে ভাতির প্রবো বাদিরা উট্ট। তবন আবাদের নরন-সন্থবে কাভির ছ্যুভি विज्ञा वाह अवर विद्यक्तर अहे काव्यक महिनाक स्मिन। এখানে কাভি একটা 'জ্যাবস্ট্রাই আইডিয়া' হিসাবে আমাদের (बार्य पहुरू हत्त. देहा विठात-वृद्धित प्रशीक। अहे क्षत्रहरू कवि विनाद्य - "अक विनाद तोक्याबाद आविन्ताहे : त्म (क) यह मह, तम अक्डी (श्रेदनी वा जामात्मद जलत दम-नकांत करत। मातीत मरना मोकार्वात व शकान देखनी णहाबरे थणीक। अब बर्या (करन चार्यमुझे के श्लीकर्याब টান আছে ভা নয়, কিছ বেহেতু নারীরণকে অবলয়ন ক'ৰে এই সৌন্দর্যা, সেই সদে ভার সদে বভাবত নারীর বোহ चारह।"

উৰ্মাণী-কলনাৰ মধ্য বিলা প্ৰকৃতপক্ষে ন্নবীন্তনাৰ এই আনস্মীট কৌন্দৰ্য্যের কথাই বলিতে চাব। পৌনাধিক উৰ্মাণীয় মধ্যে পুলাণ্ডার এই ভয়ুট সন্তিবেশিত করেন নাই,

ववीलमां व वेर्कणीत प्रवा विशा तारे ववकेटकरे श्रामां कविटक हाहिबाद्यम । देखाँची बच्चन श्रीवानिक देखाँची चच्चन "উৰ্মণীতে সেই অনিৰ্মাচনীয়তা কেচবাৰণ করেছে, প্ৰভৱাং ভা चारित्रहे विष्य । चचका वैक्यी बाहीह (वह-तिव्यक्तिहे পরিপ্রতা, অর্থাং উপরক্ত পাত্তের মধ্যে দিয়া কাভির উপরক্ত প্রকাশ। ববীজনাধ যদি 'বসীর' বৃত্তিটির মধ্য দিরা ভত্তিকে প্ৰতিষ্ঠিত না করিতেন তবে বিষয়টির কোন কাব্যক্ষরি বাজিত मा । कारवात विशव चावारकत तजारकवारक नार्व कवितात অপেকা রাবে, নড়বা ভাষা আমাদের বোবে সঞ্চারিত হর मा। श्रीतानिक दैर्वानैत देखनात्वरे जावात्वत त्रम्लात्कत ত্ৰি প্ৰত ভাৰা বাৰ, আমাদের বন একট বোভ, একট वानमात यदा क्रिता ज्ञासक्यांनि ज्ञानत हरेश शास-जिल्ह ठरेवा छैर्छ । **जावारमञ किसरक अहे जा**रक्याका क्रियास क्राडे কবি কৌশলে উর্বাধী-বৃষ্ঠির আশ্রার লইয়াছেন। এই বে गर्फणमणा देश चावदा चावारस्य कीवम-(ताव कडेरक अहत कवि। अरे कीवम-वार्यद क्रिकार कारवार रह बाह्यात्रस ৰংশ্য সহজে সঞ্চাৱিত হইৱা বাৰ। এই পৌৱাণিক উৰ্বেশ্ব-ৰম্ভি ৰাহা কৰি "নাৱী-গৌন্দৰোৱ প্ৰভীক" বলিয়াছেন, ইহা ক্ৰির লক্য নর, উপলক্য মাত্র।

বদি কাভিকে বুৱাইতে পিয়া কবি কাভির আধার্টকেই বুবাইতেন ভাতা তইলে পৌৱাণিক উৰ্ক্তীর বৰ্ণনাহ ভবিভাটত नवाधि प्रकेष, किन्द्र द चावादवव बावा काश्विव श्रकाम, जिहे আৰাত্ৰই কাছিত চত্ৰৰ পত্তিচত্ত নত। কাত্ৰণ আৰাত্ত সীমাৰ্ছ, कांचि अक्षेत्र सतीय कार-त्राता । ভাই ভবি ইতাকে জোন भीबाद পরিচরে চরর করিছা বাঁবিকে পারিলেন বা । বলিলেন - वह बाका, वह क्या, वह दश । चावार शोदानिक केर्स्स वह তৰিত উৰ্জ্বশীত ভাতনিক আধাত হাত। কিছ এ পৌতাৰিক উৰ্বা -পাতের মধ্যে বে সৌন্দর্বাসভার প্রকাশ ভাচা ভ ভোনও তহুর সীমার বর মহে, ভাহার মধ্যে ত কোম তুলভা নাই---ভাহাকে আমরা রূপের মধ্যে প্রকাশিত দেবি বটে, কিছ ভার চরম সভা ভ রূপের মধ্যে নাই। রূপ ভাহার প্রভাশের আবার মাত্র। আকাশের বাধ্যমে বেষদ আলোর প্রকাশ, আলোর রহত আমরা আমি মা: তেমনি রূপের মাধ্যমে কাভির क्षकान, काण्य बक्छ जानात्मत जनविनेता। वार्शन मर्दा বহুভবৰতা নাই, রূপের মধ্যে কাছির বে জ্যোতনা, তাহাভেই রহতবরতা বহিবাতে। কাভির এই বহুতবহুতার কথাই विना कवि विकीश नाम कैस्निय वर्गना कविरामन । देखांब সহিত প্ৰথম বৰ্ণনাত্ৰ বিভাগ বহিল না, প্ৰথম পৌৱাণিক छेर्सनैरकरे कवि धरे भरत्वाक्तकृत्व वावा जानमात छैर्सनी **कविदा नवेराना । जश्याक्यांक्रेक् अवेदार्थ :** 

> বৰ্ণের উপরাচলে বৃষ্টিমতী ভূমি হে উন্দী হে ভূমনবোছিনী উর্ম্মী।

কগভের অঞ্চৰারে ধৌত তব তছ্ব তদিবা বিলোকের অধিয়ক্তে আঁকা তব চরণ-শোণিবা মুক্তবেনী বিবসনে, বিকলিভ বিশ-বাসমার— অরবিক্ষ বাববামে পাদপল রেবেছ তোযার অতি সম্ভার।

অধিল হামস-হর্গে অমন্ত রদিণী
হে হর্ত-সদিমী।

कवि विलाम, धेर्मने विशेष वृद्धिकी, तम काम आवादकत এই লৌকিক কৰতে নয়, ভাৱার পরিবেশ খলৌকিক, ভাৱা वर्षित केवताहरमा जाता चामारकत अवहे चलमात ताला। अहे बरुखानारक बरुखन है किया वर्षिन है वह बारिकार । (म বৃত্তি কিবল ? তাহা তমু নয়, তাহা তমুর তনিয়া, ভাচার बर्दा क्यूर अक्षे प्रम कार दान रहिशाक माळ क्यूर प्रमक् मारे। चावदा क्रम्बन्नरक रूपद ब्रावा काताद श्रवाम (पवि कारे क्यूद काटवरे काठाटक बादवा कदिएक शादि। क्रेर्स्टिय ৰবো ভাই ভদুৱ যেন ভাব বুচিয়াছে--- ভদু নাই। ভাচাব চরণত বেন কর্মার আসে না, চরণ-শোণিমাট আমরা অমুক্তর कतिए भावि गाव। धैर्सनैवृत्ति वर इस्के देविक गाव কৰি দিয়াছেন, ইহা অপেকা অধিক বৰ্ণনা ভিমি দেন मारे। कारन देखी ननमात कछील, काम करभव नर्गमारलहे সেই ভাব-সভাটকে ব্রিভে পারা বার না। ভারও চুইট भवा कवि ब श्रमाक विकासक्त-'बक्करवेषे' ७ 'विवमस्य'। बुख्यदिवे चार्य द्वांत. (व जीमार्वा। वक्त वाता वह जीमर्वा-দতা পঠিত, ভাষা সহত এবং হক। ভাষাতে ভটনভা বা वष्ण मारे। 'विवनमा' कथात वृतात- अरे जीव्या- नष्टात क्षकान प्रेयक. काम चारवान तम चानमारक त्मानम करव

এই ভনিমা ও চবণ-শোণিমা কিরণে গছিয়া উঠিয়াছে, কিরণে প্রতিভাত হইয়াছে? কবি বলিলেন, "কণতের অক্রণরে বৌত তব তহুর ভনিমা।" উর্ফার ভনিমা বিশ্বের অক্রণরার বৌত, ভাহার চবণ-শোণিমা নিধিলের ছদিরতেই উর্ফানী-মৃতির উপাদাম। অর্থাং, ইহা আমাদের হোদিরতেই উর্ফানী-মৃতির উপাদাম। অর্থাং, ইহা আমাদের বোব-সঞ্জাত। রূপের বব্যে সৌন্দর্যা-সভার প্রকাশ ঘর্ষম কেবি তর্ম আমাদের অক্রন্ত বহুতে সেই রূপাতীতকে পভিয়া ভোলে, এই গৌন্দর্যোপলবিতে আমাদের বহুর হুইতে বত রক্ত ভরিত হর আমাদের করলোকে ভতই ভাহার চরণবানি অহুরঞ্জিত হুইয়া উঠে। আমন্দের বেহুমার আমাদের অক্রন্ত নির্মান, পাওয়ার একাত আক্রাক্রার আমাদের বহুরতের করণ। এই আমন্দ-বেহুমাতেই বাহা বেহুহীন সৌন্দর্যা-সভারার হিল, ভাহাতে বেম হেছের ভার উপলব্ধি করি, এই বহিরতের করণই বেম ভাহার চরণের আভাস পাই। এইয়পের

আমাদের বোবের বব্য দিরা রাণনিবণেক একট কাভিবৃতি
রঞ্জিত হইরা উঠে। অরণ সভাট রণের বব্য দিরা আমাদের
চেতলাকে কর্প করে এবং আমাদের বোব ভাছাকে একট
রণের ভাবে করলোকে বৃতিতে গভিরা ভোলে। ইহাই
উর্বাহীর রঞ্জনর্তী। এই রঞ্জনর্তী প্রকাশ করিবার বিবাহ মর,
বর্ণনা করিবার উপাদান ইহাতে নাই, ওবু বাহার অপ্রধারার
ও ভালিরক্তে ইহা গভিরা উটিয়াহে, ইহা ভাহারই একাত উপলব্বির বিঘর; বাহারই বাসনা বিকশিত হইরাহে, দে-ই এই
উর্বাহিক বৃত্তিরা বেভাইতেহে। আমাদের বিকশিত বাসনার
কাহেই রূপনৌক্রির আপনাকে নিবেরন করে। সেই বিকশিত
বাসনা-পরের উপর উর্বাহী ভাহার 'অভিলত্তার' চরপবানি
রাবিয়াহে। ভাহার চরণ অভিলত্তার, ইহাতে ভত্তর মুলভা
নাই। আমাদের করলোকে বাসনা-পরের আসনে অপ্রদবারার এবং হুদ্বের রক্তক্তরণে বৃত্তিরতী এই উর্বাহী বিরাক্ত
করিতেহে—সে আমাদের নিভার স্বগ্রস্থিনী।

देशात भत कृति विलालन, अहे त्व देशी दाव, बाहा चामारमव चीवरम এक चक्रकम बङ्गाई चानिश कर्ड, चाला बाद किर्दिश बारम मा। य करभद बरना अक्नांत बाहात আবিৰ্ভাৰ আৱ ভাচাকে দেখানে ৰ'কিয়া পাই না। সে जाबारमञ मरवा विश्रम जामम, जशाब वाममा जामादेश मिता হায় কিছ তাহাকে আর বুঁদিয়া পাই না, রূপের বব্যে ভাচাতে প্ৰৱাৰ বহিছে পিছা বাৰ্থ চইছা কিবিয়া ভালি। ভাচাত্ৰই বাসনাত্ৰ বিভিন্ন ত্ৰপের ৰব্যে ভাহাকে স্থান কৰিয়া ভিত্তি এভাছভাবে ভাচাকে আশা করি, কিছ ভাচাকে পাই मा। बाबायात (महे अकास वाशिष्ठ छैर्सनैत महिष्ठ अक्षे हिरुकारमार विरुद्धा ग्रेड करेश श्राह । छारे सम्राह्म करनेव মধ্যে খেখানে যভ গৌন্দৰ্য্যে প্ৰকাশ, সে সবই সেই উৰ্ফেটীয় ক্ষা শ্বৰণ ক্রাইয়া দেয়। খণ্ডিত গৌন্দর্যা আনাদিগকে অৰও গৌন্দৰ্ব্যের প্ৰতি ভকাৰ্ড ব্যাকুল করিয়া রাবে। ভাহাকে পাই মা, ক্রিত্ত ভাচার ভাল আলা আমাদের জীবদের যাত্রা-টকে গভিশীল করিয়া রাখে।

পরিশেষে উর্কাশী সম্বন্ধে ববীজনাবের একট উজির আলোচনা করিব। রবীজনাব বলিতেহেন—'আদর্শ রহনীকে ছুই তাগ করিরা দেবিলে এক তাগে The Beautiful, এক তাগে The Good পতে।' উর্কাশী কবিতার প্রবনোজনীর তবগান আহে, 'বর্গ কইতে বিদারে' বিতীরার উল্লেখ পাওরা যার। উর্কাশী কবিতার আলোচনার এই উজিনীর তাংপর্যা সমূজে বুঁজিরা পাওরা বায়। সৌন্ধর্য যথন বরাহোঁয়োর অতীত একটা সভা তথন তাহার মধ্যে তালনক বিভাগ নাই। তালরক বিভাগ বহুযাক্রত আহর্ণের অনুবারী। তালর আহর্ণেরে সৌন্ধর্যান্ত বাব্, ভাহাই লক্ষীরূপে আবাদের ক্রমণার মুর্জ ক্ইয়াছে।

রাছে। নিরঞ্জন সৌক্র্য-সভা ভালনক বিচারের অভীত। আনাদের জীবনে আগে সৌক্র্য-বোন, তাহার পর ভাহাতে নক্লাদর্শের প্রতিষ্ঠা। এই সৌক্র্য-বোবে ভাই ভালনক, স্বত্বংব, স্বা ও বিব এক্স সম্বিভ হবরা আছে। চিন্সার রবীক্ষমার যে উর্ক্ষের করা বলিয়াক্রম ভাচা এইরপ।

কিছ পরবর্তীকালে রবীক্রনাথ বধন 'বলাকা'র উর্ক্তনী ও লজীর একটা ভূলনাব্লক ব্যাখ্যা বিরাহেন, তথন উর্ক্তনীর এই গৌর্কিকতা (priority) রকা করেন নাই। তথন লজীর নাম-লতে উর্ক্তনীকে বাপিতে গিরা উর্ক্তনীর অর্থ সংকীণ করিয়াছেন। বলাকার রবীক্রনাথ বে উর্ক্তনীর কথা বলিয়াছেন ভাতা বাজবিক প্রাণের উর্ক্তনী—

এক্ষম তপোতক করি—
উচ্চহাস্ত-অরিরসে কান্ত্রের পুরাণাত্র তরি'
নিরে বার প্রাণ নম হরি'—
হহাতে হড়ার তারে বসভের পুলিত প্রদাপে
রাগরক কিংডকে গোলাপে
নিজাহীন বৌৰনের গানে।

নারীর মধ্যে সৌন্দর্ব্যের বে প্রকাশ এ উর্কাশী ভারই প্রভীক।
কিন্ত ইহার মধ্যে নিরঞ্জন সৌন্দর্ব্য-সভার ভন্ত নাই। চিজার
উর্কাশীর মধ্যেও এ গুণগুলি রহিরাছে। কিন্ত ইহা ছাড়াও অভিরিক্ত একটা ব্যাপকভা রহিরাছে, ভাহা সেই সংযোজনাটুকুর
ব্যাধ্যার দেখাইরাছি।

ভাহা হইলে বলাকার উর্ক্নী বেষণ নারী-গৌন্দর্ব্যের প্রভীক, চিন্তার উর্ক্নী ভত্ত-বলণা, ভাব-বলণা বলিরা ভাহাকে কেবল বান্ত নারী-গৌন্দর্ব্যের প্রভীক বলিরা বনে করিবার কারণ নাই। কবি কাব্যের প্রবোধনে পৌরাণিক নারী-র্ষ্তির লাহাব্য লইরাছেন। কোন পৌরাণিক প্রব-বৃত্তির কল্পনাভেও কবি কাব্যের বিষয়বন্ত বর্ণনা করিভে পারিভেন, অন্তভ্ত: কোন পাঠিকা সেই ভাবে কবিভাট বৃবিতে চাহিলে, ভাহার কিছুমান্ত ভূল বৃবিবার সন্তাবনা নাই। কারণ ভিনি ভাচার ব্য দিয়া একই ভলে পিরা পৌরাইবেন।

বিশ্বনি কবিভাভেও কবি এই নিরঞ্জন গৌল্পবা-সভার পরিচর বিরাহেন। পৃথিবীর পরিবেশে উর্জনী-বোবের বে ভাব্যন ব্যঞ্জনাই স্কৃষ্ট হইতে পারে বিজ্ঞানী কবিভার ভার্তারই কাব্যিক অনুবাদ বিরাহেন। আনাদের জীবনে বে একট অনুকৃত্য রুমুর্ভে উর্জনী-বোব জাগিরা উঠে, ভেননই একট জনকে কবি এই কবিভার ব্যিরাহেন। এবানেও কবি বিজ্ঞানীর জোন বর্ণনা দেন নাই—বে পরিবেশের মধ্যে বিজ্ঞানীর আপনাকে প্রজাশ করে সেই পরিবেশের ক্বাই বলিরাহেন। অবচ এত বৈপুণ্যের সহিত্য পরিবেশট বর্ণিত হইরাহে বে, বিজ্ঞানীর রঞ্জিত বৃত্তি বেন আন্তর্যা চোবের সাবনে বেবিভে পাই।

উৰ্কাশ-বোৰের সময় আমাৰের জীবনে প্রথম বেষন প্রেমাস্কৃতির অস্কৃত মুহুর্তের আবির্তান হয়, বিজ্ঞানী বধন সামে আসিতেহিল, তথমও পৃথিবীতে একট ,অস্কৃত মুহুর্তের প্রতিহাহিল।

আছোদ সরসীনীরে রমণী বে দিন
নামিলা ভাষের ভরে, বসত নবীন
সে দিন কিরিভেছিল ভ্বন ব্যাণিয়া—
প্রথম প্রেমের মভো কাঁপিয়া কাঁণিয়া—
ভবে ভবে দিহরি শিহরি।

উৰ্কাণী কৰিতার ৰক্তবাট রগোডীৰ্ণ করিবার ক্ষত কৰি বেষদ পৌরাণিক উৰ্কাণী-বৃতির সাহায্য লইরাছেন, এখানেও তেননি স্নানাধিনীর উল্লেখ করিবা আমাদের বনের রস-ভূমি প্রস্তুভ করিবাছেন। ভক্রণী নারীর স্নানালীলার উল্লেখ আমাদের চিড বে গৌলর্থা-বঙ্গে ও বাসনার আর ভ হইরা উঠে ভাভেই ক্ষির বক্তবা সমাপ্ত হইরা বার। আমাদের চিডের এই ক্রিয়াটভেই ক্ষির বক্তবাট অভিবাক্ত হইরা উঠে। বিজ্বিনী বে সৌল্ব্যা-শ্রেটা, সে যে আমাদের কামনা-বাসনার ক্ষেত্র—ক্ষত সহজে, নিপুণভার সহিভ ক্ষি সেই সভাটকে আমাদের বোধগোচর ক্রিয়া বিরাছেন।

हें हार भर करि श्रीकृतिक भरित्याचेर वर्गमा करियात्वय । कैसी-(वारवद नमस चामदा शृथिबीद एव मुख्य, बधुद शदि-त्यानंत माता. त्य काचि-क्रमांकत माता कामिश केंद्रे. हेठा সেই পরিবেশ। ঐ অভ্যক্তেরটতে অপুর্ব্ধ নৈপুর্ব্যে কবি কাছি-वह शृषियोव शविष्ठव विवाद्यम । धैर्यन-वाद्यत नवत्वरे क्रश-क्रमरकत बरवा अरे कावित क्रमरके हैतानिक करेता हैरई। अरे (जोम्बर्धा-त्याय वर्षम चामारमञ् हिच्चारक च्यान चहिता वाह. क्षम विश्व क्षकित्क त्यम मध्य वातिनी स्वमिक क्षेत्र क्षि . **७वम नविरो**एं द-नक्न सनवद्य अक सिम नामाना विनयो. जाबादन रजिया स्विर्ण्डिकाम, णाहावा अक्के मुख्य श्विष्ठय महेशा चारम, चाहारमर मत्या अकडी चारभर्गा, अकडी मार्यक्रा দেবিতে পাই ৷ তৰ্ম সেই বস্থ-দিমের প্রভাতটতে তথু ছল ত্ৰপই দেবি না, কভ স্পান-কপ্ৰন, কভ নিখাস-উচ্ছাস, কভ काय-काकाम नदा भएक. अ मक्नरे ब्राम्ब कव:विक अक्षे कार-जोमर्वारक क्षेकांन करता और जोमर्वारवारवत शस्त्र वनक्कारन ७१ क्र वे सिविदाकिनान, अवन क्राप्तक अक्ष:क्रिक ভাবের কুরণ বেবিলাব। বেবিলাব হারা ও রৌত্রকর. चद्रत्याद ऋदि अवर शाचाद वर्षाद : चर्वार चार्त्या अवर चक्नात. चक्ना बरर मुनत्रणा देणहात महिल बरे देनेपहान-श्रीन विभिन्न ज्ञान-मनरण्य बर्गा (यन अक्षी जारबद काहिनी রচনা করিয়া চলিভেছে। আছ বেন আফাশের আলো (रहमाद महीए राक्तिश केंद्रेरकरक । अवसरे विकित सनवस व्हेट अक्टी जार, अक्टी लोजर्ग क्टीब वेटिकट अन्र সকলেই পরস্বারের সহিত একট সাবঞ্চ ও সকতি রক্ষা করিবা এই পৃথিবীর পরিবেশে সুবিদ্যত হুইবা আছে। পুলের বিঃশক র্ডচাতি, কোফিলের বিকল কাকলি, বিবারিবীর কলস্থা, সারসের বধ্র স্থাতিদিনা, বলাকার চকল গতি, বনগরবহু প্রাত বাহ্র উত্তর প্রবাহ—এ সকল বিভিন্ন রূপ বেব হুলমিল রক্ষা করিবা একট অর্থপূর্ণ সুক্ষর কাব্য স্কৃটি করিবা
চলিবারে।

এই পরিপূর্ণ সৌক্ষ্যাকে বলন-দেবভা বৰন ভোগে বাবিভে গেল, ভবন সে পরাভ হইল। এই বিভয়িনী ভ ভোগের নীয়ার নব্যে বরা দের না, এই সৌক্ষ্য্যভা বে বিশ্ব স্যাপিরা বিরাজ-নান—ভোগে ইহাকে নীবার নব্যে চরন করিরা পাইবে ক্ষেম্ব করিরা। রূপের নব্যে ইহার প্রকাশ কেবিরা আনতা রূপকে বরিভে চাই, ইহাভে ভবু রূপের হ্রারে বাবা ঠুকিরা বরি বাম, কাভিকে বাহ্বছমের নব্যে বরিভে পারি না। কাভি আনা-বের চেডমাকে স্পর্ণ করিরা, আনাহিগকে বাগনা-চঞ্চল করিরা ভোলে, আৰাবের বব্যে অভিনৰ উপলব্ধি আনিবা বের। কিছ
ভাতিকে উপলবিই করা বার, ভাত্তাকে ভোগ করা বার না।
ভোগের করা আবার ভাত্তার আবারটকে বৃটির ভিতর চাপিরা
বিরি—বাসনা-বিক্তর হইরা উটি, আবাবের বোরট স্থ্য হর,
ভাতি অভর্চান করে। কাভির সহিত আনরা এই উপলব্ধির
সম্পর্কট পাভাইতে পারি বার—পরিপূর্ব সৌন্দর্ব্যের বেবাবে
প্রকাশ, অভরের বীকৃতি বারা ভাত্তাকে প্রণাম আবাইতে পারি
বার—ভোল্য ও ভোভার সম্পর্ক নেবাবে বাক্তিতে পারে না।
ইহা একটি স্থা বাবনিক ভোগ বার, সুল বেহুগত ভোগ বহে
—বেহুরে বব্যে ভাত্তাকে আরম্ভ করা বার না। ববন-বেবও
সৌন্দর্ব্যান কাবাইরাহেন—ইহাই সৌন্দর্ব্যের
সহিত সৌন্দর্ব্যার প্রকাশ বদন লেবানেই ভোগনিকা।
কিছ বে কাভি-সভা উপলব্ধির বিবর, কবি বননকেও নেবাবে
প্রথম ভরিবাহেন।

## ফাল্পন

### এশৈলেব্ৰকৃষ্ণ লাহা

মহান মোহন—পুশাভরণে সক্ষা করিয়া এল, বিচিত্রভার চিত্র-বিভবে চিন্ত ভরিয়া এল। শীভের কুহেলি কাটিয়া গিয়াছে, আকাশ স্থনির্মল, এল প্রফুল্ল ফান্তন, এল মূলে মূলে উচ্ছল।

কে জানে কথন বহিবে দখিনা অকস্মাতের ক্লে, সারা অরণ্যে শিহর সাগিবে, ছক্ষ উঠিবে ছলে, ফ্রন্ম-নদীতে কলঞ্চনিতে বহিবে স্মোতের ধারা, জাগিবে জীবন, চারি দিক পানে চাহিবে আত্মহারা।

ভূমি কি আসিবে, চাহিবে আবার দীঘল ছ-আঁখি ভূলে ? ভূলে-বাওয়া কথা কল-গুলনে বলিবে আবার ভূলে ? ভূরের মতন গুনে বাব গুণু, কে করে অর্থ ভার! দূরের বন্ধু নিকটে আসিবে, ছাড়িয়া বাবে না আর। মামী পূর্ণিমা এসে কবে বুঝি চ'লে পেছে নাহি জানি, সেদিন কি-ভূলে চাহিনি উর্ছে, গুনিনি ভোমার ঘাণী। সেই বঞ্চিত মুহুর্তগুলি অঞ্চলে ভরি' অয়ি, এস অদুবের বেদনার পাবে চঞ্চলা মায়াময়ী!

এল ফান্তন, ফুলে ফুলে ভাই কুঞ্চ ভবিষা গেল, বিচলিত বত গুৰু পত্ৰ শুন্যে ববিষা গেল। বনে বনে কুকু বাতুল বায়ুব ব্যাকুল আন্দোলন, কোন্ দেবভাব বাতুল চবণে জীবনেব নিবেদন।

ফুল-ফোটানোর সদীতে মেলে বারা-পজের পান, বাওরা ও আসার পদধ্যনিতে এ-পথ স্পক্ষান। এস অশান্ত, এস বসন্ত, এস তৃমি, বাবে বাবে জীবনের বীণা বাজিয়া উঠুক অপূর্ক বাহারে।

# ভারতে বৈদেশিক সাহায্যের প্রতিদ্বন্দিতা

### 🗃 হরিহর শেঠ

পছুৰও বেমন পিরি কজ্মনের সাধ হয়, বামনের বেমন हैं एक हो छ कियार है कहा हब, चाब उठक है। चामार मना व चामारमव लाटन बास्त्रीकि अ वाहेरनवा বলিতে সাধারণত: বাহা বরাবর দেখিয়া আসিতেতি धवर मत्रकारत्व मण काछि है। का बारत भृषिवीय धके बुश्खन निकांहन छेनना नक्त याहा इहेरएड, मःवाहनक मावक्छ चातक विवद-चित्रिक्षण श्रं वार्गाव वाहा चवनक हरे एकि. काहेरक दक्षा कविवाद क्या. दारहेद ऐत्रदन-क्या राग्यक নেতা অ-নেতাদের বে অক্লাম্ভ ছটাছটি ও অমাকুবিক পরিশ্রম করিতে দেখিতেছি ও হয়ত বা অপর্যাপ্ত অর্থবায় ক্রিডেছেন ব্লিয়া অমুক্তবে আসিতেছে, ভাহাতে উহা সামান্ত ডিপ্লিট্ট বোর্ড অথবা স্থানীয় মিউনিাসপ্যালিটির নির্বাচনের একটা অভি বুংৎ সংস্করণ ভিন্ন আমার দৃষ্টিতে ত আৰু তেমন বেশী বিছু ঠেকিতেছে না। অভিারক্ত बाहा नाइरङ्कि, छाश चात्र विक्रू नर्ट-(मनवाभी छेर-সাহী বিশুদ্ধ ও ৰুপট দেশসেবকদের মধ্যে গুলীতি, অধাধুতা সংস্পৃত্যিন থাটি লোক্দিগ্ৰে বাছিয়া লইবার অভ আইন व्यवस्य बाबा अवहै। न्डन यावका।

কোথার মনে করিঃছিলাম, আরোজনের বিরাট ব্যবস্থা ভিন্ন বৃহৎ ব্যাপারে নৃতন ও অসাধারণ বিদ্ধু দেখিব। গাড়ী মোটর ক্রিজ করিয়া নির্বাচকদিগকে আনার সঙ্গে এবার হয়ত বা নবীনতর প্লেনের ব্যবহার বা ঐ মত কিছু কিছু দেখিতে পাইব। কিন্তু মুখের খাবীনতা অর্থাৎ প্রতিষ্থা প্রাথীনের বা দলবিশেবের মধ্যে বা উদ্দেশে ম্পাই কথা-কাটাহাটি, সভা মিথা। দোষাধানে প্রভৃতি নানা রবমের প্রচারকার্য চলিতে পাহিলেও নির্বাচকদিগকে স্পক্ষে ভোট দিবার অন্ত কোন আকারে অর্থদান ত দ্বের কথা, প্রার্থী বা প্রার্থীর হইয়া অপরেরও নির্বাচনের নিমিত নিদিষ্ট পরিমাণ ব্যরের অভিবিক্ত ব্যয় করা বা গাড়ী মোটর করিয়া ভোটারকে ভোটদান কেন্দ্রে আনাও নিবিদ্ধ। পাছে কেন্দ্র দেবতা-দানব নির্বাহেশ্বে প্রভ্যেব্যর্থই দাগিয়া ক্রেল্য কেন্ত্রার বেওয়াজও নৃতন দেবিভেছি।

এক দিকে এই নিৰ্বাচনের প্রতিষ্কৃত্যর ধূম-প্রার্থী বা প্রার্থীদলের কথা বা প্রতিশ্রতিমত নির্বাচনের পর দেশমাতাকে অপরূপ ঐবর্থামতিত:করার বয়না, অন্ত দিকে পুথিবীর বৃহত্তর রাইব্যের অবাচিত সাধাধানের আগ্রহ বা প্রতিদ্বস্থিতা। এই উভয়ের সমন্বরে না জানি জচিরে আমবা দেশমাত্রকার কি অপদ্ধপ দ্ধণই না দেখিব।

রূপক ছাড়িয়া বান্তব কেত্রে বাহা দেখা বাইভেছে ভাচার কথা ভাবিয়া আমি বড়ই গোলে পড়িয়াছি।

মানিশ বুক্তবাষ্ট্রের খন চাণ্ডার বেমন অফুরস্ক, কোন কোন রাষ্ট্রবিশেবকে তাহার আধিক সাহার্য দানে অগ্রেহ্ এবং দের সাহাব্যের পরিমানের বহরও एন্তান। ভাংতের প্রতি তাহার দরদী হৃদরের পরিচয় ইতিপ্রেও পাওরা পিয়াছে। আদ কিছু দিন হইতে সংবাদপত্র ও রেভিও মাংফত মাকিন সরকাবের আর এক প্রস্থ ভারত-প্রীতির বে পবিচয় পাওয়া বাইতেছিল ভাহা কার্যুত্ত: সিদ্ধ্ হইয়াছে। একটি চুক্তির ঘারা দ্বির হইয়াছে, ভারতংবকৈ আগামী ৩-শে ফুনের মধ্যে প্রায় ২৫ কোটি টাবা অর্থ-সাহায়্য প্রদান করা হইবে। উদ্বেশ্ব — চারতের অর্থ নৈতিক বনিয়াদ অন্ত প্রশ্নেন্ট তাহাদের পঞ্চর্যাক্তিক পরিক্লানা কার্য্যক্রী ক্রিবার কল্প প্রার্থিকি হইয়াছিলেন। শুনা গিয়াছে, ইহার মধ্যে রাম্বনৈতিক হাব্যবাধকতা কিছু আক্রেনা।

. এই চুক্তির পর কয় দিন না বাইতেই পুনবায় প্রচারিত হুটয়াছে, মংতিন যুক্তবাষ্ট্ৰ সরকাবের ভাবতব্যিত রাষ্ট্রপুত -शिः ८० होत्र वानन व्'क्ट अ भाविषाद्यत, केक नाहाबाहे बटचहे নহে। তিনি বলিয়াছেন-গত চাবি বংসরে ভারতবাদীর অবস্থার উন্নতি ইইয়াছে: তবে মন্তর পতিতে। আগামী চারি বংসর ভাহার পক্ষে অভান্ত সম্ভবিষ্ হইবে। যিঃ বোলংসর মনে হয় এজন্ত ভারতকে আধিক সাহায্য করা वकाष्टरे क्षराक्रम, ভাগতের পক্ষে वहे माहावा वक्क्ष व्यविद्यार्थ धरः युक्तदाहे व्यवका करिएक भारत्व ना। এই উদ্দেশ্ত তিনি সম্প্রত প্রেচিডেন্ট টুম্যান ও স্বরাষ্ট্র দপ্তবের সাইত আলাণ-আলোচনার অন্ত বিমানবোলে নিউইংক পৌভিয়াছেন এবং তথায় ভিনি আগামী চারি বংশবে ভারতকে এক শত কোটি মাধিন জগার সাহায্য निवाद चित्राय चानारेय। खुनादिन कविशाद्वन । महन रुप्त. कादटब इन्थ पुराहेबाव चन्न इवक के(हारमब मबनी क्षान **এই সাহায্যও না করিয়া ক্ষান্ত হটতে পা**হিবে না।

পূর্বের পাঁচণ কোটি টাকা অর্থ-সাহাব্যের চুক্তির উদ্বেজ বর্ণনার স্পটান্সরে লিখিত হ্ইরাছে বে, ভারত- সরকার এবং মারিন সরকার আছর্জাতিক সহবোগিতা ও বিশ্বশান্তি ভাপনে সংযুক্ত ভাবে কাল করিতে, আবার বিশ্বশান্তি নই হইতে পারে এরপ কোন কারণ দেখা দিলে, ভারতবর্ব সেই অবস্থা দ্বীকংশের জনা মার্কিন সরকাথের সহিত সহবোগিতা করিতে বাধা থাকিবেন। ইছা লেখা থাকিলেও নয় দিল্লীর ঘোষণা হইতে জানা বায় চুক্তির মধ্যে রাজনৈতিক থাধ্যবাধকভার কোন সর্প্ত নাই। হয়ত এই নতন সাহায়ও এই ভাবের রাজনৈতিক বাধ্যবাধকতা। বিবক্তিত কোন সর্প্তে গুলীত হইবে।

এই ন্তন মার্কিনী সাচাব্য সম্পর্কে একটা রফা না হইতেই, ভারতত্বিত সোভিষেট রাইবৃত মঃ এন, ভি. নোভিকোভ, বোঘাইয়ের এক সাংবাদিক বৈঠকে স্কুম্প্ট এক বোষণা করিয়াছেন বে, সোভিয়েট বাশিরা ভারতবর্ষকে বে-কোন যন্ত্রণাতি ও বান্ত্রিক সাজস্কলা সরবরাহ করিতে প্রস্তুত আছেল এবং এই সমন্ত বন্ধশিল্পের মূল্য ভারতবর্ষ ইচ্চা করিলে ভারতীয় মূল্যার (টাকায়) কিংবা অন্ত বে-কোন শ্বলঙ মূল্যার দিতে পাবেন। তিনি আরও বলিয়াছেন, ভারতবর্ষ ইচ্চা করিলে তাহাদের গেন্সের যে-কোন মাল কিনিতে পাবেন এবং তাহাদের বে সমন্ত প্রবার প্রয়োজন ভারাও তাহারা ভারতবর্ষ হইতে কিনিতে বাকী আছেন। তিনি প্রস্কৃতঃ একথাও ভারাইয়াছেন বে, বাশিয়াতে বেকারসমন্ত্রা নাই। লোভিয়েট সমাজনীতি এমন বে, উহার মধ্যে আরিক সন্তরের কোন স্থান নাই, তাহাদের যুক্তের বছলে শান্তি ও নির্কিশ্ব হাই প্রয়োজন।

বধন ভারত গ্রন্থেট ভারত হবে কসকারধানা ও প্রথ-শিল্পের প্রদার কবিতে পিলা নান। রকম বিস্নো সন্মুগীন ইইলাছেন, বধন উল্লেখ্য একমাত্র আমেরিকার মুখের দিকে চাহিয়া অসলায় ভাবে দিন গণন। করিতেছেন, তখন এই অবাচিত প্রস্থাব নিশ্চয়ই বিশেব গুফুরপূর্ন ভালতে সংক্ষেত্র নাই।

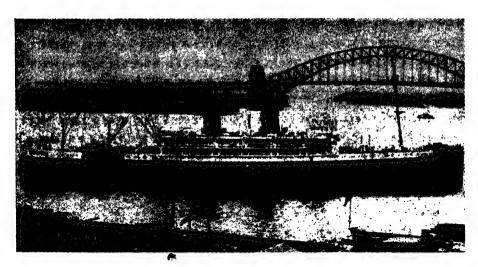
এক্ষণে দেখা বাইতেছে, এক দিকে ভাষতের অর্থ নৈতিক বনিয়াদ ব্যুদ্ধ করিয়া ভাষতের উন্নতির জন্য আমে রকার যুক্তবাই উটির। পড়িয়া লাগিয়াছেন, অন্য নিকে সোভিরেট বাংশিয়া আমানের নেশের দৈন্য কোথায় ভাষা অসুসভান ভাষা দ্বির করিয়াছেন এবং ভাষা ঘুচাইবার অন্য অভঃ-প্রণোদিত হইয়া ওভ প্রভাব আমানের সন্মুবে ধরিয়াছেন। চক্তি বলি হয়, জানি না হয়ত বড়জোর ইংবর মধ্যেও বিশের শাস্তিংকাকল্পে ভারতকে সোভিরেট রাশিয়ার সহযোগিতার অন্য প্রতিজ্ঞাবন্ধ হওয়। আবশুক হইতে পাবে।

আপাতত: এই সব সাহাব্যের পরও আও প্রয়োজনীর আর একটি বড় সাহাব্যের স্থান পড়িলা থাকে। সেটি আমাদের ক্ষরির উরতি বিষয়। নৃহন চীনের ভূমিব্যবস্থা ও কৃষ্ণির উরতি বে অনুক্রণীর একথা হয়ত অনেকে বলিবেন। চানের সহিত ভারতের প্রতিব সম্পর্কও বছ শতাব্যার। ভারতে অনাবাদী ক্ষমির আভাব নাই। কেইআনে ভারতের দরদে মহাপ্রাণ চীনের ক্ষমেও না এই সময় কাদিয়া উঠে। চীনের অর্থবল কিরণ জানি না, ভাহার জনবল চির্প্রাণ্ড। ভারতে সোনা ফলাইয়া অলেম আভাব মিটাইবার জনা ভারতের প্রাণ্ড বহুত হইয়া এই সাহাব্যের প্রতিভ্রমিতার মুগে বে নিজ লোকবল লইয়া ভারতভূমে না আগাইয়া আসিবেন ভাহা কে বলিতে পাবে।

ভারতের অন্নংশ্রের দুঃখ ঘুটবার পর ভাগর স স্কৃতির উন্নতি ও দেশবকার কথা অ'নে। এককালে বেমন ইংরেজ 'মসভা' 'বর্ষর' ভারতকে সভা শিষ্ট করিবার প্রয়াস পাইয়া-হিলেন, তেমনি আন্ধ গণভাত্মিক স্বাধীন ভারতের সাংস্কৃতিক উংকর্ষ সাধনে বাশিয়া হয়ত উঠিং। পড়িয়া লাগিয়া বাই-: বেন, আর দেশবকার্থ অন্ধ দিয়া ভারতকে রশসক্ষায় সাকাইবার কার্যে আমেরিকা আন্ধনিয়োগ করিবেন।

বদি সভাই আমেরিক', বাশিয়া ও চীনের ভারত-প্রীক্তি-বশত: ভারতের সমৃদ্ধি জনা সংসা একবাসে সাহাব্যের একটা প্রবদ প্রতিষ স্থতা উপস্থিত হয় ভাষা হইলে এড স্থাকি গোড়া ভারতের ভাগ্যে সহিবে? তথন ভারার চাপে ভারতের কি দশা হইতে পারে ভারাই আজিকার ভাবনা।





চিত্ৰল স্বাহাস

## পশ্চিম সমুদ্র-বক্ষে

### वित्यकानी नन्ती, अभ-अ

ভ>শে আগষ্ট ১৯৫১ সন, স্কালবেলার সোনালী স্ব্য রাডা আলো ছড়িরে দিলে আরব সাগরের বক্ষেত্রীড়াষরী নববধুর মত বক্তিম হরে উঠল তার মূব। আমাদের চিত্রল আহাল সাড়ে সাত শত বাত্রীসহ অক্ল সমূত্রে পাড়ি জমাল। পাড়ের দিকে একবার চোধ পড়ল— অনেকেই কমাল নাড়ছে আহান্তের বক্ষ থেকে, কেউ বা চোধ মুছ্ছে, কেউবা বেলনা চেপে রেধে মান হাসি হেসে প্রিরশ্নের কাছ থেকে বিলার নিচ্ছে। ভারতের ম টি ছেড়ে আমবা অকানা সমৃত্রের বুকে ভাসলাম।

আবব সাগর পাড়ি দিতে এবার লাগল পাঁচ দিন। প্রথম হ'একদিন বাজীরা স্বাই বেন আশ্চর্যুরকম শান্ত, কাকরই মনের অবহা বিশেব ভাল নয়। ছেড়ে এগেছে প্রিরজন, সামনে অনিশ্চিত ভবিশ্রৎ, বজনহীন প্র্রাস আর দ্র সমুজ্র-বাজা—এ সকল মিলে ভালের করে তুলেছিল বিষয়। নানা-দেশ থেকে এসেছে নানা ভাষাভাষীর দল, সম্পর্ক স্থাপিত হরেছে পঞাব ভকষাট মরাঠা জাবিড় উৎকল বন্ধ সভানদের। কেউ চলেছে প্রশাস্ত-মহাসাগরীয় মণিমাণিক্য আহরণ করতে, কেউ-বা চলেছে পশ্চিম হতে আলোক-র্দ্ধি নিরে এসে ছড়িবে দিতে ভারতের বুকে।

উপকৃষবর্তী আরব সাগরের বং ব্লান। সাগার বলতে বে ছবি ভেসে উঠে আমাদের চোখে ভার দর্শন পাই বেশ আনিকটা দুরে গেলে পর—বেখানে, কুলের চিক্ত নেই, সীমাহীন জলধি মিশে পেছে দুৱে দিক্চক্রবালে, গুরাম্মান মেঘের বেখা বেখানে এক হরে त्रिश्तरह श्रिश्तर चानिकत्त । मार्च मार्च के कि स्मर्व जामालव लगरह छेष्ट्रक मारहत দল। বেটুকু সামার শক্তি আছে ওদের পাধার তাই দিয়ে হাতথানেক লাফিয়ে বা উডে ওরা চেষ্টা করছে জাহাজের সভে প্রতিবোরিতা করতে। বে সামার তেওঁ উঠতে ভাতেই বাত্রীদের মধ্যে কেউ কেউ শব্যা নিয়েছে, আবার বধন সমূত্র প্রশান্ত ভাব ধারণ করলে ভধন ধীরে স্থন্থে चात्रकरे अत्र छत्कद अभद वमन । विमादक छाकारे अर नीरनद रमना, चनक्रम दः अहे नीन नानरदब-र नीन भारे वाःनाव चाकात्म, त्व नीन त्वि भूवीव नमूत्व, त्रहे नीत्वव বুক চিবে চলেছি আমরা। ক্রমশঃ সমূত্রের রূপে শনে হচ্ছে বাংলার কোন ভাষল প্রান্তরে নীল আকাশের নীচে বলে আছি। কিছু না আকাশ ত নীল নয়, এমন ধুগর আকাশ একমাত্র তথনই দেখা বায়, বধন বর্ষণমুধর প্রকৃতি ক্ষণিক বিপ্রামলাভের আশায় শুধু মাবে মাবে প্রচণ্ড রোবে পর্জন करत श्रार्थ। चात्रत्वत छेनकुनवर्खी व चानान त्वन चिक् मानी स्मरत, श्रिक्षात्मव बनागरव हों हे कृतिस वरन बारक भा कृतित्व, এই दुवि शांत व्यव बदव बन्ध ।

আরব সাগরে ত্র্যান্ত দেখে মুদ্ধ হরে বেতে হয়। একদিন দেখলাম ঠিক বেন একথানি পূর্ণিমার চান, আকাশে মেবের বং নেই, ত্র্যের শেষ বিদারকালীন বক্তাভা নেই, ক্ষেল সোনালী রভের একটি সোলাকার বস্তুপিও ধীরে নেমে বাচ্ছে সমৃত্রের অভলম্পর্ল গভীরতার। আর একদিন দেখলাম অন্তর্ন। থানিকটা রক্তিম আভা ও মেঘের সংমিশ্রণে পলিড লাভার মত স্ব্য ডুবে বাচ্ছে সমৃত্রের কোলে।



ভাছাত হইতে এতেন বলর

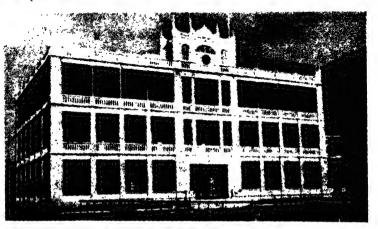
আগামী কাল অর্থাৎ •ই সেপ্টেশ্বর পৌছৰ আমরা এডেন বন্দৰে। বাত্রীরা এবার বেশ প্রসন্ন চঞ্চল। বার বার ভিজ্ঞাসা করছে, "কাল কথন পৌছব ?" এই কয়টি কথার মধ্যে নিহিত রয়েছে ডাঙার জীব বাত্রীরা আবার কবে মাটির মুধ দেধবে। তারই জন্ম একটা আকৃতি—প্রাণ

ভাদের হাঁপিরে উঠেছে—প্রথম দলায় কি এভ দীর্ল পাড়ি পোষায় ? এইকছেই কি পান-কক্ষে বাজীর এভ ভিড় ? ঐ বে নিজ্ঞা ছেলেটি এভ বেশী পরিমাণে পান করেছিল কি লাভ হ'ল ভার ? টাল সামলাভে না পেরে বেচারা অভিম শব্যা নিলে সাসরভলে। বিশদজ্ঞাপক ভীত্র বাশী বাজিরে বাজীদের ঘুম ভাঙিরে সকলকে জানিরে বেওয়া হ'ল কি ঘটেছে। খানিকক্ষণ খোঁলাখুঁ জিও চল্ল কিছু এই রাজে সাগরের কোন্ অভলে বে ছেলেটি সলিলসমাধি লাভ করেছে ভার কোনও পাছা পাওয়া গেল না।

শ্বশেবে এডেন বন্দরে এসে পৌছলাম। বন্দরটি কিছ পূর থেকেই বেশ দেখার, বেন ছোট একটি পাছাড়ী প্রাম। শাহাডের সুক চিয়ে বে বাড়ীগুলো উঠেছে সেগুলি রেন পটে আঁকা ছবির ষত। প্রায় সব বাজীই নেমে সেল ছোট ছোট থেয়া নৌকায়। সকলেই চাইছে সন্তায় কিছু সওলা করতে, কারণ এডেনে বাণিজ্য-শুক নেই বলে এখানকার জিনিষপত্র বেশ সন্তা। এখানে ভারতীয় ও বিলাতী উভয় রকম মূলার ব্যবহারই চলে। বারা আহাজ থেকে নামে নি ভালের কাছে পণ্যস্তব্য বিক্রগ্রার্থ অনেকপ্রসি ভাসমান বিপণি এসে জাহাজের চার পাশে ভিড় করে গাড়াল। এলের বা আর ভার বেশীর ভাগই আসে বাত্তী-দের কাছ থেকে।

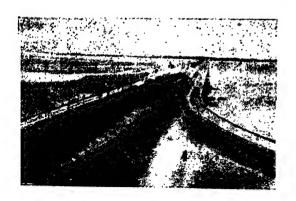
বাজীরা বাতে প্রবাস-ছঃধ ভূলতে পারে ভার জন্য হরেক-রকম আনন্দের ব্যবস্থা আছে। নানাবকম ধেলা, গীতকজ, ধ্মণান-গৃহ, ভার উপর আছে পানকজ। জীড়াসমূহে প্রায় সকলেই বোগ দেয়। সব জিনিইই সাধারণ বাজারের ভূলনার ঢের সন্তা, ভাই কাক্রই বিশেষ অস্থবিধা হয় না। সপ্তাহে ছু-ভিন বার সিনেমা দেখাবার ব্যবস্থাও আছে।

জাহাজের ভারতীর যাত্রীবা একদিন সর্বজ্ঞাতির লোকেদের সহবোগিতার একটা গানের মজলিস বসাল, পর পর তিন দিন হ'ল এই অফ্টান। কারণ ভেকের উপর বডগুলি চেয়ার পাতা বার তাতে মাত্র এক ভৃতীরাংশ বাত্রীর বসবার ব্যবস্থা হয়। অফ্টানটি কিছ মোটাম্টি মল্ল হয় নি। বাঙালীরা আবার আলাদা ভাবে আর একটা জলসার ব্যবস্থা করলেন। মহাসমারোহে "শেষ বর্বণ আর লাবদোৎসব" উদ্যাপিত হ'ল। নিতক্ক রাত্রি—বাইরে কর



क्लाके खारीन, बरहन

ব্য বৃষ্টির শব্দ, অভলাভিকের বৃক্তের উপর ভাসমান 'চিত্রলে'র বৃক্তে স্থদ্ধ প্রবাদ-বাজী বন্ধ-সভানরা ক্রিওক্স নাটকের দুরিপ্রান্থ ও শ্রতি-পোচর স্থাধান ক্রছেন, অগুর্কা প্রকাদ, মন্ত্রপ্প প্রোভার দল নির্জাক, অবান্ত:গীরা ইংরেজী সারাংশ ও ভাবার্থের এবং অপরুণ স্থরের সমর্বর মুধ্য। সমাপ্তির সংক্ষমুগর ভঞ্জনে শোনা গেল একটা কথা 'অপুর্জা'।



क्ष. बन्दारमञ्जू भार्यत राजा

এবার আমরা লোহিত সাগরে। সোহিত সাগর বিশ্ব মোটেই লোহিত নয়। বং ভাব মোটামৃটি কৃষ্ণ ভ, বি 🖷 खांत छेकडा यस दानी दा बादीया तकरें है आह एक व म ক্ষিবে বেভে চাই না। কেবিনের ভিততেও প্রচুঃ হাভয়ার বন্দোবত আছে, কিছু ভাতেও গ্ৰম বিছুমাত্ৰ কমে না। তিন দিন এ অবহায় ভাপপ্রধান সমুক্তঃ উপর দিয়ে আসার পর আমর। পৌছলাম স্বয়েছ খালের মুখে। অপুর্য় এর (बाडा। इ'निक निर्व भारा पात भारा का आजाडेहे भाराष्ट्रय क्लान निष्य **Б:न** जिल्लाहरू कुन्य क्लांके ज्ञान श्यक शामत मिरक मूथ करत शिक्षिय आहि "हेखियां মেমোবিয়াল"। ভারই পাশে বোধ হয় "ত্রিটিশ দুভাবাদ" আর ভার কাছে কাছে ন'না দেশের পতাকাচিক্তি বিভিন্ন काम्लानित खबन। कारकत शास शिर्व हरन शिरहरू मश्दव क्रथान वाषा, वक्वक शीराव दाषाव 'छेनव चायुनिक छम (माठेव-शाही ममुद्द मगादवन । राखात हु' পাশে বাউ গাছের সারি। ভারি স্থন্য আরু পরিছার **পरिका महर्छि। वाष्ट्रीय हामश्रामा काबाल काबाल वा** दल् म, त्वन मत्न इव न (क वतन । क्रिक्त (थ:क नान दल्य न मा कृषितकःना छैकि स्यस्य चामास्यत स्वराह । छात भन्नहे भः यश এসে পছলাম এবটা লে:क--- नाम "विটার লেক"। श्वास्त्रक कार भारतक व्यवस्थान का कार का कार का विकास का त्वानक्रण कवि एका निरंदध खदः चाहेन : मखनीय মপ্লাধ ৷ বারা জয়জ বন্দব থেকে পিয়ামিত দেবতে तिरविक्त छावा अवगायरा मान बिरक भारत वि। भिरा-बिर्णे नान बिर्दे ए जनाम । २७ में विकित नह ज्वर यहेना किए जार्ड बडरमाव मान, बरवद विवास कीवाम इ

নখৰতা বেন চোখের সামনে ভেসে উঠে। তীবনকে বেঁখে বাধবার জনা আহোজনের সীমা নেই, কিছু সভ্যিই কি সে ঙেটা সফল হয়েছে ?

ই সেপ্টেখন, বাত্রে পোর্ট সৈরদ বন্দবে পৌছে দেখি
চাবদিকে বিপানির সারি, আর বনিকস্থলত অপ্রানের
আওয়াজে সে অঞ্চাটি মুখরিত। কর্তৃপক বাত্রীদের 'ভিলা'
দেওয়ার পর কেন জানি না সকলেই একটু শভাকুল চিডে
পাড়ে নামল। বিশেষ দূরে বেতে কাকরই আগ্রহ দেখা
গেল না। সাধারণ লোকের ব্যবহার খুব হন্ততাপুর্ণ নয়,
আবার বৈরিভাভোতকও নয়। কিছ কি একটা অহৈতৃকী
ভীতি বেন বাত্রী আর পোর্ট সৈয়দবাসীদের মাঝে বাবধান
স্পত্নী করে বেথেছে। বেনী দঃক্রাক্রি আর তর্ক বিতর্ক
কেউই করতে চাইল না। সহর্তী। কিছ বেশ ক্ষর। কেকোন বড় সহরের মত চভড়া বাত্তা, তু'পালে গাছের সারি
আর বাত্তার তু'ধারে দোকান, রেত্যোর্গী আর বেশ বড় বড



प्रदिशी रचन

বাড়ী। অবশ্ব রাত বলে সবই আলোর কামল করছিল।
এখানকার বিশেষ চিত্তাকর্ষক জিনিব বিছু দেখলাম না,
চামড়ার বাজ মন্দ নয়। আনেবেই আগ্রেহের সংক ছবি
কিনল। রাত বাংটার আবার ভাসলাম ভূমধ্য সালারের
বুকে।

ৰাজীবা একটু গঙীব হবে উঠেছে। মাটিব দৰ্শন আৰ বেশ বিছু দিন পাওয়া বাবে না। এবাৰ একেবাবে টিগ্ৰাঝী বন্দৰ।

এবার জলের বং নীলাভ সবৃত্য। প্রচণ্ড চেট, জনেকেই
শবা নিলে। কেবিনে কেবিনে ইয়ার্ড ও সুরার্ডেস্ এসে
মাঝে ম ঝে থোঁজ নিয়ে বায় কাব কডট। ঠোঙাং দর হার।
বাবা স্থান্থ ডালের কাছে বাাপাংটা বেশ হান্তক্ষ্য, বারা
আক্ষ্ম ডারা ভাবছে এখনই বলি এট, বিক্তে উপসাপ্রে
না জানি কি হবে দু এলিকে ভাহাত্তে জালানির আভাব
লেথা দিলে। কর্ত্বাক্ষ্য হির ক্রলেন বে, জালানি সংগ্রহের
জন্য আমানের ভাহাত্তকে বেডে হবে জিলান্ট্যর প্রপানী

অভিক্রম করে আফ্রিকার উত্তৰতম প্রাত্তে অবস্থিত বন্দর ছয়েটার। এ থবরে অনেকের মূখে আবার হাদি দেখা দিল।

ৰতই আমবা পশ্চিমাতিষ্ধে একতে লাগলাম ততই আমাদের বড়িব কাটা পিছিয়ে দেওৱা হতে লাগল। কোন দিন বা আধ ঘণ্টা। ভূমধ্য সাগ্রে ত্র্য অত গেল বেলা ৭ট। ৩০ মিনিটে। তেওের উপরে ব ত্রীর তিড়—বাত্তে স্র্ব্যান্ত দেখার জন্য আনেকেই ব্যাকুল।



[प्राक्ती नगरवत्र अपने वृत्रा

১৩ই সেপ্টেবর রাত্তে একটা বুলেটন বের করা হ'ল। ভাতে ১৫ই স্থয়েটার নামবার জন্য সকলকে জানিরে দেওরা হ'ল, জারও জানানো হ'ল স্থয়েটাবালীরা জ'মা-কাপড়েব সংক্ষিপ্ত হাকে পছন্দ করে না, জত এব কেউ বেন সংক্ষিপ্ত পোলাকে জ্ববা স্থানের পোলাকে ভীবে না নামেন।

১ ই সেপ্টেবন, 'ফ্যান্সি ড্রেন নাইট'—খাবান টেবিলে কর্তৃপক্ষ একট। করে কাগজের টুলি প্রভ্যেক্তের পরিবে দিলেন, খাবার খনটি নানা বং-বেরঙের কাগজ আর বেলুন দিবে নাজান হ'ল। প্রতিটি বাজীর মাধার একটা করে টুলি—খাবার টেবিলের দৃশুটি দেখবার মত। সন্থা ৭ট। বাজতেই আইন্ত হ'ল ছোট ছেলেমেরেদের অপরুল পোলাকের প্রদর্শন। একটি মেরে—বছর আটের তার বর্ষন হবে, লহা পাজামা, পুরা আছিন জামা, কাঁধের উপর দিবে জ্ঞান উচ্না আর মাধার পালক গোলা পুরো টুলী, পিঠে লেখা "Ready for ceuto" পেলে প্রথম প্রন্থার, আর বিতীর প্রভার পেলে "Scarecrow" একটি ছেলে—ছেড়া জামা গামে দিবে মুখে বং মেখে আর একটি ছোট পাইপ মুখে নিবে ডাকে সভ্যিকারের খোড়ো মাছ্বের মুছই দেখা-ছিল। অবন্ধ বাজারা, প্রভ্যেকেই কিছু-না-বিছু পুরন্ধার

পেলে এবার বড়দের প্রতিধাগিতার পালা, কার মাধার কত বক্ষ উট্ট করনা থেলতে পারে ভার নির্দান বেথতে পেলাম। প্রথম পুরস্কার বিনি পেলেন ভার সর্বাচ্ছে জড়ানো ইছিল, পিয়ানোর অবলিপি।



बाहाब हरे। छ यू.वी रचव

১০ই সেপ্টেম্বর আমরা পৌঃলাম স্থারট। হক্ষার।
১৯০৯ দালের পর ভাইতীর মাজীবাহী আব কোন আহাক্ষ
এ বন্ধরে নােডর করে নি। দ্যু থেকে লাল পাহাড় দেশে
মনে হয় এ বুবি স্থাান্ডের বং, আসলে বিশ্ব তা নয়।
ব্যানাইট পাহাড় বলে ভার বং লাল্চে বাদামী। পাহাড়ের
কোলে সাগ্য— আছে ভার বারিখালি, একটি ছটি মালবাহী
আহাক, ইতভতঃ ভাগমান ছোট ছোট খেয়া নৌকা, নীল
আকাশের নীতে পাহাড়ের বুক্তেবা গ্রাম—স্থাাতের হর্পসমাবাহ, সর মিলিয়ে খেন দে এক বিচিত্র রঙের মেলা।
বে দিকে ভাকাই দৃষ্টি যেন ফিরতে চাম্বনা।

ছোট এই ংলংটি ংগুনানে স্পেনীয় মবজোর
লাসনাধীন। এব গাড়াঘাট দবই পরিজ্ঞাব পরিজ্ঞান
এখানকার অধিবাদীরা বেল আগ্রহ ও কৌতুগলের সজে
ভারতবাদীদের ভন্য প্রতীকা করছিল ভেটার উপর
লাড়িয়ে। হ'জন পদস্থ অফিদার উঠে এলেন উপরে বাজীদের টাকা পর্যা লেন দেনের ভন্য। বিলেডী বা ভারতীয়
মূলা এখানে অচল। ১১০ পেনেটা এক পাউপ্তের সমান।
প্রত্যেকই পাউপ্ত ভাত্তির দেওয়া হ'ল, আর একটা
নি.জিট সম্বের মধ্যে এনে ব'ড্ডি বা অবলিট মূলা ফি.িয়ে
দিয়ে পাউপ্ত নেবার কথা ঐ স্পানীয় অফিদাংছয় বলে
লিলেন। ভেটাঃ বাইবে গাড়িছেছিল মোটর বাদ আর
টাজিন। বাজীঃ বাব বেখানে খুলি বেড়াভে বেক্লা।
অনেকেই লক্ষ্য প্রাক্ষাবদের আবাদ গ্রহণ, স্পেনীয় পণ্য
ক্ষর্য সংগ্রহ আর ভাচের আচার ব্যবহার পর্যবেক্ষণ।
এখানকার চাম্ভার কাল বেশ ভাল। অনেকেই কিন্ল

কাঠের করতালের যত এক রক্ষ বন্ধ বা' নাকি ওরা
ব্যবহার ক'রে গান বা নাচের সমর হাতের তালুর সাহাব্যে
তাল জ্ঞাপন করে—অনেকটা তৃড়ি দেওরার মত শক হর
তাতে। বে সকল অ্রেটাবাসী দাঁড়িরেছিল পোডার্ডারে
তারা মহা কোতুললের সকে বাত্রীদের লক্ষ্য করছিল আর
হেসে গড়িরে পড়ছিল। আসল কারণ ওরা কিছুই ব্রুডে
পারছে না—শাত্রীদের ভাষা আনতে চার, বাত্রীরা একট্
একট্ করে আকার-ইক্ষিতে করেকটা কথা ওদের সমধ্যে
দিলে আর উদ্ধারও করলে ওদের হু' একটা কথা। হাসি
ওদের ক্তাব। বারা সহরে গিরেছিল—ভারা ইতিমধ্যে
কিরে এল; ভারা বে বর্ণনা দিলে ভার সার মর্শ্ব হক্ষে এই
বে, এই ছোট সহরটির অধিবাসীদের ভক্রভা, বন্ধুত্ব আর
বি—সৌঠবের ভলনা হর না।

ৰাঙালী মেরেদের শাড়ীর ট্রিনিকে এরা এমন অভুত দৃষ্টিতে তাকিরে আছে যে মনে হয়—ওরা যেন বলতে চার এটা আবার কোন্ জাতীয় পোশাক। বেখানে দেখা গেছে সক্ষান্তর মত ভত্তবর্ণা, আপাদমন্তক বজার্তা সন্ত্রান্ত মহিলারা এমনি পর্কানশীল বে, ওধু কথা বলার সময় মুখের আবরণটি ইবং সহিয়ে থাকে, সেখানেই কিছু দোকান বাজারে মেরেদের দেখে মনে হ'ল ছীজাতির এখানে প্রচ্ব স্থানীনতা। এত ভিড়ের মাঝেও কুৎসিত চেছারা চোথে পড়ল না। পাধর কেটে ভৈরি, পরিজ্ঞা পিচ্চালা রাজাঘাট দেখে নরন পরিভাগ্ত হয়। রাজার দক্ষিণ-অবলম্বী রীতি মনে করিবে দেয় আমরা ব্রিটিশ রাজ্জের মাইরে এসেছি। প্রভারটী বাজী উপরে না উঠা পর্যন্ত দাড়িয়ে রইল আমাদের নবপরিচিত বন্ধুরা, শেবে স্মিতহাতে কমাল নেতে বিদার নিলে।

এবার সামরা সভলান্তিকের বুকের উপর। সীমাহীন সাকাল সার সম্ভান কলধি মনে এনে দের সপুর্ব প্রশাস্তি। ঘনকৃষ্ণ বারিরালি কছ আক্রোলে গর্জন করে উঠে—মাঝে মাঝে সফেন তরক্ষালা কাহান্তের গারে এসে প্রতিহত হয়। এই ত সভলান্তিকের প্রকৃত রূপ। তরক্ষীন সমুদ্র বেন নিপ্রাণ। এবার স্মামরা চলেছি পর্ত্পালের উপকৃল দিয়ে। স্বর্শেরে স্মামরা বিস্কে উপসাপরে এসে পড়লাম। কিছ বিস্কে:ছিল স্মানাতিত রূপে লাস্ত। চিকিশ স্থার পর ধীরে ধীরে সমুদ্রের রং বদলে গেল। স্মাগামী কাল স্মামরা বৃক্তন রাজ্যের-তীরভূমির দর্শনলাভ করব। বাজীরা এখন থেকেই ভার ভোড়স্কোড় করছে। রাজি প্রভাত হ'ল, ২১শে সেপ্টেম্ব স্থাক্ত এসে পৌছল টিলবারী বন্ধরে ভার প্রব্যা স্থান।

# **जुः** थवानी

## এসস্তোবকুমার অধিকারী

বিৰ বাহ, বিৰ বাবে লে ভ' জাৰি; বহুবো না ভবু বৃছ্যু নয়,
বতে বতে জীবনের হঙ বিঃশেব করি; চিড্ডব হতাশার বেব জড়ো হয় আর বিগ্রভারা পূব্যভাতে
বজী-জীবন কৈনে কেনে বহুয়ের বহা আভাজাতে।
বহুবো না ভবু। ভোনার চোবে বে কেবা বাজি আহে জবিবান,
বেবি বি বে আজও আন্তরভিত্র শেবপ্রভারণা সর্ক্রনান;
পলে পলে বত সঞ্জলোগে বিনাভ বেবে জবে বাবার,
বহুবের কথা পাবরের বুকে জলে নাব লেবে বিজ্ঞার।

বেঁচে বাকা এই , বিজ্ঞপ নহ, বিশীপ নতে পাঙ্ লেখ, বাঁচি আকাশের হারাপথ খনে প্রভ্যাশাক্ত নির্ণিবেধ, ভরা বিকেলের রক্ত-আলোর বাঁকে জীবনের বর্গুগুলি, জলে নার লিখি, বাল্সজার শেষ কামনার নিনার ভূলি। দিন বার, ভার হারালোকে দেখি অসংশবিক আত্মনাশে, বেখি গোগুলির হলনার বিবা, ভোষার রক্তা নিরুক্তালে ।

## ফরধার

### **क्रिशाशामहत्य प्राम**

चावि बाद्य करे त्रविष्ठ, नकात्न क्षेत्रेक त्रविष्ठ, रेहा चानाव प्रतापदाव चन्नान। त्नविन प्रत नानिर्द्ध नारम আলিল শিলীয়ার প্রতীক্ত কঠের ব্যব্ধে আওয়ার। ইয়া बाद विकासारतत नाभाव करेरमध अपने विवक्ति व सामिन ৰা, ভাছা দছে। শিলীয়াই এ বাটৰ প্ৰভাৱশালিকী বছারম্বরী কর্মী। কিছ লেভত কোন অভবিধা ভিল মা। পরিবারের ৰৰো ৰাগ করিতে ভইলে কাচারও-মা-কাচারও কর্মত বানিরা চলিতেই হব, আপতি করিলে পুখলা বাকে না। পুভরাং সে হিক দিয়া আমাদের কোন অভিযোগ ছিল না, ভিত্ত গোলবোগ पाविद्यास अ गांकित स्टालस्वरतस्य चानावनीयका नरेवा । इहै (ब्राम्प्यादावा नकान क्षेत्रकर क्रम वाविका हा, विकृष्टे, क्रिम बर्फ निविद भागीर थ बाहाश्रमि श्री-ब्राटन निनिद्य ... बाह्या ভালাভেও না হয় পিলীয়ার ভেত্তৰ আপতি নাই। ভেতে-बाक्टबर चक विकास करिएक श्रीत करन ना। विक कार्रे विना और प्रवष्ट कालायका अक्रमा करियार अकरी বিদিট ছাৰ বাহিবে ৰা ? ভাচাৱা কি ৰা ভাচাৱ বিভলত ক্ষেত্ৰ সন্থৰ হইতে আৰম্ভ কবিবা সাবা বাৰালা ভৱাইৰা ত্রিভলের পূজার বরের সিঁড়ি পর্ব্যন্ত ছাম ভুড়িয়া বাবা বুলি वरित ७ क्यानत्वर बरबळ्यात देवचय: ब्यादेश तावित १ বাৰ্গ ভটবার কথা নম্ন প্রকালের ভেলেবেবেরের চর্বাছ प्रकार क वारशायित चीत लिखाए कतिएक कतिएक प्रश्न कारनाहित्क त्वायरकात क्या किया गत्यत केनत्वत (क्या পাভা ও ভাগতের টুকুরা, কিলের ম্যাকড়া ও বছকুটা একট बक्षे कतिया वं हैवा कृतिया शविशार्थंत वर्षयाव निर्कर ভবিতে করিতে আমাদের সদ্যন্তাভা সেকালের পিসীয়া नुबबाब चान कविएक छनिएनम ।

শেষিৰ শনিবাৰ। কৰ্ম্মত হাতে নকাল সকাল বাজি ভিত্তিতেই, ভাষাভাতি আলিবাই শুনিলাৰ শিলীবাৰ অভ্যত কঠেছ স্পতিভিত বজাৱ। ব্যাপার বে অক্তব্য কিছু নতে, ভাষা: গছকেই অভ্যাম করা বাব। বলিলাম, কি হ'ল শিলীবা ? শিলীবা তথন বাগে গর্গর্ করিতেছেন , আয়ার বিজের উভর বিজের বা। কিছু নম্ভ ন্যাপারট এক নিবিবেই স্থাট হাইলা পেল। বেক্ষ্যালায় ভিন্ন ব্যৱের বেলে বিন্তু, শিলীবার অঞ্চাট ভান হাতের হুঠার ব্যৱহা তথন অপরণ তলীতে বহু বহু বাজ করিতেছে। ভাষার শুল বতে, উক্লাচকে, বীক্কাচুলে—কোবাও ভারের লেখনার মাই।

ব্যাশাকট এই। বশাকে ও ভয়াচারে শিলীয়া ক্রিচায়ের শাক্ষট উনান ক্ষতে নামাইয়া বয় ক্ষতে কাভ গুইনার ক্ষ বাহিৰে আনিভেছিলেন, এবন সৰৱ পূৰ্বোক্ত নিউ ৱ পালার পাছিল। গিলাছেন—অবাং কাজ্ঞানহীন অপোগওট উল্লাচ্চে হুইট বাছ বিলা কড়াইলা বহিলাছে। কাজীলা বলিলেন, "ও ড বিগৰৰ নিও, বিলি, ওল পল্লং ত কাপছেল কোন বালাই নেই, ও ছুঁলে আল বোৰ কি ?" এই গা-অলাবে বেছিলাৰী কথাল পিনীলা আলও অবিক অলিলা উটলাছেন। কথাটা ওল ছিলাৰ না কৰিলা বলা টক হইলাছে কি ? নিও-বিগৰৰ ভবুই বহি তাঁহাল আঁচল চাগিলা বলিত, আলা হইলো কি তিনি অভ লাগ কলিতেন, না, লাগে তাঁহাল নৰ্বাান আলে কৰিত ? ভাহা মহে। সে কক্ষিৰ হতে অঞ্চল বহিলা আছে এবং সেই সদে বাল হতে বৃচ্ন বৃটিতে ভাহাল ক্ল একণাট ক্লাও বলিলা অহিলাছে বে! সে বডটল নোহ সে ভাগা কৰিতে পালে নাই!

আগে আগে দেখিবাহি শিলীবা বেলেকের তালবালিতেব বেশ। ইলানীং কেবল তাঁহার আচারপরাচণতার উভাগে তাঁহার অংবের শিগুরীতির রল্টুক্ বেদ নিঃশেবে বিশুক্ হুইরা উটিতের।

উচ্চকঠে অভ্যন্ত নৰালোচনার মুধ্য বুলিগুলি আওড়াইডে আওড়াইতে আনাবের শিলীনা পুনরার সান করিতে চলিলেন।

নিভ্যকার অভ্যানরত নেধিবও শিলীবা নত্যার কিছু পূর্বের সামাধি নাল করিবা ঠাকুতের 'বৈকালিকী' নবাপন করিছে বন্দিরে চুকিরাহিলেন। কিছ উাহার যথ অনুষ্টক্রের টুনিকে বিখান করিবা দুর্বা। করণাহি ভূলিবা আনিতে বলাই 'কাল' হইবাছিল। নেই ক্থাই বলিতেছি।

টুলি আৰাবের পাড়ার এক নবঃপুলের বেরে—এ বাড়ির হেলেমেরেরের পেলার নাবী। নবের ববের নে পিলীবার হুই একট কাই-করবাল পাটবা বেন বর্তিরা বার। অবঞ্চ, প্লপ্রিলের করাপি চ্বিত হর না এইরপ সমাতম করবারেসই সে বাটতে পার। আরও সে চ্ব্রা ত্লিবার অহমতি পাইরা পরবাজাবে সূত্য করিতে করিতে বহিব্যাটতে বিয়াহিল ও প্রাক্তির চ্ছৃতিকে ব্রিরা ব্রিরা বাহিরা বাহিরা সভেজ চ্ব্রাবরের কর্তিকে ব্রিরা ব্রিরা বাহিরা বাহিরা সভেজ চ্ব্রাবরের কর্তিকে ব্রিরা ব্রেরা বাহিরা বিরাহিল। ক্রিরা রেকাবীর একাতে আলগোবে রাবিরা বিরাহিল। ক্রির চক্ত্রাবীর একাতে আলগোবে রাবিরা বিরাহিল। ক্রির চক্তরতি হত্তাবী বেবে ত হুই চোবে বেবিরা ক্রোম ভাল করিবে না। চ্ব্রাবে তালই আবিরাহে বটে, কিত্র নেই সলে অভাইরা জীপ্তিলপ্ত বেজে বলে পড়া এক টুক্রা হুল হুতাও যে আবিরা বিরাহে। এবল ইরাহেই ক্রির ক্রোম অভার অভ্যান্তর বিরাহের প্রথম করিবে করিল।

ভাহাই ভাবিতে বিরা শিলীবার বার কাঁটা বিরা উটিরাহে—
"বা গো।" রাজ্যকতা ও নবঃপ্র-ক্তার হোঁওরা কাণভের
হুতা বে একই কার্ণান ভূলার ভৈরারি এবং ভ্রবার্ তর্
বাহ্যের অভরের নিঠাটুকুই বেবেন, বাহিরের নর—এবনিই
কিছু বলিতে বাইব, এবন সময় কেবি, শিলীবা বেন ডাঁহার
কুম্ বৃষ্টিতে কাহাকে শালন করিতে করিতে, শীতে কাঁশিতে
কাঁশিতে নহীপ্রে চলিতেন।

ছুৰ্জন শীভেন সভা। কৰন উতীৰ্ণ হইনা গিনাছে, সেকিকে কাহানত বেনাল নাই। পূৰ্ণোভনে একট উপাবেন আলোচনা চলিতেহিল। আচানহীনভান অভ শিনীনান নিকট সম্পান্তিভা এ বাছিন ছোট বন্ধ ওয়কে আনাবেন আধ্নিকা ছোট কাকিনা বলিতেহিলেন, "নন্ধ আন কি ৷ বালি নাওনা আন নাওনা ৷ বৰ্গ থেকে গোনান নথ নেনে আস্বে উক্তে ভূলে নেবান্ন জতে ৷ হাতে হাজা, গাবে হাজা— অফচি আন কি ! ভগবান্" আন বলা হইল না ৷ দেবিলান, বানপ্ৰে সভন্নভা শিনীনা গল্পক ক্ষিতে ক্ষিতে বাভি চ্কিতেহেন ৷

हेडाड किड्डिय शददद क्या। येड ड्यंन वार-वारे कविशास अटकवाटन मि: स्थेय करेश यात्र मारे। कीए जनमदन ৰেছিমীপুর অঞ্চল প্রবল বভা আদিয়া বেবিভে কেবিভে প্রাবের পর প্রার গ্রাস করিয়া কেলিল। ইতা ভাগনারা কেত কেত হয়ত প্রত্যক্ষ করিয়াহেন, আর বাঁহারা প্রত্যক্ষ করেন নাই. জীভাষা সংবাদপত্তে ভাভার বিবরণ পাঠ ভবিষাভেন। এভত-भगरक प्रमायक पाकिनांभव नाम नश्राक्षिक कविया विनिक कार्रात क्योंक्ट जाहांचा कविवाद क्य जश्वामभरवद करक चाय, वाक्तिका बाब बाब देव देव विनायका। नर्सकार्य, नकन नवदा जायने (कालद मन ननांद दादवनियन ७ पुणन बुलाहेबा, बंक्षमी बाकाहेबा मनदाब नदब, आदाब नदब मनदाब সলীত গাহিবা চলিবাছে—"ভিন্দা বাও গো, ভিন্দা বাও গো।" विकिक कार्दात प्रविश्वत वह (वार्ड-वह करतकड़े क्या वार्तिक ब्रेबार्ट अवर चात्रथ करवकडे ब्रेट्व, चाहात हैत्जान চলিভেছে। নানাহান হইতে কথাঁৱা আসিহা ভূটভেছেন। **जाबाद्यत मध्य वाष्ट्रिय इरेबामि पद्यय मद्या रक पत्र ७ मध्य** कामामक काकारकत वाकिता रक्षता वरेरव, दित वरेबारक। देवा क्यांश्रीवद्यानस्वत्र नविकास्वरे दरेशस्य । किन्न निनीवास्क না ভাষাইয়া বা তাঁতার অভয়তি বা লইয়া কোৰ কাৰ্যা করা क वाक्रित त्रीकित नरक करर काक्। मध्यक नरक । मध्यक ৰা, জ্যাঠাইৰা--কাহাকেও লইৱা কাক চলিবে না, শিসীবার व्याष्ट्रिका जामारवत कतिरकरे व्हेरव । "देवाबा ज्यानवान, इर्नजरबर रमवाब जांब मावाब महेबा गर्व वाविब इरेबारबन এবং জনসাধারণেয় সাহাব্যতিকা করিবা বেশে বেশে কিবিতেছেন"--ইভ্যাৰি বলিৱা আৰি পিলীবাৰ নিকট ইঁহাবের बहर बार्यक अपने गरिक्त श्वित्व विकाय । जामा वरेन.

निवव, बबहीन नवनावीय प्रयंगाय विन निजीवाय वनकरकव নুদ্ৰৰে ভুলিয়া ব্যৱতে সূত্ৰৰ হুইৱাছি। অভঃপৱ ভৱসভাৰ-नर्पर पाणित्वरण चीकार करिवार यह विश्वनिविध कररफ़्री गार्ड निनीयाद नविक निव प्राणिक वरेन अवर परक्षार नर्ड-थनि छाडाविश्वक भागारेश व्यक्ता हरेत । वर्षधनि बहेबन : (3) चाहार्वा अहनकारम केलिहे शास हहेरछ यह वा वाश्यवह কোন অংশ বেন আগৰে পভিত না চর। (২) বাবহুতে देश्याद चत्रभारतत म्मर्भ बहेरल. त्यहे वस द्वा क्रमकर मिक পরিবেরে সংস্থাই না হয় ৷ (৩) প্রভাবে বেন আর্ত্রবন্ত পরিবান করিয়া ভার্যাবিশেষ্ট সন্দর করা তর অথবা উক্ত কর্মসন্দাদন শেষে পরিভিত্ত বল্লষ্টকে বেল তীভিত্তত দিক্ত ভরিষা লওৱা हर। ठक्कर भवता मर्वात्मय मध्के हरेत्याह बरे (य. खबनात्म গতে প্ৰভাবৰ্ত্ৰকালে বেন কছাই পৰ্যাত্ত হন্ত ও ভাল পৰ্যাত্ত भारत क्षणांतम करा हर । स्मित्रिहारी अवर स्मार्शकीर এই সর্ব্রচন্ত্রইর আগত্তকগণের ক্রান্তিগোচ্ছীত্ত করা হইলে তাঁহারা হাভ সহরণ ভরিভে পারিলেন না। হাসি ধারিলে এক কৰ বলিলেন, "আপনাৱা এই সকল নিৱৰ বেনে চলেন ?" বৰাসন্তব গাঞীৰ্য্য ৰাৱণ কৱিয়া বলিলায়, "এই সকল আচাৱ পালন করা এ বাভিত্র মন্দাগত অভ্যাস। এখনি পালন না ভৱার কথা আমরা কেউই ভাবতে পারি মা। ভাই বলে আপনারা ভাববেদ না বেন, এওলো বেনে চলতে আনাদের काम कड़े हवा मां. जाबारवय बार्डिंग काम जबविया हव मा ।"

আচার-অভ্ঠানের খত ববো ববো মততের হইতে বাজিলেও দেবিলাম, শিনীবার সহিত রিলিকের ছেলেদের বেশ একটু ঘনিওঁতা কমিরা উটিভেছে। বভা কমিরা আলিল। ছেলেদের এবানকার কাকও প্রার কুরাইবা গেল। এ অকলের বাছারা তিকা দিবার, তাঁহারা সকলেই সাব্যরভা লাহার্য করিরাহেন। আমাদের বাছিটকে কেন্স করিরা চতুর্বিকে পাঁচ নাইলের বব্যে তাঁহাদের কার্য্য সারা হইরাছে। তাঁহারা এবন অভর গিরা কিকা করিছে চান। স্করাং এইবার তাঁহাদের বিঘার দিবার পালা। পরহুংকাভর এই পরিচয়হীন পবের ছেলেগুলির অভ হাল্যের একট নিতৃতককে বেকলা অভ্যুক্ত করিছে লাগিলার। তাঁহাদের বিঘারবেলার কেন্দি, শিনীবা অক্রানকাচকে একট ছেলের নাবার হাভ রাবিরা তাঁহার কলা।প্লার্মণ করিরা বলিকেছেন, ভোরাদের অবেক কট দিরছি বাবা, সে বব ভূলে বেও; বহি ক্রমণ এদিকে আস ভো শিনীবার সলে দেবা করে বেও আবার।

ক্রাপের। ব্যালেনিয়াটা এবার বেশ ভারেবীভাবেই চাপিরা বনিয়াহে বেবিভেত্তি। বাভি বাভি অসুব। ছুটৰ বাব। হঠাং এক সম্বন্ধে বাভি কিবিয়া বেখি,
শিলীনাৰ বৃত্তিৰকী অবাচাৰ আমানের হোট কাকিয়া শিলীমাৰ
ছবিত নাৰাইকেছেন। শুল গরকের পাভীর উপর ভিজা
চুলগুলি এলাইরা বিরাহেন—চুলের জলে শিঠের থানিকটা
ভিজিয়া গিরাহে—ভাষার এইরূপ সৃত্তি সচরাচর কেবি বা—
সচরাচর কেন, কোল দিন বেখিরাহি বলিয়া বনে পড়ে মা।
বথেই কৌভুকবোৰ করিলায়। কিন্তু ভাহার চেরে বেশি
বোৰ করিলার বিশ্বর। শিলীয়ার হবিষ্য নামাইকেছেম
আমানের হোট কাকিয়া—খাহার হাতের হোওরা জল পাম
করিতে ক্রাচ হর না, ভিনি ? এ কি বিশ্বর। অচিন্তুনীর
কোন বাগার প্রভাক করিভেছি বলিয়াই বনে হইল।

ছোট কাকিনা বীরে প্রস্থে বলিলেন, দিবিষণি আৰক্ষাল লকল সমবেই বাস্ত থাকেন, সময়মত আস্তে পারেন না, তাই আমিই হুটো কুটারে রাখি। না হলে বে তার খাওরাই হয় না, বাবা )

শিসীনা ব্যন্ত থাকেন ? কিসে তাঁহার এত ব্যন্তভা—
বার কচ তাঁহার আকর ব্যব্দ সংকারের অনুষ্ঠানগুলি
উপেক্ষিত হুইতেহে ? সমরে আসিতে পারেন না ? কেন ?
কোধার থাকেন তিনি ? তবে কি আক্রান তাঁহার 'বাজ্কি'
বাড়িরা গিরাহে ? ভচিবার্থভতা ভনিবাহি ক্রম্বর্জমান এক
প্রকার বামসিক ব্যাধি। তবে কি আক্রান তিনি নদীর
বাটেই সারাদিন কাটাইভেহেন ? এইরূপ বহু প্রশ্ন বৃত্ত্তি
মধ্যে বিহ্যতের যত আনার মাধার ধেলিরা পেল। নিমেহবার।
আনি সপ্রার্হীতে হোট কাকিবার রূপের ধিকে ভাকাইতেই

ভিনি আনার মনের ভাব বুবিরা বলিলেন, "বিধিয়ণি এবন কর্পাভার গেছেন, দেধান থেকে বাবেন বালীবভিতে। বরে বরে অপ্রব। কে কার বুবে কল কের, ভার ট্রিকানা নেই। ভাই ভিনি নিজের হাভে সেই লব অভাগার দেবার ভার বাবার ভূলে নিরেছেন।" আনাকে বলিভে বলিভে হোট কাকিনার চকু হুইটা সকল হুইরা উট্টভেছিল। ভিনি অভ দিকে মুব কিরাইলেন।

স্থান লইরা একট বাছিতে প্রবেশ করিলান। ইটাচাবাঁশের বেড়া-দেওরা খোড়ো চালা। লাওরার উঠিন বরের
মধ্যে উঁকি দিরা দেখিলার, শিনীনা সেই চির অপ্যক্তাভির
ভাটে একট বেরের নাধার হাভ বুলাইরা দিতেহেন। অপর
পার্শ্বে আর একট বিহানার আগাগোড়া লেপর্যুভ দিরা অভ্ট হরে গোঁডাইতেহে আর একজন। বেনন নিঃশব্দে আসিরাছিলান, ভেননই নিঃশব্দে শিনীনার অলক্ষ্যে কিরিরা
চলিলান।

ধুনর সভা। ছারার মন্ত নি:শব্দে বীরে বীরে বরে কিরিলেন ঐ আনার সন্তাসিনী পিসীরা। আদ আর কোন বাবা নাই। ছুটরা চলিলান তাঁহার ঘরে। তাঁহার পা ছুইটর উপর আনার নাবা রাবিরা বলিলান, পিসীরা না দেনে অনেক অপরাধ করেছি, আনাকে ভুবি করা কর। ভারণর করেক কোঁটা অবোধ অঞ্জ আপনিই বরিরা পড়িরা তাঁহার চরণ ছুইট সিঞ্জ করিল।

# কুলজী গ্রন্থে হিন্দু-মুসলমান

অধ্যাপক জীরমেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যার, এম-এ

ভারতের জাতীয় জীবনে হিন্দু-মুস্লমান সম্পর্ক একটি বিশেব স্থান অধিকার করিয়া আছে। গত অর্দ্ধ শতাব্দীর রাজনৈতিক ইতিহাসে হিন্দু-মুস্লমান সমস্তাই ছিল জাতীয় জীবনের সর্ব্বাপেকা গুরুত্বপূর্ণ সমস্তা। ভারতের ইতিহাস, বিশেবতঃ আধুনিক ভারতের রাজনৈতিক ও সমাজনৈতিক ইতিহাস সম্বন্ধে বাঁহারা কৌতুহলী, হিন্দু-মুস্লমান সম্পর্কের ইতিহাস ভাঁহাদের নিকট একটি চিত্তাকর্বক বিবন্ধ না হইরা পারে না। তঃখের বিবন্ধ, উচ্চাব্দের ঐতিহাসিক স্মালোচনাকারীলের মনোবোগ এদিকে উপযুক্ত পরিমাণে আরুই হইয়াছে বলিয়া মনে হয় না। অভতঃ বাঙালীর স্পাতীয় ইতিহাসে বিবয়টি উল্লেখবোগ্য স্থান পার নাই। অধিকত, দেশীর সাহিত্যে এ বিবয় সম্পর্কে রে অমূল্য উপান্ধ

দান পাওয়া বায়, ভারতের কোন প্রদেশেই ভাহা সম্যক্রপে ব্যবহার হইয়াছে কিনা সন্দেহ। বাংলা-সাহিত্যে বাহা পাওয়া বায় ভাহার পুরাপুরি সন্থাবহার এখনও করা হইয়াছে বলিয়া মনে হয় না। পক্ষান্তরে, বাংলা-সাহিত্যের ইভিহাস গ্রন্থে এবং অন্য কোন কোন হলে পুরাতন বাংলা-সাহিত্য হইতে ছ'চারটি লোক উদ্ধৃত করিয়া এমন একটি একদেশ-দশিভাপুর্ণ চিত্র দাঁড় করাইবার চেটা হইয়াছে, বাহা সাহিত্যে প্রভিক্তিত বুহত্তর চিত্রের ঠিক বিপরীত।

বাহা হউক, हिन्नू-মুস্ল্মান সম্পর্ক সহত্রে বাংলা-সাহিত্যের নানা বিভাগ হইতে প্রচুর উপাদান সংগ্রহ করিয়া কোন বিভূত আলোচনা লিপিবত্ব করা এই প্রবত্তের উদ্দেশ্ত নহে। বর্তমান প্রবত্তে-সাহিত্যের বিশাল প্রাসাদের এক

নিভত ও উপেকিত কোণ হইতে সামান্য কিছু মালম্পলা সংগ্রহ করিয়া হিন্দু-মুসলমান সম্পর্কের কুত্র একটি বিবরণ দিবার চেটা করা বাইভেছে। কুলজী প্রছে হিন্দু মুসলমান जन्मदर्वत व जायांना शतिहत हेएलए: विकिश व्यवहार পাওয়া বায় ভাচার কথাই আমি বলিভেচি। সেকালের चंदेक महाभविद्यात विक्ष क्लाबी अवस्त्री हिन्द्रमाद्याव উচ্চবর্ণের বংশপরিচয় পরিজ্ঞাপক চইলেও, ঐ শ্রেণীর কোন কোন প্রয়ে প্রসক্তমে হিন্দ-মুসলমান সম্পর্ক সম্বরীয় বে ছ'এ+টি ঘটনা অথবা লেখকপণের মন্তব্য দৃষ্ট হয়, ভাহা সম-সামরিক অবস্থার একটা আংশিক ধারণা ছিতে পারে। বলিয়া বাধা ভাল যে, এই প্রবদ্ধে উদ্ভত লেখাগুলিতে ডৎ-কালী ন মুসলমান ধর্মাবলম্বী তথী-মোগল শাসক-সম্প্রদায়ের সহিত শাসিত অৰ্থাৎ হিন্দু সম্প্রদায়ের সংস্তব এবং এই नचर्ड हिन्दु श्रकामाधावर्गव मत्नाकारवबरे পविहस भाउदा गारेएएह। कृतवी क्रिकादा ७९कानीन खांद्रशीय मूनन-মানদিগকে নিজেদের বিবরণ ও মজবোর বাহিরে রাখিয়া-(क्रेंच विकार प्राप्त कर । (जकारनव खिद्रधर्षावनकी मानव-সম্প্রদায়ের সচিত প্রজাসাধারণের বে সম্পর্ক ও ভাঁচানের প্রতি যে মনোভাবের সামান্ত পরিচর কুলভীগ্রছে পাওয়া ৰাৰ ভাহা পুৱাপুৱি সোঁহাৰ্দ্ধ ও প্ৰীভিব আপক হইলে সকলেরই আনন্দের কারণ হইত। কিছু অপ্রিয় হইলেও ইহা সত্য কথা বে, কুললী গ্রন্থে শাসক-শাসিতের প্রীভিমধ্র সম্পর্কের পরিচয় এই ক্ষুদ্র লেখকের সংগৃহীত উপকরণ-শুলির মধ্যে পাওয়া বায় নাই। বাঁহারা সেকালের শাসক-সম্প্ৰায়ায়ভক্ত লেখকগণের ইতিহাস গ্ৰন্থকৈ ভিত্তি কৰিয়া এই সম্বীৰ চিত্ৰ আঁকিয়াছেন তাঁহাদের সহিত কুলভী গ্ৰাৰের এ বিবয়ে মিল দেখা বায় না। অথচ, বাংলা ভাষায় লিখিত क्षेत्र अन्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वाद्यानीय मन्त्र कथाव অধিকতের নির্ভৱ বাগা প্রমাণ বলিয়া প্রচণ না করিয়াও উপায় नाहे। वाहा रुकेन, अधन क्षतस्त्र विवयवक नयरक আলোচনা ক্লক করা বাক।

তুর্নী-মোগল শাসনের বিক্লছে থেলোক্তি।

বিদেশী ও ভিন্নধর্মবেলয়ী তৃংস্ব-মোপলাদি জাতীয় আক্রমণকারীরা হিন্দুরাজন্মের বিলোপ ঘটাইলে, হিন্দু-সমাজপতিগণ বেষন মনোবেদনা অস্কৃত্তব করিয়াছিলেন, হিন্দুশাসনের অভাবে বে সামাজিক বিপর্যার ঘটিয়াছিল তালাও ভাছাদিগকে ভেমনি উল্লিপ্ত ওবিচলিত করিয়াছিল। "গোঞ্চিক্য" নামক বিখ্যাত প্রস্থেব নিম্নোন্ধত ছ্লেঞ্জি ইহার প্রমাণ :—

বিশ্ব বাৰ্থকাৰে পৰ্কাহণ হিল কালে । বিভাৱান্ধ্য প্ৰধান। विषय्या जनविक. অভাগাৰ আবিছ'ত, मचीनवरणी चचर्यात । विकास क्षेत्र (वर्ष গৰাচাহণুত বেশ. ঘৰ্ষে প্ৰতি একাত প্ৰহা। शांत्रविद्ध अप शर्व খ-ছভিত্ৰ লোভাগৰে. বৰ্ণবাদে বাচি বলে আহা ! সভাচাত বহিছ'ত, जर्द थन-वन्त्रक. নাৰেমান কুলীন প্ৰোনীর। त्याबिक मरमक विका. কুলীবেভে কুলজিয়া. বিভাপুৰ্য সকল গোলীর। वम चवाडे विकादी. नरका चारक च्यानार्वा रक्षक विद्यान श्रीवत । चनवर्ग चमवार् অৰকাম পুরুষার্থ, वर्षकर्ष निकास इर्जन ।

বিষ্ণেতার দাসত্বের প্রতি সমান্তপতিপ্রণের স্থণা।

ঘটক-কারিকার মতে, অহিন্দু শাসনের নিশ্পেরণে হিন্দু সমাজে বিপর্যন্ত অবস্থার স্বাষ্ট হইয়াছিল। ইহার উপর, হিন্দু সমাজের অনেক ব্যক্তি ভিয়ধর্মাবলমী শাসকবর্গের দাসত প্রহণ করিয়া অভাভিজ্যোহিতা এবং "দহ্যতা" (অভ্যাচার) ঘারা সেই অবস্থাকে আরও শোচনীয় করিয়া তুলিয়াছিল। কুলজী-রচয়িভারা বলেন য়ে, এই শ্রেণীয় হিন্দুরা "লবণের" (প্রভুগণের) প্রতি আফুপত্য দেখাইতে পিয়া "গো-রাক্ষণ" হতাায়ও পশ্চাৎপদ হইত না:—

ক্ষেত্ৰ বৰ্ষের, সুবিখন লবপের,
প্রধান আনাত্য কর্মকর।
প্রধান লালয় পেরে, বলার দে রার রেঁরে,
সেই ভ অনপের আকর।
ভাই বন্ধু রার রেঁরে, লহ্যকার্য্যে কেপ ছেরে,
অলপত্যে হলগত্যে বীর।
পাতপার নৈতগপে, বেন্দ্যানত রলবলানে
পোরাজন হত্যাতেও সুহির। ইত্যাদি।

তৃকী-মোগল শাসকদিগের দাসত গ্রহণ করিরা বে সকল হিন্দু নিজেদের সম্পদ বৃদ্ধি করিরাছিলেন, ভাঁহারা কূল-মর্ব্যাদা নির্পরকারী ঘটকমহাশরদিগের প্রাভা আকর্ষণ করিছে পারেন নাই। এই প্রেম্বীর হিন্দুরা কুলপন্ধী প্রত্থে তিরত্বত হইয়াছিলেন এবং ইংলদের ভিরথন্বাবলঘী প্রভূব প্রদন্ত উপাধিসমূহ মর্ব্যাদা অপেকা অপৌরবের চিল্ল বলিরাই তথন বিবেচিত হইত। কুললী-রচমিতাদিগের মধ্যে "প্রলোপকানন" সমধিক প্রসিদ্ধা। ভাঁহার খাবা র্যাচত বলিরাক ক্ষিত নিরোক্তত হজতলি এ বিবরে প্রশিধানবোগ্যঃ—

অভিপাণে বহাপাণে বত বিশ্বজ্বে।
অহতরে বাধার্তা এই ত প্রতের ।
এই আভা দের বারা ভারা বিধানরা।
ববন রাজের বত সংজ্ঞা বিভোগরা।
ভাবের রাজতে বানী বাঁ বত্রভার।
বরিত বিধান ভার রার নরকার।
চার্রী বুলী বলী হাজরা ভরকার।
সরাভার রার রেঁবে ভার জোরারভার।

প্ৰকাশন ছলো কর বাসন্তের কথা। বাব বেঁবে কৌজদার অহতার বুধা। সবাজের উচ্চতাবে না বসিতে পাও।

ৰাজ্যকাৰে লোভের বাধার্ভাতে বাও। ইত্যাধি।
তুকী-মোগল শাসনের প্রথম দিকে হিন্দু-সমাজপতিগণ
বিদেশী ও বিধন্মী শাসকগণের দাসত্বকারী ঐপর্যাশালী
হিন্দুদিগতেও বে শাসক-সম্প্রদারের সহিত সংপ্রবশ্ন্য বিশুভ কিছ দরিন্ত হিন্দু অপেকা অপবিত্র মনে করিতেন ভাহার
ভার একটি প্রমাণ "মেলমালা" নামক গ্রন্থে পাওয়া বার।
ত গ্রন্থের একটি প্লোক এইব্রপ:—

ৰহিতা ত্ৰগৰানতো দক্ষ বাটা গতেন্তক:।
তিতী শ্ৰী প্ৰমান্ত্ৰহো বাৰা: বুলাভড়া: ।

"সম্ব-নির্ণয়" রচয়িতা এই স্নোকের উপর নিয়োক্ত রক্ষর করিয়াছেন:—

"এই ভিন ব্যক্তিই ( অর্থাং প্লোকে উরিখিত জগদানক, ক্ষেত্র এবং পর্যানক ) আক্ষরের সময় রাম রেঁরে পদে রতিবিক্ত ছিলেন। মৃসলনানের দাসত্ব করিভেন বলিয়াই বিশেব নিন্দিত ছিলেন। কিছু অর্থনেে লোতীকুলীন মধ্যে কলা সভাবাৰ করিয়া সমাজে উপিত হব।···সামাজিকগণ নবনের বাস অপেকা বাবীন ব্যক্তিবর্গকে অভঃভছ ভান ক্রিভেন। সেইজন্য এই ভিন রাম রেঁরেকে অপবিত্র ও বিশেষরূপে কুল্যানক বলিয়া উল্লেখ করেন।"

এই প্রসংজ, রাজপুতানার ইভিহাসের কথা খভাবভাই মনে পড়ে। মেবাবের রাণা প্রতাশ সিংহ বে মনোভাবের নশবর্তী হইরা মোগল সমাটের প্রির ও প্রধান সেবক মান-সংহের সহিত একত্র ভোজনে আসীন হইতে পাবেন নাই, নাংলার সেকালের সমাজপভিষের মধ্যেও কভকটা সেই মনোভাবই বিভয়ান ছিল, বদিও ভাহার অভিব্যক্তি হইনা-ইল অপেকারত মৃত্ ভাবে।

শবন্ধ, একথাও এথানে শ্বরণ রাণা দরকার বে, ভূকী-মাগল শাসকদিপের সেবার রভ হিন্দুদিপের প্রতি সমাজের এই বিরণ ভাব ক্রমণ: শন্তর্হিত হইরাছিল এবং ভিরবর্ধা-লবী প্রাভূর প্রবন্ধ সেবক্ষম্মচক উপাধিভলি পরিণামে খুণার ভাব যুক্ত হইয়। অন্যান্য উপাধি ও পদবীর যভই কেবল বংশচিক রূপে গুটাত হইতে লাগিল।

বাহা হউক, একৰে "মেল বছন" এবং "লবণ লোব" "ববন লোব" প্ৰভৃতি ব্যাপাৰ হইতে হিন্দু-মুসলমান সম্পর্কের কি পরিচয় পাওয়া যায়, ভাহা লেখা যাক।

#### (यम वस्त ।

আধুনিক হিন্দু সমাজে কোন ব্যাপারেই "মেনের" প্রশ্ন উঠে না। কলাচিৎ উঠিলেও উচার প্রতি বিশেষ গুরুত্ব আবোপিড হয় না। কিছ সেকালের বিবাহ ব্যাপারে ''মেলের'' প্রশ্ন খব কঠোরভার সহিত বিবেচিত হইত। সে যগের সামাজিক আবশুকতা হইতেই মেল বছনের উৎপত্তি হুইয়াছিল। "মেলে"র ইভিহাস আলোচনা করিতে পেলে দেখা বায় বে, অ-হিন্দু শাসন কালে ভিরধর্মাবলমী শাসক-বর্গের সহিত অবাঞ্চিত সংসর্গের ফলে হিন্দু সমাজের কোন কোনসলে যে সকল "দোষ" ঘটিয়াছিল, সেগুলিকে ব্থাসভব সীমাবদ কৰিয়া সমাজে পৃথালা আনয়ন করাই ছিল "মেল বছনের" প্রকৃত উদ্দেশ্ত। আধুনিক যুগে কাহারও কাহারও দৃষ্টিতে "মেল" হয়ত একটা নিছক খামখেয়ালী ব্যাপার। किंच कुनकी धारमय विवयन स्मितिन बुक्षा वाहेत्व त्व, छथन-কার সমাজপতিপুণ তাঁহাদের জ্ঞানবৃদ্ধিমত একটা সহুদেও नहेशाहे ( वर्षा ९ शृद्धांक "त्वाव"श्वनि वाहारण नमारकद সর্বস্থেরে প্রসারিত না হইয়া সমীর্ণ ক্ষেত্রে সীমাবদ্ধ থাকে সেইজন্মই ) "মেল" সৃষ্টি কবিয়াছিলেন। "দোৰ" যুক্ত বংশগুলিকে এক প্রকার বছনে আবছ করার সঙ্গে সঙ্গে **च्यत्र "तिय"न्त्र घर्षित्र अतिक्य निर्द्धान्य मर्था नरब्र्ड** করার বাবভা হইয়াছিল। এই প্রসঙ্গে "মেলমালা" প্রভের निरम्भक व्यान सहेवा :---

বেল কি পথাৰ্থ হয় কয়ই প্ৰবণ।
বহাত্যানক বল বাবে আলখন।
বৈ কালে লক্ষণ নেন নীলাচলে চলে।
হিন্দুৰাক্য শেষ হৈল বৰনের বলে।।
লেকালে বেশেতে বড় হল অভ্যাচার।
ক্লেরে রাখিব কিলে, কাভি রাধা ভার।।
কাভিগত, বর্ষণত, কুলগত বাদ।
আর কি বলিব, বেলে এই অবলাব।।
বর্ষেতে ভাজিল্য হলে, কিছু বাহি রর।
অভপূর্কা করে কুল, আর বিপর্বার।।
পর্যার লখন প্রার ক্লে হাভি বিল।
নামানিব বিপর্বার করিতে লাগিল।।
বৌবে ঐঘর্ব্য বেধি গৌব বীকারে।
বিবার করিতে চলে রাম রেঁত্রে করে।।

এইরণ ভিনশত বংগর করে গতি।
ভারণর কেবীবর হর্মনী গততি।।
নেই সব বোষ লবে করে এক ঠাঞি।
রলে রল গুণ করে, ভার গুণ গাই।।

অনিলু শাসক-সম্প্রদায়ের সহিত অবাঞ্চিত সংসর্গের
কলে এবং ডাহাদের দাস্ত্ব-প্রহণকারী হিন্দুদের চরিত্রল্লংশের পরিণামস্বরূপ সামাজিক বিপর্যয় বোধ করিবার
কল্পন্ট বে মেল-বন্ধনের স্থাই হইয়াছিল, ভাহা শারাবলি
কারিকা প্রত্তেও স্পাই ভাষায় বিবত হইয়াছে:

(वन पद्दवन किना कर **ग**तिनाहै। अवव बरबाकि (काटब कार्रा-कार्ड ।। ষ্ঠিতা ভগৰামক গোভারি গছেল। ण्डिनारे नवबायम, क**डे** ट्यांबिरक्य ॥ বৰদের দাসভে বলার রার রেঁরে। করে জাভিবন্ধ দলারভি, বেশ চেবে।। चक्र मिक्ची कृष्टेय शाकीय मध्य । जबत रेजबर विम (करवे चजबर ।। ছিছে পুন ব্যবসায় ত্রাছাণ্য বিগভ। वरमञ्ज पाजरच वरमरे अविक ॥ কেছ অপ্ৰাৰ্য, অকৰ্য, মীচ পৱিবাদে। পতিত, ভাজা থাকে স্পর্যায় প্রমানে ।। এইবৰে লোভী বিক এই হয় কাকে। ক্ষৰে ভেছে দলে উঠে বজার সমাজে।। देश (वि (विशेषक मना कुन रादि। সৰলোধী কুলীদেৱে এক করে সাবে।।

#### "१वन (कार")

শাসক-সম্প্রদায়ের দাসত্বকই প্রধানতঃ বেমন "লবণ দোব" বলা হইত (কোন কোন ক্ষেত্রে ব্রংশ্বণ বর্ত্ত্ব লবণের ব্যবসায়কেও ঐরপ দোব বলিয়া ধরা হইত ), তাঁহাদের সংস্রবে ভোজন অথবা হিন্দুনারীর সহিত তাঁহাদের অবাহিত সংসর্গজনিত দোবকে তেমনি "বমন দোব" বলা হইত। উত্তর দোবই ভিরধ্মী শাসক-সম্প্রদায়ের প্রতিশাসিত-সম্প্রদায়ের প্রতিক্ল মনোভাবের প্রমাণ। পরাধীনতার গ্রানি এবং সময় সময় রাষ্ট্রশক্তির বারা ধর্মের লাহ্বনাজনিত মনোবেদনাই বে এই প্রতিক্ল ভাবের কারণ ভাহা সহজেই বুরিতে পারা বায়।

"ব্যন্" সংস্থাকনিত "হোব" স্থাছ "মেলমালা" গ্রাছে সাধারণ ভাবে বলা হইয়াছে:

> হত্তিশ বেলেভে, বোষের জালেভে বেভিল কুলীব বীব। মানা অপবাবে, করি অবনাবে, বলেভে করিল কীব।।

বেকালে পীরালি, আবে কডডলি,
হইল বিজেরি বলে ।

সেকালে ববল সংগ্রবে ভোজন,
হুলেভে গালি বে বলে ॥

একি অসভব, বে ভাভি বিভব,
বভনেভে রাবা বার ।

ববল গ্রম, রহিল আঝ্ব,
ভাহা কি সভব পার ?

#### **देशाश्य**ण ।

হিন্দুনারীর "ববন"-সংসর্গের ফলে কোন কোন মেলের উৎপত্তি হইয়াছিল বলিয়া কথিত হয়। বথা "শুভরাজখানী" মেল। "মেলমালা"র ইহার যে বিবরণ আছে, "সম্মানির নির্দ্ধশ্বার ভাহার উপর এইরূপ মন্তব্য করিয়াছেন:

"ধবন-নীতা কলা বিবাহে অ-কতপ্রায়শ্চিত। মকবন্দ বংশীয় মাধ্ব শুভবাক খাঁ প্রধান।" সময় সময় "ষ্বন" লোষের মিখ্য। অপবাদ রটনার ফলেও কোন কোন নিরপরাধ বংশের "দোষ" ঘটিত। ইহার একটি উদাহরণ "ধাধা" দোষ। কোন ব্ৰাহ্মণ-কন্যা নদীতে কল আনিতে श्रिशकित। পথিমধ্যে हठार "धाँधा" पर्यार ममका याष् আসিয়া পড়িল। ব্ৰাহ্মণ-কন্যা পণিপাৰ্শে অবন্ধিত হাঁসাই ধানাদার নামক মুসলমানের পোয়ালে আত্মর লইডে বাধ্য হয়। ঝড কমিলে কনাা বাড়ী আসিল। বাড়ীর লোকেরা দেবির কারণ জিজাসা করিয়া জানিল বে, রাহ্মণ-কন্যা মুসলমানের বাড়ীতে আখ্রম লইয়াছিল। সমবয়স্থারা এই ব্যাপার নইয়া ঠাটা-ভামাশা করে। ক্রমে ক্রমে ঘটনাটা অবাঞ্চিত ভাবে পল্লবিত হট্যা সমাজে বাষ্ট্র হওয়াতে ক্লার বংশে "ধাঁধা" দোব জ্মিল। অভুরূপ আর এইটি मृहोस अहे : अनुहा कना अकाकिनी नमीट शिवा क्छीव কৰ্ত্তক আক্ৰান্ত হইয়া মৃত্যুমুখে পতিত হয়। ভাহার মৃত-मह करन छात्रमान व्यवद्यात्र स्वयं यात्र । हेहा नहेशा वयन-সংসর্গের জনব্ব রটে। ফলে, কন্যার পিতৃকুলে "ব্বন" कार वर्ष ।

হিন্দুনারীকে বলপূর্বক ধর্ষণ কিংবা অপহরণের একটি
ছৃষ্টাভ "সাহসধানী" দোব। শাসক-সম্প্রদারের সাহস থা
(ধান) নামক কোন তৃদ্ধান্ত বাজি সকনা আন্ধণীকে হরণ
করিয়াছিল। স্কুতরাং তাহার বংশে "সাহস্থানী" নোব
জরিল। এই সকল ক্ষেত্রে স্তইব্য এই বে, উল্লিখিত প্রকারের
"লোব" সভ্তে সাধারণতঃ সংগ্লিষ্ট মাস্ত্রবভাবিকে সমাজে
কোন না-কোন প্রকারের স্থান দেওয়া হইত; সাভাকুঁড়ে
নিজিপ্ত উদ্ভিত্ত পাত্রের মত লোকগুলিকে হিন্দু সমাজ হইতে
সূরে নিজিপ্ত করা হইত না। বার একটি কথা এই প্রসংগ

বিশ রাখা দরকার। তাহা এই বে, উপরি-বর্ণিত "দোব"গুলি বিছে কুলজী-রচরিভাবের মধ্যেই মতভেদ থাকিতে পারে। কান কোন ঘটক মহাশয়দের বিবরণে তুলও থাকিতে গারে। প্রভাবে "দোব" সম্বন্ধে সভানিপিয়ের জন্য উপযুক্ত মহসভান এবং গবেবণা করা হইয়াছে বলিয়াও মনে হয়।। স্বভরাং বর্ভমান যুগের কোন ব্যক্তি কিংবা বংশ বেন না করেন বে, এই সমন্ত মধ্যযুসীর ব্যাপার তাহাদের স্মান অথবা অসম্মান ঘটাইতেছে। সেকালের হিন্দু-স্লমান সম্পর্কের সামান্য কিছু পরিচয় গ্রহণ করিবার উদ্বেশ্রই ঐ বিবরণ প্রকাশ করা হইতেছে, সামাজিক নান-মর্ব্যাদার ভারতম্য নির্দ্ধারণের জন্য নহে।

#### "পীরালি"।

"পীরালি" ব্রাহ্মণের উৎপত্তির যে ইভিহাস "নীলকণ্ঠের ারিকা" নামক ঘটক-কুলজীতে লিখিত আছে ৰদ্ধে ভিন্ন ইতিহাসও আছে ), তাহাতেও সেকালের ভিন্ন-র্মী শাসক-সম্প্রদায়ের সহিত শাসিত-সম্প্রদায়ের সামাজিক পকের একটি চিত্র পাওয়া বায় এবং ইহাকে তৎকালীন শ্রেদায়িক অবস্থার প্রতীক বলিয়া গ্রহণ করিলে ভূল হইবে লিয়া মনে হয় না। নীলকণ্ঠের বিবরণটি সংক্ষেপে এইরূপ: मिनाट्ड निर्वाननक भारेषा थान काशन खानी बर्गाट्यव াসনকর্ত্তা হইয়া আসিয়া বসিলেন। তাঁহার প্রধান কর্মচারীর াম মামুদ তাহিব। অপর নাম পীর আগী। এই ব্যক্তি ৰ্বে হিন্দু ছিলেন। কখিত হইত, তিনি মুণলমান নাথীব ্রপ মৃগ্ধ হইয়া ধর্মত্যাগ করিয়াছিলেন। মামুদ তাহিব :জুটিয়া প্রগণার শাসনভার পাইয়াছিলেন। धीनच कर्षाठाबीरमव मरधा कामरमव ७ क्वरमव नामक इहे াশ্বণ ছিলেন। একদা কোন বোজার দিন মামুদ ভাহিব ভাসদ সহ বসিয়া আছেন। প্রজারা নানা উপঢৌকন ানিয়া হাজির করিতেছে। এক ব্যক্তি স্থাম লেবু নিয়া ভেট দিল, চারিদিক গব্দে আমোদিত হইয়া উঠিল। ুমুদ ভাহির "বাহবা, বাহবা" বলিয়া লেবুটি নাকের কাছে बेरनन्। कामरावर ७ क्यान्य वनिया छित्रितनः "इक्त, রন কি ? আবেতে অর্জ ভোজন। আপনার ত রোজা 🗦 হইল ," ত্রান্মণবয় জানিতেন না এই কথার পরিণাম ্ত্রণ সাংঘাতিক হটবে। কারিকার ভাষার:

ক্ৰাৰ বিজ্ঞপ তাৰি তাৰিৰ অহিব।
গৌড়াৰি তালিতে কোঁতের বন কৈল ছিব।।
বিল পৰে বজলিন করিল তাৰিব।
ক্রাণেৰ কান্যানৰ হবল চালিব।।
ক্রাণেৰ চালিকিকে তোকের আবোক্র।
লাত শত বড়বি আর গোবাংল ব্যবন।।

পলাও লভৰ গৰে লভা ভৱপুর। সেই সভাষ ছিল আছো ত্ৰাহ্মণ প্ৰচুৱ ॥ मार्क रह रिहा नर्य क्षेत्रां ग्रिन । কাঁকি দিয়া হলে কলে কভ পলাইল।। कावरकर क्याकर कवि जरकारम । হাসিরা কৃহিল গুর্ভ ভাহির ভব্ন।। ভাবিত্বৰি চৌধুৱী ভাৱ নাহি গাটে। ষাণে অৰ্ডেক ভোকন পালে আছে বটে।। मारक कांच बिरन चार केंकि (का करन मा। এখন ছেছে চং আহার সাথে কর ধানাপিনা।। इरे क्रम बित शैव बाखवारेन शास । পীরালি হইল ভারা হইল ভাভি নই।। কাৰাল কাৰাল নাম চইল দোঁচার। ত্ৰাহ্মৰ সহাতে পভি গেল চাচাভার।। পীৱালি অব্যাতি দিল বাণবাত্ত বোৰ। नर्यास्त्य बाडे इन क्रबाहब (बाय।। সংসর্গে পঞ্চিল বারা ভারাও বজিল। খক শীহালি লোম বলি ঘটকে বুবিল।।

#### উপসংহার

কুলদ্ধী গ্রন্থ হইতে দেকালের শাসক-সম্প্রদায়ের সহিত শাণিত হিন্দু সম্প্রদায়ের সম্পর্কের একটি সংক্ষিপ্ত পরিচয় मिवात ८० है। कता रहेग । घर्ड कवातिका किःवा कुमकी छ। इत मध्या कम नहर। **मरक्षण मृ**ष्टि ७ ६ मा है। मृष्टि ७ গ্রন্থ লির মধ্যেও সকল গ্রন্থ সহজ্বলভ্য নহে। এই জাভীয় সমূদয় গ্রন্থ অমুসন্ধান করিলে হয়ত আলোচ্য বিষয়ের আরও অনেক উপকরণ পাওয়া বাইতে পারে। এই व्यवस-लिथद्य व्यथान छेटम् आलाहा विव्यवस्त्र व्यक्ति व्यक्रमिरक्षरत्व मत्नारवात्र व्यक्ति कदा। हिन्दू-मूननमान সম্পর্কের ইতিহাস বাঁহারা রচনা করিতে চাহিবেন, বাংলা-সাহিত্যের সকল স্করের গ্রন্থ অনুসন্ধান করিয়া তথ্য সংগ্রহ করা ভাঁহাদের উচিত। মধ্যযুগের শাসক-সম্প্রদায়ের লেখক দাবা ফাসি ভাষায় বচিত গ্রন্থ অথবা ইউবোপীয় ইভিহাদ-প্রণেতা ও ভ্রমণকারীর বিবরণ অপেকা দেশীর माहिट्डारे व ज म्हान्य क्षमामाधावत्व मरनाकारवव অধিকতর নির্ভবযোগ্য প্রতিচ্ছবি পাওয়া বাইবে, ভাচা काहारक अ त्वाध हम विनम्न मियाय मयकाय नाहे। व्यवक्र, विष क्टियन करवन क, कुनको श्रम्युरह क्वन चनीक কলনাপ্রস্ত পালপলের সমাবেশ আছে ভো ভাছাদের नच्या कि हू विनवाद नाहै। किन्त याहादा विभाग करवन या, কিছু ভূল কিংবা অভিরঞ্জনের সম্ভাবনা সত্ত্বেও কুলজী এছে তংকালীন স্মাজের একটা মোটামৃটি চিত্র পাওয়া বায়, ভাঁহারা এ বিষয়ে অন্থ্যস্থান করিলে আরও তথ্য আধিকার -कविरुष्ठ भावित्वन विश्वश कामा कवा शहेरक भारत ।

## अक्रूप्रवर्ग महिक

ৰীটান নহি প্ৰস্কৃ,
ভোষাৰ কুশের বেদনা বে আদি
অহুতব করি তবু।
প্রসম্বভা ও প্রসাদ ভোষার চাই,
মোর দেবভার পালেই ভোষার ঠাই,
ক্যা-স্থলর ভোষার স্বভি
ভূলিতে পারি কি কভু ?

ধর্ম ভোমার নিরেছে বাহারা,
নিরেছে ভোমার চিনা,
সন্দেহ হয় আমার দ্যাল,
ভোমারে নিরেছে কি না ?
ভোমার কথা কি একবার ভারা ভাবে?
ভোমার স্থার্গ প্রবেশ ভারা কি পাবে?
মমডা-বিহীন করিভেছে দিন
বস্তুদ্ধাকে দীনা।

শপ-বিচারেডে ফাঁদি দিল বার।

শাপান শার্থানীতে,
ডোমার চেয়ে যে জুশকেই তারা

বড় করে ভাবে চিতে।
ইম্পাতে গড়া ভাহাদের সব হাদি,
ক্মাহীন প্রভিহিংসার প্রভিনিধি,
ধরাকে কসুব কালিমার চার

কুৎসিত করে দিতে।

ভোষার আলোকে বাবে কি ভাহার।
আঁধারের পথ বাহি' ?
ভারা বে আলোক স্কট করিছে
ভোষার স্কট নাহী।
কি ভত্র বেশ পরেছে বর্জরভা !
মুখেতে বিখনাভিয় বড় কথা,
বোহ আবিষ্ট, মন-গর্জিড—

व्यक्षाव गीवा नाहि।

ভব প্রেৰ, ক্ষা, শান্তি রাজ্যে

মেব-পালকের দেশে,

মেব কোথা ? ক্রুর নেকড়ে রাজ ভ্রমিছে ছল্পবেশে।

রক্ত-পাগল, হীন, হিংল্ল প্রাণ,

হে ত্রাণকর্তা, ভাহারা পাবে কি ত্রাণ ?
ভোমার কর্তনে বিব-বিস্পী

কি নদী মিশিল এসে ?

শতীতে বাহারা কণ্টকহার
পরাইল তব লিবে,
কণ্টকিত কি করিতে ধরণী
তারাই এলেছে ফিরে ?
কোনো শণরাধ নাধনে নহেক ভীত,
নহে প্রীতিকামী, শার্বলাভেই প্রীত,
করে সমারোহে হিংসার পূজা
দাড়ারে ভোমারে দিবে

জুশে খাৰোপিয়া বলেছিল ভারা হাসি' বিজ্ঞপ-হাসি 'প্রম-পিতা তো বন্ধিতে স্তে খাসিল না ভালবাসি ?' বস-বিগ্রহ, জীবস্ত মন্দির ভাঙে মূপে মূগে দ্ভেরা হুক্তির, লাহনা মাঝে দেবতা উঠেন নব রূপে উভাসি'।

বৈক্ষৰ মোৱা বিখাস করি
তব প্নক্ষান,
তৃষি প্রোক্ষণ পাবও বল
সৃষ্টিত ধূলিয়ান।
তৃষি ভাঞ্জ, হে অবিভর্গীর,
প্রণাম আমার, প্রণতি আমার নিরো,
অপাশবিদ্ধ হে যুর্ভ প্রেম,
গাহি তব জরগান।

# ভারতের নিকট মুক্তিকামী টিউনিসিয়ার আবেদন

क्रियारभम्ब वाभन

ইউনিসিয়ার ক্রান্সের অধীনভাপাশ রুক্ত ক্ইবার ক্রম্ভ ক্রেডর।
আন্দোলন উপস্থিত ক্ইরাছে। এই আন্দোলনের বেতা
লাংবারিক এল ক্রিব বোর্জিবা ও বহু জাতীরভাবাদীকে
ইউনিসিয়ার অচুরে একট বীপে করালী সরকার নির্মাণিত
ক্রিরাছেন। এই প্রধানি বোর্জিবা বহোবর ভারতের উদ্দেশ
আরবি ভাষার লিবিরাছেন। উত্যর ইংরেজী অসুবাদ ক্ইতে
ভাংপর্যা এবানে প্রবন্ধ কইল ঃ

"করাচীর বিশ-রুগনিব সম্মেলন হইতে ইন্সোমেশির। বাইবার পথে বে ক'দিন ভারভরাট্রে ফাটাইরাহিলার তাহাঁ আমার জীবনের সর্কোংক্ট ফাল বলিছা বনে করি। এই সমর জনেক বৃতদ কথাও আমি প্রবণ করি। ভারভবর্ধে—আমি ভনিলাম ইহা এখন তথু 'ভারভ' নামেই আখ্যাত, এমন করেকজন প্রেট বেভা এবং পদত্ব কর্মচারীর সদে বেখাসাক্ষাতের সৌভাগ্য আমার ঘটনাহে হাঁহার। আমাদের বর্ডনান বিপদে সাহাব্য করিতে বা পারিলেও আমাদের প্রতি বিশেষ সহাত্ত্তিসম্পর। করাচী গ্রনের পর ভারভ সম্বত্তে বে সম্বত্ত বারণা আমার ব্যব বঙ্কুল হইরাহিল ভার্যন্ত অনেকগুলি আমার বিক্ট ভাছিকুলক প্রতিপর হইরাহে।

ধিলীতে আমি পণ্ডিত নেহ ক্রর সংল সাক্ষাং করি। তিনি
এশিরার স্মতান, এবং বাবীন দেশসর্তে সর্বাপেশা প্রির
ব্যক্তি। সেখানে আমি প্রীবেননের সলেও দেখা করিবাছিলার। তিনি পদাবিকার বলে সংপরারশ বিবার বোগ্য
ব্যক্তি। আমার দেশের রস্ত পরপদদলিত এবং পরবাই
কর্ত্তক অবিখাত কুকর্ষে কর্জরিত দেশগুলিকে এইরূপ সংপরারশ দিরা তিনি ভারতের প্রতি ভাহাদিগকে চিরস্বস্কতাপাশে আবর করিতেত্বন।

কলিকাভার আমি তংকালীন গবর্ণর ভটর কাটকুর সংশ্ আববকীকাল কাটাই। এ সমন্তির কবাও তুলিতে পারিব না। আমার সোক্রোপন ভটর কীলানি ভাহার সহিত আমার সাকাভের ব্যবহা করিলা বিনাছিলেন, একত তাঁহার নিকটও আমি হতজা। তঃ কীলানি আমাকের উভরের বব্যে বো-ভাষীর কার্য্য করেন। তিনি উপস্থিত না বাফিলে ডঃ কাটলুর মূল্যবান্ ক্বাঙ্লির বর্ষ এইণ করা আমার পক্ষে অসভব ভিলা।

আৰি আলা ক্রি, তঃ কাইকুর প্রাবর্ণনত চলিতে স্বৰ্ণ , হইরাছি। বহালা গানীর বহুৎ আকর্ণে তিনি আনাকে বাবীনতা-সংগ্রাম প্রিচালনা ক্রিতে বলিয়াছিলেন। তিনি বলেন, এইতাবে চলিলে আম্বরা বাবীনতা-সংগ্রামে নাক্ল্য- লাভ করিছে পারিব। ইহার পর হইছে, এই ক্থাওলির নারবভা উপলবি করিরা নেইবভ কার্য করিরা আনিভেছি। জীলানির বারকভ কাইলু বহাশবের ক্থাওলির বর্ম অস্থাবন করিছে পারিবাহিলার বলিরা তাঁহাকে পুনরার বছবার প্রধান করি।

अहे केशरवर्ष अक्रमारवरे आवि आवारवर केश्मिक वाहे



এল হৰিৰ বোৰিবা

জ্ঞালের বিক্লবে বিদা রক্তপাতে বাবীমতা আন্দোলন পরি-চালনে ববালাব্য প্রবান পাইরাহি। প্রফুতিবিক্লব হুইলেও জ্ঞালের সলে আমি ববালতব 'নহন' ব্যবহার ভরিষাহি। আপোব্যকার নমোভাব লইরাই আমি আমাবিপের বাবি অনেকটা লবু ভরিষা 'বাপে বাপে বার্ড-শালন' পর্বাত্ত নামাইরাহি। আমার সহক্ষমীয়া ইহাতে বিশেষ অসভোষ প্রকাশ ভরিবেন ভানিষাও আমি কলাক্তের প্রতি প্রকেশ না ভরিষা এইরণ বল্প বাবিই ভরিষাহিলার।

আৰি ভাঃ বিধাৰচক বাবের ব্ল্যবান্ উপদেশগুলি
এবং আভৱিক সহাত্ত্তিও আৰু বিশেষতাবে সরণ করি।
উহার সহিত সাকাতের লবর ভঃ জীলানি উপস্থিত বাকিলেও
হুর্তাগ্যবশতঃ বোভাষীর কাজ করিয়াহিলেন এবন একজন
লোক বিনি করানী ভাষার বুংগর নহেন। বাহা হুউক, আনি
ভাঃ রাহকে আবাবের জাতীর হাবি এবং আশা-আজার
কথা বেরণ বলিয়াহিলান, বনে হর ভাষা তিনি ব্রন্তন
ভবিতে পাহিরাহিলেন।

ক্লিকাভার অবহানকালে ভারতীর বুগলবান নেতা বিঃ আরিকের একট পার্টভে প্রতিনিবিছানীর সাংবাদিককের সক্তেও লাকাং করিতে আরি সন্তর্গ কই। এবার আনার লোভাবীর কাক করিবাছিলেন 'অরভ বাজার পরিকা'র ডঃ এন্, সরকার। তিনি করাসী বেশ ভালই জাবেন। এই বিনকার ব্যাপারট আমি বিশেষভাবে পরণ করি। আনি নিকে সাংবাদিক; একবা আমি এবং আনার বেশবাসীরা ভালই জানি বে, ইউনিসিরার হাবীনভা আন্দোলনে ভারতীর সাংবাদিকদের ববা—'হিন্দুরান গ্রাভার্ত','অরভ বাজার পরিকা'র সন্পাদক্ষণ এবং 'বভার্ণ রিভিন্ন'র ঐকেচারমাব চটোপাব্যারের স্বর্থন ও সহাক্ত্রভির উপর আবরা কভবানি নির্ভর করিতে পারি। ডঃ জীলানি আনাকে বলেন বে, 'বভার্ম রিভিন্ন' তবু ভারতে নর, স্বর্ধ এশিরার বব্যে শ্রেষ্ঠ ইংরেকী রাসিক।

ৰহাত্মা গাত্ৰী এবং পণ্ডিত নেত্ৰুত্ব নেতৃত্বে ভারতবৰ্ষ বাহা অৰ্জন করিবাতে আমবাও টিক ভাৱাই চাই। আমবা করাসী অভ্যাচারীকের সকে সমত সম্পূৰ্ক হিছ করিতে ইচ্ছক। আমবা আৰাবের দেশ ও জাতি সহত্বে কি করিতে পারি ভাহা আনরাই বুকিরা নইব। আনরা আনাবের ভাগ্যবিবাতা কোন বিবেশকে চইতে দিব মা।

আৰি নিভিত্ত কানি আনায় এই আবেষৰ পণ্ডিত নেছ ক্ল, ডঃ কাঁচ্ছু, ডাঃ রাম এবং সাংবাধিক-প্রবানদের বৃষ্টি বিশেষ-ভাবে আকর্ষণ করিবে। আনায় সহক্ষিপণ এবং আনি ভাষতবাট্টের বিপাদের কবা সন্তক্ষ্ অবগত আহি। কিছ ভাষার সহস্ক এইবানে বে, নিজে শত বিপাদের মধ্যে বাক্ষিতেও অভাবের বিপাদেও ব্রোচিত সাহাব্য করিতে ক্রমণ্ড পদ্যংগত হয় না।

টটনিসিরা ভারতরাট্রের বিশেষ দাহাব্যপ্রার্থী। আমরা ভাহার নিকট ভিকা চাহিভেছি না। বাদবিকভার অবিকার বভটুকু ভাহার বলেই আমরা ভাহার বাবে উপছিভ। ভূচ বিখাদ, ভারতরাট্রের মেড্রুল আমাদের দাহাব্যার্থ অঞ্জর হইবেন।"

# যখন রবো না আমি

অসুনীলকুমার লাহিড়ী

বছৰে আবার কেঁখা বা গো প্রির
কেলো না'কো কোঁটা বাঁথির কল,
সহাবি-শ্বন-শিবরে আবার
কিও না গো রাঙা গোলাপ-বল।
আবার লাগিরা বিবাদ গাবার
গেরো না'কো কোন করুণ ভান,
সরোর-নারির-টালোরা কিও না
স্থীতল হারা করিতে হান।
ভার চেয়ে বন বাসের হারার
এ কেই আবার বহিবে ঢাকা,
বর্যাবারায় বোরানো লৈ ড্ব—
শিশিরের বারা বুক্তে বাঁকা।
আবারে শ্বিতে স্থ বদি পাও
শ্বিত—বাবার ভবিও প্রাণঃ—

ভূলে বাও বলি ? ভাতেই কি কভি ?

আৰি বৰো চিব নিয়তিবান !

ভবনো চলিবে বহনীয় বুকে

এই বভ আলোহারার বেলা,
ব্যথায় ভবরি ভাতিবে চাভক

আভাশে ভাসিবে মেবের ভেলা ।
আৰি হহিব না, বেবিব না কিছু

অভ্তবাতীত হবে এ প্রাণ,
এত বে মারার বোহিনী বল্প

ভূতিব না বোহে হর্ম বান ।
চির-গোগুলির আবাহে ভবন

ব্যথান সম ভোষার বুব ;

হ্যত বহুবে ভালে কি হুব ।

ক্লিভিয়াণা ছলেটির "Song" ক্ষিভার ভাষাত্র্যাল।

# ভারতীয় বিজ্ঞান কংগ্রেস—কলিকাতা অধিবেশন

**এ**মোহিনীমোহন বিশ্বাস, এম-এসসি

পূर्वरश्रदक वक जावजीव विकास करत्वन बवादक जानवारी बारन चक्रकेंच करवदित । चतिकाचा (श्रेतिरक्षणी करकास्वर विचीर्य सामाय चडेत खेळात्मलमाय मूर्याभागारस्य मण्-পভিত্তে এই সভার কার্ব্য সন্দর চর। ভারত বভারাটের ध्यानवद्यी अपनादवनान (मह्त्य बरे नणांव बक्के नांदर्शक वक्का (क्य । कियि कांडकवार्य विकास-माध्यांत (कांक क्रिकाका महरीर मर्दराक्षत्राची शाहरेश विवय प्रेटक कार्यस । खित्मर क नवरवर्ष रेक्कानिकननरक-कावकरार्वद नकन कवि-वाजीरकरे चार्मिक विकास्यत श्रास्त्रीश्चात विवय क्रेम्बिक করাবার চেষ্টা করতে অভুরোর করেন। ভারভবর্বে বে-সকল ভাতীর পবেষণাগার প্রতিষ্ঠিত হরেছে, ভিনি সেগুলির क्षेत्रका करवम अवर काविश्वर्यस्य क्षत्र हैहारस्य क्षर्या-ভনীৰভা দীভার ভবেম। তাঁর রভে আরে দাবীন ভারভের नाबादन बाकूरबंद नरक रबनारमणी करत. चारकंद वास्त्रितंच बरनाजारवत পরিচরলাভ করে ভার পরে বৈজ্ঞানিকপ্রকে ব ব বিজ্ঞান-সাৰ্বায় কেত্ৰে কালে বায়তে চবে এবং একণ বিজ্ঞানী-বের ছারা থেখের লোকের চঃগ্রোচন ছবে।

म्बाद शंकित्रवरकृत क्षेत्रायक्षी हा: खेविताराज्य तात. ताकाशांक ण्डेत खेरदासक्यात प्रवाशायात. क्लिकाचा विश्वविकालस्यत ভাইস্-চ্যালেলার ঞ্ৰিশভুদার বন্দ্যোপাধ্যার এবং আহও অনেক গণ্যৰাভ ব্যক্তি বক্তভা বেল। মাৰ্কিন বুক্তভাঠ এবং এেট-बिटिन, चरेकावना। एवनार्क, शक्तिव-कार्यानी, कार्डनिश छ कांशान (बटक श्रीह हिंदन क्य बाक्यामा देवकानिक औ সংখ্যান বোগদাম করেন। সভাপতি ভট্টর বুৰোপাধ্যার তাঁর অভিভাষণে বলেন-ভারতবর্ষে আধুনিক বৈজ্ঞানিক প্রতি-সৰুত প্ৰবোগ কৰে শিল্প এবং কৰিকাৰ্থোর উন্নতি সাৰিত হতে शांदा। जिनि श्रामण निका अवर शंदवरनाव मान वैवदानव पर वर क्षेत्राम करवम अवर चाय:-विश्वविद्यालय त्वार्थ अवर विविज-णावण बद्ध-विकास निका-शरिवरक अ विवय महत्त्वम হতে বলেন। তার মতে ভারতীর বিশ্ববিভালরসমূহের সহিভ প্ৰথম শ্ৰেণীর ভারবানাসহত রাবভে তবে বেবানে বিশেষভাবের वाता बारवाकमीय वस्ताकि वैद्यानम् अन्य अवक कृत्यः कृत्यः। ঐ সভন ভারধানার ভভক্তাল বিশেষ প্রয়োজনীর রাসার্নিক ত্ৰৰাও ভৈত্তি ভত্তৰাত বাৰজা ভাৰতে হবে। সভাপতি ৰহাপত बोलिक अवर बावकाञ्चिक भरवयनांच बरवा इन्नेंका नीवारवर्ग है।वराह रफ्रांकी वम्। कांत्र वर्क नर्काखनेत्र दिकानिक-পৰের দল্লিভ প্রচেপ্তার কলে ব্যাপক শিলোর্যন সভব হবে। ভিনি ভারতবর্ষকে ভবিকার্ব্যে বৈজ্ঞানিক প্রভিসমূহ প্রয়োগের

উপদেশ দেন এবং অন্তর্নণ উপারে ইউরোপে বেনন উংপাদিত কললের পরিবাণ বেডেছে এডেশেও তা সভব হতে পারে—তরনা দেন। তিনি যুভিকা লগতে তালরপ অন্তল্যকারী চালানো এবং বিদেশ থেকে নৃতন নৃতন উভিন্নসূত্ আমলানী করে ক্ষরিকার্যে বা উভান-রচমার ব্যবহার করা, ক্ষরি আর্মভা সংরক্ষণ প্রভৃতি বহু বিষয়ে স্ল্যবান উপদেশ দেন। পরিশেষে তিনি বৈজ্ঞানিকদের এডেশের ক্ষয়করের সহিত্ত সহবোগিতা করতে আহলান করেন। তার বতে ক্ষয়কই হচ্ছে কলল উৎপাদনের প্রধান কারিগর—বিজ্ঞানী এই ভাত্তিপরক্ষে অবহেলা না করে তাকে সকে নিরে অপ্রসর হলে আশাস্তর্নণ কলল উৎপর হতে পারবে। প্রস্নপতারে বৈজ্ঞানিক-প্রচেটা সম্প্রসারিত করলে অল্প সমরের বব্যে কলল উৎপাদন

অভঃপর বিজ্ঞান-কংগ্রেসের কার্য্য বধারীতি আরভ হয়।
রসায়ন, পরার্থবিভা, লারীরবিভা, গণিত, তুতত্ব প্রভৃতি বিভিন্ন
বিজ্ঞানশাধাসমূহের সভাপতিগণ হ'হ অভিভাষণ বধাসময়ে
পাঠ করেম এবং প্রভাজেই নিজ বিজ সভার মধ্যে সমবেত
বৈজ্ঞানিক্ষের নবাবিক্তত তথ্যসমূহ আলোচনা করতে নির্বেশ
কেম।

রসারন্দাধার সভাপতিত করেছিলেন ভক্তর আরু ভি দেশাই। ভিনি তাঁর অভিভাষণে বৈজ্ঞানিক বেহার প্রবর্ত্তিত '(हेम विश्वति' श्र कात्र क्लाक्न जन्नदर्व बारनाहमा करवम। ১৮৮৫ লালে ভদ বেহার এই বিওরি বা মৃতবাত ভারা ভার্মন পরমাণুযোগে ভিন হতে সাভ পরমাণু-সংখ্যা বিশিষ্ট বলরাক্তভি বৌগিক-পদাৰ্গসূত্তর গঠন ও ছিভির সভাব্যভা বুঝাবার চেঠা क्रात्म । यहनत्रमानृत (क्रात्म अरे मचनान जानवन काक क्रात्स. किन दावादम भवमानुव मरवा। वृष दानी दावा त्राह दावादम ভা বাৰ্বভাৰ প্ৰাৰ্থিত হৰেছে। চৌত্ৰিপট প্ৰমাণসহযোগে কাৰ্ব্যণ ছাত্ৰা গটিভ ছৌগিভ ছালাহনিভ পঢ়াৰ্থ এবং ভছত্তি-ৰূপের গ্লাভ থেকে নিস্ত বাজোন এই বতবাদের বিক্তমতা वायना करवाद । यह नवयानुष्क र्योनिक नवार्यक्षित रव नीह বা হর পরবার হারা গটিত প্রার্থটোরই অ্বরূপ হারী, কুভিকা श्रम् विकामी काहा श्रमानिक क्राइट्न। और नवक क्रम्बिना ह्वीक्वनार्थ रेमर्गाच्छ ७ वद्यन द्वारवव बचवान क्रिक् नश्रमायम करव चार अकडी मुख्य शतिकत्रमा ( वाक्विहाचि ) (भन करवन । बाहा बहेक, दिवारवद दिन विश्ववित धावर्षाम वह कार्कनवनवकुक दोनिक-नवार्य जन्मदर्क मरवदनाव वारवक প্ৰবিধা হবেছে। তঃ দেখাই তাত্ত এই মভামত সভাৰ্কে নিজৰ

গৰেষণালক ছ'একট মূল্যবাদ তথ্যের বিষয় ধর্ণনা করেম। পরিশেষে তিনি তারতবর্ধে রনারনসম্পর্কীর গ্রেষণার ক্রয়োহতির বিষয় ইয়ের ক্রয়েন।

नशार्वविकास भाषात मकानकिक कार्राहरूम करेर अन রামচল রাও : তিনি তার অভিভাবণে ক্ষটকসমূহের চুক্-श्वनारमी जबरक जवारमाञ्चल करवन । श्विम वरमन- व्यक्त-খণের উপর ভিত্তি করে জবাসবৃত্তক ভিদ শ্রেণীতে ভাগ করা (बट्ड शादा । छात्रामानरमहिक्त, शातामानरमहिक्त बदर क्रावामानिम्हेक्ता हचक क्षेत्र (अवैत नवार्त्रवृद्धक विकर्त्, ভিতীয় শ্ৰেণীর পঢ়ার্থতে ক্রমং আকর্ষণ এবং শেষোক্ত শ্রেণীকে श्रांत कारत कावर्षन करता अहे किम (श्रापेत नहार्यंत हरता क्तामानिम्हेकनश्किर नर्वारिका द्वाराम । **हरकश्वर्**क পদাৰ্থনৰত বেভিও ও বিবিধ হল বছাদি নিৰ্দাণকাৰ্য্যে ব্যবহৃত इह । अमनि, अमनिरका अवर अमरकाशाकृत श्रेष्ठकि करवक्षे ষিত্ৰ ৰাভু ৰাৱা এই সমত চুত্তক ভৈত্তি হয়। এই সকল মিত্ৰ ৰাভৱ ক্ষিক অবনৰ লেখে ভাষেত্ৰ চহক্তৰ পত্নীকা করা হয়। क्रकेक-नवार्यत वर्गत प्रविक खेवात व्यक्त स्थान विश्व प्रवृद्ध ৰেধা বার। বিভিন্ন ৰাজ্ব অকাইডের উপস্থিতিই উক্ত বর্ণ बार कृषकश्चान कर मात्री। 'बारमविक्रे' श्राचतात माना '(क्विक लोव' भाषदा भाष बन्द हैवाल व मीन दर नहे वह केक 'कदिक' लोड त्यांव कर कार कारवा: करकश्रीत कड़ेक्ट माना लोठ चनिक शिवाद विक्रमाम अवर के ममस क्ष्मीरक्व मर्था विकित्त वर्ग एडे छत । एकेव बांध क्ष्मीक्तवृत्वत हेचक थन मन्नर्क छैनद्वांक बुनावान धनामबृह वर्गमा करवन बन्द केक नियद बनम्छ शत्यम्बा यात्र द्वाराक्षीयका चारक এরণ অভিয়ত বাল্ল করেন।

উছিদ্বিতা শাধার সভাপতিত্ব করেন এএস, রানাত্তম্।
তিনি বাত, ইত্ন, তুলা, তৈলবীত্ব, কল ও শাক্সতী, উছিদ
কোষণমূহের গঠনপ্রধালী ও ভাহাদের প্রক্ষনজিয়া সধ্যে বে
সম্ভ বহু মূল্যবান গ্রেষণা হয়েছে ভাহা বর্ণনা করেন এবং
নিভ্যপ্রোত্তমীয় উছিত্তসমূহের উন্নতিসাধনের ত্বন্য এরপ গ্রেন্
বর্ণার প্রয়োত্তমন্ত্র উন্নতিসাধনের ত্বন্য এরপ গ্রেন্
বর্ণার প্রয়োত্তমন্ত্র কর্মান্ত করেন।

চিকিংসা-বিজ্ঞান শাবার সভাপতিত্ব করেছিলেন ডাঃ তি.
আৰ. বানোলকার। তিনি ক্যান্নার বেগিও ভাতার বিবিধ কারণ নির্ণর সময়ে এক বছু বুল্যবান তথ্যসমূহ অভিভাষণ পাঠ করেন। তিনি বলেন—ক্যান্নার রোগের কারণ নির্ণর এক ক্ষান সমভা। বর্তনান চিকিংসা-বিজ্ঞান এই হোগের সঞ্জীক কারণ বিতে অকম। নির্ণিঠ একট বাহ, বোরগ, পশু এবং নাছবের এই বোগ হয়, অধ্য একই গ্রেক্ত কার কারও হয় না—এই মহত তেল করবার করা চিকিংসাবিজ্ঞানী গবেষণা করবেল। জীববেছছ বাতাবিক ছল লেল বা কোষসমূহের ক্যান্সার সেলে পরিষর্ভন হওৱা এক বিচিত্র ব্যাপার। বর্তনাদে লম্প্র পৃথিবীব্যাপী এই বিষয়ে মূল্যবাদ গবেষণা চলছে এবং অনেক বিজ্ঞানী ক্যান্সারের উংপতির মূলে এক শ্রেবর তাইরাস এবং এমজাইবের কার্যকারিভার উল্লেখ করে গবেষণা করহেন। বাহা হউক, ডাঃ বানোলকারের মতে এবনও এই গবেষণা সম্পূর্ণ হয় নি।

গণিত-বিজ্ঞানের সভাপতিত্ব করেছিলেন ভট্টর বি, বি, সেন। তিনি তার পাতিত্যপূর্ণ ভাষণে বলেন—গণিতের প্রহোগে কনিত বিজ্ঞানের অঞ্জগতির অনেক স্থাবিবা হরেছে। অনেক সমন্ত গণিতের সাহায্যে বিশ্লেষণ করে যে কল পাওরা গেছে ভাতে নির-সন্থীর অনেক কটল সমভার বীমাংসা সভ্তবণর হরেছে। তিনি আশা করেন, ভবিত্ততে কলিত-বিজ্ঞান আরও বেলী করে গণিতের সাহায্য নেবে।

প্রাণিতত্ব বিভাগের সভাপতিত্ব করেছিলেন প্রীবি, আর.
শেষচর। তিনি তাঁর অভিভাষণে নিউক্লিক এসিডসমূহের
কৈব রাসায়নিক জিয়া সহছে সুক্ষর আলোচনা করেন।
তিনি বলেন, জীবদেহের গঠন প্রভৃতির জন্য মুসতঃ এই নিউক্লিক এসিডই হারী। তিনি আরও বলেন, কৈব এবং উদ্ভিজ্ন সেলসমূহে হই প্রেণীর নিউক্লিক এসিড বিভ্যান—রাইবোজ এবং ভিসন্নিরাইবোজ। শেষোক্ত নিউক্লিক এসিডই জীব-দেহের পক্ষে অবিক্তর কার্য্যকরী এবং বে কোন নৃত্য প্রাণী-দেহ স্কীর মূলেই এই উপাদানের প্রয়োজনীয়তা দুই হয়।

ব্যাভ্যাবা রাসার্থিক ভটার ইল আরগট গাছ্ডা সহছে
নিজের আবিস্কৃত অনেক স্ন্যাব্য ভব্যসমূহ বর্ণনা করেন।
নিউইরর্কের বৈজ্ঞানিক ভটার কেনস্ এটিবারোটক্স সহছে
নারগর্ড বভ্তা বেন। তঃ শাভিবরণ ভাটনগর ভারতীর
'বনাজাইট ভাত'-এর বিবিধ শিল্প-সভাবনা সহছে একট পুলর
বভ্তা বেন।

বিভিন্ন পাণাসমূহে বহু বুল্যবাম বৌলিক গবেষণামূলক প্রবন্ধ পঞ্চিত ও স্বালোচিত হত্তেহিল। ধেশ-বিদেশের বৈজ্ঞানিকদের একজ স্বাবেশ ও পাণ্ডিত্যপূর্ণ বিভর্কে সভাত্তে এক বিচিত্র পরিবেশের পঞ্চী হত্তেহিল।

প্রায় স্থাত্কালব্যাপী অস্থানের পর বিভাগ কংগ্রেসের এবারকার অবিবেশন স্বাপ্ত হয়। বেশের শিরোরভিত্র ক্ষ্য কাতীয় সরকায় যে সমত বৈভাষিক পরিক্রমা এবণ ক্ষেত্রেন, বৈভাষিক্ষের উচিত যাতে সেগুলি সম্বয় কার্য্যে পরিবভ হয় কংগ্রিভি সক্ষ্য রাধা।

# "জাহানারার আত্মকাহিনী"

#### ডক্টর ঐকালিকারখন কামুনগো

"কাহানারার আত্মকাহিনী"র অনুবাদক শ্রীবাধনলাল পান্তী বাংলা-লাহিত্যে অপরিচিত ব্যক্তি নহেন। তিনি বিশরের অল্-আকহর বাজালার আরবী সাহিত্য অব্যহন করিবা আলিরাছেন। তিনি একাবারে ঐতিহাসিক, বহদী সাহিত্যিক এবং হস্মনৃষ্টিসন্পর স্বালোচক। সম্প্রতি তিনি "কাহানারার আত্মকাহিনী" প্রকাশ করিবা বাঙালী পাঠকের ফুডজভাতাক্র (৫) হইবাছেন।

এই পুডক্বানি ঐতিহাসিক এছ মনে করিরাই প্রবাসী পঞ্জিত সন্দাদক বর্তমান লেখকের উপর সমালোচনার ভার बच्च कविशास्त्रम । जन्नारमाठमात विश्वत्रयम् शार्क कविश हरू-चित्र : मन दूर्गर चाच्य ७ जत्मद्र चात्राकाच वरेन । धरे পুত্তক কি অনুবাদ, না অপবাদ ? অনুবাদক লিবিতেছেন. "ভালামারার আত্মধীবনী কালীর থেকে পারভ-ভাষার श्रकानिक क्राइट । चामि वारनाकामात्र वाकानी मार्केटकत উপযুক্ত করে লিখলায় ভাতানারার ভাত্তকাতিনী।" কোন পুত্তকর অভুবাদ প্রকাশ করিবার সময় পাগুলিপি কিংবা ছাপা বভিত্ৰ একটা ভাষিস দেওৱা স্থীচীন। কোন বিশিষ্ট ঐভিতাসিকের হবে এইরপ কোন আত্বতাতিনীর কবা ভনি মাই। কোন ঐভিহালিক পঞ্জিবার ইতার পরিচর পাওরা बाद मा : चर्क 'केंचिकानिक' बार्यननान माश्री पारि करवन, "बाहानादाद कक्न काहिनी प्रकार्शित अपूर्व मण्या अरे কাতিনীতে আছে গৌল্ব্য ও বিভীষিকার অপরণ সম্বত্ত बाबबाचार बायक क्या " वश्त्रदाविक काम (बाँक करिया আৰৱা ভানিতে পাৱিলাম, ঐ রক্ষ হাপা বহির অভিত কালীরে নাই। আজিরা ব্রেটনশন ক্রত ইংরেকী অভবাবের बाय बायमनान हाना विदारस्य । देश्रदक-महिनाद रहिद बाय "The Life of a Mughal Princess" (G. Routledge and Sons, London, 193I)

ঐ ইংবেজী বহির সহিত অসুবাদ বহু পরিপ্রবে বিলাইরা বেবিলার, উক্ত ইংরেজ-মহিলার বহি-ই বাংলার তর্জনা করা হইরাছে। "বাঙালী পাঠকের উপর্ক" করিবার ওত্তাতে অহ্বাক্ত আসলের উপর বং কলাইরা বিরপ করিবাহেন, বীর্ব ঐতিহালিক (?) টাকাটাগনী বোপ করিবা একবানা প্রকর্ম হৈরেজী ঐতিহালিক উপভাসকে ইতিহাসের বর্মাকা কাম করিবার প্রবাদ পাইরাহেন। ইংরেজ-মহিলার বহি নিছক কাঁকিবাজী, কার্সি বহি হাইছে
অন্ত্রাবের দাবি কি তবে একটা বলেই চাল ? অন্ত্রাকক
বদি এই তবাকবিত পাঙ্লিশি কিংবা হাপা কার্সি বহির
রচনাশৈলী সপ্তরশ শতাকীর কার্সি রচনা বলিরা ঐতিহাসিকসপ্রের নিকট প্ররাণ করিতে পারেন তবে নিক্তের মূর্বে চ্থকালি পড়িবে, জাহানারা ভাহারনে বাইবেন।

পালী নাৰ্যলালের পুত্ৰ পঢ়িয়া বনে হইতেছে এই 'কাহানারার আল্লভাহিনী' বাবর আহালীরের ভূকুক বা দিনচর্ব্যা নহে; কোন্ অংশ কোন্ বংগর লেখা হইয়াছে বুবিবার উপায় নাই।

পুত্তকৰানা আসলে এমণবুড়াছকে হোমাঞ্কর ঐতিহাসিক ইপভাসের রূপ ভেষার প্রলোভনে লিবিভ। কি ভাবে ষোগন রাভক্ষাতীর আত্তকাতিনী ভিনি আবিভার করিলেন নে সহছে লিবিয়াছেন, জাহামারার ক্বরের উপর সাবাভ ৰাস দেবিবা বেৰসাহেবের ভাবাবেশ হইল, সম্রাট-মন্দিনীর क्न बरे रेम्छ १ क्मरे वा क्वरवद छैनद बाहिक ब्यव নিবেলনে এই হুডালার অভিযান ? আরও কিছু জানিবার कर छाठाव प्रवेश थान चाकून टरेश देशिन - चाजा पूर्व বেড়াইবার সময় তিনি খেবিলেন মুসান্মন বুরুজের এক বেড প্ৰভৱৰত প্ৰায় পভনোগুৰ , ত্ৰাভ বাড়াইভেই আসিয়া পড়িল अक शाक्ष्मिति, किश्वरम जन्महे ७ विश्व। বেৰসাহেবের বৃদ্ধির ভূষিকা লিবিয়াছেম। উহাতে কোৰ ঐভিহাসিক আলোচনা নাই, বহিৰাৰা Dryden-कृष Aurangzib नाहेक जरनका मर्बन्नमी निवाह ভিনি বারিত্ব এভাইরা নিরাছেন। লেবিকা ভাঁহার বৃদ্ধি "India"-एक छैरनर्न कविवादस्य। चालिवाद अहे बहाब উদারতা বিস বেবোর বগোত্রীয়ার উপযুক্তই বটে। ভাতাবায়ার बूर्व किश और विक्रिमियी पश्चिमा जावाकिम्यक एव मक्क कर्वा ভ্ৰাইরাছেন, ভাহা সভ্যের অপলাপ বাস্ত এবং অভ্যন্ত আপতিভ্ৰত ।

বৃধবৰে ঐতিহালিক পরিবেশ স্ক্রীর চেঙা করিরা অন্ধ্রনক এই নেকী কাহানারার আত্মকাহিনীকে বাবর ও কাহালীরের বিনচর্বা। এবং ওলবদন বেগবের ঐতিহালিক প্রছের স্বপর্বারে হান বিরাহেন। বে গবত বটনা এই ক্রিভা কাহানারার বৃধে ওলান কইরাহে দেওলির ঐতিহালিকভা সহতে তিনি কোন সন্দেহ প্রকাশ করেব নাই; পাবলীকার্ডার ব্যং শিক্ষের ঐতিহালিক ভানপ্রচার এবং বৃল লেণ্ডিকার প্রকাশবর্ধনের অন্তই বোগ করা কইরাছে।

ভক্তবাল চটোপাব্যার এও সল, কলিকাভা। পৃঃ
 ১৮৫ , বৃদ্যা লাভে ভিল টাকা।

ক্ষিত অহ্বাবের বোহাই বিরা ঐস্লাবিক ইতিহাসের এক ক্ষম অব্যাপক পুণ্যশীলা অকী-সাবিকা শাহকাহান-হহিতা জাহানায়ার নাবে এই শ্রেণীর বুণরোচক বিধ্যা কুংলা বাঙালী-স্বাক্তে প্রচার করিবার বার হইতে অব্যাহতি পাইতে পারের না। বে বহির নাম উল্লেখ করিতেও ঐতিহাসিকপণ কুণ্ঠা-বোধ করিবাহেন, ভাহার বাংলা ভাষার অস্থান হারা আর বাহাই রউক, বাঙালী পাঠকের ঐতিহাসিক জাম বৃদ্ধি পাইবার কোন সভাবনা নাই। নেইজ্লই আব্রা ইতিহাসের নাবে এই বিধ্যা-প্রচারের মুখোন উলোচনের প্রবোজন আহে বলিরা মনে করি।

আমরা এই বহির ভূলের কিরিভির এক কিভি পাঠকবর্গের কালে উপভাগিত করিভেছি।

अव्यक्ति विश्व विश्व वामिनिश्रवं अति यामनारें विश्व विश्व क्षेत्र क्षेत्र विश्व वि

প্ৰবাণ ? শাহজাহানের বাভার বাব বানবভি বা বালবভি পাওৱা বাব (B. P. Saxena: *History of Shahjahan*, p. 1)।

बागविक जररकरण "बागवारे" हरेरक भारत । बागजिरह्द क्षीय मात्र कामता (काम क्षावान) रेक्हारन भारे
बारे । "कार (बाजारेवी" छेगावि, मात्र नरह । "(बाजारेवी"
कार्ति, जरक्क किश्वा दिन्ती नरह ; वारजात (बाजारे नरक्त
बीजिक हरेरक भारत । Fuxuk-i-Jahangiri-त वृज कार्ति
भाई (बाजारेव-रेहा कह हिन्ती।

২। "আকিষের বিষ" [পু. ৬, বুল poppy juice, p. 7]
এক উদ্ভিদ হইতে উংপর হইলেও আকিম ও পোভদানা
বিভিন্ন বভ। এক দীর্ঘ পাদটীকার অনুবাদক লিবিয়াহেন,
গোরালিয়র হর্পে বলী পাহকাদাগণকে "বলনাঞ্জার আকিষের
জল পান করতে বৈত্রা হত।" আনরা জানিতার এইরূপ
পানীর বেপাথোরের অর্ড, রাজপুতানার অনুল, সেরুগে হিন্দু

বুগলমানের পঞ্চে প্রায় স্থান হালাল। বেব-সাহেব poppy juice বা পোড-ভিজান জন ট্রকই নিবিরাহেন। পাডিজ্য ফলাইরা ভরকে জভর করিবার অবিকার জন্বাবজের আহে কি ?

- তার (জাহামারার) জীবনীতে হিন্দু-শারালোচনার
   বহু পরিচর পাওরা বাব ( পাদটীকা ১০ )।
- —ব্ৰা ? ছই-একটা বহির নাম, কিংবা কোন সমসাব্যিক ইতিহাসের মনীর উদ্ধুত করিলে পাঠকবর উপকৃত হুইতেন।
  - 8। अक्वारमञ्ज्य मञ्जा :--

"In my palace in Delhi I lived like the *dayfly* in the gardens of Shalimar, which seeks intoxication in the cups of flowers".....(p. 11)

"দিলীর প্রানাদে শালিষার বাগে ষব্যক্ষিকার যত উচ্চে বেরিরেছি"·····(পু. ১০)।

বিলাভী 'ভে-ক্লাই' কি আবাদের মধ্যক্ষিকা ? ইহার পরেই আলিভেছেন, "বনি-মানিক্যোজন বর্ণরেণু পাণার মেথে কালো বৌরাছির সোমালী পাণা কেছ কেথিয়াছেন কি ?

know of a palace on a hill far away above the lake, p. 12)

বেৰিভেছি বেম-সাহেবের "রুদ" অসুবাদে জ্যাট হইরা পাধরের হাদ হইরা সিরাহে, এবং উহার "ঐ শান্ত জ্সরাশির উপর প্রতিফ্লিত হচ্ছে" দেই প্রাসাদ।

৬। পুনন্ধ-By the Canal of Firuz Shah"কিবোজনার পরিধার পালে আমার উভানবাটকা" (পু. ১৩)।

কিরোজশাতের পরিধা জাতানারার জন্মের পূর্বেই লোপ পাইরাহিল। এই কথা লেখিকা জানিতেন। অস্থ্যায়ক থাল এবং তুর্গবিধার বধ্যে পার্থক্য নিক্ষাই জানেন। বিলী



শহরের বাহিত্রে উভর-পশ্চিষে লেখিকা কর্তৃক উল্লিখিক থালের বাত এখনও আহে, পরিবা কোবায়ও নাই।

#### १। बीच पृक्षे (पृ: २३, २२)

বলাছ্বাদের কুপার মহারাণা প্রভাগের প্রির অব "চেটক" হৈতত হইরাছে। এইবার জীবৃত নাবনলাল শারীর বারকত ছই ছই বার আলিলেন বীর পুটা। কার্সি বর্ণবালার 'ট' নাই; পুটা বিস্থানী নর। বেরলাহেব 'ভ' বর্ণ ছানে ট উচ্চারণ করেন; অহ্বাদক বেরলাহেবের প্ররে প্রর বেনাপ্র নিলাইরা কেলিরাছেন। এই কিশোর রাজপুত বীরের আলল নার কিছিল জানিতে হইলে কোন হুলপাঠ্য ইতিহাস কিংবা ভবা-কৃত 'রাজপুতানেকা ইতিহাস' (হিতীর বভ, পৃ. ৭২৭) অহ্বাদক দেখিরা লইতে পারিতেন।

৮। বেগৰ ন্বজাহানের জেনেনিন প্রাসাদে আনার কক্ষে
...( পৃ: ৩১ : Eng. p 42 )।

আঞাহর্গে মুসান্থন বক্লব অবাং বেনের "কেসেমিন" প্রাসাদের সহিত স্বজাহানের কি সম্পর্ক ? উহা নিমিত হই-বার ক্ষেক বংসর পূর্কেই বিববা স্বজাহান বিবিবিভ্যনার লাহোরে নির্কাসিতা। এই কবা পাংটীকার লিবিলে 'ইভি-হাস্ত্র' অভ্যাদক্ষের মুধ্যকা হইত।

। সেই বিরাট চীন বিটপীর ভলার…(পৃ: ৪৫; the big Chena-tree)

"চীন" বৃক্ষ মহাচীনে থাকিতে পাবে, ভারভবর্থে ক্ষিন-কালে হিল না, এবনও নাই। বেনসাহেব নিক্ষাই ভ্রপ ডালীরে "চনার" বা চেনার গাছের সারি দেবিরাহেন। দিলী আঞার ঐ গাছ করার না। অভ্বাদক বোব হর ঐ গাছের 'চীন' এই নামকরণ করিবাহেন।

১০। "আৰি অখসুৱাকৃতি ভোৱণের বব্য দিয়া বসভিদে প্রবেশ ক্ষলায়"—( পৃ: ৭১; Throngh horseshoe-gate ...p. 79)।

তত্ত ট্লকা—"এই ভোরণের মধ্য দিয়া সাতট হতী পাশা-পাশি প্রবেশ করতে পারে" ( ) )

বোভার বুর এবং বোভার পারের লোহার নাল (horse-shoe) কি একই বছ ? বেবলাহেব লভা বরের গাইজ-বুক পভিরা ভানিতে পারিরাছিলেন, বর্তমান শভাকীতে হানীর বিরক্ষর লোকেরা বুল্লকরওরাজাকে নাল-ফরওরাজা বলে। এইজন্য ভিনি কভকটা করার্হ, কিছ অহ্বাফক অর্থ করিবা-হেন টিক বিপরীত। Pointed arch, Horseshoe arch, semicircular arch ইত্যাবি বিলাবের সংজা। বুল্লকরওরাজার বব্যে কোন "অর্থক্রাফৃতি" বিলান অহ্বাক্ষ কিবা অন্য কের কি চল্ল চকে বেবিরাহেন ? এ করওরাজার বিলাবি-বৈলী অর্থক্রাফৃতি বা Semi-dome style। নীচে বে অংশে বিশ্ব কার্টের বিরাট পালা বলান হুইরাহে উহা

# ৪ বছরের হিসাবে

১৯৫०-ध्रत ज्याम्ट्समन

গত ৪ বছরের হিনাব-নিকাশে 'হিন্দুখান'-এর
তিন্ধ কেন্দ্র পরি মাণ দাঁ ড়াই য়াছে
তিন্দালি নিশ্ন ক্ষাক্র টাকার উপর।
সেই টাকা হইতে লাভ-সহিত সকল বীমাপত্রে
বছর প্রতি হাজারকরা বোনাস বোষণা
করা হইয়াছে:

## মেয়াদী ৰীমায়— ) আজীবন ৰীমায়— ) ৮২ টাকা

ভবিষ্যতে মূল্য হ্রাস এবং অন্তান্ত অনিশ্চিত ব্যয় সাপক্ষে সংবৃক্ষিত তহ্বিলের যথেষ্ট ব্যবস্থা রাখিয়া এবং স্থানের হার অক্ষিত হার অপেকা ২% কম ধরিয়া কঠোরতর পদ্ধতিতে হিসাব নিকাশের এইরপ ফল দাভাইয়াতে।

লগ্নীতে কমহারে স্থদ অর্জন, তুর্লার বাজারে অধিকতর ব্যয় প্রভৃতি নানা প্রতিকৃত অবস্থা সত্ত্বেও এই হিসাব-নিকাশে হিন্দুখানের অবিস্থাদী নিরাপত্তা, স্থদৃঢ় আর্থিক সন্ধৃতি এবং পরিচালনবারে মিতব্যয়িতার প্রমাণ পাওয়া যায়।

চলতি ৰীমা ····· ৭০ কোট ১৬ লক টাকার উপর ৰীমা তহৰিল ··· ১৫ "১৭ " " প্রিমিয়ামের আয় ৩ "৪০ " " " দাবী শোধ ····· ৭ "২০ " "



# হিন্দুস্কান কো-অপার্ক্সিভ ইন্সিওরেন্স সোসাইটি, নিঃ

৪নং চিত্তরঞ্জন এভিনিউ, কলিকাভা।

অবেকাংশে ব্যৱবাদী Pointed arch-এর বত। ওছকে
অভব অহ্বাহ করার এরপ দুঠাত আর কত বেবাইব। অহ্বাহক ইহার সলে এক অভিনব দ্বীকা ভূতিরা বিরাহেব।
বাহারা এই নাল-বরওরাজা অভিক্রম করিবা বসকিবে চুকিরাহেন তাঁহারা বলিবেন, সাভাই হাতী কুরে বাহক সাভাই গর্বত
কিংবা সাভক্রম ভূতিওরালা লোকও পাশাপাশি চুকিতে পারিবে
কিনা সলেহ। ইহাকে নাল-বরওরাজা কেন বলে সিকীর
এক্কাওরালাকে বিজ্ঞাসা করিকেই জানা বার। বোভার
ব্যারার হবলে ভাহারা বোভার নাল কাঠের পারার
বাহিরা দের।

১১। "ছুৰ্কী-বেগৰের প্রাসাধ এবনও ক্লের উপর প্রতি-বিষিত ক্লে; সেই অপরা মহলে প্রত্যেকট বৈত প্রতর বেদ কোষিত গ্রুম্বর ।" (পৃ: ११; মূল···Facry castle···as if red sandstone were ivory, p. 86.)

ক্ষেপুর নিজীর খান মহলের মধ্যে এই প্রানাদের আশে-পাশে কল কোবায় ?

উৰ্বাই-ভিলোভনার ভানা ছিল না; সুভরাং অপারা "পরী" হইতে পারে না। বেৰসাহেবের "পরীবহন" অপারা-মহল হইল কেন ? ঐ প্রাসাদের কোবাও খেড প্রভর নাই। লাল বেলে পাবরকে লালা ভরিষা পাঠককে বিভান্ত এবং ইভিহালকে অপায়নিভ করিষার প্রয়োজন কি ছিল ?

· ১২। বাবার্ণী বলেন বে আক্বরের বাসকক্ষের সন্মুখে একটি বোলনার বসে স্থাকিগণ বোগাভ্যাস ক্ষরভেন। [ চীকা গঃ ১১ ]

ইহা কি লোকর্বে গুলিষা লেখা হইরাছে ? বদার্নী এবন আজগুলি কথা লিবেন নাই। জিনিষ্টা লোলনা নর, একটা যভিবাধা সুভি। প্রতি হাজিতে আমন্তিত ব্যক্তিকে বুভিতে বলাইরা উপরে পরনকক্ষের বাহিরে ঐ বুভি বাঁবিয়া রাধা হইত। সুকিরা বোগভ্যাল করিভেন না, আকবরের সক্রে ভড়ালোচনা করিভেন।

় ১৩। সে পুত্র বোৰাবাই প্রসৰ করেৰ ললিব চিশ্তীর ভূত্র ভূটিরে [টিকা পু: ১৬]

সলিবের বাভার বাম জোন ইভিহাসে লেখা আছে কি? বোৰাবাই তথা সিঞ্জীর বোৰবাই-নহল ক্ষঞ্জি, ইভিহান বয়। প্রবাবের পূর্বে সমাজী চিশ্ভীর ভুত্ত কুটীতে বাস করিতেন না। চিশ্ভীর বাড়ীর সংলগ্ন ক্ষিতে উহার ক্ষ নিৰ্দ্বিত হুইয়াহিল ছয়ন্য য়ল্যহাল। ইহার ভগাবদের এখন বিচালান।

১৪। ছলেৱা—ছলেৱা বেৰলাছেব-ক্ষিত্ত আছাৰাৱা প্ৰথম প্ৰথমী। লেখিকা Explanations-এই মধ্যে ভাৰতে লাসির-ই-বলক্ষর পরিচয় বিষাহেব, অবচ ছলেৱার কো পরিচয় বেন নাই। সিনেবার বহি ও নাটকার বাঁচে প্রীয়ু নাবনলার বাংলা অকুবাবে একটা পরিচয় নিবিরাহেন। তির্দ্ধিকাকে "বুলীরাক" হল্লগার বুলেলা, বনিরাহেন। হল্লগার্কা "বুলীরাক" নহেন, বুলেলখনের অন্তর্গত ওরছার হাজা বেনসাহেব-বর্ণিত ভাছানারার সীলা অবসানের করেক বংস পরে বুলেলা হল্লগাল সাবালক ছইরাছিলেন। "বুলেহ বুলীরাক" নোগল ইভিছানে "লোলার পাবর-বাটি"। ইহা সভান প্রীভিচানিক মাবনলার কোবার পাইলেন গ

সামুগতের মূহে মূলেরা মেকাবত বাঁর সহিত লকা করিরা মরিলেন, শিতার সহিত আঞা মূর্পে বন্দী হউলে জাহানারা। করেক বংসর পরে হারার হিরমুও উপহারপার নকর পাঠাইরাহেন শাহজাহানের কাহে শাহান্শাহ আলং দীর। তবন রাজকুরারীর বরস পঞ্চাশ পার হইরাহে, কিপ্রেরের উলাদনার প্রাণ কিশোরীর মত চকন। চারিদিং ফুতির পাষাণ-প্রাচীর। অভকার নামিরা আসিরাহে মুসাম্মন ক্রক্রেম্বে বসিরা আহেন নীরবে একাকিনী বেং সাহেবের ক্রিভ জাহানারা, সামনে কাগজ-কলম। তিং বগত বলিলেন, "আল রজনীতে আনি বাব না স্ত্রাহে বুলাকে বাব"—লেবিকা ইহাতেও সভ্যকে বিক্রত করিরা উল্কর্মার পরাকার্তা হেবাইরাহেন।

ভাষানার বিধ্যা অভিনরের ত্রিকার নামিরাছেন বং আলিরা, বজব্য বা প্রলাশ উভর ইংরেজী ভাষার সপ্রভিত্তাই বলিরা সিরাছেন। বাংলা 'জাহানারার আত্মকাহিনী'টে পোরালার হব বলিলে উচ্চ প্রশংসা করা হব। গোরালা হা কল মিশার, বোভলের কালি ঢালে না। আরাছের হুর্তার্গ পুত্তক-সমালোচনা করিতে বলিরা বোগল ইভিহাসের বুই বোর হচনা করিরা কেলিরাছি। বোগল বুরের ইভিছা সভতে ওরাকিবহাল বে লকল পাঠক এই পুত্তক পাঠ করিরাটে উন্নরার বলিবেন—ভূলের ভাভার নিঃশেষিত হব নাই, পুত্র বালির সর্বার অভ্যা হভালো রহিরাছে।





রাবিণ বধ----কবি কৃষ্ণচক্র মন্ত্যদার বিরচিত। গুরুষাস চটোপাধ্যার এও সভা। পু. ৫+১>+৫৪। মুলা২।• টাকা।

'সভাৰশতকে'র কবি কুক্চক্র মজমধার মহাশবের পত্র বর্মীয় উমেশ-চক্র মজমদারের নিকট সংরক্ষিত কৰির অপ্রকাশিত পাওলিপি হইতে ৰাছিয়া জীকুফ মিত এই .খঙিত নাটকথানি সম্পাদন ও প্ৰকাশ কৰিবা नकरमत्र कृष्टकाशासन स्टेशाएन। प्रहे-शिक्षानि अध्यापत्र लावक হইলেও মজুমদার মহাশরের প্রদাহিত্যে থাতি নাই, তিনি বে আবার नांहेक तहना कतिशाहित्मन छाहा । अहे আবিষ্ঠারে কবির সাহিত্য-কীর্ত্তি বে বর্দ্ধিত হুইল ভাহা নতে: পরাতন সংস্কৃত নাটকের প্রতিতে রচিত এই নাটকথানি বাংলা নাট্যসাহিত্যের একটি বিচিত্র সমূলা হিসাবে বিশেষ কৌতহলের সৃষ্টি করিবে এই মাত্র। ইহাতে লেখক আধুনিক দিনেমার প্রযুক্ত "ফ্লাম ব্যাক" পদ্ধতির ব্যবহার করিয়াছেন এবং সিনেমাসকত দশুপরিবর্তনে স্থান ও কালের বাধা গভান করিরা এক আশুর্বা ফ্রতগতির সঞ্চার করিরাছেন। মাত্র c-Ib- প্রচার মধ্যে সমগ্র রামারণের মূল দশ্রাবলী পাঠকের চোধের সামনে আবর্ত্তিত হর, ইহা বধেষ্ট কৃতিছের পরিচারক সন্দেহ নাই। কিন্তু শুধু ঘটনা লইরাই নাটক হর না, দৃশ্র হইতে দৃশ্রান্তরে চরিত্রগুলিরও বিকাশ ও गतिगिष्ठि धारतासन। **এই ना**हेटक छाड़ा इत नाहे, यखताः हेटा অভিনয়োপবোগী নতে। ভাষা ক্রিয়াপদে প্রধানত: চলতি হইলেও অভাস্থ ছক্ষ বিশেষ বিশেষণে কণ্টকিত। মোটের উপর, এই আবিফারের ঐতিহাসিক বুলা আছে বীকার করিতেই হইবে। সম্পাদক জীকুফ মিত্র मीर्ग "मन्नामरकत्र निर्दम्सन" नामा धामरकत्र व्यवहात्रमा कत्रितारहम । ক্ৰিত্ৰ তিনি কেন কৰিয় জন্মেয় ভারিধ সম্পর্কে জীবনীকার ইন্দুপ্রকাশ बरमार्गशास्त्रक मक ১২৪৪ সন এছণ ना कतिहा ১২৪১ সন এছণ করিরাচেন সে বিষয়ে কোন সক্ষত কারণ প্রদর্শন 'করেন নাই। কবি 'হিন্দু হিতৈবিণী' পত্ৰিকা সম্পাদৰ করিতেন এ ধ্যুরই বা তিনি কোধার প ইলেন ? আমরা বতদর জানি ছরিশ্চল মিএই ইহার সম্পাদক ছিলেন। 'রাবণ-বধ' গিরিশচন্দ্র অমিতাকর ছব্দে লেখেন নাই, ভারা অমিতাকর-গৈরিশী ছলে লিখিরাছিলেন। ছঃখের সহিত শেবে একটি অমুযোগ না করিয়া পারিতেছি না, বইখানি অবদ্ধ-সম্পাদিত, বহু মুদ্রাকর প্রমাদে ৰুক্টৰিত।

#### **এ**বজেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

আবৈর্ত্ত — এই লুকুবৰ দান। গণ-দীপানন পাৰ্দিনাস, ১৭-এ
শাপান সার্ক্লার রোড, কলিকাতা-৪। দাম হুই টাকা।

একট মন্দ্রভাগা হেলের অবস্থা-বিপর্বারের কাহিনী এই উপভাবে
চিত্রিত হইরাছে। নানা চরিত্র ও ঘটনার সমাবেশে আবর্ত স্টের প্রমানও ইহাতে আছে—সে নব একান্তই বাহিরের দিক, নারকের মনোলগতে এই বিপর্ব্যয়ের হাপ সামাত মাত্রই পাওরা বার। গলটি আগাগোড়া সম্ভাব্যভাবে গড়িরা উঠিয়াছে। মাবে মাবে মুল সক্ষ্য বিচ্যুত হইরা বেশ থানিকটা দুরেই সরিরা পিরাছে। পরিশেবে অব্তা সম্ভ চরিত্র ও ঘটনা মিলিয়া মধ্যেশ সমাপ্যেবং হইরাছে।

সভাব্য ৰাণীচিত্ৰের প্রভাবই এই ধরণের গল-রচনার মূল কারণ বলিরা মনে হয়। ভারভাবে সব বাণীচিত্র আমানের বর্তমানকে শীড়িত ও ভবিত্তকে আশাশৃত করিরা তুলিভেছে—এটি তাহাদের সংগাতীর নহে। ইহাতে সাহিত্য-স্টের অবকাশ বণেষ্ট ছিল লগনকে ছারাছবির রাজ্যে ভিডাইরা দিবার তাডাই সে সম্ভাবনাকে নষ্ট করিয়াছে।

আৰ্থিক লাভকে মুখ্য উদ্দেশ্য করিরা সাহিত্য-রচনাকে বিষম বাাধি বলিয়া মনে করা যাইতে পারে। আঞ্চকাল এই ব্যাধির প্রকোপটা বেন বৃদ্ধি পাইরাছে। এই বিষম বাাধিতে আফ্রান্ত লেখকগণ কিভাবে নিজেকের ক্ষমতার অপবাবহার করিতেহেন বর্তমান প্রক্রধানি তাহার প্রমাণ।

আমি ছিলাম—গ্রীনরেশচক্র দেবভপ্ত। বেনারেল প্রিন্টার্স এণ্ড পাবলিশার্স লিমিটেড। ১১৯, ধর্মতলা ষ্টাট, কলিকাতা।

বাংলা কথা-সাহিতো নরেশচন্দ্র দেনভথের পরিচয় দেওরা বাহলা।
উপজাস রচনার তিনি সভামুগতিক পছা অমুসরণ করেন নাই—কোন কোন ক্ষেত্রে রীতিমত ছংসাহসের পরিচয় দিয়াছেন। সেই সব লইরা এফকালে বাদবিতপ্তার অন্ত ছিল না। আন্ধ পরিপত বরুসে তাঁহার বচনার সে বিজ্ঞাহের হ্বর নাই, ভূরোদর্শনে তাঁহার দৃষ্টিভলীর পরিবর্তন ইইয়ছে। আলোচা উপজ্ঞাস্থানি তাহারই নিম্পন। এটি উপজাস বইলেও অভীত মুভি-উল্পাইনের মধা দিয়া বাত্তবক্ষেই বেন নিষ্ঠাভরে অমুসরণ করা হইরাছে। ইহাকে জীবন-মুভি বলিলেও অভ্যাক্তি হর না।

# ভারত রাষ্ট্রতন্ত্র

## बीठाक्ठ टिंभूकी

Indian Constitutionএর বাংলা ব্যাখ্যা

···এই গ্রন্থটির অপরিদীম উপকারিতার কথা অ**খাকার** করা বার না। — মুগা**ন্তর** 

···দেশের একটি প্রকৃত অভাব প্রণ করিয়াছেন··· এ পুস্তকের বহুল প্রচার বাস্থনীয়। — দেশ

...Written in a fascinating and chaste language.....the author's approach and presentation.....clear and vivid. — Modern Review.

দাম আড়াই টাকা, ডাকমাওল আলাদা।

এষা পাবলিশিং কোম্পানী ১৯০সি, রাসবিহারী এভিনিউ, কলিকাতা-২৯

এস, সি, সরকার এগু সন্স্ লিমিটেড
> সি, কলেজ কোরার, কলিকাতা—১২
প্র অস্তান্ত লোকানে পাওয়া বায়।

এ প্রবেষ নায়ক বান্ধ্রের পারে বিল্লা পৃথিবীকে থানিকটা
নিরাসক দৃষ্টিতে দেখিরাছে এবং বিচার-বিরেষণের যারা আত্মবরপাট
চিনিরা লইবার চেটা করিয়াছে। ধনজনসমূদ্ধ সংসারে ভারার সলী কের্
লাই—কের্ ভারার সন্মান করে না, ভাই অভীতকে অভার প্রেরে, মনভার
আঁকড়াইরা ধরিয়া বর্ত্তনাধনে উপেকা করিবার প্রয়াস ভারার মধ্যে
পাওয়া বার। ইহাতে সরের প্রস্থিত কিনুরি পরিপুরক হিসাবে প্রকুলার
লাহত হর না। নারকের অপূর্ব ইন্দার পরিপুরক হিসাবে প্রকুলার
চিন্তরের অবভারণা। ভারার দেশপ্রীতি ও বলিঠ সমাজসঠনের প্রচেটা
ক্রিভিড কইরাছে। এই আল্লপ্রতির চারতের পাশে কাসিয়া ইন্ডাইলাছে
এক নমভামনী নারী—মণিকা। উভরের অকৃত্রিম অমুরার ও মুংখ্রবেশর
নহত্তে কাহিনী হইরাছে উজ্জন।

मूबन ७ अष्ट्रनाडे अन्त्रनीय।

পূর্ণচৈছে न — श्रेजिन मिनी। यहात्र गहिरासी। २०॥, वर्षका 'मन क्षेत्र, करिकारा। मुना हुई है। १।

তিনট নন্নারার অন্তরে ভালগাগার আবির্ভাব ও বল্প এবং অংশ-ভাগের উপর সের লেমকে প্রতিন্তিত করার করণ-কাহিনা এই উপন্তাস-আনির বিংহবন্তা। এই বংশের কাতিনা নেশী-বিদেশী উভার সাহিত্যেই প্রচুর আছে। অভিনা প্রকাশভাসার কৌশলে প্রাহন সন্ধানত বিদ্যাস সার্থক চইয়া উঠে। কিন্তু আলোচা উপন্তাসধানিতে তেমন বৈশিষ্ট্য চোধে পড়িল না। তবে ব্যহারা তথু সময় কাটাইবার করা সর পড়িতে ভালবাদেন – এই পর ভার্দের চিন্তবন্ধন ক্রিতে সারিবে ব্লিয়া মনে হয়।

खेद: मशन मूर्याशाया



দাদ্বাণী---- এবোরেশচক্র মজুবদার। বীণা লাইত্রেরী। ১৫০ কলেজ কোরার, কলিকাতা-১২। বুলা ১০ টাকা।

গ্রন্থকার স্থাবুগের বিখ্যাত সাধক দাদুর অসরবাদী হইতে বাছিয়া কেড় শতট বাংলা পঞ্জে অসুবাদ করিয়াছেয়। তাঁহার অসুবাদ প্রাঞ্জন ও সরস। ইহার সাহাব্যে পাঠক মূল সোক্তলির রসাধাদন করিতে পারিবেন।

খুসির খেয়াল-- এইক্লান আচার্গ চৌধুরী। ৮১৩, হরিশ চাটার্কি ট্রট, কলিকান্ডা-২৫। মলা আডাই টাকা।

খেরাণ, সন্দেহ নাই। আধুনিকভার বনক দেওরা কবিভার বই। কোথাও মনোবিজ্ঞানের ছারা, কোথাও বালবিজ্ঞাপের চমক। ভাবুকতা নাই, ভাবালুডা আছে। বে বুলে শঙীরের ফ্লাভি আর মনের অমুভূতি লোকে হালুণা হাওরার সঙ্গে শুলে উড়াইরা দিতে চার, হরতো সেই বুলেই উপযুক্ত ভটা।

ভানাগার ভেদে আদে নাইটক্ইনের গন্ধ—
এমারেলিব, পৃমিগা, রাভি'ফ্লাবা।
ফেরালের গায়ে একটা টিকটার্ব—
প্রাণাড়ের (१) কু'মবের বাচ্চা।
মন্তব,ড়া হা।
বরেছে চেপে টু'টি

# সভভা, কৰ্ডব্যমিষ্ঠা ও কাৰ্য্য কুশলভার নিম্নন ব্যাক্ত অফ্ বাক্তভা লিমিটেড

বাংলার ট্রব্যাহিং অগতে বিরাট বিপর্যর সংস্কৃত ভারত সরকার হইতে পাঁচ লক বাট হাজার টাকার শেরার বিক্রয়ের অস্থ্যতি পাইয়াছে। শেরার বিক্রয় সংক্রান্ত বোষণা শীমাই বধারীতি প্রকাশিত হটবে।

চেনারম্যান—**শ্রীক্রপরাথ কোলে** ম্যানেকিং ডিরেটার—শ্রীহরিদাস ব্যামার্কি

# ছোট ক্ৰিমিনোনের খব্যৰ উৰৰ "ভেরোনা হেলমিন্থিয়া"

শৈশবে আমাদের দেশে শতকরা ৩০ জন শিশু নানা জাডীর ক্রিমি রোগে, বিশেষতঃ কৃত্র ক্রিমিডে আক্রান্ত হরে ৩র-যান্ত্য প্রাপ্ত হয় "ভেরোকা" জনসাধারণের এই বছদিনের অক্সবিধা হুর করিয়াছে।

ৰ্ণ্য—ঃ খাং শিশি ডাং মাং নহ—২॥ আনা।
ভবিত্ৰেন্টাল কেমিক্যাল ভৱাৰ্কস লিঃ
১৷১ বি, গোবিস্থ আড্ডী বোড, ফলিকাডা—২৭
নোৰ—নাইৰ ৮৮১

#### পুত্তক-পরিচর

বেৰ ৰুগোলিনী আধিসিনিবাৰ টু'ট চেপে গোঁকহীন গোঁকে বিচ্ছে চাড়া '" কাব্যের ট ট কেহ চাপিরা ধরে নাই তো গ

विशादक्यनाथ मृत्यांभाशाग्र

বিজ ( প্রথম বঞ্জ ) — ইলিয়া এরেমবুর্গ। অন্মরাদক — এঅপোক অহা ভারতী লাইবেরী, ১৪৭, কর্ণবেরালিস ট্রাট, কলিকাতা-১। বলাচার টাকা।

"ৰড়" এবেনবুৰ্গের 'ইপ্ন' নামক ইালিন প্রস্থারপ্রাপ্ত বিধ্যাত উপভানের বলাসুধান। বিংশ শতান্দার প্রথম ভাগে বিধ্যাপী মহাবুদ্ধের বে প্রচন্দ্র বড় বহিনা বাহু তাহারই পটভ্যমিকার উপভাসধানি রচিত।

অতীত ও বর্ত্তমান বৃশের বৃশ্বর পছতির মধ্যে বিরুটি পার্থকোর স্পন্ধ হইরাছে। তথন বৃদ্ধ গুইটি বিষদমান দলের মধ্যে সীমাবদ্ধ থাকিত। একটা সহজ্ঞ সংল পথেই ছিল ভাষার গতি, কিন্তু বর্ত্তমান বৃদ্ধ অত্যন্ত অচিল আকার থাবপ করে। আজ ইবা তথু একটি দল বা জাভিতে সীমাবদ্ধ থাকে লা, পৃথিবীময় ছড়াইটা পড়ে। তাই পালার্ডা সাহিত্যে অনেক ক্ষেত্রে পট্টিকা এবং বিষয়বন্ত উল্লয় দিক দিলাই উপকাসাদিতে অভিনরত্ব পরিলক্ষিত হইতেছে। উপকাশের ঘটনা ব্যৱপানিস হানে আবদ্ধ নাই—বিস্তৃতিলাভ করিরাছে। এরেনবুর্গ একথা তথু অসুক্রই করেন নাই, দে অসুকৃতিকে সহজ্ঞ এবং বাভাবিক ভাবে প্রকাশ করিরাছেন

"পারীর পত্রে", আর তাঁর দে প্রচাস পরিপূর্ণরশে সাক্ষ্যলাক করিবাহে
"কড়"-এ। লেপক শুধুষার ঐতিহাসিক মন্তিরকেই একয়ার উপজীবা
হিসাবে প্রহণ করের নাই। তিনি বেয়ন আধুনিক অভিনয় সংগ্রাবের
জটিলতর রূপকে বৃথিতে পারিরাচেন, তেমনি প্রতাক্ষ করিয়াছেন তার
লানবীর বীভংস্তাকে। তিনি নিজে এই বৃত্তে বোগদান করিয়া,
আধুনিক বৃত্তের প্রকৃত ব্রাপের সভান পাইরাচেন এবং অপরিসীর
লয়দ বিরা প্রত্যেক্টি মাসুবকে চিত্রিত অরিয়াহেন—কোষাও ভাষা
বুলা দিতে কাপি। করেন নাই। এত হিচিত্র মাসুবের ভিড়ের মবোও
তিনি নিজের আসল সন্তাকে হারাইরা ফেলেন নাই। জাঁর নিপূণ
তুলিতে প্রত্যেক্টি চরিত্রের বৈশিষ্টা পরিপূর্ণভাবে ফুইরা উটিবাছে।
বেমন পারীর ভস্ব স্মালকে, তেমনি লাগিরে আর বাটি, মালো এবং
ল্যুই, নিভেল, তুমা, কেলার, হিন্তা, সালি ও সাপ প্রভৃতি সকলকেই
লেপক একই দৃষ্টভালীতে দেখিয়াছেন। পাত্রপারীতি, য০ বাধিবার আল্কাল – সে যর ভালিরা বাধ্রার দক্ষন
বুংব, লোনবিভিন্ন উরি চির্যার আল্কাল – সে যর ভালিরা বাধ্রার দক্ষন
বুংব, কোনকিছিই তার চের্যা এডার নাই।

ৰা:লা অমুৰাৰ-সাহিত কে পুষ্ট কঙিতে বাঁহারা বড়বান হইরাছেন শ্রীআশোক গুড় তাঁহাদের অগুতম। আলোচা পুঞ্চবানিও নিপুৰ অমুবাৰক হিসাবে তাঁৱ ফুনাম অগুৱ হাবিবে। তাঁহার ভাষা সহজ্ঞ সূত্রল অখ্য বেগবুড়ী, বলিবার অগুও চিন্তাক্ষ্ক ।

ত্রীবিভৃতিভূষণ গুপ্ত



জী জ্বীচণ্ডীতত্বসুবোধিনী—(১ম, ২র, ৩ম ও ৪র্ব ৭ও)
ক্রিবেজেনাথ চটোপাধার সম্পাদিত এবং ১৭-নি, জ্রীনোহন লেন,
কলিকাতা-২০ হইতে সম্পাদক কর্ত্বক প্রকাশিত। সুল্য বর্ণাক্রমে
১০০, ১০০, ১০০ ও ০০ আনা।

আলোচা গ্রন্থের প্রথম খণ্ডে এবিচন্ডার চরিত-এরের এবং অর্গনা, কীলক, কবচ ও বৈদিক দেবীসজের সংক্ষিপ্ত আধ্যান্ত্রিক তাৎপর্ববিরেশমুক্ত সরল ব্যাখ্যার সহিত বটুচক্রজেন-রহস্ত সরিবিট্ট হইরাছে।

দিঠীর বঙে শ্রীশ্রীজনস্মাতার দীলামাহাত্মা, তাঁহাকে লাভ করিবার সাধন-পদ্ধতি, চণ্ডীপাঠের নিরম, অর্গনা, কীলক কবচ ও দেবীপ্রক্রের প্রতিপাত মূল বিবরের আলোচনা এবং মুর্তিপুলা-রহস্ত বণিত আছে।

তৃতীয় বৰে এত্ৰীতভাৱ প্ৰতি লোকের বলাসুবাদ এবং সুবোধিনী নামক বিশেষ বাাধা। সন্তিবেশিত হইয়াছে।

চতুর্থ থকে পাঠবিধি, বৈদিক রাত্রিস্থক ও দেবীস্থকসহ বড়ল সংগণতী চন্ত্রীর মূল সংস্কৃতরোকাবলী প্রদণ্ড হইরাছে। এই চারি থক্ত প্রছে লেথক শ্রীপ্রীচন্ত্রীমাহাল্মা কীত'ন করিরাছেন। চন্ত্রীর বহবিধ সংস্কৃত টীকা বা সাধনসমরাদি বৃহৎ বাংলা পুশুকাবলীর মর্মে নিবাটন করা সাধারণ পাঠকের ছংসাধা, কিন্তু শ্রীপ্রীচন্ত্রীতত্ত্ব স্থবোধিনীর বধোচিত সংক্ষিপ্রসার পাঠ করিরা পাঠকমাত্রেই বিশ্বজননীর অপার লীলামাধুরী মর্মে মর্মে অসুক্তব করিতে পারিবেন: চতুর্থ থকে বৈদিক দেবীস্থক্ক চন্ত্রীপাঠের অক্টে পাঠারণে প্রদর্শিত হইরাছে, কিন্তু বৈদিক রাত্রিস্থক্ক ও দেবীস্থক

চঞ্জাপাঠের পূর্বেই পাঠ্য বলিরা এ পর্বন্ধ প্রকাশিত প্রার সকল চঞ্জীতে নির্দেশিত। শত বারাহী ও মরীচিতত্ত্বের বিধিবাক্য পৌরাধিক এবং তাত্ত্বিক স্কাফি বিবরেই প্রবোজ্য; কিন্তু পৌরাধিক চঞ্জীর মূল আকর ব্রেকীর স্কাফি বেদের প্রাচীনছ ও সনাতন ধর্মের প্রতি প্রভা রাখিরা অত্রে পাঠই সমীচীন। চঞ্জীর প্রথম চরিতের প্রসিদ্ধ মহাকালীর ব্যানমন্ত্রেও প্রচলিত রীতির ব্যাতিক্রম দৃষ্ট হর, শেবের ছুইটি চরপকে পূর্বাপর উপ্টা করা হুইরাছে। ইহাবে ভুল তাহা মধ্যমচরিতের মহাকল্মীর এবং উদ্ভরচ্বিতের মহাক্রমতীর ধ্যানবর দৃষ্টেই শাষ্ট প্রমাণিত হর।

এউমেশচন্দ্র চক্রবর্তী

শিবরাত্রি-পূজা ও কথা—এ উ ষেণ চ ল চ ক ব তাঁ। এত্রীজানক্ষরী কানীমন্দির, ৮৫, জামহাই ট্রীট, কলিকাতা-১। বুলা দশ পরনা।

প্রছ'কার ফ্লড বুলো বিবিধ পুলা ও ব্রতক্ষা প্রকাশ করিয়া হিন্দু বাঙালী গৃহছের বিশেব উপকারসাধন করিতেছেন। আলোচা পুতকের সোড়ার দিকে শিবরাত্রির পূলা সম্বন্ধে বে তথালোচনা সমিবিই হইরাছে তাহা লেখকের গভীর শাল্লজানের পরিচারক। এই পুতকে গরার ও জিপাই হন্দে ব্রতক্ষা এবং লিকাইকন্, প্রীপ্রীভ্যানক্ষতেরবল্লোত্রন্, শ্রীপ্রীভর-পোরী আরতি এই তিনটি সংস্কৃত তোলে প্রদন্ত হইরাছে!

ঞ্জীনলিনীকুমার ভজ





ডক্টর কালিকারঞ্জন কামুনগোর সম্মান লাভ

'রয়্যাল এসিয়াটক সোলাইট অব বেলল' সম্প্রতি লক্ষ্ণে বিশ্ববিভালবের ইভিহালের অব্যাপক ভট্টর প্রকালিকারপ্রম কালুমর্গোকে ভারতের মব্যবুরের ইভিহাল সক্ষকে ট্রাহার উল্লেখবাল্য গ্রেগণার অভ 'লার বছ্লাব সরকার' পদক প্রধান করিয়াছেন। বাংলার ইভিহাল সক্ষকে অব্যাপক কাছ্ম-গোর গ্রেষণাও বিশেষ মূল্যবান। এভব্যতীত ভিগ্লি, অরপুর রাজ্য সক্ষকে তাঁহার আবিদ্ধত ভব্যাদি যোগল-রাবপুত ইভি-



মুকুর একালিকার্থন কামুনগো

হাসের একট অহকারাছের অব্যারের উপর অভিনব আলোকপাত করিতে সক্ষ হইবাহে। অব্যাপক কাহনগো একজন
শক্তিয়ান বাংলা ঐতিহাসিক সন্ধ-লেবক। তিনি শের
শাহের ইভিহাস, ভাঠবের ইভিহাস, হারা শোকোর ইভিহাস
প্রভৃতি ইংহেজী পুত্তের প্রশেষা।

অব্যাপক কাল্নগো আচার্য্য বহুনাবের একক্স পুরবো ও ব্যির শিক্ত।

ভারত দেবাশ্রম সঞ্জের দাধারণ দমিতির বার্ষিক অধিবেশন

স্থাতি স্থা-স্ভাপতি গ্ৰীবং দাবী স্চিদানক্ষী বহারাধ্যে স্ভাপতিত্ব সংকর কালিকাভার প্রবান কার্যালরে ইহার সাবারণ স্বিভিন্ন বার্থিক অবিবেশন অষ্টিভ হইবা গিরাছে। বজ্যের সাবারণ সম্পাহক স্থানী বেদানক্ষী বহারাক সংকর

ৰিভিন্ন কৰ্মৰাকা পৰ্যালোচনা ক্রিমা ১৯৪৯-৫০ সালের অষ্টিত কাৰ্যাৰলীর নিয়লিখিত সংক্রিপ্ত বিবরণ প্রাদান করেম—

আলোচ্য বর্বে ৬ট প্রচারক-দল বংগো, বিহার, উড়িছা, মধ্যপ্রদেশ, উভরপ্রদেশ, আসাম, বোঘাই প্রভৃতি রাজ্যে ভারতীর সংস্কৃতির মহান্ আদর্শ প্রচার করেন। সব্দ হইতে একট সাংস্কৃতিক বিশন দক্ষিণ আমেরিকা ও পশ্চির ভারতীর বীপপ্রতে হিন্দুবর্শ এবং সংস্কৃতির ব্যাপক প্রচার করেন।

গরা, কাই, প্ররাগ, রুদাবন, পুরী প্রভৃতি ভীর্থক্সভলিতে দল আলোচ্য বর্ষে বছ ভীর্থাগ্রীকে অর্থাহার্য
করিবাছে। এই বংসর কুকুক্তেরে একট নুতন আশ্রব
প্রতিপ্রত হইরাছে। আলোচ্য বর্ষে দতকর্তৃক ২০ট প্রাথমিক
বিভালর এবং ১ট বিদ্যার্থী-তবন পরিচালিত হইরাছে।
সল্প হইতে বিভিন্ন ভাষার ভাতিসঠনবুলক কর্মপন্থার নির্কেশসবলিত ২০বানি পুভক, হইবানি মালিক পরিকা ইত্যারি
প্রকাশিত হইরাছে। ভারবত হারবারে শরণার্থীদের কর একট
বিদ্যালর ও কুটিবলিল্ল শিক্ষা বেওরার কর শিল্পান্যর হাপম
করা হইবাছে।

এই বংসত্র গরা, ভানী, সাগত্র, ছত্তিহার প্রভৃতি ভীর্বছানে বিভিন্ন বেলার সেবাভার্য করা হইরাছে।
সক্ষর্ভৃত আসারে ভূমিকম্পে বিহন্ত অঞ্চলেও সেবাভার্য পরিচালিত হয়। এতহাতীত সহস্রাধিক ব্যক্তিকে কলেরা-ও বসত্ত প্রতিবেশক টকা এবং ইঞ্জেলন দান, ৪০ সহস্রাধিক বোনীর চিকিংসার ব্যবস্থা করা হয়। রাণাবাটে প্রতীক্ষাণ শরণাবাঁদের কত একট সদারত বোলা হয় এবং শিরাক্ষর, বন্দরা, ভারমও হারবারে অকটি শিল্পভারতন প্রতিষ্ঠাও এই বংসরের একটি উল্লেখনায় ভার্য। ভাগ হাভা গরা সেবাপ্রবেশ্ব আন্তর্ম বংসর শরণাবাঁদের আন্তর্ম ও সাহাব্যদান করা হয়।
বছ লোককে হিন্দুবর্দ্ধে প্ররাদ্যেন, বৈধিক বজ ও বিভিন্ন প্রভার বর্দ্মির অনুষ্ঠানও স্কুভাবে সম্পর হইরাছে।

আহব্যাহের হিসাব নিয়লিখিত রূপ :

আর—( সাধারণ ভহনিল ) ৪৯৩,৪০৭৸০ ; ব্যর ২৫৭০৭ টাজা, সাহাধ্য-ভাভারে আর—১১৪৪৮৬।/৩ এবং ব্যর— ৪১৫৪২।৯ পাই। প্রভাকর চট্টোপাধ্যায়ের ডিগ্রি প্রাপ্তি
বাদি বিশ্ববিভাগর কলিকাতার হাক্তবৈভ কবিরাজ শ্রীপ্রভাকর চট্টোপাধ্যারকে ভট্টর অব সাধাল (আয়র্কের-



**बिश्रकाकत हार्धेशभाशास** 

বৃহস্তি ) উপাৰি প্ৰদাম কৰিবাছেন। তাঁহার গবেষণার বিষয়বস্তু ছিল "সায়াল অব পালস্"।

## কবি ভুক্তপ্রধরের স্মৃতি-তর্পণ

প্রভাৱ কৈ ক্ষেত্রতী শনিবার ক্ষিত্র ভূক্ষণর স্থৃতিংক।
সমিতির উভোগে বসিহেটে টাটন হলে বাংলার স্বগ্রতিই
ক্ষিত্রকার রাষ্টোব্রী মহাশারে একাদশ মৃত্যু-বার্ষিকী
উপলক্ষে এক বিরাট স্থৃতি-তর্গন অনুষ্ঠানের আবোৰন
করা হর। প্রবাসীর সহস্পাদক, বিশিষ্ট সাহিত্যিক
শীর্ক বোগেশগল্প বাগল মহাশার অনুষ্ঠানের পৌরোহিত্য করেন। ভূক্ষণর স্থিত্রকা সমিতির সম্পাদক শীর্ক বতীক্ষনাথ মুবোপানায় সাহিত্যাক, বিভাবিন্যাল মহাশার ক্ষিত্র স্থৃতিহকাকল্পে সমিতির একাদশবর্ষব্যাণী প্রচেষ্টার বিশল বিস্তৃতি প্রদান করেন।

लाव नाड मक बर-बादी कवित पाकि-बानाव देनविक

হটবা নিজেকের অভারের প্রভা নিবেনন কাংন। ক্ষির বিভিন্ন কান্যারলী, অহবাদ-সাহিত্য, প্রকাশী, নীভাকার, বেবকুত, চঙীকারা, বৈক্ষর প্রারালী প্রভৃতি এবং সামাজিক ও লোকসেবক হিসাবে উহার উন্নত হাররের ভাবপ্রবেশতা, উহার বিলাসবাসমহীন নিবলস জীবনবাপন, ইংরেজী সাহিত্যের প্রাঞ্জন মর্বাহ্মবাদে নৈপুণ্য প্রভৃতি বহুরুণী প্রতিভার আলোচনা কহিরা প্রবৃত বোগেশচন্দ্র বাগল একট সাল্যার্ক ভাষণ দেন। প্রবিভয়নারর মঞ্জন, মঃ বোশলাল, প্রবিবেশ্বর বজ্যোপান্যার, প্রপ্রেশ ভট্টার্চার্যা প্রভৃতি ব্রহিত ক্বিতা, প্রবৃত্ব ও ব্রহ্নার বায়া প্রক্রমব্বের স্থতির প্রতিভ



कवि कूक्ववत दावटकोवुको

শ্রভাঞ্জি নিবেদম করেন। সভার ছুইট প্রভাব গৃহীত হয়। প্রথম প্রভাব হিল—বদীর সাহিত্যপথিবদে কবি ভ্রভাবরের একবানি তৈলচিত্র হকার ব্যবহা সম্পর্কে বিভীর প্রভাবে ওাঁছার কাব্যরাকি ছইতে বিশেষ বিশেষ অংশ আহরণ করিবা একবানি সকলম-গ্রহ সম্প্রধার কবা হয়। ভূকদম্বরের কবিতা ছইতে প্রবোজনাপূর্বকে ক্রেফট সমীত ইত হয়। ওাঁহার রচিত প্রাব্দীয় ক্তক্যংশ নইরা দীর্ভন্ত করা ছইবাহিল।



#### চন্দ্রশেখর সেন

ক্লিকাভা হাইকোটের প্রবীণ সরকারী উক্লি চল্লপের সেন পত ১৭ই নাব ৫৮ বংসর বরণে তাহার কলিকাভাহ বাসতবনে পরলোকগনন করিবাছেন। তাহার পরিবার-পরিজন চট্টগ্রাবের সমাজে একটা বিশিষ্ট স্থান অবিকার করিবাছিলেন। বলবিভাগের পর তাহারা হল্লক হইরা প্রিয়াহেন।

বে গ্রুল তাণ থাকিলে আইন-ব্যবসারে উন্নতিলাক করা বান চল্লেখবের ভাছা পূর্ণমালাই ছিল। এতহাতীত তিনি বেলাগুলার বিশেষ অপুরাসী ছিলেন এবং গত ভিন বংগর বাবং বোহনবাগান স্লাবের সাবারণ সম্পাদকের কর্তব্য পালন করিবা গিরাছেন।

বিশ্বী, সমালাপী, সকল সংকাৰ্থ্যে উৎসাহী এই ব্যক্তির বিয়োগে বাঙালী সমাধের অনেকে ব্যধা অমুভব করিবেন। উচ্চার প্রাধিত লোক লাভ হউক।

# त्रत्भवस (भेर्त्रो

অসুশীলন সমিভিত্র আর এক জন বিশিষ্ট ক্মাত্রি ভিত্রোবাদে

আনরা আত্মীরবিরোগ-ব্যথা অপুতব করিতেছি। বিপ্লবীভীবনের অনিরম ও অতিরিক্ত পরিপ্রমে রমেশচলের
বাহ্য অকালে মই হইরা বার। মরমনসিংহ—বাজিতপুরের এক সম্পন্ন পরিবারে তিনি করপ্রহণ করেন। বদেশী
র্পের অব্যবহিত পরেই তিনি বিপ্লব-আন্দোলনের সঙ্গে ভাত্তর
হইরা পড়েন। রমেশচলের পুত্র ও পরিবারের প্রতি আবরা
সমবেদনা প্রকাশ করিতেছি। তাহার আত্মা শাভিলাভ
করক।

#### কিরণচন্দ্র ঘোষ

গভ ২৬শে পৌষ টেটস্ব্যানের ভ্তপ্র প্রবাম রিপোটার কিরণচক্র বোষ ৬১ বংসর বরসে দেহত্যাগ করিয়ছেন। ১৯১৭ শ্রীষ্টাকে ভিমি রিপোটার হিসাবে উক্ত পঞ্জির বোগদান করেন। পরে প্রবাম রিপোটারের পদে উরীত হইরা ১৯৪০ সাল পর্বান্ত কার্যো নির্ক্ত থাকেন। ঐ বংসরই কর্ম হইতে অবসর প্রহণ করেন। সাংবাদিক মহলে ভিমি স্পরিচিত ও অন্প্রির হিলেন। আমরা তাঁহার পরিবার-পরিভ্নের সভে শোকে সম্বেদনা প্রকাশ করিতেছি।



#### ম্যাক্সিম লিটভিনফ

লোভিবেট প্রচারণত্র "প্রাভদা" বোষণা করিবাছেন বে, নোভিবেট রাঠের ভূতপূর্ব পরবাঠ-বরী লিটভিনক গত ১৭ই পৌষ বেহভাগ করিবাছেন। তাঁহার সংক্তিও পরিচয় নিয়ে বেওরা গেল:

ভিনি ১৮৭৬ সালে বিষেশইকে ক্ষরপ্রহণ করেন। সভর বংলর বহসে ভিনি কেছালৈভরণে লেনাবলে বোগদান করেন। লেনাবলে নির্ক্ত থাকাকালে ভিনি মার্কলীর বভাবে বিষালী হইরা উঠেন। লেনাবল ভ্যাগ করিরা ভিনি কিরেভে লোভাল ভেবজ্যাইক পার্টভে বোগদান করেন। ১৯০১ লালে উক্ত পার্টর অন্যান্য সক্তগণের সহিভ লিইভিনকও বেগার হন। কিছ কারাগার হইভে পলারন করিবা ভিনি ক্ইজারল্যাওে চলিরা বান। কিছুদিনের বভ ক্ইজারল্যাওই ভাহার প্রবান কর্মভেক্ত হইরা উঠে। ১৯০৩ লালে ভিনি পুনরার রাশিরার প্রভাবর্তন করেন প্রবং ভ্যবনি রাশিরাভেই ভিলেন।

পূৰ্ব-ইউরোপের বিভিন্ন বেশের সহিত চুক্তি সম্পাদশ করিবা তিনি রাশিরার প্রভাব বৃত্তি করিবাছেন। ১৯৩৭-৩৮ লালে হিটলারী আক্রমণের বিরুদ্ধে সামরিক চুক্তিতে আবহ হইবার ক্ষ ব্রিটেন ও ক্রালের নিকট তিনি বে আবেষন জানাইরাহিলেন, ভাহা বিদি গৃহীত হইত, ওবে ইউরোপের, এবন কি সম্প্র পৃথিবীর ইভিহাসের বারা জন্য পরে বহিরা চলিত।

সোভিয়েট গৰবে ক প্রতিষ্ঠিত হইলে ১৯১৮ সালের আহ্বাবী মাসে তিনি ব্রিটেনে রুপ-চ্ছ নির্ভ হন। কিছ এ সমর এেট ব্রিটেন বিনা কারণে সোভিয়েট-রাই আক্রমণ করে। ভার মধ্যে ক্রান্ড ও নার্কিন ব্রুজ্বাট্রের সমর্থন ছিল। রালিয়ার ব্রিটেশ প্রভিনিবিগণকে আটক করা হইলে প্রভিত্বাবে মাই কিটভিনককেও লওনে প্রেপ্তার করা হয়। কিছ ১৯১৯ সালের শেবভাগে কৃটনীভিক বন্দীগণকে ব্রুজ্বানের করা ইন্দ্র এবং ভিনি ব্রুজ্বাত করেন।

১৯২৫ সালে নজোভে বে নির্মীকরণ সংস্থান অনুষ্ঠিত হর, উহাতে তিনি সভাপতিত্ব করেন এবং শাভি ও নির্মী-করণ সমভা সম্পর্কে লোভিয়েট মনোভাব বিশ্ববাসীর নিকট ব্যক্ত করেন। ১৯০৯ সালের বে বালে বঁ: লিইভিনক লোভিরেট পরবাইনত্তীর পদ ভ্যাস করেন এবং বঁ: নলোটোভ উক্ত পদে
নির্ক্ত হন। ১৯৪১ সালের নবেছর মাসে ভিনি আবেরিকার
সোভিরেট রাইচ্ছ-পদে নির্ক্ত হন এবং ১৯৪৩ সালের আগই
নাস পর্যন্ত উক্ত পদে বহাল ছিলেন। ইহার পর ভিনি
লোভিরেটের সহকারী পররাই-বল্পী নির্ক্ত হন এবং ১৯৪৬
সালের আগই বালে উক্ত কার্যভার ভ্যাগ করেন।

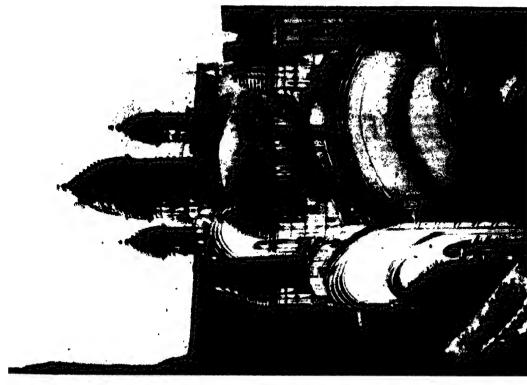
নঁ: লিটভিনক ইংরেজ ব্যারিপ্তার ভার সিডনী লো'র কভাকে বিবাহ করেন। "শাভি অবিভাল্য" ক্বাট উাহারই রচিভ।

লিটভিনকের সমরেই "ক্রিনোভিরেভের চিট্ট" ব্রিটেনের প্রথম প্রমিক সরকারকে ক্ষমতার আসম হইছে দূর করিছে সাহায্য করে। চার্চিল এই বিষয়ে অপ্রশী ছিলেন। এই চিট্টি জাল বলিরা প্রমাণিত হইরাছিল। সেইরুপ ১৯৩২-৬৩ সালে মুক্রাফ্নীতি হইছে আত্মরকার ক্ষম রামানে ম্যাক্র-ডোনাভকে রক্ষণশীল হলের সলে মিলিভ হইরা একট সমিলিভ মন্ত্রিক্ব পঠন করিতে হয়। ভদবনি চার্চিল সোভিরেটের বন্ধু হইরা পড়েন; হিটলারের ভর উাহাকে পাইরা বসে। ভার পরের বটনাবলী ইভিহাসের আদ। মিভীর বিশ্বরুদ্ধের কল আক্রেরেণ দিভেছে।

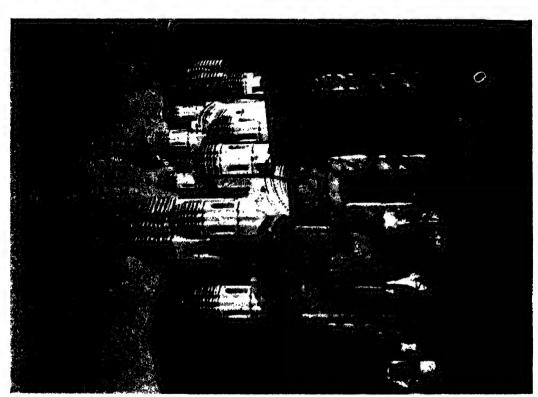
## नर्छ निन्निथरग।

ত্রিটশ-শাসিত ভারতের অভতর বড়লাট লও নিন্নিব্রো ৬৪ বংগর বরসে অফ্সাং পরলোকগন্য করিরাছেন। তাঁহার নান ত্রিটশের অধীন ভারতের ইভিহাসে বিশেষ উল্লেখযোগ্য। তাঁহার বড় দীর্ঘ (সাড়ে সাড় বংগরব্যাপী) শাসন্দাল অনেক বড়লাটের ভাগ্যে ঘটে নাই। অধিক্য এই সমরের নব্যে বছ় ঐভিহাসিক শুকুত্বপূর্ণ ঘটনা সংঘটত ত্ইবাছে। কিশন বিশন, কংগ্রেসের হারা ত্রিটশের বিক্লম্যে "ভারত ছাড় আন্দোলন" (১৯৪২), ১৯৪৩ লালের বাংলার বর্ডর ইত্যাহি ঘটনা লও নিন্নিব্রোর সমরের।

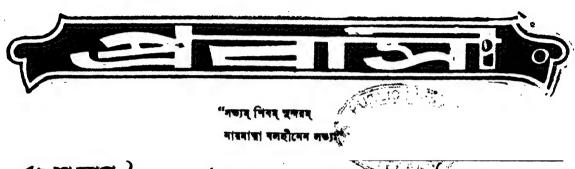
তিনি "গো-হান" একটা ক্যাশনে পরিণত করেন। তাঁহার কল একেবারে নির্থক হর নাই। বলিতে গেলে তাল-বদ্দ বিশিয়া লর্ড লিল্লিথ গো ত্রিটণ চরিত্রের প্রতীক হিলেন; "কন বুল" বাঁচ বা "বুল ডগ"—বাবা কুকুরের প্রকৃতি বানব-বেহে প্রবেশ করিরাহিল। আজু তিনি নিশা-প্রশংসার অতীত।



্ফাট উইলিয়মের দেওয়ান বিলোকরাম পাকড়াশী ফা্পিত নবরত ৩ পদর্গ শিষ্টাদল



কলিকাতা বলরাম ঘোষ স্থীটফু শীশৌভ ভব্তার্কী দেবীর লিপিছনৈ নব্যত্ন মন্দির। চুই পাশের মুইশাল ও সন্মুগের লাটামন্দিরের কিয়দে<del>লা</del> দেখা যাইতেছে



০১শ ভাগ ২য় খণ্ড 200, 5000 {

७ मरभा

# -বিবিধ প্রসঙ্গ

নির্বাচন ও পশ্চিমবঙ্গের ভবিষ্যতের রূপ

নিৰ্কাচন ও ভাগ্য-নিবল্প একই কথা—একথা সম্পূৰ্ণ সভ্যও নতে, সম্পূৰ্ণ বিধ্যাও নতে। প্ৰভাগে এই ৰে নিৰ্কাচনের পালা প্ৰায় শেষ হইবা আলিল উহাতে পশ্চিন বাংলার, ভথা ভারতের আগানী পাঁচ বংগরের ভাগ্যনির্ণরের ইনিভ বাজ পাওরা বাইতে পারে। কিছ বভটা ইনিভ পাওরা বার ভারার বিচার করা প্ররোজন, কেননা আনরা বর্ত্তানের পরিবর্তমন্ত্রীল ইভিহানের বারার দৌলার বহুর ভাগাইরা চলিরাহি। ঐ বারা আনাবের কোন্ বিতে লইবা বাইতেহে, কোবার কবন প্রবান বারারের নির্কা করিলার ভালাকেরই বা বছবাপটা সামলাইবার করভা কভটুর্—এ সকলই বিবেচনা করা প্ররোজন। আনেকে বলিবেন, "বা হইবার ভা ভ হইরাই সিরাহে, প্রথম আগানী পাঁচ বংসর নীর্বে কপালে লেবার কলাকল প্রহণ করা হাড়া কর্ত্বা আর কিছুই নাই।"

এই নিক্রতম অষ্ট্রাদের প্রেই বাঙালী বর্ডনানে চলিতেছে এবং ঐ ভারবেই লে আল "গত গৌরব হাত আসন নত বতক লাকে।" নির্বাচনের প্রেই ও নির্বাচনের বব্যে ঐ ভাবই ভারার হিল, এবং বলি ভবিত্ততেও ঐ ভাবই বাকে ভবে বাঙালীর অষ্ট্রলিণিতে "সবাগ্র" নিবিয়া উহাকে চিভার সমর্গন ভিয় আয় কর্ডব্য কিছুই নাই। এবাবের নির্বাচনে বাঙালীর ববের বে চিল্ল আয়লা ক্বিলার ভারা এক বিকে নৈরাপ্রক্রক, অত বিক্রে অতুত।

ন্নগড়ের ভাষা হাছিলা স্পষ্ট ক্থার বলিতে হর এবারের নির্মাচনে আবলা দেবিলান বাঙালীর—বিশেষতঃ পশ্চিম বাংলার বাঙালীর—বন হর শিশুর ভার অপরিণত, নর "বাহাভুরে" এত ব্রের ভার জ্যাজীর ও শৈবিল্যপ্রার । ক্ষেমা বেবিলান বাঙালী নির্মাচনের উক্তে বৃবে নাই, নির্মাচনের ভারিজন জানে বা এবং ঐ ব্যাপারে ভাষার বে কোনও অন্তর্পুর্ব ক্রিয়ের আহ্বান আহে দে বিবরে ভাষার ক্যোকও

চেত্ৰাই নাই। বাঙালী বে খাবীন লে ক্ৰাও লে ট্ৰক ক্তচা বুবিহাতে তাহা বুবা গেল না, তবে খাতহ্য হজাহ ভাহার বে কোনও থাহিত আহে লে বিষয়ে লে সম্পূৰ্ণ অচেতন।

ভবিষ্যভের বে ইলিভের কথা বলিবাহি ভাহা রহিরাছে বাঙালীর এই অঙুত বানসিক অবহার বব্য। বলি ইহা লাভিগত "dementia praecox" হব ভবে লব শেষ। না হইলে বহুত্বীর চিকিংলার বলি জরাভাব বার ভবে কিছু হইলেও হইতে পারে। আবাদের বিখাল শিক্তিত বাঙালী নির্মাচক বুদ্বিছা হিসাবে বিবেশী নির্মাচক অংশকা হোলেও অংশ হীন নহে। ভবে এরকম অবহা হব কেন ?

এবারকার নির্বাচনে নিকিত বাঙালী পুরুষের মধ্যে শতকরা দশ করও ভোট বিরাহেন কিনা সন্দেহ। আরৱা আন্দাঞ্জের
উপর নির্ভন্ন করিবা একবা বলি নাই। কলিকাভার বে সকল
অকলে শিক্তিত বর্হাবিত লোকের বাস সেবানকার, বর্জয়ায়
শহরের ও অন্যান্য ভিন-চার্লট কেলের ভোট-কল কানিবার
পরে আরৱা ঐ নিভাতে উপনীত হইবাহি এবং ঐ বিচার-কল
স্কিক কিনা ব্রিবার কর নানা হানের অনেক ভ্রানোককে
প্রার্গরিবাহি, ভাহাতেও কিক ঐ হিসাবেই আলে।

প্রয়োভরে ভরেকট বিষয়ের আই বির্থেশ পাওয়া বার।
নেগুলির পূর্ব আলোচনা এবানে করা সভব নক, কেননা ভারার
সন্মাক্ বিচার বিরাই ব্যাপার। বানিকপ্রের সম্পাক্তীরের
আরভনে ভারার স্থানের একাডই অভাব। ভর্ও কিছু বিচার
ক্রা প্রয়োক্ষ।

এক হলে অবিকাংশ তক্রলোকই বলিলেন, "বশাব বে বার লকার নেই হর রাবণ, হলে-বলে-কৌশলে ভোট ভিন্না চলে, ভোট পেরে গেলেই ভার পর সব কথা শেব। বহি ক্ষেত্র ভবে নিজমূর্ত্তি বরে, আর বহি হারে ভবে ভূব বারে।" একথার বেবিলার উপহিত আট-বশ কন তর্নোক সকলেই রোটার্ট একথত। হতে সেহে, এক্স. যা হৰার আই হবে। আৰি ভোট দি ৰাই মুশায়, ওপৰ চ্যাংচা হেলে-হোক্যায় ব্যাণাতে কি ভবলোকে বাব 9" ইড়্যাৰি ইড্যাৰি।

এইভাবে নানা মুনির নানা মত পাওৱা সেল। বোটের উপর ব্বিলার বনের বত লোক, বাহার কথার বিধাস করা বার এ রক্ষ, তাঁহাদের অবিকাংশের বিচারেই, প্রাথীরণে ইডার নাই, স্তরাং তাঁহাদের ভোট দিবার স্পৃহত্ত হয় নাই। অভ দিকে উপর্ক্ত লোক বুঁজিয়া বাহির ক্রিবার তেটা বা প্রাথীদের মধ্যে বোগাভার বিচার করা, এ হুই-ই তাঁহাদের নানসিক অবসালের ভারে সক্তব হয় নাই।

ষাদসিক অবসাদ, চিছা করার অনিকা এ তো আযাদের আতিগত ব্যাবিতে গাঁচাইরাছে। উপরত্ত আছে ভাবপ্রবৰ্ণতা, চক্লজা এবং অবশা বিরাগ (prejudice)। এই সকলের প্রতিক্রিরা ত হিলই, আরও হিল একটা অববিধান বে ভোট দিরা প্রার্থীর বাবা কর করা যার। ভোটগাতার বাবা ক্রম বা বিক্রম বে হয় সেক্পা নিক্ষিত সমাদ একটু চিছা করিলেই ব্বিতে পারেম, এবং বিচার করিলে ব্বিতেম বে, তাঁহারা ঘরে ছাণ্ডাবে বসিহা বাকিলে অপরে তাঁহাদের মাধা পরোক্তাবে বিক্রম করিতে পারে বা প্রত্যক্ত ভাবে তাঁহাদের জাতী হলরণে দিরা আসিতে পারে। কিছু চিছা বা বিচার করিবার মত বহাপাতক করে কে?

কংগ্রেসের বিরুদ্ধে বাগ আবে, অভএব কংগ্রেসের প্রার্থীকে ভোট দিব না এই বিচারে অনেক কেন্তে ভিন্ন পহী অভি
অবোগ্য লোকের নির্বাচনে প্রভাক বা পরোক সাহাব্য
করিয়াহেন অনেকে। এবারের নির্বাচনে ঐ বৈশিষ্ট্য, ভিন্ন
দলের বব্যে বোগ্যভব লোকেরা প্রায় সকল কেন্তেই হারিয়াহে,
অবোগ্য লোকই অবিকাংশ কেন্তে ভিভিন্নতে। বভতঃ এবারের
নির্বাচন জুরাবেলার পর্বাবে পঢ়িয়াতে।

বিচার চাহিরাছিলেন উাহাবেরও অবিকাংশই ছারিরাছেন।
নেইকচ হারার ভালিকার এবন বহু লোকের নাম পাওরা বার
বাহাদের সরক্ষ বিজ্ঞোভিগেন মধ্যে নাই,সে কংগ্রেন ফ্রীরই
হটন বা বারপহীই অববা মধাপহী বা বহুপ্রপ্রাই হটন।

বেশের শিক্ষিত অন্তলাকের উচিত হিল নির্মাচনে সঞ্জির তাবে অংশ সঙহা। তাহা না করার নীচ কলিবাল, চতুর ভূরাতী ও কপট তাগ্যাবেষীর বরাত পুলিরাছে। নির্মাচনে সাধারণের বিচারে সহারতা করা বাহাবের উচিত হিল ভাহারা সরিয়া বাইরা অশিক্ষিত ও অবিবেচক নির্মাচককে ভূলিয়া বিয়াবের উহাবের হাতে। পুতরাং হর হইরাছে টাকার কর বর হইরাছে ভুরাও বিধ্যা প্রতিশ্রুতির কর।

একজন বিজ্ঞেতা চাৰীদিগকে প্ৰতিশ্ৰুতি দিংছিলেন বে, তিনি নিৰ্মাণিত হইলে কণ্ট্ৰোল ভূলিৱা দিবেন বাহাতে চাৰী চাল পঞ্চাল টাকা নগ দৱে বিজ্ঞান করিয়া লাভবান হয়। বান-পছীরা ভোটারগণকে বানপছীকে ভোট দিলেই হয় হইতে নিশ বিবা নিজর ক্লবি-জনি পাইবে এই ঢালা প্রতিশ্রুতি দিরাছেন। একজন কংগ্রেসবিয়োবী অবিবাহিত ব্যক্তি বতীর প্রচুৱ স্ত্রীভোট সংগ্রহ করিয়াছেন সলে শার্থা-সিঁহুরবুক্তা এক স্ত্রীলোককে লইৱা, বে ভার "বানী"কে জেল হইতে বাঁচাইতে চায় এই কবা প্রত্যেককে বলিয়াছে।

ভাহার পর বেকী-ভোট ও যুত লোকের ভোটে ত কেল্ল-প্রলি ভরিষাতে। উপরত্ব ভোটদান ও ভোট-প্রণার নব্যে অনেক দিন—ও রাজ্ঞি—সময় বাকার রক্ষক্ষহার্শারপর বছক্ষেত্রে ইচ্ছামত ভোট উভাইরা ভোক্ষবালীর বেলা দেবাইরাত্বেন। বলা বাহল্য এই লেবের বাছকরী ব্যাপার—বে বিষরে আমা-দের সক্ষেহ্যাত্র বাই—সক্ল পক্ষেত্রই চর অন্নচর্যুগ প্রবিধা অনুধারী ক্ষিয়াতে।

নিৰ্মাচনে ভাল-ভ্ৰাচুত্তি বিধানবাভকভাত কৰা কভ বলিব ? এইবাজ বলি বে, এবাতের নিৰ্মাচন দীচভা, ভ্ৰাচুত্তি ও কুটবড্যতে পূৰ্বেক্টার সকল বেক্ড ভল করিবাতে।'

অৰ্থ একবা সভ্য নৰ বে, বাংলার বিশিত সমাৰ ইক্ষা বাকিলে ইহাকে অভ মণ দান করিতে পারিতেন না, এবং একবা আয়ও সভ্য বে, সারা ভারতে বলি কোনও প্রদেশ বাকে বেবানকার ব্যবহা পরিবলে উপর্জ্ঞ লোকের নিভাও প্রয়োজন ভবে সে এই আমানের "সমভাপৃর্ণ" হুর্ভাগা পশ্চিম বাংলা, এবং সেই সলে বলি বে সারা ভারতে যদি অবন অবহা কাহারও বাকে তবে ভাহা এই অভাগা বাঙালী ভাতির।

নিক্ষে প্রবেশে আরাক্ষে কি অবস্থা নে কবা কি কোনও শিক্ষিত বাঙালীকে বলা প্রয়োজন ? অভ প্রকেশে ভাষা কিম্নণ ভাষার পরিচর কিছু কিছু নিয়ে উত্তত অংশগুলিতে পাঙার বাইবে :

ें "देवरणंत्र वर्डवामं भागम-कींपरवद्द अ**वी**त्य *त्वरा*चन्न त्यारणंत्र

বে অবস্থা চলিতেতে-ভাষা আৰু চাহি বংগর বহিষা ভব-विद्यां । बार्मानमन्द्रवर जिन्द विशे श्रेमानिक हरेबारह । ভাহার দ্বিভ বান্তবের বিশেষরপের বিবিধ অভ্যানার ৬ Weiwamie weitem etel neum : ... nem martran थायम क्षेत्रक कार्याकाम एवं जक्त वृक्त वृक्त विवासक আক্ষিকভাবে উবিভ চুইরা ভিষেত্র পর ভিষ ভাষভত্তত चारलाविक कविवारक-कालावते भववर्षी चवाविकाभ करा-চারের ক্তক্তলি ভুচাকু ব্যবস্থা ব্যবস্থিতরূপে স্থান্ত্রে **फारवरी ७ वाजाविक बाबाद श्रविक हरेटक हलिहाटक । बाध-**ভূষের চতুদ্দিক দেখিয়া, প্রাধানসমূহে ভূরিয়া প্রত্যক্ষরণে छेशमिक हरेएछाइ (व. कीवमवादांत जबक विकारन व्यवाहांत কবিবার সমস্ত উপারশ্বলি এবন স্বাভাবিকভাবে ভারেত্রী ভারন খৰাইবা লইভেছে বে. প্ৰতিনিয়ত মাসুষের জীবনযাত্তার উং-পাতের বারা অব্যাহত চলিরাছে, কিছু প্রতিকারের ভোষত नव मारे. प्रविष्ठारबंब क्लामक चाना मारे. काटारकक इ:४. चार्यविश चारादेवात. वानवात्रथ भव माहे , कात्रव अभिवाद (WE HIR !

শন্ত জেলার অবছার দিকে ভাকাইরা এই এক বারা দেবিতেছি। জেলার বাছের ব্যবছা—জেলার বল, জলল, বাজার ও বন্টনের ব্যবছা—জেলার শিকা, শালম, আইম আলালভ, অবিকার ও অপরিহার্থ্য সর্বরাহসমূহের ব্যবছা— সকল বিভাগে, সকল বিষয়ে এক ব্যবছিত অভ্যানার, অনানার ও শোষণ বাছ্যের কীবদকে নিভা উভ্যক্ত ও হ্রিব্রহ করিতেছে।…

তাহার পর নিকা-বিভাগ। ইহা ছাতীর কর্ণের এক মহান্ অস—ভাতীর অঞাগতির আশা ও ভবিষ্যং রগ এই নিকা দাইনা ফাটকা-বাজারের বেলা ও অমাচার চলিতেছে। নিকা বছটর নাম উঠিং। গিরাছে, ইহা আল বেকগ্নিশন, বিল, গ্রাক্ট, এলাওডেল, রিমিউরাল, ভিজিটং রিপোর্টের ভারসালীর নাজার—প্রাদেশিকভা স্টের ব্যবহিত আবভা-ক্ষেম। যুয, উংপাত, অমাচার ও বিভাগর অব্যবহার প্রতিবোসিভার এই ক্ষেম্ব কাহাকেও পিছাইরা মাই। বছ বাংলা ছুলের মঞ্জী (রেকগ্নিশন) উটারা পিরাছে, বছ নিকলের ম্যাব্য পাওনা প্রভাগত হুইতেছে, বছ ভবাকবিত হিন্দী-ছুল বিশ্বা মার বছনের জন্য কুপার অজন্ম আন্তর্ভাগত। কিছ এই হুই চক্ষ প্রক্র, বিত্রবিত বারার আবর্তিত ও ইয়ত হুইতেছে—দেখিবার কেছ্ লাই।

"এই নক্ষেত্ৰ বংগ্য কৰ-জীবন গঠনের ও ভাতার অঞাতি প্রচেটার ক্ষেত্র কিভাবে চলিতেতে ভাতাও বেধিবার। আছ্মাননের ক্ষা, ক্ষম-জীববের বিকাশের ক্ষা সঞ্চারেং প্রভৃতি ন্যবহার বে প্রশংসা কেশে করা হয়, সেই পঞ্চারেং কর্ম্যবহা এথালে কমজীবদ বিষপুর্ব করিবার কর । করপর্বের অবিকারকে বঞ্চিত করিবা, প্রবিধারত কিছু কিছু
প্রাবে সরকার হারা নিবাজিত তাবেদার পঞ্চারেও করা
হইতেহে—এবং ভারারা সরকারের হিন্দী প্রচার ও বিশেষ
উদ্দেশসমূহের সহারভার নিবোজিত বাকিরা নিজেকের
হার্থ সাব্যে অনাচারের রাজত্ব পট্ট করিতেহে। একট
বিশেষ জিনিব লক্ষ্য করিবার কর্যা—সমস্ত বানভূষে যে
সমস্ত লোক অবাহিত বলিরা বহু বিখ্যাত, সেই লোকগুলিই
আন্ধ বাহাই করিবা সরকারের বে-সরকারী নিজর লোকগুলিই
আন্ধ বাহাই করিবা সরকারের বে-সরকারী নিজর লোকরূপে
নির্ক্ত। ইহারা জেলার সর্ব্বের তীতি প্রধর্ণন করিবা, শোষণ
করিবা, আন্ধানির করিবা জনপ্রের প্রতিকার চাহিলে সরকার
বর্ত্তাই হারাই ভবন্ত, শীবাংসা ও প্রতিকারের কর্ত ভারপ্রাপ্ত
হল—ইহাই অবহা।"

মানভূষের বিধ্যাত সাপ্তাহিক "মুক্তি"র ১৯শে ও ২৬শে কান্তন সংখ্যা হইতে উপরোক্ত অংশগুলি গৃহীত। বলা বাহল্য, বে বে অঞ্চল এইরপ বৈবাচার চলিতেহে ভাহার অবিকাংশ অবিবাদীই বাঙালী এবং সেই কারণেই ভাহারের উপর, বিমা প্রতিকারে এবং বিনা ভরে, অভ্যাচারীর লল হিংলাত্মক কাজ চালাইতেহে। বাঙালীর হংবে বাঙালীই বিচলিত হয় মা, সুভরাং প্রতিকার হইবে কি ভাবে? বিদি আমানের মন্ত্রত্ব থাকিত তবে কেল্লে এরণ লোককে পাঠাইতে আমরা চেটিত হইতাম বাহার হাতে পাবে "পার্টর" শিকল বাবা নাই, বাহার মুবে বাবের বন্ধন মাই, চোবে প্রাচেশিক্তা মহাপাণ" এই শক্ষুক্ত ঠলি প্রাইয়া দেওবা হয় নাই।

বাংলার কংগ্রেস ত অতি হীন অবস্থার পৌছিরাছে এবং
যত দিন গ্রীনান্ অতুল্য বোষ প্রমুব "নেতা" বলীর প্রাদেশিক
চক্রান্ত-চক্রের কেন্দ্রে অবিষ্ঠিত বাকিবেন তত দিন ঐ হীন
অবস্থা বাইবার নয়। আকু নির্বাচনে কংগ্রেস কিভিয়াছে
বলিরা "নেতা"গণ উরাদে অবীর। কিন্তু সেদিন দূরে নাই
যবন সভাতাগের পালা বলিবে এবং তথমই হুইবে পরীকা।

ভাজার রারের বোগ্যতম তিন জন সহক্ষীই নির্বাচনে ইটিই হইরাহেন। বাঁহারা আসিহাহেন উহাহের বব্য হই জন অবোগ্যতম, একজন সাজীগোপাল, অভ জন সং ও বোগ্য, ভিড অভিজ্ঞা কর। কংগ্রেগ বলে বে ১৫০ জনের মধ্যে ভাজার রারকে নত্রী বুঁজিতে হইবে, উাহাহের মধ্যে অভাজ রম্ব থাতিতে পারে না একথা আনরা বলি না, এবং লোভ দেবাইলে বিশক্ষ লের মধ্য হইতে লোক আসিতে পারে না এ কথাও আনহা বিশাস করি না। ভিড পশ্চিমবদের মভ গমভাপুর্ব প্রবেশে রাইটালনার বোগ্যতা অর্জন করা সহজ্ব মন্ত্র, মূরি, বিচার ও গভভা ভো চাই-ই, আরও চাই অভিজ্ঞা প্রম্ব করিয়া। ঐরপ ভার্ত মবরম্ব ভিভাবে সংগৃহীত হর জাহা এইবা।

#### ভারত সরকারের বাজেট

ভয় চিভাৰৰ বেশহুৰ পাৰ্জাৱেক্টে ভায়ভ পরকারের বাকেট পেশ করিবাহেল এবং নির্মিত্তে ভাহা পাল করাইরা লইবাহেল। এই বাকেটেও বেশহুবের বক্তভার করেকট বিশেষত আছে।

বিগত বংগত্তে তেশের আর্থিক অবস্থার আলোচনা-প্রদক্ষে প্ৰীয়ক্ত বেশমৰ বলেম বে, সাধারণভাবে কেশের আধিক चवडा इर्द्यात्रभून दिन बदर युवाकीकि, युनावृक्ति, बाजाकार देखापि नवकारे देखांत कर बाती। बुलावृत्तित कांत्रण स्वरण बळाकीकि बर यह प्रेश्नावमाक्ये किमि वांशी कतिशासन । त्वमं विकक कथशंद करण व्यामद केश्यावम कथका व्यामग्रीत बार्क्स करेशास : देश राष्ट्रीय अधिवृद्धे समावृद्धेत करमध क्षाच्य क्षांत्राक्रमीय क्षया देश्शायम क्यां मध्य स्थ मारे। प्रच्यार स्वापना प्रचारिक युक्ति भावेशास्त्र । प्रवृत्ति কোরিয়ার যুধ আছক্ষাভিক পটভূবিতে বে পরিবর্তন আনহন করে ভাত্তর প্রভাবে ভারভের প্রব্যব্দ্য আবঙ বৃদ্ধি পার, पूछवार मिनवार्यव वाक जावाजव देशांक क्वनेव किह दिन ना पनिवारे बुनाहारबद क्या चारत मा। क्यि चायकांछिक অবস্থার ভত্তেপ করার অবিকার না বাকিলে, আভাতরীণ बाबक चयलकान दव चार्वाद्य नवकाद्यत शाक काक किन ভাতাতে জোৰ সন্দেহ ভাছে কি ? এই বলাবু ছি বে বছলাংশে चावारम्ब नवकाव मुशीच करवक्षी भीचित चरचवानी कनरवन त्म चवा किनि नित्वरे चौकांत कतिवादन। ১৯৪৯ नात्म ৰ্জ্যন্তাসের লক্ষ্ণ দেখা দেখবার সদে সদে ত্রিটেনের অভুকরণে ডিভ্যালুৰেখন করার ক্টাই বে আনাদের বুলা বৃদ্ধি পার ভাজা আৰু আর ভাতারও বিভট অভাত নতে।

এই বৃলান্ত্ৰানের কল সরকার লইতে বৃলাকীভিকে দাবাইরা রাখিবার ব্যবহা করা হয়। ১৯৫০-৫১ সালের বাছতি বাজেট এই ব্যাপারে ববেট সাহাব্য করে। রপ্তামী শুক্ষ বাজাইরা ও স্তম শুক্ষ বলাইরা সরকারের রাজ্য রুতি করা হুইরাছে। বিভারতঃ, আবেরিকা হুইতে প্রাপ্ত গম বাজারে বিক্রম করা হুইরাছে। ইহাতে জনসাধারণের হাত হুইতে সরকারী কোবাগারে টাকা চলিরা আসিরাছে। পুতরাং টাকার পরিরাণ অনেক ক্ষিরাছে। ইহা ব্যতীত ব্যাক রেট শহকরা ও হুইতে ৩০০ তার্গে ভূলিরা ব্যাক জেভিটের পরিমাণও দ্লাস করা হুইরাছে, কলে সম্প্র ভাবে কেন্দে টাকার সম্ম্যান করা হুইরাছে।

কৃষি উৎপাৰৰ অপেকাকত আপাপ্তৰ হুইলেও অনাবৃচিত্ৰ কৰা গাভাতাৰ অহিনাই নিবাহে। কৃষ্ণ, অধ্যাট, নৌবাই, উভত্ত প্ৰবেশ প্ৰভৃতি স্থানে অনাবৃচিত্ৰ কৃত গাভাতাৰ ঘটনাহে প্ৰবং ইয়াত্ৰ কৃত বহু গাল্য আম্বানী কৃত্তিকে হুইবে বনিবা অৰ্থনিত্ৰ মুক্তায় বনিবাহেন। প্ৰথানে প্ৰকৃষ্টি প্ৰয়েশ্ব উপাপন ভৱা প্ৰবাজন। কংগ্ৰেন বাই-পৰিচালনভাৰ প্ৰহণ ভ্ৰাৰ পৰ হুইতেই ভেন্ত অভ্ৰা, অভিন্তুই, অনান্তই ইভ্যানি কথা ভনা নাইভেছে, প্ৰকৃতি কি কেন্ত হুৰ্ভাগা ভাৱতের নদেই বছনত্র করিভেছে, না পৃথিনীয় অন্যান্য দেশেও প্রভাবিক্যার হানা নিরাহে ? প্রাকৃতিক হুর্ব্যাপ কি ভারতে বা পৃথিনীতে মৃত্ন ?

— বহির্জানিত্যে আনালের চলতি বংগরে বিভর লোকসান হুইরাছে। স্যর চিভারন দেশমুব বীকার করিবাহেন বে, ভিভ্যাল্যেকন হারা আন্তা রগুনি বাভাইতে আলাহ্ত্রণ পারি নাই প্রবং বেটুকু কল পাওরার আলা হিল ভারাও প্রচুর বাভ ও কাঁচা হাল আম্বামী করিতে ক্তক নিংশেষ হুইরা প্রিবাহে।

ভারতের কলকারবামার অবহা এবনও এমন নর বে, বিবেশে রপ্তানি উভরোভর বাভাইতে পারে। কারবামার প্রভাভ প্রবার বব্য প্রবাম রপ্তানি প্রবার চট ও বলিরা। কিছ পাটের কভ চটকলকে কিছু অংশে পাকিছানের শুভবুছির উপর নির্ভ্তর করিতে হয়। কারব ভারত ও পাকিছানের বব্য সম্পর্কটা প্রায়ই অনিক্ষিত। পাকিছান ভিত্যাস্রেশ্রন করার কাঁচা পাটের লাম মিটাইতেই বাভতি মূল্য বাবদ লাতের কিছু অংশ ব্যর হইরা গিরাতে।

ইার্লিং ব্যালাল সম্পর্কে শ্রীষ্ট্রুক্ত বেশবৃধ বলেন, ১৯৫১ লালের ভিলেম্বর বালে বিটেনের নিকট আবালের ৭৮১ কোট টালার ইার্লিং পাথনা ছিল। দেশমূর্ণ হর বংলরের জন্য উহার একাংশ বার্ষিক প্রায় ৪৫ কোট টালার কিন্তিজে ভূলিবার ব্যবহা ভরিবা বিবাহেন। শ্রীষ্ট্রুক্ত দেশমূর্ণ করেক লগ্রাহ্র আবে লগুনে ক্ষমগুরেল্ব অর্বাচিবের গোপন সম্মেলনে বোগদান করেন। লেবানে ভিনি ভারতের প্রতিনিধি রূপে বীলার করিবা আলিরাহেন বে, ১৯৫২ লালের শেষ পর্বাচ্ছ ইার্লিং রুক্ত সম্মালার বিহুক্ত অঞ্চলের সহিত্য অর্বাং ইার্লিং রুক্তর বহিত্তি অঞ্চলের সহিত্য অর্বাং ইার্লিং রুক্তর বহিত্তি অঞ্চলের বাইক্তি বিটালোর দায়িছ একা- বিটেন না লইবা সম্মা ইার্লিং রুক্তর বাক্তে ভারা চাপান হইল। ভারত্বর্বের বাক্তি হইলে বিটেন ভারা প্রহণ করিবা নিক্ষের বাইতির একটা অংশ ইার্লিং রুক্তের বেশ হিলাবে ভারতের বাক্তে চাপাইর, বিতে পারিবে।

ভলাবের ব্যবহা ভিছু হুর্ব্বোব্য। আবাবের ৩৫ ভোট টাড়ার ভলার বিটেনে জবা আছে। বলা হুইরাছে বে, ১৯৫১ লালে "বেট" ৭ ভোট টাড়া বুল্যের ভলার আবাবের লইভে হুইভে পারে। অভলিকে একবাও বলা হুইভেহে, ঐ বিলাব হাড়াও বিধ ব্যাক হুইভে বেশের কবি, বেল এবং বিহাৎ পরিক্রনার লভ ৩১ ভোট টাড়া বব লইভে হুইরাছে। এই ভলাবের চাপ আবাবের বাভিভেহে বা ক্রিভেছে ভাহা বুঝা বার বা।

बायय बार्गारह क्रमंकि बरमहरूत बारकाई ( ১৯৫১-৫২ ) ६७ क्ला है है।का बाज्य हरेद बलिया सम्बाय क्या निर्वाधिक for des viele states are so cett frei : परमास्त बानामी परमास्त सामि बता महेबारम ১৮ (बाहै 10 88 8181 शक वरमावत क्रिमार बालाजी वर-गरदर चार चन्नाम चरित्र हैता चारक चरित्र हरेच। रमन्य वनिष्णस्य-वाक्षिकी illnsory वर्षार करता। प्रकार बरे illusory का करना चारबत देशन निर्कत कतिया है। ज क्यांत्मा बाद मा। कादन चायलामी सक 45 काही है।का बबर दक्षांबी क्षय २७ काहे है।का त्व तबी बाहाद करेबाटक कालाटकत केनत मिर्कत कता बाद मा। ३३००-०३ जारम बाबसायी सक बासंब क्रेसाल 209 (क्रांके 40 सक होका । कवानि ১৯৫১-१२ जारमा वारकाहे बायमानी सक ক্ষাইয়া ১৩ কোট বরা চইল। ইচার কোন বক্তিসভত কারণ বঁজিবা পাওৱা যার বা। দেশে বছ ক্রব্যের চাহিলা द्रविशास, आयशमी लाहेरम् ना अवाहेरल बाल आजित्व बार क्षक ज्ञाम बाकित्य। बाम्यामी क्षक त्रणी बामान व्हेंबाट्ट (ग्रेंज, नृतिक्केर (चन, वन, क्वांकेंब गांकी, बर, वस-পাভি, লোহা, কাগৰ, কৃত্তিম রেশন, সুপারি প্রভৃতির উপর। रेठारम्ब काममेव चाममामी ठाँगर क्षिका वासमाव चाममा चार्य छाठा चर्य प्रक्रिय कामान माहे। दशामी क्षेत्र चाहार राण व्यवाद्य हते. कनां, काणक, बाानानिक अवर देवनवीक हरेए । जुलात चलार जामारकत कांगक हम मा, किन्द कुना ब्रक्षाभीत सकरे जानात सरेबाट १ (कार्ड १० नक है।का। ১৯৫০-৫১ जाल दक्षांकी सरकद পरिवार विज ১ कार्ड २० লক টাকা। কাপৰ বধানীতে ১৯৫০-৫১ সালে শ্ৰহ चानिशां ए । जम होकां, ब वरमदा ( ১৯৫১-४२ ) दामवर्ष बहानव जानाव कविवाद्यन ७ (कांक्रे २० नक, अवर जानावी वरमत्त्व क्य विमाय बतिबारकम चांचारे (कांडे हैं।का । हेवा वाकीय कांगरवत देशन अकांकें है। क हांगाहेबारवस ३१ (कांडे টাভা। অৰ্থাং ছেশে ভাগতের অভাব বাভা সভেও বিভেগে कांगर दक्षांनी कविया बाद किय (कांडे डीका कांगर कविटक शाविकार्यम, किस सम्मनानीत निकृष्ठे व्हेरक नहेबार्यम ३१ (काष्ट्री क्रीका, चानावी वरनदाव देखाँद बडा खदेबाद । चवानि ৰাঙভি হিলাৰটা illusory হইল কেন ?

বেশের গরীৰ ও মধ্যবিভ শ্রেণী হুইতে সরকার প্রভাক ভাবে একাইজ ট্যান্ত আহার করেব নির্নিধিত পরিমাণ—

<b>ৰেশলাই</b>	৮ व्यक्ति	40 FF	क्रेका
ভাৰাক	**		
<b>কাপড়</b>	39 "		
	<b>মূল্য</b> হ্রাস	•	

विश्ववानी बुलाझारमध विवरत मानावित जारनावना

চলিভেছে। প্ৰায়ল্য কভ দূৰ পৰ্বান্ত কৰিবে অথবা কোৰাৰ निया क्षित करेटर काका नक्षेत्र अक्ष्याम कृतियात नमन अपनक चारंत्र नारे त्रका, करव बुकाहारमञ्ज कावन अपन चरनकी। वृता बाहेरण्डा जाकिन-हे बाब चारनाहवा हहेरण हेवाब प्रमाण। बीट्र बीट्र देग्रामिक जश्वावनम्बन्दरक द्व जब अश्वाक क्षकानिक करेंद्रकाल कांकारक दावी वारेद्रकाल दा. हार्कित है बामरक करवक्षे प्लंड क्या विनदा चानिशांवरतम । किमि कामादेशकितम त्व. त्माकिताहेत शक्तिमवनी अकिमान यक कतिएक करेंद्रा कांकारक बदा-वेबेट्याटमेंके वादा किएक करेंदर (माकिटवर्ड वानिश बाबाटक चाडेलाफिटकर चीटक (नीकिक का नारत काता करिएक तरेरव। हैतात कवा वित्मवहार्य जित्हेमरक ७ क्षांकरक मकिमाली कहा बहकात । ब्रिटिंग 890 कार्ड भाष्ट्रिका एवं जनबीकान त्याताम स्राप्त তবিহাতে ভাতা ভাৰো পবিৰত ভবিবাত সাৰা বৰ্জনাৰ ভবভাত ভাৰার নাই। আমেরিকা Stock Pile আরম্ভ করার কলে वित्रंत वाकारक बादाभक्षत्व अवर दलांकी स्रवादिक कांछा बारनव पाम अछ हिंचा निवारक (व. जिरहेरनव भरक के पारव কিনিষপত্ৰ কৰ করা সভাৰ নৱ। প্ৰভাৱাং ভাতার পক্তে তাভ পা ভাতিহা ভিহা নিভেত সাবামত বৰ্জহাম অবসায় বেটক অছ-সক্ষা সম্ভব ভাচার অভিবিক্ত ভিচ্চ ভবিবার উপার বাভিতেতে মা। উপত্ত ভাতাত ভলভাত্তথানাত কাঁচা মাল পাইভেতে मा। है,बाब अरे जवशाद अक्रम अदर ब्रिकेंग बुक्किय नायवणा धेशनिक करवम अवर Stock Pile वक कविका बनाङारमङ ব্যবস্থা করিয়া দিতে দক্ষত হুদ বাহাতে ত্রিটেন ও ক্রাল ক্রব্য-बुना द्वांत्र हरेल काँठा बान किमिश शिक्षावर वर्गरेमिक बान बका कविदा बुदनका कविएक नक्ष्य द्या।

ठाफिन रहरने किवियात भर है। जिश्ल ज्ञानिक करांच क्या बाक (बहे बाक्षदेश (क्य अवर बाक्ष कर हेरलक बनलस क्यादेशास्त्रम । देशात काल जित्हेरमत है।कांत वाकारत थन-वाधि क्षेत्र कर बन्द करण यक यक नायमानावासय शास्त्र আসল ব্রিয়া রাখা অসভব চুইয়া টুঠে। ওলিকে আমেরিকা बान (क्यां क्यांदेश (यह। अदे हुदे कांबर्यंब क्या खनावुका क्विए बाब्र हर बर ब्रामक्व ७ कांवा माल्य नाकारत, बर्बार हडे, लाहा, डेन, रेडननीक श्रेष्ट्रित नाकारत ৰক্ষা দেখা দেৱ। আৰেৱিকা মাল কিমিডেছে মা এই সংবাদ बाडे ठहेवाद जाक जाक किविजनात्वत विरक्तका ७ वेश्नावकात्वत बर्दा क्षेत्रियांत्रिका स्वयं स्वयं बदर करन बना चात्रक कवित्क बारम । बबा, माविरमन-एक Stock Pile अब अमेरी উল্লেখযোগ্য বন্ধ বিল । আমেরিকা ও ত্রিটেন গুক্তবা বারিকেল क्षत्र क्यारेश बाब निश्वलात बाहित्कलात वर शक्ति। बाह . তথ্য কোচিম ভার সলে প্রভিযোগিতা ভারত ভরে। এই णार वाषां वावादेश बिट्टेंग चार विट्यर टार्साववीर **बट्डानक्ष्म किवियांक कावालां कालिशा आरिमानाः ।** 

এদিকে ভারতেও খ্যাক বেট খাছিল ও খ্যাকওলিকে খা-খান সকোচ ভ্যার ইভিড কেওরা ব্রন। ইবার কলে বড় বড় এন্ডটেটা ব্যবসাধারের টাভার বিষয় টান পভিল।

pb. एमा ७ रिक्रमपीय कातरकत क्षेत्राम वानिकासरवाद व्यक्त अवर विमार्के एक व्यक्त रकत्व कार्यका हिन्दि बाटक। नाडे थ हड़े विवास चायचवार्यस (व अच्छाडेश कविया क्रिस जाका यह करेवा विवास । जावज-विजात्वत करण कांता नाहे शांकिशास (वर्षे शिशास । कातरक शांते वेश्शासन ताकान ছইয়াতে, কিন্তু ভাল পাষ্ট এখনও জনায় ভব পাকিয়ালে। চটকল এক ভারত ও ভাঙি ভির ভার কোবাও বেদী ছিল मा । जारकरे विज (वन । अथम क्रांज ७ (वजकिशासर हरेकन काल बालाइरकरण । किन्न इक्रेस्टारम्ब कारक केरकई हुई किन (बाड़ी हड़े के बिला देवित हव मा । चारचवर्षत हड़ेकन अहे श्रीन देखित करता। भाकिनात्मत केश्मके भावेचे वेखेरवारभ চালান বাব, কিছ বোটা পাট ভারতে ভিন্ন বিক্রম ক্ষবার উপায় बाहे। बहे चारव भारतेत वाबजा चातकवर्ष भाविकात ख वेषेत्वाण अवे किम चारम कांग कवेश बालबाद लाके-बावनाय अक्रेंगका रूपा विशास । भावितारमस भारतेस सल्बा रक्षण winest : Bereiche niferia vant fente : Beires পাতিহান ভীষৰ অপুবিধার পভিয়াতে। পাতিহানী টাকার দ্বর এক পরিবা যাওয়ার ইচাই ভারণ।

ভূলার ক্ষম এবার পৃথিবীর লব বেশে ভাল হইরাছে।
কলে লাম ক্ষিরা সিধাছে। ভারতবর্ধ পৃথিবীর বাজারে ভূলার
অভত্য ক্রেডা। বোঘাইরের ভূলার বাজারের ফাটকাবাজার
বিথবিব্যাত। এবার সেবানেও লাম পভিয়া বাওরার ফাটকাবাজারে এবং বোলাবাজারে বিপর্ব্যর কেবা দিরাছে। ভূলার
কুল্য ব্রাসেও সাকিস্থান বুব আঘাত পাইরাছে। পাকিস্থানের
বৈধেশিক মূলা অর্জনের পণ্য নাম ভিনটি—পাট, ভূলা ও
চামড়া। চামড়ার বাজার এবনও টিকিয়া আছে, পাট ও ভূলার
বিপর্ব্যর ঘটরা নিরাছে। ভূলা-ব্যবসারীকের বাঁচাইবার জন্য
পাকিস্থান ভালনাল ব্যাক্ষ চেঞা ভ্রিভেছে।

পাট, চট, চুলা, ভৈলবীক প্রভৃতির নাম পাঁড়রা বাওয়ার বাহারা নাল নকুত করিবাহিল ভাহারা বিষম বিপদে পাঁড়রাছে। ব্যাদের ও বাজারের দেশার চাপে ভাহারা পছতি লাবেই বাল বেচিরা দিরা দেশা বিটাইতে বাব্য হইতেছে। ভাহাতে না কুলাইলে সোনা বাহির করিতেছে। ইনকার ট্যান্তের তরে ইহারা ব্যাদে নিজের টাকা রাবে বা, নোটের বাভিল রাবিতেও তর পার, স্কুতরাং ইহারা এত বিদ স্কিত অব লোবার ও কাঁচাবালে রাবিরাছে। এবার সেই সোনাই বাহির ছইতেছে। একবারে বাজারে বছ লোবা আসিরা পছার সোনার বাজারঞ্জ ছ ক্ষরিরা নামিতেছে।

गक्**चित्र पूर्व गाकात वय कृतिया क्रिया नामना**देशाच ताले।

করা ব্রৈছেছে, কিছ এই চেঠা ছাত্রী হুইছে পারে না। বাজার বুলিলেই আবার পক্তি আরম্ভ হুইবার সভাননা বুব বেবী। তবে একটা কবা, এই স্বাহালে বিশেষ তাবে নত্ত্যার ও চোরাকারবারীরাই আঘাত পাইতেহে বেবী। সাবারণ:কেতা-বের এবনও তবের কারণ বটে নাই। ফ্ষিকাত পণ্যের বর উৎপাধ্যের ব্যৱেহ নীতে নামিবার সভাবনা এবনও দেখা বাইতেহে না, তবে এই তাবে চলিতে বাজিলে ভাহা বটা আক্র্যা স্বর্ম। দে বিষ্ধে এবন হুইতেই গ্রণ্ডেটের সভ্ক্

ভারত সরকারের কর্তাব্যক্তিদের মধ্যে হরেকক বহাতব এবাৰং মূৰ বুলিয়াছেন, কিছ বিশেষ কোন পৰ কেবাইভে भारतम माहे । जिरहेरमत न्यांक दब्हे वृष्टित महन आमारमत হ্যাত বেটও বাভাৰ চইবাছিল, কিছ ভাতার কল বেশের ব্যবসা বাৰিলোর পদে কভটা ভাল হইয়াহে ভালা বুঝা বার মাই। ब्रिकेटम कावाद वाद त्रहे वाकिशाद । कामारम्य दिकार्क ব্যাহ এবনও উভাত অভুদরণ করিতে ভরণা পার নাই। ভারতে মুলান্তাদের প্রতিক্রিয়া কোবার গিরা আবার গাড়াইবে, রিকার্ড ব্যাস্থ এবং ভারতীয় কিনাল বিভাগতে কোবার গিয়া বাৰা দিয়া লোভ বহাইতে চইবে ভাচা সমস্ত বাজাৱের ৰাভাবিত ভাততৰ আহম্ভ চওৱাত আলে সঞ্জ বরা বাইবে मा। चार अकवा अवम न्यहे चारव वृत्री बाहेरचरह रव. मुना-ছালের কর্বা ভারত পরকার নতেন, পুভরাং ভাতা রোধ ক্রাও ভাছানের সম্পূর্ণ আরভের মধ্যে নাই। বেশের বাণিক্য বেধানে विम्हान मुनारमकी (मनारम कांक्रक मक्कारक कर्क्षणक देखा-यक मृत्काद केंग्री-मामा निषद्य कविष्क भारतम मा। मृत्राद्वित বেলার ভারত সরকার বেরণ অসহার হিলেম, মূলাহ্রাসেও कारे। कारकर बनायुका भकरनत कमा कांदाता (व कांब्र्यमान अरेवाव (ह्रेश कविशास्त्र कांका क्या ।

ভবে বালারে এখন আদের অবহা চলিরাছে। বেইক্স্য অনেক কেন্তে—বর্থা সহিষায় ভেলে—কাঁচা বাল অপেকা ভৈনানী নাজের দর অনেক নামিবাছে। এইরপ আল বোরে ভারত সরকার অনেক কিছু করিতে পারেন। ভারতে বালারের উঠা-নামা কিছু নির্মিক ক্ইতে পারে।

## কোম্পানা আইন কমিটি

ভারতীর কোম্পানী ভাইন ক্রিট উছেহেন্স রিগোর্ট দাবিল করিলাছেন। ক্রিটন বিগোর্টে ব্যাহেরিং একেলি বিবরে বে স্থলাই প্রতিয়ান আশা করা গিরাহিল ভাষা হব নাই। ভারতীর ব্যবসাবাবিক্যক্ষেরে ব্যাহেবিং একেলি এক অভূতপূর্ব বন্ধ। পৃথিবীর কোম দেশেই এই জিনিব নাই। ন্যানেবিং এত্তেলির বব্যে কোম্পানী পরিচালনের বীর্বহামী চুক্তি, লয়ত বিলাবণর ভিলেবের ক্রেডেরাথার ক্ষরতা এবং

বিভিন্ন কোম্পানীতে একই ব্যক্তির ডিবেটর বাকা (Interlocking directorship) এই কর্মন্ত সর্বাহ্রান্য কোষ।
Interlocking Directorship-এর অপরিভার্ত্য অক Interinvestment of funds! কোম্পানী আইনের ১৯০৬ সালের সংশোধনে এই দোর দূর করিবার ক্ষণ্ড কিছু তেটা হইরাছিল, কিছু ব্যানেকিং একেউবা নিকেনের এপ ব্যাহ্ণ সঠন করিবা আইনের এই বারা একাইবার ব্যবহা করিবা লইবাছে! ভারভীর পিল ও ব্যবসাক্ষেত্রের স্বাভাবিক অবহা কিরাইরা আমিতে হইলে ন্যানেকিং একেজি ভূলিরা দেওরা দ্বরুলার। কংগ্রেস ক্ষণ্ডা কর্মনের পরে এ আই সি-সির অবিবেশন এই প্রভাব পাসও করিবাছিল, কিছু পরে বীরে বীরে কংগ্রেস সর্বপ্রেট ন্যানেকিং একেজি বীকার ক্রিডাই লইবাছেন। কোম্পানী আইন ক্রিটেও ব্যানেকিং একেজি ভূলিরা দেওরার সুপারিশ ক্রিতে ভ্রুমা পান নাই।

কাঁচাৰাল ক্ষর ও শিল্পকাত পণ্য বিক্রবের তত করেকট বাপে নিজেদের কোল্পানীর সাহাব্য গ্রহণ করিবা ব্যান্ত্রিং একেলিগুলি অনেক টাকা করে। বেষন কোল কংলা কোল্পানীর করলা সেই কোল্পানী নিজে বিক্রব করিতে পারে না, তার ব্যানেকিং একেট বিক্রব করে। কোল্পানীর ব্যানেকিং একেট ১৮ টাকার নিজের অধীনহু কোল্পানীর নিজ্ঞ ইতে সমন্ত করলা কিনিরা লইরা বাজারে উহা ২০ টাকার বিক্রব করিলে কোল্পানীর অংশীলারদের ভারাতে বাবা কেওবার কোন উপার নাই। কোল্পানী বে করলা বাজারে নিজে ২০ টাকার বিক্রব করিতে পারে, ম্যানেকিং একেটের ত্রত ভারা ১৮ টাকার বেশী দর করিবার কোন উপার নাই।

ইহা তো আইনসদত আলার, বে-আইনি আলারই বেশী
চলে। বাল জর প্রথম বাপে বালার হইতে ১৮ টাজার
ন্যানেজিং একেটদের এক নম্বর ক্লোপানী করে, বিভীর বাপে
কোপানী হইতে ২নং কোপানী ২০ টাজার বাল কেনে,
ফুডীর বাপে বুল কোপানী ২নং কোপানী হুইতে ২২ টাজার
নাল জর করে। ইহাতে কোপানীর কর বালার দর হুইতে
অবর্থম ৪ টাজা বেশী দর হর। ১ন্যু ৮ ২নং কোপানীর
নালিক বা অংশীবারেরা ন্যানেজিং একেটদের বেনারদার,
ইহাদের বারম্বত বাকতি টাজাটা উহাদের পকেটে আলে।
কেপোরাম কটন নিলে এই ন্যাপারই লেলট্যান্তের এনিপ্রাট
ক্রিমান্ত ইলাই বরা পরিরাহিলেন। নগুতি ব্যক্তিরত
কোপানীতেও ইলাই বরা পরিরাহে। ঐ কোপানীর মুই কন
প্রিপালী ভিরেটরকে এইরূপ কার্যকলাপের ক্লম লোব বেওয়
ইইরাক্তে এবং ভারাদের ক্রমান্তাবের করা ভ্ইতেতে পোনা
বাত।

Interlecking Directorship-44 (\*CE 485) \*\*\*

কৃতি করা উচিত হিল ক্যেপামী আইন কৃত্রিট ভারাও করিছে। ভরগা পান নাই।

ব্যানেদিং একে তিওঁলি একদিন অংশীবারী প্রতিওঁলি এবং-প্রাইভেট লিনিটেড কোন্দানীরলে পরিচালিক ক্ষত। ইতাকে এদের বতটা দারিত্ব ছিল, বাবীনতার পরে ব্যানেদিং এক্টোলিক পরিবাদ করিছিত কোন্দানীতে পরিবাদ করিছিত তাহাও একাইবার ব্যবহা কইরাছে। বর্তবালে ন্যানেদিং একে তিওঁলির ক্ষতা বোল আনা বজার রহিরাহে, কিন্ত লারিত্ব অনেক হাল্কা ক্ষরা সিরাছে। ক্তিপ্রস্থাক্ত ইহালের উংপর নালের ক্রেতা এবং ইহালের অধীনত্ব কোন্দানীর অংশীনার।

পূৰ্বৰ পাকিস্থানে বাংলাভাষা আন্দোলন ....

পূর্ব্ব পাকিছানের ভাষ'-আন্দোলন অভি ভীত্র এবং ব্যাপক রাণ বাবণ ভবিচাছে। এই আন্দোলনে বাহারা লভিভেছে, এবং বাহারা প্রচার ভবিতেছে ভাহারা প্রার সকলেই ব্যলনান। আন্দোলনের নেড্ছ সম্পূর্বনেশ পূর্ব্ব পাকিছিলনের লিভিভ ব্যলনান সম্মানরের হাতে এবং বর্ডরানের ভীত্র রাণ বাবণের পূর্ব্বে বছ দিন বাবং বব্রের ভাগতে ও সভা-স্বিভিতে বাড্ভাষার বিনাশের বিরুদ্ধে প্রবল্প প্রভিষাদ ভানাইরা আসিভেছে পূর্ব্ব পাকিছানের বাংলাভাষী বিভিত্ত ব্যলনান।

পূর্বে পাকিছাম সরকার বোৰ হর ভাবেন নাই বে, এই আলোলন এভ ব্যাপক ও প্রচণ রূপ প্রহণ করিবে, অববা হয়ত করাচীর কর্তৃপক্ষ মনে করেন নাই বে, পূর্বে পাকিছানের বিক্তি মুসলনান সন্তানার ভাহাবের মনের ক্ষতি গলবন্ধ ভাবে এনপ তেকের সহিত প্রকাশ করিতে সর্ব হইবে। সেই-ক্ষত প্রথমে এই সকল প্রতিবাদ ভাক্তিল্যের সহিত অবহেলা করার এই আলোলন উত্রোভর প্রবল হইরাছে ও ক্ষরেই বাভিন্ন চলিয়াছে। ইহার কারণ স্কর্লাই। পূর্বেবদের বিক্তি-আনিক্তি সকল প্রেণীর মুসলনানের নাভ্তাবা বাংলা এবং উল্লেখ্য বাড়ভারার অপনান নারের অপনানেরই রভ। এই অপনানের কলেই বিক্তি মুসলনান রাবিরা উল্লিখ্য সঞ্জির ভাবে ভাহার প্রতিরোধ করিতেছে। কলে পাকিছান সরকার প্রমাদ গণিতেছেন।

ব্যাপার এই অবহার গঢ়াইরা আনিবার পর ভাত্তি নামলাইবার কচ বে অপচেটা চলিতেতে ভাতার রূপ ও কৌশল হই-ই বাঙালী হিন্দুর কাতে স্পরিচিত। নেই চেটা নহকে কলিকাভার "রুগাভর" নিয়ন্ত্রণ বভব্য করিবাত্তেন:

শ্ৰূপৰ আন্নাৰবাহিনীৰ প্ৰবাদ প্ৰিচালক দিঃ এইচ, এব. বোহা বহনদনিংহে এক আন্নাহ স্বাহেশে বলেন বে; ১৯৫০ সালেহ পূৰ্বে বে নক্তম হিন্দু গাড়িছাৰ ভ্যাণ কৰিছা

বৰ্ডবাৰে পাকিছাৰে বাভাৱাত করে, ভারারাই পাকিছাবের **१२व मेळ** । मेळाएव वे किश शक्ति कविश्वत कर जामनाद-বের সভর্ক থাজিতে বলিয়া বিঃ যোচা ভাষাম বে, ভাষা चार्त्वानम चार्रकीर अरक्तेरम्य रहे , विचर प्रदेश भावि-प्रानत्क स्वरम क्यारे कालात्क्य केटक्छ । विवि काममानटक्य উত্তৰ বিকে বাভাৱাতকারী ব্যক্তিবের বিজ্ঞানাবাদ করিবা সম্বেছভাতৰ হলে হইলে পুলিসের চাতে অর্পণ করিতে বলেব। वि: बाहा चाहक राजन (व. शाकिशास शही चार वजवाज-काबी बक्रमक किक्टलब निवामका विश्वान माक नवकाटबढ 'পৰিত্ৰ হাছিড'। পাক সভকাত এই পৰিত্ৰ হাছিছ কি ভাবে পালন ক্রিভেছেন ভাতা পূর্ব্বব্দর ছারী অবিবাসীবের व्यक्ताना नरह । श्रुक्तवन वावशा-श्रीवश्यान हिन्तू नवनात्रन नरवान-লছবের বিরাপভা ও অসচার অবস্থা সম্পর্কে যে সকল বজতা विवाद्यम कावार केवार खकाक खमान। भाकियाम मरवाा-লয় সম্প্রচাহের কেতৃত্ব জীহক সভীক্রমার সেম, গোবিক बाक्साभावाद क बाबादक्य बदाक विकित काम कादन वा দেবাইবা ভিডা আচালতে প্রবাশযোগ্য কোন অভিবোগ না ভবিষা এেপ্তার ভবা ভইবাছে। ঢাকা বিশ্ববিভালতের বত ভিন্দ অব্যাপককে পাক-নিৱাপড়া আইবে---বাচাকে সাধারণ লোভ বে-আইনী আইন নাবে অভিহিত করিয়া থাকে-ভাৱাত্ৰৰ ৱাৰা হইৱাছে। পূৰ্বব্যের ভাষা আন্দোলন कार्वादय निक्ष वारमानन। अरे कारमानन वेशनरक ভিন্দ-বদল্যান নিৰ্বিশেষে তাহারা বে-পরোয়াভাবে যে ভোষ ৰাজ্যিক প্ৰেপ্তাৰ ভৱিবাছেৰ এবং ব্যাপাৱটাকে वाकित्वत वाकित्वत काक विना विकास कविवाद हारी हामारना बरेरफरक ७ वरे ऋरवारन विक त्नका, चनानक প্ৰভতিকে প্ৰেপ্তার করিয়া সংখ্যালছদের মধ্যে আভাতের স্ক্রী कविशास्त्रम । जैवक जैनित्स हर्द्वानावाद्यव काव नाक সরকারের বিশ্বত ও অনুগত বেতাও পূর্ববন কর্তুপক্ষের এই चाहबर्गब अधिनाम भागादेख नामा हरेबारहम । जरमालक्-ষের বিরাপভা নাশের এই প্রভাক অভিযান সভেও গর্মত-চৰ্ষায়ত নেডভে বাবের ভার বিঃ বোহা পাকিছানের ছারী यानिया, व्यवन वियुक्ति निवायका-विवादन श्रविक वाहित्यन पुनि चाथकारेटकट्टन ।

পূৰ্ধবদের আন্সার-নারক কোহা সাহেব উচ্ছার বাহিনীকে পশ্চিম্বক বা আসার হুইতে বে কোন পূৰ্ধবদে গ্রনকারীকে বানাভ্রাস করিতে ও জিঞাসাবাদ করিব। পূলিসের হাতে বিতে বলিয়াহেল। বরিবা আনিতে বলিলে বাহারা বাবিরা আনে, ভাহাকের প্রতি এই নির্দেশ কিভাবে কার্যকরী হুইতে পারে, ভাহা কাহারও অভানা নহে। ইহা বে ভাষা-আংলালন চাপা বিবার হীন কৌশলনার ভাহাও বুবিতে কাহারও বিলম্ব হুইবার কর্মা নহে। কিছু অভ বিকে ইহার ওক্তম্ব

স্ট্রপ্রামী বলিরাই আবরা ইকার আলোচনা প্রয়োজন বলে করি। প্রথম্ভঃ বিঃ গোহার উজি বলি সরকারী উজি হর, ভাহা হইলে উহা বেহজু-লিয়াকং চুক্তি-বিরোধী। আনাবের ভারত সরকার এই ব্যাপারে কি পহা অবলঘন করিবেন, আবরা এবানে ভারা ভানিতে চাই।"

## হাবড়া উদাস্ত-কলোনী

শীৰছ্ল্য ৰোধ বলীর প্রাদেশিক কংগ্রেস করিট্র সভা-পতি। তিনি একথানি দৈনিক পঞ্জিলা সম্পাদন করেন। ভাহার নাম "কন্সেবক"। স্বভয়াং বলিতে পারা বার বে, ভাহার পঞ্জিলার বে সব বছব্য ও পঞ্জাবলী প্রকাশিত হয়, ভা: বিধানচক্র রাম ও ভাহার পরামর্শনাভারা একেবারে ভাহাকে ভাহ্মিল্য করিতে পারিবেন না, এবং প্রাদেশিক সমিতির সভাপতিরশে ভংসহতে ভাহার হারিছও ভাতে।

এই গৰ কথা বলিলাৰ গত ১৬ই কাছৰ পৰিকাৰ প্ৰকাশিত হাৰড়া কলোনীৰ অধিবাসীয়ন্দেৰ স্থ-ছংখের বিষয়ণ পাঠ করিবা। এইংকিকেডিশোর যাব লিখিতেহেন:

শ্বরকারী প্রচেষ্টার হাবকার বাস্ত্রভাগীবের ক্ষতে যে ক্ষম-পদ গড়ে উঠেছে, সেটা দেববার সোঁতাগ্য হ'ল সেদিন। প্রথম প্রচেষ্টা হিসেবে পশ্চিমবদ সরকার এ নিয়ে গর্জা করছে পারের নিশ্চরই। কিছু এতে সম্পূর্ণ সাক্ষ্যলাভ নির্ভর করছে ক্ষমাবারবের সহযোগিতা এবং সরকারী আত্মবিক কতক-স্থাল বাবকা অবস্থানের উপর।

আমরা সভ্য করলাম, কতক্তলি বাকী দ্বল নেবার পর কিছু সংব্যক লোক দরকার ভালা লাগিরে চলে গিবেছে। এ ব্যাপারে বোঁকে নিবে ছানীর লোক্ষের কাছ বেকে কানভে পারলাম, সাধারণভঃ পানীর কলের প্রশ্ন এবং ছানীর কীবিকা-নির্ব্বাহের সম্ভাই ছামভ্যাগ করার কারণ।

ছানীর লোককের জীবিকার প্রবৃচীই বড় করে বেবা বিবেছে। সাবারণ বেকার ব্রকরা অরসংহাবের অন্ন কোন উপায় লা পেরে কেউ কেউ চুরি-চাকাভির বিকে বুঁকে পড়ছে। ভাই বা ক'কনে পারে ?

বত দিন না কোন অৰ্কন্তী প্ৰতিষ্ঠান গড়ে উঠে, তত দিন অভতঃ কলকাতা বন্ধন ইত্যাধির সলে বোগাবোগ ব্যবহার উন্নতি ক'লে এ বিষয়ের আংশিক স্বাধান করা ব্যক্তার।

ভংলানী থেকে নিকটবর্তী খেল টেশন ছই নাইল থেকে ভিন নাইল। এবানকার বোগাবোগ ব্যবহা লাইকেল-রিজা ঐ পথের অভে ঃ√০ থেকে ৸০ আনা নের। নাবারণ লোকের পক্ষে তা বেওরা সভব নর। ভাই অবিলয়ে সম্বকারী বান অব্যবিক /১০ ভাভার চালু করা ব্যবহার হাবভা টেশন পর্যাভ।

গুনলাৰ, কলোৰী থেকে কিছু বিনের মধ্যেই একটা বাদ বাবে ভালছোলী পৰ্যায়। কিছু বা' ভাড়া টক হবে, ভা বোৰ হৰ লাবারবেৰ নাগালেৰ বাইছেই স্কাৰে। এ সমত চুৰবৰ্জী পথেৱ চাত্ৰীজীবীহনক বাৰ্ধে হেলেল সমাত্ৰ ভাতাৰ বাহনী ইকিটের বংলাৰত ক্ষলে বোৰ হব কিছুটা সুবিধা হবে। ট্রেন চলাচলেরও কিছু সুবিধা হওৱা বরকার। ১০টার বাবের অফিস, ভারা বাল একট ৮টার টেনের সুবিধা পেতে পারেন, বেটা বিরালবাতে ৯-২৫-এ পৌরার। আরও হ'ট ট্রেন বেওরা ইচিড, বা লাবারবভাবে ৯-৩০ বেকে ৯-৪৫-এর বব্যে বিরালবহু বাবে। এই হুট ট্রেন প্রভ্যেক ট্রেন্সেন বা বেবে হাওড়া-ভারাবালত-নব্যব্রাব-ক্ষরে অংশন ব্যে বিরালবহু পৌরাল সমর অনেক ক'লে বাবে।

ক্লিকাভার উপর থেকে ক্ষমভার চাপ ক্ষাতে হলে এ লগত ক্লোনীগুলোকে প্রাণবাদ করে ভোলার প্রয়েক্ষন বীকার না ক'বে উপার নাই। হাবড়া কলোনী নির্মাণ পশ্চিম-বিদ সরকারের প্রথম প্রচেষ্টা বলে ভার লাকল্যের উপর প্রথম-নারীর ক্ষানত ৬৪টি ক্ষমণক গড়ে ভোলার লাক্স্য প্রয়েক্ষ্

## বুনিয়াদি শিক্ষার সংগঠন

গভ আবিন নাসের "শিকারভী" পৃথিকার ঞ্রীপ্রনিস্বোহন
শুরু এই বিষয়ের অভরদ ও বহিরদ ভাব ও প্রধানী সহত্তে
একটি প্রবহ নিধিরাহেন। অভ্রমণ প্রবহ হুইতে অনুনদ সরর
আনরা "প্রবাসী" পৃথিকার উদ্ভূত করিরা থাকি ও বছব্যও
করি। সাবারণতঃ শিকার ব্যাপারে সরকারী কর্তৃত্ব আনরঃ
প্রহম করি না। রাষ্ট্রের পক্ষে ভূমিদান করিরা অথবা
নাসিক বা বাংসরিক আবিক সাহাব্য করিরা ব্যক্তিকে বা ভূজ্য
প্রতিষ্ঠানকে ঠেকিরা শিবিবার প্রবাগ কেওবা উচিত। বহুহ
প্রতিষ্ঠান, ভাবা বভ নহংই হুউক বা ভাবাবের কর্ম্বর্জা বভ
সংই হুউন না, ব্যক্তির বাবীনভা সম্বৃচ্চিত করিরা কেলে।
ভার কন সনাজের পক্ষে অনিষ্ঠকর।

অণচ, বৃহৎ প্রতিষ্ঠানের প্রতি লোকের এক চুর্জার আকর্ষণ আহে; বৃহৎ লোকের পারের গুলা লইবার কত বা উচ্চাকের করকানি করিবার কত কিবা উচ্চাকের কেবতার পরে উরীত করিবার কত নর্মকালে ও নর্মকেশে বেরূপ ঠেলাঠেলি পতিরা বার, তাহা বেধিরা বানব-প্রকৃতি সক্ষতে প্রভা রক্ষা করা কর্তীন চইরা পতে।

ব্ৰিবাদি শিকাৰ প্ৰবৰ্তককে আৰৱা কুলেৰ বালাৰ চাকিবা কেলিতে চেঠা কৰিবাহি এবং প্ৰতিক্ৰিবাৰণে উহাহাহ কীৰণ অভিঠ কৰিবাহি, অবশেৰে উহাকে হত্যা কৰিবাহি। ব্ৰিবাদি শিকা এই ব্ৰোভাৱ বুৱ কৰিতে পাৰিলে ক্পতেৰ পৰ্বাশেকা উপভাৱ কৰিবে। এই অভ্যন্ত ভাবেৰ নিবন্ধৰ ব্যৱহাৰ কৰিবা ভাগত বাকা উচিত।

পৰিবলের কৌশল লক্ষরে অনিলবাৰু কাছা বলিবাহেন ভাষার ক্ষিত্রবান কুলিয়া বিলাব ঃ "(क) প্রথমতঃ, ঝানের উপালানে আলর্শ পুত্নির্জ্যণ করতে হবে। বুনিবালী বিভালনের পুত্নির্জাণির বেজার এ কথাটা আনরা প্রান্তই বনে রাবি না। বুনিবালী নিজার নারকতে প্রানের সামনে বে আলর্শ রাগতে হবে তা এরন হওলা চাই বা প্রানের দীনতম ব্যক্তিও প্রত্ন করতে পারে। গাঙীজীর চিভাবারার বে স্বাজ-বিপ্রানের পরিক্রমা পাই এট তার একট মূল কথা। প্রানের সামনে প্রানের লোকের পক্ষে সহক্ষাব্য কোন আলর্শ দেওরা যদি সভব না হর তবে বুর্বতে হবে প্রান্ত দেবার মত প্রবিশ্বরে বুনিবালী নিজার কিছুই নেই। ইট, লিরেন্ট ইভ্যাদি হাড়া যদি আল্র্শ পুর্নির্জ্ঞান সভব না হর তবে প্রান্তক আল্র্শ পুর্নির্জ্ঞান বিভাগ বিত্ত বাঙ্গা ব্যর্গত হবে প্রান্ত ব্যব্যাদি হাড়া বি

चार अक्षी किक (बरक्श वर्षमान चवत्राव प्राप्ती वर्षनाकी देखती कतात शाक काम विक बाँक शाहे वा । कांठा वह-ৰাভীত পরিবর্তম সাধ্য সভজসাধ্য, পাকা ৰাভীত বেলার ভা বৰ। আৰু বনিবাদী শিকা ৰে কোঠাৰ আছে ভাতে এই (सनैव विकालरबर कर काम (सनैव कि शविवारशव बववाकी নৰ্ব্বাশেকা উপৰোধী ভাৱ কোন চুড়ান্ত পরীকা হয় নি। সে क्ति विकार शाविक वाद भाका वत्रवाकी देखती क्यांव পক্ষে কোন বক্তি ব'লে পাই বে। কি বিভালৰ, কি শিক্ষকের বাসগর আৰু ভাই কাঁচা তওয়া বাজনীয় বলেই মনে ভরি। সভাই বলি ভোন দিন লবে চর পাকা বর কাঁচা বরের চাইতে हैश्क्रदेश्य बन्द विक श क्रिया अर्थमानावानव गर्फ महत्वमण করে ভোলা বার ভবে দেবিদ হয়ত বুনিয়াদী বিভালর ও আর निक्कारक क्या भाका वाजीत वावश करा क्या अमार भारत। সমাজের বাছৰ অবস্থার সঙ্গে সম্বৃতি বেখে সমাজের পক্তে সহজ্ঞসাধ্য আহর্শ পিকাকেল সমাকের সামনে চলে বরুবে बहारे पुनिशाली निकात बक्डे पुनक्या। प्रविश्वीद्वय বেলাভেও আমহা বেদ বিশ্বত দা হই পরিবেশকে সুকর করে (कामात्र क्या ।

প্রায়ে বৃক্ত আলো-বাভাগ এবং জনের অভাব বাকার কবা মর। শহরের বভ কলের বোঁরা, বিরাট প্রানারের পর্কোছত চূড়া বাভাগকে আবিল ও আলোকে ব্যাহত করে না। কিছ অঞ্চার কলে আবরা প্রায়ের আবহাওয়াকে বিবাস্ত করে ভূলেছি।

পরিবেশকে এই দ্রেণাক্তভা বেকে রক্ষা করা হবে শিক্ষাকর্মীর অন্যতম প্রবান কাবা। আবা নাহবের নলম্বা প্রানের
নবচেরে বক্ত অভিনাশ। বোলা নাঠে আনবা নলম্বা ক্তান করতে অভ্যত। কলে এর লারাংশটুক্ স্বর্নোর ভাগে নাই হবে যার আর এর কেভরকার বীক্ষাপ্রতি নহকেই হকাবার স্বরোগ পার। অভি ক্ষর বরচেই পারধানা তৈরী করা চলতে পারে। বীলাও বেকুর বা ভালশাভা বিরে আলাবা বেভা তৈয়ী কৰে পাৰবানা বেলা চলতে পাৰে এবং এক ভাৰগাৰ দালা কাটাৰ হাল ভাই হয়ে পেলে বেলাগুলি বুলে নিৰে পূক্ষ পাৰবানা ভৈন্নী কৰা বাৰ। বাঁপেৰ টাচ কিংখা বাঁপ বিষে পুলেও এ যুক্তৰ বেলা কৰা চলতে পাৰে।"

পরিকল্পনা ক্ষিপ্রের স্থারিশের উপর তিন্তি ক্ষির।
ক্ষেত্রীর পিকা বর্ত্তর স্থার তারতের ব্যাহারী ও স্বাধ-পিকা
উরহনের উত্তেও একট পাঁচবকা পরিক্রমা হচনা ক্ষিয়াহেন ।
রাজ্য সরকারসমূহের রভারত কাবিবার কর এবং তাহাহের
সহবাসিতার কর উহা প্রভাক রাজ্য সরকারের নিকট
প্রেরণ করা হইরাহে। পরিক্রমার অর্ভর্ক ক্রক্তনি
কাব্যের কর ১৯৫২-৫০ সালে ভারত সরকার প্রারতিক এক
কোট টাকা ব্যর ক্রিবেশ বলিরা হির হইরাহে।

পরিকল্পার প্রথম পর্বাবে কেন্দ্রীর শিক্ষা দপ্তর প্রভ্যেক शास्त्र अक्षे कविशा नुनीक वृतिशायी निका-श्रविकाम शानव ক্ষরিবেদ। বুনিরাদী শিকা কলেকের শিক্কবিগের শিকাদানের क्या अक्षे (गांडे-बाक्टके निका-निक्य करनक दागम करा क्रेंद्र । निकाशास्त्र प्रतिशास क्रमा अक्षे पूर्वान युनिसारी শিক্ষানত বাজিবে। প্রাথমিক বিদ্যালয়ের শিক্ষারিগের শিক্ষার क्या अक्षे वृतिवारी निका-करनक अवर तारे गरन वरेके विव-वारमद नुमिदानी निकामद पाकिरत। देवा बाजाक वाकिरन नाहर क्रमविक्विक वारवाबाबी (क्य. नबीरवकारवद निका-शास्त्र चना अकड़े करनक, अकड़े अद्योगीय अवर निकी-क्रिक चक्राजब ब्राविवक ७ वृतिवाकी - निकालवर्शन व वेत्रवर्गत क्या वर्गावादाह वावशा । अहेत्रभ अक-अकडे वर्गल क्षाह এত পভট প্ৰায় বাভিবে। পৰিভয়নার নাবারণ উচ্চত চইল প্রাথবিক প্রেম হাইতে স্নাতকোত্তর বিভাগ পর্যাত ব্রিয়ালী বিভার আহর্ণ ভার্যকরী করা। ব্যরের কভ অংশ কেন্দ্রীর সরকার বর্ষ করিবেন, ভাতা রাজ্য সরকারসবহের সভিত चालाव्या पवित्रा दिव पदा वरेट्य।

পরিকরণার বিভীর বজার নির্মাচিত বাব্যমিক বিদ্যালয়ভালতে শিকার উরহন করা হইবে এবং দেবানে উরত বরবের
শিকাব্যবহা প্রবর্তন করা হইবে। শিকা-শিকণ প্রতিঠানগুলি
গবেরণা করিরা উরত শিকাব্যবহা উত্তাবন করিবে এবং এই
উত্তেও অর্থ বরাক করা বাকিবে। ঘরিত্র হার্যাণ বাহাতে
লরকারী বিদ্যালয়ওলিতে প্রভাকা করিতে পারে, দেহত
বোগ্যতা বিচার করিরা বৃত্তি বেওরা হইবে। বাব্যমিক শিকাব্যবহা পর্ব্যালোচনা এবং তাহার উরহবে বীর্যমেরাদী ব্যবহা
অবলব্যের স্থপারিশ করিবার করা বর্তনান বংগরে একট
বাব্যমিক শিকা করিপান গঠনের করা ভারত সরকার বিবেচনা
করিরা বেবিতেবেন। হিতীর বকার করা ১৯৫২-৫৩ লালে
তিন লক্ষ টাকা ব্যর বহাক করা হুইরাহে।

ুক্তীৰ দক্ষাৰ কৰা ১৯৫২-৫৩ লাচে ৭ জন ঠাকা ব্যৱ কৰা

হুইবৈ। বুনিছালী ও সহাধ-শিকা কেন্তে শিক্তবের ও প্রার্থ-ব্যৱহারের উপবাদি পুরুকাদি রচনা এবং অ-হিন্দীকারী অকলে হিন্দী কারা প্রচারের ব্যবহা বাকিবে। চিন্ন ও বক্তবার সাহার্যে শিকালানের বিষয়েও শিকালানের ব্যবহা করা হুইবে।

শিকা ও নংকৃতি সম্প্রদারণের কার্ব্যে নির্ক্ত বেসরকারী প্রতির্ক্ত, পূত্রকারার প্রকৃতিকে সাহাব্যবান, বারোরারী কেন্দ্র, ব্যক্ত-ব্যক্তী কর্ত্বক পরিচালিক নদল-ক্ষেপ্ত প্রভিত্ত ইর্বন চন্ত্রক করার কর্ম তালিকার অভর্তি । ইর্বার ক্ষ্যা ব্যাধের পরিবাধ ৫০ লক্ষ্ ইকার।

পাণ্যৰ কৰাৰ অপৰাধ্যাৰণ অৱপ্ৰেৰ শিকাৰানেৰ অন্য একট কেন্দ্ৰ হাপনেৰ ব্যবহা হহিছাছে। ইহাৰ অন্য এক সক্ষ টাকা ব্যৱ কৰা হইবে।

পরিক্ষন। কার্য্যকরী করিকে গিরা বজ্ব গভব ব্যর গভোচ করিবার অন্য রাজ্য-সরকারসমূহকে পরার্থ দেওরা হইরাছে। বেবানে গভব গেবানে পুরাজন গৃহারি কাজে লাগাইতে হইবে। আগানী ১লা নার্ফের মধ্যে রাজ্য-সরকার-সমূহকে বভারত জানাইতে বলা হইরাছে। আগানী ১০ই ও ১৬ই বার্চ ভারিবে নরাবিদ্ধীতে কেন্দ্রীর শিক্ষা উপরেপ্তার বৈঠিক বলিভেছে। এই সম্বে কেন্দ্রীর শিক্ষা-ম্বর্ম বাহাতে বিভিন্ন রাজ্যের প্রক্রিমিবিদের লহিত ঐ বিষয়ে আলোচনা করিতে পারেদ, ভর্ততে নির্মিপ্ত সম্বের্ম ম্বান্ত জানাইবার জন্য অন্তরোধ করা হইরাছে।

১৯৩৭ লাল হইতে বুনিৱাদী শিকার বাহান্য হাবে অহাবে कीर्धन कवा करेबारक। प्रकबार ১৯৪१ मारल ১৪ই चानरहेब পর আশা করা পিরাহিল বে, মুভব সবাজ-সংগঠবের উদ্বেশ্ত সহতে ভারত সর্ভার ইংরেজ আমলের "লাল কিভার ভ বিশেষজ্ঞ"গণের হাতে নিজেদের স্বর্ণণ ভরিবেদ না। चावारम्ब इक्षांग्रक्रस्य त्म चाना पूर्व इव मारे. पूर्व इरेगाव म्हारमा । द्वारा वार्टा मा । द्वारायि ग्राह्म कर्यहारी-ৰঙলী বুনিয়াবি শিক্ষাকে গাড়ীকীয় অগণিত বেয়ালের বব্যে একট দূতৰ বেৱাল বলিৱা বলে ভৱিৱা আলিভেৱেল ৷ ভার नव और मूजन निकास कड दर विदान क निर्वास कारवाकन. ভাঁছাৰের ভাভা নাই। ভাইনীর ছাতে সভান সমর্পন ভারিলে শিশুর বে অবহা হয়, ভাহাই আনাবের চকুর সমূবে বটভেছে। পশ্চিম্বলের কথা প্রভাক অভিজ্ঞতা হুইভে অনেকে বলিতে পাৰেব। অভ্যন্ত অংপরভার সহিত প্রাই-ৰামী ও বুৰিমাদি শিকা গৃহতে অহুসভাৰ ও আলোচনা ক্ষিণায় ক্ত একট ক্ষিট নিযুক্ত করা হুইব। সভাপতি विषक्रमध्य ७७।

্ষিকীয় অরিবেশনে নোধ হয় একজন বেণয়কায়ী গভ্য প্রভাগ ক্ষানেল বে, কলিকাজা ক্ষিক্তিকালয় বেধন প্রায় সাধীন প্রতিষ্ঠানরশে ভার্য্য ভরিষা বর্তমান উন্নতি করিয়াকে লেইরণ প্রাথমিক শিকা ও ব্যিরাধি শিকার বত একটি বতর প্রতিষ্ঠান প্রতিষা ভূলিবার প্রতাধ করা হউক। নে প্রতাবে প্রায় নকলেই এই বলিরা আগতি করিলেন বে, এই রহং প্রতিষ্ঠান চালাইবার নত বেরপ লোকের প্রবাহন উাহাকে ভোবার পাওরা বাইবে। যানবিহারী বোব, ভারক্ষাব পালিক, ভাতীর শিকা পরিষদের প্রতিষ্ঠাভূগণ, রবীক্ষমাব ঠাকুর, নতীশচক্ষ রুবোপাব্যার ও আভভোব মুবোপাব্যার এরপ প্রশ্ন করিতেম না।

ভার পর প্রার বার বাস পর রিপোর্ট ভ সম্পূর্ণ ক্ইল।
সভাপতি বহালর ভাহার বসভা ভরিরা প্রার প্রতিট পর্ক ভ্রিটির সভাগপের আলোচ্যার বিষয় ভরিলেন। ভিত্ত সরকারী দপ্তর ভাহাদের ননোরভ সংশোবন বা বিভ্রুভ ভরিরা রিপোর্টট ববন উপস্থিভ ভরিলেন, ভবন সমর নাই বলিরা ভাহা নবোননঃ ভরিরা শেষ ভরা ক্ইল।

একট বৃহৎ দরকারী প্রতিঠান গছিলা উট্টরাছে। সেক্ষে-টালী, সহকারী সেক্ষেটালী কেলার কেলার ইন্দর্গেটল, বহকুলা-বহকুলার লাব-ইন্সপেটল প্রভৃতি সরকালী কর্মনত লক্ষা ব্যাহা করা চইয়াছে।

অর্থের কথা সংক্রেপে উরেপ করি। বরাদ ও কোট হইতে ১ কোট টাকার নাবিরাহে। সরকারের নিঠার পরিচর পাইলার।

ভবে কি বলিব বে, বুনিয়ারি শিকা ব্যর্থ হইবাছে ? ভাছা হর নাই। কারণ অভাভ লোক—নর-নারী, নির্চার সকে বুতৰ বাহুব পট্ট করিয়া প্তম সনাক প্রতিষ্ঠার কাম্পে সাবলা করিভেছেন। সরকার তাঁহাদের জানিলেও সহাত্ত্তির সৃষ্টিতে তাঁহাদের কার্যকলাপ সক্য করেন না। তাঁহারাই বুনিয়ারি শিকার বারক, ভাহার সেবক।

## ডাকাত সদার ভূপৎ

গোৰেকা বিভাগের উচ্চণবছ কৰ্মচারী মহল হইতে প্রাপ্ত সংবাদে জানা গিরাছে বে, সৌরাট্রের বারওরালা-বিবাসী ভূপং নামীর বস্তা সর্বার সৌরাট্রের অভর্গত চিত্রল প্রান্ত রইতে সম্রতি নাগপুর হইরা আলাবে গিরা পৌহিরাছে। এ পর্বান্ত ভূপং ৬০ট ভাকাতি ক্রিরাছে এবং ৮১ জনকে হত্যা করিবাহে।

নেণালের বিজ্ঞাহী বেভা ডাঃ কে, আই, সিংহের সহিত বিলিভ হুইবার উদ্দেশ্তে সে আসার সীরাভ অভিক্রম করিবা ভিক্ষত বাওরার চেপ্তার আছে। বিশেব আসরবেই বাকি ভূগং ভিক্ষত অভিযুবে রওবা হুইবাহে।

আছও প্রকাশ বে, নাগপুরের ক্তিপর বাবোবাতী ক্ত-লোকের অন্থরেবে কিছুদিন আলে বব্যপ্রবেশের প্রতির এই ভাড়াত সৰ্বাহের সভাহের প্রায়ত হয়। কিন্তু, তুপৎ বিপরের জাঁচ পাইরা পরেই সহিলা পভিবাহিল।

ইভিপূৰ্বে ভাৰত সৱকাৰ ভাৰাকে জীবিত বা বত অবহাৰ বহিবা দিতে পাহিলে ৫০ হাজাৰ টাকা প্ৰভাৱ দিবেন বলিবা বোৰণা কৰিবাহিলেন। কিছুদিন পূৰ্বে ভাহাৰ বসুস্থবাদ প্ৰভানিত হয়। গোৱেলা বিভাগ ইয়া অধীকাৰ কৰে।

ভূপং এবং ভাছাত্র সদীবের আসল উবেড রাজনৈতিত।
ভাছাত্র দলের বিশিষ্ট ব্যক্তিবের বব্যে রহিরাক্তে—ভাটি বাবোজা
বাসিরা এবং আহের দেবাবেং কেঠা। এক সংবর্ধে আহের
দেবাবেং কেঠার মৃত্যু হর। দৌরাষ্ট্রের কারনীরবার ও প্রাক্তন
রাজা-নহারাজারা নিক নিক রাজনৈতিক উবেড সাববের করা
ভূপংকে-বরের ন্যার ব্যবহার করিভেছিলেন। পঞ্চাব সরকার
ভূপং এবং ভাহার চার-পাঁচ কন সদীকে প্রেপ্তার করার কাক্তে
লাহাব্যের কন্য বিশিষ্ট পূলিন কর্মচারী অধিনীকুবারকে
নৌরাষ্ট্রে পাঠান। এ সম্পর্কে ভ্রনগরের নহারাজার ভাই
ভূমার নির্মাক্ত্রারের এবং ঢোলের ঠাকুরের সেপ্তার বিশেব
উল্লেখবাগ্য।

এই ব্যক্তিদের এেগ্রারের পরমূহর্তে পালিবাটামার মহা-রাজার রাজ্যেট সকরের উপর বিলক্ষণ অক্ত আব্যোপ করা কইতেতে।

ষধ্যপ্রদেশে ভূপভের অভ্চরের সংখ্যা করণকে আই পক।
ইতাবের অর্থেকেরও বেশী ক্যুবিট। ভাতার নিকট হইকে
নির্কেশ পাওরা নাম সর্কম হালা ও অরাক্তভা স্টের কর্ম
প্রকৌই নির্কেশ কেওবা হইবা থাকে।

পাগাড়োর বর্ডনাম পীর ভূপতের সাহাব্য প্রার্থনা ভরিতে-ছেন। প্রকৃত প্রভাবে পাগাড়োর পীরের উদেও হুইতেহে মধাপ্রদেশকে "কাসিন রেক্ডী"র বিভীর হার্থবাবাদে পরিপ্রভ করা।

ভূপভের বরস ৩৫ বংসর বাজ। ভাছার মুখের উপরের পংক্তির একট গাঁভ ভাছা। সর্বলা সে সমল থাকে। অনেকেই বলিলা থাকেন বে, ভূপং অভ্যন্ত হাবরতীন। নিরে বর্ণিভ বটনা কিছ অন্য লাভ্য বের :

এক্ষিম সোঁৱাটোর কোন এক প্রামে বিদাহরার নারীর ভাষার এক শক্ষর গৃহে ভাষাকে হত্যা করার উবেতে তানা বের। প্রমন সমর নাহরামের পদ্মী দরভার আসিরা ভূপতের পভিপর্বে বারা কের এবং বলে বে, ভাষাকে (সাহরামের পদ্মীকে) হত্যা না করিরা ভূপং (সাহরামের) খরে চুকিতে পারিবে না। ভূপতের চিভ বিচলিত হয়। সে লক্ষার নাথা নত করে এবং ভাষাকে রা বলিরা সংবাবন করে। লাহ্য-রামের ভীবন হক্ষা পার।

নোনাই ভ্যাবের পূর্বে ভূগং ভাহার নীর সহিত সাক্ষাং কৃষিবার ক্ষয় ধবর বেয় নি কোলে একট সভোকাত শিক্ষ লইবা নাজাং করে। 'বিদার' লগুৱার ক্ষর লে ব্রীকে এই
মর্বে উপবেশ দের দে, বর্জ বিপদই বচুক, লে বেদ ভারার
ঘানীর অচল আহুগভা রাবে। ভারার ব্রীর' এবং বেচলর
ভয়ব-শোষণের ক্ষয় লে প্রার ৫০ লক্ষ টাকা রাবিরা নিরাতে।
বিদারপ্রহণকালে ভূপং ব্রীকে নিক্ষই গুরুষণের ন্যান বিরা
নিয়াতে।

এই ডাকাড স্থানের বিষয়ণ পাঠ করিবা বনে হর লে একজন রাজনীতিক করাঁ। তাঃ কে, আই, নিংহকেও ডাকাড-স্থান বলিবা বৰ্ণনা করা হইবাছিল। এরপ বৰ্ণনার কোন নার্থকতা দেবি লা। বরং ডাহার ওক্রছ উপলব্ধি করিবা বৰোপর্ক্ত উপার অবল্যন করা উচিত। আর একটা কথা ভাষা প্রবাদন, কাবিওরার নৌবাইই বা কেন এরপতাবে কিছুক হইবা উটিবাছে। রাজ-বাজ্ঞারা বহি রাজনীতিতে বোগ-দান করিছে চান, তবে "পেন্সনভোগী" বলিবা ভারাকের বারণ করা হইভেছে কেন ? প্রীচিতানন বেশব্ধও ত পেন্সনভোগী, তিনি ত আবাদের আর্থিক ভগতের বিয়ামক।

## ভূমিদান যজ্ঞের সূত্রপাত

গত তথা কাছবের "ব্যৱস্থান প্রিকার বিবোধা ভাবের তেলেকামা সভা সক্ষে নিয়লিবিভ বিবর্গট প্রভাবিভ চটনালে

"ঐ হানের প্রধান সমভা হইল ভ্রিসমভা। সক্লের বুবেই এক কথা, চাবের ভত আমরা করি চাই। প্রামের বোট করির পরিমাণ ৭,৫০০ বিখা। ক্ষমংখ্যা ৩,০০০, অর্থাং ক্ষম প্রভিত্নই বিখার উপর করি। বর্তনাবে সমভ ক্রিক্সই ক্ষমিত প্রমাক্তরে ও ভারার পরিবর্তে উংপরের ১)২০ ভাগ ক্ষম ও একট ক্ষম ও এক্লোড়া ভূভা পার।

বিৰোবা বিজ্ঞাসা করিলেব ভাহাব্যের কড বিবা করির ক্রোজন। কিছুক্দ পরাবর্ণের পর ভাহারা জানাইল ১২০ বিবা ভক্তবা ও ১২০ বিবা ভিজা ক্রিই ব্রেই।

ইবা বৰেই কিলা বিনোবা লে বিবৰে সন্দেহ প্রকাশ করিলেন। তিনি আরও বিজ্ঞানা করিলেন বে ভাহারা সনবারে চাব করিবে, লা ব্যক্তিগভভাবে করিবে? ভাহারা সনবারে চাব করিভে ইজুক। তংগর বিনোবা ভাহারের একট বরবাত নিবিরা বিভে বনিলেন এবং আনাইলেন বে তিনি ভাহারের অন্য চেই। করিবেন। অন্যান্য প্রার্থানিগণও নেবানে উপস্থিত বিজ্ঞান। তিনি ভাহারের সহিত পরামর্শ করা প্রয়োজন ববে করেন। তিনি ভিজ্ঞানা করিলেন :

্ৰকি সৰকাৰ কৰি না কিছে পাৰে, আছা হইলে আপ্ৰাৰা কি কোন ব্যবহা কৰিছে পাৰেন ?

শীরাবচন বেজী গাড়াইরা উট্টরা জানাইলেন—আয়ার-শিভার ইকা হিল ইহাবের কিছু করি নান করিবেন। আবি আয়ার ও ভারেবের পঞ্চ হুইডে ভিন শুভ বিদা করি বান করিতেরি। ইয়াই এবৰ ভূমিকাৰ এবং এইভাবে এই সজের প্রপাত ক্ষম।

কৰিব আছও একট কাজের ছ্বলাভ হইল। বিবোৰাজী হরিকন্দের জিজানা করিকেন, আপনাধের বব্যে ক্তবন পানে আনক ? উভর হইল নকলে। "আপনারা সভ্য বলিরাহেন, তালই। কিন্ত ইহা সম্পূর্ণ ভ্যাগ করিতে ক্তবিদ লাগিবে।

ছবিষদ-দৰ্শায় বৰ্ত্তের সহিত আলোচনা কবিলেন। আর পরেই তিনি সভাত্তে স্বাভাইলেন। সকলে উংস্কুত আরহে আভার বিজে ভাতাইল।

বহারাত, আমরা আত ব্ইতেই বঙ্গান বছ করা ছির করিলার।

একজন চিংকার করিবা বলিলেন, উহাদের দিয়া একট প্রতিফাপত লভি করাইবা লওবা ভটক।

বিৰোৰা ভাছাতে ৱাজী ছইলেন না। তিনি বলিলেন, বছপান একট অভ্যানের ব্যাপার। উহা বীরে বীরে চুর ছইবে। উহারা বলি নিজেকের কথা বাবিতে চেঠা করে ভাছা ছইলেই ববেঠ।

তৃতীর সমভা হইল তাঁতীদের সইরা। তাহারা বংগঠ হতা পার না বলিরা অতিবােগ করিল; বানে মাত্র আব বেল হতা পার। ইহাতে এফ লগ্রাহের কাজ চলে। তিল লগ্রাহ বলিরা বাক্তিতে হর। তাহারা বিনােবাজীকে বলিল, আপনি অভ্যঞ্জ করিরা আমানের অবিক পরিমাণে হতা পাইবার ব্যবভা তরিরা দিন।

रेबा ७ अपने गर्स-जावजीव गवजा।

ভাষা বইলে আৰম। কি ক্ষিত্ৰ ? ভাতীয়া বিনোবাকে বিজ্ঞানা কৰিল। তিনি বলিব্যেন, মিল বৰ্ষ ছিল না— ভবন কি আনাদের দেশে ভাতী ছিল না ? ভাছারা কি বলিবা বাকিভ, না লোকে উলদ বাকিভ ? আবার বেধুন, আপনায়া নিজেরাই নিজেবের ভৈরারী কাপক ব্যবহার ক্ষেত্র না । ক্ষম কি বান চাব ক্ষিত্রা, চাউল কিনিরা বার ? আপনারা নিজেরাই নিজেবের বাব নই ক্ষিভেছেন । বিনোনারা নিজেরাই নিজেবের বাব নই ক্ষিভেছেন । বিনোনারী নিজের বৃতি চালর ইভ্যাবি বেবাইয়া বলিকোন, এই বেবাক কি সুন্দর কাপক—লম্পুর্ণরূপে হাতে ভৈরারী হইরাছে ।

ভাতীয়া বলিল, এবাবে তুলা জনায় না। বিনোবালী বলিলেন, ইহা নতা। ভিড তুলা কি এবাবে কবনই করিত না? আগনায়া বহি তুলা চাব ছাতিয়া বিয়া বাকেন তবে এবন উহা পুনয়ায় হয়ে করেন। এই নবতা কেবলয়ায় এই-বানেই লীবাবছ নয়। ভারতব্যালী এই সমতা। আমি তিনিছে লা চাব করিলে সমকায় রাজ্য আবাহ করিবে না। বতাবিন চাব না হয় আগনায়া তুলা কিনিছে পারেন। ভাগভ কেবা অপেলা তুলা কেবা ভাল।

" শাঁচটা পৰ্যাত নামা লোক ও বল ভাৰাবের সমভা লইবা আলিতে সাগিল। বাসহাদের বিপরীত দিকে এক নির ও আন গাঁহের হারার লভা বগিল। প্রার পাঁচ হাজার লোক উপস্থিত হিল। পার্থবর্তী প্রার্থসূত্র ইতে অনেকে আনিহা-হিল। বিনোধা বাভাইরা উট্টরা তাহার বেল্পু বভা আর্ডি ভরিলেন।

বিশোলা বলিলেন বে, বর্ত্তনান ভারতে বনীগন কর্তৃক অনেক কমি অধিকার করিরা রাণা অনন্তর। তিনি আমণির-রক্ষণ ও বল্যানা নিবারণের উপরও জোর বিলেন। আবের লারিন্য ও উভিট্রের খুভার সমভা মিট্রেন না, বলি-না তাঁহারা নিক্ষেরা তুলা উৎপালন করিরা খুভা কাইরা আবে কুমাইবার ব্যবস্থা করেন এবং বর্ণাসন্তর অন্যান্য প্ররোজনীর ক্রব্যালি আবেই উৎপন্ন ক্রাইরা লন। বল্যানা বন্ধ না করিলে ভারানের অব্যার উন্নতি হওবা ক্রিন।

বে কৰি পাওৱা গিৰাছে ভাছা বণ্টনের ক্ষা পাঁচ ক্ষকে
লইবা একট ক্ষিট করা হইল। উহাতে হরিক্দদের হুই ক্ষ
প্রতিনিধি, এক ক্ষ প্রায়ের মাভক্ষর, ক্ষ্প কংগ্রেস ক্ষিটর
সভাপতি প্রভেকটেশ রেজ্ঞী ও দাভা রাষ্চক্র রেজ্ঞী এই পাঁচ
ক্ষমকে লইবা ক্ষিট গঠিক হইল। ক্ষানা পেল রাষ্চক্র রেজ্ঞীর
ভবীর সহিত হার্দ্যবাবাদের ক্ষ্মানিষ্ট মেভা মারার্থ রেজ্ঞীর
বিবাহ হইবাছে এবং উভ্যেই গোঁভা ক্য়ানিষ্ট।

এই অপাত এবং ক্যুনিপ্ট অধ্যয়িত অঞ্চেও বহু লোক বিনোবাদীর সহিত সামাজিক ও আব্যান্ত্রিক প্রান্ত্র লইরা আলোচনা করিবার জন্য উপন্থিত হইরাছিল। বর্ণাশ্রম প্রান্তর উভরে তিনি বলিলেন, বর্ণাশ্রম বর্দ্ধ সকলেই সরভ রূপে নানিরা চলিরাছে। আবাদের উভীর নিকট হইতেই কাপভ কিনিতে হইবে আর প্রান্তের ভেলীর নিকট হইতে তৈল ভিনিতে হইবে। এইরূপেই বর্ণাশ্রম বর্দ্ধ টিকিরা বাকিবে। আক্কাল লোকে শেষ পর্যন্ত সংলাবে ক্ষিত বাকিতে চায়।

#### যুবজনের সেবামগুল

আমন। ইংরেজী ভাষার লিখিত ছইগানি প্রচারণক্ত পাইরাছি। এই বঙল (Indian Youth Service,) গভ ১৩৫৬ বলান্দের চৈত্র-বৈশাব (বে, ১৯৫০ বিটাল) প্রভিত্তিত হয়। এই প্রভিটানের সভাপতি ভটর কৈলাসনাথ কাটপু। ভিনি ভবল পশ্চিমবলের প্রবেশপাল ছিলেন। সহকারী সভাপতিমঙলীর মধ্যে বহারাকী স্কচাক্র বেবীর নাম উরেধ-বোগ্য। সন্দের সন্পাকক প্রীহীরালাল বস্থু পাশ্চাত্য বেকীর কোরেকার সন্দোরক প্রতিপ্রিক্ত্রাক্রবকনী সেবা প্রতিঠানের (Friends Service Unit) একজন বিশিষ্ট সহারক। বিশ্বসাধী পাত্রির বার্ধা প্রতিঠান উর্কেশে বে সব্ প্রতিঠান

গটিত ক্ৰৈছে, ক্ৰিলাল বস্থ ভাতাৰ প্ৰভোকের গলে লংকি

এই প্রচারণতে যে সব ভার্যবিবরণী পাওরা বাব, ভারা ব্য উল্লেখনোগ্য হয়। সম্পাদক হল্পার বিষয়ণতে ভারা বীকার ভরিয়াছেল। প্রভি সপ্তাহের ভক্তবারে পার্ট-চক্র বসে। ৫-৩০ হইতে ৭-৩০ বিনিট পর্যন্ত ভাষার ভাষার চলে। বানাবিব আলোচনা হয় এবং এরপ ভাষ-বিনিবর্ক্তের আলোচনা করা হার। বাল্যসমভার্তার বিষয়, দেবা হার, আলোচনা করা হইরাহিল। কিছ ভারত-বর্ষের মবজাররণ ও ভারতবর্ষের সংস্কৃতির সম্বন্ধর হৈছিল হুর্গে হুর্গে বাহা ব্রটিরাভে, ভংসহতে এই পার্ঠচক্রের বিষয়ণতে কোম উল্লেখ বেবিলাম মা। ভারতীয় সমভা সম্বন্ধ আলোচনা ভারাও হওরা উচিত হিল। এবনও লে চেঠা ক্রায়-প্রভাকন আলে।

গণভন্ন ও একনারকদ্বের (democracy ও totalitarian-ism) বিরোবের ভাসাভাসা আলোচনা নিরপঁক। এই ছুই মভবাব ছুইট বিখাসের উপর প্রভিন্তিত। মিরীখরবাবও একটা বর্ষ। এই বিষয়ে প্রহার ভাব পোষ্য না করিছে পারিকে কেবল কাঁবা ছুকনেরই সার হুইবে। গোমেরিকা ও সোভিরেট ভাহাই করিভেছে। সেইরপ মানা সম্ভার আলোচনা করিছে চুইবে।

অসংখ্য সেবারওলের বধ্যে এই সন্সেরও স্থান আছে। এই স্বালোচ্যা করিলান সন্সের সকলভা কার্যা করি--বলিরাট।

## ভারত-ত্রিটেন-যুক্তরাষ্ট্র

ভারত ও ত্রিটেনের মধ্যে প্রতি বর্ষিত করিবার হুত লেভি বাউণ্টব্যাটেন গত হুর বংগর বাবং অক্লান্ত চেঠা করিতেহেন। পূৰিবীর হাটে-বাজারে ও হাট্রার ব্যাপারে বার্কিন যুক্তরাট্র ব্রিটেনের উভরাবিকারী বলিলে অন্যার হুইবে না। ভারত-বর্ষের আধীনতা সংগ্রার বে বিশ্ববিবানের অদ এই নীতি বীকার করিবা ক্রমতেন্ট চলিরা গিরাহেন। ক্র্যান্ত, অবলন, কিলিকস এবং এখন বোল্স—এই ক্টনীতিবিদ্পণ এই কান্তে নির্ভুত আহেন। কিন্ত বেসরকারী প্রতিঠান ও ব্যক্তি এই কান্তে হাত না বিলে ক্থনই ভারা সার্থ ক হুইতে পারে না। সেইজ্লত এখন লেভি বাউণ্টব্যাটেন ব্রিট্রা রেড ক্রম্ম প্রতিঠানের ক্রম্ম-রূপে প্রতি হুর বাসে ভারত্রাট্র ও পাকিস্থান স্থাররা বাক্ষের। বিলেস্ ক্রমতেন্ট্রও সেই উন্নেট্ড লইবা ভারত্বর্য ক্রম্মন

তিনি করাটী গিরাছিলেন; বিলী লাছোর কলিকাজা' নাগপুর গিরাছেন। প্রার প্রতি লভার এই ছই ফেলের বব্যে বোগছুর ভূট করিবার ক্য নানা উপারের কথা বলিলাছেন'। ঐ বোগপ্ত বৃদ্ধ ভবিতে ক্ষানে প্ৰথবে ভৰ্তন্য এই ছুই বেশের বব্যে অভানভাগ্রেত্ত নানা ভূল বারণা বৃদ্ধ ভবা এবং একের সক্ষে অভ্যের পরিচর সাব্যের ভিত্তিতে হাপন ভরা। বিটেন ও ভারতের বব্যে বে শোষক ও শোষিত সম্পর্ক ছিল লে কথা ভারতবালীর ভূলিতে আরও করেক রুগ লাসিবে। নার্কিন রাই সম্পর্কেও সেই আশভা আহে এবং ঐ আশভার মূলে বাত্তব বে ভিছু নাই ভারতে নহে। নে ভর-ভাবনা ছুর ভ্রিতে ক্ষানে হুই বিকেরই বোরক্রেট বোলাবুলি বলা প্রব্রেত্ত হুই বিকেরই বোরক্রেট বোলাবুলি বলা প্রব্রেত্ত হুই বিকেরই বোরক্রেট বোলাবুলি বলা প্রব্রেত্ত হুইতে পারে না। পারে জীর্তা ক্রমতেন্ট প্রবৃধ প্রতিপত্তির্ভা প্রভাবশালিনী বহিলা বা অভ্যাপ সক্ষমের বারা। পৃথিবীতে আররা ভারারও শক্রভা চাহি না সভ্যা, ক্রিত বন্ধুতারে নার প্রকাল ক্রম্বেত্ত প্রভাব নার প্রবারত শক্রভার বন্ধুতারে ক্রম্ব আলিলে জালার সভ্রেরা প্রব্রেত্তন। সভ্রাণ বন্ধুতারে ক্রম্ব আলিলে জালার সভ্রেরা প্রব্রেত্তন।

#### মাহিষ্য জাতির পরিচয়

"বাহিষ্য-স্বাদ" নামক একথানি বাসিক পঞ্জিতা বাবে বাবে পাইরা থাকি। প্রায় ৩১ বংসর পূর্ব্ধ হুইতে ভাহা প্রকাশিত হুইতেরে। গত এক সংখ্যার "বাহিষ্য ভাতির পরিচয়" শীর্ষক প্রবাহে ভাহা দেওরা হুইরাহে। ভার কিরবংশ ভূলিরা দিলার:

বাংলাদেশে হুই প্রকার কৈবর্ড জাতি আছে। একট আর্বা, উচ্চ হিন্দু জাতি ও বিভব, অভট তালিকাজুক আতি। একট বাহিন্দ, অভট বার্গব , একট বিভবর্মী, অভট প্রবর্মী ; একট আচরনীর, অভট আবাচরনীর। আর্বা কৈবর্ড জাতির পিতা করিব, নাতা বৈশ্বা এবং ইহারা করিব লীবী ; সুভরাং করত: কর্মত: ও বর্মত: ইহারা বিভব , এইকত রাম্মণাধি উচ্চ জাতীরগণ আবহরান কাল ইতাদের কল পান করিব। আলিকাজুক কর্মতাতি নৌকর্মজীবী ও বংজ-ব্যবসারী ; ইহারা প্রথম প্রকারের কৈবর্ড হুইতে করত: কর্মত: ও বর্মত: পূর্বক—রাম্মণাধি উচ্চজাতীরগণ ই হালের কল পান করেন না—ইহালের নাবাছর জালিক—ইহারা বাহিব্য নহে পরন্ধ বার্গব বাশ। বস্ত্রসংহিতার এই বিভীর প্রকারের ক্রৈর্ম্ভ জাতির উৎপত্তি সম্পর্কে এইরূপ পাওরা বার :

নিবাৰো নাৰ্গবং হ'তে বাশং নৌকৰ্মজীবিষৰ। কৈবৰ্ডনিভি বং প্ৰান্তবাৰ্গাবৰ্ড নিবাসিনঃ । ১০০০ঃ ।

ব্ৰাহ্মণ হইতে প্ৰাতে ভাত বিবাৰ প্ৰবেৰ ওৱনে প্ৰ হইতে বৈভাতে ভাত অৱোগৰ ভাতীয়া ব্ৰীতে বেকিৰ্মণীৰী বাৰ্গৰ ভাতির উৎপতি হয়—বাৰ্গবের অপব নাম লাশ—আৰ্থ্য-বৰ্তবানীয়া ইহাবিগকে কৈবৰ্ত এইৱাপ বাবেও ভাতিয়া বাকে। ( বৰ্জ বাৰ্গৰ জাতি বাংলাবেশে বালো বাবেও পতিচিত, বালো ও জেলে কৈবৰ্ড একই জাতি, বিভিন্ন পরিচন বাত্র— বিশ্বকোষ ও বৰত নিৰ্গবেশ্ব পরিশিষ্টেও এইরপ উরেব আছে।)

वह श्राट्य प्रदेष्ठे क्या निविध व्हेबाटा :

(১) নিবাৰ হুইতে অবোগৰীতে জাত জাতির একট শাহোক নাম "মাৰ্থৰ", অপন শাহোক নাম "হাশ"।

এশিরাটক সোলাইটর কোন এক লংখ্যার (১৮৭৭ বীঃ ১ন খণ্ড) ব্যবীশের বিষরণে লিখিত হইরাহিল—"ব্দ-বীপের ক্ষরিগণ বাহিষ বা কেবো" অর্থাং নাহিষ্য বা কৈবর্ত নাবে পরিচিত হিল। প্রকটির ব্যুংপশ্বিগত অর্থ হইল—বাহিষ্য —বহী-লো-ক—বহিব পশ্চির প্রতীক।

চাৰী কৈবৰ্ড ও মাহিব্য পিতৃৰাত্ গাৰ্যে একই আজি—
নামতেৰে নামতেৰ বাত্ৰ। কিছু আলিক কৈবৰ্ড বিভিন্ন
পিতাযাভাৱ উংপন্ন বলিনা আহিব্য নহে। চাৰী কৈবৰ্ড ও
নাহিব্য উভৱের আভীর বৃত্তি একই। ওপান্দন বৰ্মপাত্ৰে
কৃত্ৰিন্ন পিতার ওবনে ও বৈশু ভার্যার গর্ভভাত সভানের মাহিন্ত
কি কৈবর্ড কোন সংজ্ঞা নির্কেশ নাই—উহাদের বৈশুবৃত্তি হারা
ভীবিকা নির্দিষ্ঠ আছে। কৃত্তি, পশুপালন ও বাণিজ্য পাত্রনির্দিষ্ঠ বৈশুবৃত্তি। আবহুমান কাল চাৰী কৈবর্ড আভিও এই
বৃত্তিতে অভ্যবক্ত বৃহ্তিয়াছে।

"প্ৰাছয়া বা প্ৰকাশ বা বেধিতব্যা দকৰ্মতিঃ" এই বহু-বচন অহুনাৱে শিতৃষাতৃ সাব্যে ও বৃতিসাব্য অহুনাৱে চাৰী কৈবৰ্ত্ত ও মাতিবা ভাতি অভিয় ।

বাংলা ও আসারে চাষী কৈবর্ত ও লাস, উভিষ্যার বঙাইত, রাজপুতনার বহু, রাজপুতনা ও ইটোরা অঞ্চলে নাহেজী (বাহেররী) এবং ভারতের কভিপর ছানে হুলির রাজপুত আতিগুলি ভারতের বিরাট বাহিব্য আতির এক এক পাবা বলিলে চলে। প্রস্থৃতন্ত্বর আলোচনার জানা বার বে, মর্দ্রা মনীর ভীরদেশে এই আভির প্রাথমিক আবাসভূমি হিল। এই ছান সভবতঃ কিবর্তবেশ। সরস্তুট হইভেও বিবিজয়ী বাহিব্য কৈবর্ত্তপন বব্যভারতে গরম করিরাছিলেন। বাহিন্য আভির একতন প্রাচীন কেলভূমি বাহিন্যতী সহছে মিঃ রাইস্ এবং মিঃ ক্লিট্ রবাল এসিরাটক লোলাইটর কর্ণালে বিভর আলোচনা করিরাছেল (এপ্রিল ১৯১০)। নর্দ্রাও কর্যভূচি হইভে বব্য ভারতের অবিভ্যকার পূর্বপ্রোভ বিরা উল্লোৱা ক্লিক ও ভারতিগ্র প্রবেশে আসিরা রাজ্যহাপন করিবাছিলেন। । ।

## হে অনাদি অতীত, কথা কণ্ড

ত্ৰিৰ এই তথা উদ্ভূত কৰিব। বৰ্তনাৰের "আৰ্থ্য" (সাঞ্চাহিত) গত ২২শে কাছৰ সংখ্যাৰ একট প্ৰবন্ধ নিৰিত হইবাছে। "ব্ৰিবে আছে থাৰ" প্ৰব্যাবনীয় অন্তৰ্গত একট প্ৰবন্ধ হাইতে এই অংশট ভূলিয়া বিলাম। থাবের নাম আবা; ভার "লাভ বেউলের" ইভিক্থা বলিতে নিয়া লেখক বলিতেবেন:

্ৰ থাবের কোমও হৃদিশ বেলে না ইভিহানের পাভার।
লোক-প্রবাহকে কেন্দ্র করে গড়ে উঠেছে লাক-বেউলের
লৌকিক ইভিহান। প্রবাহ আছে লাক-বেউল শুরুর্গের।
বেউলের শিল-চাভূর্ব্যে প্রকাশবাদ হবে আছে শুরু সন্নাইবের
শিল-শোবকভার স্ববহান নিধর্মন।

গগনচ্বী বিনাবের উবত স্পর্কার সাত-দেউল আত আর বাবা তুলে হাঁভিবে নেই। বিলীবনান গৃপতিবংশের তীর্তি-বশোগাবার হাণত্য সাত্যরূপে একটা বার আব তারা দেউল হাঁভিবে আছে। তালের প্রহ্নী হরে আছে হাঁভিবে; গল আছে: লাভ তাই মাতৃবদ শোধ করতে তৈরী করেছিল এ সাত্রেউল। তে তালে কি বে বাতৃবদ ; কেউ-বা বলে: হিন্দু রাজা শালিবাহন ছিলেন আবাপুরের নরপতি। লভবতঃ, আবাপুরই ছিল তার রাজবানী। আবাপুর, হ্যাচরা, সালম্লা, বীরাণাভা, আব্যপুর ছিল তার রাজ্যের চৌহুদি। শালিবাহন রাজার রাজ্যের শেব নির্দেশ আবাপুরের পূর্ব্ব প্রান্তের সালম্লা জনপদের শিবানী সলির।

বেষ্টলের ভাষ্ব্যশিরের ভাব-ভলিবার কোণারক আর 
ছুব্বের্বের শিল্ল-বৈভবের প্রভাব ররেছে প্রচুর। বেউলের
ইউওলো লক্ষ ও লখা। লজী, ছুর্গা, জালী ও বিকুর্তির
ধ্বংসাবশেষও ররেছে এবাবে। বেউলের পঠন-ভলিবা শিববলিবের নড, ভার চুভাগুলো বিলেবের উপর ইাভিরে আছে।
বেউলের গারে বেব-বেবীর বৃতি, শিলীর পরিভাষার একে বলে
'ঠবাভোটা' (terra-cota) অবাং বাটর বৃতি গড়ে ভাড়ে
আগুনে পৃত্তির বেওরালে বেওরা হর বেঁবে। এবাবে বে লব
বৃতি ররেছে ভার রূপ এত অভুত। ঐভিহাসিক স্থতি-ভারে
ঘটিত ররেছে বে বৃত্তির বিক্তরূপ-বৈক্লা। নাড় কান
চোব হাত বুব পা এবের লব ভাটা। লোক্ষ্রেভি বে, জালাপাহাত ববন হিন্দু বেব-বেবীর্তি ব্যংগ করতে স্কুর করে
ভবন এবানেও ভার প্রোভ এলে পৌছে। বৃত্তিগুলোর ভাড়া
বিটা ভাব ভারই কল।

বেউলের চারধারে এবন বদ কলল । বলিবের বব্যে বে বেবভা আহেন ভিনি পান বা ভোন পূলা। পূক্র ভাটার সময়, বাড়ীর ভিন্ বোঁড়ার ভালে ছোট-ছোট প্রকোঠের হর আত্মপ্রভাগ। এই ক্ষণক গড়ে উঠবার ভালে ভিন-চার কুট নাটার ভেভরে পূক্ষের গৈঠা, হাভী বাবার শিক্স ও পূক্ষের হবিশ বেলে। প্রমিক্ষের বনে জেপে ওঠে ওপ্রব্যের অপক্ষা ভাহিনী।

এ প্ৰায় তৈত্ৰী হয়ে উঠেছে এক নদীগৰ্কের বুকের উপর। ১৯৪৩ লালের যানে হাবোহর ভার গতি নের এই পরে। বনে হর বাবোৰবের প্রাচীন বরে যাওৱা বুকে প্রভন হরেছে এই নবীন প্রায় সভ্যভা, আর ভারও আনে প্রয়ই বুকে ছাপনা হরেছিল বালিবাহনের হাজবানী।

প্রাবের কিছু দ্ব বিবে ববে গিরেছিল বেছলা বা বহুলা
বনী। পারে চলার পথের গলে লে এবন গেছে বিশে।
একদ' বছর আগে এক ফ্লাছ পবিক প্রাভি বিনোদনের বাচ ঠাই
বিবেছিল লাভ-বেউলের পাশে। নেবাবে বলে একটা কাটি
বিবে লে আপন বলে বাটার বুকে লিবে চলছিল জীববের
আবোব্য এক বারভা। ধুলোর একটু নীচে লে বেবল লোনার
বোহর। আক্বরের সমরে বে আস্বকী চলভি ছিল, এ বর্ণ
বোহর ভারই অভ্যন।

···সাত-আট বছর আগে কলকাতা বিশ্ববিভালর বেকে সাত-বেউলের বোঁজ নিতে আসা হয়। তাঁরা নিয়ে বাদ এক বিজু মৃষ্টি। এাবের বিভোৎসাহীরা ঐতিহাসিক্তের সৃষ্টি আকর্ষণ করেছেন।···

এই বৰ্ণনা কিছ বৰ্ছনান ফেলার বিদান ও প্রিভর্কের বারিছ হৃতি করিবাছে। "আর্থ্যে"র "বলের কথা" চুট্কি কথার উহিচেরে পরিচর পাই। বর্জনানে বলীর-নাহিত্য-পরিবরের একট পাথা সক্রিয়ভাবে কাল করিতেছে। ভাহারেরই এই বিষরে অএই হওরা উচিভ। সকল বিষরে কলিভাভার মূর্বের বিকে চাহিরা বাকা বাহ্মনীর নর। অতীভকে কথা কহাইতে হ্র কি করিবা ভাহা ভানিভেদ ব্রিমচন্ত্র, অকরক্রার, হ্র প্রসাদ, রবীক্রমাব এবং ভানেন আচার্য্য বহুনাব ও উাহার পিত-প্রশিক্তরণ। এই ইলিভই ব্রেপ্ট।

## ম্যুট হ্থামন্থন

১২ বংগর বরসে অগদ্বিব্যাত সাহিত্যিক ও উপভাগিক সরওরের স্থাই ছামত্ম পরলোকগমন করিরাছেন। ১৮৫১ বিটাবে হঠা আগই ভারিবে তিনি অবপ্রহণ করেন। বর্জনতের সহিত উচ্চার সাক্ষাং পরিচর বুচিল। কিছ ভাবের রাজ্যে লোকের বনে উচ্চার ছান অটুই হইরা বাজিবে, বভবিন বৃহিত ও স্থার্ভের সমভা বিশ্বসংসারকে বিয়ক্ত ও বিস্তৃত্ব করিতে বাজিবে।

১৮৮৯ বিটাৰে উট্টাৰ সাহিত্যিকলীবন স্কু হয়। চাৰায় ছেলে, চাৰায় হত উট্টাৰ বননীতে। সে বজের চীন উট্টাকে ক্ষিয় বিকে চানিয়া কইয়া আলে নার্কিন মুক্তের বান-চালকের অবহা হইতে। "হালার" ('বৃত্তা') উট্টার প্রথম পুতত্ত। কোন প্রকাশক তাহা কইতে বিবাবোর করিত। অভ্যাতনারা ও অব্যাতনারা এককন লেবকের প্রথম বই প্রকাশ করিবার নাহস সকলের বাকে না। কোন সাম্য্রিকপঞ্জে বিবাহি বে, এক অন প্রকাশক অভ্যন্ত ভাজিল্য সহকারে ঐ "বৃত্তা" বইবানি যাবিয়া বাইতে বলিলের, এবং ভাজিল্য-

নহজাবে নেবিদ কোজাবে ভাজকর্ম পের বইলে ভাছা হাভে লইলেন। এডট বরির অকলের হোটেলের বর্ণনা বিল ভাহাতে। বই পড়িরা প্রভাশক হাট ভানস্থের কুটরে চুটরা পেলেন এবং ভিছু অধিন টাকা বিবা বই প্রকাশের চুক্তিপরে বাক্স ভ্রাইলেন।

ভার পর করেক বংগরের বব্যে আলিল বিষ্যাপী ব্যাভি এবং বিপুল অবোণার্জন। কিন্ত তাহার পরিবার-পরিক্ষকে লইয়া ভিনি ক্রমত-ভীবন বাপন ভরিতে লাগিলেন।

বড়াকালে তিনি মী ব্যারী আভারনেন, হুইট পুর ও তিনট কতা বাবিরা সিরাহেন। তাঁহার বর্ণবিদান কি হিন, নে সহতে কোন বিশ্বদ আলোচনা দেবি নাই। তাহা অনেকটা হিল প্রস্থতি-পূকা (Pantheism) বাবা বীজীর সমাজ কর্তৃত্বিলা করা হুইরা বাকে। আবরা তাঁহার বী-পূর-ক্তার উত্তেশ লববেহনা আগন করিছেছি।

#### কালীকান্ত শিরোমণি

ক্রিগণুর কেলার কোটালীপাভার উনশিরা আবের বিব্যাভ বৈরাক্ষণ পণ্ডিত ভালীভাত শিরোমণি গভ ১৭ই কান্তন ভাঁহার শ্রীরামণুরত্ব বাসভবনে ৮৬ বংগর ব্যবস সঞ্চানে গলা-লাভ ক্রিয়াহেন।

बिटबाइवि इहानंद विनिद्दे देविक द्वांचन वर्गन क्यांवन ক্ষেত্ৰ। অধ্বল দা থাকিলেও তিনি বহু হাত্ৰকে নিজের ৰাজীতে তাৰিয়া বিভাগাৰ ও অৱসাৰ করিয়াতেন। তাঁহার অমারিক ও মধুর ব্যবহার এবং তাঁহার পাতিভার কলে তিনি रमन बावानवृद्ध महमाहीत विरम्द खंदा ७ शिवनाळ विरमम । দীৰ ৩০ বংগৰাৰিত কাল বহিয়া ভিনি কোটালীপাড়া উচ্চ हेश्तको विकासरबद्ध क्षेत्राम शिक्षक शर्म व्यविष्ठिक विरागम । পাকিছাৰ ভাই হাইবার পর ভিনি বেশভাগ করিয়া জীৱানপ্রে चानिया नुबदाद 'चार्चा विकालद' नाटन अक्षे होल अधिकी ্করেন ও সংক্ত ভাষার সেবার আছনিবোর করেন। ভিনি এবিভন্য জীবনবাপন করিভেন, ভারার ভার নিঠাবান ও সহা-চামী ব্যক্তি এই বুলে চুৰ্লত। শিরোমণি বহাপরের হাঞ্জের মধ্যে বহাৰছোপাধ্যার এইরিবাস সিভাতবারীশ, বহাবছো-পাৰ্যাৰ ঞ্ৰিকালীপদ কৰ্কাচাৰ্য প্ৰযুব বিশিষ্ট ব্যক্তিগণেত্ব দাৰ ইত্রেববোগ্য। ভিনি বিশেষ সদীভাত্রাই ও পরোপকারী . **(BE)** 1

चिनि बी, क्षित्रं नूब, अक कड़ा थ वह शीवश्रीकी अवर

বৌহিত্র ও বৌহিত্রী রাখিরা দিরাছেন। অর্থনিত করিছ-পূরবাসী উাহার তিরোধানে আত্মীরক্ষদিবোগ-বাধা অস্থতব করিবেন। আমরা আমারের সমবেদনা আশন করিকেতি।

#### অমিয়কুমার গাঙ্গুলী

"অয়ভবাভার" ও "ব্রাভর" পরিকার বিরীয় সংবালাভা, ভরুণ সাংবাদিক অবিরহ্মার গাল্লীর যুত্যসংবাদে সংবালপত্র-শেবীবাত্রেই বিশেষ হংগ অভ্তৰ করিবেন। বিরীয় ইউনাইটেড প্রেনের রিপোর্টাররূপে এই ভরুণ সাংবাদিক প্রভিতাও কর্মকভার পরিচয় বিরাহিলেন। অমারিক, মিইভাষী, সহাপ্রক্র এই ব্রক্তের সহিভ হাহারেই পরিচয়ের প্রবাস বটনাকে, তিনিই ভাহার আচরণে মুখ হইবাছেন। বিবিল্লারত সাংবাদিক কেডারেশন গঠিত হইবার পরে এই ভরুণ মুম্মকে বিরীয় সাংবাদিকগণ সম্পাহক পদের বোগ্যতম ব্যক্তি হিসাবে বয়ণ করিবাছিলেন। ভারতের সাংবাদিকদিগকে প্রকার্যক করিতে, বিভিন্ন প্রবাদেশ গাংবাদিক দক্ষ গঠন করিতে ভাহার উৎসাত্রের অভ বিল না।

বোগের অবহা কটিন ত্ইরা উটিলে তিনি অলোপচারের ক্ষা কিছুকাল পূর্বে কলিকাতার আগিরাহিলেন। তাঁহার বিয়োগে তারতের এক ক্ষা ক্ষা সাংবাহিকের কেহাবদান কটল। বাত্র বৃদ্ধিন বংসর বরলে তাঁহার বৃত্য হইরাছে। উপারার, নগেলনার তথ, শীতলাকাত চটোপারার, কালীনার রার প্রত্তি লাংবাহিকগণ বে ঐতিহ্ প্রত্ত করিবাহেন, অনিরকুরার তাহার উত্তরাবিকারী। নৃত্য বুলে এরপালোকের প্রয়োক্ষর বর্ষন স্কাবিক তব্যই তগ্রান তাঁহাকে উল্লোক্ষর প্রথাকে কইরা গেলেন।

#### অবনীমোহন রায়

গভ ২৯শে কান্তন ভ্ৰনপুত্ৰিয়া কলেখেব বৰ্ণনের ভ্ৰৱাণক ভ্ৰমীনোহন বাব শেবনিখাস ত্যাগ করিবাছেন। ৫০ বংসারের কিকিবকি বয়সে তাঁছার পরলোকগরমে তাঁছার পুত্র-পহিবার বিপর হইলেন। ন্ব্যবিভের ও ভ্ৰমণাবারণের উপার্জনক্র লোকের ভ্রমানহত্যুতে কভ সংসার বে ভারিবা পতে, ভারা স্বিধিত।

সৰ্নীৰোহনের শোকার্ড পরিবারের উচ্চেশে সমবেরনা জাগম করিভেছি।

# প্রাচীন ভারতে সভ্যতার উদ্ভব

## ঞ্জীগিরীক্রশেখর বস্থ

প্রাচীৰ ভারতে আর্থ সভ্যতার উদ্ভব সম্বন্ধে বিচার করিতে হইলে সভ্যতা বলিতে কি বুঝায় প্রথমে তাহার আলোচনা দরকার। কি দেখিলে আমরা বঝিব এক জাতি অন্ত জাতি चाराका विश्व महा ? हैश्त्रकोटि वक्ति कथा चारह रह. বে জাতি অধিক সাবান ব্যবহার করে তাহারাই সভ্যভার व्यक्ति के का कार्य क्रियाक। दिवानामानाथ मूर्यानाधारयव 'ড়ত ও মাহুয' গলে সভ্য ভব্য নব্য ড়ত সূল্ল বুলিয়াছিল বে. সে সাবান মাখিতেচে, ভাচাকে দেখিলে লোকে এখন कान विनाजी 'नार्ड'व (हरन विनश मन कविरव) কাহারও মতে সংবাদপত্তের সংখ্যার উপর সভাতার উৎকর্ষ নির্ভর করে। এটম বোমা তৈয়ারি করিতে পারিলে কি অধিক সভ্য হয় ? পোশাক কি সভ্যভার পরিচায়ক ? श्रृष्ट পविष्ट्रमधावी हक्तिरावी हार्हिन मार्ट्य कि अर्धनश्र গানীর অপেকা অধিক অ্সভ্য ? সর্বস্কৃতে সমদশী কৌপীন পরিহিত বোগী ভোগবিলাসে: নিমচ্ছিত ধনী ব্যক্তির অপেকা কি কম সভা ৮ এই সকল প্রশ্নের উত্তর দেওয়া महक नहर ।

সভ্যতার মান। সভাতার কোন একটি বিশেষ মাপ-কাঠি নাই। এক জাতি অন্ত জাতির অপেকা কতক বিষয়ে বেশী সভ্য এবং অপর বিষয়ে কম সভা হইতে পারে। আবার হৃদভা জাতির মধ্যেও সময় সময় অসভাতা প্রকাশ পায়। কোন জাতির সভাতার পরিমাপ করিভে হইলে আমাদের সেই জাতি সম্বন্ধে অনেক বিষয়ের ধবর জানা দরকার। তাহাদের শারীবিক পরিজ্ঞাতা ও স্বাস্থ্য. শীবনযাত্রাবিধি, ব্যক্তিগত নৈতিক ধর্ম, গাহস্থ্য সম্পর্ক, विद्या चर्थार कान ও विकास्त्र चरूनीनन, नमाक्रधर्म. निद्यापित व्यवहा, तावधर्य, युब्धारपणा ও युक्कामीन नीजि, গ্রাম নগর বানবাহন ইত্যাদির অবস্থা কিরপ জানিয়া সমগ্রভাবে সভাতার বিচার করিতে হয়। পোশাৰ-পরিচ্ছদ, ভাষা, ব্যবহার ইভ্যাদি সভ্যভার বহি:-क्षकान । मातान वावहात नावीतिक नतिक्षत्रकात निर्दर्शक : ধবরের কাগজের সংখ্যা দেখিয়া জাতির শিকা বিভারের পরিমাপ করা বাইতে পাবে; স্থদুত পোশাক-পরিচ্ছদ ছক্তির পরিচায়ক; এটম বোমার ছারা বুরা বায় জাতি বিজ্ঞান ও শিল্পের অনুশীলনে কতটা অগ্রসর হইয়াছে, ইত্যাদি। মানবের নৈতিক ধর্ম সভ্যতার এক নীভিবিৰোধী যুদ্ধবিগ্ৰহ কিংবা অপর

লাভির উপর অন্তার কর্তৃত্ব সভ্যতার কলক বলিয়া ধরা হয়।
অপর পক্ষে যে লাভি বিজ্ঞানের চর্চা করে না, ঐছিক স্থধসাধনে তৎপর নহে, শক্ষর আক্রমণ হইতে নিজেকে বন্ধা
করিতে পাবে না, রোগ-প্রভিষেধক উপায় আনে না
তাহার নীভিবোধ ও পারত্তিক ধর্মলান চরমে উঠিলেও
তাহাকে সভ্য বলা চলিবে না। দকল বিবয়ে অসমন্তর্গ প্রচিতিই (development) প্রকৃত সভ্যতা। এই সমন্ত আলোচনা করিয়া প্রাচীন ভারতে কি প্রকার সভ্যতার উদ্ভব হইয়াছিল এবং তাহার মান কিরুণ ছিল বুঝা
সম্ভবপর হইবে।

প্রেডবিছা। কোন জাতির অতি প্রাচীন সভাতা কি প্রকার ছিল জানিবার জন্ত প্রায় সকল ক্ষেত্রেই আমাদের প্রত্ববিভাব আত্রয় লইতে হয়। ক্রীট, ব্যাবিলোনিয়া, অ্যাসিরিয়া প্রভৃতি দেশের প্রাচীন সভ্যতা সম্বদ্ধে সামরা বাহা কিছু জানিতে পাৰিয়াছি তাহা এই প্ৰত্নবিভাৱ পম্পিয়াই ও হারকুলেনিয়ম নগরীর অনষ্ট ধ্বংসাবশেষ হইতে আমবা পুৱাতন বোমক জাতির জীবন-याजा-लागो व्यवगं इहेशाहि। लाहीन भिन्नेशेष्टलंब সভাতা সম্বীয় বহু তথা তাহাদের রাজাদের পুরাতন স্থাকিত কবর আবিষ্ঠার কবিয়া আমরা উদ্ধার কবিয়াছি। ভারতে মোহন-জ-দরে৷ ধননের বারা তত্ত্ব অধিবাসীদের অনেক পুরাকীতি জানিতে পারা গিয়াছে। আরও নানা স্থান ধনন করিলে হয়ত প্রাচীন ভারতের অনেক কথাই জানা বাইবে কিছ প্রত্নবিভাব সাহাব্য না লইয়াও ভারতের অতি প্রাচীন সভ্যতার পূর্ণান্ধ ইতবৃত্ত উদ্ধার করা সম্ভবপর। त्यम ७ श्रुवात्वय मार्था है এই हेजबुढ निहिज वहिशाह । পৰিবীর মধ্যে কেবল ভারতই একমাত্র দেশ যেখানে বছ প্রাচীনকাল হইতে স্থলিখিত ইতবুত্ত সংবক্ষিত হইয়াছে। পুরাণই প্রাচীন ইভবুত। পুরাণ সম্পূর্ণ বিশাসবোগ্য 'हिहेबि'। পুরাণের প্রামাণিকতা 'পুরাণপ্রবেশ' গ্রন্থে খালোচিত হইয়াছে। এই প্রবন্ধে বে সকল কালনির্দেশ আছে ভাষা এই পুত্তক হইতে গুহীত।

বৈদিককাল। বৈদিক ঋষিদের ও বেদস্তেক উলিখিড নুপভিদের কাল আলোচনা করিলে দেখা বায় মছ, বম বমীর স্কুঙ্গলি সর্বাপেকা পুরাতন। অবশু বেদে আরও অতি পুরাতন ব্যক্তি ও ঘটনার উল্লেখ আছে, কিছ বৈৰণ্ড মছর পূর্বে কোন স্কুক রচিত হইয়াছিল বলিয়া মনে হয় না। ৩৮০০ ঞ্জীই-পূর্বান্ধ হইতে আরম্ভ করিয়া প্রায় ১৪০০ ঞ্জীই-পূর্বান্ধ পর্বস্ত বেদ ক্ষক্তগুলি রচিত হইয়া-ছিল। অসিত ও দেবল ঝবি সর্বাপেক্ষা অর্বাচীন ক্রেকার-দিগের মধ্যে ছই জন। বৈদিক্কাল বলিতে এই দীর্ঘ ২৪০০ বংসরব্যাপী সময় বুঝায়। বেদক্ষক্তগুলি সমক্ষেপরে আরপ্ত কিছু বলিব।

প্রাকালে অধিগণ ও রাজন্তবর্গ নানা বক্ত করিছেন।
বক্তে বিভিন্ন দেবভার আবাহন করিয়া তাঁহাদিগকে
সোমরস নিবেদন করা হইত। এই উপলক্ষে অভিকরণ
বে মন্ত্র পাঠ করিছেন তাহাই বেদে সংগৃহীত হইয়াছে।
অহমান হয় বাল্মীকি বেদমন্ত্রভাকে প্রথমে বজুস্, অক্ ও
সাম এই ভিন ভাগে ভাগ করেন। বাল্মীকিকাল ২১০০
বী-প্রান্ধ। মোটামৃটি বলা বাইছে পারে মন্ত্রগুলির
গভভাগ বজুস্, ছন্দোময় পদ্যভাগ অক্ এবং বে মন্ত্রগুলি
গান করা হইত ভাহাই সাম। বজুর্বদের কোন কোন
মন্ত্র সর্বাপেকা প্রাচীন। পূর্বে অথববেদ বলিয়া কোন
পৃথক বেদ ছিল না। কৃষ্ণবৈপায়ন বেদব্যাস বেদের
কতকগুলি স্ক্র পৃথক করিয়া ভাহার নাম দেন অথববেদ।
এইরপে ভিন বেদ অর্থাৎ ত্রয়ী কালক্রমে চারিবেদ হয়।
কৃষ্ণবৈপায়নের কাল ১৪৩০ ব্রী-পূর্বান্ধ।

বেদে পুরারত। বেদ ধর্ম পুত্তক, তাহা ইতবৃত্ত নহে। বেদ হইতে ইতবৃত্ত অমুমান করিতে হয়। প্রসম্প-क्ट्य त्राम बाबाद्य युद्धकथा. चार्च ও नामनित्भव याथा विवाद, उৎकानीन निकादित अवदा हेजादि नाना विवरत्व উল্লেখ আছে। এই সকল উক্তি হইতে होर्च देविककारनव সভ্যতার ইতবুত্ত সংকলন করা বার। বেদপাঠে দেখা যায় বে, পুরাকালে ভারতে কৃষির যথেষ্ট উন্নতি হইয়াছিল, বাণিজা ও বিবিধ শিরের প্রসার লাভ ঘটিয়াছিল। গো অখ, গজ, উট্ট, কুকুর প্রভৃতি পশুপালন করা হইত। নাপিতে মন্তক মুগুন করিত, শিল্পীরা বন্ধ বহন করিত, মেষলোম হইতে পশমী কাপড়ও তৈয়ারি হইড, লোকে নৌকা করিয়া তুত্তর নদী পার হইত, খাতব জবোর বছল ব্যবহার ছিল, স্থাকরায় ঘর্ণালংকার তৈয়ারি করিত, রখ ইত্যাদি কাঠেব স্তব্য প্রস্তুত করিবার নিমিত্ত স্থাক ছতার মিল্লি ছিল, বথকে মন্তব্ত কবিবাব অন্ত ভাচা পোচর্মের ৰাবা নাবত কৰা হইত, বথে বোড়া বা বলদ লোড়া হইড। বলদ-বাহিত মুদ্ধরণে চড়িয়া মূদ্যাল রাজার জী ইঞ্রেনা শতি কৃতিদের সহিত যুদ্ধ করিয়। শত্রুদিগকে পরাস্ত করিয়া-ছিলেন। ধছুৰ্বাণ ব্যতীত বৰ্বা তরবাবি ও অক্তাপ্ত অন্তের উল্লেখ পাওয়া বায়। ধাতৰ শিৱস্থাণ ও অক্তরাণ ব্যবহৃত হইত। বেদে কুলিম লৌহ নির্মিত পদেরও উল্লেখ আছে।

ধেলা হিসাবে ঘোড়দৌড় হইত। এখনকার সন্তান্ধাতির মত ঘোড়দৌড়ে বান্ধি ধরা হইত কিনা তাহার উল্লেখ নাই, তবে বান্ধি রাখিয়া পাশা খেলার বিবরণ পাওয়া বায়। বেল-স্থাক্তে জ্বয়াডির নানা চর্জোপের বর্ণনা আছে।

পুরুষে অনেক সময় বছ বিবাহ করিত। এখনকার মত তথনও অসং পক্ষর ও অসতী স্ত্রীলোক দেখা বাইত। ঋষিরা वटक क्षान्य चर्न. (शा. चन, मान ७ मानी जनहार नाहेरजन। পোধনের খব গৌরব ছিল। চৌরভয় ও রাক্ষদের অর্থাৎ नुर्रभाष्ट्रकादी मञ्चादम्य छिरभाख हिन। मञ्चामन नाशायभछ বনে থাকিত। বনে অনেক সময় দাবানল জলিতে দেখা ষাইত। লোকে আগুন লাগাইয়া জলল পরিছার করিত। বেদে বাসস্থানের কোন বিশদ বিবরণ পাওয়া বায় না. তবে ৰক্ষশালার বিবরণ আছে এবং এক বায়গায় বছ স্বস্তম্ভ অট্রালিকার কথা আছে, অস্থ্রদিপের লৌহময় পুরীর উল্লেখ আচে। বিভার বিশেষ আদর চিল। বেদে অনেক গভীর ক্লানের কথা আছে। কাব্য হিসাবে অনেক স্থক্ত অভি উৎকৃষ্ট। ছন্দোবছ, ভাবগন্তীর থকস্কুগুলি দেখিলেই বুঝা যায়, ডাহাদের রচয়িতা ঋষিগণের বিভা ও জ্ঞান কড উচ্চপ্তবের ছিল। কেহ কেহ মনে করেন বে, ঋথেদ চাবার পান মাত্র। এই ধারণা কেবল পরবগ্রাহী হিন্দুশাল্ভানভিত পাঠকের পক্ষেই সম্ভবপর। পুরাণে কথিত হইয়াছে বে, বাহার পুরাণ সম্বন্ধে জ্ঞান নাই তাহার নিকট বেদ প্রস্তুত इटेरवन विश्वा चानका करवन। श्रुवार चनिस्क वास्कि বেদের নানা প্রকার কদর্ব করিয়া থাকেন। প্রাণার্থবিৎ धकान करनव निकर्षेष्टे राम श्रीय मर्भ छेन्याष्टिक करवन।

পুরাণ। বেদপাঠে বেটুকু ইতবৃত্ত অন্ধমান করা বায় তাহাতে দেখা বায় বে, বৈদিককালে ভারতীয়গণের সভ্যতা উচ্চাকের ছিল। এ সভ্যতা কিছু এক দিনেই পড়িয়া উঠে নাই, বেদের পূর্বকাল হইতেই সভ্যতার ক্রমবিকাশ হইয়াছে। এই সভ্যতা বিস্তাবের ইতবৃত্ত পুরাণ হইতে সহজেই পাওয়া বায়। পুরাণ বেদেরও বছ পূর্বতা। সৌভাগ্যের বিষয় পুরাণে ভারতীয় পুরাবৃত্তের বিখাদবোগ্য বিবরণ লিখিত হইয়াছে।—

व्यवद नर्वनाञ्चानार नृज्ञानर जन्मना चुण्य ।

অনতরণ বজুভো বেলাভভ বিনি:হুডা: ।।বারু ১।৩১।।
অর্থাৎ, সর্বশাস্থের মধ্যে প্রাণ প্রথমে ব্রন্ধাকর্ত্ক স্বভ
হইল, অনন্তর উাহার মুখনমূহ হইডে বেদ সকল বিনি:হুড
হইল। পুরাণে ৫৯৫৮ খ্রী-পূর্বান্ধ হইডে আরম্ভ করিয়া
৪৩৫ খ্রীষ্টান্ধ কিংবা ভাহারও পরবর্তীকাল পর্যন্ত অধ্যন্ত
ধারায় ভারতের ইভবুত্ত লিখিত হইয়াছে। কালে কালে
পুরাণকারগণ পুরাণকে অকালাব্যিক করিয়া গিয়াছেন।

বৈদিক কাল পৌরাণিক কালের অন্তর্গত।

অনেকে বৈদিক কাল ও পৌরাণিক কালে পার্থক্য দেখেন।

তাঁহারা মনে করেন, বৈদিক কাল পৌরাণিক কালের
পূর্ববতী। এ ধারণা নিতাম্ব ভূল। বৈদিক কাল প্রায়
২৪০০ বংসর বাণী এবং ইহা দীর্যতর ৬৪০০ বংসরের
পৌরাণিক কালের অন্তর্ভুক্ত। পূরাণে বেদের পূর্ববতী
প্রায় ২০০০ বংসরের ইতবৃত্ত ধুত হইয়াছে। বৈদিক স্থয়
সভ্যতা এইরূপ ছিল এবং পৌরাণিক কালে এইপ্রকার ছিল
এই ধরণের উক্তির কোন মূল্য নাই। অবশ্র যে উক্তি
কালনির্দেশসহ করা হয় ভাহার শুক্তম্ব বিচার করা যায়।
আমি ভারতীয় সভাভার যে বিবরণ দিতেছি তাহা। বিভিন্ন
পুরাণ হইতে সংক্লিত।

ভারতীয় সভ্যভার উত্তব। বাহাদিগকে আর্ব বলা হয় তাঁহাবা ভারতে কবে প্রথম আসেন দে সম্বন্ধে न्नष्टे উল্লেখ প্রবাণে পাওয়া বার না। তবে আর্বেরা মধ্য এশিয়াৰ পূৰ্ব তৃকীম্বান অৰ্থাৎ ইলাবত বৰ্ব হইতে প্ৰথম কাশ্মীরে আসেন একথা অন্তুমান করা বায়। পরে তাঁহারা পঞ্চাব ও বিদ্যাচলের উত্তর প্রায়েশ ক্রমে অধিকার করেন। আর সময়ের মধ্যে আর্বেরা দক্ষিণাপথেও রাজ্যবিজ্ঞার করেন। ইলাবত বৰ্ষ, কাশ্মীৰ, বিস্ফোত্তৰ ভাৰত এবং দক্ষিণাপৰ বধাক্রমে বর্গ, অন্তরীক্ষ, মর্ত এবং পাতাল নামে পুরাণে পবিচিত আছে। ইলাবত বৰ্ষ, কাশ্মীর ও উত্তর ভারত, **प्रवर्गक, পিতৃলোক ও মর্তলোক অথবা ইলা, সরস্বতী** ও ভারতী এই তিন নামেও পরিচিত চিল। দেবলোক হইতে দেবগণ প্রথমে বথন ভারতে আসিলেন ডখন তাঁহারা স্বর্গাধিপতি ইন্দ্রের অধীন ছিলেন। ইন্দ্র স্বর্গাধিপতির ভারতে ইন্দ্রের প্রতিভর নাম হইল সাধারণ নাম। প্রজাপতি এবং তৎপরে মন্তু। প্রথমে খুব অল্পসংখ্যক ব্যক্তি ভারতে আসিয়াছিলেন। তখনকার প্রজাপভিদের নাম ननक, ननकन, ननाजन ७ ननरक्यात । हैशामत वर्षीत প্রজা বৃদ্ধি পাইল না। তখন খায়ভূব মহা ইল্লের প্রতিভূ हरेलन । हेनिहे अथम मञ्चा हेहांत अङ्गा नाम विवास । বিরাজ মতু প্রজাদিপের পালনের করু বিশেষ চেঁটিত হইলেন। তাঁহার কাল ৫০৫৮ এী-পূর্বাক। স্বায়ভূব মহুর वः भवत्रभव > • • व दशद्वत्र किकिए अधिककान वास्राव साव অজাপালন করিয়াছিলেন। ইহাদের সময় প্রজা জন্ম পরিমাণে বৃদ্ধি পাইয়াছিল। স্বারম্ভুব মন্থর সময় হইতে ২০০০ বংসরকাল পর্যন্ত পুরাণমতে সভাযুগ। সভাযুগে কোন আইন-কাছন ছিল না, লোকে বদুছা চলিত। আইন-কাতুন না থাকার কোনও কাজই মানবধর্মবিগহিত শ্পরাধ বলিয়া বিবেচিভ হইভ না। এইজন্যই বলা হয়

বে, সভাবুদে ধর্ম পরিপূর্ণ বা চতৃষ্পাদ ছিল। স্বারস্থ্য
মহার পাঁচ পুরুষ পববর্তী প্রজাপতিব নাম নরত। ইংগার
নাম হুইডেই ভার নর্বর্ধ নামের উৎপত্তি। ভাতের কাল
১৮০৭ খ্রী-পূর্বান্ধ। বিবাক্ত মহার বংশেই আহ্মানিক ১৯৬৯
খ্রী পূর্বান্ধে ধ্রুব আবিভূতি হুইভেছে। আন্মানিক ৪৯১৯
খ্রী-পূর্বান্ধে স্বায়ন্ত্র বংশে বেণ নামক এক প্রক্রাপতি হন।
ইনি ইক্তের বক্তা অস্থাকার করিয়া নিজেকে স্বাধীন নুপতি
রূপে ঘোষণা করেন। ইহার ফলে ইাহার ঋষিদের সহিত
কলহ হয় ও তিনি নিহত হন। তখন অবাজক অবস্থা
উপস্থিত হয়। বিদ্ধা শৈলবাসী নিষ্ণদর্গণ দেশ অধিকার
করে। নিষাদ্র্যণ ভারতের এক আদি জাতি। তাহারা
হুস্বকায়, তাহাদের বর্ণ পোড়া কাঠের ন্যায় ও মুখ ধর্বাকার।

নিষাদগণ প্রজাগণের ধনসম্পত্তি লুঠপাট করিতে লাগিল। রাজ্যের অরাজক অবস্থা দর করিবার অন্য অধিরা পথকে বেণের স্থলাভিষিক্ত করিলেন। পথর নামানুবায়ী ভমগুলের নাম পুথিবী হয়। পুথুই ভারতের প্রথম প্রকৃত রাজা। जिनि कर्व ७ ध्रुधीय कविश्रा निरामिनारक वरन আনিলেন ও রাজ্যে শৃত্যলা স্থাপন করিলেন। ইতবৃত্ত প্রস্তুত করাইবার জন্য ডিনিই প্রথম স্থত ও মাগধ নিয়োগ করিলেন। পুথুর রাজ্যকালে প্রজাপণের প্রথমত কোন কট হয় নাই। ভাহারা প্রচর গো-তৃগ্ধ পাইত এবং একপ্রকার বুক্ষ হইতে মিষ্ট বস আহবণ কবিত। এই বসকে অমাক্ষিক मधु तना हरेग्राह् । श्रकांशन वृत्कत कनकृत हरेएड অলংকার প্রস্তুত করিয়া পরিধান করিত এবং বুক্ট তাহাদের পরিধান যোগাইত বলিয়া কথিত হইয়াছে। বোধ হয় তাহাবা বৰুল পরিত। প্রথমত বুক্ষের আশ্রেই ভাহারা ব্যবাস করিত, ক্রমে বুক্ষশাখা বিস্তাবের অভ্যকরণে তাহারা কুটার প্রস্তুত করিতে শিধিল। অধিক অমাক্ষিক मधु चाह्यत्वय करन मधु युक्तकनि नहे हहेशा (भन। उधन প্রজাপণ পুথুর নিকট গিয়া বলিল, 'অরাজক অবস্থায় ধরিত্রী সকল ওষ্ধি অর্থাৎ খাদাশস্ত গ্রাস করিয়াছে ভাচাতে ममख थाना करथाश वहेरलहा বিধাতা তোমাকে আমাদের বৃত্তিপ্রদ প্রকাপাল নিরূপিত করিয়াছেন, তৃষি ক্ষধার্ড প্রজাগণকে বন্ধ। কর'।

অনন্তর পৃথু নানা স্থান হইতে থালাপাশুর বীজ সংগ্রহ করাইলেন, জমি হইতে প্রস্তবাদি অপসারিত করাইরা কৃষিকার্বের উপবােগী ক্ষেত্রসমূহ প্রস্তুত করাইলেন, গো রক্ষার ব)বস্থা করিলেন এবং বিশিক-পথ নির্মাণ করাইলেন। তিনি নপর ও গ্রামের প্রবিভাগ প্রবর্তন করিলেন। ভূমির বে বে স্থান সম ছিল রাক্ষা সেই সেই স্থানে প্রজাদিপের নিবাস করনা করিলেন।
পুরাণে আছে, পৃথ্ব পূর্বে এ সকল কিছুই ছিল না, বৈণ্য
আর্থাৎ বেণপুত্র পূর্বে এ সকল কিছুই ছিল না, বৈণ্য
আর্থাৎ বেণপুত্র পূর্ণ হইডেই এ সকলের উৎপত্তি। এড
পরিশ্রম করিয়া পৃথ্ বে সভ্যতার গোড়াপন্তন করিলেন
উাহার মৃত্যুর এক শত বংসরের মধ্যেই তাহা লোপ
পার। পুনরার প্রায় সহল্র বর্বর্যাপী অরাজকতা দেখা
দেয়। এই সময় পৃথিবী কুল ভূণে আভ্যত ইইয়া সিয়াছিল
এবং অরণ্যানী সমস্ত ভূমি গ্রাস করিয়াছিল। অভ্যান
হয় বৃহৎ প্লাবনের ফলে এইরূপ ঘটিয়াছিল। অভ্যান
হয় বৃহৎ প্লাবনের ফলে এইরূপ ঘটিয়াছিল। অভ্যান নদীতীরবর্তী দেশ হইতে দশ জন প্রচেতা নামধারী ব্যক্তি
আসিয়া অলিগংবোগে বনের বৃক্তসমূহ দশ্ব করিলেন।
তাহারা মারিবা নামী এক বন্যজাতীয়া কন্যাকে বিবাহ
করিলেন। দশ জন প্রচেতাই মারিবার স্থামী হইলেন।

প্রচেতাগণের দক্ষ নামে এক পত্র হয়। দক্ষ প্রকাপতি ছিলেন। তাহার সময়ে প্রজাপণ ক্রমে বৃদ্ধি পাইডে লাগিল। অহমান হয় তথন প্রজাপণ পৃথক পৃথক দলে ৰাস করিত। হর্ষণ নামে প্রায় ৫০০০ বাজির একটি মল উত্তম বাস্থান খুঁ ভিতে গিয়া নট হইয়া গেল। 'নদী বেমন সমূত্রে পিয়া আব ফিরিয়া আইসে না সেইরপ ভাহারা অন্যাপি নিবভিত হন নাই।' দক্ষের হর্ষণ নামক প্রজাপণ निक्षकिडे स्टेरन भवनाथ नामक ১००० वास्कित चार अविधि দল পুনবাৰ এইদ্ৰণই বাসভান খু'লিতে পিরা লোপ পাইল। ভারভের কোন কোন প্রদেশে রোগে, আদিম আভির উৎপাতে এবং প্রাকৃতিক বিপর্বয়ে এইরূপ অনেক দল লুপ্ত हरेबार्छ। मरक्य काम ७०७० औ-পूर्वास । मरक्य मध्य হইতে ভারতীয় সভাতার পুনকজীবন হয়। দেবলোক বা ইলাবুড বৰ্ষ হইডে বে সভাতা ভারতে আনিয়াছিল তাহাই এই সময় হইতে ক্ৰমোৱতি প্ৰাপ্ত হইয়া আৰু পৰ্যন্ত অথপ্ত शाबाब हानिया ज्यानियारह। ज्यास्तिक वृत्त द्वाचम वधन ইউবোপীয়গণ আমেরিকায় বান তখন ভাঁছাদের সভাতার मान चत्नकारम द्वान भारेबाहिन। भरत जारा जानीव পরিবেশের প্রভাবে পুনক্ষীবিভ হইয়া আধুনিক আমেরিকান সভাভার রূপ ধারণ করিয়াছে। সেই প্রকার ইলাবুড বৰ্ষে সভ্যতা ভাৰতে আসিয়া প্ৰথমত প্ৰায় লোপ পাইয়াও পরে নবকলেবরে উথিত হইয়াছে।

বৈৰম্ভ মন্ত্ৰকাল। বিবিধ ধন বিধি প্ৰবভান।

দক্ষের কন্যা অদিভির এক পুত্রের নাম বিবখান। বিবখান

মতি ডেকখী এবং পরাক্রাভ নরপতি ছিলেন। ধ্বেদে

উাহাকে পদ্ধব বলা হইয়াছে মধাৎ ডিনি পার্বত্য প্রদেশে

যাক্ষম করিভেন। উাহার পুত্র বৈবস্থত। ইনি মন্ত্রমধাৎ
ভারতীয়দিপের প্রভাগালক নুপতি হন। বৈবস্থত মন্তর্ম

কাল ৩৮১৪ খ্রী-পূর্বাক। এই সমষ্টা ভারতীয় সভাতার এক অতি পৌরবোজ্ঞন হুগ। বৈবৰত মহু ত্রেতা বুপের প্রথম দিকে আবিক্ত হন। ত্রেতা যুগের প্রার্থ ৩৯৫৮ এ-পূর্বাবে। বৈবছভের সময় স্থচিভিড পরিকরনা অমুবায়ী मधाज-मध्यात, मधाविधि क्षवर्षन धवः ज्ञानविज्ञातन न्छन ধারার সত্রপাত হয়। এই সময় বঞামুঠানও প্রচলিত হয়. অনেক বিধান ব্যক্তির সহযোগিতা বাতীত সর্ববিষয়ে এরপ चामून मरकाद मखदेशद हद नारे। एक, भूगछ, भूगर, कुरू, चित्रा, मदीहि, প্রচেতা, चित्र, विष्ठं, नावन এবং चळाड-নামা আরও অনেকে বৈব্যুত নুপতিকে তাঁহার মহৎ কার্বে महायुक्ता-कवियाहित्यत । हैहादा त्म्यूर्य, खार्किर्य, क्मर्थ, পাৰগুগণের ধর্ম প্রভৃতি বিভিন্ন প্রকাবের বাবতীয় আচার-বাবহার বিচার করিয়া বিধিস্থাপনা করিলেন। চতুর্বর্ণ ও চতরাত্ম বিভাগ এই সময় প্রথম প্রবৃতিত হয়। বাহারা বজন, ৰাজন, অধ্যয়ন ও অধ্যাপনা লইয়া থাকিবেন ডাঁহারা ব্ৰাহ্মণ হইলেন, বাঁহাঝা যুদ্ধ-বিগ্ৰহাদি ও প্ৰকাপালন ক্রিভেন তাঁহারা ক্রিয় হইলেন, ক্র্মি-বাণিল্য ইত্যাদিতে नियुक्त वाकिया देव इहेरनन अवः अहे जिन वर्षत शवि-চারকেরা শুল হইলেন। जयहर्व, গৃহস্থ, বাণপ্রস্থ ও পরি-जाकक এই চারি খাল্লম जायन, ক্ষত্তির ও বৈষ্কের জন্য निक्षिक रहेन। कालक्यांकि मध्यात, वस्राती वर्षार ছাত্রের কর্তব্য, চতুর্বর্ণের বিবাহ, বিবাহের প্রকারভেদ, অতিধি-সংকার, আজাদি, বিভিন্ন প্রকারের জীবিকার देशाइ, शामाशामा निर्वह, षट्योठ वावद्या, कार्ड वश्च शाख्य ম্রব্যাদির শোধন-ব্যবস্থা, স্ত্রীলোকের ধর্মোপায়, বানপ্রস্থ বডি পরিব্রাক্তকের ধর্ম, খাকধর্ম রাজ্যশাসন ও মুদ্ধাদির নিয়ম, খণদান, সাক্ষ্য, দণ্ডাদির ব্যবস্থা, চৌর্থ নিবারণ ইত্যাদি ৰভপ্ৰকাৰ কৰ্ম সমাজ বন্ধাৰ জনা আবশ্ৰক ভাষা সমস্তই विधिनिट्यायत निषमाधीन कवा इहेन। शवमाञ्चळान अ মোক্সাধনেরও উপদেশ লিখিত হইল। এই সকল বিভিন্ন বিষয়ের নিষ্মাবলী সংহিতাকারে একত্তৈ প্রথিত হইয়া মলুলংহিতা বা মানব ধর্মশান্ত প্রস্তুত হইল। কালে কালে এই ধর্মশান্ত বিভিন্ন বাজগণের পর্চপোবকতার বৃগধর্বাস্থবারী পরিবৃতিত হইয়াছে ও পরিপূর্ণতা লাভ করিয়াছে। इकेद्राल मध्नीकि न्तर्भानियन्त्र नमय अध्य विधिवक করা হয় কিছ ভারতীয় দওনীতি বহু যুগ হইল ধর্মশাল্পের चन्दर्गक कवा इहेबाह्य। अहे धर्मनाज अधनक हिन्दृतित्त्रव জীবনবাত্রা অনেকাংশে নিয়ন্ত্রিত করিতেছে। প্রাচীন हिन्दुव चाचाविधि, गाईचाधर्व, नमावधर्व, वावधर्व, बुबनीछि প্ৰভৃতিৰ মান কত উন্নত ছিল ভাহা বিভিন্ন পুৰাণে अफरमच्चीत अवस्थान शक्ति चाना गाहेरव।

বাছল্য, এই সকল প্রবন্ধের মূল উৎস আদি মহুত্বতি।
ছ:খের বিষয়, আধুনিক ভারতীয় মনীবীদের এখন পর্যন্ত পুরাণের দিকে মনোবোগ আক্রষ্ট হয় নাই।

বিধি প্রতিষ্ঠিত হুইতে সময় লাগিয়াছিল। স্কল ব্যাপারে বিনয় বা নিয়মান্ত্রতিতা সভাতার এক প্রধান শব্দণ। বে জাতি ববেচ্ছাচারী তাহাকে সভ্য বলা যায় না। প্রাচীন হিন্দুর বিনয় এক প্রধান শিক্ষণীয় বিষয় ছিল, কিছু মন্তব্যতি বচনার সঙ্গে সঙ্গেই সকল লোকে নিয়মামুবতী হয় নাই। বিধিসমূহ সমাজে ক্সপ্রতিষ্ঠিত হইতে বছ সময় লাগিয়াচিল। কালে বিভিন্ন বর্ণের সংমিশ্রেণের ফলে অনেক সহর জাতির উৎপত্তি চইয়াচিল এবং ভাচা-দিগকে সমাজের মধ্যে রাখিবার জন্য বছ নৃতন নৃতন বিধি প্রবৃত্তিত করিতে হইয়াছিল। স্বয়ং মহুকন্যা ইলা বুধের সহিত বিবাহিত হইলেও স্কুতায় বাজাব সহিত সক্ষতা হইয়া-ছিলেন। মহপুত্র পুষ্ধ আচার-ব্যবহারের দোষে শুত্রত প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। মহুর পৌত্র নাভাগ এক বৈশ্রকন্যার বোমে পড়িয়া পিতার আপত্তি সভেও ভালাকে বিবাল ক্রিয়া বৈশ্র হট্যা বান। তিনি বৈশ্র চট্যা রাজাদেশে গ্রমাপালন পরিভাগে করিয়া কৃষি-বাণিজ্যে নিযুক্ত হন। নাভাগের পুত্র ভলন্দন খীয় বাহবলে রাজ্য অধিকার করেন। তিনি নিক পিতাকে সেই রাজ্যে অধিষ্ঠিত করিতে চাহিলে নাভাগ বলিলেন. 'আমি পিতার আজ্ঞান্তসারে বে রাজ্য একবার পরিত্যাগ করিয়াচি ভাহা আর পুনপ্রহণ করিব না। আমি বৈশ্য বুত্তিতেই অবস্থিত থাকিয়া ভোমাকে কর প্রদান করিব। তুমি এই রাজ্য ভোগ কর অথবা ইচ্ছা হইলে পরিত্যাগও বরিতে পার। লোকে বাহাতে নিজ নিজ বর্ণমর্বাদা অভিক্রম না করে পরবর্তীকালের রাজগণ সে বিষয়ে খর দৃষ্টি রাখিতেন কিছ ভাহা সত্ত্বেও আমরা দেখিতে পাই. বিশ্বামিত্র ক্ষত্রিয় বংশে জন্মগ্রহণ করিয়াও ব্রাহ্মণ বলিয়া পরিচিত হইয়াছিলেন, रमान ७ कुन बाद्यन इरेबा**७ कवि**ष्य न्याब यूद्ध निश्च रहेशाहित्नन। हैरावा त्करहे नमाख रहेत्व हा हन नारे। মন্তব সময় চইতে প্রায় হাজার বংসরকাল পর্যন্ত ভারতে বিভিন্ন যাবাবর দক্ষাদল দেখা বাইত। দক্ষাদলণতিরা প্রায়ই নিজেদের দেশে রাজার মত প্রজাপালন করিত। ভাহায়া অপরের রাজ্য আক্রমণ করিয়া লুঠপাট করিত। পরবাজা আক্রমণে ভাহারা অন্যায় যুদ্ধের আশ্রয় কইত। বাবণ এইত্রপই একজন দম্যবাজ বা বাক্ষ্সপতি ছিলেন। ভিনি ভাতিতে ত্রাহ্মণ হইয়াও দক্ষাবৃত্তি অবলম্ব করিয়া-किरनन ।

क्यांकिविकाव क्षांता । देववक मक्कांत

জ্যোতিবিদ্যার প্রভৃত উন্নতি সাধিত হইরাছিল। এই সময় পূর্বপরিচিত জ্যোতিকগণের নৃতন করিয়া নামকরণ হয়। देववच ७- शिका विवचात्मव नामाञ्चावी च्यार्वव नाम इहेन. ধর্মপুত্র সোমের নামে চন্দ্র পরিচিত হইল, ভঞ্পত্তের নামান্ত্ৰায়ী ওক্তগ্ৰের নাম হইল। সেইরপ বুধ, বুহুম্পতি, শনৈশ্চর প্রভৃতি বিশিষ্ট ব্যক্তিগণের নামে এছগণ নাম পাইল। তথনকার দিনে উত্তর দিক উচ্চ দিক বলিয়া কল্লিভ হইভ। সর্বোচেচ অবস্থিত নক্ষত্তের নাম ধ্রুবের নামার্যায়ী প্রব হইল। অফুমান হয় বিশিষ্ট ব্যক্তিগণের পৌর্বাপর অনুসারে সর্বোধ্ব ধ্রুব চুইতে আরম্ভ কবিয়া জ্যোতিষ্ণপথের নামকরণ হইয়াছিল। পুলন্ত, পুলহ প্রভৃতি ঋষির নামাত্রধায়ী সপ্তবিমগুলের ভারকাদের নামকরণ চইয়াছিল। দক ক্লাবা ক্লাম্বানীয়া ব্যক্তিগণের নাম অফুসারে ২৭ নক্ষত্তের নাম হইয়াছিল। হিরণ্যকশিপুর দৌহিত্তের নামে চক্রতুর্বগ্রাসকারী ছায়া বাছ নাম পাইল। রাছ যে বাস্তবিক মণ্ডলাক্রডি পৃথিবীর ছায়া তাহা জানা ছিল। ব্রহ্মাণ্ড পুরাণ ॥ ১৮।৬০ ॥ পৃথিবীর আরুতি বে शानाकात ভाराও काना हिन। ठाख. सोर्व, मावन **ও** নাক্ত এই চারি প্রকার মাস এবং পাঁচ বৎসরের সৌকিক বুল নিলীত হইল। দীর্ঘতবকাল পরিমাপের জন্ত ১০০০ বুল অর্থাৎ ৫০০০ বৎসবের কল্প নিনিষ্ট হইল। কল্পের অস্কবিভাগ হিসাবে প্রতি ৭১ যুগের অর্থাৎ ৩৫৫ বংস্বের 'মফুকাল' কল্লিত হইল। 'মমু' ১৪টি। এই কালের সহিতে ১৫টি ২ বংসরের সন্ধি স্থির করিয়া ভাহা ৫০০০ বংসরের করের স্হিত খাপ খাওয়ান হইল। ১৪ম্মু+১৫স্থি-১৪× Oce+>e×2-8>9. वरम्ब+ 0. वरम्ब-€.00 वरम्ब। স্বায়ন্তব মহুকে স্বাদি বিশু স্থিব কবিয়া 'মহু' কালের সাহায্যে ইতবৃতীয় উদ্দেশ্তে কাল গণনা হইত। আরও নানা প্রকার যুগের ঘারা কালমাপনা প্রবৃতিত হয়। গ্রহাদির নামকরণ ও বে সকল ক্যোভিষ সম্বভীয় তথ্য वना इहेन जाहा ७१०० औ-পूर्वास्त्रत भूर्वहे चित्रीकृष्ठ रुरेशाहिन।

শিক্ষা। শিকা ও ভাষাকে সভ্যতার মানদও মনে করা ষাইতে পারে। প্রাচীন ভারতে শিকার ব্যবস্থা প্রই উন্নত ছিল। বর্ণাপ্রম ধর্মের প্রথম আপ্রম ব্রহ্মচর্বাপ্রম। এই আপ্রম কাল উপনমনের বয়স হইতে আরম্ভ করিয়া, ২৪ এমন কি ৩৬ বয়স পর্যন্ত বিত্তারিত ছিল। ব্রহ্মচারীকে শুক্সগৃহেই থাকিতে হইত। আপ্রমের স্থান লোক-কোলাহল হইতে দ্বে শাস্ত পরিবেশের মধ্যে নির্দিষ্ট হইত। ব্রাহ্মণ, ক্ষব্রিয় ও বৈশ্ব এই তিন জাতিকেই আপ্রমধর্ম শালন ক্ষিতে হইত। ব্রহ্মচারীর সমন্ত সময়ই লেখাপড়া,

বিনয়, সদাচায় ও ধর্মাচরণ শিক্ষার কাটিত। ভাহাকে কঠোর নির্মের মধ্যে থাকিতে হইত। সর্বপ্রকার আলক্ষ ও ভোগবিলাস পবিভাগে কবিয়া অকুসেবা ও গুরুর সাংসারিক কার্বে সহায়তা কবিতে হইত। পরিধেয় ও বিছানাপত্তের সকল প্রকার আডমর ছাডিতে চইড। গোচারণ, কাঠাদি আহরণ প্রভৃতি প্রমুসাধ্য কার্য ও গুরুর ব্দ ভিকা করিতে হইত। মোটকথা, ব্রস্কার্য আশ্রমে থাকিয়া শিশ্বের সর্বপ্রকার কায়িক ও মানসিক উন্নতি সাধিত হইত। সব কাজেই, এমন কি ডিক্ষা করাতেও, বিধি নিবেধ মানিয়া চলিতে চইড। এখনকার মত অবিনীত ছাত্র তথন প্রায়ট দেখা বাইত না। এক ও নিষোর মধ্যে ৰদাচিৎ বলহ হইত। কথিত আছে, বাঞ্চবভা তাঁহার শুক্র সহিত বিবাদ করিয়াছিলেন। নগর হইতে দুরে আল্লম থাকায় ব্ৰন্ধচাৱীর কোন প্ৰকার চিত্তচাঞ্চলোর কারণ ঘটিত না। চাতেরা একমনে লেখাপড়া করিত। ঋকুর নিকট শিক্ষা সমাধ্য হইলে অধিকাংশ ছাত্র নিজেদের मामबीमक खक्तकिना विदा भाई हा चाल्याम गाईक। खक्-গ্ৰহে থাকাকালীন শিশুৱা গুৰুৱ পৰিবাৰভুক্ত বলিয়াই পরিগণিত হইত এবং ভাহাদের নিজেদের কিছুই খরচ ক্রিতে হইত না, সেইজন্ত আশ্রম ছাড়িবার সময় শিষ্যরা শুক্রদক্ষিণা হিসাবে স্থবর্গ, গো, অখ, ছত্র, চর্মপাতকা, আসন, ধাক্ত, শাক, বস্ত্র ইত্যাদি দিয়া গুরুকে স্বস্তু করিত। শিব্য অসমৰ্থ হইলে অন্তত পক্ষে তাহাকে ছব্ৰ ও পাছকা দিতে ছইত। কোন কোন শিষ্য বিবাহাদি না করিয়া আজীবন-কাল শুকুগুহে থাকিয়া লেখাপড়া করিত। স্থাবার কেহ त्कर अक खक्रव निकृष्टि निका ममाश्च रहेल चनव खक्रव নিকট নুজন বিবয়ে শিক্ষার জন্ত বাইত। তথনকার দিনে সাধারণত এই কয়টি বিদ্যা শিখান হইত—বন্ধবিদ্যা, বেদ, निका, क्या, ब्यां जित्र, इन, निक्क, ब्यांकद्रव, व्यांक्र, नार्था, देवत्नविक, त्यान, मीमारना, न्याव, नूवान, हेलिहान, ধর্মশান্ত, আরুর্বেদ, ধহুর্বেদ, পান্ধর্ব বেদ অর্থাৎ সভীত শান্ত, নিধিশান্ত অর্থাৎ ধনবড়াদি পরীকা বিষয়ক শান্ত, নিমিত বিদ্যা অর্থাৎ নানা লক্ষণ বিচার করিয়া বিপদের সম্ভাবনা অমুমান: মৃত্যু, অগ্নিদাহ, প্লাবন, ভূমিকম্প প্রভৃতি ঘটনা এবং বুদ্ধের ফলাফল অমুমান ইত্যাদি ইহার অন্তর্গত, অর্থ-শান্ত্র, গণিত, ভতবিদ্যা, সর্প ও দেবজন বিদ্যা অর্থাৎ দেবতা ষানব দর্প প্রস্তৃতি জাতির নৃতত্ত্ববিষয়ক জান, পর্বতাদির সংস্থান অর্থাৎ ভূগোল, বাস্ত্রশাস্ত্র অর্থাৎ মন্দির বাসস্থান নগর গ্রাম প্রভৃতি নির্মাণ, শিল্পান্ত ইত্যাদি। এই স্কল विशाब वह श्रींथे हिन जवर जहे श्रींथे उन्हाबीदरव बाबा নিখিত হইত। সংখ্যত সাহিত্যে বত পুঁৰি পাওয়া সিয়াছে

পৃথিবীর অন্যান্য সকল ভাষার লিখিত পুঁথি একত্তিত কবিলে ডাহার অধে কও চইবে না।

শুক্রগৃহে পাঠের স্থবিধা এই বে দর্শন প্রভৃতি শাল্পের বত গভীর অন্থূলীলন তথার সম্ভবপর সাধারণ বিদ্যালয়ে বা কলেকে তাহা নহে। অপর পকে বিজ্ঞানাদি শিক্ষার জন্য প্রয়োগশালার আবক্সক হওয়ায় এখনকার বাবস্থাই প্রশন্ততর। প্রয়োগশালা না থাকিলেও প্রাচীন ভারতবর্ষে বে বিজ্ঞানের উন্নতি হইয়াচিল তাহা বিশ্বমকর। সেই সময়কার কোন জাতি বিজ্ঞানে ভারতীয়দের মত অগ্রসর হইতে পারে নাই। আধুনিককালে জন্মান্য সভাজাতির ভূলনাম ভাবত বৈজ্ঞানিক শিক্ষায় পিছাইয়। পড়িয়াছে।

खो ७ मुखानित्र मिका। उक्षत्र बाधारम व्यवधिकावीय শিকা-ব্যবস্থা অন্য প্রকার ছিল। ন্ত্রী এবং শদ্রের আশ্রমধর্ম নাই। অনেক সময় গুরুকনাাগণ খনাানা শিষ্যের সহিত পাঠ লইতেন এবং পিতগ্রহে থাকিয়াই যথেষ্ট শিক্ষালাভ করিতেন। সাধারণ जीलार कर बारा करें स्विधा किल मा किन कांशासर ভিতর অনেকেও বে নানা বিদ্যা অর্জন করিতেন, তাহার প্রচুর উল্লেখ পুরাণে পাওয়া বায়। ঋথেদে বছ স্ত্রী-ঋষির স্তুক্ত আছে। কোন কোন পুরাণকার অনার্যা স্ত্রীপোক। পুরাণে মদাল্যা নামী এক ধর্মণান্ত পারদর্শিনী সুলিক্ষিতা বাঞ্চীর উল্লেখ আছে। বে সকল স্ত্রীলোকের এইরূপ শিকার স্বােগ মিলিত না তাহাদের এবং শুরুদের জন্য নানাপ্রকার লোকশিকার ব্যবস্থা ছিল। শৃত্র এবং অস্তাক জাতীয় লোকও বে ব্রন্ধবিদ্যা লাভ করিয়াছিলেন ভাহার উল্লেখ পুরাণে পাওয়া বায়। লোকশিকার বাবভায় অকর পরিচয় হইত না বটে কিছ তাহাতে প্রকৃত শিক্ষার কোনও বাাঘাত হইত না। প্রাচীন কালে নানা প্রকার ব্রত্ত পার্বণ এবং দানবিধি প্রচলিত ছিল। লোকে পরাণ ইতিহাস, আখ্যান, উপাধ্যান প্রবণ করিত। রাজগণের নিয়মিত পুরাণ প্রবণ অবশ্র কর্তব্য বলিয়া পরিগণিত হইত। श्वीरनारकत ७ मुखमिरभव अहे मकन चक्रहीरन रवान संस्वताद কোন বাধা ছিল না। ব্ৰভ. পাৰ্বণ ও ভীৰ্থবাজাৰ মধা দিয়া মনেক জ্যোতিবিক, ভৌগোলিক ও ইডবুভীয় তথ্য সাধারণের মধ্যে প্রচলিত হইয়াছিল। পুরাণে এই স্কল ব্ৰত ও উপবাসময় বিবিধ দানধৰ্মকে 'ধৰ্ম, অৰ্থ এবং কাম-नाधक' विववन वना हहेशाहि। अवक्रभूबारन दर नानाविध ব্ৰভের বিবৰণ দেওৱা আছে তাহা পাঠ করিলেই আমার উক্তির সার্থকতা বুরা হাইবে। পুরাণ, আধ্যান প্রভৃতি খাবণে লেট্রকের ইভবুতীয় কৌতৃহল ও ধর্মজিজাসা চরিতার্থ হইত। তাহা হাড়া লোকে ইহাতে সমালনীতি, খাখ্য- নীতি, সদাচার প্রভৃতিরও শিক্ষা পাইত। আধুনিককালেও লোকশিক্ষার জন্য কথকতা প্রভৃতি অল্পত্ম প্রচলন আছে। রামায়ণ ও মহাভারত পাঠও অনেক লোকে শুনিয়া থাকেন। আমাদের দেশে নিরক্ষর জনসাধারণ এখনও অন্ত দেশের নিম্ন শ্রেণীর লেখাপড়া জানা সাধারণ লোক অপেক্ষা অনেক অধিক শিক্ষিত।

প্রাক্ত ও সংক্**ত ভাষা।** প্রাচীন ভারতে ছই শ্ৰেণীৰ ভাষা প্ৰচলিত চিল। এক প্ৰাকৃত অপবৃটি সংস্কৃত। প্রাকৃত ভাষা প্রকৃতি জাত অর্থাৎ কেন্ট্র ইনার সৃষ্টি করে নাই। মাহুৰ স্বভাবত মাতৃক্রোড়ে থাকিয়া বে ভাষা শিকা করে তাহাই প্রাকৃত ভাষা। প্রাকৃত ভাষা প্রদেশ অফুসারে ভিন্ন প্রকারের হয়। প্রাকৃত শব্দের আদিম অর্থ অনুসারে वारना, अनवारि, हिन्ती, मवाठी, अधिवा, जामिन, देश्दबी, ক্রেঞ্চ, জার্মান প্রভৃতি ভাষা প্রাকৃত। একই প্রাকৃত ভাষার মধ্যে প্রকারভেদ আছে। পূর্ববঙ্গের বাংলা ও পশ্চিমবঙ্গের বাংলা বিভিন্ন। প্ৰাকৃত ভাষা বলিতে আৰকাল একটি বিশিষ্ট প্রাকৃত ভাষা বুঝায়। পুরাকালে প্রাকৃত শব্দের এই সমীৰ্ণ অৰ্থ ছিল না। আমি প্ৰাকৃত শৰ্টি পুৱাতন অর্থেট বাবহার করিব। একট প্রদেশের স্থানভেদে প্রাকৃতিক ভাষার মধ্যে সামানা পার্থকা থাকিলেও সেই প্রাদেশের লেখা ভাষার একটি বিশিষ্ট রূপ দেখা যায় এবং প্রদেশবাসী সমন্ত শিক্ষিত ব্যক্তি সেই ভাষা সহজে বুঝিতে পারেন। প্রাক্ত ভাষার কিছু সংস্থার করিয়া লেখা ভাষা পঠিত হয়। এই সংস্থার স্বাভাবিক কতকগুলি নিয়মের বশেই চইয়া থাকে।

সংস্কৃত ভাষা। সংস্কৃত ভাষা প্রাকৃত হইতে উৎপন্ন হইয়াছে একথা সভ্য কিছ যে সংস্থারের ফলে ইহা এক পূর্ণাবয়ব ভাষার রূপ পাইয়াছে ভাহা অতি স্থদ্রপ্রসারী এবং স্থপরিকল্পিড। পরিকল্পনা অমুদাবে সংস্কৃত ভাষার ষ্ঠি হইয়াছিল। সংস্থাতের বর্ণবিন্যাস ও শব্দ, সদ্ধি ও সমাস গঠন ও ইহার ব্যাকরণ স্থদুচ় বৈজ্ঞানিক ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত। পুথিবীর অন্য কোন ভাষায় এই বৈজ্ঞানিক প্ৰতি অভ্যুস্ত হয় নাই। সংস্কৃত ভিন্ন অপর সকল ভাষাতেই বৰ্ণমালায় শ্বর ও ব্যঞ্জনবর্ণ মিশ্রিত হইয়া উচ্চারণ স্থান অভুষায়ী স্বর ও বাঞ্চনবর্ণের বিভাগও অন্য ভাষায় দেখা যায় না। সংস্কৃতের শব্দ-সম্পদ্ধ অতুলনীয়; এই ভাষায় ১,৮০,০০০এর উপর শব্দ আছে। বে কোন কটিল ভাব সংস্কৃতে প্রকাশ করা বায়। এক বা একাধিক প্রাকৃত ভাষার আবৃদ-সংস্কার করিয়া गः इष्ठ ভाষার ऋष्ठि इहेशाहिन, এहेन्नाहे हेहाद नाम শংখত। এই ভাষা কেবল শিক্ষিত ব্যক্তিরাই বুরিতে পারিতেন। এখন বেমন লেখ্য বাংলা অনেক শিক্ষিত ব্যক্তির কথা ইইয়াছে পুরাকালে সেইরপ অনেকেই সংস্কৃতে কথাবার্ত্তা বলিতেন। আম্বণগণ, রাজগণ ও বিশিষ্ট ব্যক্তি-গণ সংস্কৃত ব্যবহার করিতেন। অপর পক্ষে স্ত্রীলোক এবং অশিক্ষিত জনসাধারণ প্রাকৃতে কথা বলিতেন। প্রাকৃত হইতে অনেক শন্ধ বেমন সংস্কৃতে আসিয়াছিল সেরপ সংস্কৃত হইতেও নানা শন্ধ পরবর্তীকালে প্রাকৃত ভাষা-গুলিকে পুট করিয়াছে। বাংলা, হিন্দী, মরাঠা প্রভৃতি প্রাকৃত ভাষাতে এখনও সংস্কৃত হইতে শন্ধ লোহন চলিতেছে।

গংস্কৃত ভাষা মূলত বিদান ব্ৰাহ্মণদিপের ভাষা ছিল বলিয়া ইহাকে ব্ৰাহ্মী ভাষাও বলা হইত। সংস্কৃত ভাষার আদি লিপির নাম ব্রান্ধী লিপি। পরে দেবনাগরী লিপির চলন হয়। সংস্কৃত কোন প্রাদেশিক ভাষা না হওয়ায় विधानभाष्य माथा ভावित चामान-अमारनद कना हेहा ভারতের সর্বত্র গহীত হইয়াছিল। এই ভাষা স্বষ্ট হইবার পর হইতে বিভিন্ন প্রদেশের পণ্ডিতগণ সংস্কৃতে গ্রন্থাদি শ্রতি, স্বতি, পুরাণ, অর্থশান্ত, লিখিতে লাগিলেন। ক্যোতিষ ইত্যাদি সকল বিভাৱ গ্রন্থ সংস্কৃতে লিখিত। সংস্কৃত কেবল বে বাই-পরিচালনার উদ্দেশ্যে ব্যবহৃত হইছ তাহা নহে। অনেক কবি ও বিধান ইহাতে রাষ্ট্রের প্রয়োজনাতিবিক্ত কাব্য প্রভৃতিও বচনা করিয়াছেন। রামায়ণ মহাভারতের মত বহুৎ এবং উৎকৃষ্ট কাবাগ্রন্থ অন্য কোন বিদেশীয় ভাষায় নাই। বাঁহার বক্তব্য সকল প্রদেশের লোককে শুনাইবার দরকার হইত তিনিই সংশ্বতে নিধিতেন। এই ভাষার দারা সমগ্র ভারতের সাংস্কৃতিক ঐকাসাধন সম্ভবপর হইয়াছিল। ভারতের এক প্রাম্ভ হইতে আরম্ভ করিয়া অন্য প্রান্ত পর্যন্ত ধর্মের আচরণে ও শিক্ষার ধারায় যে মূল ঐক্য দেখা বায় তাহা এই সংস্কৃতের প্রভাবেই। সংস্থতের মত এক কুত্রিম ভাষা যে অন্তত সাফল্য লাভ করিয়াছে ভাষা পরম আশ্চর্যের বিষয়। বাঁচারা এই ভাষা আবিষ্কার ও প্রচলন করিয়াছিলেন তাঁহাদের দুবদৃষ্টি প্রশংসার অভীত। পুথিবীতে সংস্কৃতের ন্যায় আরও একটি কুত্রিম ভাষা প্রচলিত আছে তাহার নাম এস্পার্যান্টো (Esperanto)। ইহা আধুনিককালে স্ট হইয়াছে। এস্পান্যান্টো পৃথিবীর বিভিন্ন জাতির মধ্যে সাংস্কৃতিক ঐক্য সাধন করিবে বলিয়া বে আলা করা পিয়াছিল ভাহা সফল হয় নাই।

লংকৃত ভাষার উৎপত্তি। কাহার বারা এবং কবে সংস্কৃত ভাষার প্রবর্তন হয় তাহার কোন বধাবধ সন্ধান পাওয়া বায় না তবে এ ভাষা বে পুরই পুরাতন সে বিবরে

সন্দেহ নাই। সংস্কৃত ভাষা অন্যান্য প্রাকৃত ভাষার ন্যায় क्रा शिक्षा छेर्छ नाहे। वाहाबा हेबारक ठानाहेबाहिरनन ভাঁহারা প্রথম হইভেই ইহাকে পূর্ণাবয়ব ভাষারূপে স্থাই করিয়াছিলেন। এ ভাষা লোকসমাজে প্রচলিত না থাকায় ভাহার কোন ঐতিহ্ন ছিল না দেজন্য বৈজ্ঞানিক প্রভিত্তে ইহার ইচ্ছামত পঠনে কোন বাধার সন্মুখীন হইতে হয় নাই। শ্ৰষ্টা ইহার বে রূপ দিয়াছিলেন ভাহাই ক্রমে প্রচলিত হইয়াছিল। কালে সকল ভাষাই অল্পবিশ্বর পরিবর্তিত হয় কিছু সংস্কৃতের বেলায় দে কথা খাটে না। বৈদিক ভাষা ও সাধারণ সংস্কৃতের মধ্যে কিছু প্রভেদ আছে সভ্য কিছ উভয়ই কুত্রিম ও সমকালীন। বৈদিক ভাষা সাধারণ সংস্কৃতের প্রকারভেদ মাত্র। ঋর্যেদে এক স্থানে ১০ম ।৭১।২-৩। উল্লেখ আছে বে, ঝিবরা কোন এক সময়ে ভাষাকে চালুনির বারা ছাতু ছাঁকার ন্যায় ছাঁকিয়াছিলেন। ইহাতে ভাষার উৎকর্ব সাধিত হইয়া তাহাতে 'ভদ্রালম্বী শাসিয়াছিল এবং সপ্তছম্ম তাহার চারদিকে নৃত্য করিয়াছিল। এ ভাষা সাধারণ লোকে বুঝিতে পারে নাই। পরে সেই ভাষাকে আহরণ করিয়া বিধানগণ নানা বিদ্যা-মন্দিরে স্থাপিত করিয়াছিলেন।' ভাষা সংস্থারের কথার উল্লেখ ঋখেদের এই শক্ত বাতীত আর কোথাও পাওয়া বার না। ভৈত্তিরীয় সংহিভায় আছে "এক সময় বেদ ভাষা-সমূত্রের ধ্বনির ন্যায় অস্পষ্ট ছিল। পরে সেই ভাষার প্রকৃতি প্রভারাদি বিশ্লেষণ সংসাধিত হইল, ভাহা 'ব্যাকৃতা' ভাষা বলিয়া পণ্য হয়। এই মহৎ কাৰ্য ইন্দ্ৰ সম্পন্ন করিয়াছেন। তদবধি 'ব্যাক্বত' বাক্য ঋবিদের মূখে অভ্যুদিত ছইভেছে" ।উমেশচজ্ৰ বটব্যাল, বেদ প্ৰবেশিকা, ১৭৮পু। ভৈত্তিবীয় সংহিতায় বৈদিক ভাষার ব্যাকরণ প্রস্তুতের काहिनी वना इहेशारह।

সংস্তের ন্যার কৃত্রিম ভাষা চালাইতে বিদানগণের সাহাব্য ব্যতীভ কোনও প্রবল রাজশক্তির আপ্রমণ আবঞ্চক হইমাছিল অভ্যান করা বায়। বৈবল্পত মন্থকালে পরিকল্পনা অভ্যারী অনেক বিবরে নৃতন ধারা প্রবিভিত হইমাছিল। হয়ত সংস্কৃত ভাষা সেই সময়কার স্থাই। অবেদে অবিরা অনেক সমসাময়িক ব্যক্তিদের নাম করিয়াছেন। তাঁহাদের অববা সেই অবিপ্রের কাল অধিকাংশ কেত্রেই পুরাণ সাহাব্যে ব্যাব্য পাওয়া বায়। ইহাতে দেখা বায় বে, ইহারা বৈবল্পত মন্থ্য পরবর্তী। বৈবল্পত মন্থকাল ৩৮১৪ খ্রী-পূর্বাল্ব। অবেদের কেবল এক ছানে ॥১০ম।১৪৮॥ বেণপুত্র পূর্বতী। অভ্যান হয়, পূর্ব ভবের ভাষা পরিবর্তিত করিয়া কোন করি ভাহা

ইন্দ্রত্তব রূপে ব্যবহার করিয়াছিলেন। পুথুর ভবের মধ্যেই উক্ত হইয়াছে 'বেণের পুত্র পুধুর শুবের বারা তোমার শুব क्वा इटेरफ्टिं। बर्स्सिय अक्टे ख्व दा विভिन्न बवि বিভিন্ন সময়ে ব্যবহার করিয়াছেন ভাষার বহু উল্লেখ পাওয়া বায়। কথন কথন তাঁহারা স্তোত্তগুলির কিঞ্চিৎ পরিবর্তন করিতেন। ৮ম।১:১০ প্লোকে শশকর্ণ ঝাষ বলিতেছেন, 'হে অধিষয়, ককিবান ঋষি বেরণ ভোমাদিগকে আহ্বান করিয়াছে, বেরূপ বাখ ও দীর্ঘতমা, বেরূপ বেণের পুত্র পৃথু ৰঞগৃহে আহ্বান করিয়াছেন, সেইব্নপেই আমি ন্তব করিতেছি, আমার এই ন্তোত্র অবগত হও । রমেশচক্র দত্ত। প্ৰকল যজ্ঞে ঋষিরা নৃতন শুব তৈয়ারী করিতেন না। পুরাতন স্বোত্রই অনেক সময় গাত হইত। আবার একাধিক ঋষি একই স্কুত হয়ত কথনও ব্যবহার করিয়াছেন। ঋথেদের **ऽम । ১००, ৮म ।১, ৮म ।১**०२, २म ।১०৮, ১०म ।১৩१ हेजानि স্কুক্ত লি দেখিলেই এই কথার পোষকতা পাওয়া বাইবে। বৈবন্ধত মহুৱ বহু পূৰ্বকাল হইতেই যে ৰজ্ঞ প্ৰচলিত ছিল এবং ইন্দ্র, বঙ্গণ, বিষ্ণু প্রভৃতি দেবতার নামে স্কব পাঠ হইত এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই কিন্তু এই সময়ের স্কুত সকল বেলে আহরণ করা হয় নাই। হয়ত প্রাকৃত ভাষায় এই সব স্তব রচিত হইত। বেদের আহাব ও নিবিদ্ মন্ত্রী ষতি প্রাচীন; এগুলির ভাষা কোন পরিবর্তন করিয়া গ্রহণ করা হইয়াছিল কিনা বলা বায় না।

সভ্যতা সম্বনীয় কভিপয় তথ্য। বৈবন্ধত মহ হইতে আৰম্ভ কৰিয়া মহাভাৱতের স্থান পর্যস্ত ভারতে বে সভ্যতার অভ্যানয় হইয়াছিল তাহার সমগ্র বিবরণ দেওয়া এই প্রবন্ধে সম্ভবপর নয়। বিভিন্ন পুরাণগুলি পাঠ করিলে এ ভণ্য সহজেই পাওয়া বাইবে। এখানে মাত্র কভৰগুলি কৌতৃহলোদীপক কথা উদ্ধৃত করিতেছি। প্রাচীন কালে ভারতে কার্পাদ, মদিনার ছাল, বেশম, পশম ইত্যাদি হইডে ব্দনেকপ্রকার ক্ষাবন্ধ তৈয়ারী হইত। বন্ধু মুগের চামড়া হইতে এক প্রকার অভিশয় কোমল শ্যার আন্তরণ প্রস্তুত হইত। ধবি ও আক্ষচারীরা বছল পরিধান করিতেন। **७**थन ठळवर्जी नुबाहे पूर कमरे हिलन । क्य क्य बार्जा বাজারা রাজ্য করিতেন। রাজধর্ম আলোচনায় দেখা ান্ন বে, বাজাবা প্রজাবশ্বন করিতেন বলিয়াই তাঁহাদের বনাম রাজা। এ গুণ না থাকিলে অধিকাংশ ক্ষেত্ৰেই ভাঁহাদের বাজাচ্যত হইতে হইয়াছে। রাজণিতাও অপরাধী সাব্যস্ত হইলে তাঁহার শান্তি হইত, এমন কি প্রাণদণ্ডও দেওয়া হইত। রাজপুত্রের বেলাও এরণ ব্যবস্থা ছিল। বাজা নিজেকে প্রজাদের বেডনভূক্ ভূড্য বলিয়া ৰনে ক্রিডেন। কোন কোন বাজার আমলে শল্প আইন

(arms act) প্রচলিত ছিল। চক্রবর্তী রাজা কার্ডবীর্বাজ্বনি আদেশ প্রচার করেন, 'আদ্যাবধি আমি ভিন্ন বে অল্প প্রহণ করিবে সেই পরহিংসারত বা দক্ষা বলিয়া গণ্য হইবে এবং সে আমার বধ্য হইবে'। তিনিই একমাত্র গ্রাম-শালক, পশুশালক, ক্ষেত্রণালক, ত্রাহ্মণপালক, ভপন্থীরক্ষক ও অর্থণালক হইলেন। তাহার সময়ে কাহারও কোন ক্ষর চুরি বাইত না। মহুসংহিতার আছে, অশরের তৃণ, শাক, মৃত্তিকা, ফুল ও জল না বলিয়া লইলেও তাহা চুরি বলিয়া গণ্য হইবে না। তথন বোধ হয় এই সব জ্বরের খুবই প্রাচুর্য ছিল। পরবর্তীকালে এই সকল জ্বর্য বিনা অন্থমতিতে গ্রহণ করা নরকপ্রদ দোব বলিয়া গণ্য হইটাচে।

তখনকার দিনেও প্রজা এবং প্র গ্রনা হটত ও বাজা ভাছার হিনাব রাখিতেন। সর্প. পশু ও পক্ষীকে পরস্পরের मध्य महाहे क्वाहेत्व ना अहेब्रुल हिन्दम चाह्न । त्वाहम গ্লাভিদ্রেটারদের যুদ্ধ প্রাসিদ্ধ ছিল। এখানে নিষেধ সংস্থেও মুংগী ও বুলবুলের লড়াই পুরাকাল হইতে অন্যাবধি প্রচলিত আছে। ক্রফের সময় ক্রীড়াচ্ছলে বে মরবৃদ্ধ হইত ভাহাতেও অনেক সময় প্রাণহানি ঘটিত। মল, মূত্র, রক্ত, পুথু, বিষ ইত্যাদি অপবিত্র দ্রবাযুক্ত বস্ত্র জলাশয়ে প্রকালন ক্রানিষেধ ছিল। অপরের ব্যবস্থত বল্প, জুতাবাধড়ম পরা দুষনীয় পণ্য হইত। যে খান্যের উপর কেহ হাঁচিয়াছে তाहा क्लिश निरांत चारम चारह। भगाम चर्चार रह লোকের জ্বন্ত বে অর পাক করা হয় ভাষা গ্রহণীয় নতে। হোটেলের অন্ন পণান্ন। গৃহকর্তা নিম্ন ভূত্যের সহিত একত্রে পাইবেন ইহাই গার্হস্থ ধর্মের উপদেশ। এখনও উত্তর-প্রাদেশে কোন কোন পরিবারের মধ্যে এই প্রথা প্রচলিত আছে। রোগবহল গ্রাম পরিত্যাগ করা বিহিত বলিয়া উপिष्ठि : इहेशाहि। य वाक्ति कूर्वेश भागन ना कविशा मान

কবে, তাহার দান অদিয়। প্রাণে আছে বে, ত্রীকে হাঁচিতে, হাই তুলিতে বা যদৃক্ষ। ভাবে বদিয়া থাকা অবস্থায় দেখিবে না।

খনিজের উপদেশ। প্রাচীন ভারতের স্মহান্
ঐতিহু আন্তও আমাদের অনুষ্ট নিয়ন্তিত করিতেছে। সেই
ঐতিহু স্বরণ রাখিয়া বদি আমরা সমন্ত কর্মে প্রবৃত্ত হই,
ভবে আমাদের সাফল্য স্থনিশ্চিত। অতি পুরাকালে ধনিত্র
নামে এক রালা ছিলেন। তাঁহার কাল ৩৬৮৩ খ্রী-পূর্বান্থ।
তিনি এক ধর্মণাসন প্রবর্তন করেন। রালা ধনিত্রের ধর্মশাসন উদ্বৃত্ত করিয়া প্রবৃত্ত কেরিবান্তিছ :

'मकन शानी जानम উপडোগ कक्षकः। विकासानिक ভাহারা স্বেহ্যুক্ত হউক, সর্বস্থাতর মধ্য হউক এবং সক্ষেই নিরাভন্কভা লাভ করক। প্রাণিগণের ব্যাধি বিনষ্ট হউক। कारावस (यम प्रमाद है मा द्य अवः मक्न लागी मक्लब প্রতি মিত্রভাব প্রকাশ কম্পক। বিজাতিগণের মঙ্গল ও পরস্পারের প্রীতি, সকল বর্ণের সমৃদ্ধি এবং সর্বভার্মর দিছি হউক। হে জনপণ, তোমাদের সর্বভৃতে সর্বদ। মুদ্দ বৃদ্ধি ছউক, তোমরা যেরপ নিজের ও পুত্রগণের হিডকামন। ক্রিয়া থাক, সেইরূপ দর্বভূতের হিতকারী হও। ইহাতেই তোমাদের পরম মঙ্গল হইবে। কে কাছার নিকট অপরাধী হয় ? কোন মুচবৃদ্ধি ব্যক্তি কাহারও অহিত করিলে ভাহার নিজেরই অহিত হইয়া থাকে, কারণ কর্মফর কর্তারট উপভোগ্য। হে মছবাগন, তোমরা এই সমস্ত विद्युजना कविशा मकन विषया श्विवनिक्ष हुछ। एह बुधनन, ভোমরা লৌকিক পাপে, প্রবৃত্ত হইও না। এইরপ করিলে **ভোমরা পুণালোক প্রাপ্ত হইবে।** বে আমাকে **আজ স্বেহ** করিতেছে, পৃথিবীতে সর্বদা তাহার মন্দল হউক, বে আমাকে ছেব করিতেছে দেও সর্বনা মৰল উপভোগ कक्का'

### নৰবসম্ভে

### विविषयनान हाडीभाशाय

বসভ আগিল আজি আমের রুক্লে।
লাজিরাতে বনভূবি পুলিভ শির্লে।
লজিয়ার গুজ হাভে প্রলয় বস্থা;
দিক হভে দিগভারে সদীভের স্থা
আনল-উবেল কঠে হভার কোকিল।
নিবিলের অবক্রম হাদরের বিল বিবেবে বুলিল আজি কোন্ বাহ্কর!
বর্ষকারিতে লামা অবণ্য রুবর। ভোষরা আসিবে বারা শশুবর্ধ পরে—
এমনি বসন্থ-বিনে বনের বর্ণরে
পুলকে চকল হবে ভোষাবেরও প্রাব ;
সেবিমও আবের বনে কোকিলের গাম
এমনি উঠিবে বাজি। মান্তবের হিরা
রুগে রুগে একই পুরে উঠিছে কাঁপিরা।

# আনারকলি

### बिहेन्सिना (पर्वी कोधुनागी

ওয় **অং** ১ম দুক্ত

(কাজী সাহেবের আদাসত। পুঁথিপত্র সহ কাজী সাহেব উচ্চ মঞ্চে আসীন। অপেকাকত নিয় আসনে মামলংলার, পেশকার, সেরেন্ডালার, নাজির ইড্যালি ঘিরিয়া বসিয়াতে। তুই পার্যে তুই চাপরানী দুগুরুমান)।

এক জন চাপরালী। (বাহিরে গিয়া প্রত্যাবর্ত্তনপূর্ব্বক) হজুর বীরবল মন্ত্রীজী আপনার সাক্ষাৎপ্রার্থী।

কাজী। তাঁকে সন্মানপূর্বক ভিতরে নিয়ে এস স্মার তোমরা সকলে বাইরে স্পপেকা করো—দেধ থেন কেউ এখন এখানে না স্মাসে।

( বীরবলের প্রবেশ ও কর্মচারিগণের প্রস্থান )।

কাঞ্জী। (বাস্তভাবে উঠিয়া) আসতে আঞা হোক, মন্ত্ৰীজী। আৰু আমার কি স্বপ্ৰভাত। (নিৰূপাৰ্থে বীব্ৰলকে বসাইলেন।)

বীরবন। স্থ কি কু, সে আপনার মর্জ্জির উপব নির্ভর।
আমি ত আপনাকে সংপরামর্শ দিতেই এনেছি; তবে
নেওয়:-মা-নেওয়া সে আপনার হাত।

কাৰী। আমধা বাজভূত্য, বাজমন্ত্রীর পরামর্শ বাজারই আলেশ বলে গণ্য এবং মান্ত করি। ধর্মের অবিধোধী যা বলবেন তাই করতে প্রস্তুত আছি।

বীববল। দেখুন কাজী সাহেব, আদালত ও মস্জিদ ঠিক এক স্থান নয়। মন্দির মস্জিদে লোকে বায় পরমার্থ-সিজির জন্য; কিন্তু আদালতে আদে স্থার্থসিজির জন্য।

কাজী। তাত বটেই, তবে সে স্বার্থ বাতে ন্যায়তঃ-ধর্মতঃ সিদ্ধ হয়, তাই দেখবার জন্যই ত আমাদের এ জারগার বসানো হয়েছে মনীলা ?

বীরবল। শান্তীয় অর্থে ধর্ম মানে আইন। কিছ আপনি কি বলতে চান, সংলে একই আইনের একই অর্থ করে ? বা একই পাপে একই দণ্ড হয় ?

কাজী। তা কেমন করে বলব হক্ব ? নিজ নিজ কুল বৃদ্ধিতে বা ন্যায়সকত ও আইনসমত বলে বোধ করি, সেইক্লপ রাম দেবার চেটা করি, এই মাত্র বলতে পারি। কিছ আইন সক্ষে আলোচনার ভিতরে বোধ হয়, হজ্বের কোন উদ্বেশ্য আছে।

বীরবল। তা নইলে কি ভিজে ধস্থসের চিক-ঢাকা ঠাঙা অভকার ঘরের অভাত দিবানিস্তার স্থপন্যা ছেড়ে,

এই গ্রীম্মকালের দিনত্বপুবের রোদ ও ধুলা উপভোগ করবার জন্য আপনার কাছে ছুটে এসেছি! আপনি বিবয়ী লোক, এক আঁচড়েই সব বুঝতে পারেন। তাই আর বুথা আপনার অমূল্য সময় নই না করে, আলল প্রভাবে আদা বাক্। আজ খোদ্ রাজপ্রাসাদ থেকে একটি বিশেষ মামলা কল্প করা হরেছে, তা আপনি অবগত আছেন নিশ্চয় ?

কান্ধী। হাঁ, আপনি যধন এলেন, আমি ডারই কালজ-পত্র উন্টে পান্টে দেখছিলুম।

বীরবল। তার থেকে কি সার সংগ্রহ করলেন জ্ঞানডে পারি কি ?

কাঞা। আনারকলি নামে একটি আফগান মেয়ে কাব্লের বাজপ্রতিনিধি কর্ত্ক প্রেরিত হয়ে মাসাবধি বেগমসাহিবাদের আগ্রয়ে থাকে। মেয়েটি বড় আনন্দময়ী ও অনিন্দাহন্দরী; মাঝে মাঝে আমার ত্রীর কাছে বেডাতে আগত। ভার মোহিনী ক্রপ দেখে—

বীববল। কাঞ্জীসাহেব, রূপে মোহিত হবার দিন আপনারও নেই, আমারও নেই। কাজের কথা আর কিছু থাকে ত শীদ্র বলে ফেলুন। কবিদের পক্ষে কাল নিরব্ধি হতে পাবে, কিন্তু সাধারণ লোকের পক্ষে সময় সীমারত।

কাজী। বাচালত। মাপ করবেন হজুর; তাকে দেখলে আমার একটি মৃতা কলার কথা মনে পড়ে। আরজিতে দেখা রয়েছে বে মেয়েটি নীচবংশের হয়েও শাহাজালার প্রতি চোধ তুলতে সাহস করেছে, এবং সাবধান করে দেওয়া সজেও বারংবার অন্তঃপুর-উল্যানে তাঁর সদে সাকাং করেছে। এমন কি, সে এতই ছুর্জিনীতা বে, গত উৎদর রজনীতে শাহেন-শা'র চোধের সামনে শাহাজালার সদে সহাস্য দৃষ্টিবিনিময় করতেও কুঠা বোধ করেনি। তাই তিনি কুছ হয়ে অসমাপ্ত উৎসব বছ করেন, এবং এই গুকতর অপরাধের বিচার না হওয়া পর্যন্ত তাকে কারাক্র রাধতে আদেশ করেন।

বীববল। আমি এই শোচনীয় ছুৰ্ঘটনাৰ এক জন প্ৰভাকদৰ্শী। সৰই ৰধাৰৰ লেখা হয়েছে। এখন আপনি এই সহিত আচৰণেৰ কি দণ্ড আইনসক্ত মনে কৰেন ?

কালী। শর বর্ষ এবং শনভিক্ষভাপ্রস্থত তৃত্বকৈ শাইন সর্বহাই ক্ষার চক্ষে বেখতে প্রস্তত। একলে সমূ পাণে শ্বকাণ্ডের প্রবোধন হবে না। বীরবদ। একে আপনি বলতে চান লঘু পাপ? বে শাহাজালা তু'দিন পরে দিলীর ভজে বসবেন, তাঁকে কুহকু লালে জড়িত করে তাঁর মহৎ বংশে কলক লেপন করবার ছরভিদ্যি ত আমার মতে সামায় বালিকার পক্ষে আমার্জনীয় অপরাধ, এবং কঠিন্তম দণ্ডের বোগ্য।

কালী। হজ্ব, আইন রাজা-প্রজাধনী-দরিজের প্রভেদ মানে না। এই সরলা বালিকা শাহাজাদাকে ফাঁদে ফেলবার চেটায় ছিল, কিংবা ভার অঞ্চতার স্ববোগ নিয়ে ভিনিই নিজের প্রবৃত্তি চরিভার্ব করবার চেটায় ছিলেন, ভার প্রমাণ কি আছে ? অফুমান ত প্রমাণ নয়।

বীরবল। আছে। বেশ, আপনি আপনার পুঁথিনথি সাক্ষীসাবুদ নিয়ে বিচারে প্রবৃত্ত হোন, আমিও উপস্থিত থাকি। কিন্তু নিজের স্ত্রীপুত্তের প্রতি মায়া বেশী, না এই অফ্লাতকুলীলার প্রতি দরদ বেশী, তাও এই সঙ্গে প্রমাণ হরে বাবে, সেক্থা মনে রাধবেন।

কাজী। ভথান্ত। চাপরাশী!

**ठा** भवाने । को रुक्त ।

কাজী। আদামী আনারকলিকে হাজির করে:— আদালতের কর্মচারীদেরও তাকো।

(অক্কণ পরে চাপরাশী কর্ত্ক আনীতা, মলিনবন্ত পরি-হিতা, সানম্থী আনারকলির প্রবেশ, পশ্চাতে রোশেনারা ও ইলাহীবকা। আনারকলি কাজীসাহেব ও বীরবলকে অভিবাদন করতঃ একপার্ঘে দাড়াইল, অন্যেরা চাপরাশীর ইন্ধিতে বিলি। কর্মচারিগণ একে একে ক্ষিরিয়া আদিয়া যথান্থানে বিলি। (কাজী আনারকে সংঘাধন করিয়া বলিলেন) সত্য কথা বদি বল ত কোন ভয় নেই। এতামার নাম কি?

আনার। আয়েষা ধাতুন।

কালী। তবে তোমাকে আনারকাল বলে ভাকে কেন ? আনার। এখানে এলে আমার ঐ নতুন নামকরণ হয়েছিল।

কাজী। এ নাম দিলে কে?

খানার। রাজ্যভার একজন, তিনি কে, খামি ঠিক জানি নে।

বীববল। (জনান্তিকে) কিছ আমি জানি। তিনি হচ্ছেন রাজকবি কৈজী। (হাসিরা) ছেলেব্ডো সেদিন সকলেই অল্পবিশুর ঘারেল হয়ে পড়েছিল; আমি বলি নি বে, আপনি মেরেটিকে বত অবলা সরলা ঠাওরেছেন, সেঠিক তানর ?

কাজী। ভোষার বাপের নাম কি, দেশ কোধার, বয়ন কড ? আনার। আমি কাবুলের মূলী মহিউদিনের মেরে, আমার বয়স বোল।

কাৰী। তোমার সংখ কে কে এসেছেন ?

আনার। এই ইনি, আমাদের শহর-কোতোরাল ইলাহীবল্প সাহেব; আর ইনি, আমাদের কাজীসাহেবের মেয়ে রোশেনারা।

কালী। বোশেনারা, তুমি বলতে পার ভোষার স্থীর উপযুক্ত বয়দ হওয়া সম্বেও এতদিন বিবাহ হয় নি কেন ৪

রোশেনারা। ছজুর, মা-বাবা বিষে দেবার বথেষ্ট চেষ্টা করেছেন, আয়েবাই কিছুতেই বিয়ে করতে রাকী হয় নি।

কাজী। কেন ? কোন গোপন কারণ ছিল কি ? সব কথা খলে না বললে স্থবিচার হওয়া শক্ত মনে রেখো।

বীরবল। বে বক্ম দেখছি, একটি নর, খুব সম্ভব অনেকগুলি গোপন কাবণ ছিল। স্বাধীন জেনানা হতে পেলে অস্কঃপুরের গাবদে কে বন্ধ থাকতে চায় বল ?

ইলাহী। (উত্তেজিত ভাবে উঠিয়া) আবেষা থাতুনের নামে কাব্লে কোন দিন কোন কলকের লেশমাত্র স্পর্শ করে নি। এথানে বে নরাধম তাঁর পবিত্র নামে আভাসে-ইলিতে অপবশ আবোপ করতে সাহস করবে, তার জন্য এই তরবারি মুক্ত বয়েছে, সাবধান।

বীরবল। (হাসিয়া) ভেবেছিলাম কাবুল জ্বলনী অসভ্য দেশ, কিন্তু সেথানেও দেখছি নাটুকে ভাবভলী বেশ প্রভাব বিস্তার করেছে। গোপন কাবপগুলির মধ্যে একটি যে স্পরীরে এখানে উপস্থিত আছেন, তা স্পট্টই বোঝা বাছে। কিন্তু তাঁকেও সাবধান করে দিছি বে, একাধিক বার এ বকম অনাহুত সাক্ষ্য দিলে তাঁকে কারাগারের ভিতরে একেবারে গোপন থাকতে হবে; তথন সাক্ষাও সাক্ষাৎ তু-ই বন্ধ হবে। তেনাকীসাহেব, এরকম অ'র ক্তপ্রমাণ পেলে ভবে আপনার বিশাস হবে বে, স্ত্রীলোককে বিশাস করতে নেই ?

কাজী। শান্তবচন মানতে হলে ত রাজপুরুবকেও বিশাস করা চলে না, হুছুব। আছে। বোশেনারা, তোমার বন্ধুর এই বয়সে এমন অস্বাভাবিক বৈরাগ্যের কোন সঙ্গত কারণ দেখাতে পার কি ?

বোশেনারা। বাড়ীতে তার দক্ষে আমার এ বিবরে কথনো আলোচনা হয় নি হজুর, কি করে বলব ?

কাজী। শুধু মুখের আলোচনায় মনোভাব প্রকাশ হয় না, ভাবে হয়, কাজে হয়। এখানে এসে অবধি তোমার সধীর ভাবে কোন বৈলক্ষণ্য, কাজে কোন অমনোবাগ প্রকাশ পেরেছে কি? তোমরা ভ সারাদিন এক সক্ষেই ধাকতে?

বোশেনারা। ইা চ্ছুর, কেবল সন্ধাবেলা বেগমসাহিবা আমাকে মাঝে মাঝে শহর দেখতে পাঠাতেন, তথন ও একলাই তাঁর কাচে থকেত।

কাজী। ভোমরাত তু'জনেই দিল্লী দেখতে এসেছ্ শুনতে পাই; তবে আয়েষা বিবি ভোমার সঙ্গে বেড়াতে বেভেন না কেন ?

বোশেনারা। সে সমষ্টা ওর প্রায়ই মাথা ধরত, ভাই বেতে চাইত না; বাপের বড় আছুবে মেয়ে বলে কেট ওকে জোর করে কিছু বলে না।

বীরবল। (জনাস্থিকে) আদর দিয়ে দিয়ে বে মেরের মাথাটি থা ভয়। ছয়েছে, দে বিধয়ে কোন সন্দেহ নেই।

কাজী। আং বা, তুমি আমার প্রশ্নের ঠিক উত্তর দেবে বলে আমার বিখাস। তুমি কি সালা সন্ধা বেগম-সাহিবার কাছে বলে থাকতে ?

শানার। নাত্ত্র। মাঝে মাঝে তিনি শাম কে শন্দরের বাগানে হাওয়া থেতে পাঠিয়ে দিতেন।

কাঞী। কার সঙ্গে পাঠাতেন ?

चानात । नकावनी (महत्व-छेत्रिमाद महन्।

কাৰী। তিনি কি বরাবর তোমার সকে স**কে** থাকতেন?

আনার। না, কখন কখনও গৃহকাতে অন্সরে চলে বেছেন।

কালী। তখন কি তুমি একলাই বাগানে বলে ধাকতে ?

খানার। (ইভন্তভ: করিয়া) হাঁ, বসে ধাকভাম, কিংবা বেড়াভাম, কিংবা গান করভাম।

কাজী। ভোষার বাবা ভোষাকে গানবাজনা লেখা-পড়া শিথিয়েছেন শুনেছি। ভাল নাচতে পার, সেকথাও কানে এগেছে—ৰ দিও চোথে দেখবার গৌভাগ্য বোধ করি, কথনও হবে না।

বীববল। কাজীসাহেব, বাজে কথায় আসল কাজ চাপা দেবেন না। নিজের ও পবের সর্জনাশ করবার জন্য বে কয়টি বিদ্যা জানা আবশুক, তার কোনটিই মূলীসাহেব আদবের মেয়েকে শেখাতে বাকি রাখেন নি, সে বিষয় আহি নিজেই সাক্ষ্য দিতে পারি।

কান্সী। বধন বাগানে বসে থাকভে, দেখানে আর কেউ আসভেন কি ? সভ্য বল।

স্থানার। (নত শিরে স্ফুট স্বরে) হাঁ, ক্থনও ক্থনও স্থার একজন বেড়াতে স্থাসতেন।

বীরবল। (হাসিরা) সাদ্য বায়ুদেবনটা দেধছি সংক্রামক, ভবে সকলের পক্ষে সমান স্বাস্থ্যকর নাও হডে পারে! কালী। আর্থেবা, লক্ষা করো না, ভয় পেয়ো না, মিধ্যা বলো না। ভোমার সাক্ষ্যের উপর বালবংশের মান ও ভোমার জীবন পর্যন্ত নির্ভর করছে মনে রেখো। এ শুপ্তপ্রেমে কেউ লইয়েছিল, না ভূমি কি আপনি উপবাচিকা হয়েছিলে ?

শানার। আমার মনই শামাকে এ কাকে লইয়েছে, আর কেউ নয়।

বীরবল। বা হোক, মেয়েটা বেমনই হোক, সভ্য কথা বলে দেখে সম্ভষ্ট হলাম। মিথাা ত স্ত্রীলোকের অব্দের ভূষণ বা রক্ষাক্বচ, যাই বল। কিন্তু ওর আর একটি অব্দের ভূষণ সম্বন্ধে আমার কিছু কিন্তাাস্য আছে। (জনস্থিকে কাজীপাৰেবের সহিত কথা।)

কানী। আয়েষা খাতুন, তোমার হাতের ঐ আংটিট একবার দেখতে পারি কি ? (আনার আংটি খুলিয়া দিল, তাহা দেখিয়া ও বীরবলকে দেখাইয়া) বিনি আসতেন, তিনিই কি এই আংটি ডোমাকে দিয়েছেন ? (আংটি ফেরড দিলেন।)

ষানার। (নিক্তর)

বীরবল। মৌনই সম্মতির লক্ষণ। (হাসিয়া) একেই বলে হাতে হাতে প্রমাণ, বা বমাল গ্রেপ্তার। এর পরেও বলি আমাদের কথায় আপনি অবিবাস করেন কাজীগাহেব, তা হলে কিন্তু আমি নাচার। বিশাস না করবারও একটা সীমা আছে।

কানী। ( স্থাসামীদের প্রতি ) স্থাচ্ছা, এখন ভোমরা বেতে পার। চাপরালী, স্থাসামীর সাজা হওয়া পর্যান্ত কের কয়েল করে রাধ।

চাপরা<sup>র</sup>। বো ছকুম হজুব। (আসামীদের লইয়া প্রস্থান।)

বীরবল। এখন কি বায় দিতে আঞা হয়, কাজী-সাহেব ? মনের মত প্রমাণ পেলেন ত, না আরও কিছু চাই ?

কাজী। প্রমাণে বা বলে, মন বে তাতে সার দিতে চার না।

বীববল। বিচারকের নিজের মন বলে কিছু নেই, সে আইনের মুখপাত্ত মাত্ত। এ স্থলে আইন-ই-আক্বরীতে কি দণ্ডের বিধি আছে, সেই হচ্ছে কথা। আসামী নিজের মুধে দোব খীকার করেছে, সে বিবরে ভ সম্পেহ নেই ?

কাৰী। (উডেৰিড ভাবে) ধিক্ এই আইন, ধিক্ এই স্বৃণ্য ব্যবসা, ধিক্ এই পুণোর মুখোস পরে পরের দোব বিচার করতে বদবার অভিনয়। আজ বদি ঈশর স্বয়ং সভাই এই ধর্মাদিকরণে বসডেন, তা হলে আপনি আমি এই বিচারাসনে না বসে ঐ কাঠগড়ার দাঁড়াতাম তা আপনি বেশ আনেন। এটাও আপনি বেশ আনেন বে, আজ ঐ নিরপরাধ, অসহায়া বালিকাকে আমরা তুই বৃদ্ধে মিলে মিধ্যা বাক্যবাপে কর্জাবিত করেছি,—তার বা শান্তি হবার তা আগামই দিয়ে দিয়েছি। তবু তাকে আরও শান্তি দিড়েহুবে ?—তা দেব, ভাল করেই দেব। তাকে জীয়ন্তে গোর দেবাব বিধান দেব—হ। হা!—বার চেয়ে বঠিন দও আমাদের আইনে নেই। কিছু আমাকে আজ থেকে অবসব দিতে;আজা হোক হজুর। আর বে ক'দিন বাঁচি, দেখি বদি গরীবের সজে গরীব হয়ে থেকে এ নৃশংস পাপের প্রায়শ্চিত্ত করতে পারি। (তাড়াতাড়ি একটা কাগজে কি লিখিয়া ছুঁড়িয়া ফেলিয়া দিয়া তুই হাতে মুখ ঢাকিয়া বিদলেন।)

#### २३ मु

প্রোদাদের একটি কুত্র ককে রোশেনারা মাধায় হাত দিয়া বদিয়া কাদিতেছে এবং আনারকলি পায়চারি করিতে করিতে মাঝে মাঝে জানালায় মুধ বাড়াইয়া কি দেখিতেছে।)

আনার। ইলাহীবক্স ত এখনও এল না রোশেনারা ? ভাকে কখন পাঠিয়েত ?

রোশেনারা। **অনেকক**ণ, প্রায়ত্ব'ঘন্টা হবে। এই এব বলে। একটু স্থির হয়ে বস।

আনার। দ্বির ? আমি ত দ্বির ইয়েই আছি, তোমবাই অন্থির হকে। আমার মনও দ্বির, শরীরও দ্বির হয়ে আসছে, সময়ও চলছে না; ঘড়ির দম ফ্রিয়ে এসেছে। কেবল একটিমাত্র আশা ধরে এখনও বেঁচে রয়েছি।

বোশেনারা। আহেষা, বোন্ আমার, অমন বুড়ো
মাছবের মত কথা তোমার মুখে বে শুনতে পারি নে—চুপ
কর দোহাই ভোমার । এই কি আমাদের সেই ছটফটে
মেয়ে, বার হাসি কথা সর্বানা কোগারার মত ঠিকরে পড়ত ।
সে আয়েয়া কোথার গেল । আমি তার বাপমায়ের কাছে
পিয়ে কি জ্বাবলিছি করব । তারা বে তাকে আমার
জ্মায় এই বিদেশে পাঠিয়েছিলেন—এই নির্মান, নিষ্ঠর,
নির্দায় বিদেশে! কেন মরতে এই নরকে এসেছিলে
আয়েয়া ।

আনাব। বে জন্যে এসেছিলাম, আমাব সে নাধ পূর্ণ হয়েছে বোশেনাবা; পূর্ণ হয়েছে, কিছু মেটে নি—বোধ হয় এ পূথিবীতে শেষ পর্যন্ত কিছুই মেটে না বলে। কিছু বেটুকু পেয়েছি, ভাই নিয়েই হাসিমুধে পরপারে বেডে পারব। বোশেনারা। কি পেরেছ, তা তুমিই জান। কিছ

আমাদের বা দিয়ে গেলে, সে বে বড় ভরানক জিনিস।

এ আফশোষ, এ অপমান, এ লজ্জা, ছংখ রাখবার ছান
কোথায়? কেবলই মনে হছে কোন্ মুখে দেশে ফিরে

যাব ? গিরে তাঁদের কি বলব ?

আনার। মাকে বলো তাঁর চুটু মেয়েটি শেব পর্যন্ত তেমনি অবাধ্যই রইল, কিছুতেই তোমাদের সজে দেশে ফিরে গেল না। আর বাবাকে ( তুই হাতে মুখ ঢাকিয়া… পরে মুখ তুলিয়া), বাবাকে বলো তাঁর শেব অফুরোধ রক্ষাকরেতে পারলাম না, নিজেকে ভালোয় ভালোয় ফিরিয়ে নিয়ে যেতে পারলাম না বলে বেন আমাকে কমা করেন। বলো আমি কাবুলের মান রেখেছি, মরতে ভয় পাই নি। আর— ( আবার জানালায় মুখ বাড়াইয়া ) ও বে ইলাহীবন্ধ আগতে।

(মান মূপে ইলাহী প্রবেশ করিয়া নি:শব্দে দুখায়মান হইলেন)

স্থানার। (উৰিপ্প ভাবে তাহার দিকে চাহিয়া কাতর কঠে) তবে তোমার বাওয়া বুথা হয়েছে ?

ইলাহী। (নত মুখে) ই। শাহাজাদার সলে ভোমার একটি বার শেষ দেখা করবার প্রার্থনা বাদশাহ কিছুভেই মঞ্জর করলেন না।

#### ( আনার হতাশভাবে বদিয়া পড়িল)

व्यामि वाम्मारहत वक बरमत-थात नाम अतिहि, अरक একে সকলের কাছেই পিয়ে করজোতে বিনীত অভবোধ कानियाहि, जाहे এত দেৱি হ'न। अननाम य भाहाकामा अ পাগলের মত দিবারাত্র ছটাছটি করে এই নৃশংস দণ্ড রহিত क्यवाय बना श्रामन (हहा क्यहन। क्य कानरे कन इएक्ट्र ना । अपन कि, जिनि निष्कृष्टे नक्षवरकी इरव दरक-চেন। তাঁর ক্ষেত্রময় পিতা এ বিষয়ে একেবারে বজ্ঞের মত কঠিন ও ভীষণ, কারও সাধ্য নেই তাঁর কাছে এপোয়। (সকলে কিছুক্ষণ নীরব থাকার পরে কাতর উচ্ছালে) আহেয়, আয়েয়া। তুমি কখনও আমার কোন কথা রাখ নি। আৰু মৃত্যুর মুংধামুধি দাঁড়িষে তোমাকে এই শেষ चल्रुरवाध कव्हि, धनरव ना कि । हन, এই वाक्मन्यूरी থেকে আৰু বাত্ৰেই আমবা ডিন কনে পালিয়ে বাই। এধানকার সকলেই প্রলোভনের বণ, ভা আমি এই অল্প দিনে বুঝতে পেরেছি। আমার কাছে এই তলোয়ার ছাড়া আর কোন মূল্যবান জিনিব নেই। কিছ ভোষার ঐ মহামূল্য আংটিটা দিলে নিশ্চয় বাত্তের প্রহরীরা ছার খুলে দেবে, আর ছন্মবেশে একবার শহরের সিংহৰৰওয়ালা পাব হতে পাবলৈ তাব পৰে আমাৰ ঘোড়া

ছুটিয়ে আমি শীত্রই ভোষাদের নিরাপদ স্থানে পৌছে দিতে পারব।

(করবোড়ে) আহেবা, এই বয়সে কি ভোমার নিকের প্রাণের প্রতি এডটুকুও মায়া নেই ? ভোমার বাণ-মা, ভোমার শৈশবদন্ধীদের প্রতি একটুও দয়া নেই।

আনার। ইলাহী, অনেক করে মন বেঁধেছি, আবার আমাকে অন্থির করে তুলো না। বার জন্য এ জীবন, তাকেই বধন পাব না, তধন সে জীবনের উপর আমার আর তিলমাত্র মায়া নেই। সব মায়াই ভ্যাপ করেছি, কেবল এই ছটি জিনিসের (হাতের আংটি ও বুকে-ঝোলানো ছবি দেখাইয়া) মায়া এখনও ছাড়তে পারি নি। এ ছটি আমার নখর দেছের সঙ্গে সমাধিস্থ হবে, পরলোকে আমার অবিনশ্ব প্রেমের সাক্ষ্য দেবে।

ইলাহী। আয়েবা, পুরুষ্থারুষ হয়ে আমি ভেঙে পড়ছি, আর তুমি এই সেদিনকার কচি মেয়ে, কোথা থেকে মনে এমন অমাত্মবিক বল পেলে, তাই ভাবছি। আগে ভোমাকে মানবী ভেবে আপন করতে চেয়েছি, কিন্তু আজ ভোমাকে কেবী বলে পুলো করতে ইচ্ছে করছে।

चानाव। हेनाही, चामि नामाना मानवी माज, दक्वन প্রেমের বলে মনে এমন অধামান্য বল পেয়েছি। (কিয়ৎ-क्न थामिया) हेनारी, मुठात मृत्य मामाक्तिक नक्कानतम. সংহা6- ছিখা জীৰ্ণ বংশ্বের মত আপনিই খনে পড়ে যায়। আমি জানি তমি বছকাল থেকে আমার অহুরক্ত ভক্ত, বদিও মুখ ফুটে কখনও সেকথা আমাকে বল নি। আমি ভোষার নিষ্ঠার উপযক্ত প্রতিদান কোন দিন দিতে পারি নি, পাহৰ 9 না। কিন্তু এত দিনে ভার মর্গাদা ব্রতে পেবেছি। ভোমার প্রথম ও শেষ অফুরোধ আমি রকা করতে পারব না ইলাহী, ক্মা কর ;— আমি ভীকর মত রাভারাতি এখান থেকে পালাভেও পারব না. ভার প্রাণ ধাকতে এ খাংটিও (ঠোটে ঠেকাইন) আর কারও হাতে দিতে পারব না। কিছ ছোট বোনের প্রথম ও শেব অভুরোধ ভোমাকে রাখতেই হবে ভাই, রোপেনারা, এদিকে এস ড ভাই! (তথাৰৱণ) আমি জানি ভোমার মন ইলাহীর প্রতি অভুকুল। বথার্থ বীরপুরুবের হাতে আত্ম- সমর্পণ করাতেই নারীঞ্চীবনের সার্থকতা। ইলাহী, বা পাও নি তার জন্য জীবনকে বাথ হতে না দিরে, বে প্রেম ও সেবা ভোমার জন্য উন্মুখ হরে রয়েছে, তাকে নম্র চিত্তে গ্রহণ কর ভাই, ভোমাদের ত্'লনেরই জন্ম সার্থক হোক। প্রস্পাবের হাতে হাত মিলাইয়া)

আৰু আমি ধর্মদাকী করে ভোমাদের বে পবিত্র বছনে বাঁধলাম, দেশে গিয়ে ভাকে সমাদের সাক্ষাতে পূর্ব করো, ভা হলেই আমার আস্থা শান্তি পাবে জেনো।

(হাত ছাড়িয়া ও ছাড়াইয়া)

আজ বড় বেশী বকছি—চিরকালই বেশী বক্তাম। আজ চিরকালের জন্য মুথ বন্ধ হবার আগে (হাসিয়া) বোধ হয় স্থান্ত পুৰিয়ে নিচিছ।

পৃষ্ঠবং হাল্কা ভাব আনিবার চেটা করিয়া)
ইলাহী, বোশেনারা, আজ আমাদের শেষ দেখা। শুনছি
এবা কাল আমাকে লাহোরে পাঠিয়ে দেবে। (একটু
থামিয়া) মোভিদিদিকে বল ভার কথাই ফলেছে, পভল
আলোর বেশী কাছে উড়ভে গিয়ে পুড়ে মরেছে। কিছ
দেজন্য ভার কোন হুঃখ নেই। সে যা চেয়েছিল ভা
পেয়েছে। যখন আর ভা পাবার আশা নেই, ভখন মর্পই
ভার পর্ম বন্ধ।

( বন্দমকের আলো ক্রমশঃ ন্তিমিত হইতে হইতে শেষে একেবারে নিবিয়া গেল।)

#### ৩য় দৃশ্র

(লাছোর শছবের উপাস্তে আনারকলির হুন্দর কবর সামনে ভূল্ঞিত দেলিম। প্রদীপ হত্তে স্থীপণ ধীরে ধীরে কবর প্রদক্ষিণপূর্কক পাহিতেছে:)

গদল

ক্যা ক্যা পরী জ্বমান থে, আরে চলে গরে।
তাব উস্কো দেখনে কি ল লারে, চলে গরে।এ।
আবম রহা ন কোই, ল পর্যার রহা ইহা।
আরে জ্বমিশে গুরোভি সমারে, চলে গরে।এ।
দারা রহা, ন জ্বম, ন সেক্লর শা বাদশা।
তত্তে জ্বমিশে শারক্ডো আরে, চলে গরে।এ।

**শ্ৰাপ্ত** 



## আমার দেশ

#### জীবরদাচরণ গুপ্ত

নব্য বাংলা বে নৈয়ায়িকের দেশ এটা সর্ব্বাদিসম্বত। এদেশে নানা বিষয়ে নানান্ মত আম্ব নৃতন নয়। মতামতের
ভাতা-গড়ার জন্যে, বিশেষ করে এই দেশটাকেই ভারতের
ভাগাবিধাতা, স্বদ্ব মতীত যুগ থেকে, স্থনিদিট করে
রেখেছেন। একে একে আর্ধ্য ও মনার্ব্যের, কৈন-বৌদ্ধ ও
রাহ্মণ্যের, মোগল ও পাঠানের, শাক্ত ও বৈফবের সংঘর্ষ
এবং সময়য় চুড়াম্বভাবে এই দেশের মাটিতেই হয়ে গিয়েছে।
নবাবী ম্বাক্তকভায় অগহিষ্ণ হয়ে এই দেশেরই কতিপয়
ধ্বদ্বর বিদেশী বনিকের হাতে এদেশের শাসনদও তুলে নিতে
ইতন্ততঃ করেন নাই। মাবার বৈদেশিক শাসন এবং
শোষণের বিফদ্বে প্রবৃদ্ধ ভারতের ঐকান্তিক বিদ্ধোহের
বীন্ধও বে এই দেশেই সর্ব্যপ্রম উপ্ত এবং ম্ব্রুবিত হয়েছিল
সে বিষয়েও কোন তর্কের ম্বরণাশ নাই।

এদেশে ভাঙা-গড়ার এই বে প্রবণতা, স্থিতি এবং প্রগতির এই বে ঘন্দ, এটা মোটেই আকন্মিক নয়। বাংলার ফল, বাটে, বংশার বায়ুতেই এ প্রাণ পেয়েছে, আর বাংলার ফল, বাংলার ফল থেকেই যুগে যুগে এ রস আহরণ করেছে। বাংলার কবি ভাই নিঃসংখাচে, বোধ হয় গোণন পূলকের সঙ্গেই, বলতে শেরেছিলেন: "এত ভল বদদেশ তবু রজ ভরা।" প্রীথ্রীরামক্তম্ম তাই জগৎকে লিবিয়ে গেছেন, "যত মত ডাত পথ।" বহু মত আর বহু পথ বাংলার পক্ষেনিতাক্তই আভাবনীয় তা ভো "পলাশীর যুদ্ধে"র কবি তার অনম্করণীয় ভাষায় বহু পূর্কেই বলে গিয়েছেন। তার উক্তি "ঘর্গ মন্ত্র করে যদি স্থান বিনিমন্ন, তথাপি বাঙালী নাহি হবে একমত।"

যদিও বাংলার মাটিতে, পূর্বে কিংবা পশ্চিমে, কোথাও

ঘর্গ নেমে আগবার আশু সন্থাবন। আদৌ দেখা বাচ্ছে না;

আর মর্ন্তালোক হতেও দর্গের নিঁড়ি তৈরি করবার কোনো

কারি ব্যবস্থাবা পরিকল্পনা, ঢাকা কিংবা কলিকাতা, কোথাও

গৃহীত হয়েছে বলে আজও জানা বায় নাই, তবুও কিছ্ক

সর্বার একটা বিষয়ে সমন্ত বাঙালী একমত হতে চলেছে

দর্শনা: দনৈ:। বিষয়টা হচ্ছে বাংলার অবিচ্ছেন্য সমগ্রতা—

এর বিভিন্ন আংশের অচ্ছেন্য, আলাজ, আক্রেন্য, আশোর্য

আলাজ ঘনিষ্ঠতা। আনায়াসলর এবং আক্রেন্ত্রেত

আকাল-বাভানের মত বে দেশান্মবোধ ছিল আমানের

আবচ্চেত্র স্থনে বিলীন, বেশের অভি অল্পন্থাক উচ্চ

শিক্ষিতের মনের ষা ছিল বিলাস মাত্র, বিধাবিভক্ত বন্ধে তা আৰু অবস্থার চাপে ক্রমশ: গভীর দাপ কেটে উৎকীর্ণ হচ্ছে আবালবুর্বনিতা স্বারই মনে। রাজ্যনৈতিক বিক্রতা আর সাম্প্রদায়িক স্কীর্ণতা প্রকৃতির সেই অমোঘ কার্যক্রমকে অনির্দিষ্টকালের জন্য ব্যাহত করতে বা স্থগিত রাধতে পারবে এমনটি মনে করবার কোনও সম্বত কারণই নাই। অবস্থার বিপাকে শ্রোতের জলে বহু আবর্তের স্পৃষ্টি হয়, কিছু ভাতে করে তার সমুজ্যাভিমুধী গতি কথনও চির্ভরে অবক্রম্ক হয় না।

বাংলার ছুৰ্দশা আছ চরমে উঠেছে। বে বাংলা ধনধান্যে শুধু থাবলমী ও অপ্রতিষ্ঠিতই ছিল না, উপরন্ধ বিপুল
শিল্পমন্তারের বহির্বাণিজ্যে সমন্ত ভারতকে সমুদ্ধও করে
তুলেছিল এক দিন, আজ তার গৃহে গৃহে অল্লাভাব,
বন্ধাভাব নিতাব্যবহার্য তেল-ফুন-লক্ডিরও একান্ত অভাব।
আমাদের এ দৈন্য মোটেই সাম্প্রতিক ব্যাপার নয়। এর
উৎসের অন্থসন্ধান করতে হলে বাংলার ইতিহাসের ধারার
উলান বয়ে অনেকটা দূরে বেতে হবে।

দেশজোড়া এই দৈন্য বে আমাদের কত গভীর—এর
নগ্ন প্রকাশ বে কত লজ্জাকর, কত নির্দান, কত আত্মবাতী
তার পরিচয় আমরা ক্রমাগত পেয়ে আগছি আমাদের
বরাক্ষের সন্তাবনা এবং তার প্রতিষ্ঠার পরে থেকেই।
পরাধীনতার নাগপাশে আড়েই এবং আবিষ্ট অবস্থায় দৈন্যের
বেদনা আমাদের বতটা ছিল আক্ষেপ ততটা ছিল না।
পাশন্ক্রির সক্ষে সক্ষেই তা আত্মপ্রকাশ করেছে—শত-শোহণ সহস্রশং—বহন্তাবে, বহুরূপে।

আমাদের ধর্ষান্ধতা, সাম্প্রদায়িকতার উগ্র তাগুব, সামাজিক সাম্য প্রতিষ্ঠার নামে পরপীড়নের প্রয়াদ, এমনিধারা আরও অনেক পাপ সেই দৈন্যেরই বিকার। এদের উংপুত্তি এবং প্রসার বে প্রতাক্ষ বা পরোক্ষভাবে আমাদের ঐ ব্যাপক এবং উংকট দৈন্য থেকেই প্রধানতঃ সম্ভব হয়েছে তাতে কোনই সন্দেহ নাই। ইংরেজ রাজত্বের প্রায় ছই শতাকীর একটানা শোবণের ফলে এই একান্ত লগ্রীহীন দেশে কলিবান্ধ ধীরে ধীরে তাঁর সিংহাসনধানি কারেম করে নিষেছেন। দেশব্যাপী দৈন্যের সন্দে বিদেশী-শাসকের ভেদনীতি আর আমাদের অক্ষতা স্মিলিত হয়ে দেশে বে ব্যাহস্পর্দের সৃষ্টি করেছিল তাতে করে এ অক্ষ্যাণ অনিবার্য হয়েই পড়েছিল। বত দিন রাজতক্তে ইংরেজ

সমাসীন ছিল ডড দিন জন্ততার থাতিরেই হোক অথবা তাদের ১২৪ ধারার ভয়েই হোক কলিরাল ছিলেন প্রছের। আল তাঁর সার্কভৌম আধিপত্য রাচ, বরেন্দ্র, বল, সমতট — বাংলার সর্ক্তর সমভাবে প্রকট হয়ে উঠেছে। ফলে বাঙালীর ঘর ভেঙেছে, ভাইবোনেরা পৃথক হয়েছে; বাঙালীর আশা, বাঙালীর ভাষা, বাঙালীর মনের মত ভালবাসা সবই আল বিপর এবং বিক্তত হতে চলেচে।

বাংলার অভাবধর্মের একান্ত বিরোধী এই সব পরিণতি এবং সভাবনা। এ দেশের অভিব্যক্তির ধারার এলের বিশেব কোন স্থান নাই। ভাগীরবীর প্রবাহকে প্রবাহত পথস্রই করতে পারে নি; অহুমুনিও তাকে গ্রাস করতে পারেন নি। ক্রমোরতির পথে আব্দ হোক, কাল হোক বাংলাও ধুয়ে মুছে নিয়ে বাবে এ সব পাপ এবং লক্ষা। ভাবী ইতিহাসে এলের কথাও বর্গীর হাক্ষামা বা ছিয়াভরের মন্তরের মতই বাংলার অন্যতম ছ্ঃমপ্রের পর্যায়ে পড়বে। বর্জমানের ছর্জোগ আমালের বত্তই হোক না, একথা জানা দরকার বে, এ পরিস্থিতি অভান্ত অবাভাবিক, কাজেই অ-চিরস্থায়ী। কলিবাজের প্রভাপ বত্তই প্রচণ্ড হোক না কেন, বাংলার ভাগ্যবিধাতা বলে তাকে মনে করাটা চড়ন-হারকে ঘোড়ার মালিক বলে মনে করার মন্তই প্রমাজক হবে।

3

বাংলার মাটি আর বাংলার মনের পরিণতির একটা বিশেব ধারা আছে। বাংলার কবি বলেছেন, সদ্যম্মতা, সিজ্ঞবসনা জননী ভারতবর্ব স্থনীল জলধি হতে বিপুল হর্বোচ্ছালের মধ্যে অভাপিতা হয়েছেন। কাব্য হিসাবে তার বর্ণনা জনবন্ধ, ভাতে সন্দেহমাত্র নাই, কিছু আদলে ব্যাপারটা ও রক্ম হয় নি মোটেই। ভারতের বিভিন্ন অংশ বিভিন্ন সময়ে, বিভিন্ন প্রকারে স্টে হয়েছে।

বেমন স্টের আদিকাল থেকে আৰু পর্যন্ত দাকিলাণ্ডার বিশাল মালভূমি আদে সিদ্ধু-শীকরসিক্ত হর নি। উত্তরে ছিল তার স্থবিতীর্ণ সমূত্রের মেথলা। ভারতের সেই আদিম বাস্তভিটা—দাকিলাণ্ডার ত্রিভূজাকৃতি মালভূমি—ভূ-স্টের আদি থেকে নিবন্ধ নিক্ষণ ভাবে অপেকা করছিল সমূত্রের দিকে নিবন্ধটি হয়ে ভারতের উত্তরার্কের অভালরের আলার। কোটি কোটি বর্বের প্রতীক্ষার ভার ভ্বিত ভাপিত বক্ষ ভেল করে উঠেছিল নিলাকণ আরেয়োলারে। জ্যাটবাঁধা ভার 'লাভা'র পুরু আতরণ প্রসাবিত রবেছে সহস্র সহস্র বোক্তনব্যাণী ভূথতে —আরুনিক মধ্যভারত থেকে দক্ষিণে হায়বাবান পর্যন্ত।

णांव भरव विश्व भारताप्रत्न क्षत्रवभरतापि विद्य

করে অভ্যুথিত হন হিমাজির উত্তুদ প্রাকার। এর ছই প্রান্তে ভারতের ছই সীমাক্ত প্রদেশ। হিমালয় দিলে ভারতভূমির উত্তরের সীমারেখা টেনে। সেই থেকে উত্তর-এশিয়ার শুক্ত শীতল বায়ুপ্রবাহের দক্ষিণমুখী অভিযান বন্ধ হয়ে গেল। আর দক্ষিণের বাষ্পপূর্ণ মৌক্ষমী বাভাসেরও উত্তরের নিক্ষেশ বাজার পথ চিরভরে অবক্ষর হয়ে গেল।

ভারতের অভিব্যক্তির কিছ তথনও পরিসমাথি হয় নি। উত্তরের পার্কত্য ভূমি আর দক্ষিণের মালভূমির মাঝথানে ছিল পূর্ব্ব-পশ্চিমব্যাপী সমৃত্যের অলজ্য ব্যবধান। বর্ত্তমানের আরব-সাগর আর বজোপদাগরে ছিল তথন একাকার। প্রকৃতির স্তঙ্গনীশক্তির প্রভাবে কালে এ ব্যবধানও অভ্যত্তির স্তঙ্গনীশক্তির প্রভাবে কালে এ ব্যবধানও অভ্যত্তির স্তঙ্গনীশক্তির প্রভাবে কালে এ ব্যবধানও অভ্যত্তি হ'ল। উত্তরের হিমালয় আর দক্ষিণের মালভূমি ধৌত হয়ে রাশি রাশি পলিমাটি এসে ভ্রাট করে দিলে এই নিমভূমি। ফলে লবণাক্ত বিপুল সমৃত্র পর্যবসিত হ'ল গলা-বমুনা-দিল্প-সরস্বতী আদি প্তস্তিললা স্রোত্তিনী-বিধৌত বিত্তীর্ণ সমভূমিতে। একে একে রাজস্থান, পঞাব, উত্তর প্রদেশ, বিহার ইত্যাদি গঠিত হ'ল।

সর্বাশেরে বিশ্বকর্মার ভারত-সৃষ্টি বজ্ঞের আছতি পূর্ণ হ'ল বলমাতার আবির্ভাবে। গলা আর ব্রহ্মপুত্র উভরে মিলে নগরাক হিমালয়ের পূত বেগুরুণা ভিলে ভিলে আহরণ করে এনে দশভূদা শভভূদা হয়ে অঞ্চলি দিয়েছে ভারতের এই প্রাস্তবেশে ভারতের ভাগাবিধাভার পারে। তাঁর প্রসর হাসির সঙ্গেই ফুটে উঠেছে এই বাংলাদেশ।

ক্ষাব-শভিব্যক্তির ধারা শহুসরণ করে বিজ্ঞানীরা নি:সংশয়িত ভাবে দেখিয়েছেন মাছুব এসেছে সর্কাশেবে এই পৃথিবীতে। শার ভারতের ভূ-প্রকৃতির পঠন-বিম্থাসের ব্যাপারে বাংলাদেশের স্থান বে সর্কাশেবে, বিশ্বকর্মা বে ভারতের স্থার স্থার সব ক্ষায়পায় হাত পাকিরে সর্কাশেবে গড়েছেন বাংলাদেশকে সে বিষরেও তারা নি:সন্দেহ। বাংলার কবি তার ক্ষাভূমিকে বর্ধন "সকল দেশের সেরা" বলে ঘোষণা করেছেন, তথন তার কবি-প্রতিভা ভ্রমাত্র সভ্যকেই স্থালোকিত করেছে, কোন ক্য়লোকের স্পষ্টি করে নাই।

পৃথিবীর সর্ব্বোচ্চ পর্কাতমালার উচ্চতম অংশ ব্রেছে বাংলার উত্তরে। আর দক্ষিণে ররেছে ভারত মহাসাগরের জলরাশি। পূর্কা, পশ্চিম উভর সীমাত্মপ্রারী পর্কাতমালা আর সাগরবেলার এমন সমাত্মলাল সন্নিবেশ, ভূপ্রকৃতির এমন মণিকাঞ্চন বোগ খুব কম দেশের ভাগ্যেই ঘটেছে। বাংলার বত্ত প্রাকৃতিক বৈশিষ্ট্য—এর প্রীমের কালবৈশাখী, শরতের 'হাসি, এর বর্বার ঘনঘটা, হেমত্তের অণক্ষণ শোডা—স্বারই মূলে ররেছে উভরের হিবাচল আর

দক্ষিণের চলোর্দ্ধি—এই ত্রের অসুপম বোপাবোগ।
এদের ক্রিয়া এবং প্রতিক্রিয়া গুধু বাংলার মাটি, বাংলার
কল, বাংলার বায়, বাংলার ফলকেই বৈশিষ্ট্য দেয় নাই;
বাংলার মনোজগতেও এই কোমল-কঠোরের প্রভাব অস্থপ্রবিষ্ট হয়েছে ওতপ্রোভভাবে, বার ফলে বাঙালী—
বাঙালী।

পারিপাশিক প্রাকৃতিক পরিবেশ দেশের অধিবাসীদের দেহমনকে বে বছল পরিমাণে প্রভাবিত করে একথা মানব-সভ্যতার শৈশবে বেমন সভ্য ছিল আৰুও তেমনই আছে। অভ্বিজ্ঞানের ক্ষত অগ্রগতিতে আত্মহারা হয়ে আমরা মনে করি—অভ্পক্তির পরাক্ষরের উপবেই বুঝি সভ্যতা এবং সংস্কৃতির প্রতিষ্ঠা। মানবশিশু হাঁটতে শিধে বদি মনে করে সে মাধ্যাকর্ষণ জয় কতেছে; অথবা গোবৎস বদি মনে করে মাভৃত্তনে আভাত করেই দে তুধ আনছে তা হলে তাদের সেই মনোভাবের মধ্যে বভটুকু সভ্য ধরা দেয়, আমাদের দাবির মল্যও ঠিক তভটকই।

আসলে মাহ্য প্রকৃতির হাতে গড়', প্রকৃতির পাঠশালার পড়া। কাজেই ভূপ্ঠে প্রকৃতির বৈচিত্রের সংক সংক্ বিভিন্ন ভানের অধিবাসীদের আকৃতি-প্রকৃতিও অভাবতঃই বিভিন্ন হয়েছে। মেকপ্রদেশের এম্বিনো আর সাহারার বেছইন এদের পার্থক্য চিরস্কন। পার্থক্য শুধু অন্থিমজ্জাগত নম্ন, মনবৃদ্ধিও এদের স্বভন্ত।

অস্কৃদ প্রাকৃতিক পরিবেশে বাংলা বে স্কলা স্কলা শক্তথামলা এটা ত প্রত্যক সত্য। এনেশে শীত-গ্রীমের আতিশব্য নাই, অরচিছার তীব্রতাও ছিল না। স্বভাবতঃই এন্দেশের অধিবাসীদের মনের গতি আর হাতের কাজ দুই-ই বিশের বিশ্বর উৎপাদন করে এসেছে চিরকাল। মদীমাতৃক বন্ধভূমির প্রতি অঞ্চলে, প্রতি জনপদে সহজ্ঞেই বাংলার বিচিত্র ভাবধারা অস্প্রবিষ্ট এবং প্রচারিত হতে পেরেছে নানা ভাবে, নানা আকাবে। ফলে অসংখ্য বৈচিত্র্যের মধ্যেও এদেশে একটা বিশিষ্ট সাংস্কৃতিক ঐক্য-বোধ গড়ে উঠেছে। আতিবর্ণসম্প্রদায় নির্বিশেষে প্রত্যেক বাঙালীর মনের উপরে তার স্থায়ী আগদন স্থপ্রতিষ্ঠিত।

খাধীন ভারত-রাষ্ট্রে আজ একথা সহসা প্রাদেশিকভা-দোবতুই বলে মনে হতে পারে। আগলে কিছ এর সঙ্গে ভথাকথিত প্রাদেশিকভার আকাশ-পাতাল পার্বক্য। এ হ'ল অতি অস্তরক বস্তু, আর প্রাদেশিকভা হ'ল নিতান্ত বাহ্য। আত্মভানের সঙ্গে অহুকারের, সহজ শৌচের সঙ্গে ভচিবাইরের অথবা আশুনের সঙ্গে আশুনের ধোঁবার বে পার্বক্য এ তুই ব্স্তর মধ্যেও ঠিক সেই রক্ষের পার্বক্য রয়েছে। ভার্বপরতা ধারাণ সন্দেহ নাই; কিছ

শার্থবাধ ওধু অপরিহার্য নয়, অত্যন্ত প্রয়োজনীয়। আর বাংলাদেশে এ প্রয়োজনীয়তা, আজকার দিনে যত বেশী, ততটা এর বহু শতাস্বীব্যাপী ইতিহাসের কোন দিনেও হয় নাই।

৩

বাঙালীর স্বার্থবাধ আদ্ধ নানা কারণে বিক্লিপ্ত। বহু সাধনা আর প্রভৃত ত্যাপের পরে: দেশে যখন স্বাধীনতা এল, আমরা তখন তার পূর্ণ স্বাদ থেকে হলাম বঞ্চিত। কারণ সেই সঙ্গে আমাদের দেশ হ'ল বিধপ্তিত।

এ তুর্ভাগ্যের জন্য দায়ী বে কে তা বলা বেমন শক্ত, এর কারণ যে কি তা বলা ঠিক তেমনই সহজ। দেশ-বিভাগের মূলে ররেছে আমাদের পারস্পরিক সাম্প্রদায়িক অবিখাস আর বিষেব। আমরা যারা অন্তরে এই অবিখাস আর বিষেবের ভাব পোবণ করেছি, অথবা জ্ঞানে-অক্সানে এর পোবকতা করেছি তারা স্বাই এ তুর্ভাগ্যের জন্যে দায়ী। বিদেশীর ভেদনীতির দিকে অন্তল-নির্দেশ করলে আমাদের দায়িষ্বের মাত্রা একটুও কমবে না। বিদেশী ভার সামাজ্য রাধবার চরম চেটার বা কর্ত্তব্য মনে করেছে নিশুঁত ভাবে তা করেছে। ভার পান্টা আমরা আমাদের জাতীয় স্থার্থ-সংরক্ষণকরে কি করেছি ?

বিদেশীর প্রবোচনায় আমরা ভূলে গেলাম—জাতীয় আর্থ সম্প্রদায়-নিরপেক, ভূলে গেলাম—জন্মভূমির প্রতি স্বারই কর্ত্তরা রয়েছে, জন্মভূমির উপরে স্বারই সমান অধিকার। আধীনতার উবা আছেল হয়ে গেল সাম্প্রদায়িকতার ক্রাশায়। আধীনতার মুদ্ধে বারা ছিল দর্শক, সাম্প্রদায়িকতার যক্তে তারাই হ'ল হোতা। বিদেশীর দোর্দণ্ড শাসনের অস্ত হতে না হতেই সাম্প্রদায়িকতার ঝড়ে দেশ গেল ছেয়ে।

এমনধারা উগ্র সাম্প্রদায়িকতা অরাক্ষকতারই স্থানশী সংস্করণ। একে একে কলিকাতায় ও নোয়াধালিতে, বিহার ও পঞ্চাবে আমরা সাম্প্রদায়িকতার নামে অরাক্ষকতার তাওবলীলাই দেখেছি। রাষ্ট্রশক্তি ফুর্বল হলে, অশিক্ষিত দৈনাপীড়িত দেশে অরাক্ষকতার প্রাকৃতাব স্বাভাবিক। ক্ষিত এই ধ্বংসাত্মক মনোভাব বধন দেশের শিক্ষিত জনগণের মধ্যেও সংক্রামিত হয় তথনই দেশের স্ত্যিকারের বিপদ। সে বিপদ আমাদের আজও কাটে নি।

বাইশক্তির তুর্বালতার ছিত্রপথে অবাজকতার প্রাবন বাংলাদেশের পক্ষে মোটেই নৃতন নয়। রাষ্ট্রিক পরিবর্তনের সময়ে এদেশে এইটাই নিয়ম। গৌডরালা শশাব্দের মৃত্যুর পরে, পালবংশের অভ্যাদয়ের আগে স্থদীর্ঘকাল ধরে বাংলায় চলেছিল মাৎস্কার্যায়। মাৎস্কার্যায় মানে "মৎস্কের ভূল্য পরস্পর হনন, অরাজকতা ও নরহত্যা"। এক বছর ত্ব'
বছর নর, এক শ' বছর ধরে, সেই বুপের সোনার বাংলার
বা হয়েছিল তার আভিধানিক অর্থ ত বলেইছি;
ব্যবহারিক অর্থের আভাসমাত্রও নিশ্চর নোরাধালির
অন্ত্যাচারের অত্যক্তিকেও অনেক দুর ছাড়িয়ে বাবে।

পাঠান বাজত্বের শেষের দিকে, মোগলশাসন প্রতিষ্ঠিত sale আপে কামত্ৰপ থৈকে কাশী পৰ্যান্ত কালাপাহাডী ভাত্তবে যা হয়েছিল ভাব ক্লোড়া ইভিহানে তুর্লত। সে ধর্মছেষ্টার অভ্যাচারের মর্মছেদ কাহিনী এখন প্রবাদে পবিধত হয়েছে। ভার পর মোগল বাজতের শেবে, কোম্পানির আমলের আগে এদেছিল এদেশে বর্গীর হাৰামা। তার ভীবন্ত চিত্র ভুক্তভোগী বাঙালী কবি প্রভার ব তার 'নহারাষ্ট্র পুরাণে' এঁকে পিয়েছেন। ত'ল বছর পরে আৰু বাঙালী দে কাহিনী ভূলে গিয়েছে। অব ঘুমপাড়ানী ছড়াতেই তার ক্ষীণ প্রতিধানিটুকু রয়ে গেছে। ভলে বাওয়াই খাভাবিক, ভলে বাওয়াই উচিত। জাতীয় জীবনে ওওলো সত্য নয়, নিতান্তই ফু:ৰপ্ন। কিছ বধন ঘটেছিল তখন ভক্তভোগী বাঙালী নর-নারীর कारक त्र हाकामा त्यारहेहे चक्ष किन ना। পুরাবে'র কয়েক পংক্তি পড়বেই পাঠক এর বীভৎসভা আর বর্ষরতা উপদত্তি করতে পারবেন:

> "বাঠে বেরিয়া বরগী দের ভবে সাভা। লোনা-মুণা লুঠে বেছ, আৰু সৰ ছাড়া। ভাক্ত হাত ভাঠে, ভাকু নাভ ভান। विक कार्ड काक व्यव नवान । ভাল ভাল খ্ৰীলোক বভ ধ্ৰিয়া লইবা বার। অভুঠে হক্তিবাধি ধের ভার গলায়। अक क्षत्र कारक करन जार क्या नरह । ....... जादा बाहि भक् करद । बरे बच रदनी कच शाशकर्ष कविशा। লেই সৰ প্ৰীলোককে যত ছের সৰ ছাতিয়া। ভবে বাঠে সুটবা বরগী আবে সাবার। यक यक परत जातिया जाश्वम जातीय । ভাততে বাঁৰে বরুদ্ধী বিধা পিঠ-যোডা। हिर कवि बाद्य नावि शाद्य क्रू हका । "सनै (वह, सनी (वह" (वाल वात करत । स्तरी मा शारेबा करन मारक कन करव । ভাততে বরিরা বরগী পুর্বরে ভুষার। ভাকর হইরা তবে ভাক প্রাণ বাব।"

এসৰ কবির অত্যক্তি নয়। কবি বাণেশ্ব বিদ্যালয়ারও বর্গীর হালামায় বাঙালী নর-নারীর মুর্কণা অচক্ষে দেখে উব্লংম্বুত কাব্যগ্রহ 'চিজ্ঞচন্দু'ডে লিখেছেন: "বাষাঠায়া কৃপায় কৃপাৰ, গৰ্ভবতী এবং শিশু, ত্ৰাত্মণ ও বহিত্ৰদেয় তলোয়ায় বিয়া কাটিয়া কেলে, সমন্ত নিবিদ্ধ আচয়ণে নিপূৰ, ভাছায়া বাংলায় ক্ষমণকে বেন ছোট প্ৰকৃত্ত বটাইল, সমত বম এবং লাক্ষী ছীলোক হবৰ ক্ষিত্ৰ।"

এক আধ বছর নয়, বছরের পর বছর—দশ দশ বৎসর এমনিধারা অমাকৃষিক অভ্যাচারের প্লাবন বয়ে গিয়েছিল এ দেশের উপর দিয়ে।

এব প্রার পিঠাপিটিই এল এদেশে 'ছিয়ান্তবের মৰস্কর'। এরও মূলে রয়েছে অরাজকতা। সেদিনকার সে অরাজকতার নগ্রন্থ বৃদ্ধিমচন্দ্র 'আনন্দ্র মঠে':

"১১৭৬ সালে বাংলা প্রবেশ ইংরেজের শাসনাধীন হর নাই, ইংরেজ তথন বাংলার দেওরান। তাঁহারা বাজনার টাকা আলার করিরা লবেন, কিন্তু তথনও বাঙালীর প্রাথ-সম্পত্তি রক্ষণাবেকণের ভার পাপিঠ নরাবন বিধানহতা নক্ষয়-কুনকন্দ নীর্জাকরের উপর। নীর্জাকর আল্রন্ধার অক্ষর, বাংলা রক্ষা করিবে কি প্রকারে ? নীর্জাকর ভলি বার ও মুরার। ইংরেজ টাকা আলার করে ও ভেসপ্যাচ লিবে। বাঙালী কাঁচে আর উৎসর বার।"

বাঙালীর দেদিনকার হর্দ্ধণার বে চিত্র বহিমচন্ত্র এঁকেছেন তাতে কল্পনার অভিরঞ্জন নাই—আছে ঐতি-হাসিকের সংগ্রন্থভ আর সমীকা। সমসাম্মিক সরকারী কাগজপত্রের প্রমাণপুঞ্জ থেকে সংগ্রহ করে সে হর্দ্ধণার সংক্রিপ্তধার তিনি বা দিয়েছেন তা এই:

"লোকে প্রথবে ভিন্দা করিছে আরম্ভ করিল, ভার পরে क् किमा त्वत ? है भवान कविष्ठ आवस कविन, आव भरत वानाकाच ब्रेटच नानिन। नक विक्ति, नानन काबान र्विन, बीक्याम बारेबा स्थानन, बढवाकी व्विन, स्थाकका বেচিল। ভার পরে বেবে বেচিতে ভারত করিল, ভার পরে হেলে বেচিতে আহত করিল। ভার পরে লী বেচিতে আরভ করিল। ভার পর মেরে, ছেলে, ত্রী কে কিলে ? পরিভার मारे, जकरनरे व्विटिक हाता। वाकाकारव बारवर भावा बारेट नातिन, यान बारेट चावड कविन, चानावा बारेट मानिम। जारमक भनावेता। बाह्यका भनावेत, ভाह्यका विरम्प निवा चनाहारत महिल : याहाता ननारेन मा. जाहाता অবাভ বাইরা, দা বাইরা, রোগে পভিরা প্রাবভ্যাগ করিছে লাগিল। রোগ গবর পাইল, অর, ওলাউঠা, কর, বলত। विष्यकः वनत्वत वक वाक्षीय हरेन। वृद्ध वृद्ध वनत्व विशिष्ट नानिन। (क काहोरक क्रम (वड, एक काहोरक न्यर्न করে ? কেই কাহারও চিকিংসা করে না, কেই কাহাকেও (बर्ट मा , महिला (कह क्ला मा । अकि समनेश वर्ग करें।-निका बर्बा जानमा जानमि नरह। रव ब्रंट अक बाब बनव প্ৰবেশ কৰে সে গুৰুৰাদীয়া হোগী কেলিয়া তত্ত্বে পালায়।"

বা হয়েছিল সেটা সভাই মৰ্ভর। এর কলে বাংলার এক-ভৃতীয়াংশ অধিবাসী প্রাণ হারাল। বাংলার অমিলার সম্প্রদায় উচ্ছিল্ল হ'ল; মধ্যবিত্ত সম্প্রদায়ের সর্বনাশ হ'ল। বাংলাল গৌরব শক্তিমান ক্রবককুল মক্ত্রে পরিণত হ'ল, স্বজলা স্বক্লা বাংলার মাটির এক-ভৃতীয়াংশ চাববাসের অভাবে জকলে ভবে উঠল। এক-আধ বছরের অনার্টিতে বা অজ্যায় এমনটা হয় নাই। এর মূলে ছিল বছবর্ষব্যাপী অবাক্ততা, শোবণ আর অবাধ লুঠন।

ছিয়ান্তরের মন্বন্তর এসেচিল বাংলায় ইংরেজ-শাসন প্রতিষ্ঠিত হবার প্রাক্তালে: বাংলায় আর এক ভয়ানক ম্বস্তব এল ১৯৪০ সালে—ভারতে ইংরেজ শাসনের অস্ত হবার অব্যবহিত পূর্বে। এই ছই মন্বন্ধরের মাঝধানে সময়ের ব্যবধান অনেকথানি থাকলেও এদের হেতুর সাদৃশ্য স্থম্পষ্ট। উভয় কেত্রেই অবাত্তকত। আর শোষণ চুই-ই চর্মে উঠেছিল। বাদের হাতে ছিল শাসন্যন্ত্র তারা ক্রকল্যাণে দম্প উদাদীন হয়ে প্রজার মুখের গ্রাস কেড়ে নিতে সেকালেও বিধা করে নি. একালেও নয়। সেবারও চর্ডিক্ষের मक्त वाक्य जामारा कश्चव व्यक्ति. এवाव । मात्रा सम यथन প্রাপীড়িত, তখনও সমানে বাংলার বন্দর থেকে চাল वश्रांनी हरसाइ-जावर, हेबाक, निःश्न ও जाकिकाय। প্রজাকে বঞ্চিত করে তারই শ্রমলব্ধ খাদ্য সংগৃহীত হয়েছে সঞ্চিত হয়েছে, বিদেশী সৈন্যের রুগদ বলে। কভ না ভার নষ্ট হয়েছে, কত না হয়েছে চুরি। এ অন্যায় অৱাক্ততার ষারা প্রতিবাদ কবত, প্রাণ দিয়ে এ লুঠন যারা প্রতিরোধ করতে অগ্রসর হতে পারত, বিদেশী সরকার আগেট তাদের অবক্রম করেছিল কারাপ্রাচীরের অস্তরালে। ফলে व्यतनन-मृज्यारक भन्नी खेकांक हरबरह, महरवद हानभाषारन रखर श्रामाकाव, वाक्यामीव शर्थ शर्थ अन्यम-कीर्व यक-দেহের ছডাছডি গিয়েছে।

এ তুর্ভোগের অন্ত হতে না হতেই দেশে এল সাম্প্রদায়িক হালাহানি। মৃলতঃ এ হানাহানি বে বুজুকুর কাড়াকাড়ি তাতে সন্দেহমাত্র নাই। বে 'ফুলুঝল' কুণাসনের অবাধ শোষণের ফলে দেশে এল মন্বন্ধর, তারই প্রত্যক্ষ-পরোক্ষ প্রেরাণ এবং প্ররোচনায় হ'ল সাম্প্রদায়িকভার জন্ম, বৃদ্ধি। এদেশে এ উপসর্গ চিরস্থায়ী হবে এমন মনে করবার কোন সক্ষত কারণ থাকতে পারে না। বিদেশী শাসনের শৃত্যল ভেডেছে; বিদেশীর যথেছে শোষণও বন্ধ হয়েছে। আন্ত হোক, কাল হোক বাংলা নিজেকে ফিরে পারেই। আন্ত হোক, কাল হোক বাংলা নিজেকে ফিরে পারেই। আন্ত বার এ আত্ম্বাভী মনোভাব তথন ছঃম্বর্ম বলে মনে হবে—এ স্থনিশ্রিত। সাম্প্রদায়িকভার অন্ধ্রারে আন্ত্রীরা দিবিদিক ভূলে ইডভেডঃ ছুটাছুটি করছেন, আর বারা

চোবের উপরে রাপ করে মাটিতে ভাত ধাবার ব্যবস্থা দিচ্ছেন, অভীতের কান আর ভবিব্যতের দৃষ্টি চুই-ই তাঁদের সমান আক্ষয়।

8

কিছ কেন এমনধারা তুর্গতি বাঙালীর বুপে বুপে? কারণ ছাড়া কার্য হয় না। নিভান্ত কর্মকর্ত্বাচ্যেও বে ক্রিয়া নিশার হয় তারও একটা না একটা প্রক্রের কারণ থাকেই। ভূমিকস্প বে এমন একটা আক্রির ব্যাপার, তাও দৈবাৎ হয় না। মাটির নীচেকার তাপ আর চাপের বক্রেয়া হিসাবের বোঝাপড়ার ফলেই নাকি তা হয়। আমাদেরও অমনিধারা বকেয়া হিসাবের ক্রবাবদিহি, আর তহবিল ভছকপের দণ্ড দিতে হয়েছে নানান্ রক্ষের ত্র্গতির মারফত—জাতীয় বিবর্জনের বাঁকে বাঁকে। ধরিত্রীর ইতিহাসে ভূমিকস্প নিরর্পক নয়। পৃথিবীর ব্যবস্থিতিতে ওরও প্রয়োজন আছে। বাংলার ইতিহাসের ঐ বে বড় বড় ত্রভাগগুলো, বারা কিনা জাতিবর্ণনির্ক্রিশেষে আমাদের স্বাইকেই পুনং পুনং নাড়া দিয়ে গিয়েছে, সেজলোও সার্থক হবে, বখন বাঙালী ওদের প্রকৃত ইলিড অন্তর দিয়ে বুঝতে চেষ্টা করবে।

চিরকাল প্রকৃতি এদেশের প্রতি সদয়। জীবিকা
এখানে এতই সহল্পভা বে, অতীতে বাঙালী কখনো জাতীর
আর্থের জল্প সংঘবদ্ধ হ্বার প্রয়োজনীঞ্তাও উপলব্ধি করে
নাই। মৃষ্টিমেয় বিদেশী বখন মারাঠার আক্রমণ প্রতিরোধকল্লে হুর্গ নির্মাণ করল, বহু বোজনপ্রসারী পবিধা খনন
করল, তখন লক্ষ লক্ষ বাঙালী, বর্দ্ধমানরাজ বিষ্ণুপ্ররাজ
থেকে আরম্ভ করে ছোট বড় ভূস্বামী স্বাই অসহায়ভাবে
বৃদ্ধ নবাব আলিবর্দ্দি খার দিকে তাকিয়ে বইল। বছরের
পর বছর অত্যাচরিত, অপ্যানিত হ্যেও শিক্ষা হ'ল না
কাক্বেই।

শৌর্থাবি অভাব এদেশে ছিল না, কিছ সংহতির আর সমবেত চেষ্টার অভাব এদেশে চিরকাল। বারো ভূইয়ার কেউই কম ছিলেন না। কিছ তাঁরা স্থিলিত হয়ে বাংলার বিপুল সমুদ্ধি আর গণশক্তিকে কার্যক্রী করবার কোন চেষ্টাই করেন নাই।

বাংলার অনতিদ্র অতীতের সমৃদ্ধি কেমন ছিল? আর
তার কি ব্যবহার হ'ত সেকালে? ১৭০৬ সালে মূশিদ্কুলি
থা বাংলার দেওয়ান-নাজিম হয়ে ঢাকায় এসে প্রথম
প্ণ্যাহের পরেই ছই শ' গরুর গাড়ী বোঝাই করে এক
কোটি ত্রিশ লক্ষ নগদ টাকা পাঠিয়েছিলেন দিলীতে। এ
ছাড়াও 'লায়পিবীর ও থাসনবিশির টাহা' অতম পাঠিয়েছিলেন। আর পাঠিয়েছিলেন—"হন্তী, টাক্ষন ও ৩ছ

নামক একপ্রকার ক্ষকার পার্কাত্য অব, মহিব, হরিণ, বাজপাধী, জাহাজীরনগরে (ঢাকার) বরন করা পালশাহের ব্যবহার্য স্ক্র বস্ত্র, গণ্ডার-চর্মের ঢাল, জীহট্টের মাত্র (স্বর্ণ ও গজনজ্বের), মুগনাভি ইত্যালি ইত্যালি।"

বাংলার চাল সেকালে নদী-পথে পার্টনায়, আর সমুজ-পথে করমগুল উপক্লের বহু বন্দরে, সিংহলে, মালবীপে প্রেরিভ হ'ত। বাংলার চিনি গোলকুগুায়, কর্ণাটে, আরবে, ইরাণে ইরাকে বেভ। স্থতী আর রেশনী কাপড়ও প্রচুর পরিমাণে রপ্তানি হ'ত বিদেশে।

এত যে ঐথবা, এমন যে সমুদ্ধি এর কভটুকু অংশ পেয়েছে বাংলার ক্রম্ক, বাংলার কারিগর? বাদশা-বেগম-নবাব-নাজিম-আমীর-ওমরাহদের বিশাস ব্যসনের বথাবোগ্য ব্যবস্থা করে, রাজা-মহারাজা-জমিদার-তালুকদার এঁদের রাজসিক জীবনযাত্রা আর দোল-তর্গোৎসবের খরচ জুগিয়ে যা থাকত তার বেশীর ভাগই খুব সম্ভব বেড সওদাগবের সিদ্ধকে, আর শেঠের কুঠিতে। বাংলার বারা বথার্থ ধন উৎপাদন করত তাদের অনেকের তুয়ারেই থব সম্ভব হাতী বাঁধা থাকত না। আর তাদের শিকা-সংস্কৃতির, তাঁদের দৈনন্দিন জীবনবাপন-প্রণালীর উন্নয়ন-এ সব নিষেও কেউ বে বিশেষ মাধা ঘামাত এমনও মনে হয় না। টাকায় আট মণ চাল-তারা ত'বেলা আঁচাতে পেরেই মহাক্রথে ছিল। তালের পেটে ভাত ছিল, গায়েও कांत्र किन। छाक भछत्न छान-मछकि, नांत्रि-माँछ। নিয়ে বাজার কাজ হাঁসিল করত তার', নিভাস্ত নির্বিকার ভাবে। কোন উচ্চতর ঐতিক আনর্বের সন্ধান কেউ তাদের দেয় নি।

শাস্ত্রে লেখে—দেবতার দানে সমুদ্ধ হরে বে দেবতাকে তার ভাগ দের না সে চোর। বাংলার সেকালের বিভগালী অভিজ্ঞাত শ্রেণীর প্রায় স্বাইকেই অচ্ছন্দে ঐ দলে ফেলাবার। আর তাদের যুগদঞ্চিত সেই পাণের দণ্ড তাদের সক্ষে সমস্ত দেশকেই ভোগ করতে হয়েছে। বর্গীর হালামার তার আরম্ভ, আর ছিয়াভরের মহস্তবে তার পরিণতি—১৭৪২ থেকে ১৭৭০।

তারপরে এদেশে এল ইংরেজ রাজজ। ইংরেজের আমলে অবস্থার উন্নতি ভ হ'লই না বরং আরও ক্রভ অবনতিই হতে লাগল। শিক্ষিত-সমাজের মন হ'ল প্রাম হতে বহিম্পী; আর লক্ষ্য হ'ল 'বেমন ডেমন চাকরি হুধ ভাত'। শ্রমবিমুধ বাঙালী সহজ উপারে অর্থোপার্জনের আশার ছুটল শহরে, রাজধানীতে—সরকারী শাসন আর শোবণের সহবোগিভার। বংশপরস্পরার সৃষ্টি হতে লাগল রেজা ধাঁ আর প্রকাগেবিক সিংহের পার্হস্থা সংকরণ। কৃবি আর

শিল্প বইল অবজ্ঞাত হয়ে; সর্কবিবয়ে হয়ে পড়লাম আমরা পরমুখাপেকী। ধনরত্ব বত ছিল, বিদেশীর বাত্মজ্ঞবলে সব ত উড়ে গেলই; বিল বাঁওড় জলা দীঘি সব গেল মজে, নদীনালা গেল ভকিয়ে; আর বর্জিফু গ্রাম সব ভরে গেল জললে।

এমনি করে শুধু গণদেবতার কাছেই নয়, ধরিজী দেবতার কাছেও আমরা অপরাধী হয়ে গোলাম। বে-দেশের প্রকৃতির ক্ষমা আর ভূমির উর্ব্যরতা চিরদিনই বিদেশীর বিশ্বয় উৎপাদন করে এসেছে; বেদেশে স্কৃত্র অতীত যুগোর কোন ভগীরথের বহু বর্ষব্যাপী তপায়ায় গলার হুই পাশে, রাজমহল থেকে সাগরদক্ষম পর্যন্ত ধনিত হয়েছিল অগণিত স্কৃত্রপ্রসারী খাল; যেদেশের শায় আর ক্ষি-শিল্পসভার অসংখ্য বাণিজ্যভরীতে বাহিত হয়ে সাত সম্প্র তের নদীর পারে চলে বেত দেশ-বিদেশে—বছরের পর বছর, সেদেশ আজ সকল রক্ষম কাঙাল হয়েছে।

এর দায়িত্ব সম্প্রদায়-নিরপেক আমাদের স্বারই।
বিগত সার্দ্ধ শতাকীতে বধন অট্টেলিয়ার অফুর্কর মফ, শস্যশুন্য প্রান্থর আর ফলহীন বনভূমি বিদেশীর অক্লান্থ
চেটায় সমৃদ্ধ জনপদে পরিণত হয়েছে, ঠিক সমদময়েই
ভারতের তথা জগতের সমৃদ্ধতম প্রদেশ এই সোনার বাংলা
তার অধিবাসীদের উদাসীন্যে হুর্দ্দশার প্রায় অভিম প্রান্থে
এসে দাঁড়িয়েছে। আজ কাধীনতা পুনংপ্রান্থির সঙ্গে
সংক্ষেই আমাদের সর্বপ্রথম কর্ত্তব্য হচ্ছে এই পতিত দেশকে
সমৃদ্ধির পথে পুনংপ্রতিষ্ঠিত করা।

এ কাজে রাজনীতির মল্লের চাইতে কর্মবজের সাধনা আর ত্যাপের প্রয়োজনীয়তা ঢের বেশী। আমেরিকার যুক্তরাষ্টের ঐশব্য ভার রাজনীতি থেকে আসে নি. এসেছে তার শতাব্দীব্যাপী অক্লান্ত কর্ম্মের ফলে। দেখানে মানুবের যুগ-মুগ ব্যাপী চেষ্টাম সহস্ৰ সহস্ৰ বোজনপ্ৰসাৱিত নিবিভ অরণানী পরিণত হয়েছে রমা উপবনে; ধুম 'প্রেইরি'র ভূণভূমি পরিণত হয়েছে শ্রামন শশুক্ষেত্রে, আর উষর-প্রান্তরে ফুটে উঠেছে শুল্র কার্পাদের রাশি। সেধানে আহারনিস্রা ভূলে, শীতাতপ অগ্রাছ করে মাত্র্য ত্রধিগম্য পার্বভা প্রদেশে ঘুরে মরেছে বছরের পর বছর ধনিজের সভানে। ভাবের সেই খদম্য খধ্যবসায় খার বিপুল ভ্যাগের ফলে সেদিনকার শ্রীহীন পর্বতে আৰু লন্ধীর পাদপীঠে পরিণত হয়েছে। কুলগাৰী কুদান্ত নদীর ভাগুৰে ভারা স্থব-বোজনা করে মহাদেশের মাঝধানে সমুদ্ধ বন্দরের স্থাষ্ট करदाह । भीवामार निवा-छेननिवाद विन्यास्त्र मा के विक्रीर्भ (मार्म क्षेत्राविक हरवर्ष्ट्र नर्वक वाकायार्ट, व्यवस्थ । আটলাণ্টিক থেকে প্রশাস্ত মহাসাগর পর্যন্ত বিশ্বত সেই

অধ্যাত অজ্ঞাত ভূধও মাত্ৰ ছুই শতাকীর মধ্যেই জীবনের প্রাচর্ব্যে সভ্যতার আলোকে আজ রালমল করছে।

সহস্র সহস্র বর্ষের প্রাচীন সভ্যতার উদ্ভরাধিকারে গর্বিত প্রাক্তমি ভারতবর্ষে বোধ করি এমনধারা ব্যাপক ভাবে কর্মধক্ষের অফুষ্ঠান কোন দিনই হয় নাই। সেকালে व्यथरमध्य दशका व्यवधा बादका बादका हाना मिटहरक : কিছ সভাতার অভিযান খব সম্ভব রাজ-সিংহাসন ছেডে विशेष महासे वाहे। विशेष महास्रोद मीश मधाद्वित व বিষয়ে আমরা যে ভিমিরে দেই ভিমিরেই। পর্বে নিউ-ইয়ৰ্ক আৰু পশ্চিমে সানফানসিসকো এই ছুই মহানগ্ৰীৰ মাবে. আমেরিকার বুকে গড়ে উঠেছে অগণিত নগর. অসংখ্য কুষিক্ষেত্র, শিল্পকেন্দ্র, শিক্ষায়তন, স্বাস্থ্যনিবাস। আর. কলিকাতা ও বোঘাই এই ছই মহানগরীর মাঝে ভারতের বুকে হাজার মাইল জুড়ে কি আছে? আছে, মন্ত্রবভঞ্জ-কিওপ্লোর-বোনাই, কাঁকের, বস্তর-হায়দরাবাদ-রাজ্যের অবত্তবন্ধিত জন্দ: তার মাঝে মাঝে আছে আদিবাদীদের ভোট ছোট গ্রাম আর ততোধিক ছোট ছোট কবিক্ষেত্র।

কাদ্রেই আজকের দিনে স্বাধীন ভারতে রাজনীতির চর্চার দিক থেকে গঠনমূলক কাজের দিকে শিক্ষিত সমাজের মনের মোড় ফেরান একাস্কই দরকার। এদিকে আমাদের যা কান্ধ তা মুখের কথায় বা কাগজে-কলমে হবে না। এ কান্ধ হাতে-হাতিয়াবে মন-প্রাণ দিয়ে আমাদের করতে হবে।

পূর্ব্ব এবং পশ্চিমবদ্বের রাষ্ট্রিক বিভিন্নতা বাংলায় এই গঠনমূলক কান্ধের পরিপন্থী খুব সম্ভব হবে না। তর্কের খাতিরে যদি ধরেও নেওয়া যায় বে, জাতীয় চেতনা জাপ্রত হয়ে পূর্ব্ব এবং পশ্চিমবদ্বের উভয় বাষ্ট্রকে সদ্ভাবে অহপ্রাণিত করবে না; তবুও একথা স্থনিশ্চিত বে, জাতীয় খার্থবৃদ্ধিই উভয় ঝাষ্ট্রের জনগণকে বিপদের পথ থেকে সম্পদের অভিমুখে পরিচালিত করবে।

ইংরেক্সের অধীনতার যুগের কথা বাদ দিলে, সমস্ত বাংলা

এক বাদ্রের স্থান প্রকাশন খুব বেশী দিন কথনও থেকেছে বলে মনে হয় না। প্রাচীনকালে রাচ, বরেক্স, বল. বগড়ী প্রায়ই বিচ্ছিন্ন হ'ত। পাঠান আমলেও 'গৌড়-মগুল' প্রায়ই বিভিন্ন রাষ্ট্রে বিচ্ছিন্ন হ'ত। মোগল আমলের পূর্বাহ্নেও বাংলার বার-ভূইয়াদের মধ্যে হিন্দু-মুশলমান উভয় সম্প্রদায়ের ভূমাধিকারীই ছিলেন। এরা ছিলেন নিজ নিজ রাজ্যে প্রকৃতপক্ষে আধীন নরপতি। এমনধারা রাষ্ট্রিক বিভিন্নতা বলের সামগ্রিক কৃষ্টি ও সমৃদ্ধিকে বিন্দু-মাত্রও বাহত করে নাই।

চৈতক্সদেব যথন ভক্তির মন্ত্রে, জাতি-বর্ণ-নির্বিশেষে এদেশের কোটি কোটি নর-নারীকে উব্দুদ্ধ করেছিলেন, প্রেমের বন্যায় সমস্ত দেশকে প্লাবিত করেছিলেন তথন এ-দেশের রাজপক্তি ছিল মুসলমানের, আর বিচার ছিল কাজীর। নদীয়ায় কাজী-নিমাই সংবাদের উপসংহারে কাজী বলছেন নিমাইকে:

ত্রাম সম্বন্ধে চক্রবর্তী হর মোর চাচা। বেহু সম্বন্ধ হৈছে হর প্রাম সম্বন্ধ সাচা। নীলাম্বর চক্রবর্তী হর ভোষার নামা। সে সম্বন্ধে হও তুমি আমার ভাগিনা। ভাগিমার ক্রোব বামা অবস্তু সহয়। মাতুলের অপরাব ভাগিমা বা লয়।"

( এএটেডড চরিতায়ত—আদিলীলা )

পাঁচ শ' বছর আগে এই ছিল বাংলার হিন্দু-মুস্লমানের পারস্পরিক মনোভাব। পঞ্চাশ বছর পূর্ব্বেও ঠিক এমনি-ধাবাই ছিল। আর বছর পাঁচেক পরে আবার ঐ মনো-ভাবই এদেশে ফিরে আসতে বাধ্য। কারণ ভৃতীয় পক্ষ তার ভেদনীতিসহ অপসারিত হয়েছে।

উভয় বন্ধের মধ্যে যুদ্ধের বিভীবিকা বাঁরা কালে অকালে
অহরহ দেখছেন বা দেখাছেন, তাঁদের বলি প্রজ্ঞাতান্ত্রিক
দেশে আজকার দিনে. সভ্যিকারের জনমতকে উপেক্ষা
করে যুদ্ধ-বিপ্রাহে রড হওয়া ক্রমেই কঠিন হয়ে উঠছে এবং
খুব সম্ভব অচিরে তা অসম্ভবই হয়ে দাঁড়াবে। আর
বাংলাদেশ ত স্বভাবতঃই শান্তিপ্রিয়।



# যশোহরের নীল-আন্দোলন সম্পর্কে আরও তথ্য

#### ব্রিয়োগেখচন্দ্র বাগল

श्रथमा कि कथा विषय वाचि । जीन-चारमानातव সজে শিশিরকুমার ছোবের বোগাবোগের বিষয় কভকটা জানা থাকিলেও ইহা যে কভ ঘনিষ্ঠ, গভীৱ ও ব্যাপক চিল ১৮৬ সনের 'হিন্দু পেটি ষটে' প্রকাশিত প্রধাবনী হইতেই ভাহার বিশেষ পরিচয় পাওয়া যায়। জাশনাল লাইরেবীতে রক্ষিত উক্ত সনের 'হিন্দু পেটি য়টে'র ফাইল হইতে 'M. L L.' चाक्तव्यक क्राथानि भव मर्काश्यम चाविकात कतात দৌভাগা আমার হয়। প্রথম পত্রধানি বাতীত আর সমুদ্ধই সংক্ষিপ্ত ভূমিকা সম্বলিত, তন্মধ্যে এই কথা কয়টিও ৰাছে— from our Jessore correspondent । এই ধরণের ভূমিকায় স্বাক্তরবিহীন এমন কয়েকধানি পত্রেংও স্থান পাই বেগুলি 'M.L.L.' তথা শিশিরকুমার ঘোষেরই লেখা বলিয়া বঝা যায়। এই পত্তগুলির পরিচিতিশ্বরূপ আমি "ब्रामाहाय नीन-चारमानात्त्र कथा" मैर्सक अकृष्टि श्रवह निश्वि এবং পড ভিনেম্বর মানের (১৯৫১) মাঝামাঝি "আনন্দ-বাজার পত্তিকা ববিবাসবীয় আলোচনী তৈ প্রকাশার্থ প্রেরণ করি। এই প্রবন্ধটি পরবর্ত্তী ২০শে জাহুয়ারী সংখ্যায় উহাতে প্রকাশিত হইয়াচিল। এ প্রবদ্ধে 'M.L.L.' স্বাক্ষরের প্রথম পত্রধানি হবছ উদ্ধত করি। উক্ত স্বাক্ষরযক্ত অরুণ্ড পত্রের প্রকাশের তারিখও আমি ইহাতে দিয়াছিলাম। এখন, মল আলোচনায় আসা বাক।

গত সংখ্যায় বংশাহবে নীল-আন্দোলন সম্পর্কে শিশিরকুমার ঘোবের 'M.L.L.' স্বাক্ষরযুক্ত ক্ষেক্থানি প্র
হইতে তথালি প্রদান করিয়াছি। উহাতে আরও বলিয়াছি
বে, 'M.L.L.' স্বাক্ষর ছাড়া এমন ক্ষেক্থানি পত্রও
পাইয়াছি বাহা আভ্যন্তরীণ প্রমাণ-বলে শিশিরকুমারের
লিখিত বলিয়াই আমার প্রতীতি ক্ষায়াছে। এরুপ পত্র
হইতেও কিছু কিছু তথ্য পূর্বে প্রবন্ধে উপস্থাপিত করিয়াছি।
এখানে ঐ স্বাক্ষরযুক্ত এবং স্বাক্ষরবিহীন কতকগুলি পত্রের
বিষয়বস্থ লইয়া আলোচনা করিব। নীলকর ও ম্যাজিট্রেটদের
বোগনাজনে প্রজাকুল কিরুপ অভিষ্ঠ হইয়া উঠে, এ সমুদ্র
হইতে তাহা বুঝা বাইবে।

'M.L.L.' স্বাক্ষর ও ভারিপবিহীন "from our Jessore correspondent" ভূমিকাযুক্ত একথানি পত্ত ১৫ই স্বাগষ্ট, ১৮৯০ ভারিবের হিন্দু পেট্রিরটে প্রকাশিত হয়। পত্তের শেবাংশে সম্পাদককে সম্বোধন করিয়া লেখা হয়, "You know this hand, please give the above a

place in the Indigo districts columns." অর্থাৎ,
"এ হন্তাক্ষর আপনার জানা, অন্তাহপূর্কক ইহাকে 'ইণ্ডিপো
ডিস্লীক্ট্র' অভে স্থান দিবেন।" ইহা হইভে বুঝা বায়, পত্তথানি নিশ্চিত শিশিরকুমারের শিখিত। ইহার কিয়দংশের
ভাংপর্য এই:

শবর্তনাম বতুতে বশোহরের ব্যাজিট্রেইগণের গতিবিধি
বছই বৈশিষ্ট্যপূর্ব। প্রজাদের বনপ্রাণ রক্ষার কথা একেবারে
তুলিরা নিরা তাঁহারা বছু মীলকরদের বার্থরক্ষার নিরিছই
সমত সরর ও মনোবার্গ নিরোজিত করিতেহেম। এক দিকে
বর্ণম তাঁহারা কুঠিতে ব্ল্যু না লইরাই মীলগাছ পৌছাইরা
দিবার কর প্রজাদের বাধ্য করিতেহেম, অরু দিকে ভবম কুঠীর
হর্যভারা তাঁহাদের নাকের ভগার উপরই ভাকাতি করিরা
বেডাইতেহে। এই [আগঠ] মাসের ৬ই মধ্যরাত্রে মান্ডরার
অর্থান্ত বিনাইদহ বামার জোরাদা প্রান্তে আসরং কাজীর
বাছীতে ভাকাতি হর। টাকাকভি, সোনার্গা এবং অভাত
বিভর ক্রিমিরণ্ড ভাকাতেরা লইরা বার। বাছীর লোকেদের
উপর ভাহারা উৎপাতও করে, কিছু ইবর-ইচ্ছার কোম প্রাণহামি হর নাই।

ভনিভেছি মি: জীমার সভর জম পুলিস লইবা বাগুরার গিরাছেন হারভদের নীলগাছ কাটিভে বাব্য ভবিবার জভ। জীমার ও টেলবের উপর ছোটলাট বাহাছরের ভীক্ষ দৃষ্টি রাধা দরকার। টেলর বর্জমানে মাগুরার মহকুমা হাকিম। খবর পাইলাম কুঠা-ওরালারা 'মারকীর আইমে'র নীলগাছ মই করার বারার কেলিয়া রাহভদের বিরুদ্ধে পুনরার বিব্যা মানলা রুজ্ করিভেছে। জীমার ও টেলবের পক্ষণাভিত্ব সকলেই জানেম। তাহাদের বিচারে প্রজাদের হুর্গভির আর সীরাপরিসীমা বাক্তিবে মা। শেলীল-ভছরূপ বামলাগুলির কি বিচার হুর দেবিবার জভ অপেকা করিভেছি। আমি বদি আপমাকে সংবাদ সরবরাহ করিভে মা-ও পারি, আমার বন্ধু এম-এল-এল বিক্তরই আপমাকে সকল সংবাদ বিবেম।"

জেলা-কর্তৃপক্ষের আরও কতকগুলি অনাচারের বিষয়
এই পত্তে উল্লিখিত হয়। নীলকরদের দক্ষে তাঁহাদের আহার
ও বাস এবং নানা আমোদ-প্রমোদে বোগদান, একজন
নিরক্ষর জমাদারের বেতন-বৃদ্ধি, ভাকাভিতে লিপ্ত সন্দেহে
নীলকর ওট্সের গোমন্তাকে ভলব করায় ঝিনাইদহের
দারোগার সামদিক কর্মচাভি কালোপোলের মিখ্যাপ্রমাণিত 'হামলা'র স্বীনারের সাহাব্যকারী প্রসন্ন দারোগার
পদোলতি প্রভৃতি বিষয় সম্পর্কে পত্ত-লেখক কর্ম্বৃপক্ষের দৃষ্টি

আৰ্কাণ কৰেন। বিশেষতঃ শেৰোক্ত ব্যাপারটি কেলা ক্ষের বিচারে বধন মিখ্যাই প্রমাণিত হইয়াছে তখন দারোগা-পুদৰকে এরপ ভাবে সম্মানিত করা ন্যায়ধর্মবিগহিত বলিয়া তিনি মত প্রকাশ করেন।

. 3

শিশিবকুমারের M.L.L. স্বাক্ষরিত বর্চ পত্রধানিতে (हिम् পেট बंदे, २२८न चानहे) जाविश (प्रश्वा इडेशाइ ৮ই আগষ্ট। তবে ইহা পাঠে বুঝা বায় বে. তিনি তথন মক্ষলে তুৰ্গত বায়তদের অবস্থা সম্বন্ধে ভদাবক কবিয়া বেডাইতে ছিলেন। পলী-অঞ্চলে नीनकदार व অভ্যাচার ও নির্বাভনের কাহিনী এই পুরুষানিতে আছে। জেলার ম্যাজিটেটরা নীলকরদের যে তথন বিশেষ সাহায় করিতেছিলেন ভাচাও আমবা ন্ত্ৰানিতে পারিতেছি। পত্রধানির প্রথমে শিশিকুমার নিঞ্চের সম্বন্ধ **এ**ই মর্ম্মে লেখেন: "মি: স্থীনারের কঠোর সন্ধানী-দুষ্টি এডাইবার উদ্দেশ্তে আমি অনবরত স্থান বদলাইতেছি। আমাকে এখন একজন 'ফেরারী' বলিলেও হয়। আমি মি: মোলোনীর প্রায় সঙ্গে সংক্রই সকল নীল অঞ্চলে ঘুরিতেছি। বর্তমানে হাজরাপুর কুঠীর সন্নিকটে আছি। মোলোনী সাহেব.ক্যাপ টেন হাওয়ার্ডের অধীন একশত জন সিপাহী नहेशा श्रवार विनाहेनह. त्रथान हहेटल माखवा जवः जथन. वित चामात जुन ना इटेशा थाटक, उनीय वसु विसनी क्ठीत ওমানের সঙ্গে বৃহিয়াছেন।\*

ইহার পর শিশিরকুমার নীলকরদের অভ্যাচারের মর্মন্ত্রদ কাহিনী ব্যক্ত করেন। ইহারও কডকটা এখানে প্রদত্ত চটল:

"বড়ই চুংখের বিষয় মীল ক্ষিণ্ম এ জেলার আগবনের
লম্ম করিবা উঠিতে পারিলেম না। এখানে আসিলে তাঁহারা
ব্বিতে পারিতেন—এ জেলার রায়তেরা স্থী ও সম্পংশালী
এই মর্গ্রেমিঃ করলং বে উক্তি করিবাছেন ভাছা কতথানি
লড়া। এই উক্তির মত লজাকর বিশ্যা আর নাই। ক্ষিণ্যের
লস্ত্র্যে অভ্যাচারের পভাংশও বর্ণিত হর নাই। এবনও
নীল অঞ্চলে গৃহদাহ, স্ঠতরাজ প্রভৃতির অবশেষ বৃষ্টপোচর
হবে। আরও দেখা বাইবে—নারীদের উপর ক্রীরালদের
অভ্যাচার করার দর্মন কত পরিবার সমাজ্যুত হইবাছে,
নীলকরদের অহল্য অর্থ-স্থা বিটাইবার নিবিত কত বদী ব্যক্তি
ব্যংগপ্রিতিতে ত্রীগণকে দিরা নীলক্ষেতের বাট ভাঙানো
হইবাছে। স্থানীর অভাবে বাজ্য ও কারছদিগকে বাটাইতেও
ভাহারা বিবা করে নাই। পুরুবদের নীল চাব ক্রিতে বাব্য
ক্রিয়ার উত্তের্জ ভারাদের ত্রী ও ক্যাগণকে শীলক্ষরিব

Weite wife eifen fanfene udraute wei mbuten আমি যে প্ৰায় চটাতে এই পদ্ম লিখিতেতি সেই প্ৰায়ের হারতত অধিকাঠী মাহত এক কাজিকে ভালাত লাভীতে প্ৰক্ৰেকাৰী ৰাসে চাৰুৱাপর কঠির সাতেব ওটন আঞ্চন্ধ করে। তামকর পদাইয়া বাব, কিছ বাঙীর দ্রীলোকেরা ভাতার অভ্নরণ করিছে পারে নাই। সার্ট্রালনের কোপ পভিল বাড়ী ও আসবাৰণত্ত্ৰের উপর। ভাতারা বাভীট বলিসাং করে, আর আসবাৰপত্ৰ লুঠ করিয়া দুইৱা বার। বাভীর স্ত্রীলোক্ষের প্ৰেপ্তাৰ কৰিছা পৰিবেছ বন্ধ ছিলাইছা লইবা টলচ কৰ্মাৰ টাভ कराहेश रार्थ । चर्रानेहे काहियी जिथिएक जाशांत जरकना উপস্থিত হইতেছে। এই লোকটকে বাভিচাত করা হইরাছে। वायलक छोटनद विकास सीमारदद सामामास बाबना कर करत ( श्रमित्ववि, श्रीमात श्रमेशन बाशीत), किन श्रीमात ছংকৰাং ইচা ভিস্মিস কৰিছা বেম। আৰু একট সন্থাৰিক পরিবার--লাউভারার সাহাপৰ করেক মাস পর্বের ওটনের হতে অমূত্রণ নির্বাভন ভোগ করিবাছেন। ভাঁচাছেরও বর-বাভী স্তিত হয় ও শেষে পোড়াইয়া বেওয়া হয়, স্কীনাৱের আহালতে মামলা ক্রম্ম চইলে ভিনি এটও ভিস্মিস করিবা দেন। এইক্রপ ৰচ ঘটনা ঘটনাছে ... আমি ব্যক্তিগত ভাবে বাচা লক্ষা कतिरकृष्टि काठारक भीत्रहारबंद कृष्टित क्या बाह्या जिल्लाक अ चक्र न वभी-प्रतिस, भाषी-भूगाचा अवन लाक मारे बाहाबा শীলচাষের হরুন ছাড়াও কোন-না-কোন বকর নির্বাভন ভোগ ভৱে নাই।...

ইতিপূর্বে ওটুল সাহেবের আক্রমণ হইতে আল্বরকার
নিবিভ বাধরি, পানামি, গ্রীবানপুর, বোগ্রু, রামচলপুর, হরিশকরপুর, হুর্গাপুর প্রভৃতি প্রামণ্ডলি একতাবহ হইবাছিল, কারণ
ভাহারা ব্বিভে পারিয়াছিল যে, নীল ব্নিবার সময় এইরূপ
আক্রমণ স্নিন্চিত। আনি তব্ করেকটি বড় বড় প্রায়ের নাম
করিলাম, বছ ছোট ছোট প্রায়েও বিষম উভেজনা দেখা
বাইতেছে। ওটুলের কথা ছাভিয়া এখন বিজলী কুঠীর ওমান
সাহেবের কথা কিছু লিবিতেছি।

নীলচাষী ও অনসাবারণ ওনান সাহেবকে নীলকরবের মব্যে সর্ব্বাপেকা অভ্যাচারী বলিরা মনে করে। ভাহার কুন্ধী এবার প্রার বন্ধ হইরা বাইবার উপক্রম হইরাছে, বলি-না নোলোনী ভাহার সাহায্যার ন্যাভিট্রেটের সকল করভা প্রবাপ করেন। ভাহার বেওয়ান ইপানচক্র হর্ম কারি করে বে, প্রারগুলির সকল বাঁশবাড় কাটরা কেলিভে হইবে এবং ব্রীলোকগণকে কুন্নভে বরিরা আনিতে হইবে বনি নীলচাবীরা মীল কাটভে অহীকার করে। পত পত লাটরাল নির্ক্ত করিরা বাঁশগুলি কাটরা কেলা হইল, কিছ অনুমের বিভীর অংশ কার্ব্যে পরিণত করিছে বাবা পাগুরা গেল। বাহারা বোবা বিল ভাহারাও মীলক্রের বিক্লবে বোগ বিল। বিঃ

টেলবের বিচারে ইপানচজের ভিদ নাস ভারারও ও এক শভ টাকা ভ্রিয়ানা হইবাছে। শোলকোপা প্রাথট বাংলাবেশের একট গুব বড় প্রায়। প্রধানভার পুরুষ ভ্রিয়ানীর সংখ্যাই আট ছাজারের উপর। ইহাবের ভ্রিফাংশ ধীর্বপ্রশ্রু মুসলনান। বিটুলি, উরেরপুর প্রভৃতি প্রায় কম বড় বছে। ওলান সাহেবকে এইরপ আঠাশট বৌজার সকে মুবিভে চইজেনে।…

নীবৰ্গন্ধ কুঠাজেও গোলবাল চলিজেছে। চাৰীবের জোধ এতটুকুও প্রান পার নাই। জন্মন, বিষারিশ জন নিপাহী সেধানে পাঠানো হইরাছে, কিছ এবিষয়ে সঞ্চীক বলিতে পারিভেছি না। শেবিঃ ফীনার শিশিরবাবুকে আলালতে অভিত্ত করিছে বাইজেছেন; কিছ আনি পুনরার বলি তাঁহার বনে রাধা উচিত বে, হালিতে লাহেব এখন আর বাংলাকেশ শাসন করিজেছেন না।"

19

मिनिवकुमात वर्षाकारन यानाहरतत छेखरत माख्या মহকুমা অঞ্লে ম্যাজিটেট মোলোনী ও তাঁহার সহকারী-দের প্রায় সদে সদেই ঘুরিয়া বেড়াইতেছিলেন। ইহার कृहेि कावन । প्रथमि इहेन, 'हिन्दू (भि यटि'व वर्णाह्य সংবাদদাতা সন্দেহে জেলা-কর্ত্রপক অনবরত তাঁহাকে নানা ভাবে মামলা-মোকদমায় জডাইতে চেষ্টিত ছিলেন। अवना कांशाव पूरव पूरव भाकाव श्रायायन हिन। जरव ৰিতীয় কারণই মুখ্য। এই সময় জেলা-কর্ত্রণক মক্ত্রলে निया 'वित्याही' श्रमात्मय मिया नीनगां कांगेरियांय अन বিভিন্ন অপকৌশলের আপ্রায় লইডেছিলেন। বহির্জগতের निकृष्ठ त्म मध्मम काम कविया (मध्या किन निनिवक्मादिव অভিপ্রায়। তিনি নিদাকণ বর্ষার মধ্যেও—বর্ধন উত্তর অঞ্চল ক্ষরতং ত্রদে বা ভোটখাটো সাগরে পরিণত হইয়াছে ভ্ৰম জীবন বিপন্ন কৰিয়াও নৌকাবোগে গ্ৰাম হইতে आधासद वाडेएकिएनन जवः मास्त्रिहेर ७ नीनकदानव क्रियाक्नारभव विवय कानिया नहेवा '(भि वर्षे' श्रकान क्बिएकिलन। ১৮৬०, ६ राल्पेश्यत्व 'हिन्सू (भिष्ठि बर्टि' द नवसीन वाहित हह जाहा नार्क साना वाह, क्षक वादि-পাত হেড় শিশিবকুষার শোলকোপার বাইতে পারিডেছেন ना। रमधारन बाज्या अकास क्षरप्रासन, कावन नीमकव এবং রায়তদের মধ্যে একটা ভীষণ সংঘর্ব আসর। এ বিষয়ের উল্লেখের পরে শিশিরকুষার এই মর্শ্বে লেখেন:

ত্ৰোলকোণা-কুঠাৰ ওমান সাবেব কৰেক শব্দ লাটিবাল কোণাড কৰিবাবেন। তথ্য, তিনি আহাবের বিতল্ভার ও গোলাতলি বাবা সঞ্জিত কৰিবেন। ইহা অনেকটা অভ্যক্তি সন্দেহ ৰাই, কিছ আৰি তো পুৰ্কেই লিখিরছি যে, ওয়ান সাহেব গড করেক বাস ধরিরাই পোলাবাক্তর বন্দুক সংগ্রহ করিছেবে, অছিলা—আছরকা। এ প্রযোগ হরত তিনি ছাছিবেন না। এই সংবর্ষ বহি সভাই বাবে ভালা হইলে ইহা বারাত্মক রক্ষের হইবে। হাজার হাজার স্পত্র লাটিবাল এক বিকে, অভ বিকে হর হাজার মুসলবান—বাহারা এক্ষোরে মরিরা হইরা উটিবাছে। ম্যাজিট্রেটসণ এক বার এই আসন্ন সংবর্ষ প্রতিরোধে ভংগর হটন না গ

ইহার পরে শিশিরকুমার লেখেন যে, তিনি সদর বশোহর হইতে এখন চলিশ মাইল দুরে বহিলাছেন। माक्षिष्टि पालानी २वा माल्वेषव वामान्य हाणिया যাইবেন বলিয়াও ভিনি দট আশা পোষণ করিভেছিলেন। **জেলা-কর্ত্তপক্ষ নীলকরদের কতথানি সহায় হইয়াছেন** ভাহার নিদর্শন-স্বরূপ এই পত্তে শিশিরকুমার দারোগা বৰ্ত্তৰ সম্প্ৰাপ্ত একখানা প্ৰভয়ানাৰও উল্লেখ কৰেন। পরওয়ানার মর্থ এই: "ब्यनह नीनक्द्रलय निकृष्ट इहेट्ड আবেদন আসিবে বে. বায়তেরা সংঘবত ভাবে নীলকরদের অব্য করিবার জন্ম অল্পশন্ত লইয়া হেথা-সেথা বিচরণ করিতেছে তথনই বেন ভাহাদের বেমাইনী জনতা বলিয়া গ্রেপ্তার করা হয়।" শিশিরকুমার লেখেন, "এরপ পরওয়ানা গত ১২ই মার্চ্চও একবার দেওয়া হয়। এখন পরওয়ানা পাঠাইবার একমাত্র উদ্দেশ্য-বে দকল রায়ত নীলকরদের ইচ্ছামুখায়ী কাৰ্য্য করিবে না, দরকারী সহায়ভায় ভাহাদের আটক কবিয়া বাধা।"

महकादी माबिट्डिंग मिः सीनाद्यत कीर्विकाहिनीत कथा थ শিশিরকুমার এই পত্তে বিশেষভাবে উল্লেখ করেন। ওমান সাহেবের সবে তাঁহার বিশেষ হৃত্তা। ওমানের বিক্লছে গ্রুদাহ, নরহত্যা প্রভতির বে সব অভিবোগ আসে ভাহা তিনি নিল' ভাবে ভিস্মিস করিয়া দেন। মলিক-পুরের সংঘর্ষকে—বাহাতে এক জন নিহত ও চারি জন গুরুত্বরূপে আহত হয় আর তুই জনকে একেবারে গাপ ক্রিয়া কেলা হয়—স্থীনার একটা সামার ব্যাপার বলিয়া উড়াইয়া দিয়াছেন! একদিন চুই শত মোড়ল (গ্রাম্য নেতা) তাঁহার নিকট আবেদন লইয়া গেলে ডিনি ভাষা ছ'ডিয়া ফেলিয়া দেন। আবার আবেদনকারীদের কারাগারে পুরিয়া রাখার কথা বলিয়াও ভর দেখান। কালোপোলের মিখ্যা হামলা লইয়া কতই না জাক করা হইল। কুঠীয়াল চার্ডন সাহেব একে একে নাম করিয়া দেখাইয়া দিলে মি: স্কীনার উনপঞ্চাশন্তন নিরপরাধ লোককে গ্রেপ্তার করিয়া সদরে চালান দিতে হকুম দিয়াভিলেন। ইহার পর শিশিরকুমার লেখেন:

"এত্ব দীনারকে ছোটলাট বাহাছর বি: এটি দওদাল আর এখানে বহাল রাধিবেন ? বহালর এটি দি বশোহরের সূচি লক অবিবাসীর বদল চাম না ? তাঁহার কি এই অভি-বভ বে, এক কম বেভালের কচ লক কফকার বিণীচিত চইবে ?"

পরবর্ত্তী পত্তে শিশিরকুমার ঘোষ নীলকরদের নিগদ ব্ৰপেয়া'র মহিমার কথা ব্যক্ত করেন। এ প্রথানি বাহির হয় ১৮৬০, ৩র। অক্টোববের 'হিন্দু পেটি মটে'। তিনি এই মর্ম্মে ल्टबन,-किक्रथ माज्यनकजादव ग्रीकाव वावशाव कविटल হয় তাহা কেহ জানে তো এই নীলকরের। মামলাঞ্চলিতে তাঁহাদের জয়লাভের মূলে বহিয়াছে এই টাকা। গুরুতর व्यवदार्थ व्यवदाशी इटेशाल (मन्द्रांनी ल क्लोबनादी व्यान-লভের চকে ধুলা দেওয়া, নিপীড়িতদের প্রতিশোধ লইতে चिनका, शवर्वदानद त्याराक्षत्र कदिश दाशा, श्रुनिमरक त्थाव मानात्ना. अभिनातानत नमन कता. ताम्रख्यात चाछ महेकाइमा (क्छ्या— अभ्यस्यवरे यत्न वश्याद्य अ य्राव वाक— ক্লপেয়া। নীলকরেরা টাকার 'দদব্যবহার' করিতে খুব ভাল कविशारे सात्न । উৎকোচ, উপঢ়োকন বে आकादारे मद-কার হউক, কুঠার সিন্দুক অমনি খুলিয়া বায়। গরিব চাপ-दानै, क्रश्रुष्टे मादिकामाद वा अधिकाछ मिविनियान-वर्षन বাহার বাহা প্রয়োজন হয়, কুঠীয়াল সাহেব তথনই তাহা मत्रववाह कविएक मुक्कहन्छ। नीमकुठीत मारहरवता चारम হইতেই ভাহাদের টাকা জোগাইতে থাকে, কারণ কথন বে ভাষাদের সাহায্য দরকার হইবে ভাষা ভো আর জানা নাই। বে-কোন সময় নরহত্যা বা অভ্যন্ত্রণ ঘটনা ঘটিতে भारत, कारबहे भूर्व हहेराउँ छाहारमत हाछ कतिया ताथा আবশ্রক। বেমন, মামলাকারীরা হুপ্রিম কোর্টে ব্যারিষ্টার নিযুক্ত করিয়া রাখে।

ইহার পর শিশিরকুমার সাতৃতি গ্রাম : সম্পর্কে একটি বিবরের কথা উল্লেখ করেন। কালোপোলের কুখ্যাত প্রসন্ধ দারোগার অন্ধরোধক্রমে স্কীনার এই গ্রামে এক দল পুলিস মোভায়েন রাখেন এই ওজুহাতে বে, সিন্দুর কুঠী এবং সাতৃতি গ্রামের লোকেদের মধ্যে একটা সংঘর্ব বাধিবার আশহা। প্রকৃত ঘটনা কিছ অন্ধরুণ। শিশিরকুমার বলেন, সাতৃতির মধ্র আচার্য্য নামে একজন ধনী ব্যক্তির নিকট হইতে কুঠীরাল সাহেব জরিমানা প্রভৃতি বাবদে প্রায় পাঁচ হাজার টাকা দোহন করে। ইহার পর মধ্র আর এরুপ দাসম্ব খীকার না করিয়া গ্রামবাসীদের সঙ্গে কুঠীর বিক্রমে দীড়ান। নীলকর ভাঁহাদের জন্ম করিবার জন্ম অনেক চেটা করে, বশোহর আলালতেও বহু মামলা করু হয়; কিছ

বধন দেখিল কিছুতেই প্রামনাসীদের, বিশেষতঃ ভালাদের নেতা মধ্ব আচার্থাকে জব্ধ করিতে পারা পেল না তখন আৰু উপায় ধরিল। নীলকর ভাবিল, এক দল পুলিস বদি এখানে স্থিত করা বায় ভালা হইলে ভালাদের উৎপাতে গ্রামবাসীরা শায়েন্ডা হইবে এবং নীলকুঠীর বশুভা বীকার করিবে। প্রশন্ত দারোগাকে দিয়া পুলিস আনাইবার চেটার ইলাই নিগৃঢ় কারণ। স্বীনার অনেকবার উপরওয়ালার বারা ভৎসিত হইয়াছেন। এবারে পুলিস স্থাপনের ঝুঁকি নিজে না রাখিয়া নদীয়া বিভাগের কমিশনার মিঃ লাসিং-টনের নিকট কাগ্রপ্র প্রেরণ করিয়াছিলেন।

'হিন্দু পেট্রয়টে' শিশিরকুমারের শেব পত্র বাহির হয়
১৮৬০, ১০শে ডিসেম্বর তারিখে। পত্রখানিতে এই বলিয়া
আক্ষেপ করা হয় বে, বশোহরের রায়তর্গণ পুনরায় ধ্বংসের
সন্মুখীন হইয়াছে। নীলকরেরা বে এক বিঘা জমিতেও
ন্তন করিয়া নীলচাব করাইতে সক্ষম হইয়াছে ভাহা নহে,
কিছ অন্ত দশ রকম উপায়ে ভাহারা অভ্যাচার উৎপীড়ন
করিতেছে। ভাহাদের নিপীড়ন ও নির্চ্চরভার মাত্রা পূর্ব্বসামাদেরও ছাড়াইয়া যায়। বে-সব ম্যাজিট্রেট প্রথম
প্রথম প্রজাদের সপক ছিলেন তাঁহারাও কির্পে নীলকরদের বল্লু হইয়া উঠেন ভাহার একটি ষ্টাভ শিশিরকুমার
উক্ত পত্রে এইরপ দিয়াছেন:

"আৰৱা ৰাখৱাৰ বিঃ টেলরের আগৰণে প্রথমে বছই
সম্ভ হইবাহিলান। কিড এখানে আনিবার পরই তাঁহার
অপক্ষণাত ও ভাব্য ব্যবহারের পরিচর পাই। এরপ লোক
প্রেরপের কচ ছোটলাট বাহার্রকে বিশেব বছবারও বি? এবং
আমরা থানিকটা আরও হই। কিড হুংবই বাহারের ললাটলিখন ভাহারের হোটলাট বাহার্র কি ক্রিবেন ? নছুবা
এই অকলের লক লক অবিবাসী আবরা এককন বাম লোকের
আনাচারের বিক্রমে এমন ক্রিরা কাঁদিরা মরিব কেন ? বছ
বেশে বখন লভার আচরপের কচ রাজ্যাক্তা পর্বাত সিংহাসনচাত হন সেই সময় আমরা এক কন সামাত পুলিস কর্ম্বচারীর
সন্মধে হাবা-ধোবা হইরা থাকি কেন ?

ন'হাটার বি: সভির বাড়ীতে টেলরকে বলে টানিবার

ত্বত এক ত্বর সভা হইরা সিরাহে। এই সভার ওবান, ভূরাও

সভি এবং আরও ক্রেক্তন উপস্থিত হিল। গত ১ই ভাল

[২৪শে আগঠ '৬০] এই সভা হর। ইহার পর অববি টেলরের

অভূত পরিবর্তন লক্ষ্য করা বাইতেহে। টেলর সাহেব

সেরেভাহার বহন লাহিড়ীকে অন্যবন্দভাবে ভিজালা ক্রেন

—রোটলাট কর্তুক বরা না পভিয়া, নীলকরবের সাহাব্য করিবার সম্পূর্ণ নিরাপত উপার ভি আছে।

বৰ্ব লাভিটীকে স্বাইলেই ইছার সভ্যতা নিৰ্বীত হইবে। তাৰ বাসের ও সমনীর সভার বিন হইতে নিঃ টেলর প্রারই চার-পাঁচ কম নীলকর পরিবৃত হইবা বোরাকেরা করিতেহেন। তাঁহার বৃহ একট বীভিনত নীলকর সভার ("Planter's Association") পরিবৃত হইবাহে। প্রারই তিনি এই সকল বৃদ্ধর সক্ষে বানাপিনা করিতে বান। তবন অব্যুত তাঁহার বর বালি বাতে।"

শিশিরকুমার ইহার পর বলেন বে, রায়ভেরা নদীরা বিভাগের কমিশনায়ের নিকট টেলর ও নীলকরদের বোগ-সাজনে অত্যাচার-উৎপীড়নের বিষয় জানাইয়া বাংলার এক দীর্ঘ মাবেদনপত্র প্রেরণ করিয়াছে। সভি, ওমান, ভুরাও প্রমুধ নীলকরদের ইণিত মাত্রেই ম্যাজিট্রেট টেলর রায়ত-দের গ্রেপ্তার করিয়া হাজতে প্রিভেছিলেন। শিশিরকুমার লিখিলেন:

"চজিতদ আইবের বেরার ( নাত হর নান ) করাইবার ইপ্ৰত হুইলে শীলকহেৱা সাহতাহাতাতি বাহতদেৱ বিক্ৰছে कोक्शरी चामानरक ककक्षित मामना क्रम करतम, चार बि: दिवस देवाच टाटावडीत्वर वास्पान्य त्यांची आवाच कवित्तम । देश हाण काँगार अधनात्म हर्व चारेम चन्नात्तक यह मामना क्रम हत , देशांत क्षांजाकित्वरे मि: हिनत मीन-क्रबारक व्यक्ति किकी सम । किन्द बाबाद बाम हरू. महार-भवावन रकता कर मि: रामी र्यंत भवाक खरितात कतिराम। किमि देखिशाबाद अबस सामनाव मि: किमायत वाव वालिन कवियां विशासमा । अवे मामनाव सावत्वता जाकात विवा कवि ছইতে বেচৰল ছইয়াছিল। ছোটলাটের বুবই পুনাম ভনিতে शाह । जिन्छ कि जनत्त्रत्व नवलादेश निशादक, मा निकित बीज-सक्त प्रदेश त्य सम्बद्धाः त्यांत वैदिशास स्थापित प्रय:-जररबात क्या कांडांच अकांच शरक क्षत्रक्ष ? बि: (वेजरवव कृष्टि वि: क्लक्न नक्टक किए जिनियांत अपन नवत मारे। बरेडेक पंजिलारे पर्यंडे हरेर्य हर, ब स्थान बरे प्रकृत हरे क्य ब्राक्टिडेडेटक वावान बाविता जानावित्रक देवारे ब्लादेश **(क्था क्रेंट्फट्ट गाफि (य. जानता अफ्री जिल्ल जाणि अन्र** খাৰীৰ জাভিত্ৰ ন্যাৰ ব্যবহাৰ আমত্তা ভাষাত্ৰও নিকট হইতে প্রভাগে ভরিতে পারি বা ? উপরোক্ত রাহতদের ভরেত warm we situe two trees series : 40 40 fint ভৱিমানা দিলে 'আনামী'রা সঞ্জর যত হুইতে রেরাই পাইতে TIER I

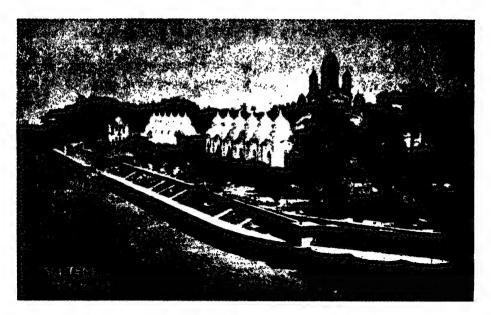
১৮৬• সনের শেষ দিকে এক্সপ স্বত্যাচার-স্নাচার চলিলেও, এই বংস্থের নীলক্ষ্যের লৌবাজ্যের বিষয় নীল ক্ষিশনের সমূধে, বিশেষভঃ সংবাদপত্ত মারক্ত বেরুপ সর্বত্ত জানালানি হইল ভাষাতে ভাষাদের মর্যাদা জার বহিল না। ইহার পরেও বহু বংসর নীলচায় বজদেশে বিজ্ঞমান ছিল, নীলকরের জভ্যাচারও কম-বেশী নানা হানে চলে, কিন্তু ভাহারা পূর্কপৌরব ও প্রতিপত্তি কথনও ফিরিয়া পায় নাই। প্রজাক্ল নীলকর সমাজের দৌরাজ্যে ভিত্তিতে না পারিয়াই প্রক্রপ সংঘবত হইয়াছিল। ভাষাদের এই সংঘবত প্রয়াস বাংলার সামাজিক ইতিহাসে জভিনব। নীল-করদের ও জেলা-শাসকগণের ব্যাপক জভ্যাচার-উৎপীড়নে বার্ডালীজাভির জ্লাড় দেহে নৃতন প্রাণ সঞ্চারিত হয়। প্রায় পনর বংসর পরে ১৮৭৪, ২২শে মে সংখ্যা 'জমৃত বালার পত্রিকা'র ইংরেজী অস্তে (ভখন 'পত্রিকা'র ইংরেজী বাংলা ছই অংশ ছিল) শিশিরকুমার ঘোষ ১৮৬০ সনের নীল-হালামা সহত্তে এইরপ লিখিয়াছিলেন :

"It was the indigo disturbance which first taught the natives the value of combination and political agitation. Indeed it was the first revolution in Bengal after the advent of the English. If there be a second revolution it will be to free the nation from the death grips of the all-powerful police and district Magistrates. Nothing like oppression! It was the oppression which brought about the glorious revolution in England and it was the oppression of half a century by indigo planters which at least roused the half-dead Bengalee and infused spark in his cold frame."

অর্থাৎ, নীল-হাজামাই সর্ব্বপ্রথম এনে নীয়নিগকে সংঘ-বন্ধ ভাবে আন্দোলন পরিচালনা করিতে শিক্ষা দেয়। বন্ধতঃ ইংরেজদের আগমনের পরে বাংলাদেশে ইহাই প্রথম বিপ্রব। বিভীয় বার বধন বিপ্লব দেখা দিবে তথন পুলিস ও ম্যাজিট্রেটগণের অভ্যাচার হইতে আমরা রেহাই পাইতে পারিব। অভ্যাচারের মন্ত কিছুই নহে! অভ্যাচারের ফলে ইংলপ্তে সেই গৌরবম্য বিপ্লব আসিয়াছিল; বাংলা-দেশেও নীরক্রদের অর্জ্বশভাকীব্যাপী অভ্যাচারের দক্ষন অর্জমৃত বাঙালী লাভি গা-ঝাড়া দিয়া উঠে এবং ভাহার অসাড দেহে আবার চেতনার সঞ্চার হয়।

কার্তিক ১৩৫৬ সংখ্যা 'প্রবর্তকে' উদ্ধৃত। এই সংখ্যা 'প্রবর্তক' হইতে বৈশাধ ১৩৫৭ 'সংখ্যা পর্যন্ত হয়ট প্রবর্ত্তে শিলিরকুমার ঘোর সহতে প্রথম মুগের 'অয়ত বাজার পরিকা', ছির সোধামিনীর স্বৃতিনিগি ( এখনও অপ্রকাশিত ), শিক্তা-বিষয়ক সরকামী রিপোর্ট, কবিবর নবীনচন্ত্র লেন, রসরাক্ত অয়তলাল বল্প প্রবৃধ সরসামরিক ব্যক্তিকের রচনা ও উক্তি এবং শিলিরকুমারের নিজম্ব প্রহাবির উপর প্রধানতঃ নির্ভর ক্ষিয়া আমি আলোচনা করি।

—লেকক



১२৬১ जात्म श्रीकृष्टिक भववदश्जात्वत्वव नावमश्रीकै विकारभावत्व मनवष्ट्र कालीविक्तित, व्यक्ष्मान ७ वास्म निवान्त

## কলিকাতার মন্দির ও মগুপ

শ্রীপঞ্চানন রায়, কাব্যতীর্থ

গ্রাম হিসাবে কলিকাতা নৃতন নহে। এখানকার ঘোষাল বংশের ইতিহাসপ্রসঞ্চে কুলগ্রন্থে আটি শত বংসরাধিক প্রাচীন এই গ্রামটির উল্লেখ আছে। ক কবিকরণ মুকুলবাম চক্রবর্তীর চন্তীমললেও কলিকাতার নাম পাওয়া বায়। বিধানে নগর গড়িয়া উঠে প্রায় ছই শত বাট বংসর পূর্ব্ব হইতে; কিন্তু নগর পন্তনের অনেক আগেই এখানে মন্দির নির্মিত হইয়াছিল।

এধানকার বাঙালী জাতির প্রাচীন মন্দিরগুলিতে প্রধানত: তিনটি মূল রীতি দেখা যায়—(ক) নিজস্ব, (ব) মিশ্র, (গ) বৈদেশিক। এই মূল রীতিত্রেয়ের সমগ্র উপরি-

- "পশুপভিন্ন সভানগণ কলিকাভার বোষাল বলিবা প্রান্তি। প্রভাব কলিকাভাকে আমরা অনেক প্রাচীন প্রান্ত বলিরা নিক্তর করিকে পারি। অভতঃ ন্যুনকরে আই শত বংসরের অপেকাও প্রাচীন"।—সমম নির্ণর চতুর্ব পরিপিই পু. ২৭। এই পশুপভি রাজা আবিশ্ব কর্ত্তক আনীত পঞ্চ বাজ্যবের অভতম বাংস গোলীর হালক ক্ইতে অইন পুরুষ।
- † "কালীপাড়া নহাছান কলিকাড়া কুটনান, হই কুলে বনাইল হাট। পাবাবে রচিড বাট, হই কুলে বালী ঠাট, 'কিছৱে বনাম নানা বাট ।"—ভাইরবীর ভটবর্শন, কবিক্ষণ চন্তী। পু. ২৯৫। বছবালী সংকরণ।

ভাগগুলি এখানে দেখা বার না। এখানকার মন্দিরগুলির প্রধান বিশেবছ এই বে, উহাদের গাত্রে অলঙ্করণ-বাহল্য কিংবা পৃত্তলিকাবিন্যাস বিরল। নিজস্ব রীভির ত্রিচ্ছ অটপাল মন্দিরই এখানে বেশী। মিশ্ররীভির পঞ্চরত ও নবরত্বের সংখ্যা ভদপেক্ষা কম। একরত্ব বা আলগোছ টুলী নাই। বৈদেশিক রীভির মধ্যে উত্তর ভারতীয় ও বিলাতী পদ্ধতির তৃই-একটি আছে। উৎকলীয় আদে ছিল না। বর্ত্তমানে নিমভলা ঘাট ব্লীট নিবাসী রায় বাহাছ্র সভীশচন্দ্র চৌধুনী মহাশয় একটি থাটি উৎকলীয় বীভির মন্দির নির্মাণ করাইয়াছেন। বলা বাহল্য, আমার আলোচনা বেশীর ভাগ মধ্য এবং উত্তর কলিকাভার প্রাচীন ও লিপিযুক্ত মন্দিরগুলিতেই নিব্দ

শোভাবাজারের নন্দরাম দেনের লেনে কলিকাভার সর্বাপেকা প্রাচীন মন্দির অবস্থিত। উহা অষ্টশাল রীভির বিচুড় ও আমলাযুক্ত একটি বিরাট মন্দির। মধ্যে তিল্ট কক্ষের ক্ষেন্দ্রটিতে বিশাল শিবলিক ও পার্ষের তুইটির উত্তরস্থটিতে ধাতুমরী দশভ্জা হুর্গা এবং দক্ষিণ দিকস্থটিতে রাধারুক্ত মুর্জি আছে। তুই পাশের কক্ষ তুইটির বারের উপর ভিনটি আধুনিক লিপি ও মধ্যের শিবগৃহের বারশীর্ষে প্রাচীন লিপি বর্জমান। লিপিটি ধাতুক্ষলকে উৎকীর্ণ;

ইছাব শেষভাগ আৰুত থাকার পড়িতে পারা বাহ নাই। BL., of 61 Wellington Street, Calcutta, who repaired লিপিটি এট :

**बिक्रि** जारबचन जबनियन संचित्री जमे २०७३ चार ७३८म रिव्य खिमणदाब जिम शांज जार शीर्च गंका बार जार प्रकासी নভাৰাভার। এতি ভলনী মধ্যে প্রভিত্তা উক্ত ঠাকুর বাটা সম ১२६১ माम ७५८म देवस समा सामीस जिस्त्रकत त्वन काम প্ৰসিদ্ধ ভাল ভলিকাভা সভাৰাভাৱ। এএ√সীভাৰব্যী ত্ৰভ शायम ( भीड़ब हरे जारेम यहा (मेल मा ।)+

नमयाय त्रकारण केहे हे खिशा काम्भानिय स्वयान ছিলেন। মন্দিরের নিকট দশ বিখা জমির উপর জাঁচার সাততলা বিরাট ভবন ছিল। সেকালের কলিকাতায় "নন্দবাম সেনের বাড়ী" একটি প্রবাদবাক্যে পরিণত হইয়া-ছিল। বর্ত্তমানে ভাঁহার অন্যতম বংশধর প্রীকমলাকান্ত সেন নীলম্পি মিজ ষ্টাটে বাস করেন।

বচবাজাবে ১৮নং কেনডাবডাইন লেনে মিপ্রবীতির তিনটি মন্দির আছে। মাঝেবটি নবরত। পাশের তইটি পঞ্চরত। মন্দির ভিনটির চড়াগুলি বছ থাঁজযুক্ত। ভিনটিই निवयस्तित । शक्षत्रप्र वा नवत्रप्र निवयस्तित वांश्नात स्व क्या আছে। এই কলিকাতাতেই মুক্তারাম বাব ষ্টাট, চিৎপুর রোড সংযোগের নিষ্ট আর একটি নবরত শিবমন্দির ষ্বন্থিত। মেদিনীপুরের কানাসোল গ্রামের ঝাড়েখরের प्रसिद्धिक नवद्य । निद्यस्थित क्षरान्छः चर्मान्डे द्रार्था বায়, এইগুলি ভাচার বাতিক্রম।

উক্ত মন্দির তিনটি কোর্ট উইলিয়মের দেওয়ান জিলোক-বাম পাকডালী নির্মাণ করাইয়া ইহাদের সম্মধে একটি বৃহৎ জলাশয় খনন করাইয়াছিলেন। বর্ত্তমানে জলাশয়টি ভরাট করাইয়া বন্ধি স্থাপিত হইয়াছে। এই প্রাচীন মন্দিরগুলি ছইতে ভানটির নামও মন্দিরতলা হইরাছে। মন্দিরমধ্যে ক্ষিপ্রান্তরের স্থঠাম ৩৮ বেখ ও ৫৯ উচ্চতার শিবলিক্তর বৰ্তমান। পাকডাশী মহাশ্যের একমাত্র কলা সর্ব্যাকলা ৰেবী ও জামাতা ফুলিয়া মুখুটিবংশীয় বখুনাথ দুখোপাখ্যায়ের वरमध्य ७)- अ अविकारिन द्वीर्ट-निवामी जीमछी महस्य मूर्या-পাধ্যায়, বি-এল, মহাশয় মন্দিরগুলি সংস্থার করাইয়া উহাবের পশ্চিমেরটির গাত্তে নিমের লিপিযুক্ত বর্ষর-ফলক স্থাপন করেন।

"In 1765 this Navaratna Temple of Maheswaram has been founded by Dewan Trilokram Pakrasy, the ancestor of the present Sevait Satish Mukhopadhyaya, the temple"

পশ্চিম বাংলার বর্ত্তমান রাজ্যপালের সহিত উক্ত মুখো-পাধাায় বংশের সম্পর্ক আচে।

৩১.২নং বাগবাজার ষ্টাটে ৮নীলমণি বিলালভার प्रेनेनक्षे निवानम् अत ১**১**१৮ जात्न चानत প্রাচীন মন্দির এখন লপ্ত। নতন মন্দির্টি ছাদযুক্ত गृह् ।

भाषावाकारव वाका नवक्ष ही है वाका छाव वाधा-কান্ত দেবের তুর্গামগুপের পশ্চিমে বে নবরত মন্দির আছে ভাহাতে বনীয় মিল্ল, মিশরীয় ও তরস্কীয় রীতির বিচিত্র সংমিশ্রণ দেখা যায়। চড়াগুলি কতকটা পিরামিডের ধরণের, উহাদের भीर्य তরন্তদেশীয় খাঁজকাটা কৃত্র গল্প. উপবের চক্ৰপ্ৰলি বটকোণ। মন্দিৱগাতে কতক্পলি ফলকে মিশবীয় ক্ষিক্ষস ধরণের পুত্রলিকা আছে, বিস্ক ইহাতে কোন লিপি নাই। বর্ত্তমান রাজবংশধরপাণের কেই কেই মনে করেন উহা বাজা বাধাকান্ত দেবের পর্বের নির্মিত। বাজা বাহা-छत्वत क्या ১१৮৪ औष्टोस ७ मृङ्य ১৮৬१ औष्टोस—हेटा হইতে মন্দিরের বয়দ কতকটা অনুমান করা যাইতে পারে। পর্কোকে রাজবংশীয়গণ মন্দিরে মিশরীয় প্রভাব স্বীকার করেন। এইরপ আর একটি মন্দির চিৎপুরে সিদ্ধেইট্রজনার পশ্চিমে আছে। উহাতে ঐ সকল মিপ্রণের সহিত কোড-वाःमा वा विभाग धवानव हाम् व वर्त्वयान ।

নিমত্লা ঘাট ষ্টাটের শেষাংশের প্রাচীন মদজিলটব উত্তরে ৺মদনমোহন দভের পুত্রগণ প্রতিষ্ঠিত বৃহৎ অষ্ট্রণাল মন্দির অবন্থিত। ইহার শিবলিপ কলিকাভার মধ্যে বুহত্তম। মন্দিবটির পশ্চিম বারের শীর্ষে কৃষ্ণপ্রস্তারে কোদিত নিয়োক্ত সংস্কৃত লিপি আছে। লিপিটি বছাক্ষরে, অক্ষরগুলি সেকেলে व्यक्तिशिव धारहव :

> "बार्कोशबीन वद्यविद्यानकद्वि । প্রব্যাত শাক সমরে পিতৃরাভারেতং। সংখাশিতং বদৰবোহৰ বত-পুলৈছ গেৰৱাৰ্য পিৰলিক্ৰছৎ স্থানে ।

মর্ম :--পিতা মননমোচন দক্ষের আদেশে ভাঁচার পুত্ৰগণ ১৭১৬ শকাকাৰ উদ্ভয় সৌধে তুৰ্গেশ্বর নামক শিব-লিক স্থাপন করেন। লিকে পাদপীঠে "এরসিকলাল দাব क्षत: खीरवनान कार क्षत मन ১২০১ मान" ও "खीशकाधव দাস ভান্ধর:" নামগুলি উৎকীর্ণ আছে। এই বিশাল লিকের স্থপতি বে একজন বাঙালী ইহা গৌরবের বিষয়। निकारे यहनत्याहन एक लान । हैनि हार्रियांनांत्र एकवः नीव প্রসিদ্ধ জাহাত-ব্যবসায়ী ছিলেন। খ্যাতনামা রাম্ডলাল

পূৰ্ণচন্ত্ৰ বে উভটগাগৰ, বি-এ, বহাপদ এক লবদ लिक्ट विवादित्व, वे विवादितिए कुन चार्छ। ৰন্দৱাৰের ছই শত বংসর পরে ডাহার প্রপৌতের সময় দেবিরা লিপি অভান্ত বলিহা বৰে ভয়।

সরকার ইহারই প্রসাদে লক্ষ রুলা লাভ করিয়া বীর বৃত্তিবলে ব্যবসার চালাইয়া পরে বিরাট ধনী হইরাছিলেন। মন্দ্রিরচ্ছা হইতে একটি বৃহুং শৃত্তাল লম্মান।

স্তিবাপান মন্দির ষ্টাটের বে মন্দিরটির শিবলিক ভগ্ন হইবার পর ১৯২৬ সালে কলিকাতার কুখ্যাত সাম্প্রদায়িক হালামা আরম্ভ হয়, তাহা আধুনিক উত্তর-ভারতীয় রীভিতে নির্মিত। মন্দিরপাত্তে প্রাচীন বলাক্ষরে কোনিত লিপিটি এই:

मकाका ३१२८।

শাকে বাৰ মুগান্ধিচক্ৰ গৰিতে বেবোৰবিংশে দিনে। বাবেত্ৰিস্তত বিপ্ৰস্কল: সৌৰং দশব্যাং তিৰো । এতাৰাতিৰকো দদৌ সুৱৰ্নী কেবোপকঠে শিব। প্ৰত্যৈ পুণাৰতো মধা স্বিত্বো: গিলো: বমংবছত:।

লিপিপ্রস্তরে উৎকীর্ণ। মর্ম:—শ্রীশ্রামা নামক ব্রাহ্মণপ্রাাত্মা স্বর্গীর মাতা ও পিতার প্রীতির জন্য গঙ্গাতীরে
১৭২৫ শকাস্থার বৈশাধ মানের উনিশে মঙ্গলবার দশমী
ডিবিতে পির স্থাপন করেন। নৃতন মন্দিরটি চোটেলাল
কানোড়িয়ার ধর্মপত্নী শ্রীকানকীবার্দ্দ সন ১৩৩২, ৬ই কাত্তিক
প্রতিষ্ঠা করেন।

ঠন ঠনিয়া কালীমনিবের পাশে পশ্চিম দিকে বে অষ্টশাল ুবিত্রমন্দিরটি আছে, উহার অস্পষ্ট লিপি:

শ্ৰীৰন্দিরে সৰস্থাণি শ্ৰীমং পৃস্ণীখর: পিব:। ৰন্দিরে শ্ৰীপ্রবাদান্তা পকাকে হত্তির্গে বর্গো। (?)

শক্ষাৰ ১৭২৮। দৰ ১২১৩ দাল, ১ বৈশাৰ।
মৰ্থ:—শ্ৰীমন্দিরে শ্ৰীপ্রিয়া দাসী উক্ত শকে শ্ৰীমৎ
পূশীশ্ব শিবছাপন করেন। নিকটে শ্ৰীদিক্ষেরী কালীমাতার মন্দির শঙ্কর ঘোষ কর্ত্তক ১২১০ সালে নির্দিত হয়।
উহাতে বাংলা ভাষায় "শ্ৰীশ্রীত্রগা। শঙ্করের ক্ষম্ম মাঝে
কালী বিরাকে" ছই পংক্তিতে লিখিত আছে।

কিছু দূরে মৃক্তারাম বাবু খ্রীটের একটি অষ্টশাল শিব-মন্দিরে এক্লপ বাংলা পদ্যাংশ:

" - এ এ - তুক্তী উর এ চরণ ভরসা।

এবণুত্বন সেনের হুবর বাবে হুর বিরাজে।

সম ১২৫০ সাল।"

গড়পারের একটি ছটশাল শিবমন্দিরের ১২৫৭ সাল লিখিত। ঐক্ল বেধুন রো'র কালীমন্দিরে বাংলা পল্য:

শ্ৰী শ্ৰীপিভাৱিশী কৰভি।
কালিকে চহৰকালে তব হালা পাহ।
ক্বানের বদ-প্রাণ সকলী মিলার হ
প্রাকা ১৭৮৭, সব ১২৭২ বাল।

যদ্দিরটি নবরত্ব; সোপানে শ্রীঈশরচক্ত নান ক্লোচড। প্রধান কটকের ছুই পার্যে অইশাল শিবমন্দির্বর অবস্থিত। আমহার ব্লীট ও সীভাবাম ঘোষ ব্লীটের সংযোগস্থলের ৺কেদারনাথ শিবের অষ্টশাল সন ১২৭৫ সালের ২রা মাঘ নিমিত।



ক্ষাকাতা বলরার বোষ ব্লীটছ এ. এ. পতবতারিণী মন্দির-সহ ছুইট অষ্ট্রশাল শিববন্দির [কটো—পিছন দিক হুইডে

কৈলাস বহু খ্রী:টর একটি অষ্টশাল শিবমন্দিরের লিশি:

শ্বহেশর মহেশোধ্যং তংপদাকাজ্বিশা সহা।
প্রতিপ্রতঃ শ্রীবহেশচন্ত সেনেন তক্তিতঃ ঃ
সন ১২৯০ সাল। বহেশ-পরাকাজ্বী—শ্রীবহেশ সেন তর্তৃত্ব
নহেশর প্রতিপ্রতঃ

ভামবাজার বলরাম ঘোষ ট্রাইছ লিপিথীন নবরত্ব কালীমন্দির ও অষ্টপাল শিবমন্দিরহয় এবং নাট্যমন্দির উক্ত
বলরাম ঘোষের লাতৃপুর, দেওরান তুলদীরাম বোবের
গৌত্ত হরপ্রদাদ ঘোষের সহধ্মিণী কর্ত্ত দন ১২০৫ সালের
১ই বৈশাধ, বাসন্তী পঞ্চমী ভিধিতে প্রভিত্তিত হয়। নবরত্ব
মধ্যে হরপ্রদাদ কর্ত্তক স্বপ্রদৃষ্ট ভৈলচিত্রাস্থ্যায়ী পূর্ণাজ্ব
শ্রীভবতারিণী দক্ষিণা কালীমৃত্তি কৃষ্টিপাথরে ও মহাকাল
মর্মারে নির্মিত হইয়া প্রভিত্তত। ঐ সক্তে প্রথম শালপ্রামও
আছেন। অষ্টশাল তুইটিতে শ্রীপহরপ্রসঙ্গ প্রীপহরেশর
লিক্ষর বর্ত্তমান। হরপ্রদাদ মকালে প্রলোক্রসমন করিলে
ভাহার পত্নী দ্বামনী লাদী ও পুত্র সারদাপ্রদাদ ঘোষের
ভঙ্বাবধানে মন্দির ও মৃত্তি প্রভিত্তিত হয়। এরপ স্থাম
মৃত্তি ও মন্দির বন্ধে বিরল। সারদাপ্রসাদের পুত্র শ্রীভূপেক্ত

নাথ ঘোষ পৈতৃক বীতি অন্ত্ৰায়ী কেবসেবার বত্নশীল। যন্ত্ৰিকশুলি ভাঁচাৱা সংস্কার করাইয়াছেন।



भडेक्डाका द्विदारहीमात शाहीय **प**डेमान निरम्भित

বহুবাজার কণানীটোলার কালীমন্দির ঘট্টশাল ও উচ্চ পীঠের উপর গঠিত। উহার লিপি:

"এএকালীবাতা ক্ষতি। নেবায়ং এবাজকুক দান ও প্রায়ক্ত বান।
১৯শে কালন সম ১২৯৬ সাল।"

পটলভালা, বেনিয়াটোলার প্রাচীন অষ্টপালের পুরাতন
ছুইটি লিপির ফলক আছি। দিওপ্রায় হইয়া ছুপাঠ্য ইইয়াছে।
নিয়ফলকের শ্রীযুত অগংরাম বন্দ্যোপাধ্যায় (?) ও প্রীরমাকাস্ক" নামগুলি কটে পড়া বায়। এই শিবমন্দিরের কুটিমে
যে আধুনিক মর্ম্মর-ফলক আছে তাহার লিপি:—৺গারদাপ্রদাদ মুখোপাধ্যায়ের সহধর্মিনী বাং ১৩৫১। শক ১৮৬৬
বি: স: ২০০১। ইং মে ১৯৪৪-এ সংস্কার করেন। অপর
কোন মন্দিরে একপ সকল প্রকার অস্ব ব্যবহার হয়
নাই। মন্দিরের বর্ত্তমান মালিক বেনিয়াটোলা নিবাসী
শ্রীধগেক্সনাথ মুখোপাধ্যায় দেবতার বহু অলোকিক কাহিনী
অবগত আছেন।

কলিকাতার নানান্থানে রুগা বা ততোধিক শিবমন্দির আছে। উহাদের কোনটিতেই লিশি দেখি নাই। আহিরীটোলার প্রাচীন অইশালের লিপি বর্ত্তমান বিদেশী মালিকের কৃতিছে আরুত। শোকাবান্ধারের পদার নিকটে একটি প্রাচীন হু-উচ্চ, থাঁকর্জ্জ নবরত্ব আছে। উহাতে কোন দেবতা বা লিশি নাই। বাগবাজারের মোডের অইশালগুলিও প্রাচীন। জগরাথ ঘাটের বুগরাখ মন্দিরটি পাইকপাড়া রাজবংশের লালাবাবু (কৃক্চক্স সিংহ) প্রজিঠা করিয়াছিলেন বলিয়া প্রবাদ। নগরের সকল মন্দিরের আলোচনা এখানে স্ক্ব নহে।

মন্দিরের মত কলিকাভার বহু প্রাচীন চকমিলান বাটীর উত্তর বা পূর্বাংশে চণ্ডীমণ্ডপ আছে। এরপ মণ্ডপর্ক চকমিলান প্রাসাদের চারিদিকের তুই ভলেরই অলিন্দে যুগ্ম অভ্ৰেণী থাকে। মগুণে উঠিবার সোণান কোবাও মধ্য-স্থাল পোলাকার, কোথাও বা সমগ্র মণ্ডপব্যাপী চতছোণ। মগুপের কুট্রিমে ছুই সারি গুভ। প্রতিটি গুভ স্থাবার বছ কুত্র ভাতের সমষ্টি। কুটিমের মধ্যস্থান উত্তর বা পূর্ব-श्चारक त्मवजाब (वमी। कृष्टे ज्टान कृष्टे भारम ठाविष्टि বাতায়ন ও খারযুক্ত কক। নীচের দক্ষিণের বা পর্বেরটিতে দেবীর বোধন হয়। অন্য দিকেরটি প্রক্ষকের বাসা বা ভাগার রূপে বাবছত। বিভলের বাতায়ন হইতে ললনা-গণ পক্তা দেখেন। কোন কোন মগুপের নিয়াংশেও চামের কার্নিসের কডির প্রাত্তে ক্ষেকটি কক থাকে। कुन्त मोक्रिनिह्नत निमर्गन रम्था यात्र। हेटारे वाश्मात প্রাচীন সৌধনির্মাণ রীতি। কোন কোন মণ্ডপে লিপিও আছে। ৬নং ছারকানাথ ঠাকর লেনে প্রিন্স ছারকানাথের বস্তবাটার মণ্ডপে মহর্ষি দেবেজ্ঞনাথের আমলে "ওঁ তদ वित्काः भवमः भनम इंछानि विकिक वहनमम् छेरकीर्न ত্রতাচে। তদবধি এখানে আদি ব্রাক্ষসমাজের নির্মে ব্ৰস্কোপাসনা চলিয়া আসিতেচে। ১১ট মাঘ এখানকার প্রাকণেই মাধোৎসব হয়। বারকানাথের আমলে গণ্ডণে সাভন্বরে তর্গোৎসব হইউ।

> নং নীলমণি মিত্র ষ্ট্রাটের মিত্রবাটীর মণ্ডপে নিয়োক্ত লিপটি আছে:

"আৰ্ব্যবিৰেণ বিৰেণ রাণাক্ষকেণ বা পুরা। প্রবর্তিতা বহাপুদা পারদীরার বওপে। অবিচ্ছিলা চ বা ভত পুত পৌতাবিভি: হতা। কগবলা প্রসাদেন প্রাপ্তা সাভ পতং সরা: । ১৮০১ প্রাকা: ।

মর্ম:—রাধাকৃষ্ণ মিত্র বে তুর্গোৎসব প্রবর্তন করেন, তাহা অবিচ্ছিলভাবে তাঁহার পুত্র-পৌত্রগণ কর্ত্ব চলিয়া বিশ্বমাভার কুপায় ১৮০১ শকে শভবর্ব পূর্ণ করিল। এই মিত্রবংশ ধনকুবের রামত্লাল সরকারের জ্যেষ্ঠ জামাভার ধারা।

উত্তর কলিকাতার উপকণ্ঠন্থিত দক্ষিণেশরের বিখ্যাত মন্দিরগুলিও প্রাচীন রীতির। উহার নিকটে আরও এক স্থানে বাদশ শিবালয়াদি আছে।

মহানগরীর এই সকল মন্দির ও মওপ বাডালীর প্রাণের বেবতার পীঠ। এগুলি আমাদের পূর্ব্বপুরুষদের কল্যাণকর ক্লচির পরিচর বহন করিতেছে। বর্ত্তমান পরিবেশে এগুলির উপবোগিতা অন্থাবন করা কঠিন। জাতি আবার নিজন বৈশিষ্ট্য সম্বন্ধ সচেতন হইরা উঠুক।

# পল্লী-অঞ্চলের মেয়েদের উপার্জ্জনের পথ

#### জ্ঞীদেবেন্দ্রনাথ মিত্র

কলিকাতা শহরের উপর ছোট-বড় জনেক মহিলা-সমিতি বা মহিলা-পরিষদ আছে। ইহাদের কোন শাধা-প্রশাধা পল্লী অঞ্চলে আছে কিনা জানি না এবং বদি থাকে তাহারা পল্লী-অঞ্চলের মেরেদের স্বর্জাকীণ উন্নতির জন্য কি ভাবে চেষ্টা করিতেছে অথবা তাঁহাদের কি ভাবে সাহাব্য করি-ভেছে সে সম্বন্ধে নিজের কোন জ্ঞান নাই।

বজিশ-ভেজিশ বংসর পূর্ব্বে বধন ফরিদপুরে ছিলাম তথন সেধানকার মহিলা-সমিভির কার্য্যাবলীর সহিত আমার ঘনিষ্ঠ পরিচয় ছিল। ফরিদপুরের তৎকালীন জেলা ম্যাজিষ্ট্রেট (অধুনা স্বর্গত) মি: জে. এন. রায়ের পত্নী শ্রীমতী কনক-লভা রায় এই মহিলা সমিভির প্রভিষ্ঠাত্রী ও পরিচালিকা ছিলেন: ইনি পরলোকগত ভাঃ পি. কে. বায়ের কন্যা।

ফরিলপুর এবং অন্যান্য বহু জেলার পল্লী অঞ্চলের স্থালাকগণ পুরাতন কাপড় বারা বে সকল কাঁথা প্রস্তুত্ত করেন তাহা দেখিলে আশ্রুর্যু হইতে হর। এই সকল কাঁথা পল্লী অঞ্চলের স্থালাকগণের "শিল্পীমনে"র বথেষ্ট পরিচয় দেয়। পুরাতন কাপড়ের পাড়ের স্থতার সাহাব্যেই এই সকল কাঁথা প্রস্তুত্ত হয়। কাঁথাগুলির উপর নানা রঙের নান্য রক্ষমের চিত্র থাকে। অনেক সময়ে দূর ইইতে কোন কোন কাঁথাকে 'শাল' বলিয়া শ্রম হয়। এই সকল কাঁথা দেশ-বিদেশে খ্যাতি অর্জন করিয়াছে এবং দেশ-বিদেশের বহু প্রদর্শনীতে পুরন্ধার লাভ করিয়াছে। বাংলাদেশের পল্লী-অঞ্চলের "কাঁথা-শিল্পের"র কথা অনেকেই জানেন। বিদ্ধ বর্ত্তমান সময়ে পল্লী অঞ্চলের বহু শিল্পকলা বেমন লুপ্ত হইয়া বাইতেছে "কাঁথা-শিল্পেও সেই অবস্থায় পৌচিয়াছে।

এই সকল কাঁথা দেখিয়া শ্রীমতী কনকলতা বাবের মনে হয় বে, বে সকল স্থালোক এইরপ কাঁথা প্রস্তুত করিতে পাবেন তাঁহারা অনায়াসেই নৃতন কাণড় এবং নৃতন হতার সাহায়ে নানা রকম ডিজাইনের 'বেড কভার' (বিছানার ঢাক্নি), 'টেবিল রুখ' (টেবিলের ঢাক্নি) প্রভৃতি প্রস্তুত করিতে পাবেন। করিদপুরের মহিলা সমিতির কার্য্যাবলীর মধ্যে প্রধান কান্ধ ছিল—পল্লী-অঞ্চলের হৃংস্থ স্ত্রীলোকগণকে 'বেড্ কভার', 'টেবিল রুখ' প্রভৃতি প্রস্তুতের কান্ধ শিক্ষা দেওয়া এবং উাহাদিগকে এই কান্ধে নিযুক্ত করিয়া উাহাদের উপার্জনের পথ স্থাম করিয়া দেওয়া, অর্থাৎ তাহাদিগকে স্থাবলখিনী করা। এই বিবরে বলীর সরকারের শিল্প-বিভাগের তৎকালীন অধ্যক্ষ মিষ্টার এ, টি ওয়েইন শ্রীমতী কনকলতা বায়কে বংগ্র সাহায্য করিয়াছিলেন। ক্ষিত্রের মহিলা সমিতির স্থানে এক জন মুসলমান ব্রক্ষ

নিযুক্ত হয়। ইহার নাম ছিল মক্র্ল মুধা। শিল্প-বিভাগ হইতে ইনি মাসিক পঁচিশ টাকা বেতন পাইতেন। আমার উপর পলী-অঞ্চলের ভঃস্থ খ্রীলোক নির্বাচনের ভার ছিল।

প্রীমতী কনক্ষতা বায় নৃতন কাপড়, নানা রঙের নৃতন क्रण ज्वर नानावकरमव 'फिबाहेन' खाँकिश मक्वनरक দিতেন। 'বেড কভাব' বা 'টেবিল ক্লথের' কি 'সাই' रहेर्व, প্রত্যেকটি कि 'ডিজাইনের' হইবে ইভ্যাদি তিনি মকবুলকে বিশদভাবে বুঝাইয়া দিতেন। অঞ্চলের নির্বাচিত স্ত্রীলোকগণের মধ্যে মকবল কাজ বণ্টন করিয়া দিতেন এবং বণ্টনের সময় কি ভাবে কাক হইবে তাহা প্রত্যেককে বুঝাইয়া বলিতেন। স্ত্রীলোকপণ বধন কাজ করিতেন, মকবুল বাইয়া দেখিতেন কাজ ঠিক-ভাবে হইতেছে কিনা এবং প্রত্যেকের কান্ধ কতদুর স্বগ্রসর হইয়াছে। প্রভ্যেকের কাজ শেব হইলে মক্রল ভাষা সংগ্রহ করিয়া শ্রীমতী কনকলতা রায়কে দিতেন। তথন তিনি প্ৰত্যেক কাৰে কত কাপড় লাগিয়াছে, কত স্থতা লাগিয়াছে এবং প্রত্যেককে কালের কম কি পাবিভামিক দিতে হইবে ভাহা হিসাব করিয়া প্রভ্যেক জিনিষের ( বেড কভার বা টেবিল ক্লখ ) মূল্য নির্দ্ধারিত করিভেন। এই সকল জিনিব কলিকাভায় হোম ইণ্ডাষ্টিজ এসোসিয়েশ্রমে প্রেরিত হইত এবং তাহারাই উহার প্রধান বিক্রেডা ছিল। ইহা বাতীত শ্রীমতী কনকলতা রায় তাঁহার স্বান্ধীয়-चक्रन এवः वक्रवाष्ट्रवगरनद मर्त्या वह क्रिनिय निर्क विक्रम क्रिएजन। (र नकन फेक्र नतकाती कर्षाताती क्रिन्नशूद्र বাইতেন তাঁহারাও খ্রীমতী কনকলতা রামের নিকট হইতে ना किनिया भाविएकन ना। अहे कारबंद करन कविमन्द **महरदद निक्**षेवकी शबी चक्रानद श्राप्त छहे गठ कन छः ह ন্ত্ৰীলোক মাসিক দশ টাকা বিশ টাকা পৰ্যন্ত উপাৰ্কন ক্রিতে সক্ষ হইয়াছিলেন। किंड आधारमत तमान সাধারণত: বাহা ঘটে. এ কেত্রে তাহাই ঘটিয়াছিল: অর্থাৎ শ্ৰীমতী কনকলতা ক্লায়ের ফ্রিলপুর হইতে চলিয়া খাসিবার পর ফরিদপুর মহিলা সমিতির মৃত্যু ঘটে। প্রায় ছই শত অন জীলোককে ছ:बक्टिव জীবন জডি-বাহিত করিতে হয়।

এইরপ কত বক্ষের কৃটার-শিল্পের প্রবর্তন করিয়া পদ্ধীঅঞ্চলের কত হুছে ত্রীলোককে খাবলছিনী করিয়া উল্লেখ্য
মূখে হাসি ফুটাইডে পাবা বায়। কিছু কবে কে ? আমরা
বড় বড় পরিকল্পনা কইয়াই ব্যস্ত; ছোট ছোট পরিকল্পনার
আমাদের বে মন উঠে না।

### विक्रमुम्द्रधन महिक

বিভ্ৰমা কি অভিশাপ নহে জ্বা।
জ্বাও বিপুল স্ভাবনার ভরা।
ভাহার প্রধান ভোগই অতীক্রির,
বৌবন চেরে নহে কম লোভনীর।
নীরব বহির্জগতের শব্ধ,
মৃদিত কমলে প্রমর আবদ্ধ।
শক্তি তথনো ধরে—
শতির কোমল অর্থে গে পুনঃ
নব মৌচাক গতে।

5

জনাই কৰায় সৰ্বাৰম্ভ ত্যাগী,
মাছয়কে কৰে চকোবের হুখভাগী।
তথন কামনা কিছুই থাকে না আৰ,
কৰ্ম্মে ও ফলে চুয়ে নাই অধিকার।
পাবাণ হইয়া এ থাকায় আছে হুখ
নামচন্দ্রের পেতে পাবে পদযুগ।
দেবীকে বাবে না দূৰে—
এ শব-সাধনা নিজ অভঃপুরে।

করে ভত্ন হতে অর্জন্ত মন—
স্কাবাদিত বদের আবাদন।
স্ক্রারেও আনন্দে রহে আপি'
নিশীধ-রাভের স্র্রোদয়ের লাগি।
এই জীবনের জরা স্ক্রাভবাদ,
স্ক্রিবেকর দে এনে দেয় আবাদ।
শোষা দে নয় নয়,
বিশীণা বেবা প্রভাগের
মৃক্রিব কথা কয়।

শুটি কেটে মাহা বাহিরিবে প্রজাপতি,
তাহারি লাগিয়া চলিয়াছে প্রস্তৃতি।
শিশু গরুড়ের পাধায় মাসিছে বল,
হুধার ভূফা করে তারে চঞ্চল।
সদাগর তার কমায় পণ্যভার
ভূফানের পথে পাড়ি তার নৌকাত।
ভাবে সে ম্পে ম্পণ—
ভরা গলার তরকে সব
রূপের নিরঞ্জন।

## মায়ের কোল

#### একালিদাস রায়

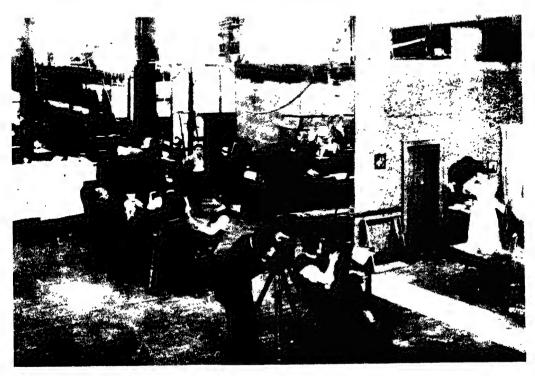
বছ সদী মিলে হেখা করিলাম নানা রকে খেলা।
পশ্চিমে চলেছে স্থা, ঝিকিমিকি বেলা।
পাখীরা গাহিছে গাছে দিনান্তের গান।
বধুবা 'জলকে চলে', মাঠ হ'তে ফিরিছে কুবাণ।
ঘরমুখো গক্ষপ্রলি, শ্না হ'ল মাঠ,
খেমে আলে কোলাহল, ভেলে বার গ্রামান্তের হাট।
হেলাভবে করি খেলা, এবে ক্ষণে ক্ষণে
মা'র কথা পড়ে শুরু মনে।

স্থীরা স্বাই নাই, অনেকেই ফিরিয়াছে ঘরে, মার কোলে বসি ভার। বুঝি সন্ধ করে। ক্লান্ত হ'ল কেহ-ঘন। মন আর লাগাতে না পারি, ভবু খেলে বাই কেন ? বিভিনাকে। গুধু বাই হারি। ধরিরা রেখেছে মোরে নৃতন ধেপুরা অকারণে। মার মুধ পড়ে ৩ধু মনে।

শনেকে কিরেছে ঘরে। এসেছে নৃতন সব সাথী,
সাধ বার ভাহাদের সাথে রই মাতি।
রোদের নাইক ভেজ, বিকিমিকি বেলা,
আজিকার মড ভবে সাল হোক খেলা।
খেলা ভালো লেগেছিল, খেলা মোর মনটি ভূগালো।
ভবু ভাবি এর চেয়ে মায়ের কোলটি আরো ভাল।
মোর প্রপানে চেয়ে আছে মা বে ভ্বিত নরনে,
মারের কোলটি পড়ে মনে।



নিউ জারসীর, ওয়েই অরেঞ্জ-এ ১৮৯৩ খ্রীষ্টাব্দে নিশ্মিত, প্রথম চলচ্চিত্র ষ্টুডিও



১১৫ খ্রীষ্টাব্দের, নিকাক চলচ্চিত্রের যুগের একটি ষ্টুডিও



এরোপ্লেন হইতে ক্যালিকোণিয়ার কালভার বিটির মেটো গোল্ডউইন মেয়ার ইুডিওর দুগ্র



আধুনিক চলচ্চিত্রের ফিল্ম তোলার দুগু

# वसी योज

#### वित्रामभन मृत्याभागात्रं

-

পরের বিদ বাইরের খরে বলে প্রভাভ কর্ব তৈরি করছিল
—একথানি রিক্সার টুং টুাং আওরাক ভার কানে এল।
গাড়ীটা ওবের বরজার এলে ধারল। কৌডুহলী প্রভাভ রুথ
ছলে বেগলে এক অবভঠনবতী বর্ষীরগী ওবের বাড়ীর মধ্যে
প্রবেশ করছেন। বেশ কোহারা চেহারার গৌরবর্ণ এক
নহিলা—পারের গভির সলে কিছু আভিজাভ্য বহন করে
চলেছেন। পরিচিভ কোন আলীরার সলে ওঁর- সায়ুপ্ত
প্রভাভের বনে কাগছে না—অবচ উনি শোকে সহায়ুপ্তভি
বেশাভে এনেছেন—এট নিক্তিভ। অনভিবিনত্বে সলী এনে
সন্দেহভঞ্জন করলে। বললে, গালা—বেক কোঠাইনা এনেছেন। বছবাড়ীর নেক কোঠাইনা।

এঁ্যা থিভাভের বিশ্বর কাটলে সে ব্যন্ত হরে উঠল।
একটা ভাল আগন পেতে দে—আর—,আর বে কি করা
উচিত প্রভাভ তেবে ঠিক করতে পারলে না। ওর আনদক্ষে
হাপিরে লজাটা প্রবল হরে উঠল। বে সকোচবলে অনিবেবকে
কোন দিন রাজীর নব্যে আহ্বান করতে পারে নি ভারই
স্থানতে সে বিশ্বচ হরে বলে বইল। কেন এলেন বেজ
জার্মীইনা ?

একটু পরেই বেক ক্যেঠাইবা এ বরে এলেন। বললেন, এডটা ব্যস্ত হত্তে উঠলে কেন বাবা ? এ ড আনার বাতির ক্রোবার ভারণা নর—লৌকিকতা করডেও আসি নি।

ভৰু আপনি এনেহেন—) ক্ষমতার প্রতাতের কঠ অবক্রম হ'ল—চোধের কোল হ'ল বাপাছের।

বেজ জ্যেত্রীইবা বললেন, দা এলে বে পারলাম মা বাবা।
আমরা প্রভিবেশী—পরস্পরের বিপদে আপদে বলি সাহায্য
দা করি তবে মাছ্য হরে অবেছি কেন? বল ভূমি—হির
হও।

হু' চোবের বালা ভরল হবে গও বেরে গড়িরে পড়ল। প্রভাভ উঠে এলে প্রণাবের ভলী করভেই উনি বললেন, আপোচে প্রণান করভে নেই—এননিভেই ভোনাদের আধীর্মাদ করছি। প্রথম আর সব চিন্তা রেবে কি করে বার উভার হবে সেই কথা ভাব। অবভ উপার একটা করবেনই ভগবান।

আহি একটা কাক সেরে আগব বেক কোঠাইবা, লগী বললে।

সে কি রে—আমি কি এবনই বাজি বে, ঠাকুর বেশার নত ঠার ইাড়িরে বাক্ষি অবাক হরে।—পরে প্রতাতের পাবে চেবে বললেন, একট অন্থরোব ভোষাকে আমি করব বাবা, বল রাধ্যে ? रत्य ।

ৰাৰে আৰু বুৰ্বে প্ৰাছে খনচ ক্ৰৰে। লোকের ক্ৰীৰ বেচে ভাষসাগৰ, বুৰোৎসৰ্গ ক্ৰৰে না বল।

দাদসাগর ? সে সাধ্য আমার কোবার ? কোন রক্ষরে ভিল-কাঞ্চন সেরে দায়হক্ত হতে চাই।

বেশ ত—কিছু ক্ম লোক বাওয়ালে বা বাট পালং দাম
না করলে, কি হ্বয় না লাগলে পূর্বাপুরুষেরা কিছু ক্ম
উঁচুতে উঠবেন না। আমি গুনেছি—মাহুবের নিজের কর্ম
অহুসাল্লা বে কল ভোগ করতে হয় ভারই জের গুরু সলে
বার। নইলে বভই সোনা উৎসর্গের আক্সন্ত কর না কেন—
এমন কোন মন্ত্র নেই বা নাহুবকে এক জারগা বেকে আর
এক জারগার টেনে ভুলতে পারে।

কানি বেক কোঠাইনা—কানল কিনিস হ'ল প্রভা-ভজ্জি বা নাছ্যকে বহু থেকে একের আপ্রান্ত নিম্নে বার—ক্ষরে সেই একও নাকি বাকে না। বাই হোক—সে নব বছ সাবনার কথা আবরা আলোচনা করতে পারি না—কেননা আবরা বুবি অলই।

লখী বললে, আছো বেদ জোঠাইবা—এ দৰের কর্ম দার এক করে কেন বাছ্য ভোগ করে ? বেহটা ধ্বংস হলেও—

ষেদ্ধ খোঠাইবা হেসে বললেন, এ ত আমার কথা নর বা,
—বাঁরা অনেক থানেন, অনেক বোবেন—পণ্ডিত আর
বার্ষিক নাছ্য—বাবি বারা—তাঁরাই বলেন, দেহটা বোলস
নাত্র—আত্মা অবিধ্বর—বার বার কর্ম অছুসারে আত্মা সেই
বোলস বহলান। স্বভারও ত বলেহে—তাঁণ বর হেডে নতুন
বর পরিবানের বভ আত্মা নিয়তই বোল বহল করছেন।

কিন্ত আত্মাকে ভ বেৰা বাম না।

দেখা ভ অনেক বিনিগই বার না—ভাতেই কি বেবে বেওরা বার জিনিসট নেই ? আজা বল ভ বাভানের কি রূপ ? আবার এবন অনেক জিনিন কেথেছ—বার রূপ বলভে পার না তুনি।

কিছ ৰাভাগকেও অমুভৰ করা বায়।

আত্মাকে অমুখ্য করা যার, দে অমুজ্ভি ভোষার আহার হয়ত আলে না, কিন্তু বারা প্রাবিভার পণ্ডিত —তাঁরা ভাষেদ এ সব।

আৰি শুনেছি এই আছা অৱের হারা হিন্ন হর বা, আগুনে পোড়ে বা, বাভানে বিকৃত হর বা। পরপাভার বেষন কলের হাগ লাগে বা—কিছুই ভাতে লেগে থাড়ে বা। ভবে কেবন করে করাভারের কর্মনল লে বরে নিরে হায়—আর বে বৃত্তি, বে বাসনা এক করে ভার কর্মের কল ভারী

করে তা করাভর পর্যন্ত অমূসরণ করে ? প্রতাভ প্রশ্ন করলে।

বেক জাঠাইনা বললেন, দেকথা কি আনিই বুবিরে
বলতে পারি ? তবে বেমন ডনেছি—কথক ঠাকুরের মুখে—
সেই মত বলছি পোন। এক দিন কর্ম আর কর্মকা নিরে
কথা ছচ্ছিল। কথাতরের বাসনা কেনন করে আত্মাকে
আত্রা করে জীবকে সেই কর্মকা তোগ করার ভারই
কথা ছচ্ছিল। কথক ঠাকুর বলেছিলেন, দেহ নই হলেও
বাসনা নই হর না। এর একটা সোলা গুঠাত দিছি পোন।
বেমন বর, একটা ক্রালে করেকট গোলাপ কুল মুডে নিরে
এসেছ। তু'দিন পরে কুলগুলি গুকিরে গেলে বর্ধন কেলে
বিলে ক্রনাল থেকে—তথন কুল বইল না ভো ? কিড গড়ও
কি লেগে বইল না দেখানে ? তেম্বি বাসনা, ওই গছের মত।

প্রভাত কৌতুহনী হরে প্রশ্ন করনে, কিন্ত আছা কি করে সংক্রম প্রহণ করেন ? ভিনি তো আকারহীন কোন প্রার্থ—

আমাদের দেহটা পঞ্চুতে গছা মান ছো ? বেন।
এবন কবা হচ্ছে এই আবারে আছা কি করে আগেন ?
আমাদের শারে বলে—বেহু কর হলে আছা ব্যোন আলর
করে। ব্যোবে কন-সঞ্চারী বেবের সকে নিশে বৃটিবারার সে
নেবে আসে পৃথিবীতে। সেই নাটতে কেন্তু বারণোগ্রোগী
শভ করার। শভায়ুরে আল্রের নের আল্লা—সেই শভ-কণা
মাল্লবের রক্ত মাংল মজাদি পোষণ করে।

লখী বৃশ্ব-উণচানো যৱে বললে, বাং সুলৱ ভো। আৰায় এই রক্ষ কথা কিছু শোনাবেদ বেক ক্যেঠাইনা।

সৰ কথা সৰ সময়ে কি ভাল লাগে যা। মনের অবহার কথা কথনও কান বিবে মনের মনের মনের নেরা গৌহর, কথনও বা আর এক কান বিবে বার হবে বার। জানীরা বলেন, কিছুই নাকি নাই হব না পৃথিবীতে। সিপ্রা সেলিন কি একটা বই থেকে পজে পোনালে—আকর্ষ্য কথা। নাকি আৰু অবি পৃথিবীতে যত দেশের যত নাক্ষয় করেছে—ভারা যত কথা বলেছে—বত কেঁলেছে, হেলেছে—বীর্থনিখাল কেলেছে—সবই পৃথিবীর বার্ভারে রেকর্ড করা রবেছে। বেসম কথা বা গানের জ্বনিতে রেকর্ড তৈরী হয় আমরা প্রারোকোনে ভা অবিকল ভনি। তেমনি শক্তিমান যত্র তৈরি হলে ইভিহানের অনেক সভ্য আমরা বৃবতে পারব। যাই হোক—কর্ম্ম অসুসারে বে কল এ তো আমরা বৃবতে পারব। বাই হোক—কর্ম অসুসারে বে কল এ তো আমরা হাতে হাতে দেখছি।—বেল-ক্যেঠাইনা হাললেন। একটু থেবে বললেন, আমালের বাভীটাকেই দেখ না।

আপনি ভো ভত বোবেন—আপনি কেন—

ঠেকাতে পাৰি না। কেনন কৰে পাৰৰ না— কৰ্মক বঙৰ কৰাৰ নাব্য তো আনাৰ নেই। বাঁহা বাননাৰ বপে অলখীয় নেবা ক্ষয়েলন—ভাঁৱা লখ্যীয় প্ৰবৃত্তা আশা ক্ষয়েন কোন বুৰ্বে ? আমাৰের বড় হলবরে তো গেছ—এই বরেই লক্ষী-বিদারের বাজনা প্রথম বেজেরিল। নেই সর্ক্ষাণা ক্ষমি আমি চেটা করেও বছ কর্মভ পারি মি। কেম ভান ?

গানিক চুগ করে বেক জাঠাইনা কি বেন তেবে নিলেন।
পরে বললেন, তানেছ তো ঠাকুর রামক্ষকেরের পর। পর
কূলে ক'কন বেচুনি এক দিন এক বাগান-বাকীতে আপ্রর
নিরেছিল রাজিকালে। লে বাগানে নানা জাতীর কুলের
গাছ—রাজিকালে নেই সব কুল কুঠে এমন পদ বার হচ্ছিল
বাতে করে ননে হওরা আক্ষ্যি নর মন্দনকাননের নব্যেই
বুলি এলে গেলার। কিছ জনেক রাত পর্যান্ত কেচুনিরা
বুরুতে পারে নি সেই কুলর পদে। ওলের বাহের চুবভিতে
ছিল বাঁসটে-গদওরালা ভাকভা—ভাই শিবরে রেবে তবে
তারা বুনোতে পারে। আনাদের বাকীটাতেও···আফা আর
এক দিন বলব লে কবা। আক্ জনেক বকেছি—এখন উঠি,
ক্ষেন্ত প্

উঠবেন । প্রভাভ বেন বাছব কগতে কিরে এল। আরও কিছু বলুন না এই রক্ষ কথা—ভারি ভাল লাগতে।

পাৰ্গল ছেলে । এ সৰ পল বেদী শোমে না।
ক্ষেম—বেদী শুমলে সংগার ভাল লাগবে না ।

মা বাবা—শ্রশাম-বৈরাগ্য আর আগল বৈরাগ্যে আকাশপাতাল ভকাং সে আমি জামি। তবে ববন ক্রেম্ কিছুই
তাল লাগছে মা—সংসারে টানাটামি—উপার্জন কম—
ভীবনের সাব-আশা মনে হজে, সবই নট হরে গেল—ভবন
এ সব কবা শোনাভেও অকল্যাণ হর। এসব কবা ভনলে
কেনন একটা আলভ বেন ননকে ভরিরে তোলে—কাল হেডে
পালিরে বেভে ইছে হর সংসারের বাইরে, স্বাইকে কেলে
লারিড এডানোর চেটা—এইটে প্রবল হরে ওঠে। এ তাব
সন্ন্যাসের বভ—কিড সন্ন্যাসীর নর। এই ডাজ বেডে,
কর্তব্য বেকে পালানোর ভাবটাই নাত্রকে নট করে দের।

ভা হলে ছ:ৰ ভোগ ক্রাটাই বুবি---

কিলের ছংগ ? যভ বিন বাবে বুববে— ছংগ ছারী নর— বেনন নদীর কল বরে চলেছে তেননি ছংগের স্রোভ। যথন চেট লাগে ভবনই ভা বুবি—ববন চেট চলে বার ভবন আনন্দ হর। বেনন অবকার নামে একেবারে আলোর অভাব নর, কিছু কর আলো; ভেননি ছংগ নামেও সাগর-পরিনাণ ছংগ মর—কিছু কর সুগ। আগলে সুগ বা ছংগ ওই কলের স্রোভ—এক জারগার ক্ষমণ্ড থাকে না।

দ্বী বললে, এক বলেহেন ব্যেঠাইনা—কাৰ কংকেই হয়। পিপভেকে দেব—কোনাহিকে দেব—পঞ্চপন্দী কছ-কানোৱাত—

বেৰ প্ৰভাত, বেৰে আনাত্ৰ কত বোকে। হংবের দ্বধান ঠেলে কেলা বাৰ ভবু কাকের হাতিয়ার বিষে। বেৰেকেয় কাল তাই অসুবস্ত--আপারও অবত শেব বেই। আমর। বাদ তেওে পড়তাম--তা হলে হা-অরের সংসারে সমী-পুরোর আরোজম করত কারা। আজা, উঠনাব।

প্রভাত বললে, একটা তথার উত্তর দিবে বান। আমাদের পাল্ল কি বলে বড়া সহকে। কোথার বার বাছস-

এক দিন নচিকেতা এই প্রশ্ন করেছিলেন ব্যরাজকে।
কি উত্তর দিরেছিলেন ব্যরাজ ?

ষ্ট্যর দেবভা ভিনি—ভিনি ওণু ভাষেন এই তাঁর কর্তব্য। বে দেবভা সব কিছু স্টি করেন—বে দেবভা পালন করেন—বিলি ক্রংস করেন—তাঁরাও নিজ নিজ কর্তব্য করে বান ওব্। কেন স্টি ছিভি, কেনই বা লয়—এই আমের অবিকারী নাত্র এক জন—নিয়ামক ওবু ভিনিই—সেই পরন পুরুষকে কানবার ভঙ্ট কর্ম্ব ভক্তি বা আন্নার্গের ভপভা।

কেট ভেষেত্ৰৰ তাঁকে ?

কোনেছেন বৈ কি—কিন্ত আমাদের এই আম দিয়ে তাঁকে উপলবি বা প্রকাশ করার ক্ষতা কৈ—যে তাঁকে কানতে পারব বা কামাতে পারব।

ওসৰ কথা থাক প্ৰভাভ। ভোষাদের অব ক্ষার ব্যবদ নিয়ম আছে এসৰ আলোচনায়ও ভেমনি নিয়ম আছে। এ বিষয়ে কিছু পড়াগুনো না থাকলে—

का करण साधारणत और निका कि हुई यह वनाइम ?

ভাই কি বলনাম, ভূমি সাহিত্যের হাত হয়ে যদি বিজ্ঞানের ভছু মা বুক্তে পার, যদি ঘর্শন ভোষার কাছে শক্ত ঠেকে সে খোষ মিক্তর ভোষার সাহিত্য-শিক্ষার ময়।

त्म दिख-वात वा माहेब-

निकात क्यांत अकी क्यां मान शक्त । किह्मिन चारन ওলেশ্ব কোন নারেব নাকি বেডাতে এলেছিলেন আমাদের বেশে। ভিনি ভবেছেন এ বেশে শিকার প্রসার নেই-বিশেষ করে বেবেরা স্বাই প্রার অশিক্তি। সভ্য বিব্যা পরীকার কৌভূহল নিরে সারেব গেলেন এক গরীব কেরাণীর বরে। গিরে বা দেবলেন ভাতে আকর্ব্য হলেন। ভার পর তিনি চিটি লিখলেন তার স্ত্রীকে—ভূমি শুনে আঞ্চর্য হবে বে, বা ভবে এসেছি এভকাল ভারভবর্থ সহতে, ভা সম্পূর্ণ ভূল বলেই ষনে হছে। কল্পা করতে পার কি একট দশ-এগারে। वहरवात त्वरव---वश्व वक् अक्के जरनाव कामारक कि जुनव ভাবে। বেরেটর বা আঁছুর বরে—বাপ করেন আগিসে চাকরি। আরও চুট ছোট ভাই-বোৰ ভাদের বাওরাবো আদর আসার বেটানো এ-সবও আছে। আন্তর্বার কবা---খইটুকু ছোট বেছে বাপকে আপিলের বাবার বিলে। ছোট णारे-त्वाम इंग्रेटक माधवारम, वाधवारम-नारक भवा विरम । বেৰণ বন্ধ চলে নিভূতি-তেমনি অবায়ালে একট বিদ সুশৃখলার চালালে সংলার। ছুবি কি এবনও বলবে, এ বেরের নিক্ষা-দীকা মেই ? বই পড়ে মি বলে সে সংসার চালমার দারিত্ব বহুন করতে পারে না ? এবন সম্পূর্ণ নিক্ষা আনাবের দেশে ত চোবে পড়ে মি—বে নিক্ষার সংসার চলে এবন অনাবাসে। বলতে বলতে উনি সদর-দরকার এলেন। হেসে বললেন, তাই বলে মনে করে। না আমি বই পড়ার নিক্ষেত্রটি, শিক্ষার বে আর একটা দিক আছে—বেটা কীবনযাপনের পক্ষে বেশী দরকারী সেইটকে বাদ দেওরা বার না—তর্মু তাই বলছি।

উনি চলে গেলে প্ৰভাত লন্ধীর পানে চেরে হাসল। বললে, কথাটা আমাহের পক্ষেও থাটে—কি বলিস ?

সভাবেলার ভক্তপোষে বসে বসে প্রভাত ঐ সব ক্থাই ভাবছিল। শিক্ষা বলতে কি বোঝার ভার অর্থ আৰু অভ্যত্ত আই হয়েছে। বন থেকে অনেক্থানি গ্লামিও গেছে বুছে। জীবনে নানান সরভা আছে,—ঘটনার চাপে প্রছিব্দ হয় সেই সব সমস্যা—ভাষের ছায়ার পথ হয়ে বার অভ্যায় —সরল পথ বছ নাথা-বাছ বেলে বিভ্রাভ করে পথিককে।…

টুং টুং টুং। একথানা বিলা বেন অন্তর থাবল। প্রভাতের চিন্তাভদ হ'ল। ভানালা দিরে দেখলে একথানা বিলা থাবল গিরে ভেতলা বাড়ীটার সাবনে। বিলা থেকে নামলেব ছুল-বপু দীর্ঘকার এক মাহ্য। অভ্যন্ত বিশ্বরে প্রভাত লাকিরে উঠল ভক্তপোব থেকে। এ নাহ্যকে বে প্রভাত ভাল করেই চেনে। অভিনাত-স্বর্মী বংশ-কৌলীত-গৌরব-পুঠ ইনি কেন এসেছেন—কাকন-কূলীন অর্দ্ধেলু রাবের কাছে। এ কি নিমন্ত্রপের ব্যাপার অথবা— । কোকুলী হরে প্রবাে আব বন্টা লাগে বেনন প্রথ ভলিতে ও-বাড়ীতে চুকেছিলেন জিলোচন সেন ভেননি ক্লান্ত পা টেনে বেরিরে এলেন। অর্দ্ধেলু রার উক্তল তাসির হারা উক্তে প্রভাত্যনন করেছিলেন—বিদান্ত দিলেন উক্তল তাসির হারা উক্তে প্রভাত্যন করেছিলেন—বিদান্ত দিলেন উক্তল তাসির বারা ভব্নে । জিলোচন সেনের রুখনানা কেবা গেল না, বিলা ক্লান্ত অবসম্ব নাছ্যইকে বহন করে টুং টুং শব্দে কিরে চলল।

VO R

তিলেখন প্রার শেষ হয়ে এল। আর একটা বিদ বার বাজি। সকালটা কেষম প্রীহীন লাগছে। কাল হয়তো সে বর্গাই দেখেছে, কিছ তা সুখ-বর্গ বা হুঃবর্গ বর। তারই মনের চিছা মানা গলি বুঁজি দিরে বড় রাভার পৌহবার কচ প্রাণণণ করেছে, কিছ অবভারের বব্যেই ছুরে ছুরে মরেছে সে। এত সভীব তার কগং। গলির এ প্রাভে একট আবুনিক সৌব আর বার্থানে একট প্রাভালের প্রানাদ—বন্দীলার হু' প্রান্থে ছুট কটক—হুটই কুছ। বাধার উপরে আকাল নেই—পারের ভলার বাট নেই—চারিদিকে আছে ভরাল অবভার। সেই অবভারে আজকের সভালটা পর্যান্থ বিষয় হুরে ছুরেছে।

अवन्त (कडे डेर्टन नि । करन कन अरमस्य-कांच नावाद

বোৱা থঠা বেবের গড়ে হড় হড় গড় উঠছে— কি বিঞী শব।
কলটা বহু করে ও পর্যে বেরিরে পড়ল। শীভের সকাল
সালটা এখনও নির্ধা। বহু জানালার কাঁচে জালোর
রেখা—একটা ভরল খোঁরার চাধর, শীভেরই বালা বেন—
গলিটা নেই চাধর রুড়ি বিরে আলভ উপভোগ করছে। প্রভাত
বার হুই পলিটা পরিক্রনা করলে। পলিটা ক্ররাগত পাশ
কিরেছে। কোন বাড়ীর কঠরে কি হেলের ভাষা, কোনটার
বা বুড়ো বাহুবের কালি—কোনটার প্রভাত—ভোত্ত পাঠে
বরনীরা পঞ্চভা ও পঞ্চ পুণ্যালাকের নাব ক্ষমিত হরে উঠল।
এখনি কল-ভলার বাসনের ও বাড়ীর হুরারে হ্রারে বি-এর
কড়া-নাভার কর্প ক্ষমি উঠবে। করলা-ভালার শক্তে—আর
উছ্বে বাঁচ দেওবার খোঁরার বন জালে গলিটা আহি আহি
ভাজ ভাতবে।

গলির ৩-যোড় থেকে বেরুলেন এক ভত্রলোক—সর্বাদ তার আলোরানে চাড়া। বাধার উপরে আলোরানটা বোনটার বভ ররেছে—চলার সদে সদে বলে বলে পড়ছে বাধা থেকে—চান হাড বিভে আবার সেটা উটিয়ে বিছেন। চলভে চলতে ভিনি প্রভাতের সারনে এসে পড়লেন। প্রভাতকে কেথেই চনজে উঠলেন এবং আলোরানটাকে টেনে নাড় পর্যান্ত চেকে কেলে পান্ন ডাটাভে চাইলেন।

প্রভান্ত উাক্তে চিনতে পেরে ভাক্তে, এত ভোরে কোণার চলেছেন ভাল্যা স্থায় ?

কে-প্ৰভাত ? আৰু যাব কোপাৰ বাবা-বোৰ প্ৰাত:-যাব গেৰে তবে ৰোঞ্চানে গিৰে বিদি। নইলে বে ডাঞ্চেম্ব চাপ-নাওয়ায় সৰয় ত বাড়ে না। হয়েক্স-হয়েক্স-

अक्ट्रे केकार्यम-अक्ट्री कवा किळाला क्यर ।

मा बाबा--- अरबमा वदक जानव क्यांबारवद निविच-पर्द. तिहे भवत छवित्वा। अवम (वना हत्त शिल-शिविक-भावित्य। इम् इम् क्रम क्रिन क्रम भावित्य। श्राचन व्यवाक ছবে ওঁর গমনপ্রের পানে চেরে বইল। সে বেশ বুরলে---बाबवा बनाव ७८क अधिरव हमराव ८०डी कवरवन । धैनि रव चार नविचि-चरत चानरवम मा अप्रै विक्छि। रूम १ वर्धार বিচাৎ চৰকের মত এই বহুভের উপর আলোকপাত হ'ল। चार्कच्य हार्ड छात्र लिया विविधानित चानिर्धाय---विक विक मबल ब्राणावहीरे विटमन चारमान म्मंडे हरत छैठेरत । अवारे লমাজের শিরোভূষণ--সর্বজনমান্য। দেকালের পরীসমাজ मिक्कि--- अध्यक्तात जवाक्शिका (व्यवस्त TIP die करदर्दम । छादा हशीवश्राम चरन माछित नानवा करद्रम मा---শহরের প্রচেরে চওড়া সভকে গাড়িরে রৌপ্যবত হেলিরে পর্ব-নিৰ্কেশ করেন। আইনের বারা ওই রৌপান্তের স্পর্নে মাৰাম অৰ্থে প্ৰযুক্ত হয়। সাধান্য লোমীয় হও শাসন-বিবাদে चारब--- जनावाना राश्यव माखि रायाव विवास चारेश्य (भरे.

কারণ বে বরণের অপরাধ আরু অস্কৃতিত হচ্ছে তা আইলে হিল অক্তিত।

দীপাৰের বাড়ীর বরজা ধুলে কে বেন বার হ'ল। এবিক পাবে লে কিরে চাইল কিনা কে জানে, কিছ এবিকে না এবিরে সে বিপরীত পথে চলতে লাবল। বনে হ'ল দীপাই বেন। ভেষনি বনু ভলিবার ও পথ চলতে—গাবের কার ভোটটা অভ্যান্ত পরিচিক।

আক্র্যা এই হ'দিনে পৃথিবী কি হঠাং বছলে গেল।
দীপাও তাকে সভাষণ কয়লে না ? ও কি বরে নিরেছে—
প্রভাভ ওর বাবাকে অপদহ করবার জন্য ক্রোণ অবেষণ
করছে। আফর্ব্য কি । অসম কেরের জানা-চেনা—সামান্য
ক্রাণার এমনি সহ্লাই অপাঠ হবে বার। অনিবেষও গাকলে
কি করত, কে জানে।

বাক পুরাতম পৃথিবী এমনি করেই বুছে বাক। তার শোতা, সম্পদ, আমল, আশা—দৃষ্টতে বা অভারে কাগিরে রেথে কি লাভ। স্বভিতে তথু ছংখের দাহন। শেব হোক সেত্তন।

ৰা বললেন, দাৰটা কি করে উদার হবি ভাবহিদ বাবা ? প্ৰভাত বললে, ভেবে কিছু ট্লক্ করতে পারি নি বা।

আমার গলার হার আছে—সাড়ে ভিদ ভবি লোমা। এভ দিন স্কিবে রেবেছিলায—শত অভাবেও বার করি দি। লেইটে বেচে—

প্রভাত অপরাধীর মত মারের পানে তাকালে। ওর বাধা হেঁট হবে পেল লজার। পিতৃহার উভাবের পৌরুষ ওর ভোগার রহল ? সভ্য পালনের হুচ্ভা—ভারও ভাছে বাধা হেঁট না ভ্রার সহর—অভারভারীকে শাভি বেবার উংলাহ—
বিশ্বারও ত অবলিঙ নেই। ও অভ্যন্ত নাবারণ বাছ্য—ভীক্র—অনভোগার—আছচিভার্জ্যর—লক্ষ ভোটি বিশ্ব বব্যে জ্যোভিহীন একট বিশ্ব—ক্ষ ও মৃত্যুর চক্রপথে—উহর-বিভারের মৃত্তুর্ভে সাবাভবার দাস ভাটভে পারে বা। লেই ভাল—লক ভোটির বব্যে আছগোপন ভ্রেই বাংলার সংসার পরিপুঠ করবে।

লন্দী বললে, বছদাকে এ সৰ কৰা এবন বলে লাভ কি ? চেষ্টা ক্ষৰলে বাৰায় আশিসে ওৱ চাক্ত্তি একটা ছবেই।

ত্মবনী বললেন, দে আর ক'টা টাকা— ললী বললে, আমিও কাক করব বা।

বাকে অবাক হবে চাইতে বেবে ও কেনে বললে, আশিনের চাকরি নর,—এই গেরত বাজীর ভাবা ইভেয় নেলাই—কাপতে চাকরে কুল ভোলা—

আৰু আৰি বলে বলে ভোকের অর ধ্বংল করব ?…

বাঃ বে—ভা কেন ? ভূমিও কাক করবে—নামে
বছৰা বৰৱেহ কাৰ্যক কিনে আনবে—ভূমি ঠোঁডা বানামে

ৰলে ৰলে। ছেলে বেলে আট আলা প্ৰলা দিব আলবে।

লেই লখী—এডও ভাবতে পারে ? পাড়া লংসারীর বত উপার বার ভ্রহে লংসার চালনার। ও কবে লিবলে এই সব ? বীপার বত অর্গাদ সামনে নিরে লদীত-সাবনা—অববা চারের টেবিলে রাজনীতি, সমাজনীতির তর্কলাল-বিভার—লোটর-বিহারের পবে দেশ-বিদেশের ভূগোল ইতিহাস বাহাতত্ত্বে অবভারণা—সদীত-ভলা-সাহিত্য-বিভাগের প্রকু আলোচনা—এ সব ভি ওর জীবনে নিবির বত হরেই রইল। ও কি এবনি ভরেই অভাল-গৃহিনীত্বের উভাপে বাভাবিক জীবন-বিভাগের বারা বেকে বিচাত হরে প্রহে না ?

নিত প্রভাতেরও ববেই কর্তব্য ররেছে। বে ক্ষরিতে আগ্রেছ পেরে বৃদ্ধের অনুর নাণা তুলেছে—সেই ক্ষরির সারে ও সেচে ভাকে বাঁচিরে—বাভিরে ভোলার দারিছই না সর্ক্রেণন । ভার পর ভার সবৃত্ব পাভা কুলের কুঁভি কলের শোভা এই সব নিরে মাণা ভারানো চলবে।

আবে ভীবন-ভার পর কচি সংখ্যতি উচ্চালা।

নিকের বরে চকে প্রভাভ কিছুক্দণ ভড়িভ বিশ্বরে চারি-निटक हारेला। कविकार्ड (बटक व्यवान-बट्टा बाजवाय-नव, वरे बाबा (कांडे वाबादिव ब्राम्क-कांव बबला विकासाव ध्वाफ--- फुला-- (दव-कवा वामिन--- बटवव काटन हाटनव बाना —আনাজের পেতে, হঁকো আর ভাষাক রাধার **ট**ন। मृष्टे भक्त (नवारमव नारब-विश्वनाय, यांची विरवकानम, গাখীলী আৰু বিভালাগর। কি বিভাক প্রশান্ত রূপ-বৃদ্ধি-(बाक्न रहे -कान-कारत बनक नजाई-प्रत्नक-कासरी-পাঁতলা অধ্যোষ্ট। সাধারণ ব্যৱর তেলে সব--বুগ ও कीरबटक केवल करवड़े अधिकांत्रिक तम वि-अबल कारजद केर्ड इरहाइव क्रिकेश । तारे कान-ता कारनद कीरन-তপভা--- नवचरे वृति पश्च दिन । इ:४ दिन-- इ:८४व क्रिक नर्सवाजी ब्रामि इव ७ दिन मा। त्निम नुवियो मामावयी সম্ভা ও আবর্তে ভিল না সভাচারা—স্বাত্ন সভার बन्छे अवन नर्वाचन बनमात (बाँबाद चाउक करत बाद नि। আৰু কুৱাশা-বলিদ কৰতে বদি ওঁৱা থাকতেন --- লে ভালই হরেছে--- चाक्किया এই সংবাত-সতুল বাৰ্কসুষিত ভুৱ শীৰাবেরা প্ৰিবীকে বেবেন নি ওঁরা। ভালই হরেছে—ওঁলের कारनव इ:नव (तक्या-वाबीमकाव वर्षाात्नारक कि वर्षाकिक व्यव बागर बार्ट बार्ट्स वियाद - जा बहुकर क्रांक वर्ष वि ওঁদের। শেষ হবে গেছে ওঁদের বুগ-বিংশ শভাসীর পূর্বার্ড. मध्याय-भटकां प्रवर्गका । छेवा काम ध्यवनारे विटक भावत्व ৰা একালের-ফ্রোডে-ভানা বড-ক্টোবের--্স্রোডে भेषा विकामकारकतः। धेरकत मान्यत खाउँ निया जानात বৰ্ষ হওৱা কেব আয়।

ভজপোৰের উপর উঠে একে একে ছবিগুলি নাবিবে নিলে প্রভাত। এই ববে ওঁলের আর নানার না—এই কারা-গারে কোন্ বাধীনতার বাদী বহন করে ছবিতে বাছবের উপাত হবে থাকবেন। স্বাধিতের কীবনে অভিশাপ নেবেছে —স্বাধিত নিভিক্ত হবে বাবে—স্পত্তের বুলে স্বাধিতের কোন প্রভাতন দেই।

ভক্তপোষে বলে বইরের র্যাক থেকে একথানি সাহা কাগক টেনে নিলে প্রভাত। কলর নিরে অভংগর সে লিওতে বসল। সে লেখা কোন কৌছুহলী পাঠকের চিভবিনোহন করবে না।

সে লেখার সলে সাহিত্যের সম্পর্ক নেই—সে লেখার জীবন-ভত্তের বিশ্লেষণত কেউ আশা করবে না। অভি ছঅ অভ্তৃতি আর অশরীরী তাব নিবে তার তাষাকে রহত্তমর ও কেনিল করে তোলার চেটাও সে করছে না। অভ্যন্ত ছুল সাহিত্যরসবর্জিত এক আবেদন-পত্রের বসভা তৈরি করছে সে। অরতিকার আবেদন—অভ্যন্ত দীন প্রার্থনার বশর্মক ভূত্যের আকৃতি কৃতিরে সে চাইছে নিজে বাঁচতে—আপ্রিত প্রাইওলিকে বাঁচাতে। হাজার হাজার মব্যবিত করের বেকার ছেলে প্রতিদিন সংবাদপত্র পড়ে আর লোকের মুখে ওনে বাকে আরত করবার আশার ব্যাক্ত হরে ছুরে বেকার পথে পরে প্রারাদের ছ্রারে ও কারবানার—সেই রুতি আরত করবার লভ ওর সর্কার পণ রইল আছে। চাকরি—চাকরি—চাকরি

ববে অহলার নেবেছে—বেভিওটা কোবার বেন আর্থনার করে উঠন। ওকি—কিনের কোলাহল ? রেভিরোকে অহাতাবিক কোলাহল—অনেক অঞ্চলিক্ত কঠবর—চাণা কারার শ্বশ্রম—

केर्द्ध क कामानाव बादव अन । त्वांववा कनत्व :

আৰু অপরাছে প্রাধনাসভার বাবার মূধে মহাদ্বা গাদ্ধী আভভারীর ভলিতে নিহত হরেহেন। আৰু অপরাছে—

ৰাৱ বার অঞ্চলত কর্পের ৰোষণা।

পৃথিবীতে অভকার নামহে—সভীগ হবে আসহে ভার পরিবি। হিংসা, লোভ, অসভ্য, নিঠুরভা, খার্থপরভা প্রভৃতি নোটা নোটা লোহার গরালঙলি কারাগৃহের সীনানা নির্দেশ করে স্পষ্টভর হচ্ছে; সেই সভীগ খবে বন্দী হবে পাক্ষবে বাছব ?

94

শোক বত প্রচণ্ডই হোক—জীবন-গতিকে আলোড়িত করে বানিককণের কত; ক্রমে তার তীরতা হ্রাস হরে আলে। তারতবর্ধের আকাশে-বাতাসে কিছু দিনের কত প্রতিধানিত হ'ল আর্ডরোবন ধানি—তার পর তার তীরতা করতে লাগল।…পিতৃবিরোপের তীরতা সহলা দুত্র করে

বৃত্তিবত্ত প্ৰভাত পকেটে চাক্ত্ৰির আবেদনপ্ৰধানি নিৰে আপিলের উদ্বেশে রখনা হ'ল। বেভে বেভে কুটপাতে रक्षांक मानाम वशामत कितिश्वांका कीवमवातानत मिका-প্রযোজনীয় ভন্ত ভিনিস সাভিয়ে—ক্ষেত্রা আত্তরিবর ভয় চাংকার করছে। বয়কে হাভাল সে। পবিবীতে এরাও रायाम ममारकत निम्नवात---कीयन-मश्जारम निश्च किन्न विज्ञक ময়। একের প্ৰিবীটা প্রভাতকের মত কি ? বিক্ষর তা मह। श्रीरमाक वैक्टिय दावाद निका ध्रता करवद जरक जरकरे भार बबर (व-काम देशांद देशांदिम करत । चव श्रम (बंदक बाब-बाहबर कारबर रक्षन-कार्या कि कीवमबादर्यन সৰ্কোত্তৰ সমাধান। যে চিত্ত জামের আলোর উত্তাসিত हा मि--- (व चारलारक चावनार करत चारन मि वननकरहत আৰক্ষ এবং সেই বহুং আৰক্ষ ক্পতের ব্যৱ উপকরণ বিবে--ভাগতভীত ভৱনা এখালোতের সাধনায় বহু ধারার নিজেকে প্রসারিত করে দিতে পারে নি, সেই ভুচ্ছ নখর জীবনের আদর্শ ভো দকলের নর। তবু প্রাথমিক কেবে এবের সতত তীবনীপক্তির বিকাশ প্রভাতকে সূত্র করতে। ওর পারে বৃদ্ধি আৰু অর্কুজুভার ভারি পাণরটা বাঁধা না ৰাক্ত। বৰি ওৰ মাৰাহ না চাপত অনহাৰ বা, বোন, कारेटबर माविक।

প্রভাত পা চালিরে বিলে। খালি চিডা—চিডা।
এ-ও তো বিলাল বার—লামনে চলার পথে বাবা। লে বা
হতে পারে দি—কল্পনার তা টেনে এনে নিজেকে কভবিকত
করা ভগু! লে তো অনেক কিছু ভাবতে পারে। ভার
বিল্যা, বৃত্তি, চরিত্র-পৌরব ভাকে বে-কোন ললাবের পরে
প্রতিষ্ঠিত করতে পারে। ভার চারপাশে বারা ভিড অবিরে
আহে ভারা লবাই বহুং নর, বিহান নর, বৃত্তিবান বা চরিত্রবান
নর—অপচ ভাবের বোটরের গুলা-কালা বেবে নিভ্য তাকে
পথ চলতে হছে। ভারা কুপার চক্ষে দেবে ভাকে—গুণা
করে ভার লারিস্ত্রকে। ভালেরই বাড়ীতে বাবের শেব লবল
হারগাহি বাঁবা বিরে পিভ্যার বেকে উলার হরেছে লে। বে
উপার্জন করে সংলাবের অভাব পূর্ণ করতে পারে না, ভার
বিভাবৃত্তি ভান বীরত্ব চরিত্রব্যাতি লবই বিশ্যা। ওই একট
বার বান্যত ভাকে বাছেকে বাচাই করে দেব লবাত।
সোলাপক্তরে বেকির্ক্যে ও সৌর্গত্যে প্রীত হ্ব বেকভারা, কিছ

ৰাটির আপ্লৱে আপ্লিড বা হলে ভার রূপ-রূপ-বস-সৰ্ভরা প্রাণ-লীলার বহিষা অভ্যত্তৰ ভরতেন ভোন কেবভা গ

আরও ফ্রন্ড চলতে লাগল প্রভাত। পথ ক্ষমসূত্র—
মাহ্রের ক্ষাট্রীয়া লাইন এগিরে চলেতে একই দিকে।
মারে মারে বড় রাভার মোডে ট্রাকিক পুলিসের সক্তেত ভা
বিচ্ছির হরে পড়তে এবং সেই ক্ষমসরে ভার গভির বেগটা
চোবে পড়তে। এই ক্ষমংখ্য মাহ্যুয় বালা করেতে মাটর
আগ্রাহ-সহামে। মাটর রনে শাখা পত্র কুল ফলে প্রবিক্ষণিত হ্বার বাসনা ভাদের মনে। এই ভা কীবম। ক্ষ
ও র্ছ্যুর মাঝগানের সমর্টুক্। প্রাণী বা পদার্থকে বিরে
চৈডতের ক্ষপঢ়ালীন প্রবাহ—মাটর প্রদীপে ভেল-সলিভার
উপক্রণে করি উংপাদনের রহত। একটানা স্যোভ পরে
পথে ভেতে পড়তে বছ বারার রপাত্তরিত হবে—বিরাট
ক্রটালিকার ক্ষাভ্রের মিনিরে বাচ্ছে। লালনীবির চারি বারের
বিরাটকার সৌধ-বৈভ্যেরা আন্চর্ব্য ক্ষিপ্রভার প্রাস করতে
এই বারাগুলি।…

প্রভাভের শিত্বভু বললেন, দরণান্ত এনেছ? দাও।
দরণান্তের উপর চোধ বুলিরে মিলেন ভিনি। একটু হেলে
বললেন, আহরা বে বাধীন হরেছি ভা এর শেব লাইনেই
ভানতে পারছি। নয় কি? বলে সেধানটার আলুল
রাধলেন।

প্ৰভাভ কিছু বুৰতে পাৱলে না।

ভিনি হাসলেম শক্ষ করে, এখন 'ইওর মোই ওবিভিরেট সারভেট' অবাং বশবদ ভূত্য বললে ভূল হবে। লিবতে হবে—'ইওরস্ কেব্ডুলি' অবাং আগমার বিখত ব্রলে? এটা ভাবেক্সন্ করে হাও।

প্রভাভ আবেশ পালন করলে। লোহার গেটের নাধার ভূঁই সুলের বাভটকে যদে পড়ল। বিঙগড়ী কোনল ফুলর ফল—কিছ বাকে অবলয়ন করে ওর লৌকর্ব্যের প্রভাশ—

দরবাত নিমে বছবাবু চলে গেলেন। প্রায় এক ঘণ্টা অপেকা করতে হ'ল প্রতাতকে। একট ঘণ্টার এই অভিনয় কর্মতের কিছু আভান পেলে ও। এই ক্রণং বে জীবনবারণের গ্রানিযুক্ত নর—ভা বুবলে।

বছৰাৰু কিৰে এলেম হানিষ্ধে। বললেম, লাকি
চ্যাপ, চল-লায়েৰ ভোনায় ডাকছেন। বোৰ কবি কালই
এয়াপ্ৰেক্ট্যেক্ট লেটায় পেৰে বাবে। বাডী সিৰে বাকে
বলবে—বেন ঠাকুম-বেৰভাৱ পুজো বানভ ক্ষেম-ভাষ
কেৱবায় পৰে কিবিলী-ভালীকে প্ৰধান ক্ষে থেও।…

সভ্যিই চাক্রিটা হবে গেল। পাঁচটার পর ক্ষতার প্রোভে নিক্ষেকে নিশিবে ও বাজী কিরলে। মনে বনে হুডজ হ'ল—কোন ব্যক্তিনিশেব বা বেবতা বিশেবের উপর বর— সমুভ পৃথিবীর উপর। সলে সদে হিল্প ক্ষতে—এই প্রেই উন্নতি করতে হবে। এই বাট বেকে রস শোষণ করে ও ওর্ বাঁচবে না—সমূদ হবে। অর্থের শাখার কুটবে গৌরবের কুল —্বশের সৌরতে সে কুল চ্রাভরের লোকের প্রশংসা, ঐতি আকর্ষণ করবে এবং সেই কুল এক সময়ে কন-শ্রহার উভাগে পরিশত হবে আছাভন্তির স্থাক কলে।

পেল—গেল—গেল! বোডের বাধার ছ্থানা গাড়ীতে সংঘর্ষ হয়ে গেল—ছ্'ভাগে বিভক্ত জনতা ভঙ্ক হয়ে গাঁডাল। এ-ও নিভাগার ব্যাপার। বেশীর ভাগ লোকই কিছুজন গাঁডিয়ে ঘটনার সংক্ষিপ্ত সার সংগ্রহ করে আবার লাইন রচনা করলে—ওবের গাঁডাবার সময় নেই। ছ্বটনা জীবনে হয়ত ঘটে নি—ভিজ্ক চার পালে ঘটছে অসংখ্য বার। বারা ছ্বটনার পড়ে জীবন বিবেছে কিংবা অলহানির বক্ষন অকর্মণ্য হয়ে গেছে ভাবের সলে এবের ভকাং অনেক্যানি—এই দল্টা-পাঁচটা-পব-চলিয়ে দলের। পিড় বাড্হারা ছেলেরা আপিলে ভিজা করতে এলে—এবের অনেকেই অন্নান বদনে বলে, বাপ কর। আবাদেরই বলে কে দের।

আক্ট এবন বটনা বটেছে আপিলে। পৰে বটন চুৰ্চনা, জীবনের পরে পরে এই চুর্জোগ। বনে বেছনা জ্বলে সহজে বার হতে চার না—আনক্ষকে বহু সাব্যসাবনার আরোজন করে আনতে হয়।

হাত মুখ ধুরে বাইরের ধরে বসল প্রভাত। বারের মুখে আগত ভাব দেখেতে—ছোট ভাইরেরা আনন্দ প্রকাশ করেছে।
লন্ধী হেনে বলেছে বাকে, বছলা বাবার সবর আবি মনে
বনে ভগবানকে ভেকেছিলাব বে, চাকরি হবে মা।

প্রভাত উৎসাহিত বোধ করছে না— চাকরিলাভের ফতিত্বে ওর এডটুকু আনক্ষ নেই। ওর মনে হুচ্ছে পৃথিবী আর বাইরে ফডিরে নেই—এই পরেতেই গুটারে এল। জানালা বিরে বেটুকু আকাশ দেবা বাচ্ছে তাতে বীবা বে ক'ট নক্ষর তাই অগতের সীবা, ওর পরিচরের পরিবি। বে কর্মট নাহ্য আক আশা আখাসে উক্লল হুরে উঠল, তালের চারিবিকে ওকে বুরতে হুবে বিনের পর বিন। বনে হুতেই সে উভেকিত হুরে উঠল। না—না—এতাবে সমীর্ণ হুরে ও বাঁচতে চার না—বাঁচতে পারবে না। ওর চাই বাইরের বিভূত পৃথিবী—অভুরত্ত আকাশ—সংখ্যাহীন নক্ষর—বালের মৃত্যিকার ক্রমার সৌকর্মের বৈচিত্রো জীবন হুবে রস্প্রাহী বিত্তীর্ণ বেগবান ও আনক্ষর।

विकास मा ।...

CF ?-

ভাষাভার বাইরে ইাভিরে ওভরর ভাকলে। ওর চুল উত্তুত—মুব ওজনো। ওজি চাকরি পেরে ওর করবার প্রিবীকে হারিরেছে—প্রভাতের বত ?

धन-पत्त धन।

**७७३३ चण्ड महिल जाद पदा मर्था अन** ।

বলো ৷--

मा-विद्यामात अभव यत्रय मा। अत्मीत किमा।

ওর বালি পারের পানে চেরে প্রভাত প্রর করলে, কে মারা গেলেন ?

ৰেছ ছোঠামণাই।

क्डांद १

হঠাৎ নৰ—হাঁ।—হঠাৎই। একটা চোক গিলে ওভছর বললে, আপনাকে ত পর বনে হর না—ওছন। তরু বানিক ইভডভ: করে গে নাবা নানিরে কৃতিভ করে বললে, ওঁর বৃত্যু ত বাতাবিক নর—উনি আছহভ্যা করেছন।

আত্মহত্যা। প্ৰভাত ভীৰণ ভাবে চৰকে উঠন।

ই।—ভাষের ভ—দেশার দারে আবাদের বিষয়-সম্পত্তি আর ভ কিছুই মেই। আবাভ সইতে পারলেম বা—জঞ্জ-বাল্যে থর বর অবক্রম হবে পেল।

প্রভাত কোন প্রান্ধ না করে সেই বেদনাকে সম্বন্ধ **পর্**র দিরে প্রচন করলে।

चरनक्ष (कर्ड (शन।

বাইরে গ্যাসের আলো অলল—বরের মধ্যকার অবকার সে আলোর ইয়ং তরল হ'ল যাত্র। কারও নম থেকে অবকার মুছে গেল মা।

বহুক্দণ পরে শুভঙ্গর বললে, আপনি বাবেন কি একবার ? বেক ক্যেঠাইলা বলছিলেন···

লাভূক ওভন্ন কথা শেষ না করে উভর-প্রভ্যাশার থানিক্ষণ হাঁভিয়ে রইল লেই অভ্যার ঘরে। ভার পর বীরে বীরে চলে গেল।

. . . .

হলমবের পাশে হোট ঘরটতে বেলজ্যেটাইনা বলে ছিলেন। তথ্যও অপরাছের আলো আকাশ থেকে বৃছে যার নি , খবের মধ্যে আলোর চিজ্নার দেই। এই ঘরট আকারেও বেনন হোট সক্ষাতেও তেননি রিক্ত। হোটনত একটা তক্তপোষ হাড়া ঘরে হিতীর আসবাব দেই। বেরালে একথানিও হবি দেই, পলভারা ওঠা বর্ণহীন হেরাল। কড়িকাঠের আলকাভরা ধুসর হবে এসেছে—সেথানে আলোর কাল্ল বুলহে না। দীপ আলানোর কোন ব্যবহাই এ ঘরে নেই। তক্তপোষ্টাও নগ্ন—একটা সভরঞ্ব পেতে ভক্তার কাকওলিকে অনুভ করার আরোজনও কেট করেন নি। সভ শোক্তর বাড়ীটার প্রতীক বেন এই স্ক্রিক্ত ঘর্ণানি, আর সেই ঘরের মেন্টের বলে ভক্তব্যনা বেল জ্যেটাইনা—

প্রভাত তার অনুরে নেবের উপর বসল।

ৰেছ ছোঠাইবা বললেন, গৰই ভ গুনেছ। কৰ্ম্মল কেউ ৰঙন কৰতে পাৱেন নি আৰু পৰ্যাত। ভিনি চূপ ভরলেন। বীর্ণনিংখাল কেললেন না, সভবভঃ চোবের কলও নর। ভরল অভ্নতারে ভার ভ্রুরেখানর বেইট লামাভ নড়ে উঠল ভগু। এই একটুবানি চাকল্যের বব্য বিরে বহু হংব-বেহুলাকে বেদ বুকের বব্যে ঠেনে নিলেন ভিনি।

প্রভাত বললে, আপনি অনৈক জানেন, আপনাকে আনি—

লৰ ক্ষেত্ৰত মনের ছ্রভগনা থাবাৰো বাব না বাবা । এননি মারা মহানাবার । বাক, ভোরাকে ক্ষে ভেকেছি শোন । আমরা আর ক'টা দিন বার এবানে আহি । ওঁর কাল শেব হবে গেলে শহর ছেকে বাইরে বাব ।

त्वन छ, किहू विस्वत कड--

কিছু দিনের কচ নর বাবা—বেশ কিছু দিনের কচ। হরতো···কিত্ত আনরা বদি না-ই কিরি ভাভেও হুংব নেই। এই বাড়ীর হ' একট জিনিব ভোনার জিলার রেবে বাব—

প্ৰভাভ ব্যাকুল খন্তে বললে, কিছ আমাত্ৰ যে বলবাৰ আহে জ্যেঠাইনা। আনি বদি আপনাকে না বেতে দিই এই বাড়ী থেকে ?

ভা ভো ভূৰি পাৱৰে না বাবা।—বেজ জাঠাইবার বুবে রান হানি। এডটু বেনে বললেন, বোৰ ভৱি নব কথা শোৰ বি ভূৰি। আন শোনাবোর নেইও বিশেষ কিছু। নদীর জল বেষন নীচু জারগা পোলে নেনে বার ভেননি নাবাল জনিতে পা কেলে এ বাড়ীর লজীও আজ চলে গেছেন। এ বাড়ীতে আনরা থাকব কোন অবিকারে ?

কিন্ত কোৰার বাবেন ? শুক কঠে প্রশ্ন করলে প্রভাত ; ভগবান দরা করে বাবা গৌজবার একটু ঠাই রেখেছেন— সেইবানেই বাব।

च्यू चावि विव वा त्यत्व विवे चानवारवत ?

প্রভাতের উদ্দল চোবের পানে চেরে মেল জ্যেতাইবা বিশিক হলেন। বললেন, ভূমি একবা বলহু কেন বাবা ?

ক্ষে—আপনিও ভা ভাবেন। এক দিন আপনাদের কাছে আনতে চেবেছিলান। বলেছিলেন, এখন নর। আত্ত কি বলবেন—

না—আৰু দেকধা বলব না। সেদিন ভোৱার বিক্টাই বেৰেছিলাৰ বাবা—আৰু আহার দিক্টাভেও ভূমি ভাল করে বেব। ভা হলেই কোবার ভ্ল—কোবার অসদভি বুরভে পারবে।

না--কোৰাও এর ভূল নেই। আলার অবস্থা বুব সক্ষ ময়, তবু---

অবহার কথা আমি বলিনি, নাদ-সন্তব রাধার কথাও দর— তবু একটা কথা তুলে বেলো বা বে, বে-কোন তাল জিনিব পেতে হলে তপভাও করতে হর তেমনি কটিন। উন্না অপর্বা হয়েছিলেন বলেই শিবকে পেরেছিলেন। किर्नड जगजा ?

-- নিপ্ৰায় তপভা নৰে আৰভ হ'ল---

না—না মেক কোঠাইনা—প্রভাভ ভার্ড কর্তে চীংকার করে উঠন।

ক্ষে নর ? চিরকাল বড-বাড়ীর কোলে বুব কৃতিরে রইল বে, বাদ-সন্তবের কাচের বরে রঙীল বাভি আলিরে—পরার হন্দের বিল পড়লে ত্বর করে—বাইরের পৃথিবী ক্ষেম্ব সেবর সে বেবর লা ? পথে বে কভ কালা তার হিলেম্ব রাখবে লা ? তার শিক্ষা শেষ লা হলে ভোষাকে লাভ করার বোগ্যতা লে পাবে কেম্মন করে ! না বাবা, আজ নম্ব—সংলারে বাছ্যকে টামলেই লে লংলার তবে অঠে বা—ত্বেরঙ হ্র মা । বে সংলারের বে ত্বর সেই ত্রের পরিচর বে নিভেই হয় । না নিলে জীবন ত্বের হয় বা—সংলারে শাভি বাকে মা ।

শৃত বর, তবু প্রতাভের বনে হ'ল সবভ বর জুড়ে বা রয়েছে ভা এই প্রাসাদের কোন অংশে বুবি নেই !

बाबा मीह करत क्षेत्राक व्यक्तिता अन यह व्यक्ति।

বাড়ীতে সুমন্ত্ৰী তব্দ চীংকার করছেন; আর পারি বা বাপু, চির্ফালই কি ভূতের ব্যাগার বাটবো! চাকরি হ'ল এইবার বিবে-বা করে সংসামী হ'। আনার চুট কে সংসার বেকে।

এই সংসার। এবানে আগবার বৃত্ত তপতা করতে হয়।
ঠোটের কোণে হাসি কুটভে-না-কুটভে নিলিরে গেল।
সভাই ত সংসারে আশ্রের নেবার বৃত্ত তপতা করতেই হয়।
সভাী আর সিপ্রা বেবন এক নর—তেননি এই প্রানাদের গোলে
এই গুহুর গোলও মিলবে না। ওবানে ভাঙা-চোরার মধ্যে
বে রামি এবনও লেগে ররেছে তাকে তপতার হারা নিঃপেবে
মুহে না কেললে এবানকার অসৌরব বইতে পারবে কেন
সিপ্রা।…এই ভাঙা-কলতনা, অপরিসর উঠান, সবীর্ণ আকাদ,
তিন বিকের বেরাল-বাঁটা সাঁতসেঁতে বর আর তেল-কুম
লক্তির আলাপ—। আশ্রর বেবার অহিলার সিপ্রাকে এই
কারাগারে বন্দী করার ব্যবহা কি সাহলে বে করলে
প্রভাত।

বহুকণ বুৰ এল না। কেনন বেন সংখ্যিত ছট্কট্ট কয়তে লাগল প্ৰভাত।

চোধের উপর আলোর স্পর্শ—কোষল বর ভীত্রই। লে আলো পথেরই। কিছ চোধ চাইলেই নামনের ভিনভলা বাড়ীর ভেতলার বরটই নজরে পড়বে। ও-বরে নারা রাভ বরে কোষল দীল আলো অলে, নারা রাভ বরে আঞাপ বরে আনে কভ বর আর ঐবর্ধের নভার—কভ ক্রনার বর্ণ ভাঙে আর গড়ে। ও-কাণং প্রভাতবের নর—ওড়ে নারনে রেখে দিলা বাওরাও কি কটিন। চোৰ বা চেৰেই প্ৰভাত জাৰালাৰ জাহে উঠে এল এবং জাৰালাটা বহু কৰেই জাৰাৰ ভৱে প্ৰজ।

সকালে কিন্ত জানালাটা খুলভেই হ'ল। ভারণর সারাহিন্দ সংসারের কাজ ও নিজের চিন্তার সক্তে নামনের ভিনতলা বাজীটাও কবন নিশে পেল আন্তর্যভাবে। সভ্যাবেলার কর্ম-প্রান্ত হরে বরে আসতেই বনে হ'ল জানালার বাইরে প্রভাতের জীবনেরই একট অংশ বেন লক্ষ্যপ্রট হরে ভিট্কে পড়েছে। বিপ্রায়-রুহুর্তে সেই অংশটা বিপ্লবীর ভ্নিকা নিরে ওকে উভাক্ত ও উভেজিত করে ভ্লবে। প্রভরাং জানালাটা বদ করে হিতেই হবে।

প্রদীপ-হাতে সন্ধী ব্যের মধ্যে এল। প্রতাতকে জানালার বাবে হাঁভিবে পাকতে কেবে বললে, ওমা, এই অবকারে হাঁভিবে কি ভাবছ? বাবে বাবে মা ? আন্দ সব্যো দিতে বজ্জ কেরি হবে পেল। বলভে বলভে ও এগিরে পেল কেরালের হিকে। প্রদীপটি উঁচু করে ব্যের বারক্ষেক আন্দোলিভ করে গলার আঁচল কভিবে প্রধান জানালে। ভার উদ্দেশে প্রধান জানালে সন্ধী ?

কৌতৃহলী প্ৰভাভ জানালা থেকে সত্তে এলে লন্মীর শিছৰে দাঁভিবে জ্বাক হতে পেল। যা নিভাভ জ্ঞানোকনীয় বোৰে সে সরিয়ে রেখেছিল, এই বুগ ও জীবনকে নিয়ন্ত্রিভ করবার বিশ্বান ক্ষভা যাবের নাই বলে বৃচ প্রভীতি জ্যেছিল, সেই সৰ প্ৰতিভাগালী কৰ্মনীৰ ব্ৰেণ্য যাত্ব্যৰ ছবি আবাৰ বেষালের গাবে কে টাভিবে বিষেতে! তবু টাভিষেই ধের নি—বেড়ে মুছে পৰিপাট করে সেগুলিকে সুত্তন লগ বিষেত্তে অহুজ্বল। প্রবীপের আন্দোলিত আলোর মুঠিগুলি বেন স্কীব হুছে উঠল।

প্রদীপ শিলপুক্ষের উপর রেখে লক্ষী প্রভাতের পানে কিরে বললে, হবিওলো ভাল করে বাঁবিরে দাও বদি ভা হলে ধুলো আর শোকার নই করতে পারে না।

আসহে বাসে বাইনে পেলে বাঁৰিছে দেব—কি বলিস ? প্ৰভাত প্ৰদাহ হাতে কৰাৰ দিলে।

সলে সলে প্রতাতের বনে হ'ল—এই হুর্থপাপ্তত ক্র বরে চারিদিকের দেরাল পাকবে, জীর্ণ লোহার গরাকে দেওরা একট রাজ জানালাও পাকবে—আর সে জানালাটা বন্ধ করা চলবে না এবং কেরালের গারে পাকবে ওই ছবিগুলি। সকালে গলাকল হিটারে ও সন্থার প্রকীপ আলিরে সজীর বন্ধ কল্যানী বেরেরা এই সরের অন্ধলারকে ও অন্তভকে মুছে নেবার সাবনাও কর্বের প্রভাহ। মন্দ কি, বুগ-বুগান্ধর ব্যরে চলুক না এই জর-পরাক্ষরের বেলা—জীবন-সীলার প্রবাহ ; অন্তভ বেকে ভক্তে, ভ্রমা থেকে জ্যাভিতে, মুভ্যু থেকে জর্ভ লোকে উন্ধর্যের সাবনা।

সমার

## দ্বিপ্রহর

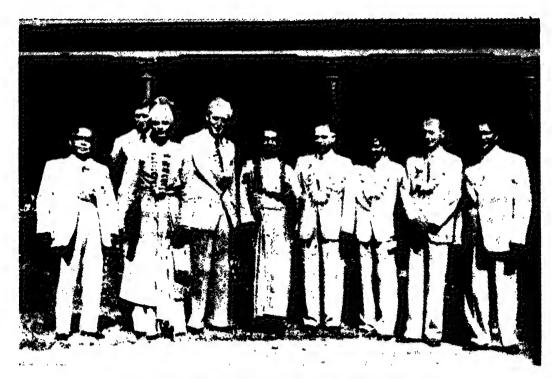
## এমধুস্দন চট্টোপাধ্যায়

ভাষালার পারে হাভহানি থের ধিপ্রহর, চোবেভে চলেছে হপুরের রোগে বুন চোলাই। লোমা থেওবালের গর্ভেডে চোকে বুনো-জনর, জনবের এই গান থেকে ধেবি রকা নাই।

বাঁ বাঁ করে বাঠ, বটবটে বাঠ, পীভাত বাস--পীভাত দে-বাল হেতে হারা বাঁকে গরু-বাছুর,
মূৰ্বি-হাওয়ার বৃলিকের ওঠে বাতিবাস,
বোকের বেখার বরা-পাতা বার কতো দে চুর চ

ছুৰে কি পড়েছে বছ দূৰে বন কাঠ-চাপার ?
শেৱাল-কাঁটার বনে বনে কাঁপে হলদে কুল।
বরজে বরজে অবপ অল পান-পাভার,
পান-পাভাগুলি লুবে বে পজেছে—নেইক ভুল।

আক্ল-বন ছাড়ারে ওদিকে বুবুর ডাঞ্চ,
বুবু ডেকে কেরে—কঠেডে ভার বিরাধী-সূর !
বোরো কুকুরের কভ ঠোকরার বৃষ্ঠ কাক;
পর্যে বিনার বান-চোর বড়ো ক্লেড-ইছুর !



ৰন্দিণ আনেৱিকার কর্জ চাঁউনে ভারত দেবাপ্রম সন্দের প্রচারক-দলের সংবর্জনা। বাব হইতে দক্ষিণে—ভা: বে, বি, সিংহ (প্রথব), ব্রহ্মচারী রাজফুফ (বিভীয়), ব্রিচ্চীশ দিনির প্রণর ভার চার্লন উলী (তৃতীয়), খাষী অবৈতামক্ষরী (চতুব) প্রভৃতি

# বহির্ভারতে ভারতীয় সংস্কৃতির প্রসার

### ব্রহ্মচারী রমেশ

ভারতের বাহিরে ব্যবসা-বাশিক্য, কৃষিকার্থ্য প্রভৃতিতে নিও ভারতবাসীর বে একট বোটামূট সংব্যা পাওরা নিরাছে ভাকা চল্লিশ লক্ষের কাছাকাছি। ভারত বহাসাগর অঞ্চলই ভার-ভীরেরা সংব্যার সর্বাণেকা অধিক। সেবানকার ত্রিশ লক্ষ্ অধিবাসীর বব্যে ভিন-চভূবাংশ ভারতীর। এভব্যতীত অভাত বেশে প্রবাসী ভারতীরের সংব্যা নিভাত ক্ষ নহে। ভাতাকের একট প্রিসংব্যার বিশ্বর প্রচল চটক :

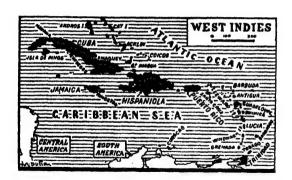
a state of the and a design	
बचारम	3,00,000
সিংহল ও মালয়	1€,000
ৰবিশস ও দক্ষিণ-আফ্রিকা	<b>₹,€0,</b> 000
<b>স্যাৱেবিয়ান অঞ্ন</b>	<b>€</b> ,0 <b>0</b> ,000
बिनियाय	<b>२,०</b> ०,०००
बिक्रेम निवि	3,40,000
ভাচ পিশি	<b>%</b> 0,000
<b>कागरिका</b>	۹0,000
এশাভ বহালাগরীর অঞ্জ	3,40,000

eo'/, बुक्कारहे so'/, अवर वाकी 30'/, (लाक सवाव वारहे

বাস করে। প্রবাসে ঐ সকস ভারতীর পুরুষাস্থ্রতবে বসবাস করিতেরে। ভাহারের আর্থিক, সামাজিক, রাজনৈতিক জীবনে বহু পরিবর্তন আসিরারে। ভিন্ন পরিবেশের মধ্যে বাস করার কলে ভাহারা ক্রমণ: নিজ নিজ আরর্ণ ও বাভরা হইতে দূরে সরিরা বাইতেরে। বাবীন ভারতের গক্ষ হইতে সেজভ ভাহারের বর্তিত বোগছর হাপন করা বিশেষ প্রয়েজন। ভাহারের বর্তীর ও সাংস্থৃতিক জীবনের বাজ্ন্য-বিবানের বিকে ল্ট বিবার সরর আজ্বাসিরারে।

প্রাচীন ভারতের সাংস্থাভিক কুডগব পৃথিবীর বিভিন্ন প্রাচ্ছে ভারতের স্বাভন আহর্শ প্রচার করিয়াহিলেন। প্রশিষার বহু অঞ্চল ভারার নিদর্শন আছে। কেবল প্রশিষার নহে, ইহার বাহিরেও অভাভ বেশে ভারতীর নিল্ল-হাপভ্যাধির বিভারতাভ বটবাহিল।

কাল-প্ৰবাহে ভারতের প্রচারভাব্য ব্যাহত হয়।
নাংকৃতিক হুতের পরিবর্তে হাজার হাজার ভারতবাসী
প্রবিকরণে গত শতাকীর প্রথম হুইতে বহির্ভারতে প্রেরিত
হুইতে বাকে। ইহার কলে আছ আফ্রিকা, কিনি, পশ্চিম
ভারতীর বীপপুঞ্জ, বরিশন, বন্ধিশ-আ্রেরিকা প্রকৃতি অঞ্চল



পশ্চিম ভারতীয় দ্বীপপঞ

বহু ভারভীয়কে পুরুষাক্ষ্ণকে বসবাস করিতে দেখি। এই সকল ভারভীয় নিজ নিজ পূর্বপুরুষণণের বহান ঐতিহ্য ভূলিতে বলিয়াছে। ভাহাদের ভিভর ভভীতের আদর্শ, বৈশিষ্ট্য ও সাংকৃতিক ভাববারার পুনকুজীবনের জল বর্ত্তারতে ভারভীয় সাংকৃতিক দৃভ প্রেরণের ব্যবহা করিভেছেন। এই সম্বন্ধে আরবা গত প্রাবণ ও পৌষ সংখ্যার প্রবাসীতে বিভ্রত আলোচনা করিছাছি।

अन्य कडेरण वक्तिकारण (श्रीतक সাংস্কৃতিক বিশ্ব বংসরাবিক কাল পশ্চিম ভারতীয় দ্বীপপ্ত ও দক্ষিণ-'আমেরিকার ਕਿਲੇਖ ভারতীয় সংভতির ভাববার৷ সম্বন্ধে ৰাৰা ভাবে প্ৰচাৱকাৰী কৱেন। তাঁচাদের প্রচারে প্রবাসী ভারভীর-তের মধ্যে বিলেষ ক্রফল পাওয়া বিশ্বাতে। শব্দিৰ ভারতীয় দ্বীপণুঞ্জের ত্রিনিদার হইতে অভার্বা-স্বিভিত্ন সভাপতি-ভারতীয় बुक्तवारहेव প্ৰবাৰমন্ত্ৰী পঞ্জি কৰাচরলাল নেহক बर बाहेशिक कः बाद्यस्थानात्त्व निक्षे विभावत क्षांत्रकार्या वादांत्क मीर्च वित्र जाबी कर कहरकरमा शब्ध निविद्यारसम्।

সভোৱ এই সাংস্কৃতিক বিশন গত ১৯৫০ সন্মের ভিসেম্বর বাস

হইতে ১৯৫১ সনের আগষ্ট বাস পর্যন্ত পশ্চিম ভারভীর বীপপুঞ্জের ব্রিলটি প্রহার বুরিরা প্রহার প্রচারকার্য্য করিবা-হেন। ভাঁহারা ৩৬১টি জনসভার ভারভীর সংস্কৃতির বহান্ আবর্ণ ব্যাব্যা করিবাহেন। ভাঁহারের চেটার ১৪৯টি বৈবিক্ত বজ, ১১৩টি বর্ষবিষয়ক বিবিধ অস্কৃত্যান, ১১টি বিরাট সাংস্কৃতিক সম্মেদন অস্কৃতিত হয়। বীভা, উপনিষদ, বেগাভ, বৈধিক প্রাব্যা, ভুলসীবাসের বাবাহন, সভ্যবারাহনের রভক্ষা প্রভৃতি

বহুসংখ্যক পুৰক সক্ষ বিধাৰ্ল্যে বিভৱণ করেন। ভারতীর-গণ ভারাদের বাতৃভাষা (বিন্দী) প্রারই ভূলিতে বলিবাতে। ভাই বাতৃভাষার প্রতি অনুরাগ রহির নিবিত্ত নিশ্যের প্রচেটার ভণার পাঁচটি বিন্দী পাঠশালা খোলা হইরাতে, বিভিন্ন হানে আটট বন্দিরও প্রতিষ্ঠা করা হইরাতে। ভারতীর সংস্থিতর প্রচারের ভিতর দিরা এই গঠনবৃদ্ধ ভাক খ্যই সক্রোপ্রোদী। এই বিষ্যে "আন্দ্রনাভার প্রিকা"র ১৩৫৮ লালের এই ভাল সংখ্যার সন্পায়কীর প্রবৃদ্ধ প্রদানিত হইরাতে:

শশিচ্য ভারতীয় দীপপুঞ্জের জিনিদাদে ভারতীয় হিন্দু প্রামিকগণ টাদা ভূলিরা করেকট বন্দির নির্দ্ধাণ করিবাছেন। প্রথমভঃ ভারত দেবাপ্রথম সন্দের নাংকৃতিক বিশবের প্রেরণাভেই জিনিদাদের প্রবাসী ভারতীয় হিন্দুগণ ভাহাদের সংকৃতি অক্র রাখিবার এই উভোগে উব্যুক্ত হইরাছেন। ছানীয় ইউরোপীয় এবং নির্প্তো সমাজের বিশিষ্ট ব্যক্তিবর্গ মন্দিরের হারোদ্যাটন অক্রাদে উপস্থিত থাকিরা ভারতীর সংকৃতি এবং হিন্দুবর্দ্ধের প্রতি ওক্তেরা জাগন করিবাছেন। সংকৃত্তি হুইতে বহু দূরে এক দ্বীপদেশে অবহান করিবাত বারতীয় প্রতিক ভাহার সংকৃতির প্রতি বে ব্যক্তা ও প্রকা



ভারতীর প্রমিকদের প্রথম অবভরণ-ক্ষেত্র--ব্রীক চাউদের একট অটালিকা

অসুর বাবিরাহে তাহাতে ওবু ভারতীর সংস্থির বহন্তই বাবে, দ্বিত্র ভারতীর প্রবন্ধীবীর সাংস্থিত বহন্তও প্রবাবিত হইতেহে।"

ৰন্দিবকে কেন্দ্ৰ কৰিবাই এক দিন ভাৰতের সংস্থৃতি গছিব।
উঠিবাছিল। এই বন্দিবকে কেন্দ্ৰ কৰিবাই প্ৰাচীন ভাৰতের
হাণভা, নিল্লকনা, ভাৰত্য প্ৰভৃতি এননই সুক্ষরশে
বিকাশনাভ কৰিবাছিল বে, ভাৰার পৰিচৰে আছিও বিশ্বরে

অভিত্ত হইতে হয়। তাই ভারত দেবাপ্রব সন্দের সাংকৃতিক বিশন বলির প্রতিষ্ঠাত এত বছুবীল, ত্রিনিলাকে আগবনের পর বিশনের উলোপে একট মাল্য নিছিত হয়। বলিবের উবোনন উপলক্ষে সাংকৃতিক সন্দেলন, বৈধিক শাভি-বজ্ঞ, বিবিধ বর্ণীর অহুঠান, তলন-কীর্ত্তন প্রভৃতিরও আবোকন হইরাহিল। ত্রিনিলাকে অবস্থিত ভারতীর হাই ক্রিশনার সন্দেলনে বক্তৃতা-প্রস্তুক্ত বলিয়াইকেন, প্রবাসী ভারতীরগণকে লক্ষ্য ক্রিয়াই



क्रिनिशास माची प्रकि-मन्त्रित क निरामस

অগতের অভাত জাতিওলি তারতের সংস্কৃতি এবং সভ্যতার বিচার করিবে। স্তরাং প্রবাসী তারতীরগণের চরিত্রবভা, আবর্শ কীবন-বাপন-প্রশালী বেব সকলকে মুখ করে। তারত এক বিম ভারার মহান্ আব্যান্ত্রিক শক্তির প্রভাবে অগংপৃত্য হইরাহিল। বাংশীনতার পর অগতে পুনরায় সেই অব্যান্ত্রনাকর প্রচার করিবার সরর আসিবাছে।

ভারত সেবাপ্রব সত্ত ভাই ভারতীর অব্যাহ্মবাধের ব্যাপক প্রচারের ভত সচেই। সত্তের সাংস্কৃতিক প্রচার ব্রিষ্টপ পশ্চিম ভারতীয় দ্বীপপৃঞ্জের জনসংগর মনে গভীরভাবে হেবাগাভ ক্ষিয়াছে; ভাঁছারা অনেকে ভারতীয় সংস্কৃতির ভাববারা মর্দ্রে মর্দ্রে উপলব্ধি ক্ষিয়াছেন। বিব্যাত পাশ্চাভা মনীরী ও মিপ্রো মেভা ভাঃ এক. এ. ক্রিচলো মিশমের প্রচারভার্ব্যে ভারতীয় সংস্কৃতির প্রতি গভীর প্রহা জ্ঞাপন ক্ষিয়া বনিরাহেন,

"Hindu religion and culture have always been characterised by its liberal Catholic outlook and as such Indian Cultural propaganda conducted by the Bharat Sevasram Sangha would not only be beneficial to the Hindus of the colony, but it is sure to

bring about a general welltbeing of all peope irrespective of caste, creed or coour."

ভারত দেবাপ্রব সন্দের এই প্রচারক বল ভারত হইতে ১২০০০ বাইল বৃরে অবস্থিত পশ্চিব ভারতীয় বীপপৃঞ্জের প্রবাসী ভারতীয়গণের বব্যে ব্যাপকভাবে হিন্দুবর্ষ ও সংকৃতির ভারবারা প্রচার করিভেবেন। প্রেকার ইভিছাস ভাবিতে পারিলে, এরপ প্রচারের গুরুত বে ক্তর্থানি ভারা আয়াবের

ব্যৱদ্য হাবে। বিশ্যের অন্যতন প্রচারক ব্রহ্মচারী রাজকুক ভারতীরগণের প্রদেশে প্রম, ছারীভাবে বসবাস এবং ভারাদের সামাজিক ও রাজনৈতিক জীব্যের একট বিবরণ দিরাছেন। আনরা বর্তনান প্রবদ্ধে ভারা হাবতে কৃতকটা দিতে চেই। ভবিব।

১৮৪৫ ছইতে ১৯১৭ সনের ব্যাবর্তী
সমর পশ্চিম ভারতীর দ্বীপপুঞ্জের ইভিহাসে বিশেষ শুকুত্বপূর্ব। ১৮১৭ সমে
ব্রিটশ সাম্রাজ্যে কাসত্মপ্রধার বিজ্ঞোপ
হুইনে বিভিন্ন রাজ্য হুইতে চুক্তিংছভাবে
প্রান্ধিকসংগ্রহের ব্যবস্থা হয়। পশ্চিম
ভারতীর দ্বীপপুঞ্জের (ব্রিটশ) উপনিবেশশুলিতে ভারতীরপন ব্রেরিভ হুইতে
থাজে। ঐ সমর ভাহারা সম্কর্টজনক
পরিস্থিতির ভিতর দিরা চলিতে বাব্য
হুর। খাহাদের বেশ-ভ্যাদের পর সুক্র
প্রবানে উপনিবেশ স্থাপনের ইভিহাস

বছই কলে। ভারতীবেরা বেছার ঐ ব্যাদেশ গরন করে নাই। ভারতীর প্রনিক সংগ্রহের এক একট সংখ্যা (Recruitment bureau) গভিষা উটিবাছিল। ১৮৫৭ সনে নিপারী বিল্লোহের কলে সরপ্র দেশে এক কটল পরিছিভির উছব হয়। প্রনিক সংগ্রহুকারী সংখ্যাগুলি ইহার প্রবোগ বিশেষভাবে প্রহণ করে। ভাহারা নাবারণ প্রলোভনে ভূলাইরা ভারতীর প্রনিকর্পকে বিবেশে পার্টার। ভাহারিপকে বছির্ভারতে প্রেরণের সমর পবিষ্কার ভারাকের প্রব-প্রবিবার কিকে লক্ষ্য রাধা হইত না। এই প্রসক্ষে ভানা সিরাহে বে, পাক্তির ভারতীর বীপপুর্গানী ভাহাতে বাদ্যাভাবে ও আবিব্যাবিতে প্রভ্রার পরর ব্যাহিত প্রভ্রার পরর ভ্রাহিক ইহলীলা সংবরণ করে।

পৰে এইরপ অসহনীয় ছ্:খতোগের পর কর্মক্ষেত্রত তাহাবিগতে বছবিব অপ্রীতিকর ঘটনার সমূবীন হুইতে হয়। কর্মে নিবাপের পূর্ব পর্বাত তাহাবিগতে একজন কঠোর ভড়াববাহকের অধীনে বাকিতে হুইত। ভাহাবিগকে নাবারণত: ইক্তেরে ও জনপাই, কোজো, বালার প্রভৃতির ক্রকে প্রবিক্ষে কার্যে নিবোগের ব্যবহা হয়। তর্মে

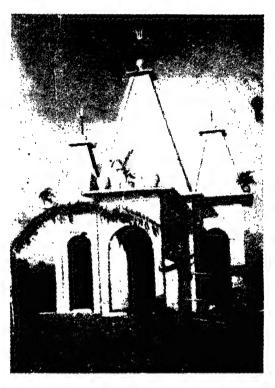
মিৰোগের পর শ্রমিকগণকে বে অবস্থার সন্থীন হইতে হইত ভালা অভীব বেদমাবারক। ভালাদের বাসস্থানগুলি বলবাদের উপবোদী বিল না। ১০০ কৃট দীর্ঘ ও ৮ কৃট প্রদান ব্যারাকগুলিকে ১৫.১৬ট শ্রমোঠে বিভক্ত করিবা বভদর সুবোগ দান করা হয়। কলে ভাহারা পৃথকভাবে বসবাসের
কল কমি পার। ভাহাতে সামাল কুটার নির্দাণ করিছা
বাকিবার ব্যবহাও করা হয়। কৃষিই ভাহাতের প্রবাদ
উপধীবিদা হইল। হারী ভাবে বাস করিবার আকাকা



স্থাৰী অবৈভাৰক্ষৰী কৰ্তৃক ত্ৰিনিদাৰে একট ভিন্দু-মন্দিৱের মারোগবাটন

সত্তৰ শ্ৰমিকে পৰিপূৰ্ণ করা চইত। ঐ বদ্ধ গৃগণ্ডলিতে তারতীৰ শ্ৰমিকগণ কৰেদীর লাহ দীবন বাপন কৰিত। তাহা-দেৱ সাত দিনের মধ্যে এক দিমও কর্মে বিরতি থাকিত না। প্রতিদিন ছব-সাত আনা পারিশ্রমিকে তের-চৌদ ঘণ্টা কঠোর ভাবে পরিপ্রন্ন করিতে চইত। চিকিংসার বালাই ছিল না। অসুস্থানিবদ্ধন কার্যো অসুপত্তি থাকিবা কৈকিবং দিতে বিলম্ম চইকে ভাচাদিগকে নির্মান ভাবে বেলাবাত করা চইত।

এবানে বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য বে, ঐ সকল প্রবিক্ষেত্র পদ্যায়িক চুক্তিতে ( অর্থাৎ, 'পাঁচ বংগল পলে বিনা বরচে ভাহালের ইজ্যালগারে ভাহালিগকে সদেশে প্রভাবিধনের স্বােগ দেওরা হইবে' ) লইবা বাওবা হইবাহিল। চুক্তির মেরাল শেষ হইলে, চুক্তির সর্ভ পালন করা দূরে বার্ক্ত, ভাহালের সাবাভতর লাবিগুলি প্রপেও কর্তৃপক্ষ কর্ণণাত করেন নাই। কথনও কর্থনও আবেদন-নিবেদনের পর ভাহালিগকে স্বদেশে প্রভাবিদনের অন্থতি লান করা হইত বটে, কিছু ভাহাতেও অনেকে স্বালেশ ক্রিছে ভারা পর্বাহিত বা, ভারব সর্ত্রপথে ভাহালের অনাক্ষিক কই ভাগ করিছে হইত। ইত্যার পর ভাহারা সক্ষরত ভাবে বাাক্ষিনার বারত করে বেন ভাহালিগকে পূর্বক ভাবে বাাক্ষিনার



ভারত দেবাপ্রম সজ্বের উভোগে ত্রিমিদানে নবমিশ্রিভ একটি হিন্দু-মন্দির

ভাহাদের হিল না; ঐ পুনর্বাসনকে ভাহারা সামরিক ভাবেই প্রহণ করিরাহিল। সংবাগ পাইলে হবেশে কিরিরা আসিবে এই আশা ভাহারা ছদরে পোষণ করিরা আসিতে-ছিল। কিছ ভাহা কার্য্যে পরিণত হর নাই। ভাহাদের সমস্ত ইক্ষাই ব্যর্থভার পর্যাবসিত হর। সেইকত পরে ঐ সৃষ্য প্রবাসকেই ভারতীরেরা হারী বাসত্বি বলিরা প্রহণ করে। পুন্যাস্ক্রেরে ঐ সুদ্ধ প্রবাসেই ভাহারা হারীভাবে বসবাস করিতেহে। ভাহাদের ঐকাভিক নিঠার ও অক্লাভ পরিপ্রবে ঐ বীপদেশ ক্রমণ: শস্তভামল ক্রমণের পরিশ্রভ হর। বর্ত্তমানে এই উপনিবেশগুলির অবিবাসীকের জীবন-বাজার বান পর্ব্যালোচনা করিলে দেখা বার বে, আর্থিক সক্ষ্যভাতা, বৃত্তির বিভিন্নতা এবং শিকা ও পরিবেশের হর্ম্ম ভাহারা ভিন্ট বিশেষ প্রেণ্ডে বিভক্ত। প্রথম প্রেণ্ডে উক্লিন, ব্যারিষ্ঠার, চিভিৎসক, বভ বভ শিল্পতি; বিভীর

শ্রেণীতে হোট হোট ব্যবসায়ী, ক্ষেত্রে বালিক, সরকায়ী চাত্রিয়া এবং ভূতীয় শ্রেণীতে অশিকিত শ্রমিক। শেবেকে শ্রেণীই—প্রবাদী ভারতীয়। কৃষিই ইহালে এক্ষাত্র সহল। ভাষায়া শতকেন্তে শ্রমিক বোগার, গ্রমিবেশের উর্লিভ



ত্রিনিবাবে হিন্দু-বন্দির

সম্বিদ্ধে ভাহাদের থান প্রশংসনীয়; কিছ ভাহাদের জীবনবাজার নান অভি নিয়ে। কর্তুপক ভাহাদের প্রথ-প্রবিশ্বর
বিক্তে লক্ষ্য রাখেন না। ভাহাদের সন্তান-সভতিপণ উচ্চশিকার
ক্রোগ হইতে বক্ষিত। জিনিদানের অবিশাসী সাঞ্চে সাভ সক।
ভাহাদের ক্ষত একটিও উচ্চ ইংরেজী বা নাব্যবিক বিভালর
নাই। ঐ হানে ১ লক ২০ হাজার হিন্দুর বাস। কিছ হিন্দুর
বর্ষ ও সংস্কৃতির অনুশীলনের উল্লেখবোগ্য প্রতিঠান একটিও ঐ
হানে দেখা বায় না। শিক্ষাদীকার বক্ষিত হইতেওে আক
ভাহাদিগের বব্যে একটা প্রাণচাক্ষ্য লক্ষিত হইতেতে।
ভাহারা বর্তবানে নিক্ষেরে খাখীন ভারতের অবিশাসী
বলিরা গর্মা অন্তব্য করে। আশা করা বার, শীমই ভাহারা
নুজন আলোক্যের সভান লাভ করিবে।

শভাবিক বংসরের মধ্যে এবানকার ভারতীরগণের সাবাজিক জীবনে ভক্তর পরিবর্তন আসিরাছে। ভারারা পাশ্চাভ্য ভাবে উর্ব হাইরাছে। ভারতীর রীভি-নীভিও ভারারা ভূলিতে বসিরাছে। ক্ষেক ক্ষম করিরা নিঠাবান রাজন এক-একট ক্লোনীতে বাকেনঃ ভারাবের চেঠার ভোৰও ভোৰও হাবে ধৰ্মীর অহুঠানাদি উদ্বাশিত হয়।

কিছ তাহা শালসমত নতে। ভোৰও কোনও হাবে শিবপূলা, বহাবীর পূলা, ইতা তাগবত পাঠ হইবা থাকে। হই
এক হাবে শিববলির হাড়া বর্মীর মত কোনও প্রতিঠান চ্টিগোচর হব না। হিন্দুদের বব্যে মাতিতেদ এবং শ্রেণী-বিভাগও
আছে। সনাভনী হিন্দু, আর্থ্যসনামী, কবীরপহী প্রভৃতিই
প্রবান। সনাভনীগণ হুঁংবার্গকে জীবাটরা রাধিবাহে এবং
আর্থাসনামীগণ বৃত্তি পূলার বিবোধী। সেইকত কোনও
প্রচারকতে তারতীর সনাভন আবর্শ ও হিন্দু বর্ষের আগভক
বৈশিষ্ট্য প্রচারের সময় তীয়ণ সরভার সন্মুবীন হইতে হয়।

বিদেশে হিন্দুদের সংগঠনী প্রতিভা বছগত হইতে পারে নাই। ইনি ভাহারা অনৈক্য পার্বক্য ভূলিরা সংঅবর না হর, তবে রাজনৈতিক ও অর্থনৈতিক সুবোগ-সুবিধা হুইতে ভাহারা বনিত হুইবে। এবন প্রতিষ্ঠান ছাপন করা আবন্তক বাহার নাধ্যবে ব্যাভাষাগার, পাঠাগার, ছালাবাস ও জনহিতকর সংস্থাসমূহ গভিরা উটিবে। বর্ষ ও সংকৃতিমূলক ভাববারার প্রস্তানক সঞ্জীবিত রাবিবার কর্ত শিক্ষিত সন্নাসী প্রচারক প্রেরণ করা দরকার। জিনিদানে ভারত সেবাপ্রম সংক্রের প্রচারক দলের পক্ষ হুইতে প্রেরিভ এক পত্রে জানা গেল বে, প্র ছানে ভারতীর ভাষার কোনও সংবাদপত্র নাই। সেইকল পারম্পরিক সংবোগ ছাপন ও সহযোগিভাকে দৃঢ় করিবার কর্ত হিন্দী ভাষার পাক্ষিক ও সাপ্তাহিক পত্রিকা প্রকাশ করা আবর্ষক। ইহা বারা ভারতীর সাংকৃতিক আন্তর্শ প্রকাহ হুইবে।

সন্দের প্রচারক্ষল বহির্ভারতে হিন্দু—তথা ভারতীরগণের বব্যে বিশেষ প্রভাব বিভার করিতেছে। বদিও হিন্দুগণ আগমাদের বর্ষ, সংস্কৃতি, রীতিনীতি হুইতে ক্রমণ: দূরে সরিষা নাইতেছে, বদিও তাহারা নাতৃতারা ভূলিরা গিরাছে তবুও এই প্রচারক দলের প্রচারের কলে বহির্ভারতে হিন্দুদের ভিতর প্রকৃতি ভাগরণ আগিরাছে। বর্ষ ও সংস্কৃতির প্রতি ভাহাদের প্রগান্ন প্রেম, নাতৃত্বির প্রতি বর্ষ্থবোব বিশেষ ভাবে সক্ষর। সন্দের প্রচারক্ষণণের উল্যোগে অক্টেড ক্রমসভার উল্যোদের কেই ক্রে বলিতেছেন বে, তাহারা নিক্রেরে হিন্দু ভণা ভারতীর বলিরা পরিচর দিতে গর্মা অক্টেম করেন। তাহারা এই প্রচারক দলকে বহির্ভারতে ছারীভাবে প্রচারক্যারের নিরাক্ষিত রাধিবার করু সক্ষ-কর্তৃপক্ষ প্রবং ভারত-সরকারের নিক্ট আবেষ্য ক্যান্ট্রাছেছ।

প্রায় এক বংগর অবিপ্রান্ত প্রচারের কলে সন্ন্যাসিগণ পশ্চিম ভারতীয় দ্বীপপুঞ্জ কন্দিশ আবেরিকার ২২টি প্রচার-ক্লেম ছাপন করিয়াহেন। বিনিদাহে প্রধান ক্লেম্বর ভার দামী পূর্ণানন্দের উপর অপিত হইরাহে। কেম্বর্ডনিতে নির্মিত পূজা, আরভি, বৈহিক সন্থা, বক্ত, ভক্ষমতীর্তন, হিলী পার্ত্ত- শালা নির্মিত চলিতেতে। সামীজী ঐ স্থানে একট গঠনসূলক পরিক্রমাও প্রথমন ক্রিয়াছেন।

বাৰীকী লিবিভাছেন, "প্ৰচাৱেৰ ক্ষত একট ৰোট্ৰ পাইৱাছি। ৪ নালে ব্লাবিক ৮০০০ ছাজাৱ বাইল জ্বৰ



ত্রিবিদাদে ভারতীয় প্রবিকের কুরির

**ক্ষিয়া দূৰ দূৰ আনে সিয়া বৰ্ণ সম্বন্ধে বক্তৃতা, সভাব্যাণ্যা,** শিকা সহতে বক্তভা ও উৎসাহদান, স্থানীর বর্ণ-সংস্কে नार्थाहिक श्रार्थमा-नका श्रीकानमा, यक, श्रका, चार्कक जन्मत করা ও করান, আনাবের বারা প্রতিষ্ঠিত হিন্দী চুলওলি পরি-वर्गम, रेविक्क जन्मा निकानाम, बर्जीस अञ्चीमानि जन्दर रव দক্ষ সমালোচমা বা সম্ভাৱ সন্মধীন চইতে চইতেছে, সে नवद्य विकित वर्षायलकीत जनदयक जत्यलद्य जनात्नाह्यात ৰণাৰৰ ৰীমাংসা, আৰাদের ছাৱা প্ৰতিষ্ঠিত কেন্দ্ৰগুলি পরিদর্শন ७ कार्यायनी पूर्व बार्ण शतिकानमात्र शतावर्ग विष्कृति । विसी इनक्रि बाह्यां कानकार हात, तारे विर्क विरमें रहे। করিতেতি। এক একট কেলা ধরিয়া দরে দরে বাহাতে ধর্মীর অক্টানাদি সম্পন্ন হয় এবং প্রতিদিন সন্মান বাহাতে গুহের পকলে প্ৰাৰ্থনার যোগদান করে, সেই দিকে চেঠা করিভেছি। और जक्रम कारकत जरक जरक अक्री विराम पतिकत्रमा অহুসারে কাক করিভেছি। হিন্দী ছুলের শিক্ষকণের একট সম্বেদন আহ্বান ক্ষিয়া ফুলওলিতে একট বোর্ড গঠনের তেটা क्विष्कि । अरे विश्वत प्रामीत मतकात ७ कावक-मतकात्वत ° দুট আকৰ্ষণ করিভেছি, বাহাতে হিন্দীভাষা এবানকার শিকা শ্ৰভিঠানে অবস্থপাঠ্য ভাষারূপে গুরীত হর।..."

সংজ্ঞার সন্ত্যালী প্রচারক্ষণ পশ্চিম ভারতীর বীপপুঞ্ বিশেষ সক্ষতার সহিত প্রচারকার্য্য স্বাপ্ত করিবা বিষ্টপ্ গিনিতে (স্বক্ষিণ আরেরিকা) গ্রম করেব। সেই ছামেও উাহাহিগকে,বিপুল্ভাবে স্বর্জনা আপন করা হয়। বিশ্বের সভ্যগণ প্রক্রিক্সন বিবাসবাঁটতে অবভয়ণ ক্রিলে প্রব্রেশর চীক সেকেটারী অনারেবল বি: জন ওচ, সরকারের শাসন-পরিবদের সক্ত বাননীর ডা: জে. বি. নিংক, ইলোগারেনিজ্ ভড্উইল সাভিসের সভাপতি বি: জে. প্রভূষাস, কেন্দ্রীর সংবর্জনা স্বিভিত্র সভাপতি বি. এসং পি. সিংক, সম্পাক্ত বি: দ্বীন্দ্রাস সিংহ প্রমুধ সভ্যর জন বিশিষ্ট ভারতীয় ভারতিদিগকে



ত্ৰিদিবাৰে কোকোৱ বাগানে কৰ্মত ভাইভীৰ প্ৰতিক

অভ্যৰ্থনা আপন করেন। বিনান্দাট হইতে একুপ বাইল হ্ববর্তী কর্জ টাউন শহরে সহস্তগণ নীত হন। শহরে পৌছি-বার সলে সলে স্থানীর বেভারকেলে হইতে নিপানের আগবন-সংবাদ প্রচারিত হর এবং প্রদেশবাসীর পক্ষ হইতে নিপানকে বাগত সভাবণ জানানো হয়। নিশানের আগবন-সংবাদ প্রচারিত হইলে প্রদেশের সর্বার ভারতীর জাতীর পভাজা উভোলিত হর এবং বেভারকেলে হইতে ভারতের জাতীর সভীত বিভ চর।

বিষ্টশ সিনিতে প্রার দেক লক ভারতীর প্রবালী ছারীভাবে বাল করে। ভরব্যে হিলুর সংখ্যা এক লক একুশ হাজার। ইরাদের পূর্বপূক্ষণণ শভাবিক বংসর পূর্বে এই দেশের চিনির কলগুলিতে প্রানিক হিলাবে আগমন করিয়াছিল। হীর্ঘ-কাল ইরাদের ভারতে প্রভাবর্ত্তন কর হালাই। ভারতের বাবীনভা অর্জনের পর ১৯৪৯ প্রীঠাকে এই ছান হইতে ভিন শভ ভারতীর বংলশে কিরিয়া সিরাছে। বছনিন রাভ্জুরি হইতে দূরে বাকার কলে প্রবালী ভারতীরগণ নিজ্ঞের বর্ত্ত প্রক্রিবারে অক্ত। পরিপূর্ণ পাশ্চাভ্য আবহাওয়ার ভিতর বাক্তিতে বাক্তিতে বিশ্বিক প্রিটিশ সিনির প্রার বাইশ হাজার হিলু বর্ত্তান্তর প্রকৃত করিয়াছে।

১৩ই সেপ্টেম্বর (১৯৫১) বধ্যাক্তে ব্রিটন সিনির সম্পর ভার চার্লন উলী বিশ্যের সভ্যপাদকে এক সংবর্জনা-সভার আণ্যারিভ করেন। ১৬ই সেপ্টেম্বর অপরাত্মে ছানীর টাউন হলে নাগরিকগণের পক্ষ হুইন্ডে উলীর পৌরোছিন্ড্যে এক বিরাট ক্ষমতার বিশ্বকে সংবর্জনা ভাগন করা হয়। বিশ্বের সভাগবের পরিচয় প্রকান করিয়া ব্যারিটার স্থানী সিং ভারত সেবাপ্রম সন্দের কর্তৃপক্ষকে বছবার কানাইরা বলেন, "ক্ষেত্রমাঞ্জ প্রবাসী ভারতীরগবই বহির্ভারতে এই



क्रिकिशारम आर्थाजवाच वन्तित

जारकृष्टिक शिनम श्रीदानद कह जाल्यद मिक्ट बने बाकिटन मा -- जनकार चन्ना जन्मनावय जन्मत निकृष्ठे जन जादन ৰণ ৰাজিবে।" সভাপতি ভার চার্লন উলী বিশনতে অভি-ৰন্দিত কৃত্তিহা বলেন, "আজিকার স্থতি আমার দীর্থকাল निश्काल व्यवद्वारमञ् नृनायाच वानादेश विरक्षतः। वानि সেধানে ভারতীয় সন্ত্রাদীর বে উদারভা ও মতামুভবভার পরিচয় পাইয়াছি ভাচা ভীবনে ক্রমণ্ড বিশ্বত হইব না।" किम बाबध बरमम, "बाबबा कातरकत निकृष्ठे कित्रवर्षे वाकित। এই ভাতীর প্রচারক প্রেরণের কর ভারতের নিকট আবরা ক্ৰছ । এই ভাতীর সাংছতিক বিশ্ন-যাতার আবর্ণ ভতি হৈছ ও মহান, ভদারা কেবল এখানকার ভারভবাগীর নতে, অভাভ সকল সম্প্রারেই প্রতুত কল্যাণ হইবে। প্রের ও বৈত্ৰীই ভারতীয় সংক্ৰিয় শিকা। এই শিকা এহণ কৰিয়া চলিতে পারিলে বিধের আধুনিক বয়বর সমস্তার সমাবাদ সহক हरेर ।" পরিখেরে ভিনি সলের প্রচারক-বলকে সর্বাধারত সচাহতা ভবিবার প্রতিশ্রুতি প্রহান ভবেন।

কর্ম টাউবের বেরর মি: আর. বি. গজরাক কনসাবারবের পক্ষ ক্রেডে বিশনকে সংবর্জনা কানাইরা বলেন, "আরু বক্ষিণ আবেরিকা ভারতের সংস্কৃতির প্রচারকগণকে সামর অভ্যবনা ক্রাপন ক্রিডে গিলা বিজেকে সৌরবাবিত বলে করিতেতে। ক্রেনা ভারতীর সন্নাগীর প্রাপ্ত এই কেলে ইরাই প্রবন " সংবর্জনার উভ্যয়ান-প্রসদে বিশবের বেভা খানী অবৈভানক্ষী ব্রের, "বিশবকে স্থানিত ক্রিবার ক্ষত আপ্নাবের বে আকুল আএক, তাহা তারতের গণাতৰ আবর্ণ, তথা সত্যতার প্রতি
অন্তরের গতীর প্রবার পরিচারক। তারতবর্গ হটতে এত দূরে
স্থাপিকাল বলবাস করিরাও তারতের সংস্কৃতিকে বরিরা থাকিবার কর আপনারা বে প্রাণণাত চেটা করিরাকেন তাহা তারতবাসী হিন্দুর নিকট আবর্ণরূপে প্রতিভাত হইবে।" প্রবাসী
তারতীরগর্পের ঘারিত্ব, তথা কর্তব্যের কথা উল্লেখ করিরা ঘানীকী
বলেন, "বিদেশে বলতি স্থাপনের সলে সলে সেই দেশকে মাতৃক্ষিরূপে বাভ করিরা তাহার উন্নতি-প্রগতির সহিত নিকেকে
বিলাইবা বিশাইরা বিলেও তারত্রাভাকে বিশ্বত হইলে
নিলাক্রণ ক্রতম্বভার পরিচর প্রবান করা হইবে। বিদেশে
ভারতীরগর্পকে দেখিরাই বিলাতীরগর ভারতীর সংস্কৃতির উচ্চ
আদর্শ ও সভ্যভার বিচার করিবে।"

হানীর সরকারের শাসন-পরিষ্টের একবার ভারতীর সহস্ত ভা: কে. বি. সিংহ সম্মেলনে ভারতীর সংস্কৃতির উলার আদর্শ, তথা সংস্কৃতি নিশনের হারা পশ্চিম ভারতীর হীপপুঞ্ বে নৈতিক ও বর্ণীর ভাগরণ আসিরাছে ভারার উল্লেখ ক্রেন। ভ্রমণ্ডার ভারতের ভাতীর সহীত বিভ হয়।

বিশ্যের সদস্তপণ চারি বাসকাল দক্ষিণ আবেরিকার विक्रेम निभिट्छ ভावजीय मश्कृष्टिय बहान जावर्गनवृत् बहाय करवन। छांकास्यत श्रीतात्वक करन मकन (अनेव सद-वादीव ৰব্যে অপূৰ্ব্য সাভা পভিয়াছে। সকলেই বিশ্বের বিকট হুইভে ভারতীয় সংভতির আমর্শ ও ভাবধারা ভামিবার ভয় বিশেষ-कार्य चात्रहास्थि। विचायत सहारुवन विक्रिय निविद लाहकार्या जवाल कदिवा कार्यक शत्य निष्ठेहेवर्क हरेबा मध्य महाद (भीविशासन । क्रिमिकारकद विश्वानवाँकिएक अवस्त्रभेवरक विश्वन मरवर्षमा जानम कता हत। वहतृत हरेए मध मध প্রবাসী ভারতীয়-সমত্রপর্যক প্রধার্য নিবেছমের বর্ত সম্বরেত ভটবাছিল। সামীতী ভাতাদিগতে যাতভ্ষিত বচান আহর্ণের क्षक्रि क्षेत्राचिक विश्वी दक्षा कृदियात चारवस्य कायादेश कायव ক্ষে। স্বামীকী পুনরায় বিদেশে মিশন প্রেরণ করিবার আখান ভাতাবিগতে প্রদান করেন। মিশদের প্রচারের প্রভাব ल्याजी जावजीवनत्वव बरवा अवयजारा शक्तिवाहिन रव. विवाद-कारत काहांदा अक्षेत्रश्वद्व कविटक शास्त्र माहे।

ভাত্রারীর (১৯৫২) প্রথম সন্তাহে বিশ্ব সঙ্গন বগরীতে অবভাব করেন। সঙ্গেও উাহারা অভ্যবিত হন। তাঃ বাজর ও তাঃ কুর্ট উাহারের প্রচারকার্ব্যের এবং অবহানের সর্ক্রণার প্রবোজনীর ব্যবস্থা করেন। হানীর হাত্র-সভ্যের পক্ষ হুইতে সংল্পতান বিশ্র এবং নাগরিকগণের পক্ষ হুইতে তাঃ ক্ষম্বন কুর্বিরা কর্ত্বক মিশনের সম্ভল্গন সংবর্ধিত হন। ১০ই ও ১১ই ভাত্রারী হানীর ভারতীর হাত্রগণরহিত হন। ১০ই ও ১১ই ভাত্রারী হানীর ভারতীর হাত্রগণরহিত হন। পরিকর্শনের উত্তেভ বিশ্বের সভ্যাপ ইতিরাম ইত্রেন্ট্য বুরো,
হান্স ক্রিনেন্ট, চিন্টইক, আর্গ্রেট প্রভৃতি ভারতীর প্রবং

বিশ্র ছাত্রনিবাস্থাল পরিজ্ঞবন্ধ করিছা ছাত্রগণের সহিত নালা বিবৰে আলোচনা করেন। লওন শহরে বিশনের সহত্যন বিভিন্ন ছানে ব্রিলা ব্রিলা সভাসনিতি, বর্ত্মালোচনা, ছাত্র-সমাজে নৈতিক আলর্শ ব্যাখ্যা প্রভৃতির বব্য বিলা প্রচারকার্য্য চালাইভেছেন। ২০শে লাহ্যবারী বিশনের উভোগে ইতিহান ই,ভেকস্ ব্যুরো হলে অস্টিত ভারতীর ছাত্রগণের এক সম্মেলনে বিশনের বেভা বারী অবৈভানক্ষী 'আল্প ছাত্র-ভীবন' সহতে সারগর্ভ ভাষণ প্রধান করেন।

লঙৰ শহরে প্রচাররত ভারত দেবাপ্রর সংস্কৃতিক বিশ্বের চিট্টপন্তাবি হইতে ঐ ছানের প্রবাসী ভারতীর হিন্দু নবাজ নহরে বে চিত্র পাওয়া গিয়াছে ভাকা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য।

ভারত হইতে আগত ছাত্রগণ ব্যতীত শতাবিক বংসর পূর্কা হইতে এই ছানে বহুসংখ্যক হিন্দু ছারীভাবে বাস করিতেছে। বর্তনানে ভাহাদের সংখ্যা দশ হাজারেরও কিছু বেশী, ভববেয় বাঙালী, সাজালী ও পঞ্চাবীই প্রধান। অলসংখ্যক শুকারী এবং নিছীও আছেন। ব্যবসারী, অব্যাপক এবং বে-সামন্ত্রিক কর্ম্মান্ত প্রায় ছার শত হিন্দু চিকিংসক আছেন। আবিক অবস্থা প্রায় ছর শত হিন্দু চিকিংসক আছেন। আবিক অবস্থা প্রায় ছরবছার প্রতি বে-কোম বর্মপ্রচারকের ধর্মী সর্বপ্রধন্ধ আক্রম্ভ হব।

এবানে অল্লনংখ্যক ভারতীর বুসলবানের বাস। তাঁহারা শহরের বিভিন্ন প্রান্তে চারিট নগজিদ পরিচালনা করিতেছেন। প্রভি সপ্তাহে এই নগজিদ ওলিতে তাঁহারা পরস্বাহের সহিত বিলিবার স্থাবাগ পাইরা বাকেন। অল্লসংখ্যক শিবও তাঁহানের অক্লবারে সরবেত হন। কিন্তু হিন্দুর কোন বিলমের ছান নাই। বিভিন্ন সন্তাধারের বিবাহাদি অস্কান উদ্বাপনের বাজক আছেন; কিন্তু হিন্দুর বিবাহ, উপনরন, প্রভৃতি অস্কান সন্দার করার কোন পুরোহিত নাই।

বহনংখ্যক হিন্দু বেভাল রননীর পাণিএছণ করিয়াহেন। তাঁহাবের অবিকাংশই হিন্দুবহিরাহেন। হিন্দু সমাজে ঐ নবাগভা খেতাক রননীগণ বলিও হিন্দুবর্ণের প্রতি গভীর প্রভাশীলা তথালি উাহাবিগকে হিন্দুবর্ণের মহান্ বাই ভ্যাইবার মত কোন ব্যবহা নাই। কাজেই ভাহাবের সভানগভভি হিন্দুবের কোন শিকা লা পাইরা বিঠান হইরা বাইভেছে।

বিশু এলোসিংহশন নাবে একট বিশু-প্রতিঠান আছে।
ভাষার কর্তৃপত অনেক বিন হইতেই একট বিশু ননির অববা
বিলবক্তের স্থাপনের পরিকল্প। করিভেছিলেন। সম্রতি
উক্ত প্রতিঠানের পরিচালক সমিতি ভারত সেবাপ্রব সন্দের
বাচারক্সবের আহর্ণে উচ্ছ হইরাছেন। প্রচারক্সবের
উল্লোধ্য অনুষ্ঠিত একট সভার সভবের বিশুবের বিলব-

কেল্পরশে ব্যবহারবোগ্য একট কবনের কর উপর্ক্ত চালা সংস্থীক হইরাছে। আশা করা বার শীন্তই উহার উরোবন-কার্বা সম্পন্ন চটকে।

বৰিও বিদেশে বছসংখ্যক হিন্দু একলে বাস করেন তথাপি বৰ্ম তথা সংস্কৃতির প্রচারের অভাবে শুভ শত হিন্দু বর্মাভয়



বানী অবৈভানস্থা কৰ্ড্ক বিনিদানে একট সন্ধিনের ভিত্তি-প্রভার ভাগন

এহণ ক্ষিতেছে। বহির্তারতে পৃথিবীর বিভিন্ন অঞ্চলে প্রার্থ এক কোট হিন্দু হারীভাবে বাস ক্ষিতেছেন। ভাইতরাই হুইতে ভাহারের সামাজিক তথা বর্মীর সন্থা রকার কোন ব্যবহা হর নাই এবং বর্ষনিরশেক রাষ্ট্রের পক্ষে ভাহা সভ্য হুইরা উট্টবেও না। ভাই বেসরকারী প্রতিষ্ঠানগুলির পক্ষ হুইতে এই সম্ভাবেশ বর্ষপ্রচারক প্রেরণ ক্ষিয়া দীর্বলাল প্রবানী হিন্দুগণের বর্মীর চেতনা লাগ্রত রাখিতে হুইবে। ভারত সেবাপ্রবান কর্ম বর্জনানে এই প্রচারকার্য্যে ব্যাপকভাবে পরিচালনের অভ উহার প্রবান কর্মক্ষেররণ কলিকাভার "ভারতীর সংভৃতি ভবন" নাবে একট সাংভৃতিক সংখ্য সন্দের পরিচালনার গড়িরা উট্টবাছে।

## ধান বনাম পাট

#### প্রীক্রনাথ ছোব

ন্তৰ সেজাল প্ৰকাশিত না হওৱা পৰ্যাত পশ্চিৰ বাংলার লোকবল লহছে সঞ্চিত বাহপা করা বাবে না। তবে বাংলার বাইবহোলরগণের বিয়তি বেকে বলে হয়, পশ্চিম বাংলার আহ্বানিক লোকসংখ্যা এবন আভাই কোট। ১৯০১-৪১ দশকে
লোকস্থির হার বরে হিলাব করলেও এ অস্বানই সঞ্চিক
বলে বলে হয়। ১৯৪১-এর পর লোকসংখ্যা শভক্ষা হুই
ভল করে বছরে বেকেরে বরুলে পাওয়া বার :

44	লোক্সংখ্যা
7987	۹,۵۵,۵۴,۵00
>>81	٩,७٩,৪०,०००
3585	₹,84,₩1,000
>>40	۹,40,33,000

ত্ৰহাং আৰম্ম বৰে নিভে পাৱি বে, বৰ্ডনান পশ্চিন বাংলার সৰজা হ'ল স্মান্তনে আভাই কোট লোকের বাওয়া-পনার সংস্থান করা।

১৯৪১-এর দেখান অভ্যারী ভারত ইউনির্যের সর্ভ রাজ্যগুলির বব্যে পশ্চিম বাংলারই লোকের বস্তি সর্বাণেক। ঘম। পশ্চিম বাংলার পরই মুক্তপ্রবেশ ও বিহারের ছাক—

वाका	প্ৰতি বৰ্গৰাইলে	লোক নংখ্যা
খাসাম	•••	281
পশ্চিম বাংলা	•••	143
বিহার	•••	433
ট ভবা	•••	293
भवा बारमम	•••	313
र्क थरमन	•••	422
ৰাজাৰ	•••	<b>65</b> 5
বোখাই	•••	₹10 .
পূৰ্ব্ব পঞ্চাৰ	•••	801
ভারত ইউনিয়ন	· · ·	961

বাৰীনতা অৰ্জনের পর 'গ্রবেশ'গুলির নাম পাণ্টে রাথা হরেছে 'রাজ্য' এবং তাদের পরিবিও পরিবর্তিত হরেছে। অবিকাংশ রাজ্যের পরিবিই বিভারলাত করেছে, কিছ পশ্চির বাংলার পরিবির ইতর-বিশেব কিছুই হর নি বলা চলে—বাঞ্জ কোচবিহার রাজ্যের ১৩০০ বর্গবাইল সংযুক্ত হরেছে (এই আলোচনার কোচবিহারের কথা বরা হর নি)। পরিবি বিভারের গলে সলে রাজ্যগুলির লোকসংখ্যাও কিছু কিছু বেকেছে বিক্ষাই, কিছ লোকের চাপ বে সেই অর্পাতে
অভাবিক হবেছে ভা মনে হর বা। ১৯৫১ সনের পেলাসই সে
প্রান্নের জ্বাব দেবে। পশ্চিম বাংলার কথা আলাহা। ১৯৪১
সন্মের জ্বাব দেবে। পশ্চিম বাংলার কথা আলাহা। ১৯৪১
সন্মের জ্বাব দেবে। পশ্চিম বাংলার বে বেকেছে সে
বিবরে কোন সংশব বেই। লোকসংখ্যা আছাই কোট বরে
হিলাব করলে প্রতি বর্গনাইলে লোকসংখ্যা ইছার ৮৬০।
লোকসংখ্যার অক্সত্ব সমাক্রণে এভেও বোঝা বার বা। সেক্ত বেধার প্রয়োজন লোকসংখ্যার অর্পাতে কর্ববোগ্য (ক্ষিত ও পভিত) জ্বির পরিবাণ ক্রিপ। এই ভাবে হিলাব করলে দেখা বাবে বে, সভর কন লোককে নির্ভর করতে হর বার দশ একর জ্বির উপর। বে দেশে (বিশেবতঃ বে দেশ ক্ষিপ্রধান) রাজ এক একর জ্বির উপর একাবিক লোককে নির্ভর করতে হব, লে দেশে লোকবস্থি-সর্কা ও বাত-সর্কা বে সম্কর্তক্ত হবে ভাতে আর আক্রম্য কি প্

जक्रमहारमद करण जन्यानक महलानवित्र निहास करविद्यालन ৰে, প্ৰতি সপ্তাহে বাংলার অধিবাসী গড়ে ৩'৫৮ সের বাছপঞ প্ৰচণ করে। প্ৰশ্যেকের খাল্লীতি এই সিহালের ইপর विक्रिक। यनि और नियास्त भावता चीकात करत नि'. चर्नार, यनि बद्ध दमक्षा बाद दम बाबा-निष्ट अदक---नाटक छात्र वन ( जनवा नक्षाद्य नाएक जिन त्नव ) हान व्यवाचन, जा व्रान पश्चिम मारलाव २,६०,১১,००० चनिनानीय *चन्न नव्यत द्या*राधम क्टन > १,२१,१२,००० वन (ना ४२,७३,००० हैन) हान । कि माक्रमर्गा चाकारे काक्रिय त्वी वर्ग बर्ग करण कुमार्ग ना। পশ্চিম বাংলার ২,৩৫,০০,০০০ একর ভূমির মধ্যে নার শতকরা ७० जान कवित्व हाव-जानाव हमस्य भारत । 3,83,00,000 अकड हांदरवांत्रा कवित बरवा साथ वित्र तक अकड कवि हांव-হোগ্য হলেও পভিত। একর-প্রতি ইংপাচন-চার ৮০৬ পাইও बरद कर्बनरवांना ( कर्बिक ७ शक्कि ) ১৪১ नक अकद कविएक अक्नाब नामरे हाय क्या ब्रायट यनि नाम व्यक्त वात. का राजक (बाहे १) नक है (बह राष्ट्र हान बाबहा गारे वा । अरे ক্ষুল পেলে পশ্চিম বাংলার চাহিদা কোন কক্ষুদে বিচাৰে পাৰে। কিছ একমাত্ৰ বাদ বোদাও চলে বা বা সহ পভিত क्वि अवनरे वानहाट्य जानांच यात्र मा। वान त्वाना वय नरक र क्लांके अकत कविरक अवर का त्वरक मानदा त्वरक भारत ( bob भारेक हेरभारत हात बरत ) ७७ जक हैन हाल चर्ड चांबारस्य बरवाक्त नानक्त्य 85,65,000 हेन हार्लव

পুভরাং বর্তবাদ পরিছিভিতে ক্ডকটা প্রত্থাপেন্টী হরে বাকা ছাকা পভারত নেই। পভিত কবি উলার করে বে বিশেষ পুরাহা হবে ভাও বনে হর না, কেননা কবিবোগ্য পভিত কবির পরিবাণ পভিত বাংলার নাবাত—বাত্র বিশ লক্ষ একর। কবিকাংশ পভিত কবিই হচ্ছে বাঁকুলা, বেধিনীপুর, বুশিলাবাদ, নদীরা ও লার্কিলিং কেলার। লাউড কবিটির

46	
<b>ৰেলা</b>	শভকরা কভ ক্ষি প্রিভ
	কিছ
	कर्रनरवाना
ৰীৱভূষ	<b>▶</b> 'o
ৰৰ্মান	<b>*</b> **
বাক্ভা	24.7
<b>चननो</b>	<b>%</b> *•
হাওছা	<b>₽.</b> •
<b>ৰেদিশীপুর</b>	22.2
वृत्तिकाचाक	24.4
নখীৱা	>8.€
२८ প्रत्रना	8.8
पार्क्किन .	22.5
জলপাইভ/ড়	<b>67</b>
ষিশাব্দপুর	28.€
মালকহ	<b>F'b</b>

এই তিসাৰ খেকে ৰোৱা ৰাচ্ছে ৰে, চায়ৰোগ্য সৰ ক্ষিতেই श्राद कांच कहा हह। प्रकहार शक्कि क्या कांद्र नातित्व कत्रम राजारमाञ्च कहमा चराचर । (त्राटक्ट रावणा, मानाद সংস্ণাৱ এবং ম্যালেরিয়া প্রভিরোবের উপার মা করা পর্যন্ত পতিত ভমি উভাৱের ভৱনা ভৱনাই থেতে বাবে। ভা ছাড়া বৰ্ডৰাম পশ্চিম বাংলা প্ৰৰ্থমেণ্টের অৰ্থসক্তির ক্ৰাও ভাৰতে कृत्य । जावनिक देवकानिक ध्रमानीत नाकार्या क्षित केवात-সাৰ্থের অবট চ'ল বাহবাললা এবং ভাও সভজসাবা চহ বহি ৰাভি এভসতে এভটানা বিভও ভবি পাওবা বাব। পশ্চিব वारमात रव मिक्क क्षत्र दृद्धाद का कृत कृत करान विक्क : ১০০ এতর রত-ধরালা পতিত ত্রির পরিষাণ প্রকরা ১৫ णात्रबंध कथ । अवर्रावर्केत वस्त्रवी शतिकत्रमाश्रीन कार्याकती হলে হয়ত পভিত জমির কতক পরিবাণ উরার করা সভব হবে, ভার পূর্বে বর। পঞ্চাভরে বহু-মদী বন্ধে বাওরার কলে कर्षिक क्षतित केश्मातिका अक्ति क्षत्रमा करत जानाद : मरीव चन क्यांडे क्रांस कामान क्यांगरमन बाह्कांगक (राष्ट्रे চলেতে। আৰু আতে প্ৰকৃতির ধেরাল। তাই কলল না বেছে ক্রমণাই করে আগতে। আরও বেবছি নবীপ্রলির হুই कृत्म बच्छे निय-कायबामा नरक वैर्देश, हारवय बरवाना क्षिय পরিবাণ ভড়াই বেডে বাজে---

ৰেলা	কৰ্বণের অংখাগ্য কৰি		- হাৰ u + বৃদ্ধি
ŧ	<b>দশ</b> স্ সার্ভে	লেটেলবেণ্ট বিপোর্ট	
वर्षमाम	478,854,04	403,336.00	+ > 2,80) 0 0
चननी नवय	82,205.65	82,034 48	+ >>0.76
<b>এবাদপুর</b>	85,826,07	Ar'977,84	+ 0,618.20
হাওছা	44,049'42	40,206,54	+ 2,300'09
(विविगी पूर	137,448'43	400,014'89	+ 48,692.30
ব্যারাকপুর	43,495'40	39,820'60	+ 8,000'11
বারাসভ ভারবভ-	or,084'63	an' \$70.55	+ 8,500'01

হারবার ১০২,২৭৮'০৫ ১১,৫৮৪'৩১ + ২,৬১৩'৬৬
উপরের হিলাবগুলি পশ্চিন বাংলার গ্রথবেন্ট কর্তুক
প্রকাশিত নিঃ ইলাকের রিপোর্ট হতে দেওরা। অভএব বেখা
যাছে বে, কলকারখানা প্রলাবের সদে সদে কিছু কিছু ক্ষিত্ত
ক্ষি—কর্ষণের অযোগ্য ক্ষিতে পরিণত হরেছে। অভ বিকে
বাংলা-বিভাগের পর বাভহারাদের আগননের কলে নানা
নগর গতে উঠছে। গ্রথবেন্টের 'ন্যাটেলাইট' টাউন পরিক্রমা
কার্যকরী হলে আরও কিছু চাবের ক্ষমি বাছার বিকে নার,
ক্ষমে আলার বিকেই এবং বাংলাদেশে চাবের ক্ষমি হাল
পাওরার ক্ষই হ'ল বানের ক্ষমির হ্লাস, স্ক্রমাং পশ্চিম বাংলার
প্রধান সম্ভাই হ'ল বান চাবের ক্ষমির সংরক্ষণ ও পরিষ্করি।

পশ্চিম বাংলার বিভীর প্রধান ক্ষরিকাভ ক্রব্য হ'ল পাট। বাংলা-বিভাগের পর পশ্চিম বাংলার পাটের চাব ক্ষরণঃ বেকে বাজে—

वर्ष	পাটচাবের অবির পরিষাণ		
7>80-88	২৪০°¢ সহুত্র এ <b>ড়</b> র		
>>88-8€	290.¢ "		
>>84-84	٠, ١٠٠٠		
2>84-8J	>e<.0 " "		
3381-8F	\$##,8 " "		
798r-89	<b>◆87.7</b> " "		
3383-40	8 <b>&gt;</b> b'o ,,		
>>60-62	<b>*#0</b> '9 ,,		

বাদের প্রবাদ প্রভিবোদী হ'ল পাট, ভাই পাটচায় বাজনে বাদের করি ব্রাস পার। পভিত করিতে চার করার কলে পাটচার বৃদ্ধি পেলেও, কিছু পরিবাণ বাল-করিতেও বে পাটচার করা হবেছে ভা পশ্চিম বাংলার বাজ-সচিব বীজার করেছেন। স্করাং দেবা বাজে বে, বাংলার পাটচায় বাজ-সমজা সমাবাদে সহারক না হতে, প্রভিবন্ধক হতে উঠেছে। কলম বাজাও' আন্দোলন এবং প্রব্রেটের বাজ-সংগ্রহ নীজি বালচাবীকে প্রসূত্ব করতে পারে নি, পাটচায়ই ভার ভাছে

অবিক্তর লোভনীর মনে হরেছে। অভ বিকে আছে পাইকলওয়ালাবের বিপুল অভিযান। 'কুট বিলস্ এসোসিবেশন'
ভাবের বিপুল অর্থসন্তি বিরে পাক্তর বাংলার পাইচার
বাভাবোর সপক্ষে বে ব্যাপক আন্দোলন চালিবেছিল ভাতে
আনরাও বোগ বিডেছি; 'করেন এজচেরু' উপার্জনের বোহাই
বিরে গবর্গনেউও সেই আন্দোলনে বোগ বিরেছেন। আদ ভারই কলে হরেছে বাবের কেতে পাটের আবির্ভাব। বাভ
আন্দানীর অভ চাই 'করেন এজচেরু', আর পাই বেচে পাই 'করেন এজচেরু' এবং পাটের ব্যাপকভার অর্থ হ'ল বাভউংপাদন হ্রাস। অর্থাৎ ক্থাটা ইভাল, পাইচাবের কলে
বাভের অভাব হ'ল ভীরভর এবং সেই বাভাভাব নেটাভে বেচতে হল পাই।

'করেম এজচেঞ্ল' উপার্জন তথমই হর সাধক বধন ঐ অজিত চীকার বছলে এমন সব পণ্য আমদানী করা বার বা বেশের বনরভির সহারক হর, অধাং বলি তোগ্য-পণ্য আমদানী না করে উংপাদন-সহারক পণ্য (বাকে বলে প্রোভাকশন্ ভর্ছ,) আমদানী করা বার তবেই 'করেন এজচেঞ্ল'র সহার হয়। ভারতের পক্ষে 'করেন এজচেঞ্ল'র সহার হয়। ভারতের পক্ষে 'করেন এজচেঞ্জ' উপার্জনের অভতম প্রধান উপার হ'ল পাট বা পাটক পণ্য রপ্তানী। পাট ও পাটক পণ্যের প্রধান করেনে তার করানী করে ভারত বে চাকা উপার্জন করেনে ভার একটা নগণ্য অংশ ব্যর হরেনে বাত্শক আমদানী করেছে।

44	কাঁচা পাট ও পাটক পৰ্য		
	রপ্তাশি		
7980-87	eण,२७,०७,००० है।का		
2987-85	<b>%8,%3,</b> 29,000 ,,		
7984-80	84,82,40,000 ,,		
7981-82	3,40,43,40,000 ,,		
7989-40	3,80,12,31,000 ,,		
>>10-4>	3,3%,88, <del>6%</del> ,000 ,,		

১৯৪০-৪১-এ বাজ শতকরা ২৭ টাকার বাজবজ ( অবাং জোগ্য-পব্য ) আবলানী করলেও ১৯৫০-৫১-তে তা বাঁজিরেছে শতকরা ৭১ টাকার। তা হলে কবাটা বাঁজাল এই বে, ঘাবীনতা অর্জনের পর পাট ও পাটক পব্য বেচে বা 'করেম এলচেরু' উপার্জন করা হরেছে তার প্রার নবটাই আবরা বেবে পেব করে বিবেছি। 'করেম এলচেরু' অবিক্তর পরি-রাবে ট্রপার্জনের প্রয়াসে পাট রপ্তানির প্রতি বত অবিক্ নকর কেওরা হবে, বাম উৎপার্গনের পরিমাব ততই হ্লাস পেরে আসার কবা, অর্থাং বে পবে আমরা চলেছি তাতে অনুর তবিভতে পাক্তর বাংলার পচ্চে বাত সহতে আরাকের এই হুৰ্মালভার প্ৰােগ নিবে ব্ৰাণিকারক কেশগুলির চড়া দর। ইাজাও কিছু বিচিত্র নৱ।

बारमात चर्याचित किए (बार एक्ट्रांस बनाए कर व. शिक्त बारमात शाहे-चित्रहे करव केर्द्राष्ट्र बारमात चार्षिक विभवादक अध्यक क्षताम (क्षता) (व निर्द्ध नक नक डीका ও লক লক লোক বাইছে, নেই পিল বেশের অর্থনীভিকে fertig were awei serm an ainem sie ni-watt क्यांडे। विद्यापन करत रामना बाक। वारलाह व्यवसीचिट्ड शाहे-निरम्भ काम क्रकीकृ ? शाहिनिरम्भ यस मक्र हीका समाका करमध बाढामी भाकेताबीद चवता कि वर मक्स ? भाकेमिरक नाट्य दान चानारे वाद 'विच नवाव' (क्वित) चाद शहे-কলওয়ালাকের বরে। চাষী পাট উৎপাদন করতে বে অলাভয়িক পরিপ্রার করে ভার বছলে পাট বেচে বা পার कारक (म 'मावनिरहेक (कारकरनद' देशदा देईएक शांदा मा . eirke aurm weie (wie wen bie water wiewiss चल आरब के 'जावजिरहेज रमस्यामव' धेनश्क धेनाक्वय करा कार शक्क चन्नवर दिन या। जकरार (महिक (बंदक शाहे-हारहत करन शक्तित वांश्ला *र*व विरम्भ नाक्वाम हरहाई छा वला बाद मा। दिखीदण: शाह-कमश्राल शालाव बारलाव অব্দিত তলেও ভাষের মালিক প্রার যোল আনাই বাংলার বাইবের লোক। কেরাল-শ্রেণীর কিছ লোক বাদ দিলে প্রবিক প্রেণীর অন্যান অর্ভেকাংশ বাংলার বাইরের লোক बबर बड़ा वा धैभार्कम करत छात्र हरन बाद वारमाह

শভ ভাল, বয়দা প্ৰভৃতি শাভপণ্য আবদানী	রপ্তামীর শতক্ষা ছিলাবে আর্থামী
>8, 48, ≥€, 000 \$1 <del>4</del> 1	49
34,08,00,000 ,,	20
*0,re,000 ,,	>-अस क्य
r1,40,42,000 ,,	45
>>,40,>>,000 ,,	•>
bo, 24,85,000 ,,	15

বাইরে। প্রভরাং বাংলার আবিক সর্বিভে ভাবের বাদ নগণ্য।

এ ক্ৰাৰ প্ৰাক্তিকভাৱ বিভীবিভা কেট কেট বেবলেও এবানে ভবু বেবাভে চেৰেছি বাংলার অৰ্থনৈভিক ক্ষেত্ৰ পাট-শিলের হান কোবার। ভা বলে কি পাটশিলের কোন বানই বেই বাংলার অৰ্থনীভিতে ? আহে বৈকি । ট্যান্ত ও ডক বাবদ বেকে বা আহার হয় ভার একটা নাবাত অংশ পশ্চিম বাংলা সম্বভাৱ পান। পাট বিক্রম করে লেল-ট্যান্ত বাবদ পশ্চিম পাটশিল্ল বাংলা সমকার পান আহ্বানিক ২৫ লক্ষ্ টাকা। ভক্ হিনাবে পাট ও পাটল পব্য বেক্তে আহার হয় বছরে প্রায় ৭৫০ লক্ষ্ টাকা; অবচ ভা বেক্তে পশ্চিম বাংলাল ক্যাক নান ১০৫ লক টাকা। আন ইন্কান ট্যাক্স বাবক পশ্চিন্ন বাংলা-সরকার পান প্রান্ত ৬ কোট টাকা। ইন্কান ট্যাক্স, কর্পোরেশন ট্যাক্স ইত্যানি বাবক পাট ও পাটক পণ্য থেকে বা আলার হয় ভার একটা নগণ্য অংশ এই ৬ কোট টাকার অক্স্ তা। অর্থাৎ পাট ও পাটক শিল্প থেকে পশ্চিন বাংলার পাওলা নোটার্ট একুলে প্রান্ত হই কোট টাকা। পশ্চিন-বাংলার ওধু বাত বাক্ষেটই বেবানে ২৫ কোট টাকার উপর নেবানে ভার সবচেরে বড় আবের পথ থেকে ভার প্রাণ্য নাল হ' কোট টাকা। অর্থাৎ পশ্চিন বাংলা হানীর অবিবানী-

বের বাভ বেকে বকিত করে পাট বেচে 'করেন এলচেপ্র'
উপার্জন করতে সারা ভারতের বাভ-সরভা সরাবাদের কত।
আর এই বার্বভাগের কত সে পাছে পাটলির বেকে
আন্দান হ' কোট টাভা মার । পাটভক নিরে পভিন বাংলার
প্রতি বে অবিচার করা হবেতে এবং হচ্ছে ভা এ বেকেই বুকা
যাবে । বাভ ঘাটভির কত প্রতি বংসর বে পরিরাণ বাভশভ পভিন বাংলাকে আনহানী করতে হচ্ছে বাংলা এবং ভারতের
বাইরে বেকে, ভার বৃদ্যুও সম্কুলান হর না পাটলির বেকে
পাঙরা এই হ' কোট টাকা বিরে।

## সুষ্মা

## এখামাপদ চট্টোপাধ্যায়

শৈলেশ অনেক দিন পরে বাকী কিরে এলেছে। কিছু অভ বারে বাকী কিরে যে আনন্দ সে পার, আজু তার ক্পারারও পেলে না। পরপুক্রের পরগুলো বেন তাবের সৌন্দর্য হারিরে কেলেছে, আবের নিকটের শালবনের সে আকর্ষণ-শক্তি আজু আর নেই।

प्रथम किमा निरम कडाल क्रमेंगेन्स । क्रमेंगेन, बाद वस्त চলিশের কোঠার এসে পড়েছে, বাবাভরা বার টাক, বিভা **प्रिकाणि वा कामारम बाद यूथ काँठाशाका (बाँकशक्रिक** বিসদৃশ মৰে হয়, সেই বিগতযৌগন বিগওসৌশন্য ষগদীশকে কিনা প্ৰয়ার মত মেরে বিরে করলে। খবচ হয়বার দৌনর্ব্যের সীরা বেই—বে শিক্ষিতা, সে আব্যাকা। र्वारवत मर्या चांत मा-नाथ (महे. त्म मानाव परत माच्य। चार्यत चर्चारवरे त्व न्यानावती पार्त त्मरह, छ। वृत्तत्व चन्छ শৈলেশের বাকি মেই। কিছ সুধবা ভো আপত্তি করতে भावक। बनाक भावक, "बाबि विदय कवन मां।" देनलामब সদে ভো ভার সেই কথাই হরেছিল। সুষ্মা বলেছিল, "বাৰি ভোষার: ভোষার হাড়া বার কারো হব বা।" বৈলেশও বলেছিল, "পড়াঙলো শেষ করে অর্থ উপার্জন করি। चाव शब ट्यांबाब विरंब कवा एक ट्रिकाब। विन मा निर्क हार, कांव करन निरंत करन मान। नारन क कानाव नरन ?" ব্ৰমা রাজী হ্রেছিল, বলেছিল, "ভালবাসা বার এক ক্মকে। বাকে ভালবাসা বার ভাকে হাড়া আর কাউকে বিবে করাও गांव मा। त्व त्वात्व अक् क्वात्क कांगरित कांव अक क्वात्क বিৰে কৰে ভাকে ভাষি অসভী বদতে কৃষ্টিত হব বা ৷" সেই देश्या वर कथा कृत्व विद्य कहान क्ष्मदीनरक । देनान्यत्मह মৰে হ'ল আহ এবাৰে বাড়া চলে বা। আছই লে

চলে বাবে কৰ্মছলে। বেগানে সুষ্মা দেগানে ভার ছান নেই।

प्रयोद बाबा हित्याहम हिलम बक्शन महरदद अक रामकाको करमायक प्रशासक। देनरम्य सारे करमायके প্ৰভা এক প্ৰাৰে বাভী বলে হরিবোহনের অভ:পুরে ভার ছিল অবাৰ গভি। পুৰুষাকে লে-ই ভার ছলে পৌছে দিৱে কলেকে বেড, চুটির পর আবার ভাকে ছল বেকে বাসার পৌছে দিভ। ভাদের বাসার বৈকালিক কলবোর অভে श्ववबाद महम ब-४-छ। मिरब चारमाहमा त्मरद बरकवारत बारब লে হোকেল কিব্ৰভ : সভ্যাৱ এক ঘণ্টা সুষ্মাতে পভাতেও व'छ । अ श्रावादन प्रेक्टइड वाका दव चनिकेका व'न का अक्सास व्हिट्टाव्यक वर्ष काकरे क्रेशका कराव भारतम । निरमन हिन जारात करि। जात त्नवा बाद्य बाद्य क्र'अक्की जावनिक কাগতে প্রকাশিতও হ'ত। ভার লেবার বিষয়বন্ধ ছিল প্রেম। নিকের লেবার হল বরে প্রবার সলে লৈলেশের আলাগটা বেল কৰে উঠছিল। লৈলেল বভ লব ভক্লণ লাহিভ্যিকের লেৰা এনে বিভ সুষ্মার হাতে, সুষ্মা সে সৰু গোঞানে বিলভ। ভার পর ছ'ক্ষের আলোচনা কুরু হ'ভ। এই नमस्बरे त्थान नचरक प्रवमा अक्डी बादना करव निस्त्रविन अवर र्निलिएनइ थ्रिय-निर्देशताब केवरद रा चार बचायक क्रियाक क्रविच ।

হ্বমা ব্যাষ্ট্রক পাস করে বর্ধন কলেকে ভতি হ'ল ভবন পৈলেশের কলেকের পঞ্চা শেব হরে পেছে। সে অবেক চেঙা করেও পরীকার অক্তভাব্য হতে পারল না। দীর্থ-বিংখাস কেলে ভাকে বেভে হ'ল কলকাভার এব-এ. পড়তে। ছুটভে এাবে এসে হ'কমার কেবা হ'ভ, ক্থাবার্তা হ'ভ; ভিড নাহিত্য সহতে আলোচনাটা আগের বভ করত না। ভার পর শৈলেশের পড়া শেষ হ'ল, ত্বরাও আই-এ পাল করে
বাবে এনে বাল করতে লাগল। কিড শৈলেশের অনুষ্ঠে
বাবে বাল করা ঘটল না। চাকরি পেরে লে কলকাভাতেই
বেকে পেল। সওলাগরি আপিন, কুট নেই বলকেই হয়। ভাই
উত্তরের দেখাশোষাও হরে পেল বছ। শৈলেশের সংলারেও
এক বিববা শিলীরা ঘাড়া আর কেউ ছিল নাবে, ভাকে
আনবার বভ ভাগির দের। এক ছিল ত্বরার ভাগির—লে
ভার বলে। ত্বরাকে পেতে হলেও চাই বর্ণ, চাই কিছু লকর।
বোরের নীড় বাঁবতে পেলেও চাই নীড়বাঁবার উপকরণ।
ত্বরার বাবা ভো ভার ভিত্রী দেবেই ভার হাতে ভারীকে
লম্পনি করবেন না। ভাই হ'চার বিনের ছুটতে বুধা রেল
কোম্পানীকে টাড়া না বিরে শৈলেশ কলকাভাতেই বেকে
বেত এবং বলে বনে ভবিয়তের রঙিন ক্রমার ভাল বনভ।

रेचियर्या प्रवादित जरनारत अक प्रवर्तमा पटके रनन। अवत्यव याव प्रयमाद यावा याकी अटन विवया जी, मानानक পুত ७ चन्छा प्रयादक त्वर्ष एकार माता त्रालम । बतवाद সমর ভিনি এক কীর্ত্তি করে গেলেন। ছরিযোছনের মধুর খভাৰ এবং গভীর বর্ণজানের খভ প্রায়ে তার বেদব ভক্ত ভূঠে-विम वर्गशीम चारवद अक वम। करवक मान करबीरमंद পত্নী-বিৰোগ তরেছিল। ত্রিবোত্নের দলে আলোচনা করে নে শৌকে সাত্ৰালাভ করত। ভাই তাঁর ভাছে সে প্রারই খাসভ। হরিবোহনের মৃত্যুখব্যার পাশে দেও ছিল। হরি-ৰোহৰ হঠাং ভার হাত হট বরে বললেন, "বাবা, আমার একটা অমুবোৰ বাৰভে হবে ৷ সুষ্ণার বিষেত্র ভঙ কিছু (शर्व (बर्फ शांत्रमाम मा। वक्र काम (बर्फ, अरक्र कामि ভোষার হাতে বিবে পেলাম। বল এহণ করলে, ভা হলে আৰি শাভিতে মহতে পাহৰ।" মুৰুমু ৰাভুলের এই অপ্রভ্যাশিত প্রভাবে পুষষা বিষ্চু হয়ে গেল। নিজেকে नायान त्म किंद्र रजनाव चार्त्ररे चनतीन चाद वाचनाना निक्ष वाट निर्द रमाम. "प्रवाद जावि बहे अहन কলনাৰ। ওর অভ আপনার চিড়া নেই।" বভাগধবানীর পাড়ুর বুব ক্বিকের জন্ম উল্লেছরে উঠল। ভিনি হাত ভূলে चार्विकार क्यालय; जाद श्व (व (ठाव प्रात्म, जा चाद বুললেন না। নৈলেন এত সৰ কৰা কাৰত না। ভার পর कृत्व भिन प्रयोग महत्र अमेगीएमंड विवात । विवादक आर्म प्रदेश व्यापक राज वास करताह वर्गणीयाक पर कंश कामिएड ভার ভাছ থেকে মৃক্তিপ্রাধনা করে। কিন্তু রবনীর চুর্জ্বর नका बात चाक वावा वित्त । त्य किहरे बनाक भावन वा । क्रिलाद्वत कवना चाद क्षीर्त वाचर क्रम ल्या मा।

Ψŧ

শিসীৰা বৈলেশের ক্ষত পরিপাট করে রাঁবছিলেন। বৈলেশ হারাবরে নিবে ভাকে কলনে, "শিলীরা আফ বিভালের টেনেই আবাকে বেভে হবে।" শিলীয়া বিশ্বিভ হবে বললেন, "লে ভিরে । ডভ কাল পরে এই কাল রাভে এলেছিল আর আজ বিজেলেই চলে বাবি । হ'বিল বাক। আর পর কাল ভোকে ওয়া আশ্বির্মান করতে আলবে।" 'আশ্বির্মান' আর 'ওরা' কবা হুটো ভার কানে গেল কিলা দে-ই কানে। অথবা ভার মনের অবহা এবন মর বে, লে ও হুটো কবার দ্রবিধান করতে পারে। লে হন্ হন্ করে বাজী বেকে বেরিরে একেবারে রাভার এলে পড়ল। কোবার বাবে ভার কিছু বিরভা নেই, লে অভবনকভাবে লামনের পথ দিরে হেঁটে চলল। কিছু চুর এলে ভার বেরাল হ'ল লে ক্পনীশের বাজীর কাছে এলে পড়েছে। আর একটু এগিরে গেলেই ক্লগনীশের বাজীর সমরদরকা। একটু ইতভভঃ করে লৈলেশ লেই দিকেই পা চালিরে দিলে।

অগদীল অবছাপর লোক। গুড়ের চারি দিক ইটের क्षांठीव मिरव (पदा)। बर्या प्रदेश अमरमद अस्मकेश श्राम ভভে বভ বভ সাভ-আটটা বামের মরাই। ভার পর বসবাসের मानामयतः। अमरीम आव्यत छेक देश्यकी विकानवार श्रीम শিক্ষ। কৃষির আর থেকেই ভার দংসার বেশ চলে বেভে भारत. भरतत ठाक्ति कतात वतकात दश मा। कि**च वनकी**म ভার ক্তের ক্ত ক্ত চারাওলি বড় করে যত আনন্দ পার হুলের ছোট ছোট ছেলেদের বাসুষ করভেও ঠিক ওডই আৰক্ষ পার। শিক্ষতা ভার পেশা নহ, নেশা। শৈলেশ কালীশের সমত মত্তাম পা মিতেই একেবাতে ক্পনীশের সাম্যে পতে (नम । क्रमीम (छम वार्य केंद्रि नावका मिर्द्र व्यविद्वित স্থান করতে, আর ভার গলে নাঠে আকের কেতে কলবরানো ঐক্মত হচ্ছে কিনা ভার ভবির করতে। আৰু রবিবার। ভূলে याबात काका त्वहै। व्यालमांक त्वरवहे त्व अकत्व वहरत केक्ट्रिक हात बनाम, "बारब, देनामन (व ? अम, अम, कांब পর ভাল ছিলে ভ ?. ভ্যেছি বে তুরি এনেছ। কাল আরি ৰেভাৰ ভোষাৰ ও**থানে।" বলে সে শৈলে**শেৰ ছাভ ৰৱে चारक मिरव क्रमम बाकीव विरुक्त। बतारेखरमा भाव करवरे बरबब बाबान्याब छैर्ड डाक्ज, "अरगा, एक अरगरह एवं।"

ত্বনা বহু থেকে বেরিরে এসে শৈলেকে থেকে ব্যক্তি ইনিলাক। বৃহুর্তের কর ভার গতে একটা লোহিভাভা এনেই বিলিরে গেল। সে নিকেকে গংবত করে বললে, কে শৈলেকলা, ভাল হিলে ত ? শৈলেকের বনের অবহা অবর্ণনীর। সে
বৃধ ভূলে ত্বনার বিকে চাইতে পারল না। বাত নেতে ত্বনার
করার করার বিলে। অগলীব বললে, তেল রেবে কেলেছি।
ভা না হলে হ'বত ভোনার নতে গল করেই বেভাব। আক
আবার আকের কেতে কল বরাকো হচ্ছে। আনি না ভাছে
বাত্তে ভাল করে চারার কল কেবে না। ভূমি তত্ত্বপ
গল কর, আমি বৃধ ভাভাভাতি আসবার চেটা করব।

শৈলেশের মুধও বুলে গেল, বললে, ভোষার গৌলবা।
সুষ্যা বললে, ভেবেছিলাম ভূমি কবিভা লেবা ছেভে
দিয়েছ। কিছু ছাভ মি দেবছি—

বৈলেশ মুখ আঁবার করে বললে, ক্ষমত বেম দা ছাতি। কিন্ত ছুবি বে ক্ষমত আমার ক্ষিতা লেখা নিয়ে ঠাটা করবে, ভা ক্ষমাত করি মি—শেষের ক্ষার মধ্যে একটা ব্যধার পুর বহুত হ'ল।

স্থম। কিছ ৰাখে লিজিভ বা ব্যবিভ হ'ল মা। ভেমনি হাসির্বে বললে, ভ্রমা আর বাভবে অনেক ভকাং আছে লৈলেকাল। ভগংটা কাব্য নয়।

শৈলেশ বিরস মুখে বললে, সে তৃত্তি বৰণ বিধে করেছ ভদলাৰ ভৰনই বুবেছি—

সুৰ্যাৱ মুখ বিৰণ হৰে উঠল। কিন্তু লকে লকে ৰন্যে চাঞ্চা হৰন কৰে লে বললে, বেৰেদের বিবে করা হাড়া আর উপার কি ? বিবে করাতে আর কি লোব হরেছে ?

পৈলেশ কিছুক্ৰণ দীৱৰ বেকে বললে, ভোষাৰ বৰে আছে

কি লা জানিনা—কিছ আনার বেশ বনে আছে: ভূমি বলেছিলে এককনকে ভালবেনে বে আর এককনকে বিবে করে নে
অনজী।

ত্ৰবাৰ ভৰ্ক ভৰতে শেবা শৈলেশেৰ ভাছেই। সে
অক্টিভ ভাষেই বললে, কিন্তু অপন্নিগত বন্ধনে কি বলেছি,
ভা বিৰে ৰাণা বাৰিছে এখন লাভ নেই। ভা ভালা ভালবানা
ন্যতে আৰি ভাৰভাৰ কি। কডকগুলো বাকে গল উপভান
পাডে, আন্ন ভোলান লকে কাব্য আলোচনা কৰে প্ৰেৰ সম্বত্ত সে বন্ধন আলান্ন ৰে বান্ধা হলেছিল, ভা আৰি ঠিক বলে
বৰ্ষে কৃষ্টি বা—

শৈলেশ বেচনার নির্মাক হবে গেল। পরবৃত্তেই বেচনার ছান অধিকার করলে কোন, একটা নিফল আকোনও ৰলা বেতে পাৱে। লে বিজ্ঞপতহা কঠে বললে, তা হলে আমাকে তুমি কথনও তালবাল নি। তালবেলেছ, ঐ বিগত-বৌৰন, লোকবার, টাকমাধা, টাকাওয়ালা কালীপকে—

হ্বনা সংৰত কঠে বললে, "দেশ, আনার স্থানী সম্বন্ধ ভূবি একটু সন্মান করে কথা বলো। কেন উচ্ছে ভাল্যাসৰ না, কিলের অভাব উচার ? তিনি শিক্ষিত ভক্ত, সম্পত্তিশালী—আর মণ-বৌবদের কথা বলছ ? দেহ ও বনের বে মণ থাকলে নাছ্য নাছ্যকে ভালবাসতে, প্রভা করতে পারে সে রণ উচার আছে।"— বলে একটু থেনে আবার সে বলে চলল, "আর বৌবন ? নাছ্যের যৌবদের বিচার সব সমন্ত্র বন্ধস বিরেই হয় না। যৌবদের বে শক্তি থাকলে জীবনকে উপভোগ করা বার, কর্মে উংসাহ করে সে শক্তি ভার বর্ণেই আছে। আর, আনার বর্গত ত নেহাং কর্ম হয় দি—"

অভিআধ্নিক তক্লণ নাহিত্যিক এবার অক্সমিন বিশ্বরে
নির্জ্ঞাক হয়ে গেল। করেক নান বিবাহিত জীবন বাপন
করে সুবনার নত বেবের বে এনন পরিবর্তন হতে পারে, ভার
চিন্তাবারা বে এবনি ভিরমুখী হতে পারে, ভা নে বারণাও
করতে পারে নি। স্তিট্র বাত্তর আর ক্রমার অনেক
ভকাং।

এই সময় যোল-সতের বছরের একট ভরুণী একটা ডিলে করে করেক বিলি পান নিরে সারা কেতে রাজ্যের কজা জড়িরে এনে বরে চকল, ত্বমা বললে, বৈলেশবাকে পানগুলো বে—

বেংক কিশিত হতে শৈলেশের বিকে পানের ভিন্তা এনিরে বিলে। শৈলেশ হুটো শান তুলে নিরে বেংকটর মুবের বিকে চেরে বললে, 'বাধুরী না ? ঈস্, রত বভ হরে গেছে বে ?' বাধুরী অপনীশের বোন। সে মুবে লক্ষার আবির বেংধ বর ছেকে বেরিরে পেল। স্বমা হেঁকে বলে বিলে, "উত্বে ভালে চাপিরে এসেছি। তরে পেলে নামিরে বিস্—" ভার পর শৈলেশের বিকে চেরে ভানে ত্রিকা না করেই বললে, "বাধুরীকে বিরে করবে ?" শৈলেশ উভেজিত হুরে বললে, "বের স্বমা, এতক্য বা বললে লব স্থ করলার। কিন্তা আবাকে এবনবারা অপনান করবার কারণ কি, ভা আবার বলবে—"

ত্ৰনা ভাগনাছবের মত বললে, "বা রে ! এটাতে আবার অপনালের কি আছে ? নাব্রী বেশ বেকে, আনার থেকে চের বেশী তুক্তী। ভোনার সকে নানাকে ভাল।"

লৈলেল গোঁ হবে হইল, কোল জবাৰ বিজে লা। প্ৰবা একটু এগিৰে এনে লৈলেশের একটা হাত নিজের হাতে নিবে অস্থ্যার থবে বললে, "গভিয় বললি, ওকে ভোষার বিৱে ভরতে হবে। আনার এ অস্থ্যাব ভোষাকে রাধ্তেই হবে।" প্রথমার কঠে যে ব্যাক্লতা স্টে উঠল ভাতে লৈলেশের অস্ত্র আবার চকল হকেউঠল। সে প্রথমার চোকে নিজের দৃষ্টি ছাপন করে বললে, "নভিচ বলছ ভূমি, আমার সংল পরিছাস করছ না ? ভূমি বলছ, আমি নাধ্যীকে বিবে করলে ভূমি ত্বা হবে ?"

সুৰবা বৰবের উৎকঠা ধ্যম করবার চেঠা করে বললে, "হাঁা, সভাই আনি সুধী হব।"

শৈলেশ আৰ একবাৰ স্বৰাৰ বিকে ভাকাল। ভাৰ পৰ বীৰহিৰ কঠে বললে, "বেশ এতে যদি ভূবি সভি্যই স্থী হও ভা হলে বাধ্বীকে আৰি বিবে কৰব। ভোৰাকে কথা বিলাৰ।" এক মুহূৰ্ত বীৰবভাৰ পৰ আবাৰ বললে, "কেবন, স্থী হলে ভূবি ?"

স্থ্যা ভভকাৰ নিৰেকে সানলে নিৰেছে। প্ৰকা অভিনেত্ৰীয় বত বুৰ্বে একবুৰ হালি টেলে লে উভৱ ক্ষলে, "বা হে! স্থী হব না! ব্যৱহা আইবুকো বোন নিৰে হামীয় ৰে কি হুৰ্ভাবনা ভাৱ ভূমি কি বুৰ্বে। ভোষায় বভ সংগাত্ৰ বিষে ক্ষতে বাজী হয়েছে জানলে ভাৱ আনন্দের সীমা বাক্ষে না। অনেক দিন পরে বাভে ভার স্থানলা হবে।" লৈলেনের বনে এই একটু আগে বে ইবং বভের আভা বেবা বিষেছিল ভা নিঃলেবে মিলিছে গেল। "ও সেই ভভ—" বলে সে উঠে ইছিল, স্থ্যাকে আয় কিছু মা বলেই বয় বেকে বেয়িয়ে গেল। প্ৰয়া অপলক দুষ্টিতে ভার গ্ৰহনীল বুর্তির বিজে চেরে হইল। একটু পরেই জগবীশ কিবল, বললে, "ভি গো, শৈলেশ চলে গেছে? হ'ল বিষেত্র সহছে কোন কথা ?"

স্থনা হেলে বললে, "এত ব্যস্ত হ্যার ব্যক্তার নেই। বালী হ্রেছে। আনাকে বটক-বিলার কি বেবে বল গ"

"এই বে বিই—" বলে কগৰীপ সুষ্যার দিকে এগিয়ে বেতেই সুষ্যা কৌকে হয় থেকে বেয়িছে গেল।

এবিকে শৈলেশ ৰাজী নিৰে শিলীবাকে বললে, "শিলীবা, আৰু আৰ আৰাৰ বাঙৰা হ'ল না। ভূবি আনাৰ বিৰেৱ কল ব্যস্ত হৰেছিলে, ও পাভাৱ অননীশের বোনের সলে কথাবার্ডা চালাতে পাব—"

শিলীয়া আম: শৃথপদ হয়ে বললেন, "ক্থাবার্ড। আর চালাভে হবে না, ও টক হরেই আছে। ভাল বে ওয়া আইবলি করতে আলছে।"

শৈলেশ আশা করেছিল, বাসরবরে সে একবার প্রবার সাক্ষাং পাবে। কিছ সারাধিন বেটে প্রবার নাকি পরীর ভাল নেই। কভাসজ্ঞাননের পর সে সেই বে নিজের শোবার বরে চুকেছে, আর বার হয় নি।

## তাজমহল



### ঞ্জীনীলয়তন দাশ

প্রেষ্থিক বিষয়-পাগল তগো স্বাট্-ত্বি,
মর্থ বিভাছি হতে হচিলে কার বর্ণর-ছবি ?
ভোষার বাননী বর্ণ-সীতা কি মহারনী নিরুপনা—
পাণরে পাণরে অপানিত হলো বৃহতি ভিলোতনা ?
হেরি প্রের্মীর করুণ আধির একট বিন্দু বারি
রুদ্ধ করিতে কালের হ্বার রচিলে স্বাবি ভারি।
ব্রভাজ লাগি' ব্রভার গড়া পাবাণের বারাপুরী,
ইত্রবহুর বর্ণে বর্ণে চলে গেবা ল্কোচ্রি।
প্রেরের পূজারী কেলিল নীর্থে বিরহের আধিকল,
আক্র-বর্ণীর গলিলে সূচল বভ বভ-শভরণ।
পাভাল সূচিয়া উটিল হেবার অপারা উর্কনি,
অপাক চোণে ভারে চেরে বেপে এই-ভারা-ছবি-প্রী।

এ যে কটকের বিরহ্-কাব্য রচিত প্রিরার হবে—
বিটার বিরহী-চিতের ক্বা ক্বাসন হুগে হুগে।
বরুমার ক্লে বর্গরে গাঁগা এ বেদ শোকের দীতা,
চিরবিরহের সাগরবেলার খলিতে প্রেমের চিতা।
সতী-পাব পিরে করিবা বারণ শুন্ন গাঁবির বভ শিলাবর বেদ হরেছেন শিব হেবা ভণতা-রত।

ওগো বহারাক, ভূবি বাই আবা, আহে তব ইতিহাস; পাবাৰে পাবাৰে অনিতেহে তব বুকের বীর্বহাস। বিন্তহ-কাতর তোবার হিরার 'অপাত কলক'— বৌন পাবাৰ ভারাগার-বাবে লতিরাহে বছন। ভাই তব প্রের-বিশ্বহ বে বাজে নিবিলের বুকে বুকে,— বিশ্ব বে হার আবো পোক্ষর ভোষার বিন্তহ হুবে।

## বঙ্কিমচন্দ্রের উপন্যাসে তাঁহার ভাবধারার ক্রমবিকাশ

## অধ্যাপক বিশ্বেরকুমার দাশগুর, এম-এ

বিদ্যার স্থাতির উদ্বেশ্য প্রবাঞ্জনি নিবেশন করিছে গিরা বর্ণনা করিছাহলনাথ উল্লেখ্য পর্যানালয়-লাহিত্য, বৈজ্ঞানিক, প্রতিহালিক, লামান্দিক ও লাগানিক প্রবন্ধ, অনুসংগ্রীর গ্রেবণা প্রবং
লল্ম হাজ ও ব্যালবচনা—সর্ব্বেই বজিব উল্লেখ্য অনায়াজ্ঞ প্রতিভাৱ হাপ রাবিলা নিরাহেল। ববীজনাবের অন্তুক্তরীর ভাষার—'বিপর বলভাষা আর্জনের বেধানেই উল্লেখ্য আহ্বান করিবাহে, লেইবানেই ভিনি প্রগর চতুর্ভুক্ত বৃত্তিতে দর্শনি বিরাহেন।' বজিবের এই বছর্গী প্রভিভার আলোচনা বর্তনান প্রবাহের উদ্দেশ্য নহে; ইহার পর-পরিসর পরিবির মধ্যে উপভাস-লাহিত্যে উল্লেখ্য ভাষারার ক্ষমবিকাশ সম্বন্ধে সংক্রেণ্ড ভারতিভা করিব।

উপভাস রচনার বছিবের উক্তে কি ? 'উত্তর চরিতে'র আলোচনা-প্রস্কে বছিব কাব্যের উক্তের বে বিশ্নেবণ করিরাহেন, ভারার নব্যেই এই প্রশ্নের উত্তর পাওরা বার। তিনি বলিতেহেন, 'কাব্যের গৌণ উক্তেও বছুতের চিতোৎকর্ম-লাবন—চিত্তভিজ্ঞনন। করিরা---লৌকর্ব্যের চরবোৎকর্ম স্থানের হারা জগতের চিত্তভিতি বিশান করেন। এই লৌকর্ব্যের চরবোৎকর্ম স্কৃতি কাব্যের মুখ্য উক্তেও। প্রথবোজ্ঞতি গৌণ উক্তেও, পেবোজ্ঞতি মুখ্য উক্তেও।' উপভাস রচনার বহিন এই উত্তর উক্তেও হারা অনুপ্রাণিত হইরাহেন। কিছু বারা গৌণ উক্তেও ভারাই ক্ষেম্ম করিরা বীরে বীরে মুখ্য উক্তেও হইরা ইন্ডিইল, বভিষের উপভাসের আলোচনা-প্রস্কে ভারা বিশেষ করিয়া লক্ষ্য করিবার বিশ্রর।

উদেও ও ভাববারার ক্ষরবিকাশের বিক বিরা বহিবের
উপভানকে রোটার্ট ভিন প্রের্থতে ভাগ করা চলে। 'র্পেণনলিনী','জণালত্তলা' ও 'রবালিনী' প্রথম পর্যারের উপভান।
এই সময় বভিষের প্রথম ও প্রধান লক্ষ্য ছিল দৌলর্বাস্টি।
আরেবার লংবর, রবালিনীর পভিভক্তি, কপালত্তলার নারল্য,
মনোরনার সরলভা, সংবম ও বিঠা। সপস্থী-কন্যার প্রভি
বিবলার বাত্তমের এবং বিক্রম্ব আবেইনের বব্যে উাহার
ঐকাভিক পভিতক্তি, ক্ষাং সিংহের পুরুষোচিত বীরম্ব ও
উলার্য, সমস্রারের প্রোপকার-প্রবৃত্তি, পকাভরে কতন্ত্ বাঁও
পভপতির পোচনীর জীবনাবলান প্রোক্তে ভিত্তভির সহারক
ক্রীক্ষে পারে; কিছ্ক এ সকল ছলে উপন্যানের সৌন উক্তেও
এক্রেবারেই অভ্যানে রবিরাহে এবং আব্যাহিকার বাব্যবে
বৃত্তির-কোন বিশিক্ত বাই প্রচার ক্ষেম্ব নাই।

কিছ শ্ৰেষ্ঠ উপন্যালে আধ্যাৱিকাৰ পৰিবেশৰ-খণে কোৰ

विभिद्रे वाने बाह-शाबद-शोवाबद शक् र्शनमाजित्यव वर्ष-कतीवरे शतिहरू शांक्षा यात् । विश्वति श्रवत श्रवातिहरू क्षेत्रकारम और विभिन्ने महिन्त्री कि १ विश्व कर्त्रवांनी किरमन अवर श्रेष्ठाक करायद बढातास वाकिया अक बहुत प्रधानिक बाबर-कीरायद केंगर प्राक्ष र श्रेकार विकास करत । अहे प्रका क्षेत्र क्षेट्रकर कांकाद स्क्री चाकर्षन कृदिशास । क्षेत्र नद्यारम्बर चिन्याना चैनमारनरे ('इर्जनमक्तिमी' ७ 'स्वानिमी'टच चम्हे नंबाब चिक्र दिया बर्र 'क्यानक्तना'ड प्रचक्र এবং শ্ৰেষ্ঠভৱ উপাৰে ) ভিনি এই অনুত নহাপজ্ঞিকে প্ৰাৰান্য বিভাবেন। এই ব্ৰহ্মনত বিবাট শক্তি বাদবের ক্রুত্ত শক্তিকে উপভাগ কৰিবা, কৰ্মৰ কৰ্মৰ ইভাৱ গভিৱোৰ-প্ৰযাগী অসভায় चक्र बाबराक चलाका कर्यात (बार्स विक विक विकारिक ভাগ্যপৰে চালিভ ভবিভেছে, কোৰাও এডটকু নভ-চভ হুইবার উপার নাই। বভিব ইহার ভার্যপদ্ভির মবো জোনৱণ দুখলার হল আবিছার করিতে পারেন নাই, ৰানবের অনুষ্ঠের নির্মা সহাত্রত্তিহীন, বিচারতীৰ चड पंकि ।

কিছ বহিব এই বৃষ্টিভলী সইবা সহট থাকিতে পাৱেব নাই। তিনি নিবতিকে বীকার করিবাছেন, কিছ সেই সলে বিশ্ববর নীতির রাজত উপসত্তি করিবাছেন। কতন্ত্রী এবং পশুপতির ভীবনের পরিপতিতে ইছার আভাস থাকিলেও 'বিষয়ক' হইতেই এই দৃষ্টিভলী বিশেষভাবে সক্ষা করা বার এবং এই সময় হইতেই বছিবের উপন্যাস-সাহিত্যে দৃত্ন বারার হচনা এবং এই উপন্যানে বাহা নীতির নিবর, করে তপবছতি বিকাশের সলে ভাছাই ঐশী বিধানে রূপাভরিত হইবাছে।

'বিষয়কে' পাশাপাশি নিষ্ঠি ও নীতির বিধান লক্ষ্য করা বার। কপালকুওলা বনোরবার ন্যার কুলও ভাগ্যহভা; পদাভরে নগেল, বেবেল ও হীরা নিজ নিজ জীবনে বরোপিত বিষয়কের কলভোগ করিরাছে। এই উপন্যানে অসংবরের হংগরর পরিণতির ভিতর হিরা বহিন এই সভ্য প্রচার করিরাক্রেন বে, চিত্তভির ব্যতীত প্রথ নাই এবং ইহার জন্য প্রাথমিক প্রয়োজন সংবর্গিক। ইহাই বিভীয় পর্যারের উপন্যানের বিশিষ্ট বাই।

'ইন্দ্রা', 'বাবাবানী' ও 'বুগলাত্রীয়' বচনাভাল হিলাবে বিভীৱ পর্ব্যারভূজ হুইলেও উদ্বেজ্ঞ বিক দিবা ইহাবের স্থান বজর। হাল্জা গলের বাব্যারে 'বলবর্ণনে'র পাঠকবর্গের চিত্তবিলোকর এ হলে বভিবের প্রধান লক্ষ্য। কিছ 'চল্লপেবরে' বীভিবেতা বভিবের কর্মবর স্থানী এবং এই উপন্যানে

লৈবলিনীর অভি কঠোর প্রারক্ষিতের পরিক্ষনার পক্ষাতে ছহিরাতে অসংবন-অসহিমূ বভিবের কটন অহশাসন। এ-ক্ষেত্রে রামানক কানী বভিবের নীতিপ্রচারের মুধ্যান্তরূপ।

'চল্লশেবল'ন গৌণ উক্তে দাবারণভাবে নীভিনিকা দাব কৰে; এই উপন্যানে দৰ্কপ্ৰথম হিন্দুবৰ্ণের প্রভি বহিষেত্র অন্যানের পরিচর পাওরা বাব। ইহাই 'চল্লশেবরে'র বিনিঠ ক্ষর এবং পরবর্ত্তী উপন্যান 'রক্ষনী'তেও এই বৈনিঠ্য সক্ষ্য করা বার। 'চল্লশেবরে' চল্লশেবরের প্রভি রামানক ঘারীর উপবেশ (চল্লশেবর ৬)১) এবং 'রক্ষনী'তে সর্যানী-ঠাকুর ও শচীলের প্রয়োভর (রক্ষনী ৬)৬) 'বর্ষ্ডভ্রে'র অন্ধ-শিক্ত-সংবাদ বরণ করাইরা বের।

বহিব বিশ্বেই বনিয়াহেন, প্ৰথম জীবনে তিনি নাতিক ছিলেন। এই সময় তিনি পাক্ষান্ত নিমীয়ম্বামী বা সংশহন্যামী বার্শনিকগণের চিন্তামানা হারা বিশেষতানে প্রতামিত ছইয়াহেন। কিন্ত প্রথম জীবন' অনির্বিষ্টকাল এবং বহিনের জোন উপন্যানই প্রকৃতপক্ষে 'বা'ভক্যনহী' নহে। তাহা ছইজেও 'চল্লপেণ্ডে'র পূর্কে তাহার অপর কোন উপন্যানে হিন্দুবর্শের প্রতি অভ্বানের নিয়পনি নাই।

লাভিক বহিবের ববে কবে, কেন্দ্রণ করিবা ক্রির-বিবাস এবং হিন্দুবর্দ্রের প্রতি অসুরাস ক্ষিত্র ভাষার পূর্ব ইতিহাস আক হয়ত কানিবার উপার নাই। এ সহতে বহিবাসক পূর্ব-চল্ল ও আভূপুত্র শচীশচলে বাহা নিবিরাহেন ভাহা বিভাভ অসপুর্ব। পূর্বচল নিবিরাহেন:

'[বভিব] বৰণ হগলীতে বদুলী হইবা আসিলেন, ভৰণ কৰ বংগৰ পিতৃবেৰেৰ নিকট বাভিয়া বৰ্ষ সহছে শিকা পাইতে লাগিলেন। কিছুকাল চুঁচুভাৱ বাভিতে হইবাছিল; ভবাপি বিবাৰে, ববিবাৰে কাঁটালপাভাৱ আসিভেন। এইবংগ বভিবচন্তেৰ হিশুবৰ্ষ শিকা হইল।…ভাঁহাৰ একবাৰ উপবেঠা হিলেন আমানেৰ পিতৃবেব।…

বভিনচজের চুঁচুভা থাজাজানেই পিছবেবের রভ্যু বটে [১৮৮১ বী:]। এই বটনার পর হইতেই জাহার ভিতরে একটা অক্তর পরিবর্তন হয়। ইহার পর বাহা নিবিভেন, ভারাই হিন্দুবর্ত্ব বুবাইবার উদ্বেক্ত নিবিভেন, ইহার পর বে উপন্যান নিবিয়াহিলেন, ভারাতেও এই উদ্বেক্ত থাজিত।'+

শচীশচনোর লিখিত বিষরণ এইরপ: '১২৮২ লালের চৈত্র বালে—ইংরেজী ১৮৭৬ বীটাখের বার্চ বালে—বিষরজ্ঞ হুগলীতে বহলী হুইলেন। । নাএই সময় হুইতে উাত্রার হুহরে বর্মজাব সমুখিত হুমনা। ১২৮০ লালের শেষভাগে ব্যৱহারের বহরে বর্ষভাব বঙ্কুল হব---বর্ষভাবের হচনা পূর্ব হইছেই

জিল্প কিল্প হইলাহিল—কোনও ভারণ অবলবে নহনা অবরে
ভানিরা উঠে নাই। ববন উচ্চার জ্যেঠা ততা আসরপ্রস্বা
ভবন ভিনি রাবাবল্পতের বলিবে দিরা ঠাকুরের সমূর্বে
পদ্মাননে বলিরা সাঞ্চন্দরনে ঠাকুরকে তত ভাকিরাকেন।
লোক-চকুর সমূর্বে এই উচ্চার প্রবন্ধ ভাক। ভার পর
হই-ভিন বংগর বাইতে না বাইতে বভিনচন্দ্রকে আবার
ভাতর হইরা রাবাবল্পতের চল্পে পভিতে বেবিলার।
ভবন উচ্চার জ্যেঠ বৌহিত্র ক্ষিন রোগাজ্ঞাত—বর্ষণার ।
ভবন উচ্চার ক্ষেত্র বৌহিত্র ক্ষিন রোগাজ্ঞাত—বর্ষণার ।
বিলিভাবহার ববসুর্বাবলভার বংশীব্যন রাবাবল্পতে বর্ষে
বেবিলেন । পরবিন ঠাকুরের নির্বাল্য আনিরা শিভর নাবার
বিলেন । শিশু অচিরে আরোগ্যলাত করিল। ভবনবি
ব্যক্ষিলচন্দ্রের অবরে বর্ষভাব ব্যক্ত হল। তবনবি

**পূर्वक्रक्ष भागिकक देखराब बाद्य ध्वानी वस्त्री ब्रेवाब शब** হুইতে বৃহিদ ভিত্ৰব্ৰের প্ৰতি বিশেষভাবে আতৃষ্ট হুইয়াছেন। क्षि 'क्ष्यानवव' अवर 'तक्षेत्री' केवत केनवानरे करनूर्त्स 'वक्वमृत्व' क्षकामिक इरेबाट्य। महीमहस्र व इरेडे बहेवाब উল্লেখ কৰিবাহেন, ভিনি ভাতার দন ভারিধ দেন নাই ; কিড ভাহাত্ৰ লেখা হইতে স্পষ্টই দৰে হয় বে, ভাহাত্ৰ হিলাবৰত क्षंपरबाक पहेमा ১২৮० मारमब हरे-चिम परमब भूर्त्सव एपा बर त्याराक पहेना के गालब त्यारब वित्क पहेना पाकित। किंद्र देश कि श्रकारत नवन वरेरछ शास ? निवस्त काली কলা ভাষার বিভীয় পদ্মীর পর্তকাত সভাস এবং তিনি বিভীয় वाब विवाद करबन ১৮৬० बैडोरक्च क्य बारम्, । वर्षार ১२७१ नारनव रेक्ड-चावाह बारन। प्रच्यार ১२৮० नारनव शूर्व প্ৰধ্যোক্ত বটনা সভব হুইলেও, বিভীয়োক্ত বটনা হয় ড ইছার পরের কথা। প্রভরাং শচীশচল্লের হিলাবে কোথাও किह नविन बरेवा वाक्ति । वाका ब्रेक, वर वेक्य प्रवेगाव शृत्किर 'इक्षापवत' मन्भूर बनर 'तक्षी' चक्रकः चारमिक প্ৰকাশিত হুইৱা থাজিবে। কারণ 'চল্লশেবর' 'বদবর্শনে' লম্পু হুইৱাতে বৃত্তিবন্ধ বিভীত বার বিবাহের কিকিববিক চৌৰ বংগৱ পৰে ১২৮১ লালের ভাক্ত সংখ্যার এবং পরবর্তী नरवा। इरेट्डरे 'तक्ती' अकानिक इरेटक वाटक। विनुवर्षीय এতি বহিষের অভ্যানের প্রাথবিক বিষর্শন হিসাবেও এই উভৰ উপভালের বিশিষ্ট স্থান বহিবাবে। বহিবের বর্ষবভ এই সময় পৰ্যাত্ত হালা বাবিয়া উঠে নাই একবা সভ্যঃ কিত ভিনি সংশ্ব কাটাইবা কটন বৃত্তিকার পদার্থন করিবাহেন।

বাহারা ইবরাভিথেত জীবনবাপন করেন, এই নবর হইতে ভাঁহাবের শক্তি নববেও বহিব সচেতন হইবাহেন। প্রথম

330 % 1

थ्यीनाच्या नक्ष्मात महामदतत 'नक्षिताच्या' व्यवक व्यवेशाः नक्षित्र

<sup>† &#</sup>x27;विकारकात वर्ष निका'—विकासना, ३००६ गृ.

वित्र-बोवनी, ३३७-३ शूः।

পর্ব্যাবের উপভাবে এবং 'বিবহুকে' কুলবলিনীর চিত্রে রাত্র্য বিরভিত্র হতে জীত্রদক বার । পেরোক্ত উপভাবে বরেক্রবার্থ বড়োপিত বিবহুকের কলভোগ করিরাছের লভ্য, কিছ ভিনিও (বিরভি না হাইলেও) প্রবৃত্তির লল্পুর্ব লল্পুর্ব পাক্তিরীয় । 'চলপেবরে' এই প্রভাৱ বৃষ্টিভলীর সহিত বৃত্তর বৃষ্টিভলীর বিপ্রাণ লক্ষর । এই উপভাবে ভাগ্যহতা কলবীর পার্প্তে বেবিতে পাই রাবানন্দ বানীকে, বিনি নাবনা বারা অলৌকিক পক্তি অর্জন করিরাছেন এবং প্রভাবনান্ত্রপ শৈবনিনী ও কট্রবের উপল্পে নেই পক্তি প্রবােশ করিরাছেন। 'রল্পনী'তে সন্ত্যালীঠাকুর রাবানন্দ বানীর ভার অভিবানন ব্রহেন, কিছ ভিনিও অলোক্তিক পক্তির অবিভারী। বৃহ্ণবের ভাবনারার ক্রমাতিব্যক্তির বিদর্শন হিসাবে ইরা ভাংপর্বাপুর্ব।

প্ৰবৰ্জী উপভাগ ক্লেক্ডাভের উইলে'ও 'বিষয়কে'র ভার चनरवरवा क्यम क्षाप्तिक करेवारक। क्यि और वेरे वेशकारम विषय श्रवित प्रवेषनीयकात क्षेत्रत अक्षत्रानि काद क्ष्य माहे . গোবিৰজাল ভভভটা ছেলাৰ প্ৰবৃত্তিৰ বিভট আৰুসৰৰ্ণৰ कविकारकतः। वार्त्रक्षवाचेक त्रीविक्तारकत व्यक्तिकारम और ৰৌলিত পাৰ্বতা পরোক্তে এবং মঞৰ্বতভাবে ভইলেও, যাছবের पंक्रित्य विश्वत कारवर्षशाय क्षेत्रात्वर चलका विवर्णय अवर 'পরিশিঠে' সন্নাসী গোবিক্সালের চিত্র গুরু বীভিবেক্সা বহিষের মতে, বিশেষ কৃতিয়া ভগৰতক বৃদ্ধিবাহ পরিচয় বের। 'ৰভনী'তে পৰ্জভাগী অৱবৰাধের চিত্রে বাচার কীণ আভাগ, 'ক্ৰডাজেৰ উইলে' সন্থানী গোবিস্পালের চিত্রে ভাতার পূর্ণ चिवाकि । चार को कारत देशक प्रवत् वावित्व वरेरन (व. क्षेत्रक अरखदार वेशकारमह भविनवादि शोविनमारमव ब्रह्माटक अवर ১৮৯६ जाराज्य प्रकृष नरफदरन, व्यवीर 'व्यानकार्क' 'বেৰী চৌৰভাৰি' ও 'নীভাৱাৰে'র পরবর্তীকালে তাঁহার এই ৰুতৰ পরিপতি পরিভৱিত হইবাবে। এই তিমট উপন্যানের ভাৰবালার লাভডের ইতাই বুল কারব।

'বালসিংহ' বিভীব পর্ব্যাবের শেব উপভাল। এই উপভালে বালসিংহ ও উবল্লেবের জর-পরাল্পরের বব্যে বহিব ঐশীবিরৰ সভ্য করিবাহেল এবং তিনি ইহার ব্যাব্যার প্রবৃত্ত হইবাহেল। (বালসিংহ—উপসংহার)। এই প্রভার বৃত্তিভালি প্রভালেহে 'বেবী চৌবুরানী' উপভালে 'সিণাহী হত হুইতে বেনী চৌবুরানীর উবাবে'র পরিভ্রনার। বিনি ভক্ত উহার 'লক্ষল বৃত্তিভালিই সম্পূর্ণ অস্থানিত', স্তরাং তিনি কর্মরাহুগুরীত, স্তরাং ইব্রের অস্থাহ লাভ করিবা ভিনি 'বৈল্পিক নির্বের গাহারোই অভিলৱ বিপন্ন হুইবাও আল্বর্জা করিবের সাহারোই অভিলৱ বিপন্ন হুইবাও আল্বর্জা করিবের বাই চিত্রট পরিভ্রন্তনা করিবাহেল। 'নবরে বেবোহর, ইব্রের অস্থাহ, অবলিই তক্তের নিজের ক্ষতা।' (বর্ষত্বত্ব ১১ স্কইবা)। অবর্ভ উব্যার উব্তেক বার্ট্রাই

ষ্ঠক, কালবৈশাৰীর বছ প্রাকৃতিক নিবনেই বটরা বাকে এবং বেবী চৌবুরাই বেতাবে ইয়াকে নিজের প্রভাগনে ব্যবহার করিবাবেন, ভাষাও সভাব্যের নীরা অভিক্রম করে নাই। কিছ 'কণালকুওলা'র বহিম প্রকৃতিকে নিরোজিত করিবা-বেন নির্মি প্রকৃতিকে নিরোজিত করিবা-বেন নির্মি করিবাবেন। ইয়াও পুচার্ব-পূর্ব। 'নীভারার' উপভালেও আব্যারিকার পরিবেশন তবে নবে হর বেন চরর নবউকালে নীভারাবের প্রার্থনার নাজা নিরাই 'নিক্রপারের উপায়' ভাষার এবং ভাষার রীপুর কভার নামারকার ব্যবহা করিবাবেন। (নীভারার ভাষ্-১-২৩ প্রইব্য )।

ঐশ শক্তি এবং ঐশী বিধানকে প্রাধান্ত বিভে গিয়া বছিব কোন কোন উপভালে নিছভিকে সম্পূর্ণ বাদ বিছাছেন, কোন কোন কেনে ( দলনী ও নধারকের জীবনে ) ভিনি নিছভিকে অপেভাক্ত অন্তরালে রাবিয়াছেন এবং একট কেনে ( চঞ্চল-কুমারীর জীবনে ) বিছভিত্র প্রভাব একেবারেই উপেভনীয় । কিন্ত কোন সমরেই বভিন নিছভিকে অন্তীভার করেন নাই । ( চঞ্চলকুমারীর কেনেও অনৃষ্ঠ প্রধা অন্ততঃ ব্যর্প হর নাই ) এবং ওাঁহার শেব উপভাস 'নীভারানে' জীয় অনুষ্ঠ প্রধার ভিতর বিয়া ভিনি নিছভিকে পুরাপুরি প্রাবাভ বিছাছেন ।

প্রথম পর্ব্যানের উপন্যানে এবং পরবর্ত্তীকালেও বে সক্ষ উপন্যানে নিরভিত্ত পরিক্ষনা রহিরাহে ভালার কোন কোন কেন্দ্রে বহুব্য-শক্তির বিরাট অপচর পার্চককে বিদ্যানিব্যন্ত করে। নবকুবার ও কপালমুঙ্গার বার্গ জীবনের সার্বকজা কি ? উহোবের এবং বনোরবা, কুম্ম ও বলনীর জীবনের শোচনীর পরিপতির পন্যাতে বিষম্প্রটার কোন্য নে নির্মুচ উবেন্দ্র রহিরাহে ? পার্চকের বনের এই সক্ষা এবং অন্থর্মণ প্রয়ের নহুম্ম বিচারবৃত্তিপ্রস্কুত কোন সমুভ্যর নাই। বে সক্ষা হলে নিরভিত্ত পরিক্ষনা নাই, 'নে সক্ষা হলেও বে কোষাও কোষাও করুব ট্র্যাক্তেভির চিত্র পাওরা বার না ভালা নহো। উলাহরবন্ধরাপ প্রভাগ ও অবনের রন্ত্যার উল্লেখ করা বাইকে পারে। কিন্ত এই মুইট অনুল্য জীবনের পরিপতি বড়ই মুংবেন্দ্র হুটকে, ই্রাবের আন্মত্যাগ নিরপ্ত নতে, ব্যর্বভার বব্যেও ই্রাবের জীবনে পরব সার্বক্ষা রহিরাহে। নিরভি ও ঐশ্বি

বাৰবেৰ অষ্টেৰ বব্যে পৃথলাৰ তাৰ আবিকাৰ কৰিকে
বিবা বছিৰ কথন কথনও বিবছিৰ অন্তিক্ষমীৰভাৱ নহিত
এশী বিধানেৰ নাৰঞ্জ ছাপন কৰিতে চাহিবাহেন। 'ভাতনিংহ' ন্যাৰকেত ৰুচ্য তথু নিৰ্ভিত্ন বিধান নহে; ন্যাৰক কণ্ডে বোহে শ্ৰেষাম্পনাৰ উপন ৰে অভ্যান্তাৰ কৰিল, ব্লিভ, নাহিত ভাল্যানা ভাত্ৰাৰ প্ৰতিশোধ কৰে। প্ৰকৃতিৰ বিবহে रेशरे जनजनीय विकासाविति (nemesis), रेशरे केन বিবাম। 'নীভারাবে' ভোরাব বাঁর আক্রমণ হইতে নগর-क्षण गाणाद राज्य शुक्रवकार, विश्वकिक अवर क्षेत्रदार यहन-विवाद्यत प्रमान नववरमायम कविवाद्यम अवर अकरे वैश्वादम नेमाबाद्यक बुष्टा नवटक बना बारेटक शास्त्र है. अवनिकादक खबु और खबुडे-नवनारे जनम कर मारे : विषय द्वेवीरेटकट्यन ৰে, সীভাছাৰ কৰা কভিলেও বিৰাভাৱ ভাৱ বিচাৰে পদাৱাৰ অব্যাহতি পার নাই , পরত আত্তরেতে অত তইরা করতীর নাহাব্যে রাজ্বার্ব্যে এ বে অভুচিত হতকেশ করিলেন.+ আভার বড়ার নিবিভরণিক হইরা ভাঁহাকে ভাহার পাভি পাইতে হইল। কিছ বছিবের ধর্বাছভূতি বাহাই বলুক, বাত্তৰ क्षत्राच्य भीवायच श्रीयाम बागरयस अमरहेर मार्क र रहण (काम वीवावता देविक विवास बार्चना कहा हरत मा । हरक अहे कारति किन करमक शुक्क शुक्क कारत निर्माण वा केनी विवासक बावान विवादक, क्ष्मक केन्द्रक बर्गा नावकन-লাবদের চেঠা করিয়াছেন, কবনও দার্শনিকের উচ্চালন হইতে প্ৰচাৰ কৰিবাছেন, 'কৰ ছংৰ বাসনিক অবহা বাজ--পুৰ ছংৰেছ জোৰ বাভিত অভিত বাই।' (বৰ্ণতত ২। 'চল্লপেৰৱে' ছামানৰ বাৰীয় যুৰেও অনুত্ৰণ উক্তি ভনিতে পাই। क्यार्ययंत्र ७१३ )।

'আন্দর্যাঠ' হাইতে ব্যিবের উপভাবে বুজন পর সভা করা বার। ইহাই ভূজীর পর্ব্যারের উপভাবের বিশিষ্ট পর। 'আন্দর্যাঠ', 'বেবী চৌধুরার' ও 'গীভারার' ভূজীর র্সের 'জরী'। জীবনব্যার্থী নাবনার ফলে ব্যির হিন্দুবর্শের গুড় ভড় বেনল ব্বিরাহেল, 'বর্ষভড়ে' তিনি বারা বিশবরূপে বিরেমণ ভরিরাহেল—'জরী'তে ভাহারই নর্মকণা তিনি বথাবোলা ভাহিনী ও চরিত্রের অবভারণার ভিতর বিরা সাবারণ পাঠকের বস্তুরে উপন্তিত ভরিরাহেল। বভিন বনিরাহেল, 'ওপবহনীভার বারা উপভানজ্বলে ভাইকভ।' (বর্ষভড় ১৯)। ভারারই ভাষার বলা বাইতে পারে বে, 'বর্ষ-

ভব্দে বাহা উপবেশ, 'আনস্বর্ক', 'বেবী চৌধুবাবি' ও 'নীভা-ঘাৰে' ভাহাই 'উপব্যাসক্তলে প্রস্তিক্ত'। এই 'এবী'তে বছিব প্রবাসভঃ বর্ষোপবেঠা। স্করাং ভাহার বর্ষব্যাব্যা সম্বন্ধে সংক্ষেপে ভূই-একট কবা এ হলে অপ্রাথদিক ক্ষ্বে না।

প্ৰবন্ধ জীবনে বৃদ্ধিৰ বে সভল পাশ্চাছ্য দাৰ্শনিকেই বছৰাৰ बाबा संवादिक हदेवाद्यन, कांडाद्यव बद्दा अनेक क्यांबर (Augusto Comte ) वित्यव डेलबरवागा । अधवर्शीकारम ভগ্ৰদ্ভক্ত বৃত্তির এই পাশ্চাতা ন্নীবীর রভবাদের সহিত क्षामस्य मात्रक्ष हाविकां विकास वाने व्यवस्थान वर्णाह अवस अक अरका निर्दम कृतिहास्त्र वाहा गर्दाधकांत माध्यमंत्रिक-कात वह केर्ड । अरे वर्ड बामववर्ड वा बहुक्छ । भागीविकी. कावाक्ती, काद्यकाविषे अवर विषयभ्यी-अरे व्यक्ति বৃতিত্ব 'উপযুক্ত কৃতি, পরিবৃতি ও লাবকুতে' ইছার পূর্ব विकाम । देश अञ्चीलयगार्थक अन्य अञ्चीलयकावत पूल কৰা এই বে, দৰ্ব্যঞ্জাৱ বৃত্তির মধ্যে দাবঞ্জ বন্দা ভাতাবেরৰ এইরণ অনুশীনৰ ক্রিতে হুইবে বাহাতে কোন বৃতি অপর কোন বৃত্তিকে ভূৱ কৰিয়া অভূচিত ও অসকত বৃদ্ধি না পাইতে পারে। কিন্ত বৃত্তিসমূহের সামগ্রভের বাপকাটি कি ? ব্যবিষ यालन वर्ष मक्त वृष्टि देवदव्यी हरेत. वर्षार वर्ष কলাকাকা বহিত কুইবা ইব্যাতিপ্ৰেত বলিবা বাহুৰ ভাষায় अक्टर्डंड कर्च जन्नावन कतिर्द. क्यमरे उक्तिन्द्रवंद नामक्षक नाविक हरेन द्विएक हरेएर । रेहारे में एकांक मिकान वर्णात পুচতত ইতাই ভক্তি ৷৷ 'এছী'তে বছিল তিপুৰৰ্ষের শাখত সভ্য এই ভক্তিভত প্রচার ভরিবাহেন।

'আনন্দৰঠে'ৰ ঘল-পৰিসৰ 'উপক্ষমণিকা' বিশেষ ভাংপৰ্য-পূৰ্ব এবং এই উপক্ষমণিকাৰ বাদী সন্মূৰ্বে বাধিবাই আৰা-দিগকে সভাৰ-সন্ধালাৰে কাৰ্য্য ও আৰ্থেবি বিচাৰ ক্ৰিডে

 <sup>।</sup> গলাবর খাবী ত্রীর ভাগ্য গণাবা করিরা বলিরাহেব, "ভোরার অনুটে এক পরব পূণ্য ভাছে। তারর উপরিভ হইলে খাবী সকর্ণবে গাবন করিও।" (সাভারার ১০০০)। ইহার বংসরখানেক পরে ভাহারই নির্দেশে করত্বী ও ত্রী ভৈরবী বেশে ভংগ্রন্ড রয়পুত (?) ত্রিপুল হতে সাভারাবের রাজধানীতে উপরিভ হইলেব। (সীভারার ২৮০)। চল্লচুড় খাবী ভংকর্জ্ব ত্রীর অনুষ্ট গণনার সহিত সক্ষতি রাধিরাই বধাবোগ্য নির্দেশ নিরা থাকিবেল এবং পরবভী ঘটনার পরিজ্ঞাকিতে ইহা নির্দেশের ক্যা ঘাইতে পারে বে, ইহাই ত্রীর 'পরব পূণো'র সমর এবং করত্রীর আয়ুকুল্যে এই সমর পরোক্ষে ভিনি সীভারাবের বে সাহাব্য করিলেন ভাহাই ভাহার 'পরব পূণা'।

নামারাবের বন্ধ সার্কানা ভিন্দা ব্যাপারে আর বৈ পর্বোক হাত
সহিষ্যতে, উহার কর্মভাগি সবকে সীতারাবের বেরার উত্তরে তিনি ন
করা কর্মভার করিতে পারেন নাই । ই সাভারার কর্ম ১) :

 নামার্কার করিতে পারেন নাই । ই সাভারার কর্ম ১) :

 নামার্কার করিতে পারেন নাই । ই সাভারার কর্ম ১) :

 নামার্কার করিতে পারেন নাই । ই সাভারার কর্ম ১) :

 নামার্কার করিতে পারেন নাই । ই সাভারার কর্ম ১) :

 নামার্কার করিতে পারেন নাই । ই সাভারার কর্ম ১) :

 নামার্কার করিতে পারেন নাই । ই সাভারার কর্ম ১) :

 নামার্কার কর্ম বিভাগি বিভ

ধর্ম সকলে বিভিন্ন পাশ্যান্তা স্বাধীর সভবাদের আলোচনা-প্রসলে বভিন্ন কোমতের সভবাদের উল্লেখ করিরাছেন। (ধর্মভন্ম, ক্লোড়প্তর ব')
 কোম্ব কলেন.

<sup>&#</sup>x27;Religion in itself expresses the State of perfect unity which is the distinctive mark of man's existence both as an individual and in society, when all the constituent parts of his nature, moral and physical are made to converge towards one common purpose.'

বৃদ্ধির ধর্মের এই ব্যাখ্যার অন্তর্নিহিত সত্য প্রহণ করিরাছেল। কিন্ত নিরীঘর্ষাণী কোষণ করিরের ছালে সাক্ষতাকে প্রতিন্তিত করিরা তাছার Gultus of Humanity প্রচার করিয়েতে বা পদান্তরে, দীতার বাদীপুই বৃদ্ধির ইবরবিহার পূর্ব স্বীকার করিতে পারের নাই, তাহার হতে বৃদ্ধিসমূহকে ইবরমুখী করিরা বিভাগ করের অনুষ্ঠানই ধর্মের বিশিষ্ট লক্ষণ। (বিভাগিত আলোচনার বৃদ্ধ হীরেন্দ্রনাথ বৃদ্ধ সহাপরের গোলীনিক বৃদ্ধিসমূহকে ১১১, ৩৫-৪০ পুলেইবা)

<sup>† &#</sup>x27;तथन नोयुर्द्ध नुकन दुष्टिकनिर्दे प्रवस्त्री या प्रवसायको हत, तरि विषद्दि क्षि ।' "बन्द "किनानिकायद्दि नेकन दुष्टिन नार्वक्षक ।' (वर्षक १३))

হুইবে। সভ্যানন্দ ঠাতুর (সভান-সন্দ্রালয়ের ইনিই শক্তির ইংন) সর্বাভ্যানী হুইরা দেশবাভ্তার সেবার আত্মনিরোগ করিরাহেন। তাহার দেশঞীতি বহিবের দেশঞীতির পরিচর দের, কিছ লভাভ গ্রীভিরভির সঞ্জিত সাবরুভ রাবিরা তিনি তাহার দেশঞীতিকে ইবরবুবী করিতে শিকালাভ করেন নাই। বাঁহবের চুইতে শিকা ও সাবনার এই অসম্পূর্ণভার কটই করের মুহুর্তে ভাহার নিক্ট বিসর্জনের-আজ্ঞান আসিল। ভাষণ সাবনার সিহিলাভের কর্ম্য 'জীবনসর্বাহ' পণই ববেই মহে, ইহার ক্যা চাই ভক্তি।

ভজিতদ্বের বিক বিরা 'আসন্দরঠে'র বেবানে পরিস্বাধি, 'বেবী চৌধুবাবী'র সেখানে আরত। 'আসন্দরঠে' বিদিন ভজিত্ব প্রয়োজনীরভার উপর জোর বিরাহেন, 'বেবী চৌধুবাবী'তে 'প্রকৃরে'র চরিত্রে ভিনি ভজিত্র আমর্শকে বাঙ্কর রূপ বিরাহেন; প্রসূত্র নিকার কর্মান্ত্রনার প্রবাহ ভজিত্র প্রভীক। বেহী রাম্রকেই কর্ম করিতে হুইবে, কারণ,

নহি কলিং কণ্যণি কাছ ভিঠভাকপুঞ্ছ।

কাৰ্য্যতে হ্ৰণ: কৰ্ম কৰ্মকৃতিকৈও গৈ: ।

কাৰ্য্যতালীতা ভাগ

অৰ্থাং, 'কেন্টই কৰম নিক্ৰ্মা হইবা অবস্থান করিতে পারে না। কৰ্ম্মা করিলে প্রকৃতিকাত গুণসকলের হারা কর্মে প্রবৃত্ত হুইতে হুইবে।' অৰ্থচ বিষ্ণবের ব্যান বিনাশের হেড়:

ব্যারতো বিষয়ান্ পুংস: সক্তেমুগজারতে।
সকাং সঞ্চারতে কাব: কামাং জোবোহতিজারতে ঃ
জোবাদ্ তবতি সন্ধোহ: সন্ধোহাং স্থতিবিজ্ঞা:।
স্থতিজংশাদ্র্তিমাশো বৃতিমাশাং প্রণক্ততি ঃ
তপ্রস্মীতা ২,৬২,৩০।

সীভারাবের চরিত্রে ইতাই বহিষের প্রভিপাত।

ভাৰা হইলে কৰ্মবৰণ হইতে মুক্তিলাতের উপায় কি ?
বজাৰ্থাং কৰ্মবাহন্যত্ৰ লোকোহয়ং কৰ্মবৰণঃ।
ভাৰতাতীয়া ৩:৯

অৰ্থাং—বজাৰ, অৰ্থাং 'ইণ্ডৱাৰ্থ বা ইণ্ডৱোডিট বে কৰ্ম ভত্তির
অন্য কৰ্ম বৰ্ষনাত্ৰ, প্ৰভাগে অন্তৰ্ভর নতে। 'বে কৰ্ম ইণ্ডৱোডিট, অৰ্থাং ইণ্ডৱাভিপ্ৰেড, ভাতাই অন্তৰ্ভর। ভাতাতে আনভিশ্ব্য এবং কলাকাজাপ্ন্য হইলা ভাতার অন্তৰ্ভাগ ক্ষিতে হইলে।' (বৰ্মভন্থ ১৪)। ইতাই কৰ্ম্যবন্ধন হইতে বুজিলাভের উপায়। ইতাই কৰ্মন্যান, ইতাই ভক্তি এবং 'বেনী চৌধুৱাৰি'তে ইতাই প্ৰস্ক্রের জীবন-বানী।

প্রকৃষ্ণের জীবন কর্মের ভিতর বিবা পূর্বভা লাভ করিল এবং তাঁহার জনাসক্ত নদের সোনার কাটির স্পর্নে প্রক্রেরর সংসারের কড়তা বুচিল। পঞ্চারের, কর্মত্যাগের অভিনানের কলে এর নিফান লাবনা অপূর্ণ রহিরা গেল এবং এ প্রত্যাবর্ধন করিলে এক দিকে গীভারামের আগভিদ, অপর দিকে এর আনালভির বিকার—উভর নিলিরা গীভারামের জীবনের এভ বার্গ ক্ষিরা দিল। নিফান লাবনার ব্যাব্যা হিলাবে 'গীভারাম্য' 'বেনী চৌবুরান্ত'র পরিপ্রক: 'বেনী চৌবুরান্ত'তে নিফাক সাবনার প্রবালী ও পরিপতি এবং 'গীভারামে' এই সাবনার পরে বে সকল অভরার রহিরাহে ভাহা ব্যাব্যাত হুইরাহে।

কিছ ভক্তিভড়ের বিশ্লেষণ বড বছ জিনিয় হউক, আর্টের বিচারে ইহা উপন্যানের গৌণ উদ্বেভ । 'ত্ররী'তে প্রকৃতপক্ষে এই গৌণ উদ্বেভই মুখ্য হইরা ইাভাইরাছে। ইহা শ্রেচ্চ শির্দ্দ প্রটির অন্তর্কুল নহে। ভাহা হইলেও বোটের উপর বলা বাইতে পারে বে, বভার লারভড় সাবারণের নিক্ষ্ট আকর্ষীর্দ্দ ভূরিবার উদ্দেশ্যে বভিনের চরিত্র-প্রটি ও প্রভিবেশ-পরিক্রমা অন্তর্পনিত্রী-প্রভিভার পরিচর বের।

# উজ্জীবন

### এঅরুণবরণ চক্রবর্ত্তী

বিদীৰ্ স্বৰ্থ নিৰে আবো আনি আশাৰ উন্ধ। প্ৰবল বঞ্চার বাবে অনিকাৰ দীপৰানি হাতে এবনো চলেছি পথ। কতবার অভকার বাতে হারিছেছি বিক। তবু বেবেছি সাহলে তর বুক।

"এ জীবৰ বহাসত্য-ভাৱ সর বাই-নাই কর।"
আবি তো চলেছি গেবে জীবনের এই জয়গান।
গোবিত সাহিত বৃদ্ধ কববের বৃগ-বলী প্রাণ
নতুন আলোর নেরে পুনক্ষীবিত বাতে হর:
বিকে বিকে পরে পরে নাগরে বলুরে নগৌরব।
নতুন বুলের রজা-বাতে ওকি আগন বিতরে।

# স্থারাম গণেশ দেউল্কর

1242-1210

#### এবজ্জেনাথ বন্দ্যোপাধ্যার

একনিঠ সাহিত্যসাধক, নির্ভীক সাংবাদিক ও দেশপ্রেষিক দৈশের কথার রচরিতা স্থারাম গণেশ দেউকরকে আল আমবা তুলিরা পিরাছি। কিছ একলা বাংলা-সাহিত্যে তিনি বিশেষ প্রতিষ্ঠা অর্জন করিতে সমর্থ হইবাছিলেন। ভাঁহার রচিত ইতিহাস, জীবনচরিত ইত্যাদি এক দিকে বেমন বাংলা-সাহিত্যের সম্পদ বৃদ্ধি করিরাছিল, অন্ত দিকে ভেমনি তাঁহার অপ্রিগর্ভ রচনাবলী আমাদের জাতীর আন্দোলনের মুর্থমুলেও প্রেরণা সঞ্চার করিরাছিল।

বাংলা দেশের অধিবাসী ত্রিবেলী, শুকুল, পাঁড়ে প্রভৃতি উপাধিধারী কণোজিয়া ত্রান্ধণ এবং সিংহ-উপাধিধারী বাক-পুতদের স্থার সধারারও ছিলেন জাতিতে অবাঙালী। কিছ বাংলা দেশের আচার-ব্যবহার, রীভিনীতি, ভাষা ইত্যাদি প্রহণ করিয়া ভিনি বাঙালী আভির সহিত একাত্ম হইরা বান। বস্ততঃ এই দারিক্যক্রতধারী মরাঠী ত্রান্ধণ বে-ভাবে বাংলা-সাহিত্যের সাধনায় জীবনপাত করিয়া সিয়াছেন, ভাহা আবাদের কলবে প্রভাব উল্লেক করে।

#### वश्य-श्रविष्ठय : स्त्र : विलाभिका

স্থারাম গণেশ দেউত্বর মহারাষ্ট্রের এক বিভাছ্রাসী আত্ম-পরিবারের কটা সন্থান। ইহাদের আহি নিবাস—বোষাই প্রদেশের অন্তর্গত বহুপিরি জেলার ছত্রপতি শিবাজীর আলবান নামক হর্গের নিকটবর্জী দেউস্ প্রাম। স্থারামের শিতামক স্থাশিব, স্থালকের নিকট কইডে বিবাকের বৌত্তকত্মক বৈদ্যানাথের নিকটত্ম করো প্রাম প্রাপ্ত কন। "করো প্রামে তাঁহার এক পুত্র ও এক কন্যার কত্ম হব। পুত্র গণেশ সন্মানিব কানীধামে বেদ অধ্যয়ন করেন। সিধোড়ের ভূতপূর্ক মহারাজ ক্ষরজন সিংহ বৈদ্যাথ দেওবরে বাস করিতেন। তিনি গণেশ সন্মানিবকে আশ্রম দেন। ১৯২৬ সংবতের পৌব মাসে শুক্লা-চতুর্কনী তিথিতে (১৭ ভিনেম্বর ১৮৬১) তাঁহার এক পুত্র ক্ষয় প্রহণ করেন। তিনিই স্থাবাম গণেশ দেউত্বর নাবে বাজনা দেশে বিশ্বাত ও দেশবাসীর শ্রাভা-প্রতিত্ব পাত্র কইয়াছিলেন।"

স্থাবাম গণেশ দেউত্ব—এই নামের মধ্যেই তাঁহার নিজের নাম, পিছনাম ও বংশ-পরিচর নিহিত। তাঁহার নাম স্থারাম, পিভার নাম গণেশ এবং বংশের নাম দেউত্ব। স্থারামের ভীবন ছংখ-খাছন্ত্যে অভিবাহিত হর নাই। সারা ভীবনই অভিকৃত অভৃত্তের সভে সংগ্রাম করিরা তাঁহাকে কভবিক্ত হইতে হইরাছিল। এই হুর্তাপ্যের স্থল্পাত হর জাহার শৈশবেই—স্থারামের বরদ বধন মাল পাঁচ বংসর তথন জাহার মাতা লোকাভরিতা হন। সাধনী পত্নীর মৃত্যুর পর স্থারামের পিতা আর বাবপরিশ্রহ করেন নাই। স্থারামই ছিলেন—একপত্নীত্রত পুত্রবংসল পিতার নয়নের মণিক্ষপ।

পদ্মীবিবাদের পর স্থারামের পিতা নিজের এক তারনীর উপর এই যাতৃহীন শিশুর লালন-পালনের তার অর্পণ করেন। স্থারামের এই পিতৃহসা বেমন ছিলেন বৃদ্ধিতী ও বিদ্যাত্বরাপিনী, তেমনই গৃহকর্ষে স্থানিপুণা। "তাঁহার মহারাট্র-সাহিত্যে বৃহণ্ডি ও ধর্মণাত্তে অধিকার ছিল। তাঁহারই বড়ে, উপলেশে, পরিজ্ঞানে স্থারামের চরিজ্ঞ গঠিত হইরাছিল।" এই পুণারতী মহিলার আবর্শ ও শিক্ষানান স্থারামের উত্তর-জীবনে পরিপ্রতাবে কলপ্রস্থ হইরাছিল। ইনি শিশু স্থারামের ক্রমরে ম্রাঠী-সাহিত্যের প্রতি বে অত্বরাপ সঞ্চারিত করিয়া দিয়াছিলেন, জাতাই পরবর্তী জীবনে তাঁহাকে উক্ত সাহিত্যের রম্বরাজি আহরণ করিয়া বক্ষ-সাহিত্য ভাগোরের সম্পাদ-বৃদ্ধিতে প্রপোদিত করিয়াছিল।

সধারার শৈশবাবধিই বাঙালী শিশুদের মড বাংলা শিথিতে আরম্ভ করেন। সধারামের শিতা বে কাশিতে আর কাল বেদ অধ্যয়ন করিরাছিলেন সে কথা আপেই বলিরাছি। পুরুকেও বাল্যকালেই ভারতের অধ্যাত্ত্ব-সম্পাদের সহিত পরিচিত করিবার উদ্দেশ্তে ভিনি ভাহার বেদ অধ্যরনের ব্যবস্থা করেন।

কিছু কাল বেদ অধ্যরনের পর স্থাবামকে দেওবর উচ্চইংরেজী বিদ্যালরে ভর্তি করিরা দেওরা হয়। মাইকেলের
চরিতকার বোসীজনাথ বস্থ তখন এই স্থলের হেডমাটার।
তাঁহার শিক্ষার গুলে স্থাবাম বাংলা-সাহিত্যের প্রতি
অন্থক্ত হইরা উঠেন। বাংলা ভাষার চর্চার সলে সক্রে
ভিনি মরাঠা ভাষা এবং সাহিত্যও স্বত্তে আরম্ভ
করিতে স্থক করেন। বোসীজনাথের সাহচর্ব্যে তাঁহার
এই প্রির ছাজটির মনে শুরু বে সাহিত্যের প্রতি অন্থরাগই
উদীপ্ত হইল ভাষা নহে, বাল্য- বরসেই বাংলা রচনার
তাঁহার হাতে-থড়ি হইল। ইতিহাসচর্চার তাঁহার
অসাধারণ অন্থরাগ ভিল। স্থারাম নানা ঐতিহাসিক
সম্বর্ড লিখিরা হাড পাকাইতে লাগিলেন। এই
ভক্ষণ লেথকের রচনারলী তথ্যকার প্রতিহাপর সানিক-

शिक्षणिक अरुगिष्ठ इरेट्ड मानिन। एथनकात नित्न शर्यण्य निर्माणिक निर्माणिक निर्माणिक निर्माणिक निर्माणिक निर्माणिक निर्माणिक निर्माणिक स्वा क्ष्मणिक हरेटा एकानीका लिथरका वार्या-माहिट्डात जानत जाटा केंद्रिए एकानीका लिथरका वार्या-माहिट्डात जानत जाटा केंद्रिए एकानीका लिथरका वार्या-माहिट्डात जानत केंद्रिए जाना विद्या केंद्रिए हरेंद्रा निर्माणिक निर्माणिक निर्माणिक निर्माणिक हरेंद्रा-हिन, रेशां एके त्वा वार्य, जक्षणीनन वार्या तकनात कित्रण केंद्रिक निर्माण केंद्रिक जिल्ला केंद्रिक केंद्रिक निर्माण केंद्रिक जिल्ला केंद्रिक केंद्रिक निर्माणिक केंद्रिक केंद्रिक

#### কৰ্মজীবন

भाविवाविक चढाव-चन्नेद्राव एकन म्थावायर्क चढ वयरमहे जीविकात मंद्रशास्त्र क्या मह्मारशामी वहेटल वहेन. ভাঁচার কর্মভীবন আবন্ধ চটন সামানা শিক্ষারভীরণে। ১৮৯০ এটানে দেওঘর বিদ্যালয়ে সেকেও পভিতের পদ শুনা হইলে স্থারাম মাসিক ১৫১ বেডনে সেই পলে নিযুক্ত हत । अहे नमदाच जिति व्यवनवकारन वहताहर्का कविर्देशन 'চিডবালী'ডে নিষ্মিত ভাবে ভাঁচাৰ বচনা প্ৰকাশিত তইত : একবার দথারাম তাঁচার একটি রচনায় বৈদানাথের ভদানীস্থন মহকুষা হাকিষের অন্যায় আচরণ স্থতে অপ্রিয় সভা উদবাটিত করেন। 'হিতবাদী'র উক্ত প্রবন্ধের দেধক বে স্থারাম, বিশেষ কোন স্থুৱে তাহা অবগত হইয়া হাকিম-পুদর জাহার উপর ভয়ানক কট চইলেন। ঐ হাকিম ছিলেন কেওবর বিভালরের ভল-কমিটির সভাপতি। স্থারামকে শামেন্ডা করিবার ভব্ন তিনি ক্তসভা হইলেন, ঠাহার প্রতিকৃত্তার স্থারাম কর্মচাত ত रहेरलाहे. अपन कि स्थवरत वान करां क्रमनः कांश्व পক্ষে অসম্ভব হুইয়া উঠিল। ডিনি ১৮১৭ সনে সপরিবারে দেওঘর জ্যাপ করিতে বাধা চইলেন। দেওঘর পরিভাগে किन्द्र नशाबात्मव शक्त्र भारत यत हरेग । स्वयद्वत कृष्ट স্থীৰ্ পঞ্জী হইতে ক্লিকাভাৱ বৃহত্তৱ কৰ্মকেত্ৰে আসিৱা ভিনি নিজের প্রভিভা বিকাশের অন্তুল কেন্দ্র পাইলেন।

কালীপ্রসন্ধ কাব্যবিশারণ তথন 'হিতবাদী'র সম্পাদক; তিনিই এই সময়ে বিপন্ন স্থারামের সহায়ক হইলেন। স্থারাম মাসিক ৩০ বেডনে 'হিতবাদী'র প্রক্র-সংশোধকের পদে নিমৃক্ত হইলেন। কর্মদক্ষতাশ্বনে অচিরাৎ উাহার বেডন বৃদ্ধি হইল, ডিনি ক্রমশ্য কাব্যবিশার্কের দক্ষিণহত্তমন্ত্রণ হইলা উঠিলেন। ১৯০৭ সনে শীড়িত কালীপ্রসন্ধ
ব্যন স্বাস্থাবেরণে জাপাত বাজা করেন, সেই সময়ে

স্থারামের স্বল হতেই ভিনি 'হিডবালী'র পরিচালন-ভার ভঙ করিয়া বান। খাবেশ-প্রভ্যাসমনকালে পথিষধ্যে কাব্যবিশারদের মৃত্যু হইলে (৪ জুলাই ১৯০৭), 'হিডবালী'র কর্তৃপক্ষ স্থারামকেই ছারী স্পাদকের পদে নির্ক্ত করেন: ভাগার বেডন হয় যাসিক ১০ টাকা।

ইহার চার পাঁচ যাস পরেট করাটে কংল্লেসের অধিবেশন আহত হয়। এই অধিবেশন কিব্ৰূপে লোকমান্ত जिनात्कत अञ्चनामीत्तत वाता वक्षतत्व नतिन्छ इत, त्न कारिनी खविषिछ। विषिन बहे कांश्र हम्, ताहे पिनहे क्रवार्व क्रवेटल क्रिक्वालीय प्रधाधिकाविश्रम जिल्लास्य विकास ভিতৰালীতে লিখিবাৰ ভন্ন স্থাবামকে ভাব করেন। ভাব পাইবা ডেক্সী মৰাঠা ত্ৰাছৰ সধাৰামেৰ আজহৰ্বাভাৰোধ যাধা বাড়া ছিয়া উঠিল। ডিলভের নিভট ডিনি ভাছেলি-কতার অপ্রিমতে দীকাঞ্জাল কবিষাভিলেন—ভিলক ভিলেন ঠাচার ওক। সেই দেশচিতে উৎস্পীতভপ্রাণ ওক্তকে হের প্রতিপদ্ন করিবার অন্ত লেখনী ধারণ।-এ কথা চিন্তা ক্রিডেট ভাষার সমস্ত অন্তর কর্ত্তপক্ষের এই অন্তার অন্ধবোধের বিক্তে বিজ্ঞোহী হইরা উঠিল। বীতিমত ভাবিরা চিভিরা তিনি ভির করিলেন, বরং ডিকা করিরা ৰাইতে হয় ভাহাও খীকাৰ, তৰ এ কাৰ ভাহাৰ বাৰা চটবে না। তিনি নিজের ছারিজ্যের কথা, পরিবার-পविकासक अवनश्चारमव कथा-नक्नहे छनिया श्रामन : স্থাবাম এক কথাৰ 'হিডবাদী'ৰ চাক্ৰি চাডিৱা চলিৱা (शरणन ।

এই ঘটনায় স্থারাম খ-মডের প্রতি বে ঐকান্তিক নিষ্ঠার পরিচর হিয়াছিলেন তাহার তুলনা সাংবাদিক জগতে বিরল। বাত্তবিক্ই "মডের খাডয়্যে তাঁহার অঞ্পটি অহুরার্গ ছিল। জীবিকার অন্ত ভিনি প্রমডের অহুবর্তন ও আত্মমডের বলিয়ানে সম্মত হন নাই।"

ইতিহাসে স্থারাষের গভীর ব্যুৎপত্তি ছিল। ভিনি সারা জীবন প্রপাচ় অধ্যবসায়ের সহিত ইতিহাসের চর্চার রত ছিলেন। 'হিতবাদী'র সহিত সম্ব বিচ্ছিন্ন হইবার অন্ন দিন প্রেই তিনি নবপ্রতিষ্ঠিত ভাশনাল মূল—কাতীর. বিভালনের ইতিহাসাধ্যাপকের পদ লাভ করেন।

#### দেশ-সেবা

মহারাট্রের সভান হইরা স্থারাম বাংলা দেশ ও বাঙালী জাতিকে আপন জন বলিয়া মনে করিতেন। বাঙালীর হুথ-তু:থ, আনন্ধ-বেহনা, আশা-আকাজ্যার সহিত ছিল উাহার নাড়ীর বোগ; বাঙালীদের তিনি বজন বলিয়া বর্ণ করিয়া লইরাছিলেন। বাংলা দেশের প্রতি উাহার আছ্বাগ ছিল গভীর। এই ছবেশপ্রেমের প্রেরণার তিনি
রক্ষয়বন্দের আব্যোলন—বাঙালীয় সর্বপ্রকার লাভীর
আব্যোলনে সক্ষিত্তাবে বোগদান করিরাছিলেন। স্থারাম
বৃগান্তবে বাবে মাবে লিখিতেন। এই দলের সহিত
ভাহার বিশেষ অন্তর্গতা ছিল। ভাহারই উদ্যোগে
বল্দেশে ১৯০২ সনে সর্বপ্রথম শিবালী-মহোৎসবের স্থচনা
হব।

#### জীবন-সায়াহ্নে

ছঃখ-লাহিত্র্য ছিল স্থাবামের নিত্য স্থচর। একে ড নানা ঘাড-প্রতিঘাতে তাঁহার জীবন কর্জবিত হইয়া উটিয়াছিল, ভাহার উপর ছুরম্ব ব্যাধির আক্রমণে তাঁহার লহীরও ভাঙিয়া পড়িল। এদিকে আবার পুত্র ও পত্নী— উভয়েই তাঁহার যাত্রা কাটাইয়া পরলোকে চলিয়া পেলেন। কিছ বেশী দিন ভাহাদের বিয়োগ-ব্যথা স্থাবামকে স্থ করিতে হইল না,—১৯১২ সনের ৪০এ নবেম্বর (৮ অগ্রহারণ ১৩১৯, কার্ডিক-শুক্লাচভূর্দ্দশী) দেওম্বরের করো প্রামের বাড়ীতে ভিনি অকালে দেহরকা করিলেন।

ক্রেশচন্দ্র সমাজপতি ছিলেন স্থারামের একজন গুণ-প্রাষ্ট্রী। স্থারামের মৃত্যুর পর তাঁহার গুণকীর্ত্তন করিছে পিরা ক্রেশচন্দ্র বে কয়টি কথা বলিয়াছিলেন তাহাতে এই ছরিন্ত্র সাহিত্যসেবীর চারিজিক বৈশিষ্ট্যসমূহ বেন একেবারে মূর্ত্ত হইয়া উঠিয়াছে। তাঁহার সেই কথাগুলি নিয়ে উদ্বৃত্ত করিতেছি—

শণিতিত সধারার গণেশ বেউছর আর ইহুছগতে নাই।
ইবি বেশবাড্ডার এড়বিঠ সাবড় হিলেন। বেশায়বোবের
প্রতিঠাড়ার তিনি বানীর সেবার জীবন উৎসর্গ ভরিরাহিলেন।
কেশের সেবার আয়নিরোগ ভরিবার উড়েন্ডেই ইনি সংবারপজের সেবার রাড়ী হইরাহিলেন। পরারার বার্ কর্মী হিলেন
—ইনি কর্ম ভরিভেন, কিছ কর্মকলের আজাজ্ঞা ভরিভেন
না। ইনি বহারাত্রীর হইলেও বলবেশকে এবং বাঙালীকে
আপনার ভরিবা লইরাহিলেন এবং বালালা সাহিত্যের
পৃষ্টিনাবনভারে ববেঠ সহারতা ভরিরাহিলেন। ইনার
অভালর্ভ্যুতে বালালা লাহিত্য ক্তিএত হইরাহে। আরবা
কেই ভতিতে বর্ষাহত হইরাহি।…

নাহিত্যনেবীর চির্ভন অভিনাপ বাহিত্য বেউক্রের চিরভীবনের নলী বিল । বৃত্যান্যার নেই বাহিত্যের বাজনা ও
রোগের ব্রণা ভোগ ভরিরা গভ ৮ই অঞ্চারণ শনিবার
প্রভাতে ভিনি বরার বছন হির ভরিরা পৃথিবীর প্রব-মুঃবের
অভীত হইরাহেন । ভগনান্ ভর্ত্যান্ত, পথপ্রাভ পবিতের
ভর্ত্যকর হির ভ্রিয়া ভক্তণার পরিচর বিরাহেন । পরলোক্তে
ভিনি ভারাতে শান্তি বান ভক্তন । ('বস্তবভী' হইডে
১৩১৯ সালের বানু-সংব্যা 'নাহিত্যে' উন্নভ )"

#### रहतांवली

স্থাবাম ভাহার কর্মকান্ত জীবনের বন্ধ জনসংট্রু
রাংলা-সাহিত্যের সেবার নিয়েজিত করিয়াছিলেন। তিনি
সরল ও বিশ্বত বাংলা লিখিতেন। তাঁহার রচনার মারকতে
বাংলা ও মহারাট্রের মধ্যে একটা আজ্মিক বোপ স্থাপিত
হইয়াছিল। তাঁহার রচিত গ্রন্থগুলির মধ্যে ভারতবর্ষীর
শিল্প-বাণিজ্যানির অধাগতির ইতিহাস—'দেশের কথা'
সমধিক প্রসিদ্ধ। এই পুত্তকথানি এদেশবাদীকে ব্রিটিশ
শাসনের ও শোবণের কৃষল সম্বদ্ধ সচেতন করিয়া তুলিতে
বিশেষভাবে সহায়ক হইয়াছিল। সরকার পুত্তকথানি
বাজেয়াপ্ত করিলে তেজন্থী স্থাবাম গ্রর্থেন্টের বিক্লে
হাইকোটে নালিশ করিয়াছিলেন। হুংধের বিবন্ধ, মামলা
ভ্রনানির পুর্বেই ভাঁহার মৃত্যু হর।

স্থারামের রচিত ও প্রকাশিত গ্রন্থণির একটি কালাফুক্রমিক তালিকা দিতেছি; বন্ধনী-মধ্যে উদ্ধৃত সাগ-তারিখধুক্ত ইংরেজী প্রকাশকাল বেক্ল লাইত্রেরি-স্কলিত মুদ্রিত-পুস্তকাদির তালিকা হইতে গৃহীত।—

১। **এটা কোন্ যুগ**়। ১৮ ভাজ ১২**>>** (২-**>-**১৮৯২)। পু. ২৪+১ শুদ্ধিতা।

"বৃগকাল সহবে শানীর বিচার।" "'এটা কোন্ বৃগ গ'
( প্রথম প্রভাব) পুদ্ধকাকারে: প্রকাশিত হইল। এই প্রবহের
এই প্রথম প্রভাবটি গত বংসরের কার্তিক বাসের 'গাহিত্য ও
বিজ্ঞানে" প্রকাশিত হইরাহিল। তংপরে পূর্বপ্রকাশিত
প্রভাবটি সংশোবিত এবং হানে হানে পরিবর্তিত ও পরিবর্তিত
হইরা তত্ববোবিনী পরিকার প্রকাশিত হর। সংপ্রতি ভাহা
পুন: সংশোবিত ও পরিবর্তিত করিরা পুত্তকাকারে প্রকাশ করা
পেল। করিবাধি ও পরিবর্তিত করিরা পুত্তকাকারে প্রকাশ করা

"এই প্রভাবের অধিকাংশ পূর্বে প্রদীপ পত্তে প্রকাশিত হইয়ছিল।"

৩। বানীর রাজকুবার। ১৩-৮ সাল (২৭ ডিসেম্ব ১৯-১)। পু. ৬০।

"এই কাৰিনীৰ সংএতে আবাৰ প্ৰবেষ ঐতিহাসিক পুৰং সাভাৱা-ৰাজেৰ পাৱনীনধীশ এছিক বভাৱেৰ ব্যৱহুত পাৱস্বীন বহোৰৰেৰ ৰচিক 'নহাৰাই সন্ধীণাইবেৰ জীবনচন্তিত' বাৰক উংক্ট বাৰাঠি এছ হুইতে আৰি অপেব নাহাৰ্য পাইবাছি ।"

8। বাজী রাও। ১৩০৮ নাল (২৪ জাত্যারি ১৯০২)। পু. ১৬২।

"হাও বাহাহর কাশীনাৰ নাহাহৰ নাবে বি, এ, ( তেতাৰ কলের ), উহুক্ত বিবনাৰ কাশীনাৰ হাজৰহাতে ও প্রথম উহুক্ত সভাজের বলবত পাহাননীন নহোলাহের বিকট আনার একাত ক্তক্তভাজকাশ প্রয়োজন। ব্রাবিশের অক্লাভ কেটার বহারাট্র বেশের ইভিহাস বংজাত তর্গত প্রাচীন ভাগতপ্র নংগ্ৰীত না বইলে এই পুডক বচনা কৰা আনাৱ পক্তে ছংসাধ্য B\$# 1"

e। **आमनी वाले**। १ (२६ मार्ड ১৯०७)। 9, 23, -00 1

"जैवनी कानी वांचे बहावादीय कावाद कावनी वांचेत (व অভি প্রকাত-বরাল আট পেজী ৪২৫ পূঠার সম্পূর্ণ জীবন-চরিত রচনা ক্রিয়াহেন, একেত্রে ভাতাই আনার প্রবাদ অবলখন। উত্তাৱ সাৱসংগ্ৰহ ক্রিয়া ভূতপূর্ব্য 'স্বী' পঞ্জিকার [ ১৬০৭, মাখ-চৈত্ৰ : ১৬০৮, জৈৱ-আয়াচ ] আমি ইড:পূৰ্বে **करवक्री श्रेषांव निविधादिनाय । अकरव वर्षामस्य श्रीवर्द्धम स्र** नश्रमानचढ चाटारे शृक्षकादा श्रकानिक कृतिनाह ।"

৬। শিবাজীর বছম্ব। আযাচ ১৩১০ (ভুলাই 5000) 1 9.201

শিৰাণী-ৰহোংসৰ উপলক্ষে কলিকাতা শিৰাণী-উংসৰ-স্বিভিত্ন ছাত্ৰা বিশাসুল্যে বিভব্লিভ। ইহা প্ৰথমে "ক্লিভাভা ১৯০৯ नात्मत निवाकी मत्हारमय धेनलक्क बहिक है।

#### १। (प्राचित्र कथा :

১ম ভাগ। ১৩১১ সাল ( ১৯ জুন ১৯ ৪ )। প.७৪২। (२७ षाक्वीवद ১२०१) भू. ७१। পরিশিষ্ট ভাগ। "ৰাভীৰ মহাস্থিতিৰ আৱম্ব কাৰ্ব্যে সহায়তা করিবার केरका 'द्यानव कथा' श्रामिक हरेन । वि: केरेनियान किन्दी ति, चारे, रे, जीवक मामा कारे भोरताकी ও जीवक बरवनहत्त वस जि.चारे.रे. चाराज्य वादिया ७ निव-वानित्काय विमान প্ৰভৃতি সম্বন্ধে যে সকল এছ বচনা ক্রিয়াছেন, বর্তবান पुष्ठाच्य दहनाव चाहारे चानाव श्रवाम चवनवम । काहारमव ৰচিত প্ৰৱন্ত-ৰি: ডিগ্ৰীৰ The Prosperous British India, बेर्ड बोरबाचीब Poverty and un-British rule in British India अवर यह बहा नरबंद The Economic History of British India ACUST WING न्हारमञ्जू चन्छ्रभार्काः। चरमरकरे बरे नकल अरहत मान अन्य ক্রিরাছেন। কিছ ভংগবৃহ পাঠ ক্রিবার স্থিবা অভি অল लारकतरे चारक। चवकारमंत्र चलारवंश चरवरक अरे चलि विकाध बाइश्वनि गार्ठ कविट्ड गारवन ना । बाहाबा देश्यकी णांवाय जमक्कि, ठांहाविश्वत जन्निवा जात्रक जनिक। अहे नक्न (अवैद्य शार्ड क्या वादाए शृत्काक अव्यविष्ट वाद्य नाद्यक् चनम् इरेट भारतम चक्रमा और कृष्ट भूकक् मर्वक्रम-र्वादनेवा ভাষার রচিত হইল। বিবিধ সরকারি রিপোর্ট ও অন্যান্য बाद करेरक क का कवा विवय जरबेट कविया और पूकरक শ্বিবিট ক্ষিয়াছি।"--ভূষিকা।

৮। कुरात्कत्र जन्मवाम् । हेः २३०८ (२५ वृगारे )। 7. 27-388 1

"म् अव अवा इहेट भूतम् विख।"

२। निर्वाकीत शीका। काळ ३०३५ (१-३-73.8)1 9 801

दवीक्षवाव श्रेष्ट्र-जिविक "निवाकी केरनव" कविका नव । শিৰাকী নহোৎসৰ উপলক্ষে কলিকাভা শিৰাকী-উংলব-সমিভিয় ৰালা বিশাৰূল্যে বিভৱিত।

>•। मिराष्ट्रो। देवनाथ २७५७ (१-७-२३०७)। 7. 28 1

निवाकी-मरहारमव উপनक्कि...विनाम्राम् विভविछ।

<sup>১১।</sup> डिमर्कत्र त्याकसमा ও সংক্রিপ্ত জীবন-**চরিত।** वाचिन ১०১৫ ( 8-১०-১৯ ।৮ ) शृ. २>० + 8० ।

বলীয় হিন্দুজাতি কি ধনংলোল্বখ ? षाचिन ১०১१ ( ১०-১०-১৯১० )। शु. ১२८।

'বংলোনুৰ কাভি'র প্ৰভিষান। "কলিকাভা কাভীর বিভা-লবের ইভিহালাব্যাপক এসবারার গণেশ দেউছর-প্রাইভ।"

পুস্তকাকারে অপ্রকাশিত রচনা : - মাসিকপত্তের পুষায় স্থারামের এমন অনেক প্রবন্ধ বিক্তিপ্ত বহিয়াছে বেগুলি এখনও পুতকাকাবে প্রকাশিত হয় নাই। আম্বা এই শ্ৰেণীৰ কতকশুলি বচনাৰ একটি তালিকা দিতেছি: 3236, जाविय-लीव 'विषयान' ক্টাৰভাৱ কোন বুলে ? **১২** ३३. देवनाव 'সাহিত্য' ৰহাৱাহীৰ ভাৰাৰ

প্রাচীবত্ব ও শ্রের্ডত ভাত্ৰ-ভাষিৰ 'প্ৰতিভা' करवर वर (नमारनाहका) : नाट्यत जल्द जल्दार चल, देहब 'বাহিভা' শেশওৱে বালাকী

বিশ্বদাৰ कांचन বাজীয়াও ও বভাগী ১৩০০, আবাচ, আন্ত 'গাহিত্য' হত্রপতি মহাদ্ধা পিবাদ

'esse)'

কাল পৌৰ 'দাহিত্য' लांगीय बनाबाहे 'else)' ৰাঘ **अक्टाठाई**।

১৩.১, देवनाय, सावन, কাৰিক, পৌষ 'সাহিত্য' Zerá 'शक्तिका' মাৰ 'बहवे' ۵ काखन

SIE

3002, देव**मा**व 'বাহিভ্য' ٥ প্ৰাৰণ-আখিদ à चाचिन alsa), चंद्रास्त

diad, 3000, चांचा**इ** 

মহারাষ্ট্র সাহিত্য পৃষ্ঠার আলোচনা মছুৰ্বোক্ত সমাভন ৰপা শিবাদীর বার্বভ্যাগ ৰহাৰাই বাহিত্য माञ्चायन प्राच्या वर्ष আক্ৰল বাঁহ অভিযান

वृश्विद्यन्न चाविकाय-

देविक चारमाह्या হুৱাণাৰ ( পানীয়

विश्व )

***			
>0-8,	देवनाव	'ভারতী'	राम्ट्रक्षक ( ১१৮১ वृडीटक महावाद्वीव
	শৌৰ	' <b>বাহিভ্য'</b>	বাদ্দের বিলাভবাতা ) বহারাই ইভিহাসের উপক্রব
> <b>9</b> •€,	বৈশাৰ, ক্যৈষ্ঠ,		
	णाव, टेव्स	'ৰাছিছ্য'	ৰহাৱাই গাহিত্য
	ৰএ, কাৰ্য	'নাহিড্য'	সৰ্ব ৱাৰ্যাস খাৰী
2000	, বৈশাৰ, জৈঠ		ৰহায়াই দাহিত্য
		,else),	<b>কি</b> কিবা
	আখিদ	'ৰাহিভ্য'	লাওয়কজেবের বর্মভাব
	टेल्स	'ভারভী'	ৰদীৰ শন্ধোৎপত্তি রহুত
١٠٠٩,	<del>বৈচঠ, আবাচ</del>	'ৰাহিভ্য'	মহারাহীর কাতির
	আয়াচ 'সা	হিভ্য-সংহিভা'	অস্থ্যবন্ধ ভাষনাচার্ব্য
	आविष	3	ত্ৰছদেশের আচার
			नानकाव
	TIET	'গাহিভ্য'	ঐতিহালিক কাগৰণৰ
	माच	<b>,बाइब्र)</b> ,	ঐতিহালিক আব্যাৱিকা
500F,	टेकार्ड	'এদীণ'	গ্রীককাভির হাবীনতা– লাভ
	ভার, পৌষ 'স	হিভ্য-সংহিভ	
>4.5,	देवार्ड	'ৰজ্পৰ্শন'	ভারতে ভাষালী
	আৰণ-অএ,	'প্ৰদীপ'	<b>च्य</b> न
<b>५०</b> ५०,	क्षांत्रव	'গাহিভ্য'	শিবামী প্রসদ
303 <b>0</b> ,	ভার	'নাহিভ্য'	ৰোপদেৰের পরিচর
<b>&gt;0&gt;</b> (,	कांखन	'নাহিভ্য'	রাকা কুকরাও বটাওকর
	टेक्स '	'वक्क्प्नि'	প্রাচীৰ ভারতে ইতিহাস ও ঐতিহাসিক
> <b>%</b> > <b>%</b> ,	स्रावन	'নাহিতা'	নালবে বহারা <u>ই</u> অবিকার
	कासम	'वक्षप्रनिष'	ওক্ষাৰে বহালাই অবিকার
<b>&gt;@&gt;%</b>	, বৈশাৰ-আৰা	<b>इ 'यक्त्यन्य'</b>	णावणीय रेजिसारनव वेनक्यन

১৩১৮, জৈচ	'নাৰিভ্য'	পূৰ্ীয়াজ-য়ালো
আবাচ	ঐ	ভারতে প্র-পোণিভ
বাব	ঐ	নহায়াঠে,প্র-পোণিভ
	সম্মাস নিজ	<del>f</del> a

#### त्रघ्नात्र । नम्मन

প্ৰাঞ্চতা, সহজ্বোধ্যতা, প্ৰসাদগুণ ইত্যাদি বে সকল ওবে বচনা উৎকৃষ্ট সাহিত্যের পর্ব্যায়ভুক্ত বলিয়া গণ্য হয়, স্থারামের রচনাবলীতে ভাষা বিশেষ ভাবে পরিদক্ষিত হইয়া থাকে। তাঁহার প্রেষ্ঠ গ্রন্থ 'দেশের কথা' হইতে উদ্ধৃত বচনাংশসমূহে ইহার প্রমাণ মিলিবে---

"ভারতীয় কংগ্রেস বা ফাভীর বহাসন্তিতি বুট্টপ পাসবের --देश्वारकत शक्क भाष्माणा-निकाद श्रवायकत प्रकृत । अञ्चन पक्षीन अरहरम शृद्ध दिन ना। प्रचतार, देवा (व-व्हापत नामबी, तारे व्यापन तीचित अप्रकार रेगाक शतिमानिक क्विट्य मा भावित्व, प्रक्रमात्यव मद्यायमा प्रमृद्यभवाद्य হবৈ। পাভাত্য দেশে প্রভার রাজনীতিক আন্দোলনে বে বাভ সুদ্দ-লাভ হয়, ভাতার ভারণ এই বে, ভবতা প্রদা-সমাজের নিয়ন্তর পর্যান্ত এই সকল আন্দোলনে অভারের সহিত বোগৰাৰ করে। আমাধের কেশে অঞ্চার কর অবেকেই धरे तकन चारमानामद जरवाप भवाच दार्थम मा. जवारकद দকলে জাতীর বহাসবিভিত্র কার্য্যে সমান উৎসাহ প্রকাশ करवम मा। कारकर कवलाधित परवक्षातात वाकनुकृत्यवा चात्नामनकादीवित्रद मुद्रैत्वरण वा जरवाहर चह्नण चन्नकर कविश अधीकारव क्षेत्राच अकाम कविश बारकन। रेहारच ভাতীয় বহাসবিভিন্ন অভিকিংকরতা প্রতিপন্ন হয় মা, আমা-দিপের অকর্ব্যাতা ও অঞ্চাই প্রকাশ পার।

ৰবি ভাতীৰ বহাসবিভিত্ন আন্দোলনে স্বাক্ষের স্কল বেৰীয় লোকেয় সহাতৃত্তি প্ৰকাশ পার, এভর্ণলক্ষে বহি সম্অ সমাজ আমূল আলোড়িত হব, রাজপুরুষেরা বলি বুরিতে পায়েন যে, বহাসবিভিত্ন প্রার্থাসমূহ সম্প্র যেশবাসীর অছ-ৰোদিত, দে প্ৰাৰ্থনা পূৰ্ণ কা ক্রিলে ভারতীয় সমাজেয় অভন্তন পৰ্যাত বৰ্ষবেদনাৰ বিজ্ঞোতিত ক্ষরা উঠিবে, ভাতা ক্ষলে উাহারা কংগ্রেনের প্রার্থনার কর্ণণাভ করিভে অবভই আগ্রহ क्षकाम कविद्यम । अहे काहरन कर्यक्षणत हैरक कर्षमिकिक ও অশিক্ষিত জনসাধারণকে বুকাইরা বিরা, বেশের বর্তনশীল হ:বহারিক্র্যের কবা, আমাদের শোচনীর অবোগভির কবা काकावित्तव व्यवक्ष क्यादेश विश्वा. क्रस्ताय अकि नक्रमध অহুৱাগ-বৰ্ষণপূৰ্বক এই প্ৰভাগুৱানের শক্তি বৃদ্ধি করা প্রভ্যেক र्मिदिक्यीय व्यक्तक्या । रात्मा श्राह्म व्यक्तात्म वर ক্রব্যভার করে এহণ করা ইচিত। ১৮৩০ সালের পার্লা-বেক্টের প্রবিভ বিবাবে ও ১৮৪৮ সালের বহারাবীর বোষণাপ্রে আৰম্ভ ৰে দক্ষল অধিকায় পাইয়াছি, ৰে তুশান্তৰত আখাল পাইরাহি, তাহা বেশের অনেকেই সরাকু অবগত নহেন। তাই আনরা সেই সকল অবিকারে বকিত হইরা অবন্তির ব্রফোতে তালিরা বাইতেহি। বুটিশ ভারতের সকল প্রকা, অতি নির্প্রেইর প্রকা পর্বাত, বাহাতে আনাবের রাজ্যত প্রকৃত অবিকারের বিষর স্বাক্রণে অবগত হইতে পারে, সে অবিকারের পূর্বকলাতের ক্ষা বাহাতে সকলে ব্যাক্ল হইরা উঠে, বেশের প্রভাকে স্সভানকে সে চেঙা করিতে হইবে। অঞ্জার ক্ষাই এত বিস আনাবিগের স্ক্রণাশ লাবিত হইরাহে। ব্রসীর বভিরবার বহুবিন পূর্বের এই ক্ষাই বলিরা গিরাহেন। তিনি বলিরাহেন—

'সুশিকিত বাহা বুবেন, অশিকিতকে ভাকিরা কিছু কিছু বুবাইনেই লোক শিকিত হয়। এই কথা বাদানার সর্ব্যপ্ত প্রচারিত হওরা আবঙক। কিছু স্পিকিত অশিকিতের সলে না বিশিলে ভাহা ঘটবে না, সুশিকিতে অশিকিতে সমবেহনা চাই। নানালার হয় কোটী বাট লক (একণ প্রায় ৮ লক) লোকের বারা বে কোনও কার্য্য হয় না, ভাহার কারণ এই বে, বাদানার লোক-শিকা নাই। [বদ্দর্শন ১২৮৫ সাল অঞ্চারণ সংখ্যা—"লোক-শিকা" প্রবছ ]

"একণে বাহাতে দে অঞ্চতার নিরাকরণ হয়, দেশের আশামর জনসাধারণে আপনাদিপের প্রকৃত অবস্থা বুঝিতে পারে, জাতীয় মহাসমিতির সহিত প্রতিকার-প্রার্থনায় সকলে সাগ্রহে বোগদান করিতে পারে, রাজপুক্ষরেরা বাহাতে মৃষ্টিমেয় আন্দোলনকারী বলিয়া আমাদের প্রতিউপেকা প্রকাশ করিতে না পারেন, ভাহার উপায় অবলঘনকরা কর্ত্তরঃ। এই স্থমহান পরিত্র কর্ত্তর্য-সাধনে উৎসাহ প্রকাশ না করিয়া বাহারা জাতীয় মহাসমিতির প্রতিউপহাস বা উপেক্ষা-প্রকাশ করিবেন, তাঁহারা দেশের শক্ষ ও সমাজের শক্ষ বলিয়া চিরকাল স্থী-সমাজের ম্বণার ভাজন হইবেন।

"বৃদ্ধ ভারতহিতৈবী হিউম সাহেব স্বাতীয় মহাসমিভির বিগত অধিবেশনের অব্যবহিত পূর্বে ভারতবাসীকে যে সারগর্ভ উপদেশ প্রদান করিয়াছেন, তাহা প্রত্যেকের স্বরণ রাখা কর্ত্তব্য । তিনি বলিয়াছেন,—

'ভোষয়া কি বৃহুর্ভের ক্ষয় বনে ক্ষানা কর বে, কোন রাজশক্তি বঅঃপ্রয়ন্ত হুইয়া ভোষাধিগকে রাজনীতিক অধিকার
প্রধান করিবেন ? বে নকল অধিকার ভোষাধিগকে প্রধান
করিবেন গালকবিগের শক্তির হ্রান বঠে, ন্যারের
হিলাবে ভোষাকের সহস্র হাবী বাক্তিনেও গ্রথবৈন্ট কি লে
সর্বায় নহক্তে হাভিবেন ? বে ক্ষাতা ত্যাগ করিলে রাজার
ব্যবেশবানিগণ উচ্চণক হুইতে বঞ্চিত হুইবেন, রাজা কি ভাষা
বিবা বাক্য-ব্যারে ত্যাগ করিবেন ? ভোষয়া কি বর্ষেও ভাষ বে,
ভ্রম্যারনীতিক অধ্বা বে কোন গ্রথবিক্টই হুটক, ভাষ ব্যারের

**पष्ट्रदार्थ रक्षांवाविश्वत इ:व-विर्धातम प्रक्षत्र हरेराव १** এরণ জনীক চিতার আত্ত-বঞ্চনা করিও না। ভারতে এবং विनाटक विश्वास कारव, वनवा ववाबनाव ७ हैश्नास नहकारब चार्त्वामन कतिएक हरेरत, विकारकरे चार्त्वामरमञ्जाका व्यक्ति कथवां व्यक्तिक । अवेकाल कीर्यकाल कालिया अवर्थ-ষেণ্টকে বৰি জনাগৰ ইভাক্ত ও আলাভন কৰিছে পান, ভবেই ভোষাদিদের ইইনিভিত্র পথ প্রসারিত ভইবে। রাজনীতিক আনোলনের সুকলে আয়ার অবিখাল নাই, কিছ ভোষয়া বেরণ ওঁদানীন্য সহকারে আন্দোলন কর, ভাহাতে কিছুই हरेरव मा । चार्लामान अकाअका चरमचम कह , रकामामिर्शन অৰ্থ, সাৰ্থ্য সমুভই জাতীয় উন্নতিকলে উৎসৰ্গ কৰু ভাৰতে সংবংগর-ব্যাপী বহাসবিভিন্ন আন্দোলন প্রদীপ্ত রাখ, বিলাভের প্রভ্যেক নগর ও প্রার ভোষাবিগের প্রার্থনার ধ্বনিভে মুখরিভ कर, कर्ड्रभाक्त काक्नीएक कीक हरेश मा. शानमान रेश्नाक কাতির বদরে এই বারণা অভিত কর বে. ভোষরা বাহা ৰৱিয়াত, ভাতা কিছুভেই ছাড়িবে না, ভোষাবিদের প্রার্থনার र्थदन मा वरेला, रेरदाक कांकिएक अक विस्मव क्यांक विद्याव দিবে মা। খগভের সম্পে প্রতিপন্ন কর বে, ভোষরা সময়, चर् अवन कि कौरन भर्गाच भाक कतिया नवब-नार्या अवस হইবাত, কাৰ্য্য বালা আপৰাদিপের বোগ্যতা প্রতিপাদন কল। विदिन, बीचांश्रेष छवादाव नाव कावावित्रव वेचकि-शृत्वव चकेक चिरहाकिक करेबारक।

ভারতের সংবাদপত্রসমূহকে প্রারই গবর্ণবেন্টের দোষ
কীর্তন করিতে দেবি। গবর্ণবেন্টের অনেক দোর আছে সভ্য,
কিন্ত ভোমাধিগের নিকের গোবই সর্বাণেকা অবিক। তোমরা
নিক্তে কর্তার পালন করিবে না, বদেশের ও বদেশবালীর
উন্নতিকরে সর্বাধ-পণে আছ-বিসর্জন করিবে না, ভব গবর্ণ-বেন্টের ঘোষ বিলে চলিবে কেন ? তোমাধিগের উন্নতি
ভোমাধিগেরই উপর নির্ভর করিতেছে। ভোনরা সমত নাত্র-বারিক ও ব্যক্তিগত রভতেক বিশ্বত হও, পরস্পরকে বিশ্বাস
কর, তথারি ও কর্ণচঁতা পরিভাক্ত ক্টক, সকলে এক বছারত্রে
নীক্তিত হও, রাজিবিন ভূলিরা এক বনে, এক ব্যানে উল্লেখ-সংসাধন-পথে অপ্রসর হও, অবিচলিত, অক্ত্রেও অসন্দিইচিতে
ভার্ব্যে ব্যাপৃত হও, দেবিবে, আন্ত ভোমাধিগের কামনা পূর্ব ক্টবে। নচেং এক্তবে ভোমাধিগের আন্দোলনে বেরণ একা-প্রভা ও আভ্রিক্তার অভাব প্রবল হহিরাছে, ভাহা বাঞ্চিলে
কিন্তুই লাভ হইবে না।

'আবার বলি, গবর্ণবেউকে গালাগালি বিলে, ভোরারের নিজের বোব চাপা পভিবে না; অন্যান্য বেশের গবর্ণবেউর ন্যার ভোরারের গবর্ণবেউও আপনাকে নর্কবিষরে সম্বিক্ত আনবান্ ও শক্তিসম্পর বলিরা বনে করেন। ইঁহারা ইক্তা করিরা কবনই ভোরারিণকে এক ভিলার্ড অবিকার প্রধান করিবেন না, বরং উভরোভর প্রবত অবিকারের সভোতে প্ররান পাইবেন। বে বেশে প্রকাশক্তি হীন্ত্রন, নে বেশে রাজ্শক্তির এইরপ ব্যবহার বটবাই বাজে। রাজ্যজ্ঞির এরপ অভ্যাচার-নিবারণে প্রজাসাবারণের সর্কলা চেঠা করা সর্ক্রভোভাবে বিবের। প্রজারা ববি রাজার অবিচার বন্ধ করিতে বা পারে, তবে লোব প্রজাবিগের—হাজার বহে, এ কবা অরণ রাবিও।

শ্বনতঃ আমরা অবনতির চরম নীমার আসিরা উপস্থিত হইরাছি। মি: ডিগ্রী মহোলর পণনা করিরা দেবাইয়াছেন বে, ১৮৫০ খুটান্তে ভারতবাসীর দৈনিক আর গড়ে জন প্রতি ছুই আনা ছিল। ১৮৮০ খুটান্তে উহা ছুর প্রসার পরিণত হয়। অধুনা উহা দৈনিক তিন পর্যায় দাঁড়াইয়াছে! অরপূর্ণার সভানদিপের আর কি ত্রবস্থা হইতে পারে! অতএব আর উদাক্ত প্রকাশের সময় দাই। ক্ষতাপ্রিয় রাজপুরুবদিপের কুটিলভায় আমরা বে বৈধ অধিকারে বঞ্চিত্রয়াছি, ভাহার পুন: প্রাপ্তির অক্ত সময় থাকিতে বছ-পরিকর ভাবে চেষ্টা না করিলে পরে অন্ততপ্ত হইতে হইবে। মি: ডিগবী বলিয়াছেন,—

"India is not far from collapse." ('দেশের কথা,' পু. ২৮৫-১১ )

# নর্মদাতীরের ওঙ্কার মান্ধাতা

ঞ্জিঅমিডাকুমারী বস্থ

ত্রীবের এক বনোরব প্রভাতে আবরা নর্পুলাভীরে অবহিত "ওড়ার বাবাভা" বেবতে রঙ্গা হলাব। বাঙোরা আসার পর বেকে হানীর এইবা হানসমূহের অভ্নতান করে আনতে শেরেছিলান বে, প্রার ৪৮ বাইল চ্রবর্তী ওড়ার বাবাভা অভি প্রসিদ্ধ ভীর্বহান। লেই বেকে সেবানকার বলিবের বিষরে হিন্দী ও ইংরেজী পুড়ক হতে নানা কাহিনী ও অনপ্রবাদ সংগ্রহ করতে লাগলাব। এক বিন সে হান প্রভাক করবার স্বোগ এনে পেল। একজন উচ্চশিক্তি সন্তাসী আবাদের অভিবি হবেছিলেন, তার আগবনের প্রবান উচ্চেড ছিল নর্ব্রাভীরত্ব এই প্রসিদ্ধ ভীব বর্ণনি করা। উারই করে হঠাৎ এই বানার আরোকন হ'ল।

নর্থার ভীরে বে সকল দেব-বশির ও ভীবছান আছে, ভার বব্যে বব্য-প্রবেশের প্রান্তভাগে অবছিত এই "ওছার বাভাতা" এক শ্রেষ্ঠ ভীবঁ। বছ্র বেকে বাত্রীরা ভীবদর্শন করতে আলে। ভারা বাভোরা বেকে ইলোর লাইন বরে ট্রেনে পরবর্তী ষ্টেশন বোর্ল্লছাতে নাবে ও দেবান বেকে গরুর গাড়ীতে, বালে বা পদত্রকে নাভাতা পৌছে। ভা ছাড়া বাভোরা বেকে সারাদিন বোর্লির সাভিনও চলে। আর্ল্লা একবানা ট্যালির বন্দোবক্ত সংহতিলার।

আমাদের নোটর নিবেবে শহরের জনাকীর্ণ রাভা অভিক্রম করে বাইরের নির্জন পথ বরল। হ'বারে কোণাও ভারল শতক্ষের, কোণাও বা পভিত অন্থর্মর করি, বাবে বাবে হ'একটা ঘোট পাহাড়ী বর্ণা প্রান্থতিক নৌলব্য বাভিরে কুলহিল। রাভার পাশে একটা-হটো প্রায়, ভারপর বানিকটা অলল, আবার প্রায় অবল—এভাবে লয়ত প্রবাহী রাভাভা পর্বান্ত চলে গেছে। কোন কোন প্রায় বেশ প্রীলভার, আবার কোন কোন প্রায় নিভাভই হোট। তবে একটা ভিনিম্ব লক্ষ্য করলাম। প্রার প্রত্যেক প্রামের সামনেই বেশ বড় বাঁবানো এক একটা ইনারা আছে, আর ভার পারে বংবেরঙের বাবড়া-পরা বছ প্রায় বধুর ভিড়। ভালের কেউ বা বলে বলে পিতলের বছাকে বলে সোমার বত বক্রকে করে ভুলছে, কেউ-বা হড়ি দিরে টেনে ইনারা থেকে জল ভুলছে, কেউ-বা মাধার জলভরা বাগর নিমে বল-গভিতে বরে কিরে চলছে। সামীলী শালের বচন উদ্ধুত করে বললেন, পরে পূর্বকুতা নারী বেখলে বাঞা

এক এক হানে বোটর বীরে বীরে পাহাকের উপরে উঠতে
লাগল। কোবাও বা এক দিকে গভীর বাদ, অন্য দিকে নিবিছ
অরণ্য, কোবাও বা অবংগ্যর হানে হানে পলাশ-কুল কুটে বন
আলো করে আছে। কোবাও বা পালের বছ বছ পাতা
ভক্তির হাওরার ব্যয়ে এবার-ওবার বিভিন্নে আছে, দেববারু,
ব্যরের প্রভৃতি নালা কল্লী গাছের কাঁকে কাঁকে প্রভাত-কুর্যের
লোনালী আলো কল্লল্ করছে। প্রকৃতির নলোরন পরি-বেশের নার বিদ্ধে তিন বন্ধী চলে আনরা বাদ্ধাতা পৌছলার।
বাদ্ধীলী কুর বেকে সর্ব্যেবর নেই নলিবের চূড়া বেবতে পেরে
আনক্ষে উক্লেভ হরে উঠলেন ও আনাদের দৃষ্টি সেদিকে
আকর্ষণ করলেন। আনরা আনাবের ভিনিরণক্ষ নিরে নেনে
পঙ্লার। উপর বেকে বাপে বাপে উপলবর নোপান ও ছাড়া
অভিক্রম করে বছ নীচে নামলান। হ'বারে ছোট হোট
লোডান; ভাতে হাল্ইকর্যা বলে কুল্বী, জিলিপি, স্চি এলব
তেক্তে ভূপীকৃত করেছে।

ৰাত্ৰীয়া সান কৰে ভচিতৰ হবে পূজো সনাপন কৰে কেৱ-বার পৰে এসৰ বিবে কলবোৰ করে, কাজেই বোকানীবের এতে প্রচুত্র অর্থানন হব।

নীচে নেৰে দৰ্শবাভীয়ে বাছিৰে নামনের মুখ বেখে চোৰ

ভূড়িৰে গেল। জি ৰলোৱৰ এই পাৰ্কাণ্ড ছাল! নিৱে ছক্ষ্য-ললিলা বৰ্ষা যৱে বাচ্ছে, অপৰ পাড়ে "ওছাৰ বাহাভা"ৰ বজিব-লিবৰ অভি উচ্চে যাখা ভূলে দাছিৰে আছে। নদীৰ ছ'ৰিক থেকে গাচ সৰ্জ পাণৱেৰ গাঁথুৰি উঠেছে। নাবি নাৱি ৰোজানপাট, বৰ-ছবাৰ মন্দিৰ ভৱে ভৱে পাহাছেৰ গাছে ছবিৰ বছ সাজালো আছে, আৰ পাশে দাছিৰে যাহাভাৱ বাজপ্ৰাসাদ। সক্ষ পাণৱেৰ বাভা এঁকে-বেঁকে উপৰে উঠে পেছে। নৰ্ম্বদাভীৱে পাহাছের উপৰ সে সমীৰ্থ বাভা, আৰ চুনকান কৰা সাদা বাডীগুলি অভি স্থান্ত দেবাছিল।

ভারতের পুণাভোরা মদীগুলির বব্যে এই মর্থা একট। সাধারণত: বাজীরা উভরে গলা ও দক্ষিণে ক্লা নদীর মাহাত্মা সম্বন্ধে অবিক্তর সচেত্রম হইলেও মহাপ্রদেশে নর্ম্বান্তে অভিপ্রিক্ত মনে করা হয়। কিংবদন্তী আছে যে, মর্ম্বান্ত গলার চেয়েও পবিক্ত, এমন কি গলাও বংসরে একবার ক্লকর্ব গাভীর বৃত্তিতে এসে মর্ম্বান্ত অবগাহম করে পাপভালম করেম ও ভর হরে খেতবর্ণ বারণ করে স্থানে কিরে বাম। এরপ বলা হয়, গলালানে যে পাপ নাল হয়ে থাকে মর্ম্বান-দর্শমেই সেই পাপ দুর হয়ে বার।

মর্মা ভারতের মহাছলে অবহিত বলে, ভার উংপতি ও বিলব সহকেই লোকের দৃষ্টপোচর হন, সে কারণে মর্মার ভীবানীরা ভব্ নর্মার অবগাহম করেই তথ্য হর মা, কেহ কেহ মর্মাকে পরিক্রমাও করে। ভারা এই পুণ্যভোষা মদীর উংপতি-ছান অমর কউক থেকে বিলরহল ভরোচ পর্যন্ত এবং পুমরার ভরোচ থেকে অমরক্তক পর্যন্ত বিত্তীপ অঞ্চল প্রদানক করে ও মনে করে এরপ প্রদক্ষিণ হারা প্রেইকল লাভ হয়। সাধারণতঃ মদীর উংপতি-ছল অভি হর্গম। সুক্র হিমালরের মব্যে গলাযমুমার উংপতি-ছলের সন্ধান কম লোকেই রাবে। কিছ দেশের ম্বারভাছিলে বে সকল মদীর উংপতি, ভালের উংপত্তিকল সাধারণ লোকেরা ভবু বে বুঁকে বের করেছে ভা মর বেছান থেকে মনীর বারা আরভ হবেছে, সেটকে চিক্তিত করে আশ্রণাশে মন্দির ভৈরি করে ভাকে ভীবছলে পরিণত করেছে।

এই দর্শ্বলা রেবা রাজ্যন্থ সাতপুরা পর্বাভশ্রেণীর শিবর অমরকণ্টক বেকে নির্গত হরে মব্যভারত ও বোষাই প্রদেশের ভিতর
দিরে আট শত মাইল প্রবাহিত হরে আরবনাগর-সংলগ্ন
কাথে উপনাগরে পভিত হরেছে। মর্দ্রা অমরকণ্টক-শিবরের
বে ছাম থেকে অবরোহণ করেছে সেই ছামটকে লোকেরা
নর্শ্বলাক্ত মান দিরেছে এবং তার পাশে করেকট মন্দিরও
তৈরি করে রেবেছে। সেবাম বেকে বেরিরে মদীট হ'তাগে
বিভক্ত হরেছে। এক ভাগ অমরকণ্টক বেকে প্রার ভিন
রাইল ভূরে একটা অলপ্রপাতের স্কট করেছে, লোকেরা তার
নাম "ক্পিলবারা" দিরেছে। জনশ্রুতি, এহানে মন্দিরে বে
বিভিন্ন বেবা যায় তা ক্পিলবুনির। সেবান বেকে মন্টি বহ
হৈ পর্বান্ত অকলাকীণ স্থান দিরে প্রবাহিত হরে অকলপুর
নির্গর উপকর্মে একে এক অপুর্ব্ধ হুর্ড রচনা করেছে। প্রার

বিশ কৃট উঁচু বেকে জনবারা নিরে পভিত হয়ে একট বনোহন জনপ্রণাতের স্টি করেছে, ভার নাম "ব্যাবারা"। ভার পর দর্মনা হ' বাইল পর্যান্ত নর্মর-প্রভয়ের ভিতর নিরে পথ কেটে চলে গেছে। সে স্থান্টকে "বার্মেল ব্যাস্ত" বলা হয়। এয়



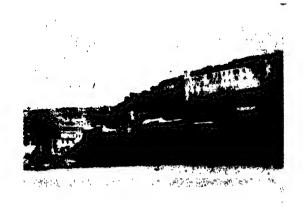
দৰ্শভীৱে ওয়াৱেশ্ব ৰশিব

দৃষ্ঠ অতি মনোরম। দেশ-বিদেশের বহু দর্শক এই মার্কেল রকস্ দেশতে বার। জোংলা হাত্রে এই হামের দৃষ্ঠ অভি চমংকার দেশার। সর্বার প্রসার সেহামে বাল বিশ পদ; সেশাম থেকে নির্গত হরে মর্ম্মা সাভপুরা ও বিদ্যাপর্কভেদ্ধ মধ্যবর্তী বিতীর্ণ ভূমিকে উর্কারা ক্ষমিতে পরিণত করে চুই শত বাইল প্রবাহিত হবে এমন হামে এসেছে বেধামে সাভপুরা পর্কাত ও বিদ্যা পর্কাতের ব্যবহাম অভি সামাত।

এক খানে নদীট প্রার চল্লিশ কুট উঁচু থেকে পভিত হলে ছুইট অলপ্রণাভের পৃষ্ট করেছে, ভার একট মানারে ও অভট পুণাশাতে। নর্শ্বলা মব্যপ্রদেশের ভিতর দিরে বতদুর প্রবাহিত হরেছে, ততদুর পর্যান্ত ভার তলদেশ প্রভারমর। মব্যপ্রদেশ থেকে নদীট ইন্দোর রাজ্য ও মব্যভারতের ভিতর দিরে এক শত মাইল পর্ব অভিক্রম করেছে। নর্শ্বলভীরে হোলকার বংশের রাজ্বানী প্রাচীন নগর "মঙ্লেখার" অবস্থিত। সেথানে রামী অহল্যাবাদী বহু মন্দির, স্থানের বাট ইভ্যাদি তৈরী করিছে দিয়েছেন। অহল্যাবাদীরের সমাবি মঠও সেথানে আছে।

গলাভীরে বেরণ বড় বড় শহর আছে, নর্দাভীরে ভল্লু-রণ বিশেষ ফিচু নেই, সেঞারণে নর্দার জল বচ্ছ ও নির্প্ত । গ্রীমভালে নর্দান বছ দুর অবধি ওকিরে বাওরার হরণ অগরি-লর হবে বার, বড় বড় বাল্ডভার স্ট হর, কিছু বর্বার পর্বাভ্তুত বিক্তে জলপ্রবার ববন নেমে আসে, তবন নদীট বিপুল জলোক্রানে হ্কুল প্রাবিভ করে প্রবাহিত হয়।

অমনকণ্ঠকের দর্শনাক্তের কিছুদ্বে একট দেবালয় আছে, তার বান "নর্মধানাকীকা নদিন", এবং তার কিছুদ্রেই আর একট শিবনদির আছে। প্রতি বংসর হাণার হালার বারী শিবভাজিত সমত নৰ্থাকৃতে ভান কৰে এই শিবনন্ধিৰে পূজা বিভে আসে। সৰ্থা সহতে পূৱাণে নিবিভ আহে বে, শিবেত ভেল থেকে নৰ্থাত উংপভি, ভাই নৰ্থা শিবভঙা। লে কারণে নৰ্থাকৃতে ভান করে শিবনিককে বিবণন্ধ দিতে যে পূজা করবে, শিবেত ববে ভারই বুক্তিলাভ হবে।



নৰ্শ্বাভীৱে সিম্নাথের মন্দির

লোকেরা বলে বে, সময় সময় এই কুণ্ডের জল ছবে পরিবভ ছয় এবং কুখের মবাছিত বেলব প্রভয়বত আছে, লেলব শিব-লিলে রূপাছয়িত হয়ে বার।

নৰ্দ্ৰলা নদীর উংপতি সহছে আরও পৌরানিক কাহিনী ও উপকথা প্রচলিত আছে। কথিত আহে যে, কলিবুলের পূর্বে নৈকাল কেব নামে এক জন রাজা ছিলেন। তাঁর নর্দ্রলা নামী একট জপরূপ স্থায়ী কভা ছিল। তার হেমলা ও বিমলা বলে ছট সহচনী ছিল। নর্দ্রলা প্রাকৃতিক সৌন্দর্ব্যের বহু অনুবাপিনী ছিলেন, তাই নৈকাল কেবক্ন্যার জন্য একট অভি নমনীর উভান তৈরি করিবে কেন।

মর্দ্রা অবিকাংশ সমন্ত্র সহচন্ত্রীদের সলে উভাবে থাকতে ভালবাসভেন। এক দিন নর্দ্রনা তার ছই সহচন্ত্রীসত্র উভাবে বলে আছেন, এবন সমন্ত্র সন্ত্রাসীর হলবেশে এক রাজপুত্র, দাম "সোনাভত্র", সেথানে এসে উপস্থিত হলেন। তিনি নর্দ্রার প্রশালাক্রী হিলেন এবং দে উভাবে ভার সঙ্গে সাকাং করতে এসেহিলেন। রাজকন্যা রাজপুত্রকে পভিন্নশে বরণ করতে একটি অভি স্থাতিপুলারক রোণণ করলেন। ভারা প্রভিতাবহ হলেন পরশার পরশারের প্রভিত চিরকাল অভ্যক্ত থাক্রেন — নর্দ্রা বা রাজপুত্র জন্য করিও চিরকাল অভ্যক্ত থাক্রেন — নর্দ্রা বা রাজপুত্র জন্য করিও নিরক্তা আরু করিব স্থাতি বিভার করি বিভার ভারতি বিভার ভারতি বিভার ভারতি বিভার ভারতি বিভার ভারতি বিভারতি বি

এর পর অনেক বিব চলে গেল, অগর এক রাজপুর বর্ত্তার পাণিপ্রার্থী হয়ে এজের। তালা ভাতেই হাককচার পান্তরণে বৰোদীত কয়লেন, ওত্বিবাহের দিন বার্ব্য হ'ল। তিনি ক্যার বভাষত প্রহণ আবর্তক বলে ননে করলেন না। বাজ্যে ধুব উৎসবের বঁটা। নেদিন ভক্ষণী নর্মবায় ওত বিবাহ, প্রহণ সরর সর্যানী-রাজপুত্র সে রাজ্যে উপস্থিত হলেন। তিনি বিবাহ-নাজে সজ্জিতা নর্মবালকে ও তার হই সবীকে শাণ দিয়ে নদীতে পরিণত করে দিলেন। নর্মবা নদী ও অবরক্টকের নিক্টবর্তী হুট উপনধী নাকি রাজক্ষ্যা ও তার স্থী হ'লনের রূপাত্র।

অবরক্টকের এক বাইল উভরে দর্শনার একট শাখা চলে গেছে, ভার মান "সন্মেনর।"। "সন্মেনর।" একট দর্শনীর হান। সেবানকার প্রাকৃতিক দৃষ্ঠ অভি বনোরর। এই নদীর আনভিদ্রে একট উভান আছে, সেই উভানকে উপরোক্ত কাহিনীতে বর্ণিভ রাজকন্যা নর্শনার উভান বলা হব। এই উদ্যানটিতেই নর্শনা ও সন্ন্যাসী-রাজপুত্র স্থাবি পুলারক রোপণ করেছিলেন। এবনও সে লাভীর বৃক্ষ সেই উন্যানে করে বাকে এবং চক্ষ্পীভা উপল্যের কন্য ভার পূলা ব্যবহৃত হব। এই উদ্যানের কিছু দ্রেই চার-পাঁচ নাইল ব্যাপী বিল আছে। স্থানীর লোকেরা বলে পোঁরাপিক কাহিনীতে উক্ত নর্শনার পিভা রাজা বৈকাল নেবের রাজপ্রানান এবনও লেই বিলের অপর পারে অস্পই ভাবে বেবা বার। কিছু কোন দর্শকই নাকি নে হানে গিরে পৌছুতে পারে মি।

আৰৱা নৰ্থবার বছে শীতন জনে আমন্দে স্থান করতে লাগলাব। নদীর পুণ্যস্তিলে অবগাহমে শরীর স্থিই হয়ে গেল। নর্থবার জল ছ'হাতে নিরে থেলা করতে করতে হঠাং চোখের সামনে তেসে উঠল বেন বিবাহসাজে সজ্জিতা অক্রীন্দ্রির বুটি। মনে হ'ল এইরণ কাহিনীর শ্রঠাদের কর্মা কি বনোরস, কি বিচিত্র।

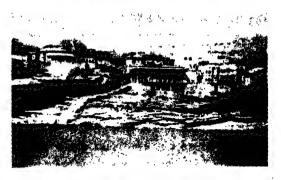
সানাতে আৰৱা ওছাবেখবের বন্দির অভিমুখে বারা করলাব। নদীর এপার খেকে ওপারে খেরা নৌকার বলে পার
হবে ওছাবেখবের বন্দিরে বেতে হর। এই বন্দিরট একট
বীপে অবহিত। এই বীপে বহু বন্দির আহে। এওলো
পিবপুরী, রুজপুরী ও বিহুপুরী এই ভিন ভাগে বিভক্ত। এই
ভিনপুরীর চারদিকে নদীট এ ভাবে প্রবাহিত হবেছে, দেখে
বনে হর বেন ও এই অকরের আকারে ভা বিহিরে আহে,
ভাই বারাভার অপর নাম "ওলার বারাভা"। বীপট প্রার
বেকু বাইল লখা, বীপের বব্যবর্তী সু-উক্ত পর্যভ্রেরী একট
উপভাকা হারা হ'লাগে বিভক্ত। পূর্ক বিকে বারী বেকে
৪০০।৫০০ কুট উচু পর্যভ্রমানা উঠে পশ্চিম বিকে বীরে বীরে
চাসু হবে সমভল অবিতে বিশে গেছে। বারাভার বিপরীত
বিবে সর্য্রার কন্দিণ ভীর পর্যভ্রমানীর্ধ। হ'পর্যভের ভিতর
বিবে গভীরসলিলা বর্ষণা বরে গেছে। মনীর বন্ধ করে নামা
আভাবের ছোট বভু বছু বাছু কলে ভালছে। এওলো

বলিবের আঝিত, একের বরা বিবেব। সব বাজীই হোলা ভালা বটর ভালা কিনে বের, আর কলে একটা হুটো করে হাততে বাকে। পত পত বাহ বাবা বের করে ভা বেতে আসে। বুক্তগতিতে এরা কলের উপর চলাকেরা করে, নাহ্বকে তর করে না। কি সুক্তর নর্ম্বার বক্তৃ কলে বাহের এই বেলা।

वर्षमां विक्य कीरत क्षत्रत्वमात्त्व प्रक्रित । अ प्रक्रित ইন্দোর রাজা হতে আগত বাইশ কম প্রাঞ্ধ হৈনিক শিবপুরা কৰেন। ত্ৰিল হাজায় শিবলিদ ৰাট দিয়ে তৈয়ি কয়ে পূকা पास महीएक विशक्षिय कहा किन कारबह देवसम्बद काक। चमद्रपद्रित मन्त्रित कारकरे वीरवधरवत बन्तित-कात शायध-বার অভি সুক্ষর। বিষ্ণুপুরীতে প্রাচীন বন্ধিরের ধ্বংলাবশেষ বেৰ্থতে পাওৱা যায়। সন্দিরগুলো প্রাচীন পছতিতে নিশিত। निष्मार्थित बन्धित चौर्थित अवस्य बन्धितत बर्था (अर्ड । अर्ड পাৰাভের পূৰ্ব্ব কিনাৱে অবস্থিত। ধুব উঁচু উঁচু ভড় মন্দিরটকে স্থান ভিত্তির উপর প্রভিন্নিত করে রেখেছে। সেই ভরত্তিতে ও যন্দিরের উচ ভিভিগাতে বহু হন্তীবৃত্তি গোদিত আছে। হন্তী वृष्टिश्रीन वक कुम्मत छाटव (बाबार कता। अविकाश्यर बृह्दत ভলীতে গাঁড়িৰে আছে, কোন কোনটার পাৰের নীচে পারিত ৰছকুৰ্তি। ৰন্ধির জীৰ্ণদশার পভিত হওরার কতক্তাল বৃত্তি शामाखिक करा करा। जात बरवा स्था मानन्त विदेशिकार রাখা হয়েছে। মন্দিরের গর্ভগৃতের ছ'পাপে আঠারট ভঙ बर कार क्षेत्र बार । बरे क्षक्रित बार क्षेत्र कुरे के ह बर त्मश्रामाण वह काञ्चकांका चाहि। मिनाके चण्ड **च**यशांत व्य प्रमुखं ७ विदाहे विम अत्मृष्ट (सरे । वर्षमारम मन्मिरवर्ष होंने थे हकां काल लिख अवर जानक चंच (कान লবেছে। ইংবেজ সরজার ভার জন্ত ভীর্ণসংখ্যার করে উপরে जाबादन अकड़ कार देवति करत किरविद्यान ।

বীপের উভর কোণে একট পুরানো মলির আছে, ভার নাম লোমনাথ। মলিরে জালো পাধরে ভৈরি অবিলাল এক নিবলিল, বাইরেও টক এই রকম মলী বা মাঁতের রুফর্তি। কংবদতী আছে যে এই বিরাট নিবলিল খেত পাবরে ভৈরি ইল। দর্শক পরজরে কি হবে জানবার ইচ্ছে নিরে বৃতির কৈ চাইলেই বাকি তা তার চোধের সামনে প্রতিতাসিতারে উঠত। একবার বাহণা আওরদক্ষেব এই মলিরে আসেন এই কথা ভবে বৃতির বিকে চেরে নিজে তবিরও অবে কিবেন তা দেখতে চান। ভিনি তবন দেখতে পোলেন এক ভ্র-মৃতি। রাবে অর হরে ভিনি সেই বিরাট মহাকালের বিতে আত্মন লাগিরে দেন। সেই বেকেই ঐ খেতমৃতি কর্মতিতে পরিণত হরেছে।

এ লব বলির দেবে আনরা লেই বিব্যাত তৈরবলিলা বিতে বেলান, বেবালে বহু পূর্বে বয়বলি হ'ত। বিভ্রতির ও জৈন বলিবের বব্যে একট নালা আছে, ভার নান বাবণ-নালা। সেই নালার তীয়ে এক বিরাট রাজুনে বৃতি আছে। বৃতিটর বলট বাহু, লবার বৃতিট বল কুট। কেট কেট বলেন, ইলা রামের শত্রু রাষ্ট্রের বৃতি, আবার কারও কারও বাকে



নৰ্মনা মধ্যত্ব খীপের ওপর মন্দিরসমূহ

তৈরবের পদ্দী বহাকালীর এই বৃষ্ঠি। বৃষ্ঠির পলছেশে সাপের হার, হাতে তলোরার ও নরমুও। বৃষ্ঠির পুন্য উদর বছব্যরতে পূর্ব হবার জন্য উদ্যত। আর সেই উদ্রের উপর বক্ত এক বৃশ্চিক্সুষ্ঠি।

মলিরের দক্ষিণ-পূর্ব্ব কোণে সেই বিখ্যাত পর্বভিচ্ন বা থেকে তৈরবের ভজরা লাকিরে নীচে নিলাবর পাদরেশে পড়ে আত্মান্ডতি দিরে রাজ্নী বহাকালীর রক্তশিপালা নির্ভ করত। ১১৬৫ বীঠাকে বর্ধন ভরত নিং বাদাতা বর্ধন করের তব্দ সেই বহাকালী ও তৈরবের পূজারী বাব এক জনই ছিলেন। অন্যেরা তরে পূজার কার্থ্যে অঞ্জরর হ'ত বা। লেই পূজারীর নাম হিল গোঁলাই দরিক্রনাথ। কঠোর তপভাবলে দরিক্রনাথ সেই বহাকালীকে ভূমিয়ন্থ এক প্রব্রে আবন করে রাথেন ও নেথানে অপর এক কালীবৃত্তি ছাপন করে পূজা করতে বাক্ষেন। বরিক্রনাথের পূজার কালী সভ্ট হন। তৈরবের কালে বরিক্রনাথ বানত করেন ও প্রতিক্রতি দেন— প্রতি বংসর মধ্যে বধ্যে তিনি বরবলির ব্যবহা করে তৈরব ও সহাকালীর রক্তশিগালার উপশন করবেন কিন্তু ভার- সর্ভ এই বে, তারা বালীকের প্রাণ হরণ করে বর্ধন ধুলী নিজেকের উদ্যপূর্তি করতে পারবেন লা।

এই সরবলিপ্রথা বর্ষন প্রচলিত হিল তর্ম নারাতা বীশ গোরালিয়রের নিভিন্নর অধীনে হিল, প্রভাগ তথানীত্ম ইংরেজ শাসনকর্তালা এসব বিষয়ে হতক্ষেপ করতে পালতেন না। ১৮২৪ সবে একজন ইংরেজ শাসনকর্তা এই "তৈর্থ-শিলা"র নরবলির বে বর্ণনা বিরেজেন তা উল্লভ করতি:

"বেছিদ সম্ভালিম উংগদ কৰে, লেছিদ আজি বুধ জোছে। উঠে তৈয়বের প্রতীক মৃতির কামে গেলাম। লে একটা কাচেন।

প্ৰভৱৰত, ভাতে লাল লিভুৱ বাৰাৰো আছে। যে ভক্ত ভৈৱবের निक्र पांचरनि दिए. (न और निनाद देशव नाक्रिय १६७)। কিছকৰ পৰ বাহাতাও বাহিছে শোভাবাতা কৰে কেই কল बन, त्र चाक नित्कत थान निन कित्न । तन भागरतत थानीत्कत **ভাষে ভিপ্ৰণয়ে উপন্থিত হ'ল, ভার চোবে বুবে একটা ছরড** উল্লাস। আৰি কিছু পৰে ভাৱ কাৰে গেলাম, ও ভাকে অনেক ব্ৰিরে এই ভীষণ প্রতিক্ষা বেকে নিয়ত করতে চেঠা করলাব। वाकी कीवन चानि चान क्रमनारक्षण ७ जननात्माव करूर अहे প্ৰতিশ্ৰুতি বিলাম। আমার দলে মৌকা ছিল, আমি ভাকে चि चत्र नवरवर वर्गा क्ष्मकात निकृष्ठे व्यक्त प्रदा निरम পালিরে বেভে পারভাব। কিছ আবার সব অভুরোধ বার্ব ए'न , त्न सुप्रधाद निव्य धेखद विराम एक देखदाबद विन वक করা বছরপজির অতীত। বেবলার এই অবহার বলপ্রবোগ ভিন্ন আৰু কোন উপাৰ ছিল না। সে বৰন ভৈত্ৰবন্ধতিৰ সমূখীন হ'ল, ভবন ভার ভিভরের কুসংভারগুলি প্রবল শক্তি বারণ করল। চার্ষিক থেকে বর্ষর ক্ষতা টেচিয়ে আর হাতভালি विद्य चादक वैश्माविक क्याक नामन । त्म चाय मुख व्यक्ति ঘারা আযাতে বুবিবে বিলে বে, সে আযার কবা সম্পূর্ণ অবজা करबरकः। तम देखबरबब माधरम माजरकम छेशमर्ग करब देवरबड़ा वित्त । चात नव अक्डी चक्ता नाचे त्वत कृद चा त्वत्क ভার স্কিভ অর্থ সেবাব্যার প্রারিশীর সাম্পে টেলে দিল। পুৰাষিণ একটা নারকেলের মালার কারণ এনে ভাকে পান করতে বিল। ভারণ বেষার পূর্বে নিজের ছেলেকে বানিকটা বাইরে দেবাল বে ভাতে বিয়াক্ত পঢ়াব কিছু নেই। कांबर्गत कथकी वृश्चित धेगत हाटन विदय चक्की कांत्रन नान क्यरन ।

"পূজাবিদী ভক্তকে ভার হাতের রূপোর আংটগুলি বুলে বিবে বিভে বললে। আংট পুলে বেবার সময় লোকটর চোবে বুবে গভীর হৈব্য বেবা গেল। সে ভার প্রথম আংট বুলে নিজের বুবে বেবে বিল, ভার পর একে একে চু'হাতের আংটগুলি বুলে প্লারিদীকে বিলে। অবভার বব্য বেকে একট লোককে বুঁলে বের করে বললে ভার শেষ আংট ভাকে বেগর বালে; এই লোকট ভার সলে ইক্রিমী থেকে একে-ছিল। এই সময় বেবা সেল আমেক লোক ভাবের হাতের রূপার বালু, গরমা, সুগারি ইভ্যাধি ভার হাত বিরে কর্মার বালু, গরমা, বিলে ভাবের জিনিবগুলি নিরে বুবে বেবে আবার ভাবের কিরিবে বিল। অবশেবে পূজারিদী ভাকে একটা পান বেতে বিলে। সে পান নিরে বুচ পারকেশে হান ভ্যাপ ক্রলে।

"চারবিকে জনতা হাততালি বিত্রে উঠল। সে বর্ণন পাহাতে চড়বিল, তথ্য বাবে বাবে লভাতবে ভার বেহ চেকে বাহিল। জনবেহে বে পাহাতের উচ্চ চুড়ার কাড়াল। বৰিও সে বৃত্যুর বুবোর্বি বঙাংমান, তবু ভার দেহ বঞু, তিনি বীরহ্যাঞ্জ। তিন্তু সময় সে আবেগের সহিত হ'বাছ দোলাতে লাগল, মনে হ'ল বর উভারণ করছে, ভার পর হির হ'ল। হ'হাত লোভ করে কমভাকে বিবার অভিমন্ত্রন লালাল। ভার পর ভার কোনরের বলি বেকে নারকেল, আমনা, ছবি, চুণ ইভ্যাবি ছুঁতে কেলতে লাগল। করেক বুছুর্ভের ক্ষয় একটু পিছু হুটল, পরমুন্তুর্ভেই একাভ পৌরুব্যুর্ভ সাহাকের উপর বেকে বাণ দিল। সামনে পা রেবে সে প্রচাড বেগে নীচে পভতে লাগল এবং অর্থ পথে একটা ইলার চুভার লেগে মাবা নীচু হবে পা উপেট সেল এবং নেই অবহার ১০ হুট নীচে পড়ে তংকবাং সে মুকুর্কে আলিকন করলে ব এই মুবকের ভিতর বা বিধাস ও লোবা হিল, ভা এ ভাবে ধ্বংস না করে সে ভা কগভের বড় কাকে লাগাতে পারত।"

কার্ত্তিক বাদের প্রথম ভাগে মাখাভার বাংসরিক বেলা বলভ। প্রায় ২৫,৩০ হাজার বালী করাবেং হ'ভ। আর এই সময়ই হ'ভ মরবলির আহোজন। ১৮২৪ সালের পর বর্ধন নাখাভা ইংরেজের অধীনে আসে তথন মরবলি বভ হয়। সাধারণতঃ এই বেলার সমত মকর মাখাভার রাজারই প্রাণ্য, কিছ পুরামো পভতি অহ্বারী তীল-পরিবারের লোকেরা চার বিম বেলার নকর বা পারে স্ঠ করে নিত। এর কলে প্রকাশের ভালার ভ্তাকের ও তীলকের মধ্যে ধূব হুছ লোগে বেভ। বেলার বহু পূর্বে বেকেই হ'বল মুখের ক্ষমা তৈরি হতে থাকত। উভয়পক্ষের লোকেরাই নাকি বেশ লখা লখা মধ রাধত বাতে মকর ও বৈবেত কেতে নিতে পারে।

ৰাদ্যাতা এবন একট ছোট প্ৰান, লোকসংখ্যা ছাজারও নব, কিন্ত এককালে ইতা সম্বিসন্দান ছিল। বর্তনান বাদ্যানার নালা আতে "তীলালা।" এই রাজারা চৌহান রাজ্পুত তরত সিংত্রের বংশবর, ইনি ১১৬৫ বীটাকে একজন তীল সর্বান্তের ক্ষানার বিশ্বের ক্ষানার তারেন। তারের বংশবররাই বর্তনানে তীলালা নাবে প্রিচিত। তীল বাঁট পার্মত্যে জাতি, কিন্তু তীলালা হচ্ছে রাজপুত ও পার্মত্য তীলের সংবিশ্রাণ।

সম্বর বলির বর্ণন করে নহাবেবের পূজা বিজে আনহা নীচে নেনে এলান এবং নবীর বাঁবানো বাটে এলে বসলান। অপরায় অর্থার রক্তির আভার বাঁল আভানের সলে সলে নর্মবার নীল কলও রাঙা হয়ে উঠল। আনহা মুখ বরে এই হামের অপরণ পোভা বেবভে লাগলান। বেবভে বেবভে বলে হ'ল ভারভের বেবভারতলো কি ভুকর প্রাকৃতিক পরি- বেশের বব্যে অবহিত। এক বিকে রায়াভার বহুত-হতনিখিত
নানা কাককার্যপূর্ণ নন্দির, কেববৃতি, সৌব বেরপ বনে বিশবের
ক্টি করে, অপর বিকে ভেননি প্রকৃতির অপরপ ক্টি—গহন
কাভার ধূদর পর্বাতনালা, সনিস্বিপূলা প্রোত্বিনী ব্যক্তির
করে বের।

ছেলেবেরয়া বাছের কচ ছোলা বটর তালা কিনে বিবে-ছিল, ওপ্তলো বুঠো বুঠো তরে জলে হু'কতে লাগল। বারীজীও শিশুবের এককন হরে গেলেন, ভিনিও পরবানকে নিজের বানার বেকে টুকরো টুকরো করে নাহগুলোকে বাওরাকে লাগলেন। কল বেঁবে লারি লারি ছোট বড় নানা আকারের নাহ জলের উপর নাবা ভূলে ওপ্তলো বেঁতে এল। বাবে বাবে হ'একটা বাছ জলের উপর বেলে ভিগবালী বেঁবে নীচে তলিরে বেতে লাগল। বিনাজের আভার তালের বানারকারার বভ বিক্রিক করে উঠিছিল। শিশুরা বাছবের নানা মুক্তর বাবার বিবে ও তালের বেলা বেবে বিশেষ কৌচুক ও ভৃতি বোব করলে। এককল ভূবরী ছেলেবেরে এলে আনাকের বিরে ইন্ডাল। তালের বিচিত্র বেশক্ষা ও কূচকুচে কালো লেছের সবল পঠন কেবে বলে হ'ল, এরা বোব হয় তৈরব

শিলার বে পাহাড়ী তীলহা আছবিদর্জন বিভ ভাবেরই হলাত। ভারা প্রার হিন্দীতে আরাবের বলতে লাগল, "ভোষরা কলে পরনা ছুঁতে লাও, আররা ভূলে আরব।" আনরা কৌতুহলী হরে পরনা নলীতে ছুঁতে কেলতে লাগলার। আন্তর্যের বিষয়, ভরা জলে বাঁপিরে পড়ে ছুব বেরে পে পরনাগলো বুঁতে বের করে আনতে লাগল। নলীর বন্দ কল প্রবের কোঁরায়েয় তীরের কাছে বোলা হরে উঠল। বলীতীরে বেশ বানিককণ বিপ্রার করে আরহা বাঁতোরা কিরবার উল্লোপ্ত ভবলার।

আবার সেই পাহাতী রাভার গাড়ী চলতে স্থক্ত করল।
গাড়ীর লোলার ক্লাভ শরীরে তলা আলতে লাগল। আর সেই
তল্লাভতিত চোবে চিল্লের যত তেসে উঠল—নর্ম্বাভীরে
স্থ-উচ্চ ওভারেখরের বলির, বচ্ছলনিলা লোভবিনী বর্ম্বা,
সেই বিতীবিভারর তৈরব নিলা, এবনি আরও তত বিচিত্র
হবি। যদ বিশ্ববাবিট হরে হুগর্গাভর পূর্কের কোন্ এক
অকানা রাজ্যে বিচরণ করতে লাগল। হঠাৎ বীক্লি বেরে
তলা সুটে পেল, জেপে দেশলাম বাঙোরা পৌছে গেন্টি। তথ্
রাজ্য হেড়ে বাডার অগতে এনে পৌছলার।

#### আশা

#### প্ৰীআৰ্য্য চক্ৰবৰ্ত্তী

সৰৰ আকাশ শীল অঞ্চ বোহ গোধুলি লৱে হাজির স্বাহোহ, পরা-আকুল হংগবলাকা চলে ক্রুড পাথা বেলে ববিদ্ বিলের ক্রে, ব্যর্থ রক্ষী, বহ্যা প্রতিশ্রুতি, দেভারের ক্রে স্কর্মণ বিস্তৃতি।

বেৰ ভবক কাল হৈছের পৰে, ভূবিল করে ক্ষচুকার শাবা, বিহাৎ-ক্ষা তীক্ত বরণীর বুবে. চোবের দৃষ্টি কালো পর্যার ঢাকা; উৎত্যক চোব কোনো বাবা বাহি বোবে, বয়বেহর দৃষ্টি কাহার বোঁকে।

ক্ষতন্ত্ৰ বিবিধিষ্ট বৰ্ণৰে
পাগল হাওৱাৰ এলোবেলো আনাগোলা,
ফ্লাভ শৱনে বীৰ্ণ প্ৰহৰ গোলা:
ভালা সংগ্ৰন প্ৰাভি বিভ বনে।
নিশ্বৰ আবাৰে ক্ষণালি ঘণ্টা বাবে
আগন্ন উবা সূতৰ আলোৱ সাজে।



# টমাস আল্ভা এডিসন ও চলচ্চিত্ৰ শিশ্প এনলিনীকুমার ভত্ত

বর্তবাৰ হলে বে সকল আবিভার বারা বাৰবকাভির প্রকৃত क्लाान जानिक हरेबारक ता क्लिंड बाना क्रम्बनाडी काहिनीवनक हिरखन संवर्धन वह । मधानमा निराशाम, धन्या प्राथमधानाई चानिक्छ। दिव-विवास वार्किय विकासिक हैवान चानका अविजय ( ১৮৪१-১৯৩১ )। इनक्रिक निरंबंद वैदायरमंद क्रम नेका करेर विरंवेद wire dibiet faut aft :

১৮৮৯ সৰে এতিসৰ কৰ্মক প্ৰথম জাতাৰ চলবান জিবালীল क्रिम अवर काळाव कमिककाल भटन 'अधिजम किरमटके द्वाम' উত্তাবিত হয়। প্ৰথম চলচ্চিত্ৰ ই.ভিবোও এভিগ্ৰেছই আবিকার এবং ১৮৯৩ এটাবে এভিনন কোলানীর কর কিন্তে চলচ্চিত্র ছলিবার উদ্দেশ্তে ইহা ব্যবহৃত হয়।



ইবাস আল্ভা এভিসৰ

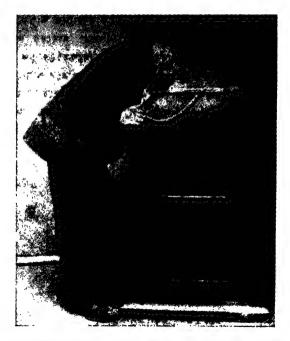
তাঁহার অভাত বে-সম্ভ আবিফার হারা পরোক্তাবে किय-निर्वाद केश्कर्य नाविक वरेबारक मध्यिक वरेरकरक-টেলিকোনে বার্ডা প্রেরণাদির পদ্ভির উন্নভিবিধান, কনো-बाक, रेन्एकाविरमधे म्याप्त ( वायत व्यवीप ), रेरक्ट्रैक कारमात्वा किरमहोत्वाकिक कारमता बन्द क्रमित्वर ভাবেরার বভ কটোঞাকিক কিব।

क्षवब रूप बर्गद हमकित्व द्वारमधाब ४० कृष्टे सीर्व क्रिय-ছৱে বিভিন্ন প্রকারের ক্রিয়াক্লাপ এবং ছানীর নাবরিক ঘটনারি একর্ণিত ক্ষত। পরে, এতিসন কোম্পানির উর্ব্যোগে बारवाकिक "रि नार्रेक जब अब जारविकान कावाववागि" ( अक्यन चारविकान काराविद्यात्मर कीवन ) अवर "वि क्षेत्र

बनाबि" (क्षेत्र छाकाकि) और इर्डेड खरिव मरन मरन

১৯০৯ नारम हमकिरबंध किरवेश्वरक्त चार्थ दिक्क वार्क विकिय क्षेत्रांच बढाजानरवड विक्य देशकरमञ्जू जवश्मवद्यानी চৰংকার আলো এবং গ্রীভিক্ত আবহাওরায়ক্ত পরিবেশে কিলে চলচ্চিত্ৰ ভলিবার উক্তেও একট কোম্পানিসহ ভবার नवम करवम । त्यवारम क्रिकेट अवर देवाई भाविभावित्क **बरे गुक्रम चार्टिव वादारव अकड़ि विभिन्ने वार्किय भिन्न करव** ক্ষরে বিকাশলাভ করিভে পাকে।

১৯২৭ जम পर्वाच क्लकिन दिल चवनान पुरू दांवाकिन। किस सर्वाद केनिकाम बन्द तकात नाकामान ७ कर-



भवनाकी मनगवनिक अधिजय "निगरवान" किरमरहारकाण वह वांक्ति व महत्त विविधे देवसाविक समारकोनन वेसाविक बरेबारक क्लाकित निरम्भ मध्यिक क्षेत्रक जनविकार्वा बरेबा হাভাইল। ১৯২৭ সৰে প্ৰথম স্বাক্ত চলচ্চিত্ৰ "কাপ নিদার" নিশ্বিত হইবার সঙ্গে প্রে প্রবোজক, ভিরেটর, অভিবেতা नकरलरे व व बूल किक्निक वा क्ला-कोमल शतिवर्धरवर वारावनीयका मद्दार महत्वन प्रदेश देवीत्वन अवर विचयकत क्रकार महिक हैहारक माम्मानाक करिरमय। वहिनार দংলাপ দলীত এবং পজের "একেট্র" চিত্রের অবিক্রেত অল-पत्रण हरेवा शेषारेन। बनि चार्य स्वीत द्विकति पूर्व ब्रेंबा डेब्रैन-जनवाय पूक बाबाजिब श्विनक ब्रेंग नवाक व्यक्तिका

# वाश्ना ও वाडानी

#### **অ**সুশীলচন্দ্র ঘোষ

অর্থ নৈতিক বিপর্যায় হেতু পৃথিবীর প্রায় অধিকাংশ দেশেই আজ বেকারসকলা ও তাহার কলে অলান্তি এবং বিশ্রুলা লাভীর জীবনে একটা বিভীবিকার স্বষ্টি করিয়াছে। বিশেষভাবে লক্ষ্য করিলে দেখিতে পাওরা বার বে, বাজিক সভ্যভার উরতির সক্ষে সকল দেশেই কূটীরশিরের প্রসার কমিরাছে ও সেই সজে জনসাধারণের অর্থনৈতিক জীবনের অবনতিও ঘটিরাছে। ইহার প্রকৃত কাবণ এই বে, বন্ধনাতিও বৃহৎ কারধানায় কূটীরশিরা অপেকা অরসংখ্যক শিল্পী অধিক উৎপাদন করে। এদেশে বখন বৃহৎ শিল্প ও কারখানা বিশেব ছিল না তথন দেশের জনসাধারণের আর্থিক সভ্যকতা এখনকার অপেকা অনেক ভাল ছিল। কারণ সেই সময় দেশের আর্থিক কাঠামো গ্রাম্য অর্থ নৈতিক বনিয়াদের উপরই ক্ষ্টভাবে প্রতিষ্ঠিত ছিল। তথন সাধারণতঃ গ্রাম ছাড়িয়া অর্থ উপার্জনের কন্স লোকেদের শহরে ও শিল্পকেরে বাইতে হইত না।

আমাদের দেশে বংসরের অধিকাংশ সময় প্রায় শতকরা নকাই জন কৃষিকার্য্যে দিপ্ত থাকে। যে কয় মাস কৃষিকেজে কোন কাজ থাকে না সেই কয় মাস বিনা উপার্জনে ভাহাদের দিন কাটাইতে হয় অথবা উপার্জনের জন্ম গ্রাম ছাড়িয়া অক্তম বাইতে হয়। সেই সময় নিজ গ্রামে থাকিয়া ভাহাদের জীবিকা উপার্জনের পক্ষে একমাত্র কৃটীবশিয়ই বিশেষ উপবাগী।

সর্ব্ধপ্রথম জাপানই লেশের অর্থনৈতিক কাঠামোর পক্তে কুটারশিরের উপকারিতা বৃথিয়া একই সঙ্গে ভাহার রৃহৎ কারখানাগুলি ও কুটারশিরসমূহ স্থন্দরভাবে স্পরিক্রনা অন্থানী পড়িয়া তুলিয়াছিল। জাপানে প্রস্তুত প্রত্যেক জিনিসই বিশের বাজারে এত সন্তালরে বিক্রম হইতে জারম্ভ করে বে, ভাহান্ডে মৃক্তরাজ্যের, মৃক্তরাষ্ট্রের, এমন কি জার্থানীর বড় বড় শিরপতিরাপ্ত ব্যবসাক্ষেত্রে জাপানের প্রতিবাশিতা কি করিয়া রোধ করিবে সেক্স্প বিশেষ চিন্তিত ও বিচলিত হইয়া পড়িয়াছিলেন। আপান ভাহার রুহজন্ম কারখানার উৎপাদিত ক্রব্যের জনেক অংশ নিক্টবর্জী প্রামে ও হোট ছোট শহরে বৈত্যুতিক শক্তি শরিচালিত কুটারশির্মগুলির বারা অর্থব্যায় তৈরি ক্রাইয়া দেশ-বিদ্বেশে সন্তাল্বে মাল চালান দিতে সক্ষম হইয়াছিল। সৈ ভাহার বৃহৎ ও কুটারশিরে মিশ্র উৎপাদনের বারা প্রাচ্য

ও পাশ্চান্ত্যের সকল দেশের বাজারে নানাত্রপ রেশম, দেশলাই, ঘড়ি, এবং সাবান ইত্যাদি বিবিধ প্রব্যের চাহিলা বাড়াইতে সক্ষম হইন্নাছিল। এই ভাবে জাপান ভাহার জাতীয় আর্থ নৈতিক কাঠামো বে কিরুপ সবল করিনাছিল ভাহা স্থবিদিত। সকল ক্ষেত্রেই বে উন্নত বত্ত্রের সাহাব্যে উৎপাদন ধরচ ক্মাইতে পারা বায় ভাহা ঠিক নয়। ইহার বাবা আবার উৎপাদনের পরিমাণ বাডাইতে পারা বায়।

আমি পূর্ব্ব প্রবাদ্ধে নির্বিষ্টি বে, দিভীয় মহাযুদ্ধের পর যুক্তরাজ্যের শ্রমিক সরকার নিজেবের দেশের বেকারসমস্তা ঐরপ মিশ্র উৎপাদনের দাবাই সমাধান করিতে অনেকটা সক্ষম হইয়াছিলেন। বাঁহাদের ধারণা বে বান্ত্রিক প্রান্তর প্রায় ভিন্ন এবং বান্ত্রিক যুগে কুটারশিরের দাবা নেশের উন্নতিসাধন করিতে পাবা বাইবে না ভাহাদের অবসভির জম্ম আমি ব্রিটিশ শ্রমিক সরকার হইতে প্রকাশিত ১৯৪৭ সনের ভিসেম্বর মাসে শ্রমিক সংখ্যামুপাতসহ মোট কার্ব্বনার সংখ্যা নিয়ে দিলাম:

১৯৪৭ সালের ভিসেম্বর বালে ব্রিষ্টশ শ্রমিক ও কারধানার সংখ্যা :

শ্ৰমিক	কারধানার	ৰোট প্ৰবিক সংখ্যা
नरवा	नरवंग .	(হাৰায়)
22-68	34,480	262
24-85	38,900	886
40-23	3,930	**
\$00-28>	1,230	3939
₹60-8≥>	4,540	3039
£00->>>	3000	202
2000-2222	<b>e&gt;</b> 0	ros
4000-8333	460	18.
4000 & TE	•0	841

বৃহৎ ও ছোট ছোট কূটাবলিরগুলি হইতে বিশ্ল উৎপাদনের বাবা বিশেব অন্যতম শ্রেষ্ঠ বান্ত্রিক শিল্পোরগ্র দেশ বে কডটা সাফল্য অব্রুন করিরাছে ভাহা উপরে প্রান্ত বিবরণী হইতে সহজেই বুঝিতে পারা বাইবে।

প্রদেশের ছোট ছোট শহরগুলির ও পরী-অঞ্চলের উন্নতিন্দ্রিকান না হইলে কূটীবলিরের প্রসার সভবপর নয়; কারপ ঐ সব ছানের ছাছারকা এবং অপ্তাপ্ত ক্থ-ক্ষেথার ব্যবস্থানা থাকিলে বথেউসংখ্যক শিল্পী পাওরা ক্ষ্তিন হইবে ভাষা বলাই বাহলা। সম্রাতি পশ্চিমবক্ষ সরকার করেকটি মুক্তন শহর (Township) প্রতিষ্ঠার পরিকল্পনা করিবাছেন, কিছ বাত্তব ক্ষেত্রে উহা বে কতটা সাকল্য অর্জন করিবে তাহাতে সন্দেহ আছে। আশহা হয় বহু অর্থবারে তৈরি ঐ সব পরিকল্পনার খনড়াগুলি শেব পর্যন্ত সরকারী দপ্তরেই থাকিরা বাইবে। যাত্র করেকটি আদর্শ নগর তৈরি করিলে প্রদেশের জনসাধারণের কি বিশেষ প্রবিধা হইবে তাহা বৃত্তিতে পারিতেছি না। অবস্তু ইহার হারা পূর্ববিক্ হইতে আগত বাত্তহারাদের কিছু প্রবিধা হইলেও হইতে পারে।

की क्षत्राक चामि वाचहावात्मव मधा चमि विख्यानव विवाद कारकि कथा लाल्य-मवकाद्वत श्रीहत्व चानि-ছেচি। শুনিহাচি বে. খনেত শক্তিশালী ধনী ও মতলব-ৰাজ লোক ৰাজচাৱানের নামে ভাল ভাল কমি প্রনেশ-नवकात कर्कक वक्त कवाहेबा भटत किछ विमी मुना पिया फाहासित निकृष्टे हहेटल चनारम ७ विनारम हसास्त्र কবিয়া লইয়াছেন ও এখনও লইবার চেষ্টা করিতেছেন। একথা मछा बर्धेक चाद नाहे बर्धेक. প্রদেশ-সরকার কর্ত্তক ৰাজ্যাবাদের মধ্যে ভূমি। বন্টনের এইরপ একটা সর্ত্ত থাকা উচিত বে, ৰাহাদের মধ্যে ঐ সমস্ত ভমি বন্টন করা হইবে উহাবা অন্তভ: ১০ বৎসবের পূর্বে উহা দান, বিক্রয়, দীৰ, বছক দেওয়া অথবা কোনত্ৰণ হতান্তৰ কৰিছে পারিবেন না। বছি ভাচা করেন ভাচা চইলে ঐ সমস্ত ভয়ি फैठिफ मुला क्षात्म-नवकावत्करे क्षणार्भन कवित्क रहेत्व। এইৰণ সৰ্ভ থাকিলে মন্তলববাৰ লোকেবা সহজে বাজহাবা-দিগকে অর্থের প্রলোভন দেখাইরা সরকার কর্ত্তক বন্টিভ क्षत्रि गहेरक शांतिरवन ना ।

বনি পশ্চিষ্ণক সরকার সমস্ত ডিট্রিক্ট বোর্ড এবং লোক্যাল বোর্ড তুলিয়া দিয়া কলিকাতা ইমপ্রুডমেন্ট ট্রাই এক্ট-এর অন্তক্ষরণে একটি 'ক্রর্যাল ইমপ্রুডমেন্ট এপ্ত ডেডেলপ্রেন্ট ট্রাই এক্ট' পাশ করেন তাহা হইলে জনসাধারণের বিশেষ উপকার হইবে সম্প্রেহ নাই। বেরুপ
ভাবে কলিকাতা ইম্প্রুডমেন্ট ট্রাই এই শহরের উন্নতিসাধন করিয়াছে এবং শহরটিকে চতুর্দ্ধিকে বেরুপ ক্রমে ক্রমে
পরিবৃদ্ধিত করিতেছে ঠিক সেইজাবেই ঐ এক্ট অন্ত্র্পারে
প্রত্যেক জেলাকে অথবা কতিপর জেলা একজ করিয়া
করেকটি ট্রাই পঠনের ব্যবস্থা করিলে প্রাদেশের ছোট বড়
শহরগুলির ও পার্যবর্তী প্রামপ্তলির ক্রম্ড উন্নতিবিধান
করিতে পারা বাইবে।

প্রবেশ-সরকারকে প্রভাবিত ট্রাইগুলির জন্য কোনও ব্যরভাব বহন করিতে হইবে না। কলিকাতা ইম্প্রক্তমেন্ট ট্রাই বে প্রকাবে ভাহার ব্যরভাব বহন করে টিক সেই প্রভাবে ঐ ট্রাইগুলির আবের ও ব্যবের ব্যবহা করা বাইডে পারে। জেলার ছোট-বড় শহরগুলিকে কেন্দ্র করিরা পরী-উররন, বৈছ্যতিক শক্তির ব্যবস্থা, নলকৃপ স্থাপন, রাস্তা তৈরি, মধ্যবিত্তদের বাসের উপবোগী গৃহ-নির্মাণ, পুড়রিণীর পক্ষোদ্ধার, অনাবাদী পতিত জমি উদ্ধার ইত্যাদি নানারণ অনহিত্তকর কার্য্য ঐ ট্রাষ্ট অথবা ট্রাই-গুলির কর্মস্থাটী হইবে।

কেলা মাজিটেট, সানীয় মিউনিসিপালিটিওলির চেয়াব্যান, ভাইতেকর অব এগ্রিকালচার অথবা ভেপ্টি ভাইবেক্টর অব এগ্রিকালচার, স্থানীয় বার এসোসিয়েশন-ভালির সভাপতি, ইউনিয়ন বোর্ডসম্য চইতে মনোনীত করেকজন সভা, সরকার হইতে মনোনীত কতিপদ সভা क्षा त्रमवकावी व्यक्तिक हैकिनियांत ए छाक्कांदरमय महेश के मकन होडे श्रेप कवितन छान हह। होट्डिव क्याजा স্থারপ্রসারী হওয়া দরকার বাহাতে সকল রক্ষ জনহিতকর कार्वा होहेश्वनि मन्भव कविटल भारत । कनिकाला हैय-क्षक्रमके होहित विक्रम 'फिरवकात' बाता है।का नःश्रहब ক্ষমতা আছে সেইবুপ ক্ষমতা প্ৰস্তাবিত টাইওলিব থাকা দরকার। ইহার বারা সানীর পুলিপতিরা ঐ সমত जित्वकात चरित्र कविशा अक्टे जान है। हेक्निय चार्चिक অবস্থা মত করিতে এবং নিজ নিজ অঞ্চলে স্থা-স্থবিধার ব্যবস্থা করিতে পারিবেন। প্রত্যেক টাটের সভ্য-সংখ্যা यछो। मध्य कम इन्द्रश छेतिछ. नत्तर अञ्चल कार्याकती इहेरव ना. रक्वन वाचरेनिकिक मनामनित भक इहेश । कार्याकारी

প্রতাবিভ ট্রাই ছাড়া, জাসানসোলের খনি অঞ্চল বেরুপ হেল্থ বোর্ড জাছে ও বেভাবে উহা কার্য করিভেছে, বেল্ল মাইনিং সেটেল্মেণ্ট এক্টের অন্থকরণে প্রভ্যেক জেলার সেইরুপ একটি করিয়া হেল্থ বোর্ড ছাপন করা আবশুক। বিদ্যালগুলিতে কর্যাল ইম্প্রাক্তমেণ্ট এও ভেজেল্প্মেণ্ট ট্রাই এবং হেল্থ বোর্ডগুলি পালাপালি কার্য্য করে ভাহা হইলে অচিরেই প্রদেশের স্বাস্থ্য ও সমুদ্ধি সকল দিক হইতে উন্নত হইবে। কলিকাতা ইম্প্রান্তমেন্ট ট্রাই এবং কলিকাতা করপোরেশন বেমন একই স্থানে নিজ নিজ কার্য্য চালাই-ভেছে, ঠিক সেইভাবেই স্থানীয় মিউনিসিগ্যালিটিগুলি ঐ লম্ভ ট্রাটের সন্ধে কার্য্য করিভে থাকিবে। জনেকে মনে ক্রেন উপন্থিত জেলা-বোর্ড এবং লোক্যাল বোর্ডগুলির বারা জনসাধারণের অর্কন্ম ছাড়া বিশেষ কিছুই উপকার হইতেছে না।

প্রদেশ-সরকার বদি ঐ সজে জাঁচাদের টেট ট্রান্সপোর্ট বিভাগের মারকত পল্লী অঞ্চলে সাধারণের চলাচলের স্থিধার জন্য প্রত্যেক জেলার সদর রাজাগুলিডে (Trunk Boad ) বৈক্যুতিক ট্রামওবের ব্যবস্থা করেন তাহা হইলে অপেন্দারুত অল্প ব্যব্ধ প্রদেশের বহু স্থানে অনেক ছোট বড় শহর আপন হইতেই গড়িয়া উঠিবে।

গ্রামোরয়নের জনা একটি পরীব ব্যান্তের কথা আমি পूर्व अवस्य উत्तर कविश्वहिनाम। छेरा निष्ठ नाष्ट्रेय ওয়েলস সরকার-পরিচালিত কর্যাল ব্যাস অফ নিউ, সাউথ ওবেলস নামে পরিচিত (ভুলক্রমে নিউজিল্যাও বলিয়া লেখা हरेबाहिन)। चाहेनियाव निष्कृति महत्व हेहाव श्रथान चानिन वादः शास्त्राचात बाह्यस्य हेशात बात्रककृति भाषा बाह्य। সংবাদপত্তে প্রকাশিত বিবরণ হইতে জানা যায় বে, করেক বংসর পূর্বে ঐ ব্যান্তের বিজ্ঞার্ড ফত্তের পরিমাণ ৬১ই লক পাউত্তের উপর অর্থাৎ প্রায় > কোটি টাকা এবং সম্পদ্ধির পরিমাণ প্রায় ৪ই কোটি পাউত অর্থাৎ ৫৬ কোটি টাকা মোটামটি ছিল। ঐ ব্যাহের তুইটি বিভাগ আছে। একটি সরকারী এক্সেন্সি বিভাগ ও অপরটি সাধারণ ব্যাহিং বিভাগ। বাাছের গজিত টাকার উপর শতকরা ৩, টাকা হাবে হল দেওয়া হয় ও বাছে লগ্নি টাকাব উপৰ শতকবা ৪ হইতে ৪ই টাকা হাবে ক্লদ গ্রহণ করে। কৃষি এবং শিল্প উন্নয়নের উপবোগী প্রক প্রকাশ, ফিলা তৈরি, পড়িবার জন্য বৃদ্ধি দিবার ব্যবস্থা ব্যাস্ক করিয়া থাকে। তিন জন কমিশনার ব্যাহটি পরিচালনা করেন ও অনেকগুলি অভিজ জ্যালয়ার আছেন যাঁহারা কুষক ও মধ্যবিত্ত ব্যক্তিকের জমি উন্নয়ন ও গৃহনিস্থাণের জন্য ঋণ দিবার পূর্বের আবেদনকারীর কাৰ্যালকতা বিচার এবং অমি ও সম্পত্তির মলা ইত্যালি স্থির কবিয়া দেন। বাাছ ছোট ছোট চাবের উপযুক্ত অমি अक्दोक्द्र(नद सना (amalgamation of small holdings) টাকা ধার দিয়া ক্রকদের বিশেষ উৎসাহপ্রদান করিয়া পাকেন। পরু, মেষ, মুরগী ইত্যাদি নানাপ্রকারের পশু-পালকদের মধ্যে প্রতিবোগিতা করাইয়া শ্রেষ্ঠ প্রতিবোগীদের বৃত্তি দিয়া ব্যাছ বিদেশে পাঠার এবং ভাহাদের ঐসব বিষয়ে আরও উচ্চতর শিকা দিবার জন্য ব্যবস্থা করিয়া থাকে। অনাবাদী পভিত কমি উদ্ধার ও বছ জনহিতকর কার্যোর নিমিত্ত সাধারণকে ঋণ দিবার ব্যবস্থাও এই ব্যাক্ষে আছে। বাাছ নিজ কর্মচারীদের ব্যাতিং সম্বন্ধে উচ্চশিক্ষার ব্যবস্থা করে ও ঐজন্য বৃদ্ধি দিয়া থাকে। ইহার সরকারী বিভাগের টাকা প্রদেশ-সরকার দিয়া থাকেন. সাধারণ বিভাগের টাকার জন্য সাধারণের মধ্যে ব্যাঙ্কের শেষার বিক্রয় করা হয়। প্রদেশের ও প্রদেশ্বাসীর বাহাতে অর্থনৈতিক উন্নতি इस अवर महांबरनद निकृष्ट इहेटक कृषिकी वी, निही अ मधा-বিজ্ঞ সম্প্রদায়ের ব্যক্তিদের টাকা ধার করিতে না হয় हेहाई वास्त्र मुचा फेल्छ।

পশ্চিমবলে প্রানেশ-সরকারের সাহাব্যে ঐরপ একটি
করাল ব্যাক প্রতিষ্ঠা করা একান্ত আবশ্রক। আমার মনে
হয়, বদি ঐ ব্যাক্রের লভ্যাংশের শভকরা ২০০ টাকা রিজার্ড
ফণ্ডে জমা রাখিয়া বাকী শভকরা ৮০০ টাকার আর্থেক
অর্থাৎ শভকরা ৪০০ টাকার খারা ব্যাক্ত অর্থা
করিয়া অর্থান্টি শভকরা ৪০০ টাকার খারা ব্যাক্ত অর্থবা
প্রান্ধেশ-সরকার কর্তৃক জমি সংগ্রহ করিয়া প্রতি ছয় মান
অন্তর অর্থবা প্রতি বংসর আংশীদারদের মধ্যে ১০ বিঘা, ২৫
বিঘা, ৫০ বিঘা ও ১০০ বিঘা চাবের উপযুক্ত জমি কিংবা
বস্তবাটী নির্মাণ করিয়া লটারি খারা প্রকার-প্রাপ্তদের
মধ্যে বিভরণের ব্যবস্থা করা হয় ভাহা হইলে মধ্যবিত্ত,
কৃষক ও শিল্পীদের মধ্যে ঐ ব্যাকের শেয়ার খরিদ করিবার
আগ্রহ বেশী হইবে। উক্ত লটারিতে বে সমন্ত ব্যক্তির
নাম উঠিবে ভাহালের নিজ্প নিক্ষা নির্মাচিত গ্রামে ঐরুপ
জমি বিভরণের ও গৃহ-নির্মাণের ব্যবস্থা ব্যাক্তলির করিত্তে
হইবে।

প্রভাবিত 'ক্রাল ব্যাহ' বাহাতে বে-কোনও শ্বডি তহবিল অথবা জনহিতকর ট্রাষ্ট ফণ্ডের ট্রাষ্ট্রীম্বরূপ কার্ব্য করিতে পারে, আইনসভভভাবে সেইরপ ক্ষমতা ঐ ব্যান্তর थोको बदकोत । स्थाभारम्य वांश्मारम्य स्थापक वर्ष वर्ष । ছোট-খাটো স্থতি ভহবিল এবং জনহিতকর ট্রাষ্ট্র আছে-ভবিষ্যতে আরও হইতে পারে। বদি ঐ সমস্ত স্থতি-তহ-विद्माव अवर हो हे करखेद है। कांच क्रांचिक क्रवान बारहर भः भ विव कदा वाय. भथवा मीर्घकान प्रशास कछकाः न অৰ্থ পচ্ছিত বাধা হয় তাহা হইলে স্বতিমন্দির, স্বতিমৰ্থি ও মতিভভ অপেকা ইহাতে দেশের ও দশের অনেক বেশী क्नाांन्त्राधन ष्टेर्टर । मनीयी वास्क्रिशत्वर प्रजिब्ह्यांव हेडा অপেকা মহৎ উপায় আর কিছ হইতে পারে কিনা সম্মেষ্ট। এ বিষয়ে বিশেষ ভাবে স্বামী বিবেকানন্দ স্থতি-ভাগোর ও কবিগুরু -রবীজনাথ স্থতি-ভাগুরের পরিচালকমপুলীর আকর্ষণ করিতেছি। ববীক্সনাথ দানের ছারা মঠ ও মন্দির তৈরি করা অপেকা জনহিতত্ব কার্ব্যের উপর অধিকত্ব গুরুত্ব আরোপ করিয়াছিলেন। তিনি তাঁহার 'খদেশী সমাজ' শীর্বক প্রবাদ্ধ লিখিয়াছিলেন---

"পূর্কেই বলিয়াছি সনাক্ষের প্রত্যেক ব্যক্তি প্রত্যন্ত অভি
আর পরিয়াণেও কিছু বংলপের কর উৎসর্গ করিবে। তা ছাজা
প্রত্যেক গৃহে বিবাহাদি ওতকর্বে প্রায়তাট প্রকৃতির ভার এই
বংলেই সনাক্ষের একট প্রাণ্য আধার হ্রহে বলিয়া বনে করি
না। ইহা ববাছানে সংগৃহীত হবলে অর্থাভার ঘটনে না।
আনাক্ষের দেশে বেচ্ছাদত ভাবে বজো বজো বঠ-নৃদ্ধির চলি-

ভেবে, এবেশে কি সমাজ ইজাপূৰ্বক আপনার আত্রর হাম আপনি মচনা ভূমিশে না ১°

ৰদি প্ৰভাবিত 'ক্ল্যাল ব্যাহে'র পন্নী উন্নয়ন কণ্ডে আমাদের সমাজ ঐত্রপ ক্ষেতালয় দানের টাকা ক্ষমা দিবার ব্যবস্থা করেন তাহা হইলে বাংলা ও বাঙালী বথাৰ্থই রবীন্দ্রনাথের আকাক্ষা পূর্ব করিয়া অধিকতর উজ্জলভাবে ভাঁহার অভিরক্ষা করিছে পাবিবেন।

# ভূল

#### विरोदिकक्मात तांग्र

শান্তলী অন্নপূর্ণ সভালবেলা গেছিলেন পাশের বাভীতে ভাঁর হুলীবিবির নদে ভোবার ভাল ভেল পাওরা বেতে পারে সেই নিরে কথা বলতে, তথন পুরবন্ধু পুষরা রারাঘরেই ছিল। কিছ ভিত্রকণ পরে বর্ধন অপ্রসর্ভিত্ত কিবে এলেন তথন বের্ধন রারাঘরে কেট নেই, একেবারে থোলা, তর্ একবারে ভাতের ইন্ডিট সোঁ-সোঁ করছে। বের্ধে ত বন্ধী গেল আরও বিগতে। কথা আরভ হ্রেছিল ভেল নিরে এবং জিনিবট শিক্তিল বলেই হোক বা বে ভারবেই ছোক সেটার বাব্যবে বাভারের সমভ জিনিবের ভালবন্ধ আলোচনা হরে গেছে; এবং আহকে আর ভাউকে বলে বিভে হবে না বে জিনিবের ভালবন্দ হুটো বিক্ত আর বাই, এবন লব বন্ধসর্বন্ধ। বাভারের জিনিব ভ আহেই—ভার উপর ব্যবের এই রাহ্যব্যক্তিও…

—বলি ও বোঁ, ভাবের বাবা বেরে বলে আছ বাকি ।
এটা অবও অরপুর্বার চালাকি। প্রথম বারের ভাকেই
কেট আর কবা বলে না। কিছ উপার কৈ, বা বরাজ গলা
ভার ভাতে বাভার লোক স্বের কবা সমত পাভার লোক
ভনতে পাবে অবচ রাবা বাওরার মত মুবরোচক শস্টাও
প্ররোগ করতে হব ।

স্বনা ব্যের ভেতরে এক কোণে ভার ছোট ক্যাপ্রামানীর কোনে বলে একটা ছোট কাপকে লভাপাভাগ্রালা করেকট হোক, ওই বালাব্যের ক্রাটা পাকে পেল, লে ভাভাভাকি 'বাই বা' বলে জিবিব— উঠে বাল। অলোকে কোনরকরে নাবলে রেথে একরকর বৌকে বাইরে এলে পাঙ্গীর কাছে ইন্ডাল। বরল ভার বোল-সভেরো বন পাঙ্গীর কাছে ইন্ডাল। বরল ভার বোল-সভেরো বন পাঙ্গীর কাছে ইন্ডাল। বরল ভার বোল-সভেরো বন পাঙ্গীর কাছে কাল্যের কেহারা আরও কচি-কচি এলোবেলে বনে হর এবং চলাকেরা ভাবভলী থেকে বনে হর বন্ধনি থেকে প্লা!

শান্তলী তেলের ভালরক পরীকা করার বত ব্র্থকনী করে তীক্রুইতে অলব্ ত্রেশা ববুর আপাধ্যকত বিরেশ্য করতে করতে কয়ার বিরে ওঠেন—বুরোজিলে শাকি ?

प्रका मुहारना बाहनही अन शास्त्र अविदेश कुनरण कुनरण

ও অভ হাতে হাওয়ার একট বুঁটকে দাকীবানার তলীতে কভিয়ে বহে অভ্যত সহচিতভাবে উভয় কের—না ত।

আনপূৰ্ণ আনও খলে খঠেন—না যা । না । ব্ৰ কথা নিখেছ বা হোক। বলি এদিকে ভ চোখের বাধা থেরে ছটো বরজাই ধোলা রেখে বলে আছ, কুকুরে যে সব থেরে পেল।

কথা হছিল রায়াখনের বেটে বারান্দার। এ কথার সুষরা তীবণ বিরতভাবে ভাভাভাভি বরের বব্যে চুকবার চেটা করে কিন্ত অন্নপুণা এবনভাবে পথ কুছে ইাভিনেত্রের বে তিনি একটু সরে বা ইাভালে বাওরাও বার বা।

আন্তৰ্ণা সন্থাৰ একট্ড চেঙা না কৰে বনং প্ৰবাৰ এই বিপন্ন ভাৰটা উপভোগ কৰতে কৰতে নিৰ্মিকান চিতে বলনেন, বাক, এখন আন লোককে তেকেহতে কাল দেখাতে হবে না, বুন হবেছে। আন না খেলেও, খেতেই বা কতকৰ। আন ইছুলের ভাত কখন হবে গুনি, গুৱা কি আল না খেনেই বাবে নাকি ?

সুবৰা প্ৰায় অস্কুটবরে কৰাৰ কেয়—আৰু বে রবিবার মা।
আরপুর্ণার আর সহ হর মা, একেবারে বগভার সুরে বলে
কেলেন—বন্যি বা হোক কর্ক নিবেছিলে বোমা। ভাই
হোক, এই করেই আৰু পেট অরুক।— বলতে বলতে ভিনি
রারাবরের বোরগোড়া বেডে শোবার বরের বারালার দিকে
উঠে বান।

পুৰৰা এবাৰ অকলাং অভ্যন্ত ব্যক্ত হবে পতে, কেবল বন বন পাঞ্জীৱ গতিপথেৰ বিকে ভাকাৰ আৰু আঁচলচাকে এলোবেলোভাবে নিজেৱ হাভেৱ ওপৰ জ্ঞাৰ। কি নাৰাভ্ৰক ভূল !

টিক তাই হ'ল। শোৰাত্ৰ বত্ত বৰ্ণানৰত তাক আনে—বোঁনা এনিকে এল। বত্তই এবাত কটিন, কিছ পাত, বনে হত্ত বজা এবাত্ৰ বলবাত্ৰ যত গটিক কিছু একটা বুঁকে শেষেকে।

প্ৰৰা বিৰে বৰে হাভাৰ, বেৰে পাভতীয় হাতে নেই

ক্লেকট। তিনি বার বার করে নেট বুরিয়ে কিরিয়ে ধেবছেব, রুথবানা বোটেই প্রদর নর। প্রবার প্রপাশ বুধ কূলে তিনি তার পানে কিছুক্দণ অভূত তলীতে চেরে রইলেন, তার পরে হঠাং একটা কটল প্রয়ের নপুণীন বুধরার বত করে বললেন—আহা বৌনা, বাড়ীবানা কার বলতে পার ?

এর এক্ষার উভর হয়, আপনার---স্ভরাং স্বলা কিছুই বলে লা।

—ৰাড়ী আবাৰ একাৰ বৰ, ভোৰাবের সকলের, কিছ বলতে পার আবি একাই বা কেন ভোষাবের পেছনে ক্তের বভ থেটে বল্লি আর এবিকে ভোষরাই বা কেন নবাবের বভ কুল লভা পাভা বিল্লে সময় কাটাবে। কেন? ভবাব বাও, চুপ করে থেক বা।

কিছ চূপ করে থাকাটাই ভ এর একবার উভর, প্রভরাং প্রবা সভর্বে চূপ করে থাকে। ৩৫ এক বার এক বৃত্তরি কভ লে অভ্যন্ত আভ্নোবে বেবে নের শাশুকীর হাতে ভার অবন নাবের সেলাইটির কি হশা হ'ল।

ওই চোৱা চাউনিট্কুই ববেও। জনপুৰ্ণ ক্ষেম্ডৰ সেলাইটকে এক হাতে কটন পুলিনী তদিতে ববে বললেন—
কথা ত এবিকে বার হর না, কিছ কাজের বেলার হাজার রক্ষের জকাজ করতে শিথেছ। কেন, এইটে বিবে কার কর্তুকু উপ্কার হবে তনি? আর পেরভর বাজী, এ কি এই রক্ষ বিবিশনা করার জারগা নাকি। না ছোট পুকিটর বভ বেলবারই নমর আহে? ভূমি না ব্যের বৌ, গেরভ বাজীর ভালমন্দ কিনে হর নেটুকু বোক না ?

প্রতিষ্ট প্রশ্নের দলে ক্লেম্ট অয়পূর্ণার হাতে এক বাগ করে বেশী নিপীতিত হচ্ছিল, ওবিকে সংবার অবহাও তেবনি। তার কাণ বিরে শান্তবীর কথাওলি বিশেষ বাচ্ছিল না, সে তবু সোনাইটর অবহা নিরে বিরত হিল। শেবের প্রশ্নে বর্ণর সেটর ওপর অভ্যন্ত বেশী চাপ পড়ল তবন লে আর পারল না, এক রক্ষর আঁতকে উঠে শান্তবীর বিকে হ' পা এগিরে এলে বলে ক্লেল—ওটা…ওটা…

হাঁ ভটা ভোষার বাবা আর আবার বুড় । বাও আর সং হরে ইাভিরে বেকো বা, রারা দেব নিরে। আর বনে রাবনে এ লব বেলার সময় ভোষার আর নেই। বাও। বলতে বলতে অরপুণা নিজেই সেলাই সমেত ফ্রুডপনে নিজের পুলার হোট বর্টতে চলে গেলেন। প্রবা ভিছুক্তণ পাবর হরে নেবানেই ইাভিরে রইল, সেলাইট বে চিরবিনের বভ ভার হাভ হাভা হরে সেল দে বুবতে পাবল, ভিছু ভার অবশ বন ভবু হুটো ক্থাই বার বার অস্ট্রবরে বলতে লাগল—ওটা… ভটা…ভটা…

ৰাৱ কোন নাথাৰ্ডু সভিচই নাই। কিছ আনল ব্যাশাৰটা হুছে এয় বেশী বলাই বা বায় কেমন করে। বৌ হুয়ে শাভড়ীকে ভ আর বলা বার না বে ওটা আবার খাবীর ভঙ ক্ষাল করছিলাব, বিশেষ করে ধরণ বোঠে এক বছর বিরে হরেছে। দে-৬ গেরভ বাড়ীর বেরে অর্থাং বে সব বাড়ীভে ब इक्न जोबीन जिनारेखन वित्नन हकी नारे, जिनादन जिनारे হৰ কাঁণা পেকে আৱন্ত কৰে ধূব কোৰ আসৰ পৰ্যাত, শাখলীর ভাষার বাভে কারও কোন উপকার হর দেই রক্ষ। কিছ পুৰবা বেশ ছোট বয়নেই এই নেলাইটা কোন খনে ভার **কাহে শিৰ্বে কেলেছিল, কিন্তু লে এখন লাভুক্ত বে বিশ্বের পরে** পুৰো একট বছর লেগেছিল ভার স্বাধী শক্তিবয়ের এটা আৰিকার করতে। ভার পরেই ভার এই অন্থরোধ বা আখার ৰাই বল। প্ৰবা শাওতীৰ ভাবগতিক প্ৰথম হতেই চিষেছে। काबन नदीन नरबद रबरब रम अनर नकृषि रनरबरे बाक्स। कार्र সেলাইরের লাজ সরঞ্চার ইড্যাদি সে অভ্যন্ত সন্তর্ণৰে বায় करबहिन बनर अक्ट्रे अक्ट्रे करब अरे अक नक्षारह रन अक्ट्रेक् ভূলেছে। আর বোটে হ'বিষ, আসহে শনিবার শক্তিমর বাড়ী षानद्य--- छथम---१

স্বৰা ইতিবৰো এনে চূপ করে উত্নগোড়ার বনে পড়ে-হিল, কিছ রায়ার কোন কিনিব আর চোবেই পড়হিল না। হঠাং কেনড়ম ভাত উথলে পড়ার শবে লে সচ্কিড হরে ডঠে এবং ভাড়াডাড়ি বট হতে হাঁড়িতে একটু জল ঢেলে বিয়ে আবার চূপ করে বলে পড়ে। ওবরে পাড়ভীর হাঁডিইড়ির শব্দ শোনা বাজে, বোব হয় কোধার কড়টুর্ কি ভাবে আছে দেপ্রেম।

শক্তিমর কাক করে কলিকাভার। সাধারণ গরীব গেরভ পরের থেলে— কি প্রকার বিভা ও চাকুরি সংগ্রহ করতে পারে সেটা সহকেই অহুষের। পলিকাভা হতে এ প্রায়টা বাইল চল্লিখেরও ওপর, সুভরাং ভেলি প্যাসেঞ্চারি করা সভব হলেও শক্তিমর পারে না, ভার শরীর ধুব ভাল নর। সক্ষতি ভার একখন পরিচিভ লোক কলিকাভার একট বিটির বোকান ক্ষেছে, সেইবানেই লে থাকার একটু কারগা পেরেছে। বিবে আশিলে কাককৰ আৰু বাত্তে লোকানের ছিলেবপত্র কেবা---এই রক্ষ করে কোন রক্ষে চলে বার। বাকীতে ভার বা, ৰো ও ছোট ছট ভাই, ছুলে পড়ে। বাড়ীভে ভাকে ভিছু किह गाउँ। एक इस प्रकार कार करतीय क्राव वारेष चाव बाद्य बाद्य वरे हेरे बड़े। तही स्मात यह किहू। बरे व'म পুৰবাৰ বাৰী আৰু এই ব্ৰেৰ সে বছ বৌ পুভৱাং ভাবেৰ ৰৱের কাক্ট হ'ল আলালা এবং লেট একবার বাতের সংস্থাৰ করা। কোবার ক্তটুত্ কি ভাবে আছে দে**ট** রেবে ঢেকে ভহিৰে ভোলা।

ভবু ভ বাবে বাবে এই অকাজের দেশা সম্ভ প্রয়োজন-বুছিকে অভিক্রম করে কেনে ওঠে, নইলে শক্তিবর বলবে কেন--- বৌ, ভা হলে কথা কইল এই বক্তৰ একটা সূল ভূলে ছাবৰে। বেৰ ভবৰ বছা, কেবৰ আৰি নবাইকে বেৰিৱে বেভাৰ, এ বক্তৰ বৌ কাল্ল আহে বেৰিৰ ভবৰ, ইয়া।

পুৰবাৰ দাবা অভয় ভৱে উঠেছিল কিছ নেও ছাড়ে বি।
কৰা ছচ্ছিল গভ বৰিবাৰ শেব বাজিব বিকে বিছালাৰ ভৱে।
এবুলি শভিষয় উঠে টেশনের পৰে রঙনা হবে। প্রমা
অনেকবানি সকোচ জোৱ করে কাটরে অপুট বরে বলে
কেলল— ভূবি আবাকে বে বলবে না বল।

শক্তিমৰ গৰ্কো উজুনিত হবে উঠছিল, হঠাং এ ক্থাৰ একটু বিশ্বিত হবে কিছ তথুনি ব্যাপান্নটা বুবে নিবে হ্বনাকে একেবাৰে বুকেন নাকে টেনে এনে একটা মজান জিনিন পোৱেছে দেই তাবে হালতে হালতে বললে—বাঃ হে ডা হলে ভূমি কান বৌ তনি ?

না--না--ভা---ওরা---স্বনা অবকারের নব্যেও সজার লাল হরে ওঠে। সে বর ত বলতে চার ভার অবেক বন্ধু-বাদ্ধবের কাছে এই নাম ডাকটা ভনেছে এবং সেটা কভ ভাল লাগে।

শক্তিমৰ ভাকে আৱণ্ড নিবিচ ভাবে কচিৱে ববে হাসভে হাসভে বজে—মা, মা, মা, এ হাচা কি আৱ কথা শেধনি বো •••পুডি•••স্থবা, সুবি আমার সুবি। হ'ল ?

স্থৰার জীবনে এই বেল প্ৰথম নামকরণ হ'ল, সে লক্ষার পালাবার পথ পার না, বানীর বুকে মুখ স্ক্রিরে অর্কস্ট বরে মলে—হাড়। বাবে, ভোষার জিনিবগুলো বেঁথে বিভে হবে না ?

শক্তিৰৰ বাছবছৰ একটুও আলগা না করে থেলেবাছবি চঙে বাবা নেতে বলে—কি হবে ৷ আনাৰ কিনিব বাঁবাই আছে ৷···

এ শনিবার সে বাজী আলে নি কিন্ত নির্বেছে আসছে শনিবার আসহেই। তবন ? তবন সে তাকে কি বিবে ?

ভাতের নময় হবে এল, স্বমা ইাডিটা নামানার উভোগ ভয়তে বাজে। ভিজে ভালভা নবেত হাড' হটো তার বর-চালিতের মত ইাডির বারে বলে বার। ভিছ ইাডি তার চোবে পড়ে না, ও বেল ফ্রেন্ডছ নেলাইছের ভাগভটা। স্বমা অভাত অভ্যমতভাবে ইাডিটা ববাছাবে নামিরে নাভ গালভে বলে বার।

ভূল করেছে ভার খানী। এরক্য বৌ বরে বরেই ভাছে, এ নিরে গর্ক করার ভিছু নাই, তথু আছে হর্কসভার সজা। পুরুষা কোর করে ইাভিটাকে একরক্য শক্ত করে কভিবে বরে।

ভার পর হুপুরবেলা। বাধবাদাধরার পাট অবেককণ চুকে নেরে। অলপুর্বা বকিশ বিকের বারাধার বাহর পেতে কাবা কড়িরে মুরোজেন, সুববা শোবার বরে ক্যাপ্রার্ভির লাবৰে টিক লেই ভারগাটিতে বলে চুণচাণ ভাৰালা দিৱে বাইবে তাকিবে আছে। বাইবে বেগালে বাঁণটা এনে পূঁই-বাচার কাছে বিলে গিবেছে লেই কোণে অত্যন্ত স্কাবো-লহুচিত তলীতে একট অণৱাজিতা লতা তার ওটকবেক কুল নিবে বাঁবে বাঁবে বিলেকে বাইবের আলোর বব্যে মেলে বরছে, স্ববার বৃটি টিক লেইটর উপর নিবছ। ও লভাটি লে বকুকে বিবে বোগাত করে কত বদ্ধে লাগিবেছে, কতিবি তার তর হয়েছে পাণ্ডলী পূঁইতাঁটা হিঁততে গিবে লভাতর টেনে উপতে লা কেলেন। আক লেই লভা পাতার পাভার ক্লে কুলো কেলেন। আক লেই লভা পাতার পাভার ক্লে কুলো কেলে উঠছে, স্ববার বহু বির কুল ওটা, কেবল কুলটা নর, ওর লভাপাতা সবভছ লবটা নিবে। লে বানীকে একবার সকল ব্যবহে কিল্পেদ করেছিল—ভোনার কোন্ কুল তাল লাগে ?

সাভ বিদ আপের গেই রাজিশের। শক্তিমর একটু তেবে
নিরে হেসে বলেছিল—আনি তাল চিনি না, তোমার বেটা
তাল লাগে নেইটিই। তবে স্বচেরে তাল আমার এই
লক্ষারতী লতা···বলতে বলতে নিবিচ আবেগে···

বৌদি । ৬ বৌদি ৷ কোণা হকে সুইতে সুইতে এলে
মন্ট্ৰী পিছন বেকে ভাল ছোট হাত ছটো বিলে প্ৰবান চোণ
ছটো চেপে বলে এবং নিজেন চোণ ছটো বণাগভব বড় বড়
করে ইংগাতে ইংগাতে বলে—ভান বৌদি ভি এনেছি ৷ বল বেবি, ভবে বুলি ৷

কিছ সদে সদে হাভ ছটো ভিজে ববে হওয়ার সে চৰ্চ্ছে ওঠে এবং বৌধির বুওটা বতটা সভব নিজের বিজে ছবিয়ে এনে হঠাং চিভাএত ভাবে বলে—কাঁল কেন বৌধি ? কিছমেহে ভোষার ? তার ?

স্বমা ভাভাভাভি আঁচলে চোৰ হুটো বুছে ৰণ্টুকে
নিজের কাছে টেনে নিষে একটু হাসবার চেটা করে বলে—চ্ব বোকা, অর হবে কেম। বাইরে ভাকিরে হিলাম, চোৰে
কি একটা পড়ল এবুনি। আছা কই কি এমেহিল কেবি ?
চকোলেট বুবি ?

বন্ধু বৌধির কাছে প্রারই ছ'এক পরদা করে বোগাড় করে কিছ নিভাভ বার্থপরের যভ দেটা একা নিজের ভোগে না নাগিরে যাবে নাবে বৌধিকেও কিছুভাগ এনে ধের। পুভরাং এতে মতুন অহুবান করার কিছু মাই।

ৰণ্টু কিছ একট্ও বৰল না, নলে নলে নিজের প্যান্টের পক্টেটা চেপে বলে বলল—হ'ল না। আবার বল।

—ভবে বুবি গাছে ক্ল বছতে লেগেছে? বলভে বলভে প্ৰবা অভাভ স্থেহের গলে ভার কণাল থেকে এলো-বেলো চুলঙলো উপর বিকে ঙবিবে ভুলতে গাছে। বঠাং ভার কণালের এককোণে কেবে একটা ছোট চিন্ন ও একটু ছক্তিক। ৰণ্টু সেটা বৃথতে পেহে বলল—ও কিছু বন্ধ, একটু কৃষ্ণি লেগেছিল। পানলে না ত, বেশ তবে এই বেশ—বলে সে গকেট থেকে একটা প্ৰকাণ হলপন্ধ বান্ধ কনল, করে সেটা স্বৰাৰ লামনে নেথে হঠাং অত্যন্ত মনোবোগের সঙ্গে হ'হাত বাতিরে বৌধিন গলাটা ততিবে বন্ধে প্রায় তান্ধ কাণে কাণে বলল—ওটা বৃধি শেব হলে গেছে, এবান্ধ আমানটা ক্যাৰে ত ?

প্ৰমা ফুলটা লেখেই চন্তে উঠেছিল। মণ্টু খার চুরিকরা লেলাইরের অভ্যন্ত মনোবাদী নাথী, রোজ ইছুল বাবার
আগে এবং ইছুল থেকে এসে ভার একষার বোঁল নেওরা
চাই, কভদ্র হ'ল এবং রবিবার দিন এই সমরটা (এইটই
একষার স্বারার চুরির সমর) সে বোঁলির কাছে বলে
ভার কাল থেগে। পরশু বিকেলেও ভালের মধ্যে চুপি
চুপি এই নিরে কথা হরেছিল। স্থ্যনা যে লভাপাভাভ্রালা ছোট ছোট ফুল ভুলছে সে নন্ট্রের মোটেই প্রক্ষ মন,
সে বলে ফুল এবন হবে বা চুর থেকে দেখা বাবে ও বেধান
বাবে। কুলের বভ কুল, সে কোন্টা? স্থ্যনা অনেক
ভেবে উভর হিরেছিল সে রক্ষ বভ কুল হ'ল হলপর, ভবে
বুর ক্ষ দেখা বার। ভাই বুরি। ভা হলে এটা কি ?

নণ্টু নহানশে বৌধির গলা হতে একটা হাত হাড়িরে নিমে হলপথটা একেবারে তার রূবের লামনে উটারে আমে এবং বিজয়পর্কো বলে—বেবলে ত ? আহলা, তোষার ফ্রেম তই বৌধি, আয়ারটা এবার আয়ম্ভ করবে ত ?

শেষের কথাটা বছ লাজুক লাজুক শোলার। কিছ পরক্ষেই মন্ট্রুকি একটা তেবে নিরে উল্পুনিভ হরে ওঠে এবং বেশ স্পষ্ট গলার বলে – আর বেশে। তথন আনার মন্দাটা ইয়া। আনি ভ ওলের বলেই রেখেছি, তথন দেখন এনন বৌধি ওলের ভার আছে, এনন বছ কুল ওলের ভার ভাছে বাকে। ভানো, বপন বছাল—

(नरे अबरे क्या | प्रवा चात नरेट मात मा, मछे दक

একেবারে বুকের কাছে টেনে নিবে চুপি চুপি বলে--কিছ দেলাই ত আৰি জানি যা লখী আইট আবার।

- —কানো না । আদর বেতে বেতে বড় বড় চোব করে বটু বৌদির দিকে রূব ভোলে।
  - -मा (व ।
- —বাঃ, ওই বে হজিল। ওটা কোবার বেধি—বদতে বলতে বটু, এবিক ওবিক ভাকার, ভার একটু বিখাসও হয় বা।
  - ७ इन इव्हिन चारे, ७८७ इटर ना।
- —বা: বেশ স্থার ক্ল উঠছিল ত। বউুর কর্চবছে এবার উবেদ প্রকাশ পার।

শিশুর এই প্রশংসাও আদ স্বনা সইতে পারে না, নারা অত্তর ভার কারার উদ্ধৃসিত হরে ওঠে। কিছু আর নর। সে ব্যাসভব শাভ বরে বলল—উঠবিল ত। কিছু ক্লি রুক্তর করে নব বুলে গেল, বোর হয় কোবাও আলগা থেকে বাছে।

এর উভরে বন্ধু সহসা আর কিছু বলতে পারে বা, একটু চিভিড-বিষর ভাবে চুপ করে বাকে। হ্যবা ভার ববের ভাব বোবে, নিজেকে নামলে নিরে ফুলচা এভকণে আমর করে নিজের হাতে ভূলে বের এবং অভ হাতে বন্ধুকে কভিরে বরে নাজুনার হুরে বলে—ভার কি হরেছে। আনায় ভাষরে আস্থে, ভবন হবে। কি বল গ

ষ্ট্ৰ বিজেৱ বিকটা ভতকৰে নামলে নিয়েছে, ভার বৰে পাছে বৌৰিয় বিকটা, নেও ভোষনি প্ৰমাকে অভিনে বয়ে বলে—ভাই বুবি ভূমি কাঁবছিলে বৌৰি। দূর, ভাতে ভাষার কি আছে? আমি ত কত ভূমি—বলতে বলতে ভার হঠাং কি একটা বনে পাতে যায়, সে আবার বলে—হাঁ। ভাষো বৌৰি, যপন কাল বলছিল যে ওবের বাভীতে একটা বুব ভাল বিলেভী কুল এগেছে, আবাকে একটা ভাল বেবে বলেছে।

কিছ ৰপৰ ও কৰা ৰোটেই বলে নি। সে বা বলেছিল ভা কেট ভাষলো না।

# একটা ছড়া

🗃 বিধুশেশর ভট্টাচার্য

২১শে বৈশাধ, ১৩৫০ সাল। স্বর্গীর রামানন্দবাব্ তথন
বন্ধ কাতর, শ্ব্যাশারী। ঐ সমরে তিনি স্ব্যোল কন্যা
শ্রীমতী শাভা দেবী ও জামাতা শ্রীযুক্ত কালিলাস নাপের
কাছে রাজা বসন্ত রার রোডে থাকিতেন। আমি প্রারই
তথন তাঁহাকে দেখিতে বাইতাম। ঐ দিনেও গিয়াছিলাম।
সেদিন একটু ভাল ছিলেন। কথাবার্তার মধ্যে নিয়লিখিত
ছড়াটা আমাকে লিখিয়া লইতে বলিয়া মন্তব্য করিলেন—
ভাঁহার বন্ধ হুরেক্রনাথ খোব মহাশয় রোগশ্ব্যায় নিজের
কল্পাকে ইহা শিধাইয়াছিলেন। মনে হয় ইহার মধ্যে কিছু
ঐতিহাসিক কথা আছে। ছড়াটি এই:

এক বে বাধাল পঞ্চ চরায়
গামছা মাধায় দিরে
তার মাকে ধরে নিয়ে গেল
জামান ফকিরে।

ণিসিমা কাঁলে মাসিমা কাঁলে
চালে নাচে বিঞে।
পুঁঠি মাছটি গান করছে
নেউলে বাজায় শিঞে।

# রন্তিদেব

#### 🗃 বিধুশেশর ভট্টাচার্য

শ্রীমন্তাগবতে ( >ম কছের ২১শ অধ্যায়ে ) রন্ধিদেবের কথা কৃত্র হইলেও অতি উপাদের। ভাগবতে বলা হইরাছে বে, ইহলোক ও পরলোক উভর হানেই ইহার মহিমার গান করা হইয়া থাকে ( "রন্ধিদেবস্য মহিমা ইহামূত্র চ সীরতে," ১,২১,২ )। ভাগবতকার কেন এরুপ বলিয়াছেন, পাঠকগণ নিজেই ভাহা ভাবিয়া দেখিবেন। আমি কেবল কথাটা গুলিয়া দিভেছি।

পুরাকালে পুকরংশে রন্তিদেব নামে এক অভি দয়াপু
ও লাড়া রাজা ছিলেন। লিবি ও হবিশুল্ল হইডে জিনি কম
ছিলেন না। জিনি আকাশের দিকে তাকাইয়া থাকিজেন।
বাহা পাইতেন তাহাতেই তাঁহার চলিড, তাহাই তিনি
লান করিতেন। শেবে এমন হইয়াছিল বে, তাঁহাকে
সপরিবারে কট পাইতে হইড। তিনি একবারে অবসর
হইয়া পড়িয়াছিলেন, কিছ তথাপি লান করা পরিভাগ
করেন নি। বাহা পাইডেন, কেহ চাহিলে ভাহাই তিনি
লান করিজেন, নিজের বলিয়া কিছুই রাখিজেন না,
ভাহাতে ভাহার খাওয়া হউক আর নাই হউক।

একদিন তাঁহার আহারের কিছুই নাই। সপরিবারে কট পাইতেছেন। এইরপে তাঁহার ৪৮ দিন কাটিয়া পেল। এমন কি পান করিবার উপযুক্ত কলও তাঁহার ছিল না। দৈববলে প্রদিন প্রাতে কিছু ভাল খাল্য তাঁহার নিকট উপস্থিত হইল। ইহার মধ্যে তিনি সপরিবারে কুবার ও তৃকার কাতর হইরা পঞ্চিরাছেন। পরীর তাঁহার কাঁপিতেছে। এমন সময় এক ব্রাহ্মণ অতিথি হইরা তাঁহার নিকটে উপস্থিত হইলেন। রাজা সকলেরই মধ্যে ভগবানকে দর্শন করেন ("হরিং স্ব্রু সংপশ্যন্")। তিনি অতি প্রদ্ধা ও আদ্বরের সহিত ঐ লক খাল্য হইতেই সেই ব্রাহ্মণকে ভোজন করাইলেন।

ব্রাহ্মণ সন্তুট হইরা চলিরা গেলে রাজা বধন অবশিষ্ট খাল্য গ্রহণ করিতে ঘাইবেন, তথন আর একটি অতিধি উপস্থিত হইল। এ ছিল শৃত্র। রাজা ইহাকেও হরি মনে করিরা অবশিষ্ট থাত হইতে থাওরাইলেন। এই অতিথি গেলে আর একটি নিকুট জাতীয় অতিথি উপস্থিত হইল। তাহার সঙ্গে কতক্তলি কুকুর। সে বলিল 'মহারাজ, এই কুকুরগুলি ও আমি বড় কুধার্ড, অন্নদান করুন।' রাজা বহুমান ও সংকার করিয়া বাহা কিছু অবশিষ্ট ছিল তাহাই দিয়া সেই অতিথিকেও নম্মার করিলেন।

তথন রাজার নিষ্টে কেবল একটুমাত্র জল আছে, বা একজনের মাত্র কোনরূপে চলিতে পারে। রাজা ভাহাই পান করিবার জল্প উদ্যুত হইরাছেন। এমন সময়ে একটি চণ্ডাল উপন্থিত হইরা বলিল, 'মহারাজ, আমি এক অমলল ব্যক্তি। আমাকে একটু জল দিন।' ভাহার ঐ কলপাপূর্ণ কথার রাজা জভান্ত সন্তপ্ত হইরা বে কথা বলিলেন ভাগবভকার ভাহা জমুভ বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন ("ইদ্যাহামুতং বচঃ।" সেই কথাটি এই (২,২১,১২)

"ন কাময়েংহং গভিমীশরাৎ পরামইছিসিছি মপুনর্ভবং বা।
আর্তিং প্রপত্তে হবিল দেহভাজামস্ক:স্থিতো বেন ভবস্কাতঃবাঃ ॥"

অধাং—ঈশবের কাছে আমি পরমগতি প্রার্থনা করি না, অণিমা প্রভৃতি অট সিদ্ধি চাই না, আমার পুনর্জন্ন হইবে না ইহাও চাহি না, আমি চাই, আমি বেন সমস্ত জীবের ভিতবে প্রবেশ করিরা তাহাদের হঃধকে পাই, বাহাতে তাহাদের হঃধ না থাকে।>

১। এই ক্ষাটাই খত এক কারণার ভাবে, বাহা অনেকে ভাবে। অনেক সক্ষে বনে রাখিতে পারেন—

> "म प्रश् कामात बाकार म पर्गर म भूगर्कवय्। कामात क्रृश्यक्षामार वानिमावार्किमानमर ॥"

অৰ্থাৎ, আমি ভাজ্য চাই না, খৰ্গ চাই না, পুনৰ্কণ ছইবে না ইত্ৰাও চাই না, আমি চাই দুংৰজ্ঞ জীবসবের দুংবের নালকে।



রচনা--- শ্রীগোপেশর বন্দ্যোপাধায়

স্বরলিপি--- শ্রীরমেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়

(পুরিয়া—তেতালা)

এসেছি প্রভূ তোমার মন্দিরে দর্শন দাও হে খ্যাম-স্থলর আজি শুনিব বাঁশী প্রাণ ভরে। তোমার অরূপ রাশি ত্রিভূবনে বিকাশে গোপেশ যাচে রাভল চরণে রাথ মোরে॥

হ হ ভ নাধাকা| গাখান্খা| গাাখাগা| খাাসা! | } - ক ৱে - ০ - } काश मा भा जा t जा | जना क्या जा W W হে 0 ना **₹**0 ा भा भा गा কা কা গকা ধনা ঋা না ! ধকা ধা কা আ ০ ক্র নি 210 0.0 र र्मार्मार्मार्मा | नाक्षार्मा | (মাগা গা গা | আমাধা সাি সা শি ৈতা মা ত্রি **9** ব নে र्शा था । मा सामा भी ना भी ना भी ना না । ধকা ধা কা গা। CSIT 72 ल Б 76 আলাপী তান:-0 ২´ ১। ন্ - ঋা- ন্- গা | † † † কাঃ নঃ ধা কা আৰু ০ ০ ০ ধাকাগা | গা সা না ধা আ বোলতান:--৩। গক্ষা ধনা স্থা নস্য | ধনা ঋসি নিধা ক্ষগা | ক্ষধা নঋ নিধা ক্ষগা নধা ক্ষগা ঋগা | ছি০ ০০ ০০ ০০ ৩০ ০০ ০০ ০০ 90 00 00 00

আশতান :---

হ'ত ৪। নঋা গকা ধনা সৰ্সা | স্না ধকা গঋা গা | আয়া ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০

হ'ত ৫। ঋসনিধা সনি ধক্ষা | ধনা ক্ষধা ক্ষগা ঋগা আমান্ত ০০ ০০ ০০ ০০ ০০

আৰ ও কম্পনযুক্ত তান :---

হ'ত ও ৬। ঋহাসনাসসানধা | ননা ধকা গকা গা আবাও ৪০ ১০ ৪০ ৪০ ৪০ ৪০

আশতান :---

০ হ ত ৭। নঝা গখা গখা গলা | ধলা ধনা খনা | ধলা গলা ধনা খনা | ধলা গলা ধনা খনা | ধলা গলা ধনা খনা । ধলা গণা লগা খগা

আশ ও কম্পনযুক্ত তান :---

০ হ´ ৩ ৮। নঝা গগা ঝগা ঝসা | ঝগা কাকা গকা গকা | গকা ধধা কাধা কাগা | কাধা ননা ধনা ধকা আবাও ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০

০ ২´ ৩ ধনাসসি নিদা নধা | আনধাননা ধআমা গলমা | ধধা আমো ঋগা আমো | গঋা ন্ঋা গগা ঋগা ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০ ০০

অন্তরার তান :---

বাট:---

০ ২০। গলাধনা সূমা সূমা নধা সূমা আনা গা। গলাধনা সূমা ধলা । গলাধলা গা থকা।।।।
এনে ছিওম ভূতো মার ম০০ কি রে ০ দর শন দা০ ও ছে আচ০০ম আই কর

# পণ্ডিচারীতে ঐঅরবিন্দ

#### অমতিলাল রায়

সে অনেক কথা, প্রায় ১২ বংসরের ইতিহাস। অভিশয় দীর্ঘ এবং বিচিত্র ঘটনাবছল। শুজববিন্দ সম্বন্ধে বে প্রায়, বে আশহরে কথা "প্রবাসী" সম্পাদক মহাশয় ১৩৫৮ বন্ধানের আবাত সংখ্যায় "নবসজ্যে"র উদ্ধৃত প্রবদ্ধ সইয়া উলেধ করিয়াছেন, তাহার উত্তর দিয়াই আমার প্রবদ্ধ শেষ করিব। শুজববিন্দের দীর্ঘ প্রবাজি উদ্ধৃত করার প্রয়োজন হুইত্তেও মুক্তি পাইব।

১৯২০ এটাবে আমি প্রীঅরবিন্দের নিকট প্রকাশ্রভাবে পিয়া উপস্থিত হই। তৎপূর্বে ১৯১৯ এটাবের ২৩শে ভিসেমর "রয়েল ক্লেমেনি" ঘোষিত হইয়ছিল। ইহার পর হইডেই অধিকাংশ রাজবন্দী মৃক্তিলাভ করেন। ১৯২০ এটাবেই বারীক্রকুমার, দ্ববিকেশ, উল্লাসকর প্রভৃতি মৃক্তি পাইয়া আন্দামান হইতে স্বদেশে প্রভাবর্তন করেন। বাংলার রাজনৈতিক পরিস্থিতিও ভিন্ন রূপ পরিগ্রহ করে। প্রীঅরবিন্দ এই সময় হইডেই তাহার উদ্দেশসিদ্ধির অমুকূল অবস্থালাভ করেন। আমাকেও আহ্বান দিয়া তিনি এই সময়ে স্পষ্ট করিয়াই লিখিয়াছিলেন—

"I have thought to delay your visit for a short time, until I saw my way more clearly on certain important matters, but I now believe that is not necessary and it will be as well for you to come as soon as it may be." অৰ্থাৎ, আমি ভাবিয়াছিলাম বে, কয়েকটি গুকুতর বিষয়ে আমার পথের স্পষ্টতা না দেখা পর্যন্ত তোমায় এখানে আসিতে বিলম্ব করিতে হইবে; কিন্তু এখন আমার বিশাস বে, আর তাহার প্রয়োজন নাই; তোমার ক্রিধামত বত কীয় হয় আসিতে পার।

তাঁহার পত্র পাইয়া আমি তাঁহার নিকট উপনীত হইলাম। এই সময়ে তাঁহার কিছু ভাবান্তর নজরে পড়িল। তিনি বধারীতি বিভলের বারান্দায় আসিয়া উপবেশন করেন। কিছু আমার বন্ধুরা কেহই আর সে ক্ষেত্রে উপন্থিত ছিলেন না, প্রীঅরবিন্দের সংস্পর্ণে আমাকেই বাকিতে হয়। ভারপর মীরা দেবী আসিয়া উপবেশন করেন। প্রীঅরবিন্দ উর্দ্ধের দিকে চাহিয়া নীরবে বসিয়া থাকেন। আমরা উভরেই নিমীলিত নেত্রে ধান করি। সন্ত্যার আলো অলিয়া উঠিলে মঁসিয়ে বিশার আসারা আসান গ্রহণ করেন। মঁসিয়ে বিশার এই সময়ে তাঁহার রচিত একধানি করাসী গ্রন্থ ইংরেজীতে অন্থবাদ করার ব্যাপারে প্রীঅরবিন্দের সহারতা লইতেন। ইহাই "আর্য্যু

পত্তিকায় "Eternal Wisdom" নামে ধারাবাহিক প্রকাশিত চইত।

এই সময়ে জীজরবিন্দকে টাইপ-রাইটার লইরা দীর্ষ
সময় কার্য্যতৎপর দেখিয়ছিলাম। তাঁহার শতীর অধিকজর
কশ হইয়ছিল। মীরা দেবীর উৎকর্চার সীমা ছিল না।
তিনি আমাদের একদিন স্পষ্ট করিয়াই বলিলেন, "বে গকর
ছ্য জীজনবিন্দ পান করেন, সেই গাঙীটির নিশ্চয়ই কয়রোগ হইয়াছে। ঐ গকর ছ্য়পান তাঁহাকে বদ্ধ করিতে
হইবে।"

এই সময় হইতেই জীমরবিন্দের স্বাস্থ্যের দায়িত মীরা দেবীই গ্রহণ করিয়াছিলেন। আমরা সকলেই ইহাতে প্রীতি অমূভব করিলাম। তিনি প্রতিদিন প্রাভ:কালে শাসিয়া শ্রীশববিন্দের মধ্যাহ্ন-ডোজনের ব্যবস্থা করিয়া বাইতেন। ইহার পর্বের আমি দেখিয়াতি আমার বন্ধরা মধ্যাহ্ন-ভোজন শেষ করিয়া চলিয়া বাওয়ার পর, শ্রীপর্বিশ কক্ষ-মাৰ'য় আন সাবিয়া দেওয়ালে টালান একটা আয়নায় ভাষা চিক্রণীর সাহাব্যে কেশ আঁচডাইয়া লইভেন। ভারপর ভিনি ভোজন-পাত্রের সম্মুধে বসিষ্টেন। স্পামি বসিয়া বিদ্যা মাছি ভাডাইতাম। ঐত্যাবনিদ করেক প্রাণ ভার গ্ৰহণ কবিয়াই উঠিয়া পড়িতেন। আমি নিৰ্মাক হট্যা তাঁচার সভে সভে উপরে গিয়া উঠিভাম। মীরা দেবীর ভদাবধান-ভার গ্রহণের পর হইতে তাঁহার প্রাভরাশ. यशास्ट्राक्त. चनदार ७ निम्हाक्त्व चनावचा रहेन। শ্রীব্যবিন্দ আত্মভোলা শিবের মত, নিক্ষের স্থাপের দিকে কোন দৃষ্টিই তাঁহার থাকিত না। মীরা দেবীর যতে প্রীপর-विष्मत नि कितिन।

এই সময়ে প্রতি রবিবার সন্ধান্ধালে আমরা মঁসিরে
বিশাবের বাড়ী বাইয়া রাজি-ভোলন সমাপ্ত করিতাম।
শ্রীঅববিন্দের প্রতি প্রভাষ ও ভক্তিতে মীরা দেবীর অভর
তথন এমনই ভবিয়া উঠিতেছিল বে, মঁসিয়ে বিশার ভাহা
লক্ষ্য করিয়া অভিভূতের ন্যায় আমানের কাছে বলিডে
বাধ্য হইয়াছিলেন, "আমি ক্রমেই মীরার মন হইতে বাহির
হইয়া বাইতেছি। মীরার সেই শূন্য স্থান পূর্ণ করিতেছেন
শ্রীঅরবিন্দ।"

এক দিন অপরাত্নে আমরা তিন জনেই ধ্যানমগ্ন। ধ্যান-শেবে মীরা দেবী ও আমি ধ্যানের বিষর আলোচনা করি-লাম। আমাদের উভরের কথা প্রানর মূপে শ্রীমর্বিন্দ

भीवा दावी विलालन श्रीवादित्यव ভনিছে লাগিলেন। অন্তর্নোকের অপার্থির ছপ্তের কথা। জাহার অসাধারণ দুৰ্শনেৰ কথা আমি বিশ্বিত চুটুৱা শুনিলাম। আমাৰ ধান ভাগ্ৰত শ্ৰীমববিদ্দকে লট্ট্যা। জাঁচার বভতপ্রভাগ্রাই ও জ্যোভিশ্বর মর্কি আমার চিত্তে ভাগিরা উঠিরাছিল। আমি যালাম মীরার অভীন্তিয় দর্শনের কথা শুনিয়া বর্গণৎ পুলকে ও বিশ্বরে অভিভঙ চুইলাম। ত্রীঅরবিন্দ আমাদের এইরপ খ্যানের শেবে প্রফুল মুখে বলিলেন, "মডি ৷ তুমি, আমি"---ভারপর চল্প-প্রসারণ করিয়া মীরা দেবীকে দেখাইয়া বলিলেন, "আর এই নারী আমরা তিন জনে সভা।" তার-পর अवश्वविक माञ्चद ভবিষাৎ নির্দেশকাল বলিলেন. "এই তিন কনেই আমবা ভগতের পরিবর্ত্তন আনিব।" সেদিন আমি মীরা দেবীকে নুজন চক্ষে দেখিলাম। ডিনিও रवन चार्याय वक चानन कविया महेरानन । विक এक प्रिरंगर কথাৰ সৰ বেন পোলযাল হট্যা পেল। সেদিন আমার এক বছও উপস্থিত ছিলেন। মীরা দেবী ঞ্রীবরবিন্দের মুখের দিকে চাহিয়া, পরে আমার প্রতি দৃষ্টপাত ৰবিৱা বলিলেন, "আমার সচিত আপনি কি সম্বন্ধ অভ্ৰত্তৰ কৰেন ?" আমি হাসিয়াই বলিলাম-"আপনাৰ সহিত আমার সহত ভরীতের। আমরা উভরেই প্রীঅর-विरमय निकृष्ठ भीकिए।" जिनि छेक शक्त कविशा मह কর্তে বলিলেন—"না। না। I like to be Mother."

আমার মাথার যেন বজ্ঞাঘাত পড়িল! আমি কি ভাবে মীরা দেবীকে মাতৃত্বে বরণ করিয়া লইব, ব্বিতে পারিলাম না। আমি ভন্ত-সহজিরার সাধনার আভাশক্তি মহামারার কিছু পরিচর পাইরাছিলাম। তাহা ব্যতীত প্রজ্বারিক্বের ধর্মপত্নী রূণালিনী দেবীকে আমি ঘাভাবিক শুরুশক্তি ঘরণেই অধ্যাত্ম-মাতৃত্বে বরণ করিয়া লইরা-ছিলাম। ১৯১৮ ঝীটাকে মাতা রূণালিনী পরলোকসমন করিলে, আমাদের ভাঁতশালার নাম রাখিরাছিলাম "রূণালিনী বন্ধ বরন কার্যালর।" মীরা দেবীর মাতৃত্বের লাবী আমার অভতিকর মনে হইল। এই দিন হইতেই মীরা দেবীর সহিত বে অভবক্ব সম্পর্ক স্থান্ত হইতেছিল, বিচিত্র ভলীতে ভাহার উপর আঘাত পড়িতে হুকু করিল। বিশেষতঃ এক রাত্রির ঘটনা এমন নিচুরভাবে প্রকাশ হইরা পড়িল, ভাহাতে আর যেন নিরামর হওরার কোনই আশা বহিল লা।

এত দিন সামাদের রাজির স্বধিবেশন-চক্র বিভালের বারান্দার হইড। স্বক্ষাৎ তাহা নির্ভলে স্মৃত্তীত হওরার, স্বামার চিন্ত বেদনার ভরিরা গেল। স্বাপন স্বভারের স্মৃত্যতি দিরা ছির ক্ষিরা লইলান—শ্রীস্বরিক্ষের

আরোছণ-ৰগ শেষ ছওয়ার অতঃপর জাঁচার অবভরণের পালাই ক্লক হইয়াছে এবং ভাহারই লক্ষণস্ত্রপ তিনি निरम्दन हकांक्ष्रीरत्व चारशंकत कविशाहत । प्रशंत গিয়া উপবেশন করিভেই, ঐবরবিন্দের মধে নানা অশরীরী আতার বাণী প্রকাশিত চইতে লাগিল। করেকজন অপরিচিত আতার কথা আমরা নীরবে শুনিবার পর ওনিলাম-বাজা বামমোহন বাবের আতা আবিভতি হইয়াছেন। জার মধে অনেক অধ্যাত্যবাগের কথা খামরা প্রবণ করিলাম। সে এক খপুর্বা খভিক্রতা। ইচার পর আসিলেন ঋষি বহিমচন্দ্র। এ অরবিন্দ আবার ফিরিরা আসিলেন আতাচেতনার। নানা প্রসঙ্গের অব-তারণা'কবিষা পরে ডিনি বলিলেন, "আমাছের সাংখ্যতিক ভিত্তির উপর নতন সমাজ, নতন অর্থনৈতিক ক্ষেত্র গড়িয়া তলিতে হইবে। এই কর্ম হইবে উপর হইতে।" ভারপর ভিনি মাথার উপর প্রায় মর্ছ হন্ত পরিমাণ হাত উঠাইয়া বলিলেন, "এই বিজ্ঞানভূষি হইতেই সকল কর্ম স্থসম্পন্ন इंडेरव।" পরিশেষে আমার দিকে চাহিয়া করুণার্দ্র চক্ষে ডিনি বলিডে আরম্ভ করিলেন "মডিলালের সাধন বেশ ক্ষমিয়া উঠিয়াছে, দে আমার কথা ববিবে: কিছ he puts a wall between him & me," weit, A will s তার মধ্যে একটি প্রাচীর বাধিয়া দিতেছে i" আমার মনে হইল, এই কথা ভাহার মুখ দিয়া বাহির হইলেও, ইহা বেন মীরা দেবীরই অমুভতির প্রতিধানি। কারণ প্রীঅরবিন্দ বে সভেয়র এখণা পাইয়াছিলেন, সেধানে মালাম মীরা ও আমার মধ্যে একটা সম্ভ স্থাপনের কথা চিল। আমি ভাচাকে মাতা বলিয়া স্বীকার স্বিতে পারি নাই বলিয়াই কি শ্রীষ্মরবিন্দের মুখে এইরূপ পরুষ বাক্য উচ্চাবিত হইল। चामि त्मरे गत्व किंद्रभ चिक्रं रहेशा भिष्मिहिनाम, छारा "জীবনস্থিনী" নামৰ প্ৰায়ে লিপিবছ আছে, ভাই সে কথার পুনক্ষেধ এখানে নিপ্রয়োজন।

শ্রীষ্মরবিন্দ ষ্ডাংপর এই প্রস্থ সইয়া ষ্মবশ্র কোনই আলোচনা করেন নাই। ইহার পরেও মানাম মীরার সহিতও আমার ক্ষরসম্ম বিল্পু হয় নাই। সেবার বিনায়কালে শ্রীষ্মরিন্দ বেমন আমার বুকে ধরিয়া আশীর্মান করিয়াছেন, আমি মীরা দেবীরও হত্ত ধরিয়া ভারীত্বের ক্ষেহ-রলারনে নিজেকে ষ্ডিবিক্ত করিয়াই সেধান হইতে ক্ষিরিয়াছি। মঁসিরে রিশার আমানের এই :বিনায়কালীন দৃশ্র দেখিয়া বিশ্বর বোধ করিয়াছিলেন। তাঁহার মুখে-চোধে এই আভাদই কেন দেখা নিয়াছিল।

মঁশিরে রিশার ১৯২০ ঝীটাব্দের ভিসেমর মাসের গোড়াডেই চন্দ্রনগরে আমার ভবনে আসিরা উপস্থিত হন। তথন তাঁর মুখেই মাদাম মীরার সহিত তাঁর চির-বিচ্ছেদ হইয়াছে, তানিলাম। তাঁহার কথার বুঝিলাম— মাদাম মীরা একণে শ্রীষ্মরবিজ্যের নিকটই বাস করেন।

मॅं निरंत्र दिनांदवत मर्चनीका हुत कवाद वरवहे छहे। ক্রিলাম। আমার গৃহদেবীও অতি সভর্কভার সহিত में जित्य विभारतय हिन्दाक्रण-निवादान्य श्रीता कविराजन। मानाम भीता ১৯১० औद्देश्य इन्टेल्ड कि कार्य अस्तरलाटक এক দিবাপুরুষের সংস্পর্শে আসিয়াছিলেন, বাঁচাকে ডিনি সেই কিশোর বয়সেই খত:ই "কৃষ্ণ" নামে অভিচিত করিছে ভালবাসিতেন এবং পরে ঘটনাচক্রে তাঁর স্বামীর সচিত কি ভাবে পণ্ডিচারীতে শ্রীম্বরবিন্দের সাক্ষাৎকার इष ७ ১৯२ • ब्रीहोट्स खीचत्रिमाटक डाँहात प्रश्नाहे "क्रक" ৰলিয়াই চিনিতে পারেন এই সকল কথা বিশদভাবে লিখিল পশ্চিচারী চইতে আসিবার সময়ে আমার হাতে একটি নিবছ দিয়াছিলেন। আমি তৎকালে মীবা দেবীর ছবির সহিত "প্রবর্ত্তকে" ভাহা প্রকাশ করি। ঐ ছবি ও लिया चामात शहर में निरम विभाव हठाए ! लिथिए शाहेश একেবাবে ক্ষিপ্ত হইয়া উটিলেন। আমার মৃষ্ট্যাবাভ কবিয়া সেই যে বাহির হইলেন, আর ফিরিলেন না। ওনিয়াছি ভিনি চন্দননগর হইতে শান্ধিনিকেতন হইয়া সবর্ষতীতে কিছদিন ছিলেন, ভারপর প্যারিস বাজা করেন।

পণ্ডিচারী হইতে শ্রীষ্মববিন্দ পরে তাঁহার সাদর্শের মর্মবাণী লিখিয়া সামায় উদ্বুদ্ধ করিভেছিলেন। একটি পরে ভিনি লিখিলেন:

"Our first object shall be to declare this ideal, insist on the spiritual change as the first necessary and group together all who accept it and are ready to strive sincerely to fulfil it. Our second shall be to build up not only an individual but a communal life on this principle"

শ্বাৎ, আমাদের প্রথম কর্ম হইবে এই আদর্শের ঘোষণা করা, অধ্যাত্ম পরিবর্তনের উপরে লোর দিতে হইবে সর্কাগ্রে। এবং বাহারা অকপটে ইহা স্বীকার করিবে ও ইহা দিছ করার জন্ত প্রস্তুত হইবে, ভাহাদের একত্র করিতে হইবে। আমাদের বিভীয় কর্ম—এই নীতির উপর ওপু ব্যক্তিকীয়ন পঞ্জিয়া ভোলা নয়, পরস্ক একটা সক্ষ্মীয়নও পঞ্জিয়া ভলিতে হইবে।

চন্দননগর হইতে আমাদের প্রকাশিত Standardbearer পত্রিকার প্রথম সংখ্যার তিনি বে আহর্ণের কথা চমৎকার বৃক্তি ও অন্তপ্রেরণাপূর্ণ ভাষার ঘোষণা করিলেন ভাহাত্তেও এই আশার বাণীই ফুটিরা উঠিল। ইহারই শেষাংশে ছিল:

"It is with confident trust in the spirit that inspires

us that we take our place among the standard-bearers of the new humanity that is struggling to be born amidst the chaos of a world in dissolution and of the future India, the greater India of the re-birth that is to rejuvenate the mighty outworn body of the ancient Mother."

শর্থাৎ, বে ভাবশক্তি শামাদের উব্দুদ্ধ করে, ভাহারই
উপর স্থল্য প্রভাগ স্থাপন করিয়া, শামরা সেই নৃতন মানব
লাভির পভাকাবাহীদের মধ্যে স্থান গ্রহণ করিভেছি, বে
লাভি একটা বিলীয়মান লগভের প্রলম্ন-বেদনায় নবলক্ষেরই
ভপস্যা করিভেছে। আর সেই ভবিব্যভারত, বে বৃহত্তর
ভারতের নবজ্যে শামাদের এই প্রাচীন দেশমাভ্নার
ভাপদেহ নবমূর্দ্ধি ধারণ করিবে, ভাহারও প্রবর্ত্তকদের মধ্যে
শামাদের স্থান হইবে।

এই সঙ্ঘ-স্কৃষ্টির প্রেরণাটিকেই চন্দননগরে রূপায়িত করিছে গেলে, তিনি উৎসাহ দিয়াই আমায় আবার লিখিলেন:

"The Samgha at Chandernagore is a thing that has grown up with my power behind and you at the centre and it has assumed a body and temperament, which is the result of this organisation."

শর্বাৎ, চন্দননগরে আমার শক্তিকে আশ্রম করিয়া ও তোমাকে কেন্দ্র করিয়া একটি সঙ্গ গড়িয়া উঠিয়াছে— এইরূপ সংগঠনের ফলে উহার একটি আকৃতি ও প্রকৃতিও ফুটিয়া উঠিয়াছে।

বারীপ্রকুমারের কর্ম-প্রচেটা ও দেশের মন্তান্ত কর্ম-ধারার সহিত তাহার পার্বক্য বিশ্লেবণ করিয়া ডিনি স্পট করিয়াই লিখিলেন:

"Our whole principle is different and you have to insist on our principle in all that you say or do. Moreover, you have got a clear form for your work in association and that form as well as the spirit you must maintain, any loosening of it or compromise would mean confusion and an impairing of the force that is working in your Samgha."

অর্থাৎ, আমাদের মূল তত্ত্ব জন্য হইতে পৃথক। তৃষি
বাহা বলিবে ও করিবে, তাহা এই মূল তত্ত্বর উপর জ্যার
দিয়াই তোমাকে করিতে হইবে। অধিকত্ত তৃমি ইহার
জন্য সক্তর্বল বে জক্ত বিপ্রহ পাইয়াছ, সেই সংস্থা ও এই
তত্ত্ব বজার রাখিয়াই তোমার চলিতে হইবে। ইহা কোনরূপে বলি লিখিল হয় জখবা কিছুর সহিত বলি আপোষ
করিতে হয়, গোলবোল বাধিবে ও বে শক্তি তোমার সক্তেব
লীলারিত হইতেছে তাহা কুল হইরা পড়িবে।

পত্ত পেবে এই ছুই ছত্ত আমার পুনরার উন্নাদের ন্যার পণ্ডিচারীর পথে ছুটাইল:

"Meanwhile your visit may help to get things into preparatory line both in the motor-power and in the outward determination." শর্বাৎ, ইতিবধ্যে তোমার উপস্থিতি শন্তবের বিচ্যুৎ-শ্বন্ধ ও বহিমুখী সভন্ন নিরপণের সক্ষ ব্যাপারকে পরিণতির নিকে শানিতেই সহায়তা করিতে পারে।

এবার তাঁর পত্তে আমার সন্ত্রীক পণ্ডিচারী গমনের অন্ধ্যোদন ও দীর্ঘ দিন তথার থাকার নির্দেশ তিনি দিয়া-ছিলেন। আমি কালবিলম্ব না করিয়া তাঁর কথার অন্ধ্যরণ করিলাম ও ১৯২১ সনের জুন মাসে উভরে পণ্ডিচারীতে গিয়া পৌছিলাম।

প্রভাতে শ্রীষ্ণরবিদ্ধকে দর্শন করিতে গেলে স্থামার সঙ্গে স্থামার পদ্মীও তাঁহার চরণে ভূমিষ্ঠ হইয়া প্রণতা হইলেন। প্রণাম করিতে তিনি একপ্রকার ধ্যানস্থা হইয়াই পড়িলেন ও ভদবস্থার শ্রীষ্ণরবিদ্ধও দীর্ঘকণ মুদিত নয়নে ভাহার মাধার হাত রাধিয়া বসিয়া বহিলেন। ধ্যানভক্ষে শ্রীষ্ণরবিদ্ধের চরণধূলি লইয়া তিনি উঠিয়া দাঁড়াইলে, স্থামার হাতে এক ভাড়া নোট দিয়া শ্রীষ্ণরবিদ্ধ স্থামাদের জন্য বে নৃতন বাড়ী লওয়া হইয়াছে, সেই বাড়ীতে গিয়া স্থামাদের উঠিতে বলিলেন।

মীরা দেবীর সন্ধান লইতে সিয়া অবপত হইলাম বে, তিনি উপরেই আছেন—বে ঘরধানিতে পত ছই বার পণ্ডিচারীতে আসিয়া আমি অবস্থান করিয়াছিলাম, দেধানেই তিনি এখন খাকেন। দার ঠেলিয়া আমি ভিতরে প্রবেশ করিলাম। বিশিত হইয়া দেখিলাম তিনি পূর্ববেশ পরিবর্তন করিয়াছেন। পরিধানে লালপেড়ে শাড়ী, চরণ-মুগল অলক্তরঞ্জিত—ভারতীয় মাতৃম্র্তির ন্যায়। আমি তাহাকে প্রণাম আনাইলাম। পশ্চাৎ ফিরিয়া সবিশ্বরে দেখিলাম—আমার পত্নী মীরা দেবীর দিকে এক দৃষ্টিতে চাহিয়া আছেন। আমি তাহাকে ইন্থিতে প্রণাম করিতে বলিলাম। তিনি তব্ও দ্বিয় দৃচ্পদে দাঁড়াইয়া রহিলেন, প্রণাম করিজেন না।

আমি ঘর হইতে বাহির হইলাম। মালাম মীরা ঘার
পর্যন্ত আসিরা ফিরিয়া পেলেন। আমি ন্তন বাসা-বাটাতে
উপস্থিত হইয়াই আমার পত্নীকে জিজাসা করিলাম, "তুমি
মীরা দেবীকে প্রণাম করিলে না কেন ?" বারবার প্রশ্ন
করিয়াও তাঁহার মূখ হইতে কোনই উত্তর পাইলাম না।
আমি পঞ্চল বংসর বরুসে দলম বর্ষীয়া বালিকা বধুকে
ঘরে আনিয়াহিলাম, ক্যার ক্যার আমার লাসন
অধিক্যাজার হইত। আমি জোধ ভরে আবার বলিলাম,
স্মালাম মীয়াকে প্রণাম না করিয়া:অভিশয় পর্হিত কর্ম
করিয়াছ।"

ভিনি উন্নত শিবে বলিলেন, "ভোষার মাথা শ্রীশর-বিন্দের চরণে নত হুইলে, আমিও চেডনাহারার ন্যার তাঁহার চরণতলে আছাড় খাইরা পড়িয়াছিলাম; কিছ এখানে ভোমার প্রণতি আমার তাল লাগে নাই।" আমি প্রুষকণ্ঠে "কেন? কেন?" বলিয়া তাঁহাকে ডং গনা কবিলাম। তিনি মাথার দিশুর দেখাইয়া বলিলেন, "আমি মঁদিরে রিশারের হুংখ দেখিয়াছি। বে নারী পতিত্যাগিনী, তাহার আমী সোভাগ্যহান হয়। ভাহার চরণে মাথা নত করিয়া এই পবিত্র দিশুর আমি মান করিতে পারিব না।"

তথনই বৃষিলাম— আমার পণ্ডিচারী আসা বার্ধ হইবে।
মীরা দেবীকে মা বলিতে হইলে, গৃহদেবীকে ছাড়িতে
হইবে। কিন্তু কেমন মনে হইল— ডিনি আমার
অপবিভাকা।

প্রতিদিন প্রভাতে সন্ত্রীক শ্রীকারবিন্দের নিকট গিয়া বিসি। তাঁর মূপে অনর্গল উপদেশবাণী প্রবণ করি। আমার পত্নী ধরিয়া বিগলেন, আমাদের গৃহে শ্রীঅরবিন্দকে একদিন নিমন্ত্রণে বাইতে হইবে। তিনি নিজেই বলিলেন, চন্দননগরে অবস্থানকালে অতি সম্বর্গণে আপনার আহাবের ব্যবস্থ। করেছি। আনু আপনাকে পরিভোষসহকারে ভোজন করাবার ইচ্ছা হয়েছে।"

শ্রীষ্মরবিন্দ কিছুক্ষণ চিস্তা করিয়া বলিলেন, "হবে, হবে, ডোমার ইচ্ছা সফল হবে।"

আমার জী বলিলেন, "কবে হবে ?" শুষরবিন্দ বলিলেন, "কালই।"

পরদিন আসিল। পর-পর কয়েকদিন চলিয়া পেলেও শ্রীমরবিন্দের বাওয়া ঘটিল না। আমার পদ্মী নিরভিশয় ক্লা হইলেন। বোড়শোপচারে শ্রীমরবিন্দের প্রাা দিবার প্রেরণা তাঁহার ব্যর্থ হইল। তিনি ওত্ত্বও আশা হাড়িলেন না। কথায়-কথায় একদিন তিনি আবার শ্রীমরবিন্দকে বলিলেন, "আপনি অন্যত্র পিয়া নিময়ণ-রক্ষার অসমর্থ, কিছু আমি বদি কিছু খাবার পাঠাই, আপনি খাইবেন ত ?"

শ্রীমরবিন্দ সহাত্তে বলিলেন, "নিক্ষরই, নিক্ষরই। নিমন্ত্রণ-রক্ষার আমার অনেক বাধা আছে, ধাবার পাঠাইও, ধাইব।"

অভ্যন্ত প্রীতি-সহকারে আমার স্ত্রী নানাবিধ থান্য প্রন্তত করিয়া পাঠাইলেন। কিছ তিনি বধন ভনিলেন বে, তাঁহার প্রদন্ত থান্যাদি দূরে নিক্ষিপ্ত হইরাছে এবং কি জন্য তাঁহার প্রদন্ত থান্যাদি থাইতে দেওয়া হয় নাই, ইহাও বধন বুবিলেন, তথন তাঁহার চক্ষে অশ্র-সাগর উথলিয়া উঠিল। তাঁহার ব্যথার ভার বহিরা পণ্ডিচারীতে বাস করিতে আমিও বেন অসমর্থ হইরা পড়িলাম। নানা উৎপাতে আমারও চিত্ত বিক্ষিপ্ত হইরা উঠিল। কিছ শ্ৰীপরবিন্দের প্রেমে ও জেহে অভিত্ত হইলা আমি তবুও দিনের পর দিন অভিবাহিত করিতে লাগিলাম।

ঠিক এই সময়ে চন্দ্ৰনগর হইকে ভার পাইলাম—
"Won't Kakima come, strong Sangha need."
মধ্যের কথাটি অস্পষ্ট। ভাবে বুরিলাম, প্রবর্ভক সভ্য
ভাষার প্রভাবর্ভন চায়। আমার পত্নীও বলিলেন, "আমি
ভোমার বাধা হইয়া এথানে থাকিতে চাহি না। আমার
পাঠাইয়া রাও, বোগ-সিত্ত হইলে ভূমি চন্দ্রনগরে ফিরিও।"

শ্ৰীন্দৰ্যক এই কথা কানাইলাম, তিনি আমার গত্নীর দিকে চাহিয়া বলিলেন, "এই ব্যক্তিটির বোপের সিদ্ধি তুমি ভিন্ন কনো আনিবে না, ভোমার বাওয়া বন্ধ থাকিবে।"

ইহার উপর আর কথা নাই। নানা নির্বাতন সহিয়া আমাদের দিন অভিবাহিত হইতে লাগিল। তারপর ঐ আগতে শ্রীমান অঞ্চনচক্র আবার তারে জানাইল, "সমুধে ১৫ই আগত, শীদ্র আপনি আহ্বন।" টেলিগ্রামের শেষ কথা—"Our victory is here."—আমাদের সাফল্য এইখানেই।

শী পরবিদ্দকে এই তার দেখাইলাম। তিনি কোন দিন কাহারও ইচ্ছার বিক্লছে কর্ম করিতেন না; কিছু এই টেলিগ্রামের উত্তর দিতে তিনি নিক্লেই আদেশ করিলেন, "Write a big 'No' there."— ভ্যানে লিখে দাও একটা প্রাক্তাও 'না'।

ভার প্রণিন আবার অরুণ ভার করিল—"কিরিয়া আহ্ন, আনুখা eternal separation অর্থাৎ চিরবিচ্ছের। এই "separation" শব্দের অর্থ বিদ সভ্য হইতে বিদায় মনে হইত, আমি ক্রক্ষেপ করিতাম না। এমন ঘটনা আমার জীবনে বহু ঘটিয়াছে। কিছু আমি এই শব্দের অর্থ মৃত্যুই ব্রিলাম। আমি ভিন দিন একাপ্রচিত্তে ভাবিলাম। ভারণর কে বেন আমায় জোর করিয়াই লিখাইয়া লইল—"অবো! আমি চলিলাম, আজ হইতে আপনার সংক্রেইল আমার eternal separation।

নিচুব বিধাতা এমন করিয়াই পণ্ডিচারীর সহিত আমার বিচ্ছেল আনিয়া দিল। আমার জী শুনিয়া বলিলেন, "তুমি ফিবে চল, অফণের টেলিগ্রাম উপলক্ষ্য। আমি এনে অবধি দেখছি, অরবিন্দ ভোমার আপনজন, কিন্তু ভোমার সাধনার স্থান এ নয়।"

আমি একপ্রকার উন্নাদের ন্যায় ১০ই আগষ্ট ভারিবের প্রভাতে প্রীজনবিজ্ঞের সহিত সাকাৎ করিতে গেলাম। শ্রীজনবিজ্ঞ করিতে খবে "আর প্রযোজন নাই," এই কথা বলিয়াই নিজ প্রত্থেবেশ করিবেন।

আমাৰ পাৰেৰ জনা হইতে বেন পুৰিবী অপকত হইতে

চাহিল। আমি টলিছে টলিছে বাসার কিরিলাম। জাত্রর বারী আমার মর্ম বিদ্ধ ক্রিয়াছিল—"লার প্রয়োজন নাই!" কিন্তু উত্তরের মধ্যে যে অচ্চেল্য সহস্ক ভাহা কি সভাই ছিল্ল হইল ? সারাদিন চিন্তা করিলাম। আমার মনে হইল প্রথমবিন্দের সহিত আমার সহস্ক মর্ভ্যবাসীর চল্লে হয়তো চিন্তু-বিচ্ছেল হইবে, কিন্তু ভাহার সহিত আমার অন্ধ্যমন্ত্র অন্ধন্ন-বোগ কোন দিন ছিল্ল হইবে না। সে সাধ্য আমারও নাই; প্রথমবিন্দেরও নাই। আমি এই দিনই সন্ধার সমরে আবার প্রথমবিন্দের নিকট সিন্না উপত্রিত হইলাম। তিনি তাড়াভাড়ি ঘর হইতে বাহির হইনা আমার সমূধে দাড়াইলেন। আমি গন্ধীর কঠে বিলাম, "চলুন, আশনার ম্বের চলুন।"

তিনি স্থির কঠে বলিলেন, "না, না,।"
আমি তব্ও জিল ধরিটা বলিলাম, "আফ্ন, আপনার
ঘরে।" এতক্ষণ তাঁহার ওল শাশ বেন অস্তরের ক্লোভে ও
অভিমানে কম্পিত হইডেছিল। অক্সাৎ আমার মুখের
দিকে চাহিয়া বেন ভিনি প্রসর হইলেন—শিবের নার শাস্ক

ষ্ঠি পরিগ্রহ করিলেন।

তিনি শ্বাগৃহে পুন: প্রবেশ করিলেন। আমিও তাঁহার অফ্সরণ করিয়া তাঁহার গৃহে প্রবেশ করিলাম। তাঁর চরণে প্রণত হইয়া উঠিয়া দাড়াইলাম। ভবিতব্য ক্ষ্-বীণায় বুঝি হুর বাধিয়াছিল।

আমি কম্পিডকঠে বলিলাম—বিদায়, আৰু আমি চিব-বিদায় লইডেছি।

চারি চক্ষে অয়ত নিঅ'র ঝবিল। আমিও কাদিলাম।
জীঅরবিন্দের চকুও সজল হইয়া উঠিল। তিনি আমার
আবার বৃকে তুলিয়া বলিলেন—"একনিষ্ঠ হও। ভোমার
মধ্যে সতা ও আলো আবিড'ত হোক।"

শ্রীক্ষরবিন্দের মুখের এই শেষ ক্ষাণীর্কাণী মাধার বহিরাই সেনিন পণ্ডিচারী হইতে ফিরিয়াছি। ক্ষাক্ত সেই স্বতি বুকে রাধিয়াই কঠোর কর্মপ্রবাহে কাঁপুনিয়া চলিয়াছি। তারণর ১৯৫০ শ্রীটান্দের হই ডিসেবর তাঁহার ইহধাম পরিত্যাগের কথা বুকে বক্ষের বতই বিশ্ব হইয়াছে। ক্ষামার কাহিনীর শেষ এইথানেই করিতে হইবে।

একণে "প্রবাসী" সম্পাদকের প্রখ্যোত্তরে আমার কি বলিবার আছে সেইটুকুই অতি সংক্রেণ বলিয়া আমার বক্তর্যু সমাপন করিব।

্ৰতাৰতের অধ্যান্তেতিহাতে সাধনায় নাবীবিপ্ৰহের
সূচাত (আছে। অধ্যান্ত-সাধনায় উৎসর্গের দেবীসৃত্তি
প্রত্যেক নরনাবীর অধা পাইবাছেন—মাতৃত্বপে অধ্যান্ত

সংস্থা ও প্রতিষ্ঠানের পূজা ও অধিনেঞ্জীরণে কেই কেই বরনীরাও ইইরাছেন। অধ্যাত্মাস্থৃতির আগুনে কি নর, কি নারী, কাহারও পূর্বজীবনের স্থতি-সংখ্যার থাকে না, স্ব পূজিরা ছাই হইরা তাহাকে নবজীবনের আখার হান কার। 'এই দিব্যজীবনেরই কটিপাথরে সাধনার আখার নিরূপণ না করিলে, দিগ্লাভ জাতির জীবন সভ্যপ্রতিষ্ঠ হইরা বিধাতার নির্দিষ্ট লক্ষ্য সিদ্ধ করিতে সমর্থ চইবে না।

কিছ এইখানে ভার একটি জিনিসও বুরিবার ভাছে।
নরনারীর সহছে বে অমৃতধারা, তাহা ভারতের সাধনার
কোনদিন উপেকিত হর নাই। ভারতের গুরু চৈতন্য
বেখানে অধ্যাত্ম সন্ধানে সর্বহারা হইয়াই ছুটিয়াছে,
সেখানেও পারভার্য রক্ষার জন্তু সমাজের নিত্য বিধানকে
অভিক্রম করিলেও লুরে রাধিয়াছে, ভাহাকে অত্মীকার
করে নাই। বৃছ, চৈতন্ত, রামকৃষ্ণপ্রমুধ ভারতের প্রেট
জ্যোতিভত্তরপ মহাধর্মগুরুগণ প্রবল ধর্মাকর্বণে বা বিশেষ
প্ররোজনে ধর্মগত্তীর সহিত প্রাকৃত সল ত্যাপ করিলেও,
কোথাও অধ্যাত্ম সম্ভ বর্জন করেন নাই। ভাই পোশা,
বিষ্প্রিয়া, সারলামাণকে ভারতের সাধননির্চ নর-নারী বা
ভত্তৎ সাধনসোচীকুল কেহই বিস্কৃত হততে পারেন নাই—
সাধনার জন্যই গুরুশভিদ্ধণে ভাইালের আল পর্যন্ত পূলার
বোগ্য অর্চ্য দিরাই আসিতেছেন।

শ্রীকরবিন্দের ক্ষেত্রে এই ব্যতিক্রম স্কাবত্যই সামাদের স্বভারে প্রশ্ন স্থাই করে—স্বার প্রশ্নের ঠিক উত্তর না পাওরা পর্যান্ত ভারত্যের স্বভাল ইবান্ সাধন-প্রাণ হইতে সাপরা-সংশরের ছারাও মুছিবার নর। ভরী নিবেদিতার ন্যার 'একনিষ্ঠা মহানারীও মনে-প্রাণে স্বভরাত্মার ভারতের হবে দীক্ষিতা, স্ববসাহিতা ও উৎস্পীকৃতা হইরাও, ভারতীর দেহ বা রক্তধারার স্বভাব কি মর্ম দিয়া স্ক্রত্ব করিরাছিলেন, ভাহা বাহারা জানেন, তাহারাই সুবিবেন—ভারত্যের এই বিধার মর্ম্ম কি! শ্রীমতী মীরা দেবীর উৎস্প ও বোগ্যতার কথা স্বামি কোনদিন স্বীকার

করি নাই—তার অলোকিক প্রতিতা ও সাধনার বহিমা বোল আনা বীকার করিরাও আমি উলাভ কঠে এই কথাই বলিরা বাইৰ—শ্রীঅরবিন্দের অক্মহিমা বে তারত বীকার করিবে, সেই তারত মহাত্মা গাড়ীর ন্যার তাঁহার পুণ্যাহি ও তত্মকণা তারতের সপ্তসরিবরার জলে বিসর্জন দিরা, সপ্তসাগরকে তার্বে পরিণত করিরা বে গৌরব অভ্যত্ম করিবে অথবা পুশ্চন্দনচর্চ্চিত বোগিদেহ পদ্মাসনে বসাইষা ম্লোচ্চারণে ছলে বা জলে সমাহিত করার বে সনাতন ভারতীর বিধান, তাহারই অভ্যব্জনে বে ত্থাও সাছনা পাইব, তাহা মীরা দেবীর নির্দেশমত শ্রীঅরবিন্দের ন্যার মহাবোলীর দেহ কমিন-শরনে করবছ করিলে ভারত কথনও অভ্যত্ম করিবে না—করিতে পারে না।

শামি এইজনাই শার্ডকণ্ঠে আরও বলিব— প্রীশরবিদ্ধা লাতীয়তার ধবিরূপে, ভারত-প্রতিভার দিছ বাশীমৃত্তিরূপে চিরদিনই শামাদের ও প্রভ্যেক ভারতবাদীর পূজ্য ও শার্লমনীর বহিবেন—প্রীশরবিদ্দের ঈশরত ও নিরঞ্জনত ভার অতীক্রির ও অভিমানদ বে "বিন্দু-নাদ-কলাতীতং ব্যোমাতীতং নিরঞ্জনং" অপ্রাকৃত গুকুতার ও গুকুত্বরূপ, ভাহাও শামাদের নিত্য শীকার্য ও নিত্যারাধ্য হইবে। মীরা দেবীর উৎসর্গদিছ জীবনের অবদানও ভারতবাদী কৃতক্রভার সহিত বছদিন শারণ করিবে ও বহন করিবে, কিছু সার্য্যভারতের গুকুত্বভার প্রত্যানী কৃতক্রভার সহিত বছদিন শারণ করিবে ও বহন করিবে, ভাহাতে ভারতীর রজধারা ও ভারতীর সতীবিভৃতি শঙ্গে লেপন করিরাই আবিভূতা হইতে হইবে।

ভারতের সনাতন বৈশিষ্ট্য ও মৌলিক সংস্কৃতিকে বিদার দিয়া বা কণামাত্র অবজ্ঞা করিয়া বে অভিনব নীতির প্রবর্তন অথবা বিশ্বমিলনের চেটা ও আয়োজন, ভাহার পশ্চাতে বভ বড় শক্তিশালী মহাপুরুবেরই সমর্থন থাকুক, বৃদ্ধকে মাধার রাখিয়া ভাহার বোদ্ধবার ও সংহতির বিদারের ন্যারই, ভারতাজ্ঞার অখীকারেই কালপ্রোতে ভাসিরা বাইবে। মহাভারতের সংগঠনে ভাহা প্রধান ও কেন্দ্রীর উপাদানরূপে কথনও সার্থক সহার হইবে না।

# স্কুলে ছেলেদের স্বাস্থ্য

**এ**ছেমেন্দ্রনাথ পালিত

আৰি শিকক। পাঁচিশ বংগর হুইল ছুলে শিককতা করিতেতি লাত-আট বংগর পূর্বেও ছুলে একটা বিষয় লক্ষ্য করিতান, বৈশিতান হেলেয়া বৰ্ণন আইন প্রেণী হুইতে ব্যব প্রেণ্ডিতে উঠি-ছাত্রে কৰ্ণন ভাছায়া বেশ একটু ব্যক্ত হুইয়াতে। এবল আয় কেট বেশিতে পাই লা। এবল বেশি—হোলেয়া প্যক্ত বহঁ

লেইতে বেৰণ ছিল, ব্ৰব-বৰ্ণৰ শ্ৰেইতেও ট্ৰফ ভেৰনই বহি-বাহে; একটুও বাকে নাই। বছরে পড়ার বত বনির্ত বাহ্য-বান বেলে কুলে এপন আর একটও বেবিতে পাই না।

একে ত বেহের এইরণ অবস্থা—তাহার উপর প্রকাকেই আর নারা বংগরেই ন্যালেরিয়ার ভূপিতে কেবি। ভাহারত বেহে বক্ত নাই, বুবে প্রকৃত্বতা নাই, চোবে জীবনের জ্যোতি
নাই। এই নব ছেলের খাছ্যোরতির থক ভুলে তিন-চার
রক্তবের ব্যবহা আছে। পেটের ভাত জীব হুইতে না হুইতে
ভাষাবিগকে অবাত টিকিন বেওরা; প্রীয়ের বিপ্রহার ছোলে
বাঁচ করাইরাও ভাষাবিগকে ফ্রিল করান; কুটবল, ক্রিকেট বেলান; ভাষাবের রক্তহীন বেহে বংগরে হু'চারবার অভতঃ
কলেরা বলভের টকা বেওরা। বরে বলিরা বুবি—ইহাতে
বলবান ছেলেরও বাহাহানি ঘটতে পারে—হুলে বলিরা
বুবিতে পাই না।

ইবাৰ উপৰ হেলেবের পৃতকের বোকা ভাষাবের কেহের ওলনের অপেভাও বেলী। ভাষা হাজা বহরে ভিনবার পরীকা, হল স্পোচঁস্, ইণ্টার হুল স্পোচঁস্, লীগ, হজি—ভভ ভি, বরণ ভরিভেও পীজা বোব হর। সর্ব্বোপরি ভয়াবহ ব্যাপার—এই লব হেলের নৈভিক চরিজের অবোগভি। শহরের নিমেরাভলি এই অবোগভির পক্ত প্রবাদ সহারক হইভেছে। ক্লালে হেলেবের বব্যে আফ্রভাল বীভংস ব্যাপার বেবিভে পাওরা বার।

ভৰ্তুপক ইছাবিগকে পাস ভৱাইবে বা। তিপাট্ৰেণ্ট ইছাবের তুল ভূলিরা বিবে। ইছাবের কিছু আলে বার বা। ইছারা ভারিপরী বিব্যা নিবিবে বা। ইছারা চাব ভরিতে পারিবে বা। ইছারা কি ভার—ভারাও ইছারা বলিতে পারে বা। আমি শিক্ত, আমি ভানি ইছারা বাঘ্য চার। সকলেই বলিবেশ—ইছা-বিগকে বাঁচিয়া বাছিতে ছইবে।

ইহালিগকে ভাছারা তলি ভরিবা বারিতে চার ? ইহাবের উপর কেন এত ভূসুর ? ইহাবিগকে বাঁটরা বাইতে বলিবার ভাহার অবিভার ? নভানের ভূবা ভাহারে বুবিবেন ? নভান বাল্য চাহিলে কোন্ শিভারাতা ভাহাকে বাঁটরা বাইতে বলিবেন ? ভাতীর সরকারের অসংব্য বিভাগের কি প্ররোজন ? এই পন বিভাগের ভূর্মভারীর সংব্যা কেলের ছারসংব্যা অপেভাও বেনী । ভাহাবের বাব্যের বভ প্ররোজন । ভাহা-কের বসন-ভূববের আভ প্ররোজন ! কেলের ছারসের বে প্রবোজন নিটাইবে না । অবিভাকে সম্ভ বিভাগ ভূলিরা বিরা ভাহারা চাবে নারুব । সমূবে বর্ষা ।

ভূলের পরিবর্গক আহেন। প্রতি বংগর একবার করিবা ভূল পুরিবর্গন করিতে আনেন। বাধীনতা-লাভের পর ভারাও না আলিলে চলে বেখিভেরি। তাঁহারা আলিরা ভূলের বিলাব-পর বেখন। ক্লালে নিরা—নিকক পভাইতে থাকিলে হার-নিগকে কিলালা করিতে বলেন, হারেরা পভা বলিতে থাকিলে নিকককে পভাইতে বলেন। ভূল করিকীর বেবরগণ বরে বলিরা গংবার রাখেন—কোন্ শিকক করি ইউপ্রনি করিতে-ত্বেন, কোন্ শিককের করে ভূলে পৌহিতে হ'বিনিট বিলয় বইতেহে। প্রধান শিক্ত ভলারক করেন—শিক্তেরা বাঁচাইরা আহেন জিলা। কোন্ হেলে কডটুর হব বাইতে পাইতেহে। কোন্ হেলে নাম চারিট ভাত বাইরা হুলে আ্নিতে পাইতেহে না, কোন্ হেলে চারিট ভাত পাইতেহে ত একটু ডাল পাইতেহে না, কোন্ হেলে একট করিরা হির হাক প্যাক্ত হাক লাট বৈ হুইট করিরা নাই। এ লব লংবাদ কাহাকেও লইতে বেশি নাই। হেলেবের শীর্ণ নলিব বুবের দিকে চাহিরা ভাহারও ব্রথতলে বেদনার আভাল কুটরা উটিল বেশিলার না। আহার পুর আহে, কভা আহে। আরি ভাহারের বাওরা-পরার কথা আগে ভাবি। আরি বলি—আলে ভাহারা বাঁচিরা বাহুক, লেবাপভা পরে হুইবে। এই লব হেলে আনে চারিট বাইরা-লাইরা বাঁচিরা বাহুক, লেবাপভা ভাহারের পরে হুইবে—ইহা বলিবার কি আফ বল্লেবেল কেরু নাই ?

চার-পাঁচ বংসর পূর্বে একবার এক সরকারী অবাধ শাশ্ৰৰে গিৱাহিলাৰ। দেখানে খনাৰ ছেলেবেৰেৰে চাৰি राजा बाबारवव बाबचा क्षिया जनाक इरेवादिलान। इन. वि. ৰাহ, বাংদ, ভিৰ, ভৱিভয়ভাষী, ভাভ, ভাল, রুট প্রচুর। সকলেরই গোলগাল চেতারা। কাতারও হাত বা শিরা বাছির হুইরা নাই। আবার আগেকার গ্রুক্সী হু'একজন লেণানে চাক্তি ক্তিভেবে বেশিলাব। উাহাবেরও গাইরা-হাইরা সুপুঠ চেছার। ছইরা গিরাছে। লেখানে ছেলেনেরেরের (भागाफ-भविष्यर बदला ना इरेटकरे (शामात नाड़ी नात। দেবাৰে ডাভার আহে, বেৰে ডাভার আহে, ডিস্পেকনারি আহে। দেবাৰে উভি আহে, উভি দিৱা ভাপত খুবাৰ হয়। আৰও কত কি আছে দেখাৰে। আনাবের পৰ ছলে বাই (क्व ? जनाव (कामारवारवारवा क्व नाव कविनाव निविध अक **पर्व (क) महकाद भारेदा बारक्य । और पर्व देशहाराय निक्**षेत्र হুইতে আবার হব আবাবের ছুলের হেলেরা তাঁহাবের নভাব। আমাৰের ছলের ছেলেয়া একবেলা শেষ্ট ভরিয়া বাইতে পার ৰা। বেছ গছ প্যাণ্টেৰ ভাপছেৰ ছত ভাৰাহিগছে বালি পেটে, ভৰ বুৰে কন্ট্ৰোল আশিলে চুটতে হয়। কন্ট্ৰোল অফিলায় ववकारेवा काकारेवा (स्व ।

বাভ ইহাবের চাই। প্রচুর বাভ চাই। বাভে ইহাবিগকে চুবাইরা রাবিতে হবৈ। তেলে ইহাবেত বাইবে;
ইালের বভ বাইবে, কেলাইবে, হভাইবে—তবে ভাহারা
হহ-সবল বাকিবে। আনার বারণা ছিল হর্মাল হেলেকে
অবিভ বাভ বিলে তাঁহার কভি করা হর। এবন লে বারণা
সিরাহে। আনার বলবান হেলেও বারা সিরাহে। আবার
এবন হেলে—বাহার প্রতি হুহুর্তে বৃত্যুত্তর করিবাহি লেও
বৌক করিরা বাইরা-হাইরা, এবন কি রোগে কুপব্য করিবাও
হহ-সবল হইরা বাঁচিরা বহিরাহে। হেলের কুবা নাই অব্যঃ
ভাহাকে কোর করিরা বাঙ্রাইলেই ভাহার কভি করা হর।

হুৰ্মল শিভাৰতিছ হুৰ্মল হৈলেও অধিক থাত পাইলে হয়সন্ত হয়। বহু বিদ হুইতেই বাঙালীয় বাত নাই। প্ৰস্কৃত্তন্ত্ব
আলীবন 'বাত চাই' বাত চাই' বলিয়া চীংভায় ভৱিয়া
গিয়াহেল। আজ খাঙালী বাত্তেই হুৰ্মল। বাঙালীয়
হেলেয়াও হুৰ্মল। হুৰ্মল শিভাৰাভায় হুৰ্মল হেলেয়েয়ে
বলিয়া আজও বাহাছা চুণ ভৱিয়া বলিয়া বাকিতে চান, আমি
বলি টাহাছাই স্বচেয়ে বেশী হুৰ্মীতিপলাহন। তাহাছা
ভাতিয় লক্ষ্ণ। ভোগায় ভিলেয় বিদ্দে চুটি বিদ্যা, জি
কেবিছা তাহাছা বাঙালীয় ভি তবিছং ক্ষমা ভ্যৱতেহন ?
আলীবন বাঙালীয় নহমে সহমে হেলেয় বাবে বাভিয়া, আজিও
বাঙালীয় নহমে সহমে হেলেয় বাবে বাভিয়া, আজিও
বাঙালীয় নহমে বহুলেয়েয়েয়ে। বিভাত বহিন শিভানাভাও তাহাছের হেলেয়েয়েকের শেষ্ট ভৱিয়া বাঙালীয়েতহেন,
আলীবন বেবিছাছি। আজ বাঙালীয় হেলেয়েরেরে বাভ
নাই। বাঙালী হুবিয়াছে।

বাঙালীর বাভ লাই—ইহা লত্য। অবিক বাভ উংশর ভারতে হুইবে—ইহাও লত্য। কিছ বাঙালীর হেলেবেরেরের প্রুর বাভ বিবার নত বাভ বাংলারেশে নাই—ইহা লত্য নর। বাংলার হেলেবেরেরের রুবের প্রাস ভারারা ভাতিরা বাইতেহে? ভুলের হেলেবেরেরাই বিব না বাইতে পাইরা রুরিল তবে শিক্ষা-লংকারের কি প্ররোজন ? ভিলের বতন বাভাইরা, শিক্ষারের, শিক্ষারাই, শিক্ষারিতার ? হেলেবের বেতন বাভাইরা, শিক্ষারের বেতন বাভি টাকা, নার্গ দি ভাতা পাচ টাকার ব্যবহা করিরা, গরকারী ভুল; বেসরকারী ভুলের প্রতেম রাবিরা, প্রবান শিক্ষ প্রবং সহকারী শিক্ষাবের রবের বিভেল স্কেইপ্রেক, আগনা হুইতে বহু ভুল উঠিরা বাইবার— ঘটিত ভাতারের বাজি বেলিলেই কিছু আভিগঠন হুইল মা। শিক্ষাবের ও হালহারীবের প্রতি সরকারের বরব আনরা ক্ষাক্ষী ভূবিরা লইবারি।

শিক্ষকরের বাল্যের কথা ভাবিতে গিরা সকলেই অনেক
ক্টুক্তি করিলের—গুনিলার। শিক্ষকরে পেট ভরিরাহে।
এবন শিক্ষকরিগতে শিক্ষা বিবার পালা চলিরাহে। ইরাজেও
শিক্ষকের কৃষ্ণত । শিক্ষকরিকে শিক্ষা বিতে সকলেই চার।
নিরক্ষর ব্যক্তিও নিক্ষকে ক্ষর আনী বনে করে না। ইরা
ভাতাবিক। একটা বাক্ষসার নিক্ষা ইইতেও শিক্ষকরা
শিক্ষালাভ করিতে প্রবাধ । সবই চলিতে বাকুক। ক্ষিত্

অবিলয়ে যে সকলেও—ছুলের ছেলেবের উপর বরবের প্রয়োজন, পূজকভার প্রতি শিক্ষারাভার বেলপ বরব বাকে। ছুলের ছাজহালীবের উপর বাহাবের বরব নাই উাহাবের শিক্ষা বিভাগে বাজা উচিত মর। শিক্ষা-মাতা প্রভৃতি পূজকভার মুব বেশিকা ভাতাবের শরীবের গ্লামি বুবেন। শিক্ষার গলম বুবেন না।

া বাহারা বলেন, চাকরী না পাইরা লোকে পিক্কতা এইব করে, তাঁহার। তুল বলেব। চাক্ষী বা পাইরা বাঁহারা শিক্তভা এতৰ কৰেৰ ভাতাতা শিক্ষাবিভাগে বেশী বিৰ वाकिएक मारवय यो । अम परजर मिककका करिएक बाज्य অপদাৰ্থ হুইয়া বার বাহারা বলেন, ভাহারা শিক্ষবের লারিছের কথা ব্রেদ দা। শিক্ততা করা দহত দর। আখীর-বন্ধৰ বন্ধৰাত্ৰ ভাগে ভবিতে হুইবে: চিৱলারিত্রা বরুব ক্রিভে হইবে: অপ্যান, লাখনা অলের আভর্ব হইবে: অবজা সর্বাল চারিলিকে উভত বহিবে: স্বাভের কোনও অংশে ভাছাবের এডটুকু স্থান বছিবে না: বাজ্যের ভোনও কাৰ্ব্যে উচ্চাবের বোগাভা খীকুত হইবে মা: আজীবন ভাষ-সমুক্রের কুলে বলিয়া উাহাধিগকে উপলবত কুড়াইতে হুইবে . সেকি সহক কথা। অশিক্ষক টেনিং দিয়া প্ৰশিক্ষ কয়। बाद मा, यह निक्करक खरमद विद्याध निकाद वेदकि हद मा। শিকার উন্নতি কিলে হব শিক্ষরের ভাবেন। আতীবন শিশুর ৰৰো বাভিয়া বাভাছিপতে শিল চইয়া ঘাইতে ভয় জাভায়া কাভিগঠন করিতে ভাষেত্র না ভ কালারা ভাষেত্র গ সে সব প্ৰশ্নই আৰু শিক্ষভিগের নিষ্ঠ বছ প্ৰশ্ন বহ। শিক্ষভিগের বাব্যাভাবের প্রশ্নও আৰু আর ভারাবের নিকট বড় প্রশ্ন মর। হাত্রহিপের তীব্দের প্রশ্নই আক ভাঁচাহের বিকট স্বচেরে বৰু প্ৰশ্ন। আভি বাঁচিয়া বাজিলে ভাতাকে সাববাৰ চইছে क्ट्रेंच ।

আৰি সরকাষী কুলের শিক্ষ নই। সরকাষী কুলের শিক্ষকেরা হবজ ইহার বিশরীত বলিবেন। সরকাষী কুলের নবই ট্রাক থাকিতে হইবে। সরকাষী কুলের হাজেরাও নাকি বড় লোকের হেলে। বড়লোক বাঙালীই বা আজ কে আছেব 
লাকেব 
প্রবাসই বা কোবার 
প্রবাসের হলের বার্তি সম্প্রবাসর হেলে। বাংলার নব্যবিভ সম্প্রবাসর হেলে। বাংলার নব্যবিভ সম্প্রবাসর হলের হেলেনেরেরাও বরিজে বলিবাকে—ইহার প্রতিকাষ হাই।



#### দেবানন্দ

#### শ্ৰীননীমাধব চৌধুরী

9

কেলের বেবার শেষ হইবার করেক্তিন আনে বেবানক হির করিবাহিল কেল হইকে বাহির হইবা লে রাজনগর বাইবে। আহার আবাল্য বন্ধু ইল্লের সঙ্গে লগ্মীর বিবাহ হওরাকে ভাহার বন্ধ আনন্দ হইবাহিল। সে ব্যাক্ল হইবাহিল ভাহাদের হই কনকে বেবিবার ক্ষা।

ৰাভা পাইবার হই দিন আগে পিভার পত্র আসিল। পত্তে ভিনি ভাহাকে গোলা ভাঁহার কর্ম্মানে চলিয়া আসিবার ক্ষ লিবিয়াছেন। অগভ্যা মনের ইচ্ছা চাপিয়া রাবিয়া ভাহাকে পিভার কর্মমান রঙনা চইতে চইল।

বেৰাৰক আলিয়া পৌছিল। তিন বাস সপ্ৰৰ কাৱাদণ্ডের আলামী কেল-প্ৰত্যাগত পুৱের গা হইতে জাবা ধুলিয়া লইয়া জীবানক অনেককণ চাহিয়া দেবিলেন। পিতার মুখের তাব কেবিয়া কেবাৰক বনে হাসিয়া বসিল—আমি কেলে তালই ছিলাম বাবা।

শীৰানৃত্য বলিলেন—চেহারা কেখে কেমন ছিলে কিছু
বুকতে পাবছি। এবানে ক্ষেক্দিন বিপ্রাম কর। ভার পর
উলকাভা নিরে কলেকে ভাই হবে। অনেক সময় নই হয়েছে।
ভার ক্ষেক্ মান পরে পরীকা, পরীকার করু তৈরি হতে
হবে।

দেশাৰক চূপ ক্ষিত্ৰা ৱহিল। সে ভাবিভেছিল হাক্ষণৱে 
বাইবাৰ কথা শিভাকে এখনই বলিবে কিনা।

ত্বীৰামন্দ বলিলেন—ভূবি এত দিন যে সকল কারণে পড়া-ভবোর অবহেলা করেছ সে সবছে এবন আর কিছু বলা নিরপ্ত। ক্ষতি বা হবার হরেছে। তবে সর্কারা একটা কথা মনে রেখ। ভোরাকে লেখাপড়া নিথে টাড়া রোজগার করতে হবে। ইল্লের মত ভোরার বিভূত ক্ষরিবারী নেই বে বঙ্গে বাবে। একত ভোরার কাকের বাধীনতা অনেকটা লছ্ডিত করতে হবে।

শিকা ইজের ক্থা কোলার প্রবোগ পাইরা দেবানক বলিল, কলকাতা বহি বেতে হয়—আনি করেকটা বিদ রাজবগরে কেম বুরে আনি না বাবা ? বা কি আনার কথা কিছু লেবেন নি ?

শীবানল পূজকে এবন রাজনগরে পাঠাইতে অনিজুক। উাহার রী জিনহানী লিবিবাছিলেন—"বেবু শীর বালাস হবে। লে বেন একবার রাজনগরে আসে। ভাকে বেববার কচ আমি অহিন হবে পড়েহি।—উভবে জীবানক সংক্ষেপে জানাইলেন—বেবু পরে রাজনগরে বাবে। ইক্সকে সংসারে আইকাৰাৰ ৰভ অনেক কঠে ভাৰ বিবে দেওৱা ক্ৰেছে।
আৰাৰ বেৰেৰ ভবিছং ভেৰে দেবুকে বাক্ষণৰে পাঠাতে চাই
বা এবন। কি কানি ভাৰ সংস্পৰ্ণে ইল বহি আবাৰ চকল
ক্ষে ডঠে। ভাৰ বাগ বা নেই, কে ভাকে ঠেকাৰে ? সংসাজে
বন বহুক ওব, পৱে দেবু বাক্ষণৱে বাবে।

পুরের কাছে এক কথা না কালিরা ভিনি বলিলেন—কা লিবেছেন। আনি কানিছেছি এবন আর রাজনগরে গিরে দেবুর সময় নষ্ট করা টিক হবে না। একেবারে পরীকা দিয়ে বাবে।

দেবাৰণ নিৱাশ হইল, কিছ শিভাৱ ক্ৰাৰ প্ৰতিবাদ ক্ৰিল লা।

ট্রাসকার সার্চিকিকেটের বল ও কলেকে ছান পাওরা বাইবে কিনা কানিবার কল কলিকাভার পত্র লেপা হইল। সাও আট বিন লাগিল উত্তর আলিতে। উত্তর আলিতে ছির হইল বেবানক কলিকাভার এক আত্মীরের বালার উটিরা কলেকে তর্তি হইবে এবং হুটেলে ছান সংগ্রহ করিবা লইবে।

শিৰালদতে পৌছিৰা টেশনেৰ বাহিৰে বাইবাৰ পৰে পিছন হইতে হঠাৎ কে দেবাননকে কড়াইৰা বনিল।

চৰকিবা কেবানক শিহন কিবিবা কেবিল নহেন্দ্ৰ। নহেন্দ্ৰ বলিল—ভূই কোথাৰ চলেছিল দেবু ? কেবানক—ভূই বাজিল কোথাৰ ?

মহেল বলিল বে, সে কলেকে ভঠি ছইরা পটলভালার কলেক হঠেলে ছাল পাইরাছে। ভাছার এক আরীর সব ব্যবহা করিয়া বিয়াহেল। বেবানক হঠেলে থাকিবে ভবিরা বহেলে ভাহাকে হাছিল লা। বলিল, চল, আনার হঠেলে উঠবি। ভিন নাল কেল খেটেছিল, বার বাহাছরের হেলে হলেও সরকারী কলেকে ভারগা পাবি না, কেল বিহিনিহি বুরে বরবি? ভার চেরে আনার কলেকে ভঠি হরে, বা। ভাহলে ছ'ক্য এক সলে থাকতে পায়ব।

কুলির বাধার বোটবাট চাপাইরা হই বন্ধু পটলভাদার বহুত্বের হুঠেলে গিরা উটিল।

সেই বিষই ছপুৰে বেৰামক কলেকে ভঠি হইল। হুটেলের একট বৰে ছইট সীট বালি হিল। সেবাৰে ভাছারা দ্বাৰ পাইল।

হঠেলের বে বর্টকে কেবানন্দ ও নছের অধিকার করিল, লে বরে তবেশ বলিরা একট হেলে বাকিত। তবেশ ভূতীর বার্ষিক শ্রেণীর হার। লে বছলোকের ছেলে, অভ্যন্ত বার্-বাহব। ভাহার হুই নাবা কলিকাভার বাকেন। একজন ব্যাবিঠার ও অভয়ন ভাজার। হঠেনে ভাহার ববেই বাজির। ক্লেকেও ভাহার প্রতিপত্তি আছে ভাল বজা ও হারবেজা বলিরা। হঠেনের নকলে কানিত বি-এ পাস করিয়া সে ব্যাবিঠারী পভিষার জন্ম বিলাধে বাইবে।

আলাপ হইবার পরে দেবাবন্ ও বহেল গুনিরা আনন্দিত হবৈ বে তবেশ এটি-লায়কুলার নোলাইটির তলাটিরার হবৈরা তবকারেলের সময় বহিশাল সিরাহিল। তিন ক্ষেত্র মধ্যে শীরই বহুত্ব হবৈরা গেল।

বেষান্দ্ৰ ভবেশের বভ বনিঠ পরিচয় পাইকে লাগিল ভভ রুই হাইল। পাঠ্য পুত্তে বিশেষ অহুরজ্ঞি বা গাঁকিলেও ভবেশ নামা রক্ষের বাই, বেশীর ভাগ ইভিহাল ও রাজনীতির বাই পড়িও। লে বড় বড় বেভাবের দলে বিশিত, বড় বড় লভার বজুতা ভরিত, একি-লারহুলার লোলাইটার বচ্চ বছ পরিপ্রম ভরিত। ভারার সমভ কাজের বব্যে এনন একটা আভরিক-ভার প্রর বিল বে বেষানন্দের ভারাকে বড় ভাল লাগিল। করেক বিল বাইতে যা বাইতে হ'জনের বব্যে সম্পর্ক হইরা ইভাইল ভভকটা স্বের্থবন অঞ্জ ও অহুগত হোট ভাইরের বব্যে সম্পর্কের বড়।

ক্লিকাভার আলিরা কেবাবন্দ বাংলার প্রাণক্ষেরের বব্যে হাব লাভ করিল। ওবু বাংলা কেন, লারা ভারতবর্ত্তর প্রাণ-ক্ষের কলিকাভা তথ্য বংলাই আন্দোলনের উত্তেশনার উবেল। পার্কে পার্কে প্রতিবিদ্য লভা চলিতেরে। সভার ববেদী প্রহণ ও বিলাভী বর্জনের ভাংপর্য্য ব্যাব্যা হইতেরে, সূলারী ববননীতির প্রতিবাদ করিতেরেন বড় বড় বেভারা। সংবাদপঞ্জলি প্রতিবিদ্য পরর প্রব প্রবন্ধ, কেনের নানা হাবে সভা-সমিতি ও ব্যবসীতির সংবাদ পরিবেশন করিতেরে। সহরের বৃত্তিবী-সমান্দে, হাজনহলে উত্তেশনার প্রোভ ব্যক্তিকেরে।

বেষাৰক কৰেকবিৰ পাৰ্কে পাৰ্কে বুৱিয়া বক্তৃতা ভৰিয়া বেড়াইল। সন্থাধ সৰৱ হুঠেলে কিন্তিলে ভৰ্কবিভৰ্ক কুল হুইল। অভ বন্ধ হুইতে হেলেন্তা আলিয়া তবেশের বনে বলিভ ও আলোচনার বাাগ বিভ । কিছু কাল এই ভাবে চলিবায় পন্ধ বেষানকের বানিকটা বিন্ধভ বনিয়া আলিল। লে ভাবিল —এবালে বেইছি হেলেন্তা স্বাই কেবল লগা-চওড়া ক্ষা বলে, কাল কেন্ত্ করে যা এক ভবেশ-হা হাড়া। বভ্ডভার প্রভ্যেকট ছেলে বেল ক্ষেত্রনাথ ব্যামার্জিন, বিশিন্তক্র পালের ক্ষা এক একট সংকরণ। কিছু নিঠা ও আভবিক্তা ভ কাহারও মধ্যে বেথা বান্ধ লা। সাখ্য আছ্টা ও ভর্কবিভর্কের কুল পড়া-ভ্যা ক্যা হয় লা।

আৰ সহ কৰিতে বা পাছিবা একধিব দে কৰেণকে বলিন, কৰেণ-না, ৰোক বভুকাৰ চোটে আমাৰ হাঁক বৰে গেছে। ক্ষাবেলাৰ আজ্ঞাচী বহু কৃষ্ণন। তবেশ হাসিরা বলিজ—চট করে বহু করা বাবে না, তবে আবি চেঠা করব। এবার চল এক্টিব এটি-সার্কার লোসাইটর সভার বিবে বাই।

তবেশের লকে লোলাইটির লভার করেক বিন মুরিরা লোলাইটির কাক্ষের বারা লে লক্য করিবাহিল। ভাহার বন লগুঠ হর বাই। লে ভাবিল বরিশাল কন্যভারেশের পরেও এই বরপের কাক্ষে কিছু কল হইবে বলিরা ইহারা এবনও বিখাল রাখেন। আন্দর্ব্য বটে! তবেশ ভাহার বনের ভাব কিছু বুবিল। করেক বিন পরে লে বলিল—বেনু, ছেলেবের ভর্ক-বিভর্ক রোজ ভানহ, এবার বড় খলের বানে নেতৃত্বানীরবের আলোচনা একটু শোলা ভাল। কাল আনার হোট নামা ব্যারিটার্ম বিং রারের বাড়ীকে যাবার ক্বা আছে। আনার সক্ষেব্যবে ?

ব্যারিঠারের কথা ভনিরা বেবানন্দ বাইতে বিশেষ উৎসাহ প্রকাশ করিল না। বলিল—আনি পাড়ার্গেরে বাছ্ব, তাঁবের অপরিচিত। আনাকে বাচ চিন ভবেশ-লা।

তবেশ হাছিল না। বলিল—এত সংকাচ কিলের ? কি বরণের আলাপ হর তাঁকের বংগ্য চুপ করে তবে বাবে। আনার বাবা নিঃ রার অনেক কাগজে ইংরেজীতে রাক্ট্রৈতিক প্রবন্ধ লেবেন। হাজসহলে তাঁর কিছু প্রতিপতি আহে। ভালকের সলে সংযোগ রাবজে তিনি ইংগ্রক।…

তবেশের অহুরোবে বেবাবলকে ভাতার দকে চক্ষবেকে ব্যাতে বিঃ রাবের বুক্তে বাইতে তুইল।

কটক, সৰ ও গাড়ীবারাকাওরালা বৃহৎ অটালিকা। বিব্যাত ব্যারিটার লাহেবের বাড়ী। আর্থানী, বর, বাবুর্চি, বানলারা, আরা লবই ববারীতি আহে—ইংরেজী ভারবার ভাইনিং ক্লম, ছবিং ক্লম, বিলিয়ার্ড ক্লম, টেনিল লন, ব্রেক্তনাট, লাঞ্চ, ভিনার দে গুহের ব্যবহা। বলেরী রীতির মধ্যে প্রণারটার চল আহে। পারভাষা ও ছেলিং গাউন পরিহিত বোটা চুক্লট হাতে ব্যারিটার লাহেবেকে বেবানক বছুর ইনিতে প্রণার করিল। ব্যারিটার জিভালা করিলেন—"এট কে ভবেন কৃ" ভবেন বলিল—"আযার বহু লেকেও ইরারের হার, পুত্র এলেহে। এর বাবা বারবাহাছ্র, পুলিলের ভি-এন-পি।"

"ভাই নাজি ? বেশ, বেশ। তেডৰে আলাগ কৰিবে বিশু। তেৰী গ্ৰাভ টু বিচ ইউ (ভোষাবেৰ ললে বেশা হওৱাতে ভাষি খুশি হলাষ)। ভোষাৰ বাবা ৱাৰবাহাহৰ ভি-এল-পি ? বেশ, বেশ। বোৱা বোৱা"

বৰ আদিবা নেলাৰ ভবিবা ইাড়াইল। ব্যাৱিঠাৰ লাহেশ বলিলেল—বাবুড়ো নেলাৰ হো।

ভবেশ বেশাৰণকে নকে নইয়া বন্ন ছইতে বাছিন ছইতে-ছিল। বি: নাম বলিলেন-নাই দি বাই, ওকে ভবেশ, আক্ষেত্ৰ বেদলী ও ইভিয়ান বিষয়ে আমান্ত হুটো আৰ্টকেল বেমিকেছে। কলেকে ভোষাত্ৰ বন্ধুকের পঞ্চে শুনিও।

ज्यम पनिन-जाना ।

বেষাক্তকে লইয়া ভবেষ উপরে উট্টল। পালিন করা ভাঠের নিঁছি, বাবধানে ভার্পেট বিহানো। নিঁছির বাধার বহুর প্রেরর একট সুঞ্জী, ভারবর্ণ বেরে বিহুনি বোলাইয়া কি একটা গানের হুর ভাঁজিভেছিল। ভবেশের সকে অপরিচিত একট হেলেকে উপরে আসিতে বেধিরা গান বহু করিয়া জ ইচভাইয়া লে ইাভাইয়া রহিল। উপরে উট্টরা ভবেষ বলিল—ভত বর্ণিং কিট। বাবী-বা ভোগার রে? কিট বলিল, ভত বর্ণিং কিট। বাবী-বা ভোগার রে? কিট বলিল, ভত বর্ণিং ।—ইচভানো জর বীচের চোধ বুয়াইয়া ইনিতে লে বে প্রার্থ করিল, ভার বাবে এ আবার কোন আনাভীকে নিরে এসেই? ভবেষ এই ইনিভের জ্বাব না বিরা বেবাবজ্বকে লইয়া ভইংক্রমে বলাইল।

বেৰামক এই প্ৰথম ভবসভাৱ দিলের বিভগালী ব্যারিপ্টারের বালভবনের ছুইংক্লমে প্রবেশ করিল। বরের আসবাৰ ও লাভাইবার ভারলা ধেবিরা সে বিমিড হইল। ভারার প্রকল্পত্ব কেরালে বহারাই ভিটোরিরার প্রকাও অরেল পেন্টিং। অভ দিকের দেরালে রাজা লগ্তম এভারার্ডের হবি। বরের ভোগভলিতে ভাল পাধরের ভেগারার উপরে রুগালি ক্লমে বাবা হোট হোট হবি, অনেকভলি বিলাভী বৃঞ্জের, কডকভলি পরিবারের লোভভবের।

ভাছাকে বসাইরা রাবিরা ভবেশ অভ ককে নিরাহিল।
ভিছুক্তণ পরে এক কন নব্যবহনী ভত্রনহিলাকে পকে সইরা
লে বরে চুক্তিল। বলিল—বেনানন্দ, নানী-নাকে প্রধান কর।
বেনানন্দ প্রধান করিলে ভিনি ভিজানা করিলেন—ভোনার
নাবা রার বাহাছ্য় ভি-এন-পি? বিলাভ গেলে ভূমি এল. পি.
হতে পারবে। ভোনাকে দেখে ভবেশ চইপটে বুডিনান
বেলে বলে বনে হয়। আনার বাবাও রার বাহাছ্য, ভিনি
একভিডিইটভ নার্ভিনে হিলেন। আনার হই ভাই, এক কন
কুভিশিরাল নার্ভিনে, এক কন বাঁটালের এন. ভি. ও.।
গবর্গবেক সার্ভিনে বাবে, না ভবেশের বভ ন্যারিপ্রারী পভ্যার
ইচ্ছে ভোনার? ভোনার বাবা বিদ্বার্থী হন এক-এ পাশ
ভ্রেও বেতে পার। উনি এেক ইনের নারকরা হাত্র হিলেন,
লব ন্যবার ভবে বিতে পারবেন।

বেৰামক ইাড়াইয়া উছোৱ কৰা শুনিভেছিল। ভিনি বলিলেক—ৰোস, ইাড়িরে কেন ? খবে কিট বোন বেৰি।

কিট হা ইচড়াইরা এড় হাতে বিছমি টানিতে টানিতে বরে প্রবেশ করিল। ভাষার বিজে চাহিরা নিসেল রার বলিজের—ড়ি অনভাভা হছে কিট, বিছনি হেড়ে বাও। চোক বিটনিট ভ্রম কেন ? সভ্য হরে বল এবানে। ভ্রমেন্টারার পূভ্য বস্তুটির সলে আলাণ কর। এর বাবা

গৰণৰেণ্ট লাভিলের লোক, যায় বাহাছর। ইক্ষে করলে হেলেকে বিজেত পাঠাতে পারেম।

ক্টি বলিল—ভূমি বিলেভ বাবে সভ্যি ? টেবিলে বেভে কান ? না এবনও হাভ বিষে যেবে বাও ?

ভবেশ—আৰি ভ হঠেলে হাভ দিয়ে বেবে ভাল-ভাভ বাই কিষ্ট ।

কিট—ভোৰায় কৰা আলাদা। ভূমি বাঁট বড় লোক।
তা হাড়া সভ্যি বাড়ে বিলেড বাড়া া—বেধানব্যের বিকে
কিমিয়া সে বলিল—ভোষাদের বাড়ীতে বাবুটি খায়া আছে।

দেবাদদ কিট্র ব্যসের বেরের এই ব্রপের ক্থাবার্তার কৌচুক বোব করিভেছিল। বৃহ হালিরা সে বলিল—আব্রা বাবুচির হাতে বাই বাঃ

কিট হই চোৰ কণালে ভূলিয়া বলিল—বাৰ্চিয় হাতে বাও না ? এঃ, বলহ কি নো। ওবা, বা, ভবহ—

কিটর বা অভন নিয়াছিলেন। কিটর বজব্য শেব হুইল না।

বেৰাৰৰ ৰভ্যন্ত ব্যবভি বোৰ ক্ষিত। বে ভ্ৰেম্কে বলিল—আগনি বোৰ হয় এবেলা এবানে ৰাক্ষৰে। আৰি হুটোলে কিন্তি ?

কিট এক লাকে উটিয়া বেবানকের হাত চাপিয়া বরিল। বনিল—রাগ হ'ল বুবি ? বল, বল, বা ভোরাকে না বাইত্রে বেতে বেবেন তেবেহ ? বাবুচির রায়া নর, নিট বেতে বেবেন। ভোরহা নিট বেতে বুব ভালবাল, না ? আমরা বাই কেক, পৃতিং, ভাতউইচ। হাজার চাইলেও রা আববানার বেকী বলগোলা বেবেন না আমাকে। বিলিটা কাঁক পেলেই রলগোলা চুরি করে বেত্রে কের। বিলিকে জান ? আমার ছোট ভাই।

বর আসিরা জানাইল বেষলাহের গালা-ভাষরার ভাকিতেহেন।

জনবোগ সাহিয়া হঙেলে কিছিবার সময়ে বেবাদশ তবেশকে বলিল—কই, আপনার নামার বাজীতে ছাঞ্নীতি চর্চা ত তবলার বা ।

ভবেশ হাসিরা বলিল—রাজনীতি চর্চা হব সন্থার পরে। আর এক দিন ভোরাকে নিরে বাব, তবন ভনবে—আত তবু পরিচর করিবে বিলান। সাত্য আড্ডার অনেকে আসেন। বুব তর্ক-বিভর্ক হব, ভূবুল উড়েজনার স্কট হব কোন কোন দিন।

তবেশ কানিক নতার পরে এই আজ্ঞার শেবের বিক্তে উপহিত নকলের নেজাল কোনল ও ভাবপ্রবন হুইরা উঠে। বি: রার নিক্তে কবাবার্তা কর বলেন বতকন প্রিটিকাল আলোচনা চলে। শেবের বিক্তে আলোচনা রাজনীতি হাড়িরা ববোরা হুইরা উঠে। রাজনৈতিক নেডাবের ব্যক্তিগত চরিত্র, বিলাত-প্রবাদের অভিজ্ঞতা, বাচ, গলক, শিকাল, প্রত্যাকার্যান ইংরেখী ও করালী লাহিছ্য ইছ্যাবি আলোচনার বিষয়ীছুছ। হলের বব্যে বিঃ গাঙ্গী বাংলা ও লংকুজ লাহিছ্যের ছিত্র ববর রাবেন। তিনি করবেন ও ভারতচক্ত হইছে আর্ডি করেন, লংকুজ কাব্যাবি হইছে লোক পর্যন্ত রূপত্ব বলেন। তবেল আজ্ঞার পেবের বিকে বল্প বাকে নাই। সে ভবিরাহে এই লব্যর আজ্ঞা ব্যক্তির ক্রিয়া উঠে।

ক্ষেক্ষিৰ পৰে বিকালের বিকে তবেশ বেবানককে বিজ্ঞানতাক চক্ষবেকে বাজি। ছই বাবি ?

বেৰাৰক্ষ—আৰু ভাৰত্মশ্ব চক্ৰবৰ্তী ও বৌলতী নিৰাকং হোলেৰ ৰাকি গোলগীবিতে বভূতা বেৰেন। সেধানে বাবার ইচ্ছে আছে।

তবেশ—কভুতা রোজ হচ্ছে, গেলেই হ'ল। আজ নানাবাবুৰ থবানেও সভা আছে। হোট লাট—ভূপেন বোস, জে চৌবুরী ও প্রয়েজ বাঁডু,জেল্ডে তেকে নাকি ছাত্রবের আন্দোলন নিরে বুব ব্যক্তেবেন, ওখন হটেছে। কি ব্যাপার হরেছে বোলবার ইচ্ছে আহে:

লেহিনভার অভিজ্ঞতা বেবানলের হবে বোঁচাইভেছিল।

ভাষার ববে ব্রন একটা ক্রমির, আলালা কগতে উহার। বাস করে। সে করভের সকে ভাষার কোন সংবাস নাই। সে বাইবার উংলাহ প্রকাশ করিল না।

ভবেশ—আজকের দিন চন্। ভোকে নিবে বাবার করে

ভিট আনাকে বিশেষ করে বলে নিবেছে। না নিবে গেলে
বেরে কেলবে। বাইরে বেকে কেবতে ওর বরণ-বারণ ওরক্ষ
হলেও ওর বনটা বুব ভাল।

কিটৰ আঞ্জের কথা ভবিষা দেবাৰক একটু আক্ষয় হইল, কথাটা লে বিধান কয়িল বা।

ভবেশ নিজের বনে বনিরা চলিল—বের গভর্ণেরের কাছে
পাছে, নাব্র্চির হারা অধান্য ধার, আবার কার কাছে বাকি
শিবপুজো নির্বেছে। ও একটা অভুত বেরে ওবের সার্বেলে।
ওর ববেশী গান শোনাব একবিন। বেশ ভাল গাইছে
পারে।

ভবেশ এতথানি আগ্রহ প্রকাশ করিবার পর কেবানলকে রাজী হইতে হইল। কিটার শিবপুলা করিবার কথা ভনিরা ভারার লজীর কথা বনে পঢ়িল। কিটাকে শিবপুলা করিতে শিবাইল কে ?

চক্ষবেকে পৌৰিকে ভবেশবের একটু দেখী হইবা সেল। ব্যাহিটার লাহেবের দীচের বলিবার বরে ভবন আলর বাঁকিরা উটিবারে। কেবানগকে লকে লইবা ভবেশ বরের এক্তোবে হইবানা চেরার অবিকার করিল। কেব ভারাবের লক্ষ্য করিল না আলোচনা চলিতেছিল হবেদী আন্দোলনের অবস্থা লয়তে।

বিঃ রার বলিলেন—নাড়োরারী চেম্বার ব্যান্টেরারে টেলিএার করেছে বিলাতী কাপড় বিক্রী রক্ষে না, তারা কর্মটাই করতে পারবে না। ব্যান্টেরার বেকে তারের নহপ-বেশ বিরে এবং তর কেবিরে তার করা করেছে, আবার চেটা ক্ষে কেন্দ্র বিলগুলোর সব কাপড় কিনে কেলে বাতে বাজার চাতের করে আবা বার।

বিঃ গাজুলী—আর একটা চেটাও হচ্ছে। ব্যান্চেটারের কাপকে দেশী বিলের হাপ দিবে বাকোরাজীদের হাতে বেওরা হছে। ভাষা দেশী বলে সেই কাপক চালাছে। ব্যাপার বরা পড়াতে হৈ চৈ ভাষত হরেছে।

নিঃ গোছ—ইংলিসন্যান গ্ৰণ্থেউজে বলেছে, ট্ৰাইজ এট বি ক্লট অব বি এজিটেশন ( আন্দোলনের গোড়ার আবাড কর )। আবার তর কেবিবেছে, আবাদের বৈব্যচ্যুতি হ'ল বলে।

বিং বিটার হাতের সিগারেট কেলিরা থিয়া বলিলেন— উত্তর্গল বলে নর, হরেছে। কলকাভার ইউরোপীরামরা-লেবর-র্যাটলিং (ভরোগাল ছ্রাইভে) আরম্ভ করেছে। বলেছে পঞ্চাপ বছর ভরবারি বাপবদ, ছিল এবার বাপ থেকে বের ভরতে হবে।

নিঃ গোহ—ভ্ৰমলাৰ ক্লাইত হ্লাটের বার্চেন্টরা আশিলের ক্লোনীকের ভাক (ব্যবাত) ক্রমে বলে তর কেবিয়েছে।

বিঃ বিটার—ছোটলাট ক্রেকারের বিটাওে কি হ'ল অনেছেন ?

বি: বার—মিটং হ'ল কোবার ? বি: বসুফে হোটলাট বললেন আপনি ও আপনার বছুরা মিলে ছাত্রবের বেণিরে ছুলছেন কেন ? বি: বসু বললেন—আনহা কিছু করি নি, ছাত্রবের বেণিরেছে প্রথবেট। ছোটলাট বললেন, কড়া বিশ্রেকিত বেজার (উপ্র ব্যন্নীতি) নিরে তিনি স্বাইকে টিট করবেন। বি: বসু আর কোন কথা না বলে চলে প্রবেদ।

বিঃ বিটার—বিঃ হুরেজ ব্যাবার্ত্তিও পুলিশ - ক্রিশবারকে

উক্ত এই কথা বলেছেন।

বি: গাসুনী—আৰু 'বাবে' গুৰলাৰ পুলিপ কৰিপনাৱেৰ ইবিতে করণোৱেশন সূত্ৰ বাই-ল ( উপরিধি ) পাল করতে পাবলিক কোৱার ও পার্কে বিটং বহু করবার বছ।

বি: ভাটা উভেড়িভভাবে বলিলেন—কল্প, আৰ্বা সূট-পাৰে বিটিং ক্ষৰ। এ বাই-ল পাপ ক্ষালো বছা নহক। হবে বা।

বিঃ গোর শিকা বিভাবের ভিরেটর পেতলারের লয়ালটি নারস্থলারের কথা সুলিলের। বলিলেন, টেকট বইরের ৰণ্যে দিৰে ৰাক্ষতকৈ শেৰণাৰ নিৰ্দেশ দিৰেছেন বিঃ পেচনাৰ। ভদৰি ছাত্ৰ ও নাটাৰদেৰ বৰ্ষকট নিটকে বাওৱা নিষিদ্ধ করে যুক্তৰ একটা সাৰকুলায় বেফচ্ছে।

মি: ভাটা—বিটঙে বাওৱা বছ করে সারস্কার বের করলে পব ছেলে রাজভক্ত হরে বাবে। দি আইডিরা। ভনহি ৬বং ওরার্ভের ফুল-কলেজের ছেলেরা নিলে দেবিন এক-রাশ বিলিডী কাপক ও চিনি কিনে আওন লাগিরে পুড়িরে বিরেছে।

নিঃ গোত—ইংলিশব্যান বলেছে, মুসলমান ও বাজোৱারীরা বাঙালীবের উপর ভারি চটে গিরেছে এই বলেই আন্দোলন চালাবার করে।

নিঃ মিটার—সব মুসলমান চটে নি। 'পার্টশন (কেশবিভাগ) আর বদেশী নিরে মুসলমানদের মব্যে করেকট বল বেশা বাজে। এক দল খোলাখুলি বলছেন লও কার্জন মুসলমানপ্রেমান নুভন একটা প্রকেশ স্টে করে মুসলমানদের উপকার করেছেন। কিছ তাবেরই আর এক দল বলছেন, পার্টশন মুসলমানদের কভি করবে, গোটা বাঙালী ভাতকে মুর্বল করেছে। এ বা খবেশীর সমর্থন করছেন। একটা বল বলছেন, শিকার অপ্রসর হিন্দুকের সদে প্রতিযোগিভার মুসলমানেরা চাক্রি পাজিল না। পার্টশনের কলে মুসলমানদের চাক্রির স্বিধে হবে। ছোলভান কাগকবানা খোলাক্রি বলছে বে, হিন্দু ও মুসলমান পরস্বারের শক্র, ভরু মুসলমানদের বলেশী আন্দোলনে যোগ কেওবা সম্বার নিজেবের আর্থিক অবস্থার উরভি করবার কতে।

বেৰামন্দ মনোবোগ দিয়া এই আলোচনা ভনিভেছিল।
আলোচনা ভাছার মন্দ লাগিভেছিল না, কিছ সে ভাবিভেছিল
—ইহারা নিজেরা ভি ভরিভেছেন সে বিষয়ে ভ ভিছুই বলিভেছেন না। ভাছার ভাব দেখিয়া ভবেশ উটিবার ইলিভ ভরিল।
লে উটভেছিল, বিঃ গোহর কথা ভনিয়া আবার বসিরা
শভিল।

্ষি: গোহ—"নোৰার বাংলা" লিফলেট বিবে 'পারোমীরর' 'ইংলিশব্যান' ও বাজী এংলো-ইভিয়ান কাগকগুলো বৃব্ শালাতে আরম্ভ করেছে বাঙালীবের। বেললী গোলাবুলি বলতে—এটা এংলো-ইভিয়ান কবিউনিটর কীর্তি।

বিঃ বিচীয়—"গিত বি তগ এ ব্যাত নেষ বিকোর বিটং ইট"
—ইংরেজের এটা চিরজানের অভ্যান। এবিকে আবার একেওঁ
লোভোকেটভর দল সম্রতি কালে দেবেছে। আবার এক
আত্মীর বললেন, সেবিন গোল বীবিতে ইউরোপীরান পোশাকে
এক্ষন জোক ইংরেজীতে বড়তা বিজ্—ইংরেজরা আবারের
শক্র, ভাবের বার। ভাবের ভাভিরে বাও এ বেশ বেকে।
—কাহেই প্রভিশের লোক বাভিরে আছে চুণ করে। এতে
নত্রতেই লোকের সন্দেহ হর। বে-কোন চুভোর একটা গোল-

ৰাল বাবিৰে বিয়ে বংকী আন্দোলবের বিরুদ্ধে কড়া ব্যবদীতি চালাতে প্রপ্রেক্টকে বাব্য করকে চার এংজো-ইছিয়ালর।

নিঃ গালুলী—একটা বজার ব্যাণার বলছি ভরন। বিহারে ববেরী প্রচার করবার করে বাঙালী হেলেরা একটা বুজন ট্যাকটক্স (কৌশল) নিরেছে। রাজা-বাটে, হাটে-বাজারে কাগলের একটা লিণ লোকের হাতে বিরে বাঙালী হেলেরা সরে গড়ে। লিগে লেবা বাকে—ববেরী ছিনিল ব্যবহার করন। ভার নীচে ইনট্রাক্তান (উপবেশ), "এই জিপের লাভবানা কণি করে আপনার লাভ কর বন্ধুর ববের বিভরণ করেন। না করলে এক লক গো ও রাজ্যণ ববের পাশ আপনাকে লাগবে।" বনেরীর কত বাদের কোন উৎলাহু নেট, পাণের ভরে ভারা অনেক ক্ষেত্রে বটে।

ৰিঃ গাসুলীর গল ভৰিয়া সকলে হাসিভে লাগিলেব।

পৰ্যা সরাইরা সৌমার্তি, কিটকাট সাহেবি পোশাক-পরা, হাতে সিগার একজন ভত্তলোক ববে চুকিরা বলিলেন, ওড ইতনিং রার, ওড ইতনিং অল অব ইউ।

তবেশ নিয়বরে দেবানন্দকে বলিল, ইনিই ভটন চঞ্চৰভূষী বায় কথা ভোকে এক্ষিম বলেছিলাম।

দেবাৰশের মনে গভিল ভবেশ এক্চিম ভাতার নানাম বন্ধু ব্যাবিটার ডক্টর চক্ষবর্তীর কথা বলিয়াহিল বটে। বলিয়াহিল, ঠাহার অগান পাণিভাের কন্য সমব্যবদামীরা ভাতাকে প্রবা করেন, ভাতার বারাল স্পটবাহিভার কন্য একটু ভয়ও করেন।

ভঃ চক্ষৰতী আসন এহণ করিলে ভবেশ বেবানসন্ত্ ভাঁছার ভাতে সিধা বলিল, নমভার ভর, কেনন আহেন ?

ভঃ চক্ৰবৰ্তী বাঁ হাতে নিগাৰ মূৰ হুইতে স্বাইৰা ক্ষমৰ্থক ক্ৰিয়া বলিলেন, কে তবেশ। ব্যৱভাগ ভ চ

ভবেশ বেৰাদন্দের পরিচয় করিয়া বিয়া বলিল, আবার বন্ধু, বিলিয়াণ্ট ই,ডেণ্ট (ভোবোড় হাত্র) ও একটভ (সঞ্জিয়) বংল্টেডয়ালা।

ড: চক্ৰবৰ্তী—ভেবি গ্লাড টু বিট ইউ (ভোষাদের সলে দেখা হয়ে ভাবি ধুশী হলাব)। বলো ভোষয়া।

ভবেশ ও বেৰামন্দ চুইবানা চেরার ড: চক্রবর্তীর জাছে সরাইয়া সইয়া বসিল।

নি: ভাটা ও নি: গালুলী বরিশালে ছাত্রবিগকে বেজ-প্রছারের কবা বলিভেছিলেন।

বি: ডাটা বলিলেন—ইংরেজরা নিজেবের সভ্য জাভ বলে গর্ম করে। বরিশালের যভ এটোলাল (জভ্যাচারগুলক) ব্যালারের করা ভেট কর্বনও ভবেতে গ

ষিঃ গাছুলী—গবৰ্ণনেউ বোৰ হয় ইণিচাৰ ভেলী নিউজেয় বল্দে যাভয়বেয় ব্যাখ্যা বেনে বিষয়ে। বল্দে যাভয়ব্ যানে বাইও এও বীট, বাঁবো আৰু যাবো। তঃ চক্ষণতাঁ উচ্চ হাভ করিলেন। হালিতে হালিতে বলিলেন, তেরি ৩০ ট্রাননেলেলান আই বাঠ লে (এ কথা বলতেই হবে বে তারি চবংকার অহ্বাদ হরেছে)। বাইও এও বীট। পাছে আবলা তাবের বার লাগাই দেই তরে তারা আলে বেকে আবাবের বার লাগাতে প্রস্নু করেছে।

কুলায়ের এটি-ববেশী লারকুলারের কথা উটিল। বি: ভাটা বলিলেন, ফুলের ছেলেরা ববেশী বিটিডে বোগ বিলে বাটার-বের স্পোল ক্ষেত্র্বল নির্ক্ত করা হবে। বি কানি আইভিরা। পঢ়ানো ব্যৱ করে বিরে বাটাররা স্পাইসিরি কর্মক আর কি !

তঃ চক্ৰবৰ্তী—বেভার কিবার । পূর্ববদ ও আসাবে কুলার ও লারন, পশ্চিমবদে ক্রেকার ও কারলাইল আর গবর্ণমেন্ট অব ইভিয়ার হারবাট রিজনে—দে আর চুইং এ ওত চীন ওরার্ক (এরা একসদে বেশ কাজ করছে)। এবের সদে আছে নতী-ভূলীর দল, বরিশাল ও রংপুরের এনার্স ন, মৈনলিংরের উপাসন ও জার্ক। এবানে কারলাইল কর্মান ভারি করছে মুল-কলেকের নাঙার ও অব্যাপকদের উপার, ওবানে করছে মুলার ও লারন।

তঃ চক্রবর্তী হাতের দিগার এস-ট্রেডে রাখিরা সোজা হইরা বলিলেন। দেবাবলকে লক্ষ্য করিরা বলিলেন, ভোবরা ববেদী আলোলন করে ইংরেজের ভাত নারবার কত হাত বাভিরের। ভোরারের লিলি ভাগকতলো বলরে, ববেদী নারে "রিভাইত্যাল অব ইভিজেনাল ইভাইছি" (বিদ্ধী শিরের পুনরক্ষীবন), এটা ত এটি-রিটিশ আলোলন নর। অভএব গবর্ণ-বেন্টের উচিত ববেদীর লাহাব্য করা। ভাই ভনে লর্ড বিন্টো বললেন, ববেদীর উপর আনার বড় নির্ণ্যাধি (বরর)। ব্যাল, কিত কুলারও বলে উঠলেন—আনারও।

তিনি এস-টের উপর হইতে সিগারট তুলিরা সইলেন।
অত্যমন্তভাবে করেকবার সিগারট টানিলেন। আবার উরা
রাবিরা বিরা বলিলেন, পার্টপানের বিরুদ্ধে আবেবন, নিবেবন,
সভা-সমিতি চলন। ইংরেজ বনে করল, বাঙালীবারুর বল
একটা আর্টিকিলিরাল (ক্রিম) আলোলন পাকিরে ভুলছে।
সভা-সমিতি করে বর্থন কিছু হ'ল বা ভবন বরকট ও ব্যেক্টি
আরত হ'ল। ইংরেজ শাসকেরা অপেকা করতে লাগল।
আলোলন বভ কেশ্বর হড়াতে লাগল ভভ ভাবের ফ্র
কৃতিত ও চন্দ্র রুক্তর্প হতে লাগল। ইতিহানে তীরু
ও অকর্পন্য বলে বর্ণিভ বাঙালী বিনি ইংরেজের ব্যবলারে
আবাভ করবে ভবে ভারা এবেশে এনেছে কেন ? কিলের
ভাবের হাত বেকে ভারতীর বাণিত্য কেকে নিরে ভাবের
ভাত্যের হাত বেকে ভারতীর বাণিত্য কেকে নিরে ভাবের
ভাত্যের হাত বেকে ভারতীর বাণিত্য কেকে নিরে ভাবের
ভাত্যেরে ?

ভটন চক্ৰবৰ্তী একটু চুপ কৰিছা ক্ৰকাল কি

ভাবিদেন, ভারণর আবার হক করিলেন—ইংরেজ এবেশের বাণিজ্যে একচেটে অবিকার লাভ করণার হত রাজ্য বিভার করেছে। এবেশের বল্ল-শিল্প, বোঁ-শিল্প ক্ষেপ করে ব্যাকেটার ও ল্যাকালারারের সর্বি বাভিরেছে। রাষ্ট্রীর ক্ষমভার অপ্নারের করে এবেশের শিল-বাণিজ্য করারত করেছে। আব্দ বিলিভী পণ্য বর্জন করে ইংরেজের এভ লাবের বাণিজ্যে আবাত করতে বাঙালী বরণরিকর। এটা কি বর্জাভ করা বার। তার করবার হত আইন পাল করতে হর নান লেগে বাবে। এ হর নালে ইংলিশ ঠেভ উভ বি ভেড (ইংরেজের বাণিজ্য বভন হরে বাবে)। ভাই কুলার কর্মচানীদের উপরেশ বিরেছে "hammer them until they come to their senses." (সুবৃদ্ধি না হওরা পর্বাভ বাঙালীবের হাছুতী পেটা করতে বাক )। এই ভ লবে ক্লির লক্ষা।

ভঃ চক্ৰবৰ্তী আবাৰ নিগাৰ ব্যাইলেন। ব্যৱহ সকলে চূপ কৰিবা আহে ধেবিবা তিনি হালিলেন। তবেপ ও দেবানন্দের দিকে চাহিরা তিনি বলিলেন, ভোক গেট কাছি বাই
ক্রেওন। (বাবতে বেও না) তিনি বিঃ বাবের দিকে ইনিভপূর্ণ
ভূটতে চাহিলেন। বিঃ বাব ভাকিলেন—বোর া বোর া

তবেশ ও দেবাদশ উঠিয়া ব্যক্তার করিয়া বন ক্টতে বাজির কটল।

छेनरव छेड़िनात निंकित करवक नाथ छेड़िता करवम काविन,

সিঁভির পাশের বরে ভিট ভবন মের গভর্মেরে ভাছে পভিতেহিল। তবেশের ভাক ভনিরা—"প্রিক্ত একভিটক নি" (আমার নাপ করুন) বলিরা বর হইতে সে চুটরা বাহিরে আসিল। তবেশের সলে বেবানককে বেবিরা হঠাং ভাহার একটু সকা হইল। ইহার ভারণ দে নিকেই বুবিতে পারিল না। লে বর্বজিরা ইভাইল। কিটর লক্ষা স্থন জিনিল। তবেশ উহা লক্ষ্য করিল। কিট বন্ধ চালাক বেরে। নিকের লক্ষিত ভাব চাকিবার কত ভবনই সে ক্ষরেব করিলা উট্টল। বলিল, ডভ ইভনিং তবেশ-লা, ৩ড ইভনিং তবেশলার ক্রেও (বন্ধু)। তবেশ-লা, এই ভোরার বিকেলে আসা ? আন না এবন পর করতে বসলে সভর্মেন নার কাহে লাসাবে—কিট বট গার্ল (কিট হুই, বেরে)। পর পেলে আর পড়াতে বন্ধ বের না।

ভবেশ—বেশ্বী হয়ে গেল ছে। গীচে আলোচনা শুনহিলায়।

ক্ষিত্ৰ অভিযান কৰিল। বলিল, ঐ হাই আলোচনা ভনতে সিয়ে বড়ি বয়ে আয়ায় পড়বায় ন্যুষ্টতে ওপরে এলে ?

ভবেশ—ভূই পড় গিছে। আনন্ধ এবন বাই। আনহে নবিবাৰ আনব। কিট—বৰিবাৰ সকালে এবানে বাবে ভবেদ-হা ? আহি বাকে বলে বাৰৰ ? ভিছ—

ভবেশ ভাষার ইভভভ: করিবার কারণ বুবিল। সে বেবানলকে বাইতে বলিভে চাহে। ভাহারের বাড়ীর বারুচির রারা বেবানল বাইবে কিবা ভাহার নলের হইল। বেবানল বাইবে না ভবেশ কানিত। ভাই বলিল—সকালে ত আগতে পারব না কিট। অনেক কাক আহে। বিকেলের বিকে আসব।

কিট নিকের বিহুনি চানিতে চানিতে বলিল—চুনি একাই আসৰে ভ তবেশ-বা ৮

ভবেশ হালিল। বলিল—বেবাৰলের সেদিন বিভন্ন কোরারের নিটঙে বক্তৃতা দেবার কথা আছে। ও ভ আসভে পারবে না।

কিট হই চোৰ কথালে তুলিয়া বেৰানন্দের কাছে একটু আগাইবা দিয়া বলিল—নিটঙে বিঃ ভাটার বড স্পীচ দেবে তুনি ? স্পীচ দিতে পার তুনি ?

একটু থাৰিছা কিট আবার বলিল, আহ্না তা হলে শনিবার এল তবেশ-লা। আনি একটা নুতন ববেদী গান শিবেছি, ভোনাজের শোনাব।

ভবেশ—আহা দেশৰ। দেশুর সককে সময় হয় দা আবার।

কিট-ওঁর বুবি ভাল লাগে বা আবাদের বাড়ী আগতে ?

অবেশ হাসিরা বলিল—দেক্থা থকেই কিজেন কর্ না।

কিটার তা কৃষ্ণিত হইল। বলিল—আবার বাবে গেছে

কিজেন করতে। ভাল লাগে বা—আবি কি বুবি না ?

কিটার এই অভিযাম কেবামন্তের ভাল লাগিল। কোম কবা না বলিরা লে বছ ভাগিল।

হাইলে কিরিবার পথে ডটর চক্রবর্তীর সবদে আলাপ হুইল ছুই অনের মধ্যে। অবেশ বলিল—ডটর চক্রবর্তী অসাধারণ পণ্ডিত। তাঁহার সাধারণ কথাবার্ডার রল আছে, কিন্ত এই রল অনেক সমরে ভিজ্ঞ-মধুর। অনেকের তাই অপ্রকা। এক বার তাঁকে উভেজিত করতে পারনে আমধার বভ অনেক কথা অবর্গন তাঁর রুধ থেকে বেরিরে আলে।

দেবাদন—বাঙালীদের কি কি দোবের কথা তিবি বলতে বিরে বেনে গেলেন গ

ত্বেশ হাসিরা বলিল—ভূই লক্য করেছিল বেবছি। ভট্টর চক্রবর্তী বলেন কডঙলো জিনিল বাঙালীকে দনিরে রেবেছে। প্রবিধে শেলেই তিনি নেগুলোকে আক্রমণ করেন।

তবেশ—বাঙালী জাতির খতাবগত আট লগতে ভট্টর চক্রবর্তীর অভিনত বেবাদলতে বিশহতাবে বুরাইরা বলিল।

বাড়ী কিরিরা সে রাজে অনেককণ পর্যন্ত বেধানকের ব্র আসিল না। এলোনেলোভাবে ড্টর চক্রবর্তীর বক্তভার কথা ভাবিতে লাসিল। ব্যাইরা পভিবার আর্গে লে ভবিল কিটি বলিতেত্তে—এ বাড়ী আসতে ওঁর বুবি ভাল লাগে না ? নিক্ষের মনে উত্তর হুইল—কিট আতে, ভাকেই ভাল লাগে।

क्षणं:

স্ত্ৰেষ্ট্ৰ :--এবাৰি দূতন উপভাস। গভ সংব্যার জনকৰে 'ক্ৰম্ম' হাপা হইয়াহে।--সম্পাদক, 'প্ৰবাসী'

#### প্রভাত

#### শ্রীসুধীর গুপ্ত

প্টির নারত্রে তব ওগো, বহাকবি, অবগাহি' উঠিলার এ ওত প্রতাতে ; বুর্ব হোলো বোর বব ; ববি-বপ্রি-পাতে ছেরিলার বিধনোকে নলবের ছবি । নারিকেল-সুপারির শোভন পাবার আলো-হারা বারা বোবে ; বদীকল-বারা বাজাইরা 'বারদে'র স্থিব একভারা

আন-প্রান্থ উবাসিরা প্রবাহিরা বার;
পাবীরা কৃষণ করে; অলস আফ্রান্থ
অতীতের 'আরণ্যক' জীবনের বাদ
বনাইরা আনে বনে; তে বহিষ্কর,
জীবনে—কগতে জানি রবেহে সভাত
অহকার—অবিচার; তবু এ প্রভাত
সমস্ত হাপারে প্রাণ্ড বাদার বিশ্বর।

# ভারতীয় দর্শন মহাসভা-পুণা অধিবেশন

ডক্টর এসতীশচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়, এম-এ, পিএইচ্-ডি

ভারতীয় বর্ণন মহাসভার বছবিংশভিতর বার্ষিক অবিবেশন পত তিলেকৰ বালে ভাৰতবৰ্ষের অবাতৰ ঐতিচালিত বগচী পুণাতে হুইয়া গিয়াছে। অভি বনোরর প্রাকৃতিক পরিবেশের ৰব্যে প্ৰতিষ্ঠিত কাৰ্ড পৰ কলেকেৰ গুৱাহিয়া বজিৰে এলা-शायार विश्वविकालरबंद वर्णन विकारबंद श्रवान क्यानिक এঅত্তুলচল বুৰোপাণ্যায়ের সভাপতিতে এই অধিবেশনের কাৰ্য সন্দা হয়। প্ৰথম বিষেৱ প্ৰাক্ত:কালীৰ অবিবেশৰে সমীতক্লাবিধি একুজরাও কুলবত্রিকর উরোধন-সমীত ও উপাসৰা সৰাপৰ ভৱিৰাত্ত পত্ৰ পুৰা বিশ্ববিভালতেত উপাচাৰ্য্য ভষ্টর এব, আর, ভরাকর বহাসভার প্রভিনিবিবর্গকে সাধর অভ্যৰণ আপন কৰেন। পৰে মহাসভাৱ অমাভৱ সভাচত অধ্যাপক এম. এ. নিক্ম দেশবিদেশের দর্শনাস্থার মনীয়ীদের শ্ৰেৰিত ডভেছাৰাই পাঠ কৰেন। ভাৰত সৰভাৱের ভ্ৰমান্তর ৰলী বাৰণীয় 💐 এন, ভি. গ্যাডগিল বছোলয় সভায় ব্রেণ্য অভিবিত্তপে উপছিত ভিলেন। অভ্যৰ্থনা স্বিভিত্ত উপাধ্যক বাৰণীৰ এপ্ৰভাপ খেঠছী ভাতাকে লাভৰ অভাৰ্মা ভাপদ चतिता नव चिनि वरे चनिर्यमानव केरवांवय करवाः। 'কৰ্মতের পুৰ্বঠনে কৰ্মনের দান' বিষয়ে তিনি একট বনোক ও সারপর্ক অভিভাবণ প্রধান করেন। বক্তভা-প্রসলে ভিনি আবাবের কাতীর কীবনের বর্তবান হতাশা ও হুরবছার কথা এবং আভর্কাভিক পরিছিভিতে বে সব বিশ্বলা ও বিবাধ-विजयां पृष्टे कर काकांत केटबर करतन। वार्गनिक वृक्षेत्क थ नक्न नवजाद नवाबाव कदिवाद कड किवि डार्जिकरकर নিক্ট আবেৰৰ ভাষাৰ। হাভৰীতি, স্থাভমীতি ও বৰ্গভগতে ৰে পৰ বিক্ৰম্ব মৃত ও পৰ আৰু ৰাজুবের বনকে আন্দোলিত ও বহুবাবিভক্ত করিবাছে ভাতাদের সমবন্ধ-সাধ্য এবং এক উদার বাববভার দৃষ্টভদী স্ক্রীর উপর তিনি বিশেষ অক্লছ আবোপ করেন। ভিনি বলেন--দার্শনিকগণ ভাঁচাদের চিতা-ৰালা ও কৰ্ম বালা এই গুকুকৰ্তব্য পালন করিছে পারিবেন। পরিশেষে সভাপতি ষহাশর 'বানবীর ব্যক্তিম্ব' ( Human Personality ) নহৰে এক পাতিভাপুৰ্ব অভিভাবৰ পাঠ কৰেন। অবশেৰে মহাসভার কাৰ্যকরী সমিভিত্র সভাপতি चरार्गक थे, चार, धरारिया नकत्क रहवार (स्य ।

প্ৰথম বিষয়ে অপরাক্ষালীন অবিবেশনে 'প্রাচ্য ও পাশ্চান্ত্য নেশের বাছবের বরুপের প্রভাৱ ও পিঞার বার্ণনিক্ ভত্ব' বিষয়ে এক আলোচনা-সভা হয়। ইছাতে ইউনেসকো'র (unesco) পক্ষ হৈছে বিঃ জ্যাকেস হাবে এবং ভারতীয় দর্শন ট্র মহাসভার পক্ষ হইতে বাহার সোকিলা ওলাহিলা, ভাং ইজ সেন, ক্ষে এন চাব, মহাবেশন, অব্যাপক ওলাহিলা, বর্তনান সেবক শ্রন্থতি বোগৰান করেন। ভারতীর প্রতিনিবিরা নাছবের নিকাৰীভার ভারার আব্যান্ত্রিক বরণের প্রতি বৃষ্টি রাবিবার এবং প্রাচ্য ও পাল্চান্ড্যের মধ্যে বর্ম, বর্মন প্রভৃতি বিষরে ভাবের আবানপ্রবাদের প্রয়োজনীরভা ব্যক্ত ভরেন। সন্মার অব্যাপক ওয়াধিরা এন পি কলেকে 'বর্মনিরপেক রাইবর্মন' (The Philosophy of a Secular State) সম্বন্ধ ক্ষমন লাবারণের উপরোধী একট ব্যক্ত। করেন।

দিনীৰ দিয়ের প্রাক্তঃকালীয় অধিবেশ্যে 'চর্পমের ইভিচাস नावा'त ज्ञानिक बतानक बात, ताबाक्काहारी अवर मार्च ও ভছৰিজান পাৰার সভাপতি ডঃ কালিয়াস ভটাচার্য্য ছইট সারণর্ড অভিভাবণ প্রধান করেন। ভাতার পর অভিভ্রাদকে क्ष्य बना बाब कि बा' (Is Existentialism Philosophy?) अरे नवरक अरु चारलावमा नका वर । देवारक छ: वान-विद्याची राज, चन्यानक चनित्रकृतात बक्तवात, अन, अ, निक्य काहारमञ्जू चिकायन गाउँ करवम अवर चनवानव अधिमिनिवा चालाइनार त्वानेशाम करवन । देकारण बरनानिकाम, नवाच-विकान, वर्गरमद देखिलान अवर गाउ ७ जनविकास भाषाधनिव नुषक् विदियमम इत । अधिनास्य वर्गत्वत्र चारमक मूख्य चया विवाद क्षेत्रक भारति के चारताहिक कर । चारताह भर अन भि কলেকে লাবাহণের কর্ড 'হর্লন ও জীবন' সহকে বক্ততা হয়। ण: क्लाने बहिक, बहारक्ष, बाराब लाक्सि **अवा**रिता श्रंपुण श्राणिनिविद्या अ नक्त रक्षणा (सम । अवेषिमकाद प्रवेष्ठी প্ৰবোদ-অভূচাৰ উল্লেখযোগ্য। ভাতার একট ত্ইভেছে স্থানীর नवीवहर्का करनास्य बहाबाद्रे वश्रामब मणासब क्रीण श्र वार्वाव क्षर्यम । देखारक शाह-एव वरमद वामक-वानिका ररेष्ठ शावनक व्रक्ता (व कीक्रांतिशून) ७ न्यानान-क्रिनन প্রবর্ণ করের ভাতা দর্শকরের ববে বুরণং আবন্ধ ও আশার দ্বাৰ কৰিবাছিল। বাজিতে এক বিচিত্ৰাভুৱাৰে দুতা ও সীতের नत्म नार्वकाकारक धैनविश्वरकत अविरक्त बावविकार धैनरकन এবং সোক্ষেট্ৰ ও জিটোর কথোপকবন উপভিত সকলের क्रिवित्याच्य करव ।

শেষ বিষেধ্ব প্রাতঃকালীন অবিবেশনে 'বনোবিজ্ঞান শাবা'র সভাপতি তঃ বি. এল, আত্তের এবং 'সরাক্ষিজ্ঞান শাবা'র সভাপতি অব্যাপক এল, তি, কাভেক্তর উচ্চাক্তর অভিভাষণ পাঠ করেন। ভাহার পর এক বিভর্ক-সভার 'বিরীখর বর্ষ সভব কি না ?' এই প্রশ্নের আলোচনা হয়। ইহাতে অব্যাপক আর. পি. সিং, এন, আর. কুলকারবী প্রভৃতি বোগদান করেন। বৈকালে পূর্ক্ষবিষেধ্ব বত শাবাসভাগুলির অবিবেশনে অবেক ভব্যপূর্ণ প্রবন্ধ পঞ্জিত ও আলোচিত হয়। তাহার পর প্রীর্থতী প্রেরলীলাবাই তি-ঠাক্র্নী উাহার বারবেদাহ "পর্ণক্রিরে" বহাসভার প্রতিবিধিকের এক প্রীতিভোক্তে আনর-আগ্যায়র করেন। সর্কলোকবরেণ্য ভারত-পুরুষ নহালা গানীর স্থতি-বিভাত এই নমোনর "পর্ণক্রিয়াই দর্শনে সকলের মধে এক অপূর্ব ভাবের স্কৃত্তী হয়। সহ্যায় এস শি কলেকে 'এক বিশ্বক্ষী বর্ণভা হয়। মাহার সোনিয়া ওমানিয়া, অধ্যাপক বি, এক, আত্রের, ডঃ বহাদেবন প্রভৃতি বক্তভা করেন। লক্ষ্য করিবার বিষয় এই বে, এক্সপ্র

দর্শনের বীক ভারতীর সংস্কৃতির মূল বেল ও উপনিষ্কে নিহিক্ত আছে। বৈধিক ধবি মানব-সভাভার অভি প্রাচীন বুলে উদাত বরে গাহিরাছিলেন—'একং সদ্বিপ্রা বছবা বছতি'। ইহাই দর্শননিচরের মহাসমব্বের মহামন্ত এবং এক উদার বিশ্বকাম দার্শনিক মভবাদের মূল পুত্র।

ৰহীশ্ব বিববিদ্যালনের আমন্ত্রণক্ষমে ভারতীর দর্শন মহা-সভার বার্ষিক অধিবেশন আগানী ভিসেদর নালে নহীশ্রে হটবে। দর্শন নহাসভার রজভ জনতী বারক এছ চুই পঞ্জে প্রকাশিত হইরাছে।

# সমুদ্রগুপ্ত সম্বন্ধে নৃতন কথা

প্রীঅশোক চট্টোপাধাায়, এম-এ

শুর স্ক্রাটগণের মধ্যে সমুদ্রগুর অভভন। তাঁহার সময়ে ভারতবর্বের যত দূর পর্যান্ত গুপ্ত-সামান্ত্যের বিভৃতি ছিল আর **फाटावर्थ नवस्वरे चल्रुव हिन मा। वान्यावर्थ हरेस्बरे जिनि** क्कीय (भौदीवीद्यापित श्रीतृष्ट श्रीमाम कृतिबाहित्सम अवर देखा षश्याम कहा त्याय हव षत्रक्छ हरेत्व मा त्य. अरे कांद्रत्यरे ভাতার পিতা প্রথম চল্লগুর সিংহাসমের অনেক দাবিদারকে খকিত ভবিষা সহক্রপ্তরেই রাজ্যের উত্তরাধিকারী বনোনীত করেন। বছত: ভিনি সমার্চ হইবার পূর্ব্বেই কোভবংশীর কোন দুপভিক্তে এবং অচ্যুক্ত ও নাগদেনকে পরাভ করিরাছিলেন —ইচা বৰে কবিবার যথেই কারণ আছে। এলাতাবাদ প্রশাস্তিতে ভারার বিবিশ্ব-বর্ণনা আরভের পূর্বেই 'উপরোজ দুপভিদিশকে ভিনি পরাভ করিয়াছিলেন' ইহা লিপিবছ ভৱিৰার অৰ্থ কি ? অৰ্থ আর কিচুই নতে-'উপরোক্ত নুপতি-দিগতে তিনি সমাট তইবার পুর্বেই ( অর্থাং তাঁতার পিতার জীবদশার) এবং বহেল প্রভৃতি নৃপতিদের, সম্রাট হইবার পর পরাভ করিয়াহিলেন' ইহা বুরান হাড়া। দাকিণাভ্যের বিভিত ব্রপতিগণের ববোই ত কোতবংশীর নরপতির নাব উল্লেখ করা চলিত। বছত: দান্দিশাভোর মীলগিরি অঞ্লে dere convenies with a le la Indian Antiquary vol. III. ) केंच्यानर्थय विकिच नृगण्डियस्य बर्या व्यवस्य তাঁছার বাব উল্লেখ করিলে পারিভেন। পূর্বা পঞ্চাব,বিরী অঞ্লে কোভনাৰাভিভ কিছু বুৱা পাওৱা বিবাহে। ইহা হইভে মনে इव (व. छाञ्चाबा के चक्रानरे बाक्य कविरक्य। Journal of Bihar and Orissa Research Society-मरनाम क्वाचनरनैताम शाविनशृत्व मानन कवित्वम अनर পহুৰাওও ভাঁহাদের পদাভ করিয়া পাটলিপুত্র অবিকাম করেন.

এইরণ নিবিভ হয়। Journal of Indian History-য अवडे जरवारकत देशांत जमर्बन मक चारत। किन देशां वृक्तिवृक्त पनिश्राभाग द्वा मा। और मक्टक पनि वानिटकर হয় ভাতা হইলে বর্ণ পুলাপুরকে কাভকুজের স্বার্থক বরিয়া नश्रारे (विकेश्वन नार्क्ष्य मर्ल) जान , जावन जावा बरेल বুলার প্রাধিস্থানের সহিত পুলাপুরের (কোতবংশীরের রাজ-ৰাশীর) ছাৰণত বৈষ্যা থাকে না। কিন্ত ব্ৰাৱাক্স নাটকের সাফ্য অনুবারী পুলপুরকে পাটলিপুর বরাই ভাল ("ভিদীজোবি অবচ্চরকৃধসত্ম ছদীঅং বিঅ হিজঅং পুলাইরবাসী বণিভারসেব ্বি क्लमपारमानाम"-- बुलाबाक्स धनमाप )। जाहा हरेल जिनि পাচলিপুত্রে রাজত করিবার সময়ে কোত্রপতি কর্ত্তক আক্রান্ত हम-बरे मण्डेरे बामाना निवा तान हव। ড: রমেশচজ বজুবদার বহাশর কেন বে নিয়লিবিভ ক্ৰাট বলিভেছেন, বিশেষ বুবা গেল না। ভিন্নি বলিভেছেন "পুলাপুর may denote at faga, but then we can hardly be definite about its connection with Samudragupta's victory over the three kings."

বোষাই প্রদেশের থানা জেলার অন্তর্গত নোপার নামক ছানের কাছাকাছি একট শিলালিপিতে কোড ভাতির উল্লেখ আছে; এবং নাকারাণপুরের কাছস রুলার কাছর উল্লেখ আছে। তঃ ইলাজীর বতে, এই ছই ছানের বে-কোন একটতে কোডভাতির অবছিতি ছিল; কিন্ত এই বত বুজি-বুজ বলিরা বোব হব না; কারণ পুলাহ্বর—হ্ব পাটলিপুর না হব কাডকুল, এই ছইটার কোনটাই নাহারাণপুর বা লোপারের নিক্টবর্তী বহে। কোডবংশীর স্পতিবুজ বেবানেই রাজন্ব করন না কেন, উভরাগবের বা চলিগাণধের কিংবা প্রভাত বরপতি-

वित्रंत बर्ग कांटावित्रंदक्ष अकर्क् क कहा ठनिक, द्विद्य वेका করিয়াই ভারা করেন নাই। উচাবের ববোই বরি কোতনুলক প্ৰভঙ্কি দুপতির নালোলের করিভেন ভাতা চইলে নরক্তথ্য व निरवानवाणिविक वृहेवात शृद्धि वैवादवत **कत कतिता-**ছিলেন ভাৱা ব্ৰাইভ না। বছত: কোন ভাৱৰ ব্যভিৱেকেই द चड नकत्क विक कविवा 'नवक्थतं निश्हान्य আরোহণ করিবার বোগ্যতা অর্জন করিরাহে' ইহা বোষণা क्तिनाव मक निर्द्ध दिला इक्ष ब्रह्म देन बनिया त्वाब हव मा। जाहा बाजा. त्योद्यादीद्यापित क्या वार विरम चन नक्न धेषवानिकाबीरे ७ जबूत्वधार्यव जबकक विरामन, कुना कुनक क्यांकेर सक्यांच क कालाते । अकतार क्रम अकताक विकेष কৰিবা তাঁহাকেই সম্ৰাষ্ট কৰা চইল কেব ? ভিনি বে জাৰ্চ পুত্ৰ বা ভাষ্য অধিভাৱী ছিলেন, ভাহাৱও কোন প্ৰমাণ নাই। ৰৱক ভাতার বিপরীত প্রধানই আছে। ভাঠ পুত্রই সিংহা-সমের ভাষা অধিকারী। ভিনি রাজা চইলে অভাভ জাভার বুৰ্বৰ্থন ত্ৰান ভুইবাত কোনই কাত্ৰণ থাকিতে পাতে না। व जावा जिवजाती नरह जाहात निश्हानमधीखि वर्नरम जना नकरनत बर्म व्यवहर कार्या नकात हरेरड भारत, हरास्ट्राव এই অভার আচরণের ভারণ কি ? বিশ্বরই ভিনি সর্জ-चर्चत नताकन वर्गरम निरमय श्रीच ७ वृक्ष व्देशविरमन, 'কিছ ভাতার জীবদশার সমূত্রগুপ্ত ক্বন পরাক্রম প্রদর্শন **फ्रिलिन' बरे श्राप्तत केवात नना नारेएक भारत (न.** "ৰীৰ্বোডগ্ৰাষ্ট কেচিছ্ৰণমূপপতা বভ বুতে প্ৰণাৰে" বা 'নংবাৰেয় বছখবিখিতা নিভাযুক্তাপভাষাঃ."

এলাহাবাৰ প্ৰশ্ভির এই ক্থাগুলি বাহা প্ৰবাণিত হয় বে চল্লগুৱের কীৰ্দণার সর্কেগুৱের বিপুল প্রাক্তম চল্লগুৱেক মুখ ক্ষিয়াহিল। বছত: উপ্রোক্ত বাক্যগুলি "একেন বেন ক্ৰাহ্ব্ল্যাচ্যত নাগনেন গ ০ ০ ০ ০ বৈওপ্রাহ্রতৈব ক্লোড-মূলকং পূলাহারে কীড্ডা" এই পরবর্তী বাক্যের ভূমিকা বা ভাগক বাল ইহা বলিলে বোৰ হয় অভায় হয় না।

चवन क्षेत्र केंद्रिए शास्त्र त्य. क्यांच चवचांच वनि जिनि অচ্যত ও নাগনেনকে পরাভূত করিয়া থাকেন ভাতা হইলে পরবর্তী ভালে আবার তিনি তাহাদিগকে পরাজিত ভরিলেব কেবন করিরা ? এই নাগলেন ও অচ্যত বে'উভরাপবের বিভিত নাগলেন ও অচ্যত হুইতে ভিন্ন এইস্পর্কে তো কোন প্রমাণ নাই। ইতার উভরে বলা মাইতে পারে, প্রথনে পরাভুত হুইয়া আবার হুয়ভো তাঁচারা বিক্রোহী হুইয়া নিজেদের খাৰীৰ বলিছা ঘোষণা ভৱিছাছিলেন। এই ভছই প্ৰবৰ্তীভালে ভিৰি ক্ৰম্ব হইবা তাঁহাদিগকে সৰুলে বিনঃ কৰিবা তাঁহাবের রাজ্য খীর সাত্রাজ্যের অভর্ত করেন। দক্ষিণাপবের সুপতি-বুন্দকে পরাজিত করিয়া পুনরায় ভাহাদিগক হ'ব নাঞাজ্যে প্রভিত্তিত 'করিলেন অবচ আর্থাবর্তের নরপতিবন্দের রাজ্য ৰ-সামাণ্ড্যের অভত জ করিলেন, সমাট সহত্রভাৱের পক্তে এই ব্যবহার-বৈষম্য শোভা পার না ৷ ইহার বেড়বরণে বলা বাইতে পারে বে, হরত উাহার রাজবানীর নিক্টবর্জী বলিহা উভরাপবের সুপভিবুদকর্ম্বক আক্রাম্ব হুইতে পারেম এই আশহা করিরা তিনি উভরাপর খ-সাত্রাজ্যের অভত্ ক্র করিরাহিলেন। किंद्र और एकडे 'नवाक्रवाड', 'वर्षावश्रवाक्रव', 'कृषावश्रवस-नर्सवात्वात्वा সমুদ্রপ্রের মহতে প্রযোজ্য নতে। বিভীয় কারণট এই হুইতে পারে বে, কোনও কারণে তিনি আর্থ্যাবর্ডের কোন কোন নৱপভিত্ৰ উপত্ৰ অভ্যন্ত ক্ৰছ ক্ইৱাছিলেন এবং সেইভ্র আর্ব্যাবর্ডের কোন রাজাকেও বিখান বা ভরিষা नकनकर विमा कविशावितन। कि कावत किनि कव हरेडाहित्म चाहा भूत्यरे वना हरेडाहि।

পরিপেষে বক্তব্য যে, এই ক্ত্র প্রবন্ধট সমাট সর্জ্বত্তরে জীবদের এক অব্যারের বৃত্তব আলোচনার স্থ্রপাত করিতেহে মাল ; এই সম্পর্কে ঐতিহাসিক পণ্ডিতবর্গের মৃষ্টি আকর্ষণ করিতেহি।



# রঘুনাথ দত্ত

বাংলার প্রাসিদ্ধ কাগজ-ব্যবসারী রছুনার বন্ধ বহাণর গভ ২০শে কারল কলিকাভাছ বাসভবনে পরলোকগনন করিলা-হেন। তাঁহার রছ্যতে বাংলার কাগজের ব্যবসার বিশেবরণে কভিএত হবল। বহু জনহিত্তকর প্রতিঠানের সঙ্গেও তাঁহার বনিঠ বোগ হিল। ভাহারাও তাঁহার জভাব গভীরভাবে অভ্যত্ত করিবেন।



ब्रुमान क्ष

বসুনাধ ১৮৮৫ বিষ্ঠান্তে কলিকাভার শোভাবাকার আকলে বেলিবাটোলার এক দরিত্র পরিবারে করপ্রত্য করেন। ভাঁহার শিভা পরলোকগভ ভোলানাথ দত্ত ১৩৪, পুরাতন চীনাবাকারে বে কাগজের কোকান চালাইভেন ভালা বিশেষ উল্লেখযোগ্য ভিল্ল না।

১৯০৪ সলে বলের বুগে লোকানে কাজের চাপ বৃত্তির কর্তানি জাঁহার শিতার আন্দেক্তরে বিভাগরের শিতা পরিত্যাগ করিরা ১৯ বংগর বরণে তাঁহার শিতার ব্যবসারে প্রবোগ্য সহকারী হিসাবে বোগদান করেন। তিনি তাঁহার ক্ষতা ও কর্মপুলকভার হারা নাম হই বংগরের নব্যেই তাঁহার শিতার প্রতিষ্ঠিত তোলামার হত এও সল নামক কাগজের ব্যবসার প্রতিষ্ঠানটির প্রভূত উন্নতিসাবন করিতে সর্ব হল। ১৯০৮ সলে তাঁহার শিতার বৃত্তার পর এই বিরাট প্রতিষ্ঠানটির ওক্ষারিক্তার তাঁহাকে প্রহণ করিতে হর। বিশ্ববিভাগরের শিকালাতের প্রবোগ তাঁহার হর নাই বটে, কিছ ব্যবসা ক্ষেত্রে হিতি ব্যক্তারের বিজ্ঞান্তর করে। বিশ্ববিভাগরের তিরি হাতে-ক্লরে বিভির্বোগ্য শিকালাত করিরা বিজ্

স্থাৰসায় ও ক্ৰমিপ্ৰভাৱ হাৱা শীৰ্ষহান অধিকায় ক্ৰিঙে সমৰ্থ ক্ষরাহিলেন।

১৯১০ সনে ভিনি তাহার প্রভিত্তান্টকে একট বৈক্তেনিভ প্রতিষ্ঠানের সভিত সরাসরি যোগাবোগ ভাগর করেন। এডট ভাৰ্মান প্ৰতিষ্ঠান ডাঁহার এই কাৰ্বো বাৰা শৃষ্ট করিবার DE करवम. कि कांचात अम्मा केश्नात्वत मिक्के विवासिक ব্যবসায়ীদের ছ্রভিন্দি চূর্ণ-বিচুর্ণ হইরা বার। ইছার পর পৃথিৰীব্যাপী প্ৰথম মহাযুদ্ধের সময় এবং পরেও মানা যাত-প্ৰভিৰাতের মৰ্য বিশ্বা এই প্ৰভিঠানটকে অঞ্জনন হইতে হয়, কিছ বছনাৰ সভভাৱ সহিত ও নিভীভভাবে ভাঁৱাৰ विर्वामक्रीक शविवानिक कृतिक ৰাকেন এবং বিভিন্ন ক্ষেত্ৰে ইহার উন্নতিসাধন করেন। অচিবেই এই প্রতিঠানট বাঙালীর ব্যবসা-বৃদ্ধি, সভভা ও কুপলভার সাকলোর এক সমুন্দল কীর্তি বোষণা করে। ভারভের বিভিন্ন রাজ্যের জেলা বোর্ড ও বিউনিদিপ্যালিটসমূহে, বিশ্ববিদ্যালয় ও অভাভ শিকা প্ৰতিষ্ঠানতলিতে, সংবাদপত্ৰ ও সামন্ত্ৰিক পত্ৰিকার এই ব্যবসায় প্রতিষ্ঠানটর পুৰ্যাতি ও পুৰুষ পরিব্যাপ্ত হয়। যত মহাদয়ের नकन श्राप्त क्षेत्र का विश्व कि विष्व कि विश्व क ভাহা নহে, ভভাভ ব্যবসাক্ষেত্রে বাঙালীর প্রমায় বৃদ্ধি করিভেও ভিনি ভংগর হইয়াছিলেন।

ভিনি রখুনাথ বত এও সল ও ঞীছুর। কটন পিনিং এও উইভিং নিলস্ লিনিটেও প্রভিঠা করেন। কলিকাভা পেণার ট্রেডার্স এসোসিরেশন, বেদল নিলওনার্স এসোসিরেশন, দরিত্র বাধন ভাঙার, ক্যাম্পাবেল হালপাভাল, অবিনাশ স্থতি প্রস্তিভ্নন, বেদল ন্যাশনাল চেদার অব ক্যার্ল, কে. এন. পাল কোম্পানী, হললী ইফ কোম্পানী, ট্রাডার্ড ট্রেশনারী ন্যামুফ্যাক্চারিং লিনিটেড, বাম্মা লাইর এও ক্ষেক্যাল কোম্পানী প্রস্তুতি বছ ব্যবসারী ও ক্ষাহিভক্তর প্রভিঠানের সহিত ভিনি বিশেষ ভাবে যুক্ত ছিলেন।

এতব্যতীত বিংখাৰ্থতাৰে তিনি বছ প্ৰতিষ্ঠানকৈ এবং হংছ ব্যক্তিকে পৰ্বসাহাব্য কৰিব। কৃতজ্ঞভাভাকন হইরাছেন। দর্মির্সে বিশ্ববীবের সহিত তিনি প্রত্যক্ষতাৰে কৃতিত বা বাকিলেও গোপনে পর্ব ও স্বস্যাম্যভাবে সাহাব্য ক্রিয়া বেশের ও বশের প্রত্য ব্যবসাধন ক্রিয়াছেন।

থ্বনাসী' ও 'নভার্শ রিভিন্ন' প্রতিষ্ঠানটির প্রভিও রন্থনাবের গভীর অহ্বাগ হিল। বহু সমর বহু ব্যাপারে উল্লেখ অবভ-স্থাভ প্রতি ও উলারভার পরিচর আবরা পাইরাহি। লাহিড্য-সেবীবেরও তিনি নামাভাবে সহারভা ভরিতে কৃষ্ঠিত হুইভেন না। ভালার পরলোভগননে আবরা আত্মীরবিরোগ-ব্যথা অহুভব ভরিতেহি।



যাঁদের দেখেছি—এহেনেক্সার রার। নিউ এক পাবলিশার্গ লিমিটেড, ২২, ক্যানিং ষ্ট্রট, কলিকাতা—>। বুল্য তিন টাকা।

জীবৰ-চরিত, আত্মলীবনী ও মুডিকণা বাংলা-সাহিত্যের একটা আদ হিসাবে বছদিন থেকে ছাল পেরে আসছে। কিন্তু ঐ তিন্টির সংনিশ্রণে সাহিত্যের পাত্রে নুতন রসের পরিবেশন হেনেপ্রধারর রসালো ও বিপুণ লেগনীতেই সভব হরেছে। হেনেপ্রধারর পৃত্তকে আমরা বে ওগু সাহিত্যের ও নাটোর ক্ষেত্রে মহারণীদিগের নৃতন চিত্র, নৃতন পরিচয় পাই তাহা নয়, সমসামত্তিক সমাজের বিভিন্ন ক্ষেত্রে বাঁরা খ্যাতি অর্জ্ঞন করেছেন, উালের করেক জনেরও ফুল্বর আলেখ্য এই মুডিচিত্রের মধ্যে পাঙ্যা বার।

এই বইরে বেমন একদিকে দেখি শরং চক্র, প্রমণ চৌধুরী, অমৃতলাল, ছিজেজ্ঞলাল ও গিরিশচক্রকে, তেমনই অন্তদিকে আমাদের সামনে একে-বারে জীবত হরে ইাড়ান। ওতার করমতুরা বাঁ, গারক জনীরজ্ঞীন, থেলোরাড় শিবদান ও অভিনেত্রী তারাক্ষরী এবং বিশেষ ভাবে উজ্জ্ঞল পরিচর পাই বাংলার চিত্রকলার প্রজাগরণের অন্তত্ম পথিকৃৎ এক জনের, বাঁর কথা বাংলার লোকে ভুলতে বসেছে—ভিনি গগনেক্রনাথ ঠাকুর। এক কথার বলতে গোলে, হেমেন্সবাদ্ বাংলার বিগত গৌরব্যব বুদ্ধে আরক গুভগুলির পরিচর দিরে গোছেন তাঁর এই লেথার মধ্যে দিরে তবে ইতিহাস ও ঘটনার শুক্রো শস্তুকে তাঁর একান্ত নিজৰ রসাখাদ ক্ষমতার গুণে, ভাবার গু ভাবের কীরমধু বোলে, পরমারে পরিণত করেছে তিনি। পাঠক সকল দিক বিয়েই তথা হবেন।

**জ্ঞী**কেদারনাথ চট্টোপাধ্যায়

মানুষের মন--- এলী ব্যবস্থ নার। রঞ্জন পাবলিশিং হাউস বুলা পাঁচ টাকা।

লেখক উৎসর্গে লিখিডেছেন, 'পরাধীনতার তীব্র আলা বাদের প্রাণ্
আগ্নিমর করে তুলেছিল,---সেই সব মৃত্যুপ্তর ভাই-বোনদের উদ্দেক্তে এই
প্রস্থ উৎসর্গ করলাম।' স্তরাং বোঝাই বার বে, উপস্থাস হইলেও বইখানি
ভারতের বাধীনতা-সংগ্রামের আংশিক চিত্র। সর্লাচ প্রধানতঃ প্রেমের
প্রল্প, তবে নায়ক-নারিকারা বা উপনারক-নারিকারা কেহ কেহ বাধীনতাসংগ্রামের সহিত কড়িত। অনেকগুলি পুরুষ ও নারীর জীবনের কটিল
সম্প্রা লইরা রলাংশ রচিত। লেখক পাঠকদের কৌতুহল শেব পর্বান্ত



লাগ্ৰত বাখিতে পারিরাহেন —ইং। উছার কৃতিছের কথা। ঘটনাপরশারা সালাইবার ও সাধারণ চরিত্রকে লীবছ করিরা তুলিবার ক্ষমতা উছার আছে। উছার ভাবা বলিও ও বচ্ছলগতি; বলিও কথাভাবার গলটি লেখা, তবু ভাবার আতিলাতা আছে। আলকাল আনেক আধুনিক লেখকের লেখার ভাবা প্রামাতা এমন কি ইডরডা লোবছুই হইতে দেখা বার, বর্তনান লেখকের লেখার স্মার্ক্তিত প্রীতে ভাহার কোন শান নাই। নারীচরিত্র-ভালর মধ্যে অগ্নিম্বরুগর সীমার চরিত্র বলিও অল্প সকলের চেয়ে ছোট তবু মাস্মবের মন সে-ই সকলের অপেলা বেশী টানে। বইথানিতে বেখানেই লেখক কালিকলমে ছবি আঁকিয়াছেন, সেখানেই ভাহা উহার হাতের চানে জীবছ হইরা উঠিরাছে, তা সে বাঙালী বধু মালতীর ছবিই হউক কি বুড়ী ঠিকা বিরই ছবিই হউক। বনম্বলগত ভাহার লাহের শান লাহ লাব লেখকের লেখার মত গতামুগতিক পছার লিখিত নহে। বইটির বিতীয় সংক্ষমণ হওয়াতে আম্বান্ত হইরাছি।

প্ৰশাসা দেবী

গান্ধী ও ষ্টালিন---- নুই ফিনার। অনুবাদক-- একমলা দন্ত। রীডাদ কর্ণার, ৫, শক্ষর ঘোষ লেন, কলিকাতা ৩। পৃঠা ২৮২। সুল্য চার টাকা।

বিখাতি মার্কিন লেখক লুই কিসাবের নাম এবেশের লিক্ষিত সম্প্রদারের নিকট অপরিচিত নহে। মহাজা গানীর বাবী ও সাধনার আধুন ভাঁহাকে ভারতবর্বে টানিয়া আনিয়াছিল। এই নহামানবের সংশার্শে আসিয়া তিনি বর্ত্তমান সমস্তাবহল পৃথিবীর অনেক সমস্তাম সমাধানের ইঞ্চিত গাইলাছিলেন। লগতে আল বিভিন্ন বিপরীতসুখা চিন্তা ও কর্মধানা এভাব বিভান করিতেছে। ইহার কোনটা হরত আপাতসূচীতে ওভ বনিয়া মনে হয়। কিন্তু পরিশাম বিবেচনা করিয়া সুধী ব্যক্তিয়া এভানিকে ভাগ করিয়া আপাতকঠোর হুর্গন প্রেই চনিতে উপ্রেশ দিয়া বাকেন। ব্যক্তি বা লাতিবিশেবের ভালমন্দ সমস্ত মানবলাভিন্ন কল্যানের নির্বেই নির্মণিত হওয়া উচিত। বিব-কল্যাণ ব্যক্তি ও লাতীর কল্যানেরই পূর্ণভামাত্র।

এই অসুবাদ-সম্থ চতুৰ্দণ অব্যানে বিভক্ত। প্ৰত্যেক অব্যানে বৰ্জমান অগতের এক বা একাধিক সমস্যা সইরা লেখক আলোচনা করিরাছেন। ব্যক্তিবাধীনতা, জাতীরতা এবং বিবলান্তি এই আলোচনার মুখ্য বিবর। সাজী ও টালিন বর্জমান বৃংগর এই কুই বিরাট পুরুবের আলে এবং কর্ম-পছতি, বিচারের মানদণ্ড ও দূর্দৃষ্টির মধ্যে বে কি বিরাট পার্থকা, লেখকের আলোচনার তাহা কুটিরা উঠিয়াছে। এক জন শীণকার হইরাও বিরাট নৈতিক ও আন্মিক শক্তির অধিকারী, আর একজন বাহতঃ মহাশন্তিশালী হইরাও নীতির মানদণ্ডে কতই না মুর্বলে বলিয়। প্রতিভাত হন—সকলকে নাবাইরা বড় কইবার কি বিরামহীন চেটা উহির। পৃথিবীর অভাত সমাজের আদর্শের সক্ষেক্ত আহাকের আদর্শের আলোচনা করিয়াছেন এবং দেখাইতে চেটা করিয়াছেন বে, ইতিহাসের নানা কালের নানা বেশের মনীবিরণের প্রচারিত উচ্চ



আহুৰ্গদে সংসাধের অক্ষতাই আৰু কুশ ক্যুনিলবের ক্য নিবাহে।
ঐ সকল আহুৰ্গ আংশিকভাবেও সকল হইলে, বিষয়ানবের সকলসাধনের
সলে সলে কুলীর প্রতিক্রিয়ালীল নৈতিক ভিডিহীন আহুৰ্গ ও কুলাছতি
একনায়কছের সহিত ভালিরা পাড়িবে। লেখকের মতে হিটলার ও ইালিনের
নীতির মধ্যে প্রের কোনটিই নহে—তা একই বিখার বুইট দিক নাত্র।
ইহারা উভরেই পাশ্য শক্তির অন্ধ উপাসক, ব্যক্তিবাধীনতা উভরের নিকট
মূল্যাহীন, উভরই নিজেকে, নিজের জাভিকে, নিজের চিলা ও কুল্মারাকে
লোর করিরা জগতের সকলের উপর চাপাইরা দিতে বাত্র। আর মহাত্রা
গান্ধীর নিরলস সাধ্যা বাভিক, সমাল, দেশ ও বিখ্যানবের মুক্তির কন্ধ।
সভ্য উহার নিকট সর্বাপেকা অধিক প্রির। এই সভো প্রতিপ্তিত সকলই
উহার একমাত্র কাম্যা—ইহাই সকলকে প্রকৃত লাভি দিতে পারিবে। এ
লক্স ব্যক্তির অধীনতা গান্ধীলীর নিকট পুরই পরিত্র, আভির বাধীনতা,
বিশ্লাভির ইহাই উৎস ৷ ক্যানীবারী কিংবা ক্যুনিট এই ঘৃষ্টভলীর মর্গ
উল্লেক্ত ক্রিতে অক্সর।

এই পুস্তকে সোভিয়েট ও বিটলারী আগপের বিমেশণ পাঠকের চিন্তার থোরাক বোগাইবে। বর্জনান কগতে গাভীবাদের সার্থকতা কোথার ভাষাত আই করিয়া দেখা বাইবে। অথচ লেখক বৈদান্তিক হিন্দু নহেন, বাটি আবেরিকান, সোভিয়েটেরও শত্রু নহেন। পুস্তকের অসুবাদ কুলর করিয়াছে।

ঞ্জীঅনাথবন্ধ দত্ত

কোণার্ক-এজীবনকৃষ পেঠ। ভি. এব. লাইবেরী, ১২, কর্ণভরালিস ট্রীট, কলিকাতা-১। দাব বেড় টাকা।

এখানি কবিতা-পুত্তক। কুডিটি কবিতার বইবানি সম্পূর্ব। কথাত্তর,

MILLIAN PROBLEM PRINTED PRINTE

বর্ষণান, কোণার্ক পূর্যানালয়, সূত্রেনী, নিয়াবিয়া—এই গাঁচট দর্ব: গভক্ষিতা কোণার্ক-সম্পর্কিত। অবশিষ্ট ক্ষিতাভালি নাতিনীর্ক, এবং চলে রচিত।

'কোণাৰ্ক পূৰ্ব্য-মন্দিরে' পাই—
"চিন্নজনী বাসুবের এই আলোক-সাধনা,
'তমসো মা জ্যোভিৰ্সমন'।
এই বানী মামুবের অক্সন্তান চিন্নকালের বানী।"
'শবরী'তে আচে.

'বারে বারে নীল মারা উঠিল ছলিরা,
বারে তার অভিনব হ'ল রূপান্তর--তাপনী শবরবালা উঠিল শিহরি
আনন্দ-আগ্রত্তমু। সমূবে জীরাম
ফ্নীল নীঃদ-রূপ বরনাভিয়াম।
তপ্তা সার্থক আলি।'

'প্ৰেম' চতুৰ্দ্দণণদী কৰিভা,

'এই ভো প্রেমের গীতি,— কুধাবিবে ভরা এ জগতে সত্য কিবা ভাছে তার ভাগে ণু'

'ৰঙৱে' আছে.

'ব্লংবের ভূমিকা'পরে মানব-জীবন শে।ভিছে নিক্যশায়ী কনক-লিখন।' 'লিরাখিরা'র পাই.

> 'নোনার আলোক বলে ভরা বুকে ভার, থেরালি কোরার ভার, নোনালি'কোরার।••• লিরাথিরা অপরূপ নরী। বাহারে দে পু'কেছিল পেরেছে কি ভারে ?'

শেষদান, অপৰ্ণা, বৃদ্দেৰ, ময়্থান্দী, ধৰ্মদদ এতৃতি কৰিতাগুলি পাঠকের মনে রেথাপাত করে। ক্বিডাগুলির মধ্যে আকর্ষণ আছে। হন্দ সাবলীল। "কোণার্ক" কাব্যামোদী পাঠকের চিগুকে নন্দিত করিবে।

এশৈলেন্দ্রক লাগ

যুগ্ৰহ্মি—এলোডম সেন। প্ৰাচন পাবনিদাস, ২৪, ভবানীচরণ মন্ত লেন, কলিকাডা। পু. ১৫২, মুল্য ছই টাকা।

আজিকার দিনে ছনিরার প্রতিটি দেশের সমাজে বে ভাঙাচোরা কলিতেছে সেই পরিবেশে উপভাসের কাহিনী-আশ গড়িরা উঠিয়াছে।

সভভা, কর্ত্তব্যবিষ্ঠা ও কার্য্য কুশলভার নিদর্শন

# লিমিটেড

বাংলার ব্যাদিং কগতে বিবাট বিপর্যার সক্তেও ভারত সরকার হইতে পাঁচ লক বাট ছাজার টাকার শেরার বিজ্ঞানের অন্তমতি পাইরাছে। শেরার বিজ্ঞার সংজ্ঞাত বোষণা শীমই বধারীতি প্রকাশিত হইবে।

চেয়াবদ্যান—শ্ৰীকৃথছাথ কোলে
ন্যানেদিং ভিবেটায়—শ্ৰীকৃথিকাল ন্যানাদিক

ছিলু নারীকে লাইন বাঁবিরা কর্ট্রোলের বোকানে বাড়াইতে হয় এই বিবর লইরা পরের প্রচনা – ইজাকিং এই বিকে অসুলি নির্দেশ করিরা গরের পরিণতির ইজিত করিয়াছেন।

কিত বৰ্ধন ধনী-সনাককে কেন্দ্ৰ করিয়া কাহিনী আবর্তিত হইতে লাগিল তবন দেখি, একটা অবাভাষিকত্ব বেন সকল পাত্র-পাত্রীকে পাইয়া বসিয়াহে। বিলাত-কেয়ত অলিত লাভিক ধনী বুৰক তাহাকে বরং কতকটা বুৰা বায়, কিত্ত জ্বভাতার উত্তই আচরণের অর্থ কি ? হঠাং একট বাভানী বেরে এরূপ অবাভাষিক মনোবৃত্তিসম্পার হইয়া উঠিল কেন ? এরূপ প্রস্ন পাঠকের মনে উদিত হওগা বাভাষিক। অবাভাষিক পারিস্থিতিতে পার-উপভাবের পাত্রপাত্রীর আচার-আচরণকে ফুটাইয়া তোলাই আজকাল অনেক সাহিত্য-দেবীর উপজীব্য হইয়া বাঁড়াইয়াছে। সমালোচ্য প্রস্নের লেককও দেখিতেছি এই প্রোতে গা ভালাইয়া দিরাছেন।

পুত্তৰখনিতে লেখকের আশাপ্রকীপ্ত মনোভাবেরও পরিচর পাই— ভাহারই ভোতক এই বইরের প্রক্রাপট। আছন পূর্ণতেকে প্রকৃতিত হইরা উঠীরাত্তে—ক্তি এই অগ্নিলাহের পরই একটা কিছু গড়িরা উঠিবে—এই ভাঙাগড়াই ইতিহাসের টানাপোড়েন।

#### **अ**श्रुद्धभव्य (प्रव

বেদান্ত দৰ্শন (১ৰ ৭৩ চতু: দুজী)—দানী বিষরপানন্দ-অনুদিত এবং বানী চিন্তনানন্দ পুনী সম্পাদিত। উবোধন কার্যালর। ১, উবোধন লেন, বাগবাজার, কলিকাতা। ২১০ পুটা। মূল্য তিন টাকা। ব্যাস-রচিত "ব্রহ্মসুজে"র উপর শক্তরাচার্ব্যের যে ভাষ্য আছে তাহাই বেহান্ত দর্শন নামে প্রসিদ্ধ। অবৈত বেদান্ত সম্বন্ধে ইহাই সর্বপ্রধান ও মৌলিক এছ। ইহার প্রথম বলাসুবাদ করেন পণ্ডিত কালীবর বেদাছ-বাদীশ বিগত শতকের শেবভাগে। কিন্ত উক্ত অনুবাদ আক্ষিত অহ্বাদমাত্র ও প্রাঞ্জন নহে। পণ্ডিত প্রথমবাধ তর্কভূবণ কর্তৃক বেদাছ দর্শনের বিতীয় বলাসুবাদ হর পণ্ডিত রাজেপ্রনাধ বোব ওরকে বাদী চিত্-ঘনাৰক প্রীয় সহবোজিতার।

সমালোচ্য গ্ৰছে ব্ৰহ্মপুত্ৰের প্ৰথম চারিটি পুত্ৰের উপর বিশ্বত শক্তরভারের অমুবাদ প্রবন্ধ হইরাছে। শক্তর-ভারের উপর রামানন্দ সর্বভীকৃত 'রম্বপ্রত' টীকাও ইহাতে সামুবাদ সংবাজিত হইরাছে। ইহাতে
ভারতী তীর্বের "বৈরাসিক ভারমালা" অমুবাদসহ থাকার পাঠকের বিশেব
ক্ষেথা হইরাছে। ভাঙামুবাদ বাতীত "ভারণীপিকা" নামক বকুত
বাথার অমুবাদক বাচস্পতি বিজ্ঞের 'ভারতী', আনন্দমিরির 'ভারবির্ণর'
প্রভৃতি প্রসিদ্ধ টীকাবলীর সারাংশ দিরাছেন। সাধারণতঃ অমুবাদ
মুলামুর ও সাবলীল, ব্যাথাা সহজবোধ্য, সারর্গর্জ, তবে ছানে ছানে প্রাঞ্জনভার অভাব দৃই হয়। এই সামান্ত ক্রেটি সম্বেত্বগ্রহুথানি বাংলা বেদাভসাহিত্যে বিশিষ্ট ছান লাভ করিবার দাবি রাংথ। ইহা ছারা পাঠকপাঠিকা বেলাভ দর্শনের মুর্বোধ্য তত্ব অধিগত করিতে সমর্থ হইবেন
বলিরা আশা করা বার।

#### यामी खननीयतानन

গীতাপাঠের ভূমিকা—জ্জানেক্রনাধ বলোপাধার।
ক্লিকাতা-৩১, চাকুরিরা—১নং রধাক্র বানার্ক্রা কেনছ 'র্থীক্র বীতা
প্রচার প্রতিষ্ঠান' হইতে জীনীপেক্রনাথ/বিস্ফোপাধার কর্ত্ত প্রকাশিত।
১৪+৯৬ পুঃ। যুল্য ছুই টাকা চারি স্থানা।



# ৪ বছরের হিসাবে

১৯৫०-এর ভ্যালুরেশন

গত ৪ বছবের হিঁগাব-নিকাশে 'হিন্দুখান'-এর
তৈলে বৈ বা গ গ জা ই রা ছে
তিলোটি ২০ ক্রমক্ত টাকার উপর।
সেই টাকা হইতে লাভ-সহিত সকল বীমাপত্রে
বছর প্রতি হাজারকরা বোনাস বোবণা
করা হইবাতে:

সেয়াদী ৰীমায়— } ৮২ টাকা

ভবিবাতে মূল্য হ্রাস এবং অক্সান্ত অনিশ্চিত
বাম সাপকে সংবৃক্ষিত তহুবিলের যথেই ব্যবস্থা
রাধিয়া এবং ক্ষদের হার অক্ষিত হার অপেকা
ই % কম ধরিয়া কঠোরতর পদ্ধতিতে হিসাব
নিকাশের এইরপ ফল দাভাইয়াতে।

লরীতে কমহারে হ'ব অর্জন, ছুমুল্যের বাজারে অধিকত্ব ব্যর প্রভৃতি নানা প্রতিকৃদ অবস্থা সন্তেও এই হিসাব-নিকাশে হিনুহানের অবিস্থাদী নিরাপপ্তা, হুদৃঢ় আর্থিক সক্তি এবং পরিচালনবাবে মিতব্যথিতার প্রমাণ পাওয়া বার।

চলতি ৰীমা ····· ৭০ কোট ১৬ বন্ধ টাকার উপর ৰীমা তহৰিল ··· ১৫ "৯৭ """ প্রিমিরামের আর ৩ "৪০ """ দাবী শোধ ····· ৭ "২০ ""



ভিস্কুছান কো-অপাদ্রেভিড ইন্সিওরেল সোসাইটি, লিঃ ৪বং চিকালন এতিনিট, কনিকাল। ইহার উহোবদ হয়। এই উংসবের প্রবর্তক ক্ষেনোহন সা জীৱানপুরে বেবালড, বর্মালাল, এবং লাভব্য চিকিংসালয় প্রকৃতি বিধিৰ ক্ষতিক্ষক সংস্থাও প্রতিষ্ঠিত ক্ষিয়া গিয়াহেন।

#### সঞ্জীবচন্দ্রের পালামো

সঞ্জীবচজের "পালাবোঁ" পশ্চিরবদের বাব্যবিক শিক্ষা-বোর্ড কর্ড্রক প্রবেশিকা পরীকার ক্রম্ভ পঠন পূর্ক বলিরা বার্ব্য হইরাছে। বোর্ড-কর্ত্রপক বলীর-সাহিত্য-পরিষণ সংস্করণই প্রামাণিক বিবার ইহা পঠন-পাঠনের নির্দেশ দিরাছেন। "পালাবোঁ" বে বাংলা সাহিত্যে স্থায়ী আসন প্রহণ করিরাছে ভাহাতে বিবত বাই। পরিষদের সুঠু ও সুসম্পাদিত সংস্করণট প্রহণ করার মাধ্যবিক শিক্ষা-বোর্ড সাধারণের বিশেষ বত-বাহাত হইরাছেন।

#### ছাত্রীর কুতিত্ব

সক্ততি ক্লিকাতা বিশ্ববিভালরের স্বাবর্তন উংসবে কুষারী বদলতা বেরা, এম্-এ, আইন-পরীকার এল্-এল্-বি উপাবি পাইরাছেম। ইনি বেলিমীপুরের বিশিষ্ট ক্ষিলার ও এড্ভোকেট শ্রীযুক্ত কুপেন্সনারারণ বেরার বিভীয়া কভা ও পশ্চিমবল সম্মেলমের ও বেলিমীপুর স্মিলমীর বিশিষ্ট ক্ষ্মী শ্রীরাক্ষেক্স্যার বেরার ভরী।

ঐবিমলকুমার দত্ত

বিখতারতী বিখবিতালরের সহ-গ্রহাগারিক ঐবিষলক্ষার হত, এব-এ, তিপ-লিব, তারত-সরকার কর্তৃক রবোনীত হইরা, ক্ষমগুরেলর টেকনিক্যাল কো-অপারেশন ব্যবহার্থারী অট্রেলিরার সাইত্রেরী সেমিনারে বোগলানের হত ২২শে ক্ষেরারী বিনামবাগে সিডনী বালা করিরাছেল। তিনি ক্ষমগর-বহিলপুর নিবাসী ঐর্ক্ত কালিলাস হত মহাশরের পুর এবং তারতের গ্রহাগার-আন্দোলন ও শিল্প সহতে এক্ষম বিশিষ্ট লেবক।

# ভোট ক্রিমিন্রান্যের অব্যর্থ ঔবধ "ভেরোনা হেলমিন্থিয়া"

নৈশবে আমাদের দেশে শভকরা ৩০ জন শিশু নানা জাডীয় ক্রিমি রোগে, বিশেষতঃ কুত্র ক্রিমিডে আক্রান্ত হয়ে ভগ্ন-খান্ত প্রাপ্ত হয় "ভেরোকা" জনসাধারণের এই বছদিনের অস্থ্যিধা দূর করিয়াছে।

ৰ্ণ্য—ঃ খাং শিশি খাং মাং সহ—২। দ খানা।

ভবিত্ৰেন্ডাল কেমিক্যাল ভবাৰ্কস লিঃ
১৷১ বি, গোবিন্দ খাডটা বোড, কলিকাডা—২৭
কোন-সাইব ১৮১



পূৰ্ম-আফ্ৰিকাৰ নাইবোৰিতে ভাৰতীৰ ভবিশনাৱের নেকেটাহী ভূপুত অচুটিত ঐতি-সন্মেলৰ

#### নাইরোবিতে প্রীতিসম্মেলন

গত ২৬লে জাছবারী, বিটেশ পূর্ব্য-জাফ্রিকার ভারভীর ক্ষিশনারের প্রথম সেফ্রেটারী—নাইরোবিতে ছানীর বিশিষ্ট ব্যক্তিরন্দের অভ্যর্থনার হুল এক বিরাট প্রীতি-সম্মেলমের আবোজন করেন। প্রায় বেড় হাজার বিশিষ্ট ব্যক্তি আব্দ্রিত হুইরা এই সম্মেলমে যোগধান করিবাহিসেন।

#### शंग्रमत्रावादम প্রবাদী वांडानीदमत क्रुर्शांडमव

এই বংসর সর্বপ্রথন হারদরাবাদে প্রবাসী বাঙালী সরিভি
কর্ত্ত্ব বিপুল সমারোহে সার্ব্যক্তনীন হুর্গোংসর উদ্যাশিত হয়।
প্রবাসী বাঙালী-সমাক হালা ছানীর অলাল সম্প্রভাবের হিন্দুরাও
এই অস্থ্রটানে বোগনান করিরাহিলেন। জ্রীঅবনীশ চৌধুরী
বহতে প্রভিনা নির্দাণ করেন এবং জ্রীপ্রবোদলাল বুবোপাণ্যার
ও তাহার সহক্রীদের ঐকাভিক চেটার অস্থ্রটান সর্ব্যালসম্পর্কর হয়।

১১ই অক্টোবর ঐসনংক্ষার মঙলের পৌরোহিত্যে বিজরা সংখ্যানের অহুঠান আরভ হয়। আর্থি, হাভকৌতৃক, নাট্যাভিনর ইণ্ডাহিতে সভাগৃহ আনন্দর্থন হইরা উঠে। ঐপুলরেণু হাস ও ঐবাসভিকা বহু অভিনয়নৈপুণ্যে হর্ণক-নভানিক মুখ্য করেন। ঐনিবঞ্জন নাহা ও ঐভোলাবাধ বন্দ্যোপাব্যার ইন্থানের উভয়কে হৌপ্যপদক ও রৌপ্যনিদ্যিত 'কাপ' উপহার প্রধান করেন।

#### ললিতমোহন গুপ্ত

ভারত কটোটাইপ ই ভিওর বছাবিকারী সলিজ্যোত্ম গুপ্ত বহালর গত ২৩লে কারন বীর বালীগঞ্জ তবনে ৭৩ বংসর বরসে পরলোকগনন করিয়াবেন। ভারতে কটো এন্বেভিং কেন্দ্রে অঞ্চ উপেক্রকিলোর রায়চৌধুরীর (ইউ. রায় কোং) সহকারী হিসাবে ভিনি কার্যা আরম্ভ করেন। পরে ভিনি



বাৰীনভাবে কৰ্মকেত্ৰে অবতীৰ্ণ কম। তায়ত কটোটাইণ ই তিও প্ৰতিটা করিবা রক প্রথতকারক এবং চিত্র-মুম্নাকরমণে তিনি প্রসিচিনাত করেব। তংকর্তৃক প্রকাশিত আট কম বক্ত্র-ননীবীর পরিচয়-স্বলিত চিত্র-পূতক একবা স্ববীনহাকের নিকট বিশেষ স্বাব্যলাত করিবাহিল। 'প্রবাদী' ও 'বভার্গ রিভিন্ন' প্রতিটানের স্থেও তীরায় বনিষ্ঠ সম্পর্ক প্রাণিত হয়।

চল বান নক্ষতি ইহলোক পরিভাগে করিয়াহেন। ভাকা বান ব্যবন্দিংক ক্ষেত্রার অবিবাদী।

১৮৭২ ৰিটাকে ১ই অটোবৰ ভাৰায় কৰ হয়। ১১৫ লবে আবেছিকায় দিবা ভিনি লেখাম্কার হানিব্যান বেভিকাং



मनिक्रवादम चव

ভাঁথার বধুর ব্যবহার এবং আবর-আণ্যারনে সক্ষেই বিশেষ প্রীত হুইছেন। সাহিত্য এবং সাহিত্যসেবীবের প্রতিও ভাঁহার গতীর অহুরাগ ছিল। কিরণ সাবাত অবহা হুইছে নিজ পরিপ্রব, কর্ম্মণট্রতা ও ঐকাভিক নিঠাবলে রক-প্রভতি ও চিত্র-বুলন ব্যাপারে তিনি অনতসাবারন কৃতিছের অবিকারী হুইরাছিলেন লে সবছে ভাঁহার প্রমুবাং আবরা অনেক ক্বাই তনিরাছি। এরণ একজন বিশেষজ্ঞের বৃত্যুতে বাঙালীবারেই হুঃব অহুতব ক্রিবেদ।

ভাক্তার গিরিশচন্দ্র দাস নক্ষো শহরের ব্যাভবারা হোবিওপ্যাব, ভাকার গিরিশ-





কলেকে ভাই হন এবং বৰ্ণাগৰরে এব-তি ভিত্রী লাভ করেন। বেশে কিনিরা ভিনি চিকিংলা ব্যবলারে বিশেব কৃতিত্ব অর্জন করেন। লক্ষ্ণো বহরে এককন বিশিষ্ট হোমিওপ্যাব হিলাবে ভাহার প্রতিষ্ঠা হিল। ভিনি উলারক্ষর এবং বহু সন্-ভণাবিভ হিলেন।

# CHATTERJEE'S PICTURE ALBUMS

#### IMPORTANT FOR THE CULTURED

The Renaissance of Indian Art has now become an accomplished fact. Even the Western World of Art has given recognition to it.

Price Rs. 4 each number. Postage extra.
On'y a few sets Nos. 10 to 17 are available

CHATTERJEE'S Albums are of Great: Value:
Historical and Artistic

# THE ARTISTS REPRESENTED IN THIS SERIES INCLUDE

Abanindranath Tagore-The Master

Nandalal Bose-Acharya, Kalabhavan, Santiniketan

Gaganendranath Tagore-The Master and Creator of a school

Asit Haldar-Principal, Government School of Arts and Crafts Lucknow

Abdur Rahman Chughtai-The foremost

Musalman Painter

Samarendranath Gupta-Principal, Mayo School of Art. Lahore

Sarada Ukil-The famous painter of Delhi

Mukul Do-Principal, Government School of Art, Calcutta

Surendranath Kar-Kalabhavan, Santiniketan

Bireswar Scn-School of Arts and Crafts, Lucknow

Deviprasad Ray Chowdhury—Principal, Government School of Arts and Crafts, Madras

Kshitindranath Majumdar—Indian Society of Oriental Arts

Surendranath Ganguli

Upendra Kishore Ray Chowdhuri

THE MODERN REVIEW OFFICE 120-2, Upper Circular Road, Calcutta

#### BOOKS AVAILABLE Chatterlee's Picture Albums-Nos. 1 to 17 ( No. 1. to 9 out of Stock ) each No. at Rs 4 32 O History of Orissa Vols. I & II -R. D. Banerii (Each) 25 Canons of Orissan Architecture-N. K. Basu 12 0 Dynasties of Medieval Orissa-Pt. Binavak Misra Eminent Americans: Whom Indians Should Rev. Dr. J. T. Sunderland Know-R Evolution & Religionditto R n Origin and Character of the Bible ditto 3 n Raimohan's Wife-Bankim Ch. Chatterjee 2 0 Prayag or Allahabad—(Illustrated) 8 n The Knight Errant (Novel)—Sita Devi 8 R The Garden Creeper (Illust, Novel)-Santa Devi & Sita Devi 8 Tales of Bengal-Santa Devi & Sita Devi 8 0 Plantation Labour in India-Dr. R. K. Das 8 India And A New Civilizationditto 0 Mussolini and the Cult of Italian Youth (Illust.)—P. N. Roy 8 Story of Satara (Illust. History) -Major B. D. Basu 10 0 ditto 2 My Solourn in England-History of the British Occupation in India - An epitome of Major Basu's first book in the list. ]-N. Kasturi 3 0 The History of Medieval Vaishnavism in Orissa-With introduction by Sir Jadunath Sarkar.—Prabhat Mukherjee The First Point of Aswini-Jogesh Ch. Roy 8 Protection of Minorities-Radha Kumud Mukherii Postage Exita.

The Modern Review Office 120-2, Upper Circular Road, CALCUTTA

# - এবার পূজার আনন্দে দে বইগুলি অবশ্য প্রয়োজনীয় -

# রাশিয়ার রাজদূত—২॥৽

পৃথিবী বিখ্যাত উপন্তাস ক্লে ভার্ণের 'মাইকেল ট্রগফ' গ্রাছের প্রথম বাঙ্লা অন্তবাদ। এ বইটি পৃথিবীর ১২টি বিভিন্ন ভাষায় অন্তবাদ হয়েছে। একমাত্র বাইবেল ভিন্ন আর কোন বই এত ভাষায় অন্দিত হয় নি। প্রথম সংস্করণ এক বংসবের মধ্যে নিঃশেষিত।

# ডাক্তারের দিখিজয়—১।•

হিউ লাফটিং লিখিত পৃথিবীবিধ্যাত হাসির গল্পের বই 'ষ্টোরি অব ডক্টর ডুলিট্ল'এর মনোরম অফুবাদ। পশুপক্ষীর ডাক্ডার ডুলিট্লের আফ্রিকায় অভিযানের চমকপ্রদ কাহিনীটি পড়ে ছেলে বুড়ো সকলেই মন্ধা পাবেন। পাতায় পাতায় ছবি।

# রাশিয়ার সেরা গণ্প—৩

রাশিয়ার কয়েকজন শ্রেষ্ঠ লেখকের পৃথিবীবিধ্যাত গল্প-জলিব অন্থবাদ ক'বে সহতে এই গ্রন্থে সংকলিত হয়েছে।

# কয়েকটি বিদেশী গম্প—২५०

পৃথিবীর বিভিন্ন দেশের বাছাই করা কয়েকটি গল্পের মনোরম অফুবাদ। এই বইপানা পড়লে বিভিন্ন দেশের অস্তুরের ফুরটির সঙ্গে পাঠকের পরিচয় হবে ভাদের দেশের শ্রেষ্ঠ গল্পভালির মাধ্যমে। এ অফুবাদ পড়ে মনে হবে যেন নুভন সৃষ্টি।

### জীবনের বদন্ত-২৮০

গ্রীঅরুণচন্দ্র গুরু

আপনি নিশ্চয়ই প্রেমের গল্প ভালবাদেন ? কে না ভালবাদে । আমাদের হৃদয়ের নিভ্ততম কোণটিতে মধ্ব-তম আঘাত হানতে এ গল্পের আর জুড়ি নেই। এ বই-থানির প্রতিটি গল্পে আপনি পাবেন দেই মধ্ব রদের সন্ধান, যা আপনাকে করে তুগবে সর্গ ও সঞ্চীব।

আমাদের নূতন বই:-

#### THIS EUROPE

Girija Mookerjee Rs. 7

দিতীয় মহাযুদ্ধের কালে ইউরোপে নেভাঞ্চর কার্যাবলীর প্রথম প্রামাণ্য ইতিহাদ। সভ্য ঘটনা উপঞ্চাদের চেয়েও উপভোগ্য করে লেগক বলেছেন এই বইটিভে।

# मन्नामो विट्याह---

ন্ত্ৰ বাষ

বাঙ্গাব ভূলে যাওচা যুগোর এক অগ্নিময় কাহিই পাবেন এই উপন্যাসটিতে।

# রপকথা—২

बैयक्नाह्य खर

গ্রীক উপকথার দেবদেবীদের নিয়ে রচিত কয়েক
সরস গল্প, কল্পনার অভিনবত্বে ও মৌলিকত্বে প্রতিটি গ
অতুলনীয়, সিলোফেন পেণারে মোড়া লাইনো টাই
ছোপা এই স্কৃতা বইখানি আনন্দোৎসবে প্রিয়ন্তনকে দেবা
পক্ষে একথানি আদর্শ উপহার।

# সৃষ্টি ও সভ্যতা—২।•

গ্রীঅরুণচন্দ্র গুহ

সৃষ্টির একেবারে গোঁড়া থেকে আজ পর্যন্ত এর বিবর্তনে ইতিহাদ অতি স্থানর ভাবে সরদ করে গল্পের মতন বং হয়েছে। লাইনো টাইপে চাপা শোভন দিতীয় সংস্কাণ আদাম গভর্ণমেন্ট কর্তৃক প্রাইজ ও লাইব্রেরীর জন্ধ প্রথ শ্রেণীর পুস্ককরণে অন্থুমাদিত।

খামী প্রজ্ঞানানন্দের কয়েকখানি বই বেদাস্ত দর্শনের ইতিহাস—১০১

( তিন খণ্ড একত্রে বাঁধানো )

সৰলতা ও ছুৰ্বলতা–১০ রাজনীতি—২১

এ ছাড়া আরও কয়েকখানি চ্ন্প্রাপ্য বই যা অনেকদিন ধরে পাওয়া যাচ্ছিল না, তার পুরোনো কয়েকথানা করে সংগ্রহ করা গেছে

দুর্চেগৎসবভত্ত্ব ।০

মাহমু ভোত্র ৷•

অৰ্ঘ্য ৷প ০

পরাধীনের মুক্তি ১১ চলার পথ ॥০

বিজয়ক্ষণ্য সোস্বামীর উপদেশাবলী ৮

চক্ৰগুপ্ত দীপশিখা (উপক্ৰাস) ২১

সরত্বতী লাইত্রেরী, সি১৮-১১, কলেজ ট্রাট মার্কেট, কলিকাতা-১২ এথবা:আমাদের খুচনা বিক্রম-কেন্দ্র: -৬নং বহিম চাটার্কী স্ত্রীটে অনুসন্ধান করন।



# उड्का जिलम अस्त्रिति

মাজো সর্কাংশে ক্রাটীন শিশু-গান্ত— ঠিকমন্ত সম্বিত ও গ্রীন্ধ প্রাধান দেশে ব্যবহারের পক্ষে বিশেষ উপযোগী। মাজে হামি-কর বীজাণু-রহিত ও সেই কারণে সাধারণ হুধ ব্যবহারে যে সহ রোগ সচরাচর সংক্রামিত হওয়া সম্ভব তা থেকে নিরাপদ রাথে। ভিটামিন্ 'ডি' থমিল গৌহগুক্ত হুওয়ার দক্ষণ ইহা রক্ত-হীনতা ও বালাহি-বিকৃতি রোগ (রিকেটস) থেকে রক্ষা করে। ম্যাজো থেতে দিলে আপনার শিশু ক্ষদর কইপুট হ'যে উঠবে।



গ্লান্ধো শিশুদের জন্ম অতি বিশুদ্ধ চুদ্ধ-খাস্ক

